क़ुरआन मजीद

हिन्दी मुतर्जम
मआ अरबी मतन

तर्जुमा:
मौलाना फ़तेह मुहम्मद ख़ाँ साहिब
जालंधरी

तस्ही:
मौलाना अब्दुल मजीद सरवर साहिब

प्रकाशक:
फ़रीद बुक डिपो (प्र.) लिमिटेड
नई दिल्ली-110002

क़ुरआन मजीद

हिन्दी मुतर्जम मआ अरबी मतन

तर्जुमाः मौलाना फ़तेह मुहम्मद ख़ाँ साहिब जालंधरी

तस्हीः मौलाना अब्दुल मजीद सरवर साहिब

संस्करणः 2006

पृष्ठः 982

प्रस्तुत-कर्ताः

मुहम्मद नासिर ख़ान

प्रकाशकः

फ़रीद बुक डिपो (प्र.) लिमिटेड

2158-59, एम० पी० स्ट्रीट, पटौदी हाउस,
दरिया गंज, नई दिल्ली-110002
फ़ोनः 23289786, 23247075,
फ़ैक्सः 23279998

कुछ इस क़ुरआन मजीद के बारे में

एक लम्बे अरसे से ख़ास कमी महसूस की जा रही थी कि सरल और आसान हिंदी भाषा में क़ुरआन मजीद का एक आम-फ़हम तर्जुमा हो जिसे हर ख़ास व आम (तालीमयाफ़्ता और कम पढ़े लिखे लोग)' आसानी से पढ़ कर समझ सकें, साथ ही अरबी मत्न (अरबी अक्षरों में लिखा हुआ क़ुरआन) भी हिंदी रस्मुलख़त (देवनागरी) में हो और जिस को बिल्कुल सही और शुद्ध उच्चारण (तलफ़्फ़ुज़) से पढ़ा जा सके।

क़ुरआन मजीद के तर्जुमे को हिंदी रूप देना तो फिर भी इतना मुश्किल न था लेकिन अरबी मत्न को हिंदी देवनागरी में रूपान्तर करना बहुत कठिन और मुश्किल था, चूंकि अरबी में कुछ ख़ास हुरूफ़ (अक्षर) ऐसे होते हैं जो हिंदी में नहीं होते जैसे (ث) से, (ح) बड़ी हे, (ز) ज़े, (ذ) ज़ाल, (ص) साद, (ض) ज़ाद, (ط) तो, (ظ) ज़ो, (ع) अैन, (غ) ग़ैन, (ف) फ़े, (ق) क़ाफ़, (ة) गोल ते, (~) छोटी मद और (ـــ) बड़ी मद वग़ैर:" हमने कुछ अलामतें (निशानियां) देकर उन हर्फ़ों (अक्षरों) को बनाया है जो अरबी हर्फ़ों की सही आवाज़ को ज़ाहिर करते हैं। हर हर्फ़ की आवाज़ के लिए अलाहिद: अलाहिद: हर्फ़ मुक़र्रर किये हैं। हिंदी के मत्न में लफ़्ज़ों के वस्ल व फसल (सन्धि-विग्रह), साकिन व मुतहर्रिक, (हलन्त और सस्वर), क़ल्ब व इदग़ाम वग़ैरह में क़ुरआन मजीद के मामूर व मंक़ूल रस्मुलख़त के तरीक़-ए-तहरीर व तिलावत की पाबन्दी की है और रुमूज़े औक़ाफ़ (विरमाविरम चिह्न) की रायज अलामतें भी अरबी में किताबत (लिखाई) की गई है ताकि उस को कोई क़ुरआन का हिस्सा समझ कर न पढ़ने लगे अलावा इसके रुबअ, निस्फ़, सुल्स, रुकूअ और सज्द: वग़ैर: के लिए भी अलामते दी गई हैं। हिंदी में अरबी के मुताबिक़ तिलावत (पाठ) करने के लिए क़ायदे बयान किये गये हैं। हुरूफ़ के सही मख़ारिज (शब्द की सही आवाज़ निकालने) का तरीक़ा भी तफ़्सील (detail) से दिया गया है ताकि हिंदी मत्न भी अरबी के सही तलफ़्फ़ुज़ के साथ पढ़ा जा सके और उस के पढ़ने का अंदाज़ अरबी के तर्ज़े अदा (तरीक़े) के मुताबिक़ हो। मत्न वाले पेज पर हिंदी के मत्न के साथ अरबी मत्न का सफ़ा (पन्ना) भी छोटा (Reduce) करके रखा गया है ताकि कभी कोई हिंदी देवनागरी मत्न को अरबी से मिलाना चाहे तो मिला भी सके। बेहतर होगा कि पाठक (क़ारी "पढ़ने वाला") किसी अरबीदां (अरबी जानने वाले) के सामने दो चार बार पढ़ कर अपना उच्चारण दुरुस्त कर लें ताकि पढ़ने में कोई ग़लती न रह जाये।

इसमें कोई शक नहीं कि यह काम बड़ा दुश्वार (कठिन) था जिसके लिए हमने मुख़्तलिफ़ उलमा-ए-किराम की ख़िदमात हासिल की शुरू में मौलाना कौसर यज़दानी साहिब से रब्त रहा लेकिन किसी वजह से वह वक़्त न दे सके। इस क़ुरआन मजीद का टाइटल पेज क़ुरआन छपने से पहले छप चुका था इसलिए टाईटल पेज पर मौलाना कौसर साहब का नाम भी है अलावा इस के इस की तस्हीह की तरफ़ ख़ास तवज्जह (ध्यान) दिया गया है और कई हाफ़िज़े क़ुरआन और उलमा-ए-किराम ने इसकी तस्हीह (Proof Reading) की है। साथ ही शुरू में ३८ पन्नों पर क़ुरआन मजीद से मुतअल्लिक़ (संबंधित) ज़रूरी मालूमात (जानकारी) का एक जामेअ (बड़ा) मुक़द्दमा है जिसमें क़ुरआन को

सही उच्चारण से पढ़ने का तरीक़ा और दीगर ज़रूरी मालूमात दर्ज हैं कि क़ुरआन मजीद किस तरह उतरा, कितने दिनों में उतरा और उस की हिफ़ाज़त (सुरक्षा) का अल्लाह् तआला ने क्या इन्तज़ाम (बंदोबस्त) किया है अलावा इसके पैग़म्बरे इस्लाम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़िंदगी के मुकम्मल हालात भी दे दिए गये हैं ताकि इस मुबारक किताब को पढ़ने से पहले यह समझा जा सके कि जिस पैग़म्बर पर यह किताब उतरी है उसकी ज़िंदगी कैसी थी। हमें उम्मीद है कि हिंदी पढ़ने वाले इस से फ़ायदा हासिल करेंगे और उलेमा से गुज़ारिश है कि वह अपने मश्विरों से नवाज़ें, साथ में पाठकों (पढ़ने वालों) से भी निवेदन है कि तिलावत (पाठ) के वक़्त कोई ग़लती या कमी देखें, तो मेहरबानी करके हमें लिखें ताकि उसे सही किया जा सके।

इस हिंदी क़ुरआन मजीद की तरतीब, तस्हीह वग़ैरह में जिन हज़रात ने हमारी मदद की उन के नाम यह हैं—

१. मौलाना अब्दुल मजीद सर्वर साहिब (मालेगांव)
२. मौलाना ख़ालिद हुसैन सिद्दीक़ी साहिब (ज़िला बस्ती)
३. मौलाना इमरान क़ासमी साहिब (दिल्ली)
४. मौलाना शुऐब इदरीस साहिब (बम्बई)
५. हाफ़िज़ हसनेन साहिब (दरभंगा)
६. हाफ़िज़ वारीस साहिब (दिल्ली)
७. नासिर खां (दिल्ली)

उम्मीद है कि हिंदी में हमारी यह कोशिश अल्लाह तआला क़ुबूल फ़रमाएगा और उन तमाम लोगों को इस का अज्र देगा जिन्होंने इस काम में हमारी मदद की है या मश्विरा दिया है।

—प्रकाशक
सैयद महमूद क़ादरी

नोट : अनुवाद में जो शब्द ब्रेकेट ( ) में हैं वह अरबी उर्दू के शब्दों के हिंदी अनुवाद के मतलब को खुलासा करने के लिए दिया गया है।

क़ुरआन मजीद के फ़ज़ाइल (लाभ)

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है, मेरी उम्मत की सबसे अफ़ज़ल (श्रेष्ठ) इबादत क़ुरआन मजीद की तिलावत है। अहले क़ुरआन (क़ुरआन पढ़ने वाले) ख़ास अल्लाह वाले होते हैं। तुम में से बेहतर वह है जो क़ुरआन सीखे और सिखाये।

तिर्मिज़ीशरीफ़ में इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जिसने क़ुरआन मजीद का एक हर्फ़ (अक्षर) पढ़ा, तो उसको एक नेकी मिलेगी, जो दूसरे कामों की दस नेकियों के बराबर होगी। अल्लाह तआला क़ुरआन मजीद पढ़ने वाले की ओर सबसे पहले मुतवज्जह होता (यानी ध्यान देता) है। तुम क़ुरआन मजीद पढ़ा करो क्योंकि क़ुरआन मजीद क़ियामत के दिन अपने पढ़ने वालों की शफ़ाअत (सिफ़ारिश) करेगा।

तिर्मिज़ी शरीफ़, सुनने दारमी और बैहक़ी में अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ख़ुदा फ़रमाता है कि जिस को क़ुरआन की तिलावत ने मेरी याद से और मुझ से अपनी हाजतों के मांगने से रोका, तो मैं तमाम मांगने वालों से ज़्यादा उस की हाजतों और दिल की मुरादों को ख़ुद ही पूरा करूंगा (यानी बे-मांगे,) क्योंकि अल्लाह के कलाम की फ़ज़ीलत (बड़ाई) दूसरे कलामों पर ऐसी है, जैसे ख़ुदा की फ़ज़ीलत मख़्लूक़ पर।

सुनने दारमी शरीफ़ में नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि अगर क़ुरआन मजीद किसी खाल में हो, तो वह खाल आग में नहीं जल सकती। खाल से मुराद मोमिन का दिल है। अगर इस में क़ुरआन मजीद हो, दोज़ख़ के अज़ाब से बचा रहेगा। हदीसों में क़ुरआन मजीद के अनगिनत फ़ज़ाइल (लाभ) हैं, जो यहां बयान से बाहर है।

क़ुरआन मजीद की अज़्मत (बड़ाई), बुज़ुर्गी और उसकी फ़ज़ीलत के लिए इतना काफ़ी है कि यह दुनिया के पैदा करने वाले ख़ुदा का कलाम है तमाम ऐबों और कमज़ोरियों से पाक और साफ़ है। इसकी फ़साहत और बलाग़त तमाम दुनिया ने मान ली है। बड़े-बड़े फ़साहत और बलाग़त के दावेदार इस जैसे दो-तीन जुमले (वाक्य) भी सदियों (सैकड़ो साल) की कोशिशों के बावजूद न बना सके। खुले आम एलान भी किया गया, जोश दिलाने वाले ख़िताब से कहा गया कि, 'अगर तुम इसके ख़ुदाई कलाम (ईश्वरीय वाणी) होने में शक करते हो और इसको इंसानी कलाम समझते हो, तो तुम इस जैसी छोटी से छोटी सूरः बना लाओ और तमाम ख़ास व आम (ज्ञानी व अज्ञानी) को जमा करो, हरगिज़ न बना सकोगे हरगिज़ न बना सकोगे। क़ुरआन मजीद में सूरः बनी इस्राईल में, पारा १५, रुकूअ १०, आयत न० ८८-८९ में अल्लाह तआला फ़रमाता है—

अनुवाद—'कह दो कि अगर इंसान और जिन्न इस बात पर जमा हों कि इस क़ुरआन जैसा बना लाएं, तो इस जैसा न ला सकेंगे, अगरचे वे एक दूसरे के मददगार हों और हमने इस क़ुरआन में हर तरह की मिसालें (उदाहरण), बयान करके बात ठीक तरीक़े से बता दी। मगर ज़्यादा लोगों का यह हाल है कि बिना इन्कार किए उनसे रहा न गया। जिन्नों की क़ौम ने जब इस चमत्कारी कलाम को सुना तो बे-झिझक कह उठे कि—'इन्ना समिअ्ना क़ुरआनन् अजबय् यह्दी इलर्रुश्दि फ़-आ मन्ना बिही व लन्नुश्रि-क बिरब्बना अहदा० अर्थात-बेशक हमने एक अजीब क़ुरआन सुना जो नेकी की तरफ़

हिदायत करता है हम इस पर ईमान लाए और अपने पालनहार का किसी को साझीदार हर्गिज़ न समझेंगे।'

स्वयं अल्लाह तआला इस पवित्र क़ुरआन की तारीफ़ (प्रशंसा) करता है फिर हम लोगों की ज़ुबान व क़लम में क्या ताक़त है कि इसकी ख़ूबियों और बरकतों का एक अंश भी बयान कर सकें।

क़ुरआन मजीद के उतरने और संग्रह व संकलन के हालात

क़ुरआन मजीद एक पवित्र किताब है जो अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल० पर उतारी गयी। यह अर्श कुर्सी के मालिक का कलाम है जो उसने स्वयं एक बरगुज़ीदा पैग़म्बर और मुक़र्रब (सबसे ज्यादा लोकप्रिय) बन्दे पर नाज़िल किया। इस्लाम का आधार इसी आसमानी फ़रमान (आदेश) पर है जिसने अनुपालन किया वह इस्लाम के दायरे में दाख़िल हुआ और जिसने ज़रा भी अवज्ञा की वह इस पाकीज़ा जमाअत (इस्लाम) से अलग हो गया और अल्लाह के बाग़ियों में शामिल हुआ। जब नबी-ए-करीम सल्ल० की उम्र शरीफ़ ४० साल की हुई उस समय आप को नबुवत प्रदान की गयी और रिसालत का ताज आप के सर पर रखा गया। इसी ज़माने से क़ुरआन के उतरने की शुरूआत हुई। यदा कदा यथा ज़रूरत के अवसर पर थोड़ा-थोड़ा २३ साल तक नाज़िल होता रहा है। अगली किताबों की तरह पूरा एक ही बार में नहीं उतरा (हज़रत मूसा अलैहि० पर तौरात, हज़रत ईसा अलैहि० पर इंजील और हज़रत दाऊद अलैहि० पर ज़बूर ये सब किताबें तो एक ही बार में उतारी गयीं और सौभाग्य से ये सब किताबें रमज़ान ही के महीने में उतरीं)

सही यह है कि आप (सल्ल०) की नुबूवत के बाद रमज़ान की शबे-क़द्र में पूरा क़ुरआन मजीद लौहे महफ़ूज़ (अल्लाह के पास से) से उस आसमान पर जिसे हम देख रहे हैं अल्लाह के हुक्म से उतारा गया और इसके बाद हज़रत जिब्रील अलैहि० को जिस समय जिस क़दर हुक्म हुआ उन्होंने पवित्र कलाम को बिल्कुल वैसा ही बिना किसी परिवर्तन या कमी-बेशी के नबी सल्ल० तक पहुंचाया। कभी दो आयतें, कभी तीन आयतें और कभी एक आयत से भी कम, कभी दस-दस आयतें और कभी पूरी-पूरी सूरतें। इसी को शरीअत में वह्य कहते हैं। उलमा (विद्वानों) ने वह्य के विभिन्न तरीक़े हदीसों से पेश किए हैं।

१—फ़रिश्ता वह्य लेकर आए और एक आवाज़ घंटी जैसी मालूम हो। यह स्थिति अनेक हदीसों से साबित है और यह क़िस्म वह्य की सभी क़िस्मों में सख़्त थी। बहुत कष्ट नबी सल्ल० को होता था यहां तक कि आपने फ़रमाया कि जब कभी ऐसी वह्य आती है तो मैं समझता हूं कि अब जान निकल जाएगी।

२—फ़रिश्ता दिल में कोई बात डाल दे।

३—फ़रिश्ता आदमी के रूप में आ कर बात करे। यह क़िस्म बहुत आसान थी इसमें कष्ट न होता था।

४—अल्लाह तआला जागते में नबी सल्ल० से कलाम फ़रमाए जैसा कि शबे मेअराज (मेअराज की रात) में।

५—अल्लाह तआला सपने की हालत में कलाम फ़रमाए। यह क़िस्म भी सही हदीसों से साबित है।

६—फ़रिश्ता सपने की हालत में आकर कलाम करे। मगर अन्तिम दो क़िस्मों से क़ुरआन मजीद ख़ाली है। पूरा क़ुरआन जागने की स्थिति में नाज़िल हुआ। अगरचे कुछ उलमा ने सूर: कौसर को आख़िरी क़िस्म से माना है लेकिन तहक़ीक़ करने वालों ने इसको रद्द कर दिया है और उन के (शक) संदेह का उचित जवाब दे दिया है। (इतक़ान)

क़ुरआन मजीद के बदफ़आत (कई बार) नाज़िल होने में यह भी हिकमत थी कि इस में कुछ आयतें वे थीं जिन का किसी समय रद्द कर देना अल्लाह को मंजूर था। क़ुरआन मजीद में तीन प्रकार के मंसूख़ात हुए हैं। कुछ वे जिनका हुक्म भी मंसूख़ (रद्द) और तिलावत भी मंसूख़।

पहली मिसाल

لَوْكَانَ لِابْنِ اٰدَمَ وَادِيًا مِّنْ مَّالٍ لَاَحَبَّ اَنْ يَّكُوْنَ اِلَيْهِ الثَّانِيْ وَلَوْكَانَ لَهُ الثَّانِيْ لَاَحَبَّ

اِنْ يَّكُوْنَ اِلَيْهِمَا الثَّالِثُ وَلَا يَمْلَاُ جَوْفَ ابْنِ اٰدَمَ اِلَّا التُّرَابُ وَيَتُوْبُ اللّٰهُ عَلٰى مَنْ تَابَ

सूर: लम यकुन में—'लव का-न लि इब्ने आ-द-म व दिय्यम मिम्मालिन् ल-अहब्-ब अंय्यकू-न इलय्हिस्सानी व लव का-न लहुस्सानी ल-अहब्-ब अंय्यकू-न इलय्हिमस्सालिसु व ला यमं लऊ जव्फ़ब्नि आ-द-मा इल्लत्ताराबु व यतूबुल्लाहु अला मन ता-ब' भी था।

दूसरी मिसाल

दुआ-ए-कुनूत भी क़ुरआन की दो सूर: थी। कुछ वे हैं जिन की तिलावत मंसूख़ हो गयी मगर हुक्म बाक़ी है जैसे कि आयते रजम, कि हुक्म इस का बाक़ी है मगर तिलावत इस की नहीं होती। ये दोनों क़िस्में क़ुरआन से निकाल दी गयी हैं और इनका लिखना भी क़ुरआन मजीद में जायज़ नहीं है। कुछ वे हैं जिन की तिलावत बाक़ी है मगर हुक्म मंसूख़ हो गया है। यह क़िस्म क़ुरआन मजीद में दाख़िल है और इस की बहुत-सी मिसालें हैं। कुछ लोगों ने मुस्तक़िल किताबों में इन को जमा किया है। तफ़्सीर (टीका) के फ़न (कला) में उन से बहुत बहस होती है मगर यहां उन की तफ़्सील (विवरण) का अवसर नहीं। (तफ़्सीर इतक़ान)

जब शाफ़अे क़यामत (क़यामत के दिन सिफ़ारिश करने वाले) और उम्मत को पनाह देने वाले हुज़ूर सल्ल० ने रफ़ीक़े आला जल्ल मुजद्दहू की रहमत में सकूनत अख़्तियार फ़रमाई और वह्य का उतरना बंद हो गया। क़ुरआन मजीद किसी किताब में, जैसाकि आजकल है जमा नहीं था अलग-अलग चीज़ों पर सूरतें और आयतें लिखी हुई थीं और वे अलग-अलग लोगों के पास थीं। अधिकांश सहाबा को क़ुरआन मजीद पूरा ज़बानी याद था। सब से पहले क़ुरआन मजीद को एक जगह जमा करने का ख़्याल हज़रत अमीरुल मोमिनीन फ़ारूक़ आज़म रज़ि० के दिल में पैदा हुआ और अल्लाह ने उन के ज़रिए से अपने इस सच्चे वायदे को पूरा किया जो अपने पैग़म्बर से किया था अर्थात क़ुरआन मजीद के हम हाफ़िज़ हैं इस का जमा करना और हिफ़ाज़त करना हमारे ज़िम्मे है। यह ज़माना हज़रत अमीरुल मोमिनीन सिद्दीक़ अकबर रज़ि० की ख़िलाफ़ते राशिदा का था। हज़रत फ़ारूक़ रज़ि० ने उन की सेवा में अर्ज़ किया कि क़ुरआन के हाफ़िज़ शहीद होते जा रहे हैं और बहुत से यमामा की जंग में शहीद हो गए। मुझे डर है कि यदि यही हाल रहेगा तो बहुत बड़ा हिस्सा क़ुरआन मजीद का हाथ से जाता रहेगा।

अतः मैं उचित समझता हूं कि आप इस तरफ़ तवज्जोह दें और क़ुरआन मजीद के जमा करने का प्रबन्ध करें। हज़रत सिद्दीक़ ने फ़रमाया कि जो काम नबी सल्ल० ने नहीं किया उस को हम कैसे कर सकते हैं ? हज़रत उमर फ़ारूक़ ने अर्ज किया कि खुदा की क़सम यह बहुत अच्छा काम है। फिर कभी-कभी हज़रत फ़ारूक़ रज़ि० इस की याद दिलाते रहे यहां तक कि हज़रत सिद्दीक़ रज़ि० के दिले मुबारक में भी यह बात जम गयी। उन्होंने ज़ैद बिन साबित रज़ि० को तलब किया और यह सब क़िस्सा बयान करके फ़रमाया कि क़ुरआन मजीद को जमा करने के लिए मैंने आप को चुना है, आप कातिबे वह्य (वह्य को लिखने वाले) थे और जवान व नेक हैं। उन्होंने भी वही बात कही कि जो काम नबी सल्ल० ने नहीं किया, उस को हम लोग कैसे कर सकते हैं ? अन्त में वह भी राज़ी हो गए और उन्होंने बड़े अहतमाम (बहुत प्रबन्धित ज़िम्मेदारी) से क़ुरआन मजीद को जमा करना शुरू किया।

ज़ैद बिन साबित रज़ि० को चुने जाने की वजह उलमा ने यह लिखी है कि हर साल रमज़ान में हज़रत जिब्रील अलैहिस्लाम से नबी सल्ल० क़ुरआन मजीद का दौर (पढ़ कर सुनना) किया करते थे और इंतक़ाल के साल में दो बार क़ुरआन मजीद का दौर हुआ और ज़ैद बिन साबित रज़ि० इस अन्तिम दौरे में शरीक थे और इस अन्तिम दौरे के बाद फिर कोई आयत मंसूख (रद्द) नहीं हुई। जितना क़ुरआन इस दौरे में पढ़ा गया, वह सब बाक़ी रहा अतः उनको उन आयतों का ज्ञान था जिनकी तिलावत मंसूख हुई थी। (शरह सुन्न.)

जब क़ुरआन मजीद सहाबा रज़ि० के प्रबन्ध से जमा हो चुका, हज़रत फ़ारूक़ रज़ि० ने अपनी खिलाफ़त के ज़माने में उस की नज़र सानी (दोबारा देखना) की और जहां कहीं किताबत (लिखने में) ग़लती हो गयी थी उस को ठीक किया। सालों इस चिन्ता में रहे और कभी-कभी सहाबा रज़ि० से मुनाज़िरा भी किया। कभी सेहत इसी मक्तूब (लिखा हुआ) की ज़ाहिर होती थी, कभी इस के खिलाफ़, तो फ़ौरन उस को सही कर देते थे फिर जब ये सब दर्जे तै हो चुके तो हज़रत फ़ारूक़ रज़ि० ने इस के पढ़ने-पढ़ाने की सख्त व्यवस्था की और हाफ़िज़ सहाबा रज़ि० को दूर के देशों में क़ुरआन व फ़िक़्ह की शिक्षा के लिए भेजा, जिस का सिलसिला हम तक पहुंचा।

सच यह है कि हज़रत फ़ारूक़ रज़ि० का एहसान इस बारे में पूरी उम्मते मुहम्मदिया (मुसलमानों) पर है। उन्हीं की बदौलत आज हमारे पास क़ुरआन मौजूद है और हम उसकी तिलावत से लाभ उठाते हैं। इस एहसान की मकाफ़ात (बदला) किस से हो सकती है। ऐ अल्लाह ! अपने रिज़्वान (ज्ञान) की खलअतें (इनाम) उन को प्रदान कर और खलअत व करामात का ताज उन के मुक़द्दस सर पर रख। आमीन।

फिर हज़रत उस्मान रज़ि० ने इस एहसान को और भी कामिल (पूरा) कर दिया। अपनी खिलाफ़त के ज़माने में उन्होंने इस मसहफ़ शरीफ़ (क़ुरआन) की सात नक़लें (प्रतियां) करा कर दूर-दूर के देशों में भेज दीं। और तिलावत क़िरआत (क़ुरआन पाठ करने के तरीक़ों) की वजह से जो मतभेद और झगड़े हो रहे थे और एक दूसरे की क़िरआत को हक़ के खिलाफ़ और ग़लत समझा जाता था, इन सब झगडों से इस्लाम को पाक कर दिया। केवल एक क़िरअत पर सब को सहमत कर दिया। अब अल्लाह के शुक्र से एक मज़बूत किताब मुसलमानों के पास है। कोई मज़हब दुनिया में इसकी मिसाल नहीं ला सकता। इन्जील व तौरात की हालत नाज़ुक है उनमें वह कमी-बेशी हुई कि खुदा की पनाह। क़ुरआन की निस्बत (बारे में) विरोधियों को भी इक़रार है कि यह वही किताब है जिसकी निस्बत मुहम्मद सल्ल० ने खुदा का कलाम होने का दावा किया था इस में किसी क़िस्म की कमी ज्यादती उनके बाद नहीं हुई। वल्हम्दु लिल्लाह अल। ज़ालिक

क़ुरआन मजीद में आयतों व सूरतों की तरतीब जो इस ज़माने में है यह भी सहाबा रज़ि० ने दिया है मगर न अपनी राय व अनुमान में से, बल्कि नबी सल्ल० जिस तरतीब (ढंग) से पढ़ते थे और जो तरतीब उस मुबारक दौर में थी उसके थोड़ा भी खिलाफ़ नहीं किया, केवल दोसूरतोंकी तरतीब अलबत्ता सहाबा रज़ि० अपने क़यास (अनुमान) से ही है। सूर: बराअत और अन्फ़ाल, तो यह भी निश्चय भी लोहे महफ़ूज़ के खिलाफ़ न होगी।जिसका मुहाफ़िज़ इस क़दर क़ादिर व क़वी(शक्तिशाली) हो उस में उसकी तरतीब भी इच्छा के खिलाफ़ नहीं हो सकती।

कुछ और सहाबा जैसे इब्ने मसऊद रज़ि० और अबी बिन कअब रज़ि० ने भी क़ुरआन मजीद को जमा किया था। किसी की तरतीब उतरने के मुताबिक़ थी किसी की और किसी तरह। जगह-जगह वे आयतें जिनकी तिलावत मन्सूख थी भी इनमें किसी उद्देश्य से शामिल थी। कहीं-कहीं तफ़्सीरी शब्द उनमें लिखे हुए थे। इन सब मुसहफ़ों (नुस्खों) को हज़रत उस्मान रज़ि० ने ले लिया वर्ना आगे चल कर इनकी वजह से सख़्त मतभेद पैदा होता। इसके अलावा यह सहमति शक्ति जो इस मसहफ़ के जमा करने में थी इन मुसहफ़ों में कहां। वह केवल एक ही व्यक्ति की मेहनत का नतीजा थे इस वजह से और भी खराबियां उनमें होंगी।

सहाबा रज़ि० के ज़माने में कुरआन मजीद में सूरतों के नाम, पारों के निशान आदि कुछ न थे, बल्कि अक्षरों पर बिन्दु (नुक़्ते) भी न दिए गए थे बल्कि कुछ सहाबा इसको बुरा समझते थे। वे चाहते थे कि मुसहफ़ में सिवाए क़ुरआन के और कोई चीज़ न लिखी जाए। अब्दुल मलिक के ज़माने में अबुल असवद या हज़रत हसन बसरी रह० ने उस में नुकते बनाये और सूर: और पारों के नाम भी लिख दिए गये। उलमा इन सब चीज़ों के कारणों (जवाज़) पर सहमत हैं इस लिए कि ये ऐसी कोई चीज़ नहीं है, जिनके क़ुरआन होने का संदेह हो और मना उन चीज़ों का लिखना है जिनका क़ुरआन होने का शक (संदेह) पड़े।

ख़लूसेनीयत (सही नीयत) व क़ुरआन की तिलावत के आदाब

बुखारी व मुस्लिम में हज़रत उमर बिन खत्ताब रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया, हर अमल का आधार नीयत पर है और हर व्यक्ति को वही मिलेगा जिसकी उसने नीयत की है। तिलावत के समय वुज़ू के बाद पाक जगह में क़िब्ले की ओर हो कर यह ख्याल करता हुआ तिलावत करे कि मैं तमाम मख़्लूक़ (जीव) के पैदा करने वाले का कलाम पढ़ रहा हूं जिसके अधिकार में मेरी जान है और रिज़्क के अस्बाब हैं। तिलावत को बिस्मिल्लाह से शुरू करे। बशारत (खुशखबरी) वाली आयतों पर खुश हो और अज़ाब वाली आयतों पर रोए, या कम से कम रोना न आए तो रोने की सूरत बनाए। अगर बे वुज़ू हो तो ग़िलाफ़ (क़ुरआन जिस कपड़े में लिपटा होता है) या किसी और कपड़े से क़ुरआन को हाथ लगाए कि ऐसी सूरत में बिना इसके क़ुरआन को हाथ लगाना जाईज़ नहीं है। मगर बिना वुज़ू क़ुरआन का पढ़ना जायज़ है। तमाम उलमा की सहमति है कि बिना ग़ुस्ल किए अर्थात जनाबत की हालत वाले मर्द या हैज़ व निफ़ास वाली औरत को क़ुरआन का पढ़ना हराम है।

हज़रत आइशा रज़ि० नबी सल्ल० की कैफ़ियत बयान फ़रमाती हैं कि आप हर हाल में तिलावत फ़रमाया करते थे, वुज़ू की हालत में भी, बिना वुज़ू की हालत में भी, हां अलबत्ता जनाबत की हालत में न करते थे।

क़ुरआन मजीद की तिलावत में एक ख़ास समय तै कर लेना भी सही है। अधिकांश सहाबा फ़ज्र की नमाज़ के बाद क़ुरआन मजीद पढ़ा करते थे। समय तै कर लेने में नाग़ा (वक़्फ़ा) भी नहीं होता।

सही यह है कि क़ुरआन मजीद की तिलावत और पढ़ने के लिए किसी उस्ताद से इजाज़त लेना या उसको सुनाना शर्त नहीं है, हां इतना ज़रूरी है कि क़ुरआन मजीद सही पढ़ता हो। यदि इतनी योग्यता अपने में न देखे तो उसको ज़रूरी है कि किसी उस्ताद को सुना दे, या उस से पढ़ ले।

(इतक़ान)

यह भी शर्त नहीं है कि क़ुरआन मजीद के मायने (अर्थ) समझ लेता हो। और यदि क़ुरआन मजीद में एराब (मात्राएं) न हों तब भी उसके सही एराब पढ़ लेने पर क़ादिर (सामर्थ) हो।

सही यह है कि क़ुरआन मजीद की तिलावत की नेमत केवल इन्सान को दी गयी है, शैतान आदि इसकी तिलावत पर क़ादिर नहीं है, बल्कि फ़रिश्तों को भी यह नेमत नसीब नहीं हुई। वे भी इस आशा में रहते हैं कि कोई इन्सान तिलावत करे और वे सुनें। हां मोमिन जिनको अलबत्ता यह नेमत मिली है और वे तिलावत पर क़ादिर (सामर्थ) हैं (नफ़तुल मरजान-इतक़ान)

शायद इससे हज़रत जिब्रील अलैहि० अलग हों, इस लिए कि उनकी निस्बत (बारे में) हदीसों में आया है कि हर रमज़ान में नबी सल्ल० से क़ुरआन मजीद का दौर किया करते थे और हाफ़िज़ इब्ने हजर अस्क़लानी रह० ने फ़तहुल बारी में व्याख्या कर दी है कि कभी वे पढ़ते थे और हज़रत (सल्ल०) सुनते थे और कभी आप (सल्ल०) पढ़ते थे और वे (जिब्रील अलैहि०) सुनते थे। (वल्लाहु आलम)

मस्नून है कि पढ़ने वाला शुरू करने से पहले,

'अऊज़ुबिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम- أَعُوذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ

-बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम' ० بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ ले और यदि पढ़ने के दौरान कोई दुनिया की बात करे तो उसके बाद फिर इसको पढ़ ले।

क़ुरआन मजीद की तिलावत मुसहफ़ (क़ुरआन) में देखकर ज़्यादा सवाब रखती है बजाए ज़बानी पढ़ने के। इस लिए कि वहां दो इबादतें होती हैं एक तिलावत, दूसरे क़ुरआन मजीद का दीदार (दर्शन)।

क़ुरआन मजीद पढ़ने की हालत में कोई बात करना या और किसी ऐसे काम में लगना जो दिल को दूसरी तरफ़ फेरे मकरूह है। क़ुरआन मजीद पढ़ते समय अपने को पूरी तरह उसी की तरफ़ लगा दे, न यह कि ज़बान से शब्द जारी हों और दिल में इधर-उधर के ख़्याल।

क़ुरआन मजीद की हर सूरः के शुरू में बिस्मिल्लाह कह लेना मुस्तहब (बेहतर) है। मगर सूरः बराअत के शुरू में बिस्मिल्लाह न पढ़ना चाहिए। पारा व अलम् में जो सूरः तौबा 'बरा अतुम्मिनल्लाहि' से शुरू है इस पर बिस्मिल्लाह नहीं लिखी है इस का हुक्म यह है कि यदि कोई ऊपर से पढ़ता चला आता है तो इस पर पहुंच कर बिस्मिल्लाह न पढ़े, वैसे ही शुरू कर दे और यदि किसी ने इसी जगह से शुरू किया है या कुछ सूरः पढ़ कर पढ़ना बन्द कर दिया था फिर बीच में से पढ़ना शुरू किया तो इन दोनों हालतों में बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम पढ़ना चाहिए।

बेहतर यह है कि क़ुरआन मजीद की सूरतों को उसी तरतीब से पढ़े जिस तरतीब से क़ुरआन मजीद में लिखी हैं, हां बच्चों के लिए आसानी के उद्देश्य से सूरतों का बिना तरतीब पढ़ाना, जैसा कि आजकल पारा अम्-म य-त-सा अलून में क़ायदा है बिना कराहत जायज़ है। (रद्दुल मुहतार)

और आयतों का बिना तरतीब पढ़ना आम सहमति से मना है। (इतक़ान)

क़ुरआन मजीद की विभिन्न सूरतों की आयतों को एक साथ मिला कर पढ़ने को उलेमा ने मकरूह लिखा है इस वजह से कि हज़रत बिलाल रज़ि० को आप (सल्ल०) ने इस से मना फ़रमाया था। (इतक़ान आदि)

मगर मेरे ख़्याल में यह कराहत (मनाही) उस समय होगी जब इन आयतों की तिलावत सवाब की वजह से हो। इस लिए कि झाड़-फूंक के वास्ते विभिन्न आयतों का एक साथ पढ़ना नबी सल्ल० और उन के सहाबा से सही तरह से साबित है और हर एक आयत के गुण अलग-अलग हैं अत: जो ख़ास असर हमें दरकार है वह जिन-जिन आयतों में होगा हम को उन का पढ़ना ज़रूरी है।

क़ुरआन मजीद अत्यन्त मधुर आवाज़ से पढ़ना चाहिए जिस से जितना हो सके। सही हदीसों में आया है कि नबी सल्ल० ने फ़रमाया कि जो व्यक्ति क़ुरआन मजीद मधुर आवाज़ से न पढ़े, वह हम में से नहीं है। (दारमी) मगर जिस की आवाज़ ही अच्छी न हो वह मजबूर है। और क़ुरआन क़िरअत के क़ायदों से पढ़ना चाहिए। राग से पढ़ना और गाना क़ुरआन मजीद का सहमत रूप से मकरूहे तहरीमी है। क़ुरआन मजीद ठहर-ठहर कर पढ़े। जल्दी-जल्दी पढ़ना भी मकरूह है।

जो व्यक्ति क़ुरआन मजीद के मायने समझ सकता हो उस को क़ुरआन मजीद पढ़ते समय उस के मायनों पर ग़ौर करना और हर मज़मून (विषय) के मुताबिक़ अपने में उस का असर पैदा करना सुन्नत है। जैसे, जब कोई व्यक्ति ऐसी आयत पढ़े जिसमें अल्लाह पाक की रहमत का ज़िक्र हो तो रहमत मांगे और अज़ाब का ज़िक्र हो तो पनाह मांगे। कोई जवाब मांगने वाला मज़मून हो तो उसका जवाब दे। जैसे हज़रत नबी सल्ल० सूर: वत्तीन के अन्त में जब पहुंचते तो 'बला व अना अला ज़ालि-क मिनश्शाहिदीन' पढ़ लेते (तिर्मिज़ी) या सूर: क़ियामत के अन्त में जब पहुंचते तो फ़रमाते कि—'बला' (तिर्मिज़ी) सूर: फ़ातिहा को जब ख़त्म करते तो आमीन कहते। लेकिन यह जवाब देना या दुआ मांगना उस समय मसनून है कि क़ुरआन मजीद फ़र्ज़ नमाज़ में या तरावीह में न पढ़ा जाता हो। यदि फ़र्ज़ या तरावीह में पढ़ा जाता हो तो फिर जवाब न देना चाहिए। (रद्दुल मुख़्तार)

क़ुरआन मजीद पढ़ने की हालत में रोना मुस्तहब है। यदि रोना न आए तो अपनी संगदिली (पत्थरदिली) पर अफ़सोस करे।

सूर: वज़्ज़ुहा के बाद से अन्त तक हर सूर: के ख़त्म होने के बाद अल्लाहु अक्बर कहना मुस्तहब है। क़ुरआन मजीद ख़त्म होने के बाद दुआ मांगना मुस्तहब है। इस लिए कि नबी सल्ल० से रिवायत है कि हर ख़त्म के बाद दुआ क़ुबूल होती है। (इतक़ान)

शबे क़द्र का बयान

हदीस से मालूम होता है कि शबे क़द्र रमज़ान शरीफ़ की अन्तिम ताक़ (दो से न कटने वाले हिन्दसे) रातों, इक्कीसवीं से सत्ताइसवीं तक है (अल-ग़ैबु अिन्दल्लाह) लेकिन हम २७ रमज़ान की रात शबे क़द्र मानते हैं। यह बहुत बरकत वाली रात है। हमें चाहिए कि इस मुबारक और बरकत वाली रात में दिल की गहराई व नेकनीयत के साथ क़ुरआन की तिलावत करें और अल्लाह से दुआ मांगे क्योंकि इस रात को हर बात का फ़ैसला होता है हर एक जानदार की जान व मौत, रिज़्क़ का अंदाज़ा होता है कि इतना शेष और इतना ख़त्म हो चुका है। बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़ में इब्ने उमर रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया कि क़ाबिले रश्क वह आदमी हैं कि जो रात और दिन के समय में क़ुरआन की तिलावत करता है। शबे मेअराज और शबे बराअत में भी क़ुरआन मजीद की तिलवात और इबादत करना अफ़्ज़ल (अच्छा) है इससे दिल की मुरादें (इच्छाएं) पूरी होती हैं और दुआएं क़ुबूल होती हैं।

मनाज़िले क़ुरआन शरीफ़

क्रम सं०	सूरः	सूरः सं०	पृष्ठ सं०	पारः सं०	नाम पारः
१	अल-फ़ातिहः	१	१-१६२		
२	अल-माइदः	५	१६४-३२४	६	ला युहिब्बुल्लाह
३	यूनुस	१०	३२६-४४४	११	याअ तज़िरूना
४	बनी इस्राइल	१७	४४६-५७८	१५	सुब्हानल्लज़ी
५	अश शोअरा	२६	५८०-७०६	१९	वक़ालल्लज़ी-न
६	वस्साफ़्फ़ात	३७	७०८-८२०	२३	वमालि-य
७	क़ाफ़	५०	८२२-९७३	२६	हामीम

सजदाते तिलावत

क्रम सं०	पारा	सूरः	सजदे वाले शब्द	सजदे का स्थान	पृष्ठ सं०	आयत
१	९	अल आराफ़	यसजुदून	यसजुदून	२७६	२०६
२	१३	अर-रअद	वलिल्लाहि यस्जुदू	बल आसाल	३९६	१५
३	१४	अन-नह्ल	"	मा युअ् मरू-न	४३०	४९-५०
४	१५	बनी इस्राईल	यख़िररून लिलअ- -ज़कानि	ख़ुशूआ	४६४	१०७-१०९
५	१६	मरयम	ख़र्रू सुजदा	व बुकया	४८८	५८
६	१७	अल हज	यसजुद लहु	मा-यशा-अ	५२८	१८
७	१७	अल हज' शाफ़ईयों में	वसजुदू	तुफ़लिहून	५४०	७७
८	१९	अल फ़ुर्क़ान	असजुद्	नुफ़ूरा	५७८	६०
९	१९	नमल	अल्लाय सजुदू	रब्बिल अरशिल अज़ीम	६००	२५-२६
१०	२१	अस-सजदा	ख़र्रू असजुद	ला यस्तकबिरू-न	६६०	१५
११	२३	साद'	व ख़र्र राकिआ	व अना-ब	७२२	२४
१२	२४	हामीम सजदा	वसजुद् लिल्लाहि	ला यसमऊना	७६४	३७-३८
१३	२७	अन-नजम	फस जुद्	वाअ बुद्	८४०	६२
१४	३०	अल-इन्शिक़ाक़	ला यस्जुदू-न	ला यस जुद्ना	९४६	२१
१५	३०	अल अलक़	वसजुद	वक़्तरिब	९६२	१९

१. इन दो सज्दों में मतभेद है। सूर: २२ आयत ७७ पर इमाम शाफ़ई रह० के नज़दीक सज्दा है लेकिन इमाम अबू हनीफ़ा रह० के नज़दीक नहीं है और सूर: ३८ आयत २४ पर इमाम अबू हनीफ़ा के नज़दीक सज्दा है लेकिन इमाम शाफ़ई के नज़दीक नहीं है। बहरहाल दोनों आलिमों के नज़दीक सज्दों की कुल तादाद १४ ही है।

क़ुरआन मजीद को कितने समय में ख़त्म किया जाए

अल्लाह के रसूल नबी सल्ल० ने फ़रमाया जिसने तीन दिन से कम में क़ुरआन मजीद ख़त्म किया वह कुछ न समझ सका। इमाम अबू हनीफ़ा से नक़ल है कि जिसने हर साल में दो बार क़ुरआन मजीद ख़त्म किया उसने हक़ अदा किया। इस लिए हज़रत (सल्ल०) ने वफ़ात (इन्तक़ाल) के साल में दो ही बार ख़त्म किया था। हज़रत अली रज़ि० फ़रमाते हैं कि उस इबादत (उपासना) में कुछ बेहतरी नहीं है जिसमें समझ न हो और न उस क़िरअत (पढ़ने में) में जिस में फ़िक्र (सोच) न हो। इमाम ग़ज़ाली रह० फ़रमाते हैं, अपने आप को क़ुरआन मजीद के ख़त्म करने की गिनती पर हावी न करो। बल्कि एक आयत का सोच कर पढ़ना सारी रात में दो क़ुरआन ख़त्म करने से बेहतर है।

हज़रत अबूज़र गिफ़ारी रज़ि० कहते हैं कि एक बार नबी सल्ल० हमारे साथ खड़े हुए तो आप (सल्ल०) यह आयत बड़ी देर तक पढ़ते रहे—

(इन तुअज़्ज़िबहुम फ़ इन्नहुम अिबादुक)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० से रिवायत है कि नबी सल्ल० ने मुझे पांच दिन से कम समय में पूरा क़ुरआन मजीद ख़त्म करने की इजाज़त नहीं दी। (हदीस सही बुख़ारी)

तिलावत के सज्दों का बयान

सज्दए तिलावत उन्हीं लोगों पर अनिवार्य है जिन पर नमाज़ अनिवार्य है। क़ज़ा (छूट हुई) नमाज़ें, हैज़ (मासिक धर्म) वाली औरत पर वाजिब नहीं। अवैध (नाबालिग़) और ऐसे मजनू (दीवाने) पर वाजिब नहीं जिसका जुनून (दीवानापन) एक दिन रात से ज़्यादा हो गया, चाहे उसके बाद ख़त्म हो या नहीं। जिस मजनू का जुनून (दीवानापन) एक दिन रात से कम रहे, उस पर वाजिब है। इसी तरह मस्त और जुनबी (वह व्यक्ति जिस पर ग़ुस्ल वाजिब हो) पर भी।

तिलावत के सज्दे के सही होने की वही सब शर्तें हैं जो नमाज़ के सही होने की हैं अर्थात तहारत (पाकी) और सतर (अर्थात आवश्यक अंगों को ढाकना) और नीयत व क़िब्ले का सही होना। तहरीमा (तक्बीर) इसमें शर्त नहीं है। इसकी नीयत में आयत का तअय्युन (निर्धारण) शर्त नहीं कि यह सज्दा फ़लां आयत के कारण से है और यदि नमाज़ में सज्दे की आयत पढ़ी जाए और तत्काल सज्दा किया जाए तो नीयत भी शर्त नहीं। (रद्दुल मुहतार)

जिन चीज़ों से नमाज़ फ़ासिद (ख़राब) हो जाती है उन चीज़ों से सज्दए सह्व (भूल का सज्दा) में भी ख़राबी आ जाती है और फिर इसका इआदा (दोबारा करना) वाजिब (अनिवार्य) हो जाता है हां इस क़दर अन्तर है कि नमाज़ में क़हक़हा से वुज़ू टूट जाता है और इसमें क़हक़हे से वुज़ू नहीं टूटता और औरत की महाज़ात भी यहां मुफ़सिद (रुकावट) नहीं।

तिलावत का सज्दा यदि ख़ारिज नमाज़ (नमाज़ से बाहर) में वाजिब हुआ हो तो बेहतर है कि तुरन्त अदा कर ले और यदि उस समय अदा न करे तब भी जायज़ है मगर मकरुह है और यदि नमाज़ में वाजिब हुआ तो उसका अदा करना तुरन्त वाजिब (अनिवार्य) है, देरी की इजाज़त नहीं है। (रद्दुल मुह्तार)

ख़ारिजे नमाज़ (नमाज़ से बाहर) का सज्दा नमाज़ में और नमाज़ का ख़ारिज (बाहर) में, बल्कि दूसरी नमाज़ में भी अदा नहीं किया जा सकता। अत: कोई आदमी नमाज़ में सज्दे की आयत पढ़े और सज्दा करना भूल जाए तो इसका गुनाह उस के ज़िम्मे (सर) होगा जिस की तदबीर (इलाज) इसके सिवा कोई नहीं कि तौबा करे, या अरहमुर्राहिमीन (रहम करने वाला) अपने फ़ज़्ल व करम (दया दृष्टि) से माफ़ फ़रमा देगा। (बहरुर्राईक़)

यदि कोई आदमी नमाज़ की हालत में किसी दूसरे से सज्दे की आयत सुने, चाहे वह दूसरा भी नमाज़ में हो या न हो यह सज्दा ख़ारिजे नमाज़(नमाज़ से बाहर)का समझा जाएगा और नमाज़ के अन्दर वह अदा नहीं किया जाएगा, बल्कि ख़ारिजे नमाज़ में।

यदि सज्दे की आयत तिलावत एक ही मज्लिस (सभा) में कई बार की जाए तो एक ही सज्दा वाजिब (अनिवार्य) होगा और यदि एक सज्दे की आयत की तिलावत की जाए, फिर वही आयत अलग-अलग लोगों से सुनी जाए, तब भी एक ही सज्दा वाजिब (अनिवार्य) होगा। यदि सुनने वालों की मज्लिस न बदले तो एक ही सज्दा वाजिब (अनिवार्य) होगा, चाहे पढ़ने वालों की मज्लिस बदल जाए या न बदले और यदि सुनने वालों की मज्लिस बदल जाए तो इस पर कई सज्दे वाजिब होंगे, चाहे पढ़ने वालों की बदले या न बदले। यदि पढ़ने की बदल जाएगी तो उस पर भी कई सज्दे वाजिब होंगे। (बहरुर्राइक़)

यदि एक सज्दे की आयत कई बार एक ही मज्लिस में पढ़ी जाए तो अख़्तियार (इच्छा) है कि सब के बाद सज्दा किया जाए या पहली ही तिलावत के बाद, क्योंकि एक ही सज्दा अपने पहले और बाद की तिलावत के लिए काफ़ी होता है मगर एहतियात (सावधानी) इसमें है कि सबके बाद किया जाए। (बहरुर्राईक़)

यदि सज्दे की आयत नमाज़ में पढ़ी जाए और तुरन्त रुकूअ किया जाए या दो तीन आयतों के बाद और इस रुकूअ में झुकते समय सज्दे की नीयत भी कर ली जाए तो सज्दा अदा हो जाएगा और इसी तरह यदि सज्दे की आयत की तिलावत के बाद नमाज़ का सज्दा किया जाए, तब भी यह सज्दा अदा हो जाएगा और इसमें नीयत की भी ज़रूरत न होगी। (दुर्रे मुख़्तार, रद्दुल मुह्तार आदि)

जुमा और ईदैन (दोनों ईदें) और धीमी आवाज़ वाली नमाज़ों में सज्दे की आयत नहीं पढ़ना चाहिए, इसलिए कि सज्दा करने में मुक़्तदियों (नमाज़ पढ़ने वालों) के इश्तिबाह (संदेह) का डर है। (बहरुल राइक़)

किसी सूर: का पढ़ना और ख़ास कर (मुख्य रूप से) सज्दे की आयत को छोड़ देना मकरूह है। (बहरुल राइक़ आदि)

यदि हाज़िरीन (उपस्थित जन) वुज़ू सहित सज्दे के लिए मुस्तअिद (तैयार) न बैठे हों तो सज्दे की आयत का धीमी आवाज़ से तिलावत करना बेहतर है इसलिए कि वे लोग इस समय सज्दा न करेंगे और दूसरे समय शायद भूल जाएं तो गुनहगार होंगे। (दुर्रे मुख़्तार आदि)

तिलावत के सज्दे का तरीक़ा यह है कि क़िब्ला रू (क़िब्ले की ओर होकर) नीयत करके अल्लाहु अक्बर कहे और सज्दा करे। फिर उठते समय अल्लाहु अक्बर कह कर उठे। और खड़े होकर

सज्दा करना मुस्तहब है। तिलावत का सज्दा कई लोग मिल कर भी कर सकते हैं इस तरह कि एक आदमी को इमाम की तरह आगे खड़ा करे और स्वयं मुक़्तदियों (नमाज़ अदा करने वाले) की तरह ताइन बना कर पीछे खड़े हों और उसकी पैरवी (अनुसरण) करें। यह सूरत असल में जमाअत की नहीं है। इसीलिए यदि इमाम का सज्दा किसी वजह से फ़ासिद (ख़राब) हो जाए तो मुक़्तदियों (पीछे वालों) का फ़ासिद (ख़राब) न होगा और इसी कारण से औरत का आगे खड़ा कर देना भी जायज़ है।

सज्दे की आयत यदि फ़र्ज़ नमाज़ों में पढ़ी जाए तो उसके सज्दे में नमाज़ वाले सज्दे में नमाज़ वाले सज्दे की तरह 'सुब्हा-न रब्बियल आला' कहना बेहतर है और नफ़्ल नमाज़ों में ख़ारिजे नमाज़ (नमाज़ से बाहर) में यदि पढ़ी जाए तो उस के सज्दे में अख़्तियार (इच्छा) है कि 'सुब्हाना रब्बियल आला कहे और तस्बीहें जो हदीसों में आयी हैं, वे पढ़ें। इस तस्बीह की तरह—

'सजदा वजही-य लिल्लज़ी ख-ल-क़हू व सव्वरहू व वशक़्क़ समअहू व बसरहू बिहौलिही व क़ुव्वतिहि फ़तबारकल्लाहु अहसनुल ख़ालिक़ीन०'

और दोनों को जमा कर ले तो और भी बेहतर है।

देवनागरी (हिंदी) में क़ुरआन मजीद को सही पढ़ने का तरीक़ा

अरबी अक्षरों की आवाज़ का देवनागरी वर्णमाला

ث सा स	ت ता त	ب बा ब	ا अलिफ़ अ
د दाल द	خ ख़ा ख़	ح हा ह़	ج जीम ज
س सीन स	ز ज़ा ज़	ر रा र	ذ ज़ाल ज
ط तो त़	ض ज़ाद ज़	ص साद स़	ش शीन श
ف फ़ा फ़	غ ग़ैन ग़	ع अैन अ़	ظ ज़ो ज
م मीम म	ل लाम ल	ك काफ़ क	ق क़ाफ़ क़
ء हम्ज़ा अ	ه हा ह	و वाव व	ن नून न
	ة गोल ते त़	ى या य	

अरबी रस्मुलखत (लिपि) में तलफ़्फ़ुज़ (उच्चारण) के नुकत-ए-नजर (दृष्टि) से जो अक्षर होते हैं उन का चार्ट दिया गया है और ब्रैकेट ( ) में उस को पढ़ने की आवाज (तलफ़्फ़ुज) भी दिया गया है।

चार्ट में आखिर के अक्षर (ة) गोल "ते" का प्रयोग शब्द में आखिर में होता है इस शब्द पर वक़्फ़ा (विराम) करने पर त् को ह् या विसर्ग (:) पढ़ा जाता है और विराम न लेने व पढ़ते चले जाने पर (ط) त् (ت 'त') के समान पढ़ा जाता है जैसे शफ़ाअत पर वक़्फ़ा करने पर शफ़ाअ: पढ़ा जायेगा। अगर किसी शब्द में गोल ता यानी त् हो और उसके बाद का अक्षर किसी नियम के आधीन खामोश (मौन) हो जाये तो फिर त् अन्तिम अक्षर रह जाने के फलस्वरूप ठहराव लेते समय " : " में बदल जाएगा। जैसे गिशावतुन् में न् गायब हो जाएगा और तब आखिरी बचे अक्षर त् का विराम लेते समय : में बदल कर गिशाव: पढ़ा जाएगा।

नोट : पाठकों की सुविधा के लिए ज़रूरी क़ायदे (ग्रामर) मुख़्तसर कर के बयान किये जा रहे हैं क़ुरआन मजीद को अरबी के अलावा किसी दूसरी भाषा के रस्मुलखत में लिखना या पढ़ना बहुत मुश्किल है। क्योंकि अरबी में लिखा कुछ होता है और पढ़ा कुछ जाता है। आयत पर वक़्फ़ किया जाता है इसलिए हम ने आयत पर हुरूफ़ को वक़्फ़ किया है और इबारत के अंदर बिल्कुल अरबी तरज़े अदा के मुताबिक़ देवनागरी में रूपांतर किया है और उसमें ठहरने और न ठहरने के रुमूज़ेऔक़ाफ़ की निशानियां भी दर्ज (अंकित) हैं और उन से मुतालिक (संबंधित) मालूमात अगले पन्नों पर दर्ज हैं। अलबत्ता जब तक खास अक्षरों के उच्चारण का सही ज्ञान न हो, तब तक लाइल्म (न जानने वाला) के लिए यह ध्यान रखना ज़रूरी है कि वह ज़ (ज़ाल), ज़ (ज़ाद) ज़ (ज़ो) और ज़ (ज़ा) को ज (जीम) की तरह हरगिज न पढ़ें। बजाए ज (जीम) के ये अक्षर ज़ (ज़ा) के ज़्यादा नज़दीक हैं। खास कर हिंदी जानने वालों को इन अक्षरों को समझ कर उनका सही उच्चारण सीखना चाहिए जैसे ث (सा), ح (बड़ी हा), خ (खा), ذ (ज़ाल), ز (ज़ा), ص (साद), ض (ज़ाद), ط (तो), ظ (ज़ो), ع (ऐन), غ (ग़ैन), ف (फ़ा) और ق (क़ाफ़)। क़ुरआन मजीद को सही मखरज (उच्चारण) से क़िरअत (पाठ) करने के लिए कारीयों (क़ुरआन पाठ के विद्वानों) से सहायता लेनी चाहिए।

क़ुरआन मजीद के मतन को अरबी के अलावा हिंदी या किसी दूसरी भाषा के रस्मुलखत में रूपांतर करने पर उलमा की रायों में मतभेद है। कुछ उलमा का ख्याल है कि इस तरह करने से क़ुरआन मजीद के हरफ़ों की तहरीफ़ (कटौती) होती है और उनको भय (डर) है कि जिस तरह इंजील और तौरात तहरीफ़ हो गयी वैसे ही खुदा न करे इस का भी वही हाल हो जबकि यह नामुम्किन है करोड़ों हाफ़िज़ों को क़ुरआन मजीद मुंह ज़बानी याद है और इस (हिंदी) क़ुरआन में भी असल अरबी मतन की किताबत का सफ़ा बराबर में है। हम ने अशाअते इस्लाम और तब्लीग की नीयत से यह काम हिंदी में किया है कि जो हज़रात (लोग) किसी वजह से अरबी उर्दू की तालीम (शिक्षा) न हासिल (प्राप्त) कर सकें और वह क़ुरआन मजीद को पढ़ने के ख्वाहिशमंद हैं वह फ़ायदा उठा सकें। मुसलमानों से गुज़ारिश है कि वह खुद भी अरबी उर्दू सीखें और अपनी आने वाली नसल को खास कर अरबी उर्दू की तालीम दें।

इल्मे क़िरअत यानी मख़ारिजे हुरूफ़ का बयान (क़ुरआन के अक्षरों का उच्चारण संस्थान)

ه، ا	अ, ह	हलक़ (कण्ठ) के अगले हिस्से से।
ح، ع	अ, ह	बीच (मध्य) हलक़ से)।
غ، خ	ख़, ग़	इंतेहा-ए-हलक़ (हलक़ के अन्तिम भाग से)
ق	क़	ज़बान की जड़ और ऊपर के तालू की मदद से।
ك	क	ज़बान के बीच और ऊपर के तालू से थोड़ा सा 'क़' (क़ाफ़) के मखरज (उच्चारण) से हट कर।
ی، ش، ج	ज, श, य	ज़बान के बीच के हिस्से और तालू के बीच हिस्से के संयोग से।
ض	ज़	ज़बान के किनारे और दांतों की गिरः के पास से यानी सारे किनारे ज़बान के लगाने से बाईं ओर के ऊपर दाढ़ों की जड़ से या दाहनी तरफ़ से, मगर बाईं तरफ़ से आसान है।
ل	ल	ज़बान की नोक और तालू के संयोग से।
ن	न	ज़बान के सिरे और ऊपर के दांतों के नीचे से।
ر	र	ज़बान के सिरे और ऊपर वाले सामने के दांतों के नीचे से 'न' के स्थान से कुछ आगे।
ط، د، ت	त, द, त	ज़बान की नोक और ऊपर के दांतों की जड़ से मिला कर।
س، ذ، ح	ज, ज़, स	ज़बान की नोक और अगले दांतों के किनारे से।
ف	फ़	नीचे के होंठ के अन्दर ऊपर के दांतों के सिरे जब छूते हैं।
م، ب	ब, म	दोनों होंठों के बीच में से।
الف	अलिफ़	'अ' सिर्फ़ एक हवा है कि अन्दर से निकलती है।
ج، ص، س	स, स, ज	ज़बान की नोक और अगले दांतों के बीच से।
و	व	दोनों होंठों को क़रीब लाकर भी 'फ़' की तरह छूना नहीं चाहिए।

क़ुरआन मजीद के रुमूज़े औक़ाफ़

हर एक भाषा के लोग जब बात-चीत करते हैं तो कहीं ठहर जाते हैं और कहीं नहीं ठहरते, कहीं कम ठहरते हैं कहीं ज़ियादा और इस ठहरने और न ठहरने को बात के सही बयान करने और सही मतलब समझने-समझाने में बहुत दख़ल है। क़ुरआन मजीद की इबारत (अरबी-लेख) भी बोल-चाल के अन्दाज़ में है इस लिये अह्ले इल्म (ज्ञानियों) ने इसके ठहरने, न ठहरने की अलामतें (चिह्न) मुक़र्रर किए हैं। जिन्हें 'रुमूज़े औक़ाफ़' कहते हैं। ख़ास ध्यान रखने की बात यह है कि आम तौर पर सभी ज़बानों (भाषाओं) में ठहरने के निशान होते हैं, लेकिन क़ुरआन में ठहरने और न ठहरने दोनों तरह के निशान होते हैं। जैसा कि हम बोलते हैं 'उठो मत, बैठो' इस जुमले (वाक्य) में अगर कौमा लगा कर लिखें जैसे 'उठो, मत बैठो' इस तरह लिखने और बोलने में उठने का हुक्म है और अगर इस जुमले को इस तरह लिखें जैसे 'उठो मत, बैठो' इस तरह लिखने और पढ़ने में बैठने का हुक्म है, इस मिसाल से हमको ख़ुद अंदाज़ा करना चाहिये कि अरबी जो क़ुरआन की भाषा है जिसके पढ़ने में किस क़द्र एह्तियात (सावधानी) की ज़रूरत है और तिलावते क़ुरआन (क़ुरआन पाठ) में

रुमूज़े आक़ाफ़ का लिहाज़ रखना किस क़द्र ज़रूरी है ताकि किताब की मंशा में फ़र्क न आने पाये। क़ुरआन मजीद के रुमूज़े औक़ाफ़ यह हैं (○) आयत, (م) मीम, (ط) तो, (ج) जीम, (ز) ज़ा, (ص) साद, (صلے) सले, (قف) क़ाफ़, (صل) सिल, (قف) क़ाफ़फ़े, (سكتة) सक्त:, (وقفه) वक़्फ़: (لا) ला, (ق) क़ाफ़, (۵) कूफ़ी आयत का निशान, (∴) मुआनिक़ा का निशान, (~ ' | ') मद, और (٣ 'T') बड़ी मद। इनको सिर्फ़ निशानियां समझना चाहिये। यह क़ुरआन के मत्न का हिस्सा नहीं है अगर हम इसको हिन्दी में लिखते तो ला इल्मी में या रवानी (तेज़ी) में कोई आयतों में शामिल पढ़ लेता इस भूल से सावधान रहने के लिये हम ने इन को अरबी रस्मुल्ख़त में किताबत (लिखाई) किया है।

रुमूज़ औक़ाफ़ से मुताल्लिक़ ज़रूरी मालूमात यह हैं—

○	( )	जहां बात पूरी होती है वहां (अरबी मत्न में) छोटा गोल दायरा बनाया जाता है यह हक़ीक़त में गोल ते (ۃ) है। यह वक़्फ़े-ताम की अलामत है यानी इस पर ठहरना चाहिये इस निशानी को आयत कहते हैं। पाठकों की सुविधा के लिये इस निशान के बीच आयत का नंबर (संख्या) भी दिया गया है जैसे आयत (२०)।
م	मीम्	यह वक़्फ़ लाज़िम का निशान है। इस पर ज़रूर ठहरना चाहिये अगर न ठहरा जाये तो अह्तमाल (भय) है कि मतलब उलट हो जाये। मिसाल उदाहरण के तौर पर कोई कहे—आओ, मत जाओ। इस तरह कहने में आने का हुक्म है और जाने की मनाई। लेकिन अगर कोई कहे—आओ मत, जाओ। तो मतलब पहले के बिल्कुल उल्ट हो जाता है इस आख़िरी जुमले में जाने का हुक्म है।
ط	तो	यह वक़्फ़ मुतलक़ का निशान है इस पर ठहरनाचाहिये। फिर भी यह ठहराव वहां होता है जहां ठहरने के बावजूद अभी कहने वाला कुछ और बात कहना चाहता है।
ج	जीम	यह वक़्फ़ जायज़ का निशान है। यहां ठहरना ज़्यादा बेहतर है, लेकिन न ठहरने को भी जायज़ (अनुमत) माना गया है।
ز	ज़े	यह वक़्फ़ मुजव्वज़ का निशान है। यहां न ठहरना ज़्यादा अच्छा है।
ص	साद	यह निशान वक़्फ़ मरख़्ख़स का है। यहां न ठहरना यानी मिला कर पढ़ना चाहिये, लेकिन अगर कोई थककर रुक जाये तो उसकी छूट है। ध्यान रहे कि, ز (ज़ा) की निस्बत (अपेक्षा) ص (साद) पर मिला कर पढ़ना ज़्यादा पसन्द किया गया है।
صلے	सले	यहां मिला कर पढ़ना बेहतर है।
ق	क़ाफ़	यह क़ील-अलैहिल-वक़्फ़ का ख़ुलासा है। यहां नहीं ठहरना चाहिये।
صل	सल्	यह क़द:यू-सल का निशान है यहां कभी ठहरा भी जाता है, और कभी नहीं। लेकिन ठहरना बेहतर है।
قف	क़िफ़्	यह लफ़्ज़ (शब्द) क़िफ़् है यानी ठहर जाओ। यह निशान वहां इस्तेमाल किया जाता है जहां पढ़ने वाले को मिला कर पढ़ते चले जाने का अंदेशा हो।
س या سكتة	सीन या सक्त:	यह सक्त: का निशान है यहां मामूली (साधारण) सा ठहरना चाहिये, लेकिन सांस न टूटने पाए।
وقفه	वक़्फ़:	यह लम्बे सक्त: का निशान है। यहां सक्त: के मुक़ाबले ज़ियादा ठहरना चाहिये, लेकिन सांस न टूटने पाए सक्त. और वक़्फ़ में सिर्फ़ यह फ़र्क है कि सक्त: में कम

चिन्ह	नाम	विवरण
		ठहरना होता है, वक़्फ़: में ज़्यादा ।
لا	ला	ला के मानी 'नहीं' के हैं । यह निशान कहीं आयत पर होता है और कहीं इबारत के अंदर । यह जब किन्हीं दो शब्दों के बीच में हो तो वहां हरगिज़ नहीं ठहरना चाहिये । आयत के ऊपर हो तो इस में इख़्तिलाफ़ (मतभेद) है, (हमने हिन्दी कम्पोज़ में आयत के निशान से पहले दिया है) एक राय है कि 'ठहर जाये,' दूसरी 'न ठहर जाये' लेकिन ठहरा जाये या न ठहरा जाये इस से मतलब में फ़र्क़ नहीं आता । ठहरना उसी जगह नहीं चाहिये जहां इबारत के अंदर लिखा हो ।
قف	काफ़	यह कज़ालिक का निशान है यानी यहां यह समझना चाहिए कि इस से पहले जो निशान आ चुका है उसी के मुताबिक़ (अनुसार) यहां भी रुकना या न रुकना मुनासिब है ।
٥	निशान	यह कूफ़ी आयत का निशान है और मतलब वही है जो ( ) आयत का है । **नोट—ध्यान रखना चाहिए कि जहां कई निशान एक साथ हों वहां उनमें से किसी भी निशान पर अमल किया जा सकता है लेकिन बाद वाले निशान का हुक्म मानना ज़्यादा उचित है**
∴	निशान	यह मुआनिक़: की अलामत है हमेशा यह दोहरा यानी दो जगह नज़र आयेगा । इसका मतलब यह है कि इनके बीच में लिखे शब्दों को चाहे इनसे पहले ही इबारत के साथ जोड़ कर पढ़ें और चाहे इनसे बाद वाली इबारत के साथ । दोनों मतलब जायज़ (मान्य) है । हासिल यह हुआ कि दोनों निशानों में से एक जगह ठहरे तो दूसरी जगह मिला कर पढ़े । न दोनों जगह ठहरा जा सकता है और न दोनों जगह मिलाया जा सकता है । यह मुआनिक़: दो तरह का होता है (१) अिन्दल् मुतअख़्ख़िरीन (२) अिन्दल मुतक़द्दमीन ।
ا	मद (छोटी)	यह छोटी मद का निशान है । मद को संस्कृत में 'प्लुत' कहते हैं जिस अक्षर पर यह निशान होगा उसको इतना खींच कर पढ़ना चाहिए कि तीन अलिफ़ के बराबर हो ।
ٓ	मद (बड़ी)	यह बड़ी मद का निशान है । जिस अक्षर पर यह निशान होगा उस को इतना खींच कर पढ़ना चाहिए कि चार बार के बराबर हो । जैसे लिखा हो وَجَآءَ (व-जा-अ) तो 'जा' जो कि ज+अ से बना है, के अ को ४ अ के बराबर खींचकर पढ़ना चाहिए । इसी तरह छोटी मद को भी ऊपर लिखे क़ायदे (नियम) के अनुसार पढ़ना चाहिए । बड़ी मद को पढ़ने का एक तरीक़ा और भी है । जैसे किसी शब्द के अक्षर पर बड़ी मद हो और उस के आगे (अलिफ़) हो और अलिफ़ के आगे 'ـّ' (तश्दीद) हो तो इस को सात अलिफ़ के बराबर पढ़ना होगा जैसे وَلَا الضَّآلِّيْنَ (वलज़्-ज़ाल्लीन), सही मख़रज (शुद्ध पाठ) के लिए क़ारी (क़ुरआन पाठ के विद्वानों) से सहायता लेना चाहिए ।
★	रुकूअ	यह रुकूअ (विराम) का निशान है । अगर हाशिये पर ऐसा निशान '★ रु १/७/आ ६' लगा हो तो इसका मतलब है कि यह सूर: तौबा का पहला रुकूअ है, पार: १० का सातवां रुकूअ है और इस रुकूअ में ६ आयतें हैं ।

●	पार: ¼, ½, ¾	हर पार: को पढ़ने की आसानी के लिए चार बराबर हिस्सों में बांट दिया गया है। रुबअ़ (चौथाई), निस्फ़ (आधा) और सुल्स (तीन चौथाई) पर यह निशान दिया गया है। इसी तरह पूरे क़ुरआन को सात मंज़िलों में बांटा गया है जो हर सफ़ह: (पृष्ठ) पर दर्ज (अंकित) हैं।
■	आधा क़ुर्आन	यह निस्फ़ुल क़ुरआन (आधा क़ुरआन) का निशान है। देखिये पृष्ठ ४६८, सूर: कह्फ़ आयत १६।
□	सज्द:	यह सज्द: का निशान है। क़ुरआन मजीद में चौदह मुक़ाम ऐसे हैं जहां सज्द: करने की हिदायत है। पढ़ने और सुनने वाले दोनों पर सज्द: करना लाज़िम है। घुटने टेककर हाथों की हथेलियां और दोनों हाथ की पांचों उंगलियां ज़मीन पर रख कर और हाथों के बीच में माथा और नाक ज़मीन पर टेककर ज़बान से ख़ुदा की पाकीज़गी (पवित्रता) बयान करने को सज्द: कहते हैं। सज्द: की तस्बीह (सज्द: में पढ़ने वाले शब्द) हमने सज्द: तिलावत के बयान में दी है। (मुकद्दमा क़ुरआन मजीद पृष्ठ नं० १५)

क़ुरआन मजीद के रस्मुलख़त से सम्बन्धित ज़रूरी याद दहानी

(१) क़ुरआन मजीद की तहरीर (लिखाई) से बेख़बरी की वजह से अक्सर लोग क़ुरआन मजीद ग़लत पढ़ते हैं। चंद (कुछ) ज़रूरी मिसालें लिखी जा रही हैं। क़ुरआन मजीद के चंद अल्फ़ाज़ (शब्द) में (و) वाव लिखा जाता है लेकिन पढ़ा नहीं जाता जैसे (زكوٰة) ज़क्वात, (حيوٰة) हैवात को ज़कात या हयात पढ़ा जाता है यानी (و) वाव को न पढ़ना चाहिए और कुछ जगह (ى) य लिखी जाती है लेकिन पढ़ी नहीं जाती बल्कि उस के बदले में अलिफ़ पढ़ा जाता है जैसे (عيسٰى موسٰى) मुसाय ईसाय वग़ैर: को (عيسا موسا) मूसा, ईसा पढ़ना चाहिए इस को अलिफ़ मक़सूरा कहते हैं और बाज़ जगह अलिफ़ मक़सूरा की अलामत खड़े ज़बर (ٰ) के अलावा कुछ नहीं होती तो इस खड़े ज़बर को भी एक अलिफ़ के बराबर पढ़ना चाहिए जैसे (اسحٰق رحمٰن) को (اسحاق ، رحمان) रह्मान,इस्हाक़ पढ़ना ज़रूरी है।

(२) यह बात याद रहे कि अरबी ज़ुबान में 'याये मजहूल नहीं होती। मगर क़ुरआन मजीद में सिर्फ़ एक जगह पार: १२ सूर: हूद रुकूअ ४, आयत ४१ में एक लफ़्ज़ मज्रीहा लिखा है उस का उच्चारण (तलफ़्फ़ुज़) मज्रीहा नहीं हे "मज्रेहा" है।

(३) नीचे लिखे दोनों लफ़्ज़ों में जो 'स' है इसमें (हफ़्स) साद (स) के नज़दीक सीन (स) पढ़ना चाहिये:— युब्सुतु—पार: २ सूर: बक़र: आयत २४५ में। बसततन्—पार: ८ सूर: अअ्राफ़ि आयत ६६ में।

(४) नीचे लिखे दोनों लफ़्ज़ों में जो (ص साद) 'स' है इनमें (س सीन) 'स' और (ص) साद (स) दोनों पढ़ने का इख़्तियार है:—हुमुल् मुसैतिरून—पार: २७ सूर: तूरि आयत ३७ में। बिमुसैतिरिन्—पार: ३० सूर: ग़ाशिय: आयत २२ में।

(५) क़ुत्बुजद्—क, त, ब, ज और द के मुतहर्रिक (हलन्त) अक्षर आने पर भी इनमें मामूली सा सस्वर जैसी हरकत पढ़ना चाहिए। जैसे 'अिब्राहीम'। इसमें ब् को थोड़ा सा हिला कर उच्चारण करना चाहिए।

(६) यह भी याद रहे कि क़ुरआने करीम में अक्सर जगह (ا) अलिफ़ लिखा जाता है मगर पढ़ा नहीं जाता जैसे कि (ا) अलिफ़ जो अलामत जमा के लिए हो जैसे قَالُوا (क़ालू'अ) में आख़री अलिफ़ पढ़ा नहीं जाता और أَنَا (अना) को أَنَ (अ-न) पढ़ा जाएगा मगर जब कहीं क़ुरआन मजीद में (عَنَّا) अना (हम्ज़ा, नून, अलिफ़ से) लिखा हो वहां आख़री अलिफ़ ज़रूर पढ़ा जाएगा जैसे جَاءَنَا نَذِيْرٌ जाअनान-ज़ीरुन

'अना'– क़ुरआन मजीद मूल (मतन) में जहां पर अलिफ़् सहित 'अना' लिखा हुआ है, जो ज़मीर (सर्वनाम) है, वहां नून (न) के साथ का आख़िरी अलिफ़् (ा) छोड़ कर 'अ-न' पढ़ना चाहिए। हिन्दी क़ुरआन मजीद के सफ़ा ४६४ लाईन २३, सफ़ा ५१२ लाईन २१, सफ़ा ५१८ लाईन १ सफ़ा ५२२ लाईन १६, सफ़ा ५३४ लाईन २४, सफ़ा ५४६ लाईन २७, सफ़ा ५०२ लाईन १६, सफ़ा ५६० लाईन २१, सफ़ा ५६० लाईन २, सफ़ा ६०२ लाईन १७, सफ़ा ६०२ लाईन २०, सफ़ा ६१० लाईन १५, सफ़ा ६३८ लाईन २१, सफ़ा ७२६ लाईन १४, सफ़ा ७२६ लाईन १६, सफ़ा ७२६ लाईन २४, सफ़ा ७२८ लाईन ४, सफ़ा ७४८ लाईन २१, सफ़ा ७५६ लाईन २२, सफ़ा ७८४ लाईन २, सफ़ा ७६८ लाईन २३, सफ़ा ८२६ लाईन ५, सफ़ा ८६६ लाईन २१, सफ़ा ८७४ लाईन १७, सफ़ा ६०० लाईन २२, सफ़ा ६३६ लाईन २५, सफ़ा ६७० लाईन ६, में 'अना' ज़मीर (सर्वनाम) है। पाठक वहां कोई निशान लगा लें ताकि उसे **'अ-न'** पढ़ें न कि 'अना'। फिर ध्यान दिलाना ज़रूरी है कि 'अन' को हिन्दी-उर्दू के तर्ज़ पर 'अन्' न पढ़ें बल्कि अरबी-संस्कृत के तर्ज़ पर 'अ-न' सस्वर ही पढ़ें। लेकिन सूरत २५ 'अल्फ़ुर्क़ान' पारः १६ आयत ४६ पृष्ठ ५७६ पर 'अनासीय' में जो 'अना' है उसको 'अना' यानी अलिफ़् के साथ पढ़ना चाहिये, क्योंकि यह 'अना' ज़मीर (सर्वनाम) नहीं है।

क़ुरआन मजीद के वह मुक़ामात जिनमें (ا) अलिफ़् ज़ायद होने पर भी ख़ामोश (मौन) है जिनमें अलिफ़् का न पढ़ना ज़रूरी है।

सं०	नाम पारः	पारः	सूरः	रुकूअ	आयत	पृष्ठ	अरबी लिपि में	अरबी ओर नागरी में पढ़िए
१	तिल्कर्रुसुलु	(३)	(शुरू) आलि अिमरान	१	१	७४	अलिफ़ लाम् मीम् (१) अल्लाहु	अलिफ़ लाम् मीम् (१) अ्ल्लाहु
२	लन्तनालू	(४)	आलि अिम्रान	१५	१४४	१०४	अफ़ा अिम्मात	अफ़ अिम्मात
३	"	"	" "	१७	१५८	१०८	ला अिलल्लाहि	ल अिलल्लाहि
४	लायुहिब्बुल्लाहु	(६)	मा'अिद:	५	२६	१७४	अन् तबू'आ	अन् तबूअ
५	अिजा समिअू	(७)	अन्आमि	४	३४	२०४	मिन् नबाअिल्मुर्सलीन	मिन्नबअिल्मुर्सलीन
६	कालल्मलअू	(६)	अअराफ़ि	१३	१०३	२५६	मलाअिही	मलअिही
७	वअ्लमू	(१०)	सूरतुत्तौब:	७	४७	३०६	ला औज़अू	ल औज़अू
८	यअ्तज़िरून	(११)	यूनुस	८	७५	३४२	मलाअिही	मलअिही
६	"	"	"	६	८३	३४२	मलाअिहिम	मलअिहिम्
१०	वमा मिन्दाब्बतिन्	(१२)	हूद	६	६८	३६२	अिन्ना समूदा	अिन्न समूद
११	"	"	"	६	६७	३६६	मलाअिही	मलअिही
१२	वमाअुबर्रिअु	(१३)	रअदि	४	३०	३६८	अुममुल्-लितत्लुवा	अुममुल्-लितत्लुव
१३	सुब्हानल्लज़ी	(१५)	कह्फ़ि	२	१४	४६६	लन्नद् अुवा	लन्नद् अुव
१४	"	(१५)	"	४	२३	४६८	लिशाअिन्	लिशैअिन्
१५	"	(१५)	"	५	३८	४७२	लाकिन्ना हुवल्लाहु	लाकिन्न हुवल्लाहु

सं०	नाम पारः	पारः	सूरः	रुकूअ	आयत	पृष्ठ	अरबी लिपि में	अरबी और नागरी में पढ़िए
१६	अिक़्तरबलिन्नासि	(१७)	अंबिया'अि	३	३४	५१४	अफ़ाअिम्-मित्त	अफ़अिम्-मित्त
१७	क़द् अफ़्लहल्-मुअ्मिनून	(१८)	मुअमिनून	३	४६	५४६	मलाअिही	मलअिही
१८	व क़ालल्लज़ीन	(१६)	अल् फ़ुर्क़ानि	४	३८	५७६	समूदा व असहाबर्रसि	समूद व असहाबर्रसि
१६	,, ,,	(१६)	नम्लि	२	२१	६००	ला अज्बहन्नहू	ल अज्बहन्नहू
२०	अम्मन् ख़लक़स्-समावाति	(२०)	क़ससि	४	३२	६१८	मलाअिही	मलअिही
२१	,, ,,	,,	अन्कबूति	४	३८	६३६	आदंव्व समूदा	आदंव्व समूद
२२	अुत्लुमा अूहिय	(२१)	रूमि	४	३६	६४८	लियर्बुवा	लियर्बुव
२३	व मालिय	(२३)	साफ़्फ़ाति	२	६६	७१२	ला अिलल् जहीमि	ल अिलल् जहीमि
२४	अिलैहि युरद्दु	(२५)	ज़ुख़्रुफ़ि	५	४६	७८२	मलाअिही	मलअिही
२५	हामीम्	(२६)	मुहम्मदिन्	१	४	८०६	व ला किल्लियब् लुवा	व ला किल्लियब्लुव
२६	,,	(२६)	,,	४	३१	८१०	व नब्लुवा अख़्बारकुम्	व नब्लुव अख़्बारकुम
२७	,,	(२६)	हुजुराति	२	११	८२०	बिअ्सलि-अस्मुल्-फ़ुसूक़	बिअ्स-लिस्मुल्-फ़ुसूक़
२८	क़ालफ़मा ख़त्बुकुम	(२७)	नज्मि	३	५१	८३८	व समूदा फ़मा	व समूद फ़मा
२६	क़द् समिअल्लाहु	(२८)	हश्रि	२	१३	८७२	ला अन्तुम् सशद्दु	ल अन्तुम् अशद्दु
३०	तबारकल्लज़ी	(२६)	दह्रि	१	४	६२८	सलासिला	सलासिल
३१	,,	(२६)	,,	१	१५	६२८	कानत् क़वारीरा	कानत् क़वारीर
३२	,,	(२६)	,,	१	१६	६२८	क़वारीरामिन्	क़वारीर मिन्

तिलावत क़ुरआन मजीद के वक़्त रुमूज़ (विरमाविराम), अलामत (चिह्न) और हरकात सकनात (गीत स्थिरता) पर पूर्ण सावधानी से अमल करना चाहिए। क़ुरआन मजीद में बीस मुक़ामात ऐसे हैं कि सही लिखा होने पर भी पढ़ने की ज़रा सी असावधानी से बिना जाने-समझे आज्ञाओं के विरुद्ध आचरण ग्रहण हो जाता है, और जान बूझकर पढ़ने से बड़ा अज़ाब (महान दोष) बल्कि कुफ़्र तक नौबत पहुंच जाती है। मगर लाअिल्मी (अनभिज्ञता) में माफ़ है, क्योंकि लाअिल्मी में और तालीम की अवस्था में अल्लाह की तरफ़ से माफ़ी है। नीचे वह तमाम मुक़ाम दर्ज किये जाते हैं, पाठक ध्यान रखें :—

सं०	सूरः	आयत	पृष्ठ	सही	ग़लत
१	सूर नु-फ़ातिहः (१)··· ···	४	१	अिय्याक नअ्बुदु	अिया नअ्बुदु (बिलातश्दीद)
२	,, ,, (१)··· ···	६	१	अन् अम्त अलैहिम्	अन् अम्तु अलैहिम्
३	सूरः बक़रः (२) रुकूअ १५	१२४	२६	अिब्राहीम रब्बुहू	अिब्राहीमु रब्बहू
४	,, ,, ,, ३३	२५१	६०	कतल दावूद जालूत	कतल दावूद जालूतु
५	,, ,, आयतल्कुर्सी ,, ३४	२५५	६२	अल्लाहु ला अिलाह	आल्लाहु लाअिलाह (बिलामद)
६	,, ,, ,, ३६	२६१	६०	वल्लाहु युज़ाअिफ़ु	वल्लाहु युज़ाअफ़ु
७	,, निसा'अि (४) ,, २३	१६५	१६०	मुबश्शिरीन व मुन्ज़िरीन	मुबश्शरीन व मुन्ज़रीन

सं०	सूर:	आयत	पृष्ठ	सही	ग़लत
८	सूर: तौब: (९) ,, १	३	२६४	मिनल्-मुश्रिकीन व रसूलुहू	मिनल्-मुश्रिकीन व रसूल्लिही
९	,, बनीइस्राईल (१७) २	१५	४४८	व मा कुन्ना मुअज्ज़िबीन	व मा कुन्ना मुअज्जबीन
१०	,, ताहा (२०) ,, ७	१२१	५०८	व असा आदमु रब्बहू	व असा आदम रब्बुहू
११	,, अम्बियाअि (२१) ,, ६	८७	५२४	अिन्नी कुन्तु मिनज़्ज़ालिमीन	अन्नी कुन्त मिनज्जालिमीन
१२	,, शुअराअि (२६) ,, ११	१६५	५९६	तिलकून मिनल् मुन्ज़िरीन	तिलकून मिनल् मुन्ज़रीन
१३	,, फ़ातिरित् (३५) ,, ४	२८	६६६	यख़्शल्लाह मिन् अिबादि	यख़्शल्लाहु मिन अिबादि
१४	,, साफ़्फ़ाति (३७) ,, २	७२	७१४	फ़ीहिम मुन्ज़िरीन	फ़ीहिम् मुन्ज़रीन
१५	,, फ़त्हि (४८) ,, ४	२७	८२२	लक़द् सदक़ल्लाहु	लक़द् सदअल्लाहु
१६	,, हश्रि (५९) ,, ३	२४	८८०	मुसव्विरु	मुसव्वरु
१७	,, हाक़्क़ति (६९) ,, १	३७	९१६	अिल्लल् ख़ातिअून	लिल्लल् ख़ातअून
१८	,, मुज़्ज़म्मिलि (७३) ,, १	१६	९२८	फ़असा फ़िर्औनुर्रसूल	फ़असा फ़िरऔनुर्रमूलु
१९	,, मुर्सलाति (७७) ,, २	४१	९४०	फ़ी ज़िलालिव	फ़ी अला लिव्व
२०	,, नाज़िआति (७९) ,, २	४५	९४६	अिन्नमा अन्त मुन्ज़िरु	अिन्नमा अन्त मुनज़रु

क़ुरआन मजीद की सूरतों के ख़्वास (लाभ)

अगर कोई यह अक़ीदा रखे कि क़ुरआन मजीद अमलियात और तावीज़ात (तावीज़ गंडे) के लिए नाज़िल (उतरा) हुआ है तो यह जिहालत है और बड़ा गुनाह है क्योंकि क़ुरआन मजीद हक़ीक़त में ख़ुदा के हक़ूक़ जो लोगों पर हैं और लोगों के हक़ूक़ भी जो आपस में एक दूसरे पर हैं और उनके अदा करने या न करने के सबब जो नतीजे दुन्या में और मरने के बाद होने वाले हैं उन सब के बयान (गोष्ठ) के लिए ख़ुदा की तरफ़ से नाज़िल हुआ है। मगर इस के साथ ही बहुत सी आयतों और सूरतों को रसूले करीम (सल्ल०) सहाबा किराम और बुज़ुरगाने दीन अमलीयात के तौर पर मुसीबतों और बलाओं के दुर करने के लिए पढ़ते थे जिनकी बरकत से वह मुसीबत दूर हो जाती थी। जो आदमी किसी मतलब के लिए अमल पढ़ता हो और ज़ाहिरी कोशिश तक़ाज़ा-ए-आलमे अस्बाब (ख़ुदा के हुक्मों) के मुताबिक़ न करता हो तो वह यक़ीनन नाकाम होगा कि उस की मिसाल एक ऐसे मरीज़ (रोगी) की सी होगी जो दवा खाता हो मगर परहेज़ न करता हो बल्कि अमल पढ़ने का यह मतलब होता है कि अमल की वजह से ज़ाहिरी कोशिश नाकाम न रहे। सब बुज़ुरगाने दीन का तजुर्बा है कि जिस आयत के मज़मून (विषय) को जिस काम से मुनासिबत (उचित) पाई जाए तो वह आयत उस काम के लिए अमल के तौर पर पढ़ी जा सकती है जैसे क़ुरआन मजीद में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के बारे में ज़िक्र है कि उन्होंने दुआ की (अनुवाद) 'मूसा अ०' ने (फ़ओन की हिदायत की तरफ़ जाते वक़्त) कहा ऐ ख़ुदा मेरे सीने को खोल दे और मेरे काम को मेरे लिए आसान फ़रमा और मेरी ज़बान की गिरह खोल दे (ताकि बयान में सफ़ाई हो) और वह लोग मेरी बात को समझें इस आयत को हर शख़्स मुश्किल कामों की आसानी के लिए पढ़ सकता है और अपने ज़ेहन और अक़्ल (बुद्धि) के बढ़ने के लिए पढ़ सकता है। क़ुरआन का अमल करने में तख़्सीसे-वक़्त और पढ़ने की तादाद की क़ैद नहीं है बल्कि हर शख़्स को चाहिए कि वह ख़ुद ईशा या सुबह की नमाज़ के बाद या कोई और वक़्त मुक़र्रर (निर्धारित) करके और पढ़ने की तादाद भी अपनी तरफ़ से क़ायम करके पढ़ा करें। अव्वल और आख़िर में दरूद हो और चीज़ को पाक रखें लेकिन यह बात तजुर्बों से साबित हुई है कि अगर कोई शख़्स क़ुरआन की आयत किसी नाजायज़ काम के लिए अमल के तौर पर इस्तेमाल में लावे तो वह कामयाब नहीं होगा और पागल हो जाता है।

सूरतों की तर्तीब

रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पवित्र जीवनी

इस्लाम से पहले अरबों के विभिन्न मज़ाहिब (धर्म) और एतक़ाद (विश्वासों) थे। कुछ उनमें से बुत परस्त, कुछ ख़ुदा परस्त, कुछ ला मज़हब (अधर्मी) और ला साइबी, कुछ यहूदी और ईसाई थे। बुत परस्ती (मूर्ति पूजा) अरब के क़दीम (प्राचीन) बाशिन्दों (निवासियों) में भी पायी जाती थी। आद, समूद, जदीस, जरहुम ओला, अमलीक़ अव्वल आदि बुतों की परिसतिश (पूजा) करते थे लेकिन उनके तफ़सीली हालात (पूरे हालात) ज़माने के कारण हम को मिल नहीं सके। बाक़ी रहे अरब आरिबह और अरब मुस्तआरिबह, उनके बुत दो प्रकार के थे। एक मलाइक और अरवाह जो ग़ैर महसूस (अस्पर्श) ताक़तों से ताल्लुक़ रखते थे और दूसरी क़िस्म उन बुज़ुर्गों (पूर्वजों) की शक्ल के बुत तैयार किए गए थे जिन्होंने अपनी हयात (जीवन) के ज़मानों में नेक कामों से शोहरत (ख्याति) हासिल कर ली थी। यह गिरोह बुत परस्ती (मूर्ति पूजा) के बावजूद उनको माअबूदे मतलक़ (वास्तविक उपास्य) न मानता था, बल्कि उनका एतक़ाद (विश्वास) यह था कि सांसारिक अधिकार उन बुज़ुर्गों (पूर्वजों) की रूहानी (आध्यात्मिक) ताक़तों को, जिनके ये बुत यादगार के तौर पर हमारे आगे मौजूद हैं, इस तरह से हासिल हैं कि वे हमारी हर हाजत (मुराद) व दरख़ास्त की ख़ुदा के यहां सिफ़ारिश कर सकते हैं और आख़िरत की निस्बत (बारे में) उनका यह ख्याल (विचार) था कि उनकी रूहानी ताक़तें (आध्यात्मिक शक्ति) ख़ुदा से उनके गुनाहों की माफ़ी कराएंगी। वे बुत जिनकी तमाम अरब परिसतिश (पूजा) कर रहा था उनकी तफ़सील (विवरण) यह है।

१—हुबुल, २—वद, ३—सुवाअ, ४—यग़ूस, ५—यऊक़, ६—नसर, ७—उज्ज़ा, ८—लात, ९—मनात।

ये ख़ास (मुख्य) क़बीलों के बुत थे। इन ९ बुतों की परिसतिश (पूजा) तमाम अरब करता था। १०—दवार, ११—असाफ़, यह कोहे सफ़ा (सफ़ा नामक पहाड़) पर था। १२—नाइला, कोहे मरवह (मरवह पहाड़) पर था इन दो बुतों पर क़ुर्बानियां (बलि) की जाती थीं। १३—अबाअब, इस पर ऊंटों की क़ुर्बानी (बलि) की जाती थी। १४—काबे के अन्दर हज़रत इब्राहीम की तस्वीर थी और उनके हाथ में इस्तख़ारह (एक प्रकार का अमल) के तीर थे जो इज़लाम कहलाते थे और एक भेड़ का बच्चा उनके क़रीब (निकट) खड़ा था। हज़रत इस्माईल की मूरत (मूर्ति) ख़ाना काबा में रखी हुई थी।

१५—हज़रत मरयम और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की भी तस्वीरें और मूरतें (मूर्तियां) ख़ाना काबा में मौजूद थीं। वद, यग़ूस, यऊक़ और नसर अय्यामे जाहिलियत (अज्ञानता का दौर) अरब से बहुत पहले, बल्कि हज़रत नूह अलैहि० के पैदा होने से भी पूर्व उन बुज़ुर्गों (पूर्वजों) में से थे जो नेक कामों और ख़ुदा परस्ती (ईश्वर वादिता) में कामिल (पूर्ण) थे और जिनकी तस्वीरें पत्थरों पर मुनक़्क़श (अंकित) करके यादगार के लिए काबे के अन्दर रख दी थीं और इनको रुतबए माअबूदियत (पूज्य होने का दर्जा) देकर उनकी पूजा करने लगे। ख़ुदा परस्ती (ईश्वर भक्ति) भी किसी क़दर अरब जाहिलियत (अज्ञानता) में थी और यह दो तरह की थी। एक ग़ैर मालूम (अज्ञात) और पोशीदा (छिपी) क़ुदरत (ताक़त) को, जिसको वे अपने वजूद का ख़ालिक़ (रचियता) क़रार देते और मानते थे लेकिन शेष विचार उनके ला मज़हबी (अधर्मी) की ओर अधिक आकृष्ट थे। दूसरा गिरोह ख़ुदा को बरहक़ (सत्य) जानता था। क़ियामत, नजात, हश्र

(हिसाब किताब का मैदान) बक़ाए रूह (रूह का जीवन) और उस के जज़ा व सज़ा (इनाम व अज़ाब) का क़ायल था। ला मज़हबी (अधर्मियों) का भी एक तरह का शोर व चर्चा अरब में पाया जाता था जो न बुतों को पूजते थे और न किसी किताब और इलहामी (आसमानी) मज़हब (धर्म) के मानने वाले थे। वे ख़ुदा और प्रलय के इन्कारी थे इसी वजह से इनाम व अज़ाब को भी न मानते थे। वे दुनिया को सदैव रहने वाली मानते थे। साईबी धर्म वाले यह अक़ीदा (विश्वास) रखते थे कि हमारा धर्म इलहामी (आसमानी) है और हम हज़रत शीश अलैहि० और इदरीस अलैहि० के पैरो (अनुयायी) हैं उन के यहां सात समय की नमाज़ और एक क़मरी (चांद) महीने का रोज़ा था ये जनाज़े की नमाज़ पढ़ते थे। इन हालात से पता चलता है कि शायद उनका दावा सही हो। लेकिन यह ऐब (ख़राबी) उनमें आ गया था कि सबअ सय्यारे (तारे) की पूजा करते थे इसी के साथ ख़ाना काबा की बड़ी इज़्ज़त (आदर, सम्मान) करते थे। यहूदी धर्म अरब में ३५वीं शताब्दी हबूते आदम अलैहि० (पांचवी शताब्दी पूर्व मसीह के अनुसार) बख़्त नसर का हंगामा (जंग) हुआ। इसके कुछ दिनों बाद यहूदियों को इत्मीनान (सन्तोष) प्राप्त हुआ तो उन्होंने अपने धर्म को फैलाना शुरू कर दिया यहां तक कि धीरे धीरे ४०२६ हबूते आदम अलैहि० ३५४ पूर्व मसीह के अनुसार में ज़ूनिवास हमीरी बादशाहे यमन यहूदी हो गया और इससे यहूदियत को अरब में बड़ी तरक़्क़ी मिली। हबूते आदम अ० की तारीख़ न तो किसी पैग़म्बर ने बताई है और न ही ख़ुदा ने, अलबत्ता तौरात के आलिमों (विद्वानों) ने अपने अन्दाज़े से तौरात की ज़मीमों (परिशिष्ठों) और तफ़सीरों (टीकाओं) में इस को लिखा है। तीसरी सदी ईसवीं में ईसाई धर्म अरब में दाख़िल हुआ। जबकि पूर्वी कलीसा में ख़राबियां और बिदअतें (नई बातें) धीरे-धीरे रिवाज पा गयी थीं। आम मुअर्रिख़ीन (इतिहासकार) कहते हैं कि यह ज़माना ज़ूनिवास का था : इस धर्म का शेत्रा अधिक नजरान में हुआ और अरब में उस ने कुछ ज़्यादा रिवाज नहीं पाया। इनके अलावा बनू तमीम मजूसी और अधिकांश क़ुरैश जिन्दक़ा (गुमराह, भटके हुए) थे। हज़रत मुहम्मद सल्ल० की पैदाइश से पहले अरब में अधिकता से काहिन और नजूमी (ज्योतिषि) लोग थे और उन्होंने यह मशहूर (प्रसिद्ध) कर दिया था कि अनक़रीब (निकट ही) अरब में एक पैग़म्बर पैदा होने वाले हैं जिनके दीन का ग़लबा (प्रभाव) तमाम धर्मों पर होगा।

विलादत (पैदाइश)

आप (सल्ल०) के वालिद का नाम अब्दुल्लाह था। अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब के इन्तक़ाल (मृत्यु) के बाद बारहवीं रबीउल अव्वल को आमुल फ़ील (उस समय का सन) के पहले साल (अर्थात अबरह की चढ़ाई के ५५ दिन बाद) ४० जुलूसे किसराए नोशीरवां और ५७० ईसवीं में नबी सल्ल० पैदा हुए। अब्दुल मुत्तलिब ने आप की परवरिश (लालन पालन) की। क़बीला साअद में आपका ज़मानए रज़ाअत (दूध पीने का ज़माना) पूरा हुआ। हज़रत हलीमा रज़ि० ने दूध पिलाया और जब नबी सल्ल० चार साल के हुए और अपने रज़ाई भाइयों (दूध शरीक भाइयों) के साथ बकरियां चराने को गए थे तो फ़रिश्तों ने आकर आपका शिकम (सीना-ए-मुबारक) चाक करके क़ल्ब (दिल) को निकाला और उस से एक सियाह नुक़्ता (काला बिन्दु) अलग करके दिल को और आन्तों को धोया। जिस समय इस वाक़िए (घटना) की सूचना हलीमा को हुई तो वे इस डर से कि ख़ुदा जाने कोई और घटना पेश न आ जाए, आप को आप की वालिदा (मां) बीबी आमना के पास लायीं और इस घटना से आपको सूचित किया। बीबी आमना ने कहा कि तुम इन को ले जाओ।

यहां की आब व हवा (जलवायु) स्वभाव के अनुसार न होगी। मैं इस घटना से हरासां (आतंकित) नहीं हुई। अल्लाह ने उनको बहुत सी करामतें प्रदान फ़रमायी हैं। जब आपकी उम्र ६ साल की हुई तो बीबी आमना आपको मदीना अपने संबंधियों से मिलाने ले गयीं। वहां अबवा के स्थान पर बीबी आमना का इन्तक़ाल हो गया। इस तरह आप वालिद वालिदा दोनों की ओर से छोटी उम्र ही में यतीम हो गए और जब आठ साल के हुए तो आपके दादा अब्दुल मुत्तलिब ने वफ़ात पायी। उस समय आपके दादा ने आपको परवरिश (पालने) के उद्देश्य से अपने लड़के अबू तालिब के सुपुर्द किया। अबू तालिब मुहब्बते पिदरी (पिता की मुहब्बत) से आपके साथ पेश आए। दूध पीने के दौर में और बचपन के दौर में आपकी अजीब हालत थी। अज्ञानत के तौर तरीक़ों से आप बिल्कुल बेज़ार (निराश) थे। लड़कों में नहीं खेलते थे। अल्लाह ने आपको तमाम आदाते खबीसा (बुरी आदतों) से अपनी पनाह में रखा। जब आपने तेरहवीं साल में क़दम रखा तो अबू तालिब के साथ शाम (सीरिया) की ओर सफ़र किया। बुसरा के स्थान पर बुहीरा राहिब के झोंपड़े के पास होकर गुज़रे बुहीरा राहिब ने आपके अन्दर आसारे नुबूवत (नुबूवत की निशानियां) को देख कर अपनी क़ौम को बुलाया और आपकी नुबूवत से उनको सूचित किया। फिर दोबारा आप (सल्ल०) उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजतुल कुबरा (रज़ि०) की तिजारत का सामान लेकर उनके गुलाम मैसरह के साथ शाम (सीरिया) गए। नसतुरा राहिब के पास से जिस समय आपका गुज़र हुआ,उसने आप सल्ल०में शाने नुबूवत (नुबूवत की शान) देखकर मैसरह को आपके हालात से सूचित किया। उसने वापसी के बाद हज़रत ख़दीजा को पूरे हालात से आगाह किया। हज़रत ख़दीजा ने आपसे विवाह करने का इरादा किया और अबू तालिब ने आपका निकाह ख़दीजा से कर दिया। नबी सल्ल० की उम्र शरीफ़ इस समय २५ साल थी। जब आप ३५ वर्ष के हुए तो क़ुरैश ने काबे को गिराकर दोबारा बनाना शुरू किया। जिस समय हजरे असवद (वह काला पत्थर जो काबे में लगा है) के रखने का अवसर आया तो आपस में सब लड़ने लगे। हर आदमी यह चाहता था कि हजरे असवद (काले पत्थर) को मैं अपने हाथ से रखूं। फिर कुछ सोच कर क़ुरैश एक होकर मश्विरा करने लगे। अबू उमय्या ने कहा कि बेहतर होगा कि पहले जो आदमी मस्जिद (काबे) में दाख़िल होगा उसे तुम लोग अपना हाकिम (जज) बनाओ। क़ुरैश इस बात पर राज़ी हो गए। इसी बीच नबी सल्ल० वहां आ गए। लोगों ने कहा कि यह अमीन (ईमानदार) है यह फ़ैसला करेंगे। आपने एक कपड़े में हजरे असवद (काले (पत्थर) को रख कर क़ुरैश से कहा, कि इस कपड़े के किनारों को पकड़ लो। किसी को किसी पर कोई फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) न होगी और न कोई झगड़ा बाक़ी रह जाएगा। अतएव क़ुरैश ने आपके कहने से कपड़े के किनारे पकड़ लिए। जिस समय हजरे असवद अपने मक़ाम (स्थान) के निकट पहुंचा, आपने अपने हाथ से लेकर उसको उसकी जगह पर रख दिया। इसके बाद नबी सल्ल० तहारत (पाकी) और इबादत अत्यन्त दृढ़ता से कोशिश फ़रमाने लगे। आपकी ज़ात पाक में एक आला दर्जे (उच्च दर्जे) का अख़्लाक़ (आचरण) और सब्र व फ़साहत (धैर्य व शालीनता) थी। जवानी में ही आपको इबादत का शौक़ था। हज़रत ख़दीजा रज़ि० से कई कई दिन का खाना तैयार कराके अपने साथ ले जाया करते थे। पहाड़ों में ग़ारे हिरा (एक खोह का नाम) आदि में आप रात दिन कई कई दिनों तक मसरूफ़े इबादत (इबादत में लीन) रहते थे और आपको लोग अमीन (अमानतदार) कहा करते थे।

नुबूवत

वह्य के उतरने से पूर्व नबी सल्ल० ने रोया-ए-सालिहात (सच्चे सपने) देखना शुरू किए। काहिनो (नजूमियों) और आसमानी किताबों के विद्वानों ने आपकी शान व नुबूवत के चर्चे व ज़िक्र करना शुरू कर दिए और नबी सल्ल० इबादत के ख्याल से तन्हाई व खिलवत (अकेले) में ज्यादा से ज्यादा रहना पसन्द फ़रमाने लगे। अक्सर ग़ारे हिरा में तशरीफ़ ले जाते और वहीं दो-दो चार-चार रातें लगातार इबादते इलाही (अल्लाह की इबादत) में लगे रहते यहां तक कि आपकी पैदाइश के चालीसवें साल आप पर वह्य नाज़िल हुई। पहले फ़रिश्ता आदमी के रूप में आता था और आपसे बातें करता था और कभी आप पर इलक़ा (आप से आप वह्य का आना) हुआ करता था और किसी समय चादर या कोई और चीज़ लपेट कर लेट जाते थे और वह्य घंटी की आवाज़ की तरह नाज़िल होती थी। इस पिछली सूरत में आपको बहुत तक्लीफ़ होती थी जैसा कि हदीस शरीफ़ में आया है 'वहु-अ अ-शद्दु अला' (और वह मुझ पर अधिक सख्त है) सख्त जाड़े में आप पसीने पसीने हो जाते, मतलब यह कि जो वह्य आरम्भ में आप पर ग़ारे हिरा में नाज़िल हुई वह यह थी—'इक़रा बिस्मि-रब्बिकल लज़ी खलक़० खलक़ल इन्सा-न मिन अलक़० इक़रा व रब्बिकल अकरमुल्लज़ी अल्ल-म बिल क़लम, अल्लमल इन्साना मा लम याअ्लम०'

बीबी खदीजा रज़ि० ने आप की बातों की तस्दीक़ (मान लेना) की और आप पर ईमान लायीं। इसके बाद नबी सल्ल० पर नमाज़ फ़र्ज़ (अनिवार्य) की गयी। हज़रत जिब्रील अलैहि० आए और वुज़ू करके पूरे अरकाने नमाज़ व तरकीब आपको नमाज़ पढ़ कर दिखायी। उसके बाद मेअ्राज की रात में आप मक्का से बैतुल मक़्दिस और फिर वहां से सातों आसमान और सदरतुल मुनतहा पर तशरीफ़ ले गए—'फ़ अवहा इला अवदहू मा अवहा'।

अर्थात—अल्लाह ने अपने बन्दे पर वह्य भेजी। जो वह्य भेजी उसका ज़िक्र (मेअराज का) पन्द्रहवें पारे के शुरू में है।

कुरैश में इस्लाम की दावत

नबी सल्ल० ने अबू तालिब को इस्लाम की दावत दी। अबू तालिब ने कहा, मैं अपना और अपने बाप-दादा का दीन (धर्म) नहीं छोड़ सकता, अलबत्ता तुम्हारी वजह से यह होगा कि मैं तुम्हारा विरोध न करूंगा, उलमा-ए-सीर (पवित्र जीवनी लिखने वाले विद्वान) लिखते हैं कि सबसे पहले खदीजा रज़ि० ईमान लायीं। इसके बाद अबू बक्र व अली (रज़ि०) और ज़ैद बिन हारसा व बिलाल रज़ि०, फिर उमर बिन अम्बसा सलमा रज़ि० व खालिद बिन सईद रज़ि० मुसलमान हुए। इन बुज़ुर्गों के बाद कुरैश के एक गिरोह ने इस्लाम को स्वीकार किया जिन को अल्लाह ने नबी सल्ल० की मुसाह-बत (निकटता) के लिये पूरी क़ौम में से बरगुज़ीदा (अहम माना) किया और इनमें से अधिकांश प्रसिद्ध व जन्नती हुए। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० चूंकि रक़ीक़ुल क़ल्ब (नर्म दिल) महबूबे खलाइक़ (लोगों के प्रिय) नर्म स्वभाव और तिजारत करने वाले थे। लोगों की मदद करने का मादा (भावना) उनमें अधिक था। क़ुरैश आपसे ज्यादा मानूस (मिले जुले) थे इस वजह से आपके हाथ पर बनू उमय्या में ही उस्मान बिन अफ़्फ़ाक, तलहा, साअद बिन अबी व क़ास और अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० ईमान लाए। इसके बाद अबू उबैदह रज़ि०, आमिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि०, अबू सलमा अब्दुल असद रज़ि०, सईद बिन ज़ैद रज़ि०, सईद की बीवी फ़ातिमा रज़ि०, (हज़रत उमर रज़ि० की बहन) सईद रज़ि० के बाप ज़ैद बिन अमरू रज़ि० इस्लाम में दाखिल हुए। यह ज़ैद बिन अमरू वही हैं जिन्हों

ने अज्ञानता में बुतपरस्ती छोड़ दी थी। फिर उमर रज़ि० और अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० मुसलमान हुए। अब्दुल्लाह बिन मसऊद उक़बा बिन मुईत की बकरियां चराते थे। एक दिन नबी सल्ल० उनकी बकरियों के गल्ले की ओर से होकर गुज़रे और उन की इजाज़त से बकरी का दूध आपने दोहा जिसका दूध बन्द हो गया था। अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० यह मुअज्जिज़ह (चमत्कार) देख कर हैरान हो गए और उसी समय ईमान ले आए। इन के बाद जाफ़र बिन अबी तालिब और उन की बीवी और साइब बिन उस्मान रज़ि० और आमिर बिन फ़हीरह रज़ि०. उम्मार बिन यासिर और सुहैब (रज़ि०) इस्लाम लाए।

इस्लाम की दावत

इन बुज़ुर्गों के इस्लाम लाने से मुसलमानों की एक छोटी सी जमाअत हो गई जिसमें जवान लड़के, बूढ़े, औरतें सभी शामिल थे। लेकिन मुश्रिकों (अधर्मियों) के भय से जंगलों और पहाड़ों में चले जाते थे और वहीं नमाज़ें पढ़ते थे। क़ुरैश का कोई ऐसा जलसा न होता था जिसमें इस्लाम का और उनके इस्लाम लाने का उल्लेख न होता। वह्य के आने के तीसरे साल नबी सल्ल० को दावत देने का हुक्म हुआ। चुनांचे आप सफ़ा पहाड़ पर चढ़ गए और क़ुरैश को बुला कर उनसे मुख़ातिब (सम्बोधित) हो कर फ़रमाया—

"यदि मैं तुमको ख़बर दूं कि दुश्मन तुम पर सुबह को आएगा या शाम को, तो क्या तुम लोग मुझे सच्चा मानोगे? क़ुरैश ने कहा, हां। तब नबी सल्ल० ने फ़रमाया, मैं तुम को डराता हूं आगे के सख़्त अज़ाब से। ख़ुदा के इन हुक्मों पर ईमान लाओ जो मेरे पास आए हैं। क़ुरैश इस कलाम को सुन कर अलग हो गए।"

फिर आपने आम हिदायत शुरू की। जब क़ुरैश ने देखा कि उनके बुतों की बुराइयां की जाती हैं और उनके पूजने पर रोक टोक की जाती है तो उनको बुरा लगा, वे सब के सब एक मकान में जमा हो कर नबी सल्ल० की दुश्मनी पर तैयार हो गए। अबू तालिब ने उनकी इस राए का विरोध किया और उनको इस काम से रोकने लगे, वे नबी सल्ल० की हिमायत पर तैयार हो गए। क़ुरैश अबू तालिब के विरोध से मजबूर हो कर न्याय कराने के लिए अबू तालिब के पास आए और अबू तालिब से नबी सल्ल० की ओर से तकलीफ़ पहुंचाने के बारे में बहस की और इस बात की इच्छा प्रकट की कि नबी सल्ल० को उनके यहां बुला कर इस नए काम से रोकें। चुनांचे नबी सल्ल० उनके बुलाने पर इस सभा में तशरीफ़ लाए। क़ुरैश ने अपने तर्क पेश किए। और यह कहा कि यदि आपको दौलत की ज़रूरत हो तो आप की इच्छा से ज़्यादा चन्दा जमा करके दे दें और यदि जवान सुन्दर औरत की ज़रूरत हो तो वह भी इसके साथ, और यदि इसके बावजूद फिर भी आप न मानें तो मुमकिन (सम्भव) है कि ख़ून-रेज़ी (रक्तपात) होगी और आपकी जान जाती रहेगी क्योंकि यह सारी क़ौम और मज़हब (धर्म) का मामला है।

तब जवाब में नबी सल्ल० ने क़ुरआन मजीद की कुछ आयत पढ़ कर इशारा फ़रमाया—

"ऐ चचा! मैं अपने इस काम को न छोड़ूंगा यहां तक कि अल्लाह उसको ज़ाहिर (स्पष्ट) करे या कि मैं स्वयं इसमें हलाक (ख़त्म) हो जाऊं।"

अबू तालिब यह सुन कर शान्त रहे, क़ुरैश की सभा ख़त्म हो गई। उस समय फिर आपने अबू तालिब से मुख़ातिब (सम्बोधित) होकर इस्लाम की दावत दी। अबू तालिब ने कहा, जो तुम्हारे दिल में है करो, लेकिन ख़ुदा की क़सम मैं कभी ईमान न लाऊंगा और न अपने बाप दादा के दीन को छोड़ूंगा। यह बात मुझ से न होगी कि नमाज़ के समय मेरे चूतड़ मेरे सर से ऊंचा हो जाएं (अर्थात सज्दे में)

हब्शा की ओर हिजरत

जब क़ुरैश ने देखा कि नबी सल्ल० इस्लाम की दावत से बाज़ नहीं आते और मुसलमानों की जमाअत बढ़ती जाती है तो बनी हाशिम और बनू मुत्तलिब और कुल क़ुरैश ने जमा होकर नबी सल्ल० और सब मुसलमानों को तक्लीफ़ पहुंचाने का अहद (वचन) किया। प्रत्यक्ष में इस वचन में बनू हाशिम और बनू मुत्तलिब पेशवा (अगुवा) थे। लेकिन असल में अरब का हर क़बीला जो उस समय मक्का और उसके निकट में था इस अहद व इक़रार में शामिल था। जहां ये लोग ग़रीब मुसलमानों को पाते, पत्थरों से मारते, तरह-तरह की तक्लीफ़ें देते थे, नमाज़ की हालत में ऊंटों, बकरियों की आंतें, गन्दगी ला-लाकर नमाज़ियों पर डालते थे। जब यह तक्लीफ़ों का सिलसिला सीमा पार कर गया तो आपने मुसलमानों को हब्शा की ओर हिजरत का हुक्म दिया। हब्शा के बादशाह और क़ुरैश के बीच तिजारत का सन्धिनामा था। वे प्राय: हब्शा के बादशाह की प्रशंसा किया करते थे। बहरहाल सबसे पहले हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि० और उनकी पत्नी रुक़ैया बिन्त नबी सल्ल०, अबू हुज़ैफ़ा और उनकी पत्नी, ज़ुबैर बिन अवाम, मुसअब बिन उमैर, अबू सबरह अब्दुल्लाह बिन मसऊद आमिर और उनकी पत्नी लैला और सुहैल रज़ि० इन बुज़ुर्गों ने हब्शा की ओर हिजरत फ़रमायी। इनके बाद फिर यके बाद दीगरे (एक के बाद एक) मुसलमानों ने हब्शा की ओर हिजरत करना शुरू कर दिया। इन्हीं लोगों के साथ जाफ़र बिन अबी तालिब रज़ि० भी हिजरत कर गए, यहां तक कि हब्शा में मुहाजिरीन (हिजरत करने वालों) की तायदाद (संख्या) तीन सौ तक पहुंच गयी मुहाजिरीने अव्वल (प्रथम हिजरत करने वाले) का मुश्रिकीने मक्का (मक्का वालों) ने दूर तक पीछा किया, लेकिन नाकाम वापस आए। क़ुरैश ने जब यह देखा कि नबी सल्ल० की तक्लीफ़ व परेशानी में आपके कुछ रिश्तेदार रुकावट बनते हैं और विरोध करते हैं तो उन्होंने यह शेवा (रास्ता) अख़्तियार (अपनाया) किया कि जो मक्का में आता था उससे नबी सल्ल० की साहिरी, (जादूगरी) मजनूनियत (पागलपन) और कहावत (ज्यौतिष) का ज़िक्र करते थे और आपके पास उसको आने से रोकते थे। इन लोगों का यह काम था कि ये लोग नबी सल्ल० और उन लोगों से जो ईमान ला चुके थे मसख़रा पन (मज़ाक उड़ाते) करते और तक्लीफ़ देते थे।

तायफ़ में इस्लाम की दावत

अल ग़रज़ (फल स्वरूप) हज़रत ख़दीजा रज़ि० के इन्तक़ाल (देहान्त) और अबू तालिब के इंतक़ाल के बाद मुश्रिकीने मक्का नबी सल्ल० के साथ हर समय इस्तहज़ा (मसख़रा) और तक्लीफ़ देने पर तैयार रहते। एक दिन आप इस्लाम की दावत देने के उद्देश्य से तायफ़ की ओर तशरीफ़ ले गए और वहां के सरदारों अब्द या लैल बिन उमर और मसऊद व हबीब के पास बैठकर उनको इस्लाम लाने और इस्लाम की मदद करने की इस्तदा (प्रार्थना) की। इन तीनों ने अत्यन्त सख़्ती से आपको जवाब दिया। तो जब नबी सल्ल० इनके इस्लाम लाने से ना-उम्मीद (निराश) हो गए तो उनको इस हाल के छुपाने के लिए इर्शाद फ़रमाया। लेकिन उन लोगों ने आपका कहा न माना। अराज़ल (क्रूर और बुरे) और छोटे-छोटे लड़कों को आपके पीछे लगा दिय।

उन लड़कों ने आपके पीछे तालियां बजानी शुरू कीं और ढेले मारने लगे, यहां तक कि आप एक बाग़ की दीवार की छाया में बैठ गए, और लडके लोग लौट गए। जब आप को उन के शोर व ग़ुल से सुकून हासिल हो गया तो रात को खजूर के एक बाग़ में ठहर गए। आधी रात को जब आप (सल्ल०)

नमाज़ पढ़ने के लिए खड़े हुए तो कुछ जिन्न इस तरफ़ से होकर गुज़रे और उन्होंने इस मक़ाम (स्थान) पर ठहर कर क़ुरआन को सुना। इसके बाद नबी सल्ल० मक्का में दाखिल हुए।

मक्का वाले बदस्तूर (उसी तरह) आपकी अदावत (दुश्मनी) पर तुले हुए थे। क़ुरैश के रईसों में से किसी ने आपको अपनी हमसायगी (शरण) में न लिया। आखिरकार मुतअिम बिन अदी के जुवार (मकान) में आप ठहरे। तुफ़ैल बिन अमरू आपकी सेवा में हाज़िर हुए और ईमान लाए। अपनी क़ौम को इस्लाम की तरफ़ बुलाया, कुछ उनमें से ईमान लाए। नबी सल्ल० ने उनके लिए दुआ फ़रमायी। इब्ने हज़म का बयान है कि इसके बाद मेअराज की घटना पेश आयी। पहले आप मक्का से बैतुलमुक़द्दस तशरीफ़ ले गए, फिर वहां से आसमानों पर गए और अम्बियाए किराम (नबियों) से मुलाक़ात की। जन्नत और सदरतुल मुन्तहा को सातवें आसमान पर देखा।

हज के मौसम में इस्लाम की दावत

जब नबी सल्ल० मुश्रिकीने मक्का के ईमान लाने से ना-उम्मीद (निराश) हो गए और हज के मौसम में जो लोग इतराफ़) इधर-उधर) से आते थे उनके फरूद गाह (ठिकानों) पर तशरीफ़ ले जाते थे और उनको इस्लाम की दावत देते थे, क़ुरआन पढ़कर उनको सुनाते। इस्लाम की नुसरत (मदद) के लिए उनसे कहते, तो क़ुरैश इन मामलों में भी मुज़ाहमत (हस्तक्षेप व रुकावट) करते और आपकी मुज़म्मत (निंदा) करते फिरते थे। अबू लहब को इस काम में एक खास दिलचस्पी थी। वह अपने सारे कामों को छोड़ कर आपके पीछे पड़ गया था। जिन लोगों को आप हज के मौसम में इस्लाम की दावत देते थे, कुछ उनमें से सुन कर सहूलियत (आसानी) से जवाब देते थे और कुछ एतराज़ (विरोध) करते और कुछ बतरीक़ तमुस्खुर (मज़ाक़ उड़ाते हुए) यह कहते थे कि "हम इस शर्त पर ईमान लाएंगे कि तुम हमको मुल्क व हुकूमत दिलाओ।"

नबी सल्ल० यह सुन कर इर्शाद फ़रमाते थे कि यह काम अल्लाह का है, मैं इस का वायदा नहीं कर सकता। इसके बाद नबी सल्ल० सुवेद बिन अस्सामत के पास तशरीफ़ ले गए और उसको इस्लाम की दावत दी। सुवेद बिन सामत ने न तो इस्लाम स्वीकार किया और न सख्ती से जवाब दिया। जब यह मदीना से वापस आया तो किसी लड़ाई में मारा गया। यह वाक़िआ (घटना) यौमे बआस (एक इतिहासिक घटना) के पहले का है। इसके बाद मक्का में अबुल हैसर अनस अपनी क़ौम बनू अब्दुल अशहल के एक गिरोह को लिए हुए क़ुरैश से खज़रज वालों से मुक़ाबले के लिए हलफ़ (शपथ) लेने आया। नबी सल्ल० इस गिरोह के पास भी इस्लाम की दावत को तशरीफ़ लाए। इस गिरोह में से एक नवजवान ने जिसका नाम अयास बिन मआज़ था अपनी क़ौम से मुखातिब (संबोधित) होकर कहा, 'वल्लाह (क़सम खुदा की) हम जिस काम के लिए आए हैं उससे यह अच्छा है।' अबुल हैसर ने यह सुन कर अयास को एक डांट दिलायी। अयास खामोश हो गया और ये सब बे नील व मराम (बिना सफल हुए) मदीना को वापस आए। थोड़े दिनों बाद अयास का इन्तक़ाल हो गया। उलेमा-ए-सेर (सीरत लिखने वाले विद्वान) कहते हैं कि अयास बिन मआज़ ने इस्लाम पर इन्तक़ाल किया।

मदीना को हिजरत

जब मदीने में इस्लाम का ज़्यादा ज़ोर हो गया और मदीने वालों के मुसलमान हो जाने से मुसलमानों को एक शक्ति मिल गयी तो मक्का के मुश्रिक इस घटना से बहुत बरहम (क्रोधित) हुए और

उन्होंने मुसलमानों के सताने का अहद (प्रतिज्ञा) कर लिया। इससे मुसलमानों की तक्लीफ़ बढ़ गयी। उस समय जो सबसे पहले जिहाद (अल्लाह के दीन के लिए लड़ना) की आयत अल्लाह ने नाज़िल फ़रमायी, उसका अनुवाद यह है—

"और लड़ाई करो तुम उनसे ताकि न रहे शिर्क और हो कुल दीन अल्लाह का।"

इसके बाद नबी सल्ल० ने अल्लाह के हुक्म से अपने असहाब (साथियों) को मक्का से मदीना हिजरत कर जाने का इर्शाद फ़रमाया। सबसे पहले अबू सलमा रज़ि० मक्का से हिजरत कर गए। इनके बाद आमिर रज़ि० फिर कुल बनू जहश, उनके बाद अकशह बिन मुहसिन रज़ि० और एक गिरोह बनू असअद, जिनमें जैनब बिन्त जहश रज़ि० उम्मुल मोमिनीन भी थीं और उनकी दोनों बहनें, हमनह और उम्मे हबीबा रज़ि० ने हिजरत की, इसके बाद उमर बिन खत्ताब व अयाश बिन अबी रबीनियह रज़ि० बीस सवारों के साथ मदीना को हिजरत कर गए। उमर बिन खत्ताब रोज़े रोशन (दिन दहाड़े) तमाम क़ुरैश के सामने मक्का से निकले और पुकार के कहा कि 'जिस किसी को अपनी पत्नी रांड (विधवा) करानी और अपने बच्चे यतीम कराने मंजूर हों तो वह उस पहाड़ के पीछे मुझसे मिले। मगर किसी को हिम्मत न हुई। फिर जैद, सईद खनीस (रज़ि०) और एक गिरोह बनू अदी हिजरत कर गए।

ये सब क़ुबा में रफ़ाअह बिन अब्दुल मुन्ज़र रज़ि० के मकान पर ठहरे। इनके बाद तलहा रज़ि०, सुहैब रज़ि०, हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ि०, ज़ैद बिन हारसह रज़ि० सहित और अबू मुरसिद ने हिजरत की और क़ुबा में ठहरे। फिर उस्मान एक जमाअत सहित हिजरत कर गए। हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने हिजरत की तैयारी की तो नबी सल्ल० ने रोका कि तुम्हारे हिजरत करने का हुक्म मेरे साथ हो गया है, इस लिए मेरा इन्तज़ार (प्रतिक्षा) करो।

धीरे-धीरे मक्का से सभी सहाबा मदीना में चले आए थे। नबी सल्ल० के पास मक्का में सिवाए अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि०, हज़रत अली रज़ि० के और कोई बाक़ी न रहा था। नबी सल्ल० खुदा के हुक्म का इन्तज़ार (प्रतिक्षा) कर रहे थे।

क़ुरैश का मश्विरा (परामर्श)

जब क़ुरैश ने इन बुज़ुर्गों के हिजरत कर जाने और मदीना वालों के इस्लाम लाने से यह समझ लिया कि ये लोग धीरे-धीरे सभी मदीना में चले गये और हस्बे ख्वाहिश (इच्छानुसार) इनके पैग़म्बर मुहम्मद सल्ल० भी चले जाएंगे। तब क़ुरैश आपके बारे में मश्विरा करने के उद्देश्य से दारुल नदवा में जमा हुए। क़ुरैश के सब बड़े-बड़े आदमी भी मश्विरे में शरीक थे और इनके सिवा दूसरे क़बीलों के आदमी भी शरीक थे। इस जलसे (सभा) में बहुत कुछ बातें पेश हुईं। कुछ कहते थे कि मुहम्मद (सल्ल०) को क़ैद कर दो, कुछ कहते थे जला वतन (देश निकाला) कर दो। अबू जहल ने कहा कि क़बीलों से एक-एक आदमी इन्तखाब (चुनकर) करके क़त्ल कर दो। इस सूरत में। किसी खास क़बीले पर क़त्ल का जुर्म न आएगा और न बनू अब्दे मनाफ़ इन सभों से लड़ सकेंगे, केवल खून बहा (खून का बदला अदा कर)दिया जाएगा। सभा में शरीक सभी लोगों ने इस राय को पसन्द किया और रात ही से इस पर अमल करने को तैयार हो गए।

नबी सल्ल० का मकान घेर लिया। अल्लाह ने वह्य द्वारा नबी सल्ल० को सूचित कर दिया। चुनांचे (अतएव) हज़रत अली रज़ि० को अपनी ख्वाबगाह (सोने के कमरे) में सुला कर मकान के बाहर आए। अल्लाह ने उनकी आंखों पर उस समय पर्दे डाल दिए। नबी सल्ल० ने एक मुश्त (मुट्ठी

भर) ख़ाक (मिट्टी) पर सूर: यासीन पहली आयतें 'फ़हुम ला युबसिरून' तक पढ़ कर उनकी तरफ़ फेंक दिया और आप अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० सहित मकान से बाहर तशरीफ़ लाए। अब्दुल्लाह बिन अरीक़त को उजरत (मज़दूरी) देकर रहबर (गाइड) मुक़र्रर (नियुक्त) किया। उसने यह कह दिया कि आम रास्ते को छोड़ कर ग़ैर माअरुफ़ (जो प्रसिद्ध न हो) रास्ते से मदीना ले जाए। अगरचे (यद्यपि) अब्दुल्लाह बिन अरीक़त काफ़िर था लेकिन इन दोनों बुज़ुर्गों ने उस पर एतमाद (भरोसा) कर लिया था।

ग़ारे सूर

नबी करीम सल्ल० और हज़रत अबू बक्र रज़ि० मकान से निकल कर रात ही को एक ग़ार (खोह) में जो जब्ले सूर (सूर नामक पहाड़) में था छिप गए। अब्दुल्लाह बिन अबी बक्र प्रतिदिन ग़ार पर आते और मक्का वालों की बातों से सूचित कर जाते थे और आमिर बिन फ़हीरह रज़ि० (अबू बक्र का सेवक) उन बकरियों को अब्दुल्लाह बिन अबी बक्र के पीछे-पीछे पांव के निशान मिटाने के लिए चराते हुए लाते और रात को वहीं रह जाते थे इस वजह से कि ज़रूरत भर दूध आदि आपको दे दिया जाए और असमा बिन्त अबू बक्र रोज़ाना मक्का से खाना लाकर खिला जाती थीं।

तमाम सावधानियों को पकड़े रहने के बावजूद क़ुरैश भी ढूंढ़ते हुए ग़ार तक पहुंच गए। चूंकि घने ग़ार (ग़ार के मुंह) पर मकड़ियों ने रात को जाला लगा रखा था। क़ुरैश ने यह सोचा कि यदि कोई अन्दर जाता तो जाला टूट जाता। इस वजह से मुतमईन (सन्तुष्ट) होकर वापस आए और सौ ऊँटों के इनाम का नबी सल्ल० और अबू बक्र रज़ि० की गिरफ़्तारी पर एलान (घोषणा) कर दिया।

जब ग़ार में तीन दिन नबी सल्ल० व अबू बक्र रज़ि० को गुज़र गए और क़ुरैश का तलाश का अभियान कम हो गया तब अब्दुल्लाह बिन अरीक़त इन दोनों बुज़ुर्गों के लिए सवारी लेकर आया और एक ऊंटनी अपने लिए भी लाया और असमा बिन्त अबी बक्र रास्ते के लिए खाना पका कर लायीं, लेकिन उजलत (जल्दी) में रस्सी लाना भूल गयीं। जिससे बांधकर खाना लटका दिया जाता। असमा बिन्त अबी बक्र ने अपना निताक़ (कमरबन्द) फाड़ कर खाना लटकाया। इसी दिन से असमा बिन्त अबी बक्र ज़ातुन्न ताक़ीन की उपाधि से मशहूर हो गयीं।

मदीने का सफ़र

नबी सल्ल० एक नाक़ा (ऊंटनी) पर सवार हुए और दूसरी पर अबू बक्र सिद्दीक़ और उनके पीछे आमिर बिन फ़हीरह रज़ि० सवार हुए और अब्दुल्लाह बिन अरीक़त एक तीसरे ऊंट पर सवार हुआ। आम रास्ता छोड़कर एक ग़ैर मशहूर रास्ते को अपनाया। अबू बक्र सिद्दीक़ ने रवाना होते समय अपना कुल माल (जो लगभग छः हज़ार दिरहम था) अपने साथ ले लिया। पहले दिन से दूसरे दिन की ज़ुहर तक बराबर सफ़र करते रहे। ज़ुहर के समय एक मैदान में थोड़ी देर के लिए ठहर गए। इस बीच में सुराक़ा बिन मालिक (जो आप (सल्ल०) के गिरफ़्तार करने का वायदा कर चुका था) आ पहुंचा। नबी सल्ल० ने उसके हक़ में बददुआ की। उसी समय उसके घोड़े के चारों पांव ज़मीन में धंस गए। सुराक़ा मजबूर होकर नबी सल्ल० से अमान (माफ़ी) का ख्वास्तगार (इच्छुक) हुआ। नबी सल्ल० ने उसको अमान दे दी और सुराक़ा ने वायदा किया कि मुझे अब जो भी आदमी मिलेगा

उसको वापस करता जाऊंगा। अतः सुराक़ा तो उस जगह से वापस हुआ। फिर जो नबी सल्ल० का पीछा करते हुए उसको मिलते जाते थे उनको वह वापस करता जाता था।

अब्दुल्लाह बिन अरीक़त नबी सल्ल० व अबू बक्र रज़ि० को लेकर साथ लिए हुए असफ़ले मक्का से निकल कर समुद्र के किनारे की ओर चला और असफ़ले असफ़ान से गुज़रता हुआ मज में पहुंचा। फिर वहां से उसके असफ़ल को तै करता हुआ क़दीर में आया। क़दीर से निकल कर उरूज होता हुआ अवाली मदीने से क़ुबा में रसूलुल्लाह (सल्ल०) और अबू बक्र (रज़ि०) के साथ दाख़िल हुआ। यह रास्ते का बड़ा जानने वाला था।

ज़कात व अज़ान

जिस समय नबी सल्ल० को मदीने में जमाव व इत्मीनान हासिल हो गया और आपके पास मुहाजिर व अन्सार जमा हो गए, उस वक़्त ज़कात फ़र्ज़ की गयी और मुक़ीम की नमाज़ में दो रकअतें और बढ़ायी गयीं जिससे चार रकअतें पूरी हुईं। इससे पहले मक्का में दो ही रकअतें नमाज़ मुसाफ़िर व मुक़ीम के लिए थीं। फिर अब्दुल्लाह बिन सलाम जो यहूद के बहुत बड़े आलिम (विद्वान) थे, इस्लाम लाए। वजह यह हुई कि पहले-पहले जब उन्होंने नबी सल्ल० को देखा तो क़सम खाई कि इस व्यक्ति का चेहरा झूठे आदमी का चेहरा नहीं हो सकता। यहूदियों ने उसका साथ छोड़ दिया और ओस व ख़ज़रज के कुछ लोगों को वहका कर मुनाफ़िक़ (कपटाचारी) बना लिया जिनका काम यह था कि वे मुसलमानों से लड़ते थे और कुफ्र की बातों पर इसरार (ज़िद) करते थे। इन मुनाफ़िक़ों (कपटाचारियों) के सरदार अब्दुल्लाह बिन उबई, वजद बिन क़ैस, हरस बिन सुहैल, अबाद बिन हनीफ़ थे और यहूदियों में से जो बज़ाहिर (प्रायक्ष में) इस्लाम के हमदर्द और छिपे तौर पर कुफ्र में डूबे हुए थे वे ये थे—साअद बिन खनीस, ज़ैद, राफ़ेअ, रिफ़ाअह इब्ने ज़ैद, कनायह आदि मुसलमानों के दुश्मन थे।

मक्का की फ़तह

१० वीं रमज़ान ८ हिजरी को दस हज़ार सेना के साथ नबी सल्ल० मदीना से मक्का को फ़तह करने के उद्देश्य से रवाना हुए। इस सेना में एक हज़ार मर्द बनू सलीम के और एक हज़ार मुज़ीना के, चार सौ ग़फ़्फ़ार के, ४ सौ अस्लम के और बाक़ी क़ुरैश व असद व तमीम और मुहाजिर व अन्सार के मवालीन व क़ताइब थे। मदीना में कलसूम बिन हसीन बिन उतबा ग़फ़्फ़ारी ही आपके क़ायम मुक़ाम (कार्यवाहक) हुए।

जिस समय आप ज़ुल हलीफ़ा और कुछ कहते हैं कि हजफ़ह में पहुंचे अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ि० मक्का से हिजरत करके मदीने को आते हुए मिले। नबी सल्ल० के फ़रमाने से अब्बास रज़ि० आप के साथ जिहाद के उद्देश्य से इस्लामी लश्कर के साथ मक्का को वापस हुए। आख़िरकार मक्का बिना जंग के फ़तह हो गया और पूरे अरब की क़ौमें इस्लाम में दाख़िल होना शुरू हुईं।

हज्जतुल विदाअ (अन्तिम हज)

इन वाक़िआत (घटनाओं) के बाद ज़िल-क़-अद का महीना आ गया। जब उसकी पांच रातें रह गयीं तो हज के इरादे से मदीना से रवाना हुए। आपके साथ मुहाजिरों, अन्सार और अरब के

रईसों का एक गिरोह था और सौ ऊंट थे। मक्का में एक शम्बा (इतवार) के दिन जबकि चार दिन जिल हज के गुज़र चुके थे दाखिल हुए। अली बिन अबी तालिब रज़ि० भी जो नजरान में सदक़ा जमा करने को गए हुए थे, मक्का में आप से आ मिले और आपके साथ हज किया। आपने इस बार लोगों को मनासिके हज (हज के क़ायदे) की तालीम दी, उसके सुनन (तरीक़े) बतलाए, उनके लिए रहमत की दुआ की और अरफ़ात में एक लम्बा ख़ुत्बा दिया जिसमें बहुत सी हिदायतों के बाद ये अलफ़ाज़ (शब्द) भी थे—'मेरे बाद तुम काफ़िर न बनो कि एक दूसरे की गर्दनें मारते फिरो।'

नबी सल्ल० की अलालत (बीमारी)

सबसे पहले जिससे नबी सल्ल० पर अपने इन्तक़ाल (देहान्त) का हाल मुन्कशफ़ (स्पष्ट) हुआ वह अल्लाह का यह क़ौल (कथन) था—

'इज़ा जा-अ -नसरुल्लाहि वल फ़त्हु .....' ता आख़िर सूर:

इसके बाद सफ़र अरबी महीने ११ हिजरी सन ६४२ ईसवी के अनुसार दो रातें बाक़ी थीं कि आपके दर्द पैदा हुआ। आपने इस दर्द की हालत में यह इर्शाद किया कि बेशक (निस्संदेह) एक बंदे को अल्लाह ने अपने बन्दों में से दुनिया और उस चीज़ का जो उसके पास है (अर्थात आख़िरत) का इख़्तियार (स्वतंत्रता) दिया है। तो बन्दे ने उसको चुना जो उसके पास है।

हज़रत अबू बक्र रज़ि० इस फ़िक़रे (वाक्य) को सुन कर रो पड़े और यह कहा—'ऐ नबी सल्ल० ! हम आपका अपनी जानों और बच्चों से फ़िदया (सदक़ा) देते हैं।' इसके बाद आपने अपने सहाबा को जमा किया और उनके हक़ में भलाई की दुआ की और आंखों से आंसू जारी होते रहे। इसी दौरान आपने फ़रमाया—

"मैं तुमको डरने की नसीहत करता हूं और ख़ुदा से, तुम्हारे लिए रहम (दया) की दरख़ास्त (प्रार्थना) करता हूं और उस की निगहबानी (देख-रेख) में तुम को छोड़ता हूं और तुम को उस के सुपुर्द (हवाले) करता हूं। (ऐ लोगो) मैं तुमको ख़ौफ़ (डर) और ख़ुशख़बरी (शुभ सूचना) दोनों सुनाता हूं कि तुम ख़ुदा के आदेशों में ज़्यादती न करो और उसके शहरों में ज़्यादती न करो और उस की मख़्लूक़ (लोगों) पर ज़्यादती (ज़ुल्म) न करो। क्योंकि ख़ुदा ने मुझ से भी और तुम से भी यह कहा है कि आख़िरत (परलोक) का घर (जन्नत) एक ऐसा मक़ाम (जगह) है कि जिसका मालिक केवल उन लोगों को बनाऊंगा जो ज़मीन में सरकशी (विद्रोह) के मुरतकिब (अपराधी) न हों और न ज़मीन में वे किसी क़िस्म (प्रकार) का फ़साद (दंगा) करते हों क्योंकि जन्नत पाक लोगों के लिए (उनके कर्मों का नतीजा) है और उसने कहा है कि क्या जहन्नम में मुतकब्बिर (घमंडी) लोगों के सिवा और भी होगा ? अर्थात न होगा) फिर आपने मस्जिद की तरफ़ के जितने दरवाज़े थे सभी को बन्द करने का हुक्म दे दिया केवल अबू बक्र के दरवाज़े को छोड़ कर। फिर यह कहा कि मैं किसी को अबू बक्र से ज़्यादा अपनी सोहबत (महफ़िल) में अफ़्ज़ल (श्रेष्ठ) नहीं जानता हूं और यदि मैं किसी को अपना ख़लील (दोस्त) बनाता तो अबू बक्र को अपना ख़लील (दोस्त) बनाता।'

वफ़ात (देहान्त)

इसके बाद फिर दर्द का इतना ज़ोर हुआ कि आप बेहोश हो गए। उम्मुहातुल मोमिनीन (आप

की पत्नियां) और फ़ातिमा (रज़ि०) व अब्बास, अली रज़ि० सबके सब आपके गिर्द (पास) आकर जमा हो गए। इसी अर्से (बीच में) में नमाज़ का वक़्त आ गया। दर्द में कुछ कमी मालूम हुई बेहोशी जाती रही, लेकिन ज़ोअफ़ (कमज़ोरी) से उठ न सकते थे। आपने हाज़िरीन (पास वालों) से मुख़ातिब (सम्बोधित) होकर फ़रमाया कि अबू बक्र रज़ि० को नमाज़ पढ़ाने के लिए कहो। उम्मुल-मोमिनीन हज़रत आयशा रज़ि० ने अर्ज़ किया कि वे एक ज़ईफ़ व रक़ीक़ुल क़ल्ब (कमज़ोर व थोड़े दिल वाले) आदमी हैं आपकी जगह पर खड़े होकर नमाज़ न पढ़ा सकेंगे, उमर रज़ि० को इस काम पर मामूर (लगा) फ़रमा दें आपने इससे इन्कार करके अबू बक्र रज़ि० को इमामत पर मामूर (खड़ा किया) किया और फ़रमाया कि ख़ुदा और मुसलमान अबू बक्र रज़ि० के सिवा और किसी पर राज़ी नहीं हैं।

फिर अबू बक्र रज़ि० ने आपकी अलालत (बीमारी) की हालत में तेरह नमाज़ें पढ़ायीं। फिर जबकि दोशम्बे (पीर) का दिन आया और यही दिन आपकी वफ़ात (देहान्त) का है सुबह की नमाज़ के समय आप सर मुबारक पर पट्टी बांधे हुए बाहर तशरीफ़ लाए। उस वक़्त अबू बक्र लोगों को नमाज़ पढ़ा रहे थे। अबू बक्र ने पीछे हटने का क़स्द (इरादा) किया, आपने उनको अपने हाथ से दायीं तरफ़ बैठकर नमाज़ पढ़ाने का इशारा किया और ख़ुद (स्वयं) अबू बक्र के पीछे नमाज़ अदा की। इसके बाद लोगों की तरफ़ मुख़ातिब (सम्बोधित) होकर फ़रमाया—ऐ लोगो! आग भड़की, फ़ित्ने आ गए तुमको मालूम रहे कि जिस चीज़ को क़ुरआन ने हलाल या हराम क़रार (ठहराया) दिया है उसके सिवा मैंने किसी चीज को हराम या हलाल क़रार नहीं दिया। फिर हज़रत आयशा रज़ि० के घर में आए और वहीं आप (सल्ल०) आप का इन्तिक़ाल (देहान्त) हो गया।

नबी सल्ल० का इन्तक़ाल होते ही सहाबा में एक अज़ीम (बड़ी) परेशानी फ़ैल गयी। उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० इस हादसए नागहानी (अचानक टूट पड़ने वाली घटना) से मुतहय्यर (हैरत) से हो गए। कुछ होश न रहा। तलवार खींच कर खड़े हो गए और बुलंद (ऊंची) आवाज़ से कहने लगे—'मुनाफ़िक़ (कपटाचारी) कहते हैं कि हुज़ूर का इन्तक़ाल हो गया मगर वे झूठे हैं, बल्कि वे तो मूसा अलैहि० की तरह ख़ुदा से मिलने गए हैं थोड़ी देर में आ जाएंगे और जो कोई यह कहे कि नबी सल्ल० मर गए हैं मैं उस की गर्दन इस तलवार से उड़ा दूंगा।' उमर रज़ि० जोश में यह कहते जाते थे। किसी की मजाल (हिम्मत) न थी कि कोई आदमी उनसे यह कहता कि तुम तलवार म्यान में कर लो नबी सल्ल० का इन्तक़ाल हो गया है।

इसी दौरान यह दिल तोड़ने वाली घटना सुनकर अबू बक्र रज़ि० आ गए और सीधे हुजरए मुबारक में जाकर हज़रत आयशा रज़ि० की गोद से सर मुबारक लेकर ग़ौर से देखकर कहा, 'मेरे मां बाप आप (सल्ल०) पर क़ुर्बान, बेशक (निस्संदेह) आप (सल्ल०) ने मौत का ज़ायक़ा (स्वाद) चखा जिस को अल्लाह ने आप के लिए लिखा था और अब हरगिज़ (कदापि) आप को मौत न आएगी—'इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन' कहते हुए बाहर आए।

उमर रज़ि० लोगों से वही बातें कह रहे थे कि अबू बक्र रज़ि० ने उमर से कहा—चुप रहो, उमर (रज़ि०) ने कुछ भी ख़्याल न किया। अबू बक्र दोबारा कहना मुनासिब (उचित) न समझ कर अलहदा (अलग) खड़े हो कर लोगों से मुख़ातिब (सम्बोधित) हुए। जितने आदमी उमर रज़ि० के पास जमा थे वे सब उन्हें अकेला छोड़ कर अबू बक्र रज़ि० के पास चले आए। उस समय उन्हों ने अल्लाह की प्रशंसा के बाद यह ख़ुत्बा पढ़ा जिस का अनुवाद यह है—

"ऐ लोगो! जो आदमी मुहम्मद (सल्ल०) की इबादत करता हो तो वे इन्तक़ाल कर गए और

जो खुदा की इबादत करता हो तो वह ज़िंदा है।" फिर क़ुरआन की ये आयतें पढ़ीं जिस का अनुवाद यह है—

"मुहम्मद (सल्ल०) इसके सिवा कुछ नहीं कि बस एक रसूल है उनसे पहले और रसूल भी गुज़र चुके हैं, फिर क्या यदि वह मर जाएं या क़त्ल कर दिए जाएं तो तुम लोग उल्टे पांव फिर जाओगे? याद रखो! जो उल्टा फिरेगा वह अल्लाह का कुछ नुक़सान न करेगा। अलबत्ता जो अल्लाह का शुक्र अदा करने वाले हैं उन्हें वह उसका इनाम देगा।"

अबू बक्र रज़ि० की ज़बान से इन आयतों का निकलना था कि लोगों के ख्यालात (विचार और सोच) बदल गए और दफ़अतन (अचानक) हैरत का आलम (वातावरण) ऐसे दूर हो गया कि गोया (जैसे) इससे पहले वह नहीं था। इस परिवर्तन से यह मालूम होता था कि सहाबा इस आयत के उतरने का हाल ही न जानते थे। उमर रज़ि० कहते हैं कि पहले मैंने अबू बक्र रज़ि० के कहने पर मुतलक़ (बिल्कुल) ख्याल नहीं किया था लेकिन जिस वक्त उन्होंने ये आयतें पढ़ी तो मुझे मालूम हुआ कि ये आयतें भी नाज़िल हुई हैं। मारे डर के मेरे पांव थर्रा गए और ज़मीन पर गिर पड़ा और मैंने यह समझ लिया कि आपका इन्तक़ाल हो गया। और आप हज़रत आयशा रज़ि० के मकान में उसी जगह पर जहां इन्तक़ाल फ़रमाया था क़ब्र शरीफ़ बनाकर रखे गए और आपके बाद तमाम मुसलमानों के इत्तिफ़ाक़ (राए) से हज़रत अबू बक्र रज़ि० ख़लीफ़ा मुक़र्रर (नियुक्त) हुए जिनमें मुहाजिर व अंसार सब शामिल थे।

दिन व तारीख़ व सन वफ़ात (इन्तिक़ाल)

आपने ६३ साल की उम्र में १२ रबीउल अव्वल ११ हिजरी दोशम्बा (पीर) के दिन इन्तक़ाल फ़रमाया।

१ सूरतुल-फ़ातिहति ५

(मक्की) इस सूर: में अरबी के १२३ अक्षर, २५ शब्द
७ आयतें और १ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल-आलमीन (१) अर्रह्मानिर्रहीम (२) मालिकि यौमिद्दीन (३) इय्या-क नअबुदु व इय्या-क नस्तईन (४) इह्दिनस्-सिरातल्मुस्तक़ीम (५) सिरातल्लज़ी-न अनअम्-त अलैहिम् (६) ग़ैरिल्-मग़्ज़ूबि अलैहिम् वलज़्ज़ाल्लीन ★ (७)

१ सूर: फ़ातिह: ५

सूर: फ़ातिहा मक्की है और इस में सात आयतें हैं।

शुरू[1] खुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

सब तरह की तारीफ़ ख़ुदा ही के लिए है जो तमाम मख़्लूक़ात का परवरदिगार है।[2] (१) बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला, (२) इन्साफ़ के दिन का हाकिम,[3] (३) (ऐ परवरदिगार!) हम तेरी ही इबादत करते हैं, और तुझी से मदद मांगते हैं, (४) हम को सीधे रास्ते पर चला, (५) उन लोगों का रास्ता जिन पर तू अपना फ़ज़्ल व करम करता रहा, (६) न उनका जिन पर ग़ुस्सा होता रहा और न गुमराहों का। ★ (७)

तर्जुमा

---

१. चूंकि हुक्म है कि क़ुरआन मजीद ख़ुदा का नाम लेकर शुरू किया जाए, इस लिए हमें 'बिस्मिल्लाह' के तर्जुमे के शुरू में 'कहो' का लफ़्ज़ जो छिपा हुआ है, लिख देना चाहिए था, मगर फिर सब जगह तर्जुमे में यह लफ़्ज़ लिखना पड़ता और इस में वह मज़ा न आता जो 'बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम' में है, इस लिए यह लफ़्ज़ छिपा ही रहने दिया।

२. इस सूर: को ख़ुदा ने बंदों की ज़ुबान में नाज़िल फ़रमायी है। मक़्सूद यह बात का सिखाना है कि वे इस तरह ख़ुदा से दुआ किया करें। हदीस शरीफ़ में आया है कि सब से अफ़्ज़ल ज़िक्र 'ला इला-ह इल्लल्लाह' है और सब से अफ़्ज़ल दुआ 'अल-हम्दु लिल्लाह'।

३. इन्साफ़ के दिन से मुराद क़ियामत का दिन है, क्योंकि दूसरी जगह इर्शाद हुआ है, 'तुम को क्या मालूम है कि इन्साफ़ का दिन कौन-सा है, जिस दिन कोई किसी के कुछ काम न आएगा और उस दिन ख़ुदा का ही हुक्म होगा'—अगरचे और दिनों का मालिक भी ख़ुदा ही है, मगर उस दिन को ख़ास इस लिए किया कि उस दिन ख़ुदा के सिवा किसी का हुक्म न चलेगा।

पहला पारः

अलिफ़्-लाम्-मीम्

२ सूरतुल-ब-क़-रति ८७

(मदनी) इस सूरः में अरबी के २०००० अक्षर, ६०२१ शब्द, २८६ आयतें और ४० रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

अलिफ़् - लाम् - मीम् (१) ज़ालिकल्किताबु ला रै - ब फ़ीहि हुदल्लिल्मुत्तक़ीन (२) अल्लज़ी-न युअ्मिनू-न बिल्ग़ैबि व युक़ीमूनस्सला-त व मिम्मा र-ज़क़्ना-हुम् यून्फ़िक़ून (३) वल्लज़ी-न युअ्मिनू-न बिमा उन्ज़ि-ल इलै-क व मा उन्ज़ि-ल मिन् क़ब्लिक व बिल-आखिरति हुम् यूक़िनून (४)

मु. अ़ि भु ता ख. १

पहला पारः

अलिफ़्-लाम्-मीम्

२ सूरः बक़रः ८७

सूरः बक़रः मदनी है और इसमें दो सौ छियासी आयतें और चालीस रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

अलफ़ि-लाम-मीम०[1] (१) यह किताब (क़ुरआन मजीद) ∴इसमें∴कुछ शक नहीं∴(कि ख़ुदा का कलाम है, ख़ुदा से) डरने वालों की रहनुमा[2] है, (२) जो ग़ैब[3] पर ईमान लाते और आदाब के साथ नमाज़ पढ़ते और जो कुछ हमने उन को दे रखा है, उसमें से ख़र्च करते हैं। (३) और जो किताब (ऐ मुहम्मद !) तुम पर नाज़िल हुई और जो किताबें तुम से पहले (पैग़म्बरों पर) नाज़िल हुयीं, सब पर ईमान लाते और आख़िरत का यक़ीन रखते हैं।[4] (४)

---

१. और इसी तरह के और हर्फ़, जो क़ुरआन मजीद की बहुत-सी सूरतों के शुरू में आये और जिन को 'हुरूफ़े मुक़त्तआत' कहते हैं, अस्‌रारे इलाही (अल्लाह के रहस्यों) में से हैं, उन पर बिना कुछ कहे-सुने ईमान लाना चाहिए। प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन के कुछ मानी नहीं बयान फ़रमाये, सिर्फ़ यह फ़रमाया है कि 'अलिफ़' एक हर्फ़ है और 'लाम' एक हर्फ़ है और 'मीम' एक हर्फ़ है।

२. 'डरने वालों' का लफ़्ज़ इस बात की दलील लाता है कि जिन के दिलों में ख़ुदा का डर है, वही उस की हिदायत को मानते और वही इस किताब से फ़ायदा हासिल करते हैं और जो डर नहीं रखते, वे हिदायत की बातों की तरफ़ तवज्जोह ही नहीं देते और इसी लिए यह किताब उन के लिए रहनुमा नहीं हो सकती।

३. 'ग़ैब' उस चीज़ को कहते हैं, जो आंख से छिपी हुई हो और इस जगह वे चीज़ें मुराद हैं, जिन की ख़बर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दी है और जो नज़र से ओझल हैं—जैसे पुले सिरात, तराज़ू-ए-आमाल, बहिश्त और दोज़ख़ वग़ैरह।

४. आख़िरत से मुराद क़ियामत का दिन है, चूंकि वह दिन दुनिया के बाद आयेगा, इस लिए उस को आख़िरत कहते हैं और 'यौमुल आख़र' भी।

उलाइ-क अला हुदम्-मिर्रब्बिहिम् ق व उलाइ-क हुमुल्-मुफ़्लिहून (५) इन्नल्लज़ी-न क-फ़-रू सवाउन् अलैहिम् अ अन्ज़र-तहुम् अम् लम् तुन्ज़िर्हुम् ला युअ्मिनून (६) ख-त-मल्लाहु अला क़ुलूबिहिम् व अला सम्अिहिम् ط व अला अब्सारिहिम् ग़िशावतुंव् ز व लहुम् अज़ाबुन् अज़ीम ★ (७) व मिनन्नासि मंय्यक़ूलु आमन्ना बिल्लाहि व बिल्यौमिल्-आख़िरि व मा हुम् बि मुअ्मिनीन ▒ (८) युख़ादिऊनल्ला-ह वल्लज़ी-न आमनू ج व मा यख़्दऊ-न इल्ला अन्फ़ुसहुम् व मा यश्अुरून ط (९) फ़ी क़ुलूबिहिम् म-रज़ुन् ل फ़ ज़ा-द हुमुल्लाहु म-र-ज़न् ج व लहुम् अज़ाबुन् अलीमुम् ه बिमा कानू यक्ज़िबून (१०) व इज़ा क़ी-ल लहुम् ला तुफ़्सिदू फ़िल्अर्ज़ि ل क़ालू इन्नमा नह्नु मुस्लिहून (११) अला इन्नहुम् हुमुल् - मुफ़्सिदू-न व ला किल्ला यश्अुरून (१२) व इज़ा क़ी-ल लहुम् आमिनू कमा आमनन्नासु क़ालू अनुअ्मिनु कमा आमनस्सुफ़हाउ ط अला इन्नहुम् हुमुस्सुफ़हाउ व लाकिल्ला यअ्-लमून (१३) व इज़ा लक़ुल्लज़ी-न आमनू क़ालू आमन्ना صلے ج व इज़ा ख़लौ इला शयातीनिहिम् ل क़ालू इन्ना म-अकुम् ل इन्नमा नह्नु मुस्तह्ज़िऊन (१४) अल्लाहु यस्तह्ज़िउ बिहिम् व यमुद्दुहुम् फ़ी तुग़्यानिहिम् यअ्-महून (१५) उलाइकल्-लज़ीनश्-त-रवुज़्-ज़ला-ल-त बिल्हुदा ص फ़मा रबिहत् तिजारतुहुम् व मा कानू मुह्तदीन (१६) म-सलुहुम् क-म-सलिल्-लज़िस्तौक़-द नारन् ج फ़-लम्मा अज़ा-अत् मा हौलहू ज़-ह-बल्लाहु बिनूरिहिम् व त-र-कहुम् फ़ी ज़ुलुमातिल्ला युब्सिरून (१७) सुम्मुम् - बुक्मुन् - अुम्युन् फ़हुम् ला यर्जिऊन ل (१८) औ क-सय्यिबिम्-मिनस्समा-इ फ़ीहि ज़ुलुमातुंव-व रअ्दुंव-व बर्क़ुन् ج यज्अलू-न असाबिअहुम् फ़ी आज़ानिहिम् मिनस्सवाअिक़ि ह-ज़-रल्मौति ط वल्लाहु मुहीतुम्-बिल्काफ़िरीन (१९)

أولئك على هدى من ربهم وأولئك هم المفلحون ۝ إن الذين كفروا
سواء عليهم أأنذرتهم أم لم تنذرهم لا يؤمنون ۝ ختم الله على
قلوبهم وعلى سمعهم وعلى أبصارهم غشاوة ولهم عذاب عظيم
ومن الناس من يقول آمنا بالله وباليوم الآخر وما هم بمؤمنين ۝
يخادعون الله والذين آمنوا وما يخدعون إلا أنفسهم وما
يشعرون ۝ في قلوبهم مرض فزادهم الله مرضا ولهم عذاب
أليم بما كانوا يكذبون ۝ وإذا قيل لهم لا تفسدوا في الأرض
قالوا إنما نحن مصلحون ۝ ألا إنهم هم المفسدون ولكن لا
يشعرون ۝ وإذا قيل لهم آمنوا كما آمن الناس قالوا أنؤمن كما
آمن السفهاء ألا إنهم هم السفهاء ولكن لا يعلمون ۝ وإذا لقوا
الذين آمنوا قالوا آمنا وإذا خلوا إلى شياطينهم قالوا إنا معكم إنما نحن
مستهزئون ۝ الله يستهزئ بهم ويمدهم في طغيانهم يعمهون ۝
أولئك الذين اشتروا الضلالة بالهدى فما ربحت تجارتهم وما كانوا
مهتدين ۝ مثلهم كمثل الذي استوقد نارا فلما أضاءت ما حوله
ذهب الله بنورهم وتركهم في ظلمات لا يبصرون ۝ صم بكم عمي
فهم لا يرجعون ۝ أو كصيب من السماء فيه ظلمات ورعد وبرق
يجعلون أصابعهم في آذانهم من الصواعق حذر الموت والله محيط

★रु. १/१ आ ७ ▒ व. लाज़िम

यही लोग अपने परवरदिगार (की तरफ़) से हिदायत पर हैं और यही निजात पाने वाले हैं। (५) जो लोग काफ़िर हैं उन्हें तुम नसीहत करो या न करो, उन के लिए बराबर है,[१] वे ईमान नहीं लाने के। (६) ख़ुदा ने उन के दिलों और कानों पर मुहर लगा रखी है और उन की आंखों पर परदा (पड़ा हुआ) है।[२] और उन के लिए बड़ा अज़ाब तैयार है। (७) ★

और कुछ लोग ऐसे हैं जो कहते हैं कि हम ख़ुदा पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं, हालांकि वे ईमान नहीं रखते ⁂ (८) ये (अपने घमंड में) ख़ुदा को और मोमिन को चकमा देते हैं, मगर (हक़ीक़त में) अपने सिवा किसी को चकमा नहीं देते और इस से बे-ख़बर हैं।[३] (९) इन के दिलों में (कुफ़्र का) रोग था। ख़ुदा ने उन का रोग और ज़्यादा कर दिया और उन के झूठ बोलने की वजह से उन को दुख देने वाला अज़ाब होगा। (१०) और जब उन से कहा जाता है कि ज़मीन में फ़साद न डालो, तो कहते हैं कि हम तो इस्लाह (सुधार) करने वाले हैं। (११) देखो, ये बिला शुब्हा फ़साद पैदा करने वाले हैं, लेकिन ख़बर नहीं रखते।[४] (१२) और जब उन से कहा जाता है कि जिस तरह और लोग ईमान ले आए, तुम भी ईमान ले आओ, तो कहते हैं, भला, जिस तरह मूर्ख ईमान ले आए हैं, उसी तरह हम भी ईमान ले आएं? सुन लो कि यही मूर्ख हैं, लेकिन नहीं जानते। (१३) और ये लोग जब मोमिनों से मिलते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान ले आए हैं और जब अपने शैतानों में जाते हैं तो (उन से) कहते हैं कि हम तुम्हारे साथ हैं और (मुहम्मद सल्ल० के मानने वालों से) तो हम हंसी किया करते हैं।[५] (१४) इन (मुनाफ़िक़ों) से ख़ुदा हंसी करता है और उन्हें मोहलत दिए जाता है कि शरारत व सरकशी में पड़े बहक रहे हैं।[६] (१५) ये वह लोग हैं जिन्होंने हिदायत छोड़ कर गुमराही ख़रीदी, तो न तो उन की तिजारत ही ने कुछ नफ़ा दिया और न वे हिदायतयाब (हिदायत पाए हुए) ही हुए। (१६) उन की मिसाल उस शख़्स की-सी है, जिस ने (अंधेरी रात में) आग जलायी। जब आग ने उसके चारों तरफ़ की चीज़ें रोशन कीं, तो ख़ुदा ने उन लोगों की रोशनी ख़त्म कर दी और उन को अंधेरों में छोड़ दिया कि कुछ नहीं देखते।[७] (१७) (ये) बहरे हैं, गूंगे हैं, अंधे हैं कि (किसी तरह सीधे रास्ते की तरफ़) लौट ही नहीं सकते। (१८) या उन की मिसाल मेंह (वर्षा) की-सी है कि आसमान से (बरस रहा हो और) उस में अंधेरे पर अंधेरा (छा रहा) हो और (बादल) गरज (रहा) हो और बिजली (कड़क रही) हो तो ये कड़क से (डर कर) मौत के डर से कानों में उंगलियां दे लें और ख़ुदा काफ़िरों को

---

१. इन्ज़ार के मानी डर की ख़बर सुनाने, ख़ौफ़ दिलाने, वाज़ व नसीहत और हिदायत करने, राह बताने और मुतनब्बह व आगाह करने के हैं। पहले मानी तो मशहूर हैं, वाज़ व नसीहत और हिदायत के मानी इस आयत से ज़ाहिर हैं। 'इन्नमा अन-त मुंज़िरुं व-व लि कुल्लि क़ौमिन हाद०' यानी ऐ पैग़म्बर! तुम तो सिर्फ़ हिदायत करने वाले हो और हर क़ौम में हिदायत करने वाले हो गुज़रे हैं।' इस का साफ़ मतलब यह है कि जिस तरह पहले हादी व रहनुमा आते रहे हैं और वे हर क़ौम में आते रहे हैं, इसी तरह तुम भी हिदायत करने वाले और रास्ता दिखाने वाले हो। इस जगह 'इन्ज़ार' से वाज़ व नसीहत के मानी ही मुनासिब हैं और वही तर्जुमे में अख़्तियार किया गया है।

२. दुनिया में इस क़िस्म के लोग भी मौजूद हैं जिन के दिल नसीहत का असर नहीं लेते और ईमानी नूर से रोशन नहीं होते, ऐसे लोग शक़ी-ए-अज़ली (हमेशा के बद-बख़्त) कहलाते हैं। ऐसों ही के हक़ में यह इर्शाद हुआ है कि उन को नसीहत करना या न करना बराबर है। दिलों और कानों पर मुहर लगने और आंखों पर परदा पड़ने से

(शेष पृष्ठ ६७५ पर)

★रु० १/१ आ ७ ⁂ व० लाज़िम

यकादुल्बर्क़ु यख़्तफ़ु अब्सारहुम् ⁊ कुल्लमा अज़ा-अ लहुम् मशौ फ़ीहि व इज़ा अज़्-ल-म अलैहिम् क़ामू ⁊ व लौ शा-अल्लाहु ल ज़-ह-ब बि सम्अिहिम् व अब्सारिहिम् ⁊ इन्नल्ला-ह अला कुल्लि शैइन् क़दीर ★ (२०)

या अय्युहन्नासुअ्-बुदू रब्बकुमुल्लज़ी ख़-ल-क़कुम् वल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिकुम् लअ़ल्लकुम् तत्तक़ून ⁊ (२१) अल्लज़ी ज-अ-ल लकुमुलअर्-ज़ फ़िराशंव्वस्समा-अ बिना ⁊ अंव्-व अन्ज़-ल मिनस्समा-इ मा-अन् फ़-अख़्-र-ज बिही मिनस्-स-मराति रिज़्-क़ल्लकुम ⁊ फ़ला तज्-अलू लिल्लाहि अन्दादंव्व अन्तुम् तअ्-लमून (२२) व इन कुन्तुम् फ़ी रैबिम्मिम्मा नज़्ज़ल्ना अला अब्दिना फ़अ्तू बिसूरतिम्-मिम्-मिस्लिही ⁊ वद्अू शुहदा - अ - कुम् मिन्दूनिल्लाहि इन कुन्तुम् सादिक़ीन (२३) फ़इल्लम् तफ़्अलू व लन् तफ़्अलू फ़त्तक़ुन्नारल्लती वक़ूदुहन्नासु वल्हिजारतु ⁊ उअिद्दत् लिल्काफ़िरीन (२४) व बश्शिरिल्लज़ी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति अन-न लहुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह़्तिहल्-अन्हारु ⁊ कुल्लमा रुज़िक़ू मिन्हा मिन् स-म-रतिर्रिज़्क़न् ⁊ क़ालू हाज़ल्लज़ी रुज़िक़्ना मिन् क़ब्लु ⁊ व उतू बिही मुतशाबिहन् ⁊ व लहुम् फ़ीहा अज़्वाजुम् - मुतह्हरतुंव-व हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (२५) इन्नल्ला-ह ला यस्तह़्यी अंय्यज़्रि-ब म-स-लम्मा बअूज़-तन् फ़मा फ़ौक़हा ⁊ फ़-अम्मल्लज़ी-न आमनू फ़ यअ्-लमू-न अन्नहुल्हक़्क़ु मिर्रब्बिहिम् व अम्मल्लज़ी-न क-फ़रू फ़ यक़ूलू-न माज़ा अरादल्लाहु बि हाज़ा म-स-लन् ⁂ युज़िल्लु बिही कसीरंव-व यह्दी बिही कसीरन् ⁊ व मा युज़िल्लु बिही इल्लल् - फ़ासिक़ीन ⁊ (२६) अल्लज़ी-न यन्क़ुज़ू-न अह्दल्लाहि मिम्बअ्दि मीसाक़िही ⁊ व यक़्तअू-न मा अ - म - रल्लाहु बिही अंय्यू-स-ल व युफ़्सिदू-न फ़िल्अर्ज़ि ⁊ उलाइ-क हुमुल्ख़ासिरून (२७)

البقرة ۵ الٓمّٓ

بِالْكٰفِرِيْنَ ۝ يَكَادُ الْبَرْقُ يَخْطَفُ اَبْصَارَهُمْ ؕ كُلَّمَآ اَضَآءَ لَهُمْ مَّشَوْا فِيْهِ ۙ وَ
اِذَآ اَظْلَمَ عَلَيْهِمْ قَامُوْا ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَذَهَبَ بِسَمْعِهِمْ وَاَبْصَارِهِمْ ؕ اِنَّ
اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ ۝ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اعْبُدُوْا رَبَّكُمُ الَّذِیْ خَلَقَكُمْ
وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ۝ الَّذِیْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ فِرَاشًا
وَّالسَّمَآءَ بِنَآءً ۪ وَّاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجَ بِهٖ مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزْقًا
لَّكُمْ ۚ فَلَا تَجْعَلُوْا لِلّٰهِ اَنْدَادًا وَّاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ وَاِنْ كُنْتُمْ فِیْ رَیْبٍ مِّمَّا
نَزَّلْنَا عَلٰى عَبْدِنَا فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّنْ مِّثْلِهٖ ۪ وَادْعُوْا شُهَدَآءَكُمْ مِّنْ
دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا وَلَنْ تَفْعَلُوْا فَاتَّقُوا
النَّارَ الَّتِیْ وَقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ ۖۚ اُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِيْنَ ۝ وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ كُلَّمَا
رُزِقُوْا مِنْهَا مِنْ ثَمَرَةٍ رِّزْقًا ۙ قَالُوْا هٰذَا الَّذِیْ رُزِقْنَا مِنْ قَبْلُ ۙ وَاُتُوْا
بِهٖ مُتَشَابِهًا ؕ وَلَهُمْ فِيْهَاۤ اَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ ۙۗ وَّهُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝ اِنَّ اللّٰهَ
لَا يَسْتَحْیٖۤ اَنْ يَّضْرِبَ مَثَلًا مَّا بَعُوْضَةً فَمَا فَوْقَهَا ؕ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
فَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۚ وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَيَقُوْلُوْنَ مَاذَاۤ اَرَادَ
اللّٰهُ بِهٰذَا مَثَلًا ۘ يُضِلُّ بِهٖ كَثِيْرًا ۙ وَّيَهْدِیْ بِهٖ كَثِيْرًا ؕ وَمَا يُضِلُّ بِهٖۤ اِلَّا
الْفٰسِقِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْ بَعْدِ مِيْثَاقِهٖ ۪ وَيَقْطَعُوْنَ مَاۤ
اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖۤ اَنْ يُّوْصَلَ وَيُفْسِدُوْنَ فِی الْاَرْضِ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝

منزل

★रु. २/२ आ १३ ⁂ व. लाज़िम

(हर तरफ़ से) घेरे हुए है ।[1] (१६) क़रीब है कि बिजली (की चमक) उन की आंखों (की रोशनी) को उचक ले जाए। जब बिजली (चमकती और) उन पर रोशनी डालती है तो उस में चल पड़ते हैं और जब अंधेरा हो जाता है तो खड़े के खड़े रह जाते हैं और अगर ख़ुदा चाहता तो उनके कानों (के सुनने की ताक़त) और आंखों (के देखने की ताक़त, दोनों) को बर्बाद कर देता। बिला शुब्हा ख़ुदा हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है ।(२०) ★

लोगो ! अपने परवरदिगार की इबादत करो, जिस ने तुमको और तुमसे पहले लोगों को पैदा किया, ताकि तुम (उस के अज़ाब से) बचो। (२१) जिस ने तुम्हारे लिए ज़मीन को बिछौना और आसमान को छत बनाया और आसमान से मेंह बरसा कर तुम्हारे खाने के लिए क़िस्म-क़िस्म के मेवे-पैदा किए। पस किसी को ख़ुदा का हमसर (बराबर का) न बनाओ और तुम जानते तो हो। (२२) और अगर तुमको इस (किताब) में, जो उस ने अपने बंदे (मुहम्मद अरबी सल्ल०) पर नाज़िल फ़रमायी है, कुछ शक हो तो इसी तरह की एक सूर: तुम भी बना लाओ और ख़ुदा के सिवा जो तुम्हारे मददगार हों, उन को भी बुला लो अगर तुम सच्चे हो।[2] (२३) लेकिन अगर (ऐसा) न कर सको और हरगिज़ नहीं कर सकोगे तो उस आग से डरो, जिस का ईंधन आदमी और पत्थर होंगे (और जो) काफ़िरों के लिए तैयार की गयी है। (२४) और जो लोग ईमान ले आए और नेक अमल करते रहे, उन को ख़ुशख़बरी सुना दो कि उन के लिए (नेमत के) बाग़ हैं, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, जब उन्हें उन में से किसी क़िस्म का मेवा खाने को दिया जाएगा तो कहेंगे यह तो वही है जो हम को पहले दिया गया था और उन को एक दूसरे से शक्ल में मिलते-जुलते मेवे दिए जाएंगे और वहां उन के लिए पाक बीवियां होंगी और वे बहिश्तों में हमेशा रहेंगे। (२५) ख़ुदा इस बात से नहीं शर्माता कि मच्छर या उस से बढ़ कर किसी चीज़ (जैसे मक्खी-मकड़ी वग़ैरह) की मिसाल बयान फ़रमाए। जो मोमिन हैं, वे यक़ीन करते हैं कि वह उन के परवरदिगार की तरफ़ से सच है और जो काफ़िर हैं, वे कहते हैं कि इस मिसाल से ख़ुदा चाहता क्या है ⁘ इस से (ख़ुदा) बहुतों को गुमराह करता है और बहुतों को हिदायत बख़्शता है और गुमराह भी करता है तो नाफ़रमानों ही को।[1] (२६) जो ख़ुदा के इक़रार को मज़बूत करने के बाद तोड़ देते हैं और जिस चीज़ (यानी रिश्तेदारी) के जोड़े रखने का ख़ुदा ने हुक्म दिया है, उसको तोड़ डालते हैं और ज़मीन में ख़राबी

---

१. यह मुनाफ़िक़ों के हाल की दूसरी मिसाल है। इस में दीने इस्लाम को मेंह (वर्षा) से तश्बीह (उपमा) दी गयी है। जिस तरह मेंह में अंधेरा और बिजली और गरज होती है, इसी तरह इस्लाम के शुरू में, भले ही कुछ परेशानियां और कठिनाइयां भी हों, लेकिन बाद में वह सरासर रहमत होता है। मुनाफ़िक़ों को इस्लाम से फ़ायदे पहुंचते तो उस के क़ायल हो जाते और जब कोई ऐसा हुक्म नाज़िल होता, जिसे वे सख़्त समझते तो सोचते कि बला नाज़िल हुई और यों डर जाते जैसे बिजली से डरा करते हैं। कड़क से डर कर कानों में उंगलियां दे लेने का मतलब यह है कि हुक्म की सख़्ती से घबरा कर उस पर अमल करने से हिचकिचाते और ऐसी तद्बीरें करने लगते कि मुश्किल में न फंस जाएं और उस से बच जाएं। कुछ लोगों ने कहा है कि क़ुरआन मजीद में जो कुफ़्र व शिर्क और उस पर डरावे और सज़ा का बयान और ख़ुदा के एक होने की रोशन दलीलें हैं, जिन की मिसाल अंधेरों और गरज और बिजली की है तो मुनाफ़िक़ों को डर पैदा होता है कि उन को सुन कर लोग कहीं ईमान लाने पर तैयार न हो जाएं और अपना मज़हब न छोड़ बैठें जो उनके नज़दीक मौत जैसा था और इसी वजह से वे अपने कानों में उंगलियां दे लेते कि क़ुरआन को सुन ही न सकें।

(शेष पृष्ठ ६७५ पर)

★रु. २/२ आ १३ ⁘ व. लाज़िम

के-फ़ तक्फ़ुरू-न बिल्लाहि व कुन्तुम् अम्वातन् फ़ अह़्याकुम् सुम्-म युमीतुकुम् सुम्-म युह़्यीकुम् सुम्-म इलैहि तुर्जअून (२८) हुवल्लज़ी ख़-ल-क़ लकुम् मा फ़िल्अर्ज़ि जमीअन् सुम्मस्तवा इलस्समा-इ फ़-सव्वाहुन्-न सब्-अ समावातिन् व हु-व बि कुल्लि शै-इन् अ़लीम★(२९)व इज़ क़ा-ल रब्बु-क लिल्मलाइकति इन्नी जाअ़िलुन् फ़िल्अर्ज़ि ख़ली-फ़-तन् क़ालू अ तज्अ़लु फ़ीहा मंय्युफ़्सिदु फ़ीहा व यस्फ़िकुद्दिमा-अ व नह़्नु नुसब्बिहु बि ह़म्दि-क व नुक़द्दिसु ल-क क़ा-ल इन्नी अअ़्-लमु मा ला तअ़्-लमून (३०) व अ़ल-ल-म आदमल्अस्मा-अ कुल्लहा सुम-म अ़-र-ज़हुम् अ़लल्मला-इकति फ़-क़ा-ल अम्बिऊनी बि अस्मा-इ हा-उला-इ इन कुन्तुम् सादिक़ीन (३१) क़ालू सुब्हान-क ला इल्-म लना इल्ला मा अ़ल्लम्तना इन्न-क अन्तल्-अ़लीमुल्-ह़कीम (३२) क़ा-ल या आदमु अम्बिअ्हुम् बिअस्मा-इहिम् फ़ लम्मा अम्ब-अहुम् बिअस्मा-इहिम् क़ा-ल अ-लम् अक़ुल्लकुम् इन्नी अअ़्-लमु ग़ैबस्समावाति वल्अर्ज़ि व अअ़्-लमु मा तुब्दू-न व मा कुन्तुम् तक्तुमून (३३) व इज़ क़ुल्ना लिल्-मला-इकतिस्जुदू लि आद-म फ़-स-ज-दू इल्ला इब्लीस, अबा वस्तक्-ब-र, व का-न मिनल्काफ़िरीन (३४) व क़ुल्ना या आदमुस्कुन् अन-त व ज़ौजुकल्जन्न-त व कुला मिन्हा र-ग़-दन् हैसु शिअ्तुमा व ला तक़रबा हाज़िहिश्श-ज-र-त फ़ तकूना मिनज़्ज़ालिमीन (३५) फ़ अज़ल्लहुमश्-शैतानु अ़न्हा फ़-अख़्-र-ज-हुमा मिम्मा काना फ़ीहि व क़ुल्नह्बितू बअ़्-ज़ुकुम् लि बअ़्ज़िन् अ़दुव्वुन् व लकुम् फ़िल्अर्ज़ि मुस्तक़र्रुंव-व मता-उ़न् इला ह़ीन (३६) फ़-त-लक़्क़ा आदमु मिर्रब्बिही कलिमातिन् फ़ ता-ब अ़लैहि इन्नहू हुवत्तव्वाबुर्रहीम् (३७) क़ुल्नह्बितू मिन्हा जमीअ़न् फ़इम्मा यअ्तियन्नकुम् मिन्नी हुदन् फ़-मन् तबि-अ हुदा-य फ़ ला ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम् व ला हुम् यह़्ज़नून (३८) वल्लज़ी-न क-फ़रू व कज़्ज़बू बि आयातिना उला-इक अस्ह़ाबुन्नारि हुम् फ़ीहा ख़ालिदून★(३९)

كَيْفَ تَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ وَكُنْتُمْ اَمْوَاتًا فَاَحْيَاكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ثُمَّ اِلَيْهِ
تُرْجَعُوْنَ ۝ هُوَ الَّذِيْ خَلَقَ لَكُمْ مَّا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا ثُمَّ اسْتَوٰٓى اِلَى السَّمَآءِ
فَسَوّٰىهُنَّ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝ وَاِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّيْ
جَاعِلٌ فِي الْاَرْضِ خَلِيْفَةً قَالُوْٓا اَتَجْعَلُ فِيْهَا مَنْ يُّفْسِدُ فِيْهَا وَيَسْفِكُ
الدِّمَآءَ وَنَحْنُ نُسَبِّحُ بِحَمْدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَ قَالَ اِنِّيْٓ اَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ وَ
عَلَّمَ اٰدَمَ الْاَسْمَآءَ كُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمْ عَلَى الْمَلٰٓئِكَةِ فَقَالَ اَنْۢبِـُٔوْنِيْ بِاَسْمَآءِ
هٰٓؤُلَآءِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ قَالُوْا سُبْحٰنَكَ لَا عِلْمَ لَنَآ اِلَّا مَا عَلَّمْتَنَا اِنَّكَ
اَنْتَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ۝ قَالَ يٰٓاٰدَمُ اَنْۢبِئْهُمْ بِاَسْمَآئِهِمْ فَلَمَّآ اَنْۢبَاَهُمْ بِاَسْمَآئِهِمْ
قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ اِنِّيْٓ اَعْلَمُ غَيْبَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ
وَمَا كُنْتُمْ تَكْتُمُوْنَ ۝ وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ
اَبٰى وَاسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ۝ وَقُلْنَا يٰٓاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ
وَكُلَا مِنْهَا رَغَدًا حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝
فَاَزَلَّهُمَا الشَّيْطٰنُ عَنْهَا فَاَخْرَجَهُمَا مِمَّا كَانَا فِيْهِ وَقُلْنَا اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ
عَدُوٌّ وَلَكُمْ فِي الْاَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَّمَتَاعٌ اِلٰى حِيْنٍ ۝ فَتَلَقّٰٓى اٰدَمُ مِنْ رَّبِّهٖ كَلِمٰتٍ
فَتَابَ عَلَيْهِ اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ۝ قُلْنَا اهْبِطُوْا مِنْهَا جَمِيْعًا فَاِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ
مِّنِّيْ هُدًى فَمَنْ تَبِعَ هُدَايَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا
وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝ يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اذْكُرُوْا

★रु. ३/३ आ ९ ★रु. ४/४ आ १०

करते हैं, यही लोग नुक़्सान उठाने वाले हैं। (२७) (काफ़िरो!) तुम ख़ुदा के कैसे इन्कारी हो सकते हो, जिस हाल में कि तुम बे-जान थे, तो तुमको जान बख़्शी, फिर वही तुमको मारता है, फिर वही तुमको ज़िंदा करेगा, फिर उसी की तरफ़ लौट कर जाओगे। (२८) वही तो है, जिसने सब चीज़ें, जो ज़मीन में हैं, तुम्हारे लिए पैदा कीं, फिर आसमानों की तरफ़ मुतवज्जह हुआ, तो उनको ठीक सात आसमान बना दिया और वह हर चीज़ से ख़बरदार है। (२९) ★

और (वह वक़्त याद करने के क़ाबिल है) जब तुम्हारे परवरदिगार ने फ़रिश्तों से फ़रमाया कि मैं ज़मीन में (अपना) नायब बनाने वाला हूं। उन्होंने कहा, क्या तू उसमें ऐसे शख़्स को नायब बनाना चाहता है, जो ख़राबियां करे और कुश्त व ख़ून करता फिरे और हम तेरी तारीफ़ के साथ तस्बीह व तक़्दीस करते रहते हैं। (ख़ुदा ने) फ़रमाया, मैं वह बातें जानता हूं जो तुम नहीं जानते। (३०) और उसने आदम को सब (चीज़ों के) नाम सिखाये, फिर उनको फ़रिश्तों के सामने किया और फ़रमाया कि अगर तुम सच्चे हो तो मुझे इनके नाम बताओ। (३१) उन्होंने कहा, तू पाक है, जितना इल्म तूने हमें बख़्शा है, उसके सिवा हमें कुछ मालूम नहीं। बेशक तू दाना (सर्व ज्ञाता) (और) हिक्मत वाला है। (३२) (तब) ख़ुदा ने (आदम को) हुक्म दिया कि आदम! तुम इन को उन (चीज़ों) के नाम बताओ। जब उन्होंने उनको उनके नाम बताये तो (फ़रिश्तों से) फ़रमाया, क्यों, मैंने तुमसे नहीं कहा था कि मैं आसमानों और ज़मीन की (सब) पोशीदा बातें जानता हूं और जो तुम ज़ाहिर करते हो और जो पोशीदा करते हो (सब) मुझको मालूम है। (३३) और जब हमने फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि आदम के आगे सज्दा करो[1], तो वे सब सज्दे में गिर पड़े, मगर शैतान ने इंकार किया और ग़ुरूर (घमण्ड) में आकर काफ़िर बन गया।[2] (३४) और हमने कहा कि ऐ आदम! तुम और तुम्हारी बीवी जन्नत में रहो और जहां से चाहो, बे-रोक-टोक खाओ (पियो), लेकिन उस पेड़ के पास न जाना, नहीं तो ज़ालिमों में (दाख़िल) हो जाओगे। (३५) फिर शैतान ने दोनों को वहां से फिसला दिया और जिस (ऐश व निशात) में थे, उससे उनको निकलवा दिया। तब हमने हुक्म दिया कि (जन्नत से) चले जाओ, तुम एक-दूसरे के दुश्मन हो और तुम्हारे लिए ज़मीन में एक वक़्त तक ठिकाना और मआश (रोज़ी) मुक़र्रर कर दिया गया है। (३६) फिर आदम ने अपने परवरदिगार से कुछ कलिमात (बोल) सीखे (और माफ़ी मांगी) तो उसने उनका क़ुसूर माफ़ कर दिया। बेशक वह माफ़ करने वाला (और) रहम वाला है। (३७) हमने फ़रमाया कि तुम सब यहां से उतर जाओ। जब तुम्हारे पास मेरी तरफ़ से हिदायत पहुंचे तो (उसकी पैरवी करना कि) जिन्होंने मेरी हिदायत की पैरवी की, उनको न कुछ ख़ौफ़ होगा और न वे ग़मनाक होंगे। (३८) और जिन्होंने (उसको) क़ुबूल न किया और हमारी आयतों को झुठलाया, वे दोज़ख़ में जाने वाले हैं (और) वे हमेशा उसमें रहेंगे। (३९) ★

---

१. सज्दा दो तरह का होता है, एक इबादत का, एक ताज़ीम (आदर) का, इबादत निहायत ज़िल्लत को कहते हैं और अल्लाह तआला नहीं चाहता कि इन्सान उस के सिवा किसी और के आगे ज़िल्लत अख़्तियार करे, इस से इंसान के शान की बुलंदी ज़ाहिर होती है कि ख़ुदा ने उस का अपने सिवा किसी और की इबादत करना जायज़ नहीं रखा। जो सज्दा ख़ुदा ने फ़रिश्तों से आदम को कराना चाहा था, वह ताज़ीम और इक्राम और एहतिराम का सज्दा था, जैसा यूसुफ़ के भाइयों ने यूसुफ़ को किया था। ऐसा सज्दा पहले मज़हबों में जायज़ था। दीने इस्लाम में ग़ैर-मशरूअ क़रार दिया गया यानी शरीअत ने नाजायज़ क़रार दिया। अब ऐसा सज्दा जायज़ नहीं।

(शेष पृष्ठ ६७६ पर)

★रु. ३/३ आ ९ ★रु. ४/४ आ-१०

या बनी इस्रा-ईलज्कुरू निअ्-मतियल्लती अन्अम्तु अलैकुम् व औफ़ू बि अह्दी ऊफ़ि बि अह्दिकुम् व इय्या-य फ़र्हबून (४०) व आमिनू बिमा अन्ज़ल्तु मुसद्दिक़ल्लिमा म-अकुम् व ला तकूनू अव्व-ल काफ़िरिम् - बिही व ला तश्तरू बि आयाती स-म-नन् क़लीलन् व इय्या-य फ़त्तक़ून (४१) व ला तल्बिसुल् हक़्-क़ बिल्बातिलि व तक्तुमुल्हक़्-क़ व अन्तुम् तअ्-लमून (४२) व अक़ीमुस्सला-त व आतुज़्ज़का-त वर्कअू मअर्राकिअीन (४३) अ तअ्मुरूनन्ना-स बिल्बिर्रि व तन्सौ-न अन्फ़ुसकुम् व अन्तुम् तत्लूनल्-किताब अ-फ़ला तअ्-क़िलून (४४) वस्तअीनू बिस्सब्रि वस्सलाति व इन्नहा ल कबीरतुन् इल्ला अलल्खाशिअीन (४५) अल्लज़ी-न यज़ुन्नू-न अन्नहुम् मुलाक़ू रब्बिहिम् व अन्नहुम् इलैहि राजिअून ★●(४६) या बनी इस्रा-ईलज्कुरू निअ्-मतियल्लती अन्अम्तु अलैकुम् व अन्नी फ़ज़्ज़ल्तुकुम् अ-लल्आलमीन (४७) वत्तक़ू यौमल्ला तज्ज़ी नफ़्सुन् अन् नफ़्सिन् शैअंव-व ला युक़्बलु मिन्हा शफ़ाअतुंव-व ला युअ्ख़ज़ु मिन्हा अद्लुंव-व ला हुम् युन्सरून (४८) व इज़ नज्जैनाकुम्

نعمتي التي انعمت عليكم واوفوا بعهدي اوف بعهدكم واياي فارهبون
وامنوا بما انزلت مصدقا لما معكم ولا تكونوا اول كافر به ولا تشتروا بايتي
ثمنا قليلا واياي فاتقون ولا تلبسوا الحق بالباطل وتكتموا الحق وانتم
تعلمون واقيموا الصلوة واتوا الزكوة واركعوا مع الركعين اتامرون الناس
بالبر وتنسون انفسكم وانتم تتلون الكتب افلا تعقلون واستعينوا بالصبر
والصلوة وانها لكبيرة الا على الخشعين الذين يظنون انهم ملقوا ربهم
وانهم اليه رجعون يبني اسراءيل اذكروا نعمتي التي انعمت عليكم
واني فضلتكم على العلمين واتقوا يوما لا تجزي نفس عن نفس شيا
ولا يقبل منها شفاعة ولا يؤخذ منها عدل ولا هم ينصرون واذ
نجينكم من ال فرعون يسومونكم سوء العذاب يذبحون ابناءكم و
يستحيون نساءكم وفي ذلكم بلاء من ربكم عظيم واذ فرقنا بكم
البحر فانجينكم واغرقنا ال فرعون وانتم تنظرون واذ وعدنا
موسى اربعين ليلة ثم اتخذتم العجل من بعده وانتم ظلمون ثم
عفونا عنكم من بعد ذلك لعلكم تشكرون واذ اتينا موسى الكتب
والفرقان لعلكم تهتدون واذ قال موسى لقومه يقوم انكم ظلمتم
انفسكم باتخاذكم العجل فتوبوا الى بارىكم فاقتلوا انفسكم ذلكم
خير لكم عند بارىكم فتاب عليكم انه هو التواب الرحيم واذ قلتم

मिन् आलि फ़िर्औ-न यसूमूनकुम् सू-अल्अज़ाबि युज़ब्बिहू-न अब्ना-अकुम् व यस्तह्यू-न निसा-अकुम् व फ़ी ज़ालिकुम् बला-उम्-मिर्रब्बिकुम् अज़ीम (४९) व इज़ फ़-रक़्ना बि कुमुल्बह्-र फ़ अन्-जैनाकुम् व अग़्रक़्ना आ-ल फ़िर्औ-न व अन्तुम् तन्ज़ुरून (५०) व इज् वाअद्ना मूसा अर्बअी-न लैलतन् सुम्मत्तख़ज़्तुमुल्-अिज्-ल मिम्बअ्दिही व अन्तुम् ज़ालिमून (५१) सुम्-म अफ़ौना अन्कुम् मिम्बअ्दि ज़ालि-क लअल्लकुम् तश्कुरून (५२) व इज़ आतैना मूसल्किता-ब वल्फ़ुर्क़ा-न लअल्लकुम् तह्तदून (५३) व इज़ क़ा-ल मूसा लि क़ौमिही या क़ौमि इन्नकुम् ज़-लम्तुम् अन्फ़ुसकुम् बित्तिख़ाज़िकुमुल्-अिज्-ल फ़ तूबू इला बारिइकुम् फ़क़्तुलू अन्फ़ुसकुम् ज़ालिकुम् ख़ैरुल्लकुम् अिन्-द बारिइकुम् फ़-ता-ब अलैकुम् इन्नहू हुवत्तव्वाबुर्रहीम (५४)

★रु. ५/५ आ ७ ●रुब्अ १/४

ऐ आले याक़ूब (बनी इस्राईल !) मेरे वे एहसान याद करो, जो मैंने तुम पर किये थे और उस इक़रार को पूरा करो जो तुम ने मुझ से किया था। मैं उस इक़रार को पूरा करूंगा, जो मैंने तुमसे किया था और मुझी से डरते रहो। (४०) और जो किताब मैंने (अपने रसूल मुहम्मद सल्ल० पर) नाज़िल की है, जो तुम्हारी किताब (तौरात) को सच्चा कहती है, उस पर ईमान लाओ और उसके पहले-पहले इन्कारी न बनो और मेरी आयतों में (घटा-बढ़ा कर के) उन के बदले थोड़ी-सी क़ीमत (यानी दुनिया का फ़ायदा) न हासिल करो और मुझी से ख़ौफ़ रखो। (४१) और हक़ को बातिल के साथ न मिलाओ और सच्ची बात को जान-बूझ कर न छिपाओ। (४२) और नमाज़ पढ़ा करो और ज़कात दिया करो और (ख़ुदा के आगे) झुकने वालों के साथ झुका करो। (४३) (यह) क्या (अक़्ल की बात है कि) तुम लोगों को नेकी करने को कहते हो और अपने आपको भुलाये देते हो, हालांकि तुम (ख़ुदा की) किताब भी पढ़ते हो, क्या तुम समझते नहीं ? (४४) और (रंज व तक्लीफ़ में) सब्र और नमाज़ से मदद लिया करो और बेशक नमाज़ गरां (बोझ) है, मगर उन लोगों पर (गरां नहीं), जो इज्ज़ करने वाले (यानी अल्लाह का डर रखने वाले) हैं। (४५) जो यक़ीन किये हुए हैं कि वे अपने परवरदिगार से मिलने वाले हैं और उसकी तरफ़ लौट कर जाने वाले हैं। ★ ● (४६) ऐ याक़ूब की औलाद ! मेरे वे एहसान याद करो, जो मैंने तुम पर किये थे और यह कि मैंने तुमको जहान (दुनिया) के लोगों पर फ़ज़ीलत दी थी। (४७) और उस दिन से डरो, जब कोई किसी के कुछ भी काम न आये और न किसी की सिफ़ारिश मंज़ूर की जाए और न किसी से किसी तरह का बदला क़ुबूल किया जाए और न लोग (किसी और तरह) मदद हासिल कर सकें। (४८) और (हमारे उन एहसानात को याद करो,) जब हमने तुम को फ़िऔंन[1] की क़ौम से मुख़्लिसी बख़्शी। वे (लोग) तुमको बड़ा दुख देते थे। तुम्हारे बेटों को तो क़त्ल कर डालते थे और बेटियों को ज़िंदा रहने देते थे, और इसमें तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से बड़ी (सख़्त) आज़माइश थी। (४९) और जब हमने तुम्हारे लिए दरिया को फाड़ दिया, तो तुमको निजात दी और फ़िऔंन की क़ौम को डुबा दिया और तुम देख ही तो रहे थे। (५०) और जब हमने मूसा से चालीस रात का वायदा किया, तो तुमने उनके पीछे बछड़े को (माबूद) मुक़र्रर कर लिया और तुम ज़ुल्म कर रहे थे। (५१) फिर उसके बाद हमने तुमको माफ़ कर दिया, ताकि तुम शुक्र करो। (५२) और जब हमने मूसा को किताब और मोजज़े इनायत किये, ताकि तुम हिदायत हासिल करो। (५३) और जब मूसा ने अपनी क़ौम के लोगों से कहा कि भाइयो, तुमने बछड़े को (माबूद) ठहराने में (बड़ा) ज़ुल्म किया है, तो अपने पैदा करने वाले के आगे तौबा करो और अपने आपको हिलाक कर डालो। तुम्हारे पैदा करने वाले के नज़दीक तुम्हारे हक़ में यही बेहतर है। फिर उसने तुम्हारा क़ुसूर माफ़ कर दिया। वह बेशक माफ़ करने वाला (और) रहम वाला है। (५४) और जब तुमने

---

१. फ़िऔंन किसी ख़ास शख़्स का नाम न था, बल्कि उन वक़्तों में मिस्र के हर बादशाह को फ़िऔंन कहते थे। जो फ़िऔंन हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के वक़्त में था, उस का नाम वलीद बिन मुस्अब बिन रय्यान था। कुछ ने मुस्अब बिन रय्यान कहा है। कहते हैं कि लोगों ने फ़िऔंन से यह बात कही थी कि बनी इस्राईल एक ऐसे शख़्स के पैदा होने के इन्तिज़ार में हैं, जिस की वजह से वे फ़िऔंन के पंजे से रिहाई पाएंगे और उन को बहुत तरक़्क़ी हासिल होगी। यह सुन कर फ़िऔंन ने हुक्म दिया कि बनी इस्राईल में जो लड़का पैदा हो, वह क़त्ल कर दिया जाए। कुछ कहते हैं कि फ़िऔंन ने एक सपना देखा था कि एक आग बैतुलमक़्दिस से निकल कर मिस्र

(शेष पृष्ठ १३ पर)

★रु. ५/५ आ ७ ●रुबुअ १/४

व इज़ कुल्तुम् या मूसा लन् नुअ्मि-न ल-क हत्ता न-रल्ला-ह जह्‌रतन् फ़-अ-ख़-ज़त्कुमुस्साअि़क़तु व अन्तुम् तन्ज़ुरून (५५) सुम्-म ब-अ़स्नाकुम् मिम्बअ्दि मौतिकुम् ल-अ़ल्लकुम् तश्कुरून (५६) व ज़ल्लल्ना अ़लैकुमुल्-ग़मा-म व अन्ज़ल्ना अ़लैकुमुल्मन्-न वस्सल्वा ؕ कुलू मिन् तय्यिबाति मा र-ज़क़्नाकुम् ؕ व मा ज़-लमूना व लाकिन् कानू अन्फ़ुसहुम् यज़्लिमून (५७) व इज़् क़ुल्नद्ख़ुलू हाज़िहिल्-क़र्य-त फ़ कुलू मिन्हा हैसु शिअ्तुम् र-ग़दंव्वद्ख़ुलुल्बा-ब सुज्जदंव-व क़ूलू हित्ततुन् नग़्फ़िर् लकुम् ख़तायाकुम् ؕ व स-नज़ीदुल्-मुह्सिनीन (५८) फ़ बद्द-लल्लज़ी-न ज़-लमू क़ौलन् ग़ैरल्लज़ी क़ी-ल लहुम् फ़ अन्ज़ल्-ना अ़लल्लज़ी-न ज़-लमू रिज्ज़म्-मिनस्समा-इ बिमा कानू यफ़्सुक़ून ★ (५९) व इज़िस्तस्क़ा मूसा लि क़ौमिही फ़ क़ुल्नज़्रिब् बि अ़साकल्-ह़-जर ؕ फ़न्फ़-ज-रत् मिन् हुस्-नता अ़-श्-र-त अ़ैनन् ؕ क़द् अ़लि-म कुल्लु उनासिम्-मश्रबहुम् ؕ कुलू वश्रबू मिरिज़्क़िल्लाहि व ला तअ्-सौ फ़िल्अर्ज़ि मुफ़्सिदीन (६०) व इज़ क़ुल्तुम् या मूसा लन् नस्बि-र अ़ला तआ़मिंव्वाहिदिन् फ़द‍अ़ु लना रब्ब-क युख़्रिज् लना मिम्मा तुम्बितुल्-अर्-ज़ु मिम्बक़्लिहा व क़िस्सा-इहा व फ़ूमिहा व अ़-दसिहा व ब-स़लिहा ؕ क़ा-ल अ तस्तब्दिलूनल्लज़ी हु-व अद्ना बिल्लज़ी हु-व ख़ैरुन् ؕ इह्बितू मिस्रन् फ़ इन-न लकुम् मा स-अल्तुम् ؕ व ज़ुरिबत् अ़लैहिमुज़्ज़िल्लतु वल्मस्कनतु ۚ व बा-ऊ बि ग़ज़बिम्-मिनल्लाहि ؕ ज़ालि-क बिअन्नहुम् कानू यक्फ़ुरू-न बि आयातिल्लाहि व यक़्तुलूनन्नबिय्यी-न बिग़ैरिल्-ह़क़्क़ि ؕ ज़ालि-क बिमा अ़सव्-व कानू यअ्-तदून ★ (६१) इन्नल्लज़ी-न आमनू वल्लज़ी-न हादू वन्नसारा वस्साबिईन मन् आम-न बिल्लाहि वल्-यौमिल्-आख़िरि व अ़मि-ल सालिहन् फ़ लहुम् अज्रुहुम् अिन्-द रब्बिहिम् ۚ व ला ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून (६२)

يٰمُوْسٰى لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ حَتّٰى نَرَى اللّٰهَ جَهْرَةً فَاَخَذَتْكُمُ الصّٰعِقَةُ وَاَنْتُمْ
تَنْظُرُوْنَ ۝ ثُمَّ بَعَثْنٰكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَوْتِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝ وَظَلَّلْنَا عَلَيْكُمُ
الْغَمَامَ وَاَنْزَلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ؕ كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ ؕ وَمَا
ظَلَمُوْنَا وَلٰكِنْ كَانُوْۤا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۝ وَاِذْ قُلْنَا ادْخُلُوْا هٰذِهِ الْقَرْيَةَ فَكُلُوْا
مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ رَغَدًا وَّادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَّقُوْلُوْا حِطَّةٌ نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطٰيٰكُمْ ؕ
وَسَنَزِيْدُ الْمُحْسِنِيْنَ ۝ فَبَدَّلَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا قَوْلًا غَيْرَ الَّذِىْ قِيْلَ لَهُمْ فَاَنْزَلْنَا
عَلَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ۝ وَاِذِ اسْتَسْقٰى
مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ فَقُلْنَا اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ ؕ فَانْفَجَرَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ
عَيْنًا ؕ قَدْ عَلِمَ كُلُّ اُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ؕ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا مِنْ رِّزْقِ اللّٰهِ وَلَا تَعْثَوْا
فِى الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ۝ وَاِذْ قُلْتُمْ يٰمُوْسٰى لَنْ نَّصْبِرَ عَلٰى طَعَامٍ وَّاحِدٍ
فَادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُخْرِجْ لَنَا مِمَّا تُنْۢبِتُ الْاَرْضُ مِنْۢ بَقْلِهَا وَقِثَّآئِهَا وَفُوْمِهَا
وَعَدَسِهَا وَبَصَلِهَا ؕ قَالَ اَتَسْتَبْدِلُوْنَ الَّذِىْ هُوَ اَدْنٰى بِالَّذِىْ هُوَ خَيْرٌ ؕ
اِهْبِطُوْا مِصْرًا فَاِنَّ لَكُمْ مَّا سَاَلْتُمْ ؕ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ وَالْمَسْكَنَةُ ۚ
وَبَآءُوْ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ
النَّبِيّٖنَ بِغَيْرِ الْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
وَالَّذِيْنَ هَادُوْا وَالنَّصٰرٰى وَالصّٰبِـِٕيْنَ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ
وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ

★रु. ६/६ आ १३ ★रु. ७/७ आ २

(मूसा से) कहा कि मूसा जब तक हम ख़ुदा को सामने न देख लेंगे, तुम पर ईमान नहीं लायेंगे, तो तुमको बिजली ने आ घेरा और तुम देख रहे थे। (५५) फिर मौत आ जाने के बाद हमने तुमको फिर से ज़िंदा कर दिया, ताकि एहसान मानो। (५६) और बादल का तुम पर साया किये रखा और (तुम्हारे लिए) मन्न व सलवा उतारते रहे कि जो पाकीज़ा चीज़ें हमने तुमको अता फ़रमायी हैं, उनको खाओ (पियो,) मगर तुम्हारे बुज़ुर्गों ने इन नेमतों की कुछ क़द्र न जानी (और) वे हमारा कुछ नहीं बिगाड़ते थे, बल्कि अपना ही नुक़सान करते थे। (५७) और जब हमने (उन से) कहा कि इस गांव में दाख़िल हो जाओ और इसमें जहां से चाहो, ख़ूब खाओ (पियो) और (देखना) दरवाज़े में दाख़िल होना तो सज्दा करना और 'हित्ततुन' कहना, हम तुम्हारे गुनाह माफ़ कर देंगे और नेकी करने वालों को और ज़्यादा देंगे। (५८) तो जो ज़ालिम थे, उन्हों ने इस लफ़्ज़ को, जिसका उनको हुक्म दिया था, बदल कर उसकी जगह और लफ़्ज़ कहना शुरू किया, पस हमने (उन) ज़ालिमों पर आसमान से अज़ाब नाज़िल किया, क्योंकि ना-फ़रमानियां किए जाते थे।[1] ★ (५९)

और जब मूसा ने अपनी क़ौम के लिए (ख़ुदा से) पानी मांगा तो हमने कहा कि अपनी लाठी पत्थर पर मारो। (उन्होंने लाठी मारी) तो फिर उसमें से बारह चश्मे फूट निकले और तमाम लोगों ने अपना-अपना घाट मालूम (करके पानी पी) लिया। (हमने हुक्म दिया कि) ख़ुदा की (अता फ़रमायी हुई) रोज़ी खाओ और पियो, मगर ज़मीन में फ़साद न करते फिरना। (६०) और जब तुमने कहा कि मूसा! हम से एक (ही) खाने पर सब्र नहीं हो सकता, तो अपने परवरदिगार से दुआ कीजिए कि तरकारी और ककड़ी और गेहूं और मसूर और प्याज़ (वग़ैरह) जो नबातात ज़मीन से उगती हैं, हमारे लिए पैदा कर दे। उन्होंने कहा कि भला उम्दा चीज़ें छोड़कर उनके बदले नाक़िस (ख़राब) चीज़ें क्यों चाहते हो? (अगर यही चीज़ें चाहिएं) तो किसी शहर में जा उतरो, वहां जो मांगते हो, मिल जाएगा और (आख़िरकार) ज़िल्लत (व रुसवाई) और मुहताजी (व बे-नवाई) उनसे चिमटा दी गयी और वे ख़ुदा के ग़ज़ब में गिरफ़्तार हो गये। यह इस लिए कि वे ख़ुदा की आयतों से इंकार करते थे और (उसके) नबियों को ना-हक़ क़त्ल कर देते थे। (यानी) यह इस लिए कि ना-फ़रमानी किये जाते और हद से बढ़े जाते थे।★ (६१)

जो लोग मुसलमान हैं या यहूदी या ईसाई या सितारापरस्त (यानी कोई शख़्स, किसी क़ौम व मज़्हब का हो) जो ख़ुदा और क़ियामत के दिन पर ईमान लाएगा और नेक अमल करेगा, तो ऐसे लोगों को उन के (आमाल) का बदला ख़ुदा के यहां मिलेगा और (क़ियामत के दिन) उन को न किसी तरह का ख़ौफ़ होगा और न वे ग़मनाक होंगे। (६२) और जब हमने तुम से अह्द (कर)

(पृष्ठ ११ का शेष)

के घरों को आ लगी है, लेकिन बनी इस्राईल के घर उस से बच गये हैं। इसे सुन कर ताबीर (स्वप्न फल) बताने वालों ने यह बताया कि बनी इस्राईल में एक लड़का पैदा होगा, जो मिस्री हुकूमत ख़त्म करने की वजह बनेगा। इस डर से फ़िरऔन ने वह हुक्म दिया था। इसी बीच मूसा अलैहिस्सलाम पैदा हुए और जिस अजीब तरीक़े से ख़ुदा ने उन को फ़िरऔनियों के हाथ से बचाया, इस की तफ़्सील और जगहों पर है। आख़िर मूसा अलैहिस्सलाम फ़िरऔनियों की तबाही और इस्राईलियों की मुख़्लिसी की वजह बने।

१. बनी इस्राईल जब मूसा अलैहिस्सलाम के साथ मिस्र से निकले थे, तो उन को हुक्म हुआ था कि अर्ज़े मुक़द्दस (पाक धरती) में जाओ। वह तुम्हारे बाप इस्राईल की मीरास है। वहां जो काफ़िर अमालीक़ रहते हैं, उन से

(शेष पृष्ठ १५ पर)

★रु. ६/६ आ १३ ★रु. ७/७ आ २

व इज़् अ-ख़ज़्ना मीसाक़-कुम् व रफ़अ़्-ना फ़ौक़-कुमुत्तू-र ط ख़ुज़ू मा
आतैनाकुम् बिक़ुव्वतिंव्वज़्कुरू मा फ़ीहि लअ़ल्लकुम् तत्तक़ून (६३) सुम्-म
तवल्लैतुम् मिम्बअ़्दि ज़ालि-क ج फ़ लौला फ़ज़्लुल्लाहि अलैकुम् व रह़्मतुहू
लकुन्तुम् मिनल् ख़ासिरीन (६४) व ल-क़द् अ़लिम्तुमुल्लज़ीनअ़्-तदौ
मिन्कुम् फ़िस्सब्ति फ़-क़ुल्ना लहुम् कूनू
क़ि-र-द-तन् ख़ासि-ईन ج (६५) फ़-ज-अ़ल्नाहा
नकालल्लिमा बै-न यदैहा व मा ख़ल्फ़हा
व मौअ़ि-ज़-तल्-लिल्-मुत्तक़ीन (६६) व
इज़् क़ा-ल मूसा लि क़ौमिही इन्नल्ला-ह
यअ़्मुरुकुम् अन् तज़्बहू ब-क़-र-तन् ط क़ालू
अ तत्तख़िज़ुना हुज़ुवन् ط क़ा-ल अऊज़ु
बिल्लाहि अन् अकू-न मिनल्जाहिलीन (६७)
क़ालुद्अ़ु लना रब्ब-क युबय्यिल्लना
मा हि-य ط क़ा-ल इन्नहू यक़ूलु इन्नहा
ब-क़-रतुल्ला - फ़ारिज़ुंव - व ला-बिक्रुन् ط अ़
अ़वानुम्बै-न ज़ालि-क ط फ़फ़्अ़लू मा तुअ़्मरून
(६८) क़ालुद्अ़ु लना रब्ब-क युबय्यिल्लना
मा लौनुहा ط क़ा-ल इन्नहू यक़ूलु इन्नहा
ब-क़-रतुन् सफ़्रा-उ لا फ़ाक़िउल्लौनुहा तसुर्रुन्नाज़िरीन (६९) क़ालुद्अ़ु
लना रब्ब-क युबय्यिल्लना मा हि-य لا इन्नल्-ब-क़-र तशाब-ह अलैना ط
व इन्ना इन्शा-अल्लाहु ल-मुह्तदून (७०) क़ा-ल इन्नहू यक़ूलु इन्नहा
ब-क़-रतुल्ला - ज़लूलुन् तुसीरुल्अर-ज़ व ला तस्क़िल्हर्-स ج मुसल्लमतुल्ला-शि-य-त
फ़ीहा ط क़ालुल्आ-न जिअ़्-त बिल्हक़्क़ि ط फ़-ज़-बहूहा व मा कादू
यफ़्अ़लून ★ (७१) व इज़् क़-तल्तुम् नफ़्सन् फ़द्दारअ़्तुम् फ़ीहा ط
वल्लाहु मुख़्रिजुम्मा कुन्तुम् तक्तुमून ج (७२) फ़ क़ुल्नज़्रिबूहु बि बअ़्ज़िहा ط
कज़ालि-क युह़्यिल्लाहुल्मौता لا व युरीकुम् आयातिही ल-अ़ल्लकुम् तअ़्क़िलून (७३)

البقرة ١ الم

يَعْتَدُونَ ۝ وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّورَ خُذُوا مَا آتَيْنَاكُمْ
بِقُوَّةٍ وَاذْكُرُوا مَا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ۝ ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ مِنْ بَعْدِ ذَٰلِكَ فَلَوْلَا
فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ لَكُنْتُمْ مِنَ الْخَاسِرِينَ ۝ وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ
الَّذِينَ اعْتَدَوْا مِنْكُمْ فِي السَّبْتِ فَقُلْنَا لَهُمْ كُونُوا قِرَدَةً خَاسِئِينَ ۝
فَجَعَلْنَاهَا نَكَالًا لِمَا بَيْنَ يَدَيْهَا وَمَا خَلْفَهَا وَمَوْعِظَةً لِلْمُتَّقِينَ ۝
وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَنْ تَذْبَحُوا بَقَرَةً قَالُوا أَتَتَّخِذُنَا
هُزُوًا قَالَ أَعُوذُ بِاللَّهِ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْجَاهِلِينَ ۝ قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ
يُبَيِّنْ لَنَا مَا هِيَ قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ لَا فَارِضٌ وَلَا بِكْرٌ عَوَانٌ
بَيْنَ ذَٰلِكَ فَافْعَلُوا مَا تُؤْمَرُونَ ۝ قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَنَا مَا لَوْنُهَا
قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ صَفْرَاءُ فَاقِعٌ لَوْنُهَا تَسُرُّ النَّاظِرِينَ ۝ قَالُوا
ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَنَا مَا هِيَ إِنَّ الْبَقَرَ تَشَابَهَ عَلَيْنَا وَإِنَّا إِنْ شَاءَ
اللَّهُ لَمُهْتَدُونَ ۝ قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ لَا ذَلُولٌ تُثِيرُ الْأَرْضَ
وَلَا تَسْقِي الْحَرْثَ مُسَلَّمَةٌ لَا شِيَةَ فِيهَا قَالُوا الْآنَ جِئْتَ بِالْحَقِّ
فَذَبَحُوهَا وَمَا كَادُوا يَفْعَلُونَ ۝ وَإِذْ قَتَلْتُمْ نَفْسًا فَادَّارَأْتُمْ فِيهَا
وَاللَّهُ مُخْرِجٌ مَا كُنْتُمْ تَكْتُمُونَ ۝ فَقُلْنَا اضْرِبُوهُ بِبَعْضِهَا كَذَٰلِكَ
يُحْيِي اللَّهُ الْمَوْتَىٰ وَيُرِيكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ۝ ثُمَّ قَسَتْ قُلُوبُكُمْ
مِنْ بَعْدِ ذَٰلِكَ فَهِيَ كَالْحِجَارَةِ أَوْ أَشَدُّ قَسْوَةً وَإِنَّ مِنَ الْحِجَارَةِ

منزل

★रु. ८/८ आ १०

लिया और तूर पहाड़ को तुम पर उठा खड़ा किया (और हुक्म दिया) कि जो किताब हमने तुम को दी है, उसको ज़ोर से पकड़े रहो और जो उसमें (लिखा) है, उसे याद रखो, ताकि (अज़ाब से) महफ़ूज़ रहो। (६३) तो तुम इसके बाद (अह्द से) फिर गये और अगर तुम पर ख़ुदा का फ़ज़्ल और उसकी मेहरबानी न होती, तो तुम घाटे में पड़ गये होते। (६४) और तुम उन लोगों को ख़ूब जानते हो, जो तुम में से हफ़्ते के दिन (मछली का शिकार करने) में हद से आगे बढ़ गये थे, तो हमने उनसे कहा कि ज़लील व ख़्वार बन्दर हो जाओ।[1] (६५) और इस क़िस्से को उस वक़्त के लोगों के लिए और जो उनके बाद आने वाले थे इबरत (सबक़) और परहेज़गारों के लिए नसीहत बना दिया। (६६) और जब मूसा ने अपनी क़ौम के लोगों से कहा कि ख़ुदा तुमको हुक्म देता है कि एक बैल ज़िब्ह करो। वे बोले, क्या तुम हमसे हंसी करते हो? (मूसा ने) कहा कि मैं ख़ुदा की पनाह मांगता हूं कि नादान बनूं। (६७) उन्होंने कहा, अपने परवरदिगार से इल्तिजा (निवेदन) कीजिए कि वह हमें बताये कि वह बैल किस तरह का हो? (मूसा ने) कहा, परवरदिगार फ़रमाता है कि वह बैल न तो बूढ़ा हो और न बछड़ा, बल्कि उन के दर्मियान (यानी जवान) हो, सो जैसा तुम को हुक्म दिया गया है, वैसा करो। (६८) उन्होंने कहा, अपने परवरदिगार से दर्ख़्वास्त कीजिए कि हमको यह भी बता दे कि उसका रंग कैसा हो? मूसा ने कहा, परवरदिगार फ़रमाता है कि उसका रंग गहरा ज़र्द (पीला) हो कि देखने वालों (के दिल) को ख़ुश कर देता हो। (६९) उन्होंने कहा (इस बार) परवरदिगार से फिर दर्ख़्वास्त कीजिए कि हम को बता दे कि वह और किस-किस तरह का हो, क्योंकि बहुत से बैल हमें एक दूसरे से मिलते मालूम होते हैं। (फिर) ख़ुदा ने चाहा तो हमें ठीक बात मालूम हो जाएगी। (७०) मूसा ने कहा कि ख़ुदा फ़रमाता है कि वह बैल काम में लगा हुआ न हो, न तो ज़मीन जोतता हो और न तो खेती को पानी देता हो, उसमें किसी तरह का दाग़ न हो। कहने लगे, अब तुमने सब बातें ठीक-ठीक बता दीं। ग़रज़ (बड़ी मुश्किल से) उन्होंने उस बैल को ज़िब्ह किया और वे ऐसा करने वाले थे नहीं। (७१) ★

और जब तुमने एक शख़्स को क़त्ल किया, तो उस (के बारे) में आपस में झगड़ने लगे, लेकिन जो बात तुम छिपा रहे थे, ख़ुदा उसको ज़ाहिर करने वाला था। (७२) तो हमने कहा कि इस बैल का कोई सा टुकड़ा मक़्तूल (जिसे क़त्ल किया गया) को मारो। इस तरह ख़ुदा मुर्दों को ज़िंदा करता है और तुम को अपनी (क़ुदरत की) निशानियां दिखाता है, ताकि तुम समझो।[2] (७३)

(पृष्ठ १३ का शेष)

जंग कर के उन को निकाल दो। ख़ुदा ने यह भी वायदा फ़रमाया था कि जंग में उन को फ़त्ह हासिल होगी, मगर उन्होंने जंग करने से हिम्मत हार दी, तो ख़ुदा ने उन को इस अज़ाब में मुब्तला किया कि चालीस वर्ष जंगल में परेशान घूमते रहे। चालीस वर्ष के बाद वे उस जंगल से निकले। उस वक़्त मूसा अलैहिस्सलाम फ़ौत (इन्तिक़ाल) हो चुके थे। यूशेअ बिन नून अलैहिस्सलाम साथ थे। अब उन्होंने अमालक़ा से जंग की तो ख़ुदा ने फ़त्ह दी और हुक्म हुआ कि शहर के दरवाज़े में सज्दा कर के और 'हित्ततुन' कह कर दाख़िल हो। हित्ततुन के मानी मग़फ़िरत व इस्तग़फ़ार के हैं यानी हमारे गुनाह माफ़ कर। मगर उन्होंने हित्ततुन की जगह 'हिन्त:' यानी गेहूं कहा और बजाए सज्दे के सुरीन के बल दाख़िल हुए। इस ना-फ़रमानी और बे-अदबी की वजह से ख़ुदा ने फिर उन को अज़ाब में मुब्तला कर दिया।

१. यहूद को हुक्म था कि हफ़्ते के दिन की ताज़ीम (आदर) करें और उस में मछली का शिकार न करें, तो वे (शेष पृष्ठ ९७६ पर)

★रु. ८/८ आ १०

सुम्-म क़-सत् क़ुलूबुकुम् मिम्बअ्दि ज़ालि-क फ़ हि-य कल्हिजारति औ अशद्दु क़स्वतन्, व इन्-न मिनल्हिजारति लमा य-त-फ़ज्जरु मिन्हुल्अन्हारु, व इन्-न मिन्हा लमा यश्शक़्क़क़ु फ़ यख़्रुजु मिन्हुल्मा-उ, व इन्-न मिन्हा लमा यह्बितु मिन् ख़श्यतिल्लाहि, व मल्लाहु बि ग़ाफ़िलिन् अम्मा तअ्-मलून (७४) अ-फ़-तत्मअ़ू-न अंय्युअ्मिनू लकुम् व क़द् का-न फ़रीक़ुम्-मिन्हुम् यस्मअ़ू-न कलामल्लाहि सुम्-म युहर्रिफ़ूनहू मिम्बअ्दि मा अ-क़लूहु व हुम् यअ्-लमून (७५) व इज़ा लक़ुल्लज़ी-न आमनू क़ालू आमन्ना, व इज़ा ख़ला बअ्-ज़ुहुम् इला बअ्-ज़िन् क़ालू अतुहद्दिसू-न-हुम् बिमा फ़-त-हल्लाहु अलैकुम् लियुहाज्जूकुम् बिही अिन्-द रब्बिकुम्, अ-फ़ला तअ्-क़िलून (७६) अ-व ला यअ्-लमू-न अन्नल्ला-ह यअ्-लमु मा युसिर्रू-न व मा युअ्-लिनून (७७) व मिन्हुम् उम्मिय्यू-न ला यअ्-लमूनल्-किता-ब इल्ला अमानिय्-य व इन् हुम् इल्ला यज़ुन्नून ● (७८) फ़वैलुल् - लिल्लज़ी - न यक्तुबूनल्किता-ब बिऐदीहिम् सुम्-म यक़ूलू-न हाज़ा मिन् अिन्दिल्लाहि लियश्तरू बिही स-म-नन् क़लीलन्, फ़ वैलुल्लहुम् मिम्मा क-त-बत् ऐदीहिम् व वैलुल्लहुम् मिम्मा यक्सिबून (७९) व क़ालू लन् तमस्सनन्नारु इल्ला अय्यामम्-मअ्-दूदतन्, क़ुल् अत्तख़ज़्तुम् अिन्दल्लाहि अह्दन् फ़ - लंय्युख़्लिफ़ल्लाहु अह्दहू अम् तक़ूलू-न अ-लल्लाहि मा ला तअ्-लमून (८०) बला मन् क-स-ब सय्यिअतंव-व अहातत् बिही ख़तीअतुहू फ़ उला-इ-क अस्हाबुन्नारि हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (८१) वल्लज़ी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति उला-इक अस्हाबुलजन्नति हुम् फ़ीहा ख़ालिदून ★ (८२) व इज् अ-ख़ज़्ना मीसा-क़ बनी इस्रा-ईल ला तअ्-बुदून इल्लल्ला-ह व बिल्वालिदैनि इह्सानंव-व ज़िल्क़ुर्बा वल्यतामा वल्मसाकीनि व क़ूलू लिन्नासि हुस्नंव-व अक़ीमुस्सला-त व आतुज़्ज़का-त, सुम्-म तवल्लैतुम् इल्ला क़लीलम्-मिन्कुम् व अन्तुम् मुअ्-रिज़ून (८३)

لَمَا يَتَفَجَّرُ مِنْهُ الْأَنْهٰرُ ۚ وَإِنَّ مِنْهَا لَمَا يَشَّقَّقُ فَيَخْرُجُ مِنْهُ الْمَآءُ ۚ وَ
إِنَّ مِنْهَا لَمَا يَهْبِطُ مِنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ۗ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝
أَفَتَطْمَعُوْنَ أَنْ يُّؤْمِنُوْا لَكُمْ وَقَدْ كَانَ فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ يَسْمَعُوْنَ كَلٰمَ
اللّٰهِ ثُمَّ يُحَرِّفُوْنَهٗ مِنْ بَعْدِ مَا عَقَلُوْهُ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ۝ وَإِذَا لَقُوا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا قَالُوْٓا اٰمَنَّا ۚ وَإِذَا خَلَا بَعْضُهُمْ إِلٰى بَعْضٍ قَالُوْٓا أَتُحَدِّثُوْنَهُمْ بِمَا
فَتَحَ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ لِيُحَآجُّوْكُمْ بِهٖ عِنْدَ رَبِّكُمْ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝ أَوَلَا يَعْلَمُوْنَ
أَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ۝ وَمِنْهُمْ أُمِّيُّوْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ
الْكِتٰبَ إِلَّآ أَمَانِيَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَظُنُّوْنَ ۝ فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ يَكْتُبُوْنَ الْكِتٰبَ
بِأَيْدِيْهِمْ ۙ ثُمَّ يَقُوْلُوْنَ هٰذَا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ لِيَشْتَرُوْا بِهٖ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۗ
فَوَيْلٌ لَّهُمْ مِّمَّا كَتَبَتْ أَيْدِيْهِمْ وَوَيْلٌ لَّهُمْ مِّمَّا يَكْسِبُوْنَ ۝ وَقَالُوْا
لَنْ تَمَسَّنَا النَّارُ إِلَّآ أَيَّامًا مَّعْدُوْدَةً ۗ قُلْ أَتَّخَذْتُمْ عِنْدَ اللّٰهِ عَهْدًا فَلَنْ
يُّخْلِفَ اللّٰهُ عَهْدَهٗٓ أَمْ تَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ بَلٰى مَنْ كَسَبَ
سَيِّئَةً وَّأَحَاطَتْ بِهٖ خَطِيْٓئَتُهٗ فَأُولٰٓئِكَ أَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا
خٰلِدُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ أُولٰٓئِكَ أَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ
فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝ وَإِذْ أَخَذْنَا مِيْثَاقَ بَنِيْٓ إِسْرَآءِيْلَ لَا تَعْبُدُوْنَ إِلَّا
اللّٰهَ ۟ وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا وَّذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَقُوْلُوْا لِلنَّاسِ
حُسْنًا وَّأَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ۗ ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ إِلَّا قَلِيْلًا مِّنْكُمْ وَأَنْتُمْ

● नि. १/२ ★रु. ९/९ आ ११

फिर इसके बाद तुम्हारे दिल सख़्त हो गये, गोया वे पत्थर हैं, या उनसे भी ज़्यादा सख़्त और पत्थर तो कुछ ऐसे होते हैं कि उनमें से चश्मे फूट निकलते हैं और कुछ ऐसे होते हैं कि फट जाते हैं और उनमें से पानी निकलने लगता है और कुछ ऐसे होते हैं कि ख़ुदा के ख़ौफ़ से गिर पड़ते हैं और ख़ुदा तुम्हारे अमलों से बे-ख़बर नहीं। (७४) (मोमिनो !) क्या तुम उम्मीद रखते हो कि ये लोग तुम्हारे (दीन के) क़ायल हो जाएंगे, (हालांकि) उनमें से कुछ लोग कलामे ख़ुदा (यानी तौरात) को सुनते फिर उसके सुन लेने के बाद उसको जान-बूझ कर बदल देते रहे हैं।[1] (७५) और ये लोग जब मोमिनों से मिलते हैं, तो कहते हैं, हम ईमान ले आये हैं और जिस वक़्त आपस में एक दूसरे से मिलते हैं, तो कहते हैं, जो बात ख़ुदा ने तुम पर ज़ाहिर फ़रमायी है, वह तुम उनको इस लिए बता देते हो कि (क़ियामत के दिन) उसी के हवाले से तुम्हारे परवरदिगार के सामने तुमको इल्ज़ाम दें। क्या तुम समझते नहीं ? (७६) क्या ये लोग यह नहीं जानते कि जो कुछ ये छिपाते और जो कुछ ज़ाहिर करते हैं, ख़ुदा को (सब) मालूम है।[2] (७७) और कुछ उन में अनपढ़ हैं कि अपने बातिल ख़्यालों के सिवा (ख़ुदा की) किताब को जानते ही नहीं और वे सिर्फ़ गुमान से काम लेते हैं (७८) ●
तो उन लोगों पर अफ़सोस है जो अपने हाथ से तो किताब लिखते हैं और कहते यह हैं कि यह ख़ुदा के पास से (आयी) है, ताकि उसके बदले थोड़ी-सी क़ीमत (यानी दुनिया का फ़ायदा) हासिल कर लें। उन पर अफ़सोस है, इस लिए कि (बे-असल बातें) अपने हाथ से लिखते हैं और (फिर) उन पर अफ़सोस है, इसलिए कि ऐसे काम करते हैं। (७९) और कहते हैं कि (दोज़ख़ की आग) हमें कुछ दिनों के सिवा छू ही नहीं सकेगी। उनसे पूछो, क्या तुमने ख़ुदा से इक़रार ले रखा है कि ख़ुदा अपने इक़रार के ख़िलाफ़ नहीं करेगा। (नहीं) बल्कि तुम ख़ुदा के बारे में ऐसी बातें कहते हो, जिन्हें तुम बिल्कुल नहीं जानते।[3] (८०) हां, जो बुरे काम करे और उसके गुनाह (हर तरफ़ से) उसको घेर लें तो ऐसे लोग दोज़ख़ (में जाने) वाले हैं (और) वे हमेशा उसमें (जलते) रहेंगे। (८१) और जो ईमान लाएं और नेक काम करें वे जन्नत के मालिक होंगे और हमेशा उसमें (ऐश करते) रहेंगे। (८२) ★

और जब हमने बनी इस्राईल से अह्द लिया कि ख़ुदा के सिवा किसी की इबादत न करना और मां-बाप और रिश्तेदारों और यतीमों और मुहताजों के साथ भलाई करते रहना और लोगों से अच्छी बातें कहना और नमाज़ पढ़ते और ज़कात देते रहना तो कुछ लोगों के अलावा तुम सब (इस

---

१. ये लोग कुछ बहुत ही निडर थे। ख़ुदा के कलाम के बदल देने में भी कोई शर्म नहीं करते थे। तह्रीफ़ में इख़्तिलाफ़ है कि किस क़िस्म की थी। बाज़ कहते हैं कि लफ़्ज़ी थी, यानी लफ़्ज़ बदल देते थे। कुछ लोग कहते हैं कि तह्रीफ़ मानी में थी यानी मानी बिगाड़ देते थे। इमाम फ़ख़्रुद्दीन राज़ी इसी के क़ायल हैं। कुछ कहते हैं लफ़्ज़ और मानी दोनों में थी, बहरहाल तमाम मुसलमान यहूदियों और ईसाइयों की किताबों को तह्रीफ़ की हुई और तब्दील की हुई मानते हैं और उन पर एतबार नहीं करते। मुसलमानों को इस बात पर फ़ख़्र है कि उन की आसमानी किताब में तह्रीफ़ नहीं हुई और हो सकती भी नहीं, क्योंकि ख़ुदा ने उस की हिफ़ाज़त अपने ज़िम्मे ले ली है।

२. इन आयतों में मुनाफ़िक़ों का हाल बयान फ़रमाया गया है। कुछ मुनाफ़िक़ ऐसे भी थे कि हज़रत पैग़म्बर सल्ल० के आने की पेशीनगोई, जो उन की किताबों में लिखी हुई थी, और जो उन पर उन के गुनाहों की वजह से पहले अज़ाब नाज़िल होते रहे थे, वह मुसलमानों से बयान कर देते थे। तो और मुनाफ़िक़ उन से कहते कि तुम

(शेष पृष्ठ ६७७ पर)

● नि. १/२ ★रु. ९/९ आ ११

व इज़ अ-ख़ज़्ना मीसाक़कुम् ला तस्फ़िकू-न दिमाअकुम् व ला तुख़्रिजू-न अन्फ़ुसकुम् मिन् दियारिकुम् सुम्-म अक़्ररतुम् व अन्तुम् तश्हदून (८४) सुम्-म अन्तुम् हा उला इ तक़्तुलू-न अन्फ़ुसकुम् व तुख़्रिजू-न फ़रीक़म्-मिन्कुम् मिन् दियारिहिम् तज़ाहरू-न अलैहिम् बिल्-इस्मि वल्-अुद्वानि व इंय्यअ्तूकुम् उसारा तुफ़ादूहुम् व हु-व मुहर्रमुन् अलैकुम् इख़्राजुहुम् अ-फ़-तुअ्मिनू-न बिबअ्-ज़िल-किताबि व तक्फ़ुरू-न बिबअ्ज़िन् फ़ मा जज़ाउ मंय्यफ़्-अलु ज़ालि-क मिन्कुम् इल्ला ख़िज़्युन् फ़िल्-हयातिद्दुन्या व यौमल्-क़ियामति युरद्दून इला अशद्दिल्-अज़ाबि व मल्लाहु बि ग़ाफ़िलिन् अम्मा तअ्-मलून (८५) उलाइकल्लज़ीनश्-त - र - वुल्हयातद्दुन्या बिल्आख़िरति फ़ला युख़फ़्फ़फ़ु अन्हुमुल्-अज़ाबु व ला हुम् युन्सरून★(८६) व ल-क़द् आतैना मूसल्किता-ब व क़फ़्फ़ैना मिम्बअ्दिही बिर्रुसुलि व आतैना अीसब्-न मर्यमल्बय्यिनाति व अय्यद्नाहु बि रूहिल्क़ुदुसि अ-फ़-कुल्लमा जाअकुम् रसूलुम्बिमा ला तह्वा अन्फ़ुसुकुमुस्-तक्बर्तुम् फ़ फ़रीक़न् कज़्ज़ब्तुम् व फ़रीक़न् तक़्तुलून (८७) व क़ालू क़ुलूबुना ग़ुल्फ़ुन् बल् ल-अ-नहुमुल्लाहु बि कुफ़्रिहिम् फ़ क़लीलम्मा युअ्मिनून (८८) व लम्मा जाअहुम् किताबुम्मिन् अिन्दिल्लाहि मुसद्दिक़ुल्लिमा म-अहुम् व कानू मिन् क़ब्लु यस्तफ़्तिहू-न अलल्लज़ी-न क-फ़रू फ़ लम्मा जाअहुम् मा अ-रफ़ू क-फ़रू बिही फ़ लअ्-नतुल्लाहि अ-लल्-काफ़िरीन (८९) बिअ्-स-मश्तरौ बिही अन्फ़ुसहुम् अंय्यक्फ़ुरू बिमा अन्ज़लल्लाहु बग़्यन् अंय्युनज़्ज़िलल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही अला मंय्यशाउ मिन् अिबादिही फ़ बाऊ बि ग़-ज़बिन् अला ग़-ज़बिन् व लिल्काफ़िरी-न अज़ाबुम्-मुहीन (९०) व इज़ा क़ी-ल लहुम् आमिनू बिमा अन्ज़लल्लाहु क़ालू नुअ्मिनु बिमा उन्ज़ि-ल अलैना व यक्फ़ुरू-न बिमा वरा-अहू व हुवल्हक़्क़ु मुसद्दिक़ल्लिमा म-अहुम् क़ुल् फ़ लि-म तक़्तुलू-न अम्बिया अल्लाहि मिन् क़ब्लु इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन (९१)

تعرضون ۝ واذ اخذنا ميثاقكم لا تسفكون دماءكم ولا تخرجون انفسكم
من دياركم ثم اقررتم وانتم تشهدون ۝ ثم انتم هؤلاء تقتلون انفسكم
وتخرجون فريقا منكم من ديارهم تظاهرون عليهم بالاثم والعدوان
وان ياتوكم اسرى تفدوهم وهو محرم عليكم اخراجهم افتؤمنون ببعض
الكتب وتكفرون ببعض فما جزاء من يفعل ذلك منكم الا خزي في الحيوة
الدنيا ويوم القيمة يردون الى اشد العذاب وما الله بغافل عما تعملون ۝
اولئك الذين اشتروا الحيوة الدنيا بالاخرة فلا يخفف عنهم العذاب ولا
هم ينصرون ۝ ولقد اتينا موسى الكتب وقفينا من بعده بالرسل واتينا
عيسى ابن مريم البينت وايدنه بروح القدس افكلما جاءكم رسول بما
لا تهوى انفسكم استكبرتم ففريقا كذبتم وفريقا تقتلون ۝ وقالوا قلوبنا
غلف بل لعنهم الله بكفرهم فقليلا ما يؤمنون ۝ ولما جاءهم كتب من
عند الله مصدق لما معهم وكانوا من قبل يستفتحون على الذين
كفروا فلما جاءهم ما عرفوا كفروا به فلعنة الله على الكفرين ۝ بئسما اشتروا
به انفسهم ان يكفروا بما انزل الله بغيا ان ينزل الله من فضله على
من يشاء من عباده فباءو بغضب على غضب وللكفرين عذاب مهين ۝
واذا قيل لهم امنوا بما انزل الله قالوا نؤمن بما انزل علينا ويكفرون
بما وراءه وهو الحق مصدقا لما معهم قل فلم تقتلون انبياء الله من

★रु० १०/१० आ ४

अह्द से) मुंह फेर कर बैठ गए। (८३) और जब हमने तुमसे अह्द लिया कि आपस में कुश्त व ख़ून न करना और अपने को उनके वतन से न निकालना, तो तुमने इक़रार कर लिया और तुम (इस बात के) गवाह हो। (८४) फिर तुम वही हो कि अपनों को क़त्ल भी कर देते हो और अपने में से कुछ लोगों पर गुनाह और ज़ुल्म से चढ़ाई करके उन्हें वतन से निकाल भी देते हो और अगर वे तुम्हारे पास क़ैद होकर आएं तो बदला देकर उनको छुड़ा भी लेते हो, हालांकि उन का निकाल देना ही तुमको हराम था। (यह) क्या (बात है कि) तुम (ख़ुदा की) किताब के कुछ हुक्मों को तो मानते हो और कुछ में इन्कार किये देते हो, तो जो तुममें से ऐसी हरकत करें, उनकी सज़ा इसके सिवा और क्या हो सकती है कि दुनिया की ज़िंदगी में तो रुसवाई हो और क़ियामत के दिन सख़्त से सख़्त अज़ाब में डाल दिए जाएं। और जो काम तुम करते हो, ख़ुदा उनसे ग़ाफ़िल नहीं। (८५) ये वह लोग हैं, जिन्होंने आख़िरत के बदले दुनिया की ज़िंदगी ख़रीदी, सो न तो उनसे अज़ाब ही हल्का किया जाएगा और न उनको (और तरह की) मदद मिलेगी। (८६) ★

और हमने मूसा को किताब इनायत की और उन के पीछे एक के बाद दूसरा पैग़म्बर भेजते रहे और ईसा बिन मरयम को खुली निशानियां बख़्शीं और रूहुल क़ुद्स (यानी जिब्रील) से उनको मदद दी, तो जब कोई पैग़म्बर तुम्हारे पास ऐसी बातें लेकर आये जिनको तुम्हारा जी नहीं चाहता था, तो तुम सरकश हो जाते रहे और (नबियों के) एक गिरोह को तो झुठलाते रहे और एक गिरोह को क़त्ल करते रहे। (८७) और कहते हैं, हमारे दिल पर्दे में हैं[1]। (नहीं) बल्कि ख़ुदा ने उनके कुफ़्र की वजह से उन पर लानत कर रखी है, पस ये थोड़े ही पर ईमान लाते हैं। (८८) और जब ख़ुदा के यहां से उनके पास किताब आयी, जो उनकी (आसमानी) किताब की भी तस्दीक़ करती है और वे पहले (हमेशा) काफ़िरों पर फ़त्ह मांगा करते थे, तो जिस चीज़ को वे ख़ूब पहचानते थे, जब उनके पास आ पहुंची, तो उससे क़ाफ़िर हो गये, पस काफ़िरों पर ख़ुदा की लानत। (८९) जिस चीज़ के बदले उन्होंने अपने को बेच डाला, वह बहुत बुरी है यानी इस जलन से कि ख़ुदा अपने बन्दों में से, जिस पर चाहता है, अपनी मेहरबानी में से नाज़िल फ़रमाता है, ख़ुदा की नाज़िल की हुई किताब से कुफ़्र करने लगे, तो वे (उसके) ग़ज़ब पर ग़ज़ब में मुब्तला हो गये और काफ़िरों के लिए ज़लील करने वाला अज़ाब है। (९०) और जब उन से कहा जाता है कि जो (किताब) ख़ुदा ने (अब) नाज़िल फ़रमायी है, उसको मानो तो कहते हैं कि जो किताब हम पर (पहले) नाज़िल हो चुकी है, हम तो उसी को मानते हैं (यानी) ये उस के सिवा और (किताब) को नहीं मानते, हालांकि वह (सरासर) सच्ची है और जो उन की (आसमानी) किताब है, उसकी भी तस्दीक़ करती है। (उन से) कह दो कि अगर तुम ईमान वाले होते तो ख़ुदा के पैग़म्बरों को पहले

---

१. यहूदी कहते थे कि हमारे दिल पर्दे में हैं यानी हम अपने दीन के सिवा किसी की बात समझ ही नहीं सकते। ख़ुदा ने फ़रमाया कि दिल पर्दे में नहीं हैं, बल्कि ख़ुदा ने कुफ़्र की वजह से उन पर लानत कर रखी है। दूसरी जगह फ़रमाया है कि 'बल त-ब-अल्लाहु अलैहा बिकुफ़्रिहिम' या उन के दिलों पर मुहर लगा दी है, कुछ भी हो, बात ऐसी थी कि ईमान उन के दिलों में दाख़िल ही नहीं होता था और यह ख़ुदा के ग़ज़ब की निशानी है।

★रु. १०/१० आ ४

व ल-क़द् जा-अकुम् मूसा बिल्-बय्यिनाति सुम्मत्तख़ज़्तुमुल्-अिज्-ल मिम्बअ़्दिही व अन्तुम् ज़ालिमून (९२) व इज़् अ-ख़ज़्ना मीसाक़कुम् व र-फ़अ़्-ना फ़ौक़कुमुत्तू-र ख़ुज़ू मा आतैनाकुम् बिक़ुव्वतिंव्वस्मअ़ू क़ालू समिअ़्ना व अ़सैना व उश्रिबू फ़ी क़ुलूबिहिमुल्-अिज्-ल बिकुफ़्रिहिम् क़ुल् बिअ्-समा यअ्मुरुकुम् बिही ईमानुकुम् इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन (९३) क़ुल् इन् कानत् लकुमुद्दारुल्-आख़िरतु अिन्दल्लाहि ख़ालि-स-तम्-मिन्दूनिन्नासि फ़ त-मन्नवुल्-मौ-त इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (९४) व लंय्यतमन्नौहु अ-ब-दम् - बिमा क़द्-द-मत् ऐदीहिम् वल्लाहु अ़लीमुम्-बिज़्ज़ालिमीन (९५) व ल-त-जिदन्नहुम् अह्-रसन्नासि अ़ला हयातिन् व मिनल्लज़ी-न अश्रकू यवद्दु अ-हदुहुम् लौ युअ़म्मरु अल्-फ़ स-नतिन् व मा हु-व बि मुज़हि़्ज़िहिही मिनल्-अ़ज़ाबि अंय्युअ़म्मर वल्लाहु बसीरुम्-बिमा यअ्-मलून ★ (९६) क़ुल् मन् का-न अ़दुव्वल्लिजिब्री-ल फ़-इन्नहु नज़्ज़लहू अ़ला क़ल्बि-क बि इज़्निल्लाहि मुसद्दिक़ल्लिमा बै-न यदैहि व हुदंव-व बुश्रा लिल्मुअ्मिनीन (९७) मन् का-न अ़दुव्वल्लिल्लाहि व मलाइकतिही व रुसुलिही व जिब्री-ल व मीका-ल फ़ इन्नल्ला-ह अ़दुव्वुल्-लिल्काफ़िरीन (९८) व ल-क़द् अन्ज़ल्ना इलै-क आयातिम्-बय्यिनातिन् व मा यक्फ़ुरु बिहा इल्लल्फ़ासिक़ून (९९) अ-व कुल्लमा आ़हदू अ़ह्दन् न-ब-ज़हू फ़रीक़ुम्मिन्हुम् बल् अक्सरुहुम् ला युअ्मिनून (१००) व लम्मा जा-अहुम् रसूलुम्-मिन् अिन्दिल्लाहि मुसद्दिक़ुल्लिमा म-अ़हुम् न-ब-ज फ़रीक़ुम्-मिनल्लज़ी-न ऊतुल्किता-ब किताबल्लाहि वरा-अ ज़ुहूरिहिम् क-अन्नहुम् ला यअ़-लमून (१०१)

قَبْلُ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿٩١﴾ وَلَقَدْ جَاءَكُمْ مُوسَىٰ بِالْبَيِّنَاتِ ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ
مِنْ بَعْدِهِ وَأَنْتُمْ ظَالِمُونَ ﴿٩٢﴾ وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّورَ خُذُوا
مَا آتَيْنَاكُمْ بِقُوَّةٍ وَاسْمَعُوا ۖ قَالُوا سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا وَأُشْرِبُوا فِي قُلُوبِهِمُ الْعِجْلَ
بِكُفْرِهِمْ ۚ قُلْ بِئْسَمَا يَأْمُرُكُمْ بِهِ إِيمَانُكُمْ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿٩٣﴾ قُلْ إِنْ
كَانَتْ لَكُمُ الدَّارُ الْآخِرَةُ عِنْدَ اللَّهِ خَالِصَةً مِنْ دُونِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ
إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٩٤﴾ وَلَنْ يَتَمَنَّوْهُ أَبَدًا بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ
بِالظَّالِمِينَ ﴿٩٥﴾ وَلَتَجِدَنَّهُمْ أَحْرَصَ النَّاسِ عَلَىٰ حَيَاةٍ ۚ وَمِنَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا ۚ
يَوَدُّ أَحَدُهُمْ لَوْ يُعَمَّرُ أَلْفَ سَنَةٍ وَمَا هُوَ بِمُزَحْزِحِهِ مِنَ الْعَذَابِ أَنْ يُعَمَّرَ ۗ
وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِمَا يَعْمَلُونَ ﴿٩٦﴾ قُلْ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِجِبْرِيلَ فَإِنَّهُ نَزَّلَهُ عَلَىٰ
قَلْبِكَ بِإِذْنِ اللَّهِ مُصَدِّقًا لِمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَهُدًى وَبُشْرَىٰ لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿٩٧﴾
مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِلَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ وَرُسُلِهِ وَجِبْرِيلَ وَمِيكَالَ فَإِنَّ اللَّهَ عَدُوٌّ
لِلْكَافِرِينَ ﴿٩٨﴾ وَلَقَدْ أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ ۖ وَمَا يَكْفُرُ بِهَا إِلَّا الْفَاسِقُونَ ﴿٩٩﴾
أَوَكُلَّمَا عَاهَدُوا عَهْدًا نَبَذَهُ فَرِيقٌ مِنْهُمْ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٠٠﴾ وَ
لَمَّا جَاءَهُمْ رَسُولٌ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ مُصَدِّقٌ لِمَا مَعَهُمْ نَبَذَ فَرِيقٌ مِنَ الَّذِينَ
أُوتُوا الْكِتَابَ كِتَابَ اللَّهِ وَرَاءَ ظُهُورِهِمْ كَأَنَّهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٠١﴾ وَاتَّبَعُوا مَا تَتْلُوا
الشَّيَاطِينُ عَلَىٰ مُلْكِ سُلَيْمَانَ ۖ وَمَا كَفَرَ سُلَيْمَانُ وَلَٰكِنَّ الشَّيَاطِينَ كَفَرُوا
يُعَلِّمُونَ النَّاسَ السِّحْرَ وَمَا أُنْزِلَ عَلَى الْمَلَكَيْنِ بِبَابِلَ هَارُوتَ وَمَارُوتَ ۚ وَمَا

ही क्यों क़त्ल किया करते ? (९१) और मूसा तुम्हारे पास खुले हुए मोजज़े लेकर आये, तो तुम उनके (तूर पहाड़ पर जाने के) बाद बछड़े को माबूद बना बैठे और तुम (अपने ही हक़ में) ज़ुल्म करते थे। (९२) और जब हमने तुम (लोगों) से पक्का अह्द लिया और तूर पहाड़ को तुम पर उठा खड़ा किया (और हुक्म दिया कि) जो किताब हमने तुमको दी है, उस को ज़ोर से पकड़ो और (जो तुम्हें हुक्म होता है, उसको) सुनो, तो वे (जो तुम्हारे बड़े थे) कहने लगे कि हम ने सुन तो लिया, लेकिन मानते नहीं और उनके कुफ़्र की वजह से बछड़ा (गोया) उनके दिलों में रच गया था। (ऐ पैग़म्बर ! उन से) कह दो कि अगर तुम मोमिन हो तो तुम्हारा ईमान तुम को बुरी बात बताता है।[1] (९३) कह दो कि अगर आख़िरत का घर और लोगों (यानी मुसलमानों) के लिए नहीं और ख़ुदा के नज़दीक तुम्हारे ही लिए मख़्सूस है, तो अगर सच्चे हो तो मौत की आरज़ू तो करो।[2] (९४) लेकिन इन आमाल की वजह से, जो उनके हाथ आगे भेज चुके हैं, ये कभी इसकी आरज़ू नहीं करेंगे और ख़ुदा ज़ालिमों को (ख़ूब) जानता है। (९५) बल्कि उनको तुम और लोगों से ज़िंदगी के कहीं लोभी देखोगे, यहां तक कि मुश्रिकों से भी। उनमें से हर एक यही ख़्वाहिश करता है कि काश ! वह हज़ार वर्ष जीता रहे, मगर इतनी लंबी उम्र उसको मिल भी जाए तो उसे अज़ाब से तो नहीं छुड़ा सकती और जो काम ये करते हैं, ख़ुदा उनको देख रहा है। (९६) ★

कह दो कि जो शख़्स जिब्रील का दुश्मन हो, (उसको गुस्से में मर जाना चाहिए,) उसने तो (यह किताब) ख़ुदा के हुक्म से तुम्हारे दिल पर नाज़िल की है, जो पहली किताबों की तस्दीक़ करती है और ईमान वालों के लिए हिदायत और ख़ुशख़बरी है। (९७) जो शख़्स ख़ुदा का और उसके पैग़म्बरों का और जिब्रील और मीकाईल का दुश्मन हो, तो ऐसे क़ाफ़िरों का ख़ुदा दुश्मन है। (९८) और हमने तुम्हारे पास सुलझी हुई आयतें भेजी हैं और उनसे इंकार वही करते हैं जो बद-किरदार हैं। (९९) उन लोगों ने (जब-जब) ख़ुदा से पक्का अह्द किया तो उनमें से एक फ़रीक़ ने उसको (किसी चीज़ की तरह फेंक दिया।) हक़ीक़त यह है कि उनमें अक्सर बे-ईमान हैं। (१००) और जब उन के पास ख़ुदा की तरफ़ से पैग़म्बर (आख़िरी) आये और वह उनकी (आसमानी) किताब की भी तस्दीक़ करते हैं, तो जिन लोगों को किताब दी गयी थी, उनमें से एक जमाअत ने ख़ुदा की किताब को पीठ पीछे फेंक दिया, गोया वे जानते ही नहीं। (१०१) और उन

---

१. यानी ज़ाहिर में कहा कि हमने माना और चुपके से कहा कि न माना।

२. कहते थे कि जन्नत में हमारे सिवा कोई न जाएगा और हम को अज़ाब न होगा। और अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि अगर तुम यक़ीनन बहिश्ती हो तो फिर मरने से क्यों डरते हो ?

वत्तबअ़ू मा तत्लुश्शयातीनु अ़ला मुल्कि सुलैमा-न ج व मा क-फ़-र सुलैमानु व लाकिन्नश्शयाती-न क-फ़रू युअ़ल्लिमूनन्नासस्-सिह्-र ج व मा उन्ज़ि-ल अ़लल्मलकैनि बिबाबि-ल हारू-त व मारू-त ط व मा युअ़ल्लिमानि मिन् अ-ह़दिन् ह़त्ता यक़ूला इन्नमा नह़्नु फ़ित्नतुन् फ़ ला तक्फ़ुर ط फ़ य-त-अ़ल्लमू-न मिन्हुमा मा युफ़र्रिक़ू-न बिही बैनल्-मर-इ व ज़ौजिही ط व मा हुम् बिज़ार्री-न बिही मिन् अ-ह़दिन् इल्ला बिइज़्निल्लाहि ط व य-त-अ़ल्लमू-न मा यज़ुर्रुहुम् व ला यन्फ़अ़ु-हुम् ط व ल-क़द् अ़लिमू ल-मनिश्तराहु मा लहू फ़िल्आख़िरति मिन् ख़लाक़िन् ط قف व ल-बिअ्-स मा शरौ बिही अन्फ़ुसहुम् ط लौ कानू यअ़्-लमून (१०२) व लौ अन्नहुम् आमनू वत्तक़ौ लमसूबतुम्मिन् अ़िन्दिल्लाहि ख़ैरुन् ط लौ कानू यअ़्-लमून ★ (१०३) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तक़ूलू राअ़िना व क़ूलुन्ज़ुर्ना वस्मअ़ू ط व लिलकाफ़िरी-न अ़ज़ाबुन् अलीम (१०४) मा यवद्दुल्लज़ी-न क-फ़रू मिन् अह़्लिल् - किताबि व लल्मुश्रिकी-न अंय्युनज़्ज़-ल अ़लैकुम् मिन् ख़ैरिम्-मिर्रब्बिकुम् ط वल्लाहु यख़्तस्सु बिरह़्मतिही मंय्यशाउ ط वल्लाहु ज़ुल्फ़ज़्लिल्-अ़ज़ीम (१०५) मा नन्सख़् मिन् आयतिन् औ नुन्सिहा नअ्ति बिख़ैरिम्मिन्हा औ मिस्लिहा ط अ-लम् तअ़्-लम् अन्नल्ला-ह अ़ला कुल्लि शै-इन् क़दीर (१०६) अ-लम् तअ़्-लम् अन्नल्ला-ह लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि ط व मा लकुम् मिन् दूनिल्लाहि मिंव्वलिय्यिंव-व ला नसीर (१०७) अम् तुरीदू-न अन् तस्अलू रसूलकुम् कमा सुइ-ल मूसा मिन् क़ब्लु ط व मंय्य-त-बद्दलिल्-कुफ़्-र बिलईमानि फ़-क़द् ज़ल्-ल सवा-अस्सबील (१०८) वद्-द कसीरुम्मिन् अह़्लिल्किताबि लौ यरुद्दूनकुम् मिम्बअ़्दि ईमानिकुम् कुफ़्फ़ारन् ج ह़-स-दम्मिन् अ़िन्दि अन्फ़ुसिहिम् मिम्बअ़्दि मा त-बय्य-न लहुमुल्ह़क़्क़ु फ़अ़्-फ़ू वस्फ़ह़ू ह़त्ता यअ्तियल्लाहु बिअम्रिही ط इन्नल्ला-ह अ़ला कुल्लि शै-इन् क़दीर ● (१०९) व अक़ीमुस्सला-त व आतुज़्ज़का-त ط व मा तुक़द्दिमू लिअन्फ़ुसिकुम् मिन् ख़ैरिन् तजिदूहु अ़िन्दल्लाहि ط इन्नल्ला-ह बिमा तअ़्-मलून बसीर (११०)

البقرة ٢ — ١٣ — الم ١

يعلمن من احد حتى يقولا انما نحن فتنة فلا تكفر فيتعلمون منهما
ما يفرقون به بين المرء وزوجه وما هم بضارين به من احد الا باذن
الله ويتعلمون ما يضرهم ولا ينفعهم ولقد علموا لمن اشترىه ما له
في الاخرة من خلاق ولبئس ما شروا به انفسهم لو كانوا يعلمون ۝
ولو انهم امنوا واتقوا لمثوبة من عند الله خير لو كانوا يعلمون ۝
يايها الذين امنوا لا تقولوا راعنا وقولوا انظرنا واسمعوا وللكفرين
عذاب اليم ۝ ما يود الذين كفروا من اهل الكتب ولا المشركين ان
ينزل عليكم من خير من ربكم والله يختص برحمته من يشاء والله
ذو الفضل العظيم ۝ ما ننسخ من اية او ننسها نات بخير منها او
مثلها الم تعلم ان الله على كل شيء قدير ۝ الم تعلم ان الله له ملك
السموت والارض وما لكم من دون الله من ولي ولا نصير ۝ ام
تريدون ان تسئلوا رسولكم كما سئل موسى من قبل ومن يتبدل
الكفر بالايمان فقد ضل سواء السبيل ۝ ود كثير من اهل الكتب
لو يردونكم من بعد ايمانكم كفارا حسدا من عند انفسهم من
بعد ما تبين لهم الحق فاعفوا واصفحوا حتى ياتي الله بامره ان الله
على كل شيء قدير ۝ واقيموا الصلوة واتوا الزكوة وما تقدموا
لانفسكم من خير تجدوه عند الله ان الله بما تعملون بصير ۝

★रु० १२/१२ आ ७ ● सु० ३/४

(गंदी बातों) के पीछे लग गये जो सुलेमान की सल्तनत के ज़माने में शैतान पढ़ा करते थे और सुलेमान ने बिल्कुल कुफ़्र की बात नहीं की, बल्कि शैतान ही कुफ़्र करते थे कि लोगों को जादू सिखाते थे और उन बातों के भी (पीछे लग गये) जो बाबिल शहर में दो फ़रिश्तों (यानी) हारूत और मारूत पर उतरी थीं और वे दोनों किसी को कुछ नहीं सिखाते थे, जब तक यह न कह देते कि हम तो आज़माइश (का ज़रिया) हैं, तुम कुफ़्र में न पड़ो। ग़रज़ लोग उनसे ऐसा (जादू) सीखते, जिससे मियां-बीवी में जुदाई डाल दें और खुदा के हुक्म के सिवा वे इस (जादू) से किसी का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते थे। और कुछ ऐसे (मंत्र) सीखते जो उन को नुक़सान ही पहुंचाते और फ़ायदा कुछ न देते। और वह जानते थे कि जो शख़्स ऐसी चीज़ों (यानी जादू और मंत्र वग़ैरह) का ख़रीदार होगा, उस का आख़िरत में कुछ हिस्सा नहीं और जिस चीज़ के बदले में उन्होंने अपनी जानों को बेच डाला, वह बुरी थी, काश ! वे (इस बात को) जानते। (१०२) और अगर वे ईमान लाते और परहेज़गारी करते तो ख़ुदा के यहां से बहुत अच्छा बदला मिलता। ऐ काश ! वे इसे जानते होते। (१०३)★

ऐ ईमान वालो ! (बात करते वक़्त ख़ुदा के पैग़म्बर से) 'राअिना' न कहा करो, 'उन्ज़ुर्ना' कहा करो और ख़ूब सुन रखो,[1] और काफ़िरों के लिए दुख देने वाला अज़ाब है। (१०४) जो लोग काफ़िर हैं, अह्ले किताब या मुश्रिक, वे इस बात को पसन्द नहीं करते कि तुम पर तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से ख़ैर (व बरकत) नाज़िल हो और ख़ुदा तो जिसको चाहता है, अपनी रहमत के साथ ख़ास कर लेता है और ख़ुदा बड़े फ़ज़्ल का मालिक है। (१०५) हम जिस आयत को मंसूख़ कर देते या उसे भुला देते हैं, तो उससे बेहतर या वैसी ही और आयत भेज देते हैं। क्या तुम नहीं जानते कि ख़ुदा हर बात पर क़ादिर है। (१०६) तुम्हें मालूम नहीं कि आसमानों और ज़मीन की बादशाहत ख़ुदा ही की है और ख़ुदा के सिवा तुम्हारा कोई दोस्त और मददगार नहीं। (१०७) क्या तुम यह चाहते हो कि अपने पैग़म्बर से उसी तरह के सवाल करो, जिस तरह के सवाल पहले मूसा से किये गये थे और जिस शख़्स ने ईमान (छोड़ कर उस) के बदले कुफ़्र लिया, वह सीधे रास्ते से भटक गया। (१०८) बहुत से अह्ले किताब अपने दिल की जलन से यह चाहते हैं कि ईमान ला चुकने के बाद तुम को फिर काफ़िर बना दें, हालांकि उन पर हक़ ज़ाहिर हो चुका है, तो तुम माफ़ कर दो और दर गुज़र करो, यहां तक कि ख़ुदा अपना (दूसरा) हुक्म भेजें,[2] बेशक ख़ुदा हर बात पर क़ादिर है। (१०९)● और नमाज़ अदा करते रहो और ज़कात देते रहो और जो भलाई अपने लिए आगे भेज रखोगे, उस को ख़ुदा के यहां पा लोगे। कुछ शक नहीं कि ख़ुदा तुम्हारे सब कामों को देख

---

१. प्यारे नबी सल्ल० की मज्लिस में यहूदी बैठते तो नबी सल्ल० के इर्शादों में से जो बात अच्छी तरह न समझ सकते और चाहते कि फिर सुनें तो 'राअिना' कहते, यानी हमारी तरफ़ तवज्जोह फ़रमाइए और फिर इर्शाद कीजिए, मगर एक तो उनकी ज़ुबान में उस के मानी होते 'मूर्ख और घमंडी', दूसरे ज़रा ज़ुबान दबा कर कहते तो 'राईना' हो जाता यानी हमारा चरवाहा। मुसलमानों को इन शरीरों की बद-नीयती का हाल मालूम न था। वे भी उनसे सीखकर किसी वक़्त यह लफ़्ज़ कह देते। ख़ुदा ने फ़रमाया कि 'राअिना' का लफ़्ज़ जिसके कई मानी हो सकते हैं और कुछ मानी बुरे हैं, उसे मत इस्तेमाल किया करो। इस जगह 'उन्ज़ुर्ना' कहा करो। 'उन्ज़ुर्ना' के मानी भी यही हैं कि हमारी तरफ़ मुतवज्जह होजिए और फिर फ़रमाइये, मगर इस में दूसरे मानों का एहतिमाल नहीं हो सकता।
२. आख़िर हुक्म पहुंचा कि यहूदियों को मदीने के नज़दीक से निकाल दो।

★रु. १२/१२ आ ७ ●सु. ३/४

व क़ालू लंय्यद्ख़ुलल्जन्न-त इल्ला मन् का-न हूदन् औ नसारा, तिल्-क अमानिय्युहुम्, क़ुल् हातू बुर्हानकुम् इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (१११) बला मन् अस्-ल-म वज्हहू लिल्लाहि व हु-व मुह्सिनुन् फ़-लहू अज्रुहू अिन्-द रब्बिही व ला ख़ौफ़ुन् अलैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून★(११२) व क़ालतिल्यहूदु लैसतिन्नसारा अला शैइंव्- व क़ालतिन्नसारा लैसतिल्यहूदु अला शैइंव्- व हुम् यत्लूनल् - किताब, कज़ालि-क क़ालल्लज़ी - न ला यअ्-लमू-न मिस्-ल क़ौलिहिम् फ़ल्लाहु यह्कुमु बैनहुम् यौमल्क़ियामति फ़ीमा कानू फ़ीहि यख़्तलिफ़ून (११३) व मन् अज़्लमु मिम्मम्-म-न-अ मसाजिदल्लाहि अंय्युज़्-क-र फ़ीहस्मुहू व सआ फ़ी ख़राबिहा, उला-इ-क मा का - न लहुम् अंय्यद्ख़ुलूहा इल्ला ख़ा - इफ़ीन लहुम् फ़िद्दुन्या ख़िज़्युंव-व लहुम् फ़िल्आख़िरति अज़ा-बुन् अज़ीम (११४) व लिल्लाहिल्-मश्रिक़ु वल्मग़्रिबु फ़ ऐनमा तुवल्लू फ़-सम् - म वज्हुल्लाहि इन्नल्ला-ह वासिअुन् अलीम (११५) व क़ालुत्त-ख़-ज़ल्लाहु व-ल-दन् सुब्हानहू, बल्लहू मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि, कुल्लुल्लहू क़ानितून (११६) बदीअुस्समावाति वल्अर्ज़ि, व इज़ा क़ज़ा अम्रन् फ़इन्नमा यक़ूलु लहू कुन् फ़-यकून (११७) व क़ालल्लज़ी-न ला यअ्-लमू-न लौ ला युकल्लिमुनल्लाहु औ तअ्तीना आयतुन् कज़ालि-क क़ालल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् मिस्-ल क़ौलिहिम्, तशाब-हत् क़ुलू - बुहुम्, क़द् बय्यन्नल् - आयाति लि क़ौमिंय्यूक़िनून (११८) इन्ना अरसल्ना-क बिल्हक़्क़ि बशीरंव-व नज़ीरंव-व ला तुस्अलु अन् अस्हाबिल्जहीम (११९) व लन् तर्ज़ा अन्कल्यहूदु व लन्नसारा हत्ता तत्तबि - अ मिल्लतहुम् क़ुल् इन्-न हुदल्लाहि हुवल्हुदा व लइनित्तबअ्-त अह्वा - अहुम् बअ्-दल्लज़ी जा - अ-क मिनल्अिल्मि, मा ल - क मिनल्लाहि मिंव्वलिय्यिंव - व ला नसीर ※ (१२०)

وقالوا لن يدخل الجنة إلا من كان هودا أو نصارى تلك أمانيهم قل
هاتوا برهانكم إن كنتم صادقين ۝ بلى من أسلم وجهه لله وهو
محسن فله أجره عند ربه ولا خوف عليهم ولا هم يحزنون ۝ وقالت اليهود
ليست النصارى على شيء وقالت النصارى ليست اليهود على شيء وهم
يتلون الكتاب كذلك قال الذين لا يعلمون مثل قولهم فالله يحكم
بينهم يوم القيامة فيما كانوا فيه يختلفون ۝ ومن أظلم ممن منع
مساجد الله أن يذكر فيها اسمه وسعى في خرابها أولئك ما كان لهم أن
يدخلوها إلا خائفين لهم في الدنيا خزي ولهم في الآخرة عذاب عظيم ۝
ولله المشرق والمغرب فأينما تولوا فثم وجه الله إن الله واسع عليم ۝
وقالوا اتخذ الله ولدا سبحانه بل له ما في السماوات والأرض كل له
قانتون ۝ بديع السماوات والأرض وإذا قضى أمرا فإنما يقول له كن
فيكون ۝ وقال الذين لا يعلمون لولا يكلمنا الله أو تأتينا آية كذلك
قال الذين من قبلهم مثل قولهم تشابهت قلوبهم قد بينا الآيات
لقوم يوقنون ۝ إنا أرسلناك بالحق بشيرا ونذيرا ولا تسأل عن أصحاب
الجحيم ۝ ولن ترضى عنك اليهود ولا النصارى حتى تتبع ملتهم قل
إن هدى الله هو الهدى ولئن اتبعت أهواءهم بعد الذي جاءك من
العلم ما لك من الله من ولي ولا نصير ۝ الذين آتيناهم الكتاب يتلونه

★रु. १३/१३ आ ९ ※ व. मंज़िल

रहा है। (११०) और (यहूदी और ईसाई) कहते हैं कि यहूदियों और ईसाइयों के सिवा कोई बहिश्त में नहीं जाने का। ये उन लोगों के बातिल ख़्यालात हैं। (ऐ पैग़म्बर! इन से) कह दो कि अगर सच्चे हो तो दलील पेश करो। (१११) हां, जो ख़ुदा के आगे गरदन झुका दे (यानी ईमान ले आए) और वह भले काम करने वाला हो, तो उसका बदला उस के परवरदिगार के पास है और ऐसे लोगों को (क़ियामत के दिन) न किसी तरह का ख़ौफ़ होगा और न वे ग़मनाक होंगे। (११२) ★

और यहूदी कहते हैं कि ईसाई रास्ते पर नहीं और ईसाई कहते हैं कि यहूदी रास्ते पर नहीं, हालांकि वे किताबे (इलाही) पढ़ते हैं। इसी तरह बिल्कुल उन्हीं की-सी बात वे लोग कहते हैं जो (कुछ) नहीं जानते (यानी मुश्रिक), तो जिस बात में ये लोग इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं, ख़ुदा क़ियामत के दिन इसका उन में फ़ैसला कर देगा। (११३) और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन है जो ख़ुदा की मस्जिदों में ख़ुदा के नाम का ज़िक्र किये जाने को मना करे और उनकी वीरानी में कोशिश करे। उन लोगों को कुछ हक़ नहीं कि उनमें दाख़िल हों, मगर डरते हुए। उन के लिए दुनिया में रुसवाई है और आख़िरत में बड़ा अज़ाब। (११४) और पूरब और पच्छिम सब ख़ुदा ही का है, तो जिधर तुम रुख़ करो, उधर ख़ुदा की ज़ात है। बेशक ख़ुदा वुस्अत वाला और बा-ख़बर है।[1] (११५) और ये लोग इस बात के क़ायल हैं कि ख़ुदा औलाद रखता है। (नहीं,) वह पाक है, बल्कि जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, सब उसी का है और सब उसके फ़रमांबरदार हैं। (११६) (वही) आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला है। जब कोई काम करना चाहता है, तो उस को इर्शाद फ़रमा देता है कि होजा, तो वह हो जाता है। (११७) और जो लोग (कुछ) नहीं जानते (यानी मुश्रिक), वे कहते हैं कि ख़ुदा हमसे कलाम क्यों नहीं करता या हमारे पास कोई निशानी क्यों नहीं आती। इसी तरह जो लोग उन से पहले थे, वे भी इन्हीं की-सी बातें किया करते थे। इन लोगों के दिल आपस में मिलते-जुलते हैं। जो लोग यक़ीन वाले हैं, उनके (समझाने के) लिए हमने निशानियां बयान कर दी हैं। (११८) (ऐ मुहम्मद!) हमने तुमको सच्चाई के साथ ख़ुशख़बरी सुनाने वाला और डराने वाला बना क भेजा है और दोज़ख़ियों के बारे में तुमसे कुछ पूछताछ न होगी। (११९) और तुमसे न तो यहूदी कभी ख़ुश होंगे और न ईसाई, यहां तक कि उनके मज़हब की पैरवी अख़्तियार कर लो। (उनसे) कह दो कि ख़ुदा की हिदायत (यानी दीने इस्लाम) ही हिदायत है और (ऐ पैग़म्बर!) अगर तुम अपने पास इल्म (यानी ख़ुदा की वह्य) के आ जाने पर भी उनकी ख़्वाहिशों पर चलोगे, तो तुम को (ख़ुदा के अज़ाब से बचाने वाला) न कोई दोस्त

---

१. इस आयत के शाने नुज़ूल में मुख़्तलिफ़ क़ौल हैं। किसी ने कहा, यह आयत उस आयत से पहले नाज़िल हुई थी, जिस में काबे की तरफ़ मुंह कर के नमाज़ पढ़ने का हुक्म है यानी पूरब और पच्छिम सब ख़ुदा ही का है। जिस तरफ़ तुम मुंह करोगे, ख़ुदा ही की तरफ़ होगा। कुछ ने कहा कि उन लोगों के हक़ में उतरी थी, जिन को काबे की दिशा मालूम न हुई और उन्होंने और तरफ़ नमाज़ पढ़ ली थी। ख़ुदा ने उन को बताया था कि ख़ुदा किसी तरफ़ मख़्सूस नहीं, इस लिए उन की नमाज़ हो गयी। मुजाहिद रह० कहते हैं कि जब आयत 'उद्‌अू नी अस्तजिब लकुम' नाज़िल हुई, तो लोगों ने पूछा कि हम किधर मुंह कर के दुआ मांगा करें। ख़ुदा ने फ़रमाया कि ख़ुदा हर तरफ़ मौजूद है, जिस तरफ़ चाहो, मुंह कर के दुआ मांगा करो।

★रु. १३/१३ आ ९

अल्लज़ी-न आतैना-हुमुल्किता-ब यत्लूनहू हक़्-क़ तिलावतिही, उला-इ-क युअ्मिनू-न बिही, व मंय्यक्फ़ुर् बिही फ़ - उला - इ - क हुमुल् - ख़ासिरून★ (१२१) या बनी इस्रा-इलज़्कुरू निअ्-मतियल्लती अन्-अम्तु अलैकुम् व अन्नी फ़ज़्ज़ल्तुकुम् अ-लल्-आलमीन (१२२) वत्तक़ू यौमल्ला तज्ज़ी नफ़्सुन् अन् नफ़्सिन् शैअंव्-व ला युक़्बलु मिन्हा अद्लुंव-व ला तन्फ़अुहा शफ़ाअतुंव-व ला हुम् युन्सरून (१२३) व इज़िब्तला इब्राही-म रब्बुहू बिकलिमातिन् फ़-अ-तम्महुन-न, क़ा-ल इन्नी जाअिलु-क लिन्नासि इमामन्, क़ा-ल व मिन् ज़ुर्रिय्यती, क़ा-ल ला यनालु अह्दिज़्ज़ालिमीन (१२४) व इज़् जअ़ल्नल्बै-त मसाबतल्-लिन्नासि व अम्नन्, वत्तख़िज़ू मिम्मक़ामि इब्राही-म मुसल्लन्, व अहिद्ना इला इब्राही-म व इस्माअी-ल अन् तह्हिरा बैति-य लित्ताइफ़ी-न वल्आकिफ़ी-न वर्रुक्कअिस्सुजूद (१२५) व इज़् क़ा-ल इब्राहीमु रब्बिज्अल् हाज़ा ब-ल-दन् आमिनंव्वर्ज़ुक़् अह्लहू मिनस्समराति मन् आ-म-न मिन्हुम् बिल्लाहि वल्यौमिल्आख़िरि, क़ा-ल व मन् क-फ़-र फ़ उमत्तिअुहू क़लीलन् सुम्-म अज़्तर्रुहू इला अज़ाबिन्नारि, व बिअ्सल्मसीर (१२६) व इज़् यर्फ़अु इब्राहीमुल्-क़वाअि-द मिनल्बैति व इस्माअीलु, रब्बना त-क़ब्बल् मिन्ना, इन्न-क अन्तस्समीअुल्-अलीम (१२७) रब्बना वज्अल्ना मुस्लिमैनि ल-क व मिन् ज़ुर्रिय्यतिना उम्मतम् - मुस्लिमतल्लक, व अरिना मनासि-कना व तुब् अलैना, इन्न-क अन्तत्तव्वाबुर्रहीम (१२८) रब्बना वब्अस् फ़ीहिम् रसूलम्मिन्हुम् यत्लू अलैहिम् आयाति-क व युअल्लिमु-हुमुल्-किता-ब वल्हिक्म-त व युज़क्कीहिम्, इन्न-क अन्तल् - अज़ीज़ुल् - हकीम ★ (१२९) व मंय्यर्ग़बु अम्मिल्लति इब्राही-म इल्ला मन् सफ़ि-ह नफ़्सहू, व ल-क़दिस्तफ़ैनाहु फ़िद्दुन्या, व इन्नहू फ़िल्आख़िरति ल मिनस्सालिहीन (१३०) इज़् क़ा-ल लहू रब्बुहू अस्लिम्, क़ा-ल अस्लम्तु लिरब्बिल्आलमीन (१३१)

حق تلاوته اولئك يؤمنون به ومن يكفر به فاولئك هم الخسرون
يبني اسراءيل اذكروا نعمتي التي انعمت عليكم واني فضلتكم على
العلمين واتقوا يوما لا تجزي نفس عن نفس شيئا ولا يقبل منها
عدل ولا تنفعها شفاعة ولا هم ينصرون واذ ابتلى ابرهم ربه
بكلمت فاتمهن قال اني جاعلك للناس اماما قال ومن ذريتي قال
لا ينال عهدي الظلمين واذ جعلنا البيت مثابة للناس وامنا و
اتخذوا من مقام ابرهم مصلى وعهدنا الى ابرهم واسمعيل ان
طهرا بيتي للطائفين والعكفين والركع السجود واذ قال ابرهم رب
اجعل هذا بلدا امنا وارزق اهله من الثمرت من امن منهم بالله
واليوم الاخر قال ومن كفر فامتعه قليلا ثم اضطره الى عذاب
النار وبئس المصير واذ يرفع ابرهم القواعد من البيت واسمعيل
ربنا تقبل منا انك انت السميع العليم ربنا واجعلنا مسلمين لك و
من ذريتنا امة مسلمة لك وارنا مناسكنا وتب علينا انك انت
التواب الرحيم ربنا وابعث فيهم رسولا منهم يتلوا عليهم ايتك ويعلمهم
الكتب والحكمة ويزكيهم انك انت العزيز الحكيم ومن يرغب عن
ملة ابرهم الا من سفه نفسه ولقد اصطفينه في الدنيا وانه في الاخرة
لمن الصلحين اذ قال له ربه اسلم قال اسلمت لرب العلمين ووصى

★रु. १४/१३ आ ६ ★रु. १५/१५ आ ८

होगा, न कोई मददगार ※(१२०) जिन लोगों को हमने किताब दी है वे, उसको (ऐसा) पढ़ते हैं, जैसा उसके पढ़ने का हक़ है। यही लोग उस पर ईमान रखने वाले हैं, और जो लोग इसको नहीं मानते, वे घाटा पाने वाले हैं। (१२१) ★

ऐ बनी इस्राईल ! मेरे वे एहसान याद करो जो मैंने तुम पर किये और यह कि मैंने तुमको दुनिया वालों पर फ़ज़ीलत बख्शी। (१२२) और उस दिन से डरो जब कोई शख्स किसी शख्स के कुछ काम न आए और न उसमे बदला क़ुबूल किया जाए, और न उसको किसी की सिफ़ारिश कुछ फ़ायदा दे और न लोगों को (किसी और तरह की) मदद मिल सके। (१२३) और जब परवरदिगार ने कुछ बातों में इब्राहीम की आज़माइश की तो वह उनमें पूरे उतरे। ख़ुदा ने कहा कि मैं तुमको लोगों का पेशवा बनाऊंगा। उन्होंने कहा कि (परवरदिगार !) मेरी औलाद में से भी (पेशवा बनाइयो) । ख़ुदा ने फ़रमाया कि हमारा इक़रार ज़ालिमों के लिए नहीं हुआ करता।[1] (१२४) और जब हमने ख़ाना-ए-काबा को लोगों के लिए जमा होने और अम्न पाने की जगह मुक़र्रर किया और (हुक्म दिया कि) जिस मक़ाम पर इब्राहीम खड़े हुए थे, उसको नमाज की जगह बना लो। और इब्राहीम और इस्माईल को कहा कि तवाफ़ करने वालों और एतिकाफ़ करने वालों रुकूअ करने वालों और सज्दा करने वालों के लिए मेरे घर को पाक साफ़ रखा करो।[2] (१२५) और जब इब्राहीम ने दुआ की कि ऐ परवरदिगार ! इस जगह को अम्न का शहर बना और इसके रहने वालों में से जो ख़ुदा पर और आखिरत के दिन पर ईमान लाएं, उनके खाने को मेवे अता कर, तो ख़ुदा ने फ़रमाया कि जो काफ़िर होगा, मैं उस को भी किसी क़दर मुतमत्तेअ करूंगा (फ़ायदा पहुंचने दूंगा) (मगर) फिर उसको (अज़ाबे) दोज़ख के (भुगतने के) लिए ना-चार कर दूंगा और वह बुरी जगह है। (१२६) और जब इब्राहीम और इस्माईल बैतुल्लाह की बुनियादें ऊंची कर रहे थे (तो दुआ किये जाते थे कि) ऐ हमारे परवरदिगार ! हमसे यह ख़िदमत क़ुबूल फ़रमा। बेशक तू सुनने वाला (और) जानने वाला है। (१२७) ऐ परवरदिगार ! हम को अपना फ़रमांबरदार बनाए रखियो और हमारी औलाद में से भी एक गिरोह को अपना ताबेअदार बनाते रहियो। और (परवरदिगार !) हमें हमारे तरीक़े इबादत के बता और हमारे हाल पर (रहम के साथ) तवज्जोह फ़रमा। बेशक तू तवज्जोह फ़रमाने वाला मेहरबान है। (१२८) ऐ परवरदिगार ! इन (लोगों) में इन्हीं में से एक पैग़म्बर भेजियो, जो उनको तेरी आयत पढ़-पढ़ कर सुनाया करे और किताब और हिकमत सिखाया करे और उन (के दिलों) को पाक-साफ़ किया करे। बेशक तू ग़ालिब और हिकमत वाला है।[3] (१२९) ★

और इब्राहीम के दीन से कौन मुंह फेर सकता है, उसके अलावा, जो निहायत नादान हो। हमने उनको दुनिया में भी चुना था और आखिरत में भी वह नेकों में होंगे। (१३०) जब उनसे उनके परवरदिगार ने फ़रमाया कि इस्लाम ले आओ, तो उन्होंने अर्ज़ की कि मैं दुनियाओं के रब के आगे

---

१. इसमें इख्तिलाफ़ है कि यह आज़माइश नुबूवत से पहले थी या बाद में, और थी तो किस मामले में थी। कभी भी हो और किसी भी मामले में भी हो, वह इस मामले में पूरे निकले और, ख़ुदा ने खुश हो कर उनको लोगों का पेशवा बनाया, मगर यह भी फ़रमा दिया कि तुम्हारी औलाद में ज़ालिम भी होंगे और जो ऐसे होंगे उन को पेशवाई का दर्जा नहीं मिलेगा। जो नेक होंगे, वही पेशवा बनाये जाएंगे।

२. यानी नमाज़ पढ़ने वालों के वास्ते पाक करें काबे के घर को कि उसे अल्लाह तआला ने अपना घर कहा है।

३. जिन पैग़म्बर के लिए हज़रत इब्राहीम ने दुआ की थी, वह मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम थे। एक हदीस में आप ने फ़रमाया कि मैं अपने बाप इब्राहीम की दुआ हूं, ईसा अलै० की बशारत हूं, अपनी मां का ख्वाब हूं।

व वस्सा बिहा इब्राहीमु बनीहि व यअ्क़ूबु ط या बनि-य्य इन्नल्लाहस्तफ़ा लकुमुद्दी-न फ़-ला तमूतुन-न इल्ला व अन्तुम् मुस्लिमून ط (१३२) अम् कुन्तुम् शु-हदा-अ इज् ह-ज़्र-र यअ्क़ूबलमौतु इज् क़ा-ल लिबनीहि मा तअ्बुदू-न मिम्बअ्दी ط क़ालू नअ्बुदु इला-ह-क व इला-ह आबा-इ-क इब्राही-म व इस्माई-ल व इस्हा-क़ इलाहंव-वाहिदंव-व नह्नु लहू मुस्लिमून (१३३) तिल्-क उम्मतुन् क़द् ख़-लत् ج लहा मा क-स-बत् व लकुम् मा क-सब्तुम् ج व ला तुस्अलू-न अम्मा कानू यअ्-मलून (१३४) व क़ालू कूनू हूदन् औ नसारा तह्तदू ط क़ुल् बल् मिल्ल-त इब्राही-म हनीफ़न् ط व मा का-न मिनल्-मुश्रिकीन् (१३५) क़ूलू आमन्ना बिल्लाहि व मा उन्ज़ि-ल इलैना व मा उन्ज़ि-ल इला इब्राही-म व इस्माई-ल व इस्हा-क़ व यअ्क़ू-ब वल् अस्बाति व मा ऊति-य मूसा व ईसा व मा ऊति-यन्नबिय्यू-न मिर्रब्बिहिम् ج ला नुफ़र्रिक़ु बै-न अ-हदिम् मिन्हुम् ﺻﻠﮯ व नह्नु लहू मुस्लिमून (१३६) फ़ इन् आमनू बिमिस्लि मा आमन्तुम् बिही फ़-क़दिह्तदौ ج व इन् तवल्लौ फ़-इन्नमा हुम् फ़ी शिक़ाक़िन् ج फ़-स-यक्फ़ी-क-हुमुल्लाहु ج व हुवस्समीअुल्-अलीम ط (१३७) सिब्ग़तल्लाहि ج व मन् अह्सनु मिनल्लाहि सिब्ग़तंव-व नह्नु लहू आबिदून (१३८) क़ुल् अतुहा-ज्जूनना फ़िल्लाहि व हु-व रब्बुना व रब्बुकुम् ج व लना अअ्-मालुना व लकुम् अअ्-मालुकुम् ج व नह्नु लहू मुख़्लिसून (१३९) अम् तक़ूलू-न इन्-न इब्राही-म व इस्माई-ल व इस्हा-क़ व यअ्क़ू-ब वल्अस्बा-त कानू हूदन् औ नसारा ط क़ुल् अ अन्तुम् अअ्लमु अमिल्लाहु ط व मन् अज़्लमु मिम्मन् क-त-म शहा-द-तन् अिन्दहू मिनल्लाहि ط व मल्लाहु बिग़ाफ़िलिन् अम्मा तअ्-मलून (१४०) तिल्-क उम्मतुन् क़द् ख़-लत् ج लहा मा क-स-बत् व लकुम् मा क-सब्तुम् ج व ला तुस्अलू-न अम्मा कानू यअ्-मलून ★ (१४१)

بها ابرٰهم بنيه ويعقوب يبني ان الله اصطفى لكم الدين فلا تموتن الا
وانتم مسلمون ۝ ام كنتم شهداء اذ حضر يعقوب الموت اذ قال لبنيه
ما تعبدون من بعدي قالوا نعبد الٰهك واله ابائك ابرٰهم واسمٰعيل
واسحٰق الٰها واحدا ونحن له مسلمون ۝ تلك امة قد خلت لها ما
كسبت ولكم ما كسبتم ولا تسئلون عما كانوا يعملون ۝ وقالوا كونوا هودا
او نصٰرى تهتدوا قل بل ملة ابرٰهم حنيفا وما كان من المشركين ۝
قولوا امنا بالله وما انزل الينا وما انزل الى ابرٰهم واسمٰعيل واسحٰق
ويعقوب والاسباط وما اوتي موسى وعيسى وما اوتي النبيون من
ربهم لا نفرق بين احد منهم ونحن له مسلمون ۝ فان امنوا
بمثل ما امنتم به فقد اهتدوا وان تولوا فانما هم في شقاق
فسيكفيكهم الله وهو السميع العليم ۝ صبغة الله ومن
احسن من الله صبغة ونحن له عٰبدون ۝ قل اتحاجوننا في الله
وهو ربنا وربكم ولنا اعمالنا ولكم اعمالكم ونحن له مخلصون ۝ ام
تقولون ان ابرٰهم واسمٰعيل واسحٰق ويعقوب والاسباط كانوا
هودا او نصٰرى قل ءانتم اعلم ام الله ومن اظلم ممن كتم شهادة
عنده من الله وما الله بغافل عما تعملون ۝ تلك امة قد خلت
لها ما كسبت ولكم ما كسبتم ولا تسئلون عما كانوا يعملون ۝

★रु. १६/१६ आ१२

इताअत के लिए सर झुकाता हूं। (१३१) और इब्राहीम ने अपने बेटों को इसी बात की वसीयत की और याक़ूब ने भी (अपने बेटों से यही कहा) कि बेटा ! खुदा ने तुम्हारे लिए यही दीन पसन्द फ़रमाया है, तो मरना तो मुसलमान ही मरना। (१३२) भला जिस वक़्त याक़ूब वफ़ात पाने लगे, तो तुम उस वक़्त मौजूद थे, जब उन्होंने अपने बेटों से पूछा कि मेरे बाद तुम किसकी इबादत करोगे ? तो उन्होंने कहा कि आपके माबूद और आपके बाप-दादा इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक़ के माबूद की इबादत करेंगे, जो अकेला माबूद है। और हम उसी के हुक्मबरदार हैं। (१३३) यह जमाअत गुज़र चुकी, उन को उनके आमाल (का बदला मिलेगा)और तुमको तुम्हारे आमाल (का) और जो अमल वे करते थे, उनकी पूछ-गछ तुमसे नहीं होगी। (१३४) और (यहूदी और ईसाई) कहते हैं कि यहूदी या ईसाई हो जाओ तो सीधे रास्ते पर लग जाओ । (ऐ पैग़म्बर ! उनसे) कह दो, (नहीं), बल्कि (हम) दीने इब्राहीम (अख़्तियार किये हुए हैं), जो एक खुदा के हो रहे थे और मुश्रिकों में से न थे। (१३५) (मुसलमानो !) कहो कि हम खुदा पर ईमान लाए और जो (किताब) हम पर उतरी, उस पर और जो (सहीफ़े) इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक़ और याक़ूब और उनकी औलाद पर नाज़िल हुए, उन पर और जो (किताबें) मूसा और ईसा को अता हुईं उन पर और जो और पैग़म्बरों को उनके परवरदिगार की तरफ़ से मिलीं, उन पर (सब पर ईमान लाये)। हम उन पैग़म्बरों में से किसी में कुछ फ़र्क़ नहीं करते और हम उसी (खुदा-ए-वाहिद) के फ़रमांबरदार हैं। (१३६) तो अगर ये लोग भी उसी तरह ईमान लायें, जिस तरह तुम ईमान ले आये हो, तो वे हिदायत पा जाएं और अगर मुंह फेर लें (और न मानें) तो वे (तुम्हारे) मुख़ालिफ़ हैं और उनके मुक़ाबले में तुम्हें खुदा काफ़ी है और वह सुनने वाला (और) जानने वाला है। (१३७) (कह दो कि हमने) खुदा का रंग (अख़्तियार कर लिया है) और खुदा से बेहतर रंग किसका हो सकता है और हम उसी की इबादत करने वाले हैं।[1] (१३८) (उन से कहो, क्या तुम खुदा के बारे में हमसे झगड़ते हो, हालांकि वही हमारा और तुम्हारा परवरदिगार है और हमको हमारे आमाल (का बदला मिलेगा) और तुम को तुम्हारे आमाल (का) और हम ख़ास उसी की इबादत करने वाले हैं। (१३९) (ऐ यहूद व नसारा !) क्या तुम इस बात के क़ायल हो कि इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक़ और याक़ूब और उनकी औलाद यहूदी और ईसाई थे। (ऐ मुहम्मद ! उनसे) कहो कि भला तुम ज़्यादा जानते हो या खुदा ?[2] और उससे बढ़ कर ज़ालिम कौन, जो खुदा की गवाही को जो उस के पास (किताब में मौजूद) है, छिपाये और जो कुछ तुम लोग कर रहे हो, खुदा उससे ग़ाफ़िल नहीं।[3] (१४०) यह जमाअत गुज़र चुकी। उन को (वह) मिलेगा, जो उन्होंने किया और तुमको वह जो तुमने किया और जो अमल वे करते थे, उन की पूछ तुम से नहीं

---

१. खुदा के रंग से मुराद उस का दीन इस्लाम है जो खुदा की तौहीदे ख़ालिस सिखाता है और उसी को इबादत का मुस्तहिक़ बनाता है।

२. यहूद व नसारा हज़रत इब्राहीम और पैग़म्बरों को अपने मज़हब की तरफ़ मंसूब करते थे यानी उन्हें यहूदी या ईसाई कहते थे। खुदा ने उन के इस क़ौल को रद्द कर दिया और फ़रमाया कि उन के हाल को तुम ज़्यादा जानते हो या खुदा। खुदा के इल्म में तो न वे यहूदी थे, न ईसाई, बल्कि अकेले खुदा के फ़रमांबरदार और उन का मज़हब इस्लाम (यानी खुदा की हुक्मबरदारी) था।

३. गवाही से मुराद इस बात की जानकारी है कि मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं, जिन का हाल उन की किताबों में लिखा हुआ था, लेकिन वे जान-बूझ कर उस को छिपाते थे और अल्लाह ने गवाही छिपाने वाले को निहायत ज़ालिम क़रार दिया।

दूसरा पारः स-यक़ूलु

सूरतुल्-बक़रति आयत १४२ से २५२

स-यक़ूलुस्सुफ़हा-उ मिनन्नासि मा वल्लाहुम् अन् क़िब्लतिहिमुल्लती कानू अलैहा ط क़ुल् लिल्लाहिल् - मश्रिक़ु वल्मग़्‌रिबु ط यह्दी मंय्यशा-उ इला सिरातिम् - मुस्तक़ीम (१४२) व कज़ालि-क ज-अ़ल्नाकुम् उम्मतंव-व-स-तल्लितकूनू शुहदा-अ अलन्नासि व यकूनर्रसूलु अलैकुम् शहीदन् ط व मा जअ़ल्नल्-क़िब्-ल-तुल्लती कुन्-त अलैहा इल्ला लिनअ्-ल-म मंय्यत्तबिअुर्रसू-ल मिम्मंय्यन्क़लिबु अला अक़िबैहि ط व इन् कानत् ल-कबीरतन् इल्ला अलल्लज़ी-न हदल्लाहु ط व मा कानल्लाहु लियुज़ी-अ ईमानकुम् ط इन्नल्ला-ह बिन्नासि ल रऊफ़ुर्रहीम (१४३) क़द् नरा तक़ल्लु-ब वज्हि-क फ़िस्समा-इ ج फ़-ल-नुवल्लियन्न-क क़िब्लतन् तर्ज़ाहा صلے फ़-वल्लि वज्ह-क शत्‌रल्-मस्जिदिल्-हरामि ط व हैसु मा कुन्तुम् फ़ वल्लू वुजूहकुम् शत्‌रहू ط व इन्नल्लज़ी-न ऊतुल्किता-ब ल-यअ्-लमू-न अन्नहुल् हक़्क़ु मिर्रब्बिहिम् ط व मल्लाहु बिग़ाफ़िलिन् अम्मा यअ्-मलून (१४४) व लइन् अतैतल्लज़ी-न ऊतुल्किता-ब बिकुल्लि आयतिम्मा तबि-अू क़िब्ल-तक ج व मा अन्-त बि ताबिअिन् क़िब्लतहुम् ج व मा बअ्‌ज़ुहुम् बि ताबिअिन् क़िब्ल-त बअ्‌ज़िन् ط व लइनित्तबअ्-त अह्वा-अ हुम् मिम्बअ्‌दि मा जा-अ-क मिनलअिलिमि لا इन्न-क इज़ल्-ल मिनज़्-ज़ालिमीन ※ (१४५) अल्लज़ी-न आतैना - हुमुल्किता-ब यअ्-रिफ़ूनहू कमा यअ्-रिफ़ू-न अब्ना-अ हुम् ط व इन्-न फ़रीक़म्-मिन्हुम् ल-यक्तुमूनल्-हक़्-क़ व हुम् यअ्-लमून ※ (१४६) अल्हक़्क़ु मिर्रब्बि-क फ़ ला तकूनन्-न मिनलमुम्तरीन ★ (१४७)

سَيَقُولُ السُّفَهَاءُ مِنَ النَّاسِ مَا وَلّٰهُمْ عَنْ قِبْلَتِهِمُ الَّتِي
كَانُوا عَلَيْهَا ۚ قُلْ لِلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ ۚ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ إِلٰى
صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝ وَكَذٰلِكَ جَعَلْنٰكُمْ أُمَّةً وَسَطًا لِتَكُونُوا شُهَدَاءَ
عَلَى النَّاسِ وَيَكُونَ الرَّسُولُ عَلَيْكُمْ شَهِيدًا ۗ وَمَا جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ
الَّتِي كُنْتَ عَلَيْهَا إِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يَتَّبِعُ الرَّسُولَ مِمَّنْ يَنْقَلِبُ عَلٰى
عَقِبَيْهِ ۚ وَإِنْ كَانَتْ لَكَبِيرَةً إِلَّا عَلَى الَّذِينَ هَدَى اللّٰهُ ۗ وَمَا كَانَ اللّٰهُ
لِيُضِيعَ إِيمَانَكُمْ ۚ إِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوفٌ رَحِيمٌ ۝ قَدْ نَرٰى
تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِي السَّمَاءِ ۖ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً تَرْضٰهَا ۚ فَوَلِّ وَجْهَكَ
شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوا وُجُوهَكُمْ شَطْرَهُ ۗ وَ
إِنَّ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتٰبَ لَيَعْلَمُونَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّهِمْ ۗ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ
عَمَّا يَعْمَلُونَ ۝ وَلَئِنْ أَتَيْتَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتٰبَ بِكُلِّ آيَةٍ مَا تَبِعُوا
قِبْلَتَكَ ۚ وَمَا أَنْتَ بِتَابِعٍ قِبْلَتَهُمْ ۚ وَمَا بَعْضُهُمْ بِتَابِعٍ قِبْلَةَ بَعْضٍ ۚ
وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ أَهْوَاءَهُمْ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ إِنَّكَ إِذًا لَمِنَ
الظّٰلِمِينَ ۝ الَّذِينَ آتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْرِفُونَهُ كَمَا يَعْرِفُونَ أَبْنَاءَهُمْ ۖ وَ
إِنَّ فَرِيقًا مِنْهُمْ لَيَكْتُمُونَ الْحَقَّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ۝ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَلَا
تَكُونَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِينَ ۝ وَلِكُلٍّ وِجْهَةٌ هُوَ مُوَلِّيهَا ۖ فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ ۚ
أَيْنَ مَا تَكُونُوا يَأْتِ بِكُمُ اللّٰهُ جَمِيعًا ۚ إِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

※ व. ला. ※ व. मं. ★ रु. १७/१ आ ६

होगी(१४१) ★ मूर्ख लोग कहेंगे कि मुसलमान जिस क़िब्ले पर (पहले से चले आते) थे (अब) उससे क्यों मुंह फेर बैठे? तुम कह दो कि पूरब और पच्छिम सब ख़ुदा ही का है। वह जिसको चाहता है, सीधे रास्ते पर चलाता है। (१४२) और इसी तरह हमने तुम को उम्मते मोतदिल बनाया है,[1] ताकि तुम लोगों पर गवाह बनो और (आख़िरी) पैग़म्बर तुम पर गवाह बनें और जिस क़िब्ले पर तुम (पहले) थे, उसको हमने इसलिए मुक़र्रर किया था कि मालूम करें कि कौन (हमारे) पैग़म्बर का ताबेअ रहता है और कौन उल्टे पांव फिर जाता है और यह बात (यानी क़िब्ले की तब्दीली, लोगों को) बोझ मालूम हुई, मगर जिन को ख़ुदा ने हिदायत बख़्शी है, (वे इसे बोझ नहीं समझते) और ख़ुदा ऐसा नहीं कि तुम्हारे ईमान को यों ही खो दे। ख़ुदा तो लोगों पर बड़ा मेहरबान (और) रहमत वाला है। (१४३) (ऐ मुहम्मद!) हम तुम्हारा आसमान की तरफ़ मुंह फेर-फेर कर देखना देख रहे हैं।[2] सो हम तुमको उसी क़िब्ले की तरफ़, जिसको तुम पसन्द करते हो, मुंह करने का हुक्म देंगे। तो अपना मुंह मस्जिदे हराम (यानी ख़ाना-ए-काबा) की तरफ़ फेर लो। और तुम लोग जहां हुआ करो (नमाज़ पढ़ने के वक़्त) उसी मस्जिद की तरफ़ मुंह कर लिया करो। और जिन लोगों को किताब दी गयी है वे ख़ूब जानते हैं कि (नया क़िब्ला) उनके परवरदिगार की तरफ़ से हक़ है और जो काम ये लोग करते हैं, ख़ुदा उन से बे-ख़बर नहीं।[3] (१४४) और अगर तुम इन अह्ले किताब के पास तमाम निशानियां भी लेकर आओ तो भी ये तुम्हारे क़िब्ले की पैरवी न करें और तुम भी उनके क़िब्ले की पैरवी करने वाले नहीं और उनमें से भी कुछ-कुछ के क़िब्ले के पैरो नहीं और अगर तुम बावजूद इसके कि तुम्हारे पास दानिश (यानी वह्ये ख़ुदा) आ चुकी है, उनकी ख़्वाहिशों के पीछे चलोगे तो ज़ालिमों में (दाख़िल) हो जाओगे ▧ (१४५) जिन लोगों को हमने किताब दी है, वे इन (आख़िरी पैग़म्बर) को इस तरह पहचानते हैं, जिस तरह अपने बेटों को पहचाना करते हैं, मगर एक फ़रीक़ इन में से सच्ची बात को जान-बूझ कर छिपा रहा है ▧ (१४६) (ऐ पैग़म्बर! यह नया क़िब्ला) तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से हक़ है तुम हरगिज़ शक करने

---

१. उम्मते मोतदिल, जिस में न इफ़रात है, न तफ़रीत। ईसाइयों ने इफ़रात अपनाया कि हज़रत ईसा को ख़ुदा का बेटा बना दिया और यहूदियों ने तफ़रीत किया किया कि उन की पैग़म्बरी को भी न माना। उम्मते मोतदिल (दर्मियानी राह वाले) ने न उन को हद से ज़्यादा बढ़ाया, न घटाया बल्कि उन के दर्जे पर रखा।

२. यानी इस ग़रज़ से मुंह फेर-फेर देखना कि कब काबे की तरफ़ मुंह कर के नमाज़ पढ़ने का हुक्म होता है, क्योंकि आप दिल से चाहते थे कि अपने दादा इब्राहीम अलैहिस्सलाम के क़िब्ले की तरफ़ मुंह कर के नमाज़ पढ़ा करें।

३. हज़रत पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ज़ुहर की नमाज़ की दो रक्अतें पढ़ी थीं कि यह आयत उतरी और हुक्म हुआ कि काबे की तरफ़ मुंह कर के नमाज़ पढ़ो। हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसी वक़्त नमाज़ के अन्दर काबे की तरफ़ फिर गये और दो रक्अतें बाक़ी काबे की तरफ़ पढ़ीं। इस मस्जिद को ज़ू क़िब्लतैन कहते हैं यानी दो क़िब्ले वाली।

व लि कुल्लिव्विज्हतुन् हु-व मुवल्लीहा फ़स्तबिक़ुल्-ख़ैराति ※ अ-न मा तकूनू यअ्ति बिकुमुल्लाहु जमीअन् ط इन्नल्ला-ह अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (१४८) व मिन् हैसु ख-रज्-त फ़ वल्लि वज्ह-क शत्‌रल्-मस्जिदिल्-हरामि ط व इन्नहु लल्हक़्क़ु मिर्रब्बिक ط व मल्लाहु बि ग़ाफ़िलिन् अ़म्मा तअ्-मलून (१४९) व मिन् हैसु ख-रज्-त फ़ वल्लि वज्-ह-क शत्‌रल्-मस्जिदिल् - हरामि ط व हैसु मा कुन्तुम् फ़ वल्लू वुजूहकुम् शत्-रहू लि-अल्ला यकू-न लिन्नासि अ़लैकुम् हुज्जतुन् ق इल्लल्लज़ी-न ज़-लमू मिन्हुम् ق फ़ ला तख़्शौहुम् वख़्शौनी ق व लि उतिम्-म निअ्-मती अ़लैकुम् व ल-अ़ल्लकुम् तह्तदून ᐟ (१५०) कमा अर्सल्ना फ़ीकुम् रसूलम्-मिन्कुम् यत्लू अ़लैकुम् आयातिना व युज़क्कीकुम् व युअ़ल्लिमु-कुमुल्-किता-ब वल्हिक्म-त व युअ़ल्लिमुकुम् मा लम् तकूनू तअ्-लमून ط (१५१) फ़ज़्कुरूनी अज़्कुर्-कुम् वश्कुरूली व ला तक्फ़ुरून ★ (१५२) या अय्युहल्लज़ी-न आमनुस्तअ़ीनू बिस्सब्रि वस्सलाति ط इन्नल्ला - ह म-अस्साबिरीन

البقرة ٢ ١٨ سيقول ٢

ومن حيث خرجت فول وجهك شطر المسجد الحرام وإنه للحق
من ربك وما الله بغافل عما تعملون ۝ ومن حيث خرجت فول
وجهك شطر المسجد الحرام وحيث ما كنتم فولوا وجوهكم
شطره لئلا يكون للناس عليكم حجة إلا الذين ظلموا منهم
فلا تخشوهم واخشوني ولأتم نعمتي عليكم ولعلكم تهتدون ۝
كما أرسلنا فيكم رسولا منكم يتلوا عليكم آياتنا ويزكيكم و
يعلمكم الكتاب والحكمة ويعلمكم ما لم تكونوا تعلمون ۝
فاذكروني أذكركم واشكروا لي ولا تكفرون ۝ يا أيها الذين
آمنوا استعينوا بالصبر والصلوة إن الله مع الصابرين ۝ ولا
تقولوا لمن يقتل في سبيل الله أموات بل أحياء ولكن لا
تشعرون ۝ ولنبلونكم بشيء من الخوف والجوع ونقص من
الأموال والأنفس والثمرات وبشر الصابرين ۝ الذين إذا
أصابتهم مصيبة قالوا إنا لله وإنا إليه راجعون ۝ أولئك
عليهم صلوات من ربهم ورحمة وأولئك هم المهتدون ۝
إن الصفا والمروة من شعائر الله فمن حج البيت أو
اعتمر فلا جناح عليه أن يطوف بهما ومن تطوع خيرا فإن
الله شاكر عليم ۝ إن الذين يكتمون ما أنزلنا من البينات

منزل

(१५३) व ला तक़ूलू लिमंय्युक़्तलु फ़ी सबीलिल्लाहि अम्वातुन् ط बल् अह्याउंव-व लाकिल्ला तश्अुरून (१५४) व ल-नब्लुवन्नकुम् बि शैइम्-मिनल्ख़ौफ़ि वल्जूअि व नक़्सिम्मिनल्-अम्वालि वल-अन्फ़ुसि वस्स़म-राति व बश्शिरिस्साबिरीन ᐟ (१५५) अल्लज़ी-न इज़ा असाबत्-हुम् मुसीबतुन् ᐟ क़ालू इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिअून ط (१५६) उलाइ-क अ़लैहिम् स-लवातुम्-मिर्रब्बिहिम् व रह्मतुन् قف व उला-इ-क हुमुल्मुह्तदून (१५७) इन्नस्सफ़ा वल्मर्व-त मिन् शआ-इरिल्लाहि ج फ़ मन् हज्जल्बै-त अविअ्-त-म-र फ़ ला जुना-ह अ़लैहि अंय्यत्तव-व-फ़ बिहिमा ط व मन् त-तव्-व-अ ख़ैरन् ᐟ फ़-इन्नल्ला-ह शाकिरुन् अ़लीम (१५८)

※ व. न बी स. ∴ मु. अि मु ता ख. ३ ★रु. १८/२ आ ५

वालों में न होना(१४७)★ और हर एक (फ़िर्क़े) के लिए एक दिशा (मुक़र्रर) है, जिधर वह (इबादत के वक़्त) मुंह किया करते हैं, तो तुम नेकियों में बाज़ी ले जाओ। तुम जहां होगे, ख़ुदा तुम सब को जमा कर लेगा। बेशक ख़ुदा हर चीज़ पर क़ादिर है। (१४८) और तुम जहां से निकलो[1] (नमाज़ में) अपना मुंह मस्जिदे मोहतरम की तरफ़ कर लिया करो। बे-शुब्हा वह तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से हक़ है।[2] और तुम लोग जो कुछ करते हो, ख़ुदा उससे बे-ख़बर नहीं। (१४९) और तुम जहां से निकलो मस्जिदे मोहतरम की तरफ़ मुंह (कर के नमाज़ पढ़ा) करो और मुसलमानो! तुम जहां हुआ करो उसी (मस्जिद की तरफ़ रुख़ किया करो (यह ताकीद) इस लिए (की गयी है) कि लोग तुमको किसी तरह का इल्ज़ाम न दे सकें, मगर इनमें से जो ज़ालिम हैं (वे इल्ज़ाम दें तो दें)[3] सो उनसे मत डरना और मुझी से डरते रहना और यह भी मक़सूद है कि मैं तुमको अपनी तमाम नेमतें बख़्शूं और यह भी कि तुम सीधे रास्ते पर चलो।∴(१५०) जिस तरह (और नेमतों के साथ) हमने तुम में तुम्हीं में से एक रसूल भेजे हैं जो तुमको हमारी आयतें पढ़-पढ़ कर सुनाते और तुम्हें पाक बनाते और किताब (यानी क़ुरआन) और दानाई सिखाते हैं और ऐसी बातें बताते हैं जो तुम पहले नहीं जानते थे।∴(१५१) सो तुम मुझे याद किया करो, मैं तुम्हें याद किया करूंगा और मेरा एहसान मानते रहना और ना-शुक्री न करना। (१५२)★

ऐ ईमान वालो! सब्र और नमाज़ से मदद लिया करो। बेशक ख़ुदा सब्र करने वालों के साथ है।[4] (१५३) और जो लोग ख़ुदा की राह में मारे जाएं, उनके बारे में यह न कहना कि वे मरे हुए हैं (वे मुर्दा नहीं) बल्कि ज़िंदा हैं, लेकिन तुम नहीं जानते। (१५४) और हम किसी क़दर ख़ौफ़ और भूख और माल और जानों और मेवों के नुक़्सान से तुम्हारी आज़माइश करेंगे, तो सब्र करने वालों को (ख़ुदा की ख़ुश्नूदी की) ख़ुशख़बरी सुना दो। (१५५) इन लोगों पर जब कोई मुसीबत आती है, तो कहते हैं कि हम ख़ुदा ही का माल हैं और उसी की तरफ़ लौट कर जाने वाले हैं। (१५६) यही लोग हैं जिन पर उनके परवरदिगार की मेहरबानी और रहमत है और यही सीधे रास्ते पर हैं। (१५७) बेशक सफ़ा और मर्वः (पहाड़) (ख़ुदा की) निशानियों में से हैं, तो जो शख़्स ख़ाना-काबा का हज या उमरः[5] करे उस पर कुछ गुनाह नहीं कि दोनों का तवाफ़ करे। (बल्कि तवाफ़ एक क़िस्म का नेक काम है) और जो कोई नेक काम करे तो ख़ुदा क़द्र शनास (क़द्र समझने

---

१. मुसाफ़िरों के वास्ते।

२. यानी काबे की तरफ़ नमाज़ पढ़ना सही है।

३. यहूद तो मुसलमानों को यह इल्ज़ाम देते थे कि हमारे दीन को तो नहीं मानते, मगर नमाज़ हमारे क़िब्ले की तरफ़ पढ़ते हैं और मुश्रिक यह इल्ज़ाम देते थे कि दावा तो इब्राहीम के दीन पर चलने का है, लेकिन उन के क़िब्ले की तरफ़ नमाज़ नहीं पढ़ते, ख़ाना-ए-काबा के क़िब्ला मुक़र्रर कर देने से ये एतराज़ दूर हो गये।

४. यहां से इशारा इस तरफ़ है कि जिहाद में मेहनत उठाओ और मज़बूती अख़्तियार करो।

५. उमरः भी एक क़िस्म का हज है और इस में और हज में यह फ़र्क़ है कि हज ख़ास ज़िलहिज्जा के महीने में होता है और उमरः और महीनों में भी हो सकता है। दूसरे हज में एहराम बांधना, फिर अर्फ़े के दिन अरफ़ात में हाज़िर होना, फिर वहां से चल कर मश्अरुल हराम में रात रहना, फिर सुबह ईद को मिना में पहुंच कर कंकर फेंकना और हजामत बनवा कर एहराम उतारना और मक्के में जा कर काबे का तवाफ़ करना, फिर सफ़ा व मर्वः के दर्मियान (जो मक्के में दो पहाड़ियां हैं) दौड़ना वग़ैरह होता है और उमरः में सिर्फ़ एहराम बांधना, ख़ाना-काबा का तवाफ़ करना, सफ़ा और मर्वः के दर्मियान दौड़ना होता है।

इन्नल्लज़ी-न यक्तुमू-न मा अन्ज़ल्ना मिनल्बय्यिनाति वल्हुदा मिम्बअ्दि मा बय्यन्नाहु लिन्नासि फ़िल्किताबि उलाइ-क यल्अनुहुमुल्लाहु व यल्अनुहुमुल्लाअिनून (१५९) इल्लल्लज़ी-न ताबू व अस्लहू व बय्यनू फ़ उला-इ-क अतूबु अलैहिम् व अनत्तव्वाबुर्रहीम (१६०) इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू व मातू व हुम् कुफ़्फ़ारुन् उला-इ-क अलैहिम् लअ्-नतुल्लाहि वल्मलाइकति वन्नासि अज्मईन (१६१) ख़ालिदी-न फ़ीहा ला युख़फ़्फ़फ़ु अन्हुमुल्-अज़ाबु व ला हुम् युन्ज़रून (१६२) व इलाहुकुम् इलाहुंव्वाहिदुन् ला इला - ह इल्ला हुवर्रह्मानुर्रहीम ★(१६३) इन - न फ़ी ख़ल्क़िस्समावाति वल्अर्ज़ि वख़्तिलाफ़िल्लैलि वन्नहारि वल्फ़ुल्किल्लती तज्री फ़िल्बह्रि बिमा यन्फ़अुन्ना-स व मा अन्ज़लल्लाहु मिनस्समा-इ मिम्मा-इन् फ़-अह्या बिहिल्अर-ज़ बअ्-द मौतिहा व बस्-स फ़ीहा मिन् कुल्लि दाब्बतिंव - व तस्रीफ़िर्रियाहि वस्सहाबिल्-मुसख़्ख़रि बैनस्समाइ वल्अर्ज़ि ल-आयातिल्-लिक़ौमिंय्यअ्क़िलून (१६४) व मिनन्नासि मंय्यत्तख़िज़ु मिन् दूनिल्लाहि अन्दादंय्युहिब्बूनहुम् क-हुब्बिल्लाहि वल्लज़ी-न आमनू अशद्दु हुब्बल्लिल्लाहि व लौ य-रल्लज़ी-न ज़-लमू इज़ यरौनल्-अज़ा-ब अन्नल्क़ुव्-व-त लिल्लाहि जमीअंव्-व अन्नल्ला-ह शदीदुल्-अज़ाब (१६५) इज़् तबर्र-अल्लज़ीनत्तुबिअू मिनल्लज़ीनत्त-बअू व र-अवुल्-अज़ा-ब व तक़त्तअत् बिहिमुल्अस्बाब (१६६) व क़ालल्लज़ीनत्तबअू लौ अन्-न लना कर्रतन् फ़ न-त-बर्र-अ मिन्हुम् कमा तबर्रअू मिन्ना कज़ालि-क युरीहिमुल्लाहु अअ्-मालहुम् ह-सरातिन् अलैहिम् व मा हुम् बिख़ारिजी-न मिनन्नार ★(१६७)

وَالْهُدٰى مِنْۢ بَعْدِ مَا بَيَّنّٰهُ لِلنَّاسِ فِى الْكِتٰبِۙ اُولٰٓئِكَ يَلْعَنُهُمُ
اللّٰهُ وَيَلْعَنُهُمُ اللّٰعِنُوْنَۙ ۝ اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا وَاَصْلَحُوْا وَبَيَّنُوْا فَاُولٰٓئِكَ
اَتُوْبُ عَلَيْهِمْ ۚ وَاَنَا التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَمَاتُوْا
وَهُمْ كُفَّارٌ اُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ لَعْنَةُ اللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالنَّاسِ
اَجْمَعِيْنَۙ ۝ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ
يُنْظَرُوْنَ ۝ وَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ۝
اِنَّ فِىْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَ
الْفُلْكِ الَّتِىْ تَجْرِىْ فِى الْبَحْرِ بِمَا يَنْفَعُ النَّاسَ وَمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ
السَّمَآءِ مِنْ مَّآءٍ فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَبَثَّ فِيْهَا مِنْ كُلِّ
دَآبَّةٍ ۪ وَّتَصْرِيْفِ الرِّيٰحِ وَالسَّحَابِ الْمُسَخَّرِ بَيْنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ
لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّتَّخِذُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ
اَنْدَادًا يُّحِبُّوْنَهُمْ كَحُبِّ اللّٰهِ ۗ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ ۗ وَلَوْ
يَرَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اِذْ يَرَوْنَ الْعَذَابَ ۙ اَنَّ الْقُوَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا ۙ وَّ
اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعَذَابِ ۝ اِذْ تَبَرَّاَ الَّذِيْنَ اتُّبِعُوْا مِنَ الَّذِيْنَ
اتَّبَعُوْا وَرَاَوُا الْعَذَابَ وَتَقَطَّعَتْ بِهِمُ الْاَسْبَابُ ۝ وَقَالَ الَّذِيْنَ
اتَّبَعُوْا لَوْ اَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَتَبَرَّاَ مِنْهُمْ كَمَا تَبَرَّءُوْا مِنَّا ۗ كَذٰلِكَ
يُرِيْهِمُ اللّٰهُ اَعْمَالَهُمْ حَسَرٰتٍ عَلَيْهِمْ ۗ وَمَا هُمْ بِخٰرِجِيْنَ مِنَ

★रु. १९/३ आ ११ ★रु. २०/४ आ ४

वाला) और जानने वाला है। (१५८) जो लोग हमारे हुक्मों और हिदायतों को, जो हमने नाज़िल की हैं, (किसी फ़सादी ग़रज से) छिपाते हैं, बावजूद कि हमने उनको लोगों के (समझाने के लिए) अपनी किताब में खोल-खोल कर बयान कर दिया है। ऐसों पर ख़ुदा और तमाम लानत करने वाले लानत करते हैं।[1] (१५९) हां, जो तौबा करते हैं और अपनी हालत दुरुस्त कर लेते और (इलाही हुक्मों को) साफ़-साफ़ बयान कर देते हैं, तो मैं उनके क़ुसूर माफ़ कर देता हूं और मैं बड़ा माफ़ करने वाला (और) रहम वाला हूं। (१६०) जो लोग काफ़िर हुए और काफ़िर ही मरे, ऐसों पर ख़ुदा की और फ़रिश्तों की और लोगों की, सब की लानत। (१६१) वे हमेशा इसी (लानत) में (गिरफ़्तार) रहेंगे। उन से न तो अज़ाब ही हल्का किया जाएगा और न उन्हें कुछ मोहलत मिलेगी। (१६२) और (लोगो)! तुम्हारा माबूद ख़ुदा-ए-वाहिद है। उस बड़े मेहरबान (और) रहम वाले के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं। (१६३) ★

बेशक आसमानों और ज़मीन के पैदा करने में और रात और दिन के एक दूसरे के पीछे आने-जाने में और कश्तियों (और जहाज़ों) में, जो दरिया में, लोगों के फ़ायदे की चीज़ें लेकर रवां हैं और मेंह में जिसको ख़ुदा आसमान से बरसाता और उससे ज़मीन को मरने के बाद ज़िंदा (यानी ख़ुश्क हुए पीछे सर-सब्ज़) कर देता है और ज़मीन पर हर क़िस्म के जानवर फैलाने में और हवाओं के चलाने में और बादलों में जो आसमान और ज़मीन के दर्मियान फिरे रहते हैं अक़्लमंदों के लिए (ख़ुदा की क़ुदरत की) निशानियां हैं।[2] (१६४) और कुछ लोग ऐसे हैं जो ग़ैर ख़ुदा को (ख़ुदा का) शरीक बनाते[3] और उनसे ख़ुदा की-सी मुहब्बत करते हैं, लेकिन जो ईमान वाले हैं, वे तो ख़ुदा ही के सबसे ज़्यादा दोस्तदार हैं। और ऐ काश! ज़ालिम लोग जो बात अज़ाब के वक़्त देखेंगे, अब देख लेते कि सब तरह की ताक़त ख़ुदा ही को है और यह कि ख़ुदा सख़्त अज़ाब करने वाला है। (१६५) उस दिन (कुफ़्र के) पेशवा अपने पैरुवों से बे-ज़ारी ज़ाहिर करेंगे और (दोनों) अज़ाबे (इलाही) देख लेंगे और उनके आपस के ताल्लुक़ात ख़त्म हो जाएंगे। (१६६) (यह हाल देख कर) पैरवी करने वाले (हसरत से) कहेंगे कि ऐ काश! हमें दुनिया में जाना नसीब होता कि जिस तरह ये तुमसे बेज़ार हो रहे हैं, इसी तरह हम भी इनसे बेज़ार हों। इस तरह ख़ुदा उनके अमल उन्हें हसरत बना कर दिखायेगा और वे दोज़ख़ से नहीं निकल सकेंगे। (१६७) ★

---

१. यह उन के हक़ में है जिन को इल्म ख़ुदा का पहुंचा और दुनिया की ग़रज़ के वास्ते छिपा रखा।

२. मक्के के काफ़िर कहते थे कि हम तीन सौ साठ ख़ुदा रखते हैं, उन से एक शहर का बन्दोबस्त ख़ूब नहीं हो सकता और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) कहते हैं कि मेरा एक ख़ुदा है, जो सारी दुनिया का काम बनाता है, सो कोई दलील लाए अपनी बात पर, तब हम सच जानें, सो अल्लाह तआला ने इस आयत में अपनी क़ुदरत की निशानियां बयान कीं।

३. यानी वे कहते हैं कि ख़ुदा-ए-तआला के बराबर ये भी हैं।

या अय्युहन्नासु कुलू मिम्मा फ़िलअर्ज़ि हलालन् तय्यिबंव्-व ला तत्तबिअ़्
ख़ुतुवातिश्शैतानि इन्नहू लकुम् अदुव्वुम्मुबीन (१६८) इन्नमा यअ्मुरुकुम्
बिस्सू-इ वल्फ़ह़्शा-इ व अन् तक़ूलू अ़लल्लाहि मा ला तअ्-लमून (१६९)
व इज़ा क़ी-ल लहुमुत्तबिअ़ू मा अन्ज़लल्लाहु क़ालू बल् नत्तबिअ़ु मा
अल्फ़ैना अ़लैहि आबा-अना अ-व-लौ का-न
आबा-उहुम् ला यअ्क़िलू-न शैअंव-व ला
यह्तदून (१७०) व म-सलुल्लज़ी-न क-फ़रू
क-म-सलिल्लज़ी यन्अिक़ु बिमा ला यस्मअ़ु
इल्ला दुआ-अंव-व निदा-अन् सुम्मुम्-
बुक्मुन् अ़ुम्युन् फ़हुम् ला यअ्क़िलून (१७१)
या अय्युहल्लज़ी-न आमनू कुलू मिन्
तय्यिबाति मा र-ज़क़्नाकुम् वश्कुरू
लिल्लाहि इन् कुन्तुम् इय्याहु तअ्-बुदून
(१७२) इन्नमा हर्र-म अ़लैकुमुल्मै-त-त
वद्-द-म व लह़्मल्ख़िन्ज़ीरि व मा उहिल-ल
बिही लि ग़ैरिल्लाहि फ़ मनिज़्तुर् - र
ग़ै-र बाग़िंव्-व ला आ़दिन् फ़-ला इस्-म
अ़लैहि इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम (१७३)

البقرة ٢ سيقول

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ كُلُوْا مِمَّا فِي الْاَرْضِ حَلٰلًا طَيِّبًا ۖ وَّلَا تَتَّبِعُوْا
خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ۭ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۝ اِنَّمَا يَاْمُرُكُمْ
بِالسُّوْۗءِ وَالْفَحْشَاۗءِ وَاَنْ تَقُوْلُوْا عَلَي اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ وَاِذَا قِيْلَ
لَهُمُ اتَّبِعُوْا مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا بَلْ نَتَّبِعُ مَآ اَلْفَيْنَا عَلَيْهِ اٰبَاۗءَنَا ۭ
اَوَلَوْ كَانَ اٰبَاۗؤُھُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ شَـيْــــًٔا وَّلَا يَهْتَدُوْنَ ۝ وَمَثَلُ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا كَمَثَلِ الَّذِيْ يَنْعِقُ بِمَا لَا يَسْمَعُ اِلَّا دُعَاۗءً وَّنِدَاۗءً ۭ صُمٌّۢ
بُكْمٌ عُمْيٌ فَهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ۝ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُلُوْا مِنْ
طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ وَاشْكُرُوْا لِلّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ۝
اِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيْرِ وَمَآ اُهِلَّ بِهٖ
لِغَيْرِ اللّٰهِ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ
غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْتُمُوْنَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ الْكِتٰبِ
وَيَشْتَرُوْنَ بِهٖ ثَـمَنًا قَلِيْلًا ۙ اُولٰۗىِٕكَ مَا يَاْكُلُوْنَ فِيْ بُطُوْنِهِمْ اِلَّا
النَّارَ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَلَا يُزَكِّيْهِمْ ښ وَلَهُمْ عَذَابٌ
اَلِيْمٌ ۝ اُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الضَّلٰلَةَ بِالْهُدٰى وَالْعَذَابَ
بِالْمَغْفِرَةِ ۚ فَمَآ اَصْبَرَھُمْ عَلَي النَّارِ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ نَزَّلَ
الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ ۭ وَاِنَّ الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا فِي الْكِتٰبِ لَفِيْ شِقَاقٍۢ
بَعِيْدٍ ۝ لَيْسَ الْبِرَّ اَنْ تُوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ

منزل ١

इन्नल्लज़ी-न यक्तुमू - न मा अन्ज़लल्लाहु मिनल् - किताबि व यश्तरू - न
बिही स-म-नन् क़लीलन् उला-इ-क मा यअ्कुलू-न फ़ी बुतूनिहिम्
इल्लन्ना-र व ला युकल्लिमुहुमुल्लाहु यौमल् - क़ियामति व ला
युज़क्कीहिम् व लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम (१७४) उला-इकल्लज़ीनश्त-र-
वुज़्ज़लाल-त बिल्हुदा वल्अ़ज़ा-ब बिल्मग़्फ़िरति फ़ मा अस्ब - र हुम्
अ़लन्नार (१७५) ज़ालि-क बिअन्नल्ला-ह नज़्ज़लल्किता-ब बिल्-ह़क़्क़ि
व इन्नल्लज़ीनख़्तलफ़ू फ़िल्किताबि ल-फ़ी शिक़ाक़िम्-बअ़ीद ★●(१७६)

लोगो ! जो चीज़ें ज़मीन में हलाल-तैयब हैं, वे खाओ और शैतान के क़दमों पर न चलो। वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (१६८) वह तो तुमको बुराई और बेहयाई ही के काम करने को कहता है और यह भी कि ख़ुदा के बारे में ऐसी बातें कहो, जिनका तुम्हें (कुछ भी) इल्म नहीं। (१६९) और जब उन लोगों से कहा जाता है कि जो (किताब) ख़ुदा ने नाज़िल फ़रमायी है, उसकी पैरवी करो, तो कहते हैं (नहीं), बल्कि हम तो उसी चीज़ की पैरवी करेंगे, जिस पर हमने अपने बाप-दादा को पाया। भला अगरचे उनके बाप-दादा न कुछ समझते हों और न सीधे रास्ते पर हों (तब भी वे उन्हीं की पैरवी किए जाएंगे।) (१७०) जो लोग काफ़िर हैं, उनकी मिसाल उस शख़्स की-सी है जो किसी ऐसी चीज़ को आवाज़ दे जो पुकार और आवाज़ के सिवा कुछ सुन न सके। (ये) बहरे हैं, गूंगे हैं, अंधे हैं, कि (कुछ) समझ ही नहीं सकते। (१७१) ऐ ईमान वालो ! जो पाकीज़ा चीज़ें हमने तुमको अता फ़रमायी हैं, उनको खाओ और अगर ख़ुदा ही के बन्दे हो, तो (उस की नेमतों) का शुक्र भी अदा करो। (१७२) उसने तुम पर मरा हुआ जानवर और लहू[1] और सुअर का गोश्त और जिस चीज़ पर ख़ुदा के सिवा किसी और का नाम पुकारा जाए, हराम कर दिया है।[2] हां, जो ना-चार हो जाए (बशर्ते कि) ख़ुदा की नाफ़रमानी न करे और (ज़रूरत की) हद से बाहर न निकल जाए, उस पर कुछ गुनाह नहीं। बेशक ख़ुदा बख़्शने वाला (और) रहम करने वाला है। (१७३) जो लोग (ख़ुदा की) किताब से उन (आयतों और हिदायतों) को जो उसने नाज़िल फ़रमायी हैं, छिपाते और उनके बदले थोड़ी-सी क़ीमत (यानी दुनिया का फ़ायदा) हासिल करते हैं, वे अपने पेटों में सिर्फ़ आग भरते हैं। ऐसे लोगों से ख़ुदा क़ियामत के दिन न कलाम करेगा और न उन को (गुनाहों से) पाक करेगा। और उन के लिए दुख देने वाला अज़ाब है। (१७४) ये वह लोग हैं, जिन्हों ने हिदायत छोड़कर गुमराही और बख़्शिश छोड़कर अज़ाब ख़रीदा। यह जहन्नम (की आग) को कैसा बर्दाश्त करने वाले हैं। (१७५) यह इसलिए कि ख़ुदा ने किताब सच्चाई के साथ नाज़िल फ़रमायी और जिन लोगों ने इस किताब में इख़्तिलाफ़ किया, वे ज़िद में

---

१. मरे हुए जानवरों में से मछली और टिड्डी नबी सल्ल० की हदीस के मुताबिक़ हलाल और लहू में से जिगर और तिल्ली हलाल हैं।

२. यह तर्जुमा डिक्शनरी के मानी के लिहाज़ से किया गया है। डिक्शनरी में 'इह्लाल' (उहिल-ल) के मानी आवाज़ बुलंद करने के हैं। तफ़्सीर लिखने वाले, जो इस लफ़्ज़ के मानी में ज़िब्ह का लफ़्ज़ शामिल करते हैं, वे शाने-नुज़ूल के लिहाज़ से करते हैं, क्योंकि जाहिलियत में जो जानवर ग़ैर-ख़ुदा के लिए मुक़र्रर किया जाता था ज़िब्ह करने के वक़्त भी उस पर उसी ग़ैर का नाम लिया जाता था, वरना हक़ीक़त में जो चीज़ ग़ैर-ख़ुदा के लिए मुक़र्रर की जाए, चाहे वह जानवर हो या और कुछ, हराम है, इस लिए कि आयत में हर्फ़ 'मा', इस्तेमाल फ़रमाया गया है, जिस के मानी हैं 'जो चीज़' और वह आम है। ज़िब्ह, हैवान और चीज़ों को, चाहे वे खाने की हों या पहनने की, या और हर तरह इस्तेमाल करने की, सब को शामिल है। चूंकि लुग़त मुक़द्दम है इस लिए हम ने उसी मानी को लिया है। हराम व हलाल चीज़ों में नीयत को बड़ा दख़ल है, मसलन जो जानवर ग़ैर-ख़ुदा के लिए मुक़र्रर किया गया हो, उस पर ज़िब्ह के वक़्त ख़ुदा का नाम लिया जाए या ग़ैर-ख़ुदा का, हराम होने के लिहाज़ से बराबर है। ख़ुदा का नाम लेने से वह हलाल न होगा। उलमा ने लिखा है कि अगर किसी मुसलमान ने कोई जानवर ग़ैर-ख़ुदा का क़रीबी बनने के लिए ज़िब्ह किया, तो वह इस्लाम से ख़ारिज हो गया और वह जानवर ऐसा होगा जैसे मुर्तद (इस्लाम से विमुख) का ज़िब्ह किया हुआ। बहरहाल नज़्र की नीयत ख़ुदा ही के लिए करनी चाहिए और ज़िब्ह करने के वक़्त उस पर 'वह्दहू ला शरी-क लहू' का नाम लेना चाहिए क्योंकि वह अपने साथ किसी को शरीक नहीं करना चाहता।

लैसल्बिर्-र अन् तुवल्लू वुजूहकुम् क़ि-ब-लल्-मश्रिक़ि वल्मग़्रिबि व लाकिन्नल्बिर्-र मन् आम-न बिल्लाहि वल्-यौमिल्आख़िरि वल्मलाइकति वल्किताबि वन्नबिय्यी-न ८ व आतल्मा-ल अला हुब्बिही ज़विल्क़ुर्बा वल्यतामा वल्मसाकी-न वब्नस्सबीलि ۷ वस्साइली-न व फ़िर्रिक़ाबि ८ व अक़ामस्सला-त व आतज़्ज़का-त ८ वल्मूफ़ू-न बि अह्दिहिम् इज़ा आहदू ८ वस्साबिरी-न फ़िल् बअ्सा-इ वज़्ज़र्रा-इ व हीनल्बअ्सि ط उला-इकल्लज़ी-न स-दक़ू ط व उला-इक हुमुल्मुत्तक़ून (१७७) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू कुति-ब अलैकुमुल्-क़िसासु फ़िल्क़त्ला ط अल्हुर्रु बिल्हुर्रि वल्अब्दु बिल्अब्दि वल्उन्सा बिल्उन्सा ط फ़ मन् उफ़ि-य लहू मिन् अख़ीहि शैउन् फ़त्तिबाउम्-बिलमअ्-रूफ़ि व अदा-उन् इलैहि बि इह्सानिन् ط ज़ालि-क तख़्फ़ीफ़ुम् - मिर्रब्बिकुम् व रह्मतुन् ط फ़ मनिअ्-तदा बअ्-द ज़ालि-क फ़-लहू अज़ाबुन् अलीम (१७८) व लकुम् फ़िल्क़िसासि हयातुय्या उलिल्-अल्बाबि ल-अल्लकुम् तत्तक़ून (१७९) कुति-ब अलैकुम् इज़ा ह-ज़-र अ-ह-दकुमुल्मौतु इन् त-र-क ख़ै-रनिल्-वसिय्यतु लिल्वालिदैनि वल्अक़रबी-न बिलमअ्-रूफ़ि ८ हक़्क़न् अलल्मुत्तक़ीन ط (१८०) फ़ मम्-बद्दलहू बअ्-द मा समि-अहू फ़ इन्नमा इस्मुहू अलल्लज़ी-न युबद्दिलूनहू ط इन्नल्ला-ह समीअुन् अलीम ط (१८१) फ़-मन् ख़ा-फ़ मिम्मूसिन् ज-न-फ़न् औ इस्मन् फ़ अस्ल-ह बैनहुम् फ़ ला इस्-म अलैहि इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम ★ (१८२) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू कुति-ब अलैकुमुस्सियामु कमा कुति-ब अलल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिकुम् ल-अल्लकुम् तत्तक़ून ۷ (१८३)

وَلٰكِنَّ الْبِرَّ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالْكِتٰبِ
وَالنَّبِيّٖنَ ۚ وَاٰتَى الْمَالَ عَلٰى حُبِّهٖ ذَوِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَ
الْمَسٰكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ ۙ وَالسَّآئِلِيْنَ وَفِي الرِّقَابِ ۚ وَاَقَامَ
الصَّلٰوةَ وَاٰتَى الزَّكٰوةَ ۚ وَالْمُوْفُوْنَ بِعَهْدِهِمْ اِذَا عٰهَدُوْا ۚ وَ
الصّٰبِرِيْنَ فِي الْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ وَحِيْنَ الْبَاْسِ ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ
صَدَقُوْا ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ
عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ فِي الْقَتْلٰى ؕ اَلْحُرُّ بِالْحُرِّ وَالْعَبْدُ بِالْعَبْدِ وَ
الْاُنْثٰى بِالْاُنْثٰى ؕ فَمَنْ عُفِيَ لَهٗ مِنْ اَخِيْهِ شَيْءٌ فَاتِّبَاعٌ ۢ
بِالْمَعْرُوْفِ وَاَدَآءٌ اِلَيْهِ بِاِحْسَانٍ ؕ ذٰلِكَ تَخْفِيْفٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ
وَرَحْمَةٌ ؕ فَمَنِ اعْتَدٰى بَعْدَ ذٰلِكَ فَلَهٗ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ وَلَكُمْ
فِي الْقِصَاصِ حَيٰوةٌ يّٰٓاُولِي الْاَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ۝ كُتِبَ
عَلَيْكُمْ اِذَا حَضَرَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ اِنْ تَرَكَ خَيْرَا ۖ ۚ الْوَصِيَّةُ
لِلْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِيْنَ ۝
فَمَنْۢ بَدَّلَهٗ بَعْدَ مَا سَمِعَهٗ فَاِنَّمَآ اِثْمُهٗ عَلَى الَّذِيْنَ يُبَدِّلُوْنَهٗ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝ فَمَنْ خَافَ مِنْ مُّوْصٍ جَنَفًا اَوْ اِثْمًا
فَاَصْلَحَ بَيْنَهُمْ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ يٰٓاَيُّهَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ

★रु. २२/६ आ ६

(आकर नेकी से) दूर(हो गए)हैं(१७६)★● नेकी यही नहीं कि तुम पूरब या पच्छिम (को क़िब्ला समझकर उन) की तरफ़ मुंह कर लो, बल्कि नेकी यह है कि लोग ख़ुदा पर और फ़रिश्तों पर और ख़ुदा की किताब पर और पैग़म्बरों पर ईमान लायें और माल बावजूद अज़ीज़ रखने के रिश्तेदारों और यतीमों और मुहताजों और मुसाफ़िरों और मांगने वालों को दें और गरदनों (को छुड़ाने) में[1] ख़र्च करें और नमाज़ पढ़ें और ज़कात दें और जब अह्द कर लें तो उसको पूरा करें और सख़्ती और तक्लीफ़ में और (लड़ाई के) मैदान में साबित क़दम रहें। यही लोग हैं जो (ईमान में) सच्चे हैं और यही हैं जो (ख़ुदा से) डरने वाले हैं। (१७७) मोमिनो! तुम को मक़्तूलों के बारे में क़िसास (यानी ख़ून के बदले ख़ून) का हुक्म दिया जाता है (इस तरह पर कि) आज़ाद के बदले आज़ाद (मारा जाए) और ग़ुलाम के बदले ग़ुलाम और औरत के बदले औरत[2] और अगर क़ातिल को उसके (मक़्तूल) भाई (के क़िसास में) से कुछ माफ़ कर दिया जाए,[3] तो (वारिस मक़्तूल को) पसंदीदा तरीक़े से (क़रारदाद की) पैरवी (यानी ख़ून बहा का मुतालबा) करना और (क़ातिल को) भले तरीक़े से अदा करना चाहिए। यह परवरदिगार की तरफ़ से तुम्हारे लिए आसानी और मेहरबानी है, जो इसके बाद ज़्यादती करे, उसके लिए दुख का अज़ाब है। (१७८) और ऐ अक़्ल वालो! क़सास (के हुक्म) में (तुम्हारी) ज़िंदगानी है कि तुम (क़त्ल व ख़ूंरेज़ी से) बचो। (१७९) तुम पर फ़र्ज़ किया जाता है कि जब तुम में से किसी को मौत का वक़्त आ जाए तो अगर वह कुछ माल छोड़ जाने वाला हो तो मां-बाप और रिश्तेदारों के लिए दस्तूर के मुवाफ़िक़ वसीयत कर जाए, (ख़ुदा से) डरने वालों पर यह एक हक़ है। (१८०) जो शख़्स वसीयत को सुनने के बाद बदल डाले, तो उस (के बदलने) का गुनाह उन्हीं लोगों पर है, जो उस को बदलें और बेशक ख़ुदा सुनता जानता है।[4] (१८१) अगर किसी को वसीयत करने वाले की तरफ़ से (किसी वारिस की) तरफ़दारी या हक़तलफ़ी का डर हो तो अगर वह (वसीयत को बदलकर) वारिसों में सुलह करा दे, तो उस पर कुछ गुनाह नहीं। बेशक ख़ुदा बख़्शने वाला (और) रहम वाला है। (१८२) ★

मोमिनो! तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किए गए हैं, जिस तरह तुमसे पहले लोगों पर फ़र्ज़ किए गये थे,

---

१. गरदनों के छुड़ाने से मुराद ग़ुलामी वग़ैरह की क़ैद से आज़ाद कराना है।

२. यानी मक़्तूल के बदले क़ातिल ही क़त्ल किया जाए।

३. यानी ख़ून से दरगुज़र किया जाए और ख़ून के बदले ख़ून बहा क़रार पाए।

४. यानी अगर मुर्दा कह मरा था, पर देने वालों ने न दिया, तो मुर्दे पर गुनाह नहीं, वही गुनाहगार है।

अय्यामम्-मअ़्-दूदातिन् ط फ़ मन् का-न मिन्कुम् मरीज़न् औ अ़ला स-फ़रिन् फ़ अिद्दतुम्मिन् अय्यामिन् उख़र ط व अ़-लल्लज़ी-न युतीक़ूनहू फ़िद्यतुन् तआमु मिस्कीनिन् ط फ़ मन् त-तव्व-अ़ ख़ैरन् फ़ हु-व ख़ैरुल्लहू ط व अन् तसूमू ख़ैरुल्लकुम् इन् कुन्तुम् तअ़्-लमून (१८४) शह्रु र-म-ज़ानल्लज़ी उन्ज़ि-ल फ़ीहिल्क़ुरआनु हुदल्लिन्नासि व बय्यिनातिम्-मिनल-हुदा वल्फ़ुर्क़ानि ج फ़-मन् शहि-द मिन्कुमुश्शह्-र फ़ल्यसुम्हु ط व मन् का-न मरीज़न् औ अ़ला स-फ़रिन् फ़अिद्दतुम्मिन् अय्यामिन् उख़र ط युरीदुल्लाहु बिकुमुल् युस्-र व ला युरीदु बिकुमुल्-अुस्-र ز व लि तुक्मिलुल्-अिद्द-त व लि तुकब्बिरुल्ला-ह अ़ला मा हदाकुम् व ल-अ़ल्लकुम् तश्कुरून (१८५) व इज़ा स-अ-ल-क अिबादी अ़न्नी फ़ इन्नी क़रीबुन् ط उजीबु दअ़्-व-तुद्दाअि इज़ा दआ़नि لا फ़ल्यस्तजीबूली वल्युअ्मिनू बी लअ़ल्लहुम् यर्शुदून (१८६) उहि़ल्-ल लकुम् लैल-तुस्सियामिर्र-फ़सु इला निसा-इकुम् ط हुन्-न लिबासुल्लकुम् व अन्तुम् लिबासुल्लहुन-न ط अ़लिमल्लाहु अन्नकुम् कुन्तुम् तख़्तानू-न अन्फ़ुसकुम् फ़-ता-ब अ़लैकुम् व अ़फ़ा अ़न्कुम् ج फ़ल्आ-न बाशिरू हुन-न वब्तग़ू मा क-त-बल्लाहु लकुम् ص व कुलू वश्रबू हत्ता य-त-बय्य-न लकुमुल्ख़ैतुल् - अब्यज़ु मिनल्ख़ैतिल् - अस्वदि मिनल्फ़जिर ص सुम् - म अतिम्मुस्सिया-म इलल्लैलि ج व ला तुबाशिरू - हुन - न व अन्तुम् आ़किफ़ू-न لا फ़िल्मसाजिदि ط तिल् - क हुदूदुल्लाहि फ़ - ला तक़्रबूहा ط कज़ालि - क युबय्यिनुल्लाहु आयातिही लिन्नासि ल-अ़ल्लहुम् यत्तक़ून ط (१८७)

سيقول ٢ ٢٢ البقرة ٢

من قبلكم لعلكم تتقون ۝ اياما معدودت ؕ فمن كان
منكم مريضا او على سفر فعدة من ايام اخر ؕ وعلى الذين
يطيقونه فدية طعام مسكين ؕ فمن تطوع خيرا فهو خير
له ؕ وان تصوموا خير لكم ان كنتم تعلمون ۝ شهر
رمضان الذي انزل فيه القران هدى للناس وبينت
من الهدى والفرقان ۚ فمن شهد منكم الشهر فليصمه ؕ
ومن كان مريضا او على سفر فعدة من ايام اخر ؕ
يريد الله بكم اليسر ولا يريد بكم العسر ؗ ولتكملوا
العدة ولتكبروا الله على ما هدىكم ولعلكم تشكرون ۝
واذا سالك عبادي عني فاني قريب ؕ اجيب دعوة الداع
اذا دعان ۙ فليستجيبوا لي وليؤمنوا بي لعلهم يرشدون ۝
احل لكم ليلة الصيام الرفث الى نسائكم ؕ هن لباس
لكم وانتم لباس لهن ؕ علم الله انكم كنتم تختانون
انفسكم فتاب عليكم وعفا عنكم ۚ فالـٔن باشروهن وابتغوا
ما كتب الله لكم ۚ وكلوا واشربوا حتى يتبين لكم الخيط
الابيض من الخيط الاسود من الفجر ۪ ثم اتموا الصيام
الى اليل ۚ ولا تباشروهن وانتم عكفون ۙ في المسجد ؕ تلك

منزل

ताकि तुम परहेज़गार बनो।[1] (१८३) (रोज़ों के दिन) गिनती के कुछ दिन हैं, तो जो आदमी तुम में से बीमार हो, या सफ़र में हो, तो दूसरे दिनों में रोज़ों की गिनती पूरी कर ले।[2] और जो लोग रोज़ा रखने की ताक़त रखें (लेकिन रखें नहीं), वे रोज़े के बदले मुहताज को खाना खिला दें।[3] और जो कोई शौक़ से नेकी करे तो उसके हक़ में ज़्यादा अच्छा है और अगर समझो तो रोज़ा रखना ही तुम्हारे हक़ में बेहतर है। (१८४) (रोज़ों का महीना) रमज़ान का महीना (है) जिसमें क़ुरआन (अव्वल-अव्वल) नाज़िल हुआ, जो लोगों का रहनुमा है और जिस में हिदायत की खुली निशानियां हैं और (जो हक़ व बातिल को) अलग-अलग करने वाला है। तो जो कोई तुममें से इस महीने में मौजूद हो, चाहिए कि पूरे महीने के रोज़े रखे और जो बीमार हो या सफ़र में हो तो दूसरे दिनों में (रखकर) उनकी गिनती पूरी कर ले, खुदा तुम्हारे हक़ में आसानी चाहता है और सख़्ती नहीं चाहता और (यह आसानी का हुक्म) इसलिए (दिया गया है) कि तुम रोज़ों का शुमार पूरा कर लो और इस एहसान के बदले कि ख़ुदा ने तुमको हिदायत बख़्शी है, तुम उसको बुज़ुर्गी से याद करो और उसका शुक्र करो। (१८५) और (ऐ पैग़म्बर!) जब तुम से मेरे बन्दे मेरे बारे में मालूम करें, तो (कह दो कि) मैं तो (तुम्हारे) पास हूं। जब कोई पुकारने वाला मुझे पुकारता है, तो मैं उसकी दुआ क़ुबूल करता हूं, तो उनको चाहिए कि मेरे हुक्मों को मानें और मुझ पर ईमान लाएं, ताकि नेक रास्ता पाएं। (१८६) रोज़ों की रातों में तुम्हारे लिए अपनी औरतों के पास जाना जायज़ कर दिया गया है, वह तुम्हारी पोशाक हैं और तुम उनकी पोशाक हो।[4] ख़ुदा को मालूम है कि तुम (उनके पास जाने से) अपने हक़ में ख़ियानत करते थे, सो उसने तुम पर मेहरबानी की और तुम्हारी हरकतों से दरगुज़र फ़रमाया। अब (तुमको अख़्तियार है कि) उनसे मुबाशरत करो और ख़ुदा ने जो चीज़ तुम्हारे लिए लिख रखी है (यानी औलाद) उसको (ख़ुदा से) तलब करो और खाओ और पियो, यहां तक कि सुबह की सफ़ेद धारी (रात की) स्याह धारी से अलग नज़र आने लगे। फिर रोज़ा (रखकर) रात तक पूरा करो और जब तुम मस्जिदों में एतिकाफ़ बैठे हो, तो उनसे मुबाशरत न करो। ये ख़ुदा की हदें हैं। उनके पास न जाना। इसी तरह ख़ुदा अपनी आयतें लोगों के (समझाने के लिए) खोल-खोलकर के बयान फ़रमाता है, ताकि वह परहेज़गार

---

१. यानी रोज़े से सलीक़ा आ जाए जी रोकने का, तो हर जगह रोक सको।

२. यानी जितने रोज़े न रखे हों, बीमारी और सफ़र के बाद उतने क़ज़ा रख ले।

३. इस आयत में तंदुरुस्त और ताक़तवर शख़्स पर रोज़ा रखना ज़रूरी नहीं किया गया था, बल्कि रखने न रखने का अख़्तियार दिया गया, मगर इस के बाद की आयत से यह अख़्तियार ख़त्म कर दिया और रोज़ा ज़रूरी क़रार दे दिया गया।

४. यानी जिस तरह पोशाक का ताल्लुक़ जिस्म से होता है, उसी तरह मर्द का ताल्लुक़ औरत से और औरत का मर्द से होता है।

व ला तअ्कुलू अम्वालकुम् बैनकुम् बिल्बातिलि व तुद्लू बिहा इलल्हुक्कामि लि तअ्कुलू फ़रीक़म्मिन् अम्वालिन्नासि बिल्-इस्मि व अन्तुम् तअ्-लमून ★ (१८८) यस्अलून-क अनिल्-अहिल्लति ؕ कुल् हि-य मवाक़ीतु लिन्नासि वल्हज्जि ؕ व लैसल्बिर्रु बि अन्तअ्तुल्-बुयू-त मिन् ज़ुहूरिहा व ला किन्नल्बिर-र मनित्तक़ा ۚ वअ्तुल्-बुयू-त मिन् अब्वाबिहा ۖ वत्तक़ुल्ला-ह ल-अल्लकुम् तुफ़्लिहून (१८९) व क़ातिलू फ़ी सबीलिल्लाहिल्लज़ी-न युक़ातिलूनकुम् व ला तअ्-तदू ؕ इन्नल्ला-ह ला युहिब्बुल्-मुअ्-तदीन (१९०) वक़्तुलू-हुम् हैसु सक़िफ़्तुमू हुम् व अख़्रिजू हुम् मिन् हैसु अख़्रजूकुम् वल्फ़ित्नतु अशद्दु मिनल्क़त्लि ۚ व ला तुक़ातिलू हुम् अिन्दल्-मस्जिदिल्-हरामि हत्ता युक़ातिलूकुम् फ़ीहि ۚ फ़ इन् क़ातलूकुम् फ़क़्तुलू-हुम् ؕ कज़ालि-क जज़ा-उल्-काफ़िरीन (१९१) फ़इनिन्तहौ फ़ इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम (१९२) व क़ातिलू-हुम् हत्ता ला तकू-न फ़ित्नतुंव-व यकूनद्दीनु लिल्लाहि ؕ फ़ इनिन्तहौ फ़-ला अुद्वा-न इल्ला अलज़्ज़ालिमीन (१९३) अश्शह्रुल्-हरामु बिश्शह्रिल्-हरामि वल्हुरुमातु क़िसासुन् ؕ फ़-मनिअ्-तदा अलैकुम् फ़अ्-तदू अलैहि बिमिस्लि मअ्-तदा अलैकुम् ۖ वत्तक़ुल्ला-ह वअ्-लमू अन्नल्ला-ह म-अल्मुत्तक़ीन (१९४) व अन्फ़िक़ू फ़ी सबीलिल्लाहि व ला तुल्क़ू बि ऐदीकुम् इलत्तह्लुकति ۛ व अह्सिनू ۛ इन्नल्ला-ह युहिब्बुल्-मुह्सिनीन (१९५)

حُدُودُ اللّٰهِ فَلَا تَقْرَبُوهَا ۗ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ اٰيٰتِهٖ لِلنَّاسِ
لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ۝ وَلَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ وَتُدْلُوْا
بِهَآ اِلَى الْحُكَّامِ لِتَاْكُلُوْا فَرِيْقًا مِّنْ اَمْوَالِ النَّاسِ بِالْاِثْمِ وَاَنْتُمْ
تَعْلَمُوْنَ ۝ يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْاَهِلَّةِ ۗ قُلْ هِيَ مَوَاقِيْتُ لِلنَّاسِ
وَالْحَجِّ ۗ وَلَيْسَ الْبِرُّ بِاَنْ تَاْتُوا الْبُيُوْتَ مِنْ ظُهُوْرِهَا وَلٰكِنَّ
الْبِرَّ مَنِ اتَّقٰى ۚ وَاْتُوا الْبُيُوْتَ مِنْ اَبْوَابِهَا ۖ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ
تُفْلِحُوْنَ ۝ وَقَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَكُمْ وَلَا
تَعْتَدُوْا ۗ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ۝ وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ
ثَقِفْتُمُوْهُمْ وَاَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ حَيْثُ اَخْرَجُوْكُمْ وَالْفِتْنَةُ اَشَدُّ
مِنَ الْقَتْلِ ۚ وَلَا تُقٰتِلُوْهُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ حَتّٰى يُقٰتِلُوْكُمْ
فِيْهِ ۚ فَاِنْ قٰتَلُوْكُمْ فَاقْتُلُوْهُمْ ۗ كَذٰلِكَ جَزَاۤءُ الْكٰفِرِيْنَ ۝
فَاِنِ انْتَهَوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَقٰتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ
فِتْنَةٌ وَّيَكُوْنَ الدِّيْنُ لِلّٰهِ ۗ فَاِنِ انْتَهَوْا فَلَا عُدْوَانَ اِلَّا عَلَى
الظّٰلِمِيْنَ ۝ اَلشَّهْرُ الْحَرَامُ بِالشَّهْرِ الْحَرَامِ وَالْحُرُمٰتُ قِصَاصٌ ۗ
فَمَنِ اعْتَدٰى عَلَيْكُمْ فَاعْتَدُوْا عَلَيْهِ بِمِثْلِ مَا اعْتَدٰى عَلَيْكُمْ
وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ۝ وَاَنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ وَلَا تُلْقُوْا بِاَيْدِيْكُمْ اِلَى التَّهْلُكَةِ ۛ وَاَحْسِنُوْا ۛ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ

★रु. २३/७ आ ६ ∴मु. ज़ि मु त क़. १

बनें। (१८७) और एक दूसरे का माल ना-हक़ न खाओ और न उसको (रिश्वत के तौर पर) हाकिमों के पास पहुंचाओ ताकि लोगों के माल का कुछ हिस्सा नाजायज़ तौर पर न खा जाओ और (इसे) तुम जानते भी हो। (१८८) ★

(ऐ मुहम्मद !) लोग तुमसे नये चांद के बारे में पूछते हैं (कि घटता-बढ़ता क्यों है) ? कह दो कि वह लोगों के (कामों की मीयादें) और हज के वक़्त मालूम होने का ज़रिया है।[1] और नेकी इस बात में नहीं कि (एहराम की हालत में) घरों में उनके पिछवाड़े की तरफ़ से आओ, बल्कि नेक वह है जो परहेज़गार हो और घरों में उनके दरवाज़ों से आया करो[2] और ख़ुदा से डरते रहो ताकि निजात पाओ। (१८९) और जो लोग तुमसे लड़ते हैं, तुम भी ख़ुदा की राह में उनसे लड़ो, मगर ज़्यादती न करना कि ख़ुदा ज़्यादती करने वालों को दोस्त नहीं रखता। (१९०) और उनको जहां पाओ, क़त्ल कर दो और जहां से उन्होंने तुमको निकाला है (यानी मक्के से) वहां से तुम भी उनको निकाल दो और (दीन से गुमराह करने का) फ़साद क़त्ल व ख़ूंरेज़ी से कहीं बढ़कर है और जब तक वे तुम से मस्जिदे मोहतरम (यानी ख़ाना काबा) के पास न लड़ें, तुम भी वहां उनसे न लड़ना। हां, अगर वे तुम से लड़ें, तो तुम उनको क़त्ल कर डालो। क़ाफ़िरों की यही सज़ा है। (१९१) और अगर वे रुक जायें तो ख़ुदा बख़्शने वाला (और) रहम करने वाला है। (१९२) और उनसे उस वक़्त तक लड़ते रहना कि फ़साद ख़त्म हो जाए और (मुल्क में) ख़ुदा ही का दीन हो जाए और अगर वे (फ़साद से) बाज़ आ जायें, तो ज़ालिमों के सिवा किसी पर ज़्यादती नहीं (करनी चाहिए)। (१९३) अदब का महीना अदब के महीने के मुक़ाबले का है और अदब की चीज़ें एक दूसरे का बदला हैं। पस अगर कोई तुम पर ज़्यादती करे, तो जैसी ज़्यादती वह तुम पर करे, वैसी ही तुम उस पर करो। और ख़ुदा से डरते रहो और जान रखो कि ख़ुदा डरने वालों के साथ है।[3] (१९४) और ख़ुदा की राह में (माल) ख़र्च करो और अपने आप को हलाकत में न डालो[4] और नेकी करो। बेशक ख़ुदा नेकी करने वालों को दोस्त रखता है।[4] (१९५) और ख़ुदा (की ख़ुश्नूदी)

---

१. 'अहिल्ला' 'हिलाल' की जमा है और हिलाल पहली तीन रातों के चांद को कहते हैं। चांद हक़ीक़त में एक है, मगर चूंकि वह घटता-बढ़ता रहता है, इस लिए गोया कई चांद हुए। इसी लिए उन को 'अहिल्ला' कहा गया है। इस के घटने-बढ़ने का फ़ायदा यह है कि जो लोग अन-पढ़ हैं उन को इस से महीना और तारीख़ और हज के वक़्त मालूम होने हैं। अगर एक हालत पर रहता तो इन लोगों को बड़ी मुश्किल पेश आती कि न महीना मालूम होता, न तारीख़। हिलाल को देख कर हर शख़्स महीना और तारीख़ और हज के वक़्त और कामों की मीयादें आसानी से मालूम कर सकता है।

२. अरब में दस्तूर था कि जब घर से निकल कर एहराम बांध लेते, और घर में आने की ज़रूरत वाक़े होती तो घर में दरवाज़े से न दाख़िल होते, बल्कि पिछवाड़े से कूद कर आते। ख़ुदा ने इस फ़ेल को दाख़िले नेकी न क़रार दिया और घर में दरवाज़े से आने का हुक्म फ़रमाया।

३. इज़्ज़त के महीने चार थे —ज़ीक़ादा, ज़िलहिज्जा, मुहर्रम, रजब। और उन में लड़ाई नहीं की जाती थी। काफ़िर इन महीनों में लड़ाई करने लगते तो मुसलमान इन महीनों के अदब की वजह से लड़ाई से रुकते और हैरान होते कि क्या करें। ख़ुदा ने फ़रमाया कि अगर काफ़िर इन महीनों के अदब का ख़्याल रखें, तो तुम भी रखो और वे अदब को छोड़ दें और तुम पर ज़ुल्म करने लगें तो तुम भी उन से लड़ो और बदला लेने में कोताही न करो।

४. यानी जिहाद छोड़ कर न बैठो, इस में तुम्हारी हलाकत है।

★रु. २३/७ आ ६, ∴ मु. अ़ि मु त क़. १

व अतिम्मुल्हज्-ज वल्अुम्-र-त लिल्लाहि ط फ़ इन् उह्सिर्तुम् फ़ मस्तै-स-र मिनल्हद्यि ج व ला तह्लिक़ू रुऊसकुम् हत्ता यब्लुग़ल्-हद्यु महिल्लहू ط फ़ मन् का-न मिन्कुम् मरीज़न् औ बिही अज़म्-मिर्रअ्सिही फ़ फ़िद्यतुम्-मिन् सियामिन् औ स-द-क़तिन् औ नुसुकिन् ج फ़ इज़ा अमिन्तुम् फ़ मन् तमत्त-अ बिल्उम्रति इलल्हज्जि फ़-मस्तै-स-र मिनल्हद्यि ج फ़ मल्लम् यजिद् फ़ सियामु सलासति अय्यामिन् फ़िल्हज्जि व सब्अतिन् इज़ा र-जअ्-तुम् ط तिल्-क अ-श-रतुन् कामिलतुन् ط ज़ालि-क लिमल्लम् यकुन् अह्लुहू हाज़िरिल्-मस्जिदिल्-हरामि वत्तक़ुल्ला-ह वअ्-लमू अन्नल्ला-ह शदीदुल्-अिक़ाब ★(१९६) अल्हज्जु अश्हुरुम्-मअ्लूमातुन् ج फ़ मन् फ़-र-ज़ फ़ीहिन्नल्-हज्-ज फ़ला र-फ़-स व ला फ़ुसू-क़ ولا व ला जिदा-ल फ़िल्हज्जि ط व मा तफ़अलू मिन् ख़ैरिंय्यअ्-लम्हुल्लाहु ▒ ط व तज़व्वदू फ़ इन्-न ख़ैरज़्ज़ादित्तक़्वा ز वत्तक़ूनि या उलिल्-अल्बाब (१९७) लै-स अलैकुम् जुनाहुन् अन् तब्तग़ू फ़ज़्लम्-मिर्रब्बिकुम् ط फ़ इज़ा अफ़ज़्तुम् मिन् अ-रफ़ातिन् फ़ज़्कुरुल्ला-ह अिन्दल्-मश्अरिल्-हरामि ص वज़्कुरूहु कमा हदाकुम् ج व इन् कुन्तुम् मिन् क़ब्लिही ल-मिनज़्ज़ाल्लीन (१९८) सुम्-म अफ़ीज़ू मिन् हैसु अफ़ाज़न्नासु वस्तग़्फ़िरुल्लाह ط इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम (१९९) फ़ इज़ा क़ज़ैतुम् मनासिककुम् फ़ज़्कुरुल्ला-ह क-ज़िक्रिकुम् आबा-अकुम् औ अशद्-द ज़िक्रन् ط फ़ मिनन्नासि मंय्यक़ूलु रब्बना आतिना फ़िद्दुन्या व मा लहू फ़िल्-आख़िरति मिन् ख़लाक़ (२००) व मिन्हुम् मंय्यक़ूलु रब्बना आतिना फ़िद्दुन्या ह-स-न-तंव-व फ़िल्-आख़िरति ह-स-न-तंव्-व क़िना अज़ाबन्नार (२०१) ●

الْمُحْسِنِينَ ۝ وَأَتِمُّوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلَّهِ ۚ فَإِنْ أُحْصِرْتُمْ فَمَا اسْتَيْسَرَ
مِنَ الْهَدْيِ ۖ وَلَا تَحْلِقُوا رُءُوسَكُمْ حَتَّىٰ يَبْلُغَ الْهَدْيُ مَحِلَّهُ ۚ
فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَرِيضًا أَوْ بِهِ أَذًى مِنْ رَأْسِهِ فَفِدْيَةٌ مِنْ صِيَامٍ
أَوْ صَدَقَةٍ أَوْ نُسُكٍ ۚ فَإِذَا أَمِنْتُمْ فَمَنْ تَمَتَّعَ بِالْعُمْرَةِ إِلَى الْحَجِّ فَمَا
اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ ۚ فَمَنْ لَمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلَاثَةِ أَيَّامٍ فِي الْحَجِّ وَ
سَبْعَةٍ إِذَا رَجَعْتُمْ ۗ تِلْكَ عَشَرَةٌ كَامِلَةٌ ۗ ذَٰلِكَ لِمَنْ لَمْ يَكُنْ أَهْلُهُ
حَاضِرِي الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ
الْعِقَابِ ۝ الْحَجُّ أَشْهُرٌ مَعْلُومَاتٌ ۚ فَمَنْ فَرَضَ فِيهِنَّ الْحَجَّ فَلَا رَفَثَ
وَلَا فُسُوقَ وَلَا جِدَالَ فِي الْحَجِّ ۗ وَمَا تَفْعَلُوا مِنْ خَيْرٍ يَعْلَمْهُ اللَّهُ ۗ وَ
تَزَوَّدُوا فَإِنَّ خَيْرَ الزَّادِ التَّقْوَىٰ ۚ وَاتَّقُونِ يَا أُولِي الْأَلْبَابِ ۝ لَيْسَ
عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَبْتَغُوا فَضْلًا مِنْ رَبِّكُمْ ۚ فَإِذَا أَفَضْتُمْ مِنْ عَرَفَاتٍ
فَاذْكُرُوا اللَّهَ عِنْدَ الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ ۖ وَاذْكُرُوهُ كَمَا هَدَاكُمْ وَإِنْ كُنْتُمْ
مِنْ قَبْلِهِ لَمِنَ الضَّالِّينَ ۝ ثُمَّ أَفِيضُوا مِنْ حَيْثُ أَفَاضَ النَّاسُ
وَاسْتَغْفِرُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ فَإِذَا قَضَيْتُمْ مَنَاسِكَكُمْ
فَاذْكُرُوا اللَّهَ كَذِكْرِكُمْ آبَاءَكُمْ أَوْ أَشَدَّ ذِكْرًا ۗ فَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَقُولُ
رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا وَمَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ۝ وَمِنْهُمْ مَنْ
يَقُولُ رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ

★रु. २४/८ आ ८ ▒ व. न बीं स ● नि. १/२

के लिए हज और उमरे को पूरा करो और अगर (रास्ते में) रोक लिए जाओ तो जैसी क़ुर्बानी मुयस्सर हो (कर दो) और जब तक क़ुर्बानी अपनी जगह पर न पहुंच जाए, सर न मुंडाओ और अगर कोई तुम में बीमार हो या उसके सर में किसी तरह की तक्लीफ़ हो तो (अगर वह सर मुंडा ले तो) उसके बदले रोज़े रखे या सदक़ा दे या क़ुर्बानी करे। फिर जब (तक्लीफ़ दूर होकर) तुम मुतमइन हो जाओ तो जो (तुममें) हज के वक़्त तक उमरे में फ़ायदा उठाना चाहे, वह जैसी क़ुर्बानी मयस्सर हो करे और जिसको (क़ुर्बानी) न मिले, वह तीन रोज़े हज के दिनों में रखे और सात जब वापस हो। ये पूरे दस दिन हुए। यह हुक्म उस शख़्स के लिए है, जिसके बाल-बच्चे मक्के में न रहते हों और ख़ुदा से डरते रहो और जान रखो कि ख़ुदा सख़्त अज़ाब देने वाला है। (१९६) ★

हज के महीने (तै हैं जो) मालूम हैं।[1] तो जो शख़्स इन महीनों में हज की नीयत कर ले तो हज (के दिनों) में न औरतों से मिले, न कोई बुरा काम करे, न किसी से झगड़े और जो नेक काम तुम करोगे, वह ख़ुदा को मालूम हो जाएगा और ज़ादेराह (यानी रास्ते का ख़र्च) साथ ले जाओ क्योंकि बेहतर (फ़ायदा) ज़ादेराह (का) परहेज़गारी है और ऐ अक़्ल वालो! मुझसे डरते रहो। (१९७) इसका तुम्हें कुछ गुनाह नहीं कि (हज के दिनों में तिजारत के ज़रिए से) अपने परवरदिगार से रोज़ी तलब करो। और जब अरफ़ात से वापस होने लगो तो मशअरे हराम (यानी मुज़दलफ़े) में ख़ुदा का ज़िक्र करो। और इस तरह ज़िक्र करो जिस तरह उसने तुमको सिखाया और इससे पहले तुम लोग (इन तरीक़ों को) बिल्कुल नहीं जानते थे। (१९८) फिर जहां से और लोग वापस हों, वहीं से तुम भी वापस हो और ख़ुदा से बख़्शिश मांगो। बेशक ख़ुदा बख़्शने वाला और रहमत करने वाला है। (१९९) फिर जब हज के तमाम अर्कान पूरे कर चुको तो (मिना में) ख़ुदा को याद करो, जिस तरह अपने बाप-दादा को याद किया करते थे, बल्कि उससे भी ज़्यादा। और कुछ लोग ऐसे हैं जो (ख़ुदा से) इल्तिजा करते हैं कि ऐ परवरदिगार! हम को (जो देना है) दुनिया ही में इनायत कर। ऐसे लोगों का आख़िरत में कुछ हिस्सा नहीं। (२००) और कुछ ऐसे हैं कि दुआ करते हैं कि परवरगिदार! हम को दुनिया में भी नेमत अता फ़रमा और आख़िरत में भी नेमत बख़्शना और दोज़ख़ के अज़ाब से बचाए रखना। (२०१) ● यही लोग हैं जिनके लिए उन के कामों का

१. यानी शव्वाल, ज़ीक़ादा और ज़िलहिज्जा के दस दिन।

उलाइ-क लहुम् नसीबुम्मिम्मा क-सबू वल्लाहु सरीअुल् - हिसाब (२०२) वज़्कुरुल्ला-ह फ़ी अय्यामिम्-मअ्-दूदातिन् फ़ मन् त-अज्ज-ल फ़ी यौमैनि फ़ ला इस-म अलैहि व मन् त-अख़्ख़-र फ़ ला इस्-म अलैहि लि मनित्तक़ा वत्तक़ुल्ला-ह वअ्-लमू अन्नकुम् इलैहि तुह्शरून (२०३) व मिनन्नासि मंय्युअ्-जिबु-क क़ौलुहू फ़िल्-हयातिद्दुन्या व युश्हिदुल्ला-ह अला मा फ़ी क़ल्बिही व हु-व अलद्दुल्-ख़िसाम (२०४) व इज़ा त-वल्ला सआ फ़िल्अर्ज़ि लि युफ़्सि-द फ़ीहा व युह्लिकल्हर्-स वन्नस्-ल वल्लाहु ला युहिब्बुल्फ़साद (२०५) व इज़ा क़ी-ल लहुत्तक़िल्ला-ह अ-ख़-ज़त्हुल्-अिज़्ज़तु बिल्-इस्मि फ़ हस्बुहू जहन्नमु व ल बिअ्सल्मिहाद (२०६) व मिनन्नासि मंय्यश्री नफ़्सहुब्तिग़ा - अ मर्ज़ातिल्लाहि वल्लाहु रऊफ़ुम्-बिल्अिबाद (२०७) या अय्युहल्लज़ी-न आमनुद्ख़ुलू फ़िस्सिल्मि काफ़्फ़तंव् व ला तत्तबिअू ख़ुतुवातिश्शैतानि इन्नहू लकुम् अदुव्वुम् - मुबीन (२०८) फ़ इन् ज़-लल्तुम् मिम्बअ्-दि मा जा-अत्कुमुल् - बय्यिनातु फ़अ्-लमू अन्नल्ला-ह अज़ीज़ुन् हकीम (२०९) हल् यन्ज़ुरू-न इल्ला अंय्यअ्ति - य-हुमुल्लाहु फ़ी ज़ु-ललिम्-मिनल्-ग़मामि वल्मला-इकतु व क़ुज़ियल्-अम्रु व इलल्लाहि तुर्जअुल्-उमूर ★ (२१०) सल् बनी इस्रा-ई-ल कम् आतैनाहुम् मिन् आयतिम्-बय्यिनतिन् व मंय्युबद्दिल् निअ्-मतल्लाहि मिम्बअ्-दि मा जा-अत्हु फ़ इन्नल्ला-ह शदीदुल् अिक़ाब (२११) ज़ुय्यि-न लिल्लज़ी-न क-फ़रुल्-हयातुद्दुन्या व यस्ख़रू - न मिनल्लज़ी - न आमनू ▒ वल्लज़ीनत्तक़ौ फ़ौक़हुम् यौमल्-क़ियामति वल्लाहु यर्ज़ुक़ु मंय्यशा-उ बिग़ैरि हिसाब (२१२)

سیقول ٢ — ٢٥ — البقرة ٢

النار ۞ اولئك لهم نصيب مما كسبوا والله سريع الحساب ۞
واذكروا الله في ايام معدودت فمن تعجل في يومين فلا اثم
عليه ومن تاخر فلا اثم عليه لمن اتقى واتقوا الله واعلموا
انكم اليه تحشرون ۞ ومن الناس من يعجبك قوله في الحيوة
الدنيا ويشهد الله على ما في قلبه وهو الد الخصام ۞ واذا
تولى سعى في الارض ليفسد فيها ويهلك الحرث والنسل
والله لا يحب الفساد ۞ واذا قيل له اتق الله اخذته العزة
بالاثم فحسبه جهنم ولبئس المهاد ۞ ومن الناس من
يشري نفسه ابتغاء مرضات الله والله رءوف بالعباد ۞ يايها
الذين امنوا ادخلوا في السلم كافة ولا تتبعوا خطوت
الشيطن انه لكم عدو مبين ۞ فان زللتم من بعد ما جاءتكم
البينت فاعلموا ان الله عزيز حكيم ۞ هل ينظرون الا ان
ياتيهم الله في ظلل من الغمام والملئكة وقضي الامر
والى الله ترجع الامور ۞ سل بني اسراءيل كم اتينهم من
اية بينة ومن يبدل نعمة الله من بعد ما جاءته فان
الله شديد العقاب ۞ زين للذين كفروا الحيوة الدنيا و
يسخرون من الذين امنوا والذين اتقوا فوقهم يوم القيمة

★रु. २५/६ आ १४ ▒ व. लाज़िम

हिस्सा (यानी नेक बदला तैयार) है और ख़ुदा जल्द हिसाब लेने वाला (और जल्द बदला देने वाला) है। (२०२) और (मिना के ठहरने के) दिनों में (जो) गिनती के (दिन) हैं, ख़ुदा को याद करो। अगर कोई जल्दी करे (और) दो ही दिन में (चल दे) तो उस पर भी कुछ गुनाह नहीं और जो बाद तक ठहरा रहे, उस पर भी कुछ गुनाह नहीं।[1] ये बातें उस शख़्स के लिए हैं जो (ख़ुदा से) डरे और तुम लोग ख़ुदा से डरते रहो और जान रखो कि तुम सब उस के पास जमा किये जाओगे। (२०३) और कोई शख़्स तो ऐसा है जिसकी बातचीत दुनिया की ज़िन्दगी में तुमको भली मालूम होती है और वह अपने माफ़िज़्ज़मीर (जो कुछ ज़मीर यानी अन्तरात्मा में है) पर ख़ुदा को गवाह बनाता है, हालांकि वह सख़्त झगड़ालू है। (२०४) और जब पीठ फेरकर चला जाता है तो ज़मीन में दौड़ता फिरता है, ताकि उसमें फ़साद फैलाए और खेती को (बर्बाद) और (इन्सानों और हैवानों की) नस्ल को हलाक करे और ख़ुदा फ़साद को पसन्द नहीं करता। (२०५) और जब उससे कहा जाता है कि ख़ुदा से ख़ौफ़ करो तो घमण्ड उस को गुनाह में फंसा देता है, तो ऐसे को जहन्नम सज़ावार है और वह बहुत बुरा ठिकाना है।[2] (२०६) और कोई शख़्स ऐसा है कि ख़ुदा की ख़ुशी हासिल करने के लिए अपनी जान बेच डालता है और ख़ुदा बन्दों पर बहुत मेहरबान है।[3] (२०७) मोमिनो! इस्लाम में पूरे-पूरे दाख़िल हो जाओ और शैतान के पीछे न चलो।[4] वह तो तुम्हारा खुला दुश्मन है। (२०८) फिर अगर तुम रोशन हुक्मों के पहुंच जाने के बाद लड़खड़ा जाओ तो जान रखो कि ख़ुदा ग़ालिब और हिक्मत वाला है। (२०९) क्या ये लोग इसी बात के इंतिज़ार में हैं कि उन पर ख़ुदा (का अज़ाब) बादल के सायेबानों में आ नाज़िल हो और फ़रिश्ते भी (उतर आयें) और काम तमाम कर दिया जाए।[5] और सब कामों का रुजूअ ख़ुदा ही की तरफ़ है। (२१०) ★

(ऐ मुहम्मद!) बनी इस्राईल से पूछो कि हमने उनको कितनी खुली निशानियां दीं और जो शख़्स ख़ुदा की नेमत को अपने पास आने के बाद बदल दे तो ख़ुदा सख़्त अज़ाब करने वाला है। (२११) और जो काफ़िर हैं, उनके लिए दुनिया की ज़िंदगी ख़ुशनुमा कर दी गयी है और वे मोमिनों से मज़ाक़ करते हैं▨ लेकिन जो परहेज़गार हैं, वे क़ियामत के दिन उन पर ग़ालिब होंगे और ख़ुदा जिस को चाहता है, अनगिनत रोज़ी देता है। (२१२) (पहले तो सब) लोगों का एक ही

---

१. गिनती के दिनों से ईद के बाद के तीन दिन मुराद हैं, जिन को अय्यामे तशरीक़ कहते हैं। इन तीन दिनों यानी ११-१२ और १३ तारीख़ में ख़ुदा को याद करना चाहिए और अगर कोई सिर्फ़ दो दिन रह कर चला जाए, तो उसे अख़्तियार है।

२. यह हाल है मुनाफ़िक़ का कि ज़ाहिर में ख़ुशामद करे और अल्लाह को गवाह करे कि मेरे दिल में तुम्हारी मुहब्बत है और झगड़े के वक़्त कुछ कमी न करे और क़ाबू पाए तो लूट-मार मचा दे और मना करने से और ज़िद चढ़े और ज़्यादा गुनाह करे।

३. यह हाल है ईमान वाले का कि अल्लाह की ख़ुशी पर अपनी जान दे।

४. यानी बहकाने पर न चलो।

५. यानी हर एक को सज़ा मिले, उस के कामों के मुताबिक़।

★रु. २५/६ आ १४ ▨व. लाज़िम

कानन्नासु उम्मतंव्वाहिद-तन् ۚ फ़ ब-अ़-सल्लाहुन्नबिय्यी-न मुबश्शिरी-न व मुन्ज़िरी-न ۖ व अन्ज़-ल म-अ़हुमुल्-किता-ब बिल्ह़क़्क़ि लियह़्कु-म बैनन्नासि फ़ी मख़्-त-लफ़ू फ़ीहि ۗ व मख़्त-ल-फ़ फ़ीहि इल्लल्लज़ी-न ऊतूहु मिम्बअ़्दि मा जा-अत्हुमुल्-बय्यिनातु बग़्यम्-बैनहुम् ۚ फ़ ह-दल्लाहुल्लज़ी-न आमनू लिमख़्त-लफ़ू फ़ीहि मिनल्ह़क़्क़ि बि इज़्निही वल्लाहु यह्दी मंय्यशा-उ इला सिरातिम्-मुस्तक़ीम (२१३) अम् ह़सिब्तुम् अन् तद्ख़ुलुल्-जन्न-त व लम्मा यअ्तिकुम् म-सलुल्लज़ी-न ख़लौ मिन क़ब्लिकुम् मस्सत्-हुमुल्बअ्सा-उ वज़्ज़र्रा-उ व ज़ुल्ज़िलू ह़त्ता यक़ूलर्-रसूलु वल्लज़ी-न आमनू म-अ़हू मता नस्रुल्लाहि ۗ अला इन्-न नस्रल्लाहि क़रीब (२१४) यस्अलून-क माज़ा युन्फ़िक़ून ۖ क़ुल् मा अन्फ़क़्तुम् मिन् ख़ैरिन् फ़ लिल्-वालिदैनि वल्-अक़्रबी-न वल्-यतामा वल्मसाकीनि वब्निस्सबीलि ۗ व मा तफ़्अ़लू मिन् ख़ैरिन् फ़ इन्नल्ला-ह बिही अ़लीम (२१५) कुति-ब अ़लैकुमुल्-क़ितालु व हु-व कुर्हुल्लकुम् ۚ व अ़सा अन् तक्रहू शैअंव-व हु-व ख़ैरुल्लकुम् ۚ व अ़सा अन् तुह़िब्बू शैअंव-व हु-व शर्रुल्लकुम् ۗ वल्लाहु यअ्-लमु व अन्तुम् ला तअ्-लमून ★ (२१६)

البقرة ٢ ٣٢ سيقول

وَاللّٰهُ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَاۤءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۞ كَانَ النَّاسُ اُمَّةً
وَّاحِدَةً فَبَعَثَ اللّٰهُ النَّبِيّٖنَ مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ وَاَنْزَلَ
مَعَهُمُ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ لِيَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ فِيْمَا اخْتَلَفُوْا فِيْهِ
وَمَا اخْتَلَفَ فِيْهِ اِلَّا الَّذِيْنَ اُوْتُوْهُ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَاۤءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ
بَغْيًاۢ بَيْنَهُمْ فَهَدَى اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَا اخْتَلَفُوْا فِيْهِ مِنَ
الْحَقِّ بِاِذْنِهٖ وَاللّٰهُ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَاۤءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۞
اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَاْتِكُمْ مَّثَلُ الَّذِيْنَ خَلَوْا
مِنْ قَبْلِكُمْ مَسَّتْهُمُ الْبَاْسَاۤءُ وَالضَّرَّاۤءُ وَزُلْزِلُوْا حَتّٰى يَقُوْلَ
الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ مَتٰى نَصْرُ اللّٰهِ اَلَآ اِنَّ نَصْرَ اللّٰهِ
قَرِيْبٌ ۞ يَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ قُلْ مَاۤ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ خَيْرٍ
فَلِلْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ وَ
مَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ۞ كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ
وَهُوَ كُرْهٌ لَّكُمْ وَعَسٰۤى اَنْ تَكْرَهُوْا شَيْـًٔا وَّهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَ
عَسٰۤى اَنْ تُحِبُّوْا شَيْـًٔا وَّهُوَ شَرٌّ لَّكُمْ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا
تَعْلَمُوْنَ ۞ يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الشَّهْرِ الْحَرَامِ قِتَالٍ فِيْهِ قُلْ قِتَالٌ
فِيْهِ كَبِيْرٌ وَصَدٌّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَكُفْرٌۢ بِهٖ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ
وَاِخْرَاجُ اَهْلِهٖ مِنْهُ اَكْبَرُ عِنْدَ اللّٰهِ وَالْفِتْنَةُ اَكْبَرُ مِنَ الْقَتْلِ

★ रु. २६/१० आ ६

मज़हब था। (लेकिन वे आपस में इख़्तिलाफ़ करने लगे) तो ख़ुदा ने (उनकी तरफ़) बशारत देने वाले और डर सुनाने वाले पैग़म्बर भेजे और उन पर सच्चाई के साथ किताबें नाज़िल कीं, ताकि जिन मामलों में लोग इख़्तिलाफ़ करते थे, उनका उनमें फ़ैसला कर दे। और इसमें इख़्तिलाफ़ भी उन्हीं लोगों ने किया जिनको किताब दी गयी थी, बावजूदे कि उन के पास खुले हुए हुक्म आ चुके थे। (और यह इख़्तिलाफ़ उन्होंने सिर्फ़) आपस की ज़िद से (किया) तो जिस हक़ बात में इख़्तिलाफ़ करते थे, ख़ुदा ने अपनी मेहरबानी से मोमिनों को उस की राह दिखा दी और ख़ुदा जिसको चाहता है, सीधा रास्ता दिखा देता है। (२१३) क्या तुम यह ख़्याल करते हो कि (यों ही) बहिश्त में दाख़िल हो जाओगे और अभी तुमको पहले लोगों की-सी (मुश्किलें) तो पेश आयी ही नहीं। उनको (बड़ी-बड़ी) सख़्तियां और तक्लीफ़ें पहुंचीं और वे (परेशानियों में) हिला-हिला दिये गये, यहां तक कि पैग़म्बर और मोमिन लोग, जो उनके साथ थे, सब पुकार उठे कि कब ख़ुदा की मदद आएगी। देखो, ख़ुदा की मदद (बहुत) जल्द (आया चाहती) है। (२१४) (ऐ मुहम्मद !) लोग तुमसे पूछते हैं कि (ख़ुदा की राह में) किस तरह का माल ख़र्च करें। कह दो कि (जो चाहो ख़र्च करो, लेकिन) जो माल ख़र्च करना चाहो, वह (दर्जा-ब-दर्जा हक़ वालों, यानी) मां-बाप को और क़रीब के रिश्तेदारों को और यतीमों को और मुहताजों को और मुसाफ़िरों को (सबको दो) और जो भलाई तुम करोगे, ख़ुदा उसको जानता है। (२१५) (मुसलमानो !) तुम पर (ख़ुदा के रास्ते में) लड़ना फ़र्ज़ कर दिया गया है, वह तुम्हें ना-गवार तो होगा। मगर अजब नहीं कि एक चीज़ तुमको बुरी लगे और वह तुम्हारे हक़ में भली हो और अजब नहीं कि एक चीज़ तुमको भली लगे और वह तुम्हारे लिए नुक़सानदेह हो। और (इन बातों को) ख़ुदा ही बेहतर जानता है और तुम नहीं जानते। (२१६) ★

★रु. २६/१० आ ६

यस्अलून-क अनिश्शह्रिल्-ह़रामि क़ितालिन् फ़ीहि ط कुल् क़ितालुन् फ़ीहि कबीरुन् ط व सद्दुन् अन् सबीलिल्लाहि व कुफ़्रुम् बिही वलमस्जिदिल्-ह़रामि ق व इख़्राजु अह्लिही मिन्हु अक्बरु अिन्दल्लाहि ج वल्फ़ित्नतु अक्बरु मिनल्-क़त्लि ط व ला यज़ालू-न युक़ातिलूनकुम् ह़त्ता यरुद्दूकुम् अन् दीनिकुम् इनिस्तताअू ط व मंय्यर्-तदिद् मिन्कुम् अन् दीनिही फ़ यमुत् व हु-व काफ़िरुन् फ़ उला-इ-क ह़बितत् अअ्-मालुहुम् फ़िद्दुन्या वल्-आख़िरति ج व उला-इ-क अस्-ह़ाबुन्नारि ج हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (२१७) इन्नल्लज़ी-न आमनू वल्लज़ी-न हाजरू व जाहदू फ़ी सबीलिल्लाहि لا उला-इ-क यर्जू-न रह़्मतल्लाहि ط वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम (२१८) यस्अलून-क अनिल्ख़म्रि वलमैसिरि ط कुल् फ़ीहिमा इस्मुन् कबीरुंव-व मनाफ़िअु लिन्नासि ز व इस्मुहुमा अक्बरु मिन्नफ़्अिहिमा ط व यस्अलून-क मा ज़ा युन्फ़िक़ू-न ط कुलिल्अ़फ़्-व ط कज़ालि-क युबय्यिनुल्लाहु लकुमुल्-आयाति ल-अ़ल्लकुम् त-त-फ़क्करून لا (२१९) फ़िद्दुन्या वल्-आख़िरति ط व यस्अलून-क अनिल्-यतामा ط कुल् इस्लाहुल्लहुम् ख़ैरुन् ط व इन् तुख़ालितूहुम् फ़ इख़्वानुकुम् ط वल्लाहु यअ्लमुल्-मुफ़्सि-द मिनल्मुस्लिहि ط व लौ शा-अल्लाहु ल-अअ्-न-तकुम् ط इन्नल्ला-ह अज़ीज़ुन् ह़कीम (२२०) व ला तन्किहुल् मुश्रिकाति ह़त्ता युअ्मिन-न ط व ल अ-म-तुम्-मुअ्मिन-तुन् ख़ैरुम्मिम्-मुश्रिकतिंव-व लौ अअ्-ज-बत्कुम् ج व ला तुन्किहुल्-मुश्रिकी-न ह़त्ता युअ्मिनू ط व ल अ़ब्दुम्-मुअ्मिनुन् ख़ैरुम्मिम्-मुश्रिकिंव-व लौ अअ्-ज-बकुम् ط उला-इ-क यद्अू-न इलन्नारि ج वल्लाहु यद्अू इलल्जन्नति वलमग़्फ़िरति बि इज़्निही ج व युबय्यिनु आयातिही लिन्नासि ल-अ़ल्लहुम् य-त-ज़क्करून (२२१) ★

ولا يزالون يقاتلونكم حتى يردوكم عن دينكم إن استطاعوا
ومن يرتدد منكم عن دينه فيمت وهو كافر فأولئك حبطت
أعمالهم في الدنيا والآخرة وأولئك أصحاب النار هم فيها
خالدون ۝ إن الذين آمنوا والذين هاجروا وجاهدوا في
سبيل الله أولئك يرجون رحمت الله والله غفور رحيم ۝
يسألونك عن الخمر والميسر قل فيهما إثم كبير ومنافع
للناس وإثمهما أكبر من نفعهما ويسألونك ماذا ينفقون
قل العفو كذلك يبين الله لكم الآيات لعلكم تتفكرون ۝
في الدنيا والآخرة ويسألونك عن اليتامى قل إصلاح لهم
خير وإن تخالطوهم فإخوانكم والله يعلم المفسد من
المصلح ولو شاء الله لأعنتكم إن الله عزيز حكيم ۝
ولا تنكحوا المشركات حتى يؤمن ولأمة مؤمنة خير
من مشركة ولو أعجبتكم ولا تنكحوا المشركين حتى
يؤمنوا ولعبد مؤمن خير من مشرك ولو أعجبكم
أولئك يدعون إلى النار والله يدعو إلى الجنة والمغفرة
بإذنه ويبين آياته للناس لعلهم يتذكرون ۝ ويسألونك
عن المحيض قل هو أذى فاعتزلوا النساء في المحيض

★रु. २७/११ आ ५

(ऐ मुहम्मद !) लोग तुम से इज़्ज़त वाले महीनों में लड़ाई करने के बारे में पूछते हैं। कह दो कि इनमें लड़ना बड़ा (गुनाह) है और ख़ुदा की राह से रोकना और उस से कुफ़्र करना और मस्जिदे हराम (यानी ख़ाना-ए-काबा) में जाने से (बन्द करना) और मस्जिद वालों को उसमें से निकाल देना (जो ये काफ़िर करते हैं) ख़ुदा के नज़दीक उस से भी ज़्यादा (गुनाह) है और फ़ितना फैलाना ख़ून बहाने से भी बढ़कर है और ये लोग हमेशा तुम से लड़ते रहेंगे, यहां तक कि अगर ताक़त रखें तो तुमको तुम्हारे दीन से फेर दें और जो कोई तुम में से अपने दीन से फिर (कर काफ़िर हो) जाएगा और काफ़िर ही मरेगा, तो ऐसे लोगों के आमाल दुनिया और आख़िरत, दोनों में बर्बाद हो जायेंगे और यही लोग दोज़ख़ (में जाने) वाले हैं, जिस में हमेशा रहेंगे। (२१७) जो लोग ईमान लाए और ख़ुदा के लिए वतन छोड़ गये और (काफ़िरों से) जंग करते रहे, वही ख़ुदा की रहमत के उम्मीदवार हैं और ख़ुदा बख़्शने वाला (और) रहमत करने वाला है। (२१८) (ऐ पैग़म्बर !) लोग तुम से शराब और जुए का हुक्म मालूम करते हैं। कह दो कि इन में नुक़्सान बड़े हैं और लोगों के लिए कुछ फ़ायदे भी हैं, मगर उनके नुक़्सान फ़ायदों से कहीं ज़्यादा हैं।[1] और यह भी तुम से पूछते हैं कि (ख़ुदा की राह में) कौन सा माल ख़र्च करें? कह दो कि जो ज़रूरत से ज़्यादा हो। इस तरह ख़ुदा तुम्हारे लिए अपने हुक्मों को खोल-खोलकर बयान फ़रमाता है, ताकि तुम सोचो। (२१९) (यानी) दुनिया और आख़िरत (की बातों) में (ग़ौर करो) और तुम से यतीमों के बारे में पूछते हैं, कह दो कि उन के (हालात का) सुधार बहुत अच्छा काम है और अगर तुम उनसे मिल-जुल कर रहना (यानी ख़र्च इकट्ठा रखना) चाहो तो वे तुम्हारे भाई हैं और ख़ुदा ख़ूब जानता है कि ख़राबी करने वाला कौन है और सुधार करने वाला कौन और अगर ख़ुदा चाहता तो तुमको तक्लीफ़ में डाल देता। बेशक ख़ुदा ग़ालिब और हिक्मत वाला है। (२२०) और (मोमिनो !) मुश्रिक औरतों से जब तक कि ईमान न लाएं निकाह न करना, क्योंकि मुश्रिक औरत, चाहे तुमको कैसी ही भली लगे उससे मोमिन लौंडी बेहतर है और (इसी तरह) मुश्रिक मर्द, जब तक ईमान न लाएं, मोमिन औरतों को उनकी बीवी न बनाना, क्योंकि मुश्रिक (मर्द) से, चाहे वह तुमको कैसा ही भला लगे, मोमिन ग़ुलाम बेहतर है। ये (मुश्रिक, लोगों को) दोज़ख़ की तरफ़ बुलाते हैं और ख़ुदा अपनी मेहरबानी से बहिश्त और बख़्शिश की तरफ़ बुलाता है और अपने हुक्म लोगों से खोल-खोलकर बयान करता है, ताकि नसीहत हासिल करें (२२१) ★

---

१. शुरू इस्लाम में शराब हराम न थी। मुसलमान उसे बिला झिझक पीते थे। जब यह आयत नाज़िल हुई तो जिन लोगों ने ख़्याल किया कि इस में नुक़्सान है, उन्होंने इस को छोड़ दिया और जिन लोगों ने समझा कि इस में फ़ायदे हैं, वे पीते रहे, फिर यह आयत उतरी कि, 'जब तुम मतवाले हुआ करो तो नमाज़ न पढ़ा करो।' तो जो शराब पिया करते थे, उन्होंने नमाज़ के वक़्त उस का पीना छोड़ दिया। इन आयतों से शराब की बुराई तो ज़ाहिर थी, लेकिन खुले तौर पर हराम न थी, फिर यह आयत उतरी कि ऐ ईमान वालो ! शराब और जुआ और बुतों के थान और पांसे, ये सब नापाक काम, शैतानों के कामों में से हैं, सो इन से बचो ताकि निजात पाओ। इस से शराब साफ़ तौर पर हराम हो गयी। हज़रत उमर रज़ि० जो शराब के बारे में साफ़-साफ़ हुक्म के आ जाने की ख़्वाहिश रखते थे, जब उन्होंने यह आयत सुनी कि 'शैतान तो यह चाहता है कि शराब और जुए की वजह से तुम्हारे आपस में दुश्मनी और रंजिश डलवा दे और तुम्हें ख़ुदा की याद और नमाज़ से रोक दे, सो तुम को (उन से) बाज़ रहना चाहिए', तो फ़ौरन बोल उठे कि हम बाज़ रहे, हम बाज़ रहे।

★रु. २७/११ आ ५

व यस्अलून-क अनिल्महीज़ि कुल् हु-व अ-ज़न् फ़अ्-तज़िलुन्निसा-अ फ़िलमहीज़ि व ला तक़रबू-हुन्-न हत्ता यत्-हुर्-न फ़ इज़ा त-तह-हर्-न फ़अ्तू-हुन-न मिन् हैसु अ-म-रकुमुल्लाहु इन्नल्ला-ह युहिब्बुत्तव्वाबी-न व युहिब्बुल्-मु-त-तह्हिरीन (२२२) निसा-उकुम् हर्सुल्लकुम् फ़अ्तू हर्सकुम् अन्ना शिअ्तुम् व क़द्दिमू लि अन्फ़ुसिकुम् वत्तक़ुल्ला-ह वअ्-लमू अन्नकुम्मुलाक़ूहु व बश्शिरिल्-मुअ्मिनीन (२२३) व ला तज्अलुल्ला-ह अुर्ज़तल्लि-ऐमानिकुम् अन् तबर्रू व तत्तक़ू व तुस्लिहू बैनन्नासि वल्लाहु समीअुन् अलीम (२२४) ला युआख़िज़ुकुमुल्लाहु बिल्लग़्वि फ़ी ऐमानिकुम् व लाकिंय्युआख़िज़ुकुम् बिमा क-स-बत् क़ुलूबुकुम् वल्लाहु ग़फ़ूरुन् हलीम (२२५) लिल्लज़ी-न युअ्लू-न मिन्निसा-इ-हिम् तरब्बुसु अर्ब-अ़ति अश्हुरिन् फ़ इन् फ़ा-ऊ फ़ इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम (२२६) व इन् अ-ज़-मुत्तला-क़ फ़-इन्नल्ला-ह समीअुन् अलीम (२२७) वल्मुतल्लक़ातु य-त-रब्बस्-न बि अन्फ़ुसिहिन्-न सला-स-त क़ुरू-इन् व ला यहिल्लु लहुन्-न अंय्यक्तुम्-न मा ख़-ल-क़ल्लाहु फ़ी अर्हामिहिन्-न इन् कुन्-न युअ्मिन्-न बिल्लाहि वल्यौमिल्-आख़िरि व बुअ़ूलतुहुन्-न अहक़्क़ु बिरद्दिहिन्-न फ़ी ज़ालि-क इन् अरादू इस्लाहन् व लहुन्-न मिस्लुल्लज़ी अलैहिन्-न बिलमअ्-रूफ़ि व लिर्रिजालि अलैहिन्-न द-र-जतुन् वल्लाहु अज़ीज़ुन् हकीम ★ (२२८)

البقرة ٢ ٢٨ سيقول ٢

ولا تقربوهن حتى يطهرن فاذا تطهرن فاتوهن من
حيث امركم الله ان الله يحب التوابين ويحب المتطهرين ۝
نساؤكم حرث لكم فاتوا حرثكم انى شئتم وقدموا
لانفسكم واتقوا الله واعلموا انكم ملقوه وبشر المؤمنين ۝
ولا تجعلوا الله عرضة لايمانكم ان تبروا وتتقوا وتصلحوا
بين الناس والله سميع عليم ۝ لا يؤاخذكم الله باللغو
في ايمانكم ولكن يؤاخذكم بما كسبت قلوبكم والله غفور
حليم ۝ للذين يؤلون من نسائهم تربص اربعة اشهر
فان فاءو فان الله غفور رحيم ۝ وان عزموا الطلاق فان
الله سميع عليم ۝ والمطلقت يتربصن بانفسهن ثلثة قروء
ولا يحل لهن ان يكتمن ما خلق الله في ارحامهن ان
كن يؤمن بالله واليوم الاخر وبعولتهن احق بردهن في
ذلك ان ارادوا اصلاحا ولهن مثل الذي عليهن بالمعروف
وللرجال عليهن درجة والله عزيز حكيم ۝ الطلاق مرتن
فامساك بمعروف او تسريح باحسان ولا يحل لكم ان
تاخذوا مما اتيتموهن شيئا الا ان يخافا الا يقيما حدود
الله فان خفتم الا يقيما حدود الله فلا جناح عليهما فيما

منزل ١

★रु. २८/१२ आ ७

और तुमसे हैज़ के बारे में पूछते हैं। कह दो कि वह तो नजासत है, सो हैज़ के दिनों में औरतों से अलग रहो और जब तक पाक न हो जायें, उनसे क़रीब न होओ। हां, जब पाक हो जाएं तो जिस तरीक़े से ख़ुदा ने तुम्हें इर्शाद फ़रमाया है, उनके पास जाओ। कोई शक नहीं कि ख़ुदा तौबा करने वालों और पाक-साफ़ रहने वालों को दोस्त रखता है। (२२२) तुम्हारी औरतें तुम्हारी खेती है, तो अपनी खेती में जिस तरह चाहो जाओ और अपने लिए (नेक अमल) आगे भेजो और ख़ुदा से डरते रहो और जान रखो कि (एक दिन) तुम्हें उसके सामने हाज़िर होना है।[1] और (ऐ पैग़म्बर!) ईमान वालों को ख़ुशख़बरी सुना दो। (२२३) और ख़ुदा (के नाम) को इस बात का हीला न बनाना कि (उसकी) क़समें खा-खाकर सुलूक करने और परहेज़गारी करने और लोगों में सुलह-सफ़ाई कराने से रुक जाओ और ख़ुदा सब कुछ सुनता और जानता है।[2] (२२४) ख़ुदा तुम्हारी बेकार क़स्मों पर तुम्हारी पकड़ नहीं करेगा, लेकिन जो क़स्में तुम दिल के इरादे से खाओगे, उन पर पकड़ करेगा और ख़ुदा बख़्शने वाला, बुर्दबार है।[3] (२२५) जो लोग अपनी औरतों के पास जाने से क़सम खा लें, उनको चार महीने तक इन्तिज़ार करना चाहिए। अगर (इस अर्से में क़सम से) रुजूअ कर लें, तो ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है। (२२६) और अगर तलाक़ का इरादा कर लें, तो भी ख़ुदा सुनता और जानता है। (२२७) और तलाक़ वाली औरतें तीन हैज़[4] तक अपने आपको रोके रहें। और अगर वे ख़ुदा और क़ियामत के दिन पर ईमान रखती हैं तो उन को जायज़ नहीं कि ख़ुदा ने जो कुछ उन के पेट में पैदा किया है, उसको छिपायें और उन के ख़ाविंद अगर फिर मुवाफ़क़त चाहें तो इस (मुद्दत) में वे उन को अपनी ज़ौजियत (बीबी बनाने) में ले लेने के ज़्यादा हक़दार हैं। और औरतों का हक़ (मर्दों पर) वैसा ही है जैसे दस्तूर के मुताबिक़ (मर्दों का) हक़ औरतों पर है। हां, मर्दों को औरतों पर फ़ज़ीलत है और ख़ुदा ग़ालिब (और) हिक्मत वाला है। (२२८) ★

---

१. लफ़्ज़ों का लिहाज़ किया जाता तो तर्जुमा यों होना चाहिए था कि 'तुम्हें ख़ुदा से मिलना है, मगर जो तर्जुमा यहां किया गया है, वह मुहावरे के लिहाज़ से बहुत लतीफ़ है।

२. यानी इस बात की क़सम न खाओ कि मैं फ़्लां शख़्स से सुलूक नहीं करूंगा या फ़्लां नेक काम नहीं करूंगा। अगर ऐसी क़सम खा ली हो तो उस को तोड़ देना चाहिए और उस का कफ़्फ़ारा दे देना चाहिए।

३. 'बेकार क़सम' वह है जिस की नीयत न हो और बे-क़स्द व इरादा खायी जाए, जैसे कुछ लोग तकिया-ए-कलाम के तौर पर बात-बात में 'वल्लाह' 'बिल्लाह' कहा करते हैं। कुछ ने कहा, बेकार क़सम वह है जो ग़ुस्से की हालत में खायी जाए, या हलाल को हराम कर लिया जाए। ऐसी क़सम में कफ़्फ़ारा नहीं है। कुछ ने कहा, जो गुनाह की बात पर खायी जाए। कुछ ने कहा, जो मामले के वक़्त खायी जाए। बेचने वाला कहे, वल्लाह! यह चीज़ मैं इतने को नहीं बेचूंगा, ख़रीदने वाला कहे, वल्लाह! मैं इतने को नहीं ख़रीदूंगा। बहरहाल बेकार क़स्मों पर पकड़ नहीं है।

४. जिस लफ़्ज़ का तर्जुमा हम ने हैज़ किया है, वह 'क़ुरू' है, जिस के मानी हैज़ और तुह्र (पाकी) दोनों हैं। इस बारे में इख़्तिलाफ़ रहा है कि यहां हैज़ मुराद है या तुह्र। सहाबा रज़ि० की एक जमाअत इस बात की क़ायल है कि क़ुरू के मानी तुह्र हैं। इमाम मालिक रह० और शाफ़ई का भी मज़हब यही है, मगर चारों ख़लीफ़ा और ताबईन का यह क़ौल है कि 'क़ुरू' से मुराद हैज़ है। इमाम अबू हनीफ़ा रह० का भी यही मज़हब है। इमाम

(शेष ५५ पर)

अत्तलाक़ु मर्रतानि ᵒ फ़ इम्साकुम्-बिमअ्-रूफ़िन् औ तस्रीहुम्-बि इह़्सानिन्ᵇ व ला यह़िल्लु लकुम् अन् तअ्ख़ुज़ू मिम्मा आतैतुमूहुन्-न शैअन् इल्ला अंय्यख़ाफ़ा अल्ला युक़ीमा हुदूदल्लाहि ᵇ फ़ इन् ख़िफ़्तुम् अल्ला युक़ीमा हुदूदल्लाहि ᵇ फ़ ला जुना-ह अलैहिमा फ़ीमफ़्तदत् बिही ᵇ तिल्-क हुदुदल्लाहि फ़-ला तअ्-तदूहा ᶜ व मंय्य-त-अद्-द हुदूदल्लाहि फ़ उला-इ-क हुमुज़्ज़ालिमून (२२९) फ़ इन् तल्ल-क़हा फ़ ला तह़िल्लु लहू मिम्बअ्-दु हत्ता तन्कि-ह ज़ौजन् ग़ैरहू ᵇ फ़ इन् तल्ल-क़हा फ़-ला जुना-ह अलैहिमा अंय्य-त-राजआ इन् ज़न्ना अंय्युक़ीमा हुदूदल्लाहि ᵇ व तिल-क हुदूदुल्लाहि युबय्यिनुहा लि क़ौमिंय्यअ्-लमून (२३०) व इज़ा तल्लक़्तुमुन्निसा-अ फ़-ब-लग़्-न अ-ज-लहुन्-न फ़ अम्सिकूहुन्-न बिमअ्-रूफ़िन् औ सर्रिहूहुन्-न बिमअ्-रूफ़िंव् व ला तुम्सिकू हुन्-न ज़िरारल्लितअ्-तदू ᶜ व मंय्यफ़्अल् ज़ालि-क

افْتَدَتْ بِهٖ ۭ تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ فَلَا تَعْتَدُوْھَا ۚ وَمَنْ يَّتَعَدَّ حُدُوْدَ
اللّٰهِ فَاُولٰۗىِٕكَ ھُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝ فَاِنْ طَلَّقَھَا فَلَا تَحِلُّ لَهٗ مِنْۢ بَعْدُ
حَتّٰي تَنْكِحَ زَوْجًا غَيْرَهٗ ۭ فَاِنْ طَلَّقَھَا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْھِمَآ اَنْ يَّتَرَاجَعَآ
اِنْ ظَنَّآ اَنْ يُّقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ۭ وَتِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ يُبَيِّنُھَا لِقَوْمٍ
يَّعْلَمُوْنَ ۝ وَاِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَاۗءَ فَبَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَاَمْسِكُوْھُنَّ
بِمَعْرُوْفٍ اَوْ سَرِّحُوْھُنَّ بِمَعْرُوْفٍ ۠ وَلَا تُمْسِكُوْھُنَّ ضِرَارًا لِّتَعْتَدُوْا ۚ
وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهٗ ۭ وَلَا تَتَّخِذُوْٓا اٰيٰتِ اللّٰهِ ھُزُوًا ۡ
وَّاذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَمَآ اَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنَ الْكِتٰبِ وَالْحِكْمَةِ
يَعِظُكُمْ بِهٖ ۭ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝ وَ
اِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَاۗءَ فَبَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَلَا تَعْضُلُوْھُنَّ اَنْ يَّنْكِحْنَ
اَزْوَاجَهُنَّ اِذَا تَرَاضَوْا بَيْنَهُمْ بِالْمَعْرُوْفِ ۭ ذٰلِكَ يُوْعَظُ بِهٖ مَنْ
كَانَ مِنْكُمْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۭ ذٰلِكُمْ اَزْكٰى لَكُمْ وَاَطْهَرُ ۭ وَ
اللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ وَالْوَالِدٰتُ يُرْضِعْنَ اَوْلَادَھُنَّ
حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ لِمَنْ اَرَادَ اَنْ يُّتِمَّ الرَّضَاعَةَ ۭ وَعَلَي الْمَوْلُوْدِ لَهٗ
رِزْقُهُنَّ وَكِسْوَتُهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ۭ لَا تُكَلَّفُ نَفْسٌ اِلَّا وُسْعَهَا ۚ
لَا تُضَاۗرَّ وَالِدَةٌۢ بِوَلَدِھَا وَلَا مَوْلُوْدٌ لَّهٗ بِوَلَدِهٖ ۤ وَعَلَي الْوَارِثِ
مِثْلُ ذٰلِكَ ۚ فَاِنْ اَرَادَا فِصَالًا عَنْ تَرَاضٍ مِّنْهُمَا وَتَشَاوُرٍ فَلَا

फ़-क़द् ज़-ल-म नफ़्सहू ᵇ व ला तत्तख़िज़ू आयातिल्लाहि हुज़ुवंव्-वज़्कुरू निअ्-म-तल्लाहि अलैकुम् व मा अन्-ज़-ल अलैकुम् मिनल्-किताबि वल्हिक्मति यअिज़ुकुम् बिही ᵇ वत्तक़ुल्ला-ह वअ्-लमू अन्नल्ला-ह बि कुल्लि शै-इन् अलीम ★● (२३१) व इज़ा तल्लक़्तुमुन्निसा-अ फ़-ब-लग़्-न अ-ज-लहुन्-न फ़ ला तअ्ज़ुलू हुन्-न अंय्यन्किह़्-न अज़्वाजहुन्-न इज़ा तराज़ौ बैनहुम् बिल्मअ्रूफ़ि ज़ालि-क यूअ़ज़ु बिही मन् का-न मिन्कुम् युअ्मिनु बिल्लाहि वल्यौमिल्-आख़िरि ᵇ ज़ालिकुम् अज़्का लकुम् व अत्हरु ᵇ वल्लाहु यअ्-लमु व अन्तुम् ला तअ्-लमून (२३२)

तलाक़ (सिर्फ़) दो बार है। (यानी जब दो बार तलाक़ दे दी जाए तो) फिर (औरतों को) या तो शाइस्ता तरीक़े से (निकाह में) रहने देना है या भलाई के साथ छोड़ देना और यह जायज़ नहीं कि जो मह्र तुम उन को दे चुके हो, उस में से कुछ वापस ले लो। हां, अगर बीवी व शौहर को ख़ौफ़ हो कि वे ख़ुदा की हदों को क़ायम नहीं रख सकेंगे, तो अगर औरत (ख़ाविंद के हाथ से) रिहाई पाने के बदले में कुछ दे डाले तो दोनों पर कुछ गुनाह नहीं। ये ख़ुदा की (मुक़र्रर की हुई) हदें हैं, उन से बाहर न निकलना और जो लोग ख़ुदा की हदों से बाहर निकल जायेंगे, वे गुनाहगार होंगे। (२२९) फिर अगर शौहर (दो तलाक़ों के बाद तीसरी) तलाक़ औरत को दे दे तो उस के बाद जब तक औरत किसी दूसरे शख़्स से निकाह न कर ले, (पहले शौहर) पर हलाल न होगी। हां, अगर दूसरा ख़ाविंद भी तलाक़ दे दे और औरत और पहला ख़ाविंद फिर एक दूसरे की तरफ़ रुजूअ कर लें तो उन पर कुछ गुनाह नहीं, बशर्ते कि दोनों यक़ीन करें कि ख़ुदा की हदों को क़ायम रख सकेंगे और ये ख़ुदा की हदें हैं, इन को वह उन लोगों के लिए बयान फ़रमाता है, जो दानिश (सूझ-बूझ) रखते हैं। (२३०) और जब तुम औरतों को (दो बार) तलाक़ दे चुको और उन की इद्दत पूरी हो जाए तो उन्हें या तो अच्छे सुलूक से निकाह में रहने दो या शाइस्ता तरीक़े से रुख़्सत कर दो और इस नीयत से उन को निकाह में न रहने देना चाहिए कि उन्हें तक्लीफ़ दो और उन पर ज़्यादती करो। और जो ऐसा करेगा वह अपना ही नुक़्सान करेगा। और ख़ुदा के हुक्मों को हंसी (और खेल) न बनाओ। और ख़ुदा ने तुमको जो नेमतें बख़्शी हैं और तुम पर जो किताब और दानाई की बातें नाज़िल की हैं, जिन से वह तुम्हें नसीहत फ़रमाता है, उन को याद करो और ख़ुदा से डरते रहो और जान रखो कि ख़ुदा हर चीज़ जानता है। (२३१)★●

और जब तुम औरतों को तलाक़ दे चुको और उन की इद्दत पूरी हो जाए तो उन को दूसरे शौहरों के साथ, जब वे आपस में जायज़ तौर पर राज़ी हो जायें, निकाह करने से मत रोको। इस (हुक्म) से उस शख़्स को नसीहत की जाती है जो तुम में ख़ुदा और आख़िरत के दिन पर यक़ीन रखता है, यह तुम्हारे लिए निहायत ख़ूब और बहुत पाकीज़गी की बात है और ख़ुदा जानता है और

(५३ का शेष)

अहमद रह० कहते हैं कि बड़े सहाबा इस के क़ायल हैं कि क़ुरू के मानी हैज़ हैं। जो लोग इस के क़ायल हैं कि क़ुरआन की आयत में क़ुरू से मुराद हैज़ है, उन की एक दलील यह भी है कि प्यारे नबी सल्ल० ने फ़ातिमा बिन्त जैश से फ़रमाया था कि 'दअिस्सला-त अय्या-म अक़राइकि' यानी हैज़ के दिनों में नमाज़ छोड़ दिया करो। हम ने इसी रिवायत की बुनियाद पर क़ुरू का तर्जुमा हैज़ किया है।

वल्वालिदातु युर्ज़िअ्-न औलादहुन्-न हौलैनि कामिलैनि लि मन् अरा-द अंय्युतिम्-
मर्-रज़ाअ-त ط व अ-लल्-मौलूदि लहू रिज़्क़ुहुन्-न व किस्वतुहुन्-न बिलमअ्-रूफ़ि ط ला
तुकल्लफ़ु नफ़्सुन् इल्ला वुस्अहा ج ला तुज़ार्-र-र वालिदतुम्-बि व-लदिहा व ला
मौलूदुल्लहू बि व-लदिही ج व अ-लल्-वारिसि मिस्लु ज़ालि-क ج फ़ इन् अरादा

جُنَاحَ عَلَيْهِمَا ۗ وَإِنْ أَرَدْتُّمْ أَنْ تَسْتَرْضِعُوا أَوْلَادَكُمْ فَلَا جُنَاحَ
عَلَيْكُمْ إِذَا سَلَّمْتُمْ مَا آتَيْتُمْ بِالْمَعْرُوفِ ۗ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ
اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝ وَالَّذِينَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُونَ
أَزْوَاجًا يَتَرَبَّصْنَ بِأَنْفُسِهِنَّ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَعَشْرًا ۖ فَإِذَا بَلَغْنَ
أَجَلَهُنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا فَعَلْنَ فِي أَنْفُسِهِنَّ بِالْمَعْرُوفِ ۗ
وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا عَرَّضْتُمْ بِهِ
مِنْ خِطْبَةِ النِّسَاءِ أَوْ أَكْنَنْتُمْ فِي أَنْفُسِكُمْ ۚ عَلِمَ اللَّهُ أَنَّكُمْ
سَتَذْكُرُونَهُنَّ وَلَٰكِنْ لَا تُوَاعِدُوهُنَّ سِرًّا إِلَّا أَنْ تَقُولُوا قَوْلًا
مَعْرُوفًا ۚ وَلَا تَعْزِمُوا عُقْدَةَ النِّكَاحِ حَتَّىٰ يَبْلُغَ الْكِتَابُ أَجَلَهُ ۚ
وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي أَنْفُسِكُمْ فَاحْذَرُوهُ ۚ وَاعْلَمُوا أَنَّ
اللَّهَ غَفُورٌ حَلِيمٌ ۝ لَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِنْ طَلَّقْتُمُ النِّسَاءَ مَا
لَمْ تَمَسُّوهُنَّ أَوْ تَفْرِضُوا لَهُنَّ فَرِيضَةً ۚ وَمَتِّعُوهُنَّ عَلَى الْمُوسِعِ
قَدَرُهُ وَعَلَى الْمُقْتِرِ قَدَرُهُ مَتَاعًا بِالْمَعْرُوفِ ۖ حَقًّا عَلَى الْمُحْسِنِينَ ۝
وَإِنْ طَلَّقْتُمُوهُنَّ مِنْ قَبْلِ أَنْ تَمَسُّوهُنَّ وَقَدْ فَرَضْتُمْ لَهُنَّ
فَرِيضَةً فَنِصْفُ مَا فَرَضْتُمْ إِلَّا أَنْ يَعْفُونَ أَوْ يَعْفُوَ الَّذِي بِيَدِهِ
عُقْدَةُ النِّكَاحِ ۚ وَأَنْ تَعْفُوا أَقْرَبُ لِلتَّقْوَىٰ ۚ وَلَا تَنْسَوُا الْفَضْلَ
بَيْنَكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝ حَافِظُوا عَلَى الصَّلَوَاتِ وَ

फ़िसालन् अन्तराज़िम्मिन्हुमा व तशावुरिन्
फ़ ला जुना-ह् अलैहिमा ط व इन् अरत्तुम्
अन् तस्तर्ज़िअू औलादकुम् फ़ ला जुना-ह्
अलैकुम् इज़ा सल्लम्तुम् मा आतैतुम्
बिलमअ्-रूफ़ि ط वत्तक़ुल्ला-ह वअ्-लमू अन्नल्ला-ह
बिमा तअ्-मलू-न बसीर (२३३) वल्लज़ी-न
यु-त-वफ़्फ़ौ-न मिन्कुम् व य-ज़रू-न अज़्वाजंय्य-त-
रब्बस्-न बिअन्फ़ुसिहिन्-न अर्ब-अ-त अश्हुरिंव-व
अश्रन् ج फ़ इज़ा ब-लग़्-न अ-ज-लहुन्-न फ़-ला
जुना-ह् अलैकुम् फ़ीमा फ़-अल्-न फ़ी अन्फ़ुसिहिन्-न
बिलमअ्रूफ़ि ط वल्लाहु बिमा तअ्-मलू-न
ख़बीर (२३४) वला जुना-ह् अलैकुम्
फ़ीमा अर्रज़्तुम् बिही मिन् ख़ित्बतिन्निसा-इ
औ अक्नन्तुम् फ़ी अन्फ़ुसिकुम् ط अलि-मल्लाहु अन्नकुम् स-तज़्कुरूनहुन्-न व लाकिल्ला
तुवाअिदूहुन्-न सिर्रन् इल्ला अन् तक़ूलू क़ौलम् मअ्-रूफ़न् ج व ला तअ्-ज़िमू
अुक़्दतन्निकाहि हत्ता यब्लुग़ल्-किताबु अ-ज-लहू ط वअ्-लमू अन्नल्ला-ह
यअ्-लमु मा फ़ी अन्फ़ुसिकुम् फ़ह्ज़रूहु ج वअ्-लमू अन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुन्
हलीम ج ★ (२३५) ला जुना-ह् अलैकुम् इन् तल्लक़्तुमुन्निसा-अ मालम्
तमस्सूहुन् - न औ तफ़्रिज़ू लहुन् - न फ़रीज़-तंव्-व मत्तिअू-हुन-न ج
अ-लल्मूसिअि क़-द-रुहू व अलल्मुक़्तिरि क़-द-रुहू ج मताअम्-बिलमअ्-रूफ़ि ج हक़्क़न्
अलल्-मुह्सिनीन (२३६) व इन् तल्लक़्तुमूहुन्-न मिन् क़ब्लि अन् तमस्सूहुन्-न
व क़द् फ़-रज़्तुम् लहुन्-न फ़रीज़-तन् फ़ निस्फ़ु मा फ़-रज़्तुम् इल्ला अंय्यअ्-फ़ू-न औ
यअ्-फ़ुवल्लज़ी बियदिही अुक़्दतुन्निकाहि ط व अन् तअ्-फ़ू अक़्रबु लित्तक़्वा ط
व ला तन्सवुल्फ़ज़्-ल बैनकुम् ط इन्नल्ला-ह बिमा तअ्-मलू-न बसीर (२३७)

★रु. ३०/१४ आ ४

तुम नहीं जानते। (२३२) और माएं अपने बच्चों को पूरे दो साल दूध पिलाएं, यह (हुक्म) उस शख़्स के लिए है जो पूरी मुद्दत तक दूध पिलवाना चाहे और दूध पिलाने वाली माओं का खाना और कपड़ा दस्तूर के मुताबिक़ बाप के ज़िम्मे होगा। किसी शख़्स को उस की ताक़त से ज़्यादा तक्लीफ़ नहीं दी जाती, (तो याद रखो कि) न तो मां को उस के बच्चे की वजह से नुक़्सान पहुंचाया जाए और न बाप को उस की औलाद की वजह से नुक़्सान पहुंचाया जाए और इसी तरह (नान-नफ़्क़ा) बच्चे के वारिस के ज़िम्मे है और अगर दोनों (यानी मां-बाप) आपस की रज़ामंदी और सलाह से बच्चों का दूध छुड़ाना चाहें, तो उनपर कुछ गुनाह नहीं और अगर तुम अपनी औलाद को दूध पिलवाना चाहो, तो तुम पर कुछ गुनाह नहीं, बशर्ते कि तुम दूध पिलाने वालियों को दस्तूर के मुताबिक़ उन का हक़ जो तुम ने देना तै किया था, दे दो और ख़ुदा से डरते रहो और जान रखो कि जो कुछ तुम करते हो, ख़ुदा उस को देख रहा है। (२३३) और जो लोग तुम में से मर जायें और औरतें छोड़ जायें तो औरतें चार महीने दस दिन अपने आप को रोके रहें और जब (ये) इद्दत पूरी कर चुकें और अपने हक़ में पसंदीदा काम (यानी निकाह) कर लें तो तुम पर कुछ गुनाह नहीं और ख़ुदा तुम्हारे सब कामों की ख़बर रखता है।[२] (२३४) अगर तुम इशारे की बातों में औरतों को निकाह का पैग़ाम भेजो या (निकाह की ख़्वाहिश को) अपने दिलों में छिपाए रखो तो तुम पर कुछ गुनाह नहीं। ख़ुदा को मालूम है कि तुम उन से (निकाह का) ज़िक्र करोगे, मगर (इद्दत के दिनों में) इस के सिवा कि दस्तूर के मुताबिक़ कोई बात कह दो छिपे तौर पर, उन से क़ौल व क़रार न करना। और जब तक इद्दत पूरी न हो ले, निकाह का पक्का इरादा न करना और जान रखो कि जो कुछ तुम्हारे दिलों में है, ख़ुदा को सब मालूम है, तो उस से डरते रहो और जान रखो कि ख़ुदा बख़्शने वाला और इल्म वाला है। (२३५) ★

और अगर तुम औरतों को उन के पास जाने या उन का मह्र मुक़र्रर करने से पहले तलाक़ दे दो, तो तुम पर कुछ गुनाह नहीं, हां, उनको दस्तूर के मुताबिक़ कुछ ख़र्च ज़रूर दो (यानी) मक़्दूर वाला अपनी ताक़त के मुताबिक़ दे और तंगदस्त अपनी हैसियत के मुताबिक़। नेक लोगों पर यह एक तरह का हक़ है। (२३६) और अगर तुम औरतों को उन के पास जाने से पहले तलाक़ दे दो, लेकिन मह्र मुक़र्रर कर चुके हो, तो आधा मह्र देना होगा। हां, अगर औरतें मह्र बख़्श दें या मर्द, जिन के हाथ में निकाह का अक़्द है (अपना हक़) छोड़ दें (और पूरा मह्र दे दें तो उनको अख़्तियार है) और अगर तुम मर्द लोग ही अपना हक़ छोड़ दो तो यह परहेज़गारी की बात है और आपस में भलाई करने को भूलना नहीं, कुछ शक नहीं कि ख़ुदा तुम्हारे सब कामों को देख रहा है। (२३७)

---

१. यानी मां अगर दूध पिलाने पर राज़ी न हो, तो उस से ज़बरदस्ती न की जाए और बाप से उस की ताक़त से ज़्यादा नफ़्क़ा (ख़र्चा) न मांगा जाए।

२. तलाक़ की इद्दत तीन हैज़ और सोग की इद्दत चार महीने दस दिन इस सूरत में है, जब हमल मालूम न हो और अगर हमल मालूम हो तो बच्चा होने के वक़्त तक है।

★रु० ३०/१४ आ ४

हाफ़िज़ू अलस्स-ल-वाति वस्सलातिल्-वुस्ता ق व क़ूमू लिल्लाहि क़ानितीन (२३८) फ़-इन् ख़िफ़्तुम् फ़ रिजालन् औ रुक्बानन् ج फ़ इज़ा अमिन्तुम् फ़ज़्कुरुल्ला-ह कमा अल्ल-म-कुम् मालम् तकूनू तअ़्-लमून (२३९) वल्लज़ी-न यु-त-वफ़्फ़ौ-न मिन्कुम् व य-ज़रू-न अज़्वाजंव्-वँ सिय्यतल्-लि अज़्वाजिहिम् मताअ़न् इलल्हौलि ग़ै-र इख़्राजिन् ج फ़ इन् ख़-रज्-न फ़ ला जुना-ह अलैकुम् फ़ी मा फ़-अल्-न फ़ी अन्फ़ुसिहिन्-न मिम्मअ़्-रूफ़िन् ط वल्लाहु अज़ीज़ुन् हकीम (२४०) व लिल्मुतल्लक़ाति मताअ़ुम् - बिल्मअ़्रूफ़ि ط हक़्क़न् अलल्मुत्तक़ीन (२४१) कज़ालि - क युबय्यिनुल्लाहु लकुम् आयातिही ल-अल्लकुम् तअ़्-क़िलून★(२४२) अ - लम् त - र इलल्लज़ी-न ख़-रजू मिन् दियारि-हिम् व हुम् उलूफ़ुन् ह-ज़-रल्मौति ص फ़ क़ा-ल लहुमुल्लाहु मूतू قف सुम्-म अह्याहुम् ط इन्नल्ला-ह लज़ू फ़ज़्लिन् अलन्नासि व

सूरतुल-ब-क़-रति २
الصَّلٰوةِ الْوُسْطٰى وَقُوْمُوْا لِلّٰهِ قٰنِتِيْنَ ۝ فَاِنْ خِفْتُمْ فَرِجَالًا
اَوْ رُكْبَانًا ۚ فَاِذَآ اَمِنْتُمْ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَمَا عَلَّمَكُمْ مَّا لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ ۝
وَالَّذِيْنَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُوْنَ اَزْوَاجًا ۚ وَّصِيَّةً لِّاَزْوَاجِهِمْ مَّتَاعًا
اِلَى الْحَوْلِ غَيْرَ اِخْرَاجٍ ۚ فَاِنْ خَرَجْنَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْ مَا فَعَلْنَ
فِيْٓ اَنْفُسِهِنَّ مِنْ مَّعْرُوْفٍ ۗ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝ وَلِلْمُطَلَّقٰتِ مَتَاعٌ
بِالْمَعْرُوْفِ ۗ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِيْنَ ۝ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ
لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ۝ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ خَرَجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَهُمْ اُلُوْفٌ
حَذَرَ الْمَوْتِ ۪ فَقَالَ لَهُمُ اللّٰهُ مُوْتُوْا ۣ ثُمَّ اَحْيَاهُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ
عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ ۝ وَقَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝ مَنْ ذَا الَّذِيْ يُقْرِضُ اللّٰهَ
قَرْضًا حَسَنًا فَيُضٰعِفَهٗ لَهٗٓ اَضْعَافًا كَثِيْرَةً ۭ وَاللّٰهُ يَقْبِضُ وَيَبْصُۜطُ
وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝ اَلَمْ تَرَ اِلَى الْمَلَاِ مِنْ بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ مِنْ بَعْدِ
مُوْسٰى ۘ اِذْ قَالُوْا لِنَبِيٍّ لَّهُمُ ابْعَثْ لَنَا مَلِكًا نُّقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
قَالَ هَلْ عَسَيْتُمْ اِنْ كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ اَلَّا تُقَاتِلُوْا ۭ قَالُوْا وَمَا
لَنَآ اَلَّا نُقَاتِلَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَقَدْ اُخْرِجْنَا مِنْ دِيَارِنَا وَاَبْنَاۗىِٕنَا
فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ تَوَلَّوْا اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ
بِالظّٰلِمِيْنَ ۝ وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ اِنَّ اللّٰهَ قَدْ بَعَثَ لَكُمْ طَالُوْتَ

लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला यश्कुरून (२४३) व क़ातिलू फ़ी सबीलिल्लाहि वअ़्-लमू अन्नल्ला-ह समीअ़ुन् अ़लीम (२४४) मन् ज़ल्लज़ी युक़्रिज़ुल्ला-ह क़र्ज़न् ह-स-नन् फ़-युज़ाअ़िफ़हू लहू अज़्आफ़न् कसीर-तन् ط वल्लाहु यक़्बिज़ु व यब्सुतु व इलैहि तुर्जअ़ून (२४५) अ-लम् त-र इलल्मल-इ मिम्बनी इस्राई-ल मिम्बअ़्-दि मूसा ※ इज़् क़ालू लि नबिय्यिल्-लहुमुब्अ़स् लना मलिकन्नुक़ातिल् फ़ी सबीलिल्लाहि ط क़ा-ल हल् असैतुम् इन् कुति-ब अलैकुमुल्-क़ितालु अल्ला तुक़ातिलू ط क़ालू व मा लना अल्ला नुक़ाति-ल फ़ी सबीलिल्लाहि व क़द् उख़्रिज्ना मिन् दियारिना व अब्ना - इना ط फ़ - लम्मा कुति - ब अलैहिमुल् - क़ितालु तवल्लौ इल्ला क़लीलम्मिन्हुम् ط वल्लाहु अलीमुम् - बिज़्ज़ालिमीन (२४६)

★रु. ३१/१५ आ ७ ※व. लाज़िम

(मुसलमानो !) सब नमाज़ें ख़ास तौर से बीच की नमाज़ (यानी अस्र की नमाज़) पूरे एहतिमाम के साथ अदा करते रहो।[1] और ख़ुदा के आगे अदब से खड़े रहा करो। (२३८) अगर तुम ख़ौफ़ की हालत में हो तो प्यादे या सवार (जिस हाल में हो, नमाज़ पढ़ लो) फिर जब अम्न (व इत्मीनान) हो जाए तो जिस तरीक़े से ख़ुदा ने तुम को सिखाया है, जो तुम पहले नहीं जानते थे, ख़ुदा को याद करो। (२३९) और जो लोग तुम में से मर जायें, और औरतें छोड़ जायें, वे अपनी औरतों के हक़ में वसीयत कर जायें कि उन को एक साल तक ख़र्च दिया जाए और घर से न निकाली जाएं। हां, अगर वे ख़ुद घर से निकल जाएं और अपने हक़ में पसन्दीदा काम (यानी निकाह) कर लें तो तुम पर कुछ गुनाह नहीं और ख़ुदा ज़बरदस्त हिक्मत वाला है। (२४०) और तलाक़ वाली औरतों को भी दस्तूर के मुताबिक़ नान व नफ़्क़ा देना चाहिए। परहेज़गारों पर (यह भी) हक़ है। (२४१) इसी तरह ख़ुदा अपने हुक्मों को तुम्हारे लिए बयान फ़रमाता है ताकि तुम समझो। (२४२)★

भला तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जो (गिनती में) हज़ारों ही थे और मौत के डर से अपने घरों से निकल भागे थे, तो ख़ुदा ने उन को हुक्म दिया कि मर जाओ, फिर उन को ज़िन्दा भी कर दिया। कुछ शक नहीं कि ख़ुदा लोगों पर मेहरबानी रखता है, लेकिन ज़्यादा लोग शुक्र नहीं करते। (२४३) और (मुसलमानो !) ख़ुदा की राह में जिहाद करो और जान रखो कि ख़ुदा (सब कुछ) सुनता (और सब कुछ) जानता है। (२४४) कोई है कि ख़ुदा को क़र्ज़े हस्ना (भला क़र्ज़) दे कि वह उस के बदले उस को कई हिस्से ज़्यादा देगा और ख़ुदा ही रोज़ी को तंग करता और (वही उसे) फैलाता है और तुम उसी की तरफ़ लौट कर जाओगे। (२४५) भला तुम ने बनी इस्राईल की एक जमाअत को नहीं देखा, जिस ने मूसा के बाद अपने पैग़म्बर से कहा कि आप हमारे लिए एक बादशाह मुक़र्रर कर दें ताकि हम ख़ुदा की राह में जिहाद करें। पैग़म्बर ने कहा कि अगर तुम को जिहाद का हुक्म दिया जाए तो अजब नहीं कि लड़ने से पहलू बचाओ। वे कहने लगे कि हम ख़ुदा की राह में क्यों न लड़ेंगे जब कि हम वतन से (निकाले) और बाल-बच्चों से जुदा कर दिए गए, लेकिन जब उनको जिहाद का हुक्म दिया गया तो कुछ लोगों के अलावा सब फिर गये और ख़ुदा ज़ालिमों को ख़ूब जानता है। (२४६) और पैग़म्बर ने उन से (यह भी) कहा कि ख़ुदा ने तुम पर तालूत को बादशाह मुक़र्रर फ़रमाया है। वे बोले कि उसे हम पर बादशाही का हक़ कैसे हो सकता है, बादशाही के हक़दार तो हम हैं और उस के पास तो बहुत सी दौलत भी नहीं। पैग़म्बर ने कहा कि ख़ुदा ने उस को तुम पर (फ़ज़ीलत दी है और बादशाही के लिए) चुन रखा है। उसने उसे इल्म भी बहुत सा बख़्शा है और जिस्म भी (बड़ा अता किया है) और ख़ुदा (को अख़्तियार है), जिसे चाहे बादशाही बख़्शे। वह बड़ी वुसअत वाला और जानने वाला है। (२४७) और पैग़म्बर ने उन

---

१. पूरे एहतिमाम के साथ अदा करने से मुराद यह है कि नमाज़ को उस के वक़्तों में पढ़ते रहो। बीच की नमाज़ के बारे में मुख़्तलिफ़ क़ौल हैं। किसी ने कहा, ज़ुहर की नमाज़ मुराद है। किसी ने कहा इशा की, किसी ने कहा अस्र की, किसी ने कहा फ़ज्र की, मगर ज़्यादा सही यह है कि इस से अस्र की नमाज़ मुराद है, जैसा कि सही हदीसों में आया है।

व क़ा-ल लहुम् नबिय्युहुम् इन्नल्ला-ह क़द् ब-अ-स लकुम् तालू-त मलिकन्, क़ालू अन्ना यकूनु लहुल्मुल्कु अलैना व नह़्नु अह़क़्क़ु बिल्मुल्कि मिन्हु व लम् युअ्-त स-अ-तम्-मिनल्मालि ط क़ा-ल इन्नल्लाहस्तफ़ाहु अलैकुम् व ज़ादहू बस्त़-तन् फ़िल्इल्मि वल्जिस्मि ط वल्लाहु युअ्ती मुल्कहू मंय्यशा-उ, वल्लाहु वासिअुन् अलीम (२४७) व क़ा-ल लहुम् नबिय्युहुम् इन्-न आय-त मुल्किही अंय्यअ्तियकुमुत्ताबूतु फ़ीहि सकीनतुम्-मिर्रब्बिकुम् व बक़िय्यतुम्-मिम्मा त-र-क आलु मूसा व आलु हारू-न तह़्मिलुहुल्-मला-इकतु ط इन्-न फ़ी ज़ालि-क ल-आयतल्लकुम् इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन ★ (२४८) फ़ लम्मा फ़-स-ल तालूतु बिल्जुनूदि ق क़ा-ल इन्नल्ला-ह मुब्तलीकुम् बि-न-हरिन् ج फ़ मन् शरि-ब मिन्हु फ़ लै-स मिन्नी ج व मल्लम् यत्-अम्हु फ़ इन्नहू मिन्नी इल्ला मनिग़्त-र-फ़ ग़ुर्फ़तम्-बि यदिही ج फ़ शरिबू मिन्हु इल्ला क़लीलम्-मिन्हुम् ط फ़ लम्मा जा-व-ज़हू हु-व वल्लज़ी-न आमनू म-अहू ق क़ालू ला ताक़-त लनल्यौ-म बिजालू-त व जुनूदिही ط क़ालल्लज़ी-न यज़ुन्नू-न अन्नहुम् मुलाक़ुल्लाहि ل कम्मिन् फ़िअतिन् क़लीलतिन् ग़-ल-बत् फ़ि-अतन् कसीरतम् बि इज़्निल्लाहि ط वल्लाहु म-अ-स्साबिरीन (२४९) व लम्मा ब-र-ज़ू लि जालू-त व जुनूदिही क़ालू रब्बना अफ़्रिग़् अलैना स़ब्रंव-व सब्बित् अक़्दामना वन्सुर्ना अ-लल्-क़ौमिल्-काफ़िरीन ط (२५०) फ़-ह-ज़मूहुम् बि इज़्निल्लाहि व क़-त-ल दावूदु जालू-त व आताहुल्लाहुल्मुल्-क वल्हिक्म-त व अल्लमहू मिम्मा यशाउ ط व लौ ला दफ़्अुल्लाहिन्ना-स बअ्-ज़हुम् बिबअ्-ज़िल्-ल-फ़-स-दतिल् अर्ज़ु व लाकिन्नल्ला-ह ज़ू फ़ज़्लिन् अलल्-आलमीन (२५१) तिल्-क आयातुल्लाहि नत्लू हा अलै-क बिल्ह़क़्क़ि ط व इन्न-क लमिनल्-मुर्सलीन (२५२)

مَلِكًا ۚ قَالُوٓا أَنَّىٰ يَكُونُ لَهُ ٱلْمُلْكُ عَلَيْنَا وَنَحْنُ أَحَقُّ بِٱلْمُلْكِ مِنْهُ وَلَمْ
يُؤْتَ سَعَةً مِّنَ ٱلْمَالِ ۚ قَالَ إِنَّ ٱللَّهَ ٱصْطَفَىٰهُ عَلَيْكُمْ وَزَادَهُۥ بَسْطَةً
فِى ٱلْعِلْمِ وَٱلْجِسْمِ ۖ وَٱللَّهُ يُؤْتِى مُلْكَهُۥ مَن يَشَآءُ ۚ وَٱللَّهُ وَٰسِعٌ عَلِيمٌ ۝
وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ ءَايَةَ مُلْكِهِۦٓ أَن يَأْتِيَكُمُ ٱلتَّابُوتُ فِيهِ سَكِينَةٌ
مِّن رَّبِّكُمْ وَبَقِيَّةٌ مِّمَّا تَرَكَ ءَالُ مُوسَىٰ وَءَالُ هَٰرُونَ تَحْمِلُهُ ٱلْمَلَٰٓئِكَةُ ۚ
إِنَّ فِى ذَٰلِكَ لَءَايَةً لَّكُمْ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ۝ فَلَمَّا فَصَلَ طَالُوتُ
بِٱلْجُنُودِ قَالَ إِنَّ ٱللَّهَ مُبْتَلِيكُم بِنَهَرٍ فَمَن شَرِبَ مِنْهُ فَلَيْسَ مِنِّى
وَمَن لَّمْ يَطْعَمْهُ فَإِنَّهُۥ مِنِّىٓ إِلَّا مَنِ ٱغْتَرَفَ غُرْفَةًۢ بِيَدِهِۦ ۚ فَشَرِبُوا۟
مِنْهُ إِلَّا قَلِيلًا مِّنْهُمْ ۚ فَلَمَّا جَاوَزَهُۥ هُوَ وَٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ مَعَهُۥ قَالُوا۟
لَا طَاقَةَ لَنَا ٱلْيَوْمَ بِجَالُوتَ وَجُنُودِهِۦ ۚ قَالَ ٱلَّذِينَ يَظُنُّونَ أَنَّهُم مُّلَٰقُوا۟
ٱللَّهِ كَم مِّن فِئَةٍ قَلِيلَةٍ غَلَبَتْ فِئَةً كَثِيرَةًۢ بِإِذْنِ ٱللَّهِ ۗ وَٱللَّهُ مَعَ
ٱلصَّٰبِرِينَ ۝ وَلَمَّا بَرَزُوا۟ لِجَالُوتَ وَجُنُودِهِۦ قَالُوا۟ رَبَّنَآ أَفْرِغْ عَلَيْنَا
صَبْرًا وَثَبِّتْ أَقْدَامَنَا وَٱنصُرْنَا عَلَى ٱلْقَوْمِ ٱلْكَٰفِرِينَ ۝ فَهَزَمُوهُم
بِإِذْنِ ٱللَّهِ وَقَتَلَ دَاوُۥدُ جَالُوتَ وَءَاتَىٰهُ ٱللَّهُ ٱلْمُلْكَ وَٱلْحِكْمَةَ وَ
عَلَّمَهُۥ مِمَّا يَشَآءُ ۗ وَلَوْلَا دَفْعُ ٱللَّهِ ٱلنَّاسَ بَعْضَهُم بِبَعْضٍ
لَّفَسَدَتِ ٱلْأَرْضُ وَلَٰكِنَّ ٱللَّهَ ذُو فَضْلٍ عَلَى ٱلْعَٰلَمِينَ ۝
تِلْكَ ءَايَٰتُ ٱللَّهِ نَتْلُوهَا عَلَيْكَ بِٱلْحَقِّ ۚ وَإِنَّكَ لَمِنَ ٱلْمُرْسَلِينَ ۝

★ रु. ३२/१६ आ ६

से कहा कि उनकी बादशाही की निशानी यह है कि तुम्हारे पास एक सन्दूक़ आएगा जिस को फ़रिश्ते उठाए हुए होंगे। उस में तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से तसल्ली (बख़्शने वाली चीज़) होगी और कुछ और चीज़ें भी होंगी जो मूसा और हारून छोड़ गये थे। अगर तुम ईमान रखते हो तो यह तुम्हारे लिए एक बड़ी निशानी है। (२४८) ★

ग़रज़ जब तालूत फ़ौजें ले कर रवाना हुआ तो उस ने (उन से) कहा कि ख़ुदा एक नहर से तुम्हारी आज़माइश करने वाला है। जो शख़्स उस में से पानी पी लेगा (उस के बारे में समझा जाएगा कि) वह मेरा नहीं और जो न पिएगा, वह (समझा जाएगा कि) मेरा है। हां, अगर कोई हाथ से चुल्लू भर पानी ले ले (तो ख़ैर, ज़ब वे लोग नहर पर पहुंचे) तो कुछ लोगों के सिवा सब ने पानी पी लिया। फिर जब तालूत और मोमिन लोग, जो उस के साथ, नहर के पार हो गये, तो कहने लगे कि आज हम में जालूत और उस के लश्कर से मुक़ाबला करने की ताक़त नहीं। जो लोग यक़ीन रखते थे कि उन को ख़ुदा के सामने हाज़िर होना है, वे कहने लगे कि कभी-कभी थोड़ी-सी जमाअत ने ख़ुदा के हुक्म से बड़ी जमाअत पर फ़त्ह हासिल की है और ख़ुदा सब्र करने वालों (जमाव वालों) के साथ है। (२४९) और जब वे लोग जालूत और उस की फ़ौज के मुक़ाबले में आए तो (ख़ुदा से) दुआ की, ऐ परवरदिगार ! हम पर सब्र के दहाने खोल दे और हमें (लड़ाई में) क़दमों से जमाये रख, और काफ़िरों की (फ़ौज) पर जीत दे। (२५०) तो तालूत की फ़ौज ने ख़ुदा के हुक्म से उन को हरा दिया और दाऊद ने जालूत को क़त्ल कर डाला। और ख़ुदा ने उस को बादशाही और दानाई बख़्शी और जो कुछ चाहा, सिखाया और ख़ुदा लोगों को एक दूसरे (पर चढ़ाई और हमला करने) से हटाता न रहता, तो मुल्क तबाह हो जाता, लेकिन ख़ुदा दुनिया वालों पर बड़ा मेहरबान है। (२५१) ये ख़ुदा की आयतें हैं जो हम तुम को सच्चाई के साथ पढ़ कर सुनाते हैं। (और ऐ मुहम्मद !) तुम बिला शुब्हा पैग़म्बरों में से हो। (२५२) ये पैग़म्बर (जो

★रु. ३२/१६ आ ६

तीसरा पारः तिल्-करु सुलु

सूरतुल्-ब-क़-रति आयत २५३ से २८६

तिल्करुसुलु फ़ज़्ज़ल्ना बअ्-ज़हुम् अ़ला बअ्ज़िन् ▨ मिन्हुम् मन् कल्लमल्लाहु व र-फ़-अ़ बअ्-ज़हुम् द-रजातिन् ط व आतैना ईसब्-न मर्यमल्-बय्यिनाति व अय्यद्नाहु बि रूहिल्कुदुसि ط व लौ शा-अल्लाहु मक़्त-त-लल्लज़ी-न मिम्बअ्-दि-हिम् मिम्बअ्दि मा जा-अत्-हुमुल्बय्यिनातु व लाकिनिख़्तलफ़ू फ़ मिन्हुम् मन् आम-न व मिन्हुम् मन् क-फ़र ط व लौ शा-अल्लाहु मक़्-त-तलू قف व लाकिन्नल्ला-ह यफ़्अ़लु मा युरीद ★ (२५३) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू अन्फ़िक़ू मिम्मा र-ज़क़्नाकुम् मिन् क़ब्लि अंय्यअ्ति-य यौमुल्ला बैअुन् फ़ीहि व ला ख़ुल्लतुंव्-व ला शफ़ाअ़तुन् ط वल्काफ़िरू - न हुमुज़्ज़ालिमून (२५४) अल्लाहु ला इला-ह इल्ला हु-व ج अल्हय्युल्क़य्यूमु ج ला तअ्ख़ुज़ुहू सि-नतुंव्-व ला नौमुन् ط लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि ط मन् ज़ल्लज़ी यश्फ़अ़ु अ़िन्दहू इल्ला बि-इज़्निही ط यअ्-लमु मा बै-न ऐदीहिम् व मा ख़ल्फ़हुम् ج व ला युहीतू-न बिशैइम्मिन् अ़िल्मिही इल्ला बिमा शा-अ ج वसि-अ़ कुर्सिय्युहुस्समावाति वल्अर्ज़ ج व ला यऊदुहू हिफ़्ज़ुहुमा ج व हुवल् अ़लिय्युल्-अ़ज़ीम (२५५) ला इक्रा - ह फ़िद्दीनि قف क़त्तबय्यनर्रुश्दु मिनल्ग़य्यि ج फ़ मंय्यक्फ़ुर् बित्ताग़ूति व युअ्मिम्-बिल्लाहि फ़-क़दिस्तम्-स-क बिल्-अ़ुर्वतिल्-वुस्क़ा ق लन्फ़िसा-म लहा ط वल्लाहु समीअ़ुन् अ़लीम (२५६)

تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ مِنْهُمْ مَنْ كَلَّمَ
اللّٰهُ وَرَفَعَ بَعْضَهُمْ دَرَجٰتٍ وَاٰتَيْنَا عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ
الْبَيِّنٰتِ وَاَيَّدْنٰهُ بِرُوْحِ الْقُدُسِ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا اقْتَتَلَ
الَّذِيْنَ مِنْ بَعْدِهِمْ مِّنْ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ وَلٰكِنِ
اخْتَلَفُوْا فَمِنْهُمْ مَّنْ اٰمَنَ وَمِنْهُمْ مَّنْ كَفَرَ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ
مَا اقْتَتَلُوْا وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْٓا اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا
بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خُلَّةٌ وَّلَا شَفَاعَةٌ وَالْكٰفِرُوْنَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝
اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا
نَوْمٌ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ مَنْ ذَا الَّذِيْ
يَشْفَعُ عِنْدَهٗٓ اِلَّا بِاِذْنِهٖ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ
وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖٓ اِلَّا بِمَا شَآءَ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَلَا يَـُٔوْدُهٗ حِفْظُهُمَا وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ۝
لَآ اِكْرَاهَ فِي الدِّيْنِ قَدْ تَّبَيَّنَ الرُّشْدُ مِنَ الْغَيِّ فَمَنْ يَّكْفُرْ
بِالطَّاغُوْتِ وَيُؤْمِنْ بِاللّٰهِ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى
لَا انْفِصَامَ لَهَا وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝ اَللّٰهُ وَلِيُّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
يُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَوْلِيٰٓـُٔهُمُ

▨ व. लाज़िम ★रु. ३३/१ आ ५

हम वक़्त-वक़्त पर भेजते रहे) हैं, इन में से हम ने कुछ को कुछ पर फ़ज़ीलत दी है, कुछ ऐसे हैं, जिन से ख़ुदा ने बातें कीं और कुछ के (दूसरे मामलों में) मर्तबे बुलंद किए और ईसा बिन मरयम को हम ने खुली हुई निशानियां अता कीं और रूहुल क़ुदुस से उन को मदद दी[1] और अगर ख़ुदा चाहता तो उन से पिछले लोग अपने पास निशानियां आने के बाद आपस में न लड़ते, लेकिन उन्होंने इख़्तिलाफ़ किया, तो उन में से कुछ तो ईमान ले आए और कुछ काफ़िर ही रहे। और अगर ख़ुदा चाहता तो ये लोग आपस में लड़ते-झगड़ते नहीं, लेकिन ख़ुदा जो चाहता है, करता है।[2] (२५३) ★

ऐ ईमान वालो ! जो (माल) हम ने तुम को दिया है, उस में से उस दिन के आने से पहले-पहले ख़र्च कर लो जिस में न (आमाल का) सौदा हो, न दोस्ती और सिफ़ारिश हो सके और कुफ़ करने वाले लोग ज़ालिम हैं। (२५४) ख़ुदा, (वह सच्चा माबूद है कि) उस के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं। ज़िन्दा हमेशा रहने वाला, उसे न ऊंघ आती है और न नींद, जो कुछ आसमानों में और जो कुछ ज़मीन में है, सब उसी का है। कौन है कि उस की इजाज़त के बग़ैर उस से (किसी की) सिफ़ारिश कर सके। जो कुछ लोगों के सामने हो रहा है और जो कुछ उन के पीछे हो चुका है, उसे सब मालूम है और वे उस की मालूमात में से किसी चीज़ पर दस्तरस (क़ाबू पाना) हासिल नहीं कर सकते, हां, जिस क़दर वह चाहता है (उसी क़दर मालूम करा देता है) उस की बादशाही (और इल्म) आसमान और ज़मीन सब पर हावी है और उसे उन की हिफ़ाज़त कुछ भी मुश्किल नहीं। वह बड़ा आली रुत्बा और जलीलुल क़द्र है। (२५५) दीने इस्लाम में ज़बरदस्ती नहीं है। हिदायत (साफ़ तौर पर ज़ाहिर और) गुमराही से अलग हो चुकी है, तो जो शख़्स बुतों से एतक़ाद न रखे और ख़ुदा पर ईमान लाये, उस ने ऐसी मज़बूत रस्सी हाथ में पकड़ ली है जो कभी टूटने वाली नहीं और ख़ुदा (सब कुछ) सुनता और (सब कुछ) जानता है। (२५६) जो लोग

---

१. खुली हुई निशानियों से मुराद मुर्दों का ज़िंदा करना, बीमारों का अच्छा करना और पैदाइशी अंधों की आंखें रोशन करना है। रूहुल क़ुदुस से मुराद जिब्रील हैं जो हर जगह ईसा अलैहिस्सलाम के साथ रहा करते थे।

२. लड़ने और जंग-लड़ाई करने से मुराद इख़्तिलाफ़ है यानी अगर ख़ुदा चाहता तो उन में इख़्तिलाफ़ न होता, मगर उस ने उन का मुख़्तलिफ़ रहना ठीक समझा, इस लिए वे उन से मुत्तफ़िक़ न हुए।

अल्लाहु वलिय्युल्लज़ी-न आमनू युख्रिजुहुम मिनज़्ज़ुलुमाति इलन्नूरि
वल्लज़ी-न क-फ़रू औलिया-उ-हुमुत्तागूतु युख़्रिजूनहुम् मिनन्नूरि
इलज़्ज़ुलुमाति उला-इ-क अस्हाबुन्नारि हुम् फ़ीहा ख़ालिदून
★(२५७) अ-लम् त-र इलल्लज़ी हाज्-ज इब्राही-म फ़ी रब्बिही अन्

आताहुल्लाहुल्-मुल्क ※ इज़् क़ा-ल इब्राहीमु रब्बियल्लज़ी युह़्यी व युमीतु क़ा-ल अ-न उह़्यी व उमीतु क़ा-ल इब्राहीमु फ़-इन्नल्ला-ह यअ्ती बिश्शम्सि मिनल्मश्रिक़ि फ़अ्ति बिहा मिनल्-मग़्रिबि फ़ बुहितल्लज़ी क-फ़र वल्लाहु ला यह्दिल्-क़ौमज़्ज़ालिमीन (२५८) औ कल्लज़ी मर्-र अला क़र्यतिंव-व हि-य ख़ावियतुन् अला उ़रूशिहा क़ा-ल अन्ना युह़्यी हाज़िहिल्लाहु बअ्-द मौतिहा फ़-अमातहुल्लाहु मि-अ-त आमिन् सुम्-म ब-अ-सहू क़ा-ल कम् लबिस्-त क़ा-ल लबिस्तु यौमन् औ बअ्-ज़ यौमिन् क़ा-ल बल्लबिस्-त मि-अ-त आमिन् फ़न्ज़ुर् इला तआमि-क व शराबि-क लम् य-त-सन्नह वन्ज़ुर् इला हिमारि-क व लि-नज-अ-ल-क आयतल्लिन्नासि वन्ज़ुर् इलल्अ़िज़ामि कै-फ़ नुन्शिज़ुहा सुम-म नक्सूहा लह़्मन् फ़ लम्मा तबय्य-न लहू क़ा-ल अअ्-लमु अन्नल्ला-ह अला कुल्लि शैइन् क़दीर (२५९) व इज़् क़ा-ल इब्राहीमु रब्बि अरिनी कै-फ़ तुह़्यिल्मौता क़ा-ल अ-व लम् तुअ्मिन् क़ा-ल बला व लाकिल्लियत्मइन्-न क़ल्बी क़ा-ल फ़ख़ुज़् अर-ब-अ-तम्-मिनत्तैरि फ़ सुर्हुन्-न इलै-क सुम्मज्अल् अला कुल्लि ज-बलिम्-मिन्हुन्-न जुज़्अन् सुम्मद्उहुन्-न यअ्तीन-क सअ्-यन् वअ्-लम् अन्नल्ला-ह अज़ीज़ुन् हकीम (२६०)★

الطاغوت يخرجونهم من النور الى الظلمت اولئك اصحب
النار هم فيها خلدون ﴿﴾ الم تر الى الذي حاج ابرهم في
ربه ان اته الله الملك اذ قال ابرهم ربي الذي يحي و
يميت قال انا احي و اميت قال ابرهم فان الله ياتي
بالشمس من المشرق فات بها من المغرب فبهت الذي
كفر والله لا يهدي القوم الظلمين ﴿﴾ او كالذي مر على
قرية وهي خاوية على عروشها قال انى يحي هذه الله بعد
موتها فاماته الله مائة عام ثم بعثه قال كم لبثت قال
لبثت يوما او بعض يوم قال بل لبثت مائة عام فانظر
الى طعامك وشرابك لم يتسنه وانظر الى حمارك و
لنجعلك اية للناس وانظر الى العظام كيف ننشزها ثم نكسوها
لحما فلما تبين له قال اعلم ان الله على كل شيء قدير ﴿﴾
و اذ قال ابرهم رب ارني كيف تحي الموتى قال اولم تؤمن
قال بلى ولكن ليطمئن قلبي قال فخذ اربعة من الطير
فصرهن اليك ثم اجعل على كل جبل منهن جزءا ثم
ادعهن ياتينك سعيا واعلم ان الله عزيز حكيم ﴿﴾ مثل
الذين ينفقون اموالهم في سبيل الله كمثل حبة انبتت سبع

ईमान लाये हैं, उन का दोस्त ख़ुदा है कि उन को अंधेरे से निकाल कर रोशनी में ले जाता है और जो काफ़िर हैं उन के दोस्त शैतान हैं कि उन को रोशनी से निकाल कर अंधेरे में ले जाते हैं। यही लोग दोज़ख़ी हैं कि उस में हमेशा रहेंगे। (२५७)★

भला तुम ने उस शख़्स को नहीं देखा, जो इस (घमंड की) वजह से कि ख़ुदा ने उस को सल्तनत (राज्य) बख़्शी थी, इब्राहीम से परवरदिगार के बारे में झगड़ने लगा▨ जब इब्राहीम ने ने कहा, मेरा परवरदिगार तो वह है, जो जिलाता और मारता है, वह बोला कि जिला और मार तो मैं भी सकता हूं। इब्राहीम ने कहा कि ख़ुदा तो सूरज को पूरब से निकालता है, आप उसे पच्छिम से निकाल दीजिए। (यह सुन कर) काफ़िर हैरान रह गया और ख़ुदा बे-इन्साफ़ों को हिदायत नहीं दिया करता।[1] (२५८) या इसी तरह उस शख़्स को (नहीं देखा) जिस का एक गांव में, जो अपनी छतों पर गिरा पड़ा था, इत्तिफ़ाक़ी गुज़र हुआ, तो उस ने कहा कि ख़ुदा इस (के बाशिंदों) को मरने के बाद किस तरह ज़िंदा करेगा, तो ख़ुदा ने उस की रूह क़ब्ज़ कर ली (और) सौ बरस तक (उस को मुर्दा रखा), फिर उस को जिला उठाया और पूछा तुम कितनी मुद्दत तक (मरे) रहे हो? उसने जवाब दिया कि एक दिन या इस से भी कम। ख़ुदा ने फ़रमाया, (नहीं), बल्कि सौ बरस (मरे) रहे हो और अपने खाने-पीने की चीज़ों को देखो कि (इतनी मुद्दत में बिल्कुल ही) सड़ी-गली नहीं और अपने गधे को भी देखो, (जो मरा पड़ा है), ग़रज़ (इन बातों से) यह है कि हम तुम को लोगों के लिए (अपनी क़ुदरत की) निशानी बनाएं और (गधे की) हड्डियों को देखो कि हम उन को कैसे जोड़ देते और उन पर (किस तरह) गोश्त-पोस्त चढ़ा देते हैं। जब ये वाक़िए उस ने देखे तो बोल उठा कि मैं यक़ीन करता हूं कि ख़ुदा हर चीज़ पर क़ादिर है।[2] (२५९) और जब इब्राहीम ने ख़ुदा से कहा कि ऐ परवरदिगार! मुझे दिखा कि तू मुर्दों को किस तरह ज़िन्दा करेगा? ख़ुदा ने फ़रमाया कि क्या तुम ने (इस बात को) बावर नहीं किया (यानी माना नहीं)? उन्हों ने कहा, क्यों नहीं, लेकिन (मैं देखना) इस लिए (चाहता हूं) कि मेरा दिल कामिल इत्मीनान हासिल कर ले। ख़ुदा ने फ़रमाया कि चार जानवर पकड़ कर अपने पास मंगा लो (और टुकड़े-टुकड़े करा दो) फिर उन का एक-एक टुकड़ा हर एक पहाड़ पर रखवा दो। फिर उन को बुलाओ तो वे तुम्हारे पास दौड़ते चले आएंगे और जान रखो कि ख़ुदा ग़ालिब और हिक्मत वाला है। (२६०)★

---

१. जिस शख़्स ने हज़रत इब्राहीम से झगड़ा किया वह बाबुल का बादशाह नमरूद था, जो लोगों से अपने आप को सज्दा कराता था। हज़रत इब्राहीम अलै० ने सज्दा करने से इन्कार किया तो उस ने वजह पूछी। उन्होंने कहा, मैं तो अपने ख़ुदा को सज्दा करता हूं। उस ने कहा, ख़ुदा कौन है? उन्होंने कहा, ख़ुदा वह है, जिस के हाथ में ज़िंदगी और मौत है, यानी जो ज़िंदगी-मौत का पैदा करने वाला है। काफ़िर इस बात को तो समझा नहीं, बोला कि मैं भी ज़िंदा कर सकता और मार सकता हूं। चुनांचे उस ने दो क़ैदियों को बुलवाया। एक, जिस का क़त्ल किया जाना ज़रूरी था, उस को माफ़ कर दिया यानी जान बख़्शी कर दी। दूसरा, जो क़ातिल न था, उस को मरवा डाला। तब हज़रत इब्राहीम ने यह देख कर कि यह बुरी समझ का है, उस से कहा कि अगर आप ख़ुदा हैं तो सूरज को, जो पूरब से निकला करता है, हुक्म दीजिए कि पच्छिम से निकले। इस का जवाब काफ़िर से कुछ न बन पड़ा और ला-जवाब हो कर रह गया।

२. हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ि० ने फ़रमाया कि यह क़िस्सा हज़रत उज़ैर पैग़म्बर का है और मशहूर भी यही है।

म-सलुल्लज़ी-न युन्फ़िक़ू-न अम्वालहुम् फ़ी सबीलिल्लाहि क-म-सलि हब्बतिन्
अम्ब-तत् सब्-अ सनाबि-ल फ़ी कुल्लि सुम्बुलतिम्मि-अतु हब्बतिन् ط
वल्लाहु युज़ाअिफ़ु लिमंय्यशा-उ ط वल्लाहु वासिअुन् अ़लीम (२६१)
अल्लज़ी-न युन्फ़िक़ू-न अम्वालहुम् फ़ी सबीलिल्लाहि सुम्-म ला युत्बिअू-न
मा अन्फ़क़ू मन्नंव्वला अ-ज़ल् ला- लहुम्
अज्रुहुम् अिन्-द रब्बिहिम् ج व ला
ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून
(२६२) क़ौलुम्मअरूफ़ुंव्-व मग़्फ़ि-रतुन्
ख़ैरुम्मिन् स-द-क़तिंय्यत्बअुहा अज़न् ط
वल्लाहु ग़निय्युन् हलीम (२६३) या
अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तुब्तिलू
स-द-क़ातिकुम् बिलमन्नि वल्अज़ा ला कल्लज़ी
युन्फ़िक़ु मालहू रिआ-अन्नासि व ला
युअ्मिनु बिल्लाहि वल्यौमिल्आख़िरि ط
फ़ म-सलुहू क-म-सलि सफ़्वानिन् अ़लैहि
तुराबुन् फ़ असाबहू वाबिलुन् फ़-त-र-कहू सल्दन् ط
ला यक़्दिरू-न अ़ला शैइम्मिम्मा क-सबू ط वल्लाहु ला यह्दिल्-क़ौमल्-काफ़िरीन
(२६४) व म-सलुल्लज़ी-न युन्फ़िक़ू-न अम्वालहुमुब्तिग़ा-अ मर्ज़ातिल्लाहि
व तस्बीतम्मिन् अन्फ़ुसिहिम् क-म-सलि जन्नतिम्-बिरब्वतिन् असाबहा
वाबिलुन् फ़-आतत् उकुलहा ज़िअ्फ़ैनि ج फ़ इल्लम् युसिब्हा वाबिलुन्
फ़-तल्लुन् ط वल्लाहु बिमा तअ्-मलू-न बसीर (२६५) अ-य-वद्दु अ-हदुकुम् अन्
तकू-न लहू जन्नतुम्-मिन्नख़ीलिंव्-व अअ्-नाबिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ला
लहू फ़ीहा मिन् कुल्लिस्समराति ला व असाबहुल्कि-ब-रु व लहू ज़ुर्रिय्यतुन्
ज़ुअफ़ा-उ صلے फ़ असाबहा इअ्-सारुन् फ़ीहि नारुन् फ़ह्त-र-क़त् ط
कज़ालि-क युबय्यिनुल्लाहु लकुमुल्आयाति ल-अ़ल्लकुम् त-त-फ़क्करून ★ (२६६)

سنابل في كل سنبلة مائة حبة والله يضعف لمن يشاء
والله واسع عليم ۝ الذين ينفقون أموالهم في سبيل الله
ثم لا يتبعون ما أنفقوا منا ولا أذى لهم أجرهم عند ربهم
ولا خوف عليهم ولا هم يحزنون ۝ قول معروف ومغفرة
خير من صدقة يتبعها أذى والله غني حليم ۝ يأيها الذين
آمنوا لا تبطلوا صدقاتكم بالمن والأذى كالذي ينفق ماله
رئاء الناس ولا يؤمن بالله واليوم الآخر فمثله كمثل
صفوان عليه تراب فأصابه وابل فتركه صلدا لا يقدرون
على شيء مما كسبوا والله لا يهدي القوم الكفرين ۝ ومثل
الذين ينفقون أموالهم ابتغاء مرضات الله وتثبيتا من
أنفسهم كمثل جنة بربوة أصابها وابل فآتت أكلها ضعفين
فإن لم يصبها وابل فطل والله بما تعملون بصير ۝ أيود
أحدكم أن تكون له جنة من نخيل وأعناب تجري من
تحتها الأنهر له فيها من كل الثمرت وأصابه الكبر وله ذرية
ضعفاء فأصابها إعصار فيه نار فاحترقت كذلك يبين
الله لكم الآيت لعلكم تتفكرون ۝ يأيها الذين آمنوا أنفقوا
من طيبت ما كسبتم ومما أخرجنا لكم من الأرض ولا تيمموا

★रु. ३६/४ आ ६

जो लोग अपना माल ख़ुदा की राह में ख़र्च करते हैं, उन (के माल) की मिसाल उस दाने की-सी है, जिस से सात बालें उगें और हर एक बाल में सौ-सौ दाने हों और ख़ुदा जिस (के माल) को चाहता है, ज़्यादा करता है, वह बड़ी वुस्अत वाला और सब कुछ जानने वाला है। (२६१) जो लोग अपना माल ख़ुदा के रास्ते में ख़र्च करते हैं, फिर इस के बाद न इस ख़र्च का (किसी पर) एहसान रखते हैं और न (किसी को) तक्लीफ़ देते हैं, उन का बदला उन के परवरदिगार के पास (तैयार) है और (क़ियामत के दिन) न उन को कुछ डर होगा और न वे ग़मगीन होंगे। (२६२) जिस ख़ैरात देने के बाद (लेने वाले को) तक्लीफ़ दी जाए, उस से तो नर्म बात कह देनी और (उस की बे-अदबी से) दरगुज़र करना बेहतर है और ख़ुदा बे-परवा और बुर्दबार है। (२६३) मोमिनो! अपने सदक़ात (व ख़ैरात) एहसान रखने और तक्लीफ़ देने से उस शख़्स की तरह बर्बाद न कर देना, जो लोगों को दिखाने के लिए माल ख़र्च करता है और ख़ुदा और आख़िरत के दिन पर ईमान नहीं रखता, तो उस (के माल) की मिसाल उस चट्टान की-सी है, जिस पर थोड़ी सी मिट्टी पड़ी हो और उस पर ज़ोर का मेंह[1] बरस कर उसे साफ़ कर डाले (इसी तरह) ये (दिखावा करने वाले) लोग अपने आमाल का कुछ भी बदला हासिल नहीं कर सकेंगे। और ख़ुदा ऐसे ना-शुक्रों को हिदायत नहीं दिया करता। (२६४) और जो लोग ख़ुदा की ख़ुश्नूदी हासिल करने के लिए ख़ुलूसे नीयत से अपना माल ख़र्च करते हैं, उन की मिसाल एक बाग़ की-सी है, जो ऊंची जगह पर वाक़े हो, (जब) उस पर मेंह पड़े तो सौगुना फल लाये और मेंह न भी पड़े, तो ख़ैर फुवार ही सही और ख़ुदा तुम्हारे कामों को देख रहा है। (२६५) भला तुम में कोई यह चाहता है कि खजूरों और अंगूरों का बाग़ हो, जिस में नहरें बह रही हों और उस के लिए हर क़िस्म के मेवे मौजूद हों और उसे बुढ़ापा आ पकड़े और उस के नन्हे-नन्हे बच्चे भी हों तो (यकायक) उस बाग़ पर आग का भरा हुआ बगोला (बवंडर) चले और वह जल (कर राख का ढेर हो) जाए। इस तरह ख़ुदा तुम से अपनी आयतें खोल-खोल कर बयान फ़रमाता है, ताकि तुम सोचो और समझो। (२६६)★

---

१. अरबी लफ़्ज़ 'वाबिल' है जो बड़ी-बड़ी बूंदों की बारिश (मेंह) को कहते हैं।
'तल्ल' ओस को भी कहते हैं और छोटी-छोटी और हल्की-हल्की बूंदों के मेंह यानी फुवार को भी कहते हैं और वह भी पेड़ों को भी हरा-भरा रखने के लिए काफ़ी होती है। हम ने तर्जुमे में फुवार अख़्तियार किया है।

★रु. ३६/४ आ ६

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू अन्फ़िक़ू मिन् तय्यिबाति मा क-सब्तुम् व मिम्मा अख़रज्ना लकुम् मिनल्अर्ज़ि ص व ला त-यम्ममुल्ख़बी-स मिन्हु तुन्फ़िक़ू-न व लस्तुम् बि आख़िज़ीहि इल्ला अन् तुग़्मिज़ू फ़ीहि ط वअ्-लमू अन्नल्ला-ह ग़निय्युन् हमीद (२६७) अश्शैतानु यअिदुकुमुल्-फ़क्-र व यअ्मुरुकुम् बिल्फ़ह्शा - इ ج वल्लाहु यअिदुकुम् मग़्फ़ि - र - तम्मिन्हु व फ़ज़्लन् ط वल्लाहु वासिअुन् अलीम قلے (२६८) युअ्तिल्-हिक्म-त मंय्यशा-उ ج व मंय्युअ्तल्-हिक्म-त फ़-क़द् ऊति-य ख़ैरन् कसीरन् ط व मा यज़्ज़क्करु इल्ला उलुल् - अल्बाब (२६९) व मा अन्फ़क़्तुम् मिन् न-फ़-क़तिन् औ न-ज़र्तुम् मिन्नज़्रिन् फ़ इन्नल्ला - ह यअ्-लमुहू ط व मा लिज़्ज़ालिमी - न मिन् अन्सार (२७०) इन् तुब्दुस्स-द-क़ाति फ़ निअिम्मा हि-य ج व इन् तुख़्फ़ूहा व तुअ्तूहल्फ़ुक़रा-अ फ़हु - व ख़ैरुल्लकुम् ط व युकफ़्फ़िरु अन्कुम् मिन् सय्यिआतिकुम् ط वल्लाहु बिमा तअ्-मलून ख़बीर (२७१) लै-स अलै-क हुदाहुम् व लाकिन्नल्ला-ह यह्दी मंय्यशा-उ ط व मा तुन्फ़िक़ू मिन् ख़ैरिन् फ़ लि अन्फ़ुसिकुम् ط व मा तुन्फ़िक़ू-न इल्लब्तिग़ा-अ वज्हिल्लाहि ط व मा तुन्फ़िक़ू मिन् ख़ैरिंय्युवफ़्-फ़ इलैकुम् व अन्तुम् ला तुज़्लमून (२७२) लिल्फ़ुक़रा-इल्लज़ी-न उह्सिरू फ़ी सबीलिल्लाहि ला यस्ततीअू-न ज़र्बन् फ़िल्अर्ज़ि ز यह्सबुहुमुल्-जाहिलु अग़्निया-अ मिनत्तअफ़्फ़ुफ़ि ج तअ्-रिफ़ुहुम् बि सीमाहुम् ج ला यस्अलूनन्ना-स इल्हाफ़न् ط व मा तुन्फ़िक़ू मिन् ख़ैरिन् फ़ इन्नल्ला-ह बिही अलीम ★ ● (२७३) अल्लज़ी-न युन्फ़िक़ू-न अम्वालहुम् बिल्लैलि वन्नहारि सिर्रंव-व अलानि-य-तन् फ़ लहुम् अज्रुहुम् अिन्-द रब्बिहिम् ج व ला ख़ौफ़ुन् अलैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून ۞ (२७४)

الخبيث منه تنفقون ولستم بأخذيه الا ان تغمضوا فيه
واعلموا ان الله غني حميد ۝ الشيطن يعدكم الفقر و
يامركم بالفحشاء والله يعدكم مغفرة منه وفضلا والله
واسع عليم ۝ يؤتي الحكمة من يشاء ومن يؤت الحكمة فقد
اوتي خيرا كثيرا وما يذكر الا اولوا الالباب ۝ وما انفقتم من
نفقة او نذرتم من نذر فان الله يعلمه وما للظلمين من
انصار ۝ ان تبدوا الصدقت فنعما هي وان تخفوها وتؤتوها
الفقراء فهو خير لكم ويكفر عنكم من سياتكم والله بما تعملون
خبير ۝ ليس عليك هدىهم ولكن الله يهدي من يشاء وما
تنفقوا من خير فلانفسكم وما تنفقون الا ابتغاء وجه الله
وما تنفقوا من خير يوف اليكم وانتم لا تظلمون ۝ للفقراء
الذين احصروا في سبيل الله لا يستطيعون ضربا في الارض
يحسبهم الجاهل اغنياء من التعفف تعرفهم بسيمهم لا
يسـٔلون الناس الحافا وما تنفقوا من خير فان الله به عليم ۝
الذين ينفقون اموالهم بالليل والنهار سرا وعلانية فلهم
اجرهم عند ربهم ولا خوف عليهم ولا هم يحزنون ۝
الذين ياكلون الربوا لا يقومون الا كما يقوم الذي يتخبطه

★रु. ३७/५ आ ७ ● रुबअ १/४ ۞ त. मंज़िल

मोमिनो ! जो पाकीज़ा और उम्दा माल तुम कमाते हो, और जो चीज़ें हम तुम्हारे लिए ज़मीन से निकालते हैं, उन में से (ख़ुदा की राह में) ख़र्च करो और बुरी और ना-पाक चीज़ें देने का इरादा न करना कि (अगर वे तुम्हें दी जाएं तो) इस के अलावा कि (लेते वक़्त) आंखें बन्द कर लो, उन को कभी न लो और जान रखो कि ख़ुदा बे-परवा (और) तारीफ़ के क़ाबिल है। (२६७) (और देखना) शैतान (का कहा न मानना, वह) तुम्हें तंगदस्ती का ख़ौफ़ दिलाता और बे-हयाई के काम करने को कहता है और ख़ुदा तुम से अपनी बख़्शिश और रहमत का वायदा करता है और ख़ुदा बड़ी वुस्अत वाला (और) सब कुछ जानने वाला है। (२६८) वह जिस को चाहता है दानाई बख़्शता है और जिस को दानाई मिली, बेशक उस को बड़ी नेमत मिली और नसीहत तो वही लोग क़ुबूल करते हैं, जो अक़्लमंद हैं। (२६९) और तुम (ख़ुदा की राह में) जिस तरह का ख़र्च करो, या कोई नज़्र मानो[1] ख़ुदा उस को जानता है और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं।[2] (२७०) अगर तुम ख़ैरात ज़ाहिर में दो तो वह भी ख़ूब है, और अगर छिपे दो और दो भी ज़रूरतमंद को, तो वह ख़ूबतर है और (इस तरह का देना) तुम्हारे गुनाहों को भी दूर कर देगा और ख़ुदा को तुम्हारे कामों की ख़बर है। (२७१) (ऐ मुहम्मद !) तुम उन लोगों की हिदायत के ज़िम्मेदार नहीं हो, बल्कि ख़ुदा ही जिस को चाहता है, हिदायत बख़्शता है और (मोमिनो !) तुम जो माल ख़र्च करोगे तो उस का फ़ायदा तुम्हीं को है और तुम जो ख़र्च करोगे, वह तुम्हें पूरा-पूरा दे दिया जाएगा और तुम्हारा कुछ नुक़्सान नहीं किया जाएगा। (२७२) (और हां, तुम जो ख़र्च करोगे तो) उन ज़रूरतमंदों के लिए जो ख़ुदा की राह में रुके बैठे हैं और मुल्क में किसी तरफ़ जाने की ताक़त नहीं रखते और मांगने में शर्म खाते हैं, यहां तक कि न मांगने की वजह से अनजान आदमी उन को मालदार ख़्याल करता है और तुम क़ियाफ़े (अनुमान) से उन को साफ़ पहचान लो (कि हाजतमंद हैं और शर्म की वजह से) लोगों से (मुंह फोड़ कर और) लिपट कर नहीं मांग सकते और तुम जो माल ख़र्च करोगे, कुछ शक नहीं कि ख़ुदा उस को जानता है। (२७३)★●

जो लोग अपना माल रात और दिन और छिपे और ज़ाहिर (ख़ुदा की राह में) ख़र्च करते रहते हैं, उन का बदला परवरदिगार के पास है और उन को (क़ियामत के दिन) न किसी तरह का

---

१. नज़्र के लिए यह शर्त है कि ऐसे काम की नज़्र मानी जाए, जो कुछ शक्लों में फ़र्ज़ भी हो, जैसे नमाज़ और रोज़ा और सद्क़ा देने की नज़्र। नमाज़ तो हर दिन पांचों वक़्त की फ़र्ज़ है और रमज़ान के रोज़े भी फ़र्ज़ हैं और सद्क़े की शक्ल में से ज़कात फ़र्ज़ है। ऐसी चीज़ों की नज़्र सही है और अगर किसी ऐसी चीज़ की नज़्र मानी जाए, जो किसी शक्ल में फ़र्ज़ नहीं है, वह बातिल (ग़लत) है।

२. ज़ालिमों से वे लोग मुराद हैं, जो ख़ुदा की राह में माल नहीं ख़र्च करते या नज़्र को पूरा नहीं करते और अगर ख़र्च करते हैं तो दिखावे के लिए या बुरे कामों में ख़र्च करते हैं।

अल्लज़ी-न यअ्कुलूनर्रिबा ला यक़ूमू-न इल्ला कमा यक़ूमुल्लज़ी य-त-ख़ब्बतुहुश् शैतानु मिनलमस्सि ط ज़ालि - क बि अन्नहुम् क़ालू इन्नमल्बैअु मिस्लुर्रिबा ※ व अहल्लल्लाहुल्बै - अ व हर्रमर्रिबा ط फ़ मन् जा - अहू मौअिज़तुम्-मिर्रब्बिही फ़न्तहा फ़ लहू मा स-लफ़ ط व अम्रुहू इलल्लाहि ط

व-मन् आ-द फ़ उला-इ-क अस्हाबुन्नारि ج हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (२७५) यम्हक़ुल्लाहुर्रिबा व युर्बिस्स-द-क़ाति ط वल्लाहु ला युहिब्बु कुल-ल कफ़्फ़ारिन् असीम (२७६) इन्नल्लज़ी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति व अक़ामुस्सला-त व आतवुज़्ज़का-त लहुम् अज्रुहुम् अिन - द रब्बिहिम् ج व ला ख़ौफ़ुन् अलैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून (२७७) या अय्युहल्लज़ी-न आमनुत्तक़ुल्ला-ह व - ज़रू मा बक़ि - य मिनर्रिबा इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन (२७८) फ़ इल्लम्

تلك الرسل ٣ ٣٦ البقرة ٢

الشيطن من المس ذلك بانهم قالوا انما البيع مثل الربوا
واحل الله البيع وحرم الربوا فمن جاءه موعظة من
ربه فانتهى فله ما سلف وامره الى الله ومن عاد فاولئك
اصحب النار هم فيها خلدون ۝ يمحق الله الربوا ويربي
الصدقت والله لا يحب كل كفار اثيم ۝ ان الذين امنوا و
عملوا الصلحت واقاموا الصلوة واتوا الزكوة لهم اجرهم
عند ربهم ولا خوف عليهم ولا هم يحزنون ۝ يايها الذين
امنوا اتقوا الله وذروا ما بقي من الربوا ان كنتم مؤمنين ۝
فان لم تفعلوا فاذنوا بحرب من الله ورسوله وان تبتم
فلكم رءوس اموالكم لا تظلمون ولا تظلمون ۝ وان كان
ذو عسرة فنظرة الى ميسرة وان تصدقوا خير لكم ان كنتم
تعلمون ۝ واتقوا يوما ترجعون فيه الى الله ثم توفى كل
نفس ما كسبت وهم لا يظلمون ۝ يايها الذين امنوا اذا
تداينتم بدين الى اجل مسمى فاكتبوه وليكتب بينكم
كاتب بالعدل ولا يأب كاتب ان يكتب كما علمه الله
فليكتب وليملل الذي عليه الحق وليتق الله ربه ولا
يبخس منه شيئا فان كان الذي عليه الحق سفيها او

منزل

तफ़्अलू फ़अ्ज़नू बि हर्बिम् - मिनल्लाहि व रसूलिही ج व इन् तुब्तुम् फ़ लकुम् रुऊसु अम्वालिकुम् ج ला तज़्लिमू-न व ला तुज़्लमून (२७९) व इन् का-न ज़ू अुस्रतिन् फ़ नज़िरतुन् इला मैस-रतिन् ط व अन् तसद्दक़ू ख़ैरुल्लकुम् इन् कुन्तुम् तअ्-लमून (२८०) वत्तक़ू यौमन् तुर्जअू-न फ़ीहि इलल्लाहि सुम - म तुवफ़्फ़ा कुल्लु नफ़्सिम् - मा क-स-बत् व हुम् ला युज़्लमून ★ (२८१)

※ व. लाज़िम ★ रु. ३८/६ आ ८

खौफ़ होगा और न ग़म।[1] (२७४) जो लोग सूद खाते हैं, वे (क़ब्रों से) इस तरह (हवास खोये हुए) उठेंगे, जैसे किसी को जिन्न ने लिपट कर दीवाना बना दिया हो, यह इस लिए कि वे कहते हैं कि सौदा बेचना भी तो (नफ़ा के लिहाज़ से) वैसा ही है जैसे सूद (लेना)[2] हालांकि सौदे को ख़ुदा ने हलाल किया है और सूद को हराम, तो जिस शख़्स के पास ख़ुदा की नसीहत पहुंची और वह (सूद लेने से) बाज़ आ गया, तो जो पहले हो चुका, वह उस का, और (क़ियामत में) उस का मामला ख़ुदा के सुपुर्द और जो फिर लेने लगा, तो ऐसे लोग दोज़ख़ी हैं कि हमेशा दोज़ख़ में (जलते) रहेंगे। (२७५) ख़ुदा सूद को ना-बूद (यानी बे-बरकत) करता और ख़ैरात (की बरकत) को बढ़ाता है और ख़ुदा किसी ना-शुक्रे गुनाहगार को दोस्त नहीं रखता। (२७६) जो लोग ईमान लाये और नेक अमल करते और नमाज़ पढ़ते और ज़कात देते रहे, उन को उन के कामों का बदला ख़ुदा के यहां मिलेगा और (क़ियामत के दिन) उन को न कुछ खौफ़ होगा और न वे ग़मनाक होंगे। (२७७) मोमिनो! ख़ुदा से डरो और अगर ईमान रखते हो तो जितना सूद बाक़ी रह गया है, उस को छोड़ दो। (२७८) अगर ऐसा न करो, तो ख़बरदार हो जाओ (कि तुम) ख़ुदा और रसूल से जंग करने के लिए (तैयार होते हो) और अगर तौबा कर लोगे (और सूद छोड़ दोगे) तो तुम को अपनी असल रक़म लेने का हक़ है, जिस में न औरों का नुक़सान, और न तुम्हारा नुक़सान। (२७९) और अगर क़र्ज़ लेने वाला तंगदस्त हो तो (उसे) फ़राख़ी (के हासिल होने) तक मोहलत (दो) और अगर (क़र्ज़ रक़म) बख़्श ही दो, तो तुम्हारे लिए ज़्यादा अच्छा है, बशर्ते कि समझो। (२८०) और उस दिन से डरो, जबकि तुम ख़ुदा के हुज़ूर में लौट कर जाओगे और हर शख़्स अपने आमाल का पूरा-पूरा बदला पायेगा और किसी का कुछ नुक़सान न होगा। (२८१) ★

---

१. ख़ैरात का बयान ख़त्म हुआ, अब आगे सूद को हराम फ़रमाया, जब ख़ैरात की ताकीद है, तो क़र्ज़ देना तो उस से ताकीदी है, फिर सूद क्यों लीजिए।

२. अरब में सूद दो तरह से चलता था। एक क़र्ज़ पर, दूसरे बैअ़ पर। क़र्ज़ पर इस तरह कि रुपया देने वाला किसी को एक मुद्दत के लिए रुपए देता। जब वह मुद्दत ख़त्म हो जाती, तो क़र्ज़दार से रुपए तलब करता। उस के पास रुपया न होता और वह मोहलत मांगता तो क़र्ज़ पर सूद बढ़ा दिया जाता और उस को असल रक़म में शामिल कर के ज़्यादा मोहलत दी जाती। इसी तरह सूद पर सूद भी हो जाता और ज़्यादा मशहूर यही सूद था। बैअ़ पर इस तरह कि कोई शख़्स किसी के पास कोई चीज़ बेचता और उसी क़िस्म की चीज़ ख़रीदने वाले से बदले में लेता। हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि गेहूं को गेहूं के बदले और नमक को नमक के बदले और जौ को जौ के बदले और खजूर को खजूर के बदले और चांदी को चांदी के बदले और सोने को सोने के बदले बेचो तो बराबर-बराबर बेचो यानी ज़्यादा लेना-देना सूद में दाख़िल है और ये दोनों क़िस्म के सूद हराम हैं। सूद खाने वाले कहते थे कि क़र्ज़ पर सूद लेना और सौदागरी करना एक-सी चीज़ें हैं। सौदागरी से भी नफ़े का मक़सद होता है और सूद से भी नफ़े का मक़सद होता है, पस नफ़ा के लिहाज़ से दोनों में कुछ फ़र्क़ नहीं, मगर अल्लाह तआला ने सूद को हराम किया है, क्योंकि यह मुरव्वत, एहसान और सुलूक के ख़िलाफ़ है। उस में एहसान, हमदर्दी और मदद करने की बहुत ताकीद फ़रमायी है और क़र्ज़ बिला सूद, जिस को क़र्ज़े हसना कहते हैं, एहसान में दाख़िल है। सौदागरी में जितना नफ़ा भी हासिल किया जाए, वह हलाल है, मगर सूद का एक पैसा भी हराम है क्योंकि तंगदस्त मुसलमान एहसान और सुलूक के हक़दार और इस क़ाबिल होते हैं कि उन को क़र्ज़ दे कर उन की मदद की जाए, न यह कि उन से सूद लेकर उन का ख़ून पिया जाए।

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इज़ा तदायन्तुम् बि दैनिन् इला अ-जलिम्मुसम्मन् फ़क्तुबूहु ط वल्यक्तुब् बैनकुम् कातिबुम्-बिल्अद्लि ص व ला यअ्-ब कातिबुन् अंय्यक्तु-ब कमा अल्लमहुल्लाहु फ़ल्यक्तुब् ج वल्युम्लिलिल्लज़ी अलैहिल्हक़्क़ु वल्यत्तक़िल्ला-ह रब्बहू व ला यब्ख़स् मिन्हु शैअन् ط फ़ इन् कानल्लज़ी अलैहिल्हक़्क़ु सफ़ीहन् औ ज़अीफ़न् औ ला यस्ततीअु अंय्युमिल्-ल हु-व फ़ल्युम्लिल् वलिय्युहू बिल्अद्लि ط वस्तश्हिदू शहीदैनि मिर्रिजालिकुम् ج फ़ इल्लम् यकूना रजुलैनि फ़ रजुलुंव्वम्र-अतानि मिम्मन् तर्ज़ौ-न मिनश्शुहदा-इ अन् तज़िल्-ल इह्दाहुमा फ़ तुज़क्कि-र इह्दाहुमल्-उख़्रा ط व ला यअ्बश्शुहदा-उ इज़ा मा दुअू ط व ला तस्अमू अन् तक्तुबूहु सग़ीरन् औ कबीरन् इला अ-जलिही ط ज़ालिकुम् अक़्सतु अिन्दल्लाहि व अक़्वमु लिश्शहादति व अद्ना अल्ला तर्ताबू इल्ला अन् तकू-न तिजारतन् हाज़ि-र-तन् तुदीरूनहा बैनकुम् फ़-लै-स अलैकुम् जुनाहुन् अल्ला तक्तुबूहा ط व अश्हिदू इज़ा तबायअ्-तुम् ص व ला युज़ार-र कातिबुंव-व ला शहीदुन् ط व इन् तफ़्-अलू फ़ इन्नहू फ़ुसूक़ुम्बिकुम् ط वत्तक़ुल्ला-ह ط व युअल्लिमुकुमुल्लाहु ط वल्लाहु बि कुल्लि शैइन् अलीम (२८२) व इन् कुन्तुम् अला सफ़रिंव्वलम् तजिदू कातिबन् फ़रिहानुम्-मक़्बूज़तुन् ط फ़ इन् अमि-न बअ्-ज़ुकुम् बअ्-ज़न् फ़ल्युअद्दिल्लज़िअ्-तुमि-न अमानतहू वल्यत्तक़िल्ला-ह रब्बहू ط व ला तक्तुमुश्शहाद-त ط व मंय्यक्तुम्हा फ़ इन्नहू आसिमुन् क़ल्बुहू ط वल्लाहु बिमा तअ्-मलू-न अलीम ★ (२८३) लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि ط व इन् तुब्दू मा फ़ी अन्फ़ुसिकुम् औ तुख़्फ़ूहु युहासिब्कुम् बिहिल्लाहु ط फ़-यग़्फ़िरु लिमंय्यशा-उ व युअज़्ज़िबु मंय्यशा-उ ط वल्लाहु अला कुल्लि शैइन् क़दीर (२८४)

تلك الرسل ٣ — ٣٨ — البقرة ٢

ضعيفا او لا يستطيع ان يمل هو فليملل وليه بالعدل ۚ و
استشهدوا شهيدين من رجالكم ۚ فان لم يكونا رجلين
فرجل وامراتان ممن ترضون من الشهداء ان تضل
احدىهما فتذكر احدىهما الاخرى ۚ ولا ياب الشهداء اذا ما
دعوا ۚ ولا تساموا ان تكتبوه صغيرا او كبيرا الى اجله ۚ ذلكم
اقسط عند الله واقوم للشهادة وادنى الا ترتابوا الا ان تكون
تجارة حاضرة تديرونها بينكم فليس عليكم جناح الا
تكتبوها ۚ واشهدوا اذا تبايعتم ۚ ولا يضار كاتب ولا شهيد ۚ
وان تفعلوا فانه فسوق بكم ۚ واتقوا الله ۚ ويعلمكم الله ۚ والله
بكل شيء عليم ۝ وان كنتم على سفر ولم تجدوا كاتبا فرهن
مقبوضة ۚ فان امن بعضكم بعضا فليؤد الذي اؤتمن امانته
وليتق الله ربه ۚ ولا تكتموا الشهادة ۚ ومن يكتمها فانه اثم
قلبه ۚ والله بما تعملون عليم ۝ لله ما في السموت وما في
الارض ۚ وان تبدوا ما في انفسكم او تخفوه يحاسبكم به الله ۚ
فيغفر لمن يشاء ويعذب من يشاء ۚ والله على كل شيء
قدير ۝ امن الرسول بما انزل اليه من ربه والمؤمنون ۚ
كل امن بالله وملئكته وكتبه ورسله لا نفرق بين

★रु. ३९/७ आ/ २

मोमिनो ! जब तुम आपस में किसी तै मुद्दत के लिए क़र्ज़ का मामला करने लगो, तो उस को लिख लिया करो और लिखने वाला तुम में (किसी का नुक़सान न करे, बल्कि) इंसाफ़ से लिखे, साथ ही लिखने वाला जैसा उसे ख़ुदा ने सिखाया है, लिखने से इन्कार भी न करे और दस्तावेज़ लिख दे। और जो शख़्स क़र्ज़ ले, वही (दस्तावेज़ का) मज़्मून बोल कर लिखवाए और ख़ुदा से, कि उस का मालिक है, ख़ौफ़ करे और क़र्ज़ रक़म में से कुछ कम न लिखवाए और, अगर क़र्ज़ लेने वाला बे-अक़्ल या ज़ईफ़ (कमज़ोर, बूढ़ा) हो या मज़्मून लिखवाने की क़ाबिलियत न रखता हो, तो जो उस का वली हो, वह इंसाफ़ के साथ मज़्मून लिखवाए और अपने में से दो मर्दों को (ऐसे मामले के) गवाह कर लिया करो और अगर दो मर्द न हों, तो एक मर्द और दो औरतें, जिन को तुम गवाह पसन्द करो, (काफ़ी) हैं कि अगर उन में से एक भूल जाएगी, तो दूसरी उसे याद दिलाएंगी और जब गवाह (गवाही के लिए) तलब किए जाएं तो इंकार न करें और क़र्ज़ थोड़ा हो या बहुत उस (की दस्तावेज़) के लिखने-लिखाने में काहिली न करना। यह बात ख़ुदा के नज़दीक इंसाफ़ के क़रीब है और गवाही के लिए भी यह बहुत सही तरीक़ा है। इस से तुम्हें किसी तरह का शक व शुब्हा न पड़ेगा। हां, अगर सौदा हाथ के हाथ हो, जो तुम आपस में लेते-देते हो, तो अगर (ऐसे मामले की) दस्तावेज़ न लिखो तो तुम पर कुछ गुनाह नहीं और जब ख़रीद व फ़रोख़्त किया करो तो भी गवाह कर लिया करो और दस्तावेज़ के लिखने वाले और गवाह (मामला करने वालों का) किसी तरह का नुक़्सान न करें। अगर तुम (लोग) ऐसा करो तो यह तुम्हारे लिए गुनाह की बात है और ख़ुदा से डरो और (देखो कि) वह तुम को (कैसी मुफ़ीद बातें) सिखाता है और ख़ुदा हर चीज़ को जानता है। (२८२) और अगर तुम सफ़र पर हो और (दस्तावेज़) लिखने वाला मिल न सके तो (कोई चीज़) रेहन बा-क़ब्ज़ा रख कर (क़र्ज़ ले लो) और अगर कोई किसी को अमीन समझे (यानी रेहन के बग़ैर क़र्ज़ दे दे) तो अमानतदार को चाहिए कि अमानत वाले की अमानत अदा कर दे और ख़ुदा से जो उस का परवरदिगार है, डरे और (देखना,) गवाही को मत छिपाना, जो उस को छिपाएगा, वह दिल का गुनाहगार होगा और ख़ुदा तुम्हारे सब कामों को जानता है। (२८३)★

जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, सब ख़ुदा ही का है। तुम अपने दिलों की बात को ज़ाहिर करोगे तो, या छिपाओगे तो, ख़ुदा तुम से उस का हिसाब लेगा, फिर वह जिसे चाहे, मग़फ़िरत करे और जिसे चाहे अज़ाब दे और ख़ुदा हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। (२८४) (ख़ुदा

★रु॰ ३९/७ आ/ २

आम-नर्रसूलु बिमा उनज़ि-ल इलैहि मिर्रब्बिही वल्मुअ्मिनून ط कुल्लुन् आम-न बिल्लाहि व मला-इकतिही व कुतुबिही व रुसुलिही نقف ला नुफ़र्रिकु बै-न अ-ह़दिम्-मिर्रुसुलिही نقف व क़ालू समिअ्-ना व अ-तअ्-ना ق ग़ुफ़रा-न-क रब्बना व इलैकल्मसीर (२८५) ला युकल्लिफ़ुल्लाहु नफ़्सन् इल्ला वुस्अहा ط लहा मा क-स-बत् व अलैहा मक्त-स-बत् ط रब्बना ला तुआख़िज़्ना इन्नसीना औ अख़्तअ्ना ج रब्बना व ला तह़्मिल् अलैना इस्रन् कमा ह़मल्तहू अ-लल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिना ج रब्बना व ला तुह़म्मिल्ना मा ला ताक़-त लना बिही ج वअ्-फ़ु अन्ना وقفة वग़्फ़िर - लना وقفة वर्ह़म्ना وقفة अन्-त मौलाना फ़न्सुर्ना अ-लल्-क़ौमिल्-काफ़िरीन ✱ (२८६)

أَحَدٍ مِّن رُّسُلِهِ ۚ وَقَالُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا ۖ غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَإِلَيْكَ
الْمَصِيرُ ۝ لَا يُكَلِّفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا
مَا اكْتَسَبَتْ ۗ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَا إِن نَّسِينَا أَوْ أَخْطَأْنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا
تَحْمِلْ عَلَيْنَا إِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهُ عَلَى الَّذِينَ مِن قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا
تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهِ ۖ وَاعْفُ عَنَّا وَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا ۚ
أَنتَ مَوْلَانَا فَانصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ۝
سُورَةُ آلِ عِمْرَانَ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ مِائَتَا آيَةٍ وَعِشْرُونَ رُكُوعًا
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ ۝
الم ۝ اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ ۝ نَزَّلَ عَلَيْكَ الْكِتَابَ
بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَأَنزَلَ التَّوْرَاةَ وَالْإِنجِيلَ ۝ مِن
قَبْلُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَأَنزَلَ الْفُرْقَانَ ۗ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ
اللَّهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ۗ وَاللَّهُ عَزِيزٌ ذُو انتِقَامٍ ۝ إِنَّ اللَّهَ لَا
يَخْفَىٰ عَلَيْهِ شَيْءٌ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ ۝ هُوَ الَّذِي
يُصَوِّرُكُمْ فِي الْأَرْحَامِ كَيْفَ يَشَاءُ ۚ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝
هُوَ الَّذِي أَنزَلَ عَلَيْكَ الْكِتَابَ مِنْهُ آيَاتٌ مُّحْكَمَاتٌ هُنَّ أُمُّ
الْكِتَابِ وَأُخَرُ مُتَشَابِهَاتٌ ۖ فَأَمَّا الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ زَيْغٌ فَيَتَّبِعُونَ
مَا تَشَابَهَ مِنْهُ ابْتِغَاءَ الْفِتْنَةِ وَابْتِغَاءَ تَأْوِيلِهِ ۗ وَمَا يَعْلَمُ تَأْوِيلَهُ

३ सूरतु आलि इम्रान ८९

(मदनी) इस सूरः में अरबी के १४३२६ अक्षर, ३५४२ शब्द, २०० आयतें और २० रुकूअ् हैं।
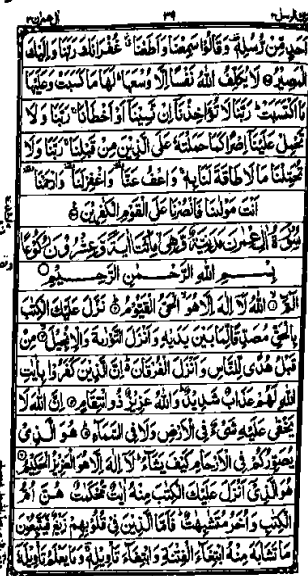
बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

अलिफ़्-लाम्-मीम् ᵔ (१) अल्लाहु ला इला-ह इल्ला हु-व ल्-ह़य्युल्क़य्यूम ط (२) नज़्ज़-ल अलैकल्किता-ब बिल्ह़क़्क़ि मुसद्दिक़ल्लिमा बै-न यदैहि व अन्ज़लत्तौरा-त वल्-इन्जील ᵔ (३) मिन् क़ब्लु हुदल्लिन्नासि व अन्ज़-लल्-फ़ुर्क़ान ط इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू बि आयातिल्लाहि लहुम् अज़ाबुन् शदीदुन् ط वल्लाहु अज़ीज़ुन् ज़ुन्तिक़ाम (४) इन्नल्ला-ह ला यख़्फ़ा अलैहि शैउन् फ़िल्अर्ज़ि व ला फ़िस्समा-इ ط (५) हुवल्लज़ी युसव्विरुकुम् फ़िल्अर्ह़ामि कै-फ़ यशा-उ ط ला इला-ह इल्ला हुवल्-अज़ीज़ुल्-ह़कीम (६)

✱रु. ४०/८ आ ३

के) रसूल उस किताब पर जो उन के परवरदिगार की तरफ़ से उन पर नाज़िल हुई, ईमान रखते हैं और मोमिन भी सब ख़ुदा पर और उस के फ़रिश्तों पर और उस की किताबों पर और उस के पैग़म्बरों पर ईमान रखते हैं (और कहते हैं कि) हम उस के पैग़म्बरों से किसी में कुछ फ़र्क़ नहीं करते। और वे (ख़ुदा से) अर्ज़ करते हैं कि हम ने (तेरा हुक्म) सुना और क़ुबूल किया। ऐ परवर-दिगार ! हम तेरी बख़्शिश मांगते हैं और तेरी ही तरफ़ लौट कर जाना है। (२८५) ख़ुदा किसी शख़्स को उस की ताक़त से ज़्यादा तक्लीफ़ नहीं देता। अच्छे काम करेगा तो उस को उन का फ़ायदा मिलेगा, बुरे करेगा तो उसे उन का नुक़्सान पहुंचेगा। ऐ परवरदिगार ! अगर हम से भूल या चूक हो गयी हो तो हमारी पकड़ न कीजियो, ऐ परवरदिगार ! हम पर ऐसा बोझ न डालियो, जैसा तूने हम से पहले लोगों पर डाला था। ऐ परवरदिगार ! जितना बोझ उठाने की हम में ताक़त नहीं, उतना हमारे सर पर न रखियो और (ऐ परवरदिगार !) हमारे गुनाहों से दरगुज़र कर और हमें बख़्श दे और हम पर रहम फ़रमा, तू ही हमारा मालिक है और हम को काफ़िरों पर ग़ालिब फ़रमा। (२८६)★

---

३ सूरः आले इम्रान ८९

सूरः आले इम्रान मदनी है और इस में दो सौ आयतें और बीस रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ़्-लाम्-मीम् (१) ख़ुदा, (जो माबूदे बरहक़ है) उस के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, ज़िन्दा, हमेशा रहने वाला (२) उसने (ऐ मुहम्मद सल्ल०!) तुम पर सच्ची किताब नाज़िल की, जो पहली (आसमानी) किताबों की तस्दीक़ करती है और उसी ने तौरात और इन्जील नाज़िल की। (३) (यानी) लोगों की हिदायत के लिए पहले (तौरात और इन्जील उतारी) और (फिर क़ुरआन, जो हक़ और बातिल को) अलग-अलग कर देने वाला (है,) नाज़िल किया। जो लोग ख़ुदा की आयतों से इन्कार करते हैं, उन को सख़्त अज़ाब होगा। और ख़ुदा ज़बरदस्त (और) बदला लेने वाला है। (४) ख़ुदा (ऐसा ख़बर रखने वाला और देखने वाला है कि) कोई चीज़ उस से छिपी नहीं, न ज़मीन में, न आसमान में। (५) वही तो है जो (मां के पेट में) जैसी चाहता है, तुम्हारी शक्लें बनाता है। उस ग़ालिब हिक्मत वाले के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं। (६) वही तो

★रु० ४०/८ आ ३

हुवल्लज़ी अन्ज़-ल अलैकल्किता-ब मिन्हु आयातुम्-मुह्कमातुन् हुन-न उम्मुल्-किताबि व उ-ख़रु मु-त-शाबिहातुन् ᵇ फ़ अम्मल्लज़ी-न फ़ी क़ुलूबिहिम् ज़ैग़ुन् फ़यत्तबिअू-न मा तशाब - ह मिन्हुब्तिग़ा-अल्-फ़ित्नति वब्तिग़ा-अ तअ्वीलिही ⁂ ट व मा यअ्-लमु तअ्वीलहू इल्लल्लाहु ⁂ वर्रासिख़ू-न फ़िल्अिल्मि यक़ूलू-न आमन्ना बिही ᵘ कुल्लुम्मिन् अिन्दि रब्बिना ट व मा यज़्ज़क्करु इल्ला उलुल्-अल्बाब (७) रब्बना ला तुज़िग़् क़ुलूबना बअ्-द इज़् हदैतना व हब् लना मिल्लदुन-क रह्-म-तन् ट इन्न-क अन्तल्वह्हाब (८) रब्बना इन्न-क जामिअुन्नासि लि यौमिल्ला रै-ब फ़ीहि ᵇ इन्नल्ला - ह ला युख़्लिफ़ुल्-मीआद ★ (९) इन्नल्लज़ी - न क - फ़रू लन् तुग़्नि-य अन्हुम् अम्वालुहुम् व ला औलादुहुम् मिनल्लाहि शैअन् ᵇ व उला-इ-क हुम् वक़ूदुन्नार ᵘ (१०) क-दअ्बि आलि फ़िर्औन ᵘ वल्लज़ी - न मिन् क़ब्लिहिम् ᵇ कज़्ज़बू बि आयातिना ट फ़ अ-ख़-ज़हुमुल्लाहु बि ज़ुनूबिहिम् ᵇ वल्लाहु शदीदुल्-अिक़ाब (११) क़ुल् लिल्लज़ी-न क-फ़रू सतुग़्लबू-न व तुह्शरू-न इला जहन्नम ᵇ व बिअ्सल्मिहाद (१२) क़द् का-न लकुम् आयतुन् फ़ी फ़िअतैनिल-त-क़ता ᵇ फ़ि - अतुन् तुक़ातिलु फ़ी सबीलिल्लाहि व उख़्रा काफ़िरतुंय्यरौनहुम् मिस्लैहिम् रअ्यल्अ़ैनि ᵇ वल्लाहु युअय्यिदु बिनस्रिही मंय्यशा-उ ᵇ इन-न फ़ी ज़ालि-क ल अिब्रतल्लि-उलिल्-अब्सार (१३) ज़ुय्यि - न लिन्नासि हुब्बुश्श-ह-वाति मिनन्निसा - इ वल्बनी-न वल्क़नातीरिल्-मुक़न्त-रति मिनज़्ज़-हबि वल्फ़िज़्ज़ति वल्-ख़ैलिल्-मुसव्वमति वल्अन्आमि वल्हर्सि ᵇ ज़ालि-क मताअुल्-हयातिद्दुन्या ट वल्लाहु अिन्दहू हुस्नुलमआब (१४) क़ुल् अ उनब्बिउकुम् बि ख़ैरिम्मिन् ज़ालिकुम् ᵇ लिल्लज़ीनत्तक़ौ अिन-द रब्बिहिम् जन्नातुन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा व अज़्वाजुम्-मुतह्हरतुं व-व रिज़्वानुम्-मिनल्लाहि ᵇ वल्लाहु बसीरुम्-बिल्अिबाद ट (१५) अल्लज़ी-न यक़ूलू-न रब्बना इन्नना आमन्ना फ़ग़्फ़िर्लना ज़ुनूबना व क़िना अज़ाबन्नार ट (१६)

تلك الرسل ٣ آل عمران

إِلَّا اللَّهُ ۗ وَالرَّاسِخُونَ فِي الْعِلْمِ يَقُولُونَ آمَنَّا بِهِ كُلٌّ مِّنْ عِندِ رَبِّنَا ۗ
وَمَا يَذَّكَّرُ إِلَّا أُولُو الْأَلْبَابِ ﴿٧﴾ رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوبَنَا بَعْدَ إِذْ هَدَيْتَنَا
وَهَبْ لَنَا مِن لَّدُنكَ رَحْمَةً ۚ إِنَّكَ أَنتَ الْوَهَّابُ ﴿٨﴾ رَبَّنَا إِنَّكَ جَامِعُ
النَّاسِ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيعَادَ ﴿٩﴾ إِنَّ الَّذِينَ
كَفَرُوا لَن تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُم مِّنَ اللَّهِ شَيْئًا ۖ وَ
أُولَٰئِكَ هُمْ وَقُودُ النَّارِ ﴿١٠﴾ كَدَأْبِ آلِ فِرْعَوْنَ وَالَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ
كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ ۗ وَاللَّهُ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿١١﴾
قُل لِّلَّذِينَ كَفَرُوا سَتُغْلَبُونَ وَتُحْشَرُونَ إِلَىٰ جَهَنَّمَ ۚ وَبِئْسَ
الْمِهَادُ ﴿١٢﴾ قَدْ كَانَ لَكُمْ آيَةٌ فِي فِئَتَيْنِ الْتَقَتَا ۖ فِئَةٌ تُقَاتِلُ فِي
سَبِيلِ اللَّهِ وَأُخْرَىٰ كَافِرَةٌ يَرَوْنَهُم مِّثْلَيْهِمْ رَأْيَ الْعَيْنِ ۚ وَاللَّهُ يُؤَيِّدُ
بِنَصْرِهِ مَن يَشَاءُ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّأُولِي الْأَبْصَارِ ﴿١٣﴾ زُيِّنَ لِلنَّاسِ
حُبُّ الشَّهَوَاتِ مِنَ النِّسَاءِ وَالْبَنِينَ وَالْقَنَاطِيرِ الْمُقَنطَرَةِ مِنَ الذَّهَبِ
وَالْفِضَّةِ وَالْخَيْلِ الْمُسَوَّمَةِ وَالْأَنْعَامِ وَالْحَرْثِ ۗ ذَٰلِكَ مَتَاعُ الْحَيَاةِ
الدُّنْيَا ۖ وَاللَّهُ عِندَهُ حُسْنُ الْمَآبِ ﴿١٤﴾ قُلْ أَؤُنَبِّئُكُم بِخَيْرٍ مِّن ذَٰلِكُمْ ۚ
لِلَّذِينَ اتَّقَوْا عِندَ رَبِّهِمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا
وَأَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِالْعِبَادِ ﴿١٥﴾ الَّذِينَ
يَقُولُونَ رَبَّنَا إِنَّنَا آمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿١٦﴾

منزل

⁂ व. नबी स. ⁂ व. मंज़िल व. लाज़िम ★ रु. १/९ आ ९

है, जिस ने तुम पर किताब उतारी, जिस की कुछ आयतें मुह्कम हैं (और) वही असल किताब हैं और कुछ मुतशाबेह[1] हैं, तो जिन लोगों के दिल में टेढ़ है, वे मुतशाबेह की पैरवी करते हैं, ताकि फ़ित्ने फैलाएं ▨ और असली मुराद ख़ुदा के सिवा कोई नहीं जानता ▨ और जो लोग इल्म में कामिल होते हैं, वे यह कहते हैं कि हम उन पर ईमान लाये, ये सब हमारे परवरदिगार की तरफ़ से है और नसीहत तो अक़्लमंद ही क़ुबूल करते हैं। (७) ऐ परवरदिगार! जब तूने हमें हिदायत बख़्शी है तो इस के बाद हमारे दिलों में टेढ़ न पैदा कर दीजियो और हमें अपने यहां से नेमत अता फ़रमा, तू तो बड़ा अता फ़रमाने वाला है। (८) ऐ परवरदिगार! तू उस दिन, जिस (के आने) में कुछ भी शक नहीं, सब लोगों को (अपने हुज़ूर में) जमा कर लेगा। बेशक ख़ुदा वायदे के ख़िलाफ़ नहीं करता। (९)★

जो लोग काफ़िर हुए (उस दिन) न तो उन का माल ही ख़ुदा (के अज़ाब) से उन को बचा सकेगा और न उन की औलाद ही (कुछ काम आयेगी) और ये लोग जहन्नम की आग का ईंधन होंगे। (१०) इन का हाल भी फ़िऔनियों और उन से पहले के लोगों का-सा होगा, जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया था, तो ख़ुदा ने उन को उन के गुनाहों की वजह से (अज़ाब में) पकड़ लिया था और ख़ुदा सख़्त अज़ाब करने वाला है। (११) (ऐ पैग़म्बर!) काफ़िरों से कह दो कि तुम (दुनिया में भी) बहुत जल्द मग़लूब हो जाओगे और (आख़िरत में) जहन्नम की तरफ़ हांके जाओगे और वह बुरी जगह है। (१२) तुम्हारे लिए दो गिरोहों में, जो (बद्र की लड़ाई के दिन) आपस में भिड़ गये (ख़ुदा की क़ुदरत की शानदार) निशानी थी। एक गिरोह (मुसलमानों का था, वह) ख़ुदा की राह में लड़ रहा था और दूसरा गिरोह (काफ़िरों का था, वह) उन को अपनी आंखों से अपने-से दो गुना देख रहा था और ख़ुदा अपनी मदद से जिस को चाहता है, मदद देता है, जो बसारत वाले (खुली आंख वाले) हैं उन के लिए इस (वाक़िए) में बड़ा सबक़ है।[2] (१३) लोगों को उन की ख़्वाहिशों की चीज़ें यानी औरतें और बेटे और सोने और चांदी के बड़े-बड़े ढेर और निशान लगे हुए घोड़े और मवेशी और खेती-बाड़ी ज़ीनतदार मालूम होती हैं, (मगर) ये सब दुनिया ही की ज़िन्दगी के सामान हैं और ख़ुदा के पास बहुत अच्छा ठिकाना है। (१४) (ऐ पैग़म्बर! उन से) कहो कि भला मैं तुम को ऐसी चीज़ बताऊं, जो इन चीज़ों से कहीं अच्छी हो, (सुनो), जो लोग परहेज़गार हैं, उन के लिए ख़ुदा के यहां (बहिश्त के) बाग़ हैं, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, उन में वे हमेशा रहेंगे और पाकीज़ा औरतें हैं और (सब से बढ़ कर) ख़ुदा की ख़ुश्नूदी और ख़ुदा (अपने नेक) बन्दों को देख रहा है। (१५) जो ख़ुदा से इल्तिजा करते हैं कि ऐ परवरदिगार! हम ईमान ले आए, सो हम को हमारे गुनाहों को माफ़ फ़रमा और दोज़ख़ के अज़ाब से बचा। (१६) ये वह

---

१. मुह्कम वे आयतें हैं, जिन के एक माने हैं और साफ़ और खुले हुए हैं और मुतशाबेह वे आयतें हैं जिन में कई माने हो सकते हों और मतलब के कई पहलू हों। हक़ीक़त में मुराद तो एक ही माने होते हैं, मगर लफ़्ज़ और उन की तर्कीब कुछ ऐसी होती है कि दूसरे मानों की तरफ़ ज़ेह्न जाने लगता है। ऐसी आयतों के माने अपनी राय से नहीं करने चाहिएं, क्योंकि आयतों के माने अपनी राय से करने पर कड़ा डरावा आया है और लोग इस से गुमराह होते हैं। कुछ लोगों ने कहा, मुतशाबेह वे आयतें हैं, जिन के माने मालूम नहीं हो सकते, जैसे हुरूफ़े मुक़त्तआत, जो सूरतों के शुरू में आते हैं जैसे अलिफ़्-लाम्-मीम् और हा-मीम् वग़ैरह। एक हदीस में आया है कि मुह्कमात पर अमल करो मुतशाबेह पर ईमान रखो।

(शेष ७९ पर)

▨ व. नबी स. ▨ व. मंज़िल व. लाज़िम ★रु. १/९ आ ९

अस्साबिरी-न वस्सादिक़ी-न वल्क़ानिती-न वल्मुन्फ़िक़ी-न वल्मुस्तग़्फ़िरी-न बिल्अस्हार (१७) शहिदल्लाहु अन्नहू ला इला-ह इल्ला हु-व वल्मलाइकतु व उलुल्अिल्मि क़ा-इमम्-बिल्क़िस्ति ط ला इला-ह इल्ला हुवल्-अज़ीज़ुल्-हकीम ط ● (१८) इन्नद्दी-न अिन्दल्लाहिल्-इस्लामु

الصّٰبِرِيْنَ وَالصّٰدِقِيْنَ وَالْقٰنِتِيْنَ وَالْمُنْفِقِيْنَ وَالْمُسْتَغْفِرِيْنَ
بِالْاَسْحَارِ ۝ شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۙ وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَاُولُوا الْعِلْمِ قَآئِمًا
بِالْقِسْطِ ؕ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ اِنَّ الدِّيْنَ عِنْدَ اللّٰهِ
الْاِسْلَامُ ۣ وَمَا اخْتَلَفَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ
الْعِلْمُ بَغْيًاۢ بَيْنَهُمْ ؕ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَاِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝
فَاِنْ حَآجُّوْكَ فَقُلْ اَسْلَمْتُ وَجْهِيَ لِلّٰهِ وَمَنِ اتَّبَعَنِ ؕ وَقُلْ لِّلَّذِيْنَ
اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَالْاُمِّيّٖنَ ءَاَسْلَمْتُمْ ؕ فَاِنْ اَسْلَمُوْا فَقَدِ اهْتَدَوْا ۚ وَاِنْ
تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْفُرُوْنَ
بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ النَّبِيّٖنَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۙ وَّيَقْتُلُوْنَ الَّذِيْنَ يَاْمُرُوْنَ
بِالْقِسْطِ مِنَ النَّاسِ ۙ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ
حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۫ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ۝
اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ يُدْعَوْنَ اِلٰى كِتٰبِ اللّٰهِ
لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ يَتَوَلّٰى فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ وَهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ
قَالُوْا لَنْ تَمَسَّنَا النَّارُ اِلَّآ اَيَّامًا مَّعْدُوْدٰتٍ ۪ وَّغَرَّهُمْ فِيْ دِيْنِهِمْ
مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝ فَكَيْفَ اِذَا جَمَعْنٰهُمْ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيْهِ ۟ وَ
وُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝ قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ
الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَنْ تَشَآءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ ۫ وَتُعِزُّ

व मख़्-त-ल-फ़ल्लज़ी-न ऊतुल्किता-ब इल्ला मिम्बअ्-दि मा जा-अ हुमुल्अिल्मु बग़्यम्बैनहुम् ط व मंय्यक्फ़ुर् बि आयातिल्लाहि फ़ इन्नल्ला-ह सरीअुल्हिसाब (१९) फ़ इन् हाज्जू-क फ़-क़ुल् अस्लम्तु वज्हि-य लिल्लाहि व मनित्त-बअनि ط व क़ुल् लिल्लज़ी-न ऊतुल्किता-ब वल्-उम्मिय्यी-न अ अस्लम्तुम् ط फ़ इन् अस्लमू फ़-क़दिह्तदौ ج व इन् तवल्लौ फ़ इन्नमा अलैकल्बलाग़ु ط वल्लाहु बसीरुम्-बिल्अिबाद ★ (२०) इन्नल्लज़ी-न यक्फ़ुरू-न बि आयातिल्लाहि व यक़्तुलूनन्नबिय्यी-न बिग़ैरि हक़्क़िंव ﻻ- व यक़्तुलूनल्लज़ी-न यअ्मुरू-न बिल्क़िस्ति मिनन्नासि ﻻ फ़ बश्शिर्हुम् बि अज़ाबिन् अलीम (२१) उला-इकल्लज़ी-न हबितत् अअ्-मालुहुम् फ़िद्दुन्या वल्-आख़िरति ز व मा लहुम् मिनन्नासिरी-न (२२) अ-लम् त-र इलल्लज़ी-न ऊतू नसीबम्-मिनल्-किताबि युद्औ-न इला किताबिल्लाहि लि यह्कु-म बैनहुम् सुम्-म य-त-वल्ला फ़रीक़ुम्मिन्हुम् व हुम् मुअ्-रिज़ून (२३) ज़ालि-क बि अन्नहुम् क़ालू लन् त-मस्स-नन्नारु इल्ला अय्यामम्-मअ्-दूदातिंव ص व ग़र्रहुम् फ़ी दीनिहिम् मा कानू यफ़्तरून (२४) फ़-कै-फ़ इज़ा ज-मअ्-नाहुम् लि यौमिल्-लारै-ब फ़ीहि व वुफ़्फ़ियत् - कुल्लु नफ़्सिम्मा क-स-ब-त व हुम् ला युज़्लमून (२५)

● नि. १/२ ★रु. २/१० आ ११

लोग हैं जो (कठिनाइयों में) सब्र करते और सच बोलते और इबादत में लगे रहते और (खुदा की) राह में खर्च करते और सेहर के वक्तों में गुनाहों की माफ़ी मांगा करते हैं। (१७) खुदा तो इस बात की गवाही देता है कि उस के सिवा कोई माबूद नहीं और फ़रिश्ते और इल्म वाले लोग, जो इंसाफ़ पर क़ायम हैं, ये भी (गवाही देते हैं कि) उस ग़ालिब हिक्मत वाले के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं। (१८) ● दीन तो खुदा के नज़दीक इस्लाम है और अह्ले किताब ने जो (इस दीन से) इख़्तिलाफ़ किया, तो इल्म हासिल होने के बाद आपस की ज़िद से किया और जो शख़्स खुदा की आयतों को न माने, तो खुदा जल्द हिसाब लेने वाला और सज़ा देने वाला है। (१९) ऐ पैग़म्बर! अगर ये लोग तुम से झगड़ने लगें, तो कहना कि मैं और मेरी पैरवी करने वाले तो खुदा के फ़रमां-बरदार हो चुके और अह्ले किताब और अन-पढ़ लोगों से कहो कि क्या तुम भी (खुदा के फ़रमांबरदार बनते और) इस्लाम लाते हो? अगर ये लोग इस्लाम ले आएं तो बेशक हिदायत पा लें और अगर (तुम्हारा कहा) न मानें, तो तुम्हारा काम सिर्फ़ खुदा का पैग़ाम पहुंचा देना है। और खुदा (अपने) बन्दों को देख रहा है। (२०) ★

जो लोग खुदा की आयतों को नहीं मानते और नबियों को ना-हक़ क़त्ल करते रहे हैं और जो इंसाफ़ करने का हुक्म देते हैं, उन्हें भी मार डालते हैं उन को दुख देने वाले अज़ाब की खुशख़बरी सुना दो। (२१) ये ऐसे लोग हैं जिन के आमाल दुनिया और आख़िरत दोनों में बर्बाद हैं और उन का कोई मददगार नहीं (होगा)। (२२) भला तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जिन को (खुदा की) किताब (यानी तौरात) दी गई और वे (उस) अल्लाह की किताब की तरफ़ बुलाये जाते हैं, ताकि वह (उन के झगड़ों का) उन में फ़ैसला कर दे तो एक फ़रीक़ उन में से मुंह बना कर फेर लेता है। (२३) यह इस लिए कि ये इस बात के क़ायल हैं कि (दोज़ख की) आग हमें कुछ दिन के सिवा छू ही न सकेगी और जो कुछ ये दीन के बारे में बुहतान बांधते रहे हैं, उस ने उन को धोखे में डाल रखा है। (२४) तो उस वक़्त क्या हाल होगा, जब हम उन को जमा करेंगे, (यानी) उस दिन, जिस (के आने) में कुछ भी शक नहीं और हर नफ़्स अपने आमाल का पूरा-पूरा बदला पाएगा और उन पर ज़ुल्म नहीं किया जाएगा। (२५) कहो कि ऐ खुदा! (ऐ) बादशाही के मालिक! तू जिस को चाहे बादशाही बख़्शे और जिससे चाहे, बादशाही छीन ले और जिस को चाहे इज़्ज़त दे और जिसे चाहे ज़लील करे। हर तरह की भलाई तेरे ही हाथ है। और बेशक तू हर चीज़

(७७ का शेष)

२. इस आयत में बद्र की लड़ाई की शक्ल बयान फ़रमायी है। बद्र एक जगह का नाम है, जो मक्के और मदीने के दर्मियान है। इस लड़ाई में मुसलमानों की तायदाद तीन सौ तेरह थी और काफ़िर उन से तिगुने यानी एक हज़ार के क़रीब थे। अल्लाह तआला ने काफ़िरों के दिल में दहशत डालने के लिए उन की आंखों में यह दिखाया कि मुसलमान उन से दोगुने यानी दो हज़ार के क़रीब हैं या यह कि काफ़िरों की तायदाद मुसलमानों की नज़रों में मुसलमानों से दोगुनी दिखायी दी यानी एक हज़ार के छः सौ छब्बीस ताकि मुसलमान काफ़िरों को अपनी दोगुनी तायदाद से ज़्यादा देख कर डर न जाएं और भाग न खड़े हों और दोगुनी तायदाद की शक्ल में भागना जायज़ नहीं। चुनांचे फ़रमाया है कि एक सौ क़दमों के मज़बूत मुसलमान दो सौ काफ़िरों पर ग़ालिब होंगे। मगर सही यही है कि काफ़िरों ने मुसलमानों को अपने से दोगुना देखा, न यह कि मुसलमानों ने काफ़िरों को अपने से दोगुना देखा। बहरहाल इस वाक़िए में खुदा की क़ुदरत की निशानी है कि मुसलमान जो तीन सौ तेरह थे, वह ग़ालिब रहे और काफ़िर जो हज़ार के क़रीब थे, वे हार गये।

● नि. १/२ ★ रु. २/१० आ ११

क़ुलिल्लाहुम-म मालिकल्मुल्कि तुअ्तिल्मुल्-क मन् तशा-उ व तन्ज़िअुल्मुल्-क मिम्मन् तशा-उ ۙ व तुअ़िज़्ज़ु मन् तशा-उ व तुज़िल्लु मन् तशा-उ ط बि यदिकल्ख़ैरु ط इन्न-क अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (२६) तूलिजुल्लै-ल फ़िन्नहारि व तूलिजुन्नहा-र फ़िल्लैलि ۙ व तुख़रिजुल्-हय्-य मिनल्मय्यिति व तुख़्रिजुल् - मय्यि - त मिनल्हय्यि ۙ व तर्ज़ुक़ु मन् तशा-उ बिग़ैरि हिसाब (२७) ला यत्तख़िज़िल् - मुअ्मिनूनल् - काफ़िरी - न औलिया - अ मिन्दूनिल् - मुअ्मिनीन ج व मंय्यफ़्अ़ल् ज़ालि-क फ़-लै-स मिनल्लाहि फ़ी शैइन् इल्ला अन् तत्तक़ू मिन्हुम् तुक़ातन् ط व युहज़्ज़िरुकुमुल्लाहु नफ़्सहू ط व इलल्लाहिल्मसीर (२८) क़ुल् इन् तुख़्फ़ू मा फ़ी सुदूरिकुम् औ तुब्दूहु यअ्लम्हुल्लाहु ط व यअ्-लमु मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि ط वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (२९) यौ-म तजिदु कुल्लु नफ़्सिम्मा अ़मिलत् मिन् ख़ैरिम् - मुह्ज़रंव ج व मा अ़मिलत् मिन्सू - इन् ج त - वद्दु लौ अन् - न बैनहा व बैनहू अ-म - दम् - बअ़ीदन् ط व युहज़्ज़िरुकुमुल्लाहु नफ़्सहू ط वल्लाहु रऊफ़ुम् - बिल्अ़िबाद ★ (३०) क़ुल् इन् कुन्तुम् तुहिब्बूनल्ला - ह फ़त्तबिअ़ूनी युह्बिब्कुमुल्लाहु व यग़्फ़िर्लकुम् ज़ुनूबकुम् ط वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम (३१) क़ुल् अतीअ़ुल्ला-ह वर्रसू-ल ج फ़ इन् तवल्लौ फ़ इन्नल्ला-ह ला युहिब्बुल्काफ़िरीन (३२) इन्नल्लाहस्तफ़ा आद-म व नूहंव्-व आ-ल इब्राही-म व आ-ल अ़िम्रा-न अ़-लल्-आ़लमीन ۙ (३३) ज़ुर्रिय्यतम्बअ्-ज़ुहा मिम्बअ्-ज़िन् ط वल्लाहु समीअ़ुन् अ़लीम ج (३४) इज़् क़ालतिम-र-अतु अ़िम्रान रब्बि इन्नी नज़र्तु ल-क मा फ़ी बत्नी मुहर्ररन् फ़-त-क़ब्बल् मिन्नी ج इन्न-क अन्तस्-समीअ़ुल्-अ़लीम (३५)

مَنْ تَشَاۤءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَاۤءُ ۭ بِيَدِكَ الْخَيْرُ ۭ اِنَّكَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ
قَدِيْرٌ ۝ تُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَتُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ ۡ وَتُخْرِجُ
الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ ۡ وَتَرْزُقُ مَنْ تَشَاۤءُ
بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝ لَا يَتَّخِذِ الْمُؤْمِنُوْنَ الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَاۤءَ مِنْ
دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَلَيْسَ مِنَ اللّٰهِ فِيْ
شَيْءٍ اِلَّآ اَنْ تَتَّقُوْا مِنْھُمْ تُقٰىةً ۭ وَيُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهٗ ۭ
وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ۝ قُلْ اِنْ تُخْفُوْا مَا فِيْ صُدُوْرِكُمْ اَوْ تُبْدُوْهُ
يَعْلَمْهُ اللّٰهُ ۭ وَيَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ وَاللّٰهُ عَلٰي
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ يَوْمَ تَجِدُ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ مِنْ خَيْرٍ
مُّحْضَرًا ۚ وَّمَا عَمِلَتْ مِنْ سُوْۗءٍ ۚ تَوَدُّ لَوْ اَنَّ بَيْنَهَا وَبَيْنَهٗٓ
اَمَدًۢا بَعِيْدًا ۭ وَيُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهٗ ۭ وَاللّٰهُ رَءُوْفٌۢ بِالْعِبَادِ ۝ قُلْ
اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ۭ
وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ قُلْ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّ
اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِيْنَ ۝ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰٓي اٰدَمَ وَنُوْحًا وَّاٰلَ
اِبْرٰهِيْمَ وَاٰلَ عِمْرٰنَ عَلَي الْعٰلَمِيْنَ ۝ ذُرِّيَّةًۢ بَعْضُهَا مِنْۢ بَعْضٍ ۭ
وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝ اِذْ قَالَتِ امْرَاَتُ عِمْرٰنَ رَبِّ اِنِّىْ نَذَرْتُ
لَكَ مَا فِيْ بَطْنِيْ مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلْ مِنِّىْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝

:मु. अ़ि मु ता ख़ ४ ★रु. ३/११ आ १०

पर क़ादिर है। (२६) तू ही रात को दिन में दाख़िल करता और तू ही दिन को रात में दाख़िल करता है। तू ही बे-जान से जानदार पैदा करता और तू ही जानदार से बे-जान पैदा करता है। और तू ही जिस को चाहता है, बे-हिसाब रोज़ी देता है। (२७) मोमिनों को चाहिए कि मोमिनों के सिवा काफ़िरों को दोस्त न बनाएं और जो ऐसा करेगा, उस से ख़ुदा का कुछ (अह्द) नहीं। हां, अगर इस तरीक़े से तुम उन (की बुराई) से बचाव की शक्ल निकालो (तो हरज नहीं) और ख़ुदा तुम को अपने (ग़ज़ब) से डराता है और ख़ुदा ही की तरफ़ (तुम को) लौट कर जाना है। (२८) (ऐ पैग़म्बर! लोगों से) कह दो कि कोई बात तुम अपने दिलों में छिपाओ या उसे ज़ाहिर करो, ख़ुदा उस को जानता है और जो कुछ आसमानों में और जो कुछ ज़मीन में है, उस को सब की ख़बर है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है। (२९) जिस दिन हर शख़्स अपने आमाल की नेकी को मौजूद पा लेगा और उन की बुराई को भी (देख लेगा), तो आरज़ू करेगा कि ऐ काश! उस में और इस बुराई में दूर का फ़ासला हो जाता और ख़ुदा तुम को अपने (ग़ज़ब) से डराता है और ख़ुदा अपने बन्दों पर निहायत मेहरबान है। (३०) ★

(ऐ पैग़म्बर! लोगों से) कह दो कि अगर तुम ख़ुदा को दोस्त रखते हो, तो मेरी पैरवी करो, ख़ुदा भी तुम्हें दोस्त रखेगा और तुम्हारे गुनाह माफ़ कर देगा और ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है। (३१) कह दो कि ख़ुदा और उसके रसूल का हुक्म मानो। अगर न मानें तो ख़ुदा भी काफ़िरों को दोस्त नहीं रखता। (३२) ख़ुदा ने आदम और नूह और इब्राहीम के ख़ानदान और इम्रान के ख़ानदान को तमाम दुनिया के लोगों में चुन लिया था।[1] (३३) इनमें कुछ-कुछ की औलाद थे।[2] और ख़ुदा सुनने वाला और जानने वाला है। (३४) (वह वक़्त याद करने के लायक़ है) जब इम्रान की बीवी ने कहा कि ऐ परवरदिगार! जो (बच्चा) मेरे पेट में है, मैं उस को तेरी नज़्र करती हूं। उसे दुनिया के कामों से आज़ाद रखूंगी। तू उसे मेरी तरफ़ से क़ुबूल फ़रमा। तू तो सुनने वाला (और) जानने वाला है। (३५) जब उनके यहां बच्चा पैदा हुआ, और जो कुछ

---

१. इम्रान से मुराद मरयम अलैहिस्सलाम के वालिद हैं, क्योंकि इस के बाद उन्हीं के क़िस्से का ज़िक्र किया गया है। कुछ कहते हैं कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के वालिद मुराद हैं कि उन का नाम भी इम्रान था, मगर पहला क़ौल तर्जीह के क़ाबिल है इस लिए कि इस के लिए क़रीना भी है।

२. जैसे इम्रान का ख़ानदान इब्राहीम अलै० की औलाद था और इब्राहीम का ख़ानदान नूह की औलाद था और नूह अलै० हज़रत आदम अलै० की औलाद थे।

फ़-लम्मा व-ज़-अत्हा क़ालत् रब्बि इन्नी वज़अ्-तुहा उन्सा वल्लाहु अअ्-लमु बिमा व-ज़-अत् व लैसज़्-ज़-करु कल्उन्सा व इन्नी सम्मैतुहा मर्य-म व इन्नी उओज़ुहा बि-क व ज़ुर्रिय्यतहा मिनश्शैतानिर्रजीम (३६) फ़ त-क़ब्ब-ल लहा रब्बुहा बि क़बूलिन् ह़-सनिंव-व अम्ब-तहा नबातन् ह़-स-नंव् व कफ़्फ़लहा ज़करिय्या कुल्लमा द-ख़-ल अलैहा ज़-करिय्यल्-मिह़्रा-ब व-ज-द अिन्दहा रिज़्क़न् क़ा-ल या मर्-यमु अन्ना लकि हाज़ा क़ालत् हु-व मिन् अिन्दिल्लाहि इन्नल्ला-ह यर्ज़ुक़ु मंय्यशा-उ बिग़ैरि हिसाब (३७) हुनालि-क दआ ज़-करिय्या रब्बहू क़ा-ल रब्बि हब्ली मिल्लदुन-क ज़ुर्रिय्यतन् तय्यि-ब-तन् इन्न-क समीअुद्दुआ-इ (३८) फ़-नादत्हुल्-मला-इकतु व हु-व क़ा-इमुंय्युसल्ली फ़िल्-मिह़्राबि अन्नल्ला-ह युबश्शिरु-क बियह़्या मुसद्दिक़म्-बिकलिमतिम्-मिनल्लाहि व सय्यिदंव-व हसूरंव-व नबिय्यम्-मिनस्सालिह़ीन (३९) क़ा-ल रब्बि अन्ना यकूनु ली ग़ुलामुंव्-व क़द् ब-ल-ग़नियल्कि-बरु वम्र-अती आक़िरुन् क़ा-ल कज़ालिकल्लाहु यफ़्अलु मा यशा-उ (४०) क़ा-ल रब्बिज्अल्ली आ-य-तन् क़ा-ल आयतु-क अल्ला तुकल्लिमन्ना-स सला-स-त अय्यामिन् इल्ला रम्ज़न् वज़्कुर्रब्ब-क कसीरंव्-व सब्बिह़् बिल्अशिय्यि वल्इब्कार ★ (४१) व इज़् क़ालतिल्-मला-इकतु या मर्-यमु इन्नल्लाहस्तफ़ाकि व तह्ह-रकि वस्तफ़ाकि अला निसा-इल-आलमीन (४२) या मर्यमुक़्नुती लि रब्बिकि वस्जुदी वर्कअी मअर्राकिअीन (४३) ज़ालि-क मिन् अम्बा-इल्ग़ैबि नूह़ीहि इलैक व मा कुन्-त लदैहिम् इज़ युल्क़ू-न अक़्लामहुम् अय्युहुम् यक्फ़ुलु मर्यम व मा कुन्-त लदैहिम् इज़् यख़्तसिमून (४४)

تلك الرسل ٣ ٣٣ آل عمران ٣

فلما وضعتها قالت رب إني وضعتها أنثى والله أعلم بما
وضعت وليس الذكر كالأنثى وإني سميتها مريم وإني
أعيذها بك وذريتها من الشيطن الرجيم ۝ فتقبلها ربها
بقبول حسن وأنبتها نباتا حسنا وكفلها زكريا كلما
دخل عليها زكريا المحراب وجد عندها رزقا قال يمريم أنى
لك هذا قالت هو من عند الله إن الله يرزق من يشاء بغير
حساب ۝ هنالك دعا زكريا ربه قال رب هب لي من لدنك ذرية
طيبة إنك سميع الدعاء ۝ فنادته الملئكة وهو قائم يصلي في
المحراب أن الله يبشرك بيحيى مصدقا بكلمة من الله و
سيدا وحصورا ونبيا من الصلحين ۝ قال رب أنى يكون
لي غلم وقد بلغني الكبر وامرأتي عاقر قال كذلك الله
يفعل ما يشاء ۝ قال رب اجعل لي ءاية قال ءايتك ألا تكلم
الناس ثلثة أيام إلا رمزا واذكر ربك كثيرا وسبح بالعشي
والإبكر ۝ وإذ قالت الملئكة يمريم إن الله اصطفك وطهرك
واصطفك على نساء العلمين ۝ يمريم اقنتي لربك و
اسجدي واركعي مع الركعين ۝ ذلك من أنباء الغيب نوحيه
إليك وما كنت لديهم إذ يلقون أقلمهم أيهم يكفل

★० /१२ आ ११

उनके यहां पैदा हुआ था, ख़ुदा को ख़ूब मालूम था, तो वह कहने लगीं कि परवरदिगार ! मेरे तो लड़की हुई है और (नज़्र के लिए) लड़का (मुनासिब था कि वह) लड़की की तरह (ना-तवां) नहीं होता।[1] और मैंने उसका नाम मरयम रखा है और मैं उसको और उसकी औलाद को मर्दूद शैतान से तेरी पनाह में देती हूं। (३६) तो परवरदिगार ने उसको पसंदीदगी के साथ क़ुबूल फ़रमाया और उसे अच्छी तरह परवरिश किया और ज़करीया को उसका मुतकफ़्फ़िल (देख-भाल करने वाला) बनाया। ज़करीया जब कभी इबादतगाह में उसके पास जाते, तो उसके पास खाना पाते। (यह सूरत देख कर एक दिन मरयम से) पूछने लगे कि मरयम ! यह खाना तुम्हारे पास कहां से आता है ? वह बोलीं कि ख़ुदा के यहां से (आता है)। बेशक ख़ुदा जिसको चाहता है, बे-शुमार रोज़ी देता है। (३७) उस वक़्त ज़करीया ने अपने परवरदिगार से दुआ की (और) कहा कि परवरदिगार ! मुझे अपनी जनाब से नेक औलाद अता फ़रमा। तू बेशक दुआ सुनने (और क़ुबूल करने) वाला है। (३८) वह अभी इबादतगाह में खड़े नमाज़ ही पढ़ रहे थे कि फ़रिश्तों ने आवाज़ दी कि (ज़करीया !) ख़ुदा तुम्हें यह्या की ख़ुशख़बरी देता है, जो ख़ुदा के फ़ैज़ (यानी ईसा) की तस्दीक़ करेंगे, और सरदार होंगे और औरतों से चाव न रखने वाले और (ख़ुदा के) पैग़म्बर (यानी) नेक लोगों में होंगे। (३९) ज़करीया ने कहा, ऐ परवरदिगार ! मेरे यहां लड़का कैसे पैदा होगा कि मैं तो बूढ़ा हो चुका हूं और मेरी बीवी बांझ है। ख़ुदा ने फ़रमाया, इसी तरह, ख़ुदा जो चाहता है करता है। (४०) ज़करीया ने कहा कि परवरदिगार ! (मेरे लिए) कोई निशानी मुक़र्रर फ़रमा। ख़ुदा ने फ़रमाया निशानी यह है कि तुम लोगों से तीन दिन इशारे के सिवा बात न कर सकोगे। तो (उन दिनों में) अपने परवरदिगार की ज़्यादा से ज़्यादा याद और सुबह व शाम उसकी तस्बीह करना। (४१)★

और जब फ़रिश्तों ने (मरयम से) कहा कि मरयम ! ख़ुदा ने तुमको चुना है और पाक बनाया है और दुनिया की औरतों में चुन लिया है। (४२) मरयम ! अपने परवरदिगार की फ़रमांबरदारी करना और सज्दा करना और रुकूअ करने वालों के साथ रुकूअ करना। (४३) (ऐ मुहम्मद !) ये बातें ग़ैब की ख़बरों में से हैं, जो हम तुम्हारे पास भेजते हैं और जब वे लोग अपने क़लम (क़ुरआ के तौर पर) डाल रहे थे कि मरयम का मुतकफ़्फ़िल कौन बने, तो तुम उनके पास नहीं थे और न उस वक़्त ही उनके पास थे, जब वे आपस में झगड़ रहे थे। (४४) (वह वक़्त

---

१. हज़रत मरयम अलै० की वालिदा ने यह समझा था कि लड़का पैदा होगा और इसी लिए नज़्र मानी थी कि मैं उस को दुनिया के कामों से आज़ाद कर के ख़ुदा की इबादत और बैतुलमक़्दिस की ख़िदमत के लिए फ़ारिग़ रखूंगी, मगर उन को क्या मालूम था कि लड़का होगा या लड़की। जब लड़की हुई तो ख़्याल किया कि नज़्र तो पूरी न हुई, क्योंकि दस्तूर था कि लड़का नज़्र किया जाए, तो कहने लगीं कि परवरदिगार ! मेरे तो लड़की हुई है और इबादत की ताक़त और मस्जिद की ख़िदमत के लिहाज़ से लड़की लड़के जैसी नहीं होती है। मगर ख़ुदा ने उस लड़की ही को क़ुबूल फ़रमाया। वह निहायत मुस्तैदी से ख़ुदा की इबादत किया करतीं और दीन की बातें सीखतीं। ख़ुदा ने उन को दुनिया की औरतों में चुन लिया और उन के पेट से एक ऊंचे क़िस्म के पैग़म्बर यानी ईसा अलैहिस्सलाम भी पैदा किए।

★रु० ४/१२ आ ११

इज़् क़ालतिल्-मला - इकतु या मर्-यमु इन्नल्ला - ह युबश्शिरुकि बिकलिमतिम्-मिन्हु- ق -स्मुहुल्मसीहु ईसब्नु मर्य - म वजीहन् फ़िद्दुन्या वल्आख़िरति व मिनल्मुक़र्रबीन ۙ (४५) व युकल्लिमुन्ना-स फ़िल्मह्दि व कह्लंव-व मिनस्सालिहीन (४६) क़ालत् रब्बि अन्ना यकूनु ली व-लदुंव्-व लम् यम्सस्नी ब-शरुन् ط क़ा-ल कज़ालिकिल्लाहु यख़्लुक़ु मा यशा - उ ط इज़ा क़ज़ा अम्रन् फ़ इन्नमा यकूलु लहू कुन् फ़ यकून (४७) व युअल्लिमुहुल्-किता-ब वल्हिक्म-त वत्तौरा-त वल्इन्जी-ल ج (४८) व रसूलन् इला बनी इस्राई-ल ۙ अन्नी क़द् जिअ्तुकुम् बि आयतिम्-मिर्रब्बिकुम् لا अन्नी अख़्लुक़ु लकुम् मिनत्तीनि क-हैअतित्तैरि फ़ अन्फ़ुख़ु फ़ीहि फ़ यकूनु तैरम्-बिइज़्निल्लाहि ج व उब्रिउल्-अक्म-ह वल्अब-र-स व उह्यिल्मौता बि इज़्निल्लाहि ج व उनब्बिउकुम् बिमा तअ्कुलू-न व मा तद्दख़िरू-न لا फ़ी बुयूतिकुम् ط इन्-न फ़ी ज़ालि-क ल - आयतल्लकुम् इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन ج (४९) व मुसद्दिक़ल्लिमा बै-न य-दय-य मिनत्तौराति व लि उहिल्-ल लकुम् बअ् - ज़ल्लज़ी हुर्रि - म अलैकुम् व जिअ्तुकुम् बि आयतिम् - मिर्रब्बिकुम् फ़त्तक़ुल्ला-ह व अतीअून (५०) इन्नल्ला-ह रब्बी व रब्बुकुम् फ़अ्बुदूहु ط हाज़ा सिरातुम् - मुस्तक़ीम (५१) फ़ लम्मा अ-हस्-स ईसा मिन्हुमुल्कुफ़्-र क़ा - ल मन् अन्सारी इलल्लाहि ط क़ालल्हवारिय्यू - न नह्नु अन्सारुल्लाहि आमन्ना बिल्लाहि ج वश्हद् बि अन्ना मुस्लिमून (५२) रब्बना आमन्ना बिमा अन्ज़ल्-त वत्तबअ्-नर्रसू-ल फ़क्तुब्ना म-अश्शाहिदीन (५३)

مريم وما كنت لديهم اذ يختصمون ۞ اذ قالت الملئكة
يمريم ان الله يبشرك بكلمة منه اسمه المسيح عيسى
ابن مريم وجيها في الدنيا والاخرة ومن المقربين ۞ ويكلم
الناس في المهد وكهلا ومن الصلحين ۞ قالت رب انى
يكون لي ولد ولم يمسسني بشر قال كذلك الله يخلق ما
يشاء اذا قضى امرا فانما يقول له كن فيكون ۞ ويعلمه
الكتب والحكمة والتورىة والانجيل ۞ ورسولا الى بني
اسراءيل اني قد جئتكم باية من ربكم اني اخلق لكم
من الطين كهيئة الطير فانفخ فيه فيكون طيرا باذن الله
وابرئ الاكمه والابرص واحي الموتى باذن الله وانبئكم
بما تاكلون وما تدخرون في بيوتكم ان في ذلك لاية
لكم ان كنتم مؤمنين ۞ ومصدقا لما بين يدي من التورىة
ولاحل لكم بعض الذي حرم عليكم وجئتكم باية من
ربكم فاتقوا الله واطيعون ۞ ان الله ربي وربكم فاعبدوه
هذا صراط مستقيم ۞ فلما احس عيسى منهم الكفر قال
من انصاري الى الله قال الحواريون نحن انصار الله
امنا بالله واشهد بانا مسلمون ۞ ربنا امنا بما انزلت

भी याद करने के लायक है) जब फ़रिश्तों ने (मरयम से कहा) कि मरयम ! ख़ुदा तुमको अपनी तरफ़ से एक फ़ैज की ख़ुशख़बरी देता है, जिस का नाम मसीह (और मशहूर) ईसा बिन मरयम होगा (और जो) दुनिया और आख़िरत में बा-आबरू और (ख़ुदा के) ख़ासों में से होगा। (४५) और मां की गोद में और बड़ी उम्र का होकर (दोनों) हालतों में लोगों से (एक ही तरह) बातें करेगा और नेकों में होगा। (४६) मरयम ने कहा, परवरदिगार ! मेरे यहां बच्चा कैसे होगा कि किसी इंसान ने मुझे हाथ तक तो लगाया नहीं। फ़रमाया कि ख़ुदा इसी तरह जो चाहता है, पैदा करता है। जब वह कोई काम करना चाहता है, तो इर्शाद फ़रमा देता है कि हो जा, तो वह हो जाता है। (४७) और वह उन्हें लिखना (-पढ़ना) और दानाई और तौरात और इंजील-सिखाएगा। (४८) और (ईसा) बनी इस्राईल की तरफ़ पैग़म्बर (हो कर जाएंगे और कहेंगे) कि मैं तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से निशानी लेकर आया हूं, वह यह कि तुम्हारे सामने मिट्टी की मूर्ति, परिंदे की शक्ल की बनाता हूं, फिर उसमें फूंक मारता हूं तो वह ख़ुदा के हुक्म से (सच मुच) जानवर हो जाता है। और अब्रस (सफ़ेद दाग़ी) को तंदुरुस्त कर देता हूं और ख़ुदा के हुक्म से मुर्दे में जान डाल देता हूं। और जो कुछ तुम खा कर आते हो और जो कुछ अपने घरों में जमा कर रखते हो, सब तुम को बता देता हूं। अगर तुम ईमान वाले हो, तो इन बातों में तुम्हारे लिए (ख़ुदा की क़ुदरत की) निशानी है। (४९) और मुझ से पहले जो तौरात (नाज़िल हुई) थी, उसकी तस्दीक़ भी करता हूं और (मैं) इसलिए भी (आया हूं) कि कुछ चीज़ें जो तुम पर हराम थीं, उनको तुम्हारे लिए हलाल कर दूं और मैं तो तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से निशानी लेकर आया हूं, तो ख़ुदा से डरो और मेरा कहा मानो। (५०) कुछ शक नहीं कि ख़ुदा ही मेरा और तुम्हारा परवरदिगार है तो उसी की इबादत करो। यही सीधा रास्ता है। (५१) जब ईसा (अलैहिस्सलाम) ने उनकी तरफ़ से ना-फ़रमानी (और क़त्ल की नीयत) देखी, तो कहने लगे कि कोई है जो ख़ुदा का तरफ़दार और मेरा मददगार हो। हवारी बोले कि हम ख़ुदा के (तरफ़दार और आपके) मददगार हैं। हम ख़ुदा पर ईमान लाये और आप गवाह रहें कि हम फ़रमांबरदार हैं। (५२) ऐ परवरदिगार ! जो (किताब) तूने नाज़िल फ़रमायी है, हम उस पर ईमान ले आये और (तेरे) पैग़म्बर के ताबेदार हो चुके, तो हमको मानने वालों में लिख रख। (५३) और वे

इज़् व म-करू व म-क-रल्लाहु ط वल्लाहु ख़ैरुलमाकिरीन ★ ● (५४) इज़्
क़ालल्लाहु या ओसा इन्नी मु-त-वफ़्फ़ी-क व राफ़िअु-क इलय्-य व
मुतह्हिरु-क मिनल्लज़ी-न क-फ़रू व जाअिलुल्लज़ीनत्तबअू-क फ़ौक़ल्लज़ी-न क-फ़रू
इला यौमिल्क़ियामति ج सुम्-म इलय्-य मर्जिअुकुम् फ़ अह्कुमु बैनकुम्
फ़ी मा कुन्तुम् फ़ीहि तख़्तलिफ़ून (५५)
फ़ अम्मल्लज़ी-न क-फ़रू फ़ उअ़ज़्ज़िबुहुम्
अ़ज़ाबन् शदीदन् फ़िद्दुन्या वल्आख़िरति ز
व मा लहुम् मिन्नासिरीन (५६) व
अम्मल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति
फ़ युवफ़्फ़ीहिम् उजूरहुम् ط वल्लाहु ला
युहिब्बुज़्ज़ालिमीन (५७) ज़ालि-क नत्लूहु
अ़लै-क मिनल्-आयाति वज़्ज़िक्रिल्-हकीम
(५८) इन्-न म-स-ल ओसा अिन्दल्लाहि
क म-सलि आद-म ط ख़-ल-क़हू मिन् तुराबिन्
सुम्-म क़ा-ल लहू कुन् फ़-यकून (५९)
अल्हक़्क़ु मिर्रब्बि-क फ़ ला तकुम्मिनल्-
मुम्तरीन (६०) फ़ मन् हा-ज्ज-क फ़ीहि मिम्बअ़्-दि मा जा-अ-क मिनल्अिल्मि
फ़ क़ुल् तआ़लौ नद्अु अब्ना-अना व अब्ना-अकुम् व निसा-अना व
निसा-अकुम् व अन्फ़ु-सना व अन्फ़ु-सकुम् قف सुम् - म नब्तहिल् फ़ नज्अ़ल्
लअ़्-न-तल्लाहि अ़-लल्काज़िबीन (६१) इन्-न हाज़ा ल हुवल् - क़-ससुल् - हक़्क़ु
व मा मिन् इलाहिन् इल्लल्लाहु ط व इन्नल्ला-ह ल-हुवल् - अ़ज़ीज़ुल् -
हकीम (६२) फ़ इन् तवल्लौ फ़ इन्नल्ला-ह अ़लीमुम्-बिल्मुफ़्सिदीन
★(६३) क़ुल् या अह्लल्किताबि तआ़लौ इला कलिमतिन्
सवा-इम् - बैनना व बैनकुम् अल्ला नअ़् - बु-द इल्लल्ला - ह व ला
नुश्रि - क बिही शैअंव् - व ला यत्तख़ि-ज़ बअ़् - ज़ुना बअ़्-ज़न् अर्बाबम्मिन्
दूनिल्लाहि ط फ़ इन् तवल्लौ फ़ क़ूलुश्हदू बिअन्ना मुस्लिमून (६४)

تلك الرسل ٣ — ٣٥ — آل عمران ٣

وَاتَّبَعْنَا الرَّسُولَ فَاكْتُبْنَا مَعَ الشّٰهِدِينَ ۝ وَمَكَرُوا وَمَكَرَ اللّٰهُ
وَاللّٰهُ خَيْرُ الْمٰكِرِينَ ۝ إِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيسٰى إِنِّي مُتَوَفِّيكَ وَ
رَافِعُكَ إِلَيَّ وَمُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا وَجَاعِلُ الَّذِينَ
اتَّبَعُوكَ فَوْقَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ثُمَّ إِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ
فَأَحْكُمُ بَيْنَكُمْ فِيمَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ۝ فَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا
فَأُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمَا لَهُمْ مِنْ
نّٰصِرِينَ ۝ وَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُوَفِّيهِمْ أُجُورَهُمْ
وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِينَ ۝ ذٰلِكَ نَتْلُوهُ عَلَيْكَ مِنَ الْآيٰتِ وَالذِّكْرِ
الْحَكِيمِ ۝ إِنَّ مَثَلَ عِيسٰى عِنْدَ اللّٰهِ كَمَثَلِ آدَمَ خَلَقَهُ مِنْ تُرَابٍ
ثُمَّ قَالَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ۝ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُنْ مِنَ
الْمُمْتَرِينَ ۝ فَمَنْ حَاجَّكَ فِيهِ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ
فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ أَبْنَاءَنَا وَأَبْنَاءَكُمْ وَنِسَاءَنَا وَنِسَاءَكُمْ وَأَنْفُسَنَا وَ
أَنْفُسَكُمْ ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَلْ لَعْنَتَ اللّٰهِ عَلَى الْكٰذِبِينَ ۝ إِنَّ
هٰذَا لَهُوَ الْقَصَصُ الْحَقُّ وَمَا مِنْ إِلٰهٍ إِلَّا اللّٰهُ وَإِنَّ اللّٰهَ
لَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّ اللّٰهَ عَلِيمٌ بِالْمُفْسِدِينَ ۝
قُلْ يٰأَهْلَ الْكِتٰبِ تَعَالَوْا إِلٰى كَلِمَةٍ سَوَاءٍ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ أَلَّا نَعْبُدَ
إِلَّا اللّٰهَ وَلَا نُشْرِكَ بِهِ شَيْئًا وَلَا يَتَّخِذَ بَعْضُنَا بَعْضًا أَرْبَابًا مِنْ

(यानी यहूदी, ईसा के क़त्ल के बारे में एक) चाल चले, और ख़ुदा भी (ईसा को बचाने के लिए) चाल चला और ख़ुदा ख़ूब चाल चलने वाला है। (५४)★●

उस वक़्त ख़ुदा ने फ़रमाया कि ईसा! मैं तुम्हारी दुनिया में रहने की मुद्दत पूरी करके तुम को अपनी तरफ़ उठा लूंगा और तुम्हें काफ़िरों (की सोहबत) से पाक कर दूंगा और जो लोग तुम्हारी पैरवी करेंगे, उनको काफ़िरों पर क़ियामत तक फ़ाइक़ (यानी बढ़ कर और ग़ालिब) रखूंगा, फिर तुम सब मेरे पास लौट कर आओगे, तो जिन बातों में तुम इख़्तिलाफ़ करते थे, उस दिन तुम में उनका फ़ैसला कर दूंगा। (५५) यानी जो काफ़िर हुए, उनको दुनिया और आख़िरत (दोनों में) सख़्त अज़ाब दूंगा और उनका कोई मददगार न होगा। (५६) और जो ईमान लाये और नेक अमल करते रहे, उन को ख़ुदा पूरा-पूरा बदला देगा और ख़ुदा ज़ालिमों को दोस्त नहीं रखता। (५७) (ऐ मुहम्मद!) यह हम तुमको (ख़ुदा की) आयतें और हिक्मत भरी नसीहतें पढ़-पढ़ कर सुनाते हैं। (५८) ईसा का हाल ख़ुदा के नज़दीक आदम का-सा है कि उसने (पहले) मिट्टी से उनका क़ालिब बनाया, फिर फ़रमाया कि (इंसान) हो जा, तो वह (इंसान) हो गये। (५९) (यह बात) तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से हक़ है, सो तुम हरगिज़ शक करने वालों में न होना। (६०) फिर अगर ये लोग ईसा के बारे में तुम से झगड़ा करें और तुमको हक़ीक़त तो मालूम ही हो चली है, तो उनसे कहना कि आओ, हम अपने बेटों और औरतों को बुलाएं, तुम अपने बेटों और औरतों को बुलाओ और हम ख़ुद भी आएं और तुम ख़ुद भी आओ फिर दोनों फ़रीक़ (ख़ुदा से) दुआ व इल्तिजा करें और झूठों, पर ख़ुदा की लानत भेजें। (६१) ये तमाम बयानात सही हैं और अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और बेशक ख़ुदा ग़ालिब (और) हिक्मत वाला है। (६२) तो अगर ये लोग फिर जाएं तो ख़ुदा मुफ़्सिदों (फ़साद फैलाने वालों) को ख़ूब जानता है। (६३★

कह दो कि ऐ अह्ले किताब! जो बात हमारे और तुम्हारे दर्मियान एक ही (मान ली गयी) है, उसकी तरफ़ आओ, वह यह कि ख़ुदा के सिवा हम किसी की इबादत न करें और उसके साथ किसी चीज़ को शरीक न बनाएं और हममें से कोई किसी को ख़ुदा के सिवा अपना कारसाज़ न समझे। अगर ये लोग (इस बात को) न मानें तो (उनसे) कह दो कि तुम गवाह रहो कि हम

★रु. ५/१३ आ १३ ●सु. ३/४ ★रु. ६/१४ आ ६

या अह्लल्किताबि लि-म तुहाज्जू-न फ़ी इब्राही-म व मा
उन्ज़िलतित्तौरातु वल्इन्जीलु इल्ला मिम्बअ्-दिही ط अ-फ़-ला तअ्-क़िलून
(६५) हा अन्तुम् हा-उला-इ हाजज्तुम् फ़ीमा लकुम् बिही अिल्मुन्
फ़ लि-म तुहाज्जू-न फ़ी मा लै-स लकुम् बिही अिल्मुन् ط वल्लाहु यअ्-लमु व

अन्तुम् ला तअ्-लमून (६६) मा का-न
इब्राहीमु यहूदिय्यंव्-व ला नस्रानिय्यंव्-व
लाकिन् का-न हनीफ़म्-मुस्लिमन् ط व मा
का-न मिनल्-मुश्रिकीन (६७) इन-न
औलन्नासि बि इब्राही-म लल्लज़ीनत्तबअूहु
व हाज़न्नबिय्यु वल्लज़ी-न आमनू ط वल्लाहु
वलिय्युल्-मुअ्मिनीन (६८) वद्दत्ता-इ-फ़तुम्-
मिन् अह्लिल्किताबि लौ युज़िल्लूनकुम् ط
व मा युज़िल्लू-न इल्ला अन्फ़ुसहुम् व मा
यश्अुरून (६९) या अह्लल्किताबि
लि-म तक्फ़ुरू-न बि आयातिल्लाहि व अन्तुम्
तश्हदून (७०) या अह्लल्किताबि

ال عمران ٣ — ٨٣ — تلك الرسل ٣

دُونِ اللّٰهِ ۚ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُولُوا اشْهَدُوا بِأَنَّا مُسْلِمُونَ ﴿٦٤﴾ يَا أَهْلَ
الْكِتَابِ لِمَ تُحَاجُّونَ فِي إِبْرَاهِيمَ وَمَا أُنْزِلَتِ التَّوْرَاةُ وَالْإِنْجِيلُ
إِلَّا مِنْ بَعْدِهِ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٦٥﴾ هَا أَنْتُمْ هٰؤُلَاءِ حَاجَجْتُمْ فِيمَا
لَكُمْ بِهِ عِلْمٌ فَلِمَ تُحَاجُّونَ فِيمَا لَيْسَ لَكُمْ بِهِ عِلْمٌ ۚ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ
وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٦٦﴾ مَا كَانَ إِبْرَاهِيمُ يَهُودِيًّا وَلَا نَصْرَانِيًّا وَ
لٰكِنْ كَانَ حَنِيفًا مُسْلِمًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿٦٧﴾ إِنَّ أَوْلَى
النَّاسِ بِإِبْرَاهِيمَ لَلَّذِينَ اتَّبَعُوهُ وَهٰذَا النَّبِيُّ وَالَّذِينَ آمَنُوا
وَاللّٰهُ وَلِيُّ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٦٨﴾ وَدَّتْ طَائِفَةٌ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَوْ
يُضِلُّونَكُمْ وَمَا يُضِلُّونَ إِلَّا أَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ﴿٦٩﴾ يَا أَهْلَ
الْكِتَابِ لِمَ تَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللّٰهِ وَأَنْتُمْ تَشْهَدُونَ ﴿٧٠﴾ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ
لِمَ تَلْبِسُونَ الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُونَ الْحَقَّ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٧١﴾
وَقَالَتْ طَائِفَةٌ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ آمِنُوا بِالَّذِي أُنْزِلَ عَلَى
الَّذِينَ آمَنُوا وَجْهَ النَّهَارِ وَاكْفُرُوا آخِرَهُ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٧٢﴾
وَلَا تُؤْمِنُوا إِلَّا لِمَنْ تَبِعَ دِينَكُمْ قُلْ إِنَّ الْهُدَىٰ هُدَى اللّٰهِ
أَنْ يُؤْتَىٰ أَحَدٌ مِثْلَ مَا أُوتِيتُمْ أَوْ يُحَاجُّوكُمْ عِنْدَ رَبِّكُمْ ۗ قُلْ
إِنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللّٰهِ يُؤْتِيهِ مَنْ يَشَاءُ ۗ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٧٣﴾
يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهِ مَنْ يَشَاءُ ۗ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ﴿٧٤﴾ وَمِنْ

منزل ١

लि-म तल्बिसूनल्हक़्-क़ बिल्बातिलि व तक्तुमूनल्-हक़्-क़ व अन्तुम् तअ्-लमून
★ (७१) व क़ालत्ता-इफ़तुम्-मिन् अह्लिल्किताबि आमिनू बिल्लज़ी
उन्ज़ि-ल अ-लल्लज़ी-न आमनू वज्हन्नहारि वक्फ़ुरू आख़िरहू ल-अल्लहुम्
यर्जिअून (७२) व ला तुअ्मिनू इल्ला लिमन् तबि-अ दीनकुम्
क़ुल् इन्नल्हुदा हुदल्लाहि अंय्युअ्ता अ-हदुम्मिस्-ल मा ऊतीतुम् औ
युहाज्जूकुम् अिन्-द रब्बिकुम् ط क़ुल् इन्नल्फ़ज़्-ल बि यदिल्लाहि
युअ्तीहि मंय्यशा-उ ط वल्लाहु वासिअुन् अ़लीम (७३) यख़्तस्सु
बि रह्मतिही मंय्यशा-उ ط वल्लाहु ज़ुल्फ़ज़्लिल्-अ़ज़ीम (७४)

★रु. ७/१५ आ ८

(खुदा के) फ़रमांबरदार हैं। (६४) ऐ अह्ले किताब ! तुम इब्राहीम के बारे में क्यों झगड़ते हो, हालांकि तौरात और इंजील उनके बाद उतरी हैं (और वह पहले हो चुके हैं), तो क्या तुम अक़्ल नहीं रखते ? (६५) देखो, ऐसी बात में तो तुमने झगड़ा किया ही था, जिसका तुम्हें कुछ इल्म था भी, मगर ऐसी बात में क्यों झगड़ते हो, जिसका तुम को कुछ भी इल्म नहीं और खुदा जानता है और तुम नहीं जानते। (६६) इब्राहीम न तो यहूदी थे और न ईसाई, बल्कि सबसे बे-ताल्लुक़ होकर एक (खुदा) के हो रहे थे और उसी के फ़रमांबरदार थे और मुश्रिकों में न थे। (६७) इब्राहीम से क़ुर्ब (क़रीबी ताल्लुक़) रखने वाले तो वे लोग हैं, जो उन की पैरवी करते हैं और यह पैग़म्बर (आखिरी) और वे लोग जो ईमान लाये हैं, और खुदा मोमिनों का कारसाज़ है। (६८) (ऐ इस्लाम मानने वालो !) कुछ अह्ले किताब इस बात की ख्वाहिश रखते हैं कि तुमको गुमराह कर दें, मगर ये (तुमको क्या गुमराह करेंगे) अपने आप को ही गुमराह कर रहे हैं और नहीं जानते। (६९) ऐ अह्ले किताब ! तुम खुदा की आयतों से क्यों इंकार करते हो और तुम (तौरात को) मानते तो हो।[1] (७०) ऐ अह्ले किताब ! तुम सच को झूठ के साथ गड-मड क्यों करते हो ? और हक़ को क्यों छिपाते हो ? और तुम जानते भी हो। (७१) ★

और अह्ले किताब एक दूसरे से कहते हैं कि जो (किताब) मोमिनों पर नाज़िल हुई है, उस पर दिन के शुरू में तो ईमान ले आया करो और उसके आखिर में इंकार कर दिया करो, ताकि वे (इस्लाम से) हट जाएं। (७२) और अपने दीन की पैरवी करने वालों के सिवा किसी और के क़ायल न होना (ऐ पैग़म्बर !) कह दो कि हिदायत तो खुदा ही की हिदायत है। (वे यह भी कहते हैं), यह भी (न मानना) कि जो चीज़ तुम को मिली है, वैसी किसी और को मिलेगी या वे तुम्हें खुदा के सामने क़ायल-माक़ूल कर सकेंगे। यह भी कह दो कि बुज़ुर्गी खुदा ही के हाथ में है। वह जिसे चाहता है, देता है और खुदा वुस्अत वाला (और) इल्म वाला है। (७३) वह अपनी रहमत से जिस को चाहता है, खास कर लेता है और खुदा बड़े फ़ज़्ल का मालिक है। (७४) और

---

१. यानी तुम इक़रार करते हो कि तौरात और इन्जील कलाम खुदा के हैं, फिर इस में जो आयतें तारीफ़ में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हैं, उन के क्यों इन्कारी होते हो ?

व मिन् अह्लिल्किताबि मन् इन् तअ्मन्हु बि क़िन्तारिंय्युअद्दिही
इलै-क ج व मिन्हुम् मन् इन् तअ्मन्हु बि दीनारिल्ला युअद्दिही
इलै-क इल्ला मा दुम्-त अलैहि क़ा-इमन् ط ज़ालि-क बि अन्नहुम् क़ालू
लै-स अलैना फ़िल्उम्मिय्यी-न सबीलुन् ج व यक़ूलू-न अ़-लल्लाहिल्-कज़ि-ब व
हुम् यअ्-लमून (७५) बला मन् औफ़ा
बि अह्दिही वत्तक़ा फ़-इन्नल्ला-ह युहिब्बुल्-
मुत्तक़ीन (७६) इन्नल्लज़ी-न यश्तरू-न
बि अह्दिल्लाहि व ऐमानिहिम् स-म-नन्
क़लीलन् उला-इ-क ला ख़ला-क़ लहुम्
फ़िल्आख़िरति व ला युकल्लिमुहुमुल्लाहु व
ला यन्ज़ुरु इलैहिम् यौमल्क़ियामति व
ला युज़क्कीहिम् ص व लहुम् अज़ाबुन्
अलीम (७७) व इन्-न मिन्हुम्
ल फ़रीक़ंय्यल्वू-न अल्सि-न-तहुम् बिल्किताबि
लि तह्सबूहु मिनल्किताबि ج व मा हु-व
मिनल्किताबि व यक़ूलू-न हु-व मिन्
अिन्दिल्लाहि व मा हु-व मिन् अिन्दिल्लाहि

تلك الرسل ٣ — آل عمران ٣

أَهْلِ الْكِتٰبِ مَنْ إِنْ تَأْمَنْهُ بِقِنْطَارٍ يُؤَدِّهٖٓ إِلَيْكَ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ
إِنْ تَأْمَنْهُ بِدِيْنَارٍ لَّا يُؤَدِّهٖٓ إِلَيْكَ إِلَّا مَا دُمْتَ عَلَيْهِ قَآئِمًا ۗ ذٰلِكَ
بِأَنَّهُمْ قَالُوْا لَيْسَ عَلَيْنَا فِي الْأُمِّيّٖنَ سَبِيْلٌ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ
الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ۝ بَلٰى مَنْ أَوْفٰى بِعَهْدِهٖ وَاتَّقٰى فَإِنَّ
اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ۝ إِنَّ الَّذِيْنَ يَشْتَرُوْنَ بِعَهْدِ اللّٰهِ وَأَيْمَانِهِمْ
ثَمَنًا قَلِيْلًا أُولٰٓئِكَ لَا خَلَاقَ لَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ
وَلَا يَنْظُرُ إِلَيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَلَا يُزَكِّيْهِمْ ۠ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيْمٌ ۝
وَإِنَّ مِنْهُمْ لَفَرِيْقًا يَّلْوٗنَ أَلْسِنَتَهُمْ بِالْكِتٰبِ لِتَحْسَبُوْهُ مِنَ
الْكِتٰبِ وَمَا هُوَ مِنَ الْكِتٰبِ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ وَمَا
هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ۝
مَا كَانَ لِبَشَرٍ أَنْ يُّؤْتِيَهُ اللّٰهُ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ثُمَّ يَقُوْلَ
لِلنَّاسِ كُوْنُوْا عِبَادًا لِّيْ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ كُوْنُوْا رَبّٰنِيّٖنَ بِمَا
كُنْتُمْ تُعَلِّمُوْنَ الْكِتٰبَ وَبِمَا كُنْتُمْ تَدْرُسُوْنَ ۝ وَلَا يَأْمُرَكُمْ
أَنْ تَتَّخِذُوا الْمَلٰٓئِكَةَ وَالنَّبِيّٖنَ أَرْبَابًا ۗ أَيَأْمُرُكُمْ بِالْكُفْرِ بَعْدَ
إِذْ أَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ۝ وَإِذْ أَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ النَّبِيّٖنَ لَمَآ اٰتَيْتُكُمْ
مِّنْ كِتٰبٍ وَّحِكْمَةٍ ثُمَّ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مُّصَدِّقٌ لِّمَا مَعَكُمْ
لَتُؤْمِنُنَّ بِهٖ وَلَتَنْصُرُنَّهٗ ۗ قَالَ ءَأَقْرَرْتُمْ وَأَخَذْتُمْ عَلٰى ذٰلِكُمْ

व यक़ूलू-न अलल्लाहिल्कज़ि-ब व हुम् यअ्-लमून (७८) मा का-न लि ब-शरिन्
अंय्युअ्तियहुल्लाहुल्-किता-ब वल्हुक्-म वन्नुबुव्व-त सुम्-म यक़ू-ल लिन्नासि कूनू
अिबादल्ली मिन् दूनिल्लाहि व लाकिन् कूनू रब्बानिय्यी-न बिमा कुन्तुम्
तुअ़ल्लिमूनल्-किता-ब व बिमा कुन्तुम् तद्रुसून ط (७९) व ला यअ्मुरकुम्
अन् तत्तख़िज़ुल्-मला-इ-क-त वन्नबिय्यी-न अर्बाबन् ط अ यअ्मुरुकुम् बिल्कुफ़्रि
बअ्-द इज़् अन्तुम् मुस्लिमून ★ (८०) व इज़् अ-ख़-ज़ल्लाहु
मीसाक़न्नबिय्यी-न लमा आतैतुकुम् मिन् किताबिंव-व हिक्मतिन् सुम्-म
जा-अकुम् रसूलुम्-मुसद्दिक़ुल्लिमा म-अकुम् ल-तुअ्मिनुन्-न बिही व ल तन्सुरुन्नहू ط
क़ा-ल अ अक़्रर्तुम् व अ-ख़ज़्तुम् अला ज़ालिकुम् इस्री ط
क़ालू अक़्रर्ना ط क़ा-ल फ़श्हदू व अ-न म-अकुम् मिनश्शाहिदीन (८१)

अह्ले किताब में से कोई तो ऐसा है कि अगर तुम उसके पास (रुपयों का) ढेर अमानत रख दो तो तुम को (फ़ौरन) वापस दे दे और कोई इस तरह का है कि अगर उसके पास एक दीनार भी अमानत रखो, तो जब तक उसके सर पर हर वक़्त खड़े न रहो, तुम्हें दे ही नहीं। यह इस लिए कि वे कहते हैं कि उम्मियों के बारे में हमारी पकड़ न होगी। ये ख़ुदा पर सिर्फ़ झूठ बोलते हैं और (इस बात को) जानते भी नहीं। (७५) हां, जो शख़्स अपने इक़रार को पूरा करे और ख़ुदा से डरे, तो ख़ुदा डरने वालों को दोस्त रखता है। (७६) जो लोग ख़ुदा के इक़रारों और अपनी क़समों (को बेच डालते हैं और उन) के बदले थोड़ी सी क़ीमत हासिल करते हैं, उनका आख़िरत में कुछ हिस्सा नहीं, उनसे ख़ुदा न तो कलाम करेगा और न क़ियामत के दिन उनकी तरफ़ देखेगा और न उनको पाक करेगा और उनको दुख देने वाला अज़ाब होगा। (७७) और इन (अह्ले किताब) में कुछ ऐसे हैं कि किताब (तौरात) को ज़ुबान मरोड़-मरोड़ कर पढ़ते हैं, ताकि तुम समझो कि जो कुछ वे पढ़ते हैं, किताब में से है, हालांकि वह किताब में से नहीं होता और कहते हैं कि वह ख़ुदा की तरफ़ से (नाज़िल हुआ) है, हालांकि वह ख़ुदा की तरफ़ से नहीं होता और ख़ुदा पर झूठ बोलते हैं और (यह बात) जानते भी हैं। (७८) किसी आदमी को मुनासिब नहीं कि ख़ुदा तो उसे किताब और हुकूमत और नुबूवत अता फ़रमाए और वह लोगों से कहे कि ख़ुदा को छोड़ कर मेरे बन्दे हो जाओ, बल्कि (उस के लिए यह कहना मुनासिब है कि ऐ अह्ले किताब!) तुम (उलेमा-ए-) रब्बानी हो जाओ, क्योंकि तुम (ख़ुदा की) किताब पढ़ते रहते हो। (७९) और उसको यह भी नहीं कहना चाहिए कि तुम फ़रिश्तों और पैग़म्बरों को ख़ुदा बना लो। भला जब तुम मुसलमान हो चुके तो क्या उसे मुनासिब है कि तुम्हें काफ़िर होने को कहे। (८०) ★

और जब ख़ुदा ने पैग़म्बरों से अह्द लिया कि जब मैं तुमको किताब और दानाई अता करूं, फिर तुम्हारे पास कोई पैग़म्बर आये, जो तुम्हारी किताब की तस्दीक़ करे तो तुम्हें ज़रूर उस पर ईमान लाना होगा और ज़रूर उस की मदद करनी होगी। और (अह्द लेने के बाद) पूछा कि भला तुम ने इक़रार किया और इस इक़रार पर मेरा ज़िम्मा लिया (या मुझे ज़ामिन ठहराया) उन्होंने, कहा (हां), हमने इक़रार किया। (ख़ुदा ने) फ़रमाया कि तुम (इस अह्द व पैमान के) गवाह रहो

★रु. ८/१६ आ ६

फ़ मन् तवल्ला बअ्-द ज़ालि-क फ़ उला-इ-क हुमुल्-फ़ासिक़ून (८२) अ-फ़-ग़ै-र दीनिल्लाहि यब्ग़ू-न व लहू अस्ल-म मन् फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि तौअंव-व करहंव-व इलैहि युर्जअून (८३) क़ुल् आमन्ना बिल्लाहि व मा उन्ज़ि-ल अलैना व मा उन्ज़ि-ल अला इब्राही-म व इस्माअी-ल व इस्हा-क़ व यअ्-क़ूब वल्अस्बाति व मा ऊति-य मूसा व अीसा वन्नबिय्यू-न मिर्रब्बिहिम् ला नुफ़र्रिक़ु बै-न अ-हदिम्मिन्हुम् व नह्नु लहू मुस्लिमून (८४) व मंय्यब्तग़ि ग़ैरल्-इस्लामि दीनन् फ़ लंय्युक़्ब-ल मिन्हु ج व हु-व फ़िल्आख़िरति मिनल्ख़ासिरीन (८५) कै-फ़ यह्दिल्लाहु क़ौमन् क-फ़रू बअ्-द ईमानिहिम् व शहिदू अन्नर्रसू-ल हक़्क़ुंव-व जा-अ हुमुल्बय्यिनातु ط वल्लाहु ला यह्दिल्-क़ौमज़्ज़ालिमीन (८६) उला-इ-क जज़ा-उहुम् अन्-न अलैहिम् लअ्-न-तल्लाहि वलमला-इकति वन्नासि अज्मअीन لا (८७) ख़ालिदी-न फ़ीहा ج ला युख़फ़्फ़फ़ु अन्हुमुल्-अज़ाबु व ला हुम् युन्ज़रून لا (८८) इल्लल्लज़ी-न ताबू मिम्बअ्दि ज़ालि-क व अस्लहू फ़ इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम (८९) इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू बअ्-द ईमानिहिम् सुम्मज़्दादू कुफ़्रल्लन् तुक़्ब-ल तौबतुहुम् ج व उला-इ-क हुमुज़्ज़ा-ल्लून (९०) इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू व मातू व हुम् कुफ़्फ़ारुन् फ़-लंय्युक़्ब-ल मिन् अ-हदिहिम् - मिल् - उल्अर्ज़ि ज़-ह-बंव-व लविफ़्तदा बिही ط उला-इ - क लहुम् अज़ाबुन् अलीमुंव-व मा लहुम् मिन्नासिरीन ★ (९१)

آل عمران ٣٨ تلك الرسل

إِصْرِي ۖ قَالُوا أَقْرَرْنَا ۚ قَالَ فَاشْهَدُوا وَأَنَا مَعَكُم مِّنَ الشَّاهِدِينَ ﴿٨١﴾
فَمَن تَوَلَّىٰ بَعْدَ ذَٰلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ﴿٨٢﴾ أَفَغَيْرَ دِينِ اللَّهِ
يَبْغُونَ وَلَهُ أَسْلَمَ مَن فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ طَوْعًا وَكَرْهًا
وَإِلَيْهِ يُرْجَعُونَ ﴿٨٣﴾ قُلْ آمَنَّا بِاللَّهِ وَمَا أُنزِلَ عَلَيْنَا وَمَا أُنزِلَ
عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطِ وَمَا
أُوتِيَ مُوسَىٰ وَعِيسَىٰ وَالنَّبِيُّونَ مِن رَّبِّهِمْ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ
أَحَدٍ مِّنْهُمْ وَنَحْنُ لَهُ مُسْلِمُونَ ﴿٨٤﴾ وَمَن يَبْتَغِ غَيْرَ الْإِسْلَامِ دِينًا
فَلَن يُقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ فِي الْآخِرَةِ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٨٥﴾ كَيْفَ يَهْدِي
اللَّهُ قَوْمًا كَفَرُوا بَعْدَ إِيمَانِهِمْ وَشَهِدُوا أَنَّ الرَّسُولَ حَقٌّ وَ
جَاءَهُمُ الْبَيِّنَاتُ ۚ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿٨٦﴾ أُولَٰئِكَ
جَزَاؤُهُمْ أَنَّ عَلَيْهِمْ لَعْنَةَ اللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ﴿٨٧﴾
خَالِدِينَ فِيهَا لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنظَرُونَ ﴿٨٨﴾
إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِن بَعْدِ ذَٰلِكَ وَأَصْلَحُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ
رَّحِيمٌ ﴿٨٩﴾ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بَعْدَ إِيمَانِهِمْ ثُمَّ ازْدَادُوا كُفْرًا لَّن
تُقْبَلَ تَوْبَتُهُمْ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الضَّالُّونَ ﴿٩٠﴾ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَمَاتُوا
وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَن يُقْبَلَ مِنْ أَحَدِهِم مِّلْءُ الْأَرْضِ ذَهَبًا وَلَوِ
افْتَدَىٰ بِهِ ۗ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ وَمَا لَهُم مِّن نَّاصِرِينَ ﴿٩١﴾

منزل

★रु. ९/१७ आ ११

और मैं भी तुम्हारे साथ गवाह हूं। (८१) तो जो इसके बाद फिर जाएं, वे बद-किरदार हैं। (८२) क्या ये (काफ़िर) ख़ुदा के दीन के सिवा किसी और दीन के तालिब हैं, हालांकि सब आसमानों और ज़मीन वाले, ख़ुशी या ज़बरदस्ती से ख़ुदा के फ़रमांबरदार हैं और उसी की तरफ़ लौट कर जाने वाले हैं। (८३) कहो कि हम ख़ुदा पर ईमान लाये और जो किताब हम पर नाज़िल हुई और जो सहीफ़े (ग्रन्थ) इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक़ और याक़ूब और उनकी औलाद पर उतरे और जो किताबें मूसा और ईसा और दूसरे नबियों को परवरगिदार की तरफ़ से मिलीं, सब पर ईमान लाये। हम इन पैग़म्बरों में से किसी में कुछ फ़र्क़ नहीं करते और हम उसी (एक ख़ुदा) के फ़रमांबरदार हैं। (८४) और जो शख़्स इस्लाम के सिवा किसी और दीन का तालिब होगा, वह उससे हरगिज़ नहीं क़ुबूल किया जाएगा और ऐसा शख़्स आख़िरत में नुक़सान उठाने वालों में होगा। (८५) ख़ुदा ऐसे लोगों को कैसे हिदायत दे जो ईमान लाने के बाद काफ़िर हो गये और (पहले) इस बात की गवाही दे चुके कि पैग़म्बर हक़ पर हैं और उनके पास दलीलें भी आ गयीं। और ख़ुदा बे-इंसाफ़ों को हिदायत नहीं देता। (८६) उन लोगों की सज़ा यह है कि उन पर ख़ुदा की और फ़रिश्तों की और इंसानों की सब की लानत हो। (८७) हमेशा इस लानत में (गिरफ़्तार) रहेंगे, उन से न तो अज़ाब हल्का किया जाएगा और न उन्हें मुहलत दी जाएगी। (८८) हां, जिन्होंने उसके बाद तौबा की और अपनी हालत दुरुस्त कर ली, तो ख़ुदा बख़्शने वाला, मेहरबान है। (८९) जो लोग ईमान लाने के बाद काफ़िर हो गये, फिर कुफ़्र में बढ़ते गये, ऐसों की तौबा हरगिज़ क़ुबूल नहीं होगी और ये लोग गुमराह हैं (९०) जो लोग काफ़िर हुए और कुफ़्र ही की हालत में मर गये, वे अगर (निजात हासिल करना चाहें और) बदले में ज़मीन भर कर सोना दें तो हरगिज़ क़ुबूल नहीं किया जाएगा। इन लोगों को दुख देने वाला अज़ाब होगा और उन की कोई मदद नहीं

चौथा पारः लन्तनालू

सूरतु आलि इम्रान आयत ९२ से २००

लन्तनालुल्बिरं-र हत्ता तुन्फ़िक़ू मिम्मा तुहिब्बून ط व मा तुन्फ़िक़ू मिन् शैइन् फ़ इन्नल्ला-ह बिही अलीम (९२) कुल्लुत्तआमि का-न हिल्ललिलबनी इस्रा-ई-ल इल्ला मा हर्-र-म इस्रा-ई-लु अला नफ़्सिही मिन् क़ब्लि अन्तुनज़्ज़लत्तौरातु ط कुल् फ़अ्तूबित्तौराति फ़त्लूहा इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (९३) फ़ मनिफ़्तरा अलल्लाहिल्-कज़ि-ब मिम्बअ्-दि ज़ालि-क फ़उलाइ-क हुमुज़्ज़ालिमून ※ (९४) क़ुल् स-द-क़ल्लाहु قف फ़त्तबिअू मिल्ल-त इब्राही-म हनीफ़न् ط व मा का-न मिनल्मुश्रिकीन (९५) इन्-न अव्व-ल बैतिंव्वुज़ि-अ लिन्नासि लल्लज़ी बि बक्क-त मुबार-कंव्-व हुदल्-लिल्-आलमीन ج (९६) फ़ीहि आयातुम्-बय्यिनातुम् - मक़ामु इब्राही - म ج व मन् द-ख़-लहू का-न आमिनन् ط व लिल्लाहि अलन्नासि हिज्जुल्बैति मनिस्तता-अ इलैहि सबीलन् ط व मन् क-फ़-र फ़ इन्नल्ला-ह ग़निय्युन् अनिल्आलमीन (९७) क़ुल् या अह्लल्किताबि लि-म तक्फ़ुरू-न बि आयातिल्लाहि صلے वल्लाहु शहीदुन् अला मा तअ्-मलून (९८) क़ुल् या अह्लल्-किताबि लि - म तसुद्दू-न अन् सबीलिल्लाहि मन् आम-न तब्ग़ूनहा अि-व-जंव्-व अन्तुम् शुहदा-उ ط व मल्लाहु बि ग़ाफ़िलिन् अम्मा तअ्-मलून (९९) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इन् तुतीअू फ़रीक़म्-मिनल्लज़ी-न ऊतुल्किता-ब यरुद्दूकुम् बअ्-द ईमानिकुम् काफ़िरीन (१००) व कै-फ़ तक्फ़ुरू-न व अन्तुम् तुत्ला अलैकुम् आयातुल्लाहि व फ़ीकुम् रसूलुहू ط व मंय्यअ्-तसिम् बिल्लाहि फ़-क़द् हुदि-य इला सिरातिम्-मुस्तक़ीम ★ (१०१)

لن تنالوا البر حتى تنفقوا مما تحبون ۚ وما تنفقوا من
شيء فإن الله به عليم ۝ كل الطعام كان حلا لبني
إسرائيل إلا ما حرم إسرائيل على نفسه من قبل أن
تنزل التوراة ۗ قل فأتوا بالتوراة فاتلوها إن كنتم
صادقين ۝ فمن افترى على الله الكذب من بعد ذلك
فأولئك هم الظالمون ۝ قل صدق الله ۗ فاتبعوا ملة إبراهيم
حنيفا ۖ وما كان من المشركين ۝ إن أول بيت وضع
للناس للذي ببكة مباركا وهدى للعالمين ۝ فيه آيات
بينات مقام إبراهيم ۖ ومن دخله كان آمنا ۗ ولله على
الناس حج البيت من استطاع إليه سبيلا ۚ ومن كفر
فإن الله غني عن العالمين ۝ قل يا أهل الكتاب لم تكفرون
بآيات الله والله شهيد على ما تعملون ۝ قل يا أهل الكتاب
لم تصدون عن سبيل الله من آمن تبغونها عوجا وأنتم
شهداء ۗ وما الله بغافل عما تعملون ۝ يا أيها الذين آمنوا
إن تطيعوا فريقا من الذين أوتوا الكتاب يردوكم بعد إيمانكم
كافرين ۝ وكيف تكفرون وأنتم تتلى عليكم آيات الله وفيكم
رسوله ۗ ومن يعتصم بالله فقد هدي إلى صراط مستقيم ۝

※ व. जिब्रील अ. ★रु. १०/१ आ १०

करेगा (९१)★ (मोमिनो !) जब तक तुम उन चीज़ों में से, जो तुम्हें प्यारी हैं, (ख़ुदा की राह में) ख़र्च न करोगे, कभी नेकी न हासिल कर सकोगे और जो चीज़ तुम ख़र्च करोगे, ख़ुदा उसको जानता है। (९२) बनी इस्राईल के लिए (तौरात के नाज़िल होने से) पहले खाने की सब चीज़ें हलाल थीं, उनके अलावा, जो याक़ूब ने ख़ुद अपने ऊपर हराम कर ली थीं। कह दो कि अगर सच्चे हो तो तौरात लाओ और उसे पढ़ो (यानी दलील पेश करो)।[1] (९३) जो इसके बाद भी ख़ुदा पर झूठी बात गढ़े, तो ऐसे लोग ही बे-इंसाफ़ हैं ▨ (९४) कह दो कि ख़ुदा ने सच फ़रमा दिया, पस इब्राहीमी दीन की पैरवी करो, जो सब से बे-ताल्लुक़ होकर एक (ख़ुदा) के हो रहे थे। और मुश्रिकों में से न थे। (९५) पहला घर जो लोगों (के इबादत करने) के लिए मुक़र्रर किया गया था, वही है जो मक्के में है, बरकत वाला और दुनिया के लिए हिदायत। (९६) इसमें खुली हुई निशानियां हैं, जिनमें से एक इब्राहीम के खड़े होने की जगह है।[2] जो शख़्स इस (मुबारक) घर में दाख़िल हुआ, उसने अम्न पा लिया। और लोगों पर ख़ुदा का हक़ (यानी फ़र्ज़) है कि जो इस घर तक जाने की क़ुदरत रखे, वह इसका हज करे, और जो इस हुक्म की तामील न करेगा, तो ख़ुदा भी दुनिया वालों से बे-नियाज़ है। (९७) कहो कि ऐ अह्ले किताब! तुम ख़ुदा की आयतों से क्यों कुफ़्र करते हो और ख़ुदा तुम्हारे सब आमाल से बा-ख़बर है। (९८) कहो कि ऐ अह्ले किताब! तुम मोमिनों को ख़ुदा के रास्ते से क्यों रोकते हो और बावजूद इसके कि तुम इसे जानते हो, इसमें टेढ़ निकालते हो और ख़ुदा तुम्हारे कामों से बे-ख़बर नहीं। (९९) मोमिनो! अगर तुम अह्ले किताब के किसी फ़रीक़ का कहा मान लोगे, तो वे तुम्हें ईमान लाने के बाद काफ़िर बना देंगे। (१००) और तुम किस तरह कुफ़्र करोगे, जबकि तुम को ख़ुदा की आयतें पढ़-पढ़ कर सुनायी जाती हैं और तुम में उसके पैग़म्बर मौजूद हैं। और जिसने ख़ुदा (की हिदायत की रस्सी) को मज़बूत पकड़ लिया, वह सीधे रास्ते लग गया। (१०१) ★

---

१. यहूदी प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहते थे कि आप को दावा तो हज़रत इब्राहीम अलै० के तरीक़े पर चलने का है, लेकिन जो चीज़ें हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम के ख़ानदान में, जो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पोते थे, हराम थीं, उन को आप खाते हैं। ख़ुदा ने इसे रद्द किया और फ़रमाया कि तौरात नाज़िल होने से पहले खाने की सब चीज़ें याक़ूब अलैहिस्सलाम को हलाल थीं, मगर वह जो उन्होंने ख़ुद अपने ऊपर हराम कर ली थीं, उस की सूरत यह है कि हज़रत याक़ूब एक गांव में रहते थे, वहां उन को अर्क़ुन्निसा का मर्ज़ हो गया, जिस की वजह से उन को बहुत तक्लीफ़ थी, तो उन्होंने नज़्र मानी कि जो चीज़ मुझ को बहुत पसन्द है, वह छोड़ दूंगा, चुनांचे ऊंट का गोश्त खाना छोड़ दिया। याक़ूब अलैहिस्सलाम के बेटों ने भी उन की पैरवी में ऊंट का गोश्त छोड़ दिया था। ग़रज़ तौरात के नाज़िल होने से पहले खाने की तमाम चीज़ें हज़रत याक़ूब पर हलाल थीं और ख़ुदा ने उन को उन पर हराम नहीं किया था। इस वजह से ख़ुदा ने फ़रमाया कि ऐ पैग़म्बर! यहूद से कह दो कि अगर सच्चे हो तो तौरात लाओ और दिखाओ कि इस में कहां लिखा है कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम के वक़्त में ऊंट हराम था। हां, यहूदियों की नाफ़रमानियों और गुनाहों की वजह से कुछ चीज़ें उन पर हराम कर दी गयी थीं, और इस से उन को उन की शरारतों की सज़ा देनी थी।

२. 'मक़ामे इब्राहीम', जिस का तर्जुमा 'इब्राहीम के खड़े होने की जगह' किया गया है, एक पत्थर है, जिस पर खड़े हो कर काबे की दीवारें चुनते थे। कहते हैं कि इस पत्थर पर हज़रत इब्राहीम के क़दमों के निशान थे, मगर अब मिट गये हैं।

या अय्युहल्लज़ी-न आमनुत्तक़ुल्ला-ह ह़क़्क़-क़ तुक़ातिही व ला तमूतुन्-न इल्ला व अन्तुम् मुस्लिमून (१०२) वअ्-तसिमू बि ह़ब्लिल्लाहि जमीअंव-व ला तफ़र्रक़ू वज़्कुरू निअ्-म-तल्लाहि अ़लैकुम् इज़् कुन्तुम् अअ्-दा-अन् फ़ अल्ल-फ़ बै-न क़ुलूबिकुम् फ़ अस्बह़्तुम् बि निअ्-मतिही इख़्वानन् ج व कुन्तुम् अ़ला शफ़ा हुफ़्रतिम्-मिनन्नारि फ़ अन्क़-ज़कुम् मिन्हा ط कज़ालि-क युबय्यिनुल्लाहु लकुम् आयातिही ल-अ़ल्लकुम् तह्तदून (१०३) वल्तकुम् - मिन्कुम् उम्मतुंय्यद्अू-न इलल्ख़ैरि व यअ्मुरू-न बिलमअ्-रूफ़ि व यन्हौ-न अ़निल्मुन्करि ط व उलाइ-क हुमुल्-मुफ़्लिहून (१०४) व ला तकूनू कल्लज़ी-न तफ़र्रक़ू वख़्त-लफ़ू मिम्बअ्-दि मा जा-अ-हुमुल्-बय्यिनातु ط व उलाइ-क लहुम् अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीम (१०५) यौ-म तब्यज़्ज़ु वुजूहुंव्-व तस्वद्दु वुजूहुन् ج फ़ अम्मल्-लज़ीनस्-वद्दत् वुजूहुहुम् قف अ-क-फ़र्तुम् बअ्-द ईमानिकुम् फ़ज़ूक़ुल्-अ़ज़ा-ब बिमा कुन्तुम् तक्फ़ुरून (१०६) व अम्मल्लज़ीनब्यज़्ज़त् वुजूहुहुम् फ़फ़ी रह़्मतिल्लाहि ط हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (१०७) तिल्-क आयातुल्लाहि नत्लूहा अ़लै-क बिल्ह़क़्क़ि ط व मल्लाहु युरीदु ज़ुल्मल्लिल्-आ़लमीन (१०८) व लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि ط व इलल्लाहि तुर्जअुल् - उमूर ★(१०९) कुन्तुम् ख़ै-र उम्मतिन् उख़्रिजत् लिन्नासि तअ्मुरू-न बिलमअ्-रूफ़ि व तन्हौ-न अ़निल्मुन्करि व तुअ्मिनू-न बिल्लाहि ط व लौ आम-न अह़्लुल्-किताबि ल का-न ख़ैरल्लहुम् ط मिन्हुमुल् - मुअ्मिनू-न व अक्सरु - हुमुल्फ़ासिक़ून (११०)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ
مُّسْلِمُوْنَ ۝ وَاعْتَصِمُوْا بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِيْعًا وَّلَا تَفَرَّقُوْا ۪ وَاذْكُرُوْا
نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ كُنْتُمْ اَعْدَآءً فَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِكُمْ فَاَصْبَحْتُمْ
بِنِعْمَتِهٖۤ اِخْوَانًا ۚ وَكُنْتُمْ عَلٰى شَفَا حُفْرَةٍ مِّنَ النَّارِ فَاَنْقَذَكُمْ
مِّنْهَا ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ۝ وَ
لْتَكُنْ مِّنْكُمْ اُمَّةٌ يَّدْعُوْنَ اِلَى الْخَيْرِ وَيَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ
وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝ وَلَا تَكُوْنُوْا
كَالَّذِيْنَ تَفَرَّقُوْا وَاخْتَلَفُوْا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْبَيِّنٰتُ ؕ وَ
اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝ يَّوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوْهٌ وَّتَسْوَدُّ وُجُوْهٌ ۚ
فَاَمَّا الَّذِيْنَ اسْوَدَّتْ وُجُوْهُهُمْ ۟ اَكَفَرْتُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ فَذُوْقُوا
الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ۝ وَاَمَّا الَّذِيْنَ ابْيَضَّتْ وُجُوْهُهُمْ
فَفِيْ رَحْمَةِ اللّٰهِ ؕ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝ تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا
عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ؕ وَمَا اللّٰهُ يُرِيْدُ ظُلْمًا لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝ وَلِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ
وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۝ كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ
اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَ
تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ؕ وَلَوْ اٰمَنَ اَهْلُ الْكِتٰبِ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ؕ مِنْهُمُ
الْمُؤْمِنُوْنَ وَاَكْثَرُهُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۝ لَنْ يَّضُرُّوْكُمْ اِلَّآ اَذًى ؕ وَ

★रु. ११/ २ आ ८

मोमिनो ! ख़ुदा से डरो, जैसा कि उस से डरने का हक़ है और मरना तो मुसलमान ही मरना। (१०२) और सब मिल कर ख़ुदा की (हिदायत की) रस्सी को मज़बूत पकड़े रहना और अलग-अलग न होना और ख़ुदा की उस मेहरबानी को याद करो, जब तुम एक दूसरे के दुश्मन थे, तो उसने तुम्हारे दिलों में उल्फ़त डाल दी और तुम उसकी मेहरबानी से भाई-भाई हो गये और तुम आग के गढ़े के किनारे तक पहुंच चुके थे, तो ख़ुदा ने तुम को इससे बचा लिया। इस तरह ख़ुदा तुम को अपनी आयतें खोल-खोल कर सुनाता है ताकि तुम हिदायत पाओ। (१०३) और तुम में एक जमाअत ऐसी होनी चाहिए, जो लोगों को नेकी की तरफ़ बुलाए और अच्छे काम करने का हुक्म दे और बुरे कामों से मना करे, यही लोग हैं जो निजात पाने वाले हैं।[1] (१०४) और उन लोगों की तरह न होना जो अलग-अलग हो गये और खुले हुक्मों के आने के बाद एक दूसरे से (ख़िलाफ़ व) इख़्तिलाफ़ करने लगे। ये वह लोग हैं, जिनको (क़ियामत के दिन) बड़ा अज़ाब होगा (१०५) जिस दिन बहुत से मुंह सफ़ेद होंगे और बहुत से मुंह स्याह, तो जिन लोगों के मुंह स्याह होंगे, (उनसे ख़ुदा फ़रमायेगा), क्या तुम ईमान ला कर काफ़िर हो गये थे ? सो (अब) इस कुफ़्र के बदले अज़ाब (के मज़े) चखो। (१०६) और जिन लोगों के मुंह सफ़ेद होंगे, वे ख़ुदा की रहमत (के बाग़ों) में होंगे और उनमें हमेशा रहेंगे। (१०७) ये ख़ुदा की आयतें हैं, जो हम तुम को सेहत के साथ पढ़ कर सुनाते हैं और अल्लाह अह्ले आलम पर ज़ुल्म नहीं करना चाहता। (१०८) और जो कुछ आसमानों में और जो कुछ ज़मीन में है, सब ख़ुदा ही का है और सब कामों का रुजूअ और अंजाम ख़ुदा ही की तरफ़ है। (१०९) ★

(मोमिनो !) जितनी उम्मतें (यानी क़ौमें) लोगों में पैदा हुईं, तुम उन सब से बेहतर हो कि नेक काम करने को कहते हो और बुरे कामों से मना करते हो और ख़ुदा पर ईमान रखते हो और अगर अह्ले किताब भी ईमान ले आते, तो उन के लिए बहुत अच्छा होता। इन में ईमान लाने वाले भी हैं (लेकिन थोड़े) और अक्सर ना-फ़रमान हैं। (११०) और ये

---

१. 'नेकी', जो लफ़्ज़ 'ख़ैर' का तर्जुमा किया गया है, उस से मुराद क़ुरआन मजीद की पैरवी है, ख़ुदा ने इसे मामले को फ़र्ज़ क़रार दिया है कि मुसलमानों में हर ज़माने में ऐसी जमाअत होनी चाहिए जो भलाई की तरफ़ बुलाये, नेकियों का हुक्म दे और बुराइयों से रोके, ताकि लोग क़ुरआन पर चलें, अच्छे काम करें और बुराइयों से बचते रहें। यह हुक्म ऐसा है कि जिस पर बहुत तवज्जोह और कोशिश से अमल होना चाहिए ताकि लोग कामियाब बनने के हक़दार हो सकें। पर बड़े अफ़सोस की जगह है कि इस ज़माने में इस हुक्म पर अमल नहीं होता, इसी वजह से मुसलमानों की दीनी व दुनियावी हालत अच्छी नहीं रही। उन के हालात देख कर डर होता है कि कहीं ऐसा वक़्त न आ जाए कि ये दुआ करें और वह ख़ुदा के यहां से रद्द कर दी जाए, जैसा कि एक हदीस में आया है कि 'तुम लोगों को चाहिए कि नेक काम करने का हुक्म करो और बुरे कामों से मना करते रहो, नहीं तो उस ज़ात की क़सम ! जिस के हाथ में मेरी जान है कि अल्लाह तआला तुम पर अज़ाब भेजेगा, फिर तुम ख़ुदा से दुआ मांगोगे और वह उसे क़ुबूल न करेगा। ख़ुदा मुसलमानों को तौफ़ीक़ बख़्शे कि उस के हुक्मों पर अमल करें ताकि उस की रहमत के हक़दार हों और उस के अज़ाब से बचे रहें।

लंय्यजुर्रू कुम् इल्ला अ-ज़न् ط व इंय्युक़ातिलूकुम् युवल्लू - कुमुलअद्बा-र सुम्-म ला युन्सरून (१११) ज़ुरिबत् अलैहिमुज़्ज़िल्लतु ऐनमा सुक़िफ़ू इल्ला बि हब्लिम्-मिनल्लाहि व हब्लिम्-मिनन्नासि व बा-ऊ बि ग़-ज़बिम्-मिनल्लाहि व ज़ुरिबत् अलैहिमुल्-मस्कनतु ط ज़ालि-क बि अन्नहुम् कानू यक्फ़ुरू - न बि आयातिल्लाहि व यक़्तुलूनल्-अम्बिया-अ बिग़ैरि हक़्क़िन् ط ज़ालि - क बिमा अ-सव्-व कानू यअ्-तदून ق (११२) लैसू सवा-अन् ط मिन् अह्लिल् - किताबि उम्मतुन् क़ा-इमतुंय्यत्लू-न आयातिल्लाहि आना-अल्लैलि व हुम् यस्जुदून (११३) युअ्मिनू-न बिल्लाहि वल्-यौमिल्-आख़िरि व यअ्मुरू-न बिलमअ्-रूफ़ि व यन्हौ-न अनिलमुन्करि व युसारिऊ - न फ़िल्ख़ैराति ط व उला-इ-क मिनस्सालिहीन (११४) व मा यफ़्अ़लू मिन् ख़ैरिन् फ़ लंय्युक्फ़रूहु ط वल्लाहु अलीमुम् - बिलमुत्तक़ीन (११५) इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू लन् तुग़्नि-य अन्हुम् अम्वालुहुम् व ला औलादुहुम् मिनल्लाहि शैअन् ط व उलाइ - क अस्हाबुन्नारि ج हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (११६) म-सलु मा युन्फ़िक़ू-न फ़ी हाज़िहिल्-हयातिद्दुन्या क-म-सलि रीहिन् फ़ीहा सिर्रुन् असाबत् हर्-स क़ौमिन् ज़-लमू अन्फ़ुसहुम् फ़ अह्ल - कत्हु ط व मा ज़ - ल - महुमुल्लाहु व लाकिन् अन्फ़ुसहुम् यज़्लिमून (११७) या अय्युहल्लज़ी - न आमनू ला तत्तख़िज़ू बितानतम् - मिन् दूनिकुम् ला यअ्लूनकुम् ख़बालन् ط वद्दू मा अनित्तुम् ج क़द् ब - दतिल् - बग़्ज़ा - उ मिन् अफ़्वाहिहिम् صلے व मा तुख़्फ़ी सुदूरुहुम् अक्बरु ط क़द् बय्यन्ना लकुमुल् - आयाति इन् कुन्तुम् तअ्-क़िलून (११८)

اِنْ يُّقَاتِلُوْكُمْ يُوَلُّوْكُمُ الْاَدْبَارَ ثُمَّ لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿١١١﴾ ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ
الذِّلَّةُ اَيْنَ مَا ثُقِفُوْٓا اِلَّا بِحَبْلٍ مِّنَ اللّٰهِ وَحَبْلٍ مِّنَ النَّاسِ وَ
بَآءُوْ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الْمَسْكَنَةُ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ
كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ذٰلِكَ
بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ﴿١١٢﴾ لَيْسُوْا سَوَآءً مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اُمَّةٌ
قَآئِمَةٌ يَّتْلُوْنَ اٰيٰتِ اللّٰهِ اٰنَآءَ الَّيْلِ وَهُمْ يَسْجُدُوْنَ ﴿١١٣﴾ يُؤْمِنُوْنَ
بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَيَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ
وَيُسَارِعُوْنَ فِي الْخَيْرٰتِ وَاُولٰٓئِكَ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١١٤﴾ وَمَا يَفْعَلُوْا
مِنْ خَيْرٍ فَلَنْ يُّكْفَرُوْهُ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ بِالْمُتَّقِيْنَ ﴿١١٥﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا
وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿١١٦﴾ مَثَلُ مَا يُنْفِقُوْنَ
فِيْ هٰذِهِ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَثَلِ رِيْحٍ فِيْهَا صِرٌّ اَصَابَتْ حَرْثَ
قَوْمٍ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَاَهْلَكَتْهُ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللّٰهُ وَلٰكِنْ اَنْفُسَهُمْ
يَظْلِمُوْنَ ﴿١١٧﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْا بِطَانَةً مِّنْ دُوْنِكُمْ لَا
يَاْلُوْنَكُمْ خَبَالًا وَدُّوْا مَا عَنِتُّمْ قَدْ بَدَتِ الْبَغْضَآءُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ
وَمَا تُخْفِيْ صُدُوْرُهُمْ اَكْبَرُ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْاٰيٰتِ اِنْ كُنْتُمْ
تَعْقِلُوْنَ ﴿١١٨﴾ هٰٓاَنْتُمْ اُولَآءِ تُحِبُّوْنَهُمْ وَلَا يُحِبُّوْنَكُمْ وَتُؤْمِنُوْنَ بِالْكِتٰبِ

तुम्हें हल्की-सी तक्लीफ़ के अलावा कुछ नुक़्सान नहीं पहुंचा सकेंगे और अगर तुमसे लड़ेंगे, तो पीठ फेर कर भाग जाएंगे, फिर उनको मदद भी (कहीं से) नहीं मिलेगी। (१११) ये जहां नज़र आएंगे, ज़िल्लत (को देखोगे कि) उनसे चिमट रही है, अलावा इसके कि ये ख़ुदा और (मुसलमान) लोगों की पनाह में आ जाएं। और ये लोग ख़ुदा के ग़ज़ब में गिरफ़्तार हैं और नादारी उनसे लिपट रही है, यह इस लिए कि ख़ुदा की आयतों से इंकार करते थे और (उस के) पैग़म्बरों को ना-हक़ क़त्ल कर देते थे। यह इस लिए कि ये नाफ़रमानी किए जाते और हद से बढ़े जाते थे। (११२) ये भी सब एक जैसे नहीं हैं। इन अह्ले किताब में कुछ लोग (ख़ुदा के हुक्म पर) क़ायम भी हैं, जो रात के वक़्त ख़ुदा की आयतें पढ़ते और (उसके आगे) सज्दे करते हैं। (११३) (और) ख़ुदा पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते और अच्छे काम करने को कहते और बुरी बातों से मना करते और नेकियों पर लपकते हैं और यही लोग नेक लोग हैं। (११४) और ये जिस तरह की नेकी करेंगे, उसकी ना-क़द्री नहीं की जाएगी और ख़ुदा परहेज़गारों को ख़ूब जानता है। (११५) जो लोग काफ़िर हैं, उनके माल और औलाद ख़ुदा के अज़ाब को हरगिज़ नहीं टाल सकेंगे और ये लोग दोज़ख़ी हैं कि हमेशा उसी में रहेंगे। (११६) ये जो माल दुनिया की ज़िंदगी में ख़र्च करते हैं, उसकी मिसाल हवा की-सी है, जिस में सख़्त सर्दी हो और वह ऐसे लोगों की खेती पर जो अपने आप पर ज़ुल्म करते थे, चले और उसे तबाह कर दे और ख़ुदा ने उन पर कुछ ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि ये ख़ुद अपने ऊपर ज़ुल्म कर रहे हैं। (११७) मोमिनो! किसी ग़ैर (मज़हब के आदमी) को अपना राज़दार न बनाना। ये लोग तुम्हारी ख़राबी (और फ़ित्ना फैलाने) में किसी तरह की कोताही नहीं नहीं करते और चाहते हैं कि (जिस तरह हो,) तुम्हें तक्लीफ़ पहुंचे। उन की ज़ुबानों से तो दुश्मनी ज़ाहिर हो ही चुकी है और जो (कपट) उनके सीनों में छिपे हैं, वे कहीं ज़्यादा हैं। अगर तुम अक़्ल रखते हो तो हमने तुमको अपनी आयतें खोल-खोल कर सुना दी हैं। (११८) देखो, तुम ऐसे (साफ़

हा-अन्तुम् उला-इ तुहिब्बूनहुम् व ला युहिब्बूनकुम् व तुअ्मिनू-न बिल्किताबि कुल्लिही ج व इजा लक़ूकुम् क़ालू आमन्ना ﺻﻠﮯ ج व इजा ख़लौ अ़ज़्ज़ू अ़लैकुमुल्-अनामि-ल मिनल्ग़ैज़ि ط क़ुल् मूतू बि ग़ैज़िकुम् ط इन्नल्ला-ह अ़लीमुम्-बि ज़ातिस्सुदूर (११९) इन् तम्सस्कुम् ह़-स-नतुन् तसुअ्हुम् ز व इन् तुसिब्कुम् सय्यिअतुंय्यफ़्रहू बिहा ط व इन् तस्बिरू व तत्तक़ू ला यज़ुर्रुकुम् कैदुहुम् शैअन् ط इन्नल्ला-ह बिमा यअ्मलू-न मुह़ीत़ ★(१२०) व इज् ग़दौ-त मिन् अह्लि-क तुबव्वि-उल्-मुअ्मिनी-न मक़ाअि-द लिल्क़िताल ط वल्लाहु समीअ़ुन् अ़लीम لا (१२१) इज् हम्मत्ता-इ-फ़तानि मिन्कुम् अन् तफ़्शला لا वल्लाहु वलिय्युहुमा ط व अ़लल्लाहि फ़ल्य-त-वक्कलिल् मुअ्मिनून (१२२) व ल-क़द् न-स-रकुमुल्लाहु बि बद्रिंव-व अन्तुम् अज़िल्लतुन् ج फ़त्तक़ुल्ला-ह ल-अ़ल्लकुम् तश्कुरून (१२३) इज् तक़ूलु लिल्-मुअ्मिनी-न अलंय्यक्फ़ि-यकुम् अंय्युमिद्दकुम् रब्बुकुम् बिसलासति आलाफ़िम्-मिनल् मला-इकति मुन्ज़लीन ط (१२४) बला لا इन् तस्बिरू व तत्तक़ू व यअ्तूकुम् मिन् फ़ौरिहिम् हाज़ा युम्दिद्-कुम् रब्बुकुम् बि ख़म्सति आलाफ़िम्-मिनल्-मला-इकति मुसव्विमीन ●(१२५) व मा ज-अ-लहुल्लाहु इल्ला बुश्रा लकुम् व लि ततमइन-न क़ुलूबुकुम् बिही ط व मन्नस्रु इल्ला मिन् अ़िन्-दिल्लाहिल्-अ़ज़ीज़िल्-ह़कीम لا (१२६) लि यक़्-त-अ़ त-र-फ़म्-मिनल्लज़ी-न क-फ़रू औ यक्बितहुम् फ़ यन्क़लिबू ख़ा-इबीन (१२७) लै-स ल-क मिनल्अम्रि शैउन् औ यतू-ब अ़लैहिम् औ युअ़ज़्ज़िबहुम् फ़ इन्नहुम् ज़ालिमून (१२८) व लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि ط यग़्फ़िरु लि मंय्यशा-उ व युअ़ज़्ज़िबु मंय्यशा-उ ط वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रह़ीम ★(१२९)

لن تنالوا ٥٢ آل عمران

كُلِّهٖ ۚ وَاِذَا لَقُوْكُمْ قَالُوْٓا اٰمَنَّا ۚۖ وَاِذَا خَلَوْا عَضُّوْا عَلَيْكُمُ الْاَنَامِلَ
مِنَ الْغَيْظِ ۭ قُلْ مُوْتُوْا بِغَيْظِكُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ
الصُّدُوْرِ ﴿۱۱۹﴾ اِنْ تَمْسَسْكُمْ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ۡ وَاِنْ تُصِبْكُمْ سَيِّئَةٌ
يَّفْرَحُوْا بِهَا ۭ وَاِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا لَا يَضُرُّكُمْ كَيْدُھُمْ شَـيْـــًٔـا ۭ
اِنَّ اللّٰهَ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ﴿۱۲۰﴾ وَاِذْ غَدَوْتَ مِنْ اَھْلِكَ تُبَوِّئُ
الْمُؤْمِنِيْنَ مَقَاعِدَ لِلْقِتَالِ ۭ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۱۲۱﴾ اِذْ ھَمَّتْ
طَّاۗىِٕفَتٰنِ مِنْكُمْ اَنْ تَفْشَلَا ۙ وَاللّٰهُ وَلِيُّهُمَا ۭ وَعَلَي اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ
الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۲۲﴾ وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ
لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۱۲۳﴾ اِذْ تَقُوْلُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ اَلَنْ يَّكْفِيَكُمْ اَنْ
يُّمِدَّكُمْ رَبُّكُمْ بِثَلٰثَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ الْمَلٰۗىِٕكَةِ مُنْزَلِيْنَ ﴿۱۲۴﴾ بَلٰٓى ۙ اِنْ
تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا وَيَاْتُوْكُمْ مِّنْ فَوْرِھِمْ ھٰذَا يُمْدِدْكُمْ رَبُّكُمْ
بِخَمْسَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ الْمَلٰۗىِٕكَةِ مُسَوِّمِيْنَ ﴿۱۲۵﴾ وَمَا جَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّا
بُشْرٰى لَكُمْ وَلِتَطْمَىِٕنَّ قُلُوْبُكُمْ بِهٖ ۭ وَمَا النَّصْرُ اِلَّا مِنْ عِنْدِ
اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ﴿۱۲۶﴾ لِيَقْطَعَ طَرَفًا مِّنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَوْ
يَكْبِتَھُمْ فَيَنْقَلِبُوْا خَاۗىِٕــبِيْنَ ﴿۱۲۷﴾ لَيْسَ لَكَ مِنَ الْاَمْرِ شَيْءٌ اَوْ يَتُوْبَ
عَلَيْهِمْ اَوْ يُعَذِّبَھُمْ فَاِنَّھُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿۱۲۸﴾ وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ
وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَاۗءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ

منزل

★रु.१२/३ आ ११ ● रुबुअ़ १/४ ★रु. १३/४ आ ९

दिल) लोग हो कि उन लोगों से दोस्ती रखते हो, हालांकि वे तुमसे दोस्ती नहीं रखते और तुम सब किताबों पर ईमान रखते हो (और वे तुम्हारी किताब को नहीं मानते) और जब तुमसे मिलते हैं, तो कहते हैं, हम ईमान ले आए और जब अलग होते हैं, तो तुम पर गुस्से की वजह से उंगलियां काट-काट खाते हैं। (उनसे) कह दो कि (बद-बख़्तो!) गुस्से में मर जाओ। ख़ुदा तुम्हारे दिलों की बातों को ख़ूब जानता है। (११९) अगर तुम्हें आसूदगी हासिल हो, तो उनको बुरी लगती है और अगर रंज पहुंचे तो ख़ुश होते हैं और अगर तुम तक्लीफ़ों की बर्दाश्त और (उन से) किनाराकशी करते रहोगे तो उनका फ़रेब तुम्हें कुछ भी नुक़्सान न पहुंचा सकेगा। ये जो कुछ करते हैं, ख़ुदा उस पर एहाता किए हुए है। (१२०) ★

और (उस वक़्त को याद करो) जब तुम सुबह को अपने घर से रवाना हो कर ईमान वालों को लड़ाई के लिए मोर्चों पर (मौक़ा-बे-मौक़ा) तैनात करने लगे और ख़ुदा सब कुछ सुनता और जानता है। (१२१) उस वक़्त तुम में से दो जमाअतों ने जो छोड़ देना चाहा, मगर ख़ुदा उन का मददगार था और मोमिनों को ख़ुदा ही पर भरोसा रखना चाहिए।[1] (१२२) और ख़ुदा ने बद्र की लड़ाई में भी तुम्हारी मदद की थी और उस वक़्त भी तुम बे-सर व सामान थे, पस ख़ुदा से डरो (और उन एहसानों को याद करो) ताकि शुक्र करो। (१२३) जब तुम मोमिनों से यह कह (कर उनके दिल बढ़ा) रहे थे कि क्या यह काफ़ी नहीं कि परवरदिगार तीन हज़ार फ़रिश्ते नाज़िल कर के तुम्हें मदद दे। (१२४) हां, अगर दिल को मज़बूत रखो और (ख़ुदा से) डरते रहो और काफ़िर तुम पर जोश के साथ यकायकी हमला कर दें तो परवरदिगार पांच हज़ार फ़रिश्ते, जिन पर निशान होंगे, तुम्हारी मदद को भेजेगा (१२५) ● और उस मदद को तो ख़ुदा ने तुम्हारे लिए बशारत (ख़ुश-ख़बरी) का (ज़रिया) बनाया, यानी इस लिए कि तुम्हारे दिलों को उस से तसल्ली हासिल हो, वरना मदद तो ख़ुदा ही की है, जो ग़ालिब (और) हिक्मत वाला है। (१२६) (यह ख़ुदा ने) इस लिए (किया) कि काफ़िरों की एक जमाअत को हलाक या उन्हें ज़लील व मग़्लूब कर दे कि (जैसे आए थे, वैसे ही) नाकाम वापस जाएं। (१२७) (ऐ पैग़म्बर!) इस काम में तुम्हारा कुछ अख़्तियार नहीं। (अब दो शक्लें हैं) या ख़ुदा उनके हाल पर मेहरबानी करे या उन्हें अज़ाब दे कि ये ज़ालिम लोग हैं। (१२८) और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, सब ख़ुदा ही का है। वह जिसे चाहे बख़्श दे, और जिसे चाहे अज़ाब करे और ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है (१२९) ★

---

१. बद्र की लड़ाई में जब काफ़िरों को हार और मोमिनों की जीत हुई, तो काफ़िरों ने अगले साल फ़ौज जमा कर के मदीने पर चढ़ाई की और उहद के क़रीब, जो मदीने के पास एक पहाड़ है, आ उतरे। हज़रत सल्ल० ने सहाबा रज़ि० से मश्विरा लिया कि शहर से बाहर निकल कर लड़ना चाहिए या शहर के अन्दर रह कर? उन्होंने सलाह दी कि बाहर निकल कर लड़ना चाहिए, मगर अब्दुल्लाह बिन उबई ने, जो मुनाफ़िक़ों का सरदार था, मश्विरा दिया कि शहर में रहना चाहिए। हज़रत ने बाहर निकल कर लड़ना मुनासिब समझा, चुनांचे आप ने ख़ुद ज़िरह पहन ली और एक हज़ार सहाबा को साथ ले कर मदीना से बाहर निकले। अब्दुल्लाह भी लड़ाई में शरीक हुआ, मगर ना-ख़ुशी से, क्योंकि उस की सलाह नहीं मानी गयी थी। जब सौत नामी जगह पर

(शेष पृष्ठ १०३ पर)

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तअ्कुलुर्रिबा अज़्-आफ़म्-मुज़ा-अ-फ़-तंव्- वत्तक़ुल्ला-ह ल-अ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून ᶜ (१३०) वत्तक़ुन्नारल्लती उअिद्दत् लिल्काफ़िरीन ᶜ (१३१) व अतीअुल्ला-ह वर्रसू-ल ल-अ़ल्लकुम् तुर्हमून ᶜ(१३२) व सारिअू इला मग़्फ़ि-रतिम्-मिर्रब्बिकुम् व जन्नतिन् अ़र्ज़ुहस्-समावातु वल्अर्ज़ु ۙ उअिद्दत् लिल्मुत्तक़ीन (१३३) अल्लज़ी-न युन्फ़िक़ू-न फ़िस्सर्रा-इ वज़्ज़र्रा-इ वल्काज़िमीनल्-ग़ै-ज़ वल्आफ़ी-न अ़निन्नासि ۗ वल्लाहु युहिब्बुल्-मुह्सिनीन ᶜ (१३४) वल्लज़ी-न इज़ा फ़-अ़लू फ़ाहिश-तन् औ ज़-लमू अन्फ़ुसहुम् ज़-करुल्ला-ह फ़स्तग़्फ़रू लि ज़ुनूबिहिम् ۖ व मंय्यग़्फ़िरुज़्ज़ुनू-ब इल्लल्लाहु ۖ क़िफ़ व लम् युसिर्रू अ़ला मा फ़-अ़लू व हुम् यअ़्लमून (१३५) उला-इ-क जज़ा-उ-हुम् मग़्फ़ि-रतुम्-मिर्रब्बिहिम् व जन्नातुन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा ۗ व निअ़्-म अज्रुल्-आमिलीन ۗ (१३६)

غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَأْكُلُوا الرِّبَا أَضْعَافًا مُّضَاعَفَةً
وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝ وَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِي أُعِدَّتْ لِلْكَافِرِينَ ۝
وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۝ وَسَارِعُوا إِلَىٰ مَغْفِرَةٍ
مِّن رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمَاوَاتُ وَالْأَرْضُ أُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِينَ ۝
الَّذِينَ يُنفِقُونَ فِي السَّرَّاءِ وَالضَّرَّاءِ وَالْكَاظِمِينَ الْغَيْظَ وَالْعَافِينَ
عَنِ النَّاسِ ۗ وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ۝ وَالَّذِينَ إِذَا فَعَلُوا فَاحِشَةً
أَوْ ظَلَمُوا أَنفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللَّهَ فَاسْتَغْفَرُوا لِذُنُوبِهِمْ وَمَن يَغْفِرُ
الذُّنُوبَ إِلَّا اللَّهُ وَلَمْ يُصِرُّوا عَلَىٰ مَا فَعَلُوا وَهُمْ يَعْلَمُونَ ۝
أُولَٰئِكَ جَزَاؤُهُم مَّغْفِرَةٌ مِّن رَّبِّهِمْ وَجَنَّاتٌ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا
الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ وَنِعْمَ أَجْرُ الْعَامِلِينَ ۝ قَدْ خَلَتْ مِن
قَبْلِكُمْ سُنَنٌ فَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ
الْمُكَذِّبِينَ ۝ هَٰذَا بَيَانٌ لِّلنَّاسِ وَهُدًى وَمَوْعِظَةٌ لِّلْمُتَّقِينَ ۝
وَلَا تَهِنُوا وَلَا تَحْزَنُوا وَأَنتُمُ الْأَعْلَوْنَ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ۝
إِن يَمْسَسْكُمْ قَرْحٌ فَقَدْ مَسَّ الْقَوْمَ قَرْحٌ مِّثْلُهُ ۚ وَتِلْكَ الْأَيَّامُ
نُدَاوِلُهَا بَيْنَ النَّاسِ وَلِيَعْلَمَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَيَتَّخِذَ مِنكُمْ
شُهَدَاءَ ۗ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الظَّالِمِينَ ۝ وَلِيُمَحِّصَ اللَّهُ الَّذِينَ
آمَنُوا وَيَمْحَقَ الْكَافِرِينَ ۝ أَمْ حَسِبْتُمْ أَن تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا

क़द् ख़-लत् मिन् क़ब्लिकुम् सुननुन् ۙ फ़ सीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़न्ज़ुरू कै-फ़ का-न आक़िबतुल्-मुकज़्ज़िबीन (१३७) हाज़ा बयानुल्लिन्नासि व हुदंव-व मौअिज़तुल्-लिल्मुत्तक़ीन (१३८) व ला तहिनू व ला तह्ज़नू व अन्तुमुल्-अअ़्-लौ-न इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन (१३९) इंय्यम्सस्कुम् क़र्हुन् फ़-क़द् मस्सल्क़ौ-म क़र्हुम्-मिस्लुहू ۗ व तिल्कल्-अय्यामु नुदाविलुहा बैनन्नासि ᶜ व लि यअ़्-ल-मल्लाहुल्लज़ी-न आमनू व यत्तख़ि-ज़ मिन्कुम् शुहदा-अ ۗ वल्लाहु ला युहिब्बुज़्ज़ालिमीन ᶜ (१४०) व लि युमह्हिसल्लाहुल्लज़ी-न आमनू व यम्ह-क़ल्-काफ़िरीन (१४१)

ऐ ईमान वालो! दोगुना-चौगुना सूद न खाओ और ख़ुदा से डरो, ताकि निजात हासिल करो। (१३०) और (दोज़ख़ की) आग से बचो, जो काफ़िरों के लिए तैयार की गयी है। (१३१) और ख़ुदा और उस के रसूल की इताअत करो, ताकि तुम पर रहमत की जाए। (१३२) और अपने परवरदिगार की बख़्शिश और बहिश्त की तरफ़ लपको, जिस की चौड़ाई आसमान और ज़मीन के बराबर है और जो (ख़ुदा से) डरने वालों के लिए तैयार की गयी है। (१३३) जो आसूदगी और तंगी में (अपना माल ख़ुदा की राह में) ख़र्च करते हैं और ग़ुस्से को रोकते और लोगों के क़ुसूर माफ़ करते हैं और ख़ुदा नेक लोगों को दोस्त रखता है। (१३४) और वह कि जब कोई खुला गुनाह या अपने हक़ में कोई और बुराई कर बैठते हैं तो ख़ुदा को याद करते और अपने गुनाहों की बख़्शिश मांगते हैं और ख़ुदा के सिवा गुनाह बख़्श भी कौन सकता है! और जान-बूझ कर अपने कामों पर अड़े नहीं रहते। (१३५) ऐसे ही लोगों का बदला परवरदिगार की तरफ़ से बख़्शिश और बाग़ हैं, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं (और) वे उस में हमेशा बसते रहेंगे और (अच्छे) काम करने वालों का बदला बहुत अच्छा है। (१३६) तुम लोगों से पहले भी बहुत से वाक़िआत गुज़र चुके हैं, तो तुम ज़मीन में सैर कर के देख लो कि झुठलाने वालों का कैसा अंजाम हुआ। (१३७) यह (क़ुरआन) लोगों के लिए खुला बयान और तक़्वा वालों के लिए हिदायत और नसीहत है। (१३८) और देखो बे-दिल न होना और न किसी तरह का ग़म करना, अगर तुम (सच्चे) मोमिन हो, तो तुम ही ग़ालिब रहोगे। (१३९) अगर तुम्हें (हार खाने का) घाव लगा है, तो उन लोगों को भी ऐसा घाव लग चुका है और ये दिन हैं कि हम इन लोगों में बदलते रहते हैं, और इस से यह भी मक़्सूद था कि ख़ुदा ईमान वालों को अलग कर दे और तुम में से गवाह बनाए और ख़ुदा बे-इन्साफ़ों को पसन्द नहीं करता। (१४०) और यह भी मक़्सूद था कि ख़ुदा ईमान वालों को ख़ालिस (मोमिन) बना दे और काफ़िरों को नाबूद (ख़त्म) कर दे। (१४१) क्या तुम यह समझते हो कि (बे-आज़माइश) बहिश्त

(पृष्ठ १०१ का शेष)

पहुंचे तो अब्दुल्लाह लश्कर के एक हिस्से को ले कर लौट चला और उस के बहकाने से क़बीला ख़ज़रज में से बनू सलमा ने और क़बीला औस में से बनू हारिसा ने, जो फ़ौज के दाहिने-बाएं मोर्चे पर मुक़र्रर थे, हिम्मत हार देनी चाही, लेकिन ख़ुदा ने उन के दिलों को मज़बूत किया और वे मैदान में जमे रहे। इस आयत में इन्हीं दो जमाअतों, यानी बनू सलमा और बनू हारिसा का ज़िक्र है और उन्हीं के बारे में ख़ुदा ने फ़रमाया कि ख़ुदा उन का मददगार था।

अम् हसिब्तुम् अन् तद्ख़ुलुल्-जन्न-त व लम्मा यअ्-लमिल्लाहुल्लज़ी-न जाहदू मिन्कुम् व यअ्-ल-मस्साबिरीन (१४२) व ल-क़द् कुन्तुम् तमन्नौनल्मौ-त मिन् क़ब्लि अन् तल्क़ौहु ق फ़-क़द् रऔतुमूहु व अन्तुम् तन्ज़ुरून ★ (१४३)

व मा मुहम्मदुन् इल्ला रसूलुन् ج क़द् ख़-लत् मिन् क़ब्लिहिर्रुसुलु ط अ-फ़-इम्मा-त औ क़ुतिलन्-क़लब्तुम् अला अअ्-क़ाबिकुम् ط व मंय्यन्क़लिब् अला अक़िबैहि फ़ लंय्यज़ुर्रल्ला-ह शैअन् ط व स-यज्ज़िल्लाहुश्-शाकिरीन (१४४) व मा का-न लि नफ़्सिन् अन् तमू-त इल्ला बि इज़्निल्लाहि किताबम् - मुअज्जलन् ط व मंय्युरिद् स - वाबद्दुन्या नुअ्तिही मिन्हा ج व मंय्युरिद् स - वाबल् - आख़िरति नुअ्तिही मिन्हा ط व स-नज्ज़िश्-शाकिरीन (१४५) व क-अय्यिम्-मिन् नबिय्यिन् क़ात-ल ل म-अहू रिब्बिय्यू-न कसीरुन् ج फ़ मा व-हनू लिमा असाबहुम् फ़ी सबीलिल्लाहि व मा ज़अुफ़ू व मस्तकानू ط वल्लाहु युहिब्बुस्साबिरीन (१४६)

يَعْلَمِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ جٰهَدُوْا مِنْكُمْ وَيَعْلَمَ الصّٰبِرِيْنَ ۝ وَلَقَدْ كُنْتُمْ
تَمَنَّوْنَ الْمَوْتَ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَلْقَوْهُ فَقَدْ رَاَيْتُمُوْهُ وَاَنْتُمْ
تَنْظُرُوْنَ ۝ وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ
اَفَاۣىِٕنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ وَمَنْ يَّنْقَلِبْ عَلٰى
عَقِبَيْهِ فَلَنْ يَّضُرَّ اللّٰهَ شَيْـًٔا وَسَيَجْزِي اللّٰهُ الشّٰكِرِيْنَ ۝ وَمَا
كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تَمُوْتَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ كِتٰبًا مُّؤَجَّلًا وَمَنْ يُّرِدْ
ثَوَابَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا وَمَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الْاٰخِرَةِ نُؤْتِهٖ مِنْهَا وَ
سَنَجْزِي الشّٰكِرِيْنَ ۝ وَكَاَيِّنْ مِّنْ نَّبِيٍّ قٰتَلَ مَعَهٗ رِبِّيُّوْنَ كَثِيْرٌ
فَمَا وَهَنُوْا لِمَآ اَصَابَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَمَا ضَعُفُوْا وَمَا
اسْتَكَانُوْا وَاللّٰهُ يُحِبُّ الصّٰبِرِيْنَ ۝ وَمَا كَانَ قَوْلَهُمْ اِلَّآ
اَنْ قَالُوْا رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَاِسْرَافَنَا فِيْٓ اَمْرِنَا وَثَبِّتْ
اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۝ فَاٰتٰىهُمُ اللّٰهُ ثَوَابَ
الدُّنْيَا وَحُسْنَ ثَوَابِ الْاٰخِرَةِ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تُطِيْعُوا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَرُدُّوْكُمْ عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ
فَتَنْقَلِبُوْا خٰسِرِيْنَ ۝ بَلِ اللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ وَهُوَ خَيْرُ النّٰصِرِيْنَ ۝
سَنُلْقِيْ فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الرُّعْبَ بِمَآ اَشْرَكُوْا بِاللّٰهِ مَا
لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا وَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ وَبِئْسَ مَثْوَى الظّٰلِمِيْنَ ۝

व मा का-न क़ौलहुम् इल्ला अन् क़ालू रब्बनग़्फ़िर् लना ज़ुनूबना व इस्राफ़ना फ़ी अम्रिना व सब्बित् अक़्दामना वन्सुर्ना अलल्क़ौमिल् - काफ़िरीन (१४७) फ़-आताहुमुल्लाहु सवाबद्दुन्या व हुस्-न सवाबिल्-आख़िरति ط वल्लाहु युहिब्बुल् - मुह्सिनीन ★ (१४८) या अय्युहल्लज़ी - न आमनू इन् तुतीअुल्लज़ी-न क-फ़रू यरुद्दूकुम् अला अअ्-क़ाबिकुम् फ़ तन्क़लिबू ख़ासिरीन (१४९) बलिल्लाहु मौलाकुम् ج व हु-व ख़ैरुन्नासिरीन (१५०) सनुल्क़ी फ़ी क़ुलूबिल्लज़ी-न क-फ़रुर्रुअ्-ब बिमा अश्रकू बिल्लाहि मा लम् युनज़्ज़िल् बिही सुल्तानन् ج व मअ्वाहुमुन्नारु ط व बिअ्-स मस्वज़्ज़ालिमीन (१५१)

★रु. १४/५ आ १४ ★रु. १५/६ आ ५

में जा दाखिल होगे, हालांकि अभी ख़ुदा ने तुम में से जिहाद करने वालों को तो अच्छी तरह् मालूम किया ही नहीं और (यह भी मक़्सूद है) कि वह साबित-क़दम रहने वालों को मालूम करे। (१४२) और तुम मौत (शहादत) के आने से पहले उस की तमन्ना किया करते थे, सो तुम ने उस को आंखों से देख लिया। (१४३) ★

और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तो सिर्फ़ (ख़ुदा के) पैग़म्बर हैं। इन से पहले भी बहुत से पैग़म्बर हो गुज़रे हैं। भला अगर यह मर जाएं या मारे जाएं, तो तुम उल्टे पांव फिर जाओ ? (यानी दीन से फिर जाओ ?) और जो उल्टे पांव फिर जाएगा, तो ख़ुदा का कुछ नुक्सान नहीं कर सकेगा और ख़ुदा शुक्रगुज़ारों को (बड़ा) सवाब देगा। (१४४) और किसी शख़्स में ताक़त नहीं कि ख़ुदा के हुक्म के बग़ैर मर जाए। (उस ने मौत का) वक़्त मुक़र्रर कर के लिख रखा है और जो शख़्स दुनिया में (अपने आमाल का) बदला चाहे, उस को हम यहीं बदला दे देंगे। और जो आख़िरत में सवाब का तालिब हो, उस को वहां अज्र अता करेंगे। और हम शुक्रगुज़ारों को बहुत जल्द (बहुत अच्छा) बदला देंगे। (१४५) और बहुत से नबी हुए हैं जिन के साथ हो कर अक्सर अल्लाह वाले (ख़ुदा के दुश्मनों से) लड़े हैं, तो जो मुसीबतें उन पर ख़ुदा की राह में वाक़े हुई, उनकी वजह से उन्हों ने न तो हिम्मत हारी और न बुज़दिली की, न (काफ़िरों से) दबे और ख़ुदा जमाव रखने वालों को दोस्त रखता है। (१४६) और (इस हालत में) उन के मुंह से कोई बात निकलती तो यही कि, ऐ परवरदिगार ! हमारे गुनाह और ज़्यादतियां जो हम अपने कामों में करते रहे हैं, माफ़ फ़रमा और हम को साबित-क़दम रख और काफ़िरों पर फ़त्ह इनायत फ़रमा। (१४७) तो ख़ुदा ने उन को दुनिया में भी बदला दिया और आख़िरत में भी बहुत अच्छा बदला (देगा) और ख़ुदा नेक लोगों को दोस्त रखता है। (१४८) ★

मोमिनो ! अगर तुम काफ़िरों का कहा मान लोगे, तो वे तुम को उल्टे पांव फेर (कर मुर्तद कर) देंगे, फिर तुम बड़े घाटे में पड़ जाओगे। (१४९) (ये तुम्हारे मददगार नहीं हैं,) बल्कि ख़ुदा तुम्हारा मददगार है और वह सब से बेहतर मददगार है। (१५०) हम बहुत जल्द काफ़िरों के दिलों में तुम्हारा रौब बिठा देंगे, क्योंकि ये ख़ुदा के साथ शिर्क करते हैं, जिस की उस ने कोई भी दलील नहीं उतारी और उन का ठिकाना दोज़ख़ है, वह ज़ालिमों का बहुत बुरा ठिकाना है। (१५१) और

★रु. १४/५ आ १४ ★रु. १५/६ आ ५

व ल-क़द् स-द-क़कुमुल्लाहु वअ्-दहू इज् तहुस्सूनहुम् बि इज़्निही ج हत्ता इज़ा फ़शिल्तुम् व तनाज़अ्-तुम् फ़िल्अम्रि व असैतुम् मिम्बअ्दि मा अराकुम् मा तुहिब्बू - न ط मिन्कुम् मंय्युरीदुद्-दुन्या व मिन्कुम् मंय्युरीदुल् - आख़िर-त ج सुम्-म स-र-फ़कुम् अन्हुम् लि यब्तलि-यकुम् ج व ल - क़द् अफ़ा अन्कुम् ط वल्लाहु ज़ू फ़ज़्लिन् अ-लल् - मुअ्मिनीन (१५२) इज् तुस्अिदू-न व ला तल्वू-न अला अ-हदिंव्वर्रसूलु यद्अूकुम् फ़ी उख़्रा कुम् फ़ असाबकुम् ग़म्मम् - बि ग़म्मिल्-लिकैला तह्ज़नू अला मा फ़ातकुम् व ला मा असाबकुम् ط वल्लाहु ख़बीरुम् - बिमा तअ्-मलून (१५३) सुम्-म अन्ज़-ल अलैकुम् मिम्बअ्-दिल् - ग़म्मि अ-म-नतन्नुआ-संय्यग़्शा ता - इ - फ़ - तम् - मिन्कुम् ﻻ व ता-इ-फ़तुन् क़द् अहम्मत्हुम् अन्फ़ुसुहुम् यज़ुन्नू - न बिल्लाहि ग़ैरल्हक्क़ि ज़न्नल्-जाहिलिय्यति ط यक़ूलू-न हल्लना मिनल्अम्रि मिन् शैइन् ط क़ुल् इन्नल् - अम्-र कुल्लहू लिल्लाहि ط युख़्फ़ू-न फ़ी अन्फ़ुसिहिम् मा ला युब्दू-न ल - क ط यक़ूलू - न लौ का-न लना मिनल्-अम्रि शैउम्मा क़ुतिल्ना हाहुना ط क़ुल् लौ कुन्तुम् फ़ी बुयूतिकुम् ल ब-र-ज़ल्लज़ी-न कुति-ब अलैहिमुल्क़त्लु इला मज़ाजिअिहिम् ج व लि यब्तलियल्लाहु मा फ़ी सुदूरिकुम् व लि युमह्हि-स मा फ़ी क़ुलूबिकुम् ط वल्लाहु अलीमुम्-बि ज़ातिस्सुदूर (१५४) इन्नल्लज़ी-न तवल्लौ मिन्कुम् यौमल्-त-क़ल्-जम्आनि ﻻ इन्नमस्तज़ल्ल-हुमुश्-शैतानु बि बअ्-ज़ि मा क-सबू ج व ल-क़द् अ-फ़ल्लाहु अन्हुम् ط इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुन् हलीम ★ (१५५)

لن تنالوا ٥٥ آل عمران

وَلَقَدْ صَدَقَكُمُ اللّٰهُ وَعْدَهٗٓ اِذْ تَحُسُّوْنَهُمْ بِاِذْنِهٖ ۚ حَتّٰٓى اِذَا
فَشِلْتُمْ وَتَنَازَعْتُمْ فِى الْاَمْرِ وَعَصَيْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَآ اَرٰىكُمْ مَّا
تُحِبُّوْنَ ۭ مِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الدُّنْيَا وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الْاٰخِرَةَ ۚ ثُمَّ
صَرَفَكُمْ عَنْهُمْ لِيَبْتَلِيَكُمْ ۚ وَلَقَدْ عَفَا عَنْكُمْ ۭ وَاللّٰهُ ذُوْ فَضْلٍ عَلَى
الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ اِذْ تُصْعِدُوْنَ وَلَا تَلْوٗنَ عَلٰٓي اَحَدٍ وَّالرَّسُوْلُ يَدْعُوْكُمْ
فِيْٓ اُخْرٰىكُمْ فَاَثَابَكُمْ غَمًّۢا بِغَمٍّ لِّكَيْلَا تَحْزَنُوْا عَلٰي مَا فَاتَكُمْ وَلَا
مَآ اَصَابَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝ ثُمَّ اَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْۢ
بَعْدِ الْغَمِّ اَمَنَةً نُّعَاسًا يَّغْشٰى طَاۗىِٕفَةً مِّنْكُمْ ۙ وَطَاۗىِٕفَةٌ قَدْ
اَهَمَّتْهُمْ اَنْفُسُهُمْ يَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ ظَنَّ الْجَاهِلِيَّةِ ۭ يَقُوْلُوْنَ
هَلْ لَّنَا مِنَ الْاَمْرِ مِنْ شَيْءٍ ۭ قُلْ اِنَّ الْاَمْرَ كُلَّهٗ لِلّٰهِ ۭ يُخْفُوْنَ
فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ مَّا لَا يُبْدُوْنَ لَكَ ۭ يَقُوْلُوْنَ لَوْ كَانَ لَنَا مِنَ الْاَمْرِ
شَيْءٌ مَّا قُتِلْنَا ھٰهُنَا ۭ قُلْ لَّوْ كُنْتُمْ فِيْ بُيُوْتِكُمْ لَبَرَزَ الَّذِيْنَ
كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقَتْلُ اِلٰى مَضَاجِعِهِمْ ۚ وَلِيَبْتَلِيَ اللّٰهُ مَا فِيْ
صُدُوْرِكُمْ وَلِيُمَحِّصَ مَا فِيْ قُلُوْبِكُمْ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ
الصُّدُوْرِ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ تَوَلَّوْا مِنْكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ ۙ اِنَّمَا
اسْتَزَلَّهُمُ الشَّيْطٰنُ بِبَعْضِ مَا كَسَبُوْا ۚ وَلَقَدْ عَفَا اللّٰهُ عَنْهُمْ ۭ
اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ ع

منزل

★रु. १६/७ आ ७

ख़ुदा ने अपना वायदा सच्चा कर दिया (यानी) उस वक़्त जबकि तुम काफ़िरों को उस के हुक्म से क़त्ल कर रहे थे, यहां तक कि जो तुम चाहते थे, ख़ुदा ने तुम को दिखा दिया, इस के बाद तुम ने हिम्मत हार दी और (पैग़म्बर के) हुक्म में झगड़ा करने लगे और उस की ना-फ़रमानी की, कुछ तो तुम में से दुनिया की ख़्वाहिश कर रहे थे और कुछ आख़िरत के तालिब। उस वक़्त ख़ुदा ने तुम को उन (के मुक़ाबले) से फेर (कर भगा) दिया, ताकि तुम्हारी आज़माइश करे और उस ने तुम्हारा क़ुसूर माफ़ कर दिया और ख़ुदा मोमिन पर फ़ज़्ल करने वाला है। (१५२) (वह वक़्त भी याद करने के लायक़ है,) जब तुम लोग दूर भागे जाते थे और किसी को पीछे फिर कर नहीं देखते थे और अल्लाह के रसूल तुम को तुम्हारे पीछे खड़े बुला रहे थे तो ख़ुदा ने तुम को ग़म पर ग़म पहुंचाया ताकि जो चीज़ तुम्हारे हाथ से जाती रही,या जो मुसीबत तुम पर वाक़ेअ हुई है, इस से तुम ग़मगीन न हो और ख़ुदा सब आमाल से ख़बरदार है।[1] (१५३) फिर ख़ुदा ने ग़म व रंज के बाद तुम पर तसल्ली नाज़िल फ़रमायी (यानी) नींद, कि तुम में से एक जमाअत पर छा गयी और कुछ लोग जिन के जान के लाले पड़ रहे थे, ख़ुदा के बारे में ना-हक़ कुफ़्र (के दिनों) जैसे गुमान करते थे और कहते थे कि भला हमारे अख़्तियार की कुछ बात है? तुम कह दो कि बेशक सब बातें अल्लाह ही के अख़्तियार में हैं, ये लोग (बहुत-सी बातें) दिलों में छिपा रखते थे, जो तुम पर ज़ाहिर नहीं करते थे। कहते थे कि हमारे बस की बात होती तो हम यहां क़त्ल ही न किये जाते। कह दो कि अगर तुम अपने घरों में भी होते तो जिनकी तक़्दीर में मारा जाना लिखा था, वे अपनी-अपनी क़त्ल गाहों की तरफ़ ज़रूर निकल आते। इस से ग़रज़ यह थी कि ख़ुदा तुम्हारे सीनों की बातों को आज़माए और जो कुछ तुम्हारे दिलों में है, उन को ख़ालिस और साफ़ कर दे और ख़ुदा दिलों की बातों को ख़ूब जानता है। (१५४)

जो लोग तुम में से (उहुद के दिन) जबकि (मोमिनों और काफ़िरों की) दो जमाअतें एक दूसरे से गुथ गयीं, (लड़ाई से) भाग गये तो उन के कुछ कामों की वजह से शैतान ने उन को फिसला दिया, मगर ख़ुदा ने उनका क़ुसूर माफ़ कर दिया। बेशक ख़ुदा बख़्शने वाला (और) बुर्दबार है।

---

१. यह उहुद की लड़ाई का क़िस्सा है। इस लड़ाई में, शुरू-शुरू में तो मुसलमान ग़ालिब रहे, मगर बाद में हज़रत सल्ल० की ना-फ़रमानी की वजह से हार हो गयी। ना-फ़रमानी यह हुई थी कि हज़रत ने तीरन्दाज़ों की एक जमाअत को एक मोर्चे पर लगा कर हुक्म दिया कि तुम यहां खड़े रहना और हरगिज़ न लड़ना। वे लोग तो वहां खड़े हुए और बाक़ी फ़ौज लड़ाई में लग गयी। लड़ाई में अल्लाह तआला ने मुसलमानों की मदद की और उन को ग़ल्बा दिया। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि हज़रत सल्ल० की जैसी मदद अल्लाह तआला ने उहुद के दिन की, ऐसी किसी मौक़े पर नहीं की। जब मुसलमान जीते और काफ़िर हार कर भागने लगे तो, तीरंदाज़ों ने चाहा कि मोर्चा छोड़ कर जीत में शामिल हो जाएं और ग़नीमत का माल लें, तो वे मोर्चा छोड़ कर चल दिए।

(शेष पृष्ठ १०९ पर)

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तकूनू कल्लज़ी-न क-फ़रू व क़ालू लि इख़्वानिहिम् इज़ा ज़-रबू फ़िल्अर्ज़ि औ कानू ग़ुज़्ज़ल्लौ कानू अिन्दना मा मातू व मा क़ुतिलू ج लि यज्अ-लल्लाहु ज़ालि-क हस्-र-तन् फ़ी क़ुलूबिहिम् ط वल्लाहु युह्यी व युमीतु ط वल्लाहु बिमा तअ्-मलू-न बसीर (१५६) व लइन् क़ुतिल्तुम् फ़ी सबीलिल्लाहि औ मुत्तुम् ल मग़्फ़ि-रतुम्-मिनल्लाहि व रह्मतुन् ख़ैरुम्मिम्मा यज्मअून (१५७) व लइम् मुत्तुम् औ क़ुतिल्तुम् ल - इलल्लाहि तुह्शरून (१५८) फ़ बिमा रह्मतिम्-मिनल्लाहि लिन्-त लहुम् ج व लौ कुन्-त फ़ज़्ज़न् ग़लीज़ल्क़ल्बि लन्फ़ज़्ज़ू मिन् हौलिक صلے फ़अ्-फु अन्हुम् वस्तग़्फ़िर्-लहुम् व शाविर्हुम् फ़िल्अम्रि ج फ़ इज़ा अ-ज़म्-त फ़-त-वक्कल् अ-लल्लाहि ط इन्नल्ला-ह युहिब्बुल्-मु-त-वक्किलीन (१५९) इंय्यन्सुर्-कुमुल्लाहु फ़ ला ग़ालि-ब लकुम् ج व इंय्यख़्ज़ुल्कुम् फ़-मन् ज़ल्लज़ी यन्सुरुकुम् मिम्बअ्-दिही ط व अ-लल्लाहि फ़ल्य-त-वक्कलिल् - मुअ्मिनून (१६०) व मा का-न लि नबिय्यिन् अंय्यग़ुल्-ल ط व मंय्यग़्लुल् यअ्ति बिमा ग़ल्-ल यौमल्क़ियामति ج सुम-म तुवफ़्फ़ा कुल्लु नफ़्सिम्मा-क-स-बत् व हुम् ला युज़्लमून (१६१) अ फ़ मनित्त-ब-अ रिज़्वानल्लाहि क-मम्बा-अ बि स-ख़तिम्-मिनल्लाहि व मअ्वाहु जहन्नमु ط व बिअ्सल्मसीर (१६२) हुम् द-र-जातुन् अिन्दल्लाहि ط वल्लाहु बसीरुम्-बिमा यअ्-मलून (१६३) ल-क़द् मन्नल्लाहु अ-लल्-मुअ्मिनी-न इज़् ब-अ-स फ़ीहिम् रसूलम्मिन् अन्फ़ुसिहिम् यत्लू अलैहिम् आयातिही व युज़क्कीहिम् व युअल्लिमुहुमुल्-किता-ब वल्हिक्म-त ج व इन् कानू मिन् क़ब्लु ल - फ़ी ज़लालिम् - मुबीन ● (१६४)

لن تنالوا ٤ — ٥٦ — آل عمران ٣

كفروا وقالوا لإخوانهم إذا ضربوا في الأرض أو كانوا غزى لو
كانوا عندنا ما ماتوا وما قتلوا ليجعل الله ذلك حسرة في
قلوبهم والله يحي ويميت والله بما تعملون بصير ۝ ولئن
قتلتم في سبيل الله أو متم لمغفرة من الله ورحمة خير
مما يجمعون ۝ ولئن متم أو قتلتم لإلى الله تحشرون ۝
فبما رحمة من الله لنت لهم ولو كنت فظا غليظ القلب
لانفضوا من حولك فاعف عنهم واستغفر لهم وشاورهم
في الأمر فإذا عزمت فتوكل على الله إن الله يحب المتوكلين ۝
إن ينصركم الله فلا غالب لكم وإن يخذلكم فمن ذا الذي
ينصركم من بعده وعلى الله فليتوكل المؤمنون ۝ وما
كان لنبي أن يغل ومن يغلل يأت بما غل يوم القيمة
ثم توفى كل نفس ما كسبت وهم لا يظلمون ۝ أفمن
اتبع رضوان الله كمن باء بسخط من الله ومأوىه جهنم
وبئس المصير ۝ هم درجت عند الله والله بصير بما
يعملون ۝ لقد من الله على المؤمنين إذ بعث فيهم رسولا
من أنفسهم يتلوا عليهم ءايته ويزكيهم ويعلمهم الكتب
والحكمة وإن كانوا من قبل لفي ضلل مبين ۝ أولما

منزل

● नि १/२

(१५५) मोमिनो ! उन लोगों जैसे न होना, जो कुफ़ करते हैं और उन के (मुसलमान) भाई जब (ख़ुदा की राह में) सफ़र करें (और मर जाएं) या जिहाद को निकलें (और मारे जाएं) तो उन के बारे में कहते हैं कि अगर वे हमारे पास रहते तो न मरते और न मारे जाते। इन बातों से मक़्सूद यह है कि ख़ुदा इन लोगों के दिलों में अफ़सोस पैदा कर दे और ज़िंदगी और मौत तो ख़ुदा ही देता है और ख़ुदा तुम्हारे सब कामों को देख रहा है। (१५६) और अगर तुम ख़ुदा के रास्ते में मारे जाओ या मर जाओ, तो जो (माल व मताअ्) लोग जमा करते हैं, उस से ख़ुदा की बख़्शिश और रहमत कहीं बेहतर है। (१५७) और अगर तुम मर जाओ, या मारे जाओ, ख़ुदा के हुज़ूर में ज़रूर इकट्ठे किये जाओगे। (१५८) (ऐ मुहम्मद !) ख़ुदा की मेहरबानी से, तुम्हारी तबियत इन लोगों के लिए नर्म वाक़े हुई है और अगर तुम बुरी तबियत के और सख़्त-दिल होते, तो ये तुम्हारे पास से भाग खड़े होते, तो उन को माफ़ कर दो और उन के लिए (ख़ुदा से) मग़्फ़िरत मांगो और अपने कामों में उन से मश्विरा लिया करो और जब (किसी काम का) पक्का इरादा कर लो तो ख़ुदा पर भरोसा रखो। बेशक ख़ुदा भरोसा रखने वालों को दोस्त रखता है। (१५९) अगर ख़ुदा तुम्हारा मददगार है, तो तुम पर कोई ग़ालिब नहीं आ सकता और अगर वह तुम्हें छोड़ दे, तो फिर कौन है कि तुम्हारी मदद करे और मोमिनों को चाहिए कि ख़ुदा ही पर भरोसा रखें। (१६०) और कभी नहीं हो सकता कि (ख़ुदा के) पैग़म्बर ख़ियानत करें और ख़ियानत करने वालों को क़ियामत के दिन ख़ियानत की हुई चीज़ (ख़ुदा के सामने) ला हाज़िर करनी होगी। फिर हर शख़्स को उसके आमाल का पूरा-पूरा बदला दिया जाएगा और बे-इन्साफ़ी नहीं की जाएगी। (१६१) भला जो शख़्स ख़ुदा की ख़ुश्नूदी का ताबेअ हो, वह उस शख़्स की तरह ख़ियानत कर सकता है, जो ख़ुदा की ना-ख़ुशी में गिरफ़्तार हो और जिस का ठिकाना दोज़ख़ है और वह बुरा ठिकाना है। (१६२) उन लोगों के ख़ुदा के यहां (अलग-अलग और मुख़्तलिफ़) दर्जे हैं और ख़ुदा उन के सब आमाल को देख रहा है। (१६३) ख़ुदा ने मोमिनों पर बड़ा एहसान किया है कि उन में उन्हीं में से एक पैग़म्बर भेजे, जो उन को ख़ुदा की आयतें पढ़-पढ़ कर सुनाते और उन को पाक करते और (ख़ुदा की) किताब और दानाई सिखाते हैं और पहले तो ये लोग खुली गुमराही में थे (१६४) ● (भला यह)

(पृष्ठ १०७ का शेष)

अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर ने जो उन के अफ़सर थे, उन को हर तरह मना किया, मगर उन्हों ने उन के कहने पर अमल न किया। इधर तो यह सूरत हुई, उधर ख़ालिद बिन वलीद ने, जो उस वक़्त काफ़िरों के साथ थे, पीछे से हमला कर दिया और इस से लड़ाई की शक्ल बदल गयी यानी जीतने वालों को हार और हार खाने वालों की जीत हुई। ख़ुद हज़रत सल्ल० का चेहरा-ए-मुबारक ज़ख़्मी हुआ, सामने के चार दांत टूट गये, ख़ूद सर में घुस गया और यह मशहूर हो गया कि आप शहीद हो गये, ग़रज़ मुसलमान भाग खड़े हुए। उस वक़्त आप फ़रमाते थे कि ऐ ख़ुदा के बन्दो ! मेरे पास आओ, मैं ख़ुदा का पैग़म्बर हूं। जो कोई फिर काफ़िरों पर हमला करेगा, उस को जन्नत मिलेगी।

ग़म पर ग़म पहुंचाने से यह मुराद है कि एक तो ग़नीमत के माल से महरूम हुए, क़त्ल और ज़ख़्मी किये गये, दूसरे हज़रत सल्ल० का शहीद होना सुना और काफ़िरों का ग़ल्बा देखा।

★रु. १९/७ आ ७ ● नि. १/२

अ-व लम्मा॑ असाबत्कुम् मुसीबतुन् क़द् असब्तुम् मिस्लैहा لا क़ुल्तुम् अन्ना हाज़ा ط क़ुल् हु-व मिन् अिन्दि अन्फ़ुसिकुम् ط इन्नल्ला-ह अला कुल्लि शैइन् क़दीर (१६५) व मा॑ असाबकुम् यौमल्-त-क़ल् - जम्‌आनि फ़बि-इज़्-निल्लाहि व लि-यअ्‌-ल-मल्-मुअ्‌मिनीन لا (१६६) व लि-यअ्‌-ल-मल्लज़ी-न नाफ़क़ू صلے ج व क़ी - ल लहुम् तआलौ क़ातिलू फ़ी सबीलिल्लाहि अविद्‌फ़अू ط क़ालू लौ नअ्‌-लमु क़िताललू - लत्तबअ्‌-नाकुम् हुम् लिल्कुफ़्रि यौमइज़िन् अक़्रबु मिन्हुम् लिल् - ईमानि ج यक़ूलू - न बिअफ़्वाहिहिम् मा लै-स फ़ी क़ुलूबिहिम् ط वल्लाहु अअ्‌-लमु बिमा यक्तुमून (१६७) अल्लज़ी-न क़ालू लि-इख़्वानिहिम् व क़-अदू लौ अताअूना मा क़ुतिलू ط क़ुल् फ़द्‌रऊ अन् अन्फ़ुसिकुमुल्मौ-त इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (१६८) व ला तह्‌सबन्नल्लज़ी-न क़ुतिलू फ़ी सबीलिल्लाहि अम्वातन् ط बल् अह्‌या॑ - उन् अिन् - द रब्बिहिम् युर्ज़क़ून لا (१६९) फ़रिही - न बिमा॑ आताहुमुल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही لا व यस्तब्शिरू - न बिल्लज़ी - न लम् यल्‌हक़ू बिहिम् मिन् ख़ल्फ़िहिम् لا अल्ला ख़ौफ़ुन् अलैहिम् व ला हुम् यह्‌ज़नून ∴(१७०) यस्तब्शिरू-न बिनिअ्‌-मतिम्-मिनल्लाहि व फ़ज़्लिन् لا - व अन्नल्ला - ह ला युज़ीअु अज्रल् - मुअ्‌मिनीन ع★(१७१) अल्लज़ीनस्तजाबू लिल्लाहि वर्रसूलि मिम्बअ्‌ - दि मा॑ असाबहुमुल्क़र्हु ط लिल्लज़ी - न अह्‌सनू मिन्हुम् वत्तक़ौ अज्रुन् अज़ीम ج (१७२) अल्लज़ी-न क़ा-ल लहुमुन्नासु इन्नन्ना-स क़द् ज-मअू लकुम् फ़ख़्शौ हुम् फ़ज़ादहुम् ईमानन्‌व-व क़ालू हस्बुनल्लाहु व निअ्‌-मल् - वकील (१७३)

لن تنالوا ٥٦ آل عمران

أَصَابَتْكُم مُّصِيبَةٌ قَدْ أَصَبْتُم مِّثْلَيْهَا قُلْتُمْ أَنَّىٰ هَٰذَا ۖ قُلْ هُوَ
مِنْ عِندِ أَنفُسِكُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٦٥﴾ وَمَا أَصَابَكُمْ
يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعَانِ فَبِإِذْنِ اللَّهِ وَلِيَعْلَمَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٦٦﴾ وَلِيَعْلَمَ
الَّذِينَ نَافَقُوا ۚ وَقِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا قَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَوِ ادْفَعُوا ۖ
قَالُوا لَوْ نَعْلَمُ قِتَالًا لَّاتَّبَعْنَاكُمْ ۗ هُمْ لِلْكُفْرِ يَوْمَئِذٍ أَقْرَبُ مِنْهُمْ
لِلْإِيمَانِ ۚ يَقُولُونَ بِأَفْوَاهِهِم مَّا لَيْسَ فِي قُلُوبِهِمْ ۗ وَاللَّهُ أَعْلَمُ
بِمَا يَكْتُمُونَ ﴿١٦٧﴾ الَّذِينَ قَالُوا لِإِخْوَانِهِمْ وَقَعَدُوا لَوْ أَطَاعُونَا
مَا قُتِلُوا ۗ قُلْ فَادْرَءُوا عَنْ أَنفُسِكُمُ الْمَوْتَ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿١٦٨﴾
وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتًا ۚ بَلْ أَحْيَاءٌ
عِندَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُونَ ﴿١٦٩﴾ فَرِحِينَ بِمَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِن فَضْلِهِ
وَيَسْتَبْشِرُونَ بِالَّذِينَ لَمْ يَلْحَقُوا بِهِم مِّنْ خَلْفِهِمْ أَلَّا خَوْفٌ
عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿١٧٠﴾ يَسْتَبْشِرُونَ بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللَّهِ وَ
فَضْلٍ وَأَنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٧١﴾ الَّذِينَ اسْتَجَابُوا
لِلَّهِ وَالرَّسُولِ مِن بَعْدِ مَا أَصَابَهُمُ الْقَرْحُ ۚ لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا
مِنْهُمْ وَاتَّقَوْا أَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿١٧٢﴾ الَّذِينَ قَالَ لَهُمُ النَّاسُ إِنَّ النَّاسَ
قَدْ جَمَعُوا لَكُمْ فَاخْشَوْهُمْ فَزَادَهُمْ إِيمَانًا وَقَالُوا حَسْبُنَا اللَّهُ
وَنِعْمَ الْوَكِيلُ ﴿١٧٣﴾ فَانقَلَبُوا بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللَّهِ وَفَضْلٍ لَّمْ يَمْسَسْهُمْ

منزل

∴व. लाज़िम ★रु. १७/८ आ १६, ∴मु. अि मु त क़. २

क्या (बात है कि) जब (उहुद के दिन काफ़िरों के हाथ से) तुम पर मुसीबत वाक़ेअ हुई, हालांकि (बद्र की लड़ाई में) इस से दोगुनी मुसीबत तुम्हारे हाथ से उन पर पड़ चुकी है, तो तुम चिल्ला उठे कि (हाय) आफ़त (हम पर) कहां से आ पड़ी। कह दो कि यह तुम्हारी ही शामते-आमाल है, (तुम ने पैग़म्बर के हुक्म के ख़िलाफ़ किया) बेशक ख़ुदा हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। (१६५) और जो मुसीबत तुम पर दोनों जमाअतों के मुक़ाबले के दिन वाक़ेअ हुई, सो ख़ुदा के हुक्म से (वाक़ेअ हुई) और इस से यह मक़्सूद था कि ख़ुदा मोमिनों को अच्छी तरह मालूम कर ले और मुनाफ़िक़ों को भी मालूम कर ले। (१६६) और (जब) उन से कहा गया कि आओ ख़ुदा के रास्ते में लड़ो या (काफ़िरों के) हमलों को रोको, तो कहने लगे कि अगर हम को इस की ख़बर होती तो हम ज़रूर तुम्हारे साथ रहते। ये उस दिन ईमान के मुक़ाबले में कुफ़्र से ज़्यादा क़रीब थे। मुंह से वे बातें कहते हैं जो उन के दिल में नहीं हैं और जो कुछ ये छिपाते हैं, ख़ुदा उसे ख़ूब जानता है। (१६७) ये ख़ुद तो (लड़ाई से बच कर) बैठ ही रहे थे, मगर (जिन्होंने ख़ुदा की राह में जानें क़ुर्बान कर दीं) अपने (उन) भाइयों के बारे में भी कहते हैं कि अगर हमारा कहा मानते तो क़त्ल न होते। कह दो कि अगर सच्चे हो तो अपने ऊपर से मौत को टाल देना। (१६८) जो लोग ख़ुदा की राह में मारे गये, उन को मरे हुए न समझना, (वे मरे हुए नहीं हैं), बल्कि ख़ुदा के नज़दीक ज़िन्दा हैं और उनको रोज़ी मिल रही है। (१६९) जो कुछ ख़ुदा ने उन को अपने फ़ज़्ल से बख़्श रखा है, उस में ख़ुश हैं, और जो लोग उन के पीछे रह गये और (शहीद हो कर) उन में शामिल नहीं हो सके,[1] उन के बारे में ख़ुशियां मना रहे हैं कि (क़ियामत के दिन) उन को भी न कुछ ख़ौफ़ होगा और न वे ग़मनाक होंगे ▩ (१७०) और ख़ुदा के इनामों और फ़ज़्ल से ख़ुश हो रहे हैं और इस से कि ख़ुदा मोमिनों का बदला बर्बाद नहीं करता (१७१) ★ ∵ जिन्होंने ज़ख़्म खाने के बावजूद ख़ुदा और रसूल (के हुक्म) को क़ुबूल किया, ∵ जो लोग इन में नेक और परहेज़गार हैं, उन के लिए बड़ा सवाब है। (१७२) (जब) उनसे लोगों ने आ कर बयान किया कि काफ़िरों ने तुम्हारे (मुक़ाबले के) लिए (बड़ी फ़ौज) जमा की है, तो उन से डरो, तो उन का ईमान और ज़्यादा हो गया और कहने लगे हम को ख़ुदा काफ़ी है

१. यानी जो शहीद नहीं हुए और लड़ाई में लगे हुए हैं।

▩ व. लाज़िम ★ रु. १७/८ आ १६ ∵ मु. अ़ि मु त क़. २

फ़न्क़लबू बि निअ्-मतिम्-मिनल्लाहि व फ़ज़्लिल्लम् यम्सस्हुम् सूउंव ۙ व-त्तबअू रिज़्वानल्लाहि ط वल्लाहु ज़ू फ़ज़्लिन् अज़ीम (१७४) इन्नमा ज़ालिकुमुश्शैतानु युख़व्विफ़ु औलिया-अहू ص फ़ ला तख़ाफ़ू-हुम् व ख़ाफ़ूनि इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन (१७५) व ला यह्ज़ुन्कल्लज़ी-न युसारिअू-न फ़िल्कुफ़्रि ج इन्नहुम् लंय्यज़ुर्रुल्ला-ह शैअन् ط युरीदुल्लाहु अल्ला यज्-अ-ल लहुम् हज़्ज़न् फ़िल्आख़िरति ج व लहुम् अज़ाबुन् अज़ीम (१७६) इन्नल्लज़ीनश्त-र-वुल्-कुफ़्-र बिल्ईमानि लंय्यज़ुर्रुल्ला-ह शैअन् ج व लहुम् अज़ाबुन् अलीम (१७७) व ला यह्स-बन्नल्लज़ी-न क-फ़रू अन्नमा नुम्ली लहुम् ख़ैरुल्लि-अन्फ़ुसिहिम् ط इन्नमा नुम्ली लहुम् लि यज़्दादू इस्मन् ج व लहुम् अज़ाबुम्-मुहीन (१७८) मा कानल्लाहु लि य-ज़-रल्-मुअ्मिनी-न अला मा अन्तुम् अलैहि हत्ता यमीज़ल्-ख़बी-स मिनत्तय्यिबि ط व मा कानल्लाहु लि युत्लि-अकुम् अलल्ग़ैबि व लाकिन्नल्ला-ह यज्तबी मिर्रुसुलिही

لن تنالوا ٤ ٥٨ آل عمران

سوء و اتبعوا رضوان الله والله ذو فضل عظيم ۝ انما
ذلكم الشيطن يخوف اولياءه فلا تخافوهم وخافون ان
كنتم مؤمنين ۝ ولا يحزنك الذين يسارعون في الكفر
انهم لن يضروا الله شيئا يريد الله الا يجعل لهم حظا في الاخرة
ولهم عذاب عظيم ۝ ان الذين اشتروا الكفر بالايمان لن
يضروا الله شيئا ولهم عذاب اليم ۝ ولا يحسبن الذين كفروا
انما نملي لهم خير لانفسهم انما نملي لهم ليزدادوا اثما
ولهم عذاب مهين ۝ ما كان الله ليذر المؤمنين على
ما انتم عليه حتى يميز الخبيث من الطيب وما كان الله
ليطلعكم على الغيب ولكن الله يجتبي من رسله من يشاء
فامنوا بالله ورسله وان تؤمنوا وتتقوا فلكم اجر عظيم ۝
ولا يحسبن الذين يبخلون بما اتىهم الله من فضله هو
خيرا لهم بل هو شر لهم سيطوقون ما بخلوا به يوم
القيمة ولله ميراث السموت والارض والله بما تعملون
خبير ۝ لقد سمع الله قول الذين قالوا ان الله فقير و
نحن اغنياء سنكتب ما قالوا وقتلهم الانبياء بغير حق
ونقول ذوقوا عذاب الحريق ۝ ذلك بما قدمت ايديكم و

منزل

मंय्यशा-उ ص फ़ आमिनू बिल्लाहि व रुसुलिही ج व इन् तुअ्मिनू व तत्तक़ू फ़-लकुम् अज्रुन् अज़ीम (१७९) व ला यह्सबन्नल्लज़ी-न यब्ख़लू-न बिमा आता-हुमुल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही हु-व ख़ैरल्लहुम् ط बल् हु-व शर्रुल्लहुम् ط सयुतव्वक़ू-न मा बख़िलू बिही यौमल्क़ियामति ط व लिल्लाहि मीरासुस्समावाति वल्अर्ज़ि ط वल्लाहु बिमा तअ्-मलू-न ख़बीर ★(१८०) ल-क़द् समिअल्लाहु क़ौलल्लज़ी-न क़ालू इन्नल्ला-ह फ़क़ीरुंव्-व नह्नु अग़्नियाउ ※ सनक्तुबु मा क़ालू व क़त्लहुमुल्-अम्बिया-अ बिग़ैरि हक़्क़िंव् ۙ व नक़ूलु ज़ूक़ू अज़ाबल्-हरीक़ (१८१)

★रु. १८/६/६ ※ व लाज़िम

और वह बहुत अच्छा कारसाज है। (१७३) फिर वे खुदा की नेमतों और उस की मेहरबानी के साथ (खुशी-खुशी) वापस आए, उन को किसी तरह का नुक़्सान न पहुंचा और वे खुदा की खुश्नूदी के ताबेअ रहे और खुदा बड़े फ़ज़्ल का मालिक है। (१७४) यह (ख़ौफ़ दिलाने वाला) तो शैतान है, जो अपने दोस्तों से डराता है, तो अगर तुम मोमिन हो, तो उन से मत डरना और मुझी से डरते रहना। (१७५) और जो लोग कुफ़्र में जल्दी करते हैं, उन (की वजह) से ग़मगीन न होना, यह खुदा का कुछ नुक़्सान नहीं कर सकते, खुदा चाहता है कि आख़िरत में उन को हिस्सा न दे और उन के लिए बड़ा अज़ाब (तैयार) है। (१७६) जिन लोगों ने ईमान के बदले कुफ़्र ख़रीदा, वे खुदा का कुछ नहीं बिगाड़ सकते और उन को दुख देने वाला अज़ाब होगा। (१७७) और काफ़िर लोग यह न ख़्याल करें कि हम जो उन को मुहलत दिए जाते हैं, तो यह उन के हक़ में अच्छा है। (नहीं, बल्कि) हम उन को इस लिए मुहलत देते हैं कि और गुनाह कर लें। आख़िरकार उन को ज़लील करने वाला अज़ाब होगा। (१७८) (लोगो!) जब तक खुदा नापाक को पाक से अलग न कर देगा, मोमिनों को इस हाल में, जिस में तुम हो, हरगिज़ नहीं रहने देगा और अल्लाह तुम को ग़ैब की बातों से भी मुत्तला नहीं करेगा, हां, खुद अपने पैग़म्बरों में से जिसे चाहता है, चुन लेता है, तो तुम खुदा पर और उस के रसूलों पर ईमान लाओ और अगर ईमान लाओगे और परहेज़गारी करोगे तो तुम को बड़ा बदला मिलेगा। (१७९) जो लोग माल में जो खुदा ने अपने फ़ज़्ल से उन को अता फ़रमाया है, बुख़्ल (कंजूसी) करते हैं, वे इस बुख़्ल को अपने हक़ में अच्छा न समझें (वह अच्छा नहीं,) बल्कि उन के लिए बुरा है। वे जिस माल में बुख़्ल करते हैं, क़ियामत के दिन उस का तौक़ (हार) बना कर उन की गरदनों में डाला जाएगा और आसमानों और ज़मीन का वारिस खुदा ही है और जो अमल तुम करते हो, खुदा को मालूम है। (१८०) ★

अल्लाह ने उन लोगों का क़ौल सुन लिया है, जो कहते हैं कि खुदा फ़क़ीर है और हम अमीर हैं,※ ये जो कहते हैं, हम इसको लिख लेंगे और पैग़म्बरों को जो ये ना-हक़ क़त्ल करते रहे हैं, उसको भी (लिख लेंगे) और (क़ियामत के दिन) कहेंगे कि जलती (आग के) अज़ाब के मज़े चखते रहो। (१८१)

★रु. १८/१/१ ※ व. लाज़िम

जालि-क बिमा क़द्द-मत् ऐदीकुम् व अन्नल्ला-ह लै-स बि जल्लामिल्-लिल्अबीद (१८२) अल्लजी-न क़ालू इन्नल्ला-ह अहि-द इलैना अल्ला नुअ्मि-न लि रसूलिन् हत्ता यअ्ति-यना बि क़ुर्बानित् तअ्कुलुहुन्नारु ط क़ुल् क़द् जा-अकुम् रुसुलुम्मिन् क़ब्ली बिल्बय्यिनाति व बिल्लजी क़ुल्तुम् फ़ लि-म क़तल्तुमूहुम् इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (१८३) फ़ इन् कज्जबू-क फ़-क़द् कुज्जि-ब रुसुलुम्मिन् क़ब्लि-क जा-ऊ बिल्बय्यिनाति वज़्ज़ुबुरि वल्किताबिल्-मुनीर (१८४) कुल्लु नफ़्सिन् जाइक़तुल्मौति ط व इन्नमा तुवफ़्फ़ौ-न उजूरकुम् यौमल्क़ियामति ط फ़ मन् ज़ुह्ज़ि-ह अनिन्नारि व उद्ख़िलल्-जन्न-त फ़-क़द् फ़ा-ज़ ط व मल्हयातुद्दुन्या इल्ला मताअुल् - ग़ुरूर (१८५) ल-तुब-ल-वुन्-न फ़ी अम्वालिकुम् व अन्फ़ुसिकुम् قف व ल तस्मअुन्-न मिनल्लजी-न ऊतुल्किता-ब मिन् क़ब्लिकुम् व मिनल्लजी-न अश्रकू अ - ज़न् कसीरन् ط व इन् तस्बिरू व तत्तक़ू फ़ इन्-न जालि-क मिन् अज़्मिल्-उमूर (१८६) व इज़् अ-ख़-ज़ल्लाहु मीसाक़ल्लजी-न ऊतुल्किता-ब लतुबय्यिनुन्नहू लिन्नासि व ला तक्तुमूनहू ز फ़-न-बज़ूहु वरा-अ ज़ुहूरिहिम् वश्तरौ बिही स-म-नन् क़लीलन् ط फ़ बिअ्-स मा यश्तरून (१८७) ला तह्सबन्नल्लजी-न यफ़्रहू-न बिमा अतव्-व युहिब्बू-न अंय्युह्मदू बिमा लम् यफ़्अलू फ़ ला तह्सबन्नहुम् बि मफ़ाज़तिम्-मिनल्-अ़ज़ाबि ج व लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम (१८८) व लिल्लाहि मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि ط वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर ★ (१८९) इन्-न फ़ी ख़ल्क़िस्समावाति वल्अर्ज़ि वख़्तिलाफ़िल्लैलि वन्नहारि ल-आयातिल्-लि उलिल्-अल्बाब ع (१९०)

لن تنالوا ٤ — آل عمران ٣

إِنَّ اللَّهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِلْعَبِيدِ ۝ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ عَهِدَ إِلَيْنَا
أَلَّا نُؤْمِنَ لِرَسُولٍ حَتَّىٰ يَأْتِيَنَا بِقُرْبَانٍ تَأْكُلُهُ النَّارُ ۗ قُلْ قَدْ
جَاءَكُمْ رُسُلٌ مِنْ قَبْلِي بِالْبَيِّنَاتِ وَبِالَّذِي قُلْتُمْ فَلِمَ قَتَلْتُمُوهُمْ
إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝ فَإِنْ كَذَّبُوكَ فَقَدْ كُذِّبَ رُسُلٌ مِنْ قَبْلِكَ
جَاءُوا بِالْبَيِّنَاتِ وَالزُّبُرِ وَالْكِتَابِ الْمُنِيرِ ۝ كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ ۗ
وَإِنَّمَا تُوَفَّوْنَ أُجُورَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۖ فَمَنْ زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَ
أُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ ۗ وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا مَتَاعُ الْغُرُورِ ۝
لَتُبْلَوُنَّ فِي أَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ وَلَتَسْمَعُنَّ مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا
الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَمِنَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا أَذًى كَثِيرًا ۚ وَإِنْ
تَصْبِرُوا وَتَتَّقُوا فَإِنَّ ذَٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْأُمُورِ ۝ وَإِذْ أَخَذَ اللَّهُ
مِيثَاقَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ لَتُبَيِّنُنَّهُ لِلنَّاسِ وَلَا تَكْتُمُونَهُ
فَنَبَذُوهُ وَرَاءَ ظُهُورِهِمْ وَاشْتَرَوْا بِهِ ثَمَنًا قَلِيلًا ۖ فَبِئْسَ مَا
يَشْتَرُونَ ۝ لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ يَفْرَحُونَ بِمَا أَتَوْا وَيُحِبُّونَ
أَنْ يُحْمَدُوا بِمَا لَمْ يَفْعَلُوا فَلَا تَحْسَبَنَّهُمْ بِمَفَازَةٍ مِنَ
الْعَذَابِ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَ
الْأَرْضِ ۗ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ لَآيَاتٍ لِأُولِي الْأَلْبَابِ ۝

منزل ١

★रु० १९/१० आ ९

यह उन कामों की सज़ा है जो तुम्हारे हाथ आगे भेजते रहे हैं और ख़ुदा तो बन्दों पर बिल्कुल ज़ुल्म नहीं करता। (१८२) जो लोग कहते हैं कि ख़ुदा ने हमें हुक्म भेजा है कि जब तक कोई पैग़म्बर हमारे पास ऐसी नियाज़ ले कर न आए, जिस को आग आ कर खा जाए, तब तक हम उस पर ईमान न लाएंगे। (ऐ पैग़म्बर! इन से) कह दो कि मुझ से पहले कई पैग़म्बर तुम्हारे पास खुली हुई निशानियां ले कर आए और वह (मोजज़ा) भी लाये, जो तुम कहते हो, तो अगर सच्चे हो तो तुम ने उन को क़त्ल क्यों किया?[1] (१८३) फिर अगर ये लोग तुम को सच्चा न समझें, तो तुम से पहले बहुत-से पैग़म्बर खुली हुई निशानियां और सहीफ़े (ग्रंथ) और रोशन किताबें ले कर आ चुके हैं और लोगों ने उन को भी सच्चा नहीं समझा। (१८४) हर जान को मौत का मज़ा चखना है और तुम को क़ियामत के दिन तुम्हारे आमाल का पूरा-पूरा बदला दिया जाएगा, तो जो शख़्स जहन्नम की आग से दूर रखा गया और बहिश्त में दाख़िल किया गया, वह मुराद को पहुंच गया। और दुनिया की ज़िन्दगी तो धोखे का सामान है। (१८५) (ऐ ईमान वालो!) तुम्हारे माल व जान में तुम्हारी आज़माइश की जाएगी और तुम अह्ले किताब से और उन लोगों से, जो मुश्रिक हैं, बहुत-सी तक्लीफ़ की बातें सुनोगे तो अगर सब्र और परहेज़गारी करते रहोगे तो ये बड़ी हिम्मत के काम हैं। (१८६) और जब ख़ुदा ने उन लोगों से, जिन को किताब इनायत की गयी थी, इक़रार लिया कि (जो कुछ इस में लिखा है) उस में साफ़-साफ़ बयान करते रहना और (उस की किसी बात) को न छिपाना, तो उन्हों ने उस को पीठ पीछे डाल दिया और उस के बदले थोड़ी-सी क़ीमत हासिल की। ये जो कुछ हासिल करते हैं, बुरा है। (१८७) जो लोग अपने (ना-पसन्द) कामों से ख़ुश होते हैं और (पसन्दीदा काम) जो करते नहीं, उन के लिए चाहते हैं कि उन की तारीफ़ की जाए, उन के बारे में ख़्याल न करना कि वह अज़ाब से रुस्तगार हो जाएंगे (और उन्हें दर्द देने वाला अज़ाब होगा)। (१८८) और आसमानों और ज़मीन की बादशाही ख़ुदा ही की है और ख़ुदा हर चीज़ पर क़ादिर है। (१८९) ★

बेशक आसमानों और ज़मीन की पैदाइश और रात और दिन के बदल-बदल कर आने-जाने में

१. अल्लाह तआला ने कुछ पैग़म्बरों को यह मोजज़ा बख़्शा था कि उन की उम्मत के लोग जो क़ुर्बानी और नज़्र व नियाज़ ख़ुदा के लिए करते, तो उस को मैदान में रख देते। आसमान से आग आती और उस को जला देती, तो यह समझा जाता कि क़ुर्बानी ख़ुदा की जनाब में क़ुबूल हुई। यहूदी आख़िरी पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्ल० से कहने लगे कि ख़ुदा ने हम को यह हुक्म दे रखा है कि हम किसी पैग़म्बर पर ईमान न लाएं, जब तक यह मोजज़ा न देख लें, तो आप भी यह मोजज़ा दिखाएं। ख़ुदा ने फ़रमाया, तुम उन के जवाब में कह दो कि कई पैग़म्बर मुझ से पहले कई तरह के मोजज़े ले कर आए और यह मोजज़ा भी, जो तुम कहते हो, लेकिन अगर तुम सच्चे हो, तो इन पैग़म्बरों को क़त्ल क्यों करते रहे? मतलब यह कि पैग़म्बरों को झुठलाना और ना-फ़रमानी करना तुम्हारी आदत में दाख़िल है।

★रु. १९/१० आ ६

अल्लज़ी-न यज़्कुरूनल्ला-ह क़ियामंव-व क़ुअूदंव्-व अ़ला जुनूबिहिम् व् य-त-फ़क्करू-न फ़ी ख़ल्क़िस्समावाति वल्अर्ज़ि रब्बना मा ख़-लक़्-त हाज़ा बातिलन् सुब्हान - क फ़ क़िना अ़ज़ाबन्नार (१९१) रब्बना इन्न-क मन् तुद्ख़िलिन्ना-र फ़-क़द् अख़्ज़ैतहू व मा लिज़्ज़ालिमी - न मिन् अन्सार (१९२) रब्बना इन्नना समिअ्-ना मुनादियंय्युनादी लिलईमानि अन् आमिनू बि रब्बिकुम् फ़ आमन्ना रब्बना फ़ग़्फ़िर्लना ज़ुनूबना व कफ़्फ़िर् अ़न्ना सय्यिआतिना व तवफ़्फ़ना म-अल् - अब्रार (१९३) रब्बना व आतिना मा वअ़त्तना अ़ला रुसुलि-क व ला तुख़्ज़िना यौमल्-क़ियामति इन्न-क ला तुख़्लिफ़ुल्-मीआ़द (१९४) फ़स्तजा-ब लहुम् रब्बुहुम् अन्नी ला उज़ीअु अ़-म-ल आ़मिलिम्-मिन्कुम् मिन् ज़-करिन् औ उन्सा बअ़-ज़ुकुम् मिम्बअ़-ज़िन् फ़ल्लज़ी-न हाजरू व उख़्रिजू मिन् दियारिहिम् व ऊज़ू फ़ी सबीली व क़ातलू व क़ुतिलू लउकफ़्फ़िरन्-न अ़न्हुम् सय्यिआतिहिम् व ल उद्ख़िलन्न-हुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह़्तिहल्-अन्हारु सवाबम्-मिन् अिन्दिल्लाहि वल्लाहु अिन्दहू हुस्नुस्सवाब (१९५) ला यग़ुर्रन्न-क तक़ल्लुबुल्लज़ी-न क-फ़रू फ़िल बिलाद (१९६) मताअुन् क़लीलुन् सुम् - म मअ्वाहुम् जहन्न-मु व बिअ्सल्मिहाद (१९७) लाकिनिल्-लज़ीनत्तक़ौ रब्बहुम् लहुम् जन्नातुन् तज्री मिन् तह़्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा नुज़ुलम्मिन् अिन्दिल्लाहि व मा अिन्दल्लाहि ख़ैरुल्लिल्-अब्रार● (१९८) व इन्-न मिन् अह़्लिल्किताबि लमंय्युअ्मिनु बिल्लाहि व मा उन्ज़ि-ल इलैकुम् व मा उन्ज़ि - ल इलैहिम् ख़ाशिअी - न

لن تنالوا ٩٠ آل عمران

الذين يذكرون الله قياما وقعودا وعلى جنوبهم ويتفكرون
في خلق السماوات والأرض ربنا ما خلقت هذا باطلا سبحانك
فقنا عذاب النار ۝ ربنا إنك من تدخل النار فقد أخزيته
وما للظالمين من أنصار ۝ ربنا إننا سمعنا مناديا ينادي
للإيمان أن آمنوا بربكم فآمنا ربنا فاغفر لنا ذنوبنا و
كفر عنا سيئاتنا وتوفنا مع الأبرار ۝ ربنا وآتنا ما وعدتنا
على رسلك ولا تخزنا يوم القيامة إنك لا تخلف الميعاد ۝
فاستجاب لهم ربهم أني لا أضيع عمل عامل منكم من
ذكر أو أنثى بعضكم من بعض فالذين هاجروا وأخرجوا
من ديارهم وأوذوا في سبيلي وقاتلوا وقتلوا لأكفرن عنهم
سيئاتهم ولأدخلنهم جنات تجري من تحتها الأنهار ثوابا
من عند الله والله عنده حسن الثواب ۝ لا يغرنك تقلب
الذين كفروا في البلاد ۝ متاع قليل ثم مأواهم جهنم
وبئس المهاد ۝ لكن الذين اتقوا ربهم لهم جنات تجري
من تحتها الأنهار خالدين فيها نزلا من عند الله وما عند
الله خير للأبرار ۝ وإن من أهل الكتاب لمن يؤمن بالله و
ما أنزل إليكم وما أنزل إليهم خاشعين لله لا يشترون بآيات

●सु. ३/४

अक़्ल वालों के लिए निशानियां हैं। (१९०) जो खड़े और बैठे और लेटे (हर हाल में) ख़ुदा को याद करते और आसमान और ज़मीन की पैदाइश में ग़ौर करते (और कहते) हैं कि ऐ परवरदिगार! तू ने इस (मख़्लूक़) को बे-फ़ायदा नहीं पैदा किया। तू पाक है, तो (क़ियामत के दिन) हमें दोज़ख़ के अज़ाब से बचाइयो। (१९१) ऐ परवरदिगार! जिस को तूने दोज़ख़ में डाला, उसे रुस्वा किया और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं। (१९२) ऐ परवरदिगार! हम ने एक पुकारने वाले को सुना कि ईमान के लिए पुकार रहा था, (यानी) अपने परवरदिगार पर ईमान लाओ, तो हम ईमान ले आये। ऐ परवरदिगार! हमारे गुनाह माफ़ फ़रमा और हमारी बुराइयों को हम से दूर कर और हम को दुनिया से नेक बन्दों के साथ उठा। (१९३) ऐ परवरदिगार! तू ने जिन-जिन चीज़ों के हम से अपने पैग़म्बरों के ज़रिए से वायदे किये हैं, वह हमें अदा फ़रमा और क़ियामत के दिन हमें रुस्वा न कीजियो। कुछ शक नहीं कि तू वायदा के ख़िलाफ़ नहीं करता। (१९४) तो उन के परवरदिगार ने उन की दुआ क़ुबूल कर ली। (और फ़रमाया) कि मैं किसी अमल करने वाले के अमल को, मर्द हो या औरत ज़ाया नहीं करता। तुम एक दूसरे की जिन्स हो, तो जो लोग मेरे लिए वतन छोड़ गये और अपने घरों से निकाले गये और सताये गये और लड़े और क़त्ल किये गये, मैं उन के गुनाह दूर कर दूंगा और उन को बहिश्तों में दाख़िल करूंगा, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं। (यह) ख़ुदा के यहां से बदला है और ख़ुदा के यहां अच्छा बदला है। (१९५) (ऐ पैग़म्बर!) काफ़िरों का शहरों में चलना-फिरना तुम्हें धोखा न दे। (१९६) (यह दुनिया का) थोड़ा-सा फ़ायदा है, फिर (आख़िरत में) तो उन का ठिकाना दोज़ख़ है और वह बुरी जगह है।[1] (१९७) लेकिन जो लोग अपने परवरदिगार से डरते रहे, उन के लिए बाग़ हैं, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं (और) उन में हमेशा रहेंगे। (यह) ख़ुदा के यहां से (उन की)

---

१. यानी काफ़िर जो शहरों में तिजारत के लिए चलते-फिरते और बहुत-सा माल पैदा करते हैं, तुम इस का ख़्याल न करना और यह न समझना कि यह भारी फ़ायदा हैं, क्योंकि फ़ना होने वाला है और दुनिया के तमाम फ़ायदे, आख़िरत के सवाब के मुक़ाबले में बहुत कम हैं। उन काफ़िर ताजिरों और मालदारों का आख़िरत [illegible] ठिकाना दोज़ख़ है और ख़ुदा ने जो मुसलमानों के लिए तैयार कर रखा है, वे बहिश्त के बाग़ हैं, जिन के आराम बाक़ी हैं और हमेशा रहेंगे।

लिल्लाहि ॥ ला यश्तरू-न बि आयातिल्लाहि स-म-नन् क़लीलन् ॥ उला-इ-क लहुम् अज्रुहुम् अिन् - द रब्बिहिम् ॥ इन्नल्ला - ह सरीअुल्हिसाब (१९९) या अय्युहल्लज़ी-न आमनुस्बिरू व साबिरू व राबितू वत्तक़ुल्ला-ह ल-अ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून ★(२००)

४ सूरतुन्निसा-इ ९२

(मदनी) इस सूरः में अरबी के १६६६७ अक्षर, ३७२० शब्द, १७६ आयतें और २४ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

या अय्युहन्नासुत्तक़ू रब्बकुमुल्लज़ी ख़ - ल - क़कुम् मिन् नफ़्सिंव्वाहिदतिंव्-व ख़-ल-क़ मिन्हा ज़ौजहा व बस्-स मिन्हुमा रिजालन् कसीरंव् - व निसा - अन् वत्तक़ुल्लाहल्लज़ी तसा - अलू - न बिही वल्अर्हा-म ॥ इन्नल्ला-ह का-न अलैकुम् रक़ीबा (१) व आतुल्यतामा अम्वालहुम् व ला त-त-बद्दलुल्ख़बी-स बित्तय्यिबि॥ व ला तअ्कुलू अम्वालहुम् इला अम्वालिकुम् ॥ इन्नहू का - न हूबन् कबीरा (२) व इन् ख़िफ़्तुम् अल्ला तुक़्सितू फ़िल्यतामा फ़न्किहू मा ता-ब लकुम् मिनन्निसा - इ मस्ना व सुला-स व रुबा-अ़ फ़ इन् ख़िफ़्तुम् अल्ला तअ्-दिलू फ़ वाहि़-दतन् औ मा म-ल-कत् ऐमानुकुम् ॥ ज़ालि-क अद्ना अल्ला तअूलू ॥ (३) व आतुन्निसा - अ सदुक़ातिहिन् - न निह्-ल - तन् ॥ फ़ इन् तिब्-न लकुम् अन् शैइम्-मिन्हु नफ़्सन् फ़ कुलूहु हनी-अम्-मरी-आ (४) व ला तुअ्तुस्सुफ़-हा-अ अम्वालकुमुल्लती ज-अ्-लल्लाहु लकुम् क़ियामंव्वर्ज़ुक़ू-हुम् फ़ीहा वक्सूहुम् व क़ूलू लहुम् क़ौलम्मअ्-रूफ़ा (५)

लن تنالوا ٤ — ٩١ — النساء ٤

اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا اُولٰٓئِكَ لَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ
الْحِسَابِ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اصْبِرُوْا وَصَابِرُوْا وَرَابِطُوْا
وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝
سُوْرَةُ النِّسَاءِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ مِائَةٌ وَّسِتٌّ وَّسَبْعُوْنَ اٰيَةً وَّاَرْبَعٌ وَّعِشْرُوْنَ رُكُوْعًا
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ
وَّخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيْرًا وَّنِسَآءً ۚ وَاتَّقُوا
اللّٰهَ الَّذِيْ تَسَآءَلُوْنَ بِهٖ وَالْاَرْحَامَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلَيْكُمْ
رَقِيْبًا ۝ وَاٰتُوا الْيَتٰمٰٓى اَمْوَالَهُمْ وَلَا تَتَبَدَّلُوا الْخَبِيْثَ بِالطَّيِّبِ
وَلَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَهُمْ اِلٰٓى اَمْوَالِكُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ حُوْبًا كَبِيْرًا ۝
وَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا تُقْسِطُوْا فِي الْيَتٰمٰى فَانْكِحُوْا مَا طَابَ لَكُمْ
مِّنَ النِّسَآءِ مَثْنٰى وَثُلٰثَ وَرُبٰعَ ۚ فَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا تَعْدِلُوْا
فَوَاحِدَةً اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ؕ ذٰلِكَ اَدْنٰٓى اَلَّا تَعُوْلُوْا ۝ وَ
اٰتُوا النِّسَآءَ صَدُقٰتِهِنَّ نِحْلَةً ؕ فَاِنْ طِبْنَ لَكُمْ عَنْ شَيْءٍ مِّنْهُ
نَفْسًا فَكُلُوْهُ هَنِيْٓـئًا مَّرِيْٓـئًا ۝ وَلَا تُؤْتُوا السُّفَهَآءَ اَمْوَالَكُمُ
الَّتِيْ جَعَلَ اللّٰهُ لَكُمْ قِيٰمًا وَّارْزُقُوْهُمْ فِيْهَا وَاكْسُوْهُمْ وَ
قُوْلُوْا لَهُمْ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ۝ وَابْتَلُوا الْيَتٰمٰى حَتّٰٓى اِذَا بَلَغُوا
منزل

★रु. २०/११ आ ११

मेहमानी है और जो कुछ खुदा के यहां है, वह नेकों के लिए बहुत अच्छा है। (१९८) ● और कुछ अह्ले किताब ऐसे भी हैं, जो खुदा पर और उस (किताब) पर, जो तुम पर नाज़िल हुई, और उस पर जो उन पर नाज़िल हुई, ईमान रखते हैं और खुदा के आगे आजिज़ी करते हैं और खुदा की आयतों के बदले थोड़ी-सी क़ीमत नहीं लेते। यही लोग हैं, जिन का बदला उस के परवरदिगार के यहां तैयार है। और खुदा जल्द हिसाब लेने वाला है। (१९९) ऐ अह्ले ईमान! (काफ़िरों के मुक़ाबले में) साबित-क़दम रहो। और इस्तिक़ामत (जमाव) रखो और (मोर्चों पर) जमे रहो और खुदा से डरो, ताकि मुराद हासिल करो। (२००) ★

४ सूरः निसा ९२

सूरः निसा मदनी है और इसमें एक सौ सतहत्तर आयतें और चौबीस रुकूअ हैं

शुरू खुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

लोगो! अपने परवरदिगार से डरो, जिसने तुमको एक शख़्स से पैदा किया (यानी पहले) उस से उसका जोड़ा बनाया, फिर उन दोनों से कसरत से मर्द व औरत (पैदा करके धरती पर) फैला दिए और खुदा से जिस के नाम को तुम ज़रूरत पूरी करने का ज़रिया बनाते हो, डरो, रिश्तेदारी (काट देने) से (बचो)। कुछ शक नहीं कि खुदा तुम को देख रहा है। (१) और यतीमों का माल (जो तुम्हारे क़ब्ज़े में हो) इनके हवाले कर दो और उनके पाकीज़ा (और उम्दा) माल को (अपने ख़राब और) बुरे माल से न बदलो और न उनका माल अपने माल में मिला कर खाओ कि यह बड़ा सख़्त गुनाह है। (२) और अगर तुमको इस बात का डर हो कि यतीम लड़कियों के बारे में इंसाफ़ न कर सकोगे, तो उन के सिवा जो औरतें तुम को पसन्द हों, दो-दो या तीन-तीन या चार-चार, उनसे निकाह कर लो और अगर इस बात का डर हो कि सब औरतों से बराबर का व्यवहार न कर सकोगे, तो एक औरत (काफ़ी है) या लौंडी, जिस के तुम मालिक हो, इस से तुम बे-इन्साफ़ी से बच जाओगे। (३) और औरतों को उन के मह्र खुशी से दे दिया करो, हां, अगर वे अपनी खुशी से उसमें से कुछ तुम को छोड़ दें तो उसे खुशी-खुशी खा लो। (४) और बे-अक़्लों को उन का माल जिसे खुदा ने तुम लोगों के लिए रोज़ी का ज़रिया बनाया है मत दो, (हां,) उसमें से उनको खिलाते

●मु. ३/४ ★रु. २०/११ आ ११

वब्तलुल् - यतामा हत्ता इज़ा ब-लग़ुन्निका-ह़ ج फ़ इन् आनस्तुम् मिन्हुम् रुश्दन् फ़द्फ़अू इलैहिम् अम्वालहुम् ج व ला तअ्कुलूहा इस्राफ़व् - व बिदारन् अंय्यक्बरू ط व मन् का-न ग़निय्यन् फ़ल्यस्तअ्-फ़िफ् ج व मन् का-न फ़क़ीरन् फ़ल्यअ्कुल् बिलमअ्-रूफ़ि ط फ़ इज़ा द-फ़अ् - तुम् इलैहिम् अम्वालहुम् फ़ अश्हिदू अलैहिम् ط व कफ़ा बिल्लाहि हसीबा (६) लिर्रिजालि नसीबुम्-मिम्मा त-र-कल्-वालिदानि वल्अक्रबू-न صلے व लिन्निसा-इ नसीबुम्मिम्मा त-र-कल्-वालिदानि वल्अक्रबू-न صلے मिम्मा क़ल्-ल मिन्हु औ कसु-र ط नसीबम्-मफ़्रूज़ा (७) व इज़ा ह-ज़-रल् क़िस्म-त उलुल्क़ुर्बा वल्यतामा वल्मसाकीनु फ़र्ज़ुक़ूहुम् मिन्हु व क़ूलू लहुम् क़ौलम् मअ्-रूफ़ा (८) वल्यख़्शल्लज़ी-न लौ त-रकू मिन् ख़ल्फ़िहिम् ज़ुर्रिय्य-तन् ज़िआफ़न् ख़ाफ़ू अलैहिम् صلے फ़ल्यत्तक़ुल्ला - ह वल्यक़ूलू क़ौलन् सदीदा (९) इन्नल्लज़ी-न यअ्कुलू-न अम्वालल्-यतामा ज़ुल्मन् इन्नमा यअ्कुलू-न फ़ी बुतूनिहिम् नारन् ط व स-यस्लौ - न सअ़ीरा ★ (१०) यूसी - कुमुल्लाहु फ़ी औलादिकुम् ق लिज़्ज़-करि मिस्लु हज़्ज़िल्-उन्सयैनि ج फ़ इन् कुन्-न निसा-अन् फ़ौक़स्-नतैनि फ़ लहुन्-न सुलुसा मा त-र-क ج व इन् कानत् वाहि-द-तन् फ़ लहन्निस्फ़ु ط व लि अ-ब-वैहि लि कुल्लि वाहिदिम्मिन्-हुमस्सुदुसु मिम्मा त-र-क इन् का-न लहू व-लदुन् ج फ़ इल्लम् यकुल्लहू व-लदुंव्-व वरिसहू अ-बवाहु फ़ लि-उम्-मिहिस्सुलुसु ج फ़ इन् का-न लहू इख़्वतुन् फ़ लि उम्-मिहिस्सुदुसु मिम्बअ्-दि वसिय्यतिंय्यूसी बिहा औदैन ط आबा-उकुम् व अब्ना-उकुम् ला तद्रू-न अय्युहुम् अक़्रबु लकुम् नफ़्अन् ط फ़रीज़-तम् - मिनल्लाहि ط इन्नल्ला - ह का - न अलीमन् हकीमा (११)

النِّكَاحَ ۚ فَإِنْ آنَسْتُم مِّنْهُمْ رُشْدًا فَادْفَعُوا إِلَيْهِمْ أَمْوَالَهُمْ ۖ
وَلَا تَأْكُلُوهَا إِسْرَافًا وَبِدَارًا أَن يَكْبَرُوا ۚ وَمَن كَانَ غَنِيًّا
فَلْيَسْتَعْفِفْ ۖ وَمَن كَانَ فَقِيرًا فَلْيَأْكُلْ بِالْمَعْرُوفِ ۚ فَإِذَا
دَفَعْتُمْ إِلَيْهِمْ أَمْوَالَهُمْ فَأَشْهِدُوا عَلَيْهِمْ ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ حَسِيبًا ۝
لِّلرِّجَالِ نَصِيبٌ مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدَانِ وَالْأَقْرَبُونَ وَلِلنِّسَاءِ نَصِيبٌ
مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدَانِ وَالْأَقْرَبُونَ مِمَّا قَلَّ مِنْهُ أَوْ كَثُرَ ۚ نَصِيبًا
مَّفْرُوضًا ۝ وَإِذَا حَضَرَ الْقِسْمَةَ أُولُو الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسَاكِينُ
فَارْزُقُوهُم مِّنْهُ وَقُولُوا لَهُمْ قَوْلًا مَّعْرُوفًا ۝ وَلْيَخْشَ الَّذِينَ
لَوْ تَرَكُوا مِنْ خَلْفِهِمْ ذُرِّيَّةً ضِعَافًا خَافُوا عَلَيْهِمْ فَلْيَتَّقُوا اللَّهَ
وَلْيَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا ۝ إِنَّ الَّذِينَ يَأْكُلُونَ أَمْوَالَ الْيَتَامَىٰ
ظُلْمًا إِنَّمَا يَأْكُلُونَ فِي بُطُونِهِمْ نَارًا ۖ وَسَيَصْلَوْنَ سَعِيرًا ۝ يُوصِيكُمُ
اللَّهُ فِي أَوْلَادِكُمْ ۖ لِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْأُنثَيَيْنِ ۚ فَإِن كُنَّ نِسَاءً
فَوْقَ اثْنَتَيْنِ فَلَهُنَّ ثُلُثَا مَا تَرَكَ ۖ وَإِن كَانَتْ وَاحِدَةً فَلَهَا النِّصْفُ ۚ
وَلِأَبَوَيْهِ لِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا السُّدُسُ مِمَّا تَرَكَ إِن كَانَ لَهُ
وَلَدٌ ۚ فَإِن لَّمْ يَكُن لَّهُ وَلَدٌ وَوَرِثَهُ أَبَوَاهُ فَلِأُمِّهِ الثُّلُثُ ۚ فَإِن
كَانَ لَهُ إِخْوَةٌ فَلِأُمِّهِ السُّدُسُ ۚ مِن بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُوصِي بِهَا
أَوْ دَيْنٍ ۗ آبَاؤُكُمْ وَأَبْنَاؤُكُمْ لَا تَدْرُونَ أَيُّهُمْ أَقْرَبُ لَكُمْ نَفْعًا ۚ

★रु. १/१२ आ १०

और पहनाते रहो और उनसे मुनासिब बातें कहते रहो। (५) और यतीमों को बालिग़ होने तक काम-काज में लगाये रखो, फिर (बालिग़ होने पर) अगर उन में अक़्ल की पुख़्तगी देखो, तो उनका माल उनके हवाले कर दो और इस डर से कि वे बड़े हो जाएंगे (यानी बड़े होकर तुम से अपना माल वापस ले लेंगे) उसको फ़िज़ूलख़र्ची और जल्दी में न उड़ा देना। जो शख़्स ख़ुशहाल हो उसको (ऐसे माल से क़तई तौर पर) परहेज़ रखना चाहिए और जो बद-हाल हो, वह मुनासिब तौर पर (यानी ख़िदमत के बराबर) कुछ ले ले और जब उन का माल उनके सुपुर्द करने लगो तो गवाह कर लिया करो और हक़ीक़त में तो ख़ुदा ही गवाह (और) हिसाब लेने वाला काफ़ी है। (६) जो माल मां-बाप और रिश्तेदार छोड़ मरें, थोड़ा हो या बहुत, उसमें मर्दों का भी हिस्सा है और औरतों का भी। ये हिस्से (ख़ुदा के) मुक़र्रर किये हुए हैं। (७) और जब मीरास की तक़्सीम के वक़्त (ग़ैर वारिस) रिश्तेदार और यतीम और मुहताज आ जाएं, तो उन को भी उस में से कुछ दे दिया करो और मीठी बातों से पेश आया करो। (८) और ऐसे लोगों को डरना चाहिए जो (ऐसी हालत में हों कि) अपने बाद नन्हें-नन्हें बच्चे छोड़ जाएं और उन को उन के बारे में डर हो (कि उनके मरने के बाद इन बेचारों का क्या हाल होगा) पस चाहिए कि ये लोग ख़ुदा से डरें और माक़ूल बात कहें। (९) जो लोग यतीमों का माल नाजायज़ तौर पर खाते हैं, वे अपने पेट में आग भरते हैं और दोज़ख़ में डाले जाएंगे। (१०) ★

ख़ुदा तुम्हारी औलाद के बारे में तुम को इर्शाद फ़रमाता है कि एक लड़के का हिस्सा दो लड़कियों के हिस्से के बराबर है और अगर मरने वाले की औलाद सिर्फ़ लड़कियां ही हों (यानी दो या) दो से ज़्यादा, तो कुल तर्के में उन का दो तिहाई और अगर सिर्फ़ एक लड़की हो तो उस का हिस्सा आधा और मय्यत के मां-बाप का यानी दोनों में हर एक का तर्के में छठा हिस्सा, बशर्ते कि मय्यत के औलाद हो, और अगर औलाद न हो और सिर्फ़ मां-बाप ही उस के वारिस हों तो एक तिहाई मां का हिस्सा। और अगर मय्यत के भाई भी हों तो मां का छठा हिस्सा (और मय्यत के तर्के की यह तक़्सीम) वसीयत (के पूरा करने) के बाद, जो उसने की हो या क़र्ज़ के (अदा होने के बाद जो उसके ज़िम्मे हो, अमल में आएगी) तुम को मालूम नहीं कि तुम्हारे बाप-दादों, बेटों-पोतों में से फ़ायदे के लिहाज़ से कौन तुम से ज़्यादा क़रीब है। ये हिस्से ख़ुदा के मुक़र्रर किये हुए हैं और ख़ुदा सब कुछ जानने वाला और हिक्मत वाला है। (११) और जो माल तुम्हारी औरतें छोड़ मरें, अगर

★रु. १/१२ आ १०

व लकुम् निस्फ़ु मा त-र-क अज़्वाजुकुम् इल्लम् यकुल्लहुन्-न व-लदुन्ॡ फ़ इन् का-न लहुन्-न व-लदुन् फ़ लकुमुर्रुबुअ़ु मिम्मा त-रक्-न मिम्बअ़्-दि वसिय्यतिंय्यूसी-न बिहा औदैनिन् ॥ व लहुन्नर्रुबुअ़ु मिम्मा त-रक्तुम् इल्लम् यकुल्लकुम् व-लदुन्ॡ फ़ इन् का-न लकुम् व-लदुन् फ़ लहुन्नस्सुमुनु मिम्मा तरक्तुम् मिम्बअ़्-दि वसिय्यतिन् तूसू-न बिहा औदैनिन् ॥ व इन्का-न रजुलुंय-यूरसु कलाल-तन् अविम्र-अतुंव् - व लहू अख़ुन् औ उख़्तुन् फ़ लि कुल्लि वाहिदिम् - मिन्हुमस्सुदुसु ॡ फ़ इन् कानू अक्स-र मिन् ज़ालि-क फ़हुम् शुरका-उ फ़िस्सुलुसि मिम्बअ़्-दि वसिय्यतिंय्यूसा बिहा औदैनिन् ॥ ग़ै - र मुज़ार्रिन् ॡ वसिय्यतम् - मिनल्लाहि ॥ वल्लाहु अलीमुन् हलीम ॥ (१२) तिल्-क हुदूदुल्लाहि ॥ व मंय्युतिअिल्ला-ह व रसूलहू युद्ख़िलहु जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल् - अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा ॥ व ज़ालिकल्-फ़ौज़ुल् - अज़ीम (१३) व मंय्यअ़्-सिल्ला-ह व रसूलहू व य-त-अ़-द्-द हुदूदहू युद्ख़िलहु नारन् ख़ालिदन् फ़ीहा ॥ व लहू अज़ाबुम्-मुहीन★(१४) वल्लाती यअ़्तीनल्-फ़ाहि-श-त मिन् निसा-इकुम् फ़स्तश्हिदू अलैहिन्-न अर्ब-अ-तम्-मिन्कुम्ॡ फ़ इन् शहिदू फ़ अम्सिकू-हुन्-न फ़िल्बुयूति हत्ता य-त-वफ़्फ़ा-हुन्नल्मौतु औ यज-अ़-लल्लाहु लहुन्-न सबीला (१५) वल्लज़ानि यअ़्तियानिहा मिन्कुम् फ़ आज़ूहुमा ॡ फ़ इन् ताबा व अस्लहा फ़ अअ़्-रिज़ू अन्हुमा ॥ इन्नल्ला-ह का-न तव्वाबर्रहीमा (१६) इन्नमत्तौबतु अ़ - लल्लाहि लिल्लज़ी-न यअ़्-मलूनस्सू-अ बि जहालतिन् सुम् - म यतूबू-न मिन् क़रीबिन् फ़ उला-इ-क यतूबुल्लाहु अलैहिम् ॥ व कानल्लाहु अलीमन् हकीमा (१७)

فَرِيضَةً مِّنَ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝١١ وَلَكُمْ نِصْفُ مَا تَرَكَ
أَزْوَاجُكُمْ إِن لَّمْ يَكُن لَّهُنَّ وَلَدٌ فَإِن كَانَ لَهُنَّ وَلَدٌ فَلَكُمُ الرُّبُعُ
مِمَّا تَرَكْنَ مِن بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُوصِينَ بِهَا أَوْ دَيْنٍ وَلَهُنَّ الرُّبُعُ
مِمَّا تَرَكْتُمْ إِن لَّمْ يَكُن لَّكُمْ وَلَدٌ فَإِن كَانَ لَكُمْ وَلَدٌ فَلَهُنَّ
الثُّمُنُ مِمَّا تَرَكْتُم مِّن بَعْدِ وَصِيَّةٍ تُوصُونَ بِهَا أَوْ دَيْنٍ وَإِن
كَانَ رَجُلٌ يُورَثُ كَلَالَةً أَوِ امْرَأَةٌ وَلَهُ أَخٌ أَوْ أُخْتٌ فَلِكُلِّ وَاحِدٍ
مِّنْهُمَا السُّدُسُ فَإِن كَانُوا أَكْثَرَ مِن ذَٰلِكَ فَهُمْ شُرَكَاءُ فِي الثُّلُثِ
مِن بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُوصَىٰ بِهَا أَوْ دَيْنٍ غَيْرَ مُضَارٍّ وَصِيَّةً مِّنَ اللَّهِ
وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَلِيمٌ ۝١٢ تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ وَمَن يُطِعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ
يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَذَٰلِكَ
الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝١٣ وَمَن يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَتَعَدَّ حُدُودَهُ
يُدْخِلْهُ نَارًا خَالِدًا فِيهَا وَلَهُ عَذَابٌ مُّهِينٌ ۝١٤ وَاللَّاتِي يَأْتِينَ
الْفَاحِشَةَ مِن نِّسَائِكُمْ فَاسْتَشْهِدُوا عَلَيْهِنَّ أَرْبَعَةً مِّنكُمْ فَإِن
شَهِدُوا فَأَمْسِكُوهُنَّ فِي الْبُيُوتِ حَتَّىٰ يَتَوَفَّاهُنَّ الْمَوْتُ أَوْ يَجْعَلَ
اللَّهُ لَهُنَّ سَبِيلًا ۝١٥ وَاللَّذَانِ يَأْتِيَانِهَا مِنكُمْ فَآذُوهُمَا فَإِن تَابَا وَ
أَصْلَحَا فَأَعْرِضُوا عَنْهُمَا إِنَّ اللَّهَ كَانَ تَوَّابًا رَّحِيمًا ۝١٦ إِنَّمَا التَّوْبَةُ
عَلَى اللَّهِ لِلَّذِينَ يَعْمَلُونَ السُّوءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ يَتُوبُونَ مِن قَرِيبٍ

★रु. २/१३ आ ४.

उन के औलाद न हो, तो उस में आधा हिस्सा तुम्हारा और अगर औलाद हो तो तर्के में तुम्हारा हिस्सा चौथाई। (लेकिन यह बांट) वसीयत (के पूरा करने) के बाद, जो उन्होंने की हो या क़र्ज़ के (अदा होने के बाद, जो उन के ज़िम्मे हो) की जाएगी और जो माल तुम (मर्द) छोड़ मरो, अगर तुम्हारे औलाद न हो तो तुम्हारी औरतों का उसमें चौथा हिस्सा। और अगर औलाद हो तो उन का आठवां हिस्सा। (ये हिस्से) तुम्हारी वसीयत (के पूरा करने के) बाद जो तुम ने की हो और क़र्ज़ के (अदा होने के बाद) बांटे जाएंगे। और अगर ऐसे मर्द या औरत की मीरास हो, जिसके न बाप हो, न बेटा, मगर उसके भाई या बहन हो तो उनमें से हर एक का छठा हिस्सा और अगर एक से ज़्यादा हों तो सब एक तिहाई में शरीक होंगे। (ये हिस्से भी) वसीयत व क़र्ज़ के अदा होने के बाद, बशर्तेकि उनसे मय्यत ने किसी का नुक़सान न किया हो (तक़सीम किये जाएंगे।) यह ख़ुदा का फ़रमान है और ख़ुदा निहायत इल्म वाला (और) निहायत हिल्म वाला है। (१२) ये (तमाम हुक्म) ख़ुदा की हदें हैं और जो आदमी ख़ुदा और उसके पैग़म्बर की फ़रमांबरदारी करेगा, ख़ुदा उसको जन्नतों में दाख़िल करेगा, जिन में नहरें बह रही हैं, वे उनमें हमेशा रहेंगे और यह बड़ी कामियाबी है। (१३) और जो ख़ुदा और उसके रसूल की ना-फ़रमानी करेगा, और उस की हदों से निकल जाएगा, उस को ख़ुदा दोज़ख़ में डालेगा, जहां वह हमेशा रहेगा और उस को ज़िल्लत का अज़ाब होगा। (१४)★

मुसलमानो! तुम्हारी औरतों में जो बद-कारी कर बैठें, उन पर अपने लोगों में चार आदमियों की गवाही लो। अगर वे (उन की बद-कारी की) गवाही दें, तो इन औरतों को घरों में बंद रखो, यहां तक कि मौत उन का काम तमाम कर दे या ख़ुदा उन के लिए कोई और रास्ता (पैदा) करे। (१५) और जो मर्द तुम में से बदकारी करें, तो उनको ईज़ा (तक्लीफ़) दो, फिर अगर वे तौबा कर लें और भले बन जाएं तो उनका पीछा छोड़ दो। बेशक ख़ुदा तौबा क़ुबूल करने वाला (और) मेहरबान है। (१६) ख़ुदा उन्हीं लोगों की तौबा क़ुबूल करता है, जो नादानी से बुरी हरकत कर बैठते हैं, फिर जल्द तौबा कर लेते हैं, पस ऐसे लोगों पर ख़ुदा मेहरबानी करता है और वह सब कुछ जानता (और) हिक्मत वाला है। (१७) और ऐसे लोगों की तौबा क़ुबूल नहीं होती

★रु. २/१३ आ ४

व लैसतित्तौबतु लिल्लज़ी-न यअ्‌-मलूनस् - सय्यिआति ج हत्ता इज़ा ह-ज़-र अ-ह-द-हुमुलमौतु क़ा-ल इन्नी तुब्तुलआ-न व लल्लज़ी-न यमूतू-न व हुम् कुफ़्फ़ारुन् ط उला - इ - क अअ्‌ - तद्ना लहुम् अज़ाबन् अलीमा (१८) या अय्युहल्लज़ी - न आमनू ला यहिल्लु लकुम् अन् तरिसुन्निसा - अ करहन् ط

व ला तअ्‌-ज़ुलूहुन्-न लि तज़्हबू बि बअ्‌-ज़ि मा आतैतुमूहुन् - न इल्ला अंय्यअ्ती - न बि फ़ाहिशतिम्-मुबय्यिनतिन् ج व आशिरू हुन्-न बिलमअ्‌ - रूफ़ि ج फ़ इन् करिह्तुमूहुन्-न फ़ असा अन् तक्रहू शैअंव्-व यज्-अ-लल्लाहु फ़ीहि ख़ैरन् कसीरा (१९) व इन् अरत्तुमुस्तिब्दा-ल ज़ौजिम्मका - न ज़ौजिंव् - व आतैतुम् इह्दा - हुन् - न क़िन्तारन् फ़ ला तअ्ख़ुज़ू मिन्हु शैअन् ط अ - तअ्ख़ुज़ूनहू बुह्तानंव-व इस्मम्-मुबीना (२०) व कै-फ़ तअ्ख़ुज़ूनहू व क़द् अफ़्ज़ा बअ्‌-ज़ुकुम् इला बअ्‌-ज़िंव्-व अ-ख़ज़्-न मिन्कुम् मीसाक़न् ग़लीज़ा (२१) व ला तन्किहू मा

فَأُولٰٓئِكَ يَتُوبُ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿١٧﴾ وَلَيْسَتِ التَّوْبَةُ
لِلَّذِينَ يَعْمَلُونَ السَّيِّـَٔاتِ ۚ حَتّٰٓى إِذَا حَضَرَ أَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ إِنِّي
تُبْتُ الْـَٔانَ وَلَا الَّذِينَ يَمُوتُونَ وَهُمْ كُفَّارٌ ۚ أُولٰٓئِكَ أَعْتَدْنَا لَهُمْ
عَذَابًا أَلِيمًا ﴿١٨﴾ يٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ اٰمَنُوا لَا يَحِلُّ لَكُمْ أَنْ تَرِثُوا النِّسَآءَ
كَرْهًا ۖ وَلَا تَعْضُلُوهُنَّ لِتَذْهَبُوا بِبَعْضِ مَآ اٰتَيْتُمُوهُنَّ إِلَّآ أَنْ
يَّأْتِينَ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ۚ وَعَاشِرُوهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ ۚ فَإِنْ كَرِهْتُمُوهُنَّ
فَعَسٰٓى أَنْ تَكْرَهُوا شَيْـًٔا وَيَجْعَلَ اللّٰهُ فِيهِ خَيْرًا كَثِيرًا ﴿١٩﴾ وَإِنْ أَرَدْتُّمُ
اسْتِبْدَالَ زَوْجٍ مَّكَانَ زَوْجٍ ۙ وَّاٰتَيْتُمْ إِحْدٰىهُنَّ قِنْطَارًا فَلَا تَأْخُذُوا
مِنْهُ شَيْـًٔا ۚ أَتَأْخُذُونَهُ بُهْتَانًا وَّإِثْمًا مُّبِينًا ﴿٢٠﴾ وَكَيْفَ تَأْخُذُونَهُ وَ
قَدْ أَفْضٰى بَعْضُكُمْ إِلٰى بَعْضٍ وَّأَخَذْنَ مِنْكُمْ مِّيثَاقًا غَلِيظًا ﴿٢١﴾ وَ
لَا تَنْكِحُوا مَا نَكَحَ اٰبَآؤُكُمْ مِّنَ النِّسَآءِ إِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ۚ إِنَّهُ كَانَ فَاحِشَةً
وَّمَقْتًا ۖ وَسَآءَ سَبِيلًا ﴿٢٢﴾ حُرِّمَتْ عَلَيْكُمْ أُمَّهٰتُكُمْ وَبَنٰتُكُمْ وَأَخَوٰتُكُمْ وَ
عَمّٰتُكُمْ وَخٰلٰتُكُمْ وَبَنٰتُ الْأَخِ وَبَنٰتُ الْأُخْتِ وَأُمَّهٰتُكُمُ الّٰتِيٓ أَرْضَعْنَكُمْ
وَأَخَوٰتُكُمْ مِّنَ الرَّضَاعَةِ وَأُمَّهٰتُ نِسَآئِكُمْ وَرَبَآئِبُكُمُ الّٰتِي فِي حُجُورِكُمْ
مِّنْ نِّسَآئِكُمُ الّٰتِي دَخَلْتُمْ بِهِنَّ ۖ فَإِنْ لَّمْ تَكُونُوا دَخَلْتُمْ بِهِنَّ فَلَا
جُنَاحَ عَلَيْكُمْ ۖ وَحَلَآئِلُ أَبْنَآئِكُمُ الَّذِينَ مِنْ أَصْلَابِكُمْ ۙ وَأَنْ
تَجْمَعُوا بَيْنَ الْأُخْتَيْنِ إِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ۗ إِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُورًا رَّحِيمًا ﴿٢٣﴾

न-क-ह आबा-उकुम् मिनन्निसा-इ इल्ला मा क़द् स - लफ़ ط इन्नहू का - न फ़ाहिशतंव - व मक़्तन् ط व सा - अ सबीला★ (२२) हुर्रिमत् अलैकुम् उम्महातुकुम् व बनातुकुम् व अ-ख़-वातुकुम् व अम्मातुकुम् व ख़ालातुकुम् व बनातुलअख़ि व बनातुल् - उख़्ति व उम्महातु - कुमुल्लाती अर्ज़अ - नकुम् व अ-ख़-वातुकुम् मिनर्रज़ाअति व उम्महातु निसा-इकुम् व रबा-इबु - कुमुल्लाती फ़ी हुजूरिकुम् मिन्-निसा-इकुमुल्लाती द-ख़ल्तुम् बिहिन्-न ۖ फ़ इल्लम् तकूनू दख़ल्तुम् बिहिन्-न फ़ ला जुना-ह अलैकुम् ۖ व हला-इलु अब्ना-इ-कुमुल्लज़ी - न मिन् अस्लाबिकुम् ۙ व अन् तज्मअू बैनल् - उख़्तैनि इल्ला मा क़द् स-लफ़ ط इन्नल्ला-ह का-न ग़फ़ूर्रहीमा ۙ (२३)

★रु. ३/१४ आ ८

जो (सारी उम्र) बुरे काम करते रहे, यहां तक कि जब उन में से किसी की मौत आ मौजूद हो, तो उस वक़्त कहने लगे कि अब मैं तौबा करता हूं और न उनकी (तौबा क़ुबूल होती है) जो कुफ़्र की हालत में मरें। ऐसे लोगों के लिए हमने दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है। (१८) मोमिनो! तुमको जायज़ नहीं कि जबरदस्ती औरतों के वारिस बन जाओ और (देखना) इस नीयत से कि जो कुछ तुमने उन को दिया है उसमें से कुछ ले लो, उन्हें (घरों में) मत रोक रखना। हां अगर वे खुले तौर पर बद-कारी करें, (तो रोकना मुनासिब नहीं) और उनके साथ अच्छी तरह से रहो-सहो। अगर वह तुम को ना-पसन्द हों तो अजब नहीं कि तुम किसी चीज़ को ना-पसन्द करो और ख़ुदा उसमें बहुत-सी भलाई पैदा कर दे। (१९) और अगर तुम एक औरत को छोड़ कर दूसरी औरत करनी चाहो और पहली औरत को बहुत-सा माल दे चुके हो, तो उसमें से कुछ मत लेना। भला तुम ना-जायज़ तौर पर और खुले ज़ुल्म से अपना माल उससे वापस लोगे? (२०) और तुम दिया हुआ माल किस तरह वापस ले सकते हो, जबकि तुम एक दूसरे के साथ सोहबत कर चुके हो और वे तुम से पक्का अह्द भी ले चुकी हैं। (२१) और जिन औरतों से तुम्हारे बाप ने निकाह किया हो, उन से निकाह मत करना, मगर (जाहिलियत में) जो हो चुका, (सो हो चुका), यह निहायत बे-हयाई और (ख़ुदा की) ना-ख़ुशी की बात थी और बहुत बुरा दस्तूर था। (२२) ★

तुम पर तुम्हारी माएं और बेटियां, बहनें और फूफियां और खालाएं और भतीजियां और भांजियां और वे माएं, जिन्होंने तुम को दूध पिलाया हो,[1] और रज़ाई बहनें और सासें हराम कर दी गयी हैं और जिन औरतों से तुम सोहबत कर चुके हो, उन की लड़कियां, जिन्हें तुम पाला करते हो, (वे भी तुम पर हराम हैं,) हां अगर उनके साथ तुम ने सोहबत न की हो, तो (उनकी लड़कियों के साथ निकाह कर लेने में) तुम पर कुछ गुनाह नहीं और तुम्हारे सगे बेटों की औरतें भी और दो बहनों का इकट्ठा करना भी (हराम है), मगर जो हो चुका, (सो हो चुका)[2] बेशक ख़ुदा बख़्शने

---

१. यानी दाइयां कि दूध पिलाने के एतबार से वे भी तुम्हारी माएं हैं।

२. हदीस शरीफ़ में फूफी और भतीजी और ख़ाला और भांजी का जमा करना भी हराम है।

★रु. ३/१४ आ ८

पांचवां पारः वल्मुह्-सनातु

सूरतुन्निसा-इ आयत २४ से १४७

वल्मुह्सनातु मिनन्निसा-इ इल्ला मा म-ल-कत् ऐमानुकुम् ॖ किताबल्लाहि अलैकुम् ॖ व उहि़ल-ल लकुम् मा वरा-अ ज़ालिकुम् अन् तब्तग़ू बि अम्वालिकुम् मुह़्सिनी-न ग़ै-र मुसाफ़िही-न ॰ फ़-मस्तम्तअ्-तुम् बिही मिनहुन्-न फ़-आतूहुन्-न उजूरहुन्-न फ़री-ज़-तन् ॰ व ला जुना-ह़ अलैकुम् फ़ी मा तराज़ैतुम् बिही मिम्बअ्-दिल्-फ़रीज़ति ॰ इन्नल्ला-ह का-न अलीमन् ह़कीमा (२४) व मल्लम् यस्ततिअ् मिन्कुम् तौलन् अंय्यन्किहल्-मुह़्सनातिल्-मुअ्मिनाति फ़-मिम्मा म-ल-कत् ऐमानुकुम् मिन् फ़-त-यातिकुमुल्-मुअ्मिनाति ॰ वल्लाहु अअ्-लमु बि ईमानिकुम् ॰ बअ्-ज़ुकुम् मिम्बअ्-ज़िन् ॖ फ़न्किहूहुन्-न बि इज़्नि अह़्लिहिन्-न व आतूहुन्-न उजूरहुन्-न बिलमअ्-रूफ़ि मुह़्सनातिन् ग़ै-र मुसाफ़िह़ातिंव्वला मुत्तख़िज़ाति अख़्दानिन् ॖ फ़ इज़ा उह़्सिन्-न फ़ इन् अतै-न बि फ़ाहि़शतिन् फ़ अलैहिन्-न निस्फ़ु मा अ-लल्-मुह़्सनाति मिनल्अ़ज़ाबि ॰ ज़ालि-क लि मन् ख़शियल्-अ-न-त मिन्कुम् ॰ व अन् तस्बिरू ख़ैरुल्लकुम् ॰ वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रह़ीम ★ (२५) युरीदुल्लाहु लि युबय्यि-न लकुम् व यह़्दियकुम् सु-नन-ल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिकुम् व यतू-ब अलैकुम् ॰ वल्लाहु अलीमुन् ह़कीम (२६) वल्लाहु युरीदु अंय्यतू-ब अलैकुम् व युरीदुल्लज़ी-न यत्तबिअूनश्-श-हवाति अन् तमीलू मैलन् अज़ीमा (२७) युरीदुल्लाहु अंय्युख़फ़्फ़ि-फ़ अन्कुम् ॖ व ख़ुलिक़ल्-इन्सानु ज़ईफ़ा (२८)

وَّالْمُحْصَنٰتُ مِنَ النِّسَآءِ اِلَّا مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ۚ كِتٰبَ اللّٰهِ
عَلَيْكُمْ ۚ وَاُحِلَّ لَكُمْ مَّا وَرَآءَ ذٰلِكُمْ اَنْ تَبْتَغُوْا بِاَمْوَالِكُمْ مُّحْصِنِيْنَ
غَيْرَ مُسٰفِحِيْنَ ۭ فَمَا اسْتَمْتَعْتُمْ بِهٖ مِنْهُنَّ فَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ
فَرِيْضَةً ۭ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا تَرٰضَيْتُمْ بِهٖ مِنْۢ بَعْدِ الْفَرِيْضَةِ ۭ
اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۝ وَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ مِنْكُمْ طَوْلًا اَنْ
يَّنْكِحَ الْمُحْصَنٰتِ الْمُؤْمِنٰتِ فَمِنْ مَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ مِّنْ فَتَيٰتِكُمُ
الْمُؤْمِنٰتِ ۭ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِاِيْمَانِكُمْ ۭ بَعْضُكُمْ مِّنْۢ بَعْضٍ ۚ
فَانْكِحُوْهُنَّ بِاِذْنِ اَهْلِهِنَّ وَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ
مُحْصَنٰتٍ غَيْرَ مُسٰفِحٰتٍ وَّلَا مُتَّخِذٰتِ اَخْدَانٍ ۚ فَاِذَآ اُحْصِنَّ
فَاِنْ اَتَيْنَ بِفَاحِشَةٍ فَعَلَيْهِنَّ نِصْفُ مَا عَلَى الْمُحْصَنٰتِ مِنَ
الْعَذَابِ ۭ ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ الْعَنَتَ مِنْكُمْ ۭ وَاَنْ تَصْبِرُوْا خَيْرٌ
لَّكُمْ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُبَيِّنَ لَكُمْ وَيَهْدِيَكُمْ
سُنَنَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَيَتُوْبَ عَلَيْكُمْ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝
وَاللّٰهُ يُرِيْدُ اَنْ يَّتُوْبَ عَلَيْكُمْ ۣ وَيُرِيْدُ الَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الشَّهَوٰتِ
اَنْ تَمِيْلُوْا مَيْلًا عَظِيْمًا ۝ يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّخَفِّفَ عَنْكُمْ ۚ وَخُلِقَ
الْاِنْسَانُ ضَعِيْفًا ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَكُمْ
بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ مِّنْكُمْ ۣ وَ

★रु. ४/१ आ ३

वाला (और) रहम वाला है। (२३) और शौहर वाली औरतें भी (तुम पर हराम हैं), मगर वे जो (क़ैद होकर लौंडियों की शक्ल में) तुम्हारे क़ब्ज़े में आ जाएं।[1] यह हुक्म ख़ुदा ने तुमको लिख दिया है और इन महरमात(यानी जो हराम कर दी गयीं) के अलावा और औरतें तुम को हलाल हैं, इस तरह से कि माल ख़र्च करके उनसे निकाह कर लो, बशर्ते कि (निकाह से) मक़्सूद पाकदामनी क़ायम रखनी हो, न कि शह्वत पूरी करनी हो। तो जिन औरतों से तुम फ़ायदा हासिल करो, उनका मह्र जो मुक़र्रर किया हो, अदा कर दो और अगर मुक़र्रर करने के बाद आपस की रज़ामंदी से मह्र में कमी-बेशी कर लो, तो तुम पर कुछ गुनाह नहीं। बेशक ख़ुदा सब कुछ जानने वाला (और) हिक्मत वाला है। (२४) और जो शख़्स तुम में से मोमिन आज़ाद औरतों (यानी बीवियों) से निकाह करने की क़ुद्रत न रखे, तो मोमिन लौंडियों में ही, जो तुम्हारे क़ब्ज़े में आ गयी हों (निकाह कर ले) और ख़ुदा तुम्हारे ईमान को अच्छी तरह जानता है। तुम आपस में एक दूसरे के हम-जिंस हो, तो उन लौंडियों के साथ उनके मालिकों से इजाज़त हासिल करके निकाह कर लो और दस्तूर के मुताबिक़ उन का मह्र भी अदा कर दो, बशर्ते कि पाकदामन हों, न ऐसी कि खुल्लम-खुल्ला बद-कारी करें और न पर्दे की आड़ में दोस्ती करना चाहें। फिर अगर निकाह में आकर बद-कारी कर बैठें, तो जो सज़ा आज़ाद औरतों (यानी बीवियों) के लिए है, उनकी आधी उस को (दी जाए), यह (लौंडी के साथ निकाह करने की) इजाज़त उस शख़्स को है जिसे गुनाह कर बैठने का डर हो और अगर सब्र करो तो यह तुम्हारे लिए बहुत अच्छा है और ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है। (२५) ★

ख़ुदा चाहता है कि (अपनी आयतें) तुम से खोल-खोल कर बयान फ़रमाए और तुम को अगले लोगों के तरीक़े बताए और तुम पर मेहरबानी करे और ख़ुदा जानने वाला (और) हिक्मत वाला है। (२६) और ख़ुदा तो चाहता है कि तुम पर मेहरबानी करे और जो लोग अपनी ख़्वाहिशों के पीछे चलते हैं, वे चाहते हैं कि तुम सीधे रास्ते से भटक कर दूर जा पड़ो। (२७) ख़ुदा चाहता है कि तुम पर से बोझ हल्का करे और इंसान (क़ुद्रती तौर पर) कमज़ोर पैदा हुआ है। (२८)

---

१. यानी 'दारुल हर्ब' की औरतें अगर ख़ाविंद वाली हों, तो भी हराम नहीं, जबकि दारुल हर्ब से निकलें और उन के साथ ख़ाविंद न आएं, तब मुबाह (जायज़) हैं, अगर उन के ख़ाविंद भी मुसलमान हो जाएं, तो अपनी जोरू ले लें।

★रु. ४/१ आ ३

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तअ्कुलू अम्वालकुम् बैनकुम् बिल्बातिलि इल्ला अन् तकू-न तिजा-र-तन् अन् तराज़िम्-मिन्कुम् व ला तक़्तुलू अन्फ़ुसकुम्ط इन्नल्ला-ह का-न बिकुम् रहीमा (२९) व मंय्यफ़्अल् ज़ालि-क अुद्वानंव्-व ज़ुल्मन् फ़ सौ-फ़ नुस्लीहि नारन्ط व का-न ज़ालि-क अ़-लल्लाहि यसीरा (३०) इन् तज्तनिबू कबा-इ-र मा तुन्हौ-न अन्हु नुकफ़्फ़िर् अन्कुम् सय्यिआतिकुम् व नुद्खिल्कुम् मुद्-ख-लन् करीमा (३१) व ला त-तमन्नौ मा फ़ज़्ज़लल्लाहु बिही बअ्-ज़कुम् अ़ला बअ्-ज़िन्ط लिर्रिजालि नसीबुम् - मिम्मक्तसबू ط व लिन्निसा - इ नसीबुम्-मिम्मक्तसब-न ط वस्अलुल्ला - ह मिन् फ़ज़्लिहीط इन्नल्ला-ह का-न बि कुल्लि शैइन् अ़लीमा (३२) व लि कुल्लिन् ज-अ़ल्ना मवालि-य मिम्मा त-र-कल्-वालिदानि वल्-अक़्रबू-नط वल्लज़ी-न अ़-क़-दत् ऐमानुकुम् फ़ आतू-हुम् नसीबहुम्ط इन्नल्ला-ह का-न अ़ला कुल्लि शैइन् शहीदा★ (३३) अर्रिजालु क़व्वामू-न अ़लन्निसा-इ बिमा फ़ज़्ज़लल्लाहु बअ्-ज़हुम् अ़ला बअ्-ज़िंव्-व बिमा अन्फ़क़ू मिन् अम्वालिहिम्ط

النساء ٤ — ٩٩ — والمحصنت ٥

لَا تَقْتُلُوا أَنفُسَكُمْ إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيمًا ۝ وَمَن يَفْعَلْ ذَٰلِكَ
عُدْوَانًا وَظُلْمًا فَسَوْفَ نُصْلِيهِ نَارًا وَكَانَ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ
يَسِيرًا ۝ إِن تَجْتَنِبُوا كَبَائِرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ نُكَفِّرْ عَنكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ
وَنُدْخِلْكُم مُّدْخَلًا كَرِيمًا ۝ وَلَا تَتَمَنَّوْا مَا فَضَّلَ اللَّهُ بِهِ
بَعْضَكُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ لِّلرِّجَالِ نَصِيبٌ مِّمَّا اكْتَسَبُوا وَلِلنِّسَاءِ
نَصِيبٌ مِّمَّا اكْتَسَبْنَ وَاسْأَلُوا اللَّهَ مِن فَضْلِهِ إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُلِّ
شَيْءٍ عَلِيمًا ۝ وَلِكُلٍّ جَعَلْنَا مَوَالِيَ مِمَّا تَرَكَ الْوَالِدَانِ وَ
الْأَقْرَبُونَ وَالَّذِينَ عَقَدَتْ أَيْمَانُكُمْ فَآتُوهُمْ نَصِيبَهُمْ إِنَّ
اللَّهَ كَانَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدًا ۝ الرِّجَالُ قَوَّامُونَ عَلَى النِّسَاءِ
بِمَا فَضَّلَ اللَّهُ بَعْضَهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ وَبِمَا أَنفَقُوا مِنْ أَمْوَالِهِمْ
فَالصَّالِحَاتُ قَانِتَاتٌ حَافِظَاتٌ لِّلْغَيْبِ بِمَا حَفِظَ اللَّهُ وَاللَّاتِي
تَخَافُونَ نُشُوزَهُنَّ فَعِظُوهُنَّ وَاهْجُرُوهُنَّ فِي الْمَضَاجِعِ
وَاضْرِبُوهُنَّ فَإِنْ أَطَعْنَكُمْ فَلَا تَبْغُوا عَلَيْهِنَّ سَبِيلًا إِنَّ اللَّهَ
كَانَ عَلِيًّا كَبِيرًا ۝ وَإِنْ خِفْتُمْ شِقَاقَ بَيْنِهِمَا فَابْعَثُوا حَكَمًا
مِّنْ أَهْلِهِ وَحَكَمًا مِّنْ أَهْلِهَا إِن يُرِيدَا إِصْلَاحًا يُوَفِّقِ اللَّهُ
بَيْنَهُمَا إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا خَبِيرًا ۝ وَاعْبُدُوا اللَّهَ وَلَا تُشْرِكُوا
بِهِ شَيْئًا وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا وَبِذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسَاكِينِ

फ़स्सालिहातु क़ानितातुन् हाफ़िज़ातुल् - लिल्ग़ैबि बिमा हफ़िज़ल्लाहुط वल्लाती तख़ाफ़ू-न नुशूज़हुन्-न फ़ अिज़ूहुन्-न वह्जुरूहुन्-न फ़िल्मज़ाजिअि वज़्रिबूहुन्-नج फ़ इन् अ-तअ्-नकुम् फ़ला तब्ग़ू अ़लैहिन्-न सबीलाط इन्नल्ला-ह का-न अ़लिय्यन् कबीरा (३४) व इन् ख़िफ़्तुम् शिक़ा-क़ बैनिहिमा फ़ब्असू ह-क-मम्-मिन् अह्लिही व ह-क-मम्-मिन् अह्लिहाج इंय्युरीदा इस्लाहंय्युवफ़्फ़िक़िल्लाहु बैनहुमाط इन्नल्ला - ह का-न अ़लीमन् ख़बीरा (३५) वअ्-बुदुल्ला-ह व ला तुश्रिकू बिही शैअंव्-व बिल्-वालिदैनि इह्सानंव्-व बि ज़िल्क़ुर्बा वल्यतामा वल्मसाकीनि वल्जारि ज़िल्क़ुर्बा

★रु. ५/२ आ ८

मोमिनो ! एक दूसरे का माल नाहक़ न खाओ। हां, अगर आपस की रजामंदी से तिजारत का लेन-देन हो (और उनसे माली फ़ायदा हासिल हो जाए, तो वह जायज़ है) और अपने आप को हलाक न करो। कुछ शक नहीं कि ख़ुदा तुम पर मेहरबान है। (२६) और जो सरकशी और ज़ुल्म से ऐसा करेगा, हम उस को बहुत जल्द जहन्नम में दाख़िल करेंगे और यह ख़ुदा को आसान है। (३०) अगर तुम बड़े-बड़े गुनाहों से, जिनसे तुम को मना किया जाता है, बचोगे, तो हम तुम्हारे (छोटे-छोटे) गुनाह माफ़ कर देंगे और तुम्हें इज़्ज़त के मकानों में दाख़िल करेंगे। (३१) और जिस चीज़ में ख़ुदा ने तुम में से कुछ को कुछ पर फ़ज़ीलत दी है, उसका लालच मत करो। मर्दों को उन कामों का सवाब है, जो उन्होंने किये, औरतों को उन कामों का सवाब है जो उन्होंने किये और ख़ुदा से उस का फ़ज़्ल (व करम) मांगते रहो। कुछ शक नहीं कि अल्लाह हर चीज़ को जानता है। (३२) और जो माल मां-बाप और रिश्तेदार छोड़ मरें, तो (हक़दारों में बांट दो कि) हम ने हर एक के हक़दार मुक़र्रर कर दिए हैं और जिन लोगों से तुम अह्द कर चुके हो, उन को भी उनका हिस्सा दो।[1] बेशक ख़ुदा हर चीज़ के सामने है। (३३)★

मर्द औरतों पर हाकिम व मुसल्लत हैं, इसलिए कि ख़ुदा ने कुछ को कुछ से अफ़ज़ल बनाया है। और इसलिए भी कि मर्द अपना माल ख़र्च करते हैं, तो जो नेक बीवियां हैं, वे मर्दों के हुक्म पर चलती हैं और उन के पीठ पीछे ख़ुदा की हिफ़ाज़त में (माल व आबरू की) ख़बरदारी करती हैं और जिन औरतों के बारे में तुम्हें मालूम हो कि सरकशी (और बद चलनी) करने लगी हैं, तो (पहले) उनको (ज़ुबानी) समझाओ, (अगर न समझें, तो) फिर उनके साथ सोना छोड़ दो। अगर इस पर भी न मानें तो मारो-पीटो और अगर फ़रमांबरदार हो जाएं तो फिर उनको तक्लीफ़ देने का कोई बहाना मत ढूंढो। बेशक ख़ुदा सबसे ऊंचा और जलीलुल क़द्र (ऊंची इज़्ज़त वाला) है। (३४) और अगर तुम को मालूम हो की मियां-बीवी में अन-बन है, तो एक मुंसिफ़, मर्द के ख़ानदान में से और एक मुंसिफ़ औरत के ख़ानदान में से मुक़र्रर करो। वे अगर सुलह करा देनी चाहेंगे, तो ख़ुदा उनमें मुवाफ़क़त पैदा कर देगा। कुछ शक नहीं कि ख़ुदा सब कुछ जानता और सब बातों से ख़बरदार है। (३५) और ख़ुदा ही की इबादत करो और उसके साथ किसी चीज़ को शरीक न बनाओ और मां-बाप क़राबत वालों और यतीमों और मुहताजों और रिश्तेदार पड़ोसियों और अजनबी पड़ोसियों और पहलू के साथियों (यानी पास बैठने वालों) और मुसाफ़िरों और जो लोग तुम्हारे कब्ज़े में हों, सब के साथ एहसान करो कि ख़ुदा (एहसान, करने वालों को दोस्त रखता है और) घमंड करने वाले, बड़ाई मारने वाले को दोस्त नहीं रखता। (३६) जो ख़ुद भी बुख़्ल

१. अह्द करने से मुराद है दीनी भाई बनाना, ऐसे लोगों के लिए तर्का नहीं है। तर्का सिर्फ़ क़राबतदारों का हक़ है। दीनी भाइयों का हिस्सा यह है कि उन से मुहब्बत और दोस्ती रखी जाए और ज़रूरत के वक़्त उन की मदद की जाए। कुछ लोगों ने आयत का मतलब यह लिखा हैं कि अगर दीनी भाइयों को कुछ दिलाना मंज़ूर हो, तो उन के लिए वसीयत कर जाओ। पहले जो लोग गोद लिए जाते थे, वे वारिस ठहराये जाते थे, मगर अल्लाह तआला ने मीरास में उन का हिस्सा मुक़र्रर फ़रमाया, बल्कि उन का हिस्सा वसीयत में ठहराया है।

★रु. ५/२ आ ८

वल्जारिल्-जुनुबि वस्साहिबि बिल् जम्बि वब्निस्सबीलि ط व मा म-ल-कत् ऐमानुकुम् ط इन्नल्ला-ह ला युहिब्बु मन् का-न मुख़्तालन् फ़ख़ूरा ط(३६) अल्लज़ी-न यब्ख़लू-न व यअ्मुरूनन्ना-स बिल्बुख़्लि व यक्तुमू-न मा आताहुमुल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही ط व अअ्-तद्ना लिल्काफ़िरी-न अज़ाबम्मुहीना (३७) वल्लज़ी-न युन्फ़िक़ू-न अम्वालहुम् रिआ-अन्नासि व ला युअ्मिनू-न बिल्लाहि व ला बिल्-यौमिल् - आख़िरि ط व मंय्यकुनिश् - शैतानु लहू क़रीनन् फ़ सा-अ क़रीना (३८) व माज़ा अलैहिम् लौ आमनू बिल्लाहि वल्-यौमिल् - आख़िरि व अन्फ़क़ू मिम्मा र - ज़-क़हुमुल्लाहु ط व कानल्लाहु बिहिम् अलीमा (३९) इन्नल्ला-ह ला यज़्लिमु मिस्क़ा-ल ज़र्रतिन् ج व इन्तकु ह-स-नतंय्युज़ा-अिफ़्हा व युअ्ति मिल्लदुन्हु अज्रन् अज़ीमा (४०) फ़ कै-फ़ इज़ा जिअ्ना मिन् कुल्लि उम्मतिम्-बि शहीदिंव्-व जिअ्ना बि-क अला हा-उला-इ शहीदा ▨ ط(४१) यौमइज़िंय्यवद्दुल्-लज़ी-न क-फ़रू व अ-स-वुर्रसू-ल लौ तुसव्वा बिहिमुल्अर्ज़ु ط व ला यक्तुमूनल्ला-ह हदीसा ✱ (४२) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तक़्रबुस्-सला-त व अन्तुम् सुकारा हत्ता तअ्-लमू मा तक़ूलू-न व ला जुनुबन् इल्ला आबिरी सबीलिन् हत्ता तग़्तसिलू ط व इन् कुन्तुम् मर्ज़ा औ अला स-फ़रिन् औ जा-अ अ-हदुम्-मिन्कुम् मिनल्ग़ा-इति औ लामस्तुमुन्निसा-अ फ़ लम् तजिदू मा-अन् फ़-त-यम्ममू सअीदन् तय्यिबन् फ़म्सहू बि वुजूहिकुम् व ऐदीकुम् ط इन्नल्ला-ह का-न अफ़ुव्वन् ग़फ़ूरा (४३)

وَالْجَارِ ذِي الْقُرْبَىٰ وَالْجَارِ الْجُنُبِ وَالصَّاحِبِ بِالْجَنبِ وَابْنِ
السَّبِيلِ وَمَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ مَن كَانَ مُخْتَالًا
فَخُورًا ۝ الَّذِينَ يَبْخَلُونَ وَيَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ وَيَكْتُمُونَ
مَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِن فَضْلِهِ ۗ وَأَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا مُّهِينًا ۝
وَالَّذِينَ يُنفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ رِئَاءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ
وَلَا بِالْيَوْمِ الْآخِرِ ۗ وَمَن يَكُنِ الشَّيْطَانُ لَهُ قَرِينًا فَسَاءَ قَرِينًا ۝
وَمَاذَا عَلَيْهِمْ لَوْ آمَنُوا بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَأَنفَقُوا مِمَّا رَزَقَهُمُ
اللَّهُ ۚ وَكَانَ اللَّهُ بِهِمْ عَلِيمًا ۝ إِنَّ اللَّهَ لَا يَظْلِمُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ ۖ
وَإِن تَكُ حَسَنَةً يُضَاعِفْهَا وَيُؤْتِ مِن لَّدُنْهُ أَجْرًا عَظِيمًا ۝
فَكَيْفَ إِذَا جِئْنَا مِن كُلِّ أُمَّةٍ بِشَهِيدٍ وَجِئْنَا بِكَ عَلَىٰ هَٰؤُلَاءِ
شَهِيدًا ۝ يَوْمَئِذٍ يَوَدُّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَعَصَوُا الرَّسُولَ لَوْ تُسَوَّىٰ
بِهِمُ الْأَرْضُ وَلَا يَكْتُمُونَ اللَّهَ حَدِيثًا ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا
لَا تَقْرَبُوا الصَّلَاةَ وَأَنتُمْ سُكَارَىٰ حَتَّىٰ تَعْلَمُوا مَا تَقُولُونَ وَ
لَا جُنُبًا إِلَّا عَابِرِي سَبِيلٍ حَتَّىٰ تَغْتَسِلُوا ۚ وَإِن كُنتُم مَّرْضَىٰ
أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ أَوْ جَاءَ أَحَدٌ مِّنكُم مِّنَ الْغَائِطِ أَوْ لَامَسْتُمُ النِّسَاءَ
فَلَمْ تَجِدُوا مَاءً فَتَيَمَّمُوا صَعِيدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوا بِوُجُوهِكُمْ وَ
أَيْدِيكُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَفُوًّا غَفُورًا ۝ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا

▨ व. न वं. स. ★रु. ६/३ आ ६

(कंजूसी) करें और लोगों को भी बुख्ल सिखाएं और जो (माल) खुदा ने उन को अपने फ़ज़्ल से अता फ़रमाया है, उसे छिपा-छिपा के रखें और हमने ना-शुक्रों के लिए ज़िल्लत का अज़ाब तैयार कर रखा है। (३७) और खर्च भी करें तो (खुदा के लिए नहीं, बल्कि) लोगों के दिखाने को और ईमान न खुदा पर लाएं, न आखिरत के दिन पर, (ऐसे लोगों का साथी शैतान है) और जिस का साथी शैतान हो, तो (कुछ शक नहीं कि) वह बुरा साथी है। (३८) और अगर ये लोग खुदा पर और क़ियामत के दिन पर ईमान लाते और जो कुछ खुदा ने उनको दिया था, उसमें से खर्च करते तो उनका क्या नुक़्सान होता और खुदा उन को ख़ूब जानता है। (३९) खुदा किसी की ज़रा भी हक़तलफ़ी नहीं करता और अगर नेकी (की) होगी तो उसको दो गुना कर देगा और अपने यहां से बड़ा बदला बख़्शेगा। (४०) भला उस दिन क्या हाल होगा, जब हम हर उम्मत में से अह्वाल बताने वाले को बुलाएंगे और तुमको उन लोगों का (हाल बताने को) गवाह तलब करेंगे ▨ (४१) उस दिन काफ़िर और पैग़म्बर के ना-फ़रमान आरज़ू करेंगे कि काश् उन को ज़मीन में दफ़्न करके मिट्टी बराबर कर दी जाती और ख़ुदा से कोई बात छिपा नहीं सकेंगे। (४२) ★

मोमिनो! जब तुम नशे की हालत में हो तो जब तक (उन लफ़्ज़ों को) जो मुंह से कहो, समझने (न) लगो, नमाज़ के पास न जाओ।[1] और जनाबत (ना-पाकी) की हालत में भी (नमाज़ के पास न जाओ), जब तक कि ग़ुस्ल (न) कर लो। हां, अगर सफ़र की हालत में रास्ता चले जा रहे हो (और पानी न मिलने की वजह से ग़ुस्ल न कर सको, तो तयम्मुम कर के नमाज़ पढ़ लो) और अगर तुम बीमार हो या सफ़र में हो या कोई तुम में से बैतुल ख़ला (टट्टी) से होकर आया हो, या तुम औरतों से हम-बिस्तर हुए हो और तुम्हें पानी न मिले, तो पाक मिट्टी लो और मुंह और हाथों का मसह (कर के तयम्मुम) कर लो। बेशक ख़ुदा माफ़ करने वाला और बख़्शने वाला है। (४३)

---

१. यह उस वक़्त का हुक्म है कि शराब के बारे में इस के हराम होने का हुक्म नाज़िल हुआ था।

▨ व. न वी स. ★ रु. ६/३ आ ६

अ-लम् त-र इलल्लज़ी-न ऊतू नसीबम्मिनल्-किताबि यश्तरूनज़्ज़ला-ल-त व युरीदू-न अन् तज़िल्लुस्सबील (४४) वल्लाहु अअ्-लमु बि अअ्-दा-इकुम्, व कफ़ा बिल्लाहि वलिय्यंव्-व कफ़ा बिल्लाहि नसीरा (४५) मिनल्लज़ी-न हादू युहर्रिफ़ूनल्-कलि-म अम्मवाज़िअिही व यक़ूलू-न समिअ्-ना व अस़ैना वस्मअ्-ग़ै-र मुस्मअिंव्-व राअिना लय्यम्-बि-अल्सिनति-हिम् व तअ्-नन् फ़िद्दीनि, व लौ अन्नहुम् क़ालू समिअ्-ना व अतअ्-ना वस्मअ् वन्ज़ुर्ना ल का-न ख़ैरल्लहुम् व अक़्वम, व लाकिल्ल-अ-न-हुमुल्लाहु बि कुफ़्रिहिम् फ़ ला युअ्मिनू-न इल्ला क़लीला (४६) या अय्युहल्लज़ी-न ऊतुल्किता-ब आमिनू बिमा नज़्ज़ल्ना मुसद्दिक़ल्लिमा म-अकुम् मिन् क़ब्लि अन्नत़्मि-स वुजूहन् फ़ नरुद्दहा अला अद्बारिहा औ नल्-अ-नहुम् कमा ल-अन्ना अस्हाबस्सब्ति, व का-न अम्रुल्लाहि मफ़्अूला (४७) इन्नल्ला-ह ला यग़्फ़िरु अंय्युश्र-क बिही व यग़्फ़िरु मा दू-न ज़ालि-क लि मंय्यशाउ व मंय्युश्रिक् बिल्लाहि फ़ क़दिफ़्तरा इस्मन् अज़ीमा (४८) अ-लम् त-र इलल्लज़ी-न युज़क्कू-न अन्फ़ुसहुम्, बलिल्लाहु युज़क्की मंय्यशाउ व लायुज़्लमू-न फ़तीला (४९) उन्ज़ुर् कै-फ़ यफ़्तरू-न अ-लल्लाहिल्-कज़ि-ब, व कफ़ा बिही इस्मम्-मुबीना ★ (५०) अ-लम् त-र इलल्लज़ी-न ऊ-तू नसीबम्मिनल् किताबि युअ्मिनू-न बिल्जिब्ति वत्ताग़ूति व यक़ूलू-न लिल्लज़ी-न क-फ़रू हा-उला-इ अह्दा मिनल्लज़ी-न आमनू सबीला (५१) उला-इकल्लज़ी-न ल-अ-नहुमुल्लाहु, व मंय्यल्अनिल्लाहु फ़ लन् तजि-द लहू नसीरा, (५२)

نَصِيبًا مِّنَ الْكِتٰبِ يَشْتَرُوْنَ الضَّلٰلَةَ وَيُرِيْدُوْنَ اَنْ تَضِلُّوا
السَّبِيْلَ ۞ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِاَعْدَآئِكُمْ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَلِيًّا ۙ وَّكَفٰى
بِاللّٰهِ نَصِيْرًا ۞ مِنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ عَنْ مَّوَاضِعِهٖ
وَيَقُوْلُوْنَ سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا وَاسْمَعْ غَيْرَ مُسْمَعٍ وَّرَاعِنَا لَيًّا
بِاَلْسِنَتِهِمْ وَطَعْنًا فِى الدِّيْنِ ؕ وَلَوْ اَنَّهُمْ قَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا وَ
اسْمَعْ وَانْظُرْنَا لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَاَقْوَمَ ۙ وَلٰكِنْ لَّعَنَهُمُ اللّٰهُ
بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ۞ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ
اٰمِنُوْا بِمَا نَزَّلْنَا مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ نَّطْمِسَ وُجُوْهًا
فَنَرُدَّهَا عَلٰٓى اَدْبَارِهَآ اَوْ نَلْعَنَهُمْ كَمَا لَعَنَّآ اَصْحٰبَ السَّبْتِ ؕ وَكَانَ
اَمْرُ اللّٰهِ مَفْعُوْلًا ۞ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا
دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدِ افْتَرٰٓى اِثْمًا
عَظِيْمًا ۞ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ يُزَكُّوْنَ اَنْفُسَهُمْ ؕ بَلِ اللّٰهُ يُزَكِّىْ مَنْ
يَّشَآءُ وَلَا يُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ۞ اُنْظُرْ كَيْفَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ
الْكَذِبَ ؕ وَكَفٰى بِهٖۤ اِثْمًا مُّبِيْنًا ۞ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا
مِّنَ الْكِتٰبِ يُؤْمِنُوْنَ بِالْجِبْتِ وَالطَّاغُوْتِ وَيَقُوْلُوْنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا
هٰۤؤُلَآءِ اَهْدٰى مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا سَبِيْلًا ۞ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَعَنَهُمُ
اللّٰهُ ؕ وَمَنْ يَّلْعَنِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ نَصِيْرًا ۞ اَمْ لَهُمْ نَصِيْبٌ

★रु. ७/४ आ ८

भला तुमने उन लोगों को नहीं देखा, जिन को किताब से हिस्सा दिया गया था कि वे गुमराही को ख़रीदते हैं और चाहते हैं कि तुम भी रास्ते से भटक जाओ। (४४) और ख़ुदा तुम्हारे दुश्मनों को ख़ूब जानता है और ख़ुदा ही काफ़ी कारसाज़ और काफ़ी मददगार है। (४५) और ये जो यहूदी हैं, उनमें कुछ लोग ऐसे भी हैं कि कलिमात (बातों) को उनकी जगहों से बदल देते हैं और कहते हैं कि हमने सुन लिया और नहीं माना और सुनिए, न सुनवाए जाओ और ज़ुबान को मरोड़ कर और दीन में तान की राह से (तुम से बात-चीत करते वक़्त) राअिना कहते हैं और अगर (यों) कहते कि हमने सुन लिया और मान लिया और (सिर्फ़) इस्मअ, और (राअिना की जगह) उन्ज़ुरनी" (कहते) तो उन के हक़ में बेहतर होता और बात भी बहुत दुरुस्त होती। लेकिन ख़ुदा ने उनके कुफ़्र की वजह से उन पर लानत कर रखी है, तो ये कुछ थोड़े ही ईमान लाते हैं। (४६) ऐ किताब वालो! इसके पहले कि हम लोगों के मुंहों को बिगाड़ कर उन की पीठ की तरफ़ फेर दें या उन पर इस तरह लानत न करें, जिस तरह हफ़्ते वालों पर की थी। हमारी नाज़िल की हुई किताब पर, जो तुम्हारी किताब की भी तस्दीक़ करती है, ईमान ले आओ और ख़ुदा ने जो हुक्म फ़रमाया, सो (समझ लो कि) हो चुका।[2] (४७) ख़ुदा उस गुनाह को नहीं बख़्शेगा कि किसी को उस का शरीक बनाया जाए और उसके सिवा और गुनाह जिसको चाहे माफ़ कर दे और जिसने ख़ुदा का शरीक मुक़र्रर किया, उसने बड़ा बुहतान बांधा। (४८) क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो अपने को पाकीज़ा कहते हैं। (नहीं,) बल्कि ख़ुदा ही जिस को चाहता है, पाकीज़ा करता है और उन पर धागे बराबर भी ज़ुल्म नहीं होगा। (४९) देखो, ये ख़ुदा पर कैसा झूठ (तूफ़ान) बांधते हैं और यही खुला गुनाह काफ़ी है। (५०) ★

भला तुम ने उन लोगों को नहीं देखा, जिन को किताब से हिस्सा दिया गया है कि बुतों और शैतान को मानते हैं और काफ़िरों के बारे में कहते हैं कि ये लोग मोमिनों के मुक़ाबले में सीधे रास्ते पर हैं। (५१) यही लोग हैं, जिन पर ख़ुदा ने लानत की है और जिस पर ख़ुदा लानत करे, तो तुम

---

१. यहूदी जनाब रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से जब कोई ऐसी बात पूछनी चाहते जो सुन न सके हों, तो 'राअिना' कहते। इस का तफ़्सीली बयान सूरः बक़रः में हुआ है और जब आप (सल्ल०) बात फ़रमाते तो वे लोग जवाब में कहते, हम ने सुन लिया यानी हम ने क़ुबूल किया, लेकिन धीरे से कहते कि नहीं माना और हज़रत से ख़िताब के वक़्त यह भी कहते कि सुनिए, न सुनवाए जाओ। ज़ाहिर में यह दुआ नेक है कि तुम ऐसे ग़ालिब रहो कि कोई तुम को बुरी बात न सुना सके, मगर दिल में यह मुराद रखते कि ख़ुदा करे तुम बहरे हो जाओ और कुछ न सुन सको। ख़ुदा ने फ़रमाया कि अगर ये लोग बजाए समिअना व असैना के समिअना व अतअना और इस्मअ ग़ैर मुस्मअिन की जगह सिर्फ़ 'इस्मअ' और 'राअिना' की जगह 'उन्ज़ुर्ना' कहते तो उन के हक़ में बेहतर होता।

२. यानी ईमान लाओ पहले अज़ाब के आने से, जो शक्ल इन्सान की बदल कर हैवान की शक्ल हो जाए, जैसे यहूदियों में 'सनीचर वालों' की शक्लें बन्दर और सुअर की बन गयी थीं। 'सनीचर वालों' का क़िस्सा सूरः आराफ़ में आएगा।

★रु. ७/४ आ ८

अम् लहुम् नसीबुम्-मिनल्मुल्कि फ़ इज़ल्ला युअ्तूनन्ना-स नक़ीरा ॥ (५३) अम् यह्सुदूनन्ना-स अला मा आताहुमुल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही ج फ़-क़द् आतैना आ-ल इब्राहीमल्-क़िता-ब वल्-हिक्म-त व आतैनाहुम् मुल्कन् अ़ज़ीमा (५४) फ़ मिन्हुम् मन् आम-न बिही व मिन्हुम् मन् सद्-द अन्हु ط व कफ़ा बि जहन्न-म सअ़ीरा (५५) इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू बि आयातिना सौ-फ़ नुस्लीहिम् नारन् ط कुल्लमा नज़िजत् जुलूदुहुम् बद्दल्ना हुम् जुलूदन् ग़ैरहा लि यज़ूक़ुल्-अ़ज़ा-ब ط इन्नल्ला-ह का-न अ़ज़ीज़न् हकीमा ● (५६) वल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्-सालिहाति सनुद्-ख़िलुहुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा अ-ब-दन् ط लहुम् फ़ीहा अज़्वाजुम्-मुतह्ह-रतुंव् व नुद्ख़िलुहुम् ज़िल्लन् ज़लीला (५७) इन्नल्ला-ह यअ्मुरुकुम् अन् तुअद्दुल्-अमानाति इला अह्लिहा ॥ व इज़ा ह़-कम्तुम् बैनन्नासि अन् तह्कुमू बिल्-अ़द्लि ط इन्नल्ला-ह निअि़म्मा यअि़ज़ुकुम् बिही ط इन्नल्ला-ह का-न समीअ़म्-बसीरा (५८) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू अतीअुल्ला-ह व अतीअुर्रसू-ल व उलिल्-अम्रि मिन्कुम् ج फ़ इन् तनाज़अ्-तुम् फ़ी शैइन् फ़ रुद्दूहु इलल्लाहि वर्रसूलि इन् कुन्तुम् तुअ्मिनू-न बिल्लाहि वल्-यौमिल्-आख़िरि ط ज़ालि-क ख़ैरुंव्-व अह्सनु तअ्वीला ★ (५९) अ-लम् त-र इलल्लज़ी-न यज़्अुमू-न अन्नहुम् आमनू बिमा उन्ज़ि-ल इलै-क व मा उन्ज़ि-ल मिन् क़ब्लि-क युरीदू-न अंय्यतहाकमू इलत्ताग़ूति व क़द् उमिरू अंय्यक्फ़ुरू बिही ط व युरीदुश्शैतानु अंय्युज़िल्लहुम् ज़लालम्-बअ़ीदा (६०)

النساء ٩٩ والمحصنت

مِّنَ الْمُلْكِ فَإِذًا لَّا يُؤْتُونَ النَّاسَ نَقِيرًا ۝ أَمْ يَحْسُدُونَ النَّاسَ
عَلَىٰ مَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِن فَضْلِهِ ۖ فَقَدْ آتَيْنَا آلَ إِبْرَاهِيمَ الْكِتَابَ
وَالْحِكْمَةَ وَآتَيْنَاهُم مُّلْكًا عَظِيمًا ۝ فَمِنْهُم مَّنْ آمَنَ بِهِ وَمِنْهُم
مَّن صَدَّ عَنْهُ ۚ وَكَفَىٰ بِجَهَنَّمَ سَعِيرًا ۝ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا
بِآيَاتِنَا سَوْفَ نُصْلِيهِمْ نَارًا كُلَّمَا نَضِجَتْ جُلُودُهُم بَدَّلْنَاهُمْ
جُلُودًا غَيْرَهَا لِيَذُوقُوا الْعَذَابَ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَزِيزًا حَكِيمًا ۝
وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن
تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ لَّهُمْ فِيهَا أَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ ۖ
وَنُدْخِلُهُمْ ظِلًّا ظَلِيلًا ۝ إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَن تُؤَدُّوا الْأَمَانَاتِ
إِلَىٰ أَهْلِهَا وَإِذَا حَكَمْتُم بَيْنَ النَّاسِ أَن تَحْكُمُوا بِالْعَدْلِ ۚ إِنَّ
اللَّهَ نِعِمَّا يَعِظُكُم بِهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ سَمِيعًا بَصِيرًا ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ
آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَأُولِي الْأَمْرِ مِنكُمْ ۖ فَإِن
تَنَازَعْتُمْ فِي شَيْءٍ فَرُدُّوهُ إِلَى اللَّهِ وَالرَّسُولِ إِن كُنتُمْ تُؤْمِنُونَ
بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۚ ذَٰلِكَ خَيْرٌ وَأَحْسَنُ تَأْوِيلًا ۝ أَلَمْ تَرَ إِلَى
الَّذِينَ يَزْعُمُونَ أَنَّهُمْ آمَنُوا بِمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ وَمَا أُنزِلَ مِن
قَبْلِكَ يُرِيدُونَ أَن يَتَحَاكَمُوا إِلَى الطَّاغُوتِ وَقَدْ أُمِرُوا أَن
يَكْفُرُوا بِهِ وَيُرِيدُ الشَّيْطَانُ أَن يُضِلَّهُمْ ضَلَالًا بَعِيدًا ۝ وَ

منزل ١

उस का किसी को मददगार न पाओगे। (५२) क्या उनके पास बादशाही का कुछ हिस्सा है कि तो लोगों को तिल बराबर भी न देंगे। (५३) या जो ख़ुदा ने लोगों को अपने फ़ज़्ल से दे रखा है, उस पर जलते हैं, तो हमने इब्राहीम के ख़ानदान को किताब और दानाई अता फ़रमायी थी और बड़ी सल्तनत (हुकूमत) भी बख़्शी थी। (५४) फिर लोगों में से किसी ने तो उस किताब को माना और कोई उससे रुका (और हटा) रहा, तो उन न मानने वालों (के जलाने) को दोज़ख़ की जलती हुई आग काफ़ी है। (५५) जिन लोगों ने हमारी आयतों से कुफ़्र किया, उनको हम जल्द आग में दाख़िल करेंगे, जब उनकी खालें गल (और जल) जाएंगी, तो हम और खालें बदल देंगे, ताकि (हमेशा) अज़ाब का (मज़ा) चखते रहें। बेशक ख़ुदा ग़ालिब हिक्मत वाला है ●(५६) और जो लोग ईमान लाये और नेक अमल करते रहे, उन को हम बहिश्तों में दाख़िल करेंगे, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, वे उन में हमेशा-हमेशा रहेंगे। वहां उन के लिए पाक बीवियां हैं और उन को हम घने साए में दाख़िल करेंगे। (५७) ख़ुदा तुम को हुक्म देता है कि अमानत वालों की अमानतें उन के हवाले कर दिया करो और जब लोगों में फ़ैसला करने लगो, तो इंसाफ़ से फ़ैसला किया करो। ख़ुदा तुम्हें बहुत ख़ूब नसीहत करता है। बेशक ख़ुदा सुनता और देखता है। (५८) मोमिनो! ख़ुदा और उस के रसूल की फ़रमांबरदारी करो और जो तुम में से हुकूमत वाले हैं, उनकी भी और किसी बात में तुम में इख़्तिलाफ़ पैदा हो तो अगर ख़ुदा और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हो, तो उसमें ख़ुदा और उसके रसूल (के हुक्म) की तरफ़ रुजूअ करो। यह बहुत अच्छी बात है और इस का अंजाम भी अच्छा है। (५९) ★

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो दावा तो यह करते हैं कि जो (किताब) तुम पर नाज़िल हुई और जो (किताबें) तुम से पहले नाज़िल हुईं, उन सब पर ईमान रखते हैं और चाहते यह हैं कि अपना मुक़दमा एक सरकश के पास ले जा कर फ़ैसला कराएं, हालांकि उन को हुक्म दिया गया था कि उस से एतक़ाद न रखें और शैतान (तो यह) चाहता है कि उन को बहका कर रास्ते से

●रुबूअ १/४ ★रु० ८/५ आ ६

इलर्रसूलि व अन्ज़लल्लाहु मा इला तआलौ लहुम् क़ी-ल इज़ा व
असाबत्हुम् इज़ा कै-फ़ फ़ (६१) सुदूदा॰ अन्-क यसुद्दू-न रऐ-तल्-मुनाफ़िक़ी-न
बिल्लाहि यह्लिफ़ू-न॰ जा-ऊ-क सुम्-म ऐदीहिम् क़द्द-मत् मुसीबतुम्-बिमा
उला-इ-कल्लज़ी-न (६२) तौफ़ीक़ा व इह्सानंव्-व इल्ला अ-रद्ना इन्

यअ्-लमुल्लाहु मा फ़ी क़ुलूबिहिम्॰ फ़ अअ्-रिज़्
अन्हुम् व अिज़्हुम् व क़ुल्लहुम् फ़ी
अन्फ़ुसिहिम् क़ौलम्-बलीग़ा (६३) व मा
अर्सल्ना मिर्रसूलिन् इल्ला लि युता - अ
बि इज़्निल्लाहि॰ व लौ अन्नहुम् इज़्ज़-लमू
अन्फ़ुसहुम् जा-ऊ-क फ़स्तग़्फ़रुल्ला-ह वस्तग़्फ़-र
लहुमुर्रसूलु ल-व-जदुल्ला-ह तव्वाबर्रहीमा (६४)
फ़ ला व रब्बि-क ला युअ्मिनू-न हत्ता
युहक्किमू-क फ़ीमा श-ज-र बैनहुम् सुम्-म ला
यजिदू फ़ी अन्फ़ुसिहिम् ह-र-जम्मिम्मा क़ज़ै-त
व युसल्लिमू तस्लीमा (६५) व लौ अन्ना
क-तब्ना अलैहिम् अनिक़्तुलू अन्फ़ुसकुम्

والمحصنت ٥ النساء ٤

إذا قيل لهم تعالوا إلى ما أنزل الله وإلى الرسول رأيت المنافقين
يصدون عنك صدودا ۝ فكيف إذا أصابتهم مصيبة بما
قدمت أيديهم ثم جاءوك يحلفون بالله إن أردنا إلا إحسانا
وتوفيقا ۝ أولئك الذين يعلم الله ما في قلوبهم فأعرض
عنهم وعظهم وقل لهم في أنفسهم قولا بليغا ۝ وما
أرسلنا من رسول إلا ليطاع بإذن الله ولو أنهم إذ ظلموا
أنفسهم جاءوك فاستغفروا الله واستغفر لهم الرسول لوجدوا
الله توابا رحيما ۝ فلا وربك لا يؤمنون حتى يحكموك فيما
شجر بينهم ثم لا يجدوا في أنفسهم حرجا مما قضيت ويسلموا
تسليما ۝ ولو أنا كتبنا عليهم أن اقتلوا أنفسكم أو اخرجوا
من دياركم ما فعلوه إلا قليل منهم ولو أنهم فعلوا ما
يوعظون به لكان خيرا لهم وأشد تثبيتا ۝ وإذا لآتيناهم
من لدنا أجرا عظيما ۝ ولهديناهم صراطا مستقيما ۝ ومن
يطع الله والرسول فأولئك مع الذين أنعم الله عليهم من
النبيين والصديقين والشهداء والصالحين وحسن أولئك
رفيقا ۝ ذلك الفضل من الله وكفى بالله عليما ۝ يا أيها الذين
آمنوا خذوا حذركم فانفروا ثبات أو انفروا جميعا ۝ وإن

منزل

अविख़्रुजू मिन् दियारिकुम् मा फ़-अलूहु इल्ला क़लीलुम्-मिन्हुम्॰ व लौ
अन्नहुम् फ़-अलू मा यूअज़ू-न बिही लका-न ख़ैरल्लहुम् व अशद्-द तस्बीतंव्-
(६६) व इज़ल-ल-आतैनाहुम् मिल्लदुन्ना अज्रन् अज़ीमा॰ (६७)
व ल-हदैनाहुम् सिरातम्-मुस्तक़ीमा (६८) व मंय्युतिअिल्ला-ह वर्रसू-ल
फ़ उला-इ-क म-अल्लज़ी-न अन्-अ-मल्लाहु अलैहिम् मिनन्नबिय्यीन वस्सिद्दीक़ी-न
वश्शुहदा-इ वस्सालिही-न॰ व हसु-न उला-इ-क रफ़ीक़ा॰ (६९)
ज़ालिकल्-फ़ज़्लु मिनल्लाहि॰ व कफ़ा बिल्लाहि अलीमा★ (७०) या
अय्युहल्लज़ी-न आमनू ख़ुज़ू हिज़्रकुम् फ़न्फ़िरू सुबातिन् अविन्फ़िरू जमीआ (७१)

★रु. ९/६ आ ११

दूर डाल दे। (६०) और जब उन से कहा जाता है कि जो हुक्म ख़ुदा ने नाज़िल फ़रमाया है, उसी की तरफ़ (रुजूअ) करो और पैग़म्बर की तरफ़ आओ, तो तुम मुनाफ़िक़ों को देखते हो कि तुम से एराज़ करते और रुके जाते हैं। (६१) तो कैसी (शर्म की) बात है कि जब उनके आमाल (की शामत) से उन पर कोई मुसीबत वाक़ेअ होती है, तो तुम्हारे पास भागे आते हैं और क़स्में खाते हैं कि वल्लाह! हमारा मक़्सूद तो भलाई और मुवाफ़क़त था।[1] (६२) उन लोगों के दिलों में जो-जो कुछ है, ख़ुदा उसको ख़ूब जानता है। तुम उन (की बातों) का कुछ ख़्याल न करो और उन्हें नसीहत करो और उनसे ऐसी बातें कहो, जो उन के दिलों पर असर कर जाएं। (६३) और हमने जो पैग़म्बर भेजा है, इसलिए भेजा है कि ख़ुदा के फ़रमान के मुताबिक़ उस का हुक्म माना जाए और ये लोग जब अपने हक़ में ज़ुल्म कर बैठे थे, अगर तुम्हारे पास आते और ख़ुदा से बख़्शिश मांगते और (ख़ुदा के) रसूल भी उन के लिए बख़्शिश तलब करते तो ख़ुदा को माफ़ करने वाला (और) मेहरबान पाते। (६४) तुम्हारे परवरदिगार की क़सम! ये लोग जब तक अपने झगड़ों में तुम्हें मुन्सिफ़ न बनायें और जो फ़ैसला तुम कर दो उस से अपने दिल में तंग न हों, बल्कि उस को ख़ुशी से मान लें, तब तक मोमिन नहीं होंगे। (६५) और अगर हम उन्हें हुक्म देते कि अपने आप को क़त्ल कर डालो या अपने घर छोड़ कर निकल जाओ, तो उनमें से थोड़े ही ऐसा करते और अगर ये इस नसीहत पर कारबंद होते जो उनको की जाती है, तो उनके हक़ में बेहतर और (दीन) में ज़्यादा साबित क़दमी की वजह बनता। (६६) और हम उनको अपने यहां से बड़ा बदला भी देते। (६७) और सीधा रास्ता भी दिखाते। (६८) और जो लोग ख़ुदा और उस के रसूल की इताअत करते हैं, वे (क़ियामत के दिन) उन लोगों के साथ होंगे, जिन पर ख़ुदा ने बड़ा फ़ज़्ल किया यानी नबी और सिद्दीक़ और शहीद और नेक लोग।[2] और इन लोगों का साथ बहुत ही ख़ूब है। (६९) यह ख़ुदा का फ़ज़्ल है और ख़ुदा जानने वाला काफ़ी है। (७०) ★

मोमिनो! (जिहाद के लिए) हथियार ले लिया करो, फिर या तो जमाअत-जमाअत हो कर

---

१. मदीने में एक यहूदी और एक मुनाफ़िक़ में झगड़ा हुआ। यहूदी ने कहा कि चलो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से फ़ैसला कराएं। मुनाफ़िक़ ने कहा कि काब बिन अशरफ़ के पास चलो। यह शख़्स यहूद का सरदार था। इस इख़्तिलाफ़ की वजह यह थी कि यहूदी हक़ पर था और जानता था कि हज़रत इस मुक़दमे का फ़ैसला उस के हक़ में करेंगे, तो वह हज़रत ही के पास जाने पर ज़ोर देता था। मुनाफ़िक़ों में जो ज़ाहिर में मुसलमान और बातिन में काफ़िर था, आप के पास जाना नहीं चाहता था। आख़िर दोनों हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आए और हज़रत ने मुक़दमा यहूदी के हक़ में फ़ैसला किया। जब बाहर निकले तो मुनाफ़िक़ ने कहा कि हज़रत उमर के पास चलो जो वह फ़ैसला कर दें वह मुझे मंज़ूर हो। हज़रत उमर रज़ि० उन दिनों जनाब सरवरे कायनात के हुक्म से मदीने में क़ज़ा (जजी) करते थे। मुनाफ़िक़ ने ख़्याल किया कि हज़रत उमर रज़ि० ज़ाहिरी इस्लाम के धोखे में आ कर मेरा ख़्याल करेंगे। जब वहां गये तो यहूदी ने पहले माजरा बयान कर दिया और कह दिया कि हम हज़रत सल्ल० की ख़िदमत में हो आए हैं और उन्हों ने मेरा हक़ साबित कर दिया है। यह सुन कर हज़रत उमर रज़ि० ने मुनाफ़िक़ को क़त्ल कर दिया। उस के वारिस हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास गये और ख़ून का दावा किया और क़स्में खाने लगे कि हम हज़रत उमर रज़ि० के पास सिर्फ़ इस लिए गये थे कि शायद वह सुलह करा दें, तब ये आयतें नाज़िल हुयीं।

(शेष पृष्ठ १३९ पर)

★रु० ९/६ आ ११

व इन्-न मिन्कुम् ल-मल्-लयुबत्तिअन्-न ج फ़ इन् असाबत्कुम् मुसीबतुन् क़ा-ल क़द् अन्-अ-मल्लाहु अलय्-य इज् लम् अकुम्-म-अहुम् शहीदा (७२). व लइन् असाबकुम् फ़ज़्लुम्-मिनल्लाहि ल-यक़ूलन्-न क-अल्लम् तकुम्बैनकुम्, व बैनहू मवद्दतुंय्यालैतनी कुन्तु म-अहुम् फ़ अफ़ू-ज़ फ़ौज़न् अज़ीमा (७३) फ़ल्युक़ातिल् फ़ी सबीलिल्लाहिल्लज़ी-न यश्रूनल्-हयातद्दुन्या बिल्आख़िरति ط व मंय्युक़ातिल् फ़ी सबीलिल्लाहि फ़ युक़्तल् औ यग़्लिब् फ़ सौ-फ़ नुअ्तीहि अज्रन् अज़ीमा (७४) व मा लकुम् ला तुक़ातिलू-न फ़ी सबीलिल्लाहि वल्-मुस्तज़्अफ़ी-न मिनर्रिजालि वन्निसा-इ वल्-विल्दानिल्लज़ी-न यक़ूलू-न रब्बना अख़्रिज्ना मिन् हाज़िहिल्-क़र्यतिज़्ज़ालिमि अह्लुहा ج वज्अल्लना मिल्लदुन-क वलिय्यंव्-لا वज्अल्लना मिल्लदुन्-क नसीरा ط (७५) अल्लज़ी-न आमनू युक़ातिलू-न फ़ी सबीलिल्लाहि ج वल्लज़ी-न क-फ़रू युक़ातिलू-न फ़ी सबीलित्ताग़ूति फ़ क़ातिलू औलिया-अश्शैतानि ج इन्-न कैदश्शैतानि का-न ज़ईफ़ा ★ (७६) अ-लम् त-र इलल्लज़ी-न क़ी-ल लहुम् कुफ़्फ़ू ऐदि-यकुम् व अक़ीमुस्सला-त व आतुज़्ज़का-त ج फ़-लम्मा कुति-ब अलैहिमुल्-क़ितालु इज़ा फ़रीक़ुम्मिन्हुम् यख़्शौनन्ना-स क-ख़श्यतिल्लाहि औ अशद्-द ख़श्य-तन् ج व क़ालू रब्बना लि-म क-तब्-त अलैनल्क़िता-ल ج लौला अख़्ख़र्तना इला अ-जलिन् क़रीबिन् ط क़ुल् मताअुद्दुन्या क़लीलुन् ج वल्-आख़िरतु ख़ैरुल्लिमनित्तक़ा قف व ला तुज़्लमू-न फ़तीला (७७)

مِنْكُمْ لَمَنْ لَّيُبَطِّئَنَّ ۚ فَإِنْ أَصَابَتْكُمْ مُّصِيبَةٌ قَالَ قَدْ أَنْعَمَ
اللَّهُ عَلَيَّ إِذْ لَمْ أَكُنْ مَّعَهُمْ شَهِيدًا ۝ وَلَئِنْ أَصَابَكُمْ فَضْلٌ
مِّنَ اللَّهِ لَيَقُولَنَّ كَأَنْ لَّمْ تَكُنْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُ مَوَدَّةٌ يَّا لَيْتَنِي كُنْتُ
مَعَهُمْ فَأَفُوزَ فَوْزًا عَظِيمًا ۝ فَلْيُقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ الَّذِينَ
يَشْرُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا بِالْآخِرَةِ ۚ وَمَنْ يُّقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ
فَيُقْتَلْ أَوْ يَغْلِبْ فَسَوْفَ نُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ۝ وَمَا لَكُمْ لَا
تُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ
وَالْوِلْدَانِ الَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا أَخْرِجْنَا مِنْ هَٰذِهِ الْقَرْيَةِ الظَّالِمِ
أَهْلُهَا ۚ وَاجْعَلْ لَّنَا مِنْ لَّدُنْكَ وَلِيًّا ۚ وَّاجْعَلْ لَّنَا مِنْ لَّدُنْكَ
نَصِيرًا ۝ الَّذِينَ آمَنُوا يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۖ وَالَّذِينَ كَفَرُوا
يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ الطَّاغُوتِ فَقَاتِلُوا أَوْلِيَاءَ الشَّيْطَانِ ۖ إِنَّ
كَيْدَ الشَّيْطَانِ كَانَ ضَعِيفًا ۝ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ قِيلَ لَهُمْ كُفُّوا
أَيْدِيَكُمْ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ ۚ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ
إِذَا فَرِيقٌ مِّنْهُمْ يَخْشَوْنَ النَّاسَ كَخَشْيَةِ اللَّهِ أَوْ أَشَدَّ خَشْيَةً ۚ
وَقَالُوا رَبَّنَا لِمَ كَتَبْتَ عَلَيْنَا الْقِتَالَ ۚ لَوْلَا أَخَّرْتَنَا إِلَىٰ أَجَلٍ
قَرِيبٍ ۗ قُلْ مَتَاعُ الدُّنْيَا قَلِيلٌ ۚ وَالْآخِرَةُ خَيْرٌ لِّمَنِ اتَّقَىٰ وَ
لَا تُظْلَمُونَ فَتِيلًا ۝ أَيْنَمَا تَكُونُوا يُدْرِكْكُمُ الْمَوْتُ وَلَوْ كُنْتُمْ

★रु. १०/७ आ ६

निकला करो या इकट्ठे कूच किया करो। (७१) और तुम में कोई ऐसा भी है कि (जान-बूझ कर) देर लगाता है, फिर अगर तुम पर कोई मुसीबत पड़ जाए, तो कहता है कि ख़ुदा ने मुझ पर बड़ी मेहरबानी की कि मैं उन में मौजूद न था। (७२) और अगर ख़ुदा तुम पर फ़ज़्ल करे तो इस तरह से कि गोया तुम में उस में दोस्ती थी ही नहीं, (अफ़सोस करता और) कहता है कि काश! मैं भी उनके साथ होता तो बड़ा मक़्सूद हासिल करता। (७३) तो जो लोग आख़िरत (को ख़रीदते और उस) के बदले दुनिया की ज़िंदगी को बेचना चाहते हैं, उन को चाहिए कि ख़ुदा की राह में जंग करें और जो शख़्स ख़ुदा की राह में जंग करे, फिर शहीद हो जाए या ग़लबा पाए, हम बहुत जल्द उसको बड़ा सवाब देंगे।[1] (७४) और तुम को क्या हुआ है कि ख़ुदा की राह में और उन बे-बस मर्दों और औरतों और बच्चों के लिए नहीं लड़ते, जो दुआएं किया करते हैं कि ऐ परवरदिगार! हम को इस शहर से, जिस के रहने वाले ज़ालिम हैं, निकाल कर कहीं और ले जा और अपनी तरफ़ से किसी को हमारा हामी बना और अपनी ही तरफ़ से किसी को हमारा मददगार मुक़र्रर फ़रमा। (७५) जो मोमिन हैं, वे तो ख़ुदा के लिए लड़ते हैं और जो काफ़िर हैं, वे बुतों के लिए लड़ते हैं, सो तुम शैतान के मददगारों से लड़ो (और डरो मत) क्यों कि शैतान का दांव बोदा होता है। (७६)★

भला तुम ने उन लोगों को नहीं देखा, जिनको (पहले यह) हुक्म दिया गया था कि अपने हाथों को (लड़ाई से) रोके रहो और नमाज़ पढ़ते और ज़कात देते रहो। फिर जब उन पर जिहाद फ़र्ज़ कर दिया गया, तो कुछ लोग उन में से लोगों से यों डरने लगे जैसे ख़ुदा से डरा करते हैं, बल्कि उस से भी ज़्यादा और बड़-बड़ाने लगे कि ऐ ख़ुदा! तू ने हम पर जिहाद (जल्द) क्यों फ़र्ज़ कर दिया। थोड़ी मुद्दत और हमें क्यों मुहलत न दी? (ऐ पैग़म्बर! उनसे) कह दो, दुनिया का फ़ायदा बहुत थोड़ा है और बहुत अच्छी चीज़ तो परहेज़गार के लिए आख़िरत (की निजात) है और तुम पर धागे बराबर भी ज़ुल्म नहीं किया जाएगा। (७७) (ऐ जिहाद से डरने वालो!) तुम कहीं

(पृष्ठ १३७ का शेष)

२. सिद्दीक़ मुबालग़े का लफ़्ज़ है यानी बड़ा सच्चा, तो सिद्दीक़ बड़े सच्चे हुए। या सिद्दीक़ से वे लोग मुराद हैं जो नबियों की पैरवी में सब से बड़ा रुत्बा रखते हैं। हज़रत अबूबक्र रज़ि० को जो सिद्दीक़ कहते हैं, तो उन पर ये दोनों मानी सही उतरते हैं। शहीद वे जो ख़ुदा की राह में मारे जाएं। हज़रत उमर रज़ि० और उस्मान रज़ि० और अली रज़ि० सब शहीद हैं। नेक लोग यानी आम नेकी वाले भले लोग। सब से ऊंचा दर्जा नबियों का है, फिर सिद्दीक़ों का, फिर शहीदों का, फिर नेक और भले लोगों का।

१. यानी मुसलमानों को चाहिए कि दुनिया की ज़िंदगी पर नज़र न रखें, आख़िरत चाहें और समझें कि अल्लाह के हुक्म में हर तरह नफ़ा है।

ऐ-न मा तकूनू युद्‌रिक्कुमुल्-मौतु व लौ कुन्तुम् फ़ी बुरूजिम्-मुशय्यदतिन् ط व इन् तुसिब्हुम् ह़ - स - नतुंय्यक़ूलू हाज़िही मिन् अि़न्दिल्लाहि ج व इन् तुसिब्हुम् सय्यिअतुंय्यक़ूलू हाज़िही मिन् अि़न्दि - क ط क़ुल् कुल्लुम् - मिन् अि़न्दिल्लाहि ط फ़ मा लि हा-उला-इल्-क़ौमि ला यकादू-न यफ़क़हू-न ह़दीसा (७८) मा असा-ब-क मिन् ह़-स-नतिन् फ़ मिनल्लाहि ز व मा असा-ब-क मिन् सय्यिअतिन् फ़ मिन्नफ़्सि-क ط व अर्सल्ना-क लिन्नासि रसूलन् ط व कफ़ा बिल्लाहि शहीदा (७९) मंय्युतिअि़र्रसू-ल फ़-क़द् अताअ़ल्ला-ह ج व मन् तवल्ला फ़ मा अर्सल्ना-क अ़लैहिम् ह़फ़ीज़ा ط (८०) व यक़ूलू-न ताअ़तुन् ز फ़ इज़ा ब-रज़ू मिन् अि़न्दि-क बय्य-त ता-इफ़तुम्-मिन्हुम् ग़ैरल्लज़ी तक़ूलु ط वल्लाहु यक्तुबु मा युबय्यितू-न ج फ़ अअ़्‌रिज़् अ़न्हुम् व त-वक्कल् अ़-लल्लाहि ط व कफ़ा बिल्लाहि वकीला (८१) अ-फ़ला य-त-दब्बरूनल्-क़ुर्आन ط व लौ का - न मिन् अि़न्दि ग़ैरिल्लाहि ल-व-जदू फ़ीहिख़्तिलाफ़न् कसीरा (८२) व इज़ा जा-अहुम् अम्रुम्मिनल्-अम्नि अविल्ख़ौफ़ि अज़ाअ़ू बिही ط व लौ रद्‌दूहु इलर्रसूलि व इला उलिल्-अम्रि मिन्हुम् ल अ़लिमहुल्लज़ी-न यस्तम्बितूनहू मिन्हुम् ط व लौ ला फ़ज़्लुल्लाहि अ़लैकुम् व रह़्मतुहू लत्तबअ़्‌तुमुश्शैता-न इल्ला क़लीला (८३) फ़ क़ातिल् फ़ी सबीलिल्लाहि ج ला तुकल्लफ़ु इल्ला नफ़्स-क व ह़र्रिज़िल्-मुअ्मिनीन ج अ़-सल्लाहु अंय्यकुफ़्-फ़ बअ्सल्लज़ी-न क-फ़रू ط वल्लाहु अशद्‌दु बअ्संव्-व अशद्‌दु तन्कीला (८४) मंय्यश्फ़अ़् शफ़ाअ़तन् ह़-स-न-तंय्यकुल्लहू नसीबुम्मिन्हा ج व मंय्यश्फ़अ़् शफ़ा-अ-तन् सय्यिअतंय्यकुल्लहू किफ़्लुम्मिन्हा ط व कानल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइम्मुक़ीता (८५)

والمحصنت ٥   ٥٢   النسآء ٤

فِيْ بُرُوْجٍ مُّشَيَّدَةٍ ؕ وَاِنْ تُصِبْهُمْ حَسَنَةٌ يَّقُوْلُوْا هٰذِهٖ مِنْ
عِنْدِ اللّٰهِ ۚ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَّقُوْلُوْا هٰذِهٖ مِنْ عِنْدِكَ ؕ قُلْ
كُلٌّ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ فَمَالِ هٰۤؤُلَآءِ الْقَوْمِ لَا يَكَادُوْنَ يَفْقَهُوْنَ
حَدِيْثًا ۞ مَاۤ اَصَابَكَ مِنْ حَسَنَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ ۫ وَمَاۤ اَصَابَكَ مِنْ
سَيِّئَةٍ فَمِنْ نَّفْسِكَ ؕ وَاَرْسَلْنٰكَ لِلنَّاسِ رَسُوْلًا ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ
شَهِيْدًا ۞ مَنْ يُّطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَ ۚ وَمَنْ تَوَلّٰى فَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ
عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ۞ وَيَقُوْلُوْنَ طَاعَةٌ ۫ فَاِذَا بَرَزُوْا مِنْ عِنْدِكَ بَيَّتَ
طَآئِفَةٌ مِّنْهُمْ غَيْرَ الَّذِيْ تَقُوْلُ ؕ وَاللّٰهُ يَكْتُبُ مَا يُبَيِّتُوْنَ ۚ فَاَعْرِضْ
عَنْهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ۞ اَفَلَا يَتَدَبَّرُوْنَ الْقُرْاٰنَ ؕ
وَلَوْ كَانَ مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللّٰهِ لَوَجَدُوْا فِيْهِ اخْتِلَافًا كَثِيْرًا ۞ وَاِذَا
جَآءَهُمْ اَمْرٌ مِّنَ الْاَمْنِ اَوِ الْخَوْفِ اَذَاعُوْا بِهٖ ؕ وَلَوْ رَدُّوْهُ اِلَى الرَّسُوْلِ
وَاِلٰۤى اُولِى الْاَمْرِ مِنْهُمْ لَعَلِمَهُ الَّذِيْنَ يَسْتَنْۢبِطُوْنَهٗ مِنْهُمْ ؕ وَلَوْ
لَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ لَاتَّبَعْتُمُ الشَّيْطٰنَ اِلَّا قَلِيْلًا ۞
فَقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ لَا تُكَلَّفُ اِلَّا نَفْسَكَ وَحَرِّضِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ
عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّكُفَّ بَاْسَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ وَاللّٰهُ اَشَدُّ بَاْسًا وَّاَشَدُّ
تَنْكِيْلًا ۞ مَنْ يَّشْفَعْ شَفَاعَةً حَسَنَةً يَّكُنْ لَّهٗ نَصِيْبٌ مِّنْهَا ۚ وَ
مَنْ يَّشْفَعْ شَفَاعَةً سَيِّئَةً يَّكُنْ لَّهٗ كِفْلٌ مِّنْهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ

منزل ١

रहो, मौत तो तुम्हें आकर रहेगी, चाहे बड़े-बड़े महलों में रहो और उन लोगों को अगर कोई फ़ायदा पहुंचता है, तो कहते हैं कि यह ख़ुदा की तरफ़ से है और कोई तक्लीफ़ पहुंचती है तो (ऐ मुहम्मद ! तुम से) कहते हैं कि यह (तक्लीफ़) आप की वजह से (हमें पहुंची) है। कह दो कि (रंज व राहत) सब अल्लाह ही की तरफ़ से है। इन लोगों को क्या हो गया है कि बात भी नहीं समझ सकते। (७८) (ऐ आदम की औलाद !) तुझ को जो फ़ायदा पहुंचे, वह ख़ुदा की तरफ़ से है और जो नुक्सान पहुंचे, वह तेरे ही (आमाल की शामत की) वजह से है और (ऐ मुहम्मद !) हम ने तुमको लोगों (की हिदायत) के लिए पैग़म्बर बना कर भेजा है और (इस बात का) ख़ुदा ही गवाह काफ़ी है। (७९) जो शख़्स रसूल की फ़रमांबरदारी करेगा, तो बेशक उसने ख़ुदा की फ़रमांबरदारी की और जो ना-फ़रमां बरदारी करे तो ऐ पैग़म्बर ! तुम्हें हमने उनका निगहबान बना कर नहीं भेजा। (८०) और ये लोग मुंह से तो कहते हैं कि (आप की) फ़रमांबरदारी (दिल से मंज़ूर) है, लेकिन जब तुम्हारे पास से चले जाते हैं, तो उनमें से कुछ लोग रात को तुम्हारी बातों के ख़िलाफ़ मश्विरे करते हैं और जो मश्विरे ये करते हैं ख़ुदा उन को लिख लेता है, तो उनका कुछ ख़्याल न करो और ख़ुदा पर भरोसा रखो और ख़ुदा ही काफ़ी कारसाज़ है। (८१) भला ये क़ुरआन में ग़ौर क्यों नहीं करते ? अगर यह ख़ुदा के सिवा किसी और का (कलाम) होता, तो उसमें (बहुत-सा) इख़्तिलाफ़ पाते। (८२) और जब उन के पास अमन या ख़ौफ़ की कोई ख़बर पहुंचती है, तो उसे मशहूर कर देते हैं और अगर उसको पैग़म्बर और अपने सरदारों के पास पहुंचाते, तो खोज लगाने वाले उसकी खोज लगा लेते। और अगर तुम पर ख़ुदा का फ़ज़्ल और उस की मेहरबानी न होती, तो कुछ लोगों के अलावा सब शैतान की पैरवी करने वाले होते। (८३) तो (ऐ मुहम्मद !) तुम ख़ुदा की राह में लड़ो, तुम अपने सिवा किसी के ज़िम्मेदार नहीं हो।[1] और मोमिनों को भी उभारो। क़रीब है कि ख़ुदा काफ़िरों की लड़ाई को बन्द कर दे और ख़ुदा लड़ाई के एतबार से बहुत सख़्त है और सज़ा के लिहाज़ से भी बहुत सख़्त है। (८४) जो शख़्स नेक बात की सिफ़ारिश करे, तो उस (के सवाब) में से हिस्सा मिलेगा और जो बुरी बात की सिफ़ारिश करे, उसको उस (के अज़ाब) में से हिस्सा मिलेगा और ख़ुदा हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। (८५)

---

१. यानी तुम से औरों के बारे में नहीं पूछा जाएगा, क्योंकि हर आदमी अपने काम का ज़िम्मेदार है।

व इज़ा हुय्यीतुम् बितहिय्यतिन् फ़हय्यू बिअह्स-न मिन्हा औरुद्दूहा इन्नल्ला-ह का-न अला कुल्लि शैइन् हसीबा●(८६) अल्लाहु ला इला-ह इल्ला हु-व ط ल-यज्मअन्नकुम् इला यौमिल्क़ियामति ला रै-ब फ़ीहि ط व मन् अस्दक़ु मिनल्लाहि हदीसा★(८७) फ़ मा लकुम् फ़िल्मुनाफ़िक़ी-न फ़िअतैनि वल्लाहु अर्कसहुम् बिमा क-सबू ط अतुरीदू-न अन् तह्दू मन् अ-ज़ल्लल्लाहु ط व मंय्युज़्लिलिल्लाहु फ़ लन् तजि-द लहू सबीला (८८) वद्दू लौ तक्फ़ुरू-न कमा क-फ़रू फ़ तकूनू-न सवा-अन् फ़ ला तत्तख़िज़ू मिन्हुम् औलिया-अ हत्ता युहाजिरू फ़ी सबीलिल्लाहि ط फ़ इन् तवल्लौ फ़ ख़ुज़ूहुम् वक़्तुलूहुम् हैसु वजत्तुमूहुम् ص व ला तत्तख़िज़ू मिन्हुम् वलिय्यंव्-व ला नसीरा ۷ (८९) इल्लल्लज़ी-न यसिलू-न इला क़ौमिम् बैनकुम् व बैनहुम् मीसाक़ुन् औ जा-ऊकुम् हसिरत् सुदूरुहुम् अंय्युक़ातिलूकुम् औ युक़ातिलू क़ौमहुम् ط व लौ शा-अल्लाहु ल सल्ल-त-हुम् अलैकुम् फ़-ल-क़ातलूकुम् ج फ़ इनिअ्-त-ज़लूकुम् फ़ लम् युक़ातिलूकुम् व अल्क़ौ इलैकुमुस्स-लम ۷ फ़ मा ज-अ-लल्लाहु लकुम् अलैहिम् सबीला (९०) स-तजिदू-न आख़री-न युरीदू-न अंय्यअ्मनूकुम् व यअ्मनू क़ौमहुम् ط कुल्लमा रुद्दू इलल्फ़ित्नति उर्किसू फ़ीहा ج फ़ इल्लम् यअ-तज़िलूकुम् व युल्क़ू इलैकुमुस्स-ल-म व यकुफ़्फ़ू ऐदियहुम् फ़ ख़ुज़ूहुम् वक़्तुलूहुम् हैसु सक़िफ़्तुमूहुम् ط व उला-इकुम् ज-अल्ना लकुम् अलैहिम् सुल्तानम् - मुबीना★(९१)

والمحصنت ٥ النساء ٤

شَيْءٍ مُّقِيْتًا ۝ وَإِذَا حُيِّيْتُمْ بِتَحِيَّةٍ فَحَيُّوْا بِأَحْسَنَ مِنْهَا أَوْ رُدُّوْهَا
إِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ حَسِيْبًا ۝ اَللّٰهُ لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ لَيَجْمَعَنَّكُمْ
إِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ وَمَنْ أَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ حَدِيْثًا ۝
فَمَا لَكُمْ فِي الْمُنٰفِقِيْنَ فِئَتَيْنِ وَاللّٰهُ أَرْكَسَهُمْ بِمَا كَسَبُوْا أَتُرِيْدُوْنَ
أَنْ تَهْدُوْا مَنْ أَضَلَّ اللّٰهُ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ سَبِيْلًا ۝
وَدُّوْا لَوْ تَكْفُرُوْنَ كَمَا كَفَرُوْا فَتَكُوْنُوْنَ سَوَآءً فَلَا تَتَّخِذُوْا مِنْهُمْ
أَوْلِيَآءَ حَتّٰى يُهَاجِرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَخُذُوْهُمْ وَ
اقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ وَلَا تَتَّخِذُوْا مِنْهُمْ وَلِيًّا وَّلَا
نَصِيْرًا ۝ إِلَّا الَّذِيْنَ يَصِلُوْنَ إِلٰى قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ
أَوْ جَآءُوْكُمْ حَصِرَتْ صُدُوْرُهُمْ أَنْ يُّقَاتِلُوْكُمْ أَوْ يُقَاتِلُوْا قَوْمَهُمْ
وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَسَلَّطَهُمْ عَلَيْكُمْ فَلَقٰتَلُوْكُمْ فَإِنِ اعْتَزَلُوْكُمْ فَلَمْ
يُقَاتِلُوْكُمْ وَأَلْقَوْا إِلَيْكُمُ السَّلَمَ فَمَا جَعَلَ اللّٰهُ لَكُمْ عَلَيْهِمْ سَبِيْلًا ۝
سَتَجِدُوْنَ اٰخَرِيْنَ يُرِيْدُوْنَ أَنْ يَّأْمَنُوْكُمْ وَيَأْمَنُوْا قَوْمَهُمْ كُلَّمَا
رُدُّوْٓا إِلَى الْفِتْنَةِ أُرْكِسُوْا فِيْهَا فَإِنْ لَّمْ يَعْتَزِلُوْكُمْ وَيُلْقُوْٓا إِلَيْكُمُ السَّلَمَ وَ
يَكُفُّوْٓا أَيْدِيَهُمْ فَخُذُوْهُمْ وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوْهُمْ وَأُولٰٓئِكُمْ جَعَلْنَا
لَكُمْ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ۝ وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ أَنْ يَّقْتُلَ مُؤْمِنًا إِلَّا
خَطَـًٔا وَمَنْ قَتَلَ مُؤْمِنًا خَطَـًٔا فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ وَّدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ

منزل

●नि. १/२ ★रु. ११/८ आ ११ ★रु. १२/९ आ ४

और जब तुम को कोई दुआ दे तो (जवाब में) तुम उस से बेहतर (कलमे) से (उसे) दुआ दो या उन्हीं लफ़्ज़ों से दुआ दो। बेशक ख़ुदा हर चीज़ का हिसाब लेने वाला है●(८६) ख़ुदा वह सच्चा माबूद है कि उस के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं। वह क़ियामत के दिन तुम सब को ज़रूर जमा करेगा और ख़ुदा से बढ़ कर बात का सच्चा कौन है? (८७)★

तो क्या वजह है कि तुम मुनाफ़िक़ों के बारे में दो गिरोह हो रहे हो, हाल यह है कि ख़ुदा ने उनके करतूतों की वजह से औंधा कर दिया है। क्या तुम चाहते हो कि जिस शख़्स को ख़ुदा ने गुमराह कर दिया है, उस को रास्ते पर ले आओ? और जिस शख़्स को ख़ुदा गुमराह कर दे, तुम उसके लिए कभी भी रास्ता नहीं पाओगे। (८८) वे तो यही चाहते हैं कि जिस तरह वे ख़ुद काफ़िर हैं, (उसी तरह) तुम भी काफ़िर हो कर (सब) बराबर हो जाओ, तो जब तक वे ख़ुदा की राह में वतन न छोड़ जाएं, उनमें से किसी को दोस्त न बनाना। अगर (वतन छोड़ने को) क़ुबूल न करे तो उन को पकड़ लो और जहां पाओ, क़त्ल कर दो और उन में से किसी को अपना साथी और मदद-गार न बनाओ। (८९) मगर जो लोग ऐसे लोगों से जा मिले हों, जिन में और तुम में (सुलह का) अह्द हो या इस हाल में कि उन के दिल तुम्हारे साथ या अपनी क़ौम के साथ लड़ने से रुक गये हों, तुम्हारे पास आ जाएं (तो एहतराज़ ज़रूरी नहीं) और अगर ख़ुदा चाहता तो उन को तुम पर ग़ालिब कर देता, तो वे तुम से ज़रूर लड़ते। फिर अगर वे तुम से (लड़ने से) हट जाएं और लड़ें नहीं और तुम्हारी तरफ़ (सुलह का पैग़ाम) भेजें तो ख़ुदा ने तुम्हारे लिए उन पर (ज़बरदस्ती करने की) कोई सबील मुक़र्रर नहीं की। (९०) तुम कुछ और लोग ऐसे भी पाओगे, जो यह चाहते हैं कि तुम से भी अम्न में रहें और अपनी क़ौम से भी अम्न में रहें, लेकिन जब, फ़ित्ना पैदा करने को बुलाये जाएं तो उसमें औंधे मुंह गिर पड़ें तो ऐसे लोग अगर तुम से (लड़ने से) न किनारा पकड़ें और न तुम्हारी तरफ़ सुलह (का पैग़ाम) भेजें और न अपने हाथों को रोकें तो उन को पकड़ लो और जहां पाओ, क़त्ल कर दो। उन लोगों के मुक़ाबले में हमने तुम्हारे लिए खुली सनद मुक़र्रर कर

● नि. १/२ ★रु. ११/८ आ ११

व मा का-न लि मुअ्मिनिन् अंय्यक्तु-ल मुअ्मिनन् इल्ला ख़-त्-अन्ॅव मन् क़-त-ल मुअ्मिनन् ख़-त्-अन् फ़ तह्रीरु र-क़-बतिम्-मुअ्मिनतिंव्-व दियतुम्-मुसल्लमतुन् इला अह्लिही इल्ला अंय्यस्सद्दक़ूॖफ़ इन् का-न मिन् क़ौमिन् अदुव्विल्लकुम् व हु-व मुअ्मिनुन् फ़ तह्रीरु र-क़-बतिम्-मुअ्मिनतिन्ॖ व इन् का-न मिन् क़ौमिम्-बैनकुम् व बैनहुम् मीसाक़ुन् फ़ दि-यतुम्-मुसल्लमतुन् इला अह्लिही व तह्रीरु र-क़-बतिम्-मुअ्मिनतिन् ॅ फ़ मल्लम् यजिद् फ़ सियामु शह्रैनि मुत - ताबिअ़ नि॑ तौबतम्मिनल्लाहि ॖ व कानल्लाहु अ़लीमन् ह़कीमा (९२) व मंय्यक़्तुल् मुअ्मिनम्-मु-त-अ़म्मिदन् फ़ जज़ा-उहू जहन्नमु ख़ालिदन् फ़ीहाॅव ग़ज़िबल्लाहु अ़लैहि व ल-अ़-नहूवअ-अ़-द्द-लहू अ़ज़ाबन् अ़ज़ीमा (९३) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इज़ा ज़रब्तुम् फ़ी सबीलिल्लाहि फ़ त-बय्यनू व ला तक़ूलू लि मन् अल्क़ा इलैकुमुस्सला-म लस्-त मुअ्मिनन् ॅ तब्तग़ू-न अ-र-ज़ल्-हयातिद्दुन्या॑फ़ अि़न्दल्लाहि मग़ानिमु कसीरतुन्ॖकज़ालि-क कुन्तुम् मिन् क़ब्लु फ़-मन्नल्लाहु अ़लैकुम् फ़ त-बय्यनूॖ इन्नल्ला-ह का-न बिमा तअ्-मलू-न ख़बीरा (९४) ला यस्तविल्क़ाअ़िदू-न मिनल्मुअ्मिनी-न ग़ैरु उलिज़्ज़ररि वल्मुजाहिदू-न फ़ी सबीलिल्लाहि बि अम्वालिहिम् व अन्फ़ुसिहिम्ॖ फ़ज़्ज़लल्लाहुल्-मुजाहिदी-न बि अम्वालिहिम् व अन्फ़ुसिहिम् अ़-लल्क़ाअ़िदी-न द-र-ज-तन् ॖ व कुल्लंव्व - अ - दल्लाहुल्-हुस्ना ॖ व फ़ज़्ज़लल्लाहुल्-मुजाहिदीन अ़-लल्-क़ाअ़िदी-न अज्रन् अ़ज़ीमा ॥ (९५) द-र-जातिम्मिन्हु व मग़्फ़ि-र-तंव्-व रह्म-तन् ॖ व कानल्लाहु ग़फ़ूररहीमा ★(९६) इन्नल्लज़ी-न तवफ़्फ़ाहुमुल्-मला-इकतु ज़ालिमी अन्फ़ुसिहिम् क़ालू फ़ी-म कुन्तुम् ॖ क़ालू कुन्ना मुस्तज़्-अफ़ी-न फ़िल्अर्ज़ि ॖ क़ालू अ-लम् तकुन् अर्ज़ुल्लाहि वासि-अ-तन् फ़ तुहाजिरू फ़ीहा ॖ फ़ उला-इ-क मअ्वाहुम् जहन्नमु ॖ व सा-अत् मसीरा ॥ (९७)

إِلَىٰٓ أَهْلِهِۦٓ إِلَّآ أَن يَصَّدَّقُوا۟ ۚ فَإِن كَانَ مِن قَوْمٍ عَدُوٍّ لَّكُمْ وَهُوَ
مُؤْمِنٌ فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ۖ وَإِن كَانَ مِن قَوْمٍۭ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُم
مِّيثَٰقٌ فَدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ إِلَىٰٓ أَهْلِهِۦ وَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ۖ فَمَن لَّمْ
يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ تَوْبَةً مِّنَ ٱللَّهِ ۗ وَكَانَ ٱللَّهُ عَلِيمًا
حَكِيمًا ۝ وَمَن يَقْتُلْ مُؤْمِنًا مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآؤُهُۥ جَهَنَّمُ خَٰلِدًا فِيهَا
وَغَضِبَ ٱللَّهُ عَلَيْهِ وَلَعَنَهُۥ وَأَعَدَّ لَهُۥ عَذَابًا عَظِيمًا ۝ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ
ءَامَنُوٓا۟ إِذَا ضَرَبْتُمْ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ فَتَبَيَّنُوا۟ وَلَا تَقُولُوا۟ لِمَنْ أَلْقَىٰٓ
إِلَيْكُمُ ٱلسَّلَٰمَ لَسْتَ مُؤْمِنًا تَبْتَغُونَ عَرَضَ ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا فَعِندَ ٱللَّهِ
مَغَانِمُ كَثِيرَةٌ ۚ كَذَٰلِكَ كُنتُم مِّن قَبْلُ فَمَنَّ ٱللَّهُ عَلَيْكُمْ فَتَبَيَّنُوٓا۟ ۚ
إِنَّ ٱللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ۝ لَّا يَسْتَوِى ٱلْقَٰعِدُونَ مِنَ ٱلْمُؤْمِنِينَ
غَيْرُ أُو۟لِى ٱلضَّرَرِ وَٱلْمُجَٰهِدُونَ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ بِأَمْوَٰلِهِمْ وَأَنفُسِهِمْ ۚ
فَضَّلَ ٱللَّهُ ٱلْمُجَٰهِدِينَ بِأَمْوَٰلِهِمْ وَأَنفُسِهِمْ عَلَى ٱلْقَٰعِدِينَ دَرَجَةً ۚ
وَكُلًّا وَعَدَ ٱللَّهُ ٱلْحُسْنَىٰ ۚ وَفَضَّلَ ٱللَّهُ ٱلْمُجَٰهِدِينَ عَلَى ٱلْقَٰعِدِينَ
أَجْرًا عَظِيمًا ۝ دَرَجَٰتٍ مِّنْهُ وَمَغْفِرَةً وَرَحْمَةً ۚ وَكَانَ ٱللَّهُ غَفُورًا
رَّحِيمًا ۝ إِنَّ ٱلَّذِينَ تَوَفَّىٰهُمُ ٱلْمَلَٰٓئِكَةُ ظَالِمِىٓ أَنفُسِهِمْ قَالُوا۟ فِيمَ
كُنتُمْ ۖ قَالُوا۟ كُنَّا مُسْتَضْعَفِينَ فِى ٱلْأَرْضِ ۚ قَالُوٓا۟ أَلَمْ تَكُنْ أَرْضُ
ٱللَّهِ وَٰسِعَةً فَتُهَاجِرُوا۟ فِيهَا ۚ فَأُو۟لَٰٓئِكَ مَأْوَىٰهُمْ جَهَنَّمُ ۖ وَسَآءَتْ

★रु० १३/१० आ ५

दी है ★ (९१) और किसी मोमिन को मुनासिब नहीं कि मोमिन को मार डाले मगर भूल कर, और जो भूल कर भी मोमिन को मार डाले, तो (एक तो) एक मुसलमान ग़ुलाम आज़ाद कर दे और (दूसरे) मक़्तूल के वारिसों को ख़ूंबहा दे। हां अगर वे माफ़ कर दें, (तो उन को अख़्तियार है)। अगर मक़्तूल तुम्हारे दुश्मनों की जमाअत में से हो और वह ख़ुद मोमिन हो, तो सिर्फ़ एक मुसलमान ग़ुलाम आज़ाद करना चाहिए और अगर मक़्तूल ऐसे लोगों में से हो, जिन में और तुम में सुलह का अह्द हो तो मक़्तूल के वारिसों को ख़ूंबहा देना और एक मुसलमान ग़ुलाम आज़ाद करना चाहिए और जिस को यह न मिले, वह लगातार दो महीने के रोज़े रखे। यह (कफ़्फ़ारा) ख़ुदा की तरफ़ से तौबा (क़बूल करने के लिए) है और ख़ुदा (सब कुछ) जानता और बड़ी हिक्मत वाला है। (९२) और जो शख़्स मुसलमान को जान-बूझ कर मार डालेगा, तो उस की सज़ा दोज़ख़ हैं, जिसमें वह हमेशा (जलता) रहेगा और ख़ुदा उस पर ग़ज़बनाक होगा और उस पर लानत करेगा और ऐसे शख़्स के लिए उस ने बड़ा (सख़्त) अज़ाब तैयार कर रखा है। (९३) मोमिनो ! जब तुम ख़ुदा की राह में बाहर निकला करो तो छान-बीन से काम लिया करो और जो शख़्स तुम से 'सलामुन् अलैक' करे, उससे यह न कहो कि तुम मोमिन नहीं हो। और इससे तुम्हारी ग़रज़ यह हो कि दुनिया की ज़िंदगी का फ़ायदा हासिल करो। सो ख़ुदा के पास बहुत-सी ग़नीमतें हैं तुम भी तो पहले ऐसे ही थे, फिर ख़ुदा ने तुम पर एहसान किया, तो (आगे) छान-बीन कर लिया करो, और जो अमल तुम करते हो, ख़ुदा को सब की ख़बर है। (९४) जो मुसलमान (घरों में) बैठे रहते और लड़ने से जी चुराते हैं और कोई उज़्र नहीं रखते, वे और जो ख़ुदा की राह में अपने माल और जान से लड़ते हैं, वे, दोनों बराबर नहीं हो सकते। ख़ुदा ने माल और जान से जिहाद करने वालों को, बैठे रहने वालों पर दर्जे में फ़ज़ीलत बख़्शी है, और (गो) नेक वायदा सब से है, लेकिन बड़े बदले के लिहाज़ से ख़ुदा ने जिहाद करने वालों को बैठे रहने वालों पर कहीं फ़ज़ीलत बख़्शी है, (९५) (यानी) ख़ुदा की तरफ़ से, दर्जों में और बख़्शिश में और रहमत में, और ख़ुदा बड़ा बख़्शने वाला (और) मेहरबान है। (९६) ★

जो लोग अपनी जानों पर ज़ुल्म करते हैं, जब फ़रिश्ते उन की जान क़ब्ज़ करने लगते हैं, तो उनसे पूछते हैं कि तुम किस हाल में थे। वे कहते हैं कि हम मुल्क में आजिज़ व नातवां थे। फ़रिश्ते कहते हैं, क्या ख़ुदा का मुल्क फ़राख़ नहीं था कि तुम उसमें हिजरत कर जाते ? ऐसे लोगों का

★रु. १२/९ आ ४ ★रु. १३/१० आ ५

इल्लल्-मुस्तज़्अफ़ी-न मिनर्रिजालि वन्निसा-इ वल्विल्दानि ला यस्ततीअू-न हील-तंव्-व ला यह्तदू-न सबीला ग (९८) फ़ उला-इ-क असल्लाहु अंय्यअ्-फ़ु-व अन्हुम् ط व कानल्लाहु अफ़ुव्वन् ग़फ़ूरा (९९) व मंय्युहाजिर फ़ी सबीलिल्लाहि यजिद् फ़िल्अर्ज़ि मुरा-ग़-मन् कसीरंव-व स-अ-तन् ط व मंय्यख़्रुज् मिम्बैतिही मुहाजिरन् इलल्लाहि व रसूलिही सुम्-म युद्रिक्हुल्मौतु फ़-क़द् व-क़-अ अज्रुहू अलल्लाहि ط व कानल्लाहु ग़फ़ूरर्रहीमा★(१००) व इज़ा ज़रब्तुम् फ़िल्अर्ज़ि फ़-लै-स अलैकुम् जुनाहुन् अन् तक़्सुरू मिनस्सलाति صلے इन् ख़िफ़्तुम् अंय्यफ़्ति-न - कुमुल्लज़ी-न क-फ़रू ط इन्नल्काफ़िरी-न कानू लकुम् अदुव्वम्-मुबीना (१०१) व इज़ा कुन्-त फ़ीहिम् फ़-अ-क़म्-त लहुमुस्सला-त फ़ल्तक़ुम् ता-इफ़तुम् मिन्हुम् म-अ-क वल्यअ्ख़ुज़ू अस्लि-ह-तहुम् قف फ़ इज़ा स-जदू फ़ल्यकूनू मिव्वरा-इकुम् ص वल्तअ्ति ता-इफ़तुन् उख़्रा लम् युसल्लू फ़ल्युसल्लू म-अ-क वल्-यअ्ख़ुज़ू हिज़्रहुम् व अस्लि-ह-तहुम् ج वद्दल्लज़ी-न क-फ़रू लौ तग़्फ़ुलू-न अन् अस्लिहतिकुम् व अम्ति-अतिकुम् फ़ यमीलू-न अलैकुम् मैलतंव्वाहि-द-तन् ط व ला जुना-ह अलैकुम् इन् का-न बिकुम् अज़म्-मिम्-म-तरिन् औ कुन्तुम् मर्ज़ा अन् त-ज़-अू अस्लि-ह-तकुम् ج व ख़ुज़ू हिज़्-रकुम् ط इन्नल्ला-ह अ-अद्-द लिल्काफ़िरी-न अज़ाबम्मुहीना (१०२) फ़ इज़ा क़ज़ैतुमुस्सला-त फ़ज़्कुरुल्ला-ह क़ियामंव्-व क़ुअूदंव्-व अला जुनूबिकुम् ج फ़ इज़त्मअ्-नन्तुम् फ़ अक़ीमुस्सला-त ج इन्नस्सला-त कानत् अलल्मुअ्मिनी-न किताबम्-मौक़ूता (१०३)

والمحصنت ٥ — النساء ٤

مصيرا ۝ الا المستضعفين من الرجال والنساء والولدان لا
يستطيعون حيلة ولا يهتدون سبيلا ۝ فاولئك عسى الله
ان يعفو عنهم ۚ وكان الله عفوا غفورا ۝ ومن يهاجر في
سبيل الله يجد في الارض مرغما كثيرا وسعة ۚ ومن يخرج
من بيته مهاجرا الى الله ورسوله ثم يدركه الموت فقد
وقع اجره على الله ۗ وكان الله غفورا رحيما ۝ واذا ضربتم
في الارض فليس عليكم جناح ان تقصروا من الصلوة ۖ ان
خفتم ان يفتنكم الذين كفروا ۚ ان الكفرين كانوا لكم عدوا
مبينا ۝ واذا كنت فيهم فاقمت لهم الصلوة فلتقم طائفة منهم
معك وليأخذوا اسلحتهم ۖ فاذا سجدوا فليكونوا من ورائكم
ولتأت طائفة اخرى لم يصلوا فليصلوا معك وليأخذوا
حذرهم واسلحتهم ۚ ود الذين كفروا لو تغفلون عن اسلحتكم
وامتعتكم فيميلون عليكم ميلة واحدة ۚ ولا جناح عليكم
ان كان بكم اذى من مطر او كنتم مرضى ان تضعوا اسلحتكم
وخذوا حذركم ۗ ان الله اعد للكفرين عذابا مهينا ۝ فاذا
قضيتم الصلوة فاذكروا الله قياما وقعودا وعلى جنوبكم ۚ فاذا
اطمأننتم فاقيموا الصلوة ۚ ان الصلوة كانت على المؤمنين كتبا

منزل

★रु. १४/११ आ ४

ठिकाना दोज़ख़ है और वह बुरी जगह है। (९७) हां, जो मर्द और औरतें और बच्चे बे-बस हैं कि न तो कोई चारा कर सकते हैं और न रास्ता जानते हैं, (९८) क़रीब है कि ख़ुदा ऐसों को माफ़ करदे और ख़ुदा माफ़ करने वाला (और) बख़्शने वाला है। (९९) और जो शख़्स ख़ुदा की राह में घर-बार छोड़ जाए, वह ज़मीन में बहुत सी जगह और फ़ैलाव पाएगा और जो शख़्स ख़ुदा और उसके रसूल की तरफ़ हिजरत कर के घर से निकल जाए, फिर उसको मौत आ पकड़े, तो उसका सवाब ख़ुदा के ज़िम्मे हो चुका और ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है। (१००) ★

और जब तुम सफ़र को जाओ, तो तुम पर कुछ गुनाह नहीं कि नमाज़ को कम कर के पढ़ो, बशर्ते कि तुमको डर हो कि काफ़िर लोग तुम को ईज़ा (तकलीफ़) देंगे। बेशक काफ़िर तुम्हारे खुले दुश्मन हैं।[1] (१०१) और (ऐ पैग़म्बर!) जब तुम उन (मुजाहिदों के लश्कर) में हो और उन को नमाज़ पढ़ाने लगो, तो चाहिए कि एक जमाअत तुम्हारे साथ हथियारों से लैस होकर खड़ी रहे, जब वे सज्दा कर चुकें, तो परे हो जाएं, फिर दूसरी जमाअत, जिसने नमाज़ नहीं पढ़ी (उनकी जगह आये और होशियार और हथियारों से लैस होकर) तुम्हारे साथ नमाज़ अदा करे। काफ़िर इस घात में हैं कि तुम ज़रा अपने हथियारों और सामानों से ग़ाफ़िल हो जाओ, तो तुम पर एकबारगी हमला कर दें। अगर तुम बारिश की वजह से तक्लीफ़ में हो या बीमार हो, तो तुम पर कुछ गुनाह नहीं कि हथियार उतार रखो, मगर होशियार ज़रूर रहना। ख़ुदा ने काफ़िरों के लिए ज़िल्लत का अज़ाब तैयार कर रखा है। (१०२) फिर जब तुम नमाज़ पूरी कर चुको, तो खड़े और बैठे और लेटे (हर हालत में) ख़ुदा को याद करो। फिर जब डर जाता रहे, तो (उस तरह से) नमाज़ पढ़ो (जिस तरह अम्न की हालत में पढ़ते हो) बेशक नमाज़ का मोमिनों पर (मुक़र्रर) वक़्तों में अदा करना

---

१. सफ़र, चाहे किसी ग़रज़ से हो, उस में नमाज़ की क़स्र करना यानी चार-चार रक्अतों की जगह दो-दो रक्अतें पढ़ना जायज़ है। आयत से तो यह पाया जाता है कि जब कुफ़्फ़ार से तक्लीफ़ पहुंचने का डर हो, तब क़स्र करना चाहिए, लेकिन सही हदीसों से साबित है कि मुसाफ़िर को अम्न की हालत में भी नमाज़ का क़स्र करना दुरुस्त है। बुख़ारी व मुस्लिम में है कि आप ने ज़ुह्र और अस्र की नमाज़ मिना में क़स्र कर के पढ़ी और उस वक़्त किसी तरह का ख़ौफ़ न था। तिर्मिज़ी में इब्ने अब्बास से रिवायत है कि हम ने सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ मक्के और मदीने के बीच में अम्न की हालत में दो-दो रक्अत पढ़ी तो सफ़र में क़स्र को हज़रत की सुन्नत समझना चाहिए।

व ला तहिनू फ़िब्तिग़ा - इल् - क़ौमि ᵇ इन् तकूनू तअ्लमू - न फ़ इन्नहुम् यअ्लमू - न कमा तअ्लमू - न ج व तर्जू - न मिनल्लाहि मा ला यर्जू-न ᵇ व कानल्लाहु अ़लीमन् ह़कीमा★(१०४) इन्ना अन्ज़ल्ना इलैकल्-किता-ब बिल्ह़क़्क़ि लि - तह्कु-म बैनन्नासि बिमा

النساء ٤   والمحصنت ٥

مَوْقُوتًا ۝ وَلَا تَهِنُوا فِي ابْتِغَاءِ الْقَوْمِ إِن تَكُونُوا تَأْلَمُونَ فَإِنَّهُمْ
يَأْلَمُونَ كَمَا تَأْلَمُونَ وَتَرْجُونَ مِنَ اللَّهِ مَا لَا يَرْجُونَ وَكَانَ اللَّهُ
عَلِيمًا حَكِيمًا ۝ إِنَّا أَنزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ لِتَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ
بِمَا أَرَاكَ اللَّهُ وَلَا تَكُن لِّلْخَائِنِينَ خَصِيمًا ۝ وَاسْتَغْفِرِ اللَّهَ إِنَّ
اللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَّحِيمًا ۝ وَلَا تُجَادِلْ عَنِ الَّذِينَ يَخْتَانُونَ أَنفُسَهُمْ
إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ مَن كَانَ خَوَّانًا أَثِيمًا ۝ يَسْتَخْفُونَ مِنَ النَّاسِ وَ
لَا يَسْتَخْفُونَ مِنَ اللَّهِ وَهُوَ مَعَهُمْ إِذْ يُبَيِّتُونَ مَا لَا يَرْضَىٰ مِنَ
الْقَوْلِ وَكَانَ اللَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطًا ۝ هَا أَنتُمْ هَٰؤُلَاءِ جَادَلْتُمْ
عَنْهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا فَمَن يُجَادِلُ اللَّهَ عَنْهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ
أَم مَّن يَكُونُ عَلَيْهِمْ وَكِيلًا ۝ وَمَن يَعْمَلْ سُوءًا أَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهُ
ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ اللَّهَ يَجِدِ اللَّهَ غَفُورًا رَّحِيمًا ۝ وَمَن يَكْسِبْ إِثْمًا فَإِنَّمَا
يَكْسِبُهُ عَلَىٰ نَفْسِهِ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝ وَمَن يَكْسِبْ
خَطِيئَةً أَوْ إِثْمًا ثُمَّ يَرْمِ بِهِ بَرِيئًا فَقَدِ احْتَمَلَ بُهْتَانًا وَإِثْمًا
مُّبِينًا ۝ وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكَ وَرَحْمَتُهُ لَهَمَّت طَّائِفَةٌ مِّنْهُمْ
أَن يُضِلُّوكَ وَمَا يُضِلُّونَ إِلَّا أَنفُسَهُمْ وَمَا يَضُرُّونَكَ مِن شَيْءٍ
وَأَنزَلَ اللَّهُ عَلَيْكَ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُن تَعْلَمُ
وَكَانَ فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكَ عَظِيمًا ۝ لَّا خَيْرَ فِي كَثِيرٍ مِّن نَّجْوَاهُمْ

अराकल्लाहु ᵇ व ला तकुल्लिल्ख़ा-इनी-न ख़सीमंव्- ᵇ (१०५) वस्तग़्फ़िरिल्ला-ह ᵇ इन्नल्ला-ह का-न ग़फ़ूर्रहीमा ج (१०६) व ला तुजादिल् अ़निल्लज़ी-न यख़्तानू-न अन्फ़ुसहुम् ᵇ इन्नल्ला - ह ला युहिब्बु मन् का - न ख़व्वानन् असीमंय्-ج (१०७) -यस्तख़्फ़ू-न मिनन्नासि व ला यस्तख़्फ़ू-न मिनल्लाहि व हु-व म-अ़हुम् इज़् युबय्यितू-न मा ला यर्ज़ा मिनल्क़ौलि ᵇ व कानल्लाहु बिमा यअ्-मलू-न मुहीता (१०८) हा-अन्तुम् हा-उला-इ जादल्तुम् अन्हुम् फ़िल् - ह़यातिद् - दुन्या फ़ मंय्युजादिलुल्ला-ह अ़न्हुम् यौमल् - क़ियामति अम्मंय्यकूनु अ़लैहिम् वकीला (१०९) व मंय्यअ्-मल् सू-अन् औ यज़्लिम् नफ़्सहू सुम्-म यस्तग़्फ़िरिल्ला-ह यजिदिल्ला-ह ग़फ़ूर्रहीमा (११०) व मंय्यक्सिब् इस्मन् फ़ इन्नमा यक्सिबुहू अ़ला नफ़्सिही ᵇ व कानल्लाहु अ़लीमन् ह़कीमा (१११) व मंय्यक्सिब् ख़ती-अ-तन् औ इस्मन् सुम-म यर्मि बिही बरी-अन् फ़ क़दिह्त-म-ल बुह्तानंव्-व इस्मम्-मुबीना ★ (११२) व लौला फ़ज़्लुल्लाहि अ़लै-क व रह्मतुहू ल - हम्मत्ता-इ - फ़ - तुम् - मिन्हुम् अंय्युज़िल्लू - क ᵇ व मा युज़िल्लू - न इल्ला अन्फ़ुसहुम् व मा यज़ुर्रू-न - क मिन् शैइन् ᵇ व अन्ज़-लल्लाहु अ़लैकल् - किता-ब वल्हिक्म - त व अ़ल्ल-म-क मा लम् तकुन् तअ् - लमु ᵇ व का-न फ़ज़्लुल्लाहि अ़लै - क अ़ज़ीमा ●(११३)

फ़र्ज़ है। (१०३) और कुफ़्फ़ार का पीछा करने में सुस्ती न करना। अगर तुम बे-आराम होते हो, तो जिस तरह तुम बे-आराम होते हो, उसी तरह वे भी बे-आराम होते हैं। और तुम ख़ुदा से ऐसी-ऐसी उम्मीदें रखते हो, जो वे नहीं रख सकते और ख़ुदा सब कुछ जानता है (और) बड़ी हिक्मत वाला है। (१०४) ★

(ऐ पैग़म्बर!) हम ने तुम पर सच्ची किताब नाज़िल की है ताकि ख़ुदा की हिदायतों के मुताबिक़ लोगों के मुक़दमों का फ़ैसला करो और (देखो) दग़ाबाज़ों की हिमायत में कभी बहस न करना। (१०५) और ख़ुदा से बख़्शिश मांगना। बेशक ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है।[1] (१०६) और जो लोग अपने हम-जिंसों की ख़ियानत करते हैं उनकी तरफ़ से बहस न करना, क्यों कि ख़ुदा ख़ियानत करने वालों और मुजिरमों को दोस्त नहीं रखता। (१०७) ये लोगों से तो छिपते हैं और ख़ुदा से नहीं छिपते, हालांकि जब वे रातों को ऐसी बातों के मश्विरे किया करते हैं, जिसको वह पसन्द नहीं करता, तो उनके साथ हुआ करता है। और ख़ुदा उन के तमाम कामों पर एहाता किए हुए है। (१०८) भला तुम लोग दुनिया की ज़िंदगी में तो उनकी तरफ़ से बहस कर लेते हो, क़ियामत को उनकी तरफ़ से ख़ुदा के साथ कौन झगड़ेगा और कौन उनका वकील बनेगा? (१०९) और जो शख़्स कोई बुरा काम कर बैठे या अपने हक़ में ज़ुल्म कर ले, फिर ख़ुदा से बख़्शिश मांगे, तो ख़ुदा को बख़्शने वाला मेहरबान पाएगा। (११०) और जो कोई गुनाह करता है, तो उस का वबाल उसी पर है और ख़ुदा जानने वाला (और) हिक्मत वाला है। (१११) और जो शख़्स कोई क़ुसूर या गुनाह तो ख़ुद करे, लेकिन किसी बे-गुनाह पर उसका इत्तिहाम (आरोप) लगाये, तो उसने बुहतान और खुले गुनाह का बोझ अपने सर पर रखा। (११२) ★

और अगर तुम पर ख़ुदा का फ़ज़्ल और मेहरबानी न होती, तो उन में से एक जमाअत तुमको बहकाने का इरादा कर ही चुकी थी और ये अपने सिवा (किसी को) बहका नहीं सकते और न तुम्हारा कुछ बिगाड़ सकते हैं। और ख़ुदा ने तुम पर किताब और दानाई नाज़िल फ़रमायी है और तुम्हें वे बातें सिखायी हैं, जो तुम जानते नहीं थे और तुम पर ख़ुदा का बड़ा फ़ज़्ल है ● (११३)

---

१. एक अन्सारी थे, उन की एक ज़िरह एक शख़्स तअ्मा बिन अबीरक़ ने चुरा ली। अन्सारी ने हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आ कर फ़रियाद की। तअ्मा ने यह चालाकी की ज़िरह किसी और के घर में डलवा दी और यह कैफ़ियत अपने कुंबे वालों से बयान कर के कहने लगा कि तुम हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास जाओ और कहो कि तअ्मा बे-गुनाह है, उस ने ज़िरह नहीं चुराई, बल्कि दूसरे शख़्स ने चुराई है। आप तअ्मा की बे-गुनाही लोगों के सामने बयान फ़रमाएं। हज़रत ग़ैब के जानने वाले तो थे ही नहीं, ख़्याल फ़रमाया कि ये लोग सच कहते होंगे। आप ने खड़े हो कर उस की बे-गुनाही का एलान कर दिया, तब ख़ुदा ने ये आयतें नाज़िल फ़रमायीं कि तुम दग़ाबाज़ों और ख़ियानत करने वालों के तरफ़दार न बनो और उन की तरफ़ से बहस न करो, और ख़ुदा से माफ़ी मांगो। मुसलमान वकील जो चोरों, डाकुओं, ख़ियानत करने वालों और हर क़िस्म के मुजरिमों की तरफ़ से मुक़दमों में वकालत करते और झगड़ते हैं और अपनी लच्छेदार तक़रीरों और बहसों से उन को सज़ा से बचा लेते हैं, उन्हें अल्लाह के इस फ़रमान पर अमल करना चाहिए और जिन लोगों के बारे में मुक़दमे की रिपोर्ट पर नज़र कर के उन का दिल कह दे कि वे हक़ीक़त में मुजरिम हैं, उन की तरफ़ से वकालत नहीं करनी चाहिए।

ला ख़ै-र फ़ी कसीरिम्-मिन्नज्वाहुम् इल्ला मन् अ-म-र बि स-द-क़तिन् औ मअ्-रूफ़िन् औ इस्लाहिम् - बैनन्नासि ᵇ व मंय्यफ़् - अल् ज़ालि-कब्तिग़ा-अ मर्ज़ातिल्लाहि फ़ सौ-फ़ नुअ्तीहि अज्रन् अ़ज़ीमा (११४) व मंय्युशाक़िक़िर्रसू-ल मिम्बअ्-दि मा तबय्य-न लहुल्हुदा व यत्तबिअ् ग़ै-र सबीलिल्-मुअमिनी-न नुवल्लिही मा तवल्ला व नुस्लिही जहन्न-मᵇ व सा-अत् मसीरा ★ (११५) इन्नल्ला-ह ला यग़्फ़िरु अंय्युश-र-क बिही व यग़्फ़िरु मा दू-न ज़ालि-क लि मंय्यशाउ ᵇ व मंय्युश्रिक् बिल्लाहि फ़-क़द् ज़ल-ल ज़लालम् बअ़ीदा (११६) इंय्यद्अ़ू-न मिन्दूनिही इल्ला इनासन् व इंय्यद्अ़ू-न इल्ला शैतानम् -मरीदल्-ᶫᵃ (११७) -ल-अ्-नहुल्लाहु ※ व क़ा-ल ल-अत्तख़िज़न्-न मिन् अ़िबादि-क नसीबम्-मफ़रूज़व्-ᶫᵃ (११८) -व ल-उज़िल्लन्नहुम् व ल उमन्नियन्नहुम् व ल आमुरन्नहुम् फ़-ल-युबत्तिकुन-न आज़ानल्-अन्आमि व ल-आमुरन्नहुम् फ़-ल-युग़य्यिरुन-न ख़ल्क़ल्लाहि ᵇ व मंय्यत्तख़िज़िश्-शैता-न वलिय्यम् - मिन् दूनिल्लाहि फ़ - क़द् ख़सि - र ख़ुस्रानम्-मुबीना (११९) यअ़िदुहुम् व युमन्नीहिम् ᵇ व मा यअ़िदुहुमुश्शैतानु इल्ला ग़ुरूरा (१२०) उला-इ-क मअ्वाहुम् जहन्नमु ᶫ व ला यजिदू-न अ़न्हा महीसा (१२१) वल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति सनुद्ख़िलुहुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह़्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा अ-ब-दन् ᵇ वअ्-दल्लाहि ह़क़्क़न् ᵇ व मन् अस्दक़ु मिनल्लाहि क़ीला (१२२) लै-स बि अमानिय्यिकुम् व ला अमानिय्यि अह्लिल्-किताबि ᵇ मंय्यअ्-मल् सू - अंय्युज - ज़ बिही ᶫ व ला यजिद् लहू मिन् दूनिल्लाहि वलिय्यंव-व ला नसीरा (१२३) व मंय्यअ्-मल् मिनस्सालिहाति मिन् ज़-करिन् औ उन्सा व हु-व मुअ्मिनुन् फ़ उला-इ-क यद्ख़ुलूनल् - जन्न-त व ला युज़्लमू-न नक़ीरा (१२४)

النساء ٤ ٤٤ والمحصنت ٥

إِلَّا مَنْ أَمَرَ بِصَدَقَةٍ أَوْ مَعْرُوفٍ أَوْ إِصْلَاحٍ بَيْنَ النَّاسِ ۚ وَمَنْ
يَفْعَلْ ذَٰلِكَ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ فَسَوْفَ نُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ﴿١١٤﴾
وَمَنْ يُشَاقِقِ الرَّسُولَ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُ الْهُدَىٰ وَيَتَّبِعْ غَيْرَ
سَبِيلِ الْمُؤْمِنِينَ نُوَلِّهِ مَا تَوَلَّىٰ وَنُصْلِهِ جَهَنَّمَ ۖ وَسَاءَتْ مَصِيرًا ﴿١١٥﴾
إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَٰلِكَ لِمَنْ يَشَاءُ ۚ
وَمَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَالًا بَعِيدًا ﴿١١٦﴾ إِنْ يَدْعُونَ مِنْ
دُونِهِ إِلَّا إِنَاثًا وَإِنْ يَدْعُونَ إِلَّا شَيْطَانًا مَرِيدًا ﴿١١٧﴾ لَعَنَهُ اللَّهُ ۘ
وَقَالَ لَأَتَّخِذَنَّ مِنْ عِبَادِكَ نَصِيبًا مَفْرُوضًا ﴿١١٨﴾ وَلَأُضِلَّنَّهُمْ وَ
لَأُمَنِّيَنَّهُمْ وَلَآمُرَنَّهُمْ فَلَيُبَتِّكُنَّ آذَانَ الْأَنْعَامِ وَلَآمُرَنَّهُمْ
فَلَيُغَيِّرُنَّ خَلْقَ اللَّهِ ۚ وَمَنْ يَتَّخِذِ الشَّيْطَانَ وَلِيًّا مِنْ دُونِ اللَّهِ
فَقَدْ خَسِرَ خُسْرَانًا مُبِينًا ﴿١١٩﴾ يَعِدُهُمْ وَيُمَنِّيهِمْ ۖ وَمَا يَعِدُهُمُ
الشَّيْطَانُ إِلَّا غُرُورًا ﴿١٢٠﴾ أُولَٰئِكَ مَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ وَلَا يَجِدُونَ عَنْهَا
مَحِيصًا ﴿١٢١﴾ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ
تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ وَعْدَ اللَّهِ حَقًّا ۚ وَ
مَنْ أَصْدَقُ مِنَ اللَّهِ قِيلًا ﴿١٢٢﴾ لَيْسَ بِأَمَانِيِّكُمْ وَلَا أَمَانِيِّ أَهْلِ الْكِتَابِ ۗ
مَنْ يَعْمَلْ سُوءًا يُجْزَ بِهِ وَلَا يَجِدْ لَهُ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا وَلَا
نَصِيرًا ﴿١٢٣﴾ وَمَنْ يَعْمَلْ مِنَ الصَّالِحَاتِ مِنْ ذَكَرٍ أَوْ أُنْثَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ

منزل

★ ३/१४ आ ३ ※ व. लाज़िम

उन लोगों के बहुत से मश्विरे अच्छे नहीं, हां, (उस शख़्स का मश्विरा अच्छा हो सकता है) जो ख़ैरात या नेक बात या लोगों में सुलह करने को कहे और जो ऐसे काम ख़ुदा की ख़ुश्नूदी हासिल करने के लिए करेगा, तो हम उसको बड़ा सवाब देंगे। (११४) और जो शख़्स सीधा रास्ता मालूम होने के बाद पैग़म्बर की मुख़ालफ़त करे और मोमिनों के रास्ते के सिवा और रास्ते पर चले, तो जिधर वह चलता है, हम उसे उधर ही चलने देंगे। और (क़ियामत के दिन) जहन्नम में दाख़िल करेंगे और वह बुरी जगह है। (११५) ★

ख़ुदा उस गुनाह को नहीं बख़्शेगा कि किसी को उसका शरीक बनाया जाए और इसके सिवा (और गुनाह) जिसको चाहेगा, बख़्श देगा। और जिसने ख़ुदा के साथ शरीक बनाया, वह रास्ते से दूर जा पड़ा। (११६) ये जो ख़ुदा के सिवा पूजा करते हैं तो औरतों ही की, और पुकारते हैं तो शैतान सरकश ही को, (११७) जिस पर ख़ुदा ने लानत की है ▩ (जो ख़ुदा से) कहने लगा, मैं तेरे बन्दों से (ग़ैर ख़ुदा की नज़्र दिलवा कर माल का) एक मुक़र्रर हिस्सा ले लिया करूंगा। (११८) और उनको गुमराह करता और उम्मीदें दिलाता रहूंगा और यह सिखाता रहूंगा कि जानवरों के कान चीरते रहें और (यह भी) कहता रहूंगा कि वे ख़ुदा की बनायी हुई सूरतों को बदलते रहें और जिस शख़्स ने ख़ुदा को छोड़ कर शैतान को दोस्त बनाया, वह खुले नुक़सान में पड़ गया। (११९) वह उनको वायदे देता है और उम्मीदें दिलाता है और जो कुछ शैतान उन्हें वायदे देता है, वह धोखा ही धोखा है। (१२०) ऐसे लोगों का ठिकाना जहन्नम है और वह वहां से मुख़्लसी नहीं पा सकेंगे। (१२१) और जो लोग ईमान लाये और नेक काम करते रहे, उनको हम बहिश्तों में दाख़िल करेंगे, जिनके नीचे नहरें जारी हैं। हमेशा-हमेशा उनमें रहेंगे, यह ख़ुदा का सच्चा वायदा है, और ख़ुदा से ज़्यादा बात का सच्चा कौन हो सकता है। (१२२) (निजात) न तो तुम्हारी आरज़ूओं पर है और न अह्ले किताब की आरज़ूओं पर। जो शख़्स बुरे अमल करेगा, उसे उसी (तरह) का बदला दिया जाएगा और वह ख़ुदा के सिवा न किसी को हिमायती पाएगा और न मददगार। (१२३) और जो नेक काम करेगा, मर्द हो या औरत और वह ईमान वाला भी होगा, तो ऐसे लोग जन्नत में दाख़िल होंगे और उनका तिल बराबर भी हक़ न मारा जाएगा। (१२४) और उस शख़्स से किसका

★रु. १७/१४ आ ३ ▩ व. लाज़िम

व मन् अह्सनु दीनम्मिम्मन् अस्ल-म वज्हहू लिल्लाहि व हु-व मुह्सिनुंव्वत्त-ब-अ मिल्ल-त इब्राही-म हनीफ़न् व त्त-ख़-ज़ल्लाहु इब्राही-म ख़लीला (१२५) व लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि व कानल्लाहु बि कुल्लि शैइम्मुहीता★ (१२६) व यस्तफ़्तून-क फ़िन्निसा-इ कुलिल्लाहु युफ़्तीकुम् फ़ीहिन्-न व मा युत्ला अलैकुम् फ़िल्किताबि फ़ी यतामन्निसा-इल्लाती ला तुअ्तूनहुन्-न मा कुति-ब लहुन्-न व तर्ग़बू-न अन् तन्किहूहुन्-न वल्-मुस्तज़्अफ़ी-न मिनल्-विल्दानि व अन् तक़ूमू लिल्यतामा बिल्क़िस्ति व मा तफ़्-अलू मिन् ख़ैरिन् फ़ इन्नल्ला-ह का-न बिही अलीमा (१२७) व इनिम्र-अतुन् ख़ाफ़त् मिम्बअ्लिहा नुशूज़न् औ इअ्-राज़न् फ़ ला जुना-ह अलैहिमा अंय्युस्लिहा बैनहुमा सुल्हन् वस्सुल्हु ख़ैरुन् व उह्ज़िरतिल्-अन्फ़ुसुश्शुह्-ह व इन् तुह्सिनू व तत्तक़ू फ़ इन्नल्ला-ह का-न बिमा तअ्-मलू-न ख़बीरा (१२८) व लन् तस्ततीअू अन् तअ्-दिलू बैनन्निसा-इ व लौ ह-रस्तुम् फ़ ला तमीलू कुल्लल्मैलि फ़-त-ज़रूहा कल्मु-अल्लक़ति व इन् तुस्लिहू व तत्तक़ू फ़-इन्नल्ला-ह का-न ग़फ़ूरर्रहीमा (१२९) व इंय्य-त-फ़र्रक़ा युग़्निल्लाहु कुल्लम्मिन् स-अतिही व कानल्लाहु वासिअन् हकीमा (१३०) व लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि व ल-क़द् वस्सैनल्लज़ी-न ऊतुल्किता-ब मिन् क़ब्लिकुम् व इय्याकुम् अनित्तक़ुल्ला-ह व इन् तक्फ़ुरू फ़ इन्-न लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि व कानल्लाहु ग़निय्यन् हमीदा (१३१)

فاولئك يدخلون الجنة ولا يظلمون نقيرا ۝ ومن احسن
دينا ممن اسلم وجهه لله وهو محسن واتبع ملة ابرهيم
حنيفا واتخذ الله ابرهيم خليلا ۝ ولله ما في السموت
وما في الارض وكان الله بكل شيء محيطا ۝ ويستفتونك
في النساء قل الله يفتيكم فيهن وما يتلى عليكم في
الكتب في يتمى النساء التي لا تؤتونهن ما كتب لهن
وترغبون ان تنكحوهن والمستضعفين من الولدان و
ان تقوموا لليتمى بالقسط وما تفعلوا من خير فان الله
كان به عليما ۝ وان امراة خافت من بعلها نشوزا او
اعراضا فلا جناح عليهما ان يصلحا بينهما صلحا والصلح
خير واحضرت الانفس الشح وان تحسنوا وتتقوا فان
الله كان بما تعملون خبيرا ۝ ولن تستطيعوا ان تعدلوا
بين النساء ولو حرصتم فلا تميلوا كل الميل فتذروها
كالمعلقة وان تصلحوا وتتقوا فان الله كان غفورا رحيما ۝
وان يتفرقا يغن الله كلا من سعته وكان الله واسعا
حكيما ۝ ولله ما في السموت وما في الارض ولقد وصينا
الذين اوتوا الكتب من قبلكم واياكم ان اتقوا الله وان

★रु. १८/१५ आ ११

दीन अच्छा हो सकता है, जिस ने ख़ुदा के हुक्म को क़ुबूल किया और वह भले काम करने वाला भी है और इब्राहीम के दीन की पैरवी करने वाला भी है, जो यकसू (मुसलमान) थे और ख़ुदा ने इब्राहीम को अपना दोस्त बनाया था। (१२५) और आसमान और ज़मीन में जो कुछ है, सब ख़ुदा ही का है और ख़ुदा हर चीज़ पर एहाता किये हुए है। (१२६) ★

(ऐ पैग़म्बर !) लोग तुमसे (यतीम) औरतों के बारे में फ़त्वा तलब करते हैं, कह दो कि ख़ुदा तुमको उनके (साथ निकाह करने के) मामले में इजाज़त देता है और जो हुक्म इस किताब में पहले दिया गया है, वह उन यतीम औरतों के बारे में है, जिनको तुम उनका हक़ तो देते नहीं और ख़्वाहिश रखते हो कि उनके साथ निकाह कर लो और (नीज़) बेचारे बेकस बच्चों के बारे में और यह (भी हुक्म देता है) कि यतीमों के बारे में इंसाफ़ पर क़ायम रहो और जो भलाई तुम करोगे, ख़ुदा उसको जानता है। (१२७) और अगर किसी औरत को अपने ख़ाविंद की तरफ़ से ज़्यादती या बे-रग़बती का डर हो, तो मियां-बीवी पर कुछ गुनाह नहीं कि आपस में किसी क़रारदाद पर सुलह कर लें। और सुलह ख़ूब (चीज़) है और तबीयतें तो बुख़्ल की तरफ़ मायल होती हैं।[1] और अगर तुम भले और परहेज़गार बनोगे, तो ख़ुदा तुम्हारे सब कामों को जानता है। (१२८) और तुम चाहे कितना ही चाहो, औरतों में हरगिज़ बराबरी नहीं कर सकोगे, तो ऐसा भी न करना कि एक ही की तरफ़ ढलक जाओ और दूसरी को (ऐसी हालत में) छोड़ दो कि गोया अधर में लटक रही है[2] और अगर आपस में मुवाफ़क़त कर लो और परहेज़गारी करो तो ख़ुदा बख़्शने वाला, मेहरबान है। (१२९) और अगर मियां-बीवी (में मुवाफ़क़त न हो सके और) एक-दूसरे से जुदा हो जाएं तो ख़ुदा हर एक को अपनी दौलत से ग़नी कर देगा और ख़ुदा बड़ी फ़राख़ी वाला और हिक्मत वाला है। (१३०) और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, सब ख़ुदा ही का है और जिन लोगों को तुमसे पहले किताब दी गई थी, उनको भी और (ऐ मुहम्मद !) तुमको भी हमने ताकीदी हुक्म किया है कि ख़ुदा से डरते रहो और अगर कुफ़्र करोगे तो (समझ रखो कि) जो कुछ आसमानों में और जो कुछ ज़मीन में है, सब ख़ुदा ही का है और ख़ुदा बे-परवाह और तारीफ़ के लायक़ है। (१३१)

---

१. यानी बुख़्ल और लालच इन्सान के मिज़ाज में दाख़िल हैं, वह अपना हक़ तो पूरा लेना चाहता है और दूसरे के हक़ की कुछ परवा नहीं करता। औरत तो चाहती है अपना हक़--खाना, कपड़ा और मकान पूरा ले और मर्द चाहता है कि बिला हक़ दिए अपना काम निकाले, लेकिन अगर औरत मर्द को ख़ुश करने के लिए अपना हक़ छोड़ दे तो मुनासिब है।

२. यानी न आसमान पर है, न ज़मीन पर, मतलब यह कि न शौहर वाली है कि शौहर से एहसान की उम्मीद हो, न आज़ाद है कि और शौहर कर ले।

★रु. १८/१५ आ ११

व लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि ط व कफ़ा बिल्लाहि वकीला (१३२) इंय्यशअ्-युज़्हिब्कुम् अय्युहन्नासु व यअ्ति बि आख़री-न ط व कानल्लाहु अ़ला ज़ालि-क क़दीरा (१३३) मन् का-न युरीदु सवाबद्दुन्या फ़ अि़न्दल्लाहि सवाबुद्दुन्या वल्आख़िरति ط व कानल्लाहु समीअम्-बसीरा ★ (१३४) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू कूनू क़व्वामी-न बिल्क़िस्ति शुहदा-अ लिल्लाहि व लौ अ़ला अन्फ़ुसिकुम् अविल्-वालिदैनि वल्अक़्रबी-न ج इंय्यकुन् ग़निय्यन् औ फ़क़ीरन् फ़ल्लाहु औला बिहिमा قف फ़ ला तत्तबिअुल्-हवा अन् तअ़्-दिलू ج व इन् तल्वू औ तुअ़्-रिज़ू फ़ इन्नल्ला-ह का-न बिमा तअ़्-मलू-न ख़बीरा (१३५) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू आमिनू बिल्लाहि व रसूलिही वल्-किताबिल्लज़ी नज़्ज़-ल अ़ला रसूलिही वल्-किताबिल्लज़ी अन्ज़-ल मिन् क़ब्लु ط व मंय्यक्फ़ुर् बिल्लाहि व मलाइकतिही व कुतुबिही व रुसुलिही वल्-यौमिल्-आख़िरि फ़-क़द् ज़ल-ल ज़लालम्-बअ़ीदा (१३६) इन्नल्लज़ी-न आमनू सुम-म क-फ़रू सुम-म आमनू सुम-म क-फ़रू सुम्मज़्दादू कुफ़्रल्लम् यकुनिल्लाहु लि यग़्फ़ि-र लहुम् व ला लि यह्दियहुम् सबीला ط (१३७) बश्शिरिल्-मुनाफ़िक़ी-न बि अन-न लहुम् अ़ज़ाबन् अलीमा ط (१३८) अ्ल्लज़ी-न यत्तख़िज़ूनल् - काफ़िरी - न औलिया-अ मिन् दूनिल्-मुअ्मिनी-न ط अ-यब्तग़ू-न अ़िन्दहुमुल्-अ़िज़्ज़-त फ़-इन्नल्-अ़िज़्ज़-त लिल्लाहि जमीआ़ ط (१३९)

والمحصنت ٥ — ع — النسآء ٤

تَكْفُرُوا فَإِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ
غَنِيًّا حَمِيدًا ۝ وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ وَكَفٰى
بِاللَّهِ وَكِيلًا ۝ إِنْ يَشَأْ يُذْهِبْكُمْ أَيُّهَا النَّاسُ وَيَأْتِ بِآخَرِينَ ۚ
وَكَانَ اللَّهُ عَلٰى ذٰلِكَ قَدِيرًا ۝ مَنْ كَانَ يُرِيدُ ثَوَابَ الدُّنْيَا
فَعِنْدَ اللَّهِ ثَوَابُ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ سَمِيعًا بَصِيرًا ۝
يٰأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا قَوّٰمِينَ بِالْقِسْطِ شُهَدَاءَ لِلَّهِ
وَلَوْ عَلٰى أَنْفُسِكُمْ أَوِ الْوٰلِدَيْنِ وَالْأَقْرَبِينَ ۚ إِنْ يَكُنْ غَنِيًّا
أَوْ فَقِيرًا فَاللَّهُ أَوْلٰى بِهِمَا ۖ فَلَا تَتَّبِعُوا الْهَوٰى أَنْ تَعْدِلُوا ۚ
وَإِنْ تَلْوُوا أَوْ تُعْرِضُوا فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ۝
يٰأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا آمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَالْكِتٰبِ الَّذِي
نَزَّلَ عَلٰى رَسُولِهِ وَالْكِتٰبِ الَّذِي أَنْزَلَ مِنْ قَبْلُ ۚ وَمَنْ
يَكْفُرْ بِاللَّهِ وَمَلٰٓئِكَتِهِ وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَقَدْ
ضَلَّ ضَلٰلًا بَعِيدًا ۝ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا ثُمَّ كَفَرُوا ثُمَّ
آمَنُوا ثُمَّ كَفَرُوا ثُمَّ ازْدَادُوا كُفْرًا لَمْ يَكُنِ اللَّهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ
وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ سَبِيلًا ۝ بَشِّرِ الْمُنٰفِقِينَ بِأَنَّ لَهُمْ عَذَابًا
أَلِيمًا ۝ الَّذِينَ يَتَّخِذُونَ الْكٰفِرِينَ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ ۚ
أَيَبْتَغُونَ عِنْدَهُمُ الْعِزَّةَ فَإِنَّ الْعِزَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا ۝ وَقَدْ نَزَّلَ

منزل

★ रु. १९/१६ आ ८

और (फिर सुन रखो कि) जो कुछ आसमानों में और जो कुछ ज़मीन में है, सब ख़ुदा ही का है और ख़ुदा ही कारसाज़ काफ़ी है। (१३२) लोगो! अगर वह चाहे तो तुम को फ़ना कर दे और (तुम्हारी जगह) और लोगों को पैदा कर दे और ख़ुदा इस बात पर क़ुदरत रखता है। (१३३) जो शख़्स दुनिया (में) अमलों का बदला चाहता हो, तो ख़ुदा के पास दुनिया और आख़िरत (दोनों) के लिए बदला (मौजूद) है और ख़ुदा सुनता-देखता है। (१३४) ★

ऐ ईमान वालो! इन्साफ़ पर क़ायम रहो और ख़ुदा के लिए सच्ची गवाही दो, चाहे (इस में) तुम्हारा या तुम्हारे मां-बाप और रिश्तेदारों का नुक़्सान ही हो। अगर कोई अमीर है या फ़क़ीर, तो ख़ुदा उनका ख़ैरख़्वाह है। तो तुम नफ़्स की ख़्वाहिश के पीछे चल कर अद्ल (इन्साफ़) को न छोड़ देना। अगर तुम पेचदार शहादत दोगे या (शहादत से) बचना चाहोगे, तो (जान रखो) ख़ुदा तुम्हारे सब कामों को जानता है। (१३५) मोमिनो! ख़ुदा पर और उस के रसूल पर और जो किताब उस ने अपने (आख़िरी) पैग़म्बर पर नाज़िल की है और जो किताबें इस से पहले नाज़िल की थीं, सब पर ईमान लाओ और जो शख़्स ख़ुदा और उस के फ़रिश्तों और उस की किताबों और उसके पैग़म्बरों और क़ियामत के दिन से इन्कार करे, वह रास्ते से भटक कर दूर जा पड़ा। (१३६) जो लोग ईमान लाये, फिर काफ़िर हो गये, फिर ईमान लाये, फिर काफ़िर हो गये, फिर कुफ़्र में बढ़ते गए, उन को ख़ुदा न तो बख़्शेगा और न सीधा रास्ता दिखायेगा। (१३७) (ऐ पैग़म्बर!) मुनाफ़िक़ों (यानी दो-रुख़े लोगों) को ख़ुशख़बरी सुना दो कि उन के लिए दुख देने वाला अज़ाब (तैयार) है। (१३८) जो मोमिनों को छोड़ कर काफ़िरों को दोस्त बनाते हैं, क्या ये उन के यहां इज़्ज़त हासिल करनी चाहते हैं, तो इज़्ज़त तो सब ख़ुदा ही की है। (१३९) और ख़ुदा ने तुम

★रु. १९/१६ आ ८

व क़द् नज़्ज़-ल अलैकुम् फ़िल्किताबि अन् इज़ा समिअ्-तुम् आयातिल्लाहि युक्फ़रु बिहा व युस्तह्ज़उ बिहा फ़-ला तक़्अुदू म-अहुम् हत्ता यख़ूज़ू फ़ी हदीसिन् ग़ैरिही ۖ इन्नकुम् इज़म्मिस्लुहुम् ط इन्नल्ला-ह जामिअुल्-मुनाफ़िक़ी-न वल्-काफ़िरी-न फ़ी जहन्न-म जमीआ ۙ (१४०) अल्लज़ी-न य-त-रब्बसू-न बिकुम् ج फ़ इन् का-न लकुम् फ़त्हुम्-मिनल्लाहि क़ालू अ-लम् नकुम्म-अकुम् ۖ व इन् का-न लिल्काफ़िरी-न नसीबुन् ۙ क़ालू अ-लम् नस्तह्विज़् अलैकुम् व नम्नअ्-कुम् मिनल्-मुअ्मिनी-न ط फ़ल्लाहु यह्कुमु बैनकुम् यौमल्-क़ियामति ط व लंय्यज्अलल्लाहु लिल्-काफ़िरी-न अ-लल्-मुअ्मिनी-न सबीला ★ (१४१) इन्नल्-मुनाफ़िक़ी-न युख़ादिअूनल्ला-ह व हु-व ख़ादिअुहुम् ج व इज़ा क़ामू इलस्सलाति क़ामू कुसाला ۙ युराऊनन्ना-स व ला यज़्कुरूनल्ला-ह इल्ला क़लीला ۙ (१४२) मुज़ब्ज़बी-न बै-न ज़ालि-क ۖ ला इला हा उला-इ ط व ला इला हा उला-इ व मंय्युज़्लिलिल्लाहु फ़ लन् तजि-द लहू सबीला (१४३) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तत्तख़िज़ुल्-काफ़िरी-न औलिया-अ मिन् दूनिल् मुअ्मिनी-न ط अ तुरीदू-न अन् तज्अलू लिल्लाहि अलैकुम् सुल्तानम्-मुबीना (१४४) इन्नल्-मुनाफ़िक़ी-न फ़िद्दर्किल्-अस्फ़लि मिनन्नारि ج व लन् तजि-द लहुम् नसीरा ۙ (१४५) इल्लल्लज़ी-न ताबू व अस्लहू वअ्-त-समू बिल्लाहि व अख़्लसू दीनहुम् लिल्लाहि फ़ उला-इ-क म-अल्-मुअ्मिनी-न ط व सौ-फ़ युअ्तिल्लाहुल्-मुअ्मिनी-न अज्रन् अज़ीमा (१४६) मा यफ़्अलुल्लाहु बि अज़ाबिकुम् इन् शकर्तुम् व आमन्तुम् ط व कानल्लाहु शाकिरन् अलीमा (१४७)

عَلَيْكُمْ فِي الْكِتٰبِ اَنْ اِذَا سَمِعْتُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ يُكْفَرُ بِهَا وَيُسْتَهْزَاُ
بِهَا فَلَا تَقْعُدُوْا مَعَهُمْ حَتّٰى يَخُوْضُوْا فِيْ حَدِيْثٍ غَيْرِهٖٓ ۖ اِنَّكُمْ
اِذًا مِّثْلُهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ جَامِعُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْكٰفِرِيْنَ فِيْ جَهَنَّمَ
جَمِيْعَا ۙ الَّذِيْنَ يَتَرَبَّصُوْنَ بِكُمْ ۚ فَاِنْ كَانَ لَكُمْ فَتْحٌ مِّنَ اللّٰهِ
قَالُوْٓا اَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ ۖ وَاِنْ كَانَ لِلْكٰفِرِيْنَ نَصِيْبٌ ۙ قَالُوْٓا اَلَمْ
نَسْتَحْوِذْ عَلَيْكُمْ وَنَمْنَعْكُمْ مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ؕ فَاللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ
يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ وَلَنْ يَّجْعَلَ اللّٰهُ لِلْكٰفِرِيْنَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ سَبِيْلًا ۝
اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ يُخٰدِعُوْنَ اللّٰهَ وَهُوَ خَادِعُهُمْ ۚ وَاِذَا قَامُوْٓا
اِلَى الصَّلٰوةِ قَامُوْا كُسَالٰى ۙ يُرَآءُوْنَ النَّاسَ وَلَا يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ
اِلَّا قَلِيْلًا ۝ مُّذَبْذَبِيْنَ بَيْنَ ذٰلِكَ ۖ لَآ اِلٰى هٰٓؤُلَآءِ وَلَآ اِلٰى
هٰٓؤُلَآءِ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ سَبِيْلًا ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ؕ
اَتُرِيْدُوْنَ اَنْ تَجْعَلُوْا لِلّٰهِ عَلَيْكُمْ سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ۝ اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ
فِي الدَّرْكِ الْاَسْفَلِ مِنَ النَّارِ ۚ وَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ نَصِيْرًا ۝ اِلَّا الَّذِيْنَ
تَابُوْا وَاَصْلَحُوْا وَاعْتَصَمُوْا بِاللّٰهِ وَاَخْلَصُوْا دِيْنَهُمْ لِلّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ
مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ ؕ وَسَوْفَ يُؤْتِ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ اَجْرًا عَظِيْمًا ۝ مَا
يَفْعَلُ اللّٰهُ بِعَذَابِكُمْ اِنْ شَكَرْتُمْ وَاٰمَنْتُمْ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ شَاكِرًا عَلِيْمًا ۝

★रु. २०/१७ आ ७

(मोमिनों) पर अपनी किताब में (यह हुक्म) नाज़िल फ़रमाया है कि जब तुम (कहीं) सुनो कि ख़ुदा की आयतों से इन्कार हो रहा है और उन की हंसी उड़ाई जाती है तो जब तक वे लोग और बातें (न) करने लगें, उन के पास मत बैठो, वरना तुम भी उन्हीं जैसे हो जाओगे। कुछ शक नहीं कि ख़ुदा मुनाफ़िक़ों और काफ़िरों सब को दोज़ख में इकट्ठा करने वाला है। (१४०) जो तुम को देखते रहते हैं, अगर ख़ुदा की तरफ़ से तुम को फ़त्ह मिले, तो कहते हैं, क्या हम तुम्हारे साथ न थे और अगर काफ़िरों को (फ़त्ह) नसीब हो, तो (उस से) कहते हैं, क्या हम तुम पर ग़ालिब नहीं थे और तुम को मुसलमानों (के हाथ) से बचाया नहीं, तो ख़ुदा तुम में क़ियामत के दिन फ़ैसला कर देगा और ख़ुदा काफ़िरों को मोमिनों पर हरगिज़ ग़लबा नहीं देगा। (१४१) ★

मुनाफ़िक़ (इन चालों से अपने नज़दीक) ख़ुदा को धोखा देते हैं, (ये उस को क्या धोखा देंगे) वह उन्हीं को धोखे में डालने वाला है और जब ये नमाज़ को खड़े होते हैं, तो सुस्त और काहिल होकर (सिर्फ़) लोगों के दिखाने को और ख़ुदा की याद ही नहीं करते, मगर बहुत कम। (१४२) बीच में पड़े लटक रहे हैं, न उनकी तरफ़ (होते हैं), न इन की तरफ़ और जिस को ख़ुदा भटकाए, तो तुम उसके लिए कभी भी रास्ता न पाओगे। (१४३) ऐ अह्ले ईमान! मोमिनों के सिवा काफ़िरों को दोस्त न बनाओ, क्या तुम चाहते हो कि अपने ऊपर ख़ुदा का खुला इल्ज़ाम लो? (१४४) कुछ शक नहीं कि मुनाफ़िक़ लोग दोज़ख के सब से नीचे के दर्जे में होंगे और तुम उनका किसी को मददगार न पाओगे। (१४५) हां, जिन्होंने तौबा की और अपनी हालत को दुरुस्त किया और ख़ुदा (की रस्सी) को मज़बूत पकड़ा और ख़ास ख़ुदा के फ़रमांबरदार हो गये, तो ऐसे लोग मोमिनों के साथ होंगे और ख़ुदा बहुत जल्द मोमिनों को बड़ा सवाब देगा। (१४६) अगर तुम (ख़ुदा के) शुक्रगुज़ार रहो और (उस पर) ईमान ले आओ.तो ख़ुदा तुम को अज़ाब देकर क्या करेगा और ख़ुदा तो क़द्रशनास और जानता-बूझता है। (१४७) ख़ुदा इस बात को पसंद नहीं करता कि

★रु. २०/१७ आ ७

छठा पारः लायुहिब्बुल्लाहु

सूरतुन्निसा-इ आयत १४८ से १७६

लायुहिब्बुल्लाहुल्-जह-र बिस्सू-इ मिनल्क़ौलि इल्ला मन् ज़ुलि-म ط व कानल्लाहु समीअ़न् अ़लीमा (१४८) इन् तुब्दू ख़ैरन् औ तुख़्फ़ूहु औ तअ़्-फ़ू अ़न् सू-इन् फ़ इन्नल्ला-ह का-न अ़फ़ुव्वन् क़दीरा (१४९) इन्नल्लज़ी-न यक्फ़ुरू-न बिल्लाहि व रुसुलिही व युरीदू-न अंय्युफ़र्रिक़ू बैनल्लाहि व रुसुलिही व यक़ूलू-न नुअ्मिनु बि बअ़्-ज़िंव्-व नक्फ़ुरु बि बअ़्-ज़िंव्-व युरीदू-न अंय्यत्तख़िज़ू बै-न ज़ालि-क सबीला ⅃ (१५०) उलाँ-इ-क हुमुल् काफ़िरू-न हक़्क़न् ج व् अअ़्-तद्ना लिल्-काफ़िरी-न अ़ज़ाबम्मुहीना (१५१) वल्लज़ी-न आमनू बिल्लाहि व रुसुलिही व-लम् युफ़र्रिक़ू बै-न अ-ह़दिम्-मिन्हुम् उलाँ-इ-क सौ-फ़ युअ्तीहिम् उजूरहुम् ط व कानल्लाहु ग़फ़ूररहीमा ★ (१५२) यस्अलु-क अह्लुल्किताबि अन् तुनज़्ज़ि-ल अ़लैहिम् किताबम्-मिनस्समाँ-इ फ़-क़द् स-अलू मूसा अक्ब-र मिन् ज़ालि-क फ़ क़ालू अरिनल्ला-ह जह्-र-तन् फ़ अ-ख़-ज़त्-हुमुस्साअि-क़तु बि ज़ुल्मिहिम् ج सुम्मत्त-ख़-ज़ुल्-अिज-ल मिम्बअ़्-दि मा जाँ-अत्-हुमुल्बय्यिनातु

لا يحب الله ٦ — ٨١ — النساء ٤

لَا يُحِبُّ اللّٰهُ الْجَهْرَ بِالسُّوْٓءِ مِنَ الْقَوْلِ اِلَّا مَنْ ظُلِمَ ؕ وَكَانَ
اللّٰهُ سَمِيْعًا عَلِيْمًا ﴿١٤٨﴾ اِنْ تُبْدُوْا خَيْرًا اَوْ تُخْفُوْهُ اَوْ تَعْفُوْا عَنْ
سُوْٓءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَفُوًّا قَدِيْرًا ﴿١٤٩﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ
وَرُسُلِهٖ وَيُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّفَرِّقُوْا بَيْنَ اللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَيَقُوْلُوْنَ
نُؤْمِنُ بِبَعْضٍ وَّنَكْفُرُ بِبَعْضٍ ۙ وَّيُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّتَّخِذُوْا بَيْنَ
ذٰلِكَ سَبِيْلًا ﴿١٥٠﴾ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْكٰفِرُوْنَ حَقًّا ۚ وَاَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ
عَذَابًا مُّهِيْنًا ﴿١٥١﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَلَمْ يُفَرِّقُوْا بَيْنَ
اَحَدٍ مِّنْهُمْ اُولٰٓئِكَ سَوْفَ يُؤْتِيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا
رَّحِيْمًا ﴿١٥٢﴾ يَسْـَٔلُكَ اَهْلُ الْكِتٰبِ اَنْ تُنَزِّلَ عَلَيْهِمْ كِتٰبًا مِّنَ السَّمَآءِ
فَقَدْ سَاَلُوْا مُوْسٰٓى اَكْبَرَ مِنْ ذٰلِكَ فَقَالُوْٓا اَرِنَا اللّٰهَ جَهْرَةً فَاَخَذَتْهُمُ
الصّٰعِقَةُ بِظُلْمِهِمْ ۚ ثُمَّ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ
الْبَيِّنٰتُ فَعَفَوْنَا عَنْ ذٰلِكَ ۚ وَاٰتَيْنَا مُوْسٰى سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ﴿١٥٣﴾ وَ
رَفَعْنَا فَوْقَهُمُ الطُّوْرَ بِمِيْثَاقِهِمْ وَقُلْنَا لَهُمُ ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا
وَّقُلْنَا لَهُمْ لَا تَعْدُوْا فِي السَّبْتِ وَاَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ﴿١٥٤﴾
فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ وَكُفْرِهِمْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَقَتْلِهِمُ الْاَنْۢبِيَآءَ
بِغَيْرِ حَقٍّ وَّقَوْلِهِمْ قُلُوْبُنَا غُلْفٌ ؕ بَلْ طَبَعَ اللّٰهُ عَلَيْهَا بِكُفْرِهِمْ
فَلَا يُؤْمِنُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿١٥٥﴾ وَّبِكُفْرِهِمْ وَقَوْلِهِمْ عَلٰى مَرْيَمَ بُهْتَانًا

منزل ١

फ़ अ़फ़ौना अ़न् ज़ालि-क ج व आतैना मूसा सुल्तानम्-मुबीना (१५३) व र-फ़अ़्-ना फ़ौक़हुमुत्तू-र बि मीसाक़िहिम् व क़ुल्ना लहुमुद्ख़ुलुलबा-ब सुज्जदंव्-व क़ुल्ना लहुम् ला तअ़्-दू फ़िस्सब्ति व अ-ख़ज़्ना मिन्हुम् मीसाक़न् ग़लीज़ा (१५४) फ़ बिमा नक़्ज़िहिम् मीसाक़हुम् व कुफ़्रिहिम् बि आयातिल्लाहि व क़त्लिहिमुल् अम्बियाँ-अ बिग़ैरि हक़्क़िंव्-व क़ौलिहिम् क़ुलूबुना ग़ुल्फ़ुन् ط बल् त-ब-अ़ल्लाहु अ़लैहा बि कुफ़्रिहिम् फ़ ला युअ्मिनू-न इल्ला क़लीला ص (१५५) व बि कुफ़्रिहिम् व क़ौलिहिम् अ़ला मर्-य-म बुह्तानन् अ़ज़ीमा ⅃ (१५६)

★रु. २१/१ आ ११

कोई किसी को एलानिया बुरा कहे, मगर वह जो मज़लूम हो और ख़ुदा (सब कुछ) सुनता (और) जानता है।[1] (१४८) अगर तुम लोग भलाई खुल्लम खुल्ला करोगे या छिपा कर या बुराई से दरगुज़र करोगे, तो ख़ुदा भी माफ़ करने वाला (और) क़ुदरत वाला है। (१४९) जो लोग ख़ुदा से और उस के पैग़म्बरों से कुफ़ करते हैं और ख़ुदा और उस के पैग़म्बरों में फ़र्क़ करना चाहते हैं और कहते हैं कि हम कुछ को मानते हैं और कुछ को नहीं मानते और ईमान और कुफ़ के बीच में एक राह निकालनी चाहते हैं, (१५०) वे बिला किसी शक-शुब्हे के काफ़िर हैं और काफ़िरों के लिए हम ने ज़िल्लत का अज़ाब तैयार कर रखा है। (१५१) और जो लोग ख़ुदा और उस के पैग़म्बरों पर ईमान लाये और उन में से किसी में फ़र्क़ न किया (यानी सब को माना), ऐसे लोगों को वह बहुत जल्द उन (की नेकियों) का बदला अता फ़रमायेगा और ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है। (१५२) ★

(ऐ मुहम्मद !) अह्ले किताब तुम से दर्ख़्वास्त करते हैं कि तुम उन पर एक (लिखी हुई) किताब आसमान से उतार लाओ, तो ये मूसा से इस से भी बड़ी-बड़ी दर्ख़्वास्तें कर चुके हैं। (उन से) कहते थे, हमें ख़ुदा को ज़ाहिर (यानी आंखों से) दिखा दो, सो उन के गुनाह की वजह से, उन को बिजली ने आ पकड़ा। फिर खुली निशानियां आये पीछे, बछड़े को (माबूद) बना बैठे, तो उस से भी हम ने दर-गुज़र की और मूसा को खुला ग़लबा दिया। (१५३) और उस से अह्द लेने को हम ने उस पर तूर पहाड़ उठा खड़ा किया और उन्हें हुक्म दिया कि (शहर के) दरवाज़े में (दाख़िल होना, तो) सज्दा करते हुए दाख़िल होना और यह भी हुक्म दिया कि हफ़्ते के दिन (मछलियां पकड़ने) में हद से आगे (यानी हुक्म के ख़िलाफ़) न करना। ग़रज़ हम ने उन से मज़बूत अह्द लिया। (१५४) (लेकिन उन्हों ने अह्द को तोड़ डाला) तो उन के अह्द तोड़ देने और ख़ुदा की आयतों से कुफ़ करने और नबियों को ना-हक़ मार डालने और यह कहने की वजह से कि हमारे दिलों पर पर्दे (पड़े हुए) हैं, (ख़ुदा ने उन को मर्दूद कर दिया और उन के दिलों पर पर्दे नहीं हैं), बल्कि उन के कुफ़ की वजह से ख़ुदा ने उन पर मुहर कर दी है, तो ये कम ही ईमान लाते हैं। (१५५) और उन के कुफ़ की वजह से और मरयम पर एक बड़ा बुहतान बांधने की वजह से (१५६) और यह

---

१. किसी की बुराई बयान करना और उस का ऐब ज़ाहिर करना कि इसी का नाम ग़ीबत है, बहुत बुरा है ख़ुदा को निहायत ना-पसंद है। हां, अगर किसी पर कोई ज़ुल्म है, तो उस का ज़ुल्म बयान करना और मज़्लूम का ज़ालिम को बुरा कहना मुनासिब है।

★रु. २१/१ आ ११

व क़ौलिहिम् इन्ना क़-तल्नल्-मसी-ह् अीसब्-न मर्य-म रसूलल्लाहि ॖ व मा क़-तलूहु व मा स-लबूहु व लाकिन् शुब्बि-ह लहुम् ॖ व इन्नल्लज़ीनख़्त-लफ़ू फ़ीहि ल-फ़ी शक्किम्मिन्हु ॖ मा लहुम् बिही मिन् अिल्मिन् इल्लत्तिबाअ़ज़्ज़न्नि ॖ व मा क़-तलूहु यक़ीना ॖ (१५७) बर्र-फ़-अहुल्लाहु इलैहि ॖ व कानल्लाहु अज़ीज़न् हकीमा (१५८) व इम्मिन् अह़्लिल्-किताबि इल्ला ल-युअ्मिनन्-न बिही क़ब्-ल मौतिही ॖ व यौमल्-क़ियामति यकूनु अलैहिम् शहीदा ॖ (१५९) फ़ बि-ज़ुल्मिम्-मिनल्लज़ी-न हादू हर्रम्ना अलैहिम् तय्यिबातिन् उहिल्लत् लहुम् व बि सद्दिहिम् अन् सबीलिल्लाहि कसीरा ॖ (१६०) व अख़्ज़िहिमुर्रिबा व क़द् नुहू अन्हु व अक्लिहिम् अम्वालन्नासि बिल्बातिलि ॖ व अअ्-तद्ना लिल्काफ़िरी-न मिन्हुम् अज़ाबन् अलीमा (१६१) लाकिनिर्-रासिख़ू-न फ़िल्-अिल्मि मिन्हुम् वल्मुअ्मिनू-न युअ्मिनू-न बिमा उन्ज़ि-ल इलै-क व मा उन्ज़ि-ल मिन् क़ब्लि-क वल्मुक़ीमीनस्सला-त वल्-मुअ्तूनज़्ज़का-त वल्मुअ्मिनू-न बिल्लाहि वल्-यौमिल्-आख़िरि ॖ उलाइ-क सनुअ्तीहिम् अज्रन् अज़ीमा ★ (१६२) इन्ना औहैना इलै-क कमा औहैना इला नूहिंव्वन्नबिय्यी-न मिम्बअ्-दिही ॖ व औहैना इला इब्राही-म व इस्माअी-ल व इस्हा-क़ व यअ्क़ू-ब वल्-अस्बाति व अीसा व अय्यू-ब व यूनु-स व हारू-न व सुलैमा-न ॖ व आतैना दावू-द ज़बूरा ॖ (१६३) व रुसुलन् क़द् क़-सस्नाहुम् अलै-क मिन् क़ब्लु व रुसुलल्लम् नक़्सुस्हुम् अलै-क ॖ व कल्लमल्लाहु मूसा तक्लीमा ॖ (१६४) रुसुलुम्-मुबश्शिरी-न व मुन्ज़िरी-न लिअल्ला यकू-न लिन्नासि अ-लल्लाहि हुज्जतुम्-बअ्-दर्रुसुलि ॖ व कानल्लाहु अज़ीज़न् हकीमा (१६५)

عَظِيمًا ۝ وَقَوْلِهِمْ إِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيحَ عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ رَسُولَ اللَّهِ
وَمَا قَتَلُوهُ وَمَا صَلَبُوهُ وَلَٰكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ ۚ وَإِنَّ الَّذِينَ
اخْتَلَفُوا فِيهِ لَفِي شَكٍّ مِنْهُ ۚ مَا لَهُمْ بِهِ مِنْ عِلْمٍ إِلَّا اتِّبَاعَ
الظَّنِّ ۚ وَمَا قَتَلُوهُ يَقِينًا ۝ بَلْ رَفَعَهُ اللَّهُ إِلَيْهِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ
عَزِيزًا حَكِيمًا ۝ وَإِنْ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ إِلَّا لَيُؤْمِنَنَّ بِهِ قَبْلَ
مَوْتِهِ ۖ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ يَكُونُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا ۝ فَبِظُلْمٍ مِنَ
الَّذِينَ هَادُوا حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ طَيِّبَاتٍ أُحِلَّتْ لَهُمْ وَبِصَدِّهِمْ
عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ كَثِيرًا ۝ وَأَخْذِهِمُ الرِّبَا وَقَدْ نُهُوا عَنْهُ وَ
أَكْلِهِمْ أَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ ۚ وَأَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ مِنْهُمْ
عَذَابًا أَلِيمًا ۝ لَٰكِنِ الرَّاسِخُونَ فِي الْعِلْمِ مِنْهُمْ وَالْمُؤْمِنُونَ يُؤْمِنُونَ
بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ وَمَا أُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ وَالْمُقِيمِينَ الصَّلَاةَ ۚ وَ
الْمُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَالْمُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ أُولَٰئِكَ
سَنُؤْتِيهِمْ أَجْرًا عَظِيمًا ۝ إِنَّا أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ كَمَا أَوْحَيْنَا إِلَىٰ نُوحٍ
وَالنَّبِيِّينَ مِنْ بَعْدِهِ ۚ وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ
وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطِ وَعِيسَىٰ وَأَيُّوبَ وَيُونُسَ وَهَارُونَ وَسُلَيْمَانَ
وَآتَيْنَا دَاوُودَ زَبُورًا ۝ وَرُسُلًا قَدْ قَصَصْنَاهُمْ عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ
وَرُسُلًا لَمْ نَقْصُصْهُمْ عَلَيْكَ ۚ وَكَلَّمَ اللَّهُ مُوسَىٰ تَكْلِيمًا ۝ رُسُلًا

★रु. २२/२ आ १०

कहने की वजह से कि हम ने मरयम के बेटे ईसा मसीह को, जो ख़ुदा के पैग़म्बर (कहलाते थे,) क़त्ल कर दिया है, (ख़ुदा ने उन को मलऊन कर दिया) और उन्होंने ईसा को क़त्ल नहीं किया और न उन्हें सूली पर चढ़ाया, बल्कि उन को उन की-सी सूरत मालूम हुई और जो लोग उन के बारे मे इख़्तिलाफ़ करते हैं, वे उन के हाल से शक में पड़े हुए हैं और बदगुमानी की पैरवी के सिवा उन को इस का कुछ भी इल्म नहीं और उन्हों ने ईसा को यक़ीनन क़त्ल नहीं किया, (१५७) बल्कि ख़ुदा ने उन को अपनी तरफ़ उठा लिया और ख़ुदा ग़ालिब और हिक्मत वाला है। (१५८) और कोई अह्ले किताब नहीं होगा, मगर उनकी मौत से पहले उनपर ईमान ले आयेगा और वह क़ियामत के दिन उन पर गवाह होंगे। (१५९) तो हम ने यहूदियों के ज़ुल्मों की वजह से (बहुत-सी) पाकीज़ा चीज़ें, जो उन को हलाल थीं, उन प रहराम कर दीं।[1] और इस वजह से भी कि वे अक्सर ख़ुदा के रास्ते से (लोगों को) रोकते थे। (१६०) और इस वजह से भी कि मना किए जाने के बावजूद सूद लेते थे और इस वजह से भी कि लोगों का माल नाहक़ खाते थे और उन में से जो काफ़िर हैं, उन के लिए हम ने दर्द देने वाला अज़ाब तैयार कर रखा है, (१६१) मगर जो लोग उन में से इल्म में पक्के हैं और जो मोमिन हैं, वे इस (किताब) पर जो तुम पर नाज़िल हुई और जो (किताबें) तुम से पहले नाज़िल हुई (सब पर) ईमान रखते हैं और नमाज़ पढ़ते हैं और ज़कात देते हैं और ख़ुदा और आख़िरत के दिन को मानते हैं। उनको हम बहुत जल्द बड़ा बदला देंगे (१६२)★

(ऐ मुहम्मद !) हम ने तुम्हारी तरफ़ उसी तरह वह्य भेजी है, जिस तरह नूह और उन से पिछले पैग़म्बरों की तरफ़ भेजी थी और इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक़ और याक़ूब और याक़ूब की औलाद और ईसा और अय्यूब और यूनुस और हारून और सुलेमान की तरफ़ भी हम ने वह्य भेजी थी और दाऊद को हम ने ज़बूर भी इनायत की थी। (१६३) और बहुत से पैग़म्बर हैं, जिनके हालात हम तुम से पहले बयान कर चुके हैं, और बहुत से पैग़म्बर हैं जिनके हालात तुमसे बयान नहीं किये। और मूसा से तो ख़ुदा ने बातें भी कीं। (१६४) (सब) पैग़म्बरों को (ख़ुदाने) ख़ुशख़बरी सुनाने वाले और डराने वाले (बना कर भेजा था), ताकि पैग़म्बरों के आने के बाद लोगों को ख़ुदा पर इल्ज़ाम का मौक़ा न रहे और ख़ुदा ग़ालिब हिक्मत वाला है। (१६५) लेकिन ख़ुदा ने जो (किताब) तुम पर

---

१. जो चीज़ें ख़ुदा ने उन लोगों पर हराम कर दी थीं, उन का बयान सूर: अन्आम आयत १४६ में है।

लाकिनिल्लाहु यश्हदु बिमा अन्ज़-ल इलै-क अन्ज़-लहू बि अिल्मिही ج वल्-मलाइ-कतु यश्हदू-न ط व कफ़ा बिल्लाहि शहीदा ط (१६६) इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू व सद्दू अन् सबीलिल्लाहि क़द् ज़ल्लू ज़लालम्-बअीदा (१६७) इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू व ज़-लमू लम् यकुनिल्लाहु लि यग़्फ़ि-र लहुम् व ला लि यह्दियहुम् तरीक़ा ﻻ (१६८) इल्ला तरी-क़ जहन्न-म ख़ालिदी-न फ़ीहा अ-ब-दन् ط व का-न ज़ालि-क अ-लल्लाहि यसीरा (१६९) या अय्युहन्नासु क़द् जा-अकुमुर्रसूलु बिल्हक़्क़ि मिर्रब्बिकुम् फ़ आमिनू ख़ैरल्लकुम् ط व इन् तक्फ़ुरू फ़ इन्-न लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि ط व कानल्लाहु अलीमन् हकीमा (१७०) या अह्लल्किताबि ला तग़्लू फ़ी दीनिकुम् व ला तक़ूलू अ-लल्लाहि इल्लल्-हक़्-क़ ط इन्नमल्-मसीहु ओसब्नु मर्य-म रसूलुल्लाहि व कलिमतुहू ج अल्क़ाहा इला मर्य-म व रूहुम्मिन्हु ز फ़ आमिनू बिल्लाहि व रुसुलिही व ला तक़ूलू सलासतुन् ط इन्तहू ख़ैरल्लकुम् ط इन्नमल्लाहु इलाहुंव्वाहिदुन् ط सुब्हानहू अंय्यकू-न लहू व-लदुन् ▩ लहू मा फ़िस्-समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि ط व कफ़ा बिल्लाहि वकीला ★ (१७१) लंय्यस्तन्किफ़ल्-मसीहु अंय्यकू-न अब्दल्-लिल्लाहि व लल्-मलाइकतुल्-मुक़र्रबू-न ط व मंय्यस्तन्किफ़् अन् अिबादतिही व यस्तक्बिर् फ़-स-यह्शुरुहुम् इलैहि जमीआ (१७२) फ़-अम्मल्लज़ी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति फ़-युवफ़्फ़ीहिम् उजूरहुम् व यज़ीदुहुम् मिन् फ़ज़्लिही ج व अम्मल्-लज़ीनस्तन्कफ़ू वस्तक्बरू फ़ युअज़्ज़िबुहुम् अज़ाबन् अलीमंव्-व ला यजिदू-न लहुम् मिन् दूनिल्लाहि वलिय्यंव्-व ला नसीरा (१७३)

مُّبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ لِئَلَّا يَكُوْنَ لِلنَّاسِ عَلَى اللّٰهِ حُجَّةٌۢ بَعْدَ
الرُّسُلِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ۝ لٰكِنِ اللّٰهُ يَشْهَدُ بِمَاۤ اَنْزَلَ
اِلَيْكَ اَنْزَلَهٗ بِعِلْمِهٖ ۚ وَالْمَلٰٓئِكَةُ يَشْهَدُوْنَ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ۝
اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ قَدْ ضَلُّوْا ضَلٰلًاۢ
بَعِيْدًا ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَظَلَمُوْا لَمْ يَكُنِ اللّٰهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ
وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ طَرِيْقًا ۝ اِلَّا طَرِيْقَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَاۤ اَبَدًا ؕ
وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ۝ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمُ الرَّسُوْلُ
بِالْحَقِّ مِنْ رَّبِّكُمْ فَاٰمِنُوْا خَيْرًا لَّكُمْ ؕ وَاِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ لِلّٰهِ مَا
فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۝ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ
لَا تَغْلُوْا فِىْ دِيْنِكُمْ وَلَا تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ ؕ اِنَّمَا الْمَسِيْحُ
عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ رَسُوْلُ اللّٰهِ وَكَلِمَتُهٗ ۚ اَلْقٰهَاۤ اِلٰى مَرْيَمَ وَ
رُوْحٌ مِّنْهُ ؗ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ۚ وَلَا تَقُوْلُوْا ثَلٰثَةٌ ؕ اِنْتَهُوْا خَيْرًا
لَّكُمْ ؕ اِنَّمَا اللّٰهُ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ؕ سُبْحٰنَهٗۤ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗ وَلَدٌ ۘ لَهٗ مَا
فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ۝ لَنْ
يَّسْتَنْكِفَ الْمَسِيْحُ اَنْ يَّكُوْنَ عَبْدًا لِّلّٰهِ وَلَا الْمَلٰٓئِكَةُ الْمُقَرَّبُوْنَ ؕ
وَمَنْ يَّسْتَنْكِفْ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَيَسْتَكْبِرْ فَسَيَحْشُرُهُمْ اِلَيْهِ جَمِيْعًا ۝
فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُوَفِّيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ وَ

▩ व. लाज़िम ★ रु. २३/३ आ ६

नाज़िल की है, उस की निस्बत ख़ुदा गवाही देता है कि उस ने अपने इल्म से नाज़िल की है और फ़रिश्ते भी गवाही देते हैं और गवाह तो ख़ुदा ही काफ़ी है। (१६६) जिन लोगों ने कुफ़्र किया और (लोगों को) ख़ुदा के रास्ते से रोका, वे रास्ते से भटक कर दूर जा पड़े। (१६७) जो लोग काफ़िर हुए और ज़ुल्म करते रहे, ख़ुदा उन को बख़्शने वाला नहीं और न उन्हें रास्ता ही दिखाएगा। (१६८) हां, दोज़ख़ का रास्ता, जिसमें वे हमेशा (जलते) रहेंगे और यह (बात) ख़ुदा को आसान है। (१६९) लोगो! ख़ुदा के पैग़म्बर तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से हक़ बात ले कर आए हैं, तो (उन पर) ईमान लाओ, (यही) तुम्हारे हक़ में बेहतर है और अगर कुफ़्र करोगे तो (जान रखो कि) जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, सब ख़ुदा ही का है और ख़ुदा सब कुछ जानने वाला (और) हिक्मत वाला है। (१७०) ऐ अह्ले किताब! अपने दीन (की बात) में हद से न बढ़ो और ख़ुदा के बारे में हक़ के सिवा कुछ न कहो। मसीह (यानी) मरयम के बेटे ईसा (न ख़ुदा थे, न ख़ुदा के बेटे, बल्कि) ख़ुदा के रसूल और उस (की बशारत) का कलिमा थे, जो उस ने मरयम की तरफ़ भेजा था और उस की तरफ से एक रूह थे, तो ख़ुदा और उस के रसूलों पर ईमान लाओ और (यह) न कहो (कि ख़ुदा) तीन (हैं, इस एतक़ाद से) बाज़ आओ कि यह तुम्हारे हक़ में बेहतर है। ख़ुदा ही अकेला माबूद है और इस से पाक है कि इस के औलाद हो। ▨ जो कुछ आसमानों में और जो कुछ ज़मीन में है सब उसी का है और ख़ुदा ही कारसाज़ काफ़ी है। (१७१) ★

मसीह इस बात से आर (लाज-शर्म) नहीं रखते कि ख़ुदा के बन्दे हों और न मुक़र्रब फ़रिश्ते (आर रखते हैं) और जो शख़्स ख़ुदा का बन्दा होने को आर की वजह समझे और सरकशी करे तो ख़ुदा सब को अपने पास जमा कर लेगा। (१७२) तो जो लोग ईमान लाये और नेक काम करते रहे, वह उन को उन का पूरा बदला देगा और अपने फ़ज़्ल से कुछ ज़्यादा भी इनायत करेगा और जिन्हों ने (बन्दा होने से) आर व इंकार और घमंड किया, उन को वह तकलीफ़ देने वाला अज़ाब

▨ व. लाज़िम ★रु. २३/३ आ ६

या अय्युहन्नासु क़द् जा-अ कुम् बुर्हानुम्-मिर्रब्बिकुम् व अन्ज़ल्ना इलैकुम् नूरम्मुबीना (१७४) फ़ अम्मल्लज़ी-न आमनू बिल्लाहि वअ्-त-समू बिही फ़-स-युद्ख़िलुहुम् फ़ी रह़्मतिम् - मिन्हु व फ़ज़्लिव् - व यह्दीहिम् इलैहि सिरातम् - मुस्तक़ीमा ⅄ (१७५) यस्तफ़्तून - क ⅄ क़ुलिल्लाहु युफ़्तीकुम् फ़िल्कलालति ⅄ इनिम्रु-उन् ह-ल-क लै-स लहू व-लदुंव्-व लहू उख़्तुन् फ़ लहा निस्फ़ु मा त-रक ⅄ व हु-व यरिसुहा इल्लम् यकुल्लहा व-लदुन् ⅄ फ़ इन् का-न-तस्नतैनि फ़-लहुमस्-सुलुसानि मिम्मा त-र-क ⅄ व इन् कानू इख़्वतर्रिजालंव्-व निसा-अन् फ़ लिज़्ज़-करि मिस्लु हज़्ज़िल् - उन्सयैनि ⅄ युबय्यिनुल्लाहु लकुम् अन् - तज़िल्लू ⅄ वल्लाहु बि कुल्लि शैइन् अलीम ★ (१७६)

يَزِيدُهُم مِّن فَضْلِهِ ۖ وَأَمَّا الَّذِينَ اسْتَنكَفُوا وَاسْتَكْبَرُوا فَيُعَذِّبُهُمْ
عَذَابًا أَلِيمًا وَلَا يَجِدُونَ لَهُم مِّن دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ۝
يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُم بُرْهَانٌ مِّن رَّبِّكُمْ وَأَنزَلْنَا إِلَيْكُمْ نُورًا
مُّبِينًا ۝ فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَاعْتَصَمُوا بِهِ فَسَيُدْخِلُهُمْ
فِي رَحْمَةٍ مِّنْهُ وَفَضْلٍ وَيَهْدِيهِمْ إِلَيْهِ صِرَاطًا مُّسْتَقِيمًا ۝
يَسْتَفْتُونَكَ قُلِ اللَّهُ يُفْتِيكُمْ فِي الْكَلَالَةِ ۚ إِنِ امْرُؤٌ هَلَكَ لَيْسَ
لَهُ وَلَدٌ وَلَهُ أُخْتٌ فَلَهَا نِصْفُ مَا تَرَكَ ۚ وَهُوَ يَرِثُهَا إِن لَّمْ يَكُن
لَّهَا وَلَدٌ ۚ فَإِن كَانَتَا اثْنَتَيْنِ فَلَهُمَا الثُّلُثَانِ مِمَّا تَرَكَ ۚ وَإِن كَانُوا
إِخْوَةً رِّجَالًا وَنِسَاءً فَلِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْأُنثَيَيْنِ ۗ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ
أَن تَضِلُّوا ۗ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝
سُورَةُ الْمَائِدَةِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ مِائَةٌ وَعِشْرُونَ آيَةً وَسِتَّةَ عَشَرَ رُكُوعًا
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَوْفُوا بِالْعُقُودِ ۚ أُحِلَّتْ لَكُم بَهِيمَةُ الْأَنْعَامِ
إِلَّا مَا يُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ غَيْرَ مُحِلِّي الصَّيْدِ وَأَنتُمْ حُرُمٌ ۗ إِنَّ اللَّهَ يَحْكُمُ
مَا يُرِيدُ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُحِلُّوا شَعَائِرَ اللَّهِ وَلَا الشَّهْرَ
الْحَرَامَ وَلَا الْهَدْيَ وَلَا الْقَلَائِدَ وَلَا آمِّينَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ يَبْتَغُونَ
فَضْلًا مِّن رَّبِّهِمْ وَرِضْوَانًا ۚ وَإِذَا حَلَلْتُمْ فَاصْطَادُوا ۚ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ

५ सूरतुल्मा-इदति ५१२

(मदनी) इस सूर: में अरबी के १३४६४ अक्षर, २८४२ शब्द, १२० आयतें और १६ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू औफ़ू बिल्अुक़ूदि ⅄ उहिल्लत् लकुम् बहीमतुल्-अन्आमि इल्ला मा युत्ला अलैकुम् ग़ै-र मुहिल्लिस्सैदि व अन्तुम् हुरुमुन् ⅄ इन्नल्ला-ह यह़्कुमु मा युरीद (१) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तुहिल्लू शआ-इरल्लाहि व लश्शह्‌रल्-ह़रा-म व लल्हद-य व लल्क़ला-इ-द व ला आम्मीनल्-बैतल्-ह़रा-म यब्तग़ू-न फ़ज़्-लम्-मिर्रब्बिहिम् व रिज़्वानन् ⅄ व इज़ा ह़-लल्तुम् फ़स्तादू ⅄ व ला यज्रिमन्नकुम् शन-आनु क़ौमिन् अन् सद्दूकुम् अनिल्-मस्जिदिल्-ह़रामि अन् तअ्-तदू ▨ व तआवनू अ-लल्बिर्रि वत्तक़्वा ⅄ व ला तआवनू अ-लल्-इस्मि वल्अुद्वानि ⅄ वत्तक़ुल्ला-ह ⅄ इन्नल्ला-ह शदीदुल्-अिक़ाब ● (२)

★रु. २४/४ आ ५ ▨ व. लाज़िम ●रुबुअ १/४

देगा। (१७३) और ये लोग ख़ुदा के सिवा अपना हामी और मददगार न पाएंगे। (१७४) लोगो! तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से तुम्हारे पास (रोशन) दलील आ चुकी है और हम ने (कुफ्र और भटकाव का अंधेरा दूर करने को) तुम्हारी तरफ़ चमकता हुआ नूर भेज दिया है। पस जो लोग ख़ुदा पर ईमान लाये और उस (के दीन की रस्सी) को मज़बूत पकड़े रहे, उन को वह अपनी रहमत और फ़ज़्ल (के बहिश्तों) में दाख़िल करेगा और अपनी तरफ़ (पहुंचने का) सीधा रास्ता दिखाएगा। (१७५) (ऐ पैग़म्बर!) लोग तुम से (कलाला के बारे में ख़ुदा का) हुक्म मालूम करते हैं।[1] कह दो कि ख़ुदा कलाला के बारे में यह हुक्म देता है कि अगर कोई ऐसा मर्द मर जाए, जिस के औलाद न हो (और न मां-बाप) और उस के बहन हो तो उस को भाई के तर्के में से आधा हिस्सा मिलेगा और अगर बहन मर जाए और उस के औलाद न हो तो उस के तमाम माल का वारिस भाई होगा और अगर (मरने वाले भाई की) दो बहनें हों तो दोनों को भाई के तर्के में से दो तिहाई और अगर भाई और बहन यानी मर्द और औरतें मिले-जुले वारिस हों तो मर्द का हिस्सा दो औरतों के हिस्से के बराबर है, ख़ुदा (ये अह्काम) तुम से इस लिए बयान फ़रमाता है कि भटकते न फिरो और ख़ुदा हर चीज़ जानता है। (१७६)★

५ सूर: माइद: ११२

सूर: माइद: मदनी है और इस में एक सौ बीस आयतें और और सोलह रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

ऐ ईमान वालो! अपने इक़रारों को पूरा करो। तुम्हारे लिए चार पाए जानवर, (जो चरने वाले हैं,) हलाल कर दिए गये हैं, अलावा उन के जो तुम्हें पढ़ कर सुनाये जाते हैं, मगर (हज के) एहराम में शिकार को हलाल न जानना। ख़ुदा जैसा चाहता है, हुक्म देता है। (१) मोमिनो! ख़ुदा के नाम की चीज़ों की बे-हुर्मती न करना और न अदब के महीने की और न क़ुर्बानी के जानवरों की (जो ख़ुदा की नज़र कर दिए गये हों और) जिनके गलों में पट्टे बंधे हों। और न उन लोगों की, जो इज़्ज़त के घर (यानी बैतुल्लाह) को जा रहे हों (और) अपने परवरदिगार के फ़ज़्ल और उस की ख़ुश्नूदी की तलब रखते हों और जब एहराम उतार दो, तो (फिर अख़्तियार है कि) शिकार करो और लोगों की दुश्मनी इस वजह से कि उन्होंने तुमको इज़्ज़त वाली मस्जिद से रोका था, तुम्हें इस बात पर तैयार न करे कि तुम उन पर ज़्यादती करने लगो ▨ और (देखो) नेकी और परहेज़गारी के कामों में एक दूसरे की मदद किया करो और गुनाह और ज़ुल्म की बातों में मदद न किया करो और ख़ुदा से डरते

---

१. कलाला इसे कहते हैं कि जिस का बेटा और बाप न हो कि असल वारिस यही हैं तो उस वक़्त उस के भाई-बहन को बेटा-बेटी का हुक्म है और अगर सगे न हों तो यही हुक्म सौतेले का है। एक बहन तो आधा और दो बहन हों, तो तिहाई उस माल से जो छोड़ मरा और अगर भाई-बहन हों तो मर्द को दोहरा हिस्सा और औरत को इकहरा और जो निरे भाई हों तो उन को फ़रमाया कि वह बहन के माल के वारिस हों यानी हिस्सा तै नहीं वह 'अस्बा' हैं। अगर बेटी हो और बहन हो तो हिस्सा बेटी को और बहन 'अस्बा है यानी हिस्सेदारों से बचे तो अस्बा लेवे।

★रु. २४/४ आ ५ ▨ व. लाज़िम

हुरिमत् अलैकुमुल्मैततु वद्दमु व लह्मुल्-खिन्ज़ीरि व मा उहिल्-ल लि ग़ैरिल्लाहि बिही वल्मुन्ख़निक़तु वल्मौक़ूज़तु वल्मुतरद्दियतु वन्नतीहतु व मा अ-क-लस्सबुअु इल्ला मा ज़क्कैतुम् ۫ व मा ज़ुबि-ह अ-लन्नुसुबि व अन् तस्तक़्सिमू बिल्-अज़्लामि ط ज़ालिकुम् फ़िस्क़ुन् ط अल्यौ-म य-इसल्लज़ी-न क-फ़रू मिन् दीनिकुम् फ़ ला तख़्शौहुम् वख़्शौनि ط अल्यौ-म अक्मल्तु लकुम् दीनकुम् व अत्मम्तु अलैकुम् निअ्-मती व रज़ीतु लकुमुल्-इस्ला-म दीनन् ط फ़ मनिज़्तुर-र फ़ी मख़्-म-स़तिन् ग़ै-र मु-त-जानिफ़िल्लि इस्मिन् ج फ़ इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम (३) यस्अलून-क माज़ा उहिल्-ल लहुम् ط क़ुल् उहिल्-ल लकुमुत्-तय्यिबातु ج व मा अल्लम्तुम् मिनल्-जवारिहि मुकल्लिबी-न तुअ़ल्लिमूनहुन्-न मिम्मा अल्-ल-मकुमुल्लाहु ز फ़ कुलू मिम्मा अम्सक-न अलैकुम् वज़्कुरुस्मल्लाहि अलैहि ص वत्तक़ुल्ला-ह ط इन्नल्ला-ह सरीअुल्हिसाब (४) अल्यौ-म उहिल्-ल लकुमुत्तय्यिबातु ط व तआमुल्लज़ी-न ऊतुल्-किता-ب हिल्लुल्लकुम् ص व तआमुकुम् हिल्लुल्लहुम् ز वल्मुह्सनातु मिनल्-मुअ्मिनाति वल्मुह्सनातु मिनल्लज़ी-न ऊतुल्-किता-ब मिन् क़ब्लिकुम् इज़ा आतैतुमूहुन्-न उजूरहुन्-न मुह्सिनी-न ग़ै-र मुसाफ़िही-न व ला मुत्तख़िज़ी अख़्दानिन् ط व मंय्यक्फ़ुर् बिल्ईमानि फ़-क़द् हबि-त अ-मलुहू ز व हु-व फ़िल्-आख़िरति मिनल्-ख़ासिरीन ★ (५)

شَنَاٰنُ قَوْمٍ اَنْ صَدُّوْكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اَنْ تَعْتَدُوْا ۘ وَتَعَاوَنُوْا
عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوٰى ۪ وَلَا تَعَاوَنُوْا عَلَى الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ۪ وَاتَّقُوا اللّٰهَ
اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝ حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ وَالدَّمُ وَلَحْمُ
الْخِنْزِيْرِ وَمَاۤ اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ وَالْمُنْخَنِقَةُ وَالْمَوْقُوْذَةُ وَالْمُتَرَدِّيَةُ
وَالنَّطِيْحَةُ وَمَاۤ اَكَلَ السَّبُعُ اِلَّا مَا ذَكَّيْتُمْ ۫ وَمَا ذُبِحَ عَلَى النُّصُبِ
وَاَنْ تَسْتَقْسِمُوْا بِالْاَزْلَامِ ؕ ذٰلِكُمْ فِسْقٌ ؕ اَلْيَوْمَ يَىِٕسَ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا مِنْ دِيْنِكُمْ فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِ ؕ اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ
دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا ؕ
فَمَنِ اضْطُرَّ فِيْ مَخْمَصَةٍ غَيْرَ مُتَجَانِفٍ لِّاِثْمٍ ۙ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ
رَّحِيْمٌ ۝ يَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَاۤ اُحِلَّ لَهُمْ ؕ قُلْ اُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبٰتُ ۙ وَ
مَا عَلَّمْتُمْ مِّنَ الْجَوَارِحِ مُكَلِّبِيْنَ تُعَلِّمُوْنَهُنَّ مِمَّا عَلَّمَكُمُ اللّٰهُ ۫ فَكُلُوْا
مِمَّاۤ اَمْسَكْنَ عَلَيْكُمْ وَاذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهِ ۪ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ
اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝ اَلْيَوْمَ اُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبٰتُ ؕ وَطَعَامُ الَّذِيْنَ
اُوْتُوا الْكِتٰبَ حِلٌّ لَّكُمْ ۪ وَطَعَامُكُمْ حِلٌّ لَّهُمْ ۫ وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ
الْمُؤْمِنٰتِ وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ اِذَاۤ
اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ مُحْصِنِيْنَ غَيْرَ مُسٰفِحِيْنَ وَلَا مُتَّخِذِيْۤ
اَخْدَانٍ ؕ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِالْاِيْمَانِ فَقَدْ حَبِطَ عَمَلُهٗ ۫ وَهُوَ فِي

★रु. १/५ आ ५

रहो। कुछ शक नहीं कि ख़ुदा का अज़ाब सख़्त है ●२) तुम पर मरा हुआ जानवर और (बहता) लहू और सुअर का गोश्त और जिस चीज़ पर ख़ुदा के सिवा किसी और का नाम पुकारा जाए और जो जानवर गला घुट कर मर जाए और जो चोट लगकर मर जाए और जो गिरकर मर जाए और जो सींग लग कर मर जाए, ये सब हराम हैं और वे जानवर भी, जिसको दरिंदे फाड़ खाएं, मगर जिसको तुम (मरने से पहले) ज़िब्ह कर लो और वे जानवर भी, जो थान पर ज़िब्ह किया जाए और यह भी कि पांसों[1] से क़िस्मत मालूम करो। ये सब गुनाह (के काम) हैं। आज काफ़िर तुम्हारे दीन से ना-उम्मीद हो गये हैं, तो उन से मत डरो और मुझी से डरते रहो (और) आज हम ने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन कामिल कर दिया और अपनी नेमतें तुम पर पूरी कर दीं और तुम्हारे लिए इस्लाम को दीन पसन्द किया, हां, जो शख़्स भूख में ना-चार हो जाए, (बशर्ते कि) गुनाह की तरफ़ मायल (झुकाव) न हो, तो ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है।[2] (३) तुम से पूछते हैं कि कौन-कौन-सी चीज़ें उन के लिए हलाल हैं, (उन से) कह दो कि सब पाकीज़ा चीज़ें तुम को हलाल हैं। और वह शिकार भी हलाल है, जो तुम्हारे लिए उन शिकारी जानवरों ने पकड़ा हो, जिन को तुम ने सधा रखा हो और जिस (तरीक़े) से ख़ुदा ने तुम्हें (शिकार करना) सिखाया है (उस तरीक़े से) तुम ने उन को सिखाया हो, तो जो शिकार वे तुम्हारे लिए पकड़ रखें, उस को खा लिया करो और (शिकारी जानवरों के छोड़ते वक़्त) ख़ुदा का नाम ले लिया करो। और ख़ुदा से डरते रहो। बेशक ख़ुदा जल्द हिसाब लेने वाला है। (४) आज तुम्हारे लिए सब पाकीज़ा चीज़ें हलाल कर दी गयीं और अह्ले किताब का खाना भी तुम को हलाल है और तुम्हारा खाना उन को हलाल है और पाकदामन मोमिन औरतें और पाकदामन अह्ले किताब औरतें भी (हलाल हैं), जब कि उन का मह्र दे दो और उन से अिफ़्फ़त (पाकदामनी) रखनी मक़्सूद हो, न खुली बद-कारी करनी और न छिपी दोस्ती करनी और जो शख़्स ईमान का मुन्किर हुआ, उस के अमल ज़ाया हो गये और वह आख़िरत में नुक़्सान पाने वालों में होगा। (५) ★

---

१. अरब जाहिलियत में यह काम करते थे कि तीन पांसे होते थे। एक पर लिखा था, यह काम कर, दूसरे पर 'मत कर', तीसरा ख़ाली था, यानी उस पर कुछ नहीं लिखा होता था। जब वे कोई काम करना चाहते तो पांसे डालते। अगर हुक्म निकलता, तो इस काम को करते, अगर इन्कार निकलता तो न करते और अगर ख़ाली निकलता, तो फिर डालते। बुख़ारी, मुस्लिम में आया है कि जनाब रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब काबे में दाख़िल हुए तो वहां इब्राहीम और इस्माईल अलै० की तस्वीरें पायीं। उन के हाथों में पांसे थे। आप ने फ़रमाया, ख़ुदा इन लोगों को हलाक करे। ये ख़ूब जानते हैं कि इब्राहीम और इस्माईल ने कभी पांसा नहीं फेंका। मुजाहिद कहते हैं कि वे पांसे जुआ खेलने के थे, मगर इस में कलाम है, क्योंकि ख़ुदा ने पांसों और जुए में फ़र्क़ किया है। पांसों को 'अज़लाम' कहा है, जुए को मैसर। हां, यों कहा जा सकता है कि कभी उन को इस्तिख़ारे में और कभी जुए में इस्तेमाल करते थे। ख़ुदा ने इस काम को गुनाह कहा और इस से रोका।

२. रिवायत है कि हातिम का बेटा अदी और ज़ैद बिन ख़ैल आंहज़रत सल्ल० के पास आये और कहा, या रसूलल्लाह ! हम ऐसे मकान में हैं कि वहां कुत्ते शिकार करते हैं। हम उन में से कुछ को ज़िब्ह करते हैं और कुछ को पाल लेते हैं और कुछ को कुत्ते बर्बाद कर देते हैं। यह शिकार हलाल है या मुर्दार। इस पर अगली आयत उतरी।

● रुबुअ १/४ ★ रु. १/५ आ ५

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इज़ा क़ुम्तुम् इलस्सलाति फ़ग़्सिलू वुजूहकुम् व ऐदि-यकुम् इलल्-मराफ़िक़ि वम्सहू बि रुऊसिकुम् वअर्जु लकुम् इलल्कअ्-बैनि ط व इन् कुन्तुम् जुनुबन् फ़त्तह-हरू ط व इन् कुन्तुम् मर्ज़ा औ अला स-फ़रिन् औ जा-अ अ-हदुम्-मिन्कुम् मिनल्ग़ा-इति औ लामस्तुमुन्निसा-अ फ़-लम् तजिदू मा-अन् फ़-त-यम्ममू सओदन् तय्यिबन् फ़म्सहू बि वुजूहिकुम् व ऐदीकुम् मिन्हु ط मा युरीदुल्लाहु लि यज्-अ-ल अलैकुम् मिन् ह़-रजिंव्-व लाकिंय्युरीदु लि युतह्हि-रकुम् व लि युतिम्-म निअ्-म-तहू अलैकुम् ल-अल्लकुम् तश्कुरून (६) वज़्कुरू निअ्-मतल्लाहि अलैकुम् व मीसाक़हुल्लज़ी वास-क़कुम् बिही ۙ इज़् क़ुल्तुम् समिअ्-ना व अ-तअ्-ना ز वत्तक़ुल्ला-ह ط इन्नल्ला-ह अलीमुम्-बि-ज़ातिस्सुदूर (७) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू कूनू क़व्वामी-न लिल्लाहि शु-हदा-अ बिल्क़िस्ति ز व ला यज्रिमन्नकुम् शनआनु क़ौमिन् अला अल्ला तअ्-दिलू ط इअ्-दिलू قف हु-व अक़रबु लित्तक़्वा ز वत्तक़ुल्ला-ह ط इन्नल्ला-ह ख़बीरुम्-बिमा तअ्-मलू-न (८) व-अ़-दल्लाहुल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति ۙ लहुम् मग़्फ़ि-र-तुंव-व अज्रुन् अ़ज़ीम (९) वल्लज़ी-न क-फ़रू व कज़्ज़बू बि आयातिना उला-इ-क अस्हाबुल्-जहीम (१०) या अय्युहल्लज़ी-न आमनुज़्कुरू निअ्-म-तल्लाहि अलैकुम् इज़् हम्-म क़ौमुन् अंय्यब्सुतू इलैकुम् ऐदियहुम् फ़-कफ़्-फ़ ऐदियहुम् अन्कुम् ج वत्तक़ुल्ला-ह ط व अ़-लल्लाहि फ़ल्-य-त-वक्कलिल्-मुअ्मिनून ★ (११)

الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا قُمْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ
فَاغْسِلُوْا وُجُوْهَكُمْ وَاَيْدِيَكُمْ اِلَى الْمَرَافِقِ وَامْسَحُوْا بِرُءُوْسِكُمْ
وَاَرْجُلَكُمْ اِلَى الْكَعْبَيْنِ ۭ وَاِنْ كُنْتُمْ جُنُبًا فَاطَّهَّرُوْا ۭ وَاِنْ كُنْتُمْ
مَّرْضٰٓى اَوْ عَلٰي سَفَرٍ اَوْ جَاۗءَ اَحَدٌ مِّنْكُمْ مِّنَ الْغَاۗىِٕطِ اَوْ لٰمَسْتُمُ
النِّسَاۗءَ فَلَمْ تَجِدُوْا مَاۗءً فَتَيَمَّمُوْا صَعِيْدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوْا بِوُجُوْهِكُمْ
وَاَيْدِيْكُمْ مِّنْهُ ۭ مَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيَجْعَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْ حَرَجٍ وَّلٰكِنْ
يُّرِيْدُ لِيُطَهِّرَكُمْ وَلِيُتِمَّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝ وَ
اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَمِيْثَاقَهُ الَّذِيْ وَاثَقَكُمْ بِهٖٓ ۙ اِذْ قُلْتُمْ
سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ۡ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ لِلّٰهِ شُهَدَاۗءَ بِالْقِسْطِ ۡ وَلَا
يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ عَلٰٓي اَلَّا تَعْدِلُوْا ۭ اِعْدِلُوْا ۣ هُوَ اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى ۡ
وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ عَظِيْمٌ ۝ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا
وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا
اذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ هَمَّ قَوْمٌ اَنْ يَّبْسُطُوْٓا اِلَيْكُمْ
اَيْدِيَهُمْ فَكَفَّ اَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ وَعَلَي اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ
الْمُؤْمِنُوْنَ ۝ وَلَقَدْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ ۚ وَبَعَثْنَا

★रु. २/६ आ ६

मोमिनो ! तुम जब नमाज़ पढ़ने का इरादा किया करो, तो मुंह और कुहनियों तक हाथ[1] धो लिया करो और सर का मसह कर लिया करो और टख़नों तक पांव (धो लिया करो) और अगर नहाने की ज़रूरत हो तो (नहा कर) पाक हो जाया करो और अगर बीमार हो या सफ़र में हो या कोई तुम में से बैतुल-ख़ला (टट्टी) से हो कर आया हो या तुम औरतों से हम-बिस्तर हुए हो और तुम्हें पानी न मिल सके तो पाक मिट्टी लो और उस से मुंह और हाथों का मसह (यानी तयम्मुम) कर लो। ख़ुदा तुम पर किसी तरह की तंगी नहीं करना चाहता, बल्कि यह चाहता है कि तुम्हें पाक करे और अपनी नेमतें तुम पर पूरी करे, ताकि तुम शुक्र करो। (६) और ख़ुदा ने तुम पर जो एहसान किये हैं, उन को याद करो और उस अह्द को भी, जिस का तुम से क़ौल लिया था, (यानी) जब तुम ने कहा था कि हम ने (ख़ुदा का हुक्म) सुन लिया और क़ुबूल किया और ख़ुदा से डरो। कुछ शक नहीं कि ख़ुदा दिलों की बातों (तक) को जानता है। (७) ऐ ईमान वालो ! ख़ुदा के लिए इंसाफ़ की गवाही देने के लिए खड़े हो जाया करो और लोगों की दुश्मनी तुम को इस बात पर तैयार न करे कि इंसाफ़ छोड़ दो। इंसाफ़ किया करो कि यही परहेज़गारी की बात है और ख़ुदा से डरते रहो। कुछ शक नहीं कि ख़ुदा तुम्हारे तमाम कामों से ख़बरदार है। (८) जो लोग ईमान लाये और नेक काम करते रहे, उन से ख़ुदा ने वायदा फ़रमाया है कि उन के लिए बख़्शिश और बड़ा अज्र है। (९) और जिन्हों ने कुफ़्र किया और हमारी आयतों को झुठलाया, वे जहन्नमी हैं। (१०) ऐ ईमान वालो ! ख़ुदा ने जो तुम पर एहसान किया है, उस को याद करो, जब एक जमाअत ने इरादा किया कि तुम पर हाथ उठाएं, तो उस ने उन के हाथ रोक दिए और ख़ुदा से डरते रहो और मोमिनों को ख़ुदा ही पर भरोसा रखना चाहिए। (११) ★

---

१. कुछ तफ़्सीर लिखने वालों ने लिखा है कि इस्लाम के शुरू में हर नमाज़ के लिए वुज़ू करना वाजिब था, मगर बाद में वह भी वाजिब न रहा। एक हदीस में है कि हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हर नमाज़ के लिए वुज़ू किया करते थे, जब फ़त्हे मक्का का दिन आया तो आप ने वुज़ू कर के दोनों मोज़ों पर मसह किया और एक ही वुज़ू से कई नमाज़ें पढ़ीं। हज़रत उमर रज़ि० ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह ! आप ने वह काम किया है जो पहले कभी नहीं करते थे। आप ने फ़रमाया, मैं ने यह काम जान-बूझ कर किया है।

★रु. २/६ आ ६

व ल-क़द् अ-ख़-ज़ल्लाहु मीसा-क़ बनी इस्रा-ई-ल व ब-अ़स्ना मिन्हुमुस्नै-अ-श-र नक़ीबन् व क़ालल्लाहु इन्नी म-अ़कुम् लइन् अ-क़म्तुमुस्सला-त व आतैतुमुज़्-ज़का-त व आमन्तुम् बि रुसुली व अ़ज़्ज़र्तुमूहुम् व अक़्रज़्तुमुल्ला-ह क़र्ज़न् ह़-स-नल्-ल उकफ़्फ़िरन्-न अ़न्कुम् सय्यिआतिकुम् व ल-उद्ख़िलन्नकुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह़्तिहल्-अन्हारु फ़-मन् क-फ़-र बअ़्-द ज़ालि-क मिन्कुम् फ़-क़द् ज़ल्-ल सवा-अस्सबील (१२) फ़ बिमा नक़्ज़िहिम् मीसाक़हुम् लअ़न्नाहुम् व ज-अ़ल्ना क़ुलूबहुम् क़ासिय-तन् युह़र्रिफ़ूनल्कलि-म अ़म्मवाज़िअ़िही व नसू ह़ज़्ज़म्मिम्मा ज़ुक्किरू बिही व ला तज़ालु तत्तलिअ़ु अ़ला ख़ा-इनतिम्-मिन्हुम् इल्ला क़लीलम्-मिन्हुम् फ़अ़्-फ़ु अ़न्हुम् वस्फ़ह़् इन्नल्ला-ह युह़िब्बुल्-मुह़्सिनी-न (१३) व मिनल्लज़ी-न क़ालू इन्ना नसारा अ-ख़ज़्ना मीसाक़हुम् फ़-नसू ह़ज़्ज़म्मिम्मा ज़ुक्किरू बिही फ़ अग़्रैना बैनहुमुल्-अ़दाव-त वल्बग़्ज़ा-अ इला यौमिल् - क़ियामति व सौ-फ़ युनब्बिउ-हुमुल्लाहु बिमा कानू यस्नअ़ून (१४) या अह्लल्-किताबि क़द् जा-अकुम् रसूलुना युबय्यिनु लकुम् कसीरम्मिम्मा कुन्तुम् तुख़्फ़ू-न मिनल्किताबि व यअ़्-फ़ू अ़न् कसीरिन् क़द् जा-अकुम् मिनल्लाहि नूरुंव्-व किताबुम्-मुबीन (१५) यह्दी बिहिल्लाहु मनित्त-ब-अ रिज़्वानहू सुबुलस्सलामि व युख़्रिजुहुम् मिनज़्ज़ुलुमाति इलन्नूरि बि इज़्निही व यह्दीहिम् इला सिरातिम्-मुस्तक़ीम (१६) ल-क़द् क-फ़-रल्लज़ी-न क़ालू इन्नल्ला-ह हुवल्मसीहुब्नु मर्य-म क़ुल् फ़ मंय्यम्लिकु मिनल्लाहि शैअन् इन् अरा-द अंय्युह्लिकल्-मसीहब्-न मर्य-म उम्महू व मन् फ़िल्अर्ज़ि जमीअ़न् व लिल्लाहि मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बैनहुमा यख़्लुक़ु मा यशा-उ वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (१७)

مِنْهُمُ اثْنَيْ عَشَرَ نَقِيبًا ۖ وَقَالَ اللَّهُ إِنِّي مَعَكُمْ ۖ لَئِنْ أَقَمْتُمُ
الصَّلَاةَ وَآتَيْتُمُ الزَّكَاةَ وَآمَنْتُمْ بِرُسُلِي وَعَزَّرْتُمُوهُمْ وَ
أَقْرَضْتُمُ اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا لَأُكَفِّرَنَّ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَلَأُدْخِلَنَّكُمْ
جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۚ فَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذَٰلِكَ مِنْكُمْ
فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ ﴿١٢﴾ فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِيثَاقَهُمْ لَعَنَّاهُمْ وَ
جَعَلْنَا قُلُوبَهُمْ قَاسِيَةً ۖ يُحَرِّفُونَ الْكَلِمَ عَنْ مَوَاضِعِهِ ۙ وَنَسُوا
حَظًّا مِمَّا ذُكِّرُوا بِهِ ۚ وَلَا تَزَالُ تَطَّلِعُ عَلَىٰ خَائِنَةٍ مِنْهُمْ إِلَّا
قَلِيلًا مِنْهُمْ ۖ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاصْفَحْ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ﴿١٣﴾
وَمِنَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّا نَصَارَىٰ أَخَذْنَا مِيثَاقَهُمْ فَنَسُوا حَظًّا مِمَّا
ذُكِّرُوا بِهِ فَأَغْرَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ ۚ
وَسَوْفَ يُنَبِّئُهُمُ اللَّهُ بِمَا كَانُوا يَصْنَعُونَ ﴿١٤﴾ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ قَدْ
جَاءَكُمْ رَسُولُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ كَثِيرًا مِمَّا كُنْتُمْ تُخْفُونَ مِنَ الْكِتَابِ
وَيَعْفُو عَنْ كَثِيرٍ ۚ قَدْ جَاءَكُمْ مِنَ اللَّهِ نُورٌ وَكِتَابٌ مُبِينٌ ﴿١٥﴾
يَهْدِي بِهِ اللَّهُ مَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَهُ سُبُلَ السَّلَامِ وَيُخْرِجُهُمْ مِنَ
الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ بِإِذْنِهِ وَيَهْدِيهِمْ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿١٦﴾ لَقَدْ
كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ ۚ قُلْ فَمَنْ يَمْلِكُ
مِنَ اللَّهِ شَيْئًا إِنْ أَرَادَ أَنْ يُهْلِكَ الْمَسِيحَ ابْنَ مَرْيَمَ وَأُمَّهُ وَ

और ख़ुदा ने बनी इस्राईल से इक़रार लिया और उन में हम ने बारह सरदार मुक़र्रर किये फिर ख़ुदा ने फ़रमाया कि मैं तुम्हारे साथ हूं। अगर तुम नमाज़ पढ़ते और ज़कात देते रहोगे और पैग़म्बरों पर ईमान लाओगे और उन की मदद करोगे और ख़ुदा को क़र्ज़े हसना दोगे, तो मैं तुम से तुम्हारे गुनाह दूर कर दूंगा और तुम को बहिश्तों में दाखिल करूंगा, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, फिर जिस ने इस के बाद तुम में से कुफ़ किया, वह सीधे रास्ते से भटक गया। (१२) तो उन लोगों के अह्द तोड़ देने की वजह से हम ने उन पर लानत की, और उन के दिलों को सख़्त कर दिया। ये लोग कलिमात (किताब) को अपनी जगहों से बदल देते हैं और जिन बातों की उन को नसीहत की गयी थी, उन का भी एक हिस्सा भुला बैठे और थोड़े आदमियों के सिवा हमेशा उन की (एक न एक) ख़ियानत की ख़बर पाते रहते हो, तो उन की ख़ताएं माफ़ कर दो और (उन से) दर-गुज़र करो कि ख़ुदा एहसान करने वालों को दोस्त रखता है। (१३) और जो लोग (अपने को) कहते हैं कि हम नसारा हैं, हम ने उन से भी अह्द लिया था, मगर उन्हों ने भी उस नसीहत का, जो उन को की गयी थी, एक हिस्सा भुला दिया, तो हम ने उन के आपस में क़ियामत तक के लिए दुश्मनी और कीना डाल दिया और जो कुछ वे करते रहे, ख़ुदा बहुत जल्द उन को उस से आगाह करेगा। (१४) ऐ अह्ले किताब! तुम्हारे पास हमारे (आख़िरी) पैग़म्बर आ गये हैं कि जो कुछ तुम (ख़ुदा की) किताब में छिपाते थे, वह इस में से बहुत कुछ तुम्हें खोल-खोल कर बता देते हैं और तुम्हारे बहुत-से क़ुसूर माफ़ कर देते हैं। बेशक तुम्हारे पास ख़ुदा की तरफ़ से नूर और रोशन किताब आ चुकी है, (१५) जिस से ख़ुदा अपनी रिज़ा पर चलने वालों को निजात के रास्ते दिखाता है और अपने हुक्म से अंधेरे में से निकाल कर रोशनी की तरफ़ ले जाता और उनको सीधे रास्ते पर चलाता है। (१६) जो लोग इस बात के क़ायल हैं कि ईसा बिन मरयम ख़ुदा हैं, वे बेशक काफ़िर हैं। (उन से) कह दो कि अगर ख़ुदा ईसा बिन मरयम और उन की वालिदा को और जितने लोग ज़मीन में हैं, सब को हलाक करना चाहे, तो उसके आगे किस की पेश चल सकती है? और आसमान और ज़मीन और जो कुछ इन दोनों में है, सब पर ख़ुदा ही की बादशाही है। वह जो चाहता है पैदा करता है और ख़ुदा

व क़ालतिल्-यहूदु वन्नसारा नह्नु अब्ना-उल्लाहि व अहिब्बा-उहू, क़ुल् फ़-लि-म युअज़्ज़िबुकुम् बि ज़ुनूबिकुम्, बल् अन्तुम् बशरुम्मिम्मन् ख़-ल-क़, यग़्फ़िरु लि मंय्यशा-उ व युअज़्ज़िबु मंय्यशा-उ, व लिल्लाहि मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बैनहुमा, व इलैहिल्-मसीर (१८) या अह्लल् - किताबि क़द् जा-अकुम् रसूलुना युबय्यिनु लकुम् अला फ़त्रतिम्-मिनर्रुसुलि अन् तक़ूलू मा जा-अना मिम्बशीरिंव्-व ला नज़ीरिन्, फ़-क़द् जा - अकुम् बशीरुंव्-व नज़ीरुन्, वल्लाहु अला कुल्लि शैइन् क़दीर ★ (१९) व इज़् क़ा - ल मूसा लि क़ौमिही याक़ौमिज़्कुरू निअ्-म-तल्लाहि अलैकुम् इज़् ज-अ-ल फ़ीकुम् अम्बिया-अ व ज - अ - लकुम् मुलूकंव् -व आताकुम् मालम् युअ्ति अ-ह-दम्मिनल्-आलमीन (२०) या क़ौमिद्ख़ुलुल्-अर्ज़ल्-मुक़द्-द-स-तल्-लती क-त-बल्लाहु लकुम् व ला तर्तद्दू अला अद्बारिकुम् फ़-तन्क़लिबू ख़ासिरीन (२१) क़ालू या मूसा इन-न फ़ीहा क़ौमन् जब्बारी-न व इन्ना लन् नद्ख़ुलहा हत्ता यख़्रुजू मिन्हा फ़ इंय्यख़्रुजू मिन्हा फ़ इन्ना दाख़िलून (२२) क़ा-ल रजुलानि मिनल्लज़ी-न यख़ाफ़ू-न अन-अ-मल्लाहु अलैहिमद्ख़ुलू अलैहिमुल्बा-ब फ़ इज़ा द-ख़ल्तुमूहु फ़-इन्नकुम् ग़ालिबू - न व अ - लल्लाहि फ़ - त-वक्कलू इन् कुन्तुम् - मुअ्मिनीन (२३) क़ालू या मूसा इन्ना लन्नद्ख़ुलहा अ - ब दम् - मा दामू फ़ीहा फ़ज़्हब् अन्-त व रब्बु-क फ़ क़ातिला इन्ना-हाहुना क़ाअिदून (२४)

مَنْ فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا ۗ وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا
بَيْنَهُمَا ۚ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٧﴾
وَقَالَتِ الْيَهُودُ وَالنَّصٰرٰى نَحْنُ أَبْنٰؤُا اللَّهِ وَأَحِبّٰؤُهُ ۚ قُلْ فَلِمَ
يُعَذِّبُكُمْ بِذُنُوبِكُمْ ۖ بَلْ أَنْتُمْ بَشَرٌ مِمَّنْ خَلَقَ ۚ يَغْفِرُ لِمَنْ يَشَاءُ
وَيُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ ۚ وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا
وَإِلَيْهِ الْمَصِيرُ ﴿١٨﴾ يٰأَهْلَ الْكِتٰبِ قَدْ جَاءَكُمْ رَسُولُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ
عَلٰى فَتْرَةٍ مِنَ الرُّسُلِ أَنْ تَقُولُوا مَا جَاءَنَا مِنْ بَشِيرٍ وَلَا
نَذِيرٍ ۖ فَقَدْ جَاءَكُمْ بَشِيرٌ وَنَذِيرٌ ۗ وَاللَّهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ
قَدِيرٌ ﴿١٩﴾ وَإِذْ قَالَ مُوسٰى لِقَوْمِهِ يٰقَوْمِ اذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ
إِذْ جَعَلَ فِيكُمْ أَنْبِيَاءَ وَجَعَلَكُمْ مُلُوكًا ۖ وَآتٰكُمْ مَا لَمْ يُؤْتِ
أَحَدًا مِنَ الْعٰلَمِينَ ﴿٢٠﴾ يٰقَوْمِ ادْخُلُوا الْأَرْضَ الْمُقَدَّسَةَ الَّتِي
كَتَبَ اللَّهُ لَكُمْ وَلَا تَرْتَدُّوا عَلٰى أَدْبَارِكُمْ فَتَنْقَلِبُوا خٰسِرِينَ ﴿٢١﴾
قَالُوا يٰمُوسٰى إِنَّ فِيهَا قَوْمًا جَبَّارِينَ ۖ وَإِنَّا لَنْ نَدْخُلَهَا حَتّٰى
يَخْرُجُوا مِنْهَا ۖ فَإِنْ يَخْرُجُوا مِنْهَا فَإِنَّا دٰخِلُونَ ﴿٢٢﴾ قَالَ رَجُلَانِ مِنَ
الَّذِينَ يَخَافُونَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِمَا ادْخُلُوا عَلَيْهِمُ الْبَابَ ۖ فَإِذَا
دَخَلْتُمُوهُ فَإِنَّكُمْ غٰلِبُونَ ۚ وَعَلَى اللَّهِ فَتَوَكَّلُوا إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿٢٣﴾
قَالُوا يٰمُوسٰى إِنَّا لَنْ نَدْخُلَهَا أَبَدًا مَا دَامُوا فِيهَا فَاذْهَبْ أَنْتَ وَرَبُّكَ

★रु. ३/७ आ ८

हर चीज पर क़ुदरत रखता है। (१७) और यहूद और नसारा कहते हैं कि हम ख़ुदा के बेटे और उस के प्यारे हैं। कहो कि फिर वह तुम्हारी बद-आमालियों की वजह से तुम्हें अज़ाब क्यों देता है, (नहीं,) बल्कि तुम उस की मख़्लूक़ात में (दूसरों की तरह के) इंसान हो। वह जिसे चाहे बख़्शे और जिसे चाहे अज़ाब दे और आसमान और ज़मीन और जो कुछ इन दोनों में है, सब पर ख़ुदा ही की हुकूमत है और (सब को) उसी की तरफ़ लौट कर जाना है। (१८) ऐ अहले किताब! (पैग़म्बरों के आने का सिलसिला जो एक अर्से तक कटा-सा रहा, तो) अब तुम्हारे पास हमारे पैग़म्बर आ गये हैं, जो तुम से (हमारे हुक्म) बयान करते हैं, ताकि तुम यह न कहो कि हमारे पास कोई ख़ुशख़बरी या डर सुनाने वाला नहीं आया, सो (अब) तुम्हारे पास ख़ुशख़बरी और डर सुनाने वाले आ गये हैं और ख़ुदा हर चीज पर क़ुदरत रखता है। (१९)★

और जब मूसा ने अपनी क़ौम के कहा कि भाइयो! तुम पर ख़ुदा ने जो एहसान किये हैं, उन को याद करो कि उस ने तुम में पैग़म्बर पैदा किये और तुम्हें बादशाह बनाया और तुम को इतना कुछ इनायत किया कि दुनिया वालों में से किसी को नहीं दिया। (२०) तो भाइयो! तुम अर्ज़े मुक़द्दस (पाक धरती, यानी शाम मुल्क) में, जिसे ख़ुदा ने तुम्हारे लिए लिख रखा है, चल दाख़िल हो और (देखना, मुक़ाबले के वक़्त) पीठ न फेर देना, वरना नुक़सान में पड़ जाओगे। (२१) वे कहने लगे कि मूसा! वहां तो बड़े ज़बरदस्त लोग (रहते) हैं और जब तक वह इस धरती से निकल न जाएं, हम वहां जा नहीं सकते, हां, अगर वे वहां से निकल जाएं, तो हम जा दाख़िल होंगे। (२२) जो लोग (ख़ुदा से) डरते थे, उन में से दो शख़्स, जिन पर ख़ुदा की इनायत थी, कहने लगे कि इन लोगों पर दरवाज़े के रास्ते से हमले कर दो। जब तुम दरवाज़े में दाख़िल हो गये तो फ़त्ह तुम्हारी है और ख़ुदा ही पर भरोसा रखो, बशर्ते कि ईमान वाले हो। (२३) वे बोले कि मूसा! जब तक वे लोग वहां हैं, हम कभी वहां नहीं जा सकते। (अगर लड़ना ही ज़रूरी है,) तो तुम और तुम्हारा

★रु. ३/७ आ ८

क़ा-ल रब्बि इन्नी ला अम्लिकु इल्ला नफ़्सी व अख़ी फ़फ़्रुक़् बैनना व बैनल्-क़ौमिल्-फ़ासिक़ीन (२५) क़ा-ल फ़ इन्नहा मुहर्र-मतुन् अलैहिम् अर्बअी-न स-न-तन् ० यतीहू-न फ़िल्अर्ज़ि ط फ़ ला तअ्-स अलल्-क़ौमिल्-फ़ासिक़ीन★(२६) वत्लु अलैहिम् न-ब-अब्नै-आद-म बिल्हक़्क़ि ▨

المآئدة ٥ — ٨٩ — لا يحب الله ٦

فَقَاتِلَآ إِنَّا هٰهُنَا قٰعِدُونَ ﴿٢٤﴾ قَالَ رَبِّ إِنِّي لَآ أَمْلِكُ إِلَّا نَفْسِي
وَأَخِي فَافْرُقْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ الْقَوْمِ الْفٰسِقِينَ ﴿٢٥﴾ قَالَ فَإِنَّهَا مُحَرَّمَةٌ
عَلَيْهِمْ أَرْبَعِينَ سَنَةً يَتِيهُونَ فِي الْأَرْضِ فَلَا تَأْسَ عَلَى الْقَوْمِ
الْفٰسِقِينَ ﴿٢٦﴾ وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ ابْنَيْ آدَمَ بِالْحَقِّ إِذْ قَرَّبَا قُرْبَانًا
فَتُقُبِّلَ مِنْ أَحَدِهِمَا وَلَمْ يُتَقَبَّلْ مِنَ الْآخَرِ قَالَ لَأَقْتُلَنَّكَ
قَالَ إِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللّٰهُ مِنَ الْمُتَّقِينَ ﴿٢٧﴾ لَئِنْ بَسَطْتَ إِلَيَّ يَدَكَ
لِتَقْتُلَنِي مَا أَنَا بِبَاسِطٍ يَدِيَ إِلَيْكَ لِأَقْتُلَكَ إِنِّي أَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ
الْعٰلَمِينَ ﴿٢٨﴾ إِنِّي أُرِيدُ أَنْ تَبُوأَ بِإِثْمِي وَإِثْمِكَ فَتَكُونَ مِنْ أَصْحٰبِ
النَّارِ وَذٰلِكَ جَزٰٓؤُا الظّٰلِمِينَ ﴿٢٩﴾ فَطَوَّعَتْ لَهُ نَفْسُهُ قَتْلَ أَخِيهِ
فَقَتَلَهُ فَأَصْبَحَ مِنَ الْخٰسِرِينَ ﴿٣٠﴾ فَبَعَثَ اللّٰهُ غُرَابًا يَبْحَثُ فِي
الْأَرْضِ لِيُرِيَهُ كَيْفَ يُوَارِي سَوْءَةَ أَخِيهِ قَالَ يٰوَيْلَتَىٰ أَعَجَزْتُ
أَنْ أَكُونَ مِثْلَ هٰذَا الْغُرَابِ فَأُوَارِيَ سَوْءَةَ أَخِي فَأَصْبَحَ مِنَ
النّٰدِمِينَ ﴿٣١﴾ مِنْ أَجْلِ ذٰلِكَ كَتَبْنَا عَلَىٰ بَنِي إِسْرٰٓءِيلَ أَنَّهُ
مَنْ قَتَلَ نَفْسًا بِغَيْرِ نَفْسٍ أَوْ فَسَادٍ فِي الْأَرْضِ فَكَأَنَّمَا قَتَلَ النَّاسَ
جَمِيعًا وَمَنْ أَحْيَاهَا فَكَأَنَّمَا أَحْيَا النَّاسَ جَمِيعًا وَلَقَدْ جَآءَتْهُمْ رُسُلُنَا
بِالْبَيِّنٰتِ ثُمَّ إِنَّ كَثِيرًا مِنْهُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ فِي الْأَرْضِ لَمُسْرِفُونَ ﴿٣٢﴾ إِنَّمَا
جَزٰٓؤُا الَّذِينَ يُحَارِبُونَ اللّٰهَ وَرَسُولَهُ وَيَسْعَوْنَ فِي الْأَرْضِ فَسَادًا أَنْ

منزل

इज़् क़र्रबा क़ुर्बानन् फ़तुक़ुब्बि-ल मिन् अ-हदिहिमा व लम् युत-क़ब्बल् मिनल्-आख़रि ط क़ा-ल ल-अक़्तुलन्न-क ط क़ा-ल इन्नमा य-त-क़ब्बलुल्लाहु मिनल्मुत्तक़ीन ● (२७) लइम्-ब-सत्-त इलय्-य य-द-क लि तक़्तुलनी मा अना बि बासितिंय्यदि-य इलै-क लि अक़्तु-ल-क ० इन्नी अख़ाफ़ुल्ला-ह रब्बल्-आलमीन (२८) इन्नी उरीदु अन् तबू-अ बि इस्मी व इस्मि-क फ़-तकू-न मिन् अस्हाबिन्नारि ० व ज़ालि-क जज़ा-उज़्-ज़ालिमीन ० (२९) फ़-तव्व-अत् लहू नफ़्सुहू क़त्-ल अख़ीहि फ़-क़-त-लहू फ़ अस्ब-ह मिनल्ख़ासिरीन (३०) फ़-ब-अ-सल्लाहु ग़ुराबंय्यब्हसु फ़िल्अर्ज़ि लि युरियहू कै-फ़ युवारी सौ-अ-त अख़ीहि ط क़ा-ल यावैलता अ अजज़्तु अन् अकू-न मिस्-ल हाज़ल्ग़ुराबि फ़ उवारि-य सौ-अ-त अख़ी० फ़-अस्-ब-ह मिनन्नादिमीन ० (३१) मिन् अज्लि ज़ालि-क ० ▨ क-तब्ना अला बनी इस्रा-ई-ल अन्नहू मन् क़-त-ल नफ़्सम्-बिग़ैरि नफ़्सिन् औ फ़सादिन् फ़िल्अर्ज़ि फ़ क-अन्नमा क़-त-लन्ना-स जमीअन् ط व मन् अह्याहा फ़ क-अन्नमा अह्यन्ना-स जमीअन् ط व ल-क़द् जा-अत्हुम् रुसुलुना बिल्बय्यिनाति ✓सुम्-म इन्-न कसीरम्-मिन्हुम् बअ्-द ज़ालि-क फ़िल्अर्ज़ि ल मुस्रिफ़ून (३२) इन्नमा जज़ा-उल्लज़ी-न युहारिबूनल्ला-ह व रसूलहू व यस्औ-न फ़िल्अर्ज़ि फ़-सादन् अंय्युक़त्तलू औ युसल्लबू औ तुक़त्त-अ ऐदीहिम् व अर्-जुलुहुम् मिन् ख़िलाफ़िन् औ युन्फ़ौ मिनल्अर्ज़ि ط ज़ालि-क लहुम् ख़िज़्युन् फ़िद्दुन्या व लहुम् फ़िल्आख़िरति अज़ाबुन् अज़ीम ٧ (३३)

★रु. ४/८ आ ७ ▨ व. मंज़िल ● नि. १/२,∴मु. अि मु ता ख़. ५ ▨ व. न बी स.

खुदा जाओ और लड़ो, हम यहां बैठे रहेंगे। (२४) मूसा ने (खुदा से) इल्तिजा की कि परवरदिगार ! मैं अपने और अपने भाई के सिवा और किसी पर अख्तियार नहीं रखता, तो हम में और इन ना-फ़रमान लोगों में जुदाई कर दे। (२५) खुदा ने फ़रमाया कि वह मुल्क उन पर चालीस बरस तक के लिए हराम कर दिया गया (कि वहां जाने न पाएंगे और जंगल की) ज़मीन में परेशान फिरते रहेंगे, तो उन ना-फ़रमान लोगों के हाल पर अफ़सोस न करो (२६)★ और (ऐ मुहम्मद) उन को आदम के दो बेटों (हाबील और क़ाबील) के हालात (जो बिल्कुल सच्चे हैं) पढ़ कर सुनादो ※ कि जब उन दोनों ने (खुदा की जनाब में) कुछ नियाज़ें चढ़ायीं, तो एक की नियाज़ तो क़ुबूल हो गयी और दूसरे की क़ुबूल न हुई, (तब क़ाबील हाबील से) कहने लगा कि मैं तुझे क़त्ल कर दूंगा। उस ने कहा कि खुदा परहेज़गारों ही की (नियाज़) क़ुबूल फ़रमाया करता है। (२७)●

और अगर तू मुझे क़त्ल करने के लिए मुझ पर हाथ चलाएगा, तो मैं तुझ को क़त्ल करने के लिए तुझ पर हाथ नहीं चलाऊंगा, मुझे तो अल्लाह रब्बुल आलमीन से डर लगता है। (२८) मैं चाहता हूं कि तू मेरे गुनाह में भी पकड़ा जाए और अपने गुनाह में भी, फिर दोज़ख वालों में से हो। और ज़ालिमों की यही सज़ा है। (२९) मगर उस के नफ़्स ने उस को भाई के क़त्ल ही पर उभारा, तो उस ने उसे क़त्ल कर दिया और घाटा उठाने वालों में हो गया।[1] (३०) अब खुदा ने एक कव्वा भेजा, जो ज़मीन कुरेदने लगा, ताकि उसे दिखाए कि अपने भाई की लाश को कैसे छिपाये। कहने लगा, ऐ हे ! मुझ से इतना भी न हो सका कि इस कव्वे के बराबर होता कि अपने भाई की लाश को छिपा देता। फिर वह शर्मिन्दा हुआ। (३१)∴ इस (क़त्ल) की वजह से ※ हम ने बनी इस्राईल पर यह हुक्म नाज़िल किया कि जो शख्स किसी को (ना-हक़) क़त्ल करेगा (यानी) बग़ैर इस के कि जान का बदला जान लिया जाए या मुल्क में खराबी पैदा करने की सज़ा दी जाए, उसने गोया तमाम लोगों को क़त्ल किया और जो उस की ज़िंदगी की वजह बना, तो गोया तमाम लोगों की ज़िंदगी की वजह बना और उन लोगों के पास हमारे पैग़म्बर रोशन दलीलें ला चुके हैं। फिर इस के बाद भी इन में बहुत-से लोग मुल्क में एतदाल की हद से निकल जाते हैं। (३२) जो लोग खुदा और उस के रसूल से लड़ाई करें और मुल्क में फ़साद करने को दौड़ते फिरें, उन की यह सज़ा है कि क़त्ल कर दिए जाएं या सूली चढ़ा दिये जाएं या उन के एक-एक तरफ़ के हाथ और एक-एक तरफ़ के पांव काट दिए जाएं। यह तो दुनिया में उन की रुसवाई है और आखिरत में उन के लिए बड़ा (भारी) अज़ाब

---

१. हज़रत आदम के जिन दो बेटों का यह क़िस्सा है, उन का नाम हाबील और क़ाबील था। यह बात मशहूर है कि हज़रत हव्वा के पेट से दो जुड़वां बच्चे पैदा होते थे, एक लड़का, एक लड़की। चूंकि ज़रूरत समझी जाती थी, इस लिए एक पेट के लड़के से दूसरे पेट की लड़की को और इस पेट की लड़की को उस पेट के लड़के से ब्याह देते थे। इत्तिफ़ाक़ यह हुआ कि क़ाबील के साथ जो लड़की पैदा हुई, वह बहुत खूबसूरत थी और हाबील के साथ जो पैदा हुई, वह बदसूरत थी। तो क़ाबील ने चाहा कि उस की बहन का निकाह हाबील से न हो, बल्कि खुद उसी से हो। आदम अलैहिस्सलाम ने कहा कि तुम दोनों नियाज़ करो, जिस की नियाज़ क़ुबूल हो, वह उस को मिले। हाबील ने नियाज़ में मोटी-ताज़ी बकरी दी और वह क़ुबूल हुई और क़ाबील ने अनाज की बाल दी, वह भी निकम्मी और खराब, वह क़ुबूल न हुई। उन दिनों नियाज़ के क़ुबूल होने की यह निशानी थी कि जो क़ुबूल होती उस को आग आसमान से उतर कर जला जाती। हाबील की नियाज़ को आग जला गयी और क़ाबील की

(शेष पृष्ठ १७७ पर)

★रु. ४/८ आ ७ ※ व. लाज़िम ● नि. १/२ ∴ मु. अि मु ता ख. ५ ※ व. न बी स.

इल्लल्लज़ी-न ताबू मिन् क़ब्लि अन् तक़्दिरू अ़लैहिम् ج फ़अ्-लमू अन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम ★ (३४) या अय्युहल्लज़ी-न आमनुत्तक़ुल्ला-ह वब्तग़ू इलैहिल्-वसी-ल-त व जाहिदू फ़ी सबीलिही ल-अ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून (३५) इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू लौ अन्-न लहुम् मा फ़िल्अर्ज़ि जमीअंव्-व मिस्लहू म-अ़हू लि यफ़्तदू बिही मिन् अ़ज़ाबि यौमिल्-क़ियामति मा तुक़ुब्बि-ल मिन्हुम् ج व लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम (३६) युरीदू-न अंय्यख़्रुजू मिनन्नारि व मा हुम् बिख़ारिजी-न मिन्हा ز व लहुम् अ़ज़ाबुम्मुक़ीम (३७) वस्सारिक़ु वस्सारिक़तु फ़क़्तअ़ू ऐदियहुमा जज़ा-अम्-बिमा क-सबा नकालम्-मिनल्लाहि ط वल्लाहु अ़ज़ीज़ुन् हकीम (३८) फ़-मन् ता-ब मिम्बअ्-दि ज़ुल्मिही व अस्-ल-ह फ़-इन्नल्ला-ह यतूबु अ़लैहि ط इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम (३९) अ-लम् तअ्-लम् अनल्ला-ह लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि ط युअ़ज़्ज़िबु मंय्यशा-उ व यग़्फ़िरु लि मंय्यशा-उ ط वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (४०) या अय्युहर्रसूलु ला यह्ज़ुन्कल्लज़ी-न युसारिअ़ू-न फ़िल्कुफ़्रि मिनल्लज़ी-न क़ालू आमन्ना बि अफ़्वाहिहिम् व लम् तुअ्मिन् क़ुलूबुहुम् ج व मिनल्लज़ी-न हादू ج सम्माअ़ू-न लिल्कज़िबि सम्माअ़ू-न लि क़ौमिन् आख़री-न ۙ लम् यअ्तू-क ط युहर्रिफ़ूनल्-कलि-म मिम्बअ्-दि मवाज़िअ़िही ج यक़ूलू-न इन् ऊतीतुम् हाज़ा फ़ ख़ुज़ूहु व इल्लम् तुअ्तौहु फ़ह्ज़रू ط व मंय्युरिदिल्लाहु फ़ित्-न-तहू फ़ लन् तम्लि-क लहू मिनल्लाहि शैअन् ط उला-इकल्लज़ी-न लम् युरिदिल्लाहु अंय्युतह्हि-र क़ुलूबहुम् ط लहुम् फ़िद्दुन्या ख़िज़्युंव्-व लहुम् फ़िल्-आख़िरति अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीम (४१)

يقتلوا او يصلبوا او تقطع ايديهم وارجلهم من خلاف او ينفوا
من الارض ذلك لهم خزي في الدنيا ولهم في الاخرة عذاب
عظيم ۝ الا الذين تابوا من قبل ان تقدروا عليهم فاعلموا ان
الله غفور رحيم ۝ يايها الذين امنوا اتقوا الله وابتغوا اليه الوسيلة و
جاهدوا في سبيله لعلكم تفلحون ۝ ان الذين كفروا
لو ان لهم ما في الارض جميعا ومثله معه ليفتدوا به
من عذاب يوم القيمة ما تقبل منهم ولهم عذاب اليم ۝
يريدون ان يخرجوا من النار وما هم بخرجين منها ولهم
عذاب مقيم ۝ والسارق والسارقة فاقطعوا ايديهما جزاء
بما كسبا نكالا من الله والله عزيز حكيم ۝ فمن تاب من
بعد ظلمه واصلح فان الله يتوب عليه ان الله غفور رحيم ۝
الم تعلم ان الله له ملك السموت والارض يعذب من
يشاء ويغفر لمن يشاء والله على كل شيء قدير ۝ يايها
الرسول لا يحزنك الذين يسارعون في الكفر من الذين قالوا
امنا بافواههم ولم تؤمن قلوبهم ومن الذين هادوا
سمعون للكذب سمعون لقوم اخرين لم ياتوك يحرفون
الكلم من بعد مواضعه يقولون ان اوتيتم هذا فخذوه و

★रु. ५/६ आ ८, ∴ मु. अ़ि मु. ता क़. ३

(तैयार) है। (३३) हां, जिन लोगों ने इस से पहले कि तुम्हारे क़ाबू आ जाएं, तौबा कर ली, तो जान रखो कि ख़ुदा बख़्शने वाला, मेहरबान है। (३४) ★

ऐ ईमान वालो ! ख़ुदा से डरते रहो और उसका क़ुर्ब हासिल करने का ज़रिया खोजते रहो और उस के रास्ते में जिहाद करो ताकि कामियाबी पाओ। (३५) जो लोग काफ़िर हैं, अगर उन के पास धरती (के तमाम ख़ज़ाने और उस) का सब माल व मताअ हो, और उस के साथ उतना ही और भी हो, ताकि क़ियामत के दिन अज़ाब से (छुटकारा पाने का) बदला दें, तो उन से क़ुबूल नहीं किया जाएगा और उन को दर्द देने वाला अज़ाब होगा। (३६) (पूरी तरह) चाहेंगे कि आग से निकल आएं, मगर उस से नहीं निकल सकेंगे और उन के लिए हमेशा का अज़ाब है। (३७) और जो चोरी करे, मर्द हो या औरत, उन के हाथ काट डालो। यह उन के फ़ेलों की सज़ा और ख़ुदा की तरफ़ से सीख है और ख़ुदा ज़बरदस्त (और) हिक्मत वाला है। (३८) और जो शख़्स गुनाह के बाद तौबा करे और भला बन जाये तो ख़ुदा उस को माफ़ कर देगा। कुछ शक नहीं कि ख़ुदा बख़्शने वाला, मेहरबान है। (३९) क्या तुम को मालूम नहीं कि आसमानों और ज़मीन में ख़ुदा ही की सल्तनत है ? जिस को चाहे अज़ाब करे और जिसे चाहे बख़्श दे और ख़ुदा हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। (४०) ऐ पैग़म्बर ! जो लोग कुफ़्र में जल्दी करते हैं, (कुछ तो) उन में से (हैं), जो मुंह से कहते हैं कि हम मोमिन हैं और (कुछ) उन में से हैं जो यहूदी हैं, उन की वजह से ग़मनाक न होना। ये ग़लत बातें बनाने के लिए जासूसी करते फिरते हैं और ऐसे लोग लोगों (के बहकाने) के लिए जासूस बने हैं, जो अभी तुम्हारे पास नहीं आए। (सही) बातों को उन की जगहों (पर साबित होने) के बाद बदल देते हैं और (लोगों से) कहते हैं कि अगर तुम को यही (हुक्म) मिले तो उसे क़ुबूल कर लेना और अगर यह न मिले तो उस में एहतराज़ करना और अगर किसी को ख़ुदा गुमराह करना चाहे तो उस के लिए तुम कुछ भी ख़ुदा से (हिदायत का) अख़्तियार नहीं रखते। ये वह लोग हैं, जिन के दिलों को ख़ुदा ने पाक करना नहीं चाहा। उन के लिए दुनिया में भी ज़िल्लत है और आख़िरत में भी बड़ा अज़ाब है।' (४१) (ये) झूठी बातें बनाने के लिए जासूसी करने वाले और

(पृष्ठ १७५ का शेष)

उसी तरह पड़ी रही। तब क़ाबील को भाई से जलन पैदा हो गई और उस से कहने लगा कि मैं तुझ को क़त्ल कर के रहूंगा। चुनांचे उस ने उस को क़त्ल कर ही दिया। एक जमाअत का यह ख़्याल है कि नियाज़ का किया जाना औरत की वजह से न था, क़ुरआन के ज़ाहिर लफ़्ज़ों से भी यही पाया जाता है कि नियाज़ की वजह औरत न थी, बल्कि दोनों भाइयों ने नियाज़ की थी। एक की क़ुबूल हुई और दूसरे की ना-मक़्बूल हुई, अल्लाह ही बेहतर जाने।

१. यह आयत यहूदियों के हक़ में नाज़िल हुई है। तौरात में हुक्म था कि जो बद-कारी करे, उस को संगसार कर दिया जाए, मगर उन्हों ने इस हुक्म को बदल कर यह अमल जारी किया कि बद-फ़ेली करने वाले को कोड़े मारते और गधे पर सवारी करा कर रुसवा करते। जनाब सरवरे कायनात सल्ल० के वक़्त में कई वाक़िआत हुए कि वे उन को फ़ैसले के लिए आप के पास लाए। हिजरत के बाद यह वाक़िआ हुआ कि यहूदी ने एक यहूदिन से मुंह काला किया। यहूदियों ने आपस में कहा कि चलो इस का फ़ैसला हज़रत सल्ल० से करायें। अगर कोड़े लगाने और मुंह काला करने का हुक्म दें, तो मान लेना चाहिए, नहीं तो नहीं। इब्ने उमर रज़ि० से रिवायत है कि

(शेष १७९ पर)

★रु. ५/६ आ ८ ∴ मु. अ़ि मु. ता क़. ३

إِن لَّمْ تُؤْتَوْهُ فَاحْذَرُوا ۚ وَمَن يُرِدِ اللَّهُ فِتْنَتَهُ فَلَن تَمْلِكَ
لَهُ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَمْ يُرِدِ اللَّهُ أَن يُطَهِّرَ قُلُوبَهُمْ ۚ
لَهُمْ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ ۖ وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٤١﴾
سَمَّاعُونَ لِلْكَذِبِ أَكَّالُونَ لِلسُّحْتِ ۚ فَإِن جَاءُوكَ فَاحْكُم بَيْنَهُمْ
أَوْ أَعْرِضْ عَنْهُمْ ۖ وَإِن تُعْرِضْ عَنْهُمْ فَلَن يَضُرُّوكَ شَيْئًا ۖ وَ
إِنْ حَكَمْتَ فَاحْكُم بَيْنَهُم بِالْقِسْطِ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ ﴿٤٢﴾
وَكَيْفَ يُحَكِّمُونَكَ وَعِندَهُمُ التَّوْرَاةُ فِيهَا حُكْمُ اللَّهِ ثُمَّ يَتَوَلَّوْنَ
مِن بَعْدِ ذَٰلِكَ ۚ وَمَا أُولَٰئِكَ بِالْمُؤْمِنِينَ ﴿٤٣﴾ إِنَّا أَنزَلْنَا التَّوْرَاةَ
فِيهَا هُدًى وَنُورٌ ۚ يَحْكُمُ بِهَا النَّبِيُّونَ الَّذِينَ أَسْلَمُوا
لِلَّذِينَ هَادُوا وَالرَّبَّانِيُّونَ وَالْأَحْبَارُ بِمَا اسْتُحْفِظُوا مِن
كِتَابِ اللَّهِ وَكَانُوا عَلَيْهِ شُهَدَاءَ ۚ فَلَا تَخْشَوُا النَّاسَ وَ
اخْشَوْنِ وَلَا تَشْتَرُوا بِآيَاتِي ثَمَنًا قَلِيلًا ۚ وَمَن لَّمْ يَحْكُم
بِمَا أَنزَلَ اللَّهُ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْكَافِرُونَ ﴿٤٤﴾ وَكَتَبْنَا عَلَيْهِمْ
فِيهَا أَنَّ النَّفْسَ بِالنَّفْسِ وَالْعَيْنَ بِالْعَيْنِ وَالْأَنفَ بِالْأَنفِ
وَالْأُذُنَ بِالْأُذُنِ وَالسِّنَّ بِالسِّنِّ وَالْجُرُوحَ قِصَاصٌ ۚ فَمَن
تَصَدَّقَ بِهِ فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَّهُ ۚ وَمَن لَّمْ يَحْكُم بِمَا أَنزَلَ اللَّهُ
فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿٤٥﴾ وَقَفَّيْنَا عَلَىٰ آثَارِهِم بِعِيسَى ابْنِ

सम्माअू-न लिल्कजिबि अक्कालू-न लिस्सुह़्ति, फ़इन् जाऊ-क फ़ह़्कुम् बैनहुम् औ अअ्‌रिज़् अ़न्हुम्, व इन् तुअ्-रिज़् अ़न्हुम् फ़ लंय्यज़ुर्रू-क शैअन्, व इन् ह़-कम्-त फ़ह़्कुम् बैनहुम् बिल्क़िस्ति, इन्नल्ला-ह युह़िब्बुल्-मुक़्सितीन (४२) व कै-फ़ युह़क्किमू-न-क व अिन्दहुमुत्तौरातु फ़ीहा हुक्मुल्लाहि सुम्-म य-त-वल्लौ-न मिम्बअ्‌दि ज़ालि-क, व मा उलाइ-क बिल्-मुअ्‌मिनीन ★ (४३) इन्ना अन्ज़ल्नत्तौरा-त फ़ीहा हुदंव्-व नूरुन्, यह़्कुमु बिहन्नबिय्यूनल्लज़ी-न अस्लमू लिल्लज़ी-न हादू वर्रब्बानिय्यू-न वल्-अह़्बारु बिमस्तुह़्फ़िज़ू मिन् किताबिल्लाहि व कानू अ़लैहि शुहदा-अ फ़-ला तख़्शवुन्ना-स वख़्शौनि व ला तश्तरू बि आयाती स-म-नन् क़लीलन्, व मल्लम् यह़्कुम् बिमा अन्ज़-लल्लाहु फ़ उलाइ-क हुमुल्काफ़िरून (४४) व क-तब्ना अ़लैहिम् फ़ीहा अन्नन्नफ़्-स बिन्नफ़्सि, वल्अै-न बिल्अैनि वल्-अन्-फ़ बिल्-अन्फ़ि वल्-उज़ु-न बिल्-उज़ुनि वस्सिन्-न बिस्सिन्नि, वल्जुरू-ह़ क़िसासुन्, फ़ मन् त-सद्-द-क़ बिही फ़हु-व कफ़्फ़ारतुल्लहू, व मल्लम् यह़्कुम् बिमा अन्ज़-लल्लाहु फ़ उलाइ-क हुमुज़्ज़ालिमून (४५) व क़फ़्फ़ैना अ़ला आसारिहिम् बि अ़ीसब्नि मर्य-म मुसद्दिक़ल्लिमा बै-न यदैहि मिनत्तौराति व आतैनाहुल्-इन्जी-ल फ़ीहि हुदंव्-व नूरुंव्- व मुसद्दिक़ल्लिमा बै-न यदैहि मिनत्तौराति व हुदंव्-व मौअ़िज़तल्-लिल्मुत्तक़ीन (४६)

★रु. ६/१० आ ६

(रिश्वत का) हराम माल खाने वाले हैं। अगर ये तुम्हारे पास (कोई मुक़दमा फ़ैसला कराने को) आएं, तो तुम उन में फ़ैसला कर देना या ऐराज़ करना और अगर उन से ऐराज़ करोगे, तो वे तुम्हारा कुछ भी न बिगाड़ सकेंगे और अगर फ़ैसला करना चाहो तो इंसाफ़ का फ़ैसला करना कि ख़ुदा इंसाफ़ करने वालों को दोस्त रखता है। (४२) और ये तुम से (अपने मुक़दमे) किस तरह फ़ैसला करायेंगे, जब कि ख़ुद उन के पास तौरात (मौजूद) है, जिस में ख़ुदा का हुक्म (लिखा हुआ) है। (ये उसे जानते हैं,) फिर इस के बाद उस से फिर जाते हैं। और ये लोग ईमान ही नहीं रखते। (४३) ★

बेशक हमीं ने तौरात नाज़िल फ़रमायी, जिस में हिदायत और रोशनी है। उसी के मुताबिक़ नबी, जो (ख़ुदा के) फ़रमांबरदार थे, यहूदियों को हुक्म देते रहे हैं, और मशाइख़ और उलेमा भी, क्यों कि वे ख़ुदा की किताब के निगहबान मुक़र्रर किये गये थे और इस पर गवाह थे (यानी अल्लाह के हुक्म पर यक़ीन रखते थे), तो तुम लोगों से मत डरना और मुझी से डरते रहना और मेरी आयतों के बदले थोड़ी-सी क़ीमत न लेना और जो ख़ुदा के नाज़िल फ़रमाए हुए हुक्मों के मुताबिक़ हुक्म न दे, तो ऐसे ही लोग काफ़िर हैं। (४४) और हम ने उन लोगों के लिए तौरात में यह हुक्म लिख दिया था कि जान के बदले जान और आंख के बदले आंख और नाक के बदले नाक और कान के बदले कान और दांत के बदले दांत और सब ज़ख़्मों का इसी तरह बदला है, लेकिन जो शख़्स बदला माफ़ कर दे, वह उस के लिए कफ़्फ़ारा होगा और जो ख़ुदा के नाज़िल फ़रमाये हुए हुक्मों के मुताबिक़ हुक्म न दे, तो ऐसे ही लोग बे-इंसाफ़ हैं। (४५) और इन पैग़म्बरों के बाद उन्हीं के क़दमों पर हम ने ईसा बिन मरयम को भेजा, जो अपने से पहले की किताब तौरात की तस्दीक़ करते थे और उन को इंजील इनायत की, जिस में हिदायत और नूर है और तौरात की जो इस से पहली (किताब) है, तस्दीक़ करती है और परहेज़गारों को राह बताती और नसीहत करती है। (४६)

(पृष्ठ १७७ का शेष)
यहूद हज़रत के पास आए और बयान किया कि इन में से एक मर्द ने औरत से बदकारी की है। इस बारे में क्या इर्शाद है? आप ने फ़रमाया कि तौरात में क्या लिखा है? उन्हों ने कहा कि हम तो कोड़े मारते और रुसवा करते हैं। आप ने फ़रमाया कि तौरात लाओ। तौरात लायी गयी और एक शख़्स पढ़ने लगा। जब इस आयत पर गुज़र हुआ, जिस में बद-कारी की सज़ा रज्म यानी संगसार करना लिखा था, तो उस पर हाथ रख दिया और आगे-पीछे की आयतें पढ़ दीं। अब्दुल्लाह बिन सलाम ने, जो तौरात के बड़े माहिर थे, अर्ज़ किया कि आप हुक्म दें कि यह हाथ उठाए। हाथ उठाया तो उस के नीचे रज्म की आयत थी। हज़रत ने रज्म का हुक्म फ़रमा दिया और दोनों संगसार कर दिए गये। इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं कि उन के संगसार के वक़्त मैं भी मौजूद था। मैं ने मर्द को देखा कि औरत पर झुक-झुक जाता था और उस को पत्थर से बचाता था।

★रु० ६/१० आ ६

वल्-यह्‌कुम् अह्‌लुल्-इन्जीलि बिमा अन्ज़-लल्लाहु फ़ीहि ط व मल्लम् यह्‌कुम् बिमा अन्ज़-लल्लाहु फ़ उला-इ-क हुमुल्-फ़ासिक़ून (४७) व

अन्ज़ल्ना इलैकल्-किता-ब बिल्हक़्क़ि मुसद्दिक़लिलमा बै-न यदैहि मिनल्-

किताबि व मुहैमिनन् अलैहि फ़ह्‌कुम् बैनहुम् बिमा अन्ज़-लल्लाहु व ला तत्तबिअ़ अह्‌वा-अहुम् अ़म्मा जा-अ-क

मिनल् - हक़्क़ि ط लि कुल्लिन् ज - अल्ना मिन्कुम् शिरअ़-तंव्-व मिन्हाजन् ط व लौ

शा-अल्लाहु ल ज-अ-लकुम् उम्मतंव्वाहिदतंव्-व लाकिल्-लि यब्लु-व-कुम् फ़ी मा आताकुम्

फ़स्तबिक़ुल्-ख़ैराति ط इलल्लाहि मर्जिअ़ुकुम्

जमीअ़न् फ़ युनब्बि-उकुम् बिमा कुन्तुम्

फ़ीहि तख़्तलिफ़ून ۷ (४८) व अनिह्‌कुम् बैनहुम् बिमा अन्ज़-लल्लाहु

व ला तत्तबिअ़ अह्‌वा-अहुम् वह्‌ज़रहुम्

अंय्यफ़्तिनू-क अ़म्बअ़्-ज़ि मा अन्ज़-लल्लाहु

इलै-क ط फ़-इन् तवल्लौ फ़अ़्-लम् अन्नमा युरीदुल्लाहु अंय्युसीबहुम् बि बअ़्-ज़ि

ज़ुनूबिहिम् ط व इन्-न कसीरम्-मिनन्नासि ल-फ़ासिक़ून (४९) अ-फ़-हुक्मल्-

जाहिलिय्यति यब्ग़ू-न ط व मन् अह्‌सनु मिनल्लाहि हुक्मलिल्क़ौमिंय्यूक़िनून ★ (५०) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तत्तख़िज़ुल्-यहू-द वन्नसारा औलिया-अ ▨ बअ़्-ज़ुहुम् औलिया-उ बअ़्-ज़िन् ط व मंय्य-त-वल्लहुम् मिन्कुम्-फ़ इन्नहू मिन्हुम् ط इन्नल्ला-ह ला यह्दिल्-क़ौमज़्ज़ालिमीन (५१)

مريم مصدقا لما بين يديه من التورىة وآتيناه الإنجيل
فيه هدى ونور ومصدقا لما بين يديه من التورىة و
هدى وموعظة للمتقين ۝ وليحكم أهل الإنجيل بما
أنزل الله فيه ومن لم يحكم بما أنزل الله فأولئك هم
الفسقون ۝ وأنزلنا إليك الكتب بالحق مصدقا لما بين
يديه من الكتب ومهيمنا عليه فاحكم بينهم بما أنزل
الله ولا تتبع أهواءهم عما جاءك من الحق لكل جعلنا
منكم شرعة ومنهاجا ولو شاء الله لجعلكم أمة واحدة و
لكن ليبلوكم في ما آتىكم فاستبقوا الخيرت إلى الله مرجعكم
جميعا فينبئكم بما كنتم فيه تختلفون ۝ وأن احكم بينهم
بما أنزل الله ولا تتبع أهواءهم واحذرهم أن يفتنوك عن
بعض ما أنزل الله إليك فإن تولوا فاعلم أنما يريد الله أن
يصيبهم ببعض ذنوبهم وإن كثيرا من الناس لفسقون ۝
أفحكم الجاهلية يبغون ومن أحسن من الله حكما لقوم
يوقنون ۝ يأيها الذين آمنوا لا تتخذوا اليهود والنصرى
أولياء بعضهم أولياء بعض ومن يتولهم منكم فإنه منهم
إن الله لا يهدي القوم الظلمين ۝ فترى الذين في قلوبهم

★रु. ७/११ आ ७ ▨ व. लाज़िम, व. ग़ु., व. म.

और अह्ले इंजील को चाहिए कि जो हुक्म ख़ुदा ने उस में नाज़िल फ़रमाये हैं, उस के मुताबिक़ हुक्म दिया करें और जो ख़ुदा के नाज़िल किये हुए हुक्मों के मुताबिक़ हुक्म न देगा, तो ऐसे लोग ना-फ़रमान हैं। (४७) और (ऐ पैग़म्बर!) हम ने तुम पर सच्ची किताब नाज़िल की है, जो अपने से पहली किताबों की तस्दीक़ करती है और उन (सब) पर शामिल है, तो जो हुक्म ख़ुदा ने नाज़िल फ़रमाया है, उस के मुताबिक़ उन का फ़ैसला करना और हक़, जो तुम्हारे पास आ चुका है, उस को छोड़ कर उन की ख़्वाहिशों की पैरवी न करना। हम ने तुम में से हर एक (फ़िर्के) के लिए एक दस्तूर और एक तरीक़ा मुक़र्रर किया है और अगर ख़ुदा चाहता तो तुम सब को एक ही शरीअत पर कर देता, मगर जो हुक्म उस ने तुम को दिए हैं, उन में वह तुम्हारी आज़माइश करनी चाहता है, सो नेक कामों में जल्दी करो। तुम सब को ख़ुदा की तरफ़ लौट कर जाना है, फिर जिन बातों में तुम को इख़्तिलाफ़ था, वह तुम को बता देगा। (४८) और (हम फिर ताकीद करते हैं कि) जो (हुक्म) ख़ुदा ने नाज़िल फ़रमाया है, उसी के मुताबिक़ उन में फ़ैसला करना और उन की ख़्वाहिशों की पैरवी न करना और उन से बचते रहना कि किसी हुक्म से, जो ख़ुदा ने तुम पर नाज़िल फ़रमाया है, ये कहीं तुम को बहका न दें। अगर ये न मानें तो जान लो कि ख़ुदा चाहता है कि उन के कुछ गुनाहों की वजह से उन पर मुसीबत नाज़िल करे और अक्सर लोग तो ना-फ़रमान हैं। (४९) क्या ये जाहिलियत के ज़माने के हुक्म के ख़्वाहिशमंद हैं? और जो यक़ीन रखते हैं, उन के लिए ख़ुदा से अच्छा हुक्म किस का है? (५०) ★

ऐ ईमान वालो! यहूद और नसारा को दोस्त न बनाओ ※ ये एक दूसरे के दोस्त हैं। और जो शख़्स तुम में से उन को दोस्त बनाएगा, वह भी उन्हीं में से होगा। बेशक ख़ुदा ज़ालिम लोगों को

★रु. ७/११ आ ७ ※ व. लाज़िम व. गु व. मं.

फ़-त-रल्लज़ी-न फ़ी क़ुलूबिहिम् मरज़ुंय्युसारिअू-न फ़ीहिम् यक़ूलू-न नख़्शा अन्
तुसीबना दा-इरतुन् ؕ फ़ अ-सल्लाहु अंय्यअ्ति-य बिलफ़त्हि औ अम्रिम्-मिन्
अिन्दिही फ़युस्बिहू अ़ला मा असर्रू फ़ी अन्फ़ुसिहिम् नादिमीन ؕ (५२)
व यक़ूलुल्लज़ी-न आमनू अ हा-उला-इल्लज़ी-न अक़्समू बिल्लाहि जह्-द
ऐमानिहिम् ۙ इन्नहुम् ल-म-अकुम् ؕ हबितत्
अअ्-मालुहुम् फ़ अस्बहू ख़ासिरीन ●(५३)
या अय्युहल्लज़ी-न आमनू मंय्यर्तद्-द मिन्कुम्
अन् दीनिही फ़-सौ-फ़ यअ्तिल्लाहु
बि क़ौमिंय्युहिब्बुहुम् व युहिब्बूनहू ۙ
अज़िल्लतिन् अ़-लल्-मुअ्मिनी-न अअिज़्ज़तिन्
अ़लल्काफ़िरी-न ؗ युजाहिदू-न फ़ी सबीलिल्लाहि
व ला यख़ाफ़ू-न लौम-त लाइमिन् ؕ
ज़ालि-क फ़ज़्लुल्लाहि युअ्तीहि मंय्यशा-उ ؕ
वल्लाहु वासिअुन् अ़लीम (५४)
इन्नमा वलिय्युकुमुल्ला-हु व रसूलुहू वल्लज़ी-न
आमनुल्लज़ी-न युक़ीमूनस्सला-त व युअ्तूनज़्ज़का-त
व हुम् राकिअून (५५) व मंय्य-त-वल्लल्ला-ह

مَرَضٌ يُسَارِعُونَ فِيهِمْ يَقُولُونَ نَخْشَىٰ أَن تُصِيبَنَا دَائِرَةٌ
فَعَسَى اللَّهُ أَن يَأْتِيَ بِالْفَتْحِ أَوْ أَمْرٍ مِّنْ عِندِهِ فَيُصْبِحُوا عَلَىٰ
مَا أَسَرُّوا فِي أَنفُسِهِمْ نَادِمِينَ ۝ وَيَقُولُ الَّذِينَ آمَنُوا
أَهَٰؤُلَاءِ الَّذِينَ أَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ إِنَّهُمْ لَمَعَكُمْ
حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فَأَصْبَحُوا خَاسِرِينَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا مَن
يَرْتَدَّ مِنكُمْ عَن دِينِهِ فَسَوْفَ يَأْتِي اللَّهُ بِقَوْمٍ يُحِبُّهُمْ وَ
يُحِبُّونَهُ أَذِلَّةٍ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ أَعِزَّةٍ عَلَى الْكَافِرِينَ يُجَاهِدُونَ
فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا يَخَافُونَ لَوْمَةَ لَائِمٍ ذَٰلِكَ فَضْلُ اللَّهِ
يُؤْتِيهِ مَن يَشَاءُ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ۝ إِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ
وَالَّذِينَ آمَنُوا الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَ
هُمْ رَاكِعُونَ ۝ وَمَن يَتَوَلَّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَالَّذِينَ آمَنُوا فَإِنَّ
حِزْبَ اللَّهِ هُمُ الْغَالِبُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِينَ
اتَّخَذُوا دِينَكُمْ هُزُوًا وَلَعِبًا مِّنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِن
قَبْلِكُمْ وَالْكُفَّارَ أَوْلِيَاءَ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ۝
وَإِذَا نَادَيْتُمْ إِلَى الصَّلَاةِ اتَّخَذُوهَا هُزُوًا وَلَعِبًا ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ
قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُونَ ۝ قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ هَلْ تَنقِمُونَ مِنَّا إِلَّا
أَنْ آمَنَّا بِاللَّهِ وَمَا أُنزِلَ إِلَيْنَا وَمَا أُنزِلَ مِن قَبْلُ وَأَنَّ أَكْثَرَكُمْ

व रसूलहू वल्लज़ी-न आमनू फ़ इन्-न हिज़्बल्लाहि हुमुलग़ालिबून ✱(५६)
या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तत्तख़िज़ुल्-लज़ीनत्तख़ज़ू दीनकुम् हुज़ुवंव्-व
लअिबम्-मिनल्लज़ी-न ऊतुल्-किता-ब मिन् क़ब्लिकुम् वल्कुफ़्फ़ा-र औलिया-अ ۚ
वत्तक़ुल्ला-ह इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन (५७) व इज़ा नादैतुम्
इलस्सलातित्-त-ख़ज़ूहा हुज़ुवंव-व लअिबन् ؕ ज़ालि-क बि अन्नहुम् क़ौमुल्ला
यअ्क़िलून (५८) क़ुल् या अह्लल्किताबि हल् तन्क़िमू-न मिन्ना
इल्ला अन् आमन्ना बिल्लाहि व मा उन्ज़ि-ल इलैना
व मा उन्ज़ि-ल मिन् क़ब्लु ۙ व अन-न अक्स-रकुम् फ़ासिक़ून (५९)

●सु. ३/४ ★रु. ८/१२ आ ६

हिदायत नहीं देता। (५१) तो जिन लोगों के दिलों में (निफ़ाक़ का) मर्ज़ है, तुम उन को देखोगे कि उन में दौड़-दौड़ के मिले जाते हैं। कहते हैं कि हमें डर है कि कहीं हम पर ज़माने की गर्दिश न आ जाए। सो क़रीब है कि ख़ुदा फ़त्ह भेजे या अपने यहां से कोई अम्र (नाज़िल फ़रमाए), फिर ये अपने दिल की बातों पर, जो छिपाया करते थे, शर्मिन्दा हो कर रह जाएंगे। (५२) (उस वक़्त) मुसलमान (ताज्जुब से) कहेंगे कि क्या ये वही हैं, जो ख़ुदा की सख़्त-सख़्त क़समें खाया करते थे कि हम तुम्हारे साथ हैं। उन के अमल अकारत गए और वह घाटे में पड़ गए● (५३) ऐ ईमान वालो! अगर तुम में से कोई अपने दीन से फिर जाएगा, तो ख़ुदा ऐसे लोग पैदा कर देगा, जिन को वह दोस्त रखे और जिसे वे दोस्त रखें। और जो मोमिनों के हक़ में नर्मी करें और काफ़िरों से सख़्ती से पेश आएं, ख़ुदा की राह में जिहाद करें, और किसी मलामत करने वाले की मलामत से न डरें, यह ख़ुदा का फ़ज़्ल है, वह जिसे चाहता है, देता है। और ख़ुदा बड़े फैलाव वाला और जानने वाला है। (५४) तुम्हारे दोस्त तो ख़ुदा और उस के पैग़म्बर और मोमिन लोग ही हैं, जो नमाज़ पढ़ते और ज़कात देते और (ख़ुदा के आगे) झुकते हैं। (५५) और जो शख़्स ख़ुदा और उस के पैग़म्बर और मोमिनों से दोस्ती करेगा तो (वह ख़ुदा की जमाअत में दाख़िल होगा और) ख़ुदा की जमाअत ही ग़लबा पाने वाली है। (५६) ★

ऐ ईमान वालो! जिन लोगों को तुम से पहले किताबें दी गयी थीं, उन को और काफ़िरों को जिन्हों ने तुम्हारे दीन को हंसी और खेल बना रखा है, दोस्त न बनाओ और मोमिन हो तो ख़ुदा से डरते रहो। (५७) और जब तुम लोग नमाज़ के लिए अज़ान देते हो, तो ये उसे भी हंसी और खेल बनाते हैं। यह इस लिए कि समझ नहीं रखते। (५८) कहो कि अह्ले किताब! तुम हम में बुराई ही क्या देखते हो, इस के सिवा कि हम ख़ुदा पर और जो (किताब) हम पर नाज़िल हुई, उस पर और जो (किताबें) पहले नाज़िल हुईं, उन पर ईमान लाए हैं और तुम में अक्सर बद-किरदार हैं। (५९)

●सु. ३/४ ★रु. ८/१२ आ ६

कुल् हल् उनब्बिउकुम् बि शर्रिम्मिन् ज़ालि-क मसूब-तन् अिन्दल्लाहि ط मल्ल-अ-न-हुल्लाहु व ग़ज़ि-ब अलैहि व ज-अ-ल मिन्हुमुल्-क़िर-द-त वल्ख़नाज़ी-र व अ-ब-दत्ताग़ू-त ط उलाइ-क शर्रुम्मकानंव्-व अज़ल्लु अन् सवाइस्सबील (६०) व इज़ा जाऊकुम् क़ालू आमन्ना व क़द्द-ख़लू बिल्कुफ़्रि व हुम् क़द् ख़-रजू बिही ط वल्लाहु अअ्-लमु बिमा कानू यक्तुमून (६१) व तरा कसीरम्-मिन्हुम् युसारिअू-न फ़िल्इस्मि वल्अुद्वानि व अक्लिहिमुस्सुह्-त ط ल-बिअ्-स मा कानू यअ्-मलून (६२) लौला यन्हाहुमुर्-रब्बानिय्यू-न वल्-अह्बारु अन् क़ौलिहिमुल्-इस्-म व अक्लिहिमुस्सुह्-त ط ल बिअ्-स मा कानू यस्नअून (६३) व क़ालतिल्-यहूदु यदुल्लाहि मग़्लूलतुन् ط ग़ुल्लत् ऐदीहिम् व लुअिनू बिमा क़ालू ※ बल् यदाहु मब्सूततानि لا युन्फ़िक़ु कै-फ़ यशा-उ ط व-ल-यज़ीदन्-न कसीरम्-मिन्हुम् मा उन्ज़ि-ल इलै-क मिर्रब्बि-क तुग़्यानंव्-व कुफ़्रन् ط व अल्क़ैना बैनहुमुल्-अदा-व-त वल्बग़्ज़ा-अ इला यौमिल्-क़ियामति ط कुल्लमा औक़दू नारल्-लिल्हर्बि अत्-फ़-अ-हल्लाहु لا व यस्औ-न फ़िल्अर्ज़ि फ़सादन् ط वल्लाहु ला युहिब्बुल्-मुफ़्सिदीन (६४) व लौ अन्-न अह्लल्-किताबि आमनू वत्तक़ौ ल-कफ़्फ़र्ना अन्हुम् सय्यिआतिहिम् व ल-अद्ख़ल्नाहुम् जन्नातिन्नअीम (६५) व लौ अन्नहुम् अक़ामुत्तौरा-त वल्-इन्जी-ल व मा उन्ज़ि-ल इलैहिम् मिर्रब्बिहिम् ल अ-क-लू मिन् फ़ौक़िहिम् व मिन् तह्ति अर्जुलिहिम् ط मिन्हुम् उम्मतुम्-मुक़्तसिदतुन् ط व कसीरुम्-मिन्हुम् सा-अ मा यअ्-मलून ★ (६६)

يَعْقِلُونَ ۝ قُلْ هَلْ أُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ مِّنْ ذٰلِكَ مَثُوبَةً عِنْدَ اللّٰهِ
مَنْ لَّعَنَهُ اللّٰهُ وَغَضِبَ عَلَيْهِ وَجَعَلَ مِنْهُمُ الْقِرَدَةَ وَالْخَنَازِيرَ
وَعَبَدَ الطَّاغُوتَ ۚ أُولٰئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّأَضَلُّ عَنْ سَوَاءِ السَّبِيلِ ۝
وَإِذَا جَاءُوكُمْ قَالُوا آمَنَّا وَقَدْ دَّخَلُوا بِالْكُفْرِ وَهُمْ قَدْ خَرَجُوا
بِهِ ۚ وَاللّٰهُ أَعْلَمُ بِمَا كَانُوا يَكْتُمُونَ ۝ وَتَرَىٰ كَثِيرًا مِّنْهُمْ
يُسَارِعُونَ فِي الْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَأَكْلِهِمُ السُّحْتَ ۚ لَبِئْسَ مَا
كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ لَوْلَا يَنْهَاهُمُ الرَّبَّانِيُّونَ وَالْأَحْبَارُ عَنْ قَوْلِهِمُ
الْإِثْمَ وَأَكْلِهِمُ السُّحْتَ ۚ لَبِئْسَ مَا كَانُوا يَصْنَعُونَ ۝ وَقَالَتِ
الْيَهُودُ يَدُ اللّٰهِ مَغْلُولَةٌ ۚ غُلَّتْ أَيْدِيهِمْ وَلُعِنُوا بِمَا قَالُوا ۘ بَلْ
يَدَاهُ مَبْسُوطَتَانِ يُنْفِقُ كَيْفَ يَشَاءُ ۚ وَلَيَزِيدَنَّ كَثِيرًا مِّنْهُمْ
مَّا أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ۚ وَأَلْقَيْنَا بَيْنَهُمُ
الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ ۚ كُلَّمَا أَوْقَدُوا نَارًا
لِّلْحَرْبِ أَطْفَأَهَا اللّٰهُ ۙ وَيَسْعَوْنَ فِي الْأَرْضِ فَسَادًا ۚ وَاللّٰهُ لَا
يُحِبُّ الْمُفْسِدِينَ ۝ وَلَوْ أَنَّ أَهْلَ الْكِتَابِ آمَنُوا وَاتَّقَوْا لَكَفَّرْنَا
عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَلَأَدْخَلْنَاهُمْ جَنَّاتِ النَّعِيمِ ۝ وَلَوْ أَنَّهُمْ
أَقَامُوا التَّوْرَاةَ وَالْإِنْجِيلَ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِمْ مِّنْ رَّبِّهِمْ
لَأَكَلُوا مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ أَرْجُلِهِمْ ۚ مِّنْهُمْ أُمَّةٌ مُّقْتَصِدَةٌ

※ व. लाज़िम ★रु. ९/१३ आ १०

कहो कि मैं तुम्हें बताऊं कि ख़ुदा के यहां इस से भी बुरा बदला (सज़ा) पाने वाले कौन हैं, वे लोग हैं, जिन पर ख़ुदा ने लानत की और जिन पर वह ग़ज़बनाक हुआ और (जिन को) उन में से बन्दर और सुअर बना दिया और जिन्हों ने शैतान की पूजा की। ऐसे लोगों का बुरा ठिकाना है और वे सीधे रास्ते से बहुत दूर हैं। (६०) और जब ये लोग तुम्हारे पास आते हैं, तो कहते हैं कि हम ईमान ले आए, हालांकि कुफ़्र ले कर आते हैं और उसी को ले कर जाते हैं। और जिन बातों को ये छिपाए रखते हैं, ख़ुदा उन को ख़ूब जानता है। (६१) और तुम देखोगे कि उन में अक्सर गुनाह और ज़्यादती और हराम खाने में जल्दी कर रहे हैं। बेशक ये जो कुछ करते हैं बुरा करते हैं। (६२) भला उन के मशाइख़ और उलेमा उन्हें गुनाह की बातों और हराम खाने से मना क्यों नहीं करते हैं। (६३) और यहूद कहते हैं कि ख़ुदा का हाथ (गरदन से) बंधा हुआ है (यानी अल्लाह बख़ील है), उन्हीं के हाथ बांधे जाएं और ऐसा कहने की वजह से उन पर लानत हो (उस का हाथ बंधा हुआ नहीं), बल्कि उस के दोनों हाथ खुले हैं। वह जिस तरह (और जितना) चाहता है, ख़र्च करता है।[1] और (ऐ मुहम्मद !) यह (किताब) जो तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से तुम पर नाज़िल हुई, इस से उन में से अक्सर की शरारत और इन्कार बढ़ेगा और हम ने उन की आपसी दुश्मनी और कपट को क़ियामत तक के लिए डाल दिया है। ये जब लड़ाई के लिए आग जलाते हैं, ख़ुदा उस को बुझा देता है और यह मुल्क में फ़साद के लिए दौड़े फिरते हैं और ख़ुदा फ़साद करने वालों को दोस्त नहीं रखता। (६४) और अगर अहले किताब ईमान लाते और परहेज़गारी करते, तो हम उनसे उनके गुनाह मिटा देते और उनको नेमत के बाग़ों में दाख़िल करते। (६५) और अगर वे तौरात और इंजील को और जो (और किताबें) उन के परवरदिगार की तरफ़ से उन पर नाज़िल हुईं, उन को क़ायम रखते, तो (उन पर रोज़ी वर्षा की तरह बरसती कि) अपने ऊपर से और पांवों के नीचे से खाते। इन में कुछ लोग दर्मियानी रास्ता अपनाने वाले हैं और बहुत से ऐसे हैं जिन के अमल बुरे हैं। (६६)★

---

१. उन लोगों का अजब हाल था, कभी अल्लाह तआला को फ़क़ीर कहते और अपने आप को ग़नी। यानी जब मालदार थे, तो अपने आप को ग़नी कहते थे और ख़ुदा को फ़क़ीर। अब जो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के झुठलाने और उन की मुख़ालफ़त करने से उन को ग़रीबी ने आ घेरा, तो यों चिल्लाने लगे कि ख़ुदा बख़ील है और बुख़्ल की वजह से हम पर से अपने अता का हाथ खींच लिया है। अल्लाह तआला ने इन बे-अदबियों की वजह से उन पर लानत की और फ़रमाया कि हमारे तो दोनों हाथ खुले हैं और जिस तरह चाहते हैं, ख़र्च करते हैं।

व. लाज़िम ★रु. ९/१३ आ १०

या अय्युहर्रसूलु बल्लिग़् मा उन्ज़ि-ल इलै-क मिर्रब्बि-क ط व इल्लम् तफ़्अल् फ़-मा-बल्लग़्-त रिसाल-तहू ط वल्लाहु यअ्-सिमु-क मिनन्नासि ط इन्नल्ला-ह ला यह्दिल्-क़ौमल् - काफ़िरीन (६७) क़ुल् या अह्लल् - किताबि लस्तुम् अ़ला शैइन् ह़त्ता तुक़ीमुत्तौरा-त वल्-इन्जी-ल व मा उन्ज़ि-ल इलैकुम् मिर्रब्बिकुम् ط व ल-यज़ीदन्-न कसीरम्-मिन्हुम् मा उन्ज़ि-ल इलै-क मिर्रब्बि-क तुग़्यानंव्-व कुफ़्रन् ج फ़ ला तअ्-स अ़-लल्-क़ौमिल्-काफ़िरीन (६८) इन्नल्लज़ी-न आमनू वल्लज़ी-न हादू वस्साबिऊ-न वन्नसारा मन् आम-न बिल्लाहि वल्-यौमिल्-आख़िरि व अ़मि-ल सालिहन् फ़ ला ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून (६९) ल-क़द् अ-ख़ज़्ना मीसा-क़ बनी इस्रा-ई-ल व अर्सल्ना इलैहिम् रुसुलन् ط कुल्लमा जा-अहुम् रसूलुम्-बिमा ला तह्वा अन्फ़ुसुहुम् ل फ़रीक़न् कज़्ज़बू व फ़रीक़ंय्यक़्तुलून ق (७०) व ह़सिबू अल्ला तकू-न फ़ित-नतुन् फ़ अ़मू व सम्मू सुम्-म ताबल्लाहु अ़लैहिम् सुम्-म अ़मू व सम्मू कसीरुम्-मिन्हुम् वल्लाहु बसीरुम्-बिमा यअ्-मलून (७१) ल-क़द् क-फ़-रल्लज़ी-न क़ालू इन्नल्ला-ह हुवल्-मसीहुब्नु मर्य-म ط व क़ालल्मसीहु या बनी इस्रा-ई-लअ्-बुदुल्ला-ह रब्बी व रब्बकुम् ط इन्नहू मंय्युश्रिक् बिल्लाहि फ़-क़द् ह़र्रमल्लाहु अ़लैहिल्-जन्न-त व मअ्वाहुन्नारु ط व मा लिज़्ज़ालिमी - न मिन् अन्सार (७२) ल-क़द् क-फ़-रल्लज़ी-न क़ालू इन्नल्ला-ह सालिसु सलासतिन् ※ व मा मिन् इलाहिन् इल्ला इलाहुंव्वाहिदुन् ط व इल्लम् यन्तहू अ़म्मा यक़ूलू-न ल-य-मस्सन्नल्लज़ी-न क-फ़रू मिन्हुम् अ़ज़ाबुन् अलीम (७३)

وَكَثِيرٌ مِّنْهُمْ سَاءَ مَا يَعْمَلُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الرَّسُولُ بَلِّغْ مَا أُنزِلَ
إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ ۖ وَإِن لَّمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ رِسَالَتَهُ ۚ وَاللَّهُ
يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ۝
قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لَسْتُمْ عَلَىٰ شَيْءٍ حَتَّىٰ تُقِيمُوا التَّوْرَاةَ وَ
الْإِنجِيلَ وَمَا أُنزِلَ إِلَيْكُم مِّن رَّبِّكُمْ ۗ وَلَيَزِيدَنَّ كَثِيرًا مِّنْهُم
مَّا أُنزِلَ إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَكُفْرًا ۖ فَلَا تَأْسَ عَلَى الْقَوْمِ
الْكَافِرِينَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالصَّابِئُونَ وَ
النَّصَارَىٰ مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَا
خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝ لَقَدْ أَخَذْنَا مِيثَاقَ بَنِي
إِسْرَائِيلَ وَأَرْسَلْنَا إِلَيْهِمْ رُسُلًا ۖ كُلَّمَا جَاءَهُمْ رَسُولٌ بِمَا
لَا تَهْوَىٰ أَنفُسُهُمْ فَرِيقًا كَذَّبُوا وَفَرِيقًا يَقْتُلُونَ ۝ وَحَسِبُوا
أَلَّا تَكُونَ فِتْنَةٌ فَعَمُوا وَصَمُّوا ثُمَّ تَابَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ ثُمَّ عَمُوا
وَصَمُّوا كَثِيرٌ مِّنْهُمْ ۚ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِمَا يَعْمَلُونَ ۝ لَقَدْ كَفَرَ
الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ ۖ وَقَالَ الْمَسِيحُ
يَا بَنِي إِسْرَائِيلَ اعْبُدُوا اللَّهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ ۖ إِنَّهُ مَن يُشْرِكْ
بِاللَّهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَأْوَاهُ النَّارُ ۖ وَمَا لِلظَّالِمِينَ
مِنْ أَنصَارٍ ۝ لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ ثَالِثُ ثَلَاثَةٍ ۘ وَمَا

※ व. लाज़िम

ऐ पैग़म्बर ! जो इर्शाद ख़ुदा की तरफ़ से तुम पर नाज़िल हुए हैं, सब लोगों को पहुंचा दो और अगर ऐसा न किया तो तुम ने ख़ुदा के पैग़ाम पहुंचाने में कोताही की (यानी पैग़म्बरी का फ़र्ज़ अदा न किया) और ख़ुदा तुम को लोगों से बचाए रखेगा। बेशक ख़ुदा मुन्किरों को हिदायत नहीं देता। (६७) कहो कि ऐ अह्ले किताब ! जब तक तुम तौरात और इंजील को और जो (और किताबें) तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से तुम लोगों पर नाज़िल हुईं, उन को क़ायम न रखोगे, कुछ भी राह पर नहीं हो सकते और (यह क़ुरआन) जो तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से तुम पर नाज़िल हुआ है, इस से उन में से अक्सर की सर-कशी और कुफ़ और बढ़ेगा, तो तुम काफ़िरों की क़ौम पर अफ़सोस न करो। (६८) जो लोग ख़ुदा पर और आख़िरत के दिन पर ईमान लाएंगे और नेक अमल करेंगे, चाहे वे मुसलमान हों या यहूदी या सितारा परस्त या ईसाई, उन को (क़ियामत के दिन) न कुछ ख़ौफ़ होगा और न वे ग़मनाक होंगे। (६९) हम ने बनी इस्राईल से अह्द भी लिया और उन की तरफ़ पैग़म्बर भी भेजे, (लेकिन) जब कोई पैग़म्बर उन के पास ऐसी बातें ले कर आता, जिन को उन के दिल नहीं चाहते थे, तो वह (नबियों की) एक जमाअत को तो झुठला देते और एक जमाअत को क़त्ल कर देते थे। (७०) और यह ख़्याल करते थे कि (इस से उन पर) कोई आफ़त नहीं आने की, तो वे अंधे और बहरे हो गये फिर ख़ुदा ने उन पर मेहरबानी फ़रमायी, (लेकिन) फिर उन में से बहुत से अंधे और बहरे हो गए और ख़ुदा उन के सब कामों को देख रहा है। (७१) वे लोग बे-शुबहा काफ़िर हैं, जो कहते हैं कि मरयम के बेटे (ईसा) मसीह ख़ुदा हैं, हालांकि मसीह यहूद से यह कहा करते थे कि ऐ बनी इस्राईल ! ख़ुदा ही की इबादत करो, जो मेरा भी परवरदिगार है और तुम्हारा भी, (और जान रखो कि) जो शख़्स ख़ुदा के साथ शिर्क करेगा, ख़ुदा उस पर बहिश्त को हराम कर देगा और उस का ठिकाना दोज़ख़ है और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं। (७२) वे लोग (भी) काफ़िर हैं, जो इस बात के क़ायल हैं कि ख़ुदा तीन में का तीसरा है, हालांकि उस एक माबूद के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं। अगर ये लोग ऐसे क़ौल (व अक़ीदों) से बाज़ नहीं आएंगे, तो उन में जो काफ़िर हुए हैं, वे तकलीफ़ देने वाला अज़ाब पाएंगे। (७३) तो ये क्यों ख़ुदा

व. लाज़िम

अ-फ़-ला यतूबू-न इलल्लाहि व यस्तग़्फ़िरूनहू ; वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम (७४) मल्मसीहुब्नु मर्य-म इल्ला रसूलुन् ε क़द् ख़-लत् मिन् क़ब्लिहिर्रुसुलु ; व उम्मुहू सिद्दीक़तुन् ; काना यअ्कुलानित्तआ-म ⸗ उन्ज़ुर् कै-फ़ नुबय्यिनु लहुमुल्आयाति सुम्मन्ज़ुर् अन्ना युअ्फ़कून (७५) क़ुल् अ-तअ्बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि मा ला यम्लिकु लकुम् ज़र्रंव्-व ला नफ़्अन् ; वल्लाहु हुवस्समीअुल् - अलीम (७६) क़ुल् या अह्लल्-किताबि ला तग़्लू फ़ी दीनिकुम् ग़ैरल्-हक़्क़ि व ला तत्तबिअू अह्वा-अ क़ौमिन् क़द् ज़ल्लू मिन् क़ब्लु व अज़ल्लू कसीरंव्-व ज़ल्लू अन् सवा - इस्सबील ★ (७७) लुअिनल्लज़ी-न क-फ़रू मिम्-बनी इस्रा-ई-ल अला लिसानि दावू-द व ईसब्नि मर्य-म ; ज़ालि-क बिमा अ-सव्-व कानू यअ्-तदून (७८) कानू ला य-त-नाहौ-न अम्मुन्करिन् फ़-अ-लूहु ; ल बिअ्-स मा कानू यफ़्अलून (७९) तरा कसीरम्-मिन्हुम् य-त-वल्लौनल्लज़ी-न क-फ़रू ; ल-बिअ्-स मा क़द्दमत् लहुम् अन्फ़ुसुहुम् अन् सख़ितल्लाहु अलैहिम् व फ़िल्अ़ज़ाबि हुम् ख़ालिदून (८०) व लौ कानू युअ्मिनू-न बिल्लाहि वन्नबिय्यि व मा उन्ज़ि-ल इलैहि मत्तख़ज़ूहुम् औलिया-अ व लाकिन्-न कसीरम्-मिन्हुम् फ़ासिक़ून (८१) ल-त-जिदन्-न अशद्दन्नासि अ़दावतल्-लिल्लज़ी-न आमनुल्-यहू-द वल्लज़ी-न अश्रकू ε व ल - तजिदन्-न अक़्-रबहुम् मवद्दतल्-लिल्लज़ी-न आमनुल्लज़ी-न क़ालू इन्ना नसारा ; ज़ालि-क बि अन्-न मिन्हुम् क़िस्सीसी-न व रुह्बानंव्-व अन्नहुम् ला यस्तक्बिरून (८२)

مِنْ إِلَٰهٍ إِلَّا إِلَٰهٌ وَاحِدٌ ۚ وَإِن لَّمْ يَنتَهُوا عَمَّا يَقُولُونَ لَيَمَسَّنَّ
الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ أَفَلَا يَتُوبُونَ إِلَى اللَّهِ وَيَسْتَغْفِرُونَهُ ۚ
وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ مَّا الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ إِلَّا رَسُولٌ قَدْ خَلَتْ
مِن قَبْلِهِ الرُّسُلُ وَأُمُّهُ صِدِّيقَةٌ ۖ كَانَا يَأْكُلَانِ الطَّعَامَ ۗ انظُرْ
كَيْفَ نُبَيِّنُ لَهُمُ الْآيَاتِ ثُمَّ انظُرْ أَنَّىٰ يُؤْفَكُونَ ۝ قُلْ أَتَعْبُدُونَ
مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَلَا نَفْعًا ۚ وَاللَّهُ هُوَ السَّمِيعُ
الْعَلِيمُ ۝ قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لَا تَغْلُوا فِي دِينِكُمْ غَيْرَ الْحَقِّ وَلَا
تَتَّبِعُوا أَهْوَاءَ قَوْمٍ قَدْ ضَلُّوا مِن قَبْلُ وَأَضَلُّوا كَثِيرًا وَضَلُّوا
عَن سَوَاءِ السَّبِيلِ ۝ لُعِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِن بَنِي إِسْرَائِيلَ عَلَىٰ
لِسَانِ دَاوُودَ وَعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ ۚ ذَٰلِكَ بِمَا عَصَوا وَّكَانُوا يَعْتَدُونَ ۝
كَانُوا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَن مُّنكَرٍ فَعَلُوهُ ۚ لَبِئْسَ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ۝
تَرَىٰ كَثِيرًا مِّنْهُمْ يَتَوَلَّوْنَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ لَبِئْسَ مَا قَدَّمَتْ لَهُمْ أَنفُسُهُمْ
أَن سَخِطَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَفِي الْعَذَابِ هُمْ خَالِدُونَ ۝ وَلَوْ كَانُوا يُؤْمِنُونَ
بِاللَّهِ وَالنَّبِيِّ وَمَا أُنزِلَ إِلَيْهِ مَا اتَّخَذُوهُمْ أَوْلِيَاءَ وَلَٰكِنَّ كَثِيرًا
مِّنْهُمْ فَاسِقُونَ ۝ لَتَجِدَنَّ أَشَدَّ النَّاسِ عَدَاوَةً لِّلَّذِينَ آمَنُوا الْيَهُودَ وَ
الَّذِينَ أَشْرَكُوا ۖ وَلَتَجِدَنَّ أَقْرَبَهُم مَّوَدَّةً لِّلَّذِينَ آمَنُوا الَّذِينَ قَالُوا إِنَّا
نَصَارَىٰ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّ مِنْهُمْ قِسِّيسِينَ وَرُهْبَانًا وَأَنَّهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ ۝

★रु० १०/१४ आ ११

के आगे तौबा नहीं करते और उस से गुनाहों की माफ़ी नहीं मांगते। और ख़ुदा तो बख़्शने वाला मेहरबान है। (७४) मसीह बिन मरयम तो सिर्फ़ (ख़ुदा के) पैग़म्बर थे, उन से पहले भी बहुत-से रसूल गुज़र चुके थे और उन की वालिदा (मरयम ख़ुदा की वली और) सच्ची फ़रमांबरदार थीं। दोनों (इंसान थे और) खाना खाते थे। देखो, हम इन लोगों के लिए अपनी आयतें किस तरह खोल-खोल कर बयान करते हैं, फिर (यह) देखो कि ये किधर उलटे जा रहे हैं। (७५) कहो कि तुम ख़ुदा के सिवा ऐसी चीज़ की क्यों पूजा करते हो, जिस को तुम्हारे नफ़ा और नुक़सान का कुछ भी अख़्तियार नहीं और ख़ुदा ही (सब कुछ) सुनता-जानता है (७६) कहो कि अहले किताब! अपने दीन (की बात) में ना-हक़ मुबालग़ा न करो और ऐसे लोगों की ख़्वाहिशों के पीछे न चलो, जो (ख़ुद भी) पहले गुमराह हुए और भी अक्सरों को गुमराह कर गये और सीधे रास्ते से भटक गये। (७७) ★

जो लोग बनी इस्राईल में काफ़िर हुए, उन पर दाऊद और ईसा बिन मरयम की ज़ुबान से लानत की गयी, यह इस लिए कि ना-फ़रमानी करते थे और हद से आगे बढ़ जाते थे। (७८) (और) बुरे कामों से जो वे करते थे, एक दूसरे को रोकते नहीं थे। बिला शुब्हा वे बुरा करते थे। (७९) तुम उन में से बहुतों को देखोगे कि काफ़िरों से दोस्ती रखते हैं। उन्हों ने जो कुछ अपने वास्ते आगे भेजा है, बुरा है (वह यह) कि ख़ुदा उन से ना-ख़ुश हुआ और वे हमेशा अज़ाब में (पड़े) रहेंगे। (८०) और अगर वे ख़ुदा पर और पैग़म्बर पर और जो किताब उन पर नाज़िल हुई थी, उस पर यक़ीन रखते तो उन लोगों को दोस्त न बनाते, लेकिन उन में अक्सर बद-किरदार हैं। (८१) (ऐ पैग़म्बर!) तुम देखोगे कि मोमिनों के साथ सब से ज़्यादा दुश्मनी करने वाले यहूदी और मुश्रिक हैं और दोस्ती के लिहाज़ से मोमिनों से क़रीब-तर उन लोगों को पाओगे, जो कहते हैं कि हम नसारा हैं, यह इस लिए कि उन में आलिम भी हैं और मशाइख़ भी और वे तकब्बुर नहीं करते। (८२)

और जब इस (किताब) को सुनते हैं, जो (सब से पिछले) पैग़म्बर (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर नाज़िल हुई तो तुम देखते हो कि उन की आंखों से आंसू जारी हो जाते हैं, इस लिए कि उन्हों ने हक़ बात पहचान ली और वे (ख़ुदा की जनाब में) अर्ज़ करते हैं कि ऐ परवरदिगार! हम ईमान लाए, तो हम को मानने वालों में लिख ले। (८३) और हमें क्या हुआ है कि

★रु. १०/१४ आ ११

सातवां पारः वइज़ासमिअ़ू

सूरतुल्मा-इदति आयत ८३ से १२०

व इज़ा समिअ़ू मा उन्ज़ि-ल इलर्रसूलि तरा अअ्-युनहुम् तफ़ीज़ु मिनद्दम्अि मिम्मा अ-रफ़ू मिनल्ह़क़्क़ि यक़ूलू-न रब्बना आमन्ना फ़क्तुब्ना म-अश्शाहिदीन (८३) व मा लना ला नुअ्मिनु बिल्लाहि व मा जा-अना मिनल्ह़क़्क़ि व नत़्मअ़ु अंय्युद्ख़ि-लना रब्बुना म-अल्-क़ौमिस्सालिहीन (८४) फ़-असाबहुमुल्लाहु बिमा क़ालू जन्नातिन् तज्री मिन् तह़्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा व ज़ालि-क जज़ा-उल् मुह़्सिनीन (८५) वल्लज़ी-न क-फ़रू व कज़्ज़बू बि आयातिना उला-इ-क अस्ह़ाबुल्-जह़ीम ★ (८६) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तुह़र्रिमू त़य्यिबाति मा अ-ह़ल्लल्लाहु लकुम् व ला तअ्-तदू इन्नल्ला-ह ला युह़िब्बुल्-मुअ्-तदीन (८७) व कुलू मिम्मा र-ज़-क़कुमुल्लाहु ह़लालन् त़य्यिबंव् - वत्तक़ुल्लाहल्लज़ी अन्तुम् बिही मुअ्मिनून (८८) ला युआख़िज़ु-कुमुल्लाहु बिल्लग़्वि फ़ी ऐमानिकुम् व लाकिंय्युआख़िज़ुकुम् बिमा अ़क़्क़त्तुमुल्-ऐमा-न फ़-कफ़्फ़ारतुहू इत़्आमु अ-श-रति मसाकी-न

وَإِذَا سَمِعُوا مَا أُنْزِلَ إِلَى الرَّسُولِ تَرَىٰ أَعْيُنَهُمْ تَفِيضُ مِنَ
الدَّمْعِ مِمَّا عَرَفُوا مِنَ الْحَقِّ ۖ يَقُولُونَ رَبَّنَا آمَنَّا فَاكْتُبْنَا مَعَ
الشَّاهِدِينَ ۝ وَمَا لَنَا لَا نُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَمَا جَاءَنَا مِنَ الْحَقِّ وَ
نَطْمَعُ أَنْ يُدْخِلَنَا رَبُّنَا مَعَ الْقَوْمِ الصَّالِحِينَ ۝ فَأَثَابَهُمُ اللَّهُ
بِمَا قَالُوا جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ وَذَٰلِكَ
جَزَاءُ الْمُحْسِنِينَ ۝ وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ
أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُحَرِّمُوا طَيِّبَاتِ مَا
أَحَلَّ اللَّهُ لَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ۝ وَ
كُلُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ حَلَالًا طَيِّبًا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي أَنْتُمْ بِهِ
مُؤْمِنُونَ ۝ لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللَّهُ بِاللَّغْوِ فِي أَيْمَانِكُمْ وَلَٰكِنْ يُؤَاخِذُكُمْ
بِمَا عَقَّدْتُمُ الْأَيْمَانَ ۖ فَكَفَّارَتُهُ إِطْعَامُ عَشَرَةِ مَسَاكِينَ مِنْ
أَوْسَطِ مَا تُطْعِمُونَ أَهْلِيكُمْ أَوْ كِسْوَتُهُمْ أَوْ تَحْرِيرُ رَقَبَةٍ ۖ فَمَنْ
لَمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلَاثَةِ أَيَّامٍ ۚ ذَٰلِكَ كَفَّارَةُ أَيْمَانِكُمْ إِذَا حَلَفْتُمْ ۚ
وَاحْفَظُوا أَيْمَانَكُمْ ۚ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ وَالْأَنْصَابُ وَالْأَزْلَامُ
رِجْسٌ مِنْ عَمَلِ الشَّيْطَانِ فَاجْتَنِبُوهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝ إِنَّمَا
يُرِيدُ الشَّيْطَانُ أَنْ يُوقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ فِي الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ

मिन् औसति मा तुत़्अिमू-न अह्लीकुम् औ किस्वतुहुम् औ तह़्रीरु र-क़-बतिन् फ़ मल्लम् यजिद् फ़सियामु सलासति अय्यामिन् ज़ालि-क कफ़्फ़ारतु ऐमानिकुम् इज़ा ह़-लफ़्तुम् वह़्फ़ज़ू ऐमानकुम् कज़ालि-क युबय्यिनुल्लाहु लकुम् आयातिही ल-अ़ल्लकुम् तश्कुरून (८९) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इन्नमल्ख़म् - रु वलमैसिरु वल्अन्साबु वल्अज़्लामु रिज्सुम्मिन् अ़-मलिश्शैत़ानि फ़ज्तनिबूहु ल - अ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून (९०)

★रु. ११/१ आ ६

ख़ुदा पर और हक़ बात पर, जो हमारे पास आयी है, ईमान न लाएं। और हम उम्मीद रखते हैं कि परवरदिगार हम को नेक बन्दों के साथ बहिश्त में दाख़िल करेगा। (८४) तो ख़ुदा ने उन को इस कहने के बदले (बहिश्त के) बाग़ अता फ़रमाये, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, वे हमेशा उन में रहेंगे और भले लोगों का यही बदला है। (८५) और जिन लोगों ने कुफ़्र किया और हमारी आयतों को झुठलाया, वे जहन्नमी हैं। (८६) ★

मोमिनो! जो पाकीज़ा चीज़ें ख़ुदा ने तुम्हारे लिए हलाल की हैं, उनको हराम न करो और हद से न बढ़ो कि ख़ुदा हद से बढ़ने वालों को दोस्त नहीं रखता।(८७)और हलाल पाक रोज़ी ख़ुदा ने तुमको दी है, उसे खाओ और ख़ुदा से, जिस पर ईमान रखते हो, डरते रहो।(८८) ख़ुदा तुम्हारी बे-इरादा[1] क़समों की तुमसे पकड़ न करेगा,[2] लेकिन पुख़्ता क़समों पर(जिनके ख़िलाफ़ करोगे, तो)पकड़ लेगा, तो उस का कफ़्फ़ारा दस मुहताजों को औसत दर्जे का खाना खिलाना है, जो तुम अपने बाल-बच्चों को खिलाते हो या उन को कपड़े देना या एक ग़ुलाम आज़ाद करना, और जिस को यह न मिले, वह तीन रोज़े रखे। यह तुम्हारी क़समों का कफ़्फ़ारा है, जब तुम क़सम खा लो (और उसे तोड़ दो) और (तुम को) चाहिए कि अपनी क़स्मों की हिफ़ाज़त करो। इस तरह ख़ुदा तुम्हारे (समझाने के) लिए अपनी आयतें खोल-खोल कर बयान फ़रमाता है, ताकि तुम शुक्र करो। (८९) ऐ ईमान वालो! शराब और जुआ और बुत और पांसे (ये सब) नापाक काम शैतान के अमलों से हैं, सो

---

१. जैसे कोई दूर से किसी आदमी को देखे और कहे कि ख़ुदा की क़सम यह तो अब्दुल्लाह है, मगर हक़ीक़त में अब्दुल्लाह न हो या जैसे कुछ लोगों की आदत होती है कि बिला इरादा—'ला वल्लाह' या 'बला वल्लाह' या 'वल्लाह', 'बिल्लाह' कहते हैं। ऐसी क़स्मों पर कोई पकड़ नहीं है।

२. जैसे कोई आदमी क़सम खाये कि मैं कभी मांस नहीं खाऊंगा, या निकाह नहीं करूंगा।

★रु. ११/१ आ ६

इन्नमा युरीदुश्शैतानु अंय्यूक़ि-अ बैनकुमुल्अदाव-त वल्बग़ज़ा-अ फ़िल्ख़म्रि वल्मैसिरि व यसुद्दकुम् अन् ज़िक्रिल्लाहि व अनिस्सलाति ७ फ़ हल् अन्तुम् मुन्तहून (९१) व अतीअुल्ला-ह व अतीअुर्रसू-ल वह्ज़रू ७ फ़ इन् तवल्लैतुम् फ़अ्-लमू अन्नमा अला रसूलिनल्-बलाग़ुल्-मुबीन (९२) लै-स अ-लल्लज़ी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति जुनाहुन् फ़ीमा तअिमू इज़ा मत्तक़व्-व आमनू व अमिलुस्सालिहाति सुम्मत्तक़व्-व आमनू सुम्मत्तक़व्-व अह्सनू ७ वल्लाहु युहिब्बुल् - मुह्सिनीन ★(९३) या अय्युहल्-लज़ी-न आमनू ल-यब्लुवन्-न-कुमुल्लाहु बि शैइम्-मिनस्सैदि तनालुहू ऐदीकुम् व रिमाहुकुम् लि यअ्-ल-मल्लाहु मंय्यख़ाफ़ुहू बिल्ग़ैबि ७ फ़-मनिअ्-तदा बअ्-द ज़ालि-क फ़-लहू अज़ाबुन् अलीम (९४) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तक़्तुलुस्सै - द व अन्तुम् हुरुमुन् ७ व मन् क़-त-लहू मिन्कुम् मुतअम्मिदन् फ़ जज़ा-उम्-मिस्लु मा क़-त-ल मिनन्न-अमि यह्कुमु बिही ज़वा अद्लिम् - मिन्कुम्

واذا سمعوا

وَيَصُدَّكُمْ عَن ذِكْرِ اللَّهِ وَعَنِ الصَّلَاةِ فَهَلْ أَنتُم مُّنتَهُونَ ﴿٩١﴾ وَأَطِيعُوا
اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَاحْذَرُوا فَإِن تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوا أَنَّمَا عَلَىٰ
رَسُولِنَا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ﴿٩٢﴾ لَيْسَ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
جُنَاحٌ فِيمَا طَعِمُوا إِذَا مَا اتَّقَوا وَّآمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ ثُمَّ اتَّقَوا
وَّآمَنُوا ثُمَّ اتَّقَوا وَّأَحْسَنُوا وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ﴿٩٣﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ
آمَنُوا لَيَبْلُوَنَّكُمُ اللَّهُ بِشَيْءٍ مِّنَ الصَّيْدِ تَنَالُهُ أَيْدِيكُمْ وَرِمَاحُكُمْ
لِيَعْلَمَ اللَّهُ مَن يَخَافُهُ بِالْغَيْبِ فَمَنِ اعْتَدَىٰ بَعْدَ ذَٰلِكَ فَلَهُ عَذَابٌ
أَلِيمٌ ﴿٩٤﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقْتُلُوا الصَّيْدَ وَأَنتُمْ حُرُمٌ وَمَن
قَتَلَهُ مِنكُم مُّتَعَمِّدًا فَجَزَاءٌ مِّثْلُ مَا قَتَلَ مِنَ النَّعَمِ يَحْكُمُ بِهِ
ذَوَا عَدْلٍ مِّنكُمْ هَدْيًا بَالِغَ الْكَعْبَةِ أَوْ كَفَّارَةٌ طَعَامُ مَسَاكِينَ أَوْ عَدْلُ
ذَٰلِكَ صِيَامًا لِّيَذُوقَ وَبَالَ أَمْرِهِ عَفَا اللَّهُ عَمَّا سَلَفَ وَمَنْ عَادَ
فَيَنتَقِمُ اللَّهُ مِنْهُ وَاللَّهُ عَزِيزٌ ذُو انتِقَامٍ ﴿٩٥﴾ أُحِلَّ لَكُمْ صَيْدُ الْبَحْرِ
وَطَعَامُهُ مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِلسَّيَّارَةِ وَحُرِّمَ عَلَيْكُمْ صَيْدُ الْبَرِّ مَا
دُمْتُمْ حُرُمًا وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٩٦﴾ جَعَلَ اللَّهُ الْكَعْبَةَ
الْبَيْتَ الْحَرَامَ قِيَامًا لِّلنَّاسِ وَالشَّهْرَ الْحَرَامَ وَالْهَدْيَ وَالْقَلَائِدَ
ذَٰلِكَ لِتَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَأَنَّ اللَّهَ
بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٩٧﴾ اعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ وَأَنَّ اللَّهَ غَفُورٌ

हद्यम्-बालिग़ल्-कअ्-बति औ कफ़्फ़ारतुन् तआमु मसाकी-न औ अद्लु ज़ालि-क सियामल्-लि यज़ू-क़ व-बा-ल अम्रिही ७ अफ़ल्लाहु अम्मा स-लफ़ ७ व मन् आ-द फ़ यन्तक़िमुल्लाहु मिन्हु ७ वल्लाहु अज़ीज़ुन् ज़ुन्तिक़ाम (९५) उहिल् - ल लकुम् सैदुलबह्रि व तआमुहू मताअल्लकुम् व लिस्सय्यारति ७ व हुर्रि - म अलैकुम् सैदुल्बर्रि मा दुम्तुम् हुरुमन् ७ वत्तक़ुल्लाहल्लज़ी इलैहि तुह्शरून (९६) ज-अ-लल्लाहुल् - कअ् - बतल् - बैतल् - हरा-म क़ियामल्लिन्नासि वश्शह्रल् - हरा - म वल्हद-य वल्क़ला - इ - द ७ ज़ालि-क लि तअ्-लमू अन्नल्ला-ह यअ्-लमु मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि व अन्नल्ला-ह बि कुल्लि शैइन् अलीम (९७)

★रु. १२/२ आ ७

इन से बचते रहना, ताकि निजात पाओ। (९०) शैतान तो यह चाहता है कि शराब और जुए की वजह से तुम्हारे आपस में दुश्मनी और रंजिश डलवा दे और तुम्हें ख़ुदा की याद से और नमाज़ से रोक दे, तो तुम को (इन कामों से) बाज़ रहना चाहिए।[1] (९१) और ख़ुदा की फ़रमांबरदारी और (ख़ुदा के) रसूल की इताअत करते रहो और डरते रहो। अगर मुंह फेरोगे तो जान रखो कि हमारे पैग़म्बर के ज़िम्मे तो सिर्फ़ पैग़ाम का खोल कर पहुंचा देना है। (९२) जो लोग ईमान लाये और नेक काम करते रहे, उन पर उन चीज़ों का कुछ गुनाह नहीं जो वह खा चुके, जब कि उन्होंने परहेज़ किया और ईमान लाये और नेक काम किए। फिर परहेज़ किया और भले काम किए और ख़ुदा भला करने वालों को दोस्त रखता है। (९३) ★

मोमिनो! किसी क़दर शिकार से, जिन को तुम हाथों और नेज़ों से पकड़ सको, ख़ुदा तुम्हारी आज़माइश करेगा, (यानी एहराम की हालत में शिकार के मना करने से), ताकि मालूम करे कि उस से ग़ायबाना कौन डरता है, तो जो उस के बाद ज़्यादती करे, उस के लिए दुख देने वाला अज़ाब (तैयार) है। (९४) मोमिनो! जब तुम एहराम की हालत में हो, तो शिकार न मारना और जो तुम में से जान-बूझ कर उसे मारे तो (या तो उस का) बदला (दे और वह यह है कि) उसी तरह का चारपाया, जिसे तुम में से दो एतबार वाले आदमी तै कर दें, क़ुर्बानी (करे और यह क़ुर्बानी) काबे पहुंचायी जाए, या कफ़्फ़ारा (दे और वह) मिस्कीनों को खाना खिलाना (है) या उस के बराबर रोज़े रखे ताकि अपने काम की सज़ा (का मज़ा) चखे (और) जो पहले हो चुका, वह ख़ुदा ने माफ़ कर दिया और जो फिर (ऐसा काम) करेगा, तो ख़ुदा उस से बदला लेगा और ख़ुदा ग़ालिब और बदला लेने वाला है। (९५) तुम्हारे लिए दरिया (की चीज़ों) का शिकार और उन का खाना हलाल कर दिया गया है, (यानी) तुम्हारे और मुसाफ़िरों के फ़ायदे के लिए और जंगल (की चीज़ों) का शिकार जब तक तुम एहराम की हालत में रहो, तुम पर हराम है और ख़ुदा से, जिस के पास तुम (सब) जमा किये जाओगे, डरते रहो। (९६) ख़ुदा ने इज़्ज़त के घर (यानी) काबे को लोगों के लिए अम्न की वजह मुक़र्रर फ़रमाया है और इज़्ज़त के महीनों को और क़ुर्बानी को और उन जानवरों को, जिन के गले में पट्टे बंधे हों, यह इस लिए कि तुम जान लो कि जो कुछ आसमानों में और जो कुछ ज़मीन में है, ख़ुदा सब को जानता है और यह कि ख़ुदा को हर चीज़ का इल्म है। (९७) जान

१. यह तर्जुमा हम ने 'फ़ हल अन्तुम मुन्तहून' का किया है और इस में सवाल नहीं है। इस में हुक्म ही हमारे नज़दीक सही है।

★रु. १२/२ आ ७

इअ्-लमू अन्नल्ला-ह शदीदुल्अिक़ाबि व अन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम ⅼ (९८) मा अलर्रसूलि इल्लल्-बलाग़ु ⅼ वल्लाहु यअ्-लमु मा तुब्दू-न व मा तक्तुमून (९९) क़ुल् ला यस्तविल्ख़बीसु वत्तय्यिबु व लौ अअ्-ज-ब-क कस्रतुल्-ख़बीसि ɛ फ़त्तक़ुल्ला-ह या उलिल्अल्बाबि ल-अ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून ★(१००) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तस्अलू अन् अश्या-अ इन् तुब्-द लकुम् तसुअ्कुम् ɛ व इन् तस्अलू अन्हा ही-न युनज़्ज़लुल्-क़ुर्-आनु तुब् - द लकुम् ⅼ अफ़ल्लाहु अन्हा ⅼ वल्लाहु ग़फ़ूरुन् ह़लीम (१०१) क़द् स-अ-लहा क़ौमुम्मिन् क़ब्लिकुम् सुम्-म अस्बहू बिहा काफ़िरीन (१०२) मा ज-अ-लल्लाहु मिम्बहीरतिंव्-व ला सा-इबतिंव - व ला वसीलतिंव्-व ला हामिंव्-ɣ-व लाकिन्नल्-लज़ी-न क-फ़रू यफ़्तरू - न अ़-लल्लाहिल्-कज़ि-ब ⅼ व अक्सरुहुम् ला यअ्-क़िलून (१०३) व इज़ा क़ी-ल लहुम् तआलौ इला मा अन्ज़लल्लाहु व इलर्रसूलि क़ालू हस्बुना मा व - जद्ना अलैहि आबा-अना ⅼ अ-व लौ का-न आबा-उहुम् ला यअ्-लमू-न शैअंव्-व ला यह्तदून (१०४) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू अलैकुम् अन्फ़ुसकुम् ɛ ला यज़ुर्रुकुम् मन् ज़ल् - ल इज़हतदैतुम् ⅼ इलल्लाहि मर्जिअ़ुकुम् जमीअ़न् फ़युनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् तअ्-मलून (१०५) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू शहादतु बैनिकुम् इज़ा ह़-ज़-र अ-ह़-दकुमुलमौतु ह़ीनल्-वसिय्यतिस्नानि ज़वा अद्लिम्-मिन्कुम् औ आख़रानि मिन् ग़ैरिकुम् इन् अन्तुम् ज़रब्तुम् फ़िल्अर्ज़ि फ़-असाबत्कुम् मुसीबतुल्मौति ⅼ तह्बिसूनहुमा मिम्बअ् - दिस्सलाति फ़युक़्सिमानि बिल्लाहि इनिर्तब्तुम् ला नश्तरी बिही स-म-नंव्-व लौ का-न ज़ाक़ुर्बा ɣ व ला नक्तुमु शहा-द-तल्लाहि इन्ना इज़ल्लमिनल् - आसिमीन (१०६)

رَّحِيمٌ ﴿٩٨﴾ مَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ وَمَا تَكْتُمُونَ ﴿٩٩﴾
قُل لَّا يَسْتَوِي الْخَبِيثُ وَالطَّيِّبُ وَلَوْ أَعْجَبَكَ كَثْرَةُ الْخَبِيثِ ۚ فَاتَّقُوا
اللَّهَ يَا أُولِي الْأَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿١٠٠﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَسْأَلُوا
عَنْ أَشْيَاءَ إِن تُبْدَ لَكُمْ تَسُؤْكُمْ وَإِن تَسْأَلُوا عَنْهَا حِينَ يُنَزَّلُ الْقُرْآنُ
تُبْدَ لَكُمْ عَفَا اللَّهُ عَنْهَا ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ حَلِيمٌ ﴿١٠١﴾ قَدْ سَأَلَهَا قَوْمٌ مِّن
قَبْلِكُمْ ثُمَّ أَصْبَحُوا بِهَا كَافِرِينَ ﴿١٠٢﴾ مَا جَعَلَ اللَّهُ مِن بَحِيرَةٍ وَلَا سَائِبَةٍ
وَلَا وَصِيلَةٍ وَلَا حَامٍ ۙ وَلَٰكِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ ۖ
وَأَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ﴿١٠٣﴾ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا إِلَىٰ مَا أَنزَلَ اللَّهُ وَ
إِلَى الرَّسُولِ قَالُوا حَسْبُنَا مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا ۚ أَوَلَوْ كَانَ آبَاؤُهُمْ
لَا يَعْلَمُونَ شَيْئًا وَلَا يَهْتَدُونَ ﴿١٠٤﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا عَلَيْكُمْ أَنفُسَكُمْ ۖ
لَا يَضُرُّكُم مَّن ضَلَّ إِذَا اهْتَدَيْتُمْ ۚ إِلَى اللَّهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا
فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿١٠٥﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا شَهَادَةُ بَيْنِكُمْ
إِذَا حَضَرَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ حِينَ الْوَصِيَّةِ اثْنَانِ ذَوَا عَدْلٍ مِّنكُمْ أَوْ
آخَرَانِ مِنْ غَيْرِكُمْ إِنْ أَنتُمْ ضَرَبْتُمْ فِي الْأَرْضِ فَأَصَابَتْكُم مُّصِيبَةُ
الْمَوْتِ ۚ تَحْبِسُونَهُمَا مِن بَعْدِ الصَّلَاةِ فَيُقْسِمَانِ بِاللَّهِ إِنِ ارْتَبْتُمْ
لَا نَشْتَرِي بِهِ ثَمَنًا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ ۙ وَلَا نَكْتُمُ شَهَادَةَ اللَّهِ إِنَّا
إِذًا لَّمِنَ الْآثِمِينَ ﴿١٠٦﴾ فَإِنْ عُثِرَ عَلَىٰ أَنَّهُمَا اسْتَحَقَّا إِثْمًا فَآخَرَانِ يَقُومَانِ

★रु. १३/३ आ ७

रखो कि ख़ुदा सख़्त अज़ाब देने वाला है और यह कि ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान भी है (९८) पैग़म्बर के ज़िम्मे तो सिर्फ़ (ख़ुदा का पैग़ाम) पहुंचा देना है और जो कुछ तुम ज़ाहिर करते हो और कुछ छिपाते हो, ख़ुदा को सब मालूम है। (९९) कह दो कि ना-पाक और पाक चीज़ें बराबर नहीं होतीं, गो ना-पाक चीज़ों की ज़्यादती तुम्हें ख़ुश ही लगे, तो अक़्ल वालो ! ख़ुदा से डरते रहो, ताकि कामियाबी हासिल करो (१००) ★ मोमिनो ! ऐसी चीज़ों के बारे में मत सवाल करो कि अगर (उन की हक़ीक़तें) तुम पर ज़ाहिर कर दी जाएं तो तुम्हें बुरी लगें और अगर क़ुरआन के नाज़िल होने के दिनों में ऐसी बातें पूछोगे, तो तुम पर ज़ाहिर भी कर दी जाएंगी। (अब तो) ख़ुदा ने ऐसी बातों (के पूछने) से दर-गुज़र फ़रमाया है और ख़ुदा बख़्शने वाला बुर्दबार है। (१०१) इस तरह की बातें तुम से पहले लोगों ने भी पूछी थीं (मगर जब बतायी गयीं तो) फिर उन के इंकारी हो गये। (१०२) ख़ुदा ने न तो बहीरा[1] कुछ चीज बनाया है और न साइबा[2] और न वसीला[3] और न हाम[4] बल्कि काफ़िर ख़ुदा पर झूठ गढ़ते हैं और ये अक्सर अक़्ल नहीं रखते।[5] (१०३) और जब इन लोगों से कहा जाता है कि जो (किताब) ख़ुदा ने नाज़िल फ़रमायी है, उस की और अल्लाह के रसूल की तरफ़ रुजू करो, तो कहते हैं कि जिस तरीक़े पर हम ने अपने बाप-दादा को पाया है, वही हमें काफ़ी है। भला अगर उन के बाप-दादा, न तो कुछ जानते हों और न सीधे रास्ते पर हों, (तब भी ?) (१०४) ऐ ईमान वालो ! अपनी जानों की हिफ़ाज़त करो। जब तुम हिदायत पर हो, तो कोई गुमराह तुम्हारा कुछ भी बिगाड़ नहीं सकता। तुम सब को ख़ुदा की तरफ़ से लौट कर जाना है। उस वक़्त वह तुम को तुम्हारे सब कामों से जो (दुनिया में) किये थे, आगाह करेगा (और उन का बदला देगा।) (१०५) मोमिनो ! जब तुम में से किसी की मौत आ मौजूद हो, तो शहादत (गवाही, का निसाब) यह है कि वसीयत के वक़्त तुम (मुसलमानों) में से दो मर्द अद्ल वाले (यानी एतबार वाले) गवाह हों, या अगर (मुसलमान न मिलें और) तुम सफ़र कर रहे हो और (उस वक़्त) तुम पर मौत की मुसीबत वाक़ेअ हो तो किसी दूसरे मज़हब के दो (शख़्सों को) गवाह (कर लो)। अगर तुम को उन गवाहों के बारे में कुछ शक हो, तो उन को (अस्र की) नमाज़ के बाद खड़ा करो और दोनों ख़ुदा की क़स्में खाएं कि हम शहादत का बदला नहीं लेंगे, गो हमारा रिश्तेदार ही हो और न हम अल्लाह की गवाही को छिपाएंगे, अगर ऐसा करेंगे, तो गुनाहगार

---

१. ऊंटनी जो बुतों की नज़्र की जाती थी, उस के कान फाड़ कर छोड़ देते थे और कोई उस का दूध दूह नहीं सकता था।

२. जानवर जो बुतों के नाम पर छोड़ दिया जाता था और उस पर बोझ नहीं लादते थे।

३. ऊंटनी जो अव्वल उम्र में ऊपर तले दो मादा बच्चे देती, उसे बुतों के नाम पर छोड़ देते थे।

४. ऊंट जिस की नस्ल से कुछ बच्चे ले कर सवारी वग़ैरह का काम लेना छोड़ देते थे।

५. काफ़िरों ने बहीरा और साइबा और वसीला और हाम तो ख़ुद मुक़र्रर कर रखे थे और यह कहते थे कि यह इब्राहीमी शरीअत के हुक्म हैं और इन से अल्लाह का क़ुर्ब हासिल होता है। ख़ुदा ने फ़रमाया, यह सब झूठ और ख़ुदा पर बुहतान है। उस ने न किसी जानवर का नाम बहीरा वग़ैरह रखा, न उस को शरई हैसियत दी, न इसे क़ुर्बत का ज़रिया क़रार दिया।

★रु. १३/३ आ ७

फ़इन् अुसि - र अ़ला अन्नहुमस्तहक़्क़ा इस्मन् फ़आख़रानि यक़ूमानि मक़ामहुमा मिनल्लज़ीनस्-तह़क़्-क़ अ़लैहिमुल्-औलयानि फ़युक़्सिमानि बिल्लाहि ल-शहादतुना अहक़्क़ु मिन् शहादति - हिमा व मअ़् - तदैना ﺻﻠﮯ इन्ना इज़ल्लमिनज़्-ज़ालिमीन (१०७) ज़ालि-क अद्ना अंय्यअ्तू बिश्शहादति अ़ला वज्हिहा औ यख़ाफ़ू अन् तुरद्-द ऐमानुम्बअ़् - द ऐमानिहिम् ط वत्तक़ुल्ला - ह वस्मअ़ू ط वल्लाहु ला यह्दिल् - क़ौमल् - फ़ासिक़ीन★(१०८) यौ-म यज्मअ़ुल्लाहुर्-रुसु - ल फ़ - यक़ूलु माज़ा उजिब्तुम् ط क़ालू ला अ़िल्-म लना ط इन्न-क अन्-त अ़ल्लामुल्ग़ुयूब (१०९) इज़् क़ालल्लाहु या अ़ीसब्-न मर्यमज़्कुर् निअ़्-मती अ़लै-क व अ़ला वालिदति - क ⋙ इज़् अय्यत्तु - क बिरूह़िल्क़ुदुसि क़फ़ तुकल्लिमुन्ना - स फ़िल्मह्दि व कह्लन् ج व इज़् अ़ल्लम्तुकल् - किता-ब वल्ह़िक्म-त वत्तौरा-त वल्इन्जी-ल ج व इज़् तख़्लु-क़ु मिनत्तीनि कहै-अतित्तैरि बि-इज़्नी फ़ तन्फ़ुख़ु फ़ीहा फ़तकूनु तैरम् - बि - इज़्नी व तुब्रि-उल्-अक्-म-ह वल्-अब्-र-स बि-इज़्नी ج व इज़् तुख़्रिजुल्मौता बि-इज़्नी ج व इज़् क - फ़फ़्तु बनी इस्रा - ई-ल अ़न्-क इज़् जिअ़्तहुम् बिल्बय्यिनाति फ़-क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू मिन्हुम् इन् हाज़ा इल्ला सिह्रुम्-मुबीन (११०) व इज़् औहैतु इलल्-हवारिय्यी-न अन् आमिनू बी व बि-रसूली ج क़ालू आमन्ना वश्हद् बि-अन्नना मुस्लिमून (१११) इज़् क़ालल्-हवारिय्यू-न या अ़ीसब्-न मर्य-म हल् यस्ततीअ़ु रब्बु-क अंय्युनज़्ज़ि-ल अ़लैना मा-इ-द-तम्-मिनस्समा-इ ط क़ालत्तक़ुल्ला - ह इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन (११२) क़ालू नुरीदु अन् नअ्कु-ल मिन्हा व तत्म-इन्-न क़ुलूबुना व नअ़्-ल-म अन् क़द् सदक़्तना व नकू-न अ़लैहा मिनश्शाहिदीन ●(११३)

المآئدة ١٠٠ واذا سمعوا

مقامهما من الذين استحق عليهم الاوليٰن فيقسمٰن بالله
لشهادتنا احق من شهادتهما وما اعتدينا انا اذا لمن
الظلمين ۝ ذلك ادنى ان يأتوا بالشهادة على وجهها او يخافوا
ان ترد ايمان بعد ايمانهم واتقوا الله واسمعوا والله لا يهدي
القوم الفسقين ۝ يوم يجمع الله الرسل فيقول ماذا اجبتم
قالوا لا علم لنا انك انت علام الغيوب ۝ اذ قال الله يعيسى
ابن مريم اذكر نعمتي عليك وعلى والدتك اذ ايدتك بروح
القدس تكلم الناس في المهد وكهلا واذ علمتك الكتب و
الحكمة والتورىة والانجيل واذ تخلق من الطين كهيئة الطير
باذني فتنفخ فيها فتكون طيرا باذني وتبرئ الاكمه والابرص
باذني واذ تخرج الموتى باذني واذ كففت بني اسراءيل عنك
اذ جئتهم بالبينت فقال الذين كفروا منهم ان هذا الا سحر
مبين ۝ واذ اوحيت الى الحواريين ان امنوا بي وبرسولي
قالوا امنا واشهد باننا مسلمون ۝ اذ قال الحواريون
يعيسى ابن مريم هل يستطيع ربك ان ينزل علينا مائدة
من السماء قال اتقوا الله ان كنتم مؤمنين ۝ قالوا نريد ان
نأكل منها وتطمئن قلوبنا ونعلم ان قد صدقتنا ونكون

★रु. १४/४ आ ८ ⋙ व. लाज़िम ● रुबअ़ १/४

होंगे। (१०६) फिर अगर मालूम हो जाए कि इन दोनों ने (झूठ बोल कर) गुनाह हासिल किया है तो जिन लोगों का उन्हों ने हक़ मारना चाहा था, उन में से उन की जगह और दो गवाह खड़े हों, जो (मय्यत से) क़रीबी ताल्लुक़ात रखते हों, फिर वे ख़ुदा की क़स्में खाएं कि हमारी गवाही उन की गवाही से बहुत सच्ची है और हम ने कोई ज़्यादती नहीं की, ऐसा किया हो, तो हम बे-इंसाफ़ हैं। (१०७) इस तरीक़े से बहुत क़रीब है कि ये लोग सही-सही गवाही दें या इस बात से डरें कि (हमारी) क़स्में उन की क़स्मों के बाद रद्द कर दी जाएंगी। और ख़ुदा से डरो और (उस के हुक्मों को कान खोल कर सुनो और) ख़ुदा ना-फ़रमान लोगों को हिदायत नहीं देता। (१०८) ★

(वह दिन याद रखने के लायक़ है) जिस दिन ख़ुदा पैग़म्बरों को जमा करेगा, फिर उनसे पूछेगा कि तुम्हें क्या जवाब मिला था। वे अर्ज़ करेंगे कि हमें कुछ मालूम नहीं। तू ही ग़ैब की बातों को जानता है। (१०९) जब ख़ुदा (ईसा से) फ़रमाएगा कि ऐ ईसा बिन मरयम! मेरे उन एहसानों को याद करो, जो मैंने तुम पर और तुम्हारी वालिदा पर किए ▨ जब मैंने रूहुल क़ुद्स (यानी जिब्रील) से तुम्हारी मदद की। तुम झूले में और जवान होकर एक ही नस्क़ पर लोगों से बातें करते थे और जब मैं ने तुम को किताब और हिक्मत और तौरात और इंजील सिखायी और जब तुम मेरे हुक्म से मिट्टी का जानवर बना कर उस में फूंक मार देते थे, तो वह मेरे हुक्म से उड़ने लगता था और पैदाइशी अंधे और सफ़ेद दाग़ वाले मेरे हुक्म से चंगा कर देते थे और मुर्दे को मेरे हुक्म से (ज़िंदा कर के क़ब्र से) निकाल खड़ा करते थे और जब मैं ने बनी इस्राईल (के हाथों) को तुम से रोक दिया, जब तुम उन के पास खुले निशान ले कर आए, तो जो उन में से काफ़िर थे, कहने लगे कि यह तो खुला जादू है। (११०) और जब मैंने हवारियों की तरफ़ हुक्म भेजा कि मुझ पर और मेरे पैग़म्बर पर ईमान लाओ। वे कहने लगे कि (परवरदिगार!) हम ईमान लाये, तो गवाह रहियो कि हम फ़रमांबरदार हैं।[1] (१११) (वह क़िस्सा भी याद करो) जब हवारियों ने कहा कि ऐ ईसा बिन मरयम! क्या तुम्हारा परवरदिगार ऐसा कर सकता है कि हम पर आसमान से (खाने का) ख़्वान नाज़िल करे? उन्हों ने कहा कि अगर ईमान रखते हो तो ख़ुदा से डरो। (११२) वे बोले कि हमारी यह ख़्वाहिश है कि हम उस में से खाएं और हमारे दिल तसल्ली पाएं और हम जान लें कि तुम ने हम से सच कहा है और हम इस (ख़्वान के नाज़िल होने पर) गवाह रहें ● (११३) (तब)

---

१. हज़रत ईसा की पैरवी करने वाले और मदद करने वाले यानी साथी हवारी कहलाते थे। हवारी हक़ीक़त में धोबी को कहते हैं और वे लोग भी ज़्यादातर धोबी थे। आजकल यह लफ़्ज़ ज़्यादा आम हो गया है और दूसरे लोगों के साथियों के लिए भी इसे बोलने लगे हैं।

★रु. १४/४ आ ८ ▨ व. लाज़िम ● रुबअ़ १/४

क़ा-ल ओसब्नु मर्यमल्लाहुम-म रब्बना अन्ज़िल अलैना मा-इद-तम्-मिनस्समा-इ तकूनु लना ओदल्लि-अव्वलिना व आख़िरिना व आयतम्-मिन्-क वर्ज़ुक़्ना व अन्-त ख़ैरुर्राज़िक़ीन (११४) क़ालल्लाहु इन्नी मुनज़्ज़िलुहा अलैकुम् ट फ़-मंयक्फ़ुर् बअ्-दु मिन्कुम् फ़-इन्नी उ-अज़्ज़िबुहू अज़ाबल्ला उ-अज़्ज़िबुहू अ-ह-दम्मिनल् - आलमीन ★ (११५) व इज़् क़ालल्लाहु या ओसब-न मर्य-म अ अन्-त क़ुल्-त लिन्नासित्-तख़िज़ूनी व उम्मि-य इलाहैनि मिन् दूनिल्लाहि ь क़ा-ल सुब्हान-क मा यकूनु ली अन् अक़ू-ल मा लै-स ली ق बिहक़्क़िन् ь ▨ इन् कुन्तु क़ुल्तुहू फ़-क़द् अलिम्तहू ь तअ्-लमु मा फ़ी नफ़्सी व ला अअ्-लमु मा फ़ी नफ़्सि-क ь इन्न-क अन्-त अल्लामुल्-ग़ुयूब (११६) मा क़ुल्तु लहुम् इल्ला मा अमर्तनी बिही अनिअ्-बुदुल्ला-ह रब्बी व रब्बकुम् ट व कुन्तु अलैहिम् शहीदम्मा दुम्तु फ़ीहिम् ट फ़-लम्मा तवफ़्फ़ैतनी कुन्-त अन्तर्रक़ी-ब अलैहिम् ь व अन्-त अला कुल्लि शैइन् शहीद (११७) इन् तुअज़्ज़िब्हुम् फ़-इन्नहुम् अिबादु-क ट व इन् तग़्फ़िर् लहुम् फ़-इन्न-क अन्तल्-अज़ीज़ुल्-हकीम (११८) क़ालल्लाहु हाज़ा यौमु यन्फ़अुस्सादिक़ी-न सिद्क़ुहुम् ь लहुम् जन्नातुन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा अ-ब-दन् ь रज़ियल्लाहु अन्हुम् व रज़ू अन्हु ь ज़ालिकल्-फ़ौज़ुल्-अज़ीम (११९) लिल्लाहि मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा फ़ीहिन्-न ь व हु-व अला कुल्लि शैइन् क़दीर ★ (१२०)

عَلَيْهَا مِنَ الشّٰهِدِيْنَ ۝ قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ اللّٰهُمَّ رَبَّنَآ اَنْزِلْ
عَلَيْنَا مَآئِدَةً مِّنَ السَّمَآءِ تَكُوْنُ لَنَا عِيْدًا لِّاَوَّلِنَا وَاٰخِرِنَا وَاٰيَةً مِّنْكَ
وَارْزُقْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ۝ قَالَ اللّٰهُ اِنِّيْ مُنَزِّلُهَا عَلَيْكُمْ فَمَنْ
يَّكْفُرْ بَعْدُ مِنْكُمْ فَاِنِّيْٓ اُعَذِّبُهٗ عَذَابًا لَّآ اُعَذِّبُهٗٓ اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ۝
وَاِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ ءَاَنْتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُوْنِيْ وَاُمِّيَ
اِلٰهَيْنِ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۗ قَالَ سُبْحٰنَكَ مَا يَكُوْنُ لِيْٓ اَنْ اَقُوْلَ مَا لَيْسَ لِيْ
بِحَقٍّ ۗ اِنْ كُنْتُ قُلْتُهٗ فَقَدْ عَلِمْتَهٗ ۗ تَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِيْ وَلَآ اَعْلَمُ مَا فِيْ
نَفْسِكَ ۗ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ۝ مَا قُلْتُ لَهُمْ اِلَّا مَآ اَمَرْتَنِيْ بِهٖٓ اَنِ
اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبَّكُمْ ۚ وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا مَّا دُمْتُ فِيْهِمْ ۚ فَلَمَّا
تَوَفَّيْتَنِيْ كُنْتَ اَنْتَ الرَّقِيْبَ عَلَيْهِمْ ۗ وَاَنْتَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ۝
اِنْ تُعَذِّبْهُمْ فَاِنَّهُمْ عِبَادُكَ ۚ وَاِنْ تَغْفِرْ لَهُمْ فَاِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝
قَالَ اللّٰهُ هٰذَا يَوْمُ يَنْفَعُ الصّٰدِقِيْنَ صِدْقُهُمْ ۗ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ
تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۗ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ۗ ذٰلِكَ الْفَوْزُ
الْعَظِيْمُ ۝ لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا فِيْهِنَّ ۗ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝

سُوْرَةُ الْاَنْعَامِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ مِائَةٌ وَّخَمْسٌ وَّسِتُّوْنَ اٰيَةً وَّعِشْرُوْنَ رُكُوْعًا

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَجَعَلَ الظُّلُمٰتِ وَالنُّوْرَ ۬

६ सूरतुल् अन्आमि ५५

(मक्की) इस सूर: में अरबी के १२९३५ अक्षर, ३१०० शब्द, १६५ आयतें और २० रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी ख़-ल-क़स्समावाति वल्अर्-ज़ व ज-अ-लज़्ज़ुलुमाति वन्नू-र ۬ सुम्मल्लज़ी-न क-फ़रू बिरब्बिहिम् यअ्-दिलून (१)

★रु. १५/५ आ ७ ▨ व. न बी स. ★रु. १६/६ आ ५

ईसा बिन मरयम ने दुआ की कि ऐ हमारे परवरदिगार ! हम पर आसमान से ख़्वान नाज़िल फ़रमा कि हमारे लिए (वह दिन) ईद क़रार पाए यानी हमारे अगलों और पिछलों (सब) के लिए और वह तेरी तरफ़ से निशानी हो और हमें रिज़्क़ दे, तू बेहतर रिज़्क़ देने वाला है (११४) ख़ुदा ने फ़रमाया, मैं तुम पर ज़रूर ख़्वान नाज़िल फ़रमाऊंगा, लेकिन जो इस के बाद तुम में से कुफ़्र करेगा, उसे ऐसा अज़ाब दूंगा कि दुनिया वालों में किसी को ऐसा अज़ाब न दूंगा।' (११५) ★

और (उस वक़्त को भी याद रखो) जब ख़ुदा फ़रमाएगा, ऐ ईसा बिन मरयम! क्या तुमने लोगों से कहा था कि ख़ुदा के सिवा मुझे और मेरी मां को माबूद मुक़र्रर करो? वह कहेंगे कि तू पाक है, मुझे कब मुनासिब था कि मैं ऐसी बात कहता, जिस का मुझे कुछ हक़ नहीं ▨ अगर मैं ने ऐसा कहा होगा, तो तुझ को मालूम होगा, (क्योंकि) जो बात मेरे दिल में है, तू उसे जानता है और जो तेरे ज़मीर में है, उसे मैं नहीं जानता, बेशक तू ग़ैबों का जानने वाला है। (११६) मैं ने उन से कुछ नहीं कहा, अलावा इस के, जिस का तू ने हुक्म दिया है, वह यह है कि तुम ख़ुदा की इबादत करो, जो मेरा और तुम्हारा सब का परवरदिगार है और जब तक मैं उन में रहा उन (के हालात) की ख़बर रखता रहा। जब तू ने मुझे दुनिया से उठा लिया तो तू उन का निगरां था और तू हर चीज़ से ख़बरदार है। (११७) अगर तू उन को अज़ाब दे, तो ये तेरे बन्दे हैं और अगर बख़्श दे तो (तेरी मेहरबानी है।) बेशक तू ग़ालिब (और) हिक्मत वाला है। (११८) ख़ुदा फ़रमायेगा कि आज वह दिन है कि सच्चों को उन की सच्चाई ही फ़ायदा देगी। उन के लिए बाग़ हैं, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं। हमेशा-हमेशा उन में बसते रहेंगे। ख़ुदा उन से ख़ुश है और वे ख़ुदा से ख़ुश हैं, यह बड़ी कामियाबी है। (११९) आसमान और ज़मीन और जो कुछ इन (दोनों) में है, सब पर ख़ुदा ही की बादशाही है और वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। (१२०) ★

६ सूरः अन्आम ५५

सूरः अन्आम मक्की है और इस में एक सौ पैंसठ आयतें और बीस रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

हर तरह की तारीफ़ ख़ुदा ही को मुनासिब है जिस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और अंधेरा और रोशनी बनायी, फिर भी काफ़िर (और चीज़ों को) ख़ुदा के बराबर ठहराते

१. ये हवारी या तो ज़रूरतमंद थे या दिल के इत्मीनान के लिए उन्हों ने माइदः (ख़्वान) उतरने की दर्ख़्वास्त की थी। कुछ भी हो ख़ुदा ने उन पर खाने का ख़्वान नाज़िल फ़रमाया। तफ़्सीर लिखने वालों ने लिखा है कि ख़्वान इतवार के दिन नाज़िल हुआ था, जो ईसाइयों की ईद है।

★रु० १५/५ आ ७ ▨ व. न बी स. ★रु० १६/६ आ ५

हुवल्लज़ी ख़-ल-क़कुम् मिन् तीनिन् सुम्-म क़ज़ा अ-ज-लन् ط व अ-जलुम्-मुसम्मन् अिन्दहू सुम्-म अन्तुम् तम्तरून (२) व हुवल्लाहु फ़िस्समावाति व फ़िल्अर्ज़ि ط यअ्-लमु सिर्रकुम् व जह्-रकुम् व यअ्-लमु मा तक्सिबून (३) व मा तअ्तीहिम् मिन् आयतिम्-मिन् आयाति रब्बिहिम् इल्ला कानू अन्हा मुअ्-रिज़ीन (४) फ़-क़द् कज़्ज़बू बिल्हक़्क़ि लम्मा जा-अहुम् ط फ़सौ - फ़ यअ्तीहिम् अम्बा-उ मा कानू बिही यस्तह्ज़िऊन (५) अ-लम् यरौ कम् अह्लक्ना मिन् क़ब्लिहिम् मिन् क़र्निम्-मक्कन्नाहुम् फ़िल्अर्ज़ि मा लम् नुमक्किल्लकुम् व अर्सल्नस्समा-अ अलैहिम् मिद्रारंव्-व ज-अ़ल्नल्-अन्हा-र तज्री मिन् तह्तिहिम् फ़ - अह्लक्नाहुम् बिज़ुनूबिहिम् व अन्शअ्ना मिम्बअ्-दिहिम् क़र्नन् आख़रीन (६) व लौ नज़्ज़ल्ना अलै-क किताबन् फ़ी क़िर्तासिन् फ़-ल-मसूहु बिऐदीहिम् ल-क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू इन् हाज़ा इल्ला सिह्रुम्-मुबीन (७) व क़ालू लौला

ثم الذين كفروا بربهم يعدلون ۝ هو الذي خلقكم من طين
ثم قضى اجلا واجل مسمى عنده ثم انتم تمترون ۝ وهو
الله في السموت وفي الارض يعلم سركم وجهركم ويعلم ما تكسبون ۝
وما تاتيهم من اية من ايت ربهم الا كانوا عنها معرضين ۝
فقد كذبوا بالحق لما جاءهم فسوف ياتيهم انبؤا ما كانوا به
يستهزءون ۝ الم يروا كم اهلكنا من قبلهم من قرن مكنهم
في الارض ما لم نمكن لكم وارسلنا السماء عليهم مدرارا و
جعلنا الانهر تجري من تحتهم فاهلكنهم بذنوبهم وانشانا
من بعدهم قرنا اخرين ۝ ولو نزلنا عليك كتبا في قرطاس
فلمسوه بايديهم لقال الذين كفروا ان هذا الا سحر مبين ۝
وقالوا لولا انزل عليه ملك ولو انزلنا ملكا لقضي الامر ثم
لا ينظرون ۝ ولو جعلنه ملكا لجعلنه رجلا وللبسنا عليهم ما
يلبسون ۝ ولقد استهزئ برسل من قبلك فحاق بالذين
سخروا منهم ما كانوا به يستهزءون ۝ قل سيروا في الارض
ثم انظروا كيف كان عاقبة المكذبين ۝ قل لمن ما في السموت
والارض قل لله كتب على نفسه الرحمة ليجمعنكم الى يوم
القيمة لا ريب فيه الذين خسروا انفسهم فهم لا يؤمنون ۝

उन्ज़ि-ल अलैहि म-लकुन् ط व लौ अन्ज़ल्ना म-ल-कल्-लक़ुज़ियल्-अम्रु सुम्-म ला युन्ज़रून (८) व लौ ज-अ़ल्नाहु म-ल-कल्ल-जअ़ल्नाहु रजुलंव्-व ल-लबस्ना अलैहिम् मा यल्बिसून (९) व ल-क़दिस्तुह्ज़ि - अ बिरुसुलिम् - मिन् क़ब्लि-क फ़हा-क़ बिल्लज़ी-न सख़िरू मिन्हुम् मा कानू बिही यस्तह्ज़िऊन ★ (१०) क़ुल् सीरू फ़िल्अर्ज़ि सुम्मन्ज़ुरू कै - फ़ का-न आक़िबतुल्-मुकज़्ज़िबीन (११) क़ुल् लिमम्मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि ط क़ुल् लिल्लाहि ط क त-ब अ़ला नफ़्सिहिर्रह्-म-त ط ल-यज्मअ़न्नकुम् इला यौमिल्क़ियामति ला रै-ब फ़ीहि ط अल्लज़ी-न ख़सिरू अन्फ़ुसहुम् फ़हुम् ला युअ्मिनून (१२)

★रु० १/७ आ १०

हैं। (१) वही तो है, जिसने तुमको मिट्टी से पैदा किया, फिर (मरने का) एक वक़्त मुक़र्रर कर दिया और एक मुद्दत उस के यहां और है, फिर भी तुम (ऐ काफ़िरो! ख़ुदा के बारे में) शक करते हो। (२) और आसमान और ज़मीन में वही (एक) ख़ुदा है, तुम्हारी छिपी और खुली, सब बातें जानता है, और तुम जो अमल करते हो, सब का जानकार है। (३) और ख़ुदा की निशानियों में से कोई निशानी उन लोगों के पास नहीं आती, मगर ये उस से मुंह फेर लेते हैं। (४) जब उन के पास हक़ आया, तो उस को भी झुठला दिया, सो उन को उन चीज़ों का जिन का ये मज़ाक़ उड़ाते हैं, बहुत जल्द अंजाम मालूम हो जाएगा। (५) क्या उन्हों ने नहीं देखा कि हम ने उन से पहले कितनी उम्मतों को हलाक कर दिया, जिन के पांव मुल्क में ऐसा जमा दिए थे कि तुम्हारे पांव भी ऐसे नहीं जमाए और उन पर आसमान से लगातार मेंह बरसाया और नहरें बना दीं जो उन में (मकानों के) नीचे बह रही थीं। फिर उन को उन के बाद गुनाहों की वजह से हलाक कर दिया और उन के बाद और उम्मतें पैदा कर दीं। (६) और अगर हम तुम पर काग़ज़ों पर लिखी हुई किताब नाज़िल करते और ये उसे अपने हाथों से टटोल लेते तो जो काफ़िर हैं वह यही कह देते कि यह तो (साफ़ और) खुला जादू है। (७) और कहते हैं कि इन (पैग़म्बर) पर फ़रिश्ता क्यों नाज़िल न हुआ, (जो उन की तस्दीक़ करता)। अगर हम फ़रिश्ता नाज़िल करते, तो काम ही का फ़ैसला हो जाता, फिर उन्हें (बिल्कुल) मोहलत न दी जाती। (८) और हम किसी फ़रिश्ते को भेजते, तो उस मर्द की सूरत में भेजते और जो शुब्हा (अब) करते हैं, उसी शुब्हे में उन्हें फिर डाल देते।[1] (९) और तुम से पहले भी पैग़म्बरों के साथ मज़ाक़ होता रहा है, सो जो लोग उन में से मज़ाक़ किया करते थे, उन को मज़ाक़ की सज़ा ने आ घेरा। (१०) ★

कहो कि (ऐ रिसालत के इंकारियो!) मुल्क में चलो-फिरो, फिर देखो कि झुठलाने वालों का क्या अंजाम हुआ। (११) (उन से) पूछो कि आसमान और ज़मीन में जो कुछ है, किस का है? कह दो ख़ुदा का। उसने अपनी (पाक) ज़ात पर रहमत को लाज़िम कर लिया है। वह तुम सब को क़ियामत के दिन, जिसमें कुछ भी शक नहीं, ज़रूर जमा करेगा। जिन लोगों ने अपने को नुक़सान

१. मुश्रिकों ने कहा था कि पैग़म्बर फ़रिश्ता क्यों नहीं आता, इस पर हक़ तआला ने यह फ़रमाया कि जैसे अब आदमी की पैग़म्बरी के क़ायल नहीं हैं, उस वक़्त भी ताना करते कि यह तुम्हारी तरह का आदमी है।

★रु० १/७ आ १०

व लहू मा स-क-न फ़िल्लैलि वन्नहारि ط व हुवस्समीअ़ुल् - अ़लीम (१३) क़ुल् अग़ैरल्लाहि अत्तख़िज़ु वलिय्यन् फ़ातिरिस्समावाति वल्अर्ज़ि व हु-व युत्अिमु व ला युत्अमु ط क़ुल् इन्नी उमिर्तु अन् अकू-न अव्व-ल मन् अस्ल-म व ला तकूनन्-न मिनल्मुश्रिकीन (१४) क़ुल् इन्नी अख़ाफ़ु इन् अ़सैतु रब्बी अ़ज़ा-ब यौमिन् अ़ज़ीम (१५) मंय्युस्रफ़् अ़न्हु यौमइज़िन् फ़-क़द् रहि़महू ط व ज़ालिकल्फ़ौज़ुल्मुबीन (१६) व इंय्यम्सस्कल्लाहु बिज़ुर्रिन् फ़ला काशि-फ़ लहू इल्ला हु-व ط व इंय्यम्सस्-क बिख़ैरिन् फ़हु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (१७) व हुवल्क़ाहिरु फ़ौ-क़ अ़िबादिही ط व हुवल् - ह़कीमुल्-ख़बीर (१८) क़ुल् अय्यु शैइन् अक्बरु शहा-द-तन् ط क़ुलिल्लाहु قف शहीदुम् - बैनी व बैनकुम् قف व ऊहि-य इलय्-य हाज़ल्क़ुर्-आनु लिउन्ज़िर-कुम् बिही व मम्-ब-ल-ग़ ط अइन्नकुम् ल-तश्हदू-न अन्-न म-अ़ल्लाहि आलि-ह-तन् उख़्रा ط क़ुल् ला अश्हदु ج क़ुल् इन्नमा हु-व इलाहुंव्वाहि़दुंव्-व इन्ननी बरी-उम्-मिम्मा तुश्रिकून ▩ (१९) अल्लज़ी-न आतैनाहुमुल्-किता-ब यअ्-रिफ़ूनहू कमा यअ्-रिफ़ू-न अब्ना-अहुम् ▩ अल्लज़ी-न ख़सिरू अन्फ़ुसहुम् फ़हुम् ला युअ्मिनून ★ (२०) व मन् अज़्लमु मिम्मनिफ़्तरा अ़-लल्लाहि कज़िबन् औ कज़्ज़-ब बिआयातिही ط इन्नहू ला युफ़्लिहुज़्ज़ालिमून (२१) व यौ-म नह़्शुरुहुम् जमीअ़न् सुम्-म नक़ूलु लिल्लज़ी-न अश्रकू ऐ-न शुरका-उकुमुल्लज़ी-न कुन्तुम् तज़्अ़ुमून (२२) सुम-म लम् तकुन् फ़ित्नतुहुम् इल्ला अन् क़ालू वल्लाहि रब्बिना मा कुन्ना मुश्रिकीन (२३) उन्ज़ुर् कै-फ़ क-ज़बू अ़ला अन्फ़ुसिहिम् व ज़ल्-ल अ़न्हुम् मा कानू यफ़्तरून (२४)

وَلَهُ مَا سَكَنَ فِي الَّيْلِ وَالنَّهَارِ ۚ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝ قُلْ أَغَيْرَ
اللَّهِ أَتَّخِذُ وَلِيًّا فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ يُطْعِمُ وَلَا يُطْعَمُ ۗ قُلْ
إِنِّي أُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ أَوَّلَ مَنْ أَسْلَمَ وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝
قُلْ إِنِّي أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۝ مَنْ
يُصْرَفْ عَنْهُ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمَهُ ۚ وَذٰلِكَ الْفَوْزُ الْمُبِينُ ۝ وَإِنْ
يَمْسَسْكَ اللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ ۖ وَإِنْ يَمْسَسْكَ بِخَيْرٍ
فَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهِ ۚ وَهُوَ الْحَكِيمُ
الْخَبِيرُ ۝ قُلْ أَيُّ شَيْءٍ أَكْبَرُ شَهَادَةً ۖ قُلِ اللَّهُ ۖ شَهِيدٌ بَيْنِي وَ
بَيْنَكُمْ ۚ وَأُوحِيَ إِلَيَّ هٰذَا الْقُرْآنُ لِأُنْذِرَكُمْ بِهِ وَمَنْ بَلَغَ ۚ أَئِنَّكُمْ
لَتَشْهَدُونَ أَنَّ مَعَ اللَّهِ آلِهَةً أُخْرَىٰ ۚ قُلْ لَا أَشْهَدُ ۚ قُلْ إِنَّمَا
هُوَ إِلٰهٌ وَاحِدٌ وَإِنَّنِي بَرِيءٌ مِمَّا تُشْرِكُونَ ۝ الَّذِينَ آتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ
يَعْرِفُونَهُ كَمَا يَعْرِفُونَ أَبْنَاءَهُمُ ۘ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ فَهُمْ
لَا يُؤْمِنُونَ ۝ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ
بِآيٰتِهِ ۚ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُونَ ۝ وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ
نَقُولُ لِلَّذِينَ أَشْرَكُوا أَيْنَ شُرَكَاؤُكُمُ الَّذِينَ كُنْتُمْ تَزْعُمُونَ ۝
ثُمَّ لَمْ تَكُنْ فِتْنَتُهُمْ إِلَّا أَنْ قَالُوا وَاللَّهِ رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِينَ ۝
انْظُرْ كَيْفَ كَذَبُوا عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ ۚ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ۝

▩ व. लाज़िम ▩ व. लाज़िम ★ रु. २/८ आ १०

में डाल रखा है, वे ईमान नहीं लाते। (१२) और जो मख़्लूक़ रात और दिन में बसती है, सब उसी की है और वह सुनता-जानता है। (१३) कहो, क्या मैं ख़ुदा को छोड़ कर किसी और को मददगार बनाऊं कि (वही तो) आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला है और वही (सब को) खाना देता है और ख़ुद किसी से खाना नहीं लेता।[1] (यह भी) कह दो कि मुझे यह हुक्म हुआ है कि मैं सब से पहले इस्लाम लाने वाला हूं और यह कि तुम (ऐ पैग़म्बर !) मुश्रिकों में न होना। (१४) (यह भी) कह दो कि अगर मैं अपने परवरदिगार की ना-फ़रमानी करूं, तो मुझे बड़े दिन के अज़ाब का डर है। (१५) जिस शख़्स से उस दिन अज़ाब टाल दिया गया, उस पर ख़ुदा ने (बड़ी) मेहरबानी फ़रमायी और यह खुली कामियाबी है। (१६) और अगर ख़ुदा तुम को कोई सख़्ती पहुंचाए, तो इस के सिवा उस को कोई दूर करने वाला नहीं और अगर नेमत (व राहत) अता करे तो (कोई उस को रोकने वाला नहीं), वह हर चीज़ पर क़ादिर है। (१७) और वह अपने बन्दों पर ग़ालिब है और वह हकीम और ख़बरदार है। (१८) उन से पूछो कि सब से बढ़ कर (इंसाफ़ के क़रीब) किस की गवाही है। कह दो कि ख़ुदा ही मुझ में और तुम में गवाह है और यह क़ुरआन मुझ पर इस लिए उतारा गया है कि इसके ज़रिए से तुम को और जिस शख़्स तक वह पहुंच सके उस को आगाह कर दूं। क्या तुम इस बात की गवाही देते हो कि ख़ुदा के साथ और भी माबूद हैं। (ऐ मुहम्मद !) कह दो कि मैं तो ऐसी गवाही नहीं देता। कह दो कि सिर्फ़ वही एक माबूद है और जिन को तुम लोग शरीक बनाते हो, मैं उन से बेज़ार हूं ▩ (१९) जिन लोगों को हमने किताब दी है, वे इन (हमारे पैग़म्बर) को इस तरह पहचानते हैं, जिस तरह अपने बेटों को पहचाना करते हैं, ▩ जिन्होंने अपने आप को नुक़्सान में डाल रखा है, वे ईमान नहीं लाते। (२०)★

और उस शख़्स से ज़्यादा कौन ज़ालिम है, जिसने ख़ुदा पर झूठ गढ़ा या उसकी आयतों को झुठलाया। कुछ शक नहीं कि ज़ालिम लोग निजात नहीं पाएंगे। (२१) और जिस दिन हम सब लोगों को जमा करेंगे, फिर मुश्रिकों से पूछेंगे कि (आज) वे तुम्हारे शरीक कहां हैं, जिन का तुम्हें दावा था ? (२२) तो उन से कुछ उज़्र (बहाना) न बन पड़ेगा (और) इस के अलावा (कुछ चारा न होगा) कि कहें, ख़ुदा की क़सम ! जो हमारा परवरदिगार है, हम शरीक नहीं बनाते थे। (२३) देखो, वे अपने ऊपर कैसा झूठ बोले और जो कुछ ये झूठ गढ़ा करते थे, सब उन से जाता

1. क्योंकि वह खाने-पीने की ज़रूरत से पाक है। उसे इस की ज़रूरत ही नहीं।

▩ व. लाज़िम ▩ व. लाज़िम ★रु. २/८ आ १०

व मिन्हुम् मंय्यस्तमिअु इलै-क ج व ज-अ़ल्ना अ़ला क़ुलूबिहिम् अकिन्नतन् अंय्यफ़्क़हूहु व फ़ी आज़ानिहिम् वक़्रन् ط व इंय्यरौ कुल्-ल आयतिल्ला युअ्मिनू बिहा ط हत्ता इज़ा जा-ऊ-क युजादिलून-क यक़ूलुल्लज़ी-न क-फ़रू इन् हाज़ा इल्ला असातीरुल्-अव्वलीन (२५) व हुम् यन्हौ-न अ़न्हु व यन्औ-न अ़न्हु ج व इंय्युह्लिकू-न इल्ला अन्फ़ुसहुम् व मा यश्अुरून (२६) व लौ तरा इज़् वुक़िफ़ू अ़लन्नारि फ़क़ालू यालैतना नुरद्दु व ला नुकज़्ज़ि-ब बिआयाति रब्बिना व नकू-न मिनल्-मुअ्मिनीन (२७) बल् बदा लहुम् मा कानू युख़्फ़ू-न मिन् क़ब्लु ط व लौ रुद्दू ल-आदू लिमा नुहू अ़न्हु व इन्नहुम् लकाज़िबून (२८) व क़ालू इन् हि-य इल्ला हयातुनद्दुन्या व मा नह्नु बिमब्अूसीन (२९) व लौ तरा इज़् वुक़िफ़ू अ़ला रब्बिहिम् ط क़ा-ल अलै-स हाज़ा बिल्हक़्क़ि ط क़ालू बला व रब्बिना ط क़ा-ल फ़ज़ूक़ुल्-अ़ज़ा-ब बिमा कुन्तुम् तक्फ़ुरून ★ (३०) क़द् ख़सिरल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिलिक़ा-इल्लाहि ط हत्ता इज़ा जा-अत्-हुमुस्साअ़तु बग़्-त-तन् क़ालू या हस्-र-तना अ़ला मा फ़र्रत़्ना फ़ीहा ۙ व हुम् यह्मिलू-न औज़ारहुम् अ़ला ज़ुहूरिहिम् ط अला सा-अ मा यज़िरून (३१) व मल्हयातुद्दुन्या इल्ला लअिबुंव्-व लह्वुन् ط व लद्दारुल् - आख़िरतु ख़ैरुल् - लिल्लज़ी-न यत्तक़ू-न ط अ-फ़ला तअ्क़िलून (३२) क़द् नअ्-लमु इन्नहू ल-यह्ज़ुनुकल्लज़ी यक़ूलू-न फ़-इन्नहुम् ला युकज़्ज़िबू-न-क व लाकिन्नज़्ज़ालिमी-न बिआयातिल्लाहि यज्हदून (३३) व ल-क़द् कुज़्ज़िबत् रुसुलुम्मिन् क़ब्लि-क फ़-स-बरू अ़ला मा कुज़्ज़िबू व ऊज़ू हत्ता अताहुम् नस्रुना ج व ला मुबद्दि-ल लिकलिमातिल्लाहि ج व ल-क़द् जा-अ-क मिन् न-बइल् - मुर्सलीन (३४)

الانعام ١٠٣ واذا سمعوا

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُ اِلَيْكَ ۚ وَجَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ
وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ؕ وَاِنْ يَّرَوْا كُلَّ اٰيَةٍ لَّا يُؤْمِنُوْا بِهَا ؕ حَتّٰٓى اِذَا
جَآءُوْكَ يُجَادِلُوْنَكَ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ
الْاَوَّلِيْنَ ﴿۲۵﴾ وَهُمْ يَنْهَوْنَ عَنْهُ وَيَنْـَٔوْنَ عَنْهُ ۚ وَاِنْ يُّهْلِكُوْنَ اِلَّآ
اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ﴿۲۶﴾ وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ وُقِفُوْا عَلَى النَّارِ فَقَالُوْا
يٰلَيْتَنَا نُرَدُّ وَلَا نُكَذِّبَ بِاٰيٰتِ رَبِّنَا وَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۲۷﴾ بَلْ
بَدَا لَهُمْ مَّا كَانُوْا يُخْفُوْنَ مِنْ قَبْلُ ؕ وَلَوْ رُدُّوْا لَعَادُوْا لِمَا نُهُوْا عَنْهُ
وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿۲۸﴾ وَقَالُوْٓا اِنْ هِيَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا وَمَا نَحْنُ
بِمَبْعُوْثِيْنَ ﴿۲۹﴾ وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ وُقِفُوْا عَلٰى رَبِّهِمْ ؕ قَالَ اَلَيْسَ هٰذَا
بِالْحَقِّ ؕ قَالُوْا بَلٰى وَرَبِّنَا ؕ قَالَ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿۳۰﴾
قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِلِقَآءِ اللّٰهِ ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَتْهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً
قَالُوْا يٰحَسْرَتَنَا عَلٰى مَا فَرَّطْنَا فِيْهَا ۙ وَهُمْ يَحْمِلُوْنَ اَوْزَارَهُمْ عَلٰى
ظُهُوْرِهِمْ ؕ اَلَا سَآءَ مَا يَزِرُوْنَ ﴿۳۱﴾ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَعِبٌ وَّ
لَهْوٌ ؕ وَلَلدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۳۲﴾ قَدْ
نَعْلَمُ اِنَّهٗ لَيَحْزُنُكَ الَّذِيْ يَقُوْلُوْنَ فَاِنَّهُمْ لَا يُكَذِّبُوْنَكَ وَلٰكِنَّ
الظّٰلِمِيْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ ﴿۳۳﴾ وَلَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ
فَصَبَرُوْا عَلٰى مَا كُذِّبُوْا وَاُوْذُوْا حَتّٰٓى اَتٰىهُمْ نَصْرُنَا ۚ وَلَا مُبَدِّلَ

منزل ۲

★रु. ३/६ आ १०

रहा। (२४) और उन में कुछ ऐसे हैं कि तुम्हारी (बातों की) तरफ़ कान रखते हैं और हम ने उन के दिलों पर तो परदे डाल दिए हैं कि उन को समझ न सकें और कानों में बोझ पैदा कर दिया है (कि सुन न सकें) और अगर ये तमाम निशानियां भी देख लें तब भी उन पर ईमान न लाएं, यहां तक कि जब तुम्हारे पास तुम से बहस करने को आते हैं, तो जो काफ़िर हैं, कहते हैं, यह (क़ुरआन) और कुछ भी नहीं, सिर्फ़ पहले लोगों की कहानियां हैं। (२५) वे इस से (और को भी) रोकते हैं और ख़ुद भी परे रहते हैं, मगर (इन बातों से) अपने आप ही को हलाक करते हैं और (इस से) बे-ख़बर हैं। (२६) काश, तुम (उन को उस वक़्त) देखो, जब ये दोज़ख़ के किनारे खड़े किये जाएंगे और कहेंगे कि ऐ काश ! हम फिर (दुनिया में) लौटा दिए जाएं, ताकि अपने परवरदिगार की आयतों को झुठलाएं नहीं और मोमिन हो जाएं। (२७) हां, ये जो कुछ पहले छिपाया करते थे, (आज) उन पर ज़ाहिर हो गया और अगर ये (दुनिया में) लौटाए भी जाएं, तो जिन (कामों) से उनको मना किया गया था, वही फिर करने लगें। कुछ शक नहीं कि ये झूठे हैं। (२८) और कहते हैं कि हमारी जो दुनिया की जिंदगी है, बस यही (ज़िंदगी) है और हम (मरने के बाद) फिर ज़िंदा नहीं किये जाएंगे। (२९) और काश ! तुम (उन को उस) वक़्त देखो, जब ये अपने परवर-दिगार के सामने खड़े किये जाएंगे और वह फ़रमाएगा, क्या यह (दोबारा ज़िंदा होना) हक़ नहीं, तो कहेंगे, क्यों नहीं, परवरदिगार की क़सम ! (बिल्कुल हक़ है।) ख़ुदा फ़रमाएगा, अब कुफ़्र के बदले (जो दुनिया में करते थे) अज़ाब (के मज़े) चखो। (३०) ✶

जिन लोगों ने ख़ुदा के सामने हाज़िर होने को झूठ समझा, वे घाटे में आ गये, यहां तक कि जब उन पर क़ियामत यकायक आ मौजूद होगी, तो बोल उठेंगे कि (हाय !) उस ख़ता पर अफ़सोस है, जो हमने क़ियामत के बारे में की और वह अपने (आमाल के) बोझ अपनी पीठों पर उठाए हुए होंगे। देखो, जो बोझ ये उठा रहे हैं, बहुत बुरा है। (३१) और दुनिया की ज़िंदगी तो एक खेल और मश्ग़ला है और बहुत अच्छा घर तो आख़िरत का घर है (यानी) उन के लिए, जो (ख़ुदा से) डरते हैं, क्या तुम समझते नहीं ? (३२) हम को मालूम है कि इन काफ़िरों की बातें तुम्हें रंज पहुंचाती हैं, (मगर) ये तुम्हें झुठलाते नहीं, बल्कि ज़ालिम ख़ुदा की आयतों से इंकार करते हैं। (३३) और तुम से पहले भी पैग़म्बर झुठलाए जाते रहे, तो वे झुठलाने और तक्लीफ़ देने पर सब्र करते रहे, यहां तक कि उन के पास हमारी मदद पहुंचती रही और ख़ुदा की बातों को कोई भी बदलने वाला नहीं। और तुम को पैग़म्बरों (के अह्वाल) की ख़बर पहुंच चुकी है, (तो तुम भी

✶रु॰ ३/९ आ १०

व इन् का-न कबु-र अलै-क इअ्-राज़ुहुम् फ़इनिस्त-तअ्-त अन् तब्तग़ि-य न-फ़-क़न् फ़िल्अर्ज़ि औ सुल्लमन् फ़िस्समाइ फ़-तअ्तियहुम् बिआयतिन्, व लौ शा-अल्लाहु ल-ज-म-अ़हुम् अ़-लल्हुदा फ़ला तकूनन्-न मिनल्-जाहिलीन ● (३५) इन्नमा यस्तजीबुल्लज़ी-न यस्मअू-न ▒ वल्मौता यब्अ़सुहुमुल्लाहु सुम्-म इलैहि युर्जअून ▒ (३६) व क़ालू लौला नुज़्ज़ि-ल अ़लैहि आयतुम्-मिर्रब्बिही, क़ुल् इन्नल्ला-ह क़ादिरुन् अ़ला अंय्युनज़्ज़ि-ल आयतंव्-व लाकिन्-न अक्सरहुम् ला यअ्-लमून (३७) व मा मिन् दाब्बतिन् फ़िल्अर्ज़ि व ला ताइरिंय्यतीरु बिजनाहैहि इल्ला उ-ममुन् अम्सालुकुम्, मा फ़र्रत्ना फ़िल्-किताबि मिन् शैइन् सुम्-म इला रब्बिहिम् युह्शरून (३८) वल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना सुम्मुंव्-व बुक्मुन् फ़िज़्ज़ुलुमाति, मंय्य-शइल्लाहु युज़्लिल्हु, व मंय्यशअ् यज्अ़ल्हु अ़ला सिरातिम्-मुस्तक़ीम (३९) क़ुल् अ-रऐतकुम् इन् अताकुम् अ़ज़ाबुल्लाहि औ अतत्कुमुस्साअ़तु अग़ैरल्लाहि तद्अू-न, इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (४०) बल् इय्याहु तद्अू-न फ़-यक्शिफ़ु मा तद्अू-न इलैहि इन् शा-अ व तन्सौ-न मा तुश्रिकून ★ (४१) व ल-क़द् अर्सल्ना इला उ-ममिम्मिन् क़ब्लि-क फ़-अ-ख़ज़्नाहुम् बिल्बअ्साइ वज़्ज़र्राइ ल-अ़ल्लहुम् य-त-ज़र्रअून (४२) फ़लौला इज् जाअहुम् बअ्सुना तज़र्रअू व लाकिन् क़-सत् क़ुलूबुहुम् व ज़य्-य-न लहुमुश्शैतानु मा कानू यअ्-मलून (४३) फ़-लम्मा नसू मा ज़ुक्किरू बिही फ़-तह्ना अ़लैहिम् अब्वा-ब कुल्लि शैइन्, हत्ता इज़ा फ़रिहू बिमा ऊतू अ-ख़ज़्नाहुम् बग़्-त-तन् फ़-इज़ा हुम् मुब्लिसून (४४)

الانعام ١٠٥ واذا سمعوا

لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ۚ وَلَقَدْ جَآءَكَ مِنْ نَّبَاِی الْمُرْسَلِيْنَ ۝ وَاِنْ كَانَ كَبُرَ
عَلَيْكَ اِعْرَاضُهُمْ فَاِنِ اسْتَطَعْتَ اَنْ تَبْتَغِيَ نَفَقًا فِي الْاَرْضِ اَوْ
سُلَّمًا فِي السَّمَآءِ فَتَاْتِيَهُمْ بِاٰيَةٍ ۚ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَمَعَهُمْ عَلَى
الْهُدٰى فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ ۝ اِنَّمَا يَسْتَجِيْبُ الَّذِيْنَ يَسْمَعُوْنَ
وَالْمَوْتٰى يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ ثُمَّ اِلَيْهِ يُرْجَعُوْنَ ۝ وَقَالُوْا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ
اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ۚ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ قَادِرٌ عَلٰٓى اَنْ يُّنَزِّلَ اٰيَةً وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ
لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْاَرْضِ وَلَا طٰٓئِرٍ يَّطِيْرُ بِجَنَاحَيْهِ
اِلَّآ اُمَمٌ اَمْثَالُكُمْ ۚ مَا فَرَّطْنَا فِي الْكِتٰبِ مِنْ شَيْءٍ ثُمَّ اِلٰى رَبِّهِمْ
يُحْشَرُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا صُمٌّ وَّبُكْمٌ فِي الظُّلُمٰتِ ۚ مَنْ
يَّشَاِ اللّٰهُ يُضْلِلْهُ ۚ وَمَنْ يَّشَاْ يَجْعَلْهُ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝ قُلْ
اَرَءَيْتَكُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُ اللّٰهِ اَوْ اَتَتْكُمُ السَّاعَةُ اَغَيْرَ اللّٰهِ
تَدْعُوْنَ ۚ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ بَلْ اِيَّاهُ تَدْعُوْنَ فَيَكْشِفُ مَا
تَدْعُوْنَ اِلَيْهِ اِنْ شَآءَ وَتَنْسَوْنَ مَا تُشْرِكُوْنَ ۝ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَآ اِلٰٓى
اُمَمٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَاَخَذْنٰهُمْ بِالْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ لَعَلَّهُمْ يَتَضَرَّعُوْنَ ۝
فَلَوْلَآ اِذْ جَآءَهُمْ بَاْسُنَا تَضَرَّعُوْا وَلٰكِنْ قَسَتْ قُلُوْبُهُمْ وَزَيَّنَ
لَهُمُ الشَّيْطٰنُ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖ فَتَحْنَا
عَلَيْهِمْ اَبْوَابَ كُلِّ شَيْءٍ ۭ حَتّٰٓى اِذَا فَرِحُوْا بِمَآ اُوْتُوْٓا اَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً

● नि. १/२ ▒ व. ग़ु फ़. ▒ व. मंज़िल ★रु. ४/१० आ ११

सब्र से काम लो)। (३४) और अगर उन का एराज़ तुम पर बोझ होता है, तो अगर ताक़त हो तो ज़मीन में कोई सुरंग ढूंढ निकालो या आसमान में सीढ़ी (तलाश करो), फिर उन के पास कोई मोजज़ा लाओ और अगर ख़ुदा चाहता तो सब को हिदायत पर जमा कर देता, पस तुम हर गिज़ ना-दानों में न होना● (३५) बात यह है कि (हक़ को) क़ुबूल वही करते हैं, जो सुनते भी हैं ▨ और मुर्दों को तो ख़ुदा (क़ियामत ही को) उठाएगा, फिर उसी की तरफ़ लौटकर जाएंगे।[1] (३६) ▨ और कहते हैं कि उन पर उन के परवरदिगार के पास से कोई निशानी क्यों नाज़िल नहीं हुई। कह दो कि ख़ुदा निशानी उतारने पर क़ुदरत रखता है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (३७) और ज़मीन में जो चलने फिरने वाला (हैवान) या दो परों से उड़ने वाला जानवर है, उन की भी तुम लोगों की तरह जमाअतें हैं। हमने किताब (यानी लौहे मह्फ़ूज़) में किसी चीज़ (के लिखने) में कोताही नहीं की, फिर सब अपने परवरदिगार की तरफ़ जमा किये जाएंगे। (३८) और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया, वे बहरे और गूंगे हैं। (इसके अलावा) अंधेरे में (पड़े हुए), जिसको ख़ुदा चाहे, गुमराह कर दे और जिसे चाहे सीधे रास्ते पर चला दे। (३९) कहो, (काफ़िरो !) भला देखो तो, अगर तुम पर ख़ुदा का अज़ाब आ जाए या क़ियामत आ मौजूद हो, तो क्या तुम (ऐसी हालत में) ख़ुदा के सिवा किसी और को पुकारोगे? अगर सच्चे हो (तो बताओ)। (४०) (नहीं) बल्कि, (मुसीबत के वक़्त तुम) उसी को पुकारते हो, तो जिस दुख के लिए उसे पुकारते हो, वह अगर चाहता है, तो उसको दूर कर देता है और जिनको तुम शरीक बनाते हो, (उस वक़्त) उन्हें भूल जाते हो। (४१) ★

और हमने तुम से पहले बहुत-सी उम्मतों की तरफ़ पैग़म्बर भेजे, फिर (उन की ना-फ़रमानियों की वजह से) हम उन्हें सख़्तियों और तकलीफ़ों में पकड़ते रहे, ताकि आजिज़ी करें। (४२) तो जब उन पर अज़ाब आता रहा, क्यों नहीं आजिज़ी करते रहे, मगर उन के तो दिल ही सख़्त हो गये थे और जो वे काम करते थे, शैतान उन को (उन की नज़रों में) सजा कर दिखाता था। (४३) फिर जब उन्होंने उस नसीहत को, जो उन को की गयी थी भुला दिया, तो हमने उन पर हर चीज़ के दरवाज़े खोल दिए, यहां तक कि जब उन चीज़ों से जो उन को दी गयी थीं, ख़ूब ख़ुश हो गये, तो हमने उन को यकायक पकड़ लिया और वे उस वक़्त ना-उम्मीद हो कर रह गये। (४४) ग़रज़

१. यानी तुम्हारी बात तो वही लोग क़ुबूल करते हैं जो सुनते भी हैं और ये कुफ़्फ़ार तो मुर्दा दिल हैं ये कब सुनने लगे। इन मुर्दों को तो ख़ुदा क़ियामत ही के दिन उठाएगा और उन के आमाल का बदला देगा।

फ़क़ुति-अ दाबिरुल्-क़ौमिल्लज़ी-न ज़-लमू ط वल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल्-आलमीन (४५) क़ुल् अ-रऐतुम् इन् अ-ख़-जल्लाहु सम्अकुम् व अब्सारकुम् व ख़-त-म अला क़ुलूबिकुम् मन् इलाहुन् ग़ैरुल्लाहि यअ्तीकुम् बिही ط उन्ज़ुर् कै-फ़ नुसर्रिफ़ुल्-आयाति सुम्-म हुम् यस्दिफ़ून (४६) क़ुल् अ-रऐतकुम् इन् अताकुम् अज़ाबुल्लाहि बग़्-त-तन् औ जह्-र-तन् हल् युह्लकु इल्लल्-क़ौमुज़्ज़ालिमून (४७) व मा नुर्सिलुल्-मुर्सली-न इल्ला मुबश्शिरी-न व मुन्ज़िरी-न ج फ़-मन् आम-न व अस्-ल-ह फ़ला ख़ौफ़ुन् अलैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून (४८) वल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना यमस्सुहुमुल्-अज़ाबु बिमा कानू यफ़्सुक़ून (४९) क़ुल् ला अक़ूलु लकुम् अिन्दी ख़ज़ाइनुल्लाहि व ला अअ्-लमुल्ग़ै-ब व ला अक़ूलु लकुम् इन्नी म-लकुन् ج इन् अत्तबिअु इल्ला मा यूहा इलय्-य ط क़ुल् हल् यस्तविल्अअ्-मा वल्बसीरु ط अ-फ़ला त-त-फ़क्करून ★ (५०) व अन्ज़िर् बिहिल्लज़ी-न यख़ाफ़ू-न अंय्युह्शरू इला रब्बिहिम् लै-स लहुम् मिन् दूनिही वलिय्युंव्-व ला शफ़ीअुल्-ल-अल्लहुम् यत्तक़ून (५१) व ला तत्रुदिल्लज़ी-न यद्अू-न रब्बहुम् बिल्ग़दाति वल्अशिय्यि युरीदू-न वज्हहू ط मा अलै-क मिन् हिसाबिहिम् मिन् शैइंव्-व मा मिन् हिसाबि-क अलैहिम् मिन् शैइन् फ़-तत्रुदहुम् फ़-तकू-न मिनज़्ज़ालिमीन (५२) व कज़ालि-क फ़-तन्ना बअ्-ज़हुम् बिबअ्-ज़िल्-लियक़ूलू अ-हा-उला-इ मन्नल्लाहु अलैहिम् मिम्बैनिना ط अलैसल्लाहु बिअअ्-ल-म बिश्शाकिरीन (५३) व इज़ा जा-अ-कल्लज़ी-न युअ्मिनू-न बिआयातिना फ़क़ुल् सलामुन् अलैकुम् क-त-ब रब्बुकुम् अला नफ़्सिहिर्रह्-म-त ۙ अन्नहू मन् अमि-ल मिन्कुम् सूअम्-बिजहालतिन् सुम्-म ता-ब मिम्बअ्-दिही व अस्-ल-ह फ़-अन्नहू ग़फ़ूरुर्रहीम (५४)

فإذا هم مبلسون ۝ فقطع دابر القوم الذين ظلموا والحمد لله
رب العلمين ۝ قل أرءيتم إن أخذ الله سمعكم وأبصركم و
ختم على قلوبكم من إله غير الله يأتيكم به انظر كيف
نصرف الأيت ثم هم يصدفون ۝ قل أرءيتكم إن أتىكم عذاب
الله بغتة أو جهرة هل يهلك إلا القوم الظلمون ۝ وما
نرسل المرسلين إلا مبشرين ومنذرين فمن ءامن وأصلح
فلا خوف عليهم ولا هم يحزنون ۝ والذين كذبوا بأيتنا
يمسهم العذاب بما كانوا يفسقون ۝ قل لا أقول لكم عندي
خزائن الله ولا أعلم الغيب ولا أقول لكم إني ملك إن أتبع إلا
ما يوحى إلي قل هل يستوي الأعمى والبصير أفلا تتفكرون ۝
وأنذر به الذين يخافون أن يحشروا إلى ربهم ليس لهم من
دونه ولي ولا شفيع لعلهم يتقون ۝ ولا تطرد الذين يدعون
ربهم بالغدوة والعشي يريدون وجهه ما عليك من حسابهم
من شيء وما من حسابك عليهم من شيء فتطردهم فتكون
من الظلمين ۝ وكذلك فتنا بعضهم ببعض ليقولوا أهؤلاء من
الله عليهم من بيننا أليس الله بأعلم بالشكرين ۝ وإذا جاءك
الذين يؤمنون بأيتنا فقل سلم عليكم كتب ربكم على نفسه

★रु. ५/११ आ ६

ज़ालिम लोगों की जड़ काट दी गयी और सब तारीफ़ खुदा-ए-रब्बुल आलमीन ही के लिए है। (४५) (इन काफ़िरों से) कहो कि भला देखो तो, अगर खुदा तुम्हारे कान और आंखें छीन ले और तुम्हारे दिलों पर मुहर लगा दे तो खुदा के सिवा कौन-सा माबूद है जो तुम्हें ये नेमतें फिर बख्शे ? देखो हम किस-किस तरह अपनी आयतें बयान करते हैं। फिर भी ये लोग मुंह फेरे जाते हैं। (४६) कहो कि भला बताओ तो अगर तुम पर खुदा का अज़ाब बेखबरी में या खबर आने के बाद आये, तो क्या ज़ालिम लोगों के सिवा कोई और भी हलाक होगा ? (४७) और हम जो पैग़म्बरों को भेजते रहे हैं, तो खुशखबरी सुनाने और डराने को, फिर जो शख्स ईमान लाये और भला आदमी हो जाए, तो ऐसे लोगों को न कुछ खौफ़ होगा और न वे ग़मगीन होंगे। (४८) और जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया, उन की ना-फ़रमानियों की वजह से उन्हें अज़ाब होगा। (४९) कह दो कि मैं तुम से यह नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह तआला के खज़ाने हैं और न (यह कि) मैं ग़ैब जानता हूं और न तुम से यह कहता हूं कि मैं फ़रिश्ता हूं। मैं तो सिर्फ़ उस हुक्म पर चलता हूं जो मुझे (खुदा की तरफ़ से) आता है, कह दो कि भला अंधा और आंख वाले बराबर होते हैं ? तो फिर तुम ग़ौर क्यों नहीं करते ? (५०) ★

और जो लोग खौफ़ रखते हैं कि अपने परवरदिगार के सामने हाज़िर किये जाएंगे (और जानते हैं कि) उस के सिवा न तो कोई उनका दोस्त होगा और न सिफ़ारिश करने वाला, उन को इस (क़ुरआन) के ज़रिए से नसीहत करो ताकि परहेज़गार बनें। (५१) और जो लोग सुबह व शाम अपने परवरदिगार से दुआ करते हैं और उस की ज़ात की तलब में हैं, उन को (अपने पास से) मत निकालो। उनके हिसाब (आमाल) की जवाब देही तुम पर कुछ नहीं और तुम्हारे हिसाब की जवाब देही उन पर कुछ नहीं। (पस ऐसा न करना) अगर उन को निकालोगे, तो ज़ालिमों में हो जाओगे।[1] (५२) और इसी तरह हमने कुछ लोगों की कुछ से आज़माइश की है कि (जो दौलतमंद हैं, वे ग़रीबों के बारे में) कहते हैं, क्या यही लोग हैं, जिन पर खुदा ने हम में से फ़ज़्ल किया है। (खुदा ने फ़रमाया) भला खुदा शुक्र करने वालों को नहीं जानता। (५३) और जब तुम्हारे पास ऐसे लोग आया करें, जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं, तो (उनसे) 'सलामुन अलैकुम' कहा करो। खुदा ने अपनी (पाक) ज़ात पर रहमत को ज़रूरी कर लिया है कि जो कोई तुम में से नादानी से कोई बुरी हरकत कर बैठे, फिर उसके बाद तौबा कर ले और भला हो जाए, तो वह

---

१. साद बिन अबी वक़्क़ास रिवायत करते हैं कि यह आयत हम छः आदमियों के हक़ में उतरी है यानी साद रज़ि० और इब्ने मस्ऊद रज़ि० और सुहैब रज़ि० और बिलाल रज़ि० और अम्मार रज़ि० और मिक़्दाद रज़ि० के हक़ में। हम लोग रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में हाज़िर होते तो क़रीब हो कर बैठते और बातें सुनते। क़ुरैश के कुफ़्फ़ार को यह बात ना-गवार हुई तो उन्हों ने आप से कहा कि हमारा दिल आप की बातें सुनने को तो चाहता है, लेकिन हम को इन ग़ुलामों के साथ बैठते हुए शर्म आती है। पस जब हम आप के पास आया करें तो आप उन को उठा दिया कीजिए और जब चले जाया करें, तो फिर आप को अख्तियार है, उन को अपने पास बिठा लिया करें। आप ने इस बात को मान लिया, तो उन्हों ने कहा कि आप हमें इस मज़्मून की एक तहरीर लिख दीजिए। आप ने काग़ज़ मंगवाया और हज़रत अली रज़ि० को लिखने के लिए बुलाया। इतने में हज़रत जिब्रील यह आयत ले कर आए कि अगरचे खुदा की तलब वाले ग़रीब हैं, लेकिन उन का ध्यान रखना चाहिए, तब से आप सल्ल० हमारा बहुत ध्यान रखने लगे।

★रु. ५/११ आ ६

व कज़ालि-क नुफ़स्सिलुल्-आयाति व लितस्तबी - न सबीलुल् - मुज्रिमीन ★ (५५) क़ुल् इन्नी नुहीतु अन् अअ्‌बुदल्लज़ी - न तद्अू - न मिन् दूनिल्लाहि ط क़ुल् ला अत्तबिअू अह्वा - अकुम् ۙ क़द् ज़लल्तु इज़ंव्-व मा अ-न मिनल्-मुह्तदीन (५६) क़ुल् इन्नी अला बय्यिनतिम्-मिर्रब्बी व कज़्ज़ब्तुम् बिही ط मा अिन्दी मा तस्तअ्‌ - जिलू - न बिही ط इनिल् - हुक्मु इल्ला लिल्लाहि ط यक़ुस्सुल्-हक़्-क़ व हु-व खैरुल्फ़ासिलीन (५७) क़ुल् लौ अन्-न अिन्दी मा तस्तअ्‌-जिलू-न बिही लक़ुज़ियल्-अम्रु बैनी व बैनकुम् ط वल्लाहु अअ्‌-लमु बिज़्ज़ालिमीन (५८) व अिन्दहू मफ़ातिहुल्ग़ैबि ला यअ्‌-लमुहा इल्ला हु-व ط व यअ्‌-लमु मा फ़िल्बर्रि वल्बह्रि ط व मा तस्क़ुतु मिव्व-र - क़तिन् इल्ला यअ्‌-लमुहा व ला हब्बतिन् फ़ी ज़ुलुमातिल्-अर्ज़ि व ला रत्बिंव्-व ला याबिसिन् इल्ला फ़ी किताबिम्-मुबीन (५९) व हुवल्लज़ी य-त-वफ़्फ़ाकुम् बिल्लैलि व यअ्‌-लमु मा जरह्तुम् बिन्नहारि सुम्-म यब्‌अ़सुकुम् फ़ीहि लियुक़्ज़ा अ-जलुम् - मुसम्मन् ज सुम्-म इलैहि मर्जिअ़ुकुम् सुम्-म युनब्बिअ़ुकुम् बिमा कुन्तुम् तअ्‌-मलून ★ (६०) व हुवल्क़ाहिरु फ़ौ - क़ अिबादिही व युर्सिलु अलैकुम् ह-फ़-ज़-तन् ط हत्ता इज़ा जा - अ अह्-दकुमुल्मौतु तवफ़्फ़त्हु रुसुलुना व हुम् ला युफ़र्रितून (६१) सुम्-म रुद्दू इलल्लाहि मौलाहुमुल्-हक़्क़ि ط अला लहुल्हुक्मु قف व हु - व अस्रअ़ुल्-हासिबीन (६२) क़ुल् मंय्युनज्जीकुम् मिन् ज़ुलमातिल् - बर्रि वल्बह्रि तद्अ़ूनहू तज़र्रुअ़ंव् - व ख़ुफ़्य-तन् ج लइन् अन्जाना मिन् हाज़िही ल-न-कूनन्-न मिनश्शाकिरीन (६३) क़ुलिल्लाहु युनज्जीकुम् मिन्हा व मिन् कुल्लि कर्बिन् सुम्-म अन्तुम् तुश्रिकून (६४)

الرَّحْمَةَ أَنَّهُ مَنْ عَمِلَ مِنكُمْ سُوءًا بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابَ مِن بَعْدِهِ وَ
أَصْلَحَ فَأَنَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ وَكَذَٰلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ وَلِتَسْتَبِينَ
سَبِيلُ الْمُجْرِمِينَ ۝ قُلْ إِنِّي نُهِيتُ أَنْ أَعْبُدَ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِن
دُونِ اللَّهِ قُل لَّا أَتَّبِعُ أَهْوَاءَكُمْ قَدْ ضَلَلْتُ إِذًا وَمَا أَنَا مِنَ
الْمُهْتَدِينَ ۝ قُلْ إِنِّي عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّي وَكَذَّبْتُم بِهِ مَا عِندِي
مَا تَسْتَعْجِلُونَ بِهِ إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا لِلَّهِ يَقُصُّ الْحَقَّ وَهُوَ خَيْرُ الْفَاصِلِينَ ۝
قُل لَّوْ أَنَّ عِندِي مَا تَسْتَعْجِلُونَ بِهِ لَقُضِيَ الْأَمْرُ بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ وَاللَّهُ
أَعْلَمُ بِالظَّالِمِينَ ۝ وَعِندَهُ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَا إِلَّا هُوَ وَيَعْلَمُ مَا
فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَا تَسْقُطُ مِن وَرَقَةٍ إِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٍ فِي ظُلُمَاتِ
الْأَرْضِ وَلَا رَطْبٍ وَلَا يَابِسٍ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ۝ وَهُوَ الَّذِي يَتَوَفَّاكُم
بِاللَّيْلِ وَيَعْلَمُ مَا جَرَحْتُم بِالنَّهَارِ ثُمَّ يَبْعَثُكُمْ فِيهِ لِيُقْضَىٰ أَجَلٌ مُّسَمًّى
ثُمَّ إِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ ثُمَّ يُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ وَهُوَ الْقَاهِرُ
فَوْقَ عِبَادِهِ وَيُرْسِلُ عَلَيْكُمْ حَفَظَةً حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَحَدَكُمُ
الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَهُمْ لَا يُفَرِّطُونَ ۝ ثُمَّ رُدُّوا إِلَى اللَّهِ مَوْلَاهُمُ
الْحَقِّ أَلَا لَهُ الْحُكْمُ وَهُوَ أَسْرَعُ الْحَاسِبِينَ ۝ قُلْ مَن يُنَجِّيكُم
مِّن ظُلُمَاتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ تَدْعُونَهُ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً لَّئِنْ أَنجَانَا
مِنْ هَٰذِهِ لَنَكُونَنَّ مِنَ الشَّاكِرِينَ ۝ قُلِ اللَّهُ يُنَجِّيكُم مِّنْهَا وَمِن

★रु. ६/१२ आ ५ ★रु. ७/१३ आ ५

बख़्शने वाला मेहरबान है। (५४) और इसी तरह हम अपनी आयतें खोल-खोल कर बयान करते हैं (ताकि तुम लोग उन पर अमल करो) और इस लिए कि गुनाहगारों का रास्ता ज़ाहिर हो जाए। (५५) ★

(ऐ पैग़म्बर ! कुफ़्फ़ार से) कह दो कि जिन को तुम ख़ुदा के सिवा पुकारते हो, मुझे उनकी इबादत से मना किया गया है। (यह भी) कह दो कि मैं तुम्हारी ख़्वाहिशों की पैरवी नहीं करूंगा, ऐसा करूं, तो गुमराह हो जाऊं और हिदायत पाये हुए लोगों में न रहूं। (५६) कह दो कि मैं तो अपने परवरदिगार की रोशन दलील पर हूं और तुम उस को झुठलाते हो। जिस चीज़ (यानी अज़ाब) के लिए तुम जल्दी कर रहे हो, वह मेरे पास नहीं है। (ऐसा) हुक्म अल्लाह ही के अख़्तियार में है, वह सच्ची बात बयान फ़रमाता है और वह सबसे बेहतर फ़ैसला करने वाला है। (५७) कह दो कि जिस चीज़ के लिए तुम जल्दी कर रहे हो, अगर वह मेरे अख़्तियार में होती, तो मुझ में और तुम में फ़ैसला हो चुका होता और ख़ुदा ज़ालिमों को ख़ूब जानता है। (५८) और उसी के पास ग़ैब की कुंजियां हैं, जिन को उस के सिवा कोई नहीं जानता और उसे जंगलों और नदियों की सब चीज़ों का इल्म है और कोई पत्ता नहीं झड़ता, मगर वह उस को जानता है और ज़मीन के अंधेरों में कोई दाना और कोई हरी और सूखी चीज़ नहीं है, मगर रोशन किताब में (लिखी हुई) है। (५९) और वही तो है जो रात को (सोने की हालत में) तुम्हारी रूह क़ब्ज़ कर लेता है और जो कुछ तुम दिन में करते हो, उस की ख़बर रखता है, फिर तुम्हें दिन को उठा देता है, ताकि (यही सिलसिला जारी रख कर ज़िंदगी की) तै मुद्दत पूरी कर दी जाए, फिर तुम (सब) को उसी की तरफ़ लौट कर जाना है। (उस दिन) वह तुम को तुम्हारे अमल, जो तुम करते हो (एक-एक कर के) बताएगा★ (६०) और वह अपने बन्दों पर ग़ालिब है और तुम पर निगहबान मुक़र्रर किए रखता है, यहां तक कि जब तुम में से किसी की मौत आती है, तो हमारे फ़रिश्ते उस की रूह क़ब्ज़ कर लेते हैं और वे किसी तरह की कोताही नहीं करते। (६१) फिर (क़ियामत के दिन तमाम) लोग अपने सच्चे मालिक अल्लाह के पास वापस बुलाये जाएंगे। सुन लो कि हुक्म उसी का है और वह बहुत जल्द हिसाब लेने वाला है। (६२) कहो, भला तुम को जंगलों और नदियों के अंधेरों से कौन ख़लासी देता है, (जब) कि तुम उसे आजिज़ी और (दिल में) छिपी नियाज़मंदी से पुकारते हो (और कहते हो), अगर ख़ुदा हम को इस (तंगी) से निजात बख़्शे, तो हम उस के बहुत शुक्रगुज़ार हों। (६३) कहो कि ख़ुदा ही तुम को इस (तंगी) से और हर सख़्ती से निजात बख़्शता है, फिर (तुम) उस के साथ शिर्क करते हो। (६४) कह दो कि वह (इस पर भी) क़ुदरत रखता है

★रु. ६/१२ आ ५ ★रु. ७/१३ आ ५

क़ुल् हुवल्क़ादिरु अ़ला अंय्यब्-अ़-स अ़लैकुम् अ़ज़ाबम्-मिन् फ़ौक़िकुम् औ मिन्
तह़्ति अर्जुलिकुम् औ यल्बि-सकुम् शिय-अ़ंव्-व युज़ी-क बअ्-ज़कुम् बअ्-स बअ्-ज़िन्
उन्ज़ुर् कै-फ़ नुस़र्रिफ़ुल्-आयाति ल-अ़ल्लहुम् यफ़्क़हून (६५) व कज़्ज़-ब
बिही क़ौमु-क व हुवल्ह़क़्क़ु क़ुल् लस्तु अ़लैकुम् बिवकील (६६)
लिकुल्लि न-बइम् - मुस्तक़र्रुंव्-व सौ - फ़
तअ्-लमून (६७) व इज़ा रऐतल्लज़ी-न
यख़ूज़ू-न फ़ी आयातिना फ़-अअ्-रिज़् अ़न्हुम्
ह़त्ता यख़ूज़ू फ़ी ह़दीसिन् ग़ैरिही व
इम्मा युन्सियन्नकश्-शैत़ानु फ़ला तक़्अुद्
बअ्-दज़्ज़िक्रा म-अ़ल्-क़ौमिज़्ज़ालिमीन (६८)
व मा अ़-लल्लज़ी-न यत्तक़ू-न मिन्
ह़िसाबिहिम् मिन् शैइंव् - व लाकिन्
ज़िक्रा ल-अ़ल्लहुम् यत्तक़ून (६९) व
ज़रिल्लज़ीनत्-त-ख़ज़ू दीनहुम् लअ़िबंव् - व
लह्वंव् - व ग़र्रत्हुमुल् - ह़यातुद्दुन्या व
ज़क्किर्-बिही अन् तुब्-स-ल नफ़्सुम्-बिमा
क-स-बत् लै-स लहा मिन् दूनिल्लाहि
वलिय्युंव्-व ला शफ़ीअ़ुन् व इन् तअ्-दिल् कुल्-ल अ़द्लिल्ला युअ्ख़ज़्
मिन्हा उला - इकल्लज़ी - न उब्सिलू बिमा क - सबू लहुम् शराबुम् -
मिन् ह़मीमिंव्-व अ़ज़ाबुन् अलीमुम्-बिमा कानू यक्फ़ुरून ★(७०) क़ुल्
अ-नद्अ़ू मिन् दूनिल्लाहि मा ला यन्फ़अ़ुना व ला यज़ुर्रुना व नुरद्दु अ़ला
अअ्-क़ाबिना बअ्-द इज़् हदानल्लाहु कल्लज़िस्तह्वत्हुश्-शयात़ीनु फ़िल्अर्ज़ि
ह़ैरा-न लहू अस्ह़ाबुंय्यद्अ़ूनहू इलल्-हुदअ्तिना क़ुल् इन्-न हुदल्लाहि
हुवल्हुदा व उमिर्ना लिनुस्लि - म लिरब्बिल् - आ़लमीन (७१)
व अन् अक़ीमुस्सला-त वत्तक़ूहु व हुवल्लज़ी इलैहि तुह़्शरून (७२)

وإذا سمعوا ٧ ١٠٨ الانعام ٦

كُلِّ كَرْبٍ ثُمَّ أَنْتُمْ تُشْرِكُونَ ۝ قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلَىٰ أَنْ يَبْعَثَ عَلَيْكُمْ
عَذَابًا مِنْ فَوْقِكُمْ أَوْ مِنْ تَحْتِ أَرْجُلِكُمْ أَوْ يَلْبِسَكُمْ شِيَعًا وَيُذِيقَ
بَعْضَكُمْ بَأْسَ بَعْضٍ انْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ لَعَلَّهُمْ يَفْقَهُونَ ۝
وَكَذَّبَ بِهِ قَوْمُكَ وَهُوَ الْحَقُّ قُلْ لَسْتُ عَلَيْكُمْ بِوَكِيلٍ ۝ لِكُلِّ نَبَإٍ
مُسْتَقَرٌّ وَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ۝ وَإِذَا رَأَيْتَ الَّذِينَ يَخُوضُونَ فِي آيَاتِنَا
فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ حَتَّىٰ يَخُوضُوا فِي حَدِيثٍ غَيْرِهِ وَإِمَّا يُنْسِيَنَّكَ
الشَّيْطَانُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرَىٰ مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝ وَمَا عَلَى الَّذِينَ
يَتَّقُونَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِنْ شَيْءٍ وَلَٰكِنْ ذِكْرَىٰ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ۝ وَذَرِ
الَّذِينَ اتَّخَذُوا دِينَهُمْ لَعِبًا وَلَهْوًا وَغَرَّتْهُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا وَذَكِّرْ بِهِ
أَنْ تُبْسَلَ نَفْسٌ بِمَا كَسَبَتْ لَيْسَ لَهَا مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلِيٌّ وَلَا
شَفِيعٌ وَإِنْ تَعْدِلْ كُلَّ عَدْلٍ لَا يُؤْخَذْ مِنْهَا أُولَٰئِكَ الَّذِينَ
أُبْسِلُوا بِمَا كَسَبُوا لَهُمْ شَرَابٌ مِنْ حَمِيمٍ وَعَذَابٌ أَلِيمٌ بِمَا كَانُوا
يَكْفُرُونَ ۝ قُلْ أَنَدْعُو مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُنَا وَلَا يَضُرُّنَا وَنُرَدُّ
عَلَىٰ أَعْقَابِنَا بَعْدَ إِذْ هَدَانَا اللَّهُ كَالَّذِي اسْتَهْوَتْهُ الشَّيَاطِينُ فِي
الْأَرْضِ حَيْرَانَ لَهُ أَصْحَابٌ يَدْعُونَهُ إِلَى الْهُدَى ائْتِنَا قُلْ إِنَّ
هُدَى اللَّهِ هُوَ الْهُدَىٰ وَأُمِرْنَا لِنُسْلِمَ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ وَأَنْ أَقِيمُوا الصَّلَاةَ
وَاتَّقُوهُ وَهُوَ الَّذِي إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ۝ وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَ

منزل ٢

★रु ८/१४ आ १०

कि तुम पर ऊपर की तरफ़ से या तुम्हारे पांव के नीचे से अज़ाब भेजे या तुम्हें फ़िर्क़ा-फ़िर्क़ा कर दे और एक को दूसरे (से लड़ा कर आपस) की लड़ाई का मज़ा चखा दे। देखो हम अपनी आयतों को किस-किस तरह बयान करते हैं, ताकि ये लोग समझें। (६५) और इस (क़ुरआन) को तुम्हारी क़ौम ने झुठलाया, हालांकि वह हक़ है, कह दो कि मैं तुम्हारा दारोग़ा नहीं हूं। (६६) हर ख़बर के लिए एक वक़्त मुक़र्रर है और तुम को बहुत जल्द मालूम हो जाएगा। (६७) और जब तुम ऐसे लोगों को देखो, जो हमारी आयतों के बारे में बेहूदा बकवास कर रहे हों, तो उन से अलग हो जाओ, यहां तक कि वे और बातों में लग जाएं और अगर (यह बात) शैतान तुम्हें भुला दे, तो याद आने पर ज़ालिम लोगों के साथ न बैठो। (६८) और परहेज़गारों पर उन लोगों के हिसाब की कुछ भी जवाबदेही नहीं, हां नसीहत, ताकि वे भी परहेज़गार हों। (६९) और जिन लोगों ने अपने दीन को खेल और तमाशा बना रखा है और दुनिया की ज़िंदगी ने उन को धोखे में डाल रखा है, उन से कुछ काम न रखो। हां, इस (क़ुरआन) के ज़रिए से नसीहत करते रहो, ताकि (क़ियामत के दिन) कोई अपने आमाल की सज़ा में हलाकत में न डाला जाए, (उस दिन) ख़ुदा के सिवा न तो कोई उसका दोस्त होगा और न सिफ़ारिश करने वाला और अगर वह हर चीज़, (जो धरती पर है,) मुआवज़े (के तौर पर) देना चाहे, तो वह उस से क़ुबूल न हो। यही लोग हैं कि अपने आमाल के वबाल में हलाकत में डाले गये उन के लिए पीने को खौलता हुआ पानी और दुख देने वाला अज़ाब है, इस लिए कि कुफ़्र करते थे। (७०) ★

कहो, क्या हम ख़ुदा के सिवा ऐसी चीज़ को पुकारें, जो न हमारा भला कर सके न बुरा और जब हम को ख़ुदा ने सीधा रास्ता दिखा दिया, तो (क्या) हम उल्टे पांव फिर जाएं? (फिर हमारी ऐसी मिसाल हो) जैसे किसी जिन्नात ने जंगल में भुला दिया हो (और वह) हैरान (हो रहा हो) और उस के कुछ साथी हों जो उस को रास्ते की तरफ़ बुलाएं कि हमारे पास चला आ। कह दो कि रास्ता तो वही है, जो ख़ुदा ने बताया है और हमें तो यह हुक्म मिला है कि हम अल्लाह, रब्बुल आलमीन के फ़रमांबरदार हों। (७१) और यह (भी) कि नमाज़ पढ़ते रहो और उस से डरते रहो और वही तो है, जिस के पास तुम जमा किये

★रु० ८/१४ आ १०

व हुवल्लज़ी ख़-ल-क़स्समावाति वल्अर्-ज़ बिल्हक़्क़ि, व यौ-म यक़ूलु कुन् फ़-यकूनु ● क़ौलुहुल्-हक़्क़ु, व लहुल्मुल्कु यौ-म युन्फ़ख़ु फ़िस्सूरि, आलिमुल्ग़ैबि वश्शहादति, व हुवल्-हकीमुल्-ख़बीर (७३) व इज़् क़ा-ल इब्राहीमु लिअबीहि आज़-र अ-तत्तख़िज़ु अस्नामन् आलिह-तन्, इन्नी अरा-क व क़ौम-क फ़ी ज़लालिम्-मुबीन (७४) व कज़ालि-क नुरी इब्राही-म म-ल-कूतस्समावाति वल्अर्ज़ि व लियकू-न मिनल्मूक़िनीन (७५) फ़-लम्मा जन-न अलैहिल्लैलु रआ कौक-बन्, क़ा-ल हाज़ा रब्बी, फ़लम्मा अ-फ़-ल क़ा-ल ला उहिब्बुल्-आफ़िलीन (७६) फ़-लम्मा र-अल्-क़-म-र बाज़िग़न् क़ा-ल हाज़ा रब्बी, फ़लम्मा अ-फ़-ल क़ा-ल लइल्लम् यह्दिनी रब्बी ल-अकूनन्-न मिनल्-क़ौमिज़्ज़ाल्लीन (७७) फ़-लम्मा र-अश्शम्-स बाज़ि-ग़-तन् क़ा-ल हाज़ा रब्बी हाज़ा अक्बरु, फ़-लम्मा अ-फ़-लत् क़ा-ल याक़ौमि इन्नी बरीउम्-मिम्मा तुश्रिकून (७८) इन्नी वज्जह्तु वज्हि-य लिल्लज़ी फ़-त-रस्समावाति वल्अर्-ज़ हनीफ़ंव्-व मा अ-न मिनल्मुश्रिकीन (७९) व हाज्जहू क़ौमुहू, क़ा-ल अतुहाज्जून्नी फ़िल्लाहि व क़द् हदानि, व ला अख़ाफ़ु मा तुश्रिकू-न बिही इल्ला अंय्यशा-अ रब्बी शैअन्, वसि-अ रब्बी कुल-ल शैइन् अिल्मन्, अ-फ़-ला त-त-ज़क्करून (८०) व कै-फ़ अख़ाफ़ु मा अश्रक्तुम् व ला तख़ाफ़ू-न अन्नकुम् अश्रक्तुम् बिल्लाहि मा लम् युनज़्ज़िल् बिही अलैकुम् सुल्तानन्, फ़अय्युल्-फ़रीक़ैनि अहक़्क़ु बिल्-अम्नि, इन् कुन्तुम् तअ्-लमून ▨ (८१) अल्लज़ी-न आमनू व लम् यल्बिसू ईमानहुम् बिज़ुल्मिन् उलाइ-क लहुमुल्-अम्नु व हुम् मुह्तदून ★ (८२) व तिल-क हुज्जतुना आतैनाहा इब्राही-म अला क़ौमिही, नर्फ़अु द-र-जातिम्-मन् नशाउ, इन्-न रब्ब-क हकीमुन् अलीम (८३)

الأنعام — وإذا سمعوا

الْأَرْضَ بِالْحَقِّ وَيَوْمَ يَقُولُ كُن فَيَكُونُ قَوْلُهُ الْحَقُّ وَلَهُ الْمُلْكُ يَوْمَ
يُنفَخُ فِي الصُّورِ عَالِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْخَبِيرُ ۝ وَإِذْ قَالَ
إِبْرَاهِيمُ لِأَبِيهِ آزَرَ أَتَتَّخِذُ أَصْنَامًا آلِهَةً إِنِّي أَرَاكَ وَقَوْمَكَ فِي
ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝ وَكَذَٰلِكَ نُرِي إِبْرَاهِيمَ مَلَكُوتَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
وَلِيَكُونَ مِنَ الْمُوقِنِينَ ۝ فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ اللَّيْلُ رَأَىٰ كَوْكَبًا قَالَ هَٰذَا
رَبِّي فَلَمَّا أَفَلَ قَالَ لَا أُحِبُّ الْآفِلِينَ ۝ فَلَمَّا رَأَى الْقَمَرَ بَازِغًا قَالَ
هَٰذَا رَبِّي فَلَمَّا أَفَلَ قَالَ لَئِن لَّمْ يَهْدِنِي رَبِّي لَأَكُونَنَّ مِنَ الْقَوْمِ
الضَّالِّينَ ۝ فَلَمَّا رَأَى الشَّمْسَ بَازِغَةً قَالَ هَٰذَا رَبِّي هَٰذَا أَكْبَرُ فَلَمَّا
أَفَلَتْ قَالَ يَا قَوْمِ إِنِّي بَرِيءٌ مِّمَّا تُشْرِكُونَ ۝ إِنِّي وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِي
فَطَرَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ حَنِيفًا وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝ وَحَاجَّهُ قَوْمُهُ
قَالَ أَتُحَاجُّونِّي فِي اللَّهِ وَقَدْ هَدَانِ وَلَا أَخَافُ مَا تُشْرِكُونَ بِهِ إِلَّا
أَن يَشَاءَ رَبِّي شَيْئًا وَسِعَ رَبِّي كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا أَفَلَا تَتَذَكَّرُونَ ۝
وَكَيْفَ أَخَافُ مَا أَشْرَكْتُمْ وَلَا تَخَافُونَ أَنَّكُمْ أَشْرَكْتُم بِاللَّهِ مَا لَمْ
يُنَزِّلْ بِهِ عَلَيْكُمْ سُلْطَانًا فَأَيُّ الْفَرِيقَيْنِ أَحَقُّ بِالْأَمْنِ إِن كُنتُمْ
تَعْلَمُونَ ۝ الَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيمَانَهُم بِظُلْمٍ أُولَٰئِكَ لَهُمُ
الْأَمْنُ وَهُم مُّهْتَدُونَ ۝ وَتِلْكَ حُجَّتُنَا آتَيْنَاهَا إِبْرَاهِيمَ عَلَىٰ قَوْمِهِ
نَرْفَعُ دَرَجَاتٍ مَّن نَّشَاءُ إِنَّ رَبَّكَ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ۝ وَوَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ

● सु. ३/४ ▨ व. लाज़िम ★ रु. ९/१५ आ १२

जाओगे। (७२) और वही तो है, जिस ने आसमानों और ज़मीन को तद्बीर से पैदा किया है और जिस दिन वह फ़रमायेगा कि होजा तो (हश्र बरपा) हो जाएगा ● उस का इर्शाद बर-हक़ है और जिस दिन सूर फूंका जाएगा (उस दिन) उसी की बादशाहत होगी। वही छिपे और ज़ाहिर (सब) का जानने वाला है और वही हिक्मत वाला और ख़बर वाला है। (७३) और (वह वक़्त भी याद करने के लायक़ है) जब इब्राहीम ने अपने बाप आज़र से कहा कि तुम बुतों को क्या माबूद बनाते हो। मैं देखता हूं कि तुम और तुम्हारी क़ौम खुली गुमराही में हो।[1] (७४) और हम इस तरह इब्राहीम को आसमान और ज़मीन के अजाइबात दिखाने लगे, ताकि वह ख़ूब यक़ीन करने वालों में हो जाएं। (७५) (यानी) जब रात ने उन को (अंधेरे के परदे) से ढांप लिया, तो (आसमान में) एक सितारा नज़र पड़ा। कहने लगे, यह मेरा परवरदिगार है। जब वह ग़ायब हो गया तो कहने लगे कि मुझे ग़ायब हो जाने वाले पसन्द नहीं। (७६) फिर जब चांद को देखा कि चमक रहा है, तो कहने लगे, यह मेरा परवरदिगार है। लेकिन जब वह भी छिप गया, तो बोल उठे कि अगर मेरा परवरदिगार मुझे सीधा रास्ता नहीं दिखाएगा, तो मैं उन लोगों में हो जाऊंगा, जो भटक रहे हैं। (७७) फिर जब सूरज को देखा कि जगमगा रहा है, तो कहने लगे, मेरा परवरदिगार यह है, यह सब से बड़ा है, मगर जब वह भी डूब गया तो कहने लगे, लोगो ! जिन चीज़ों को तुम (ख़ुदा का) शरीक बनाते हो, मैं उन से बे-ज़ार हूं। (७८) मैंने सब से यक्सू होकर अपने को उसी ज़ात की तरफ़ मुतवज्जह किया, जिस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया है और मैं मुश्रिकों में से नहीं हूं। (७९) और उन की क़ौम उन से बहस करने लगी, तो उन्होंने कहा कि तुम मुझ से ख़ुदा के बारे में (क्या) बहस करते हो, उसने तो मुझे सीधा रास्ता दिखा दिया है। और जिन चीज़ों को तुम उस का शरीक बनाते हो, मैं उन से नहीं डरता। हां, जो मेरा परवरदिगार कुछ चाहे। मेरा परवरदिगार अपने इल्म से हर चीज़ पर एहाता किये हुए है, क्या तुम ख़्याल नहीं करते ? (८०) भला मैं उन चीज़ों से, जिन को तुम (ख़ुदा का) शरीक बनाते हो, कैसे डरूं, जब कि तुम इस से नहीं डरते कि ख़ुदा के साथ शरीक बनाते हो, जिसकी उसने कोई सनद नाज़िल नहीं की। अब दोनों फ़रीक़ में से कौन-सा फ़रीक़ अम्न (और दिल के सुकून) का हक़दार है, अगर समझ रखते हो (तो बताओ) ▩ (८१) जो लोग ईमान लाये और अपने ईमान को (शिर्क के) ज़ुल्म से गड्-मड् नहीं किया, उन के लिए अम्न (और दिल का सुकून) है और वही हिदायत पाने वाले हैं। (८२) ★

और यह हमारी दलील थी जो हमने इब्राहीम को उन की क़ौम के मुक़ाबले में अता की थी। हम जिसके चाहते हैं, दर्जे बुलंद कर देते हैं। बेशक तुम्हारा परवरदिगार हिक्मत वाला और इल्म

---

१. क़ुरआन मजीद से तो हज़रत इब्राहीम के वालिद का नाम आज़र मालूम होता है, लेकिन तौरात में उन का नाम तारिख़ लिखा है और नसब व तारीख़ के उलमा के नज़दीक भी उन का यही नाम है। तफ़्सीर लिखने वालों ने इस के जवाब में कहा है, शायद उन के दो नाम होंगे, एक आज़र, दूसरा तारिख़ या एक नाम होगा, दूसरा लक़ब। फिर यह कि आज़र फ़ारसी लफ़्ज़ है और इस का मतलब 'बूढ़ा आदमी' है। पस यह भी हो सकता है कि 'अबी हि आज़र' से यह मुराद हो कि उन्हों ने बूढ़े बाप से कहा, कुछ लोगों ने कहा कि आज़र बुत का नाम था, शायद इस वजह से कि हज़रत इब्राहीम के वालिद उन की बहुत ख़िदमत करते हों, उन को भी आज़र कहने लगे। बहरहाल जो वजह भी हो, उन्हें आज़र भी कहते थे।

● पु. ३/४ ▩ व. लाज़िम ★ रु. ९/१५ आ १२

व व-हब्ना लहू इस्हा-क व यअ्-कू-ब कुल्लन् हदैना व नूहन् हदैना मिन् क़ब्लु व मिन् ज़ुर्रिय्यतिही दावू-द व सुलैमा-न व अय्यू-ब व यूसु-फ़ व मूसा व हारू-न व कज़ालि-क नज्ज़िल्-मुह्सिनीन (८४) व ज़-करिय्या व यह्या व ईसा व इल्या-स कुल्लुम्-मिनस्सालिहीन (८५) व इस्-माई-ल वल्य-स-अ व यूनु-स व लूतन् व कुल्लन् फ़ज़्ज़ल्ना अ-लल्-आलमीन (८६) व मिन् आबाइहिम् व ज़ुर्रियातिहिम् व इख़्वानिहिम् वज्-तबैनाहुम् व हदैनाहुम् इला सिरातिम्-मुस्तक़ीम (८७) ज़ालि-क हुदल्लाहि यह्दी बिही मंय्यशाउ मिन् अिबादिही व लौ अश्रकू ल-हबि-त अन्हुम् मा कानू यअ्-मलून (८८) उलाइकल्लज़ी-न आतैना हुमुल्-किता-ब वल्हुक्-म वन्नुबुव्व-त फ़इंय्यक्फ़ुर् बिहा हा-उला-इ फ़-क़द् वक्कल्ना बिहा क़ौमल्लैसू बिहा बिकाफ़िरीन (८९)

وَيَعْقُوبَ كُلًّا هَدَيْنَا وَنُوحًا هَدَيْنَا مِن قَبْلُ وَمِن ذُرِّيَّتِهِ دَاوُدَ وَ
سُلَيْمَانَ وَأَيُّوبَ وَيُوسُفَ وَمُوسَىٰ وَهَارُونَ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ
وَزَكَرِيَّا وَيَحْيَىٰ وَعِيسَىٰ وَإِلْيَاسَ كُلٌّ مِّنَ الصَّالِحِينَ وَإِسْمَاعِيلَ
وَالْيَسَعَ وَيُونُسَ وَلُوطًا وَكُلًّا فَضَّلْنَا عَلَى الْعَالَمِينَ وَمِنْ آبَائِهِمْ
وَذُرِّيَّاتِهِمْ وَإِخْوَانِهِمْ وَاجْتَبَيْنَاهُمْ وَهَدَيْنَاهُمْ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ
ذَٰلِكَ هُدَى اللَّهِ يَهْدِي بِهِ مَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَلَوْ أَشْرَكُوا لَحَبِطَ
عَنْهُم مَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ وَالْحُكْمَ
وَالنُّبُوَّةَ فَإِن يَكْفُرْ بِهَا هَٰؤُلَاءِ فَقَدْ وَكَّلْنَا بِهَا قَوْمًا لَّيْسُوا بِهَا
بِكَافِرِينَ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ هَدَى اللَّهُ فَبِهُدَاهُمُ اقْتَدِهْ قُل لَّا
أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرَىٰ لِلْعَالَمِينَ وَمَا قَدَرُوا
اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ إِذْ قَالُوا مَا أَنزَلَ اللَّهُ عَلَىٰ بَشَرٍ مِّن شَيْءٍ قُلْ مَنْ
أَنزَلَ الْكِتَابَ الَّذِي جَاءَ بِهِ مُوسَىٰ نُورًا وَهُدًى لِّلنَّاسِ تَجْعَلُونَهُ
قَرَاطِيسَ تُبْدُونَهَا وَتُخْفُونَ كَثِيرًا وَعُلِّمْتُم مَّا لَمْ تَعْلَمُوا أَنتُمْ وَ
لَا آبَاؤُكُمْ قُلِ اللَّهُ ثُمَّ ذَرْهُمْ فِي خَوْضِهِمْ يَلْعَبُونَ وَهَٰذَا كِتَابٌ
أَنزَلْنَاهُ مُبَارَكٌ مُّصَدِّقُ الَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَلِتُنذِرَ أُمَّ الْقُرَىٰ وَ
مَنْ حَوْلَهَا وَالَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ يُؤْمِنُونَ بِهِ وَهُمْ عَلَىٰ
صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا

उला-इकल्लज़ी-न हदल्लाहु फ़बिहुदा-हुमुक़्तदिह क़ुल् ला अस्अलुकुम् अलैहि अज्रन् इन् हु-व इल्ला ज़िक्रा लिल्-आलमीन ★ (९०) व मा क़-दरुल्ला-ह हक़्-क क़द्रिही इज़् क़ालू मा अन्ज़लल्लाहु अला ब-शरिम्मिन् शैइन् क़ुल् मन् अन्ज़लल्-किताबल्लज़ी जा-अ बिही मूसा नूरंव-व हुदल्-लिन्नासि तज्अलूनहू क़राती-स तुब्दूनहा व तुख़्फ़ू-न कसीरन् व अुल्लिम्तुम् मा लम् तअ्-लमू अन्तुम् व ला आबा-उकुम् क़ुलिल्लाहु सुम्-म ज़र्हुम् फ़ी ख़ौज़िहिम् यल्अबून (९१) व हाज़ा किताबुन् अन्ज़ल्नाहु मुबारकुम्-मुसद्दिक़ुल्लज़ी बै-न यदैहि व लितुन्ज़ि-र उम्मल्क़ुरा व मन् हौलहा वल्लज़ी-न युअ्मिनू-न बिल्-आख़िरति युअ्मिनू-न बिही व हुम् अला सलातिहिम् युहाफ़िज़ून (९२)

★रु. १०/१६ आ ८

वाला है। (८३) और हमने उन को इस्हाक़ और याक़ूब बख़्शे (और) सब को हिदायत दी और पहले नूह को भी हिदायत दी थी और उनकी औलाद में से दाऊद और सुलेमान और अय्यूब और यूसुफ़ और मूसा और हारून को भी और हम नेक लोगों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं। (८४) और ज़करीया और यह्या और ईसा और इल्यास को भी। ये सब भले लोग थे। (८५) और इस्माईल और अल-यसअ़ और यूनुस और लूत को भी और उन सब को दुनिया के लोगों पर फ़ज़ीलत बख़्शी थी। (८६) और किसी-किसी को उन के बाप-दादा और औलाद और भाइयों में से भी और उन को चुन भी लिया था और सीधा रास्ता भी दिखाया था। (८७) यह ख़ुदा की हिदायत है। इस पर अपने बन्दों में से जिसे चाहे चलाये। और अगर वे लोग शिर्क करते, तो जो अमल वे करते थे, सब बर्बाद हो जाते। (८८) ये वह लोग थे, जिन को हमने किताब और हुक्म (शरीअत) और नबूवत अता फ़रमायी थी। अगर ये (कुफ़्फ़ार) इन बातों से इन्कार करें तो हमने उन पर (ईमान लाने के लिए) ऐसे लोग मुक़र्रर कर दिए हैं कि वे उन से कभी इन्कार करने वाले नहीं। (८९) ये वह लोग हैं जिन को ख़ुदा ने हिदायत दी थी, तो तुम उन्हीं की हिदायत की पैरवी करो। कह दो कि मैं तुम से इस (क़ुरआन) का बदला नहीं मांगता। यह तो दुनिया के लोगों के लिए सिर्फ़ नसीहत है। (९०) ★

और उन लोगों ने ख़ुदा की क़द्र जैसी जाननी चाहिए थी, न जानी। जब उन्होंने कहा कि ख़ुदा ने इंसान पर (वह्य और किताब वग़ैरह) कुछ भी नाज़िल नहीं किया। कहो कि जो किताब मूसा ले कर आये थे, उसे किसने नाज़िल किया था, जो लोगों के लिए नूर और हिदायत थी और जिसे तुमने अलग-अलग पन्नों (पर नक़ल) कर रखा है। उन (के कुछ हिस्से) को तो ज़ाहिर करते हो और अक्सर को छिपाते हो। तुम को वे बातें सिखायी गयीं, जिनको न तुम जानते थे और न तुम्हारे बाप-दादा। कह दो (इस किताब को) ख़ुदा ही ने (नाज़िल किया था), फिर उन को छोड़ दो कि अपनी बेहूदा बकवास में खेलते रहें। (९१) और (वैसी ही) यह किताब है, जिसे हमने नाज़िल किया है, बरकत वाली, जो अपने से पहली (किताबों) की तस्दीक़ करती है और (जो) इस लिए (नाज़िल की गयी है) कि तुम मक्के और उसके आस-पास के लोगों को आगाह कर दो और जो लोग आख़िरत पर ईमान रखते हैं. वे उस किताब पर भी ईमान रखते हैं और वे अपनी

★रु. १०/१६ आ ८

व मन् अज़्लमु मिम्मनिफ़्तरा अ-लल्लाहि कज़िबन् औ क़ा-ल ऊहि-य इलय्-य व लम् यू-ह् इलैहि शैउं व्-व मन् क़ा-ल सउन्ज़िलु मिस्-ल मा अन्ज़लल्लाहु व लौ तरा इज़िज़्ज़ालिमू-न फ़ी ग़-मरातिल् - मौति वल्मलाइकतु बासितू ऐदीहिम् ج अख़्रिजू अन्फ़ुसकुम् ط अल्यौ - म तुज्ज़ौ - न अज़ाबल्हूनि बिमा कुन्तुम् तक़ूलू-न अ-लल्लाहि ग़ैरल्हक़्क़ि व कुन्तुम् अन् आयातिही तस्तक्बिरून (९३) व ल - क़द् जिअ्तुमूना फ़ुरादा कमा ख़-लक़्नाकुम् अव्व-ल मर्रतिंव्-व तरक्तुम् मा ख़व्वल्नाकुम् वरा - अ ज़ुहूरिकुम् ج व मा नरा म-अकुम् शु-फ़आ-अकुमुल्लज़ी-न ज़-अम्तुम् अन्नहुम् फ़ीकुम् शुरका-उ ط लक़त्तक़त्त-अ बैनकुम् व ज़ल्-ल अन्कुम् मा कुन्तुम् तज़्अुमून ★ (९४) इन्नल्ला-ह फ़ालिक़ुल् - हब्बि वन्नवा ط युख़्रिजुल्हय्-य मिनल्मय्यिति व मुख़्रिजुल्मय्यिति मिनल्हय्यि ط ज़ालिकुमुल्लाहु फ़-अन्ना तुअ्फ़कून (९५) फ़ालिक़ुल् - इस्बाहि ج व ज-अ़-लल्लै - ल स-क-नंव्वश्शम्-स वल्क़-म-र हुस्बानन् ط ज़ालि-क तक़्दीरुल्-अज़ीज़िल्-अलीम (९६) व हुवल्लज़ी ज-अ-ल लकुमुन्नुजू - म लितह्तदू बिहा फ़ी ज़ुलुमातिल्बर्रि वल्बह्रि ط क़द् फ़स्सल्नल् - आयाति लिक़ौमिंय्यअ्-लमून (९७) व हुवल्लज़ी अन्श-अकुम् मिन् नफ़्सिंव्वाहिदतिन् फ़मुस्तक़र्रुंव् - व मुस्तौदअुन् ط क़द् फ़स्सल्नल् - आयाति लिक़ौमिंय्यफ़्क़हून (९८) व हुवल्लज़ी अन्ज़ - ल मिनस्समा - इ मा-अन् ج फ़-अख़्रज्ना बिही नबा-त कुल्लि शैइन् फ़ - अख़्रज्ना मिन्हु ख़ज़िरन् नुख़्रिजु मिन्हु हब्बम् - मुतराकिबन् ج व मिनन्नख़्लि मिन् - तल्अिहा क़िन्वानुन् दानियतुंव्-व जन्नातिम्मिन् अअ्-नाबिंव्वज़्ज़ैतू-न वर्रुम्मा-न मुश्तबिहंव्-व ग़ै-र मुतशाबिहिन् ط उन्ज़ुरू इला स-मरिही इज़ा अस्म - र व यन्अिही ط इन् - न फ़ी ज़ालिकुम् लआयातिल् - लिक़ौमिंय्युअ्मिनून (९९)

أو قال أوحي إلي ولم يوح إليه شيء ومن قال سأنزل مثل
ما أنزل الله ولو ترى إذ الظالمون في غمرات الموت والملائكة
باسطوا أيديهم أخرجوا أنفسكم اليوم تجزون عذاب الهون
بما كنتم تقولون على الله غير الحق وكنتم عن آياته تستكبرون ﴿٩٣﴾
ولقد جئتمونا فرادى كما خلقناكم أول مرة وتركتم ما خولناكم
وراء ظهوركم وما نرى معكم شفعاءكم الذين زعمتم أنهم
فيكم شركاء لقد تقطع بينكم وضل عنكم ما كنتم تزعمون ﴿٩٤﴾
إن الله فالق الحب والنوى يخرج الحي من الميت ومخرج الميت
من الحي ذلكم الله فأنى تؤفكون ﴿٩٥﴾ فالق الإصباح وجعل الليل
سكنا والشمس والقمر حسبانا ذلك تقدير العزيز العليم ﴿٩٦﴾ وهو
الذي جعل لكم النجوم لتهتدوا بها في ظلمات البر والبحر قد
فصلنا الآيات لقوم يعلمون ﴿٩٧﴾ وهو الذي أنشأكم من نفس
واحدة فمستقر ومستودع قد فصلنا الآيات لقوم يفقهون ﴿٩٨﴾
وهو الذي أنزل من السماء ماء فأخرجنا به نبات كل شيء
فأخرجنا منه خضرا نخرج منه حبا متراكبا ومن النخل من
طلعها قنوان دانية وجنات من أعناب والزيتون والرمان
مشتبها وغير متشابه انظروا إلى ثمره إذا أثمر وينعه إن في

★रु. ११/१७ आ ४

नमाज़ों की (पूरी) ख़बर रखते हैं। (९२) और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा, जो ख़ुदा पर झूठ गढ़े या यह कहे कि मुझ पर वह्य आयी है, हालांकि उस पर कुछ भी वह्य न आयी हो और जो यह कहे कि जिस तरह की किताब ख़ुदा ने नाज़िल की है, उस तरह की मैं भी बना लेता हूं और काश! तुम उन ज़ालिम (यानी मुश्रिक) लोगों को उस वक़्त देखो, जब मौत की सख़्तियों में (पड़े) हों और फ़रिश्ते (उन की तरफ़ अज़ाब के लिए) हाथ बढ़ा रहे हों कि निकालो अपनी जानें, आज तुम को ज़िल्लत के अज़ाब की सज़ा दी जाएगी, इसलिए कि तुम ख़ुदा पर झूठ बोला करते थे और उस की आयतों से सरकशी करते थे। (९३) और जैसा हमने तुम को पहली बार पैदा किया था, ऐसा ही आज अकेले हमारे पास आए और जो (माल व मताअ) हमने तुम्हें अता फ़रमाया था, वह सब अपनी पीठ पीछे छोड़ आये और हम तुम्हारे साथ तुम्हारे सिफ़ारिशियों को भी नहीं देखते, जिन के बारे में तुम ख़्याल करते थे कि वे तुम्हारे (शफ़ीअ यानी शफ़ाअत करने वाले और हमारे) शरीक हैं। (आज) तुम्हारे आपस के सब ताल्लुक़ात ख़त्म हो गये और जो दावे तुम किया करते थे, सब जाते रहे। (९४) ★

बेशक ख़ुदा ही दाने और गुठली को फाड़ (कर उन से पेड़ वग़ैरह) उगाता है, वही जानदार को बे-जान से निकालता है और वही बे-जान का जानदार से निकालने वाला है। यही तो ख़ुदा है, फिर तुम कहां बहके फिरते हो? (९५) वही (रात के अंधेरे से) सुबह की रोशनी फाड़ निकालता है और उसी ने रात को आराम (की वजह ठहराया और सूरज और चांद को गिन्ती (का ज़रिया) बनाया है। ये ख़ुदा के (मुक़र्रर किये हुए) अन्दाज़े हैं, जो ग़ालिब (और) इल्म वाला है। (९६) और वही तो है, जिस ने तुम्हारे लिए सितारे बनाये, ताकि जंगलों और नदियों के अंधेरों में उन से रास्ते मालूम करो। अक़्ल वालों के लिए हमने अपनी आयतें खोल-खोल कर बयान कर दी हैं। (९७) और वही तो है, जिसने तुम को एक शख़्स से पैदा किया, फिर (तुम्हारे लिए) एक ठहरने की जगह है और एक सुपुर्द होने की।[1] समझने वालों के लिए हम ने (अपनी) आयतें खोल-खोल कर बयान कर दी हैं। (९८) और वही तो है जो आसमान से वर्षा बरसाता है। फिर हम ही (जो वर्षा बरसाते हैं) उस में हर तरह की हरियाली उगाते हैं, फिर उस में से हरी-हरी कोंपलें निकालते हैं और इन कोंपलों में से एक दूसरे के साथ जुड़े हुए दाने निकालते हैं और ख़जूर के गाभे में से लटकते हुए गुच्छे और अंगूरों के बाग़ और ज़ैतून और अनार, जो एक-दूसरे से मिलते-जुलते भी हैं और नहीं भी मिलते। ये चीज़ें जब फलती हैं, तो उन के फलों पर और (जब पकती हैं तो) उन के पकने पर नज़र करो। इन में उन लोगों के लिए जो ईमान लाते है (ख़ुदा की क़ुदरत की

---

१. यानी एक मुद्दत तक दुनिया में ज़िंदा रखे जाते, फिर ज़मीन में दफ़न हो कर ख़ुदा के सुपुर्द किये जाते हो।

★रु. ११/१७ आ ४

व ज-अलू लिल्लाहि शुरका-अल्जिन्-न व ख़-ल-क़हुम् व ख़-रक़ू लहू बनी-न व बनातिम् - बिग़ैरि अिल्मिन् ♭ सुब्हानहू व तआला अम्मा यसिफ़ून ✱ (१००) बदीअुस्समावाति वल्अर्ज़ि ♭ अन्ना यकूनु लहू व-लदुंव्-व लम् तकुल्लहू साहिबतुन् ♭ व ख़-ल-क़ कुल्-ल शैइन् ए व हु-व बिकुल्लि शैइन् अलीम (१०१) ज़ालिकुमुल्लाहु रब्बुकुम् ए ला इला-ह इल्ला हु-व ए ख़ालिक़ु कुल्लि शैइन् फ़अ्-बुदूहु ए व हु-व अला कुल्लि शैइंव्वकील (१०२) ला तुद्रिकुहुल्-अब्सारु ✓ व हु-व युद्रिकुल्-अब्सा-र ✓ व हुवल्लतीफ़ुल्-ख़बीर (१०३) क़द् जा-अकुम् बसा-इरु मिर्रब्बिकुम् ए फ़-मन् अब्स-र फ़लिनफ़्सिही ए व मन् अमि-य फ़-अलैहा ♭ व मा अ-न अलैकुम् बिहफ़ीज़ (१०४) व कज़ालि-क नुसर्रिफ़ुल्-आयाति व लियक़ूलू द-रस्-त व लिनुबय्यिनहू लिक़ौमिंय्यअ्-लमून (१०५) इत्तबिअ् मा ऊहि-य इलै-क मिर्रब्बि-क ए ला इला-ह इल्ला हु-व ए व अअ्-रिज़् अनिल्मुश्रिकीन (१०६) व लौ शा-अल्लाहु मा अश्रकू ♭ व मा ज-अल्ना-क अलैहिम् हफ़ीज़न् ए व मा अन्-त अलैहिम् बिवकील (१०७) व ला तसुब्बुल्लज़ी-न यद्अू-न मिन् दूनिल्लाहि फ़यसुब्बुल्ला-ह अद्-वम्-बिग़ैरि अिल्मिन् ♭ कज़ालि-क ज़य्यन्ना लिकुल्लि उम्मतिन् अ-म-लहुम् ✓ सुम्-म इला रब्बिहिम् मर्जिअुहुम् फ़युनब्बिउहुम् बिमा कानू यअ्-मलून (१०८) व अक़्समू बिल्लाहि जह्-द ऐमानिहिम् लइन् जा-अत्हुम् आयतुल्लयुअ्मिनुन्-न बिहा ♭ क़ुल् इन्नमल् - आयातु अिन्दल्लाहि व मा युश्अिरुकुम् ॥ अन्नहा इज़ा जा - अत् ला युअ्मिनून (१०९) व नुक़ल्लिबु अफ़्इ-द-तहुम् व अब्सारहुम् कमा लम् युअ्मिनू बिही अव्व-ल मर्रतिंव्-व न-ज़रुहुम् फ़ी तुग़्यानिहिम् यअ्-महून ✱ (११०)

ذٰلِكُمْ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ الْجِنَّ وَخَلَقَهُمْ
وَخَرَقُوْا لَهٗ بَنِيْنَ وَبَنٰتٍۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يَصِفُوْنَ ۝
بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اَنّٰى يَكُوْنُ لَهٗ وَلَدٌ وَّلَمْ تَكُنْ لَّهٗ صَاحِبَةٌ ؕ وَ
خَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ ۚ لَآ اِلٰهَ
اِلَّا هُوَ ۚ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ فَاعْبُدُوْهُ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ۝
لَا تُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ ۫ وَهُوَ يُدْرِكُ الْاَبْصَارَ ۚ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ۝
قَدْ جَآءَكُمْ بَصَآئِرُ مِنْ رَّبِّكُمْ ۚ فَمَنْ اَبْصَرَ فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ عَمِيَ فَعَلَيْهَا ؕ
وَمَآ اَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيْظٍ ۝ وَكَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ وَلِيَقُوْلُوْا دَرَسْتَ
وَلِنُبَيِّنَهٗ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝ اِتَّبِعْ مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ۚ لَآ اِلٰهَ
اِلَّا هُوَ ۚ وَاَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِيْنَ ۝ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَآ اَشْرَكُوْا ؕ وَمَا
جَعَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ۚ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ۝ وَلَا تَسُبُّوا
الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَيَسُبُّوا اللّٰهَ عَدْوًاۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ كَذٰلِكَ
زَيَّنَّا لِكُلِّ اُمَّةٍ عَمَلَهُمْ ۪ ثُمَّ اِلٰى رَبِّهِمْ مَّرْجِعُهُمْ فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوْا
يَعْمَلُوْنَ ۝ وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَآءَتْهُمْ اٰيَةٌ
لَّيُؤْمِنُنَّ بِهَا ؕ قُلْ اِنَّمَا الْاٰيٰتُ عِنْدَ اللّٰهِ وَمَا يُشْعِرُكُمْ ۙ اَنَّهَآ اِذَا
جَآءَتْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝ وَنُقَلِّبُ اَفْـِٕدَتَهُمْ وَاَبْصَارَهُمْ كَمَا
لَمْ يُؤْمِنُوْا بِهٖۤ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّنَذَرُهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ۝

★रु. १२/१८ आ ६ ★रु. १३/१९ आ १०

बहुत-सी) निशानियां हैं। (६६) और उन लोगों ने जिन्नों को ख़ुदा का शरीक ठहराया, हालांकि उन को उसी ने पैदा किया और बे-समझे (झूठ-बुहतान) उस के लिए बेटे और बेटियां बना खड़ी कीं। वह इन बातों से जो वे उस के बारे में बयान करते हैं, पाक है और उसकी शान उन से बुलंद है। (१००) ★

(वही) आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला (है), उस के औलाद कहां से हो, जबकि उस की बीवी ही नहीं और उस ने हर चीज़ को पैदा किया है और वह हर चीज़ की ख़बर रखता है। (१०१) यही (ख़ूबियां रखने वाला) ख़ुदा तुम्हारा परवरदिगार है। उसके सिवा कोई माबूद नहीं। (वही) हर चीज़ का पैदा करने वाला (है), तो उसी की इबादत करो और वह हर चीज़ का निगरां है। (१०२) (वह ऐसा है कि) निगाहें उस का इद्‌राक नहीं कर सकतीं और वह निगाहों का इद्‌राक कर सकता है और वह भेद जानने वाला ख़बरदार है। (१०३) (ऐ मुहम्मद ! उन से कह दो कि) तुम्हारे (पास) परवरदिगार की तरफ़ से (रोशन) दलीलें पहुंच चुकी हैं, तो जिस ने (उन को आंख खोलकर) देखा, उस ने अपना भला किया और जो अंधा बना रहा, उस ने अपने हक़ में बुरा किया और मैं तुम्हारा निगहबान नहीं हूं। (१०४) और हम इसी तरह अपनी आयतें फेर-फेर कर बयान करते हैं, ताकि काफ़िर यह न कहें कि तुम (ये बातें अह्ले किताब से) सीखे हुए हो और ताकि समझने वाले लोगों के लिए तश्रीह कर दें।[1] (१०५) और जो हुक्म तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से तुम्हारे पास आता है, उसी की पैरवी करो। उस (परवरदिगार) के सिवा कोई माबूद नहीं और मुश्रिकों से किनारा करो। (१०६) और अगर ख़ुदा चाहता तो ये लोग शिर्क न करते और (ऐ पैग़म्बर) हमने तुम को उन पर निगहबान मुक़र्रर नहीं किया और न तुम उन के दारोग़ा हो। (१०७) और जिन लोगों को ये मुश्रिक ख़ुदा के सिवा पुकारते हैं, उनको बुरा न कहना कि ये भी कहीं ख़ुदा को बे-अदबी से बे-समझे बुरा (न) कह बैठें। इस तरह हमने हर एक फ़िर्क़े के आमाल (उन की नज़रों में) अच्छे कर दिखाये हैं। फिर उनको अपने परवरदिगार की तरफ़ लौट कर जाना है, तब वह उन को बतायेगा कि वे क्या-क्या किया करते थे। (१०८) और ये लोग ख़ुदा की सख़्त-सख़्त क़समें खाते हैं कि अगर उनके पास कोई निशानी आये, तो वे उस पर ज़रूर ईमान ले आएं। कह दो कि निशानियां तो सब ख़ुदा ही के पास हैं और (मोमिनो !) तुम्हें क्या मालूम है, (ये तो ऐसे बद-बख़्त हैं कि उनके पास) निशानियां आती जाएं, तब भी ईमान न लाएं। (१०९) और हम उन के दिलों और आंखों को उलट देंगे (तो) जैसे ये इस (क़ुरआन) पर पहली बार ईमान नहीं लाये, (वैसे फिर न लाएंगे) और उन को छोड़ देंगे कि अपनी सरकशी में बहकते रहें। (११०) ★

---

१. जिस तरीक़े पर क़ुरआन मजीद में आयतें फेर-फेर कर बयान की गयी हैं, वह ऐसा नहीं है कि कोई यह कह सके कि ये मज़्मून किसी शख़्स से सीखे गये हैं। कहीं ख़ुदा की क़ुदरत का बयान है, कहीं उस की हस्ती और वह्दानियत की ज़ोरदार दलीलें हैं। कहीं ईमान वालों को बशारतें सुनायी गयी हैं, कहीं कुफ़्फ़ार को डराया गया है। कहीं नेक अमल करने के लिए हुक्म दिया गया है, कहीं बुरे आमाल से मना किया गया है, कहीं नसीहतें हैं, कहीं हिक्मतें हैं। ग़रज़ तरह-तरह के बयान है और इसी लिए इर्शाद हुआ है कि हम इसी तरह (अपनी) आयतें फेर-फेर कर बयान करते हैं ताकि यह न कहें कि आंहज़रत सल्ल० ने ये बातें यहूदी उलेमा से या किसी दूसरे से सीखी हैं।

★रु. १२/१८ आ ६ ★रु. १३/१९ आ १०

आठवां पारः वलौ अन्नना

सूरतुल्-अन्आमि आयत १११ से १६७

व लौ अन्नना नज़्ज़ल्ना इलैहिमुल्-मलाइक-त् व कल्लमहुमुल्-मौता व ह्-शर्ना अलैहिम् कुल-ल शैइन् क़ुबुलम्मा कानू लियुअ्मिनू इल्ला अंय्यशा-अल्लाहु व लाकिन-न अक्स़रहुम् यज्हलून (१११) व कज़ालि-क ज-अ़ल्ना लिकुल्लि नबिय्यिन् अदुव्वन् शयातीनल्-इन्सि वल्जिन्नि यूह़ी बअ्-ज़ुहुम् इला बअ्-ज़िन् ज़ुख़्रुफ़ल्क़ौलि ग़ुरूरन् ط व लौ शा-अ रब्बु-क मा फ़-अ़लूहु फ़-ज़र्हुम् व मा यफ़्तरून (११२) व लितस्ग़ा इलैहि अफ़्इ-दतुल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिल्आख़िरति व लियर्ज़ौहु व लियक़्तरिफ़ू मा हुम् मुक़्तरिफ़ून (११३) अ-फ़-ग़ैरल्लाहि अब्तग़ी ह़-क-मंव्-व हुवल्लज़ी अन्-ज़-ल इलैकुमुल् - किता-ब मुफ़स़्स़लन् ط वल्लज़ी-न आतैनाहुमुल्-किता-ब यअ्-लमू-न अन्नहू मुनज़्ज़लुम्-मिर्रब्बि-क बिल्हक़्क़ि फ़ला तकूनन्-न मिनल्मुम्तरीन (११४) व तम्मत् कलिमतु रब्बि-क सिद्क़ंव्-व अ़द्लन् ط ला मुबद्दि-ल लिकलिमातिही ج व हुवस्समीअ़ुल् - अ़लीम (११५) व इन् तुतिअ़् अक्स़-र मन् फ़िल्अर्ज़ि युज़िल्लू-क अन् सबीलिल्लाहि ط इंय्यत्तबिअू-न इल्लज़्ज़न-न व इन् हुम् इल्ला यख़्रुसून (११६) इन्-न रब्ब-क हु-व अअ्-लमु मंयज़िल्लु अन् सबीलिही ج व हु-व अअ्-लमु बिल्मुह्तदीन (११७) फ़कुलू मिम्मा ज़ुकिरस्मुल्लाहि अ़लैहि इन् कुन्तुम् बिआयातिही मुअ्मिनीन (११८) व मा लकुम् अल्ला तअ्कुलू मिम्मा ज़ुकिरस्मुल्लाहि अ़लैहि व क़द् फ़स़्स़-ल लकुम् मा ह़र्र-म अ़लैकुम् इल्ला मज़्तुरिर्तुम् इलैहि ط व इन्-न कसीरल्-लयुज़िल्लू-न बिअह्वाइहिम् बिग़ैरि अ़िल्मिन् ط इन् - न रब्ब-क हु-व अअ्-लमु बिल्मुअ्-तदीन (११९)

الانعام ٦ ١١٣ ولو أننا ٨

وَلَوْ أَنَّنَا نَزَّلْنَا إِلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةَ وَكَلَّمَهُمُ الْمَوْتٰى وَحَشَرْنَا عَلَيْهِمْ
كُلَّ شَيْءٍ قُبُلًا مَّا كَانُوا لِيُؤْمِنُوٓا إِلَّآ أَن يَشَآءَ اللّٰهُ وَلٰكِنَّ
أَكْثَرَهُمْ يَجْهَلُونَ ۝ وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا شَيٰطِينَ
الْإِنسِ وَالْجِنِّ يُوحِي بَعْضُهُمْ إِلٰى بَعْضٍ زُخْرُفَ الْقَوْلِ غُرُورًا
وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ مَا فَعَلُوهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُونَ ۝ وَلِتَصْغٰىٓ
إِلَيْهِ أَفْـِٔدَةُ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْاٰخِرَةِ وَلِيَرْضَوْهُ وَلِيَقْتَرِفُوا
مَا هُم مُّقْتَرِفُونَ ۝ أَفَغَيْرَ اللّٰهِ أَبْتَغِي حَكَمًا وَهُوَ الَّذِيٓ أَنزَلَ
إِلَيْكُمُ الْكِتٰبَ مُفَصَّلًا ۚ وَالَّذِينَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْلَمُونَ أَنَّهُ
مُنَزَّلٌ مِّن رَّبِّكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِينَ ۝ وَتَمَّتْ
كَلِمَتُ رَبِّكَ صِدْقًا وَعَدْلًا ۚ لَّا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهِ ۚ وَهُوَ
السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝ وَإِن تُطِعْ أَكْثَرَ مَن فِي الْأَرْضِ يُضِلُّوكَ
عَن سَبِيلِ اللّٰهِ ۚ إِن يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ۝
إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ مَن يَضِلُّ عَن سَبِيلِهِ ۖ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ۝
فَكُلُوا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللّٰهِ عَلَيْهِ إِن كُنتُم بِاٰيٰتِهِ مُؤْمِنِينَ ۝ وَ
مَا لَكُمْ أَلَّا تَأْكُلُوا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللّٰهِ عَلَيْهِ وَقَدْ فَصَّلَ لَكُم
مَّا حَرَّمَ عَلَيْكُمْ إِلَّا مَا اضْطُرِرْتُمْ إِلَيْهِ ۗ وَإِنَّ كَثِيرًا لَّيُضِلُّونَ
بِأَهْوَآئِهِم بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِالْمُعْتَدِينَ ۝

منزل ٢

और अगर हम उन पर फ़रिश्ते भी उतार देते और मुर्दे भी उन से बातें करने लगते और हम सब चीज़ों को उनके सामने ला मौजूद भी कर देते, तो भी ये ईमान लाने वाले न थे इल्ला मा शाअल्लाह। बात यह है कि ये अक्सर नादान हैं। (१११) और इसी तरह हमने शैतान-इंसानों और जिन्नों—को हर पैग़म्बर का दुश्मन बना दिया था। वे धोखा देने के लिए एक दूसरे के दिल में मुलम्मा की बातें डालते रहते थे और अगर तुम्हारा परवरदिगार चाहता, तो वे ऐसा न करते, तो उन को और जो कुछ ये गढ़ते हैं, उसे छोड़ दो। (११२) और (वे ऐसे काम) इस लिए भी (करते थे) कि जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, उन के दिल उन की बातों पर मायल हों और वे उन्हें पसंद करें और जो काम वे करते थे, वही करने लगें। (११३) (कहो) क्या मैं ख़ुदा के सिवा और इंसाफ़ करने वाला ढूंढूं, हालांकि उस ने तुम्हारी तरफ़ मतलब साफ़ करने वाली किताब भेजी है। और जिन लोगों को हमने किताब (तौरात) दी, वे जानते हैं कि वह तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से हक़ पर नाज़िल हुई कि तुम हरगिज़ शक करने वालों में न होना। (११४) और तुम्हारे परवरदिगार की बातें सच्चाई और इंसाफ़ में पूरी हैं। उसकी बातों को कोई बदलने वाला नहीं और वह सुनता-जानता है। (११५) और अक्सर लोग, जो ज़मीन पर आबाद हैं, (गुमराह हैं)। अगर तुम उन का कहना मान लोगे, तो वे तुम्हें ख़ुदा का रास्ता भुला देंगे। ये सिर्फ़ ख़्याल के पीछे चलते और निरे अटकल के तीर चलाते हैं। (११६) तुम्हारा परवरदिगार उन लोगों को ख़ूब जानता है, जो उस के रास्ते से भटके हुए हैं और उन को भी ख़ूब जानता है जो रास्ते पर चल रहे हैं। (११७) तो जिस चीज़ पर (ज़िब्ह के वक़्त) ख़ुदा का नाम लिया जाए, अगर तुम उस की आयतों पर ईमान रखते हो, तो उसे खा लिया करो। (११८) और वजह क्या है कि जिस चीज़ पर ख़ुदा का नाम लिया जाए, तुम उसे खाओ, हालांकि जो चीज़ें उसने तुम्हारे लिए हराम ठहरा दी हैं, वह एक-एक कर के बयान कर दी हैं। (बेशक उन को नहीं खाना चाहिए) मगर इस सूरत में कि उन के (खाने के) लिए ना-चार हो जाओ और बहुत से लोग बे-समझे बूझे अपने नफ़्स की ख़्वाहिशों से लोगों को बहका रहे हैं। कुछ शक नहीं कि ऐसे लोगों को, जो (ख़ुदा की मुक़र्रर की हुई) हद से बाहर निकल जाते हैं, तुम्हारा परवरदिगार ख़ूब जानता है। (११९) और ज़ाहिरी

व ज़रू ज़ाहिरल्-इस्मि व बातिनहू♭ इन्नल्लज़ी-न यक्सिबूनल्-इस्-म सयुज्ज़ौ-न बिमा कानू यक़्तरिफ़ून (१२०) व ला तअ्कुलू मिम्मा लम् युज़्करिस्मुल्लाहि अ़लैहि व इन्नहू लफ़िस्क़ुन्♭ व इन्नश्शयाती-न लयूहू-न इला औलियाइहिम् लियुजादिलूकुम् ℭ व इन् अ-तअ्-तुमूहुम् इन्नकुम् लमुश्रिकून ★ (१२१) अ-व-मन् का-न मैतन् फ़-अह्यैनाहु व ज-अ़ल्ना लहू नूरंय्यम्शी बिही फ़िन्नासि क-मम्-म-सलुहू फ़िज़्ज़ुलुमाति लै-स बिख़ारिजिम् - मिन्हा♭ कज़ालि-क ज़ुय्यि-न लिल्काफ़िरी-न मा कानू यअ्-मलून (१२२) व कज़ालि-क ज-अ़ल्ना फ़ी कुल्लि क़र्यतिन् अकाबि-र मुज्रिमीहा लियम्कुरू फ़ीहा♭ व मा यम्कुरू-न इल्ला बिअन्फ़ुसिहिम् व मा यश्‌उ़रून (१२३) व इज़ा जा-अत्हुम् आयतुन् क़ालू लन् नुअ्मि-न हत्ता नुअ्ता मिस्-ल मा ऊति-य रुसुलुल्लाहि ▩ अल्लाहु अअ्-लमु हैसु यज्‌अ़लु रिसाल-तहू♭ सयुसीबुल्लज़ी-न अज्रमू-सग़ारुन् अ़िन्दल्लाहि व अ़ज़ाबुन् शदीदुम्-बिमा कानू यम्कुरून (१२४) फ़मंय्युरिदिल्लाहु अंय्यह्दियहू यश्रह् सद्रहू लिल्इस्लामि ℭ व मंय्युरिद् अंय्युज़िल्लहू यज्‌अ़ल् सद् - रहू ज़य्यिक़न् ह्-र-जन् क-अन्नमा यस्सअ्-अ़दु फ़िस्समाइ♭ कज़ालि-क यज्अ़लुल्लाहुर्रिज-स अ़-लल्लज़ी-न ला युअ्मिनून (१२५) व हाज़ा सिरातु रब्बि-क मुस्तक़ीमन्♭ क़द् फ़स्सल्नल्-आयाति लिक़ौमिंय्यज़्ज़क्करून (१२६) लहुम् दारुस्सलामि अ़िन-द रब्बिहिम् व हु-व वलिय्युहुम् बिमा कानू यअ्-मलून (१२७) व यौ-म यह्शुरुहुम् जमीअ़न् ℭ यामअ् - शरल्जिन्नि क़दिस्तक्सर्तुम् मिनल्इन्सि ℭ व क़ा - ल औलियाउहुम् मिनल्इन्सि रब्ब-नस्तम्त-अ् बअ्-ज़ुना बिबअ्-ज़िन्-व ब - लग़्ना अ-ज-ल-नल्लज़ी अज्जल-त लना♭ क़ालन्नारु मस्वाकुम् ख़ालिदी - न फ़ीहा इल्ला मा शा-अल्लाहु♭ इन् - न रब्ब - क हकीमुन् अ़लीम (१२८)

وَذَرُوا ظَاهِرَ الْإِثْمِ وَبَاطِنَهُ إِنَّ الَّذِينَ يَكْسِبُونَ الْإِثْمَ
سَيُجْزَوْنَ بِمَا كَانُوا يَقْتَرِفُونَ ۝ وَلَا تَأْكُلُوا مِمَّا لَمْ يُذْكَرِ اسْمُ
اللَّهِ عَلَيْهِ وَإِنَّهُ لَفِسْقٌ وَإِنَّ الشَّيَاطِينَ لَيُوحُونَ إِلَىٰ أَوْلِيَائِهِمْ
لِيُجَادِلُوكُمْ وَإِنْ أَطَعْتُمُوهُمْ إِنَّكُمْ لَمُشْرِكُونَ ۝ أَوَمَنْ كَانَ مَيْتًا
فَأَحْيَيْنَاهُ وَجَعَلْنَا لَهُ نُورًا يَمْشِي بِهِ فِي النَّاسِ كَمَنْ مَثَلُهُ فِي
الظُّلُمَاتِ لَيْسَ بِخَارِجٍ مِنْهَا كَذَٰلِكَ زُيِّنَ لِلْكَافِرِينَ مَا كَانُوا
يَعْمَلُونَ ۝ وَكَذَٰلِكَ جَعَلْنَا فِي كُلِّ قَرْيَةٍ أَكَابِرَ مُجْرِمِيهَا لِيَمْكُرُوا
فِيهَا وَمَا يَمْكُرُونَ إِلَّا بِأَنْفُسِهِمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ۝ وَإِذَا جَاءَتْهُمْ
آيَةٌ قَالُوا لَنْ نُؤْمِنَ حَتَّىٰ نُؤْتَىٰ مِثْلَ مَا أُوتِيَ رُسُلُ اللَّهِ اللَّهُ
أَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ رِسَالَتَهُ سَيُصِيبُ الَّذِينَ أَجْرَمُوا صَغَارٌ عِنْدَ اللَّهِ
وَعَذَابٌ شَدِيدٌ بِمَا كَانُوا يَمْكُرُونَ ۝ فَمَنْ يُرِدِ اللَّهُ أَنْ يَهْدِيَهُ
يَشْرَحْ صَدْرَهُ لِلْإِسْلَامِ وَمَنْ يُرِدْ أَنْ يُضِلَّهُ يَجْعَلْ صَدْرَهُ
ضَيِّقًا حَرَجًا كَأَنَّمَا يَصَّعَّدُ فِي السَّمَاءِ كَذَٰلِكَ يَجْعَلُ اللَّهُ الرِّجْسَ
عَلَى الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ وَهَٰذَا صِرَاطُ رَبِّكَ مُسْتَقِيمًا قَدْ فَصَّلْنَا
الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَذَّكَّرُونَ ۝ لَهُمْ دَارُ السَّلَامِ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَهُوَ
وَلِيُّهُمْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا يَا مَعْشَرَ الْجِنِّ
قَدِ اسْتَكْثَرْتُمْ مِنَ الْإِنْسِ وَقَالَ أَوْلِيَاؤُهُمْ مِنَ الْإِنْسِ رَبَّنَا اسْتَمْتَعَ

★रु. १४/१ आ ११ ▩ व. लाज़िम व. मंज़िल

और पोशीदा (हर तरह का) गुनाह छोड़ दो। जो लोग गुनाह करते हैं, वह बहुत जल्द अपने किए की सजा पायेंगे। (१२०) और जिस चीज़ पर खुदा का नाम न लिया जाए, उसे मत खाओ कि उस का खाना गुनाह है।[1] और शैतान (लोग) अपने साथियों के दिलों में यह बात डालते हैं कि तुम से झगड़ा करें और अगर तुम लोग उनके कहे पर चले तो बेशक तुम भी मुश्रिक हुए। (१२१)★

भला जो पहले मुर्दा था, फिर हमने उस को ज़िंदा किया और उसके लिए रोशनी कर दी, जिस के ज़रिए से वह लोगों में चलता-फिरता है, कहीं उस शख्स जैसा हो सकता है, जो अंधेरे में पड़ा हुआ हो और उस से निकल ही न सके। इसी तरह काफ़िर जो अमल कर रहे हैं, वे उन्हें अच्छे मालूम होते हैं। (१२२) और इसी तरह हमने हर बस्ती में बड़े-बड़े मुजरिम पैदा किये कि उनमें मक्कारियां करते रहें और जो मक्कारियां ये करते हैं, उनका नुक्सान उन्हीं को है और (इससे) बे-खबर हैं। (१२३) और जब उन के पास कोई आयत आती है, तो कहते हैं कि जिस तरह की रिसालत खुदा के पैग़म्बरों को मिली है, जब तक उसी तरह की रिसालत हम को न मिले, हम हरगिज़ ईमान नहीं लाएंगे ❁ इसको खुदा ही खूब जानता है कि (रिसालत का कौन-सा महल है और) वह अपनी पैग़म्बरी किसे इनायत फ़रमाए। जो लोग जुर्म करते हैं, उन को खुदा के यहां ज़िल्लत और कड़ा अज़ाब होगा, इस लिए कि मक्कारियां करते थे। (१२४) तो जिस शख्स को खुदा चाहता है कि हिदायत बख्शे, उसका सीना इस्लाम के लिए खोल देता है और जिसे चाहता है कि गुमराह करे, उस का सीना तंग और घुटा हुआ कर देता है, गोया वह आसमान पर चढ़ रहा है। इस तरह खुदा उन लोगों पर जो ईमान नहीं लाते, अज़ाब भेजता है। (१२५) और यही तुम्हारे परवरदिगार का सीधा रास्ता है। जो लोग ग़ौर (विचार) करने वाले हैं, उनके लिए हमने अपनी आयतें खोल-खोल कर बयान कर दी हैं। (१२६) उन के लिए उन के आमाल के बदले में परवरदिगार के यहां सलामती का घर है और वही उनका दोस्तदार है। (१२७) और जिस दिन वह सब (जिन्न व इंस) को जमा करेगा (और फ़रमाएगा कि) ऐ जिन्नो के गिरोह! तुम ने इंसानों से बहुत (फ़ायदे) हासिल किये, तो जो इंसानों में उन के दोस्तदार होंगे, वे कहेंगे कि परवरदिगार! हम एक-दूसरे से फ़ायदा उठाते रहे[2] और (आखिर) इस वक्त को पहुंच गये, जो तूने हमारे लिए मुक़र्रर किया था। खुदा फ़रमायेगा (अब) तुम्हारा ठिकाना दोज़ख है। हमेशा उसमें (जलते) रहोगे, मगर जो खुदा चाहे, बेशक तुम्हारा परवरदिगार हिक्मत वाला और खबरदार है। (१२८)

---

१. यानी जिस जानवर के ज़िब्ह करने के वक्त खुदा का नाम न लिया गया हो, उस का खाना हराम है। इमाम शाफ़ई रह० कहते हैं कि खुदा का नाम न लिए जाने से यह मुराद है कि जो जानवर ग़ैर-खुदा के लिए ज़िब्ह किया जाए, ऐसे ही जानवर का खाना गुनाह है और इस की दलील उन के नज़दीक इसी सूर: की आयत १४५ है। इस में तो कुछ शक ही नहीं कि ग़ैर-अल्लाह के लिए किया गया ज़िब्ह हराम है, लेकिन एक जमाअते सहाबा, ताबईन और फ़ुक़हा का यह मज़हब है कि जिस जानवर पर ज़िब्ह करते वक्त अल्लाह का नाम न लिया गया हो, चाहे भूल कर, चाहे जान-बूझ कर, उस का खाना भी हराम है। हां, एक हदीस से जो हज़रत आइशा रज़ि० से रिवायत की गयी है, यह मालूम होता है कि अगर किसी जानवर के बारे में यह मालूम न हो कि ज़िब्ह के वक्त उस पर खुदा का नाम लिया गया है या नहीं, तो खुदा का नाम ले कर उस का खाना जायज़ है। हदीस यों है कि कुछ लोगों ने हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल! कुछ लोग हमारे पास गोश्त लाते हैं और हम नहीं जानते कि उस पर अल्लाह का नाम लिया गया है या नहीं। आप ने फ़रमाया कि तुम उस पर अल्लाह का नाम ले लिया करो और खा लिया करो।

२. जिन्नों से आदमियों का फ़ायदा उठाना यह है कि नफ़्स की आरज़ूओं की तरफ़ राह दिखायी आदमियों को और जिन्नों का आदमियों से फ़ायदा यह है कि आदमी जिन्नों के ताबेदार हो गये।

★रु. १४/१ आ ११ ❁ व. लाज़िम व. मंज़िल

व कज़ालि-क नुवल्ली बअ्-ज़ज़्ज़ालिमी-न बअ्-ज़म्-बिमा कानू यक्सिबून ★ (१२९) यामअ्-शरल्जिन्नि वल्इन्सि अ-लम् यअ्तिकुम् रुसुलुम्-मिन्कुम् यक़ुस्सू-न अलैकुम् आयाती व युन्ज़िरूनकुम् लिक़ा-अ यौमिकुम् हाज़ा ط क़ालू शहिद्ना अला अन्फ़ुसिना व ग़र्रत्हुमुल्-ह़यातुद्दुन्या व शहिदू अला अन्फ़ुसिहिम् अन्नहुम् कानू काफ़िरीन (१३०) ज़ालि-क अल्लम् यकुर्रब्बु - क मुह्लिकल्क़ुरा बिज़ुल्मिव - व अह्लुहा ग़ाफ़िलून (१३१) व लिकुल्लिन् द-र-जातुम्-मिम्मा अमिलू ط व मा रब्बु-क बिग़ाफ़िलिन् अम्मा यअ्-मलून (१३२) व रब्बुकल् - ग़निय्यु ज़ुर्रह्मति ط इंय्य - शअ् युज़्हिब्कुम् व यस्तख़्लिफ़् मिम्बअ्-दि-कुम् मा यशाउ कमा अन्श-अकुम् मिन् ज़ुर्रिय्यति क़ौमिन् आख़रीन ط (१३३) इन्न मा तूअदू - न लआतिव ۙ- व मा अन्तुम् बिमुअ्-जिज़ीन (१३४) क़ुल् या क़ौमिअ्-मलू अला मकानतिकुम् इन्नी आमिलुन् ج फ़सौ-फ़ तअ्-लमू-न ۙ मन् तकूनु लहू आक़िबतुद्दारि ط इन्नहू ला युफ़्लिहुज़्ज़ालिमून (१३५) व ज-अलू लिल्लाहि मिम्मा ज़-र-अ मिनल्हर्सि वल्अन्आमि नसीबन् फ़क़ालू हाज़ा लिल्लाहि बिज़अ्-मिहिम् व हाज़ा लिशुरकाइना ج फ़मा का-न लिशुरकाइहिम् फ़ला यसिलु इलल्लाहि ج व मा का-न लिल्लाहि फ़हु-व यसिलु इला शुरकाइहिम् ط सा - अ मा यह्कुमून (१३६) व कज़ालि-क ज़य्य-न लिकसीरिम् - मिनल्मुश्रिकी - न क़त् - ल औलादिहिम् शुरकाउहुम् लियुर्दूहुम् व लियल्बिसू अलैहिम् दीनहुम् ط व लौ शाअल्लाहु मा फ़ - अलूहु फ़ज़र्हुम् व मा यफ़्तरून (१३७)

بعضنا ببعض وبلغنا اجلنا الذي اجلت لنا قال النار مثوىكم
خلدين فيها الا ما شاء الله ان ربك حكيم عليم ۝ وكذلك
نولي بعض الظلمين بعضا بما كانوا يكسبون ۝ يمعشر الجن
والانس الم ياتكم رسل منكم يقصون عليكم ايتي و
ينذرونكم لقاء يومكم هذا قالوا شهدنا على انفسنا وغرتهم
الحيوة الدنيا وشهدوا على انفسهم انهم كانوا كفرين ۝ ذلك
ان لم يكن ربك مهلك القرى بظلم واهلها غفلون ۝ و
لكل درجت مما عملوا وما ربك بغافل عما يعملون ۝ و
ربك الغني ذو الرحمة ان يشا يذهبكم ويستخلف من بعدكم
ما يشاء كما انشاكم من ذرية قوم اخرين ۝ ان ما توعدون
لات وما انتم بمعجزين ۝ قل يقوم اعملوا على مكانتكم اني
عامل فسوف تعلمون من تكون له عاقبة الدار انه لا
يفلح الظلمون ۝ وجعلوا لله مما ذرا من الحرث والانعام
نصيبا فقالوا هذا لله بزعمهم وهذا لشركائنا فما كان
لشركائهم فلا يصل الى الله وما كان لله فهو يصل الى
شركائهم ساء ما يحكمون ۝ وكذلك زين لكثير من
المشركين قتل اولادهم شركاؤهم ليردوهم وليلبسوا

★रु. १५/२ आ ८

और इसी तरह हम ज़ालिमों को, उनके अमाल की वजह से, जो वे करते थे, एक दूसरे पर मुसल्लत कर देते हैं। (१२९) ★

ऐ जिन्नों और इंसानों की जमाअत ! क्या तुम्हारे पास तुम्हीं में से पैग़म्बर नहीं आते रहे ? जो मेरी आयतें तुम को पढ़-पढ़ कर सुनाते और उस दिन के सामने आ मौजूद होने से डराते थे। वे कहेंगे कि (परवरदिगार !) हमें अपने गुनाहों का इक़रार है। इन लोगों को दुनिया की ज़िंदगी ने धोखे में डाल रखा था और (अब) ख़ुद अपने ऊपर गवाही दी कि कुफ़्र करते थे। (१३०) (ऐ मुहम्मद !) यह (जो पैग़म्बर आते रहे और किताबें नाज़िल होती रहीं तो इस लिए कि तुम्हारा परवरदिगार ऐसा नहीं कि बस्तियों को ज़ुल्म से हलाक कर दे और वहां के रहने वालों को (कुछ भी) ख़बर न हो। (१३१) और सब लोगों के आमाल के लिहाज़ से दर्जे मुक़र्रर हैं और जो काम ये लोग करते हैं, ख़ुदा उन से बे-ख़बर नहीं। (१३२) और तुम्हारा परवरदिगार बे-परवा (और) रहमत वाला है। अगर चाहे (तो ऐ बन्दो !) तुम्हें ख़त्म कर दे और तुम्हारे बाद जिन लोगों को चाहे, तुम्हारा जानशीं बनाये, जैसा तुम को भी दूसरे लोगों की नस्ल से पैदा किया है। (१३३) कुछ शक नहीं कि जो वायदा तुम से किया जाता है, वह पूरा होने वाला है और तुम (ख़ुदा को) मग़लूब नहीं कर सकते। (१३४) कह दो कि लोगो ! तुम अपनी जगह अमल किये जाओ, मैं (अपनी जगह) अमल किये जाता हूं। बहुत जल्द तुम को मालूम हो जाएगा कि आख़िरत में (बहिश्त) किस का घर होगा। कुछ शक नहीं कि मुश्रिक निजात नहीं पाने के। (१३५) और (ये लोग) ख़ुदा ही की पैदा की हुई चीज़ों यानी खेत और चौपायों में ख़ुदा का भी एक हिस्सा मुक़र्रर करते हैं और अपने (झूठे) ख़्याल से कहते हैं कि यह (हिस्सा) तो ख़ुदा का और यह हमारे शरीक (यानी बुतों) का, तो जो हिस्सा उन के शरीकों का होता है, वह तो ख़ुदा की तरफ़ नहीं जा सकता और जो हिस्सा ख़ुदा का होता है, वह उन के शरीकों की तरफ़ जा सकता है। यह कैसा बुरा इंसाफ़ है।[1] (१३६) इसी तरह बहुत से मुश्रिकों को उन के शरीकों ने उन के बच्चों को जान से मार डालना अच्छा कर दिखाया है, ताकि उन्हें हलाकत में डाल दें और उन के दीन को उन पर गड्-मड्‌ कर दें। और अगर ख़ुदा चाहता तो वे ऐसा न करते, तो उन को छोड़ दो कि वह जानें और उन का झूठ। (१३७)

---

१. इस आयत में ख़ुदा मुश्रिकों की बुराई करता है कि उन्हों ने तरह-तरह की कुफ़्र व शिर्क की रस्में निकाली हैं, जिन में औरों को ख़ुदा का शरीक बनाया है। मख़्लूक़ तो ख़ुदा की और उसी में से एक हिस्सा ख़ुदा का मुक़र्रर करते यानी खेती और फलों और चारपायों में एक हिस्सा ख़ुदा और दूसरा हिस्सा बुतों को ठहराते। इस से बढ़ कर यह बेवक़ूफ़ी कि बुतों को ख़ुदा के मुक़ाबले में आगे रखते, इस तरह से कि अगर बुतों के हिस्से में से कुछ ख़र्च हो जाता तो उतना ख़ुदा के हिस्से में से ले लेते और अगर ख़ुदा के हिस्से में से कुछ ख़र्च हो जाता, तो बुतों के हिस्से में से न लेते और कहते कि ख़ुदा ग़नी है और बुत फ़क़ीर हैं।

★रु. १५/२ आ ८

व क़ालू हाज़िही अन्आमुं व्-व हर्सुं त् हिज्रुल् ج ला यत्अमुहा इल्ला मन् नशाउ बिज़अ्-मिहिम् व अन्आमुन् हुर्रिमत् ज़ुहूरुहा व अन्आमुल्ला यज़्कुरूनस्मल्लाहि अ़लैहफ़्तिरा-अन् अ़लैहि ط स-यज्ज़ीहिम् बिमा कानू यफ़्तरून (१३८) व क़ालू मा फ़ी बुतूनि हाज़िहिल्-अन्आमि ख़ालिसतुल्-लिज़ुकूरिना व मुहर्रमुन् अ़ला अज़्वाजिना ج व इंय्यकुम्मैत-तन् फ़हुम् फ़ीहि शुरकाउ ط सयज्ज़ीहिम् वस्फ़हुम् ط इन्नहू हकीमुन् अ़लीम (१३९) क़द् ख़सिरल्लज़ी-न क़-तलू औलादहुम् स-फ़-हम्-बिग़ैरि अ़िल्मिंव्-व हर्रमू मा र-ज़-क़हुमुल्लाहुफ़्तिरा-अन् अ़-लल्लाहि ط क़द् ज़ल्लू व मा कानू मुह्तदीन★●(१४०) व हुवल्लज़ी अन्श-अ जन्नातिम्-मअ्-रूशातिंव्-व ग़ै-र मअ्-रूशातिंव्-वन्नख़्-ल वज़्ज़र-अ मुख़्तलिफ़न् उकुलुहू वज़्ज़ैतू-न वर्रुम्मा-न मु-तशाबिहंव्-व ग़ै-र मु-तशाबिहिन् ط कुलू मिन् स-मरिही इज़ा अस्म-र व आतू हक़्क़हू यौ-म हसादिही ۖ व ला तुस्रिफ़ू ط इन्नहू ला युहिब्बुल्मुस्रिफ़ीन ۙ (१४१) व मिनल्-अन्आमि हमू-ल-तंव्-व फ़र्शन् ط कुलू मिम्मा र-ज़-क़कुमुल्लाहु व ला तत्तबिअ़ू ख़ुतुवातिश्शैतानि ط इन्नहू लकुम् अ़दुव्वुम्-मुबीन ۙ (१४२) समानि-य-त अज़्वाजिन् ج मिनज़्ज़अ्-निस्नैनि व मिनल्मअ्ज़िस्नैनि ج क़ुल्आज़्ज़-करैनि हर्-र-म अमिल्उन्सयैनि अम्मश्-त-म-लत् अ़लैहि अर्हामुल्-उन्सयैनि ط नब्बिऊनी बिअ़िल्मिन् इन् कुन्तुम् सादिक़ीन ۙ (१४३)

عليهم دينهم ولو شاء الله ما فعلوه فذرهم وما يفترون ۝
وقالوا هذه أنعام وحرث حجر لا يطعمها إلا من نشاء
بزعمهم وأنعام حرمت ظهورها وأنعام لا يذكرون اسم
الله عليها افتراء عليه سيجزيهم بما كانوا يفترون ۝ وقالوا
ما في بطون هذه الأنعام خالصة لذكورنا ومحرم على
أزواجنا وإن يكن ميتة فهم فيه شركاء سيجزيهم وصفهم
إنه حكيم عليم ۝ قد خسر الذين قتلوا أولادهم سفها بغير
علم وحرموا ما رزقهم الله افتراء على الله قد ضلوا وما كانوا
مهتدين ۝ وهو الذي أنشأ جنات معروشات وغير معروشات
والنخل والزرع مختلفا أكله والزيتون والرمان متشابها وغير
متشابه كلوا من ثمره إذا أثمر وآتوا حقه يوم حصاده ولا
تسرفوا إنه لا يحب المسرفين ۝ ومن الأنعام حمولة وفرشا
كلوا مما رزقكم الله ولا تتبعوا خطوات الشيطان إنه لكم عدو
مبين ۝ ثمانية أزواج من الضأن اثنين ومن المعز اثنين
قل آلذكرين حرم أم الأنثيين أما اشتملت عليه أرحام
الأنثيين نبئوني بعلم إن كنتم صادقين ۝ ومن الإبل
اثنين ومن البقر اثنين قل آلذكرين حرم أم الأنثيين

★रु. १६/३ आ ११ ●रुबुअ १/४

और अपने ख्याल से यह भी कहते हैं कि ये चारपाए और खेती मना है। उसे उस शख्स के सिवा, जिसे हम चाहें, कोई न खाये, और (कुछ) चारपाए ऐसे हैं, कि उन की पीठ पर चढ़ना मना कर दिया गया है और कुछ मवेशी ऐसे हैं, जिन पर (ज़िब्ह करते वक़्त) ख़ुदा का नाम नहीं लेते। सब ख़ुदा पर झूठ है। वह बहुत जल्द उन को उन के झूठ का बदला देगा। (१३८) और यह भी कहते हैं कि जो बच्चा इन चारपायों के पेट में है, वह ख़ास हमारे मर्दों के लिए है और हमारी औरतों को उस का खाना हराम है और अगर वह बच्चा मरा हुआ हो, तो सब उस में शरीक हैं (यानी उसे मर्द और औरतें सब खाएं) बहुत जल्द ख़ुदा उन को उन के ढकोसलों की सज़ा देगा। बेशक वह हिक्मत वाला ख़बरदार है।[1] (१३९) जिन लोगों ने अपनी औलाद को बे-वक़ूफ़ी से, बे-समझी से क़त्ल किया और ख़ुदा पर झूठ गढ़ कर के उस की दी हुई रोज़ी को हराम ठहराया, वे घाटे में पड़ गये। वे बे-शुब्हा गुमराह हैं और हिदायत पाए हुए नहीं हैं। (१४०) ★●

और ख़ुदा ही तो है जिस ने बाग़ पैदा किए, छतरियों पर चढ़ाए हुए भी और जो छतरियों पर नहीं चढ़ाये हुए, वह भी और खजूर और खेती, जिन के तरह-तरह के फल होते हैं और ज़ैतून और अनार जो (कुछ बातों में) एक-दूसरे से मिलते-जुलते हैं और (कुछ बातों में) नहीं मिलते, जब ये चीज़ें फलें तो उन के फल खाओ और जिस दिन (फल तोड़ो और खेती) काटो, तो ख़ुदा का हक़ भी उस में से अदा करो। और बे-जा न उड़ाना कि ख़ुदा बे-जा उड़ाने वालों को दोस्त नहीं रखता। (१४१) और चारपायों में बोझ उठाने वाले (यानी बड़े-बड़े) भी पैदा किये और ज़मीन से लगे हुए (यानी छोटे-छोटे) भी। (पस) ख़ुदा की दी हुई रोज़ी खाओ और शैतान के क़दमों पर न चलो, वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (१४२) (ये बड़े-छोटे चारपाए) आठ क़िस्म के (हैं), दो (-दो) भेड़ों में से और दो(-दो) बकरियों में (यानी एक-एक नर और एक-एक मादा)। (ऐ पैग़म्बर! उन से) पूछो कि (ख़ुदा ने दोनों (के) नरों को हराम किया है या दोनों (की) मादिनों को या जो बच्चा मादिनों के पेट में लिपट रहा हो उसे, अगर सच्चे हो तो मुझे सनद से बताओ। (१४३)

---

१. मुश्रिकों ने एक यह भी रस्म निकाल रखी है कि अगर जानवर ज़िब्ह किया जाए और उस के पेट में से बच्चा निकले तो अगर बच्चा ज़िंदा निकले, मर्दों को उस का खाना हलाल और औरतों को हराम और अगर मुर्दा निकले तो मर्दों और औरतों सब के लिए हलाल।

व मिनल् - इबिलिस्नैनि व मिनल् - ब-क़रिस्नैनि ؕ क़ुल् आज़्ज़-करैनि हर्र-म अमिल्-उन्सयैनि अम्मश्त-म-लत् अलैहि अर्हामुल्-उन्सयैनि अम् कुन्तुम् शु-हदा-अ इज़् वस्साकुमुल्लाहु बिहाज़ा ۚ फ़-मन् अज़्-लमु मिम्मनिफ़्तरा अ - लल्लाहि कज़िबल्-लियुज़िल्लन्ना-स बिग़ैरि अिल्मिन् ؕ इन्नल्ला-ह ला यह्दिल्-क़ौमज़्ज़ालिमीन ★ (१४४) क़ुल् ला अजिदु फ़ी मा ऊहि-य इलय्-य मुहर्रमन् अला ताअिमिय्यत्-अमुहू इल्ला अंय्यकू-न मैत-तन् औ द-मम्-मस्फ़ूहन् औ लह्-म ख़िन्ज़ीरिन् फ़-इन्नहू रिज्सुन् औ फ़िस्क़न् उहिल्-ल लिग़ैरिल्लाहि बिही ۚ फ़-मनिज़्तुर्-र ग़ै-र बाग़िव्-व ला आदिन् फ़इन्-न रब्ब-क ग़फ़ूरुर्रहीम (१४५) व अ-लल्-लज़ी-न हादू हर्रम्ना कुल्-ल ज़ी ज़ुफ़ुरिन् ۚ व मिनल्ब-क़रि वल्ग़-नमि हर्रम्ना अलैहिम् शुहूमहुमा इल्ला मा ह-म-लत् ज़ुहूरुहुमा अविल्हवाया औ मख़्-त-लत् बि-अज़्मिन् ؕ ज़ालि - क जज़ैनाहुम् बिबग़्यिहिम् ۖ व इन्ना ल-सादिक़ून (१४६) फ़इन् कज़्ज़बू-क फ़क़ुर्रब्बुकुम् ज़ू रह्मतिंव्वा-सिअतिन् ۚ व ला युरद्दु बअ्सुहू अनिल्क़ौमिल्-मुज्रिमीन (१४७) स-य-क़ूलुल्लज़ी-न अश्रकू लौ शा-अल्लाहु मा अश्रक्ना व ला आबा-उना व ला हर्रम्ना मिन् शैइन् ؕ क-ज़ालि-क कज़्ज़बल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् हत्ता ज़ाक़ू बअ्-सना ؕ क़ुल् हल् अिन्दकुम् मिन् अिल्मिन् फ़तुख़्रिजूहु लना ؕ इन् तत्तबिअू - न इल्लज़्ज़न्-न व इन् अन्तुम् इल्ला तख़्रुसून (१४८) क़ुल् फ़लिल्लाहिल्-हुज्जतुल्-बालिग़तु ۚ फ़लौ शा-अ ल-हदाकुम् अज्मअीन (१४९) क़ुल् हलुम्-म शुहदा-अकुमुल्लज़ी-न यश्हदू-न अन्नल्ला-ह हर्र-म हाज़ा ۚ फ़इन् शहिदू फ़ला तश्हद् म-अहुम् ۚ व ला तत्तबिअ् अह्वा-अल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना वल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिल्-आख़िरति व हुम् बिरब्बिहिम् यअ्-दिलून ★ (१५०)

أَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ أَرْحَامُ الْأُنْثَيَيْنِ أَمْ كُنْتُمْ شُهَدَاءَ إِذْ وَصّٰكُمُ
اللّٰهُ بِهٰذَا فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا لِّيُضِلَّ النَّاسَ
بِغَيْرِ عِلْمٍ إِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِينَ ۞ قُلْ لَّا أَجِدُ فِي
مَا أُوحِيَ إِلَيَّ مُحَرَّمًا عَلٰى طَاعِمٍ يَطْعَمُهُ إِلَّا أَنْ يَكُونَ مَيْتَةً أَوْ
دَمًا مَّسْفُوحًا أَوْ لَحْمَ خِنْزِيرٍ فَإِنَّهُ رِجْسٌ أَوْ فِسْقًا أُهِلَّ لِغَيْرِ
اللّٰهِ بِهِ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَإِنَّ رَبَّكَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۞
وَعَلَى الَّذِينَ هَادُوا حَرَّمْنَا كُلَّ ذِي ظُفُرٍ وَمِنَ الْبَقَرِ وَالْغَنَمِ حَرَّمْنَا
عَلَيْهِمْ شُحُومَهُمَا إِلَّا مَا حَمَلَتْ ظُهُورُهُمَا أَوِ الْحَوَايَا أَوْ مَا اخْتَلَطَ بِعَظْمٍ
ذٰلِكَ جَزَيْنٰهُمْ بِبَغْيِهِمْ وَإِنَّا لَصٰدِقُونَ ۞ فَإِنْ كَذَّبُوكَ فَقُلْ
رَّبُّكُمْ ذُو رَحْمَةٍ وَّاسِعَةٍ وَلَا يُرَدُّ بَأْسُهُ عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِينَ ۞
سَيَقُولُ الَّذِينَ أَشْرَكُوا لَوْ شَاءَ اللّٰهُ مَا أَشْرَكْنَا وَلَا آبَاؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا
مِنْ شَيْءٍ كَذٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ حَتّٰى ذَاقُوا بَأْسَنَا
قُلْ هَلْ عِنْدَكُمْ مِّنْ عِلْمٍ فَتُخْرِجُوهُ لَنَا إِنْ تَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَ
إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا تَخْرُصُونَ ۞ قُلْ فَلِلّٰهِ الْحُجَّةُ الْبَالِغَةُ فَلَوْ شَاءَ لَهَدٰكُمْ
أَجْمَعِينَ ۞ قُلْ هَلُمَّ شُهَدَاءَكُمُ الَّذِينَ يَشْهَدُونَ أَنَّ اللّٰهَ حَرَّمَ
هٰذَا فَإِنْ شَهِدُوا فَلَا تَشْهَدْ مَعَهُمْ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَ الَّذِينَ كَذَّبُوا
بِآيٰتِنَا وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ وَهُمْ بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُونَ ۞

★रु० १७/४ आ ४ ★रु० १८/५ आ ६

और दो(-दो) ऊंटों में से और दो-(दो) गायों में से, (उन के बारे में भी उन से) पूछो कि (ख़ुदा ने) दोनों (के) नरों को हराम किया है, या दोनों (की) मादिनों को या जो बच्चा मादिनों के पेट में लिपट रहा है, उस को। भला जिस वक़्त ख़ुदा ने तुम को इस का हुक्म दिया था, तुम उस वक़्त मौजूद थे ? तो उस शख़्स से ज़्यादा कौन ज़ालिम है, जो ख़ुदा पर झूठ गढ़े ताकि बे-जाने-बूझे लोगों को गुमराह करे। कुछ शक नहीं कि ख़ुदा ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। (१४४) ★

कहो कि जो हुक्म मुझ पर नाज़िल हुए हैं, मैं उन में कोई चीज़, जिसे खाने वाला खाये, हराम नहीं पाता, इस के अलावा कि वह मरा हुआ जानवर हो या बहता लहू या सुअर का गोश्त कि ये सब नापाक हैं या कोई गुनाह की चीज़ हो कि उस पर ख़ुदा के सिवा किसी और का नाम लिया गया हो और अगर कोई मजबूर हो जाए, लेकिन न तो ना-फ़रमानी करे और न हद से बाहर निकल जाए, तो तुम्हारा परवरदिगार बख़्शने वाला मेहरबान है। (१४५) और यहूदियों पर हम ने सब नाख़ून वाले जानवर हराम कर दिए थे और गायों और बकरियों से उन की चर्बी हराम कर दी थी, सिवा इस के, जो उन की पीठ पर लगी हो या ओझड़ी में हो या हड्डी में मिली हो यह सज़ा हम ने उन को उन की शरारत की वजह से दी थी और हम तो सच कहने वाले हैं।[1] (१४६) और अगर ये लोग तुम्हें झुठलाएं, तो कह दो कि तुम्हारा परवरदिगार फैली रहमत वाला है, मगर उस का अज़ाब गुनाहगार लोगों से नहीं टलेगा। (१४७) जो लोग शिर्क करते हैं, वे कहेंगे कि अगर ख़ुदा चाहता, तो हम शिर्क न करते और न हमारे बाप-दादा (शिर्क करते) और न हम किसी चीज़ को हराम ठहराते। इसी तरह उन लोगों ने झुठलाया था, जो उन से पहले थे, यहां तक कि हमारे अज़ाब का मज़ा चख कर रहे। कह दो, क्या तुम्हारे पास कोई सनद है ? (अगर है) तो उसे हमारे सामने निकालो। तुम सिर्फ़ ख़्याल के पीछे चलते और अटकल के तीर चलाते हो। (१४८) कह दो कि ख़ुदा ही की हुज्जत ग़ालिब है। अगर वह चाहता तो तुम सब को हिदायत दे देता। (१४९) कहो कि अपने गवाहों को लाओ जो बताएं कि ख़ुदा ने ये चीज़ें हराम की हैं, फिर अगर वे (आ कर) गवाही दें, तो तुम उन के साथ गवाही न देना और न उन लोगों की ख़्वाहिशों की पैरवी करना, जो हमारी आयतों को झुठलाते हैं और जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते और (बुतों को) अपने परवर-दिगार के बराबर ठहराते हैं। (१५०) ★

---

१. जिन चीज़ों को ख़ुदा ने यहूदियों पर उन के ज़ुल्म और शरारत और सरकशी की वजह से हराम किया था, जिस का कुछ बयान सूरः निसा की आयत १६० में है, उन की तफ़्सील इस आयत में है। वे एक तो वह जानवर थे, जिन की उंगलियां फटी हुई हों, जैसे ऊंट और शुतुर मुर्ग़ और बतख़ या खुर वाले जानवर, जैसे गोर ख़र या पंजे वाले दरिंदे और गाय और बकरी की चर्बी, सिवा उस चर्बी के, जो उन की पीठ पर या ओझड़ी में लगी हुई हो या हड्डी से मिली हुई हो जैसे हाथ-पांव या पसली या आंख या कान की चर्बी कि यह हलाल थी।

★रु. १७/४ आ ४ ★रु. १८/५ आ ६

कुल् तआलौ अत्लु मा हर्र-म रब्बुकुम् अलैकुम् अल्ला तुश्रिकू बिही शैअंव्-व बिल्वालिदैनि इह्सानन् ८ व ला तक़्तुलू औलादकुम् मिन् इम्लाक़िन्७ नह्नु नर्ज़ुक़ुकुम् व इय्याहुम्८ व ला तक़्रबुल्-फ़वाहि-श मा अ-ह-र मिन्हा व मा ब-तन८ व ला तक़्तुलुन्नफ़्सल्लती हर्रमल्लाहु इल्ला बिल्हक़्क़िं७ ज़ालिकुम् वस्साकुम् बिही ल-अल्लकुम् तअ्-क़िलून (१५१) व ला तक़्रबू मालल्-यतीमि इल्ला बिल्लती हि-य अह्सनु हत्ता यब्लु-ग अशुद्दहू ८ व औफ़ुल्कै-ल वल्मीज़ा-न बिल्क़िस्ति ८ ला नुकल्लिफ़ु नफ़्सन् इल्ला वुस्अहा ८ व इज़ा क़ुल्तुम् फ़अ्-दिलू व लौ का-न ज़ा क़ुर्बा८ व बि-अह्दिल्लाहि औफ़ू ७ ज़ालिकुम् वस्साकुम् बिही ल-अल्लकुम् त-ज़क्करून७ (१५२) व अन्-न हाज़ा सिराती मुस्तक़ीमन् फ़त्तबिअूहु ८ व ला तत्तबिअुस्-सुबु-ल फ़-त-फ़र्र-क़ बिकुम् अन् सबीलिही७ ज़ालिकुम् वस्साकुम् बिही ल-अल्लकुम् तत्तक़ून (१५३) सुम्-म आतैना मूसल्किता-ब तमामन् अ-लल्लज़ी अह्-स-न व तफ़्सीलल्लिकुल्लि शैइंव्-व हुदंव्-व रह्मतल्ल-अल्लहुम् बिलिक़ा-इ रब्बिहिम् युअ्मिनून★ (१५४) व हाज़ा किताबुन् अन्ज़ल्नाहु मुबारकुन् फ़त्तबिअूहु वत्तक़ू ल-अल्लकुम् तुर्हमून७ (१५५) अन् तक़ूलू इन्नमा उन्ज़िलल्-किताबु अला ताइफ़तैनि मिन् क़ब्लिना ७ व इन् कुन्ना अन् दिरासतिहिम् लग़ाफ़िलीन७ (१५६) औ तक़ूलू लौ अन्ना उन्ज़ि-ल अलैनल्-किताबु लकुन्ना अह्दा मिन्हुम् ८ फ़-क़द् जा-अकुम् बय्यिनतुम्-मिर्रब्बिकुम् व हुदंव्-व रह्मतुन् ८ फ़-मन् अज़्लमु मिम्मन् कज़्ज़-ब बिआयातिल्लाहि व स-द-फ़ अन्हा ७ स-नज्ज़िल्लज़ी-न यस्दिफ़ू-न अन् आयातिना सू-अल्-अज़ाबि बिमा कानू यस्दिफ़ून (१५७)

قُلْ تَعَالَوْا أَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبُّكُمْ عَلَيْكُمْ أَلَّا تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا وَبِالْوَالِدَيْنِ
إِحْسَانًا وَلَا تَقْتُلُوا أَوْلَادَكُمْ مِنْ إِمْلَاقٍ نَحْنُ نَرْزُقُكُمْ وَإِيَّاهُمْ
وَلَا تَقْرَبُوا الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ
الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ ذَٰلِكُمْ وَصَّاكُمْ بِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ۝
وَلَا تَقْرَبُوا مَالَ الْيَتِيمِ إِلَّا بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ حَتَّىٰ يَبْلُغَ أَشُدَّهُ
وَأَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيزَانَ بِالْقِسْطِ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا
وَإِذَا قُلْتُمْ فَاعْدِلُوا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ وَبِعَهْدِ اللَّهِ أَوْفُوا ذَٰلِكُمْ
وَصَّاكُمْ بِهِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ۝ وَأَنَّ هَٰذَا صِرَاطِي مُسْتَقِيمًا
فَاتَّبِعُوهُ وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ سَبِيلِهِ ذَٰلِكُمْ
وَصَّاكُمْ بِهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ۝ ثُمَّ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ تَمَامًا
عَلَى الَّذِي أَحْسَنَ وَتَفْصِيلًا لِكُلِّ شَيْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً
لَعَلَّهُمْ بِلِقَاءِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُونَ ۝ وَهَٰذَا كِتَابٌ أَنْزَلْنَاهُ مُبَارَكٌ
فَاتَّبِعُوهُ وَاتَّقُوا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۝ أَنْ تَقُولُوا إِنَّمَا أُنْزِلَ
الْكِتَابُ عَلَىٰ طَائِفَتَيْنِ مِنْ قَبْلِنَا وَإِنْ كُنَّا عَنْ دِرَاسَتِهِمْ
لَغَافِلِينَ ۝ أَوْ تَقُولُوا لَوْ أَنَّا أُنْزِلَ عَلَيْنَا الْكِتَابُ لَكُنَّا أَهْدَىٰ
مِنْهُمْ فَقَدْ جَاءَكُمْ بَيِّنَةٌ مِنْ رَبِّكُمْ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ فَمَنْ
أَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَّبَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَصَدَفَ عَنْهَا سَنَجْزِي الَّذِينَ

★रु. १९/६ आ ४

कहो कि (लोगो!) आओ मैं तुम्हें वे चीजें पढ़ कर सुनाऊं, जो तुम्हारे परवरदिगार ने तुम पर हराम कर दी हैं, (उन के बारे में उस ने इस तरह इर्शाद फ़रमाया है) कि किसी चीज़ को खुदा का शरीक न बनाना और माँ-बाप से (बद-सुलूकी न करना, बल्कि) सुलूक करते रहना और नादारी (के खतरे) से अपनी औलाद को क़त्ल न करना, क्योंकि तुम को और उन को हमीं रोजी देते हैं और बे-हयाई के काम जाहिर हों या छिपे हुए, उन के पास न फटकना। और किसी जान (वाले) को जिस के क़त्ल को खुदा ने हराम कर दिया है, क़त्ल न करना, मगर जायज़ तौर पर (यानी जिस का शरीअत हुक्म दे)। इन बातों की वह तुम्हें ताकीद फ़रमाता है, ताकि तुम समझो। (१५१) और यतीम के माल के पास भी न जाना, मगर ऐसे तरीक़े से कि बहुत पसंदीदा हो, यहां तक कि वह जवानी को पहुंच जाए और नाप और तौल इंसाफ़ के साथ पूरी-पूरी किया करो। हम किसी को तक्लीफ़ नहीं देते, मगर उस की ताक़त के मुताबिक़ और जब (किसी के बारे में) कोई बात कहो, तो इंसाफ़ से कहो, गो वह (तुम्हारा) रिश्तेदार ही हो और खुदा के अह्द को पूरा करो। इन बातों का खुदा तुम्हें हुक्म देता है, ताकि तुम नसीहत करो। (१५२) और यह कि मेरा सीधा रास्ता यही है, तो तुम उसी पर चलना और और रास्तों पर न चलना कि (उन पर चल कर) खुदा के रास्ते से अलग हो जाओगे। इन बातों का खुदा तुम्हें हुक्म देता है, ताकि तुम परहेज़गार बनो। (१५३) (हां) फिर (सुन लो कि) हम ने मूसा को किताब दी थी, ताकि उन लोगों पर जो भले हैं, नेमत पूरी कर दें और (उस में) हर चीज़ का बयान (है) और हिदायत (है) और रहमत है, ताकि (उन की उम्मत के) लोग अपने परवरदिगार के सामने ज़ाहिर होने का यक़ीन करें। (१५४) ★

और (ऐ कुफ़्र करने वालो!) यह किताब भी हमीं ने उतारी है बरकत वाली, तो उस की पैरवी करो और (खुदा से) डरो, ताकि तुम पर मेहरबानी की जाए। (१५५) (और इस लिए उतारी है) कि (तुम यों न) कहो कि हम से पहले दो ही गिरोहों पर किताबें उतरी हैं और हम उन के पढ़ने से (मजबूर और) बे-खबर थे। (१५६) या (यह न) कहो कि अगर हम पर भी किताब नाज़िल होती तो हम उन लोगों के मुक़ाबले कहीं सीधे रास्ते पर होते, सो तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से दलील और हिदायत और रहमत आ गयी है। तो उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा जो खुदा की आयतों को झुठलाये और उन से (लोगों को) फेरे। जो लोग हमारी आयतों से फेरते हैं, इस फेरने की वजह से हम उन को बुरे अज़ाब की सज़ा देंगे। (१५७) ये इस

★रु. १९/६ आ ४

हल् यन्ज़ुरू-न इल्ला अन् तअ्ति-य-हुमुल्-मला-इकतु औ यअ्ति-य रब्बु-क औ यअ्ति-य बअ्-ज़ु आयाति रब्बि-क ط यौ-म यअ्ती बअ्-ज़ु आयाति रब्बि-क ला यन्फ़अु नफ़्सन् ईमानुहा लम् तकुन् आम-नत् मिन् क़ब्लु औ क-स-बत् फ़ी ईमानिहा ख़ैरन् ط क़ुलिन्-तज़िरू इन्ना मुन्तज़िरून (१५८) इन्नल्लज़ी-न फ़र्रक़ू दीनहुम् व कानू शि-य-अ़ल्लस्-त मिन्हुम् फ़ी शैइन् ط इन्नमा अम्रुहुम् इलल्लाहि सुम्-म युनब्बिउहुम् बिमा कानू यफ़्-अ़लून (१५९) मन् जा-अ बिल्ह़-स-नति फ़-लहू अ़श्रु अम्सालिहा ج व मन् जा-अ बिस्सय्यिअति फ़ला युज्ज़ा इल्ला मिस्लहा व हुम् ला युज़्-लमून (१६०) क़ुल् इन्ननी हदानी रब्बी इला सिरातिम्-मुस्तक़ीम ج दीनन् क़ि-य-मम्मिल्-ल-त इब्राही-म ह़नीफ़न् ج व मा का-न मिनल्मुश्रिकीन (१६१) क़ुल् इन्-न सलाती व नुसुकी व मह़्या-य व ममाती लिल्लाहि रब्बिल्-आ़लमीन ع (१६२) ला शरी-क लहू ج व बिज़ालि-क उमिर्तु व अ-न अव्वलुल्-मुस्-लिमीन (१६३) क़ुल् अ-ग़ैरल्लाहि अब्ग़ी रब्बंव्-व हु-व रब्बु कुल्लि शैइन् ط व ला तक्सिबु कुल्लु नफ़्सिन् इल्ला अ़लैहा ج व ला तज़िरु वाज़िरतुंव्विज़्-र उख़्रा ج सुम्-म इला रब्बिकुम् मर्जिअुकुम् फ़युनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् फ़ीहि तख़्तलिफ़ून (१६४) व हुवल्लज़ी ज-अ-लकुम् ख़लाइफ़ल्-अर्ज़ि व र-फ़-अ बअ्-ज़कुम् फ़ौ-क़ बअ्-ज़िन् द-र-जातिल्-लियब्लु-वकुम् फ़ी मा आताकुम् ط इन्-न रब्ब-क सरीअुल्-अ़िक़ाबि صلے व इन्नहू ल-ग़फ़ूरुर्रहीम ★● (१६५)

الانعام ١١٩ ولو اننا

يصدفون عن ءايتنا سوء العذاب بما كانوا يصدفون ۝
هل ينظرون إلا أن تأتيهم الملئكة أو يأتي ربك أو يأتي
بعض ءايت ربك يوم يأتي بعض ءايت ربك لا ينفع نفسا
إيمانها لم تكن ءامنت من قبل أو كسبت في إيمانها خيرا
قل انتظروا إنا منتظرون ۝ إن الذين فرقوا دينهم وكانوا
شيعا لست منهم في شيء إنما أمرهم إلى الله ثم ينبئهم
بما كانوا يفعلون ۝ من جاء بالحسنة فله عشر أمثالها
ومن جاء بالسيئة فلا يجزى إلا مثلها وهم لا يظلمون ۝
قل إنني هدىني ربي إلى صراط مستقيم دينا قيما ملة
إبرهيم حنيفا وما كان من المشركين ۝ قل إن صلاتي
ونسكي ومحياي ومماتي لله رب العلمين ۝ لا شريك له
وبذلك أمرت وأنا أول المسلمين ۝ قل أغير الله أبغي
ربا وهو رب كل شيء ولا تكسب كل نفس إلا عليها
ولا تزر وازرة وزر أخرى ثم إلى ربكم مرجعكم فينبئكم
بما كنتم فيه تختلفون ۝ وهو الذي جعلكم خلئف
الأرض ورفع بعضكم فوق بعض درجت ليبلوكم في ما
ءاتىكم إن ربك سريع العقاب وإنه لغفور رحيم ۝

منزل

★रु. २०/७ आ ११● नि. १/२

के सिवा और किस बात के इन्तिज़ार में हैं कि उन के पास फ़रिश्ते आएं, या ख़ुद तुम्हारा परवरदिगार आये या तुम्हारे परवरदिगार की कुछ निशानियां आयें (मगर) जिस दिन तुम्हारे परवरदिगार की कुछ निशानियां आ जाएंगी, तो जो शख़्स पहले ईमान नहीं लाया होगा, उस वक़्त उसे ईमान लाना कुछ फ़ायदा नहीं देगा या अपने ईमान (की हालत) में नेक अमल नहीं किये होंगे, (तो गुनाहों से तौबा करना मुफ़ीद न होगा। (ऐ पैग़म्बर ! उन से) कह दो कि तुम भी इंतिज़ार करो, हम भी इंतिज़ार करते हैं। (१५८) जिन लोगों ने अपने दीन में (बहुत से) रास्ते निकाले और कई-कई फ़िर्क़े हो गये, उनसे तुमको कुछ काम नहीं। उन का काम ख़ुदा के हवाले। फिर जो-जो कुछ वे करते रहे हैं, वह उन को (सब) बतायेगा।[1] (१५९) जो कोई (ख़ुदा के हुज़ूर) नेकी ले कर आयेगा, उस को वैसी दस नेकियां मिलेंगी और जो बुराई लाएगा उसे सज़ा वैसी ही मिलेगी और उन पर ज़ुल्म नहीं किया जाएगा। (१६०) कह दो कि मुझे मेरे परवरदिगार ने सीधा रास्ता दिखा दिया है (यानी सही दीन) मज़हब इब्राहीम का, जो एक (ख़ुदा) ही की तरफ़ के थे, और मुश्रिकों में से न थे। (१६१) (यह भी) कह दो कि मेरी नमाज़ और मेरी इबादत और मेरा जीना और मेरा मरना सब अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिए है। (१६२) जिस का कोई शरीक नहीं और मुझ को इसी बात का हुक्म मिला है और मैं सब से अव्वल फ़रमांबरदार हूं। (१६३) कहो, क्या मैं ख़ुदा के सिवा और परवरदिगार खोजूं ? और वही तो हर चीज़ का मालिक है। और जो कोई (बुरा) काम करता है, तो उस का नुक़्सान उसी को होता है। और कोई शख़्स किसी (के गुनाह) का बोझ नहीं उठायेगा, फिर तुम सब को अपने परवरदिगार की तरफ़ लौट कर जाना है, तो जिन-जिन बातों में तुम इख़्तिलाफ़ किया करते थे, वह तुम को बतायेगा। (१६४) और वही तो है, जिस ने ज़मीन में तुम को अपना नायब बनाया और एक दूसरे पर दर्जे बुलंद किये ताकि जो कुछ उस ने तुम्हें बख़्शा है, उस में तुम्हारी आज़माइश करे। बेशक तुम्हारा परवरदिगार जल्द अज़ाब देने वाला मेहरबान भी है। (१६५) ★ ●

---

१. दीन में तफ़रक़ा डालना और कई-कई फ़िर्क़े बन जाना ख़ुदा को सख़्त ना-पसन्द है। इसी लिए फ़रमाया है कि जिन लोगों ने दीन को टुकड़े-टुकड़े कर दिया और कई-कई फ़िर्क़े बन गये, (ऐ पैग़म्बर !) उन से तुम्हारा कोई मतलब नहीं। अल्लाह तआला की मर्ज़ी तो यह है कि सब लोग एक दीन (यानी इस्लाम) पर जो सच्चा दीन है, चलें और उस की हिदायतों पर अमल करें, मगर कोई किसी रास्ते पर चलता है, कोई किसी पर। किसी ने कोई तरीक़ा अख़्तियार किया है, किसी ने कोई राह और आपस में इत्तिफ़ाक़ की जगह नफ़रत व अदावत पैदा हो जाती है। कुछ शक नहीं कि इन बातों की वजह यह है कि वे क़ुरआन को ग़ौर से नहीं पढ़ते और उस के अह्काम पर नहीं चलते। अगर अल्लाह तआला के मक़सद को समझ लिया जाए तो इख़्तिलाफ़ व तफ़र्क़े का नाम व निशान न रहे।

★रु. २०/७ आ ११● नि. १/२

७ सूरतुल् अअ्‌राफ़ि ३९

(मक्की) इस सूर: में अरबी के १४६३५ अक्षर, ३३८७ शब्द, २०६ आयत और २४ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्‌मानिर्रहीम

अलिफ़्-लाम्-मीम्-साद् ८ (१) किताबुन् उन्ज़ि-ल इलै-क फ़ला यकुन् फ़ी सद्‌रि-क ह-रजुम्-मिन्हु लितुन्ज़ि-र बिही व ज़िक्रा लिल्मुअ्‌मिनीन (२) इत्तबिअू मा उन्ज़ि-ल इलैकुम् मिर्रब्बिकुम् व ला तत्तबिअू मिन् दूनिही औलिया-अ ط क़लीलम्-मा त-ज़क्करून (३) व कम् मिन् क़र्यतिन् अह्‌लक्नाहा फ़जा-अहा बअ्‌सुना ब-यातन् औ हुम् क़ा-इलून (४) फ़मा का-न दअ्‌-वाहुम् इज़्‌ जा-अहुम् बअ्‌सुना इल्ला अन् क़ालू इन्ना कुन्ना ज़ालिमीन (५) फ़-ल-नस्‌अलन्नल्-लज़ी-न उर्सि-ल इलैहिम् व ल-नस्-अलन्नल्-मुर्सलीन ﻻ (६) फ़-ल-नक़ुस्सन्-न अलैहिम् बिअिल्मिव्-व मा कुन्ना ग़ा-इबीन (७) वल्‌वज़्‌नु यौमइज़ि-निल् - हक़्क़ु ८ फ़ - मन् सक़ुलत् मवाज़ीनुहू फ़ - उलाइ-क हुमुल्-मुफ़्लिहून (८) व मन् ख़फ़्फ़त् मवाज़ीनुहू फ़-उला - इकल्लज़ी - न ख़सिरू अन्फ़ुसहुम् बिमा कानू बिआयातिना यज़्लिमून (९)

سورة الاعراف مكية وهي مائتان وست آيات واربع وعشرون ركوعا

بسم الله الرحمن الرحيم

المص ۝ كتاب انزل اليك فلا يكن في صدرك حرج منه
لتنذر به وذكرى للمؤمنين ۝ اتبعوا ما انزل اليكم
من ربكم ولا تتبعوا من دونه اولياء قليلا ما تذكرون ۝
وكم من قرية اهلكناها فجاءها باسنا بياتا او هم قائلون ۝
فما كان دعواهم اذ جاءهم باسنا الا ان قالوا انا كنا
ظلمين ۝ فلنسئلن الذين ارسل اليهم ولنسئلن المرسلين ۝
فلنقصن عليهم بعلم وما كنا غائبين ۝ والوزن يومئذ
الحق فمن ثقلت موازينه فاولئك هم المفلحون ۝ ومن
خفت موازينه فاولئك الذين خسروا انفسهم بما كانوا
باياتنا يظلمون ۝ ولقد مكنكم في الارض وجعلنا لكم فيها
معايش قليلا ما تشكرون ۝ ولقد خلقنكم ثم صورنكم
ثم قلنا للملئكة اسجدوا لادم فسجدوا الا ابليس لم يكن
من السجدين ۝ قال ما منعك الا تسجد اذ امرتك قال انا
خير منه خلقتني من نار وخلقته من طين ۝ قال
فاهبط منها فما يكون لك ان تتكبر فيها فاخرج انك من

व ल-क़द् मक्कन्नाकुम् फ़िल्‌अर्ज़ि व ज-अल्ना लकुम् फ़ीहा मआयि-श ط क़लीलम्मा तश्कुरून ★ (१०) व ल - क़द् ख़ - लक़्नाकुम् सुम् - म सव्वर्नाकुम् सुम् - म क़ुल्ना लिल्मला - इकतिस्जुदू लि-आद-म ﮩ फ़-स-जदू इल्ला इब्ली - स ط लम् यकुम् - मिनस्साजिदीन (११) क़ा - ल मा म-न-अ-क अल्ला तस्जु-द इज़् अमर्तु-क ط क़ा - ल अ-न ख़ैरुम् - मिन्हु ج ख़-लक़्तनी मिन् नारिव्-व ख़-लक़्तहू मिन् तीन (१२) क़ा-ल फ़ह्‌बित् मिन्हा फ़मा यकूनु ल-क अन् त-त-कब्ब-र फ़ीहा फ़ख़्‌रुज् इन्न-क मिनस्साग़िरीन (१३)

★रु. १/८ आ १०

७ सूर: आराफ़ ३९

सूर: आराफ़ मक्की है और इस में दो सौ छः आयतें और चौबीस रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ़्-लाम्-मीम्-स्वाद्। (१) (ऐ मुहम्मद ! यह) किताब (जो) तुम पर नाज़िल हुई है, इस से तुम को तंगदिल नहीं होना चाहिए। (यह नाज़िल) इस लिए (हुई है) कि तुम इस के ज़रिए से (लोगों को) डर सुनाओ और (यह) ईमान वालों के लिए नसीहत है। (२) (लोगो !) जो (किताब) तुम पर तुम्हारे परवरदिगार के यहां से नाज़िल हुई है, उस की पैरवी करो और इस के सिवा और साथियों की पैरवी न करो (और) तुम कम ही नसीहत क़ुबूल करते हो। (३) और कितनी ही बस्तियां हैं कि हम ने तबाह कर डालीं, जिन पर हमारा अज़ाब (या तो रात को) आता था, जबकि वे सोते थे, या (दिन को) जब वे क़ैलूला (यानी दोपहर को आराम) करते थे। (४) तो जिस वक़्त उन पर अज़ाब आता था, उन के मुंह से यही निकलता था कि (हाय !) हम (अपने ऊपर) ज़ुल्म करते रहे। (५) तो जिन लोगों की तरफ़ पैग़म्बर भेजे गये, हम उन से भी पूछेंगे और पैग़म्बरों से भी पूछेंगे। (६) फिर अपने इल्म से उन के हालात बयान करेंगे और हम कहीं ग़ायब तो नहीं थे। (७) और उस दिन (आमाल का) तुलना बर-हक़ है, तो जिन लोगों के (अमलों के) वज़न भारी होंगे, वे तो निजात पाने वाले हैं। (८) और जिन के वज़न हल्के होंगे, तो यही लोग हैं, जिन्हों ने अपने को घाटे में डाला, इस लिए कि हमारी आयतों के बारे में बे-इंसाफ़ी करते थे। (९) और हमीं ने ज़मीन में तुम्हारा ठिकाना बनाया और इस में तुम्हारे लिए रोज़ी के सामान पैदा किए (मगर) तुम कम ही शुक्र करते हो। (१०) ★

और हमीं ने तुम को (शुरू में मिट्टी से) पैदा किया, फिर तुम्हारी सूरत-शक्ल बनायी, फिर फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि आदम के आगे सज्दा करो, तो (सब ने) सज्दा किया, लेकिन इब्लीस, कि वह सज्दा करने वालों में (शामिल) न हुआ। (११) (ख़ुदा ने) फ़रमाया, जब मैं ने तुझ को हुक्म दिया, तो किस चीज़ ने तुझे सज्दा करने से रोका। उस ने कहा कि मैं इस से अफ़्ज़ल हूं। मुझे तू ने आग से पैदा किया है और इसे मिट्टी से बनाया है। (१२) फ़रमाया, तू (बहिश्त से) उतर जा। तुझे मुनासिब नहीं कि यहां घमंड करे, पस निकल जा, तू ज़लील है। (१३) उस ने कहा कि

★रु. १/८ आ १०

क़ा-ल अन्ज़िर्नी इला यौमि युब्असून (१४) क़ा-ल इन्न-क मिनल्मुन्ज़रीन (१५) क़ा-ल फ़बिमा अग्वै-तनी ल-अक़्अुदन्-न लहुम् सिरात-कल्-मुस्तक़ीम (१६) सुम्-म ल-आतियन्नहुम् मिम्बैनि ऐदीहिम् व मिन् ख़ल्फ़िहिम् व अन् ऐमानिहिम् व अन् शमा-इलिहिम् व ला तजिदु अक्स-रहुम् शाकिरीन (१७) क़ालख़्रुज् मिन्हा मज़ऊमम्-मद्हूरन् ल-मन् तबि-अ-क मिन्हुम् ल-अम्-ल-अन्-न जहन्न-म मिन्कुम् अज्मअ़ीन (१८) व या आदमुस्कुन् अन्-त व ज़ौजुकलजन्न-त फ़कुला मिन् हैसु शिअ्तुमा व ला तक़्रबा हाज़िहिश्श-ज-र-त फ़-तकूना मिनज़्ज़ालिमीन (१९) फ़-वस्-व-स लहुमश्शैतानु लियुब्दि-य लहुमा मा वूरि-य अन्हुमा मिन् सौआतिहिमा व क़ा-ल मा नहाकुमा रब्बुकुमा अन् हाज़िहिश्श-ज-रति इल्ला अन् तकूना म-लकैनि औ तकूना मिनल्ख़ालिदीन (२०) व क़ास-महुमा इन्नी लकुमा लमिनन्नासिहीन (२१)

الصغرين ۝ قال انظرني الى يوم يبعثون ۝ قال انك من
المنظرين ۝ قال فبما اغويتني لاقعدن لهم صراطك المستقيم ۝
ثم لاتينهم من بين ايديهم ومن خلفهم وعن ايمانهم وعن
شمائلهم ولا تجد اكثرهم شكرين ۝ قال اخرج منها مذءوما
مدحورا لمن تبعك منهم لاملان جهنم منكم اجمعين ۝ و
يادم اسكن انت وزوجك الجنة فكلا من حيث شئتما ولا تقربا
هذه الشجرة فتكونا من الظلمين ۝ فوسوس لهما الشيطن ليبدي
لهما ما وري عنهما من سواتهما وقال ما نهكما ربكما عن
هذه الشجرة الا ان تكونا ملكين او تكونا من الخلدين ۝
وقاسمهما اني لكما لمن النصحين ۝ فدلهما بغرور فلما ذاقا
الشجرة بدت لهما سواتهما وطفقا يخصفن عليهما من ورق
الجنة ونادىهما ربهما الم انهكما عن تلكما الشجرة واقل
لكما ان الشيطن لكما عدو مبين ۝ قالا ربنا ظلمنا انفسنا
وان لم تغفر لنا وترحمنا لنكونن من الخسرين ۝ قال اهبطوا
بعضكم لبعض عدو ولكم في الارض مستقر ومتاع الى
حين ۝ قال فيها تحيون وفيها تموتون ومنها تخرجون ۝
يبني ادم قد انزلنا عليكم لباسا يواري سواتكم وريشا ولباس

फ़-दल्लाहुमा बिग़ुरूरिन् फ़-लम्मा ज़ाक़श्श-ज-र-त ब-दत् लहुमा सौआतुहुमा व तफ़िक़ा यख़्सिफ़ानि अलैहिमा मिंव्-व-रक़िल्-जन्नति व नादाहुमा रब्बुहुमा अ-लम् अन्-हकुमा अन् तिल्कुमश्श-ज-रति व अक़ुल्लकुमा इन्नश्शैता-न लकुमा अदुव्वुम्-मुबीन (२२) क़ाला रब्बना ज़-लम्ना अन्फ़ुसना व इल्लम् तग़्फ़िर्लना व तर्हम्ना ल-नकूनन्-न मिनल्ख़ासिरीन (२३) क़ालह्बितू बअ्-ज़ुकुम् लिबअ्-ज़िन् अदुव्वुन् व लकुम् फ़िल्अर्ज़ि मुस्तक़र्रुंव्-व मताअुन् इला हीन (२४) क़ा-ल फ़ीहा तह्यौ-न व फ़ीहा तमूतू-न व मिन्हा तुख़्रजू-न ★ (२५) या बनी आद-म क़द् अन्ज़ल्ना अलैकुम् लिबासंय्युवारी सौआतिकुम् व रीशन् व लिबासुत्तक़्वा ज़ालि-क ख़ैरुन् ज़ालि-क मिन् आयातिल्लाहि ल-अल्लहुम् यज़्ज़क्करून (२६)

★रु. २/९ आ १५

मुझे उस दिन तक मुहलत अता फ़रमा, जिस दिन लोग (क़ब्रों से) उठाए जाएंगे। (१४) फ़रमाया, (अच्छा,) तुझ को मुहलत दी जाती है। (१५) (फिर) शैतान ने कहा कि मुझे तो तू ने मलऊन किया ही है। मैं भी तेरे सीधे रास्ते पर उन (को गुमराह करने) के लिए बैठूंगा। (१६) फिर उन के आगे से और पीछे से और दाएं से और बाएं से (ग़रज़ हर तरफ़ से) आऊंगा (और उन की राह मारूंगा) और तू उन में अक्सर को शुक्रगुज़ार नहीं पायेगा। (१७) (ख़ुदा ने) फ़रमाया, निकल जा यहां से पाजी मर्दूद। जो लोग उन में से तेरी पैरवी करेंगे, मैं (उन को और तुझ को जहन्नम में डाल कर) तुम सब से जहन्नम को भर दूंगा। (१८) और (हम ने) आदम (से कहा कि) तुम और तुम्हारी बीवी बहिश्त में रहो-सहो और जहां से चाहो (और जो चाहो) खाओ, मगर इस पेड़ के पास न जाना, वरना गुनाहगार हो जाओगे। (१९) तो शैतान दोनों को बहकाने लगा ताकि उन के सतर की चीज़ें, जो उन से छिपी थीं, खोल दे और कहने लगा कि तुम को तुम्हारे परवरदिगार ने पेड़ से सिर्फ़ इस लिए मना किया है कि तुम फ़रिश्ते न बन जाओ या हमेशा जीते न रहो। (२०) और उन से क़सम खा कर कहा कि मैं तो तुम्हारा भला चाहने वाला हूं। (२१) ग़रज़ (मर्दूद ने) धोखा दे कर उन को (गुनाह की तरफ़) खींच ही लिया, जब उन्होंने उस पेड़ (के फल) को खा लिया, तो उन के सतर की चीज़ खुल गयीं और वह बहिश्त से (पेड़ों के) पत्ते (तोड़-तोड़ कर) अपने ऊपर चिपकाने (और सतर छिपाने) लगे। तब उन के परवरदिगार ने उन को पुकारा कि क्या मैं ने तुम को इस पेड़ (के पास जाने) से मना नहीं किया था और बता नहीं दिया था कि शैतान तुम्हारा खुल्लम-खुल्ला दुश्मन है। (२२) दोनों कहने लगे कि परवरदिगार! हम ने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया और अगर तू हमें नहीं बख़्शेगा और हम पर रहम नहीं करेगा, तो हम तबाह हो जाएंगे। (२३) (ख़ुदा ने) फ़रमाया, (तुम सब बहिश्त से) उतर जाओ। (अब से) तुम एक-दूसरे के दुश्मन हो और तुम्हारे लिए एक (ख़ास) वक़्त तक ज़मीन पर ठिकाना और (ज़िंदगी का) सामान (कर दिया गया) है। (२४) (यानी) फ़रमाया कि उसी में तुम्हारा जीना होगा और उसी में मरना, उसी में से (क़ियामत को ज़िंदा कर के) निकाले जाओगे। (२५) ★

ऐ बनी आदम! हम ने तुम पर पोशाक उतारी कि तुम्हारा सतर ढांके और (तुम्हारे बदन को) ज़ीनत (दे) और (जो) परहेज़गारी का लिबास (है)। वह सब से अच्छा है। ये ख़ुदा की निशानियां हैं ताकि लोग नसीहत पकड़ें। (२६) ऐ बनी आदम! (देखना कहीं) शैतान तुम्हें

★रु. २/९ आ १५

या बनी आद-म ला यफ़्तिनन्नकुमुश्शैतानु कमा अख़्-र-ज अ-ब-वैकुम् मिनल्जन्नति यन्ज़िअु अन्हुमा लिबा-सहुमा लियुरि-यहुमा सौआतिहिमा ط इन्नहू यराकुम् हु-व व क़बीलुहू मिन् हैसु ला तरौनहुम् ط इन्ना ज-अल्नश्-शयाती-न औलिया-अ लिल्लज़ी-न ला युअ्मिनून (२७) व इज़ा फ़-अलू फ़ाहि-श-तन् क़ालू व-जद्ना अलैहा आबा-अना वल्लाहु अ-म-रना बिहा ط क़ुल् इन्नल्ला-ह ला यअ्मुरु बिल्फ़ह्-शा-इ ط अ-तक़ूलू-न अ-लल्लाहि मा ला तअ्-लमून (२८) क़ुल् अ-म-र रब्बी बिल्क़िस्ति قف व अक़ीमू वुजूहकुम् अिन्-द कुल्लि मस्जिदिंव्वद्अूहु मुख़्लिसी-न लहुद्दी-न ۵ कमा ब-द-अकुम् त-अूदून ط (२९) फ़रीक़न् हदा व फ़रीक़न् हक़्-क़ अलैहिमुज़्ज़लालतु ط इन्नहुमुत्त-ख़ज़ुश्-शयाती-न औलिया-अ मिन् दूनिल्लाहि व यह्सबू-न अन्नहुम् मुह्तदून (३०) या बनी आद-म ख़ुज़ू ज़ीन-तकुम् अिन्-द कुल्लि मस्जिदिंव्-व कुलू वश्रबू व ला तुस्रिफ़ू ج इन्नहू ला युहिब्बुल्-मुस्रिफ़ीन ★(३१) क़ुल् मन् हर्-र-म ज़ीनतल्लाहिल्लती अख़्-र-ज लिअिबादिही वत्तय्यिबाति मिनर्रिज़्क़ ط क़ुल् हि-य लिल्लज़ी-न आमनू फ़िल्-हयातिद्दुन्या ख़ालि-स-तंय्यौमल्-क़ियामति ط कज़ालि-क नुफ़स्सिलुल्-आयाति लिक़ौमिंय्यअ्-लमून (३२) क़ुल् इन्नमा हर्-र-म रब्बियल्-फ़वाहि-श मा ज़-ह-र मिन्हा व मा ब-त-न वल्इस्-म वल्बग़्-य बिग़ैरिल्हक़्क़ि व अन् तुश्रिकू बिल्लाहि मा लम् युनज़्ज़िल् बिही सुल्तानंव्-व अन् तक़ूलू अ-लल्लाहि मा ला तअ्-लमून (३३)

التَّقْوٰى ذٰلِكَ خَيْرٌ ذٰلِكَ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ۝ يٰبَنِيْٓ
اٰدَمَ لَا يَفْتِنَنَّكُمُ الشَّيْطٰنُ كَمَآ اَخْرَجَ اَبَوَيْكُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ يَنْزِعُ
عَنْهُمَا لِبَاسَهُمَا لِيُرِيَهُمَا سَوْاٰتِهِمَا ۗ اِنَّهٗ يَرٰىكُمْ هُوَ وَقَبِيْلُهٗ مِنْ
حَيْثُ لَا تَرَوْنَهُمْ ۗ اِنَّا جَعَلْنَا الشَّيٰطِيْنَ اَوْلِيَآءَ لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝
وَاِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً قَالُوْا وَجَدْنَا عَلَيْهَآ اٰبَآءَنَا وَاللّٰهُ اَمَرَنَا بِهَا ۗ
قُلْ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَاْمُرُ بِالْفَحْشَآءِ ۗ اَتَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝
قُلْ اَمَرَ رَبِّيْ بِالْقِسْطِ ۗ وَاَقِيْمُوْا وُجُوْهَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ
وَّادْعُوْهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۗ كَمَا بَدَاَكُمْ تَعُوْدُوْنَ ۝ فَرِيْقًا
هَدٰى وَفَرِيْقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ الضَّلٰلَةُ ۗ اِنَّهُمُ اتَّخَذُوا الشَّيٰطِيْنَ
اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ۝ يٰبَنِيْٓ
اٰدَمَ خُذُوْا زِيْنَتَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّكُلُوْا وَاشْرَبُوْا وَلَا تُسْرِفُوْا ۚ
اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ۝ قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِيْنَةَ اللّٰهِ الَّتِيْٓ
اَخْرَجَ لِعِبَادِهٖ وَالطَّيِّبٰتِ مِنَ الرِّزْقِ ۗ قُلْ هِيَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا خَالِصَةً يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ
لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝ قُلْ اِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّيَ الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَ
مَا بَطَنَ وَالْاِثْمَ وَالْبَغْيَ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَاَنْ تُشْرِكُوْا بِاللّٰهِ مَا لَمْ
يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا وَّاَنْ تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ وَلِكُلِّ

★रु. ३/१० आ ६

बहका न दे, जिस तरह तुम्हारे मां-बाप को (बहका कर) बहिश्त से निकलवा दिया और उन से उन के कपड़े उतरवा दिए, ताकि उन से सतर उन को खोल कर दिखा दे। वह और उस के भाई तुम को ऐसी जगह से देखते रहते हैं, जहां से तुम उन को नहीं देख सकते। हम ने शैतानों को उन्हीं लोगों का साथी बनाया है, जो ईमान नहीं रखते। (२७) और जब कोई बे-हयाई का काम करते हैं, तो कहते हैं कि हम ने अपने बुज़ुर्गों को इसी तरह करते देखा है और ख़ुदा ने भी हम को यही हुक्म दिया है। कह दो कि ख़ुदा बे-हयाई के काम करने का हुक्म हरगिज़ नहीं देता। भला तुम ख़ुदा के बारे में ऐसी बात क्यों कहते हो, जिस का तुम्हें इल्म नहीं। (२८) कह दो कि मेरे परवरदिगार ने तो इन्साफ़ करने का हुक्म दिया है और यह कि हर नमाज़ के वक़्त सीधा (क़िब्ले की तरफ़) रुख किया करो और ख़ास उसी की इबादत करो और उसी को पुकारो। उस ने जिस तरह तुम को शुरू में पैदा किया था, उसी तरह तुम फिर पैदा होगे। (२९) एक फ़रीक़ को तो उस ने हिदायत दी और एक फ़रीक़ पर गुमराही साबित हो चुकी। इन लोगों ने ख़ुदा को छोड़ कर शैतानों को दोस्त बना लिया और समझते (यह) हैं कि हिदायत पाये हुए हैं। (३०) ऐ बनी आदम ! हर नमाज़ के वक़्त अपने को मुज़य्यन (सुसज्जित) किया करो।[1] और खाओ और पियो और बे-जा न उड़ाओ कि ख़ुदा बे-जा उड़ाने वालों को दोस्त नहीं रखता। (३१) ★

पूछो तो, कि जो ज़ीनत (व आराइश) और खाने(-पीने) की पाक चीज़ें ख़ुदा ने अपने बन्दों के लिए पैदा की हैं, उन को हराम किस ने किया है ? कह दो कि ये चीज़ें दुनिया की ज़िंदगी में ईमान वालों के लिए हैं और क़ियामत के दिन ख़ास उन्हीं का हिस्सा होंगी। इसी तरह ख़ुदा अपनी आयतें समझने वालों के लिए खोल-खोल कर बयान फ़रमाता है।[2] (३२) कह दो कि मेरे परवरदिगार ने तो बे-हयाई की बातों को, ज़ाहिर हों या छिपी हुई और गुनाह को और ना-हक़ ज़्यादती करने को हराम किया है और इस को भी कि तुम किसी को ख़ुदा का शरीक बनाओ, जिस की उस ने कोई सनद नाज़िल नहीं की और इस को भी कि ख़ुदा के बारे में ऐसी बातें कहो, जिन का तुम्हें

---

१. ज़ीनत उस चीज़ को कहते हैं, जिस से सजावट की जाए जैसे लिबास। इब्ने अब्बास कहते हैं कि जाहिलियत के ज़माने में लोग काबे का तवाफ़ नंगे करते थे। ख़ुदा ने उस से मना फ़रमाया और हुक्म दिया कि जब तवाफ़ को या मस्जिद में नमाज़ को आओ, तो कपड़ा पहन कर आओ, नंगे न आओ। इस से नमाज़ में पर्दे की चीज़ों को ढांकना फ़र्ज़ हो गया। इल्म वालों के नज़दीक हर हालत में सतरे औरत ढांकना फ़र्ज़ है, चाहे आदमी तन्हा ही क्यों न हो। कुछ ने कहा कि सजाने से मुराद कंघी करना और ख़ुश्बू लगाना है, मगर वही पहली बात सही है। और अगर कंघी भी कर ली जाए और ख़ुश्बू भी लगा ली जाए तो सजावट पर सजावट है। 'खाओ और पियो' के इर्शाद से मक़सद ख़ुदा की नेमतों से फ़ायदा उठाना है यानी पाकीज़ा और सुथरी चीज़ों से, जो ख़ुदा ने तुम्हारे ही लिए पैदा की हैं फ़ायदा उठाओ और ख़ुदा का शुक्र अदा करो। एक हदीस में आया है कि खाओ और पियो और पहनो और सदक़ा दो, लेकिन न बे-जा उड़ाओ, न इतराओ, क्योंकि अल्लाह तआला को यह बात भली लगती है कि अपनी नेमत अपने बंदे पर देखे। जिस तरह पाक रोज़ी के खाने-पीने की इजाज़त है, उसी तरह बे-जा उड़ाने से मना किया गया है यानी बे-ज़रूरत खाना या पेट-भरे की हालत में खाना कि यह ज़्यादा है, फ़िज़ूल-ख़र्ची में दाख़िल है। यह आयत फ़िज़ूल ख़र्ची करने वालों के हक़ में एक डरावा है।

२. इस आयत से पाया जाता है कि जिस तरह खाने-पीने की चीज़ों और माल का उड़ाना हराम है, इसी तरह उन को छोड़ देना और उन से फ़ायदा न उठाना भी ख़ुदा को ना-पसन्द है और सच पूछो तो यह ख़ुदा की नेमतों

(शेष पृष्ठ २४३ पर)

★रु. ३/१० आ ६

व लिकुल्लि उम्मतिन् अ-जलुन् ० फ़-इज़ा जा-अ अ-जलुहुम् ला यस्तअ्ख़िरू-न सा-अतंव्-व ला यस्तक़्दिमून (३४) या बनी आद-म इम्मा यअ्तियन्नकुम् रुसुलुम्-मिन्कुम् यक़ुस्सू-न अ़लैकुम् आयाती ॥ फ़ - मनित्तक़ा व अस् - ल-ह् फ़ला ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम् व ला हुम् यह़्ज़नून (३५) वल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना वस्तक्बरू अ़न्हा उला-इ-क अस्ह़ाबुन्नारि ० हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (३६) फ़-मन् अज़्-लमु मिम्मनिफ़्तरा अ़ - लल्लाहि कज़िबन् औ कज़्ज़ - ब बिआयातिही ॰ उला - इ - क यनालुहुम् नसीबुहुम् मिनल् - किताबि ॰ ह़त्ता इज़ा जा - अत्हुम् रुसुलुना य - त - वफ़्फ़ौनहुम् ॥ क़ालू ऐ-न मा कुन्तुम् तद्अू-न मिन् दूनिल्लाहि ॰ क़ालू ज़ल्लू अ़न्ना व शहिदू अ़ला अन्फ़ुसिहिम् अन्नहुम् कानू काफ़िरीन (३७) क़ालद्ख़ुलू फ़ी उममिन् क़द् ख़-लत् मिन् क़ब्लिकुम् मिनल्जिन्नि वल्इन्सि फ़िन्नारि ॰ कुल्लमा द - ख़ - लत् उम्मतुल् - ल-अ़-नत् उख़्तहा ॰ ह़त्ता इज़द्दारकू फ़ीहा जमीअ़न् ॥ क़ालत् उख़्राहुम् लिऊलाहुम् रब्बना हा-उला-इ अ-ज़ल्लूना फ़-आतिहिम् अ़ज़ाबन् ज़िअ्-फ़म् - मिनन्नारि ॥ क़ा-ल लिकुल्लिन् ज़िअ्-फ़ुंव्-व लाकिल्ला तअ्-लमून (३८) व क़ालत् ऊलाहुम् लिउख़्राहुम् फ़मा का-न लकुम् अ़लैना मिन् फ़ज़्लिन् फ़ज़ूक़ुल्-अ़ज़ा-ब बिमा कुन्तुम् तक्सिबून ★ (३९) इन्नल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना वस्तक्बरू अ़न्हा ला तुफ़त्तहु लहुम् अब्वाबुस्समा - इ व ला यद्ख़ुलूनल्जन्न - त ह़त्ता यलिजल्-ज - मलु फ़ी सम्मिल् - ख़ियाति ॰ व कज़ालि-क नज्ज़ि-ल-मुज्रिमीन (४०) लहुम् मिन् जहन्न-म मिहादुंव्-व मिन् - फ़ौक़िहिम् ग़वाशिन् ॰ व कज़ालि - क नज्ज़िज़्ज़ालिमीन (४१)

ولو اننا ٣٣ الاعراف ٧

امة اجل فاذا جاء اجلهم لا يستأخرون ساعة ولا يستقدمون
يبني آدم اما يأتينكم رسل منكم يقصون عليكم آيتي فمن
اتقى واصلح فلا خوف عليهم ولا هم يحزنون ۝ والذين كذبوا
بآيتنا واستكبروا عنها اولئك اصحب النار هم فيها خلدون ۝
فمن اظلم ممن افترى على الله كذبا او كذب بآيته اولئك
ينالهم نصيبهم من الكتب حتى اذا جاءتهم رسلنا يتوفونهم
قالوا اين ما كنتم تدعون من دون الله قالوا ضلوا عنا و
شهدوا على انفسهم انهم كانوا كفرين ۝ قال ادخلوا في امم
قد خلت من قبلكم من الجن والانس في النار كلما دخلت امة
لعنت اختها حتى اذا اداركوا فيها جميعا قالت اخرىهم لاولىهم
ربنا هؤلاء اضلونا فآتهم عذابا ضعفا من النار قال لكل
ضعف ولكن لا تعلمون ۝ وقالت اولىهم لاخرىهم فما كان
لكم علينا من فضل فذوقوا العذاب بما كنتم تكسبون ۝
ان الذين كذبوا بآيتنا واستكبروا عنها لا تفتح لهم ابواب
السماء ولا يدخلون الجنة حتى يلج الجمل في سم الخياط
وكذلك نجزي المجرمين ۝ لهم من جهنم مهاد ومن فوقهم
غواش وكذلك نجزي الظلمين ۝ والذين آمنوا وعملوا الصلحت

★रु. ४/११ आ ८

कुछ इल्म नहीं। (३३) और हर एक फ़िर्क़े के लिए (मौत का) एक वक़्त मुक़र्रर है। जब वह वक़्त आ जाता है, तो न तो एक घड़ी देर कर सकते हैं, न जल्दी। (३४) ऐ बनी आदम! (हम तुम को यह नसीहत हमेशा करते रहे हैं कि) जब हमारे पैग़म्बर तुम्हारे पास आया करें और हमारी आयतें तुम को सुनाया करें (तो उन पर ईमान लाया करो कि) जो शख़्स (उन पर ईमान ला कर) ख़ुदा से डरता रहेगा और अपनी हालत ठीक रखेगा, तो ऐसे लोगों को न कुछ ख़ौफ़ होगा और न वे ग़मनाक होंगे। (३५) और जिन्हों ने हमारी आयतों को झुठलाया और उनसे सर-ताबी की, वही दोज़ख़ी हैं कि हमेशा उस में (जलते) रहेंगे। (३६) तो उस से ज़्यादा ज़ालिम कौन है, जो ख़ुदा पर झूठ बांधे या उस की आयतों को झुठलाये, उन को उन के नसीब का लिखा मिलता ही रहेगा, यहां तक कि जब उन के पास हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते) जान निकालने आएंगे, तो कहेंगे कि जिन को तुम ख़ुदा के सिवा पुकारा करते थे, वे (अब) कहां हैं? वे कहेंगे, (मालूम नहीं) कि वे हम से (कहां) ग़ायब हो गये? और इक़रार करेंगे कि बेशक वे काफ़िर थे। (३७) तो ख़ुदा फ़रमाएगा कि जिन्नों और इन्सानों की जो जमाअतें तुम से पहले हो गुज़री हैं, उन्हीं के साथ तुम भी जहन्नम में दाख़िल हो जाओ। जब एक जमाअत (वहां) दाख़िल होगी तो अपनी (मज़हबी) बहन (यानी अपनी जैसी दूसरी जमाअत) पर लानत करेगी, यहां तक कि जब सब उस में दाख़िल हो जाएंगे, तो पिछली जमाअत पहली के बारे में कहेगी कि ऐ परवरदिगार! इन्हीं लोगों ने हम को गुमराह किया था, तो इन को जहन्नम की आग का दोगुना अज़ाब दे। ख़ुदा फ़रमाएगा कि (तुम) सब को दोगुना (अज़ाब दिया जाएगा), मगर तुम नहीं जानते। (३८) और पहली जमाअत पिछली से कहेगी कि तुम को हम पर कुछ भी फ़ज़ीलत न हुई, तो जो (अमल) तुम किया करते थे उसके बदले में अज़ाब के मज़े चखो। (३९) ★

जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया और उन से सर-ताबी की, उन के लिए न आसमान के दरवाज़े खोले जाएंगे और न वे बहिश्त में दाख़िल होंगे, यहां तक कि ऊंट सूई के नाके में से निकल जाए।[1] और गुनाहगारों को हम ऐसी ही सज़ा दिया करते हैं। (४०) ऐसे लोगों के लिए (नीचे) बिछौना भी जहन्नम (की आग) का होगा और ऊपर से ओढ़ना भी (इसी का) और ज़ालिमों को

(पृष्ठ २४१ का शेष)

की ना-शुक्री है। अगर ख़ुदा किसी को अच्छी क़िस्म की चीज़ें खाने-पीने-पहनने को दे, तो वह उन को छोड़ कर मामूली चीज़ों को क्यों अपनाये? ऐसा करना ख़ुदा की सुन्नत के ख़िलाफ़ है। उस ने तमाम खाने-पीने और पहनने की और ज़ेब व ज़ीनत की चीज़ें हलाल की हैं और जब तक कोई शरअी मजबूरी रुकावट न बने, उन से फ़ायदा उठाना चाहिए। इमाम फ़ख़्रुद्दीन राज़ी रह० कहते हैं कि इस आयत में हर क़िस्म के लिबास और ज़ेवर दाख़िल हैं। अगर मर्दों के लिए सोने और रेशम का पहनना हराम न होता तो आयत के आम होने से इस का मतलब उन पर सही ठहरता। ग़रज़ खाने-पीने और ज़ीनत की बेहतर और अच्छी चीज़ों को ज़ुह्द (दुनिया को छोड़ देने) की बुनियाद पर छोड़ देना ग़लती है। हां, अगर कोई ख़ाकसारी के जज़्बे से अच्छे कपड़े न पहने और फटे-पुराने पहनने लगे, तो जायज़ है।

१. यह हक़ीक़त से मुताल्लिक़ है कि न ऊंट सूई के नाके में से निकल सके, न कुफ़्फ़ार बहिश्त में दाख़िल हों।

★रु. ४/११ आ ८

वल्लज़ी - न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति ला नुकल्लिफ़ु नफ़्सन् इल्ला वुस्-अहा ✓ उला-इ-क अस्हाबुल्जन्नति ج हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (४२) व न-ज़अ्-ना मा फ़ी सुदूरिहिम् मिन् ग़िल्लिन् तज्री मिन् तह़्तिहिमुल्-अन्हारु ج व क़ालुल्-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी हदाना लिहाज़ा قف व मा कुन्ना लिनह्-तदि-य लौला अन् हदानल्लाहु ج ल-क़द् जा-अत् रुसुलु रब्बिना बिल्हक़्क़ि ط व नूदू अन् तिल्कुमुल्-जन्-नतु ऊरिस्तुमूहा बिमा कुन्तुम् तअ्-मलून ● (४३) व नादा अस्हाबुल्-जन्नति अस्हाबन्नारि अन् क़द् व-जद्-ना मा व-अ़-दना रब्बुना ह़क़्क़न् फ़-हल् वजत्तुम् मा व-अ़-द रब्बुकुम् ह़क़्क़न् ط क़ालू न - अ़म् ج फ़-अज़्-ज़न मुअज़्ज़िनुम्-बैनहुम् अल्लअ्-नतुल्लाहि अ़-लज़्ज़ालिमीन ۙ (४४) अ्ल्लज़ी-न यसुद्दू-न अन् सबीलिल्लाहि व यब्ग़ूनहा अि-व-जन् ج व हुम् बिल्आख़िरति काफ़िरून ※ (४५) व बैनहुमा ह़िजाबुन् ج व अ़-लल्-अअ्-राफ़ि रिजालुंय्यअ्-रिफ़ू-न कुल्लम् - बिसीमाहुम् ج व नादौ अस्हाबल् - जन्नति अन् सलामुन् अ़लैकुम् قف लम् यद्ख़ुलूहा व हुम् यत्मअू - न (४६) व इज़ा सुरिफ़त् अब्सारुहुम् तिल्क़ा - अ अस्हाबिन्नारि ۙ क़ालू रब्बना ला तज्-अ़ल्ना म-अ़ल् - क़ौमिज़्ज़ालिमीन ★(४७) व नादा अस्हाबुल् - अअ्-राफ़ि रिजालंय्यअ्-रिफ़ू-न-हुम् बिसीमाहुम् क़ालू मा अग़्ना अ़न्कुम् जम्अुकुम् व मा कुन्तुम् तस्तक्बिरून (४८) अ - हा - उला - इल्लज़ी - न अक़्सम्तुम् ला यनालुहुमुल्लाहु बिरह् - मतिन् ط उद्ख़ुलुल्-जन्न-त ला ख़ौफ़ुन् अ़लैकुम् व ला अन्तुम् तह़्-ज़नून (४९)

ولو اننا ٨ — ١٢٣ — الاعراف ٧

لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ۫ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا
خٰلِدُوْنَ ﴿٤٢﴾ وَنَزَعْنَا مَا فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنْ غِلٍّ تَجْرِيْ مِنْ
تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ ۚ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ هَدٰىنَا لِهٰذَا ۫ وَمَا كُنَّا
لِنَهْتَدِيَ لَوْلَآ اَنْ هَدٰىنَا اللّٰهُ ۚ لَقَدْ جَآءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۭ
وَنُوْدُوْٓا اَنْ تِلْكُمُ الْجَنَّةُ اُوْرِثْتُمُوْهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٤٣﴾
وَنَادٰٓى اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ اَصْحٰبَ النَّارِ اَنْ قَدْ وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا
رَبُّنَا حَقًّا فَهَلْ وَجَدْتُّمْ مَّا وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًّا ۭ قَالُوْا نَعَمْ ۚ فَاَذَّنَ
مُؤَذِّنٌۢ بَيْنَهُمْ اَنْ لَّعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٤﴾ الَّذِيْنَ يَصُدُّوْنَ
عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ۚ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ كٰفِرُوْنَ ﴿٤٥﴾ وَ
بَيْنَهُمَا حِجَابٌ ۚ وَعَلَى الْاَعْرَافِ رِجَالٌ يَّعْرِفُوْنَ كُلًّاۢ بِسِيْمٰىهُمْ ۚ وَ
نَادَوْا اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ اَنْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ ۣ لَمْ يَدْخُلُوْهَا وَهُمْ يَطْمَعُوْنَ ﴿٤٦﴾
وَاِذَا صُرِفَتْ اَبْصَارُهُمْ تِلْقَآءَ اَصْحٰبِ النَّارِ ۙ قَالُوْا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا
مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٧﴾ وَنَادٰٓى اَصْحٰبُ الْاَعْرَافِ رِجَالًا يَّعْرِفُوْنَهُمْ
بِسِيْمٰىهُمْ قَالُوْا مَآ اَغْنٰى عَنْكُمْ جَمْعُكُمْ وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٤٨﴾
اَهٰٓؤُلَآءِ الَّذِيْنَ اَقْسَمْتُمْ لَا يَنَالُهُمُ اللّٰهُ بِرَحْمَةٍ ۭ اُدْخُلُوا الْجَنَّةَ لَا
خَوْفٌ عَلَيْكُمْ وَلَآ اَنْتُمْ تَحْزَنُوْنَ ﴿٤٩﴾ وَنَادٰٓى اَصْحٰبُ النَّارِ اَصْحٰبَ
الْجَنَّةِ اَنْ اَفِيْضُوْا عَلَيْنَا مِنَ الْمَآءِ اَوْ مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ ۭ قَالُوْٓا اِنَّ

● सु. ३/४ ※ व. लाज़िम ★रु. ५/१२ आ ८

हम ऐसी ही सज़ा देते हैं। (४१) और जो लोग ईमान लाये और नेक अमल करते रहे और हम (अमलों के लिए) किसी शख्स को उस की ताक़त से ज़्यादा तक्लीफ़ देते ही नहीं। ऐसे ही लोग जन्नत वाले हैं (कि) उस में हमेशा रहेंगे। (४२) और जो कीने (कपट) उन के सीनों में होंगे, हम सब निकाल डालेंगे उन के (महलों के) नीचे नहरें बह रही होंगी। और कहेंगे कि ख़ुदा का शुक्र है, जिस ने हम को यहां का रास्ता दिखाया और अगर ख़ुदा हम को रास्ता न दिखाता तो हम रास्ता न पा सकते। बेशक हमारे परवरदिगार के रसूल हक़ बात ले कर आये थे और उस (दिन) मुनादी कर दी जाएगी कि तुम उन आमाल के बदले में जो (दुनिया में) करते थे, इस बहिश्त के वारिस बना दिये गये हो ●(४३) और जन्नत वाले दोज़खियों से पुकार कर कहेंगे कि जो वायदा हमारे परवरदिगार ने हम से किया था, हम ने उसे सच्चा पा लिया। भला जो वायदा तुम्हारे परवरदिगार ने तुम से किया था, तुम ने भी उसे सच्चा पाया? वे कहेंगे, हां, तो (उस वक़्त) उन में एक पुकारने वाला पुकार देगा कि बे-इन्साफ़ों पर ख़ुदा की लानत, (४४) जो ख़ुदा की राह से रोकते और उस में कजी ढूंढते और आख़िरत से इंकार करते थे ※(४५) उन दोनों, यानी जन्नत और दोज़ख के दर्मियान (आराफ़ नाम की) एक दीवार होगी, और आराफ़ पर कुछ आदमी होंगे जो सब को उन की सूरतों से पहचान लेंगे, तो वे जन्नत वालों को पुकार कर कहेंगे कि तुम पर सलामती हो। ये लोग (अभी) जन्नत में दाखिल तो नहीं हुए होंगे, मगर उम्मीद रखते होंगे। (४६) और जब उन की निगाहें पलट कर दोज़ख वालों की तरफ़ जाएंगी, तो अर्ज़ करेंगे कि ऐ हमारे परवरदिगार! हम को ज़ालिम लोगों के साथ (शामिल) न कीजिये। (४७) ★

और आराफ़ वाले (काफ़िर) लोगों को, जिन्हें उन की सूरतों से शनाख्त करते होंगे, पुकारेंगे और कहेंगे (कि आज) न तो तुम्हारी जमाअत ही तुम्हारे कुछ काम आयी और न तुम्हारा तकब्बुर (यानी घमंड ही फ़ायदेमंद हुआ)। (४८) (फिर मोमिनों की तरफ़ इशारा कर के कहेंगे) क्या ये वही लोग हैं, जिन के बारे में तुम क़स्में खाया करते थे कि ख़ुदा अपनी रहमत से उन की दस्तगीरी नहीं करेगा, (तो मोमिनो!) तुम बहिश्त में दाखिल हो जाओ। तुम्हें कुछ डर नहीं और न तुम को

●सु. ३/४ ※व. लाज़िम ★रु. ५/१२ आ ८

व नादा अस्हाबुन्नारि अस्हाबल्-जन्नति अन् अफ़ीज़ू अलैना मिनल्मा-इ औ मिम्मा र-ज़-क़कुमुल्लाहु ॰ क़ालू इन्नल्ला - ह हर्र-महुमा अ - लल्काफ़िरीन॥ (५०) अल्लज़ीनत्त-ख़ज़ू दीनहुम् लह्वंव्-व लअिबंव्-व ग़र्रतहुमुल्-हयातुद्दुन्या ॰ फ़ल्यौ-म नन्साहुम् कमा नसू लिक़ा-अ यौमिहिम् हाज़ा ॥ व मा कानू बिआयातिना यज्हदून (५१) व ल-क़द् जिअ्नाहुम् बिकिताबिन् फ़स्सल्नाहु अला अिल्मिन् हुदंव्-व रह्-म-तल्-लिक़ौमिय्युअ्मिनून (५२) हल् यन्ज़ुरू-न इल्ला तअ्वीलहू ॰ यौ-म यअ्ती तअ्वीलुहू यक़ूलुल्लज़ी-न नसूहु मिन् क़ब्लु क़द् जा-अत् रुसुलु रब्बिना बिल्हक़्क़ि ॰ फ़ - हल्लना मिन् शु-फ़-आ-अ फ़-यश्फ़अू लना औ नुरद्दु फ़-नअ्-म-ल ग़ैरल्लज़ी कुन्ना नअ्-मलु ॰ क़द् ख़सिरू अन्फ़ुसहुम् व ज़ल्-ल अन्हुम् मा कानू यफ़्तरून★(५३) इन्-न रब्बकुमुल्लाहुल्लज़ी ख़-ल-क़स्समावाति वल्अर्-ज़ फ़ी सित्तति अय्यामिन् सुम्मस्तवा अ - लल्अर्शि युग़्शिल्लैलन्नहा - र यत्लुबुहू हसीसंव्-व वश्शम्-स वल्क़-म-र वन्नुजू - म मुसख़्ख़रातिम्-बिअम्रिही ॰ अला लहुल्ख़ल्क़ु वल्-अम्रु ॰ तबा-र-कल्लाहु रब्बुल्-आलमीन (५४) उद्अू रब्बकुम् त-ज़र्रुअंव्-व ख़ुफ़्य-तन् ॰ इन्नहू ला युहिब्बुल्-मुअ्-तदीन ॰ (५५) व ला तुफ़्सिदू फ़िल्अर्ज़ि बअ्-द इस्लाहिहा वद्अूहु ख़ौफ़ंव्-व त-म-अन् ॰ इन्-न रह्मतल्लाहि क़रीबुम्-मिनल्मुह्सिनीन (५६) व हुवल्लज़ी युर्सिलुर्रिया-ह बुश्रम्-बै-न यदै रह्मतिही ॰ हत्ता इज़ा अ-क़ल्लत् सहाबन् सिक़ालन् सुक़्नाहु लि-ब-लदिम्-मय्यितिन् फ़-अन्ज़ल्ना बिहिल्मा-अ फ़-अख़्-रज्ना बिही मिन् कुल्लिस्स-म-राति ॰ क-ज़ालि-क नुख़्रिजुल्मौता ल-अल्लकुम् त-ज़क्करून (५७)

الله حرمهما على الكفرين ۝ الذين اتخذوا دينهم لهوا ولعبا
وغرتهم الحيوة الدنيا فاليوم ننسهم كما نسوا لقاء يومهم
هذا وما كانوا بايتنا يجحدون ۝ ولقد جئنهم بكتب فصلنه
على علم هدى ورحمة لقوم يؤمنون ۝ هل ينظرون الا
تاويله يوم ياتي تاويله يقول الذين نسوه من قبل قد
جاءت رسل ربنا بالحق فهل لنا من شفعاء فيشفعوا لنا
او نرد فنعمل غير الذي كنا نعمل قد خسروا انفسهم و
ضل عنهم ما كانوا يفترون ۝ ان ربكم الله الذي خلق السموت
والارض في ستة ايام ثم استوى على العرش يغشي اليل
النهار يطلبه حثيثا والشمس والقمر والنجوم مسخرت بامره
الا له الخلق والامر تبرك الله رب العلمين ۝ ادعوا ربكم
تضرعا وخفية انه لا يحب المعتدين ۝ ولا تفسدوا في
الارض بعد اصلاحها وادعوه خوفا وطمعا ان رحمت الله
قريب من المحسنين ۝ وهو الذي يرسل الريح بشرا بين
يدي رحمته حتى اذا اقلت سحابا ثقالا سقنه لبلد ميت
فانزلنا به الماء فاخرجنا به من كل الثمرت كذلك نخرج الموتى
لعلكم تذكرون ۝ والبلد الطيب يخرج نباته باذن ربه

★रु. ६/१३ आ ६

कुछ रंज व ग़म होगा। (४६) और दोज़ख़ी जन्नतियों से (गिड़गिड़ा कर) कहेंगे किसी क़दर हम पर पानी बहाओ या जो रोज़ी ख़ुदा ने तुम्हें दी है, उन में से (कुछ हमें भी दो)। वे जवाब देंगे कि ख़ुदा ने बहिश्त का पानी और रोज़ी काफ़िरों पर हराम कर दी है, (५०) जिन्हों ने अपने दीन को तमाशा और खेल बना रखा था और दुनिया की ज़िंदगी ने उन को धोखे में डाल रखा था, तो जिस तरह ये लोग उस दिन के आने को भूले हुए थे और हमारी आयतों से मुंकिर हो रहे थे, उसी तरह आज हम भी उन्हें भुला देंगे।[1] (५१) और हम ने उन के पास किताब पहुंचा दी है, जिस को इल्म व दानिश के साथ खोल-खोल कर बयान कर दिया है (और) वह मोमिन लोगों के लिए हिदायत और रहमत है। (५२) क्या ये लोग उस से अज़ाब के वायदे के इंतिज़ार में हैं? जिस दिन वह वायदा आ जाएगा, तो जो लोग उस को पहले से भूले हुए होंगे, वे बोल उठेंगे कि बेशक हमारे परवरदिगार के रसूल हक़ ले कर आये थे। भला (आज) हमारे कोई सिफ़ारिशी हैं कि हमारी सिफ़ारिश करें या हम (दुनिया में) फिर लौटा दिए जाएं कि जो (बुरा) अमल हम (पहले) करते थे, (वह न करें, बल्कि) उन के सिवा और (नेक) अमल करें। बेशक उन लोगों ने अपना नुक़सान किया और जो कुछ ये झूठ गढ़ा करते थे, उन से सब जाता रहा। (५३) ★

कुछ शक नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार ख़ुदा ही है, जिस ने आसमानों और ज़मीन को छः दिन में पैदा किया फिर अर्श पर जा ठहरा।[2] वही रात को दिन का लिबास पहनाता है कि वह उसके पीछे दौड़ता चला आता है और उसी ने सूरज और चांद और सितारों को पैदा किया। सब उसी के हुक्म के मुताबिक़ काम में लगे हुए हैं। देखो सब मख़्लूक़ भी उसी की है और हुक्म भी (उसी का है)। यह ख़ुदा-ए-रब्बुल आलमीन बड़ी बरकत वाला है। (५४) (लोगो!) अपने परवरदिगार से आजिज़ी से और चुपके-चुपके दुआएं मांगा करो। वह हद से बढ़ने वालों को दोस्त नहीं रखता। (५५) और मुल्क में इस्लाह के बाद ख़राबी न करना और ख़ुदा से ख़ौफ़ करते हुए और उम्मीद रख कर दुआएं मांगते रहना। कुछ शक नहीं कि ख़ुदा की रहमत नेकी करने वालों से क़रीब है। (५६) और वही तो है जो अपनी रहमत (यानी बारिश) से पहले हवाओं को ख़ुशख़बरी (बना कर) भेजता है, यहां तक कि जब वह भारी-भारी बादलों को उठा लाती है, तो हम उस को एक मरी हुई बस्ती की तरफ़ हांक देते हैं। फिर बादल में मेंह (वर्षा) बरसाते हैं, फिर मेंह से हर तरह के फल पैदा करते हैं। इसी तरह हम मुर्दों को (ज़मीन से) ज़िंदा कर के बाहर निकालेंगे। (ये आयतें इस लिए बयान

---

१. ख़ुदा तो भूलने वाला नहीं है। मतलब यह है कि हम उन के साथ ऐसा मामला करेंगे जैसे कोई किसी को भुला देता है, यानी वे दोज़ख़ में जलते रहेंगे और हम उन को पूछेंगे भी नहीं।

२. असल लफ़्ज़ 'इस्तवा' इस्तेमाल हुआ है, जिस का मतलब डिक्शनरी में बुलंद होने और ठहरने के हैं। चारों इमाम और तमाम मुहद्दिसों का ख़ुदा के बारे में यह मज़हब है कि वह अर्श पर मुस्तवी यानी ठहरा हुआ है और वह ठहरना ऐसा है, जो उस की शान के लायक़ है और जिस की असल सूरत मालूम नहीं। अल्लाह तआला की जो सिफ़तें हैं, उन पर लफ़्ज़ तो वही बोले जाते हैं, जो मख़्लूक़ की सिफ़तों पर बोले जाते हैं, जैसे ख़ुदा को भी कहते हैं कि देखता है, इन्सान को भी कहते हैं कि देखता है। ख़ुदा को भी कहते हैं कि सुनता है, इन्सान को भी कहते हैं कि सुनता है, लेकिन ख़ुदा का देखना और सुनना और तरह का है। मख़्लूक़ की सिफ़तों का ख़ुदा की सिफ़तों से कोई मेल नहीं और क़ुरआन की यह आयत इस पर दलील है—'लै-स कमिस्लिही शैउन' – यानी कोई उस के मिस्ल नहीं। पस जब कोई चीज़ ख़ुदा जैसी नहीं तो ख़ुदा को 'मुजस्सम' कैसे कह सकते हैं?

(शेष पृष्ठ २४६ पर)

वल-ब-लदुत्तय्यिबु यख़्रुजु नबातुहू बिइज़्नि रब्बिही वल्लज़ी ख़बु-स ला यख़्रुजु इल्ला नकिदन् कज़ालि-क नुसर्रिफ़ुल्-आयाति लिक़ौमिंय्यश्कुरून ★ (५८) ल-क़द् अर्सल्ना नूहन् इला क़ौमिही फ़-क़ा-ल याक़ौमिअ्-बुदुल्ला-ह मा लकुम् मिन् इलाहिन् ग़ैरुहू इन्नी अख़ाफ़ु अ़लैकुम् अ़ज़ा-ब यौमिन् अ़ज़ीम (५९) क़ालल्मलउ मिन् क़ौमिही इन्ना ल-नरा-क फ़ी ज़लालिम्-मुबीन (६०) क़ा-ल या क़ौमि लै-स बी ज़लालतुंव्-व लाकिन्नी रसूलुम् - मिर्रब्बिल् - आ़ल - मीन (६१) उबल्लिग़ुकुम् रिसालाति रब्बी व अन्सहु लकुम् व अअ्-लमु मिनल्लाहि मा ला तअ्-लमून (६२) अ-व अ़जिब्तुम् अन् जा-अकुम् ज़िक्रुम्-मिर्-रब्बिकुम् अ़ला रजुलिम्-मिन्कुम् लियुन्ज़ि-रकुम् व लितत्तक़ू व ल-अ़ल्लकुम् तुर्हमून (६३) फ़-कज़्ज़बूहु फ़-अन्जैनाहु वल्लज़ी-न म-अ़हू फ़िल्फ़ुल्कि व अग़्रक़्नल्लज़ी - न कज़्ज़बू बिआयातिना इन्नहुम् कानू क़ौमन् अ़मीन ★ (६४) व इला आ़दिन् अख़ाहुम् हूदन् क़ा-ल या क़ौमिअ्-बुदुल्ला - ह मा लकुम् मिन् इलाहिन् ग़ैरुहू अ-फ़ला तत्तक़ून (६५) क़ालल्-मलउल्लज़ी-न क-फ़रू मिन् क़ौमिही इन्ना ल-नरा-क फ़ी सफ़ाहतिंव्-व इन्ना ल-नज़ुन्नु-क मिनल्-काज़िबीन (६६) क़ा-ल या क़ौमि लै-स बी सफ़ाह-तुंव्-व लाकिन्नी रसूलुम्-मिर्रब्बिल्-आ़ल-मीन (६७) उबल्लिग़ुकुम् रिसालाति रब्बी व अ-न लकुम् नासिहुन् अमीन (६८) अ-व अ़जिब्तुम् अन् जा-अकुम् ज़िक्रुम्-मिर्रब्बिकुम् अ़ला रजुलिम्-मिन्कुम् लियुन्ज़ि-रकुम् वज़्कुरू इज़् ज-अ़-लकुम् ख़ु-ल-फ़ा-अ मिम्बअ्-दि क़ौमि नूहिंव्-व ज़ादकुम् फ़िल्ख़ल्क़ि बस्त-तन् फ़ज़्कुरू आला-अल्लाहि ल-अ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून (६९) क़ालू अजिअ्तना लिनअ्-बुदल्ला-ह वह्-दहू व न-ज़-र मा का-न यअ्-बुदु आबा-उना फ़अ्तिना बिमा तअिदुना इन् कुन्-त मिनस्सादिक़ीन (७०)

وَالَّذِي خَبُثَ لَا يَخْرُجُ إِلَّا نَكِدًا ۚ كَذَٰلِكَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ
يَشْكُرُونَ ۝ لَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَقَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ
مَا لَكُمْ مِنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۝
قَالَ الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِهِ إِنَّا لَنَرَاكَ فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ۝ قَالَ يَا قَوْمِ
لَيْسَ بِي ضَلَالَةٌ وَلَٰكِنِّي رَسُولٌ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ أُبَلِّغُكُمْ
رِسَالَاتِ رَبِّي وَأَنْصَحُ لَكُمْ وَأَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝ أَوَعَجِبْتُمْ
أَنْ جَاءَكُمْ ذِكْرٌ مِنْ رَبِّكُمْ عَلَىٰ رَجُلٍ مِنْكُمْ لِيُنْذِرَكُمْ وَلِتَتَّقُوا وَ
لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۝ فَكَذَّبُوهُ فَأَنْجَيْنَاهُ وَالَّذِينَ مَعَهُ فِي الْفُلْكِ
وَأَغْرَقْنَا الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا عَمِينَ ۝ وَ
إِلَىٰ عَادٍ أَخَاهُمْ هُودًا ۗ قَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَٰهٍ
غَيْرُهُ ۚ أَفَلَا تَتَّقُونَ ۝ قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ إِنَّا لَنَرَاكَ
فِي سَفَاهَةٍ وَإِنَّا لَنَظُنُّكَ مِنَ الْكَاذِبِينَ ۝ قَالَ يَا قَوْمِ لَيْسَ بِي
سَفَاهَةٌ وَلَٰكِنِّي رَسُولٌ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ أُبَلِّغُكُمْ رِسَالَاتِ رَبِّي
وَأَنَا لَكُمْ نَاصِحٌ أَمِينٌ ۝ أَوَعَجِبْتُمْ أَنْ جَاءَكُمْ ذِكْرٌ مِنْ رَبِّكُمْ
عَلَىٰ رَجُلٍ مِنْكُمْ لِيُنْذِرَكُمْ ۚ وَاذْكُرُوا إِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَاءَ مِنْ بَعْدِ
قَوْمِ نُوحٍ وَزَادَكُمْ فِي الْخَلْقِ بَسْطَةً ۖ فَاذْكُرُوا آلَاءَ اللَّهِ
لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝ قَالُوا أَجِئْتَنَا لِنَعْبُدَ اللَّهَ وَحْدَهُ وَنَذَرَ

★रु. ७/१४ आ ५ ★रु. ८/१५ आ ६

की जाती हैं) ताकि तुम नसीहत पकड़ो। (५७) जो ज़मीन पाकीज़ा (है), उस में से सब्ज़ा भी परवरदिगार के हुक्म से (अच्छा ही) निकलता है और जो ख़राब है, उस में से जो कुछ निकलता है, नाक़िस (ख़राब) होता है। इसी तरह हम आयतों को शुक्रगुज़ार लोगों के लिए फेर-फेर कर बयान करते हैं★(५८) हम ने नूह को उन की क़ौम की तरफ़ भेजा, तो उन्हों ने (उस से) कहा, ऐ मेरी बिरादरी के लोगो! ख़ुदा की इबादत करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं। मुझे तुम्हारे बारे में बड़े दिन के अज़ाब का (बहुत ही) डर है। (५६) तो जो उन की क़ौम में सरदार थे, वे कहने लगे कि हम तुम्हें खुली गुमराही में (पड़े) देखते हैं। (६०) उन्हों ने कहा, ऐ क़ौम! मुझ में किसी तरह की गुमराही नहीं है, बल्कि मैं दुनिया के परवरदिगार का पैग़म्बर हूं। (६१) तुम्हें अपने परवरदिगार के पैग़ाम पहुंचाता हूं और तुम्हारी ख़ैर-ख़्वाही करता हूं और मुझ को ख़ुदा की तरफ़ से ऐसी बातें मालूम हैं, जिन से तुम बे-ख़बर हो। (६२) क्या तुम को इस बात से ताज्जुब हुआ है कि तुम में से एक शख़्स के हाथ तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से तुम्हारे पास नसीहत आयी, ताकि वह तुमको डराये और ताकि तुम परहेज़गार बनो और ताकि तुम पर रहम खाया जाए।(६३) मगर उन लोगों ने उन को झुठलाया, तो हम ने नूह को और जो उन के साथ कश्ती में सवार थे, उन को तो बचा लिया और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया था, उन्हें डुबा दिया। कुछ शक नहीं कि वे अंधे लोग थे। (६४) ★

और (इसी तरह) आद क़ौम की तरफ़ उन के भाई हूद को भेजा। उन्होंने कहा कि भाइयो! ख़ुदा ही की इबादत करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं, क्या तुम डरते नहीं? (६५) तो उन की क़ौम के सरदार, जो काफ़िर थे, कहने लगे कि तुम हमें बेवक़ूफ़ नज़र आते हो और हम तुम्हें झूठा ख़्याल करते हैं। (६६) उन्हों ने कहा कि भाइयो! मुझ में बेवक़ूफ़ी की कोई बात नहीं है, बल्कि मैं रब्बुल आलमीन का पैग़म्बर हूं। (६७) मैं तुम्हें ख़ुदा के पैग़ाम पहुंचाता हूं और तुम्हारा अमानतदार ख़ैर-ख़्वाह हूं। (६८) क्या तुम को इस बात से ताज्जुब हुआ है कि तुम में से एक शख़्स के हाथ तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से तुम्हारे पास नसीहत आयी, ताकि वह तुम्हें डराये और याद तो करो जब उस ने तुम को नूह की क़ौम के बाद सरदार बनाया और तुम्हें फैलाव ज़्यादा दिया, पस ख़ुदा की नेमतों को याद करो, ताकि निजात हासिल करो।(६६) वे कहने लगे, क्या तुम हमारे पास इस लिए आये हो कि हम अकेले ख़ुदा ही की इबादत करें और जिन को हमारे बाप-दादा पूजते चले आए हैं, उनको छोड़ दें? तो अगर सच्चे हो, तो जिस चीज़ से हमें डराते हो, उसे ले आओ। (७०)

(पृष्ठ २४७ का शेष)

मुजस्सम चीज़ की कैफ़ियत मालूम होती है और ख़ुदा की किसी सिफ़त की कैफ़ियत मालूम नहीं। कोई शख़्स नहीं बता सकता कि ख़ुदा का देखना-सुनना किस तरह का है, क्योंकि न उस की ऐसी आंखें हैं, जिस तरह की हम रखते हैं, न ऐसे कान जिस तरह के हमारे हैं। पस जब उस का देखना और सुनना ही ऐसा है कि उस की कैफ़ियत मालूम नहीं और वह उसी तरह का होगा, जैसा उस की शान है, तो उस के ठहरने की सूरत भी किसी को मालूम नहीं और वह भी उसी तरह का होगा, जैसे उस की शान को जंचता हो। हैरत की बात है कि लोग ख़ुदा में दूसरी सिफ़तें तो जानते हैं, उन से उस को मुजस्सम क़रार नहीं देते, हालांकि मख़्लूक़ में उन सिफ़तों के लिए 'जिस्मियत' लाज़िम है, लेकिन 'इस्तवा' के लिए उस का मुजस्सम होना क़रार देते हैं और इस वजह से उस

(शेष पृष्ठ २५१ पर)

★रु. ७/१४ आ ५ ★रु. ८/१५ आ ६

क़ा-ल क़द् व-क़-अ अ़लैकुम् मिर्रब्बिकुम् रिज्सुंव्-व ग़-ज़-बुन्, अतुजादिलूननी फ़ी अस्मा-इन् सम्मैतुमूहा अन्तुम् व आबा-उकुम् मा नज़्ज़लल्लाहु बिहा मिन् सुल्तानिन्, फ़न्तज़िरू इन्नी म-अकुम् मिनल्-मुन्तज़िरीन (७१) फ़-अन्जैनाहु वल्लज़ी-न म-अहू बि-रह्मतिम्-मिन्ना व क़-तअ्-ना दाबिरल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना व मा कानू मुअ्मिनीन ★ (७२) व इला समू-द अख़ाहुम् सालिहन् ※ क़ा-ल या क़ौमिअ्-बुदुल्ला-ह मा लकुम् मिन् इलाहिन् ग़ैरुहू, क़द् जा-अत्कुम् बय्यिनतुम्-मिर्रब्बिकुम्, हाज़िही नाक़तुल्लाहि लकुम् आय-तन् फ़-ज़रूहा तअ्कुल् फ़ी अर्ज़िल्लाहि व ला त-मस्सूहा बिसू-इन् फ़यअ्-ख़ु-ज़कुम् अ़ज़ाबुन् अलीम (७३) वज़्कुरू इज़् ज-अ़-लकुम् ख़ु-लफ़ा-अ मिम्बअ्-दि आ़दिंव्-व बव्व-अकुम् फ़िल्अर्ज़ि तत्तख़िज़ू-न मिन् सुहूलिहा क़ुसूरंव्-व तन्हितूनल्-जिबा-ल बुयूतन् फ़ज़्कुरू आला-अल्लाहि व ला तअ्सौ फ़िल्अर्ज़ि मुफ़्सिदीन (७४) क़ालल्म-लउल्-लज़ीनस्तक्बरू मिन् क़ौमिही लिल्लज़ीनस्तुज़्अिफ़ू लिमन् आम-न मिन्हुम् अतअ्-लमू-न अन्-न सालिहम्-मुर्सलुम्-मिर्रब्बिही, क़ालू इन्ना बिमा उर्सि-ल बिही मुअ्मिनून (७५) क़ालल्लज़ीनस्तक्बरू इन्ना बिल्लज़ी आमन्तुम् बिही काफ़िरून (७६) फ़-अ-क़रुन्नाक़-त व अ़तौ अन् अम्रि रब्बिहिम् व क़ालू यासालिहुअ्तिना बिमा तअिदुना इन् कुन्-त मिनल्-मुर्सलीन (७७) फ़-अ-ख़-ज़त्-हुमुर्रज्फ़तु फ़-अस्बहू फ़ी दारिहिम् जासिमीन (७८)

ما كان يعبد اباؤنا فأتنا بما تعدنا ان كنت من الصدقين ﴿٧٠﴾
قال قد وقع عليكم من ربكم رجس وغضب اتجادلونني
في اسماء سميتموها انتم واباؤكم ما نزل الله بها من
سلطن فانتظروا اني معكم من المنتظرين ﴿٧١﴾ فانجينه
والذين معه برحمة منا وقطعنا دابر الذين كذبوا باياتنا و
ما كانوا مؤمنين ﴿٧٢﴾ والى ثمود اخاهم صلحا قال يقوم اعبدوا
الله ما لكم من اله غيره قد جاءتكم بينة من ربكم هذه
ناقة الله لكم اية فذروها تاكل في ارض الله ولا تمسوها
بسوء فياخذكم عذاب اليم ﴿٧٣﴾ واذكروا اذ جعلكم خلفاء
من بعد عاد وبواكم في الارض تتخذون من سهولها قصورا
وتنحتون الجبال بيوتا فاذكروا الاء الله ولا تعثوا
في الارض مفسدين ﴿٧٤﴾ قال الملا الذين استكبروا
من قومه للذين استضعفوا لمن امن منهم اتعلمون
ان صلحا مرسل من ربه قالوا انا بما ارسل به مؤمنون ﴿٧٥﴾
قال الذين استكبروا انا بالذي امنتم به كفرون ﴿٧٦﴾
فعقروا الناقة وعتوا عن امر ربهم وقالوا يصلح ائتنا بما
تعدنا ان كنت من المرسلين ﴿٧٧﴾ فاخذتهم الرجفة

★रु. ९/१६ आ ८ ※ व. लाज़िम

हूद ने कहा कि तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से तुम पर अज़ाब और ग़ज़ब (का नाज़िल होना) मुक़र्रर हो चुका है। क्या तुम मुझ से ऐसे नामों के बारे में झगड़ते हो, जो तुम ने और तुम्हारे बाप-दादा ने (अपनी तरफ़ से) रख लिए हैं, जिन की ख़ुदा ने कोई सनद नाज़िल नहीं की, तो तुम भी इन्तिज़ार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करता हूं। (७१) फिर हम ने हूद को और जो लोग उन के साथ थे, उन को निजात बख़्शी और जिन्हों ने हमारी आयतों को झुठलाया था, उन की जड़ काट दी और वे ईमान लाने वाले थे ही नहीं। (७२) ★

और समूद क़ौम की तरफ़ उन के भाई सालेह को भेजा, ▒ (तो) सालेह ने कहा कि ऐ क़ौम! ख़ुदा ही की इबादत करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं। तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से एक मोजज़ा आ चुका है, (यानी) यही ख़ुदा की ऊंटनी तुम्हारे लिए मोजज़ा है, तो उसे (आज़ाद) छोड़ दो कि ख़ुदा की ज़मीन में चरती फिरे और तुम उसे बुरी नीयत से हाथ भी न लगाना वरना दर्दनाक अज़ाब तुम्हें पकड़ लेगा। (७३) और याद तो करो जब उस ने तुम को आद क़ौम के बाद सरदार बनाया और ज़मीन पर आबाद किया कि नर्म ज़मीन से (मिट्टी ले कर) महल बनाते हो और पहाड़ों को काट-छांट कर घर बनाते हो, पस ख़ुदा की नेमतों को याद करो, ज़मीन में फ़साद न करते फिरो। (७४) तो उन की क़ौम में सरदार लोग जो घमंड रखते थे, ग़रीब लोगों से, जो उनमें से ईमान ले आये थे, कहने लगे, भला तुम यक़ीन करते हो कि सालेह अपने परवरदिगार की तरफ़ से भेजे गये हैं? उन्हों ने कहा, हां, जो चीज़ वह दे कर भेजे गये हैं, हम उस पर बिला शुब्हा ईमान रखते हैं। (७५) तो घमंडी (सरदार) कहने लगे कि जिस चीज़ पर तुम ईमान लाये हो, हम तो उस को नहीं मानते। (७६) आख़िर उन्हों ने ऊंटनी (की कूंचों) को काट डाला और अपने परवरदिगार के हुक्म से सरकशी की और कहने लगे कि सालेह! जिस चीज़ से तुम हमें डराते थे, अगर तुम (ख़ुदा के) पैग़म्बर हो, तो उसे हम पर ले आओ। (७७) तो उन को भूंचाल ने आ पकड़ा और वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गये। (७८) फिर सालेह उन से (ना-उम्मीद हो कर)

(पृष्ठ २४६ का शेष)

की तावील करना ज़रूरी समझते हैं। फिर इस के बावजूद सब उसको हर जगह हाज़िर और रगे गरदन से ज़्यादा क़रीब भी समझते हैं। अगर ख़ुदा को अर्श पर ठहरने की वजह से उसे 'मुजस्सम' क़रार दिया जाए, तो वह सब जगह हाज़िर और रगे गरदन से ज़्यादा नज़दीक कैसे माना जा सकता है। मुजस्सम महमूद होता है और जो हर जगह हाज़िर हो, वह ग़ैर महदूद। पस महदूद, ग़ैर-महदूद कैसे हो सकता है? बहरहाल अल्लाह तआला मुजस्सम नहीं। उस की जितनी सिफ़तें हैं, उन की वह सूरत नहीं जो इन्सान की सूरतों की हैं, इस लिए इन्सानी सिफ़तों को अल्लाह तआला की सिफ़तों पर नहीं सोचा जा सकता और इसी लिए उस को मुजस्सम नहीं कह सकते।

ग़रज़ यह कि ख़ुदा ने जिन बातों को अपनी सिफ़त क़रार दिया है, उन को मानना चाहिए और उन की वह सूरत नहीं समझनी चाहिए जो मख़्लूक़ की सिफ़तों की होती है।

वह तख़्त, जिस को अर्श कहते हैं, उस की सूरत मालूम नहीं कि वह किस तरह का है, तो उस पर अल्लाह तआला के ठहरने की क्या सूरत मालूम हो सकती है?

★रु. ९/१६ आ ८ ▒ व. लाज़िम

फ़-त-वल्ला अन्हुम् व क़ा-ल या क़ौमि ल-क़द् अब्लग़्तुकुम् रिसाल-त रब्बी व नसह्तु लकुम् व लाकिल्ला तुहिब्बूनन्नासिहीन (७९) व लूतन् इज़् क़ा-ल लिक़ौमिही अ-तअ्तूनल्-फ़ाहिश-त मा स-ब-क़कुम् बिहा मिन् अ-हदिम्-मिनल्-आलमीन (८०) इन्नकुम् ल-तअ्तूनर्रिजा-ल शह्-व-तम्-मिन् दूनिन्निसा-इ ط बल् अन्तुम् क़ौमुम्-मुस्रिफ़ून (८१) व मा का-न जवा-ब क़ौमिही इल्ला अन् क़ालू अख़्रिजूहुम् मिन् क़र्यतिकुम् ج इन्नहुम् उनासुंय्य-त - तह्हरून (८२) फ़-अन्जैनाहु व अह्लहू इल्लम्-र - अ-तहू ﺻﻠﮯ कानत् मिनल्ग़ाबिरीन (८३) व अम्तर्ना अलैहिम् म-त-रन् ط फ़न्ज़ुर् कै-फ़ का - न आक़िबतुल्-मुज्रिमीन ★ (८४) व इला मद्य - न अख़ाहुम् शुअैबन् ط क़ा-ल या क़ौमिअ्-बुदुल्ला-ह मा लकुम् मिन् इलाहिन् ग़ैरुहू ط क़द् जा-अत्कुम् बय्यिनतुम्-मिर्रब्बिकम् फ़औफ़ुल्कै-ल वल्मीज़ा - न व ला तब्ख़सुन्ना - स अश्या - अ हुम् व ला तुफ़्सिदू फ़िल्अर्ज़ि बअ् - द इस्लाहिहा ط ज़ालिकुम् ख़ैरुल्लकुम् इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन ج (८५) व ला तक़्अुदू बिकुल्लि सिरातिन् तूअिदू-न व तसुद्दू-न अन् सबीलिल्लाहि मन् आम-न बिही व तब्ग़ूनहा अि-व-जन् ج वज़्कुरू इज़् कुन्तुम् क़लीलन् फ़-कस्स-र - रकुम् ص वन्ज़ुरू कै - फ़ का-न आक़िबतुल् - मुफ़्सिदीन (८६) व इन् का - न ता-इफ़तुम् - मिन्कुम् आमनू बिल्लज़ी उर्सिल्तु बिही व ता - इफ़तुल्लम् युअ्मिनू फ़स्बिरू हत्ता यह्कुमल्लाहु बैनना ج व हु - व ख़ैरुल्-हाकिमीन (८७)

الاعراف ٧ ١٢٨ ولو اننا ٨

فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ جٰثِمِينَ ۝ فَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰقَوْمِ لَقَدْ
أَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَةَ رَبِّي وَنَصَحْتُ لَكُمْ وَلٰكِنْ لَّا تُحِبُّونَ النّٰصِحِينَ ۝
وَلُوطًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ أَتَأْتُونَ الْفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ
أَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِينَ ۝ إِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّنْ دُونِ النِّسَآءِ
بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُونَ ۝ وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ إِلَّآ أَنْ قَالُوٓا
أَخْرِجُوهُمْ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ إِنَّهُمْ أُنَاسٌ يَتَطَهَّرُونَ ۝ فَأَنْجَيْنٰهُ
وَأَهْلَهٗٓ إِلَّا امْرَأَتَهٗ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِينَ ۝ وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ
مَّطَرًا فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عٰقِبَةُ الْمُجْرِمِينَ ۝ وَإِلٰى
مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ
إِلٰهٍ غَيْرُهٗ قَدْ جَآءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ فَأَوْفُوا الْكَيْلَ
وَالْمِيزَانَ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَآءَهُمْ وَلَا تُفْسِدُوا فِي
الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِينَ ۝
وَلَا تَقْعُدُوا بِكُلِّ صِرَاطٍ تُوعِدُونَ وَتَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ
اللّٰهِ مَنْ آمَنَ بِهٖ وَتَبْغُونَهَا عِوَجًا وَاذْكُرُوٓا إِذْ كُنْتُمْ قَلِيلًا
فَكَثَّرَكُمْ وَانْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عٰقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ۝ وَإِنْ
كَانَ طَآئِفَةٌ مِّنْكُمْ آمَنُوا بِالَّذِيٓ أُرْسِلْتُ بِهٖ وَطَآئِفَةٌ لَّمْ
يُؤْمِنُوا فَاصْبِرُوا حَتّٰى يَحْكُمَ اللّٰهُ بَيْنَنَا وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِينَ ۝

★रु. १०/१७ आ १२

फिरे और कहा कि ऐ मेरी क़ौम ! मैं ने तुम को ख़ुदा का पैग़ाम पहुंचा दिया और तुम्हारी ख़ैरख़्वाही की, मगर तुम (ऐसे हो कि ख़ैरख़्वाहों को दोस्त ही नहीं रखते। (७९) और (इसी तरह जब हमने) लूत को (पैग़म्बर बना कर भेजा, तो) उस वक़्त उन्हों ने अपनी क़ौम से कहा, तुम ऐसी बे-हयाई का काम क्यों करते हो कि तुम से पहले अह्ले आलम में से किसी ने इस तरह का काम नहीं किया। (८०) यानी नफ़्स की ख़्वाहिश पूरा करने के लिए औरतों को छोड़ कर लौंडों पर गिरते हो। हक़ीक़त यह है कि तुम लोग हद से निकल जाने वाले हो। (८१) तो उन से इस का जवाब कुछ न बन पड़ा और बोले, तो यह बोले कि इन लोगों (यानी लूत और उन के घर वालों) को अपने गांव से निकाल दो (कि) ये लोग पाक बनना चाहते हैं। (८२) तो हम ने उन को और उन के घर वालों को बचा लिया, मगर उन की बीवी (न बची) कि वह पीछे रहने वालों में थी। (८३) और हम ने उन पर (पत्थरों का) मेंह बरसाया, सो देख लो कि गुनाहगारों का कैसा अंजाम हुआ। (८४) ★

और मदयन की तरफ़ उन के भाई शुऐब को भेजा, (तो) उन्हों ने कहा कि ऐ क़ौम! ख़ुदा ही की इबादत करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं। तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से निशानी आ चुकी है, तो तुम नाप और तौल पूरी किया करो और लोगों को चीजें कम न दिया करो और ज़मीन में सुधार के बाद ख़राबी न करो। अगर तुम ईमान वाले हो तो समझ लो कि यह बात तुम्हारे हक़ में बेहतर है।[1] (८५) और हर रास्ते पर मत बैठा करो कि जो शख़्स ख़ुदा पर ईमान लाता है, उसे तुम डराते और ख़ुदा की राह से रोकते और उस में टेढ़ ढूंढते हो और (उस वक़्त को) याद करो, जब तुम थोड़े-से थे तो ख़ुदा ने तुम को बड़ी जमाअत बना दिया और देख लो कि ख़राबी पैदा करने वालों का अंजाम कैसा हुआ।[2] (८६) और अगर तुम में से एक जमाअत मेरी रिसालत पर ईमान ले आयी है और एक जमाअत ईमान नहीं लायी; तो सब्र किये रहो, यहां तक कि ख़ुदा हमारे-तुम्हारे दर्मियान फ़ैसला कर दे और वह सब से बेहतर फ़ैसला करने वाला है। (८७)

---

१. ज़मीन में सुधार के बाद ख़राबी न करने से यह मुराद है कि जिस ज़मीन में गुनाह के काम होते थे, हराम चीज़ों को हलाल कर लिया जाता था, क़त्ल व ख़ूंरेज़ी होती थी, जब उस में पैग़म्बर आये और उन्हों ने लोगों को ख़ुदा की तरफ़ बुलाया तो उस का सुधार हो गया। अब उस भली ज़मीन में ऐसे काम न करो, जिन से यह समझा जाए कि सुधार ख़राबी में बदल गया और उस में फ़साद हो रहा है।

२. वे लोग डाकू और लूट-मार करने वाले थे। रास्तों पर बैठ कर लोगों को डराते थे कि अगर तुम हम को माल न दोगे तो हम तुम को क़त्ल कर डालेंगे या रास्ते से मुराद वे रास्ते हैं, जो हज़रत शुऐब की तरफ़ जाते थे। वे लोग उन रास्तों पर बैठ जाते थे और जिस शख़्स को उस तरफ़ जाते देखते थे, उस को डराते-धमकाते थे कि तुम शुऐब के पास क्यों जाते हो। वह झूठा मक्कार है, ख़ुदा का पैग़म्बर नहीं, ख़ुदा की राह से रोकने से मुराद हज़रत शुऐब के पास जाने और मोमिन बनने से मना करना है।

नवां पारः क़ाललमलउ

सूरतुल्-अअ्राफ़ि आयत ८८ से २०६

क़ालल्-मलउल्लज़ीनस्तक्बरू मिन् क़ौमिही लनुख़्रिजन्न-क याशुअ़ैबु वल्लज़ी-न आमनू म-अ-क मिन् क़र्यतिना औ ल-त-अूदुन्-न फ़ी मिल्लतिना♪ क़ा-ल अ-व लौ कुन्ना कारिहीन قف (८८) क़दिफ़्तरैना अ़-लल्लाहि कज़िबन् इन् अ़ुद्ना फ़ी मिल्लतिकुम् बअ्-द इज् नज्जानल्लाहु मिन्हा♪ व मा यकूनु लना अन् नअू - द फ़ीहा इल्ला अंय्यशा - अल्लाहु रब्बुना♪ वसि-अ़ रब्बुना कुल्-ल शैइन् अ़िल्मन्♪ अ़ - लल्लाहि त-वक्कल्ना♪ रब्बनफ़्तह् बैनना व बै - न क़ौमिना बिल्हक़्क़ि व अन्-त ख़ैरुल्फ़ातिहीन (८९) व क़ालल्-मलउल्लज़ी-न क-फ़रू मिन् क़ौमिही लइनित्तबअ्-तुम् शुअ़ैबन् इन्नकुम् इज़ल-ल ख़ासिरून (९०) फ़-अ-ख़-ज़त्-हुमु र्-रज्फ़तु फ़ - अस्बहू फ़ी दारिहिम् जासिमीन (९१) अ़ल्लज़ी-न कज़्ज़बू शुअ़ैबन् क-अल्लम् यग़्नौ फ़ीहा ج अल् - लज़ी - न कज़्ज़बू शुअ़ैबन् कानू हुमुल्ख़ासिरीन (९२) फ़-त-वल्ला अ़न्हुम् व क़ा-ल या क़ौमि ल-क़द् अब्लग़्तुकुम् रिसालाति रब्बी व न-सह्तु लकुम् ج फ़-कै-फ़ आसा अ़ला क़ौमिन् काफ़िरीन ★ (९३) व मा अर्सल्ना फ़ी क़र्यतिम् - मिन् नबिय्यिन् इल्ला अ-ख़ज़्ना अह्लहा बिल्बअ्सा-इ वज़्ज़र्रा-इ ल-अ़ल्लहुम् यज़्ज़र्रअ़ून (९४) सुम्-म बद्दल्ना मकानस्-सय्यिअतिल्-ह्-स-न-त हत्ता अ़-फ़व्-व क़ालू क़द् मस्-स आबा-अनज़्-ज़र्रा-उ वस्सर्रा-उ फ़-अ-ख़ज़्नाहुम् बग़्-त-तंव्-व हुम् ला यश्अ़ुरून (९५) व लौ अन्-न अह्लल्क़ुरा आमनू वत्तक़ौ ल-फ़-तह्ना अ़लैहिम् ब-र-कातिम्-मिनस्समा इ वल्अर्ज़ि व लाकिन् कज़्ज़बू फ़-अ-ख़ज़्नाहुम् बिमा कानू यक्सिबून (९६)

قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا مِنْ قَوْمِهِ لَنُخْرِجَنَّكَ يَا شُعَيْبُ
وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَكَ مِنْ قَرْيَتِنَا أَوْ لَتَعُودُنَّ فِي مِلَّتِنَا ۚ قَالَ أَوَلَوْ
كُنَّا كَارِهِينَ ۝ قَدِ افْتَرَيْنَا عَلَى اللَّهِ كَذِبًا إِنْ عُدْنَا فِي مِلَّتِكُمْ
بَعْدَ إِذْ نَجَّانَا اللَّهُ مِنْهَا ۚ وَمَا يَكُونُ لَنَا أَنْ نَعُودَ فِيهَا إِلَّا أَنْ
يَشَاءَ اللَّهُ رَبُّنَا ۚ وَسِعَ رَبُّنَا كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۚ عَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْنَا ۚ
رَبَّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَأَنْتَ خَيْرُ الْفَاتِحِينَ ۝ وَ
قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ لَئِنِ اتَّبَعْتُمْ شُعَيْبًا إِنَّكُمْ
إِذًا لَخَاسِرُونَ ۝ فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ جَاثِمِينَ ۝
الَّذِينَ كَذَّبُوا شُعَيْبًا كَأَنْ لَمْ يَغْنَوْا فِيهَا ۚ الَّذِينَ كَذَّبُوا شُعَيْبًا
كَانُوا هُمُ الْخَاسِرِينَ ۝ فَتَوَلَّى عَنْهُمْ وَقَالَ يَا قَوْمِ لَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ
رِسَالَاتِ رَبِّي وَنَصَحْتُ لَكُمْ ۖ فَكَيْفَ آسَى عَلَى قَوْمٍ كَافِرِينَ ۝ وَ
مَا أَرْسَلْنَا فِي قَرْيَةٍ مِنْ نَبِيٍّ إِلَّا أَخَذْنَا أَهْلَهَا بِالْبَأْسَاءِ وَالضَّرَّاءِ
لَعَلَّهُمْ يَضَّرَّعُونَ ۝ ثُمَّ بَدَّلْنَا مَكَانَ السَّيِّئَةِ الْحَسَنَةَ حَتَّى عَفَوْا
وَقَالُوا قَدْ مَسَّ آبَاءَنَا الضَّرَّاءُ وَالسَّرَّاءُ فَأَخَذْنَاهُمْ بَغْتَةً وَهُمْ
لَا يَشْعُرُونَ ۝ وَلَوْ أَنَّ أَهْلَ الْقُرَى آمَنُوا وَاتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِمْ
بَرَكَاتٍ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ وَلَٰكِنْ كَذَّبُوا فَأَخَذْنَاهُمْ بِمَا كَانُوا
يَكْسِبُونَ ۝ أَفَأَمِنَ أَهْلُ الْقُرَى أَنْ يَأْتِيَهُمْ بَأْسُنَا بَيَاتًا

∴ मु. अि मु. त क़. ★रु. ११/१ आ ६

(तो) उन की क़ौम में जो लोग सरदार और बड़े आदमी थे, वे कहने लगे कि शुऐब ! (या तो) हम तुम को और जो लोग तुम्हारे साथ ईमान लाए हैं, उन को अपने शहर से निकाल देंगे या तुम हमारे मज़हब में आ जाओ। उन्हों ने कहा, चाहे हम (तुम्हारे दीन से) बे-ज़ार ही हों (तो भी ?) (८८) अगर हम इस के बाद कि ख़ुदा हमें इस से निजात बख़्श चुका है, तुम्हारे मज़हब में लौट जाएं, तो बेशक हम ने ख़ुदा पर झूठ इफ़्तरा बांधा और हमें मुनासिब नहीं कि हम उस में लौट जाएं। हां, ख़ुदा जो हमारा परवरदिगार है, वह चाहे तो (हम मजबूर हैं), हमारे परवरदिगार का इल्म हर चीज़ पर एहाता किए हुए है। हमारा ख़ुदा ही पर भरोसा है। ऐ परवरदिगार ! हम में और हमारी क़ौम में इंसाफ़ के साथ फ़ैसला कर दे और तू सब से बेहतर फ़ैसला करने वाला है। (८९) और उन की क़ौम में से सरदार लोग जो काफ़िर थे, कहने लगे कि (भाइयो !) अगर तुम ने शुऐब की पैरवी की तो बेशक तुम घाटे में पड़ गये। (९०) तो उन को भूंचाल ने आ पकड़ा और वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गये। (९१) (ये लोग) जिन्हों ने शुऐब को झुठलाया था; ऐसे बर्बाद हुए कि गोया वे उन में कभी आबाद ही न हुए थे॰ (ग़रज़) जिन्हों ने शुऐब को झुठलाया वे घाटे में पड़ गये। (९२) तो शुऐब उन में से निकल आये और कहा कि भाइयो ! मैं ने तुम को अपने परवरदिगार के पैग़ाम पहुंचा दिए हैं, और तुम्हारी ख़ैरख़्वाही की थी, तो मैं काफ़िरों पर (अज़ाब नाज़िल होने से) रंज व ग़म क्यों करूं ? (९३) ★

और हम ने किसी शहर में कोई पैग़म्बर नहीं भेजा, मगर वहां के रहने वालों को जो ईमान न लाये, दुखों और मुसीबतों में डाल दिया, ताकि वे आजिज़ी और ज़ारी करें। (९४) फिर हम ने तक्लीफ़ को आसूदगी (ख़ुशहाली) से बदल दिया, यहां तक कि (माल व औलाद में) ज़्यादा हो गये तो कहने लगे कि इसी तरह रंज व राहत हमारे बड़ों को भी पहुंचता रहा है, तो हम ने उन को यकायक पकड़ लिया और वे (अपने हाल में) बे-ख़बर थे। (९५) अगर इन बस्तियों के लोग ईमान ले आते और परहेज़गार हो जाते, तो हम उन पर आसमान और ज़मीन की बरकतों (के दरवाज़े) खोल देते, मगर उन्हों ने तो झुठलाया, सो उन के आमाल की सज़ा में हम ने उन को पकड़

∴ मु. अ़ि मु. ता ख़. १५ ★रु. ११/१ आ ९

अ-फ़-अमि-न अह्लुल्क़ुरा अंय्यअ्तियहुम् बअ्सुना बयातंव्-व हुम् ना-इमून (९७) अ-व अमि-न अह्लुल्क़ुरा अंय्यअ्तियहुम् बअ्सुना ज़ुहंव्वहुम् यल्-अबून (९८) अ-फ़अमिनू मक्रल्लाहि ८ फ़ला यअ्मनु मक्रल्लाहि इल्लल्क़ौमुल्-ख़ासिरून ★ (९९) अ-व लम् यह्दि लिल्लज़ी-न यरिसूनल्अर-ज़ मिम्बअ्-दि अह्लिहा अल्लौ नशा-उ अ-सब्नाहुम् बिज़ुनूबिहिम् ८ व नत्बअु अला क़ुलूबिहिम् फ़हुम् ला यस्मअून (१००) तिल्कल्क़ुरा नक़ुस्सु अलै-क मिन् अम्बा-इहा ८ व ल-क़द् जा-अत्हुम् रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति ८ फ़मा कानू लियुअ्मिनू बिमा कज़्ज़बू मिन् क़ब्लु ८ कज़ालि-क यत्बअुल्लाहु अला क़ुलूबिल्काफ़िरीन (१०१) व मा व-जद्ना लि-अक्सरिहिम् मिन् अ़ह्दिन् ८ व इंव्व-जद्ना अक्सरहुम् लफ़ासिक़ीन (१०२) सुम्-म ब-अ़स्ना मिम्बअ्-दिहिम् मूसा बिआयातिना इला फ़िर्औ़-न व म-लइही फ़-ज़-लमू बिहा ८ फ़न्ज़ुर् कै-फ़ का-न आक़िबतुल्-मुफ़्सिदीन (१०३) व क़ा-ल मूसा या फ़िर्औ़नु इन्नी रसूलुम्-मिर्रब्बिल्-आ़लमीन ॥ (१०४) ह़क़ीक़ुन् अ़ला अल्ला अक़ू-ल अ़-लल्लाहि इल्लल्ह़क़्-क़ ॥ क़द् जिअ्तुकुम् बिबय्यिनतिम्-मिर्रब्बिकुम् फ़अर्सिल् मअि-य बनी इस्रा-ई-ल ॥ (१०५) क़ा-ल इन् कुन्-त जिअ्-त बिआयतिन् फ़अ्ति बिहा इन् कुन्-त मिनस्सादिक़ीन (१०६) फ़-अल्क़ा असाहु फ़इज़ा हि-य सुअ्-बानुम्-मुबीन॥ (१०७) व न-ज़-अ य-दहू फ़इज़ा हि-य बैज़ाउ लिन्नाज़िरीन ★ (१०८) क़ालल्मलउ मिन् क़ौमि फ़िर्औ़-न इन्-न हाज़ा लसाहिरुन् अ़लीम॥ (१०९) युरीदु अंय्युख़्रिजकुम् मिन् अर्ज़िकुम् ८ फ़ माज़ा तअ्मुरून (११०) क़ालू अर्जिह व अख़ाहु व अर्सिल् फ़िल्-मदाइनि ह़ाशिरीन॥ (१११) यअ्तू-क बिकुल्लि साहिरिन् अ़लीम (११२) व जा-अस्-स-ह-रतु फ़िर्औ़-न क़ालू इन्-न लना ल-अज्रन् इन् कुन्ना नह्नुल्ग़ालिबीन (११३)

الاعراف ١٣٠ قال الملا

وَهُمْ نَآئِمُونَ ۞ أَوَأَمِنَ أَهْلُ الْقُرَىٰ أَن يَأْتِيَهُم بَأْسُنَا ضُحًى
وَهُمْ يَلْعَبُونَ ۞ أَفَأَمِنُوا مَكْرَ اللَّهِ ۚ فَلَا يَأْمَنُ مَكْرَ اللَّهِ إِلَّا الْقَوْمُ
الْخَاسِرُونَ ۞ أَوَلَمْ يَهْدِ لِلَّذِينَ يَرِثُونَ الْأَرْضَ مِن بَعْدِ أَهْلِهَا
أَن لَّوْ نَشَاءُ أَصَبْنَاهُم بِذُنُوبِهِمْ ۚ وَنَطْبَعُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا
يَسْمَعُونَ ۞ تِلْكَ الْقُرَىٰ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنبَائِهَا ۚ وَلَقَدْ
جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا بِمَا كَذَّبُوا مِن قَبْلُ
كَذَٰلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِ الْكَافِرِينَ ۞ وَمَا وَجَدْنَا لِأَكْثَرِهِم مِّنْ عَهْدٍ
وَإِن وَجَدْنَا أَكْثَرَهُمْ لَفَاسِقِينَ ۞ ثُمَّ بَعَثْنَا مِن بَعْدِهِم مُّوسَىٰ بِآيَاتِنَا
إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَظَلَمُوا بِهَا ۖ فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ۞
وَقَالَ مُوسَىٰ يَا فِرْعَوْنُ إِنِّي رَسُولٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ۞ حَقِيقٌ عَلَىٰ أَن
لَّا أَقُولَ عَلَى اللَّهِ إِلَّا الْحَقَّ ۚ قَدْ جِئْتُكُم بِبَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ
فَأَرْسِلْ مَعِيَ بَنِي إِسْرَائِيلَ ۞ قَالَ إِن كُنتَ جِئْتَ بِآيَةٍ فَأْتِ
بِهَا إِن كُنتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ۞ فَأَلْقَىٰ عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ
مُّبِينٌ ۞ وَنَزَعَ يَدَهُ فَإِذَا هِيَ بَيْضَاءُ لِلنَّاظِرِينَ ۞ قَالَ الْمَلَأُ مِن
قَوْمِ فِرْعَوْنَ إِنَّ هَٰذَا لَسَاحِرٌ عَلِيمٌ ۞ يُرِيدُ أَن يُخْرِجَكُم مِّنْ
أَرْضِكُمْ ۖ فَمَاذَا تَأْمُرُونَ ۞ قَالُوا أَرْجِهْ وَأَخَاهُ وَأَرْسِلْ فِي الْمَدَائِنِ
حَاشِرِينَ ۞ يَأْتُوكَ بِكُلِّ سَاحِرٍ عَلِيمٍ ۞ وَجَاءَ السَّحَرَةُ فِرْعَوْنَ

قال

★रु. १२/२ आ ६ ★रु. १३/३ आ ६

लिया। (९६) क्या बस्तियों के रहने वाले इस से बे-ख़ौफ़ हैं कि उन पर हमारा अज़ाब रात को आए और वे (बे-ख़बर) सो रहे हों। (९७) और क्या शहर वाले निडर हैं कि उन पर हमारा अज़ाब दिन चढ़े आ नाज़िल हो और वे खेल रहे हों। (९८) क्या ये लोग ख़ुदा के दांव का डर नहीं रखते? (सुन लो कि) ख़ुदा के दांव से वही लोग निडर होते हैं जो घाटा पाने वाले हैं। (९९) ★

क्या इन लोगों को जो अह्ले ज़मीन के (मर जाने के) बाद ज़मीन के मालिक होते हैं, यह बात हिदायत की वजह नहीं बनी कि अगर हम चाहें तो उन के गुनाहों की वजह से उन पर मुसीबत डाल दें और उन के दिलों पर मुहर लगा दें कि कुछ सुन ही न सकें। (१००) ये बस्तियां हैं, जिन के कुछ हालात हम तुम को सुनाते हैं, और उन के पास उन के पैग़म्बर निशानियां ले कर आए, मगर वे ऐसे नहीं थे कि जिस चीज़ को पहले झुठला चुके हों, उसे मान लें। इसी तरह ख़ुदा काफ़िरों के दिलों पर मुहर लगा देता है। (१०१) और हम ने उन में से अक्सरों में (अह्द का निबाह) नहीं देखा और उन में अक्सरों को (देखा तो) बदकार ही देखा। (१०२) फिर इन (पैग़म्बरों) के बाद हम ने मूसा को निशानियां दे कर फ़िऔन और उस के सरदारों के पास भेजा, तो उन्हों ने उन के साथ कुफ़्र किया। सो देख लो, कि ख़राबी करने वालों का अंजाम क्या हुआ। (१०३) और मूसा ने कहा कि ऐ फ़िऔन ! मैं रब्बुल आलमीन का पैग़म्बर हूं। (१०४) मुझ पर वाजिब है कि ख़ुदा की तरफ़ से जो कुछ कहूं, सच ही कहूं। मैं तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से निशानी ले कर आया हूं। सो बनी इस्राईल को मेरे साथ जाने की रुख़्सत दे दीजिए। (१०५) फ़िऔन ने कहा कि अगर तुम निशानी ले कर आए हो, तो अगर सच्चे हो, तो लाओ (दिखाओ)। (१०६) मूसा ने अपनी लाठी (ज़मीन पर) डाल दी, तो वह उसी वक़्त खुला अज़दहा (हो गया), (१०७) और अपना हाथ बाहर निकाला तो उसी दम देखने वालों की निगाहों में सफ़ेद बर्राक़ (था), (१०८) ★

तो फ़िऔन की क़ौम में जो सरदार थे, वे कहने लगे कि यह बड़ा अल्लामा जादूगर है। (१०९) इस का इरादा यह है कि तुम को तुम्हारे मुल्क से निकाल दे, भला तुम्हारी क्या सलाह है? (११०) उन्हों ने (फ़िऔन से) कहा कि फ़िलहाल मूसा और उस के भाई के मामले को माफ़ रखिए और शहरों में नक़ीब रवाना कर दीजिए, (१११) कि तमाम माहिर जादूगरों को आप के पास ले आएं। (११२) (चुनांचे ऐसा ही किया गया) और जादूगर फ़िऔन के पास आ पहुंचे और कहने लगे, कि अगर हम जीत गये, तो हमें सिला (इनाम) अता किया जाए। (११३) (फ़िऔन ने)

★रु. १२/२ आ ६ ★रु. १३/३ आ ९

क़ा-ल न-अम् व इन्नकुम् लमिनल्-मुक़र्रबीन (११४) क़ालू या मूसा इम्मा अन् तुल्क़ि-य व इम्मा अन्नकू-न नह़्नुल्-मुल्क़ीन (११५) क़ा-ल अल्क़ू फ़-लम्मा अल्क़ौ स-ह़रू अअ्-युनन्नासि वस्तर्हबूहुम् व जा-ऊ बिसिह़्रिन् अ़ज़ीम (११६) व औह़ैना इला मूसा अन् अल्क़ि अ़साक़ फ़इज़ा हि-य तल्क़फ़ु मा यअ्फ़िकून (११७) फ़ व-क़-अल्-ह़क़्क़ु व ब-त़-ल मा कानू यअ्-मलून (११८) फ़ग़ुलिबू हुनालि - क वन्क़लबू साग़िरीन (११९) व उल्क़ियस्स-ह़-रतु साजिदीन (१२०) क़ालू आमन्ना बिरब्बिल् - आ़लमीन (१२१) रब्बि मूसा व हारून (१२२) क़ा-ल फ़िर्औनु आमन्तुम् बिही क़ब्-ल अन् आज़-न लकुम् इन् - न हाज़ा ल - मक्रुम् - मकर्तुमूहु फ़िल्मदीनति लितुख़्रिजू मिन्हा अह्-लहा फ़सौ-फ़ तअ्-लमून (१२३) ल-उ-क़त्ति-अन्-न ऐदियकुम् व अर्जु-लकुम् मिन् ख़िलाफ़िन्

قَالُوٓا إِنَّ لَنَا لَأَجْرًا إِن كُنَّا نَحْنُ ٱلْغَٰلِبِينَ ۝ قَالَ نَعَمْ وَإِنَّكُمْ لَمِنَ
ٱلْمُقَرَّبِينَ ۝ قَالُوا۟ يَٰمُوسَىٰٓ إِمَّآ أَن تُلْقِىَ وَإِمَّآ أَن نَّكُونَ نَحْنُ
ٱلْمُلْقِينَ ۝ قَالَ أَلْقُوا۟ ۖ فَلَمَّآ أَلْقَوْا۟ سَحَرُوٓا۟ أَعْيُنَ ٱلنَّاسِ وَٱسْتَرْهَبُوهُمْ
وَجَآءُو بِسِحْرٍ عَظِيمٍ ۝ وَأَوْحَيْنَآ إِلَىٰ مُوسَىٰٓ أَنْ أَلْقِ عَصَاكَ ۖ فَإِذَا
هِىَ تَلْقَفُ مَا يَأْفِكُونَ ۝ فَوَقَعَ ٱلْحَقُّ وَبَطَلَ مَا كَانُوا۟ يَعْمَلُونَ ۝
فَغُلِبُوا۟ هُنَالِكَ وَٱنقَلَبُوا۟ صَٰغِرِينَ ۝ وَأُلْقِىَ ٱلسَّحَرَةُ سَٰجِدِينَ ۝
قَالُوٓا۟ ءَامَنَّا بِرَبِّ ٱلْعَٰلَمِينَ ۝ رَبِّ مُوسَىٰ وَهَٰرُونَ ۝ قَالَ فِرْعَوْنُ
ءَامَنتُم بِهِۦ قَبْلَ أَنْ ءَاذَنَ لَكُمْ ۖ إِنَّ هَٰذَا لَمَكْرٌ مَّكَرْتُمُوهُ فِى
ٱلْمَدِينَةِ لِتُخْرِجُوا۟ مِنْهَآ أَهْلَهَا ۖ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ۝ لَأُقَطِّعَنَّ
أَيْدِيَكُمْ وَأَرْجُلَكُم مِّنْ خِلَٰفٍ ثُمَّ لَأُصَلِّبَنَّكُمْ أَجْمَعِينَ ۝
قَالُوٓا۟ إِنَّآ إِلَىٰ رَبِّنَا مُنقَلِبُونَ ۝ وَمَا تَنقِمُ مِنَّآ إِلَّآ أَنْ ءَامَنَّا بِـَٔايَٰتِ رَبِّنَا
لَمَّا جَآءَتْنَا ۚ رَبَّنَآ أَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَتَوَفَّنَا مُسْلِمِينَ ۝ وَقَالَ
ٱلْمَلَأُ مِن قَوْمِ فِرْعَوْنَ أَتَذَرُ مُوسَىٰ وَقَوْمَهُۥ لِيُفْسِدُوا۟ فِى ٱلْأَرْضِ
وَيَذَرَكَ وَءَالِهَتَكَ ۚ قَالَ سَنُقَتِّلُ أَبْنَآءَهُمْ وَنَسْتَحْىِۦ نِسَآءَهُمْ وَ
إِنَّا فَوْقَهُمْ قَٰهِرُونَ ۝ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ ٱسْتَعِينُوا۟ بِٱللَّهِ وَٱصْبِرُوٓا۟ ۖ
إِنَّ ٱلْأَرْضَ لِلَّهِ يُورِثُهَا مَن يَشَآءُ مِنْ عِبَادِهِۦ ۖ وَٱلْعَٰقِبَةُ
لِلْمُتَّقِينَ ۝ قَالُوٓا۟ أُوذِينَا مِن قَبْلِ أَن تَأْتِيَنَا وَمِنۢ بَعْدِ مَا

सुम्-म लउसल्लिबन्नकुम् अज्-मईन (१२४) क़ालू इन्ना इला रब्बिना मुन्क़लिबून (१२५) व मा तन्क़िमु मिन्ना इल्ला अन् आमन्ना बिआयाति रब्बिना लम्मा जा-अत्ना रब्बना अफ़्रिग् अ़लैना स़ब्रव्-व तवफ़्फ़ना मुस्लिमीन ★ (१२६) व क़ालल्मलउ मिन् क़ौमि फ़िर्औ-न अ-त-ज़रु मूसा व क़ौमहू लियुफ़्सिदू फ़िल्अर्ज़ि व य-ज़-र-क व आलिह-त-क, क़ा - ल सनुक़त्तिलु अब्ना - अहुम् व नस्तह़्यी निसा - अहुम् व इन्ना फ़ौक़हुम् क़ाहिरून (१२७) क़ा-ल मूसा लिक़ौमिहिस्तईनू बिल्लाहि वस्बिरू इन्नल्अर् - ज़ लिल्लाहि यूरिसुहा मंय्यशा - उ मिन् अ़िबादिही वल्आ़क़िबतु लिल्मुत्तक़ीन (१२८) क़ालू ऊज़ीना मिन् क़ब्लि अन् तअ्ति-यना व मिम्बअ्-दि मा जिअ्तना, क़ा-ल अ़सा रब्बुकुम् अंय्युह्लि-क अ़दुव्वकुम् व यस्तख़्लि-फ़कुम् फ़िल्अर्ज़ि फ़-यन्ज़ु-र कै-फ़ तअ्-मलून ★ (१२९)

★रु. १४/४ आ १८ ★रु. १५/५ आ ३

कहा, हां (ज़रूर) और (उस के अलावा) तुम मुक़र्रिबों में दाख़िल कर लिए जाओगे। (११४) (जब दोनों फ़रीक़ मुक़र्रर दिन को जमा हुए, तो) जादूगरों ने कहा कि मूसा या तो तुम (जादू की चीज़) डालो या हम डालते हैं। (११५) (मूसा ने) कहा, तुम ही डालो, जब उन्होंने (जादू की चीज़ें) डालीं तो लोगों की आंखों पर जादू कर दिया, (यानी नज़रबन्दी कर दी) और (लाठियों और रस्सियों के सांप बना-बना कर) उन्हें डरा-डरा दिया और बड़ा भारी जादू दिखाया। (११६) (उस वक़्त) हम ने मूसा की तरफ़ वह्य भेजी कि तुम भी अपनी लाठी डाल दो, वह फ़ौरन (सांप बन कर) जादूगरों के बनाए हुए सांपों को (एक-एक कर के) निगल जाएगी। (११७) (फिर) तो हक़ साबित हो गया और जो कुछ फ़िऔनी करते थे, बातिल हो गया। (११८) और वे मग़लूब हो गए और ज़लील हो कर रह गए। (११९) (यह सूरत देख कर) जादूगर सज्दे में गिर पड़े। (१२०) और कहने लगे कि हम जहान के परवरदिगार पर ईमान लाए, (१२१) (यानी) मूसा और हारून के परवरदिगार पर। (१२२) फ़िऔन ने कहा कि इस से पहले कि मैं तुम्हें इजाज़त दूं, तुम उस पर ईमान ले आए ?. बेशक यह फ़रेब है, जो तुम ने मिल कर शहर में किया है, ताकि शहर वालों को यहां से निकाल दो। सो बहुत जल्द (इस का नतीजा) मालूम कर लोगे। (१२३) मैं (पहले तो) तुम्हारे एक तरफ़ के हाथ और दूसरे तरफ़ के पांव कटवा दूंगा, फिर तुम सब को सूली चढ़वा दूंगा। (१२४) वह बोले कि हम तो अपने परवरदिगार की तरफ़ लौट कर जाने वाले हैं। (१२५) और उस के सिवा तुझ को हमारी कौन-सी बात बुरी लगी है कि जब हमारे परवरदिगार की निशानियां हमारे पास आ गयीं, तो हम उन पर ईमान ले आए। ऐ परवदिगार ! हम पर सब्र व इस्तिक़ामत के दहाने खोल दे और हमें (मारियो तो) मुसलमान ही मारियो। (१२६) ★

और फ़िऔन की क़ौम में जो सरदार[1] थे, कहने लगे कि क्या आप मूसा और उस की क़ौम को छोड़ दीजिएगा कि मुल्क में ख़राबी करें और आप से और आप के माबूदों से हाथ खींच लें। वह बोले कि हम उन के लड़कों को क़त्ल कर डालेंगे और लड़कियों को ज़िंदा रहने देंगे और बे-शुब्हा हम उन पर ग़ालिब हैं। (१२७) मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि ख़ुदा से मदद मांगो और साबित क़दम रहो। ज़मीन तो ख़ुदा की है और वह अपने बन्दों में से जिसे चाहता है, उस का मालिक बनाता है और आख़िर भला तो डरने वालों का है। (१२८)

---

१. रिवायत में है कि फ़िऔन ख़ल्क़ को अपनी बंदगी का हुक्म करता था और आप सितारों को पूजता था और अपनी शक्ल के बुत बनवा कर क़ौम को देता था कि तुम उन की पूजा करो, ताकि वे बुत तुम को मुझ से नज़दीक कर दें और सरदारों ने फ़िऔन को याद दिलायी मूसा के क़त्ल की, जो उन्होंने उस की क़ौम के एक आदमी का किया था।

व ल-क़द् अ-ख़ज़्ना आ-ल फ़िर्‌औ-न बिस्सिनी-न व नक़्सिम्-मिनस्स-मराति ल-अ़ल्लहुम् यज़्ज़क्करून (१३०) फ़इज़ा जा-अत्हुमुल्-ह्-स-नतु क़ालू लना हाज़िही ८ व इन् तुसिब्हुम् सय्यिअतुं य्यत्तय्यरू बिमूसा व मम्म - अहू। अला इन्नमा ता - इरुहुम् अिन्दल्लाहि व लाकिन् - न अक्सरहुम् ला यअ्-लमून (१३१) व क़ालू महमा तअ्तिना बिही मिन् आयतिल्-लितस-ह्-रना बिहा ८ फ़मा नह्नु ल - क बिमुअ्मिनीन (१३२) फ़ - अर्सल्ना अ़लैहिमुत्तूफ़ा - न वल्जरा-द वल्क़ुम्म-ल वज़्ज़फ़ादि-अ वद्-द-म आयातिम् - मुफ़स्सलातिन् क़फ़ फ़स्तक्बरू व कानू क़ौमम्-मुज्रिमीन (१३३) व लम्मा व-क़-अ अ़लैहिमुर्रिज्ज़ु क़ालू या मूसद्अु लना रब्ब-क बिमा अ़हि-द अिन्द-क ८ लइन् क-श-फ़्-त अ़न्नर्रिज्-ज़ लनुअ्मिनन्-न ल-क व लनुर्सिलन्-न म-अ़-क बनी इस्रा - ई-ल८ (१३४) फ़-लम्मा क-शफ़्ना अ़न्हुमुर्रिज्-ज़ इला अ-जलिन् हुम् बालिग़ूहु इज़ा हुम् यन्कुसून (१३५) फ़न्त-क़म्ना मिन्हुम् फ़-अग़रक़्नाहुम् फ़िल्यम्मि बिअन्नहुम् कज़्ज़बू बिआयातिना व कानू अ़न्हा ग़ाफ़िलीन (१३६) व औरस्नल्-क़ौमल्लज़ी-न कानू युस्तज़्अफ़ू-न मशारि-क़ल्-अर्ज़ि व मग़ारिबहल्लती बारक्ना फ़ीहा ८ व तम्मत् कलिमतु रब्बिकल्हुस्ना अ़ला बनी इस्रा - ई - ल८ बिमा स-बरू ८ व दम्मर्ना मा का-न यस्नअु फ़िर्‌औनु व क़ौमुहू व मा कानू यअ्-रिशून ●(१३७) व जावज़्ना बि बनी इस्रा-ईलल्-बह्-र फ़-अतौ अ़ला क़ौमिय्यअ्-कुफ़ू - न अ़ला अस्नामिल्लहुम् ८ क़ालू या मूसज्अल् लना इलाहन् कमा लहुम् आलिहतुन् ८ क़ा-ल इन्नकुम् क़ौमुन् तज्हलून (१३८)

الاعراف ١٣٢ قال الملا

جئتنا ۚ قال عسى ربكم أن يهلك عدوكم ويستخلفكم في
الأرض فينظر كيف تعملون ۝ ولقد أخذنا آل فرعون
بالسنين ونقص من الثمرات لعلهم يذكرون ۝ فإذا
جاءتهم الحسنة قالوا لنا هذه ۖ وإن تصبهم سيئة يطيروا
بموسى ومن معه ۗ ألا إنما طائرهم عند الله ولكن أكثرهم
لا يعلمون ۝ وقالوا مهما تأتنا به من آية لتسحرنا بها فما
نحن لك بمؤمنين ۝ فأرسلنا عليهم الطوفان والجراد و
القمل والضفادع والدم آيات مفصلات فاستكبروا وكانوا
قوما مجرمين ۝ ولما وقع عليهم الرجز قالوا يا موسى ادع لنا
ربك بما عهد عندك ۖ لئن كشفت عنا الرجز لنؤمنن لك
ولنرسلن معك بني إسرائيل ۝ فلما كشفنا عنهم الرجز
إلى أجل هم بالغوه إذا هم ينكثون ۝ فانتقمنا منهم فأغرقناهم
في اليم بأنهم كذبوا بآياتنا وكانوا عنها غافلين ۝ وأورثنا
القوم الذين كانوا يستضعفون مشارق الأرض ومغاربها
التي باركنا فيها ۖ وتمت كلمت ربك الحسنى على بني إسرائيل
بما صبروا ۖ ودمرنا ما كان يصنع فرعون وقومه وما كانوا
يعرشون ۝ وجاوزنا ببني إسرائيل البحر فأتوا على قوم

●रुबुअ् १/४

वे बोले कि तुम्हारे आने से पहले भी हम को तक्लीफ़ें पहुंचती रहीं और आने के बाद भी। मूसा ने कहा कि क़रीब है कि तुम्हारा परवरदिगार तुम्हारे दुश्मन को हलाक कर दे और उस की जगह तुम्हें ज़मीन में ख़लीफ़ा बनाए, फिर देखे कि तुम कैसे अमल करते हो ★(१२९) और हम ने फ़िऔनियों को क़हतों और मेवों के नुक़सान में पकड़ा ताकि नसीहत हासिल करें। (१३०) तो जब उन को सुख हासिल होता तो कहते कि हम इस के हक़दार हैं और अगर सख़्ती पहुंचती तो मूसा और उन के साथियों की बद-शगूनी बताते। देखो, उन की बद-शगूनी ख़ुदा के यहां (तै) है, लेकिन उन में अक्सर नहीं जानते। (१३१) और कहने लगे कि तुम हमारे पास (चाहे) कोई भी निशानी लाओ, ताकि उस से हम पर जादू करो, मगर हम तुम पर ईमान लाने वाले नहीं हैं। (१३२) तो हम ने उन पर तूफ़ान और टिड्डियां और जुएं और मेंढक और ख़ून कितनी खुली हुई निशानियां भेजीं, मगर वे तकब्बुर (घमंड) ही करते रहे और वे लोग थे ही गुनाहगार। (१३३) और जब उन पर अज़ाब आता तो कहते कि मूसा हमारे लिए अपने परवरदिगार से दुआ करो, जैसा उस ने तुम से अह्द कर रखा है, अगर तुम हम से अज़ाब को टाल दोगे तो हम तुम पर ईमान भी लाएंगे और बनी इस्राईल को भी तुम्हारे साथ जाने (की इजाज़त) देंगे। (१३४) फिर जब हम एक मुद्दत के लिए, जिस तक उन को पहुंचना था, उन से अज़ाब दूर कर देते, तो वह अह्द को तोड़ डालते। (१३५) तो हम ने उन से बदला ले कर ही छोड़ा कि उन को दरिया में डुबो दिया, इस लिए कि वे हमारी आयतों को झुठलाते और उनसे बे-परवाई करते थे।[1] (१३६) और जो लोग कमज़ोर समझे जाते थे, उनको (शाम यानी सीरिया की) ज़मीन के पूरब व पच्छिम का, जिसमें हम ने बरकत दी थी, वारिस कर दिया और बनी इस्राईल के बारे में उन के सब्र की वजह से तुम्हारे परवरदिगार का नेक वायदा पूरा हुआ और फ़िऔन की क़ौम वाले जो (महल) बनाते और (अंगूर के बाग़) जो छतरियों पर चढ़ाते थे, सब को हम ने तबाह कर दिया●(१३७) और हम ने बनी इस्राईल को दरिया से पार उतारा, तो वह ऐसे लोगों के पास जा पहुंचे जो अपने बुतों (की इबादत) के लिए बैठे रहते थे। (बनी इस्राईल) कहने लगे कि मूसा, जैसे इन लोगों के माबूद हैं, हमारे लिए भी माबूद बना दो। मूसा ने कहा कि तुम बड़े ही जाहिल लोग हो। (१३८) ये लोग जिस (काम) में (फंसे हुए) हैं,

---

१. ये सब बलाएं उन पर आयीं एक-एक हफ़्ते के फ़र्क़ से। अव्वल हज़रत मूसा फ़िऔन को कह आये कि अल्लाह तुम पर यह बला भेजेगा, वही बला आती, फिर परेशान हो जाते और हज़रत मूसा की ख़ुशामद करते। उन की दुआ से दूर हो जाती और फिर इन्कारी हो जाते। आख़िर को वबा पड़ी। आधी रात को सारे शहर में हर शख़्स का पहला बेटा मर गया। वह मुर्दों के ग़म में फंस गये। हज़रत मूसा अपनी क़ौम को ले कर शहर से निकल गये। फिर कई दिन के बाद फ़िऔन फ़ौज समेत ग़र्क़ हो गया।

इन्-न हा-उला-इ मुतब्बरुम्मा हुम् फ़ीहि व बातिलुम्मा कानू यअ्-मलून (१३९) क़ा-ल अग़ैरल्लाहि अब्ग़ीकुम् इलाहंव-व-हु-व फ़ज़्ज़-लकुम् अ-लल्-आलमीन (१४०) व इज् अन्जैनाकुम् मिन् आलि फ़िर्-औ-न यसूमूनकुम् सू-अल्अज़ाबि ८ युक़त्तिलू-न अब्ना-अ-कुम् व यस्तह्यू-न निसा-अ-कुम् ↓ व फ़ी ज़ालिकुम् बला-उम् - मिर्रब्बिकुम् अ़ज़ीम ★ (१४१) व वाअ़द्ना मूसा सलासी-न लैल-तंव्-व अत्मम्नाहा बिअ़श्रिन् फ़-तम्-म मीक़ातु रब्बिही अर्बई-न लैल-तन् ८ व क़ा-ल मूसा लिअख़ीहि हारूनख़्लुफ़्नी फ़ी क़ौमी व अस्लिह् व ला तत्तबिअ् सबीलल्-मुफ़्सिदीन (१४२) व लम्मा जा-अ मूसा लिमीक़ातिना व कल्ल-महू रब्बुहू ↓ क़ा-ल रब्बि अरिनी अन्ज़ुर् इलै-क ↓ क़ा-ल लन् तरानी व लाकिनिन्ज़ुर् इलल् - ज-बलि फ़इनिस्त-क़र्-र मकानहू फ़सौ - फ़ तरानी ८ फ़-लम्मा त-जल्ला रब्बुहू लिल्-ज-बलि ज-अ-लहू दक्कंव्-व ख़र्-र मूसा स़अ़िक़न् ८ फ़-लम्मा अफ़ा-क़-क़ा-ल सुब्हान - क तुब्तु इलै-क व अ-न अव्वलुल्-मुअ्मिनीन (१४३) क़ा-ल या मूसा इन्निस्त़फ़ैतु-क अ़लन्नासि बिरिसालाती व बिकलामी ↓ फ़ख़ुज़् मा आतैतु-क व कुम् - मिनश्शाकिरीन (१४४) व क-तब्ना लहू फ़िल्अल्वाहि मिन् कुल्लि शैइम्-मौअ़िज़-तंव् - व तफ़्सीलल् - लिकुल्लि शैइन् ८ फ़ - ख़ुज़्-हा बिक़ुव्वतिंव्वअ्मुर् क़ौम-क यअ्ख़ुज़ू बिअह्सनिहा ↓ स-उरीकुम् दारल् - फ़ासिक़ीन (१४५)

قال الملأ ٩ — ١٣٣ — الأعراف ٧

يَعْكُفُونَ عَلَىٰٓ أَصْنَامٍ لَّهُمْ ۚ قَالُوا يٰمُوسَى اجْعَل لَّنَآ إِلٰهًا كَمَا لَهُمْ
اٰلِهَةٌ ۚ قَالَ إِنَّكُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُونَ ۝ إِنَّ هٰٓؤُلَآءِ مُتَبَّرٌ مَّا هُمْ فِيهِ وَبٰطِلٌ
مَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ قَالَ أَغَيْرَ اللّٰهِ أَبْغِيكُمْ إِلٰهًا وَّهُوَ فَضَّلَكُمْ
عَلَى الْعٰلَمِينَ ۝ وَإِذْ أَنجَيْنٰكُم مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَسُومُونَكُمْ سُوٓءَ
الْعَذَابِ ۚ يُقَتِّلُونَ أَبْنَآءَكُمْ وَيَسْتَحْيُونَ نِسَآءَكُمْ ۚ وَفِي ذٰلِكُم بَلَآءٌ
مِّن رَّبِّكُمْ عَظِيمٌ ۝ وَوٰعَدْنَا مُوسَىٰ ثَلٰثِينَ لَيْلَةً وَأَتْمَمْنٰهَا
بِعَشْرٍ فَتَمَّ مِيقٰتُ رَبِّهِۦٓ أَرْبَعِينَ لَيْلَةً ۚ وَقَالَ مُوسَىٰ لِأَخِيهِ
هٰرُونَ اخْلُفْنِي فِي قَوْمِي وَأَصْلِحْ وَلَا تَتَّبِعْ سَبِيلَ الْمُفْسِدِينَ ۝
وَلَمَّا جَآءَ مُوسَىٰ لِمِيقٰتِنَا وَكَلَّمَهُۥ رَبُّهُۥ ۚ قَالَ رَبِّ أَرِنِيٓ أَنظُرْ
إِلَيْكَ ۚ قَالَ لَن تَرٰىنِي وَلٰكِنِ انظُرْ إِلَى الْجَبَلِ فَإِنِ اسْتَقَرَّ
مَكَانَهُۥ فَسَوْفَ تَرٰىنِي ۚ فَلَمَّا تَجَلّٰى رَبُّهُۥ لِلْجَبَلِ جَعَلَهُۥ دَكًّا وَّخَرَّ
مُوسَىٰ صَعِقًا ۚ فَلَمَّآ أَفَاقَ قَالَ سُبْحٰنَكَ تُبْتُ إِلَيْكَ وَأَنَا۠ أَوَّلُ
الْمُؤْمِنِينَ ۝ قَالَ يٰمُوسَىٰٓ إِنِّي اصْطَفَيْتُكَ عَلَى النَّاسِ بِرِسٰلٰتِي
وَبِكَلٰمِي ۖ فَخُذْ مَآ اٰتَيْتُكَ وَكُن مِّنَ الشّٰكِرِينَ ۝ وَكَتَبْنَا لَهُۥ
فِي الْأَلْوَاحِ مِن كُلِّ شَيْءٍ مَّوْعِظَةً وَتَفْصِيلًا لِّكُلِّ شَيْءٍ
فَخُذْهَا بِقُوَّةٍ وَأْمُرْ قَوْمَكَ يَأْخُذُوا بِأَحْسَنِهَا ۚ سَأُورِيكُمْ دَارَ
الْفٰسِقِينَ ۝ سَأَصْرِفُ عَنْ اٰيٰتِيَ الَّذِينَ يَتَكَبَّرُونَ فِي الْأَرْضِ

★रु. १६/६ आ १२

वह बरबाद होने वाला है और जो काम ये करते हैं, सब बेहूदा हैं। (१३९) (और यह भी) कहा कि भला मैं ख़ुदा के सिवा तुम्हारे लिए कोई और माबूद खोजूं हालांकि उस ने तुम को तमाम दुनिया वालों पर फ़ज़ीलत बख़्शी है। (१४०) और (हमारे उन एहसानों को याद करो) जब हम ने तुम को फ़िरऔनियों (के हाथ) से निजात बख़्शी, वे लोग तुम को बड़ा दुख देते थे। तुम्हारे बेटों को तो क़त्ल कर डालते थे और बेटियां ज़िन्दा रहने देते थे और इस में तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से सख़्त आज़माइश थी। (१४१) ★

और हम ने मूसा से तीस रात की मीयाद मुक़र्रर की और दस (रातें) और मिला कर उसे पूरा (चिल्ला) कर दिया, तो उस के परवरदिगार की चालीस रात की मीयाद पूरी हो गयी। और मूसा ने अपने भाई हारून से कहा कि मेरे (तूर पहाड़ पर जाने के) बाद तुम मेरी क़ौम में जानशीन हो, (उन की) इस्लाह करते रहना और शरीरों के रास्ते पर न चलना।[1] (१४२) और जब मूसा हमारे मुक़र्रर किए हुए वक़्त पर (तूर पहाड़ पर) पहुंचे और उन के परवरदिगार ने उन से कलाम किया तो कहने लगे कि ऐ परवरदिगार! तू मुझे (जलवा) दिखा कि मैं तेरा दीदार (भी) देखूं। परवरदिगार ने फ़रमाया कि तुम मुझे हरगिज़ न देख सकोगे। हां, पहाड़ की तरफ़ देखते रहो, अगर यह अपनी जगह क़ायम रहा तो तुम मुझ को देख सकोगे। जब उन का परवरदिगार पहाड़ पर ज़ाहिर हुआ तो (रब के अन्वार की तजल्ली ने) उस को रेज़ा-रेज़ा कर दिया और मूसा बे-होश हो कर गिर पड़े। जब होश में आये तो कहने लगे कि तेरी ज़ात पाक है और मैं तेरे हुज़ूर में तौबा करता हूं और जो ईमान लाने वाले हैं उन में सब से अव्वल हूं। (१४३) (ख़ुदा ने (फ़रमाया, मूसा! मैं ने तुम को अपने पैग़ाम और अपने कलाम से लोगों से मुम्ताज़ किया है, तो जो मैं ने तुम को अता किया है, उसे पकड़ रखो और (मेरा) शुक्र बजा लाओ। (१४४) और हम ने (तौरात की) तख़्तियों में उन के लिए हर क़िस्म की नसीहत और हर चीज़ की तफ़्सील लिख दी, फिर (इर्शाद फ़रमाया कि) इसे ज़ोर से पकड़े रहो और अपनी क़ौम से भी कह दो कि इन बातों को, जो इस में (दर्ज हैं और) बहुत बेहतर हैं, पकड़े रहें। मैं बहुत जल्द तुम को ना-फ़रमान लोगों का घर

---

१. ख़ुदा ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को चालीस रातों के लिए बुलाया था, ताकि उन को तौरात इनायत की जाए। इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि ख़ुदा ने मुझे तीस रात के लिए तलब फ़रमाया है। मैं तुम में अपने भाई हारून को अपनी जगह छोड़े जाता हूं। जब मूसा अलैहिस्सलाम वहां से तशरीफ़ ले गये, तो अल्लाह तआला ने दस रातें और बढ़ा दीं। इस आख़िरी दस दिन में बनी इस्राईल बछड़े की पूजा कर के गुमराह हो गये। चुनांचे सामरी के बछड़ा बनाने का क़िस्सा आगे आता है। जिस तरह मूसा अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम के लोगों से कहा था कि मैं तुम में अपने भाई हारून को जानशीन करता हूं, इसी तरह हज़रत हारून से कहा कि आप मेरी क़ायम मक़ामी कीजिएगा और इन लोगों की इस्लाह करते रहिएगा ताकि कोई फ़साद न होने पाए।

★रु. १६/६ आ १२

स-अस्रिफ़ु अन् आयातियल्लज़ी-न य-त-कब्बरू-न फ़िल्अर्ज़ि बिग़ैरिल्-हक़्क़ि व इंय्यरौ कुल्-ल आयतिल्ला-युअ्मिनू बिहा व इंय्यरौ सबीलर्रुश्दि ला यत्तख़िज़ूहु सबीलन् व इंय्यरौ सबीलल्ग़य्यि यत्तख़िज़ूहु सबीलन् ज़ालि-क बिअन्नहुम् कज़्ज़बू बिआयातिना व कानू अन्हा ग़ाफ़िलीन (१४६)

वल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना व लिक़ाइल्-आख़िरति हबितत् अअ्-मालुहुम् हल् युज्ज़ौ-न इल्ला मा कानू यअ्-मलून ★ (१४७) वत्त-ख़-ज़ क़ौमु मूसा मिम्बअ्-दिही मिन् हुलिय्यिहिम् अिज्लन् ज-स-दल्लहू ख़ुवारुन् अ-लम् यरौ अन्नहू ला युकल्लिमुहुम् व ला यह्दीहिम् सबीला ※ इत्त-ख़ज़ूहु व कानू ज़ालिमीन (१४८) व लम्मा सुक़ि-त फ़ी ऐदीहिम् व रऔ अन्नहुम् क़द् ज़ल्लू क़ालू लइल्लम् यर्हम्ना रब्बुना व यग़्फ़िर्लना ल-नकूनन्-न मिनल्ख़ासिरीन (१४९) व लम्मा र-ज-अ मूसा इला क़ौमिही ग़ज़्बा-न असिफ़न् क़ा-ल बिअ्-समा ख़-लफ़्तुमूनी मिम्बअ्-दी अ अजिल्तुम् अम-र रब्बिकुम् व अल्क़ल्-अल्वा-ह व अ-ख़-ज़ बिरअ्सि अख़ीहि यजुर्रुहू इलैहि क़ालब्-न उम्-म इन्नल्-क़ौमस्तज़्-अफ़ूनी व कादू यक़्तुलूननी फ़ला तुश्मित् बियल्-अअ्-दा-अ व ला तज्-अल्नी म-अल्-क़ौमिज़्ज़ालिमीन (१५०) क़ा-ल रब्बिग़्फ़िर्ली व लि-अख़ी व अद्ख़िल्ना फ़ी रह्मति-क व अन्-त अर्हमुर्-राहिमीन ★ (१५१) इन्नल्लज़ीनत्त-ख़ज़ुल्-अिज्-ल स-यनालुहुम् ग़-ज़बुम्मिर्रब्बिहिम् व ज़िल्लतुन् फ़िल्हयातिद्दुन्या व कज़ालि-क नज्ज़िल्-मुफ़्तरीन (१५२) वल्लज़ी-न अमिलुस्सय्यिआति सुम्-म ताबू मिम्बअ्-दिहा व आमनू इन्-न रब्ब-क मिम्बअ्-दिहा ल-ग़फ़ूरुर्रहीम (१५३)

بغير الحق وإن يروا كل آية لا يؤمنوا بها وإن يروا سبيل
الرشد لا يتخذوه سبيلا وإن يروا سبيل الغي يتخذوه
سبيلا ذلك بأنهم كذبوا بآياتنا وكانوا عنها
غافلين ۝ والذين كذبوا بآياتنا ولقاء الآخرة حبطت أعمالهم
هل يجزون إلا ما كانوا يعملون ۝ واتخذ قوم موسى من
بعده من حليهم عجلا جسدا له خوار ألم يروا أنه لا
يكلمهم ولا يهديهم سبيلا اتخذوه وكانوا ظالمين ۝ ولما
سقط في أيديهم ورأوا أنهم قد ضلوا قالوا لئن لم يرحمنا
ربنا ويغفر لنا لنكونن من الخاسرين ۝ ولما رجع موسى إلى
قومه غضبان أسفا قال بئسما خلفتموني من بعدي
أعجلتم أمر ربكم وألقى الألواح وأخذ برأس أخيه يجره
إليه قال ابن أم إن القوم استضعفوني وكادوا يقتلونني
فلا تشمت بي الأعداء ولا تجعلني مع القوم الظالمين ۝ قال
رب اغفر لي ولأخي وأدخلنا في رحمتك وأنت أرحم الراحمين ۝
إن الذين اتخذوا العجل سينالهم غضب من ربهم وذلة
في الحياة الدنيا وكذلك نجزي المفترين ۝ والذين عملوا
السيئات ثم تابوا من بعدها وآمنوا إن ربك من بعدها لغفور

★रु. १७/७ आ ६ ※व. लाज़िम ★रु. १८/८ आ ४

दिखाऊंगा। (१४५) जो लोग जमीन में ना-हक़ घमंड करते हैं, उन को अपनी आयतों से फेर दूंगा। अगर ये सब निशानियां भी देख लें, तब भी उन पर ईमान न लाएं और अगर रास्ती का रास्ता देखें तो उसे (अपना) रास्ता न बनाएं। और अगर गुमराही की राह देखें तो उसे रास्ता बना लें। यह इस लिए कि उन्हों ने हमारी आयतों को झुठलाया और उस से ग़फ़लत करते रहे। (१४६) और जिन लोगों ने हमारी आयतों और आखिरत के आने को झुठलाया, उन के आमाल बर्बाद हो जाएंगे। ये जैसे अमल करते हैं वैसा ही उन को बदला मिलेगा। (१४७) ★

और मूसा की क़ौम ने मूसा के बाद अपने ज़ेवर का एक बछड़ा बना लिया। (वह) एक जिस्म (था) जिस में से बैल की आवाज़ निकलती थी। उन लोगों ने यह न देखा कि वह न उन से बात कर सकता है और न उन को रास्ता दिखा सकता है ▨उस को उन्होंने (माबूद) बना लिया और (अपने हक़ में) ज़ुल्म किया।[1] (१४८) और जब वे शर्मिंदा हुए और देखा कि गुमराह हो गये हैं, तो कहने लगे कि अगर हमारा परवरदिगार हम पर रहम नहीं करेगा और हम को माफ़ नहीं फ़रमायेगा तो हम बर्बाद हो जाएंगे। (१४९) और जब मूसा अपनी क़ौम में निहायत गुस्से और अफ़सोस की हालत में वापस आये तो कहने लगे कि तुमने मेरे बाद बहुत ही बुरा काम किया। क्या तुम ने अपने परवरदिगार का हुक्म (यानी मेरा अपने पास आना) जल्द चाहा। (यह कहा) और (गुस्से की तेज़ी से तौरात की) तख्तियां डाल दीं और अपने भाई के सर (के बालों) को पकड़ कर अपनी तरफ़ खींचने लगे। उन्होंने कहा कि भाई जान! लोग तो मुझे कमजोर समझते थे और क़रीब था कि क़त्ल कर दें, तो ऐसा काम न कीजिए कि दुश्मन मुझ पर हंसें और मुझे ज़ालिम लोगों में मत मिलाइए। (१५०) तब उन्होंने दुआ की कि ऐ मेरे परवरदिगार! मुझे और मेरे भाई को माफ़ फ़रमा और हमें अपनी रहमत में दाखिल कर, तू सब से बढ़ कर रहम करने वाला है। (१५१) ★

(ख़ुदा ने फ़रमाया कि) जिन लोगों ने बछड़े को माबूद बना लिया था, उन पर परवरदिगार का ग़ज़ब वाक़े होगा और दुनिया की जिंदगी में ज़िल्लत (नसीब होगी) और हम झूठ गढ़ने वालों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं। (१५२) और जिन्होंने बुरे काम किए, फिर उसके बाद तौबा कर ली और ईमान ले आए, तो कुछ शक नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार इस के बाद (बख्श देगा कि वह)

---

१. ऐसा मालूम होता है कि मूसा अलैहिस्सलाम की क़ौम के लोग अक़्ल व होश से काम नहीं लेते थे। मूसा अलैहिस्सलाम के तूर पहाड़ पर चले जाने के बाद, एक शख्स सामरी नाम का, जो उन्हीं लोगों में से था, उन से कहने लगा कि मैं तुम को एक ख़ुदा बना देता हूं, उस की पूजा किया करना। उन्हों ने यह बात मान ली तो उस ने सोने के गहने इकट्ठा किये और उस को गला कर बछड़ा बनाया और उस के मुंह में हज़रत जिब्रील के घोड़े के पांव के तले की मुट्ठी भर मिट्टी, जो उस को मिल गयी थी, डाल दी। वह गाय की-सी आवाज़ करने लगा। सामरी ने कहा, लो यह ख़ुदा है, इस की पूजा करो। वे उस की पूजा करने लगे। ख़ुदा फ़रमाता है कि उन्हों ने इतना न सोचा कि यह कैसा माबूद है, जो न कलाम करने की ताक़त रखता है और न हिदायत कर सकता है, भला बछड़ा क्या और ख़ुदा क्या? और जो यह फ़रमाया कि मूसा की क़ौम ने मूसा के बाद अपने ज़ेवर का एक बछड़ा बना लिया, हालांकि बछड़ा सामरी ने बनाया था, तो इस वजह से है कि सामरी उन्हीं में से था और सब उस के इस काम से खुश थे।

व लम्मा स-क-त अम्मूसल्-ग़-ज़बु अ-ख़-ज़ल्-अल्वा-ह़ व फ़ी नुस्ख़तिहा हुदंव्-व रह़्मतुल्-लिल्लज़ी-न हुम् लिरब्बिहिम् यर्हबून (१५४) वख़्ता-र मूसा क़ौमहू सब्अी-न रजुलल् लिमीक़ातिना फ़-लम्मा अ-ख़-ज़त्-हुमुर्रज्-फ़तु क़ा-ल रब्बि लौ शिअ्-त अह्-लक्तहुम् मिन् क़ब्लु व इय्या-य अतुह्लिकुना बिमा फ़-अ-लस्सुफ़हाउ मिन्ना इन् हि-य इल्ला फ़ित्नतु-क तुज़िल्लु बिहा मन् तशाउ व तह्दी मन् तशाउ अन्-त वलिय्युना फ़ग़्फ़िर्लना वर्हम्ना व अन्-त ख़ैरुल्ग़ाफ़िरीन (१५५) वक्तुब् लना फ़ी हाज़िहिद्दुन्या ह़-स-न-तंव्-व फ़िल्आख़िरति इन्ना हुद्ना इलै-क क़ा-ल अ़ज़ाबी उसीबु बिही मन् अशाउ व रह़्मती वसि-अत् कुल्-ल शैइन् फ़-स-अक्तुबुहा लिल्लज़ी-न यत्तक़ू-न व युअ्तूनज़्ज़का-त वल्लज़ी-न हुम् बिआयातिना युअ्मिनून (१५६) अल्लज़ी-न यत्तबिअूनर्-रसूलन्नबिय्यल्-उम्मिय्यल्लज़ी यजिदूनहू मक्तूबन् अ़िन्दहुम् फ़ित्तौराति वल्इन्जीलि यअ्मुरुहुम् बिल्मअ्-रूफ़ि व यन्हाहुम् अ़निल्मुन्करि व युहिल्लु लहुमुत्तय्यिबाति व युह़र्रिमु अ़लैहिमुल्-ख़बाइ-स व य-ज़-अु अ़न्हुम् इस्रहुम् वल्अग़्लालल्लती कानत् अ़लैहिम् फ़ल्लज़ी-न आमनू बिही व अ़ज़्ज़रूहु व न-स-रूहु वत्तबअुन्नूरल्लज़ी उन्ज़ि-ल म-अ़हू उलाइ-क हुमुल्-मुफ़्लिहून★ (१५७) क़ुल् या अय्युहन्नासु इन्नी रसूलुल्लाहि इलैकुम् जमी-अ़-निल्लज़ी लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि ला इला-ह इल्ला हु-व युह़्यी व युमीतु फ़-आमिनू बिल्लाहि व रसूलिहिन्नबिय्यिल्-उम्मिय्यिल्लज़ी युअ्मिनु बिल्लाहि व कलिमातिही वत्तबिअूहु ल-अ़ल्लकुम् तह्तदून (१५८)

يجزون ۝ ولما سكت عن موسى الغضب اخذ الالواح ۖ وفي
نسختها هدى ورحمة للذين هم لربهم يرهبون ۝ واختار
موسى قومه سبعين رجلا لميقاتنا ۖ فلما اخذتهم الرجفة قال
رب لو شئت اهلكتهم من قبل واياي ۖ اتهلكنا بما فعل
السفهاء منا ۖ ان هي الا فتنتك تضل بها من تشاء وتهدي
من تشاء ۖ انت ولينا فاغفر لنا وارحمنا ۖ وانت خير الغافرين ۝
واكتب لنا في هذه الدنيا حسنة وفي الاخرة انا هدنا اليك ۚ
قال عذابي اصيب به من اشاء ۖ ورحمتي وسعت كل شيء ۚ
فساكتبها للذين يتقون ويؤتون الزكاة والذين هم باياتنا
يؤمنون ۝ الذين يتبعون الرسول النبي الامي الذي يجدونه
مكتوبا عندهم في التوراة والانجيل يامرهم بالمعروف و
ينهاهم عن المنكر ويحل لهم الطيبات ويحرم عليهم الخبائث
ويضع عنهم اصرهم والاغلال التي كانت عليهم ۚ فالذين امنوا
به وعزروه ونصروه واتبعوا النور الذي انزل معه ۙ اولئك هم
المفلحون ۝ قل يا ايها الناس اني رسول الله اليكم جميعا
الذي له ملك السماوات والارض ۖ لا اله الا هو يحيي ويميت ۖ
فامنوا بالله ورسوله النبي الامي الذي يؤمن بالله وكلماته

★रु. १९/९ आ ६

बख़्शने वाला मेहरबान है। (१५३) और जब मूसा का गुस्सा दूर हुआ तो (तौरात की) तख्तियां उठा लीं और जो कुछ उन में लिखा था, वह उन लोगों के लिए, जो अपने परवरदिगार से डरते हैं, हिदायत और रहमत थी। (१५४) और मूसा ने उस मीआद पर, जो हमने मुक़र्रर की थी, अपनी क़ौम के सत्तर आदमी चुन (कर के तूर पहाड़ पर हाज़िर) किए। जब उन को ज़लज़ले ने पकड़ा तो मूसा ने कहा कि ऐ परवरदिगार ! अगर तू चाहता तो उन को और मुझ को पहले ही से हलाक कर देता। क्या तू इस काम की सज़ा में, जो हम में से बे-अक़्ल लोगों ने किया है, हमें हलाक कर देगा। यह तो तेरी आज़माइश है। इस से तू जिस को चाहे, गुमराह करे और जिसे चाहे हिदायत बख़्शे, तू ही हमारा कारसाज़ है, तो हमें (हमारे गुनाह) बख़्श दे और हम पर रहम फ़रमा और तू सब से बेहतर बख़्शने वाला है। (१५५) और हमारे लिए इस दुनिया में भी, भलाई लिख दे और आख़िरत में, भी हम तेरी तरफ़ रुजू हो चुके। फ़रमाया कि जो मेरा अज़ाब है, उसे तो जिस पर चाहता हूं नाज़िल करता हूं और जो मेरी रहमत है, वह हर चीज़ को शामिल है। मैं इस को उन लोगों के लिए लिख दूंगा जो परहेज़गारी करते, और ज़कात देते और हमारी आयतों पर ईमान रखते हैं। (१५६) वे जो (मुहम्मद, अल्लाह के) रसूल के जो नबी-ए-उम्मी हैं, पैरवी करते हैं, जिन की (ख़ूबियों) को वे अपने यहां तौरात और इंजील में लिखा हुआ पाते हैं, वे उन्हें नेक काम का हुक्म देते हैं और बुरे काम से रोकते हैं और पाक चीज़ों को उन के लिए हलाल करते हैं और नापाक चीज़ों को उन पर हराम ठहराते हैं और उन पर से बोझ और तौक़ जो उन (के सर) पर (और गले में) थे, उतारते हैं, तो जो लोग उन पर ईमान लाए और उन का साथ दिया और उन्हें मदद दी और जो नूर उन के साथ नाज़िल हुआ है, उसकी पैरवी की, वही मुराद पाने वाले हैं। (१५७) ★

(ऐ मुहम्मद !) कह दो कि लोगो ! मैं तुम सब की तरफ़ ख़ुदा का भेजा हुआ (यानी उस का रसूल) हूं। (वह) जो आसमानों और ज़मीन का बादशाह है, उसके सिवा कोई माबूद नहीं। वही ज़िंदगी बख़्शता और वही मौत देता है, तो ख़ुदा पर और उस के रसूल पैग़म्बर उम्मी पर, जो ख़ुदा पर और उसके तमाम कलाम पर ईमान रखते हैं, ईमान लाओ और उनकी पैरवी करो, ताकि

★रु. १९/६ आ ६

व मिन् क़ौमि मूसा उम्मतुंय्यह्दू-न बिल्हक़्क़ि व बिही यअ्-दिलून (१५९) व क़त्तअ्-ना-हुमुस्नतै-अश्-र-त अस्बातन् उम-मन् ♭ व औहैना इला मूसा इज़िस्तस्क़ाहु क़ौमुहू अनिज़्रिब् बिअ़साकल् - ह्-जर ♭ फ़म्ब-ज-सत् मिन्हुस्नता अश्-र-त अ़नन् ♭ क़द् अ़लि - म कुल्लु उनासिम्-मश्रबहुम् ♭ व ज़ल्लल्ना अ़लैहिमुल्-ग़मा-म व अन्ज़ल्ना अ़लैहिमुल्-मन्-न वस्सल्वा♭ कुलू मिन् तय्यिबाति मा र-ज़क़्नाकुम् ♭ व मा ज़-लमूना व लाकिन् कानू अन्फ़ुसहुम् यज़्लिमून (१६०) व इज़् क़ी-ल लहुमुस्कुनू हाज़िहिल्क़र्य-त व कुलू मिन्हा हैसु शिअ्तुम् व क़ूलू हित्ततुंव्वद्ख़ुलुल्बा-ब सुज्जदन्-नग़्फ़िर् लकुम् ख़तीआतिकुम् ♭ स-नज़ीदुल्-मुह्सिनीन (१६१) फ़-बद्-द-लल्लज़ी-न ज़-लमू मिन्हुम् क़ौलन् ग़ैरल्लज़ी क़ी-ल लहुम् फ़-अर्सल्ना अ़लैहिम् रिज्-ज़म्-मिनस्समा-इ बिमा कानू यज़्लिमून ★ (१६२) वस्-अल्हुम् अ़निल्क़र्यतिल्लती

وَاتَّبِعُوهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ۝ وَمِنْ قَوْمِ مُوسَىٰ أُمَّةٌ يَهْدُونَ بِالْحَقِّ
وَبِهِ يَعْدِلُونَ ۝ وَقَطَّعْنَاهُمُ اثْنَتَيْ عَشْرَةَ أَسْبَاطًا أُمَمًا ۚ وَأَوْحَيْنَا
إِلَىٰ مُوسَىٰ إِذِ اسْتَسْقَاهُ قَوْمُهُ أَنِ اضْرِبْ بِعَصَاكَ الْحَجَرَ ۖ فَانْبَجَسَتْ
مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ۖ قَدْ عَلِمَ كُلُّ أُنَاسٍ مَشْرَبَهُمْ ۚ وَظَلَّلْنَا عَلَيْهِمُ
الْغَمَامَ وَأَنْزَلْنَا عَلَيْهِمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوَىٰ ۖ كُلُوا مِنْ طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ ۚ
وَمَا ظَلَمُونَا وَلَٰكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ۝ وَإِذْ قِيلَ لَهُمُ اسْكُنُوا
هَٰذِهِ الْقَرْيَةَ وَكُلُوا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ وَقُولُوا حِطَّةٌ وَادْخُلُوا
الْبَابَ سُجَّدًا نَغْفِرْ لَكُمْ خَطِيئَاتِكُمْ ۚ سَنَزِيدُ الْمُحْسِنِينَ ۝ فَبَدَّلَ
الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ قَوْلًا غَيْرَ الَّذِي قِيلَ لَهُمْ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ
رِجْزًا مِنَ السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا يَظْلِمُونَ ۝ وَاسْأَلْهُمْ عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِي
كَانَتْ حَاضِرَةَ الْبَحْرِ إِذْ يَعْدُونَ فِي السَّبْتِ إِذْ تَأْتِيهِمْ حِيتَانُهُمْ
يَوْمَ سَبْتِهِمْ شُرَّعًا وَيَوْمَ لَا يَسْبِتُونَ ۙ لَا تَأْتِيهِمْ ۚ كَذَٰلِكَ نَبْلُوهُمْ
بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ۝ وَإِذْ قَالَتْ أُمَّةٌ مِنْهُمْ لِمَ تَعِظُونَ قَوْمًا ۙ
اللَّهُ مُهْلِكُهُمْ أَوْ مُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا ۖ قَالُوا مَعْذِرَةً إِلَىٰ رَبِّكُمْ
وَلَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ۝ فَلَمَّا نَسُوا مَا ذُكِّرُوا بِهِ أَنْجَيْنَا الَّذِينَ يَنْهَوْنَ
عَنِ السُّوءِ وَأَخَذْنَا الَّذِينَ ظَلَمُوا بِعَذَابٍ بَئِيسٍ بِمَا كَانُوا
يَفْسُقُونَ ۝ فَلَمَّا عَتَوْا عَنْ مَا نُهُوا عَنْهُ قُلْنَا لَهُمْ كُونُوا قِرَدَةً

कानत् हाज़िर-तल् - बह्रि ▨ इज़् यअ्-दू-न फ़िस्सब्ति इज़् तअ्तीहिम् हीतानुहुम् यौ-म सब्तिहिम् शुर्रअंव्-व यौ-म ला यस्बितू-न ⫽ ला तअ्तीहिम् ♭ कज़ालि-क ♭ नब्लूहुम् बिमा कानू यफ़्सुक़ून ● (१६३) व इज़् क़ालत् उम्मतुम्-मिन्हुम् लि-म तअ़िज़ू-न क़ौमनि-ल्लाहु मुह्लिकुहुम् औ मुअ़ज़्ज़िबुहुम् अ़ज़ाबन् शदीदा ♭ क़ालू मअ्-ज़ि-र-तन् इला रब्बिकुम् व ल-अ़ल्लहुम् यत्तक़ून (१६४) फ़-लम्मा नसू मा ज़ुक्किरू बिही अन्जैनल्लज़ी-न यन्हौ-न अ़निस्सू-इ व अ-ख़ज़-नल्लज़ी-न ज़-लमू बिअ़ज़ाबिम्-बईसिम्-बिमा कानू यफ़्सुक़ून (१६५) फ़-लम्मा अ़तौ अ़म्मा नुहू अ़न्हु क़ुल्ना लहुम् कूनू क़ि-र-द-तन् ख़ासिईन (१६६)

★रु. २०/१० आ ५ ▨व. लाज़िम ∴ मु. अि मु त क़. ६ ●नि. १/२

हिदायत पाओ। (१५८) और मूसा की क़ौम में से कुछ लोग ऐसे भी हैं जो हक़ का रास्ता बताते और उसी के साथ इंसाफ़ करते हैं। (१५६) और हमने उनको (यानी बनी इस्राईल को) अलग-अलग करके बारह क़बीले (और) बड़ी-बड़ी जमाअतें बना दिया और जब मूसा से उन की क़ौम ने पानी तलब किया तो हम ने उनकी तरफ़ वह्य भेजी कि अपनी लाठी पत्थर पर मार दो, तो उसमें से बारह चश्मे फूट निकले और सब लोगों ने अपना-अपना घाट मालूम कर लिया और हमने उनके (सरों पर) बादल को सायबान बनाये रखा और उन पर मन्न व सल्वा उतारते रहे (और उन से कहा कि) जो पाकीज़ा चीज़ें हम तुम्हें देते हैं, उन्हें खाओ और उन लोगों ने हमारा कुछ नुक़्सान नहीं किया, बल्कि (जो) नुक़्सान (किया) वह अपना ही किया। (१६०) और (याद करो) जब उन से कहा गया कि इस शहर में रहो-बसो, और इस में जहां से जी चाहे खाना (पीना) और (हां शहर में जाना तो) 'हित्ततुन' कहना और दरवाज़े में दाख़िल होना तो सज्दा करना। हम तुम्हारे गुनाह माफ़ कर देंगे और नेकी करने वालों को और ज़्यादा देंगे। (१६१) मगर जो उन में ज़ालिम थे, उन्होंने उस लफ़्ज़ को, जिस का उन को हुक्म दिया गया था, बदल कर उसकी जगह और लफ़्ज़ कहना शुरू किया, तो हमने उन पर आसमान से अज़ाब भेजा इस लिए कि ज़ुल्म करते थे। (१६२) ★

और उनसे उस गांव का हाल तो पूछो, जो दरिया के किनारे वाक़ेअ था ▨ जब ये लोग हफ़्ते के दिन के बारे में हद से आगे निकल जाने लगे (यानी) उस वक़्त कि उन के हफ़्ते के दिन मछलियां उनके सामने पानी के ऊपर आतीं और जब हफ़्ते का दिन न होता, तो न आतीं, इसी तरह हम उन लोगों को उनकी ना-फ़रमानियों की वजह से आज़माइश में डालने लगे। (१६३) ● और जब उनमें से एक जमाअत ने कहा कि तुम ऐसे लोगों को क्यों नसीहत करते हो, जिन को ख़ुदा हलाक करने वाला या सख़्त अज़ाब देने वाला है, तो उन्होंने कहा, इसलिए कि तुम्हारे परवरदिगार के सामने माज़रत कर सकें (यानी मजबूरी ज़ाहिर कर सकें) और अजब नहीं कि वे परहेज़गारी अपनाएं। (१६४) जब उन्होंने इन बातों को भुला दिया, जिन की उन को नसीहत की गयी थी, तो जो लोग बुराई से मना करते थे, उनको हमने निजात दी और जो ज़ुल्म करते थे, उनको बुरे अज़ाब में पकड़ लिया कि नाफ़रमानी किये जाते थे। (१६५) ग़रज़ जिन (बुरे) आमाल से उनको मना किया गया था, जब वे उन (पर इस्रार और हमारे हुक्म) से गरदनकुशी करने लगे, तो हम ने उन को हुक्म दिया कि ज़लील बन्दर हो जाओ। (१६६) और (उस वक़्त को याद करो) जब तुम्हारे

★रु. २०/१० आ ५ ▨ व. लाज़िम मु. अ़ि मु ता ख़. ६ ● नि. १/२

व इज़् त-अज़्ज़-न रब्बु-क ल-यब्-अ़-सन्-न अ़लैहिम् इला यौमिल्क़ियामति मंय्यसूमुहुम् सूअल्अज़ाबि ⁊ इन्-न रब्ब-क ल-सरीअुल् - अि़क़ाबि ह़ै व इन्नहू ल - ग़फ़ूरुर्-रह़ीम (१६७) व क़त्तअ्-नाहुम् फ़िल्अर्ज़ि उ-म-मन् ᵹ मिन्हुमुस्सालिहू-न व मिन्हुम् दू-न ज़ालि-क ✓ व बलौनाहुम् बिल्ह़-स-नाति वस्सय्यिआति ल-अ़ल्लहुम् यर्जिअू़न (१६८) फ़-ख़-ल-फ़ मिम्बअ्-दि-हिम् ख़ल्फ़ुंव्वरिसुल्-किता-ब यअ्ख़ुज़ू-न अ़-र-ज़ हाज़ल्अद्ना व यक़ूलू-न स-युग़्फ़रु लना ᵹ व इंय्यअ्तिहिम् अ़-र-ज़ुम् - मिस्लुहू यअ्ख़ुज़ूहु ⁊ अ-लम् युअ्ख़ज़् अ़लैहिम् मीसाक़ुल्-किताबि अल्ला यक़ूलू अ़-लल्लाहि इल्लल्ह़क़्-क़ व द-रसू मा फ़ीहि ⁊ वद्दारुल्आख़िरतु ख़ैरुल्लिल्लज़ी-न यत्तक़ू-न ⁊ अ-फ़ला तअ्-क़िलून (१६९) वल्-लज़ी-न युमस्सिकू-न बिल्किताबि व अक़ामुस्-सला-त ⁊ इन्ना ला नुज़ीअ़ु अज्रल्-मुस्लिह़ीन (१७०) व इज़् न-तक़्नल्ज-ब-ल फ़ौक़हुम् क-अन्नहू ज़ुल्लतुंव्-व ज़न्नू अन्नहू वाक़िअ़ुम्-बिहिम् ᵹ ख़ुज़ू मा आतैनाकुम् बिक़ुव्वतिंव्वज़्कुरू मा फ़ीहि ल - अ़ल्लकुम् तत्तक़ून ★ (१७१) व इज़् अ-ख़-ज़ रब्बु-क मिम्बनी आद-म मिन् ज़ुहूरिहिम् ज़ुर्रिय्यतहुम् व अश्ह - दहुम् अ़ला अन्फ़ुसिहिम् ᵹ अ - लस्तु बिरब्बिकुम् ⁊ क़ालू बला ᵹ∴ शहिद्ना ᵹ∴ अन् तक़ूलू यौमल् - क़ियामति इन्ना कुन्ना अ़न् हाज़ा ग़ाफ़िलीन ॥ (१७२) औ तक़ूलू इन्नमा अश्-र-क आबाउना मिन् क़ब्लु व कुन्ना ज़ुर्रिय्यतम्-मिम्बअ्-दिहिम् ᵹ अ- फ़-तुह-लिकुना बिमा फ़-अ़-लल्-मुब्तिलून (१७३) व कज़ालि-क नुफ़स्सिलुल्-आयाति व ल-अ़ल्लहुम् यर्जिअ़ून (१७४) वत्लु अ़लैहिम् न-ब-अल्लज़ी आतैनाहु आयातिना फ़न्स-ल-ख़ मिन्हा फ़-अत्ब-अ़हुश्-शैतानु फ़-का-न मिनल्ग़ावीन (१७५)

قال الملا ١٧٦ الاعراف

خٰسِـِٕيْنَ ۝ وَاِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكَ لَيَبْعَثَنَّ عَلَيْهِمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ
يَّسُوْمُهُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ ؕ اِنَّ رَبَّكَ لَسَرِيْعُ الْعِقَابِ ۖۚ وَاِنَّهٗ لَغَفُوْرٌ
رَّحِيْمٌ ۝ وَقَطَّعْنٰهُمْ فِى الْاَرْضِ اُمَمًا ۚ مِنْهُمُ الصّٰلِحُوْنَ وَمِنْهُمْ
دُوْنَ ذٰلِكَ ۫ وَبَلَوْنٰهُمْ بِالْحَسَنٰتِ وَالسَّيِّاٰتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ۝
فَخَلَفَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ وَّرِثُوا الْكِتٰبَ يَاْخُذُوْنَ عَرَضَ هٰذَا
الْاَدْنٰى وَيَقُوْلُوْنَ سَيُغْفَرُ لَنَا ۚ وَاِنْ يَّاْتِهِمْ عَرَضٌ مِّثْلُهٗ يَاْخُذُوْهُ ؕ
اَلَمْ يُؤْخَذْ عَلَيْهِمْ مِّيْثَاقُ الْكِتٰبِ اَنْ لَّا يَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ
وَدَرَسُوْا مَا فِيْهِ ؕ وَالدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ؕ اَفَلَا
تَعْقِلُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ يُمَسِّكُوْنَ بِالْكِتٰبِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ؕ اِنَّا لَا
نُضِيْعُ اَجْرَ الْمُصْلِحِيْنَ ۝ وَاِذْ نَتَقْنَا الْجَبَلَ فَوْقَهُمْ كَاَنَّهٗ ظُلَّةٌ
وَّظَنُّوْٓا اَنَّهٗ وَاقِعٌۢ بِهِمْ ۚ خُذُوْا مَآ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّاذْكُرُوْا مَا فِيْهِ
لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ۝ وَاِذْ اَخَذَ رَبُّكَ مِنْۢ بَنِيْٓ اٰدَمَ مِنْ ظُهُوْرِهِمْ
ذُرِّيَّتَهُمْ وَاَشْهَدَهُمْ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ ۚ اَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ ؕ قَالُوْا بَلٰى ۛۚ
شَهِدْنَا ۛۚ اَنْ تَقُوْلُوْا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اِنَّا كُنَّا عَنْ هٰذَا غٰفِلِيْنَ ۝ اَوْ
تَقُوْلُوْٓا اِنَّمَآ اَشْرَكَ اٰبَآؤُنَا مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا ذُرِّيَّةً مِّنْۢ بَعْدِهِمْ ۚ
اَفَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ الْمُبْطِلُوْنَ ۝ وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ وَ
لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ۝ وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ الَّذِيْٓ اٰتَيْنٰهُ اٰيٰتِنَا فَانْسَلَخَ

★रु॰ २१/११ आ ९ ∴मु॰ कि मु ता ख़. ७

परवरदिगार ने (यहूद को) आगाह कर दिया था कि वह उन पर क़ियामत तक ऐसे शख़्स को मुसल्लत रखेगा, जो उन को बुरी-बुरी तक्लीफ़ें देता रहे। बेशक तुम्हारा परवरदिगार जल्द अज़ाब करने वाला है और वह बख़्शने वाला मेहरबान भी है। (१६७) और हमने उन को जमाअत-जमाअत कर के मुल्क में बिखरा दिया। कुछ उन में भले काम करने वाले हैं और कुछ और तरह के (यानी बुरे) और हम आरामों और तक्लीफ़ों (दोनों) से उन की आज़माइश करते रहे ताकि (हमारी तरफ़) रुजूअ करें। (१६८) फिर उन के बाद ना-ख़लफ़ उनके क़ायम मक़ाम हुए, जो किताब के वारिस बने। यह (बे-झिझक) इस बे-क़ीमत दुनिया का माल व मताअ ले लेते हैं और कहते हैं कि हम बख़्श दिए जाएंगे। और (लोग ऐसों पर तान करते हैं) अगर उन के सामने भी वैसा ही माल आ जाता है, तो वह भी उसे ले लेते हैं। क्या उन से किताब के बारे में अह्द नहीं लिया गया कि ख़ुदा पर सच के सिवा और कुछ नहीं कहेंगे और जो कुछ इस (किताब) में है, उस को उन्होंने पढ़ भी लिया है और आख़िरत का घर परहेज़गारों के लिए बेहतर है, क्या तुम समझते नहीं? (१६९) और जो लोग किताब को मज़बूत पकड़े हुए हैं, और नमाज़ का इल्तिज़ाम रखते हैं (उन को हम बदला देंगे कि) हम भले लोगों का बदला बर्बाद नहीं करते। (१७०) और जब हमने उन (के सरों) पर पहाड़ उठा खड़ा किया, गोया वह सायबान था और उन्होंने ख़्याल किया कि वह उन पर गिरता है, तो (हमने कहा कि) जो हमने तुम्हें दिया है, उसे ज़ोर से पकड़े रहो और जो इसमें लिखा है, उस पर अमल करो ताकि बच जाओ। (१७१) ★

और जब तुम्हारे परवरदिगार ने बनी आदम से यानी उन की पीठों से उन की औलाद निकाली, तो उन से ख़ुद उनके मुक़ाबले में इक़रार करा लिया (यानी उन से पूछा कि) क्या मैं तुम्हारा परवरदिगार नहीं हूं? वे कहने लगे, क्यों नहीं; हम गवाह हैं (कि तू हमारा परवरदिगार है)। (यह इक़रार इस लिए कराया था) कि क़ियामत के दिन (कहीं यों न) कहने लगो कि हम को इस की ख़बर ही न थी। (१७२) या यह (न) कहो कि शिर्क तो पहले हमारे बड़ों ने किया था और हम तो उन की औलाद थे (जो) उन के बाद (पैदा हुए) तो क्या जो काम अह्ले बातिल करते रहे, उस के बदले तू हमें हलाक करता है। (१७३) और इसी तरह हम (अपनी) आयतें खोल-खोल कर बयान करते हैं, ताकि ये रुजू करें। (१७४) और उन को उस शख़्स का हाल पढ़ कर सुना दो, जिस को हमने अपनी आयतें अता फ़रमायीं, तो उसने उनको उतार दिया, फिर शैतान उस के पीछे लगा,

★रु. २१/११ आ ६: मु. कि मु ता ख. ७

व लौ शिअ्ना ल-र-फ़अ्-नाहु बिहा व लाकिन्नहू अख़्-ल-द इलल्अर्ज़ि वत्त-ब-अ हवाहु ८ फ़-म-सलुहू क-म-सलिल्कल्बि ८ इन् तह्मिल् अलैहि यल्हस् औ तत्रुक्हु यल्हस् ७ ज़ालि-क म-सलुल्-क़ौमिल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना ८ फ़क़्सुसिल्-क़-स-स ल-अल्लहुम् य-त-फ़क्करून (१७६) सा-अ म-स-ल-निल्-क़ौमुल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना व अन्फ़ुसहुम् कानू यज़्लिमून (१७७) मंय्यह्दिल्लाहु फ़हुवल्-मुह्तदी ८ व मंय्युज़्लिल् फ़-उलाइ-क हुमुल्ख़ासिरून (१७८) व ल-क़द् ज़-रअ्ना लिज-हन्न-म कसीरम्-मिनल्जिन्नि वल्-इन्सि ५ लहुम् क़ुलूबुल्-ला-यफ़्क़हू-न बिहा ५ व लहुम् अअ्-युनुल्-ला-युब्सिरू-न बिहा ५ व लहुम् आज़ानुल्-ला-यस्मअू-न बिहा ७ उलाइ-क कल्अन्आमि बल् हुम् अज़ल्लु ७ उलाइ-क हुमुल्ग़ाफ़िलून (१७९) व लिल्लाहिल्-अस्माउल्-हुस्ना फ़द्अूहु बिहा ५ व ज़रुल्लज़ी-न युल्हिदू-न फ़ी अस्माइही ७ स-युज्ज़ौ-न मा कानू यअ्-मलून (१८०) व मिम्मन् ख़-लक़्ना उम्मतुंय्यह्दू-न बिल्हक़्क़ि व बिही यअ्-दिलून ★ (१८१) वल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना स-नस्तद्रिजुहुम् मिन् हैसु ला यअ्-लमून ८ (१८२) व उम्ली लहुम् ८ इन-न कैदी मतीन (१८३) अ-व लम् य-त-फ़क्करू मा बिसाहिबिहिम् मिन् जिन्नतिन् ७ इन् हु-व इल्ला नज़ीरुम्मुबीन (१८४) अ-व लम् यन्ज़ुरू फ़ी म-ल-कूतिस्-समावाति वल्अर्ज़ि व मा ख़-ल-क़ल्लाहु मिन् शैइंव्-व अन् असा अंय्यकू-न क़दिक़्-त-र-ब अ-जलुहुम् ८ फ़बिअय्यि हदीसिम्बअ्-दहू युअ्मिनून (१८५)

قال الملأ ٩ — ١٣٨ — الأعراف ٧

منها فاتبعه الشيطن فكان من الغاوين ۞ ولو شئنا لرفعنه
بها ولكنه اخلد الى الارض واتبع هوىه فمثله كمثل
الكلب ان تحمل عليه يلهث او تتركه يلهث ذلك مثل
القوم الذين كذبوا بايتنا فاقصص القصص لعلهم
يتفكرون ۞ ساء مثلا القوم الذين كذبوا بايتنا وانفسهم
كانوا يظلمون ۞ من يهد الله فهو المهتدي ومن يضلل
فاولئك هم الخسرون ۞ ولقد ذرانا لجهنم كثيرا من الجن
والانس لهم قلوب لا يفقهون بها ولهم اعين لا يبصرون
بها ولهم اذان لا يسمعون بها اولئك كالانعام بل هم
اضل اولئك هم الغفلون ۞ ولله الاسماء الحسنى فادعوه
بها وذروا الذين يلحدون في اسمائه سيجزون ما كانوا
يعملون ۞ وممن خلقنا امة يهدون بالحق وبه
يعدلون ۞ والذين كذبوا بايتنا سنستدرجهم من حيث
لا يعلمون ۞ واملي لهم ان كيدي متين ۞ اولم
يتفكروا ما بصاحبهم من جنة ان هو الا نذير مبين ۞
اولم ينظروا في ملكوت السموت والارض وما خلق الله
من شيء وان عسى ان يكون قد اقترب اجلهم فباي

★रु० २२/१२ आ १०

तो वह गुमराहों में हो गया। (१७५) और अगर हम चाहते तो इन आयतों से उस (के दर्जे) को बुलंद कर देते, मगर वह तो पस्ती की तरफ़ मायल हो गया और अपनी ख्वाहिश के पीछे चल पड़ा, तो उस की मिसाल कुत्ते की-सी हो गयी कि अगर सख्ती करो, तो ज़ुबान निकाले रहे और यों ही छोड़ दो, तो भी ज़ुबान निकाले रहे। यही मिसाल उन लोगों की है, जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया तो (उन से) यह क़िस्सा बयान कर दो, ताकि वे फ़िक्र करें। (१७६) जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया, उन की मिसाल बुरी है और उन्होंने नुक़्सान (किया, तो) अपना ही किया। (१७७) जिस को ख़ुदा हिदायत दे, वही हिदायत पर है और जिस को गुमराह करे, तो ऐसे ही लोग नुक़्सान उठाने वाले हैं। (१७८) और हम ने बहुत से जिन्न और इंसान दोज़ख के लिए पैदा किये हैं, उन के दिल हैं, लेकिन उनसे समझते नहीं और उन की आंखें हैं, मगर उन से देखते नहीं। और उन के कान हैं, पर उन से सुनते नहीं। ये लोग (बिल्कुल) चारपायों की तरह हैं बल्कि उन से भी भटके हुए। यही वे हैं जो गफ़्लत में पड़े हुए हैं। (१७९) और ख़ुदा के सब नाम अच्छे ही अच्छे हैं, तो उस को उसके नामों से पुकारा करो और जो लोग उसके नामों में टेढ़ (अपनाया) करते हैं, उन को छोड़ दो। वे जो कुछ कर रहे हैं, बहुत जल्द उस की सज़ा पाएंगे। (१८०) और हमारी मख्लूक़ात में से एक वे लोग हैं, जो हक़ का रास्ता बताते हैं और उसी के साथ इंसाफ़ करते हैं। (१८१) ★

और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया, उन को तर्तीब से इस तरीक़े से पकड़ेंगे कि उन को मालूम ही न होगा। (१८२) और मैं उन को मुहलत दिए जाता हूं, मेरी तद्बीर (बड़ी) मज़बूत है। (१८३) क्या उन्होंने ग़ौर नहीं किया कि उन के साथी (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को (किसी तरह का भी) जुनून नहीं है। वह तो ज़ाहिर-ज़हूर डर सुनाने वाले हैं। (१८४) क्या उन्होंने आसमान व ज़मीन की बादशाही में और जो चीज़ें ख़ुदा ने पैदा की हैं, उन पर नज़र नहीं की और इस बात पर (ख्याल नहीं किया) कि अजब नहीं उन (की मौत) का वक़्त नज़दीक पहुंच गया हो, तो इस के बाद वह और किस बात पर ईमान लाएंगे। (१८५) जिस शख्स को ख़ुदा

★रु. २२/१२ आ १०

मंय्युज़्-लिलिल्लाहु फ़ला हादि-य लहू ؕ व य-ज़-रुहुम् फ़ी तुग़्यानिहिम् यअ्-महून (१८६) यस्-अलू-न-क अ़निस्साअ़ति अय्या-न मुर्साहा ؕ क़ुल् इन्नमा अ़िल्मुहा अ़िन् - द रब्बी ج ला युजल्लीहा लिवक़्तिहा इल्ला हु - व ▨ सक़ुलत् फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि ؕ ला तअ्तीकुम् इल्ला बग़्त - तन् ؕ यस्अलून - क क-अन्न-क हफ़िय्युन् अ़न्हा ؕ क़ुल् इन्नमा अ़िल्मुहा अ़िन्दल्लाहि व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला यअ्-लमून (१८७) क़ुल् ला अम्लिकु लिनफ़्सी नफ़्अंव्-व ला ज़र्रन् इल्ला मा शाअल्लाहु ؕ व लौ कुन्तु अअ्-लमुल्ग़ै-ब लस्तक्सर्तु मिनल्ख़ैरि صلے व मा मस्सनियस्सूउ ج इन् अ-न इल्ला नज़ीरुंव् - व बशीरुल् - लिक़ौमिंय्युअ्मिनून ★ (१८८) हुवल्लज़ी ख़ - ल-क़कुम् मिन् नफ़्सिंव्वाहिदतिंव्-व ज-अ-ल मिन्हा ज़ौजहा लियस्कु-न इलैहा ج फ़-लम्मा त - ग़श्शाहा ह-म-लत् हम्लन् ख़फ़ीफ़न् फ़-मर्रत बिही ج फ़-लम्मा अस्क़लद्-द-अ़-वल्ला-ह रब्बहुमा लइन् आतैतना सालिहल्-ल-नकूनन्-न मिनश्शाकिरीन (१८९) फ़-लम्मा आताहुमा सालिहन् ज-अ़ला लहू शु-रका-अ फ़ीमा आताहुमा ج फ़-त-आ़लल्लाहु अ़म्मा युश्रिकून (१९०) अयुश्रिकू-न मा ला यख़्लुक़ु शैअंव्-व हुम् युख़्-लक़ून ے (१९१) व ला यस्ततीअू-न लहुम् नस्रंव्-व ला अन्फ़ुसहुम् यन्सुरून (१९२) व इन् तद्अूहुम् इलल्हुदा ला यत्तबिअूकुम् ؕ सवाउन् अ़लैकुम् अ - दऔतुमूहुम् अम् अन्तुम् सामितून (१९३) इन्नल्लज़ी-न तद्अू-न मिन् दूनिल्लाहि अ़िबादुन् अम्सालुकुम् फ़द्अूहुम् फ़ल्यस्तजीबू लकुम् इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (१९४)

حَدِيثٍ بَعْدَهُ يُؤْمِنُونَ ۝ مَنْ يُضْلِلِ اللَّهُ فَلَا هَادِيَ لَهُ ۚ
وَيَذَرُهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ۝ يَسْأَلُونَكَ عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ
مُرْسَاهَا ۖ قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّي ۖ لَا يُجَلِّيهَا لِوَقْتِهَا إِلَّا هُوَ ۚ
ثَقُلَتْ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ لَا تَأْتِيكُمْ إِلَّا بَغْتَةً ۗ يَسْأَلُونَكَ كَأَنَّكَ
حَفِيٌّ عَنْهَا ۖ قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللَّهِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا
يَعْلَمُونَ ۝ قُلْ لَا أَمْلِكُ لِنَفْسِي نَفْعًا وَلَا ضَرًّا إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ ۚ
وَلَوْ كُنْتُ أَعْلَمُ الْغَيْبَ لَاسْتَكْثَرْتُ مِنَ الْخَيْرِ ۛ وَمَا مَسَّنِيَ
السُّوءُ ۚ إِنْ أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ وَبَشِيرٌ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝ هُوَ الَّذِي
خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ وَجَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا لِيَسْكُنَ
إِلَيْهَا ۖ فَلَمَّا تَغَشَّاهَا حَمَلَتْ حَمْلًا خَفِيفًا فَمَرَّتْ بِهِ ۖ فَلَمَّا
أَثْقَلَتْ دَعَوَا اللَّهَ رَبَّهُمَا لَئِنْ آتَيْتَنَا صَالِحًا لَنَكُونَنَّ مِنَ
الشَّاكِرِينَ ۝ فَلَمَّا آتَاهُمَا صَالِحًا جَعَلَا لَهُ شُرَكَاءَ فِيمَا آتَاهُمَا ۚ
فَتَعَالَى اللَّهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝ أَيُشْرِكُونَ مَا لَا يَخْلُقُ شَيْئًا وَهُمْ
يُخْلَقُونَ ۝ وَلَا يَسْتَطِيعُونَ لَهُمْ نَصْرًا وَلَا أَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُونَ ۝
وَإِنْ تَدْعُوهُمْ إِلَى الْهُدَىٰ لَا يَتَّبِعُوكُمْ ۚ سَوَاءٌ عَلَيْكُمْ
أَدَعَوْتُمُوهُمْ أَمْ أَنْتُمْ صَامِتُونَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ
دُونِ اللَّهِ عِبَادٌ أَمْثَالُكُمْ ۖ فَادْعُوهُمْ فَلْيَسْتَجِيبُوا لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ

▨ व. लाज़िम व. मंज़िल ∴ मु. अ़ि मु ता ख़ ८ ★रु. २३/१३ आ ७

गुमराह करे, उसको कोई हिदायत देने वाला नहीं और वह उन (गुमराहों) को छोड़े रखता है कि अपनी सरकशी में पड़े बहकते रहें। (१८६) (ये लोग) तुम से क़ियामत के बारे में पूछते हैं कि इस के वाक़ेअ होने का वक़्त कब है। कह दो कि इस का इल्म तो मेरे परवरदिगार ही को है। वही उसे उस के वक़्त पर ज़ाहिर कर देगा वह आसमान और ज़मीन में एक भारी बात होगी और यकायक तुम पर आ जाएगी। यह तुम से इस तरह पूछते हैं कि गोया तुम इस को अच्छी तरह जानते हो। कहो कि इस का इल्म तो ख़ुदा ही को है, लेकिन अक्सर लोग यह नहीं जानते। (१८७) कह दो कि मैं अपने फ़ायदे और नुक़्सान का कुछ भी अख़्तियार नहीं रखता, मगर जो ख़ुदा चाहे और अगर मैं ग़ैब की बातें जानता होता, तो बहुत से फ़ायदे जमा कर लेता और मुझ को कोई तक्लीफ़ न पहुंचती, मैं तो मोमिनों को डर और ख़ुशख़बरी सुनाने वाला हूं। (१८८) ★

वह ख़ुदा ही तो है, जिसने तुम को एक शख़्स से पैदा किया, और उस से उसका जोड़ा बनाया, ताकि उस से राहत हासिल करे, सो जब वह उस के पास जाता है, तो उसे हल्का-सा हमल रह जाता है और वह उसके साथ चलती-फिरती है। फिर जब कुछ बोझा मालूम करती (यानी बच्चा पेट में बड़ा होता) है तो दोनों (मियां-बीवी) अपने परवरदिगार ख़ुदा-ए अज़्ज़ व जल्ल से इल्तिजा करते हैं कि अगर तू हमें सही व सालिम (बच्चा) देगा, तो हम तेरे शुक्रगुज़ार होंगे। (१८९) जब वह उनको सही व सालिम (बच्चा) देता है, तो उस (बच्चे) में जो वह उन को देता है, उसका शरीक मुक़र्रर करते हैं। जो वे शिर्क करते हैं, ख़ुदा का (रुत्बा) इस से बुलंद है।[1] (१९०) क्या वे ऐसों को शरीक बनाते हैं, जो कुछ भी पैदा नहीं कर सकते और ख़ुदा पैदा किये जाते हैं। (१९१) और न उन की मदद की ताक़त रखते हैं और न अपनी ही मदद कर सकते हैं। (१९२) अगर तुम उन को सीधे रास्ते की तरफ़ बुलाओ, तो तुम्हारा कहा न मानें, तुम्हारे लिए बराबर है कि तुम उन को बुलाओ या चुपके हो रहो। (१९३) (मुश्रिको!) जिन को तुम ख़ुदा के सिवा पुकारते हो, वह (तुम्हारी) तरह के बन्दे ही हैं, (अच्छा) तुम उन को पुकारो, अगर सच्चे हो तो चाहिए कि वह

---

१. इस आयत की तफ़्सीर में तमाम तफ़्सीर लिखने वालों को बड़ी मुश्किल पेश आयी कि इस को हज़रत आदम व हव्वा का क़िस्सा समझ कर ख़्याल किया कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से भी शिर्क का बड़ा गुनाह हुआ, हालांकि नबी शिर्क से मासूम होते हैं। तो कुछ ने इस सवाल को इस तरह हल किया है कि यह गुनाह सिर्फ़ हव्वा से हुआ न कि आदम से, यह तो सिर्फ़ कहने का अन्दाज़ है जैसा कि और जगहों पर इस्तेमाल हुआ है।

अ-लहुम् अर्जुलुंय्यम्शू-न बिहा अम् लहुम् ऐदिंय्यब्तिशू - न बिहा अम् लहुम् अअ्-युनुंय्युब्सिरू - न बिहा अम् लहुम् आज़ानुंय्यस्मअू - न बिहा ط क़ुलिद्अू शुरका-अकुम् सुम्-म कीदूनि फ़ला तुन्ज़िरून (१९५) इन्-न वलिय्यि-यल्लाहुल्लज़ी नज़्ज़लल् - किता-ब व हु-व य - त - वल्लस्सालिहीन (१९६) वल्लज़ी-न तद्अू-न मिन् दूनिही ला यस्ततीअू-न नस्रकुम् व ला अन्फ़ुसहुम् यन्सुरून (१९७) व इन् तद्अूहुम् इलल्हुदा ला यस्मअू ط व तराहुम् यन्ज़ुरू-न इलै-क व हुम् ला युब्सिरून (१९८) ख़ुज़िल्अफ़्-व वअ्मुर् बिल्उर्फ़ि व अअ्-रिज़् अनिल्जाहिलीन (१९९) व इम्मा यन्ज़ग़न्न-क मिनश्शैतानि नज़्ग़ुन् फ़स्तअिज़् बिल्लाहि ط इन्नहू समीअुन् अलीम (२००) इन्नल्लज़ीनत्तक़ौ इज़ा मस्सहुम् ताइफ़ुम् - मिनश्शैतानि त-ज़क्करू फ़-इज़ा हुम् मुब्सिरून ۚ (२०१) व इख़्वानु-हुम् यमुद्दूनहुम् फ़िल्ग़य्यि सुम्-म ला युक़्सिरून (२०२) व इज़ा लम् तअ्तिहिम् बिआयतिन् क़ालू लौलज्तबैतहा ط क़ुल् इन्नमा अत्तबिअु मा यूहा इलय्-य मिर्रब्बी ۚ हाज़ा बसाइरु मिर्रब्बिकुम् व हुदंव् - व रह्मतुल्-लिक़ौमिंय्युअ्मिनून (२०३) व इज़ा क़ुरिअल्-क़ुरआनु फ़स्तमिअू लहू व अन्सितू ल-अल्लकुम् तुर्हमून (२०४) वज़्कुर्रब्ब-क फ़ी नफ़्सि-क तज़र्रुअंव्-व ख़ीफ़-तंव्-व-दूनल्जह्रि मिनल्क़ौलि बिल्ग़ुदुव्वि वल्आसालि व ला तकुम्मिनल्-ग़ाफ़िलीन (२०५) इन्नल्लज़ी-न अिन्-द रब्बि-क ला यस्तक्बिरू-न अन् अिबादतिही व युसब्बिहूनहू व लहू यस्जुदून ★ ● □ (२०६)

قال الملأ ٩ | ١٧٠ | الأعراف ٧

صدقين ۝ ألهم أرجل يمشون بها أم لهم أيد يبطشون
بها أم لهم أعين يبصرون بها أم لهم آذان يسمعون بها
قل ادعوا شركاءكم ثم كيدون فلا تنظرون ۝ إن ولي الله
الذي نزل الكتب وهو يتولى الصلحين ۝ والذين تدعون
من دونه لا يستطيعون نصركم ولا أنفسهم ينصرون ۝
وإن تدعوهم إلى الهدى لا يسمعوا وتراهم ينظرون إليك
وهم لا يبصرون ۝ خذ العفو وأمر بالعرف وأعرض عن
الجهلين ۝ وإما ينزغنك من الشيطن نزغ فاستعذ بالله
إنه سميع عليم ۝ إن الذين اتقوا إذا مسهم طئف من
الشيطن تذكروا فإذا هم مبصرون ۝ وإخوانهم يمدونهم
في الغي ثم لا يقصرون ۝ وإذا لم تأتهم بآية قالوا لولا
اجتبيتها قل إنما أتبع ما يوحى إلي من ربي هذا بصائر
من ربكم وهدى ورحمة لقوم يؤمنون ۝ وإذا قرئ
القرآن فاستمعوا له وأنصتوا لعلكم ترحمون ۝ واذكر ربك
في نفسك تضرعا وخيفة ودون الجهر من القول بالغدو و
الآصال ولا تكن من الغفلين ۝ إن الذين عند ربك لا
يستكبرون عن عبادته ويسبحونه وله يسجدون ۝

منزل

★रु. २४/१४ आ १८ ●सु. ३/४ □सज्दः १

तुम को जवाब भी दें। (१९४) भला उन के पांव हैं, जिन से चलें या हाथ हैं, जिन से पकड़ें या आंखें हैं जिन से देखें या कान हैं, जिन से सुनें ? कह दो कि अपने शरीकों को बुला लो और मेरे बारे में (जो) तद्बीर (करनी हो) कर लो और मुझे कुछ मुहलत भी न दो (फिर देखो कि) वह मेरा क्या कर सकते हैं ? (१९५) मेरा मददगार तो ख़ुदा ही है जिस ने (हक़) किताब नाज़िल की और नेक लोगों का वही दोस्तदार है। (१९६) और जिन को तुम ख़ुदा के सिवा पुकारते हो, वह न तुम्हारी ही मदद की ताक़त रखते हैं और न ख़ुद अपनी ही मदद कर सकते हैं। (१९७) और अगर तुम उन को सीधे रास्ते की तरफ़ बुलाओ, तो सुन न सकें और तुम उन्हें देखते हो कि (देखने में) आंखें खोले तुम्हारी तरफ़ देख रहे हैं, मगर (सच में) कुछ नहीं देखते। (१९८) (ऐ मुहम्मद !) अफ़्व (माफ़ करना) अख़्तियार करो और नेक काम करने का हुक्म दो और जाहिलों से किनारा कर लो। (१९९) और अगर शैतान की तरफ़ से तुम्हारे दिल में किसी तरह कोई वस्वसा पैदा हो तो ख़ुदा से पनाह मांगो, बेशक वह सुनने वाला (और) सब कुछ जानने वाला है। (२००) जो लोग परहेज़गार हैं, जब उन को शैतान की तरफ़ से कोई वस्वसा पैदा होता है तो चौंक पड़ते हैं और (दिल की आंखें खोल कर) देखने लगते हैं। (२०१) और इन (कुफ़्फ़ार) के भाई उन्हें गुमराही में खींचे जाते हैं, फिर (उस में किसी तरह की) कोताही नहीं करते। (२०२) और जब तुम उन के पास (कुछ दिनों तक) कोई आयत नहीं लाते, तो कहते हैं कि तुमने (अपनी तरफ़ से) क्यों नहीं बना ली। कह दो कि मैं तो उसी हुक्म की पैरवी करता हूं, जो मेरे परवरदिगार की तरफ़ से मेरे पास आता है। यह (क़ुरआन) तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से दानिश व बसीरत और मोमिनों के लिए हिदायत और रहमत है। (२०३) और जब क़ुरआन पढ़ा जाए तो तवज्जोह से सुना करो और ख़ामोश रहा करो, ताकि तुम पर रहम किया जाए। (२०४) और अपने परवरदिगार को दिल ही दिल में आजिज़ी और ख़ौफ़ से और पस्त आवाज़ से, सुबह व शाम याद करते रहो, और (देखना) ग़ाफ़िल न होना। (२०५) जो लोग तुम्हारे परवरदिगार के पास हैं, वे उस की इबादत से गरदन कशी नहीं करते और उस पाक ज़ात को याद करते और उसके आगे सज्दे करते रहते हैं।[1] (२०६) ★ ● □

---

१. इस आयत की तिलावत से सज्दा फ़र्ज़ होता है, जो कर लेना चाहिए।

★रु. २४/१४-आ १८ ●सु. ३/४ □सज्दः १

८ सूरतुल्अन्फ़ालि ८८

(मदनी) इस सूर: में अरबी के ५५२२ अक्षर, १२५३ शब्द, ७५ आयत और १० रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

यस्-अलून - क अनिल्-अन्फ़ालि ꕯ क़ुलिल् - अन्फ़ालु लिल्लाहि वर्रसूलि ꕯ फ़त्तक़ुल्ला-ह व अस्लिहू ज़ा-त बैनिकुम् ꕯ व अतीउल्ला-ह व रसूलहू इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन (१) इन्नमल्-मुअ्मिनूनल्लज़ी-न इज़ा ज़ुकिरल्लाहु वजिलत् क़ुलूबुहुम् व इज़ा तुलियत् अलैहिम् आयातुहू ज़ादत्हुम् ईमानंव्-व अला रब्बिहिम् य-त - वक्कलून ꕯ (२) अल्लज़ी-न युक़ीमूनस्सला - त व मिम्मा र-ज़क़्नाहुम् युन्फ़िक़ून ꕯ (३) उलाइ-क हुमुल्-मुअ्मिनू-न हक़्क़न् ꕯ लहुम् द-रजातुन् अिन्-द रब्बिहिम् व मग़्फ़ि-रतुंव्-व रिज़्क़ुन् करीम ꕯ (४) कमा अख़्-र-ज-क रब्बु-क मिम्बैति - क बिल्हक़्क़ि ꕯ व इन - न फ़रीक़म्मिनल् - मुअ्मिनी - न लकारिहून ꕯ (५) युजादिलून-क फ़िल्हक़्क़ि बअ्-द मा त-बय्य-न क-अन्नमा युसाक़ू-न इलल्मौति व हुम् यन्ज़ुरून ꕯ (६) व इज़् यअिदु-कुमुल्लाहु इह्दत्ता - इफ़तैनि अन्नहा लकुम् व त-वद्दू-न अन्-न ग़ै-र ज़ातिश्शौकति तकूनु लकुम् व युरीदुल्लाहु अंय्युहिक़्क़ल्-हक़्-क़ बिकलिमातिही व यक़्त-अ दाबिरल्-काफ़िरीन ꕯ (७) लियुहिक़्क़ल्-हक़्-क़ व युब्तिलल् - बाति-ल व लौ करिहल्-मुज्रिमून ꕯ (८) इज़् तस्तग़ीसू-न रब्बकुम् फ़स्तजा-ब लकुम् अन्नी मुमिद्दुकुम् बिअल्फ़िम्-मिनल्-मला-इकति मुर्दिफ़ीन (९) व मा ज-अ-लहुल्लाहु इल्ला बुश्रा व लितत्मइन्-न बिही क़ुलूबुकुम् ꕯ व मन्नस्रु इल्ला मिन् अिन्दिल्लाहि ꕯ इन्नल्ला - ह अज़ीज़ुन् हकीम ★ (१०)

سورة الانفال مدنية وهي خمس وسبعون اية وعشر ركوعات

بسم الله الرحمن الرحيم

يسـٔلونك عن الانفال قل الانفال لله والرسول فاتقوا
الله واصلحوا ذات بينكم واطيعوا الله ورسوله ان كنتم
مؤمنين ۝ انما المؤمنون الذين اذا ذكر الله وجلت قلوبهم
واذا تليت عليهم اياته زادتهم ايمانا وعلى ربهم يتوكلون ۝
الذين يقيمون الصلوة ومما رزقنهم ينفقون ۝ اولئك
هم المؤمنون حقا لهم درجت عند ربهم ومغفرة ورزق
كريم ۝ كما اخرجك ربك من بيتك بالحق وان فريقا من
المؤمنين لكرهون ۝ يجادلونك في الحق بعد ما تبين كانما
يساقون الى الموت وهم ينظرون ۝ واذ يعدكم الله احدى
الطائفتين انها لكم وتودون ان غير ذات الشوكة تكون
لكم ويريد الله ان يحق الحق بكلمته ويقطع دابر الكفرين ۝
ليحق الحق ويبطل الباطل ولو كره المجرمون ۝ اذ تستغيثون
ربكم فاستجاب لكم اني ممدكم بالف من الملئكة مردفين ۝
وما جعله الله الا بشرى ولتطمئن به قلوبكم وما النصر
الا من عند الله ان الله عزيز حكيم ۝ اذ يغشيكم النعاس

★रु. १/१५ आ १०

८ सूर: अन्फ़ाल ८८

सूर: अन्फ़ाल मदनी है और इसमें पचहत्तर आयतें और दस रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

(ऐ मुहम्मद ! मुजाहिद लोग) तुमसे ग़नीमत के बारे में सवाल करते हैं (कि क्या हुक्म है।) कह दो कि ग़नीमत ख़ुदा और उसके रसूल का माल है, तो ख़ुदा से डरो और आपस में सुलह रखो और अगर ईमान रखते हो तो ख़ुदा और उस के रसूल के हुक्म पर चलो। (१) मोमिन तो वे हैं कि जब ख़ुदा का ज़िक्र किया जाता है, तो उन के दिल डर जाते हैं और जब उन्हें उस की आयतें पढ़ कर सुनायी जाती हैं, तो उन का ईमान और बढ़ जाता है और वे अपने परवरदिगार पर भरोसा रखते हैं। (२) (और) वे जो नमाज़ पढ़ते हैं और जो माल हमने उन को दिया है, उसमें से ये (नेक कामों) में ख़र्च करते हैं। (३) यही सच्चे मोमिन हैं और उन के लिए परवरदिगार के यहां (बड़े-बड़े) दर्जे और बख़्शिश और इज़्ज़त की रोज़ी है। (४) (उन लोगों को अपने घरों से उसी तरह निकलना चाहिए था) जिस तरह तुम्हारे परवरदिगार ने तुमको तद्बीर के साथ अपने घर से निकाला और (उस वक़्त) मोमिनों की एक जमाअत ना-ख़ुश थी (५) वे लोग हक़ बात में उस के ज़ाहिर हुए पीछे तुम से झगड़ने लगे, गोया मौत की तरफ़ धकेले जाते हैं और देख रहे हैं। (६) और (उस वक़्त को याद करो) जब ख़ुदा तुम से वायदा करता था। कि (अबू सुफ़ियान और अबूजह्ल के) दो गिरोहों में से एक गिरोह तुम्हारे (क़ाबू में) हो जाएगा और तुम चाहते थे कि जो क़ाफ़िला (बे-शान व) शौकत (यानी बे-हथियार) है, वह तुम्हारे हाथ आ जाएगा और ख़ुदा चाहता था कि अपने फ़रमान से हक़ को क़ायम रखे और काफ़िरों की जड़ काट कर (फेंक) दे,[1] (७) ताकि सच को सच और झूठ को झूठ कर दे, गो मुश्रिक ना-ख़ुश ही हों। (८) जब तुम अपने परवरदिगार से फ़रियाद करते थे, तो उसने तुम्हारी दुआ क़ुबूल कर ली (और फ़रमाया) कि (तसल्ली रखो), हम हज़ार फ़रिश्तों से जो एक-दूसरे के पीछे आते जाएंगे तुम्हारी मदद करेंगे। (९) और इस मदद को ख़ुदा ने सिर्फ़ बशारत बनाया था कि तुम्हारे दिल इस से इत्मीनान हासिल करें और मदद तो अल्लाह ही की तरफ़ से है। बेशक ख़ुदा ग़ालिब हिक्मत वाला है। (१०) ★

---

१. ये आयतें बद्र की लड़ाई से मुताल्लिक़ हैं। कुछ तारीख़ लिखने वालों और तफ़्सीर लिखने वालों ने इस लड़ाई की यह वजह लिखी है कि वह क़ाफ़िला, जो अबू सुफ़ियान शाम से ले कर आ रहा था, उस को प्यारे नबी सल्ल० और उन के सहाबियों रज़ि० ने यह ख़्याल कर के कि लोग बहुत कम हैं और माल बहुत ज़्यादा है, लूट लेने के इरादे से कूच किया था। जब यह ख़बर मक्का के क़ुरैश को पहुंची, तो बहुत सी फ़ौज ले कर क़ाफ़िले को बचाने के लिए निकले और बद्र नामी जगह पर लड़ाई शुरू हो गयी। लड़ाई का नतीजा यह था कि क़ुरैश के सत्तर आदमी मारे गये और इतने ही गिरफ़्तार हुए। जो माल व अस्बाब वह छोड़ कर भाग आये थे, वह सब मुसलमानों के हाथ आया। मगर क़ुरआनी आयतों से साफ़ मालूम होता है कि रसूले ख़ुदा सल्ल० को मक्का के क़ुरैश का मदीने पर चढ़ाई करने का हाल पहले मालूम हो चुका था और इस के बाद आप ने उन के मुक़ाबले के लिए कूच फ़रमाया था। बेशक कुछ सहाबा किराम की राय होगी कि शाम के क़ाफ़िले को लूट लिया जाए और इसी गिरोह के बारे में ख़ुदा ने फ़रमाया कि तुम बे-शान व शौकत गिरोह को लेना चाहते हो, मगर ख़ुदा ने इस राय को मंज़ूर न

(शेष २८१ पर)

★रु. १/१५ आ १०

इज़् युग़श्शीकुमुन्नुआ-स अ-म-न-तम्-मिन्हु व युनज़्ज़िलु अलैकुम् मिनस्समा-इ मा-अल्-लियुतह्हि-रकुम् बिही व युज़्हि-ब अन्कुम् रिज्ज़श्शैतानि व लि-यर्बि-त अला क़ुलूबिकुम् व युसब्बि-त बिहिल्अक़्दाम (११) इज़् यूही रब्बु-क इलल्-मला-इकति अन्नी म-अ-कुम् फ़-सब्बितुल्लज़ी-न आमनू स-उल्क़ी फ़ी क़ुलूबिल्लज़ी-न क-फ़रुर्रुअ्-ब फ़ज़्रिबू फ़ौक़ल्-अअ्नाक़ि वज़्रिबू मिन्हुम् कुल्-ल बनान (१२) ज़ालि-क बिअन्-नहुम् शाक़्क़ुल्ला-ह व रसूलहू व मंय्युशाक़िक़िल्ला-ह व रसूलहू फ़-इन्नल्ला-ह शदीदुल्-अिक़ाब (१३) ज़ालिकुम् फ़ज़ूक़ूहु व अन्-न लिल्काफ़िरी-न अज़ाबन्नार (१४) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इज़ा लक़ीतुमुल्लज़ी-न क-फ़रू ज़ह्-फ़न् फ़ला तुवल्लूहुमुल्-अद्बार (१५) व मंय्युवल्लिहिम् यौ-म-इज़िन् दुबुरहू इल्ला मुतहर्रिफ़ल्-लिक़ितालिन् औ मुत-हय्यिज़न् इला फ़ि-अतिन् फ़-क़द् बा-अ बिग़-ज़बिम्-मिनल्लाहि व मअ्वाहु ज-हन्-नमु व बिअ्-सल्-मसीर (१६) फ़-लम् तक़्तुलूहुम् व लाकिन्नल्ला-ह क़-त-लहुम् व मा रमै-त इज़् रमै-त व लाकिन्नल्ला-ह र-मा व लियुब्लियल्-मुअ्मिनी-न मिन्हु बला-अन् ह-स-नन् इन्नल्ला-ह समीअुन् अलीम (१७) ज़ालिकुम् व अन्नल्ला-ह मूहिनु कैदिल्काफ़िरीन (१८) इन् तस्तफ़्तिहू फ़-क़द् जा-अकुमुल्-फ़त्हु व इन् तन्तहू फ़हु-व ख़ैरुल्लकुम् व इन् तअूदू नअुद् व लन् तुग़्नि-य अन्कुम् फ़िअतुकुम् शैअंव्-व लौ कसुरत् व अन्नल्ला-ह म-अल्-मुअ्मिनीन★(१९) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू अतीअुल्ला-ह व रसूलहू व ला तवल्लौ अन्हु व अन्तुम् तस्मअून (२०)

اَمَنَةً مِّنْهُ وَيُنَزِّلُ عَلَيْكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَآءً لِّيُطَهِّرَكُمْ بِهٖ وَ
يُذْهِبَ عَنْكُمْ رِجْزَ الشَّيْطٰنِ وَلِيَرْبِطَ عَلٰى قُلُوْبِكُمْ وَيُثَبِّتَ بِهِ
الْاَقْدَامَ ۝ اِذْ يُوْحِيْ رَبُّكَ اِلَى الْمَلٰٓئِكَةِ اَنِّيْ مَعَكُمْ فَثَبِّتُوا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۚ سَاُلْقِيْ فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الرُّعْبَ
فَاضْرِبُوْا فَوْقَ الْاَعْنَاقِ وَاضْرِبُوْا مِنْهُمْ كُلَّ بَنَانٍ ۝ ذٰلِكَ
بِاَنَّهُمْ شَآقُّوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۚ وَمَنْ يُّشَاقِقِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاِنَّ
اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝ ذٰلِكُمْ فَذُوْقُوْهُ وَاَنَّ لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابَ
النَّارِ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا زَحْفًا فَلَا
تُوَلُّوْهُمُ الْاَدْبَارَ ۝ وَمَنْ يُّوَلِّهِمْ يَوْمَئِذٍ دُبُرَهٗٓ اِلَّا مُتَحَرِّفًا لِّقِتَالٍ
اَوْ مُتَحَيِّزًا اِلٰى فِئَةٍ فَقَدْ بَآءَ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَمَاْوٰىهُ
جَهَنَّمُ ۭ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝ فَلَمْ تَقْتُلُوْهُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ قَتَلَهُمْ
وَمَا رَمَيْتَ اِذْ رَمَيْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ رَمٰى ۚ وَلِيُبْلِيَ الْمُؤْمِنِيْنَ
مِنْهُ بَلَآءً حَسَنًا ۭ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝ ذٰلِكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ
مُوْهِنُ كَيْدِ الْكٰفِرِيْنَ ۝ اِنْ تَسْتَفْتِحُوْا فَقَدْ جَآءَكُمُ الْفَتْحُ ۚ
وَاِنْ تَنْتَهُوْا فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَاِنْ تَعُوْدُوْا نَعُدْ ۚ وَلَنْ تُغْنِيَ
عَنْكُمْ فِئَتُكُمْ شَيْـًٔا وَّلَوْ كَثُرَتْ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَا تَوَلَّوْا عَنْهُ وَ

★रु० २/१६ आ १

जब उसने (तुम्हारी) तस्कीन के लिए अपनी तरफ़ से तुम्हें नींद (की चादर) उढ़ा दी और तुम पर आसमान से पानी बरसा दिया ताकि तुम को उससे (नहला कर) पाक कर दे और शैतानी नजासत को तुम से दूर कर दे और इसलिए भी कि तुम्हारे दिलों को मज़बूत करदे और इससे तुम्हारे पांव जमाए रखे। (११) जब तुम्हारा परवरदिगार फ़रिश्तों को इर्शाद फ़रमाता था कि मैं तुम्हारे साथ हूं, तुम मोमिनों को तसल्ली दो कि साबित क़दम रहें। मैं अभी-अभी काफ़िरों के दिलों में रौब व हैबत डाले देता हूं, तो उन के सर मार (कर) उड़ा दो और उन का पोर-पोर मार कर (तोड़) दो। (१२) यह (सज़ा) इस लिए दी गयी कि उन्होंने ख़ुदा और उसके रसूल की मुख़ालफ़त की और जो शख़्स ख़ुदा और उसके रसूल की मुख़ालफ़त करता है, तो ख़ुदा भी सख़्त अज़ाब देने वाला है। (१३) यह (मज़ा तो यहां) चखो और यह (जाने रहो) कि काफ़िरों के लिए दोज़ख़ का अज़ाब (भी तैयार) है। (१४) ऐ ईमान वालो! जब लड़ाई के मैदान में कुफ़्फ़ार से तुम्हारा मुक़ाबला हो तो उन से पीठ न फेरना। (१५) और जो शख़्स लड़ाई के दिन इस सूरत के सिवा कि लड़ाई के लिए किनारे-किनारे चले (यानी हिक्मते अमली से दुश्मन को मारे) या अपनी फ़ौज में जा मिलना चाहे, उन से पीठ फेरेगा तो (समझो कि) वह ख़ुदा के ग़ज़ब में गिरफ़्तार हो गया और उस का ठिकाना दोज़ख़ है और वह बहुत ही बुरी जगह है। (१६) तुम लोगों ने उन (कुफ़्फ़ार) को क़त्ल नहीं किया, बल्कि ख़ुदा ने उन्हें क़त्ल किया और (ऐ मुहम्मद!) जिस वक़्त तुम ने कंकरियां फेंकी थीं, तो वह तुम ने नहीं फेंकी थी, बल्कि अल्लाह ने फेंकी थी। इस से यह ग़रज़ थी कि मोमिनों को अपने (एहसानों) से अच्छी तरह आज़मा ले। बेशक ख़ुदा सुनता-जानता है। (१७) (बात) यह (है), कुछ शक नहीं कि ख़ुदा काफ़िरों की तद्बीर को कमज़ोर कर देने वाला है। (१८) (काफ़िरो!) अगर तुम (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर) फ़त्ह चाहते हो, तो तुम्हारे पास फ़त्ह आ चुकी। (देखो) अगर तुम (अपने फ़ेल से) रुक जाओ तो तुम्हारे हक़ में बेहतर है और अगर फिर (ना-फ़रमानी) करोगे, तो हम भी फिर (तुम्हें अज़ाब) करेंगे और तुम्हारी जमाअत, वह कितनी ही बड़ी हो, तुम्हारे कुछ भी काम न आयेगी और ख़ुदा तो मोमिनों के साथ है★ (१९)

ऐ ईमान वालो! ख़ुदा और उस के रसूल के हुक्म पर चलो और उससे रू-गरदानी न करो

(पृष्ठ २७९ का शेष)

फ़रमाया और यही चाहा कि हथियारों से लैस फ़ौज से जंग करें और बहादुरी दिखा कर फ़त्ह हासिल करें, चुनांचे ऐसा ही हुआ। इस लड़ाई की वजह, जो ज़्यादा सही लगती है, यह है कि मक्का के क़ुरैश को मुहाजिरों और मदीने के अंसार के साथ कड़ी दुश्मनी थी और वे हमेशा उन को तक्लीफ़ पहुंचाने पर तैयार रहते थे, तो हुज़ूर सल्ल० अपने दुश्मनों के हालात और इरादों से आगाह रहने के लिए कभी-कभी मक्का के चारों तरफ़ आदमी रवाना फ़रमाते। चुनांचे एक बार नख़ला नामी जगह को, जो मक्का और ताइफ़ के बीच वाक़ेअ है, आप ने कुछ लोगों को रवाना किया, जिन के सरदार आप के फूफीज़ाद भाई अब्दुल्लाह बिन जह्श थे। नख़ला एक निहायत ख़तरनाक जगह थी और वहां जाने में बहुत ख़तरा था। आप ने अब्दुल्लाह को एहतियात के साथ एक सील मुहर परचा दिया और फ़रमाया कि मक्के की तरफ़ बराबर चले चलो। तीन दिन के बाद इस परचे को खोल कर पढ़ना और जो कुछ उस में लिखा है, उस पर अमल करना। परचे में लिखा था, 'नख़ला तक चले जाओ और वहां पहुंच कर छिपे तौर पर क़ुरैश के हालात मालूम करो और हमारे पास उन की ख़बर लाओ।' मगर वहां

(शेष पृष्ठ २८३ पर)

★रु० २/१६ आ ९

व ला तकूनू कल्लज़ी-न क़ालू समिअ्-ना व हुम् ला यस्मअून (२१) इन्-न शर्रद्दवाब्बि अिन्दल्लाहिस्सुम्मुल्-बुक्मुल्लज़ी-न ला यअ्-क़िलून (२२) व लौ अ़लिमल्लाहु फ़ीहिम् ख़ैरल्-ल अस्म-अहुम्, व लौ अस्म-अहुम् ल-त-वल्लव्वहुम् मुअ्-रिज़ून (२३) या अय्युहल्लज़ी-न आमनुस्तजीबू लिल्लाहि व लिर्रसूलि इज़ा दआकुम् लिमा युह़्यीकुम् ८ वअ्-लमू अन्नल्ला-ह यहूलु बैनल्मरइ व क़ल्बिही व अन्नहू इलैहि तुह़्शरून (२४) वत्तक़ू फ़ित्-न-तल्ला-तुसीबन्नल्लज़ी-न ज़-लमू मिन्कुम् ख़ास्सतन् ८ वअ्-लमू अन्नल्ला-ह शदीदुल्-अिक़ाब (२५) वज़्कुरू इज़् अन्तुम् क़लीलुम्-मुस्तज़्-अफ़ू-न फ़िल्अर्ज़ि तख़ाफ़ू-न अंय्य-त-ख़त्त-फ़-कुमुन्नासु फ़-आवाकुम् व अय्य-दकुम् बिनस्रिही व र-ज़-क़कुम् मिनत्तय्यिबाति ल-अ़ल्लकुम् तश्कुरून (२६) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तख़ूनुल्ला-ह वर्रसू-ल व तख़ूनू अमानातिकुम् व अन्तुम् तअ्-लमून (२७)

وَأَنْتُمْ تَسْمَعُونَ ۝ وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ قَالُوا سَمِعْنَا وَهُمْ
لَا يَسْمَعُونَ ۝ إِنَّ شَرَّ الدَّوَابِّ عِنْدَ اللَّهِ الصُّمُّ الْبُكْمُ الَّذِينَ
لَا يَعْقِلُونَ ۝ وَلَوْ عَلِمَ اللَّهُ فِيهِمْ خَيْرًا لَأَسْمَعَهُمْ وَلَوْ أَسْمَعَهُمْ
لَتَوَلَّوْا وَهُمْ مُعْرِضُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَجِيبُوا لِلَّهِ
وَلِلرَّسُولِ إِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيكُمْ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَحُولُ
بَيْنَ الْمَرْءِ وَقَلْبِهِ وَأَنَّهُ إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ۝ وَاتَّقُوا فِتْنَةً لَا
تُصِيبَنَّ الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْكُمْ خَاصَّةً وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ
الْعِقَابِ ۝ وَاذْكُرُوا إِذْ أَنْتُمْ قَلِيلٌ مُسْتَضْعَفُونَ فِي الْأَرْضِ
تَخَافُونَ أَنْ يَتَخَطَّفَكُمُ النَّاسُ فَآوَاكُمْ وَأَيَّدَكُمْ بِنَصْرِهِ
وَرَزَقَكُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا
لَا تَخُونُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ وَتَخُونُوا أَمَانَاتِكُمْ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝
وَاعْلَمُوا أَنَّمَا أَمْوَالُكُمْ وَأَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ وَأَنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ
أَجْرٌ عَظِيمٌ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنْ تَتَّقُوا اللَّهَ يَجْعَلْ لَكُمْ
فُرْقَانًا وَيُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ
الْعَظِيمِ ۝ وَإِذْ يَمْكُرُ بِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِيُثْبِتُوكَ أَوْ يَقْتُلُوكَ
أَوْ يُخْرِجُوكَ وَيَمْكُرُونَ وَيَمْكُرُ اللَّهُ وَاللَّهُ خَيْرُ الْمَاكِرِينَ ۝
وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا قَالُوا قَدْ سَمِعْنَا لَوْ نَشَاءُ لَقُلْنَا مِثْلَ

वअ्-लमू अन्नमा अम्वालुकुम् व औलादुकुम् फ़ित्-नतुंव्-व अन्नल्ला-ह अिन्दहू अज्रुन् अ़ज़ीम★(२८) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इन् तत्तक़ुल्ला-ह यज्-अ़ल्लकुम् फ़ुर्-क़ानंव्-व युकफ़्फ़िर् अन्कुम् सय्यिआतिकुम् व यग़्फ़िर् लकुम्, वल्लाहु ज़ुल्-फ़ज़्लिल्-अ़ज़ीम (२९) व इज़् यम्कुरु बिकल्लज़ी-न क-फ़रू लियुस्बितू-क औ यक़्तुलू-क औ युख़्रिजू-क, व यम्कुरू-न व यम्कुरुल्लाहु, वल्लाहु ख़ैरुल्-माकिरीन (३०) व इज़ा तुत्ला अ़लैहिम् आयातुना क़ालू क़द् समिअ्-ना लौ नशाउ ल-क़ुल्ना मिस्-ल हाज़ा, इन् हाज़ा इल्ला असातीरुल्-अव्वलीन (३१)

★रु. ३१७आ ६

और तुम सुनते हो। (२०) और उन लोगों जैसे न होना जो कहते हैं कि हम ने (खुदा का हुक्म)
सुन लिया, मगर (हक़ीक़त में) नहीं सुनते। (२१) कुछ शक नहीं कि खुदा के नज़दीक
तमाम जानदारों से बद-तर बहरे गूंगे हैं, जो कुछ नहीं समझते। (२२) और अगर खुदा उन में
नेकी (का माद्दा) देखता तो उन को सुनने की तौफ़ीक़ बख़्शता और अगर (हिदायत की सलाहियत
के बग़ैर) समाअत देता तो वे मुंह फेर कर भाग जाते। (२३) मोमिनो! खुदा और उस के रसूल
का हुक्म क़ुबूल करो, जब कि खुदा के रसूल तुम्हें ऐसे काम के लिए बुलाते हैं, जो तुम को ज़िंदगी
(हमेशा की) बख़्शता है और जान रखो कि खुदा आदमी और उसके दिल के दर्मियान हायल हो
जाता है और यह भी कि तुम सब उस के रू-ब-रू जमा किये जाओगे। (२४) और उस फ़ित्ने से
डरो, जो ख़ुसूसियत के साथ उन्हीं लोगों पर वाक़ेअ न होगा, जो तुम में गुनाहगार हैं और जान रखो
कि खुदा सख़्त अज़ाब देने वाला है। (२५) और (उस वक़्त को) याद करो, जब तुम ज़मीन
(मक्का) में थोड़े और कमज़ोर समझे जाते थे और डरते रहते थे कि लोग तुम्हें उड़ा (न) ले जाएं
(यानी बे-घर-बार न कर दें) तो उस ने तुम को जगह दी और अपनी मदद से तुम को ताक़त बख़्शी
और पाकीज़ा चीज़ें खाने को दीं, ताकि (उस का) शुक्र करो। (२६) ऐ ईमान वालो! न तो खुदा
और रसूल की अमानत में ख़ियानत करो और न अपनी अमानतों में ख़ियानत करो और तुम (इन
बातों को) जानते हो। (२७) और जान रखो कि तुम्हारा माल और औलाद बड़ी आज़माइश है
और यह कि खुदा के पास (नेकियों का) बड़ा सवाब है। (२८) ★

मोमिनो! अगर तुम खुदा से डरोगे, तो वह तुम्हारे लिए फ़र्क़ करने वाली चीज़ पैदा कर देगा
(यानी तुम को मुम्ताज़ कर देगा) और तुम्हारे गुनाह मिटा देगा और तुम्हें बख़्श देगा और खुदा
बड़े फ़ज़्ल वाला है। (२९) और (ऐ मुहम्मद! उस वक़्त को याद करो) जब काफ़िर लोग तुम्हारे
बारे में चाल चल रहे थे कि तुम को क़ैद कर दें या जान से मार डालें या (वतन से) निकाल दें तो
(इधर से) वे चाल चल रहे थे और (उधर) खुदा चाल चल रहा था और खुदा सब से बेहतर चाल
चलने वाला है। (३०) और जब उन को हमारी आयतें पढ़ कर सुनायी जाती हैं तो कहते हैं, (यह
कलाम) हमने सुन लिया है, अगर हम चाहें तो इसी तरह का (कलाम) हम भी कह दें और यह है

(पृष्ठ २८१ का शेष)
और ही मामला पेश आया, कि उन के नख़्ले में पहुंचने के दो दिन बाद क़ुरैश का एक छोटा-सा क़ाफ़िला तायफ़
से तिजारत का माल लिए हुए आ पहुंचा। अब्दुल्लाह और उन के साथियों को इर्शादे नबवी और इस परचे का
ख़्याल न रहा और उन्हों ने उन लोगों पर हमला कर दिया। नतीजा यह हुआ कि अम्र बिन अब्दुल्लाह हज़रमी
जो मक्के के सरदारों में से था, तीर से मारा गया और हकम बिन केसान और उस्मान बिन अब्दुल्लाह मख़्ज़ूमी
गिरफ़्तार हो गये। जनाब रसूले खुदा सल्ल० ने उन लोगों को इस हरकत पर बहुत मलामत की और क़ैदियों को
भी छोड़ दिया और अब्दुल्लाह बिन हज़रमी का ख़ून बहा भी अपने पास से दे दिया। मगर मक्का वालों के कपट
की आग बग़ैर भड़के न रही और उन्हों ने साढ़े नौ सौ के क़रीब लड़ने के तजुर्बेकार योद्धा जमा किये, जिन में से
तीन सौ के पास घोड़े और बाक़ी के पास सवारी और बोझ ढोने के लिए सात सौ ऊंट थे। इस के अलावा किसी
ने यह हवाई उड़ा दी कि जनाब रसूलुल्लाह अबू सुफ़ियान वाले क़ाफ़िले को जो शाम से मक्के को आ रहा है,
लूटने का इरादा रखते हैं। इस ख़बर से उन का ग़ुस्सा और भी भड़क उठा और वे फ़ौरन मदीना पर हमला
करने के लिए निकल खड़े हुए। इधर मदीने में यह ख़बर पहुंच चुकी थी कि मक्का के क़ुरैश बहुत ज़ोर-शोर से
(शेष पृष्ठ २८५ पर)

★रु. ३/१७ आ ९

व इज़् क़ालुल्लाहुम्-म इन् का-न हाज़ा हुवल्हक्-क़ मिन् अिन्दि-क फ़-अम्तिर् अलैना हिजा-र-तम्-मिनस्समाइ अविअ्तिना बिअ़जाबिन् अलीम (३२) व मा कानल्लाहु लियुअ़ज्जिबहुम् व अन्-त फ़ीहिम् ط व मा कानल्लाहु मुअ़ज्जिबहुम् व हुम् यस्तग़्फ़िरून (३३) व मा लहुम् अल्ला युअ़ज़्ज़िब-हुमुल्लाहु व हुम् यसुद्दू-न अ़निल्-मस्जिदिल्-हरामि व मा कानू औलिया-अहू ط इन् औलिया-उहू इल्लल्-मुत्तकू-न व लाकिन्-न अक्स-रहुम् ला यअ्-लमून (३४) व मा का-न सलातुहुम् अिन्दल्बैति इल्ला मुकाअंव्-व तस्दि-य-तन् ط फ़ज़ूकुल् - अ़ज़ा - ब बिमा कुन्तुम् तक्फ़ुरून (३५) इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू युन्फ़िक़ू-न अम्वालहुम् लियसुद्दू अन् सबीलिल्लाहि ط फ़-स-युन्फ़िक़ू-न-हा सुम् - म तकूनु अ़लैहिम् हस्-र-तन् सुम्-म युग़्लबू-न ط वल्लज़ी-न क-फ़रू इला ज - हन्न - म युह्शरून لا (३६) लियमीज़ल्लाहुल् - ख़बी-स मिनत्तय्यिबि व यज्-अ-लल्-ख़बी-स बअ्-ज़हू अ़ला बअ्-ज़िन् फ़-यर्कुमहू जमीअ़न् फ़ - यज्अ़ - लहू फ़ी जहन्न-म ط उला - इ - क हुमुल्ख़ासिरून ★ (३७) कुल् लिल्लज़ी-न क-फ़रू इंय्यन्तहू युग़्फ़र् लहुम् मा क़द् स - लफ़ ج व इंय्यअ़ूदू फ़-क़द् म-ज़त् सुन्नतुल् - अव्वलीन (३८) व क़ातिलू - हुम् हत्ता ला तकू - न फ़ित्नतुंव्-व यकूनद्दीनु कुल्लुहू लिल्लाहि ج फ़इनिन्तहौ फ़इन्नल्ला-ह बिमा यअ् - मलू - न बसीर (३९) व इन् तवल्लौ फ़अ्-लमू अन्नल्ला-ह मौलाकुम् ط निअ्-मल्मौला व निअ्-मन्नसीर (४०)

هٰذَآ اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝ وَاِذْ قَالُوا اللّٰهُمَّ اِنْ
كَانَ هٰذَا هُوَ الْحَقَّ مِنْ عِنْدِكَ فَاَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً مِّنَ السَّمَآءِ
اَوِ ائْتِنَا بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَاَنْتَ فِيْهِمْ ط
وَمَا كَانَ اللّٰهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ ۝ وَمَا لَهُمْ اَلَّا
يُعَذِّبَهُمُ اللّٰهُ وَهُمْ يَصُدُّوْنَ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَمَا كَانُوْٓا
اَوْلِيَآءَهٗ ط اِنْ اَوْلِيَآؤُهٗٓ اِلَّا الْمُتَّقُوْنَ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝
وَمَا كَانَ صَلَاتُهُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ اِلَّا مُكَآءً وَّتَصْدِيَةً ط فَذُوْقُوا
الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُنْفِقُوْنَ
اَمْوَالَهُمْ لِيَصُدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ط فَسَيُنْفِقُوْنَهَا ثُمَّ تَكُوْنُ
عَلَيْهِمْ حَسْرَةً ثُمَّ يُغْلَبُوْنَ ۵ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى جَهَنَّمَ
يُحْشَرُوْنَ ۝ لِيَمِيْزَ اللّٰهُ الْخَبِيْثَ مِنَ الطَّيِّبِ وَيَجْعَلَ الْخَبِيْثَ
بَعْضَهٗ عَلٰى بَعْضٍ فَيَرْكُمَهٗ جَمِيْعًا فَيَجْعَلَهٗ فِيْ جَهَنَّمَ ط اُولٰٓئِكَ
هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝ قُلْ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ يَّنْتَهُوْا يُغْفَرْ لَهُمْ
مَّا قَدْ سَلَفَ ج وَاِنْ يَّعُوْدُوْا فَقَدْ مَضَتْ سُنَّتُ الْاَوَّلِيْنَ ۝
وَقَاتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَّيَكُوْنَ الدِّيْنُ كُلُّهٗ
لِلّٰهِ ج فَاِنِ انْتَهَوْا فَاِنَّ اللّٰهَ بِمَا يَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝ وَاِنْ
تَوَلَّوْا فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَوْلٰىكُمْ ط نِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ ۝

★रु.४/१८ आ ६

ही क्या, सिर्फ़ अगले लोगों की हिकायतें है। (३१) और जब उन्होंने कहा कि ऐ ख़ुदा! अगर यह (क़ुरआन) तेरी तरफ़ बरहक़ है, तो हम पर आसमान से पत्थर बरसा या कोई और तक्लीफ़ देने वाला अज़ाब भेज। (३२) और ख़ुदा ऐसा न था कि जब तक तुम उन में थे, उन्हें अज़ाब देता और न ऐसा था कि वे बख़्शिश मांगें और उन्हें अज़ाब दे। (३३) और (अब) उन के लिए कौन-सी वजह है कि वह उन्हें अज़ाब न दे, जबकि वह मस्जिदे मोहतरम (में नमाज़ पढ़ने) से रोकते हैं और वे उस मस्जिद के मुतवल्ली भी नहीं। उसके मुतवल्ली तो सिर्फ़ परहेज़गार हैं, लेकिन उन में के अक्सर नहीं जानते, (३४) और उन लोगों की नमाज़ ख़ाना-ए-काबा के पास सीटियां और तालियां बजाने के सिवा कुछ न थी, तो तुम जो कुफ़्र करते थे, अब उस के बदले अज़ाब (का मज़ा) चखो। (३५) जो लोग काफ़िर हैं, अपना माल ख़र्च करते हैं कि (लोगों को) ख़ुदा के रास्ते से रोकें, सो अभी और ख़र्च करेंगे मगर आख़िर वह (ख़र्च करना) उनके लिए अफ़सोस (की वजह) होगा और वे मग़लूब हो जाएंगे। और काफ़िर लोग दोज़ख़ की तरफ़ हांके जाएंगे, (३६) ताकि ख़ुदा पाक को ना-पाक से अलग कर दे और ना-पाक को एक दूसरे पर रख कर एक ढेर बना दे। फिर उस को दोज़ख़ में डाल दे। यही लोग घाटा पाने वाले हैं। (३७) ★

(ऐ पैग़म्बर!) कुफ़्फ़ार से कह दो कि अगर वे अपने फ़ेलों से बाज़ आ जाएं तो जो हो चुका, वह उन्हें माफ़ कर दिया जाएगा और अगर फिर (वही हरकतें) करने लगेंगे तो अगले लोगों का (जो) तरीक़ा जारी हो चुका है (वही उन के हक़ में बरता जाएगा), (३८) और उन लोगों से लड़ते रहो, यहां तक कि फ़िला (यानी कुफ़्र का फ़साद) बाक़ी न रहे और दीन सब ख़ुदा ही का हो जाए और अगर बाज़ आ जाएं तो ख़ुदा उन के कामों को देख रहा है। (३९) और अगर रू-गरदानी करें तो जान रखो कि ख़ुदा तुम्हारा हिमायती है (और) वह ख़ूब हिमायती और ख़ूब मददगार है। (४०)

(पृष्ठ २८३ का शेष)
मदीने पर चढ़ाई की तैयारियां कर रहे हैं। ऐसी हालत में ज़रूरी था कि रसूले ख़ुदा सल्ल० अपनी हिफ़ाज़त का इन्तिज़ाम फ़रमाते, तो आप ने तीन सौ तेरह आदमियों के साथ मदीने से कूच फ़रमाया, जिन में से एक या दो के पास घोड़े थे और बाक़ी के पास सिर्फ़ सत्तर ऊंट थे, जिन पर बारी-बारी तीन-तीन, चार-चार आदमी सवार होते थे। चुनांचे ख़ुद जनाब सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ि० और ज़ैद बिन हारिसा रज़ि० एक ही ऊंट पर बारी-बारी सवार होते रहे। जब बद्र के मक़ाम पर पहुंचे तो क़ुरैश से लड़ाई हुई, जिस में उन के सत्तर आदमी मारे गये और इतने ही गिरफ़्तार हुए और बहुत-सा माल व अस्बाब मुसलमानों के हाथ आया। मक़्तूलों में अबू जह्ल, उत्बा बिन रबीआ, शैबा बिन रबीआ, वलीद बिन उत्बा, हंज़ला बिन सुफ़ियान, नौफ़ुल और अबुल बख़्तरी वग़ैरह चौबीस आदमी क़ुरैश के सरदारों में से थे, जिन में से इब्ने हिशाम की रिवायत के मुताबिक़ नौ को हज़रत अली रज़ि० ने क़त्ल किया था। मुसलमानों में से सिर्फ़ चौदह आदमी मारे गये, जिन में छः मुहाजिर और आठ अंसार थे। क़ुरआन की आयतों को देखो, पांचवीं आयत से मालूम होता है कि नबी सल्ल० अभी मदीने ही में थे और कूच नहीं फ़रमाया था कि सहाबा रज़ि० में इख़्तिलाफ़ हो गया। कुछ लड़ाई को पसन्द करते थे और कुछ ना-पसन्द करते थे। छठी आयत से मालूम होता है कि मुसलमान मक्का के क़ुरैश की इस भारी फ़ौज से हिचकिचाते थे, जो उन्हों ने मदीने पर हमले की ग़रज़ से जमा की थी वरना तिजारत के क़ाफ़िले को लूट लेने के इरादे से तक्लीफ़ करना किसी सूरत में भी मौत की तरफ़

(शेष पृष्ठ २८७ पर)

★रु. ४/१८ आ ६

दसवां पारः वअ्-लमू

सूरतुल्-अन्फ़ालि आयत ४१ से ७५

वअ्-लमू अन्नमा ग़निम्तुम् मिन् शैइन् फ़-अन्-न लिल्लाहि ख़ुमुसहू व लिर्रसूलि व लिज़िल्क़ुर्बा वल्यतामा वल्मसाकीनि वब्निस्सबीलि ॥ इन् कुन्तुम् आमन्तुम् बिल्लाहि व मा अन्ज़ल्ना अ़ला अ़ब्दिना यौमल्फ़ुर्क़ानि यौमल्-त-क़ल्-जम्आनि ॰ वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (४१) इज़् अन्तुम् बिल्-अुद्वतिद्दुन्या व हुम् बिल्-अुद्वतिल्-क़ुस्वा वर्रक्बु अस्फ़-ल मिन्कुम् ॰ व लौ तवा - अ़त्तुम् लख़्त - लफ़्तुम् फ़िल्मीआदि ॥ व लाकिल्-लियक़्-ज़ियल्लाहु अम्रन् का-न मफ़् - अूलल्ॅ- लियह्लि - क मन् ह-ल-क अम्बय्यिनतिंव्-व यह्या मन् हय्-य अम्बय्यिनतिन् ॰ व इन्नल्ला-ह ल - समीअुन् अ़लीम ॥ (४२) इज़् युरीकहुमुल्लाहु फ़ी मनामि-क क़लीलन् ॰ व लौ अराकहुम् कसीरल्-ल फ़शिल्तुम् व ल-तनाज़अ्-तुम् फ़िल्अम्रि व लाकिन्नल्ला-ह सल्ल-म ॰ इन्नहू अ़लीमुम्-बिज़ातिस्सुदूर (४३) व इज़् युरीकुमूहुम् इज़िल्तक़ैतुम् फ़ी अअ्-युनिकुम् क़लीलंव्-व युक़ल्लिलुकुम् फ़ी अअ्-युनिहिम् लियक़्-ज़ियल्लाहु अम्रन् का-न मफ़्-अूलन् ॰ व इलल्लाहि तुर्जअुल् - उमूर ★ (४४) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इज़ा लक़ीतुम् फ़ि-अ-तन् फ़स्बुतू वज़्कुरुल्ला-ह कसीरल्-ल - अ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून ८ (४५) व अतीअुल्ला - ह व रसूलहू व ला तनाज़अू फ़ - तफ़्शलू व तज़् - ह - ब रीहुकुम् वस्बिरू ॰ इन्नल्ला - ह म-अ़स्साबिरीन ८ (४६) व ला तकूनू कल्लज़ी-न ख़-र-जू मिन् दियारिहिम् ब-त़रंव्-व रिआ-अन्नासि व यसुद्दू-न अ़न् सबीलिल्लाहि ॰ वल्लाहु बिमा यअ् - मलू - न मुहीत़ (४७)

الانفال ٨ — ١٧٥ — واعلموا ١٠

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِّنْ شَیْءٍ فَاَنَّ لِلّٰهِ خُمُسَهٗ وَلِلرَّسُوْلِ
وَلِذِی الْقُرْبٰی وَالْیَتٰمٰی وَالْمَسٰكِیْنِ وَابْنِ السَّبِیْلِ اِنْ كُنْتُمْ
اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلٰی عَبْدِنَا یَوْمَ الْفُرْقَانِ یَوْمَ الْتَقَی
الْجَمْعٰنِ وَاللّٰهُ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ۝ اِذْ اَنْتُمْ بِالْعُدْوَةِ الدُّنْیَا
وَهُمْ بِالْعُدْوَةِ الْقُصْوٰی وَالرَّكْبُ اَسْفَلَ مِنْكُمْ وَلَوْ تَوَاعَدْتُّمْ
لَاخْتَلَفْتُمْ فِی الْمِیْعٰدِ وَلٰكِنْ لِّیَقْضِیَ اللّٰهُ اَمْرًا كَانَ مَفْعُوْلًا ۙ
لِّیَهْلِكَ مَنْ هَلَكَ عَنْۢ بَیِّنَةٍ وَّیَحْیٰی مَنْ حَیَّ عَنْۢ بَیِّنَةٍ وَاِنَّ
اللّٰهَ لَسَمِیْعٌ عَلِیْمٌ ۝ اِذْ یُرِیْكَهُمُ اللّٰهُ فِیْ مَنَامِكَ قَلِیْلًا وَلَوْ
اَرٰىكَهُمْ كَثِیْرًا لَّفَشِلْتُمْ وَلَتَنَازَعْتُمْ فِی الْاَمْرِ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ
سَلَّمَ اِنَّهٗ عَلِیْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝ وَاِذْ یُرِیْكُمُوْهُمْ اِذِ الْتَقَیْتُمْ
فِیْٓ اَعْیُنِكُمْ قَلِیْلًا وَّیُقَلِّلُكُمْ فِیْٓ اَعْیُنِهِمْ لِیَقْضِیَ اللّٰهُ اَمْرًا
كَانَ مَفْعُوْلًا وَاِلَی اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۝ یٰٓاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْٓا
اِذَا لَقِیْتُمْ فِئَةً فَاثْبُتُوْا وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِیْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝
وَاَطِیْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَا تَنَازَعُوْا فَتَفْشَلُوْا وَتَذْهَبَ رِیْحُكُمْ
وَاصْبِرُوْا اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِیْنَ ۝ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِیْنَ
خَرَجُوْا مِنْ دِیَارِهِمْ بَطَرًا وَّرِئَآءَ النَّاسِ وَیَصُدُّوْنَ عَنْ
سَبِیْلِ اللّٰهِ وَاللّٰهُ بِمَا یَعْمَلُوْنَ مُحِیْطٌ ۝ وَاِذْ زَیَّنَ لَهُمُ

★ रु. ५/१ आ ७

और जान रखो कि जो चीज़ तुम (कुफ़्फ़ार से) लूट कर लाओ उसमें से पांचवां हिस्सा ख़ुदा का और उस के रसूल का और क़राबतदारों का और यतीमों का और मुहताजों का और मुसाफ़िरों का है। अगर तुम ख़ुदा पर और उस (मदद) पर ईमान रखते हो, जो (हक़ व बातिल में) फ़र्क़ करने के दिन (यानी बद्र की लड़ाई में) जिस दिन दोनों फ़ौजों में मुठभेड़ हो गयी, अपने बन्दे (मुहम्मद) पर नाज़िल फ़रमायी और ख़ुदा हर चीज़ पर क़ादिर है। (४१) जिस वक़्त तुम (मदीने से) क़रीब के नाके पर थे और काफ़िर दूर के नाके पर और क़ाफ़िला तुम से नीचे (उतर गया) था और अगर तुम (लड़ाई के लिए) आपस में क़रारदाद कर लेते तो तै किये हुए वक़्त पर (जमा होने) में आगे-पीछे हो जाता, लेकिन ख़ुदा को मंज़ूर था कि जो काम हो कर रहने वाला था, उसे कर ही डाले, ताकि जो मरे बसीरत पर (यानी यक़ीनी जान कर) मरे और जो जीता रहे, वह भी बसीरत पर (यानी हक़ पहचान कर) जीता रहे और कुछ शक नहीं कि ख़ुदा सुनता-जानता है। (४२) उस वक़्त ख़ुदा ने ख़्वाब में काफ़िरों को थोड़ी तायदाद में दिखाया और अगर बहुत कर के दिखाता तो तुम लोग जी छोड़ देते और (जो) काम (सामने था, उस) में झगड़ने लगते, लेकिन ख़ुदा ने (तुम्हें इस से) बचा लिया। बेशक वह सीनों की बातों तक को जानता है। (४३) और उस वक़्त जब तुम एक दूसरे के मुक़ाबले में हुए तो काफ़िरों को तुम्हारी नज़रों में थोड़ा कर के दिखाता था, और तुम को उन की निगाहों में थोड़ा कर के दिखाता था, ताकि ख़ुदा को जो काम करना मंज़ूर था, उसे कर डाले और सब कामों का रुजू ख़ुदा ही की तरफ़ है। (४४) ★

मोमिनो! जब (कुफ़्फ़ार की) किसी जमाअत स तुम्हारा मुक़ाबला हो, तो साबित क़दम रहो और ख़ुदा को बहुत याद करो, ताकि मुराद हासिल करो। (४५) और ख़ुदा और उस के रसूल के हुक्म पर चलो और आपस में झगड़ा न करना कि (ऐसा करोगे तो) तुम बुज़दिल हो जाओगे और तुम्हारा इक़बाल जाता रहेगा और सब्र से काम लो कि ख़ुदा सब्र करने वाले का मददगार है। (४६) और उन लोगों जैसे न होना, जो इतराते हुए (यानी हक़ का मुक़ाबला करने के लिए) और लोगों को दिखाने के लिए घरों से निकल आये और लोगों को ख़ुदा की राह से रोकते हैं। और जो आमाल

(पृष्ठ २८५ का शेष)

हांका जाना नहीं हो सकता। सातवीं आयत में दो गिरोहों का ज़िक्र है, एक जो लड़ाइ का साज़ व सामान नहीं रखता था और वह अबू सुफ़ियान का तिजारत का क़ाफ़िला था, जो शाम से आ रहा था। दूसरा गिरोह मक्का के क़ुरैश यानी अबू जह्ल का लश्कर था, जिस की तायदाद बहुत ज़्यादा थी और जिस के साथ बहुत-सा जंग का सामान था, ग़रज़ बे-हथियार लोगों पर हमला करना तो ख़ुदा को मंज़ूर और पसंद न था, हथियारों से लैस फ़ौज का मुक़ाबला किया गया, तो उस के वायदे के मुताबिक़ मुसलमानों को फ़त्ह हासिल हुई।

व इज् ज़य्य-न लहुमुश्शैतानु अअ्-मालहुम् व क़ा-ल ला ग़ालि-ब लकुमुल्यौ-म मिनन्नासि व इन्नी जारुल्लकुम् ८ फ़-लम्मा तरा-अतिल् - फ़ि-अतानि न-क-स अला अक़िबैहि व क़ा-ल इन्नी बरीउम्-मिन्कुम् इन्नी अरा मा ला तरौ-न इन्नी अख़ाफ़ुल्ला-ह ↄ वल्लाहु शदीदुल् - अिक़ाब ★(४८) इज् यक़ूलुल्-मुनाफ़िक़ू-न वल्लज़ी - न फ़ी क़ुलूबिहिम् म-र-ज़ुन् ग़र्-र हाउला-इ दीनुहुम् ↄ व मंय्य-त-वक्कल् अ-लल्लाहि फ़-इन्नल्ला-ह अज़ीज़ुन् हकीम (४९) व लौ तरा इज् य-त-वफ़्फ़ल्लज़ी - न क-फ़रू-ण –ल्मलाइकतु यज़्रिबू - न वुजूहहुम् व अद्बारहुम् ८ व ज़ूक़ू अज़ाबल्-हरीक़ (५०) ज़ालि-क बिमा क़द्-द-मत् ऐदीकुम् व अन्नल्ला-ह लै-स बिज़ल्लामिल् - लिल्अबीद ण (५१) क-दअ्बि आलि फ़िर्औ-न ण वल्लज़ी- - न मिन् क़ब्लिहिम् ↄ क-फ़रू बिआयातिल्लाहि फ़-अ-ख़-ज़हुमुल्लाहु बिज़ुनूबिहिम् ↄ इन्नल्ला-ह क़विय्युन् शदीदुल् अिक़ाब (५२) ज़ालि-क

الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ وَقَالَ لَا غَالِبَ لَكُمُ الْيَوْمَ مِنَ النَّاسِ وَ
اِنِّیْ جَارٌ لَّكُمْ ۚ فَلَمَّا تَرَآءَتِ الْفِئَتٰنِ نَكَصَ عَلٰی عَقِبَیْهِ وَقَالَ
اِنِّیْ بَرِیْٓءٌ مِّنْكُمْ اِنِّیْٓ اَرٰی مَا لَا تَرَوْنَ اِنِّیْٓ اَخَافُ اللّٰهَ ؕ وَاللّٰهُ
شَدِیْدُ الْعِقَابِ ۞ اِذْ یَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالَّذِیْنَ فِیْ قُلُوْبِهِمْ
مَّرَضٌ غَرَّ هٰۤؤُلَآءِ دِیْنُهُمْ ؕ وَمَنْ یَّتَوَكَّلْ عَلَی اللّٰهِ فَاِنَّ اللّٰهَ
عَزِیْزٌ حَكِیْمٌ ۞ وَلَوْ تَرٰۤی اِذْ یَتَوَفَّی الَّذِیْنَ كَفَرُوا الْمَلٰٓئِكَةُ
یَضْرِبُوْنَ وُجُوْهَهُمْ وَاَدْبَارَهُمْ ۚ وَذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِیْقِ ۞ ذٰلِكَ
بِمَا قَدَّمَتْ اَیْدِیْكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ لَیْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِیْدِ ۞ كَدَاْبِ
اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَفَرُوْا بِاٰیٰتِ اللّٰهِ فَاَخَذَهُمُ
اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ قَوِیٌّ شَدِیْدُ الْعِقَابِ ۞ ذٰلِكَ بِاَنَّ
اللّٰهَ لَمْ یَكُ مُغَیِّرًا نِّعْمَةً اَنْعَمَهَا عَلٰی قَوْمٍ حَتّٰی یُغَیِّرُوْا مَا
بِاَنْفُسِهِمْ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ سَمِیْعٌ عَلِیْمٌ ۞ كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَ
الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَذَّبُوْا بِاٰیٰتِ رَبِّهِمْ فَاَهْلَكْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ
وَاَغْرَقْنَاۤ اٰلَ فِرْعَوْنَ ۚ وَكُلٌّ كَانُوْا ظٰلِمِیْنَ ۞ اِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ
عِنْدَ اللّٰهِ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا فَهُمْ لَا یُؤْمِنُوْنَ ۞ اَلَّذِیْنَ عٰهَدْتَّ
مِنْهُمْ ثُمَّ یَنْقُضُوْنَ عَهْدَهُمْ فِیْ كُلِّ مَرَّةٍ وَّهُمْ لَا یَتَّقُوْنَ ۞
فَاِمَّا تَثْقَفَنَّهُمْ فِی الْحَرْبِ فَشَرِّدْ بِهِمْ مَّنْ خَلْفَهُمْ لَعَلَّهُمْ

बि-अन्नल्ला-ह लम् यकु मुग़य्यिरन्-निअ्-म-तन् अन्-अ-महा अला क़ौमिन् हत्ता युग़य्यिरू मा बिअन्फ़ुसिहिम् ण व अन्नल्ला-ह समीअुन् अलीम ण (५३) क-दअ्बि आलि फ़िर्औ - न ण वल्लज़ी - न मिन् क़ब्लिहिम् ↄ कज़्ज़बू बिआयाति रब्बिहिम् फ़-अह्लक्नाहुम् बिज़ुनूबिहिम् व अग़्रक़्ना आ-ल फ़िर्औ-न ८ व कुल्लुन् कानू ज़ालिमीन (५४) इन्-न शर्रद्-दवाब्बि अिन्दल्लाहिल्लज़ी-न क-फ़रू फ़हुम् ला युअ्मिनून (५५) अल्लज़ी-न आहत्-त मिन्हुम् सुम्-म यन्क़ुज़ू-न अह्-दहुम् फ़ी कुल्लि मर्रतिंव्-व-हुम् ला यत्तक़ून (५६) फ़-इम्मा तस्क़फ़न्नहुम् फ़िल्हर्बि फ़-शर्रिद् बिहिम् मन् ख़ल्फ़हुम् ल-अल्लहुम् यज़्ज़क्करून (५७)

★रु. ६/ २ आ ४

ये करते हैं, ख़ुदा उन पर एहाता किये हुए है। (४७) और जब शैतानों ने उन के आमाल उन को सजा कर दिखाये और कहा कि आज के दिन लोगों में से कोई तुम पर ग़ालिब न होगा और मैं तुम्हारा साथी हूं, (लेकिन) जब दोनों फ़ौजें एक दूसरे के मुक़ाबले में (आ खड़ी) हुईं तो पसपा हो कर चल दिया और कहने लगा कि मुझे तुम से कोई वास्ता नहीं। मैं तो ऐसी चीज़ें देख रहा हूं, जो तुम नहीं देख सकते। मुझे तो ख़ुदा से डर लगता है और ख़ुदा सख़्त अज़ाब करने वाला है। (४८) ★

उस वक़्त मुनाफ़िक़ और (काफ़िर), जिन के दिलों में मर्ज़ था कहते थे कि उन लोगों को उन के दीन ने घमंड में डाल रखा है और जो शख़्स ख़ुदा पर भरोसा रखता है, तो ख़ुदा ग़ालिब हिक्मत वाला है। (४९) और काश ! तुम उस वक़्त (की कैफ़ियत) देखो, जब फ़रिश्ते काफ़िरों की जानें निकालते हैं, उन के मुंहों और पीठों पर (कोड़े और हथोड़े वग़ैरह) मारते (हैं और कहते) हैं कि (अब) आग के अज़ाब (का मज़ा) चखो। (५०) यह उन (आ़माल) की सज़ा है, जो तुम्हारे हाथों ने आगे भेजे हैं और यह (जान रखो) कि ख़ुदा बन्दों पर ज़ुल्म नहीं करता। (५१) जैसा हाल फ़िऔ़नियों का और उन से पहले लोगों का (हुआ था, वैसा ही उन का हुआ कि) उन्होंने ख़ुदा की आयतों से कुफ़्र किया, तो ख़ुदा ने उनके गुनाहों की सज़ा में उन को पकड़ लिया। बेशक ख़ुदा ज़बरदस्त और सख़्त अज़ाब देने वाला है। (५२) यह इस लिए कि जो नेमत ख़ुदा किसी क़ौम को दिया करता है, जब तक वे ख़ुद अपने दिलों की हालत न बदल डालें, ख़ुदा उसे बदला नहीं करता। और इस लिए कि ख़ुदा सुनता-जानता है। (५३) जैसा हाल फ़िऔ़नियों और उन से पहले लोगों का (हुआ था, वैसा ही उनका हुआ), उन्हों ने अपने परवरदिगार की आयतों को झुठलाया तो हमने उनके गुनाहों की वजह से हलाक कर डाला और फ़िऔ़नियों को डुबा दिया और वे सब ज़ालिम थे। (५४) जानदारों में सब से बद-तर ख़ुदा के नज़दीक वे लोग हैं जो काफ़िर हैं, सो वे ईमान नहीं लाते। (५५) जिन लोगों से तुम ने (सुलह) का अह्द किया है, फिर वे हर बार अपने अह्द को तोड़ डालते हैं और (ख़ुदा से) नहीं डरते। (५६) अगर तुम उनको लड़ाई में पाओ तो उन्हें ऐसी सज़ा दो कि जो लोग उनको पीछे (से मदद दे रहे) हों, वे उनको देख कर भाग जाएं। अजब नहीं कि उन को (इस से) इबरत (सबक़) हो। (५७) और अगर तुम को किसी क़ौम से

★रु. ६/२ आ ४

व इम्मा तख़ाफ़न्-न मिन् क़ौमिन् ख़ियान-तन् फ़म्बिज़् इलैहिम् अ़ला सवाइन्, इन्नल्ला - ह ला युहिब्बुल् - ख़ा - इनीन★(५८) व ला यह़्सबन्नल्लज़ी-न क-फ़रू स-बक़ू, इन्नहुम् ला युअ्-जिज़ून (५९) व अअिद्दू लहुम् मस्त-त़अ्-तुम् मिन् क़ुव्वतिंव्-व मिर्रिबातिल्ख़ैलि तुर्हिबू-न बिही अ़दुव्वल्लाहि व अ़दुव्वकुम् व आख़री-न मिन् दूनिहिम्, ला तअ्-लमूनहुम्, अल्लाहु यअ् - लमुहुम्, व मा तुन्फ़िक़ू मिन् शैइन् फ़ी सबीलिल्लाहि युवफ़्-फ़ इलैकुम् व अन्तुम् ला तुज़्लमून (६०) व इन् ज-नहू लिस्सल्मि फ़ज्नह् लहा व त - वक्कल् अ़ - लल्लाहि, इन्नहू हुवस्समीअुल् - अ़लीम (६१) व इंय्युरीदू अंय्यख़्दअू-क फ़इन्-न ह़स्बकल्लाहु, हुवल्लज़ी अय्य - द - क बिनस्रिही व बिल् - मुअ्मिनीन (६२) व अल्ल - फ़ बै - न क़ुलूबिहिम्, लौ अन्फ़क़् - त मा फ़िल्अर्ज़ि जमीअ़म् - मा अल्लफ़्-त बै-न क़ुलूबिहिम् व लाकिन्नल्ला-ह अल्ल - फ़ बैनहुम्, इन्नहू अ़ज़ीज़ुन् ह़कीम (६३) या अय्युहन्नबिय्यु ह़स्बुकल्लाहु व मनित्त-ब-अ-क मिनल्-मुअ्मिनीन★(६४) या अय्युहन्नबिय्यु ह़र्रिज़िल् - मुअ्मिनी - न अ़ - लल् - क़िताति, इंय्यकुम् - मिन्कुम् अिश्रू - न साबिरू - न यग़्लिबू मि-अतैनि, व इंय्यकुम् - मिन्कुम् मि-अतुंय्यग़्लिबू अल्फ़म् - मिनल्लज़ी - न क-फ़रू बिअन्नहुम् क़ौमुल्ला यफ़्क़हून (६५) अल्आ - न ख़फ़्फ़फ़ल्लाहु अ़न्कुम् व अ़लि - म अन् - न फ़ीकुम् ज़अ् - फ़न्, फ़इंय्यकुम् - मिन्कुम् मि-अतुन् साबिरतुंय्यग़्लिबू मि - अतैनि, व इंय्यकुम् - मिन्कुम् अल्फ़ुंय्यग़्लिबू अल्फ़ैनि बिइज़्निल्लाहि, वल्लाहु म - अ़स्साबिरीन (६६)

يذكرون ۝ وإما تخافن من قوم خيانة فانبذ إليهم على
سواء ۚ إن الله لا يحب الخائنين ۝ ولا يحسبن الذين
كفروا سبقوا ۚ إنهم لا يعجزون ۝ وأعدوا لهم ما استطعتم
من قوة ومن رباط الخيل ترهبون به عدو الله وعدوكم و
آخرين من دونهم لا تعلمونهم الله يعلمهم ۚ وما تنفقوا
من شيء في سبيل الله يوف إليكم وأنتم لا تظلمون ۝ و
إن جنحوا للسلم فاجنح لها وتوكل على الله ۚ إنه هو السميع
العليم ۝ وإن يريدوا أن يخدعوك فإن حسبك الله ۚ هو
الذي أيدك بنصره وبالمؤمنين ۝ وألف بين قلوبهم ۚ
لو أنفقت ما في الأرض جميعا ما ألفت بين قلوبهم ولكن
الله ألف بينهم ۚ إنه عزيز حكيم ۝ يا أيها النبي حسبك الله
ومن اتبعك من المؤمنين ۝ يا أيها النبي حرض المؤمنين
على القتال ۚ إن يكن منكم عشرون صابرون يغلبوا مائتين ۚ
وإن يكن منكم مائة يغلبوا ألفا من الذين كفروا بأنهم قوم
لا يفقهون ۝ الآن خفف الله عنكم وعلم أن فيكم ضعفا ۚ
فإن يكن منكم مائة صابرة يغلبوا مائتين ۚ وإن يكن
منكم ألف يغلبوا ألفين بإذن الله ۗ والله مع الصابرين ۝

★रु. ७/३ आ १० ★रु. ८/४ आ ६

दग़ाबाज़ी का ख़ौफ़ हो तो (उन का अह्द) उन्हीं की तरफ़ फेंक दो (और) बराबर (का जवाब दो)। कुछ शक नहीं कि ख़ुदा दग़ाबाज़ों को दोस्त नहीं रखता। (५८) ★

और काफ़िर यह न ख़्याल करें कि वे भाग निकले हैं। वे (अपनी चालों से हम को हरगिज़) आजिज़ नहीं कर सकते। (५९) और जहां तक हो सके (फ़ौज की जमईयत के) ज़ोर से और घोड़ों के तैयार रखने से उन के (मुक़ाबले) के लिए मुस्तैद रहो कि उस से ख़ुदा के दुश्मनों और तुम्हारे दुश्मनों और उन के सिवा और लोगों पर, जिन को तुम नहीं जानते और ख़ुदा जानता है, हैबत बैठी रहेगी, और तुम जो कुछ ख़ुदा के रास्ते में ख़र्च करोगे उस का सवाब तुम को पूरा-पूरा दिया जाएगा और तुम्हारा ज़रा नुक़्सान नहीं किया जाएगा। (६०) और अगर ये लोग सुलह की तरफ़ मायल हों, तुम भी उस की तरफ़ मायल हो जाओ और ख़ुदा पर भरोसा रखो। कुछ शक नहीं कि वह सब कुछ सुनता (और) जानता है। (६१) और अगर यह चाहें कि तुम को फ़रेब दें, तो ख़ुदा तुम्हें किफ़ायत करेगा। वही तो है, जिस ने तुम को अपनी मदद से और मुसलमानों (की जमाअत) से ताक़त पहुंचायी। (६२) और उनके दिलों में उल्फ़त (मुहब्बत) पैदा कर दी और अगर तुम दुनिया भर की दौलत ख़र्च करते, तब भी उन के दिलों में उल्फ़त पैदा न कर सकते, मगर ख़ुदा ही ने उनमें उल्फ़त डाल दी। बेशक वह ज़बर्दस्त (और) हिक्मत वाला है। (६३) ऐ नबी! ख़ुदा तुम को और मोमिनों को, जो तुम्हारे पैरो हैं, काफ़ी है। (६४) ★

ऐ नबी! मुसलमानों को जिहाद पर उभारो। अगर तुम में २० आदमी साबित क़दम रहने वाले होंगे, तो दो सौ काफ़िरों पर ग़ालिब रहेंगे और अगर सौ (ऐसे) होंगे, तो हज़ार पर ग़ालिब रहेंगे, इस लिए कि काफ़िर ऐसे लोग हैं कि कुछ भी समझ नहीं रखते। (६५) अब ख़ुदा ने तुम पर से बोझ हल्का कर दिया और मालूम कर लिया कि (अभी) तुम में किसी क़दर कमज़ोरी है। पस अगर तुम में एक सौ साबित क़दम रहने वाले होंगे, तो दो सौ पर ग़ालिब रहेंगे और अगर एक हज़ार होंगे, तो ख़ुदा के हुक्म से दो हज़ार पर ग़ालिब रहेंगे और ख़ुदा साबित क़दम रहने वालों का मददगार है।[1] (६६) पैग़म्बर को मुनासिब नहीं कि उसके क़ब्ज़े में क़ैदी रहें,

---

१. साबित क़दम रहने वालों से मुराद बहादुर और मज़बूत दिल हैं और हक़ीक़त में जिहाद करना भी बहादुरों का काम है और बहादुरी ईमानी क़ूवत से बढ़ती है। जितना ईमान ज़्यादा होता है, उतनी ही बहादुरी ज़्यादा होती है। इसी लिए हज़रत सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुबारक अह्द के मोमिनों के बारे में यह इर्शाद हुआ है कि अगर तुम में बीस बहादुर होंगे तो दो सौ काफ़िरों पर ग़ालिब रहेंगे और ईमान की इसी ताक़त की बुनियाद पर कुछ लोगों ने इसे 'हुक्म' माना है यानी ईमान वालों को ख़ुदा का हुक्म यह है कि अगर काफ़िर उन से दस गुने भी हों, तब भी उन के मुक़ाबले में जमे रहें। अपने से दो गुने कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले में साबित क़दम रहने का हुक्म इस ताक़त की और भी कमज़ोरी की वजह से है। चुनांचे इसी लिए बाद की आयत में यह इर्शाद हुआ कि, 'अब ख़ुदा ने तुम से बोझ हल्का कर दिया और मालूम कर लिया कि (अभी) तुम में कमज़ोरी है, पस अगर तुम में से एक हज़ार होंगे तो ख़ुदा के हुक्म से दो हज़ार पर ग़ालिब रहेंगे। अब अगर दो गुने काफ़िर मुक़ाबले पर हों, तो हरगिज़ नहीं भागना चाहिए यानी कम से कम एक सौ मोमिन को दो सौ काफ़िरों पर भारी होना चाहिए और एक हज़ार को दो हज़ार पर।

★रु. ७/३ आ १० ★रु. ८/४ आ ६

मा का-न लिनबिय्यिन् अंय्यकू-न लहू अस्रा हत्ता युस्ख़ि-न फ़िल्अर्ज़ि ط तुरीदू-न अ-र-ज़द्दुन्या قلے वल्लाहु युरीदुल्-आख़ि-र-तः ط वल्लाहु अज़ीज़ुन् हकीम (६७) लौला किताबुम्-मिनल्लाहि स-ब-क़ ल-मस्सकुम् फ़ीमा अ-ख़ज़्तुम् अज़ाबुन् अज़ीम (६८) फ़कुलू मिम्मा ग़निम्तुम् हलालन् तय्यिबंव्-व-त्तक़ुल्ला-ह ط इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम ★(६९) या अय्युहन्नबिय्यु क़ुल् लिमन् फ़ी ऐदीकुम् मिनल्अस्रा لا इंय्यअ्-लमिल्लाहु फ़ी क़ुलूबिकुम् ख़ैरंय्युअ्तिकुम् ख़ैरम्मिम्मा उख़ि-ज़ मिन्कुम् व यग़्फ़िर् लकुम् ط वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम (७०) व इंय्युरीदू ख़ियान-त-क फ़-क़द् ख़ानुल्ला-ह मिन् क़ब्लु फ़-अम्क-न मिन्हुम् ط वल्लाहु अलीमुन् हकीम (७१) इन्नल्लज़ी-न आमनू व हाजरू व जाहदू बिअम्वालिहिम् व अन्फ़ुसिहिम् फ़ी सबीलिल्लाहि वल्लज़ी-न आवव्-व न-सरू उला-इक बअ्-ज़ुहुम् औलिया-उ बअ्-ज़िन् ط वल्लज़ी-न आमनू व लम् युहाजिरू मा लकुम् मिंव्वलायतिहिम् मिन् शैइन् हत्ता युहाजिरू ج व इनिस्तन्सरूकुम् फ़िद्दीनि फ़-अलैकुमुन्नस्रु इल्ला अला क़ौमिम्बैनकुम् व बैनहुम् मीसाक़ुन् ط वल्लाहु बिमा तअ्-मलू-न बसीर (७२) वल्लज़ी-न क-फ़रू बअ्-ज़ुहुम् औलिया-उ बअ्-ज़िन् ط इल्ला तफ़्अलूहु तकुन् फ़ित्-न-तुन् फ़िल्अर्ज़ि व फ़सादुन् कबीर ط (७३) वल्लज़ी-न आमनू व हाजरू व जाहदू फ़ी सबीलिल्लाहि वल्लज़ी-न आवव्-व न-सरू उलाइ-क हुमुल्-मुअ्मिनू-न हक़्क़न् ط लहुम् मग़्फ़ि-रतुंव्-व रिज़्क़ुन् करीम (७४)

ما كان لنبي ان يكون له اسرى حتى يثخن في الارض
تريدون عرض الدنيا والله يريد الاخرة والله عزيز
حكيم ﴿٦٧﴾ لولا كتب من الله سبق لمسكم فيما اخذتم
عذاب عظيم ﴿٦٨﴾ فكلوا مما غنمتم حللا طيبا واتقوا
الله ان الله غفور رحيم ﴿٦٩﴾ يايها النبي قل لمن في
ايديكم من الاسرى ان يعلم الله في قلوبكم خيرا يؤتكم
خيرا مما اخذ منكم ويغفر لكم والله غفور رحيم ﴿٧٠﴾ و
ان يريدوا خيانتك فقد خانوا الله من قبل فامكن منهم
والله عليم حكيم ﴿٧١﴾ ان الذين امنوا وهاجروا وجهدوا
باموالهم وانفسهم في سبيل الله والذين اووا ونصروا
اولئك بعضهم اولياء بعض والذين امنوا ولم يهاجروا
ما لكم من ولايتهم من شيء حتى يهاجروا وان استنصروكم
في الدين فعليكم النصر الا على قوم بينكم وبينهم
ميثاق والله بما تعملون بصير ﴿٧٢﴾ والذين كفروا بعضهم
اولياء بعض الا تفعلوه تكن فتنة في الارض وفساد
كبير ﴿٧٣﴾ والذين امنوا وهاجروا وجهدوا في سبيل الله
والذين اووا ونصروا اولئك هم المؤمنون حقا لهم مغفرة

★रु. ९/५ आ ५

जब तक (काफ़िरों को क़त्ल कर के) ज़मीन में कसरत से ख़ून (न) बहा दे। तुम लोग दुनिया के माल के तालिब हो और ख़ुदा आख़िरत (की भलाई) चाहता है और ख़ुदा ग़ालिब हिक्मत वाला है। (६७) अगर ख़ुदा का हुक्म पहले न हो चुका होता, तो जो (फ़िद्या) तुम ने लिया है, उसके बदले तुम पर बड़ा अज़ाब नाज़िल होता। (६८) तो ग़नीमत का जो माल तुम को मिला है, उसे खाओ (कि वह तुम्हारे लिए) पाक-हलाल (है) और ख़ुदा से डरते रहो। बेशक ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है। (६९) ★

ऐ पैग़म्बर! जो क़ैदी तुम्हारे हाथ में (गिरफ़्तार) हैं, उनसे कह दो कि अगर ख़ुदा तुम्हारे दिलों में नेकी मालूम करेगा, तो जो (माल) तुम से छिन गया है, उस से बेहतर तुम्हें इनायत फ़रमाएगा। और तुम्हारे गुनाह भी माफ़ कर देगा और ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है। (७०) और अगर ये लोग तुम से दग़ा करना चाहेंगे तो ये पहले ही ख़ुदा से दग़ा कर चुके हैं, तो उसने उन को (तुम्हारे) क़ब्ज़े में कर दिया और ख़ुदा जानने वाला, हिक्मत वाला है। (७१) जो लोग ईमान लाये और वतन से हिजरत कर गये और ख़ुदा की राह में अपने माल और जान से लड़े, वे और जिन्होंने (हिजरत करने वालों को) जगह दी और उन की मदद की, वे आपस में एक दूसरे के साथी हैं। और जो लोग ईमान तो ले आये, लेकिन हिजरत नहीं की, तो जब तक वे हिजरत न करें, तुम को उन के साथ से कुछ वास्ता नहीं। और अगर वे तुमसे दीन (के मामलों) में मदद तलब करें तो तुम को मदद करनी ज़रूरी है, मगर उन लोगों के मुक़ाबले में कि तुम में और उन में (सुलह का) अह्द हो, (मदद नहीं करनी चाहिए) और ख़ुदा तुम्हारे सब कामों को देख रहा है। (७२) और जो लोग काफ़िर हैं (वे भी) एक दूसरे के साथी हैं, तो (मोमिनो!) अगर तुम यह (काम) न करोगे तो मुल्क में फ़ित्ना बरपा हो जाएगा और बड़ा फ़साद मचेगा। (७३) और जो लोग ईमान लाये और वतन से हिजरत कर गये और ख़ुदा की राह में लड़ाइयां करते रहे और जिन्होंने (हिजरत करने वालों को) जगह दी और उनकी मदद की, यही लोग सच्चे मुसलमान हैं। उन के लिए (ख़ुदा

★रु. ९/५ आ ५

वल्लज़ी-न आमनू मिम्बअ्-दु व हाजरू व जाहदू म-अकुम् फ़उलाइ-क मिन्कुम् ط व उलुल्-अर्हामि बअ्-ज़ुहुम् औला बिबअ्-ज़िन् फ़ी किताबिल्लाहि ط इन्नल्ला-ह बिकुल्लि शैइन् अ़लीम ★ ● (७५)

والعلموا ١٠   ١٧٩   التوبة ٩

وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ۝ وَالَّذِينَ آمَنُوا مِنْ بَعْدُ وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا
مَعَكُمْ فَأُولَٰئِكَ مِنْكُمْ ۚ وَأُولُو الْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ أَوْلَىٰ بِبَعْضٍ فِي
كِتَابِ اللَّهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝

سُورَةُ التَّوْبَةِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ مِائَةٌ وَتِسْعٌ وَعِشْرُونَ آيَةً وَسِتَّةَ عَشَرَ رُكُوعًا

بَرَاءَةٌ مِنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ إِلَى الَّذِينَ عَاهَدْتُمْ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝
فَسِيحُوا فِي الْأَرْضِ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَاعْلَمُوا أَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِي
اللَّهِ ۙ وَأَنَّ اللَّهَ مُخْزِي الْكَافِرِينَ ۝ وَأَذَانٌ مِنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ إِلَى
النَّاسِ يَوْمَ الْحَجِّ الْأَكْبَرِ أَنَّ اللَّهَ بَرِيءٌ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۙ وَ
رَسُولُهُ ۚ فَإِنْ تُبْتُمْ فَهُوَ خَيْرٌ لَكُمْ ۖ وَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوا أَنَّكُمْ
غَيْرُ مُعْجِزِي اللَّهِ ۗ وَبَشِّرِ الَّذِينَ كَفَرُوا بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ۝ إِلَّا
الَّذِينَ عَاهَدْتُمْ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ثُمَّ لَمْ يَنْقُصُوكُمْ شَيْئًا وَلَمْ
يُظَاهِرُوا عَلَيْكُمْ أَحَدًا فَأَتِمُّوا إِلَيْهِمْ عَهْدَهُمْ إِلَىٰ مُدَّتِهِمْ ۚ إِنَّ
اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ۝ فَإِذَا انْسَلَخَ الْأَشْهُرُ الْحُرُمُ فَاقْتُلُوا الْمُشْرِكِينَ
حَيْثُ وَجَدْتُمُوهُمْ وَخُذُوهُمْ وَاحْصُرُوهُمْ وَاقْعُدُوا لَهُمْ كُلَّ
مَرْصَدٍ ۚ فَإِنْ تَابُوا وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ فَخَلُّوا
سَبِيلَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ وَإِنْ أَحَدٌ مِنَ الْمُشْرِكِينَ
اسْتَجَارَكَ فَأَجِرْهُ حَتَّىٰ يَسْمَعَ كَلَامَ اللَّهِ ثُمَّ أَبْلِغْهُ مَأْمَنَهُ ۚ ذَٰلِكَ

منزل ٢

९ सूरतुत्तौबति ११३

(मदनी) इस सूरः में अरबी के ११,३६० अक्षर, २५३७ शब्द, १२९ आयतें और १६ रुकूअ़ हैं।

बराअतुम्मिनल्लाहि व रसूलिही इलल्लज़ी-न आ़हत्तुम् मिनल्मुश्रिकीन ط (१) फ़सीहू फ़िल्अर्ज़ि अर्ब-अ-त अश्हुरिंव्वअ्-लमू अन्नकुम् ग़ैरु मुअ्-जिज़िल्लाहि ج व अन्नल्ला-ह मुख़्ज़िल्काफ़िरीन (२) व अज़ानुम्मिनल्लाहि व रसूलिही इलन्नासि यौमल्-हज्जिल्-अक्बरि अन्नल्ला-ह बरीउम् मिनल्-मुश्रिकी-न ۙ व रसूलुहू ط फ़-इन् तुब्तुम् फ़हु-व ख़ैरुल्लकुम् ج व इन् तवल्लैतुम् फ़अ्-लमू अन्नकुम् ग़ैरु मुअ्-जिज़िल्लाहि ط व बश्शिरिल्लज़ी-न क-फ़रू बिअ़ज़ाबिन् अलीम ج (३) इल्लल्लज़ी-न आ़हत्तुम् मिनल्-मुश्रिकी-न सुम्-म लम् यन्क़ुसूकुम् शैअंव्-व लम् युज़ाहिरू अलैकुम् अ-ह-दन् फ़-अतिम्मू इलैहिम् अ़ह्दहुम् इला मुद्दतिहिम् ط इन्नल्ला-ह युहिब्बुल्-मुत्तक़ी-न (४) फ़इज़न्-स-ल-ख़ल्-अश्हुरुल्-हुरुमु फ़क़्तुलुल्-मुश्रिकी-न हैसु वजत्तुमूहुम् व ख़ुज़ूहुम् वह्सुरूहुम् वक़्अुदू लहुम् कुल्-ल मर्सदिन् ج फ़इन् ताबू व अक़ामुस्-सला-त व आतवुज़्ज़का-त फ़ख़ल्लू सबीलहुम् ط इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम (५) व इन् अ-हदुम्मिनल्-मुश्रिकीनस्तजा-र-क फ़-अजिर्हु हत्ता यस्म-अ कलामल्लाहि सुम्-म अब्लिग़्हु मअ्-म-नहू ط ज़ालि-क बिअन्नहुम् क़ौमुल्ला यअ्-लमून ★ (६)

के यहां) बख्शिश और इज़्ज़त की रोज़ी है। (७४) और जो लोग बाद में ईमान लाये और वतन से हिजरत कर गये और तुम्हारे साथ हो कर जिहाद करते रहे, वे भी तुम्हीं में से हैं और रिश्तेदार ख़ुदा के हुक्म के मुताबिक़ एक दूसरे के ज़्यादा हक़दार हैं। कुछ शक नहीं कि ख़ुदा हर चीज़ को जानता है। (७५) ★ ●

९ सूरः तौबा ११३

सूरः तौबा मदनी है और इस में एक सौ उन्तीस आयतें और सोलह रुकूअ हैं।

(ऐ मुसलमानो ! अब)[1] ख़ुदा और उसके रसूल की तरफ़ से मुश्रिकों से, जिन से तुम ने अह्द (समझौता) कर रखा था, बे-ज़ारी (और जंग की तैयारी) है। (१) तो (मुश्रिको ! तुम) ज़मीन में चार महीने[2] चल फिर लो और जान रखो कि तुम ख़ुदा को आजिज़ न कर सकोगे और यह भी कि ख़ुदा काफ़िरों को रुसवा करने वाला है। (२) और हज्जे अक्बर के दिन ख़ुदा और उसके रसूल की तरफ़ से लोगों को आगाह किया जाता है कि ख़ुदा मुश्रिकों से बेज़ार है और उस का रसूल भी (उन से दस्तबरदार है)। पस अगर तुम तौबा कर लो, तो तुम्हारे हक़ में बेहतर है और न मानो (और ख़ुदा से मुक़ाबला करो) तो जान रखो कि तुम ख़ुदा को हरा नहीं सकोगे और (ऐ पैग़म्बर !) काफ़िरों को दुख देने वाले अज़ाब की ख़बर सुना दो। (३) अल-बत्ता, जिन मुश्रिकों के साथ तुम ने अह्द किया हो, और उन्होंने तुम्हारा किसी तरह का क़ुसूर न किया हो और न तुम्हारे मुक़ाबले में किसी की मदद की हो, तो जिस मुद्दत तक उनके साथ अह्द किया हो, उसे पूरा करो (कि) ख़ुदा परहेज़गारों को दोस्त रखता है। (४) जब इज़्ज़त के महीने गुज़र जाएं, तो मुश्रिकों को जहां पाओ, क़त्ल कर दो और पकड़ लो और घेर लो और हर घात की जगह पर उनकी ताक में बैठे रहो, फिर अगर वे तौबा कर लें और नमाज़ पढ़ने और ज़कात देने लगें, तो उन की राह छोड़ दो। बेशक ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है। (५) और अगर कोई मुश्रिक तुम से पनाह चाहता हो, तो उसको पनाह दो, यहां तक कि ख़ुदा का कलाम सुनने लगे, फिर उसको अम्न की जगह वापस पहुंचा दो, इस लिए कि ये बे-ख़बर लोग हैं। (६) ★

---

१. इस सूरः के शुरू में बिस्मिल्लाह नहीं लिखी गयी और इस की बहुत-सी वजहें बयान की गयी हैं। हज़रत अली रज़ि० कहते हैं कि बिस्मिल्लाह में अमान है, क्योंकि इस में ख़ुदा का नाम इस ख़ूबी के साथ लिया जाता है, जो अमान का काम करने वाला है यानी रहमत और यह सूरः लड़ाई और जंग और अमान उठाने के लिए नाज़िल हुई है, इस लिए इस में बिस्मिल्लाह नहीं है। कुछ ने कहा कि अरब की आदत थी कि जब उन में और किसी क़ौम में समझौता होता था और वे उस को तोड़ना चाहते थे, तो इस बारे में जो ख़त कि उस क़ौम को लिखते थे उस पर बिस्मिल्लाह नहीं लिखते थे। जब कुफ़्फ़ार ने वह अह्द (समझौता), जो मुसलमानों ने ख़ुदा के हुक्म से उन के साथ किया था, तोड़ डाला, तो ख़ुदा ने मुसलमानों से फ़रमाया कि तुम को भी अपने अह्द पर क़ायम रहना ज़रूरी नहीं। पस चूंकि इस सूरः में अह्द तोड़ डाला गया है और इस के नाज़िल होने पर हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत अली रज़ि० को मुश्रिकों के पास भेजा। उन्हों ने यह सूरः उन को सुना दी और उन से कह दिया कि अब समझौता टूट चुका है। चार महीने के बाद हर जगह तुम लोगों से जंग है, इस लिए उन की आदत के मुताबिक़ उस के शुरू में 'बिस्मिल्लाह' नहीं लिखी। इन के अलावा भी कई क़ौल हैं, मगर ज़्यादा सही पहला क़ौल मालूम होता है।

२. ज़िल हिज्जा की दसवीं तारीख़ से रबीउल अव्वल आख़िर की दसवीं तक।

कै-फ़ यकूनु लिल्मुश्रिकी-न अ़हदुन् अ़िन्दल्लाहि व अ़िन्-द रसूलिही इल्लल्-लज़ी-न आ़हत्तुम् अ़िन्दल्-मस्जिदिल्-हरामि ج फ़-मस्तक़ामू लकुम् फ़स्तक़ीमू लहुम् ط इन्नल्ला-ह युहि़ब्बुल्-मुत्तक़ीन (७) कै-फ़ व इंय्यज़्हरू अ़लैकुम् ला यर्क़ुबू फ़ीकुम् इल्लंव्-व ला ज़िम्म-तन् ط युर्ज़ूनकुम् बिअफ़्वाहिहिम् व तअ्बा क़ुलूबुहुम् ج व अक्सरुहुम् फ़ासिक़ून ج (८) इश्तरौ बिआयातिल्लाहि स-म-नन् क़लीलन् फ़-सद्दू अ़न् सबीलिही ط इन्नहुम् सा-अ मा कानू यअ्-मलून (९) ला यर्क़ुबू-न फ़ी मुअ्मिनिन् इल्लंव्-व ला ज़िम्म-तन् ط व उलाइ - क हुमुल्मुअ्-तदून (१०) फ़इन् ताबू व अक़ामुस्सला-त व आतवुज़्ज़का-त फ़इख़्वानुकुम् फ़िद्दीनि ط व नुफ़स्सिलुल्-आयाति लिक़ौमिंय्यअ्-लमून (११) व इन्न-कसू ऐमानहुम् मिम्बअ्-दि अ़ह्दिहिम् व त-अ़नू फ़ी दीनिकुम् फ़क़ातिलू अइम्म-तल् - कुफ़्रि ز इन्नहुम् ला ऐमा-न लहुम् ल-अ़ल्लहुम् यन्तहून (१२) अला तुक़ातिलू-न क़ौमन्-न-कसू ऐमानहुम् व हम्मू बिइख़्राजिर्रसूलि व हुम् ब-दऊकुम् अव्व-ल मर्रतिन् ط अ - तख़्शौनहुम् ج फ़ल्लाहु अ-हक़्क़ु अन् तख़्शौहु इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन (१३) क़ातिलू-हुम् युअ़ज़्ज़िब्-हुमुल्लाहु बिऐदीकुम् व युख़्ज़िहिम् व यन्सुर्कुम् अ़लैहिम् व यश्फ़ि सुदू - र क़ौमिम् - मुअ्मिनीन ز (१४) व युज़्हिब् ग़ै - ज़ क़ुलूबिहिम् ط व यतूबुल्लाहु अ़ला मंय्यशाउ ط वल्लाहु अ़लीमुन् हकीम (१५)

التوبة ٩ — ١٥٠ — واعلموا ١٠

بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْلَمُونَ ۝ كَيْفَ يَكُونُ لِلْمُشْرِكِينَ عَهْدٌ عِندَ
اللَّهِ وَعِندَ رَسُولِهِ إِلَّا الَّذِينَ عَاهَدتُّمْ عِندَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ
فَمَا اسْتَقَامُوا لَكُمْ فَاسْتَقِيمُوا لَهُمْ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ۝
كَيْفَ وَإِن يَظْهَرُوا عَلَيْكُمْ لَا يَرْقُبُوا فِيكُمْ إِلًّا وَلَا ذِمَّةً
يُرْضُونَكُم بِأَفْوَاهِهِمْ وَتَأْبَىٰ قُلُوبُهُمْ وَأَكْثَرُهُمْ فَاسِقُونَ ۝
اشْتَرَوْا بِآيَاتِ اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا فَصَدُّوا عَن سَبِيلِهِ إِنَّهُمْ
سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ لَا يَرْقُبُونَ فِي مُؤْمِنٍ إِلًّا وَلَا ذِمَّةً
وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُعْتَدُونَ ۝ فَإِن تَابُوا وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا
الزَّكَاةَ فَإِخْوَانُكُمْ فِي الدِّينِ وَنُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ۝
وَإِن نَّكَثُوا أَيْمَانَهُم مِّن بَعْدِ عَهْدِهِمْ وَطَعَنُوا فِي دِينِكُمْ
فَقَاتِلُوا أَئِمَّةَ الْكُفْرِ إِنَّهُمْ لَا أَيْمَانَ لَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَنتَهُونَ ۝
أَلَا تُقَاتِلُونَ قَوْمًا نَّكَثُوا أَيْمَانَهُمْ وَهَمُّوا بِإِخْرَاجِ الرَّسُولِ وَ
هُم بَدَءُوكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ أَتَخْشَوْنَهُمْ فَاللَّهُ أَحَقُّ أَن تَخْشَوْهُ
إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ۝ قَاتِلُوهُمْ يُعَذِّبْهُمُ اللَّهُ بِأَيْدِيكُمْ وَ
يُخْزِهِمْ وَيَنصُرْكُمْ عَلَيْهِمْ وَيَشْفِ صُدُورَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِينَ ۝
وَيُذْهِبْ غَيْظَ قُلُوبِهِمْ وَيَتُوبُ اللَّهُ عَلَىٰ مَن يَشَاءُ وَاللَّهُ
عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝ أَمْ حَسِبْتُمْ أَن تُتْرَكُوا وَلَمَّا يَعْلَمِ اللَّهُ الَّذِينَ

منزل ٢

भला मुश्रिकों के लिए (जिन्होंने अह्द तोड़ डाला), ख़ुदा और उसके रसूल के नज़दीक अह्द किस तरह क़ायम रह सकता है,[1] हां, जिन लोगों के साथ तुम ने मस्जिदे मोहतरम (यानी ख़ाना-ए-काबा) के नज़दीक अह्द किया है अगर वे (अपने अह्द पर) क़ायम रहें, तो तुम भी अपने क़ौल व क़रार (पर) क़ायम रहो। बेशक ख़ुदा परहेज़गारों को दोस्त रखता है। (७) (भला उन से अह्द) किस तरह (पूरा किया जाए, जब उन का हाल यह है) कि अगर तुम पर ग़लबा पा लें, तो न क़राबत का लिहाज़ करें, न अह्द का, यह मुंह से तो तुम्हें ख़ुश कर देते हैं, लेकिन उनके दिल (इन बातों को) क़ुबूल नहीं करते और उन में अक्सर ना-फ़रमान हैं। (८) ये ख़ुदा की आयतों के बदले थोड़ा सा फ़ायदा हासिल करते और लोगों को ख़ुदा के रास्ते से रोकते हैं। कुछ शक नहीं कि जो काम ये करते हैं, बुरे हैं। (९) ये लोग किसी मोमिन के हक़ में न तो रिश्तेदारी का पास करते हैं, न अह्द का और ये हद से आगे बढ़ जाने वाले हैं। (१०) अगर ये तौबा कर लें और नमाज़ पढ़ने और ज़कात देने लगें, तो दीन में तुम्हारे भाई हैं और समझने वाले लोगों के लिए हम अपनी आयतें खोल-खोल कर बयान करते हैं। (११) और अगर अह्द करने के बाद अपनी क़स्मों को तोड़ डालें और तुम्हारे दीन में ताने करने लगें, तो उन कुफ़्र के पेशवाओं से जंग करो, (ये बे-ईमान लोग हैं और) इन की क़स्मों का कुछ-एतबार नहीं है। अजब नहीं कि (अपनी हरकतों से) बाज़ आ जाएं। (१२) भला तुम ऐसे लोगों से क्यों न लड़ो, जिन्होंने अपनी क़स्मों को तोड़ डाला और (ख़ुदा के) पैग़म्बर के निकालने का पक्का इरादा कर लिया और उन्होंने तुम से (किया गया अह्द तोड़ना) शुरू किया। क्या तुम ऐसे लोगों से डरते रहो, हालांकि डरने के लायक़ ख़ुदा है, बशर्ते कि ईमान रखते हो। (१३) उन से (ख़ूब) लड़ो। ख़ुदा उन को तुम्हारे हाथों से अज़ाब में डालेगा और रुसवा करेगा और तुम को उन पर ग़लबा देगा और मोमिन लोगों के सीनों को शिफ़ा बख़्शेगा। (१४) और उन के दिलों से ग़ुस्सा दूर करेगा और जिस पर चाहेगा, रहमत करेगा और

---

१. हुदैबिया में कुफ़्फ़ार के साथ दस वर्ष का समझौता हुआ था और इस शर्त पर सुलह क़रार पायी थी कि जो लोग मुसलमानों की पनाह में हैं, उन पर न मक्के वाले ख़ुद हमला करेंगे और न हमला करने वालों की मदद करेंगे और जो लोग मक्के वालों की पनाह में हैं, उन पर मुसलमान न हमला करेंगे और न हमला करने वालों की मदद करेंगे, मगर क़ुरैश ने अपना अह्द तोड़ डाला। यानी बनूबक्र ने जो मक्के वालों की पनाह में थे, ख़ुज़ामा पर, जो हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पनाह में थे चढ़ाई कर दी और क़ुरैश ने उन की मदद की। यह वाक़िआ होने पर ख़ुज़ामा में से एक शख़्स अम्र बिन सालिम नाम का हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और कहा कि मक्के के काफ़िरों ने अपना अह्द तोड़ डाला, तब आप ने फ़रमाया, मैं तुम्हारी मदद करूंगा। ग़रज़ आप को मक्के वालों से जंग करनी पड़ी। चुनांचे आप ने सन् ०८ हि० में उन पर चढ़ाई की और मक्का फ़त्ह कर लिया।

अम् हसिब्तुम् अन् तुत्रकू व लम्मा यअ्-लमिल्लाहुल्लज़ी-न जाहदू मिन्कुम् व लम् यत्तख़िज़ू मिन् दूनिल्लाहि व ला रसूलिही व लल्मुअ्मिनी-न वलीज-तन्, वल्लाहु ख़बीरुम् - बिमा तअ्-मलून ★ (१६) मा का-न लिल्मुश्रिकी-न अंय्यअ्-मुरू मसाजिदल्लाहि शाहिदी-न अला अन्फ़ुसिहिम् बिल्कुफ़्रि ⅃ उलाइ-क हबितत् अअ्-मालुहुम् व फ़िन्नारि हुम् ख़ालिदून (१७) इन्नमा यअ्-मुरु मसाजिदल्लाहि मन् आम-न बिल्लाहि वल्-यौमिल्-आख़िरि व अक़ामस्सला-त व आतज़्ज़का-त व लम् यख़्-श इल्लल्ला-ह फ़-असा उलाइ-क अंय्यकूनू मिनल्-मुह्तदीन (१८) अ-ज-अल्तुम् सिक़ाय-तल्-हाज्जि व अिमार-तल्-मस्जिदिल्-हरामि क-मन् आम-न बिल्लाहि वल्-यौमिल्-आख़िरि व जा-ह-द फ़ी सबीलिल्लाहि ⅃ ला यस्तवू-न अिन्दल्लाहि ⅃ वल्लाहु ला यह्दिल्-क़ौमज़्-ज़ालिमी-न ▨ (१९) अल्लज़ी-न आमनू व हाजरू व जाहदू फ़ी सबीलिल्लाहि बिअम्वालिहिम् व अन्फ़ुसिहिम् अअ्-ज़मु द-र-ज-तन् अिन्दल्लाहि ⅃ व उलाइ-क हुमुल्-फ़ाइज़ून (२०) युबश्शिरुहुम् रब्बुहुम् बिरह्मतिम्मिन्हु व रिज़्वानिंव्-व जन्नातिल्लहुम् फ़ीहा नअीमुम्-मुक़ीम ⅃ (२१) ख़ालिदी-न फ़ीहा अ-ब-दन् ⅃ इन्नल्ला-ह अिन्दहू अज्रुन् अज़ीम (२२) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तत्तख़िज़ू आबा-अकुम् व इख़्वानकुम् औलिया-अ इनिस्तहब्बुल्कुफ़्-र अ-लल्ईमानि ⅃ व मंय्य-त-वल्लहुम् मिन्कुम् फ़-उलाइ-क हुमुज़्ज़ालिमून (२३)

جٰهَدُوْا مِنْكُمْ وَلَمْ يَتَّخِذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلَا رَسُوْلِهٖ وَلَا
الْمُؤْمِنِيْنَ وَلِيْجَةً ۭ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝ مَا كَانَ
لِلْمُشْرِكِيْنَ اَنْ يَّعْمُرُوْا مَسٰجِدَ اللّٰهِ شٰهِدِيْنَ عَلٰٓي اَنْفُسِهِمْ بِالْكُفْرِ
اُولٰۗىِٕكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ ښ وَفِي النَّارِ هُمْ خٰلِدُوْنَ ۝ اِنَّمَا يَعْمُرُ
مَسٰجِدَ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ وَ
اٰتَى الزَّكٰوةَ وَلَمْ يَخْشَ اِلَّا اللّٰهَ فَعَسٰٓى اُولٰۗىِٕكَ اَنْ يَّكُوْنُوْا مِنَ
الْمُهْتَدِيْنَ ۝ اَجَعَلْتُمْ سِقَايَةَ الْحَاۗجِّ وَعِمَارَةَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ
كَمَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَجٰهَدَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ لَا
يَسْتَوٗنَ عِنْدَ اللّٰهِ ۭ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝
اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِهِمْ
وَاَنْفُسِهِمْ ۙ اَعْظَمُ دَرَجَةً عِنْدَ اللّٰهِ ۭ وَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْفَاۗىِٕزُوْنَ ۝
يُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُمْ بِرَحْمَةٍ مِّنْهُ وَرِضْوَانٍ وَّجَنّٰتٍ لَّهُمْ فِيْهَا
نَعِيْمٌ مُّقِيْمٌ ۝ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۭ اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ
عَظِيْمٌ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْٓا اٰبَاۗءَكُمْ وَاِخْوَانَكُمْ اَوْلِيَاۗءَ
اِنِ اسْتَحَبُّوا الْكُفْرَ عَلَي الْاِيْمَانِ ۭ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَاُولٰۗىِٕكَ
هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝ قُلْ اِنْ كَانَ اٰبَاۗؤُكُمْ وَاَبْنَاۗؤُكُمْ وَاِخْوَانُكُمْ
وَاَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيْرَتُكُمْ وَاَمْوَالُۨ اقْتَرَفْتُمُوْهَا وَتِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ

★रु. २/८ आ १० ▨ व. लाज़िम

ख़ुदा सब कुछ जानता (और) हिक्मत वाला है। (१५) क्या तुम लोग यह ख़्याल करते हो कि (बे-आज़माइश) छोड़ दिये जाओगे और अभी तो ख़ुदा ने ऐसे लोगों को अलग किया ही नहीं, जिन्हों ने तुम में से जिहाद किये और ख़ुदा और उसके रसूल और मोमिनों के सिवा किसी को दिली दोस्त नहीं बनाया और ख़ुदा तुम्हारे सब कामों को जानता है। (१६) ★

मुश्रिकों को मुनासिब नहीं कि ख़ुदा की मस्जिदों को आबाद करें, जबकि वे अपने आप पर कुफ़्र की गवाही दे रहे हैं। उन लोगों के सब अमल बेकार हैं, और ये हमेशा दोज़ख़ में रहेंगे। (१७) ख़ुदा की मस्जिदों को तो वे लोग आबाद करते हैं, जो ख़ुदा पर और क़ियामत के दिन पर ईमान लाते हैं और नमाज़ पढ़ते और ज़कात देते हैं और ख़ुदा के सिवा किसी से नहीं डरते। यही लोग, उम्मीद है कि हिदायत पाये हुए लोगों में (दाख़िल) हों। (१८) क्या तुमने हाजियों को पानी पिलाना और मस्जिदे मोहतरम (यानी ख़ाना-ए-काबा) को आबाद करना उस शख़्स के अमल जैसा ख़्याल किया है जो ख़ुदा और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है और ख़ुदा की राह में जिहाद करता है? ये लोग ख़ुदा के नज़दीक बराबर नहीं हैं और ख़ुदा ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं किया करता ※ (१९) जो लोग ईमान लाये और वतन छोड़ गये और ख़ुदा की राह में माल और जान से जिहाद करते रहे, ख़ुदा के यहां इन के दर्जे बहुत बड़े हैं और वही मुराद को पहुंचने वाले हैं। (२०) उनका परवरदिगार उनको अपनी रहमत की और ख़ुश्नूदी की और बहिश्तों की ख़ुश-ख़बरी देता है, जिन में उन के लिए हमेशा-हमेशा की नेमतें हैं। (२१) (और वे) उनमें हमेशा-हमेशा रहेंगे। कुछ शक नहीं कि ख़ुदा के यहां बड़ा बदला तैयार है। (२२) ऐ ईमान वालो! अगर तुम्हारे (मां-) बाप और (बहन-) भाई ईमान के मुक़ाबले में कुफ़्र को पसंद करें, तो उनसे दोस्ती न रखो और जो उन से दोस्ती रखेंगे, वे ज़ालिम हैं। (२३) कह दो कि अगर तुम्हारे बाप

★रु. २/८ आ १० ※व. लाज़िम

क़ुल् इन् का-न आबाउकुम् व अब्नाउकुम् व इख़्वानुकुम् व अज़्वाजुकुम् व अ़शीरतुकुम् व अम्वालु निक़्-त-रफ़्तुमूहा व तिजारतुन् तख़्शौ-न कसादहा व मसाकिनु तर्ज़ौनहा अ-ह़्-ब्-ब इलैकुम् मिनल्लाहि व रसूलिही व जिहादिन् फ़ी सबीलिही फ़-त-रब्बसू ह़त्ता यअ्तियल्लाहु बिअम्रिही ۭ वल्लाहु ला यह्दिल्-क़ौमल्-फ़ासिक़ीन ★(२४) ल-क़द् न-स-र-कुमुल्लाहु फ़ी मवाति-न कसीरतिंव्-व यौ - म हुनैनिन् ۙ इज़् अअ् - ज - बत्कुम् कस-रतुकुम् फ़-लम् तुग़्नि अन्कुम् शैअंव्-व ज़ाक़त् अ़लैकुमुल्अर्ज़ु बिमा रहुबत् सुम्-म वल्लैतुम् मुद्बिरीन ۚ (२५) सुम् - म अन्ज़-लल्लाहु सकीन-तहू अ़ला रसूलिही व अ़-लल्-मुअ्मिनी-न व अन्ज़-ल जुनूदल्लम् तरौहा व अ़ज़्ज़बल्लज़ी-न क-फ़रू ۭ व ज़ालि-क जज़ाउल्काफ़िरीन (२६) सुम्-म यतूबुल्लाहु मिम्बअ्-दि ज़ालि-क अ़ला मंय्यशाउ ۭ वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम (२७) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इन्नमल्-मुश्रिकू-न न - जसुन् फ़ला यक़्रबुल्-मस्जिदल्-ह़रा-म बअ्-द आमिहिम् हाज़ा ۚ व इन् ख़िफ़्तुम् अ़ै-ल-तन् फ़सौ - फ़ युग़्नीकुमुल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही इन् शा-अ ۭ इन्नल्ला-ह अ़लीमुन् ह़कीम (२८) क़ातिलुल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिल्लाहि व ला बिल्-यौमिल्-आख़िरि व ला युहर्रिमू-न मा हर्रमल्लाहु व रसूलुहू व ला यदीनू-न दीनलहक़्क़ि मिनल्लज़ी-न ऊतुल्किता-ब ह़त्ता युअ्-तुल्-जिज़्-य-त अंय्यदिंव-व हुम् साग़िरून ★(२९) व क़ालतिल्-यहूदु अ़ुज़ैरुनिब्नुल्लाहि व क़ालतिन्नसारल्-मसीहुब्नुल्लाहि ۭ ज़ालि-क क़ौलुहुम् बि-अफ़्वाहिहिम् ۚ युज़ाहिऊ-न क़ौलल्लज़ी-न क - फ़रू मिन् क़ब्लु ۭ क़ात - लहुमुल्लाहु ۚ अन्ना युअ् - फ़कून (३०)

التوبة ٩　　١٥٢　　واعلموا ١٠

كَسَادَهَا وَمَسٰكِنُ تَرْضَوْنَهَآ اَحَبَّ اِلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَجِهَادٍ
فِيْ سَبِيْلِهٖ فَتَرَبَّصُوْا حَتّٰى يَاْتِيَ اللّٰهُ بِاَمْرِهٖ ۗ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي
الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ۝ لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ فِيْ مَوَاطِنَ كَثِيْرَةٍ ۙ وَّيَوْمَ
حُنَيْنٍ ۙ اِذْ اَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ فَلَمْ تُغْنِ عَنْكُمْ شَيْـًٔا وَّضَاقَتْ
عَلَيْكُمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ ثُمَّ وَلَّيْتُمْ مُّدْبِرِيْنَ ۝ ثُمَّ اَنْزَلَ
اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَاَنْزَلَ جُنُوْدًا
لَّمْ تَرَوْهَا وَعَذَّبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۗ وَذٰلِكَ جَزَآءُ الْكٰفِرِيْنَ ۝
ثُمَّ يَتُوْبُ اللّٰهُ مِنْ بَعْدِ ذٰلِكَ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّمَا الْمُشْرِكُوْنَ نَجَسٌ فَلَا يَقْرَبُوا الْمَسْجِدَ
الْحَرَامَ بَعْدَ عَامِهِمْ هٰذَا ۚ وَاِنْ خِفْتُمْ عَيْلَةً فَسَوْفَ يُغْنِيْكُمُ
اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖٓ اِنْ شَآءَ ۗ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝ قَاتِلُوا الَّذِيْنَ
لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَلَا يُحَرِّمُوْنَ مَا حَرَّمَ
اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَلَا يَدِيْنُوْنَ دِيْنَ الْحَقِّ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ
حَتّٰى يُعْطُوا الْجِزْيَةَ عَنْ يَّدٍ وَّهُمْ صٰغِرُوْنَ ۝ وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ
عُزَيْرُ ابْنُ اللّٰهِ وَقَالَتِ النَّصٰرَى الْمَسِيْحُ ابْنُ اللّٰهِ ۗ ذٰلِكَ قَوْلُهُمْ
بِاَفْوَاهِهِمْ ۚ يُضَاهِـُٔوْنَ قَوْلَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَبْلُ ۗ قٰتَلَهُمُ
اللّٰهُ ۚ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ۝ اِتَّخَذُوْٓا اَحْبَارَهُمْ وَرُهْبَانَهُمْ اَرْبَابًا

★रु. ३/६ आ ८　★रु. ४/१० आ ५

और बेटे और भाई और औरतें और खानदान के आदमी और माल, जो तुम कमाते हो और तिजारत, जिस के बन्द होने से डरते हो, और मकान, जिनको पसंद करते हो, खुदा और उस के रसूल से और खुदा की राह में जिहाद करने से, तुम्हें ज़्यादा अज़ीज़ हों, तो ठहरे रहो, यहां तक कि खुदा अपना हुक्म (यानी अज़ाब) भेजे। और ना-फ़रमान लोगों को हिदायत नहीं दिया करता। (२४) ★

खुदा ने बहुत-से मौक़ों पर तुम को मदद दी है। और हुनैन (की लड़ाई) के दिन, जबकि तुम को अपनी (जमाअत की) ज़्यादती पर फ़ख़्र था, तो वह तुम्हारे कुछ भी काम न आये और ज़मीन बावजूद (इतनी बड़ी) फ़राखी के, तुम पर तंग हो गयी, फिर तुम पीठ फेर कर फिर गये। (२५) फिर खुदा ने अपने पैग़म्बर पर और मोमिनों पर अपनी तरफ़ से तस्कीन नाज़िल फ़रमायी (तुम्हारी मदद को फ़रिश्तों के) लश्कर, जो तुम्हें नज़र नहीं आते थे, (आसमान से) उतारे और काफ़िरों को अज़ाब दिया और कुफ़्र करने वालों की यही सज़ा है। (२६) फिर खुदा इस के बाद जिस पर चाहे, मेहरबानी से तवज्जोह फ़रमाये और खुदा बख़्शने वाला मेहरबान है।[1] (२७) मोमिनो! मुश्रिक तो पलीद हैं, तो इस वर्ष के बाद वे खाना-ए-काबा के पास न जाने पाएं और अगर तुम को ग़रीबी का डर हो, तो खुदा चाहेगा, तो तुम को अपने फ़ज़्ल से ग़नी कर देगा। बेशक खुदा सब कुछ जानता (और) हिक्मत वाला है। (२८) जो लोग अह्ले किताब में से खुदा पर ईमान नहीं लाते और न आख़िरत के दिन पर (यक़ीन रखते हैं) और न उन चीज़ों को हराम समझते हैं, जो खुदा और उसके रसूल ने हराम की हैं और न दीने हक़ को क़ुबूल करते हैं, उन से जंग करो, यहां तक कि ज़लील हो कर अपने हाथ से जिज़या दें। (२९) ★

और यहूद कहते हैं कि उज़ैर खुदा के बेटे हैं और ईसाई कहते हैं कि मसीह खुदा के बेटे हैं। यह उन के मुंह की बातें हैं। पहले काफ़िर भी इसी तरह की बातें कहा करते थे, ये भी उन्हीं की रीस करने लगे हैं। खुदा इनको हलाक करे, ये कहां बहके फिरते हैं। (३०) इन्होंने अपने उलेमा और

---

१. इन आयतों में खुदा ने उन मेहरबानियों का इज़्हार फ़रमाया है, जो मुसलमानों पर की थीं। जब मक्का फ़त्ह हो चुका और मक्का वाले इस्लाम ले आये, तो जनाब रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह ख़बर पहुंची कि हवाज़िन क़बीले के लोग हुनैन में आप के साथ लड़ाई करने को जमा हैं। यह वाक़िआ सन् ०८ हि० का है। हवाज़िन एक तीरंदाज क़ौम थी और हुनैन एक वादी है जो मक्के और तायफ़ के दर्मियान वाक़ेअ है। मुसलमानों की फ़ौज ग्यारह या बारह या सोलह हज़ार थी और काफ़िर सिर्फ़ चार हज़ार। इन्हें अपनी फ़ौज की ज़्यादती पर घमंड हो गया कि काफ़िर हैं ही क्या। उन को तो यों ही मार कर भगा देंगे। खुदा को घमंड पसन्द न था। जब ये दुश्मन की तरफ़ चले तो वे जंगल के रास्तों और पहाड़ के दर्रों में बड़ी मुस्तैदी से उन की घात में लगे हुए थे। हज़रत सल्ल० मय सहाबा रज़ि० के सुबह के अंधेरे में मैदान में उतरे थे कि उन्हों ने यकायक तीरंदाज़ी शुरू कर दी। तलवारें खींच कर यकबारगी ऐसा हमला किया कि मुसलमानों की फ़ौज बिखर गयी, मगर हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि अपने ख़च्चर पर सवार थे, उसी तरह जमे रहे और उस को दुश्मनों की तरफ़ बढ़ाया। आप के चचा अब्बास रज़ि० रकाब पकड़े हुए थे और दूसरी रकाब अबू सुफ़ियान बिन हर्स बिन अब्दुल

(शेष पृष्ठ ३०३ पर)

★रु. ३/९ आ ८ ★रु. ४/१० आ ५

इत्तखज़ू अह़्बारहुम् व रुह़्बानहुम् अर्बाबम्मिन दूनिल्लाहि वल्मसीह़ब् - न मर्-य-म ۚ व मा उमिरू इल्ला लियअ्-बुदू इलाहंव्वाहिदन् ۚ ला इला-ह इल्ला हु-व ط सुब्हानहू अम्मा युश्रिकून (३१) युरीदू-न अंय्युत्फ़िऊ नूरल्लाहि बिअफ़्वाहिहिम् व यअ्बल्लाहु इल्ला अंय्युतिम्-म नूरहू व लौ करिहल्-काफ़िरून (३२) हुवल्लज़ी अर्स-ल रसूलहू बिल्हुदा व दीनिल्ह़क्कि लियुज़्हिरहू अलद्दीनि कुल्लिही ۙ व लौ करिहल् - मुश्रिकून ●(३३) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इन्-न कसीरम्मिनल्-अह़्बारि वर्रुह़्बानि ल-यअ्कुलू-न अम्वालन्नासि बिल्बातिलि व यसुद्दू-न अन् सबीलिल्लाहि ط वल्लज़ी-न यक्निज़ूनज़्ज़-ह-ब वल्-फ़िज़्ज़-त व ला युन्फ़िक़ूनहा फ़ी सबीलिल्लाहि ۙ फ़-बश्शिर्हुम् बिअ़ज़ाबिन् अलीम ۙ (३४) यौ-म युह़्मा अ़लैहा फ़ी नारि ज-हन्-न-म फ़तुक्वा बिहा जिबाहुहुम् व जुनूबुहुम् व ज़ुहूरुहुम् ط हाज़ा मा क-नज़्तुम् लि-अन्फ़ुसिकुम् फ़ज़ूक़ू मा कुन्तुम् तक्निज़ून (३५) इन् - न अि़द्दतश्शुहूरि अि़न्दल्लाहिस्ना-अ-श्-र शह्रन् फ़ी किताबिल्लाहि यौ - म ख़-ल-क़स्समावाति वल्अर् - ज़ मिन्हा अर्ब-अ़तुन् हुरुमुन् ط ज़ालिकद्दीनुल् - क़य्यिमु ۙ फ़ला तज़्लिमू फ़ीहिन् - न अन्फ़ुसकुम् व क़ातिलुल्-मुश्रिकी - न काफ़्फ़-तन् कमा युक़ातिलूनकुम् काफ़्फ़-तन् ط वअ् - लमू अन्नल्ला - ह म - अ़ल्मुत्तक़ीन (३६) इन्नमन्नसीउ ज़ियादतुन् फ़िल्कुफ़्रि युज़ल्लु बिहिल्लज़ी-न क-फ़रू युह़िल्लूनहू आमंव्-व युह़र्रिमूनहू आमल्-लियुवातिऊ अि़द्-द - त मा ह़र्रमल्लाहु फ़युहिल्लू मा ह़र्रमल्लाहु ط ज़ुय्यि - न लहुम् सूउ अअ् - मालिहिम् ط वल्लाहु ला यह्दिल्-क़ौमल् - काफ़िरीन ★(३७)

التوبة ۱۸۳ واعلموا ۱۰

مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَالْمَسِيْحَ ابْنَ مَرْيَمَ ۚ وَمَآ اُمِرُوْٓا اِلَّا لِيَعْبُدُوْٓا
اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۭ سُبْحٰنَهٗ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿۳۱﴾ يُرِيْدُوْنَ
اَنْ يُّطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ وَيَاْبَى اللّٰهُ اِلَّآ اَنْ يُّتِمَّ نُوْرَهٗ
وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ﴿۳۲﴾ هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَ
دِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ ۙ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ﴿۳۳﴾
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ الْاَحْبَارِ وَالرُّهْبَانِ لَيَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ
النَّاسِ بِالْبَاطِلِ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ وَالَّذِيْنَ يَكْنِزُوْنَ
الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يُنْفِقُوْنَهَا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ
اَلِيْمٍ ﴿۳۴﴾ يَّوْمَ يُحْمٰى عَلَيْهَا فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوٰى بِهَا جِبَاهُهُمْ
وَجُنُوْبُهُمْ وَظُهُوْرُهُمْ ۭ هٰذَا مَا كَنَزْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ فَذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ
تَكْنِزُوْنَ ﴿۳۵﴾ اِنَّ عِدَّةَ الشُّهُوْرِ عِنْدَ اللّٰهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا فِيْ كِتٰبِ
اللّٰهِ يَوْمَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ مِنْهَآ اَرْبَعَةٌ حُرُمٌ ۭ ذٰلِكَ
الدِّيْنُ الْقَيِّمُ ڏ فَلَا تَظْلِمُوْا فِيْهِنَّ اَنْفُسَكُمْ وَقَاتِلُوا الْمُشْرِكِيْنَ
كَاۗفَّةً كَمَا يُقَاتِلُوْنَكُمْ كَاۗفَّةً ۭ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ
الْمُتَّقِيْنَ ﴿۳۶﴾ اِنَّمَا النَّسِيْۗءُ زِيَادَةٌ فِي الْكُفْرِ يُضَلُّ بِهِ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا يُحِلُّوْنَهٗ عَامًا وَّيُحَرِّمُوْنَهٗ عَامًا لِّيُوَاطِـُٔوْا عِدَّةَ مَا حَرَّمَ
اللّٰهُ فَيُحِلُّوْا مَا حَرَّمَ اللّٰهُ ۭ زُيِّنَ لَهُمْ سُوْۗءُ اَعْمَالِهِمْ ۭ وَاللّٰهُ لَا

منزل ۲

● नि. १/२ ★रु. ५/११ आ ८

मशाइख़ (बुज़ुर्गों) और मसीह इब्ने मरयम को अल्लाह के सिवा ख़ुदा बना लिया, हालांकि उनको यह हुक्म दिया गया था कि एक ख़ुदा के सिवा किसी की इबादत न करें। उस के सिवा कोई माबूद नहीं। और वह उन लोगों के शरीक मुक़र्रर करने से पाक है। (३१) ये चाहते हैं कि ख़ुदा के नूर को अपने मुंह से (फूंक मार कर) बुझा दें और ख़ुदा अपने नूर को पूरा किये बग़ैर रहने का नहीं, अगरचे काफ़िरों को बुरा ही लगे। (३२) वही तो है जिसने अपने पैग़म्बर को हिदायत और दीने हक़ देकर भेजा, ताकि उस (दीन) को (दुनिया के) तमाम दीनों पर ग़ालिब करे, अगरचे काफ़िर ना-ख़ुश ही हों। (३३) ● मोमिनो !(अह्ले किताब के) बहुत-से आलिम और मशाइख़ लोगों का माल ना-हक़ खाते और (उन को) ख़ुदा की राह से रोकते हैं और जो लोग सोना और चांदी जमा करते हैं और उस को ख़ुदा की राह में ख़र्च नहीं करते, उन को उस दिन के दर्दनाक अज़ाब की ख़ुशख़बरी सुना दो, (३४) जिस दिन वह माल दोज़ख़ की आग में (ख़ूब) गर्म किया जाएगा, फिर उस में इन (बख़ीलों) की पेशानियां और पहलू और पीठें दाग़ी जाएंगी (और कहा जाएगा कि) यह वही है, जो तुम ने अपने लिए जमा किया था, सो जो तुम जमा करते थे, (अब) उसका मज़ा चखो। (३५) ख़ुदा के नज़दीक महीने गिनती में (बारह हैं, यानी) उस दिन (से) कि उस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया। ख़ुदा की किताब में (वर्ष के) बारह महीने (लिखे हुए) हैं। उन में से चार महीने[1] अदब के हैं। यही दीन (का) सीधा रास्ता है। तो इन (महीनों) में (ना-हक़ ख़ूरेज़ी से) अपने आप पर ज़ुल्म न करना और तुम सब के सब मुश्रिकों से लड़ो, जैसे वे सब के सब तुम से लड़ते हैं और जान रखो कि ख़ुदा परहेज़गारों के साथ है। (३६) अम्न के किसी महीने को हटा कर आगे-पीछे कर देना कुफ़्र में बढ़ती करता है। इस से काफ़िर गुमराही में पड़े रहते हैं। एक साल तो उस को हलाल समझ लेते हैं और दूसरे साल हराम, ताकि अदब के महीनों की, जो ख़ुदा ने मुक़र्रर किये है, गिनती पूरी कर लें और जो ख़ुदा ने मना किया है, उसको जायज़ कर लें। उन के बुरे अमल उन को भले दिखायी देते हैं और ख़ुदा काफ़िर लोगों को हिदायत नहीं दिया करता। (३७) ✶

(पृष्ठ ३०१ का शेष)

मुत्तलिब के हाथ में थी। वह ख़च्चर को रोकते थे कि तेज न चले। हज़रत अपना नामे मुबारक ले-ले कर मुसलमानों को पुकारते थे कि ख़ुदा के बंदो ! कहां जाते हो, मेरी तरफ़ आओ। मैं ख़ुदा का रसूल हूं। यह भी फ़रमाते थे कि 'अनन्नबीयु ला कज़िब० अनब्नु अब्दिल मुत्तलिब'। लिखा है कि सौ के क़रीब सहाबी साबित क़दम रहे, बाक़ी सब के पांव उखड़ गये। आप ने अपने चचा अब्बास से, कि वह बुलंद आवाज़ थे, इर्शाद फ़रमाया कि ख़ूब ज़ोर से पुकारें। वह पुकारने लगे तो लोग हज़रत की तरफ़ रुजू हुए। जब कुछ लोग इस तरह पर जमा हो गये, तो हज़रत ने उन को हमला करने का हुक्म दिया। चुनांचे इस हमले में हवाज़िन को हार हुई। इस लड़ाई में ख़ुदा ने मुसलमानों की मदद के लिए फ़रिश्तों का लश्कर भेजा, जो मुसलमानों की तसल्ली की वजह बना। ग़रज़ ख़ुदा ने मुसलमानों को उन के इतराने और घमंड करने पर चेतावनी दे कर उन्हें जिताया। इस लड़ाई में कुफ़्फ़ार के क़त्ल और गिरफ़्तारी के अलावा बहुत-सा माल हाथ आया। कहते हैं कि इस से ज़्यादा कोई बड़ी ग़नीमत हाथ नहीं आयी थी।

१. ज़ीक़ादा, ज़िलहिज्जा, मुहर्रम, रजब।

● नि. १/२ ★रु. ५/११ आ ८

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू मा लकुम् इज़ा क़ी-ल लकुमुन्फ़िरू फ़ी सबीलिल्लाहिस्साक़ल्तुम् इलल्अर्ज़ि ϧ अ - रज़ीतुम् बिल् - हयातिद्दुन्या मिनल्-आखिरति ط फ़-मा मताअुल्-हयातिद्दुन्या फ़िल्आखिरति इल्ला क़लील (३८) इल्ला तन्फ़िरू युअ़ज़्ज़िब्कुम् अ़ज़ाबन् अलीमंव् ϧ- व यस्तब्दिल् क़ौमन् ग़ै-रकुम् व ला तज़ुर्रूहु शैअन् ϧ वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (३९) इल्ला तन्सुरूहु फ़-क़द् न-स-रहुल्लाहु इज़् अख़-र-जहुल्लज़ी-न क-फ़रू सानियस्नैनि इज़् हुमा फ़िल्ग़ारि इज़् यक़ूलु लिसाहिबिही ला तह़् - ज़न् इन्नल्ला - ह म - अना ط फ़-अन्-ज़-लल्लाहु सकी-न-तहू अ़लैहि व अय्यदहू बिजुनूदिल्लम् तरौहा व ज-अ़-ल कलिमतल्-लज़ी-न क-फ़रुस्सुफ़्ला ϧ व कलिमतुल्लाहि हियल्अुल्या ϧ वल्लाहु अ़ज़ीज़ुन् हकीम (४०) इन्फ़िरू ख़िफ़ाफ़ंव्-व सिक़ालंव्-व जाहिदू बिअम्वालिकुम् व अन्फ़ुसिकुम् फ़ी सबीलिल्लाहि ϧ ज़ालिकुम् ख़ैरुल्लकुम् इन् कुन्तुम् तअ्-लमून (४१) लौ का-न अ़-र-ज़न् क़रीबंव्-व स-फ़-रन् क़ासिदल्लत्तबअू-क व लाकिम्-बअुदत् अ़लैहिमुश्शुक़्क़तु ϧ व स-यह्लिफ़ू-न बिल्लाहि लविस्त-तअ्-ना ल-ख़-रज्ना म-अ़कुम् ط युह्लिकू - न अन्फ़ुसहुम् ط वल्लाहु यअ् - लमु इन्नहुम् ल-काज़िबून ★ (४२) अ़-फ़ल्लाहु अ़न्-क ط लि-म अज़िन्-त लहुम् हत्ता य-त-बय्य-न ल-कल्लज़ी-न स - दक़ू व तअ्-ल-मल्काज़िबीन (४३) ला यस्तअ्ज़िनु-कल्लज़ी-न युअ्मिनू-न बिल्लाहि वल्यौमिल् - आख़िरि अंय्युजा-हिदू बिअम्वालिहिम् व अन्फ़ुसिहिम् ϧ वल्लाहु अ़लीमुम् - बिलमुत्तक़ीन (४४)

التوبة ٩ | ١٩٢ | واعلموا

يَهْدِي الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَا لَكُمْ اِذَا قِيْلَ
لَكُمُ انْفِرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اثَّاقَلْتُمْ اِلَى الْاَرْضِ ۭ اَرَضِيْتُمْ بِالْحَيٰوةِ
الدُّنْيَا مِنَ الْاٰخِرَةِ ۚ فَمَا مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا فِي الْاٰخِرَةِ اِلَّا
قَلِيْلٌ ۝ اِلَّا تَنْفِرُوْا يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۙ وَّيَسْتَبْدِلْ قَوْمًا
غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّوْهُ شَيْـًٔا ۭ وَاللّٰهُ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝
اِلَّا تَنْصُرُوْهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللّٰهُ اِذْ اَخْرَجَهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ثَانِيَ
اثْنَيْنِ اِذْ هُمَا فِي الْغَارِ اِذْ يَقُوْلُ لِصَاحِبِهٖ لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ
مَعَنَا ۚ فَاَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلَيْهِ وَاَيَّدَهٗ بِجُنُوْدٍ لَّمْ تَرَوْهَا وَجَعَلَ
كَلِمَةَ الَّذِيْنَ كَفَرُوا السُّفْلٰى ۭ وَكَلِمَةُ اللّٰهِ هِيَ الْعُلْيَا ۭ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ
حَكِيْمٌ ۝ اِنْفِرُوْا خِفَافًا وَّثِقَالًا وَّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ
فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ لَوْ كَانَ
عَرَضًا قَرِيْبًا وَّسَفَرًا قَاصِدًا لَّاتَّبَعُوْكَ وَلٰكِنْ بَعُدَتْ عَلَيْهِمُ
الشُّقَّةُ ۭ وَسَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَوِ اسْتَطَعْنَا لَخَرَجْنَا مَعَكُمْ ۚ
يُهْلِكُوْنَ اَنْفُسَهُمْ ۚ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ۝ عَفَا اللّٰهُ
عَنْكَ ۚ لِمَ اَذِنْتَ لَهُمْ حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَتَعْلَمَ
الْكٰذِبِيْنَ ۝ لَا يَسْتَاْذِنُكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ
اَنْ يُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالْمُتَّقِيْنَ ۝

★रु. ६/१२ आ ५

मोमिनो ! तुम्हें क्या हुआ है कि जब तुम से कहा जाता है कि ख़ुदा की राह में (जिहाद के लिए) निकलो, तो तुम (काहिली की वजह से) ज़मीन पर गिरे जाते हो (यानी घरों से निकलना नहीं चाहते) ? क्या तुम आख़िरत (की नेमतों) को छोड़ कर दुनिया की ज़िंदगी पर ख़ुश हो बैठे हो ? दुनिया की ज़िंदगी के फ़ायदे तो आख़िरत के मुक़ाबले बहुत ही कम हैं। (३८) अगर तुम न निकलोगे तो ख़ुदा तुमको बड़ी तक्लीफ़ का अज़ाब देगा और तुम्हारी जगह और लोग पैदा कर देगा (जो ख़ुदा के पूरे फ़रमांबरदार होंगे) और तुम उस को कुछ नुक़्सान न पहुंचा सकोगे और ख़ुदा हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। (३९) अगर तुम पैग़म्बर की मदद न करोगे तो ख़ुदा उन का मददगार है। (वह वक़्त तुमको याद होगा) जब उन को काफ़िरों ने घरों से निकाल दिया, (उस वक़्त) दो (ही शख़्स थे, जिन) में (एक अबूबक्र थे), दूसरे (ख़ुद अल्लाह के रसूल), जब वे दोनों (सौर के) ग़ार में थे, उस वक़्त पैग़म्बर अपने साथी को तसल्ली देते थे कि ग़म न करो, ख़ुदा हमारे साथ है, तो ख़ुदा ने उन पर तस्कीन नाज़िल फ़रमायी और उन को ऐसी फ़ौजों से मदद दी, जो तुम को नज़र नहीं आते थे और काफ़िरों की बात को पस्त कर दिया और बात तो ख़ुदा ही की बुलंद है और ख़ुदा ज़बरदस्त (और) हिक्मत वाला है। (४०) तुम हल्के हो या बोझल (यानी माल व अस्बाब थोड़ा रखते हो या बहुत, घरों से) निकल आओ और ख़ुदा के रास्ते में माल और जान से लड़ो। यही तुम्हारे हक़ में अच्छा है, बशर्ते कि समझो। (४१) अगर ग़नीमत का माल आसानी से हासिल हो जाने वाला और सफ़र भी हल्का-सा होता, तो तुम्हारे साथ (शौक़ से) चल देते, लेकिन सफ़र उनको दूर (का) नज़र आया, (तो उज़्र करेंगे) और ख़ुदा की क़समें खाएंगे कि अगर हम ताक़त रखते, तो आपके साथ निकल खड़े होते। ये (ऐसे उज़्रों से) अपने आप को हलाक कर रहे हैं और ख़ुदा जानता है कि ये झूठे हैं। (४२) ★

ख़ुदा तुम्हें माफ़ करे। तुमने इससे पहले कि, वे लोग भी ज़ाहिर हो जाते, जो सच्चे हैं और वे भी तुम्हें मालूम हो जाते जो झूठे हैं, उन को इजाज़त क्यों दी ? (४३) जो लोग ख़ुदा पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं, वे तुम से इजाज़त नहीं मांगते (कि पीछे रह जाएं, बल्कि चाहते हैं कि) अपने माल और जान से जिहाद करें और ख़ुदा डरने वालों को जानता है। (४४)

★रु. ६/१२ आ ५

इन्नमा यस्तअ्जिनुकल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिल्लाहि वल्यौमिल्-आख़िरि वर्ताबत् क़ुलूबुहुम् फ़हुम् फ़ी रैबिहिम् य-त-रद्ददून (४५) व लौ अरादुल्-ख़ुरू-ज ल-अ-अद्दू लहू अुद्दतंव्-व लाकिन् करिहल्लाहुम्बिआ़सहुम् फ़-सब्-ब-तहुम् व क़ीलक़्अुदू मअ़ल्क़ाअ़िदीन (४६) लौ ख़-रजू फ़ीकुम् मा ज़ादूकुम् इल्ला ख़बालंव्-व ल औज़अू ख़िलालकुम् यब्ग़ूनकुमुल्-फ़ित-न-त ج व फ़ीकुम् सम्माअू-न लहुम् ط वल्लाहु अ़लीमुम् - बिज़्ज़ालिमीन (४७) ल-क़दिब्त-ग़वुल्-फ़ित्-न-त मिन् क़ब्लु व क़ल्लबू ल-कल्-उमू-र हत्ता जा-अल्हक़्क़ु व ज़-ह-र अम्रुल्लाहि व हुम् कारिहून (४८) व मिन्हुम् मंय्यक़ूलुअ्-ज़ल्ली व ला तफ़्तिन्नी ط अला फ़िल्फ़ित - नति स-क़तू ط व इन्-न जहन्न-म लमुही-ततुम् बिल्काफ़िरीन (४९) इन् तुसिब्-क ह-स-नतुन् तसुअ्हुम् ج व इन् तुसिब्-क मुसीबतुंय्यक़ूलू क़द् अ - ख़ज़्ना अम - रना मिन् क़ब्लु व य-त - वल्लव्वहुम् फ़रिहून (५०)

إنما يستأذنك الذين لا يؤمنون بالله واليوم الآخر وارتابت
قلوبهم فهم في ريبهم يترددون ۝ ولو أرادوا الخروج
لأعدوا له عدة ولكن كره الله انبعاثهم فثبطهم وقيل
اقعدوا مع القاعدين ۝ لو خرجوا فيكم ما زادوكم إلا خبالا
ولأوضعوا خلالكم يبغونكم الفتنة وفيكم سماعون لهم
والله عليم بالظالمين ۝ لقد ابتغوا الفتنة من قبل وقلبوا
لك الأمور حتى جاء الحق وظهر أمر الله وهم كارهون ۝ و
منهم من يقول ائذن لي ولا تفتني ألا في الفتنة سقطوا
وإن جهنم لمحيطة بالكافرين ۝ إن تصبك حسنة
تسؤهم وإن تصبك مصيبة يقولوا قد أخذنا أمرنا
من قبل ويتولوا وهم فرحون ۝ قل لن يصيبنا إلا ما
كتب الله لنا هو مولانا وعلى الله فليتوكل المؤمنون ۝
قل هل تربصون بنا إلا إحدى الحسنيين ونحن نتربص
بكم أن يصيبكم الله بعذاب من عنده أو بأيدينا
فتربصوا إنا معكم متربصون ۝ قل أنفقوا طوعا أو كرها
لن يتقبل منكم إنكم كنتم قوما فاسقين ۝ وما منعهم
أن تقبل منهم نفقاتهم إلا أنهم كفروا بالله وبرسوله و

क़ुल्लंय्युसीबना इल्ला मा क-त-बल्लाहु लना ج हु-व मौलाना ج व अ-लल्लाहि फ़ल्-य-त-वक्कलिल्-मुअ्मिनून (५१) क़ुल् हल् त-रब्बसू-न बिना इल्ला इह्दल् - हुस - नयैनि ط व नह्नु न-त-रब्बसु बिकुम् अंय्युसी-ब - कुमुल्लाहु बिअ़ज़ाबिम् - मिन् अ़िन्दिही औ बिऐदीना ج फ़ - त - रब्बसू इन्ना म-अकुम् मु-त - रब्बिसून (५२) क़ुल् अन्फ़िक़ू तौअ़न् औ करहल्-लंय्युत - क़ब्ब - ल मिन्कुम् ط इन्नकुम् कुन्तुम् क़ौमन् फ़ासिक़ीन (५३) व मा म-न-अ़हुम् अन् तुक़्ब-ल मिन्हुम् न-फ़-क़ातुहुम् इल्ला अन्नहुम् क - फ़रू बिल्लाहि व बिरसूलिही व ला यअ्तूनस्सला - त इल्ला व हुम् कुसाला व ला युन्फ़िक़ू - न इल्ला व हुम् कारिहून (५४)

इजाज़त वही लोग मांगते हैं, जो ख़ुदा पर और पिछले दिन पर ईमान नहीं रखते और उनके दिल शक में पड़े हुए हैं, सो वे अपने शक में डांवा-डोल हो रहे हैं। (४५) और अगर वे निकलने का इरादा करते हैं तो उसके लिए सामान तैयार करते, लेकिन ख़ुदा ने उनका उठना (और निकलना) पसन्द न किया, तो उनको हिलने-जुलने ही न दिया और (उनसे) कह दिया गया कि जहां (माज़ूर) बैठे हैं, तुम भी उन के साथ बैठे रहो। (४६) अगर वे तुम में (शामिल होकर) निकल भी खड़े होते तो, तुम्हारे हक़ में शरारत करते और तुम में फ़साद डलवाने की ग़रज़ से दौड़े-दौड़े फिरते और तुम में उन के जासूस भी हैं और ख़ुदा ज़ालिमों को ख़ूब जानता है। (४७) ये पहले भी फ़साद चाहने वाले रहे हैं और बहुत-सी बातों में उलट-फेर करते रहे हैं, यहां तक कि हक़ आ पहुंचा और ख़ुदा का हुक्म ग़ालिब हुआ और वे बुरा मानते ही रह गये। (४८) और उन में कोई ऐसा भी है, जो कहता है कि मुझे तो इजाज़त ही दीजिए और आफ़त में न डालिए। देखो, ये आफ़त में पड़ गये हैं और दोज़ख़ सब काफ़िरों को घेरे हुए है। (४९) (ऐ पैग़म्बर!) अगर तुम को आराम (व सुख) मिलता है, तो उन को बुरा लगता है और अगर कोई कठिन (घड़ी आ) पड़ती है, तो कहते हैं कि हमने अपना काम पहले ही (ठीक) कर लिया था और ख़ुशियां मनाते लौट जाते हैं। (५०) कह दो कि हम को कोई मुसीबत नहीं पहुंच सकती, उस के अलावा, जो ख़ुदा ने हमारे लिए लिख दी हो। वही हमारा कारसाज़ है और मोमिनों को ख़ुदा ही का भरोसा रखना चाहिए। (५१) कह दो कि तुम हमारे हक़ में दो भलाइयों में से एक के इंतिज़ार में हो और हम तुम्हारे हक़ में इस बात के इंतिज़ार में हैं कि ख़ुदा (या तो) अपने पास से तुम पर कोई अज़ाब नाज़िल करे या हमारे हाथों से अज़ाब दिलवाये तो तुम भी इंतिज़ार करो, हम भी तुम्हारे साथ इंतिज़ार करते हैं। (५२) कह दो कि तुम (माल) ख़ुशी से ख़र्च करो या ना-ख़ुशी से, हरगिज़ क़ुबूल नहीं किया जाएगा। तुम नाफ़रमान लोग हो। (५३) और उन के ख़र्च (मालों) के क़ुबूल होने में कोई चीज़ रोक नहीं बनी, सिवा इसके कि उन्होंने ख़ुदा से और उसके रसूल से कुफ़्र किया और नमाज़ को आते हैं, तो सुस्त व काहिल हो कर और ख़र्च करते हैं तो ना-ख़ुशी से। (५४) तुम उन के माल और औलाद से ताज्जुब न करना।

फ़ला तुअ्-जिब-क अम्वालुहुम् व ला औलादुहुम् ط इन्नमा युरीदुल्लाहु लियु-अ़ज़्ज़िबहुम् बिहा फ़िल्ह़यातिद्दुन्या व तज़्-ह-क़ अन्फ़ुसुहुम् व हुम् काफ़िरून (५५) व यह़्लिफ़ू-न बिल्लाहि इन्नहुम् लमिन्कुम् ط व मा हुम् मिन्कुम् व लाकिन्नहुम् क़ौमुंय्यफ़्रक़ून (५६) लौ यजिदू-न मलज-अन् औ मग़ारातिन् औ मुद्द-ख़-लल्-ल वल्लौ इलैहि व हुम् यज्मह़ून (५७) व मिन्हुम् मंय्यल्मिज़ु-क फ़िस्स-द-क़ाति ج फ़-इन् उअ्-तू मिन्हा रज़ू व इल्लम् युअ्-तौ मिन्हा इज़ा हुम् यस्ख़तून (५८) व लौ अन्नहुम् रज़ू मा आताहुमुल्लाहु व रसूलुहू ل व क़ालू ह़स्बुनल्लाहु सयुअ्तीनल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही व रसूलुहू ل इन्ना इलल्लाहि राग़िबून ★ (५९) इन्नमस्स-द-क़ातु लिल्फ़ुक़राइ वल्मसाकीनि वल्आमिली-न अ़लैहा वल्मुअल्लफ़ति क़ुलूबु-हुम् व फ़िर्रिक़ाबि वल्ग़ारिमी-न व फ़ी सबीलिल्लाहि वब्निस्सबीलि ط फ़री-ज़-तम्-मिनल्लाहि ط वल्लाहु अ़लीमुन् ह़कीम (६०) व मिन्हुमुल्लज़ी-न युअ्ज़ूनन्नबिय्-य व यक़ूलू-न हु-व उज़ुनुन् ط क़ुल् उज़ुनु ख़ैरिल्लकुम् युअ्मिनु बिल्लाहि व युअ्मिनु लिल्-मुअ्मिनी-न व रह़्मतुल्-लिल्लज़ी-न आमनू मिन्कुम् ط वल्लज़ी-न युअ्ज़ू-न रसूलल्लाहि लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम (६१) यह़्लिफ़ू-न बिल्लाहि लकुम् लियुर्ज़ूकुम् ج वल्लाहु व रसूलुहू अ-ह़क़्क़ु अंय्युर्ज़ूहु इन् कानू मुअ्मिनीन (६२) अ-लम् यअ्-लमू अन्नहू मंय्युहादिदिल्ला-ह व रसूलहू फ़अन्-न लहू ना-र ज-हन्न-म ख़ालिदन् फ़ीहा ط ज़ालिकल्-ख़िज़्युल्-अ़ज़ीम ● (६३)

لَا يَأْتُوْنَ الصَّلٰوةَ اِلَّا وَهُمْ كُسَالٰى وَلَا يُنْفِقُوْنَ اِلَّا وَهُمْ كٰرِهُوْنَ ۝
فَلَا تُعْجِبْكَ اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ ۭ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ
بِهَا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ اَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ۝
وَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ اِنَّهُمْ لَمِنْكُمْ ۭ وَمَا هُمْ مِّنْكُمْ وَلٰكِنَّهُمْ قَوْمٌ
يَّفْرَقُوْنَ ۝ لَوْ يَجِدُوْنَ مَلْجَاً اَوْ مَغٰرٰتٍ اَوْ مُدَّخَلًا لَّوَلَّوْا
اِلَيْهِ وَهُمْ يَجْمَحُوْنَ ۝ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّلْمِزُكَ فِي الصَّدَقٰتِ ۚ فَاِنْ
اُعْطُوْا مِنْهَا رَضُوْا وَاِنْ لَّمْ يُعْطَوْا مِنْهَآ اِذَا هُمْ يَسْخَطُوْنَ ۝ وَ
لَوْ اَنَّهُمْ رَضُوْا مَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ ۙ وَقَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ
سَيُؤْتِيْنَا اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ وَرَسُوْلُهٗٓ ۙ اِنَّآ اِلَى اللّٰهِ رٰغِبُوْنَ ۝
اِنَّمَا الصَّدَقٰتُ لِلْفُقَرَاۗءِ وَالْمَسٰكِيْنِ وَالْعٰمِلِيْنَ عَلَيْهَا وَالْمُؤَلَّفَةِ
قُلُوْبُهُمْ وَفِي الرِّقَابِ وَالْغٰرِمِيْنَ وَفِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۭ
فَرِيْضَةً مِّنَ اللّٰهِ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝ وَمِنْهُمُ الَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ
النَّبِيَّ وَيَقُوْلُوْنَ هُوَ اُذُنٌ ۭ قُلْ اُذُنُ خَيْرٍ لَّكُمْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ
وَيُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَرَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ۭ وَالَّذِيْنَ
يُؤْذُوْنَ رَسُوْلَ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝ يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ
لِيُرْضُوْكُمْ ۚ وَاللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗٓ اَحَقُّ اَنْ يُّرْضُوْهُ اِنْ كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ ۝
اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّهٗ مَنْ يُّحَادِدِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاَنَّ لَهٗ نَارَ

منزل

★रु. ७/१३ आ १७ ●मु. ३/४

ख़ुदा चाहता है कि इन चीजों से दुनिया की ज़िंदगी में उन को अज़ाब दे और (जब) उन की जान निकले, तो (उस वक़्त भी) वे काफ़िर ही हों। (५५) और ख़ुदा की क़स्में खाते हैं कि वे तुम्हीं में से हैं हालांकि वे तुम में से नहीं हैं। असल यह है कि ये डरपोक लोग हैं। (५६) अगर उन को कोई बचाव की जगह (जैसे क़िला) या ग़ार व मग़ाक या (ज़मीन के अंदर) घुसने की जगह मिल जाए, तो उसी तरह रस्सियां तुड़ाते हुए भाग जाएं। (५७) और उनमें कुछ ऐसे भी हैं कि सदक़ों (की तक़्सीम) में तुम पर ताना ज़नी करते हैं। अगर उन को उसमें से (अच्छा-भला कुछ) मिल जाए तो ख़ुश रहें और अगर (इस क़दर) न मिले तो झट ख़फ़ा हो जाएं। (५८) और अगर वे इस पर ख़ुश रहते जो ख़ुदा और उसके रसूल ने उनको दिया था और कहते कि हमें ख़ुदा काफ़ी है और ख़ुदा अपने फ़ज़्ल से और पैग़म्बर (अपनी मेहरबानी से) हमें (फिर) दे देंगे और हमें तो ख़ुदा ही की ख़्वाहिश है, (तो उन के हक़ में बेहतर होता)। (५९) ★

सदक़े (यानी ज़कात व ख़ैरात) तो मुफ़्लिसों और मुहताजों और सदक़ात के लिए काम करने वालों का हक़ है और उन लोगों का जिन के दिलों का रखना मंज़ूर है और ग़ुलामों के आज़ाद कराने में और क़र्ज़दारों (के क़र्ज़ अदा करने में) और ख़ुदा की राह में और मुसाफ़िरों (की मदद) में (भी यह माल ख़र्च करना चाहिए। ये हुक़ूक़) ख़ुदा की तरफ़ से मुक़र्रर कर दिए गये हैं और ख़ुदा जानने वाला (और) हिक्मत वाला है। (६०) और इन में कुछ ऐसे हैं, जो पैग़म्बर को ईज़ा (तक्लीफ़) देते हैं और कहते हैं कि यह शख़्स निरा कान है।[1] (उन से) कह दो कि (वह) कान (है, तो) तुम्हारी भलाई के लिए। वह ख़ुदा का और मोमिनों (की बात) का यक़ीन रखता है और जो लोग तुम में ईमान लाये हैं, उन के लिए रहमत है और जो लोग रसूले ख़ुदा को रंज पहुंचाते हैं, उनके लिए दर्दनाक अज़ाब (तैयार) है। (६१) मोमिनो ! ये लोग तुम्हारे सामने ख़ुदा की क़स्में खाते हैं, ताकि तुम को ख़ुश कर दें, हालांकि अगर ये (दिल से) मोमिन होते, तो ख़ुदा और और उसके पैग़म्बर ख़ुश करने के ज़्यादा हक़दार हैं ● (६२) क्या इन लोगों को मालूम नहीं कि जो शख़्स ख़ुदा और उसके रसूल से मुक़ाबला करता है, तो उसके लिए जहन्नम की आग (तैयार) है, जिस में वह हमेशा (जलता) रहेगा, यह बड़ी रुसवाई है। (६३) मुनाफ़िक़ डरते रहते हैं कि उन

१. कुछ मुनाफ़िक़ जनाब सरवरे कायनात को ईज़ा देते थे यानी कहते थे कि ये तो निरे कान हैं। जो कोई उन से बात कह देता है, उस को हमारे हक़ में सच जान लेते हैं और जब हम आ कर क़सम खा लेते हैं तो हमें सच्चा जानते हैं। ख़ुदा ने फ़रमाया कि यह बात नहीं कि वह हक़ व बातिल में तमीज़ नहीं करते, बल्कि सच्चे को झूठे से ख़ूब पहचानते हैं, लेकिन अमलन दरगुज़र करते हैं और जो मुनाफ़िक़ ऐसी बात कह कर पैग़म्बरे ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ईज़ा देते हैं, उन को सख़्त अज़ाब होगा।

यह्ज़रुल् मुनाफ़िक़ू-न अन् तुनज़्ज़-ल अलैहिम् सूरतुन् तुनब्बिउहुम् बिमा फ़ी क़ुलूबिहिम् ط क़ुलिस्तह्ज़िऊ ج इन्नल्ला-ह मुख़्रिजुम् - मा तह्ज़रून (६४) व लइन् स-अल्तहुम् ल-यक़ूलुन्-न इन्नमा कुन्ना नख़ूज़ु व नल्अबु ط क़ुल् अबिल्लाहि व आयातिही व रसूलिही कुन्तुम् तस्तह्ज़िऊन (६५) ला तअ्-तज़िरू क़द् क-फ़र्तुम् बअ्-द ईमानिकुम् ط इन्नअ् - फ़ु अन् ताइफ़तिम् - मिन्कुम् नुअ़ज़्ज़िब् ताइ-फ़ - तम् - बिअन्नहुम् कानू मुज्रिमीन ★ (६६) अल्मुनाफ़िक़ू - न वल्मुनाफ़िक़ातु बअ् - ज़ुहुम् मिम्बअ्-ज़िन् ⁂ यअ्मुरू-न बिल्मुन्करि व यन्हौ-न अ़निल्मअ्-रूफ़ि व यक़्बिज़ू - न ऐदियहुम् ط नसुल्ला - ह फ़-नसि-यहुम् ط इन्नल्-मुनाफ़िक़ी - न हुमुल् - फ़ासिक़ून (६७) व-अ़-दल्लाहुल्-मुनाफ़िक़ी-न वल्मुनाफ़िक़ाति वल्कुफ़्फ़ा-र ना-र ज-हन्न-म ख़ालिदी-न फ़ीहा ط हि - य हस्बुहुम् ج व ल-अ़ - नहुमुल्लाहु ج व लहुम् अ़ज़ाबुम्मुक़ीम لا (६८) कल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिकुम् कानू अशद् - द मिन्कुम् क़ुव्वतंव्-व अक्स-र अम्वालंव् - व औलादन् ط फ़स्तम्तअू बिख़लाक़िहिम् फ़स्तम्तअ् - तुम् बिख़लाक़िकुम् क-मस-तम्त-अ़ल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिकुम् बिख़लाक़िहिम् व ख़ुज़्तुम् कल्लज़ी ख़ाज़ू ط उलाइ-क हबितत् अअ्-मालुहुम् फ़िद्दुन्या वल्आख़िरति ج व उलाइ-क हुमुल्ख़ासिरून (६९) अ-लम् यअ्तिहिम् न-ब-उल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् क़ौमि नूहिंव्-व आ़दिंव्-व समू-द لا व क़ौमि इब्राही-म व अस्हाबि मद्-य-न वल्मुअ्तफ़िकाति ط अ-तत्हुम् रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति ج फ़मा कानल्लाहु लि-यज़्लि-महुम् व लाकिन् कानू अन्फ़ुसहुम् यज़्लिमून (७०)

جَهَنَّمَ خَالِدًا فِيهَا ۚ ذَٰلِكَ الْخِزْيُ الْعَظِيمُ ﴿٦٣﴾ يَحْذَرُ الْمُنَافِقُونَ
أَنْ تُنَزَّلَ عَلَيْهِمْ سُورَةٌ تُنَبِّئُهُمْ بِمَا فِي قُلُوبِهِمْ ۚ قُلِ
اسْتَهْزِئُوا إِنَّ اللَّهَ مُخْرِجٌ مَا تَحْذَرُونَ ﴿٦٤﴾ وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ
لَيَقُولُنَّ إِنَّمَا كُنَّا نَخُوضُ وَنَلْعَبُ ۚ قُلْ أَبِاللَّهِ وَآيَاتِهِ وَرَسُولِهِ
كُنْتُمْ تَسْتَهْزِئُونَ ﴿٦٥﴾ لَا تَعْتَذِرُوا قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ إِيمَانِكُمْ ۚ
إِنْ نَعْفُ عَنْ طَائِفَةٍ مِنْكُمْ نُعَذِّبْ طَائِفَةً بِأَنَّهُمْ كَانُوا
مُجْرِمِينَ ﴿٦٦﴾ الْمُنَافِقُونَ وَالْمُنَافِقَاتُ بَعْضُهُمْ مِنْ بَعْضٍ ۚ
يَأْمُرُونَ بِالْمُنْكَرِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمَعْرُوفِ وَيَقْبِضُونَ
أَيْدِيَهُمْ ۚ نَسُوا اللَّهَ فَنَسِيَهُمْ ۗ إِنَّ الْمُنَافِقِينَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ﴿٦٧﴾
وَعَدَ اللَّهُ الْمُنَافِقِينَ وَالْمُنَافِقَاتِ وَالْكُفَّارَ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ
فِيهَا ۚ هِيَ حَسْبُهُمْ ۚ وَلَعَنَهُمُ اللَّهُ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُقِيمٌ ﴿٦٨﴾
كَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ كَانُوا أَشَدَّ مِنْكُمْ قُوَّةً وَأَكْثَرَ أَمْوَالًا وَ
أَوْلَادًا فَاسْتَمْتَعُوا بِخَلَاقِهِمْ فَاسْتَمْتَعْتُمْ بِخَلَاقِكُمْ كَمَا
اسْتَمْتَعَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ بِخَلَاقِهِمْ وَخُضْتُمْ كَالَّذِي
خَاضُوا ۚ أُولَٰئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۖ وَ
أُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ﴿٦٩﴾ أَلَمْ يَأْتِهِمْ نَبَأُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ
قَوْمِ نُوحٍ وَعَادٍ وَثَمُودَ وَقَوْمِ إِبْرَاهِيمَ وَأَصْحَابِ مَدْيَنَ

★रु. ८/१४ आ ७ ⁂ व. लाज़िम

(के पैग़म्बर) पर कहीं कोई ऐसी सूरत (न) उतर आये कि उनके दिल की बातों का उन (मुसल-मानों) पर ज़ाहिर कर दे। कह दो कि हंसी किये जाओ। जिस बात से तुम डरते हो, ख़ुदा उस को ज़रूर ज़ाहिर कर देगा। (६४) और अगर तुम उन से (इस बारे में) पूछो, तो कहेंगे कि हम तो यों ही बात-चीत और दिल्लगी करते थे कहो, क्या तुम ख़ुदा और उस की आयतों और उस के रसूल से हंसी करते थे? (६५) बहाने मत बनाओ, तुम ईमान लाने के बाद काफ़िर हो चुके हो। अगर हम तुम में से एक जमाअत को माफ़ कर दें तो दूसरी जमाअत को सज़ा भी देंगे, क्योंकि वे गुनाह करते रहे हैं। (६६) ✶

मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें एक दूसरे के हम जिंस (यानी एक ही तरह के) हैं, कि बुरे काम करने को कहते और नेक कामों से मना करते और (ख़र्च करने से) हाथ बन्द किये रहते हैं, उन्होंने ख़ुदा को भुला दिया तो ख़ुदा ने भी उन को भुला दिया। बेशक मुनाफ़िक़ ना-फ़रमान हैं। (६७) अल्लाह ने मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों और काफ़िरों से जहन्नम की आग का वायदा किया है, जिसमें हमेशा (जलते) रहेंगे। वही उन के लायक़ हैं और ख़ुदा ने उन पर लानत कर दी है और उनके लिए हमेशा का अज़ाब (तैयार) है। (६८) (तुम मुनाफ़िक़ लोग) उन लोगों की तरह हो, जो तुम से पहले हो चुके हैं, वह तुम से बहुत ताक़तवर और माल व औलाद में कहीं ज़्यादा थे, तो वे अपने हिस्से से फ़ायदा उठा चुके सो जिस तरह तुम से पहले लोग अपने हिस्से से फ़ायदा उठा चुके हैं, उसी तरह तुम ने अपने हिस्से से फ़ायदा उठा लिया और जिस तरह वे बातिल में डूबे रहे, उसी तरह तुम बातिल में डूबे रहे। ये वह लोग हैं, जिन के अमल दुनिया और आख़िरत में बर्बाद हो गये। और यही नुक़सान उठाने वाले हैं। (६९) क्या इन को उन लोगों (के हालात) की ख़बर नहीं पहुंची, जो इन से पहले थे (यानी नूह और आद और समूद की क़ौम और इब्राहीम की क़ौम और मद्यन वाले, उलटी हुई बस्तियों वाले, उन के पास पैग़म्बर निशानियां ले-ले कर आए और ख़ुदा तो ऐसा न था कि उन पर ज़ुल्म करता लेकिन वही अपने आप पर ज़ुल्म करते थे। (७०)

★रु. ८/१४ आ ७ व. लाज़िम

वल्मुअ्मिनू-न वल्मुअ्मिनातु बअ्-ज़ुहुम् औलिया-उ बअ्-ज़िन् ※ यअ्मुरू - न बिल्-मअ्-रूफ़ि व यन्हौ-न अनिल्मुन्करि व युक़ीमूनस्सला-त व युअ्तूनज़्ज़का-त व युतीअूनल्ला-ह व रसूलहू ♭ उलाइ-क स-यर्हमुहुमुल्लाहु ♭ इन्नल्ला-ह अज़ीज़ुन् हकीम (७१) व-अ-दल्लाहुल्-मुअ्मिनी-न वल्मुअ्मिनाति जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा व मसाकि-न तय्यि-ब-तन् फ़ी जन्नाति अद्निन् ♭ व रिज़्वानुम् - मिनल्लाहि अक्बरु ♭ ज़ालि-क हुवल्-फ़ौज़ुल् - अज़ीम ★ (७२) या अय्युहन्नबिय्यु जाहिदिल् - कुफ़्फ़ा - र वल्मुनाफ़िक़ी - न वग़्लुज़् अलैहिम् ♭ व मअ्वाहुम् जहन्नमु ♭ व बिअ्सल्मसीर (७३) यह्लिफ़ू-न बिल्लाहि मा क़ालू ♭ व ल-क़द् क़ालू कलि-म-तल्-कुफ़्रि व क-फ़रू बअ्-द इस्लामिहिम् व हम्मू बिमा लम् यनालू ϭ व मा न - क़मू इल्ला अन् अग़्नाहुमुल्लाहु व रसूलुहू मिन् फ़ज़्लिहीϭ फ़इ य्यतूबू यकु ख़ैरल्लहुम् ϭ व इ य्य-त-वल्लौ युअ़ज़्ज़िब्-हुमुल्लाहु अ़ज़ाबन् अलीमन् ♭ फ़िद्दुन्या वल्आख़िरतिϭ व मा लहुम् फ़िल्अर्ज़ि मिव्वलिय्यिव्वला नसीर (७४) व मिन्हुम् मन् आह-दल्ला-ह लइन् आताना मिन् फ़ज़्लिही ल-नस्सद्द-क़न्-न व ल-नकूनन्-न मिनस्सालिहीन (७५) फ़-लम्मा आताहुम् मिन् फ़ज़्लिही बख़िलू बिही व त-व-ल्लव्-व हुम् मुअ्-रिज़ून (७६)

التوبة ٩ واعلموا ١٠

وَالْمُؤْتَفِكٰتِ ۭ اَتَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ۚ فَمَا كَانَ اللّٰهُ
لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۝ وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَ
الْمُؤْمِنٰتُ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَاۗءُ بَعْضٍ ۘ يَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَ
يَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَ
يُطِيْعُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۭ اُولٰۗىِٕكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللّٰهُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ
حَكِيْمٌ ۝ وَعَدَ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ
مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ
عَدْنٍ ۭ وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ اَكْبَرُ ۭ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝
يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ۭ وَ
مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۭ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝ يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ مَا قَالُوْا ۭ
وَلَقَدْ قَالُوْا كَلِمَةَ الْكُفْرِ وَكَفَرُوْا بَعْدَ اِسْلَامِهِمْ وَهَمُّوْا
بِمَا لَمْ يَنَالُوْا ۚ وَمَا نَقَمُوْٓا اِلَّآ اَنْ اَغْنٰىهُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ مِنْ
فَضْلِهٖ ۚ فَاِنْ يَّتُوْبُوْا يَكُ خَيْرًا لَّهُمْ ۚ وَاِنْ يَّتَوَلَّوْا يُعَذِّبْهُمُ
اللّٰهُ عَذَابًا اَلِـيْمًا ۙ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَمَا لَهُمْ فِي الْاَرْضِ
مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ۝ وَمِنْهُمْ مَّنْ عٰهَدَ اللّٰهَ لَىِٕنْ اٰتٰىنَا
مِنْ فَضْلِهٖ لَنَصَّدَّقَنَّ وَلَنَكُوْنَنَّ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝ فَلَمَّآ
اٰتٰىهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ بَخِلُوْا بِهٖ وَتَوَلَّوْا وَّهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ۝

※ व. लाज़िम ★ रु. ९/१५ आ ६

और मोमिन मर्द और मोमिन औरतें एक दूसरे के दोस्त हैं कि अच्छे काम करने को कहते और बुरी बातों से मना करते और नमाज पढ़ते और ज़कात देते और ख़ुदा और उस के पैग़म्बर की इताअत करते हैं। यही लोग हैं, जिन पर ख़ुदा रहम करेगा, बेशक ख़ुदा ग़ालिब हिक्मत वाला है। (७१) ख़ुदा ने मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों से बहिश्तों का वायदा किया है, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं (वे) उनमें हमेशा रहेंगे और हमेशा-हमेशा की बहिश्तों में उम्दा मकानों का (वायदा किया है) और ख़ुदा की रज़ामंदी तो सब से बढ़ कर नेमत है। यही बड़ी कामियाबी है। (७२) ★

ऐ पैग़म्बर! काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों से लड़ो और उन पर सख़्ती करो और उन का ठिकाना दोज़ख़ है और बुरी जगह है। (७३) ये ख़ुदा की क़स्में खाते हैं कि उन्होंने (तो कुछ) नहीं कहा, हालांकि उन्होंने कुफ़्र का कलिमा कहा है और ये इस्लाम लाने के बाद काफ़िर हो गये हैं और ऐसी बात का क़स्द कर चुके हैं, जिस पर क़ुदरत नहीं पा सके और उन्होंने (मुसलमानों में) ऐब ही कौन-सा देखा है, सिवा इस के कि ख़ुदा ने अपने फ़ज़्ल से और उसके पैग़म्बर ने (अपनी मेहरबानी से) उन को दौलतमंद कर दिया है, तो अगर ये लोग तौबा कर लें, तो उन के हक़ में बेहतर होगा और अगर मुंह फेर लें, तो ख़ुदा उन को दुनिया और आख़िरत में दुख देने वाला अज़ाब देगा और ज़मीन में उनका कोई दोस्त और मददगार न होगा। (७४) और उनमें कुछ ऐसे हैं, जिन्होंने ख़ुदा से अह्द किया था कि अगर वह हम को अपनी मेहरबानी से (माल) अता फ़रमाएगा, तो हम ज़रूर ख़ैरात किया करेंगे और नेक लोगों में हो जाएंगे। (७५) लेकिन जब ख़ुदा ने उनको अपने फ़ज़्ल से (माल) दिया तो उसमें बुख़्ल करने लगे और (अपने अह्द से) रू-गरदानी कर के फिर बैठे। (७६) तो ख़ुदा

व॰ लाज़िम ★रु॰ ९/१५ आ ९

फ़-अअ्-क़-बहुम् निफ़ाक़न् फ़ी क़ुलूबिहिम् इला यौमि यल्क़ौनहू बिमा अख़्-लफ़ुल्ला-ह मा व-अदूहु व बिमा कानू यक्ज़िबून (७७) अ-लम् यअ्-लमू अन्नल्ला-ह यअ्-लमु सिर्रहुम् व नज्वाहुम् व अन्नल्ला-ह अ़ल्लामुल्ग़ुयूब ८ (७८) अल्लज़ी-न यल्मिज़ूनल्-मुत्तव्विअ़ी-न मिनल्-मुअ्मिनी - न फ़िस्स़-द - क़ाति वल्लज़ी - न ला यजिदू-न इल्ला जुह्-दहुम् फ़-यस्ख़रू-न मिन्हुम् ♭ सख़िरल्लाहु मिन्हुम् ⁄ व लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम (७९) इस्तग़्फ़िर् लहुम् औ ला तस्तग़्फ़िर् लहुम् ♭ इन् तस्तग़्फ़िर् लहुम् सब्अ़ी - न मर्र-तन् फ़-लंय्यग़्फ़िरल्लाहु लहुम् ♭ ज़ालि-क बिअन्नहुम् क-फ़रू बिल्लाहि व रसूलिही ♭ वल्लाहु ला यह्दिल्क़ौमल् - फ़ासिक़ीन ★ (८०) फ़रिहल्-मुख़ल्लफ़ू-न बिमक्अ़दिहिम् ख़िला-फ़ रसूलिल्लाहि व करिहू अंय्युजाहिदू बिअम्वालिहिम् व अन्फ़ुसिहिम् फ़ी सबीलिल्-लाहि व क़ालू ला तन्फ़िरू फ़िल्हर्रि ♭ क़ुल् नारु ज-हन्न-म अशद्दु हर्रन् ♭ लौ कानू यफ़्क़हून (८१) फ़ल्-यज़्हकू क़लीलंव्वल्-यब्कू कसीरन् ८ जज़ा - अम् - बिमा कानू यक्सिबून (८२) फ़इर्-र-ज - अ़-कल्लाहु इला ता-इफ़तिम्-मिन्हुम् फ़स्तअ्ज़नू - क लिल्ख़ुरूजि फ़क़ुल्लन् तख़रुजू मअि-य अ-ब-दंव्-व लन् तुक़ातिलू मअि-य अ़दुव्वन् ♭ इन्नकुम् रज़ीतुम् बिल्क़ुअ़ूदि अव्व-ल मर्रतिन् फ़क्अ़ुदू म-अ़ल्-ख़ालिफ़ीन (८३) व ला तुसल्लि अ़ला अ-ह़दिम्मिन्हुम् मा-त अ-ब-दंव्-व ला तक़ुम् अ़ला क़ब्रिही ♭ इन्नहुम् क-फ़रू बिल्लाहि व रसूलिही व मातू व हुम् फ़ासिक़ून (८४)

واعلموا ١٠ ١٥٩ التوبة

فأعقبهم نفاقا في قلوبهم إلى يوم يلقونه بما أخلفوا الله
ما وعدوه وبما كانوا يكذبون ۝ ألم يعلموا أن الله يعلم
سرهم ونجواهم وأن الله علام الغيوب ۝ الذين
يلمزون المطوعين من المؤمنين في الصدقت والذين
لا يجدون إلا جهدهم فيسخرون منهم سخر الله منهم
ولهم عذاب أليم ۝ استغفر لهم أو لا تستغفر لهم إن
تستغفر لهم سبعين مرة فلن يغفر الله لهم ذلك
بأنهم كفروا بالله ورسوله والله لا يهدي القوم الفسقين ۝
فرح المخلفون بمقعدهم خلف رسول الله وكرهوا أن
يجاهدوا بأموالهم وأنفسهم في سبيل الله وقالوا لا
تنفروا في الحر قل نار جهنم أشد حرا لو كانوا
يفقهون ۝ فليضحكوا قليلا وليبكوا كثيرا جزاء بما كانوا
يكسبون ۝ فإن رجعك الله إلى طائفة منهم فاستأذنوك
للخروج فقل لن تخرجوا معي أبدا ولن تقاتلوا معي
عدوا إنكم رضيتم بالقعود أول مرة فاقعدوا مع الخلفين ۝
ولا تصل على أحد منهم مات أبدا ولا تقم على قبره
إنهم كفروا بالله ورسوله وماتوا وهم فسقون ۝ ولا

منزل ٢

★रु. १०/१६ आ ८

ने उसका अंजाम यह किया कि उस दिन तक के लिए, जिस में वे खुदा के सामने हाज़िर होंगे, उन के दिलों में निफ़ाक़ डाल दिया, इस लिए कि उन्होंने खुदा से जो वायदा किया था, उस के ख़िलाफ़ किया और इसलिए कि वे झूठ बोलते थे। (७७) क्या उनको मालूम नहीं कि खुदा उन भेदों और मश्विरों तक को जानता है और यह कि वह ग़ैब की बातें जानने वाला है। (७८) जो (ताक़त वाले) मुसलमान दिल खोलकर ख़ैरात करते हैं और जो (बेचारे ग़रीब) सिर्फ़ उतना ही कमा सकते हैं, जितनी मज़दूरी करते (और उस थोड़ी-सी कमाई में से भी खर्च करते) हैं, उन पर जो (मुनाफ़िक़) तान करते और हंसते हैं, खुदा उन पर हंसता है और उन के लिए तक्लीफ़ देने वाला अज़ाब (तैयार) है।[1] (७९) तुम उन के लिए बख़्शिश मांगो या न मांगो, (बात एक है) अगर उनके लिए सत्तर बार भी बख़्शिश मांगोगे, तो भी खुदा उन को नहीं बख़्शेगा, यह इस लिए कि उन्होंने खुदा और उसके रसूल से कुफ़्र किया और खुदा ना-फ़रमान लोगों को हिदायत नहीं देता। (८०)★

जो लोग (तबूक की लड़ाई) में पीछे रह गये, वे पैग़म्बर (की मर्ज़ी) के ख़िलाफ़ बैठे रहने से खुश हुए और इस बात को ना-पसंद किया कि खुदा की राह में अपने माल और जान से जिहाद करें और (औरों से भी) कहने लगे कि गर्मी में मत निकलना। (उन से) कह दो कि दोज़ख की आग इस से कहीं ज़्यादा गर्म है। काश! ये (इस बात) को समझते। (८१) ये दुनिया में) थोड़ा-सा हंस लें और (आख़िरत में) उनको उन आमाल के बदले, जो करते रहे हैं, बहुत-सा रोना होगा। (८२) फिर अगर खुदा तुम को उन में से किसी गिरोह की तरफ़ ले जाए और वह तुम से निकलने की इजाज़त तलब करें, तो कह देना कि तुम मेरे साथ हरगिज़ नहीं निकलोगे और न मेरे साथ (मदद-गार हो कर) दुश्मन से लड़ाई करोगे। तुम पहली बार बैठे रहने से खुश हुए तो अब भी पीछे रहने वालों के साथ बैठे रहो। (८३) और (ऐ पैग़म्बर!) इन में से कोई मर जाए तो कभी उस (के जनाज़े) पर नमाज़ न पढ़ना और न उस की क़ब्र पर (जा कर) खड़े होना। ये खुदा और उस के रसूल के साथ कुफ़्र करते रहे और मरे भी तो ना-फ़रमान (ही मरे), (८४) और उन के माल और

---

१. जनाब रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़ैरात के लिए हुक्म फ़रमाया तो मोमिन अपनी-अपनी ताक़त के मुताबिक़ माल लाने लगे। कोई तो बहुत-सा रुपया लाया और कोई अनाज। अब्दुर्रहमान बिन औफ़ चार हज़ार दिरहम लाये और कहा कि मेरे पास आठ हज़ार दिरहम थे। चार हज़ार मैं अल्लाह तआला को क़र्ज़ देने के लिए ले आया हूं और चार हज़ार तो बीवी-बच्चों के ख़र्च के लिए छोड़ आया हूं। आसिम के पास रुपया न था, वह चार सेर ग़ल्ला लाये, वह भी जौ और कहने लगे कि मैं मज़दूरी कर के आठ सेर जौ लाया था, चार सेर ख़ैरात करता हूं और चार सेर बच्चों के लिए रखे हैं। यह हालत देख कर मुनाफ़िक़ ताने देने और मज़ाक़ उड़ाने लगे। अब्दुर्रहमान को तो कहने लगे कि इस ने दिखावे के लिए इतना माल दे दिया है, ताकि लोग तारीफ़ करें और आसिम के बारे में कहने लगे कि इन मियां को देखो, न सोना, न चांदी, जौ ही उठा लाए कि नाम ख़ैरात करने वालों में होगा --

हम भी लहू लगा के शहीदों में मिल गये

भला जौ क्या और ख़ैरात क्या और खुदा को इन जवों की ज़रूरत ही क्या है? खुदा ने फ़रमाया कि जिस तरह से मुनाफ़िक़ मुसलमानों से मज़ाक़ करते हैं, खुदा भी इन को अज़ाब दे कर उन के मज़ाक़ का जवाब देगा।

★रु० १०/१६ आ ८

व ला तुअ्-जिब्-क अम्वालुहुम् व औलादुहुम् ط इन्नमा युरीदुल्लाहु अंय्यु-अ़ज़्ज़िबहुम् बिहा फ़िद्दुन्या व तज़्-ह-क़ अन्फ़ुसुहुम् व हुम् काफ़िरून (८५) व इज़ा उन्ज़ि-लत् सूरतुन् अन् आमिनू बिल्लाहि व जाहिदू म-अ़ रसूलि हिस्-तअ्-ज़-न-क उलुत्तौलि मिन्हुम् व क़ालू ज़र्ना नकुम्म-अल्-क़ाअ़िदीन (८६) रज़ू बिअंय्यकूनू म-अल्-ख़वालिफ़ि व तुबि-अ़ अ़ला क़ुलूबिहिम् फ़हुम् ला यफ़्क़हून (८७) लाकिनिर्रसूलु वल्लज़ी-न आमनू म-अ़हू जाहदू बिअम्वालिहिम् व अन्फ़ुसिहिम् ط व उलाइ-क लहुमुल्ख़ैरातु ز व उलाइ-क हुमुल्मुफ़्लिहून (८८) अ-अ़द्दल्लाहु लहुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा ط ज़ालिकल्-फ़ौज़ुल्-अ़ज़ीम ★ (८९) व जा-अल्-मुअ़ज़्ज़िरू-न मिनल्-अअ़्-राबि लियुअ्-ज़-न लहुम् व क़-अ़-दल्लज़ी-न क-ज़बुल्ला-ह व रसूलहू ط सयुसीबुल्लज़ी-न क-फ़रू मिन्हुम् अ़ज़ाबुन् अलीम (९०) लै-स अ़-लज़्ज़ु-अ़फ़ा-इ व ला अ़-लल्मर्ज़ा व ला अ़-लल्लज़ी-न ला यजिदू-न मा युन्फ़िक़ू-न ह-रजुन् इज़ा न-सहू लिल्लाहि व रसूलिही ط मा अ़-लल्-मुह्सिनी-न मिन् सबीलिन् ط वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम ٧ (९१) व ला अ़-लल्लज़ी-न इज़ा मा अतौ-क लितह्मि-लहुम् क़ुल्-त ला अजिदु मा अह्मिलुकुम् अ़लैहि ص त-वल्लव्-व अअ्-युनुहुम् तफ़ीज़ु मिनद्दम्अ़ि ह-ज़-नन् अल्ला यजिदू मा युन्फ़िक़ून ط (९२) इन्नमस्सबीलु अ़-लल्लज़ी-न यस्तअ्ज़िनू-न-क व हुम् अग़्निया-उ ج रज़ू बिअंय्यकूनू मअ़ल्ख़वालिफ़ि ٧ व त-ब-अ़ल्लाहु अ़ला क़ुलूबिहिम् फ़हुम् ला यअ्-लमून (९३)

تُعْجِبْكَ أَمْوَالُهُمْ وَأَوْلَادُهُمْ ۚ إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ أَنْ يُعَذِّبَهُمْ بِهَا
فِي الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ أَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كَافِرُونَ ﴿٨٥﴾ وَإِذَا أُنْزِلَتْ
سُورَةٌ أَنْ آمِنُوا بِاللَّهِ وَجَاهِدُوا مَعَ رَسُولِهِ اسْتَأْذَنَكَ أُولُو
الطَّوْلِ مِنْهُمْ وَقَالُوا ذَرْنَا نَكُنْ مَعَ الْقَاعِدِينَ ﴿٨٦﴾ رَضُوا بِأَنْ يَكُونُوا
مَعَ الْخَوَالِفِ وَطُبِعَ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُونَ ﴿٨٧﴾ لَٰكِنِ
الرَّسُولُ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ جَاهَدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ ۚ
وَأُولَٰئِكَ لَهُمُ الْخَيْرَاتُ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٨٨﴾ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ
جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ
الْعَظِيمُ ﴿٨٩﴾ وَجَاءَ الْمُعَذِّرُونَ مِنَ الْأَعْرَابِ لِيُؤْذَنَ لَهُمْ وَقَعَدَ
الَّذِينَ كَذَبُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۚ سَيُصِيبُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٩٠﴾ لَيْسَ عَلَى الضُّعَفَاءِ وَلَا عَلَى الْمَرْضَىٰ وَلَا
عَلَى الَّذِينَ لَا يَجِدُونَ مَا يُنْفِقُونَ حَرَجٌ إِذَا نَصَحُوا لِلَّهِ وَ
رَسُولِهِ ۚ مَا عَلَى الْمُحْسِنِينَ مِنْ سَبِيلٍ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٩١﴾ وَلَا
عَلَى الَّذِينَ إِذَا مَا أَتَوْكَ لِتَحْمِلَهُمْ قُلْتَ لَا أَجِدُ مَا أَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ
تَوَلَّوْا وَأَعْيُنُهُمْ تَفِيضُ مِنَ الدَّمْعِ حَزَنًا أَلَّا يَجِدُوا مَا يُنْفِقُونَ ﴿٩٢﴾
إِنَّمَا السَّبِيلُ عَلَى الَّذِينَ يَسْتَأْذِنُونَكَ وَهُمْ أَغْنِيَاءُ ۚ رَضُوا بِأَنْ
يَكُونُوا مَعَ الْخَوَالِفِ وَطَبَعَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٩٣﴾

★रु. ११/१७ आ ६

औलाद से ताज्जुब न करना। इन चीज़ों से ख़ुदा यह चाहता है कि उन को दुनिया में अज़ाब करे और (जब) उन की जान निकले तो (उस वक़्त भी) ये काफ़िर ही हों। (८५) और जब कोई सूर: नाज़िल होती है कि ख़ुदा पर ईमान लाओ और उस के रसूल के साथ हो कर लड़ाई करो, तो जो उन में दौलतमंद हैं, वे तुम से इजाज़त तलब करते हैं और कहते हैं कि हमें तो रहने ही दीजिए कि जो लोग घरों में रहेंगे, हम भी उन के साथ रहें। (८६) ये इस बात से ख़ुश हैं कि औरतों के साथ, जो पीछे रह जाती हैं (घरों में बैठे) रहें। उन के दिलों पर मुहर लगा दी गयी है, तो ये समझते ही नहीं। (८७) लेकिन पैग़म्बर और जो लोग उन के साथ ईमान लाये, सब अपने माल और जान से लड़े। इन्हीं लोगों के लिए भलाइयां हैं।[1] और यही मुराद पाने वाले हैं। (८८) ख़ुदा ने उन के लिए बाग़ तैयार कर रखे हैं, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, हमेशा उन में रहेंगे, यह बड़ी कामियाबी है। (८९)। ★

और सहरा नशीनों में से भी कुछ लोग उज़्र करते हुए (तुम्हारे पास) आये कि उन को भी इजाज़त दी जाए और उन्हों ने ख़ुदा और उन के रसूल से झूठ बोला, वे (घर में) बैठे रहे। सो जो लोग उन में से काफ़िर हुए हैं, उन को दुख देने वाला अज़ाब पहुंचेगा। (९०) न तो बूढ़ों पर कुछ गुनाह है और न बीमारों पर और न उन पर जिन के पास ख़र्च मौजूद नहीं (कि जिहाद में शरीक हों, यानी) जबकि ख़ुदा और उस के रसूल की भलाई चाहने वाले (और दिल से उन के साथ) हों। भले लोगों पर किसी तरह का इल्ज़ाम नहीं है और ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है। (९१) और न उन (बे सर व सामान) लोगों पर (इल्ज़ाम है कि तुम्हारे पास आए कि उन को सवारी दो और तुम ने कहा कि मेरे पास कोई ऐसी चीज़ नहीं, जिस पर तुम को सवार करूं, तो वह लौट गए और इन ग़म से कि उन के पास ख़र्च मौजूद न था, उन की आंखों से आंसू बह रहे थे। (९२) इल्ज़ाम तो उन लोगों पर है जो दौलतमंद हैं और (फिर) तुम से इजाज़त तलब करते हैं (यानी) इस बात से ख़ुश हैं कि औरतों के साथ जो पीछे रह जाती हैं (घरों में बैठ) रहें। ख़ुदा ने उन के दिलों पर मुहर

१. यानी उन के वास्ते दोनों दुनिया की नेकियां हैं, दुनिया में फ़त्ह और ग़नीमत का माल और आख़िरत में करामत और बहिश्त।

ग्यारहवां पारः यअ्-तज़िरून

सूरतुत्तौबति आयत ९४ से १२९

यअ्-तज़िरू-न इलैकुम् इज़ा र-जअ्-तुम् इलैहिम् ⌄ क़ुल्ला तअ्-तज़िरू लन्नुअ्मि-न लकुम् क़द् नब्ब-अ-नल्लाहु मिन् अख़्बारिकुम् ⌄ व स-य-रल्लाहु अ-म-लकुम् व रसूलुहू सुम्-म तुरद्दू-न इला आलिमिल्ग़ैबि वश्शहादति फ़युनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् तअ्-मलून (९४) स-यह्लिफ़ू-न बिल्लाहि लकुम् इज़न्क़लब्तुम् इलैहिम् लितुअ्-रिज़ू अन्हुम् ⌄ फ़-अअ् - रिज़ू अन्हुम् इन्नहुम् रिज्सुंव् - व मअ्वाहुम् जहन्नमु ⌄ जज़ा-अम् - बिमा कानू यक्सिबून (९५) यह्लिफ़ू-न लकुम् लितर्ज़ौ अन्हुम् ⌄ फ़-इन् तर्ज़ौ अन्हुम् फ़इन्नल्ला-ह ला यर्ज़ा अनिल् - क़ौमिल्-फ़ासिक़ीन (९६) अल्अअ्-राबु अशद्दु कुफ़रंव्-व निफ़ाक़ंव्-व अज्दरु अल्ला यअ्-लमू हुदू-द मा अन्ज़लल्लाहु अला रसूलिही ⌄ वल्लाहु अ़लीमुन् हकीम (९७) व मिनल्अअ्-राबि मंय्यत्तख़िज़ु मा युन्फ़िक़ु मग़्रमंव् -व य-त-रब्बसु बिकुमुद्दवाइ-र अलैहिम् दाइरतुस्सौइ ⌄ वल्लाहु समीअुन् अ़लीम (९८) व मिनल्अअ्-राबि मंय्युअ्मिनु बिल्लाहि वल्यौमिल्-आख़िरि व यत्तख़िज़ु मा युन्फ़िक़ु क़ुरुबातिन् अिन्दल्लाहि व स - ल-वातिर्रसूलि अला इन्नहा क़ुर - बतुल्लहुम् ⌄ सयुद्ख़िलुहुमुल्लाहु फ़ी रह्मतिही इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम ★ (९९) वस्साबिक़ूनल्-अव्वलू-न मिनल्मुहाजिरी - न वल्अन्सारि वल्लज़ीनत्त - ब - अू - हुम् बिइह्सानिर् - रज़ियल्लाहु अन्हुम् व रज़ू अन्हु व अ-अद्-द लहुम् जन्नातिन् तज्री तह-तहल्-अन्हारु ख़ालिदी - न फ़ीहा अ-ब - दन् ⌄ ज़ालिकल् - फ़ौज़ुल् - अ़ज़ीम (१००)

التوبة ٩ — ١١ — يعتذرون

يَعْتَذِرُونَ إِلَيْكُمْ إِذَا رَجَعْتُمْ إِلَيْهِمْ ۚ قُل لَّا تَعْتَذِرُوا لَن
نُّؤْمِنَ لَكُمْ قَدْ نَبَّأَنَا اللَّهُ مِنْ أَخْبَارِكُمْ ۚ وَسَيَرَى اللَّهُ عَمَلَكُمْ
وَرَسُولُهُ ثُمَّ تُرَدُّونَ إِلَىٰ عَالِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُم بِمَا
كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٩٤﴾ سَيَحْلِفُونَ بِاللَّهِ لَكُمْ إِذَا انقَلَبْتُمْ إِلَيْهِمْ
لِتُعْرِضُوا عَنْهُمْ ۖ فَأَعْرِضُوا عَنْهُمْ ۖ إِنَّهُمْ رِجْسٌ ۖ وَمَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ
جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٩٥﴾ يَحْلِفُونَ لَكُمْ لِتَرْضَوْا عَنْهُمْ ۖ فَإِن
تَرْضَوْا عَنْهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَرْضَىٰ عَنِ الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ ﴿٩٦﴾ الْأَعْرَابُ
أَشَدُّ كُفْرًا وَنِفَاقًا وَأَجْدَرُ أَلَّا يَعْلَمُوا حُدُودَ مَا أَنزَلَ اللَّهُ عَلَىٰ
رَسُولِهِ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٩٧﴾ وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَن يَتَّخِذُ مَا يُنفِقُ
مَغْرَمًا وَيَتَرَبَّصُ بِكُمُ الدَّوَائِرَ ۚ عَلَيْهِمْ دَائِرَةُ السَّوْءِ ۗ وَاللَّهُ
سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٩٨﴾ وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَن يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ
وَيَتَّخِذُ مَا يُنفِقُ قُرُبَاتٍ عِندَ اللَّهِ وَصَلَوَاتِ الرَّسُولِ ۚ أَلَا إِنَّهَا
قُرْبَةٌ لَّهُمْ ۚ سَيُدْخِلُهُمُ اللَّهُ فِي رَحْمَتِهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٩٩﴾
وَالسَّابِقُونَ الْأَوَّلُونَ مِنَ الْمُهَاجِرِينَ وَالْأَنصَارِ وَالَّذِينَ اتَّبَعُوهُم
بِإِحْسَانٍ رَّضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ وَأَعَدَّ لَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي
تَحْتَهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۚ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١٠٠﴾ وَمِمَّنْ
حَوْلَكُم مِّنَ الْأَعْرَابِ مُنَافِقُونَ ۖ وَمِنْ أَهْلِ الْمَدِينَةِ ۖ مَرَدُوا

★रु. १२/१ आ १०

लगा दी है। पस वे समझते नहीं। (९३) जब तुम उन के पास वापस जाओगे, तो तुम से उज़्र करेंगे। तुम कहना कि उज़्र मत करो, हम हरगिज़ तुम्हारी बात नहीं मानेंगे। खुदा ने हम को तुम्हारे सब हालात बता दिए हैं और अभी खुदा और उस का रसूल तुम्हारे अमलों को (और) देखेंगे, फिर तुम ग़ायब व हाज़िर के जानने वाले (एक खुदा) की तरफ़ लौटाए जाओगे। और जो अमल तुम करते रहे हो, वह सब तुम्हें बताएगा। (९४) जब तुम उन के पास लौट कर जाओगे, तो तुम्हारे सामने खुदा की क़स्में खाएंगे, ताकि तुम उनको दरगुज़र करो, सो उन की तरफ़ तवज्जोह न करना। ये ना-पाक हैं और जो काम ये करते रहे हैं, उन के बदले उन का ठिकाना दोज़ख़ है। (९५) ये तुम्हारे आगे क़स्में खाएंगे, ताकि तुम उन से खुश हो जाओ, लेकिन अगर तुम उन से खुश हो जाओगे, तो खुदा तो नाफ़रमान लोगों से खुश नहीं होता। (९६) देहाती लोग सख्त काफ़िर और सख्त मुनाफ़िक़ हैं और इस क़ाबिल हैं कि जो (शरीअत से) अहकाम खुदा ने अपने रसूल पर नाज़िल फ़रमाए हैं, उन्हें जानते (ही) न हों और खुदा जानने वाला (और) हिक्मत वाला है। (९७) और कुछ देहाती हैं कि जो कुछ खर्च करते हैं, उसे जुर्माना समझते हैं और तुम्हारे हक़ में मुसीबतों के इन्तिज़ार में हैं। उन्हीं पर बुरी मुसीबत (वाक़ेअ) हो और खुदा सुनने वाला (और) जानने वाला है। (९८) और कुछ देहाती ऐसे हैं कि खुदा पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं और जो कुछ खर्च करते हैं, उस को खुदा की क़ुर्बत और पैग़म्बर की दुआओं का ज़रिया समझते हैं। देखो वह बे-शुब्हा उन के क़ुर्बत (की वजह) है। खुदा उन को बहुत जल्द अपनी रहमत में दाखिल करेगा। बेशक खुदा बख़्शने वाला है। (९९) ★

जिन लोगों ने सबक़त की (यानी सब से) पहले (ईमान लाए) मुहाजिरों में से भी और अन्सार में से भी और जिन्हों ने भले लोगों के साथ उन की पैरवी की, खुदा उन से खुश है और वे खुदा से खुश हैं और उन के लिए बाग़ तैयार किए हैं, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं (और) हमेशा उन में रहेंगे। यह कामियाबी है। (१००) और तुम्हारे पास-पड़ोस के कुछ देहाती मुनाफ़िक़ हैं और कुछ मदीने वाले भी निफ़ाक़ पर अड़े हुए हैं, ※ तुम उन्हें नहीं जानते, हम जानते हैं। हम उन को दोहरा अज़ाब देंगे, फिर वह बड़े अज़ाब की तरफ़ लौटाए जाएंगे। (१०१) और कुछ और लोग हैं कि अपने

★रु. १२/१ आ १० ∴ मु. अ़ि मु ता ख़.५ ※ व. मंज़िल

व मिम्मन् हौलकुम् मिनल्अअ् - राबि मुनाफ़िक़ू-न ᵇ व मिन् अह्लिल्-मदीनति ❁ म - रदू अलन्निफ़ाक़ि قف ला तअ् - लमुहुम् ᵇ नह्नु नअ्-लमुहुम् ᵇ सनु-अ़ज़्ज़िबुहुम् मर्रतैनि सुम्-म युरद्दू-न इला अ़ज़ाबिन् अ़ज़ीम (१०१) व आख़रूनअ्-त-रफ़ू बिज़ुनूबिहिम् ख़-लतू अ़-म-लन् सालिहंव्-व आख़-र सय्यिअन् ᵇ अ़-सल्लाहु अंय्यतू - ब अ़लैहिम् ᵇ इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम (१०२) ख़ुज़् मिन् अम्वालिहिम् स-द-क़-तन् तुतह्हिरुहुम् व तुज़क्कीहिम् बिहा व सल्लि अ़लैहिम् ᵇ इन्-न सला-त-क स - कनुल्लहुम् ᵇ वल्लाहु समीअुन् अ़लीम (१०३) अ-लम् यअ्-लमू अन्नल्ला-ह हु-व यक़्बलुत्तौब-त अ़न् अ़िबादिही व यअ्ख़ुज़ुस्स-द-क़ाति व अन्नल्ला - ह हुवत्तव्वाबुर्रहीम (१०४) व क़ुलिअ्-मलू फ़-स-य-रल्लाहु अ़-म-लकुम् व रसूलुहू वल्-मुअ्मिनू-न ᵇ व सतुरद्दू-न इला आ़लिमिल्ग़ैबि वश्शहादति फ़-युनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् तअ्-मलून ☪ (१०५) व आख़रू-न मुर्जौ-न लिअम्रिल्लाहि इम्मा युअ़ज़्ज़िबुहुम् व इम्मा यतूबु अ़लैहिम् ᵇ वल्लाहु अ़लीमुन् हकीम (१०६) वल्लज़ीनत्त-ख़ज़ू मस्जिदन् ज़िरारंव्-व कुफ़्रंव्-व तफ़्रीक़म्-बैनल्मुअ्मिनी-न व इर्सादल्लिमन् हार-बल्ला-ह व रसूलहू मिन् क़ब्लु ᵇ व ल-यह्लिफ़ुन्-न इन् अरद्ना इल्लल् - हुस्ना ᵇ वल्लाहु यश्हदु इन्नहुम् ल-काज़िबू-न (१०७) ला तक़ुम् फ़ीहि अ-ब-दन् ᵇ ल-मस्जिदुन् उस्सि-स अ़लत्तक़्वा मिन् अव्वलि यौमिन् अहक़्क़ु अन् तक़ू-म फ़ीहि ᵇ फ़ीहि रिजालुंय्युहिब्बू-न अंय्यत-तह्हरू ᵇ वल्लाहु युहिब्बुल् - मुत्तह-हिरीन (१०८) अ फ़-मन् अस्स-स बुन्यानहू अ़ला तक़्वा मिनल्लाहि व रिज़्वानिन् ख़ैरुन् अम् मन् अस्स - स बुन्यानहू अ़ला शफ़ा जुरुफ़िन् हारिन् फ़न्हा - र बिही फ़ी नारि ज-हन्न-म ᵇ वल्लाहु ला यह्दिल्-क़ौमज़्ज़ालिमीन (१०९)

يعتذرون ١٦٢ التوبة

على النفاق لا تعلمهم نحن نعلمهم سنعذبهم مرتين ثم
يردون الى عذاب عظيم ۝ وآخرون اعترفوا بذنوبهم خلطوا
عملا صالحا وآخر سيئا عسى الله ان يتوب عليهم ان الله
غفور رحيم ۝ خذ من اموالهم صدقة تطهرهم وتزكيهم بها
وصل عليهم ان صلوتك سكن لهم والله سميع عليم ۝ الم
يعلموا ان الله هو يقبل التوبة عن عباده ويأخذ الصدقت وان
الله هو التواب الرحيم ۝ وقل اعملوا فسيرى الله عملكم
ورسوله والمؤمنون وستردون الى علم الغيب والشهادة فينبئكم
بما كنتم تعملون ۝ وآخرون مرجون لامر الله اما يعذبهم و
اما يتوب عليهم والله عليم حكيم ۝ والذين اتخذوا مسجدا
ضرارا وكفرا وتفريقا بين المؤمنين وارصادا لمن حارب الله
ورسوله من قبل وليحلفن ان اردنا الا الحسنى والله يشهد
انهم لكذبون ۝ لا تقم فيه ابدا لمسجد اسس على التقوى
من اول يوم احق ان تقوم فيه فيه رجال يحبون ان يتطهروا
والله يحب المطهرين ۝ افمن اسس بنيانه على تقوى من
الله ورضوان خير ام من اسس بنيانه على شفا جرف هار
فانهار به في نار جهنم والله لا يهدي القوم الظلمين ۝

منزل

∴ मु. ज़ि मु. ता क़. ५ ❁ व. मंज़िल

गुनाहों का (साफ़) इक़रार करते हैं। उन्हों ने अच्छे और बुरे अमलों को मिला-जुला दिया था। क़रीब है कि ख़ुदा उन पर मेहरबानी से तवज्जोह फ़रमाये। बेशक ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है। (१०२) उन के माल में से ज़कात क़ुबूल कर लो कि उस से तुम उन को (ज़ाहिर में) भी पाक और (बातिन में भी) पाकीज़ा करते हो और उन के हक़ में दुआ-ए-ख़ैर करो कि तुम्हारी दुआ उन की तस्कीन की वजह है और ख़ुदा सुनने वाला जानने वाला है। (१०३) क्या ये लोग नहीं जानते कि ख़ुदा ही अपने बन्दों से तौबा क़ुबूल फ़रमाता और सद्क़ात (व ख़ैरात) लेता है और बेशक ख़ुदा ही तौबा क़ुबूल करने वाला मेहरबान है। (१०४) और उन से कह दो कि अमल किये जाओ, ख़ुदा और उस का रसूल और मोमिन (सब) तुम्हारे अमलों को देख लेंगे और तुम ग़ायब व हाज़िर के जानने वाले (एक ख़ुदा) की तरफ़ लौटाए जाओगे। फिर जो कुछ करते रहे हो, वह सब तुम को बता देगा। (१०५) और कुछ और लोग हैं, जिन का काम ख़ुदा के हुक्म पर रुका हुआ है, चाहे उन को अज़ाब दे और चाहे माफ़ कर दे और ख़ुदा जानने वाला, हिक्मत वाला है। (१०६) और (उन में ऐसे भी हैं), जिन्हों ने इस ग़रज़ से मस्जिद बनायी है कि नुक़्सान पहुंचाएं और कुफ़्र करें और मोमिनों में फूट डालें और जो लोग ख़ुदा और उस के रसूल से पहले जंग कर चुके हैं उन के लिए घात की जगह बनाएं और क़स्में खाएंगे कि हमारा मक़्सूद तो सिर्फ़ भलाई थी, मगर ख़ुदा गवाही देता है कि वे झूठे हैं। (१०७) तुम इस (मस्जिद) में कभी (जा कर) खड़े भी न होना, अल-बत्ता वह मस्जिद जिस की बुनियाद पहले दिन से तक़्वा पर रखी गयी है, इस क़ाबिल है कि इस में जाया (और नमाज़ पढ़ाया) करो। इस में ऐसे लोग हैं जो पाक रहने को पसन्द करते हैं और ख़ुदा पाक रहने वाले ही को पसन्द करता है। (१०८) भला जिस शख़्स ने अपनी इमारत की बुनियाद ख़ुदा के ख़ौफ़ और उस की रज़ामंदी पर रखी, वह अच्छा है या वह जिस ने अपनी इमारत की बुनियाद गिर जाने वाली खाई के किनारे पर रखी कि वह उस को दोज़ख़ की आग में ले कर गिरी।[1] और ख़ुदा

---

१. मदीने में एक मस्जिद थी जो मस्जिदे क़ुबा के नाम से मशहूर थी। हज़रत सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अक्सर हफ़्ते के दिन वहां तशरीफ़ ले जाते और नमाज़ पढ़ते। मुनाफ़िक़ों ने चाहा कि उस के मुक़ाबले में अपनी एक अलग मस्जिद बनाएं। इस की बुनियाद यह हुई कि मदीने में आंहज़रत के तशरीफ़ ले जाने से पहले एक शख़्स अबू आमिर नाम का रहता था जो जाहिलियत के ज़माने में ईसाई हो गया था, निहायत टेढ़े मिज़ाज का आदमी था। वह आप के मदीना में तशरीफ़ ले जाने पर इस्लाम तो क्या लाता, आप का खुल्लम-खुल्ला दुश्मन हो गया और वहां से निकल कर मक्के के काफ़िरों से जा मिला और उन को आंहज़रत से लड़ने पर उभारा। चुनांचे उहुद की लड़ाई हुई और वह उस में काफ़िरों के साथ था, फिर रोम के बादशाह के पास चला गया और उस से आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुक़ाबले के लिए मदद चाही। उस ने मदद का वायदा कर लिया। यह उस के पास ठहरा रहा और मदीने के काफ़िरों को लिख भेजा कि रोम से बहुत जल्द एक लश्कर आता है, जो मुसलमानों को तबाह कर देगा। तुम एक मज़बूत जगह बना रखो, जहां वह शख़्स, जो उस के पास से पैग़ाम पहुंचाने आया करे, क़ियाम किया करे, तो उन लोगों ने मस्जिदे क़ुबा के पास ही एक मस्जिद बनानी शुरू की। इस मस्जिद को मस्जिदे ज़रार कहते हैं। जब वह तैयार हो चुकी, तो मुनाफ़िक़ आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और कहने लगे कि हम ने बीमारों और कमज़ोरों के लिए, साथ ही बरसात के ख़्याल से एक मस्जिद बनायी है। आप वहां तशरीफ़ ले चलें और नमाज़ पढ़ें और बरकत की दुआ करें, ताकि वहां

(शेष पृष्ठ ३२३ पर)

ला यज़ालु बुन्यानुहुमुल्लज़ी बनौ री-ब-तन् फ़ी क़ुलूबिहिम् इल्ला अन् त-क़त्-त-अ क़ुलूबुहुम्, वल्लाहु अलीमुन् हकीम ★ (११०) इन्नल्लाहश्तरा मिनल्मुअ्मिनी-न अन्फु-स-हुम् व अम्वालहुम् बिअन्-न लहुमुल्जन्न-त, युक़ातिलू-न फ़ी सबीलिल्लाहि फ़-यक़्तुलू-न व युक़्तलू-न वअ्-दन् अलैहि हक़्क़न् फ़ित्तौराति वल्इन्जीलि वल्क़ुरआनि, व मन् औफ़ा बिअह्दिही मिनल्लाहि फ़स्तब्शिरू बिबैअिकुमुल्लज़ी बायअ्तुम् बिही, व ज़ालि-क हुवल्फ़ौज़ुल् - अज़ीम (१११) अत्ता - इबूनल् - आबिदूनल् हामिदूनस् - सा - इहूनर् - राकिअूनस् - साजिदूनल् - आमिरू-न बिल्मअ्-रूफ़ि वन्नाहू-न अनिल्मुन्करि वल्हाफ़िज़ू न लिहुदूदिल्लाहि, व बश्शिरिल् - मुअ्मिनीन (११२) मा का-न लिन्नबिय्यि वल्लज़ी-न आमनू अंय्यस्तग़्फ़िरू लिल्मुश्रिकी-न व लौ कानू उली क़ुर्बा मिम्बअ्-दि मा त-बय्य-न लहुम् अन्नहुम् अस्हाबुल्जहीम (११३) व मा कानस्तिग़्फ़ारु

يَزَالُ بُنْيَانُهُمُ الَّذِي بَنَوْا رِيبَةً فِي قُلُوبِهِمْ إِلَّا أَنْ تَقَطَّعَ قُلُوبُهُمْ
وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝ إِنَّ اللَّهَ اشْتَرَىٰ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ أَنْفُسَهُمْ
وَأَمْوَالَهُمْ بِأَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ ۚ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَيَقْتُلُونَ
وَيُقْتَلُونَ ۖ وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا فِي التَّوْرَاةِ وَالْإِنْجِيلِ وَالْقُرْآنِ ۚ وَ
مَنْ أَوْفَىٰ بِعَهْدِهِ مِنَ اللَّهِ ۚ فَاسْتَبْشِرُوا بِبَيْعِكُمُ الَّذِي بَايَعْتُمْ بِهِ ۚ
وَذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝ التَّائِبُونَ الْعَابِدُونَ الْحَامِدُونَ السَّائِحُونَ
الرَّاكِعُونَ السَّاجِدُونَ الْآمِرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَالنَّاهُونَ عَنِ الْمُنْكَرِ
وَالْحَافِظُونَ لِحُدُودِ اللَّهِ ۗ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ۝ مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ
وَالَّذِينَ آمَنُوا أَنْ يَسْتَغْفِرُوا لِلْمُشْرِكِينَ وَلَوْ كَانُوا أُولِي قُرْبَىٰ
مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُمْ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ۝ وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ
إِبْرَاهِيمَ لِأَبِيهِ إِلَّا عَنْ مَوْعِدَةٍ وَعَدَهَا إِيَّاهُ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُ أَنَّهُ
عَدُوٌّ لِلَّهِ تَبَرَّأَ مِنْهُ ۚ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ لَأَوَّاهٌ حَلِيمٌ ۝ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُضِلَّ
قَوْمًا بَعْدَ إِذْ هَدَاهُمْ حَتَّىٰ يُبَيِّنَ لَهُمْ مَا يَتَّقُونَ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ
شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝ إِنَّ اللَّهَ لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۚ
وَمَا لَكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ۝ لَقَدْ تَابَ اللَّهُ عَلَى
النَّبِيِّ وَالْمُهَاجِرِينَ وَالْأَنْصَارِ الَّذِينَ اتَّبَعُوهُ فِي سَاعَةِ الْعُسْرَةِ
مِنْ بَعْدِ مَا كَادَ يَزِيغُ قُلُوبُ فَرِيقٍ مِنْهُمْ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ ۚ إِنَّهُ بِهِمْ

इब्राही - म लिअबीहि इल्ला अम्मौअिदतिंव् - व - अ - दहा इय्याहु, फ़-लम्मा त-बय्य-न लहू अन्नहू अदुव्वुलिल्लाहि तबर्र-अ मिन्हु, इन्-न इब्राही-म ल-अव्वाहुन् हलीम (११४) व मा कानल्लाहु लियुज़िल्-ल क़ौमम्-बअ्-द इज् हदाहुम् हत्ता युबय्यि - न लहुम् मा यत्तक़ू-न, इन्नल्ला-ह बिकुल्लि शैइन् अलीम (११५) इन्नल्ला-ह लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि, युह्यी व युमीतु, व मा लकुम् मिन् दूनिल्लाहि मिंव्वलिय्यिंव्-व ला नसीर (११६) ल-क़त्ताबल्लाहु अ-लन्नबिय्यि वल्मुहाजिरी-न वल्-अन्सारिल्लज़ीनत्त-बअूहु फ़ी साअतिल्-अुस्रति मिम्बअ्-दि मा का-द यज़ीगु क़ुलूबु फ़रीक़िम्-मिन्हुम् सुम् - म ता - ब अलैहिम्, इन्नहू बिहिम् रऊफ़ुर्रहीम ″ (११७)

ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। (१०९) यह इमारत, जो उन्हों ने बनायी हैं, हमेशा उन के दिलों में शक भरी बेचैनी (की वजह) रहेगी, मगर यह कि उन के टुकड़े-टुकड़े हो जाएं। और ख़ुदा जानने वाला, हिक्मत वाला है। (११०) ★

ख़ुदा ने मोमिनों से उन की जानें और उन के माल ख़रीद लिए हैं (और इस के) बदले में उन के लिए बहिश्त (तैयार की) है। ये लोग ख़ुदा की राह में लड़ते हैं तो मारते भी हैं और मारे जाते भी हैं। यह तौरात और इंजील और क़ुरआन में सच्चा वायदा है, जिस का पूरा करना उसे ज़रूर है और ख़ुदा से ज़्यादा वायदा पूरा करने वाला कौन है, तो जो सौदा तुम उस से किया है, उस से ख़ुश रहो और यही बड़ी कामियाबी है। (१११) तौबा करने वाले, इबादत करने वाले, हम्द करने वाले, रोज़ा रखने वाले, रुकूअ करने वाले, सज्दा करने वाले, नेक कामों का हुक्म देने वाले और बुरी बातों से मना करने वाले, ख़ुदा की हदों की हिफ़ाज़त करने वाले (यही मोमिन लोग हैं) और ऐ पैग़म्बर मोमिनों को (बहिश्त की) ख़ुशख़बरी सुना दो। (११२) पैग़म्बर और मुसलमानों को मुनासिब नहीं कि जब उन पर ज़ाहिर हो गया कि मुश्रिक दोज़ख़ी हैं, तो उन के लिए बख़्शिश मांगे, गो वे उन के क़राबतदार (रिश्तेदार) ही हों। (११३) और इब्राहीम का अपने बाप के लिए बख़्शिश मांगना तो एक वायदे की वजह से था, जो वह उस से कर चुके थे, लेकिन जब उन को मालूम हो गया कि वह ख़ुदा का दुश्मन है, तो उस से बे-ज़ार हो गये। कुछ शक नहीं कि इब्राहीम बड़े नर्म दिल और बुर्दबार थे। (११४) और ख़ुदा ऐसा नहीं कि किसी क़ौम को हिदायत देने के बाद गुमराह कर दे, जब तक उन को वह चीज़ न बता दे, जिस से वह परहेज़ करें। बेशक ख़ुदा हर चीज़ को जानता है। (११५) ख़ुदा ही है, जिसके लिए आसमानों और ज़मीन की बादशाही है। वही ज़िंदगानी बख़्शता और मौत देता है, ख़ुदा के सिवा तुम्हारा कोई दोस्त और मददगार नहीं है। (११६) बेशक ख़ुदा ने पैग़म्बर पर मेहरबानी की और मुहाजिरों और अन्सार पर, जो बावजूद इस के कि उन में से कुछ-एक के दिल जल्द फिर जाने को थे, कठिन घड़ी में पैग़म्बर के साथ रहे, फिर ख़ुदा ने उन पर मेहरबानी फ़रमायी। बेशक वह उन से बहुत ज़्यादा मुहब्बत करने वाला और मेहरबान है। (११७) और उन तीनों पर भी,

---

(पृष्ठ ३२१ का शेष)

जमाअत क़ायम हो जाए। आप को उस वक़्त तक बिल्कुल इल्म न था कि यह मस्जिद किस नीयत और किस ग़रज़ से बनायी गयी है। इस लिए आप ने फ़रमाया कि अब तो हम सफ़र में जा रहे हैं, जब वापस आएंगे, तब इन्शाअल्लाह वहां नमाज़ पढ़ेंगे। जब आप तबूक की लड़ाई से वापस हुए और मदीना पहुंचने में एक-आध दिन का रास्ता रह गया तो यह आयत नाज़िल हुई जिस से आप को मालूम हो गया कि मुनाफ़िक़ों का मक़्सद इस मस्जिद के बनाने से, मुसलमानों को मस्जिदे क़ुबा से, जिस की बुनियाद तक़्वा पर रखी गयी थी, अलग करना और उन में फूट डालना था, तब आप ने हुक्म दिया कि हमारे पहुंचने से पहले वह मस्जिद ढा दी जाए और जला दी जाए। चुनांचे इस हुक्म की तामील की गयी और मस्जिद ढा दी गयी और जला दी गयी।

★रु. १३/२ आ ११

व अ-लस् - सलासतिल्-लज़ी-न ख़ुल्लिफ़ू ط हत्ता इज़ा ज़ाक़त् अलैहिमुल् - अर्ज़ु बिमा रहुबत् व ज़ाक़त् अलैहिम् अन्फ़ुसुहुम् व ज़न्नू अल्ला मल्ज-अ मिनल्लाहि इल्ला इलैहि ط सुम्-म ता - ब अलैहिम् लियतूबू ط इन्नल्ला - ह हुवत्तव्वाबुर्रहीम ★ (११८) या अय्युहल्लज़ी-न आमनुत्तक़ुल्ला-ह व कूनू म-अस्सादिक़ीन (११९) मा का-न लिअह्लिल्-मदीनति व मन् हौल - हुम् मिनल्अअ्-राबि अंय्य-त-ख़ल्लफ़ू अर्रसूलिल्लाहि व ला यर्ग़बू बिअन्फ़ुसिहिम् अन् नफ़्सिही ط ज़ालि - क बिअन्नहुम् ला युसीबुहुम् ज़-मउंव्-व ला न-स-बुंव्-व ला मख़्म-स-तुन् फ़ी सबीलिल्लाहि व ला य-त़-ऊ-न मौतिअंय्यग़ीज़ुल्-कुफ़्फ़ा-र व ला यनालू-न मिन् अदुव्विन्नैलन् इल्ला कुति-ब लहुम् बिही अ - मलुन् सालिहुन् ط इन्नल्ला - ह ला युज़ीअु अज्रल् - मुह्सिनीन ۙ (१२०) व ला युन्फ़िक़ू-न न-फ़-क़-तन् सग़ीरतंव्-व ला कबीरतंव्-व ला यक़्तअू-न वादियन् इल्ला कुति - ब लहुम् लियज्ज़ि-य-हुमुल्लाहु अह्-स-न मा कानू यअ्-मलून (१२१) व मा कानल् - मुअ्मिनू-न लियन्फ़िरू काफ़्फ़तन् ۙ फ़लौला न - फ़ - र मिन् कुल्लि फ़िर्क़तिम् - मिन्हुम् ताइफ़तुल् - लिय-त-फ़क़्क़हू फ़िद्दीनि व लियुन्ज़िरू क़ौमहुम् इज़ा रजअू इलैहिम् ल - अल्लहुम् यह्ज़रून ★ (१२२) या अय्युहल्लज़ी - न आमनू क़ातिलुल्लज़ी - न यलूनकुम् मिनल्कुफ़्फ़ारि वल्यजिदू फ़ीकुम् ग़िल्-ज - तन् ۙ वअ् - लमू अन्नल्ला-ह मअल्मुत्तक़ीन ● (१२३) व इज़ा मा उन्ज़ि-लत् सूरतुन् फ़मिन्हुम् मंय्यक़ूलु अय्युकुम् ज़ादत्हु हाज़िही ईमानन् ۚ फ़-अम्मल्लज़ी-न आमनू फ़-ज़ादत्-हुम् ईमानंव्-व-हुम् यस्तब्शिरून (१२४)

التوبة ٩ — يعتذرون ١١

رَءُوفٌ رَّحِيمٌ ۝ وَعَلَى الثَّلٰثَةِ الَّذِيْنَ خُلِّفُوْا حَتّٰى إِذَا ضَاقَتْ
عَلَيْهِمُ الْأَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ وَضَاقَتْ عَلَيْهِمْ أَنْفُسُهُمْ وَظَنُّوْا أَنْ
لَّا مَلْجَأَ مِنَ اللّٰهِ إِلَّا إِلَيْهِ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ لِيَتُوْبُوْا إِنَّ اللّٰهَ هُوَ
التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ۝ يٰأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَكُوْنُوْا مَعَ
الصّٰدِقِيْنَ ۝ مَا كَانَ لِأَهْلِ الْمَدِيْنَةِ وَمَنْ حَوْلَهُمْ مِّنَ
الْأَعْرَابِ أَنْ يَّتَخَلَّفُوْا عَنْ رَّسُوْلِ اللّٰهِ وَلَا يَرْغَبُوْا بِأَنْفُسِهِمْ عَنْ
نَّفْسِهٖ ذٰلِكَ بِأَنَّهُمْ لَا يُصِيْبُهُمْ ظَمَأٌ وَّلَا نَصَبٌ وَّلَا مَخْمَصَةٌ
فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا يَطَئُوْنَ مَوْطِئًا يَّغِيْظُ الْكُفَّارَ وَلَا يَنَالُوْنَ مِنْ
عَدُوٍّ نَّيْلًا إِلَّا كُتِبَ لَهُمْ بِهٖ عَمَلٌ صَالِحٌ إِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ أَجْرَ
الْمُحْسِنِيْنَ ۝ وَلَا يُنْفِقُوْنَ نَفَقَةً صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً وَّلَا
يَقْطَعُوْنَ وَادِيًا إِلَّا كُتِبَ لَهُمْ لِيَجْزِيَهُمُ اللّٰهُ أَحْسَنَ مَا كَانُوْا
يَعْمَلُوْنَ ۝ وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُوْنَ لِيَنْفِرُوْا كَآفَّةً فَلَوْلَا نَفَرَ
مِنْ كُلِّ فِرْقَةٍ مِّنْهُمْ طَآئِفَةٌ لِّيَتَفَقَّهُوْا فِي الدِّيْنِ وَلِيُنْذِرُوْا
قَوْمَهُمْ إِذَا رَجَعُوْا إِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ يَحْذَرُوْنَ ۝ يٰأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَاتِلُوا
الَّذِيْنَ يَلُوْنَكُمْ مِّنَ الْكُفَّارِ وَلْيَجِدُوْا فِيْكُمْ غِلْظَةً وَاعْلَمُوْا أَنَّ
اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ۝ وَإِذَا مَا أُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ فَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ
أَيُّكُمْ زَادَتْهُ هٰذِهٖ إِيْمَانًا فَأَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَزَادَتْهُمْ إِيْمَانًا وَّ

منزل ٢

★रु. १४/३ आ ८★रु. १५/४ आ ४ ●रुबुअ् १/४

जिन का मामला मुलतवी किया गया था, यहां तक कि ज़मीन अपने फैलाव के बाद भी उन पर तंग हो गयी और उन की जानें भी उन पर दूभर हो गयीं और उन्हों ने जान लिया कि ख़ुदा के हाथ से ख़ुद उस के सिवा कोई पनाह नहीं। फिर (ख़ुदा) ने उन पर मेहरबानी की ताकि तौबा करें। बेशक ख़ुदा तौबा क़ुबूल करने वाला मेहरबान है। (११८) ★

ऐ ईमान वालो ! ख़ुदा से डरते रहो और सच्चों के साथ रहो। (११९) मदीना वालों को और जो उन के आस-पास देहाती रहते हैं, उन को मुनासिब न था कि ख़ुदा के पैग़म्बर से पीछे रह जाएं और न यह कि अपनी जानों को उन की जान से ज़्यादा अज़ीज़ रखें। यह इस लिए कि उन्हें ख़ुदा की राह में जो तक्लीफ़ पहुंचती है, प्यास की या मेहनत की या भूख की या वे ऐसी जगह चलते हैं कि काफ़िरों को ग़ुस्सा आये या दुश्मनों से कोई चीज़ लेते हैं तो हर बात पर नेक अमल लिखा जाता है। कुछ शक नहीं कि ख़ुदा भलों का बदला बर्बाद नहीं करता। (१२०) और (इसी तरह) वे जो ख़र्च करते हैं, थोड़ा या बहुत, या कोई मैदान तै करते हैं, तो यह सब कुछ उन के लिए (भले कामों में) लिख लिया जाता है, ताकि ख़ुदा उनको उनके अमलों का बहुत अच्छा बदला दे। (१२१) और यह तो हो नहीं सकता कि मोमिन सब के सब निकल आएं, तो यों क्यों न किया कि हर एक जमाअत में से कुछ लोग निकल जाते ताकि दीन (का इल्म सीखते और उस) में समझ पैदा करते और जब अपनी क़ौम की तरफ़ वापस आते तो उन को डर सुनाते ताकि वे हज़र करते। (१२२) ★

ऐ ईमान वालो ! अपने नज़दीक के (रहने वाले) काफ़िरों से जंग करो और चाहिए कि वह तुम में सख़्ती (यानी मेहनत और लड़ाई की ताक़त) मालूम करें और जान रखो कि ख़ुदा परहेज़गारों के साथ है। (१२३) ● और जब कोई सूर: नाज़िल होती है तो कुछ मुनाफ़िक़ (मज़ाक़ उड़ाते और) पूछते हैं कि इस सूर: ने तुम में से किस का ईमान ज़्यादा किया है? सो जो ईमान वाले हैं, उन का तो ईमान ज़्यादा किया और वे ख़ुश

---

१. ये तीन शख़्स भी उन्हीं लोगों में हैं, जो तबूक की लड़ाई से पीछे रह गये थे और जनाब रिसालत मआब के साथ लड़ाई में नहीं गये थे। तबूक एक क़स्बे का नाम है, जो शाम और वादिल क़ुरा के दर्मियान वाक़ेअ है। इस लड़ाई से पीछे रह जाने वाले तीन क़िस्म के लोग थे—१. एक मुनाफ़िक़, ये बे-ईमान भला क्यों घर से निकलने लगे थे। उन्हों ने तरह-तरह के हीले-बहाने किये और इस वजह से ख़ुदा ने उन पर सख़्त लानत व तान की, २. दूसरे मुसलमान जो किसी मजबूरी से पीछे रह गये थे, ३. तीसरे यही तीन शख़्स जो किसी मजबूरी से न गये। तो जिन शख़्सों ने अपने क़ुसूरों को मान लिया, उन को माफ़ कर दिया गया, मगर इन तीन शख़्सों का मामला सज़ा के तौर पर पचास दिन तक मुलतवी रखा गया। ये तीन शख़्स मुरारा बिन रबीअ, काब बिन मालिक और हिलाल बिन उमैया थे। इन दिनों में इन पर ऐसी सख़्त हालत गुज़री कि उसे मौत से भी बद-तर समझते थे। आख़िर सच कहने की वजह से उन के क़ुसूर भी माफ़ कर दिए गये।

व अम्मल्लज़ी - न फ़ी क़ुलूबिहिम् म-र-ज़ुन् फ़-ज़ादत्हुम् रिज्-सन् इला रिज्सिहिम् व मातू व हुम् काफ़िरून (१२५) अ-व ला यरौ-न अन्नहुम् युफ़्तनू-न फ़ी कुल्लि आमिम्-मर्र-तन् औ मर्रतैनि सुम्-म ला यतूबू-न व ला हुम् यज़्ज़क्करून (१२६) व इज़ा मा उन्ज़ि-लत् सूरतुन् न-ज़-र बअ्-ज़ुहुम् इला बअ् - ज़िन् ᵇ हल् यराकुम् मिन् अ-ह़दिन् सुम्मन्स-रफ़ू ᵇ स-र-फ़ल्लाहु क़ुलूबहुम् बिअन्नहुम् क़ौमुल्ला यफ़्क़हून (१२७) ल-क़द् जा-अ कुम् रसूलुम्-मिन् अन्फ़ुसिकुम् अज़ीज़ुन् अलैहि मा अनित्तुम् ह़रीसुन् अलैकुम् बिल्मुअ्मिनी - न रऊफ़ुर्रह़ीम (१२८) फ़-इन् तवल्लौ फ़क़ुल् ह़स् - बियल्लाहु ᶜ ला इला - ह इल्ला हु-व ᵇ अलैहि त-वक्कल्तु व हु-व रब्बुल् - अर्शिल् - अज़ीम ★ (१२९)

هُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ۝١٢٤ وَأَمَّا الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ فَزَادَتْهُمْ
رِجْسًا إِلَىٰ رِجْسِهِمْ وَمَاتُوا وَهُمْ كَافِرُونَ ۝١٢٥ أَوَلَا يَرَوْنَ أَنَّهُمْ
يُفْتَنُونَ فِي كُلِّ عَامٍ مَرَّةً أَوْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ لَا يَتُوبُونَ وَلَا هُمْ
يَذَّكَّرُونَ ۝١٢٦ وَإِذَا مَا أُنْزِلَتْ سُورَةٌ نَظَرَ بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ
هَلْ يَرَاكُمْ مِنْ أَحَدٍ ثُمَّ انْصَرَفُوا ۚ صَرَفَ اللَّهُ قُلُوبَهُمْ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ
لَا يَفْقَهُونَ ۝١٢٧ لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِنْ أَنْفُسِكُمْ عَزِيزٌ عَلَيْهِ مَا
عَنِتُّمْ حَرِيصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِينَ رَءُوفٌ رَحِيمٌ ۝١٢٨ فَإِنْ تَوَلَّوْا
فَقُلْ حَسْبِيَ اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ۖ وَهُوَ رَبُّ
الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ۝١٢٩

سُورَةُ يُونُسَ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مِائَةٌ وَتِسْعُ آيَاتٍ وَإِحْدَىٰ عَشْرَةَ رُكُوعًا

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

الر ۚ تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْحَكِيمِ ۝١ أَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا أَنْ أَوْحَيْنَا
إِلَىٰ رَجُلٍ مِنْهُمْ أَنْ أَنْذِرِ النَّاسَ وَبَشِّرِ الَّذِينَ آمَنُوا أَنَّ
لَهُمْ قَدَمَ صِدْقٍ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۗ قَالَ الْكَافِرُونَ إِنَّ هَٰذَا لَسَاحِرٌ
مُبِينٌ ۝٢ إِنَّ رَبَّكُمُ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي
سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ ۖ يُدَبِّرُ الْأَمْرَ ۖ مَا مِنْ شَفِيعٍ
إِلَّا مِنْ بَعْدِ إِذْنِهِ ۚ ذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ ۚ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ۝٣

१० सूरतु यूनुस ५१

(मक्की) इस सूरः में अरबी के ७७३३ अक्षर, १८६१ शब्द, १०९ आयतें और ११ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

अलिफ़्-लाम्-रा ᶜ तिल्-क आयातुल्-किताबिल्-ह़कीम (१) अ-का-न लिन्नासि अ-ज-बन् अन् औह़ैना इला रजुलिम्-मिन्हुम् अन् अन्ज़िरिन्ना-स व बश्शिरिल्लज़ी-न आमनू अन्-न लहुम् क़-द-म सिद्क़िन् अिन्-द रब्बिहिम् ※ क़ालल्काफ़िरू-न इन्-न हाज़ा लसाहिरुम्-मुबीन (२) इन्-न रब्बकुमुल्लाहुल्लज़ी ख़-ल-क़स्समावाति वल्अर्-ज़ फ़ी सित्तति अय्यामिन् सुम्मस्तवा अ-लल्-अर्शि युदब्बिरुल् - अम् - र ᵇ मा मिन् शफ़ीअिन् इल्ला मिम्बअ् - दि इज़्निही ᵇ ज़ालिकुमुल्लाहु रब्बुकुम् फ़अ्-बुदूहु ᵇ अ-फ़ला त - ज़क्करून (३)

★रु. १६/५ आ ७ ※व. न बी स.

होते हैं। (१२४) और जिनके दिलों में मर्ज़ है, उनके हक़ में गंदगी पर गंदगी ज़्यादा की और वे मरे भी तो काफ़िर के काफ़िर। (१२५) क्या ये देखते नहीं कि ये हर साल एक या दो बार बला में फंसा दिए जाते हैं, फिर भी तौबा नहीं करते और न नसीहत पकड़ते हैं। (१२६) और जब कोई सूरः नाज़िल होती है, तो एक दूसरे की तरफ़ देखने लगते हैं (और पूछते हैं कि) भला तुम्हें कोई देखता है? फिर जाते हैं। ख़ुदा ने उन के दिलों को फेर रखा है, क्योंकि ये ऐसे लोग हैं कि समझ से काम नहीं लेते। (१२७) (लोगो!) तुम्हारे पास तुम ही में से एक पैग़म्बर आए हैं। तुम्हारी तक्लीफ़ उन को बोझ जान पड़ती है और तुम्हारी भलाई के बड़े ख़्वाहिशमंद हैं। और ईमान वालों पर निहायत मुहब्बत करने वाले (और) मेहरबान हैं। (१२८) फिर अगर ये लोग फिर जाएं (और न मानें) तो कह दो कि ख़ुदा मुझे काफ़ी है। उस के सिवा कोई माबूद नहीं। उसी पर मेरा भरोसा है और वही बड़े अर्श का मालिक है। (१२९) ★

१० सूरः यूनुस ५१

सूरः यूनुस मक्की है और इस में एक सौ नौ आयतें और ग्यारह रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ़्-लाम्-रा, यह बड़ी दानाई (हिक्मत) की किताब की आयतें हैं। (१) क्या लोगों को ताज्जुब हुआ कि हम ने उन्हीं में से एक मर्द को हुक्म भेजा कि लोगों को डर सुना दो और ईमान वालों को ख़ुशख़बरी दे दो कि उन के परवरदिगार के यहां उन का सच्चा दर्जा है ▒ (ऐसे आदमी के बारे में) काफ़िर कहते हैं कि यह तो खुला जादूगर है। (२) तुम्हारा परवरदिगार तो ख़ुदा ही है, जिस ने आसमान और ज़मीन छः दिन में बनाए, फिर अर्श (तख़्ते शाही) पर क़ायम हुआ। वही हर एक काम का इन्तिज़ाम करता है कोई (उस के पास) उस की इजाज़त हासिल किए बग़ैर (किसी) की सिफ़ारिश नहीं कर सकता। यही ख़ुदा तुम्हारा परवरदिगार है, तो उसी की इबादत करो। भला

★रु. १६/५ आ ७   ▒ व. न वी स.

इलैहि मर्जिअुकुम् जमीअन् ᵇ वअ् - दल्लाहि हक़्क़न् ᵇ इन्नहू यब्दउल् - ख़ल्-क सुम् - म युअीदुहू लियज्ज़ियल्लज़ी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति बिल्क़िस्ति ᵇ वल्लज़ी-न क-फ़रू लहुम् शराबुम्-मिन् हमीमिव्-व अज़ाबुन् अलीमुम्-बिमा कानू यक्फ़ुरून (४) हु-वल्लज़ी ज-अ-लश्शम्-स ज़ियाअंव्वल्क़-म-र नूरंव्-व क़द्-द-रहू मनाज़ि-ल लितअ्-लमू अ-द-दस्सिनी-न वल्हिसा-ब ᵇ मा ख़-ल-क़ल्लाहु ज़ालि - क इल्ला बिल्हक़्क़ि ᶜ युफ़स्सिलुल्-आयाति लिक़ौमिंय्यअ्-लमून (५) इन्-न फ़िख़्तिलाफ़िल्लैलि वन्नहारि व मा ख़ - ल - क़ल्लाहु फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि लआयातिलिलक़ौमिंय्यत्तक़ून (६) इन्नल्लज़ी-न ला यर्जू-न लिक़ा-अना व रज़ू बिल्हयातिद्दुन्या वत्म-अन्नू बिहा वल्लज़ी - न हुम् अन् आयातिना ग़ाफ़िलून ᵇ (७) उलाइ-क मअ्वाहुमुन्नारु बिमा कानू यक्सिबून (८) इन्नल्लज़ी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति यह्दीहिम् रब्बुहुम् बिईमानिहिम् ᶜ तज्री मिन् तह्तिहिमुल् - अन्हारु फ़ी जन्नातिन्नअीम (९) दअ्-वाहुम् फ़ीहा सुब्हान-कल्लाहुम-म व तहिय्यतुहुम् फ़ीहा सलामुन् ᶜ व आख़िरु दअ्-वाहुम् अनिल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल्-आलमीन★(१०) व लौ युअ़ज्जिलुल्लाहु लिन्नासिश् - शर्रस्तिअ्-जा-ल-हुम् बिल्ख़ैरि लक़ुज़ि-य इलैहिम् अ-जलुहुम् ᵇ फ़-न - ज़रुल्लज़ी-न ला यर्जू - न लिक़ा - अना फ़ी तुग़्यानिहिम् यअ्-महून (११) व इज़ा मस्सल् - इन्सानज़्ज़ुर्रु द - आना लिजम्बिही औ क़ाअिदन् औ क़ाइमन् ᶜ फ़-लम्मा क-शफ़्ना अन्हु ज़ुर्रहू मर्-र क-अल्लम् यद्अुना इला ज़ुर्रिम्मस्सहू ᵇ कज़ालि-क ज़ुय्यि - न लिल्मुस्रिफ़ी-न मा कानू यअ् - मलून (१२)

إليه مرجعكم جميعا وعد الله حقا إنه يبدؤا الخلق ثم يعيده
ليجزي الذين آمنوا وعملوا الصالحات بالقسط والذين كفروا لهم
شراب من حميم وعذاب أليم بما كانوا يكفرون ۝ هو الذي
جعل الشمس ضياء والقمر نورا وقدره منازل لتعلموا عدد
السنين والحساب ما خلق الله ذلك إلا بالحق يفصل الآيات
لقوم يعلمون ۝ إن في اختلاف الليل والنهار وما خلق الله
في السماوات والأرض لآيات لقوم يتقون ۝ إن الذين لا
يرجون لقاءنا ورضوا بالحياة الدنيا واطمأنوا بها والذين هم
عن آياتنا غافلون ۝ أولئك مأواهم النار بما كانوا يكسبون ۝
إن الذين آمنوا وعملوا الصالحات يهديهم ربهم بإيمانهم
تجري من تحتهم الأنهار في جنات النعيم ۝ دعواهم فيها
سبحانك اللهم وتحيتهم فيها سلام وآخر دعواهم أن الحمد لله
رب العالمين ۝ ولو يعجل الله للناس الشر استعجالهم بالخير
لقضي إليهم أجلهم فنذر الذين لا يرجون لقاءنا في طغيانهم
يعمهون ۝ وإذا مس الإنسان الضر دعانا لجنبه أو قاعدا أو
قائما فلما كشفنا عنه ضره مر كأن لم يدعنا إلى ضر مسه
كذلك زين للمسرفين ما كانوا يعملون ۝ ولقد أهلكنا القرون

★रु. १/६ आ १०

तुम ग़ौर क्यों नहीं करते ? (३) उसी के पास तुम सब को लौट कर जाना है। ख़ुदा का वायदा सच्चा है, वही ख़ल्क़त को पहली बार पैदा करता है, फिर वही उस को दोबारा पैदा करेगा, ताकि ईमान वालो और नेक काम करने वालों को इंसाफ़ के साथ बदला दे। और जो काफ़िर हैं उन के लिए पीने को बहुत गर्म पानी और दर्द देने वाला अज़ाब होगा, क्यों कि (ख़ुदा से) इंकार करते थे। (४) वही तो है जिस ने सूरज को रोशन और चांद को मुनव्वर (नूर) बनाया और चांद की मंज़िलें मुक़र्रर कीं, ताकि तुम वर्षों की गिनती और (कामों का) हिसाब मालूम करो। यह (सब कुछ) ख़ुदा ने तद्‌बीर से पैदा किया है। समझने वालों के लिए वह अपनी आयतें खोल-खोल कर बयान फ़रमाता है। (५) रात और दिन के (एक दूसरे के पीछे) आने-जाने में और जो चीज़ें ख़ुदा ने आसमान और ज़मीन में पैदा की हैं (सब में) डरने वालों के लिए निशानियां हैं। (६) जिन लोगों को हम से मिलने की उम्मीद नहीं और दुनिया की ज़िंदगी से ख़ुश और उसी पर मुत्मइन हो बैठे और हमारी निशानियों से ग़ाफ़िल हो रहे हैं। (७) उन का ठिकाना उन (आमाल) की वजह से, जो वे करते हैं, दोज़ख़ है। (८) (और) जो लोग ईमान लाये और नेक काम करते रहे, उन को परवरदिगार उन के ईमान की वजह से (ऐसे महलों की) राह दिखाएगा (कि) उन के नीचे नेमत के बाग़ों में नहरें बह रही होंगी। (९) (जब वे) उन में (उन की नेमतों को देखेंगे, तो बे-साख़्ता) कहेंगे, सुब्हानल्लाह और आपस में उन की दुआ 'सलामुन् अलैकुम' होगी और उन का आख़िरी क़ौल यह (होगा) कि ख़ुदा-ए-रब्बुल आलमीन की हम्द (और उस का शुक्र) है। (१०) ★

और अगर ख़ुदा लोगों की बुराई में जल्दी करता, जिस तरह वे भलाई चाहने में जल्दी करते हैं, तो उन की (उम्र की) मीयाद पूरी हो चुकी होती सो जिन लोगों को हम से मिलने की उम्मीद नहीं, उन्हें हम छोड़े रखते हैं कि अपनी सर-कशी में बहकते रहें। (११) और जब इंसान को तक्लीफ़ पहुंचती है तो लेटा और बैठा और खड़ा (हर हाल में) हमें पुकारता है, फिर जब हम तक्लीफ़ को इस से दूर कर देते हैं तो (बे-लिहाज़ हो जाता और) इस तरह गुज़र जाता है कि गोया किसी तक्लीफ़ पहुंचने पर हमें कभी पुकारा ही न था। इसी तरह हद से निकल जाने वालों का उन के

★रु. १/६ आ १०

व ल-क़द् अह्लक्नल्-क़ुरू-न मिन् क़ब्लिकुम् लम्मा ज़-लमू ʼʼ व जा-अत्हुम् रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति व मा कानू लियुअ्मिनू ط कज़ालि - क नज्ज़िल्-क़ौमल्-मुज्रिमीन (१३) सुम्-म ज-अल्नाकुम् ख़लाइ-फ़ फ़िल्अर्ज़ि मिम्बअ्-दि हिम् लिनन्ज़ु-र कै-फ़ तअ्-मलून (१४) व इज़ा तुत्ला अलैहिम् आयातुना बय्यिनातिन् ʼʼ क़ालल्लज़ी - न ला यर्जू-न लिक़ा-अनअ्ति बिक़ुर्आनिन् ग़ैरि हाज़ा औ बद्दिल्हु ط क़ुल् मा यकूनु ली अन् उबद्दिलहू मिन् तिल्क़ाइ नफ़्सी ج इन् अत्तबिअु इल्ला मा यूहा इलय् - य इन्नी अख़ाफ़ु इन् असैतु रब्बी अज़ा-ब यौमिन् अज़ीम (१५) क़ुल् लौ शा-अल्लाहु मा तलौतुहू अलैकुम् व ला अद्राकुम् बिही ز फ़ - क़द् लबिस्तु फ़ीकुम् अुमुरम्मिन् क़ब्लिही ط अ-फ़ला तअ्-क़िलून (१६) फ़ - मन् अज़्लमु मिम्मनिफ़्तरा अ़ - लल्लाहि कज़िबन् औ कज़्ज़ - ब बिआयातिही ط इन्नहू ला युफ़्लिहुल् - मुज्रिमून (१७) व यअ्-बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि मा ला यज़ुर्रुहुम् व ला यन्फ़अुहुम् व यक़ूलू-न हाउलाइ शुफ़-आउना अिन्दल्लाहि ط क़ुल् अतुनब्बिऊनल्ला - ह बिमा ला यअ् - लमु फ़िस्समावाति व ला फ़िल्अर्ज़ि ط सुब्हानहू व तआ़ला अम्मा युश्रिकून (१८) व मा कानन्नासु इल्ला उम्मतंव्वाहि-द - तन् फ़ख़् - त - लफ़ू व लौला कलिमतुन् स-ब-क़त् मिर्रब्बि-क लक़ुज़ि-य बैनहुम् फ़ी मा फ़ीहि यख़्-तलिफ़ून (१९) व यक़ूलू - न लौला उन्ज़ि-ल अलैहि आयतुम्-मिर्रब्बिही ج फ़क़ुल् इन्नमल् - ग़ैबु लिल्लाहि फ़न्तज़िरू ج इन्नी म-अकुम् मिनल्-मुन्तज़िरीन ★ (२०) व इज़ा अ - ज़क़्नन्ना-स रह्-म-तम्-मिम्बअ् - दि ज़र्रा-अ मस्सत्हुम् इज़ा लहुम् मक्-रुन् फ़ी आयातिना ط क़ुलिल्लाहु अस्-रअु मक्रन् ط इन्-न रुसुलना यक्तुबू-न मा तम्कुरून (२१)

مِنْ قَبْلِكُمْ لَمَّا ظَلَمُوا ۙ وَجَاءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ وَمَا كَانُوا
لِيُؤْمِنُوا ۚ كَذٰلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿١٣﴾ ثُمَّ جَعَلْنٰكُمْ خَلٰٓئِفَ
فِي الْأَرْضِ مِنْ بَعْدِهِمْ لِنَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٤﴾ وَإِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ
اٰيَاتُنَا بَيِّنٰتٍ ۙ قَالَ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا ائْتِ بِقُرْاٰنٍ غَيْرِ هٰذَآ
أَوْ بَدِّلْهُ ۚ قُلْ مَا يَكُوْنُ لِيْٓ أَنْ أُبَدِّلَهٗ مِنْ تِلْقَآئِ نَفْسِيْ ۚ إِنْ
أَتَّبِعُ إِلَّا مَا يُوْحٰٓى إِلَيَّ ۚ إِنِّيْٓ أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّيْ عَذَابَ يَوْمٍ
عَظِيْمٍ ﴿١٥﴾ قُلْ لَّوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا تَلَوْتُهٗ عَلَيْكُمْ وَلَآ أَدْرٰىكُمْ بِهٖ ۖ فَقَدْ
لَبِثْتُ فِيْكُمْ عُمُرًا مِّنْ قَبْلِهٖ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿١٦﴾ فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ
افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ۚ إِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿١٧﴾ وَ
يَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَيَقُوْلُوْنَ هٰٓؤُلَآءِ
شُفَعَآؤُنَا عِنْدَ اللّٰهِ ۚ قُلْ أَتُنَبِّـُٔوْنَ اللّٰهَ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي السَّمٰوٰتِ وَ
لَا فِي الْأَرْضِ ۚ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿١٨﴾ وَمَا كَانَ النَّاسُ إِلَّآ
أُمَّةً وَّاحِدَةً فَاخْتَلَفُوْا ۚ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِيَ
بَيْنَهُمْ فِيْمَا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿١٩﴾ وَيَقُوْلُوْنَ لَوْلَآ أُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ
مِّنْ رَّبِّهٖ ۚ فَقُلْ إِنَّمَا الْغَيْبُ لِلّٰهِ فَانْتَظِرُوْا ۚ إِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ﴿٢٠﴾
وَإِذَآ أَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً مِّنْ بَعْدِ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُمْ إِذَا لَهُمْ مَّكْرٌ فِيْٓ
اٰيَاتِنَا ۚ قُلِ اللّٰهُ أَسْرَعُ مَكْرًا ۚ إِنَّ رُسُلَنَا يَكْتُبُوْنَ مَا تَمْكُرُوْنَ ﴿٢١﴾ هُوَ

★रु. २/७ आ १०

आमाल सजा कर दिखाए गए हैं। (१२) और तुम से पहले हम कई उम्मतों को, जब उन्हों ने ज़ुल्म अख़्तियार किया, हलाक कर चुके हैं और उन के पास पैग़म्बर खुली निशानियां ले कर आये, मगर वे ऐसे न थे कि ईमान लाते। हम गुनाहगार लोगों को इसी तरह बदला दिया करते हैं। (१३) फिर हम ने उन के बाद तुम लोगों को मुल्क में ख़लीफ़ा बनाया, ताकि देखें कि तुम कैसे काम करते हो। (१४) और उन को हमारी आयतें पढ़ कर सुनायी जाती हैं, तो जिन लोगों को हम से मिलने की उम्मीद नहीं, वे कहते हैं कि (या तो) इस के सिवा कोई और क़ुरआन (बना) लाओ या इस को बदल दो। कह दो कि मुझ को अख़्तियार नहीं है कि इसे अपनी तरफ़ से बदल दूं। मैं तो उसी हुक्म का ताबेअ हूं जो मेरी तरफ़ आता है। अगर मैं अपने परवरदिगार की ना-फ़रमानी करूं, तो मुझे बड़े (सख़्त) दिन के अज़ाब से ख़ौफ़ आता है। (१५) (यह भी) कह दो कि अगर ख़ुदा चाहता तो (न तो) मैं ही यह (किताब) तुम को पढ़ कर सुनाता और न वही तुम्हें इस के बारे में बताता। मैं इस से पहले तुम में एक उम्र रहा हूं (और कभी एक कलिमा भी इस तरह का नहीं कहा), भला तुम समझते नहीं। (१६) तो उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन जो ख़ुदा पर झूठ गढ़े और उस की आयतों को झुठलाए। बेशक गुनाहगार कामियाबी नहीं पाएंगे। (१७) और ये (लोग) ख़ुदा के सिवा ऐसी चीज़ों की इबादत करते हैं, जो न उन का कुछ बिगाड़ ही सकती हैं और न कुछ भला ही कर सकती हैं और कहते हैं कि ये ख़ुदा के पास हमारी सिफ़ारिश करने वाले हैं। कह दो, क्या तुम ख़ुदा को ऐसी चीज़ बताते हो, जिस का वजूद उसे न आसमानों में मालूम होता है और न ज़मीन में। वह पाक है और (उस की शान) उन के शिर्क करने से बहुत बुलंद है। (१८)और (सब) लोग (पहले) एक ही उम्मत (यानी एक ही मिल्लत पर) थे। फिर अलग-अलग हो गए और अगर एक बात जो तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से पहले हो चुकी है, न होती, तो जिन बातों में वे इख़्तिलाफ़ करते हैं, उन में फ़ैसला कर दिया जाता। (१९) और कहते हैं कि इस पर उन के परवरदिगार की तरफ़ से कोई निशानियां क्यों नाज़िल नहीं हुई। कह दो कि ग़ैब (का इल्म) तो ख़ुदा ही को है, सो तुम इंतिज़ार करो। मैं भी तुम्हारे साथ इंतिज़ार करता हूं। (२०) ★

और जब हम लोगों को तक्लीफ़ पहुंचने के बाद (अपनी) रहमत (से सुख) का मज़ा चखाते हैं, तो वे हमारी आयतों में ही हीले करने लगते हैं। कह दो कि ख़ुदा बहुत जल्द हीला करने वाला है। और जो हीले तुम करते हो, हमारे फ़रिश्ते उन को लिखते जाते हैं। (२१) वही तो है जो तुम

★रु. २/७ आ १०

हुवल्लज़ी युसय्यिरुकुम् फ़िल्बर्रि वल्बह्रि ط हत्ता इज़ा कुन्तुम् फ़िल्फ़ुल्कि ج व जरै-न बिहिम् बिरीहिन् तय्यिबतिंव्-व फ़रिहू बिहा जाअत्हा रीहुन् आसिफ़ुंव्-व जा-अहुमुल्-मौजु मिन् कुल्लि मकानिंव्-व ज़न्नू अन्नहुम् उही-त बिहिम् ۙ द-अ-वुल्ला-ह मुख़्लिसी-न लहुद्दीन-न ۚ लइन् अन्जैतना मिन् हाज़िही ल-नकूनन्-न मिनश्शाकिरीन (२२) फ़-लम्मा अन्जाहुम् इज़ाहुम् यब्ग़ू-न फ़िल्अर्ज़ि बिग़ैरिल्हक़्क़ि ط या अय्युहन्नासु इन्नमा बग़्युकुम् अला अन्फ़ुसिकुम् ۙ मताअल् - हयातिद्दुन्या ۡ सुम्-म इलैना मर्जिअुकुम् फ़नुनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् तअ्-मलून (२३) इन्नमा म-सलुल्-हयातिद्दुन्या कमा-इन् अन्ज़ल्नाहु मिनस्समाइ फ़ख़्-त-ल-त बिही नबातुल्अर्ज़ि मिम्मा यअ्कुलुन्नासु वल् - अन्आमु ط हत्ता इज़ा अ-ख़-ज़तिल्-अर्-ज़ु ज़ुख़्-रुफ़हा वज़्ज़य्य-नत् व ज़न्-न अह्लुहा अन्नहुम् क़ादिरू-न अलैहा ۙ अताहा अम्रुना लैलन् औ नहारन् फ़-ज-अल्नाहा हसीदन् क-अल्लम् तग़्-न बिल्-अम्सि ط कज़ालि-क नुफ़स्सिलुल्-आयाति लिक़ौमिंय्य-त-फ़क्करून (२४) वल्लाहु यद्अू इला दारिस्सलामि ط व यह्दी मंय्यशाउ इला सिरातिम्मुस्तक़ीम (२५) लिल्लज़ी-न अह्सनुल्हुस्ना व ज़िया-द-तुन् ط व ला यर्हक़ु वुजूहहुम् क़-त-रुंव्-व ला ज़िल्लतुन् ط उलाइ-क अस्हाबुल्-जन्नति ۚ हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (२६) वल्लज़ी-न क-सबुस्सय्यिआति जज़ाउ सय्यिअतिम् - बिमिस्लिहा ۙ व तर्हक़ुहुम् ज़िल्लतुन् ط मा लहुम् मिनल्लाहि मिन् आसिमिन् ۚ क-अन्नमा उग़्शियत् वुजूहुहुम् क़ि-त-अम्-मिनल्लैलि मुज़्लिमन् ط उलाइ-क अस्हाबुन्नारि ۚ हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (२७) व यौ-म नह्शुरुहुम् जमीअन् सुम्-म नक़ूलु लिल्लज़ी-न अश्रकू मकानकुम् अन्तुम् व शु-रकाउकुम् ۚ फ़-ज़य्यल्ना बैनहुम् व क़ा-ल शु-रकाउहुम् मा कुन्तुम् इय्याना तअ्-बुदून (२८)

الَّذِي يُسَيِّرُكُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ حَتَّى إِذَا كُنتُمْ فِي الْفُلْكِ وَجَرَيْنَ بِهِم
بِرِيحٍ طَيِّبَةٍ وَفَرِحُوا بِهَا جَاءَتْهَا رِيحٌ عَاصِفٌ وَجَاءَهُمُ الْمَوْجُ مِن
كُلِّ مَكَانٍ وَظَنُّوا أَنَّهُمْ أُحِيطَ بِهِمْ دَعَوُا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۚ
لَئِنْ أَنجَيْتَنَا مِنْ هَذِهِ لَنَكُونَنَّ مِنَ الشَّاكِرِينَ ﴿٢٢﴾ فَلَمَّا أَنجَاهُمْ إِذَا هُمْ
يَبْغُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۗ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّمَا بَغْيُكُمْ عَلَى أَنفُسِكُم ۖ
مَّتَاعَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُكُمْ فَنُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٢٣﴾
إِنَّمَا مَثَلُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَاءٍ أَنزَلْنَاهُ مِنَ السَّمَاءِ فَاخْتَلَطَ بِهِ نَبَاتُ
الْأَرْضِ مِمَّا يَأْكُلُ النَّاسُ وَالْأَنْعَامُ حَتَّى إِذَا أَخَذَتِ الْأَرْضُ زُخْرُفَهَا
وَازَّيَّنَتْ وَظَنَّ أَهْلُهَا أَنَّهُمْ قَادِرُونَ عَلَيْهَا أَتَاهَا أَمْرُنَا لَيْلًا أَوْ
نَهَارًا فَجَعَلْنَاهَا حَصِيدًا كَأَن لَّمْ تَغْنَ بِالْأَمْسِ ۚ كَذَلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ
لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٢٤﴾ وَاللَّهُ يَدْعُو إِلَى دَارِ السَّلَامِ وَيَهْدِي مَن يَشَاءُ
إِلَى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٢٥﴾ لِّلَّذِينَ أَحْسَنُوا الْحُسْنَى وَزِيَادَةٌ ۖ وَلَا يَرْهَقُ
وُجُوهَهُمْ قَتَرٌ وَلَا ذِلَّةٌ ۚ أُولَئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٢٦﴾
وَالَّذِينَ كَسَبُوا السَّيِّئَاتِ جَزَاءُ سَيِّئَةٍ بِمِثْلِهَا وَتَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ۖ
مَّا لَهُم مِّنَ اللَّهِ مِنْ عَاصِمٍ ۖ كَأَنَّمَا أُغْشِيَتْ وُجُوهُهُمْ قِطَعًا مِّنَ
اللَّيْلِ مُظْلِمًا ۚ أُولَئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٢٧﴾ وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ
جَمِيعًا ثُمَّ نَقُولُ لِلَّذِينَ أَشْرَكُوا مَكَانَكُمْ أَنتُمْ وَشُرَكَاؤُكُمْ ۚ فَزَيَّلْنَا

को जंगल और दरिया में चलने-फिरने और सैर करने की तौफ़ीक़ देता है, यहां तक कि जब तुम कश्तियों में (सवार) होते हो और कश्तियां पाकीज़ा हवा (के नर्म-नर्म झोंकों) से सवारों को ले कर चलने लगती हैं और वे उन से ख़ुश होते हैं, तो यकायकी ज़न्नाटे की हवा चल पड़ती है और लहरें हर तरफ़ से उन पर (जोश मारती हुई) आने लगती हैं और वे ख़्याल करते हैं कि (अब तो) लहरों में घिर गए, तो उह वक़्त ख़ालिस ख़ुदा ही की इबादत कर के उससे दुआ मांगने लगते हैं कि (ऐ ख़ुदा!) अगर तू हम को इस से निजात बख़्शे तो हम (तेरे) बहुत ही शुक्रगुज़ार हों। (२२) लेकिन जब वह उन को निजात दे देता है, तो मुल्क में ना-हक़ शरारत करने लगते हैं। लोगो! तुम्हारी शरारत का वबाल तुम्हारी ही जानों पर होगा, तुम दुनिया की ज़िंदगी के फ़ायदे उठा लो, फिर तुम को हमारे ही पास लौट कर आना है। उस वक़्त तुम को बताएंगे, जो कुछ तुम किया करते थे। (२३) दुनिया की ज़िंदगी की मिसाल मेंह की-सी है कि हम ने उस को आसमान से बरसाया। फिर उस के साथ सब्ज़ा, जिसे आदमी और जानवर खाते हैं, मिल कर निकला, यहां तक कि ज़मीन सब्ज़े से ख़ुशनुमा (हुई) और सज गयी और ज़मीन वालों ने ख़्याल किया कि वह इस पर पूरा क़ब्ज़ा रखते हैं, यकायक रात को या दिन को हमारे (अज़ाब का हुक्म) आ पहुंचा, तो हम ने उस को काट (कर ऐसा कर) डाला कि गोया कल वहां कुछ था ही नहीं। जो लोग ग़ौर करने वाले हैं, उन के लिए हम (अपनी क़ुदरत की) निशानियां इसी तरह खोल-खोल कर बयान करते हैं। (२४) और ख़ुदा सलामती के घर की तरफ़ बुलाता है और जिस को चाहता है सीधा रास्ता दिखाता है। (२५) जिन लोगों ने भले काम किए, उन के लिए भलाई है और (कुछ) और भी। और उन के मुंहों पर न तो स्याही छाएगी और न रुसवाई। यही जन्नती हैं कि उस में हमेशा रहेंगे। (२६) और जिन्हों ने बुरे काम किये, तो बुराई का बदला वैसा ही होगा और उन के मुंहों पर ज़िल्लत छा जाएगी और कोई उन को ख़ुदा से बचाने वाला न होगा। उन के मुंहों (की स्याही का हाल होगा कि उन) पर गोया अंधेरी रात के टुकड़े उढ़ा दिए गए हैं। यही दोज़ख़ी हैं कि हमेशा उस में रहेंगे। (२७) और जिस दिन हम इन सब को जमा कर देंगे, फिर मुश्रिकों से कहेंगे कि तुम और तुम्हारे शरीक अपनी-अपनी जगह ठहरे रहो, तो हम उन में फूट डाल देंगे उन के शरीक (उन से) कहेंगे कि तुम हम को तो नहीं पूजा

फ़-कफ़ा बिल्लाहि शहीदम्-बैनना व बैनकुम् इन् कुन्ना अन् अिबादतिकुम् लग़ाफ़िलीन (२९) हुनालि-क तब्लू कुल्लु नफ़्सिम्मा अस्-ल-फ़त् व रुद्दू इलल्लाहि मौलाहुमुल्-हक़्क़ि व ज़ल्-ल अन्हुम् मा कानू यफ़्तरून ★● (३०) क़ुल् मंय्यर्ज़ुक़ुकुम् मिनस्समा-इ वल्अर्ज़ि अम्मंय्यम्लिकुस्-सम्-अ वल्-अब्सा-र व मंय्युख़्रिजुल्हय्-य मिनलमय्यिति व युख़्रिजुल्-मय्यि-त मिनल्हय्यि व मंय्युदब्बिरुल्-अम्-र ط फ़-स-यक़ूलूनल्लाहु ج फ़क़ुल् अ-फ़ला तत्तक़ून (३१) फ़-ज़ालिकुमुल्लाहु रब्बुकुमुल्-हक़्क़ु ج फ़माज़ा बअ्-दल्-हक़्क़ि इल्लज़्ज़लालु صلے फ़-अन्ना तुस्रफ़ून (३२) क-ज़ालि-क हक़्क़त् कलिमतु रब्बि-क अ-लल्लज़ी-न फ़-सक़ू अन्नहुम् ला युअ्मिनून (३३) क़ुल् हल् मिन् शुरकाइकुम् मंय्यब्दउल्-ख़ल-क़ सुम्-म युईदुहू ط क़ुलिल्लाहु यब्दउल्ख़ल-क़ सुम्-म युईदुहू फ़-अन्ना तुअ्फ़कून (३४) क़ुल् हल् मिन् शुरकाइकुम् मंय्यह्दी इलल्हक़्क़ि ط क़ुलिल्लाहु यह्दी लिल्हक़्क़ि ط अ-फ़-मंय्यह्दी इलल्हक़्क़ि अहक़्क़ु अंय्युत्त-ब-अ अम्मल्ला यहिद्दी इल्ला अंय्युह्दा ج फ़मा लकुम् وقف कै-फ़ तह्कुमून (३५) व मा यत्तबिअु अक्सरुहुम् इल्ला ज़न्नन् ط इन्नज़्ज़न्-न ला युग़्नी मिनल्हक़्क़ि शैअन् ط इन्नल्ला-ह अलीमुम्-बिमा यफ़्अलून (३६) व मा का-न हाज़ल्क़ुरआनु अंय्युफ़्तरा मिन् दूनिल्लाहि व लाकिन् तस्दीक़ल्लज़ी बै-न यदैहि व तफ़्सीलल्-किताबि ला रै-ब फ़ीहि मिर्रब्बिल्-आलमीन وقف (३७) अम् यक़ूलूनफ़्तराहु ط क़ुल् फ़अ्-तू बिसूरतिम्-मिस्लिही वद्अू मनिस्त-तअ्-तुम् मिन् दूनिल्लाहि इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (३८)

بَيْنَهُمْ وَقَالَ شُرَكَآؤُهُمْ مَّا كُنتُمْ إِيَّانَا تَعْبُدُونَ ۝ فَكَفَىٰ بِاللَّهِ
شَهِيدًۢا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ إِن كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُمْ لَغَٰفِلِينَ ۝ هُنَالِكَ
تَبْلُوا۟ كُلُّ نَفْسٍ مَّآ أَسْلَفَتْ وَرُدُّوٓا۟ إِلَى اللَّهِ مَوْلَىٰهُمُ الْحَقِّ وَضَلَّ عَنْهُم
مَّا كَانُوا۟ يَفْتَرُونَ ۝ قُلْ مَن يَرْزُقُكُم مِّنَ السَّمَآءِ وَالْأَرْضِ أَمَّن
يَمْلِكُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَٰرَ وَمَن يُخْرِجُ الْحَىَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ
الْمَيِّتَ مِنَ الْحَىِّ وَمَن يُدَبِّرُ الْأَمْرَ فَسَيَقُولُونَ اللَّهُ فَقُلْ أَفَلَا
تَتَّقُونَ ۝ فَذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمُ الْحَقُّ فَمَاذَا بَعْدَ الْحَقِّ إِلَّا الضَّلَٰلُ
فَأَنَّىٰ تُصْرَفُونَ ۝ كَذَٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِينَ فَسَقُوٓا۟
أَنَّهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ قُلْ هَلْ مِن شُرَكَآئِكُم مَّن يَبْدَؤُا۟ الْخَلْقَ
ثُمَّ يُعِيدُهُۥ قُلِ اللَّهُ يَبْدَؤُا۟ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُۥ فَأَنَّىٰ تُؤْفَكُونَ ۝
قُلْ هَلْ مِن شُرَكَآئِكُم مَّن يَهْدِىٓ إِلَى الْحَقِّ قُلِ اللَّهُ يَهْدِى
لِلْحَقِّ أَفَمَن يَهْدِىٓ إِلَى الْحَقِّ أَحَقُّ أَن يُتَّبَعَ أَمَّن لَّا يَهِدِّىٓ
إِلَّآ أَن يُهْدَىٰ فَمَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ ۝ وَمَا يَتَّبِعُ أَكْثَرُهُمْ إِلَّا
ظَنًّا إِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِى مِنَ الْحَقِّ شَيْـًٔا إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌۢ بِمَا يَفْعَلُونَ ۝
وَمَا كَانَ هَٰذَا الْقُرْءَانُ أَن يُفْتَرَىٰ مِن دُونِ اللَّهِ وَلَٰكِن تَصْدِيقَ
الَّذِى بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيلَ الْكِتَٰبِ لَا رَيْبَ فِيهِ مِن رَّبِّ
الْعَٰلَمِينَ ۝ أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَىٰهُ قُلْ فَأْتُوا۟ بِسُورَةٍ مِّثْلِهِۦ وَادْعُوا۟

करते थे। (२८) हमारे और तुम्हारे दर्मियान ख़ुदा ही गवाह काफ़ी है। हम तुम्हारी पूजा से बिल्कुल बे-ख़बर थे। (२९) वहां हर आदमी (अपने आमाल की), जो उस ने आगे भेजे होंगे, बुहतान आज़माइश कर लेगा।[1] और वे अपने सच्चे मालिक की तरफ़ लौट जाएंगे और जो कुछ वे बांधा करते थे, सब उन से जाता रहेगा। (३०) ★ ●

(उन से) पूछो कि तुम को आसमान व ज़मीन में रोज़ी कौन देता है या (तुम्हारे) कानों और आंखों का मालिक कौन है और बे-जान से जानदार कौन पैदा करता है और जानदार से बे-जान कौन पैदा करता है और दुनिया के कामों का इन्तिज़ाम कौन करता है। झट कह देंगे कि अल्लाह, तो कहो कि फिर तुम (ख़ुदा से) डरते क्यों नहीं ? (३१) यही ख़ुदा तो तुम्हारा परवरदिगारे बर-हक़ है और हक़ बात के ज़ाहिर होने के बाद गुमराही के सिवा है ही क्या ? तो तुम कहां फिर जाते हो ? (३२) इसी तरह ख़ुदा का इर्शाद इन ना-फ़रमानों के हक़ में साबित हो कर रहा कि ये ईमान नहीं लाएंगे। (३३) (उन से) पूछो कि भला तुम्हारे शरीकों में कोई ऐसा है कि मख़्लूक़ात को पहले पैदा करे (और) फिर उस को दोबारा बनाये। कह दो कि ख़ुदा ही पहली बार पैदा करता है, फिर वही उस को दोबारा पैदा करेगा तो तुम कहां उलटे जा रहे हो ? (३४) पूछो कि भला तुम्हारे शरीकों में कौन ऐसा है कि हक़ का रास्ता दिखाए। कह दो कि ख़ुदा ही हक़ का रास्ता दिखाता है, भला जो हक़ का रास्ता दिखाए, वह इस क़ाबिल है कि उस की पैरवी की जाए या वह कि जब तक कोई उसे रास्ता न बताए, रास्ता न पाए। तो तुम को क्या हुआ है, कैसा इंसाफ़ करते हो ? (३५) और उन में के अक्सर सिर्फ़ ज़न (गुमान) की पैरवी करते हैं। और कुछ शक नहीं कि हक़ के मुक़ाबले में कुछ भी कारआमद नहीं हो सकता। बेशक ख़ुदा तुम्हारे (तमाम) कामों को जानता है। (३६) और यह क़ुरआन ऐसा नहीं कि ख़ुदा के सिवा कोई उस को अपनी तरफ़ से बना लाए। हां, (हां, यह ख़ुदा का कलाम है), जो (किताबें) इन से पहले (की) हैं, उन की तस्दीक़ करता है और उन्हीं किताबों की (इस में) तफ़्सील है। इस में शक नहीं (कि) यह रब्बुल आलमीन की तरफ़ से (नाज़िल हुआ) है। (३७) क्या ये लोग कहते हैं कि पैग़म्बर ने उस को अपनी तरफ़ से बना लिया है। कह दो कि अगर सच्चे हो, तो तुम भी इस तरह की एक सूरः बना लाओ और ख़ुदा के सिवा जिन को तुम बुला सको, बुला भी लो। (३८) हक़ीक़त यह है कि जिस चीज़ के इल्म पर ये

---

१. यानी जब उस को उस के आमाल का बदला मिलेगा, तब उसे मालूम हो जाएगा कि उस ने दुनिया में कैसे काम किए थे।

★रु. ३/८ आ १० ● नि. १/२

बल् कज़्ज़बू बिमा लम् युहीतू बिअिल्मिही व लम्मा यअ्तिहिम् तअ्-वीलुहू कज़ालि-क कज़्ज़-बल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् फ़न्ज़ुर् कै-फ़ का-न आ़क़िबतुज़्ज़ालिमीन (३९) व मिन्हुम् मंय्युअ्मिनु बिही व मिन्हुम् मल्ला युअ्मिनु बिही व रब्बु-क अअ्-लमु बिलमुफ़्सिदीन ★ (४०) व इन् कज़्ज़बू-क फ़क़ुल् ली अ-मली व लकुम् अ-मलुकुम् अन्तुम् बरीऊ-न मिम्मा अअ्-मलु व अ-न बरीउम्-मिम्मा तअ्-मलून (४१) व मिन्हुम् मंय्यस्तमिअू-न इलै-क अ-फ़-अन्-त तुस्मिअुस्-सुम्-म व लौ कानू ला यअ्-क़िलून (४२) व मिन्हुम् मंय्यन्ज़ुरु इलै-क अ-फ़-अन्-त तह्दिल्अुम्-य व लौ कानू ला युब्सिरून (४३) इन्नल्ला-ह ला यज़्लिमुन्ना-स शैअंव्-व लाकिन्नन्ना-स अन्फ़ुसहुम् यज़्लिमून (४४) व यौ-म यह्शुरुहुम् क-अल्लम् यल्बसू इल्ला सा-अ-तम्-मिनन्नहारि य-त-आरफ़ू-न बैनहुम् क़द् ख़सिरल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिलिक़ाइल्लाहि

مَن اسْتَطَعْتُم مِّن دُونِ اللَّهِ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ۝ بَلْ كَذَّبُوا
بِمَا لَمْ يُحِيطُوا بِعِلْمِهِ وَلَمَّا يَأْتِهِمْ تَأْوِيلُهُ كَذَٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِينَ
مِن قَبْلِهِمْ فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظَّالِمِينَ ۝ وَمِنْهُم مَّن
يُؤْمِنُ بِهِ وَمِنْهُم مَّن لَّا يُؤْمِنُ بِهِ وَرَبُّكَ أَعْلَمُ بِالْمُفْسِدِينَ ۝
وَإِن كَذَّبُوكَ فَقُل لِّي عَمَلِي وَلَكُمْ عَمَلُكُمْ أَنتُم بَرِيئُونَ مِمَّا أَعْمَلُ
وَأَنَا بَرِيءٌ مِّمَّا تَعْمَلُونَ ۝ وَمِنْهُم مَّن يَسْتَمِعُونَ إِلَيْكَ أَفَأَنتَ
تُسْمِعُ الصُّمَّ وَلَوْ كَانُوا لَا يَعْقِلُونَ ۝ وَمِنْهُم مَّن يَنظُرُ إِلَيْكَ أَفَأَنتَ
تَهْدِي الْعُمْيَ وَلَوْ كَانُوا لَا يُبْصِرُونَ ۝ إِنَّ اللَّهَ لَا يَظْلِمُ النَّاسَ
شَيْئًا وَلَٰكِنَّ النَّاسَ أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ۝ وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ كَأَن لَّمْ
يَلْبَثُوا إِلَّا سَاعَةً مِّنَ النَّهَارِ يَتَعَارَفُونَ بَيْنَهُمْ قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ
كَذَّبُوا بِلِقَاءِ اللَّهِ وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ۝ وَإِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِي
نَعِدُهُمْ أَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَإِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ اللَّهُ شَهِيدٌ عَلَىٰ مَا
يَفْعَلُونَ ۝ وَلِكُلِّ أُمَّةٍ رَّسُولٌ فَإِذَا جَاءَ رَسُولُهُمْ قُضِيَ بَيْنَهُم
بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۝ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن
كُنتُمْ صَادِقِينَ ۝ قُل لَّا أَمْلِكُ لِنَفْسِي ضَرًّا وَلَا نَفْعًا إِلَّا مَا شَاءَ
اللَّهُ لِكُلِّ أُمَّةٍ أَجَلٌ إِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ فَلَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً وَ
لَا يَسْتَقْدِمُونَ ۝ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَتَاكُمْ عَذَابُهُ بَيَاتًا أَوْ نَهَارًا

व मा कानू मुह्तदीन (४५) व इम्मा नुरियन्न-क बअ्-ज़ल्लज़ी नअिदुहुम् औ न-त-वफ़्फ़-यन्न-क फ़-इलैना मर्जिअुहुम् सुम्मल्लाहु शहीदुन् अ़ला मा यफ़्-अ़लून (४६) व लिकुल्लि उम्मतिर्रसूलुन् फ़इज़ा जा-अ रसूलुहुम् क़ुज़ि-य बैनहुम् बिल्क़िस्ति व हुम् ला युज़्लमून (४७) व यक़ूलू-न मता हाज़ल्वअ्-दु इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (४८) क़ुल् ला अम्लिकु लिनफ़्सी ज़र्रंव्-व ला नफ़्-अन् इल्ला मा शा-अल्लाहु लिकुल्लि उम्मतिन् अ-जलुन् इज़ा जा-अ अ-जलुहुम् फ़ला यस्तअ्ख़िरू-न सा-अ-तंव्-व ला यस्तक़्दिमून (४९) क़ुल् अ-रऐतुम् इन् अताकुम् अ़ज़ाबुहू बयातन् औ नहारम्-माज़ा यस्तअ्-जिलु मिन्हुल्-मुज्रिमून (५०)

★रु. ४/९ आ १०

क़ाबू नहीं पा सके, उस को (नादानी से) झुठला दिया और अभी इस की हक़ीक़त उन पर खुली ही नहीं। इसी तरह जो लोग इन से पहले थे, उन्हों ने झुठलाया था, सो देख लो ज़ालिमों का कैसा अंजाम हुआ। (३९) और इन में से कुछ तो ऐसे हैं कि इस पर ईमान ले आते हैं और कुछ ऐसे हैं कि ईमान नहीं लाते। और तुम्हारा परवरदिगार शरीरों को ख़ूब जानता है। (४०)★

और अगर यह तुम्हें झुठलाएं, तो कह दो कि मुझ को मेरे अमल (का बदला मिलेगा) और तुम को तुम्हारे अमल (का)। तुम मेरे अमलों के जवाबदेह नहीं हो और मैं तुम्हारे अमलों का जवाबदेह नहीं हूं। (४१) और इन में कुछ ऐसे हैं कि तुम्हारी तरफ़ कान लगाते हैं, तो क्या तुम बहरों को सुनाओगे, अगरचे कुछ भी (सुनते,) समझते न हों। (४२) और कुछ ऐसे हैं कि तुम्हारी तरफ़ देखते हैं, तो क्या तुम अंधों को रास्ता दिखाओगे, अगरचे कुछ भी देखते (भालते) न हों।[1] (४३) ख़ुदा तो लोगों पर कुछ ज़ुल्म नहीं करता, लेकिन लोग ही अपने आप पर ज़ुल्म करते हैं (४४) और जिस दिन ख़ुदा उन को जमा करेगा (तो वे दुनिया के बारे में ऐसा ख़्याल करेंगे कि) गोया (वहां) घड़ी भर दिन से ज़्यादा रहे ही नहीं थे (और) आपस में एक दूसरे को पहचानेंगे भी। जिन लोगों ने ख़ुदा के सामने हाज़िर होने को झुठलाया, वे घाटे में पड़ गये और राहयाब न हुए। (४५) अगर हम कोई अज़ाब, जिस का इन लोगों से वायदा करते हैं, तुम्हारी आंखों के सामने (नाज़िल) करें या (इस वक़्त, जब) तुम्हारी ज़िंदगी की मुद्दत पूरी कर दें, तो उन को हमारे ही पास लौट कर आना है। फिर जो कुछ ये कर रहे हैं, ख़ुदा उस को देख रहा है। (४६) और हर एक उम्मत की तरफ़ पैग़म्बर भेजा गया, जब उन का पैग़म्बर आता है, तो उन में इंसाफ़ के साथ फ़ैसला कर दिया जाता है और उन पर कुछ ज़ुल्म नहीं किया जाता। (४७) और ये कहते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो (जिस अज़ाब का) यह वायदा (है, वह आयेगा) कब ? (४८) कह दो कि मैं तो अपने नुक़्सान और फ़ायदे का भी कुछ अख़्तियार नहीं रखता, मगर जो ख़ुदा चाहे। हर एक उम्मत के लिए (मौत का) एक वक़्त मुक़र्रर है। जब वह वक़्त आ जाता है, तो एक घड़ी भी देर नहीं कर सकते और न जल्दी कर सकते हैं। (४९) कह दो कि भला देखो तो अगर उस का अज़ाब तुम पर (यकायक) आ जाए, रात को या दिन को, तो फिर गुनाहगार किस बात की जल्दी करेंगे। (५०) क्या जब वह आ

---

१. यानी उन का तुम्हारी तरफ़ कान लगाना या नज़र करना उन को कुछ फ़ायदा नहीं देगा, क्योंकि उन की मिसाल बहरों और अंधों की-सी है कि न सुन सकें, न देख सकें, ख़ास तौर से इस हालत में कि अक़्ल और समझ से कोरे हों। बहरे को इशारे से समझा सकते हैं, अंधे को आवाज़ से बता सकते हैं, मगर जो अक़्ल ही न रखे, उस को किसी तरह समझाना भी नफ़ा नहीं देता। मतलब यह है कि लोग न शौक़ और तवज्जोह से तुम्हारी बातों को सुनते हैं, न यक़ीन रखते हैं, इस लिए इन का हिदायत पाना कठिन है।

★रु. ४/६ आ १०

अ-सुम्-म इज़ा मा व-क़-अ़ आमन्तुम् बिही ط आल्आ-न व क़द् कुन्तुम् बिही तस्तअ्-जिलून (५१) सुम्-म क़ी-ल लिल्लज़ी-न ज़-लमू ज़ूक़ू अ़ज़ाबल्-ख़ुल्दि हल् तुज्ज़ौ-न इल्ला बिमा कुन्तुम् तक्सिबून (५२) व यस्तम्बिऊन-क अहक़्क़ुन् हु-व ط ▩ क़ुल् ई व रब्बी इन्नहू लहक़्क़ुन् ط ▩ व मा अन्तुम् बिमुअ्-जिज़ीन ★(५३) व लौ अन्-न लिकुल्लि नफ़्सिन् ज़-ल-मत् मा फ़िल्अर्ज़ि लफ़्-त-दत् बिही ط व असर्रुन्नदा-म-त लम्मा र-अवुल्-अ़ज़ा-ब ج व क़ुज़ि-य बैनहुम् बिल्क़िस्ति व हुम् ला युज़्लमून (५४) अला इन्-न लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि ط अला इन्-न वअ्-दल्लाहि ह़क़्क़ुंव्-व लाकिन्-न अक्स-रहुम् ला यअ्-लमून (५५) हु-व युह़्यी व युमीतु व इलैहि तुर्जअून (५६) या अय्युहन्नासु क़द् जा-अत्कुम् मौअि-ज़-तुम्-मिर्रब्बिकुम् व शिफ़ाउल्लिमा फ़िस्सुदूरि ॥ व हुदंव्-व रह्-मतुल्-लिल्मुअ्मिनीन (५७) क़ुल् बिफ़ज़्लिल्लाहि व बिरह़्मतिही फ़बिज़ालि-क फ़ल्-यफ़्रहू ط हु-व ख़ैरुम्मिम्मा यज्मअून (५८) क़ुल् अ-रऐतुम् मा अन्ज़-लल्लाहु लकुम् मिर्रिज़्क़िन् फ़-ज-अल्तुम् मिन्हु ह़रामंव्-व ह़लालन् ط क़ुल् आल्लाहु अज़ि-न लकुम् अम् अ़-लल्लाहि तफ़्तरून (५९) व मा ज़न्नुल्लज़ी-न यफ़्तरू-न अ़लल्लाहिल्-कज़ि-ब यौमल्-क़ियामति ط इन्नल्ला-ह लज़ू फ़ज़्लिन् अ़-लन्नासि व लाकिन्-न अक्स-रहुम् ला यश्कुरून★(६०) व मा तकूनु फ़ी शअ्निंव्-व मा तत्लू मिन्हु मिन् क़ुर्आनिंव्-व ला तअ्-मलू-न मिन् अ़-मलिन् इल्ला कुन्ना अ़लैकुम् शुहूदन् इज़् तुफ़ीज़ू-न फ़ीहि ط व मा यअ्-ज़ुबु अ़र्रब्बि-क मिम्मिस्क़ालि ज़र्रतिन् फ़िल्अर्ज़ि व ला फ़िस्समाइ व ला अस्-ग़-र मिन् ज़ालि-क व ला अक्ब-र इल्ला फ़ी किताबिम्-मुबीन (६१)

مَّاذَا يَسْتَعْجِلُ مِنْهُ الْمُجْرِمُونَ ۝ أَثُمَّ إِذَا مَا وَقَعَ آمَنتُم بِهِ ۚ آلْآنَ
وَقَدْ كُنتُم بِهِ تَسْتَعْجِلُونَ ۝ ثُمَّ قِيلَ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذُوقُوا عَذَابَ
الْخُلْدِ هَلْ تُجْزَوْنَ إِلَّا بِمَا كُنتُمْ تَكْسِبُونَ ۝ وَيَسْتَنبِئُونَكَ أَحَقٌّ هُوَ
قُلْ إِي وَرَبِّي إِنَّهُ لَحَقٌّ ۖ وَمَا أَنتُم بِمُعْجِزِينَ ۝ وَلَوْ أَنَّ لِكُلِّ
نَفْسٍ ظَلَمَتْ مَا فِي الْأَرْضِ لَافْتَدَتْ بِهِ ۗ وَأَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَأَوُا
الْعَذَابَ ۖ وَقُضِيَ بَيْنَهُم بِالْقِسْطِ ۚ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۝ أَلَا إِنَّ لِلَّهِ
مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ أَلَا إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا
يَعْلَمُونَ ۝ هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝ يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ
جَاءَتْكُم مَّوْعِظَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ وَشِفَاءٌ لِّمَا فِي الصُّدُورِ وَهُدًى
وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ ۝ قُلْ بِفَضْلِ اللَّهِ وَبِرَحْمَتِهِ فَبِذَٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوا
هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ ۝ قُلْ أَرَأَيْتُم مَّا أَنزَلَ اللَّهُ لَكُم مِّن
رِّزْقٍ فَجَعَلْتُم مِّنْهُ حَرَامًا وَحَلَالًا قُلْ آللَّهُ أَذِنَ لَكُمْ ۖ أَمْ عَلَى
اللَّهِ تَفْتَرُونَ ۝ وَمَا ظَنُّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ يَوْمَ
الْقِيَامَةِ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُونَ ۝
وَمَا تَكُونُ فِي شَأْنٍ وَمَا تَتْلُو مِنْهُ مِن قُرْآنٍ وَلَا تَعْمَلُونَ مِنْ
عَمَلٍ إِلَّا كُنَّا عَلَيْكُمْ شُهُودًا إِذْ تُفِيضُونَ فِيهِ ۚ وَمَا يَعْزُبُ عَن
رَّبِّكَ مِن مِّثْقَالِ ذَرَّةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ وَلَا أَصْغَرَ مِن

▩ व. न दी स. ▩ व. न बी स. ★रु. ५/१० आ १२ ★रु. ६/११ आ ७

जाएगा, तब उस पर ईमान लाओगे (उस वक़्त कहा जाएगा कि) और अब (ईमान लाये ?) इसी के लिए तो तुम जल्दी मचाया करते थे। (५१) फिर ज़ालिम लोगों से कहा जाएगा कि हमेशा के अज़ाब का मज़ा चखो। (अब) तुम उन्हीं (आमाल) का बदला पाओगे, जो (दुनिया में) करते रहे। (५२) और तुम से पूछते हैं कि क्या यह सच है ▒ कह दो, हां, ख़ुदा की क़सम! सच है ▒ और तुम (भाग कर ख़ुदा को) आजिज़ नहीं कर सकोगे★(५३) और अगर हर एक ना-फ़रमान शख़्स के पास धरती की तमाम चीज़ें हों तो (अज़ाब से बचने के) बदले में (सब) दे डाले और जब वे अज़ाब देखेंगे तो (पछताएंगे और) नदामत को छिपाएंगे और उन में इंसाफ़ के साथ फ़ैसला कर दिया जाएगा और (किसी तरह का) उन पर ज़ुल्म नहीं होगा। (५४) सुन रखो कि जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, सब ख़ुदा ही का है और यह भी सुन रखो कि ख़ुदा का वायदा सच्चा है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (५५) वही जान बख़्शता और (वही) मौत देता है और तुम लोग उसी की तरफ़ लौट कर जाओगे। (५६) लोगो! तुम्हारे पास परवरदिगार की तरफ़ से नसीहत और दिलों की बीमारियों की शिफ़ा और मोमिनों के लिए हिदायत और रहमत आ पहुंची है। (५७) कह दो कि (यह किताब) ख़ुदा के फ़ज़्ल और उस की मेहरबानी से (नाज़िल हुई है,) तो चाहिए कि लोग इस से ख़ुश हों। यह उस से कहीं बेहतर है, जो वे जमा करते हैं। (५८) कहो कि भला देखो तो, ख़ुदा ने तुम्हारे लिए जो रोज़ी उतारी, तो तुम ने उस में से (कुछ को) हराम ठहराया और (कुछ को) हलाल, (उन से) पूछो, क्या ख़ुदा ने तुम्हें इस का हुक्म दिया है या तुम ख़ुदा पर झूठ गढ़ते हो? (५९) और जो लोग ख़ुदा पर झूठ गढ़ते हैं, वे क़ियामत के दिन के बारे में क्या ख़्याल रखते हैं? बेशक ख़ुदा लोगों पर मेहरबान है, लेकिन अक्सर लोग शुक्र नहीं करते। (६०)★

और तुम जिस हाल में होते हो, या क़ुरआन में से कुछ पढ़ते हो, या तुम लोग कोई (और) काम करते हो, जब उस में लग जाते हो, हम तुम्हारे सामने होते हैं और तुम्हारे परवरदिगार से ज़र्रा बराबर भी कोई चीज़ छिपी हुई नहीं है, न ज़मीन में और न आसमान में और न कोई चीज़ उस से छोटी है या बड़ी, मगर रोशन किताब में (लिखी हुई) है। (६१) सुन रखो कि जो ख़ुदा के

▒ व. न बी स. ▒ व. न बी स. ★रु. ५/१० आ १३ ★रु. ६/११ आ ७

अला इन्-न औलिया-अल्लाहि ला ख़ौफ़ुन् अलैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून ﴿ ६२ ﴾ अल्लज़ी-न आमनू व कानू यत्तक़ून ط ﴿ ६३ ﴾ लहुमुल्बुश्रा फ़िल्हयातिद्दुन्या व फ़िल्आख़िरति ط ला तब्दी - ल लिकलिमातिल्लाहि ط ज़ालि-क हुवल्फ़ौज़ुल् - अज़ीम ط ﴿ ६४ ﴾ व ला यह्ज़ुन् - क क़ौलुहुम् ▩ इन्नल्अिज़्ज़ - त लिल्लाहि जमीअ़न् ط हुवस्समीअुल्-अलीम ﴿ ६५ ﴾ अला इन्-न लिल्लाहि मन् फ़िस्समावाति व मन् फ़िल्अर्ज़ि ط व मा यत्तबिअुल्लज़ी - न यद-अू-न मिन् दूनिल्लाहि शु - रका - अ इ य्यत्तबिअू-न इल्लज़् - ज़न्-न व इन् हुम् इल्ला यख़रुसून ﴿ ६६ ﴾ हुवल्लज़ी ज-अ-ल लकुमुल्लै - ल लितस्कुनू फ़ीहि वन्नहा-र मुब्सिरन् ط इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल - लिक़ौमिंय्यस्मअ़ून ﴿ ६७ ﴾ क़ालुत्त-ख़-ज़ल्लाहु व - ल - दन् सुब्हानहू ط हुवल्ग़निय्यु ط लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि ط इन् अिन्दकुम् मिन् सुल्तानिम्-बिहाज़ा ط अ तक़ूलू-न अ-लल्लाहि मा ला तअ्-लमून ﴿६८﴾ क़ुल् इन्नल्लज़ी-न यफ़्तरू-न अ-लल्लाहिल् - कज़ि - ब ला युफ़्लिहून ط ﴿ ६९ ﴾ मताअुन् फ़िद्दुन्या सुम्-म इलैना मर्जिअ़ुहुम् सुम्-म नुज़ीक़ुहुमुल्-अज़ाबश्शदी-द बिमा कानू यक्फ़ुरून ★ ● ﴿ ७० ﴾ वत्लु अलैहिम् न-ब-अ नूहिन् ▩ इज़् क़ा-ल लिक़ौमिही या क़ौमि इन् का-न कबु-र अलैकुम् मक़ामी व तज़्कीरी बिआयातिल्लाहि फ़-अ-लल्लाहि त-वक्कल्तु फ़-अजिमअ़ू अम्रकुम् व शुरका-अ कुम् सुम्-म ला यकुन् अम्रुकुम् अलैकुम् ग़ुम्म-तन् सुम्मक़्ज़ू इलय्-य व ला तुन्ज़िरून ﴿ ७१ ﴾ फ़-इन् तवल्लैतुम् फ़मा स-अल्तुकुम् मिन् अज्रिन् ط इन् अज्रि-य इल्ला अ-लल्लाहि ط व उमिर्तु अन् अकू-न मिनल्-मुस्लिमीन ﴿७२﴾

ذٰلِكَ وَلَآ أَكْبَرَ إِلَّا فِي كِتٰبٍ مُّبِينٍ ﴿٦١﴾ أَلَآ إِنَّ أَوْلِيَآءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ
وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٦٢﴾ الَّذِينَ اٰمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ﴿٦٣﴾ لَهُمُ الْبُشْرٰى
فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ لَا تَبْدِيلَ لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ذٰلِكَ هُوَ
الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٦٤﴾ وَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ إِنَّ الْعِزَّةَ لِلّٰهِ جَمِيعًا هُوَ
السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٦٥﴾ أَلَآ إِنَّ لِلّٰهِ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ
وَمَا يَتَّبِعُ الَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللّٰهِ شُرَكَآءَ إِنْ يَتَّبِعُونَ إِلَّا
الظَّنَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ﴿٦٦﴾ هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ
لِتَسْكُنُوا فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا إِنَّ فِي ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُونَ ﴿٦٧﴾
قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا سُبْحٰنَهُ هُوَ الْغَنِيُّ لَهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا
فِي الْأَرْضِ إِنْ عِنْدَكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ بِهٰذَا أَتَقُولُونَ عَلَى اللّٰهِ مَا
لَا تَعْلَمُونَ ﴿٦٨﴾ قُلْ إِنَّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا
يُفْلِحُونَ ﴿٦٩﴾ مَتَاعٌ فِي الدُّنْيَا ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ نُذِيقُهُمُ
الْعَذَابَ الشَّدِيدَ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ﴿٧٠﴾ وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ نُوحٍ
إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ يٰقَوْمِ إِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكُمْ مَّقَامِي وَتَذْكِيرِي بِاٰيٰتِ
اللّٰهِ فَعَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ فَأَجْمِعُوا أَمْرَكُمْ وَشُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُنْ
أَمْرُكُمْ عَلَيْكُمْ غُمَّةً ثُمَّ اقْضُوا إِلَيَّ وَلَا تُنْظِرُونِ ﴿٧١﴾ فَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ
فَمَا سَأَلْتُكُمْ مِّنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى اللّٰهِ وَأُمِرْتُ أَنْ

▩ व. लाज़िम ★रु. ७/१२ आ. १० ●सु. ३/४ ▩ व. लाज़िम

दोस्त हैं, उनको न कुछ ख़ौफ़ होगा और न वे ग़मनाक होंगे। (६२) (यानी) वे जो ईमान लाये और परहेज़गार रहे, (६३) उन के लिए दुनिया की ज़िंदगी में भी ख़ुशख़बरी है और आख़िरत में भी, ख़ुदा की बातें बदलती नहीं, यही तो बड़ी कामियाबी है। (६४) और (ऐ पैग़म्बर!) उन लोगों की बातों में ग़मज़दा न होना (क्योंकि) इज़्ज़त सब ख़ुदा ही की है। वह (सब कुछ) सुनता (और) जानता है। (६५) सुन रखो कि जो मख़्लूक़ आसमानों में है और जो लोग ज़मीन में हैं, सब ख़ुदा ही के (बन्दे और उस के मम्लूक) हैं और यह जो ख़ुदा के सिवा (अपने बनाए हुए) शरीकों को पुकारते हैं, वे (किसी और चीज़ के) पीछे नहीं चलते, सिर्फ़ ज़न के पीछे चलते हैं और सिर्फ़ अटकलें दौड़ा रहे हैं। (६६) वही तो है, जिस ने तुम्हारे लिए रात बनायी, ताकि इस में आराम करो और रोशन दिन बनाया, (ताकि उस में काम करो) जो लोग सुनने (का माद्दा) रखते हैं, उन के लिए उन में निशानियां हैं। (६७) (कुछ लोग) कहते हैं कि ख़ुदा ने बेटा बना लिया है। उस की ज़ात (औलाद से) पाक है (और) वह बे-नियाज़ है। जो कुछ आसमानों में और जो कुछ ज़मीन में है, सब उसी का है, (ऐ झूठ गढ़ने वालो!) तुम्हारे पास इस (झूठी बात) की कोई दलील नहीं है। तुम ख़ुदा के बारे में ऐसी बात क्यों कहते हो जो जानते नहीं? (६८) कह दो कि जो लोग ख़ुदा पर झूठ बुहतान बांधते हैं, फ़लाह (कामियाबी) नहीं पाएंगे। (६९) उन के लिए जो फ़ायदे हैं, दुनिया में (हैं), फिर उन को हमारी ही तरफ़ लौट कर आना है। उस वक़्त हम उन को कड़े अज़ाब (के मज़े) चखाएंगे, क्योंकि कुफ़्र (की बातें) किया करते थे। (७०) ● ★

और उन को नूह का क़िस्सा पढ़ कर सुना दो जब उन्हों ने अपनी क़ौम से कहा कि ऐ मेरी क़ौम! अगर तुम को मेरा तुम में रहना और ख़ुदा की आयतों से नसीहत करना ना-गवार हो, तो मैं तो ख़ुदा पर भरोसा रखता हूं। तुम अपने शरीकों के साथ मिल कर एक काम (जो मेरे बारे में करना चाहो) मुक़र्रर कर लो और वह तुम्हारी तमाम जमाअत (को मालूम हो जाए और किसी) से पोशीदा न रहे, फिर वह काम मेरे हक़ में कर गुज़रो और मुझे मुहलत न दो। (७१) और अगर तुम ने मुंह फेर लिया तो (तुम जानते हो कि) मैंने तुम से कुछ मुआवज़ा नहीं मांगा। मेरा मुआवज़ा तो ख़ुदा के ज़िम्मे है और मुझे हुक्म हुआ है कि मैं फ़रमांबरदारों में रहूं। (७२) लेकिन उन लोगों ने

व. लाज़िम ★रु. ७/१२ आ. १० ●सु. ३/४ व. लाज़िम

फ़-कज़्ज़बूहु फ़-नज्जैनाहु व मम्-म-अ़हू फ़िल्फ़ुल्कि व ज-अ़ल्नाहुम् ख़लाइ-फ़ व अग्-रक़्-नल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना ᶜ फ़न्ज़ुर् कै-फ़ का-न आक़िबतुल् - मुन्ज़रीन (७३) सुम्-म ब-अ़स्ना मिम्बअ्-दिही रुसुलन् इला क़ौमिहिम् फ़जाऊ-हुम् बिल्बय्यिनाति फ़मा कानू लियुअ्मिनू बिमा कज़्ज़बू बिही मिन् क़ब्लु ᵇ कज़ालि-क नत्बअु अ़ला क़ुलूबिल्-मुअ्-तदीन (७४) सुम्-म ब-अ़स्ना मिम्बअ्-दिहिम् मूसा व हारू-न इला फ़िर्औ़ - न व म-लइही बिआयातिना फ़स्तक्बरू व कानू क़ौमम् - मुज्रिमीन (७५) फ़ - लम्मा जा-अ-हुमुल् - हक़्क़ु मिन् अ़िन्दिना क़ालू इन्-न हाज़ा ल-सिह्रुम्-मुबीन (७६) क़ा-ल मूसा अ-तक़ूलू-न लिल्हक़्क़ि लम्मा जा - अकुम् ᵇ असिह्रुन् हाज़ा ᵇ व ला युफ़्लिहुस् - साहिरून (७७) क़ालू अजिअ्तना लितल्फ़ि-तना अ़म्मा व-जद्ना अ़लैहि आबा-अना व तकू - न लकुमल्-किब्रियाउ फ़िल्अर्ज़ि ᵇ व मा नह्नु लकुमा बिमुअ्मिनीन (७८) व क़ा-ल फ़िर्औ़नुअ्तूनी बिकुल्लि साहिरिन् अ़लीम (७९) फ़-लम्मा जा-अस्-स-ह-रतु क़ा-ल लहुम् मूसा अल्क़ू मा अन्तुम् मुल्क़ून (८०) फ़-लम्मा अल्क़ौ क़ा - ल मूसा मा जिअ्तुम् बिहिस्सिह्रु ᵇ इन्नल्ला - ह सयुब्तिलुहू ᵇ इन्नल्ला-ह ला युस्लिहु अ़-म-लल्मुफ़्सिदीन (८१) व युहिक़्क़ुल्लाहुल्-हक़्-क़ बिकलिमातिही व लौ करिहल् - मुज्रिमून ★ (८२) फ़मा आम - न लिमूसा इल्ला ज़ुर्रिय्यतुम्-मिन् क़ौमिही अ़ला ख़ौफ़िम्मिन् फ़िर्औ़-न व मल-इहिम् अंय्यफ़्ति-नहुम् ᵇ व इन्-न फ़िर्औ़-न ल - आलिन् फ़िल्अर्ज़ि ᶜ व इन्नहू लमिनल्मुस्रिफ़ीन (८३) व क़ा-ल मूसा या क़ौमि इन् कुन्तुम् आमन्तुम् बिल्लाहि फ़-अ़लैहि तवक्कलू इन् कुन्तुम् मुस्लिमीन (८४)

أَكُونَ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٧٢﴾ فَكَذَّبُوهُ فَنَجَّيْنَاهُ وَمَن مَّعَهُ فِي الْفُلْكِ
وَجَعَلْنَاهُمْ خَلَائِفَ وَأَغْرَقْنَا الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا ۖ فَانظُرْ كَيْفَ
كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنذَرِينَ ﴿٧٣﴾ ثُمَّ بَعَثْنَا مِن بَعْدِهِ رُسُلًا إِلَىٰ قَوْمِهِمْ
فَجَاءُوهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا بِمَا كَذَّبُوا بِهِ مِن قَبْلُ ۚ
كَذَٰلِكَ نَطْبَعُ عَلَىٰ قُلُوبِ الْمُعْتَدِينَ ﴿٧٤﴾ ثُمَّ بَعَثْنَا مِن بَعْدِهِم
مُّوسَىٰ وَهَارُونَ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ بِآيَاتِنَا فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا
قَوْمًا مُّجْرِمِينَ ﴿٧٥﴾ فَلَمَّا جَاءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِندِنَا قَالُوا إِنَّ هَٰذَا
لَسِحْرٌ مُّبِينٌ ﴿٧٦﴾ قَالَ مُوسَىٰ أَتَقُولُونَ لِلْحَقِّ لَمَّا جَاءَكُمْ ۖ أَسِحْرٌ
هَٰذَا وَلَا يُفْلِحُ السَّاحِرُونَ ﴿٧٧﴾ قَالُوا أَجِئْتَنَا لِتَلْفِتَنَا عَمَّا وَجَدْنَا
عَلَيْهِ آبَاءَنَا وَتَكُونَ لَكُمَا الْكِبْرِيَاءُ فِي الْأَرْضِ وَمَا نَحْنُ لَكُمَا
بِمُؤْمِنِينَ ﴿٧٨﴾ وَقَالَ فِرْعَوْنُ ائْتُونِي بِكُلِّ سَاحِرٍ عَلِيمٍ ﴿٧٩﴾ فَلَمَّا
جَاءَ السَّحَرَةُ قَالَ لَهُم مُّوسَىٰ أَلْقُوا مَا أَنتُم مُّلْقُونَ ﴿٨٠﴾ فَلَمَّا أَلْقَوْا
قَالَ مُوسَىٰ مَا جِئْتُم بِهِ السِّحْرُ ۖ إِنَّ اللَّهَ سَيُبْطِلُهُ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا
يُصْلِحُ عَمَلَ الْمُفْسِدِينَ ﴿٨١﴾ وَيُحِقُّ اللَّهُ الْحَقَّ بِكَلِمَاتِهِ وَلَوْ كَرِهَ
الْمُجْرِمُونَ ﴿٨٢﴾ فَمَا آمَنَ لِمُوسَىٰ إِلَّا ذُرِّيَّةٌ مِّن قَوْمِهِ عَلَىٰ خَوْفٍ
مِّن فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِمْ أَن يَفْتِنَهُمْ ۚ وَإِنَّ فِرْعَوْنَ لَعَالٍ فِي
الْأَرْضِ وَإِنَّهُ لَمِنَ الْمُسْرِفِينَ ﴿٨٣﴾ وَقَالَ مُوسَىٰ يَا قَوْمِ إِن كُنتُمْ

★रु. ८/१३ आ १२

उनको झुठलाया, तो हमने उनको और जो लोग उनके साथ नाव में सवार थे, सबको (तूफ़ान से) बचा लिया और उन्हें (ज़मीन में) ख़लीफ़ा बना दिया और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया, उन को ग़र्क़ कर दिया, तो (देख लो कि) जो लोग डराए गये थे, उन का कैसा अंजाम हुआ। (७३) फिर नूह के बाद हम ने और पैग़म्बर अपनी-अपनी क़ौम की तरफ़ भेजे, तो वे उन के पास खुली निशानियां ले कर आये, मगर वे लोग ऐसे न थे कि जिस चीज़ को पहले झुठला चुके थे, उस पर ईमान ले आते। इसी तरह हम ज़्यादती करने वालों के दिलों पर मुहर लगा देते हैं। (७४) फिर उन के बाद हम ने मूसा और हारून को अपनी निशानियां दे कर फ़िरऔन और उस के सरदारों के पास भेजा, तो उन्हों ने तकब्बुर (घमंड) किया और वे गुनाहगार लोग थे। (७५) तो जब उन के पास हमारे यहां से हक़ आया, तो कहने लगे कि यह खुला जादू है। (७६) मूसा ने कहा, क्या तुम हक़ के बारे में, जब वह तुम्हारे पास आये, यह कहते हो कि यह जादू है, हालांकि जादूगर फ़लाह नहीं पाने के। (७७) वे बोले, क्या तुम हमारे पास इस लिए आए हो कि (जिस राह) पर हम अपने बाप-दादा को पाते रहे हैं, उस से हम को फेर दो और (इस) देश में तुम दोनों ही की सरदारी हो जाए और हम तुम पर ईमान लाने वाले नहीं हैं। (७८) और फ़िरऔन ने हुक्म दिया कि सब माहिर जादूगरों को हमारे पास ले आओ। (७९) जब जादूगर आये, तो मूसा ने उन से कहा कि जो तुम को डालना हो, डालो। (८०) जब उन्हों ने (अपनी रस्सियों और लाठियों को) डाला तो मूसा ने कहा कि जो चीज़ें तुम (बना कर) लाये हो, जादू है। ख़ुदा इस को अभी नेस्त व नाबूद कर देगा। ख़ुदा शरीरों के काम संवारा नहीं करता। (८१) और ख़ुदा अपने हुक्म से सच को सच ही कर देगा, अगरचे गुनाहगार बुरा ही मानें। (८२) ★

तो मूसा पर कोई ईमान न लाया मगर उस की क़ौम में से कुछ लड़के (और वह भी) फ़िरऔन और उस के दरबारियों से डरते-डरते कि कहीं वह उन को आफ़त में न फंसा दे। और फ़िरऔन मुल्क में मुतकब्बिर व मुतग़ल्लिब और (किब्र व कुफ़्र में) हद से बढ़ा हुआ था। (८३) और मूसा ने कहा कि भाइयो ! अगर तुम ख़ुदा पर ईमान लाये हो तो अगर (दिल से) फ़रमांबरदार हो तो उसी

★रु. ८/१३ आ १२

फ़-क़ालू अ - लल्लाहि त-वक्कल्ना ☾ रब्बना ला तज्-अल्ना फ़ित-न-तुल्लिल्-
क़ौमिज़्ज़ालिमीन ॥ (८५) व नज्जिना बिरह़्मति - क मिनल्-क़ौमिल्-
काफ़िरीन (८६) व औह़ैना इला मूसा व अख़ीहि अन-तबव्वआ लिक़ौमि-
कुमा बिमिस् - र बुयूतंव्वज्अलू बुयूतकुम् क़िब्लतंव्-व अक़ीमुस्सला-त ᵀ व
बश्शिरिल्-मुअ्मिनीन (८७) व क़ा-ल
मूसा रब्बना इन्न-क आतै-त फ़िर्औ-न व
म-ल-अहू ज़ीनतंव् - व अम्वालन् फ़िल्-
ह़यातिद्दुन्या ॥ रब्बना लियुज़िल्लू अन्
सबीलि-क ☾ रब्बनत्मिस् अला अम्वालिहिम्
वश्दुद् अला क़ुलूबिहिम् फ़ला युअ्मिनू
ह़त्ता य-र-वुल्-अ़ज़ाबल् - अलीम (८८)
क़ा-ल क़द् उजीबद्दअ्-वतु-कुमा फ़स्तक़ीमा
व ला तत्तबिआन्नि सबीलल्लज़ी-न ला
यअ्-लमून (८९) व जावज़्ना बिबनी
इस्राईलल्-बह़्-र फ़-अत्ब-अहुम् फ़िर्औनु
व जुनूदुहू बग़्यंव्-व अद्वन् ᵀ ह़त्ता इज़ा
अद्-र-कहुल् - ग - रक़ु ॥ क़ा - ल आमन्तु
अन्नहू ला इला - ह इल्लल्लज़ी आम-नत् बिही बनू इस्राई - ल व
अ-न मिनल्-मुस्लिमीन (९०) आल्आ-न व क़द् असै-त क़ब्लु व
कुन्-त मिनल्-मुफ़्सिदीन (९१) फ़ल्यौ-म नुनज्जी-क बि-ब-दनि-क लितकू-न
लिमन् ख़ल्फ़-क आयतन् ᵀ व इन्-न कसीरम् - मिनन्नासि अन् आयातिना
लग़ाफ़िलून ★ (९२) व ल - क़द् बव्वअ्ना बनी इस्राईल मुबव्व-अ
सिद्क़िंव्-व र - ज़क़्नाहुम् मिनत्तय्यिबाति ☾ फ़-मख़्त - लफ़ू . ह़त्ता जा-अहुमुल्-
अ़िल्मु ᵀ इन्-न रब्ब-क यक़्ज़ी बैनहुम् यौमल् - क़ियामति फ़ीमा कानू
फ़ीहि यख़्तलिफ़ून (९३) फ़इन् कुन् - त फ़ी शक्किम्-मिम्मा अन्ज़ल्ना
इलै-क फ़स्अलिल्लज़ी-न यक़्-रऊनल् - किता-ब मिन् क़ब्लि - क ☾ ल - क़द्
जा-अकल् - ह़क़्क़ु मिर्रब्बि - क फ़ला तकूनन्-न मिनलमुम्तरीन ॥ (९४)

آمَنْتُمْ بِاللّٰهِ فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوْٓا اِنْ كُنْتُمْ مُّسْلِمِيْنَ ۝ فَقَالُوْا عَلَى
اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا ۚ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَنَجِّنَا
بِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۝ وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰى وَاَخِيْهِ اَنْ
تَبَوَّاٰ لِقَوْمِكُمَا بِمِصْرَ بُيُوْتًا وَّاجْعَلُوْا بُيُوْتَكُمْ قِبْلَةً وَّاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ
وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَقَالَ مُوْسٰى رَبَّنَآ اِنَّكَ اٰتَيْتَ فِرْعَوْنَ وَ
مَلَاَهٗ زِيْنَةً وَّاَمْوَالًا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ رَبَّنَا لِيُضِلُّوْا عَنْ سَبِيْلِكَ
رَبَّنَا اطْمِسْ عَلٰٓي اَمْوَالِهِمْ وَاشْدُدْ عَلٰي قُلُوْبِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْا حَتّٰى
يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ۝ قَالَ قَدْ اُجِيْبَتْ دَّعْوَتُكُمَا فَاسْتَقِيْمَا وَ
لَا تَتَّبِعٰٓنِّ سَبِيْلَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَجٰوَزْنَا بِبَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ
الْبَحْرَ فَاَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ وَجُنُوْدُهٗ بَغْيًا وَّعَدْوًا ۭ حَتّٰٓي اِذَآ اَدْرَكَهُ
الْغَرَقُ ۙ قَالَ اٰمَنْتُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا الَّذِيْٓ اٰمَنَتْ بِهٖ بَنُوْٓا اِسْرَاۗءِيْلَ
وَاَنَا مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ۝ اٰۗلْــٰٔنَ وَقَدْ عَصَيْتَ قَبْلُ وَكُنْتَ مِنَ
الْمُفْسِدِيْنَ ۝ فَالْيَوْمَ نُنَجِّيْكَ بِبَدَنِكَ لِتَكُوْنَ لِمَنْ خَلْفَكَ
اٰيَةً ۭ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ عَنْ اٰيٰتِنَا لَغٰفِلُوْنَ ۝ وَلَقَدْ بَوَّاْنَا
بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ مُبَوَّاَ صِدْقٍ وَّرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ۚ فَمَا
اخْتَلَفُوْا حَتّٰى جَاۗءَهُمُ الْعِلْمُ ۭ اِنَّ رَبَّكَ يَقْضِيْ بَيْنَهُمْ يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ۝ فَاِنْ كُنْتَ فِيْ شَكٍّ مِّمَّآ

★रु. ६/१४ आ १०

पर भरोसा रखो। (८४) तो बोले कि हम ख़ुदा ही पर भरोसा रखते हैं। ऐ हमारे परवरदिगार! हम को ज़ालिम लोगों के हाथ से आज़माइश में न डाल। (८५) और अपनी रहमत से काफ़िरों की क़ौम से निजात बख़्श। (८६) और हम ने मूसा और उस के भाई की तरफ़ वह्य भेजी कि अपने लोगों के लिए मिस्र में घर बनाओ और अपने घरों को क़िब्ला (यानी मस्जिदें) ठहराओ और नमाज़ पढ़ो और मोमिनों को ख़ुशख़बरी सुना दो। (८७) और मूसा ने कहा, ऐ परवरदिगार! तू ने फ़िऔन और उस के सरदारों को दुनिया की ज़िंदगी में (बहुत-सा) साज़ व सामान, धन-दौलत दे रखा है, ऐ परवरदिगार! इन का मआल (अंजाम) यह है कि तेरे रास्ते से गुमराह कर दें। ऐ परवरदिगार! इन के माल को बर्बाद कर दे और इन के दिलों को सख़्त कर दे कि ईमान न लाएं, जब तक दर्दनाक अज़ाब न देख लें। (८८) (ख़ुदा ने) फ़रमाया कि तुम्हारी दुआ क़ुबूल कर ली गयी, तो तुम साबित-क़दम रहना और बे-अक़्लों के रास्ते न चलना। (८९) और हम ने बनी इस्राईल को दरिया से पार कर दिया, तो फ़िऔन और उस के लश्कर ने सरकशी और तअद्दी से उन का पीछा किया, यहां तक कि जब उस को ग़र्क़ (के अज़ाब) ने आ पकड़ा तो कहने लगा, मैं ईमान लाया कि जिस (ख़ुदा) पर बनी इस्राईल ईमान लाये हैं, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, और मैं फ़रमांबरदारों में हूं। (९०) (जवाब मिला कि) अब (ईमान लाता है,) हालांकि तू पहले नाफ़रमानी करता रहा और फ़साद फैलाने वाला बना रहा? (९१) तो आज हम तेरे बदन को (दरिया से) निकाल लेंगे, ताकि तू पिछलों के लिए इबरत (सबक़) हो और बहुत से लोग हमारी निशानियों से बे-ख़बर हैं। (९२) ★

और हम ने बनी इस्राईल को रहने को उम्दा जगह दी और खाने को पाकीज़ा चीज़ें अता कीं, लेकिन वह बावजूद इल्म हासिल होने के इख़्तिलाफ़ करते रहे। बेशक जिन बातों में वे इख़्तिलाफ़ करते रहे हैं, तुम्हारा परवरदिगार! क़ियामत के दिन उन में उन बातों का फ़ैसला कर देगा। (९३) अगर तुम को इस (किताब के) बारे में, जो हम ने तुम पर नाज़िल की है, कुछ शक हो, तो जो लोग तुम से पहले की (उतरी हुई) किताबें पढ़ते हैं, उन से पूछ लो। तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से तुम्हारे पास हक़ आ चुका है, तो तुम हरगिज़ शक करने वालों में न होना। (९४) और न उन लोगों में

★रु. ९/१४ आ १०

व ला तकूनन्-न मिनल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिल्लाहि फ़-तकू-न मिनल्ख़ासिरीन (९५) इन्नल्लज़ी-न ह़क़्क़त् अ़लैहिम् कलिमतु रब्बि-क ला युअ्मिनून ॥ (९६) व लौ जा-अत्हुम् कुल्लु आयतिन् ह़त्ता य-रवुल्-अ़ज़ाबल्-अलीम (९७) फ़-लौला कानत् क़र्यतुन् आम-नत् फ़-न-फ़-अहा ईमानुहा इल्ला क़ौ-म यूनुस ط लम्मा आमनू क - शफ़्ना अ़न्हुम् अ़ज़ाबल्-ख़िज़्यि फ़िल्-ह़यातिद्दुन्या व मत्तअ्-नाहुम् इला ह़ीन (९८) व लौ शा-अ रब्बु-क ल-आम-न मन् फ़िल्अर्ज़ि कुल्लुहुम् जमीअ़न् ط अ-फ़-अन्-त तुक्रिहुन्ना-स ह़त्ता यकूनू मुअ्मिनीन (९९) व मा का-न लिनफ़्सिन् अन् तुअ्मि-न इल्ला बिइज़्निल्लाहि ط व यज्अ़लुर्रिज - स अ़-लल्लज़ी-न ला यअ्-क़िलून (१००) क़ुलिन्ज़ुरू माज़ा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि ط व मा तुग़्निल्-आयातु वन्नुज़ुरु अ़न् क़ौमिल्-ला युअ्मिनून (१०१) फ़-हल् यन्तज़िरू-न इल्ला मिस्-ल अय्यामिल्लज़ी-न ख़लौ मिन् क़ब्लिहिम् ط क़ुल् फ़न्तज़िरू इन्नी म-अ़कुम् मिनल्-मुन्तज़िरीन (१०२) सुम्-म नुनज्जी रुसुलना वल्लज़ी - न आमनू कज़ालि - क ج ह़क़्क़न् अ़लैना नुन्जिल् - मुअ्मिनीन ✶ (१०३) क़ुल् या अय्युहन्नासु इन् कुन्तुम् फ़ी शक्किम् - मिन् दीनी फ़ला अअ्-बुदुल्लज़ी-न तअ्-बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि व लाकिन् अअ् - बुदुल्लाहल्लज़ी य - त - वफ़्फ़ाकुम् ج व उमिर्तु अन् अकू - न मिनल् - मुअ्मिनीन ॥ (१०४) व अन् अक़िम् वज्ह - क लिद्दीनि ह़नीफ़न् ج व ला तकूनन् - न मिनल् - मुश्रिकीन (१०५)

أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ فَسْـَٔلِ الَّذِينَ يَقْرَءُونَ الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ لَقَدْ جَآءَكَ
الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِينَ ۝ وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ
الَّذِينَ كَذَّبُوا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَتَكُونَ مِنَ الْخٰسِرِينَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ
حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ وَلَوْ جَآءَتْهُمْ كُلُّ
اٰيَةٍ حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ۝ فَلَوْلَا كَانَتْ قَرْيَةٌ اٰمَنَتْ
فَنَفَعَهَآ إِيمَانُهَآ إِلَّا قَوْمَ يُونُسَ ۚ لَمَّآ اٰمَنُوا كَشَفْنَا عَنْهُمْ عَذَابَ
الْخِزْيِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَمَتَّعْنٰهُمْ إِلٰى حِينٍ ۝ وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ
لَاٰمَنَ مَنْ فِي الْأَرْضِ كُلُّهُمْ جَمِيعًا ۚ أَفَأَنْتَ تُكْرِهُ النَّاسَ حَتّٰى
يَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ۝ وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ أَنْ تُؤْمِنَ إِلَّا بِإِذْنِ
اللّٰهِ ۚ وَيَجْعَلُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِينَ لَا يَعْقِلُونَ ۝ قُلِ انْظُرُوا
مَاذَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَمَا تُغْنِي الْاٰيٰتُ وَالنُّذُرُ عَنْ
قَوْمٍ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ فَهَلْ يَنْتَظِرُونَ إِلَّا مِثْلَ أَيَّامِ الَّذِينَ
خَلَوْا مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ قُلْ فَانْتَظِرُوٓا إِنِّي مَعَكُمْ مِنَ الْمُنْتَظِرِينَ ۝
ثُمَّ نُنَجِّي رُسُلَنَا وَالَّذِينَ اٰمَنُوا كَذٰلِكَ ۚ حَقًّا عَلَيْنَا نُنْجِ الْمُؤْمِنِينَ ۝
قُلْ يٰٓأَيُّهَا النَّاسُ إِنْ كُنْتُمْ فِي شَكٍّ مِنْ دِينِي فَلَآ أَعْبُدُ الَّذِينَ
تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ أَعْبُدُ اللّٰهَ الَّذِي يَتَوَفّٰىكُمْ ۚ وَ
أُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ وَأَنْ أَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ

✶रु. १०/१५ आ ११

होना, जो ख़ुदा की आयतों को झुठलाते हैं, नहीं तो नुक़सान उठाओगे। (६५) जिन लोगों के बारे में ख़ुदा (के अज़ाब) का हुक्म क़रार पा चुका है, वे ईमान नहीं लाने के, (६६) जब तक कि दर्दनाक अज़ाब न देख लें, चाहे उन के पास हर (तरह की) निशानी आ जाए। (६७) तो कोई बस्ती ऐसी क्यों न हुई कि ईमान लाती तो उस का ईमान उसे नफ़ा देता, हां, यूनुस की क़ौम कि जब ईमान लायी तो हम ने दुनिया की ज़िंदगी में उन से ज़िल्लत का अज़ाब दूर कर दिया और एक मुद्दत तक (दुनिया के फ़ायदों से) उन को नवाज़ा। (६८) और अगर तुम्हारा परवरदिगार चाहता, तो जितने लोग ज़मीन पर हैं, सब के सब ईमान ले आते। तो क्या तुम लोगों पर ज़बरदस्ती करना चाहते हो कि वे मोमिन हो जाएं। (६९) हालांकि किसी शख़्स को क़ुदरत नहीं है कि ख़ुदा के हुक्म के बग़ैर ईमान लाये और जो लोग बे-अक़्ल हैं, उन पर वह (कुफ़ व ज़िल्लत) की नजासत डालता है। (१००) (इन कुफ़्फ़ार से) कहो कि देखो तो आसमानों और ज़मीन में क्या-क्या कुछ है, मगर जो लोग ईमान नहीं रखते, उन की निशानियां और डरावे कुछ काम नहीं आते। (१०१) जैसे (बुरे) दिन इन से पहले लोगों पर गुज़र चुके हैं। उसी तरह के (दिनों के) ये इन्तिज़ार में हैं। कह दो कि तुम भी इन्तिज़ार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करता हूं। (१०२) और हम अपने पैग़म्बरों को और मोमिनों को निजात देते रहे हैं। इसी तरह हमारा ज़िम्मा है कि मुसलमानों को निजात दें। (१०३)★

(ऐ पैग़म्बर!) कह दो कि लोगो! अगर तुम को मेरे दीन में किसी तरह का शक हो तो (सुन रखो कि) जिन लोगों की तुम ख़ुदा के सिवा इबादत करते हो, मैं उन की तो इबादत नहीं करता, बल्कि मैं ख़ुदा की इबादत करता हूं जो तुम्हारी रूहें क़ब्ज़ कर लेता है और मुझ को यही हुक्म हुआ है कि ईमान लाने वालों में हूं। (१०४) और यह कि (ऐ मुहम्मद! सब से) यकसू होकर (इस्लाम) दीन की पैरवी किए जाओ और मुश्रिकों में हरगिज़ न होना। (१०५) और ख़ुदा को

★रु. १०/१५ आ ११

व ला तद्अु मिन् दूनिल्लाहि मा ला यन्फ़अु-क व ला यज़ुर्रु-क ج फ़-इन् फ़-अल्-त फ़इन्न-क इज़म्-मिनज़्ज़ालिमीन (१०६) व इंय्यम्सस्कल्लाहु बिज़ुर्रिन् फ़ला काशि-फ़ लहू इल्ला हु-व ج व इंय्युरिद-क बिख़ैरिन् फ़ला राद्-द लिफ़ज़्लिही ط युसीबु बिही मंय्यशाउ मिन् अिबादिही ط व हुवल् ग़फ़ूरुर्रहीम (१०७) क़ुल् या अय्युहन्नासु क़द् जा-अकुमुल्हक़्क़ु मिर्रब्बिकुम् ج फ़-मनिह्तदा फ़-इन्नमा यह्तदी लिनफ़्सिही ج व मन् ज़ल-ल फ़-इन्नमा यज़िल्लु अलैहा ج व मा अ-न अलैकुम् बिवकील ط (१०८) वत्तबिअ् मा यूहा इलै-क वस्बिर् हत्ता यह्कुमल्लाहु ج व हु-व ख़ैरुल्हाकिमीन ✶ (१०९)

११ सूरतु हूदिन् ५२

(मक्की) इस सूरः में अरबी के ७६२४ अक्षर, १६३६ शब्द, १२३ आयतें और १० रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

حَنِيفًا ۚ وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝ وَلَا تَدْعُ مِن دُونِ اللَّهِ مَا
لَا يَنفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَ ۖ فَإِن فَعَلْتَ فَإِنَّكَ إِذًا مِّنَ الظَّالِمِينَ ۝ وَإِن
يَمْسَسْكَ اللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ ۖ وَإِن يُرِدْكَ بِخَيْرٍ فَلَا رَادَّ
لِفَضْلِهِ ۚ يُصِيبُ بِهِ مَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۚ وَهُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۝
قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمُ الْحَقُّ مِن رَّبِّكُمْ ۖ فَمَنِ اهْتَدَىٰ
فَإِنَّمَا يَهْتَدِي لِنَفْسِهِ ۖ وَمَن ضَلَّ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۖ وَ
مَا أَنَا عَلَيْكُم بِوَكِيلٍ ۝ وَاتَّبِعْ مَا يُوحَىٰ إِلَيْكَ وَاصْبِرْ حَتَّىٰ
يَحْكُمَ اللَّهُ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحَاكِمِينَ ۝
سُورَةُ هُودٍ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مِائَةٌ وَثَلَاثٌ وَعِشْرُونَ آيَةً وَعَشْرُ رُكُوعَاتٍ
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
الر ۚ كِتَابٌ أُحْكِمَتْ آيَاتُهُ ثُمَّ فُصِّلَتْ مِن لَّدُنْ حَكِيمٍ خَبِيرٍ ۝ أَلَّا
تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ ۚ إِنَّنِي لَكُم مِّنْهُ نَذِيرٌ وَبَشِيرٌ ۝ وَأَنِ اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ
ثُمَّ تُوبُوا إِلَيْهِ يُمَتِّعْكُم مَّتَاعًا حَسَنًا إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى وَيُؤْتِ
كُلَّ ذِي فَضْلٍ فَضْلَهُ ۖ وَإِن تَوَلَّوْا فَإِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ
يَوْمٍ كَبِيرٍ ۝ إِلَى اللَّهِ مَرْجِعُكُمْ ۖ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝
أَلَا إِنَّهُمْ يَثْنُونَ صُدُورَهُمْ لِيَسْتَخْفُوا مِنْهُ ۚ أَلَا حِينَ يَسْتَغْشُونَ
ثِيَابَهُمْ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ۚ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝

अलिफ़्-लाम्-रा क़फ़ किताबुन् उह्किमत् आयातुहू सुम्-म फ़ुस्सिलत् मिल्लदुन् हकीमिन् ख़बीर ل (१) अल्ला तअ्बुदू इल्लल्ला-ह ط इन्ननी लकुम् मिन्हु नज़ीरुंव्-व बशीरुंव- ل (२) व अनिस्तग़फ़िरू रब्बकुम् सुम्-म तूबू इलैहि युमत्तिअ्-कुम् मताअन् ह-स-नन् इला अ-जलिम्-मुसम्मंव्-व युअ्ति कुल-ल ज़ी फ़ज़्लिन् फ़ज़्लहू ط व इन् त-वल्लौ फ़इन्नी अख़ाफ़ु अलैकुम् अज़ा-ब यौमिन् कबीर (३) इलल्लाहि मर्जिअुकुम् ج व हु-व अला कुल्लि शैइन् क़दीर (४) अला इन्नहुम् यस्नू-न सुदूरहुम् लि-यस्तख़्फ़ू मिन्हु ط अला ही-न यस्तग़्शू-न सियाबहुम् ل यअ्लमु मा युसिर्रू-न व मा युअ्लिनू-न ج इन्नहू अलीमुम्-बिज़ातिस्सुदूर (५)

★रु.११/१६ आ ६

छोड़ कर ऐसी चीज़ को न पुकारना, जो न तुम्हारा कुछ भला कर सके और न कुछ बिगाड़ सके। अगर ऐसा करोगे, तो ज़ालिमों में हो जाओगे। (१०६) और अगर ख़ुदा तुम को कोई तक्लीफ़ पहुंचाए, तो उस के सिवा इस का कोई दूर करने वाला नहीं और अगर तुम से भलाई करनी चाहे तो उस के फ़ज़्ल को कोई रोकने वाला नहीं। वह अपने बन्दों में से, जिसे चाहता है फ़ायदा पहुंचाता है है और वह बख़्शने वाला मेहरबान है। (१०७) कह दो कि लोगो! तुम्हारे परवरदिगार के यहां से तुम्हारे पास हक़ आ चुका है, तो जो कोई हिदायत हासिल करता है, तो हिदायत से अपने ही हक़ में भलाई करता है और जो गुमराही अख़्तियार करता है, तो गुमराही से अपना ही नुक़्सान करता है और मैं तुम्हारा वकील नहीं हूं। (१०८) और (ऐ पैग़म्बर!) तुम को जो हुक्म भेजा जाता है, उस की पैरवी किये जाओ और (तक्लीफ़ों पर) सब्र करो, यहां तक कि ख़ुदा फ़ैसला कर दे। वह सब से बेहतर फ़ैसला करने वाला है। (१०९) ★

११ सूरः हूद ५२

सूरः हूद मक्की है और इस में एक सौ तेईस आयतें और दस रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ़्-लाम्-रा, यह वह किताब है, जिस की आयतें मुस्तहकुम हैं और हकीम व ख़बीर ख़ुदा की तरफ़ से तफ़्सील से बयान कर दी गयी हैं, (१) (वह यह) कि ख़ुदा के सिवा किसी की इबादत न करो और मैं उस की तरफ़ से तुम को डर सुनाने वाला और ख़ुशख़बरी देने वाला हूं। (२) और यह कि अपने परवरदिगार से बख़्शिश मांगों और उस के आगे तौबा करो। वह तुम को एक मुक़र्रर वक़्त तक नेक पूंजी से बहरा मंद करेगा (नवाज़ेगा) और हर बुज़ुर्गी वाले को उस की बुज़ुर्गी (की दाद) देगा और अगर रू-गरदानी करोगे तो मुझे तुम्हारे बारे में (क़ियामत के) बड़े दिन के अज़ाब का डर है। (३) तुम (सब) को ख़ुदा की तरफ़ लौट कर जाना है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है। (४) देखो, यह अपने सीनों को दोहरा करते हैं, ताकि ख़ुदा से पर्दा करें। सुन रखो, जिस वक़्त ये कपड़ों में लिपट कर पड़ते हैं (तब भी) वह उन की छिपी और खुली बातों को जानता है। वह तो

★रु. ११/१६ आ ६

बारहवां पारः व मा मिन् दाब्बतिन्

सूरतु हूदिन् आयत ६ से १२३

व मा मिन् दाब्बतिन् फ़िल्अर्ज़ि इल्ला अ-लल्लाहि रिज़-क़ुहा व यअ्-लमु मुस्तक़र्रहा व मुस्तौद-अहा ط कुल्लुन् फ़ी किताबिम्-मुबीन (६) व हु-वल्लज़ी ख़-ल-क़स्समावाति वल्अर-ज़ फ़ी सित्तति अय्यामिंव्-व का-न अर्शुहू अ-लल्माइ लि-यब-लुवकुम् अय्युकुम् अह्सनु अ-म-लन् ط व लइन् क़ुल्-त इन्नकुम् मब्ऊसू-न मिम्बअ्-दिल्-मौति ल-यक़ूलन्नल्लज़ी-न क-फ़रू इन् हाज़ा इल्ला सिह्रुम्मुबीन (७) व लइन् अख़्ख़र्ना अन्हुमुल्-अज़ा-ब इला उम्मतिम्-मअ्-दूदतिल्-ल-यक़ूलुन-न मा यह्बिसुहू ط अला यौ-म यअ्तीहिम् लै-स मस्रूफ़न् अन्हुम् व हा-क़ बिहिम् मा कानू बिही यस्तह्ज़िऊन ★ (८) व लइन् अ-ज़क्-नल्-इन्सा-न मिन्ना रह्-म-तन् सुम्-म न-ज़अ्-नाहा मिन्हु ج इन्नहू ल-यऊसुन् कफ़ूर (९) व लइन् अ-ज़क़्नाहु नअ्-मा-अ बअ्-द ज़र्रा-अ मस्सत्हु ल-यक़ूलन्-न ज़-ह-बस्सय्यिआतु अन्नी ط इन्नहू ल-फ़रिहुन् फ़ख़ूर ॥ (१०) इल्लल्लज़ी-न स-बरू व अमिलुस्सालिहाति ط उलाइ-क लहुम् मग़्फ़ि-रतुंव् - व अज्रुन् कबीर (११) फ़ ल-अल्ल-क तारिकुम्बअ्-ज़ मा यूहा इलै-क व ज़ाइ-कुम्-बिही सद्रु-क अंय्यक़ूलू लौला उन्ज़ि-ल अलैहि कन्ज़ुन् औ जा-अ म-अहू म-लकुन् ط इन्नमा अन् - त नज़ीरुन् ط वल्लाहु अला कुल्लि शैइंव् - वकील ط (१२) अम् यक़ूलूनफ़्तराहु ط क़ुल् फ़अ्तू बिअ़श्रि सु - वरिम् - मिस्लिही मुफ़्त-र-यातिंव्वद्ऊ मनिस्-त-तअ्-तुम् मिन् दूनिल्लाहि इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (१३) फ़इल्लम् यस्तजीबू लकुम् फ़अ्-लमू अन्नमा उन्ज़ि-ल बिअिल्मिल्लाहि व अल्ला इला - ह इल्ला हु-व ج फ़ - हल् अन्तुम् मुस्लिमून (१४)

وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْأَرْضِ إِلَّا عَلَى اللَّهِ رِزْقُهَا وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا
وَمُسْتَوْدَعَهَا كُلٌّ فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ۝ وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ وَكَانَ عَرْشُهُ عَلَى الْمَاءِ لِيَبْلُوَكُمْ أَيُّكُمْ
أَحْسَنُ عَمَلًا وَلَئِن قُلْتَ إِنَّكُم مَّبْعُوثُونَ مِن بَعْدِ الْمَوْتِ لَيَقُولَنَّ
الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ۝ وَلَئِنْ أَخَّرْنَا عَنْهُمُ
الْعَذَابَ إِلَىٰ أُمَّةٍ مَّعْدُودَةٍ لَّيَقُولُنَّ مَا يَحْبِسُهُ أَلَا يَوْمَ يَأْتِيهِمْ
لَيْسَ مَصْرُوفًا عَنْهُمْ وَحَاقَ بِهِم مَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۝ وَ
لَئِنْ أَذَقْنَا الْإِنسَانَ مِنَّا رَحْمَةً ثُمَّ نَزَعْنَاهَا مِنْهُ إِنَّهُ لَيَئُوسٌ كَفُورٌ ۝
وَلَئِنْ أَذَقْنَاهُ نَعْمَاءَ بَعْدَ ضَرَّاءَ مَسَّتْهُ لَيَقُولَنَّ ذَهَبَ السَّيِّئَاتُ
عَنِّي إِنَّهُ لَفَرِحٌ فَخُورٌ ۝ إِلَّا الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أُولَٰئِكَ
لَهُم مَّغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ۝ فَلَعَلَّكَ تَارِكٌ بَعْضَ مَا يُوحَىٰ إِلَيْكَ
وَضَائِقٌ بِهِ صَدْرُكَ أَن يَقُولُوا لَوْلَا أُنزِلَ عَلَيْهِ كَنزٌ أَوْ جَاءَ مَعَهُ
مَلَكٌ إِنَّمَا أَنتَ نَذِيرٌ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ ۝ أَمْ يَقُولُونَ
افْتَرَاهُ قُلْ فَأْتُوا بِعَشْرِ سُوَرٍ مِّثْلِهِ مُفْتَرَيَاتٍ وَادْعُوا مَنِ اسْتَطَعْتُم
مِّن دُونِ اللَّهِ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ۝ فَإِلَّمْ يَسْتَجِيبُوا لَكُمْ فَاعْلَمُوا
أَنَّمَا أُنزِلَ بِعِلْمِ اللَّهِ وَأَن لَّا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ فَهَلْ أَنتُم مُّسْلِمُونَ ۝
مَن كَانَ يُرِيدُ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَزِينَتَهَا نُوَفِّ إِلَيْهِمْ أَعْمَالَهُمْ فِيهَا

★रु. १/१ आ ८

दिलों तक की बातों से आगाह है। (५) और ज़मीन पर कोई चलने-फिरने वाला नहीं, मगर उस की रोज़ी ख़ुदा के ज़िम्मे है, वह जहां रहता है, उसे भी जानता है और जहां सौंपा जाता है, उसे भी। यह सब कुछ रोशन किताब में (लिखा हुआ) है। (६) और वही तो है जिस ने आसमानों और ज़मीन को छः दिनों में बनाया और (उस वक़्त) उस का अर्श पानी पर था। (तुम्हारे पैदा करने से) मक़्सूद यह है कि वह तुम को आज़माये कि तुम में अमल के लिहाज़ से कौन बेहतर है और अगर तुम कहो कि तुम लोग मरने के बाद (ज़िंदा कर के) उठाए जाओगे, तो काफ़िर कह देंगे कि यह तो खुला जादू है। (७) और अगर एक तै मुद्दत तक हम उन पर अज़ाब को रोक दें, तो कहेंगे कि कौन-सी चीज़ अज़ाब को रोके हुए है। देखो, जिस दिन वह उन पर वाक़ेअ होगा, (फिर) टलने का नहीं और जिस चीज़ का मज़ाक़ उड़ाया करते हैं, वह उन को घेर लेगी। (८) ★

और अगर हम इंसान को अपने पास से नेमत बख़्शें, फिर उस से उसको छीन लें, तो ना-उम्मीद (और) ना-शुक्रा (हो जाता) है। (९) और अगर तक्लीफ़ पहुंचने के बाद आसाइश (आराम सुख) का मज़ा चखाएं, तो (ख़ुश हो कर) कहता है कि (आ-हा) सब सख़्तियां मुझ से दूर हो गयीं बेशक वह ख़ुशियां मनाने वाला (और) फ़ख़्र करने वाला है। (१०) हां, जिन्हों ने सब्र किया और नेक अमल किये, यही हैं जिन के लिए बख़्शिश और बड़ा बदला है। (११) शायद तुम कुछ चीज़ वह्य में से जो तुम्हारे पास आती है, छोड़ दो और इस (ख़्याल) से तुम्हारा दिल तंग हो कि (काफ़िर) यह कहने लगें कि उस पर कोई ख़ज़ाना क्यों नहीं नाज़िल हुआ या उस के साथ कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं आया ? ऐ मुहम्मद ! तुम तो सिर्फ़ नसीहत करने वाले हो और ख़ुदा हर चीज़ का निगहबान है। (१२) ये क्या कहते हैं कि इस ने क़ुरआन ख़ुद से बना लिया है ? कह दो कि अगर सच्चे हो तो तुम भी ऐसी दस सूरतें बना लाओ और ख़ुदा के सिवा जिस-जिस को बुला सकते हो, बुला भी लो। (१३) अगर वे तुम्हारी बात क़ुबूल न करें तो जान लो कि वह ख़ुदा के इल्म से उतरा है और यह कि उस के सिवा कोई माबूद नहीं, तो तुम्हें भी इस्लाम ले आना चाहिए।[1] (१४)

---

१. यह आम लोगों से ख़िताब है, जो इस्लाम नहीं लाते थे, यानी जब क़ुरआन मजीद का यह एजाज़ देख चुके हो कि कोई शख़्स ऐसा कलाम नहीं बना सकता, तो तुम को भी उसे मानना चाहिए कि ख़ुदा का कलाम है और इस्लाम ले आना चाहिए।

★रु. १/१ आ ८

मन् का-न युरीदुल्-ह़यातद्दुन्या व ज़ी-न-तहा नुवफ़्फ़ि इलैहिम् अअ्-मालहुम् फ़ीहा व हुम् फ़ीहा ला युब्ख़सून (१५) उलाइकल्लज़ी-न लै-स लहुम् फ़िल्आख़िरति इल्लन्नारु व ह़बि-त मा स-नअू फ़ीहा व बातिलुम्मा कानू यअ्-मलून (१६) अ-फ़-मन् का-न अला बय्यिनतिम्-मिर्रब्बिही व यत्लूहु शाहिदुम्-मिन्हु व मिन् क़ब्लिही किताबु मूसा इमामंव्-व रह्-म-तन् ط उलाइ-क युअ्मिनू-न बिही ط व मंय्यक्फ़ुर् बिही मिनल्-अह्ज़ाबि फ़न्नारु मौअिदुहू ج फ़ला-तकु फ़ी मिर्यतिम्-मिन्हु ق इन्नहुल्-ह़क़्क़ु मिर्रब्बि-क व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला युअ्मिनून (१७) व मन् अज़्लमु मिम्-मनिफ़्तरा अ-लल्लाहि कज़िबन् ط उलाइ-क युअ्-रज़ू-न अला रब्बिहिम् व यक़ूलुल्-अश्हादु ج हाउलाइल्लज़ी-न क-ज़बू-अला रब्बिहिम् ج अला लअ्-नतुल्लाहि अ-लज़्ज़ालिमीन ला (१८) अल्लज़ी-न यसुद्दू-न अन् सबीलिल्लाहि व यब्ग़ूनहा अि-व-जन् ط व हुम् बिल्आख़िरति हुम् काफ़िरून (१९) उलाइ-क लम् यकूनू मुअ्जिज़ी-न फ़िल्अर्ज़ि व मा का-न लहुम् मिन् दूनिल्लाहि मिन् औलिया-अ ※ युज़ा-अफ़ु लहुमुल्-अज़ाबु ط मा कानू यस्ततीअूनस्सम्-अ व मा कानू युब्सिरून (२०) उलाइकल्लज़ी-न ख़सिरू अन्फ़ु-सहुम् व ज़ल्-ल अन्हुम् मा कानू यफ़्तरून (२१) ला ज-र-म अन्नहुम् फ़िल्आख़िरति हुमुल्-अख़्सरून (२२) इन्नल्लज़ी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति व अख़्-बतू इला रब्बिहिम् ला उलाइ-क अस्ह़ाबुल्-जन्नति ج हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (२३) म-सलुल्-फ़रीक़ैनि कल्-अअ्-मा वल्-असम्मि वल्बसीरि वस्समीअि ط हल् यस्तवियानि म-स-लन् ط अ-फ़ला तज़क्करून ★ (२४) व ल-क़द् अर्-सल्ना नूहन् इला क़ौमिही ز इन्नी लकुम् नज़ीरुम्-मुबीन ला (२५)

وَهُمْ فِيهَا لَا يُبْخَسُونَ ۝ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَيْسَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ
إِلَّا النَّارُ ۖ وَحَبِطَ مَا صَنَعُوا فِيهَا وَبَاطِلٌ مَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ أَفَمَن
كَانَ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّهِ وَيَتْلُوهُ شَاهِدٌ مِّنْهُ وَمِن قَبْلِهِ كِتَابُ
مُوسَىٰ إِمَامًا وَرَحْمَةً ۚ أُولَٰئِكَ يُؤْمِنُونَ بِهِ ۚ وَمَن يَكْفُرْ بِهِ مِنَ
الْأَحْزَابِ فَالنَّارُ مَوْعِدُهُ ۚ فَلَا تَكُ فِي مِرْيَةٍ مِّنْهُ ۚ إِنَّهُ الْحَقُّ مِن
رَّبِّكَ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ
عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ۚ أُولَٰئِكَ يُعْرَضُونَ عَلَىٰ رَبِّهِمْ وَيَقُولُ الْأَشْهَادُ هَٰؤُلَاءِ
الَّذِينَ كَذَبُوا عَلَىٰ رَبِّهِمْ ۚ أَلَا لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الظَّالِمِينَ ۝ الَّذِينَ
يَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا وَهُم بِالْآخِرَةِ هُمْ
كَافِرُونَ ۝ أُولَٰئِكَ لَمْ يَكُونُوا مُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ وَمَا كَانَ لَهُم
مِّن دُونِ اللَّهِ مِنْ أَوْلِيَاءَ ۘ يُضَاعَفُ لَهُمُ الْعَذَابُ ۚ مَا كَانُوا يَسْتَطِيعُونَ
السَّمْعَ وَمَا كَانُوا يُبْصِرُونَ ۝ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ
وَضَلَّ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ۝ لَا جَرَمَ أَنَّهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمُ
الْأَخْسَرُونَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَأَخْبَتُوا إِلَىٰ
رَبِّهِمْ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝ مَثَلُ الْفَرِيقَيْنِ
كَالْأَعْمَىٰ وَالْأَصَمِّ وَالْبَصِيرِ وَالسَّمِيعِ ۚ هَلْ يَسْتَوِيَانِ مَثَلًا ۚ أَفَلَا
تَذَكَّرُونَ ۝ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ إِنِّي لَكُمْ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۝

※ व. लाज़िम ★रु. २/२ आ १६

जो लोग दुनिया की ज़िंदगी और उस की ज़ेब व ज़ीनत के तालिब हों, हम उन के आमाल का बदला उन्हें दुनिया ही में दे देते हैं और इस में उन का हक़ नहीं मारा जाता। (१५) ये वह लोग हैं, जिनके लिए आख़िरत में (जहन्नम की) आग के सिवा और कुछ नहीं और जो अमल उन्हों ने दुनिया में किए, सब बर्बाद और जो कुछ वे करते रहे, सब झूठ। (१६) भला जो लोग अपने परवरदिगार की तरफ़ से (रोशन) दलील रखते हों और उन के साथ एक (आसमानी) गवाह भी उस की तरफ़ से हो और उस से पहले मूसा की किताब हो, जो पेशवा और रहमत है, (तो क्या वे क़ुरआन पर ईमान नहीं लाएंगे ?) यही लोग तो उस पर ईमान लाते हैं। और जो कोई और फ़िर्क़ों में से इस का इंकारी हो, तो उस का ठिकाना आग है तो तुम इस (क़ुरआन) से शक में न होना, यह तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से हक़ है, लेकिन अक्सर लोग ईमान नहीं लाते। (१७) और इस से बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा, जो ख़ुदा पर झूठ गढ़े, ऐसे लोग ख़ुदा के सामने पेश किए जाएंगे और गवाह कहेंगे कि यही लोग हैं, जिन्हों ने अपने परवरदिगार पर झूठ बोला था, सुन रखो कि ज़ालिमों पर ख़ुदा की लानत है। (१८) जो ख़ुदा के रास्ते से रोकते हैं और उस में टेढ़ चाहते हैं और वे आख़िरत से भी इंकार करते हैं, (१९) ये लोग ज़मीन में (कहीं भाग कर ख़ुदा को) हरा नहीं सकते और न ख़ुदा के सिवा कोई उन का हिमायती है, (ऐ पैग़म्बर !) उन को दोगुना अज़ाब दिया जाएगा, क्योंकि ये (कुफ़्र की ज़्यादती की वजह से तुम्हारी बात) नहीं सुन सकते थे और न (तुम को) देख सकते थे। (२०) यही हैं जिन्होंने अपने आपको घाटे में डाला और जो कुछ ये गढ़ा करते थे, उनसे जाता रहा। (२१) बिला शुब्हा ये लोग आख़िरत में सब से ज़्यादा नुक़्सान पाने वाले हैं। (२२) जो लोग ईमान लाये और नेक अमल किये और अपने परवरदिगार के आगे आजिज़ी की, यही जन्नत वाले हैं, हमेशा उस में रहेंगे। (२३) दोनों फ़िर्क़ों (यानी काफ़िर व मोमिन) की मिसाल ऐसी है, जैसे एक अंधा-बहरा हो और एक देखता-सुनता, भला दोनों का हाल बराबर हो सकता है ? फिर तुम सोचते क्यों नहीं ? (२४) ★

और हम ने नूह को उन की क़ौम की तरफ़ भेजा (तो उन्हों ने उन से कहा) कि मैं तुम को खोल-खोल कर डर सुनाने (और यह पैग़ाम पहुंचाने) आया हू, (२५) कि ख़ुदा के सिवा किसी की

व. लाज़िम ★रु. २/२ आ १६

अल्ला तअ्-बुदू इल्लल्ला-ह ط इन्नी अख़ाफ़ु अलैकुम् अज़ा-ब यौमिन् अलीम (२६) फ़-क़ालल्-म-ल-उल्लज़ी-न क-फ़रू मिन् क़ौमिही मा नरा-क इल्ला ब-श-रम्-मिस्-लना व मा नराकत्-त-ब-अ-क इल्लल्लज़ी-न हुम् अराज़िलुना बादियर्रअ्यि ج व मा नरा लकुम् अलैना मिन् फ़ज़्लिम्-बल् नज़ुन्नुकुम् काज़िबीन (२७) क़ा-ल या क़ौमि अ-रऐतुम् इन् कुन्तु अला बय्यिनतिम्-मिर्रब्बी व आतानी रह् - म - तम् - मिन् अिन्दिही फ़ - अुम्मियत् अलैकुम् ط अनुल्ज़िमुकुमू - हा व अन्तुम् लहा कारिहून (२८) व या क़ौमि ला अस् - अलुकुम् अलैहि मालन् ط इन् अज्रि-य इल्ला अ-लल्लाहि व मा अ-न बितारिदिल्लज़ी - न आमनू ط इन्नहुम् मुलाक़ू रब्बिहिम् व लाकिन्नी अराकुम् क़ौमन् तज्-हलून (२९) व या क़ौमि मंय्यन्सुरुनी मिनल्लाहि इन् तरत्तुहुम् ط अ-फ़ला त-ज़क्करून (३०) व ला अक़ूलु लकुम् अिन्दी ख़ज़ाइनुल्लाहि व ला अअ्-लमुल्-ग़ै-ब व ला अक़ूलु इन्नी मलकुं-व्-व ला अक़ूलु लिल्लज़ी-न तज़्दरी अअ्-युनुकुम् लंय्युअ्ति-य-हुमुल्लाहु ख़ैरन् ط अल्लाहु अअ् - लमु बिमा फ़ी अन्फ़ुसिहिम् ج इन्नी इज़ल्-लमिनज़्-ज़ालिमीन (३१) क़ालू या नूहु क़द् जादल्-तना फ़-अक्सर-त जिदालना फ़अ्-तिना बिमा तअिदुना इन् कुन्-त मिनस्सादिक़ीन (३२) क़ा-ल इन्नमा यअ्तीकुम् बिहिल्लाहु इन् शा-अ व मा अन्तुम् बिमुअ्-जिज़ीन (३३) व ला यन्फ़अुकुम् नुस्ही इन् अरत्तु अन् अन्स - ह लकुम् इन् कानल्लाहु युरीदु अंय्युग़्वि - य - कुम् ط हु - व रब्बुकुम् وقف व इलैहि तुर्जअून ط (३४) अम् यक़ूलूनफ़्तराहु ط क़ुल् इनिफ़्तरैतुहू फ़-अ-लय् - य इज्रामी व अ-न बरीउम् - मिम्मा तुज्रिमून (३५) ★

أَنْ لَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ؕ اِنِّیْٓ اَخَافُ عَلَیْكُمْ عَذَابَ یَوْمٍ اَلِیْمٍ ۝ فَقَالَ
الْمَلَاُ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ مَا نَرٰىكَ اِلَّا بَشَرًا مِّثْلَنَا وَمَا نَرٰىكَ
اتَّبَعَكَ اِلَّا الَّذِیْنَ هُمْ اَرَاذِلُنَا بَادِیَ الرَّاْیِ ۚ وَمَا نَرٰى لَكُمْ عَلَیْنَا
مِنْ فَضْلٍۭ بَلْ نَظُنُّكُمْ كٰذِبِیْنَ ۝ قَالَ یٰقَوْمِ اَرَءَیْتُمْ اِنْ
كُنْتُ عَلٰى بَیِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّیْ وَاٰتٰىنِیْ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِهٖ فَعُمِّیَتْ
عَلَیْكُمْ ؕ اَنُلْزِمُكُمُوْهَا وَاَنْتُمْ لَهَا كٰرِهُوْنَ ۝ وَیٰقَوْمِ لَاۤ اَسْـَٔلُكُمْ
عَلَیْهِ مَالًا ؕ اِنْ اَجْرِیَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ وَمَاۤ اَنَا بِطَارِدِ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا ؕ
اِنَّهُمْ مُّلٰقُوْا رَبِّهِمْ وَلٰكِنِّیْۤ اَرٰىكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُوْنَ ۝ وَیٰقَوْمِ مَنْ
یَّنْصُرُنِیْ مِنَ اللّٰهِ اِنْ طَرَدْتُّهُمْ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝ وَلَاۤ اَقُوْلُ
لَكُمْ عِنْدِیْ خَزَآىِٕنُ اللّٰهِ وَلَاۤ اَعْلَمُ الْغَیْبَ وَلَاۤ اَقُوْلُ اِنِّیْ مَلَكٌ
وَّلَاۤ اَقُوْلُ لِلَّذِیْنَ تَزْدَرِیْۤ اَعْیُنُكُمْ لَنْ یُّؤْتِیَهُمُ اللّٰهُ خَیْرًا ؕ اَللّٰهُ
اَعْلَمُ بِمَا فِیْۤ اَنْفُسِهِمْ ۚۖ اِنِّیْۤ اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِیْنَ ۝ قَالُوْا یٰنُوْحُ
قَدْ جٰدَلْتَنَا فَاَكْثَرْتَ جِدَالَنَا فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَاۤ اِنْ كُنْتَ مِنَ
الصّٰدِقِیْنَ ۝ قَالَ اِنَّمَا یَاْتِیْكُمْ بِهِ اللّٰهُ اِنْ شَآءَ وَمَاۤ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِیْنَ ۝
وَلَا یَنْفَعُكُمْ نُصْحِیْۤ اِنْ اَرَدْتُّ اَنْ اَنْصَحَ لَكُمْ اِنْ كَانَ اللّٰهُ یُرِیْدُ
اَنْ یُّغْوِیَكُمْ ؕ هُوَ رَبُّكُمْ ۫ وَاِلَیْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝ اَمْ یَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ
قُلْ اِنِ افْتَرَیْتُهٗ فَعَلَیَّ اِجْرَامِیْ وَاَنَا بَرِیْٓءٌ مِّمَّا تُجْرِمُوْنَ ۝

★रु. ३ /३ आ ११

इबादत न करो। मुझे तुम्हारे बारे में दर्दनाक अज़ाब का डर है। (२६) तो उन की क़ौम के सरदार, जो काफ़िर थे, कहने लगे कि हम तुम को अपने ही जैसा एक आदमी देखते हैं और यह भी देखते हैं कि तुम्हारी पैरवी करने वाले वही लोग हुए हैं, जो हम में निचले दर्जे के हैं और वह भी ज़ाहिर राय से (न कि ग़ौर व फ़िक्र से) और हम तुम में अपने ऊपर किसी तरह की फ़ज़ीलत नहीं देखते, बल्कि तुम्हें झूठा ख़्याल करते हैं। (२७) उन्हों ने कहा कि ऐ क़ौम! देखो तो अगर मैं अपने परवरदिगार की तरफ़ से (रोशन) दलील रखता हूं और उस ने मुझे अपने यहां से रहमत बख़्शी हो, जिस की हक़ीक़त तुम से छिपा रखी गयी है, तो क्या हम इस के लिए तुम्हें मजबूर कर सकते हैं और तुम हो कि उस से ना-ख़ुश हो रहे हो। (२८) और ऐ क़ौम! मैं इस (नसीहत) के बदले तुम से माल व ज़र की ख़्वाहिश नहीं रखता हूं, मेरा बदला तो ख़ुदा के ज़िम्मे है और जो लोग ईमान लाए हैं, मैं उन को निकालने वाला भी नहीं हूं। वह तो अपने परवरदिगार से मिलने वाले हैं, लेकिन मैं देखता हूं कि तुम लोग ना-दानी कर रहे हो। (२९) और ऐ मेरी क़ौम के लोगो! अगर मैं उन को निकाल दूं तो ख़ुदा (के अज़ाब) से (बचाने के लिए) कौन मेरी मदद कर सकता है? भला तुम ग़ौर क्यों नहीं करते? (३०) मैं न तुम से यह कहता हूं कि मेरे पास ख़ुदा के ख़ज़ाने हैं और न यह कि मैं ग़ैब जानता हूं और न यह कहता हूं कि मैं फ़रिश्ता हूं और न उन लोगों के बारे में, जिन को तुम नीची नज़र से देखते हो, यह कहता हूं कि ख़ुदा उन को भलाई (यानी आमाल का नेक बदला) नहीं देगा, जो उन के दिलों में है, इसे ख़ुदा ख़ूब जानता है। अगर मैं ऐसा कहूं तो बे-इन्साफ़ों में हूं। (३१) उन्हों ने कहा कि नूह! तुम ने हम से झगड़ा तो किया और झगड़ा भी बहुत किया, लेकिन अगर सच्चे हो, तो जिस चीज़ से हमें डराते हो, वह हम पर ला नाज़िल करो। (३२) नूह ने कहा कि इस को तो ख़ुदा ही चाहेगा, तो नाज़िल करेगा और तुम (उस को किसी तरह) हरा नहीं सकते। (३३) और अगर मैं यह चाहूं कि तुम्हारी ख़ैरख़्वाही करूं और ख़ुदा यह चाहे कि तुम्हें गुमराह करे, तो मेरी ख़ैरख़्वाही तुम को कुछ फ़ायदा नहीं दे सकती। वही तुम्हारा परवरदिगार है और तुम्हें उसी की तरफ़ लौट कर जाना है। (३४) क्या ये कहते हैं कि इस (पैग़म्बर) ने क़ुरआन अपने दिल से बना लिया है? कह दो कि अगर मैं ने दिल से बना लिया है, तो मेरे गुनाह का वबाल मुझ पर जो गुनाह तुम करते हो, उस की ज़िम्मेदारी से मैं बरी हूं। (३५) ★

★रु. ३/३ आ ११

व ऊहि-य इला नूहिन् अन्नहू लंय्युअ्मि-न मिन् क़ौमि-क इल्ला मन् क़द् आम-न फ़ला तब्तइस् बिमा कानू यफ़्-अलून (३६) वस्नअिल्-फ़ुल-क बिअअ्-युनिना व वह्यिना व ला तुख़ातिब्नी फ़िल्लज़ी-न ज़-लमू इन्नहुम् मुग़रक़ून (३७) व यस्-नअुल्फ़ुल-क व कुल्लमा मर-र अलैहि म - ल - उम्मिन् क़ौमिही सख़िरू मिन्हु क़ा-ल इन् तस्ख़रू मिन्ना फ़इन्ना नस्ख़रु मिन्कुम् कमा तस्ख़रून (३८) फ़सौ-फ़ तअ्-लमू-न मंय्यअ्तीहि अज़ाबुंय्युख़्ज़ीहि व यहिल्लु अलैहि अज़ाबुम् - मुक़ीम (३९) हत्ता इज़ा जा-अ अम्रुना व फ़ारत्तन्नूरु क़ुल्नह्मिल् फ़ीहा मिन् कुल्लिन् ज़ौजैनिस्नैनि व अह्ल-क इल्ला मन् स-ब - क़ अलैहिल् - क़ौलु व मन् आम-न व मा आम-न म-अहू इल्ला क़लील (४०) व क़ालर्कबू फ़ीहा बिस्मिल्लाहि मज्रेहा व मुर्साहा इन-न रब्बी ल-ग़फ़ूरुर्-रहीम (४१) व हि-य तज्री बिहिम् फ़ी मौजिन् कल्जिबालि व नादा नूहु-निब्नहू व का-न फ़ी मअ्-ज़िलि-य्याबुनय्यर्कम्म-अना व ला तकुम्म-अल्-काफ़िरीन (४२) क़ा-ल स-आवी इला जबलिंय्यअ्-सिमुनी मिनल्माइ क़ा - ल ला आसि-मल्यौ - म मिन् अम्रिल्लाहि इल्ला मर्रहि-म व हा-ल बैनहुमल् मौजु फ़का-न मिनल्मुग़रक़ीन (४३) व क़ी-ल या अर्ज़ुब्लई मा-अकि व यासमा-उ अक्लिई व ग़ीज़ल्-माउ व क़ुज़ियल् - अम्रु वस्तवत् अ - लल्जूदिय्यि व क़ी-ल बुअ् - दल्लिल्-क़ौमिज़्ज़ालिमीन ● (४४) व नादा नूहुर्रब्बहू फ़क़ा-ल रब्बि इन्नब्नी मिन् अह्ली व इन्-न वअ्-द-कल्-हक़्क़ु व अन्-त अह्कमुल्-हाकिमीन (४५)

وأوحي إلى نوح أنه لن يؤمن من قومك إلا من قد آمن
فلا تبتئس بما كانوا يفعلون ۝ واصنع الفلك بأعيننا و
وحينا ولا تخاطبني في الذين ظلموا إنهم مغرقون ۝ ويصنع
الفلك وكلما مر عليه ملأ من قومه سخروا منه قال إن
تسخروا منا فإنا نسخر منكم كما تسخرون ۝ فسوف تعلمون
من يأتيه عذاب يخزيه ويحل عليه عذاب مقيم ۝ حتى
إذا جاء أمرنا وفار التنور قلنا احمل فيها من كل زوجين
اثنين وأهلك إلا من سبق عليه القول ومن آمن وما
آمن معه إلا قليل ۝ وقال اركبوا فيها بسم الله مجريها ومرسيها
إن ربي لغفور رحيم ۝ وهي تجري بهم في موج كالجبال
ونادى نوح ابنه وكان في معزل يبني اركب معنا ولا تكن
مع الكفرين ۝ قال سآوي إلى جبل يعصمني من الماء قال
لا عاصم اليوم من أمر الله إلا من رحم وحال بينهما الموج
فكان من المغرقين ۝ وقيل يأرض ابلعي ماءك ويسماء
أقلعي وغيض الماء وقضي الأمر واستوت على الجودي و
قيل بعدا للقوم الظلمين ۝ ونادى نوح ربه فقال رب إن
ابني من أهلي وإن وعدك الحق وأنت أحكم الحكمين ۝

और नूह की तरफ़ वह्य की गयी कि तुम्हारी क़ौम में जो लोग ईमान ला चुके, (ला चुके) उनके सिवा और कोई ईमान नहीं लाएगा, तो जो काम ये कर रहे हैं, उन की वजह से ग़म न खाओ। (३६) और एक कश्ती हमारे हुक्म से हमारे सामने बनाओ और जो लोग ज़ालिम हैं, उनके बारे में हम से कुछ न कहना, क्योंकि वे ज़रूर ग़र्क़ कर दिए जाएंगे। (३७) तो नूह ने कश्ती बनानी शुरू कर दी और जब उन की क़ौम के सरदार उनके पास से गुज़रते तो उनका मज़ाक़ उड़ाते। वह कहते कि अगर तुम हमारा मज़ाक़ उड़ाते हो, तो जिस तरह तुम हमारा मज़ाक़ उड़ाते हो, उसी तरह (एक वक़्त) हम भी तुम्हारा मज़ाक उड़ाएंगे। (३८) और तुम को जल्द मालूम हो जाएगा कि किस पर अज़ाब आता है, जो उसे रुसवा करेगा और किस पर हमेशा का अज़ाब नाज़िल होता है? (३९) यहां तक कि जब हमारा हुक्म आ पहुंचा औरतन्नूर जोश मारने लगा तो हमने (नूह को) हुक्म दिया कि हर क़िस्म (के जानदारों) में से जोड़ा-जोड़ा (यानी) दो (दो जानवर—एक-एक नर और एक-एक मादा) ले लो और जिस शख़्स के बारे में हुक्म हो चुका है (कि हलाक हो जाएगा) उस को छोड़ कर अपने घर वालों को और जो ईमान लाया हो, उसको कश्ती में सवार कर लो और उनके साथ ईमान बहुत ही कम लोग लाए थे। (४०) (नूह ने) कहा कि ख़ुदा का नाम लेकर (कि उसी के हाथ में) उस का चलना और ठहरना (है), उस में सवार हो जाओ। बेशक मेरा परवरदिगार बख़्शने वाला मेहरबान है। (४१) और वह उनको लेकर (तूफ़ान की) लहरों में चलने लगी, (लहरें क्या थीं), गोया पहाड़ (थे)। उस वक़्त नूह ने अपने बेटे को कि (कश्ती से) अलग था, पुकारा कि बेटा! हमारे साथ सवार हो जा और काफ़िरों में शामिल न हो। (४२) उसने कहा कि मैं (अभी) पहाड़ से जा लगूंगा, वह मुझे पानी से बचा लेगा। उन्होंने कहा कि आज ख़ुदा के अज़ाब से कोई बचाने वाला नहीं (और न कोई बच सकता है,) मगर जिस पर ख़ुदा रहम करे। इतने में दोनों के दर्मियान लहर आ, रोक बन गयी और वह डूब कर रह गया। (४३) और हुक्म दिया गया कि ऐ ज़मीन! अपना पानी निगल जा और ऐ आसमान! थम जा, तो पानी ख़ुश्क हो गया और काम तमाम कर दिया गया और कश्ती जूदी पहाड़ पर जा ठहरी और कह दिया गया कि बे-इंसाफ़ लोगों पर लानत ●(४४) और नूह ने अपने परवरदिगार को पुकारा और कहा कि परवरदिगार! मेरा बेटा भी मेरे घर वालों में है, (तो उस को भी निजात दे), तेरा वायदा सच्चा

●रुकूअ १/४

क़ा-ल या नूहु इन्नहू लै-स मिन् अह्लिक इन्नहू अ-मलुन् ग़ैरु सालिहिन् फ़ला तस-अलि मा लै-स ल-क बिही अिल्मुन् इन्नी अअिज़ु-क अन् तकू-न मिनल्-जाहिलीन (४६) क़ा-ल रब्बि इन्नी अअूज़ुबि-क अन् अस्अ-ल-क मा लै-स ली बिही अिल्मुन् व इल्ला तग़्फ़िर् ली व तर्हम्नी अकुम्मिनल्-ख़ासिरीन (४७) क़ी-ल यानूहुह्बित् बिसलामिम्-मिन्ना व ब-र-कातिन् अलै-क व अला उम-मिम्-मिम्मम्-म-अक व उम-मुन् सनुमत्तिअुहुम् सुम्-म य-मस्सुहुम् मिन्ना अज़ाबुन् अलीम (४८) तिल्-क मिन् अम्बाइल्ग़ैबि नूहीहा इलै-क मा कुन्-त तअ्-लमुहा अन्-त व ला क़ौमु-क मिन् क़ब्लि हाज़ा फ़स्बिर् इन्नल्-आक़ि-ब-त लिल्मुत्तक़ीन★ (४९) व इला आदिन् अख़ाहुम् हूदन् क़ा-ल या क़ौमिअ्-बुदुल्ला-ह मा लकुम् मिन् इलाहिन् ग़ैरुहू इन् अन्तुम् इल्ला

قَالَ يٰنُوْحُ اِنَّهٗ لَيْسَ مِنْ اَهْلِكَ ۚ اِنَّهٗ عَمَلٌ غَيْرُ صَالِحٍ ۖ فَلَا تَسْـَٔلْنِ
مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ۭ اِنِّيْٓ اَعِظُكَ اَنْ تَكُوْنَ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ ۝ قَالَ رَبِّ
اِنِّيْٓ اَعُوْذُ بِكَ اَنْ اَسْـَٔلَكَ مَا لَيْسَ لِيْ بِهٖ عِلْمٌ ۭ وَاِلَّا تَغْفِرْ لِيْ وَتَرْحَمْنِيْٓ
اَكُنْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝ قِيْلَ يٰنُوْحُ اهْبِطْ بِسَلٰمٍ مِّنَّا وَبَرَكٰتٍ عَلَيْكَ وَ
عَلٰٓي اُمَمٍ مِّمَّنْ مَّعَكَ ۭ وَاُمَمٌ سَنُمَتِّعُهُمْ ثُمَّ يَمَسُّهُمْ مِّنَّا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝
تِلْكَ مِنْ اَنْۢبَاۗءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهَآ اِلَيْكَ ۚ مَا كُنْتَ تَعْلَمُهَآ اَنْتَ وَلَا قَوْمُكَ
مِنْ قَبْلِ هٰذَا ڔ فَاصْبِرْ ڔ اِنَّ الْعَاقِبَةَ لِلْمُتَّقِيْنَ ۝ وَاِلٰي عَادٍ اَخَاهُمْ
هُوْدًا ۭ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۭ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا
مُفْتَرُوْنَ ۝ يٰقَوْمِ لَآ اَسْـَٔــلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا ۭ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَي الَّذِيْ
فَطَرَنِيْ ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝ وَيٰقَوْمِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ
يُرْسِلِ السَّمَاۗءَ عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا وَّيَزِدْكُمْ قُوَّةً اِلٰي قُوَّتِكُمْ وَلَا تَتَوَلَّوْا
مُجْرِمِيْنَ ۝ قَالُوْا يٰهُوْدُ مَا جِئْتَنَا بِبَيِّنَةٍ وَّمَا نَحْنُ بِتَارِكِيْٓ اٰلِهَتِنَا
عَنْ قَوْلِكَ وَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ ۝ اِنْ نَّقُوْلُ اِلَّا اعْتَرٰىكَ
بَعْضُ اٰلِهَتِنَا بِسُوْۗءٍ ۭ قَالَ اِنِّىْٓ اُشْهِدُ اللّٰهَ وَاشْهَدُوْٓا اَنِّىْ بَرِيْۗءٌ
مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ۝ مِنْ دُوْنِهٖ فَكِيْدُوْنِيْ جَمِيْعًا ثُمَّ لَا تُنْظِرُوْنِ ۝
اِنِّىْ تَوَكَّلْتُ عَلَي اللّٰهِ رَبِّيْ وَرَبِّكُمْ ۭ مَا مِنْ دَاۗبَّةٍ اِلَّا هُوَ اٰخِذٌۢ بِنَاصِيَتِهَا ۭ
اِنَّ رَبِّيْ عَلٰي صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ مَّآ اُرْسِلْتُ

मुफ़्तरून (५०) या क़ौमि ला अस्अलुकुम् अलैहि अज-रन् इन् अज्रि-य इल्ला अ-लल्लज़ी फ़-त-रनी अ-फ़ला तअ्-क़िलून (५१) व या क़ौमिस-तग़्फ़िरू रब्बकुम् सुम्-म तूबू इलैहि युर्सिलिस्-समा-अ अलैकुम् मिद्रारंव-व यज़िद्कुम् क़ुव्व-तन् इला क़ुव्वतिकुम् व ला त-त-वल्लौ मुज्रिमीन (५२) क़ालू या हूदु मा जिअ्-तना बिबय्यिनतिंव्-व मा नह्नु बितारिकी आलिहतिना अन् क़ौलि-क व मा नह्नु ल-क बिमुअ्मिनीन (५३) इन्नक़ूलु इल्लाअ्-तरा-क बअ्-ज़ु आलिहतिना बिसूइन् क़ा-ल इन्नी उश्हिदुल्ला-ह वश्हदू अन्नी बरीउम्-मिम्मा तुश्रिकू-न (५४) मिन् दूनिही फ़कीदूनी जमीअ़न् सुम्-म ला तुन्ज़िरून (५५) इन्नी त-वक्कल्तु अ-लल्लाहि रब्बी व रब्बिकुम् मा मिन् दाब्बतिन् इल्ला हु-व आख़िज़ुम्-बिनासि-यतिहा इन्-न रब्बी अला सिरातिम्-मुस्तक़ीम (५६)

है और तू सब से बेहतर हाकिम है। (४५) ख़ुदा ने फ़रमाया कि नूह ! वह तेरे घर वालों में नहीं है। वह तो नाशाइस्ता (ना-ज़ेबा) अमल है, तो जिस चीज़ की तुमको हक़ीक़त मालूम नहीं, उसके बारे में मुझ से सवाल ही न करो और मैं तुमको नसीहत करता हूं कि नादान न बनो। (४६) नूह ने कहा, परवरदिगार ! मैं तुझ से पनाह मांगता हूं कि ऐसी चीज़ का तुझ से सवाल करूं, जिस की मुझे हक़ीक़त मालूम नहीं और अगर तू मुझे नहीं बख़्शेगा, और मुझ पर रहम नहीं करेगा, तो मैं तबाह हो जाऊंगा। (४७) हुक्म हुआ कि नूह ! हमारी तरफ़ से सलामती और बरकतों के साथ (जो) तुम पर और तुम्हारे साथ की जमाअतों पर (नाज़िल की गयी है) उतर आओ और कुछ और जमाअतें होंगी, जिन को हम (दुनिया के फ़ायदों से) नवाज़ेंगे, फिर उन को हमारी तरफ़ से दर्दनाक अज़ाब पहुंचेगा। (४८) ये (हालात) तमाम ग़ैब की ख़बरों में से हैं, जो हम तुम्हारी तरफ़ भेजते हैं और इससे पहले न तुम ही इनको जानते थे और न तुम्हारी क़ौम (ही इन को जानती थी), ∴तो सब्र करो∴कि अंजाम परहेज़गारों ही का (भला) है। (४९) ★

और हमने आद की तरफ़ उन के भाई हूद को (भेजा)। उन्होंने कहा कि मेरी क़ौम ! ख़ुदा ही की इबादत करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं। तुम (शिर्क करके ख़ुदा पर) सिर्फ़ बुहतान बांधते हो। (५०) मेरी क़ौम ! मैं इस (वाज़ व नसीहत) का तुम से कुछ बदला नहीं मांगता। मेरा बदला तो उसके ज़िम्मे है, जिस ने मुझे पैदा किया। भला, तुम समझते क्यों नहीं ? (५१) और ऐ क़ौम ! अपने परवरदिगार से बख़्शिश मांगो, फिर उसके आगे तौबा करो। वह तुम पर आसमान से मूसलाधार मेंह बरसाएगा और तुम्हारी ताक़त पर ताक़त बढ़ाएगा और (देखो) गुनाहगार बनकर रू-गरदानी न करो। (५२) वे बोले, हूद ! तुम हमारे पास कोई ज़ाहिर दलील नहीं लाए और हम (सिर्फ़) तुम्हारे कहने से न अपने माबूदों को छोड़ने वाले हैं और न तुम पर ईमान लाने वाले हैं। (५३) हम तो यह समझते हैं कि हमारे किसी माबूद ने तुम्हें आसेब पहुंचा (कर दीवाना कर) दिया है। उन्होंने कहा कि मैं ख़ुदा को गवाह करता हूं और तुम भी गवाह रहो कि जिन को तुम (ख़ुदा का) शरीक बनाते हो, उन से बेज़ार हूं। (५४) (यानी जिन की) ख़ुदा के सिवा (इबादत करते हो, तो) तुम सब मिल कर मेरे बारे में (जो) तद्बीर (करनी चाहो,) कर लो और मुझे मोहलत न दो। (५५) मैं ख़ुदा पर, जो मेरा और तुम्हारा (सब का) परवरदिगार है, भरोसा रखता हूं (ज़मीन पर) जो चलने फिरने वाला है, वह उसको चोटी से पकड़े हुए है। बेशक मेरा परवरदिगार सीधे रास्ते पर है। (५६) अगर तुम रू-गरदानी करोगे, तो जो पैग़ाम

फ़-इन् तवल्लौ फ़-क़द् अब्-लग़्तुकुम् मा उर्सिल्तु बिही इलैकुम् ᵇ व यस्तख़्लिफ़ु रब्बी क़ौमन् ग़ै-रकुम् ᶜ व ला तज़ुर्रूनहू शैअन् ᵇ इन्-न रब्बी अला कुल्लि शैइन् हफ़ीज़ (५७) व लम्मा जा-अ अम्रुना नज्जैना हूदंव्वल्लज़ी-न आमनू म-अ़हू बिरह्मतिम्-मिन्ना ᶜ व नज्जैनाहुम् मिन् अज़ाबिन् ग़लीज़ (५८) व तिल्-क आदुन् ज-हदू बिआयाति रब्बिहिम् व असौ रुसुलहू वत्तबअू अम्-र कुल्लि जब्बारिन् अनीद (५९) व उत्बिअू फ़ी हाज़िहिद्दुन्या लअ्-न-तंव्-व यौमल्-क़ियामति ᵇ अला इन्-न आदन् क-फ़रू रब्बहुम् ᵇ अला बुअ्-दल्लिआदिन् क़ौमि हूद ★ (६०) व इला समू-द अख़ाहुम् सालिहन् ▩ क़ा-ल याक़ौमिअ-बुदुल्ला-ह मा लकुम् मिन् इलाहिन् ग़ैरुहू ᵇ हु-व अन्श-अकुम् मिनल्अर्ज़ि वस्तअ्-म-र-कुम् फ़ीहा फ़स्तग़्फ़िरूहु सुम्-म तूबू इलैहि ᵇ इन्-न रब्बी क़रीबुम्-मुजीब (६१) क़ालू या सालिहु क़द् कुन्-त फ़ीना मर्जुव्वन् क़ब्-ल हाज़ा अ-तन्हाना अन् नअ्-बु-द मा यअ्-बुदु आबाउना व इन्नना लफ़ी शक्किम्मिम्मा तद्अूना इलैहि मुरीब (६२) क़ा-ल या क़ौमि अ-रऐतुम् इन् कुन्तु अला बय्यिनतिम्-मिर्रब्बी व आतानी मिन्हु रह्-म-तन् फ़मंय्यन्सुरुनी मिनल्लाहि इन् असैतुहू फ़मा तज़ीदूननी ग़ै-र तख़्सीर (६३) व या क़ौमि हाज़िही नाक़तुल्लाहि लकुम् आय-तन् फ़-ज़रूहा तअ्कुल् फ़ी अर्ज़िल्लाहि व ला त-मस्सूहा बिसूइन् फ़-यअ्ख़ुज़कुम् अज़ाबुन् क़रीब (६४) फ़-अ-क़रूहा फ़-क़ा-ल त-मत्तअू फ़ी दारिकुम् सलास-त अय्यामिन् ᵇ ज़ालि-क वअ्-दुन् ग़ैरु मक्ज़ूब (६५) फ़-लम्मा जा-अ अम्रुना नज्जैना सालिहंव्वल्लज़ी-न आमनू म-अ़हू बिरह्मतिम्-मिन्ना व मिन् ख़िज़्यि यौमिइज़िन् ᵇ इन्-न रब्ब-क हुवल्क़विय्युल्-अज़ीज़ (६६)

به اليكم ويستخلف ربي قوما غيركم ولا تضرونه شيئا ان
ربي على كل شيء حفيظ ۝ ولما جاء امرنا نجينا هودا و
الذين امنوا معه برحمة منا ونجينهم من عذاب غليظ ۝ و
تلك عاد جحدوا بايت ربهم وعصوا رسله واتبعوا امر كل
جبار عنيد ۝ واتبعوا في هذه الدنيا لعنة ويوم القيمة الا
ان عادا كفروا ربهم الا بعدا لعاد قوم هود ۝ والى ثمود اخاهم
صلحا قال يقوم اعبدوا الله ما لكم من اله غيره هو انشاكم
من الارض واستعمركم فيها فاستغفروه ثم توبوا اليه ان ربي
قريب مجيب ۝ قالوا يصلح قد كنت فينا مرجوا قبل هذا اتنهنا
ان نعبد ما يعبد اباؤنا واننا لفي شك مما تدعونا اليه مريب ۝
قال يقوم ارءيتم ان كنت على بينة من ربي واتىني منه رحمة
فمن ينصرني من الله ان عصيته فما تزيدونني غير تخسير ۝
ويقوم هذه ناقة الله لكم اية فذروها تاكل في ارض الله و
لا تمسوها بسوء فياخذكم عذاب قريب ۝ فعقروها فقال
تمتعوا في داركم ثلثة ايام ذلك وعد غير مكذوب ۝ فلما جاء
امرنا نجينا صلحا والذين امنوا معه برحمة منا ومن خزي
يومئذ ان ربك هو القوي العزيز ۝ واخذ الذين ظلموا

★रु. ५/५ आ ११ ▩ व. लाज़िम

मेरे हाथ तुम्हारी तरफ़ भेजा गया है, वह मैं ने तुम्हें पहुंचा दिया है और मेरा परवरदिगार तुम्हारी जगह और लोगों को ला बसाएगा और तुम ख़ुदा का कुछ भी नुक़्सान नहीं कर सकते। मेरा परवरदिगार तो हर चीज़ पर निगेहबान है। (५७) और जब हमारा हुक्म (अज़ाब) आ पहुंचा तो हमने हूद को और जो लोग उन के साथ ईमान लाए थे, उनको अपनी मेहरबानी से बचा लिया और उन्हें भारी अज़ाब से निजात दी। (५८) ये (वही) आद हैं, जिन्होंने ख़ुदा की निशानियों से इन्कार किया और उसके पैग़म्बरों की ना-फ़रमानी की और हर मुतकब्बिर व सर-कश का कहा माना। (५९) तो इस दुनिया में भी उनके पीछे लानत लगी रही और क़ियामत के दिन भी (लगी रहेगी)। देखो आद ने अपने परवरदिगार से कुफ़्र किया (और) सुन रखो हूद की क़ौम पर फिटकार है। (६०) ★

और समूद की तरफ़ उन के भाई सालेह को (भेजा) तो उन्होंने कहा कि क़ौम! ख़ुदा ही की इबादत करो उस के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं, उसी ने तुम को ज़मीन से पैदा किया और उसमें आबाद किया, तो उस से मग़फ़िरत मांगो और उसके आगे तौबा करो। बेशक मेरा परवरदिगार नज़दीक (भी है और दुआ का) क़ुबूल करने वाला (भी) है। (६१) उन्होंने कहा कि सालेह! इस से पहले हम तुम से (कई तरह की) उम्मीदें रखते थे। (अब वे ख़त्म हो गयीं) क्या तुम हम को उन चीज़ों को पूजने से मना करते हो, जिन को हमारे बुज़ुर्ग पूजते आए हैं? और जिस बात की तरफ़ तुम हमें बुलाते हो, इस में हमें ज़बरदस्त शुब्हा है। (६२) सालेह ने कहा, क़ौम! भला देखो तो अगर मैं अपने परवरदिगार की तरफ़ से खुली दलील पर हूं और उसने मुझे अपने यहां से (नुबूवत की) नेमत बख़्शी हो, तो अगर मैं ख़ुदा की ना-फ़रमानी करूं, तो उसके सामने मेरी मदद करेगा? तुम तो (कुफ़्र की बातों से) मेरा नुक़्सान करते हो। (६३) और (यह भी कहा कि) ऐ क़ौम! यह ख़ुदा की ऊंटनी तुम्हारे लिए एक निशानी (यानी मोजज़ा) है तो इसको छोड़ दो कि ख़ुदा की ज़मीन में (जहां चाहे) चरे और उसको किसी तरह की तक्लीफ़ न देना, वरना तुम्हें जल्द अज़ाब आ पड़ेगा। (६४) मगर उन्होंने उसकी कूंचें काट डालीं, तो (सालेह ने) कहा कि अपने घरों में तीन दिन (और) फ़ायदे उठा लो। यह वायदा है कि झूठा न होगा। (६५) जब हमारा हुक्म आ गया तो हमने सालेह को और जो लोग उन के साथ ईमान लाये थे, उनको अपनी मेहरबानी से बचा लिया और उस दिन की रुसवाई से (बचाए रखा)! बेशक तुम्हारा परवरदिगार ताक़तवर

★रु. ५/५ आ ११ ▒ व. लाज़िम

व अ-ख़-ज़ल्लज़ी-न ज़-ल-मुस्सैहतु फ़-अस्बहू फ़ी दियारिहिम् जासिमीन ॥ (६७) क-अल्लम् यग़्नौ फ़ीहा ۖ अला इन्-न समू-द क-फ़रू रब्बहुम् ۗ अला बुअ्-दल्लि-समूद ★ (६८) व ल-क़द् जा-अत् रुसुलुना इब्राही-म बिल्बुश्रा क़ालू सलामन् ۖ क़ा-ल सलामुन् फ़मा लबि-स अन् जा-अ बिअिज्लिन् हनीज़ (६९) फ़-लम्मा रआ ऐदियहुम् ला तसिलु इलैहि नकि-रहुम् वऔज-स मिन्हुम् ख़ीफ़-तन् ۖ क़ालू ला त-ख़फ़् इन्ना उर्सिल्ना इला क़ौमि लूत ۖ (७०) वम्र-अतुहू क़ाइमतुन् फ़-ज़हिकत् फ़-बश्शर्ना-हा बिइस्हा-क़ ॥ व मिंव्वराइ इस्हा-क़ यअ्-क़ूब (७१) क़ालत् यावैलता अ अलिदु व अ-न अजूज़ुंव्-व हाज़ा बअ्-ली शैख़न् ۖ इन्-न हाज़ा लशैउन् अजीब (७२) क़ालू अ-तअ्-जबी-न मिन् अम्रिल्लाहि रह्मतुल्लाहि व ब-र-कातुहू अलैकुम् अह्लल्बैति ۖ इन्नहू हमीदुम्-मजीद

الصيحة فاصبحوا في ديارهم جثمين ۝ كان لم يغنوا فيها ۗ الا
ان ثمودا كفروا ربهم ۗ الا بعدا لثمود ۝ ولقد جاءت رسلنا
ابرهيم بالبشرى قالوا سلما ۖ قال سلم فما لبث ان جاء بعجل
حنيذ ۝ فلما را ايديهم لا تصل اليه نكرهم واوجس منهم
خيفة ۚ قالوا لا تخف انا ارسلنا الى قوم لوط ۝ وامراته قائمة
فضحكت فبشرنها باسحق ومن وراء اسحق يعقوب ۝ قالت
يويلتى ءالد وانا عجوز وهذا بعلي شيخا ۖ ان هذا لشيء عجيب ۝
قالوا اتعجبين من امر الله رحمت الله وبركته عليكم اهل
البيت ۚ انه حميد مجيد ۝ فلما ذهب عن ابرهيم الروع و
جاءته البشرى يجادلنا في قوم لوط ۝ ان ابرهيم لحليم
اواه منيب ۝ يابرهيم اعرض عن هذا ۚ انه قد جاء
امر ربك ۚ وانهم اتيهم عذاب غير مردود ۝ ولما جاءت
رسلنا لوطا سيء بهم وضاق بهم ذرعا وقال هذا يوم عصيب ۝
وجاءه قومه يهرعون اليه ۖ ومن قبل كانوا يعملون السيات ۚ
قال يقوم هؤلاء بناتي هن اطهر لكم فاتقوا الله ولا تخزون
في ضيفي ۖ اليس منكم رجل رشيد ۝ قالوا لقد علمت ما
لنا في بناتك من حق ۚ وانك لتعلم ما نريد ۝ قال لو ان لي

(७३) फ़-लम्मा ज-ह-ब अन् इब्राहीमर्-रौअु व जा-अत्हुल्-बुश्रा युजादिलुना फ़ी क़ौमि लूत ۖ (७४) इन-न इब्राही-म ल-हलीमुन् अव्वाहुम्-मुनीब (७५) या इब्राहीमु अअ्-रिज़् अन् हाज़ा ۚ इन्नहू क़द् जा-अ अम्रु रब्बिक ۚ व इन्नहुम् आतीहिम् अज़ाबुन् ग़ैरु मर्दूद (७६) व लम्मा जा-अत् रुसुलुना लूतन् सी-अ बिहिम् व ज़ा-क़ बिहिम् ज़रअंव्-व क़ा-ल हाज़ा यौमुन् असीब (७७) व जा-अहू क़ौमुहू युह्-रअू-न इलैहि ۖ व मिन् क़ब्लु कानू यअ्-मलूनस्-सय्यिआति ۖ क़ा-ल या क़ौमि हाउलाइ बनाती हुन्-न अत्हरु लकुम् फ़त्तक़ुल्ला-ह व ला तुख़्ज़ूनि फ़ी ज़ैफ़ी ۖ अलै-स मिन्कुम् रजुलुर्रशीद (७८) क़ालू ल-क़द् अलिम्-त मा लना फ़ी बनाति-क मिन् हक़्क़िन् ۚ व इन्न-क ल-तअ्-लमु मा नुरीद (७९)

★रु. ६/६ आ ८

और ज़बरदस्त है। (६६) और जिन लोगों ने ज़ुल्म किया था, उनको चिंघाड़ (की शक्ल में अज़ाब) ने आ पकड़ा, तो वे घरों में औंधे पड़े रह गये, (६७) गोया कभी उन में बसे ही न थे। सुन रखो कि समूद ने अपने परवरदिगार से कुफ़्र किया और सुन रखो समूद पर फिटकार है। (६८) ★

और हमारे फ़रिश्ते इब्राहीम के पास ख़ुशख़बरी[1] लेकर आए, तो सलाम कहा। उन्होंने भी (जवाब में) सलाम कहा। अभी कुछ देर भी नहीं हुई थी कि (इब्राहीम) एक भुना हुआ बछड़ा ले आए (६९) जब देखा कि उनके हाथ खाने की तरफ़ नहीं जाते (यानी वह खाना नहीं खाते) तो उन को अजनबी समझ कर दिल में डरे। (फ़रिश्तों ने) कहा कि डरिए नहीं, हम लूत की क़ौम को तरफ़ (उन के हलाक करने को) भेजे गये हैं। (७०) और इब्राहीम की बीवी (जो पास) खड़ी थी, हंस पड़ी, तो हम ने उसको इस्हाक़ के बाद याक़ूब की ख़ुशख़बरी दी। (७१) उस ने कहा, ऐ है! मेरे बच्चा होगा? मैं तो बुढ़िया हूं और यह मेरे मियां भी बूढ़े हैं। यह तो बड़ी अजीब बात है। (७२) उन्होंने कहा, क्या तुम ख़ुदा की क़ुदरत से ताज्जुब करती हो? ऐ अह्ले बैत! तुम पर ख़ुदा की रहमत और उसकी बरकतें हैं। वह तारीफ़ के लायक़ और बुज़ुर्गवार है। (७३) जब इब्राहीम से डर जाता रहा और उन को ख़ुशख़बरी भी मिल गयी, तो लूत की क़ौम के बारे में लगे हम से बहस करने।[2] (७४) बेशक इब्राहीम बड़े तहम्मुल वाले, नर्मदिल और रुजू करने वाले थे। (७५) ऐ इब्राहीम! इस बात को जाने दो। तुम्हारे परवरदिगार का हुक्म आ पहुंचा है और इन लोगों पर अज़ाब आने वाला है, जो कभी नहीं टलने का। (७६) और जब हमारे फ़रिश्ते लूत के पास आये, तो वह उन (के आने) से ग़मनाक और तंग दिल हुए और कहने लगे कि आज का दिन बड़ी मुश्किल का दिन है। (७७) और लूत की क़ौम के लोग उनके पास बे-तहाशा दौड़ते हुए आए और ये लोग पहले ही से गन्दा काम किया करते थे। लूत ने कहा कि ऐ क़ौम! यह (जो) मेरी (क़ौम की) लड़कियां हैं, ये तुम्हारे लिए (जायज़ और) पाक हैं, तो ख़ुदा से डरो और मेरे मेहमानों के (बारे) में मेरी आबरू न खोओ। क्या तुम में से कोई भी शायस्ता (शिष्ट) आदमी नहीं! (७८) वे बोले, तुम को मालूम है कि तुम्हारी (क़ौम की) बेटियों की हमें कोई ज़रूरत नहीं और जो हमारी ग़रज़ है उसे तुम (ख़ूब) जानते हो। (७९) लूत ने कहा कि ऐ काश! मुझ में

---

१. जो फ़रिश्ते ख़ुशख़बरी ले कर आए थे, वे जिब्रील, मीकाईल और इस्राफ़ील थे और ख़ूबसूरत नवजवान की शक्ल में आए थे। हज़रत इब्राहीम ने उन को मुअज़्ज़िज़ मेहमान समझ कर उन के लिए एक मोटा-ताज़ा बछड़ा ज़िब्ह किया और उसके कबाब बना कर उन के पास लाये। हज़रत इब्राहीम की बीवी हज़रत सारा ने जब देखा कि इब्राहीम मेहमानों की ख़ातिर और सत्कार करते हैं, तो ख़ुद भी उन की ख़िदमत के लिए आ खड़ी हुयीं। मेहमानों का यह हाल कि खाना सामने रखा है और उन के हाथ खाने की तरफ़ जाते ही नहीं, यह हाल देख कर हज़रत इब्राहीम के दिल में डर पैदा हुआ कि ये लोग किसी बुरे इरादे से न आये हों, क्योंकि उन लोगों की आदत थी कि जब कोई मेहमान आता और मेज़बान के यहां खाना न खाता, तो वह यह ख़्याल करते कि यह नेक नीयत से नहीं आया, बल्कि किसी बुरे इरादे से आया है। मेहमानों ने कहा, डरिए नहीं, हम ख़ुदा के फ़रिश्ते हैं और लूत की क़ौम को हलाक करने के लिए भेजे गए हैं। फ़रिश्तों का यह क़ौल सुन कर बीवी सारा हंस पड़ीं। फिर फ़रिश्तों ने बीवी सारा को हज़रत इस्हाक़ और हज़रत इस्हाक़ के बाद हज़रत याक़ूब के पैदा होने की ख़ुशख़बरी सुनायी, तो वह मारे ख़ुशी के बे-साख़्ता हंस पड़ीं।

२. जब हज़रत इब्राहीम को फ़रिश्तों के आने की वजह मालूम हुई और उन की बीवी को हज़रत इस्हाक़ की

(शेष पृष्ठ ३६५ पर)

★रु० ६/६ आ ८

क़ा-ल लौ अन्-न ली बिकुम् क़ुव्वतन् औ आवी इला रुक्निन् शदीद (८०)
क़ालू या लूतु इन्ना रुसुलु रब्बि-क लंय्यसिलू इलै-क फ़-अस्रि बिअह्लि-क
बिक़ित्अिम्-मिनल्लैलि व ला यल्तफ़ित् मिन्कुम् अ-हदुन् इल्लम्-र-अ-तक ॰
इन्नहू मुसीबुहा मा असाबहुम् ॰ इन्-न मौअि - द - हुमुस्सुब्हु ॰ अलैसस्सुब्हु
बिक़रीब (८१) फ़ - लम्मा जा-अ
अम्रुना ज-अल्ना आलियहा साफ़िलहा व
अम्तर्ना अलैहा हिजा-र-तम् - मिन्
सिज्जीलिम् - मन्ज़ूदिम् (८२)
मुसव्वम-तन् अिन्-द रब्बि-क ॰ व मा हि-य
मिनज़्ज़ालिमी - न बिबअीद ● ★ (८३)
व इला मद् - य-न अख़ाहुम् शुअैबन् ॰
क़ा-ल या क़ौमिअ्-बुदुल्ला-ह मा लकुम् मिन्
इलाहिन् ग़ैरुहू ॰ व ला तन्क़ुसुल्-
मिक्या-ल वल्मीज़ा - न इन्नी अराकुम्
बिख़ैरिंव्-व इन्नी अख़ाफ़ु अलैकुम् अज़ा-ब
यौमिम्मुहीत (८४) व या क़ौमि
औफ़ुल्-मिक्या-ल वल्मीज़ा - न बिल्क़िस्ति

بِكُمْ قُوَّةً أَوْ آوِي إِلَىٰ رُكْنٍ شَدِيدٍ ۝ قَالُوا يَا لُوطُ إِنَّا رُسُلُ رَبِّكَ
لَن يَصِلُوا إِلَيْكَ فَأَسْرِ بِأَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ اللَّيْلِ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنكُمْ
أَحَدٌ إِلَّا امْرَأَتَكَ إِنَّهُ مُصِيبُهَا مَا أَصَابَهُمْ إِنَّ مَوْعِدَهُمُ الصُّبْحُ
أَلَيْسَ الصُّبْحُ بِقَرِيبٍ ۝ فَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا جَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا
وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهَا حِجَارَةً مِّن سِجِّيلٍ مَّنضُودٍ ۝ مُّسَوَّمَةً
عِندَ رَبِّكَ وَمَا هِيَ مِنَ الظَّالِمِينَ بِبَعِيدٍ ۝ وَإِلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ
شُعَيْبًا قَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ وَلَا تَنقُصُوا
الْمِكْيَالَ وَالْمِيزَانَ إِنِّي أَرَاكُم بِخَيْرٍ وَإِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ
يَوْمٍ مُّحِيطٍ ۝ وَيَا قَوْمِ أَوْفُوا الْمِكْيَالَ وَالْمِيزَانَ بِالْقِسْطِ وَلَا تَبْخَسُوا
النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ۝ بَقِيَّتُ اللَّهِ
خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ وَمَا أَنَا عَلَيْكُم بِحَفِيظٍ ۝ قَالُوا
يَا شُعَيْبُ أَصَلَاتُكَ تَأْمُرُكَ أَن نَّتْرُكَ مَا يَعْبُدُ آبَاؤُنَا أَوْ أَن نَّفْعَلَ
فِي أَمْوَالِنَا مَا نَشَاءُ إِنَّكَ لَأَنتَ الْحَلِيمُ الرَّشِيدُ ۝ قَالَ يَا قَوْمِ
أَرَأَيْتُمْ إِن كُنتُ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّي وَرَزَقَنِي مِنْهُ رِزْقًا حَسَنًا
وَمَا أُرِيدُ أَنْ أُخَالِفَكُمْ إِلَىٰ مَا أَنْهَاكُمْ عَنْهُ إِنْ أُرِيدُ إِلَّا الْإِصْلَاحَ
مَا اسْتَطَعْتُ وَمَا تَوْفِيقِي إِلَّا بِاللَّهِ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ أُنِيبُ ۝
وَيَا قَوْمِ لَا يَجْرِمَنَّكُمْ شِقَاقِي أَن يُصِيبَكُم مِّثْلُ مَا أَصَابَ قَوْمَ نُوحٍ

व ला तब्ख़सुन्ना-स अश्या-अहुम् व ला तअ्-सौ फ़िल्अर्ज़ि मुफ़्सिदीन (८५)
बक़िय्यतुल्लाहि ख़ैरुल्लकुम् इन् कुन्तुम् मुअ्मिनी - न ॰ व मा अन
अलैकुम् बिहफ़ीज़ (८६) क़ालू या शुअैबु अ-सलातु-क तअ्-मुरु-क अन् नत-रु-क
मा यअ्-बुदु आबाउना औ अन् नफ़्-अ-ल फ़ी अम्वालिना मा नशाउ ॰
इन्न-क ल-अन्तल्-हलीमुर्रशीद (८७) क़ा-ल या क़ौमि अ र-ऐतुम् इन्
कुन्तु अला बय्यिनतिम्-मिर्रब्बी व र-ज़-क़नी मिन्हु रिज़्-क़न् ह-स-नन् ॰ व
मा उरीदु अन् उख़ालिफ़कुम् इला मा अन्हाकुम् अन्हु ॰ इन् उरीदु
इल्लल्-इस्ला-ह मस्त-तअ्-तु ॰ व मा तौफ़ीक़ी इल्ला बिल्लाहि ॰ अलैहि
त-वक्कल्तु व इलैहि उनीब (८८) व या क़ौमि ला यज्रिमन्नकुम्
शिक़ाक़ी अंय्युसीबकुम् मिस्लु मा असा-ब क़ौ-म नूहिन् औ क़ौ-म हूदिन् औ
क़ौ - म सालिहिन् ॰ व मा क़ौमु लूतिम् - मिन्कुम् बिबअीद (८९)

★रु. ७/७ आ १५ ● नि. १/२

तुम्हारे मुक़ाबले की ताक़त होती या मैं किसी मज़बूत क़िले में पनाह पकड़ सकता। (८०) फ़रिश्तों ने कहा कि लूत ! हम तुम्हारे परवरदिगार के फ़रिश्ते हैं। ये लोग हरगिज़ तुम तक नहीं पहुंच सकेंगे, तो कुछ रात रहे ये अपने घर वालों को लेकर चल दो और तुम में से कोई शख्स पीछे फिर कर न देखे, मगर तुम्हारी बीवी कि जो आफ़त उन पर पड़ने वाली है, वही उस पर पड़ेगी। उनके (अज़ाब के) वायदे का वक़्त सुबह है और क्या सुबह कुछ दूर है? (८१) तो जब हमारा हुक्म आया, हमने उस (बस्ती) को (उलट कर) नीचे-ऊपर कर दिया और उन पर पत्थर की तह-ब-तह कंकरियां बरसायीं, (८२) जिन पर तुम्हारे परवरदिगार के यहां से निशान किये हुए थे और वह (बस्ती इन) ज़ालिमों से कुछ दूर नहीं ●★(८३)और मदयन[1] की तरफ़ उनके भाई शुऐब को (भेजा), तो उन्होंने कहा कि ऐ क़ौम ! ख़ुदा ही की इबादत करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं। और नाप-तौल में कमी न किया करो। मैं तो तुम को ख़ुशहाल देखता हूं और (अगर तुम ईमान न लाओगे, तो) मुझे तुम्हारे बारे में एक ऐसे दिन के अज़ाब का डर है, जो तुम को घेर कर रहेगा। (८४) और क़ौम ! नाप और तौल इंसाफ़ के साथ पूरी-पूरी किया करो और लोगों को उनकी चीज़ें कम न दिया करो और ज़मीन में ख़राबी करते न फिरो। (८५) अगर तुम को (मेरे कहने का) यक़ीन हो तो ख़ुदा का दिया हुआ नफ़ा ही तुम्हारे लिए है और मैं तुम्हारा निगेहबान नहीं हूं। (८६) उन्होंने कहा, शुऐब ! क्या तुम्हारी नमाज़ तुम्हें यह सिखाती है कि जिन को हमारे बाप-दादा पूजते आए हैं, हम उनको छोड़ दें या अपने माल से जो काम लेना चाहें, न लें। तुम बड़े नर्म दिल और रास्तबाज़ हो। (८७) उन्होंने कहा कि ऐ क़ौम ! देखो तो, अगर मैं अपने परवरदिगार की तरफ़ से रोशन दलील पर हूं और उस ने अपने यहां से मुझे नेक रोज़ी दी हो। (तो क्या मैं उनके ख़िलाफ़ करूंगा ?) और मैं नहीं चाहता कि जिस बात से मैं तुम्हें मना करूं, ख़ुद मैं उसको करने लगूं, मैं तो जहां तक मुझ से हो सके (तुम्हारे मामलों की) इस्लाह चाहता हूं और (इस बारे में) मुझे तौफ़ीक़ का मिलना ख़ुदा ही (के फ़ज़्ल) से है। मैं उसी पर भरोसा रखता हूं और उसी की तरफ़ रुजूअ करता हूं। (८८) और ऐ क़ौम ! मेरी मुख़ालफ़त तुम से कोई ऐसा काम न करा दे कि जैसी मुसीबत नूह की क़ौम या हूद की क़ौम या सालेह की क़ौम पर वाक़ेअ हुई थी, वैसी ही मुसीबत तुम पर वाक़ेअ हो और लूत की क़ौम (का ज़माना तो) तुम से कुछ दूर नहीं। (८९)

(पृष्ठ ३६३ का शेष)

बशारत भी मिल गयी और उन का डर भी दूर हो गया, तो वह हज़रत लूत के बारे में फ़रिश्तों से बातें करने लगे, जिस को ख़ुदा ने अपने से मुताल्लिक़ फ़रमाया है। वे बातें यह थीं कि जब फ़रिश्तों ने कहा कि हम लूत के गांव को तबाह करने आये हैं, तो हज़रत इब्राहीम ने कहा, क्या तुम ऐसे गांव को तबाह करोगे, जिस में तीन सौ मोमिन रहते हैं। फ़रिश्तों से कहा, नहीं। फिर इब्राहीम ने कहा, क्या तुम ऐसे गांव को हलाक करोगे, जिस में चालीस मोमिन हैं? कहा नहीं। फिर उन्होंने कहा, भला जिस गांव में तीस या बीस या दस या पांच मोमिन हों, क्या तुम उस को भी हलाक करोगे ? कहा, नहीं। फिर उन्हों ने कहा कि अगर उस गांव में एक ही मोमिन हो, तब भी उसे तबाह कर दोगे ? कहा, नहीं। तब इब्राहीम ने कहा कि उस गांव में तो लूत हैं। उन्हों ने कहा, जो-जो उस में हैं, मालूम हैं। हम लूत को और उन के घर वालों को तो बचा लेंगे, पर उन की औरत नहीं बचेगी। हज़रत इब्राहीम, चूंकि बहुत नर्म दिल थे, इस लिए चाहते थे कि इन लोगों के अज़ाब में देर हो जाए, तो अच्छा

(शेष पृष्ठ ३६७ पर)

वस्तग़फ़िरू रब्बकुम् सुम्-म तूबू इलैहि ط इन्-न रब्बी रहीमुंव्वदूद (९०) क़ालू या शुअैबु मा नफ़्क़हु कसीरम्-मिम्मा तक़ूलु व इन्ना ल-नरा-क फ़ीना ज़ईफ़न् ج व लौला रह्तु-क ल-र-जम्ना-क ز व मा अन्-त अलैना बि-अज़ीज़ (९१) क़ा-ल या क़ौमि अ-रह्ती अ-अज़्ज़ु अलैकुम् मिनल्लाहि ط वत्तख़ज़्तुमूहु वरा-अकुम् ज़िह्रिय्यन् ط इन्-न रब्बी बिमा तअ्-मलू-न मुहीत (९२) व या क़ौमिअ्-मलू अला मकानतिकुम् इन्नी आमिलुन् ط सौ-फ़ तअ्-लमून ٧ मंय्यअ्तीहि अज़ाबुंय्युख़्ज़ीहि व मन् हु-व काज़िबुन् ط वर्तक़िबू इन्नी म-अकुम् रक़ीब (९३) व लम्मा जा-अ अम्रुना नज्जैना शुअैबंव्वल्-लज़ी-न आमनू म-अहू बिरह्मतिम्-मिन्ना व अ-ख़-ज़तिल्लज़ी-न ज़-ल-मुस्सैहतु फ़-अस्बहू फ़ी दियारिहिम् जासिमीन ٧ (९४) क-अल्लम् यग़्नौ फ़ीहा ط अला बुअ्-दल्-लि मद्-य-न कमा बअिदत् समूद ★ (९५)

اوقوم هود او قوم صلح وما قوم لوط منكم ببعيد ۝ واستغفروا
ربكم ثم توبوا اليه ان ربي رحيم ودود ۝ قالوا يشعيب ما
نفقه كثيرا مما تقول وانا لنرىك فينا ضعيفا ولولا رهطك
لرجمنك وما انت علينا بعزيز ۝ قال يقوم ارهطي اعز عليكم
من الله واتخذتموه وراءكم ظهريا ان ربي بما تعملون محيط ۝
ويقوم اعملوا على مكانتكم اني عامل سوف تعلمون من ياتيه
عذاب يخزيه ومن هو كاذب وارتقبوا اني معكم رقيب ۝ ولما
جاء امرنا نجينا شعيبا والذين امنوا معه برحمة منا واخذت
الذين ظلموا الصيحة فاصبحوا في ديرهم جثمين ۝ كان لم
يغنوا فيها الا بعدا لمدين كما بعدت ثمود ۝ ولقد ارسلنا
موسى بايتنا وسلطن مبين ۝ الى فرعون وملايه فاتبعوا
امر فرعون وما امر فرعون برشيد ۝ يقدم قومه يوم
القيمة فاوردهم النار وبئس الورد المورود ۝ واتبعوا في
هذه لعنة ويوم القيمة بئس الرفد المرفود ۝ ذلك من
انباء القرى نقصه عليك منها قائم وحصيد ۝ وما ظلمنهم
ولكن ظلموا انفسهم فما اغنت عنهم الهتهم التي يدعون
من دون الله من شيء لما جاء امر ربك وما زادوهم غير تتبيب ۝

व ल-क़द् अर्सल्ना मूसा बिआयातिना व सुल्तानिम्-मुबीन ٧ (९६) इला फ़िर्औ-न व म-लइही फ़त्तबअू अम्-र फ़िर्औ-न ج व मा अम्रु फ़िर्औ-न बिरशीद (९७) यक़्दुमु क़ौमहू यौमल्-क़ियामति फ़-औ-र-द हुमुन्ना-र ط व बिअ्सल्-विर्दुल्-मौरूद (९८) व उत्बिअू फ़ी हाज़िही लअ्-नतंव्-व यौमल्-क़ियामति ط बिअ्सर्रिफ़्दुल्-मर्फ़ूद (९९) ज़ालि-क मिन् अम्बाइल्क़ुरा नक़ुस्सुहू अलै-क मिन्हा क़ाइमुंव्-व हसीद (१००) व मा ज़-लम्नाहुम् व लाकिन् ज़-लमू अन्फ़ुसहुम् फ़मा अग़्-नत् अन्-हुम् आलिहतुहुमुल्लती यद्अू-न मिन् दूनिल्लाहि मिन् शैइल्लम्मा जा-अ अम्रु रब्बि-क ط व मा ज़ादूहुम् ग़ै-र तत्बीब (१०१)

★रु. ८/६ आ १२

और अपने परवरदिगार से बख़्शिश मांगो और उसके आगे तौबा करो। बेशक मेरा परवरदिगार रहम वाला और मुहब्बत वाला है।[1] (६०) उन्होंने कहा कि शुऐब ! तुम्हारी बहुत सी बातें हमारी समझ में नहीं आतीं और हम देखते हैं कि तुम हम में कमज़ोर भी हो और अगर तुम्हारे भाई-बंद न होते, तो हम तुमको संगसार कर देते और तुम हम पर (किसी तरह भी) ग़ालिब नहीं हो। (६१) उन्होंने कहा कि क़ौम ! क्या मेरे भाई-बंदों का दबाव तुम पर ख़ुदा से ज़्यादा है और उसको तुम ने पीठ पीछे डाल रखा है। मेरा परवरदिगार तो तुम्हारे सब अमाल पर एहाता किये हुए है। (६२) और मेरी क़ौम ! तुम अपनी जगह काम किये जाओ, मैं (अपनी जगह) काम किये जाता हूं। तुमको बहुत जल्द मालूम हो जाएगा कि रुसवा करने वाला अज़ाब किस पर आता है और झूठा कौन है और तुम भी इंतिज़ार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इंतिज़ार करता हूं। (६३) और जब हमारा हुक्म आ पहुंचा तो हमने शुऐब को और जो लोग उन के साथ ईमान लाए थे, उन को तो अपनी रहमत से बचा लिया और जो ज़ालिम थे, उनको चिंघाड़ ने आ दबोचा, तो वह अपने घरों में औंधे पड़े रह गये। (६४) गोया उनमें कभी बसे ही न थे। सुन रखो कि मदयन पर (वैसी ही) फिटकार है, जैसी समूद पर फिटकार थी। (६५) ✱

और हमने मूसा को अपनी निशानियां और रोशन दलील देकर भेजा। (६६) (यानी) फ़िऔन और उसके सरदारों की तरफ़, तो वह फ़िऔन ही के हुक्म पर चले और फ़िऔन का हुक्म दुरुस्त नहीं था। (६७) वह क़ियामत के दिन अपनी क़ौम के आगे-आगे चलेगा और उनको दोज़ख़ में जा उतारेगा और जिस मक़ाम पर वे उतारे जाएंगे, वह बुरा है। (६८) और इस दुनिया में भी लानत उनके पीछे लगा दी गयी और क़ियामत के दिन भी (पीछे लगी रहेगी), जो इनाम उन को मिला है, बुरा है। (६९) ये (पुरानी) बस्तियों के थोड़े से हालात हैं, जो हम तुम से बयान करते हैं। इन में से कुछ तो बाक़ी हैं और कुछ का तहस-नहस हो गया। (१००) और हमने उन लोगों पर ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि उन्होंने ख़ुद अपने ऊपर ज़ुल्म किया, ग़रज़ जब तुम्हारे परवरदिगार का हुक्म आ पहुंचा, तो जिन माबूदों को, वे ख़ुदा के सिवा पुकारा करते थे, वह उनके कुछ भी काम न आए और तबाह करने के सिवा उनके हक़ में और कुछ न कर सके। (१०१) और

(पृष्ठ ३६५ का शेष)

है। शायद वे ईमान ले आएं और बद-फ़ेलियों से रुक जाएं। फ़रिश्तों ने इब्राहीम से कहा, यह ख़्याल छोड़ दीजिए, उन के लिए अज़ाब का हुक्म हो चुका है और अज़ाब हो कर रहेगा।

१. मदयन हज़रत इब्राहीम के बेटे का नाम था, फिर उन की औलाद में से एक क़बीले का यह नाम हो गया। इस जगह यही क़बीला मुराद है।

१. 'वदूद' (मुहब्बत वाला) यानी बंदों को दोस्त रखे या बंदे उस को दोस्त रखें। क़ुत्बुल अब्रार मौलाना याक़ूब चर्ख़ी क़द्द-स सिर्रहू 'शरहे' 'अस्माउल्लाह' में वदूद के मानी इस तरह बयान किये हैं कि तमाम ख़ल्क़ के साथ नेकी का दोस्त रखने वाला और उन दिलों का दोस्त कि जो हक़ की तरफ़ झुके हुए हैं, यानी वह नेकी को दोस्त रखता है और नेक लोग उस को दोस्त रखते हैं।

★रु. ८/८ आ १२

व कज़ालि-क अख़्ज़ु रब्बि-क इज़ा अ-ख़-ज़ल्क़ुरा व हि-य ज़ालिमतुन् इन्-न अख़्-ज़हू अलीमुन् शदीद (१०२) इन्-न फ़ी ज़ालि-क ल-आयतल्-लिमन् ख़ा-फ़ अज़ाबल्-आख़िरति ज़ालि-क यौमुम् - मज्मूअुल् - लहुन्नासु व ज़ालि - क यौमुम्मश्हूद (१०३) व मा नु-अख़्ख़िरुहू इल्ला लिअ - जलिम्-मअ्-दूद

(१०४) यौ-म यअ्ति ला त-कल्लमु नफ़्सुन् इल्ला बिइज़्निही फ़मिन्हुम् शक़िय्युंव-व सअीद (१०५) फ़-अम्मल्लज़ी-न शक़ू फ़फ़िन्नारि लहुम् फ़ीहा ज़फ़ीरुंव-व शहीक़ (१०६) ख़ालिदी-न फ़ीहा मा दामतिस्-समावातु वल्अर्ज़ु इल्ला मा शा - अ रब्बु-क इन्-न रब्ब-क फ़अ् - आलुल्लिमा युरीद (१०७) व अम्मल्लज़ी-न सुअिदू फ़फ़िल्जन्नति ख़ालिदी-न फ़ीहा मा दामतिस्-समावातु वल्अर्ज़ु इल्ला मा शा - अ रब्बु-क अ़ता-अन् ग़ै-र मज्ज़ूज़ (१०८) फ़ला तकु फ़ी मिर्यतिम्मिम्मा यअ्-बुदु हा-उलाइ मा यअ्-बुदू - न इल्ला कमा

وكذلك اخذ ربك اذا اخذ القرى وهي ظالمة ان اخذه
اليم شديد ۝ ان في ذلك لاية لمن خاف عذاب الاخرة ذلك
يوم مجموع له الناس وذلك يوم مشهود ۝ وما نؤخره الا
لاجل معدود ۝ يوم يات لا تكلم نفس الا باذنه فمنهم
شقي وسعيد ۝ فاما الذين شقوا ففي النار لهم فيها زفير و
شهيق ۝ خلدين فيها ما دامت السموت والارض الا ما شاء
ربك ان ربك فعال لما يريد ۝ واما الذين سعدوا ففي الجنة
خلدين فيها ما دامت السموت والارض الا ما شاء ربك عطاء
غير مجذوذ ۝ فلا تك في مرية مما يعبد هؤلاء ما يعبدون
الا كما يعبد اباؤهم من قبل وانا لموفوهم نصيبهم غير
منقوص ۝ ولقد اتينا موسى الكتب فاختلف فيه ولولا كلمة
سبقت من ربك لقضي بينهم وانهم لفي شك منه مريب ۝
وان كلا لما ليوفينهم ربك اعمالهم انه بما يعملون خبير ۝
فاستقم كما امرت ومن تاب معك ولا تطغوا انه بما تعملون
بصير ۝ ولا تركنوا الى الذين ظلموا فتمسكم النار وما لكم
من دون الله من اولياء ثم لا تنصرون ۝ واقم الصلوة
طرفي النهار وزلفا من اليل ان الحسنت يذهبن السيات

यअ्-बुदु आबाउहुम् मिन् क़ब्लु व इन्ना लमुवफ़्फ़ूहुम् नसीबहुम् ग़ै - र मन्क़ूस ★(१०९) व-ल-क़द् आतैना मूसल्किता - ब फ़ख़्तुलि - फ़ फ़ीहि व लौला कलिमतुन् स-ब-क़त् मिर्रब्बि-क लक़ुज़ि-य बैनहुम् व इन्नहुम् लफ़ी शक्किम्-मिन्हु मुरीब (११०) व इन् - न कुल्लल्लम्मा लयुवफ़्फ़ियन्नहुम् रब्बु-क अअ्-मालहुम् इन्नहू बिमा यअ्-मलू-न ख़बीर (१११) फ़स्तक़िम् कमा उमिर-त व मन् ता-ब म-अ-क व ला तत़्ग़ौ इन्नहू बिमा तअ्-मलू-न बसीर (११२) व ला तर्कनू इलल्लज़ी-न ज़-लमू फ़-त-मस्सकुमुन्नारु व मा लकुम् मिन् दूनिल्लाहि मिन् औलिया-अ सुम्-म ला तुन्सरून (११३) व अक़िमिस्सला-त त़-र - फ़यिन्नहारि व ज़ु-ल-फ़म् - मिनल्लैलि इन्नल् - ह़-स-नाति युज़्हिब्नस्-सय्यिआति ज़ालि-क ज़िक्रा लिज़्ज़ाकिरीन (११४)

★रु. ९/९ आ १४

तुम्हारा परवरदिगार जब ना-फ़रमान बस्तियों को पकड़ा करता है, तो उस की पकड़ इसी तरह की होती है। बेशक उसकी पकड़ दुख देने वाली (और) सख्त है। (१०२) इन (क़िस्सों) में उस शख्स के लिए, जो आखिरत के अज़ाब से डरे, इब्रत है। यह वह दिन होगा, जिसमें सब लोग इकट्ठे किए जाएंगे और यही वह दिन होगा, जिसमें सब (खुदा के सामने) हाज़िर किए जाएंगे। (१०३) और हम उसके लाने में एक तै वक़्त तक ताखीर कर रहे हैं। (१०४) जिस दिन वह आ जाएगा, तो कोई शख्स खुदा के हुक्म के बग़ैर बोल भी नहीं सकेगा। फिर उनमें से कुछ बद-बख्त होंगे और कुछ नेक-बख्त। (१०५) तो जो बद-बख्त होंगे वे दोजख में (डाल दिए जाएंगे), उस में उनको चिल्लाना और धाड़ना होगा। (१०६) (और) जब तक आसमान व ज़मीन हैं, हमेशा उसी में रहेंगे, मगर जितना तुम्हारा परवरदिगार चाहे। बेशक तुम्हारा परवरदिगार जो चाहता है, कर देता है। (१०७) और जो नेक-बख्त होंगे, वे बहिश्त में (दाखिल किए जाएंगे और) जब तक आसमान और ज़मीन हैं, हमेशा इसी में रहेंगे, मगर जितना तुम्हारा परवरदिगार चाहे, यह (खुदा की) बख्शिश है, जो कभी खत्म नहीं होगी। (१०८) तो ये लोग, जो (ग़ैर-खुदा की) पूजा करते हैं, उस से तुम शक में न पड़ना, ये इसी तरह पूजा करते हैं, जिस तरह पहले से इन के बाप-दादा पूजा करते आये हैं और हम उन को उन का हिस्सा पूरा-पूरा बग़ैर कुछ घटाए-बढ़ाए देने वाले हैं। (१०९) ★

और हमने मूसा को किताब दी, तो उसमें इख्तिलाफ़ किया गया और अगर तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से एक बात पहले न हो चुकी होती, तो उन में फ़ैसला कर दिया जाता और वे तो इस से भारी शुब्हे में (पड़े हुए) हैं। (११०) और तुम्हारा परवरदिगार इन सब को (क़ियामत के दिन) उन के आमाल का पूरा-पूरा बदला देगा। बेशक जो अमल ये करते हैं, वह उसे जानता है। (१११) सो (ऐ पैग़म्बर!) जैसा तुम को हुक्म होता है (उस पर) तुम और जो लोग तुम्हारे साथ तौबा कर चुके हैं, क़ायम रहो और हद से आगे न जाना। वह तुम्हारे सब अमल देख रहा है। (११२) और जो लोग ज़ालिम हैं, उन की तरफ़ मायल न होना, नहीं तो तुम्हें (दोजख की) आग आ लिपटेगी और खुदा के सिवा तुम्हारे और दोस्त नहीं हैं। अगर तुम ज़ालिमों की तरफ़ मायल हो गये, तो फिर तुम को (कहीं से) मदद न मिल सकेगी। (११३) और दिन के दोनों सिरों (यानी सुबह और शाम के वक़्तों में और रात की चंद पहली) साअतों में नमाज़ पढ़ा करो। कुछ शक नहीं कि नेकियां गुनाहों को दूर कर देती हैं, यह उनके लिए नसीहत है, जो नसीहत

★रु. ९/९ आ १४

वस्बिर् फ़-इन्नल्ला-ह ला युज़ीअु अज्-रल्-मुह्सिनीन (११५) फ़लौला का-न मिनल्क़ुरूनि मिन् क़ब्लिकुम् उलू बक़िय्यतिंय्यन्हौ-न अनिल्फ़सादि फ़िल्अर्ज़ि इल्ला क़लीलम्-मिम्मन् अन्जैना मिन्हुम् ८ वत्त - ब - अल्लज़ी-न ज़लमू मा उत्रिफ़ू फ़ीहि व कानू मुज्रिमीन (११६) व मा का - न रब्बु-क लियुह्लिकल्-क़ुरा बिज़ुल्मिंव् - व अह्लुहा मुस्लिहून (११७) व लौ शा-अ रब्बु-क ल-ज-अ-लन्ना-स उम्मतंव्वाहि-दतंव् - व ला यज़ालू-न मुख़्तलिफ़ीन ⫽ (११८) इल्ला मर्रहि-म रब्बुक ♭ व लिज़ालि-क ख़-ल-क़हुम् ♭ व तम्मत् कलिमतु रब्बि - क ल अम्-ल-अन्-न जहन्न-म मिनल्-जिन्नति वन्नासि अज्-मअ़ीन (११९) व कुल्लन् नक़ुस्सु अलै-क मिन् अम्बाइर्रुसुलि मा नुसब्बितु बिही फ़ुआ-द - क ८ व जा - अ-क फ़ी हाज़िहिल्-हक़्क़ु व मौअ़िज़तुंव्-व ज़िक्रा लिल्मुअ्मिनीन (१२०) व क़ुल् लिल्लज़ी-न ला युअ्मिनूनअ्-मलू अ़ला मकानतिकुम् ♭ इन्ना आमिलून ⫽ (१२१) वन्तज़िरू ८ इन्ना मुन्तज़िरून (१२२) व लिल्लाहि ग़ैबुस्समावाति वल्अर्ज़ि व इलैहि युर्जअुल्-अम्रु कुल्लुहू फ़अ्-बुद्हु व त-वक्कल् अलैहि ♭ व मा रब्बु-क बिग़ाफ़िलिन् अम्मा तअ्-मलून ★ (१२३)

ذٰلِكَ ذِكْرٰى لِلذّٰكِرِيْنَ ۝ وَاصْبِرْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ
الْمُحْسِنِيْنَ ۝ فَلَوْلَا كَانَ مِنَ الْقُرُوْنِ مِنْ قَبْلِكُمْ اُولُوْا بَقِيَّةٍ
يَّنْهَوْنَ عَنِ الْفَسَادِ فِي الْاَرْضِ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّنْ اَنْجَيْنَا مِنْهُمْ
وَاتَّبَعَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَآ اُتْرِفُوْا فِيْهِ وَكَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ۝ وَمَا كَانَ
رَبُّكَ لِيُهْلِكَ الْقُرٰى بِظُلْمٍ وَّاَهْلُهَا مُصْلِحُوْنَ ۝ وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ
لَجَعَلَ النَّاسَ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلَا يَزَالُوْنَ مُخْتَلِفِيْنَ ۝ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ
رَبُّكَ وَلِذٰلِكَ خَلَقَهُمْ وَتَمَّتْ كَلِمَةُ رَبِّكَ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ
الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ۝ وَكُلًّا نَّقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الرُّسُلِ
مَا نُثَبِّتُ بِهٖ فُؤَادَكَ وَجَآءَكَ فِيْ هٰذِهِ الْحَقُّ وَمَوْعِظَةٌ وَّذِكْرٰى
لِلْمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَقُلْ لِّلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ
اِنَّا عٰمِلُوْنَ ۝ وَانْتَظِرُوْا اِنَّا مُنْتَظِرُوْنَ ۝ وَلِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ وَاِلَيْهِ يُرْجَعُ الْاَمْرُ كُلُّهٗ فَاعْبُدْهُ وَتَوَكَّلْ عَلَيْهِ
وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝

سُوْرَةُ يُوْسُفَ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ مِائَةٌ وَّاَحَدَ عَشَرَ اٰيَةً وَّاثْنَا عَشَرَ رُكُوْعًا

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓرٰ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۝ اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ
تَعْقِلُوْنَ ۝ نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ اَحْسَنَ الْقَصَصِ بِمَآ اَوْحَيْنَآ

१२ सूरतु यूसु-फ़ ५३

(मक्की) इस सूरः में अरबी के ७४११ अक्षर, १८०८ शब्द, १११ आयत और १२ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

अलिफ़् - लाम् - रा ﻗﻒ तिल - क आयातुल् - किताबिल् - मुबीन (१) इन्ना अन्ज़ल्नाहु क़ुर-आनन् अ-रबिय्यल्-ल-अल्लकुम् तअ्-क़िलून (२)

क़ुबूल करने वाले हैं। (११४) और सब्र किये रहो कि ख़ुदा नेक लोगों का बदला बर्बाद नहीं करता। (११५) तो जो उम्मतें तुम से पहले गुज़र चुकी हैं, उनमें ऐसे होशमंद क्यों न हुए, जो मुल्क में ख़राबी करने से रोकते, हां (ऐसे) थोड़े से (थे), जिन को हम ने उन में से मुख़्लिसी बख़्शी और जो ज़ालिम थे, उन्हीं बातों के पीछे लगे रहे, जिन में ऐश व आराम था और वे गुनाहों में डूबे हुए थे। (११६) और तुम्हारा परवरदिगार ऐसा नहीं है कि बस्तियों में, जबकि वहां के रहने वाले नेक हों ज़ुल्म के तौर पर तबाह कर दे। (११७) और अगर तुम्हारा परवरदिगार चाहता तो तमाम लोगों को एक ही जमाअत कर देता, लेकिन वे हमेशा इख़्तिलाफ़ करते रहेंगे। (११८) मगर जिन पर तुम्हारा परवरदिगार रहम करे और इसी लिए उस ने उनको पैदा किया है और तुम्हारे परवरदिगार का क़ौल पूरा हो गया कि मैं दोज़ख़ को जिन्नों और इंसानों, सब से भर दूंगा। (१२०) ऐ (मुहम्मद !) और पैग़म्बरों के वे सब हालात जो हम तुम से बयान करते हैं, उन से हम तुम्हारे दिल को क़ायम रखते हैं और इन (क़िस्सों) में तुम्हारे पास हक़ पहुंच गया और (यह) मोमिनों के लिए नसीहत और इब्रत है। (१२०) और जो लोग ईमान नहीं लाए उन से कह दो कि तुम अपनी जगह अमल किये जाओ, हम (अपनी जगह) अमल किये जाते हैं। (१२१) और (आमाल के नतीजे का) तुम भी इन्तिज़ार करो, हम भी इन्तिज़ार करते हैं। (१२२) और आसमानों और ज़मीन की छिपी चीज़ों का इल्म ख़ुदा ही को है और तमाम मामलों का पलटना उसी की तरफ़ है, तो उसी की इबादत करो और उसी पर भरोसा रखो और जो कुछ तुम कर रहे हो, तुम्हारा परवरदिगार उस से बे-ख़बर नहीं। (१२३) ★

१२ सूरः यूसुफ़ ५३

सूरः यूसुफ़ मक्की है और इसमें एक सौ ग्यारह आयतें और बारह रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ़-लाम-रा, यह रोशन किताब की आयतें हैं। (१) हमने इस क़ुरआन को अरबी में नाज़िल किया है, ताकि तुम समझ सको। (२) (ऐ पैग़म्बर !) हम इस क़ुरआन के ज़रिए से, जो

★रु. १०/१० आ १४

नह़्नु नक़ुस्सु अलै-क अह़्-स-नल्-क़-स़सि बिमा औहैना इलै-क हाज़ल्-क़ुर्आ-न ق व इन् कुन्-त मिन् क़ब्लिही लमिनल्ग़ाफ़िलीन (३) इज़् क़ा-ल यूसुफ़ु लि-अबीहि या अ-बति इन्नी र-ऐतु अ-ह़-द अ-श-र कौकबव्वश्शम-स वल्क़-म-र रऐतुहुम् ली साजिदीन (४) क़ा-ल या बुनय्-य ला तक़्सुस् रुअ्-या-क अला इख़्वति-क फ़-यकीदू ल-क कैदन् ط इन्नश्शैता-न लिल्इन्सानि अदुव्वुम्-मुबीन (५) व कज़ालि-क यज्तबी-क रब्बु-क व युअ़ल्लिमु-क मिन् तअ्वीलिल्-अह़ादीसि व युतिम्मु निअ़्-म-तहू अलै-क व अला आलि यअ़्-क़ू-ब कमा अतम्महा अला अ-बवै-क मिन् क़ब्लु इब्राही-म व इस्हा-क़ ط इन्-न रब्ब-क अ़लीमुन् ह़कीम ★(६) ल-क़द् का-न फ़ी यूसु-फ़ व इख़्वतिही आयातुल्लिस्-सा-इलीन (७) इज़् क़ालू ल-यूसुफ़ु व अख़ूहु अह़ब्बु इला अबीना मिन्ना व नह़्नु अुस्बतुन् ط इन्-न अबाना लफ़ी ज़लालिम्-मुबीन صلے (८) उक़्तुलू यूसु-फ़ अविद़्रहूहु अर-ज़ंय्यख़्लु लकुम् वज्हु अबीकुम् व तकूनू मिम्बअ़्-दिही क़ौमन् सालिह़ीन (९) क़ा-ल क़ाइलुम्-मिन्हुम् ला तक़्तुलू यूसु-फ़ व अल्क़ूहु फ़ी ग़याबतिल्-जुब्बि यल्तक़ित्हु बअ़्-ज़ुस्-सय्यारति इन् कुन्तुम् फ़ाअ़िलीन (१०) क़ालू या अबाना माल-क ला तअ्मन्ना अला यूसु-फ़ व इन्ना लहू लनासिह़ून (११) अर्सिल्हु म-अ़ना ग़दंय्यर्तअ़् व यल-अ़ब् व इन्ना लहू लहाफ़िज़ून (१२) क़ा-ल इन्नी ल-यह़्ज़ुनुनी अन् तज़्हबू बिही व अख़ाफ़ु अंय्यअ्कुलहुज़्ज़िअ्बु व अन्तुम् अ़न्हु ग़ाफ़िलून (१३) क़ालू लइन् अ-क-लहुज़्ज़िअ्बु व नह़्नु अुस्बतुन् इन्ना इज़ल्लख़ासिरून (१४)

إِلَيْكَ هَٰذَا الْقُرْآنَ ۖ وَإِن كُنتَ مِن قَبْلِهِ لَمِنَ الْغَافِلِينَ ۝ إِذْ قَالَ
يُوسُفُ لِأَبِيهِ يَا أَبَتِ إِنِّي رَأَيْتُ أَحَدَ عَشَرَ كَوْكَبًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ
رَأَيْتُهُمْ لِي سَاجِدِينَ ۝ قَالَ يَا بُنَيَّ لَا تَقْصُصْ رُؤْيَاكَ عَلَىٰ إِخْوَتِكَ
فَيَكِيدُوا لَكَ كَيْدًا ۖ إِنَّ الشَّيْطَانَ لِلْإِنسَانِ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ۝ وَكَذَٰلِكَ
يَجْتَبِيكَ رَبُّكَ وَيُعَلِّمُكَ مِن تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ وَيُتِمُّ نِعْمَتَهُ
عَلَيْكَ وَعَلَىٰ آلِ يَعْقُوبَ كَمَا أَتَمَّهَا عَلَىٰ أَبَوَيْكَ مِن قَبْلُ إِبْرَاهِيمَ وَ
إِسْحَاقَ ۚ إِنَّ رَبَّكَ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝ لَّقَدْ كَانَ فِي يُوسُفَ وَإِخْوَتِهِ
آيَاتٌ لِّلسَّائِلِينَ ۝ إِذْ قَالُوا لَيُوسُفُ وَأَخُوهُ أَحَبُّ إِلَىٰ أَبِينَا مِنَّا وَ
نَحْنُ عُصْبَةٌ إِنَّ أَبَانَا لَفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝ اقْتُلُوا يُوسُفَ
أَوِ اطْرَحُوهُ أَرْضًا يَخْلُ لَكُمْ وَجْهُ أَبِيكُمْ وَتَكُونُوا مِن بَعْدِهِ قَوْمًا
صَالِحِينَ ۝ قَالَ قَائِلٌ مِّنْهُمْ لَا تَقْتُلُوا يُوسُفَ وَأَلْقُوهُ فِي غَيَابَتِ
الْجُبِّ يَلْتَقِطْهُ بَعْضُ السَّيَّارَةِ إِن كُنتُمْ فَاعِلِينَ ۝ قَالُوا يَا أَبَانَا
مَا لَكَ لَا تَأْمَنَّا عَلَىٰ يُوسُفَ وَإِنَّا لَهُ لَنَاصِحُونَ ۝ أَرْسِلْهُ مَعَنَا غَدًا
يَرْتَعْ وَيَلْعَبْ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ ۝ قَالَ إِنِّي لَيَحْزُنُنِي أَن تَذْهَبُوا
بِهِ وَأَخَافُ أَن يَأْكُلَهُ الذِّئْبُ وَأَنتُمْ عَنْهُ غَافِلُونَ ۝ قَالُوا لَئِنْ
أَكَلَهُ الذِّئْبُ وَنَحْنُ عُصْبَةٌ إِنَّا إِذًا لَّخَاسِرُونَ ۝ فَلَمَّا ذَهَبُوا بِهِ
وَأَجْمَعُوا أَن يَجْعَلُوهُ فِي غَيَابَتِ الْجُبِّ ۚ وَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِ لَتُنَبِّئَنَّهُم

★रु. १/११ आ ६

हमने तुम्हारी तरफ़ भेजा है, तुम्हें एक बहुत अच्छा क़िस्सा सुनाते हैं और तुम इस से पहले बे-ख़बर थे। (३) जब यूसुफ़ ने अपने वालिद से कहा कि अब्बा ! मैं ने (ख़्वाब में) ग्यारह सितारों और सूरज और चांद को देखा है। देखता (क्या) हूं कि वे मुझे सज्दा कर रहे हैं। (४) उन्होंने कहा कि बेटा ! अपने ख़्वाब का ज़िक्र अपने भाइयों से न करना, नहीं तो वे तुम्हारे हक़ में फ़रेब की की चाल चलेंगे। कुछ शक नहीं कि शैतान इंसान का खुला दुश्मन है। (५)और इसी तरह ख़ुदा तुम्हें बर्गुज़ीदा (चुना हुआ ख़ास) करेगा और (ख़्वाब की) बातों की ताबीर का इल्म सिखाएगा और जिस तरह उस ने अपनी नेमत पहले तुम्हारे दादा, परदादा इब्राहीम और इस्हाक़ पर पूरी की थी, उसी तरह तुम पर और याक़ूब की औलाद पर पूरी करेगा । बेशक तुम्हारा परवरदिगार (सब कुछ) जानने वाला (और) हिक्मत वाला है। (६) ★

हां, यूसुफ़ और उन के भाइयों (के क़िस्से) में पूछने वालों के लिए (बहुत सी) निशानियां हैं।[१] (७) जब उन्होंने (आपस में) तज़्किरा किया कि यूसुफ़ और उसका भाई अब्बा को हम से ज़्यादा प्यारे हैं, हालांकि हम जमाअत (की जमाअत) हैं। कुछ शक नहीं कि अब्बा खुली ग़लती पर हैं।[२] (८) तो यूसुफ़ को (या तो जान से) मार डालो या किसी मुल्क में फेंक आओ, फिर अब्बा की तवज्जोह सिर्फ़ तुम्हारी तरफ़ हो जाएगी और इसके बाद तुम अच्छी हालत में हो जाओगे। (९) उन में से एक कहने वाले ने कहा कि यूसुफ़ को जान से न मारो, किसी गहरे कुएं में डाल दो कि कोई राह चलता आदमी निकाल (कर और मुल्क में) ले जाएगा। अगर तुम को करना है (तो यों करो)। (१०) (यह मश्विरे कर के वे याक़ूब से) कहने लगे कि अब्बा जान ! क्या वजह है कि आप यूसुफ़ के बारे में हमारा एतबार नहीं करते, हालांकि हम उस के ख़ैरख़्वाह हैं। (११) कल उसे हमारे साथ भेज दीजिए कि ख़ूब मेवे खाये और खेले-कूदे। हम उस के निगहबान हैं। (१२) उन्होंने कहा कि यह बात मुझे ग़मनाक किये देती है कि तुम उसे ले जाओ (यानी वह मुझ से जुदा हो जाए) और मुझे यह ख़ौफ़ है कि तुम (खेल में) उस से ग़ाफ़िल हो जाओ और उसे भेड़िया खा जाए। (१३) वे कहने लगे कि अगर हमारी मौजूदगी में, कि हम एक ताक़तवर जमाअत हैं, भेड़िया

---

१. यहूदियों ने जनाब रिसालत मआब से कहा कि हमें उन पैग़म्बर का हाल बताइए, जो शाम में रहते थे और उन का बेटा मिस्र की तरफ़ निकाल दिया गया था। वह बेटे के ग़म में इतना रोते रहे कि आंख की रोशनी जाती रही। कहते हैं कि उस वक़्त मक्का में कोई शख़्स अह्ले किताब में से न था और न कोई ऐसा आदमी था जो पिछले नबियों के हालात का इल्म रखता हो। इस लिए यहूदियों ने एक शख़्स को मदीने से यह सवाल करने को हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास मक्का में भेजा, तब ख़ुदा ने यह सूरः नाज़िल फ़रमायी।

२. हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के ग्यारह भाई थे, जिन में से दस तो सौतेले थे और एक सगे। उन का नाम बिन यामीन था और यह सब में छोटे थे। यहां 'इस के भाई' से मुराद यही बिन यामीन हैं।

★रु. १/११ आ ६

फ़-लम्मा ज-हबू बिही व अज-मअू अंय्यज-अलूहु फ़ी ग़याबतिल्-जुब्बि ج व औहैना इलैहि ल-तुनब्बि-अन्न-हुम् बिअम्रिहिम् हाज़ा व हुम् ला यश-अुरून (१५) व जाऊ अबाहुम् अिशाअंय्यब-कून ط (१६) क़ालू या अबाना इन्ना ज-हब्ना नस्तबिक़ु व त-रक्ना यूसु-फ़ अिन्-द मताअिना फ़-अ-क-लहुज़्-ज़िअ्बु ج व मा अन्-त बिमुअ्मिनिल्लना व लौ कुन्ना सादिक़ीन ● (१७) व जाऊ अला क़मीसिही बिदमिन् कज़िबिन् ط क़ा-ल बल् सव्व-लत् लकुम् अन्फ़ुसुकुम् अम-रन् ط फ़ - सब्रुन् जमीलुन् ط वल्लाहुल् - मुस्तआनु अला मा तसिफ़ून (१८) व जा-अत् सय्यारतुन् फ़-अर्सलू वारि - दहुम् फ़-अद्ला दल्-वहू ط क़ा-ल या बुश्रा हाज़ा ग़ुलामुन् ط व अ - सर्रूहु बिज़ा - अ-तन् ط वल्लाहु अलीमुम् - बिमा यअ्-मलून (१९) व शरौहु बि-स-म-निम् - बख़्सिन् दराहि-म मअ् - दूदतिन् ج व कानू फ़ीहि मिनज़् - ज़ाहिदीन ★ (२०) व क़ालल्लज़िश्तराहु मिम्मिस्-र लिम-र-अतिही अक्रिमी मस्-वाहु असा अंय्यन्फ़-अना औ नत्तख़ि-ज़हू व-ल-दन् ط व कज़ालि-क मक्कन्ना लियूसु-फ़ फ़िल्अर्ज़ि ز व लिनु-अल्लिमहू मिन् तअ्वीलिल्-अहादीसि ط वल्लाहु ग़ालिबुन् अला अम्रिही व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला यअ्-लमून (२१) व लम्मा ब-ल-ग़ अशुद्दहू आतैनाहु हुक्मंव्-व अिल-मन् ط व कज़ालि-क नज्ज़िल्-मुह्सिनीन (२२) व रा-व-दत्-हुल्लती हु-व फ़ी बैतिहा अन् नफ़्सिही व ग़ल्ल-क़तिल्-अब-वा-ब व क़ालत् है-त लक ط क़ा-ल मआज़ल्लाहि इन्नहू रब्बी अह्-स-न मस्वा-य ط इन्नहू ला युफ़्लिहुज़्ज़ालिमून (२३) व ल-क़द् हम्मत् बिही ج व हम्-म बिहा लौला अर्रआ बुर्हा-न रब्बिही ط कज़ालि-क लिनस्रि-फ़ अन्हुस्सू - अ वल् - फ़ह्शा-अ ط इन्नहू मिन् अिबादिनल्-मुख़-लसीन (२४)

يوسف ١٢ — ١٨٩ — وما من دآبة ١٢

بِأَمْرِهِمْ هَٰذَا وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿١٥﴾ وَجَاءُوا أَبَاهُمْ عِشَاءً يَبْكُونَ ﴿١٦﴾
قَالُوا يَا أَبَانَا إِنَّا ذَهَبْنَا نَسْتَبِقُ وَتَرَكْنَا يُوسُفَ عِنْدَ مَتَاعِنَا فَأَكَلَهُ
الذِّئْبُ ۖ وَمَا أَنْتَ بِمُؤْمِنٍ لَنَا وَلَوْ كُنَّا صَادِقِينَ ﴿١٧﴾ وَجَاءُوا عَلَىٰ
قَمِيصِهِ بِدَمٍ كَذِبٍ ۚ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ أَنْفُسُكُمْ أَمْرًا ۖ فَصَبْرٌ
جَمِيلٌ ۖ وَاللَّهُ الْمُسْتَعَانُ عَلَىٰ مَا تَصِفُونَ ﴿١٨﴾ وَجَاءَتْ سَيَّارَةٌ فَأَرْسَلُوا
وَارِدَهُمْ فَأَدْلَىٰ دَلْوَهُ ۖ قَالَ يَا بُشْرَىٰ هَٰذَا غُلَامٌ ۚ وَأَسَرُّوهُ بِضَاعَةً ۚ وَ
اللَّهُ عَلِيمٌ بِمَا يَعْمَلُونَ ﴿١٩﴾ وَشَرَوْهُ بِثَمَنٍ بَخْسٍ دَرَاهِمَ مَعْدُودَةٍ
وَكَانُوا فِيهِ مِنَ الزَّاهِدِينَ ﴿٢٠﴾ وَقَالَ الَّذِي اشْتَرَاهُ مِنْ مِصْرَ
لِامْرَأَتِهِ أَكْرِمِي مَثْوَاهُ عَسَىٰ أَنْ يَنْفَعَنَا أَوْ نَتَّخِذَهُ وَلَدًا ۚ وَكَذَٰلِكَ
مَكَّنَّا لِيُوسُفَ فِي الْأَرْضِ وَلِنُعَلِّمَهُ مِنْ تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ ۚ
وَاللَّهُ غَالِبٌ عَلَىٰ أَمْرِهِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢١﴾ وَلَمَّا
بَلَغَ أَشُدَّهُ آتَيْنَاهُ حُكْمًا وَعِلْمًا ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿٢٢﴾
وَرَاوَدَتْهُ الَّتِي هُوَ فِي بَيْتِهَا عَنْ نَفْسِهِ وَغَلَّقَتِ الْأَبْوَابَ وَقَالَتْ
هَيْتَ لَكَ ۚ قَالَ مَعَاذَ اللَّهِ ۖ إِنَّهُ رَبِّي أَحْسَنَ مَثْوَايَ ۖ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ
الظَّالِمُونَ ﴿٢٣﴾ وَلَقَدْ هَمَّتْ بِهِ ۖ وَهَمَّ بِهَا لَوْلَا أَنْ رَأَىٰ بُرْهَانَ رَبِّهِ ۚ
كَذَٰلِكَ لِنَصْرِفَ عَنْهُ السُّوءَ وَالْفَحْشَاءَ ۚ إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُخْلَصِينَ ﴿٢٤﴾
وَاسْتَبَقَا الْبَابَ وَقَدَّتْ قَمِيصَهُ مِنْ دُبُرٍ وَأَلْفَيَا سَيِّدَهَا لَدَى الْبَابِ ۚ

● सु. ३/४ ★रु. २/१२ अर १४

खा गया, तो हम बड़े नुक़्सान में पड़ गये। (१४) ग़रज़ जब वे उस को ले गये और इस पर एक राय हो गये कि उसको गहरे कुएं में डाल दें, तो हमने यूसुफ़ की तरफ़ वह्य भेजी कि (एक वक़्त ऐसा आऐगा कि) तुम उन को इस व्यवहार से आगाह करोगे और उनको (इस वह्य की) कुछ ख़बर न होगी। (१५) (यह हरकत करके) वे रात के वक़्त बाप के पास रोते हुए आये, (१६) (और) कहने लगे कि अब्बाजान ! हम तो दौड़ने और एक दूसरे से आगे निकलने में लग गये और यूसुफ़ को अपने सामान के पास छोड़ गये तो भेड़िया खा गया और आप हमारी बात को, गो हम सच ही कहते हों, मान कर न देंगे ●(१७) और उनके कुरते पर झूठ-मूठ का लहू भी लगा लाये। याक़ूब ने कहा (कि हक़ीक़त यों नहीं है), बल्कि तुम अपने मन से (यह) बात बना लाये हो।[1] अच्छा सब्र (कि वही) ख़ूब (है) और जो तुम बयान करते हो, उसके बारे में ख़ुदा ही से मदद चाहिये। (१८) (अब ख़ुदा की शान देखो कि उस कुएं के क़रीब) एक क़ाफ़िला आया और उन्होंने (पानी के लिये) अपना सक़्क़ा भेजा। उस ने कुएं में डोल लटकाया (तो यूसुफ़ उससे लटक गये)। वह बोला, ज़हे क़िस्मत ! यह तो (निहायत हसीन) लड़का है और उसको क़ीमती सरमाया समझ कर छिपा लिया और जो कुछ वे करते थे, ख़ुदा को सब मालूम था। (१९) और उसको थोड़ी-सी क़ीमत (यानी) गिनती के कुछ दिरहमों पर बेच डाला और उन्हें उन (के बारे) में कुछ लालच भी न था। (२०) ★

और मिस्र में जिस शख़्स[2] ने उस को ख़रीदा, उसने अपनी बीवी से, (जिस का नाम ज़ुलेख़ा था) कहा कि इस को इज़्ज़त व इकराम से रखो। अजब नहीं कि यह हमें फ़ायदा दे या हम इसे अपना बेटा बना लें। इस तरह हमने यूसुफ़ को (मिस्र की) धरती पर जगह दी और ग़रज़ यह थी कि हम उन को (ख़्वाब की) बातों की ताबीर सिखाएं और ख़ुदा अपने काम पर ग़ालिब है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (२१) और जब वह अपनी जवानी को पहुंचे तो हमने उनको हिक्मत और इल्म दिया और भले लोगों को हम इसी तरह बदला दिया करते हैं। (२२) तो जिस औरत के घर में वह रहते थे उसने उन को अपनी तरफ़ मायल करना चाहा और दरवाज़े बन्द करके कहने लगी, (यूसुफ़ !) जल्दी आओ। उन्होंने कहा कि ख़ुदा पनाह में रखे, वह (यानी तुम्हारे मियां) तो मेरे आक़ा हैं, उन्होंने मुझे अच्छी तरह से रखा है, (मैं ऐसा ज़ुल्म नहीं कर सकता,) बेशक ज़ालिम लोग फ़लाह नहीं पाएंगे। (२३) और उस औरत ने उनका क़स्द किया और उन्होंने उसका क़स्द किया।[3] अगर वह अपने परवरदिगार की निशानी न देखते (तो जो होता, होता,) यों इसलिए (किया गया) कि हम उनसे बुराई और बे-हयाई को रोक दें। बेशक वह हमारे ख़ालिस बन्दों में से थे। (२४)

---

१. कुरते पर झूठ-मूठ का लहू लगा लाये, ताकि यह समझा जाए कि भेड़िया सचमुच खा गया है, लेकिन यह ख़्याल न किया कि भेड़िया सचमुच खा जाता, तो भेड़िए के दांतों से कुरता भी फट जाता, हालांकि वह बिल्कुल सालिम था। जब इन मक्कारों ने हज़रत याक़ूब से आ कर कहा कि यूसुफ़ को भेड़िया खा गया, तो उन्हों ने कुरता ही देख कर समझ लिया कि ये झूठ कहते हैं और कहा, भेड़िया तो बड़ा अक़्लमंद था कि यूसुफ़ को तो खा गया और कुरता न फटने दिया।

२. उस शख़्स का नाम क़ुत्फ़ीर था। कुछ लोगों ने लुत्फ़ीर कहा है। यह मिस्र के बादशाह का, जिस का नाम रय्यान बिन वलीद था, वज़ीर था और उस का लक़ब 'अज़ीज़' था।

३. ज़ुलेख़ा का क़स्द जैसा होगा, ज़ाहिर है, क्योंकि वह यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के हुस्न व जमाल पर फ़रेफ़्ता हो

(शेष पृष्ठ ३७७ पर)

●सु. ३/४ ★रु. २/१२ आ १४

वस्त-ब-क़ल्बा-ब व क़द्-दत् क़मी-सहू मिन् दुबुरिंव-व अल्फ़या सय्यि-दहा ल-दल्बाबि ᵇ क़ालत् मा जज़ा-उ मन् अरा-द बि-अह्लि-क सूअन् इल्ला अंय्युस्ज-न औ अज़ाबुन् अलीम (२५) क़ा-ल हि-य रा-व-दत्नी अन् नफ़्सी व शहि-द शाहिदुम्-मिन् अह्लिहा ᶜ इन् का-न क़मीसुहू क़ुद-द मिन् क़ुबुलिन् फ़-स-द-क़त्

व हु-व मिनल्काज़िबी-न (२६) व इन् का-न क़मीसुहू क़ुद्-द मिन् दुबुरिन् फ़-क-ज़-बत् व हु-व मिनस्-सादिक़ीन (२७) फ़-लम्मा रआ क़मी-सहू क़ुद्-द मिन् दुबुरिन् क़ा-ल इन्नहू मिन् कैदि-कुन्-न ᵇ इन्-न कै-द-कुन्-न अज़ीम (२८) यूसुफ़ु अअ्-रिज़् अन् हाज़ा ˢᵃˡᵃ वस्तग़्फ़िरी लिज़म्बिकि ˢᵃˡᵉ इन्नकि कुन्ति मिनल्-ख़ातिईन ★ (२९) व क़ा-ल निस्-वतुन् फ़िल्-मदीनतिम्-र-अतुल्-अज़ीज़ि तुराविदु फ़ताहा अन् नफ़्सिही ᶜ क़द् श-ग़-फ़हा हुब्बन् ᵇ इन्ना ल-न-राहा फ़ी ज़लालिम्-मुबीन (३०)

قَالَتْ مَا جَزَآءُ مَنْ اَرَادَ بِاَهْلِكَ سُوْٓءًا اِلَّآ اَنْ يُّسْجَنَ اَوْ عَذَابٌ
اَلِيْمٌ ﴿٢٥﴾ قَالَ هِيَ رَاوَدَتْنِيْ عَنْ نَّفْسِيْ وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْ اَهْلِهَا
اِنْ كَانَ قَمِيْصُهٗ قُدَّ مِنْ قُبُلٍ فَصَدَقَتْ وَهُوَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٢٦﴾
وَاِنْ كَانَ قَمِيْصُهٗ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ فَكَذَبَتْ وَهُوَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٢٧﴾
فَلَمَّا رَاٰ قَمِيْصَهٗ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ قَالَ اِنَّهٗ مِنْ كَيْدِكُنَّ اِنَّ كَيْدَكُنَّ
عَظِيْمٌ ﴿٢٨﴾ يُوْسُفُ اَعْرِضْ عَنْ هٰذَا وَاسْتَغْفِرِيْ لِذَنْۢبِكِ
اِنَّكِ كُنْتِ مِنَ الْخٰطِـئِيْنَ ﴿٢٩﴾ وَقَالَ نِسْوَةٌ فِي الْمَدِيْنَةِ امْرَاَتُ الْعَزِيْزِ
تُرَاوِدُ فَتٰىهَا عَنْ نَّفْسِهٖ قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا اِنَّا لَنَرٰىهَا فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٣٠﴾
فَلَمَّا سَمِعَتْ بِمَكْرِهِنَّ اَرْسَلَتْ اِلَيْهِنَّ وَاَعْتَدَتْ لَهُنَّ مُتَّكَاً وَّاٰتَتْ
كُلَّ وَاحِدَةٍ مِّنْهُنَّ سِكِّيْنًا وَّقَالَتِ اخْرُجْ عَلَيْهِنَّ فَلَمَّا رَاَيْنَهٗۤ اَكْبَرْنَهٗ
وَقَطَّعْنَ اَيْدِيَهُنَّ وَقُلْنَ حَاشَ لِلّٰهِ مَا هٰذَا بَشَرًا اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا مَلَكٌ
كَرِيْمٌ ﴿٣١﴾ قَالَتْ فَذٰلِكُنَّ الَّذِيْ لُمْتُنَّنِيْ فِيْهِ وَلَقَدْ رَاوَدْتُّهٗ عَنْ
نَّفْسِهٖ فَاسْتَعْصَمَ وَلَئِنْ لَّمْ يَفْعَلْ مَاۤ اٰمُرُهٗ لَيُسْجَنَنَّ وَلَيَكُوْنًا
مِّنَ الصّٰغِرِيْنَ ﴿٣٢﴾ قَالَ رَبِّ السِّجْنُ اَحَبُّ اِلَيَّ مِمَّا يَدْعُوْنَنِيْۤ اِلَيْهِ
وَاِلَّا تَصْرِفْ عَنِّيْ كَيْدَهُنَّ اَصْبُ اِلَيْهِنَّ وَاَكُنْ مِّنَ الْجٰهِلِيْنَ ﴿٣٣﴾
فَاسْتَجَابَ لَهٗ رَبُّهٗ فَصَرَفَ عَنْهُ كَيْدَهُنَّ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٣٤﴾
ثُمَّ بَدَا لَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا رَاَوُا الْاٰيٰتِ لَيَسْجُنُنَّهٗ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿٣٥﴾

फ़-लम्मा समिअत् बिमक्रिहिन्-न अर्स-लत् इलैहिन्-न व अअ्-त-दत् लहुन्-न मुत्त-क-अंव्-व आतत् कुल-ल वाहिदतिम्-मिन्हुन्-न सिक्कीनंव्-व क़ालतिख़-रुज् अलैहिन्-न ᶜ फ़-लम्मा रऐनहू अक्बर-नहू व क़त्तअ्-न ऐदि-यहुन्-न व क़ुल-न हा-श लिल्लाहि मा हाज़ा ब-शरन् ᵇ इन् हाज़ा इल्ला म-लकुन् करीम (३१) क़ालत् फ़ज़ालिकुन्-नल्लज़ी लुम्तुन्ननी फ़ीहि ᵇ व ल-क़द् रावत्तुहू अन् नफ़्सिही फ़स्तअ्-सम ᵇ व लइल्लम् यफ़्-अल् मा आमुरुहू लयुस्जनन्-न व ल-यकूनम्-मिनस्साग़िरीन (३२) क़ा-ल रब्बिस्सिज्नु अहब्बु इलय्-य मिम्मा यद्-ऊननी इलैहि ᶜ व इल्ला तस्रिफ़् अन्नी कै-द-हुन्-न अस्बु इलैहिन्-न व अकुम्मिनल्-जाहिलीन (३३) फ़स्तजा-ब लहू रब्बुहू फ़-स-र-फ़ अन्हु कैदहुन्-न ᵇ इन्नहू हुवस्समीअुल्-अलीम (३४) सुम्-म बदा लहुम् मिम्बअ्-दि मा र-अवुल्-आयाति ल-यस्जुनुन्नहू हत्ता हीन ★ (३५)

★रु. ३/१३ आ ६ ★रु. ४/१४ आ ६

और दोनों दरवाज़े की तरफ़ भागे (आगे यूसुफ़, पीछे ज़ुलेखा) और औरत ने उनका कुरता पीछे से (पकड़ कर जो खींचा, तो) फाड़ डाला और दोनों को दरवाज़े के पास औरत का ख़ाविंद मिल गया, तो औरत बोली कि जो शख़्स तुम्हारी बीवी के साथ बुरा इरादा करे, उस की इस के सिवा क्या सज़ा है कि या तो क़ैद किया जाए या दुख का अज़ाब दिया जाए। (२५) यूसुफ़ ने कहा, उसी ने मुझ को अपनी तरफ़ मायल करना चाहा था। उस के क़बीले में से एक फ़ैसला करने वाले ने यह फ़ैसला किया कि अगर उसका कुरता आगे से फटा हो, तो यह सच्ची और यूसुफ़ झूठा। (२६) और अगर कुरता पीछे से फटा हो तो यह झूठी और वह सच्चा। (२७) जब उसका कुरता देखा (तो) पीछे से फटा था, (तब उसने ज़ुलेखा से कहा) कि यह तुम्हारा ही फ़रेब है और कुछ शक नहीं कि तुम औरतों के फ़रेब बड़े (भारी) होते हैं। (२८) यूसुफ़! इस बात का ख़्याल न कर. और (ज़ुलेखा) तू अपने गुनाह की बख़्शिश माग, बेशक ख़ता तेरी ही है। (२९) ★

और शहर में औरतें बातें करने लगीं कि अज़ीज़ की बीवी अपने ग़ुलाम को अपनी तरफ़ मायल करना चाहती है और उसकी मुहब्बत उसके दिल में घर कर गयी है। हम देखते हैं कि वह खुली गुमराही में है। (३०) जब ज़ुलेखा ने इन औरतों की (बातें, जो हक़ीक़त में यूसुफ़ के दीदार के लिए एक) चाल (थी) सुनी तो उनके पास (दावत का) पैग़ाम भेजा और उनके लिए एक महफ़िल सजायी और (फल काटने के लिए) हर एक को एक-एक छुरी दी और (यूसुफ़ से) कहा कि इनके सामने बाहर आओ। जब औरतों ने उनको देखा तो उन (के हुस्न) का रौब ऐसा छा गया कि (फल काटते-काटते) अपने हाथ काट लिए। और बे-साख़्ता बोल उठीं कि सुब्हानल्लाह! (यह हुस्न!) यह आदमी नहीं, कोई बुज़ुर्ग फ़रिश्ता है। (३१) तब ज़ुलेखा ने कहा, यह वही है जिसके बारे में तुम मुझे ताने देती थीं और बेशक मैं ने उस को अपनी तरफ़ मायल करना चाहा, मगर यह बचा रहा और अगर यह वह काम न करेगा, जो मैं इसे कहती हूं, तो क़ैद कर दिया जाएगा और ज़लील होगा। (३२) यूसुफ़ ने दुआ की कि परवरदिगार! जिस काम की तरफ़ ये मुझे बुलाती हैं, उस के मुक़ाबले में मुझे क़ैद पसन्द है और अगर तू मुझ से उन के फ़रेब को न हटायेगा, तो मैं उन की तरफ़ मायल हो जाऊंगा और नादानों में दाख़िल हो जाऊंगा। (३३) तो ख़ुदा ने उन की दुआ क़ुबूल कर ली और उन से औरतों का मक्र ख़त्म कर दिया। बेशक वह सुनने (और) जानने वाला है। (३४) फिर बावजूद इस के कि वे लोग निशान देख चुके थे, उन की राय यही ठहरी कि कुछ दिनों के लिए उन को क़ैद ही कर दें। (३५) ★

(पृष्ठ ३७५ का शेष)

रही थी, मगर यूसुफ़ का क़स्द ऐसा नहीं हो सकता, क्योंकि वह ऐसे काम से ख़ुदा की पनाह मांगते हैं और अमानत में ख़ियानत करने को ज़ुल्म समझते हैं और यह कह कर ज़ुलेखा का कहा नहीं मानते। वह उस के इस्रार से उस की तरफ़ झुक तो गये, लेकिन किसी रज़ामंदी, चाव और दिल से नहीं, बल्कि बे-मन से और जब क़स्द इन्सानी तबीयत के तक़ाज़े से न हो और उस में इरादा न शामिल हो यानी सिर्फ़ ख़्याल ही ख़्याल हो, इस पर पकड़ नहीं। ज़ुलेखा के क़स्द में दिल का चाव शामिल था, इस्रार था और यूसुफ़ के क़स्द में चाव न था। दोनों के क़स्द में बड़ा फ़र्क़ था। अव्वल तो यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का क़स्द चाव का न था, फिर उन्हों ने परवरदिगार की कोई निशानी देख ली, तो वह क़स्द भी जाता रहा।

★रु. ३/१३ आ ९ ★रु. ४/१४ आ ६

व द-ख़-ल म-अहुस्सिज्-न फ़-तयानि ط क़ा-ल अ-ह़दुहुमा इन्नी अरानी अअ्-सिरु ख़म्-रन् ج व क़ालल्-आख़रु इन्नी अरानी अह़्मिलु फ़ौ-क़ रअ्-सी ख़ुब-ज़न् तअ - कुलुत्तैरु मिन्हु नब्बिअ् - ना बितअ् - वीलिही ج इन्ना नरा - क मिनल्मुह़्सिनीन (३६) क़ा-ल ला यअ्तीकुमा तआमुन् तुर्ज़क़ानिही इल्ला नब्बअ्-तुकुमा बितअ - वीलिही क़ब् - ल अंय्यअ - ति - यकुमा ط ज़ालिकुमा मिम्मा अ़ल्ल-मनी रब्बी ط इन्नी तरक्तु मिल्ल-त क़ौमिल्ला युअ्मिनू-न बिल्लाहि व हुम् बिल्आख़िरति हुम् काफ़िरून (३७) वत्तबअ्-तु मिल्ल-त आबाई इब्राही - म व इस्हा-क़ व यअ्-क़ू-ब ط मा का-न लना अन् नुश्रि - क बिल्लाहि मिन् शैइन् ط ज़ालि-क मिन् फ़ज़्लिल्लाहि अलैना व अ़-लन्नासि व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला यश्कुरून (३८) या साह़िबयिस्-सिज्नि अ-अर्बाबुम्-मुत-फ़र्रिक़ू-न ख़ैरुन् अमिल्लाहुल्-वाह़िदुल्-क़ह्हार ط (३९) मा तअ्-बुदू-न मिन् दूनिही इल्ला अस्मा-अन् सम्मैतुमूहा अन्तुम् व आबाउकुम् मा अन्ज़ - लल्लाहु बिहा मिन् सुल्तानिन् ط इनिल्हुक्मु इल्ला लिल्लाहि ط अ - म - र अल्ला तअ-बुदू इल्ला इय्याहु ط ज़ालिकद-दीनुल्-क़य्यिमु व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला यअ्-लमून (४०) या साह़िबयिस्-सिज्नि अम्मा अह़दुकुमा फ़-यस्क़ी रब्बहू ख़म् - रन् ج व अम्मल् - आख़रु फ़युस् - लबु फ़ - तअ्कुलुत्तैरु मिर्रअ - सिही ط क़ुज़ियल् - अम्रुल्लज़ी फ़ीहि तस्तफ़्तियान ط (४१) व क़ा-ल लिल्लज़ी ज़न् - न अन्नहू नाजिम् - मिन्हुमज़ - कुर्नी अ़िन् - द रब्बि - क ✓ फ़-अन्साहुश्शैतानु ज़िक् - र रब्बिही फ़ - लबि - स फ़िस्सिज्नि बिज़्-अ सिनीन ★ (४२)

وما من دآبة ١٢ — ١٩١ — يوسف ١٢

ودخل معه السجن فتيان قال احدهما اني اراني اعصر خمرا
وقال الاخر اني اراني احمل فوق راسي خبزا تاكل الطير منه
نبئنا بتاويله انا نراك من المحسنين ﴿٣٦﴾ قال لا ياتيكما
طعام ترزقنه الا نباتكما بتاويله قبل ان ياتيكما ذلكما
مما علمني ربي اني تركت ملة قوم لا يؤمنون بالله وهم
بالاخرة هم كفرون ﴿٣٧﴾ واتبعت ملة اباءي ابرهيم واسحق
ويعقوب ما كان لنا ان نشرك بالله من شيء ذلك من فضل
الله علينا وعلى الناس ولكن اكثر الناس لا يشكرون ﴿٣٨﴾
يصاحبي السجن ءارباب متفرقون خير ام الله الواحد القهار ﴿٣٩﴾
ما تعبدون من دونه الا اسماء سميتموها انتم واباؤكم
ما انزل الله بها من سلطن ان الحكم الا لله امر الا تعبدوا
الا اياه ذلك الدين القيم ولكن اكثر الناس لا يعلمون ﴿٤٠﴾
يصاحبي السجن اما احدكما فيسقي ربه خمرا واما الاخر
فيصلب فتاكل الطير من راسه قضي الامر الذي فيه
تستفتين ﴿٤١﴾ وقال للذي ظن انه ناج منهما اذكرني عند
ربك فانسه الشيطن ذكر ربه فلبث في السجن بضع سنين ﴿٤٢﴾
وقال الملك اني ارى سبع بقرت سمان ياكلهن سبع عجاف

★रु. ५/१५ आ ७

और उन के साथ दो और जवान भी जेल में दाख़िल हुए। एक ने उन में से कहा कि (मैं ने ख़्वाब देखा है।) देखता (क्या) हूं कि शराब (के लिए अंगूर) निचोड़ रहा हूं। दूसरे ने कहा कि (मैं ने भी ख़्वाब देखा है।) मैं यह देखता हूं कि अपने सर पर रोटियां उठाये हुए हूं और जानवर उन में से खा रहे हैं (तो) हमें उन की ताबीर बता दीजिए कि हम तुम्हें नेक देखते हैं। (३६) यूसुफ़ ने कहा कि जो खाना तुम को मिलने वाला है, वह आने नहीं पायेगा कि मैं इस से पहले तुम को उन की ताबीर बता दूंगा। यह उन (बातों) में से हैं, जो मेरे परवरदिगार ने मुझे सिखायी हैं। जो लोग ख़ुदा पर ईमान नहीं लाते और आख़िरत के दिन का इन्कार करते हैं, मैं उन का मज़हब छोड़े हुए हूं। (३७) और अपने बाप-दादा, इब्राहीम और इस्हाक़ और याक़ूब के मज़हब पर चलता हूं हमें मुनासिब नहीं है कि किसी चीज़ को ख़ुदा के साथ शरीक बनाएं। यह ख़ुदा का फ़ज़्ल है, हम पर भी और लोगों पर भी। लेकिन अक्सर लोग शुक्र नहीं करते। (३८) मेरे जेलख़ाने के साथियो! भला कई जुदा-जुदा आक़ा अच्छे या (एक) ख़ुदा-ए-यक्ता व ग़ालिब। (३९) जिन चीज़ों को तुम ख़ुदा के सिवा पूजते हो, वे सिर्फ़ नाम हैं, जो तुम ने और तुम्हारे बाप-दादा ने रख लिए हैं। ख़ुदा ने उन की कोई सनद नाज़िल नहीं की। (सुन रखो कि) ख़ुदा के सिवा किसी की हुकूमत नहीं है। उस ने इर्शाद फ़रमाया है कि उस के सिवा किसी की इबादत न करो। यही सीधा दीन है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (४०) मेरे जेल के साथियो! तुम में से एक (जो पहला ख़्वाब बयान करने वाला है, वह) तो अपने आक़ा को शराब पिलाया करेगा और जो दूसरा है, वह सूली दिया जाएगा और जानवर उस का सर खा-खा जाएंगे। जो बात तुम मुझ से पूछते थे, उस का फ़ैसला हो चुका है। (४१) और दोनों शख़्सों में से जिस के बारे में (यूसुफ़ ने) ख़्याल किया कि वह रिहाई पा जाएगा, उस से कहा कि अपने आक़ा से मेरा ज़िक्र भी करना, लेकिन शैतान ने उन का अपने आक़ा से ज़िक्र करना भुला दिया और यूसुफ़ कई वर्ष जेलख़ाने ही में रहे। (४२) ★

★रु. ५/१५ आ ७

व क़ालल्मलिकु इन्नी अरा सब्-अ ब-क़रातिन् सिमानिय्यअ्कुलुहुन्-न सब्अुन् अिजाफ़ुंव्-व सब्-अ सुम्बुलातिन् ख़ुज़्रिंव्-व उख़-र याबिसातिन् ط या अय्युहल्मलउ अफ़्तूनी फ़ी रुअ्या-य इन् कुन्तुम् लिर्रुअ्या तअ्-बुरून (४३) क़ालू अज़्ग़ासु अह्लामिन् ج व मा नह्नु बितअ्वीलिल् - अह्लामि बिआलिमीन (४४) व क़ालल्लज़ी नजा मिन्हुमा वद्द-क-र बअ्-द उम्मतिन् अना उनब्बिउकुम् बितअ्वीलिही फ़ - अर्सिलून (४५) यूसुफ़ु अय्युहस्सिद्दीक़ु अफ़्तिना फ़ी सब्अि ब-क़-रातिन् सिमानिय्यअ्कुलुहुन्-न सब्अुन् अिजाफ़ुंव् - व सब्अि सुम्बुलातिन् ख़ुज़्रिंव् - व उख़ - र याबिसातिल्लअल्ली अर्जिअु इलन्नासि ल-अल्लहुम् यअ्-लमून (४६) क़ा-ल तज़्-रअू-न सब्-अ सिनी-न द-अ-बन् ج फ़मा हसत्तुम् फ़-ज़रूहु फ़ी सुम्बुलिही इल्ला क़लीलम् - मिम्मा तअ्कुलून (४७) सुम्-म यअ्ती मिम्बअ्-दि

وَسَبْعَ سُنْۢبُلٰتٍ خُضْرٍ وَّاُخَرَ يٰبِسٰتٍ ؕ يٰۤاَيُّهَا الْمَلَاُ اَفْتُوْنِيْ فِيْ
رُءْيَايَ اِنْ كُنْتُمْ لِلرُّءْيَا تَعْبُرُوْنَ ۝ قَالُوْۤا اَضْغَاثُ اَحْلَامٍ ۚ وَ
مَا نَحْنُ بِتَاْوِيْلِ الْاَحْلَامِ بِعٰلِمِيْنَ ۝ وَقَالَ الَّذِيْ نَجَا مِنْهُمَا
وَادَّكَرَ بَعْدَ اُمَّةٍ اَنَا اُنَبِّئُكُمْ بِتَاْوِيْلِهٖ فَاَرْسِلُوْنِ ۝ يُوْسُفُ اَيُّهَا
الصِّدِّيْقُ اَفْتِنَا فِيْ سَبْعِ بَقَرٰتٍ سِمَانٍ يَّاْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ
وَّسَبْعِ سُنْۢبُلٰتٍ خُضْرٍ وَّاُخَرَ يٰبِسٰتٍ ۙ لَّعَلِّيْۤ اَرْجِعُ اِلَى النَّاسِ
لَعَلَّهُمْ يَعْلَمُوْنَ ۝ قَالَ تَزْرَعُوْنَ سَبْعَ سِنِيْنَ دَاَبًا ۚ فَمَا حَصَدْتُّمْ
فَذَرُوْهُ فِيْ سُنْۢبُلِهٖۤ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّا تَاْكُلُوْنَ ۝ ثُمَّ يَاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِ
ذٰلِكَ سَبْعٌ شِدَادٌ يَّاْكُلْنَ مَا قَدَّمْتُمْ لَهُنَّ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّا
تُحْصِنُوْنَ ۝ ثُمَّ يَاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ عَامٌ فِيْهِ يُغَاثُ النَّاسُ وَ
فِيْهِ يَعْصِرُوْنَ ۝ وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُوْنِيْ بِهٖ ۚ فَلَمَّا جَآءَهُ
الرَّسُوْلُ قَالَ ارْجِعْ اِلٰى رَبِّكَ فَسْـَٔلْهُ مَا بَالُ النِّسْوَةِ الّٰتِيْ
قَطَّعْنَ اَيْدِيَهُنَّ ؕ اِنَّ رَبِّيْ بِكَيْدِهِنَّ عَلِيْمٌ ۝ قَالَ مَا خَطْبُكُنَّ
اِذْ رَاوَدْتُّنَّ يُوْسُفَ عَنْ نَّفْسِهٖ ؕ قُلْنَ حَاشَ لِلّٰهِ مَا عَلِمْنَا
عَلَيْهِ مِنْ سُوْٓءٍ ؕ قَالَتِ امْرَاَتُ الْعَزِيْزِ الْـٰٔنَ حَصْحَصَ الْحَقُّ ؗ
اَنَا رَاوَدْتُّهٗ عَنْ نَّفْسِهٖ وَاِنَّهٗ لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝ ذٰلِكَ
لِيَعْلَمَ اَنِّيْ لَمْ اَخُنْهُ بِالْغَيْبِ وَاَنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ كَيْدَ الْخَآئِنِيْنَ ۝

ज़ालि-क सब्अुन् शिदादुंय्यअ्कुल-न मा क़द्दम्तुम् लहुन्-न इल्ला क़लीलम्-मिम्मा तुह्सिनून (४८) सुम्-म यअ्ती मिम्बअ्-दि ज़ालि-क आमुन् फ़ीहि युग़ासुन्नासु व फ़ीहि यअ् - सिरून ✱ (४९) व क़ालल् - मलिकुअ्तूनी बिही ج फ़लम्मा जा - अहुर् - रसूलु क़ालर्जिअ् - इला रब्बि - क फ़स्अल्हु मा बालुन्-निस्वतिल्लाती क़त्तअ्-न ऐदि-यहुन्-न ط इन्-न रब्बी बिकैदिहिन्-न अलीम (५०) क़ा-ल मा ख़त्बुकुन्-न इज़् रावत्तुन्-न यूसु - फ़ अन् नफ़्सिही ط क़ुल् - न हा - श लिल्लाहि मा अलिम्ना अलैहि मिन् सूइन् ط क़ालतिम्-र-अतुल् - अज़ीज़िल्आ - न हस्-ह-सल् - हक़्क़ु ؗ अ-न रावत्तुहू अन् नफ़्सिही व इन्नहू लमिनस्सादिक़ीन (५१) ज़ालि-क लियअ्-ल-म अन्नी लम् अख़ुन्हु बिल्ग़ैबि व अन्नल्ला-ह ला यह्दी कैदल्ख़ाइनीन (५२)

✱रु. ६/१६ आ ७

और बादशाह ने कहा कि मैं (ने ख़्वाब देखा है।) देखता (क्या) हूं कि सात मोटी गायें हैं, जिन को सात दुबली गायें खा रही हैं और सात हरी बालियां हैं और (सात) सूखी। ऐ सरदारो! अगर तुम ख़्वाबों की ताबीर दे सकते हो, तो मुझे मेरे ख़्वाब की ताबीर बताओ। (४३) उन्हों ने कहा, ये तो परेशान से ख़्वाब हैं और हमें ऐसे ख़्वाबों की ताबीर नहीं आती। (४४) अब वह शख़्स, जो दोनों क़ैदियों में से रिहाई पा गया था और जिसे मुद्दत के बाद वह बात याद आ गयी, बोल उठा कि मैं आप को उसकी ताबीर (ला) बताता हूं। मुझे (जेलख़ानें) जाने की इजाज़त दीजिए। (४५) (ग़रज़ वह यूसुफ़ के पास आया और कहने लगा) यूसुफ़! ऐ बड़े सच्चे (यूसुफ़!) हमें (इस ख़्वाब की ताबीर) बताइए कि सात मोटी गायों को सात दुबली गायें खा रही हैं और सात बालियां हरी हैं और सात सूखी ताकि मैं लोगों के पास जा (कर ताबीर बताऊं), अजब नहीं कि वे (तुम्हारी क़द्र) जानें। (४६) उन्हों ने कहा कि तुम लोग सात साल लगातार खेती करते रहोगे, तो जो (अनाज) काटो तो थोड़े से अनाज के सिवा, जो खाने में आए, उसे बालियों ही में रहने देना। (४७) फिर इस के बाद (सूखे के) सात सख़्त (साल) आएंगे कि जो (अनाज) तुम ने जमा कर रखा होगा, वे उस सब को खा जाएंगे, सिर्फ़ वही थोड़ा-सा रह जाएगा, जो तुम एहतियात से रख छोड़ोगे। (४८) फिर इस के बाद एक साल ऐसा आएगा कि ख़ूब मेंह बरसेगा और लोग उस में रस निचोड़ेंगे★(४९) (यह ताबीर सुन कर) बादशाह ने हुक्म दिया कि यूसुफ़ को मेरे पास ले आओ। जब क़ासिद उन के पास गया, तो उन्हों ने कहा कि अपने आक़ा के पास वापस जाओ और उन से पूछो कि उन औरतों का क्या हाल है, जिन्हों ने अपने हाथ काट लिए थे। बेशक मेरा परवरदिगार उन के मक्रों को ख़ूब जानता है। (५०) बादशाह ने (औरतों से) पूछा कि भला उस वक़्त क्या हुआ था, जब तुमने यूसुफ़ को अपनी तरफ़ मायल करना चाहा। सब बोल उठीं कि 'हाशा लिल्लाह' हम ने उस में कोई बुराई नहीं मालूम की। अज़ीज़ की औरत ने कहा कि अब सच्ची बात तो ज़ाहिर हो ही गयी है। (असल यह है कि) मैं ने उस को अपनी तरफ़ मायल करना चाहा था और वह बेशक सच्चा है। (५१) (यूसुफ़ ने कहा कि मैंने) यह बात इस लिए (पूछी है) कि अज़ीज़ को यक़ीन हो जाए कि मैं ने उस की पीठ पीछे उस की (अमानत में) ख़ियानत नहीं की और ख़ुदा ख़ियानत करने वालों के मक्रों को (सीधा) रास्ता नहीं दिखाता। (५२) और मैं अपने आप को

★रु. ६/१६ आ ७

तेरहवां पारः व मा उबर्रिउ

सूरतु यूसु-फ़ आयत ५३ से १११

व मा उबर्रिउ नफ़्सी इन्नन्नफ़्-स ल-अम्मारतुम्-बिस्सू-इ इल्ला मा रहि-म रब्बी इन्-न रब्बी ग़फ़ूरुर्रहीम (५३) व क़ालल्-मलिकुअ्तूनी बिही अस्तख़्लिस्हु लिनफ़्सी फ़-लम्मा कल्ल-महू का-ल इन्नकल्-यौ-म लदैना मकीनुन् अमीन (५४) क़ालज्अल्नी अला ख़ज़ाइनिल्-अर्ज़ि इन्नी हफ़ीज़ुन् अलीम (५५) व कज़ालि-क मक्कन्ना लियूसु-फ़ फ़िल्अर्ज़ि य-त-बव्वउ मिन्हा हैसु यशाउ नुसीबु बिरह्-मतिना मन् नशाउ व ला नुज़ीअु अज्रल्-मुह्सिनीन (५६) व ल-अज्रुल्-आख़िरति ख़ैरुल्लिल्लज़ी-न आमनू व कानू यत्तक़ून ★ (५७) व जा-अ इख़्वतु यूसु-फ़ फ़-द-ख़लू अलैहि फ़-अ-र-फ़हुम् व हुम् लहू मुन्किरून (५८) व लम्मा जह्-ह-ज़-हुम् बिजहाज़िहिम् क़ालअ्तूनी बि-अख़िल्लकुम् मिन् अबीकुम् अला तरौ-न अन्नी ऊफ़िल्-कै-ल व अना ख़ैरुल्-मुन्ज़िलीन (५९) फ़इल्लम् तअ्तूनी बिही फ़ला कै-ल लकुम् अिन्दी व ला तक़्रबून (६०) क़ालू सनुराविदु अन्हु अबाहु व इन्ना लफ़ाअिलून (६१) व क़ा-ल लिफ़ित्यानिहिज्-अलू बिज़ा-अ-तहुम् फ़ी रिहालिहिम् ल-अल्लहुम् यअ्-रिफ़ूनहा इज़न्क़-लबू इला अह्लिहिम् ल-अल्लहुम् यर्जिअून (६२) फ़-लम्मा र-ज-अू इला अबीहिम् क़ालू या अबाना मुनि-अ मिन्नल्कैलु फ़-अर्सिल् म-अना अख़ाना नक्तल् व इन्ना लहू लहाफ़िज़ून (६३) क़ा-ल हल् आमनुकुम् अलैहि इल्ला कमा अमिन्तुकुम् अला अख़ीहि मिन् क़ब्लु फ़ल्लाहु ख़ैरुन् हाफ़िज़ंव्-व हु-व अर्हमुर्-राहिमीन (६४)

وما أبرئ نفسي إن النفس لأمارة بالسوء إلا ما رحم ربي
إن ربي غفور رحيم ۝ وقال الملك ائتوني به أستخلصه لنفسي
فلما كلمه قال إنك اليوم لدينا مكين أمين ۝ قال اجعلني
على خزائن الأرض إني حفيظ عليم ۝ وكذلك مكنا ليوسف
في الأرض يتبوأ منها حيث يشاء نصيب برحمتنا من نشاء
ولا نضيع أجر المحسنين ۝ ولأجر الآخرة خير للذين آمنوا
وكانوا يتقون ۝ وجاء إخوة يوسف فدخلوا عليه فعرفهم و
هم له منكرون ۝ ولما جهزهم بجهازهم قال ائتوني بأخ
لكم من أبيكم ألا ترون أني أوفي الكيل وأنا خير المنزلين ۝
فإن لم تأتوني به فلا كيل لكم عندي ولا تقربون ۝ قالوا
سنراود عنه أباه وإنا لفاعلون ۝ وقال لفتيانه اجعلوا
بضاعتهم في رحالهم لعلهم يعرفونها إذا انقلبوا إلى أهلهم
لعلهم يرجعون ۝ فلما رجعوا إلى أبيهم قالوا يا أبانا منع منا
الكيل فأرسل معنا أخانا نكتل وإنا له لحافظون ۝ قال
هل آمنكم عليه إلا كما أمنتكم على أخيه من قبل فالله
خير حافظا وهو أرحم الراحمين ۝ ولما فتحوا متاعهم وجدوا
بضاعتهم ردت إليهم قالوا يا أبانا ما نبغي هذه بضاعتنا ردت

★रु. ७/१ आ ८

पाक-साफ़ नहीं कहता, क्यों कि नफ़्से अम्मारा (इंसान को) बुराई ही सिखाता रहता है, मगर यह कि मेरा परवरदिगार रहम करे। बेशक मेरा परवरदिगार बख़्शने वाला मेहरबान है। (५३) बादशाह ने हुक्म दिया कि उसे मेरे पास लाओ। मैं उसे अपना ख़ास मुसाहिब बनाऊंगा। फिर जब उन से बातें कीं तो कहा कि आज से तुम हमारे यहां दर्जे वाले और एतबार वाले हो। (५४) (यूसुफ़ ने) कहा, मुझे इस मुल्क के ख़ज़ानों पर मुक़र्रर कर दीजिए, क्यों कि मैं हिफ़ाज़त भी कर सकता हूं और इस काम को जानता हूं। (५५) इस तरह हम ने यूसुफ़ को मुल्क (मिस्र) में जगह दी और वह उस मुल्क में जहां चाहते थे। रहते थे हम अपनी रहमत जिस पर चाहते हैं, करते हैं और नेक लोगों के अज्र को बर्बाद नहीं करते। (५६) और जो लोग ईमान लाए और डरते रहे, उन के लिए आख़िरत का अज्र बहुत बेहतर है। (५७) ★

और यूसुफ़ के भाई (कन्आन से मिस्र में ग़ल्ला ख़रीदने के लिए) आए तो यूसुफ़ के पास गये तो यूसुफ़ ने उनको पहचान लिया और वह उनको न पहचान सके। (५८) जब यूसुफ़ ने उनके लिए उन का सामान तैयार कर दिया तो कहा कि (फिर आना तो) जो बाप की तरफ़ से तुम्हारा एक और भाई है, उसे भी मेरे पास लेते आना। क्या तुम नहीं देखते कि मैं नाप भी पूरी-पूरी देता हूं और मेहमानदारी भी ख़ूब करता हूं। (५९) और अगर तुम उसे मेरे पास न लाओगे, तो न तुम्हें मेरे यहां से ग़ल्ला मिलेगा, और न तुम मेरे पास ही आ सकोगे। (६०) उन्हों ने कहा कि हम उस के बारे में उसके वालिद से तज़्किरा करेंगे और हम यह (काम) करके रहेंगे। (६१) और (यूसुफ़ ने) अपने नौकरों से कहा कि उन का सरमाया (यानी ग़ल्ले की क़ीमत) उन के शलीतों में रख दो। अजब नही कि जब ये अपने बाल-बच्चों में जाएं तो उसे पहचान लें (और) अजब नहीं कि ये फिर यहां आएं। (६२) जब वे अपने बाप के पास वापस गए तो कहने लगे कि अब्बा! (जब तक हम बिन यामीन को साथ न ले जाएं) हमारे लिए ग़ल्ले की पाबंदी कर दी गयी है, तो हमारे साथ हमारे भाई को भेज दीजिए, ताकि हम फिर अनाज लाएं और हम इस के निगहबान हैं। (६३) (याक़ूब ने) कहा कि मैं इस के बारे में तुम्हारा एतबार नहीं करता, मगर वैसा ही जैसा पहले इस के भाई के बारे में किया था, सो ख़ुदा ही बेहतर निगेहबान है और वह सब से ज़्यादा रहम

★रु. ७/१ आ ८

व लम्मा फ़-तहू मताअहुम् व-जदू बिज़ा-अ-तहुम् रुद्दत् इलैहिम् ط क़ालू
या अबाना मा नब्ग़ी ط हाज़िही बिज़ाअतुना रुद्दत् इलैना ج व नमीरु
अह्-लना व नह़्फ़ज़ु अख़ाना व नज़्दादु कै-ल बअीरिन् ط ज़ालि-क कैलुंय्यसीर
(६५) क़ा-ल लन् उर्सि-लहू म-अकुम् ह़त्ता तुअ्तूनि मौसिक़म्-मिनल्लाहि
ल-तअ्तुन्ननी बिही इल्ला अंय्युहा-त बिकुम् ج
फ़-लम्मा आतौहु मौसिक़हुम् क़ालल्लाहु अला
मा नक़ूलु वकील (६६) व क़ा-ल या
बनिय्-य ला तद्ख़ुलू मिम्बाबिंव्वाहिदिंव्वद्ख़ुलू
मिन् अब्वाबिम् - मुतफ़र्रिक़तिन् ط
व मा उग़्नी अन्कुम् मिनल्लाहि मिन्
शैइन् ط इनिल्हुक्मु इल्ला लिल्लाहि ط
अलैहि तवक्कल्तु ج व अलैहि
फ़ल-य-त-वक्कलिल्-मु-त-वक्किलून (६७) व
लम्मा द-ख़-लू मिन् हैसु अ-म-रहुम् अबूहुम् ط
मा का-न युग़्नी अन्हुम् मिनल्लाहि मिन्
शैइन् इल्ला हाज-तन् फ़ी नफ़्सि यअ्-क़ू-ब

إِلَيْنَا وَنَمِيرُ أَهْلَنَا وَنَحْفَظُ أَخَانَا وَنَزْدَادُ كَيْلَ بَعِيرٍ ذٰلِكَ كَيْلٌ
يَسِيرٌ ﴿٦٥﴾ قَالَ لَنْ أُرْسِلَهُ مَعَكُمْ حَتّٰى تُؤْتُونِ مَوْثِقًا مِّنَ اللّٰهِ
لَتَأْتُنَّنِي بِهِ إِلَّا أَنْ يُّحَاطَ بِكُمْ فَلَمَّا آتَوْهُ مَوْثِقَهُمْ قَالَ اللّٰهُ عَلٰى
مَا نَقُولُ وَكِيلٌ ﴿٦٦﴾ وَقَالَ يٰبَنِيَّ لَا تَدْخُلُوا مِنْ بَابٍ وَّاحِدٍ وَّادْخُلُوا
مِنْ أَبْوَابٍ مُّتَفَرِّقَةٍ وَمَا أُغْنِي عَنْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا
لِلّٰهِ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَعَلَيْهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُونَ ﴿٦٧﴾ وَلَمَّا دَخَلُوا مِنْ
حَيْثُ أَمَرَهُمْ أَبُوهُمْ مَا كَانَ يُغْنِي عَنْهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا
حَاجَةً فِي نَفْسِ يَعْقُوبَ قَضٰهَا وَإِنَّهُ لَذُو عِلْمٍ لِّمَا عَلَّمْنٰهُ وَلٰكِنَّ
أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٦٨﴾ وَلَمَّا دَخَلُوا عَلٰى يُوسُفَ آوٰى إِلَيْهِ
أَخَاهُ قَالَ إِنِّي أَنَا أَخُوكَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٦٩﴾ فَلَمَّا
جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ جَعَلَ السِّقَايَةَ فِي رَحْلِ أَخِيهِ ثُمَّ أَذَّنَ مُؤَذِّنٌ
أَيَّتُهَا الْعِيرُ إِنَّكُمْ لَسٰرِقُونَ ﴿٧٠﴾ قَالُوا وَأَقْبَلُوا عَلَيْهِمْ مَّاذَا تَفْقِدُونَ ﴿٧١﴾
قَالُوا نَفْقِدُ صُوَاعَ الْمَلِكِ وَلِمَنْ جَاءَ بِهِ حِمْلُ بَعِيرٍ وَّأَنَا بِهِ
زَعِيمٌ ﴿٧٢﴾ قَالُوا تَاللّٰهِ لَقَدْ عَلِمْتُمْ مَّا جِئْنَا لِنُفْسِدَ فِي الْأَرْضِ وَمَا
كُنَّا سٰرِقِينَ ﴿٧٣﴾ قَالُوا فَمَا جَزَاؤُهُ إِنْ كُنْتُمْ كٰذِبِينَ ﴿٧٤﴾ قَالُوا جَزَاؤُهُ
مَنْ وُّجِدَ فِي رَحْلِهِ فَهُوَ جَزَاؤُهُ كَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِينَ ﴿٧٥﴾ فَبَدَأَ
بِأَوْعِيَتِهِمْ قَبْلَ وِعَاءِ أَخِيهِ ثُمَّ اسْتَخْرَجَهَا مِنْ وِّعَاءِ أَخِيهِ

क़ज़ाहा ط व इन्नहू लज़ू अिल्मिल्लिमा अ़ल्लम्नाहु व लाकिन्-न अक्सरन्नासि
ला यअ्-लमून ★ (६८) व लम्मा द-ख़लू अला यूसु-फ आवा इलैहि
अख़ाहु क़ा-ल इन्नी अ-न अख़ू-क फ़ला तब्तइस् बिमा कानू यअ्-मलून
(६९) फ़-लम्मा जह्-ह-ज़-हुम् बिजहाज़िहिम् ज-अ-लस्सिक़ाय-त फ़ी रह़्लि
अख़ीहि सुम्-म अज़्ज़ - न मुअज़्ज़िनुन् अय्यतुहल्-ईरु इन्नकुम् लसारिक़ून
(७०) क़ालू व अक़्बलू अलैहिम् माज़ा तफ़्क़िदून (७१) क़ालू
नफ़्क़िदु सुवाअल्-मलिकि व लिमन् जा - अ बिही ह़िम्लु बअीरिंव - व
अना बिही ज़अीम (७२) क़ालू तल्लाहि ल - क़द् अलिम्तुम् मा
जिअ्ना लिनुफ़्सि-द फ़िल्अर्ज़ि व मा कुन्ना सारिक़ीन (७३) क़ालू
फ़मा जज़ाउहू इन् कुन्तुम् काज़िबीन (७४) क़ालू जज़ाउहू
मंव्वुजि-द फ़ी रह़्लिही फ़हु-व जज़ाउहू ط कज़ालि-क नज्ज़िज़्ज़ालिमीन (७५)

★रु. ८/२ आ ११

करने वाला है । (६४) और जब उन्हों ने अपना सामान देखा कि उन का सरमाया उन को वापस कर दिया गया है' कहने लगे, अब्बा ! हमें (और) क्या चाहिए ? (देखिए) यह हमारी पूंजी हमें वापस कर दी गयी है। अब हम अपने बाल-बच्चों के लिए फिर ग़ल्ला लाएंगे और अपने भाई की निगेहबानी करेंगे और एक ऊंट बोझ ज़्यादा लाएंगे (कि) यह अनाज (जो हम लाए हैं) थोड़ा है। (६५) (याक़ूब ने) कहा कि जब तक तुम ख़ुदा का अह्द न दो कि उस को मेरे पास (सही व सालिम) ले आओगे, मैं इसे हरगिज़ तुम्हारे साथ नहीं भेजने का, मगर यह कि तुम घेर लिए जाओ (यानी बे-बस हो जाओ तो मजबूरी है) । जब उन्हों ने उन से अह्द कर लिया, तो (याक़ूब) ने कहा कि जो क़ौल व क़रार हम कर रहे हैं, उस का ख़ुदा वकील (ज़ामिन) है। (६६) और हिदायत की कि बेटा ! एक ही दरवाज़े से दाख़िल न होना, बल्कि अलग-अलग दरवाज़ों से दाख़िल होना और मैं ख़ुदा की तक़्दीर तो तुम से नहीं रोक सकता । (बेशक) हुक्म उसी का है। मैं उसी पर भरोसा रखता हूं और भरोसे वालों को उसी पर भरोसा रखना चाहिए। (६७) और जब वे उन-उन जगहों से दाख़िल हुए, जहां-जहां से (दाख़िल होने के लिए) बाप ने उन से कहा था तो वह तद्बीर ख़ुदा के हुक्म को ज़रा भी टाल नहीं सकती थी। हां, वह याक़ूब के दिल की ख़्वाहिश थी, जो उन्हों ने पूरी की थी और बेशक वह इल्म वाले थे, क्यों कि हम ने उन को इल्म सिखाया था, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (६८)★

और जब वे लोग यूसुफ़ के पास पहुंचे तो यूसुफ़ ने अपने सगे भाई को अपने पास जगह दी और कहा कि मैं तुम्हारा भाई हूं तो जो सुलूक ये (हमारे साथ) करते रहे हैं, इस पर अफ़सोस न करना। (६९) जब उन का सामान तैयार कर दिया, तो अपने भाई के शलीते में गिलास रख दिया, फिर (जब वे आबादी से बाहर निकल गये तो) एक पुकारने वाले ने आवाज़ दी कि क़ाफ़िले वालो ! तुम तो चोर हो।[1] (७०) वे उन की तरफ़ मुतवज्जह हो कर कहने लगे कि तुम्हारी क्या चीज़ खोयी गयी है। (७१) वह बोले कि बादशाह (के पानी पीने) का गिलास खोया गया है और जो शख़्स उस को ले आए, उस के लिए एक ऊंट बोझ (इनाम) और मैं उस का ज़ामिन हूं। (७२) वे कहने लगे कि ख़ुदा की क़सम ! तुम को मालूम है कि हम (इस) मुल्क में इस लिए नहीं आए कि ख़राबी करें और न हम चोरी किया करते हैं। (७३) बोले कि अगर तुम झूठे निकले (यानी चोरी साबित हुई) तो उस की सज़ा क्या है ? (७४) उन्हों ने कहा कि उस की सज़ा यह कि जिस के शलीते में वह मिले, वही उस का बदल क़रार दिया जाए। हम ज़ालिमों को यही सज़ा

१. पुकारने वाले ने उन को सच में चोर समझा था, क्योंकि उन को यह मालूम न था कि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने यह तद्बीर की है।

★रु. ८/२ आ ११

फ़-ब-द-अ बिऔअियतिहिम् क़ब्-ल विआ-इ अख़ीहि सुम्मस्तख़-र-जहा मिंव्विआइ अख़ीहि ط कज़ालि - क किद्ना लियूसु-फ़ ط मा का - न लियअ्ख़ु-ज़ अख़ाहु फ़ी दीनिल्मलिकि इल्ला अंय्यशाअल्लाहु ط नर्फ़अु द - र - जातिम् - मन् नशाउ ط व फ़ौ - क़ कुल्लि ज़ी अिल्मिन् अलीम (७६) क़ालू इंय्यस्रिक़् फ़-क़द् स-र-क़ अख़ुल्लहू मिन् क़ब्लु ج फ़ - असर्रहा यूसुफ़ु फ़ी नफ़्सिही व लम् युब्दिहा लहुम् ج क़ा-ल अन्तुम् शर्रुम्-मकानन् ج वल्लाहु अअ् - लमु बिमा तसिफ़ून (७७) क़ालू या अय्युहल्-अज़ीज़ु इन-न लहू अ-बन् शैख़न् कबीरन् फ़ख़ुज़् अ - ह - दना मकानहू ج इन्ना नरा - क मिनल्मुह्सिनीन (७८) क़ा-ल मआज़ल्लाहि अन्नअ्ख़ु-ज़ इल्ला मंव्व-जद्ना मता-अना अिन्दहू لا इन्ना इज़ल्लज़ालिमून ★ (७९) फ़-लम्मस्तै-असू मिन्हु ख़ - लसू नजिय्यन् ط क़ा-ल कबीरुहुम् अ-लम् तअ्-लमू अन-न अबाकुम् क़द् अ-ख़-ज़ अलैकुम् मौसिक़म्-मिनल्लाहि व मिन् क़ब्लु मा फ़र्रत्तुम् फ़ी यूसु-फ़ ج फ़-लन् अब्-र-हल्-अर-ज़ हत्ता यअ्ज़-न ली अबी औ यह्कुमल्लाहु ली ج व हु-व ख़ैरुल्-हाकिमीन (८०) इर्जिअू इला अबीकुम् फ़क़ूलू या अबाना इन्नब-न-क स-र-क़ ج व मा शहिद्ना इल्ला बिमा अलिम्ना व मा कुन्ना लिल्ग़ैबि हाफ़िज़ीन (८१) वस् - अलिल् - क़र्यतल्लती कुन्ना फ़ीहा वल्-ईरल्लती अक़्बल्ना फ़ीहा ط व इन्ना लसादिक़ून (८२) क़ा-ल बल् सव्व-लत् लकुम् अन्फ़ुसुकुम् अम्रन् ط फ़ - सब - रुन् जमीलुन् ط अ-सल्लाहु अंय्यअ्तियनी बिहिम् जमीअन् ط इन्नहू हुवल्-अलीमुल्-हकीम (८३) व त-वल्ला अन्हुम् व क़ा-ल या अ-सफ़ा अला यूसु-फ़ वब्यज़्ज़त् अ़ैनाहु मिनल्हुज़्नि फ़हु-व कज़ीम (८४) क़ालू तल्लाहि तफ़्-तउ तज़्कुरु यूसु-फ़ हत्ता तकू-न ह-र-ज़न् औ तकू-न मिनल्-हालिकीन (८५)

يوسف ١٢ — ١٩٥ — وما ابرئ ١٣

كَذٰلِكَ كِدْنَا لِيُوسُفَ ۖ مَا كَانَ لِيَأْخُذَ أَخَاهُ فِي دِينِ الْمَلِكِ إِلَّا أَنْ
يَشَاءَ اللَّهُ ۚ نَرْفَعُ دَرَجَاتٍ مَنْ نَشَاءُ ۗ وَفَوْقَ كُلِّ ذِي عِلْمٍ عَلِيمٌ ۝
قَالُوا إِنْ يَسْرِقْ فَقَدْ سَرَقَ أَخٌ لَهُ مِنْ قَبْلُ ۚ فَأَسَرَّهَا يُوسُفُ فِي
نَفْسِهِ وَلَمْ يُبْدِهَا لَهُمْ ۚ قَالَ أَنْتُمْ شَرٌّ مَكَانًا ۖ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا
تَصِفُونَ ۝ قَالُوا يَا أَيُّهَا الْعَزِيزُ إِنَّ لَهُ أَبًا شَيْخًا كَبِيرًا فَخُذْ أَحَدَنَا
مَكَانَهُ ۖ إِنَّا نَرَاكَ مِنَ الْمُحْسِنِينَ ۝ قَالَ مَعَاذَ اللَّهِ أَنْ نَأْخُذَ إِلَّا
مَنْ وَجَدْنَا مَتَاعَنَا عِنْدَهُ إِنَّا إِذًا لَظَالِمُونَ ۝ فَلَمَّا اسْتَيْأَسُوا مِنْهُ
خَلَصُوا نَجِيًّا ۖ قَالَ كَبِيرُهُمْ أَلَمْ تَعْلَمُوا أَنَّ أَبَاكُمْ قَدْ أَخَذَ عَلَيْكُمْ
مَوْثِقًا مِنَ اللَّهِ وَمِنْ قَبْلُ مَا فَرَّطْتُمْ فِي يُوسُفَ ۖ فَلَنْ أَبْرَحَ الْأَرْضَ
حَتَّىٰ يَأْذَنَ لِي أَبِي أَوْ يَحْكُمَ اللَّهُ لِي ۖ وَهُوَ خَيْرُ الْحَاكِمِينَ ۝ ارْجِعُوا
إِلَىٰ أَبِيكُمْ فَقُولُوا يَا أَبَانَا إِنَّ ابْنَكَ سَرَقَ وَمَا شَهِدْنَا إِلَّا بِمَا عَلِمْنَا
وَمَا كُنَّا لِلْغَيْبِ حَافِظِينَ ۝ وَاسْأَلِ الْقَرْيَةَ الَّتِي كُنَّا فِيهَا وَالْعِيرَ
الَّتِي أَقْبَلْنَا فِيهَا ۖ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ۝ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ أَنْفُسُكُمْ
أَمْرًا ۖ فَصَبْرٌ جَمِيلٌ ۖ عَسَى اللَّهُ أَنْ يَأْتِيَنِي بِهِمْ جَمِيعًا ۚ إِنَّهُ
هُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ۝ وَتَوَلَّىٰ عَنْهُمْ وَقَالَ يَا أَسَفَىٰ عَلَىٰ يُوسُفَ
وَابْيَضَّتْ عَيْنَاهُ مِنَ الْحُزْنِ فَهُوَ كَظِيمٌ ۝ قَالُوا تَاللَّهِ تَفْتَأُ
تَذْكُرُ يُوسُفَ حَتَّىٰ تَكُونَ حَرَضًا أَوْ تَكُونَ مِنَ الْهَالِكِينَ ۝

★रु. ६/३ आ ११

दिया करते हैं। (७५) फिर यूसुफ़ ने अपने भाई के शलीते से पहले उन के शलीतों को देखना शुरू किया। फिर अपने भाई के शलीते में से उस को निकाल लिया। इस तरह हम ने यूसुफ़ के लिए तद्बीर की (वरन्) बादशाह के क़ानून के मुताबिक़ वह ख़ुदा की मशीयत के सिवा अपने भाई को नहीं ले सकते थे।[1] हम जिस के चाहते हैं दर्जे बुलन्द करते हैं और हर इल्म वाले से दूसरा इल्म वाला बढ़ कर है। (७६) (यूसुफ़ के भाइयों ने) कहा कि अगर इस ने चोरी की हो तो (कुछ अजब नहीं कि) इस के एक भाई ने भी पहले चोरी की थी।[2] यूसुफ़ ने इस बात को अपने दिल में छिपाए रखा और उन पर ज़ाहिर न होने दिया (और) कहा कि तुम बड़े बद-क़िमाश (दुष्ट) हो और जो तुम बयान करते हो, ख़ुदा उसे ख़ूब जानता है (७७) वे कहने लगे कि ऐ अज़ीज़! इस के वालिद बहुत बूढ़े हैं (और इस से बहुत मुहब्बत रखते हैं) तो (उस को छोड़ दीजिए और) उस की जगह हम में से किसी को रख लीजिए, हम देखते हैं कि आप एहसान करने वाले हैं। (७८) (यूसुफ़ ने) कहा कि ख़ुदा पनाह में रखे कि जिस शख़्स के पास हम ने अपनी चीज़ पायी है, उस के सिवा किसी और को पकड़ लें। ऐसा करें तो हम (बड़े) बे-इंसाफ़ हैं। (७९)★

जब वे इस से ना-उम्मीद हो गये तो अलग हो कर सलाह करने लगे। सब से बड़े ने कहा, क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारे वालिद ने तुम से ख़ुदा का अह्द लिया है और इस से पहले भी तुम यूसुफ़ के बारे में क़ुसूर कर चुके हो, तो जब तक वालिद साहब मुझे हुक्म न दें, मैं तो इस जगह से हिलने का नहीं या ख़ुदा मेरे लिए कोई और तद्बीर करे और वह सब से बेहतर फ़ैसला करने वाला है। (८०) तुम सब वालिद साहब के पास जाओ और कहो कि अब्बा! आप के साहबज़ादे ने (वहां जा कर) चोरी की और हम ने तो अपने जानते आप से (उस के ले आने का) अह्द किया था, मगर हम ग़ैब (की बातों) के (जानने और) याद रखने वाले तो नहीं थे। (८१) और जिस बस्ती में हम (ठहरे) थे, वहां से (यानी मिस्र वालों से) और जिस क़ाफ़िले में आए हैं, उस से पूछ लीजिए और हम (इस बयान में) बिल्कुल सच्चे हैं। (८२) (जब उन्हों ने यह बात याक़ूब से आ कर कही तो) उन्हों ने कहा (कि हक़ीक़त यों नहीं है,) बल्कि यह बात तुम ने अपने दिल से बना ली है, तो सब्र ही बेहतर है। अजब नहीं कि ख़ुदा इन सब को मेरे पास ले आए। बेशक वह जानने वाला (और) हिक्मत वाला है। (८३) फिर उन के पास से चले गये और कहने लगे कि हाय अफ़सोस, यूसुफ़! (हाय अफ़सोस!) और रंज व दुख में (इस क़दर रोये कि) उन की आंखें सफ़ेद हो गयीं और उन का दिल ग़म से भर रहा था। (८४) बेटे कहने लगे कि ख़ुदा की क़सम! अगर आप यूसुफ़ को इसी तरह याद ही करते रहेंगे, तो या तो बीमार हो जाएंगे या जान ही दे

---

१. इब्राहीमी शरीअत में चोर की सज़ा यह थी कि जिस की चोरी की हो, उस को एक वर्ष तक मम्लूक ग़ुलाम बना कर रखा जाए, इस के बाद छोड़ दिया जाए। यही सज़ा यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाइयों ने बयान की और इसी के मुताबिक़ बिन यामीन को ले लिया गया, वरना मिस्र का क़ानून तो यह था कि चोर को मारें-पीटें और चोरी के माल से दोगुना जुर्माना ले लें और यह क़ानून इजाज़त नहीं देता था कि जिस के पास से चीज़ निकले, उस को पकड़ लिया जाए। ग़रज़ यह तद्बीर हज़रत यूसुफ़ ने इस लिए की थी कि उन को मालूम था कि याक़ूब की शरीअत में चोर की सज़ा उसे गिरफ़्तार कर के एक साल तक ग़ुलाम बना रखना है और इसी से वह अपने मक़सद में कामियाब रहे।

२. उस के एक भाई से उन की मुराद यूसुफ़ अलैहिस्सलाम थे, क्योंकि बिन यामीन और यूसुफ़ एक मां से थे और

(शेष पृष्ठ ३८९ पर)

★रु. ९/३ आ ११

क़ा-ल इन्नमा अश्कू बस्सी व हुज़्नी इलल्लाहि व अअ्-लमु मिनल्लाहि मा ला तअ्-लमून (८६) या बनिय्यज़्हबू फ़ त-हस्ससू मिंय्यू-सु-फ़ व अख़ीहि व ला तै-असू मिर्रौहिल्लाहि ط इन्नहू ला यै-असु मिर्रौहिल्लाहि इल्लल्-क़ौमुल्-काफ़िरून (८७) फ़-लम्मा द-ख़लू अलैहि क़ालू या अय्युहल्-अज़ीज़ु मस्सना व अह्-ल-नज़्ज़ुर्रु व जिअ्ना बिबिज़ाअतिम्-मुज्जातिन् फ़-औफ़ि लनल्कै-ल व त-सद्-दक् अलैना ط इन्नल्ला-ह यज्ज़िल्-मु-त-सद्दिक़ीन (८८) क़ा-ल हल् अलिम्तुम् मा फ़-अल्तुम् बियूसु-फ़ व अख़ीहि इज़् अन्तुम् जाहिलून (८९) क़ालू अ-इन्न-क ल-अन्-त यूसुफ़ु ط क़ा-ल अ-न यूसुफ़ु व हाज़ा अख़ी ز क़द् मन्नल्लाहु अलैना ط इन्नहू मंय्यत्तक़ि व यस्बिर् फ़इन्नल्ला-ह ला युज़ीअु अज्रल्-मुह्सिनीन (९०) क़ालू तल्लाहि ल-क़द् आस-र-कल्लाहु अलैना व इन् कुन्ना ल-ख़ातिईन (९१)

قَالَ إِنَّمَا أَشْكُوا بَثِّي وَحُزْنِي إِلَى اللَّهِ وَأَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٨٦﴾
يَا بَنِيَّ اذْهَبُوا فَتَحَسَّسُوا مِنْ يُوسُفَ وَأَخِيهِ وَلَا تَيْأَسُوا مِنْ رَوْحِ
اللَّهِ إِنَّهُ لَا يَيْأَسُ مِنْ رَوْحِ اللَّهِ إِلَّا الْقَوْمُ الْكَافِرُونَ ﴿٨٧﴾ فَلَمَّا
دَخَلُوا عَلَيْهِ قَالُوا يَا أَيُّهَا الْعَزِيزُ مَسَّنَا وَأَهْلَنَا الضُّرُّ وَجِئْنَا
بِبِضَاعَةٍ مُزْجَاةٍ فَأَوْفِ لَنَا الْكَيْلَ وَتَصَدَّقْ عَلَيْنَا إِنَّ اللَّهَ
يَجْزِي الْمُتَصَدِّقِينَ ﴿٨٨﴾ قَالَ هَلْ عَلِمْتُمْ مَا فَعَلْتُمْ بِيُوسُفَ وَ
أَخِيهِ إِذْ أَنْتُمْ جَاهِلُونَ ﴿٨٩﴾ قَالُوا أَإِنَّكَ لَأَنْتَ يُوسُفُ قَالَ أَنَا يُوسُفُ
وَهَٰذَا أَخِي قَدْ مَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا إِنَّهُ مَنْ يَتَّقِ وَيَصْبِرْ فَإِنَّ اللَّهَ
لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٩٠﴾ قَالُوا تَاللَّهِ لَقَدْ آثَرَكَ اللَّهُ عَلَيْنَا وَ
إِنْ كُنَّا لَخَاطِئِينَ ﴿٩١﴾ قَالَ لَا تَثْرِيبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ يَغْفِرُ اللَّهُ لَكُمْ
وَهُوَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ ﴿٩٢﴾ اذْهَبُوا بِقَمِيصِي هَٰذَا فَأَلْقُوهُ عَلَىٰ
وَجْهِ أَبِي يَأْتِ بَصِيرًا وَأْتُونِي بِأَهْلِكُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٩٣﴾ وَلَمَّا فَصَلَتِ
الْعِيرُ قَالَ أَبُوهُمْ إِنِّي لَأَجِدُ رِيحَ يُوسُفَ لَوْلَا أَنْ تُفَنِّدُونِ ﴿٩٤﴾
قَالُوا تَاللَّهِ إِنَّكَ لَفِي ضَلَالِكَ الْقَدِيمِ ﴿٩٥﴾ فَلَمَّا أَنْ جَاءَ الْبَشِيرُ
أَلْقَاهُ عَلَىٰ وَجْهِهِ فَارْتَدَّ بَصِيرًا قَالَ أَلَمْ أَقُلْ لَكُمْ إِنِّي أَعْلَمُ
مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٩٦﴾ قَالُوا يَا أَبَانَا اسْتَغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا إِنَّا كُنَّا
خَاطِئِينَ ﴿٩٧﴾ قَالَ سَوْفَ أَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّي إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿٩٨﴾

क़ा-ल ला तस्री-ब अलैकुमुल्-यौ-म ط यग़्फ़िरुल्लाहु लकुम् ✓ व हु-व अर्हमुर-राहिमीन (९२) इज़्हबू बिक़मीसी हाज़ा फ़-अल्क़ूहु अला वज्हि अबी यअ्ति बसीरन् ج वअ्तूनी बिअह्लिकुम् अज्मईन ★ (९३) व लम्मा फ़-स-लतिल्‌ओरु क़ा-ल अबूहुम् इन्नी ल-अजिदु री-ह यूसु-फ़ लौला अन् तुफ़न्निदून (९४) क़ालू तल्लाहि इन्न-क लफ़ी ज़लालिकल्-क़दीम● (९५) फ़-लम्मा अन् जा-अल्-बशीरु अल्क़ाहु अला वज्हिही फ़र्तद्-द बसीरन् ج क़ा-ल अ-लम् अक़ुल्लकुम् ج इन्नी अअ्-लमु मिनल्लाहि मा ला तअ्-लमून (९६) क़ालू या अबानस्तग़्फ़िर् लना ज़ुनूबना इन्ना कुन्ना ख़ातिईन (९७) क़ा-ल सौ-फ़ अस्तग़्फ़िरु लकुम् रब्बी ط इन्नहू हुवल्-ग़फ़ूरुर्रहीम (९८)

★रु० १०/४ आ १४● रुबअ १/४

दगे। (८५) उन्हों ने कहा कि मैं तो अपने ग़म व दुख को ख़ुदा से ही ज़ाहिर करता हूं और ख़ुदा की तरफ़ से वह बातें जानता हूं, जो तुम नहीं जानते। (८६) बेटा! (यों करो कि एक बार फिर) जाओ और यूसुफ़ और उस के भाई को खोजो और ख़ुदा की रहमत से ना-उम्मीद न हो कि ख़ुदा की रहमत से बे-ईमान लोग ना-उम्मीद हुआ करते हैं। (८७) जब वे यूसुफ़ के पास गए तो कहने लगे कि अज़ीज़! हमें और हमारे बाल-बच्चों को बड़ी तक्लीफ़ हो रही है और हम थोड़ी सी पूंजी लाए हैं। आप हमें (इस के बदले) पूरा अनाज दीजिए और ख़ैरात कीजिए कि ख़ुदा ख़ैरात करने वालों को सवाब देता है। (८८) (यूसुफ़ ने) कहा, कि तुम्हें मालूम है कि जब तुम ना-दानी में फंसे हुए थे तो तुम ने यूसुफ़ और उस के भाई के साथ क्या किया था? (८९) वे बोले, क्या तुम्हीं यूसुफ़ हो? उन्हों ने कहा, हां मैं ही यूसुफ़ हूं और (बिन यामीन की तरफ़ इशारा कर के कहने लगे,) यह मेरा भाई है। ख़ुदा ने हम पर बड़ा एहसान किया है। जो शख़्स ख़ुदा से डरता और सब्र करता है तो ख़ुदा नेक लोगों का बदला बर्बाद नहीं करता। (९०) वे बोले, ख़ुदा की क़सम! ख़ुदा ने तुम को हम पर फ़ज़ीलत बख़्शी है और बेशक हम ख़ताकार थे। (९१) (यूसुफ़ ने) कहा कि आज के दिन (से) तुम पर कुछ इताब (व मलामत) नहीं है। ख़ुदा तुम को माफ़ करे और वह बहुत रहम करने वाला है। (९२) यह मेरा कुरता ले जाओ और इसे वालिद साहब के मुंह पर डाल दो। उन की रोशनी वापस आ जाएगी और अपने तमाम बाल-बच्चों को मेरे पास ले आओ★(९३) और जब क़ाफ़िला (मिस्र से) रवाना हुआ, तो उन के वालिद कहने लगे कि अगर मुझ को यह न कहो कि (बूढ़ा) बहक गया है, तो मुझे तो यूसुफ़ की बू आ रही है। (९४) वे बोले कि ख़ुदा की क़सम! आप उसी पुरानी ग़लती में पड़े हुए हैं●(९५) जब ख़ुशख़बरी देने वाला आ पहुंचा तो कुरता याक़ूब के मुंह पर डाल दिया और उन की रोशनी लौट आयी, (और बेटों से कहने लगे), क्या मैं ने तुम से नहीं कहा था कि मैं ख़ुदा की तरफ़ से वे बातें जानता हूं, जो तुम नहीं जानते। (९६) बेटों ने कहा कि अब्बा! हमारे लिए हमारे गुनाह की मग़्फ़िरत मांगिए, बेशक हम ख़ताकार थे। (९७) उन्हों ने कहा कि मैं अपने परवरदिगार से तुम्हारे लिए बख़्शिश मांगूगा।

(पृष्ठ ३८७ का शेष)

वे दूसरी माओं से, मगर यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने कभी चोरी नहीं की और यूसुफ़ जैसा शख़्स चोरी कर सकता ही नहीं। जिस वाक़िए को उन लोगों ने चोरी क़रार दिया, वह यों हुआ था कि जब यूसुफ़ पैदा हुए, तो उन की फूफी उन की परवरिश करने लगीं और वह उन से निहायत मुहब्बत रखती थीं। जब आप कुछ साल के हुए तो याक़ूब अलैहिस्सलाम बहन के पास आए और कहा कि अब यूसुफ़ को दे दो। वह उन को अपने से दम भर जुदा करना भी गवारा नहीं कर सकती थीं। उन्हों ने कहा ख़ुदा की क़सम! मैं इस को अपने से अलग नहीं करूंगी। तुम इसे कुछ मुद्दत और मेरे पास रहने दो, ताकि मैं इसे देख-देख कर दिल ठंडा करती रहूं। जब याक़ूब अलैहिस्सलाम बहन के पास से बाहर चले गये तो उन्हों ने यूसुफ़ को अपने पास रखने की क्या तद्बीर की कि हज़रत इस्हाक़ का एक पटका उन के पास था, जो मीरास के तौर पर उस शख़्स को मिलता था, जो सब में बड़ा होता था और चूंकि याक़ूब अलैहिस्सलाम की यह बहन सब में बड़ी थीं, इस लिए वह उन को मिला था, तो उन्हों ने वह पटका यूसुफ़ की कमर से बांध दिया और मशहूर यह किया कि पटका गुम हो गया है और उसे खोजना शुरू किया। जब खोजने पर न मिला तो कहा कि घर वालों की जामा तलाशी करनी चाहिए। जामा तलाशी की तो यूसुफ़ की कमर से बंधा हुआ मिला। तब कहा कि उस ने मेरी चोरी की है, इस लिए मैं इसे छोड़ने की नहीं और इस

(शेष पृष्ठ ३९१ पर)

फ़लम्मा द-ख़लू अला यूसु-फ़ आवा इलैहि अ-बवैहि व क़ालद्ख़ुलू मिस्-र इन्शाअल्लाहु आमिनीन ط (९९) व र-फ़-अ अ-बवैहि अ-लल्-अ़र्शि व ख़र्रू लहू सुज्जदन् ج व क़ा-ल या अ-बति हाज़ा तअ्वीलु रुअ्या-य मिन् क़ब्लु ✓ क़द् ज-अ-लहा रब्बी हक़्क़न् ط व क़द् अह्-स-न बी इज् अख़्-र-जनी मिनस्सिज्नि व जा-अ बिकुम् मिनल्बद्वि मिम्बअ् - दि अन् न-ज़-ग़श्शैतानु बैनी व बै - न इख़्वती ط इन् - न रब्बी लतीफ़ुल्लिमा यशाउ ط इन्नहू हुवल् - अ़लीमुल् - हकीम (१००) रब्बि क़द् आतैतनी मिनल्मुल्कि व अ़ल्लम्तनी मिन् तअ्वीलिल् - अहादीसि ج फ़ातिरस्समावाति वल्अर्ज़ि قف अन - त वलिय्यी फ़िद्दुन्या वल्आख़िरति ج त-वफ़्फ़नी मुस्लिमंव्-व अल्-हिक़्नी बिस्सालिहीन (१०१) ज़ालि - क मिन् अम्बाइल्ग़ैबि नूहीहि इलै - क ج व मा कुन् - त लदैहिम् इज् अज-मअू अम्-रहुम् व हुम् यम्कुरून (१०२) व मा अक्सरुन्नासि व लौ ह-रस्-त बिमुअ्मिनीन (१०३) व मा तस-अलुहुम् अ़लैहि मिन् अज्रिन् ط इन् हु - व इल्ला ज़िक्रुल्लिल् - आलमीन ★ (१०४) व क-अय्यिम्मिन् आयतिन् फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि यमुर्रू-न अ़लैहा व हुम् अ़न्हा मुअ्-रिज़ून (१०५) व मा युअ्मिनु अक्सरुहुम् बिल्लाहि इल्ला व हुम् मुश्रिकून (१०६) अ-फ़ - अमिनू अन् तअ्-ति-यहुम् ग़ाशि-यतुम्-मिन् अ़ज़ाबिल्लाहि औ-तअ्ति-य-हुमुस्साअतु बग़्-तंव्-व हुम् ला यश्अुरून (१०७) क़ुल् हाज़िही सबीली अद्अू इलल्लाहि قف ▩ अ़ला बसीरतिन् अ-न व मनित्त-ब-अ़नी ط व सुब्हानल्लाहि व मा अ-न मिनल्-मुश्रिकीन (१०८)

فَلَمَّا دَخَلُوا عَلَىٰ يُوسُفَ آوَىٰ إِلَيْهِ أَبَوَيْهِ وَقَالَ ادْخُلُوا مِصْرَ إِنْ
شَاءَ اللَّهُ آمِنِينَ ﴿٩٩﴾ وَرَفَعَ أَبَوَيْهِ عَلَى الْعَرْشِ وَخَرُّوا لَهُ سُجَّدًا ۖ وَ
قَالَ يَا أَبَتِ هَٰذَا تَأْوِيلُ رُؤْيَايَ مِنْ قَبْلُ قَدْ جَعَلَهَا رَبِّي حَقًّا ۖ
وَقَدْ أَحْسَنَ بِي إِذْ أَخْرَجَنِي مِنَ السِّجْنِ وَجَاءَ بِكُمْ مِنَ الْبَدْوِ
مِنْ بَعْدِ أَنْ نَزَغَ الشَّيْطَانُ بَيْنِي وَبَيْنَ إِخْوَتِي ۚ إِنَّ رَبِّي لَطِيفٌ
لِمَا يَشَاءُ ۚ إِنَّهُ هُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ﴿١٠٠﴾ رَبِّ قَدْ آتَيْتَنِي مِنَ الْمُلْكِ
وَعَلَّمْتَنِي مِنْ تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ ۚ فَاطِرَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ أَنْتَ
وَلِيِّي فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۖ تَوَفَّنِي مُسْلِمًا وَأَلْحِقْنِي بِالصَّالِحِينَ ﴿١٠١﴾
ذَٰلِكَ مِنْ أَنْبَاءِ الْغَيْبِ نُوحِيهِ إِلَيْكَ ۖ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ إِذْ
أَجْمَعُوا أَمْرَهُمْ وَهُمْ يَمْكُرُونَ ﴿١٠٢﴾ وَمَا أَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ
حَرَصْتَ بِمُؤْمِنِينَ ﴿١٠٣﴾ وَمَا تَسْأَلُهُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۚ إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ
لِلْعَالَمِينَ ﴿١٠٤﴾ وَكَأَيِّنْ مِنْ آيَةٍ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ يَمُرُّونَ
عَلَيْهَا وَهُمْ عَنْهَا مُعْرِضُونَ ﴿١٠٥﴾ وَمَا يُؤْمِنُ أَكْثَرُهُمْ بِاللَّهِ إِلَّا
وَهُمْ مُشْرِكُونَ ﴿١٠٦﴾ أَفَأَمِنُوا أَنْ تَأْتِيَهُمْ غَاشِيَةٌ مِنْ عَذَابِ اللَّهِ
أَوْ تَأْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿١٠٧﴾ قُلْ هَٰذِهِ سَبِيلِي
أَدْعُو إِلَى اللَّهِ ۚ عَلَىٰ بَصِيرَةٍ أَنَا وَمَنِ اتَّبَعَنِي ۖ وَسُبْحَانَ اللَّهِ وَ
مَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿١٠٨﴾ وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ إِلَّا رِجَالًا

★रु. ११/५ आ ११ ▩ व. न बी स.

बेशक वह बख़्शने वाला मेहरबान है। (९८) जब (ये सब लोग) यूसुफ़ के पास पहुंचे, तो यूसुफ़ ने अपने मां-बाप को अपने पास बिठाया और कहा कि मिस्र में दाख़िल हो जाइए। ख़ुदा ने चाहा तो अम्न व सुकून मे रहिएगा। (९९) और अपने मां-बाप को तख़्त पर बिठाया और सब यूसुफ़ के आगे सज्दे में गिर पड़े और (उस वक़्त) यूसुफ़ ने कहा, अब्बा जान! यह मेरे उस ख़्वाब की ताबीर है, जो मैं ने पहले (बचपन में) देखा था। मेरे परवरदिगार ने उसे सच कर दिया और उस ने मुझ पर (बहुत से) एहसान किए हैं कि मुझ को जेलख़ाने से निकाला और इस के बाद कि शैतान ने मुझ में और मेरे भाइयों में फ़साद डाल दिया था, आप को गांव से यहां लाया। बेशक मेरा परवरदिगार जो चाहता है तद्बीर से करता है। वह जानने वाला (और) हिक्मत वाला है। (१००) (जब ये सब बातें हो लीं, तो यूसुफ़ ने ख़ुदा से दुआ की कि) ऐ मेरे परवरदिगार! तू ने मुझ को हुकूमत से नवाज़ा और ख़्वाबों की ताबीर का इल्म बख़्शा। ऐ आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले! तू ही दुनिया व आख़िरत में मेरा कारसाज़ है। तू मुझे (दुनिया से) अपनी इताअत (की हालत) में उठाइयो और आख़िरत में अपने नेक बंदों में दाख़िल कीजियो। (१०१) (ऐ पैग़म्बर!) ये ख़बरें ग़ैब में से हैं जो हम तुम्हारी तरफ़ भेजते हैं और जब यूसुफ़ के भाइयों ने अपनी बात पर इत्तिफ़ाक़ किया था और वे फ़रेब कर रहे थे, तो तुम उनके पास तो न थे। (१०२) और बहुत से आदमी, गो तुम (कितनी ही) ख़्वाहिश करो, ईमान लाने वाले नहीं हैं। (१०३) और तुम उनसे इस (ख़ैर-ख़्वाही) का कुछ बदला भी तो नहीं मांगते। यह क़ुरआन और कुछ नहीं तमाम दुनिया के लिए नसीहत है। (१०४) ★

और आसमान व ज़मीन में बहुत-सी निशानियां हैं, जिन पर ये गुज़रते हैं और इनसे मुंह छिपाते हैं। (१०५) और ये अक्सर ख़ुदा पर ईमान नहीं रखते, मगर (उसके साथ) शिर्क करते हैं।[१] (१०६) क्या ये (इस बात) से बे-ख़ौफ़ हैं कि उन पर ख़ुदा का अज़ाब नाज़िल हो कर उन को ढांप ले या उन पर यकायक क़ियामत आ जाए और उन्हें ख़बर भी न हो। (१०७) कह दो कि मेरा रास्ता तो यह है मैं ख़ुदा की तरफ़ बुलाता हूं ▨ (यक़ीन के मुताबिक़) समझ-बूझ कर मैं भी (लोगों को ख़ुदा की तरफ़ बुलाता हूं) और मेरी पैरवी करने वाले भी और ख़ुदा पाक है और मैं शिर्क करने वालों में से नहीं

(पृष्ठ ३८९ का शेष)

तद्बीर से उन को अपने पास रख लिया। चूंकि यूसुफ़ अलैहिस्सलाम पर चोरी का इल्ज़ाम था, इस लिए याक़ूब अलैहिस्सलाम भी मजबूर थे और बेटे को बहन से नहीं ले सकते थे, ग़रज़ यूसुफ़ फूफी के पास रहते और परवरिश पाते रहे, यहां तक कि फूफी का इन्तिक़ाल हो गया। भला यह वाक़िआ चोरी है और कोई शख़्स इसे सुन कर कह सकता है कि हज़रत यूसुफ़ ने चोरी की थी? तफ़्सीर लिखने वालों ने इस के सिवा कई और बातें लिखी हैं। जैसे, घर में एक मुर्ग़ी थी, वह उन्हों ने फ़क़ीर को दे दी थी या दस्तरख़्वान से खाना ले जाते थे और मुहताजों को दे आते थे, मगर ये बातें ऐसी हैं जिन्हें देख कर चोरी नहीं कहा जा सकता और सच तो यह है कि यूसुफ़ अलै० पर चोरी का इल्ज़ाम सिर्फ़ झूठ है। यूसुफ़ के भाइयों को तो झूठ बोलने में झिझक थी ही नहीं, तफ़्सीर लिखने वालों ने भी ऐसी झूठी बातों को चोरी क़रार देने और उन को यूसुफ़ से मुताल्लिक़ कर देने की ग़लती की है।

१. यानी ख़ुदा को मानते भी हैं और यह जानते भी हैं कि ज़मीन व आसमान और जो कुछ उन में है, उन का पैदा करने वाला और मालिक वही है, मगर साथ ही बुतों की पूजा भी करते हैं या उन को ख़ुदा की बराबरी का भी ठहराते हैं। यह खुला हुआ शिर्क है। इस तरीक़े पर ख़ुदा को मानने वाला मोमिन नहीं कहलाता, मुश्रिक

(शेष पृष्ठ ३९३ पर)

★रु. ११/५ आ ११ ▨ व. न वी स.

व मा असंल्ना मिन् क़ब्लि-क इल्ला रिजालन् नूही इलैहिम् मिन् अह्लिल्क़ुरा ط अ-फ़-लम् यसीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़-यन्ज़ुरू कै-फ़ का-न आक़िबतुल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् ط व ल-दारुल् - आख़िरति ख़ैरुल्लिल्लज़ीनत्तक़ौ ط अ - फ़ला तअ्-क़िलून (१०९) हत्ता इज़स्तै-अ-सर् - रुसुलु व ज़न्नू अन्नहुम् क़द् कुज़िबू जा-अहुम् नस्रुना ط फ़नुज्जि-य मन् नशाउ ط व ला युरद्दु बअ्सुना अनिल्-क़ौमिल्-मुज्रिमीन (११०) ल-क़द् का-न फ़ी क़-ससिहिम् अिब्रतुल् - लिउलिल् - अल्बाबि ط मा का - न हदीसंय्युफ़्तरा व लाकिन् तस्दीक़ल्लज़ी बै - न यदैहि व तफ़्सी-ल कुल्लि शैइंव् - व हुदंव् - व रह्-म-तल् - लिक़ौमिंय्युअ्मिनून ★ (१११)

१३ सूरतुर्रअ्-दि ९६

(मदनी) इस सूरः में अरबी के ३६१४ अक्षर, ८६३ शब्द, ४३ आयतें और ६ रुकूअ् हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

نوحي اليهم من اهل القرى افلم يسيروا في الارض فينظروا
كيف كان عاقبة الذين من قبلهم ولدار الاخرة خير للذين
اتقوا افلا تعقلون ۝ حتى اذا استيئس الرسل وظنوا
انهم قد كذبوا جاءهم نصرنا فنجي من نشاء ولا
يرد باسنا عن القوم المجرمين ۝ لقد كان في قصصهم
عبرة لاولي الالباب ما كان حديثا يفترى ولكن
تصديق الذي بين يديه وتفصيل كل شيء وهدى
ورحمة لقوم يؤمنون ۝

سورة الرعد مدنية وهي ثلث واربعون اية وست ركوعات

بسم الله الرحمن الرحيم

المر تلك ايت الكتب والذي انزل اليك من ربك الحق و
لكن اكثر الناس لا يؤمنون ۝ الله الذي رفع السموت بغير
عمد ترونها ثم استوى على العرش وسخر الشمس والقمر كل
يجري لاجل مسمى يدبر الامر يفصل الايت لعلكم بلقاء ربكم
توقنون ۝ وهو الذي مد الارض وجعل فيها رواسي وانهرا
ومن كل الثمرت جعل فيها زوجين اثنين يغشي اليل النهار
ان في ذلك لايت لقوم يتفكرون ۝ وفي الارض قطع متجورت

अलिफ़् - लाम्-मीम्-रा (क़फ़) तिल - क आयातुल् - किताबि ط वल्लज़ी उन्ज़ि - ल इलै - क मिर्रब्बिकल् - हक़्क़ु व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला युअ्मिनून (१) अल्लाहुल्लज़ी र-फ़-अस्-समावाति बिग़ैरि अ-म-दिन् तरौनहा सुम्मस्तवा अ-लल्अर्शि व सख़्ख़रश्-शम्-स वल्क़-म-र ط कुल्लुंय्यज्री लि-अ-जलिम् - मुसम्मन् ط युदब्बिरुल्-अम्-र युफ़स्सिलुल्-आयाति ल-अल्लकुम् बिलिक़ाइ रब्बिकुम् तूक़िनून (२) व हुवल्लज़ी मद्दल्-अर्-ज़ व ज-अ-ल फ़ीहा रवासि-य व अन्हारन् ط व मिन् कुल्लिस्समराति ज - अ - ल फ़ीहा ज़ौजैनिस्नैनि युग़्शिल् - लैलन्नहा-र ط इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल् - लिक़ौमिंय्य-त-फ़क्करून (३)

★रु. १२/६ आ ७

हूं। (१०८) और हम ने तुम से पहले बस्तियों के रहने वालों में से मर्द ही भेजे थे। जिन की तरफ़ हम वह्य भेजते थे, क्या इन लोगों ने देश में (घूमना-फिरना) नहीं किया कि देख लेते कि जो लोग उन से पहले थे, उन का अंजाम क्या हुआ और मुत्तक़ियों के लिए आख़िरत का घर बहुत अच्छा है। क्या तुम समझते नहीं ? (१०९) यहां तक कि जब पैग़म्बर ना-उम्मीद हो गये और उन्हों ने ख़्याल किया कि (अपनी) मदद के बारे में जो बात उन्हों ने कही थी, उस में वे सच्चे न निकले। तो उनके पास हमारी मदद आ पहुंची। फिर जिसे हम ने चाहा, बचा दिया और हमारा अज़ाब उतर कर गुनाहगार लोगों से फिरा नहीं करता। (११०) उन के क़िस्से में अक़्लमंदों के लिए सबक़ है। यह (क़ुरआन) ऐसी बात नहीं है जो (अपने दिल से) बना ली गयी हो, बल्कि जो किताबें इस से पहले (नाज़िल हुई) हैं, उन की तस्दीक़ (करने वाला) है और हर चीज़ की तफ़्सील (करने वाला) और मोमिनों के लिए हिदायत और रहमत है। (१११) ★

१३ सूरः रअ्‌द ९६

सूरः राद मक्की है और इस में ४३ आयतें और छः रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ़्-लाम्-मीम्-रा, (ऐ मुहम्मद !) ये (अल्लाह की) किताब की आयतें हैं और जो तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से तुम पर नाज़िल हुआ है, हक़ है, लेकिन अक्सर लोग ईमान नहीं लाते। (१) ख़ुदा वही तो है, जिस ने स्तूनों के बग़ैर आसमान, जैसा कि तुम देखते हो, (इतने) ऊंचे बनाये, फिर अर्श पर जा ठहरा और सूरज और चांद को काम में लगा दिया। हर-एक एक तै मीयाद तक घूम रहा है। वही (दुनिया के) कामों का इंतिज़ाम करता है। (इस तरह) वह अपनी आयतें खोल-खोल कर बयान करता है कि तुम अपने परवरदिगार के रू-ब-रू जाने का यक़ीन करो। (२) और वह वही है जिस ने ज़मीन को फैलाया और उस में पहाड़ और दरिया पैदा किए और हर तरह के मेवों की दो-दो क़िस्में बनायीं। वही रात को दिन का लिबास पहनाता है। ग़ौर करने वालों के लिए इस में बहुत

(पृष्ठ ३९१ का शेष)
कहलाता है और शिर्क ऐसा गुनाह है, जो कभी नहीं बख़्शा जाएगा। (अल्लाह तआला हमें उस से पनाह दे)। कुछ लोगों ने इस आयत को मुनाफ़िक़ों पर चस्पां किया है कि ज़ाहिर में वे मोमिन थे और अन्दर से मुश्रिक। कुछ लोगों ने कहा है कि इस से मुराद अह्ले किताब हैं यानी यहूदी और ईसाई कि वे ख़ुदा को भी मानते हैं और साथ ही उज़ैर और ईसा अलैहिस्सलाम को ख़ुदा का बेटा भी कहते हैं और यह शिर्क है, क्योंकि ख़ुदा औलाद से पाक है। कुछ लोगों ने कहा है कि ऐसे दिखावट करने वाले लोग मुराद हैं कि वे ख़ुदा पर ईमान रखते हैं, लेकिन चूंकि ख़ास अमल ख़ुदा के लिए नहीं करते, बल्कि दिखावे के लिए करते हैं और दिखावे के लिए अमल करना शिर्क में दाख़िल है, इस लिए वे मुश्रिक हैं। शेख़ सादी रह० के मुताबिक़ जो सिफ़तें ख़ुदा की ज़ात से मख़्सूस हैं, उन के बारे में यह एतक़ाद रखना कि वे किसी और में भी पायी जाती हैं, यह भी शिर्क है और आज-कल जो मुसलमान ख़ुदा के भी क़ायल हैं और साथ ही क़ब्र-परस्ती, पीर-परस्ती और ताज़िया परस्ती भी करते हैं उन में और इसी तरह की और चीज़ों में ख़ुदा के-से तसर्रुफ़ात मानते हैं, इस आयत में वे भी शामिल हैं। अल्लाह तआला मुसलमानों को तौफ़ीक़ बख़्शे कि वे उस को इस तरह जानें और उस पर इस तरह ईमान रखें कि उस में शिर्क बिल्कुल न मिला हो, उन का ईमान शिर्क से बिल्कुल पाक हो और वे ख़ालिस मोमिन हों।

★रु० १२/६ आ ७

व फ़िल्अर्ज़ि क़ि-त-अुम्-मु-तजाविरातुंव-व जन्नातुम्-मिन् अअ्-नाबिंव्-व ज़र्अुंव-व नख़ीलुन् सिन्वानुंव्-व ग़ैरु सिन्वानिंय्युस्क़ा बिमाइंव्वाहिदिन् व नुफ़ज़्ज़िलु बअ्-ज़हा अला बअ्-ज़िन् फ़िल्उकुलि इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल्-लिक़ौमिंय्यअ्-क़िलून (४) व इन् तअ्-जब् फ़-अ-जबुन् क़ौलुहुम् अ इज़ा कुन्ना तुराबन् अ इन्ना लफ़ी ख़ल्क़िन् जदीदिन् उलाइकल्लज़ी-न क-फ़रू बिरब्बिहिम् व उलाइकल्-अग़्लालु फ़ी अअ्-नाक़िहिम् व उलाइ-क अस्हाबुन्नारि हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (५) व यस्तअ्-जिलून-क बिस्-सय्यिअति क़ब्-लल्-ह-स-नति व क़द् ख़-लत् मिन् क़ब्लिहिमुल्-मसुलातु व इन्-न रब्ब-क लज़ू मग़्फ़ि-रतिल्-लिन्नासि अला ज़ुल्मिहिम् व इन्-न रब्ब-क ल-शदीदुल्-अिक़ाब (६) व यक़ूलुल्लज़ी-न क-फ़रू लौला उन्ज़ि-ल अलैहि आयतुम्-मिर्रब्बिही इन्नमा अन्-त मुन्ज़िरुंव्-व लिकुल्लि क़ौमिन् हाद ★ (७)

وَجَنّٰتٌ مِّنْ اَعْنَابٍ وَّزَرْعٌ وَّنَخِيْلٌ صِنْوَانٌ وَّغَيْرُ صِنْوَانٍ يُّسْقٰى
بِمَآءٍ وَّاحِدٍ وَّنُفَضِّلُ بَعْضَهَا عَلٰى بَعْضٍ فِى الْاُكُلِ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ
لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿۴﴾ وَاِنْ تَعْجَبْ فَعَجَبٌ قَوْلُهُمْ ءَاِذَا كُنَّا تُرٰبًا
ءَاِنَّا لَفِىْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ وَاُولٰٓئِكَ الْاَغْلٰلُ
فِىْ اَعْنَاقِهِمْ وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۵﴾ وَ
يَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ وَقَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمُ الْمَثُلٰتُ
وَاِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ مَغْفِرَةٍ لِّلنَّاسِ عَلٰى ظُلْمِهِمْ وَاِنَّ رَبَّكَ لَشَدِيْدُ
الْعِقَابِ ﴿۶﴾ وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ
اِنَّمَآ اَنْتَ مُنْذِرٌ وَّلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ ﴿۷﴾ اَللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ اُنْثٰى
وَمَا تَغِيْضُ الْاَرْحَامُ وَمَا تَزْدَادُ وَكُلُّ شَىْءٍ عِنْدَهٗ بِمِقْدَارٍ ﴿۸﴾ عٰلِمُ
الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْكَبِيْرُ الْمُتَعَالِ ﴿۹﴾ سَوَآءٌ مِّنْكُمْ مَّنْ اَسَرَّ الْقَوْلَ
وَمَنْ جَهَرَ بِهٖ وَمَنْ هُوَ مُسْتَخْفٍ بِالَّيْلِ وَسَارِبٌ بِالنَّهَارِ ﴿۱۰﴾ لَهٗ
مُعَقِّبٰتٌ مِّنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ يَحْفَظُوْنَهٗ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ
اِنَّ اللّٰهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ وَاِذَآ اَرَادَ اللّٰهُ
بِقَوْمٍ سُوْٓءًا فَلَا مَرَدَّ لَهٗ وَمَا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّالٍ ﴿۱۱﴾ هُوَ
الَّذِىْ يُرِيْكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَّطَمَعًا وَّيُنْشِئُ السَّحَابَ الثِّقَالَ ﴿۱۲﴾
وَيُسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِهٖ وَالْمَلٰٓئِكَةُ مِنْ خِيْفَتِهٖ وَيُرْسِلُ الصَّوَاعِقَ

अल्लाहु यअ्-लमु मा तह्मिलु कुल्लु उन्सा व मा तग़ीज़ुल्-अर्हामु व मा तज़्दादु व कुल्लु शैइन् अिन्दहू बिमिक़्दार (८) आलिमुल्-ग़ैबि वश्शहादतिल्-कबीरुल्-मु-त-आल (९) सवाउम्-मिन्कुम् मन् अ-सर्रल्-क़ौ-ल व मन् ज-ह-र बिही व मन् हु-व मुस्तख़्फ़िम्-बिल्लैलि व सारिबुम्-बिन्नहार (१०) लहू मुअक़्क़िबातुम्-मिम्बैनि यदैहि व मिन् ख़ल्फ़िही यह्फ़ज़ूनहू मिन् अम्रिल्लाहि इन्नल्ला-ह ला युग़य्यिरु मा बिक़ौमिन् हत्ता युग़य्यिरू मा बि-अन्फ़ुसिहिम् व इज़ा अरादल्लाहु बिक़ौमिन् सूअन् फ़ला म-रद्-द लहू व मा लहुम् मिन् दूनिही मिंव्वाल (११) हुवल्लज़ी युरीकुमुल्बर-क ख़ौफ़ंव्-व त-म-अंव-व युन्शिउस्-सहाबस्-सिक़ाल (१२) व युसब्बिहुर्रअ्-दु बिहम्दिही वल्मलाइकतु मिन् ख़ीफ़तिही व युर्सिलुस्सवाअि-क़ फ़युसीबु बिहा मंय्यशाउ व हुम् युजादिलू-न फ़िल्लाहि व हु-व शदीदुल्-मिहाल (१३)

★रु. १/७ आ ७

सी निशानियां हैं। (३) और ज़मीन में कई तरह के क़तात हैं, एक दूसरे से मिले हुए और अंगूर के बाग़ और खेती और खजूर के पेड़, कुछ की बहुत सी शाखें होती है और कुछ की इतनी नहीं होतीं (इस के बावजूद कि) पानी सब को एक ही मिलता है और हम कुछ मेवों को कुछ पर लज़्ज़त में बढ़ा देते हैं। इस में समझने वालों के लिए बहुत-सी निशानियां हैं। (४) अगर तुम अजीब बात सुननी चाहो तो काफ़िरों का यह कहना अजीब है कि जब हम (मर कर) मिट्टी हो जाएंगे तो क्या फिर से पैदा होंगे। यही लोग हैं जो अपने परवरदिगार से मुंकिर हुए हैं और यही हैं जिन की गरदनों में तौक़ होंगे, और यही दोज़ख वाले हैं कि हमेशा उस में (जलते) रहेंगे। (५) और ये लोग भलाई से पहले तुम से बुराई के जल्द चाहने वाले (यानी अज़ाब चाहने वाले) हैं, हालांकि उन से पहले अज़ाब (वाक़ेअ) हो चुके हैं और तुम्हारा परवरदिगार लोगों को उन की बे-इंसाफ़ियों के बावजूद माफ़ करने वाला है और बेशक तुम्हारा परवरदिगार सख़्त अज़ाब देने वाला है। (६) और काफ़िर लोग कहते हैं कि इस (पैग़म्बर) पर उस के परवरदिगार की तरफ़ से कोई निशानी क्यों नाज़िल नहीं हुई।[1] सो (ऐ मुहम्मद !) तुम तो सिर्फ़ हिदायत करने वाले हो और हर एक क़ौम के लिए रहनुमा हुआ करता है। (७) ★

ख़ुदा ही उस बच्चे को जानता है, जो औरत के पेट में होता है और पेट के सुकड़ने और बढ़ने को भी (जानता है) और हर चीज़ का उस के यहां एक अन्दाज़ा मुक़र्रर है। (८) वह छिपे और खुले का जानने वाला है। सब से बुज़ुर्ग (और) बुलंद रुत्बा है। (९) कोई तुम में से चुपके से बात कहे या पुकार कर या रात को कहीं छिप जाए या दिन (की रोशनी) में खुल्लम-खुल्ला चले-फिरे (उस के नज़दीक) बराबर है। (१०) उस के आगे और पीछे ख़ुदा के चौकीदार हैं, जो ख़ुदा के हुक्म से उस की हिफ़ाज़त करते हैं। ख़ुदा उस (नेमत) को, जो किसी क़ौम को (हासिल) है, नहीं बदलता, जब तक कि वह अपनी हालत को न बदले और जब ख़ुदा किसी क़ौम के साथ बुराई का इरादा करता है, तो फिर वह फिर नहीं सकती और ख़ुदा के सिवा उन का कोई मददगार नहीं होता। (११) और वही तो है जो तुम को डराने और उम्मीद दिलाने के लिए बिजली दिखाता और भारी-भारी बादल पैदा करता है। (१२) और राद और फ़रिश्ते सब उस के डर से उस की तस्बीह व तहमीद करते रहते हैं[2] और वही बिजलियां भेजता है, फिर जिस पर चाहता है गिरा भी देता है और वे ख़ुदा के

---

१. मक्का के काफ़िर कहते थे कि जैसे हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की लाठी अज़दहा होती थी और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम मुर्दे को ज़िन्दा करते थे, वैसा ही काम यह नबी सल्ल० क्यों नहीं करते ?

२. राद नाम है एक फ़रिश्ते का, जो बदली का रखवाला है।

★रु० १/७ आ ७

लहू दअ्-वतुल्-हक़्क़ि ॥ वल्लज़ी-न यद्अू-न मिन् दूनिही ला यस्तजीबू-न लहुम्
बिशैइन् इल्ला कबासिति कफ़्फ़ैहि इलल्-मा-इ लियब-लु-ग फ़ाहु व मा हु-व
बिबालिग़िही ॥ व मा दुआउल् - काफ़िरी - न इल्ला फ़ी ज़लाल (१४)
व लिल्लाहि यस्जुदु मन् फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि तौअ़ व-व करहंव-व ज़िलालुहुम्
बिल्ग़ुदुव्वि वल् - आसाल ☐(१५) क़ुल्
मर्रब्बुस्समावाति वल्अर्ज़ि ॥ क़ुलिल्लाहु
क़ुल् अ - फ़त्त - ख़ज़्तुम् मिन् दूनिही
औलिया-अ ला यम्लिकू-न लिअन्फ़ुसिहिम्
नफ़्अ़ व-व ला ज़र्रन् ॥ क़ुल् हल् यस्तविल्-
अअ् - मा वल्बसीरु ॥ अम् हल्
तस्तविज़्ज़ुलुमातु वन्नूरु ॥ अम् ज - अलू
लिल्लाहि शु-रका-अ ख़-लक़ू क-ख़ल्क़िही
फ़ - तशाबहल् - ख़ल्क़ु अलैहिम् ॥ क़ुलिल्लाहु
ख़ालिक़ु कुल्लि शैइंव्-व हुवल्-वाहिदुल् -
क़ह्हार (१६) अन्ज़ - ल मिनस्समाइ
मा-अन् फ़ सालत् औदियतुम्-बि-क़-दरिहा

فَيُصِيبُ بِهَا مَنْ يَشَاءُ وَهُمْ يُجَادِلُونَ فِي اللَّهِ وَهُوَ شَدِيدُ الْمِحَالِ ﴿١٣﴾
لَهُ دَعْوَةُ الْحَقِّ ۖ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ لَا يَسْتَجِيبُونَ لَهُمْ
بِشَيْءٍ إِلَّا كَبَاسِطِ كَفَّيْهِ إِلَى الْمَاءِ لِيَبْلُغَ فَاهُ وَمَا هُوَ بِبَالِغِهِ ۚ وَمَا
دُعَاءُ الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلَالٍ ﴿١٤﴾ وَلِلَّهِ يَسْجُدُ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
طَوْعًا وَكَرْهًا وَظِلَالُهُمْ بِالْغُدُوِّ وَالْآصَالِ ۩ ﴿١٥﴾ قُلْ مَنْ رَبُّ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضِ قُلِ اللَّهُ ۚ قُلْ أَفَاتَّخَذْتُمْ مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ لَا يَمْلِكُونَ
لِأَنْفُسِهِمْ نَفْعًا وَلَا ضَرًّا ۚ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ أَمْ
هَلْ تَسْتَوِي الظُّلُمَاتُ وَالنُّورُ ۗ أَمْ جَعَلُوا لِلَّهِ شُرَكَاءَ خَلَقُوا كَخَلْقِهِ
فَتَشَابَهَ الْخَلْقُ عَلَيْهِمْ ۚ قُلِ اللَّهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ وَهُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿١٦﴾
أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَسَالَتْ أَوْدِيَةٌ بِقَدَرِهَا فَاحْتَمَلَ السَّيْلُ
زَبَدًا رَابِيًا ۚ وَمِمَّا يُوقِدُونَ عَلَيْهِ فِي النَّارِ ابْتِغَاءَ حِلْيَةٍ أَوْ مَتَاعٍ
زَبَدٌ مِثْلُهُ ۚ كَذَٰلِكَ يَضْرِبُ اللَّهُ الْحَقَّ وَالْبَاطِلَ ۚ فَأَمَّا الزَّبَدُ فَيَذْهَبُ
جُفَاءً ۖ وَأَمَّا مَا يَنْفَعُ النَّاسَ فَيَمْكُثُ فِي الْأَرْضِ ۚ كَذَٰلِكَ يَضْرِبُ
اللَّهُ الْأَمْثَالَ ﴿١٧﴾ لِلَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِرَبِّهِمُ الْحُسْنَىٰ ۚ وَالَّذِينَ لَمْ
يَسْتَجِيبُوا لَهُ لَوْ أَنَّ لَهُمْ مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لَافْتَدَوْا
بِهِ ۚ أُولَٰئِكَ لَهُمْ سُوءُ الْحِسَابِ وَمَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ ۖ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿١٨﴾
أَفَمَنْ يَعْلَمُ أَنَّمَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ أَعْمَىٰ ۚ

फ़ह्-त-मलस्सैलु ज़-ब-दर्-राबियन् ॥ व मिम्मा यूक़िदू-न अलैहि फ़िन्नारिब्तिग़ा-अ
हिल्यतिन् औ मताअिन् ज़-ब-दुम् - मिस्लुहू ॥ कज़ालि - क यज़्रिबुल्लाहुल्-
हक़्-क़ वल्बाति-ल ॥ फ़-अम्मज़् - ज़-ब-दु फ़ - यज़्-हबु जुफ़ा-अन् ॥ व अम्मा
मा यन्फ़अुन्ना - स फ़ - यम्कुसु फ़िल्अर्ज़ि ॥ कज़ालि - क यज़्रिबुल्लाहुल् -
अम्साल ॥ (१७) लिल्लज़ीनस्तजाबू लिरब्बिहिमुल् - हुस्ना ॥
▩ वल्लज़ी - न लम् यस्तजीबू लहू लौ अन - न लहुम् मा फ़िल्अर्ज़ि
जमीअ़ व-व मिस्लहू म - अहू लफ़्तदौ बिही ॥ उलाइ - क लहुम् सूउल्-
हिसाबि ॥ व मअ्वाहुम् ज - हन्नमु ॥ व बिअ्सल् - मिहाद
★● (१८) अ-फ़-मंय्यअ्-लमु अन्नमा उन्ज़ि-ल इलै - क मिर्रब्बिकल् - हक़्क़ु
क-मन् हु - व अअ् - मा ॥ इन्नमा य-त-ज़क्करु उलुल्-अल्बाब ॥ (१९)

☐ सजदः २ ▩ व. न बी स. ★रु. २/८ आ ११ ● नि. १/२

बारे में झगड़ते हैं और वह बड़ी ताक़त वाला है। (१३) सूदमंद पुकारना तो उसी का है और जिन को ये लोग उस के सिवा पुकारते हैं, वह उन की पुकार को किसी तरह क़ुबूल नहीं करते, मगर उस शख़्स की तरह जो अपने दोनों हाथ पानी की तरफ़ फैला दे, ताकि (दूर ही से) उस के मुंह तक आ पहुंचे, हालांकि वह (उस तक कभी भी) नहीं आ सकता और (इसी तरह) काफ़िरों की पुकार बेकार है। (१४) और जितनी मख़्लूक़ आसमानों और ज़मीन में है, ख़ुशी से या ज़बरदस्ती से ख़ुदा के आगे सज्दा करती है और उन के साए भी सुबह व शाम सज्दा करते हैं[1] (१५) उन से पूछो कि आसमानों और ज़मीन का परवरदिगार कौन है? (तुम ही उन की तरफ़ से) कह दो कि ख़ुदा फिर (उन से) कहो कि तुम ने ख़ुदा को छोड़ कर ऐसे लोगों को क्यों कारसाज़ बनाया है जो ख़ुद अपने नफ़ा-नुक़्सान का भी कुछ अख़्तियार नहीं रखते? (यह भी) पूछो, क्या अंधा और आंखों वाला बराबर है? या अंधेरा और उजाला बराबर हो सकता है? भला उन लोगों ने जिन को ख़ुदा का शरीक मुक़र्रर किया है, क्या उन्होंने ख़ुदा की-सी मख़्लूक़ात पैदा की है, जिस की वजह से उन की मख़्लूक़ात मुश्तबह हो गयी है। कह दो कि ख़ुदा ही हर चीज़ का पैदा करने वाला है और वह यक्ता (और) ज़बरदस्त है। (१६) उसी ने आसमान से मेंह बरसाया, फिर उस से अपने-अपने अन्दाज़े के मुताबिक़ नाले बह निकले, फिर नाले पर फूला हुआ झाग आ गया और जिस चीज़ को ज़ेवर या कोई और सामान बनाने के लिए आग में तपाते हैं, उस में भी ऐसा ही भाग होता है। इस तरह ख़ुदा हक़ और बातिल की मिसाल बयान फ़रमाता है। सो झाग तो सूख कर ख़त्म हो जाता है। और (पानी) जो लोगों को फ़ायदा पहुंचाता है, वह ज़मीन में ठहरा रहता है। इस तरह ख़ुदा (सही और ग़लत की) मिसालें बयान फ़रमाता है, (ताकि तुम समझो)। (१७) जिन लोगों ने ख़ुदा के हुक्म को क़ुबूल किया, उन की हालत बहुत बेहतर होगी और जिन्हों ने इस को क़ुबूल न किया अगर धरती के सब ख़ज़ाने उन के अख़्तियार में हों, तो वे सब के सब और उन के साथ उतने ही और, (निजात) के बदले में ख़र्च कर डालें, (मगर निजात कहां?) ऐसे लोगों का हिसाब भी बुरा होगा और उन का ठिकाना भी दोज़ख़ है और वह बुरी जगह है। (१८) ★ ●

भला जो शख़्स यह जानता है कि जो कुछ तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से तुम पर नाज़िल हुआ है, हक़ है, वह उस शख़्स की तरह है, जो अंधा है? और समझते तो वही हैं, जो अक़्लमंद

---

१. जो यक़ीन लाया अल्लाह पर, वह ख़ुशी से सर रखता है उस के हुक्म पर और जो न यक़ीन लाया आख़िर उस पर भी उसी का हुक्म जारी है और परछाइयां सुबह-शाम ज़मीन पर फैल जाती हैं, यही है उन का सज्दा।

अल्लज़ी-न यूफ़ू-न बिअ़हि्दल्लाहि व ला यन्क़ुज़ूनल् - मीसाक़ ۙ (२०) वल्लज़ी-न यसिलू-न मा अ-म-रल्लाहु बिही अंय्यूस-ल व यख़्शौ-न रब्बहुम् व यख़ाफ़ू-न सूअल्-हिसाब ط (२१) वल्लज़ी-न स-बरुब्तिग़ा-अ वज्हि रब्बिहिम् व अक़ामुस्सला-त व अन्फ़क़ू मिम्मा र-ज़क़्नाहुम् सिर्-रंव-व अलानि-य-तंव्-व यद्रऊ-न बिल् - ह़-स-नतिस् - सय्यि-अ-त उलाइ - क लहुम् उक़्बद्दार ۙ (२२) जन्नातु अद्निंय्यद्ख़ुलूनहा व मन् स-ल-ह़ मिन् आबाइहिम् व अज़्वाजिहिम् व ज़ुर्रिय्यातिहिम् वलमलाइकतु यद्ख़ुलू - न अलैहिम् मिन् कुल्लि बाब ج (२३) सलामुन् अलैकुम् बिमा स-बर्तुम् फ़निअ्-म उक़्बद्दार ط (२४) वल्लज़ी-न यन्क़ुज़ू-न अह - दल्लाहि मिम्बअ्-दि मीसाक़िही व यक़्तअू-न मा अ-म-रल्लाहु बिही अंय्यूस-ल व युफ़्सिदू - न फ़िल्अर्ज़ि ۙ उलाइ - क लहुमुल्लअ्-नतु व लहुम् सूउद्दार (२५)

إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولُوا الْأَلْبَابِ ۝ الَّذِينَ يُوفُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَلَا
يَنقُضُونَ الْمِيثَاقَ ۝ وَالَّذِينَ يَصِلُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَن يُوصَلَ
وَيَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ وَيَخَافُونَ سُوءَ الْحِسَابِ ۝ وَالَّذِينَ صَبَرُوا ابْتِغَاءَ
وَجْهِ رَبِّهِمْ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَأَنفَقُوا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً
وَيَدْرَءُونَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عُقْبَى الدَّارِ ۝ جَنَّاتُ
عَدْنٍ يَدْخُلُونَهَا وَمَن صَلَحَ مِنْ آبَائِهِمْ وَأَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيَّاتِهِمْ
وَالْمَلَائِكَةُ يَدْخُلُونَ عَلَيْهِم مِّن كُلِّ بَابٍ ۝ سَلَامٌ عَلَيْكُم بِمَا
صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ ۝ وَالَّذِينَ يَنقُضُونَ عَهْدَ اللَّهِ مِن
بَعْدِ مِيثَاقِهِ وَيَقْطَعُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَن يُوصَلَ وَيُفْسِدُونَ
فِي الْأَرْضِ أُولَٰئِكَ لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوءُ الدَّارِ ۝ اللَّهُ يَبْسُطُ
الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ وَفَرِحُوا بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَمَا الْحَيَاةُ
الدُّنْيَا فِي الْآخِرَةِ إِلَّا مَتَاعٌ ۝ وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلَا أُنزِلَ
عَلَيْهِ آيَةٌ مِّن رَّبِّهِ قُلْ إِنَّ اللَّهَ يُضِلُّ مَن يَشَاءُ وَيَهْدِي
إِلَيْهِ مَنْ أَنَابَ ۝ الَّذِينَ آمَنُوا وَتَطْمَئِنُّ قُلُوبُهُم بِذِكْرِ اللَّهِ
أَلَا بِذِكْرِ اللَّهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوبُ ۝ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
طُوبَىٰ لَهُمْ وَحُسْنُ مَآبٍ ۝ كَذَٰلِكَ أَرْسَلْنَاكَ فِي أُمَّةٍ قَدْ خَلَتْ
مِن قَبْلِهَا أُمَمٌ لِّتَتْلُوَ عَلَيْهِمُ الَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ وَهُمْ يَكْفُرُونَ

अल्लाहु यब्सुतुर्रिज़् - क़ लिमंय्यशाउ व यक़्दिरु ط व फ़रिहू बिल्-ह़यातिद्दुन्या ط व मल् - ह़यातुद्दुन्या फ़िल् - आख़िरति इल्ला मता-अ ★ (२६) व यक़ूलुल्लज़ी-न क-फ़रू लौला उन्ज़ि - ल अलैहि आयतुम् - मिर्रब्बिही ط क़ुल् इन्नल्ला - ह युज़िल्लु मंय्यशाउ व यह्दी इलैहि मन् अनाब ج (२७) अल्लज़ी - न आमनू व तत्मइन्नु क़ुलूबुहुम् बिज़िक - रिल्लाहि ط अला बिज़िक - रिल्लाहि तत्मइन्नुल् - क़ुलूब ط (२८) अल्लज़ी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति तूबा लहुम् व हुस्नु मआब (२९) कज़ालि-क अर्सल्ना-क फ़ी उम्मतिन् क़द् ख़-लत् मिन् क़ब्लिहा उ-ममुल्-लितत्-लु-व अलैहिमुल्लज़ी औहैना इलै - क व हुम्-यक्फ़ुरू-न बिर्रह्मानि ط क़ुल् हु-व रब्बी ला इला-ह इल्ला हु-व ج अलैहि तवक्कल्तु व इलैहि मताब (३०)

★रु. ३/१ आ ८

हैं। (१९) जो ख़ुदा के अह्द को पूरा करते हैं और इक़रार को नहीं तोड़ते। (२०) और जिन (क़राबतदारों) के जोड़े रखने का ख़ुदा ने हुक्म दिया है, उन को जोड़े रखते और अपने परवरदिगार से डरते रहते और बुरे हिसाब से ख़ौफ़ रखते हैं। (२१) और जो परवरदिगार की ख़ुशनूदी हासिल करने के लिए (मुसीबतों पर) सब्र करते हैं और नमाज पढ़ते हैं और जो (माल) हम ने उन को दिया है, उस में से छिपे और ज़ाहिर ख़र्च करते हैं और नेकी से बुराई को दूर करते हैं। यही लोग हैं जिन के लिए आक़िबत का घर है, (२२) (यानी) हमेशा रहने के बाग़, जिन में वे दाख़िल होंगे और उन के बाप-दादा और बीवियों और औलाद में से जो नेक होंगे, वे भी (बहिश्त में जाएंगे) और फ़रिश्ते (बहिश्त के) हर एक दरवाज़े से उन के पास आएंगे, (२३) (और कहेंगे) तुम पर रह्मत हो (यह) तुम्हारी साबित क़दमी का बदला है और आक़िबत का घर ख़ूब (घर) है। (२४) और जो लोग ख़ुदा से पक्का अह्द कर के उस को तोड़ डालते और जिन (क़राबत के रिश्तों) के जोड़े रखने का ख़ुदा ने हुक्म दिया है, उन को काट डालते हैं और मुल्क में फ़साद करते हैं, ऐसों पर लानत है और उनके लिए घर भी बुरा है। (२५) ख़ुदा जिस की चाहता है, रोज़ी फैला देता है, और जिस की चाहता है तंग कर देता है और काफ़िर लोग दुनिया की ज़िंदगी पर ख़ुश हो रहे हैं और दुनिया की ज़िंदगी में आख़िरत (के मुक़ाबले) में (बहुत) थोड़ा फ़ायदा है। (२६)★

और काफ़िर कहते हैं कि इस (पैग़म्बर पर) उस के परवरदिगार की तरफ़ से कोई निशानी क्यों नाज़िल नहीं हुई। कह दो कि ख़ुदा जिसे चाहता है, गुमराह करता है और जो (उस की तरफ़) रुजू होता है, उस को अपनी तरफ़ का रास्ता दिखाता है।[1] (२७) (यानी) जो लोग ईमान लाते और जिन के दिल ख़ुदा की याद से आराम पाते हैं (उन को) और सुन रखो कि ख़ुदा की याद से दिल आराम पाते हैं। (२८) जो लोग ईमान लाए और नेक अमल किए, उन के लिए ख़ुशहाली और उम्दा ठिकाना है। (२९) (जिस तरह हम और पैग़म्बर भेजते रहे हैं) उसी तरह (ऐ मुहम्मद) हम ने तुम को इस उम्मत में, जिस से पहले बहुत सी उम्मतें गुज़र चुकी हैं, भेजा है, ताकि तुम उन को वह (किताब) जो हम ने तुम्हारी तरफ़ भेजी है, पढ़ कर सुना दो और ये लोग रहमान को नहीं मानते। कहो, वही तो मेरा परवरदिगार है, उस के सिवा कोई माबूद नहीं। मैं उसी पर भरोसा

१. यानी ईमान की तौफ़ीक़ देता है बग़ैर मोजज़ा दिखाए उस को, जो कोई उस की तरफ़ आजिज़ी करता है और ख़ुदा की तरफ़ सब को छोड़ कर फिरता है।

★रु. ३/६ आ ८

व लौ अन्-न क़ुर्आनन् सुय्यिरत् बिहिल्-जिबालु औ क़ुत्तिअत् बिहिल्-अर-ज़ु औ कुल्लि-म बिहिल्मौता ♭ बल् लिल्लाहिल्-अम्रु जमीअन् ♭ अ-फ़-लम् यै-असिल्लज़ी-न आमनू अल्लौ यशाउल्लाहु ल-ह-दन्ना-स जमीअन् ♭ व ला यज़ालुल्लज़ी-न क-फ़रू तुसीबुहुम् बिमा स-न-अू क़ारिअतुन् औ तहुल्लु क़रीबम्मिन् दारिहिम् हत्ता यअ्ति-य वअ्-दुल्लाहि ♭ इन्नल्ला-ह ला युख़्लिफ़ुल्-मीआद ★ (३१) व ल-क़दिस्तुह्ज़ि-य बिरुसुलिम्-मिन् क़ब्लि-क फ़ अम्लैतु लिल्लज़ी-न क-फ़रू सुम-म अ-ख़ज़्-तुहुम् फ़कै-फ़ का-न अिक़ाब (३२) अ-फ़-मन् हु-व क़ाइमुन् अला कुल्लि नफ़्सिम्-बिमा क-स-बत् ? व ज-अलू लिल्लाहि शु-रका-अ ♭ क़ुल् सम्मूहुम् ♭ अम् तुनब्बिऊनहू बिमा ला यअ्-लमु फ़िल्अर्ज़ि अम् बिज़ाहिरिम्-मिनल्क़ौलि ♭ बल् ज़ुय्यि-न लिल्लज़ी-न क-फ़रू मक्रुहुम् व सुद्दू-अनिस्सबीलि ♭ व मंय्युज़्लिलिल्लाहु फ़मा लहू मिन् हाद (३३) लहुम् अ़ज़ाबुन् फ़िल्-हयातिद्दुन्या व ल-अ़ज़ाबुल्-आख़िरति अशक़्क़ु ? व मा लहुम् मिनल्लाहि मिंव्वाक़ (३४) म-सलुल्-जन्नतिल्लती वुअिदल्-मुत्तक़ू-न ♭ तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ♭ उकुलुहा दाइमुंव-व ज़िल्लुहा ♭ तिल-क अुक़्बल्लज़ीनत्तक़व-व उक़्बल्-काफ़िरीनन्नार (३५) वल्लज़ी-न आतैनाहुमुल्-किता-ब यफ़्रहू-न बिमा उन्ज़ि-ल इलै-क व मिनल्-अह्ज़ाबि मंय्युन्किरु बअ्-ज़हू ♭ क़ुल् इन्नमा उमिर्तु अन् अअ्-बुदल्ला-ह व ला उश्रि-क बिही ♭ इलैहि अद्अू व इलैहि मआब (३६) व कज़ालि-क अन्ज़ल्नाहु हुक्मन् अ-रबिय्यन् ♭ व ल-इनित्तबअ्-त अह्वा-अहुम् बअ्-द मा जा-अ-क मिनल्-अिल्मि ♭ मा ल-क मिनल्लाहि मिंव्वलिय्यिंव-व ला वाक़ ★ (३७)

بِالرَّحْمٰنِ قُلْ هُوَ رَبِّيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْهِ مَتَابِ ۝
وَلَوْ اَنَّ قُرْاٰنًا سُيِّرَتْ بِهِ الْجِبَالُ اَوْ قُطِّعَتْ بِهِ الْاَرْضُ اَوْ كُلِّمَ بِهِ
الْمَوْتٰى بَلْ لِّلّٰهِ الْاَمْرُ جَمِيْعًا اَفَلَمْ يَايْئَسِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ
لَّوْ يَشَآءُ اللّٰهُ لَهَدَى النَّاسَ جَمِيْعًا وَلَا يَزَالُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
تُصِيْبُهُمْ بِمَا صَنَعُوْا قَارِعَةٌ اَوْ تَحُلُّ قَرِيْبًا مِّنْ دَارِهِمْ حَتّٰى
يَاْتِيَ وَعْدُ اللّٰهِ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ۝ وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ
بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَاَمْلَيْتُ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا ثُمَّ اَخَذْتُهُمْ فَكَيْفَ
كَانَ عِقَابِ ۝ اَفَمَنْ هُوَ قَآئِمٌ عَلٰى كُلِّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ وَجَعَلُوْا
لِلّٰهِ شُرَكَآءَ قُلْ سَمُّوْهُمْ اَمْ تُنَبِّئُوْنَهٗ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي الْاَرْضِ اَمْ
بِظَاهِرٍ مِّنَ الْقَوْلِ بَلْ زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مَكْرُهُمْ وَصُدُّوْا عَنِ
السَّبِيْلِ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ۝ لَهُمْ عَذَابٌ فِي
الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَشَقُّ وَمَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ
وَّاقٍ ۝ مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِيْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ
اُكُلُهَا دَآئِمٌ وَّظِلُّهَا تِلْكَ عُقْبَى الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّعُقْبَى الْكٰفِرِيْنَ
النَّارُ ۝ وَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَفْرَحُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَ
مِنَ الْاَحْزَابِ مَنْ يُّنْكِرُ بَعْضَهٗ قُلْ اِنَّمَآ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ
اللّٰهَ وَلَآ اُشْرِكَ بِهٖ اِلَيْهِ اَدْعُوْا وَاِلَيْهِ مَاٰبِ ۝ وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ

★रु. ४/१० आ ५ ★रु. ५/११ आ ६

रखता हूं और उसी की तरफ़ रुजू करता हूं। (३०) और अगर कोई क़ुरआन ऐसा होता कि उस (के असर से) पहाड़ चल पड़ते या ज़मीन फट जाती या मुर्दों से कलाम कर सकते (तो यही क़ुरआन इन ख़ूबियों वाला होता मगर) बात यह है कि सब बातें ख़ुदा के अख़्तियार में हैं, तो क्या मोमिनों को इस से इत्मीनान नहीं हुआ कि अगर ख़ुदा चाहता तो सब लोगों को हिदायत के रास्ते पर चला देता और काफ़िरों पर हमेशा उन के आमाल के बदले बला आती रहेगी या उन के मकानों के क़रीब नाज़िल होती रहेगी, यहां तक कि ख़ुदा का वायदा आ पहुंचे। बेशक ख़ुदा वायदा ख़िलाफ़ नहीं करता। (३१) ★

और तुम से पहले भी रसूलों का मज़ाक़ होता रहा है, तो हम ने काफ़िरों को मोहलत दी, फिर पकड़ लिया, सो (देख लो कि) हमारा अज़ाब कैसा था। (३२) तो क्या जो (ख़ुदा हर) नफ़्स के आमाल का निगरां (व निगहबान) है (वह बुतों की तरह बे-इल्म व बे-ख़बर हो सकता है) और उन लोगों ने ख़ुदा के शरीक मुक़र्रर कर रखे हैं। उन से कहो कि (ज़रा) उन के नाम तो लो। क्या तुम उसे ऐसी चीज़ें बताते हो जिस को वह ज़मीन में (कहीं भी) मालूम नहीं करता या (सिर्फ़) ज़ाहिरी (बातिल और झूठी) बात के (पीछे चलते हो)। असल यह है कि काफ़िरों को उन के फ़रेब ख़ूबसूरत मालूम होते हैं और वे (हिदायत के) रास्ते से रोक लिए गए हैं और जिसे ख़ुदा गुमराह करे, उसे कोई हिदायत करने वाला नहीं। (३३) उन को दुनिया की ज़िंदगी में भी अज़ाब है और आख़िरत का अज़ाब तो बहुत ही सख़्त है और उन को ख़ुदा (के अज़ाब से) कोई भी बचाने वाला नहीं। (३४) जिस बाग़ का मुत्तक़ियों से वायदा किया गया है, उस की ख़ूबियां ये हैं कि उस के नीचे नहरें बह रही हैं, उस के फल हमेशा (क़ायम रहने वाले) हैं और उस के साए भी। यह उन लोगों का अंजाम है, जो मुत्तक़ी हैं और काफ़िरों का अंजाम दोज़ख़ है। (३५) और जिन लोगों को हम ने किताब दी है, वे उस (किताब) से जो तुम पर नाज़िल हुई है, ख़ुश होते हैं और कुछ फ़िर्क़े, जिन की कुछ बातें नहीं भी मानते। कह दो कि मुझ को यही हुक्म हुआ है कि ख़ुदा ही की इबादत करूं और उस के साथ (किसी को) शरीक न बनाऊं। मैं उसी की तरफ़ बुलाता हूं और उसी की तरफ़ मुझे लौटना है। (३६) और इसी तरह हम ने इस क़ुरआन को अरबी ज़ुबान का फ़रमान नाज़िल किया है और अगर तुम इल्म (व दानिश) आने के बाद उन लोगों की ख़्वाहिशों के पीछे चलोगे तो ख़ुदा के सामने कोई न तुम्हारा मददगार होगा और न कोई बचाने वाला। (३७) ★

★रु. ४/१० आ ५ ★रु. ५/११ आ ६

व ल-क़द् अर्सल्ना रुसुलम्-मिन् क़ब्लि-क व ज-अल्ना लहुम् अज़्वाजंव्-व ज़ुर्रिय्य-तन् ؕ व मा का - न लिरसूलिन् अंय्यअ्ति-य बिआयतिन् इल्ला बिइज़्निल्लाहि ؕ लिकुल्लि अ - जलिन् किताब (३८) यम्हुल्लाहु मा यशाउ व युस्बितु ۖ व अिन्दहू उम्मुल् - किताब (३९) व इम्मा नुरियन्न-क बअ्-ज़ल्लज़ी नअिदुहुम् औ न-त-वफ़्फ़-यन्न-क फ़-इन्नमा अलैकल्-बलाग़ु व अलैनल्-हिसाब (४०) अ-व लम् यरौ अन्ना नअ्तिल् - अर्-ज़ नन्क़ुसुहा मिन् अत्राफ़िहा ؕ वल्लाहु यह्कुमु ला मुअक़्क़ि - ब लिहुक्मिही ؕ व हु - व सरीअुल् - हिसाब (४१) व क़द् म-क-रल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् फ़लिल्लाहिल्-मक्रु जमीअन् ؕ यअ् - लमु मा तक्सिबु कुल्लु नफ़्सिन् ؕ व स-यअ्-लमुल् - कुफ़्फ़ारु लिमन् अुक़्बद्दार (४२) व यक़ूलुल्लज़ी-न क - फ़रू लस् - त मुर्सलन् ؕ क़ुल् कफ़ा बिल्लाहि शहीदम् - बैनी व बैनकुम् ۙ व मन् अिन्दहू अिल्मुल् - किताब ★ (४३)

१४ सूरतु इब्राही-म ७२

(मक्की) इस सूर: में अरबी के ३६०१ अक्षर, ८४५ शब्द, ५२ आयतें और ७ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ●

अलिफ़्-लाम्-रा ۛ किताबुन् अन्ज़ल्नाहु इलै - क लितुख़्रिजन्ना - स मिनज़्ज़ुलुमाति इलन्नूरि ۙ बिइज़्नि रब्बिहिम् इला सिरातिल् - अज़ीज़िल् - हमीद ۙ (१) अल्लाहिल्लज़ी लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि ؕ व वैलुल्लिल् - काफ़िरी - न मिन् अज़ाबिन् शदीद ۙ (२) अल्लज़ी-न यस्तहिब्बूनल्-हयातद्दुन्या अ-लल्-आख़िरति व यसुद्दू - न अन् सबीलिल्लाहि व यब्ग़ूनहा अि-व-जन् ؕ उलाइ-क फ़ी ज़लालिम्-बअीद (३)

★रु. ६/१२ आ ६

और (ऐ मुहम्मद !) हम ने तुम से पहले भी पैग़म्बर भेजे थे और उनको बीवियां और औलाद भी दी थी और किसी पैग़म्बर के अख़्तियार की बात न थी कि ख़ुदा के हुक्म के बग़ैर कोई निशानी लाए। क़ज़ा (का) हर (हुक्म किताब में) लिखा हुआ है। (३८) ख़ुदा जिस को चाहता है, मिटा देता है और (जिस को चाहता है) क़ायम रखता है और उसी के पास असल किताब है। (३९) और अगर हम कोई अज़ाब, जिस का उन लोगों से वायदा करते हैं, तुम्हें दिखाएं (यानी तुम्हारे सामने उन पर नाज़िल करें) या तुम्हारी ज़िंदगी की मुद्दत पूरी कर दें (यानी) तुम्हारे इंतिक़ाल के बाद अज़ाब भेजें, तो तुम्हारा काम (हमारे हुक्मों का) पहुंचा देना है और हमारा काम हिसाब लेना है। (४०) क्या उन्हों ने नहीं देखा कि हम ज़मीन को उस के किनारों से घटाते चले आते हैं।[1] और ख़ुदा (जैसा चाहता है) हुक्म करता है, कोई उस के हुक्म का रद्द करने वाला नहीं और वह जल्द हिसाब लेने वाला है। (४१) जो लोग उन से पहले थे, वे भी (बहुतेरी) चालें चलते रहे, सो चाल तो सब अल्लाह ही की है। हर नफ़्स जो कुछ कर रहा है, वह उसे जानता है और काफ़िर जल्द मालूम करेंगे कि आक़िबत का घर (यानी अच्छाई का अंजाम) किस के लिए है ? (४२) और काफ़िर लोग कहते हैं कि तुम (ख़ुदा के) रसूल नहीं हो। कह दो कि मेरे और तुम्हारे दर्मियान ख़ुदा और वह शख़्स, जिस के पास (आसमानी) किताब का इल्म है,[2] गवाह काफ़ी है। (४३)★

१४ सूरः इब्राहीम ७२

सूरः इब्राहीम मक्की है और इस में ५२ आयतें और सात रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ़्-लाम्-रा, यह एक (पुरनूर) किताब (है), इस को हम ने तुम पर इस लिए नाज़िल किया है कि लोगों को अंधेरे से निकाल कर रोशनी की तरफ़ ले जाओ (यानी) उन के परवरदिगार के हुक्म से ग़ालिब और तारीफ़ के क़ाबिल (ख़ुदा) के रास्ते की तरफ़। (१) वह ख़ुदा कि जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, सब उसी का है और काफ़िरों के लिए सख़्त अज़ाब (की वजह) से ख़राबी है, (२) जो आख़िरत के मुक़ाबले दुनिया को पसन्द करते और (लोगों को) ख़ुदा के रास्ते से रोकते और उस में टेढ़ चाहते हैं। ये लोग परले सिरे की गुमराही में हैं। (३) और हम ने कोई

---

१. ज़मीन के घटाने से यह मुराद है कि कुफ़्र मुल्क से कम होता जाता और इस्लाम फैलता जाता है। किसी ने कहा कि देहात वीरान हुए जाते हैं। किसी ने कहा कि जानें और फल और मेवे ज़ाया हो रहे हैं।

२. जिस के पास किताब का इल्म है, उस से मुराद या तो अब्दुल्लाह बिन सलाम हैं जो अहले किताब में से थे और जिन्हों ने हज़रत की रिसालत की गवाही दी थी और इस्लाम ले आये थे, चुनांचे वह इस बात के क़ायल भी थे कि यह आयते इलाही के हक़ में नाज़िल हुई है या आम अहले किताब मुराद हैं जिन की पिछली किताबों से आप की गवाही मालूम है।

★रु. ६/१२ आ ६

व मा अर्सल्ना मिर्रसूलिन् इल्ला बिलिसानि क़ौमिही लियुबय्यि-न लहुम्ط फ़युज़िल्लुल्लाहु मंय्यशा-उ व यह्दी मंय्यशाउ ط व हुवल्-अज़ीज़ुल्-हकीम (४) व ल-क़द् अर्सल्ना मूसा बिआयातिना अन् अख़्रिज् क़ौम-क मिनज़्-ज़ुलुमाति इलन्नूरि व ज़क्किरहुम् बिअय्यामिल्लाहि ط इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल्लिकुल्लि सब्बारिन् शकूर (५) व इज़् क़ा-ल मूसा लिक़ौमिहिज़्कुरू निअ्-म-तल्लाहि अलैकुम् इज़् अन्जाकुम् मिन् आलि फ़िर्औ-न यसूमूनकुम् सूअल्-अज़ाबि व युज़ब्बिहू-न अब्ना-अकुम् व यस्तह्यू-न निसा-अकुम्ط व फ़ी ज़ालिकुम् बलाउम्-मिर्रब्बिकुम् अज़ीम ★(६) व इज़् त-अज़्ज़-न रब्बुकुम् लइन् श-कर्तुम् ल-अज़ीदन्नकुम् व लइन् क-फ़र्तुम् इन्-न अज़ाबी ल-शदीद (७) व क़ा-ल मूसा इन् तक्फ़ुरू अन्तुम् व मन् फ़िल्अर्ज़ि जमीअन् फ़इन्नल्ला-ह लग़निय्युन् हमीद (८) अ-लम् यअ्तिकुम् न-बउल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिकुम् क़ौमि नूहिंव्-व आदिंव्-व समू-द वल्लज़ी-न मिम्बअ्-दिहिम्ط ला यअ्-लमुहुम् इल्लल्लाहु ط जाअत्हुम् रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति फ़रद्दू ऐदि-यहुम् फ़ी अफ़्वाहिहिम् व क़ालू इन्ना क-फ़र्ना बिमा उर्सिल्तुम् बिही व इन्ना लफ़ी शक्किम्-मिम्मा तद्अूनना इलैहि मुरीब ●(९) क़ालत् रुसुलुहुम् अफ़िल्लाहि शक्कुन् फ़ातिरिस्समावाति वल्अर्ज़ि ط यद्अूकुम् लियग़्फ़ि-र लकुम् मिन् ज़ुनूबिकुम् व यु-अख़्ख़ि-रकुम् इला अ-जलिम्-मुसम्मन्ط क़ालू इन् अन्तुम् इल्ला ब-शरुम्-मिस्लुना ط तुरीदू-न अन् तसुद्दूना अम्मा का-न यअ्बुदु आबाउना फ़अ्-तूना बिसुल्तानिम्-मुबीन (१०)

سَبِيلِ اللّٰهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا ۚ أُولٰٓئِكَ فِي ضَلٰلٍۭ بَعِيدٍ ۝٣ وَمَآ
أَرْسَلْنَا مِن رَّسُولٍ إِلَّا بِلِسَانِ قَوْمِهٖ لِيُبَيِّنَ لَهُمْ ۖ فَيُضِلُّ اللّٰهُ
مَن يَشَآءُ وَيَهْدِي مَن يَشَآءُ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝٤ وَلَقَدْ
أَرْسَلْنَا مُوسٰى بِاٰيٰتِنَآ أَنْ أَخْرِجْ قَوْمَكَ مِنَ الظُّلُمٰتِ إِلَى النُّورِ ۙ
وَذَكِّرْهُم بِأَيّٰىمِ اللّٰهِ ۚ إِنَّ فِي ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ۝٥
وَإِذْ قَالَ مُوسٰى لِقَوْمِهِ اذْكُرُوا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ إِذْ أَنجٰىكُم
مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَسُومُونَكُمْ سُوٓءَ الْعَذَابِ وَيُذَبِّحُونَ أَبْنَآءَكُمْ
وَيَسْتَحْيُونَ نِسَآءَكُمْ ۚ وَفِي ذٰلِكُم بَلَآءٌ مِّن رَّبِّكُمْ عَظِيمٌ ۝٦ وَإِذْ
تَأَذَّنَ رَبُّكُمْ لَئِن شَكَرْتُمْ لَأَزِيدَنَّكُمْ ۖ وَلَئِن كَفَرْتُمْ إِنَّ عَذَابِي
لَشَدِيدٌ ۝٧ وَقَالَ مُوسٰٓى إِن تَكْفُرُوٓا أَنتُمْ وَمَن فِي الْأَرْضِ
جَمِيعًا فَإِنَّ اللّٰهَ لَغَنِيٌّ حَمِيدٌ ۝٨ أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِينَ مِن
قَبْلِكُمْ قَوْمِ نُوحٍ وَعَادٍ وَثَمُودَ ۛ وَالَّذِينَ مِنۢ بَعْدِهِمْ ۛ لَا يَعْلَمُهُمْ
إِلَّا اللّٰهُ ۚ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنٰتِ فَرَدُّوٓا أَيْدِيَهُمْ فِيٓ أَفْوٰهِهِمْ
وَقَالُوٓا إِنَّا كَفَرْنَا بِمَآ أُرْسِلْتُم بِهٖ وَإِنَّا لَفِي شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُونَنَآ
إِلَيْهِ مُرِيبٍ ۝٩ قَالَتْ رُسُلُهُمْ أَفِي اللّٰهِ شَكٌّ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَ
الْأَرْضِ ۖ يَدْعُوكُمْ لِيَغْفِرَ لَكُم مِّن ذُنُوبِكُمْ وَيُؤَخِّرَكُمْ إِلٰٓى
أَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ قَالُوٓا إِنْ أَنتُمْ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا تُرِيدُونَ أَن

मंजिल ३

पैग़म्बर नहीं भेजा, मगर अपनी क़ौम की ज़ुबान बोलता था,[1] ताकि उन्हें (ख़ुदा के हुक्म) खोल-खोल कर बता दे, फिर ख़ुदा जिसे चाहता है, गुमराह करता है और जिसे चाहता है, हिदायत देता है और वह ग़ालिब (और) हिक्मत वाला है, (४) और हम ने मूसा को अपनी निशानियां दे कर भेजा कि अपनी क़ौम को अंधेरे से निकाल कर रोशनी में ले जाओ और उन को ख़ुदा के दिन याद दिलाओ,[2] इस में उन लोगों के लिए जो सब्र करने वाले और शुक्र करने वाले हैं, (ख़ुदा की क़ुदरत की) निशानियां हैं। (५) और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि ख़ुदा ने जो तुम पर मेहरबानियां की हैं, उन को याद करो, जब कि तुम को फ़िऔन की क़ौम (के हाथ) से मुख्लिसी दी। वे लोग तुम्हें बुरे अज़ाब देते थे और तुम्हारे बेटों को मार डालते थे और औरत ज़ात यानी तुम्हारी लड़कियों को ज़िंदा रहने देते थे और उस में तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से बड़ी (सख़्त) आज़माइश थी, (६) ★

और जब तुम्हारे परवरदिगार ने (तुम को) आगाह किया कि अगर शुक्र करोगे, तो मैं तुम्हें ज़्यादा दूंगा और अगर नाशुक्री करोगे तो (याद रखो कि) मेरा अज़ाब (भी) सख़्त है। (७) और मूसा ने (साफ़-साफ़) कह दिया कि अगर तुम और जितने और लोग ज़मीन में हैं, सब के सब ना-शुक्री करो, तो ख़ुदा भी बे-नियाज़ (और) तारीफ़ के क़ाबिल है। (८) भला तुम को उन लोगों (के हालात) की ख़बर नहीं पहुंची जो तुम से पहले थे (यानी) नूह और आद और समूद की क़ौम और जो उन के बाद थे, ∴ जिन का इल्म ख़ुदा के सिवा किसी को नहीं। (जब) उन के पास पैग़म्बर निशानियां ले कर आए तो उन्हों ने अपने हाथ उन के मुंहों पर रख दिए (कि ख़ामोश रहो) और कहने लगे कि हम तो तुम्हारी रिसालत को नहीं मानते और जिस चीज़ की तरफ़ तुम हमें बुलाते हो, हम उस से भारी शक में हैं ● (९) उन के पैग़म्बरों ने कहा, क्या (तुम को) ख़ुदा (के बारे) में शक है, जो आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला है। वह तुम्हें इस लिए बुलाता है कि तुम्हारे गुनाह बख़्शने और (फ़ायदा पहुंचाने के लिए) एक मुक़र्रर मुद्दत तक तुम को मोहलत दे। वे बोले तुम तो हमारे ही जैसे आदमी हो, तुम्हारा यह मंशा है कि जिन चीज़ों को हमारे बड़े पूजते रहे हैं, उन (के पूजने) से हम को बन्द कर दो तो (अच्छा!) कोई खुली दलील लाओ (यानी मोजज़ा

---

१. काफ़िर कहते थे कि और ज़ुबान में क़ुरआन उतरता, तो हम यक़ीन करते, यह तो उस शख़्स की बोली है, शायद आप कह लाता हो, इस का यह जवाब है।

२. ख़ुदा के दिनों से मुराद वे वाक़िए हैं जो उस की तरफ़ से ज़ाहिर होते रहते हैं।

क़ालत् लहुम् रुसुलुहुम् इन् नह्नु इल्ला ब-शरुम्-मिस्लुकुम् व लाकिन्नल्ला-ह यमुन्नु अला मंय्यशाउ मिन् अिबादिही ♭ व मा का-न लना अन्-नअ्ति-यकुम् बिसुल्तानिन् इल्ला बिइज़्निल्लाहि ♭ व अ-लल्लाहि फ़ल्-य-त-वक्कलिल्-मुअ्मिनून (११) व मा लना अल्ला न-त-वक्क-ल अ-लल्लाहि व क़द् हदाना सुबुलना ♭ व ल-नस्बिरन्-न अला मा आज़ैतुमूना ♭ व अ-लल्लाहि फ़ल्-य-त-वक्कलिल्-मुत-वक्किलून ★ (१२) व क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू लिरुसुलिहिम् लनुख़्रिजन्नकुम् मिन् अर्ज़िना औ ल-तअ़ूदुन्-न फ़ी मिल्लतिना ♭ फ़औहा इलैहिम् रब्बुहुम् लनुह्लिकन्नज़्-ज़ालिमीन ॥ (१३) व लनुस्किनन्न-कुमुल्-अर्-ज़ मिम्बअ्-दिहिम् ♭ ज़ालि-क लिमन् ख़ा-फ़ मक़ामी व ख़ा-फ़ वअीद (१४) वस्तफ़्तहू व ख़ा-ब कुल्लु जब्बारिन् अनीदिम् ॥ (१५) मिंव्वराइही जहन्नमु व युस्क़ा मिम्-माइन् सदीदिम्-॥ (१६) य-त-जर्रअुहू व ला यकादु युसीग़ुहू व यअ्तीहिल्-मौतु मिन् कुल्लि मकानिंव्-व मा हु-व बिमय्यितिन् ♭ व मिंव्वराइही अज़ाबुन् ग़लीज़ (१७) म-सलुल्लज़ी-न क-फ़रू बिरब्बिहिम् अअ्-मालुहुम् क-रमादि-नि-श्तद्दत् बिहिर्रीहु फ़ी यौमिन् आसिफ़िन् ♭ ला यक़्दिरू-न मिम्मा क-सबू अला शैइन् ♭ ज़ालि-क हुवज़्ज़लालुल्-बअीद (१८) अ-लम् त-र अन्नल्ला-ह ख़-ल-क़स्समावाति वल्अर्-ज़ बिल्हक़्क़ि ♭ इंय्यशअ् युज़्हिब्कुम् व यअ्ति बिख़ल्क़िन् जदीद ॥ (१९) व मा ज़ालि-क अ-लल्लाहि बिअ़ज़ीज़ (२०) व ब-रज़ू लिल्लाहि जमीअ़न् फ़-क़ालज़्ज़ुअ़फ़ाउ लिल्लज़ीनस्तक्बरू इन्ना कुन्ना लकुम् त-ब-अन् फ़-हल् अन्तुम् मुग़्नू-न अन्ना मिन् अज़ाबिल्लाहि मिन् शैइन् ♭ क़ालू लौ हदानल्लाहु ल-हदैनाकुम् ♭ सवाउन् अलैना अ-जज़िअ्-ना अम् स-बर्ना मा लना मिम्महीस ★ (२१)

تَصُدُّونَا عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ آبَاؤُنَا فَأْتُونَا بِسُلْطَانٍ مُبِينٍ ۝ قَالَتْ
لَهُمْ رُسُلُهُمْ إِنْ نَحْنُ إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُكُمْ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ يَمُنُّ عَلَىٰ مَنْ
يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۖ وَمَا كَانَ لَنَا أَنْ نَأْتِيَكُمْ بِسُلْطَانٍ إِلَّا بِإِذْنِ
اللَّهِ ۚ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ۝ وَمَا لَنَا أَلَّا نَتَوَكَّلَ عَلَى
اللَّهِ وَقَدْ هَدَانَا سُبُلَنَا ۚ وَلَنَصْبِرَنَّ عَلَىٰ مَا آذَيْتُمُونَا ۚ وَعَلَى اللَّهِ
فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُونَ ۝ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِرُسُلِهِمْ لَنُخْرِجَنَّكُمْ
مِنْ أَرْضِنَا أَوْ لَتَعُودُنَّ فِي مِلَّتِنَا ۖ فَأَوْحَىٰ إِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ لَنُهْلِكَنَّ
الظَّالِمِينَ ۝ وَلَنُسْكِنَنَّكُمُ الْأَرْضَ مِنْ بَعْدِهِمْ ۚ ذَٰلِكَ
لِمَنْ خَافَ مَقَامِي وَخَافَ وَعِيدِ ۝ وَاسْتَفْتَحُوا وَخَابَ كُلُّ
جَبَّارٍ عَنِيدٍ ۝ مِنْ وَرَائِهِ جَهَنَّمُ وَيُسْقَىٰ مِنْ مَاءٍ صَدِيدٍ ۝
يَتَجَرَّعُهُ وَلَا يَكَادُ يُسِيغُهُ وَيَأْتِيهِ الْمَوْتُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَ
مَا هُوَ بِمَيِّتٍ ۖ وَمِنْ وَرَائِهِ عَذَابٌ غَلِيظٌ ۝ مَثَلُ الَّذِينَ كَفَرُوا
بِرَبِّهِمْ ۖ أَعْمَالُهُمْ كَرَمَادٍ اشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيحُ فِي يَوْمٍ عَاصِفٍ ۖ
لَا يَقْدِرُونَ مِمَّا كَسَبُوا عَلَىٰ شَيْءٍ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الضَّلَالُ الْبَعِيدُ ۝
أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ إِنْ يَشَأْ يُذْهِبْكُمْ
وَيَأْتِ بِخَلْقٍ جَدِيدٍ ۝ وَمَا ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ بِعَزِيزٍ ۝ وَبَرَزُوا
لِلَّهِ جَمِيعًا فَقَالَ الضُّعَفَاءُ لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا كُنَّا لَكُمْ

★रु. २/१४ आ ६ ★रु. ३/१५ आ ९

दिखलाओ)। (१०) पैग़म्बरों ने उन से कहा कि हां, हम तुम्हारे ही जैसे आदमी हैं, लेकिन ख़ुदा अपने बन्दों में से, जिस पर चाहता है (नुबूवत का) एहसान करता है और हमारे अख़्तियार की बात नहीं कि हम ख़ुदा के हुक्म के बग़ैर तुम को (तुम्हारी फ़रमाइश के मुताबिक़) मोजज़ा दिखाएं और ख़ुदा ही पर मोमिनों को भरोसा रखना चाहिए। (११) और हम क्यों न ख़ुदा पर भरोसा रखें हालांकि उस ने हम को हमारे (दीन के सीधे) रास्ते बताए हैं, और जो तक्लीफ़ें तुम हम को देते हो, उस पर सब्र करेंगे और भरोसा करने वालों को ख़ुदा ही पर भरोसा रखना चाहिए। (१२) ★

और जो काफ़िर थे उन्हों ने अपने पैग़म्बरों से कहा कि (या तो) हम तुम को अपने मुल्क से बाहर निकाल देंगे या हमारे मज़हब में दाखिल हो जाओ। तो परवरदिगार ने उन की तरफ़ वह्य भेजी कि हम ज़ालिमों को हलाक कर देंगे। (१३) और उन के बाद तुम को उस ज़मीन में आबाद कर देंगे। यह उस शख़्स के लिए है जो (क़ियामत के दिन) मेरे सामने खड़े होने से डरे और मेरे अज़ाब से ख़ौफ़ करे। (१४) और पैग़म्बरों ने (ख़ुदा से अपनी) फ़त्ह चाही, तो हर सरकश, ज़िद्दी, ना-मुराद रह गया। (१५) उस के पीछे दोज़ख़ है और उसे पीप का पानी पिलाया जाएगा, (१६) वह उस को घूंट-घूंट पिएगा और गले से नहीं उतार सकेगा और हर तरफ़ से उसे मौत आ रही होगी, मगर वह मरने में नहीं आएगा और उस के पीछे सख़्त अज़ाब होगा। (१७) जिन लोगों ने अपने परवरदिगार से कुफ़्र किया, उन के आमाल की मिसाल राख की-सी है कि आंधी के दिन उस पर ज़ोर की हवा चले (और) उसे उड़ा ले जाए, (इसी तरह) जो काम वे करते रहे, उन पर उन को कुछ क़ुदरत न होगी। यही तो परले सिरे की गुमराही है। (१८) क्या तुम ने नहीं देखा कि ख़ुदा ने आसमानों और ज़मीन को तद्बीर से पैदा किया है, अगर वह चाहे, तो तुम को नाबूद कर दे और (तुम्हारी जगह) नयी मख़्लूक़ पैदा कर दे। (१९) और यह ख़ुदा को कुछ भी मुश्किल नहीं। (२०) और (क़ियामत के दिन) सब लोग ख़ुदा के सामने खड़े होंगे, तो (अक़्ल के) कमज़ोर (पैरवी करने वाले अपने) घमंडी (सरदारों) से कहेंगे कि हम तो तुम्हारी पैरवी करने वाले थे। क्या तुम ख़ुदा का कुछ अज़ाब हम पर से हटा सकते हो ? वे कहेंगे कि अगर ख़ुदा हम को हिदायत करता तो हम तुम को हिदायत करते। अब हम घबराएं या सब्र करें, हमारे हक़ में बराबर है। कोई जगह (भागने

★रु० २/१४ आ ६

व क़ालश्शैतानु लम्मा क़ुज़ियल्-अम्रु इन्नल्ला-ह व-अ-दकुम् वअ्-दल्हक़्क़ि व वअत्तुकुम् फ़-अख़्लफ़्तुकुम् ط व मा का-न लि-य अलैकुम् मिन् सुल्तानिन् इल्ला अन् दऔतुकुम् फ़स्तजब्तुम् ली ج फ़ला तलूमूनी व लूमू अन्फ़ुसकुम् ط मा अ-न बिमुस्रिख़िकुम् व मा अन्तुम् बिमुस्रिख़िय्-य ط इन्नी क-फ़र्तु बिमा अश्-रक्तुमूनि मिन् क़ब्लु ط इन्नज़्ज़ालिमी-न लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम (२२) व उद्ख़िलल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा बिइज़्नि रब्बिहिम् ط तहिय्यतुहुम् फ़ीहा सलाम (२३) अ-लम् त-र कै-फ़ ज़-र-बल्लाहु म-स-लन् कलि-म-तन् तय्यि-ब-तन् क-श-ज-रतिन् तय्यिबतिन् अस्लुहा साबितुं व-फ़र्अुहा फ़िस्समाइ ॥ (२४) तुअ्ती उकुलहा कुल्-ल हीनिम्-बिइज़्नि रब्बिहा ط व यज़्रिबुल्लाहुल्-अम्सा-ल लिन्नासि ल-अल्लहुम् य-त-ज़क्करून (२५) व म-सलु कलिमतिन् ख़बीसतिन् क-श-जरतिन् ख़बीसति-निज्तुस्सत् मिन् फ़ौक़िल्अर्ज़ि मा लहा मिन् क़रार (२६) युसब्बितुल्लाहुल्-लज़ी-न आमनू बिल्-क़ौलिस्साबिति फ़िल्-हयातिद्दुन्या व फ़िल्आख़िरति ج व युज़िल्लुल्लाहुज़्-ज़ालिमी-न वक़्फ़ व यफ़्-अलुल्लाहु मा यशाउ★ (२७) अ-लम् त-र इलल्लज़ी-न बद्दलू निअ्-म-तल्लाहि कुफ़्रंव्-व अहल्लू क़ौमहुम् दारल्बवार ॥ (२८) जहन्न-म ج यस्लौनहा ط व बिअ्सल्क़रार (२९) व ज-अलू लिल्लाहि अन्दादल्-लियुज़िल्लू अन् सबीलिही ط क़ुल् त-मत्तअू फ़-इन्-न मसीरकुम् इलन्नार (३०)

تبعا فهل أنتم مغنون عنا من عذاب الله من شيء ۚ قالوا لو
هدىنا الله لهدينكم ۖ سواء علينا أجزعنا أم صبرنا ما لنا من
محيص ﴿٢١﴾ وقال الشيطن لما قضي الأمر إن الله وعدكم وعد
الحق ووعدتكم فأخلفتكم ۖ وما كان لي عليكم من سلطن إلا
أن دعوتكم فاستجبتم لي ۖ فلا تلوموني ولوموا أنفسكم ۖ ما أنا
بمصرخكم وما أنتم بمصرخي ۖ إني كفرت بما أشركتمون من قبل ۗ
إن الظلمين لهم عذاب أليم ﴿٢٢﴾ وأدخل الذين آمنوا وعملوا
الصلحت جنت تجري من تحتها الأنهر خلدين فيها بإذن
ربهم ۖ تحيتهم فيها سلم ﴿٢٣﴾ ألم تر كيف ضرب الله مثلا كلمة
طيبة كشجرة طيبة أصلها ثابت وفرعها في السماء ﴿٢٤﴾ تؤتي
أكلها كل حين بإذن ربها ۗ ويضرب الله الأمثال للناس
لعلهم يتذكرون ﴿٢٥﴾ ومثل كلمة خبيثة كشجرة خبيثة اجتثت
من فوق الأرض ما لها من قرار ﴿٢٦﴾ يثبت الله الذين آمنوا
بالقول الثابت في الحيوة الدنيا وفي الآخرة ۖ ويضل الله
الظلمين ۚ ويفعل الله ما يشاء ﴿٢٧﴾ ألم تر إلى الذين بدلوا نعمت الله
كفرا وأحلوا قومهم دار البوار ﴿٢٨﴾ جهنم ۚ يصلونها ۖ وبئس القرار ﴿٢٩﴾
وجعلوا لله أندادا ليضلوا عن سبيله ۗ قل تمتعوا فإن مصيركم

★रु. ४/१६ आ ६

और) रिहाई की हमारे लिए नहीं है★(२१) जब (हिसाब-किताब का काम) फ़ैसला हो चुकेगा, तो शैतान कहेगा (जो) वायदा ख़ुदा ने तुम से किया था, (वह तो) सच्चा (था) और (जो) वायदा मैं ने तुम से किया था, वह झूठा था और मेरा तुम पर किसी तरह का ज़ोर नहीं था। हां, मैं ने तुम को (गुमराही और बातिल की तरफ़) बुलाया, तो तुम ने (जल्दी से और बे-दलील) मेरा कहना मान लिया तो, (आज) मुझे मलामत न करो, अपने आप ही को मलामत करो। न मैं तुम्हारी फ़रियादरसी कर सकता हूं और न तुम मेरी फ़रियादरसी कर सकते हो। मैं इस बात से इंकार करता हूं कि तुम पहले मुझे शरीक बनाते थे। बेशक जो ज़ालिम हैं, उन के लिए दर्द देने वाला अज़ाब है। (२२) और जो ईमान लाये और नेक अमल किये, वे बहिश्तों में दाख़िल किये जाएंगे, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, अपने परवरदिगार के हुक्म से हमेशा उन में रहेंगे, वहां उन की साहब-सलामत सलाम होगा। (२३) क्या तुम ने नहीं देखा कि ख़ुदा ने पाक बात की कैसी मिसाल बयान फ़रमायी है, (वह ऐसी है) जैसे पाक पेड़, जिस की जड़ मज़बूत (यानी ज़मीन को पकड़े हुए) हो और शाखें आसमान में।[1] (२४) अपने परवरदिगार के हुक्म से हर वक़्त फल आता (और मेवे देता) हो और ख़ुदा लोगों के लिए मिसालें बयान फ़रमाता है, ताकि वे नसीहत पकड़ें। (२५) और नापाक बात की मिसाल नापाक पेड़ की-सी है, (न जड़ मज़बूत न शाखें ऊंची) ज़मीन के ऊपर ही से उखाड़ कर फेंक दिया जाए, उस को ज़रा भी क़रार (व सबात) नहीं।[2] (२६) ख़ुदा मोमिनों (के दिलों) को (सही और) पक्की बात से दुनिया की ज़िंदगी में भी मज़बूत रखता है और आख़िरत में भी (रखेगा) और ख़ुदा बे-इन्साफ़ों को गुमराह कर देता है और ख़ुदा जो चाहता है, करता है। (२७)★

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा, जिन्हों ने ख़ुदा के एहसान को ना-शुक्री से बदल दिया और अपनी क़ौम को तबाही के घर उतारा। (२८) (वह घर) दोज़ख़ है, (सब ना-शुक्रे) उस में दाख़िल होंगे और वह बुरा ठिकाना है। (२९) और उन लोगों ने ख़ुदा के शरीक मुक़र्रर किये कि (लोगों को) उस के रास्ते से गुमराह करें। कह दो कि (कुछ दिन) फ़ायदे उठा लो। आख़िरकार

---

१. पाक बात से मुराद कलिमा-ए-तौहीद 'ला इला-ह इल्लल्लाह' है। फ़रमाया कि कलिमा-ए-तौहीद की मिसाल उस पाक पेड़ की-सी है, जिस की जड़ ज़मीन में मज़बूत हो और उस की शाखें बुलंदी में आसमान तक पहुंची हुई हों और हर मौसम में फल देता हो। कलिमा-ए-तौहीद की जड़ भी दिलों में क़ायम व मुस्तहकम होती है और उस की शाखें यानी अमल आसमान पर चढ़ते रहते हैं और उन की बरकत हर वक़्त हासिल होती रहती है।

२. ना-पाक बात से मुराद शिर्क का कलिमा है। फ़रमाया शिर्क के कलिमे की मिसाल ऐसे पेड़ की है, जिस की जड़ ज़मीन पर से उखाड़ दी गयी हो, उसे ज़रा क़रार व सबात न हो यानी शिर्क का कलिमा बिल्कुल बे-असल होता है, न उस के लिए मज़बूत दलील होती है, न शिर्क के कामों की क़ुबूलियत होती है, न उस में ख़ैर व बरकत होती है।

★रु. ३/१५ आ ९ ★रु. ४/१६ आ ६

क़ुल् लिअिबादियल्-लज़ी-न आमनू युक़ीमुस्सला-त व युन्फ़िक़ू मिम्मा र-ज़क़्नाहुम् सिर्-रंव्-व अ़लानिय्यतम्-मिन् क़ब्लि अंय्यअ्ति-य यौमुल्ला बैअुन् फ़ीहि व ला ख़िलाल (३१) अल्लाहुल्लज़ी ख़-ल-क़स्समावाति वल्अर्-ज़ व अन्-ज़-ल मिनस्समाइ मा-अन् फ़-अख़्-र-ज बिही मिनस्स - मराति रिज़्क़ल्लकुम् ج व

सख़्ख़-र लकुमुल्फ़ुल्-क लितज्रि-य फ़िल्बह्रि बिअम्रिही ج व सख़्ख़ - र लकुमुल् - अन्हार ج (३२) व सख़्ख़-र लकुमुश्शम्-स वल्क़-म-र दाइबैनि ج व सख़्ख़-र लकुमुल्-लै - ल वन्नहार ج (३३) व आताकुम् मिन् कुल्लि मा स - अल्तुमूहु ط व इन् तअुद्दू निअ् - म-तल्लाहि ला तुह्सूहा ط इन्नल् - इन्सा - न ल - ज़लूमुन् कफ़्फ़ार ★ (३४) व इज़् क़ा - ल इब्राहीमु रब्बिज्-अल् हाज़ल्ब-ल-द आमिनंव्वज्नुब्नी व बनिय्-य अन् नअ्-बुदल्-अस्नाम ط (३५) रब्बि इन्नहुन् - न अज़्-लल्-न कसीरम्-

إلى النار ۝ قل لعبادي الذين آمنوا يقيموا الصلوة وينفقوا مما
رزقنهم سرا وعلانية من قبل أن يأتي يوم لا بيع فيه ولا
خلل ۝ الله الذي خلق السموت والأرض وأنزل من السماء ماء
فأخرج به من الثمرت رزقا لكم وسخر لكم الفلك لتجري في
البحر بأمره وسخر لكم الأنهر ۝ وسخر لكم الشمس والقمر دائبين
وسخر لكم اليل والنهار ۝ وآتكم من كل ما سألتموه وإن
تعدوا نعمت الله لا تحصوها إن الإنسان لظلوم كفار ۝ وإذ
قال إبرهيم رب اجعل هذا البلد آمنا واجنبني وبني أن نعبد
الأصنام ۝ رب إنهن أضللن كثيرا من الناس فمن تبعني
فإنه مني ومن عصاني فإنك غفور رحيم ۝ ربنا إني أسكنت
من ذريتي بواد غير ذي زرع عند بيتك المحرم ربنا ليقيموا
الصلوة فاجعل أفئدة من الناس تهوي إليهم وارزقهم
من الثمرت لعلهم يشكرون ۝ ربنا إنك تعلم ما نخفي وما
نعلن وما يخفى على الله من شيء في الأرض ولا في السماء ۝
الحمد لله الذي وهب لي على الكبر إسمعيل وإسحق إن ربي
لسميع الدعاء ۝ رب اجعلني مقيم الصلوة ومن ذريتي ربنا و
تقبل دعاء ۝ ربنا اغفر لي ولولدي وللمؤمنين يوم يقوم الحساب ۝

मिनन्नासि ج फ़-मन् तबि-अ़नी फ़-इन्नहू मिन्नी ج व मन् अ़सानी फ़इन्न-क ग़फ़ूरुर्रहीम (३६) रब्बना इन्नी अस्कन्तु मिन् ज़ुर्रिय्यती बिवादिन् ग़ैरि-ज़ी ज़र्अिन् अिन्-द बैतिकल्-मुहर्रमि ॥ रब्बना लियुक़ीमुस्सला-त फ़ज्-अ़ल् अफ़्इ-द-तम्-म् मिनन्नासि तह्वी इलैहिम् वर्ज़ुक़्-हुम् मिनस्स-मराति ल-अ़ल्लहुम् यश्कुरून (३७) रब्बना इन्न-क तअ्-लमु मा नुख़्फ़ी व मा नुअ्-लिनु ط व मा यख़्फ़ा अ़-लल्लाहि मिन् शैइन् फ़िल्अर्ज़ि व ला फ़िस्समाइ (३८) अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी व-ह-ब ली अ़-लल्किबरि इस्माअ़ी-ल व इस्हा-क़ ط इन्-न रब्बी ल-समीअुद्दुआइ (३९) रब्बिज्‌ - अ़ल्नी मुक़ीमस्सलाति व मिन् ज़ुर्रिय्यती ق रब्बना व त - क़ब्बल् दुआइ (४०) रब्बनग़्फ़िर्ली व लिवालिदय्-य व लिल्मुअ्मिनी-न यौ-म यक़ूमुल् - हिसाब ★ (४१)

★रु. ५/१७ आ ७ ★रु. ६/१८ आ ७

तुम को दोज़ख़ की तरफ़ लौट कर जाना है। (३०) (ऐ पैग़म्बर!) मेरे मोमिन बन्दों से कह दो कि नमाज़ पढ़ा करें और उस दिन के आने से पहले, जिस में न (आमाल) का सौदा होगा और न दोस्ती (काम आएगी) हमारे दिए हुए माल में से छिपे और ज़ाहिर ख़र्च करते रहें। (३१) ख़ुदा ही तो है, जिस ने आसमान और ज़मीन को पैदा किया और आसमान से मेंह बरसाया, फिर उस से तुम्हारे खाने के लिए फल पैदा किए और कश्तियों (और जहाज़ों) को तुम्हारे फ़रमान के तहत किया, ताकि दरिया (और समुन्दर) में उस के हुक्म से चलें और नहरों को भी तुम्हारे फ़रमान के तहत किया। (३२) और सूरज और चांद को तुम्हारे लिए काम में लगा दिया कि दोनों (दिन-रात) एक दस्तूर पर चल रहे हैं और रात और दिन को भी तुम्हारे लिए काम में लगा दिया। (३३) और जो कुछ तुम ने मांगा, सब में से तुम को इनायत किया और अगर ख़ुदा के एहसान गिनने लगो तो गिन न सको, (मगर लोग नेमतों का शुक्र नहीं करते)। कुछ शक नहीं कि इंसान बड़ा बे-इंसाफ़ और ना-शुक्रा है। (३४) ★

और जब इब्राहीम ने दुआ की कि मेरे परवरदिगार! इस शहर को (लोगों के लिए) अम्न की जगह बना दे[1] और मुझे और मेरी औलाद को इस बात से कि बुतों की पूजा करने लगें, बचाए रख। (३५) ऐ परवरदिगार! उन्हों ने बहुत से लोगों को गुमराह किया है, सो जिस शख़्स ने मेरा कहा माना, वह मेरा और जिस ने मेरी ना-फ़रमानी की, तो तू बख़्शने वाला मेहरबान है। (३६) ऐ परवरदिगार! मैं ने अपनी औलाद (मक्का के) मैदान में, जहां खेती नहीं, तेरे इज़्ज़त (व अदब) वाले घर के पास ला बसायी है, ऐ परवरदिगार! ताकि ये नमाज़ पढ़ें, तो लोगों के दिलों को ऐसा कर दे कि उन की तरफ़ झुके रहें और उन को मेवों से रोज़ी दे ताकि (तेरा) शुक्र करें। (३७) ऐ परवरदिगार! जो बात हम छिपाते और ज़ाहिर करते हैं, तू सब जानता है और ख़ुदा से कोई चीज़ छिपी हुई नहीं, (न) ज़मीन में, न आसमान में। (३८) ख़ुदा का शुक्र है, जिस ने मुझ को बड़ी उम्र में इस्माईल और इस्हाक़ बख़्शे। बेशक मेरा परवरदिगार दुआ सुनने वाला है। (३९) ऐ परवरदिगार! मुझ को (ऐसी तौफ़ीक़ इनायत) कर कि नमाज़ पढ़ता रहूं और मेरी औलाद को भी (यह तौफ़ीक़ बख़्श), ऐ परवरदिगार! मेरी दुआ क़ुबूल फ़रमा। (४०) ऐ परवरदिगार! हिसाब (-किताब) के दिन मुझ को और मेरे मां-बाप को और मोमिनों को मग़फ़िरत कीजियो, (४१) ★

---

१. यानी इलाही! मक्का को सब बलाओं और आफ़तों से अमान में रख।

★रु. ५/१७ आ ७ ★रु. ६/१८ आ ७

व ला तह्स-बन्नल्ला-ह ग़ाफ़िलन् अम्मा यअ् - मलुज़्ज़ालिमू - न ‌ॽ इन्नमा युअख़्ख़िरुहुम् लियौमिन् तश्ख़सु फ़ीहिल्-अब्सार ⅟ (४२) मुह्तिओ - न मुक़्निओ-रुऊसिहिम् ला यर्तद्दु इलैहिम् तर - फ़ुहुम् ج व अफ़् - इदतुहुम् हवा-अ् ط (४३) व अन्ज़िरिन्ना-स यौ-म यअ्तीहिमुल्-अज़ाबु फ़-यक़ूलुल्-लज़ी-न ज़-लमू रब्बना अख़्ख़िर्ना इला अ-जलिन् क़रीबिन् ⅟ नुजिब् दअ्-व-त-क व नत्तबिअिर्-रुसु-ल ط अ-व लम् तकूनू अक़्सम्तुम् मिन् क़ब्लु मा लकुम् मिन् ज़वालिन् ⅟ (४४) व स-कन्तुम् फ़ी मसाकिनिल्लज़ी-न ज़-लमू अन्फ़ुसहुम् व त-बय्य-न लकुम् कै-फ़ फ़-अल्ना बिहिम् व ज़-रब्ना लकुमुल्-अम्-साल (४५) व क़द् म-करु मक्रहुम् व अिन्दल्लाहि मक्रुहुम् ط व इन् का-न मक्रुहुम् लि-तज़ू-ल मिन्हुल्-जिबाल (४६) फ़ला तह्-स-बन्नल्ला-ह मुख़्लि-फ़ वअ्-दिही रुसुलहू ط इन्नल्ला - ह अज़ीज़ुन् ज़ुन्तिक़ा - म ط (४७)

وَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظّٰلِمُوْنَ ۬ؕ اِنَّمَا يُؤَخِّرُهُمْ لِيَوْمٍ
تَشْخَصُ فِيْهِ الْاَبْصَارُ ۙ مُهْطِعِيْنَ مُقْنِعِيْ رُءُوْسِهِمْ لَا يَرْتَدُّ اِلَيْهِمْ
طَرْفُهُمْ ۚ وَاَفْـِٕدَتُهُمْ هَوَآءٌ ؕ وَاَنْذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَاْتِيْهِمُ الْعَذَابُ
فَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا رَبَّنَاۤ اَخِّرْنَاۤ اِلٰۤى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۙ نُّجِبْ دَعْوَتَكَ
وَنَتَّبِعِ الرُّسُلَ ؕ اَوَلَمْ تَكُوْنُوْۤا اَقْسَمْتُمْ مِّنْ قَبْلُ مَا لَكُمْ مِّنْ زَوَالٍ ۙ
وَّسَكَنْتُمْ فِيْ مَسٰكِنِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ وَتَبَيَّنَ لَكُمْ كَيْفَ
فَعَلْنَا بِهِمْ وَضَرَبْنَا لَكُمُ الْاَمْثَالَ ۝ وَقَدْ مَكَرُوْا مَكْرَهُمْ وَعِنْدَ
اللّٰهِ مَكْرُهُمْ ؕ وَاِنْ كَانَ مَكْرُهُمْ لِتَزُوْلَ مِنْهُ الْجِبَالُ ۝ فَلَا تَحْسَبَنَّ
اللّٰهَ مُخْلِفَ وَعْدِهٖ رُسُلَهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ؕ يَوْمَ تُبَدَّلُ
الْاَرْضُ غَيْرَ الْاَرْضِ وَالسَّمٰوٰتُ وَبَرَزُوْا لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ۝
وَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ يَوْمَىٕذٍ مُّقَرَّنِيْنَ فِى الْاَصْفَادِ ۚ سَرَابِيْلُهُمْ مِّنْ
قَطِرَانٍ وَّتَغْشٰى وُجُوْهَهُمُ النَّارُ ۙ لِيَجْزِيَ اللّٰهُ كُلَّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝ هٰذَا بَلٰغٌ لِّلنَّاسِ وَلِيُنْذَرُوْا بِهٖ وَ
لِيَعْلَمُوْۤا اَنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّلِيَذَّكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۝
سُوْرَةُ الْحِجْرِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ تِسْعٌ وَّتِسْعُوْنَ اٰيَةً وَّسِتَّةُ رُكُوْعَاتٍ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
الٓرٰ ۫ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ وَقُرْاٰنٍ مُّبِيْنٍ ۝

यौ-म तुबद्दलुल्-अर्ज़ु ग़ैरल्अर्ज़ि वस्समावातु व ब - रज़ू लिल्लाहिल्-वाहिदिल्-क़ह्हार (४८) व त - रल्मुज्रिमी - न यौमइज़िम्-मुक़र्रनी-न फ़िल्-अस्फ़ाद ج (४९) सराबीलुहुम् मिन् क़तिरानिंव-व तग़्शा वुजूह-हुमुन्नार ⅟ (५०) लियज्ज़ियल्लाहु कुल-ल नफ़्सिम्-मा क-स-बत् ط इन्नल्ला-ह सरीअुल्-हिसाब (५१) हाज़ा बलाग़ुल्लिन्नासि व लियुन्ज़रू बिही व लियअ्-लमू अन्नमा हु-व इलाहुंव्वाहिदुंव-व लि-यज़्ज़क्क-र उलुल्-अल्बाब★(५२)

१५ सूरतुल् हिज्र ५४

(मक्की) इस सूर: में अरबी के २१०७ अक्षर, ६६३ शब्द, ९९ आयतें और ६ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ●

अलिफ़्-लाम्-रा तिल-क आयातुल्-किताबि व क़ुर्आनिम्-मुबीन (१)

★रु. ७/१९आ ११

और (मोमिनो !) मत ख़्याल करना कि ये ज़ालिम जो अमल कर रहे हैं, ख़ुदा उन से बे-ख़बर है। वह उन को उस दिन तक मुहलत दे रहा है, जबकि (दहशत की वजह से) आंखें खुली की खुली रह जाएंगी, (४२) (और लोग) सर उठाए हुए (क़ियामत के मैदान की तरफ़) दौड़ रहे होंगे, उन की निगाहें उन की तरफ़ लौट न सकेंगी और उन के दिल (मारे डर के) हवा हो रहे होंगे। (४३) और लोगों को उस दिन से आगाह कर दो, जब उन पर अज़ाब आ जाएगा, तब ज़ालिम लोग कहेंगे कि ऐ हमारे परवरदिगार ! हमें थोड़ी सी मोहलत की मुद्दत अता कर, ताकि हम तेरी (तौहीद की) दावत क़ुबूल करें और (तेरे) पैग़म्बरों के पीछे चलें। (तो जवाब मिलेगा) क्या तुम पहले क़स्में नहीं खाया करते थे कि तुम को (उस हाल से जिस में तुम हो) ज़वाल (और क़ियामत को आमाल का हिसाब) नहीं होगा। (४४) और जो लोग अपने आप पर ज़ुल्म करते थे, तुम उन के मकानों में रहते थे और तुम पर ज़ाहिर हो चुका था कि हम ने उन लोगों के साथ किस तरह (का मामला) किया था और तुम्हारे (समझाने) के लिए मिसालें भी बयान कर दी थीं। (४५) और उन्हों ने (बड़ी-बड़ी) तद्बीरें कीं और उन की (सब) तद्बीरें ख़ुदा के यहां (लिखी हुई) हैं, गो वे तद्बीरें ऐसी (ग़ज़ब की) थीं कि उन से पहाड़ भी टल जाएं। (४६) तो ऐसा ख़्याल न करना कि ख़ुदा ने जो अपने पैग़म्बरों से वायदा किया है, उस के ख़िलाफ़ करेगा। बेशक ख़ुदा ज़बरदस्त (और) बदला लेने वाला है। (४७) जिस दिन यह ज़मीन दूसरी ज़मीन से बदल दी जाएगी और आसमान भी (बदल दिए जाएंगे) और सब लोग ख़ुदा-ए-यगाना व ज़बरदस्त के सामने निकल खड़े होंगे। (४८) और उस दिन तुम गुनाहगारों को देखोगे कि ज़ंजीरों में जकड़े हुए हैं। (४९) उन के कुरते गंधक के होंगे और उन के मुंहों को आग लिपट रही होगी। (५०) यह इस लिए कि ख़ुदा हर शख़्स को उस के आमाल का बदला दे, बेशक ख़ुदा जल्द हिसाब लेने वाला है। (५१) यह (क़ुरआन) लोगों के नाम (ख़ुदा का पैग़ाम) है, ताकि उन को उस से डराया जाए और ताकि वे जान लें कि वही अकेला माबूद है और ताकि अक़्ल वाले नसीहत पकड़ें। (५२) ★

१५ सूरः हिज्र ५४

सूरः हिज्र मक्की है और इस में ९९ आयतें और छः रुकूअ हैं !

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ़-लाम्-रा, यह (ख़ुदा की) किताब और रोशन क़ुरआन की आयतें हैं। (१) किसी वक़्त

★रु. ७/१६ आ ११

चौदहवां पारः रु-बमा

सूरतुल्-हिज्र आयत २ से ६६

रु-बमा य-वद्दुल्लजी-न क-फ़रू लौ कानू मुस्लिमीन (२) जर्हुम् यअ्कुलू व य-त-मत्तअू व युल्हि-हिमुल्-अ-मलु फ़सौ-फ़ यअ्-लमून (३) व मा अह्-लक्ना मिन् क़र्यतिन् इल्ला व लहा किताबुम्-मअ्-लूम (४) मा तस्बिक़ु मिन् उम्मतिन् अ-ज-लहा व मा यस्तअ्ख़िरून (५) व क़ालू या अय्युहल्लजी नुज्ज़ि - ल अलैहिज़् - ज़िक्रु इन्न - क ल-मज्नून (६) लौ मा तअ्तीना बिल्मलाइकति इन् कुन-त मिनस्सादिक़ीन (७) मा नुनज़्ज़िलुल्-मलाइ-क-तु इल्ला बिल्हक़्क़ि व मा कानू इज़म्मुन्ज़रीन (८) इन्ना नह्नु नज़्ज़ल्नज़्-ज़िक-र व इन्ना लहू लहाफ़िज़ून (९) व ल-क़द् अर्सल्ना मिन् क़ब्लि-क फ़ी शि-यअिल्-अव्वलीन (१०) व मा यअ्तीहिम् मिर्-रसूलिन् इल्ला कानू बिही यस्तह्ज़िऊन (११) कज़ालि-क नस्लुकुहू फ़ी क़ुलूबिल्-मुज्रिमीन (१२) ला युअ्मिनू-न बिही व क़द् ख़-लत् सुन्नतुल्-अव्वलीन (१३) व लौ फ़-तह्ना अलैहिम् बाबम्-मिनस्समाइ फ़-ज़ल्लू फ़ीहि यअ्-रुजून (१४) लक़ालू इन्नमा सुक्किरत् अब्सारुना बल् नह्नु क़ौमुम्-मस्हूरून ★ (१५) व ल-क़द् ज-अल्ना फ़िस्समाइ बुरूजंव्-व ज़य्यन्नाहा लिन्नाज़िरीन (१६) व हफ़िज़्नाहा मिन् कुल्लि शैतानिर्-रजीम (१७) इल्ला मनिस्त-र-क़स्सम-अ फ़-अत-ब-अहू शिहाबुम्-मुबीन (१८) वल्अर्-ज़ म-दद्नाहा व अल्क़ैना फ़ीहा रवासि-य व अम्बत्ना फ़ीहा मिन् कुल्लि शैइम्-मौज़ून (१९) व ज-अल्ना लकुम् फ़ीहा मआयि-श व मल्लस्तुम् लहू बिराज़िक़ीन (२०) व इम्मिन् शैइन् इल्ला अिन्दना ख़ज़ाइनुहू व मा नुनज़्ज़िलुहू इल्ला बि क़-दरिम्-मअ्-लूम (२१)

الحجر ٢٠٩ ربما

رُبَمَا يَوَدُّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ كَانُوا مُسْلِمِينَ ۝ ذَرْهُمْ يَأْكُلُوا وَ
يَتَمَتَّعُوا وَيُلْهِهِمُ الْأَمَلُ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ۝ وَمَا أَهْلَكْنَا مِنْ
قَرْيَةٍ إِلَّا وَلَهَا كِتَابٌ مَعْلُومٌ ۝ مَا تَسْبِقُ مِنْ أُمَّةٍ أَجَلَهَا وَ
مَا يَسْتَأْخِرُونَ ۝ وَقَالُوا يَا أَيُّهَا الَّذِي نُزِّلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ إِنَّكَ
لَمَجْنُونٌ ۝ لَوْ مَا تَأْتِينَا بِالْمَلَائِكَةِ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ۝
مَا نُنَزِّلُ الْمَلَائِكَةَ إِلَّا بِالْحَقِّ وَمَا كَانُوا إِذًا مُنْظَرِينَ ۝ إِنَّا نَحْنُ
نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ ۝ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِي
شِيَعِ الْأَوَّلِينَ ۝ وَمَا يَأْتِيهِمْ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۝
كَذَٰلِكَ نَسْلُكُهُ فِي قُلُوبِ الْمُجْرِمِينَ ۝ لَا يُؤْمِنُونَ بِهِ وَقَدْ
خَلَتْ سُنَّةُ الْأَوَّلِينَ ۝ وَلَوْ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا مِنَ السَّمَاءِ فَظَلُّوا
فِيهِ يَعْرُجُونَ ۝ لَقَالُوا إِنَّمَا سُكِّرَتْ أَبْصَارُنَا بَلْ نَحْنُ قَوْمٌ
مَسْحُورُونَ ۝ وَلَقَدْ جَعَلْنَا فِي السَّمَاءِ بُرُوجًا وَزَيَّنَّاهَا لِلنَّاظِرِينَ ۝
وَحَفِظْنَاهَا مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ رَجِيمٍ ۝ إِلَّا مَنِ اسْتَرَقَ السَّمْعَ
فَأَتْبَعَهُ شِهَابٌ مُبِينٌ ۝ وَالْأَرْضَ مَدَدْنَاهَا وَأَلْقَيْنَا فِيهَا
رَوَاسِيَ وَأَنْبَتْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَوْزُونٍ ۝ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيهَا
مَعَايِشَ وَمَنْ لَسْتُمْ لَهُ بِرَازِقِينَ ۝ وَإِنْ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا عِنْدَنَا
خَزَائِنُهُ وَمَا نُنَزِّلُهُ إِلَّا بِقَدَرٍ مَعْلُومٍ ۝ وَأَرْسَلْنَا الرِّيَاحَ لَوَاقِحَ

★ रु. १/१ आ १५

काफ़िर लोग आरज़ू करेंगे कि ऐ काश ! वे मुसलमान होते। (२) (ऐ मुहम्मद !) उन को उन के हाल पर रहने दो कि खा लें और फ़ायदे उठा लें और (लम्बी) उम्मीद उन को (दुनिया में) फंसाए रहे। बहुत जल्द उन को (इस का अंजाम) मालूम हो जाएगा। (३) और हम ने कोई बस्ती हलाक नहीं की, मगर उस का वक़्त लिखा हुआ और तै था। (४) कोई जमाअत अपनी (वक़्त की) मुद्दत से न आगे निकल सकती है, न पीछे रह सकती है। (५) और (काफ़िर) कहते हैं कि ऐ शख़्स ! जिस पर नसीहत (की किताब) नाज़िल हुई है, तू तो दीवाना है। (६) अगर तू सच्चा है, तो हमारे पास फ़रिश्तों को क्यों नहीं ले आता ? (७) (कह दो) हम फ़रिश्तों को नाज़िल नहीं किया करते, मगर हक़ के साथ और उस वक़्त उन को मोहलत नहीं मिलती। (८) बेशक यह (किताब) नसीहत हम ही ने उतारी है और हम ही इस के निगेहबान हैं। (९) और हम ने तुम से पहले लोगों में भी पैग़म्बर भेजे थे। (१०) और उन के पास कोई पैग़म्बर नहीं आता था, मगर वे उस का मज़ाक़ उड़ाते थे। (११) इसी तरह हम (इस झूठ और गुमराही) को गुमराहों के दिलों में दाख़िल कर देते हैं। (१२) सो वे इस पर ईमान नहीं लाते और पहलों का रवैया भी यही रहा है, (१३) और अगर हम आसमान का कोई दरवाज़ा खोल दें और वे उस में चढ़ने भी लगें, (१४) तो भी यही कहें कि हमारी आंखें नशीली हो गयी हैं, बल्कि हम पर जादू कर दिया गया है। (१५) ★

और हम ही ने आसमान में बुर्ज बनाये और देखने वालों के लिए उस को सजा दिया। (१६) और हर शैतान, धुत्कारे हुए से उसे महफ़ूज़ कर दिया। (१७) हां, अगर कोई चोरी से सुनना चाहे, तो चमकता हुआ अंगारा उस के पीछे लपकता है। (१८) और ज़मीन को भी हम ही ने फैलाया और उस पर पहाड़ (बना कर) रख दिए और उस में हर एक संजीदा चीज़ उगायी। (१९) और हम ही ने तुम्हारे लिये और उन लोगों के लिए, जिन को तुम रोज़ी नहीं देते, उस में रोज़ी के सामान पैदा किए। (२०) और हमारे यहां हर चीज़ के ख़ज़ाने हैं और हम उन को मुनासिब मिक़दार में

★रु. १/१ आ १५

फ़ - अस्क़ैना माअन् मिनस्समाइ फ़-अन्ज़ल्ना ल-वाक़ि-ह़ व असंल्नरिया-ह़
कुमूहु ^ᶜ व मा अन्तुम् लहू बिख़ाज़िनीन (२२) व इन्ना ल - नह़्नु
नुह़्यी व नुमीतु व नह़्नुल्-वारिसून (२३) व ल - क़द् अ़लिम्नल्-
मुस्तक़्दिमी-न मिन्कुम् व ल-क़द् अ़लिम्-नल्-मुस्तअ्-ख़िरीन (२४) व इन्-न
रब्ब-क हु-व यह़्शुरुहुम् ط इन्नहू ह़कीमुन्
अ़लीम ★ (२५) व ल-क़द् ख़-लक़्नल्-
इन्सा-न मिन् स़ल्स़ालिम्मिन् ह़ - म-इम्-
मस्नून ^ᶜ (२६) वल्जान् - न ख़-लक़्नाहु
मिन् क़ब्लु मिन्नारिस्-समूम (२७) व
इज़् क़ा-ल रब्बु-क लिलमलाइकति इन्नी
ख़ालिक़ुम् - ब-श-रम्मिन् स़ल्स़ालिम् - मिन्
ह़-म-इम्-मस्नून (२८) फ़इज़ा सव्वैतुहू
व न-फ़ख़्तु फ़ीहि मिर्रूह़ी फ़-क़अ़ू लहू
साजिदीन (२९) फ़-स-ज-दल् - मलाइकतु
कुल्लुहुम् अज्मअ़ून ۙ (३०) इल्ला
इब्ली-स ط अबा अंय्यकू-न म-अस्-साजिदीन
(३१) क़ा-ल या इब्लीसु माल-क अल्ला तकू-न म-अस्-साजिदीन (३२)
क़ा-ल लम् अ-कुल्लि-अस्जु-द लिब-शरिन् ख़-लक़्तहू मिन् स़ल्स़ालिम् - मिन्
ह़-म-इम्-मस्नून (३३) क़ा-ल फ़ख़्-रुज् मिन्हा फ़इन्न-क रजीमुंव्- ۙ (३४)
व इन्-न अ़लैकल्-लअ़्-न-त इला यौमिद्दीन (३५) क़ा-ल रब्बि फ़-अन्ज़िर्नी
इला यौमि युब्-अ़सून (३६) क़ा-ल फ़इन्न-क मिनल्-मुन्ज़रीन ۙ (३७)
इला यौमिल्-वक़्तिल् - मअ़्लूम (३८) क़ा-ल रब्बि बिमा अग़्वैतनी
लउज़य्यिनन्-न लहुम् फ़िल्अर्ज़ि व ल-उग़्वियन्नहुम् अज्-मअ़ीन ۙ (३९) इल्ला
अ़िबाद-क मिन्-हुमुल्-मुख़्-लसीन (४०) क़ा-ल हाज़ा स़िरातुन् अ़लय्-य मुस्तक़ीम
(४१) इन्-न अ़िबादी लै-स ल-क अ़लैहिम् सुल्तानुन् इल्ला मनित्तब-अ़-क मिनल्-
ग़ावीन (४२) व इन्-न जहन्न-म लमौअ़िदुहुम् अज-मअ़ीन ۙ (४३) लहा
सब्-अ़तु अब्वाबिन् ط लिकुल्लि बाबिम् - मिन्हुम् जुज़उम् - मक़्सूम ★(४४)

فَاَنۡزَلۡنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَسۡقَيۡنٰكُمُوۡهُ‌ۚ وَمَاۤ اَنۡتُمۡ لَهٗ بِخٰزِنِيۡنَ ۝
وَاِنَّا لَـنَحۡنُ نُحۡىٖ وَنُمِيۡتُ وَنَحۡنُ الۡوٰرِثُوۡنَ ۝ وَلَقَدۡ عَلِمۡنَا الۡمُسۡتَقۡدِمِيۡنَ
مِنۡكُمۡ وَلَقَدۡ عَلِمۡنَا الۡمُسۡتَاۡخِرِيۡنَ ۝ وَاِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَحۡشُرُهُمۡ‌ ؕ اِنَّهٗ
حَكِيۡمٌ عَلِيۡمٌ ۝ وَلَقَدۡ خَلَقۡنَا الۡاِنۡسَانَ مِنۡ صَلۡصَالٍ مِّنۡ حَمَاٍ
مَّسۡنُوۡنٍ‌ ۝ وَالۡجَـآنَّ خَلَقۡنٰهُ مِنۡ قَبۡلُ مِنۡ نَّارِ السَّمُوۡمِ ۝ وَاِذۡ قَالَ رَبُّكَ
لِلۡمَلٰٓئِكَةِ اِنِّىۡ خَالِـقٌ ۢ بَشَرًا مِّنۡ صَلۡصَالٍ مِّنۡ حَمَاٍ مَّسۡنُوۡنٍ ۝
فَاِذَا سَوَّيۡتُهٗ وَنَفَخۡتُ فِيۡهِ مِنۡ رُّوۡحِىۡ فَقَعُوۡا لَهٗ سٰجِدِيۡنَ ۝ فَسَجَدَ
الۡمَلٰٓئِكَةُ كُلُّهُمۡ اَجۡمَعُوۡنَ ۝ اِلَّاۤ اِبۡلِيۡسَ ؕ اَبٰٓى اَنۡ يَّكُوۡنَ مَعَ
السّٰجِدِيۡنَ ۝ قَالَ يٰۤاِبۡلِيۡسُ مَا لَـكَ اَلَّا تَكُوۡنَ مَعَ السّٰجِدِيۡنَ ۝
قَالَ لَمۡ اَكُنۡ لِّاَسۡجُدَ لِبَشَرٍ خَلَقۡتَهٗ مِنۡ صَلۡصَالٍ مِّنۡ حَمَاٍ مَّسۡنُوۡنٍ ۝
قَالَ فَاخۡرُجۡ مِنۡهَا فَاِنَّكَ رَجِيۡمٌ ۙ ۝ وَّاِنَّ عَلَيۡكَ اللَّعۡنَةَ اِلٰى يَوۡمِ
الدِّيۡنِ ۝ قَالَ رَبِّ فَاَنۡظِرۡنِىۡۤ اِلٰى يَوۡمِ يُبۡعَثُوۡنَ ۝ قَالَ فَاِنَّكَ مِنَ
الۡمُنۡظَرِيۡنَ ۙ ۝ اِلٰى يَوۡمِ الۡوَقۡتِ الۡمَعۡلُوۡمِ ۝ قَالَ رَبِّ بِمَاۤ اَغۡوَيۡتَنِىۡ
لَاُزَيِّنَنَّ لَهُمۡ فِى الۡاَرۡضِ وَلَاُغۡوِيَـنَّهُمۡ اَجۡمَعِيۡنَ ۙ ۝ اِلَّا عِبَادَكَ
مِنۡهُمُ الۡمُخۡلَصِيۡنَ ۝ قَالَ هٰذَا صِرَاطٌ عَلَىَّ مُسۡتَقِيۡمٌ ۝ اِنَّ
عِبَادِىۡ لَـيۡسَ لَكَ عَلَيۡهِمۡ سُلۡطٰنٌ اِلَّا مَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الۡغٰوِيۡنَ ۝
وَاِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوۡعِدُهُمۡ اَجۡمَعِيۡنَ ۙ ۝ لَهَا سَبۡعَةُ اَبۡوَابٍ ؕ لِكُلِّ

★रु. २/२ आ १० ★रु. ३/३ आ १९

उतारते रहते हैं। (२१) और हम ही हवाएं चलाते हैं (जो बादलों के पानी से) भरी हुई (होती हैं) और हम ही आसमान से मेंह बरसाते हैं और हम ही तुम को उस का पानी पिलाते हैं और तुम तो उस का खज़ाना नहीं रखते, (२२) और हम ही ज़िंदगी बख़्शते और हम ही मौत देते हैं और हम ही सब के वारिस (मालिक) हैं, (२३) और जो लोग तुम में पहले गुज़र चुके हैं, हम को मालूम हैं और जो पीछे आने वाले हैं, वे भी हम को मालूम हैं, (२४) और तुम्हारा परवरदिगार (क़ियामत के दिन) उन सब को जमा करेगा, वह बड़ा जानने वाला (और) ख़बरदार है। (२५) ★

और हम ने इन्सानों को खनखनाते सड़े हुए गारे से पैदा किया है, (२६) और जिन्नों को इन से भी पहले बे-धुएं की आग से पैदा किया था, (२७) और तुम्हारे परवरदिगार ने फ़रिश्तों से फ़रमाया कि मैं खनखनाते हुए सड़े हुए गारे से एक बशर बनाने वाला हूं। (२८) जब उस को (इंसानी शक्ल में) ठीक कर लूं और उस में अपनी (क़ीमती चीज़ यानी) रूह फूंक दूं, तो उस के आगे सज्दे में गिर पड़ना। (२९) तो फ़रिश्ते तो सब के सब सज्दे में गिर पड़े! (३०) मगर शैतान कि उसने सज्दा करने वालों के साथ होने से इंकार कर दिया, (३१) (ख़ुदा ने) फ़रमाया कि इब्लीस तुझ को क्या हुआ कि कि तू सज्दा करने में शामिल न हुआ। (३२) (उस ने) कहा, मैं ऐसा नहीं हूं कि इंसान को, जिस को तू ने खनखनाते सड़े हुए गारे से बनाया है, सज्दा करूं। (३३) ख़ुदा ने फ़रमाया, यहां से निकल जा, तू मर्दूद है। (३४) और तुझ पर क़ियामत के दिन तक लानत (बरसेगी)। (३५) (उस ने) कहा कि परवरदिगार! मुझे उस दिन तक मोहलत दे, जब लोग (मरने के बाद) ज़िंदा किए जाएंगे। (३६) फ़रमाया कि तुझे मोहलत दी जाती है। (३७) मुक़र्रर वक़्त (यानी क़ियामत) के दिन तक। (३८) (उस ने) कहा कि परवरदिगार! जैसा तू ने मुझे रास्ते से अलग किया है, मैं भी ज़मीन में लोगों के लिए (गुनाहों को) सजा कर दिखाऊंगा और सब को बहकाऊंगा। (३९) हां, उन में जो तेरे मुख़्लिस बन्दे हैं, (उन पर क़ाबू चलना मुश्किल है)। (४०) (ख़ुदा ने) फ़रमाया कि मुझ तक (पहुंचने का) यही सीधा रास्ता है। (४१) जो मेरे (मुख़्लिस) बन्दे हैं, उन पर तुझे कुछ क़ुदरत नहीं (कि उन को गुनाह में डाल सके) हां, बद राहों में से जो तेरे पीछे चल पड़े। (४२) और उन सब के वायदे की जगह जहन्नम है। (४३) उस के सात दरवाज़े हैं।[1] हर एक दरवाज़े के लिए उन में से जमाअतें तक़्सीम कर दी गयी हैं। (४४) ★

---

१. इब्ने अब्बास कहते हैं कि दरवाज़ों से मुराद तब्क़े हैं यानी दोज़ख़ के नीचे-ऊपर सात तब्क़े और मंज़िलें हैं। पहला तब्क़ा जहन्नम है, दूसरा लज़्ज़ा, तीसरा हुतमा, चौथा सओर, पांचवां सक़र, छठा जहीम, सातवां हाविया। क़तादा ने कहा कि ये दर्जे अमल के लिहाज़ से है, मगर इसका इल्म ख़ुदा ही को है कि किस तरह के अमल और अक़ीदे के लिए कौन-सा तब्क़ा है।

इन्नल्मुत्तक़ी-न फ़ी जन्नातिंव - व अुयून ↄ (४५) उद्खुलूहा बिसलामिन् आमिनीन (४६) व न-ज़अ्-ना मा फ़ी सुदूरिहिम् मिन् ग़िल्लिन् इख़्-वानन् अला सुरुरिम्-मु-त-क़ाबिलीन (४७) ला यमस्सुहुम् फ़ीहा न-स-बुं व्-व मा हुम् मिन्हा बिमुख़्रजीन (४८) नब्बिअ् अिबादी अन्नी अ-नल् - ग़फ़ूरुर्रहीमु ᒍ (४९) व अन्-न अज़ाबी हुवल्अज़ाबुल्-अलीम (५०) व नब्बिअ्हुम् अन् ज़ैफ़ि इब्राहीम ▨ (५१) इज् द - ख़लू अलैहि फ़-क़ालू सलामन् ↄ क़ा - ल इन्ना मिन्कुम् वजिलून (५२) क़ालू ला तौजल् इन्ना नुबश्शिरु - क बिग़ुलामिन् अलीम (५३) क़ा-ल अ-बश्शर्तुमूनी अला अम्मस्सनियल् - कि-बरु फ़बि-म् तुबश्शिरून (५४) क़ालू बश्शर्ना-क बिल्हक़्क़ि फ़ला तकुम्मिनल्-क़ानितीन (५५) क़ा-ल व मंय्यक़्नतु मिर्रह्मति रब्बिही इल्लज़्ज़ाल्लून (५६) क़ा-ल फ़ मा ख़त्बुकुम् अय्युहल्-मुर्सलून (५७) क़ालू इन्ना उर्सिल्ना इला क़ौमिम् - मुज्रिमीन ᒍ (५८) इल्ला आ-ल लूतिन् ↄ इन्ना लमुनज्जूहुम् अज् - मअीन ᒍ (५९) इल्लम्-र-अ-तहू क़द्दर्ना ᒍ इन्नहा लमिनल्-ग़ाबिरीन ★ (६०) फ़ - लम्मा जा-अ आ-ल लूति-निल्-मुर्सलून ᒍ (६१) क़ा-ल इन्नकुम् क़ौमुम्-मुन्करून (६२) क़ालू बल् जिअ्ना-क बिमा कानू फ़ीहि यम्तरून (६३) व अतैना-क बिल्हक़्क़ि व इन्ना लसादिक़ून (६४) फ़ अस्रि बिअह्लि-क बिक़ित्अिम् मिनल्लैलि वत्तबिअ् अद्बारहुम् व ला यल्तफ़ित् मिन्कुम् अ-ह-दुंव्वम्ज़ू हैसु तुअ्-मरून (६५) व क़ज़ैना इलैहि ज़ालिकल्-अम्-र अन्-न दाबि-र हाउलाइ मक़्तूअुम् - मुस्बिहीन (६६) व जा-अ अह्लुल् - मदीनति यस्तब्शिरून (६७) क़ा-ल इन् - न हाउलाइ ज़ैफ़ी फ़ ला तफ़्ज़हून ᒍ (६८)

بَابٍ مِنْهُمْ جُزْءٌ مَقْسُومٌ ﴿٤٤﴾ إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنّٰتٍ وَعُيُونٍ ﴿٤٥﴾
اُدْخُلُوهَا بِسَلٰمٍ اٰمِنِينَ ﴿٤٦﴾ وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِمْ مِنْ غِلٍّ
إِخْوَانًا عَلٰى سُرُرٍ مُتَقٰبِلِينَ ﴿٤٧﴾ لَا يَمَسُّهُمْ فِيهَا نَصَبٌ وَمَا هُمْ
مِنْهَا بِمُخْرَجِينَ ﴿٤٨﴾ نَبِّئْ عِبَادِي أَنِّي أَنَا الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿٤٩﴾ وَ
أَنَّ عَذَابِي هُوَ الْعَذَابُ الْأَلِيمُ ﴿٥٠﴾ وَنَبِّئْهُمْ عَنْ ضَيْفِ إِبْرٰهِيمَ ﴿٥١﴾
إِذْ دَخَلُوا عَلَيْهِ فَقَالُوا سَلٰمًا قَالَ إِنَّا مِنْكُمْ وَجِلُونَ ﴿٥٢﴾ قَالُوا
لَا تَوْجَلْ إِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمٍ عَلِيمٍ ﴿٥٣﴾ قَالَ أَبَشَّرْتُمُونِي عَلٰى أَنْ
مَسَّنِيَ الْكِبَرُ فَبِمَ تُبَشِّرُونَ ﴿٥٤﴾ قَالُوا بَشَّرْنٰكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُنْ مِنَ
الْقٰنِطِينَ ﴿٥٥﴾ قَالَ وَمَنْ يَقْنَطُ مِنْ رَحْمَةِ رَبِّهِ إِلَّا الضَّالُّونَ ﴿٥٦﴾
قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ أَيُّهَا الْمُرْسَلُونَ ﴿٥٧﴾ قَالُوا إِنَّا أُرْسِلْنَا إِلٰى قَوْمٍ
مُجْرِمِينَ ﴿٥٨﴾ إِلَّا اٰلَ لُوطٍ إِنَّا لَمُنَجُّوهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٥٩﴾ إِلَّا امْرَأَتَهُ
قَدَّرْنَا إِنَّهَا لَمِنَ الْغٰبِرِينَ ﴿٦٠﴾ فَلَمَّا جَاءَ اٰلَ لُوطٍ الْمُرْسَلُونَ ﴿٦١﴾
قَالَ إِنَّكُمْ قَوْمٌ مُنْكَرُونَ ﴿٦٢﴾ قَالُوا بَلْ جِئْنٰكَ بِمَا كَانُوا فِيهِ يَمْتَرُونَ ﴿٦٣﴾
وَأَتَيْنٰكَ بِالْحَقِّ وَإِنَّا لَصٰدِقُونَ ﴿٦٤﴾ فَأَسْرِ بِأَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِنَ الَّيْلِ
وَاتَّبِعْ أَدْبَارَهُمْ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ أَحَدٌ وَامْضُوا حَيْثُ تُؤْمَرُونَ ﴿٦٥﴾
وَقَضَيْنَا إِلَيْهِ ذٰلِكَ الْأَمْرَ أَنَّ دَابِرَ هٰؤُلَاءِ مَقْطُوعٌ مُصْبِحِينَ ﴿٦٦﴾
وَجَاءَ أَهْلُ الْمَدِينَةِ يَسْتَبْشِرُونَ ﴿٦٧﴾ قَالَ إِنَّ هٰؤُلَاءِ ضَيْفِي فَلَا

▨ व. लाज़िम ★ रु. ४/४ आ १६

जो मुत्तक़ी हैं, बाग़ों और चश्मों में होंगे। (४५) (उन से कहा जाएगा कि) उन में सलामती (और सुकून) से दाख़िल हो जाओ, (४६) और उन के दिलों में जो कदूरत (गंदगी) होगी, उसको हम निकाल (कर साफ़ कर) देंगे, (गोया) भाई-भाई तख़्तों पर एक-दूसरे के सामने बैठे हुए हैं। (४७) न उन को वहां कोई तक्लीफ़ पहुंचेगी और न वे वहां से निकाले जाएंगे। (४८) (ऐ पैग़म्बर!) मेरे बन्दों को बता दो कि मैं बड़ा बख़्शने वाला (और) मेहरबान हूं। (४९) और यह कि मेरा अज़ाब भी दर्द देने वाला अज़ाब है। (५०) और उन को कोई इब्राहीम के मेहमानों के हालात सुना दो ▩(५१) वह इब्राहीम के पास आए तो सलाम कहा, (उन्हों ने) कहा, हमें तो तुम से डर लगता है। (५२) (मेहमानों ने) कहा कि डरिये नहीं, हम आप को एक दानिशमंद लड़के की ख़ुशख़बरी देते हैं। (५३) (वह) बोले कि जब मुझे बुढ़ापे ने आ पकड़ा, तो तुम ख़ुशख़बरी देने लगे। अब किस बात की ख़ुशख़बरी देते हो। (५४) (उन्हों ने) कहा कि हम आप को सच्ची ख़ुश-ख़बरी देते हैं। आप मायूस न होजिए। (५५) (इब्राहीम ने) कहा कि ख़ुदा की रहमत से (मैं मायूस क्यों होने लगा इस से) मायूस होना गुमराहों का काम है। (५६) फिर कहने लगे कि फ़रिश्तो! तुम्हें (और) क्या काम है? (५७) (उन्हों ने) कहा कि हम एक गुनाहगार क़ौम की तरफ़ भेजे गये हैं (कि उस को अज़ाब करें), (५८) मगर लूत के घर वाले कि उन सब को हम बचा लेंगे। (५९) अल-बत्ता उन की औरत (कि) उस के लिए हम ने ठहरा दिया है कि वह पीछे रह जाएगी। (६०) ★

फिर जब फ़रिश्ते लूत के घर गये, (६१) तो लूत ने कहा, तुम तो अनजान से लोग हो। (६२) वे बोले कि (नहीं), बल्कि हम आप के पास वह चीज़ ले कर आए हैं, जिस में लोग शक करते थे।[1] (६३) और हम आप के पास यक़ीनी बात ले कर आए हैं और हम सच कहते हैं। (६४) तो आप कुछ रात रहे-से अपने घर वालों को ले निकलें और ख़ुद उन के पीछे चलें और आप में से कोई शख़्स पीछे मुड़ कर न देखे और जहां आप को हुक्म हो, वहां चले जाइए। (६५) और हम ने लूत की तरफ़ वह्य भेजी कि इन लोगों की जड़ सुबह होते-होते काट दी जाएगी। (६६) और शहर वाले (लूत के पास) ख़ुश-ख़ुश (दौड़े) आए। (६७) (लूत ने) कहा कि ये मेरे मेहरबान हैं, (कहीं

१. यानी हम ऊपर से आदमी नहीं, फ़रिश्ते हैं। क़ौम पर अज़ाब लाए हैं।

वत्तक़ुल्ला-ह व ला तुख़्ज़ून (६९) क़ालू अ-व लम् नन्-ह-क अ़निल्-आ़लमीन (७०) क़ा-ल हाउलाइ बनाती इन् कुन्तुम् फ़ाअ़िलीन ط (७१) ल-अ़म्रु-क इन्नहुम् लफ़ी सक-रतिहिम् यअ़्-महून (७२) फ़-अ-ख़-ज़त्-हुमुस्सैहतु मुश्रिक़ीन ॥ (७३) फ़-ज-अ़ल्ना आ़लियहा साफ़िलहा व अम्तर्ना अ़लैहिम् हिजा-र-तम् - मिन् सिज्जील ط (७४) इन्-न फ़ी ज़ालि - क लआयातिल्लिल् - मु-त-वस्सिमीन (७५) व इन्नहा लबिसबीलिम्-मुक़ीम (७६) इन-न फ़ी ज़ालि - क ल-आयतल्लिल् - मुअ्मिनीन ط (७७) व इन् का-न अस्हाबुल्-ऐकति लज़ालिमीन لا (७८) फ़न्-त - क़म्ना मिन्हुम् ※ व इन्नहुमा लबिइमामिम् - मुबीन ط ★ (७९) व ल-क़द् कज़्ज़-ब अस्हाबुल् - हिज्रिल्-मुर्सलीन ॥ (८०) व आतैनाहुम् आयातिना फ़-कानू अ़न्हा मुअ़् - रिज़ीन لا (८१) व कानू यन्हितू-न मिनल्जिबालि बुयूतन् आमिनीन (८२) फ़-अ-ख़-ज़त्-हुमुस्सैहतु मुस्बिहीन ॥ (८३) फ़मा अग़्ना अ़न्हुम् मा कानू यक्सिबून ط (८४) व मा ख़-लक़्नस्-समावाति वल्अर्-ज़ व मा बैनहुमा इल्ला बिल्हक़्क़ि ط व इन्नस्सा-अ-त लआतियतुन् फ़स्फ़हिस्-सफ़्हल्-जमील (८५) इन्-न रब्ब-क हुवल्-ख़ल्लाक़ुल्-अ़लीम (८६) व ल-क़द् आतैना-क सब्अ़म्मिनल्-मसानी वल्-क़ुर्आनल्-अ़ज़ीम (८७) ला तमुद्दन्-न अ़ैनै-क इला मा मत्तअ़्-ना बिही अज़्वाजम्-मिन्हुम् व ला तह्ज़न् अ़लैहिम् वख़्फ़िज़् जना-ह-क लिल्-मुअ्मिनीन (८८) व क़ुल् इन्नी अ-नन्नज़ीरुल् - मुबीन ج (८९) कमा अन्ज़ल्ना अ़-लल्-मुक़्तसिमीन ॥ (९०) अल्लज़ी-न ज-अ़ - लुल् - क़ुर्आ - न अ़िज़ी-न (९१) फ़-व रब्बि-क ल-नस्अ-लन्नहुम् अज्मअ़ीन ॥ (९२) अ़म्मा कानू यअ़्-मलून ● (९३) फ़स्दअ़्-बिमा तुअ्मरु व अअ़्-रिज़् अ़निल्-मुश्रिकीन (९४)

تَفْضَحُونِ ۝ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَلَا تُخْزُونِ ۝ قَالُوا أَوَلَمْ نَنْهَكَ عَنِ
الْعَالَمِينَ ۝ قَالَ هَٰؤُلَاءِ بَنَاتِي إِنْ كُنْتُمْ فَاعِلِينَ ۝ لَعَمْرُكَ إِنَّهُمْ
لَفِي سَكْرَتِهِمْ يَعْمَهُونَ ۝ فَأَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُشْرِقِينَ ۝ فَجَعَلْنَا
عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِنْ سِجِّيلٍ ۝ إِنَّ فِي
ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِلْمُتَوَسِّمِينَ ۝ وَإِنَّهَا لَبِسَبِيلٍ مُقِيمٍ ۝ إِنَّ فِي
ذَٰلِكَ لَآيَةً لِلْمُؤْمِنِينَ ۝ وَإِنْ كَانَ أَصْحَابُ الْأَيْكَةِ لَظَالِمِينَ ۝
فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ وَإِنَّهُمَا لَبِإِمَامٍ مُبِينٍ ۝ وَلَقَدْ كَذَّبَ أَصْحَابُ
الْحِجْرِ الْمُرْسَلِينَ ۝ وَآتَيْنَاهُمْ آيَاتِنَا فَكَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ۝ وَ
كَانُوا يَنْحِتُونَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا آمِنِينَ ۝ فَأَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ
مُصْبِحِينَ ۝ فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝ وَمَا خَلَقْنَا
السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ ۗ وَإِنَّ السَّاعَةَ لَآتِيَةٌ
فَاصْفَحِ الصَّفْحَ الْجَمِيلَ ۝ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْخَلَّاقُ الْعَلِيمُ ۝ وَلَقَدْ
آتَيْنَاكَ سَبْعًا مِنَ الْمَثَانِي وَالْقُرْآنَ الْعَظِيمَ ۝ لَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ
إِلَىٰ مَا مَتَّعْنَا بِهِ أَزْوَاجًا مِنْهُمْ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَاخْفِضْ
جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِينَ ۝ وَقُلْ إِنِّي أَنَا النَّذِيرُ الْمُبِينُ ۝ كَمَا
أَنْزَلْنَا عَلَى الْمُقْتَسِمِينَ ۝ الَّذِينَ جَعَلُوا الْقُرْآنَ عِضِينَ ۝
فَوَرَبِّكَ لَنَسْأَلَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ۝ عَمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ فَاصْدَعْ بِمَا

※ व. लाज़िम ★रु. ५/५ आ १६ ● रुबुअ़ १/४

इन के बारे में) मुझे रुसवा न करना। (६८) और खुदा से डरो और मेरी बे-आबरूई न कीजियो। (६९) वे बोले, क्या हम ने तुम को सारे जहान (की हिमायत व तरफ़दारी) से मना नहीं किया? (७०) (उन्हों ने) कहा कि अगर तुम्हें करना ही है, तो यह मेरी (क़ौम की) लड़कियां हैं, (इन से शादी कर लो।) (७१) (ऐ मुहम्मद!) तुम्हारी जान की क़सम! वे अपनी मस्ती में मदहोश (हो रहे) थे। (७२) सो उन को सूरज निकलते-निकलते चिंघाड़ ने आ पकड़ा। (७३) और हम ने उस (शहर) को (उलट कर) नीचे-ऊपर कर दिया और उन पर खंगर की पथरियां बरसायीं। (७४) बेशक इस (क़िस्से) में सूझ-बूझ वालों के लिए निशानी है। (७५) और वह (शहर) अब तक सीधे रास्ते पर (मौजूद) है।[1] (७६) बेशक इस में ईमान लाने वालों के लिए निशानी है। (७७) और बन के रहने वाले (यानी शुऐब की क़ौम के लोग) भी गुनाहगार थे। (७८) तो हम ने उन से भी बदला लिया और ये दोनों शहर खुले रास्ते पर (मौजूद) हैं। (७९)★

और हिज्र (की वादी) के रहने वालों ने भी पैग़म्बरों को झुठलाया।[2] (८०) हम ने उन को अपनी निशानियां दीं और वे उन से मुंह फेरते रहे। (८१) और वे पहाड़ों को काट-छांट कर घर बनाते थे (कि) अम्न (व इत्मीनान) से रहेंगे। (८२) तो चीख़ ने उन को सुबह होते-होते आ पकड़ा। (८३) और जो काम वे करते थे, वे उन के कुछ भी काम न आये। (८४) और हम ने आसमानों और ज़मीन को और जो (मख़्लूक़ात) उन में हैं, उस को तद्बीर के साथ पैदा किया है और क़ियामत तो ज़रूर आ कर रहेगी, तो तुम (उन लोगों से) अच्छी तरह से दर-गुज़र करो। (८५) कुछ शक नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार ही (सब कुछ) पैदा करने वाला (और) जानने वाला है। (८६) और हम ने तुम को सात (आयतें), जो (नमाज़ में) दोहरा कर पढ़ी जाती हैं (यानी सूरः अल-हम्दु) और अज़्मत वाला क़ुरआन अता फ़रमाया है। (८७) और हम ने काफ़िरों की कई जमाअतों को, जो (दुनिया के फ़ायदों से) नवाज़ा है, तुम उन की तरफ़ (रग़बत से) आंख उठा कर न देखना और न उनके हाल पर ग़म करना और मोमिनों से ख़ातिर और तवाज़ो से पेश आना, (८८) और कह दो कि मैं तो एलानिया डर सुनाने वाला हूं, (८९) (और हम इन काफ़िरों पर इसी तरह अज़ाब नाज़िल करेंगे), जिस तरह उन लोगों पर नाज़िल किया, जिन्होंने तक़्सीम कर दिया। (९०) यानी क़ुरआन को (कुछ मानने और कुछ न मानने से) टुकड़े-टुकड़े कर डाला। (९१) तुम्हारे परवरदिगार की क़सम! हम उन से ज़रूर पूछ-ताछ करेंगे, (९२) उन कामों की, जो वे करते रहे (९३)● पस जो हुक्म तुम को (ख़ुदा की तरफ़ से) मिला है वह (लोगों को) सुना दो और

---

१. मक्का से शाम को जाते हुए वह बस्ती राह पर नज़र आती थी।

२. हिज्र के रहने वालों से मुराद समूद की क़ौम है। हिज्र मदीने और शाम के दर्मियान एक बस्ती थी। समूद की क़ौम वहां रहती थी।

इन्ना कफ़ैनाकल् - मुस्तह्ज़िईन ﻻ (९५) अल्लज़ी-न यज-अलू-न म-अल्लाहि इलाहन् आख़-र ۚ फ़सौ-फ़ यअ-लमून (९६) व ल-क़द् नअ-लमु अन्न-क यज़ीक़ु सद्रु-क बिमा यक़ूलून ﻻ (९७) फ़-सब्बिह् बिह़म्दि रब्बि-क व कुम्-मिनस्साजिदीन ﻻ (९८) वअ्-बुद् रब्ब-क हत्ता यअ्ति-य-कल्-यक़ीन ★ (९९)

१६ सूरतुन्नह्-लि ७०

(मक्की) इस सूरः में अरबी के ७६७४ अक्षर, १८७१ शब्द, १२८ आयतें और १६ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

अता अम्रुल्लाहि फ़ ला तस्तअ्-जिलूहु ط सुब्हानहू व तआला अम्मा युश्रिकून (१) युनज़्ज़िलुल् - मलाइ - क-त बिर्रूहि मिन् अम्रिही अला मय्यशाउ मिन् अिबादिही अन् अन्ज़िरू अन्नहू ला इला-ह इल्ला अ-न फ़त्तक़ून (२) ख़-ल-क़स्-समावाति वल्अर् - ज़ बिल्हक़्क़ि ط तआला अम्मा युश्रिकून (३) ख़-ल-क़ल्-इन्सा-न मिन् नुत्फ़तिन् फ़इज़ा हु-व ख़सीमुम्-मुबीन (४) वल्-अन्आ-म ख़-ल-क़हा ۚ लकुम् फ़ीहा दिफ़्उंव्-व मनाफ़िअु व मिन्हा तअ्-कुलून ۖ (५) व लकुम् फ़ीहा जमालुन् ही-न तुरीहू-न व ही-न तस्रहून ۖ (६) व तह्मिलु अस्क़ालकुम् इला ब-लदिल्लम् तकूनू बालिग़ीहि इल्ला बिशिक़्क़िल्-अन्फ़ुसि ط इन्-न रब्बकुम् ल-रऊफ़ुर्रहीम ﻻ (७) वल्ख़ै-ल वल्बिग़ा-ल वल्हमी-र लितर्कबूहा व ज़ी-न - तन् ط व यख़्लुक़ु मा ला तअ् - लमून (८) व अ् - लल्लाहि क़स्दुस्सबीलि व मिन्हा जाइरुन् ط व लौ शा-अ ल-हदाकुम् अज्-मअ़ीन ★ (९) हुवल्लज़ी अन्ज़-ल मिनस्-समाइ माअल्लकुम् मिन्हु शराबुंव्-व मिन्हु श-जरुन् फ़ीहि तुसीमून (१०)

النحل ٢١٣ ربما

تُؤْمَرُ وَأَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِينَ ﴿٩٤﴾ إِنَّا كَفَيْنَاكَ الْمُسْتَهْزِئِينَ ﴿٩٥﴾
الَّذِينَ يَجْعَلُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿٩٦﴾ وَلَقَدْ نَعْلَمُ
أَنَّكَ يَضِيقُ صَدْرُكَ بِمَا يَقُولُونَ ﴿٩٧﴾ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُنْ مِنَ
السَّاجِدِينَ ﴿٩٨﴾ وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتَّىٰ يَأْتِيَكَ الْيَقِينُ ﴿٩٩﴾

سُورَةُ النَّحْلِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مِائَةٌ وَثَمَانٌ وَعِشْرُونَ آيَةً وَسِتَّةَ عَشَرَ رُكُوعًا

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

أَتَىٰ أَمْرُ اللَّهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوهُ ۚ سُبْحَانَهُ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿١﴾ يُنَزِّلُ
الْمَلَائِكَةَ بِالرُّوحِ مِنْ أَمْرِهِ عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ أَنْ أَنْذِرُوا
أَنَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا أَنَا فَاتَّقُونِ ﴿٢﴾ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ
تَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٣﴾ خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ نُطْفَةٍ فَإِذَا هُوَ خَصِيمٌ
مُبِينٌ ﴿٤﴾ وَالْأَنْعَامَ خَلَقَهَا ۗ لَكُمْ فِيهَا دِفْءٌ وَمَنَافِعُ وَمِنْهَا
تَأْكُلُونَ ﴿٥﴾ وَلَكُمْ فِيهَا جَمَالٌ حِينَ تُرِيحُونَ وَحِينَ تَسْرَحُونَ ﴿٦﴾
وَتَحْمِلُ أَثْقَالَكُمْ إِلَىٰ بَلَدٍ لَمْ تَكُونُوا بَالِغِيهِ إِلَّا بِشِقِّ الْأَنْفُسِ ۚ
إِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوفٌ رَحِيمٌ ﴿٧﴾ وَالْخَيْلَ وَالْبِغَالَ وَالْحَمِيرَ لِتَرْكَبُوهَا
وَزِينَةً ۚ وَيَخْلُقُ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٨﴾ وَعَلَى اللَّهِ قَصْدُ السَّبِيلِ وَمِنْهَا
جَائِرٌ ۚ وَلَوْ شَاءَ لَهَدَاكُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٩﴾ هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ
مَاءً ۖ لَكُمْ مِنْهُ شَرَابٌ وَمِنْهُ شَجَرٌ فِيهِ تُسِيمُونَ ﴿١٠﴾ يُنْبِتُ لَكُمْ بِهِ

منزل

★रु. ६/६ आ २० ★रु. १/७ आ ६

मुश्रिकों का (ज़रा) ख्याल न करो। (६४) हम तुम्हें उन लोगों की (बुराई) से बचाने के लिए, जो तुम से मज़ाक़ करते हैं, काफ़ी हैं। (६५) जो ख़ुदा के साथ और माबूद क़रार देते हैं, सो बहुत जल्द उन को (इन बातों का अंजाम) मालूम हो जाएगा। (६६) और हम जानते हैं कि उन की बातों से तुम्हारा दिल तंग होता है, (६७) तो तुम अपने परवरदिगार की तस्बीह कहते और (उस की) ख़ूबियां बयान करते रहो और सज्दा करने वालों में दाखिल रहो। (६८) और अपने परवरदिगार की इबादत किये जाओ, यहां तक कि तुम्हारी मौत (का वक़्त) आ जाए। (६६) ★

१६ सूरः नह्ल ७०

सूरः नह्ल मक्की है और इस में १२८ आयतें और सोलह रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

ख़ुदा का हुक्म (यानी अज़ाब गोया) आ ही पहुंचा तो (काफ़िरो!) इस के लिए जल्दी मत करो। ये लोग जो (ख़ुदा का) शरीक बनाते हैं, वह इस से पाक और बाला-तर है। (१) वही फ़रिश्तों को पैग़ाम दे कर अपने हुक्म से अपने बन्दों में से, जिस के पास चाहता है, भेजता है कि (लोगों को) बता दो कि मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तो मुझी से डरो। (२) उसी ने आसमानों और ज़मीन को हिक्मत के साथ पैदा किया, उस की ज़ात इन (काफ़िरों) के शिर्क से ऊंची है। (३) उसी ने इंसान को नुत्फ़े से बनाया, मगर वह उस (पैदा करने वाले) के बारे में एलानिया झगड़ने लगा, (४) और चारपायों को भी उसी ने पैदा किया, उस में तुम्हारे लिए जड़ावल[1] और बहुत से फ़ायदे हैं और इन में से कुछ को तुम खाते भी हो। (५) और जब शाम को उन्हें (जंगल से) लाते हो और जब सुबह को (जंगल) चराने ले जाते हो, तो उन से तुम्हारी इज़्ज़त व शान है। (६) और (दूर-दूर के) इन शहरों में जहां तुम मशक़्क़त भरी तक्लीफ़ के बग़ैर नहीं पहुंच सकते, वे तुम्हारे बोझ उठा कर ले जाते हैं। कुछ शक नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार निहायत शफ़क़त (मुहब्बत) वाला मेहरबान है। (७) और उसी ने घोड़े और ख़च्चर और गधे पैदा किये ताकि तुम उन पर सवार हो और (वह तुम्हारे लिए) रौनक़ व ज़ीनत (भी हैं) और वह (और चीज़ें भी) पैदा करता है, जिन की तुम को ख़बर नहीं। (८) और सीधा रास्ता तो ख़ुदा तक जा पहुंचता है और कुछ रास्ते टेढ़े हैं, (वे उस तक नहीं पहुंचते) और अगर वह चाहता तो तुम सब को सीधे रास्ते पर चला देता। (९) ★

वही तो है जिस ने आसमान से पानी बरसाया, जिसे तुम पीते हो और उस से पेड़ भी (हरे-भरे होते हैं), जिन में तुम अपने चारपायों को चराते हो। (१०) उसी पानी से वह तुम्हारे लिए

---

१. जाड़े के सामान को जड़ावल कहते हैं।

★रु. ६/६ आ २० ★रु. १/७ आ ६

युम्बितु लकुम् बिहिज़्-ज़र्-अ वज़्ज़ैतू-न वन्नख़ी-ल वल्-अअ्-ना-ब व मिन् कुल्लिस्स-मराति इन्-न फ़ी ज़ालि-क ल-आ-यतल्-लिक़ौमिय्य-त-फ़क्करून (११) व सख़्ख़-र लकुमुल्लै-ल वन्नहा-र वश्शम्-स वल्क़-म-र वन्नुजूमु मुसख़्ख़रातुम्-बि-अमरिही इन् - न फ़ी ज़ालि - क लआयातिल् - लिक़ौमिय्यअ् - क़िलून (१२) व मा ज़-र-अ लकुम् फ़िल्अर्ज़ि मुख़्तलिफ़न् अल्वानुहू इन्-न फ़ी ज़ालि-क ल-आयतल् - लिक़ौमिय्यज़्ज़क्करून (१३) व हुवल्लज़ी सख़्ख़-रल्-बह्-र लि-तअ्कुलू मिन्हु लह्-मन् त़रिय्यंव्-व तस्तख़्रिजू मिन्हु हिल्-य-तन् तल्बसूनहा व त-रल्फ़ुल् - क मवाख़ि-र फ़ीहि व लितब्तग़ू मिन् फ़ज़्लिही व ल-अल्लकुम् तश्कुरून (१४) व अल्क़ा फ़िल्अर्ज़ि रवासि-य अन् तमी-द बिकुम् व अन्हारंव्-व सुबुलल्-ल-अल्लकुम् तह्तदून (१५) व अलामातिन् व बिन्नज्मि हुम् यह्तदून (१६) अ-फ़-मंय्यख़्लुक़ु क-मल्ला यख़्लुक़ु अ-फ़ला त-ज़क्करून (१७) व इन् त-अुद्दू निअ्-म-तल्लाहि ला तुह़्सूहा इन्नल्ला-ह ल-ग़फ़ूरुर्-रहीम (१८) वल्लाहु यअ्-लमु मा तुसिर्रू-न व मा तुअ्-लिनून (१९) वल्लज़ी-न यद्अू-न मिन् दूनिल्लाहि ला यख़्लुक़ू-न शैअंव्-व हुम् युख़्लक़ून (२०) अम्वातुन् ग़ैरु अह्याइन् व मा यश्अुरू - न अय्या - न युब्अ़सून ★ (२१) इलाहुकुम् इलाहुंव्वाहिदुन् फ़ल्लज़ी - न ला युअ्मिनू-न बिल्आख़िरति क़ुलूबुहुम् मुन्कि-रतुंव्-व हुम् मुस्तक्बिरून (२२) ला ज-र-म अन्नल्ला-ह यअ्-लमु मा युसिर्रू-न व मा युअ्-लिनू-न इन्नहू ला - युहिब्बुल्-मुस्तक्बिरीन (२३) व इज़ा क़ी-ल लहुम् माज़ा अन्-ज - ल रब्बुकुम् क़ालू असातीरुल् - अव्वलीन (२४) लियह्मिलू औज़ारहुम् कामि-ल - तंय्यौमल् - क़ियामति व मिन् औज़ारिल्लज़ी - न युज़िल्लूनहुम् बिग़ैरि अ़िल्मिन् अला सा - अ मा यज़िरून ★ (२५)

الزَّرْعَ وَالزَّيْتُوْنَ وَالنَّخِيْلَ وَالْاَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ اِنَّ فِيْ
ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝ وَسَخَّرَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ
وَالْقَمَرَ وَالنُّجُوْمُ مُسَخَّرٰتٌ بِاَمْرِهٖ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ
يَّعْقِلُوْنَ ۝ وَمَا ذَرَاَ لَكُمْ فِي الْاَرْضِ مُخْتَلِفًا اَلْوَانُهٗ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ
لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّذَّكَّرُوْنَ ۝ وَهُوَ الَّذِيْ سَخَّرَ الْبَحْرَ لِتَاْكُلُوْا مِنْهُ لَحْمًا
طَرِيًّا وَّتَسْتَخْرِجُوْا مِنْهُ حِلْيَةً تَلْبَسُوْنَهَا وَتَرَى الْفُلْكَ مَوَاخِرَ
فِيْهِ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝ وَاَلْقٰى فِي الْاَرْضِ
رَوَاسِيَ اَنْ تَمِيْدَ بِكُمْ وَاَنْهٰرًا وَّسُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ۝ وَعَلٰمٰتٍ
وَبِالنَّجْمِ هُمْ يَهْتَدُوْنَ ۝ اَفَمَنْ يَّخْلُقُ كَمَنْ لَّا يَخْلُقُ اَفَلَا
تَذَكَّرُوْنَ ۝ وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا اِنَّ اللّٰهَ لَغَفُوْرٌ
رَّحِيْمٌ ۝ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تُسِرُّوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَا يَخْلُقُوْنَ شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ ۝ اَمْوَاتٌ غَيْرُ
اَحْيَآءٍ وَمَا يَشْعُرُوْنَ اَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ ۝ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ
فَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ قُلُوْبُهُمْ مُّنْكِرَةٌ وَّهُمْ مُّسْتَكْبِرُوْنَ ۝
لَا جَرَمَ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ
الْمُسْتَكْبِرِيْنَ ۝ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ مَّاذَا اَنْزَلَ رَبُّكُمْ قَالُوْا اَسَاطِيْرُ
الْاَوَّلِيْنَ ۝ لِيَحْمِلُوْا اَوْزَارَهُمْ كَامِلَةً يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ وَمِنْ اَوْزَارِ

★रु. २/८ आ १२ ★रु. ३/९ आ ४

खेती और जैतून और खजूर और अंगूर (और अनगिनत पेड़) उगाता है और हर तरह के फल (पैदा करता है), और ग़ौर करने वालों के लिए इस में (अल्लाह की क़ुदरत की बड़ी) निशानी है। (११) और उसी ने तुम्हारे लिए रात और दिन और सूरज और चांद को काम में लगाया और उसी के हुक्म से सितारे भी काम में लगे हुए हैं, समझने वालों के लिए, इस में (ख़ुदा की क़ुदरत की बहुत सी) निशानियां हैं। (१२) और जो तरह-तरह के रंगों की चीज़ें उस ने ज़मीन में पैदा कीं, (सब तुम्हारे फ़रमान के तहत कर दीं), नसीहत पकड़ने वालों के लिए इस में निशानी है। (१३) और वही तो है, जिस ने दरिया को तुम्हारे अख़्तियार में किया ताकि उस में से ताज़ा गोश्त खाओ और उस से ज़ेवर (वग़ैरह) निकालो, जिसे तुम पहनते हो और तुम देखते हो कि कश्तियां दरिया में पानी को फाड़ती चली जाती हैं और इस लिए भी (दरिया को तुम्हारे अख़्तियार में किया) कि तुम ख़ुदा के फ़ज़्ल से रोज़ी तलाश करो और ताकि उस का शुक्र अदा करो। (१४) और उसी ने ज़मीन पर पहाड़ (बना कर) रख दिए कि तुम को ले कर कहीं झुक न जाए और नहरें और रास्ते बना दिए ताकि एक जगह से दूसरी जगह तक (आसानी से) जा सको। (१५) और (रास्तों में) निशानात बना दिए और लोग सितारों से भी रास्ते मालूम करते हैं। (१६) तो जो (इतनी मख़्लू-क़ात) पैदा करे, क्या वह ऐसा है, जो कुछ भी पैदा न कर सके ? तो फिर तुम ग़ौर क्यों नहीं करते ? (१७) और अगर तुम ख़ुदा की नेमतों को गिनना चाहो, तो गिन न सको। बेशक ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है। (१८) और जो कुछ तुम छिपाते और जो कुछ ज़ाहिर करते हो, सब ख़ुदा जानता है। (१९) और जिन लोगों को ये ख़ुदा के सिवा पुकारते हैं, वे कोई चीज़ भी तो नहीं बना सकते, बल्कि ख़ुद उन को और बनाते हैं। (२०) (वे) लाशें हैं, बे-जान, उन को यह भी तो मालूम नहीं कि उठाए कब जाएंगे। (२१) ★

तुम्हारा माबूद तो अकेला ख़ुदा है, तो जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, उन के दिल इंकार कर रहे हैं और वे सर-कश हो रहे हैं। (२२) ये जो कुछ छिपाते हैं और जो ज़ाहिर करते हैं, ख़ुदा ज़रूर उस को जानता है। वह सर-कशी को हरगिज़ पसंद नहीं करता। (२३) और जब इन (काफ़िरों से) कहा जाता है कि तुम्हारे परवरदिगार ने क्या उतारा है, तो कहते हैं कि (वे तो) पहले लोगों की हिकायतें हैं। (२४) (ऐ पैग़म्बर ! उन को बकने दो) ये क़ियामत के दिन अपने (आमाल के) पूरे बोझ भी उठाएंगे और जिन को यह बे-तह्क़ीक़ गुमराह करते हैं, उन के बोझ भी (उठाएंगे)। सुन रखो कि जो बोझ ये उठा रहे हैं, बुरे हैं। (२५) ★

★रु. २/८ आ १२ ★रु. ३/९ आ ४

क़द् म-क-रल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् फ़-अ-तल्लाहु बुन्यानहुम् मिनल्-क़वाअिदि फ़-ख़र्-र अ़लैहिमुस्सक़्फ़ु मिन् फ़ौक़िहिम् व अताहुमुल्-अ़ज़ाबु मिन् हैसु ला यश्अुरून (२६) सुम्-म यौमल्क़ियामति युख़्ज़ीहिम् व यक़ूलु ऐ-न शुरकाइयल्-लज़ी-न कुन्तुम् तुशाक़्क़ू-न फ़ीहिम् क़ालल्लज़ी - न ऊतुल्-अिल्-म इन्नल् - ख़िज़्यल्-यौ-म वस्सू - अ अ़-लल्-काफ़िरीन (२७) अल्लज़ी - न त - तवफ़्फ़ाहुमुल्-मलाइकतु ज़ालिमी अन्फ़ुसिहिम् फ़-अल्क़वुस्स-ल-म मा कुन्ना नअ्-मलु मिन् सूइन् बला इन्नल्ला - ह अ़लीमुम् - बिमा कुन्तुम् तअ्-मलून (२८) फ़द्ख़ुलू अब्वा-ब ज-हन्न-म ख़ालिदी - न फ़ीहा फ़-लबिअ्-स मस्वल् मु-त-कब्बिरीन (२९) व क़ी-ल लिल्लज़ीनत्तक़ौ माज़ा अन्ज़-ल रब्बुकुम् क़ालू ख़ैरन् लिल्लज़ी - न अह्सनू फ़ी हाज़िहिद् - दुन्या ह-स-नतुन् व ल-दारुल्-आख़िरति ख़ैरुन् व लनिअ्-म दारुल्-मुत्तक़ीन (३०) जन्नातु अ़द्निंय्यद्ख़ुलूनहा तजरी मिन् तह्तिहल्-अन्हारु लहुम् फ़ीहा मा यशाऊ-न कज़ालि - क यज्ज़िल्लाहुल् - मुत्तक़ीन (३१) अल्लज़ी-न त-त-वफ़्फ़ाहुमुल्-मलाइकतु तय्यिबी-न यक़ूलू-न सलामुन् अ़लैकुमुद्ख़ुलुल् - जन्न - त बिमा कुन्तुम् तअ् - मलून (३२) हल् यन्ज़ुरू - न इल्ला अन् तअ्तियहुमुल् - मलाइकतु औ यअ्ति - य अम्रु रब्बि-क कज़ालि-क फ़-अ़-लल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् व मा ज़-ल-महुमुल्लाहु व लाकिन् कानू अन्फ़ुसहुम् यज़्लिमून (३३) फ़-असाबहुम् सय्यिआतु मा अ़मिलू व हा - क़ बिहिम् मा कानू बिही यस्तह्ज़िऊन ★ (३४)

٢١٥

الَّذِينَ يُضِلُّونَهُم بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ أَلَا سَاءَ مَا يَزِرُونَ ﴿٢٥﴾ قَدْ مَكَرَ الَّذِينَ
مِن قَبْلِهِمْ فَأَتَى اللَّهُ بُنْيَانَهُم مِّنَ الْقَوَاعِدِ فَخَرَّ عَلَيْهِمُ السَّقْفُ
مِن فَوْقِهِمْ وَأَتَاهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٢٦﴾ ثُمَّ يَوْمَ
الْقِيَامَةِ يُخْزِيهِمْ وَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَائِيَ الَّذِينَ كُنتُمْ تُشَاقُّونَ
فِيهِمْ ۚ قَالَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ إِنَّ الْخِزْيَ الْيَوْمَ وَالسُّوءَ عَلَى الْكَافِرِينَ ﴿٢٧﴾
الَّذِينَ تَتَوَفَّاهُمُ الْمَلَائِكَةُ ظَالِمِي أَنفُسِهِمْ ۖ فَأَلْقَوُا السَّلَمَ مَا كُنَّا نَعْمَلُ
مِن سُوءٍ ۚ بَلَىٰ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٢٨﴾ فَادْخُلُوا أَبْوَابَ
جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا ۖ فَلَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِينَ ﴿٢٩﴾ وَقِيلَ لِلَّذِينَ
اتَّقَوْا مَاذَا أَنزَلَ رَبُّكُمْ ۚ قَالُوا خَيْرًا ۗ لِّلَّذِينَ أَحْسَنُوا فِي هَٰذِهِ
الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ۚ وَلَدَارُ الْآخِرَةِ خَيْرٌ ۚ وَلَنِعْمَ دَارُ الْمُتَّقِينَ ﴿٣٠﴾ جَنَّاتُ
عَدْنٍ يَدْخُلُونَهَا تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ لَهُمْ فِيهَا مَا يَشَاءُونَ ۚ
كَذَٰلِكَ يَجْزِي اللَّهُ الْمُتَّقِينَ ﴿٣١﴾ الَّذِينَ تَتَوَفَّاهُمُ الْمَلَائِكَةُ طَيِّبِينَ ۙ
يَقُولُونَ سَلَامٌ عَلَيْكُمُ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٣٢﴾ هَلْ
يَنظُرُونَ إِلَّا أَن تَأْتِيَهُمُ الْمَلَائِكَةُ أَوْ يَأْتِيَ أَمْرُ رَبِّكَ ۚ كَذَٰلِكَ فَعَلَ
الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللَّهُ وَلَٰكِن كَانُوا أَنفُسَهُمْ
يَظْلِمُونَ ﴿٣٣﴾ فَأَصَابَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا عَمِلُوا وَحَاقَ بِهِم مَّا كَانُوا بِهِ
يَسْتَهْزِئُونَ ﴿٣٤﴾ وَقَالَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا عَبَدْنَا مِن

★रु. ४/१० आ ६

इन से पहले लोगों ने भी (ऐसी ही) मक्कारियां की थीं, तो ख़ुदा (का हुक्म) उन की इमारत के स्तूनों पर आ पहुंचा और छत उन पर उन के ऊपर से गिर पड़ी। और (ऐसी तरफ़ से) उन पर अज़ाब आ वाक़ेअ हुआ, जहां से उन को ख़्याल भी न था। (२६) फिर वह उन को क़ियामत के दिन भी ज़लील करेगा और कहेगा कि मेरे वे शरीक कहां हैं, जिन के बारे में तुम झगड़ा करते थे? जिन लोगों को इल्म दिया गया था, वे कहेंगे कि आज काफ़िरों की रुसवाई और बुराई है। (२७) (उन का हाल यह है कि) जब फ़रिश्ते उन की रूहें क़ब्ज़ करने लगते हैं (और ये) अपने ही हक़ में ज़ुल्म करने वाले (होते हैं) तो इताअतगुज़ार व फ़रमांबरदार हो जाते हैं (और कहते हैं) कि हम कोई बुरा काम नहीं करते थे। हां, जो कुछ तुम किया करते थे, ख़ुदा ख़ूब जानता है। (२८) सो दोज़ख़ के दरवाज़ों में दाख़िल हो जाओ, हमेशा उस में रहोगे, अब तकब्बुर (घमंड) करने वालों का बुरा ठिकाना है। (२९) और (जब) परहेज़गारों से पूछा जाता है कि तुम्हारे परवरदिगार ने क्या नाज़िल किया है, तो कहते हैं कि बेहतरीन (कलाम)। जो लोग भले हैं, उन के लिए इस दुनिया में भी भलाई है और आख़िरत का घर तो बहुत अच्छा है और परहेज़गारों का घर बहुत ख़ूब है। (३०) (वह) हमेशा के बहिश्त (हैं) जिन में वे दाख़िल होंगे, उन के नीचे नहरें बह रही हैं वहां जो चाहेंगे, उन के लिए मयस्सर होगा। ख़ुदा परहेज़गारों को ऐसा ही बदला देता है। (३१) (उन की हालत यह है कि) जब फ़रिश्ते उन की जानें निकालने लगते हैं और ये (कुफ़्र व शिर्क से) पाक होते हैं, तो "सलामुन अलैकुम" कहते हैं (और कहते हैं कि) जो अमल तुम किया करते थे, उन के बदले में बहिश्त में दाख़िल हो जाओ। (३२) क्या ये (काफ़िर) इस बात के इन्तिज़ार में हैं कि फ़रिश्ते उन के पास (जान निकालने) आएं या तुम्हारे परवरदिगार का हुक्म (अज़ाब का) आ पहुंचे। इसी तरह उन लोगों ने किया था जो उन से पहले थे और ख़ुदा ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि वे ख़ुद अपने आप पर ज़ुल्म करते थे। (३३) तो उन के आमाल के बुरे बदले मिले और जिस चीज़ के साथ वे ठट्ठे किया करते थे, उस ने उन को (हर तरफ़ से) घेर लिया। (३४) ★

★रु. ४/१० आ ९

व क़ालल्लज़ी-न अश्रकू लौ शाअल्लाहु मा अ-बद्ना मिन् दूनिही मिन् शैइन् नह्नु व ला आबाउना व ला हर्रम्ना मिन् दूनिही मिन् शैइन् ط कज़ालि-क फ़-अ-लल्लज़ी - न मिन् क़ब्लिहिम् ج फ़ - हल् अ-लर्रुसुलि इल्लल् - बलाग़ुल्-मुबीन (३५) व ल-क़द् ब-अस्ना फ़ी कुल्लि उम्मतिर्रसूलन् अनिअ-बुदुल्ला-ह वज्तनिबुत् - ताग़ू - त ج फ़मिन्हुम् मन् ह - दल्लाहु व मिन्हुम् मन् हक़्क़त् अलैहिज़्ज़लालतु ط फ़सीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़न्ज़ुरू कै-फ़ का-न आक़िबतुल्-मुकज़्ज़िबीन (३६) इन् तह्रिस् अला हुदाहुम् फ़-इन्नल्ला-ह ला यह्दी मंय्युज़िल्लु व मा लहुम् मिन्नासिरीन (३७) व अक़्समू बिल्लाहि जह् - द ऐमानिहिम् ﻻ ला यब्असुल्लाहु मंय्यमूतु ط बला वअ्-दन् अलैहि हक़्क़ंव्-व लाकिन - न अक्सरन्नासि ला यअ्-लमून ﻻ (३८) लियुबय्यि-न लहुमुल्लज़ी यख़्तलिफ़ू-न फ़ीहि व लियअ्-ल-मल्लज़ी-न क-फ़रू अन्नहुम् कानू काज़िबीन (३९) इन्नमा क़ौलुना लिशैइन् इज़ा अ-रद्नाहु अन् नक़ू-ल लहू कुन् फ़-यकून ★ (४०) वल्लज़ी-न हाजरू फ़िल्लाहि मिम्बअ्-दि मा ज़ुलिमू लनुबव्विअन्नहुम् फ़िद्दुन्या ह-स-न - तन् ط व ल - अज्रुल् - आख़िरति अक्बरु ▓ लौ कानू यअ् - लमून ﻻ (४१) अल्लज़ी-न स-बरू व अला रब्बिहिम् य-त-वक्कलून (४२) व मा अर्सल्ना मिन् क़ब्लि-क इल्ला रिजालन्नूही इलैहिम् फ़स्-अलू अह्लज़्ज़िक्रि इन् कुन्तुम् ला तअ्-लमून ﻻ (४३) बिल्बय्यिनाति वज़्ज़ुबुरि ط व अन्ज़ल्ना इलैकज़्ज़िक-र लितुबय्यि-न लिन्नासि मा नुज़्ज़ि-ल इलैहिम् व ल-अल्लहुम् य-त-फ़क्करून ● (४४) अ-फ़-अमिनल्लज़ी - न म-करुस्सय्यिआति अंय्यख़्सिफ़ल्लाहु बिहिमुल्-अर्-ज़ औ यअ्ति-य-हुमुल् - अज़ाबु मिन् हैसु ला यश्अुरून ﻻ (४५)

دونه من شيء نحن ولا آباؤنا ولا حرمنا من دونه من
شيء ۚ كذلك فعل الذين من قبلهم ۚ فهل على الرسل إلا
البلاغ المبين ۝ ولقد بعثنا في كل أمة رسولا أن اعبدوا الله
واجتنبوا الطاغوت ۖ فمنهم من هدى الله ومنهم من حقت
عليه الضلالة ۚ فسيروا في الأرض فانظروا كيف كان عاقبة
المكذبين ۝ إن تحرص على هداهم فإن الله لا يهدي من
يضل ۖ وما لهم من ناصرين ۝ وأقسموا بالله جهد أيمانهم ۙ
لا يبعث الله من يموت ۚ بلى وعدا عليه حقا ولكن أكثر الناس
لا يعلمون ۝ ليبين لهم الذي يختلفون فيه وليعلم الذين
كفروا أنهم كانوا كاذبين ۝ إنما قولنا لشيء إذا أردناه أن
نقول له كن فيكون ۝ والذين هاجروا في الله من بعد ما
ظلموا لنبوئنهم في الدنيا حسنة ۖ ولأجر الآخرة أكبر ۚ لو
كانوا يعلمون ۝ الذين صبروا وعلى ربهم يتوكلون ۝ وما
أرسلنا من قبلك إلا رجالا نوحي إليهم ۚ فاسألوا أهل الذكر إن
كنتم لا تعلمون ۝ بالبينات والزبر ۗ وأنزلنا إليك الذكر لتبين
للناس ما نزل إليهم ولعلهم يتفكرون ۝ أفأمن الذين مكروا
السيئات أن يخسف الله بهم الأرض أو يأتيهم العذاب من

★रु. ५/११ आ ६ ▓ व. लाज़िम ● नि. १/२

और मुश्रिक कहते हैं कि अगर ख़ुदा चाहता तो न हम ही उस के सिवा किसी चीज़ को पूजते और न हमारे बड़े ही (पूजते) और न उस के (फ़रमान के) बग़ैर हम किसी चीज़ को हराम ठहराते। (ऐ पैग़म्बर!) इसी तरह इन से अगले लोगों ने किया था, तो पैग़म्बरों के ज़िम्मे (ख़ुदा के हुक्मों को) खोल कर पहुंचा देने के सिवा और कुछ नहीं। (३५) और हम ने हर जमाअत में पैग़म्बर भेजा कि ख़ुदा ही की इबादत करो और बुतों (की पूजा करने) से बचो, तो उन में कुछ ऐसे हैं, जिन को ख़ुदा ने हिदायत दी और कुछ ऐसे हैं, जिन पर गुमराही साबित हुई, सो ज़मीन पर चल-फिर कर देख लो कि झुठलाने वालों का अंजाम कैसा हुआ। (३६) अगर तुम इन (काफ़िरों) को हिदायत के लिए ललचाओ, तो जिस को ख़ुदा गुमराह कर देता है, उस को हिदायत नहीं दिया करता और ऐसे लोगों का कोई मददगार भी नहीं होता। (३७) और ये ख़ुदा की सख़्त-सख़्त क़स्में खाते हैं कि जो मर जाता है, ख़ुदा उसे (क़ियामत के दिन क़ब्र से) नहीं उठाएगा। हरगिज़ नहीं! यह (ख़ुदा का वायदा) सच्चा है और इस का पूरा करना उसे ज़रूर है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते, (३८) ताकि जिन बातों में ये इख़्तिलाफ़ करते हैं, वह उन पर ज़ाहिर कर दे और इस लिए कि काफ़िर जान लें कि वे झूठे थे। (३९) जब हम किसी चीज़ का इरादा करते हैं तो हमारी बात यही है कि उस को कह देते हैं कि "हो जा" तो वह हो जाती है। (४०)★

और जिन लोगों ने ज़ुल्म सहने के बाद ख़ुदा के लिए वतन छोड़ा, हम उन को दुनिया में अच्छा ठिकाना देंगे और आख़िरत का बदला तो बहुत बड़ा है ▨ काश! वे (उसे) जानते। (४१) यानी वे लोग जो सब्र करते हैं और अपने परवरदिगार पर भरोसा रखते हैं। (४२) और हम ने तुम से पहले मर्दों ही को पैग़म्बर बना कर भेजा था, जिन की तरफ़ हम वह्य भेजा करते थे। अगर तुम लोग नहीं जानते, तो अह्ले किताब से पूछ लो। (४३) (और उन पैग़म्बरों को) दलीलें और किताबें दे कर (भेजा था) और हम ने तुम पर भी यह किताब नाज़िल की है ताकि जो (इर्शादात) लोगों पर नाज़िल हुए हैं, वह उन पर ज़ाहिर कर दे और ताकि वे ग़ौर करें ● (४४) क्या जो लोग बुरी-बुरी चालें चलते हैं, इस बात से बे-ख़ौफ़ हैं कि ख़ुदा उन को ज़मीन में धंसा दे या (ऐसी तरफ़ से) उन पर अज़ाब आ जाए जहां से उन को ख़बर ही न हो। (४५) या उन को चलते-फिरते पकड़ ले।

★रु. ५/११ आ ६ ▨ व. लाज़िम ● नि. १/२

औ यअ्ख़ुज़हुम् फ़ी तक़ल्लुबिहिम् फ़मा हुम् बिमुअ्-जिज़ीन ॥ (४६) औ यअ्ख़ुज़हुम् अला तख़व्वुफ़िन् ط फ़-इन्-न रब्बकुम् ल - रऊफ़ुर्रहीम (४७) अ व लम् यरौ इला मा ख़-ल-क़ल्लाहु मिन् शैइ य्य-तफ़य्यउ ज़िलालुहू अनिल्-यमीनि वश्शमाइलि सुज्जदल् - लिल्लाहि व हुम् दाख़िरून (४८) व लिल्लाहि यस्जुदु मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि मिन् दाब्बतिंव्वल्-मलाइकतु व हुम् ला यस्तक्बिरून (४९) यख़ाफ़ू-न रब्बहुम् मिन् फ़ौक़िहिम् व यफ़्-अलू-न मा युअ्-मरून ★ □ (५०) व क़ालल्लाहु ला तत्तख़िज़ू इलाहैनिस्नैनि ؏ इन्नमा हु - व इलाहुंव्वाहिदुन् ؏ फ़इय्या - य फ़र्हबून (५१) व लहू मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि व लहुद्दीनु वासिबन् ط अ-फ़-ग़ैरल्लाहि तत्तक़ून (५२) व मा बिकुम् मिन् निअ्-मतिन् फ़मिनल्लाहि सुम् - म इज़ा मस्सकुमुज़्ज़ुर्रु फ़-इलैहि तज्अरून ؏ (५३)

حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ۝ أَوْ يَأْخُذَهُمْ فِي تَقَلُّبِهِمْ فَمَا هُمْ بِمُعْجِزِينَ ۝
أَوْ يَأْخُذَهُمْ عَلَىٰ تَخَوُّفٍ فَإِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوفٌ رَحِيمٌ ۝ أَوَلَمْ يَرَوْا
إِلَىٰ مَا خَلَقَ اللَّهُ مِنْ شَيْءٍ يَتَفَيَّأُ ظِلَالُهُ عَنِ الْيَمِينِ وَالشَّمَائِلِ
سُجَّدًا لِلَّهِ وَهُمْ دَاخِرُونَ ۝ وَلِلَّهِ يَسْجُدُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي
الْأَرْضِ مِنْ دَابَّةٍ وَالْمَلَائِكَةُ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ ۝ يَخَافُونَ
رَبَّهُمْ مِنْ فَوْقِهِمْ وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ ۩ ۝ وَقَالَ اللَّهُ لَا تَتَّخِذُوا
إِلَٰهَيْنِ اثْنَيْنِ ۖ إِنَّمَا هُوَ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ ۖ فَإِيَّايَ فَارْهَبُونِ ۝ وَلَهُ مَا
فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَهُ الدِّينُ وَاصِبًا ۚ أَفَغَيْرَ اللَّهِ تَتَّقُونَ ۝
وَمَا بِكُمْ مِنْ نِعْمَةٍ فَمِنَ اللَّهِ ۖ ثُمَّ إِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فَإِلَيْهِ تَجْأَرُونَ ۝
ثُمَّ إِذَا كَشَفَ الضُّرَّ عَنْكُمْ إِذَا فَرِيقٌ مِنْكُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُونَ ۝
لِيَكْفُرُوا بِمَا آتَيْنَاهُمْ ۚ فَتَمَتَّعُوا ۖ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ۝ وَيَجْعَلُونَ
لِمَا لَا يَعْلَمُونَ نَصِيبًا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ ۗ تَاللَّهِ لَتُسْأَلُنَّ عَمَّا كُنْتُمْ
تَفْتَرُونَ ۝ وَيَجْعَلُونَ لِلَّهِ الْبَنَاتِ سُبْحَانَهُ ۙ وَلَهُمْ مَا يَشْتَهُونَ ۝
وَإِذَا بُشِّرَ أَحَدُهُمْ بِالْأُنْثَىٰ ظَلَّ وَجْهُهُ مُسْوَدًّا وَهُوَ كَظِيمٌ ۝
يَتَوَارَىٰ مِنَ الْقَوْمِ مِنْ سُوءِ مَا بُشِّرَ بِهِ ۚ أَيُمْسِكُهُ عَلَىٰ هُونٍ
أَمْ يَدُسُّهُ فِي التُّرَابِ ۗ أَلَا سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ۝ لِلَّذِينَ لَا
يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ مَثَلُ السَّوْءِ ۖ وَلِلَّهِ الْمَثَلُ الْأَعْلَىٰ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ

सुम्-म इज़ा क-श-फ़ज़्ज़ुर-र अन्कुम् इज़ा फ़रीक़ुम् - मिन्कुम् बिरब्बिहिम् युश्रिकून ॥ (५४) लियक्फ़ुरू बिमा आतैनाहुम् ط फ़-त - मत्तअू क़फ़ फ़सौ - फ़ तअ्-लमून (५५) व यज्-अलू-न लिमा ला यअ्-लमू-न नसीबम् मिम्मा र-ज़क़्ना-हुम् ط तल्लाहि ल-तुस्अलुन्-न अम्मा कुन्तुम् तफ़्तरून (५६) व यज्अलू-न लिल्लाहिल्-बनाति सुब्हानहू ॥ व लहुम् मा यश्तहून (५७) व इज़ा बुश्शि-र अ-हदुहुम् बिल्उन्सा ज़ल्-ल वज्हुहू मुस्वद्दंव्-व हु-व कज़ीम ؏(५८) य-त-वारा मिनल्-क़ौमि मिन् सूइ मा बुश्शि-र बिही ط अ-युम्सिकुहू अला हूनिन् अम् यदुस्सुहू फ़ित्तुराबि ط अला सा - अ मा यह्कुमून (५९) लिल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिल्आख़िरति म - स-लुस्सौइ ؏ व लिल्लाहिल् - म - सलुल् - अअ् - ला ط व हुवल् - अज़ीज़ुल् - हकीम ★ (६०)

★ रु. ६/१२ आ १० □ सजदः ३ ★ रु. ७/१३ आ १०

वे (ख़ुदा को) आजिज़ नहीं कर सकते। (४६) या जब उन को अज़ाब का डर पैदा हो गया हो, तो उन को पकड़ ले। बेशक तुम्हारा परवरदिगार बहुत शफ़क़त करने वाला (और) मेहरबान है। (४७) क्या उन लोगों ने ख़ुदा की मख़्लूक़ात में से ऐसी चीज़ें नहीं देखीं, जिन के साए दाएं से (बाएं को) और बाएं से (दाए को) लौटते रहते हैं, (यानी) ख़ुदा के आगे आजिज़ हो कर सज्दे में पड़े रहते हैं। (४८) और तमाम जानदार जो आसमानों में हैं, सब ख़ुदा के आगे सज्दे करते हैं और फ़रिश्ते भी और ये तनिक भी घमंड नहीं करते। (४९) और अपने परवरदिगार से, जो उन के ऊपर है, डरते हैं और जो उन को इर्शाद होता है, उस पर अमल करते हैं। (५०) ★□

और ख़ुदा ने फ़रमाया है कि दो-दो माबूद न बनाओ। माबूद वही एक है, तो मुझी से डरते रहो। (५१) और जो कुछ आसमानों में और जो कुछ ज़मीन में है, सब उसी का है और उसी की इबादत ज़रूरी है तो तुम ख़ुदा के सिवा औरों से क्यों डरते हो? (५२) और जो नेमतें तुम को मिली हैं, सब ख़ुदा की तरफ़ से हैं, फिर जब तुम को कोई तक्लीफ़ पहुंचती है, तो उसी के आगे चिल्लाते हो। (५३) फिर जब वह तुम को तक्लीफ़ से दूर कर देता है तो कुछ लोग तुम में से ख़ुदा के साथ शरीक करने लगते हैं। (५४) ताकि जो (नेमतें) हम ने उन को अता फ़रमायी हैं, उन की ना-शुक्री करें तो (मुश्रिको!) दुनिया में फ़ायदे उठा लो। बहुत जल्द तुम को (इस का अंजाम) मालूम हो जाएगा। (५५) और हमारे दिए हुए माल में से ऐसी चीज़ों का हिस्सा मुक़र्रर करते हैं, जिन को जानते ही नहीं। (काफ़िरो!) ख़ुदा की क़सम जो कि तुम झूठ गढ़ते हो, उसकी तुम से ज़रूर पूछ होगी, (५६) और ये लोग ख़ुदा के लिए तो बेटियां तज्वीज़ करते हैं (और) वह उन से पाक है और अपने लिए (बेटे), जो पसंदीदा (और दिल पसंद) हैं, (५७) हालांकि जब उन में से किसी को बेटी (के पैदा होने की) ख़बर मिलती है, तो उस का मुंह (ग़म की वजह से) काला पड़ जाता है और (उस के दिल को तो देखो तो) वह दुखी हो जाता है। (५८) और इस बुरी ख़बर से (जो वह सुनता है) लोगों से छिपता-फिरता है (और सोचता है) कि क्या ज़िल्लत बर्दाश्त कर के लड़की को ज़िंदा रहने दे या ज़मीन में गाड़ दे। देखो, ये जो तज्वीज़ करते हैं, बहुत बुरी है। (५९) जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, उन्हीं के लिए बुरी बातें (मुनासिब) हैं और ख़ुदा को बुलंद सिफ़त (ज़ेब देती है) और वह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (६०) ★

★रु. ६/१२ आ १० □सज्दः ३ ★रु. ७/१३ आ १०

व लौ युआख़िज़ुल्-लाहुन्-ना-स बिज़ुल्मिहिम् मा त-र-क अलैहा मिन् दाब्बतिंव्-व लाकिंय्यु-अख़्ख़िरुहुम् इला अ-जलिम्-मुसम्मन् ज फ़-इज़ा जा-अ अ-जलुहुम् ला यस्तअ्ख़िरू-न सा-अतंव्-व ला यस्तक़्दिमून (६१) व यज्-अलू-न लिल्लाहि मा यक्-रहू-न व तसिफ़ु अल्सिनतु-हुमुल्-कज़ि-ब अन्-न लहुमुल्-हुस्ना ط ला ज-र-म अन्-न लहुमुन्ना-र व अन्नहुम् मुफ़्-रतून (६२) तल्लाहि ल-क़द् अर्सल्ना इला उ-ममिम् - मिन् क़ब्लि-क फ़-ज़य्य-न लहुमुश्-शैतानु अअ्-मालहुम् फ़हु-व वलिय्युहुमुल्-यौ-म व लहुम् अज़ाबुन् अलीम (६३) व मा अन्ज़ल्ना अलैकल्-किता-ब इल्ला लितुबय्यि-न लहुमुल्लज़िख़-त-लफ़ू फ़ीहि ॥ व हुदंव् - व रह्-म-तल्-लिक़ौमिंय्युअ्मिनून (६४) वल्लाहु अन्ज़-ल मिनस्समा-इ मा-अन् फ़ - अह्या बिहिल्अर-ज़ बअ्-द मौतिहा ط इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ-य-तल्लिक़ौमिंय्यस्मअ़ून ★(६५) व इन्-न लकुम् फ़िल्-अन्आमि ल-अिब-र-तन् ط

الْحَكِيْمُ ۝ وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِظُلْمِهِمْ مَّا تَرَكَ عَلَيْهَا مِنْ
دَآبَّةٍ وَّلٰكِنْ يُّؤَخِّرُهُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ لَا
يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ۝ وَيَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ مَا يَكْرَهُوْنَ
وَتَصِفُ اَلْسِنَتُهُمُ الْكَذِبَ اَنَّ لَهُمُ الْحُسْنٰى ۭ لَا جَرَمَ اَنَّ لَهُمُ
النَّارَ وَاَنَّهُمْ مُّفْرَطُوْنَ ۝ تَاللّٰهِ لَقَدْ اَرْسَلْنَآ اِلٰٓى اُمَمٍ مِّنْ قَبْلِكَ
فَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَهُوَ وَلِيُّهُمُ الْيَوْمَ وَلَهُمْ عَذَابٌ
اَلِيْمٌ ۝ وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ اِلَّا لِتُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِى اخْتَلَفُوْا
فِيْهِ ۙ وَهُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝ وَاللّٰهُ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ
مَآءً فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۭ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ
يَّسْمَعُوْنَ ۝ وَاِنَّ لَكُمْ فِى الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً ۭ نُسْقِيْكُمْ مِّمَّا فِىْ بُطُوْنِهٖ
مِنْ بَيْنِ فَرْثٍ وَّدَمٍ لَّبَنًا خَالِصًا سَآئِغًا لِّلشّٰرِبِيْنَ ۝ وَمِنْ
ثَمَرٰتِ النَّخِيْلِ وَالْاَعْنَابِ تَتَّخِذُوْنَ مِنْهُ سَكَرًا وَّرِزْقًا حَسَنًا ۭ
اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝ وَاَوْحٰى رَبُّكَ اِلَى النَّحْلِ اَنِ
اتَّخِذِىْ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا وَّمِنَ الشَّجَرِ وَمِمَّا يَعْرِشُوْنَ ۝ ثُمَّ كُلِىْ
مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ فَاسْلُكِىْ سُبُلَ رَبِّكِ ذُلُلًا ۭ يَخْرُجُ مِنْۢ بُطُوْنِهَا
شَرَابٌ مُّخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ فِيْهِ شِفَآءٌ لِّلنَّاسِ ۭ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ
يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝ وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ ثُمَّ يَتَوَفّٰىكُمْ ۙ وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرَدُّ اِلٰٓى

नुस्क़ीकुम् मिम्मा फ़ी बुतूनिही मिम्-बैनि फ़र्सिंव्-व दमिल्-ल-ब-नन् ख़ालिसन् साइग़ल्-लिश्शारिबीन (६६) व मिन् स-म-रातिन्-नख़ीलि वल्अअ्-नाबि तत्तख़िज़ू-न मिन्हु स-क-रंव्-व रिज़्क़न् ह्-स-नन् ط इन्-न फ़ी ज़ालि-क ल-आयतल्-लिक़ौमिंय्यअ्-क़िलून (६७) व औहा रब्बु-क इलन्नह्लि अनित्तख़िज़ी मिनल्जिबालि बुयूतंव्-व मिनश्शजरि व मिम्मा यअ्-रिशून ॥ (६८) सुम्-म कुली मिन् कुल्लिस्स - मराति फ़स्लुकी सुबु - ल रब्बिकि ज़ुलुलन् ط यख़्रुजु मिम् - बुतूनिहा शराबुम् - मुख़्तलिफ़ुन् अल्वानुहू फ़ीहि शिफ़ाउल्लिन्नासि ط इन् - न फ़ी ज़ालि-क ल-आयतल्-लिक़ौमिय्य-त-फ़क्करून (६९)

★रु. ८/१४ आ ५

और अगर ख़ुदा लोगों को उन के ज़ुल्म की वजह से पकड़ने लगे, तो एक जानदार को ज़मीन पर न छोड़े लेकिन उन को एक मुक़र्रर वक़्त तक मोहलत दिए जाता है। जब वह वक़्त आ जाता है, तो एक घड़ी न पीछे रह सकते हैं, न आगे बढ़ सकते हैं। (६१) और ये ख़ुदा के लिए ऐसी चीज़ें तज्वीज़ करते हैं, जिन को ख़ुदा ना-पसन्द करते हैं और ज़ुबान से झूठ बके जाते हैं कि उन को (क़ियामत के दिन) भलाई (यानी निजात) होगी। कुछ शक नहीं कि उन के लिए (दोज़ख़ की) आग (तैयार) है और ये (दोज़ख़ में) सब से आगे भेजे जाएंगे। (६२) ख़ुदा की क़सम! हम ने तुम से पहली उम्मतों की तरफ़ पैग़म्बर भेजे, तो शैतान ने उन के (बुरे) अमल उन को सजा कर दिखाए, तो आज भी वही उन का दोस्त है और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है। (६३) और हम ने जो तुम पर किताब नाज़िल की है, तो इस के लिए कि जिस मामले में इन लोगों को इख़्तिलाफ़ है, तुम उन का फ़ैसला कर दो और (यह) मोमिनों के लिए हिदायत और रहमत है। (६४) और ख़ुदा ही ने आसमान से पानी बरसाया, फिर उस से ज़मीन को उस के मरने के बाद ज़िंदा किया। बेशक इस में सुनने वालों के लिए निशानी है। (६५)★

और तुम्हारे लिए चारपायों में भी सबक़ (हासिल करने और ग़ौर करने की) जगह है कि उन के पेटों में जो गोबर और लहू है, उस से हम तुम को ख़ालिस दूध पिलाते हैं जो पीने वालों के लिए ख़ुशगवार है। (६६) और खजूर और अंगूर के मेवों से भी (तुम पीने की चीज़ें तैयार करते हो) कि उन से शराब बनाते हो और अच्छी रोज़ी (खाते हो), जो लोग समझ रखते हैं, उन के लिए इन (चीज़ों) में (ख़ुदा की क़ुदरत की) निशानी है। (६७) और तुम्हारे परवरदिगार ने शहद की मक्खियों को इर्शाद फ़रमाया कि पहाड़ों में और पेड़ों में और ऊंची-ऊंची छतरियों में, जो लोग बनाते हैं, घर बना।[1] (६८) और हर क़िस्म के मेवे खा और अपने परवरदिगार के साफ़ रास्तों पर चली जा। उस के पेट से पीने की चीज़ निकलती है, जिस के मुख़्तलिफ़ रंग होते हैं, उस में लोगों (के कई मर्ज़ों) की शिफ़ा है। बेशक सोचने वालों के लिए उस में भी निशानी है। (६९) और ख़ुदा

१. ऊंची-ऊंची छतरियों से मुराद वे छतरियां हैं, जो अंगूर की बेल चढ़ाने के लिए डाली जाती हैं।

वल्लाहु ख़-ल-क़कुम् सुम्-म य-त - वफ़्फ़ाकुम् व मिन्कुम् मंय्युरद्‌दु इला अर्ज़लिल् उमुरि लिकै ला यअ्-ल-म बअ्-द अिल्मिन् शैअन् ♭ इन्नल्ला-ह अ़लीमुन् क़दीर ✱ (७०) वल्लाहु फ़ज़्ज़-ल बअ्-ज़कुम् अ़ला बअ्‌ - ज़िन् फ़िर्रिज़्क़ि ♭ फ़-मल्लज़ी-न फ़ुज़्ज़िलू बिराद्‌दी-रिज़्क़िहिम् अ़ला मा म-ल-कत् ऐमानुहुम् फ़हुम् फ़ीहि सवाउन् ♭ अ - फ़-बिनिअ्‌ - मतिल्लाहि यज्ह़दून (७१) वल्लाहु ज-अ़-ल लकुम् मिन् अन्फ़ुसिकुम् अज़्वाजंव्-व ज-अ़-ल लकुम् मिन् अज़्वाजिकुम् बनी-न व ह़-फ़-द-तंव्-व र-ज़-क़कुम् मिनत्तय्यिबाति ♭ अ-फ़-बिल्‌बातिलि युअ्‌मिनू - न व बिनिअ्‌ - मतिल्लाहि हुम् यक्फ़ुरून ⅃ (७२) व यअ्-बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि मा ला यम्लिकु लहुम् रिज़्क़म्-मिनस्समावाति वल्‌अर्ज़ि शैअंव्-व ला यस्ततीअ़ून ̸ (७३) फ़-ला तज़्रिबू लिल्लाहिल् - अम्सा - ल इन्नल्ला-ह यअ्-लमु व अन्तुम् ला तअ्-लमून (७४) ज़-र-बल्लाहु म-स-लन् अ़ब्दम्-मम्लूकल्-

أرذل العمر لكي لا يعلم بعد علم شيئا إن الله عليم قدير ﴿٧٠﴾
والله فضل بعضكم على بعض في الرزق فما الذين فضلوا
برادي رزقهم على ما ملكت أيمانهم فهم فيه سواء أفبنعمة
الله يجحدون ﴿٧١﴾ والله جعل لكم من أنفسكم أزواجا وجعل لكم
من أزواجكم بنين وحفدة ورزقكم من الطيبات أفبالباطل
يؤمنون وبنعمت الله هم يكفرون ﴿٧٢﴾ ويعبدون من دون
الله ما لا يملك لهم رزقا من السماوات والأرض شيئا ولا
يستطيعون ﴿٧٣﴾ فلا تضربوا لله الأمثال إن الله يعلم و
أنتم لا تعلمون ﴿٧٤﴾ ضرب الله مثلا عبدا مملوكا لا يقدر
على شيء ومن رزقناه منا رزقا حسنا فهو ينفق منه سرا
وجهرا هل يستوون الحمد لله بل أكثرهم لا يعلمون ﴿٧٥﴾
وضرب الله مثلا رجلين أحدهما أبكم لا يقدر على شيء
وهو كل على مولاه أينما يوجهه لا يأت بخير هل
يستوي هو ومن يأمر بالعدل وهو على صراط مستقيم ﴿٧٦﴾
ولله غيب السماوات والأرض وما أمر الساعة إلا كلمح
البصر أو هو أقرب إن الله على كل شيء قدير ﴿٧٧﴾ والله
أخرجكم من بطون أمهاتكم لا تعلمون شيئا وجعل لكم

ला यक़्दिरु अ़ला शैइंव्-व मर्रज़क़्नाहु मिन्ना रिज़्क़न् ह़-स-नन् फ़हु-व युन्फ़िक़ु मिन्हु सिर्रंव् - व जह्‌रन् ♭ हल् यस्तवू-न ♭ अल्ह़म्दु लिल्लाहि ♭ बल् अक्सरु-हुम् ला यअ्-लमून (७५) व ज़-र-बल्लाहु म-स-लर्-रजुलैनि अ-ह़दुहुमा अब्कमु ला यक़्दिरु अ़ला शैइंव्-व हु-व कल्लुन् अ़ला मौलाहु ⅃ ऐनमा युवज्जिह्हु ला यअ्‌ति बिख़ैरिन् ♭ हल् यस्तवी हु-व ⅃ व मंय्यअ्‌मुरु बिल्‌अ़द्लि ⅃ व हु-व अ़ला सिरातिम्-मुस्तक़ीम ✱ (७६) व लिल्लाहि ग़ैबुस्समावाति वल्‌अर्ज़ि ♭ व मा अम्रुस्साअ़ति इल्ला क - लम्हिल् - ब-स़रि औ हु - व अक़्रबु ♭ इन्नल्ला - ह अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (७७) वल्लाहु अख़्-र-जकुम् मिम्-बुतूनि उम्महातिकुम् ला तअ्-ल-मू-न शैअंव्-व ज-अ़-ल लकुमुस्सम् - अ वल्‌अब्सा - र वल्‌अफ़्इ-द-त ⅃ ल-अ़ल्लकुम् तश्कुरून (७८)

★रु. ९/१५ आ ५ ★रु. १०/१६ आ ६

ही ने तुम को पैदा किया, फिर वही तुम को मौत देता है और तुम में कुछ ऐसे होते हैं कि निहायत खराब उम्र को पहुंच जाते हैं और (बहुत कुछ) जानने के बाद हर चीज़ से बे-इल्म हो जाते हैं। बेशक (खुदा सब कुछ) जानने वाला (और) क़ुदरत वाला है। (७०)✱

और खुदा ने रोज़ी (और दौलत) में कुछ को कुछ पर फ़ज़ीलत दी है तो जिन लोगों को फ़ज़ीलत दी है, वे अपनी रोज़ी अपने मम्लूकों को तो दे डालने वाले हैं नहीं कि सब उस में बराबर हो जाएं, तो क्या ये लोग अल्लाह की नेमत के इंकारी है ? (७१) और खुदा ही ने तुम में से तुम्हारे लिए औरतें पैदा कीं और औरतों से तुम्हारे बेटे और पोते पैदा किए और खाने को तुम्हें पाकीज़ा चीज़ें दीं, तो क्या ये बे-असल चीज़ों पर एतक़ाद रखते और खुदा की नेमतों से इंकार करते हैं ? (७२) और खुदा के सिवा ऐसों को पूजते हैं, जो उन को आसमानों और ज़मीन में रोज़ी देने का ज़रा भी अख्तियार नहीं रखते और न (किसी और तरह की) क़ुदरत रखते हैं। (७३) तो (लोगो!) खुदा के बारे में (ग़लत) मिसालें न बनाओ। (सही मिसालों का तरीक़ा) खुदा ही जानता है और तुम नहीं जानते। (७४) खुदा एक और मिसाल बयान फ़रमाता है कि एक गुलाम है जो (बिल्कुल) दूसरे के अख्तियार में है और किसी चीज़ पर क़ुदरत नहीं रखता और एक ऐसा शख्स है, जिस को हम ने अपने यहां से (बहुत-सा) माल बेहतर अता फ़रमाया है और वह उस में से (रात-दिन) छिपे और खुले खर्च करता है, तो क्या दोनों शख्स बराबर हैं ? (हरगिज़ नहीं) अलहम्दु लिल्लाह ! लेकिन इन में से अक्सर लोग समझ नहीं रखते। (७५) और खुदा एक और मिसाल बयान फ़रमाता है कि दो आदमी हैं एक उन में से गूंगा (और दूसरे की मिल्क) है, (बे-अख्तियार व कमज़ोर) कि किसी चीज़ पर क़ुदरत नहीं रखता और अपने मालिक को दूभर हो रहा है। वह जहां उसे भेजता है (खैर से कभी) भलाई नहीं लाता। क्या ऐसा (गूंगा-बहरा) और वह शख्स जो (सुनता-बोलता और) लोगों को इंसाफ़ करने का हुक्म देता है और खुद सीधे रास्ते पर चल रहा है, दोनों बराबर हैं ?[१] (७६) ★

और आसमानों और ज़मीन का इल्म खुदा ही को है और (खुदा के नज़दीक) क़ियामत का आना यों ही है, जैसे आंख का झपकना, बल्कि (उस से भी) जल्दतर। कुछ शक नहीं कि खुदा हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। (७७) और खुदा ही ने तुम को तुम्हारी मांओं के पेट से पैदा किया कि तुम कुछ नहीं जानते थे और उस ने तुम को कान और आंखें और दिल (और उन के अलावा और)

---

१. यानी खुदा के दो बन्दे, एक बहुत निकम्मा, न हिल सके, न चल सके, जैसा कि गूंगा गुलाम, दूसरा रसूल जो अल्लाह की राह बतावे हज़ारों को और आप बन्दगी पर क़ायम रहे, उस की पैरवी करना बेहतर है या इस की ?

★रु. ९/१५ आ ५ ★रु. १०/१६ आ ६

अ-लम् यरौ इलत्तैरि मुसख़्ख़रातिन् फ़ी जव्विस्समाइ ⅃ मा युम्सिकुहुन्-न इल्लल्लाहु ⅃ इन्-न फ़ी ज़ालि-क ल-आयातिल् - लिक़ौमिय्युअ्मिनून (७९) वल्लाहु ज-अ-ल लकुम् मिम्-बुयूतिकुम् स-क-नंव्-व ज-अ-ल लकुम् मिन् जुलूदिल्-अन्आमि बुयूतन् तस्तख़िफ़्फ़ूनहा यौ-म ज़अ्-निकुम् व यौ-म इक़ामतिकुम् ⅃ व मिन् अस्वाफ़िहा व औबारिहा व अश्आरिहा असासंव्-व मताअ़न् इलाहीन (८०) वल्लाहु ज-अ-ल लकुम् मिम्मा ख़-ल-क़ ज़िलालंव्-व ज-अ-ल लकुम् मिनल्जिबालि अक्नानंव्-व ज-अ-ल लकुम् सराबी - ल तक़ीकुमुल्हर् - र व सराबी-ल तक़ीकुम् बअ्-सकुम् ⅃ कज़ालि-क युतिम्मु निअ्-मतहू अलैकुम् ल-अ़ल्लकुम् तुस्लिमून (८१) फ़-इन् त-वल्लौ फ़-इन्नमा अलैकल्-बलाग़ुल्-मुबीन (८२) यअ्-रिफ़ू-न निअ्-म-तल्लाहि सुम् - म युन्किरूनहा व अक्सरुहुमुल् - काफ़िरून ★(८३) व यौ - म नब्असु मिन् कुल्लि उम्मतिन् शहीदन् सुम्-म ला युअ्ज़नु लिल्लज़ी-न क-फ़रू व ला हुम् युस्तअ्-तबून (८४) व इज़ा र-अल्लज़ी-न ज़-लमुल्-अज़ा-ब फ़ला युख़फ़्फ़फ़ु अन्हुम् व ला हुम् युन्ज़रून (८५) व इज़ा र-अल्लज़ी-न अश्रकू शु-रका - अहुम् क़ालू रब्बना हाउलाइ शु-र-काउनल्-लज़ी-न कुन्ना नद्ऊ मिन् दूनि - क ج फ़-अल्क़ौ इलैहिमुल्क़ौ-ल इन्नकुम् ल - काज़िबून ج ● (८६) व अल्क़ौ इलल्लाहि यौमइज़ि-निस् - स - लम व ज़ल् - ल अन्हुम् मा कानू यफ़्तरून (८७) अल्लज़ी-न क-फ़रू व सद्दू अन् सबीलिल्लाहि ज़िद्नाहुम् अज़ाबन् फ़ौक़ल् - अज़ाबि बिमा कानू युफ़्सिदून (८८)

السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْئِدَةَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝ اَلَمْ يَرَوْا
اِلَى الطَّيْرِ مُسَخَّرٰتٍ فِيْ جَوِّ السَّمَآءِ مَا يُمْسِكُهُنَّ اِلَّا اللّٰهُ اِنَّ
فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝ وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ
بُيُوْتِكُمْ سَكَنًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ جُلُوْدِ الْاَنْعَامِ بُيُوْتًا تَسْتَخِفُّوْنَهَا
يَوْمَ ظَعْنِكُمْ وَيَوْمَ اِقَامَتِكُمْ وَمِنْ اَصْوَافِهَا وَاَوْبَارِهَا
وَاَشْعَارِهَآ اَثَاثًا وَّمَتَاعًا اِلٰى حِيْنٍ ۝ وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّمَّا
خَلَقَ ظِلٰلًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الْجِبَالِ اَكْنَانًا وَّجَعَلَ لَكُمْ
سَرَابِيْلَ تَقِيْكُمُ الْحَرَّ وَسَرَابِيْلَ تَقِيْكُمْ بَاْسَكُمْ كَذٰلِكَ يُتِمُّ
نِعْمَتَهٗ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْلِمُوْنَ ۝ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْكَ
الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ۝ يَعْرِفُوْنَ نِعْمَتَ اللّٰهِ ثُمَّ يُنْكِرُوْنَهَا وَاَكْثَرُهُمُ
الْكٰفِرُوْنَ ۝ وَيَوْمَ نَبْعَثُ مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا ثُمَّ لَا يُؤْذَنُ
لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ۝ وَاِذَا رَاَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا
الْعَذَابَ فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ۝ وَاِذَا رَاَ
الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا شُرَكَآءَهُمْ قَالُوْا رَبَّنَا هٰٓؤُلَآءِ شُرَكَآؤُنَا الَّذِيْنَ
كُنَّا نَدْعُوْا مِنْ دُوْنِكَ فَاَلْقَوْا اِلَيْهِمُ الْقَوْلَ اِنَّكُمْ لَكٰذِبُوْنَ ۝
وَاَلْقَوْا اِلَى اللّٰهِ يَوْمَئِذِ ٰ السَّلَمَ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا
يَفْتَرُوْنَ ۝ اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ زِدْنٰهُمْ

★रु. ११/१७ आ ७ ●सु. ३/४

अंग दिए, ताकि तुम शुक्र करो। (७८) क्या इन लोगों ने परिंदों को नहीं देखा कि आसमान की हवा में घिरे हुए (उड़ते रहते) हैं। उन को ख़ुदा ही थामे रखता है। ईमान वालों के लिए इस में (बहुत-सी) निशानियां हैं। (७९) और ख़ुदा ही ने तुम्हारे लिए घरों को रहने की जगह बनाया। और उसी ने चौपायों की खालों से तुम्हारे डेरे बनाए, जिन को तुम हल्का देख कर और हज़र सफ़र (ठहरने की हालत) में काम में लाते हो और उन की ऊन और रेशम और बालों से तुम सामान और बरतने की चीज़ें (बनाते हो, जो) मुद्दत तक (काम देती हैं।) (८०) और ख़ुदा ही ने तुम्हारे (आराम के) लिए अपनी पैदा की हुई चीज़ों के साए बनाए और पहाड़ों में ग़ारें बनायीं और कुरते बनाये, जो तुम को गर्मी से बचाएं और (ऐसे) कुरते (भी) जो तुम को जंग (के हथियारों के नुक्सान) से बचाये रखें। इसी तरह ख़ुदा अपना एहसान तुम पर पूरा करता है, ताकि तुम फ़रमां-बरदार बनो। (८१) और अगर ये लोग मुंह मोड़ें तो (ऐ पैग़म्बर !) तुम्हारा काम सिर्फ़ खोल कर सुना देना है। (८२) ये ख़ुदा की नेमतों को जानते हैं, मगर (जान कर) उन से इंकार करते हैं और ये अक्सर ना-शुक्रे हैं। (८३)★

और जिस दिन हम हर उम्मत में से गवाह (यानी पैग़म्बर) खड़ा करेंगे तो न तो कुफ़्फ़ार को बोलने की) इजाज़त मिलेगी और न उन के उज़्र क़ुबूल किए जाएंगे। (८४) और जब ज़ालिम लोग अज़ाब देख लेंगे, तो फिर न तो उन के अज़ाब ही में कमी की जाएगी और न उन को मोहलत ही दी जाएगी। (८५) और जब मुश्रिक अपने (बनाये हुए) शरीकों को देखेंगे, तो कहेंगे कि परवर-दिगार ! ये वही हमारे शरीक हैं, जिन को हम तेरे सिवा पुकारा करते थे, तो वे (उन के कलाम को रद्द कर देंगे और) उन से कहेंगे कि तुम तो झूठे हो● (८६) और उस दिन ख़ुदा के सामने सिर झुका देंगे और जो तूफ़ान वे बांधा करते थे, सब उन से जाता रहेगा। (८७) जिन लोगों ने कुफ़्र किया और (लोगों को) ख़ुदा के रास्ते से रोका, हम उन को अज़ाब पर अज़ाब देंगे, इस लिए कि

★रु· ११/१७ आ ७ ●सु· ३/४

व यौ-म नब्अ़सु फ़ी कुल्लि उम्मतिन् शहीदन् अ़लैहिम् मिन् अन्फ़ुसिहिम् व जिअ्-ना बि-क शहीदन् अ़ला हाउलाइ ط व नज़्ज़ल्ना अ़लैकल्-किता - ब तिब्यानल्-लिकुल्लि शैइंव्-व हुदंव्-व रह्मतंव्-व बुश्रा लिल्मुस्लिमीन ★(८९) इन्नल्ला - ह यअ्मुरु बिल्अ़द्लि वल्इह्सानि व ईताइ ज़िल्क़ुर्बा व यन्हा अ़निल् - फ़ह्शाइ वल्मुन्करि वल्बग़्यि ج यअ़िज़ुकुम् ल - अ़ल्लकुम् त-ज़क्करून (९०) व औफ़ू बिअ़ह्दिल्लाहि इज़ा आ़हत्तुम् व ला तन्क़ुज़ुल्-ऐमा-न बअ्-द तौकीदिहा व क़द् ज-अ़ल्तुमुल्ला-ह अ़लैकुम् कफ़ीलन् ط इन्नल्ला-ह यअ् - लमु मा तफ़्-अ़लून (९१) व ला तकूनू कल्लती न-क़-ज़त् ग़ज़्-लहा मिम्बअ्-दि क़ुव्वतिन् अन्कासन् ط तत्तख़िज़ू-न ऐमानकुम् द-ख़-लम्-बैनकुम् अन् तकू-न उम्मतुन् हि-य अर्बा मिन् उम्मतिन् ط इन्नमा यब्लूकुमुल्लाहु बिही ط व ल-युबय्यिनन्-न लकुम् यौमल् - क़ियामति मा कुन्तुम् फ़ीहि तख़्तलिफ़ून (९२) व लौ शा-अल्लाहु ल-ज-अ़-लकुम् उम्मतंव्वाहि-द-तंव् - व लाकिंय्युज़िल्लु मंय्यशाउ व यह्दी मंय्यशाउ ط व ल-तुस्अलुन्-न अ़म्मा कुन्तुम् तअ्-मलून (९३) व ला तत्तख़िज़ू ऐमानकुम् द-ख़-लम्-बैनकुम् फ़-तज़िल्-ल क़-दमुम्-बअ्-द सुबूतिहा व तज़ूक़ुस्सू-अ बिमा स़-दत्तुम् अ़न् सबीलिल्लाहि ج व लकुम् अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीम (९४) व ला तश्तरू बि - अ़ह्दिल्लाहि स-म - नन् क़लीलन् ط इन्नमा अ़िन्दल्लाहि हु - व ख़ैरुल्लकुम् इन् कुन्तुम् तअ् - लमून (९५) मा अ़िन्दकुम् यन्फ़दु व मा अ़िन्दल्लाहि बाक़िन् ط व ल - नज्ज़ियन्नल्लज़ी - न स - बरू अज्रहुम् बि - अह्सनि मा कानू यअ् - मलून (९६)

ربما ١٤ — ٢٢١ — النحل ١٦

عذابا فوق العذاب بما كانوا يفسدون ﴿٨٨﴾ ويوم نبعث في
كل أمة شهيدا عليهم من أنفسهم وجئنا بك شهيدا
على هؤلاء ۚ ونزلنا عليك الكتب تبيانا لكل شيء وهدى
ورحمة وبشرى للمسلمين ﴿٨٩﴾ إن الله يأمر بالعدل و
الإحسان وإيتاي ذي القربى وينهى عن الفحشاء والمنكر
والبغي يعظكم لعلكم تذكرون ﴿٩٠﴾ وأوفوا بعهد الله إذا
عهدتم ولا تنقضوا الأيمان بعد توكيدها وقد جعلتم الله
عليكم كفيلا ۚ إن الله يعلم ما تفعلون ﴿٩١﴾ ولا تكونوا كالتي
نقضت غزلها من بعد قوة أنكاثا تتخذون أيمانكم دخلا
بينكم أن تكون أمة هي أربى من أمة ۚ إنما يبلوكم الله به
وليبينن لكم يوم القيمة ما كنتم فيه تختلفون ﴿٩٢﴾ ولو
شاء الله لجعلكم أمة واحدة ولكن يضل من يشاء و
يهدي من يشاء ۚ ولتسئلن عما كنتم تعملون ﴿٩٣﴾ ولا
تتخذوا أيمانكم دخلا بينكم فتزل قدم بعد ثبوتها وتذوقوا
السوء بما صددتم عن سبيل الله ۚ ولكم عذاب عظيم ﴿٩٤﴾
ولا تشتروا بعهد الله ثمنا قليلا ۚ إنما عند الله هو خير لكم
إن كنتم تعلمون ﴿٩٥﴾ ما عندكم ينفد وما عند الله باق ۗ ولنجزين

★रु. १२/१८ आ ६

शरारत किया करते थे। (८८) और (उस दिन को याद करो) जिस दिन हम हर उम्मत में से खुद उन पर गवाह खड़े करेंगे और (ऐ पैग़म्बर!) तुम को इन लोगों पर गवाह लाएंगे। और हम ने तुम पर (ऐसी) किताब नाज़िल की है कि (इस में) हर चीज़ का बयान (तफ़्सील से) है। और मुसलमानों के लिए हिदायत और रहमत और बशारत है। (८९)★

खुदा तुम को इंसाफ़ और एहसान करने और रिश्तेदारों को (खर्च से मदद) देने का हुक्म देता है और बे-हयाई और ना-माक़ूल कामों से और सर-कशी से मना करता है (और) तुम्हें नसीहत करता है, ताकि तुम याद रखो। (९०) और जब खुदा से पक्का अह्द करो तो उस को पूरा करो और जब पक्की क़स्में खाओ तो उन को मत तोड़ो कि तुम खुदा को अपना ज़मानतदार मुक़र्रर कर चुके हो और जो कुछ तुम करते हो, खुदा उस को जानता है। (९१) और उस औरत की तरह न होना जिस ने मेहनत से तो सूत काता फिर उस को तोड़ कर टुकड़े-टुकड़े कर डाला कि तुम अपनी क़स्मों को आपस में इस बात का ज़रिया बनाने लगो कि एक गिरोह दूसरे गिरोह से ज़्यादा ग़ालिब रहे। बात यह है कि खुदा तुम्हें इस से आज़माता है और जिन बातों में तुम इख़्तिलाफ़ करते हो, क़ियामत को उन की हक़ीक़त तुम पर ज़ाहिर कर देगा। (९२) और अगर खुदा चाहता, तो तुम (सब) को एक ही जमाअत बना देता लेकिन वह जिसे चाहता है, गुमराह करता है और जिसे चाहता है, हिदायत देता है और जो अमल तुम करते हो, (उस दिन) उन के बारे में तुम से ज़रूर पूछा जाएगा। (९३) और अपनी क़स्मों को आपस में इस बात का ज़रिया न बनाओ कि (लोगों के) क़दम जम चुकने के बाद लड़-खड़ा जाएं और इस वजह से कि तुम ने लोगों को खुदा के रास्ते से रोका, तुम को बुराई का मज़ा चखना पड़े और बड़ा सख़्त अज़ाब मिले। (९४) और खुदा से जो तुम ने अह्द किया है (उस को मत बेचो और) उस के बदले थोड़ी सी क़ीमत न लो (क्योंकि वायदा पूरा करने का) जो (बदला) खुदा के यहां मुक़र्रर है, वह अगर समझो तो तुम्हारे लिए बेहतर है। (९५) जो कुछ तुम्हारे पास है, वह ख़त्म हो जाता है, और जो खुदा के पास है, वह बाक़ी है (कि कभी ख़त्म नहीं होगा) और जिन लोगों ने सब्र किया, हम उन को उन के आमाल का बहुत अच्छा बदला देंगे। (९६) जो शख़्स

★रु. १२/१८ आ ६

मन् अमि-ल सालिहम्-मिन् ज-करिन् औ उन्सा व हु-व मुअ्मिनुन् फ़-लनुह्यियन्नहू हयातन् तय्यि-ब-तन् ۚ व-ल - नज्ज़ियन्नहुम् अज्रहुम् बिअह्सनि मा कानू यअ्मलून (९७) फ़इज़ा क़-रअ्तल् - क़ुर्आ-न फ़स्तअिज़् बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्-रजीम (९८) इन्नहू लै-स लहू सुल्तानुन् अ-लल्लज़ी - न आमनू व अला रब्बिहिम् य-त-वक्कलून (९९) इन्नमा सुल्तानुहू अ-लल्लज़ी-न य-त-वल्लौनहू वल्लज़ी-न हुम् बिही मुश्रिकून ★ (१००) व इज़ा बद्दल्ना आ-य-तम् - मका - न आयतिव् ۙ- वल्लाहु अअ् - लमु बिमा युनज़्ज़िलु क़ालू इन्नमा अन्-त मुफ़्तरिन् ط बल् अक्सरुहुम् ला यअ्-लमून (१०१) क़ुल् नज़्ज़-लहू रूहुल् - क़ुदुसि मिर्रब्बि-क बिल्हक़्क़ि लियुसब्बि-तल्लज़ी-न आमनू व हुदंव्-व बुश्रा लिल्-मुस्लिमीन (१०२) व ल-क़द् नअ्-लमु अन्नहुम् यक़ूलू-न इन्नमा युअल्लिमुहू ब - शरुन् ط लिसानुल्लज़ी युल्हिदू-न इलैहि अअ्-जमिय्युंव्-व हाज़ा लिसानुन् अ-रबिय्युम्-मुबीन (१०३) इन्नल्लज़ी - न ला युअ्मिनू-न बिआयातिल्लाहि ۙ ला यह्दीहिमुल्लाहु व लहुम् अज़ाबुन् अलीम (१०४) इन्नमा यफ़्तरिल् - कज़िबल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिआयातिल्लाहि ۚ व उलाइ-क हुमुल्-काज़िबून (१०५) मन् क-फ़-र बिल्लाहि मिम्बअ्-दि ईमानिही इल्ला मन् उक्रि-ह व क़ल्बुहू मुत्-मइन्नुम्-बिल्ईमानि व लाकिम्मन् श-र-ह बिल्कुफ़्रि सद्-रन् फ़-अलैहिम् ग़ - ज़बुम् - मिनल्लाहि ۚ व लहुम् अज़ाबुन् अज़ीम (१०६) ज़ालि - क बि - अन्नहुमुस्त - हब्बुल् - हयातद्दुन्या अ - लल् - आख़िरति ۙ व अन्नल्ला - ह ला यह्दिल् - क़ौमल् - काफ़िरीन (१०७)

الَّذِيْنَ صَبَرُوْٓا اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ مَنْ عَمِلَ
صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهٗ حَيٰوةً طَيِّبَةً ۚ
وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ فَاِذَا قَرَاْتَ
الْقُرْاٰنَ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ۝ اِنَّهٗ لَيْسَ لَهٗ
سُلْطٰنٌ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ۝ اِنَّمَا سُلْطٰنُهٗ
عَلَى الَّذِيْنَ يَتَوَلَّوْنَهٗ وَالَّذِيْنَ هُمْ بِهٖ مُشْرِكُوْنَ ۝ وَاِذَا بَدَّلْنَآ
اٰيَةً مَّكَانَ اٰيَةٍ ۙ وَّاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا يُنَزِّلُ قَالُوْٓا اِنَّمَآ اَنْتَ مُفْتَرٍ ؕ
بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ قُلْ نَزَّلَهٗ رُوْحُ الْقُدُسِ مِنْ
رَّبِّكَ بِالْحَقِّ لِيُثَبِّتَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهُدًى وَّبُشْرٰى لِلْمُسْلِمِيْنَ ۝
وَلَقَدْ نَعْلَمُ اَنَّهُمْ يَقُوْلُوْنَ اِنَّمَا يُعَلِّمُهٗ بَشَرٌ ؕ لِسَانُ الَّذِيْ
يُلْحِدُوْنَ اِلَيْهِ اَعْجَمِيٌّ وَّهٰذَا لِسَانٌ عَرَبِيٌّ مُّبِيْنٌ ۝ اِنَّ
الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۙ لَا يَهْدِيْهِمُ اللّٰهُ وَلَهُمْ عَذَابٌ
اَلِيْمٌ ۝ اِنَّمَا يَفْتَرِى الْكَذِبَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِ
اللّٰهِ ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ ۝ مَنْ كَفَرَ بِاللّٰهِ مِنْ بَعْدِ
اِيْمَانِهٖٓ اِلَّا مَنْ اُكْرِهَ وَقَلْبُهٗ مُطْمَئِنٌّ بِالْاِيْمَانِ وَلٰكِنْ
مَّنْ شَرَحَ بِالْكُفْرِ صَدْرًا فَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ مِّنَ اللّٰهِ ۚ وَلَهُمْ
عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمُ اسْتَحَبُّوا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا عَلَى

नेक अमल करेगा, मर्द हो या औरत, और वह मोमिन भी होगा, तो हम उस को (दुनिया में) पाक (और आराम की) ज़िंदगी से ज़िंदा रखेंगे और (आख़िरत में) उन के आमाल का निहायत अच्छा बदला देंगे। (९७) और जब तुम क़ुरआन पढ़ने लगो तो शैतान मर्दूद से पनाह मांग लिया करो, (९८) कि जो मोमिन हैं और अपने परवरदिगार पर भरोसा रखते हैं, उन पर उस का कुछ ज़ोर नहीं चलता। (९९) उस का ज़ोर उन्हीं लोगों पर चलता है, जो उस को साथी बनाते हैं, और उस के (वस्वसे की) वजह से (ख़ुदा के साथ) शरीक मुक़र्रर करते हैं। (१००)★

और जब हम कोई आयत किसी आयत की जगह बदल देते हैं और ख़ुदा जो कुछ नाज़िल फ़रमाता है उसे ख़ूब जानता है, तो (काफ़िर) कहते हैं तुम तो (यों ही) अपनी तरफ़ से बना लाते हो। सच तो यह है कि उन में अक्सर नादान हैं। (१०१) कह दो कि इस को रूहुल क़ुदुस तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से सच्चाई के साथ ले कर नाज़िल हुए हैं ताकि यह (क़ुरआन) मोमिनों को साबित क़दम रखे और हुक्म मानने वालों के लिए तो (यह) हिदायत और बशारत है। (१०२) और हमें मालूम है कि ये कहते हैं कि इस (पैग़म्बर) को एक शख़्स सिखा जाता है मगर जिस की तरफ़ (तामील का) ताल्लुक़ जोड़ते हैं उस की ज़ुबान तो अजमी है और यह साफ़ अरबी ज़ुबान है। (१०३) जो लोग ख़ुदा की आयतों पर ईमान नहीं लाते, उन को ख़ुदा हिदायत नहीं देता और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है। (१०४) झूठ तो वही लोग गढ़ते हैं, जो ख़ुदा की आयतों पर ईमान नहीं लाते और वही झूठे हैं। (१०५) जो शख़्स ईमान लाने के बाद ख़ुदा के साथ कुफ़्र करे, वह नहीं जो (कुफ़्र पर ज़बरदस्ती) मजबूर किया जाए और उस का दिल ईमान के साथ मुत्मईन हो, बल्कि वह जो (दिल से और) दिल खोल कर कुफ़्र करे, तो ऐसों पर अल्लाह का ग़ज़ब है और उन को बड़ा सख़्त अज़ाब होगा। (१०६) यह इसलिए कि उन्हों ने दुनिया की ज़िंदगी को आख़िरत के मुक़ाबले में अज़ीज़ रखा और इस लिए कि ख़ुदा काफ़िर लोगों को हिदायत नहीं

★रु. १३/१६ आ ११

उलाइ-कल्लज़ी-न त़-ब-अल्लाहु अ़ला क़ुलूबिहिम् व सम्अिहिम् व अब्सारिहिम्
व उलाइ-क हुमुल्ग़ाफ़िलून (१०८) ला ज-र-म अन्नहुम् फ़िल्आख़िरति
हुमुल्ख़ासिरून (१०९) सुम्-म इन्-न रब्ब-क लिल्लज़ी-न हाजरू मिम्बअ्-दि मा
फ़ुतिनू सुम्-म जाहदू व स-बरू इन्-न रब्ब-क मिम्बअ्-दिहा ल-ग़फ़ूरुर्रहीम
★ (११०) यौ-म तअ्ती कुल्लु नफ़्सिन्
तुजादिलु अ़न्नफ़्सिहा व तुवफ़्फ़ा कुल्लु
नफ़्सिम्मा अ़मिलत् व हुम् ला युज़्-लमून
(१११) व ज़-र-बल्लाहु म-स-लन् क़र्-य-तन्
कानत् आमि-न-तम् - मुत्मइन्नतंय्यअ्तीहा
रिज़्-क़ुहा र-ग़ - दम्मिन् कुल्लि मकानिन्
फ़-क-फ़-रत् बि-अन्अुमिल्लाहि फ़-अज़ा-क़-हल्लाहु
लिबासल्जूअि वल्ख़ौफ़ि बिमा
कानू यस् - नअून (११२) व ल-क़द्
जाअहुम् रसूलुम् - मिन्हुम् फ़ - कज़्ज़बूहु
फ़ अ-ख़-ज़-हुमुल्-अ़ज़ाबु व हुम् ज़ालिमून
(११३) फ़कुलू मिम्मा र-ज़-क़कुमुल्लाहु

الْآخِرَةِ ۙ وَأَنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ۝ أُولَٰئِكَ
الَّذِينَ طَبَعَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ وَسَمْعِهِمْ وَأَبْصَارِهِمْ ۖ وَأُولَٰئِكَ
هُمُ الْغَافِلُونَ ۝ لَا جَرَمَ أَنَّهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمُ الْخَاسِرُونَ ۝
ثُمَّ إِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِينَ هَاجَرُوا مِنْ بَعْدِ مَا فُتِنُوا ثُمَّ جَاهَدُوا
وَصَبَرُوا إِنَّ رَبَّكَ مِنْ بَعْدِهَا لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ يَوْمَ تَأْتِي
كُلُّ نَفْسٍ تُجَادِلُ عَنْ نَفْسِهَا وَتُوَفَّىٰ كُلُّ نَفْسٍ مَا عَمِلَتْ
وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۝ وَضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا قَرْيَةً كَانَتْ آمِنَةً
مُطْمَئِنَّةً يَأْتِيهَا رِزْقُهَا رَغَدًا مِنْ كُلِّ مَكَانٍ فَكَفَرَتْ
بِأَنْعُمِ اللَّهِ فَأَذَاقَهَا اللَّهُ لِبَاسَ الْجُوعِ وَالْخَوْفِ بِمَا كَانُوا
يَصْنَعُونَ ۝ وَلَقَدْ جَاءَهُمْ رَسُولٌ مِنْهُمْ فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَهُمُ
الْعَذَابُ وَهُمْ ظَالِمُونَ ۝ فَكُلُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ حَلَالًا طَيِّبًا
وَاشْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ ۝ إِنَّمَا حَرَّمَ
عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيرِ وَمَا أُهِلَّ لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِ ۖ
فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَلَا عَادٍ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ وَ
لَا تَقُولُوا لِمَا تَصِفُ أَلْسِنَتُكُمُ الْكَذِبَ هَٰذَا حَلَالٌ وَهَٰذَا
حَرَامٌ لِتَفْتَرُوا عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ ۚ إِنَّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى
اللَّهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُونَ ۝ مَتَاعٌ قَلِيلٌ وَلَهُمْ عَذَابٌ

हलालन् तय्यिबंव ص - वश्कुरू निअ् - म - तल्लाहि इन् कुन्तुम् इय्याहु
तअ्-बुदून (११४) इन्नमा हर्र-म अ़लैकुमुल्मैत-त वद्-द-म व लह्मल्-ख़िन्ज़ीरि
व मा उहिल-ल लिग़ैरिल्लाहि बिही फ़-मनिज़्तुर-र ग़ै-र बाग़िंव-व ला
आदिन् फ़ - इन्नल्ला - ह ग़फ़ूरुर् - रहीम (११५) व ला तक़ूलू
लिमा तसिफ़ु अल - सि-नतुकुमुल् - कज़ि - ब हाज़ा हलालुंव् - व हाज़ा
हरामुल् - लितफ़्तरू अ़ - लल्लाहिल् - कज़ि - ब ط इन्नल्लज़ी - न
यफ़्तरू - न अ़ - लल्लाहिल् - कज़ि - ब ला युफ़्लिहून ط (११६)
मताअुन् क़लीलुंव् ص - व लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम (११७)

★रु॰ १४/२० आ १०

देता। (१०७) यही लोग हैं, जिन के दिलों पर और कानों पर और आंखों पर ख़ुदा ने मुहर लगा रखी है और यही ग़फ़लत में पड़े हुए हैं। (१०८) कुछ शक नहीं कि ये आख़िरत में घाटा उठाने वाले होंगे। (१०९) फिर जिन लोगों ने तक्लीफ़ें उठाने के बाद वतन छोड़ा, फिर जिहाद किये और जमे रहे, तुम्हारा परवरदिगार उन को बेशक इन (आज़माइशों) के बाद बख़्शने वाला (और उन पर) रहमत करने वाला है। (११०)★

जिस दिन हर नफ़्स (शख़्स, जीव) अपनी तरफ़ से झगड़ा करने आएगा और हर शख़्स को उस के आमाल का पूरा-पूरा बदला दिया जाएगा और किसी का नुक़्सान नहीं किया जाएगा। (१११) और ख़ुदा एक बस्ती की मिसाल बयान फ़रमाता है कि (हर तरह) अम्न-चैन से बसती थी, हर तरफ़ से फैलाव के साथ रोज़ी चली आती थी, मगर उन लोगों ने ख़ुदा की नेमतों की नाशुक्री की, तो ख़ुदा ने उन के आमाल की वजह से उन को भूख और ख़ौफ़ का लिबास पहना कर (ना-शुक्री का) मज़ा चखा दिया। (११२) और उन के पास उन्हीं में से एक पैग़म्बर आया, तो उन्हों ने उस को झुठलाया, सो उन को अज़ाब ने आ पकड़ा और वे ज़ालिम थे। (११३) पस ख़ुदा ने जो तुम को पाक हलाल रोज़ी दी है, उसे खाओ और अल्लाह की नेमतों का शुक्र करो, अगर उसी की इबादत करते हो। (११४) उस ने तुम पर मुर्दार और लहू और सुअर का गोश्त हराम कर दिया है और जिस चीज़ पर ख़ुदा के सिवा किसी और का नाम पुकारा जाए (उस को भी), हां अगर कोई ना-चार हो जाए तो बशर्ते कि गुनाह करने वाला न हो और न हद से निकलने वाला हो, तो ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है (११५) और यों ही झूठ, जो तुम्हारी ज़ुबान पर आ जाए, मत कह दिया करो कि यह हलाल है और यह हराम है कि ख़ुदा पर झूठ बुहतान बांधने लगो। जो लोग ख़ुदा पर झूठ बुहतान बांधते हैं, उन का भला नहीं होगा। (११६) (झूठ का) फ़ायदा तो थोड़ा सा है, मगर (उस के बदले) उनको दर्दनाक अज़ाब (बहुत) होगा। (११७) और जो चीज़ें हम तुमको

★रु. १४/२० आ १०

व अ-लल्लज़ी-न हादू हर्रम्ना मा क-सस्ना अलै-क मिन् क़ब्लु ᶜ व मा ज़-लम्नाहुम् व लाकिन् कानू अन्फ़ुसहुम् यज़्लिमून (११८) सुम्-म इन्-न रब्ब-क लिल्लज़ी-न अमिलुस्सू-अ बिजहालतिन् सुम्-म ताबू मिम्बअ्-दि ज़ालि-क व अस्-लहू ॥ इन् - न रब्ब - क मिम्बअ् - दिहा ल-ग़फ़ूरुर्-रहीम ★ (११९) इन्-न इब्राही - म का - न उम्म-तन् क़ानितल् - लिल्लाहि हनीफ़न् ᵇ व लम् यकु मिनल् - मुश्रिकीन ॥ (१२०) शाकिरल् - लि-अन् - अुमिही ᵇ इज्तबाहु व हदाहु इला सिरातिम्-मुस्तक़ीम (१२१) व आतैनाहु फ़िद्दुन्या ह-स-न - तन् ᵇ व इन्नहू फ़िल्आख़िरति लमिनस् - सालिहीन ᵇ (१२२) सुम्-म औहैना इलै-क अनित्तबिअ्-मिल्ल-त इब्राही-म हनीफ़न् ᵇ व मा का-न मिनल् - मुश्रिकीन (१२३) इन्नमा जुअिलस्-सब्तु अ-लल्-लज़ीनख़्-त-लफ़ू फ़ीहि ᵇ व इन्-न रब्ब-क ल - यह्कुमु बैनहुम् यौमल्-क़ियामति फ़ीमा कानू फ़ीहि यख़्तलिफ़ून (१२४) उद्अु इला सबीलि रब्बि-क बिल्हिक्मति वल्मौअिज़तिल्-ह-स-नति व जादिल्हुम् बिल्लती हि-य अह्सनु ᵇ इन्-न रब्ब-क हु-व अअ्-लमु बिमन् ज़ल्-ल अन् सबीलिही व हु-व अअ्-लमु बिल्मुह-तदीन (१२५) व इन् आक़ब्तुम् फ़-आक़िबू बिमिस्लि मा अूक़िब्तुम् बिही ᵇ व लइन् स-बर्तुम् लहु-व ख़ैरुल्लिस्साबिरीन (१२६) वस्बिर् व मा सब्रु - क इल्ला बिल्लाहि व ला तह् - ज़न् अलैहिम् व ला तकु फ़ी ज़ैक़िम् - मिम्मा यम् - कुरून (१२७) इन्नल्ला - ह म - अल्लज़ीनत् - त - क़ौवल्लज़ी-न हुम् मुह्सिनून ★ (१२८)

أَلِيمٌ ۞ وَعَلَى الَّذِينَ هَادُوا حَرَّمْنَا مَا قَصَصْنَا عَلَيْكَ
مِن قَبْلُ ۖ وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ وَلَٰكِن كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ۞
ثُمَّ إِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِينَ عَمِلُوا السُّوءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابُوا مِن
بَعْدِ ذَٰلِكَ وَأَصْلَحُوا إِنَّ رَبَّكَ مِن بَعْدِهَا لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ ۞ إِنَّ
إِبْرَاهِيمَ كَانَ أُمَّةً قَانِتًا لِّلَّهِ حَنِيفًا وَلَمْ يَكُ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۞
شَاكِرًا لِّأَنْعُمِهِ ۚ اجْتَبَاهُ وَهَدَاهُ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ۞ وَآتَيْنَاهُ
فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً ۖ وَإِنَّهُ فِي الْآخِرَةِ لَمِنَ الصَّالِحِينَ ۞ ثُمَّ
أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ أَنِ اتَّبِعْ مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا ۖ وَمَا كَانَ مِنَ
الْمُشْرِكِينَ ۞ إِنَّمَا جُعِلَ السَّبْتُ عَلَى الَّذِينَ اخْتَلَفُوا فِيهِ ۚ وَإِنَّ
رَبَّكَ لَيَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۞
ادْعُ إِلَىٰ سَبِيلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ ۖ وَ
جَادِلْهُم بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ ۚ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَن ضَلَّ عَن
سَبِيلِهِ ۖ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ۞ وَإِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوا
بِمِثْلِ مَا عُوقِبْتُم بِهِ ۖ وَلَئِن صَبَرْتُمْ لَهُوَ خَيْرٌ لِّلصَّابِرِينَ ۞
وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ إِلَّا بِاللَّهِ ۚ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُ
فِي ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُونَ ۞ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الَّذِينَ اتَّقَوا وَّ
الَّذِينَ هُم مُّحْسِنُونَ ۞

★रु. १५/२१ आ ६ ★रु. १६/२२ आ ६

पहले बयान कर चुके हैं वह यहूदियों पर हराम कर दी थीं और हम ने उन पर कुछ ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि वही अपने आप पर ज़ुल्म किया करते थे। (११८) फिर जिन लोगों ने नादानी से बुरा काम किया, फिर उसके बाद तौबा की और नेक हो गये, तो तुम्हारा परवरदिगार (उन को) तौबा करने और नेक हो जाने के बाद उन को बख़्शने वाला और (उन पर) रहमत करने वाला है। (११९)★

बेशक इब्राहीम (लोगों के) इमाम (और) ख़ुदा के फ़रमांबरदार थे, जो एक तरफ़ के हो रहे थे और मुश्रिकों में से न थे।[1] (१२०) उस की नेमतों के शुक्रगुज़ार थे। ख़ुदा ने उन को चुन लिया था और (अपनी) सीधी राह पर चलाया था। (१२१) और हम ने उन को दुनिया में भी ख़ूबी दी थी और वह आख़िरत में भी नेक लोगो में होंगे। (१२२) फिर हम ने तुम्हारी तरफ़ वह्य भेजी कि दीने इब्राहीम की पैरवी अख़्तियार करो, जो एक तरफ़ के हो रहे थे और मुश्रिकों में से न थे। (१२३) हफ़्ते (शनिवार) का दिन तो उन्हीं लोगों के लिए मुक़र्रर किया गया था, जिन्हों ने उस में इख़्तिलाफ़ किया और तुम्हारा परवरदिगार क़ियामत के दिन उन बातों का फ़ैसला कर देगा, जिन से वे इख़्तिलाफ़ करते थे। (१२४) (ऐ पैग़म्बर!) लोगों को दानिश और नेक नसीहत से अपने परवरदिगार के रास्ते की तरफ़ बुलाओ और बहुत ही अच्छे तरीक़े से उन से मुनाज़रा करो। जो उस के रास्ते से भटक गया तुम्हारा परवरदिगार उसे भी ख़ूब जानता है और जो रास्ते पर चलने वाले हैं, उन्हें भी ख़ूब जानता है। (१२५) अगर उन को तक्लीफ़ देनी चाहो, तो उतनी ही दो, जितनी तक्लीफ़ तुम को उन से पहुंची और अगर सब्र करो, तो वह सब्र करने वालों के लिए बहुत अच्छा है। (१२६) और सब्र ही करो और तुम्हारा सब्र भी ख़ुदा ही की मदद से है और उन के बारे में ग़म न करो और जो ये बुरी चालें चलते हैं, उस से तंगदिल न हो। (१२७) कुछ शक नहीं कि जो परहेज़गार हैं और जो नेक और भले हैं, ख़ुदा उन का मददगार है। (१२८)★

१. यानी हलाल और हराम में और दीन की बातों में अमल मिल्लते इब्राहीम है और सब लोग जो कहते हैं आप को 'हनीफ़' और शिर्क करते हैं, वे आप की राह पर नहीं।

★रु. १५/२१ आ ६ ★रु. १६/२२ आ ६

पन्द्रहवां पारः सुब्हानल्लज़ी

१७ सूरतु बनी इस्राईल ५०

(मक्की) इस सूरः में अरबी के ६७१० अक्षर १५८२ शब्द, १११ आयतें और १२ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्‌मानिर्रहीम ●

सुब्हानल्लज़ी अस्रा बिअ़ब्दिही लैलम्मिनल् - मस्जिदिल् - ह़रामि इलल् - मस्जिदिल् - अक़्सल्लज़ी बारक्ना ह़ौलहू लिनुरियहू मिन् आयातिना इन्नहू हुवस्समीअुल्-बसीर (१) व आतैना मूसल्-किता-ब व ज-अ़ल्नाहु हुदल्लिबनी इस्राई - ल अल्ला तत्तख़िज़ू मिन् दूनी वकीला (२) ज़ुर्रिय्य-त मन् ह़-मल्ना म-अ़ नूह़िन् इन्नहू का-न अ़ब्दन् शकूरा (३) व क़ज़ैना इला बनी इस्राई - ल फ़िल्किताबि लतुफ़्सिदुन-न फ़िल्अर्ज़ि मर्रतैनि व ल-तअ़्लुन्-न अुलुव्वन् कबीरा (४) फ़-इज़ा जा-अ वअ़्-दु ऊलाहुमा ब-अ़स्ना अ़लैकुम् अ़िबादल्लना उली बअ्सिन् शदीदिन् फ़ जासू ख़िलालद्दियारि व का-न वअ़्-दम्-मफ़्अ़ूला (५) सुम्-म र-दद्ना लकुमुल्कर्र-त अ़लैहिम् व अम्दद्नाकुम् बि-अम्वालिंव्-व बनी-न व ज-अ़ल्नाकुम् अक्स-र नफ़ीरा (६) इन् अह़्सन्तुम् अह़्सन्तुम् लिअन्फ़ुसिकुम् व इन् अ-सअ्-तुम् फ़-लहा फ़ - इज़ा जा-अ वअ़्-दुल्आख़िरति लियसूउ वुजूहकुम् व लियद्ख़ुलुल्-मस्जि-द कमा द-ख़लूहु अव्व-ल मर्रतिंव्-व लियुतब्बिरू मा अ़लौ तत्बीरा (७) असा रब्बुकुम् अंय्यर्-ह़-मकुम् व इन् अ़ुत्तुम् अ़ुद्ना व ज-अ़ल्ना ज-हन्न-म लिल्काफ़िरी-न ह़सीरा (८) इन्-न हाज़ल्क़ुर्आ-न यह्दी लिल्लती हि-य अक़्वमु व युबश्शिरुल्-मुअ्मिनीनल्लज़ी-न यअ़्-मलूनस्-सालिहाति अन्-न लहुम् अज्-रन् कबीरा (९)

سُورَةُ بَنِيٓ إِسْرَآءِيلَ مَكِّيَّةٌ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
سُبْحٰنَ الَّذِيْٓ اَسْرٰى بِعَبْدِهٖ لَيْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ
اِلَى الْمَسْجِدِ الْاَقْصَا الَّذِيْ بٰرَكْنَا حَوْلَهٗ لِنُرِيَهٗ مِنْ اٰيٰتِنَا
اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ۝ وَاٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَجَعَلْنٰهُ
هُدًى لِّبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اَلَّا تَتَّخِذُوْا مِنْ دُوْنِيْ وَكِيْلًا ۝ ذُرِّيَّةَ
مَنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ اِنَّهٗ كَانَ عَبْدًا شَكُوْرًا ۝ وَقَضَيْنَآ اِلٰى
بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ فِي الْكِتٰبِ لَتُفْسِدُنَّ فِي الْاَرْضِ مَرَّتَيْنِ وَلَتَعْلُنَّ
عُلُوًّا كَبِيْرًا ۝ فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ اُوْلٰىهُمَا بَعَثْنَا عَلَيْكُمْ عِبَادًا لَّنَآ
اُولِيْ بَاْسٍ شَدِيْدٍ فَجَاسُوْا خِلٰلَ الدِّيَارِ وَكَانَ وَعْدًا مَّفْعُوْلًا ۝
ثُمَّ رَدَدْنَا لَكُمُ الْكَرَّةَ عَلَيْهِمْ وَاَمْدَدْنٰكُمْ بِاَمْوَالٍ وَّبَنِيْنَ وَ
جَعَلْنٰكُمْ اَكْثَرَ نَفِيْرًا ۝ اِنْ اَحْسَنْتُمْ اَحْسَنْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ
وَاِنْ اَسَاْتُمْ فَلَهَا فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ الْاٰخِرَةِ لِيَسُوْٓءٗا وُجُوْهَكُمْ
وَلِيَدْخُلُوا الْمَسْجِدَ كَمَا دَخَلُوْهُ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّلِيُتَبِّرُوْا مَا عَلَوْا
تَتْبِيْرًا ۝ عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يَّرْحَمَكُمْ وَاِنْ عُدْتُّمْ عُدْنَا وَجَعَلْنَا
جَهَنَّمَ لِلْكٰفِرِيْنَ حَصِيْرًا ۝ اِنَّ هٰذَا الْقُرْاٰنَ يَهْدِيْ لِلَّتِيْ
هِيَ اَقْوَمُ وَيُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِيْنَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ

व· लाज़िम

१७ सूरः बनी इस्राईल ५०

सूरः बनी इस्राईल मक्की है और इस में एक सौ ग्यारह आयतें और बारह रुकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है !

वह (ज़ात) पाक है, जो एक रात अपने बन्दे को मस्जिदुल हराम (यानी खाना काबा) से मस्जिदे अक्सा (यानी बैतुल मक्दिस) तक, जिस के चारों तरफ़ हम ने बरकतें रखी हैं, ले गया, ताकि हम उसे अपनी (क़ुदरत की) निशानियां दिखाएं। बेशक वह सुनने वाला (और) देखने वाला है। (१) और हम ने मूसा को किताब इनायत की थी और उस को बनी इस्राईल के लिए रहनुमा मुक़र्रर किया था कि मेरे सिवा किसी को कारसाज़ न ठहराना। (२) ऐ उन लोगों की औलाद! जिन को हम ने नूह के साथ (किश्ती में) सवार किया था ! बेशक नूह (हमारे) शुक्र-गुज़ार बन्दे थे। (३) और हम ने किताब में बनी इस्राईल से कह दिया था कि तुम ज़मीन में दो बार फ़साद मचाओगे और बड़ी सरकशी करोगे। (४) पस जब पहले (वायदे) का वक्त आया, तो हम ने अपने सख्त लड़ाई लड़ने वाले बन्दे तुम पर मुसल्लत कर दिए और वे शहरों के अन्दर फैल गये और वह वायदा पूरा हो कर रहा। (५) फिर हम ने दूसरी बार तुम को उन पर ग़लबा दिया और माल और बेटों से तुम्हारी मदद की और तुम को बड़ी जमाअत बना दिया (६) अगर तुम भला करोगे तो अपनी जानों के लिए करोगे और अगर बुरा करोगे तो (उन का) वबाल भी तुम्हारी ही जानों पर होगा, फिर जब दूसरे (वायदे) का वक्त आया (तो हम ने फिर अपने बन्दे भेजे) ताकि तुम्हारे चेहरों को बिगाड़ दें और जिस तरह पहली बार मस्जिद (बैतुल मक्दिस) में दाखिल हो गये थे, उसी तरह फिर उस में दाखिल हो जाएं और जिस चीज़ पर ग़लबा पाएं उसे तबाह कर दें। (७) उम्मीद है कि तुम्हारा परवरदिगार तुम पर रहम करे और अगर तुम फिर वही (हरकतें) करोगे तो हम भी वही (पहला-सा सुलूक) करेंगे ※ और हमने जहन्नम को काफ़िरों के लिए क़ैदखाना बना रखा है। (८) यह क़ुरआन वह रास्ता दिखाता है, जो सब से सीधा है और मोमिनों को जो नेक अमल करते हैं, खुशखबरी देता है कि उन के लिए बड़ा अज्र है। (९) और

※ व. ला.

व अन्नल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिल्आख़िरति अअ्-तद्ना लहुम् अज़ाबन् अलीमा ✱ (१०) व यद्अुल् - इन्सानु बिश्शर्रि दुआ-अहू बिल्ख़ैरि ᵇ व कानल्-इन्सानु अजूला (११) व ज-अल्नल्लै-ल वन्नहा-र आयतैनि फ़-महौना आयतल्लैलि व ज-अल्ना आयतन्नहारि मुब्सि-र-तल् - लि-तब्तग़ू फ़ज़्लम्मिर्-रब्बिकुम् व लितअ्-लमू अ-द-दस्सिनी-न वल्हिसा-ब ᵇ व कुल्-ल शैइन् फ़स्सल्नाहु तफ़्सीला (१२) व कुल्-ल इन्सानिन् अल्ज़म्नाहु ताइ-रहू फ़ी अुनुक़िही ᵇ व नुख़्रिजु लहू यौमल्-क़ियामति किताबंय्यल्क़ाहु मन्शूरा (१३) इक़्रअ् किता-ब - क ᵇ कफ़ा बिनफ़्सिकल्-यौ-म अलै-क हसीबा ᵇ (१४) मनिह्तदा फ़इन्नमा यह्तदी लिनफ़्सिही ᵹ व मन् ज़ल् - ल फ़-इन्नमा यज़िल्लु अलैहा ᵇ व ला तज़िरु वाज़िरतुंव्विज़-र उख़रा ᵇ व मा कुन्ना मुअज़्ज़िबी-न हत्ता नब्-अ-स रसूला (१५)

لَهُمْ اَجْرًا كَبِيْرًا ۙ وَّاَنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ اَعْتَدْنَا
لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۞ وَيَدْعُ الْاِنْسَانُ بِالشَّرِّ دُعَآءَهٗ بِالْخَيْرِ ؕ
وَكَانَ الْاِنْسَانُ عَجُوْلًا ۞ وَجَعَلْنَا الَّيْلَ وَالنَّهَارَ اٰيَتَيْنِ
فَمَحَوْنَآ اٰيَةَ الَّيْلِ وَجَعَلْنَآ اٰيَةَ النَّهَارِ مُبْصِرَةً لِّتَبْتَغُوْا فَضْلًا
مِّنْ رَّبِّكُمْ وَلِتَعْلَمُوْا عَدَدَ السِّنِيْنَ وَالْحِسَابَ ؕ وَكُلَّ شَيْءٍ
فَصَّلْنٰهُ تَفْصِيْلًا ۞ وَكُلَّ اِنْسَانٍ اَلْزَمْنٰهُ طٰٓئِرَهٗ فِيْ عُنُقِهٖ ؕ
وَنُخْرِجُ لَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ كِتٰبًا يَّلْقٰىهُ مَنْشُوْرًا ۞ اِقْرَاْ كِتٰبَكَ ؕ
كَفٰى بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيْبًا ۞ مَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا
يَهْتَدِيْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ؕ وَلَا تَزِرُ
وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ؕ وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِيْنَ حَتّٰى نَبْعَثَ رَسُوْلًا ۞
وَاِذَآ اَرَدْنَآ اَنْ نُّهْلِكَ قَرْيَةً اَمَرْنَا مُتْرَفِيْهَا فَفَسَقُوْا فِيْهَا
فَحَقَّ عَلَيْهَا الْقَوْلُ فَدَمَّرْنٰهَا تَدْمِيْرًا ۞ وَكَمْ اَهْلَكْنَا مِنَ
الْقُرُوْنِ مِنْۢ بَعْدِ نُوْحٍ ؕ وَكَفٰى بِرَبِّكَ بِذُنُوْبِ عِبَادِهٖ خَبِيْرًا
بَصِيْرًا ۞ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْعَاجِلَةَ عَجَّلْنَا لَهٗ فِيْهَا مَا نَشَآءُ
لِمَنْ نُّرِيْدُ ثُمَّ جَعَلْنَا لَهٗ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلٰىهَا مَذْمُوْمًا
مَّدْحُوْرًا ۞ وَمَنْ اَرَادَ الْاٰخِرَةَ وَسَعٰى لَهَا سَعْيَهَا وَهُوَ
مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ كَانَ سَعْيُهُمْ مَّشْكُوْرًا ۞ كُلًّا نُّمِدُّ هٰٓؤُلَآءِ

व इज़ा अ-रद्ना अन्नुह्लि-क क़र्य-तन् अ-मर्ना मुत-रफ़ीहा फ़-फ़-सक़ू फ़ीहा फ़-हक़्-क़ अलैहल्क़ौलु फ़-दम्मर्नाहा तद्मीरा (१६) व कम् अह्-लक्ना मिनल्क़ुरूनि मिम्बअ्-दि नूहिन् ᵇ व कफ़ा बिरब्बि-क बिज़ुनूबि अिबादिही ख़बीरम्-बसीरा (१७) मन् का - न युरीदुल्-आजि-ल-त अज्जल्ना लहू फ़ीहा मा नशाउ लिमन् नुरीदु सुम्-म-ज-अल्ना लहू जहन्न-म ᵹ यस्लाहा मज़्मूमम्-मद्हूरा (१८) व मन् अरादल् - आख़ि-र-त व सआ लहा सअ्-यहा व हु-व मुअ्मिनुन् फ़उलाइ-क का-न सअ्-युहुम् मश्कूरा (१९)

★रु. १/१ आ १०

यह भी (बताता है) कि जो आखिरत पर ईमान नहीं रखते, उन के लिए दुख देने वाला अज़ाब तैयार कर रखा है। (१०)★

और इंसान जिस तरह (जल्दी से) भलाई मांगता है, इसी तरह बुराई मांगता है और इंसान जल्दबाज़ (पैदा हुआ) है। (११) और हम ने दिन और रात को दो निशानियां बनाया है, रात की निशानी को तारीक बनाया और दिन की निशानी को रोशन, ताकि तुम अपने परवरदिगार का फ़ज़्ल (यानी) रोज़ी तलाश करो और वर्षों की गिनती और हिसाब जानो और हम ने हर चीज़ की (अच्छी तरह) तफ़्सील कर दी है। (१२) और हमने हर इंसान के आमाल को (किताब की सूरत में) उस के गले में लटका दिया है और क़ियामत के दिन (वह) किताब उसे निकाल दिखाएंगे, जिसे वह खुला देखेगा। (१३) कहा जाएगा (कि) अपनी किताब पढ़ ले, तू आज अपना आप ही हिसाब लेने वाला काफ़ी है। (१४) जो शख़्स हिदायत अपनाता है, तो अपने लिए अपनाता है और जो गुमराह होता है, तो गुमराही का नुक़्सान भी उसी को होगा और कोई शख़्स किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा और जब तक हम पैग़म्बर न भेज लें, अज़ाब नहीं दिया करते (१५) और जब हमारा इरादा किसी बस्ती के हलाक करने का हुआ तो वहां के खुशहाल लोगों को (गंदी बातों पर) लगा दिया, तो वे ना-फ़रमानियां करते रहे। फिर उस पर (अज़ाब का) हुक्म साबित हो गया और हमने उसे हलाक कर डाला। (१६) और हमने नूह के बाद बहुत सी उम्मतों को हलाक कर डाला और तुम्हारा परवरदिगार अपने बन्दों के गुनाहों को जानने और देखने वाला काफ़ी है। (१७) जो शख़्स दुनिया (की खुशहाली) का ख्वाहिशमंद हो तो हम उस में से जिसे चाहते हैं और जितना चाहते हैं, जल्द दे देते हैं, फिर उस के लिए जहन्नम को (ठिकाना) मुक़र्रर कर रखा है, जिस में नफ़रीन सुन कर और (खुदा की दरगाह से) रांदा हो कर दाखिल होगा। (१८) और जो शख़्स आखिरत की तलब में हो और उस में इतनी कोशिश करे जितनी वह कर सकता है और वह मोमिन भी हो तो ऐसे ही लोगों की कोशिश ठिकाने लगती है। (१९) हम उन को और उन

★रु. १/१ आ १०

कुल्लन्नुमिद्दु हाउलाइ व हाउलाइ मिन् अता - इ रब्बि - क, व मा का-न अताउ रब्बि-क मह़्ज़ूरा (२०) उन्ज़ुर् कै-फ फ़ज़्ज़ल्ना बअ़्-ज़हुम् अला बअ़्-ज़िन्, व लल्आख़िरतु अक्बरु द-र-जातिंव-व अक्बरु तफ़्ज़ीला (२१) ला तज्अ़ल् म-अ़ल्लाहि इलाहन् आख़-र फ़-तक़्अु-द मज़्मूमम्-मख़्ज़ूला ★ (२२)

व क़ज़ा रब्बु-क अल्ला तअ़्-बुदू इल्ला इय्याहु व बिल् - वालिदैनि इह्सानन्, इम्मा यब्लुग़न्-न अ़िन्दकल्-कि-ब-र अ-ह़दुहुमा औ किलाहुमा फ़ला तक़ुल्लहुमा उफ़्फ़िंव्-व ला तन्हर्हुमा व क़ुल्लहुमा क़ौलन् करीमा (२३) वख़्फ़िज़् लहुमा जनाह़ज़्-ज़ुल्लि मिनर्रह़्मति व क़ुर्रब्बिर् - ह़म्हुमा कमा रब्बयानी सग़ीरा, (२४) रब्बुकुम् अअ़् - लमु बिमा फ़ी नुफ़ूसिकुम्, इन् तकूनू सालिही-न फ़-इन्नहू का-न लिल्-अव्वाबी-न ग़फ़ूरा (२५) व आति ज़ल्क़ुर्बा ह़क़्क़हू वल्मिस्की-न वब्नस्सबीलि व ला तुबज़्ज़िर् तब्ज़ीरा (२६) इन्नल् - मुबज़्ज़िरी - न कानू इख़्वानश् - शयातीनि, व कानश्शैतानु लिरब्बिही कफ़ूरा (२७) व इम्मा तुअ़् - रिज़न्-न अ़न्हुमुब्तिग़ा-अ रह़्मतिम्-मिर् - रब्बि-क तर्जूहा फ़-क़ुल्लहुम् क़ौलम्-मैसूरा (२८) व ला तज-अ़ल् य-द-क मग़लूल-तन् इला अ़ुनुक़ि-क व ला तब्सुत्हा कुल्लल्बस्ति फ़-तक़्अु-द मलूमम्-मह़्सूरा (२९) इन्-न रब्ब-क यब्सुतुर्रिज़-क़ लिमंय्यशाउ व यक़्दिरु, इन्नहू का - न बिअ़िबादिही ख़बीरम् - बसीरा ★(३०) व ला तक़्तुलू औलादकुम् ख़श् - य - त इम्लाक़िन्, नह़्नु नर्ज़ुक़ुहुम् व इय्याकुम्, इन-न क़त्-लहुम् का-न ख़ित्-अन् कबीरा (३१) व ला तक़्रबुज़्ज़िना इन्नहू का-न फ़ाहि-श-तन्, व सा-अ सबीला (३२)

وَّهٰٓؤُلَآءِ مِنْ عَطَآءِ رَبِّكَ وَمَا كَانَ عَطَآءُ رَبِّكَ مَحْظُوْرًا ۝
اُنْظُرْ كَيْفَ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ وَلَلْاٰخِرَةُ اَكْبَرُ دَرَجٰتٍ
وَّاَكْبَرُ تَفْضِيْلًا ۝ لَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتَقْعُدَ مَذْمُوْمًا
مَّخْذُوْلًا ۝ وَقَضٰى رَبُّكَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا
اِمَّا يَبْلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ اَحَدُهُمَآ اَوْ كِلٰهُمَا فَلَا تَقُلْ لَّهُمَآ اُفٍّ
وَّلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُلْ لَّهُمَا قَوْلًا كَرِيْمًا ۝ وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ
الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَّبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِيْ صَغِيْرًا ۝
رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَا فِيْ نُفُوْسِكُمْ اِنْ تَكُوْنُوْا صٰلِحِيْنَ فَاِنَّهٗ كَانَ
لِلْاَوَّابِيْنَ غَفُوْرًا ۝ وَاٰتِ ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهٗ وَالْمِسْكِيْنَ وَابْنَ
السَّبِيْلِ وَلَا تُبَذِّرْ تَبْذِيْرًا ۝ اِنَّ الْمُبَذِّرِيْنَ كَانُوْٓا اِخْوَانَ
الشَّيٰطِيْنِ وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِرَبِّهٖ كَفُوْرًا ۝ وَاِمَّا تُعْرِضَنَّ
عَنْهُمُ ابْتِغَآءَ رَحْمَةٍ مِّنْ رَّبِّكَ تَرْجُوْهَا فَقُلْ لَّهُمْ قَوْلًا مَّيْسُوْرًا ۝
وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُوْلَةً اِلٰى عُنُقِكَ وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبَسْطِ
فَتَقْعُدَ مَلُوْمًا مَّحْسُوْرًا ۝ اِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَ
يَقْدِرُ اِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًا بَصِيْرًا ۝ وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَوْلَادَكُمْ
خَشْيَةَ اِمْلَاقٍ نَحْنُ نَرْزُقُهُمْ وَاِيَّاكُمْ اِنَّ قَتْلَهُمْ كَانَ خِطْاً
كَبِيْرًا ۝ وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنٰٓى اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً وَسَآءَ سَبِيْلًا ۝

★रु. २/२ आ १२ ★रु. ३/३ आ ८

को, सब को तुम्हारे परवरदिगार की बख़्शिश से मदद देते हैं और तुम्हारे परवरदिगार की बख़्शिश (किसी से) रुकी हुई नहीं। (२०) देखो हम ने किस तरह कुछ को कुछ पर फ़ज़ीलत बख़्शी है और आख़िरत दर्जों में (दुनिया से) बहुत बरतर और बरतरी में कहीं बढ़ कर है। (२१) और ख़ुदा के साथ कोई और माबूद न बनाना कि मलामतें सुन कर और बेकस हो कर बैठे रह जाओगे। (२२)★

और तुम्हारे परवरदिगार ने इर्शाद फ़रमाया है कि उस के सिवा किसी की इबादत न करो। और मां-बाप के साथ भलाई करते रहो। अगर उन में से एक या दोनों तुम्हारे सामने बुढ़ापे को पहुंच जाएं, तो उन को उफ़ तक न कहना और न उन्हें झिड़कना और उन से बात अदब के साथ करना।[१] (२३) और नियाज़मंदी के साथ उन के आगे झुके रहो और उन के हक़ में दुआ करो कि ऐ परवरदिगार! जैसा उन्हों ने मुझे बचपन में (मुहब्बत से) पाला-पोसा है, तू भी उन (के हाल) पर रहमत फ़रमा। (२४) जो कुछ तुम्हारे दिलों में है, तुम्हारा परवरदिगार उसे अच्छी तरह जानता है। अगर तुम नेक होगे, तो वह रुजूअ लाने वालों को बख़्श देने वाला है। (२५) और रिश्तेदारों और मुहताजों और मुसाफ़िरों को उन का हक़ अदा करो और फ़िज़ूलख़र्ची से माल न उड़ाओ। (२६) कि फ़िज़ूलख़र्ची करने वाले तो शैतान के भाई हैं और शैतान अपने परवरदिगार (की नेमतों) का कुफ़ान करने वाला (यानी ना-शुक्रा) है। (२७) और अगर तुम अपने परवरदिगार की रहमत के इन्तिज़ार में, जिस की तुम्हें उम्मीद हो, उन (हक़दारों) की तरफ़ तवज्जोह न कर सको, तो उन से नर्मी से बात कह दिया करो।[२] (२८) और अपने हाथ को न तो गरदन से बंधा हुआ (यानी बहुत तंग) कर लो (कि किसी को कुछ दो ही नहीं) और न बिल्कुल खोल ही दो (कि सभी कुछ दे डालो और अंजाम यह हो) कि मलामत किए हुए और निचले हो कर बैठ जाओ। (२९) बेशक तुम्हारा परवरदिगार, जिस की रोज़ी चाहता है, फैला देता है और (जिस की रोज़ी चाहता है) तंग कर देता है। वह अपने बन्दों से ख़बरदार है और (उनको) देख रहा है★ (३०)

और अपनी औलाद को मुफ़्लिसी के डर से क़त्ल न करना, (क्योंकि) उन को और तुम को हम ही रोज़ी देते हैं। कुछ शक नहीं कि इन का मार डालना सख़्त गुनाह है। (३१) और ज़िना

---

१. यानी रंज व अफ़सोस और ना-ख़ुशी का कलिमा मुंह से न निकालना और न घुड़कना-झिड़कना और यह जो फ़रमाया कि बुढ़ापे को पहुंच जाएं तो उन को उफ़ तक न कहना, यह इस लिए कि बुढ़ापे में मां-बाप की कुछ क़द्र और परवाह नहीं की जाती। उन की इज़्ज़त, अदब और एहतराम करना, चाहे वे जवान हों या बूढ़े, दोनों हालतों में फ़र्ज़ है। इन्सानियत और सआदतमंदी का तक़ाज़ा भी यही है कि मां-बाप को ख़ुश रखा जाए, उन का अदब किया जाए। वह शख़्स निहायत ख़ुशनसीब है, जो मां-बाप की ख़िदमत करे और उन को ख़ुश रखे।

२. यानी देने को कुछ पास नहीं है और हाथ तंग होने की वजह से उन की तरफ़ तवज्जोह नहीं कर सकते और चाहते यह हो कि ख़ुदा दे तो उन को दो। तो इस शक्ल में उन को नर्मी से समझा दिया करो कि ख़ुदा के फ़ज़्ल से माल हाथ आता है तो तुम को भी देते हैं।

★रु. २/२ आ १२ ★रु. ३/३ आ ८

व ला तक़्तुलुन्-नफ़्सल्लती हर्र-मल्लाहु इल्ला बिल्हक़्क़ि ط व मन् क़ुति-ल मज़्लूमन् फ़-क़द् ज-अ़ल्ना लिवलिय्यिही सुल्तानन् फ़ला युस्रिफ़्-फ़िल्क़त्लि ط इन्नहू का-न मन्सूरा (३३) व ला तक़्रबू मालल् - यतीमि इल्ला बिल्लती हि-य अह़्सनु ह़त्ता यब्लु - ग अशुद्दहू ص व औफ़ू बिल्अ़ह्दि ج

इन्नल्अ़ह - द का - न मस्ऊला (३४) व औफ़ुल्कै-ल इज़ा किल्तुम् व ज़िनू बिल् - क़िस्तासिल् - मुस्तक़ीमि ط ज़ालि - क ख़ैरुंव-व अह़्सनु तअ्-वीला (३५) व ला तक़्फ़ु मा लै-स ल-क बिही अ़िल्मुन् ط इन्नस्सम्-अ़ वल्ब-स-र वल्फ़ुआ - द कुल्लु उलाइ-क का-न अ़न्हु मस्ऊला (३६) व ला तम्शि फ़िल्अर्ज़ि म-र-ह़न् ج इन्न-क लन् तख़्रिक़ल्-अर्-ज़ व लन् तब्लुग़ल्-जिबा-ल तूला (३७) कुल्लु ज़ालि-क का-न सय्यिउहू अ़िन्-द रब्बि-क मक्रूहा (३८) ज़ालि-क मिम्मा औहा इलै-क रब्बु-क मिनल्हिक्मति ط

وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ ۗ وَمَن قُتِلَ مَظْلُومًا
فَقَدْ جَعَلْنَا لِوَلِيِّهِ سُلْطَانًا فَلَا يُسْرِف فِّي الْقَتْلِ ۖ إِنَّهُ كَانَ
مَنصُورًا ۝ وَلَا تَقْرَبُوا مَالَ الْيَتِيمِ إِلَّا بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ حَتَّىٰ
يَبْلُغَ أَشُدَّهُ ۚ وَأَوْفُوا بِالْعَهْدِ ۖ إِنَّ الْعَهْدَ كَانَ مَسْئُولًا ۝ وَأَوْفُوا
الْكَيْلَ إِذَا كِلْتُمْ وَزِنُوا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيمِ ۚ ذَٰلِكَ خَيْرٌ وَ
أَحْسَنُ تَأْوِيلًا ۝ وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ ۚ إِنَّ السَّمْعَ
وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ أُولَٰئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْئُولًا ۝ وَلَا تَمْشِ فِي
الْأَرْضِ مَرَحًا ۖ إِنَّكَ لَن تَخْرِقَ الْأَرْضَ وَلَن تَبْلُغَ الْجِبَالَ طُولًا ۝
كُلُّ ذَٰلِكَ كَانَ سَيِّئُهُ عِندَ رَبِّكَ مَكْرُوهًا ۝ ذَٰلِكَ مِمَّا أَوْحَىٰ
إِلَيْكَ رَبُّكَ مِنَ الْحِكْمَةِ ۗ وَلَا تَجْعَلْ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ فَتُلْقَىٰ فِي
جَهَنَّمَ مَلُومًا مَّدْحُورًا ۝ أَفَأَصْفَاكُمْ رَبُّكُم بِالْبَنِينَ وَاتَّخَذَ مِنَ
الْمَلَائِكَةِ إِنَاثًا ۚ إِنَّكُمْ لَتَقُولُونَ قَوْلًا عَظِيمًا ۝ وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِي هَٰذَا
الْقُرْآنِ لِيَذَّكَّرُوا وَمَا يَزِيدُهُمْ إِلَّا نُفُورًا ۝ قُل لَّوْ كَانَ مَعَهُ آلِهَةٌ
كَمَا يَقُولُونَ إِذًا لَّابْتَغَوْا إِلَىٰ ذِي الْعَرْشِ سَبِيلًا ۝ سُبْحَانَهُ وَ
تَعَالَىٰ عَمَّا يَقُولُونَ عُلُوًّا كَبِيرًا ۝ تُسَبِّحُ لَهُ السَّمَاوَاتُ السَّبْعُ وَالْأَرْضُ
وَمَن فِيهِنَّ ۚ وَإِن مِّن شَيْءٍ إِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهِ وَلَٰكِن لَّا تَفْقَهُونَ
تَسْبِيحَهُمْ ۗ إِنَّهُ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا ۝ وَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ جَعَلْنَا

व ला तज्अ़ल् म-अ़ल्लाहि इलाहन् आख़-र फ़ तुल्क़ा फ़ी ज-हन्न-म मलमम्-मद्हूरा (३९) अ-फ़-अस्फ़ाकुम् रब्बुकुम् बिल्बनी-न वत्त-ख़-ज़ मिनल्-मलाइकति इनासन् ط इन्नकुम् ल - तक़ूलू-न क़ौलन् अ़ज़ीमा ★ (४०) व ल - क़द् सर्रफ़्ना फ़ी हाज़ल् - क़ुर्आनि लि - यज़्ज़क्करू ط व मा यज़ीदुहुम् इल्ला नुफ़ूरा (४१) क़ुल् लौ का-न म-अ़हू आलिहतुन् कमा यक़ूलू-न इज़ल्लब्तग़ौ इला ज़िल्अ़र्शि सबीला (४२) सुब्हानहू व तआ़ला अ़म्मा यक़ूलू-न अ़ुलुव्वन् कबीरा (४३) तुसब्बिहु लहुस्समावातुस्-सब्अ़ु वल्अर्ज़ु व मन् फ़ीहिन् - न ط व इम्मिन् शैइन् इल्ला युसब्बिहु बिह़म्दिही व लाकिल्ला तफ़्क़हू - न तस्बीहहुम् ط इन्नहू का - न ह़लीमन् ग़फ़ूरा (४४)

★रु. ४/४ आ १०

के पास भी न जाना कि वह बे-हयाई और बुरी राह है। (३२) और जिस जानदार का मारना ख़ुदा ने हराम किया है, उसे क़त्ल न करना मगर जायज़ तौर पर (यानी शरीअत के फ़त्वे के मुताबिक़) और जो शख़्स ज़ुल्म से क़त्ल किया जाए, हम ने उस के वारिस को अख़्तियार दिया है (कि ज़ालिम क़ातिल से बदला ले) तो उस को चाहिए कि क़त्ल (के क़िसास) में ज़्यादती न करे कि वह मंसूर व फ़त्हयाब है। (३३) और यतीम के माल के पास भी न फटकना, मगर ऐसे तरीक़े से कि बहुत बेहतर हो, यहां तक कि वह जवानी को पहुंच जाए और अह्द (वायदे) को पूरा करो कि अह्द के बारे में ज़रूर पूछ होगी। (३४) और जब (कोई चीज़) नाप कर देने लगो, तो पैमाना पूरा भरा करो और (जब तोल कर दो, तो) तराज़ू सीधी रख कर तोला करो। यह बहुत अच्छी बात है और अंजाम के लिहाज़ से भी बहुत बेहतर है। (३५) और (ऐ बन्दे!) जिस चीज़ का तुझे इल्म नहीं, उस के पीछे न पड़ कि कान और आंख और दिल इन सब (अंगों) से ज़रूर पूछ-ताछ होगी। (३६) और ज़मीन पर अकड़ कर (और तन कर) मत चल कि तू ज़मीन को फाड़ तो नहीं डालेगा और न लंबा हो कर पहाड़ों (की चोटी) तक पहुंच जाएगा। (३७) इन सब (आदतों) की बुराई तेरे परवरदिगार के नज़दीक बहुत ना-पसन्द है। (३८) (ऐ पैग़म्बर!) यह उन (हिदायतों) में से हैं जो ख़ुदा ने हिक्मत की बातें तुम्हारी तरफ़ वह्य की हैं और ख़ुदा के साथ कोई और माबूद न बनाना कि (ऐसा करने से) मलामत किया हुआ और (ख़ुदा की दरगाह से) धुत्कारा हुआ बना कर जहन्नम में डाल दिए जाओगे। (३९) (मुश्रिको!) क्या तुम्हारे परवरदिगार ने तुम को तो लड़के दिए और ख़ुद फ़रिश्तों को बेटियां बनाया। कुछ शक नहीं कि (यह) तुम बड़ी (ना-मुनासिब) बात कहते हो। (४०) ★

और हम ने इस क़ुरआन में तरह-तरह की बातें बयान की हैं, ताकि लोग नसीहत पकड़ें, मगर वे इस से और बिदक जाते हैं। (४१) कह दो कि अगर ख़ुदा के साथ और माबूद होते, जैसा कि ये कहते हैं, तो वे ज़रूर (ख़ुदा-ए-) मालिके अर्श की तरफ़ (लड़ने-भिड़ने के लिए) रास्ता निकालते। (४२) वह पाक है और जो कुछ ये बकवास करते हैं, उस से (इस का रुत्बा) बहुत ऊंचा है। (४३) सातों आसमान और ज़मीन और जो लोग उन में हैं, सब उसी की तस्बीह करते हैं और (मख़्लूक़ात में से) कोई चीज़ नहीं मगर उस की तारीफ़ के साथ तस्बीह करती है, लेकिन तुम उन की तस्बीह को नहीं समझते, बेशक वह बुर्दबार (और) बख़्शने वाला है। (४४) और जब

★रु. ४/४ आ १०

व इज़ा क़-रअ्तल्-क़ुर्आ-न ज-अल्ना बै-न-क व बैनल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिल्आख़िरति हिजाबम्-मस्तूरा (४५) व ज - अल्ना अला क़ुलूबिहिम् अकिन्नतन् अंय्यफ़्क़हूहु व फ़ी आज़ानिहिम् वक़्-रन् व इज़ा ज़-कर्-त रब्ब-क फ़िल्क़ुर्आनि वह्-दहू वल्लौ अला अद्बारिहिम् नुफ़ूरा (४६) नह्नु अअ्-लमु बिमा यस्तमिअू-न बिही इज् यस्तमिअू-न इलै-क व इज् हुम् नज्वा इज् यक़ूलुज़्ज़ालिमू - न इन् तत्तबिअू-न इल्ला रजुलम् - मस्हूरा (४७) उन्ज़ुर् कै-फ़ ज़-रबू ल-कल्-अम्सा-ल फ़-ज़ल्लू फ़ला यस्ततीअू-न सबीला ●(४८) व क़ालू अ इज़ा कुन्ना अिज़ामंव-व रुफ़ातन् अ इन्ना ल-मब्अूसू-न ख़ल्क़न् जदीदा (४९) क़ुल् कूनू हिजा-र - तन् औ हदीदा (५०) औ ख़ल्क़म्-मिम्मा यक्बुरु फ़ी सुदूरिकुम् फ़-स - यक़ूलू - न मंय्युअीदुना क़ुलिल्लज़ी फ़-त-रकुम् अव्व-ल मर्रतिन् फ़ सयुन्ग़िज़ू-न इलै-क रुऊसहुम् व यक़ूलू-न मता हु-व क़ुल् असा अंय्यकू-न क़रीबा (५१) यौ-म यद्अूकुम् फ़-तस्तजीबू-न बिहम्दिही व तज़ुन्नू-न इल्लबिस्तुम् इल्ला क़लीला ★(५२) व क़ुलिल् अिबादी यक़ूलुल्लती हि-य अह्सनु इन्नश्शैता - न यन्ज़ग़ु बैनहुम् इन्नश्शैता-न का-न लिल्इन्सानि अदुव्वम्-मुबीना (५३) रब्बुकुम् अअ्-लमु बिकुम् इंय्यशअ् यर्हम्कुम् औ इंय्यशअ् युअज़्ज़िब्कुम् व मा अर्सल्ना-क अलैहिम् वकीला (५४) व रब्बु-क अअ्-लमु बिमन् फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि व ल - क़द् फ़ज़्ज़ल्ना बअ् - ज़न्नबिय्यी-न अला बअ्-ज़िंव-व आतैना दावू-द ज़बूरा (५५) क़ुलिद्अुल्लज़ी - न ज-अम्तुम् मिन् दूनिही फ़ला यम्लिकू-न कश-फ़ज़्ज़ुर्रि अन्कुम् व ला तह्वीला (५६)

بني إسرآءيل ٢٢٩ سبحن الذي ١٥

بينك وبين الذين لا يؤمنون بالآخرة حجابا مستورا ﴿٤٥﴾ و
جعلنا على قلوبهم أكنة أن يفقهوه وفي آذانهم وقرا وإذا ذكرت
ربك في القرآن وحده ولوا على أدبارهم نفورا ﴿٤٦﴾ نحن أعلم بما
يستمعون به إذ يستمعون إليك وإذ هم نجوى إذ يقول
الظلمون إن تتبعون إلا رجلا مسحورا ﴿٤٧﴾ انظر كيف ضربوا لك
الأمثال فضلوا فلا يستطيعون سبيلا ﴿٤٨﴾ وقالوا أإذا كنا عظاما
ورفاتا أإنا لمبعوثون خلقا جديدا ﴿٤٩﴾ قل كونوا حجارة أو
حديدا ﴿٥٠﴾ أو خلقا مما يكبر في صدوركم فسيقولون من
يعيدنا قل الذي فطركم أول مرة فسينغضون إليك رءوسهم
ويقولون متى هو قل عسى أن يكون قريبا ﴿٥١﴾ يوم يدعوكم
فتستجيبون بحمده وتظنون إن لبثتم إلا قليلا ﴿٥٢﴾ وقل لعبادي
يقولوا التي هي أحسن إن الشيطن ينزغ بينهم إن الشيطن
كان للإنسان عدوا مبينا ﴿٥٣﴾ ربكم أعلم بكم إن يشأ يرحمكم أو
إن يشأ يعذبكم وما أرسلنك عليهم وكيلا ﴿٥٤﴾ وربك أعلم
بمن في السموت والأرض ولقد فضلنا بعض النبين على بعض
وءاتينا داود زبورا ﴿٥٥﴾ قل ادعوا الذين زعمتم من دونه فلا يملكون
كشف الضر عنكم ولا تحويلا ﴿٥٦﴾ أولئك الذين يدعون يبتغون

●रुब्अ १/४ ★रु. ५/५ आ १२

तुम क़ुरआन पढ़ा करते हो, तो हम तुम में और उन लोगों में जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, हिजाब (पर्दा) पर हिजाब कर देते हैं। (४५) और उन के दिलों पर पर्दा डाल देते हैं कि उसे समझ न सकें और उन के कानों में बोझ पैदा कर देते हैं और जब तुम क़ुरआन में अपने परवरदिगार यकता का ज़िक्र करते हो, तो वे बिदक जाते और पीठ फेर कर चल देते हैं। (४६) ये लोग जब तुम्हारी तरफ़ कान लगाते हैं, तो जिस नीयत से ये सुनते हैं, हम उसे ख़ूब जानते हैं और जब ये फुसी करते हैं, (यानी) जब ज़ालिम कहते हैं कि तुम तो एक ऐसे शख़्स की पैरवी करते हो, जिस पर जादू किया गया है। (४७) देखो, उन्हों ने किस-किस तरह की तुम्हारे बारे में बातें बनायीं, सो ये गुमराह हो रहे हैं और रास्ता नहीं पा सकते ●(४८) और कहते हैं कि जब हम (मर कर बोसीदा) हड्डियां और चूर-चूर हो जाएंगे, तो क्या नये सिरे से पैदा हो कर उठेंगे। (४९) कह दो कि (चाहे तुम) पत्थर हो जाओ या लोहा, (५०) या कोई और चीज़, जो तुम्हारे नज़दीक (पत्थर लोहे से भी) बड़ी (सख़्त) हो, (झट कहेंगे) कि (भला) हमें दोबारा कौन जिलाएगा ? कह दो वही जिस ने पहली बार पैदा किया, तो (ताज्जुब से) तुम्हारे आगे सर हिलाएंगे और पूछेंगे कि ऐसा कब होगा ? कह दो उम्मीद है कि जल्द होगा। (५१) जिस दिन वह तुम्हें पुकारेगा, तो तुम उस की तारीफ़ के साथ जवाब दोगे और ख़्याल करोगे कि तुम (दुनिया में) बहुत कम (मुद्दत) रहे। (५२)★

और मेरे बन्दों से कह दो कि (लोगों से) ऐसी बातें कहा करें, जो बहुत पसंदीदा हों, क्योंकि शैतान (बुरी बातों से) उन में फ़साद डलवा देता है। कुछ शक नहीं कि शैतान इंसान का खुला दुश्मन है। (५३) तुम्हारा परवरदिगार तुम को ख़ूब जानता है। अगर चाहे तो तुम पर रहम करे या अगर चाहे तो तुम्हें अज़ाब दे और हम ने तुम को उन पर दारोग़ा (बना कर) नहीं भेजा। (५४) और जो लोग आसमानों और ज़मीन में हैं, तुम्हारा परवरदिगार उन्हें ख़ूब जानता है। और हमने कुछ पैग़म्बरों को कुछ पर फ़ज़ीलत बख़्शी और दाऊद को ज़बूर दी।(५५) कहो कि (मुश्रिको !) जिन लोगों के बारे में तुम्हें (माबूद होने का) ख़्याल है, उन को बुला देखो। वह तुम से तक्लीफ़ के दूर करने या उस को बदल देने का कुछ अख़्तियार नहीं रखते। (५६) ये लोग,

●रुबुअ़ १/४ ★रु. ५/५ आ १२

उलाइकल्लज़ी-न यद्अू-न यब्तग़ू-न इला रब्बिहिमुल् - वसी-ल - त अय्युहुम् अक़रबु व यर्जू-न रह़्म-तहू व यख़ाफ़ू-न अ़ज़ाबहू ط इन्-न अ़ज़ा-ब रब्बि-क का-न मह़्ज़ूरा (५७) व इम्मिन् क़र्यतिन् इल्ला नह़्नु मुह्लिकूहा क़ब्-ल यौमिल्क़ियामति औ मुअ़ज़्ज़िबूहा अ़ज़ाबन् शदीदा ط का - न ज़ालि - क फ़िल्किताबि मस्तूरा (५८) व मा म-न-अ़ना अन्नुर्सि-ल बिल्आयाति इल्ला अन् कज़्ज़ - ब बिहल् - अव्वलू-न ط व आतैना समूदन्ना-क़-त मुब्सि-र-तन् फ़-ज़-लमू बिहा ط व मा नुर्सिलु बिल्आयाति इल्ला तख़्वीफ़ा (५९) व इज़् क़ुल्ना ल-क इन्-न रब्ब-क अहा-त बिन्नासि ط व मा ज-अ़ल्नर्रुअ्-यल्लती अरैना - क इल्ला फ़ित-न-तल् - लिन्नासि वश्श-ज-र-तल् - मल्अू़न-त फ़िल्क़ुर्आनि ط व नुख़व्विफ़ुहुम् لا फ़मा यज़ीदुहुम् इल्ला तुग़्यानन् कबीरा ★ (६०) व इज़् क़ुल्ना लिल्मलाइकतिस्जुदू लिआद - म फ़-स-जदू इल्ला इब्ली-स ط क़ा-ल अ अस्जुदु लिमन् ख़-लक़्-त तीना ط (६१) क़ा-ल अ-रऐ-त-क हाज़ल्लज़ी कर्रम्-त अ़-लय-य ز लइन् अख़्ख़र्तनि इला यौमिल्क़ियामति ल-अह्-तनिकन्-न ज़ुर्रिय्य-तहू इल्ला क़लीला (६२) क़ालज़्हब् फ़-मन् तबि-अ़-क मिन्हुम् फ़-इन्-न ज-हन्न-म जज़ाउकुम् जज़ाअम्-मौफ़ूरा (६३) वस्तफ़्ज़िज़् मनिस्त-तअ़्-त मिन्हुम् बिसौति-क व अज्लिब् अ़लैहिम् बिख़ैलि-क व रजिलि-क व शारिक्हुम् फ़िल्अम्वालि वल्औलादि व अ़िद्हुम् ط व मा यअ़िदुहुमुश्-शैतानु इल्ला ग़ुरूरा (६४) इन्-न अ़िबादी लै-स ल-क अ़लैहिम् सुल्तानुन् ط व कफ़ा बिरब्बि-क वकीला (६५) रब्बुकुमुल्लज़ी युज़्जी लकुमुल्फ़ुल्-क फ़िल्बह़्रि लितब्तग़ू मिन् फ़ज़्लिही ط इन्नहू का-न बिकुम् रह़ीमा (६६)

إِلَىٰ رَبِّهِمُ الْوَسِيلَةَ أَيُّهُمْ أَقْرَبُ وَيَرْجُونَ رَحْمَتَهُ وَيَخَافُونَ عَذَابَهُ ۚ إِنَّ
عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ مَحْذُورًا ۝ وَإِن مِّن قَرْيَةٍ إِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوهَا قَبْلَ
يَوْمِ الْقِيَامَةِ أَوْ مُعَذِّبُوهَا عَذَابًا شَدِيدًا ۚ كَانَ ذَٰلِكَ فِي الْكِتَابِ
مَسْطُورًا ۝ وَمَا مَنَعَنَا أَن نُّرْسِلَ بِالْآيَاتِ إِلَّا أَن كَذَّبَ بِهَا الْأَوَّلُونَ
وَآتَيْنَا ثَمُودَ النَّاقَةَ مُبْصِرَةً فَظَلَمُوا بِهَا ۚ وَمَا نُرْسِلُ بِالْآيَاتِ إِلَّا
تَخْوِيفًا ۝ وَإِذْ قُلْنَا لَكَ إِنَّ رَبَّكَ أَحَاطَ بِالنَّاسِ ۚ وَمَا جَعَلْنَا الرُّؤْيَا
الَّتِي أَرَيْنَاكَ إِلَّا فِتْنَةً لِّلنَّاسِ وَالشَّجَرَةَ الْمَلْعُونَةَ فِي الْقُرْآنِ ۚ وَ
نُخَوِّفُهُمْ فَمَا يَزِيدُهُمْ إِلَّا طُغْيَانًا كَبِيرًا ۝ وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا
لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ قَالَ أَأَسْجُدُ لِمَنْ خَلَقْتَ طِينًا ۝ قَالَ
أَرَأَيْتَكَ هَٰذَا الَّذِي كَرَّمْتَ عَلَيَّ لَئِنْ أَخَّرْتَنِ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ
لَأَحْتَنِكَنَّ ذُرِّيَّتَهُ إِلَّا قَلِيلًا ۝ قَالَ اذْهَبْ فَمَن تَبِعَكَ مِنْهُمْ فَإِنَّ
جَهَنَّمَ جَزَاؤُكُمْ جَزَاءً مَّوْفُورًا ۝ وَاسْتَفْزِزْ مَنِ اسْتَطَعْتَ مِنْهُم
بِصَوْتِكَ وَأَجْلِبْ عَلَيْهِم بِخَيْلِكَ وَرَجِلِكَ وَشَارِكْهُمْ فِي الْأَمْوَالِ
وَالْأَوْلَادِ وَعِدْهُمْ ۚ وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطَانُ إِلَّا غُرُورًا ۝ إِنَّ عِبَادِي
لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ ۚ وَكَفَىٰ بِرَبِّكَ وَكِيلًا ۝ رَّبُّكُمُ الَّذِي
يُزْجِي لَكُمُ الْفُلْكَ فِي الْبَحْرِ لِتَبْتَغُوا مِن فَضْلِهِ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِكُمْ
رَحِيمًا ۝ وَإِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فِي الْبَحْرِ ضَلَّ مَن تَدْعُونَ إِلَّا إِيَّاهُ ۖ

★रु. ६/६ आ ८

जिन को (ख़ुदा के सिवा) पुकारते हैं, वे ख़ुद अपने परवरदिगार के यहां (तक़र्रुब का) ज़रिया तलाश करते हैं कि कौन उन में (ख़ुदा का) ज़्यादा मुक़र्रब (होता) है और उस की रहमत के उम्मीदवार रहते हैं और उस के अज़ाब से ख़ौफ़ रखते हैं। बेशक तुम्हारे परवरदिगार का अज़ाब डरने की चीज़ है। (५७) और (कुफ़्र करने वालों की) कोई बस्ती नहीं मगर क़ियामत के दिन से पहले हम उसे हलाक कर देंगे या सख़्त अज़ाब से मुअज़्ज़ब करेंगे। यह किताब (यानी तक़्दीर) में लिखा जा चुका है।(५८) और हम ने निशानियां भेजनी इसलिए बन्द कर दीं कि अगले लोगों ने उन को झुठलाया था और हम ने समूद को ऊंटनी (सालेह की नुबूवत की खुली) निशानी दी, तो उन्हों ने उस पर ज़ुल्म किया और हम जो निशानियां भेजा करते हैं, तो डराने को। (५९) जब हम ने तुम से कहा कि तुम्हारा परवरदिगार लोगों को एहाता किए हुए है और जो नुमाइश हम ने तुम्हें दिखायी, उस को लोगों के लिए आज़माइश किया और इसी तरह (थूहर के) पेड़ को, जिस पर क़ुरआन में लानत की गयी और हम उन्हें डराते हैं तो उन को उस से बड़ी (सख़्त) सरकशी पैदा हुई है। (६०)★

और जब हमने फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सज्दा करो, तो सब ने सज्दा किया, मगर इब्लीस ने न किया, बोला, भला मैं ऐसे शख़्स को सज्दा करूं, जिस को तू ने मिट्टी से पैदा किया है। (६१) (और तान के तौर पर) कहने लगा कि देख तो यही वह है जिसे तू ने मुझ पर फ़ज़ीलत दी है। अगर तू मुझ को क़ियामत के दिन तक की मोहलत दे, तो मैं थोड़े से शख़्सों के सिवा उस की (तमाम) औलाद की जड़ काटता रहूंगा। (६२) ख़ुदा ने फ़रमाया (यहां से) चला जा। जो शख़्स इन में से तेरी पैरवी करेगा, तो तुम सब की सज़ा जहन्नम है (और वह) पूरी सज़ा (है)। (६३) और उन में से जिस को बहका सके, अपनी आवाज़ से बहकाता रह और उन पर अपने सवारों और प्यादों को चढ़ा कर लाता रह और उन के माल और औलाद में शरीक होता रह और उन से वायदे करता रह और शैतान जो वायदे उन से करता है, सब धोखा है। (६४) जो मेरे (मुख़्लिस) बन्दे हैं, उन पर तेरा कुछ ज़ोर नहीं और ऐ (पैग़म्बर!) तुम्हारा परवरदिगार कारसाज़ काफ़ी है। (६५) तुम्हारा परवरदिगार वह है, जो तुम्हारे लिए दरिया में किश्तियां चलाता है, ताकि तुम उस के फ़ज़्ल से (रोज़ी) तलाश करो। बेशक वह तुम पर मेहरबान है। (६६) और जब तुम को

★रु. ६/६ आ ८

व इज़ा मस्सकुमुज़्ज़ुर्रु फ़िल्बह्रि ज़ल्-ल मन् तद्अू - न इल्ला इय्याहु ८ फ़-लम्मा नज्जाकुम् इलल्बर्रि अअ्-रज़्तुम्, व कानल्-इन्सानु कफ़ूरा (६७) अ-फ़-अमिन्तुम् अंय्यख़्सि-फ़ बिकुम् जानिबल्-बर्रि औ युर्सि-ल अलैकुम् हासिबन् सुम्-म ला तजिदू लकुम् वकीला ❘ (६८) अम् अमिन्तुम् अंय्युअी-दकुम् फ़ीहि ता-र-तन् उख़्रा फ़युर्सि-ल अलैकुम् क़ासिफ़म्-मिनर्रीहि फ़ - युग़्रिक़-कुम् बिमा क-फ़र्तुम् ❘ सुम्-म ला तजिदू लकुम् अलैना बिही तबीआ (६९) व ल-क़द् कर्रम्ना बनी आद-म व ह़ - मल्नाहुम् फ़िल्बर्रि वल्बह्रि व र-ज़क़्नाहुम् मिनत्-तय्यिबाति व फ़ज़्ज़ल्नाहुम् अला कसीरिम् - मिम्मन् ख़-लक़्ना तफ़्ज़ीला ★(७०) यौ-म नद्अू कुल्-ल उनासिम् - बिइमामिहिम् ८ फ़ - मन् ऊति-य किताबहू बियमीनिही फ़उलाइ-क यक़्रऊ-न किताबहुम् व ला युज़्लमू-न फ़तीला (७१) व मन् का-न फ़ी हाज़िही अअ्-मा फ़हु-व फ़िल्आख़िरति अअ्-मा व अज़ल्लु सबीला (७२) व इन् कादू ल-यफ़्तिनू-न-क अनिल्लज़ी औहैना इलै - क लितफ़्तरि-य अलैना ग़ैरहू ८ व इज़ल्लत्तख़-ज़ू-क ख़लीला (७३) व लौला अन् सब्बत्ना-क ल-क़द् कित्-त तर्कनु इलैहिम् शैअन् क़लीला ७ (७४) इज़ल्-ल अ - ज़क़्ना-क ज़िअ्-फ़ल्-हयाति व ज़िअ्-फ़ल्-ममाति सुम्-म ला तजिदु ल-क अलैना नसीरा (७५) व इन् कादू ल-यस्तफ़िज़्ज़ू-न-क मिनल्अर्ज़ि लियुख़्रिजू-क मिन्हा व इज़ल्ला यल्बसू-न ख़िलाफ़-क इल्ला क़लीला (७६) सुन्न-त मन् क़द् अर्सल्ना क़ब्ल-क मिर्रुसुलिना व ला तजिदु लिसुन्नतिना तह़्वीला★(७७) अक़िमिस्सला-त लिदुलूकिश्-शम्सि इला ग़-सक़िल्लैलि व क़ुर्आनल् - फ़ज्रि ८ इन्-न क़ुर्आनल्-फ़ज्रि का-न मश्हूदा (७८) व मिनल्लैलि फ़-त-हज्जद् बिही नाफ़ि-ल-तल्ल-क ८ असा अंय्यब्अ-स-क रब्बु - क मक़ामम्-मह़्मूदा (७९)

فَلَمَّا نَجّٰىكُمْ اِلَى الْبَرِّ اَعْرَضْتُمْ ۚ وَكَانَ الْاِنْسَانُ كَفُوْرًا ﴿٦٧﴾ اَفَاَمِنْتُمْ
اَنْ يَّخْسِفَ بِكُمْ جَانِبَ الْبَرِّ اَوْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ثُمَّ لَا تَجِدُوْا لَكُمْ
وَكِيْلًا ﴿٦٨﴾ اَمْ اَمِنْتُمْ اَنْ يُّعِيْدَكُمْ فِيْهِ تَارَةً اُخْرٰى فَيُرْسِلَ عَلَيْكُمْ
قَاصِفًا مِّنَ الرِّيْحِ فَيُغْرِقَكُمْ بِمَا كَفَرْتُمْ ۙ ثُمَّ لَا تَجِدُوْا لَكُمْ عَلَيْنَا بِهٖ
تَبِيْعًا ﴿٦٩﴾ وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِيْٓ اٰدَمَ وَحَمَلْنٰهُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَرَزَقْنٰهُمْ
مِّنَ الطَّيِّبٰتِ وَفَضَّلْنٰهُمْ عَلٰى كَثِيْرٍ مِّمَّنْ خَلَقْنَا تَفْضِيْلًا ﴿٧٠﴾ يَوْمَ
نَدْعُوْا كُلَّ اُنَاسٍۭ بِاِمَامِهِمْ ۚ فَمَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ فَاُولٰٓئِكَ
يَقْرَءُوْنَ كِتٰبَهُمْ وَلَا يُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ﴿٧١﴾ وَمَنْ كَانَ فِيْ هٰذِهٖٓ اَعْمٰى فَهُوَ
فِي الْاٰخِرَةِ اَعْمٰى وَاَضَلُّ سَبِيْلًا ﴿٧٢﴾ وَاِنْ كَادُوْا لَيَفْتِنُوْنَكَ عَنِ الَّذِيْٓ
اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ لِتَفْتَرِيَ عَلَيْنَا غَيْرَهٗ ۖ وَاِذًا لَّاتَّخَذُوْكَ خَلِيْلًا ﴿٧٣﴾ وَلَوْ
لَآ اَنْ ثَبَّتْنٰكَ لَقَدْ كِدْتَّ تَرْكَنُ اِلَيْهِمْ شَيْئًا قَلِيْلًا ﴿٧٤﴾ اِذًا لَّاَذَقْنٰكَ
ضِعْفَ الْحَيٰوةِ وَضِعْفَ الْمَمَاتِ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ عَلَيْنَا نَصِيْرًا ﴿٧٥﴾ وَاِنْ
كَادُوْا لَيَسْتَفِزُّوْنَكَ مِنَ الْاَرْضِ لِيُخْرِجُوْكَ مِنْهَا وَاِذًا لَّا يَلْبَثُوْنَ
خِلٰفَكَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٧٦﴾ سُنَّةَ مَنْ قَدْ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنْ رُّسُلِنَا وَلَا تَجِدُ
لِسُنَّتِنَا تَحْوِيْلًا ﴿٧٧﴾ اَقِمِ الصَّلٰوةَ لِدُلُوْكِ الشَّمْسِ اِلٰى غَسَقِ الَّيْلِ وَ
قُرْاٰنَ الْفَجْرِ ۭ اِنَّ قُرْاٰنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُوْدًا ﴿٧٨﴾ وَمِنَ الَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهٖ
نَافِلَةً لَّكَ ۖ عَسٰٓى اَنْ يَّبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا ﴿٧٩﴾ وَقُلْ رَّبِّ اَدْخِلْنِيْ

★रु. ७/७ आ १० ★रु. ८/८ आ ७

दरिया में तक्लीफ़ पहुंचती है (यानी डूबने का ख़ौफ़ होता है) तो जिन को तुम पुकारा करते हो सब उस (परवरदिगार) के सिवा गुम हो जाते हैं। फिर जब वह तुम को (डूबने से) बचा कर ख़ुश्की की तरफ़ ले जाता है, तो तुम मुंह फेर लेते हो और इंसान है ही ना-शुक्रा। (६७) क्या तुम (इस से) बे-ख़ौफ़ हो कि ख़ुदा तुम्हें ख़ुश्की की तरफ़ (ले जा कर ज़मीन में) धंसा दे या तुम पर संगरेज़ों की भरी हुई आंधी चला दे, फिर तुम अपना कोई निगहबान न पाओ। (६८) या (इस से) बे-ख़ौफ़ हो कि तुम को दूसरी बार दरिया में ले जाए, फिर तुम पर तेज़ हवा चलाए और तुम्हारे कुफ़्र की वजह से तुम्हें डुबो दे। फिर तुम उस ग़र्क़ की वजह से अपने लिए कोई हमारा (पीछा करने वाला) न पाओ। (६९) और हम ने बनी आदम को इज़्ज़त बख़्शी और उन को जंगल और दरिया में सवारी दी और पाकीज़ा रोज़ी अता की और अपनी बहुत-सी मख़्लूक़ात पर फ़ज़ीलत दी। (७०) ★

जिस दिन हम सब लोगों को उन के पेशवाओं के साथ बुलाएंगे, तो जिन (के आमाल) की किताब उन के दाहिने हाथ में दी जाएगी, वह अपनी किताब को (ख़ुश हो-हो कर) पढ़ेंगे और उन पर धागे बराबर भी ज़ुल्म न होगा। (७१) और जो शख़्स इस (दुनिया) में अंधा हो, वह आख़िरत में भी अंधा होगा, और (निजात के) रास्ते से बहुत दूर, (७२) और ऐ पैग़म्बर ! जो वह्य हम ने तुम्हारी तरफ़ भेजी है, क़रीब था कि ये (काफ़िर) लोग तुम को इस से बिचला दें, ताकि तुम इस के सिवा और बातें हमारे बारे में बना लो और उस वक़्त वह तुम को दोस्त बना लेते।[1] (७३) और अगर हम तुम को साबित क़दम न रहने देते तो तुम किसी क़दर उन की तरफ़ मायल होने ही लगे थे। (७४) उस वक़्त हम तुम को ज़िंदगी में भी (अज़ाब का) दोगुना और मरने पर भी दोगुना अज़ाब चखाते, फिर तुम हमारे मुक़ाबले में किसी को अपना मददगार न पाते। (७५) और क़रीब था कि ये लोग तुम्हें ज़मीन (मक्का) से फिसला दें ताकि तुम्हें वहां से देश निकाला दे दें और उस वक़्त तुम्हारे पीछे यह भी न रहते, मगर कम। (७६) जो पैग़म्बर हम ने तुम से पहले भेजे थे, उन का (और उन के बारे में हमारा, यही) तरीक़ा रहा है और तुम हमारे तरीक़े में तब्दीली न पाओगे। (७७) ★

(ऐ मुहम्मद !) सूरज के ढलने से रात के अंधेरे तक (ज़ुहर, अस्र, मग़रिब, इशा की) नमाज़ें और सुबह को क़ुरआन पढ़ा करो, क्यों कि सुबह के वक़्त क़ुरआन का पढ़ना मूजिबे हुज़ूर (फ़रिश्ता) है। (७८) और रात के हिस्से में जागा करो (और तहज्जुद की नमाज़ पढ़ा करो)। (यह रात का जागना) तुम्हारे लिए ज़्यादती (की वजह) है, और (तहज्जुद की नमाज़ तुम को नफ़्ल) है क़रीब है कि ख़ुदा तुम को मक़ामे महमूद में दाख़िल करे। (७९) और कहो कि ऐ परवरदिगार ! मुझे

---

१. काफ़िर कहते थे कि इस कलाम में नसीहत की बातें अच्छी हैं, मगर हर जगह शिर्क पर ऐब रखा है, यह बदल डाल, तो हम इस सब को मानें।

★रु. ७/७ आ १० ★रु. ८/८ आ ७

व क़ुर्रब्बि अद्ख़िल्नी मुद्-ख़-ल सिद्क़िंव्-व अख़्रिज्नी मुख़्-र-ज सिद्क़िव्वज्-अल्
ली मिल्लदुन् - क सुल्तानन् नसीरा (८०) व क़ुल् जा-अल् - ह़क़्क़ु
व ज़-ह-क़ल्-बातिलु ط इन्नल्बाति-ल का-न ज़हूक़ा (८१) व नुनज़्ज़िलु
मिनल्क़ुर्आनि मा हु-व शिफ़ाउंव्-व रह़-मतुल्लिल् - मुअ्मिनी-न ॥ व ला
यज़ीदुज़्ज़ालिमी-न इल्ला ख़सारा (८२)
व इज़ा अन-अ़म्ना अ़-लल्इन्सानि अअ्-र-ज़
व नआ बिजानिबिही ج व इज़ा मस्सहुश्-
शर्रु का-न यऊसा (८३) क़ुल् कुल्लुंय्यअ्-मलु
अ़ला शाकिलतिही ط फ़-रब्बुकुम् अअ्-लमु
बिमन् हु-व अह्दा सबीला ★ (८४) व
यस्-अलून-क अ़निर्रूहि ط क़ुलिर्रूहु मिन्
अम्रि रब्बी व मा ऊतीतुम् मिनल्अ़िल्मि
इल्ला क़लीला (८५) व लइन् शिअ्ना
ल-नज़्-ह-बन्-न बिल्लज़ी औहैना इलै-क सुम्-म
ला तजिदु ल-क बिही अ़लैना वकीला ॥
(८६) इल्ला रह़्-म-तम् - मिर्-रब्बि-क ط
इन्-न फ़ज़्लहू का-न अ़लै-क कबीरा (८७)

سلطانا نصيرا ۝ وقل جاء الحق وزهق الباطل إن الباطل كان
زهوقا ۝ وننزل من القرآن ما هو شفاء ورحمة للمؤمنين ولا
يزيد الظالمين إلا خسارا ۝ وإذا أنعمنا على الإنسان أعرض و
نأى بجانبه وإذا مسه الشر كان يئوسا ۝ قل كل يعمل على شاكلته
فربكم أعلم بمن هو أهدى سبيلا ۝ ويسألونك عن الروح قل
الروح من أمر ربي وما أوتيتم من العلم إلا قليلا ۝ ولئن
شئنا لنذهبن بالذي أوحينا إليك ثم لا تجد لك به علينا وكيلا ۝
إلا رحمة من ربك إن فضله كان عليك كبيرا ۝ قل لئن اجتمعت
الإنس والجن على أن يأتوا بمثل هذا القرآن لا يأتون بمثله و
لو كان بعضهم لبعض ظهيرا ۝ ولقد صرفنا للناس في هذا
القرآن من كل مثل فأبى أكثر الناس إلا كفورا ۝ وقالوا لن
نؤمن لك حتى تفجر لنا من الأرض ينبوعا ۝ أو تكون لك جنة
من نخيل وعنب فتفجر الأنهار خلالها تفجيرا ۝ أو تسقط السماء
كما زعمت علينا كسفا أو تأتي بالله والملائكة قبيلا ۝ أو يكون
لك بيت من زخرف أو ترقى في السماء ولن نؤمن لرقيك
حتى تنزل علينا كتابا نقرؤه قل سبحان ربي هل كنت إلا بشرا

क़ुल्-ल इनिज्-त-म-अ़तिल्-इन्सु वल्जिन्नु अ़ला अंय्यअ्तू बिमिस्लि हाज़ल्-
क़ुर्आनि ला यअ्तू-न बिमिस्लिही व लौ का-न बअ्-ज़ुहुम् लिबअ्-ज़िन् ज़हीरा (८८)
व ल-क़द् सर्रफ़्ना लिन्नासि फ़ी हाज़ल्-क़ुर्आनि मिन् कुल्लि म-सलिन्
फ़-अबा अक्सरुन्नासि इल्ला कुफ़ूरा (८९) व क़ालू लन् नुअ्मि-न ल-क
ह़त्ता तफ़्जु-र लना मिनल्अर्ज़ि यम्बूआ ॥ (९०) औ तकू-न ल-क जन्नतुम्मिन्
नख़ीलिंव्-व अ़-नबिन् फ़तुफ़ज्जिरल्-अन्हा-र ख़िलालहा तफ़्जीरा ॥ (९१)
औ तुस्क़ितस्समा-अ कमा ज़-अ़म्-त अ़लैना कि-स-फ़न् औ तअ्ति-य बिल्लाहि
वल्मलाइकति क़बीला ॥ (९२) औ यकू-न ल-क बैतुम्मिन् ज़ुख़्रुफ़िन् औ तर्क़ा
फ़िस्समाइ ط व लन् नुअ्मि-न लिरुक़िय्यि-क ह़त्ता तुनज़्ज़ि-ल अ़लैना किताबन्
नक़्रउहू ط क़ुल् सुब्हा-न रब्बी हल् कुन्तु इल्ला ब-श-रर्-रसूला ★ (९३)

★रु. ९/९ आ ७ ★रु. १०/१० आ ९

(मदीने में) अच्छी तरह दाख़िल कीजियो और (मक्के से) अच्छी तरह निकालियो और अपने यहां से ज़ोर व क़ूवत को मेरा मददगार बनाइयो। (८०) और कह दो कि हक़ आ गया और बातिल नाबूद हो गया. बेशक बातिल नाबूद होने वाला है। (८१) और हम क़ुरआन (के ज़रिए) से वह चीज़ नाज़िल करते हैं, जो मोमिनों के लिए शिफ़ा और रहमत है और ज़ालिमों के हक़ में तो इस से नुक़्सान ही बढ़ता है। (८२) और जब हम इंसान को नेमत बख़्शते हैं, तो मुंह फेर लेता और पहलू फेर लेता है और जब उसे सख़्ती पहुंचती है तो ना-उम्मीद हो जाता है। (८३) कह दो कि हर शख़्स अपने तरीक़े के मुताबिक़ अमल करता है, सो तुम्हारा परवरदिगार उस शख़्स को ख़ूब जानता है, जो सब से ज़्यादा सीधे रास्ते पर है। (८४)★

और तुम से रूह के बारे में सवाल करते हैं। कह दो कि वह मेरे परवरदिगार की एक शान है और तुम लोगों को (बहुत ही) कम इल्म दिया गया है। (८५) और अगर हम चाहें तो जो (किताब) हम तुम्हारी तरफ़ भेजते हैं, उसे (दिलों से) मिटा दें। फिर तुम उस के लिए हमारे मुक़ाबले में किसी को मददगार न पाओ। (८६) मगर (उस का क़ायम रहना) तुम्हारे परवरदिगार की रहमत है। कुछ शक नहीं कि तुम पर उस का बड़ा फ़ज़्ल है। (८७) कह दो कि अगर इन्सान और जिन्न इस बात पर जमा हों कि इस क़ुरआन जैसा बना लाएं, तो इस जैसा न ला सकें, अगरचे वे एक दूसरे के मददगार हों। (८८) और हम ने इस क़ुरआन में सब बातें तरह-तरह से बयान कर दी हैं, मगर अक्सर लोगों ने इंकार करने के सिवा क़ुबूल न किया। (८९) और कहने लगे कि हम तुम पर ईमान नहीं लाएंगे, जब तक कि (अजीब व ग़रीब बातें न दिखाओ, यानी या तो) हमारे लिए ज़मीन में से चश्मा जारी कर दो, (९०) या तुम्हारा खजूरों और अंगूरों का कोई बाग़ हो और उस के बीच में नहरें बहा निकालो, (९१) या जैसा तुम कहा करते हो हम पर आसमान के टुकड़े ला गिराओ या ख़ुदा और फ़रिश्तों को (हमारे) सामने ले आओ। (९२) या तुम्हारा सोने का घर हो या तुम आसमान पर चढ़ जाओ और हम तुम्हारे चढ़ने को भी नहीं मानेंगे, जब तक कि कोई किताब न लाओ, जिसे हम पढ़ भी लें। कह दो कि मेरा परवरदिगार पाक है। मैं तो सिर्फ़ एक पैग़ाम पहुंचाने वाला इंसान हूं। (९३)★

★रु. ९/९ आ ७ ★रु. १०/१० आ ९

व मा म-न-अन्ना-स अंय्युअ्मिनू इज़् जा-अ-हुमुल्-हुदा इल्ला अन् क़ालू अ-ब-अ-सल्लाहु ब-श-रर्-रसूला (९४) क़ुल् लौ का-न फ़िल्अर्ज़ि मलाइकतुंय्यम्शू-न मुत्मइन्नी-न ल-नज़्ज़ल्ना अलैहिम् मिनस्समाइ म-ल-करसूला (९५) क़ुल् कफ़ा बिल्लाहि शहीदम्-बैनी व बैनकुम् ♭ इन्नहू का-न बिअिबादिही ख़बीरम् - बसीरा (९६) व मंय्यह्दिल्लाहु फ़हुवल्मुह्तदि ८ व मंय्युज़्लिल् फ़-लन् तजि-द लहुम् औलिया-अ मिन्दूनिही ♭ व नह्शुरुहुम् यौमल्क़ियामति अला वुजूहिहिम् अुम्यंव-व बुक्मंव-व सुम्मन् ♭ मअ्वाहुम् जहन्नमु ♭ कुल्लमा ख़-बत् ज़िद्नाहुम् सअीरा● (९७) ज़ालि-क जज़ाउहुम् बिअन्नहुम् क-फ़रू बिआयातिना व क़ालू अ इज़ा कुन्ना अिज़ामंव-व रुफ़ातन् अ इन्ना ल-मब्अूसू-न ख़ल्क़न् जदीदा (९८) अ-व-लम् यरौ अन्नल्लाहल्लज़ी ख़-ल-क़स्समावाति वल्अर्-ज़ क़ादिरुन् अला अंय्यख़्लु-क़ मिस्-लहुम् व ज-अ-ल लहुम् अ-ज-लल्-ला रै-ब फ़ीहि ♭ फ़-अ-बज़्ज़ालिमू-न इल्ला कुफ़ूरा (९९) क़ुल् लौ अन्तुम् तम्लिकू-न ख़ज़ाइ-न रह्मति रब्बी इज़ल् - ल अम् - सक्तुम् ख़श-य-तल्-इन्फ़ाक़ि ♭ व कानल् - इन्सानु क़तूरा★(१००) व ल - क़द् आतैना मूसा तिस्-अ आयातिम्-बय्यिनातिन् फ़स्अल् बनी इस्राई - ल इज़् जाअहुम् फ़क़ा - ल लहू फ़िर्औनु इन्नी ल-अज़ुन्नु-क या मूसा मस्हूरा (१०१) क़ा-ल ल-क़द् अलिम् - त मा अन्ज़ - ल हाउलाइ इल्ला रब्बुस्समावाति वल्अर्ज़ि बसाइ-र ८ व इन्नी ल-अज़ुन्नु-क या फ़िर्औनु मस्बूरा (१०२) फ़-अरा-द अंय्यस्तफ़िज़्ज़हुम् मिनल्अर्ज़ि फ़ - अग़रक़्नाहु व मम्म - अहू जमीअ़ व् ^ल^- (१०३) व क़ुल्ना मिम्बअ् - दिही लिबनी इस्राईलस्कुनुल् - अर् - ज़ फ़इज़ा जा - अ वअ् - दुल्-आख़िरति जिअ्ना बिकुम् लफ़ीफ़ा ♭ (१०४)

سبحن الذى ١٥ — ٣٣٣ — بنی اسرائیل ١٧

رسولا ۝ وما منع الناس ان يؤمنوا اذ جاءهم الهدى الا ان قالوا
ابعث الله بشرا رسولا ۝ قل لو كان في الارض ملئكة يمشون
مطمئنين لنزلنا عليهم من السماء ملكا رسولا ۝ قل كفى
بالله شهيدا بيني وبينكم انه كان بعباده خبيرا بصيرا ۝ ومن
يهد الله فهو المهتد ومن يضلل فلن تجد لهم اولياء من
دونه ونحشرهم يوم القيمة على وجوههم عميا وبكما وصما ماوىهم
جهنم كلما خبت زدنهم سعيرا ۝ ذلك جزاؤهم بانهم كفروا بايتنا
وقالوا ءاذا كنا عظاما ورفاتا ءانا لمبعوثون خلقا جديدا ۝ اولم
يروا ان الله الذي خلق السموت والارض قادر على ان يخلق
مثلهم وجعل لهم اجلا لا ريب فيه فابى الظلمون الا كفورا ۝
قل لو انتم تملكون خزاىن رحمة ربي اذا لامسكتم خشية الانفاق
وكان الانسان قتورا ۝ ولقد اتينا موسى تسع ايت بينت فسل
بني اسراءيل اذ جاءهم فقال له فرعون اني لاظنك يموسى
مسحورا ۝ قال لقد علمت ما انزل هؤلاء الا رب السموت والارض
بصاىر واني لاظنك يفرعون مثبورا ۝ فاراد ان يستفزهم
من الارض فاغرقنه ومن معه جميعا ۝ وقلنا من بعده
لبني اسراءيل اسكنوا الارض فاذا جاء وعد الاخرة جئنا بكم

● नि. १/२ ★रु. ११/११ आ ७

और जब लोगों के पास हिदायत आ गयी तो उन को ईमान लाने में इस के सिवा कोई चीज़ रुकावट न हुई कि कहने लगे कि क्या ख़ुदा ने आदमी को पैग़म्बर कर के भेजा है। (९४) कह दो कि अगर ज़मीन में फ़रिश्ते होते (कि इस में) चलते-फिरते (और) आराम करते (यानी बसते) तो हम उन के पास फ़रिश्तों को पैग़म्बर बना कर भेजते। (९५) कह दो कि मेरे और तुम्हारे दर्मियान ख़ुदा ही गवाह काफ़ी है। वही अपने बन्दों से ख़बरदार (और उनको) देखने वाला है। (९६) और जिस शख़्स को ख़ुदा हिदायत दे, वही हिदायत पाया हुआ है और जिन को गुमराह करे तो तुम अल्लाह के सिवा उन के दोस्त नहीं पाओगे और हम उन को क़ियामत के दिन औंधे मुंह अंधे-गूंगे और बहरे (बना कर) उठाएंगे। और उन का ठिकाना दोज़ख़ है। जब (उस की आग) बुझने को होगी तो हम उन को (अज़ाब देने) के लिए और भड़का देंगे● (९७) यह उन की सज़ा है, इस लिए कि वे हमारी आयतों से कुफ़्र करते थे और कहते थे कि जब हम (मर कर सड़ी-गली) हड्डियां और चूरा-चूरा हो जाएंगे तो क्या नये सिरे से पैदा किये जाएंगे? (९८) क्या उन्हों ने नहीं देखा कि ख़ुदा जिस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया है, इस बात की क़ुदरत रखता है कि उन जैसे (लोग) पैदा कर दे और उस ने उन के लिए एक वक़्त मुक़र्रर कर दिया है, जिस में कुछ भी शक नहीं। तो ज़ालिमों ने इंकार करने के सिवा (उसे) क़ुबूल न किया। (९९) कह दो कि अगर मेरे परवरदिगार की रहमत के ख़ज़ाने तुम्हारे हाथ में होते, तो तुम ख़र्च हो जाने के डर से (उन को) बन्द रखते और इंसान दिल का बहुत तंग है। (१००)✱

और हम ने मूसा को नौ खुली निशानियां दीं, तो बनी इस्राईल से मालूम कर लो कि जब वह उन के पास आए तो फ़िरऔन ने उन से कहा कि मूसा! मैं ख़्याल करता हूं कि तुम पर जादू किया गया है। (१०१) उन्हों ने कहा कि तुम यह जानते हो कि आसमानों और ज़मीन के परवरदिगार के सिवा उन को किसी ने नाज़िल नहीं किया (और वह भी तुम लोगों के) समझाने को और ऐ फ़िरऔन! मैं ख़्याल करता हूं कि तुम हलाक हो जाओगे। (१०२) तो उस ने चाहा कि उन को (मिस्र की) धरती से निकाल दे, तो हम ने उस को और जो उस के साथ थे, सब को डुबो दिया। (१०३) और उस के बाद बनी इस्राईल से कहा कि तुम इस मुल्क में रहो-सहो, फिर जब आख़िरत का वायदा आ जाएगा, तो हम तुम सब को जमा कर के ले जाएंगे। (१०४) और हम ने

● नि. १/२ ★रु. ११/११ आ ७

व बिल्हक़्क़ि अन्ज़ल्नाहु व बिल्हक़्क़ि न-ज़ल ◌ व मा अर्सल्ना-क इल्ला मुबश्शिरंव्-व नज़ीरा(१०५) व क़ुरआनन् फ़-रक़्नाहु लि-तक़्र-अहू अलन्नासि अला मुक्सिंव्-व नज़्ज़ल्नाहु तन्ज़ीला (१०६) क़ुल् आमिनू बिही औ ला तुअ्मिनू ◌ इन्नल्लज़ी-न ऊतुल्अिल-म मिन् क़ब्लिही इज़ा युत्ला अलैहिम् यख़िर्रू-न लिल्अज़्क़ानि सुज्जदा (१०७) व यक़ूलू-न सुब्हा-न रब्बिना इन् का-न वअ्-दु रब्बिना ल-मफ़्अूला (१०८) व यख़िर्रू-न लिल्अज़्क़ानि यब्कू-न व यज़ीदुहुम् ख़ुशूआ □(१०९) क़ुलिद्अुल्ला-ह अविद्अुर् रह्मा-न ◌ अय्यम्-मा तद्अू फ़ - लहुल् - अस्माउल् - हुस्ना ◌ व ला तज् - हर् बिसलाति-क व ला तुख़ाफ़ित् बिहा वब्तग़ि बैं-न ज़ालि-क सबीला (११०) व क़ुलिल् - ह़म्दु लिल्लाहिल्लज़ी लम् यत्तख़िज़् व-ल-दंव्-व लम् यकुल्लहू शरीकुन् फ़िल्मुल्कि व - लम् यकुल्लहू वलिय्युम्-मिनज़्ज़ुल्लि व कब्बिर्हु तक्बीरा ★(१११)

१८ सूरतुल्-कह्फ़ि ६९

(मक्की) इस सूर: में अरबी के ६६२० अक्षर, १२०१ शब्द, ११० आयतें और १२ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ●

अल्ह़म्दु लिल्लाहिल्लज़ी अन्ज़-ल अला अब्दिहिल्-किता-ब व लम् यज्अल्लहू अि-व-जा ◌ (१) क़य्यिमल् - लियुन्ज़ि - र बअ्-सन् शदीदम्-मिल्लदुन्हु व युबश्शिरल्-मुअ्मिनीनल्लज़ी-न यअ्-मलूनस्-सालिहाति अन् - न लहुम् अज्-रन् ह़-स-नम्-◌ (२) माकिसी - न फ़ीहि अ-ब-दंन्- ◌ (३) व युन्ज़िरल्लज़ी-न क़ालुत्त-ख़ - ज़ल्लाहु व-ल-दा ◌ (४) मा लहुम् बिही मिन् अिल्मिंव्-व ला लि - आबाइहिम् ◌ कबुरत् कलि-म-तन् तख़्रुजु मिन् अफ़्वाहिहिम् ◌ इंय्यक़ूलू-न इल्ला कज़िबा (५) फ़-ल-अल्ल - क बाख़िअुन् नफ़्स-क अला आसारिहिम् इल्लम् युअ्मिनू बिहाज़ल्हदीसि अ-स-फ़ा (६)

✻ व. लाज़िम □ सज्द: ४ ★ रु. १२/१२ आ ११

इस क़ुरआन को सच्चाई के साथ नाज़िल किया है और वह सच्चाई के साथ नाज़िल हुआ (ऐ मुहम्मद !) हम ने तुम को सिर्फ़ खुशख़बरी देने वाला और डर सुनाने वाला बना कर भेजा है ※ (१०५) और हम ने क़ुरआन को जुज़-जुज़ कर के नाज़िल किया है ताकि तुम लोगों को ठहर-ठहर कर, पढ़ कर सुनाओ और हम ने उस को आहिस्ता-आहिस्ता उतारा है। (१०६) कह दो कि तुम इस पर ईमान लाओ या न लाओ, (यह हक़ है) जिन लोगों को इस से पहले इल्म (किताब) दिया गया है, जब वह उन को पढ़ कर सुनाया जाता है, तो वे ठोड़ियों के बल सज्दे में गिर पड़ते हैं, (१०७) और कहते हैं कि हमारा परवरदिगार पाक है। बेशक हमारे परवरदिगार का वायदा पूरा हो कर रहा। (१०८) और वे ठोड़ियों के बल गिर पड़ते हैं और रोते जाते हैं और इस से उन को और ज़्यादा आजिज़ी पैदा होती है □ (१०९) कह दो कि तुम (ख़ुदा को) अल्लाह (के नाम से) पुकारो या रहमान (के नाम से), जिस नाम से पुकारो, उस के सब नाम अच्छे हैं, और न नमाज़ बुलंद आवाज़ से पढ़ो और न धीरे, बल्कि उस के बीच का तरीक़ा अख़्तियार करो।[1] (११०) और कहो कि सब तारीफ़ ख़ुदा ही को है, जिस ने न तो किसी को बेटा बनाया है और न उसकी बादशाही में कोई शरीक है और न इस वजह से कि वह आजिज़ व नातवां है, कोई उस का मददगार है और उस को बड़ा जान कर उस की बड़ाई करते रहो। (१११)★

१८ सूरः कहफ़ ६९

सूरः कहफ़ मक्की है और इस में एक सौ दस आयतें और बारह रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

सब तारीफ़ ख़ुदा ही को है, जिस ने अपने बन्दे (मुहम्मद) पर (यह) किताब नाज़िल की और इस में किसी तरह की टेढ़ (और पेचीदगी) न रखी, (१) (बल्कि) सीधी (और आसान उतारी) ताकि (लोगों को) सख़्त अज़ाब से जो उस की तरफ़ से (आने वाला) है, डराए और मोमिनों को जो नेक अमल करते हैं, ख़ुशख़बरी सुनाए कि उन के लिए (उन के कामों का) नेक बदला (यानी बहिश्त) है। (२) जिस में वे हमेशा-हमेशा रहेंगे। (३) और उन लोगों को भी डराए, जो कहते हैं कि ख़ुदा ने (किसी को) बेटा बना लिया है। (४) उन को इस बात का कुछ भी इल्म नहीं और न उन के बाप-दादा ही को था। (यह) बड़ी सख़्त बात है, जो उन के मुंह से निकलती है (और कुछ शक नहीं कि) ये जो कुछ कहते हैं, सिर्फ़ झूठ है। (५) (ऐ पैग़म्बर !) अगर ये इस कलाम पर ईमान न लाएं, तो शायद तुम उनके पीछे रंज करके अपने आप को हलाक कर

१. अल्लाह का नाम रहमान लोग जानते थे, इस पर यह फ़रमाया कि नाम बहुतेरे हैं, अल्लाह वही एक है और पुकारने की नमाज़ में बहुत चिल्लाना भी नहीं और बहुत दबी आवाज़ भी नहीं। बीच की चाल पसंद रहे।

इन्ना ज-अल्ना मा अ-लल्अर्ज़ि ज़ी-नतल्लहा लिनब्लु-वहुम् अय्युहुम् अह्सनु अ-मला (७) व इन्ना ल-जाअिलू-न मा अलैहा सओदन् जुरुज़ा ﻁ (८) अम् हसिब्-त अन्-न अस्हाबलकह्फ़ि वर्रक़ीमि कानू मिन् आयातिना अ-ज-बा (९) इज् अवल्फ़ित्यतु इलल्-कह्फ़ि फ़-क़ालू रब्बना आतिना मिल्लदुन-क रह्-म-तंव्-व हय्यिअ् लना मिन् अम्रिना र-शदा (१०) फ़ - ज़रब्ना अला आज़ानिहिम् फ़िल्-कह्फ़ि सिनी - न अ-द-दा ﻻ (११) सुम्-म ब-अस्नाहुम् लिनअ्-ल-म अय्युहल्हिज़्बैनि अह्सा लिमा लबिसू अ - मदा ★ (१२) नह्नु नक़ुस्सु अलै-क न-ब-अहुम् बिल्हक़्क़ि ﻁ इन्नहुम् फ़ित्यतुन् आमनू बिरब्बिहिम् व ज़िद्नाहुम् हुदंव् - (१३) व र-बत्ना अला क़ुलूबिहिम् इज् क़ामू फ़-क़ालू रब्बुना रब्बुस्समावाति वल्अर्ज़ि लन्नद्अु-व मिन्दूनिही इलाहल्लक़द् क़ुल्ना इज़न् श-त-ता (१४) हाउलाइ क़ौमुनत्त-खज़ू मिन् दूनिही आलिह-तन् ﻁ लौला यअ्तू-न अलैहिम् बिसुल्तानिम्-बय्यिनिन् ﻁ फ़-मन् अज़्-लमु मिम्मनिफ़्तरा अ-लल्लाहि कज़िबा ﻁ (१५) व इज़िअ्-त-ज़ल्तुमूहुम् व मा यअ्-बुदू-न इल्लल्ला - ह फ़अ्-वू इलल्कह्फ़ि यन्शुर् लकुम् रब्बुकुम् मिर्रह्मतिही व युहय्यिअ् लकुम् मिन् अम्रिकुम् मिर्फ़क़ा (१६) व-त-रश्-शम-स इज़ा त-ल-अत्-तज़ावरु अन् कह्फ़िहिम् ज़ातल्यमीनि व इज़ा ग़-र-बत्-तक़्रिज़ुहुम् ज़ातश्शिमालि व हुम् फ़ी फ़ज्-वतिम्-मिन्हु ﻁ ज़ालि-क मिन् आयातिल्लाहि ﻁ मंय्यह्दिल्लाहु फ़हुवल्मुह्तदि व मंय्युज़्लिल् फ़-लन् तजि-द लहू वलिय्यम्-मुर्शिदा ★ (१७) व तह्सबुहुम् ऐक़ाज़ंव्वहुम् रुक़ूदु व् - व नुक़ल्लिबुहुम् ज़ातल्यमीनि व ज़ातश् - शिमालि - व कल्बुहुम् बासितुन् ज़िराअैहि बिल्वसीदि ﻁ लवित्तलअ् - त अलैहिम् ल-वल्लै-त मिन्हुम् फ़िरारंव्-व लमुलिअ्-त मिन्हुम् रुअ्-बा (१८)

إنا جعلنا ما على الأرض زينة لها لنبلوهم أيهم أحسن عملا ۝
وإنا لجاعلون ما عليها صعيدا جرزا ۝ أم حسبت أن أصحاب الكهف
والرقيم كانوا من آياتنا عجبا ۝ إذ أوى الفتية إلى الكهف فقالوا
ربنا آتنا من لدنك رحمة وهيئ لنا من أمرنا رشدا ۝ فضربنا
على آذانهم في الكهف سنين عددا ۝ ثم بعثناهم لنعلم أي
الحزبين أحصى لما لبثوا أمدا ۝ نحن نقص عليك نبأهم
بالحق إنهم فتية آمنوا بربهم وزدناهم هدى ۝ وربطنا على
قلوبهم إذ قاموا فقالوا ربنا رب السماوات والأرض لن ندعو من
دونه إلها لقد قلنا إذا شططا ۝ هؤلاء قومنا اتخذوا من دونه
آلهة لولا يأتون عليهم بسلطان بين فمن أظلم ممن افترى
على الله كذبا ۝ وإذ اعتزلتموهم وما يعبدون إلا الله فأووا إلى
الكهف ينشر لكم ربكم من رحمته ويهيئ لكم من أمركم
مرفقا ۝ وترى الشمس إذا طلعت تزاور عن كهفهم ذات اليمين
وإذا غربت تقرضهم ذات الشمال وهم في فجوة منه ذلك من
آيات الله من يهد الله فهو المهتد ومن يضلل فلن تجد له وليا
مرشدا ۝ وتحسبهم أيقاظا وهم رقود ونقلبهم ذات اليمين
وذات الشمال وكلبهم باسط ذراعيه بالوصيد لو اطلعت

★रु. १/१३ आ १२ ★रु. २/१४ आ ५

दोगे। (६) जो चीज़ ज़मीन पर है, हम ने उस को ज़मीन के लिए ज़ीनत बनाया है, ताकि लोगों की आज़माइश करें कि उन में कौन अच्छे अमल करने वाला है। (७) और जो चीज़ ज़मीन पर है, हम उस को (नाबूद कर के) बंजर मैदान कर देंगे। (८) क्या तुम ख़्याल करते हो कि ग़ार और लौह वाले हमारी निशानियों से अजीब थे। (९) जब वे जवान ग़ार में जा रहे तो कहने लगे कि ऐ हमारे परवरदिगार! हम पर अपने यहां से रहमत नाज़िल फ़रमा और हमारे काम में दुरुस्ती (के सामान) मुहय्या कर। (१०) तो हम ने ग़ार में कई साल तक उन के कानों पर (नींद के) परदे डाले (यानी उन को सुलाए) रखा। (११) फिर उन को जगा उठाया, ताकि मालूम करें कि जितनी मुद्दत वे (ग़ार में) रहे, दोनों जमाअतों में से उस की मिक़्दार किस को ख़ूब याद है। (१२)★

हम इन के हालात तुम से सही-सही बयान करते हैं। वे कई जवान थे, जो अपने परवरदिगार पर ईमान लाए थे और हम ने उन को और ज़्यादा हिदायत दी थी। (१३) और उन के दिलों को मर्बूत (यानी मज़बूत) कर दिया। जब वे (उठ) खड़े हुए तो कहने लगे कि हमारा परवरदिगार आसमानों और ज़मीन का मालिक है, हम उस के सिवा किसी को माबूद (समझ कर) न पुकारेंगे। (अगर ऐसा किया) तो उस वक़्त हम ने अक़्ल से दूर की बात कही। (१४) इन हमारी क़ौम के लोगों ने उस के सिवा और माबूद बना रखे हैं। भला ये उन (के ख़ुदा होने) पर कोई खुली दलील क्यों नहीं लाते, तो उस से ज़्यादा कौन ज़ालिम है, जो ख़ुदा पर झूठ गढ़े। (१५) और जब तुम ने इन (मुश्रिकों) से और जिन की ये ख़ुदा के सिवा इबादत करते हैं, उन से किनारा कर लिया है, तो ग़ार में चल रहो। तुम्हारा परवरदिगार तुम्हारे लिए अपनी रहमत फैला देगा और तुम्हारे कामों में आसानी (के सामान) मुहय्या करेगा।[1] (१६) और जब सूरज निकले तो तुम देखो कि (धूप) उन के ग़ार से दाहिनी तरफ़ सिमट जाए और जब डूबे तो उन से बायीं तरफ़ कतरा जाए और वे उस के मैदान में थे। ये ख़ुदा की निशानियों में से हैं, जिस को ख़ुदा हिदायत दे, उसे हिदायत मिल गयी और जिस को गुमराह करे, तो तुम उस के लिए कोई दोस्त, राह बताने वाला न पाओगे। (१७)★

और तुम उन को ख़्याल करो कि जाग रहे हैं, हालांकि वे सोते हैं और हम उन को दाएं और बाएं करवट बदलाते थे और उनका कुत्ता चौखट पर दोनों हाथ फैलाए हुए था। अगर तुम उनको झांक कर देखते तो पीठ फेर कर भाग जाते और उन से रौब में आ जाते। (१८) और इसी तरह हम ने

---

१. तफ़्सीरों में लिखा है कि ये लोग क़ौम के सरदारों की औलाद थे। एक दिन ईद का दिन था। वे बाहर मेले में गये तो देखते हैं कि लोग बुतों को पूज रहे हैं और उनके नाम पर जानवर ज़िब्ह कर रहे हैं ख़ुदा ने उनके दिल की आंखें सूझ-बूझ के नूर से रौशन कर दी थीं तो उन्होंने लोगों की बुतपरस्ती की हरकत को ना-पसंदीदगी की नज़र से देखा और दिल में कहा कि ये बातें तो ख़ुदा ही के लिए मुनासिब हैं जो आसमान व ज़मीन का पैदा करने वाला है, फिर ये अपनी क़ौम के लोगों से दूर ही रहने लगे। चुनांचे सब से पहले इन में से एक शख़्स एक पेड़ के साए तले अलग जा बैठा। दूसरा भी वहीं आ कर बैठ गया, फिर तीसरा भी उन के पास आया और बैठ गया, चौथा आया, फिर पांचवां। ये लोग आपस में एक दूसरे को नहीं जानते थे, इसी वजह से अपने दिल का हाल एक दूसरे से कहते हुए डरते और झिझकते थे। आख़िर एक उन में से बोला कि साहिबो! तुम जो अपने भाई-बन्दों से अलग हो कर यहां आ बैठे हो, इस की कोई न कोई वजह ज़रूर है और वह हर शख़्स को सच्चाई के साथ बयान कर देना चाहिए। दूसरे ने कहा, भाई! सच तो यह है कि मैं ने यह ख़्याल किया कि जो काम हमारी क़ौम के लोग कर रहे हैं, बातिल है और इबादत का हक़दार सिर्फ़ एक ख़ुदा है, जो आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला है। तीसरे ने कहा कि ख़ुदा की क़सम!

(शेष पृष्ठ ४६९ पर)

★रु. १/१३ आ १२ ★रु. २/१४ आ ५

व कज़ालि-क ब-अस्नाहुम् लि-य-त-साअलू बैनहुम् ط क़ा-ल क़ाइलुम् - मिन्हुम्
कम् लबिस्तुम् ط क़ालू लबिस्ना यौमन् औ बअ्-ज़ यौमिन् ط क़ालू रब्बुकुम्
अअ्-लमु बिमा लबिस्तुम् ط फ़ब-असू अ-ह-दकुम् बिवरिक़िकुम् हाज़िही इलल्-
मदीनति फ़ल्यन्ज़ुर् अय्युहा अज़्का तआमन् फ़ल्-यअ्तिकुम् बिरिज़्क़िम्-मिन्हु
वल्-य-त-लत्तफ़ व ला युश्अिरन्-न बिकुम्
अ - ह-दा (१९) इन्नहुम् इंय्यज़्हरू
अलैकुम् यर्जुमूकुम् औ युईदूकुम् फ़ी
मिल्लतिहिम् व लन् तुफ़्लिहू इज़न्
अ-ब-दा (२०) व कज़ालि-क अअ्-सर्ना
अलैहिम् लियअ्-लमू अन-न वअ्-दल्लाहि
हक़्क़ुंव्-व अन्नस्सा-अ-त ला रै-ब फ़ीहा ج
इज़् य-त-नाज़अू-न बैनहुम् अम्-रहुम् फ़-क़ालुब्नू
अलैहिम् बुन्-यानन् ط रब्बुहुम् अअ् - लमु
बिहिम् ط क़ालल्लज़ी - न ग़ - लबू अला
अम्रिहिम् ल-नत्तख़िज़न्-न अलैहिम् मस्जिदा
(२१) स-यक़ूलू-न सला-सतुर्-राबिअुहुम्
कल्बुहुम् ج व यक़ूलू-न ख़म्सतुन् सादिसुहुम्

عليهم لوليت منهم فرارا ولملئت منهم رعبا ۝ وكذلك بعثنهم
ليتساءلوا بينهم قال قائل منهم كم لبثتم قالوا لبثنا يوما او
بعض يوم قالوا ربكم اعلم بما لبثتم فابعثوا احدكم بورقكم
هذه الى المدينة فلينظر ايها ازكى طعاما فلياتكم برزق منه
وليتلطف ولا يشعرن بكم احدا ۝ انهم ان يظهروا عليكم يرجموكم
او يعيدوكم في ملتهم ولن تفلحوا اذا ابدا ۝ وكذلك اعثرنا عليهم
ليعلموا ان وعد الله حق وان الساعة لا ريب فيها اذ يتنازعون
بينهم امرهم فقالوا ابنوا عليهم بنيانا ربهم اعلم بهم قال
الذين غلبوا على امرهم لنتخذن عليهم مسجدا ۝ سيقولون ثلثة
رابعهم كلبهم ويقولون خمسة سادسهم كلبهم رجما بالغيب
ويقولون سبعة وثامنهم كلبهم قل ربي اعلم بعدتهم ما يعلمهم
الا قليل فلا تمار فيهم الا مراء ظاهرا ولا تستفت فيهم
منهم احدا ۝ ولا تقولن لشاىء اني فاعل ذلك غدا ۝ الا
ان يشاء الله واذكر ربك اذا نسيت وقل عسى ان يهدين ربي
لاقرب من هذا رشدا ۝ ولبثوا في كهفهم ثلث مائة سنين
وازدادوا تسعا ۝ قل الله اعلم بما لبثوا له غيب السموت والارض
ابصر به واسمع ما لهم من دونه من ولي ولا يشرك في حكمه

कल्बुहुम् रज्-मम्-बिल्ग़ैबि ج व यक़ूलू - न सब्-अतुंव्-व सामिनुहुम् कल्बुहुम् ط
क़ुर्रब्बी अअ्-लमु बिअिद्दतिहिम् मा यअ्-लमुहुम् इल्ला क़लीलुन् قف फ़ला
तुमारि फ़ीहिम् इल्ला मिराअन् ज़ाहिरंव् - व ला तस्तफ़्ति फ़ीहिम्
मिन्हुम् अ-ह-दा ★ (२२) व ला तक़ूलन्-न लिशैइन् इन्नी फ़ाअिलुन् ज़ालि-क
ग़दा ﻻ (२३) इल्ला अंय्यशाअल्लाहु ز वज़्कुर्रब्ब-क इज़ा नसी-त व क़ुल्
असा अंय्यह्दियनि रब्बी लि-अक़्-र-ब मिन् हाज़ा र-श-दा (२४) व लबिसू फ़ी
कह्फ़िहिम् सला-स मिअतिन् सिनी-न वज़्दादू तिस्आ (२५) क़ुलिल्लाहु अअ्-लमु
बिमा लबिसू ج लहू ग़ैबुस्समावाति वल्अर्ज़ि ط अब्सिर् बिही व अस्मिअ् ط मा
लहुम् मिन्दूनिही मिंव्वलिय्यिंव्-व ला युश्रिकु फ़ी हुक्मिही अ-ह-दा (२६)

■ निस्फ़ुल् क़ुरआन ★रु. ३/१५ आ ५

उन को उठाया ताकि आपस में एक दूसरे से मालूम करें। एक कहने वाले ने कहा कि तुम (यहां) कितनी मुद्दत रहे ? उन्होंने कहा कि एक दिन या इस से भी कम ! उन्हों ने कहा कि जितनी मुद्दत तुम रहे हो, तुम्हारा परवरदिगार ही उस को खूब जानता है। तो अपने में से किसी को यह रुपया दे कर शहर को भेजो, वह देखे कि अच्छा खाना कौन-सा है, तो उस में से खाना ले आए और धीरे-धीरे आए-जाए और तुम्हारा हाल किसी को न बताए ※ (१९) अगर वह तुम पर ग़लबा पा लेंगे तो तुम्हें पत्थर मार-मार कर हलाक कर देंगे या फिर अपने मज़हब में दाखिल कर लेंगे और उस वक़्त तुम कभी कामियाबी नहीं पाओगे। (२०) और इसी तरह हम ने (लोगों को) उन (के हाल) से ख़बरदार कर दिया, ताकि वे जानें कि ख़ुदा का वायदा सच्चा है और यह कि क़ियामत (जिस का वायदा किया जाता है) इस में कुछ शक नहीं। उस वक़्त लोग उन के बारे में आपस में झगड़ने लगे और कहने लगे कि उन (के ग़ार) पर इमारत बना दो। उन का परवरदिगार उन (के हाल) को ख़ूब जानता है। जो लोग उन के बारे में ग़लबा रखते थे, कहने लगे कि हम उन (के ग़ार) पर मस्जिद बनाएंगे। (२१) (कुछ लोग) अटकल-पच्चू कहेंगे कि वे तीन थे (और) चौथा उन का कुत्ता था और (कुछ) कहेंगे कि वे पांच थे (और) छठा उन का कुत्ता था और (कुछ) कहेंगे कि वे सात थे और आठवां उन का कुत्ता था। कह दो कि मेरा परवरदिगार ही उन की गिनती ख़ूब जानता है। उनको जानते भी हैं तो थोड़े ही लोग (जानते हैं), तो तुम उन (के मामले) में बात-चीत न करना, मगर सरसरी सी बातें और न उनके बारे में उनमें से किसी से कुछ मालूम ही करना (२२) ★

और किसी काम के बारे में न कहना कि मैं इसे कल कर दूंगा, (२३) मगर (इन्शा अल्लाह) कह कर, (यानी अगर) ख़ुदा चाहे तो (कर दूंगा) और जब ख़ुदा का नाम लेना भूल जाओ, तो याद आने पर ले लो और कह दो कि उम्मीद है कि मेरा परवरदिगार मुझे इस से भी ज़्यादा हिदायत की बातें बताए। (२४) और ग़ार वाले अपने ग़ार में नौ ऊपर तीन सौ साल रहे। (२५) कह दो कि जितनी मुद्दत वे रहे, उसे ख़ुदा ही ख़ूब जानता है। उसी को आसमानों और ज़मीन की छिपी बातें (मालूम) हैं। वह क्या ख़ूब देखने वाला और क्या ख़ूब सुनने वाला है। उस के सिवा उन का कोई कारसाज़ नहीं और न वह अपने हुक्म में किसी को शरीक करता है। (२६) और अपने परवर-

---

(पृष्ठ ४६७ का शेष)
मेरे दिल में भी यही ख़्याल पैदा हुआ था। चौथे ने कहा कि मेरा भी यही ख़्याल है। ग़रज़ सब एक ही ख़्याल के हो गये और अपनी एक जुदा इबादतगाह बना ली। इस में एक ख़ुदा की इबादत करते और बुतों की पूजा से ज़रा भी ताल्लुक़ न रखते। उन का यह हाल लोगों को मालूम हुआ तो उन्हों ने बादशाह से जा चुग़ली खायी। बादशाह बड़ा जाबिर व ज़ालिम और तंगनज़र था, लोगों को कुफ़्र व शिर्क पर तैयार करता और उन से ज़बरदस्ती बुतपरस्ती कराता। बादशाह ने उन को बुलाया और पूछा किया। उन्हों ने सब कुछ सच-सच बयान कर दिया। बादशाह ने उन को डराया-धमकाया और कुछ मोहलत दी कि ख़ुदापरस्ती से रुक जाएं, मगर ख़ुदापरस्ती और तौहीद ऐसी नहीं कि जब दिल में बैठ जाए तो कभी निकल सके। उन्हों ने यह सलाह की कि अब इन लोगों से तुम्हें कुछ मतलब नहीं रहा, तो उन में रहना क्या ज़रूरी है। बेहतर यह है कि ग़ार में चल रहें।

२. यानी जो ख़ुदा चाहता है (वही होता है) और ख़ुदा (की मदद) के सिवा (किसी को) कुछ ताक़त व क़ुदरत नहीं।

※ निस्फ़ुल् क़ुरआन ★रु. ३/१५ आ ५

वत्लु मा ऊहि - य इलै-क मिन् किताबि रब्बि - क ج ला मुबद्दि-ल लिकलिमातिही ज व लन् तजि-द मिन् दूनिही मुल्त - ह़ - दा (२७) वस्बिर् नफ़्-स-क म-अ़ल्लज़ी-न यद्अू-न रब्बहुम् बिल्ग़दाति वल्अ़शिय्यि युरीदू-न वज्हहू व ला तअ़्-दु अ़ना-क अ़न्हुम् ج तुरीदु ज़ीनतल् - ह़यातिद् - दुन्या ج व ला तुतिअ़् मन् अग़्फ़ल्ना क़ल्बहू अ़न् ज़िक्रिना वत्त-ब-अ़ हवाहु व का-न अम्रुहू फ़ुरुता ● (२८) व क़ुलिल्ह़क़्क़ु मिर् - रब्बिकुम् قف फ़-मन् शा - अ फ़ल् - युअ्मिन् - व मन्शाअ फ़ल्यक्फ़ुर् ۙ इन्ना अअ़्-तद्ना लिज़्ज़ालिमी-न नारन् ۙ अहा-त बिहिम् सुरादिक़ुहा ط व इंय्यस्तग़ीसू युग़ासू बिमाइन् कल्मुह्लि यश्विल् - वुजू - ह ط बिअ़् - सश्शराबु ط व सा - अत् मुर्तफ़-क़ा (२९) इन्नल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति इन्ना ला नुज़ीअ़ु अज्-र मन् अह़्-स-न अ़-म-ला ج (३०) उलाइ-क लहुम् जन्नातु अ़द्निन् तज्री मिन् तह़्तिहिमुल्-अन्हारु युहल्लौ-न फ़ीहा मिन् असावि-र मिन् ज़-हबिंव-व यल्बसू-न सियाबन् ख़ुज़्रम्-मिन् सुन्दुसिंव-व इस्तब्रक़िम् - मुत्तकिई-न फ़ीहा अ़लल्अराइकि ط निअ़् - मस्सवाबु ط व ह़सुनत् मुर्त-फ़-क़ा ★ (३१) वज़्रिब् लहुम् म-स-लर्रजुलैनि ज-अ़ल्ना लिअह़दिहिमा जन्नतैनि मिन् अअ़्-नाबिंव-व ह़-फ़फ़्नाहुमा बिनख़्लिंव-व ज-अ़ल्ना बैनहुमा ज़र्आ ط (३२) किल्तल्-जन्नतैनि आतत् उकुलहा व लम् तज़्लिम् मिन्हु शैअंव्-व फ़ज्जर्ना ख़िलालहुमा न-ह-रा ۙ (३३) व का - न लहू स - मरुन् ج फ़क़ा-ल लिसाहि़बिही व हु-व युहाविरुहू अ-न अक्सरु मिन्-क मालंव्-व अ-अ़ज़्ज़ु न-फ़-रा (३४) व द-ख़-ल जन्नतहू व हु-व ज़ालिमुल्-लिनफ़्सिही ج क़ा-ल मा अज़ुन्नु अन् तबी-द हाज़िही अ-ब-दा ۙ (३५) व मा अज़ुन्नुस्सा - अ - त क़ाइ-म - तंव्-व लइर्रुदित्तु इला रब्बी ल - अजिदन् - न ख़ैरम्-मिन्हा मुन्क़-लबा (३६)

أَحَدًا ۝ وَاتْلُ مَا أُوحِيَ إِلَيْكَ مِنْ كِتَابِ رَبِّكَ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمَاتِهِ
وَلَنْ تَجِدَ مِنْ دُونِهِ مُلْتَحَدًا ۝ وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِينَ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ
بِالْغَدَاةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيدُونَ وَجْهَهُ وَلَا تَعْدُ عَيْنَاكَ عَنْهُمْ تُرِيدُ زِينَةَ
الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَلَا تُطِعْ مَنْ أَغْفَلْنَا قَلْبَهُ عَنْ ذِكْرِنَا وَاتَّبَعَ هَوَاهُ وَكَانَ
أَمْرُهُ فُرُطًا ۝ وَقُلِ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكُمْ فَمَنْ شَاءَ فَلْيُؤْمِنْ وَمَنْ
شَاءَ فَلْيَكْفُرْ إِنَّا أَعْتَدْنَا لِلظَّالِمِينَ نَارًا أَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا وَإِنْ
يَسْتَغِيثُوا يُغَاثُوا بِمَاءٍ كَالْمُهْلِ يَشْوِي الْوُجُوهَ بِئْسَ الشَّرَابُ وَ
سَاءَتْ مُرْتَفَقًا ۝ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ إِنَّا لَا نُضِيعُ
أَجْرَ مَنْ أَحْسَنَ عَمَلًا ۝ أُولَٰئِكَ لَهُمْ جَنَّاتُ عَدْنٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِمُ
الْأَنْهَارُ يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَيَلْبَسُونَ ثِيَابًا خُضْرًا
مِنْ سُنْدُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ مُتَّكِئِينَ فِيهَا عَلَى الْأَرَائِكِ نِعْمَ الثَّوَابُ
وَحَسُنَتْ مُرْتَفَقًا ۝ وَاضْرِبْ لَهُمْ مَثَلًا رَجُلَيْنِ جَعَلْنَا لِأَحَدِهِمَا
جَنَّتَيْنِ مِنْ أَعْنَابٍ وَحَفَفْنَاهُمَا بِنَخْلٍ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمَا زَرْعًا ۝ كِلْتَا
الْجَنَّتَيْنِ آتَتْ أُكُلَهَا وَلَمْ تَظْلِمْ مِنْهُ شَيْئًا وَفَجَّرْنَا خِلَالَهُمَا نَهَرًا ۝
وَكَانَ لَهُ ثَمَرٌ فَقَالَ لِصَاحِبِهِ وَهُوَ يُحَاوِرُهُ أَنَا أَكْثَرُ مِنْكَ مَالًا وَأَعَزُّ
نَفَرًا ۝ وَدَخَلَ جَنَّتَهُ وَهُوَ ظَالِمٌ لِنَفْسِهِ قَالَ مَا أَظُنُّ أَنْ تَبِيدَ هَٰذِهِ
أَبَدًا ۝ وَمَا أَظُنُّ السَّاعَةَ قَائِمَةً وَلَئِنْ رُدِدْتُ إِلَىٰ رَبِّي لَأَجِدَنَّ خَيْرًا

●सु. ३/४ ★रु. ४/१६ आ ९

दिगार की किताब को, जो तुम्हारे पास भेजी जाती है, पढ़ते रहा करो। उस की बातों को कोई बदलने वाला नहीं और उस के सिवा तुम पनाह भी नहीं पाओगे। (२७) और जो लोग सुबह व शाम अपने परवरदिगार को पुकारते और उस की ख़ुशी चाहते हैं, उन के साथ सब्र करते रहो और तुम्हारी निगाहें उन में से (गुज़र कर) और तरफ़ न दौड़ें कि दुनिया की ज़िंदगी की ज़ीनत चाहने लगो और जिस शख़्स के दिल को हम ने अपनी याद से ग़ाफ़िल कर दिया है और वह अपनी ख़्वाहिश की पैरवी करता है और उस का काम हद से बढ़ गया है, उस का कहा न मानना ●(२८) और कह दो कि (लोगो !) यह क़ुरआन तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से हक़ (पर) है, तो जो चाहे ईमान लाए और जो चाहे काफ़िर रहे। हम ने ज़ालिमों के लिए (दोज़ख़ की) आग तैयार कर रखी है, जिस की क़नातें उस को घेर रही होंगी और अगर फ़रियाद करेंगे, तो ऐसे खौलते हुए पानी से, उन की दादरसी की जाएगी जो पिघले हुए तांबे की तरह (गर्म होगा और जो) मुंहों को भून डालेगा। (उन के पीने का) पानी भी बुरा और आरामगाह भी बुरी। (२९) (और) जो ईमान लाए और काम भी नेक करते रहे, तो हम नेक काम करने वालों का बदला बर्बाद नहीं करते। (३०) ऐसे लोगों के लिए हमेशा रहने के बाग़ हैं, जिन में उन के (महलों के) नीचे नहरें बह रही हैं। उनको वहां सोने के कंगन पहनाए जाएंगे और वे बारीक दीबा और अतलस के हरे कपड़े पहना करेंगे (और) तख़्तों पर तकिए लगा कर बैठा करेंगे। (क्या) ख़ूब बदला और (क्या) ख़ूब आरामगाह है★(३१)

और उन से दो शख़्सों का हाल बयान करो, जिन में से एक को हम ने अंगूर के दो बाग़ (इनायत) किए थे और उन के चारों तरफ़ खजूरों के पेड़ लगा दिए थे और उन के दर्मियान खेती पैदा कर दी थी। (३२) दोनों बाग़ (ज़्यादा से ज़्यादा) फल लाते और उन की (पैदावार) में किसी तरह की कमी न होती और दोनों में हम ने एक नहर भी जारी कर रखी थी। (३३) और (इस तरह) उस (शख़्स) को (उन की) पैदावार (मिलती रहती) थी, तो (एक दिन) जबकि वह अपने दोस्त से बातें कर रहा था, कहने लगा कि मैं तुम से माल (व दौलत) में भी ज़्यादा हूं और जत्थे (और जमाअत) के लिहाज़ से भी ज़्यादा इज़्ज़त वाला हूं। (३४) और (ऐसी शेख़ियों से) अपने हक़ में ज़ुल्म करता हुआ अपने बाग़ में दाख़िल हुआ कहने लगा कि मैं नहीं ख़्याल करता कि यह बाग़ कभी तबाह हो। (३५) और न ख़्याल करता हूं कि क़ियामत बरपा हो और अगर मैं अपने परवरदिगार की तरफ़ लौटाया भी जाऊं, तो (वहां) ज़रूर इसमें अच्छी जगह पाऊंगा। (३६)

●मु. ३/४ ★रु. ४/१६ आ ६

क़ा-ल लहू साहिबुहू व हु-व युहाविरुहू अ-क-फ़र्-त बिल्लज़ी ख़-ल-क़-क मिन् तुराबिन् सुम्-म मिन् नुत्फ़तिन् सुम्-म सव्वा-क रजुला (३७) लाकिन्-न हुवल्लाहु रब्बी व ला उशिरकु बिरब्बी अ-ह्-दा (३८) व लौला इज़् द-ख़ल्-त जन्न-त-क क़ुल्-त मा शा-अल्लाहु ला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाहि इन् तरनि अ-न अ-क़ल्-ल मिन्-क मालंव्-व व-ल-दा (३९) फ़-असा रब्बी अंय्युअ्तियनि ख़ैरम्मिन् जन्नति-क व युर्सि-ल अलैहा हुस्बानम्-मिनस्समाइ फ़तुस्बि-ह सअीदन् ज़-ल-क़ा (४०) औ युस्बि-ह माउहा ग़ौरन् फ़-लन् तस्तती-अ लहू त-ल-बा (४१) व उही-त बि-स-मरिही फ़-अस्ब-ह युक़ल्लिबु कफ़्फ़ैहि अला मा अन्फ़-क़ फ़ीहा व हि-य ख़ावि-यतुन् अला अुरूशिहा व यक़ूलु यालैतनी लम् उशिरक् बिरब्बी अ-ह्-दा (४२) व लम् तकुल्लहू फ़ि-अतुंय्यन्सुरूनहू मिन् दूनिल्लाहि व मा का-न मुन्तसिरा (४३) हुनालिकल्-वलायतु लिल्लाहिल्-हक़्क़ि हु-व ख़ैरुन् सवाबंव्-व ख़ैरुन् अुक़्बा★(४४) वज़्रिब् लहुम् म-स-लल्-हयातिद्-दुन्या कमाइन् अन्ज़ल्नाहु मिनस्समाइ फ़ख़्त-ल-त बिही नबातुल्अर्ज़ि फ़-अस्ब-ह हशीमन् तज़्-रूहुर्रियाहु व कानल्लाहु अला कुल्लि शैइम्-मुक़्तदिरा (४५) अल्मालु वल्बनू-न ज़ीनतुल्-हयातिद्-दुन्या वल्बाक़ियातुस्-सालिहातु ख़ैरुन् अिन-द रब्बि-क सवाबंव्-व ख़ैरुन् अ-म-ला (४६) व यौ-म नुसय्यिरुल्-जिबा-ल व त-रल्अर्-ज़ बारिज़-तंव्-व ह्-शर्-नाहुम् फ़-लम् नुग़ादिर् मिन्हुम् अ-ह्-दा (४७) व अुरिज़ू अला रब्बि-क सफ़्फ़न् ल-क़द् जिअ्तुमूना कमा ख़लक़्नाकुम् अव्व-ल मर्रतिम् बल् ज़-अम्तुम् अल्लन् नज्-अ-ल लकुम् मौअिदा (४८) व वुज़िअल्-किताबु फ़-त-रल्-मुज्रिमी-न मुश्फ़िक़ी-न मिम्मा फ़ीहि व यक़ूलू-न यावै-ल-तना मालि हाज़ल्-किताबि ला युग़ादिरु सग़ी-र-तंव्-व ला कबीरतन् इल्ला अह्साहा व व-जदू मा अमिलू हाज़िरन् व ला यज़्लिमु रब्बु-क अ-ह्-दा★(४९)

منها منقلبا ﴿٣٦﴾ قال له صاحبه وهو يحاوره أكفرت بالذي خلقك
من تراب ثم من نطفة ثم سواك رجلا ﴿٣٧﴾ لكنا هو الله ربي ولا
أشرك بربي أحدا ﴿٣٨﴾ ولولا إذ دخلت جنتك قلت ما شاء الله لا قوة
إلا بالله إن ترن أنا أقل منك مالا وولدا ﴿٣٩﴾ فعسى ربي أن
يؤتين خيرا من جنتك ويرسل عليها حسبانا من السماء فتصبح
صعيدا زلقا ﴿٤٠﴾ أو يصبح ماؤها غورا فلن تستطيع له طلبا ﴿٤١﴾ وأحيط
بثمره فأصبح يقلب كفيه على ما أنفق فيها وهي خاوية على عروشها
ويقول يا ليتني لم أشرك بربي أحدا ﴿٤٢﴾ ولم تكن له فئة ينصرونه
من دون الله وما كان منتصرا ﴿٤٣﴾ هنالك الولاية لله الحق هو خير
ثوابا وخير عقبا ﴿٤٤﴾ واضرب لهم مثل الحياة الدنيا كماء أنزلناه
من السماء فاختلط به نبات الأرض فأصبح هشيما تذروه الرياح
وكان الله على كل شيء مقتدرا ﴿٤٥﴾ المال والبنون زينة الحياة
الدنيا والباقيات الصالحات خير عند ربك ثوابا وخير أملا ﴿٤٦﴾ و
يوم نسير الجبال وترى الأرض بارزة وحشرناهم فلم نغادر
منهم أحدا ﴿٤٧﴾ وعرضوا على ربك صفا لقد جئتمونا كما خلقناكم
أول مرة بل زعمتم ألن نجعل لكم موعدا ﴿٤٨﴾ ووضع الكتاب
فترى المجرمين مشفقين مما فيه ويقولون يا ويلتنا مال هذا

★रु. ५/१७ आ १३ ★रु. ६/१८ आ ५

तो उस का दोस्त, जो उस से बात-चीत कर रहा था, कहने लगा कि क्या तुम उस (ख़ुदा) से कुफ़्र करते हो, जिस ने तुम को मिट्टी से पैदा किया, फिर नुत्फ़े से, फिर तुम्हें पूरा मर्द बनाया। (३७) मगर मैं यह कहता हूं कि ख़ुदा ही मेरा परवरदिगार है और मैं अपने परवरदिगार के साथ किसी को शरीक नहीं करता। (३८) और (भला) जब तुम अपने बाग़ में दाख़िल हुए, तो तुम ने 'माशा अल्लाह ला क़ू-व-त इल्ला बिल्लाह' क्यों न कहा, अगर तुम मुझे माल व औलाद में अपने से कमतर देखते हो? (३९) तो अजब नहीं कि मेरा परवरदिगार मुझे तुम्हारे बाग़ से बेहतर अता फ़रमाए और इस तुम्हारे बाग़ पर आसमान से आफ़त भेज दे, तो वह साफ़ मैदान हो जाए। (४०) या उस (की नहर) का पानी गहरा हो जाए तो फिर तुम उसे न ला सको। (४१) और उस के मेवों को अज़ाब ने आ घेरा और वह अपनी छतरियों पर गिर कर रह गया, तो जो माल उस ने उस पर ख़र्च किया था, उस पर (हसरत से) हाथ मलने लगा और कहने लगा कि काश मैं अपने परवरदिगार के साथ किसी को शरीक न बनाता। (४२) (उस वक़्त) ख़ुदा के सिवा कोई जमाअत उस की मदद-गार न हुई और न वह बदला ले सका। (४३) यहां (से साबित हुआ) कि हुकूमत सब ख़ुदा-ए-बरहक़ की है, उसी का सिला बेहतर और (उसी का) बदला अच्छा है। (४४)★

और उस ने दुनिया की ज़िंदगी की मिसाल भी बयान करो, (वह ऐसी हैं,) जैसे पानी, जिसे हम ने आसमान से बरसाया, तो उस के साथ ज़मीन को ज़रखेज़ी मिल गयी, फिर वह चूरा-चूरा हो गयी कि हवाएं उसे उड़ाती फिरती हैं और ख़ुदा तो हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। (४५) माल और बेटे तो दुनिया की ज़िंदगी की (रौनक़ व) ज़ीनत हैं और नेकियां जो बाक़ी रहने वाली हैं, वे सवाब के लिहाज़ से तुम्हारे परवरदिगार के यहां बहुत अच्छी और उम्मीद के लिहाज़ से बहुत बेहतर हैं। (४६) और जिस दिन हम पहाड़ों को चलाएंगे और तुम ज़मीन को साफ़ मैदान रखोगे और उन (लोगों) को हम जमा कर लेंगे तो उन में से किसी को भी नहीं छोड़ेंगे। (४७) और सब तुम्हारे परवरदिगार के सामने सफ़ बांध कर लाए जाएंगे (तो हम उन से कहेंगे कि) जिस तरह हम ने तुम को पहली बार पैदा किया था, (इसी तरह आज) तुम हमारे सामने आए, लेकिन तुम ने तो यह ख़्याल कर रखा था कि हम ने तुम्हारे लिए (क़ियामत का) कोई वक़्त मुक़र्रर ही नहीं किया। (४८) और (अमलों की) किताब (खोल कर) रखी जाएगी तो तुम गुनाहगारों को देखोगे कि जो कुछ उस में (लिखा) होगा, उस से डर रहे होंगे और कहेंगे, हाय शामत! यह कैसी किताब है कि न छोटी बात को छोड़ती है, न बड़ी को, (कोई बात भी नहीं) मगर उसे लिख रखा है और जो अमल किए होंगे, सब को हाज़िर पाएंगे और तुम्हारा परवरदिगार किसी पर ज़ुल्म नहीं करेगा। (४९)★

★रु. ५/१७ आ १२ ★रु. ६/१८ आ ५

व इज़् क़ुल्ना लिल्मलाइकतिस्जुदू लि-आद-म फ़-स-जदू इल्ला इब्ली-स ♭ का-न मिनल्-जिन्नि फ़-फ़-स-क़ अन् अम्रि रब्बिही ♭ अ-फ़-तत्तख़िज़ूनहू व ज़ुर्रिय्यतहू औलिया-अ मिन् दूनी व हुम् लकुम् अदुव्वुन् ♭ बिअ्-स लिज़्ज़ालिमी-न ब-द-ला (५०) मा अश्हत्तुहुम् ख़ल्क़स्समावाति वल्अर्ज़ि व ला ख़ल्-क़ अन्फ़ुसिहिम् ◌ॅ व मा कुन्तु मुत्तख़िज़ल्-मुज़िल्ली-न अज़ुदा (५१) व यौ-म यक़ूलु नादू शु-र-काइ-यल्लज़ी-न ज़-अम्तुम् फ़-दऔहुम् फ़-लम् यस्तजीबू लहुम् व ज-अल्ना बैनहुम् मौबिक़ा (५२) व र-अल्-मुज्रिमूनन्ना-र फ़-ज़न्नू अन्नहुम् मुवाक़िअूहा व लम् यजिदू अन्हा मस्रिफ़ा ★(५३) व ल-क़द् सर्रफ़्ना फ़ी हाज़ल्-क़ुर्आनि लिन्नासि मिन् कुल्लि म-सलिन् ♭ व कानल्-इन्सानु अक्स-र शैइन् ज-द-ला (५४) व मा म-न-अन्ना-स अंय्युअ्मिनू इज़् जा-अ-हुमुल्-हुदा व यस्तग़्फ़िरू रब्बहुम् इल्ला अन् तअ्ति-यहुम् सुन्नतुल्-अव्वली-न औ यअ्तियहुमुल्-अज़ाबु क़ुबुला (५५) व मा नुर्सिलुल्-मुर्सली-न इल्ला मुबश्शिरी-न व मुन्ज़िरी-न ◌ॅ व युजादिलुल्लज़ी-न क-फ़रू बिल्बातिलि लियुद्हिज़ू बिहिल्-हक़्-क़ वत्तख़ज़ू आयाती व मा उन्ज़िरू हुज़ुवा (५६) व मन् अज़्लमु मिम्मन् ज़ुक्कि-र बिआयाति रब्बिही फ़-अअ्-र-ज़ अन्हा व नसि-य मा क़द्-द-मत् यदाहु ♭ इन्ना ज-अल्ना अला क़ुलूबिहिम् अकिन्नतन् अंय्यफ़्क़हूहु व फ़ी आज़ानिहिम् वक़्रन् ♭ व इन् तद्-अुहुम् इलल्-हुदा फ़लंय्यह्तदू इज़न् अ-ब-दा (५७) व रब्बुकल्-ग़फ़ूरु ज़ुर्रह्मति ♭ लौ युआख़िज़ुहुम् बिमा क-सबू ल-अज्ज-ल लहुमुल्-अज़ा-ब ♭ बल्लहुम् मौअिदुल्-लंय्यजिदू मिन् दूनिही मौअिला (५८)

سبحن الذي ١٥ — الكهف ١٨

الكتب لا يغادر صغيرة ولا كبيرة الا احصها ووجدوا ما عملوا حاضرا
ولا يظلم ربك احدا ۝ واذ قلنا للملئكة اسجدوا لادم فسجدوا الا
ابليس كان من الجن ففسق عن امر ربه افتتخذونه وذريته
اولياء من دوني وهم لكم عدو بئس للظلمين بدلا ۝ ما
اشهدتهم خلق السموت والارض ولا خلق انفسهم وما كنت
متخذ المضلين عضدا ۝ ويوم يقول نادوا شركاءي الذين زعمتم
فدعوهم فلم يستجيبوا لهم وجعلنا بينهم موبقا ۝ ورا المجرمون
النار فظنوا انهم مواقعوها ولم يجدوا عنها مصرفا ۝ ولقد صرفنا
في هذا القران للناس من كل مثل وكان الانسان اكثر شيء
جدلا ۝ وما منع الناس ان يؤمنوا اذ جاءهم الهدى ويستغفروا ربهم
الا ان تاتيهم سنة الاولين او ياتيهم العذاب قبلا ۝ وما
نرسل المرسلين الا مبشرين ومنذرين ويجادل الذين كفروا
بالباطل ليدحضوا به الحق واتخذوا ايتي وما انذروا هزوا ۝ و
من اظلم ممن ذكر بايت ربه فاعرض عنها ونسي ما قدمت
يده انا جعلنا على قلوبهم اكنة ان يفقهوه وفي اذانهم وقرا و
ان تدعهم الى الهدى فلن يهتدوا اذا ابدا ۝ وربك الغفور ذو
الرحمة لو يؤاخذهم بما كسبوا لعجل لهم العذاب بل لهم موعد

★रु. ७/१६ आ ४

और जब हम ने फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि आदम को सज्दा करो तो सब ने सज्दा किया, मगर इब्लीस (ने न किया), वह जिन्नों में से था, तो अपने परवरदिगार के हुक्म से बाहर हो गया। क्या तुम उस को और उस की औलाद को मेरे सिवा दोस्त बनाते हो, हालांकि वे तुम्हारे दुश्मन हैं, और (शैतान की दोस्ती) ज़ालिमों के लिए (ख़ुदा की दोस्ती का) बुरा बदल है। (५०) मैं ने उन को न तो आसमानों और ज़मीन के पैदा करने के वक़्त बुलाया था और न ख़ुद उन के पैदा करने के वक़्त और मैं ऐसा न था कि गुमराह करने वालों को मददगार बनाता। (५१) और जिस दिन ख़ुदा फ़रमाएगा कि (अब) मेरे शरीकों को, जिन के बारे में तुम (ख़ुदा होने का) गुमान रखते थे, बुलाओ, तो वह उन को बुलाएंगे, मगर वे उन को कुछ जवाब न देंगे और हम उन के बीच से एक हलाकत की जगह बना देंगे। (५२) और गुनाहगार लोग दोज़ख़ को देखेंगे, तो यक़ीन कर लेंगे कि वे उस में पड़ने वाले हैं और इस से बचने का कोई रास्ता न पाएंगे★(५३) और हम ने इस क़ुरआन में लोगों (के समझाने) के लिए तरह-तरह की मिसालें बयान फ़रमायी हैं, लेकिन इंसान सब चीज़ों से बढ़ कर झगड़ालू है। (५४) और लोगों के पास जब हिदायत आ गयी, तो उन को किस चीज़ ने मना किया कि ईमान लाएं और अपने परवरदिगार से बख़्शिश मांगें, इस के अलावा कि (इस बात के इंतिज़ार में हों कि) उन्हें भी पहलों का-सा मामला पेश आए या उन पर अज़ाब सामने मौजूद हो। (५५) और हम जो पैग़म्बरों को भेजा करते हैं, तो सिर्फ़ इस लिए कि (लोगों को ख़ुदा की नेमतों की) ख़ुशख़बरियां सुनाएं और (अज़ाब से) डराएं और जो काफ़िर हैं, वह बातिल (की सनद) से झगड़ा करते हैं, ताकि उस के हक़ को फिसला दें और उन्हों ने हमारी आयतों को और जिस चीज़ से उन को डराया जाता है, हंसी बना लिया। (५६) और उससे ज़ालिम कौन है, जिस को उस के परवरदिगार के कलाम से समझाया गया, तो उस ने उस से मुंह फेर लिया और जो आमाल वह आगे कर चुका, उन को भूल गया, हम ने उन के दिलों पर परदे डाल दिए कि इसे समझ न सकें और कानों में बोझ (पैदा कर दिया है कि सुन न सकें) और अगर तुम उन को रास्ते की तरफ़ बुलाओ तो कभी रास्ते पर न आएंगे। (५७) और तुम्हारा परवरदिगार बख़्शने वाला, रहमत वाला है। अगर वह उन के करतूतों पर उन को पकड़ने लगे, तो उन पर झट अज़ाब भेज दे, मगर उन के लिए एक वक़्त (मुक़र्रर कर रखा) है कि उस के अज़ाब से कोई पनाह की जगह न पाएंगे। (५८)

★रु. ७/१६ आ ४

व तिल्कल्-क़ुरा अह्लक-नाहुम् लम्मा ज़-लमू व ज-अल्ना लिमह्लिकिहिम् मौअिदा ★ (५९) व इज़् क़ा-ल मूसा लिफ़ताहु ला अब्रहु हत्ता अब्लु-ग़ मज्-म-अल्-बह्रैनि औ अम्ज़ि-य हुक़ुबा (६०) फ़-लम्मा ब-लग़ा मज्-म-अ बैनिहिमा नसिया हूतहुमा फ़त्त-ख़-ज़ सबीलहू फ़िल्बह्रि स-र-बा (६१)

लन् यजिदू मिन् दूनिही मौइला ○ व तिल्कल्-क़ुरा अह्लक्नाहुम् लम्मा ज़लमू
وجعلنا لمهلكهم موعدا ○ وإذ قال موسى لفتاه لا أبرح حتى
أبلغ مجمع البحرين أو أمضي حقبا ○ فلما بلغا مجمع بينهما نسيا
حوتهما فاتخذ سبيله في البحر سربا ○ فلما جاوزا قال لفتاه آتنا
غداءنا لقد لقينا من سفرنا هذا نصبا ○ قال أرأيت إذ أوينا إلى
الصخرة فإني نسيت الحوت وما أنسانيه إلا الشيطان أن أذكره و
اتخذ سبيله في البحر عجبا ○ قال ذلك ما كنا نبغ فارتدا على
آثارهما قصصا ○ فوجدا عبدا من عبادنا آتيناه رحمة من عندنا
وعلمناه من لدنا علما ○ قال له موسى هل أتبعك على أن
تعلمن مما علمت رشدا ○ قال إنك لن تستطيع معي صبرا ○ و
كيف تصبر على ما لم تحط به خبرا ○ قال ستجدني إن شاء الله صابرا
ولا أعصي لك أمرا ○ قال فإن اتبعتني فلا تسألني عن شيء حتى
أحدث لك منه ذكرا ○ فانطلقا حتى إذا ركبا في السفينة
خرقها قال أخرقتها لتغرق أهلها لقد جئت شيئا إمرا ○ قال ألم
أقل إنك لن تستطيع معي صبرا ○ قال لا تؤاخذني بما نسيت و
لا ترهقني من أمري عسرا ○ فانطلقا حتى إذا لقيا غلاما فقتله
قال أقتلت نفسا زكية بغير نفس لقد جئت شيئا نكرا ○

फ़-लम्मा जावज़ा क़ा-ल लिफ़ताहु आतिना ग़दा-अना ✓ ल-क़द् लक़ीना मिन् स-फ़रिना हाज़ा न-स्-बा (६२) क़ा-ल अ-रऐ-त इज़् अवैना इलस्-सख़्-रति फ़-इन्नी नसीतुल्हू-त ✓ व मा अन्सानीहु इल्लश्शैतानु अन् अज़्कु-रहू ✓ वत्त-ख़ - ज़ सबीलहू फ़िल्बह्रि अ-ज-बा (६३) क़ा-ल ज़ालि-क मा कुन्ना नब्ग़ि फ़र्तद्दा अला आसारिहिमा क़-स-सा ॥ (६४) फ़-व-जदा अब्दम्-मिन् अिबादिना आतैनाहु रह्-म-तम्मिन् अिन्दिना व अल्लम्नाहु मिल्लदुन्ना अिल्मा (६५) क़ा-ल लहू मूसा हल् अत्तबिअु-क अला अन् तुअल्लिमनि मिम्मा अुल्लिम-त रुश्दा (६६) क़ा-ल इन्न-क लन् तस्ततीअ मअि-य सब्रा (६७) व कै-फ़ तस्बिरु अला मा लम् तुहित् बिही ख़ुब्रा (६८) क़ा-ल स-तजिदुनी इन्शा-अल्लाहु साबिरंव-व ला अअ्-सी ल-क अम्रा (६९) क़ा-ल फ़-इनित्तबअ्-तनी फ़ला तस्-अल्नी अन् शैइन् हत्ता उह्दि-स ल - क मिन्हु ज़िक्रा ★ (७०) फ़न्त-ल-क़ा हत्ता इज़ा रकिबा फ़िस्सफ़ीनति ख़-र-क़हा ॥ क़ा-ल अ-ख़-रक़्-तहा लितुग़्रि-क अह्-लहा ल-क़द् जिअ्-त शैअन् इम्रा (७१) क़ा-ल अ-लम् अक़ुल् इन्न-क लन् तस्ततीअ मअि-य सब्रा (७२) क़ा-ल ला तुआख़िज़्नी बिमा नसीतु व ला तुर्हिक़्नी मिन् अम्री अुस्रा (७३) फ़न्त-लक़ा हत्ता इज़ा लक़िया ग़ुलामन् फ़-क़-त-लहू ॥ क़ा-ल अ-क़-तल-त नफ़्सन् ज़किय्यतम्-बिग़ैरि नफ़्सिन् ॥ ल-क़द् जिअ्-त शैअन् नुक्रा (७४)

★रु. ८/२० आ ६ ★रु. ९/२१ आ ११

और ये बस्तियां (जो वीरान पड़ी हैं), जब उन्हों ने (कुफ़्र में) ज़ुल्म किया, तो हम ने उन को तबाह कर दिया और उन की तबाही के लिए एक वक़्त मुक़र्रर कर दिया था। (५९)★

और जब मूसा ने अपने शागिर्द[1] से कहा कि जब तक मैं दो दरियाओं के मिलने की जगह[2] न पहुंच जाऊं, हटने का नहीं, चाहे वर्षों चलता रहूं। (६०) जब उन के मिलने की जगह पर पहुंचे, तो अपनी मछली भूल गये, तो उसने दरिया में सुरंग की तरह अपना रास्ता बना लिया। (६१) जब आगे चले तो (मूसा ने) अपने शागिर्द से कहा कि हमारे लिए खाना लाओ, इस सफ़र से हम को बड़ी थकन हो गयी है। (६२) (उस ने) कहा कि भला आप ने देखा कि जब हम ने पत्थर के पास आराम किया था, तो मैं मछली (वहीं) भूल गया और मुझे (आप से) उस का ज़िक्र करना शैतान ने भुला दिया और उस ने अजब तरह से दरिया में अपना रास्ता लिया। (६३) (मूसा ने) कहा, यही तो (वह जगह) है, जिसे हम खोजा करते थे, तो वे अपने पांव के निशान देखते-देखते लौट गये। (६४) (वहां) उन्हों ने हमारे बन्दों में से एक बन्दा देखा, जिस को हम ने अपने यहां से रहमत (यानी नुबूवत या विलायत की नेमत) दी थी और अपने पास से इल्म बख़्शा था। (६५) मूसा ने उन से (जिन का नाम ख़िज़्र था) कहा कि जो इल्म (ख़ुदा की तरफ़ से) आप को सिखाया गया है, अगर आप उस में से मुझे कुछ भलाई (की बातें) सिखाएं तो मैं आप के साथ रहूं। (६६) (ख़िज़्र ने) कहा कि तुम मेरे साथ रह कर सब्र नहीं कर सकोगे, (६७) और जिस बात की तुम्हें ख़बर ही नहीं, उस पर सब्र कर भी क्योंकर सकते हो। (६८) मूसा ने कहा, ख़ुदा ने चाहा, तो आप मुझे सब्र करने वाला पाइएगा और मैं आप के इर्शाद के ख़िलाफ़ नहीं करूंगा। (६९) (ख़िज़्र ने) कहा, अगर तुम मेरे साथ रहना चाहो तो (शर्त यह है), मुझ से कोई बात न पूछना, जब तक मैं ख़ुद उस का ज़िक्र तुम से न करूं। (७०)★

तो दोनों चल पड़े, यहां तक कि जब कश्ती में सवार हुए, तो (ख़िज़्र ने) कश्ती को फाड़ डाला। (मूसा ने) कहा, क्या आप ने उस को इस लिए फाड़ा है कि सवारों को डुबो दें। यह तो आप ने बड़ी (अजीब) बात की। (७१) (ख़िज़्र ने) कहा, क्या मैं ने नहीं कहा था कि तुम मेरे साथ सब्र न कर सकोगे। (७२) (मूसा ने) कहा कि जो भूल मुझ से हुई, उस पर पकड़ न कीजिए और मेरे मामले में मुझ पर मुश्किल न डालिए। (७३) फिर दोनों चले, यहां तक कि (रास्ते में) एक लड़का मिला, तो (ख़िज़्र ने) उसे मार डाला। (मूसा ने) कहा कि आप ने एक बे-गुनाह शख़्स को (नाहक़) बग़ैर क़िसास के मार डाला। (यह तो) आप ने बुरी बात की। (७४) (ख़िज़्र ने)

---

१. असल लफ़्ज़ 'फ़ता' है, जिस का मतलब जवान है। 'फ़ता' से यहां मुराद यूशेअ बिन नून हैं। चूंकि वह मूसा अलैहिस्सलाम के साथ रहते और उन से इल्म हासिल किया करते थे, इस लिए हम ने उन को जवान की जगह शागिर्द लिखा है। कुछ लोगों ने कहा कि वह यूशेअ के भाई थे। कुछ लोगों ने कहा कि मूसा अलैहिस्सलाम का ग़ुलाम था।

२. किसी ने मूसा अलैहिस्सलाम से पूछा कि सब से ज़्यादा आलिम कौन है? उन्हों ने कहा कि मैं हूं। ख़ुदा ने वह्य की कि मेरा एक बन्दा दो दरियाओं के मिलने की जगह में है, वह तुम से ज़्यादा इल्म रखता है, तो मूसा अलैहिस्सलाम ने उन से मिलने और इल्म हासिल करने की ग़रज़ से सफ़र का इरादा किया। यह बन्दे, जैसा कि हदीसों से साबित है, ख़िज़्र थे। उन का नाम जैसा कि सहीह बुख़ारी में अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत किया गया है, ख़िज़्र

(शेष पृष्ठ ४७९ पर)

सोलहवां पारः क़ा-ल अ-लम

सूरतुल् कह्फ़ि आयत ७५ से ११०

क़ा-ल अ-लम् अक़ुल्ल-क इन्न-क लन् तस्तती-अ मअि-य स़ब्रा (७५) क़ा-ल इन् स-अल्तु-क अन् शैइम्-बअ्-दहा फ़ ला तुसाहिब्नी ट क़द् ब-लग्-त मिल्लदुन्नी अुज़्रा (७६) फ़न्त्-लक़ा हत्ता इज़ा अ-तया अह्-ल क़र-यतिनिस-तत्-अमा अह्-लहा फ़ अबौ अंय्युज़य्यिफ़ू हुमा फ़-व-जदा फ़ीहा जिदारंय्युरीदु अंय्यन्क़ज़्-ज़ फ़-अक़ामहू. क़ा-ल लौ शिअ्-त लत्त-ख़ज़्-त अलैहि अज्रा (७७) क़ा-ल हाज़ा फ़िराक़ु बैनी व बैनि-क ट सउनब्बिउ-क बितअ्वीलि मा लम् तस्ततिअ् अलैहि स़ब्रा (७८) अम्मस्सफ़ीनतु फ़-कानत् लिमसाकी-न यअ्-मलू-न फ़िल्बह्रि फ़-अरत्तु अन् अ-ईब-हा व का-न वरा-अहुम् मलिकुंय्यअ्ख़ुज़ु कुल्-ल सफ़ीनतिन् ग़स्बा (७९) व अम्मल्ग़ुलामु फ़का-न अ-ब-वाहु मुअ्मिनैनि फ़-ख़शीना अंय्युर्हि-क़-हुमा तुग़्यानंव्-व कुफ़्रा ट (८०) फ़ - अरद्ना अंय्युब्दि-लहुमा रब्बुहुमा ख़ैरम्-मिन्हु ज़कातंव्-व अक़्र-ब रुह्मा (८१) व अम्मल्-जिदारु फ़का-न लिग़ुलामैनि यतीमैनि फ़िल्-मदीनति व का-न तह्तहू कन्ज़ुल्लहुमा व का-न अबूहुमा सालिहन् ट फ़-अरा-द रब्बु-क अंय्यब्लुग़ा अशुद्दहुमा व यस्तख़्रिजा कन्ज़हुमा रह्मतम्मिर् - रब्बि - क ट व मा फ़ - अल्तुहू अन् अम्री. ज़ालि-क तअ्वीलु मा लम् तस्तिअ् अलैहि स़ब्रा. ★ (८२) व यस्अलून-क अन् ज़िल्क़र्नैनि. क़ुल् स-अत्लू अलैकुम् मिन्हु ज़िक्रा. (८३) इन्ना मक्कन्ना लहू फ़िल्अर्ज़ि व आतैनाहु मिन् कुल्लि शैइन् स-ब-बा. (८४) फ़-अत्ब-अ स-ब-बा (८५) हत्ता इज़ा ब-ल-ग़ मग़्रिबश्-शम्सि व-ज-दहा तग़्रुबु फ़ी अैनिन् हमि-अतिंव्-व व-ज-द अिन्दहा क़ौमन्. क़ुल्ना याज़ल्-क़र्नैनि इम्मा अन् तुअज़्ज़ि-ब व इम्मा अन् तत्तख़ि-ज फ़ीहिम् हुस्ना (८६)

قَالَ أَلَمْ أَقُل لَّكَ إِنَّكَ لَن تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا ﴿٧٥﴾ قَالَ إِن
سَأَلْتُكَ عَن شَيْءٍ بَعْدَهَا فَلَا تُصَاحِبْنِي ۖ قَدْ بَلَغْتَ مِن لَّدُنِّي
عُذْرًا ﴿٧٦﴾ فَانطَلَقَا حَتَّىٰ إِذَا أَتَيَا أَهْلَ قَرْيَةٍ اسْتَطْعَمَا أَهْلَهَا فَأَبَوْا
أَن يُضَيِّفُوهُمَا فَوَجَدَا فِيهَا جِدَارًا يُرِيدُ أَن يَنقَضَّ فَأَقَامَهُ ۖ قَالَ
لَوْ شِئْتَ لَاتَّخَذْتَ عَلَيْهِ أَجْرًا ﴿٧٧﴾ قَالَ هَٰذَا فِرَاقُ بَيْنِي وَبَيْنِكَ ۚ
سَأُنَبِّئُكَ بِتَأْوِيلِ مَا لَمْ تَسْتَطِع عَّلَيْهِ صَبْرًا ﴿٧٨﴾ أَمَّا السَّفِينَةُ فَكَانَتْ
لِمَسَاكِينَ يَعْمَلُونَ فِي الْبَحْرِ فَأَرَدتُّ أَنْ أَعِيبَهَا وَكَانَ وَرَاءَهُم مَّلِكٌ
يَأْخُذُ كُلَّ سَفِينَةٍ غَصْبًا ﴿٧٩﴾ وَأَمَّا الْغُلَامُ فَكَانَ أَبَوَاهُ مُؤْمِنَيْنِ فَخَشِينَا
أَن يُرْهِقَهُمَا طُغْيَانًا وَكُفْرًا ﴿٨٠﴾ فَأَرَدْنَا أَن يُبْدِلَهُمَا رَبُّهُمَا خَيْرًا
مِّنْهُ زَكَاةً وَأَقْرَبَ رُحْمًا ﴿٨١﴾ وَأَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلَامَيْنِ
يَتِيمَيْنِ فِي الْمَدِينَةِ وَكَانَ تَحْتَهُ كَنزٌ لَّهُمَا وَكَانَ أَبُوهُمَا صَالِحًا
فَأَرَادَ رَبُّكَ أَن يَبْلُغَا أَشُدَّهُمَا وَيَسْتَخْرِجَا كَنزَهُمَا رَحْمَةً مِّن
رَّبِّكَ ۚ وَمَا فَعَلْتُهُ عَنْ أَمْرِي ۚ ذَٰلِكَ تَأْوِيلُ مَا لَمْ تَسْطِع عَّلَيْهِ
صَبْرًا ﴿٨٢﴾ وَيَسْأَلُونَكَ عَن ذِي الْقَرْنَيْنِ ۖ قُلْ سَأَتْلُو عَلَيْكُم مِّنْهُ
ذِكْرًا ﴿٨٣﴾ إِنَّا مَكَّنَّا لَهُ فِي الْأَرْضِ وَآتَيْنَاهُ مِن كُلِّ شَيْءٍ سَبَبًا ﴿٨٤﴾
فَأَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٨٥﴾ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَغْرُبُ فِي
عَيْنٍ حَمِئَةٍ وَوَجَدَ عِندَهَا قَوْمًا ۗ قُلْنَا يَا ذَا الْقَرْنَيْنِ إِمَّا أَن

★रु. १०/१ आ १२

कहा, क्या मैं ने नहीं कहा था कि तुम से मेरे साथ सब्र नहीं हो सकेगा ? (७५) उन्हों ने कहा कि अगर मैं इस के बाद (फिर) कोई बात पूछूं, (यानी एतराज़ करूं), तो मुझे अपने साथ न रखिएगा कि आप मेरी तरफ़ से उज़्र (क़ुबूल करने में इंतिहा) को पहुंच गये। (७६) फिर दोनों चले, यहां तक कि एक गांव वालों के पास पहुंचे और उन से खाना तलब किया। उन्होंने उन की मेहमानी करने से इंकार किया। फिर उन्हों ने वहां एक दीवार देखी जो (झुक कर) गिरा चाहती थी तो (ख़िज़्र ने) उस को सीधा कर दिया। (मूसा ने) कहा कि अगर आप चाहते तो उन से (उस का) मुआवज़ा लेते, (ताकि खाने का काम चलता।) (७७) (ख़िज़्र ने) कहा कि अब मुझ में और तुम में अलगाव, (मगर) जिन बातों पर तुम सब्र न कर सके, मैं उन का तुम्हें भेद बताए देता हूं। (७८) (कि वह जो) कश्ती (थी) ग़रीब लोगों की थी, जो दरिया में मेहनत (कर के यानी कश्तियां चला कर गुज़ारा) करते थे और उन के सामने (की तरफ़) एक बादशाह था, जो हर एक कश्ती को ज़बर-दस्ती छीन लेता था, तो मैं ने चाहा कि उसे ऐबदार कर दूं (ताकि वह उसे ग़सब न कर सके)। (७९) और वह जो लड़का था, उस के मां-बाप दोनों मोमिन थे, हमें डर हुआ कि वह (बड़ा हो कर बद-किरदार होगा, कहीं) उन को सर-कशी और कुफ़्र में न फंसा दे।¹ (८०) तो हम ने चाहा कि उनका परवरदिगार उस की जगह उन को और (बच्चा) अता फ़रमाए जो पाक-मिज़ाजी में बेहतर और मुहब्बत में ज़्यादा क़रीब हो। (८१) और वह जो दीवार थी, सो दो यतीम लड़कों की थी (जो) शहर में (रहते थे) और उस के नीचे उन का ख़ज़ाना (दफ़न) था और उन का बाप एक नेक आदमी था, तो तुम्हारे परवरदिगार ने चाहा कि वे अपनी जवानी को पहुंच जाएं और (फिर) अपना ख़ज़ाना निकालें। यह तुम्हारे परवरदिगार की मेहरबानी है और ये काम मैं ने अपनी तरफ़ से नहीं किए। यह उन बातों की हक़ीक़त है, जिन पर तुम सब्र न कर सके। (८२) ★

और तुम से ज़ुलक़रनैन के बारे में पूछते हैं। कह दो कि मैं उस का किसी क़दर हाल पढ़ कर सुनाता हूं। (८३) हम ने उस को ज़मीन में बड़ी दस्तरस (पहुंच) दी थी और हर तरह का सामान अता किया था। (८४) तो उसने (सफ़र का) एक सामान किया। (८५) यहां तक कि जब सूरज के डूब जाने की जगह पहुंचा तो उसे ऐसा पाया कि एक कीचड़ की नदी में डूब रहा है और उस (नदी) के पास एक क़ौम देखी। हम ने कहा, ज़ुलक़रनैन ! तुम उन को चाहे तक्लीफ़ दो, चाहे उन (के बारे) में भलाई अख़्तियार करो, (दोनों बातों की तुम को क़ुदरत है)। (८६) (ज़ुलक़रनैन ने) कहा कि

(पृष्ठ ४७७ का शेष)

इस लिए हुआ कि वह एक सूखी घास पर बैठे थे और वह उन के नीचे हरी-भरी हो गयी।

३. लफ़्ज़ों का तर्जुमा तो यह है कि एक लड़के से मिले, मगर ऐसे मौक़े पर इसी तरह बात करते हैं, जिस तरह हम ने लिखा है।

१. यानी चूंकि लड़का मां-बाप के तरीक़े पर न होता और कुफ़्र और सरकशी करता, इस लिए ख़िज़्र को यह डर हुआ कि जब यह लड़का बड़ा हो, तो उस के मां-बाप कहीं उस की मुहब्बत में अंधे हो कर कुफ़्र की ना-फ़रमानों में न फंस जाएं, इस लिए उस को मार डालना अल्लाह तआला के हुक्म से था।

का-ल अम्मा मन् ज़-ल-म फ़सौ-फ़ नुअ़ज़्ज़िबुहू सुम्-म युरद्दु इला रब्बिही फ़युअ़ज़्ज़िबुहू अ़ज़ाबन् नुक्रा (८७) व अम्मा मन् आम-न व अ़मि-ल सालिहन् फ़-लहू जज़ा-अ-निल्-हुस्ना ० व स-नक़ूलु लहू मिन् अम्रिना युस्रा (८८) सुम्-म अत्-ब-अ स-ब-बा (८९) हत्ता इज़ा ब-ल-ग़ मत्-लिअ़श्-शम्सि व-ज-दहा तत्लुअु अ़ला क़ौमिल्लम् नज्अ़ल्लहुम् मिन् दूनिहा सित्रा (९०) कज़ालि-क व क़द् अहत्-ना बिमा लदैहि ख़ुब्रा (९१) सुम्-म अत्-ब-अ स-ब-बा (९२) हत्ता इज़ा ब-ल-ग़ बैनस्-सद्दैनि व-ज-द मिन् दूनिहिमा क़ौमल्-ला यकादू - न यफ़्क़हू-न क़ौला (९३) क़ालू याज़ल्-क़र्नैनि इन् - न यअ्जू-ज व मअ्जू-ज मुफ़्सिदू-न फ़िल्अर्ज़ि फ़-हल् नज्अ़लु ल-क ख़र्जन् अ़ला अन् तज्-अ़-ल बैनना व बैनहुम सद्दा (९४) क़ा-ल मा मक्कन्नी फ़ीहि रब्बी ख़ैरुन् फ़-अ़ईनूनी बिक़ुव्वतिन् अज्-अ़ल् बैनकुम् व बैनहुम् रद्मा (९५) आतूनी ज़ु-ब-रल्-हदीदि हत्ता इज़ा सावा बैनस्स-द-फ़ैनि क़ालन्फ़ुख़ू हत्ता इज़ा ज-अ़-लहू नारन् क़ा - ल आतूनी उफ़्रिग़् अ़लैहि क़ित्रा (९६) फ़ - मस्ताअू अंय्यज़्हरूहु व मस्तताअू लहू नक़्बा (९७) क़ा-ल हाज़ा रह्-मतुम्मिर्-रब्बी फ़-इज़ा जा-अ वअ्-दु रब्बी ज-अ़-लहू दक्का-अ व का-न वअ्-दु रब्बी हक़्क़ा (९८) व त-रक्ना बअ्-ज़हुम् यौमइज़िंय्यमूजु फ़ी बअ्-ज़िंव-व नुफ़ि-ख़ फ़िस्सूरि फ़-ज-मअ्-नाहुम् जम्अ़व्- (९९) -व अ़-रज़्ना जहन्न-म यौमइज़िल्लिल्-काफ़िरी-न अ़र्ज़ा (१००) अल्लज़ी-न कानत् अअ्-युनुहुम् फ़ी ग़िताइन् अ़न् ज़िक्री व कानू ला यस्ततीअू-न सम्-आ ★ (१०१) अ-फ़-हसिबल्लज़ी-न क-फ़रू अंय्यत्तख़िज़ू अ़िबादी मिन् दूनी औलिया-अ इन्ना अअ्-तद्ना जहन्न-म लिल्काफ़िरी-न नुज़ुला (१०२)

تُعَذِّبَ وَاِمَّآ اَنْ تَتَّخِذَ فِيْهِمْ حُسْنًا ۝ قَالَ اَمَّا مَنْ ظَلَمَ فَسَوْفَ
نُعَذِّبُهٗ ثُمَّ يُرَدُّ اِلٰى رَبِّهٖ فَيُعَذِّبُهٗ عَذَابًا نُّكْرًا ۝ وَاَمَّا مَنْ اٰمَنَ وَ
عَمِلَ صَالِحًا فَلَهٗ جَزَآءَ ۨالْحُسْنٰى ۚ وَسَنَقُوْلُ لَهٗ مِنْ اَمْرِنَا يُسْرًا ۝ ثُمَّ
اَتْبَعَ سَبَبًا ۝ حَتّٰٓى اِذَا بَلَغَ مَطْلِعَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَطْلُعُ عَلٰى قَوْمٍ
لَّمْ نَجْعَلْ لَّهُمْ مِّنْ دُوْنِهَا سِتْرًا ۝ كَذٰلِكَ ۗ وَقَدْ اَحَطْنَا بِمَا لَدَيْهِ
خُبْرًا ۝ ثُمَّ اَتْبَعَ سَبَبًا ۝ حَتّٰٓى اِذَا بَلَغَ بَيْنَ السَّدَّيْنِ وَجَدَ مِنْ
دُوْنِهِمَا قَوْمًا ۙ لَّا يَكَادُوْنَ يَفْقَهُوْنَ قَوْلًا ۝ قَالُوْا يٰذَا الْقَرْنَيْنِ اِنَّ
يَاْجُوْجَ وَمَاْجُوْجَ مُفْسِدُوْنَ فِى الْاَرْضِ فَهَلْ نَجْعَلُ لَكَ خَرْجًا عَلٰٓى
اَنْ تَجْعَلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ سَدًّا ۝ قَالَ مَا مَكَّنِّىْ فِيْهِ رَبِّىْ خَيْرٌ فَاَعِيْنُوْنِىْ
بِقُوَّةٍ اَجْعَلْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ رَدْمًا ۝ اٰتُوْنِىْ زُبَرَ الْحَدِيْدِ ۗ حَتّٰٓى اِذَا سَاوٰى
بَيْنَ الصَّدَفَيْنِ قَالَ انْفُخُوْا ۗ حَتّٰٓى اِذَا جَعَلَهٗ نَارًا ۙ قَالَ اٰتُوْنِىْٓ اُفْرِغْ عَلَيْهِ
قِطْرًا ۝ فَمَا اسْطَاعُوْٓا اَنْ يَّظْهَرُوْهُ وَمَا اسْتَطَاعُوْا لَهٗ نَقْبًا ۝ قَالَ هٰذَا
رَحْمَةٌ مِّنْ رَّبِّىْ ۚ فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ رَبِّىْ جَعَلَهٗ دَكَّآءَ ۚ وَكَانَ وَعْدُ رَبِّىْ
حَقًّا ۝ وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَّمُوْجُ فِىْ بَعْضٍ وَّنُفِخَ فِى الصُّوْرِ فَجَمَعْنٰهُمْ
جَمْعًا ۝ وَّعَرَضْنَا جَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ لِّلْكٰفِرِيْنَ عَرْضًا ۝ الَّذِيْنَ كَانَتْ اَعْيُنُهُمْ
فِىْ غِطَآءٍ عَنْ ذِكْرِىْ وَكَانُوْا لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَمْعًا ۝ اَفَحَسِبَ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْٓا اَنْ يَّتَّخِذُوْا عِبَادِىْ مِنْ دُوْنِىْٓ اَوْلِيَآءَ ۭ اِنَّآ اَعْتَدْنَا جَهَنَّمَ لِلْكٰفِرِيْنَ
نُزُلًا

★रु. ११/२ आ १६

जो (कुफ़्र व बद-किरदारी से) ज़ुल्म करेगा उसे हम अज़ाब देंगे, फिर (जब) वह अपने परवरदिगार की तरफ़ लौटाया जाएगा, तो वह भी उसे बुरा अज़ाब देगा। (८७) और जो ईमान लाएगा और नेक अमल करेगा, उस के लिए बहुत अच्छा बदला है और हम अपने मामले में (उस पर किसी तरह की सख़्ती नहीं करेंगे, बल्कि) उस से नर्म बात कहेंगे। (८८) फिर उस ने एक और सामान (सफ़र का) किया। (८९) यहां तक कि सूरज के निकलने की जगह पर जा पहुंचा तो देखा कि वह ऐसे लोगों पर निकलता है, जिन के लिए हम ने सूरज के उस तरफ़ कोई ओट नहीं बनायी थी। (९०) (हक़ीक़त) यों (थी) और जो कुछ उस के पास था, हम को सब की ख़बर थी। (९१) फिर उस ने एक और सामान किया। (९२) यहां तक कि दो दीवारों के दर्मियान पहुंचा, तो देखा कि उन के उस तरफ़ कुछ लोग हैं कि बात को समझ नहीं सकते। (९३) उन लोगों ने कहा कि ज़ुलक़र्नैन ! याजूज और माजूज ज़मीन में फ़साद करते रहते हैं। भला हम आपके लिए ख़र्च (का इंतिज़ाम) करदें कि आप हमारे और उन के दर्मियान एक दीवार खींच दें। (९४) (ज़ुलक़र्नैन ने) कहा कि ख़र्च की जो क़ुदरत ख़ुदा ने मुझे बख़्शी है, वह बहुत अच्छा है, तुम मुझे (बाज़ू) की ताक़त से मदद दो। मैं तुम्हारे और उन के दर्मियान एक मज़बूत ओट बना दूंगा। (९५) तुम लोहे के (बड़े-बड़े) तख़्ते लाओ, (चुनांचे काम जारी कर दिया गया), यहां तक कि जब उस ने दानों पहाड़ों के दर्मियान (का हिस्सा) बराबर कर दिया (और) कहा कि (अब इसे) धौंको, यहां तक कि जब उस को (धौंक-धौंक कर) आग कर दिया तो कहा कि (अब) मेरे पास तांबा लाओ कि उस पर पिघला कर डाल दूं। (९६) फिर उन में यह क़ुदरत न रही कि उस पर चढ़ सकें और न यह ताक़त रही कि उस में नक़ब लगा सकें। (९७) बोला कि यह मेरे परवरदिगार की मेहरबानी है। जब मेरे परवरदिगार का वायदा आ पहुंचेगा, तो उस को (ढा कर) हमवार कर देगा और मेरे परवरदिगार का वायदा सच्चा है।(९८) (उस दिन) हम उनको छोड़ देंगे कि (धरती पर फैल कर) एक दूसरे में घुस जाएंगे और सूर फूंका जाएगा, तो हम सब को जमा कर लेंगे। (९९) और उस दिन जहन्नम को काफ़िरों के सामने लाएंगे, (१००) जिन की आंखें मेरी याद से परदे में थीं और सुनने की ताक़त नहीं रखते थे। (१०१)★

क्या काफ़िर यह ख़याल करते हैं कि वे हमारे बन्दों को हमारे सिवा (अपना) कारसाज़ बनाएंगे, (तो हम ख़फ़ा नहीं होंगे)। हम ने (ऐसे) काफ़िरों के लिए जहन्नम की मेहमानी तैयार

★रु. ११/२ आ १६

क़ुल् हल् नुनब्बिउकुम् बिल्-अख़सरी-न अअ् - माला ⁄ (१०३) अल्लज़ी-न ज़ल्-ल सअ्-युहुम् फ़िल्-हयातिद्दुन्या व हुम् यह्-सबू-न अन्नहुम् युह्सिनू-न सुन्आ (१०४) उलाइ-कल्लज़ी-न क-फ़रू बिआयाति रब्बिहिम् व लिक़ाइही फ़-हबितत् अअ्-मालुहुम् फ़ला नुक़ीमु लहुम् यौमल्क़ियामति वज़्ना (१०५) ज़ालि-क जज़ाउहुम् जहन्नमु बिमा क-फ़रू वत्त-ख़ज़ू आयाती व रुसुली हुज़ुवा (१०६) इन्नल्लज़ी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति कानत् लहुम् जन्नातुल्-फ़िर-दौसि नुज़ुला ⁄ (१०७) ख़ालिदी-न फ़ीहा ला यब्ग़ू-न अन्हा हि-वला (१०८) क़ुल् लौ कानल्-बह्रु मिदादल्लिकलिमाति रब्बी ल-नफ़िदल्-बह्रु क़ब्-ल अन् तन्फ़-द कलिमातु रब्बी व लौ जिअ्ना बिमिस्लिही म - द-दा (१०९) क़ुल् इन्नमा अ-न ब-श-रुम् - मिस्लुकुम् यूहा इलय् - य अन्नमा इलाहुकुम् इलाहुंव्वाहिदुन् फ़-मन् का-न यर्जू लिक़ा-अ रब्बिही फ़ल-यअ्-मल् अ-म-लन् सालिहंव्-व ला युश्रिक् बिअिबादति रब्बिही अ - ह - दा★ (११०)

قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْأَخْسَرِينَ أَعْمَالًا ۝ الَّذِينَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ يُحْسِنُونَ صُنْعًا ۝ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ وَلِقَائِهِ فَحَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فَلَا نُقِيمُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَزْنًا ۝ ذَٰلِكَ جَزَاؤُهُمْ جَهَنَّمُ بِمَا كَفَرُوا وَاتَّخَذُوا آيَاتِي وَرُسُلِي هُزُوًا ۝ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنَّاتُ الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ۝ خَالِدِينَ فِيهَا لَا يَبْغُونَ عَنْهَا حِوَلًا ۝ قُلْ لَوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِكَلِمَاتِ رَبِّي لَنَفِدَ الْبَحْرُ قَبْلَ أَنْ تَنْفَدَ كَلِمَاتُ رَبِّي وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهِ مَدَدًا ۝ قُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِثْلُكُمْ يُوحَىٰ إِلَيَّ أَنَّمَا إِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ فَمَنْ كَانَ يَرْجُو لِقَاءَ رَبِّهِ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهِ أَحَدًا ۝

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

كهيعص ۝ ذِكْرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ عَبْدَهُ زَكَرِيَّا ۝ إِذْ نَادَىٰ رَبَّهُ نِدَاءً خَفِيًّا ۝ قَالَ رَبِّ إِنِّي وَهَنَ الْعَظْمُ مِنِّي وَاشْتَعَلَ الرَّأْسُ شَيْبًا وَلَمْ أَكُنْ بِدُعَائِكَ رَبِّ شَقِيًّا ۝ وَإِنِّي خِفْتُ الْمَوَالِيَ مِنْ وَرَائِي وَكَانَتِ امْرَأَتِي عَاقِرًا فَهَبْ لِي مِنْ لَدُنْكَ وَلِيًّا ۝ يَرِثُنِي وَيَرِثُ مِنْ آلِ يَعْقُوبَ وَاجْعَلْهُ رَبِّ رَضِيًّا ۝ يَا زَكَرِيَّا إِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلَامٍ اسْمُهُ يَحْيَىٰ لَمْ نَجْعَلْ لَهُ مِنْ قَبْلُ سَمِيًّا ۝

१९ सूरतु मर्य-म ४४

(मक्की) इस सूरः में अरबी के ३९८६ अक्षर, ९६८ शब्द, ९८ आयतें और ६ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

काफ़्-हा-या - अ़ैन् - साद् (१) ज़िक्रु रह्-मति रब्बि-क अब्दहू ज़-करिय्या (२) इज् नादा रब्बहू निदाअन् ख़फ़िय्या (३) क़ा-ल रब्बि इन्नी व-ह-नल्-अज़्मु मिन्नी वश्त-अ-लर्रअ्सु शैबंव्-व लम् अकुम्-बिदुआइ-क रब्बि शक़िय्या (४) व इन्नी ख़िफ़्तुल्-मवालि-य मिंव्वराई व कानतिम्-र-अती आक़िरन् फ़-हब्-ली मिल्लदुन् - क वलिय्या ⁄ (५) यरिसुनी व यरिसु मिन्आलि यअ्-क़ू-ब वज्-अल्हु रब्बि रज़िय्या (६) या ज़करिय्या इन्ना नुबश्शिरु-क बिग़ुलामि-निस्मुहू यह्या ⁄ लम् नज्-अल् लहू मिन् क़ब्लु समिय्या (७)

★रु० १२/३ आ ९

कर रखी है। (१०२) कह दो कि हम तुम्हें बताएं कि जो अमलों के लिहाज़ से बड़े नुक़सान में हैं, (१०३) वह लोग, जिन की कोशिश दुनिया की ज़िंदगी में बर्बाद हो गयी और वे समझे हुए हैं कि अच्छे काम कर रहे हैं। (१०४) ये वह लोग हैं जिन्हों ने अपने परवरदिगार की आयतों और उस के सामने जाने से इन्कार किया, तो उन के आमाल ज़ाया हो गये और हम क़ियामत के दिन उन के लिए कुछ भी वज़न क़ायम नहीं करेंगे।[1] (१०५) यह उन की सज़ा है (यानी) जहन्नम, इस लिए कि उन्हों ने कुफ़्र किया और हमारी आयतों और हमारे पैग़म्बरों की हंसी उड़ायी। (१०६) जो लोग ईमान लाए और नेक अमल किए, उन के लिए बहिश्त के बाग़ मेंमेहमानी होंगे। (१०७) हमेशा उन में रहेंगे और वहां से मकान बदलना न चाहेंगे। (१०८) कह दो कि अगर समुन्दर मेरे परवरदिगार की बातों के (लिखने के) लिए स्याही हो, तो इस से पहले कि मेरे परवरदिगार की बातें पूरी हों, समुन्दर ख़त्म हो जाए, अगरचे जो हम वैसा ही और उस की मदद को लाएं। (१०९) कह दो कि मैं तुम्हारी तरह का एक बशर हूं, अल-बत्ता मेरी तरफ़ वह्य आती है कि तुम्हारा माबूद (वही) एक माबूद है, तो जो शख़्स अपने परवरदिगार से मिलने की उम्मीद रखे, चाहिए कि नेक अमल करे और अपने परवरदिगार की इबादत में किसी को शरीक न बनाए। (११०)★

१९ सूरः मर्यम ४४

सूरः मरयम मक्की है और इस में ९८ आयतें और छः रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

काफ़-हा-या-ऐन-स्वाद, (१) (यह) तुम्हारे परवरदिगार की मेहरबानी का बयान (है, जो उस ने) अपने बन्दे ज़करीया पर (की थी), (२) जब उन्हों ने अपने परवरदिगार को दबी आवाज़ से पुकारा। (३) (और) कहा कि ऐ मेरे परवरदिगार! मेरी हड्डियां बुढ़ापे की वजह से कमज़ोर हो गयी हैं और सर शोला मारने लगा है[2] और ऐ मेरे परवरदिगार! मैं तुझ से मांग कर कभी महरूम नहीं रहा। (४) और मैं अपने बाद अपने भाई-बन्दों से डरता हूं और मेरी बीवी बांझ है, तो मुझे अपने पास से एक वारिस अता फ़रमा, (५) जो मेरी और याक़ूब की औलाद की मीरास का मालिक हो और (ऐ) मेरे परवरदिगार उस को ख़ुश अतवार (अच्छे तौर-तरीक़े वाला) बनाइयो।[3] (६) ऐ ज़करीया! हम तुम को एक लड़के की ख़ुशख़बरी देते हैं, जिस का नाम यह्या है। इस से पहले हम ने इस नाम का कोई शख़्स पैदा नहीं किया। (७) उन्हों ने कहा, परवरदिगार!

---

१. वे आख़िरत को मानते न थे, तो इस के वास्ते कुछ काम न किया, फिर एक पल्ला क्या तौलना ?

२. यानी बालों की सफ़ेदी की वजह से सर आग की तरह चमकने लगा है।

३. मीरास के मालिक होने से मुराद नुबूवत का वारिस होना है, न कि माल व दौलत का, क्योंकि पैग़म्बर की नज़रों में माल व दौलत कुछ चीज़ नहीं होती, जिस के लिए ख़ुदा से वारिस मांगें। उन के नज़दीक जो चीज़ सब से बेहतर और विरासत के क़ाबिल है, वह ख़ुदा का दीन और उस के बन्दों की हिदायत है और पैग़म्बर से इन्हीं कामों के लिए ख़ुदा से औलाद मांगने की उम्मीद होनी चाहिए, साथ ही जैसा कि हदीस से साबित है, पैग़म्बर का माल ख़ुदा की राह में सदक़ा होता है, उस का कोई वारिस नहीं होता।

★रु० १२/३ आ ६

क़ा-ल रब्बि अन्ना यकूनु ली ग़ुलामुंव्-व कानतिम्-र-अती आक़िरंव्-व क़द् ब-लग़्तु मिनल्कि-बरि अ़ितिय्या (८) क़ा-ल कज़ालि-क क़ा-ल रब्बु-क हु-व अ़-लय्-य हय्यिनुंव्-व क़द् ख़-लक़्तु-क मिन् क़ब्लु व लम् तकु शैआ (९) क़ा-ल रब्बिज्-अ़ल्ली आ-य-तन्, क़ा-ल आयतु-क अल्ला तुकल्लिमन्ना-स सला-स लयालिन् सविय्या (१०)

लि ग़ुलामुंव्-व कानतिम्-र-अती आ़क़िरंव्-व क़द् ब-लग़्तु मिनल्-कि-बरि अ़ितिय्या ۝ क़ा-ल
कज़ालि-क क़ा-ल रब्बु-क हु-व अ़-लय्-य हय्यिनुंव्-व क़द् ख़-लक़्तु-क

लِيْ غُلٰمٌ وَّكَانَتِ امْرَاَتِيْ عَاقِرًا وَّقَدْ بَلَغْتُ مِنَ الْكِبَرِ عِتِيًّا ۝ قَالَ
كَذٰلِكَ ۚ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ وَّقَدْ خَلَقْتُكَ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ تَكُ
شَيْـًٔا ۝ قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّيْٓ اٰيَةً ۭ قَالَ اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلٰثَ
لَيَالٍ سَوِيًّا ۝ فَخَرَجَ عَلٰي قَوْمِهٖ مِنَ الْمِحْرَابِ فَاَوْحٰٓى اِلَيْهِمْ اَنْ سَبِّحُوْا
بُكْرَةً وَّعَشِيًّا ۝ يٰيَحْيٰى خُذِ الْكِتٰبَ بِقُوَّةٍ ۭ وَاٰتَيْنٰهُ الْحُكْمَ صَبِيًّا ۝
وَّحَنَانًا مِّنْ لَّدُنَّا وَزَكٰوةً ۭ وَكَانَ تَقِيًّا ۝ وَّبَرًّۢا بِوَالِدَيْهِ وَلَمْ يَكُنْ
جَبَّارًا عَصِيًّا ۝ وَسَلٰمٌ عَلَيْهِ يَوْمَ وُلِدَ وَيَوْمَ يَمُوْتُ وَيَوْمَ يُبْعَثُ حَيًّا ۝
وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ مَرْيَمَ ۘ اِذِ انْتَبَذَتْ مِنْ اَهْلِهَا مَكَانًا شَرْقِيًّا ۝ فَاتَّخَذَتْ
مِنْ دُوْنِهِمْ حِجَابًا ۣ فَاَرْسَلْنَآ اِلَيْهَا رُوْحَنَا فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا سَوِيًّا ۝
قَالَتْ اِنِّىْٓ اَعُوْذُ بِالرَّحْمٰنِ مِنْكَ اِنْ كُنْتَ تَقِيًّا ۝ قَالَ اِنَّمَآ اَنَا رَسُوْلُ
رَبِّكِ ڰ لِاَهَبَ لَكِ غُلٰمًا زَكِيًّا ۝ قَالَتْ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّلَمْ يَمْسَسْنِيْ
بَشَرٌ وَّلَمْ اَكُ بَغِيًّا ۝ قَالَ كَذٰلِكِ ۚ قَالَ رَبُّكِ هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ ۚ وَلِنَجْعَلَهٗٓ
اٰيَةً لِّلنَّاسِ وَرَحْمَةً مِّنَّا ۚ وَكَانَ اَمْرًا مَّقْضِيًّا ۝ فَحَمَلَتْهُ فَانْتَبَذَتْ
بِهٖ مَكَانًا قَصِيًّا ۝ فَاَجَاۗءَهَا الْمَخَاضُ اِلٰى جِذْعِ النَّخْلَةِ ۚ قَالَتْ
يٰلَيْتَنِيْ مِتُّ قَبْلَ هٰذَا وَكُنْتُ نَسْيًا مَّنْسِيًّا ۝ فَنَادٰىهَا مِنْ تَحْتِهَآ
اَلَّا تَحْزَنِيْ قَدْ جَعَلَ رَبُّكِ تَحْتَكِ سَرِيًّا ۝ وَهُزِّيْٓ اِلَيْكِ بِجِذْعِ
النَّخْلَةِ تُسٰقِطْ عَلَيْكِ رُطَبًا جَنِيًّا ۝ فَكُلِيْ وَاشْرَبِيْ وَقَرِّيْ عَيْنًا ۚ فَاِمَّا

फ़-ख़-र-ज अ़ला क़ौमिही मिनल्-मिह़्राबि फ़औह़ा इलैहिम् अन् सब्बिह़ू बुक्-र-तंव्-व अ़शिय्या (११) या यह़्या ख़ुज़िल्किता-ब बिक़ुव्वतिन्, व आतैनाहुल् - हुक् - म सबिय्या (१२) व ह़नानम् - मिल्लदुन्ना व ज़कातन्, व का - न तक़िय्या (१३) व बर्रम्-बिवालिदैहि व लम् यकुन् जब्बारन् अ़सिय्या (१४) व सलामुन् अ़लैहि यौ-म वुलि-द व यौ-म यमूतु व यौ-म युब्अ़सु ह़य्या ★ (१५) वज़्कुर् फ़िल्किताबि मर्यम 888 इज़िन - त - ब-ज़त् मिन् अह्लिहा मकानन् शर्क़िय्या (१६)

फ़त्त - ख़ - ज़त् मिन् दूनिहिम् ह़िजाबन् फ़ - अर्सल्ना इलैहा रूह़ना फ़-त-मस्स-ल लहा ब-श-रन् सविय्या (१७) क़ालत् इन्नी अऊज़ु बिर्रह़्मानि मिन्-क इन् कुन्-त तक़िय्या (१८) क़ा-ल इन्नमा अ-न रसूलु रब्बिकि लि-अ-ह-ब लकि ग़ुलामन् ज़किय्या (१९) क़ालत् अन्ना यकूनु ली ग़ुलामुंव्-व लम् यम्सस्नी ब-शरुंव्-व लम् अकु बग़िय्या ● (२०) क़ा-ल कज़ालिकि क़ा-ल रब्बुकि हु-व अ़-लय्-य हय्यिनुन् व लिनज्-अ़-लहू आयतल्लिन्नासि व रह़्-म-तम्मिन्ना व का-न अम्रम्-मक़्ज़िय्या (२१) फ़-ह़-म-लत्हु फ़न्त-ब-ज़त् बिही मकानन् क़सिय्या (२२) फ़-अजा-अहल्-मख़ाज़ु इला जिज़्अ़िन्-नख़्-लति क़ालत् यालैतनी मित्तु क़ब्-ल हाज़ा व कुन्तु नस-यम्-मन्सिय्या (२३) फ़नादाहा मिन् तह़्तिहा अल्ला तह़्-ज़नी क़द् ज-अ़-ल रब्बुकि तह़्-तकि सरिय्या (२४) व हुज़्ज़ी इलैकि बिजिज़्अ़िन्-नख़्-लति तुसाक़ित् अ़लैकि रु-त़-बन् जनिय्या (२५)

★रु. १/४ आ १५ 888व. लाज़िम ●रुब्अ़ १/४

मेरे यहां किस तरह लड़का पैदा होगा, जिस हाल में मेरी बीवी बांझ है और मैं बुढ़ापे की इन्तिहा को पहुंच गया हूं। (८) हुक्म हुआ कि इसी तरह (होगा) तुम्हारे परवरदिगार ने फ़रमाया है कि मुझे यह आसान है और मैं पहले तुम को भी तो पैदा कर चुका हूं और तुम कुछ चीज़ न थे। (९) कहा कि परवरदिगार ! मेरे लिए कोई निशानी मुक़र्रर फ़रमा। फ़रमाया, निशानी यह है कि तुम सही व सालिम हो कर तीन (रात -दिन) लोगों से बात न कर सकोगे। (१०) फिर वह (इबादत के) हुज्रे से निकल कर अपनी क़ौम के पास आए, तो उन से इशारे से कहा कि सुबह व शाम (ख़ुदा को) याद करते रहो। (११) ऐ यह्या ! (हमारी) किताब को ज़ोर से पकड़े रहो और हम ने उन को लड़कपन ही में हुक्म (दानाई) अता फ़रमायी थी। (१२) और अपने पास से शफ़क़त और पाकीज़गी (दी थी) और वह परहेज़गार थे। (१३) और मां-बाप के साथ नेकी करने वाले थे और सरकश (और) ना-फ़रमान नहीं थे। (१४) और जिस दिन पैदा हुए और जिस दिन वफ़ात पाएंगे और जिस दिन ज़िंदा कर के उठाए जाएंगे, उन पर सलाम और रहमत (है)। (१५)★

और किताब (क़ुरआन) में मरयम का भी ज़िक्र करो॥ जब वह अपने लोगों से अलग हो कर पूरब की तरफ़ चली गयीं, (१६) तो उन्हों ने उन की तरफ़ से पर्दा कर लिया, (उस वक़्त) हम ने उन की तरफ़ अपना फ़रिश्ता भेजा, तो वह उनके सामने ठीक आदमी (की शक्ल) बन गया। (१७) (मरयम) बोलीं कि अगर तुम परहेज़गार हो तो मैं तुम से ख़ुदा की पनाह मांगती हूं। (१८) उन्होंने कहा कि मैं तो तुम्हारे परवरदिगार का भेजा हुआ (यानी फ़रिश्ता) हूं (और इस लिए आया हूं) कि तुम्हें पाकीज़ा लड़का बख़्शूं। (१९) (मरयम) ने कहा कि मेरे यहां लड़का कैसे होगा, मुझे किसी इंसान ने छुआ तक नहीं और मैं बद-कार भी नहीं हूं। (२०)● (फ़रिश्ते ने) कहा कि यों ही (होगा)। तुम्हारे परवरदिगार ने फ़रमाया कि यह मुझे आसान है और (मैं उसे इसी तरीक़े पर करूंगा) पैदा ताकि उस को लोगों के लिए अपनी तरफ़ से निशानी और रहमत (व मेहरबानी का ज़रिया) बनाऊं और यह काम मुक़र्रर हो चुका है। (२१) तो वह उस (बच्चे) के साथ हामिला हो गयीं और उसे ले कर एक दूर जगह चली गयीं। (२२) फिर दर्दज़ेह (बच्चा पैदा होने के वक़्त का दर्द) उन को खजूर के तने की तरफ़ ले आया। कहने लगीं कि काश मैं इस से पहले मर चुकती और भूली-बिसरी हो गयी होती। (२३) उस वक़्त उन के नीचे की तरफ़ से फ़रिश्ते ने उन को आवाज़ दी कि ग़मनाक न हो। तुम्हारे परवरदिगार ने तुम्हारे नीचे एक चश्मा पैदा कर दिया है। (२४) और खजूर के तने को पकड़ कर अपनी तरफ़ हिलाओ, तुम पर ताज़ा खजूरें झड़

★रु. १/४ आ १५ ॥व. लाज़िम ●रुबअ १/४

फ़कुली वश-रबी व क़र्री अ़ैनन् फ़इम्मा त-र-यिन्-न मिनल्-ब-शरि अ-ह्-दन्
फ़क़ूली इन्नी न-ज़र्तु लिर्रह्मानि सौमन् फ़-लन् उकल्लिमल्-यौ-म इन्सिय्या
(२६) फ़-अ-तत् बिही क़ौमहा तह्-मिलुहू क़ालू या मर्यमु ल-क़द् जिअ्ति
शैअन् फ़रिय्या (२७) याउख़्-त हारू-न मा का-न अबूकिम्र-अ सौइंव्-व मा

कानत् उम्मुकि बग़िय्या (२८)
फ़-अशारत् इलैहि क़ालू कै-फ़ नुकल्लिमु
मन् का-न फ़िल्महि्द सबिय्या (२९) क़ा-ल
इन्नी अ़ब्दुल्लाहि आतानियल्-
किता-ब व ज-अ़-लनी नबिय्या (३०)
व ज-अ़-लनी मुबारकन् ऐ-न मा कुन्तु
व औसानी बिस्सलाति वज़्ज़काति मादुम्तु
ह़य्या (३१) व बर्रम्-
बिवालिदती व लम् यज्-अ़ल्नी जब्बारन्
शक़िय्या (३२) वस्सलामु अ़-लय्-य यौ-म
वुलित्तु व यौ-म अमूतु व यौ-म उब्अ़सु
ह़य्या (३३) ज़ालि-क ई़सब्नु मर्य-म

تريني من البشر احدا فقولي اني نذرت للرحمن صوما فلن
اكلم اليوم انسيا ۝ فاتت به قومها تحمله قالوا يمريم لقد جئت
شيا فريا ۝ يااخت هرون ما كان ابوك امرا سوء وما كانت امك
بغيا ۝ فاشارت اليه قالوا كيف نكلم من كان في المهد صبيا ۝
قال اني عبد الله اتني الكتب وجعلني نبيا ۝ وجعلني مبركا
اين ما كنت واوصني بالصلوة والزكوة ما دمت حيا ۝ وبرا
بوالدتي ولم يجعلني جبارا شقيا ۝ والسلم علي يوم ولدت ويوم
اموت ويوم ابعث حيا ۝ ذلك عيسى ابن مريم قول الحق الذي
فيه يمترون ۝ ما كان لله ان يتخذ من ولد سبحنه اذا قضى
امرا فانما يقول له كن فيكون ۝ وان الله ربي وربكم فاعبدوه
هذا صراط مستقيم ۝ فاختلف الاحزاب من بينهم فويل
للذين كفروا من مشهد يوم عظيم ۝ اسمع بهم وابصر يوم
ياتوننا لكن الظلمون اليوم في ضلل مبين ۝ وانذرهم يوم
الحسرة اذ قضي الامر وهم في غفلة وهم لا يؤمنون ۝ انا
نحن نرث الارض ومن عليها والينا يرجعون ۝ واذكر في
الكتب ابرهيم انه كان صديقا نبيا ۝ اذ قال لابيه يابت لم
تعبد ما لا يسمع ولا يبصر ولا يغني عنك شيا ۝ يابت اني قد

क़ौलल्-ह़क़्क़िल्लज़ी फ़ीहि यम्तरून (३४) मा का-न लिल्लाहि अंय्यत्तख़ि-ज़
मिंव्व - लदिन् सुब्ह़ानहू इज़ा क़ज़ा अम् - रन् फ़-इन्नमा यक़ूलु लहू
कुन् फ़-यकून (३५) व इन्नल्ला-ह रब्बी व रब्बुकुम् फ़अ़्-बुदूहु हाज़ा
सिरातुम् - मुस्तक़ीम (३६) फ़ख़्त - ल् - फ़ल् - अह़्ज़ाबु मिम् - बैनिहिम्
फ़-वैलुल्-लिल्लज़ी - न क-फ़रू मिम् - मश्हदि यौमिन् अ़ज़ीम (३७)
अस्मिअ़ बिहिम् व अब्सिर् यौ - म यअ्तूनना लाकिनिज़् - ज़ालिमूनल्-
यौ-म फ़ी ज़लालिम्-मुबीन (३८) व अन-ज़िहुम् यौमल्-ह़स्-रति इज़्
क़ुज़ियल् - अम्रु व हुम् फ़ी ग़फ़्-लतिंव्वहुम् ला युअ्मिनून (३९)
इन्ना नह़्नु नरिसुल्अर्-ज़ व मन् अ़लैहा व इलैना युर्जअ़ून ★ (४०)
वज़् - कुर् फ़िल्किताबि इब्राही - म इन्नहू का - न सिद्दीक़न्
नबिय्या (४१) इज़् क़ा - ल लिअबीहि या-अ-बति लि-म तअ़् - बुदु
मा ला यस्मअ़ु व ला युब्सिरु व ला युग़्नी अ़न्-क शैआ (४२)

व. लाज़िम ★रु. २/५ आ २५

पड़ेगी। (२५) तो खाओ और पियो और आंखें ठंडी करो। अगर तुम किसी आदमी को देखो तो कहना कि मैं ने खुदा के लिए रोजे की मन्नत मानी, तो आज मैं किसी आदमी से हरगिज़ बात नहीं करूंगी। (२६) फिर वह उस (बच्चे) को उठा कर अपनी क़ौम के लोगों के पास ले आयीं। ये कहने लगे कि मरयम! यह तो तू ने बुरा काम किया। (२७) ऐ हारून की बहन![1] न तो तेरा बाप बुरी आदतों वाला था और न तेरी मां ही बद-कार थी। (२८) तो मरयम ने उस लड़के की तरफ़ इशारा किया। वह बोले कि हम इस से कि गोद का बच्चा है, किस तरह बात करें। (२९) (बच्चे ने) कहा कि मैं खुदा का बन्दा हूं, उस ने मुझे किताब दी है और नबी बनाया है। (३०) और मैं जहां हूं (और जिस हाल में हूं) मुझे बरकत वाला बनाया है और जब तक ज़िंदा हूं, मुझ को नमाज़ और ज़कात का हुक्म इर्शाद फ़रमाया है। (३१) और (मुझे) अपनी मां के साथ नेक सुलूक करने वाला (बनाया है) और सरकश व बद-बख़्त नहीं बनाया, (३२) और जिस दिन मैं पैदा हुआ, जिस दिन मैं मरूंगा और जिस दिन ज़िंदा कर के उठाया जाऊंगा, मुझ पर सलाम (व रहमत) है। (३३) यह मरयम के बेटे ईसा हैं (और यह) सच्ची बात है, जिसमें लोग शक करते हैं। (३४) खुदा की शान नहीं कि किसी को बेटा बनाए, वह पाक है, जब किसी चीज़ का इरादा करता है, तो उस को यही कहता है कि हो जा, तो वह हो जाती है। (३५) और बेशक खुदा ही मेरा और तुम्हारा परवरदिगार है, तो उसी की इबादत करो, यही सीधा रास्ता है। (३६) फिर (किताब वालों के) फ़िर्क़ों ने आपस में इख़्तिलाफ़ किया, सो जो लोग काफ़िर हुए हैं, उन को बड़े दिन (यानी क़ियामत के दिन) हाज़िर होने से ख़राबी है। (३७) वे जिस दिन हमारे सामने आएंगे, कैसे सुनने वाले और कैसे देखने वाले होंगे, मगर ज़ालिम आज खुली गुमराही में हैं। (३८) और उन को हसरत (व अफ़सोस) के दिन से डरा दो, जब बात फ़ैसला कर दी जाएगी और (अफ़सोस!) वे ग़फ़लत में (पड़े हुए) हैं और ईमान नहीं लाते। (३९) हम ही ज़मीन के और जो लोग उस पर (बसते) हैं, उन के वारिस हैं और हमारी ही तरफ़ उन को लौटना होगा। (४०) ★

और किताब में इब्राहीम को याद करो। बेशक वह निहायत सच्चे पैग़म्बर थे। (४१) जब उन्होंने अपने बाप से कहा कि अब्बा! आप ऐसी चीज़ों को क्यों पूजते हैं, जो न सुनें और न देखें

---

१. हारून से यहां वह हारून मुराद नहीं, जो हज़रत मूसा के भाई थे, क्योंकि वह हज़रत मरयम से मुद्दतों पहले हो गुज़रे थे यानी रिश्तेदारी के लिहाज़ से वह हारून मुराद नहीं हैं, बल्कि नेकी और परहेज़गारी में एक जैसे होने के एतबार से मुराद है, यानी तू हारून जैसी नेक और परहेज़गार थी, गोया उन की बहन थी, फिर तू ने यह काम किया। अली बिन तल्हा और सुद्दी ने कहा कि हारून की बहन इस लिए कहा गया कि वह हज़रत मूसा के भाई हारून की नस्ल से थीं और अरब की आदत है कि जो शख़्स जिस क़ौम और क़बीले का होता है उस को उस क़ौम और क़बीले का भाई कह कर पुकारते हैं, जैसे तमीमी को 'अख़ा तमीम' (तमीम के भाई) और मुज़री या 'अख़ा मुज़र' (मुज़र के भाई) कहते हैं। इसी तरह यहां भी हज़रत मरयम को हज़रत हारून की बहन कह कर पुकारा।

या-अ-बति इन्नी क़द् जा-अनी मिनल्-अिल्मि मा लम् यअ्-ति-क फ़त्तबिअ्-नी अह्-दि-क सिरातन् सविय्या (४३) याअ-बति ला तअ्-बुदिश्शैता-न इन्नश्शैता-न का-न लिर्रह्मानि असिय्या (४४) याअ-बति इन्नी अख़ाफ़ु अंय्य-मस्स-क अज़ाबुम्-मिनर्रह्मानि फ़-तकू-न लिश्शैतानि वलिय्या (४५) क़ा-ल अ-राग़िबुन् अन्-त अन् आलिहती याइब्राहीमु लइल्लम् तन्तहि ल-अर्जुमन्न-क वह्जुर्नी मलिय्या (४६) क़ा-ल सलामुन् अलै-क स-अस्तग़्फ़िरु ल-क रब्बी इन्नहू का-न बी हफ़िय्या (४७) व अअ्-तज़िलुकुम् व मा तद्अू-न मिन् दूनिल्लाहि व अद्अू रब्बी असा अल्ला अकू-न बिदुआ-इ रब्बी शक़िय्या (४८) फ़-लम्मअ्-त-ज़-लहुम् व मा यअ्-बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि व-हब्ना लहू इस्-हा-क़ व यअ्-क़ू-ब व कुल्लन् ज-अल्ना नबिय्या (४९) व व-हब्ना लहुम् मिर्रह्मतिना व ज-अल्ना लहुम् लिसा-न सिद्क़िन् अलिय्या ★(५०) वज़्कुर् फ़िल्किताबि मूसा इन्नहू का-न मुख़्-ल-सव-व का-न रसूलन् नबिय्या (५१) व नादैनाहु मिन् जानिबित्तूरिल्-ऐ-मनि व क़र्रब्नाहु नजिय्या (५२) व व-हब्ना लहू मिर्रह्मतिना अख़ाहु हारू-न नबिय्या (५३) वज़्कुर् फ़िल्किताबि इस्माई-ल इन्नहू का-न सादिक़ल्-वअ्-दि व का-न रसूलन् नबिय्या (५४) व का-न यअ्मुरु अह्-लहू बिस्सलाति वज़्ज़काति व का-न अिन्-द रब्बिही मर्-ज़िय्या (५५) वज़्कुर् फ़िल्किताबि इद्री-स इन्नहू का-न सिद्दीक़न् नबिय्या (५६) व र-फ़अ्-नाहु मकानन् अलिय्या (५७) उला-इकल्लज़ी-न अन्-अ-मल्लाहु अलैहिम् मिनन्-नबिय्यी-न मिन् ज़ुर्रिय्यति आद-म व मिम्मन् ह-मल्ना म-अ नूहिन् व मिन् ज़ुर्रिय्यति इब्राही-म व इस्राई-ल व मिम्मन् हदैना वज्तबैना इज़ा तुत्ला अलैहिम् आयातुर्रह्मानि ख़र्रू सुज्जदंव-व बुकिय्या □(५८)

جَآءَنِىْ مِنَ الْعِلْمِ مَا لَمْ يَأْتِكَ فَاتَّبِعْنِىْٓ اَهْدِكَ صِرَاطًا سَوِيًّا ۝ يٰٓاَبَتِ
لَا تَعْبُدِ الشَّيْطٰنَ ؕ اِنَّ الشَّيْطٰنَ كَانَ لِلرَّحْمٰنِ عَصِيًّا ۝ يٰٓاَبَتِ
اِنِّىْٓ اَخَافُ اَنْ يَّمَسَّكَ عَذَابٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ فَتَكُوْنَ لِلشَّيْطٰنِ
وَلِيًّا ۝ قَالَ اَرَاغِبٌ اَنْتَ عَنْ اٰلِهَتِىْ يٰٓاِبْرٰهِيْمُ ۚ لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهِ لَاَرْجُمَنَّكَ
وَاهْجُرْنِىْ مَلِيًّا ۝ قَالَ سَلٰمٌ عَلَيْكَ ۚ سَاَسْتَغْفِرُ لَكَ رَبِّىْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ
بِىْ حَفِيًّا ۝ وَاَعْتَزِلُكُمْ وَمَا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَاَدْعُوْا رَبِّىْ ۖ
عَسٰٓى اَلَّآ اَكُوْنَ بِدُعَآءِ رَبِّىْ شَقِيًّا ۝ فَلَمَّا اعْتَزَلَهُمْ وَمَا يَعْبُدُوْنَ
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۙ وَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ ؕ وَكُلًّا جَعَلْنَا نَبِيًّا ۝ وَ
وَهَبْنَا لَهُمْ مِّنْ رَّحْمَتِنَا وَجَعَلْنَا لَهُمْ لِسَانَ صِدْقٍ عَلِيًّا ۝ وَاذْكُرْ
فِى الْكِتٰبِ مُوْسٰٓى ۫ اِنَّهٗ كَانَ مُخْلَصًا وَّكَانَ رَسُوْلًا نَّبِيًّا ۝ وَنَادَيْنٰهُ
مِنْ جَانِبِ الطُّوْرِ الْاَيْمَنِ وَقَرَّبْنٰهُ نَجِيًّا ۝ وَوَهَبْنَا لَهٗ مِنْ رَّحْمَتِنَآ
اَخَاهُ هٰرُوْنَ نَبِيًّا ۝ وَاذْكُرْ فِى الْكِتٰبِ اِسْمٰعِيْلَ ۫ اِنَّهٗ كَانَ صَادِقَ
الْوَعْدِ وَكَانَ رَسُوْلًا نَّبِيًّا ۝ وَكَانَ يَاْمُرُ اَهْلَهٗ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ ۪
وَكَانَ عِنْدَ رَبِّهٖ مَرْضِيًّا ۝ وَاذْكُرْ فِى الْكِتٰبِ اِدْرِيْسَ ۫ اِنَّهٗ كَانَ
صِدِّيْقًا نَّبِيًّا ۝ وَّرَفَعْنٰهُ مَكَانًا عَلِيًّا ۝ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ
عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ مِنْ ذُرِّيَّةِ اٰدَمَ ۗ وَمِمَّنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ ۫ وَّمِنْ
ذُرِّيَّةِ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْرَآءِيْلَ ۫ وَمِمَّنْ هَدَيْنَا وَاجْتَبَيْنَا ؕ اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ

★रु. ३/६ आ १० □ सज्दः ५

और न आप के कुछ काम आ सकें। (४२) अब्बा! मुझे ऐसा इल्म मिला है, जो आप को नहीं मिला, तो मेरे साथ होजिए, मैं आप को सीधी राह पर चला दूंगा। (४३) अब्बा! शैतान की पूजा न कीजिए बेशक शैतान ख़ुदा का ना-फ़रमान है। (४४) अब्बा! मुझे डर लगता है कि आप को ख़ुदा का अज़ाब आ पकड़े, तो आप शैतान के साथी हो जाएं। (४५) उस ने कहा कि इब्राहीम! क्या तू मेरे माबूदों से बरगश्ता है? अगर तू बाज़ न आएगा, तो मैं तुझे संगसार करूंगा और तू हमेशा के लिए मुझ से दूर हो जा। (४६) (इब्राहीम ने) "सलामुन अलैकुम" कहा (और कहा कि) मैं आपके लिए अपने परवरदिगार से बख़्शिश मांगूंगा। बेशक वह मुझ पर निहायत मेहरबान है। (४७) और मैं आप लोगों से और जिन को आप ख़ुदा के सिवा पुकारा करते हैं, उन से किनारा करता हूं और अपने परवरदिगार ही को पुकारूंगा। उम्मीद है कि मैं अपने परवरदिगार को पुकार कर महरूम नहीं रहूंगा। (४८) और जब इब्राहीम उन लोगों से और जिन की वे ख़ुदा के सिवा पूजा किया करते थे, अलग हो गये, तो हम ने उन को इस्हाक़ और (इस्हाक़ को) याक़ूब बख़्शे और सब को पैग़म्बर बनाया। (४९) और उन को अपनी रहमत से (बहुत-सी चीज़ें) इनायत कीं और उन का बेहतर ज़िक्र बुलंद किया। (५०)★

और किताब में मूसा का भी ज़िक्र करो। बेशक वह (हमारे) चुने हुए और भेजे हुए (रसूल) पैग़म्बर थे। (५१) और हम ने तूर की दाहिनी तरफ़ पुकारा और बातें करने के लिए नज़दीक बुलाया। (५२) और अपनी मेहरबानी से उन को उन का भाई हारून पैग़म्बर अता किया। (५३) और किताब में इस्माईल का भी ज़िक्र करो। वह वायदे के सच्चे और (हमारे) भेजे हुए नबी थे। (५४) और अपने घर वालों को नमाज़ और ज़कात का हुक्म करते थे और अपने परवरदिगार के यहां पसंदीदा (व बर्गुज़ीदा) थे। (५५) और किताब में इद्रीस का भी ज़िक्र करो। वह भी निहायत सच्चे नबी थे। (५६) और हम ने उन को ऊंची जगह उठा लिया था।[1] (५७) ये वह लोग हैं जिन पर ख़ुदा ने अपने पैग़म्बरों में से फ़ज़्ल किया (यानी) आदम की औलाद में से और उन लोगों में से जिन को हम ने नूह के साथ (कश्ती में) सवार किया और इब्राहीम और याक़ूब की औलाद में से और उन लोगों में से जिन को हम ने हिदायत दी और चुन लिया, जब उन के सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती थीं तो सज्दे में गिर पड़ते और रोते रहते थे□ (५८) फिर उन के बाद कुछ

---

१. यानी नुबूवत का बुलंद दर्जा या दुनिया में बुलंद मर्तबा बख़्शा था या यह कि आसमान की तरफ़ उठा लिया था।

फ़-ख़-ल-फ़ मिम्बअ्-दिहिम् ख़ल्फ़ुन् अज़ाअुस्सला-त वत्तबअुश्श-ह-वाति फ़सौ-फ़ यल्क़ौ-न ग़य्या (५९) इल्ला मन् ता-ब व आम-न व अमि-ल सालिहन् फ़उलाइ-क यद्ख़ुलूनल्-जन्न-त व ला युज़्लमू-न शैआ (६०) जन्नाति अद्नि-निल्लती व-अ-दर्रह्मानु अिबादहू बिलग़ैबि इन्नहू का-न वअ्-दुहू मअ्तिय्या (६१) ला यस्मअू-न फ़ीहा लग़्-वन् इल्ला सलामन् व लहुम् रिज़्-क़ुहुम् फ़ीहा बुक-र-तंव्-व अशिय्या (६२) तिल्कल्-जन्नतुल्लती नूरिसु मिन् अिबादिना मन् का-न तक़िय्या (६३) व मा न-त-नज़्ज़लु इल्ला बिअम्रि रब्बि-क लहू मा बै-न ऐदीना व मा ख़ल्फ़ना व मा बै-न ज़ालि-क व मा का-न रब्बु-क नसिय्या (६४) रब्बुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बैनहुमा फ़अ्-बुद्हु वस्तबिर् लिअिबादतिही हल् तअ्-लमु लहू समिय्या ★(६५) व यक़ूलुल्-इन्सानु अ-इज़ा मा मित्तु ल-सौ-फ़ उख़्रजु हय्या (६६) अ-व ला यज़्कुरुल्-इन्सानु अन्ना ख़-लक़्नाहु मिन् क़ब्लु व लम् यकु शैआ (६७) फ़-व रब्बि-क ल-नह्शुरन्नहुम् वश्शयाती-न सुम्-म ल-नुह्ज़िरन्नहुम् हौ-ल जहन्न-म जिसिय्या (६८) सुम्-म ल-नन्ज़िअन्-न मिन् कुल्लि शीअतिन् अय्युहुम् अशद्दु अलर्रह्मानि अितिय्या (६९) सुम्-म ल-नह्नु अअ्-लमु बिल्लज़ी-न हुम् औला बिहा सिलिय्या (७०) व इम्-मिन्कुम् इल्ला वारिदुहा का-न अला रब्बि-क हत्मम्-मक़्ज़िय्या (७१) सुम्-म नुनज्जिल्लज़ीनत्तक़व्-व न-ज़-रुज़्ज़ालिमी-न फ़ीहा जिसिय्या (७२) व इज़ा तुत्ला अलैहिम् आयातुना बय्यिनातिन् क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू लिल्लज़ी-न आमनू अय्युल्फ़रीक़ैनि ख़ैरुम्-मक़ामंव्-व अह्सनु नदिय्या (७३) व कम् अह्-लक्ना क़ब्-लहुम् मिन् क़र्निन् हुम् अह्-सनु असासंव्-व रिअ्या (७४)

اٰيٰتُ الرَّحْمٰنِ خَرُّوْا سُجَّدًا وَّبُكِيًّا ۩ فَخَلَفَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ
اَضَاعُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهَوٰتِ فَسَوْفَ يَلْقَوْنَ غَيًّا ۙ اِلَّا مَنْ
تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُوْنَ
شَيْـًٔا ۙ جَنّٰتِ عَدْنِ ِۨالَّتِيْ وَعَدَ الرَّحْمٰنُ عِبَادَهٗ بِالْغَيْبِ ؕ اِنَّهٗ كَانَ
وَعْدُهٗ مَاْتِيًّا ۙ لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا اِلَّا سَلٰمًا ؕ وَلَهُمْ رِزْقُهُمْ فِيْهَا بُكْرَةً
وَّعَشِيًّا ۙ تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِيْ نُوْرِثُ مِنْ عِبَادِنَا مَنْ كَانَ تَقِيًّا ۙ وَمَا
نَتَنَزَّلُ اِلَّا بِاَمْرِ رَبِّكَ ۚ لَهٗ مَا بَيْنَ اَيْدِيْنَا وَمَا خَلْفَنَا وَمَا بَيْنَ ذٰلِكَ ۚ وَ
مَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا ۚ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فَاعْبُدْهُ وَ
اصْطَبِرْ لِعِبَادَتِهٖ ؕ هَلْ تَعْلَمُ لَهٗ سَمِيًّا ۙ وَيَقُوْلُ الْاِنْسَانُ ءَاِذَا مَا
مِتُّ لَسَوْفَ اُخْرَجُ حَيًّا ۙ اَوَلَا يَذْكُرُ الْاِنْسَانُ اَنَّا خَلَقْنٰهُ مِنْ قَبْلُ
وَلَمْ يَكُ شَيْـًٔا ۙ فَوَرَبِّكَ لَنَحْشُرَنَّهُمْ وَالشَّيٰطِيْنَ ثُمَّ لَنُحْضِرَنَّهُمْ حَوْلَ
جَهَنَّمَ جِثِيًّا ۚ ثُمَّ لَنَنْزِعَنَّ مِنْ كُلِّ شِيْعَةٍ اَيُّهُمْ اَشَدُّ عَلَى الرَّحْمٰنِ
عِتِيًّا ۚ ثُمَّ لَنَحْنُ اَعْلَمُ بِالَّذِيْنَ هُمْ اَوْلٰى بِهَا صِلِيًّا ۙ وَاِنْ مِّنْكُمْ اِلَّا
وَارِدُهَا ۚ كَانَ عَلٰى رَبِّكَ حَتْمًا مَّقْضِيًّا ۚ ثُمَّ نُنَجِّي الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّ
نَذَرُ الظّٰلِمِيْنَ فِيْهَا جِثِيًّا ۙ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالَ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا ۙ اَيُّ الْفَرِيْقَيْنِ خَيْرٌ مَّقَامًا وَّاَحْسَنُ
نَدِيًّا ۙ وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هُمْ اَحْسَنُ اَثَاثًا وَّرِءْيًا ۙ

★रु. ४/७ आ १५

ना-खलफ़ उन के जानशीन हुए, जिन्होंने नमाज़ को (छोड़ दिया, गोया उसे) खो दिया और नफ़्स की ख्वाहिशों के पीछे लग गये, बहुत जल्द उन को गुमराही (की सज़ा) मिलेगी। (५९) हां, जिस ने तौबा की और ईमान लाया और नेक अमल किए तो ऐसे लोग बहिश्त में दाखिल होंगे और उन का कुछ नुक़्सान न किया जाएगा। (६०) (यानी) हमेशा की बहिश्त (में) जिस का खुदा ने अपने बन्दों से वायदा किया है (और जो उन की आंखों से) छिपा हुआ (है।) बेशक उस का वायदा (नेकों के सामने) आने वाला है। (६१) वे उस में सलाम के सिवा कोई बेहूदा कलाम न सुनेंगे और उन के लिए सुबह व शाम खाना तैयार होगा।[१] (६२) यह वह जन्नत है जिस का हम अपने बन्दों में से ऐसे शख्स को मालिक बनाएंगे, जो परहेज़गार होगा। (६३) और (फ़रिश्तों ने पैग़म्बर को जवाब दिया कि) हम तुम्हारे परवरदिगार के हुक्म के सिवा उतर नहीं सकते, जो कुछ हमारे आगे है और जो पीछे है और जो उन के दर्मियान है, सब उसी का है और तुम्हारा परवरदिगार भूलने वाला नहीं। (६४) (यानी) आसमान और ज़मीन और जो उन दोनों के दर्मियान है सब का परवरदिगार, तो उसी की इबादत करो और उस की इबादत पर साबित क़दम रहो, भला तुम कोई उस का हम-नाम (एक नाम वाला) जानते हो ? (६५)★

और (काफ़िर) इंसान कहता है कि जब मैं मर जाऊंगा तो क्या ज़िंदा कर के निकाला जाऊंगा ? (६६) क्या (ऐसा) इंसान याद नहीं करता कि हम ने उस को पहले भी तो पैदा किया था और वह कुछ भी चीज़ न था। (६७) तुम्हारे परवरदिगार की क़सम ! हम उन को जमा करेंगे और शैतानों को भी, फिर इन सब को जहन्नम के गिर्द हाज़िर करेंगे (और वे) घुटनों पर गिरे हुए (होंगे)। (६८) फिर हर जमाअत में से हम ऐसे लोगों को खींच निकालेंगे, जो खुदा से सख्त सर-कशी करते थे। (६९) और हम उन लोगों को खूब जानते हैं, जो उन में दाखिल होने के ज़्यादा लायक़ हैं। (७०) और तुम में कोई (शख्स) नहीं, मगर उसे उस पर गुज़रना होगा। यह तुम्हारे परवरदिगार पर ज़रूरी और मुक़र्रर है। (७१) फिर हम परहेज़गारों को निजात देंगे और ज़ालिमों को उस में घुटनों के बल पड़ा हुआ छोड़ देंगे। (७२) और जब उन लोगों के सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं, तो जो काफ़िर हैं, वे मोमिनों से कहते हैं कि दोनों फ़रीक़ में से मकान किस के अच्छे और मज्लिसों में से किस की बेहतर है ? (७३) और हम ने उन से पहले बहुत-सी उम्मतें हलाक कर दीं। वे लोग (उन से) ठाट और दिखावे में कहीं अच्छे थे। (७४) कह दो कि जो शख्स गुमराही में

---

१. बक-बक न सुनेंगे और सलामुन अलैकुम की आवाज़ सुनेंगे।

क़ुल् मन् का-न फ़िज़्ज़लालति फ़ल्-यम्दुद् लहुर्रह्मानु मद्-दा ج हत्ता इज़ा रऔ मा यूअदू-न इम्मल्-अज़ा-ब व इम्मस्सा-अ-तु ط फ़-स-यअ्-ल-मू-न मन् हु-व शर्रुम्-मकानंव्-व अज़्अफ़ु जुन्दा (७५) व यज़ीदुल्लाहुल्-लज़ीनह्-तदौ हुदन् ط वल्बाक़ियातुस्-सालिहातु ख़ैरुन् अिन्-द रब्बि-क सवाबंव्-व ख़ैरुम्-म-रद्दा (७६) अ-फ़-रऐ-तल्लज़ी क-फ़-र बिआयातिना व क़ा-ल ल-ऊ-त-यन्-न मालंव्-व व-ल-दा ط (७७) अत्त-ल-अल्-ग़ै-ब अमित्त-ख़-ज़ अिन्दर्रह्मानि अह्-दा ز (७८) कल्ला ط स-नक्तुबु मा यक़ूलु व नमुद्दु लहू मिनल्-अज़ाबि मद्-दा ز (७९) व नरिसुहू मा यक़ूलु व यअ्तीना फ़र्दा (८०) वत्त-ख़ज़ू मिन् दूनिल्लाहि आलि-ह-तल्-लि-यकूनू लहुम् अिज़्ज़ा ز (८१) कल्ला ط स-यक्फ़ुरू-न बिअिबादतिहिम् व यकूनू-न अलैहिम् ज़िद्दा ★(८२) अ-लम् त-र अन्ना अर्सल्नश्-शयाती-न अ-लल्-काफ़िरी-न तउज़्ज़ुहुम् अज़्ज़ा ز (८३) फ़ला तअ्-जल् अलैहिम् ط इन्नमा नअुद्दु लहुम् अद्दा ج (८४) यौ-म नह्शुरुल्-मुत्तक़ी-न इलर्रह्मानि वफ़्-दा ز (८५) व नसूक़ुल्-मुजिरमी-न इला जहन्न-म विर्दा ※(८६) ला यम्लिकूनश्शफ़ा-अ-त इल्ला मनित्त-ख़-ज़ अिन्दर्रह्मानि अह्दा ※(८७) व क़ालुत्त-ख़-ज़र्रह्मानु व-ल-दा ط (८८) ल-क़द् जिअ्तुम् शैअन् इद्दा ز (८९) तकादुस्समावातु य-त-फ़त्तर-न मिन्हु व तन-शक़्क़ुल्अर्ज़ु व तख़िर्रुल्-जिबालु हद्दा ز (९०) अन् दऔ लिर्रह्मानि व-ल-दा ج (९१) व मा यम्बग़ी लिर्रह्मानि अंय्यत्तख़ि-ज़ व-ल-दा ط (९२) इन् कुल्लु मन् फ़िस्समावाति वल्-अर्ज़ि इल्ला आतिर्रह्मानि अब्दा ط (९३) ल-क़द् अह्साहुम् व अद्दहुम् अद्दा ط (९४) व कुल्लुहुम् आतीहि यौमल्क़ियामति फ़र्दा (९५) इन्नल्लज़ी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति स-यज्अलु लहुमुर्रह्मानु वुद्दा (९६)

قُلْ مَنْ كَانَ فِي الضَّلٰلَةِ فَلْيَمْدُدْ لَهُ الرَّحْمٰنُ مَدًّا ۚ حَتّٰى إِذَا رَأَوْا
مَا يُوعَدُونَ إِمَّا الْعَذَابَ وَإِمَّا السَّاعَةَ ۗ فَسَيَعْلَمُونَ مَنْ هُوَ شَرٌّ
مَكَانًا وَأَضْعَفُ جُنْدًا ۝ وَيَزِيدُ اللّٰهُ الَّذِينَ اهْتَدَوْا هُدًى ۗ وَالْبٰقِيٰتُ
الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَخَيْرٌ مَرَدًّا ۝ أَفَرَءَيْتَ الَّذِي كَفَرَ
بِاٰيٰتِنَا وَقَالَ لَأُوتَيَنَّ مَالًا وَوَلَدًا ۝ أَطَّلَعَ الْغَيْبَ أَمِ اتَّخَذَ عِنْدَ
الرَّحْمٰنِ عَهْدًا ۝ كَلَّا ۚ سَنَكْتُبُ مَا يَقُولُ وَنَمُدُّ لَهُ مِنَ الْعَذَابِ
مَدًّا ۝ وَنَرِثُهُ مَا يَقُولُ وَيَأْتِينَا فَرْدًا ۝ وَاتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللّٰهِ اٰلِهَةً
لِيَكُونُوا لَهُمْ عِزًّا ۝ كَلَّا ۚ سَيَكْفُرُونَ بِعِبَادَتِهِمْ وَيَكُونُونَ عَلَيْهِمْ
ضِدًّا ۝ أَلَمْ تَرَ أَنَّا أَرْسَلْنَا الشَّيٰطِينَ عَلَى الْكٰفِرِينَ تَؤُزُّهُمْ أَزًّا ۝
فَلَا تَعْجَلْ عَلَيْهِمْ ۖ إِنَّمَا نَعُدُّ لَهُمْ عَدًّا ۝ يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِينَ إِلَى الرَّحْمٰنِ
وَفْدًا ۝ وَنَسُوقُ الْمُجْرِمِينَ إِلٰى جَهَنَّمَ وِرْدًا ۝ لَا يَمْلِكُونَ الشَّفَاعَةَ
إِلَّا مَنِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمٰنِ عَهْدًا ۝ وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا ۝
لَقَدْ جِئْتُمْ شَيْئًا إِدًّا ۝ تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْهُ وَتَنْشَقُّ الْأَرْضُ
وَتَخِرُّ الْجِبَالُ هَدًّا ۝ أَنْ دَعَوْا لِلرَّحْمٰنِ وَلَدًا ۝ وَمَا يَنْبَغِي لِلرَّحْمٰنِ
أَنْ يَتَّخِذَ وَلَدًا ۝ إِنْ كُلُّ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ إِلَّا اٰتِي الرَّحْمٰنِ
عَبْدًا ۝ لَقَدْ أَحْصٰهُمْ وَعَدَّهُمْ عَدًّا ۝ وَكُلُّهُمْ اٰتِيهِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ
فَرْدًا ۝ إِنَّ الَّذِينَ اٰمَنُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمٰنُ

★रु. ५/८ आ १७ ※व. लाज़िम ※व. लाज़िम

पड़ा हुआ है, खुदा उस को धीरे-धीरे मोहलत दिए जाता है, यहां तक कि जब उस चीज़ को देख लेंगे, जिस का उन से वायदा किया जाता है, ख्वाह अज़ाब, और ख्वाह क़ियामत तो (उस वक़्त) जान लेंगे कि मकान किस का बुरा है और लश्कर किस का कमज़ोर है। (७५) और जो लोग हिदायत पाए हुए हैं, खुदा उन को ज़्यादा हिदायत देता है और नेकियां जो बाक़ी रहने वाली हैं, वे तुम्हारे परवरदिगार के बदले के लिहाज़ से खूब और अंजाम के एतबार से बेहतर हैं। (७६) भला तुम ने उस शख़्स को देखा जिस ने हमारी आयतों से कुफ़्र किया और कहने लगा कि (अगर मैं नये सिरे से ज़िंदा हुआ भी तो यही) माल और औलाद मुझे (वहां) मिलेगा। (७७) क्या उस ने ग़ैब की ख़बर पा ली है, या खुदा के यहां (से) अह्द ले लिया है ? (७८) हरगिज़ नहीं ! यह जो कुछ कहता है, हम उस को लिखते जाते और धीरे-धीरे अज़ाब बढ़ाते जाते हैं, (७९) और जो चीज़ें यह बताता है, उन के हम वारिस होंगे और यह अकेला हमारे सामने आएगा। (८०) और उन लोगों ने खुदा के सिवा और माबूद बना लिए हैं, ताकि वह उन के लिए (इज़्ज़त व) मदद (की वजह) हो। (८१) हर गिज़ नहीं। वे (झूठे माबूद) उन की पूजा से इन्कार करेंगे और उन के दुश्मन (व मुख़ालिफ़) होंगे, (८२) ★

क्या तुम ने नहीं देखा कि हम ने शैतानों को काफ़िरों पर छोड़ रखा कि वे उन को उभारते रहते हैं, (८३) तो तुम उन पर (अज़ाब के लिए) जल्दी न करो और हम तो उन के लिए (दिन) गिन रहे हैं, (८४) जिस दिन हम परहेज़गारों को खुदा के सामने मेहमानों (के तौर-पर) जमा करेंगे। (८५) और गुनाहगारों को दोज़ख़ की तरफ़ प्यासे हांक ले जाएंगे ※ (८६) (तो लोग) किसी की सिफ़ारिश का अख़्तियार न रखेंगे, मगर जिस ने खुदा से इक़रार लिया हो ※ (८७) और कहते हैं खुदा बेटा रखता है। (८८) (ऐसा कहने वालो ! यह तो) तुम बुरी बात (ज़ुबान पर) लाते हो। (८९) क़रीब है कि इस (झूठ गढ़ने) से आसमान फट पड़े और ज़मीन फट जाए और पहाड़ टुकड़े-टुकड़े हो कर गिर पड़ें, (९०) कि उन्हों ने खुदा के लिए बेटा तज्वीज़ किया। (९१) और खुदा को मुनासिब नहीं कि किसी को बेटा बनाए। (९२) तमाम शख़्स जो आसमानों और ज़मीन में हैं, सब खुदा के रू-ब-रू बन्दे हो कर आएंगे। (९३) उस ने उन (सब) को (अपने इल्म से) घेर रखा और (एक-एक को) गिन रखा है, (९४) और सब क़ियामत के दिन उस के सामने अकेले-अकेले हाज़िर होंगे। (९५) और जो लोग ईमान लाए और नेक अमल किए, खुदा उन की मुहब्बत (मख़्लूक़ात के दिल में) पैदा कर देगा। (९६) (ऐ पैग़म्बर !) हम ने यह (क़ुरआन)

★ रु. ५/८ आ १७ ※ व. लाज़िम ※ व. लाज़िम

फ़इन्नमा यस्सर्नाहु बिलिसानि-क लितुबश्शि-र बिहिल्-मुत्तक़ी-न व तुन्ज़ि-र बिही क़ौमल्-लुद्दा (९७) व कम् अह्लक्ना क़ब-लहुम् मिन् क़र्नित्, हल् तुहिस्सु मिन्हुम् मिन् अ-हदिन् औ तस्मअु लहुम् रिक्ज़ा ●★ (९८)

فَإِنَّمَا يَسَّرْنَاهُ بِلِسَانِكَ لِتُبَشِّرَ بِهِ الْمُتَّقِينَ وَتُنذِرَ بِهِ قَوْمًا لُّدًّا ۝ وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُم مِّن قَرْنٍ هَلْ تُحِسُّ مِنْهُم مِّنْ أَحَدٍ أَوْ تَسْمَعُ لَهُمْ رِكْزًا ۝

سُورَةُ طٰهٰ مَكِّيَّةٌ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

طه ۝ مَا أَنزَلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْآنَ لِتَشْقَىٰ ۝ إِلَّا تَذْكِرَةً لِّمَن يَخْشَىٰ ۝ تَنزِيلًا مِّمَّنْ خَلَقَ الْأَرْضَ وَالسَّمَاوَاتِ الْعُلَى ۝ الرَّحْمَٰنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوَىٰ ۝ لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَمَا تَحْتَ الثَّرَىٰ ۝ وَإِن تَجْهَرْ بِالْقَوْلِ فَإِنَّهُ يَعْلَمُ السِّرَّ وَأَخْفَى ۝ اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ لَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ ۝ وَهَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ مُوسَىٰ ۝ إِذْ رَأَىٰ نَارًا فَقَالَ لِأَهْلِهِ امْكُثُوا إِنِّي آنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّي آتِيكُم مِّنْهَا بِقَبَسٍ أَوْ أَجِدُ عَلَى النَّارِ هُدًى ۝ فَلَمَّا أَتَاهَا نُودِيَ يَا مُوسَىٰ ۝ إِنِّي أَنَا رَبُّكَ فَاخْلَعْ نَعْلَيْكَ إِنَّكَ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ۝ وَأَنَا اخْتَرْتُكَ فَاسْتَمِعْ لِمَا يُوحَىٰ ۝ إِنَّنِي أَنَا اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا أَنَا فَاعْبُدْنِي وَأَقِمِ الصَّلَاةَ لِذِكْرِي ۝ إِنَّ السَّاعَةَ آتِيَةٌ أَكَادُ أُخْفِيهَا لِتُجْزَىٰ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا تَسْعَىٰ ۝ فَلَا يَصُدَّنَّكَ عَنْهَا مَن لَّا يُؤْمِنُ بِهَا وَاتَّبَعَ هَوَاهُ فَتَرْدَىٰ ۝ وَمَا تِلْكَ بِيَمِينِكَ يَا مُوسَىٰ ۝ قَالَ هِيَ عَصَايَ أَتَوَكَّأُ عَلَيْهَا وَأَهُشُّ بِهَا

२० सूरतु ताहा ४५

(मक्की) इस सूरः में अरबी के ५४६६ अक्षर, १२५१ शब्द, १३५ आयतें और ८ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम ●

ता - हा (१) मा अन्ज़ल्ना अलैकल् - क़ुर्आ - न लितश्क़ा (२) इल्ला तज़्कि-र-तल् - लिमंय्यख़्शा (३) तन्ज़ीलम्-मिम्मन् ख़-ल-क़ल्अर्-ज़ वस्समावातिल्-अुला (४) अर्रह़्मानु अ - लल् - अर्शिस्तवा (५) लहू मा फ़िस्-समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि व मा बैनहुमा व मा तह-तस्सरा (६) व इन् तज्-हर् बिल्क़ौलि फ़-इन्नहू यअ-लमुस्सिर-र व अख़्फ़ा (७) अल्लाहु ला इला-ह इल्ला हु-व, लहुल् - अस्मा - उल् - हुस्ना (८) व हल् अता - क ह़दीसु मूसा ※ (९) इज़् रआ नारन् फ़ - क़ा - ल लिअह्लिहिम्कुसू इन्नी आनस्तु नारल्ल-अल्ली आतीकुम् मिन्हा बि-क़-बसिन् औ अजिदु अ-लन्नारि हुदा (१०) फ़-लम्मा अताहा नूदि-य या मूसा (११) इन्नी अ-न रब्बु-क फ़ख़्लअ् नअ् - लै-क इन्न-क बिल्वादिल्-मुक़द्दसि तुवा (१२) व अनख़्तर्तु-क फ़स्तमिअ् लिमा यूहा (१३) इन्ननी अनल्लाहु ला इला-ह इल्ला अ-न फ़अ्-बुद्नी, व अक़िमिस्सला-त लिज़िक्री (१४) इन्नस्सा-अ-त आतियतुन् अकादु उख़्फ़ीहा लितुज्ज़ा कुल्लु नफ़्सिम्-बिमा तस्आ (१५) फ़ला यसुद्दन्न-क अन्हा मल्ला युअ्मिनु बिहा वत्तब-अ हवाहु फ़-तर्दा (१६) व मा तिल्-क बियमीनि-क या मूसा (१७) क़ा-ल हि-य असाय अ-त-वक्कउ अलैहा व अहुश्शु बिहा अला ग़-नमी व लि-य फ़ीहा मआरिबु उख़्रा (१८)

★रु. ६/६ आ १६ ● नि. १/२ ※व लाज़िम

तुम्हारी ज़ुबान में आसान (नाज़िल) किया है ताकि तुम इस से परहेज़गारों को ख़ुशख़बरी पहुंचा दो और झगड़ालुओं को डर सुना दो। (९७) और हम ने इस से पहले बहुत से गिरोहों को हलाक कर दिया है, भला तुम उन में किसी को देखते हो या (कहीं) उन की भनक सुनते हो। (९८)★●

२० सूरः ता़ हा ४५

सूरः त्वा हा मक्की है और इस में एक सौ पैंतीस आयतें और आठ रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

त्वा हा, (१) (ऐ मुहम्मद!) हमने तुम पर क़ुरआन इसलिए नाज़िल नहीं किया कि तुम मुशक़्क़त में पड़ जाओ।[1] (२) बल्कि उस शख़्स को नसीहत देने के लिए (नाज़िल किया है) जो डर रखता है। (३) यह उस ज़ात का उतारा हुआ है, जिस ने ज़मीन और ऊंचे-ऊंचे आसमान बनाए। (४) (यानी ख़ुदा-ए-) रहमान, जिस ने अर्श पर क़रार पकड़ा। (५) जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और जो कुछ इन दोनों के बीच में है, और जो कुछ (ज़मीन की) मिट्टी के नीचे है, सब उसी का है। (६) और अगर तुम पुकार कर बात कहो तो वह तो छिपे भेद और बहुत छिपी बात तक को जानता है। (७) (वह) माबूद (बर हक़) है (कि) उस के सिवा कोई माबूद नहीं है, उस के (सब) नाम अच्छे हैं। (८) और क्या तुम्हें मूसा के हाल की ख़बर मिली है ▒ (९) जब उन्हों ने आग देखी तो अपने घर के लोगों से कहा कि तुम (यहां) ठहरो, मैं ने आग देखी है। (मैं वहां जाता हूं) शायद उस में से मैं तुम्हारे पास अंगारे लाऊं या आग (की जगह) का रास्ता मालूम कर सकूं। (१०) जब वहां पहुंचे तो आवाज़ आयी कि मूसा! (११) मैं तो तुम्हारा परवरदिगार हूं, तो अपनी जूतियां उतार दो, तुम (यहां) पाक मैदान (यानी) तुवा में हो। (१२) और मैं ने तुम को चुन लिया है, तो जो हुक्म दिया जाए, उसे सुनो। (१३) बेशक मैं ही ख़ुदा हूं, मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तो मेरी इबादत किया करो, और मेरी याद के लिए नमाज़ पढ़ा करो। (१४) क़ियामत यक़ीनन आने वाली है। मैं चाहता हूं कि उस (के वक़्त) को पोशीदा रखूं, ताकि हर शख़्स जो कोशिश करे, उस का बदला पाए।[2] (१५) तो जो शख़्स उस पर ईमान नहीं रखता और अपनी ख़्वाहिश के पीछे चलता है, (कहीं) तुम को उस (के यक़ीन) से रोक न दे, तो (इस शक्ल में) तुम हलाक हो जाओ। (१६) और मूसा यह तुम्हारे दाहिने हाथ में क्या है? (१७) उन्हों ने कहा यह मेरी लाठी है, इस पर मैं सहारा लगाता हूं और इस से अपनी बकरियों के लिए पत्ते झाड़ता हूं और इस में मेरे और भी कई फ़ायदे

---

१. जब क़ुरआन नाज़िल होना शुरू हुआ तो जनाब रिसालत मआब ज़्यादा से ज़्यादा इबादत करते और बहुत ज़हमत उठाते, रातों को नमाज़ में खड़े रहते और क़ुरआन शरीफ़ पढ़ते रहते, इस से एक तो सेहत में ख़लल वाक़ेअ होने का डर होता था, दूसरे काफ़िरों ने आप से कहना शुरू किया कि क़ुरआन तो आप के लिए सख़्त तक्लीफ़ की वजह बन गया, तब यह आयत नाज़िल हुई कि अल्लाह तआला ने आप को ऐसी मशक़्क़त उठाने से मना फ़रमाया।

२. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को भी पहली वह्य में नमाज़ का हुक्म है और हमारे पैग़म्बर को भी 'व रब्ब-क फ़-कब्बिर' और क़ियामत को छिपाता हूं यानी वक़्त किसी को नहीं बताता।

क़ा-ल अल्क़िहा या मूसा (१९) फ़-अल्क़ाहा फ़-इज़ा हि-य हय्यतुन् तस्आ (२०) क़ा-ल ख़ुज़्हा व ला त-ख़फ़् सनुईदुहा सी-र-त-हल्-ऊला (२१) वज़्मुम् य-द-क इला जनाहि-क तख़्-रुज् बैज़ा-अ मिन् ग़ैरि सूइन् आ-य-तन् उख़्रा (२२) लिनुरि-य-क मिन् आयातिनल्-कुब्रा (२३) इज़्हब् इला फ़िर्औ-न इन्नहू तग़ा★(२४) क़ा-ल रब्बिश्रह्ली सद्री (२५) व यस्सिर् ली अम्री (२६) वह्लुल्-उक़्द-तम्-मिल्लिसानी (२७) यफ़्क़हू क़ौली (२८) वज्अल्-ली वज़ीरम्मिन् अह्ली (२९) हारू-न अख़ि- (३०) उश्दुद् बिही अज़्री (३१) व अश्रिक्हु फ़ी अम्री (३२) कै नुसब्बि-ह-क कसीरंव (३३) व नज़्कु-र-क कसीरा (३४) इन्न-क कुन्-त बिना बसीरा (३५) क़ा-ल क़द् ऊती-त सुअ्-ल-क या मूसा (३६) व ल-क़द् मनन्ना अलै-क मर्रतन् उख़्रा (३७) इज़् औहैना इला उम्मि-क मा यूहा (३८) अनिक़्ज़िफ़ीहि फ़िताबूति फ़क़्ज़िफ़ीहि फ़िल्यम्मि फ़ल्-युल्क़िहिल्-यम्मु बिस्साहिलि यअ्ख़ुज़्हु अदुव्वुल्ली व अदुव्वुल्लहू व अल्क़ैतु अलै-क महब्बतम्मिन्नी व लितुस्-न-अ अला अैनी ※(३९) इज़् तम्शी उख़्तु-क फ़-तक़ूलु हल् अदुल्लुकुम् अला मंय्यक्फ़ुलुहू फ़-र-जअ्ना-क इला उम्मि-क कै त-क़र्-र अैनुहा व ला तह्ज़-न व क़-तल्-त नफ़्सन् फ़-नज्जैना-क मिनल्-ग़म्मि व फ़-तन्ना-क फ़ुतूनन् फ़-लबिस्-त सिनी-न फ़ी अह्लि मद्-य-न सुम्-म जिअ्-त अला क़-दरिंय्या मूसा (४०) वस्तनअ्-तु-क लिनफ़्सी (४१) इज़्-हब् अन्-त व अख़ू-क बिआयाती व ला तनिया फ़ी ज़िक्री (४२) इज़्हबा इला फ़िर्औ-न इन्नहू तग़ा (४३) फ़क़ूला लहू क़ौलल्लय्यिनल्-ल-अ़ल्लहू य-त-ज़क्करु औ यख़्शा (४४)

غنمي ولي فيها مآرب أخرى ۝ قال ألقها يا موسى ۝ فألقاها فإذا
هي حية تسعى ۝ قال خذها ولا تخف سنعيدها سيرتها الأولى ۝
واضمم يدك إلى جناحك تخرج بيضاء من غير سوء آية أخرى ۝
لنريك من آياتنا الكبرى ۝ اذهب إلى فرعون إنه طغى ۝ قال رب
اشرح لي صدري ۝ ويسر لي أمري ۝ واحلل عقدة من لساني ۝
يفقهوا قولي ۝ واجعل لي وزيرا من أهلي ۝ هارون أخي ۝
اشدد به أزري ۝ وأشركه في أمري ۝ كي نسبحك كثيرا ۝
ونذكرك كثيرا ۝ إنك كنت بنا بصيرا ۝ قال قد أوتيت سؤلك
يا موسى ۝ ولقد مننا عليك مرة أخرى ۝ إذ أوحينا إلى أمك
ما يوحى ۝ أن اقذفيه في التابوت فاقذفيه في اليم فليلقه اليم
بالساحل يأخذه عدو لي وعدو له وألقيت عليك محبة مني
ولتصنع على عيني ۝ إذ تمشي أختك فتقول هل أدلكم على من
يكفله فرجعناك إلى أمك كي تقر عينها ولا تحزن وقتلت نفسا
فنجيناك من الغم وفتناك فتونا فلبثت سنين في أهل مدين
ثم جئت على قدر يا موسى ۝ واصطنعتك لنفسي ۝ اذهب
أنت وأخوك بآياتي ولا تنيا في ذكري ۝ اذهبا إلى فرعون إنه
طغى ۝ فقولا له قولا لينا لعله يتذكر أو يخشى ۝ قالا ربنا إننا

★रु. १/१० आ २४ ※ व. लाज़िम

हैं। (१८) फ़रमाया कि मूसा ! इसे डाल दो। (१९) तो उन्हों ने उस को डाल दिया और वह यकायक सांप बन कर दौड़ने लगा। (२०) ख़ुदा ने फ़रमाया कि उसे पकड़ लो और डरना मत। हम उस को अभी उस की पहली हालत पर लौटा देंगे। (२१) और अपना हाथ अपनी बग़ल से लगा लो, वह किसी ऐब (व बीमारी) के बग़ैर सफ़ेद (चमकता-दमकता) निकलेगा। (यह) दूसरी निशानी (है), (२२) ताकि हम तुम्हें अपनी बड़ी निशानियां दिखाएं (२३) तुम फ़िऔंन के पास जाओ (कि) वह सरकश हो रहा है। (२४)★

कहा, मेरे परवरदिगार ! (इस काम के लिए) मेरा सीना खोल दे। (२५) और मेरा काम आसान कर दे, (२६) और मेरी ज़ुबान की गिरह खोल दे, (२७) ताकि वह मेरी बात समझ लें, (२८) और मेरे घर वालों में से (एक को) मेरा वज़ीर (यानी मददगार) मुक़र्रर फ़रमा, (२९) (यानी) मेरे भाई हारून को। (३०) उस से मेरी ताक़त को मज़बूत कर, (३१) और उसे मेरे काम में शरीक कर, (३२) ताकि हम तेरी बहुत-सी तस्बीह करें। (३३) और तुझे ज़्यादा से ज़्यादा याद करें (३४) तू हम को (हर हाल में) देख रहा है। (३५) फ़रमाया, मूसा ! तुम्हारी दुआ क़ुबूल की गयी। (३६) और हम ने तुम पर एक बार और भी एहसान किया था। (३७) जब हम ने तुम्हारी मां को इल्हाम किया था, जो तुम्हें बताया जाता है। (३८) (वह यह था) कि उसे (यानी मूसा को) संदूक़ में रखो, फिर उस (संदूक़) को दरिया में डाल दो तो दरिया उस को किनारे पर डाल देगा (और) मेरा और उस का दुश्मन उसे उठा लेगा और (मूसा !) मैं ने तुम पर अपनी तरफ़ से मुहब्बत डाल दी, (इसलिए कि तुम पर मेहरबानी की जाए) और इसलिए कि तुम मेरे सामने परवरिश पाओ ※ (३९) जब तुम्हारी बहन (फ़िऔंन के यहां) गयी और कहने लगी कि मैं तुम्हें ऐसा शख़्स बताऊं जो उस को पाले, तो (इस तरीक़े से) हम ने तुम को तुम्हारी मां के पास पहुंचा दिया ताकि उन की आंखें ठंडी हों और वह रंज न करें और तुम ने एक शख़्स को मार डाला तो हम ने तुम को ग़म से मुख़्लिसी दी और हम ने तुम्हारी (कई बार) आज़माइश की। फिर तुम कई साल मदयन वालों में ठहरे रहे, फिर ऐ मूसा ! तुम (रिसालत की क़ाबिलियत के) अन्दाज़े पर आ पहुंचे। (४०) और मैं ने तुम को अपने (काम के) लिए बनाया है। (४१) तो तुम और तुम्हारा भाई दोनों हमारी निशानियां ले कर जाओ और मेरी याद में सुस्ती न करना। (४२) दोनों फ़िऔंन के पास जाओ, वह सरकश हो रहा है। (४३) और उस से नर्मी से बात करना शायद वह ग़ौर करे या डर जाए। (४४) दोनों कहने लगे कि

★रु. १/१० आ २४　※ व. लाज़िम

क़ाला रब्बना इन्नना नख़ाफ़ु अंय्यफ़्रु-त अलैना औ अंय्यत्‌ग़ा (४५) क़ा-ल ला तख़ाफ़ा इन्ननी म-अकुमा अस्मअु व अरा (४६) फ़अ्तियाहु फ़कूला इन्ना रसूला रब्बि-क फ़-अर्सिल् म-अना बनी इस्राई-ल व ला तुअ़ज़्ज़िब्हुम् क़द् जिअ्‌ना-क बि-आयतिम्-मिर्रब्बि-क वस्सलामु अ़ला मनित्त-ब-अ़ल्-हुदा (४७) इन्ना क़द् ऊहि-य इलैना अन्नल्‌अ़ज़ा-ब अ़ला मन् कज़्ज़-ब व त-वल्ला (४८) क़ा-ल फ़-मर्-रब्बुकुमा या मूसा (४९) क़ा-ल रब्बुनल्लज़ी अअ्‌ता कुल्-ल शैइन् ख़ल्क़हू सुम्-म हदा (५०) क़ा-ल फ़-मा बालुल्-क़ुरूनिल्-ऊला (५१) क़ा-ल अ़िल्मुहा अ़िन्-द रब्बी फ़ी किताबिन् ला यज़िल्लु रब्बी व ला यन्-स (५२) -ल्लज़ी ज-अ़-ल लकुमुल्‌अर्-ज़ मह्दंव्-व स-ल-क लकुम् फ़ीहा सुबुलंव्-व अन्ज़-ल मिनस्समाइ मा-अन् फ़-अख़्-रज्ना बिही अज़्-वाजम्मिन् नबातिन् शत्ता (५३) कुलू वर्-औ अन्-आमकुम् इन्-न फ़ी ज़ालि-क ल-आयातिल्लि-उलिन्नुहा ★ (५४) मिन्हा ख़-लक़्नाकुम् व फ़ीहा नुअ़ीदुकुम् व मिन्हा नुख़्रिजुकुम् तार-तन् उख़्रा (५५) व ल-क़द् अरैनाहु आयातिना कुल्लहा फ़-कज़्ज़-ब व अबा (५६) क़ा-ल अजिअ्‌तना लितुख़्रि-जना मिन् अर्ज़िना बिसिह्‌रि-क या मूसा (५७) फ़-ल-नअ्‌तियन्न-क बिसिह्‌रिम्-मिस्लिही फ़ज्-अ़ल् बैनना व बैन-क मौअ़िदल्ला नुख़्लिफ़ुहू नह्‌नु व ला अन्-त मकानन् सुवा (५८) क़ा-ल मौअ़िदुकुम् यौमुज़्ज़ीनति व अंय्युह्‌शरन्नासु ज़ुहा (५९) फ़-त-वल्ला फ़िर्औनु फ़-ज-म-अ़ कैदहू सुम्-म अता (६०) क़ा-ल लहुम् मूसा वैलकुम् ला तफ़्तरू अ़-लल्लाहि कज़िबन् फ़-युस्हितकुम् बिअ़ज़ाबिन् व क़द् ख़ा-ब मनिफ़्तरा (६१) फ़-त-नाज़अ़ू अम्-रहुम् बैनहुम् व अ-सर्रुन्नज्वा (६२) क़ालू इन् हाज़ानि ल-साहिरानि युरीदानि अंय्युख़्रिजाकुम् मिन् अर्ज़िकुम् बिसिह्‌रिहिमा व यज़्हबा बि-तरीक़तिकुमुल्-मुस्ला (६३)

قَالَا رَبَّنَآ إِنَّنَا نَخَافُ أَن يَفْرُطَ عَلَيْنَآ أَوْ أَن يَطْغَىٰ ۝ قَالَ لَا تَخَافَآ إِنَّنِى مَعَكُمَآ
أَسْمَعُ وَأَرَىٰ ۝ فَأْتِيَاهُ فَقُولَآ إِنَّا رَسُولَا رَبِّكَ فَأَرْسِلْ مَعَنَا بَنِىٓ
إِسْرَٰٓءِيلَ وَلَا تُعَذِّبْهُمْ ۖ قَدْ جِئْنَٰكَ بِـَٔايَةٍ مِّن رَّبِّكَ ۖ وَٱلسَّلَٰمُ عَلَىٰ
مَنِ ٱتَّبَعَ ٱلْهُدَىٰٓ ۝ إِنَّا قَدْ أُوحِىَ إِلَيْنَآ أَنَّ ٱلْعَذَابَ عَلَىٰ مَن كَذَّبَ
وَتَوَلَّىٰ ۝ قَالَ فَمَن رَّبُّكُمَا يَٰمُوسَىٰ ۝ قَالَ رَبُّنَا ٱلَّذِىٓ أَعْطَىٰ كُلَّ شَىْءٍ
خَلْقَهُۥ ثُمَّ هَدَىٰ ۝ قَالَ فَمَا بَالُ ٱلْقُرُونِ ٱلْأُولَىٰ ۝ قَالَ عِلْمُهَا عِندَ
رَبِّى فِى كِتَٰبٍ ۖ لَّا يَضِلُّ رَبِّى وَلَا يَنسَى ۝ ٱلَّذِى جَعَلَ لَكُمُ
ٱلْأَرْضَ مَهْدًا وَسَلَكَ لَكُمْ فِيهَا سُبُلًا وَأَنزَلَ مِنَ ٱلسَّمَآءِ مَآءً فَأَخْرَجْنَا
بِهِۦٓ أَزْوَٰجًا مِّن نَّبَاتٍ شَتَّىٰ ۝ كُلُوا۟ وَٱرْعَوْا۟ أَنْعَٰمَكُمْ ۗ إِنَّ فِى ذَٰلِكَ لَءَايَٰتٍ
لِّأُو۟لِى ٱلنُّهَىٰ ۝ مِنْهَا خَلَقْنَٰكُمْ وَفِيهَا نُعِيدُكُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً
أُخْرَىٰ ۝ وَلَقَدْ أَرَيْنَٰهُ ءَايَٰتِنَا كُلَّهَا فَكَذَّبَ وَأَبَىٰ ۝ قَالَ أَجِئْتَنَا لِتُخْرِجَنَا
مِنْ أَرْضِنَا بِسِحْرِكَ يَٰمُوسَىٰ ۝ فَلَنَأْتِيَنَّكَ بِسِحْرٍ مِّثْلِهِۦ فَٱجْعَلْ بَيْنَنَا
وَبَيْنَكَ مَوْعِدًا لَّا نُخْلِفُهُۥ نَحْنُ وَلَآ أَنتَ مَكَانًا سُوًى ۝ قَالَ مَوْعِدُكُمْ
يَوْمُ ٱلزِّينَةِ وَأَن يُحْشَرَ ٱلنَّاسُ ضُحًى ۝ فَتَوَلَّىٰ فِرْعَوْنُ فَجَمَعَ كَيْدَهُۥ
ثُمَّ أَتَىٰ ۝ قَالَ لَهُم مُّوسَىٰ وَيْلَكُمْ لَا تَفْتَرُوا۟ عَلَى ٱللَّهِ كَذِبًا فَيُسْحِتَكُم
بِعَذَابٍ ۖ وَقَدْ خَابَ مَنِ ٱفْتَرَىٰ ۝ فَتَنَٰزَعُوٓا۟ أَمْرَهُم بَيْنَهُمْ وَأَسَرُّوا۟
ٱلنَّجْوَىٰ ۝ قَالُوٓا۟ إِنْ هَٰذَٰنِ لَسَٰحِرَٰنِ يُرِيدَانِ أَن يُخْرِجَاكُم مِّنْ

★रु. २/११ आ ३०

हमारे परवरदिगार ! हमें डर है कि वह हम पर ज़ुल्म करने लगे या ज़्यादा सरकश हो जाए। (४५) (ख़ुदा ने) फ़रमाया कि डरो मत, मैं तुम्हारे साथ हूं (और) सुनता और देखता हूं। (४६) (अच्छा) तो उस के पास जाओ और कहो कि हम आप के परवरदिगार के भेजे हुए हैं, तो बनी इस्राईल को हमारे साथ जाने की इजाज़त दीजिए और उन्हें अज़ाब न कीजिए। हम आप के पास आप के परवरदिगार की तरफ़ से निशानी ले कर आए हैं और जो हिदायत की बात माने, उस को सलामती हो। (४७) हमारी तरफ़ यह वह्य आयी है कि जो झुठलाए और मुंह फेरे, उस के लिए अज़ाब (तैयार) है। (४८) (ग़रज़ मूसा और हारून फ़िऔ़न के पास गये।) उसने कहा कि मूसा तुम्हारा परवरदिगार कौन है ? (४९) कहा कि हमारा परवरदिगार वह है जिस ने हर चीज़ को उस की शक्ल व सूरत बख़्शी, फिर राह दिखायी। (५०) कहा तो पहली जमाअतों का क्या हाल हुआ ? (५१) कहा कि उनका इल्म मेरे परवरदिगार को है, (जो) किताब में (लिखा हुआ है)। मेरा परवरदिगार न चूकता है, न भूलता है। (५२) वह (वही तो है,) जिस ने तुम लोगों के लिए ज़मीन को फ़र्श बनाया और उस में तुम्हारे लिए रास्ते जारी किए और आसमान से पानी बरसाया, फिर उससे क़िस्म-क़िस्म की रूईदगियां (पेड़-पौधे) पैदा कीं। (५३) (कि ख़ुद भी) खाओ और अपने चारपायों को भी चराओ। बेशक इन (बातों) में अक़्ल वालों के लिए (बहुत सी) निशानियां हैं। (५४)★

इसी (ज़मीन) से हम ने तुम को पैदा किया और इसी में तुम्हें लौटाएंगे और इसी से दूसरी बार निकालेंगे (५५) और हम ने फ़िऔ़न को अपनी सब निशानियां दिखायीं, मगर वह झुठलाता और इंकार ही करता रहा। (५६) कहने लगा कि मूसा ! क्या तुम हमारे पास इसलिए आए हो कि अपने जादू (के ज़ोर) से हमें हमारे मुल्क से निकाल दो। (५७) तो हम भी तुम्हारे मुक़ाबले में ऐसा ही जादू लाएंगे, तो हमारे और अपने दर्मियान एक वक़्त मुक़र्रर कर लो कि न तो हम उस के ख़िलाफ़ करें और न तुम। (और यह मुक़ाबला) एक हमवार मैदान में (होगा) (५८) (मूसा ने) कहा कि आप के लिए ज़ीनत के दिन का वायदा है और यह कि लोग उस दिन चाश्त के वक़्त इकट्ठे हो जाएं। (५९) तो फ़िऔ़न लौट गया और अपने सामान जमा कर के फिर आया। (६०) मूसा ने उन (जादूगरों) से कहा कि हाय ! तुम्हारी कम-बख़्ती ! ख़ुदा पर झूठ न गढ़ो कि वह तुम्हें अज़ाब से फ़ना कर देगा और जिस ने झूठ गढ़ा, वह ना-मुराद रहा। (६१) तो वे आपस में अपने मामले में झगड़ने और चुपके-चुपके काना-फूसी करने लगे। (६२) कहने लगे, ये दोनों जादूगर हैं, चाहते हैं कि अपने जादू (के ज़ोर) से तुमको तुम्हारे मुल्क से निकाल दें और

★रु. २/११ आ ३०

फ़-अजिमअू कैदकुम् सुम्मअ्तू सफ़्फ़न् ॰ व क़द् अफ़्-ल-हल्यौ-म मनिस्तअ्-ला (६४) क़ालू या मूसा इम्मा अन् तुल्कि-य व इम्मा अन् नकू-न अव्व-ल मन् अल्क़ा (६५) क़ा-ल बल् अल्क़ू ॰ फ़-इज़ा हि़बालुहुम् व अि़सिय्युहुम् युख़य्यलु इलैहि मिन् सिहि़रहिम् अन्नहा तस्आ़ (६६) फ़-औ-ज-स फ़ी नफ़्सिही ख़ीफ़तम्-मूसा (६७) क़ुल्ना ला त-ख़फ़् इन्न-क अन्तल्-अअ्-ला (६८) व अल्कि़ मा फ़ी यमीनि-क तल्क़फ़् मा स्-नअू ॰ इन्नमा स्-नअू कैदु साहि़रिन् ॰ व ला युफ़्लिहुस्साहि़रु है़सु अता (६९) फ़-उल्क़ियस्-स-ह-रतु सुज्ज-दन् क़ालू आमन्ना बिरब्बि हारू-न व मूसा (७०) क़ा-ल आमन्तुम् लहू क़ब्-ल अन् आ-ज़-न लकुम् ॰ इन्नहू ल-कबीरुकुमुल्लज़ी अ़ल्ल-म-कुमुस्-सिह्-र ॰ फ़-ल-उ-क़त्ति़अन्-न ऐदि-यकुम् व अर्जु-लकुम् मिन् ख़िलाफ़िंव्-व लउ-स़ल्लिबन्नकुम् फ़ी जुज़ूअि़न्नख़्लि ॰ व ल-तअ्-लमुन्-न अय्युना अ-शद्दु अ़ज़ाबंव्-व अब्क़ा (७१) क़ालू लन् नुअ्सि-र-क अ़ला मा जा-अना मिनल्बय्यिनाति वल्लज़ी फ़-त़-रना फ़क़्ज़ि मा अन्-त क़ाज़िन् ॰ इन्नमा तक़्ज़ी हाज़िहिल्-हयातद्दुन्या ॰ (७२) इन्ना आमन्ना बिरब्बिना लियग़्-फ़ि-र लना ख़तायाना व मा अक्-रह्-तना अ़लैहि मिनस्सिह़्रि ॰ वल्लाहु ख़ैरुंव्-व अब्क़ा ●(७३) इन्नहू मंय्यअ्ति रब्बहू मुज्रिमन् फ़-इन्-न लहू जहन्न-म ॰ ला यमूतु फ़ीहा व ला यह़्या (७४) व मंय्यअ्तिही मुअ्मिनन् क़द् अ़मिलस्सालिहाति फ़-उलाइ-क लहुमुद्-द-र-जातुल्-अु़ला ॰ (७५) जन्नातु अ़द्निन् तज्री मिन् तह़्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा ॰ व ज़ालि-क ज-ज़ाउ मन् त-ज़क्का ★(७६)

أَرْضِكُم بِسِحْرِهِمَا وَيَذْهَبَا بِطَرِيقَتِكُمُ الْمُثْلَىٰ ۝ فَأَجْمِعُوا كَيْدَكُمْ
ثُمَّ ائْتُوا صَفًّا ۚ وَقَدْ أَفْلَحَ الْيَوْمَ مَنِ اسْتَعْلَىٰ ۝ قَالُوا يَا مُوسَىٰ إِمَّا
أَن تُلْقِيَ وَإِمَّا أَن نَّكُونَ أَوَّلَ مَنْ أَلْقَىٰ ۝ قَالَ بَلْ أَلْقُوا ۖ فَإِذَا
حِبَالُهُمْ وَعِصِيُّهُمْ يُخَيَّلُ إِلَيْهِ مِن سِحْرِهِمْ أَنَّهَا تَسْعَىٰ ۝
فَأَوْجَسَ فِي نَفْسِهِ خِيفَةً مُّوسَىٰ ۝ قُلْنَا لَا تَخَفْ إِنَّكَ أَنتَ الْأَعْلَىٰ ۝
وَأَلْقِ مَا فِي يَمِينِكَ تَلْقَفْ مَا صَنَعُوا ۖ إِنَّمَا صَنَعُوا كَيْدُ سَاحِرٍ ۖ وَلَا يُفْلِحُ
السَّاحِرُ حَيْثُ أَتَىٰ ۝ فَأُلْقِيَ السَّحَرَةُ سُجَّدًا قَالُوا آمَنَّا بِرَبِّ هَارُونَ وَ
مُوسَىٰ ۝ قَالَ آمَنتُمْ لَهُ قَبْلَ أَنْ آذَنَ لَكُمْ ۖ إِنَّهُ لَكَبِيرُكُمُ الَّذِي
عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ ۖ فَلَأُقَطِّعَنَّ أَيْدِيَكُمْ وَأَرْجُلَكُم مِّنْ خِلَافٍ وَلَأُصَلِّبَنَّكُمْ
فِي جُذُوعِ النَّخْلِ وَلَتَعْلَمُنَّ أَيُّنَا أَشَدُّ عَذَابًا وَأَبْقَىٰ ۝ قَالُوا لَن
نُّؤْثِرَكَ عَلَىٰ مَا جَاءَنَا مِنَ الْبَيِّنَاتِ وَالَّذِي فَطَرَنَا ۖ فَاقْضِ مَا أَنتَ
قَاضٍ ۖ إِنَّمَا تَقْضِي هَٰذِهِ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ۝ إِنَّا آمَنَّا بِرَبِّنَا لِيَغْفِرَ لَنَا
خَطَايَانَا وَمَا أَكْرَهْتَنَا عَلَيْهِ مِنَ السِّحْرِ ۗ وَاللَّهُ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ ۝ إِنَّهُ
مَن يَأْتِ رَبَّهُ مُجْرِمًا فَإِنَّ لَهُ جَهَنَّمَ لَا يَمُوتُ فِيهَا وَلَا يَحْيَىٰ ۝
وَمَن يَأْتِهِ مُؤْمِنًا قَدْ عَمِلَ الصَّالِحَاتِ فَأُولَٰئِكَ لَهُمُ الدَّرَجَاتُ
الْعُلَىٰ ۝ جَنَّاتُ عَدْنٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ وَ
ذَٰلِكَ جَزَاءُ مَن تَزَكَّىٰ ۝ وَلَقَدْ أَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنْ أَسْرِ بِعِبَادِي

● सु. ३/४ ★रु. ३/१२ आ २२

तुम्हारे शाइस्ता मज़हब को नाबूद कर दें। (६३) तो तुम (जादू का) सामान इकट्ठा कर लो और फिर क़तार बांध कर आओ, आज जो ग़ालिब रहा, वही कामियाब हुआ। (६४) बोले कि मूसा या तो तुम (अपनी चीज़) डालो या हम (अपनी चीज़ें) पहले डालते हैं। (६५) मूसा ने कहा, नहीं, तुम ही डालो। (जब उन्हों ने चीज़ें डालीं) तो यकायक उस की रस्सियां और लाठियां मूसा के ख़्याल में ऐसी आने लगीं कि वह (मैदान में इधर-उधर) दौड़ रही हैं। (६६) (उस वक़्त) मूसा ने अपने दिल में ख़ौफ़ मालूम किया। (६७) हमने कहा, ख़ौफ़ न करो, बेशक तुम ही ग़ालिब हो। (६८) और जो चीज़ (यानी लाठी) तुम्हारे दाहिने हाथ में है, उसे डाल दो कि जो कुछ उन्हों ने बनाया है, उस को निगल जाएगी। जो कुछ उन्हों ने बनाया है (यह तो) जादूगरों के हथकंडे हैं और जादूगर जहां जाए, कामियाबी नहीं पाएगा। (६९) (ग़रज़ यह कि यों ही हुआ) तो जादूगर सज्दे में गिर पड़े (और) कहने लगे कि हम मूसा और हारून के परवरदिगार पर ईमान लाए। (७०) (फ़िरऔन) बोला कि इस के पहले कि मैं तुम्हें इजाज़त दूं, तुम उस पर ईमान ले आए। बेशक वह तुम्हारा बड़ा (यानी उस्ताद) है, जिस ने तुम को जादू सिखाया है, सो मैं तुम्हारे हाथ और पांव, मुख़ालिफ़ (तरफ़) से कटवा दूंगा और खजूर के तनों पर सूली चढ़वा दूंगा, (उस वक़्त) तुम को मालूम होगा कि हम में से किस का अज़ाब ज़्यादा सख़्त और देर तक रहने वाला है। (७१) उन्हों ने कहा कि जो दलीलें हमारे पास आ गयी हैं, उन पर और जिस ने हम को पैदा किया है, उस पर हम आप को हरगिज़ तर्जीह नहीं देंगे, तो आप को जो हुक्म देना हो, दे दीजिए और आप (जो) हुक्म दे सकते हैं, वह सिर्फ़ इसी दुनिया की ज़िंदगी में (दे सकते हैं)। (७२) हम अपने परवरदिगार पर ईमान ले आए ताकि वह हमारे गुनाहों को माफ़ करे और (उसे भी) जो आप ने हम से ज़बरदस्ती जादू कराया और ख़ुदा बेहतर और बाक़ी रहने वाला है●(७३) जो शख़्स अपने परवरदिगार के पास गुनाहगार हो कर आएगा तो उस के लिए जहन्नम है, जिस में न मरेगा, न जिएगा। (७४) और जो उस के रू-ब-रू ईमानदार हो कर आएगा और अमल भी नेक किए होंगे, तो ऐसे लोगों के लिए ऊंचे-ऊंचे दर्जे हैं। (७५) (यानी) हमेशा रहने के बाग़, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, हमेशा उन में रहेंगे और यह उस शख़्स का बदला है, जो पाक हुआ। (७६)★

●रु. ३/४　★रु. ३/१२ आ २२

व ल-क़द् औहैना इला मूसा अन् असिर बिअिबादी फ़ज़्रिब् लहुम् तरीक़न् फ़िल्बह़्रि य-ब-सल्-ला तख़ाफ़ु द-र-कंव्-व ला तख़्शा (७७) फ़-अत्ब-अहुम् फ़िर्औनु बिजुनूदिही फ़-ग़शियहुम् मिनल्-यम्मि मा ग़शि-यहुम् (७८) व अ-ज़ल्-ल फ़िर्औनु क़ौमहू व मा हदा (७९) याबनी इस्राई-ल क़द् अन्जैनाकुम् मिन् अदुव्विकुम् व वाअद्नाकुम् जानिबत् - तूरिल् - ऐम-न व नज़्ज़ल्ना अलैकुमुल्-मन्-न वस्सल्वा (८०) कुलू मिन् तय्यिबाति मा र-ज़क़्नाकुम् व ला तत़्ग़ौ फ़ीहि फ़-यहि़ल्-ल अलैकुम् ग़-ज़बी व मंय्यह़्लिल् अलैहि ग़-ज़बी फ़-क़द् हवा (८१) व इन्नी ल-ग़फ़्फ़ारुल् - लिमन् ता-ब व आम-न व अमि-ल सालिहन् सुम्मह्तदा (८२) व मा अअ्-ज-ल-क अन् क़ौमि-क या मूसा (८३) क़ा-ल हुम् उलाइ अला अ-सरी व अजिल्तु इलै-क रब्बि लितर्ज़ा (८४) क़ा-ल फ़-इन्ना क़द् फ़-तन्ना क़ौम-क मिम्बअ्-दि-क व अ-ज़ल्ल-हुमुस्-सामिरिय्यु (८५) फ़-र-ज-अ मूसा इला क़ौमिही ग़ज़्बा-न असिफ़न् क़ा-ल या क़ौमि अ-लम् यअिद्कुम् रब्बुकुम् वअ्-दन् ह़-स-नन् अ-फ़-ता-ल अलैकुमुल्-अह्दु अम् अ-रत्तुम् अंय्यहि़ल्-ल अलैकुम् ग़-ज़-बुम्-मिर्रब्बिकुम् फ़-अख़्लफ़्तुम् मौअिदी (८६) क़ालू माअख़्-लफ़्ना मौअि-द-क बिमल्किना व लाकिन्ना हुम्मिल्ना औज़ारम्मिन् ज़ीनतिल्क़ौमि फ़-क़-ज़फ़्नाहा फ़-कज़ालि-क अल्क़स्सामिरिय्यु (८७) फ़ - अख़-र-ज लहुम् अिज्-लन् ज-स-दल्लहू ख़ुवारुन् फ़-क़ालू हाज़ा इलाहुकुम् व इलाहु मूसा फ़-नसि-य (८८) अ-फ़ला यरौ - न अल्ला यर्जिअु इलैहिम् क़ौलंव्-व ला यम्लिकु लहुम् ज़र्-रंव्-व ला नफ़्आ★(८९) व ल-क़द् क़ा-ल लहुम् हारूनु मिन् क़ब्लु या क़ौमि इन्नमा फ़ुतिन्तुम् बिही व इन्-न रब्बकुमुर् - रह़्मानु फ़त्तबिअूनी व अतीअू अम्री (९०)

فَاضْرِبْ لَهُمْ طَرِيقًا فِي الْبَحْرِ يَبَسًا لَّا تَخَافُ دَرَكًا وَلَا تَخْشَىٰ ۝
فَأَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ بِجُنُودِهِ فَغَشِيَهُم مِّنَ الْيَمِّ مَا غَشِيَهُمْ ۝ وَ
أَضَلَّ فِرْعَوْنُ قَوْمَهُ وَمَا هَدَىٰ ۝ يَا بَنِي إِسْرَائِيلَ قَدْ أَنجَيْنَاكُم
مِّنْ عَدُوِّكُمْ وَوَاعَدْنَاكُمْ جَانِبَ الطُّورِ الْأَيْمَنَ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ
وَالسَّلْوَىٰ ۝ كُلُوا مِن طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ وَلَا تَطْغَوْا فِيهِ فَيَحِلَّ
عَلَيْكُمْ غَضَبِي ۖ وَمَن يَحْلِلْ عَلَيْهِ غَضَبِي فَقَدْ هَوَىٰ ۝ وَإِنِّي
لَغَفَّارٌ لِّمَن تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ثُمَّ اهْتَدَىٰ ۝ وَمَا أَعْجَلَكَ
عَن قَوْمِكَ يَا مُوسَىٰ ۝ قَالَ هُمْ أُولَاءِ عَلَىٰ أَثَرِي وَعَجِلْتُ إِلَيْكَ رَبِّ
لِتَرْضَىٰ ۝ قَالَ فَإِنَّا قَدْ فَتَنَّا قَوْمَكَ مِن بَعْدِكَ وَأَضَلَّهُمُ السَّامِرِيُّ ۝
فَرَجَعَ مُوسَىٰ إِلَىٰ قَوْمِهِ غَضْبَانَ أَسِفًا ۚ قَالَ يَا قَوْمِ أَلَمْ يَعِدْكُمْ رَبُّكُمْ
وَعْدًا حَسَنًا ۚ أَفَطَالَ عَلَيْكُمُ الْعَهْدُ أَمْ أَرَدتُّمْ أَن يَحِلَّ عَلَيْكُمْ
غَضَبٌ مِّن رَّبِّكُمْ فَأَخْلَفْتُم مَّوْعِدِي ۝ قَالُوا مَا أَخْلَفْنَا مَوْعِدَكَ
بِمَلْكِنَا وَلَٰكِنَّا حُمِّلْنَا أَوْزَارًا مِّن زِينَةِ الْقَوْمِ فَقَذَفْنَاهَا فَكَذَٰلِكَ
أَلْقَى السَّامِرِيُّ ۝ فَأَخْرَجَ لَهُمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهُ خُوَارٌ فَقَالُوا هَٰذَا
إِلَٰهُكُمْ وَإِلَٰهُ مُوسَىٰ فَنَسِيَ ۝ أَفَلَا يَرَوْنَ أَلَّا يَرْجِعُ إِلَيْهِمْ قَوْلًا
وَلَا يَمْلِكُ لَهُمْ ضَرًّا وَلَا نَفْعًا ۝ وَلَقَدْ قَالَ لَهُمْ هَارُونُ مِن قَبْلُ
يَا قَوْمِ إِنَّمَا فُتِنتُم بِهِ ۖ وَإِنَّ رَبَّكُمُ الرَّحْمَٰنُ فَاتَّبِعُونِي وَأَطِيعُوا

★रु. ४।१३आ १३

और हमने मूसा की तरफ़ वह्य भेजी कि हमारे बन्दों को रातों-रात निकाल ले आओ, फिर उन के लिए दरिया में लाठी मार कर खुश्क रास्ता बना दो, फिर तुम को न तो (फ़िऔन के) आ पकड़ने का डर होगा और न (डूबने का) डर। (७७) फिर फ़िऔंन ने अपने लश्कर के साथ उन का पीछा किया तो दरिया (की मौजों) ने उन पर चढ़ कर उन्हें ढांक लिया (यानी डुबो दिया।) (७८) और फ़िऔंन ने अपनी क़ौम को गुमराह कर दिया और सीधे रास्ते पर न डाला। (७९) ऐ याक़ूब की औलाद! हमने तुम को तुम्हारे दुश्मन से निजात दी और तौरात देने के लिए तुम से तूर पहाड़ की दाहिनी तरफ़ मुक़र्रर की और तुम पर मन्न व सलवा नाज़िल किया। (८०) (और हुक्म दिया कि) जो कुछ पाकीज़ा चीज़ें हमने तुम को दी हैं, उन को खाओ और उस में हद से न निकलना, वरना तुम पर मेरा ग़ज़ब नाज़िल होगा। और जिस पर मेरा अज़ाब नाज़िल हुआ, वह हलाक हो गया।[1] (८१) और जो तौबा करे और ईमान लाए और नेक अमल करे, फिर सीधे रास्ते चले, उस को मैं बख़्श देने वाला हूं। (८२) और ऐ मूसा! तुम ने अपनी क़ौम से (आगे चले आने में) क्यों जल्दी की? (८३) कहा वह मेरे पीछे (आ रहे हैं) और ऐ मेरे परवरदिगार! मैं ने तेरी तरफ़ आने की जल्दी इस लिए की कि तू ख़ुश हो। (८४) फ़रमाया कि हम ने तुम्हारी क़ौम को तुम्हारे बाद आज़माइश में डाल दिया है और सामेरी ने उन को बहका दिया है। (८५) और मूसा ग़ुस्से और ग़म की हालत में अपनी क़ौम के पास वापस आए और कहने लगे कि ऐ क़ौम! क्या तुम्हारे परवरदिगार ने तुम से अच्छा वायदा नहीं किया था![1] क्या (मेरी जुदाई की) मुद्दत तुम्हें लंबी (मालूम) हुई या तुम ने चाहा कि तुम पर तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से ग़ज़ब नाज़िल हो और (इसलिए) तुम ने मुझ से जो वायदा (किया था, उस के) ख़िलाफ़ किया। (८६) वे कहने लगे कि हमने अपने अख़्तियार से तुम से वायदा ख़िलाफ़ नहीं किया, बल्कि हम लोगों के ज़ेवरों का बोझ उठाए हुए थे, फिर हमने उस को (आग में) डाल दिया और इसी तरह सामरी ने डाल दिया। (८७) तो उस ने उन के लिए एक बछड़ा बना दिया (यानी उस का) क़ालिब, जिस की आवाज़ गाय की-सी थी, तो लोग कहने लगे कि यही तुम्हारा माबूद है और यही मूसा का माबूद है, मगर वह भूल गये हैं। (८८) क्या वे लोग नहीं देखते कि वह उन की किसी बात का जवाब नहीं देता और न उन के नुक़्सान और नफ़ा का कुछ अख़्तियार रखता है। (८९)★

और हारून ने उन में पहले ही कह दिया था कि लोगो! इस से सिर्फ़ तुम्हारी आज़माइश की गयी है और तुम्हारा परवरदिगार तो ख़ुदा है, तो मेरी पैरवी करो और मेरा कहा मानो। (९०)

---

१. वायदा तौरात देने का। हज़रत मूसा क़ौम से तीस दिन का वायदा कर के पहाड़ पर गये थे, वहां चालीस दिन लगे, पीछे बछड़ा पूजने लगे।

★रु. ४/१३ आ १३

क़ालू लन् नब-र-ह् अलैहि आकिफ़ी-न हत्ता यर्जि-अ इलैना मूसा (९१) क़ा-ल या हारूनु मा म-न-अ-क इज़् रऐतहुम् ज़ल्लू ꞁ (९२) अल्ला तत्तबिअनि ط अ-फ़-असै-त अम्री (९३) क़ा-ल यब्नउम्-म ला तअ्ख़ुज़् बिलिह्-यती व ला बिरअ्-सी ج इन्नी ख़शीतु अन् तक़ू-ल फ़र्रक्-त बै-न बनी इस्राई-ल व लम् तर्क़ुब् क़ौली (९४) क़ा-ल फ़मा ख़त्बु-क या सामिरिय्यु (९५) क़ा-ल बसुर्तु बिमा लम् यब्सुरू बिही फ़-क़-बज़्तु क़ब्ज़-तम्-मिन् अ-स-रिर्रसूलि फ़-न-बज़्तुहा व कज़ालि-क सव्व-लत् ली नफ़्सी (९६) क़ा-ल फ़ज़्हब् फ़इन्-न ल-क फ़िल्हयाति अन् तक़ू-ल ला मिसा-स ص व इन्-न ल-क मौअिदल्लन् तुख़्-ल-फ़हू ج वन्ज़ुर् इला इलाहिकल्लज़ी ज़ल्-त अलैहि आकिफ़न् ط लनुहर्रिक़न्नहू सुम्-म ल-नन्सिफ़न्नहू फ़िल्यम्मि नस्फ़ा (९७) इन्नमा इलाहु-कुमुल्-लाहुल्-लज़ी ला इला-ह इल्ला हु-व ط वसि-अ कुल-ल शैइन् अिल्मा (९८) कज़ालि-क नक़ुस्सु अलै-क मिन् अम्बाइ मा क़द् स-ब-क़ ج व क़द् आतैना-क मिल्लदुन्ना ज़िक्रा (९९) मन् अअ्-र-ज़ अन्हु फ़-इन्नहू यह्मिलु यौमल्क़ियामति विज़्रा ꞁ (१००) ख़ालिदी-न फ़ीहि ط व सा-अ लहुम् यौमल्क़ियामति हिम्ला ꞁ (१०१) यौ-म युन्फ़ख़ु फ़िस्सूरि व नह्शुरुल्-मुज्रिमी-न यौमइज़िन् ज़ुर्क़न् (१०२) य-त-ख़ाफ़तू-न बैनहुम् इल्लबिस्तुम् इल्ला अश्रा (१०३) नह्नु अअ्-लमु बिमा यक़ूलू-न इज़् यक़ूलु अम्सलुहुम् तरीक़-तन् इल्लबिस्तुम् इल्ला यौमा ★ (१०४) व यस्अलू-न-क अनिल्जिबालि फ़क़ुल् यन्सिफ़ुहा रब्बी नस्फ़ा ꞁ (१०५) फ़-य-ज़रुहा क़ाअन् सफ़्-स-फ़ा ꞁ (१०६) ल्ला तरा फ़ीहा अिवजंव्-व ला अम्ता ط (१०७)

أَمْرِي ۝ قَالُوا لَن نَّبْرَحَ عَلَيْهِ عَاكِفِينَ حَتَّىٰ يَرْجِعَ إِلَيْنَا مُوسَىٰ ۝
قَالَ يَا هَارُونُ مَا مَنَعَكَ إِذْ رَأَيْتَهُمْ ضَلُّوا ۝ أَلَّا تَتَّبِعَنِ ۖ أَفَعَصَيْتَ
أَمْرِي ۝ قَالَ يَا ابْنَ أُمَّ لَا تَأْخُذْ بِلِحْيَتِي وَلَا بِرَأْسِي ۖ إِنِّي خَشِيتُ
أَن تَقُولَ فَرَّقْتَ بَيْنَ بَنِي إِسْرَائِيلَ وَلَمْ تَرْقُبْ قَوْلِي ۝ قَالَ
فَمَا خَطْبُكَ يَا سَامِرِيُّ ۝ قَالَ بَصُرْتُ بِمَا لَمْ يَبْصُرُوا بِهِ فَقَبَضْتُ
قَبْضَةً مِّنْ أَثَرِ الرَّسُولِ فَنَبَذْتُهَا وَكَذَٰلِكَ سَوَّلَتْ لِي نَفْسِي ۝
قَالَ فَاذْهَبْ فَإِنَّ لَكَ فِي الْحَيَاةِ أَن تَقُولَ لَا مِسَاسَ ۖ وَإِنَّ لَكَ
مَوْعِدًا لَّن تُخْلَفَهُ ۖ وَانظُرْ إِلَىٰ إِلَٰهِكَ الَّذِي ظَلْتَ عَلَيْهِ عَاكِفًا ۖ
لَّنُحَرِّقَنَّهُ ثُمَّ لَنَنسِفَنَّهُ فِي الْيَمِّ نَسْفًا ۝ إِنَّمَا إِلَٰهُكُمُ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَٰهَ
إِلَّا هُوَ ۚ وَسِعَ كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۝ كَذَٰلِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنبَاءِ مَا قَدْ
سَبَقَ ۚ وَقَدْ آتَيْنَاكَ مِن لَّدُنَّا ذِكْرًا ۝ مَّنْ أَعْرَضَ عَنْهُ فَإِنَّهُ يَحْمِلُ
يَوْمَ الْقِيَامَةِ وِزْرًا ۝ خَالِدِينَ فِيهِ ۖ وَسَاءَ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ حِمْلًا ۝
يَوْمَ يُنفَخُ فِي الصُّورِ ۚ وَنَحْشُرُ الْمُجْرِمِينَ يَوْمَئِذٍ زُرْقًا ۝ يَتَخَافَتُونَ
بَيْنَهُمْ إِن لَّبِثْتُمْ إِلَّا عَشْرًا ۝ نَّحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ إِذْ يَقُولُ
أَمْثَلُهُمْ طَرِيقَةً إِن لَّبِثْتُمْ إِلَّا يَوْمًا ۝ وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْجِبَالِ
فَقُلْ يَنسِفُهَا رَبِّي نَسْفًا ۝ فَيَذَرُهَا قَاعًا صَفْصَفًا ۝ لَّا
تَرَىٰ فِيهَا عِوَجًا وَلَا أَمْتًا ۝ يَوْمَئِذٍ يَتَّبِعُونَ الدَّاعِيَ لَا

★रु. ५/१४ आ १५

वे कहने लगे कि जब तक मूसा हमारे पास वापस न आयें, हम तो उस (की पूजा) पर क़ायम रहेंगे। (९१) (फिर मूसा ने हारून से) कहा कि हारून ! जब तुम ने उन को देखा था कि गुमराह हो गये हैं, तो तुम को किस चीज ने रोका ? (९२) (यानी) इस बात से कि तुम मेरे पीछे चले आओ, भला तुम ने मेरे हुक्म के ख़िलाफ़ (क्यों) किया ? (९३) कहने लगे कि भाई मेरी दाढ़ी और सर (के बालों) को न पकड़िए, मैं तो इस से डरा कि आप यह न कहें कि तुम ने बनी इस्राईल में फूट डाल दी और मेरी बात को ध्यान में न रखा। (९४) (फिर सामरी से) कहने लगे कि सामरी तेरा क्या हाल है ? (९५) उस ने कहा कि मैं ने ऐसी चीज़ देखी जो औरों ने नहीं देखी, तो मैं ने फ़रिश्ते के पैरों के निशान से (मिट्टी की) एक मुट्ठी भर ली, फिर उस को (बछड़े के क़ालिब में) डाल दिया और मुझे मेरे जी ने (इस काम को) अच्छा बताया। (९६) (मूसा ने) कहा, जा तुझ को (दुनिया की) ज़िंदगी में यह (सज़ा) है कि कहता रहे कि "मुझ को हाथ न लगाना"[1] और तेरे लिए एक और वायदा है (यानी अज़ाब का) जो तुझ से टल न सकेगा और जिस माबूद (की पूजा) पर तू (क़ायम व मोतकिफ़) था, उस को देख, हम उसे जला देंगे, फिर उस (की राख) को उड़ा कर दरिया में बिखेर देंगे। (९७) तुम्हारा माबूद ख़ुदा ही है, जिस के सिवा कोई माबूद नहीं, उस का इल्म हर चीज़ पर छाया हुआ है। (९८) इस तरह पर हम तुम से वे हालात बयान करते हैं, जो गुज़र चुके हैं और हम ने तुम्हें अपने पास से नसीहत (की किताब) अता फ़रमायी है। (९९) जो शख़्स इस से मुंह फेरेगा, वह क़ियामत के दिन (गुनाह का) बोझ उठाएगा। (१००) (ऐसे लोग) हमेशा उस (अज़ाब) में (पड़े) रहेंगे और यह बोझ क़ियामत के दिन उन के लिए बुरा होगा। (१०१) जिस दिन सूर फूंका जाएगा और हम गुनाहगारों को इकट्ठा करेंगे और उन की आंखें नीली-नीली होंगी। (१०२) (तो) वे आपस में धीरे-धीरे कहेंगे कि तुम (दुनिया में) सिर्फ़ दस ही दिन रहे हो। (१०३) जो बातें ये करेंगे, हम ख़ूब जानते हैं। उस वक़्त उन में सब से अच्छी राह वाला (यानी अक़्ल व होश वाला) कहेगा कि (नहीं, बल्कि) सिर्फ़ एक ही दिन ठहरे हो। (१०४)★

और तुम से पहाड़ों के बारे में पूछते हैं, कह दो कि ख़ुदा उन को उड़ा कर बिखेर देगा। (१०५) और ज़मीन को हमवार मैदान कर छोड़ेगा, (१०६) जिस में न तुम टेढ़ (और

१. यानी बनी इस्राईल को गुमराह करने की वजह से अल्लाह तआला ने उस को यह सज़ा दी कि तमाम उम्र सब से अलग रहा। उस की यह हालत थी कि अगर वह किसी को हाथ लगाता या कोई उस को हाथ लगाता तो दोनों के तप आ जाती, इस लिए वह यही कहता रहा कि कोई मुझे छुए नहीं। यह दुनिया का अज़ाब था और आख़िरत का अज़ाब अलग रहा।

★रु. ५/१४ आ १५

यौमइज़िंय्यत्तबिअ़ूनद् - दाअि-य ला अि-व-ज लहू ج व ख़-श-अ़तिल् - अस्वातु लिर्रह्मानि फ़ला तस्मअ़ु इल्ला हम्सा (१०८) यौमइज़िल्ला तन्फ़अ़ुश्-शफ़ाअ़तु इल्ला मन् अज़ि-न लहुर्रह्मानु व रज़ि-य लहू क़ौला (१०९) यअ़्-लमु मा बै-न ऐदीहिम् व मा ख़ल्फ़हुम् व ला युहीतू-न बिही अ़िल्मा (११०) व अ़ - नतिल् - वुजूहु लिल्हय्यिल् - क़य्यूमि ط व क़द् ख़ा-ब मन् ह़-म-ल ज़ुल्मा (१११) व मंय्यअ़्-मल् मिनस्सालिहाति व हु-व मुअ्मिनुन् फ़ला यख़ाफ़ु ज़ुल्मंव्-व ला हज़्मा (११२) व कज़ालि-क अन्ज़ल्नाहु क़ुरआनन् अ़-र-बिय्यंव्-व सर्रफ़्ना फ़ीहि मिनल्वअ़ीदि ल-अ़ल्लहुम् यत्तक़ू-न औ युह्दिसु लहुम् ज़िक्रा (११३) फ़-त-आ़लल्लाहुल् - मलिकुल्हक़्क़ु ج व ला तअ़्-जल् बिल्क़ुरआनि मिन् क़ब्लि अंय्युक़्ज़ा इलै - क वह्युहू ز व क़ुर्रब्बि ज़िद्नी अ़िल्मा (११४) व ल-क़द् अ़हिद्ना इला आद-म मिन् क़ब्लु फ़-नसि-य व लम् नजिद् लहू अ़ज़्मा ★ (११५) व इज़् क़ुल्ना लिल्मलाइकतिस्जुदू लिआद-म फ़-स-जदू इल्ला इब्ली-स ط अबा (११६) फ़क़ुल्ना या आदमु इन्-न हाज़ा अ़दुव्वुल्लं-क व लिज़ौजि-क फ़ला युख़्रिजन्नकुमा मिनल्जन्नति फ़-तश्क़ा (११७) इन्-न ल-क अल्ला तजू-अ़ फ़ीहा व ला तअ़्-रा ۙ (११८) व अन्न-क ला तज़्मउ फ़ीहा व ला तज़्हा (११९) फ़-वस्-व-स इलैहिश्शैतानु क़ा-ल या आदमु हल् अदुल्लु-क अ़ला श-ज-रतिल्-ख़ुल्दि व मुल्किल्-ला यब्ला (१२०) फ़-अ-कला मिन्हा फ़-ब-दत् लहुमा सौआतुहुमा व तफ़िक़ा यख़्सिफ़ानि अ़लैहिमा मिंव्व - रक़िल् - जन्नति ز व अ़सा आदमु रब्बहू फ़ - ग़वा صلے (१२१) सुम्मज्तबाहु रब्बुहू फ़ता-ब अ़लैहि व हदा (१२२) क़ालह्बिता मिन्हा जमीअ़म्-बअ़्-ज़ुकुम् लिबअ़् - ज़िन् अ़दुव्वुन् ج फ़इम्मा यअ्तियन्नकुम् मिन्नी हुदन् फ़ - मनित्त-ब-अ़ हुदा - य फ़ला यज़िल्लु व ला यश्क़ा (१२३)

عِوَجَ لَهٗ ۚ وَخَشَعَتِ الْاَصْوَاتُ لِلرَّحْمٰنِ فَلَا تَسْمَعُ اِلَّا هَمْسًا ۞
يَوْمَئِذٍ لَّا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ اِلَّا مَنْ اَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ وَرَضِيَ لَهٗ
قَوْلًا ۞ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِهٖ
عِلْمًا ۞ وَعَنَتِ الْوُجُوْهُ لِلْحَيِّ الْقَيُّوْمِ ۗ وَقَدْ خَابَ مَنْ حَمَلَ
ظُلْمًا ۞ وَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا يَخٰفُ ظُلْمًا
وَّلَا هَضْمًا ۞ وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا وَّصَرَّفْنَا فِيْهِ مِنَ
الْوَعِيْدِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ اَوْ يُحْدِثُ لَهُمْ ذِكْرًا ۞ فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ
الْحَقُّ ۚ وَلَا تَعْجَلْ بِالْقُرْاٰنِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يُّقْضٰٓى اِلَيْكَ وَحْيُهٗ ۫ وَ
قُلْ رَّبِّ زِدْنِيْ عِلْمًا ۞ وَلَقَدْ عَهِدْنَاۤ اِلٰٓى اٰدَمَ مِنْ قَبْلُ فَنَسِيَ وَ
لَمْ نَجِدْ لَهٗ عَزْمًا ۞ وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْۤا اِلَّاۤ
اِبْلِيْسَ ؕ اَبٰى ۞ فَقُلْنَا يٰۤاٰدَمُ اِنَّ هٰذَا عَدُوٌّ لَّكَ وَلِزَوْجِكَ فَلَا
يُخْرِجَنَّكُمَا مِنَ الْجَنَّةِ فَتَشْقٰى ۞ اِنَّ لَكَ اَلَّا تَجُوْعَ فِيْهَا وَلَا
تَعْرٰى ۞ وَاَنَّكَ لَا تَظْمَؤُا فِيْهَا وَلَا تَضْحٰى ۞ فَوَسْوَسَ اِلَيْهِ الشَّيْطٰنُ
قَالَ يٰۤاٰدَمُ هَلْ اَدُلُّكَ عَلٰى شَجَرَةِ الْخُلْدِ وَمُلْكٍ لَّا يَبْلٰى ۞ فَاَكَلَا
مِنْهَا فَبَدَتْ لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفٰنِ عَلَيْهِمَا مِنْ وَّرَقِ
الْجَنَّةِ ۫ وَعَصٰۤى اٰدَمُ رَبَّهٗ فَغَوٰى ۞ ثُمَّ اجْتَبٰهُ رَبُّهٗ فَتَابَ
عَلَيْهِ وَهَدٰى ۞ قَالَ اهْبِطَا مِنْهَا جَمِيْعًا ۢ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ

★रु. ६/१५ आ ११

पस्ती) देखोगे, न टीला (और बुलंदी), (१०७) उस दिन लोग एक पुकारने वाले के पीछे चलेंगे और उस की पैरवी से कतरा न सकोगे और ख़ुदा के सामने आवाज़ें पस्त हो जाएंगी, तो तुम धीमी आवाज़ के सिवा कुछ न सुनोगे। (१०८) उस दिन (किसी की) सिफ़ारिश कुछ फ़ायदा न देगी, मगर उस शख़्स की, जिसे ख़ुदा इजाज़त दे और उस की बात को पसन्द फ़रमाए। (१०९) जो कुछ उन के आगे है और जो कुछ उन के पीछे है, वह उस को जानता है और वह (अपने) इल्म से ख़ुदा (के इल्म) पर एहाता नहीं कर सकते। (११०) और उस ज़िंदा व क़ायम के सामने मुंह नीचे हो जाएंगे और जिस ने ज़ुल्म का बोझ उठाया, वह ना-मुराद रहा। (१११) और जो नेक काम करेगा और मोमिन भी होगा, तो उस को न ज़ुल्म का डर होगा और न नुक़्सान का। (११२) और हमने उस को इसी तरह का अरबी क़ुरआन नाज़िल किया है और उस में तरह-तरह के डरावे बयान कर दिए हैं, ताकि लोग परहेज़गार बनें या ख़ुदा उन के लिए नसीहत पैदा कर दे। (११३) तो ख़ुदा जो सच्चा बादशाह है आलीक़द्र है और क़ुरआन की वह्य जो तुम्हारी तरफ़ भेजी जाती है, उस के पूरा होने से पहले क़ुरआन के (पढ़ने के) लिए जल्दी न किया करो और दुआ करो कि मेरे परवरदिगार मुझे और ज़्यादा इल्म दे। (११४) और हमने पहले आदम से वायदा लिया था, मगर वह (उसे) भूल गये और हमने उन में सब्र व सबात न देखा। (११५)★

और जब हमने फ़रिश्तों से कहा कि आदम के आगे सज्दा करो तो सब सज्दे में गिर पड़े मगर इब्लीस ने इंकार किया। (११६) हमने फ़रमाया कि आदम! यह तुम्हारा और तुम्हारी बीवी का दुश्मन है, तो यह कहीं तुम दोनों को बहिश्त से निकलवा न दे, फिर तुम तक्लीफ़ में पड़ जाओ। (११७) यहां तुम को यह (आराम) है कि न भूखे रहो, न नंगे। (११८) और यह कि न प्यासे रहो और न धूप खाओ। (११९) तो शैतान ने उन के दिल में वस्वसा डाला और कहा कि आदम! भला मैं तुम को (ऐसा) पेड़ बताऊं (जो) हमेशा की ज़िंदगी (का फल) दे और (ऐसी) बादशाहत कि कभी ख़त्म न हो। (१२०) तो दोनों ने उस पेड़ का फल खा लिया, तो उन पर उन की शर्मगाहें ज़ाहिर हो गयीं और वे अपने (बदनों) पर बहिश्त के पत्ते चिपकाने लगे और आदम ने अपने परवरदिगार के (हुक्म के) ख़िलाफ़ किया, तो (वे अपनी मंज़िल से) बे-राह हो गये। (१२१) फिर उन के परवरदिगार ने उन को नवाज़ा तो उन पर मेहरबानी से तवज्जोह फ़रमायी और सीधी राह बतायी। (१२२) फ़रमाया कि तुम दोनों यहां से नीचे उतर जाओ। तुम में कुछ कुछ के दुश्मन (होंगे), फिर अगर मेरी तरफ़ से तुम्हारे पास हिदायत आए तो जो शख़्स मेरी हिदायत की पैरवी करेगा, वह न गुमराह होगा और न तक्लीफ़ में पड़ेगा। (१२३)

★रु. ६/१५ आ ११

व मन् अअ्-र-ज़ अन् ज़िक्री फ़इन्-न लहू मओ़-श-तन् ज़न्कंव-व नह्शुरुहू योमल्क़ियामति अअ्-मा (१२४) क़ा-ल रब्बि लि-म ह्-शर्तनी अअ्-मा व क़द् कुन्तु बसीरा (१२५) क़ा-ल कज़ालि-क अ-तत्-क आयातुना फ़-नसीतहा ۚ व कज़ालिकल्-यौ-म तुन्सा (१२६) व कज़ालि-क नज्ज़ी मन् अस्-र-फ़ व लम् युअ्मिम्-बिआयाति रब्बिही ۖ व ल-अ़ज़ाबुल्-आख़िरति अ-शद्दु व अब्क़ा (१२७) अ-फ़ लम् यह्दि लहुम् कम् अह्-लक्-ना क़ब-लहुम् मिनल्क़ुरूनि यम्शू-न फ़ी मसाकिनिहिम् ۖ इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल्लिउलिन्नुहा ★ (१२८) व लौला कलिमतुन् स-ब-क़त् मिर्रब्बि-क ल-का-न लिज़ामंव्-व अ-ज-लुम्-मुसम्-म ۖ (१२९) फ़स्बिर् अ़ला मा यक़ूलू-न व सब्बिह् बिह़म्दि रब्बि-क क़ब्-ल तुलूअ़िश्-शम्सि व क़ब्-ल ग़ुरूबिहा ۚ व मिन् आनाइल्लैलि फ़-सब्बिह् व अत्-राफ़न्नहारि ल-अ़ल्ल-क तर्ज़ा (१३०) व ला तमुद्-दन्-न ऐनै-क इला मा मत्तअ्-ना बिही अज़्वाजम्-मिन्हुम् ज़ह्-र-तल्-ह़यातिद्दुन्या ۙ लिनफ़्तिनहुम् फ़ीहि ۖ व रिज़्क़ु रब्बि-क ख़ैरुंव्-व अब्क़ा (१३१) वअ्मुर् अह्-ल-क बिस्सलाति वस्तबिर् अ़लैहा ۖ ला नस्-अलु-क रिज़्-क़न् ۖ नह़्नु नर्ज़ुक़ु-क ۖ वल्आ़क़िबतु लित्तक़्वा (१३२) व क़ालू लौला यअ्-तीना बिआयतिम्-मिर्रब्बिही ۖ अ-व लम् तअ्तिहिम् बय्यिनतु मा फ़िस्सुहुफ़िल्-ऊला (१३३) व लौ अन्ना अह-लक्नाहुम् बिअ़ज़ाबिम्-मिन् क़ब्लिही ल-क़ालू रब्बना लौला अर्सल्-त इलैना रसूलन् फ़-नत्तबि-अ़ आयाति-क मिन् क़ब्लि अन् नज़िल्-ल व नख़्ज़ा (१३४) क़ुल् कुल्लुम्-मु-त-रब्बिसुन् फ़-त-रब्बसू ۚ फ़-स-तअ्-लमू-न मन् अस्हाबुस्-सिरातिस्सविय्यि व मनिह्तदा ★ (१३५)

فَإِمَّا يَأْتِيَنَّكُم مِّنِّي هُدًى فَمَنِ اتَّبَعَ هُدَايَ فَلَا يَضِلُّ وَلَا يَشْقَىٰ ۝
وَمَنْ أَعْرَضَ عَن ذِكْرِي فَإِنَّ لَهُ مَعِيشَةً ضَنكًا وَنَحْشُرُهُ يَوْمَ
الْقِيَامَةِ أَعْمَىٰ ۝ قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِي أَعْمَىٰ وَقَدْ كُنتُ بَصِيرًا ۝
قَالَ كَذَٰلِكَ أَتَتْكَ آيَاتُنَا فَنَسِيتَهَا ۖ وَكَذَٰلِكَ الْيَوْمَ تُنسَىٰ ۝ وَكَذَٰلِكَ
نَجْزِي مَنْ أَسْرَفَ وَلَمْ يُؤْمِن بِآيَاتِ رَبِّهِ ۚ وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَشَدُّ
وَأَبْقَىٰ ۝ أَفَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُم مِّنَ الْقُرُونِ يَمْشُونَ فِي
مَسَاكِنِهِمْ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّأُولِي النُّهَىٰ ۝ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ
سَبَقَتْ مِن رَّبِّكَ لَكَانَ لِزَامًا وَأَجَلٌ مُّسَمًّى ۝ فَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا
يَقُولُونَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوبِهَا ۖ وَ
مِنْ آنَاءِ اللَّيْلِ فَسَبِّحْ وَأَطْرَافَ النَّهَارِ لَعَلَّكَ تَرْضَىٰ ۝ وَلَا تَمُدَّنَّ
عَيْنَيْكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعْنَا بِهِ أَزْوَاجًا مِّنْهُمْ زَهْرَةَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا لِنَفْتِنَهُمْ
فِيهِ ۚ وَرِزْقُ رَبِّكَ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ ۝ وَأْمُرْ أَهْلَكَ بِالصَّلَاةِ وَاصْطَبِرْ
عَلَيْهَا ۖ لَا نَسْأَلُكَ رِزْقًا ۖ نَّحْنُ نَرْزُقُكَ ۗ وَالْعَاقِبَةُ لِلتَّقْوَىٰ ۝ وَقَالُوا لَوْ
لَا يَأْتِينَا بِآيَةٍ مِّن رَّبِّهِ ۚ أَوَلَمْ تَأْتِهِم بَيِّنَةُ مَا فِي الصُّحُفِ الْأُولَىٰ ۝
وَلَوْ أَنَّا أَهْلَكْنَاهُم بِعَذَابٍ مِّن قَبْلِهِ لَقَالُوا رَبَّنَا لَوْلَا أَرْسَلْتَ إِلَيْنَا
رَسُولًا فَنَتَّبِعَ آيَاتِكَ مِن قَبْلِ أَن نَّذِلَّ وَنَخْزَىٰ ۝ قُلْ كُلٌّ مُّتَرَبِّصٌ
فَتَرَبَّصُوا ۖ فَسَتَعْلَمُونَ مَنْ أَصْحَابُ الصِّرَاطِ السَّوِيِّ وَمَنِ اهْتَدَىٰ ۝

★रु. ७/१६ आ १३ ★रु. ८/१७ आ ७

और जो मेरी नसीहत से मुंह फेरेगा, उसकी ज़िंदगी तंग हो जाएगी और क़ियामत को हम उसे अंधा कर के उठाएंगे (१२४) वह कहेगा कि मेरे परवरदिगार! तू ने मुझे अंधा करके क्यों उठाया, मैं तो देखता-भालता था। (१२५) ख़ुदा फ़रमाएगा कि ऐसा ही (चाहिए था) तेरे पास हमारी आयतें आयीं तो तू ने उनको भुला दिया, इसी तरह आज हम तुझको भुला देंगे। (१२६) और जो शख़्स हद से निकल जाए और अपने परवरदिगार की आयतों पर ईमान न लाए, हम उस को ऐसा ही बदला देते हैं और आख़िरत का अज़ाब बहुत सख़्त और बहुत देर रहने वाला है। (१२७) क्या यह बात उन लोगों के लिए हिदायत की वजह न बनी कि हम उन से पहले बहुत से फ़िर्क़ों को हलाक कर चुके हैं, जिन के रहने की जगहों में ये चलते-फिरते हैं। अक़्ल वालों के लिए इस में बहुत-सी निशानियां हैं। (१२८)★

और अगर एक बात तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से पहले ही से न होती और (आमाल के बदले के लिए) एक मीयाद मुक़र्रर न हो चुकी होती तो अज़ाब (का आना) ज़रूरी हो जाता। (१२९) पस जो कुछ ये बकवास करते हैं, उस पर सब्र करो और सूरज के निकलने से पहले और उस के डूबने से पहले अपने परवरदिगार की तस्बीह व तह्मीद किया करो, और रात की (अव्वल) घड़ियों में भी उस की तस्बीह किया करो और दिन के किनारों (यानी दोपहर के क़रीब ज़ुहर के वक़्त भी), ताकि तुम ख़ुश हो जाओ। (१३०) और कई तरह के लोगों को, जो हमने दुनिया की (ज़िंदगी में) आराम की चीज़ों से नवाज़ा है, ताकि उन की आज़माइश करें, उन पर निगाह न करना और तुम्हारे परवरदिगार की (दी हुई) रोज़ी बहुत बेहतर और बाक़ी रहने वाली है। (१३१) और अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म करो और उस पर क़ायम रहो। हम तुम से रोज़ी नहीं चाहते बल्कि तुम्हें हम रोज़ी देते हैं और (नेक) अंजाम तक़्वा (वालों) का है। (१३२) और कहते हैं कि यह (पैग़म्बर) अपने परवरदिगार की तरफ से हमारे पास कोई निशानी क्यों नहीं लाते, क्या उन के पास पहली किताबों की निशानी नहीं आयी? (१३३) और अगर हम उन को पैग़म्बर (के भेजने) से पहले किसी अज़ाब से हलाक कर देते तो वे कहते कि ऐ हमारे परवरदिगार! तू ने हमारी तरफ़ कोई पैग़म्बर क्यों न भेजा कि हम ज़लील और रुसवा होने से पहले तेरे कलाम (व अहकाम) की पैरवी करते। (१३४) कह दो कि सब (आमाल के नतीजे के) इंतिज़ार में हैं, सो तुम भी इंतिज़ार में रहो। बहुत जल्द तुम को मालूम हो जाएगा कि (दीन के) सीधे रास्ते पर चलने वाले कौन हैं और (जन्नत की तरफ़) राह पाने वाले कौन हैं (हम या तुम)? (१३५)★

★रु. ७/१६ आ १३　★रु. ८/१७ आ ७

सत्रहवां पारः इक़्त-र-ब लिन्नासि

२१ सूरतुल्-अम्बियाइ ७३

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के ५१५४ अक्षर, ११८७ शब्द, ११२ आयतें और ७ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ●

इक़्-त-र-ब लिन्नासि हिसाबुहुम् व हुम् फ़ी ग़फ़्लतिम्-मुअ़्रिज़ून (१) मा यअ्तीहिम् मिन् ज़िक्रिम्-मिर्-रब्बिहिम् मुह्दसिन् इल्लस्त - म - अूहु व हुम् यल्-अबून (२) लाहि-य-तन् क़ुलूबुहुम् व अ - सर्रुन् - नज्वल्-लज़ी - न ज़ - लमू हल् हाज़ा इल्ला ब - श-रुम् - मिस्लुकुम् अ-फ़-तअ्तूनस्-सिह्-र व अन्तुम् तुब्सिरून (३) क़ा-ल रब्बी यअ् - लमुल्क़ौ-ल फ़िस्समाइ वल्अर्ज़ि व हुवस्समीअुल्-अ़लीम (४) बल् क़ालू अज़्ग़ासु अह्लामिम्-बलिफ़्तराहु बल् हु - व शाअिरुन् फ़ल् - यअ्तिना बिआयतिन् कमा उर्सिलल्-अव्वलून (५) मा आ-म-नत् क़ब्लहुम् मिन् क़र्-यतिन् अह्-लक्नाहा अ-फ़हुम् युअ्मिनून (६) व मा अर्सल्ना क़ब्-ल-क इल्ला रिजालन् नूही इलैहिम् फ़स्-अलू अह्लज़्ज़िक्रि इन् कुन्तुम् ला तअ्-लमून (७) व मा ज-अ़ल्नाहुम् ज-स-दल्ला यअ्कुलूनत्-तआ़-म व मा कानू ख़ालिदीन (८) सुम्-म स-दक़्नाहुमुल्-वअ़्-द फ़-अन्जैनाहुम् व मन् नशाउ व अह्लक्नल् - मुस्रिफ़ीन (९) ल - क़द् अन्ज़ल्ना इलैकुम् किताबन् फ़ीहि ज़िक्रुकुम् अ-फ़ला तअ्-क़िलून ★ (१०) व कम् क़-सम्ना मिन् क़र्-यतिन् कानत् ज़ालि-म-तंव्-व अन्शअ्ना बअ्-दहा क़ौमन् आख़रीन (११) फ़-लम्मा अ-हस्सू बअ्-सना इज़ा हुम् मिन्हा यर्कुज़ून (१२) ला तर्कुज़ू वर्जिअू इला माउत्रिफ़्तुम् फ़ीहि व मसाकिनिकुम् ल-अ़ल्लकुम् तुस्अलून (१३)

سورة الانبياء مكية وهي مائة واثنتا عشرة آية وسبع ركوعات

بسم الله الرحمن الرحيم

اقترب للناس حسابهم وهم في غفلة معرضون ۝ ما
يأتيهم من ذكر من ربهم محدث الا استمعوه وهم
يلعبون ۝ لاهية قلوبهم واسروا النجوى الذين ظلموا
هل هذا الا بشر مثلكم افتأتون السحر وانتم تبصرون ۝
قال ربي يعلم القول في السماء والارض وهو السميع
العليم ۝ بل قالوا اضغاث احلام بل افتراه بل هو
شاعر فليأتنا بآية كما ارسل الاولون ۝ ما آمنت
قبلهم من قرية اهلكناها افهم يؤمنون ۝ وما ارسلنا
قبلك الا رجالا نوحي اليهم فاسألوا اهل الذكر ان
كنتم لا تعلمون ۝ وما جعلناهم جسدا لا يأكلون الطعام
وما كانوا خالدين ۝ ثم صدقناهم الوعد فانجيناهم ومن
نشاء واهلكنا المسرفين ۝ لقد انزلنا اليكم كتابا فيه
ذكركم افلا تعقلون ۝ وكم قصمنا من قرية كانت
ظالمة وانشأنا بعدها قوما آخرين ۝ فلما احسوا بأسنا اذا
هم منها يركضون ۝ لا تركضوا وارجعوا الى ما اترفتم فيه

★रु. १/१ आ १०

२१ सूरः अंबिया ७३

सूरः अंबिया मक्की है और इस में एक सौ बारह आयतें और सात रुकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

लोगों का (आमाल के) हिसाब (का वक़्त) नज़दीक आ पहुंचा है और वे ग़फ़लत में (पड़े उस से) मुंह फेर रहे हैं। (१) उन के पास कोई नयी नसीहत उन के परवरदिगार की तरफ़ से नहीं आती, मगर वे उसे खेलते हुए सुनते हैं। (२) उन के दिल ग़फ़लत में पड़े हुए हैं और ज़ालिम लोग (आपस में) चुपके-चुपके बातें करते हैं कि यह (शख़्स कुछ भी) नहीं, मगर तुम्हारे जैसा आदमी है तो तुम आंखों देखते जादू (की लपेट) में क्यों आते हो?[1] (३) (पैग़म्बर ने) कहा कि जो बात आसमान और ज़मीन में (कही जाती) है, मेरा परवरदिगार उसे जानता है और वह सुनने वाला (और) जानने वाला है। (४) बल्कि (ज़ालिम) कहने लगे कि (यह क़ुरआन) परेशान (बातें हैं, जो) ख़्वाब (में देख ली) हैं, (नहीं) बल्कि उस ने इस को अपनी तरफ़ से बना लिया है, (नहीं) बल्कि यह (शेर है जो इस) शायर (का ख़्याल) है। तो जैसे पहले (पैग़म्बर निशानियां दे कर) भेजे गए थे (उसी तरह) यह भी हमारे पास कोई निशानी लाए। (५) इन से पहले जिन बस्तियों को हमने हलाक किया, वे ईमान नहीं लाती थीं, तो क्या ये ईमान ले आएंगे ? (६) और हमने तुम से पहले मर्द ही (पैग़म्बर बना कर) भेजे, जिन की तरफ़ हम वह्य भेजते थे। अगर तुम नहीं जानते तो जो याद रखते हैं, उन से पूछ लो। (७) और हमने उन के ऐसे जिस्म नहीं बनाए थे कि खाना न खाएं और न वे हमेशा रहने वाले थे। (८) फिर हमने उन के बारे में (अपना) वायदा सच्चा कर दिया तो उन को और जिस को चाहा, निजात दी और हद से निकल जाने वालों को हलाक कर दिया। (९) हमने तुम्हारी तरफ़ ऐसी किताब नाज़िल की है, जिस में तुम्हारा तज़्किरा है, क्या तुम नहीं समझते ? (१०)★

और हमने बहुत सी बस्तियों को जो ज़ालिम थीं, हलाक कर मारा और उन के बाद और लोग पैदा कर दिए। (११) जब उन्हों ने हमारे अज़ाब (के मुक़दमे) को देखा, तो लगे उस से भागने। (१२) मत भागो और जिन (नेमतों) में तुम ऐश व आराम करते थे उन की और अपने घरों की तरफ़ लौट जाओ, शायद तुम से (इस बारे में) पूछा जाए। (१३) कहने लगे, हाय

---

१. यानी यह मुहम्मद पैग़म्बर तो हैं नहीं, तुम्हारे जैसे एक आदमी हैं और जो यह क़ुरआन सुनाते हैं, वह जादू है, जिस को सुन कर आदमी उस की तरफ़ झुक पड़ता है, तो तुम जान-बूझ कर उस के जादू में क्यों फंसते हो ?

★रु. १/१ आ १०

क़ालू यावैलना इन्ना कुन्ना ज़ालिमीन (१४) फ़-मा ज़ालत् तिल्-क दअ्-वाहुम् हत्ता ज-अ़ल्नाहुम् हसीदन् ख़ामिदीन (१५) व मा ख़-लक्-नस्समा-अ वल-अर्-ज़ व मा बैनहुमा लाअिबीन (१६) लौ अ-रद्ना अन् नत्तख़ि-ज लह्वल्-लत्त-ख़ज्नाहु मिल्लदुन्ना इन् कुन्ना फ़ाअिलीन (१७) बल् नक़्ज़िफ़ु बिल्हक़्क़ि अ़-लल्बातिलि फ़-यद्मग़ुहू फ़इज़ा हु-व ज़ाहिक़ुन् व लकुमुल्वैलु मिम्मा तसिफ़ून (१८) व लहू मन् फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि व मन् अ़िन्दहू ला यस्तक्बिरू-न अन् अ़िबादतिही व ला यस्तह्सिरून (१९) युसब्बिहूनल्लै-ल वन्नहा-र ला यफ़्तुरून (२०) अमित्त-ख़ज़ू आलिहतम्-मिनल्अर्ज़ि हुम् युन्शिरून (२१) लौ का-न फ़ीहिमा आलिहतुन् इल्लल्लाहु ल-फ़-स-दता फ़-सुब्हानल्लाहि रब्बिल्-अ़र्शि अ़म्मा यसिफ़ून (२२) ला युस्अलु अ़म्मा यफ़्अ़लु व हुम् युस्अलून (२३) अमित्त-ख़ज़ू मिन् दूनिही आलि-ह-तन् क़ुल् हातू बुर्हानकुम् हाज़ा ज़िक्रु मम्-मअि-य व ज़िक्रु मन् क़ब्ली बल् अक्सरु-हुम् ला यअ्-लमूनल्हक़्-क़ फ़हुम् मुअ्-रिज़ून (२४) व मा अर्सल्ना मिन् क़ब्लि-क मिर्रसूलिन् इल्ला नूही इलैहि अन्नहू ला इला-ह इल्ला अ-न फ़अ्-बुदून (२५) व क़ालुत्त-ख़-ज़र्-रह्मानु व-ल-दन् सुब्हानहू बल् अ़िबादुम्-मुक्-रमून (२६) ला यस्बिक़ूनहू बिल्क़ौलि व हुम् बिअम्रिही यअ्-मलून (२७) यअ्-लमु मा बै-न ऐदीहिम् व मा ख़ल्फ़हुम् व ला यश्फ़अू-न इल्ला लिमनिर्-तज़ा व हुम् मिन् ख़श्-यतिही मुश्फ़िक़ून (२८)

وَمَسٰكِنِكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْـَٔلُوْنَ ۞ قَالُوْا يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ۞
فَمَا زَالَتْ تِّلْكَ دَعْوٰىهُمْ حَتّٰى جَعَلْنٰهُمْ حَصِيْدًا خٰمِدِيْنَ ۞
وَمَا خَلَقْنَا السَّمَآءَ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لٰعِبِيْنَ ۞ لَوْ اَرَدْنَآ اَنْ
نَّتَّخِذَ لَهْوًا لَّاتَّخَذْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّآ ۖ اِنْ كُنَّا فٰعِلِيْنَ ۞ بَلْ نَقْذِفُ
بِالْحَقِّ عَلَى الْبَاطِلِ فَيَدْمَغُهٗ فَاِذَا هُوَ زَاهِقٌ ۭ وَلَكُمُ الْوَيْلُ مِمَّا
تَصِفُوْنَ ۞ وَلَهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَمَنْ عِنْدَهٗ لَا
يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَلَا يَسْتَحْسِرُوْنَ ۞ يُسَبِّحُوْنَ الَّيْلَ
وَالنَّهَارَ لَا يَفْتُرُوْنَ ۞ اَمِ اتَّخَذُوْٓا اٰلِهَةً مِّنَ الْاَرْضِ هُمْ
يُنْشِرُوْنَ ۞ لَوْ كَانَ فِيْهِمَآ اٰلِهَةٌ اِلَّا اللّٰهُ لَفَسَدَتَا ۚ فَسُبْحٰنَ
اللّٰهِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ۞ لَا يُسْـَٔلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ
يُسْـَٔلُوْنَ ۞ اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً ۭ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ ۚ
هٰذَا ذِكْرُ مَنْ مَّعِيَ وَذِكْرُ مَنْ قَبْلِيْ ۭ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۙ
الْحَقَّ فَهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ۞ وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ
اِلَّا نُوْحِيْٓ اِلَيْهِ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدُوْنِ ۞ وَقَالُوا اتَّخَذَ
الرَّحْمٰنُ وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ ۭ بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُوْنَ ۞ لَا يَسْبِقُوْنَهٗ
بِالْقَوْلِ وَهُمْ بِاَمْرِهٖ يَعْمَلُوْنَ ۞ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَ
مَا خَلْفَهُمْ وَلَا يَشْفَعُوْنَ ۙ اِلَّا لِمَنِ ارْتَضٰى وَهُمْ مِّنْ خَشْيَتِهٖ

शामत ! बेशक हम ज़ालिम थे। (१४) तो वह हमेशा इसी तरह पुकारते रहे यहां तक कि हमने उन को (खेती की तरह) काट कर (और आग की तरह) बुझा कर ढेर कर दिया। (१५) और हमने आसमान और ज़मीन को और जो (मख्लूक़ात) इन दोनों के दर्मियान है, उस को खेल-तमाशा के लिए पैदा नहीं किया। (१६) अगर हम चाहते कि खेल (की चीज़ें यानी बीवी व लड़के) बनाएं तो अगर हम को करना ही होता तो हम अपने पास से बना लेते। (१७) (नहीं), बल्कि हम सच को झूठ पर खींच मारते हैं, तो वह उस का सर तोड़ देता है और झूठ उसी वक़्त नाबूद हो जाता है और जो बातें तुम बनाते हो, उन से तुम्हारी ही ख़राबी है। (१८) और जो लोग आसमानों में और जो ज़मीन में हैं, सब उसी की (मम्लूक और उसी का माल) हैं और जो (फ़रिश्ते) उस के पास हैं, वे उस की इबादत से न कतराते हैं और न उकताते हैं। (१९) रात-दिन (उस की) तस्बीह करते रहते हैं, (न थकते हैं), न थमते हैं। (२०) भला लोगों ने जो ज़मीन की चीज़ों से (कुछ को) माबूद बना लिया है (तो क्या) वह उन को (मरने के बाद) उठा खड़ा करेंगे ? (२१) अगर आसमान और ज़मीन में ख़ुदा के सिवा और माबूद होते, तो ज़मीन व आसमान फ़साद से भर जाते। जो बातें ये लोग बताते हैं, अर्श का मालिक, ख़ुदा उन से पाक है। (२२) वह जो काम करता है, उस की पूछ-ताछ नहीं होगी और (जो काम ये लोग करते हैं, उस की) उन से पूछ-ताछ होगी। (२३) क्या लोगों ने ख़ुदा को छोड़ कर और माबूद बना लिए हैं कह दो कि (इस बात पर) अपनी दलील पेश करो। यह (मेरी और) मेरे साथ वालों की किताब भी है और जो मुझ से पहले (पैग़म्बर) हुए हैं, उन की किताबें भी हैं, बल्कि (बात यह है कि) उन में अक्सर हक़ बात को नहीं जानते और इसलिए उस से मुंह फेर लेते हैं। (२४) और जो पैग़म्बर हमने तुम से पहले भेजे, उन की तरफ़ यही वह्य भेजी कि मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तो मेरी ही इबादत करो। (२५) और कहते हैं कि ख़ुदा बेटा रखता है, वह पाक है, (उस के न बेटा है, न बेटी है), बल्कि (जिन को ये लोग उस के बेटे-बेटियां समझते हैं) वे उस के इज़्ज़त वाले बन्दे हैं। (२६) उस के आगे बढ़ कर बोल नहीं सकते और उस के हुक्म पर अमल करते हैं। (२७) जो कुछ उन के आगे हो चुका है और जो पीछे होगा, वह सब जानता है और वे (उस के पास किसी की) सिफ़ारिश नहीं कर सकते, मगर उस शख़्स की, जिस से ख़ुदा ख़ुश हो और वे उस की

व मंय्यक़ुल् मिन्हुम् इन्नी इलाहुम्-मिन् दूनिही फ़ज़ालि-क नज्ज़ीहि जहन्न-म कज़ालि-क नज्ज़िज़्-ज़ालिमीन ★ (२९) अ-व लम् य-रल्लज़ी-न क-फ़रू अन्नस्-समावाति वल्अर्-ज़ कानता रत्-क़न् फ़-फ़-तक़्नाहुमा व ज-अ़ल्ना मिनल्माइ कुल्-ल शैइन् हय्यिन् अ-फ़ला युअ्मिनून (३०) व ज-अ़ल्ना फ़िल्अर्ज़ि रवासि-य अन् तमी-द बिहिम् व ज-अ़ल्ना फ़ीहा फ़िजाजन् सुबुलल्-ल-अ़ल्लहुम् यह्-तदून (३१) व ज-अ़ल्नस्समा-अ सक़्फ़म्-मह्फ़ूज़ंव्-व हुम् अन् आयातिहा मुअ्-रिज़ून (३२) व हुवल्लज़ी ख़-ल-क़ल्लै-ल वन्नहा-र वश्शम-स वल्क़-म-र कुल्लुन् फ़ी फ़-लकिंय्यस्बहून (३३) व मा ज-अ़ल्ना लिब-श-रिम्-मिन् क़ब्लिकल्-ख़ुल्-द अ-फ़इम्-मित्-त फ़हुमुल्-ख़ालिदून (३४) कुल्लु नफ़्सिन् ज़ाइक़-तुल्-मौति व नब्लूकुम् बिश्शर्रि वल्ख़ैरि फ़ित्-न-तन् व इलैना तुर्जअ़ून (३५) व इज़ा रआकल्लज़ी-न क-फ़रू इंय्यत्तख़िज़ून-क इल्ला हुज़ुवन् अ-हाज़ल्लज़ी यज़्कुरु आलि-ह-तकुम् व हुम् बिज़िक्रिर्-रह्मानि हुम् काफ़िरून (३६) ख़ुलिक़ल्-इन्सानु मिन् अ़-जलिन् सउरीकुम् आयाती फ़ला तस्तअ्जिलून (३७) व यक़ूलू-न मता हाज़ल् वअ्-दु इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (३८) लौ यअ्-लमुल्लज़ी-न क-फ़रू ही-न ला यकुफ़्फ़ू-न अंव्वुजूहि-हिमुन्ना-र व ला अन् ज़ुहूरिहिम् व ला हुम् युन्सरून (३९) बल् तअ्तीहिम् बग़्-ततन् फ़ तब्-हतुहुम् फ़ ला यस्ततीअू-न रद्दहा व ला हुम् युन्ज़रून (४०) व ल-क़दिस्तुह्ज़ि-अ बिरुसुलिम्-मिन् क़ब्लि-क फ़हा-क़ बिल्लज़ी-न सख़िरू मिन्हुम् मा कानू बिही यस्तह्ज़िऊन ★ (४१)

مُشْفِقُوْنَ ۝ وَمَنْ يَّقُلْ مِنْهُمْ اِنِّيْٓ اِلٰهٌ مِّنْ دُوْنِهٖ فَذٰلِكَ
نَجْزِيْهِ جَهَنَّمَ ۭ كَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِيْنَ ۝ اَوَلَمْ يَرَ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْٓا اَنَّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ كَانَتَا رَتْقًا فَفَتَقْنٰهُمَا ۭ وَجَعَلْنَا
مِنَ الْمَاۗءِ كُلَّ شَيْءٍ حَيٍّ ۭ اَفَلَا يُؤْمِنُوْنَ ۝ وَجَعَلْنَا فِي الْاَرْضِ
رَوَاسِيَ اَنْ تَمِيْدَ بِهِمْ ۠ وَجَعَلْنَا فِيْهَا فِجَاجًا سُبُلًا لَّعَلَّهُمْ
يَهْتَدُوْنَ ۝ وَجَعَلْنَا السَّمَاۗءَ سَقْفًا مَّحْفُوْظًا ښ وَّهُمْ عَنْ اٰيٰتِهَا
مُعْرِضُوْنَ ۝ وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۭ
كُلٌّ فِيْ فَلَكٍ يَّسْبَحُوْنَ ۝ وَمَا جَعَلْنَا لِبَشَرٍ مِّنْ قَبْلِكَ الْخُلْدَ ۭ
اَفَا۟ىِٕنْ مِّتَّ فَهُمُ الْخٰلِدُوْنَ ۝ كُلُّ نَفْسٍ ذَاۗىِٕقَةُ الْمَوْتِ ۭ وَنَبْلُوْكُمْ
بِالشَّرِّ وَالْخَيْرِ فِتْنَةً ۭ وَاِلَيْنَا تُرْجَعُوْنَ ۝ وَاِذَا رَاٰكَ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْٓا اِنْ يَّتَّخِذُوْنَكَ اِلَّا هُزُوًا ۭ اَھٰذَا الَّذِيْ يَذْكُرُ اٰلِهَتَكُمْ ۚ
وَهُمْ بِذِكْرِ الرَّحْمٰنِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ۝ خُلِقَ الْاِنْسَانُ مِنْ عَجَلٍ ۭ
سَاُورِيْكُمْ اٰيٰتِيْ فَلَا تَسْتَعْجِلُوْنِ ۝ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ
اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ لَوْ يَعْلَمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا حِيْنَ لَا يَكُفُّوْنَ
عَنْ وُّجُوْهِهِمُ النَّارَ وَلَا عَنْ ظُهُوْرِهِمْ وَلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ۝
بَلْ تَاْتِيْهِمْ بَغْتَةً فَتَبْهَتُهُمْ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ رَدَّهَا وَلَا هُمْ
يُنْظَرُوْنَ ۝ وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِيْنَ

★रु. २/२ आ १९ ★रु. ३/३ आ १२

हैबत से डरते रहते हैं। (२८) और जो आदमी उन में से यह कहे कि ख़ुदा के सिवा मैं माबूद हूं, तो उसे हम दोज़ख़ की सज़ा देंगे और ज़ालिमों को हम ऐसी ही सज़ा दिया करते हैं। (२६)★

क्या काफ़िरों ने नहीं देखा कि आसमान और ज़मीन दोनों मिले हुए थे, तो हमने जुदा-जुदा कर दिया और तमाम जानदार चीज़ें हमने पानी से बनायीं, फिर ये लोग ईमान क्यों नहीं लाते ? (३०) और हमने ज़मीन में पहाड़ बनाये ताकि लोगों (के बोझ) से हिलने (और झुकने) न लगे और उस में कुशादा रास्ते बनाये, ताकि लोग उन पर चलें। (३१) और आसमान को महफ़ूज़ छत बनाया, इस पर भी वे हमारी निशानियों से मुंह फेर रहे हैं। (३२) और वही तो है, जिस ने रात और दिन और सूरज और चांद को बनाया (ये) सब (यानी सूरज और चांद और सितारे) आसमान में (इस तरह चलते हैं, गोया) तैर रहे हैं। (३३) और (ऐ पैग़म्बर!) हमने तुम से पहले किसी आदमी को हमेशा की ज़िंदगी नहीं बख़्शी, भला, अगर तुम मर जाओ तो क्या ये लोग हमेशा रहेंगे।[1] (३४) हर नफ़्स को मौत का मज़ा चखना है और हम तुम लोगों को सख़्ती और आसूदगी में आज़माइश के तौर पर डाल देते हैं और तुम हमारी तरफ़ ही लौट कर आओगे। (३५) और जब काफ़िर तुम को देखते हैं तो तुम्हारा मज़ाक़ उड़ाते हैं कि क्या यही शख़्स है जो तुम्हारे माबूदों का ज़िक्र (बुराई से) किया करता है, हालांकि वह ख़ुद रहमान के नाम से मुंकिर है। (३६) इंसान (कुछ ऐसा जल्दबाज़ है कि गोया) जल्दबाज़ी ही से बनाया गया है। मैं तुम लोगों को बहुत जल्द अपनी निशानियां दिखाऊंगा, तो तुम जल्दी न करो। (३७) और कहते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो (जिस अज़ाब की) यह धमकी (है, वह) कब (आएगा) ? (३८) ऐ काश! काफ़िर उस वक़्त को जानें, जब वे अपने मुंहों पर से (दोज़ख़ की) आग को रोक न सकेंगे और न अपनी पीठों पर से और न उन का कोई मददगार होगा। (३६) बल्कि क़ियामत उन पर यकायक आ वाक़ेअ होगी और उन के होश खो देगी, फिर न तो वे उस को हटा सकेंगे और न उन को मोहलत दी जाएगी। (४०) और तुम से पहले भी पैग़म्बरों के साथ मज़ाक़ होता रहा है, तो जो लोग उन में से मज़ाक़ किया करते थे, उन को उसी (अज़ाब) ने जिस की हंसी उड़ाते थे, आ घेरा। (४१)★

---

१. काफ़िर कहते थे कि जब मुहम्मद चल बसेंगे, तो इस्लाम का ज़ोर भी मिट जाएगा और ये सब ताम-झाम जाता रहेगा। जितनी यह धूम-धाम है, उन्हीं के दम से है। ख़ुदा ने फ़रमाया कि ये लोग तुम्हारी मौत का इन्तिज़ार करते हैं, लेकिन तुम इन्तिक़ाल कर जाओगे, तो ये भी हमेशा नहीं रहेंगे, मौत इन को भी फ़ना कर देगी और तुम्हारे इन्तिक़ाल से इस्लाम क्यों नाबूद होने लगा, वह तुम्हारी ज़ात से मुताल्लिक़ नहीं है कि जब तक तुम्हारी ज़िंदगी हो, तब तक उस की हस्ती हो, वह हमेशा रहेगा और कभी फ़ना होगा और हक़ीक़त है कि इस्लाम आंहज़रत के इन्तिक़ाल के बाद घटा नहीं, बल्कि दिन-ब-दिन बढ़ता गया और तमाम दुनिया में फैल गया और क़ियामत तक रहेगा।

★रु. २/२ आ १६ ★रु. ३/३ आ १२

क़ुल् मंय्यक्लउकुम् बिल्लैलि वन्नहारि मिनर् - रह़्मानि ♭ बल् हुम् अन् ज़िक्रि रब्बिहिम् मुअ्-रिज़ून (४२) अम् लहुम् आलिहतुन् तम्नअुहुम् मिन् दूनिना♭ ला यस्ततीअू-न नस्-र अन्फ़ुसिहिम् व ला हुम् मिन्ना युस्हबून (४३) बल् मत्तअ् - ना हाउला-इ व आबा-अहुम् ह़त्ता ता-ल अलैहिमुल्-अुमुरु♭ अ-फ़ला यरौ-न अन्ना नअ्तिल्अर्-ज़ नन्क़ुसुहा मिन् अत्राफ़िहा ♭ अ-फ़हुमुल् - ग़ालिबून (४४) क़ुल् इन्नमा उन्ज़िरुकुम् बिल्वह़्यि ﷺ व ला यस्मअुस् - सुम्मुद्दुआ-अ इज़ा मा युन्ज़रून (४५) व लइम् - मस्सत्हुम् नफ़्ह़तुम् - मिन् अज़ाबि रब्बि-क ल-यक़ूलुन्-न यावैलना इन्ना कुन्ना ज़ालिमीन (४६) व न-ज़-अुल्-मवाज़ीनल् - क़िस - त लियौमिल्-क़ियामति फ़ला तुज़्लमु नफ़्सुन् शैअन् ♭ व इन् का-न मिस्क़ा-ल ह़ब्बतिम्-मिन् ख़र्-दलिन् अतैना बिहा ♭ व कफ़ा बिना ह़ासिबीन (४७) व ल-क़द् आतैना मूसा व हारूनल्-फ़ुर्क़ा-न व ज़ियाअंव् - व ज़िक्रल् - लिल्मुत्तक़ीन ᐯ (४८) अल्लज़ी - न यख़्शौ-न रब्बहुम् बिल्ग़ैबि व हुम् मिनस्साअ़ति मुश्फ़िक़ून (४९) व हाज़ा ज़िक्रुम् - मुबा-रकुन् अन्ज़ल्नाहु ♭ अ-फ़ - अन्तुम् लहू मुन्किरून ★●(५०) व ल-क़द् आतैना इब्राही-म रुश्दहू मिन् क़ब्लु व कुन्ना बिही आलिमीन♭ (५१) इज़् क़ा-ल लिअबीहि व क़ौमिही मा हाज़िहित्-तमासीलुल्लती अन्तुम् लहा आकिफ़ून (५२) क़ालू व-जद्ना आबा-अना लहा आबिदीन (५३) क़ा-ल ल - क़द् कुन्तुम् अन्तुम् व आबाउकुम् फ़ी ज़लालिम्-मुबीन (५४) क़ालू अजिअ्-तना बिल्ह़क़्क़ि अम् अन्-त मिनल्लाअिबीन (५५)

سَخِرُوْا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۞ قُلْ مَنْ يَّكْلَؤُكُمْ
بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ مِنَ الرَّحْمٰنِ ۭ بَلْ هُمْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهِمْ مُّعْرِضُوْنَ ۞
اَمْ لَهُمْ اٰلِهَةٌ تَمْنَعُهُمْ مِّنْ دُوْنِنَا ۭ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَ
اَنْفُسِهِمْ وَلَا هُمْ مِّنَّا يُصْحَبُوْنَ ۞ بَلْ مَتَّعْنَا هٰٓؤُلَاۗءِ وَاٰبَاۗءَهُمْ
حَتّٰى طَالَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ ۭ اَفَلَا يَرَوْنَ اَنَّا نَاْتِي الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا
مِنْ اَطْرَافِهَا ۭ اَفَهُمُ الْغٰلِبُوْنَ ۞ قُلْ اِنَّمَآ اُنْذِرُكُمْ بِالْوَحْيِ ڮ وَ
لَا يَسْمَعُ الصُّمُّ الدُّعَاۗءَ اِذَا مَا يُنْذَرُوْنَ ۞ وَلَىِٕنْ مَّسَّتْهُمْ
نَفْحَةٌ مِّنْ عَذَابِ رَبِّكَ لَيَقُوْلُنَّ يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ۞
وَنَضَعُ الْمَوَازِيْنَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْـــًٔا ۭ
وَاِنْ كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ اَتَيْنَا بِهَا ۭ وَكَفٰى بِنَا
حٰسِبِيْنَ ۞ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ الْفُرْقَانَ وَضِيَاۗءً وَّ
ذِكْرًا لِّلْمُتَّقِيْنَ ۞ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَهُمْ مِّنَ
السَّاعَةِ مُشْفِقُوْنَ ۞ وَهٰذَا ذِكْرٌ مُّبٰرَكٌ اَنْزَلْنٰهُ ۭ اَفَاَنْتُمْ لَهٗ
مُنْكِرُوْنَ ۞ وَلَقَدْ اٰتَيْنَآ اِبْرٰهِيْمَ رُشْدَهٗ مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا بِهٖ
عٰلِمِيْنَ ۞ اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَا هٰذِهِ التَّمَاثِيْلُ الَّتِيْٓ
اَنْتُمْ لَهَا عٰكِفُوْنَ ۞ قَالُوْا وَجَدْنَآ اٰبَاۗءَنَا لَهَا عٰبِدِيْنَ ۞ قَالَ
لَقَدْ كُنْتُمْ اَنْتُمْ وَاٰبَاۗؤُكُمْ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۞ قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا

कहो कि रात और दिन में ख़ुदा से तुम्हारी कौन हिफ़ाज़त कर सकता है ? बात यह है कि ये अपने परवरदिगार की याद से मुंह फेरे हुए हैं। (४२) क्या हमारे सिवा इन के और माबूद हैं कि इन को (मुसीबतों) से बचा सकें, वे आप अपनी मदद तो कर ही नहीं सकेंगे और न हम से पनाह ही दिए जाएंगे, (४३) बल्कि हम उन लोगों को और उन के बाप-दादा को नवाज़ते रहे, यहां तक कि (इसी हालत में) उन की उम्रें बसर हो गयीं। क्या ये नहीं देखते कि हम ज़मीन को उस के किनारों से घटाते चले आते हैं, तो क्या ये लोग ग़लबा पाने वाले हैं।[1] (४४) कह दो कि मैं तुम को ख़ुदा के हुक्म के मुताबिक़ नसीहत करता हूं और बहरों को जब नसीहत की जाए तो वे पुकार को सुनते ही नहीं। (४५) और अगर उन को तुम्हारे परवरदिगार का थोड़ा-सा अज़ाब पहुंचे तो कहने लगें कि हाय कमबख़्ती ! हम बेशक गुनाहगार थे। (४६) और हम क़ियामत के दिन इंसाफ़ की तराज़ू खड़ी करेंगे, तो किसी शख़्स का ज़रा भी हक़ न मारा जाएगा और राई के दाने के बराबर भी (किसी का अमल) होगा तो हम उस को ला मौजूद करेंगे और हम हिसाब करने को काफ़ी हैं। (४७) और हमने मूसा और हारून को (हिदायत और गुमराही में) फ़र्क़ कर देने वाली और (मुकम्मल) रोशनी और नसीहत (की किताब) अता की (यानी) परहेज़गारों के लिए। (४८) जो बिन-देखे अपने परवरदिगार से डरते हैं और क़ियामत का भी डर रखते हैं। (४९) और यह मुबारक नसीहत है, जिसे हमने नाज़िल फ़रमाया है, तो क्या तुम इस से इंकार करते हो (५०)★● और हमने इब्राहीम को पहले ही से हिदायत दी थी और हम उन (के हाल) को जानते थे, (५१) जब उन्हों ने अपने बाप और अपनी क़ौम के लोगों से कहा कि ये क्या मूर्तियां हैं जिन (की इबादत) पर तुम मोतकिफ़ (व क़ाइम) हो। (५२) वे कहने लगे कि हमने अपने बाप-दादा को उन की पूजा करते देखा है। (५३) (इब्राहीम ने) कहा कि तुम भी (गुमराह हो) और तुम्हारे बाप-दादा भी खुली गुमराही में पड़े रहे। (५४) वे बोले, क्या तुम हमारे पास (सच से) हक़ लाए हो या (हम से) खेल (की बातें) करते हो। (५५) (इब्राहीम ने) कहा,

१. हम घटाते चले आते हैं यानी अरब के मुल्क में मुसलमानी फैलने लगी है, कुफ़्र कटने लगा।

क़ा-ल बर्रब्बुकुम् रब्बुस्समावाति वल्अर्ज़िल्लज़ी फ़-त-रहुन्-न ☆ व अ-न अला ज़ालिकुम् मिनश्शाहिदीन (५६) व तल्लाहि ल-अकीदन्-न अस्नामकुम् बअ्-द अन् तुवल्लू मुद्बिरीन (५७) फ़-ज-अ-लहुम् जुज़ाजन् इल्ला कबीरल्लहुम् ल-अल्लहुम् इलैहि यर्जिअून (५८) क़ालू मन् फ़-अ-ल हाज़ा बिआलिहतिना इन्नहू लमिनज़्ज़ालिमीन (५९) क़ालू समिअ्-ना फ़-तय्यज़्कुरुहुम् युक़ालु लहू इब्राहीम ॰ (६०) क़ालू फ़अ्तू बिही अला अअ्-युनिन्नासि ल-अल्लहुम् यश्हदून (६१) क़ालू अ-अन्-त फ़-अल्-त हाज़ा बिआलिहतिना या इब्राहीम ॰ (६२) क़ा-ल बल् फ़-अ-लहू ☆ कबीरुहुम् हाज़ा फ़स्-अलूहुम् इन् कानू यन्तिक़ून (६३) फ़-र-जअू इला अन्फ़ुसिहिम् फ़-क़ालू इन्नकुम् अन्तुमुज़्-ज़ालिमून ॰ (६४) सुम्-म नुकिसू अला रुऊसिहिम् ॰ ल-क़द् अलिम-त मा हाउलाइ यन्तिक़ून (६५) क़ा-ल अ-फ़-तअ्-बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि मा ला यन्फ़अुकुम् शैअंव्-व ला यज़ुर्रुकुम् ॰ (६६) उफ़्फ़िल्लकुम् व लिमा तअ्-बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि ॰ अ-फ़ला तअ्-क़िलून (६७) क़ालू हर्रिक़ूहु वन्सुरू आलि-ह-तकुम् इन् कुन्तुम् फ़ाअिलीन (६८) क़ुल्ना या नारु कूनी बर्दंव-व सलामन् अला इब्राहीम ॰ (६९) व अरादू बिही कैदन् फ़-ज-अल्ना-हुमुल्-अख़्-सरीन ॰ (७०) व नज्जैनाहु व लूतन् इलल्अर्ज़िल्-लती बारक्ना फ़ीहा लिल्आलमीन (७१) व व-हब्ना लहू इस्हा-क़ ॰ व यअ्-क़ू-ब नाफ़िल-तन् ॰ व कुल्लन् ज-अल्ना सालिहीन (७२) व ज-अल्नाहुम् अइम्मतंय्यह्दू-न बिअम्रिना व औहैना इलैहिम् फ़िअ्-लल्-ख़ैराति व इक़ामस्-सलाति व ईताअज़् - ज़काति ॰ व कानू लना आबिदीन ॰ (७३)

بِالْحَقِّ اَمْ اَنْتَ مِنَ اللّٰعِبِيْنَ ۝ قَالَ بَلْ رَّبُّكُمْ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ الَّذِيْ فَطَرَهُنَّ ۖ وَاَنَا عَلٰى ذٰلِكُمْ مِّنَ الشّٰهِدِيْنَ ۝ وَ
تَاللّٰهِ لَاَكِيْدَنَّ اَصْنَامَكُمْ بَعْدَ اَنْ تُوَلُّوْا مُدْبِرِيْنَ ۝ فَجَعَلَهُمْ
جُذٰذًا اِلَّا كَبِيْرًا لَّهُمْ لَعَلَّهُمْ اِلَيْهِ يَرْجِعُوْنَ ۝ قَالُوْا مَنْ فَعَلَ
هٰذَا بِاٰلِهَتِنَا اِنَّهٗ لَمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝ قَالُوْا سَمِعْنَا فَتًى يَّذْكُرُهُمْ
يُقَالُ لَهٗ اِبْرٰهِيْمُ ۝ قَالُوْا فَاْتُوْا بِهٖ عَلٰى اَعْيُنِ النَّاسِ لَعَلَّهُمْ
يَشْهَدُوْنَ ۝ قَالُوْا ءَاَنْتَ فَعَلْتَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَا يٰاِبْرٰهِيْمُ ۝ قَالَ
بَلْ فَعَلَهٗ ۖ كَبِيْرُهُمْ هٰذَا فَسْـَٔلُوْهُمْ اِنْ كَانُوْا يَنْطِقُوْنَ ۝ فَرَجَعُوْا
اِلٰى اَنْفُسِهِمْ فَقَالُوْا اِنَّكُمْ اَنْتُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝ ثُمَّ نُكِسُوْا عَلٰى
رُءُوْسِهِمْ لَقَدْ عَلِمْتَ مَا هٰٓؤُلَآءِ يَنْطِقُوْنَ ۝ قَالَ اَفَتَعْبُدُوْنَ
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُكُمْ شَيْـًٔا وَّلَا يَضُرُّكُمْ ۝ اُفٍّ لَّكُمْ
وَلِمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۖ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝ قَالُوْا حَرِّقُوْهُ
وَانْصُرُوْٓا اٰلِهَتَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ۝ قُلْنَا يٰنَارُ كُوْنِيْ بَرْدًا وَّ
سَلٰمًا عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ ۝ وَاَرَادُوْا بِهٖ كَيْدًا فَجَعَلْنٰهُمُ الْاَخْسَرِيْنَ ۝
وَنَجَّيْنٰهُ وَلُوْطًا اِلَى الْاَرْضِ الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا لِلْعٰلَمِيْنَ ۝ وَ
وَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ ۖ وَيَعْقُوْبَ نَافِلَةً ۖ وَكُلًّا جَعَلْنَا صٰلِحِيْنَ ۝
وَجَعَلْنٰهُمْ اَئِمَّةً يَّهْدُوْنَ بِاَمْرِنَا وَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِمْ فِعْلَ الْخَيْرٰتِ وَ

(नहीं), बल्कि तुम्हारा परवरदिगार आसमानों और ज़मीन का परवरदिगार है, जिसने उन को पैदा किया है और मैं इस (बात) का गवाह (और इसी का क़ायल) हूं। (५६) और ख़ुदा की क़सम ! जब तुम पीठ फेर कर चले जाओगे, तो मैं तुम्हारे बुतों से एक चाल चलूंगा। (५७) फिर उन को तोड़ कर टुकड़े-टुकड़े कर दिया, मगर एक बड़े (बुत) को (न तोड़ा), ताकि वह उस की तरफ़ रुजूअ करें। (५८) कहने लगे कि हमारे माबूदों के साथ यह मामला किस ने किया ? वह तो कोई ज़ालिम है। (५९) लोगों ने कहा कि हमने एक जवान को उन का ज़िक्र करते हुए सुना है, उसे इब्राहीम कहते हैं। (६०) वे बोले कि उसे लोगों के सामने लाओ ताकि वे गवाह रहें। (६१) (जब इब्राहीम आये तो बुतपरस्तों ने) कहा कि भला इब्राहीम ! यह काम हमारे माबूदों के साथ तू ने किया है ? (६२) (इब्राहीम ने) कहा, बल्कि यह उन के इन बड़े (बुत) ने किया (होगा) अगर ये बोलते हों तो इन से पूछ लो। (६३) उन्हों ने अपने दिल में ग़ौर किया, तो आपस में कहने लगे, बेशक तुम ही बे-इंसाफ़ हो। (६४) फिर (शर्मिन्दा हो कर) सर नीचा कर लिया, (इस पर भी इब्राहीम से कहने लगे कि) तुम जानते हो, ये बोलते नहीं। (६५) (इब्राहीम ने) कहा कि फिर तुम ख़ुदा को छोड़ कर क्यों ऐसी चीज़ों को पूजते हो, जो न तुम्हें कुछ फ़ायदा दे सकें और न नुक़्सान पहुंचा सकें ? (६६) अफ़सोस है तुम पर और जिन को तुम ख़ुदा के सिवा पूजते हो उन पर ! क्या तुम अक़्ल नहीं रखते ? (६७) (तब वे) कहने लगे कि अगर तुम्हें (इस से अपने माबूद का बदला लेना और) कुछ करना है तो उस को जला डालो और अपने माबूदों की मदद करो। (६८) हमने हुक्म दिया, ऐ आग ! सर्द हो जा और इब्राहीम पर सलामती (की वजह बन जा)। (६९) उन लोगों ने बुरा तो उन का चाहा था, मगर हमने उन्हीं को नुक़्सान में डाल दिया। (७०) और इब्राहीम और लूत को उस धरती की तरफ़ बचा निकाला, जिस में हमने दुनिया वालों के लिए बरकत रखी थी। (७१) और हमने इब्राहीम को इस्हाक़ अता किए, और उस पर याक़ूब और सब को नेक किया। (७२) और उनको पेशवा बनाया कि हमारे हुक्म से हिदायत करते थे और उन को नेक काम करने और नमाज़ पढ़ने और ज़कात देने का हुक्म भेजा और वे हमारी इबादत

व लूतन् आतैनाहु हुक्मंव्-व अिल्मंव्-व नज्जैनाहु मिनल्-क़र्यतिल्लती कानत् तअ्-मलुल् - ख़बाइ-स ७ इन्नहुम् कानू क़ौ-म सौइन् फ़ासिक़ीन ﻻ (७४) व अद्-ख़ल्नाहु फ़ी रह़्मतिना ७ इन्नहू मिनस्सालिह़ीन ★ (७५) व नूह़न् इज् नादा मिन् क़ब्लु फ़स्-त-जब्ना लहू फ़-नज्जैनाहु व अह्लहू मिनल्-कर्बिल्-अज़ीम ० (७६) व न - सर्नाहु मिनल्-क़ौमिल्लज़ी - न कज़्ज़बू बिआयातिना ७ इन्नहुम् कानू क़ौ-म सौइन् फ़-अग़्रक़्नाहुम् अज्-मअ़ीन (७७) व दावू-द व सुलैमा-न इज् यह़्कुमानि फ़िल्ह़र्सि इज् न-फ़-शत् फ़ीहि ग़ - नमुल् - क़ौमि ० व कुन्ना लिहुक्मिहिम् शाहिदीन ﻻ (७८) फ़-फ़ह्-हम्नाहा सुलैमा-न ० व कुल्लन् आतैना हुक्मंव् - व अिल्मंव् ﻻ व सख़्ख़र्ना म-अ़ दावू-दल्-जिबा-ल युसब्बिह़्-न वत्तै-र ७ व कुन्ना फ़ाअ़िलीन (७९) व अ़ल्लम्नाहु सन्-अ़-त लबूसिल्लकुम् लितुह़्सिनकुम् मिम्-बअ्सिकुम् ० फ़-हल् अन्तुम् शाकिरून (८०) व लिसुलैमानर् - री - ह़ आसि-फ़ - तन् तज्री बिअम्रिही इलल् - अर्ज़िल्लती बारक्ना फ़ीहा ७ व कुन्ना बिकुल्लि शैइन् आ़लिमीन (८१) व मिनश्-शयातीनि मंय्यग़ूसू-न लहू व यअ्-मलू-न अ़-म-लन् दू-न ज़ालि-क ० व कुन्ना लहुम् ह़ाफ़िज़ीन ﻻ (८२) व अय्यू-ब इज् नादा रब्बहू अन्नी मस्सनियज़्ज़ुर्रु व अन्-त अर्ह़मुर् - राहिमीन ० (८३) फ़स्त - जब्ना लहू फ़ - क - शफ़्ना मा बिही मिन् ज़ुर्रिंव्-व आतैनाहु अह्-लहू व मिस्-लहुम् म-अ़हुम् रह़्-म-तम्-मिन् अ़िन्दिना व ज़िक्रा लिल्आ़बिदीन (८४) व इस्माअ़ी - ल व इद्री - स व ज़ल्किफ़्ल ७ कुल्लुम् - मिनस्साबिरीन ० (८५)

وَإِقَامَ الصَّلٰوةِ وَإِيتَاءَ الزَّكٰوةِ وَكَانُوا لَنَا عٰبِدِينَ ۝ وَلُوطًا اٰتَيْنٰهُ
حُكْمًا وَّعِلْمًا وَّنَجَّيْنٰهُ مِنَ الْقَرْيَةِ الَّتِي كَانَتْ تَّعْمَلُ الْخَبٰٓئِثَ
إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمَ سَوْءٍ فٰسِقِينَ ۝ وَأَدْخَلْنٰهُ فِي رَحْمَتِنَا إِنَّهُ
مِنَ الصّٰلِحِينَ ۝ وَنُوحًا إِذْ نَادٰى مِنْ قَبْلُ فَاسْتَجَبْنَا لَهُ
فَنَجَّيْنٰهُ وَأَهْلَهُ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيمِ ۝ وَنَصَرْنٰهُ مِنَ الْقَوْمِ
الَّذِينَ كَذَّبُوا بِاٰيٰتِنَا إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمَ سَوْءٍ فَأَغْرَقْنٰهُمْ أَجْمَعِينَ ۝
وَدَاوٗدَ وَسُلَيْمٰنَ إِذْ يَحْكُمٰنِ فِي الْحَرْثِ إِذْ نَفَشَتْ فِيهِ غَنَمُ
الْقَوْمِ وَكُنَّا لِحُكْمِهِمْ شٰهِدِينَ ۝ فَفَهَّمْنٰهَا سُلَيْمٰنَ وَكُلًّا
اٰتَيْنَا حُكْمًا وَّعِلْمًا وَّسَخَّرْنَا مَعَ دَاوٗدَ الْجِبَالَ يُسَبِّحْنَ وَالطَّيْرَ
وَكُنَّا فٰعِلِينَ ۝ وَعَلَّمْنٰهُ صَنْعَةَ لَبُوسٍ لَّكُمْ لِتُحْصِنَكُمْ مِّنْ
بَأْسِكُمْ فَهَلْ أَنْتُمْ شٰكِرُونَ ۝ وَلِسُلَيْمٰنَ الرِّيحَ عَاصِفَةً
تَجْرِي بِأَمْرِهٖٓ إِلَى الْأَرْضِ الَّتِي بٰرَكْنَا فِيهَا وَكُنَّا بِكُلِّ شَيْءٍ
عٰلِمِينَ ۝ وَمِنَ الشَّيٰطِينِ مَنْ يَّغُوصُونَ لَهٗ وَيَعْمَلُونَ عَمَلًا
دُونَ ذٰلِكَ وَكُنَّا لَهُمْ حٰفِظِينَ ۝ وَأَيُّوبَ إِذْ نَادٰى رَبَّهٗٓ أَنِّي
مَسَّنِيَ الضُّرُّ وَأَنْتَ أَرْحَمُ الرّٰحِمِينَ ۝ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَكَشَفْنَا مَا
بِهٖ مِنْ ضُرٍّ وَّاٰتَيْنٰهُ أَهْلَهٗ وَمِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا
وَذِكْرٰى لِلْعٰبِدِينَ ۝ وَإِسْمٰعِيلَ وَإِدْرِيسَ وَذَا الْكِفْلِ كُلٌّ مِّنَ

किया करते थे। (७३) और लूत (का क़िस्सा याद करो जब उन) को हमने हुक्म (यानी हिक्मत व नुबूवत) और इल्म बख़्शा और उस बस्ती से, जहां के लोग गन्दे काम किया करते थे, बचा निकाला। बेशक वे बुरे और बद-किरदार लोग थे। (७४) और उन्हें अपनी रहमत (के महल) में दाख़िल किया। कुछ शक नहीं कि वे नेक किरदारों में थे। (७५)★

और नूह का (क़िस्सा भी याद करो) जब (इस से) पहले उन्हों ने हमें पुकारा तो हमने उन की दुआ क़ुबूल फ़रमायी और उन को और उन के साथियों को बड़ी घबराहट से निजात दी। (७६) और जो लोग हमारी आयतों को झुठलाते थे, उन पर नुसरत बख़्शी। वे बेशक बुरे लोग थे, सो हमने उन सब को डुबो दिया। (७७) और दाऊद और सुलेमान (का हाल भी सुन लो कि) जब वे एक खेती का मुक़दमा फ़ैसला करने लगे, जिस में कुछ लोगों की बकरियां रात को चर गयीं (और उसे रौंद गयी) थीं और हम उन के फ़ैसले के वक़्त मौजूद थे।[1] (७८) तो हमने फ़ैसला (करने का तरीक़ा) सुलेमान को समझा दिया और हमने दोनों को हुक्म (यानी हिक्मत व नुबूवत) और इल्म बख़्शा था। और हमने पहाड़ों को दाऊद का ताबेअ कर दिया था कि उन के साथ तस्बीह करते थे और जानवरों को भी (ताबेअ) कर दिया था और हम ही (ऐसा) करने वाले थे। (७९) और हमने तुम्हारे लिए उन को एक (तरह का) लिबास बनाना भी सिखा दिया, ताकि तुम को लड़ाई (के नुक़्सान) से बचाए, पस तुम को शुक्रगुज़ार होना चाहिए। (८०) और हमने तेज़ हवा सुलेमान के (फ़रमान के) ताबेअ कर दी थी, जो उन के हुक्म से उस मुल्क में चलती थी, जिस में हमने बरकत दी थी (यानी शाम) और हम हर चीज़ से ख़बरदार हैं। (८१) और देवों (की जमाअत को भी उन के ताबेअ कर दिया था कि उन) में से कुछ उन के लिए ग़ोते मारते थे और इस के सिवा और काम भी करते थे और हम उन के निगहबान थे। (८२) और अय्यूब (को याद करो,) जब उन्हों ने अपने परवरदिगार से दुआ की कि मुझे तक्लीफ़ हो रही है और तू सब से बढ़ कर रहम करने वाला है। (८३) तो हमने दुआ क़ुबूल कर ली और जो उन को तक्लीफ़ थी, वह दूर कर दी और उन को बाल-बच्चे भी अता फ़रमाये और अपनी मेहरबानी से उन के साथ उतने ही और (बख़्शे) और इबादत करने वालों के लिए (यह) नसीहत है। (८४) और इस्माईल और इद्रीस ज़ुलकिफ़्ल (को भी याद करो), ये सब सब्र करने वाले थे। (८५)

---

१. हज़रत इब्ने अब्बास से रिवायत है कि हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम का यह फ़ैसला कि बकरियां खेती वालों को दिलवा दीं, हज़रत सुलेमान अलै० को चरवाहों से यह हाल मालूम हुआ तो उन्हों ने कहा कि अगर मैं तुम्हारा मुक़दमा फ़ैसला करता तो कुछ और फ़ैसला करता। यह ख़बर हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम को हुई तो उन्हों ने हज़रत सुलेमान को बुला कर कहा कि तुम इस मुक़दमे का क्या फ़ैसला करते हो। उन्हों से कहा कि मेरा फ़ैसला यह है कि खेती वालों को बकरियां दिलायी जाएं कि उन के दूध वग़ैरह से फ़ायदा उठाएं और बकरियों के मालिक खेती में बीज डालें और खेती करें। जब खेती इस हालत में हो जाए, जिस हालत में पहले थी तो उस को खेती वाले ले लें और बकरियां उन के मालिकों को वापस कर दी जाएं।

व अद - ख़ल्नाहुम् फ़ी रह़्मतिना ط इन्नहुम् मिनस् - सालिहीन (८६) व ज़न्नूनि इज़् ज़-ह-ब मुग़ाज़िबन् फ़-ज़न्-न अल्लन् नक़्दि-र अलैहि फ़नादा फ़िज़्ज़ुलुमाति अल् - ला इला - ह इल्ला अन्-त सुब्हा-न-क ﷺ इन्नी कुन्तु मिनज़्ज़ालिमीन (८७) फ़स्-त - जब्ना लहू ۙ व नज्जैनाहु मिनल्ग़म्मि ط

व कज़ालि-क नुन्जिल्-मुअ्मिनीन (८८) व ज़-करिय्या इज़् नादा रब्बहू रब्बि ला त-ज़र्नी फ़र्-दंव्-व अन्-त ख़ैरुल्-वारिसीन ﷺ (८९) फ़स्-त-जब्ना लहू ۙ व व-हब्ना लहू यह़्या व अस् - लह़्ना लहू ज़ौजहू ط इन्नहुम् कानू युसारिअू-न फ़िल्ख़ैराति व यद्अूनना र-ग़-बंव्-व र-ह-बन् ط व कानू लना ख़ाशिअीन (९०) वल्लती अह़्-स-नत् फ़र्जहा फ़-न-फ़ख़्ना फ़ीहा मिर्रूहिना व ज-अल्नाहा वब्-नहा आयतल्-लिल्आलमीन (९१) इन - न हाज़िही उम्मतुकुम् उम्मतंव्वाहि-द - तंव् ﷺ व अ-न रब्बुकुम् फ़अ्-बुदून (९२) व त-क़त्तअू अम्-रहुम् बैनहुम् ط कुल्लुन् इलैना राजिअून ★ (९३) फ़ - मंय्यअ् - मल् मिनस्-सालिहाति व हु-व मुअ्मिनुन् फ़ला कुफ़्रा-न लिसअ्-यिही ج व इन्ना लहू कातिबून (९४) व ह़रामुन् अला क़र-यतिन् अह्-लक्नाहा अन्नहुम् ला यर्जिअून (९५) हत्ता इज़ा फ़ुतिहत् यअ्जूजु व मअ्जूजु व हुम् मिन् कुल्लि ह़-दबिंय्यन्सिलून (९६) वक़्त-र-बल्-वअ्-दुल्-हक़्क़ु फ़-इज़ा हि - य शाख़ि-सतुन् अब्सारुल्लज़ी-न क-फ़रू ط यावैलना क़द् कुन्ना फ़ी ग़फ़-लतिम्-मिन् हाज़ा बल् कुन्ना ज़ालिमीन (९७) इन्नकुम् व मा तअ्-बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि ह़-सबु जहन्न-म ط अन्तुम् लहा वारिदून (९८) लौ का-न हाउलाइ आलि-ह - तम् - मा व - रदूहा ط व कुल्लुन् फ़ीहा ख़ालिदून (९९) लहुम् फ़ीहा ज़फ़ीरुंव्-व हुम् फ़ीहा ला यस् - मअून (१००)

الصّبرين ۝ وادخلنهم في رحمتنا انهم من الصلحين ۝ و
ذا النون اذ ذهب مغاضبا فظن ان لن نقدر عليه فنادى في
الظلمت ان لا اله الا انت سبحنك اني كنت من الظلمين ۝
فاستجبنا له ونجينه من الغم وكذلك ننجي المؤمنين ۝ و
زكريا اذ نادى ربه رب لا تذرني فردا وانت خير الورثين ۝
فاستجبنا له ووهبنا له يحيى واصلحنا له زوجه انهم كانوا
يسرعون في الخيرت ويدعوننا رغبا ورهبا وكانوا لنا خشعين ۝
والتي احصنت فرجها فنفخنا فيها من روحنا وجعلنها وابنها
اية للعلمين ۝ ان هذه امتكم امة واحدة وانا ربكم فاعبدون ۝
وتقطعوا امرهم بينهم كل الينا رجعون ۝ فمن يعمل من
الصلحت وهو مؤمن فلا كفران لسعيه وانا له كتبون ۝ و
حرم على قرية اهلكنها انهم لا يرجعون ۝ حتى اذا فتحت
يأجوج ومأجوج وهم من كل حدب ينسلون ۝ واقترب
الوعد الحق فاذا هي شاخصة ابصار الذين كفروا يويلنا قد
كنا في غفلة من هذا بل كنا ظلمين ۝ انكم وما تعبدون
من دون الله حصب جهنم انتم لها وردون ۝ لو كان
هؤلاء الهة ما وردوها وكل فيها خلدون ۝ لهم فيها زفير

★रु. ६/६ आ १८

और हमने उन को अपनी रहमत में दाखिल किया। बेशक वह नेक थे। (८६) और जुन्नून (को याद करो), जब वह (अपनी क़ौम से नाराज हो कर) गुस्से की हालत में चल दिए और ख्याल कि हम उन पर क़ाबू नहीं पा सकेंगे, आखिर अंधेरे में (खुदा को) पुकारने लगे कि "तेरे सिवा कोई माबूद नहीं। तू पाक है" (और) बेशक मैं क़ुसूरवार हूं"। (८७) तो हमने उन की दुआ क़ुबूल कर ली और उन को ग़म से निजात बख्शी। और ईमान वालों को हम इसी तरह निजात दिया करते हैं। (८८) और ज़करीया (को याद करो), जब उन्हों ने अपने परवरदिगार को पुकारा कि परवरदिगार! मुझे अकेला न छोड़ और तू सब से बेहतर वारिस है। (८९) तो हमने उन की पुकार सुन ली और उनको यह्या बख्शे और उन की बीवी को औलाद के क़ाबिल बना दिया। ये लोग लपक-लपक कर नेकियां करते और हमें उम्मीद और डर से पुकारते और हमारे आगे आजिज़ी किया करते थे। (९०) और उन (मरयम) को (भी याद करो), जिन्हों ने अपनी पाकदामनी को बचाए रखा, तो हमने उन में अपनी रूह फूंक दी और उन को और उन के बेटे को दुनिया वालों के लिए निशानी बना दिया। (९१) यह तुम्हारी जमाअत एक ही जमाअत है, और मैं तुम्हारा परवरदिगार हूं, तो मेरी ही इबादत किया करो। (९२) और ये लोग अपने मामले में आपस में बट गये (मगर) सब हमारी तरफ़ रुजूअ करने वाले हैं। (९३)★

जो नेक काम करेगा और मोमिन भी होगा, तो उस की कोशिश बेकार न जाएगी और हम उस के लिए (आमाल का सवाब) लिख रहे हैं। (९४) और जिस बस्ती (वालों) को हमने हलाक कर दिया, महाल है कि (रुजूअ करें) वह रुजूअ नहीं करेंगे।[1] (९५) यहां तक कि याजूज और माजूज खोल दिए जाएं और वे हर बुलंदी से दौड़ रहे हों। (९६) और (क़ियामत का) सच्चा वायदा क़रीब आ जाए, तो यकायक काफ़िरों की आंखें खुली की खुली रह जाएं (और कहने लगें कि) हाय शामत हम इस (हाल) से ग़फ़लत में रहे, बल्कि हम (अपने हक़ में) ज़ालिम थे। (९७) (काफ़िरो! उस दिन) तुम और जिन की तुम खुदा के सिवा इबादत करते हो, दोज़ख का ईंधन होंगे (और) तुम (सब) उस में दाखिल हो कर रहोगे। (९८) अगर ये लोग (हक़ीक़त में) माबूद होते तो उस में दाखिल न होते, सब उस में हमेशा (जलते) रहेंगे। (९९) वहां उन को चिल्लाना होगा और उस में (कुछ) न सुन सकेंगे। (१००) जिन लोगों के लिए हमारी तरफ़ से पहले भलाई मुक़र्रर हो चुकी है, वे इस से दूर रखे जाएंगे। (१०१) (यहां तक कि) उस

---

१. रुजूअ न करने के दो मानी हो सकते हैं—एक तो यह कि क़ियामत से पहले दुनिया की तरफ़ रुजूअ न करेंगे, दूसरे यह कि खुदा की तरफ़ रुजूअ यानी तौबा न करेंगे।

★रु. ६/६ आ १८

इन्नल्लज़ी-न स-ब-क़त् लहुम् मिन्नल्-हुस्ना ॥ उलाइ-क अन्हा मुब् - अदून॥ (१०१) ला यस् - मअ़ू-न हसीसहा ج व हुम् फ़ी मश्-त-हत् अन्फ़ुसुहुम् ख़ालिदून ج (१०२) ला यह्ज़ुनुहुमुल्-फ़-ज़्-अुल्-अक्बरु व त-त-लक़्क़ाहुमुल्-मलाइकतु ط हाज़ा यौमुकुमुल्लज़ी कुन्तुम् तू-अ़दून (१०३) यौ-म नत्विस्-समा-अ क-तय्यिस् - सिजिल्लि लिल्कुतुबि ط कमा ब-दअ्-ना अव्व-ल ख़ल्क़िन् नुअ़ीदुहू ط वअ्-दन् अ़लैना ط इन्ना कुन्ना फ़ाअ़िलीन (१०४) व ल-क़द् क-तब्ना फ़िज़्ज़बूरि मिम्-बअ्-दिज़्ज़िक्रि अन्नल्अर्-ज़ यरिसुहा अ़िबादियस्-सालिहून (१०५) इन् - न फ़ी हाज़ा ल-ब-लाग़ल्-लिक़ौमिन् आबिदीन ط (१०६) व मा अर्सल्ना-क इल्ला रह्-म-तल्-लिल्आलमीन (१०७) क़ुल् इन्नमा यूहा इलय्-य अन्नमा इलाहुकुम् इलाहुंव्वाहिदुन् ج फ़-हल् अन्तुम् मुस्लिमून (१०८) फ़-इन् त-वल्लौ फ़क़ुल् आज़न्तुकुम् अ़ला सवाइन् ط व इन् अद्री अ-क़रीबुन् अम् बअ़ीदुम्मा तू-अ़दून (१०९) इन्नहू यअ्-लमुल्-जह्-र मिनल्क़ौलि व यअ्-लमु मा तक्-तुमून (११०) व इन् अद्री ल-अ़ल्लहू फ़ित्-नतुल् - लकुम् व मताअ़ुन् इला हीन (१११) क़ा-ल रब्बिह्कुम् बिल्हक़्क़ि ط व रब्बुनर्-रह्मानुल् - मुस्तआ़नु अ़ला मा तसिफ़ून★●(११२)

وَهُمْ فِيهَا لَا يَسْمَعُونَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ سَبَقَتْ لَهُم مِّنَّا الْحُسْنَىٰ
أُولَٰئِكَ عَنْهَا مُبْعَدُونَ ۝ لَا يَسْمَعُونَ حَسِيسَهَا ۖ وَهُمْ فِي مَا
اشْتَهَتْ أَنفُسُهُمْ خَالِدُونَ ۝ لَا يَحْزُنُهُمُ الْفَزَعُ الْأَكْبَرُ وَتَتَلَقَّاهُمُ
الْمَلَائِكَةُ هَٰذَا يَوْمُكُمُ الَّذِي كُنتُمْ تُوعَدُونَ ۝ يَوْمَ نَطْوِي
السَّمَاءَ كَطَيِّ السِّجِلِّ لِلْكُتُبِ ۚ كَمَا بَدَأْنَا أَوَّلَ خَلْقٍ نُّعِيدُهُ ۚ وَعْدًا
عَلَيْنَا ۚ إِنَّا كُنَّا فَاعِلِينَ ۝ وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِي الزَّبُورِ مِن بَعْدِ الذِّكْرِ
أَنَّ الْأَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِيَ الصَّالِحُونَ ۝ إِنَّ فِي هَٰذَا لَبَلَاغًا لِّقَوْمٍ
عَابِدِينَ ۝ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا رَحْمَةً لِّلْعَالَمِينَ ۝ قُلْ إِنَّمَا يُوحَىٰ
إِلَيَّ أَنَّمَا إِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ ۖ فَهَلْ أَنتُم مُّسْلِمُونَ ۝ فَإِن تَوَلَّوْا
فَقُلْ آذَنتُكُمْ عَلَىٰ سَوَاءٍ ۖ وَإِنْ أَدْرِي أَقَرِيبٌ أَم بَعِيدٌ مَّا
تُوعَدُونَ ۝ إِنَّهُ يَعْلَمُ الْجَهْرَ مِنَ الْقَوْلِ وَيَعْلَمُ مَا تَكْتُمُونَ ۝
وَإِنْ أَدْرِي لَعَلَّهُ فِتْنَةٌ لَّكُمْ وَمَتَاعٌ إِلَىٰ حِينٍ ۝ قَالَ رَبِّ احْكُم
بِالْحَقِّ ۗ وَرَبُّنَا الرَّحْمَٰنُ الْمُسْتَعَانُ عَلَىٰ مَا تَصِفُونَ ۝

سُورَةُ الْحَجِّ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ ثَمَانٍ وَسَبْعُونَ آيَةً وَعَشْرُ رُكُوعَاتٍ
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمْ ۚ إِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَيْءٌ عَظِيمٌ ۝
يَوْمَ تَرَوْنَهَا تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ عَمَّا أَرْضَعَتْ وَتَضَعُ كُلُّ

२२ सूरतुल्-हज्जि १०३

(मदनी) इस सूरः में अरबी के ५४३२ अक्षर, १२८३ शब्द, ७८ आयतें और १० रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ●

या अय्युहन्नासुत्तक़ू रब्बकुम् ج इन्-न ज़ल्-ज़-ल-तस् - साअ़ति शैउन् अ़ज़ीम (१) यौ-म तरौनहा तज़्हलु कुल्लु मुर्ज़ि-अ़तिन् अ़म्मा अर्ज़-अ़त् व त-ज़-अ़ु कुल्लु ज़ाति-हम्लिन् हम् - लहा व त - रन्ना - स सुकारा व मा हुम् बिसुकारा व लाकिन् - न अ़ज़ाबल्लाहि शदीद (२)

की आवाज़ भी तो नहीं सुनेंगे और जो कुछ उन का जी चाहेगा उस में (यानी हर तरह के ऐश और मज़े में) हमेशा रहेंगे। (१०२) उन को (इस दिन का) बड़ा भारी ख़ौफ़ ग़मगीन नहीं करेगा और फ़रिश्ते उन को लेने आएंगे (और कहेंगे कि) यही वह दिन है, जिस का तुम से वायदा किया जाता था। (१०३) जिस दिन हम आसमान को इस तरह लपेट लेंगे, जैसे ख़तों का तूमार लपेट लेते हैं, जिस तरह हमने (काइनात) को पहले पैदा किया था, उसी तरह दोबारा पैदा कर देंगे। (यह) वायदा (है जिस का पूरा करना) ज़रूरी है। हम ऐसा ज़रूर करने वाले हैं। (१०४) और हमने नसीहत (की किताब यानी तौरात) के बाद ज़बूर में लिख दिया था कि मेरे नेक बन्दे मुल्क के वारिस होंगे, (१०५) इबादत करने वाले लोगों के लिए इस में (ख़ुदा के हुक्मों की) तब्लीग़ है। (१०६) और (ऐ मुहम्मद!) हमने तुम को तमाम दुनिया के लिए रहमत बना कर भेजा है। (१०७) कह दो कि मुझ पर (ख़ुदा की तरफ़ से) यह वह्य आती है कि तुम सब का माबूद एक ख़ुदा है, तो तुम को चाहिए कि फ़रमांबरदार हो जाओ। (१०८) अगर ये लोग मुंह फेरें तो कह दो कि मैं ने तुम सब को एक जैसे (ख़ुदा के हुक्मों से) आगाह कर दिया है और मुझ को मालूम नहीं कि जिस चीज़ का तुम से वायदा किया जाता है, वह (बहुत) जल्द (आने वाली) है। (उस का वक़्त) दूर है। (१०९) जो बात पुकार कर की जाए, वह उसे भी जानता है और जो तुम छिपा कर करते हो, उसे भी जानता है। (११०) और मैं नहीं जानता शायद वह तुम्हारे लिए आज़माइश हो और एक मुद्दत तक (तुम उस से) फ़ायदा (उठाते रहो)। (१११) (पैग़म्बर ने) कहा कि ऐ मेरे परवरदिगार! हक़ के साथ फ़ैसला कर दे और हमारा परवरदिगार बड़ा मेहरबान है, उसी से उन बातों में जो तुम बयान करने हो, मदद मांगी जाती है। (११२)★●

२२ सूरः हज्ज १०३

सूरः हज्ज मदनी है और इस में ७८ आयतें और दस रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

लोगो! अपने परवरदिगार से डरो कि क़ियामत का ज़लज़ला एक बड़ा हादिसा है। (१) (ऐ मुख़ातब!) जिस दिन तू उस को देखेगा, (उस दिन यह हाल होगा कि) तमाम दूध पिलाने वाली औरतें अपने बच्चों को भूल जाएंगी और तमाम हमल वालियों के हमल गिर पड़ेंगे और लोग तुझ को मतवाले नज़र आएंगे, मगर वे मतवाले नहीं होंगे, बल्कि (अज़ाब देख कर मदहोश हो रहे

★रु. ७/७ आ १६ ●नि. १/२

व मिनन्नासि मंय्युजादिलु फ़िल्लाहि बिग़ैरि अिल्मिंव-व यत्तबिअ़ु कुल-ल शैतानिम्-मरीद ॥ (३) कुति-ब अलैहि अन्नहू मन् त-वल्लाहु फ़-अन्नहू युज़िल्लुहू व यह्दीहि इला अ़ज़ाबिस्सअ़ीर (४) या अय्युहन्नासु इन् कुन्तुम् फ़ी रैबिम्-मिनल्बअ्-सि फ़-इन्ना ख़-लक़्नाकुम् मिन् तुराबिन् सुम्-म मिन् नुत्-फ़तिन् सुम्-म मिन् अ-ल-क़तिन् सुम्-म मिम्-मुज़्-ग़तिम्-मुख़ल्लक़तिंव्-व ग़ैरि मुख़ल्लक़तिल्-लिनुबय्यि-न लकुम् ط व नुक़िर्रु फ़िल्अर्हामि मा नशाउ इला अ-जलिम्-मुसम्मन् सुम्-म नुख़्रिजुकुम् तिफ़्-लन् सुम्-म लितब्लुग़ू अशुद्दकुम् ج व मिन्कुम् मंय्यु-त-वफ़्फ़ा व मिन्कुम् मंय्युरद्दु इला अर्ज़लिल्-अ़ुमुरि लिकैला यअ्-ल-म मिम्बअ्-दि अिल्मिन् शैअन् ط व त-रल्अर्-ज़ हामि-द-तन् फ़इज़ा अन-ज़ल्ना अलैहल्-मा-अह्तज़्ज़त् व र-बत् व अम्ब-तत् मिन् कुल्लि ज़ौजिम्-बहीज (५) ज़ालि-क बिअन्नल्ला-ह हुवल्-हक़्क़ु व अन्नहू युह्यिल्-मौता व अन्नहू अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर ॥ (६) व अन्नस्सा-अ-त आतियतुल्ला रै-ब फ़ीहा ॥ व अन्नल्ला-ह यब्अ़सु मन् फ़िल्क़ुबूर (७) व मिनन्नासि मंय्युजादिलु फ़िल्लाहि बिग़ैरि अिल्मिंव्-व ला हुदंव्-व ला किताबिम्-मुनीर ॥ (८) सानि-य अित्फ़िही लियुज़िल्-ल अन् सबीलिल्लाहि ط लहू फ़िद्दुन्या ख़िज़्युंव व नुज़ीक़ुहू यौमल्-क़ियामति अ़ज़ाबल्-हरीक़ (९) ज़ालि-क बिमा क़द्-द-मत् यदा-क व अन्नल्ला-ह लै-स बिज़ल्लामिल्-लिल्-अ़बीद ★(१०)

ذات حمل حملها وترى الناس سكرى وما هم بسكرى و
لكن عذاب الله شديد ۝ ومن الناس من يجادل في الله
بغير علم ويتبع كل شيطن مريد ۝ كتب عليه أنه من
تولاه فأنه يضله ويهديه إلى عذاب السعير ۝ يأيها
الناس إن كنتم في ريب من البعث فإنا خلقنكم من تراب
ثم من نطفة ثم من علقة ثم من مضغة مخلقة وغير
مخلقة لنبين لكم ونقر في الأرحام ما نشاء إلى أجل مسمى
ثم نخرجكم طفلا ثم لتبلغوا أشدكم ومنكم من يتوفى و
منكم من يرد إلى أرذل العمر لكيلا يعلم من بعد علم شيئا
وترى الأرض هامدة فإذا أنزلنا عليها الماء اهتزت وربت
وأنبتت من كل زوج بهيج ۝ ذلك بأن الله هو الحق وأنه
يحي الموتى وأنه على كل شيء قدير ۝ وأن الساعة آتية
لا ريب فيها وأن الله يبعث من في القبور ۝ ومن الناس
من يجادل في الله بغير علم ولا هدى ولا كتب منير ۝ ثاني
عطفه ليضل عن سبيل الله له في الدنيا خزي ونذيقه
يوم القيمة عذاب الحريق ۝ ذلك بما قدمت يداك وأن الله
ليس بظلام للعبيد ۝ ومن الناس من يعبد الله على حرف

★रु. १/८ आ १०

होंगे)। बेशक ख़ुदा का अज़ाब सख़्त है। (२) और कुछ लोग ऐसे हैं जो ख़ुदा (की शान) में इल्म (और सूझ-बूझ) के बग़ैर झगड़ते और हर शैतान-सरकश की पैरवी करते हैं। (३) जिस के बारे में लिख दिया गया है कि जो उसे दोस्त रखेगा तो वह उस को गुमराह कर देगा और दोज़ख़ के अज़ाब का रास्ता दिखाएगा। (४) लोगो! अगर तुम को (मरने के बाद) जी उठने में कुछ शक हो तो हमने तुम को (पहली बार भी तो) पैदा किया था, (यानी शुरू में) मिट्टी से, फिर उस से नुत्फ़ा बना कर, फिर उस से ख़ून का लोथड़ा बना कर, फिर उससे बोटी बना कर, जिसकी बनावट पूरी भी होती है और अधूरी भी, ताकि तुम पर अपना 'पैदा करने वाला' होना ज़ाहिर कर दे और हम जिस को चाहते हैं एक मुक़र्रर मीआद तक पेट में ठहराए रखते हैं, फिर तुम को बच्चा बनाकर निकालते हैं, फिर तुम जवानी को पहुंचते हो और कुछ (बुढ़ापे से पहले) मर जाते हैं और कुछ (बूढ़े खूसट हो जाते और बुढ़ापे की) बहुत ख़राब उम्र की तरफ़ लौटाए जाते हैं कि (बहुत कुछ) जानने के बाद बिल्कुल बे-इल्म हो जाते हैं और (ऐ देखने वाले!) तू देखता है (कि एक वक़्त में) ज़मीन सूखी (पड़ी होती है), फिर जब हम उस पर मेंह बरसाते हैं तो वह हरी-भरी हो जाती है और उभरने लगती है और तरह-तरह की रौनक़दार चीज़ें उगाती है। (५) इन क़ुदरतों से ज़ाहिर है कि ख़ुदा ही (सब कुछ क़ुदरत रखने वाला है, जो) बरहक़ है और यह कि वह मुर्दों को ज़िंदा कर देता है और यह कि वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। (६) और यह कि क़ियामत आने वाली है। इस में कुछ शक नहीं और यह कि ख़ुदा सब लोगों को, जो क़ब्रों में हैं, जिला उठाएगा। (७) और लोगों में कोई ऐसा भी है जो ख़ुदा (की शान) में बग़ैर इल्म (व दानिश) के और बग़ैर हिदायत के और बग़ैर रोशन किताब के झगड़ता है। (८) (और घमंड से) गरदन मोड़ लेता (है) ताकि (लोगों को) ख़ुदा के रास्ते से गुमराह कर दे, उस के लिए दुनिया में ज़िल्लत है और क़ियामत के दिन हम उसे जलती (आग के) अज़ाब का मज़ा चखाएंगे। (९)

व मिनन्नासि मंय्यअ्-बुदुल्ला-ह अ़ला हर्फ़िन् ज फ़-इन् असाबहू ख़ैरु-निऩ्म-अन्-न बिही ज व इन् असाबत्हु फ़ित्-नतु-निन्-क-ल-ब अ़ला वज्हिही ख़सिरद्दुन्या वल्आख़ि-र-त ط ज़ालि-क हुवल्ख़ुस्रानुल्-मुबीन (११) यद्अू मिन् दूनिल्लाहि मा ला यज़ुर्रुहू व मा ला यन्फ़अुहू ط ज़ालि-क हुवज़्ज़लालुल्-बअ़ीद ج (१२) यद्अू ल-मन् ज़र्रुहू अक़्रबु मिन् नफ़्अिही ط लबिअ्सल्-मौला व लबिअ्सल्-अ़शीर (१३) इन्नल्ला-ह युद्ख़िलुल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ط इन्नल्ला-ह यफ़्अलु मा युरीद (१४) मन् का-न यज़ुन्नु अल्लंय्यन्सुरहुल्लाहु फ़िद्दुन्या वल्आख़िरति फ़ल्यम्दुद् बि-स-बबिन् इलस्समाइ सुम्मल्-यक़्तअ् फ़ल्-यन्ज़ुर् हल् युज़्हिबन्-न कैदुहू मा यग़ीज़ (१५) व क-ज़ालि-क अन्ज़ल्नाहु आयातिम्-बय्यिनातिंव् ل‍ا- व अन्नल्ला-ह यह्दी मंय्युरीद (१६) इन्नल्लज़ी-न आमनू वल्लज़ी-न हादू वस्साबिई-न वन्नसारा वल्मजू-स वल्लज़ी-न अश्रकू صلے इन्नल्ला-ह यफ़्सिलु बैनहुम् यौमल्क़ियामति ط इन्नल्ला-ह अ़ला कुल्लि शैइन् शहीद (१७) अ-लम् त-र अन्नल्ला-ह यस्जुदु लहू मन् फ़िस्समावाति व मन् फ़िल्अर्ज़ि वश्शम्सु वल्-क़-मरु वन्नुजूमु वल्जिबालु वश्श-जरु वद्दवाब्बु व कसीरुम्-मिनन्नासि ط व कसीरुन् हक़्-क़ अ़लैहिल्-अ़ज़ाबु ط व मंय्युहिनिल्लाहु फ़मा लहू मिम्-मुक्रिमिन् ط इन्नल्ला-ह यफ़्अलु मा यशाउ ط □ (१८) हाज़ानि ख़स्-मानिख़्-त-समू फ़ी रब्बिहिम् ز फ़ल्लज़ी-न क-फ़रू क़ुत्तिअ़त् लहुम् सियाबुम्-मिन् नारिन् ط युसब्बु मिन् फ़ौक़ि रुऊसिहिमुल्-हमीम ج (१९)

فإن أصابه خير اطمأن به وإن أصابته فتنة انقلب على
وجهه خسر الدنيا والآخرة ذلك هو الخسران المبين ۝
يدعوا من دون الله ما لا يضره وما لا ينفعه ذلك هو الضلل
البعيد ۝ يدعوا لمن ضره أقرب من نفعه لبئس المولى
ولبئس العشير ۝ إن الله يدخل الذين آمنوا وعملوا
الصلحت جنت تجري من تحتها الأنهر إن الله يفعل ما
يريد ۝ من كان يظن أن لن ينصره الله في الدنيا والآخرة
فليمدد بسبب إلى السماء ثم ليقطع فلينظر هل يذهبن
كيده ما يغيظ ۝ وكذلك أنزلنه آيت بينت وأن الله
يهدي من يريد ۝ إن الذين آمنوا والذين هادوا والصبئين
والنصرى والمجوس والذين أشركوا إن الله يفصل بينهم
يوم القيمة إن الله على كل شيء شهيد ۝ ألم تر أن الله
يسجد له من في السموت ومن في الأرض والشمس والقمر
والنجوم والجبال والشجر والدواب وكثير من الناس وكثير
حق عليه العذاب ومن يهن الله فما له من مكرم إن الله
يفعل ما يشاء ۩ هذان خصمان اختصموا في ربهم فالذين
كفروا قطعت لهم ثياب من نار يصب من فوق رءوسهم

□ सज्दः ६

(ऐ सरकश !) यह उस (कुफ़्र) की सज़ा है, जो तेरे हाथों ने आगे भेजा है और ख़ुदा अपने बन्दों पर ज़ुल्म करने वाला नहीं★ (१०) और लोगों में कोई ऐसा भी है जो किनारे पर (खड़ा हो कर) ख़ुदा की इबादत करता है। अगर उस को कोई (दुनिया का) फ़ायदा पहुंचे तो उस की वजह से मुतमइन हो जाए और अगर कोई आफ़त आ पड़े तो मुह के बल लौट जाए (यानी फिर काफ़िर हो जाए)। उस ने दुनिया में भी नुक़सान उठाया और आख़िरत में भी यही तो खुला नुक़सान है। (११) यह ख़ुदा के सिवा ऐसी चीज़ को पुकारता है, जो न उसे नुक़्सान पहुंचाए और न फ़ायदा दे सके, यही तो परले दर्जे की गुमराही है। (१२) (बल्कि) ऐसे शख़्स को पुकारता है, जिस का नुक़्सान फ़ायदे से ज़्यादा क़रीब है, ऐसा दोस्त भी बुरा और ऐसा साथी भी बुरा। (१३) जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, ख़ुदा उन को बहिश्तों में दाखिल करेगा, जिन के नीचे नहरें चल रही हैं। कुछ शक नहीं कि ख़ुदा जो चाहता है, करता है। (१४) जो आदमी यह गुमान करता हो कि ख़ुदा उस को दुनिया और आख़िरत में मदद नहीं देगा, तो उस को चाहिए कि ऊपर की तरफ़ (यानी अपने घर की छत में) एक रस्सी बांधे फिर (उस से अपना) गला घोंट ले, फिर देखे कि क्या यह तद्बीर उस के गुस्से को दूर कर देती है। (१५) और इसी तरह हमने इस क़ुरआन को उतारा है (जिस की तमाम) बातें खुली हुई (हैं) और यह (याद रखो) कि ख़ुदा जिस को चाहता है, हिदायत देता है। (१६) जो लोग मोमिन (यानी मुसलमान) हैं और जो यहूदी हैं और सितारापरस्त और ईसाई और मजूसी और ख़ुदा के मुश्रिक, इन (सब) में क़ियामत के दिन फ़ैसला कर देगा। बेशक ख़ुदा हर चीज़ से बा-ख़बर है। (१७) क्या तुम ने नहीं देखा कि जो (मख़्लूक़) आसमानों में है और जो ज़मीन में है और सूरज और चांद और सितारे और पहाड़ और पेड़ और चारपाए और बहुत से इंसान ख़ुदा को सज्दा करते हैं और बहुत से ऐसे हैं, जिन पर अज़ाब साबित हो चुका है और जिस आदमी को ख़ुदा ज़लील करे, उस को कोई इज़्ज़त देने वाला नहीं। बेशक ख़ुदा जो चाहता है, करता है□(१८) ये दो (फ़रीक़) एक दूसरे के दुश्मन अपने परवरदिगार (के बारे) में झगड़ते हैं, तो जो काफ़िर हैं उन के लिए आग के कपड़े काटे जाएंगे (और) उन के सरों पर जलता हुआ पानी डाला जाएगा। (१९) इस से उन के पेट के

★रु. १/८ आ १० □ सजूदः ६

युस्हरु बिही मा फ़ी बुतूनिहिम् वल्-जुलूद ● (२०) व लहुम् मक़ामिअु मिन् हदीद (२१) कुल्लमा अरादू अंय्यख़्रुजू मिन्हा मिन् ग़म्मिन् उअीदू फ़िहा व ज़ूक़ू अज़ाबल्-हरीक़ ✱ (२२) इन्नल्ला-ह युद्खिलुल्लज़ी - न आमनू व अमिलुस्-सालिहाति जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल् - अन्हारु युहल्लौ-न फ़ीहा मिन् असावि-र मिन् ज़-हबिंव - व लुअ्लुअन् ● व लिबासुहुम् फ़ीहा हरीर (२३) व हुदू इलत्तय्यिबि मिनल्क़ौलि व हुदू इला सिरातिल् - हमीद (२४) इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू व य-सुद्दू-न अन् सबीलिल्लाहि वल्मस-जिदिल्-हरामिल्लज़ी ज-अल्नाहु लिन्नासि सवा-अ-निल्-आकिफ़ु फ़ीहि वल्बादि ● व मंय्युरिद् फ़ीहि बि-इल्हादिम् - बिज़ुल्मिन् नुज़िक़्हु मिन् अज़ाबिन् अलीम ✱ (२५) व इज़् बव्वअ्ना लिइब्राही - म मकानल्-बैति अल्ला तुश्रिक् बी शैअंव - व तह्हिर् बैति - य लित्ताइफ़ी - न वल्क़ा-इमी-न वर्रुक्कअिस्सुजूद (२६) व अज़्ज़िन् फ़िन्नासि बिल्हज्जि यअ्-तू-क रिजालंव-व अला कुल्लि ज़ामिरिंय्यअ्ती-न मिन् कुल्लि फ़ज्जिन् अमीक़िल्- (२७) लियश्हदू मनाफ़ि - अ लहुम् व यज़्कुरुस्मल्लाहि फ़ी अय्यामिम्-मअ्-लूमातिन् अला मा र-ज़-क़हुम् मिम् - बहीमतिल् - अन्आमि फ़कुलू मिन्हा व अत्अिमुल् - बाइसल् - फ़क़ीर (२८) सुम्मल् - यक़्ज़ू त-फ़-सहुम् वल्यूफ़ू नुज़ूरहुम् वल्यत्तव्वफ़ू बिल्बैतिल्-अतीक़ (२९) ज़ालि-क व मंय्युअ़ज़्ज़िम् हुरुमातिल्लाहि फ़हु - व ख़ैरुल्लहू अिन् - द रब्बिही ● व उहिल्लत् लकुमुल् - अन्आमु इल्ला मा युत्ला अलैकुम् फ़ज्-तनिबुर्रिज् - स मिनल् - औसानि वज्-तनिबू क़ौलज़्ज़ूर (३०)

الحميم ﴿١٩﴾ يصهر به ما في بطونهم والجلود ﴿٢٠﴾ ولهم مقامع
من حديد ﴿٢١﴾ كلما أرادوا أن يخرجوا منها من غم أعيدوا
فيها وذوقوا عذاب الحريق ﴿٢٢﴾ إن الله يدخل الذين آمنوا
وعملوا الصالحات جنات تجري من تحتها الأنهار يحلون فيها
من أساور من ذهب ولؤلؤا ولباسهم فيها حرير ﴿٢٣﴾ وهدوا
إلى الطيب من القول وهدوا إلى صراط الحميد ﴿٢٤﴾ إن الذين
كفروا ويصدون عن سبيل الله والمسجد الحرام الذي جعلناه
للناس سواء العاكف فيه والباد ومن يرد فيه بإلحاد بظلم
نذقه من عذاب أليم ﴿٢٥﴾ وإذ بوأنا لإبراهيم مكان البيت
أن لا تشرك بي شيئا وطهر بيتي للطائفين والقائمين والركع
السجود ﴿٢٦﴾ وأذن في الناس بالحج يأتوك رجالا وعلى كل
ضامر يأتين من كل فج عميق ﴿٢٧﴾ ليشهدوا منافع لهم و
يذكروا اسم الله في أيام معلومات على ما رزقهم من بهيمة
الأنعام فكلوا منها وأطعموا البائس الفقير ﴿٢٨﴾ ثم ليقضوا
تفثهم وليوفوا نذورهم وليطوفوا بالبيت العتيق ﴿٢٩﴾
ذلك ومن يعظم حرمات الله فهو خير له عند ربه و
أحلت لكم الأنعام إلا ما يتلى عليكم فاجتنبوا الرجس

★रु. २/१ आ १२ ★रु. ३/१० आ ३

अन्दर की चीज़ें और खालें गल जाएंगी। (२०) और उन (के मारने-ठोकने) के लिए लोहे के हथौड़े होंगे। (२१) जब वे चाहेंगे कि इस रंज (व तक्लीफ़ की वजह) से दोज़ख से निकल जाएं, तो फिर उसी में लौटा दिए जाएंगे और (कहा जाएगा कि) जलने के अज़ाब का मज़ा चखते रहो। (२२)★

जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, ख़ुदा उन को बहिश्तों में दाखिल करेगा, जिन के तले नहरें बह रही हैं। वहां उन को सोने के कंगन पहनाए जाएंगे और मोती, और वहां उन का लिबास रेशमी होगा। (२३) और उन को पाक कलाम की हिदायत की गयी और (ख़ुदा-ए-) हमीद की राह बतायी गयी। (२४) जो लोग काफ़िर हैं और (लोगों को) ख़ुदा के रास्ते से और मस्जिदे मोहतरम से, जिसे हमने लोगों के लिए एक जैसी (इबादतगाह) बनाया है, रोकते हैं, चाहे वे वहां के रहने वाले हों या बाहर से आने वाले और जो इस में शरारत से टेढ़ा रास्ता (और कुफ़्र) अपनाना चाहे, उस को हम दर्द देने वाले अज़ाब का मज़ा चखाएंगे★ (२५) और (एक वक़्त था) जब हमने इब्राहीम के लिए ख़ाना-काबा को मक़ाम मुक़र्रर किया (और इर्शाद फ़रमाया) कि मेरे साथ किसी चीज़ को शरीक न कीजियो और तवाफ़ करने वालों और क़ियाम करने वालों और रुकूअ करने वालों (और) सज्दा करने वालों के लिए मेरे घर को साफ़ रखा करो। (२६) और लोगों में हज के लिए निदा कर दो कि तुम्हारी तरफ़ पैदल और दुबले-दुबले ऊंटों पर, जो दूर (-दूर के) रास्तों से चले आते हों, (सवार हो कर) चले आएं, (२७) ताकि अपने फ़ायदे के कामों के लिए हाज़िर हों और (क़ुर्बानी के) मालूम दिनों में चारपायों (के ज़िब्ह के वक़्त) जो ख़ुदा ने उन को दिए हैं, उन पर ख़ुदा का नाम लें। उस में से तुम ख़ुद भी खाओ और दबे-कुचले फ़क़ीर को भी खिलाओ। (२८) फिर चाहिए कि लोग अपना मैल-कुचैल दूर करें और नज़्रें पूरी करें और पुराने घर (यानी बैतुल्लाह) का तवाफ़ करें। (२९) यह (हमारा हुक्म है) और जो शख़्स अदब की चीज़ों की, जो ख़ुदा ने मुक़र्रर की हैं अज़्मत रखे, तो यह परवरदिगार के नज़दीक उस के हक़ में बेहतर है और तुम्हारे लिए मवेशी हलाल कर दिए गए हैं, सिवा उन के जो तुम्हें पढ़ कर सुनाए जाते हैं तो बुतों की पलीदी से बचो और झूठी बात से बचो, (३०)

★रु. २/९ आ १२ ★रु. ३/१० आ ३

हु-न-फ़ा-अ लिल्लाहि ग़ै-र मुश्रिकी-न बिही ᵇ व मंय्युश्रिक बिल्लाहि फ़-क-अन्नमा ख़र्-र मिनस्समा-इ फ़-तख़्तफ़ुहुत्-तैरु औ तह्वी बिहिर्रीहु फ़ी मकानिन् सहीक़ (३१) ज़ालि-क ᵘ व मंय्युअ़ज़्ज़िम् शआ़इरल्लाहि फ़-इन्नहा मिन् तक़्वल्क़ुलूब (३२) लकुम् फ़ीहा मनाफ़िअ़ु इला अ-जलिम्-मुसम्मन् सुम्-म महिल्लुहा इलल्-बैतिल्-अ़तीक़ ★ (३३) व लिकुल्लि उम्मतिन् ज-अ़ल्ना मन्-स-कल् - लि-यज़्कुरुस्मल्लाहि अ़ला मा र-ज़-क़हुम् मिम् बहीमतिल्-अन् - आ़मि ᵇ फ़इलाहुकुम् इलाहुंव्वाहिदुन् फ़ - लहू अस्लिमू ᵇ व बश्शिरिल् - मुख़्बितीन ᴶ (३४) अ़ल्लज़ी-न इज़ा ज़ुकि-रल्लाहु वजिलत् क़ुलूबुहुम् वस्साबिरी-न अ़ला मा असा - बहुम् वल्मुक़ीमिस्सलाति ᴶ व मिम्मा र-ज़क़्नाहुम् युन्फ़िक़ून (३५) वल्बुद् - न ज - अ़ल्नाहा लकुम् मिन् शआ़इरिल्लाहि लकुम् फ़ीहा ख़ैरुन् फ़ज़्कुरुस्मल्लाहि अ़लैहा सवाफ़् - फ़ फ़-इज़ा व-ज-बत् जुनूबुहा फ़कुलू मिन्हा व अत्अ़िमुल्क़ानि-अ़ वल्मुअ़् - तर्-र ᵇ कज़ालि-क सख़्ख़र्नाहा लकुम् ल-अ़ल्लकुम् तश्कुरून (३६) लंय्यनालल्ला-ह लुहूमुहा व ला दिमाउहा वलाकिंय्यनालुहुत्-तक़्वा मिन्कुम् ᵇ कज़ालि-क सख़्-ख़-रहा लकुम् लितुकब्बिरुल्ला - ह अ़ला मा हदाकुम् ᵇ व बश्शिरिल् - मुह्सिनीन (३७) इन्नल्ला-ह युदाफ़िअ़ु अ़निल्लज़ी-न आमनू ᵇ इन्नल्ला-ह ला युहिब्बु कुल्-ल ख़व्वानिन् कफ़ूर ★● (३८) उज़ि-न लिल्लज़ी - न युक़ातलू - न बि-अन्नहुम् ज़ुलिमू ᵇ व इन्नल्ला-ह अ़ला नस्रिहिम् ल-क़दीर ᴶ (३९)

مِنَ الْأَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوا قَوْلَ الزُّورِ ۝ حُنَفَاءَ لِلَّهِ غَيْرَ مُشْرِكِينَ بِهِ
وَمَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَكَأَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَاءِ فَتَخْطَفُهُ الطَّيْرُ أَوْ
تَهْوِي بِهِ الرِّيحُ فِي مَكَانٍ سَحِيقٍ ۝ ذَٰلِكَ وَمَنْ يُعَظِّمْ شَعَائِرَ
اللَّهِ فَإِنَّهَا مِنْ تَقْوَى الْقُلُوبِ ۝ لَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ إِلَىٰ أَجَلٍ
مُسَمًّى ثُمَّ مَحِلُّهَا إِلَى الْبَيْتِ الْعَتِيقِ ۝ وَلِكُلِّ أُمَّةٍ جَعَلْنَا
مَنْسَكًا لِيَذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ عَلَىٰ مَا رَزَقَهُمْ مِنْ بَهِيمَةِ الْأَنْعَامِ
فَإِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ فَلَهُ أَسْلِمُوا وَبَشِّرِ الْمُخْبِتِينَ ۝ الَّذِينَ إِذَا
ذُكِرَ اللَّهُ وَجِلَتْ قُلُوبُهُمْ وَالصَّابِرِينَ عَلَىٰ مَا أَصَابَهُمْ وَالْمُقِيمِي
الصَّلَاةِ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُونَ ۝ وَالْبُدْنَ جَعَلْنَاهَا لَكُمْ
مِنْ شَعَائِرِ اللَّهِ لَكُمْ فِيهَا خَيْرٌ فَاذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ عَلَيْهَا صَوَافَّ
فَإِذَا وَجَبَتْ جُنُوبُهَا فَكُلُوا مِنْهَا وَأَطْعِمُوا الْقَانِعَ وَالْمُعْتَرَّ
كَذَٰلِكَ سَخَّرْنَاهَا لَكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝ لَنْ يَنَالَ اللَّهَ لُحُومُهَا
وَلَا دِمَاؤُهَا وَلَٰكِنْ يَنَالُهُ التَّقْوَىٰ مِنْكُمْ كَذَٰلِكَ سَخَّرَهَا لَكُمْ
لِتُكَبِّرُوا اللَّهَ عَلَىٰ مَا هَدَاكُمْ وَبَشِّرِ الْمُحْسِنِينَ ۝ إِنَّ اللَّهَ
يُدَافِعُ عَنِ الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ خَوَّانٍ كَفُورٍ ۝
أُذِنَ لِلَّذِينَ يُقَاتَلُونَ بِأَنَّهُمْ ظُلِمُوا وَإِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ نَصْرِهِمْ
لَقَدِيرٌ ۝ الَّذِينَ أُخْرِجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ بِغَيْرِ حَقٍّ إِلَّا أَنْ يَقُولُوا

सिर्फ़ एक ख़ुदा के हो कर और उस के साथ शरीक न ठहरा कर और जो शख़्स (किसी को) ख़ुदा के साथ शरीक मुक़र्रर करे, तो वह गोया ऐसा है जैसे आसमान से गिर पड़े, फिर उस को परिंदे उचक ले जाएं या हवा किसी दूर जगह उड़ा कर फेंक दे। (३१) यह (हमारा हुक्म है) और जो शख़्स अदब की चीज़ों की, जो ख़ुदा ने मुक़र्रर की है, अज़्मत रखे, तो यह (काम) दिलों की परहेज़गारी में से है। (३२) उन में एक मुक़र्रर वक़्त तक तुम्हारे लिए फ़ायदे हैं, फिर उन को पुराने घर (यानी बैतुल्लाह) तक पहुंचना (और ज़िब्ह होना) है। (३३)★

और हम ने हर एक उम्मत के लिए क़ुर्बानी का तरीक़ा मुक़र्रर कर दिया है, ताकि जो मवेशी चारपाए ख़ुदा ने उन को दिए हैं, (उन के ज़िब्ह करने के वक़्त) उन पर ख़ुदा का नाम लें, सो तुम्हारा माबूद एक ही है, तो उसी के फ़रमांबरदार हो जाओ और आजिज़ी करने वालों को ख़ुश-ख़बरी सुना दो। (३४) ये वह लोग हैं कि जब ख़ुदा का नाम लिया जाता है, तो उन के दिल डर जाते हैं और (जब) उन पर मुसीबत पड़ती है, तो सब्र करते हैं और नमाज़ आदाब से पढ़ते हैं और जो (माल) हम ने उन को अता फ़रमाया है, उस में से (नेक कामों में) ख़र्च करते हैं। (३५) और क़ुर्बानी के ऊंटों को भी हम ने तुम्हारे लिए 'ख़ुदा शआयर' मुक़र्रर किया है। उन में तुम्हारे लिए फ़ायदे हैं, तो (क़ुर्बानी करने के वक़्त) क़तार बांध कर उन पर ख़ुदा का नाम लो। जब पहलू के बल गिर पड़ें तो उन में से खाओ और (क़नाअत) से बैठ रहने वालों और सवाल करने वालों को भी खिलाओ। इस तरह हम ने उन को तुम्हारे ताबेअ कर दिया है, ताकि तुम शुक्र करो। (३६) ख़ुदा तक न उन का गोश्त पहुंचता है और न ख़ून, बल्कि उस तक तुम्हारी परहेज़गारी पहुंचती है। इसी तरह ख़ुदा ने उन को तुम्हारा ताबेअ कर दिया है, ताकि इस बात के बदले कि तुम को हिदायत बख़्शी है, उसे बुज़ुर्गी से याद करो और (ऐ पैग़म्बर!) नेकों को ख़ुशख़बरी सुना दो। (३७) ख़ुदा तो मोमिनों से उन के दुश्मनों को हटाता रहता है। बेशक ख़ुदा किसी ख़ियानत करने वाले और नेमत को ठुकराने वाले को दोस्त नहीं रखता। (३८)★●

जिन मुसलमानों से (ख़ामख़ाह) लड़ाई की जाती है, उन को इजाज़त है (कि वे भी लड़ें), क्योंकि उन पर ज़ुल्म हो रहा है और ख़ुदा (उन की मदद करेगा, वह) यक़ीनन उन की मदद पर

★रु. ४/१आ ८ ★रु. ५/१२ आ ५ ●सू. ३/४

अल्लज़ी-न उख़्रिजू मिन् दियारिहिम् बिग़ैरि हक़्क़िन् इल्ला अंय्यक़ूलू रब्बुनल्लाहु ط व लौला दफ़्अुल्लाहिन्ना-स बअ्-ज़-हुम् बिबअ्-ज़िल्-लहुद्दिमत् सवामिअु व बि-यअुं व-व स-ल-वातुं व-व मसाजिदु युज़्करु फ़ीहस्मुल्लाहि कसीरन् ط व ल-यन्सुरन्नल्लाहु मंय्यन्सुरुहू ط इन्नल्ला - ह ल-क़विय्युन् अज़ीज़ (४०)

अल्लज़ी - न इम्मक्कन्नाहुम् फ़िल्अर्ज़ि अक़ामुस्सला-त व-आ-तवुज़्ज़का-त व अ-मरू बिल्मअ् - रूफ़ि व नहौ अ़निल्मुन्करि ط व लिल्लाहि आक़ि-बतुल्-उमूर (४१)

व इं य्युकज़्ज़िबू-क फ़-क़द् कज़्ज़-बत् क़ब्-लहुम् क़ौमु नूहिंव-व आदुं व-व समूद ج (४२) व क़ौमु इब्राही-म व क़ौमु लूतिंव- ج (४३) व अस्हाबु मद्-य-न ج व कुज़्ज़ि-ब मूसा फ़-अम्लैतु लिल् - काफ़िरी - न सुम् - म अ-ख़ज़्तुहुम् ج फ़ कै-फ़ का-न नकीर (४४)

फ़-क-अय्यिम्-मिन् क़र्-यतिन् अह्-लक्नाहा व हि-य ज़ालि-मतुन् फ़हि-य ख़ावि-यतुन् अला अुरूशिहा व बिअ्रिम्-मु-अत्त-लतिंव-व क़स्रिम् - मशीद (४५)

رَبُّنَا اللّٰهُ ۗ وَلَوْلَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لَّهُدِّمَتْ
صَوَامِعُ وَبِيَعٌ وَّصَلَوٰتٌ وَّمَسٰجِدُ يُذْكَرُ فِيْهَا اسْمُ اللّٰهِ كَثِيْرًا ۗ
وَلَيَنْصُرَنَّ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ ۗ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِيٌّ عَزِيْزٌ ۝ اَلَّذِيْنَ
اِنْ مَّكَّنّٰهُمْ فِي الْاَرْضِ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ وَاَمَرُوْا
بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ ۗ وَلِلّٰهِ عَاقِبَةُ الْاُمُوْرِ ۝ وَاِنْ
يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّعَادٌ وَّثَمُوْدُ ۝ وَقَوْمُ
اِبْرٰهِيْمَ وَقَوْمُ لُوْطٍ ۝ وَّاَصْحٰبُ مَدْيَنَ ۚ وَكُذِّبَ مُوْسٰى
فَاَمْلَيْتُ لِلْكٰفِرِيْنَ ثُمَّ اَخَذْتُهُمْ ۚ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ۝ فَكَاَيِّنْ
مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ فَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا
وَبِئْرٍ مُّعَطَّلَةٍ وَّقَصْرٍ مَّشِيْدٍ ۝ اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ
فَتَكُوْنَ لَهُمْ قُلُوْبٌ يَّعْقِلُوْنَ بِهَآ اَوْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ بِهَا ۚ
فَاِنَّهَا لَا تَعْمَى الْاَبْصَارُ وَلٰكِنْ تَعْمَى الْقُلُوْبُ الَّتِيْ فِي
الصُّدُوْرِ ۝ وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ وَلَنْ يُّخْلِفَ اللّٰهُ وَعْدَهٗ ۗ
وَاِنَّ يَوْمًا عِنْدَ رَبِّكَ كَاَلْفِ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ ۝ وَكَاَيِّنْ
مِّنْ قَرْيَةٍ اَمْلَيْتُ لَهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ ثُمَّ اَخَذْتُهَا ۚ وَاِلَيَّ
الْمَصِيْرُ ۝ قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّمَآ اَنَا لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝
فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ

अ-फ़-लम् यसीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़-तकू-न लहुम् क़ुलूबुं य्यअ्-क़िलू-न बिहा औ आज़ानुं य्यस्-मअू-न बिहा ج फ़-इन्नहा ला तअ्-मल्-अब्सारु व लाकिन् तअ्-मल्-क़ुलूबुल्लती फ़िस्सुदूर (४६) व यस्तअ्-जिलू-न-क बिल्अ़ज़ाबि व लंय्युख़्लिफ़ल्लाहु वअ्-दहू ط व इन्-न यौमन् अिन्-द रब्बि-क क-अल्फ़ि स-नतिम्मिम्मा त-अुद्दून (४७) व क-अय्यिम्-मिन् क़र्-यतिन् अम्लैतु लहा व हि-य ज़ालि-मतुन् सुम्-म अ-ख़ज़्तुहा ج व इलय्यल्-मसीर ★(४८) क़ुल् याअय्युहन्नासु इन्नमा अ-न लकुम् नज़ीरुम्-मुबीन ج (४९) फ़ल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति लहुम् मग़्-फ़ि-रतुं व्-व रिज़्-क़ुन् करीम (५०)

★रु. ६/१३ आ १०

क़ुदरत रखता है। (३९) ये वह लोग हैं कि अपने घरों से ना-हक़ निकाल दिए गए, (उन्हों ने कुछ क़ुसूर नहीं किया) हां, यह कहते हैं कि हमारा परवरदिगार ख़ुदा है और अगर ख़ुदा लोगों को एक-दूसरे से न हटाता रहता तो (राहिबों के) पूजा-घर और (ईसाइयों के) गिरजे और (यहूदियों की) और (मुसलमानों की) मस्जिदें, जिन में ख़ुदा का बहुत-सा ज़िक्र किया जाता है, गिरायी जा चुकी होतीं। और जो शख़्स ख़ुदा की मदद करता है, ख़ुदा उस की ज़रूर मदद करता है। बेशक ख़ुदा ताक़त वाला और ग़ालिब है। (४०) तो ये लोग हैं कि अगर हम उन को मुल्क में ग़ल्बा दें तो नमाज़ पढ़ें और ज़कात अदा करें और नेक काम करने का हुक्म दें और बुरे कामों से मना करें और सब कामों का अंजाम ख़ुदा ही के अख़्तियार में है। (४१) और अगर ये लोग तुम को झुठलाते हैं, तो उन से पहले नूह की क़ौम और आद और समूद भी (अपने पैग़म्बरों को) झुठला चुके हैं, (४२) और इब्राहीम की क़ौम और लूत की क़ौम भी, (४३) और मदयन के रहने वाले भी और मूसा भी तो झुठलाए जा चुके हैं, लेकिन मैं काफ़िरों को मोहलत देता रहा, फिर उन को पकड़ लिया, तो (देख लो कि) मेरा अज़ाब कैसा (सख़्त) था। (४४) और बहुत-सी बस्तियां हैं कि हम ने उन को तबाह कर डाला था कि वे ना-फ़रमान थीं, सो वे अपनी छतों पर गिर पड़ी हैं और (बहुत से) कुएं बेकार और (बहुत से)महल वीरान (पड़े हैं)। (४५) क्या उन लोगों ने मुल्क में सैर नहीं की, ताकि उनके दिल ऐसे होते कि उन से समझ सकते और कान (ऐसे) होते कि उन से सुन सकते। बात यह है कि आंख अंधी नहीं होतीं, बल्कि दिल, जो सीनों में हैं, (वे) अंधे होते हैं। (४६) और (ये लोग) तुम से अज़ाब के लिए जल्दी कर रहे हैं और ख़ुदा अपना वायदा हर गिज़ ख़िलाफ़ नहीं करेगा और बेशक तुम्हारे परवरदिगार के नज़दीक एक दिन तुम्हारे हिसाब के मुताबिक़ हज़ार वर्ष के बराबर है।(४७) और बहुत-सी बस्तियां हैं कि मैं उन को मोहलत देता रहा और वे ना-फ़रमान थीं। फिर मैं ने उन को पकड़ लिया और मेरी ही तरफ़ लौट कर आना है। (४८)★

(ऐ पैग़म्बर!) कह दो कि लोगो! मैं तुम को खुल्लम-खुल्ला नसीहत करने वाला हूं। (४९) तो जो लोग ईमान लाए और नेक काम किए, उन के लिए बख़्शिश और आबरू की रोज़ी है। (५०)

★रु. ६/१३ आ १०

वल्लज़ी-न सऔ फ़ी आयातिना मुआजिज़ी-न उलाइ-क अस्हाबुल् - जहीम (५१) व मा अर्सल्ना मिन् क़ब्लि-क मिर्रसूलिव्-व ला नबिय्यिन् इल्ला इज़ा त - मन्ना अल्क़श्शैतानु फ़ी उम्निय्यतिही ۚ फ़-यन्सख़ुल्लाहु मा युल्क़िश्शैतानु सुम् - म युह्किमुल्लाहु आयातिही ۗ वल्लाहु अलीमुन् हकीम (५२) लि-यज्-अ-ल मा युल्क़िश्शैतानु फ़ित्-न-तल् - लिल्लज़ी-न फ़ी क़ुलूबिहिम् म - रज़ुंव्वल् - क़ासियति क़ुलूबुहुम् ۗ व इन्नज़्ज़ालिमी-न लफ़ी शिक़ाक़िम् - बईद (५३) व लियअ्-ल-मल्लज़ी-न ऊतुल्‌अिल्-म अन्नहुल्-हक़्क़ु मिर्रब्बि-क फ़-युअ्मिनू बिही फ़-तुख़्बि-त लहू क़ुलूबुहुम् ۗ व इन्नल्ला-ह लहादिल्लज़ी - न आमनू इला सिरातिम्-मुस्तक़ीम (५४) व ला यज़ालुल्लज़ी-न क - फ़रू फ़ी मिर्यतिम्मिन्हु हत्ता तअ्तियहुमुस्सा-अतु बग़्-त-तन् औ यअ्ति-यहुम् अज़ाबु यौमिन् अक़ीम (५५) अल्मुल्कु यौमइज़िल् - लिल्लाहि ۗ यह्कुमु बैनहुम् ۗ फ़ल्लज़ी - न आमनू व अमिलुस्सालिहाति फ़ी जन्नातिन्नईम (५६) वल्लज़ी-न क-फ़रू व कज़्ज़बू बिआयातिना फ़-उलाइ-क लहुम् अज़ाबुम्-मुहीन ★ (५७) वल्लज़ी - न हाजरू फ़ी सबीलिल्लाहि सुम्-म क़ुतिलू औ मातू ल-यर्ज़ुक़न्नहुमुल्लाहु रिज़्-क़न् ह-स-नन् ۗ व इन्नल्ला-ह लहु-व ख़ैरुर् - राज़िक़ीन (५८) लयुद्ख़िलन्नहुम् मुद - ख़-लंय्यर्ज़ौनहू ۗ व इन्नल्ला-ह ल-अलीमुन् हलीम (५९) ज़ालि-क ۚ व मन् आक़-ब बिमिस्लि मा ऊक़ि-ब बिही सुम्-म बुग़ि-य अलैहि ल - यन्सुरन्नहुल्लाहु ۗ इन्नल्ला-ह ल-अफ़ुव्वुन् ग़फ़ूर (६०) ज़ालि-क बि-अन्नल्ला-ह यूलिजुल्लै-ल फ़िन्नहारि व यूलिजुन्नहा-र फ़िल्लैलि व अन्नल्ला-ह समीअुम् - बसीर (६१)

كَرِيمٌ ۝ وَالَّذِينَ سَعَوْا فِي آيَاتِنَا مُعَاجِزِينَ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ
الْجَحِيمِ ۝ وَمَا أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ مِن رَّسُولٍ وَلَا نَبِيٍّ إِلَّا
إِذَا تَمَنَّىٰ أَلْقَى الشَّيْطَانُ فِي أُمْنِيَّتِهِ فَيَنسَخُ اللَّهُ مَا يُلْقِي
الشَّيْطَانُ ثُمَّ يُحْكِمُ اللَّهُ آيَاتِهِ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝ لِّيَجْعَلَ
مَا يُلْقِي الشَّيْطَانُ فِتْنَةً لِّلَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ وَالْقَاسِيَةِ
قُلُوبُهُمْ ۗ وَإِنَّ الظَّالِمِينَ لَفِي شِقَاقٍ بَعِيدٍ ۝ وَلِيَعْلَمَ الَّذِينَ
أُوتُوا الْعِلْمَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِن رَّبِّكَ فَيُؤْمِنُوا بِهِ فَتُخْبِتَ لَهُ قُلُوبُهُمْ
وَإِنَّ اللَّهَ لَهَادِ الَّذِينَ آمَنُوا إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ۝ وَ
لَا يَزَالُ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي مِرْيَةٍ مِّنْهُ حَتَّىٰ تَأْتِيَهُمُ السَّاعَةُ
بَغْتَةً أَوْ يَأْتِيَهُمْ عَذَابُ يَوْمٍ عَقِيمٍ ۝ الْمُلْكُ يَوْمَئِذٍ لِّلَّهِ يَحْكُمُ
بَيْنَهُمْ ۚ فَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ ۝
وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا فَأُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ۝
وَالَّذِينَ هَاجَرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ قُتِلُوا أَوْ مَاتُوا لَيَرْزُقَنَّهُمُ
اللَّهُ رِزْقًا حَسَنًا ۚ وَإِنَّ اللَّهَ لَهُوَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ۝ لَيُدْخِلَنَّهُم
مُّدْخَلًا يَرْضَوْنَهُ ۗ وَإِنَّ اللَّهَ لَعَلِيمٌ حَلِيمٌ ۝ ذَٰلِكَ ۖ وَ
مَنْ عَاقَبَ بِمِثْلِ مَا عُوقِبَ بِهِ ثُمَّ بُغِيَ عَلَيْهِ لَيَنصُرَنَّهُ اللَّهُ ۚ
إِنَّ اللَّهَ لَعَفُوٌّ غَفُورٌ ۝ ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ يُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ

★रु. ७/१४ आ ६

और जिन लोगों ने हमारी आयतों में (अपने झूठे गुमान में) हमें आजिज़ करने के लिए कोशिश की, वे दोज़ख़ वाले हैं। (५१) और हम ने तुम से पहले कोई रसूल और नबी नहीं भेजा, मगर (उस का यह हाल था कि) जब वह कोई आरज़ू करता था तो शैतान उस की आरज़ू में (वस्वसा) डाल देता था, तो जो (वस्वसा) शैतान डालता है, ख़ुदा उस को दूर कर देता है, फिर ख़ुदा अपनी आयतों को मज़बूत कर देता है और ख़ुदा इल्म (और) हिक्मत वाला है। (५२) ग़रज़ (इस से) यह है कि जो (वस्वसा) शैतान डालता है, उस को उन लोगों के लिए, जिन के दिलों में बीमारी है और जिन के दिल सख़्त हैं, आज़माइश का ज़रिया ठहराए। बेशक ज़ालिम परले दर्जे की मुख़ालफ़त में हैं। (५३) और यह भी ग़रज़ है कि जिन लोगों को इल्म अता हुआ है, वे जान लें कि वह (यानी वह्य) तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से हक़ है, तो वह इस पर ईमान लाएं और उन के दिल ख़ुदा के आगे आजिज़ी करें और जो लोग ईमान लाए हैं, ख़ुदा उन को सीधे रास्ते की तरफ़ हिदायत करता है। (५४) और काफ़िर लोग हमेशा इससे शक में रहेंगे, यहां तक कि क़ियामत उन पर अचानक आ जाए या एक ना-मुबारक दिन का अज़ाब उन पर अचानक आ वाक़ेअ हो। (५५) उस दिन बादशाही ख़ुदा ही की होगी (और) वह उन में फ़ैसला कर देगा, तो जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, ये नेमत के बाग़ों में होंगे। (५६) और जो काफ़िर हुए और हमारी आयतों को झुठलाते रहे, उन के लिए ज़लील करने वाला अज़ाब होगा। (५७) ★

और जिन लोगों ने ख़ुदा की राह में हिजरत की, फिर मारे गये या मर गये, उन को ख़ुदा अच्छी रोज़ी देगा और बेशक ख़ुदा सब से बेहतर रोज़ी देने वाला है। (५८) वह उन को ऐसी जगह दाख़िल करेगा, जिसे वे पसंद करेंगे और ख़ुदा तो जानने वाला (और) बुर्दबार है। (५९) यह (बात ख़ुदा के यहां ठहर चुकी है) और जो शख़्स (किसी को) उतनी ही तक्लीफ़ दे, जितनी तक्लीफ़ उस को दी गयी, फिर उस शख़्स पर ज़्यादती की जाए, तो ख़ुदा उस की मदद करेगा। बेशक ख़ुदा माफ़ करने वाला (और) बख़्शने वाला है। (६०) यह इस लिए कि ख़ुदा रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में दाख़िल करता है और ख़ुदा तो सुनने वाला, देखने

★रु. ७/१४ आ ६

ज़ालि-क बि-अन्नल्ला-ह हुवल्-हक़्क़ु व अन्-न मा यद्अू-न मिन्दूनिही हुवल्बातिलु व अन्नल्ला-ह हुवल्अलिय्युल्-कबीर (६२) अ-लम् त-र अन्नल्ला-ह अन्ज़-ल मिनस्समा-इ मा-अन् ॰ फ़-तुस्बिहुल्अर्-ज़ु मुख़्ज़र्र-तन् ॰ इन्नल्ला-ह लतीफ़ुन् ख़बीर ۝ (६३) लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि ॰ व इन्नल्ला-ह लहुवल्-ग़निय्युल् - हमीद ★ (६४) अ-लम् त-र अन्नल्ला-ह सख़्ख़-र लकुम् मा फ़िल्अर्ज़ि वल्फ़ुल् - क तज्री फ़िल्बह्रि बिअम्रिही ॰ व युम्सिकुस्समा-अ अन् त-क़-अ अ-लल्अर्ज़ि इल्ला बिइज़्निही ॰ इन्नल्ला - ह बिन्नासि ल - रऊफ़ुर्रहीम (६५) व हुवल्लज़ी अह्-याकुम् ॰ सुम् - म युमीतुकुम् सुम्-म युह्यीकुम् ॰ इन्नल् - इन्सा - न ल - कफ़ूर (६६) लिकुल्लि उम्मतिन् ज - अल्ना मन्-स-कन् हुम् नासिकूहु फ़ला युनाज़िअुन्न-क फ़िल्अम्रि वद्अु इला रब्बि-क ॰ इन्न-क ल-अला हुदम्-मुस्तक़ीम (६७) व इन् जादलू-क फ़कुलिल्लाहु अअ्-लमु बिमा तअ्-मलून (६८) अल्लाहु यह्कुमु बैनकुम् यौमल्-क़ियामति फ़ीमा कुन्तुम् फ़ीहि तख़्-तलिफ़ून (६९) अ-लम् तअ्-लम् अन्नल्ला-ह यअ्-लमु मा फ़िस्समाइ वल्अर्ज़ि ॰ इन-न ज़ालि-क फ़ी किताबिन् ॰ इन्-न ज़ालि-क अ-लल्लाहि यसीर (७०) व यअ्-बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि मा लम् युनज़्ज़िल् बिही सुल्तानंव्-व मा लै-स लहुम् बिही अिल्मुन् ॰ व मा लिज़्ज़ालिमी-न मिन् नसीर (७१)

وَيُولِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ وَأَنَّ اللّٰهَ سَمِيعٌۢ بَصِيرٌ ۝ ذٰلِكَ
بِأَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَأَنَّ مَا يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ هُوَ الْبَاطِلُ
وَأَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ ۝ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللّٰهَ أَنْزَلَ مِنَ
السَّمَاءِ مَاءً فَتُصْبِحُ الْأَرْضُ مُخْضَرَّةً إِنَّ اللّٰهَ لَطِيفٌ
خَبِيرٌ ۝ لَهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَإِنَّ
اللّٰهَ لَهُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ۝ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَا
فِي الْأَرْضِ وَالْفُلْكَ تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِأَمْرِهِ وَيُمْسِكُ السَّمَاءَ
أَنْ تَقَعَ عَلَى الْأَرْضِ إِلَّا بِإِذْنِهِ إِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوفٌ
رَحِيمٌ ۝ وَهُوَ الَّذِي أَحْيَاكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ إِنَّ
الْإِنْسَانَ لَكَفُورٌ ۝ لِكُلِّ أُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا هُمْ نَاسِكُوهُ
فَلَا يُنَازِعُنَّكَ فِي الْأَمْرِ وَادْعُ إِلَىٰ رَبِّكَ إِنَّكَ لَعَلَىٰ هُدًى
مُسْتَقِيمٍ ۝ وَإِنْ جَادَلُوكَ فَقُلِ اللّٰهُ أَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝
اللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيمَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ۝
أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِنَّ ذٰلِكَ
فِي كِتٰبٍ إِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيرٌ ۝ وَيَعْبُدُونَ مِنْ
دُونِ اللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهِ سُلْطٰنًا وَمَا لَيْسَ لَهُمْ بِهِ
عِلْمٌ وَمَا لِلظّٰلِمِينَ مِنْ نَصِيرٍ ۝ وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ

★रु. ८/१५ आ ७

वाला है। (६१) यह इस लिए कि खुदा ही बरहक़ है और जिस चीज़ को (काफ़िर) खुदा के सिवा पुकारते हैं, वह झूठ है और इस लिए कि खुदा बड़ी शान वाला और बड़ा है। (६२) क्या तुम नहीं देखते कि खुदा आसमान से मेंह बरसाता है, तो ज़मीन हरी-भरी हो जाती है। बेशक खुदा मेहरबान और ख़बरदार है। (६३) जो कुछ आसमान में है और जो कुछ ज़मीन में है, उसी का है और बेशक खुदा बे-नियाज़ (और) तारीफ़ के क़ाबिल है। (६४)★

क्या तुम नहीं देखते कि जितनी चीज़ें ज़मीन में हैं (सब) खुदा ने तुम्हारे ताबेअ कर रखी हैं और कश्तियां (भी) जो उसी के हुक्म से दरिया में चलती हैं और वह आसमान को थामे रहता है कि ज़मीन पर (न) गिर पड़े, मगर उस के हुक्म से। बेशक खुदा लोगों पर बहुत शफ़क़त करने वाला मेहरबान है। (६५) और वही तो है जिस ने तुम को ज़िंदगी दी, फिर तुम को मारता है, फिर तुम्हें ज़िंदा भी करेगा और इन्सान तो (बड़ा) ना-शुक्रा है। (६६) हम ने हर एक उम्मत के लिए एक शरीअत मुक़र्रर कर दी, जिस पर वे चलते हैं तो ये लोग तुम से इस मामले में झगड़ा न करें और तुम (लोगों को) अपने परवरदिगार की तरफ़ बुलाते रहो। बेशक तुम सीधे रास्ते पर हो। (६७) और अगर ये तुम से झगड़ा करें, तो कह दो कि जो अमल तुम करते हो, खुदा उन को खूब जानता है। (६८) जिन बातों में तुम इख़्तिलाफ़ करते हो, खुदा तुम में क़ियामत के दिन उन का फ़ैसला कर देगा। (६९) क्या तुम नहीं जानते कि जो कुछ आसमान और ज़मीन में है, खुदा उस को जानता है। यह (सब कुछ) किताब में (लिखा हुआ) है। बेशक यह सब खुदा को आसान है। (७०) और (ये लोग) खुदा के सिवा ऐसी चीज़ों की इबादत करते हैं, जिन की उस ने कोई संनद नाज़िल नहीं फ़रमायी और न उन के पास इस की कोई दलील है और ज़ालिमों का कोई भी मददगार नहीं

★रु. ८/१५ आ ७

व इज़ा तुत्ला अ़लैहिम् आयातुना बय्यिनातिन् तअ्-रिफ़ु फ़ी वुजूहिल्लज़ी-न क-फ़रुल्मुन्क-र ط यकादू-न यस्तू-न बिल्लज़ी-न यत्लू-न अ़लैहिम् आयातिना ط क़ुल् अ-फ़-उनब्बिउकुम् बिशर्रिम्-मिन् ज़ालिकुम् ط अन्नारु ط व-अ़-द-हल्लाहुल्-लज़ी - न क-फ़रू ط व बिअ्सल् - मसीर ★(७२) या-अय्युहन्नासु ज़ुरि-ब म - सलुन् फ़स्तमिअू लहू ط इन्नल्लज़ी - न तद्अू-न मिन् दूनिल्लाहि लंय्यख़्लुक़ू ज़ुबाबंव - व लविज-त-मअू लहू ط व इंय्यस्लुब् - हुमुज़्-ज़ुबाबु शैअल्ला यस्तन्क़िज़ूहु मिन्हु ط ज़अुफ़त्तालिबु वल्मत्लूब (७३) मा क़-द-रुल्ला-ह हक़्-क़ क़द्रिही ط इन्नल्ला-ह ल-क़विय्युन् अ़ज़ीज़ (७४) अल्लाहु यस्तफ़ी मिनल्मलाइकति रुसुलंव - व मिनन्नासि ط इन्नल्ला-ह समीअुम् - बसीर ج (७५) यअ्-लमु मा बै-न ऐदीहिम् व मा ख़ल्फ़हुम् ط व इलल्लाहि तुर्जअुल् - उमूर (७६) या अय्युहल्लज़ी-न आमनुर्कअू वस्जुदू वअ्-बुदू रब्बकुम् वफ़्-अ़लुल्-ख़ै-र ल - अ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून □(७७) व जाहिदू फ़िल्लाहि हक़्-क़ जिहादिही ط हुवज्तबाकुम् व मा ज-अ़-ल अ़लैकुम् फ़िद्दीनि मिन् ह-रजिन् ط मिल-ल - त अबीकुम् इब्राही - म ط हु - व सम्माकुमुल् - मुस्लिमी-न मिन् क़ब्लु व फ़ी हाज़ा लि-यकूनर्रसूलु शहीदन् अ़लैकुम् व तकूनू शु-ह-दा-अ अ़-लन्नासि ج फ़-अक़ीमुस्सला-त व आतुज़्ज़का-त वअ्-तसिमू बिल्लाहि ط हु-व मौलाकुम् ج फ़-निअ्-मल्-मौला व निअ्-मन्नसीर ★(७८)

ءاياتنا بينات تعرف في وجوه الذين كفروا المنكر يكادون
يسطون بالذين يتلون عليهم ءاياتنا قل أفأنبئكم بشر
من ذلكم النار وعدها الله الذين كفروا وبئس
المصير ۝ يا أيها الناس ضرب مثل فاستمعوا له إن
الذين تدعون من دون الله لن يخلقوا ذبابا ولو اجتمعوا
له وإن يسلبهم الذباب شيئا لا يستنقذوه منه ضعف
الطالب والمطلوب ۝ ما قدروا الله حق قدره إن الله
لقوي عزيز ۝ الله يصطفي من الملائكة رسلا ومن الناس
إن الله سميع بصير ۝ يعلم ما بين أيديهم وما خلفهم
وإلى الله ترجع الأمور ۝ يا أيها الذين ءامنوا اركعوا
واسجدوا واعبدوا ربكم وافعلوا الخير لعلكم تفلحون ۝
وجاهدوا في الله حق جهاده هو اجتباكم وما جعل
عليكم في الدين من حرج ملة أبيكم إبراهيم هو
سماكم المسلمين من قبل وفي هذا ليكون الرسول
شهيدا عليكم وتكونوا شهداء على الناس فأقيموا
الصلاة وآتوا الزكاة واعتصموا بالله هو مولاكم
فنعم المولى ونعم النصير ۝

★रु. ९/१६ आ ८ □सज्दः शाफ़ई ★रु. १०/१७ आ ६

होगा। (७१) और जब उन को हमारी आयतें पढ़ कर सुनायी जाती हैं, तो (उन की शक्ल बिगड़ जाती है और) तुम उन के चेहरों में साफ़ तौर पर ना-ख़ुशी (की निशानियां) देखते हो। क़रीब होते हैं कि जो लोग उन को हमारी आयतें पढ़ कर सुनाते हैं, उन पर हमला कर दें। कह दो कि तुम को इस से भी बुरी चीज़ बताऊं! वह (दोज़ख़ की) आग है, जिस का ख़ुदा ने काफ़िरों से वायदा किया है और वह बुरा ठिकाना है। (७२)★

लोगो! एक मिसाल बयान की जाती है, उसे ग़ौर से सुनो कि जिन लोगों को तुम ख़ुदा के सिवा पुकारते हो, वे एक मक्खी भी नहीं बना सकते, अगरचे उस के लिए सब जमा हो जाएं और अगर उन से मक्खी कोई चीज़ छीन ले जाए तो उसे उस से छुड़ा नहीं सकते। तालिब और मत्लूब (यानी आबिद और माबूद दोनों) गये-गुज़रे हैं। (७३) इन लोगों ने ख़ुदा की क़द्र जैसी करनी चाहिए थी, नहीं की, कुछ शक नहीं कि ख़ुदा ज़बरदस्त (और) ग़ालिब है। (७४) ख़ुदा फ़रिश्तों में से पैग़ाम पहुंचाने वाले चुन लेता है और इंसानों में से भी, बेशक ख़ुदा सुनने वाला (और) देखने वाला है। (७५) जो उन के आगे है और जो उन के पीछे है, वह इसे जानता है और सब लोगों का रुजूअ ख़ुदा ही की तरफ़ है। (७६) मोमिनो! रुजूअ करते और सज्दे करते और अपने परवरदिगार की इबादत करते रहो और नेक काम करो ताकि कामियाबी पाओ। (७७)☐और ख़ुदा (की राह) में जिहाद करो, जैसा जिहाद करने का हक़ है। उस ने तुम को चुन लिया है और तुम पर दीन (की किसी बात) में तंगी नहीं की (और तुम्हारे लिए) तुम्हारे बाप इब्राहीम का दीन (पसंद किया) उसी ने पहले (यानी पहली किताबों में) तुम्हारा नाम मुसलमान रखा था और इस किताब में भी (वही नाम रखा है, तो जिहाद करो) ताकि पैग़म्बर तुम्हारे बारे में गवाह हों और तुम लोगों के मुक़ाबले में गवाह हो और नमाज़ पढ़ो और ज़कात दो और ख़ुदा (के दीन की रस्सी) को पकड़े रहो। वही तुम्हारा दोस्त है और ख़ूब मददगार है। (७८)★

★रु० ९/१६ आ ८ ☐सज्दः शाफ़ई ★रु० १०/१७ आ ६

अठारहवां पारः क़द अफ़्-ल-हल् मुअ्मिनू-न

२३ सूरतुल्-मुअ्मिनू-न ७४

(मक्की) इस सूरः में अरबी के ४५३८ अक्षर, १०७० शब्द, ११८ आयतें और ६ रुकूअ् हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ●

क़द् अफ़्-ल-हल्-मुअ्मिनून لا (१) अल्लज़ी-न हुम् फ़ी सलातिहिम् ख़ाशिऊन لا (२) वल्लज़ी-न हुम् अनिल्लग्वि मुअ्-रिज़ून (३) لا वल्लज़ी-न हुम् लिज़्ज़काति फ़ाअिलून لا (४) वल्लज़ी-न हुम् लिफ़ुरूजिहिम् हाफ़िज़ून لا (५) इल्ला अला अज़्वाजिहिम् औ मा म-ल-कत् ऐमानुहुम् फ़-इन्नहुम् ग़ैरु मलूमीन ج (६) फ़-मनिब्तग़ा वरा-अ ज़ालि-क फ़-उलाइ-क हुमुल्आदून ج (७) वल्लज़ी-न हुम् लि-अमानाति - हिम् व अह्दिहिम् राऊन لا (८) वल्लज़ी-न हुम् अला स-ल-वातिहिम् युहाफ़िज़ून م (९) उलाइ-क हुमुल् - वारिसून لا (१०) अल्लज़ी-न यरिसूनल् - फ़िर्दौ - स ط हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (११) व ल-क़द् ख़-लक़्नल्-इन्सा-न मिन् सुलालतिम् - मिन् तीन ج (१२) सुम्-म ज-अल्नाहु नुत-फ़-तन् फ़ी क़रारिम्-मकीन ص (१३) सुम्-म ख़-लक़्-नन् नुत-फ़-त अ-ल-क़-तन् फ़-ख़-लक़्नल्-अ-ल-क़-त मुज़्-ग़-तन् फ़-ख़-लक़्नल्-मुज़्-ग़-त अिज़ामन् फ़-कसौनल्-अिज़ा-म लह्-मन् ق सुम्-म अन्शअ्नाहु ख़ल्क़न् आख़-र ط फ़-त-बा-र-कल्लाहु अह्सनुल्-ख़ालिक़ीन ط (१४) सुम्-म इन्नकुम् बअ्-द ज़ालि-क ल-मय्यितून ط (१५) सुम्-म इन्नकुम् यौमल्-क़ियामति तुब्-अ़सून (१६) व ल-क़द् ख़-लक़्ना फ़ौक़कुम् सब्-अ तराइ-क़ ق व मा कुन्ना अनिल्ख़ल्क़ि ग़ाफ़िलीन (१७) व अन्ज़ल्ना मिनस्समाइ माअम् - बि-क़ - दरिन् फ़-अस्कन्नाहु फ़िल्अर्ज़ि ق व इन्ना अला ज़हाबिम्-बिही लक़ादिरून ج (१८) फ़-अन्शअ्ना लकुम् बिही जन्नातिम्मिन् नख़ीलिंव्-व अअ्-नाबिन् م लकुम् फ़ीहा फ़वाकिहु कसीरतुंव्-व मिन्हा तअ्-कुलून لا (१९)

سورة المؤمنون مكية وهي مائة وثمان عشرة آية وست ركوعات
بسم الله الرحمن الرحيم
قد أفلح المؤمنون ۝ الذين هم في صلاتهم خاشعون ۝ و
الذين هم عن اللغو معرضون ۝ والذين هم للزكوة فاعلون ۝
والذين هم لفروجهم حافظون ۝ إلا على أزواجهم أو ما ملكت
أيمانهم فإنهم غير ملومين ۝ فمن ابتغى وراء ذلك فأولئك هم
العادون ۝ والذين هم لأماناتهم وعهدهم راعون ۝ والذين هم
على صلواتهم يحافظون ۝ أولئك هم الوارثون ۝ الذين يرثون
الفردوس هم فيها خالدون ۝ ولقد خلقنا الإنسان من سللة
من طين ۝ ثم جعلناه نطفة في قرار مكين ۝ ثم خلقنا النطفة
علقة فخلقنا العلقة مضغة فخلقنا المضغة عظاما فكسونا
العظام لحما ثم أنشأناه خلقا آخر فتبارك الله أحسن الخالقين ۝
ثم إنكم بعد ذلك لميتون ۝ ثم إنكم يوم القيامة تبعثون ۝ و
لقد خلقنا فوقكم سبع طرائق وما كنا عن الخلق غافلين ۝
وأنزلنا من السماء ماء بقدر فأسكناه في الأرض وإنا على
ذهاب به لقادرون ۝ فأنشأنا لكم به جنات من نخيل و
أعناب لكم فيها فواكه كثيرة ومنها تأكلون ۝ وشجرة تخرج

م व. लाज़िम م व. लाज़िम

२३ सूरः मुअ्मिनून ७४

सूरः मुअ्मिनून मक्की है और इस में एक सौ अठारह् आयतें और छः रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

बेशक ईमान वाले कामियाब हो गये, (१) जो नमाज़ में इज्ज़ व नियाज़ करते हैं, (२) और जो बेहूदा बातों से मुंह मोड़े रहते हैं, (३) और जो ज़कात अदा करते हैं, (४) और जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करते हैं, (५) मगर अपनी बीवियों से या (बांदियों से), जो उन की मिल्कियत होती हैं कि (उन से सोहबत करने से) उन्हें मलामत नहीं, (६) और जो इन के सिवा औरों के तालिब हों, वे (ख़ुदा की मुक़र्रर की हुई) हद से निकल जाने वाले हैं, (७) और जो अमानतों और इक़रारों का ध्यान करते हैं, (८) और जो नमाज़ों की पाबंदी करते हैं, (९) यही लोग मीरास हासिल करने वाले हैं। (१०) (यानी) जो बहिश्त की मीरास हासिल करेंगे (और) उस में हमेशा रहेंगे। (११) और हम ने इन्सान को मिट्टी के ख़ुलासे[1] से पैदा किया है। (१२) फिर उस को एक मज़बूत (और महफ़ूज़) जगह में नुत्फ़ा बना कर रखा। (१३) फिर नुत्फ़े का लोथड़ा बनाया, फिर लोथड़े की बोटी बनायी, फिर बोटी की हड्डियां बनायीं, फिर हड्डियों पर गोश्त (-पोस्त) चढ़ाया, फिर उस को नयी सूरत में बना दिया, तो ख़ुदा जो सब से बेहतर बनाने वाला, बड़ा बरकत वाला है। (१४) फिर इस के बाद तुम मर जाते हो। (१५) फिर क़ियामत के दिन उठा खड़े किये जाओगे। (१६) और हम ने तुम्हारे ऊपर (की तरफ़) सात आसमान पैदा किए और हम ख़ल्क़त से ग़ाफ़िल नहीं हैं। (१७) और हम ही ने आसमान से एक अन्दाज़े के साथ पानी उतारा, फिर उस को ज़मीन में ठहरा दिया और हम उस के नाबूद कर देने पर भी क़ादिर हैं। (१८) फिर हम ने उस से तुम्हारे लिए खजूरों और अंगूरों के बाग़ बनाए उन में तुम्हारे लिए बहुत-से मेवे पैदा होते हैं

---

१. 'ख़ुलासा' 'सुलाला' का तर्जुमा है। सुलाला उस को कहते हैं, जो किसी चीज़ के साफ़ और ख़ालिस करने से उस में से निकालते हैं और वही ख़ुलासा है और उसी को सत कहते हैं।

व. लाज़िम व. लाज़िम

व श-ज-र-तन् तख़्रुजु मिन्-तूरि सैना-अ तम्बुतु बिद्दुह्नि व सिब्गि़लिल्-आकिलीन (२०) व इन्-न लकुम् फ़िल्-अन्आमि ल-अिब्-र-तन् ॰ नुस्क़ीकुम् मिम्मा फ़ी बुतूनिहा व लकुम् फ़ीहा मनाफ़िअु कसी-रतुंव्-व मिन्हा तअ्कुलून॥ (२१) व अलैहा व अ-लल्फ़ुल्कि तुह्मलून ★ (२२) व ल-क़द् अर्सल्ना नूहन् इला क़ौमिही फ़-का-ल या क़ौमिअ्-बुदुल्ला-ह मा लकुम् मिन् इलाहिन् ग़ैरुहू ॰ अ-फ़ला तत्तक़ून (२३) फ़-क़ालल्-म-ल-उल्लज़ी-न क-फ़रू मिन् क़ौमिही मा हाज़ा इल्ला ब-श-रुम् - मिस्लुकुम् ॥ युरीदु अंय्य-त-फ़ज़्ज़-ल अलैकुम् ॰ व लौ शा-अल्लाहु ल-अन्ज़-ल मलाइक-तम् ॓ मा समिअ्-ना बिहाज़ा फ़ी आबाइनल्-अव्वलीन ॓ (२४) इन् हु-व इल्ला रजुलुम्-बिही जिन्नतुन् फ़-त-रब्बसू बिही हत्ता हीन (२५) का-ल रब्बिन्सुर-नी बिमा कज़्ज़बून (२६) फ़-औहैना इलैहि अनिस्-नअिल्-फ़ुल्-क बि-अअ्-युनिना व वह्यिना फ़-इज़ा जा-अ अम्रुना व फ़ारत्तन्नूरु॥

مِنْ طُورِ سَيْنَاءَ تَنْبُتُ بِالدُّهْنِ وَصِبْغٍ لِلْآكِلِينَ ۝ وَإِنَّ لَكُمْ
فِي الْأَنْعَامِ لَعِبْرَةً ۖ نُسْقِيكُمْ مِمَّا فِي بُطُونِهَا وَلَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ كَثِيرَةٌ
وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ۝ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُونَ ۝ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا
نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَقَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۖ أَفَلَا
تَتَّقُونَ ۝ فَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ مَا هَٰذَا إِلَّا بَشَرٌ
مِثْلُكُمْ يُرِيدُ أَنْ يَتَفَضَّلَ عَلَيْكُمْ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَأَنْزَلَ مَلَائِكَةً
مَا سَمِعْنَا بِهَٰذَا فِي آبَائِنَا الْأَوَّلِينَ ۝ إِنْ هُوَ إِلَّا رَجُلٌ بِهِ جِنَّةٌ
فَتَرَبَّصُوا بِهِ حَتَّىٰ حِينٍ ۝ قَالَ رَبِّ انْصُرْنِي بِمَا كَذَّبُونِ ۝ فَأَوْحَيْنَا
إِلَيْهِ أَنِ اصْنَعِ الْفُلْكَ بِأَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا فَإِذَا جَاءَ أَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّورُ
فَاسْلُكْ فِيهَا مِنْ كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَأَهْلَكَ إِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ
الْقَوْلُ مِنْهُمْ ۖ وَلَا تُخَاطِبْنِي فِي الَّذِينَ ظَلَمُوا ۖ إِنَّهُمْ مُغْرَقُونَ ۝
فَإِذَا اسْتَوَيْتَ أَنْتَ وَمَنْ مَعَكَ عَلَى الْفُلْكِ فَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي
نَجَّانَا مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝ وَقُلْ رَبِّ أَنْزِلْنِي مُنْزَلًا مُبَارَكًا وَأَنْتَ
خَيْرُ الْمُنْزِلِينَ ۝ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ وَإِنْ كُنَّا لَمُبْتَلِينَ ۝ ثُمَّ أَنْشَأْنَا
مِنْ بَعْدِهِمْ قَرْنًا آخَرِينَ ۝ فَأَرْسَلْنَا فِيهِمْ رَسُولًا مِنْهُمْ أَنِ اعْبُدُوا
اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۖ أَفَلَا تَتَّقُونَ ۝ وَقَالَ الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِهِ
الَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِلِقَاءِ الْآخِرَةِ وَأَتْرَفْنَاهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا مَا

फ़स्लुक फ़ीहा मिन् कुल्लिन् ज़ौजैनिस्नैनि व अह्-ल-क इल्ला मन् स-ब-क़ अलैहिल्-क़ौलु मिन्हुम् ॓ व ला तुख़ातिब्नी फ़िल्लज़ी-न ज़-लमू ॓ इन्नहुम् मुग़्रक़ून (२७) फ़-इज़स्तवै-त अन्-त व मम्-म-अ-क अ-लल्फ़ुल्कि फ़क़ुलिल्-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी नज्जाना मिनल्-क़ौमिज़्ज़ालिमीन (२८) व क़ुर्रब्बि अन्ज़िल्नी मुन्-ज़-लम्-मुबारकंव्-व अन्-त ख़ैरुल्-मुन्ज़िलीन (२९) इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिंव्-व इन् कुन्ना लमुब्तलीन (३०) सुम्-म अन्शअ्ना मिम्-बअ्-दिहिम् क़र्-नन् आख़रीन ॓ (३१) फ़-अर्सल्ना फ़ीहिम् रसूलम्-मिन्हुम् अनिअ्-बुदुल्ला-ह मा लकुम् मिन् इलाहिन् ग़ैरुहू ॰ अ-फ़ला तत्तक़ून ★(३२) व क़ालल्-मल-उ मिन् क़ौमिहिल्लज़ी-न क-फ़रू व कज़्ज़बू बिलिक़ाइल्-आख़िरति व अत-रफ़्नाहुम् फ़िल्-हयातिद्दुन्या॥ मा हाज़ा इल्ला ब-श-रुम् - मिस्लुकुम्॥ यअ्कुलु मिम्मा तअ्कुलू-न मिन्हु व यश्रबु मिम्मा तश्रबून (३३)

और उनमें से तुम खाते हो। (१६) और वह पेड़ भी (हम ही ने पैदा किया) जो तूरे सैना में पैदा होता है (यानी ज़ैतून का पेड़ कि) खाने के लिए रोग़न और सालन लिए हुए उगता है। (२०) और तुम्हारे लिए चारपायों में भी इब्रत (और निशानी) है कि जो उन के पेटों में है, उस से हम तुम्हें (दूध) पिलाते हैं और तुम्हारे लिए उन में (और भी) बहुत से फ़ायदे हैं और कुछ को तुम खाते भी हो। (२१) और उन पर और कश्तियों पर तुम सवार होते हो। (२२)★

और हम ने नूह को उन की क़ौम की तरफ़ भेजा, तो उन्हों ने उन से कहा कि ऐ क़ौम! ख़ुदा ही की इबादत करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं, क्या तुम डरते नहीं? (२३) तो उनकी क़ौम के सरदार जो काफ़िर थे, कहने लगे कि यह तो तुम ही जैसा आदमी है, तुम पर बड़ाई हासिल करना चाहता है और अगर ख़ुदा चाहता तो फ़रिश्ते उतार देता। हम ने अपने अगले बाप-दादा में तो यह बात कभी सुनी नहीं। (२४) इस आदमी को जो दीवानगी (का मरज़) है, तो इसके बारे में कुछ मुद्दत इन्तिज़ार करो। (२५) (नूह ने) कहा कि परवरदिगार। उन्हों ने मुझे झुठलाया है, तो मेरी मदद कर। (२६) पस हम ने उन की तरफ़ वह्य भेजी है कि हमारे सामने और हमारे हुक्म से एक कश्ती बनाओ। फिर जब हमारा हुक्म आ पहुंचे और तनूर (पानी से भर कर) जोश मारने लगे तो सब (क़िस्म के जानवरों) में से जोड़ा-जोड़ा (यानी नर और मादा) दो-दो कश्ती में बिठा लो और घर वालों को भी, सिवा उन के, जिन के बारे में उन में से (हलाक होने का) हुक्म पहले (लागू) हो चुका है और ज़ालिमों के बारे में हमसे कुछ न कहना। वे ज़रूर डुबो दिए जाएंगे। (२७) और जब तुम और तुम्हारे साथी कश्ती में बैठ जाओ तो (ख़ुदा का शुक्र करना और) कहना कि तारीफ़ ख़ुदा ही के लिए है, जिस ने हम को ज़ालिम लोगों से निजात बख़्शी। (२८) और (यह भी) दुआ करना कि ऐ परवरदिगार! हम को मुबारक जगह उतारियो और तू सब से बेहतर उतारने वाला है। (२९) बेशक इस (क़िस्से) में निशानियां हैं और हमें तो आज़माइश करनी थी, (३०) फिर इन के बाद हम ने एक और जमाअत पैदा की। (३१) और उन्हीं में से एक पैग़म्बर भेजा (जिस ने उन से कहा) कि ख़ुदा की इबादत करो (कि) उस के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं। तो क्या तुम डरते नहीं? (३२)★

तो उन की क़ौम के सरदार जो काफ़िर थे और आख़िरत के आने को झूठ समझते थे और दुनिया की ज़िंदगी में हम ने उन को आसूदगी दे रखी थी, कहने लगे कि यह तो तुम ही जैसा आदमी है, जिस क़िस्म का खाना तुम खाते हो, उसी तरह का यह भी खाता है और जो (पानी) तुम पीते

★रु. १/१ आ २२ ★रु. २/२ आ १०

व ल-इन् अ-तअ्-तुम् ब-श-रम्-मिस-लकुम् ॥ इन्नकुम् इज़ल्लख़ासिरून ॥ (३४) अ-यअिदुकुम् अन्नकुम् इज़ा मित्तुम् व कुन्तुम् तुराबंव्-व अिज़ामन् अन्नकुम् मुख़्रजून ॥ (३५) हैहा-त हैहा-त लिमा तूअदून ॥ (३६) इन् हि - य इल्ला हयातुनद्दुन्या नमूतु व नह्या व मा नह्नु बिमब्अूसीन ॥ (३७)

इन् हु - व इल्ला रजुलु-नि-फ़्तरा अ-लल्लाहि कज़िबंव - व मा नह्नु लहू बिमुअ्मिनीन (३८) क़ा-ल रब्बिन्सुर्नी बिमा कज़्ज़बून (३९) क़ा-ल अम्मा क़लीलिल् - लयुस्बिहुन्-न नादिमीन ᴄ (४०) फ़-अ-ख़-ज़त् - हुमुस्सैहतु बिल्हक़्क़ि फ़ ज-अल्नाहुम् ग़ुसा-अन् ᴄ फ़बुअ्-दल्लिल् - क़ौमिज़्ज़ालिमीन (४१) सुम-म अन्शअ्ना मिम्-बअ्-दिहिम् क़ुरूनन् आख़रीन ॰ (४२) मा तस्बिक़ु मिन् उम्मतिन् अ-ज-लहा व मा यस्तअ्ख़िरून ॰ (४३) सुम् - म अर्सल्ना रुसुलना तत्रा ॰ कुल्लमा जा-अ उम्म-तर्रसूलुहा कज़्ज़बूहु फ़-अत्बअ्-ना बअ्-ज़हुम् बअ्-ज़ंव्-व ज-अल्नाहुम् अहादी-स ᴄ फ़-बुअ् - दल्लिक़ौमिल्ला युअ्मिनून (४४) सुम् - म अर्सल्ना मूसा व अख़ाहु हारू - न ॥ बिआयातिना व सुल्तानिम् - मुबीन ॥ (४५) इला फ़िर्औ - न व म - ल-इही फ़स्तक्बरू व कानू क़ौमन् आलीन ᴄ (४६) फ़-क़ालू अनुअ्मिनु लि-ब-शरैनि मिस्लिना व क़ौमुहुमा लना आबिदून ᴄ (४७) फ़-कज़्ज़बू-हुमा फ़कानू मिनल्-मुह्लकीन (४८) व ल-क़द् आतैना मूसल्किता-ब ल-अल्लहुम् यह्तदून (४९) व ज-अल्-नब्-न मर्य-म व उम्महू आ-य-तंव्-व आवैनाहुमा इला रब्-वतिन् ज़ाति क़रारिंव्-व मअीन ★ (५०) या अय्युहर्रुसुलु कुलू मिनत्तय्यिबाति वअ् - मलू सालिहन् ॰ इन्नी बिमा तअ् - मलू-न अलीम ॰ (५१) व इन्-न हाज़िही उम्मतुकुम् उम्मतंव्वाहि-द-तंव् - व अ-न रब्बुकुम् फ़त्तक़ू-न (५२)

هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يَاْكُلُ مِمَّا تَاْكُلُوْنَ مِنْهُ وَيَشْرَبُ مِمَّا تَشْرَبُوْنَ ۝
وَلَئِنْ اَطَعْتُمْ بَشَرًا مِّثْلَكُمْ اِنَّكُمْ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ۝ اَيَعِدُكُمْ اَنَّكُمْ اِذَا
مِتُّمْ وَكُنْتُمْ تُرَابًا وَّعِظَامًا اَنَّكُمْ مُّخْرَجُوْنَ ۝ هَيْهَاتَ هَيْهَاتَ لِمَا
تُوْعَدُوْنَ ۝ اِنْ هِيَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوْتُ وَنَحْيَا وَمَا نَحْنُ
بِمَبْعُوْثِيْنَ ۝ اِنْ هُوَ اِلَّا رَجُلُ ِۨافْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا وَّمَا نَحْنُ لَهٗ
بِمُؤْمِنِيْنَ ۝ قَالَ رَبِّ انْصُرْنِيْ بِمَا كَذَّبُوْنِ ۝ قَالَ عَمَّا قَلِيْلٍ لَّيُصْبِحُنَّ
نٰدِمِيْنَ ۝ فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ بِالْحَقِّ فَجَعَلْنٰهُمْ غُثَآءً ۚ فَبُعْدًا لِّلْقَوْمِ
الظّٰلِمِيْنَ ۝ ثُمَّ اَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قُرُوْنًا اٰخَرِيْنَ ۝ مَا تَسْبِقُ مِنْ
اُمَّةٍ اَجَلَهَا وَمَا يَسْتَاْخِرُوْنَ ۝ ثُمَّ اَرْسَلْنَا رُسُلَنَا تَتْرَا ۗ كُلَّمَا جَآءَ
اُمَّةً رَّسُوْلُهَا كَذَّبُوْهُ فَاَتْبَعْنَا بَعْضَهُمْ بَعْضًا وَّجَعَلْنٰهُمْ اَحَادِيْثَ ۚ
فَبُعْدًا لِّقَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ۝ ثُمَّ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى وَاَخَاهُ هٰرُوْنَ ۙ
بِاٰيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۝ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا
قَوْمًا عَالِيْنَ ۝ فَقَالُوْٓا اَنُؤْمِنُ لِبَشَرَيْنِ مِثْلِنَا وَقَوْمُهُمَا لَنَا عٰبِدُوْنَ ۝
فَكَذَّبُوْهُمَا فَكَانُوْا مِنَ الْمُهْلَكِيْنَ ۝ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ
لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ۝ وَجَعَلْنَا ابْنَ مَرْيَمَ وَاُمَّهٗٓ اٰيَةً وَّاٰوَيْنٰهُمَآ
اِلٰى رَبْوَةٍ ذَاتِ قَرَارٍ وَّمَعِيْنٍ ۝ يٰٓاَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُوْا مِنَ الطَّيِّبٰتِ وَ
اعْمَلُوْا صَالِحًا ۭ اِنِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ۝ وَاِنَّ هٰذِهٖٓ اُمَّتُكُمْ اُمَّةً

★रु. ३/३ आ १८

हो, उसी क़िस्म का यह भी पीता है। (३३) अगर तुमने अपने ही जैसे आदमी का कहा मान लिया, तो घाटे में पड़ गये। (३४) क्या यह तुम से यह कहता है कि जब तुम मर जाओगे और मिट्टी हो जाओगे और हड्डी (के सिवा कुछ न रहेगा) तो तुम (ज़मीन से) निकाले जाओगे? (३५) जिस बात का तुम से वायदा किया जाता है (बहुत) दूर और (बहुत) दूर है। (३६) ज़िंदगी तो यही हमारी दुनिया की ज़िंदगी है कि (इस में) हम मरते और जीते हैं और हम फिर नहीं उठाए जाएंगे। (३७) यह तो एक ऐसा आदमी है, जिस ने खुदा पर झूठ गढ़ा है और हम इस को मानने वाले नहीं। (३८) (पैग़म्बर ने) कहा कि ऐ परवरदिगार! उन्हों ने मुझे झूठा समझा है, तू मेरी मदद कर। (३९) फ़रमाया कि ये थोड़े ही अर्से में शर्मिंदा हो कर रह जाएंगे। (४०) तो उन को बरहक़ (वायदे के मुताबिक़) ज़ोर की आवाज़ ने आ पकड़ा, तो हम ने उन को कूड़ा कर डाला, पस ज़ालिम लोगों पर लानत है। (४१) फिर उन के बाद हम ने और जमाअतें पैदा कीं। (४२) कोई जमाअत अपने वक़्त से न आगे जा सकती है, न पीछे रह सकती है। (४३) फिर हम एक के बाद एक अपने पैग़म्बर भेजते रहे। जब किसी उम्मत के पास उस का पैग़म्बर आता था, वे उसे झुठला देते थे, तो हम भी कुछ को कुछ के पीछे (हलाक करते और उन पर अज़ाब) लाते रहे और उन के अफ़साने बनाते रहे। पस जो लोग ईमान नहीं लाते, उन पर लानत। (४४) फिर हम ने मूसा और उन के भाई हारून को अपनी निशानियां और ज़ाहिरी दलील दे कर भेजा। (४५) (यानी) फ़िऔन और उस की जमाअत की तरफ़, तो उन्हों ने घमंड किया और वे सरकश लोग थे। (४६) कहने लगे कि क्या हम उन अपने दो आदमियों पर ईमान ले आएं और उन की क़ौम के लोग हमारे खिदमतगार हैं। (४७) तो उन लोगों ने उन को झुठलाया, सो (आखिर) हलाक कर दिए गए। (४८) और हम ने मूसा को किताब दी थी, ताकि वे लोग हिदायत पाएं। (४९) और हम ने मरयम के बेटे (ईसा) और उन की मां को (अपनी) निशानी बनाया था और उन को एक ऊंची जगह पर, जो रहने के लायक़ थी और जहां (निथरा हुआ) पानी जारी था पनाह दी थी। (५०)★

ऐ पैग़म्बरो! पाकीज़ा चीज़ें खाओ और नेक अमल करो। जो अमल तुम करते हो, मैं उन को जानता हूं। (५१) और यह तुम्हारी जमाअत (हक़ीक़त में) एक ही जमाअत है और मैं तुम्हारा

★रु. ३/३ आ १८

फ़-त-क़त्तअू अम् - रहुम् बैनहुम् ज़ुबुरन् ؕ कुल्लु हिज़्बिम् - बिमा लदैहिम्
फ़रिहून (५३) फ़-ज़र्हुम् फ़ी ग़म्-रतिहिम् हत्ता हीन (५४) अ-यह्सबू-न
अन्नमा नुमिद्दुहुम् बिही मिम्मालिंव्-व बनीन ۙ (५५) नुसारिअु लहुम्
फ़िल्-ख़ैराति ؕ बल् ला यश्अुरून (५६) इन्नल्लज़ी-न हुम् मिन् ख़श्यति
रब्बिहिम् मुश्फ़िक़ून ۙ (५७) वल्लज़ी-न
हुम् बिआयाति रब्बिहिम् युअ्मिनून ۙ (५८)
वल्लज़ी - न हुम् बिरब्बिहिम् ला
युश्रिकून ؕ (५९) वल्लज़ी - न युअ्तू-न
मा आतव्-व क़ुलूबुहुम् वजि-लतुन् अन्नहुम्
इला रब्बिहिम् राजिअून ۙ (६०)
उलाइ-क युसारिअू-न फ़िल्-ख़ैराति व हुम्
लहा साबिक़ून (६१) व ला नुकल्लिफ़ु
नफ़्सन् इल्ला वुस - अहा ✓ व लदैना
किताबुंय्यन्तिक़ु बिल्हक़्क़ि व हुम् ला
युज़्लमून (६२) बल् क़ुलूबुहुम् फ़ी
ग़म्-रतिम्-मिन् हाज़ा व लहुम् अअ्-मालुम्-

وَّاحِدَةً وَّاَنَا رَبُّكُمْ فَاتَّقُوْنِ ۝٥٢ فَتَقَطَّعُوْٓا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ زُبُرًا ؕ كُلُّ
حِزْبٍۭ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُوْنَ ۝٥٣ فَذَرْهُمْ فِيْ غَمْرَتِهِمْ حَتّٰى حِيْنٍ ۝٥٤
اَيَحْسَبُوْنَ اَنَّمَا نُمِدُّهُمْ بِهٖ مِنْ مَّالٍ وَّبَنِيْنَ ۝٥٥ نُسَارِعُ لَهُمْ فِي
الْخَيْرٰتِ ؕ بَلْ لَّا يَشْعُرُوْنَ ۝٥٦ اِنَّ الَّذِيْنَ هُمْ مِّنْ خَشْيَةِ رَبِّهِمْ
مُّشْفِقُوْنَ ۝٥٧ وَالَّذِيْنَ هُمْ بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُوْنَ ۝٥٨ وَالَّذِيْنَ هُمْ بِرَبِّهِمْ
لَا يُشْرِكُوْنَ ۝٥٩ وَالَّذِيْنَ يُؤْتُوْنَ مَآ اٰتَوْا وَّقُلُوْبُهُمْ وَجِلَةٌ اَنَّهُمْ اِلٰى
رَبِّهِمْ رٰجِعُوْنَ ۝٦٠ اُولٰٓئِكَ يُسٰرِعُوْنَ فِي الْخَيْرٰتِ وَهُمْ لَهَا سٰبِقُوْنَ ۝٦١ وَ
لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا وَلَدَيْنَا كِتٰبٌ يَّنْطِقُ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝٦٢
بَلْ قُلُوْبُهُمْ فِيْ غَمْرَةٍ مِّنْ هٰذَا وَلَهُمْ اَعْمَالٌ مِّنْ دُوْنِ ذٰلِكَ هُمْ لَهَا
عٰمِلُوْنَ ۝٦٣ حَتّٰٓى اِذَآ اَخَذْنَا مُتْرَفِيْهِمْ بِالْعَذَابِ اِذَا هُمْ يَجْئَرُوْنَ ۝٦٤
لَا تَجْئَرُوا الْيَوْمَ ۫ اِنَّكُمْ مِّنَّا لَا تُنْصَرُوْنَ ۝٦٥ قَدْ كَانَتْ اٰيٰتِيْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ
فَكُنْتُمْ عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ تَنْكِصُوْنَ ۝٦٦ مُسْتَكْبِرِيْنَ ۖۗ بِهٖ سٰمِرًا تَهْجُرُوْنَ ۝٦٧
اَفَلَمْ يَدَّبَّرُوا الْقَوْلَ اَمْ جَآءَهُمْ مَّا لَمْ يَاْتِ اٰبَآءَهُمُ الْاَوَّلِيْنَ ۝٦٨ اَمْ
لَمْ يَعْرِفُوْا رَسُوْلَهُمْ فَهُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ۝٦٩ اَمْ يَقُوْلُوْنَ بِهٖ جِنَّةٌ ؕ بَلْ
جَآءَهُمْ بِالْحَقِّ وَاَكْثَرُهُمْ لِلْحَقِّ كٰرِهُوْنَ ۝٧٠ وَلَوِ اتَّبَعَ الْحَقُّ اَهْوَآءَهُمْ
لَفَسَدَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهِنَّ ؕ بَلْ اَتَيْنٰهُمْ بِذِكْرِهِمْ
فَهُمْ عَنْ ذِكْرِهِمْ مُّعْرِضُوْنَ ۝٧١ اَمْ تَسْـَٔلُهُمْ خَرْجًا فَخَرَاجُ رَبِّكَ

मिन् दूनि ज़ालि-क हुम् लहा आमिलून (६३) हत्ता इज़ा अ-ख़ज़्ना
मुत्-र-फ़ीहिम् बिल्अ़ज़ाबि इज़ा हुम् यज्-अरून ؕ (६४) ला तज्-अरुल्-
यौ-म इन्नकुम् मिन्ना ला तुन्सरून (६५) क़द् कानत् आयाती तुत्ला
अ़लैकुम् फ़कुन्तुम् अ़ला अअ्-क़ाबिकुम् तन्किसून (६६) मुस्तक्बिरी-न
बिही सामिरन् तह्जुरून (६७) अ-फ़ लम् यद्दब्बरुल्-क़ौ-ल अम् जा-अहुम्
मा लम् यअ्ति आबा-अ-हुमुल्-अव्वलीन ✓ (६८) अम् लम् यअ्-रिफ़ू रसूलहुम्
फ़हुम् लहू मुन्किरून ✓ (६९) अम् यक़ूलू-न बिही जिन्नतुन् ؕ बल् जा-अहुम्
बिल्हक़्क़ि व अक्सरुहुम् लिल्हक़्क़ि कारिहून (७०) व लवित्त-ब-अल्-हक़्क़ु
अह्वा-अहुम् ल-फ़-स-दतिस्-समावातु वल्अर्ज़ु व मन् फ़ीहिन्-न ؕ बल् आतैनाहुम्
बिज़िक्रिहिम् फ़हुम् अन् ज़िक्रिहिम् मुअ्-रिज़ू-न ؕ (७१) अम् तस्-अलुहुम्
ख़र्जन् फ़-ख़राजु रब्बि-क ख़ैरुंव्-व हु - व ख़ैरुर्-राज़िक़ीन (७२)

परवरदिगार हूं, तो मुझ से डरो। (५२) फिर उन्हों ने आपस में अपने काम को मुतफ़र्रिक़ कर के जुदा-जुदा कर दिया। जो चीज़ जिस फ़िर्क़े के पास है, वह इस मे खुश हो रहा है। (५३) तो उन को एक मुद्दत तक उन की ग़फ़लत ही में रहने दो। (५४) क्या ये लोग यह ख्याल करते हैं कि हम जो दुनिया में उन को माल और बेटों से मदद देते हैं, (५५) (तो इस से) उन की भलाई में जल्दी कर रहे हैं, (नहीं,) बल्कि ये समझते ही नहीं। (५६) जो लोग अपने परवरदिगार के खौफ़ से डरते हैं, (५७) और जो अपने परवरदिगार की आयतों पर ईमान रखते हैं, (५८) और जो अपने परवर-दिगार के साथ शरीक नहीं करते, (५९) और जो दे सकते हैं, देते हैं और उन के दिल इस बात से डरते हैं कि उन को अपने परवरदिगार की तरफ़ लौट कर जाना है, (६०) यही लोग नेकियों में जल्दी करते और यही उन के लिए आगे निकल जाते हैं। (६१) और हम किसी शख्स को उस की ताक़त से ज्यादा तक्लीफ़ नहीं देते और हमारे पास किताब है, जो सच-सच कह देती है और उन (लोगों) पर ज़ुल्म नहीं किया जाएगा। (६२) मगर उन के दिल इन (बातों) की तरफ़ से ग़फ़लत में (पड़े हुए) हैं, और इन के सिवा और आमाल भी हैं जो ये करते रहते हैं। (६३) यहां तक कि जब हम ने उन में से खाते-पीते लोगों को पकड़ लिया, तो वे उस वक़्त तिलमिला उठेंगे। (६४) आज मत तिलमिलाओ, तुम को हम से कुछ मदद नहीं मिलेगी। (६५) मेरी आयतें तुम को पढ़-पढ़ कर सुनायी जाती थीं और तुम उल्टे पांव फिर-फिर जाते थे। (६६) उस से सरकशी करते, कहानियों में लगे रहते और बेहूदा बकवास करते थे। (६७) क्या उन्हों ने इस कलाम में ग़ौर नहीं किया, या उन के पास कोई ऐसी चीज़ आयी है जो उन के अगले बाप-दादा के पास नहीं आयी थी। (६८) या ये अपने पैग़म्बर को जानते-पहचानते नहीं, इस वजह से उनको नहीं मानते? (६९) क्या ये कहते हैं कि इसे सौदा है (नहीं,) बल्कि वह उन के पास हक़ को ले कर आए हैं और उन में अक्सर हक़ को ना-पसन्द करते हैं। (७०) और अगर (खुदा-ए-बर-) हक़ उन की ख्वाहिशों पर चले तो आसमान और ज़मीन, और जो उन में हैं, सब टूट-फूट जाएं, बल्कि हम ने उस के पास उन की नसीहत (की किताब) पहुंचा दी है और वे अपनी (किताब) नसीहत से मुंह फेर रहे हैं। (७१) क्या तुम उन से (तब्लीग़ के बदले में) कुछ माल मांगते हो, तो तुम्हारे परवरदिगार का माल बहुत अच्छा है और वह सब से बेहतर रोज़ी देने वाला है। (७२) और तुम तो उन को सीधे रास्ते की

व इन्न-क ल-तद्ऊहुम् इला सिरातिम्-मुस्तक़ीम ● (७३) व इन्नल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिल्आख़िरति अनिस्सिराति लनाकिबून (७४) व लौ रहिम्नाहुम् व क-शफ़्ना मा बिहिम् मिन् ज़ुर्रिल्-ल-लज्जू फ़ी तुग़्यानिहिम् यअ्-महून (७५) व ल-क़द् अ-ख़ज़्नाहुम् बिल्अ़ज़ाबि फ़-मस्तकानू लिरब्बिहिम् व मा य-त-ज़र्रअ़ून (७६) हत्ता इज़ा फ़-तह्ना अ़लैहिम् बाबन् ज़ा अ़ज़ाबिन् शदीदिन् इज़ाहुम् फ़ीहि मुब्लिसून ★ (७७) व हुवल्लज़ी अन्-श-अ लकुमुस्सम्-अ़ वल्अब्सा-र वल्-अफ़्इ-द-त ؕ क़लीलम्मा तश्कुरून (७८) व हुवल्लज़ी ज़-र-अकुम् फ़िल्अर्ज़ि व इलैहि तुह्-शरून (७९) व हुवल्लज़ी युह्यी व युमीतु व लहुख़्तिलाफ़ुल्-लैलि वन्नहारि ؕ अ-फ़ला तअ्-क़िलून (८०) बल् क़ालू मिस्-ल मा क़ालल्-अव्वलून (८१) क़ालू अ-इज़ा मित्ना व कुन्ना तुराबंव-व अ़िज़ामन् अ इन्ना ल-मब्अ़ूसून (८२) ल-क़द् वुअ़िद्ना नह्नु व आबाउना हाज़ा मिन् क़ब्लु इन् हाज़ा इल्ला असातीरुल्-अव्वलीन (८३) क़ुल् लिमनिल् - अर्ज़ु व मन् फ़ीहा इन् कुन्तुम् तअ़्-लमून (८४) स-यक़ूलू-न लिल्लाहि ؕ क़ुल् अ-फ़ला त-ज़क्करून (८५) क़ुल् मर्रब्बुस्-समावातिस्-सब्अ़ि व रब्बुल्-अ़र्शिल्-अ़ज़ीम (८६) स-यक़ूलू-न लिल्लाहि ؕ क़ुल् अ-फ़ला तत्तक़ून (८७) क़ुल् मम् - बियदिही म-लकूतु कुल्लि शैइंव्-व हु-व युजीरु व ला युजारु अ़लैहि इन् कुन्तुम् तअ्-लमून (८८) स-यक़ूलू-न लिल्लाहि ؕ क़ुल् फ़-अन्ना तुस्-हरून (८९) बल् अतैनाहुम् बिल्हक़्क़ि व इन्नहुम् ल-काज़िबून (९०) मत्त-ख़-ज़ल्लाहु मिंव्व-लदिंव्-व मा का-न म-अ़हू मिन् इलाहिन् इज़ल्-ल-ज़-ह-ब कुल्लु इलाहिम्-बिमा ख़-ल-क़ व ल-अ़ला बअ़्-ज़ुहुम् अ़ला बअ़्-ज़िन् ؕ सुब्हानल्लाहि अ़म्मा यसिफ़ून ۙ (९१)

خَيْرٌ ۖ وَّهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿٧٢﴾ وَاِنَّكَ لَتَدْعُوْهُمْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٧٣﴾
وَاِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ عَنِ الصِّرَاطِ لَنٰكِبُوْنَ ﴿٧٤﴾ وَلَوْ
رَحِمْنٰهُمْ وَكَشَفْنَا مَا بِهِمْ مِّنْ ضُرٍّ لَّلَجُّوْا فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿٧٥﴾ وَ
لَقَدْ اَخَذْنٰهُمْ بِالْعَذَابِ فَمَا اسْتَكَانُوْا لِرَبِّهِمْ وَمَا يَتَضَرَّعُوْنَ ﴿٧٦﴾
حَتّٰٓى اِذَا فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا ذَا عَذَابٍ شَدِيْدٍ اِذَا هُمْ فِيْهِ مُبْلِسُوْنَ ﴿٧٧﴾
وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ۗ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ﴿٧٨﴾
وَهُوَ الَّذِيْ ذَرَاَكُمْ فِي الْاَرْضِ وَاِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٧٩﴾ وَهُوَ الَّذِيْ يُحْيٖ
وَيُمِيْتُ وَلَهُ اخْتِلَافُ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ ۗ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٨٠﴾ بَلْ قَالُوْا
مِثْلَ مَا قَالَ الْاَوَّلُوْنَ ﴿٨١﴾ قَالُوْٓا ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا
لَمَبْعُوْثُوْنَ ﴿٨٢﴾ لَقَدْ وُعِدْنَا نَحْنُ وَاٰبَآؤُنَا هٰذَا مِنْ قَبْلُ اِنْ هٰذَآ
اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٨٣﴾ قُلْ لِّمَنِ الْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهَآ اِنْ كُنْتُمْ
تَعْلَمُوْنَ ﴿٨٤﴾ سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ۗ قُلْ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٨٥﴾ قُلْ مَنْ رَّبُّ
السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ﴿٨٦﴾ سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ۗ قُلْ
اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿٨٧﴾ قُلْ مَنْ بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُوَ يُجِيْرُ
وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٨٨﴾ سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ۗ قُلْ فَاَنّٰى
تُسْحَرُوْنَ ﴿٨٩﴾ بَلْ اَتَيْنٰهُمْ بِالْحَقِّ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿٩٠﴾ مَا اتَّخَذَ اللّٰهُ
مِنْ وَّلَدٍ وَّمَا كَانَ مَعَهٗ مِنْ اِلٰهٍ اِذًا لَّذَهَبَ كُلُّ اِلٰهٍۢ بِمَا خَلَقَ

● रुकूअ़ १/४ ★रु. ४/४ आ २७

तरफ़ बुलाते हो●(७३) और जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं लाते, वे रास्ते से अलग हो रहे हैं। (७४) और अगर हम उन पर रहम करें और जो तक्लीफ़ें उन को पहुंच रही हैं, वे दूर करें, तो अपनी सरकशी पर अड़े रहें (और) भटकते (फिरें)। (७५) और हम ने उन को अज़ाब में भी पकड़ा, तो उन्हों ने ख़ुदा के आगे आजिज़ी न की और वे आजिज़ी करते ही नहीं, (७६) यहां तक कि जब हम ने उन पर तेज़ अज़ाब का दरवाज़ा खोल दिया, तो उस वक़्त वहां ना-उम्मीद हो गये। (७७)★

और वही तो है जिस ने तुम्हारे कान और आंखें और दिल बनाए (लेकिन) तुम कम शुक्र-गुज़ारी करते हो। (७८) और वही तो है जिस ने तुम को ज़मीन में पैदा किया और उसी की तरफ़ तुम जमा हो कर जाओगे। (७९) और वही है जो ज़िंदगी बख़्शता है और मौत देता है और रात और दिन का बदलते रहना उसी का तसर्रुफ़ है, क्या तुम समझते नहीं? (८०) बात यह है कि जो बात अगले (काफ़िर) कहते थे, उसी तरह की (बात) ये कहते हैं। (८१) कहते हैं कि जब हम मर जाएंगे और मिट्टी हो जाएंगे और (सड़ी-गली) हड्डियों (के सिवा कुछ न रहेगा) तो क्या हम फिर उठाए जाएंगे? (८२) यह वायदा हम से और हम से पहले हमारे बाप-दादा से भी होता चला आया है, (अजी) यह तो सिर्फ़ अगले लोगों की कहानियां हैं। (८३) कहो कि अगर तुम जानते हो तो (बताओ कि) ज़मीन और जो कुछ ज़मीन में है (सब) किस का माल है? (८४) झट बोल उठेंगे कि ख़ुदा का। कहो कि फिर तुम सोचते क्यों नहीं? (८५) (उन से) पूछो कि सात आसमानों का कौन मालिक है और बड़े अर्श का (कौन) मालिक (है)? (८६) बे-साख़्ता कह देंगे कि (ये चीज़ें) ख़ुदा ही की हैं। कहो कि फिर डरते क्यों नहीं? (८७) कहो कि अगर तुम जानते हो तो (बताओ कि) वह कौन है जिस के हाथ में हर चीज़ की बादशाही है और वह पनाह देता है और उसके मुक़ाबले में कोई किसी को पनाह नहीं दे सकता। (८८) फ़ौरन कह देंगे कि (ऐसी बादशाही तो) ख़ुदा ही की है। कहो कि फिर तुम पर जादू कहां से पड़ जाता है? (८९) बात यह है कि हमने उनके पास हक़ पहुंचा दिया है और ये (जो बुतपरस्ती किए जाते हैं) बेशक झूठे हैं। (९०) ख़ुदा ने न तो किसी को (अपना) बेटा बनाया है और न उस के साथ कोई और माबूद है, ऐसा होता तो हर माबूद अपनी-अपनी मख़्लूक़ात को लेकर चल देता और एक दूसरे पर ग़ालिब आ जाता। ये लोग जो कुछ (ख़ुदा के बारे में) बयान करते हैं, ख़ुदा उस से पाक है। (९१) वह पोशीदा और

●रुबुअ् १/४ ★रु. ४/४ आ २७

आलिमिल्-ग़ैबि वश्शहादति फ़-तआला अम्मा युश्रिकून ★(९२) क़ुर्रब्बि इम्मा तुरियन्नी मा यूअदून ۙ (९३) रब्बि फ़ला तज - अल्नी फ़िल्-क़ौमिज़्ज़ालिमीन (९४) व इन्ना अला अन् नुरि-य-क मा नअिदुहुम् ल-क़ादिरून (९५) इद्-फ़अ् बिल्लती हि-य अह्सनुस्-सय्यि-अ-त ط नह्नु अअ्-लमु बिमा यसिफ़ून (९६) व क़ुर्रब्बि अअूज़ु बि-क मिन् ह-म-ज़ातिश् - शयातीन ۙ (९७) व अअूज़ु बि-क रब्बि अंय्यह्ज़ुरून (९८) हत्ता इज़ा जा-अ अ-ह-दहुमुल्-मौतु क़ा-ल रब्बिर्जिअून ۙ (९९) ल-अल्ली अअ्-मलु सालिहन् फ़ीमा त-रक्तु कल्ला ط इन्नहा कलिमतुन् हु - व क़ाइलुहा ط व मिंव्वरा - इहिम् बर्ज़खुन् इला यौमि युब्-असून (१००) फ़-इज़ा नुफ़ि-ख़ फ़िस्सूरि फ़ला अन्सा-ब बैनहुन् यौमइज़िंव्-व ला य-त-सा-अलून (१०१) फ़-मन् सक़ुलत् मवा-ज़ीनुहू फ़-उलाइ-क हुमुल्-मुफ़्लिहून (१०२) व मन् ख़फ़्फ़त् मवाज़ीनुहू फ़-उलाइ - कल्लज़ी - न ख़सिरू अन्फ़ुसहुम् फ़ी जहन्न-म ख़ालिदून ج (१०३) तल्फ़हु वुजूह-हुमुन्नारु व हुम् फ़ीहा कालिहून (१०४) अ-लम् तकुन् आयाती तुत्ला अलैकुम् फ़कुन्तुम् बिहा तुकज़्ज़िबून (१०५) क़ालू रब्बना ग़-ल-बत् अलैना शिक़्वतुना व कुन्ना क़ौमन् ज़ाल्लीन (१०६) रब्बना अख़्रिज्ना मिन्हा फ़-इन् अुद्ना फ़इन्ना ज़ालिमून (१०७) क़ालख़्सऊ फ़ीहा व ला तुकल्लिमून (१०८) इन्नहू का-न फ़रीक़ुम्मिन् अिबादी यक़ूलू-न रब्बना आमन्ना फ़ग़्फ़िर्-लना वर्हम्ना व अन-त ख़ैरुर् - राहिमीन ج (१०९) फ़त्त - ख़ज़्तुमू - हुम् सिख़्रिय्यन् हत्ता अन्सौकुम् ज़िक्री व कुन्तुम् मिन्हुम् तज़्-हकून (११०) इन्नी जज़ैतु - हुमुल् - यौ-म बिमा स-बरू ۙ अन्नहुम् हुमुल् - फ़ाइज़ून (१११)

ولعلا بعضهم على بعض سبحن الله عما يصفون ۝ علم
الغيب والشهادة فتعلى عما يشركون ۝ قل رب اما تريني ما
يوعدون ۝ رب فلا تجعلني في القوم الظلمين ۝ وانا على ان
نريك ما نعدهم لقدرون ۝ ادفع بالتي هي احسن السيئة
نحن اعلم بما يصفون ۝ وقل رب اعوذ بك من همزت الشيطين ۝
واعوذ بك رب ان يحضرون ۝ حتى اذا جاء احدهم الموت
قال رب ارجعون ۝ لعلي اعمل صالحا فيما تركت كلا انها كلمة
هو قائلها ومن ورائهم برزخ الى يوم يبعثون ۝ فاذا نفخ في
الصور فلا انساب بينهم يومئذ ولا يتساءلون ۝ فمن
ثقلت موازينه فاولئك هم المفلحون ۝ ومن خفت موازينه
فاولئك الذين خسروا انفسهم في جهنم خلدون ۝ تلفح
وجوههم النار وهم فيها كلحون ۝ الم تكن ايتي تتلى عليكم فكنتم
بها تكذبون ۝ قالوا ربنا غلبت علينا شقوتنا وكنا قوما ضالين ۝
ربنا اخرجنا منها فان عدنا فانا ظلمون ۝ قال اخسئوا فيها ولا
تكلمون ۝ انه كان فريق من عبادي يقولون ربنا امنا
فاغفر لنا وارحمنا وانت خير الرحمين ۝ فاتخذتموهم سخريا
حتى انسوكم ذكري وكنتم منهم تضحكون ۝ اني جزيتهم اليوم

★रु. ५/५ आ १५

ज़ाहिर को जानता है और (मुश्रिक) जो उस के साथ शरीक करते हैं, (उस की शान) उस से बुलंद है। (९२)★

(ऐ मुहम्मद !) कहो कि ऐ परवरदिगार ! जिस अज़ाब का इन (कुफ़्फ़ार) से वायदा हुआ है, अगर तू मेरी ज़िंदगी में उन पर नाज़िल कर के मुझे भी दिखाये, (९३) तो ऐ परवरदिगार ! मुझे (उस से महफ़ूज़ रखियो और) इन ज़ालिमों में शामिल न कीजियो। (९४) और जो वायदा हम उन से कर रहे हैं, हम तुम को दिखा कर उन पर नाज़िल करने की क़ुदरत रखते हैं। (९५) और बुरी बात के जवाब में ऐसी बात कहो जो बहुत अच्छी हो और ये जो कुछ बयान करते हैं, हमें खूब मालूम है। (९६) और कहो कि ऐ परवरदिगार ! मैं शैतानों के वस्वसों से तेरी पनाह मांगता हूं। (९७) और ऐ परवरदिगार ! इस से भी तेरी पनाह मांगता हूं कि वह मेरे पास आ मौजूद हों। (९८) (ये लोग इसी तरह ग़फ़लत में रहेंगे) यहां तक कि जब उन में से किसी के पास मौत आ जाएगी तो कहेगा कि ऐ परवरदिगार ! मुझे फिर दुनिया में वापस भेज दे, (९९) ताकि मैं उसमें जिसे छोड़ आया हूं, नेक काम किया करूं, हरगिज़ नहीं यह एक (ऐसी) बात है कि वह उसे ज़ुबान से कह रहा होगा (और उस के साथ अमल नहीं होगा) और उस के पीछे बरज़ख है, (जहां वे) उस दिन तक कि (दोबारा) उठाए जाएंगे, (रहेंगे)। (१००) फिर जब सूर फूंका जाएगा, तो न तो उन में रिश्तेदारियां रहेंगी और न एक-दूसरे को पूछेंगे। (१०१) तो जिन के (अमलों के) बोझ

★रु. ५/ ५ आ १५

क़ा-ल कम् लबिस्तुम् फ़िल्अर्ज़ि अ-द-द सिनीन (११२) क़ालू लबिस्ना यौमन् औ बअ्-ज़ यौमिन् फ़स-अलिल्-आद्दीन (११३) क़ा-ल इल्लबिस्तुम् इल्ला क़लीलल्लौ अन्नकुम् कुन्तुम् तअ्-लमून (११४) अ-फ़-ह़सिब्तुम् अन्नमा ख़-लक़्ना-कुम् अ-ब-संव्-व अन्नकुम् इलैना ला तुर्जअून (११५) फ़-त-आलल्-लाहुल्-मलिकुल् - ह़क़्क़ु ८ ला इला - ह इल्ला हु-व ८ रब्बुल् - अ़र्शिल् - करीम (११६) व मंय्यद्अु म-अ़ल्लाहि इलाहन् आख़-र ॥ ला बुर्हा - न लहू बिही ॥ फ़-इन्नमा हिसाबुहू अिन् - द रब्बिही ৮ इन्नहू ला युफ़्लिहुल्-काफ़िरून (११७) व क़ुर्-रब्बिग़्फ़िर् वर्ह़म् व अन् - त ख़ैरुर् - राहिमीन ★ (११८)

२४ सूरतुन्-नूरि १०२

(मदनी) इस सूरः में अरबी के ६४१ अक्षर, १४२ शब्द, ६४ आयतें और ६ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम ●

सूरतुन् अन्ज़ल्नाहा व फ़-रज़्नाहा व अन्ज़ल्ना फ़ीहा आयातिम् - बय्यिनातिल्-ल-अल्लकुम् त-ज़क्करून (१) अज़्ज़ानियतु वज़्ज़ानी फ़ज्लिदू कुल्-ल वाहिदिम्-मिन्हुमा मि-अ-त जल्दतिंव्-व ला तअ्ख़ुज़्-कुम् बिहिमा रअ्-फ़तुन् फ़ी दीनिल्लाहि इन् कुन्तुम् तुअ्मिनू-न बिल्लाहि वल् - यौमिल् - आख़िरि ८ वल्-यश्-हद् अ़ज़ाबहुमा ताइ-फ़तुम्-मिनल्-मुअ्मिनीन (२) अज़्ज़ानी ला यन्किहु इल्ला ज़ानि-य-तन् औ मुश्रिक-तंव्-व वज़्ज़ानियतु ला यन्किहुहा इल्ला ज़ानिन् औ मुश्रिकुन् ८ व हुर्रि-म ज़ालि-क अ़-लल्-मुअ्मिनीन (३) वल्लज़ी-न यर्मूनल् - मुह्सनाति सुम्-म लम् यअ्तू बि - अर्-ब - अ़ति शु - हदा - अ फ़ज्लिदूहुम् समानी - न जल्दतंव् - व ला तक़्बलू लहुम् शहाद - तन् अ - ब - दन् ८ व उलाइ - क हुमुल् - फ़ासिक़ून ॥ (४)

بِمَا صَبَرُوا أَنَّهُمْ هُمُ الْفَائِزُونَ ﴿١١١﴾ قَالَ كَمْ لَبِثْتُمْ فِي الْأَرْضِ عَدَدَ
سِنِينَ ﴿١١٢﴾ قَالُوا لَبِثْنَا يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ فَاسْأَلِ الْعَادِّينَ ﴿١١٣﴾ قَالَ إِنْ
لَبِثْتُمْ إِلَّا قَلِيلًا لَوْ أَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿١١٤﴾ أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَاكُمْ
عَبَثًا وَأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لَا تُرْجَعُونَ ﴿١١٥﴾ فَتَعَالَى اللَّهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۖ لَا إِلَٰهَ
إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ ﴿١١٦﴾ وَمَنْ يَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ لَا
بُرْهَانَ لَهُ بِهِ فَإِنَّمَا حِسَابُهُ عِنْدَ رَبِّهِ ۚ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الْكَافِرُونَ ﴿١١٧﴾
وَقُلْ رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّاحِمِينَ ﴿١١٨﴾

سُورَةُ النُّورِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ أَرْبَعٌ وَسِتُّونَ آيَةً وَتِسْعُ رُكُوعَاتٍ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

سُورَةٌ أَنْزَلْنَاهَا وَفَرَضْنَاهَا وَأَنْزَلْنَا فِيهَا آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ لَعَلَّكُمْ
تَذَكَّرُونَ ﴿١﴾ الزَّانِيَةُ وَالزَّانِي فَاجْلِدُوا كُلَّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا مِائَةَ
جَلْدَةٍ ۖ وَلَا تَأْخُذْكُمْ بِهِمَا رَأْفَةٌ فِي دِينِ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُونَ
بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۖ وَلْيَشْهَدْ عَذَابَهُمَا طَائِفَةٌ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٢﴾
الزَّانِي لَا يَنْكِحُ إِلَّا زَانِيَةً أَوْ مُشْرِكَةً وَالزَّانِيَةُ لَا يَنْكِحُهَا إِلَّا زَانٍ أَوْ
مُشْرِكٌ ۚ وَحُرِّمَ ذَٰلِكَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ ﴿٣﴾ وَالَّذِينَ يَرْمُونَ الْمُحْصَنَاتِ
ثُمَّ لَمْ يَأْتُوا بِأَرْبَعَةِ شُهَدَاءَ فَاجْلِدُوهُمْ ثَمَانِينَ جَلْدَةً وَلَا تَقْبَلُوا
لَهُمْ شَهَادَةً أَبَدًا ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ﴿٤﴾ إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا

भारी होंगे, वे कामियाबी पाने वाले हैं। (१०२) और जिन के बोझ हल्के होंगे, वे वह लोग हैं, जिन्होंने अपने आपको घाटे में डाला, हमेशा दोज़ख़ में रहेंगे। (१०३) आग उन के मुंहों को झुलसा देगी और वे उस में त्यौरी चढ़ाये हुए होंगे। (१०४) क्या तुम को मेरी आयतें पढ़ कर सुनायी जाती थीं, (नहीं,) तुम उन को (सुनते थे और) झूठलाते थे। (१०५) ऐ हमारे परवरदिगार! हम पर हमारी कम-बख़्ती ग़ालिब हो गयी और हम रास्ते से भटक गये। (१०६) ऐ परवरदिगार! हम को इस में से निकाल दे। अगर हम फिर (ऐसे काम) करें तो ज़ालिम होंगे। (१०७) (ख़ुदा) फ़रमाएगा कि इसी में ज़िल्लत के साथ पड़े रहो और मुझ से बात न करो। (१०८) मेरे बन्दों में एक गिरोह था, जो दुआ किया करता था कि ऐ हमारे परवरदिगार! हम ईमान लाए, तो तू हम को बख़्श दे और हम पर रहम कर और तू सबसे बेहतर रहम करने वाला है। (१०९) तो तुम उनसे मज़ाक़ करते रहे, यहां तक कि उन के पीछे मेरी याद भी भूल गये और तुम (हमेशा) उनसे हंसी किया करते थे। (११०) आज मैं ने उनको उनके सब्र का बदला दिया कि वे कामियाब हो गये। (१११) (ख़ुदा) पूछेगा कि तुम ज़मीन में कितने वर्ष रहे? (११२) वे कहेंगे कि हम एक दिन या एक दिन से भी कम रहे थे, गिनती करने वालों से पूछ लीजिए। (११३) (ख़ुदा) फ़रमाएगा कि (वहां) तुम (बहुत ही) कम रहे। काश! तुम जानते होते। (११४) क्या तुम यह ख़्याल करते हो कि हमने तुम को बे-फ़ायदा पैदा किया है और यह कि तुम हमारी तरफ़ लौट कर नहीं आओगे? (११५) तो ख़ुदा जो सच्चा बादशाह है (उस की शान इस से) ऊंची है। उस के सिवा कोई माबूद नहीं। (वही) बुज़ुर्ग अर्श का मालिक है। (११६) और जो आदमी ख़ुदा के साथ और माबूद को पुकारता है, जिस की उस के पास कुछ सनद नहीं, तो उसका हिसाब ख़ुदा ही के यहां होगा। कुछ शक नहीं कि काफ़िर कामियाबी नहीं पाएंगे। (११७) और ख़ुदा से दुआ करो कि मेरे परवरदिगार मुझे बख़्श दे और (मुझ पर) रहम कर और तू सब से बेहतर रहम करने वाला है। (११८)★

२४ सूर: नूर १०२

सूर: नूर मदनी है और इस में चौंसठ आयतें और नौ रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

यह (एक) सूर: है जिस को हमने नाज़िल किया और उस (के हुक्मों) को फ़र्ज़ कर दिया और उसमें खुले मतलब वाली आयतें नाज़िल कीं, ताकि तुम याद रखो। (१) बद-कारी करने वाली औरत और बद-कारी करने वाला मर्द (जब उन की बद-कारी साबित हो जाए तो) दोनों में से हर एक को सौ दुर्रे मारो और अगर तुम ख़ुदा और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हो, तो ख़ुदा की शरअ (के हुक्म) में तुम्हें उन पर हरगिज़ तरस न आए और चाहिए कि उन की सज़ा के वक़्त मुसलमानों की एक जमाअत भी मौजूद हो। (२) बद-कार मर्द तो बद-कार या मुश्रिक औरत के सिवा निकाह नहीं करता और बद-कार औरत को भी बद-कार या मुश्रिक मर्द के सिवा और कोई निकाह में नहीं लाता।[1] और यह (यानी बद-कार औरत से निकाह करना) मोमिनों पर हराम है। (३) और जो लोग परहेज़गार औरतों को बद-कारी का ऐब लगाएं और उस पर चार गवाह न लाएं तो उन को अस्सी दुर्रे मारो और कभी उनकी गवाही क़ुबूल न करो और यही बदकिरदार

---

१. यानी वह भी बद-कार या मुश्रिक मर्द के सिवा किसी से मियां-बीवी का ताल्लुक़ पैदा नहीं करती।

इल्लल्लज़ी-न ताबू मिम्-बअ्-दि ज़ालि-क व अस्लहू फ़इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्-रहीम (५) वल्लज़ी-न यर्मू-न अज़्वाजहुम् व लम् यकुल्लहुम् शुहदाउ इल्ला अन्फ़ुसुहुम् फ़-शहादतु अ-हदिहिम् अर्बअु शहादातिम् - बिल्लाहि इन्नहू लमिनस्-सादिक़ीन (६) वल्-ख़ामिसतु अन्-न लअ्-न-तल्लाहि अलैहि इन् का-न मिनल्-काज़िबीन (७) व यद्रऊ अन्हल्-अज़ा-ब अन् तश्ह-द अर्ब-अ शहादातिम् - बिल्लाहि इन्नहू लमिनल् - काज़िबीन (८) वल्-ख़ामि-स-त अन्-न ग़-ज़-बल्लाहि अलैहा इन् का-न मिनस्-सादिक़ीन (९) व लौला फ़ज़्लुल्लाहि अलैकुम् व रह्मतुहू व अन्नल्ला-ह तव्वाबुन् हकीम ★ (१०) इन्नल्लज़ी - न जाऊ बिल् - इफ़्कि अुस्बतुम् - मिन्कुम् ط ला तह्सबूहु शर्रल्लकुम् ط बल् हु-व ख़ैरुल्लकुम् ط लिकुल्लिम्रिइम्-मिन्हुम् मक-त-स-ब मिनल्-इस्मि ج वल्लज़ी त-वल्ला किब्रहू मिन्हुम् लहू अज़ाबुन् अज़ीम (११) लौला इज़् समिअ्-तुमूहु ज़न्नल्-मुअ्मिनू-न वल् - मुअ्मिनातु बिअन्फ़ुसिहिम् ख़ैरंव्- व क़ालू हाज़ा इफ़्कुम् - मुबीन (१२) लौला जाऊ अलैहि बि-अर-ब - अति शुहदा-अ ج फ़इज़् लम् यअ्तू बिश्शु-ह-दाइ फ़उलाइ-क अिन्दल्लाहि हुमुल्काज़िबून (१३) व लौला फ़ज़्लुल्लाहि अलैकुम् व रह्मतुहू फ़िद्दुन्या वलआख़िरति ल-मस्सकुम् फ़ी मा अ - फ़ज़्तुम् फ़ीहि अज़ाबुन् अज़ीम (१४) इज़् त-लक़्क़ौनहू बिअल्सिनतिकुम् व तक़ूलू-न बिअफ़्वाहिकुम् मा लै-स लकुम् बिही अिल्मुंव-व तह्सबूनहू हय्यिनंव्-व हु-व अिन्दल्लाहि अज़ीम (१५) व लौला इज़् समिअ् - तुमूहु क़ुल्तुम् मा यकूनु लना अन् न-त-कल्ल-म बिहाज़ा सुब्हा-न - क हाज़ा बुह्तानुन् अज़ीम (१६)

مِنْ بَعْدِ ذٰلِكَ وَأَصْلَحُوا فَإِنَّ اللّٰهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ وَالَّذِينَ يَرْمُونَ
أَزْوَاجَهُمْ وَلَمْ يَكُن لَّهُمْ شُهَدَاءُ إِلَّا أَنفُسُهُمْ فَشَهَادَةُ أَحَدِهِمْ
أَرْبَعُ شَهَادَاتٍ بِاللّٰهِ إِنَّهُ لَمِنَ الصَّادِقِينَ ۝ وَالْخَامِسَةُ أَنَّ لَعْنَتَ
اللّٰهِ عَلَيْهِ إِن كَانَ مِنَ الْكَاذِبِينَ ۝ وَيَدْرَأُ عَنْهَا الْعَذَابَ أَن
تَشْهَدَ أَرْبَعَ شَهَادَاتٍ بِاللّٰهِ إِنَّهُ لَمِنَ الْكَاذِبِينَ ۝ وَالْخَامِسَةَ
أَنَّ غَضَبَ اللّٰهِ عَلَيْهَا إِن كَانَ مِنَ الصَّادِقِينَ ۝ وَلَوْلَا فَضْلُ
اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ وَأَنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ حَكِيمٌ ۝ إِنَّ الَّذِينَ جَاءُوا
بِالْإِفْكِ عُصْبَةٌ مِّنكُمْ لَا تَحْسَبُوهُ شَرًّا لَّكُم بَلْ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ
لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُم مَّا اكْتَسَبَ مِنَ الْإِثْمِ وَالَّذِي تَوَلَّىٰ كِبْرَهُ
مِنْهُمْ لَهُ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝ لَّوْلَا إِذْ سَمِعْتُمُوهُ ظَنَّ الْمُؤْمِنُونَ وَ
الْمُؤْمِنَاتُ بِأَنفُسِهِمْ خَيْرًا وَقَالُوا هٰذَا إِفْكٌ مُّبِينٌ ۝ لَّوْلَا
جَاءُوا عَلَيْهِ بِأَرْبَعَةِ شُهَدَاءَ فَإِذْ لَمْ يَأْتُوا بِالشُّهَدَاءِ فَأُولٰئِكَ
عِندَ اللّٰهِ هُمُ الْكَاذِبُونَ ۝ وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ فِي
الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ لَمَسَّكُمْ فِي مَا أَفَضْتُمْ فِيهِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝ إِذْ
تَلَقَّوْنَهُ بِأَلْسِنَتِكُمْ وَتَقُولُونَ بِأَفْوَاهِكُم مَّا لَيْسَ لَكُم بِهِ عِلْمٌ وَتَحْسَبُونَهُ
هَيِّنًا وَهُوَ عِندَ اللّٰهِ عَظِيمٌ ۝ وَلَوْلَا إِذْ سَمِعْتُمُوهُ قُلْتُم مَّا يَكُونُ
لَنَا أَن نَّتَكَلَّمَ بِهٰذَا سُبْحَانَكَ هٰذَا بُهْتَانٌ عَظِيمٌ ۝ يَعِظُكُمُ

★रु. १/७ आ १०

हैं। (४) हां, जो इस के बाद तौबा कर लें और (अपनी हालत) संवार लें तो खुदा (भी) बख़्शने वाला मेहरबान है। (५) और जो लोग अपनी औरतों पर बदकारी की तोहमत लगाएं और खुद उन के सिवा उनके गवाह न हों तो हर एक की गवाही यह है कि पहले तो चार बार खुदा की क़सम खाएं कि बेशक सच्चा है। (६) और पांचवीं (बार) यह (कहे) कि अगर वह झूठा हो तो उस पर खुदा की लानत। (७) और औरत से सज़ा को यह बात टाल सकती है कि वह पहले चार बार खुदा की क़सम खाए कि बेशक यह झूठा है। (८) और पांचवीं (बार) यों (कहे) कि अगर यह सच्चा हो तो मुझ पर खुदा का ग़ज़ब (नाज़िल) हो। (९) और अगर तुम पर खुदा का फ़ज़्ल और उसकी मेहरबानी न होती (तो बहुत-सी) ख़राबियां पैदा हो जातीं (मगर वह आम करम वाला है) और यह कि खुदा तौबा क़ुबूल करने वाला (और) हकीम है। (१०)★

जिन लोगों ने बोहतान बांधा है, तुम ही में से वह एक जमाअत है, उस को अपने हक़ में बुरा न समझना, बल्कि वह तुम्हारे लिए अच्छा है। उन में से जिस शख़्स ने गुनाह का जितना हिस्सा लिया उसके लिए उतना वबाल है और जिसने उनमें से उस बोहतान का बड़ा बोझ उठाया है, उस को बड़ा अज़ाब होगा। (११) जब तुम ने वह बात सुनी थी, तो मोमिन मर्दों और औरतों ने क्यों अपने दिलों में नेक गुमान न किया और (क्यों न) कहा कि यह खुला तूफ़ान है। (१२) ये (झूठ गढ़ने वाले) अपनी बात (की तस्दीक़) के (लिए) चार गवाह क्यों न लाए, तो जब ये गवाह नहीं ला सके, तो खुदा के नज़दीक यही झूठे हैं। (१३) और अगर दुनिया और आख़िरत में तुम पर खुदा का फ़ज़्ल और उस की रहमत न होती तो जिस काम में तुम लगे हुए थे, उसकी वजह से तुम पर बड़ा (सख़्त) अज़ाब नाज़िल होता। (१४) जब तुम अपनी ज़ुबानों से इसका एक दूसरे से ज़िक्र करते थे और अपने मुंह से ऐसी बात कहते थे, जिसका तुम को कुछ भी इल्म न था और तुम उसे एक हल्की बात समझते थे और खुदा के नज़दीक वह बड़ी (भारी) बात थी। (१५) और जब तुम ने उसे सुना था, तो क्यों न कह दिया कि हमें मुनासिब नहीं कि ऐसी बात ज़ुबान पर लाएं। (परवरदिगार!) तू पाक है, यह तो (बहुत) बड़ा बोहतान है। (१६)

★रु. १/७ आ १०

यअिज़ुकुमुल्लाहु अन् तअूदू लिमिस्लिही अ-ब-दन् इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन ج (१७)
व युबय्यिनुल्लाहु लकुमुल्-आयाति ط वल्लाहु अलीमुन् हकीम (१८)
इन्नल्लज़ी-न युहिब्बू-न अन् तशीअल्-फ़ाहिशतु फ़िल्लज़ी-न आमनू लहुम् अज़ाबुन्
अलीमुन् ۙ फ़िद्दुन्या वल्आख़िरति ط वल्लाहु यअ्-लमु व अन्तुम् ला तअ्-लमून (१९)

व लौ ला फ़ज़्लुल्लाहि अलैकुम् व रह्मतुहू
व अन्नल्ला-ह रऊफ़ुर्-रहीम ★ ● (२०)
या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तत्तबिअू
ख़ुतुवातिश्शैतानि ط व मंय्यत्तबिअ ख़ुतुवातिश्-
शैतानि फ़इन्नहू यअ्मुरु बिल्फ़ह्शा-इ
वल्मुन्करि ط व लौ ला फ़ज़्लुल्लाहि अलैकुम्
व रह्मतुहू मा ज़का मिन्कुम् मिन् अ-हदिन्
अ-ब-दंव्-व लाकिन्नल्ला-ह युज़क्की
मंय्यशाउ ط वल्लाहु समीअुन् अलीम (२१)
व ला यअ्तलि उलुल्फ़ज़्लि मिन्कुम् वस्स-अति
अंय्युअ्तू उलिल्क़ुर्बा वल्मसाकी-न वल्मुहाजिरी-न
फ़ी सबीलिल्लाहि ۖ वल् - यअ् - फ़ू

النور ٣٨١ قد افلح ١٨

اللّٰهُ اَنْ تَعُوْدُوْا لِمِثْلِهٖۤ اَبَدًا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝١٧ وَيُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ
الْاٰيٰتِ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝١٨ اِنَّ الَّذِيْنَ يُحِبُّوْنَ اَنْ تَشِيْعَ الْفَاحِشَةُ
فِي الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۙ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ
لَا تَعْلَمُوْنَ ۝١٩ وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ وَاَنَّ اللّٰهَ رَءُوْفٌ
رَّحِيْمٌ ۝٢٠ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ وَمَنْ
يَّتَّبِعْ خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ فَاِنَّهٗ يَاْمُرُ بِالْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ ؕ وَلَوْلَا فَضْلُ
اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ مَا زَكٰى مِنْكُمْ مِّنْ اَحَدٍ اَبَدًا ۙ وَّلٰكِنَّ اللّٰهَ يُزَكِّيْ
مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝٢١ وَلَا يَاْتَلِ اُولُوا الْفَضْلِ مِنْكُمْ وَ
السَّعَةِ اَنْ يُّؤْتُوْۤا اُولِي الْقُرْبٰى وَالْمَسٰكِيْنَ وَالْمُهٰجِرِيْنَ فِيْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ ۖ وَلْيَعْفُوْا وَلْيَصْفَحُوْا ؕ اَلَا تُحِبُّوْنَ اَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ
رَّحِيْمٌ ۝٢٢ اِنَّ الَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ الْمُحْصَنٰتِ الْغٰفِلٰتِ الْمُؤْمِنٰتِ لُعِنُوْا فِي
الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۪ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝٢٣ يَّوْمَ تَشْهَدُ عَلَيْهِمْ اَلْسِنَتُهُمْ
وَاَيْدِيْهِمْ وَاَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝٢٤ يَوْمَئِذٍ يُّوَفِّيْهِمُ اللّٰهُ دِيْنَهُمُ
الْحَقَّ وَيَعْلَمُوْنَ اَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ الْمُبِيْنُ ۝٢٥ اَلْخَبِيْثٰتُ لِلْخَبِيْثِيْنَ
وَالْخَبِيْثُوْنَ لِلْخَبِيْثٰتِ ۚ وَالطَّيِّبٰتُ لِلطَّيِّبِيْنَ وَالطَّيِّبُوْنَ لِلطَّيِّبٰتِ ۚ
اُولٰٓئِكَ مُبَرَّءُوْنَ مِمَّا يَقُوْلُوْنَ ؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ۝٢٦ يٰۤاَيُّهَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَدْخُلُوْا بُيُوْتًا غَيْرَ بُيُوْتِكُمْ حَتّٰى تَسْتَاْنِسُوْا وَتُسَلِّمُوْا

منزل

वल्यस्फ़हू ط अला तुहिब्बू-न अंय्यग्फ़िरल्लाहु लकुम् ط वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम (२२)
इन्नल्लज़ी - न यर्मूनल् - मुह्-सनातिल् - ग़ाफ़िलातिल् - मुअ्मिनाति लुअिनू
फ़िद्दुन्या वल् - आख़िरति ۖ व लहुम् अज़ाबुन् अज़ीम ۙ (२३)
यौ-म तश्हदु अलैहिम् अल्सि-न-तुहुम् व ऐदीहिम् व अर्जुलुहुम् बिमा
कानू यअ्-मलून (२४) यौमइज़िंय्युवफ़्फ़ीहिमुल्-लाहु दीनहुमुल्-हक़्-क़ व
यअ्-लमू-न अन्नल्ला-ह हुवल्-हक़्क़ुल्-मुबीन (२५) अल्ख़बीसातु लिल्ख़बीसी-न
वल्-ख़बीसू - न लिल्ख़बीसाति ج वत्तय्यिबातु लित्तय्यिबी - न वत्तय्यिबू - न
लित्तय्यिबाति ج उलाइ-क मुबर्रऊ-न मिम्मा यक़ूलू-न ط लहुम् मग्फ़ि-रतुंव्-व
रिज़्क़ुन् करीम ★ (२६) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तद्ख़ुलू
बुयूतन् ग़ै - र बुयूतिकुम् हत्ता तस्तअ्निसू व तुसल्लिमू अला
अह्लिहा ط ज़ालिकुम् ख़ैरुल्लकुम् ल - अल्लकुम् त - ज़क्करून (२७)

★रु. २/८ आ १० ● नि. १/२ ★रु. ३/९ आ ६

ख़ुदा तुम्हें नसीहत करता है कि अगर मोमिन हो तो फिर कभी ऐसा (काम) न करना। (१७) और ख़ुदा तुम्हारे (समझाने के) लिए अपनी आयतें खोल-खोल कर बयान फ़रमाता है और ख़ुदा जानने वाला (और) हिक्मत वाला है। (१८) जो लोग इस बात को पसन्द करते हैं कि मोमिनों में बे-हयाई (यानी बद-कारी की तोहमत की ख़बर) फैले, उन को दुनिया और आख़िरत में दुख देने वाला अज़ाब होगा और ख़ुदा जानता है और तुम नहीं जानते। (१९) और अगर तुम पर ख़ुदा का फ़ज़्ल और उस की रहमत न होती, (तो क्या कुछ न होता, मगर वह करीम है) और यह कि ख़ुदा निहायत मेहरबान और रहीम है।[1] (२०)★●

मोमिनो ! शैतान के क़दमों पर न चलना और जा शख़्स शैतान के क़दमों पर चलेगा, तो शैतान तो बे-हयाई (की बातें) और बुरे काम ही बताएगा और अगर तुम पर ख़ुदा का फ़ज़्ल और उसकी मेहरबानी न होती, तो एक शख़्स भी तुम में पाक न हो सकता, मगर ख़ुदा जिस को चाहता है, पाक कर देता है और ख़ुदा सुनने वाला (और) जानने वाला है। (२१) और जो लोग तुम में फ़ज़्ल वाले और वुस्अत वाले हैं, वे इस बात की क़सम न खाएं कि रिश्तेदारों और मुहताजों और वतन छोड़ जाने वालों को कुछ ख़र्च-पात न देंगे, उन को चाहिए कि माफ़ कर दें और दरगुज़र करें। क्या तुम पसन्द नहीं करते कि ख़ुदा तुम को बख़्श दे और ख़ुदा तो बख़्शने वाला मेहरबान है ? (२२) जो लोग परहेज़गार (और) बुरे कामों से बे-ख़बर (और) ईमानदार औरतों पर बद-कारी की तोहमत लगाते हैं, उन पर दुनिया और आख़िरत (दोनों) में लानत है और उनको सख़्त अज़ाब होगा। (२३) (यानी क़ियामत के दिन) जिस दिन उन की ज़ुबानें और हाथ और पांव सब उनके कामों की गवाही देंगे। (२४) उस दिन ख़ुदा उन को (उन के आमाल का) पूरा-पूरा (और) ठीक बदला देगा और उनको मालूम हो जाएगा कि ख़ुदा बर-हक़ (और हक़ को) ज़ाहिर करने वाला है। (२५) ना-पाक औरतें ना-पाक मर्दों के लिए हैं और ना-पाक मर्द ना-पाक औरतों के लिए और पाक औरतें पाक मर्दों के लिए हैं और पाक मर्द पाक औरतों के लिए। ये (पाक लोग) इन (झूठों) की बातों से बरी हैं (और) उनके लिए बख़्शिश और नेक रोज़ी है। (२६)★

मोमिनो ! अपने घरों के सिवा दूसरे (लोगों के) घरों में घर वालों से इजाज़त लिए और उन को सलाम किए बग़ैर दाख़िल न हुआ करो, यह तुम्हारे हक़ में बेहतर है (और हम यह नसीहत इस

---

१. आयत 'इन्नल्लज़ी-न जाऊ बिल इफ़्कि' से ले कर यहां तक दस आयतें उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा रज़ि-यल्लाहु अन्हा की शान में नाज़िल हुई हैं। इन में अल्लाह तआला ने उन को इस तोहमत से पाक ज़ाहिर फ़रमाया है, जो मुनाफ़िक़ों ने उन के बारे में गढ़ रखा था और जिस को ज़्यादातर अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल, मुनाफ़िक़ों के सरदार ने मशहूर किया था और जिस का ज़िक्र मुसलमानों में भी हुआ। इस वाक़िए की तफ़्सील इस तरह है—

हज़रत आइशा रज़ि० ख़ुद फ़रमाती हैं कि प्यारे नबी सल्ल० की आदत थी कि जब आप किसी सफ़र को तशरीफ़ ले जाने का इरादा फ़रमाते, तो अपनी बीवियों में क़ुरआ डालते। जिस बीवी के नाम का क़ुरआ निकलता, उस को आप अपने साथ ले जाते। एक लड़ाई में मेरे नाम का क़ुरआ निकला और मैं आप के साथ गयी और यह सफ़र परदे के हुक्म के नाज़िल होने के बाद का था। मैं ऊंट पर सवारी करती और हौदज यानी कजावे में बैठती थी। जब आप लड़ाई से फ़ारिग़ हो चुके और लौटते हुए मदीने के क़रीब पहुंचे तो एक रात कूच का एलान किया गया। मैं उस वक़्त (ज़रूरत पूरी करने) चली गयी, यहां तक कि फ़ौज आगे बढ़ गयी। जब डेरे के पास आयी तो देखा

(शेष पृष्ठ ५६१ पर)

फ़-इल्लम् तजिदू फ़ीहा अ-ह्-दन् फ़ला तद्खुलूहा हत्ता युअ्-ज-न लकुम् ج व इन् क़ी-ल लकुमुर्जिअू फ़र्जिअू हु-व अज़्का लकुम् ط वल्लाहु बिमा तअ्-मलू-न अ़लीम (२८) लै-स अ़लैकुम् जुनाहुन् अन् तद-खुलू बुयूतन् ग़ै-र मस्कूनतिन् फ़ीहा मताअुल्लकुम् ط वल्लाहु यअ्-लमु मा तुब्दू-न व मा तक्तुमून (२९)

क़ुल् लिल्-मुअ्मिनी-न यग़ुज़्ज़ू मिन् अब्सारिहिम् व यह-फ़ज़ू फ़ुरू-जहुम् ط ज़ालि-क अज़्का लहुम् ط इन्नल्ला-ह ख़बीरुम्-बिमा यस्-नअून (३०) व क़ुल्लिल्-मुअ्मिनाति यग़्-ज़ुज़्-न मिन् अब्सारिहिन्-न व यह-फ़ज़्-न फ़ुरूजहुन-न व ला युब्दी-न ज़ी-न-तहुन्-न इल्ला मा ज़-ह-र मिन्हा वल्-यज़्रिब-न बिख़ुमुरि-हिन्-न अ़ला जुयूबिहिन-न ص व ला युब्दी-न ज़ी-न-तहुन-न इल्ला लिबुअ़ूलति-हिन्-न औ आबाइहिन्-न औ आबाइ बुअ़ूलति-हिन्-न औ अब्नाइ-हिन्-न औ अब्नाइ बुअ़ूलति-हिन्-न औ इख़्वानिहिन्-न औ बनी इख़्वानिहिन्-न औ बनी अ-ख़-वातिहिन्-न औ निसाइहिन्-न औ मा म-ल-कत् ऐमानु-हुन्-न अवित्ताबिअ़ी-न ग़ैरि उलिल्इर्बति मिनर्रिजालि अवित्-तिफ़्लिल्-लज़ी-न लम् यज़्-हरू अ़ला औरातिन्निसाइ ص व ला यज़्रिब्-न बि-अर्जुलि-हिन-न लियुअ्-ल-म मा युख़्फ़ी-न मिन् ज़ीनतिहिन्-न ط व तूबू इलल्लाहि जमीअ़न् अय्युहल्-मुअ्मिनू-न ल-अ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून (३१) व अन्किहुल्-अयामा मिन्कुम् वस्सालिही-न मिन् अ़िबादिकुम् व इमाइकुम् ط इंय्यकूनू फ़ु-क़-रा-अ युग़्निहिमुल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही ط वल्लाहु वासिअ़ुन् अ़लीम (३२)

عَلَىٰٓ أَهْلِهَا ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿٢٧﴾ فَإِن لَّمْ تَجِدُوا فِيهَآ
أَحَدًا فَلَا تَدْخُلُوهَا حَتَّىٰ يُؤْذَنَ لَكُمْ وَإِن قِيلَ لَكُمُ ارْجِعُوا فَارْجِعُوا
هُوَ أَزْكَىٰ لَكُمْ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ﴿٢٨﴾ لَّيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَن
تَدْخُلُوا بُيُوتًا غَيْرَ مَسْكُونَةٍ فِيهَا مَتَاعٌ لَّكُمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ
وَمَا تَكْتُمُونَ ﴿٢٩﴾ قُل لِّلْمُؤْمِنِينَ يَغُضُّوا مِنْ أَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوا
فُرُوجَهُمْ ذَٰلِكَ أَزْكَىٰ لَهُمْ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا يَصْنَعُونَ ﴿٣٠﴾ وَقُل
لِّلْمُؤْمِنَاتِ يَغْضُضْنَ مِنْ أَبْصَارِهِنَّ وَيَحْفَظْنَ فُرُوجَهُنَّ وَلَا
يُبْدِينَ زِينَتَهُنَّ إِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَلْيَضْرِبْنَ بِخُمُرِهِنَّ عَلَىٰ
جُيُوبِهِنَّ وَلَا يُبْدِينَ زِينَتَهُنَّ إِلَّا لِبُعُولَتِهِنَّ أَوْ آبَائِهِنَّ أَوْ آبَاءِ
بُعُولَتِهِنَّ أَوْ أَبْنَائِهِنَّ أَوْ أَبْنَاءِ بُعُولَتِهِنَّ أَوْ إِخْوَانِهِنَّ أَوْ بَنِي إِخْوَانِهِنَّ
أَوْ بَنِي أَخَوَاتِهِنَّ أَوْ نِسَائِهِنَّ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُنَّ أَوِ التَّابِعِينَ غَيْرِ
أُولِي الْإِرْبَةِ مِنَ الرِّجَالِ أَوِ الطِّفْلِ الَّذِينَ لَمْ يَظْهَرُوا عَلَىٰ عَوْرَاتِ
النِّسَاءِ وَلَا يَضْرِبْنَ بِأَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ مَا يُخْفِينَ مِن زِينَتِهِنَّ وَ
تُوبُوا إِلَى اللَّهِ جَمِيعًا أَيُّهَ الْمُؤْمِنُونَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٣١﴾ وَأَنكِحُوا
الْأَيَامَىٰ مِنكُمْ وَالصَّالِحِينَ مِنْ عِبَادِكُمْ وَإِمَائِكُمْ إِن يَكُونُوا
فُقَرَاءَ يُغْنِهِمُ اللَّهُ مِن فَضْلِهِ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٣٢﴾ وَلْيَسْتَعْفِفِ
الَّذِينَ لَا يَجِدُونَ نِكَاحًا حَتَّىٰ يُغْنِيَهُمُ اللَّهُ مِن فَضْلِهِ وَالَّذِينَ

लिए करते हैं कि) शायद तुम याद रखो। (२७) अगर तुम घर में किसी को मौजूद न पाओ तो जब तक तुम को इजाज़त न दी जाए उसमें मत दाख़िल हो और अगर (यह) कहा जाए कि (इस वक़्त) लौट जाओ तो लौट जाया करो। यह तुम्हारे लिए बड़ी पाकीज़गी की बात है और जो काम तुम करते हो, ख़ुदा सब जानता है। (२८) (हां) अगर तुम किसी ऐसे मकान में जाओ, जिस में कोई न बसता हो और उस में तुम्हारा सामान (रखा) हो तो तुम पर कुछ गुनाह नहीं और जो कुछ तुम ज़ाहिर करते हो और जो छिपाते हो, ख़ुदा को सब मालूम है। (२९) मोमिन मर्दों से कह दो कि अपनी नज़रें नीची रखा करें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त किया करें। यह उन के लिए बड़ी पाकीज़गी की बात है (और) जो काम ये करते हैं, ख़ुदा उन से ख़बरदार है। (३०) और मोमिन औरतों से भी कह दो कि वे भी अपनी निगाहें नीची रखा करें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त किया करें और अपनी ज़ीनत (यानी ज़ेवर की जगहों) को ज़ाहिर न होने दिया करें, मगर जो उस में से खुला रहता हो और अपने सीनों पर ओढ़नियां ओढ़े रहा करें और अपने ख़ाविंद और बाप और ससुर और बेटे और ख़ाविंद के बेटों और भाइयों और भतीजों और भांजों और अपनी (ही क़िस्म की) औरतों और लौंडी-ग़ुलाम के सिवा, और उन ख़ादिमों के, जो औरतों की ख़्वाहिश न रखें या ऐसे लड़कों के, जो औरतों के परदे की चीज़ों को न जानते हों, (ग़रज़ इन लोगों के सिवा) किसी पर ज़ीनत (और सिंगार की जगहों) को ज़ाहिर न होने दें और अपने पांव (ऐसे तौर से ज़मीन पर) न मारें कि (झंकार कानों में पहुंचे और) उन का छिपा ज़ेवर मालूम हो जाए और मोमिनो! सब ख़ुदा के आगे तौबा करो ताकि कामियाब रहो। (३१) और अपनी क़ौम की बेवा औरतों के निकाह कर दिया करो और अपने ग़ुलामों और लौंडियों के भी जो नेक हों (निकाह कर दिया करो) और वे ग़रीब होंगे तो ख़ुदा उन को अपने फ़ज़्ल से ख़ुशहाल कर देगा

(पृष्ठ ५५६ का शेष)
कि मेरा मनकों का हार कहीं रास्ते में टूट कर गिर गया है। मैं हार खोजने लौट गयी और उस को खोजते-खोजते मुझे देर हो गयी। इतने में वे लोग आ गये जो मेरे हौदज को कसा करते थे और उन्हों ने मेरे हौदज को उठा लिया और उस को मेरे ऊंट पर कस दिया। चूंकि औरतें उस ज़माने में दुब्ली-पतली होती थीं और उन के सवार होने से हौदज कुछ भारी नहीं हो जाता था, इस लिए उन्हों ने हौदज के हल्केपन का कुछ ख़्याल न किया और यह न समझा कि मैं उस में नहीं हूं, ग़रज़ वे ऊंट को ले कर चल दिए। मुझ को अपना हार उस वक़्त मिला, जब लश्कर गुज़र गया। मैं लश्कर के पड़ाव में आयी, हालांकि वहां कोई नहीं था, फिर अपनी मंज़िल को, जहां उतरी हुई थी, चली गयी, इस ख़्याल से कि जब लोग मुझे गुम पाएंगे, तो आ कर ले जाएंगे। इसी बीच मुझे नींद आ गयी और मैं वहीं सो गयी।

उधर सफ़वान बिन मुअत्तल जो रात के आख़िरी हिस्से में लश्कर के पीछे, आराम लेने के लिए उतर पड़ा था, सुबह के क़रीब चला। जब मेरी मंज़िल के क़रीब पहुंचा, तो मेरे बारे में ख़्याल किया कि कोई आदमी सो रहा है। वह मेरे पास आया और मुझे देख कर पहचान लिया, क्योंकि परदे के हुक्म से पहले वह मुझे देख चुका था। मैं ने चादर से घूंघट निकाल लिया और मैं क़सम खा कर कहती हूं कि न तो उस ने मुझ से कोई बात की, न मैं ने उस से कोई बात सुनी, अलावा 'इन्ना लिल्लाहि व इन्ना अलैहि राजिऊन' के, जो उस ने सवारी के बिठाते वक़्त

(शेष पृष्ठ ६७७ पर)

वल्-यस्तअ्-फ़िफ़िल्-लज़ी-न ला यजिदू-न निकाहन् हत्ता युग़्नि-य-हुमुल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही ط वल्लज़ी - न यब्तग़ूनल् - किता - ब मिम्मा म-ल-कत् ऐमानुकुम् फ़कातिबूहुम् इन् अलिम्तुम् फ़ीहिम् ख़ैरंव़ - व आतूहुम् मिम् - मालिल्लाहिल्लज़ी आताकुम् ط व ला तुक्रिहू फ़-त-यातिकुम् अ-लल्‌बिग़ा-इ इन् अ-रद्-न त-हस्सुनल्-लि-तब्तग़ू अ-र-ज़ल्-हयातिद्दुन्या ط व मंय्युक्रिह् - हुन - न फ़-इन्नल्ला-ह मिम्बअ्-दि इक्राहिहिन्-न ग़फ़ूरुर्-रहीम (३३) व ल - क़द् अन-ज़ल्ना इलैकुम् आयातिम्-मुबय्यिनातिंव्-व म-स-लम्-मिनल्लज़ी-न ख़लौ मिन् क़ब्-लिकुम् व मौअि-ज़-तल्-लिल्मुत्तक़ीन ★ (३४) अल्लाहु नूरुस्समावाति वल्अर्ज़ि ط म - सलु नूरिही कमिश्कातिन् फ़ीहा मिस्बाहुन् ط अल-मिस्बाहु फ़ी ज़ुजाजतिन् ط अज़्ज़ुजाजतु क - अन्नहा कौकबुन् दुर्रिय्युंय्यूक़दु मिन् श-ज-रतिम्-मुबा-र-कतिन् ज़ैतूनतिल्ला शर्क़िय्यतिंव्-व ला ग़र्बिय्यतिंय्-यकादु ज़ैतुहा युज़ीउ व लौ लम् तम्सस्हु नारुन् ط नूरुन् अला नूरिन् ط यह्दिल्लाहु लिनूरिही मंय्यशाउ ط व यज़्रिबुल्लाहुल्-अम्सा-ल लिन्नासि ط वल्लाहु बिकुल्लि शैइन् अलीम ۝ (३५) फ़ी बुयूतिन् अज़िनल्लाहु अन्तुर्फ़-अ व युज़्क-र फ़ीहस्मुहू ۝ युसब्बिहु लहू फ़ीहा बिल्ग़ुदुव्वि वल्आसाल ۝ (३६) रिजालुल्ला तुल्हीहिम् तिजा - र-तुंव्-व ला बैअुन् अन् ज़िक्रिल्लाहि व इक़ामिस्सलाति व ईताइज़्ज़काति यख़ाफ़ू-न यौमन् त-त-क़ल्लबु फ़ीहिल्क़ुलूबु वल्-अब्सार ۝ (३७) लियज्ज़ि-य-हुमुल्लाहु अह्-स-न मा अमिलू व यज़ीदहुम् मिन् फ़ज़्लिही ط वल्लाहु यर्ज़ुक़ु मंय्यशाउ बिग़ैरि हिसाब (३८) वल्लज़ी-न क-फ़रू अअ्-मालुहुम् क-सराबिम्-बिक़ीअतिंय्यह्सबुहुज़्-ज़म्-आनु माअन् ط हत्ता इज़ा जा-अहू लम् यजिद्हु शैअंव्-व व-ज-दल्ला-ह अिन्दहू फ़-वफ़्फ़ाहु हिसाबहू ط वल्लाहु सरीअुल्-हिसाब ۝ (३९)

يبتغون الكتب مما ملكت أيمانكم فكاتبوهم إن علمتم فيهم
خيرا وآتوهم من مال الله الذي آتىكم ولا تكرهوا فتيتكم على
البغاء إن أردن تحصنا لتبتغوا عرض الحيوة الدنيا ومن يكرههن
فإن الله من بعد إكراههن غفور رحيم ۝ ولقد أنزلنا إليكم آيت
مبينت ومثلا من الذين خلوا من قبلكم وموعظة للمتقين ۝
الله نور السموت والأرض مثل نوره كمشكوة فيها مصباح المصباح
في زجاجة الزجاجة كأنها كوكب دري يوقد من شجرة مبركة
زيتونة لا شرقية ولا غربية يكاد زيتها يضيء ولو لم تمسسه
نار نور على نور يهدي الله لنوره من يشاء ويضرب الله
الأمثال للناس والله بكل شيء عليم ۝ في بيوت أذن الله أن
ترفع ويذكر فيها اسمه يسبح له فيها بالغدو والآصال ۝ رجال
لا تلهيهم تجارة ولا بيع عن ذكر الله وإقام الصلوة وإيتاء
الزكوة يخافون يوما تتقلب فيه القلوب والأبصار ۝ ليجزيهم
الله أحسن ما عملوا ويزيدهم من فضله والله يرزق من يشاء
بغير حساب ۝ والذين كفروا أعملهم كسراب بقيعة يحسبه
الظمان ماء حتى إذا جاءه لم يجده شيئا ووجد الله عنده فوفىه
حسابه والله سريع الحساب ۝ أو كظلمت في بحر لجي يغشىه موج

★रु. ४/१० आ ८

और ख़ुदा (बहुत) वुस्अत वाला और (सब कुछ) जानने वाला है।[1] (३२) और जिस को ब्याह की ताक़त न हो, वे पाकदामनी को अख़्तियार किए रहें, यहां तक कि ख़ुदा उन को अपने फ़ज़्ल से ग़नी कर दे और जो गुलाम तुम से मुकातबत चाहें, अगर तुम उन में (सलाहियत और) नेकी पाओ तो उन से मुकातबत कर लो और ख़ुदा ने जो माल तुम को बख़्शा है, उस में से उन को भी दो और अपनी लौंडियों को अगर वे पाकदामन रहना चाहें, तो (बे-शर्मी से) दुनिया की ज़िंदगी के फ़ायदे हासिल करने के लिए बद-कारी पर मजबूर न करना और जो उन को मजबूर करेगा तो उन (बेचारियों) के मजबूर किए जाने के बाद ख़ुदा उन को बख़्शने वाला मेहरबान है। (३३) और हमने तुम्हारी तरफ़ रोशन आयतें नाज़िल की हैं और जो लोग तुम से पहले गुज़र चुके हैं, उन की ख़बरें और परहेज़गारों के लिए नसीहत। (३४)★

ख़ुदा आसमानों और ज़मीन का नूर है। उस के नूर की मिसाल ऐसी है कि गोया एक ताक़ है, जिस में चिराग़ है और चिराग़ एक क़ंदील में है और क़ंदील (ऐसी साफ़-शफ़्फ़ाफ़ है कि) गोया मोती का सा चमकता हुआ तारा है। इस में एक मुबारक पेड़ का तेल जलाया जाता है, (यानी) ज़ैतून कि न पूरब की तरफ़ है, न पच्छिम की तरफ़। (ऐसा मालूम होता है कि) उस का तेल, चाहे आग उसे न भी छूए, जलने को तैयार है, (बड़ी) रोशनी पर रोशनी (हो रही है)। ख़ुदा अपने नूर से जिस को चाहता है, सीधी राह दिखाता है और ख़ुदा (जो) मिसालें बयान फ़रमाता है (तो) लोगों के (समझाने के) लिए और ख़ुदा हर चीज़ जानता है। (३५) (वह क़ंदील) उन घरों में (है) जिनके बारे में ख़ुदा ने इर्शाद फ़रमाया है कि बुलन्द किए जाएं और वहां ख़ुदा के नाम का ज़िक्र किया जाए (और) उन में सुबह व शाम उस की तस्बीह करते रहें। (३६) (यानी ऐसे) लोग, जिन को ख़ुदा के ज़िक्र और नमाज़ पढ़ने और ज़कात देने से न सौदागरी ग़ाफ़िल करती है, न ख़रीदना-बेचना, वह उस दिन से जब दिल (ख़ौफ़ और घबराहट की वजह से) उलट जाएंगे और आंखें (ऊपर चढ़ जाएंगी), डरते हैं। (३७) ताकि ख़ुदा उन को उन के अमलों का बहुत अच्छा बदला दे और अपने फ़ज़्ल से ज़्यादा भी अता करे और ख़ुदा जिस को चाहता है, बे-शुमार रोज़ी देता है। (३८) और जिन लोगों ने कुफ़्र किया, उन के आमाल (की मिसाल ऐसी है) जैसे मैदान में रेत कि प्यासा उसे पानी समझे, यहां तक कि जब उस के पास आए तो उसे कुछ भी न पाए और ख़ुदा ही को अपने पास देखे, तो वह उसे उस का हिसाब पूरा-पूरा चुका दे और

---

1. हज़रत ने फ़रमाया, ऐ अली! तीन कामों में देर न करना—फ़र्ज़ नमाज़ का जब वक़्त आवे, दूसरे जनाज़ा जब मौजूद हो, तीसरे रांड औरत जब उस की ज़ात का मर्द मिले। जो कोई दूसरा ख़ाविंद करने को ऐब जाने, उस का ईमान सलामत नहीं और जो लौंडी-गुलाम नेक हों यानी ब्याह देने से घमंड में न पड़ जाएं कि तुम्हारा काम छोड़ दें।

औ क - ज़ुलुमातिन् फ़ी बह्‌रिल् - लुज्जिय्यिंय्यग़्शाहु मौजुम्-मिन् फ़ौक़िही मौजुम्मिन् फ़ौक़िही सहाबुन् ط ज़ुलुमातुम् - बअ्‌ज़ुहा फ़ौ-क़ बअ्‌ज़िन् ط इज़ा अख़्‌-र-ज य-दहू लम् य-कद् यराहा ط व मल्लम् यज-अलिल्लाहु लहू नूरन् फ़मा लहू मिन्नूर ★ (४०) अ-लम् त-र अन्नल्ला-ह युसब्बिहु लहू मन् फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि वत्तैरु साफ़्फ़ातिन् ط कुल्लुन् क़द् अलि-म सलातहू व तस्बी-हहू ط वल्लाहु अलीमुम्-बिमा यफ़्-अलून (४१) व लिल्लाहि मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि ج व इलल्लाहिल्-मसीर (४२) अ-लम् त-र अन्नल्ला-ह युज़्जी सहाबन् सुम्-म युअल्लिफ़ु बैनहू सुम्-म यज्-अलुहू रुकामन् फ़-त-रल्-वद् - क़ यख़्‌रुजु मिन् ख़िलालिही ج व युनज़्ज़िलु मिनस्समाइ मिन् जिबालिन् फ़ीहा मिम्-ब-रदिन् फ़युसीबु बिही मंय्यशाउ व यस्‌रिफ़ुहू अम् - मंय्यशाउ ط यकादु सना बर्क़िही यज़्हबु बिलअब्सार ط (४३) युक़ल्लिबुल्लाहुल्लै-ल वन्नहा-र ط, इन्-न फ़ी ज़ालि-क ल-अिब-र-तल्-लिउलिल् - अब्सार (४४) वल्लाहु ख़-ल-क़ कुल्-ल दाब्बतिम्-मिम्माइन् ج फ़मिन्हुम् मंय्यम्शी अला बत्‌निही ج व मिन्हुम् मंय्यम्शी अला रिज्लैनि ج व मिन्हुम् मंय्यम्शी अला अर् - बअिन् ط यख़्‌लुक़ुल्ला-हु मा यशाउ ط इन्नल्ला-ह अला कुल्लि शैइन् क़दीर (४५) ल - क़द् अन्ज़ल्ना आयातिम् - मुबय्यिनातिन् ط वल्लाहु यह्‌दी मंय्यशाउ इला सिरातिम्-मुस्तक़ीम (४६) व यक़ूलू-न आमन्ना बिल्लाहि व बिर्रसूलि व अ-तअ्‌-ना सुम्-म य-त-वल्ला फ़रीक़ुम्-मिन्हुम् मिम्बअ्‌-दि ज़ालि-क ط व मा उलाइ-क बिल्-मुअ्‌मिनीन (४७) व इज़ा दुअू इलल्लाहि व रसूलिही लि - यह्‌कु - म बैनहुम् इज़ा फ़रीक़ुम् - मिन्हुम् मुअ्‌-रिज़ून (४८) व इ य्यकुल् - लहुमुल्-हक़्क़ु यअ्‌तू इलैहि मुज़्अिनीन ط (४९) अफ़ी क़ुलूबिहिम् म-र-ज़ुन् अमिर्ताबू अम् यख़ाफ़ू-न अंय्यहीफ़ल्लाहु अलैहिम् व रसूलुहू ط बल् उलाइ - क हुमुज़्ज़ालिमून ★●(५०)

مِّن فَوْقِهِ مَوْجٌ مِّن فَوْقِهِ سَحَابٌ ظُلُمَاتٌ بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ إِذَا أَخْرَجَ
يَدَهُ لَمْ يَكَدْ يَرَاهَا وَمَن لَّمْ يَجْعَلِ اللَّهُ لَهُ نُورًا فَمَا لَهُ مِن نُّورٍ ۝ أَلَمْ
تَرَ أَنَّ اللَّهَ يُسَبِّحُ لَهُ مَن فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَالطَّيْرُ صَافَّاتٍ كُلٌّ
قَدْ عَلِمَ صَلَاتَهُ وَتَسْبِيحَهُ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِمَا يَفْعَلُونَ ۝ وَلِلَّهِ مُلْكُ
السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَإِلَى اللَّهِ الْمَصِيرُ ۝ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يُزْجِي سَحَابًا
ثُمَّ يُؤَلِّفُ بَيْنَهُ ثُمَّ يَجْعَلُهُ رُكَامًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلَالِهِ
وَيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَاءِ مِن جِبَالٍ فِيهَا مِن بَرَدٍ فَيُصِيبُ بِهِ مَن يَشَاءُ
وَيَصْرِفُهُ عَن مَّن يَشَاءُ يَكَادُ سَنَا بَرْقِهِ يَذْهَبُ بِالْأَبْصَارِ ۝ يُقَلِّبُ
اللَّهُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّأُولِي الْأَبْصَارِ ۝ وَاللَّهُ خَلَقَ
كُلَّ دَابَّةٍ مِّن مَّاءٍ فَمِنْهُم مَّن يَمْشِي عَلَىٰ بَطْنِهِ وَمِنْهُم مَّن يَمْشِي
عَلَىٰ رِجْلَيْنِ وَمِنْهُم مَّن يَمْشِي عَلَىٰ أَرْبَعٍ يَخْلُقُ اللَّهُ مَا يَشَاءُ إِنَّ
اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ لَّقَدْ أَنزَلْنَا آيَاتٍ مُّبَيِّنَاتٍ وَاللَّهُ يَهْدِي
مَن يَشَاءُ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ۝ وَيَقُولُونَ آمَنَّا بِاللَّهِ وَبِالرَّسُولِ وَ
أَطَعْنَا ثُمَّ يَتَوَلَّىٰ فَرِيقٌ مِّنْهُم مِّن بَعْدِ ذَٰلِكَ وَمَا أُولَٰئِكَ بِالْمُؤْمِنِينَ ۝
وَإِذَا دُعُوا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ إِذَا فَرِيقٌ مِّنْهُم مُّعْرِضُونَ ۝
وَإِن يَكُن لَّهُمُ الْحَقُّ يَأْتُوا إِلَيْهِ مُذْعِنِينَ ۝ أَفِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ
أَمِ ارْتَابُوا أَمْ يَخَافُونَ أَن يَحِيفَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَرَسُولُهُ بَلْ أُولَٰئِكَ

ख़ुदा जल्द हिसाब करने वाला है। (३६) या (उन के आमाल की मिसाल ऐसी है) जैसे गहरे दरिया में अंधेरे, जिस पर लह्र चढ़ी आती हो (और) उस के ऊपर और लहर (आ रही हो और) उस के ऊपर बादल हो, ग़रज़ अंधेरे ही अंधेरे हों, एक पर एक (छाया हुआ), जब अपना हाथ निकाले तो कुछ न देख सके और जिस को ख़ुदा रोशनी न दे उस को (कहीं भी) रोशनी नहीं (मिल सकती)। (४०)★

क्या तुम ने नहीं देखा कि जो लोग आसमानों और ज़मीन में हैं, ख़ुदा की तस्बीह् करते रहते हैं और पर फैलाए हुए जानवर भी और सब अपनी नमाज़ और तस्बीह् (के तरीक़े) जानते हैं और जो कुछ वे करते हैं (सब) ख़ुदा को मालूम है। (४१) और आसमान और ज़मीन की बादशाही ख़ुदा ही के लिए है और ख़ुदा ही की तरफ़ लौट कर जाना है। (४२) क्या तुम ने नहीं देखा कि ख़ुदा ही बादलों को चलाता है, फिर उन को आपस में मिला देता है, फिर उन को तह-ब-तह कर देता है, फिर तुम देखते हो कि बादल में से मेंह निकल (कर बरस) रहा है और आसमान में जो (ओलों के) पहाड़ हैं, उन से ओले नाज़िल करता है, तो जिस पर चाहता है, उस को बरसा देता है और जिस से चाहता है, हटा रखता है, और बादल में जो बिजली होती है, उस की चमक आंखों को (चकाचौंध कर के आंखों की रोशनी को) उचके लिए जाती है। (४३) ख़ुदा ही रात और दिन को बदलता रहता है। रोशनी वालों के लिए इसमें बड़ी इबरत है। (४४) और ख़ुदा ही ने हर चलने-फिरने वाले जानदार को पानी से पैदा किया तो उन में से कुछ ऐसे हैं कि पेट के बल चलते हैं और कुछ ऐसे हैं जो दो पांव पर चलते हैं और कुछ ऐसे हैं जो चार पांव पर चलते हैं। ख़ुदा जो चाहता है, पैदा करता है, बेशक ख़ुदा हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। (४५) हम ही ने रोशन आयतें नाज़िल की हैं और ख़ुदा जिस को चाहता है, सीधे रास्ते की तरफ़ हिदायत करता है। (४६) और (कुछ लोग) कहते हैं कि हम ख़ुदा पर और रसूल पर ईमान लाए और (उन का) हुक्म मान लिया, फिर उस के बाद उन में से एक फ़िर्क़ा फिर जाता है और ये लोग ईमान वाले ही नहीं हैं। (४७) और जब उन को ख़ुदा और उस के रसूल की तरफ़ बुलाया जाता है, ताकि (अल्लाह के रसूल) उन का झगड़ा चुका दें, तो उन में से एक फ़िर्क़ा मुंह फेर लेता है। (४८) और अगर (मामला) हक़ (हो और) उन को (पहुंचता) हो तो उनकी तरफ़ फ़रमांबरदार हो कर चले आते हैं। (४९) क्या उन के दिलों में बीमारी है या (ये) शक में हैं या उन को यह डर है कि ख़ुदा और उस का रसूल उन पर ज़ुल्म करेंगे? (नहीं), बल्कि ये ख़ुद ज़ालिम हैं। (५०)★●

★रु. ५/११ आ ६ ★रु. ६/१२ आ १० ●सु. ३/४

इन्नमा का-न क़ौलल्-मुअ्मिनी-न इज़ा दुऊ इलल्लाहि व रसूलिही लि-यह्कु-म बैनहुम् अंय्यक़ूलू समिअ्-ना व अ-तअ्-ना ᐈ व उलाइ-क हुमुल्-मुफ़्लिहून (५१) व मंय्युतिअिल्ला-ह व रसू-लहू व यख़्शल्ला-ह व यत्तक़्-हि फ़उलाइ-क हुमुल्फ़ाइज़ून (५२) व अक़्समू बिल्लाहि जह्-द ऐमानिहिम् ल-इन् अ-मर्तहुम् ल-यख़्रुजुन्-न ᐈ क़ुल् ला तुक़्सिमू ᑕ ता-अतुम् मअ्-रूफ़तुन् ᐈ इन्नल्ला-ह ख़बीरुम्-बिमा तअ्-मलून (५३) क़ुल् अतीअुल्ला-ह व अतीअुर्रसू-ल ᑕ फ़-इन् त-वल्लौ फ़-इन्नमा अलैहि मा हुम्मि-ल व अलैकुम् मा हुम्मिल्तुम् ᐈ व इन् तुतीअूहु तह्तदू ᐈ व मा अ-लर्रसूलि इल्लल्-बलाग़ुल्-मुबीन (५४) व-अ-दल्-लाहुल्-लज़ी-न आमनू मिन्कुम् व अमिलुस्-सालिहाति ल-यस्-तख़्-लिफ़न्-न-हुम् फ़िल्अर्ज़ि क-मस्-तख़्-ल-फ़ल्-लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् व लयुमक्किनन्-न लहुम् दीनहुमुल्लज़िर्-तज़ा लहुम् व लयुबद्दिलन्नहुम् मिम्बअ्-दि ख़ौफ़िहिम् अम्-नन् ᐈ यअ्-बुदूननी ला युश्रिकू-न बी शैअन् ᐈ व मन् क-फ़-र बअ्-द ज़ालि-क फ़उलाइ-क हुमुल्-फ़ासिक़ून (५५) व अक़ीमुस्सला-त व आतुज़्ज़का-त व अतीअुर्रसू-ल ल-अल्लकुम् तुर्-हमून (५६) ला तह्-सबन्नल्लज़ी-न क-फ़रू मुअ्-जिज़ी-न फ़िल्अर्ज़ि ᑕ व मअ्-वा-हुमुन्नारु ᐈ व ल-बिअ्सल्-मसीर ★ (५७) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू लि-यस्तअ्-ज़िन्-कुमुल्लज़ी-न म-ल-कत् ऐमानुकुम् वल्लज़ी-न लम् यब्लुग़ुल्-हुलु-म मिन्कुम् सला-स मर्रातिन् ᐈ मिन् क़ब्लि सलातिल्-फ़ज्रि व ही-न त-ज़-अू-न सियाबकुम् मिनज़्ज़हीरति व मिम्बअ्-दि सलातिल् अिशाइ ᐈ सलासु औरातिल्लकुम् ᐈ लै-स अलैकुम् व ला अलैहिम् जुनाहुम्-बअ्-दहुन्-न ᐈ तव्वाफ़ू-न अलैकुम् बअ्-ज़ुकुम् अला बअ्-ज़िन् ᐈ कज़ालि-क युबय्यिनुल्लाहु लकुमुल्-आयाति ᐈ वल्लाहु अलीमुन् हकीम (५८)

هُمُ الظّٰلِمُونَ ۞ إِنَّمَا كَانَ قَوْلَ الْمُؤْمِنِينَ إِذَا دُعُوا إِلَى اللّٰهِ وَرَسُولِهِ
لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ أَنْ يَقُولُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا ۚ وَأُولٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝
وَمَنْ يُطِعِ اللّٰهَ وَرَسُولَهُ وَيَخْشَ اللّٰهَ وَيَتَّقْهِ فَأُولٰئِكَ هُمُ الْفَائِزُونَ ۝
وَأَقْسَمُوا بِاللّٰهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَئِنْ أَمَرْتَهُمْ لَيَخْرُجُنَّ ۖ قُلْ لَا تُقْسِمُوا ۖ
طَاعَةٌ مَعْرُوفَةٌ ۚ إِنَّ اللّٰهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝ قُلْ أَطِيعُوا اللّٰهَ وَ
أَطِيعُوا الرَّسُولَ ۖ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا عَلَيْهِ مَا حُمِّلَ وَعَلَيْكُمْ مَا حُمِّلْتُمْ ۖ
وَإِنْ تُطِيعُوهُ تَهْتَدُوا ۚ وَمَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ۝ وَعَدَ
اللّٰهُ الَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْأَرْضِ كَمَا
اسْتَخْلَفَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِينَهُمُ الَّذِي
ارْتَضٰى لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِنْ بَعْدِ خَوْفِهِمْ أَمْنًا ۚ يَعْبُدُونَنِي لَا يُشْرِكُونَ
بِي شَيْئًا ۚ وَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ فَأُولٰئِكَ هُمُ الْفٰسِقُونَ ۝ وَأَقِيمُوا
الصَّلٰوةَ وَآتُوا الزَّكٰوةَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۝ لَا
تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا مُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ ۚ وَمَأْوٰىهُمُ النَّارُ ۖ وَ
لَبِئْسَ الْمَصِيرُ ۝ يٰأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لِيَسْتَأْذِنْكُمُ الَّذِينَ مَلَكَتْ
أَيْمَانُكُمْ وَالَّذِينَ لَمْ يَبْلُغُوا الْحُلُمَ مِنْكُمْ ثَلٰثَ مَرّٰتٍ ۚ مِنْ قَبْلِ
صَلٰوةِ الْفَجْرِ وَحِينَ تَضَعُونَ ثِيَابَكُمْ مِنَ الظَّهِيرَةِ وَمِنْ بَعْدِ
صَلٰوةِ الْعِشَاءِ ۚ ثَلٰثُ عَوْرٰتٍ لَكُمْ ۚ لَيْسَ عَلَيْكُمْ وَلَا عَلَيْهِمْ جُنَاحٌ

मोमिनों की तो यह बात है कि जब खुदा और उस के रसूल की तरफ़ बुलाए जाएं ताकि वे उन में फ़ैसला करें, तो कहें कि हमने (हुक्म) सुन लिया और मान लिया और यही लोग फ़लाह (कामियाबी) पाने वाले हैं। (५१) और जो शख़्स खुदा और उस के रसूल की फ़रमांबरदारी करेगा और उस से डरेगा, तो ऐसे ही लोग मुराद को पहुंचने वाले हैं। (५२) और (ये) खुदा की सख़्त-सख़्त क़समें खाते हैं कि अगर तुम उन को हुक्म दो तो (सब घरों से) निकल खड़े हों, कह दो कि क़स्में मत खाओ, पसंदीदा फ़रमांबरदारी (चाहिए)। बेशक खुदा तुम्हारे सब आमाल से खबरदार है। (५३) कह दो कि खुदा की फ़रमांबरदारी करो और (खुदा के) रसूल के हुक्म पर चलो। अगर मुंह मोड़ोगे तो रसूल पर (उस चीज़ का अदा करना) है जो उन के ज़िम्मे है और तुम पर (उस चीज़ का अदा करना) है जो तुम्हारे ज़िम्मे है और अगर तुम उन के फ़रमान पर चलोगे तो सीधा रास्ता पा लोगे और रसूल के ज़िम्मे तो साफ़-साफ़ (खुदा के अह्काम का) पहुंचा देना है। (५४) जो लोग तुम में से ईमान लाए और नेक काम करते रहे, उन से खुदा का वायदा है कि उनको मुल्क का हाकिम बना देगा, जैसा उनसे पहले लोगों को हाकिम बनाया था और उन के दीन को उनके लिए पसन्द किया है मज़बूत व पायदार करेगा और ख़ौफ़ के बाद उनको अम्न बख़्शेगा। वे मेरी इबादत करेंगे और मेरे साथ किसी चीज़ को शरीक न बनाएंगे और जो इस के बाद कुफ़्र करें तो ऐसे लोग बद-किरदार हैं। (५५) और नमाज़ पढ़ते रहो और ज़कात देते रहो और (खुदा के) पैग़म्बर के फ़रमान पर चलते रहो, ताकि तुम पर रहमत की जाए। (५६) (और) ऐसा ख़्याल न करना कि काफ़िर लोग (हम को) ज़मीन में मग़लूब कर देंगे, (ये जा ही कहां सकते हैं) इन का ठिकाना दोज़ख़ है और वह बहुत बुरा ठिकाना है। (५७)★

मोमिनो! तुम्हारे ग़ुलाम-लौंडियां और जो बच्चे तुम में से बुलूग़ को नहीं पहुंचे, (बालिग़ नहीं हुए), तीन बार (यानी तीन वक़्तों में) तुम से इजाज़त लिया करें। (एक तो) सुबह की नमाज़ से पहले और (दूसरे गर्मी की) दोपहर को, जब तुम कपड़े उतार देते हो और (तीसरे) इशा की नमाज़ के बाद। (ये) तीन (वक़्त) तुम्हारे पर्दे (के) हैं। इन के (आगे-) पीछे (यानी दूसरे वक़्तों में) न तुम पर कुछ गुनाह है और न उन पर कि (काम-काज के लिए) एक-दूसरे के पास आते-रहते हो। इस तरह खुदा अपनी आयतें खोल-खोल कर बयान फ़रमाता है और खुदा बड़ा इल्म वाला (और) बड़ा हिक्मत वाला है। (५८) और जब तुम्हारे लड़के बालिग़ हो जाएं तो उन

★रु. ७/१३ आ ७

व इज़ा ब-ल-ग़ल्-अत्फ़ालु मिन्कुमुल्-हुलु-म फ़ल्-यस्तअ्ज़िनू क-मस्-तअ्-ज़-नल्-लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् ᵇ कज़ालि - क युबय्यिनुल्लाहु लकुम् आयातिही ᵇ वल्लाहु अ़लीमुन् हकीम (५९) वल्क़वाअिदु मिनन्निसाइल्लाती ला यर्जू-न निकाहन् फ़लै-स अ़लैहिन्-न जुनाहुन् अंय्य-ज़अ्-न सियाबहुन्-न ग़ै-र मुतबर्रिजातिम्-बिज़ीनतिन् ᵇ व अंय्यस्तअ्-फ़िफ़्-न ख़ैरुल्लहुन्-न ᵇ वल्लाहु समीअुन् अ़लीम (६०) लै-स अ़लल्-अअ्-मा ह-र-जुंव्-व ला अ़लल्-अअ्-रजि ह-र-जुंव्-व ला अ़लल्-मरीज़ि ह-र-जुंव्-व ला अ़ला अन्फ़ुसिकुम् अन् तअ्कुलू मिम्-बुयूतिकुम् औ बुयूति आबाइकुम् औ बुयूति उम्महातिकुम् औ बुयूति इख़्वानिकुम् औ बुयूति अ-ख़-वातिकुम् औ बुयूति अअ्-मामिकुम् औ बुयूति अ़म्मातिकुम् औ बुयूति अख़-वालिकुम् औ बुयूति ख़ालातिकुम् औ मा म - लक्तुम् मफ़ाति - हहू औ सदीक़िकुम् ᵇ लै-स अ़लैकुम् जुनाहुन् अन् तअ्कुलू जमीअ़न् औ अश्तातन् ᵇ फ़-इज़ा द-ख़ल्तुम् बुयूतन् फ़-सल्लिमू अ़ला अन्फ़ुसिकुम् तहिय्य-तम्-मिन् अ़िन्दिल्लाहि मुबा-र-क-तन् तय्यि-ब-तन् ᵇ कज़ालि-क युबय्यिनुल्लाहु लकुमुल्-आयाति ल-अ़ल्लकुम् तअ्-क़िलून ★ (६१) इन्नमल् - मुअ्मिनूनल्लज़ी - न आमनू बिल्लाहि व रसूलिही व इज़ा कानू म-अ़हू अ़ला अम्रिन् जामिअ़िल्लम् यज़्हबू हत्ता यस्तअ्ज़िनूहु ᵇ इन्नल्लज़ी-न यस्तअ्ज़िनू-न-क उलाइकल्लज़ी - न युअ्मिनू - न बिल्लाहि व रसूलिही ᶜ फ़इज़स्तअ्-ज़-नू-क लिबअ्-ज़ि शअ्निहिम् फ़अ्-ज़ल्लि-मन् शिअ्-त मिन्हुम् वस्तग़्फ़िर् लहुमुल्ला-ह ᵇ इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्-रहीम (६२)

بَعْدَهُنَّ طَوّٰفُوْنَ عَلَيْكُمْ بَعْضُكُمْ عَلٰى بَعْضٍ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ
لَكُمُ الْاٰيٰتِ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿۵۸﴾ وَاِذَا بَلَغَ الْاَطْفَالُ مِنْكُمُ الْحُلُمَ
فَلْيَسْتَاْذِنُوْا كَمَا اسْتَاْذَنَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ
اٰيٰتِهٖ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿۵۹﴾ وَالْقَوَاعِدُ مِنَ النِّسَآءِ الّٰتِيْ لَا يَرْجُوْنَ
نِكَاحًا فَلَيْسَ عَلَيْهِنَّ جُنَاحٌ اَنْ يَّضَعْنَ ثِيَابَهُنَّ غَيْرَ مُتَبَرِّجٰتٍ
بِزِيْنَةٍ وَاَنْ يَّسْتَعْفِفْنَ خَيْرٌ لَّهُنَّ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۶۰﴾ لَيْسَ
عَلَى الْاَعْمٰى حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْاَعْرَجِ حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْمَرِيْضِ حَرَجٌ
وَّلَا عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ اَنْ تَاْكُلُوْا مِنْ بُيُوْتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اٰبَآئِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ
اُمَّهٰتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اِخْوَانِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اَخَوٰتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اَعْمَامِكُمْ اَوْ
بُيُوْتِ عَمّٰتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اَخْوَالِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ خٰلٰتِكُمْ اَوْ مَا مَلَكْتُمْ مَّفَاتِحَهٗٓ
اَوْ صَدِيْقِكُمْ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَاْكُلُوْا جَمِيْعًا اَوْ اَشْتَاتًا فَاِذَا
دَخَلْتُمْ بُيُوْتًا فَسَلِّمُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ تَحِيَّةً مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُبٰرَكَةً
طَيِّبَةً كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿۶۱﴾ اِنَّمَا
الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاِذَا كَانُوْا مَعَهٗ عَلٰٓى اَمْرٍ
جَامِعٍ لَّمْ يَذْهَبُوْا حَتّٰى يَسْتَاْذِنُوْهُ اِنَّ الَّذِيْنَ يَسْتَاْذِنُوْنَكَ اُولٰٓئِكَ
الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ فَاِذَا اسْتَاْذَنُوْكَ لِبَعْضِ شَاْنِهِمْ
فَاْذَنْ لِّمَنْ شِئْتَ مِنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمُ اللّٰهَ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ

★रु. ८/१४ आ ४

को भी इसी तरह इजाज़त लेनी चाहिए, जिस तरह उन में अगले (यानी बड़े आदमी) इजाज़त हासिल करते रहे हैं, इस तरह ख़ुदा तुम से अपनी आयतें खोल-खोल कर बयान फ़रमाता है और ख़ुदा जानने वाला (और) हिक्मत वाला है। (५६) और बड़ी उम्र की औरतें, जिन को निकाह की उम्मीद नहीं रही और वे कपड़े उतार (कर सर नंगा कर) लिया करें, तो उन पर कुछ गुनाह नहीं बशर्ते कि अपनी ज़ीनत की चीज़ें न ज़ाहिर करें और अगर इस से भी बचें तो (यह) उन के हक़ में बेहतर है और ख़ुदा सुनता-जानता है। (६०) न तो अंधे पर कुछ गुनाह है और न लंगड़े पर और न बीमार पर और न ख़ुद तुम पर कि अपने घरों से खाना खाओ या अपने बापों के घरों से या अपनी मांओं के घरों से या भाइयों के घरों से या अपनी बहनों के घरों से या अपने चचाओं के घरों से या अपनी फूफियों के घरों से या अपने मामुओं के घरों से या अपनी ख़ालाओं के घरों से या उस घर से, जिस की कुंजियां तुम्हारे हाथ में हों या अपने दोस्तों के घरों से (और इस का भी) तुम पर कुछ गुनाह नहीं कि सब मिल कर खाना खाओ या अलग-अलग। और जब घरों में जाया करो तो अपने (घर वालों) को सलाम किया करो। (यह) ख़ुदा की तरफ़ से मुबारक और पाकीज़ा तोहफ़ा है। इस तरह ख़ुदा अपनी आयतें खोल-खोल कर बयान फ़रमाता है, ताकि तुम समझो। (६१)★

मोमिन तो वे हैं जो ख़ुदा पर और उस के रसूल पर ईमान लाए और जब कभी ऐसे काम के लिए जो जमा हो कर करने का हो, पैग़म्बरे ख़ुदा के पास जमा हों, तो उन से इजाज़त लिए बग़ैर चले नहीं जाते। ऐ पैग़म्बर! जो लोग तुम से इजाज़त हासिल करते हैं, वही ख़ुदा पर और उस के रसूल पर ईमान रखते हैं, सो जब ये लोग तुम से किसी काम के लिए इजाज़त मांगा करें, तो उन में से जिसे चाहा करो, इजाज़त दे दिया करो और उन के लिए ख़ुदा से बख़्शिश मांगा करो। कुछ शक नहीं कि ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है। (६२) मोमिनो! पैग़म्बर के बुलाने को ऐसा ख़्याल न

★रु० ८/१४ आ ४

ला तज्अ़लू दुआ़अर्रसूलि बैनकुम् कदुआ़इ बअ्-ज़िकुम् बअ्-ज़न् ᵇ क़द् यअ्-लमुल्लाहुल्लज़ी-न य-त-सल्ललू-न मिन्कुम् लिवाज़न् ᶜ फ़ल्-यह़्-ज़रिल्-लज़ी-न युख़ालिफ़ू-न अन् अम्रिही अन् तुसीबहुम् फ़ित्-नतुन् औ युसीबहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम (६३) अला इन्-न लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि ᵇ क़द् यअ्-लमु मा अन्तुम् अ़लैहि ᵇ व यौ-म युर्जअू-न इलैहि फ़युनब्बिउहुम् बिमा अ़मिलू ᵇ वल्लाहु बिकुल्लि शैइन् अ़लीम ★ (६४)

قد افلح ١٨ — ٤٨٧ — الفرقان ٢٥

رَحِيمٌ ﴿٦٢﴾ لَا تَجْعَلُوا دُعَاءَ الرَّسُولِ بَيْنَكُمْ كَدُعَاءِ بَعْضِكُم بَعْضًا ۚ قَدْ
يَعْلَمُ اللَّهُ الَّذِينَ يَتَسَلَّلُونَ مِنكُمْ لِوَاذًا ۚ فَلْيَحْذَرِ الَّذِينَ يُخَالِفُونَ
عَنْ أَمْرِهِ أَن تُصِيبَهُمْ فِتْنَةٌ أَوْ يُصِيبَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٦٣﴾ أَلَا إِنَّ
لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ قَدْ يَعْلَمُ مَا أَنتُمْ عَلَيْهِ وَيَوْمَ
يُرْجَعُونَ إِلَيْهِ فَيُنَبِّئُهُم بِمَا عَمِلُوا ۗ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٦٤﴾
سُورَةُ الْفُرْقَانِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ سَبْعٌ وَسَبْعُونَ آيَةً وَسِتُّ رُكُوعَاتٍ
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
تَبَارَكَ الَّذِي نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلَىٰ عَبْدِهِ لِيَكُونَ لِلْعَالَمِينَ نَذِيرًا ﴿١﴾
الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَلَمْ يَكُن لَّهُ
شَرِيكٌ فِي الْمُلْكِ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ فَقَدَّرَهُ تَقْدِيرًا ﴿٢﴾ وَاتَّخَذُوا
مِن دُونِهِ آلِهَةً لَّا يَخْلُقُونَ شَيْئًا وَهُمْ يُخْلَقُونَ وَلَا يَمْلِكُونَ
لِأَنفُسِهِمْ ضَرًّا وَلَا نَفْعًا وَلَا يَمْلِكُونَ مَوْتًا وَلَا حَيَاةً وَلَا نُشُورًا ﴿٣﴾
وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هَٰذَا إِلَّا إِفْكٌ افْتَرَاهُ وَأَعَانَهُ عَلَيْهِ قَوْمٌ
آخَرُونَ ۖ فَقَدْ جَاءُوا ظُلْمًا وَزُورًا ﴿٤﴾ وَقَالُوا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ اكْتَتَبَهَا
فَهِيَ تُمْلَىٰ عَلَيْهِ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ﴿٥﴾ قُلْ أَنزَلَهُ الَّذِي يَعْلَمُ السِّرَّ
فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ إِنَّهُ كَانَ غَفُورًا رَّحِيمًا ﴿٦﴾ وَقَالُوا مَالِ هَٰذَا
الرَّسُولِ يَأْكُلُ الطَّعَامَ وَيَمْشِي فِي الْأَسْوَاقِ ۙ لَوْلَا أُنزِلَ إِلَيْهِ مَلَكٌ

२५ सूरतुल्-फ़ुर्क़ानि ४२

(मक्की) इस सूर: में अरबी के ३९१९ अक्षर, ९०६ शब्द, ७७ आयतें और ६ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

तबारकल्लज़ी नज़्ज़ - लल् - फ़ुर्क़ा-न अ़ला अ़ब्दिही लि-यकू-न लिल्आ़लमी-न नज़ीरा ᵍ (१) अल्लज़ी लहू मुल्कुस्-समावाति वल्अर्ज़ि व लम् यत्तख़िज़् व-ल-दंव्-व लम् यकुल्लहू शरीकुन् फ़िल्मुल्कि व ख़-ल-क़ कुल्-ल शैइन् फ़-क़द्-द-रहू तक़्दीरा (२) वत्तख़ज़ू मिन् दूनिही आलिहतल्ला यख़्लुक़ू-न शैअंव्-व हुम् युख़-लक़ू-न व ला यम्लिकू-न लिअन्फ़ुसिहिम् ज़र्रंव्-व ला नफ़्-अंव्-व ला यम्लिकू-न मौतंव-व ला ह़यातंव-व ला नुशूरा (३) व क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू इन् हाज़ा इल्ला इफ़्कुनिफ़्तराहु व अ-आनहू अ़लैहि क़ौमुन् आख़रू-न ᶜ फ़ - क़द् जाऊ ज़ुल्मंव्वज़ूरा ᶜ (४) व क़ालू असातीरुल्-अव्वलीनक्-त-त-बहा फ़हि-य तुम्ला अ़लैहि बुक-र-तंव्-व असीला (५) क़ुल् अन्-ज़-लहुल्लज़ी यअ्-लमुस्सिर्-र फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि ᵇ इन्नहू का-न ग़फ़ूरर्-रह़ीमा (६) व क़ालू मालिहाज़र्रसूलि यअ्-कुलुत्तआ़-म व यम्शी फ़िल्अस्वाक़ि ᵇ लौला उन्ज़ि-ल इलैहि म-ल-कुन् फ़-यकू-न म-अ़हू नज़ीरा ᵍ (७)

★रु. ६/१५ आ ३०, मु. अ़ मु त क़. १०

करना जैसा तुम आपस में एक दूसरे को बुलाते हो। बेशक ख़ुदा को वे लोग मालूम हैं, जो तुम में से आंख बचा कर चल देते हैं तो जो लोग उन के हुक्म की मुख़ालफ़त करते हैं, उन को डरना चाहिए कि (ऐसा न हो कि) उन पर कोई आफ़त पड़ जाए या तक्लीफ़ देने वाला अज़ाब नाज़िल हो। (६३) देखो जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, सब ख़ुदा ही का है। जिस (ढंग) पर तुम हो, वह उसे जानता है और जिस दिन लोग उस की तरफ़ लौटाए जाएंगे तो जो अमल वे करते रहे, वह उन को बता देगा और ख़ुदा हर चीज़ को जानता है। (६४)★

२५ सूरः फ़ुर्क़ान ४२

सूरः फ़ुर्क़ान मक्की है और इस में ७७ आयतें और छः रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

वह (ख़ुदा-ए-अज्ज़ व जल्ल) बहुत ही बरकत वाला है, जिस ने अपने बन्दे पर क़ुरआन नाज़िल फ़रमाया, ताकि दुनिया वालों को हिदायत करे। (१) वही कि आसमानों और ज़मीन की बादशाही उसी की है और जिस ने (किसी को) बेटा नहीं बनाया और जिस का बादशाही में कोई शरीक नहीं और जिस ने हर चीज को पैदा किया, फिर उस का एक अन्दाज़ा ठहराया। (२) और (लोगों ने) उस के सिवा और माबूद बना लिए हैं, जो कोई चीज़ भी पैदा नहीं कर सकते और ख़ुद पैदा किए गये हैं और न अपने नुक़्सान और नफ़ा का कुछ अख़्तियार रखते हैं और न मरना उन के अख़्तियार में है और न जीना और न (मर कर) उठ खड़े होना। (३) और काफ़िर कहते हैं कि यह (क़ुरआन) मनगढ़त बातें हैं, जो इस (रिसालत के दावेदार) ने बना ली हैं और लोगों ने इस में उस की मदद की है। ये लोग (ऐसा कहने से) ज़ुल्म और झूठ पर (उतर) आए हैं। (४) और कहते हैं कि यह पहले लोगों की कहानियां हैं, जिन को उस ने जमा कर रखा है। और वह सुबह व शाम उस को पढ़-पढ़ कर सुनायी जाती हैं। (५) कह दो कि उस को उस ने उतारा है जो आसमानों और ज़मीन की छिपी बातों को जानता है। बेशक वह बख़्शने वाला मेहरबान है। (६) और कहते हैं, यह कैसा पैग़म्बर है कि खाना खाता है और बाज़ारों में चलता-फिरता है, इस पर कोई फ़रिश्ता क्यों नाज़िल नहीं किया गया कि इस के साथ हिदायत करने को रहता। (७) या

★रु. ६/१५ आ ३ ∴ मु. अ़ि मु. त क़ १०

ओ युल्क़ा इलैहि कन्ज़ुन् ओ तकूनु लहू जन्नतुंय्यअ्कुलु मिन्हा ط व क़ालज़्ज़ालिमू-न इन् तत्तबिअू-न इल्ला रजुलम्-मस्हूरा (८) उन्ज़ुर् कै-फ़ ज़-रबू ल-कल्-अम्सा-ल फ़ज़ल्लू फ़ला यस्ततीअू-न सबीला ★(९) तबारकल्लज़ी इन् शा-अ ज-अ-ल ल-क ख़ैरम्मिन् ज़ालि-क जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु لا व यज्-अल् ल-क क़ुसूरा (१०) बल् कज़्ज़बू बिस्साअ़ति व अअ्-तद्-ना लिमन् कज़्ज़-ब बिस्साअ़ति सअ़ीरा ج (११) इज़ा र-अत्हुम् मिम्-मकानिम्-बअ़ीदिन् समिअ़ू लहा त-ग़य्युज़ंव्-व ज़फ़ीरा (१२) व इज़ा उल्क़ू मिन्हा मकानन् ज़य्यिक़म्-मुक़र्रनी-न दऔ हुनालि-क सुबूरा ط (१३) ला तद्अुल्-यौ-म सुबूरंव्वाहिदंव्वद्अू सुबूरन् कसीरा (१४) क़ुल् अ ज़ालि-क ख़ैरुन् अम् जन्नतुल्-ख़ुल्दिल्-लती वुअ़िदल्-मुत्तक़ू-न ط कानत् लहुम् जज़ाअंव्-व मसीरा (१५) लहुम् फ़ीहा मा यशाऊ-न ख़ालिदी-न ط का-न अ़ला रब्बि-क वअ्-दम्-मस्ऊला (१६) व यौ-म यह्शुरुहुम् व मा यअ्-बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि फ़-यक़ूलु अ अन्तुम् अज़्-लल्तुम् अिबादी हाउला-इ अम् हुम् ज़ल्लुस्सबील ط (१७) क़ालू सुब्हान-क मा का-न यम्बग़ी लना अन् नत्तख़ि-ज़ मिन् दूनि-क मिन् औलिया-अ व लाकिम्-मत्तअ्-तहुम् व आबा-अहुम् हत्ता नसुज़्ज़िक्-र ج व कानू क़ौमम्बूरा (१८) फ़-क़द् कज़्ज़बूकुम् बिमा तक़ूलू-न لا फ़मा तस्ततीअ़ू-न सर्फ़ंव्-व ला नस्रन् ج व मंय्यज़्लिम् मिन्कुम् नुज़िक़्हु अ़ज़ाबन् कबीरा (१९) व मा अर्सल्ना क़ब्ल-क मिनल्-मुर्सली-न इल्ला इन्नहुम् ल-यअ्कुलूनत्-तआ़-म व यम्शू-न फ़िल्अस्वाक़ि ط व ज-अ़ल्ना बअ्-ज़कुम् लिबअ्-ज़िन् फ़ित्-न-तन् ط अ-तस्बिरू-न ج व का-न रब्बु-क बसीरा ★(२०)

فَيَكُونَ مَعَهُ نَذِيرًا ﴿٧﴾ أَوْ يُلْقَىٰ إِلَيْهِ كَنزٌ أَوْ تَكُونُ لَهُ جَنَّةٌ يَأْكُلُ مِنْهَا ۚ وَ
قَالَ الظَّالِمُونَ إِن تَتَّبِعُونَ إِلَّا رَجُلًا مَّسْحُورًا ﴿٨﴾ انظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوا لَكَ
الْأَمْثَالَ فَضَلُّوا فَلَا يَسْتَطِيعُونَ سَبِيلًا ﴿٩﴾ تَبَارَكَ الَّذِي إِن شَاءَ
جَعَلَ لَكَ خَيْرًا مِّن ذَٰلِكَ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ وَيَجْعَل
لَّكَ قُصُورًا ﴿١٠﴾ بَلْ كَذَّبُوا بِالسَّاعَةِ ۖ وَأَعْتَدْنَا لِمَن كَذَّبَ بِالسَّاعَةِ سَعِيرًا ﴿١١﴾
إِذَا رَأَتْهُم مِّن مَّكَانٍ بَعِيدٍ سَمِعُوا لَهَا تَغَيُّظًا وَزَفِيرًا ﴿١٢﴾ وَإِذَا أُلْقُوا مِنْهَا
مَكَانًا ضَيِّقًا مُّقَرَّنِينَ دَعَوْا هُنَالِكَ ثُبُورًا ﴿١٣﴾ لَّا تَدْعُوا الْيَوْمَ ثُبُورًا
وَاحِدًا وَادْعُوا ثُبُورًا كَثِيرًا ﴿١٤﴾ قُلْ أَذَٰلِكَ خَيْرٌ أَمْ جَنَّةُ الْخُلْدِ الَّتِي
وُعِدَ الْمُتَّقُونَ ۚ كَانَتْ لَهُمْ جَزَاءً وَمَصِيرًا ﴿١٥﴾ لَّهُمْ فِيهَا مَا يَشَاءُونَ
خَالِدِينَ ۚ كَانَ عَلَىٰ رَبِّكَ وَعْدًا مَّسْئُولًا ﴿١٦﴾ وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ
مِن دُونِ اللَّهِ فَيَقُولُ أَأَنتُمْ أَضْلَلْتُمْ عِبَادِي هَٰؤُلَاءِ أَمْ هُمْ ضَلُّوا
السَّبِيلَ ﴿١٧﴾ قَالُوا سُبْحَانَكَ مَا كَانَ يَنبَغِي لَنَا أَن نَّتَّخِذَ مِن دُونِكَ
مِنْ أَوْلِيَاءَ وَلَٰكِن مَّتَّعْتَهُمْ وَآبَاءَهُمْ حَتَّىٰ نَسُوا الذِّكْرَ وَكَانُوا
قَوْمًا بُورًا ﴿١٨﴾ فَقَدْ كَذَّبُوكُم بِمَا تَقُولُونَ فَمَا تَسْتَطِيعُونَ صَرْفًا
وَلَا نَصْرًا ۚ وَمَن يَظْلِم مِّنكُمْ نُذِقْهُ عَذَابًا كَبِيرًا ﴿١٩﴾ وَمَا أَرْسَلْنَا
قَبْلَكَ مِنَ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا إِنَّهُمْ لَيَأْكُلُونَ الطَّعَامَ وَيَمْشُونَ فِي الْأَسْوَاقِ
وَجَعَلْنَا بَعْضَكُمْ لِبَعْضٍ فِتْنَةً أَتَصْبِرُونَ ۗ وَكَانَ رَبُّكَ بَصِيرًا ﴿٢٠﴾

★रु. १/१६ आ ९ ★रु. २/१७ आ ११

उस की तरफ़ (आसमान से) ख़ज़ाना उतारा जाता या उस का कोई बाग़ होता कि उसमें से खाया करता और ज़ालिम कहते हैं कि तुम तो एक जादू किए हुए शख़्स की पैरवी करते हो। (८) (ऐ पैग़म्बर!) देखो तो ये तुम्हारे बारे में किस-किस तरह की बातें करते हैं, सो गुमराह हो गये और रास्ता नहीं पा सकते ★ (९) वह (ख़ुदा) बहुत बरकत वाला है, जो अगर चाहे, तो तुम्हारे लिए इस से बेहतर (चीज़ें) बना दे, (यानी) बाग़, जिन के नीचे नहरें बह रही हों, और तुम्हारे लिए महल बना दे। (१०) बल्कि ये तो क़ियामत ही को झुठलाते हैं और हमने क़ियामत के झुठलाने वालों के लिए दोज़ख़ तैयार कर रखी है। (११) जिस वक़्त वह उन को दूर से देखेगी, तो (ग़ज़बनाक हो रही होगी और ये) उस के जोशे (ग़ज़ब) और चीख़ने-चिल्लाने को सुनेंगे। (१२) और जब ये दोज़ख़ की किसी तंग जगह में (ज़ंजीरों में) जकड़ कर डाले जाएंगे तो वहां मौत को पुकारेंगे। (१३) आज एक ही मौत को न पुकारो, बहुत-सी मौतों को पुकारो। (१४) पूछो कि यह बेहतर है या हमेशा की जन्नत, जिस का परहेज़गारों से वायदा है। यह उन (के अमलों का) बदला और रहने का ठिकाना होगा। (१५) वहां जो चाहेंगे, उन के लिए (मयस्सर) होगा, हमेशा उस में रहेंगे। यह वायदा ख़ुदा को (पूरा करना) ज़रूरी है और इस लायक़ है कि मांग लिया जाए। (१६) और जिस दिन (ख़ुदा) इन को और उन को जिन्हें ये ख़ुदा के सिवा पूजते हैं, जमा करेगा, तो फ़रमाएगा, क्या तुम ने मेरे इन बन्दों को गुमराह किया था या ये ख़ुद गुमराह हो गये थे। (१७) वे कहेंगे, तू पाक है, हमें यह बात मुनासिब न थी कि तेरे सिवा औरों को दोस्त बनाते, लेकिन तू ने ही उन को और उन के बाप-दादा को बरतने की नेमतें दीं, यहां तक कि वे तेरी याद को भूल गये और ये हलाक होने वाले लोग थे। (१८) तो (काफ़िरो!) उन्हों ने तो तुम को तुम्हारी बात में झुठला दिया पस (अब) तुम (अज़ाब को) न फेर सकते हो। न (किसी से) मदद ले सकते हो। और जो शख़्स तुम में से ज़ुल्म करेगा, हम उस को बड़े अज़ाब का मज़ा चखाएंगे। (१९) और हमने तुम से पहले जितने पैग़म्बर भेजे हैं, सब खाना खाते थे और बाज़ारों में चलते-फिरते थे और हम ने तुम्हें एक-दूसरे के लिए आज़माइश बनाया। क्या तुम सब्र करोगे और तुम्हारा परवरदिगार तो देखने वाला है। (२०) ★

★रु. १/१६ आ ९ ★रु. २/१७ आ ११

उन्नीसवां पारः व क़ालल्लज़ी-न

सूरतुल-फ़ुर्क़ानि आयात २१ से ७७

व क़ालल्लज़ी-न ला यर्जू-न लिक़ा-अना लौ ला उन्ज़ि-ल अलैनल्-मलाइकतु औ नरा रब्बना॰ ल-क़दिस्तक्बरू फ़ी अन्फ़ुसिहिम् व अतौ अुतुव्वन् कबीरा (२१) यौ-म यरौनल्-मलाइ-क-त ला बुश्रा यौमइज़िल्-लिल्मुज्रिमी-न व यक़ूलू-न हिज्रम्-मह्जूरा (२२) व क़दिम्ना इला मा अमिलू मिन् अ-मलिन् फ़-ज-अल्नाहु हबा-अम् - मन्सूरा (२३) अस्-हाबुल् - जन्नति यौमइज़िन् खैरुम् - मुस्त-क़र्-रंव्-व अह्सनु मक़ीला (२४) व यौ-म त - शक़्क़क़ुस्समाउ बिल्ग़मामि व नुज़्ज़िलल् - मलाइकतु तन्ज़ीला (२५) अल्मुल्कु यौमइज़ि-निल्-हक़्क़ु लिर्रह्मानि॰ व का-न यौमन् अ-लल्-काफ़िरी-न असीरा (२६) व यौ-म य-अज़्ज़ुज़्ज़ालिमु अला यदैहि यक़ूलु यालैतनित्तख़ज़्तु म-अर्रसूलि सबीला (२७) या वैलता लै-तनी लम् अत्तख़िज़् फ़ुलानन् ख़लीला (२८) ल-क़द् अ-ज़ल्लनी अनिज़्ज़िक्रि बअ्-द इज़् जा-अनी॰ व कानश्शैतानु लिल्इन्सानि ख़ज़ूला (२९) व क़ालर्रसूलु या रब्बि इन्-न क़ौमित्त-ख़ज़ू हाज़ल्-क़ुर्आ-न मह्जूरा (३०) व कज़ालि-क ज-अल्ना लिकुल्लि नबिय्यिन् अदुव्वम्मिनल्-मुज्रिमी-न॰ व कफ़ा बिरब्बि-क हादियंव्-व नसीरा (३१) व क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू लौ ला नुज़्ज़ि-ल अलैहिल्-क़ुर्आनु जुम-ल-तंव्वाहि-द-तन्॰ कज़ालि-क॰ लिनुसब्बि-त बिही फ़ुआद-क व रत्तल्नाहु तर्तीला (३२) व ला यअ्तून-क बि-म-सलिन् इल्ला जिअ्ना-क बिल्हक़्क़ि व अह्-स-न तफ़्सीरा॰ (३३) अल्लज़ी-न युह्शरू-न अला वुजूहिहिम् इला जहन्न-म॰ उलाइ-क शर्रुम्-मकानंव्-व अ-ज़ल्लु सबीला★(३४) व ल-क़द् आतैना मूसल्-किता-ब व ज-अल्ना म-अहू अख़ाहु हारू-न वज़ीरा॰(३५) फ़क़ुल्नज़्हबा इलल्-क़ौमिल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना॰ फ़ - दम्मर्नाहुम् तद्मीरा॰ (३६)

وقال الذين لا يرجون لقاءنا لولا أنزل علينا الملئكة أو
نرى ربنا لقد استكبروا في أنفسهم وعتو عتوا كبيرا ۝ يوم
يرون الملئكة لا بشرى يومئذ للمجرمين ويقولون حجرا
محجورا ۝ وقدمنا إلى ما عملوا من عمل فجعلنه هباء منثورا ۝
أصحب الجنة يومئذ خير مستقرا وأحسن مقيلا ۝ ويوم
تشقق السماء بالغمام ونزل الملئكة تنزيلا ۝ الملك يومئذ الحق
للرحمن وكان يوما على الكفرين عسيرا ۝ ويوم يعض الظالم
على يديه يقول يليتني اتخذت مع الرسول سبيلا ۝ يويلتى
ليتني لم أتخذ فلانا خليلا ۝ لقد أضلني عن الذكر بعد إذ
جاءني وكان الشيطن للإنسان خذولا ۝ وقال الرسول يرب
إن قومي اتخذوا هذا القرءان مهجورا ۝ وكذلك جعلنا لكل
نبي عدوا من المجرمين وكفى بربك هاديا ونصيرا ۝ وقال
الذين كفروا لولا نزل عليه القرءان جملة وحدة كذلك لنثبت
به فؤادك ورتلنه ترتيلا ۝ ولا يأتونك بمثل إلا جئنك بالحق
وأحسن تفسيرا ۝ الذين يحشرون على وجوههم إلى جهنم
أولئك شر مكانا وأضل سبيلا ۝ ولقد ءاتينا موسى الكتب و
جعلنا معه أخاه هرون وزيرا ۝ فقلنا اذهبا إلى القوم الذين

∴मु॰ अि॰ मु॰ ता॰ ख॰ १२ ★रु॰ ३/१ आ १४

और जो लोग हम से मिलने की उम्मीद नहीं रखते, कहते हैं कि हम पर फ़रिश्ते क्यों न नाज़िल किये गये या हम आंख से अपने परवरदिगार को देख लें। ये अपने ख़्याल में बड़ाई रखते हैं और (इसी वजह से) बड़े सरकश हो रहे हैं। (२१) जिस दिन ये फ़रिश्तों को देखेंगे, उस दिन गुनाहगारों के लिए कोई ख़ुशी की बात नहीं होगी और कहेंगे (ख़ुदा करे तुम) रोक लिए (और बंद कर दिए) जाओ।[1] (२२) और जो उन्हों ने अमल किए होंगे, हम उन की तरफ़ मुतवज्जह होंगे तो उनको उड़ती ख़ाक कर देंगे।(२३) उस दिन जन्नत वालों का ठिकाना भी बेहतर होगा और आराम की जगह भी ख़ूब होगी। (२४) और जिस दिन आसमान बादल के साथ फट जाएगा[2] और फ़रिश्ते नाज़िल किए जाएंगे। (२५) उस दिन सच्ची बादशाही ख़ुदा ही की होगी और वह दिन काफ़िरों पर (सख़्त) मुश्किल होगा। (२६) और जिस दिन (अंजाम से बे-ख़बर) ज़ालिम अपने हाथ काट-काट खाएगा (और) कहेगा कि ऐ काश ! मैं ने पैग़म्बर के साथ रास्ता अपनाया होता। (२७) हाय शामत ! काश ! मैं ने फ़्लां शख़्स को दोस्त न बनाया होता। (२८) उस ने मुझ को नसीहत (की किताब) के मेरे पास आने के बाद बहका दिया और शैतान इंसान को वक़्त पर दग़ा देने वाला है। (२९) और पैग़म्बर कहेंगे कि ऐ परवरदिगार ! मेरी क़ौम ने इस क़ुरआन को छोड़ रखा था।[3] (३०) और इसी तरह हमने गुनाहगारों में से हर पैग़म्बर का दुश्मन बना दिया और तुम्हारा परवरदिगार हिदायत देने और मदद करने को काफ़ी है। (३१) और काफ़िर कहते हैं कि इस पर क़ुरआन एक ही बार क्यों नहीं उतारा गया, ∴इस तरह∴ (धीरे-धीरे) इसलिए (उतारा गया) कि इस से तुम्हारे दिल को क़ायम रखें और (इसी वास्ते) हम उस को ठहर-ठहर कर पढ़ते रहे हैं। (३२) और ये लोग तुम्हारे पास जो (एतराज़ की) बात लाते हैं, हम तुम्हारे पास सही और ख़ूब बेहतर जवाब भेज देते हैं। (३३) जो लोग अपने मुंहों के बल दोज़ख़ की तरफ़ जमा किए जाएंगे, उन का ठिकाना भी बुरा है और वे रास्ते से भी बहके हुए हैं। (३४)★

और हमने मूसा को किताब दी और उन के भाई हारून को मददगार बना कर उन के साथ मिला दिया। (३५) और कहा कि दोनों उन लोगों के पास जाओ, जिन्हों ने हमारी आयतों को झुठलाया। (जब झुठलाने पर अड़े रहे) तो हमने उन को हलाक कर डाला। (३६) और नूह की

---

१. यानी ख़ुदा तुम से पनाह में रखे। अरबों की आदत है कि जब उन में से किसी पर कोई सख़्ती और आफ़त व बला नाज़िल होती है, तो कहते हैं 'हिज-रम मह्जूरा' जैसे हम कहते हैं कि ख़ुदा की पनाह।

२. यानी आसमान के फटने के साथ वह बदली भी फट जाएगी, जो आसमान और लोगों के दर्मियान है। कुछ लोगों ने कहा कि आसमान फट जाएगा, इस हाल में कि उस पर बादल होगा। कुछ लोगों ने कहा कि आसमान बादल की वजह से फट जाएगा यानी बदली ज़ाहिर होगी और उस की वजह से आसमान फट जाएगा।

३. प्यारे नबी सल्ल० क़ियामत के दिन ख़ुदा से शिकायतें करेंगे कि मेरे परवरदिगार ! मेरी क़ौम ने क़ुरआन को छोड़ दिया। छोड़ देने की कई शक्लें हैं—इस को न मानना और इस पर ईमान न लाना भी छोड़ देना है। इस में ग़ौर न करना और सोच-समझ कर न पढ़ना भी छोड़ देना है। इस के हुक्मों का न मानना और इस की मना की हुई चीज़ों से न रुकना भी छोड़ देना है। क़ुरआन की परवाह न कर के दूसरी चीज़ों जैसे बेहूदा नाविलों, दीवानों, लग्व बातों, खेल-तमाशों, राग व रंग में लगा रहना भी छोड़ देना है। अफ़सोस है कि आजकल के मुसल्मान क़ुरआन की तरफ़ से निहायत ग़ाफ़िल हो रहे हैं। उस के पढ़ने-सोचने-समझने और हिदायतों से फ़ायदा उठाने की तरफ़ तवज्जोह नहीं करते और यह खुल्लम-खुल्ला क़ुरआन मजीद का छोड़ना है। अल्लाह तआला उन

(शेष पृष्ठ ५७७ पर)

व क़ौ-म नूहि़ल्लम्मा कज़्ज़बुर्रुसु-ल अग़्-रक़्नाहुम् व ज-अ़ल्नाहुम् लिन्नासि आ-य-तन्, व अअ्-तद्ना लिज़्ज़ालिमी-न अ़ज़ाबन् अलीमा (३७) व आ़दंव्-व समू-द व अस्हा़बर्रस्सि व क़ुरूनम्-बै-न ज़ालि-क कसीरा (३८) व कुल्लन् ज़-रब्ना लहुल्-अम्सा-ल व कुल्लन् तब्बर्ना तत्बीरा (३९) व ल-क़द् अतौ अ़-लल्-क़र्यतिल्लती उम्ति़-रत् म-त़-रस्सौइ, अ-फ़-लम् यकूनू यरौनहा बल् कानू ला यर्जू-न नुशूरा (४०) व इज़ा रऔ-क इंय्यत्तख़िज़ू-न-क इल्ला हुज़ुवा, अहाज़ल्लज़ी ब-अ़-सल्लाहु रसूला (४१) इन् का-द लयुज़िल्लुना अ़न् आलिहतिना लौला अन् स़-बर्ना अ़लैहा, व सौ-फ़ यअ्-लमू-न ही़-न यरौनल्-अ़ज़ा-ब मन् अ-ज़ल्लु सबीला (४२) अ-रऐ-त मनित्त-ख़-ज़ इलाहहू हवाहु, अ-फ़-अन्-त तकूनु अ़लैहि वकीला (४३) अम् तह़्सबु अन्-न अक्स-रहुम् यस्मअू-न औ यअ्-क़िलू-न, इन् हुम् इल्ला कल्-अन्आ़मि बल् हुम् अ-ज़ल्लु सबीला ★ (४४) अ-लम् त-र इला रब्बि-क कै-फ़ मद्दज़्ज़िल्-ल व लौ शा-अ ल-ज-अ़-लहू साकिनन् सुम्-म ज-अ़ल्नश्शम्-स अ़लैहि दलीला (४५) सुम्-म क़-बज़्नाहु इलैना क़ब्ज़ंय्यसीरा (४६) व हुवल्लज़ी ज-अ़-ल लकुमुल्लै-ल लिबासंव्वन्नौ-म सुबातंव्-व ज-अ़-लन्-नहा-र नुशूरा (४७) व हुवल्लज़ी अर्स-लर्रिया-ह़ बुश्रम्-बै-न यदै रह़्मतिही व अन्ज़ल्ना मिनस्समाइ माअन् त़हूरल्- (४८) -लिनुह़्यि-य बिही बल्द-तम्-मैतंव्-व नुस्क़ि-यहू मिम्मा ख़-लक़्ना अन्आ़मंव्-व अनासिय्-य कसीरा (४९) व ल-क़द् स़र्रफ़्नाहु बैनहुम् लियज़्ज़क्करू फ़-अबा अक्सरुन्नासि इल्ला कुफ़ूरा (५०) व लौ शिअ्ना ल-बअ़स्ना फ़ी कुल्लि क़र्-यतिन् नज़ीरा (५१) फ़ला तुति़अिल्-काफ़िरी-न व जाहिद्हुम् बिही जिहादन् कबीरा (५२)

كذبوا بايتنا فدمرنهم تدميرا ۝ وقوم نوح لما كذبوا الرسل
اغرقنهم وجعلنهم للناس اية واعتدنا للظلمين عذابا اليما ۝ و
عادا وثمودا واصحب الرس وقرونا بين ذلك كثيرا ۝ وكلا ضربنا
له الامثال وكلا تبرنا تتبيرا ۝ ولقد اتوا على القرية التي امطرت
مطر السوء افلم يكونوا يرونها بل كانوا لا يرجون نشورا ۝ واذا
راوك ان يتخذونك الا هزوا اهذا الذي بعث الله رسولا ۝ ان
كاد ليضلنا عن الهتنا لولا ان صبرنا عليها وسوف يعلمون
حين يرون العذاب من اضل سبيلا ۝ ارءيت من اتخذ الهه
هوىه افانت تكون عليه وكيلا ۝ ام تحسب ان اكثرهم يسمعون
او يعقلون ان هم الا كالانعام بل هم اضل سبيلا ۝ الم تر الى
ربك كيف مد الظل ولو شاء لجعله ساكنا ثم جعلنا الشمس عليه
دليلا ۝ ثم قبضنه الينا قبضا يسيرا ۝ وهو الذي جعل لكم
اليل لباسا والنوم سباتا وجعل النهار نشورا ۝ وهو الذي
ارسل الريح بشرا بين يدي رحمته وانزلنا من السماء ماء
طهورا ۝ لنحي به بلدة ميتا ونسقيه مما خلقنا انعاما واناسي
كثيرا ۝ ولقد صرفنه بينهم ليذكروا فابى اكثر الناس الا
كفورا ۝ ولو شئنا لبعثنا في كل قرية نذيرا ۝ فلا تطع الكفرين و

★रु. ४/२ आ १०

क़ौम ने भी जब पैग़म्बरों को झुठलाया, तो हमने उन्हें डुबो दिया और लोगों के लिए निशानी बना दिया और ज़ालिमों के लिए हमने दुख देने वाला अज़ाब तैयार कर रखा है। (३७) और आद और समूद और कुएं वालों और उनके दर्मियान और बहुत सी जमाअतों को भी (हलाक कर दिया)। (३८) और सब के (समझाने के) लिए हम ने मिसालें बयान कीं और न (मानने पर) सब का तहस-नहस कर दिया। (३९) और ये (काफ़िर) उस बस्ती पर भी गुज़र चुके हैं, जिस पर बुरी तरह का मेंह बरसाया गया था, ये इस को देखते न होंगे, बल्कि उन को तो (मरने के बाद) जी उठने की उम्मीद ही नहीं। (४०) और ये लोग जब तुम को देखते हैं, तो तुम्हारी हंसी उड़ाते हैं कि क्या यही शख़्स है, जिस को ख़ुदा ने पैग़म्बर बना कर भेजा है। (४१) अगर हम अपने माबूदों के बारे में साबित क़दम न रहते, तो यह ज़रूर हम को बहका देता (और) उन से (फेर देता) और ये बहुत जल्द मालूम कर लेंगे, जब अज़ाब देखेंगे कि सीधे रास्ते से कौन भटका हुआ है। (४२) क्या तुम ने उस शख़्स को देखा, जिस ने नफ़्स की ख़्वाहिश को माबूद बना रखा है, तो क्या तुम उस पर निगहबान हो सकते हो? (४३) या तुम यह ख़्याल करते हो कि इन में अक्सर सुनते या समझते हैं? (नहीं) ये तो चौपायों की तरह के हैं बल्कि उन से भी ज़्यादा गुमराह हैं★(४४) भला तुम ने अपने परवरदिगार (की क़ुदरत) को नहीं देखा कि वह साए को किस तरह लंबा कर (के फैला) देता है और अगर वह चाहता तो उस को (बे-हरकत) ठहरा रखता, फिर सूरज को उस का रहनुमा बना देता है। (४५) फिर हम उस को धीरे-धीरे अपनी तरफ़ समेट लेते हैं। (४६) और वही तो है, जिस ने रात को तुम्हारे लिए पर्दा और नींद को आराम बनाया और दिन को उठ खड़े होने का वक़्त ठहराया। (४७) और वही तो है, जो अपनी रहमत के मेंह के आगे हवाओं को ख़ुशख़बरी बना कर भेजता है और हम आसमान से पाक (और निथरा हुआ) पानी बरसाते हैं। (४८) ताकि इस से मुर्दा शहर (यानी बंजर ज़मीन) को ज़िंदा कर दें और फिर हम उसे बहुत से चौपायों और आदमियों को, जो हमने पैदा किए हैं, पिलाते हैं। (४९) और हमने इस (क़ुरआन की आयतों) को तरह-तरह से लोगों में बयान किया ताकि नसीहत पकड़ें, मगर बहुत से लोगों ने इंकार के सिवा क़ुबूल न किया। (५०) और अगर हम चाहते तो हर बस्ती में डराने वाला भेज देते। (५१) तो तुम काफ़िरों का कहा न मानो और उनसे इस क़ुरआन के हुक्म

(पृष्ठ ५३५ का शेष)

को इस तरफ़ तवज्जोह देने और उन की तिलावत में लगे रहने की तौफ़ीक़ बख़्शे ताकि वे उन पर अमल करें और उन को दोनों दुनिया की कामियाबी हासिल हो।

★रु. ४/२ आ १०

व हुवल्लज़ी म-र-जल्-बह़्रैनि हाज़ा अज़्बुन् फ़ुरातुंव्-व हाज़ा मिल्हुन् उजाजुन् व ज-अ-ल बैनहुमा बर्ज़ख़ंव-व हिज्रम्-मह़्जूरा (५३) व हुवल्लज़ी ख़-ल-क़ मिनल्माइ ब-श-रन् फ़-ज-अ-लहू न-स-बंव्-व सिह्रन्ᵇव का-न रब्बु-क क़दीरा (५४) व यअ्-बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि मा ला यन्फ़अुहुम् व ला यज़ुर्रुहुम्ᵇव कानल्काफ़िरु अ़ला रब्बिही ज़हीरा (५५) व मा अर-सल्ना-क इल्ला मुबश्शिरंव्-व नज़ीरा (५६) क़ुल् मा अस्अलुकुम् अ़लैहि मिन् अज्रिन् इल्ला मन् शा-अ अंय्यत्तख़ि-ज़ इला रब्बिही सबीला (५७) व त-वक्कल् अ़-लल्-ह़य्यिल्लज़ी ला यमूतु व सब्बिह़् बिह़म्दिही ᵇ व कफ़ा बिही बिज़ुनूबि अ़िबादिही ख़बीरा (५८) अल्लज़ी ख़-ल-क़स्समावाति वल्अर-ज़ व मा बैनहुमा फ़ी सित्तति अय्यामिन् सुम्मस्तवा अ़-लल्अ़र्शि ۚ अर्रह़्मानु फ़स् - अल् बिही ख़बीरा (५९) व इज़ा क़ी-ल लहुमुस्जुदू लिर्रह़्मानि क़ालू व मर्रह़्मानु अ-नस्जुदु लिमा तअ्मुरुना व ज़ादहुम् नुफ़ूरा ★ □ (६०) तबा-रकल्लज़ी ज-अ-ल फ़िस्समाइ बुरूजंव्-व ज-अ-ल फ़ीहा सिराजंव्-व क़-म-रम्-मुनीरा (६१) व हुवल्लज़ी ज-अ-लल्लै-ल वन्नहा-र ख़िल्फ़तल्लिमन् अरा-द अंय्यज़्ज़क्क-र औ अरा-द शुकूरा (६२) व अ़िबादुर्रह़्मानिल्लज़ी-न यम्शू-न अ़लल्अर्ज़ि हौनंव्-व इज़ा ख़ा-त-बहुमुल्-जाहिलू-न क़ालू सलामा (६३) वल्लज़ी-न यबीतू-न लिरब्बिहिम् सुज्जदंव्-व क़ियामा (६४) वल्लज़ी-न यक़ूलू-न रब्ब-नस्रिफ़ अ़न्ना अ़ज़ा-ब जहन्न-म ۖ इन्-न अ़ज़ाबहा का-न ग़रामा ۖ (६५) इन्नहा सा-अत् मुस्तक़र्रंव्-व मुक़ामा (६६) वल्लज़ी-न इज़ा अन्फ़क़ू लम् युस्रिफ़ू व लम् यक़्तुरू व का-न बै-न ज़ालि-क क़वामा (६७)

جاهدهم به جهادا كبيرا ۝ وهو الذي مرج البحرين هذا عذب
فرات وهذا ملح اجاج وجعل بينهما برزخا وحجرا محجورا ۝ و
هو الذي خلق من الماء بشرا فجعله نسبا وصهرا وكان ربك قديرا ۝
ويعبدون من دون الله ما لا ينفعهم ولا يضرهم وكان الكافر على
ربه ظهيرا ۝ وما ارسلناك الا مبشرا ونذيرا ۝ قل ما اسئلكم عليه
من اجر الا من شاء ان يتخذ الى ربه سبيلا ۝ وتوكل على
الحي الذي لا يموت وسبح بحمده وكفى به بذنوب عباده خبيرا ۝
الذي خلق السموت والارض وما بينهما في ستة ايام ثم استوى
على العرش الرحمن فسئل به خبيرا ۝ واذا قيل لهم اسجدوا
للرحمن قالوا وما الرحمن انسجد لما تامرنا وزادهم نفورا ۩
تبرك الذي جعل في السماء بروجا وجعل فيها سرجا وقمرا منيرا ۝
وهو الذي جعل اليل والنهار خلفة لمن اراد ان يذكر او اراد
شكورا ۝ وعباد الرحمن الذين يمشون على الارض هونا و
اذا خاطبهم الجهلون قالوا سلما ۝ والذين يبيتون لربهم
سجدا وقياما ۝ والذين يقولون ربنا اصرف عنا عذاب جهنم
ان عذابها كان غراما ۝ انها ساءت مستقرا ومقاما ۝ و
الذين اذا انفقوا لم يسرفوا ولم يقتروا وكان بين ذلك قواما ۝

मु. अ मु त क़. ८ ★रु. ५/३ आ १६ □सज्दः ७

के मुताबिक़ बड़े ज़ोर से लड़ो। (५२) और वही तो है जिस ने दो नदियों को मिला दिया, एक का पानी मीठा है, प्यास बुझाने वाला और दूसरे का खारी है छाती जलाने वाला और दोनों के दर्मियान एक आड़ और मज़बूत ओट बना दी। (५३) और वही तो है, जिस ने पानी से आदमी पैदा किया, फिर उस को नसब वाला और दामादी रिश्ते वाला[1] बनाया और तुम्हारा परवरदिगार (हर तरह की) क़ुदरत रखता है। (५४) और ये लोग ख़ुदा को छोड़ कर ऐसी चीज़ की पूजा करते हैं कि जो न उन को फ़ायदा पहुंचा सके और न नुक़सान और काफ़िर अपने परवरदिगार की मुख़ालफ़त में बड़ा ज़ोर मारता है। (५५) और हमने (ऐ मुहम्मद!) तुम को सिर्फ़ ख़ुशी और अज़ाब की ख़बर सुनाने को भेजा है। (५६) कह दो कि मैं तुम से इस (काम) का मुआवज़ा नहीं मांगता। हां, जो शख़्स चाहे अपने परवरदिगार की तरफ़ (जाने का) रास्ता अख़्तियार कर ले। (५७) और उस (ख़ुदा-ए-) ज़िंदा पर भरोसा रखो जो (कभी) नहीं मरेगा और उस की तारीफ़ के साथ तस्बीह करते रहो और वह अपने बन्दों के गुनाहों से ख़बर रखने को काफ़ी है। (५८) जिस ने आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ इन दोनों के दर्मियान है, छः दिन में पैदा किया, फिर अर्श पर जा ठहरा, (वह जिसका नाम रहमान यानी) बड़ा मेहरबान (है), तो उसका हाल किसी बा-ख़बर से मालूम कर लो, (५९) और जब इन (काफ़िरों) से कहा जाता है कि रहमान को सज्दा करो तो कहते हैं कि रहमान क्या? क्या जिसके लिए तुम हम से कहते हो, हम उस के आगे सज्दा करें? और उस से बिदकते हैं। (६०)★□

(और ख़ुदा) बड़ी बरकत वाला है, जिस ने आसमानों में बुर्ज बनाए और उन में (सूरज का निहायत रोशन) चिराग़ और चमकता हुआ चांद भी बनाया। (६१) और वही तो है जिस ने रात और दिन को एक-दूसरे के पीछे आने-(जाने) वाला बनाया।[2] (ये बातें) उस शख़्स के लिए, जो ग़ौर करना चाहे या शुक्र-गुज़ारी का इरादा करे (सोचने और समझने की हैं)। (६२) और ख़ुदा के बन्दे तो वे हैं जो ज़मीन पर आहिस्तगी से चलते हैं और जब जाहिल लोग उन से (जाहिलाना) बात-चीत करते हैं तो सलाम कहते हैं। (६३) और वे जो अपने परवरदिगार के आगे सज्दे कर के और (इज़्ज़त व अदब से) खड़े रह कर रातें बसर करते हैं। (६४) और वे जो दुआ मांगते रहते हैं कि ऐ परवरदिगार! दोज़ख़ के अज़ाब को हम से दूर रखियो कि उस का अज़ाब बड़ी तक्लीफ़ की चीज़ है। (६५) और दोज़ख़ ठहरने और रहने की बहुत बुरी जगह है। (६६) और वे कि जब ख़र्च करते हैं तो न बे-जा उड़ाते हैं और न तंगी को काम में लाते हैं, बल्कि एतदाल के साथ, न

१. किसी का बाप, किसी का बेटा, किसी का ससुर, किसी का दामाद बना दिया।
२. जानशीं के यह मानी कि वह जाती है, तो यह आता है और यह जाता है तो वह आती है।

वल्लज़ी-न ला यद्अू-न म-अल्लाहि इलाहन् आख-र व ला यक़्तुलूनन्-नफ़्सल्लती हर्रमल्लाहु इल्ला बिल्हक़्क़ि व ला यज़्नू-न व मंय्यफ़्-अल् ज़ालि-क यल्-क़ असामंय-॥ (६८) युज़ाअफ़् लहुल्अज़ाबु यौमल्क़ियामति व यख़्लुद् फ़ीहि मुहाना (६९) इल्ला मन् ता-ब व आम-न व अमि-ल अ-म-लन् सालिहन् फ़-उलाइ-क युबद्दिलुल्लाहु सय्यिआतिहिम् ह-स-नातिन् व कानल्लाहु ग़फ़ूरर्-रहीमा (७०) व मन् ता-ब व अमि-ल सालिहन् फ़-इन्नहू यतूबु इलल्लाहि मताबा (७१) वल्लज़ी-न ला यश्हदूनज़्-ज़ू-र॥ व इज़ा मर्रू बिल्लग़्वि मर्रू किरामा (७२) वल्लज़ी-न इज़ा ज़ुक्किरू बिआयाति रब्बिहिम् लम् यख़िर्रू अलैहा सुम्मंव्-व अुम्याना (७३) वल्लज़ी-न यक़ूलू-न रब्बना हब्-लना मिन् अज़्वाजिना व ज़ुर्रिय्यातिना क़ुर्र-त अअ्-युनिंव्वज्अल्ना लिल्मुत्तक़ी-न इमामा (७४) उलाइ-क युज्ज़ौनल्-ग़ुर्-फ़-त बिमा स-बरू व युलक़्क़ौ-न फ़ीहा तहिय्यतंव्-व सलामा॥ (७५) ख़ालिदी-न फ़ीहा हसुनत् मुस्तक़र्रंव्-व मुक़ामा (७६) क़ुल् मा यअ्-बउ बिकुम् रब्बी लौला दुआउकुम् फ़-क़द् कज़्ज़ब्तुम् फ़सौ-फ़ यकूनु लिज़ामा ★●(७७)

وَالَّذِيْنَ لَا يَدْعُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ وَلَا يَقْتُلُوْنَ النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ
اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُوْنَ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ يَلْقَ اَثَامًا ۝ يُّضٰعَفْ
لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَيَخْلُدْ فِيْهٖ مُهَانًا ۝ اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ
وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ يُبَدِّلُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِهِمْ حَسَنٰتٍ وَكَانَ اللّٰهُ
غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝ وَمَنْ تَابَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَاِنَّهٗ يَتُوْبُ اِلَى اللّٰهِ
مَتَابًا ۝ وَالَّذِيْنَ لَا يَشْهَدُوْنَ الزُّوْرَ وَاِذَا مَرُّوْا بِاللَّغْوِ مَرُّوْا كِرَامًا ۝
وَالَّذِيْنَ اِذَا ذُكِّرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ لَمْ يَخِرُّوْا عَلَيْهَا صُمًّا وَّعُمْيَانًا ۝ وَالَّذِيْنَ
يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْيُنٍ وَّاجْعَلْنَا
لِلْمُتَّقِيْنَ اِمَامًا ۝ اُولٰٓئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوْا وَيُلَقَّوْنَ فِيْهَا
تَحِيَّةً وَّسَلٰمًا ۝ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا حَسُنَتْ مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا ۝ قُلْ مَا
يَعْبَؤُا بِكُمْ رَبِّيْ لَوْلَا دُعَآؤُكُمْ فَقَدْ كَذَّبْتُمْ فَسَوْفَ يَكُوْنُ لِزَامًا ۝

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
طٰسٓمّٓ ۝ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۝ لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ اَلَّا يَكُوْنُوْا
مُؤْمِنِيْنَ ۝ اِنْ نَّشَاْ نُنَزِّلْ عَلَيْهِمْ مِّنَ السَّمَآءِ اٰيَةً فَظَلَّتْ اَعْنَاقُهُمْ
لَهَا خٰضِعِيْنَ ۝ وَمَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ مِّنَ الرَّحْمٰنِ مُحْدَثٍ اِلَّا كَانُوْا
عَنْهُ مُعْرِضِيْنَ ۝ فَقَدْ كَذَّبُوْا فَسَيَاْتِيْهِمْ اَنْۢبٰٓؤُا مَا كَانُوْا بِهٖ

२६ सूरतुश्-शु-अराइ ४७

(मक्की) इस सूर: में अरबी के ५६८९ अक्षर, १३४७ शब्द, २२७ आयतें और ११ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

ता-सीम्-मीम् (१) तिल्-क आयातुल्-किताबिल्-मुबीन (२) ल-अल्ल-क बाख़िअुन् नफ़्स-क अल्ला यकूनू मुअ्मिनीन (३) इन् न-शअ् नुनज़्ज़िल् अलैहिम् मिनस्समाइ आ-य-तन् फ़-ज़ल्लत् अअ्-नाक़ुहुम् लहा ख़ाज़िईन (४) व मा यअ्तीहिम् मिन् ज़िक्रिम्-मिनर्रह्मानि मुह्-दसिन् इल्ला कानू अन्हु मुअ्-रिज़ीन (५) फ़-क़द् कज़्ज़बू फ़-स-यअ्तीहिम् अम्बाउ मा कानू बिही यस्तह्ज़िऊन (६)

★रु. ६/४ आ १७ ● रुबअ़ १/४

ज़रूरत से ज़्यादा, न कम। (६७) और वे जो ख़ुदा के साथ किसी और माबूद को नहीं पुकारते और जिस जानदार को मार डालना ख़ुदा ने हराम किया है, उस को क़त्ल नहीं करते, मगर जायज़ तरीक़े (यानी शरीअत के हुक्म) से और बद-कारी नहीं करते और जो यह काम करेगा, सख़्त गुनाह में पड़ा होगा। (६८) क़ियामत के दिन उस को दूना अज़ाब होगा और ज़िल्लत व ख़्वारी से हमेशा उस में रहेगा। (६९) मगर जिस ने तौबा की और ईमान लाया और अच्छे काम किये तो ऐसे लोगों के गुनाहों को ख़ुदा नेकियों से बदल देगा और ख़ुदा तो बख़्शने वाला मेहरबान है। (७०) और जो तौबा करता और नेक अमल करता है, तो बेशक वह ख़ुदा की तरफ़ रुजूअ करता है। (७१) और वे जो झूठी गवाही नहीं देते और जब उन को बेहूदा चीज़ों के पास से गुज़रने का इत्तिफ़ाक़ हो तो बुज़ुर्गों जैसे अन्दाज़ से गुज़रते हैं। (७२) और वे कि जब उन को परवरदिगार की बातें समझायी जाती हैं तो उन पर अंधे और बहरे हो कर नहीं गिरते, (बल्कि ग़ौर व फ़िक्र से सुनते हैं)। (७३) और वे जो (ख़ुदा से) दुआ मांगते हैं कि ऐ परवरदिगार ! हम को हमारी बीवियों की तरफ़ से (दिल का चैन) और औलाद की तरफ़ से आंख की ठंडक अता फ़रमा और हमें परहेज़गारों का इमाम बना। (७४) इन (ख़ूबियों के) लोगों को उन के सब्र के बदले ऊंचे-ऊंचे महल दिए जाएंगे और वहां फ़रिश्ते उन से दुआ व सलाम के साथ मुलाक़ात करेंगे। (७५) उसमें वे हमेशा रहेंगे और वह ठहरने और रहने की बहुत ही उम्दा जगह है। (७६) कह दो कि अगर तुम (ख़ुदा को) नहीं पुकारते तो मेरा परवरदिगार भी तुम्हारी कुछ परवाह नहीं करता। तुम ने झुठलाया है, सो उस की सज़ा (तुम्हारे लिए) लाज़िम (ज़रूरी) होगी। (७७) ★☐

२६ सूरः शुअरा ४७

सूरः शुअरा मक्की है और इस में दो सौ सत्ताईस आयतें और ग्यारह रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

त्वा-सीम्-मीम्। (१) ये रोशन किताब की आयतें हैं। (२) (ऐ पैग़म्बर!) शायद तुम इस (रंज) से कि ये लोग ईमान नहीं लाते, अपने आप को हलाक कर दोगे। (३) अगर हम चाहें तो इन पर आसमान से निशानी उतार दें, फिर इन की गरदनें उस के आगे झुक जाएं (४) और उन के पास (ख़ुदा-ए-) रहमान की तरफ़ से कोई नयी नसीहत नहीं आती, मगर उस से मुंह फेर लेते हैं (५) सो ये तो झुठला चुके, अब इन को उस चीज़ की हक़ीक़त मालूम होगी, जिस की हंसी उड़ाते

अ-व-लम् यरौ इलल्अर्ज़ि कम् अम्बत्ना फ़ीहा मिन् कुल्लि ज़ौजिन् करीम (७) इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयतन् व मा का-न अक्सरुहुम् मुअ्मिनीन (८) व इन्-न रब्ब-क लहुवल्-अज़ीज़ुर्रहीम★(९) व इज़् नादा रब्बु-क मूसा अनिअ्तिल्-क़ौमज़्-ज़ालिमीन ۙ (१०) क़ौ-म फ़िर्औ-न ط अला यत्तक़ू-न (११) क़ा-ल रब्बि इन्नी अख़ाफ़ु अंय्युकज़्ज़िबून ط (१२) व यज़ीक़ु सद्री व ला यन्तलिक़ु लिसानी फ़-अर्सिल् इला हारून (१३) व लहुम् अ-लय्-य ज़म्बुन् फ़-अख़ाफ़ु अंय्यक़्तुलून ج (१४) क़ा-ल कल्ला ج फ़ज़्-हबा बिआयातिना इन्ना म-अकुम् मुस्तमिऊन (१५) फ़अ्तिया फ़िर्औ-न फ़क़ूला इन्ना रसूलु रब्बिल्-आलमीन ۙ (१६) अन् अर्सिल् म-अना बनी इस्राईल ط (१७) क़ा-ल अ-लम् नुरब्बि-क फ़ीना वलीदंव्-व लबिस्-त फ़ीना मिन् उमुरि-क सिनीन ۙ (१८) व फ़-अल्-त फ़अ्-ल-त-कल्लती फ़-अल्-त व अन्-त मिनल्काफ़िरीन (१९) क़ा-ल फ़-अल्तुहा इज़व्-व अ-न मिनज़्ज़ाल्लीन ط (२०) फ़-फ़रर्तु मिन्कुम् लम्मा ख़िफ़्तुकुम् फ़-व-ह-ब ली रब्बी हुक्मंव्-व ज-अ-लनी मिनल्-मुर्सलीन (२१) व तिल्-क निअ्-मतुन् तमुन्नुहा अ-लय्-य अन् अ़ब्बत्-त बनी इस्राईल ط (२२) क़ा-ल फ़िर्औनु व मा रब्बुल्-आलमीन ط (२३) क़ा-ल रब्बुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बैनहुमा ط इन् कुन्तुम् मूक़िनीन (२४) क़ा-ल लिमन् हौलहू अला तस्तमिऊन (२५) क़ा-ल रब्बुकुम् व रब्बु आबाइकुमुल्-अव्वलीन (२६) क़ा-ल इन्-न रसूलकुमुल्लज़ी उर्सि-ल इलैकुम् ल-मजनून (२७) क़ा-ल रब्बुल्-मश्रिक़ि वल्-मग़्रिबि व मा बैनहुमा ط इन् कुन्तुम् तअ्-क़िलून (२८)

الشعراء ٢٦ وقال الذين ١٩

يستهزءون ⑥ أولم يروا إلى الأرض كم أنبتنا فيها من كل
زوج كريم ⑦ إن في ذلك لآية وما كان أكثرهم مؤمنين ⑧ و
إن ربك لهو العزيز الرحيم ⑨ وإذ نادى ربك موسى أن ائت
القوم الظالمين ⑩ قوم فرعون ألا يتقون ⑪ قال رب إني أخاف
أن يكذبون ⑫ ويضيق صدري ولا ينطلق لساني فأرسل
إلى هارون ⑬ ولهم علي ذنب فأخاف أن يقتلون ⑭ قال
كلا فاذهبا بآياتنا إنا معكم مستمعون ⑮ فأتيا فرعون
فقولا إنا رسول رب العالمين ⑯ أن أرسل معنا بني إسرائيل ⑰
قال ألم نربك فينا وليدا ولبثت فينا من عمرك سنين ⑱ و
فعلت فعلتك التي فعلت وأنت من الكافرين ⑲ قال فعلتها
إذا وأنا من الضالين ⑳ ففررت منكم لما خفتكم فوهب لي
ربي حكما وجعلني من المرسلين ㉑ وتلك نعمة تمنها علي
أن عبدت بني إسرائيل ㉒ قال فرعون وما رب العالمين ㉓ قال
رب السماوات والأرض وما بينهما إن كنتم موقنين ㉔
قال لمن حوله ألا تستمعون ㉕ قال ربكم ورب آبائكم
الأولين ㉖ قال إن رسولكم الذي أرسل إليكم لمجنون ㉗
قال رب المشرق والمغرب وما بينهما إن كنتم تعقلون ㉘

منزل

★रु. १/५ आ ९

थे। (६) क्या उन्हों ने ज़मीन की तरफ़ नहीं देखा कि हम ने उस में हर क़िस्म की कितनी उम्दा चीज़ें उगायी हैं। (७) कुछ शक नहीं कि इस में (ख़ुदा की क़ुदरत की) निशानी है, मगर ये अक्सर ईमान लाने वाले नहीं (८) और तुम्हारा परवरदिगार ग़ालिब (और) मेहरबान है। (६) ★

और जब तुम्हारे परवरदिगार ने मूसा को पुकारा कि ज़ालिम लोगों के पास जाओ। (१०) (यानी) फ़िऔंन की क़ौम के पास, क्या यह डरते नहीं? (११) उन्हों ने कहा कि मेरे परवरदिगार मैं डरता हूं कि ये झूठा समझें। (१२) और मेरा दिल तंग होता है और मेरी ज़ुबान रुकती है, तो हारून को हुक्म भेज (कि मेरे साथ चलें)। (१३) और उन लोगों का मुझ पर एक गुनाह (यानी क़िब्ती के ख़ून का दावा) भी है, सो मुझे यह भी डर है कि मुझ को मार ही डालें (१४) फ़रमाया, हरगिज़ नहीं! तुम दोनों हमारी निशानियां ले कर जाओ, हम तुम्हारे साथ सुनने वाले हैं। (१५) तो दोनों फ़िऔंन के पास जाओ और कहो कि हम तमाम जहान के मालिक के भेजे हुए हैं। (१६) (और इसलिए आए हैं) कि आप बनी इस्राईल को हमारे साथ जाने की इजाज़त दें। (१७) (फ़िऔंन ने मूसा से) कहा, क्या हम ने तुम को कि अभी बच्चे थे, परवरिश नहीं किया और तुम ने वर्षों हमारे यहां उम्र बसर (नहीं) की? (१८) और तुम ने एक और काम किया था, जो किया, तुम ना-शुक्रे मालूम होते हो (१९) (मूसा ने) कहा कि (हां,) वह हरकत मुझ से अचानक हो गयी थी, और मैं ख़ताकारों में था। (२०) तो जब मुझे तुम से डर लगा तो तुम में से भाग गया, फिर ख़ुदा ने मुझ को नुबूवत व इल्म बख़्शा और मुझे पैग़म्बरों में से किया। (२१) और (क्या) यही एहसान है जो आप मुझ पर रखते हैं कि आप ने बनी इस्राईल को ग़ुलाम बना रखा है[1] (२२) फ़िऔंन ने कहा कि तमाम जहान का मालिक क्या? (२३) कहा कि आसमानों और ज़मीन और जो कुछ इन दोनों में है, सब का मालिक, बशर्ते कि तुम लोगों को यक़ीन हो। (२४) फ़िऔंन ने अपने अहाली-मवाली से कहा कि क्या तुम सुनते नहीं? (२५) (मूसा ने) कहा कि तुम्हारा और तुम्हारे पहले बाप-दादा का मालिक। (२६) (फ़िऔंन ने) कहा कि (यह) पैग़म्बर, जो तुम्हारी तरफ़ भेजा गया है, बावला है। (२७) (मूसा ने) कहा कि पूरब और पच्छिम और जो कुछ इन दोनों में है, सब का मालिक, बशर्ते कि तुम को समझ हो। (२८) (फ़िऔंन ने) कहा कि अगर तुम ने

---

१. गो मूसा अलैहिस्सलाम के साथ फ़िऔंन ने सुलूक किया और उन की अच्छी तरह और एक मुद्दत तक परवरिश

(शेष पृष्ठ ५८५ पर)

★रु. १/५ आ ६

क़ा-ल ल-इनित्त-ख़ज़्-त इलाहन् ग़ैरी ल-अज्अ़लन्न-क मिनल्-मस्जूनीन (२९) क़ा-ल अ-व लौ जिअ्तु-क बिशैइम्-मुबीन (३०) क़ा-ल फ़अ्ति बिही इन् कुन्-त मिनस्सादिक़ीन (३१) फ़-अल्क़ा अ़साहु फ़-इज़ा हि-य सुअ्-बानुम्-मुबीनुंव- (३२) व न-ज़-अ य-दहू फ़इज़ा हि-य बैज़ाउ लिन्नाज़िरीन

★ (३३) क़ा-ल लिल-म-लइ हौलहू इन्-न हाज़ा ल-साहिरुन् अ़लीम (३४) युरीदु अंय्युख़्रि-जकुम् मिन् अर्ज़िकुम् बिसिह्रिही फ़-माज़ा तअ्मुरून (३५) क़ालू अर्जिह व अख़ाहु वब्-अ़स् फ़िल्मदाइनि हाशिरीन (३६) यअ्तू-क बिकुल्लि सह़्हारिन् अ़लीम (३७) फ़जुमिअ़स्स-ह-रतु लिमीक़ाति यौमिम्-मअ्लूम (३८) व क़ी-ल लिन्नासि हल् अन्तुम् मुज्तमिऊन (३९) ल-अ़ल्लना नत्तबिउ़स्स-ह-र-त इन् कानू हुमुल्-ग़ालिबीन (४०) फ़-लम्मा जाअस्स-ह-रतु क़ालू लिफ़िर्औ-न अ-इन्-न लना ल-अज्रन् इन् कुन्ना नह्नुल्-ग़ालिबीन (४१) क़ा-ल न-अ़म् व इन्नकुम् इज़ल्लमिनल्-मुक़र्रबीन (४२) क़ा-ल लहुम् मूसा अल्क़ू मा अन्तुम् मुल्क़ून (४३) फ़-अल्क़ौ हिबालहुम् व अ़िसिय्यहुम् व क़ालू बिअिज़्ज़ति फ़िर्औ-न इन्ना ल-नह्नुल्-ग़ालिबून (४४) फ़-अल्क़ा मूसा अ़साहु फ़-इज़ा हि-य तल्क़फ़ु मा यअ्फ़िकून (४५) फ़-उल्क़ियस्स-ह-रतु साजिदीन (४६) क़ालू आमन्ना बिरब्बिल्-आ़लमीन (४७) रब्बि मूसा व हारून (४८) क़ा-ल आमन्तुम् लहू क़ब्-ल अन् आ-ज़-न लकुम् इन्नहू लकबीरुकुमुल्लज़ी अ़ल्ल-मकुमुस्-सिह्-र फ़-ल-सौ-फ़ तअ्-लमू-न लउक़त्तिअन्-न ऐदि-यकुम् व अर्जु-लकुम् मिन् ख़िलाफ़िंव-व लउसल्लिबन-न-कुम् अज्मईन (४९) क़ालू ला ज़ै-र इन्ना इला रब्बिना मुन्क़लिबून (५०)

قَالَ لَئِنِ اتَّخَذْتَ إِلَٰهًا غَيْرِي لَأَجْعَلَنَّكَ مِنَ الْمَسْجُونِينَ ۝
قَالَ أَوَلَوْ جِئْتُكَ بِشَيْءٍ مُّبِينٍ ۝ قَالَ فَأْتِ بِهِ إِن كُنتَ مِنَ
الصَّادِقِينَ ۝ فَأَلْقَىٰ عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِينٌ ۝ وَنَزَعَ
يَدَهُ فَإِذَا هِيَ بَيْضَاءُ لِلنَّاظِرِينَ ۝ قَالَ لِلْمَلَإِ حَوْلَهُ إِنَّ هَٰذَا
لَسَاحِرٌ عَلِيمٌ ۝ يُرِيدُ أَن يُخْرِجَكُم مِّنْ أَرْضِكُم بِسِحْرِهِ فَمَاذَا
تَأْمُرُونَ ۝ قَالُوا أَرْجِهْ وَأَخَاهُ وَابْعَثْ فِي الْمَدَائِنِ حَاشِرِينَ ۝
يَأْتُوكَ بِكُلِّ سَحَّارٍ عَلِيمٍ ۝ فَجُمِعَ السَّحَرَةُ لِمِيقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُومٍ ۝
وَقِيلَ لِلنَّاسِ هَلْ أَنتُم مُّجْتَمِعُونَ ۝ لَعَلَّنَا نَتَّبِعُ السَّحَرَةَ إِن
كَانُوا هُمُ الْغَالِبِينَ ۝ فَلَمَّا جَاءَ السَّحَرَةُ قَالُوا لِفِرْعَوْنَ أَئِنَّ
لَنَا لَأَجْرًا إِن كُنَّا نَحْنُ الْغَالِبِينَ ۝ قَالَ نَعَمْ وَإِنَّكُمْ
إِذًا لَّمِنَ الْمُقَرَّبِينَ ۝ قَالَ لَهُم مُّوسَىٰ أَلْقُوا مَا أَنتُم مُّلْقُونَ ۝
فَأَلْقَوْا حِبَالَهُمْ وَعِصِيَّهُمْ وَقَالُوا بِعِزَّةِ فِرْعَوْنَ إِنَّا لَنَحْنُ الْغَالِبُونَ ۝
فَأَلْقَىٰ مُوسَىٰ عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَأْفِكُونَ ۝ فَأُلْقِيَ السَّحَرَةُ
سَاجِدِينَ ۝ قَالُوا آمَنَّا بِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ رَبِّ مُوسَىٰ وَهَارُونَ ۝
قَالَ آمَنتُمْ لَهُ قَبْلَ أَنْ آذَنَ لَكُمْ إِنَّهُ لَكَبِيرُكُمُ الَّذِي عَلَّمَكُمُ
السِّحْرَ فَلَسَوْفَ تَعْلَمُونَ لَأُقَطِّعَنَّ أَيْدِيَكُمْ وَأَرْجُلَكُم مِّنْ خِلَافٍ
وَلَأُصَلِّبَنَّكُمْ أَجْمَعِينَ ۝ قَالُوا لَا ضَيْرَ إِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا

★रु. २/६ आ २४

मेरे सिवा किसी और को माबूद बनाया, तो मैं तुम्हें क़ैद कर दूंगा। (२९) (मूसा ने) कहा, चाहे मैं आप के पास रोशन चीज़ लाऊं (यानी मोजज़ा ?)। (३०) (फ़िऔन ने) कहा, अगर सच्चे हो तो उसे लाओ (दिखाओ)। (३१) पस उन्हों ने अपनी लाठी डाल दी, तो वह उसी वक़्त खुला अज़्दहा बन गयी। (३२) और अपना हाथ जो निकाला, तो उसी दम देखने वालों के लिए सफ़ेद (बर्राक़) नज़र आने लगा।(३३) ★

फ़िऔन ने अपने पास के सरदारों से कहा कि यह तो फ़न में कामिल जादूगर है।(३४) चाहता है कि तुम को अपने जादू (के ज़ोर) से अपने मुल्क से निकाल दे, तो तुम्हारी क्या राय है ? (३५) उन्हों ने कहा कि उस के और उस के भाई (के बारे में) कुछ ठहरिए और शहरों में नक़ीब भेज दीजिए, (३६) कि सब माहिर जादूगरों को (जमा कर के) आप के पास ले आएं। (३७) तो जादूगर एक मुक़र्रर दिन की मीयाद पर जमा हो गए (३८) और लोगों से कह दिया गया कि तुम (सब) को इकट्ठे हो जाना चाहिए, (३९) ताकि अगर जादूगर ग़ालिब रहें तो हम उन की पैरवी करने वाले हो जाएं। (४०) जब जादूगर आये, तो फ़िऔन से कहने लगे कि अगर हम ग़ालिब रहें, तो हमें इनाम भी मिलेगा ? (४१) फ़िऔन ने कहा, हां, और तुम मुक़र्रिबों में दाख़िल हो जाओगे। (४२) मूसा ने उन से कहा कि जो चीज़ डालनी चाहते हो, डालो। (४३) तो उन्हों ने अपनी रस्सियां और लाठियां डालीं और कहने लगे कि फ़िऔन के इक़बाल की क़सम ! हम ज़रूर ग़ालिब रहेंगे। (४४) फिर मूसा ने अपनी लाठी डाली तो वह उन चीज़ों को, जो जादूगरों ने बनायी थीं, निगलने लगी। (४५) तब जादूगर सज्दे में गिर पड़े। (४६) (और) कहने लगे कि हम तमाम जहान के मालिक पर ईमान लाए, (४७) जो मूसा और हारून का मालिक है। (४८) फ़िऔन ने कहा, क्या इस से पहले कि मैं तुम को इजाज़त दूं, तुम उस पर ईमान ले आए ? बेशक यह तुम्हारा बड़ा है, जिस ने तुम को जादू सिखाया है। सो बहुत जल्द तुम (इस का अंजाम) मालूम कर लोगे कि मैं तुम्हारे हाथ और पांव मुख़ालिफ़ तरफ़ से काट दूंगा और तुम सब को सूली पर चढ़ा दूंगा। (४९) उन्हों ने कहा, कुछ नुक़सान (की बात) नहीं। हम अपने परवरदिगार की

(पृष्ठ ५८३ का शेष)

की, मगर मूसा अलैहिस्सलाम ने अपने बारे में अपनी क़ौम का ज़्यादा ख़्याल किया, जिसे इस ज़ालिम ने निहायत ज़िल्लत की हालत में रखा था और ऊंचे ख़्याल वाले नेक दिल लोग अपनी ज़ात के बारे में हमेशा अपनी क़ौम की भलाई को अहम समझा करते हैं, इस लिए उन्हों ने फ़िऔन का एहसान सुन कर यह जवाब दिया कि भला आप का मुझ पर यही एहसान है कि आप ने मेरी क़ौम को ग़ुलाम बना रखा और ज़िल्लत और मुसीबत में फंसा रखा है। एहसान तो तब था जब मेरी क़ौम के साथ भी सुलूक किया जाता।

★रु. २/६ आ २४

इन्ना नत्मअु अंय्यग्फ़ि-र लना रब्बुना ख़तायाना अन् कुन्ना अव्वलल्-मुअ्मिनीन ★ (५१) व औहैना इला मूसा अन् अस्रि बिअिबादी इन्नकुम् मुत्तबअून (५२) फ़-अर्स-ल फ़िर्औनु फ़िलमदाइनि हाशिरीन (५३) इन्-न हाउलाइ ल-शिर्जि - म-तुन् क़लीलून (५४) व इन्नहुम् लना लग़ाइज़ून (५५) व इन्ना ल-जमीअुन् हाज़िरून (५६) फ़-अख़्रज्-नाहुम् मिन् जन्नातिंव्-व अुयूनिंव्- (५७) व कुनूज़िंव्-व मक़ामिन् करीम (५८) कज़ालि-क व औरस्नाहा बनी इस्राईल (५९) फ़-अत्बअूहुम् मुश्रिक़ीन (६०) फ़-लम्मा तरा-अल् - जम्आनि क़ा-ल अस्हाबु मूसा इन्ना ल-मुद्रकून (६१) क़ा-ल कल्ला इन्-न मअि-य रब्बी स-यह्दीन (६२) फ़-औहैना इला मूसा अनिज़्रिब् बिअसाकल् - बह्-र फ़न्फ़-ल-क़ फ़-का-न कुल्लु फ़िर्क़िन् कत्तौदिल्-अज़ीम (६३) व अज़्-लफ़्ना सम्मल्-आख़रीन (६४) व अन्जैना मूसा व मम्-म-अहू अज्मअीन (६५) सुम्-म अग़्-रक़्नल्-आख़रीन (६६) इन् - न फ़ी ज़ालि-क लआ-यतन् व मा का-न अक्सरुहुम् मुअ्मिनीन (६७) व इन्-न रब्ब-क लहुवल्-अज़ीज़ुर्-रहीम ★ (६८) वत्लु अलैहिम् न - ब - अ इब्राहीम (६९) इज़् क़ा - ल लिअबीहि व क़ौमिही मा तअ्-बुदून (७०) क़ालू नअ्-बुदु अस्-नामन् फ़-न-ज़ल्लु लहा आकिफ़ीन (७१) क़ा-ल हल् यस्मअूनकुम् इज़् तद्अून (७२) औ यन्फ़अू-न कुम् औ यज़ुर्रून (७३) क़ालू बल् व-जद्ना आबा-अना कज़ालि-क यफ़-अलून (७४) क़ा-ल अ-फ़-रऐतुम् मा कुन्तुम् तअ्-बुदून (७५) अन्तुम् व आबाउकुमुल्-अक़्दमून (७६) फ़इन्नहुम् अदुव्वुल्ली इल्ला रब्बल् - आलमीन (७७) अल्लज़ी ख़-ल-क़नी फ़हु-व यह्दीन (७८) वल्लज़ी हु-व युत्अिमुनी व यस्क़ीन (७९) व इज़ा मरिज़्तु फ़हु - व यश्फ़ीन (८०)

مُنقَلِبُونَ ۝ إِنَّا نَطْمَعُ أَن يَغْفِرَ لَنَا رَبُّنَا خَطَايَانَا أَن كُنَّا أَوَّلَ
الْمُؤْمِنِينَ ۝ وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنْ أَسْرِ بِعِبَادِي إِنَّكُم مُّتَّبَعُونَ ۝
فَأَرْسَلَ فِرْعَوْنُ فِي الْمَدَائِنِ حَاشِرِينَ ۝ إِنَّ هَٰؤُلَاءِ لَشِرْذِمَةٌ
قَلِيلُونَ ۝ وَإِنَّهُمْ لَنَا لَغَائِظُونَ ۝ وَإِنَّا لَجَمِيعٌ حَاذِرُونَ ۝
فَأَخْرَجْنَاهُم مِّن جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ۝ وَكُنُوزٍ وَمَقَامٍ كَرِيمٍ ۝ كَذَٰلِكَ
وَأَوْرَثْنَاهَا بَنِي إِسْرَائِيلَ ۝ فَأَتْبَعُوهُم مُّشْرِقِينَ ۝ فَلَمَّا تَرَاءَى الْجَمْعَانِ
قَالَ أَصْحَابُ مُوسَىٰ إِنَّا لَمُدْرَكُونَ ۝ قَالَ كَلَّا إِنَّ مَعِيَ رَبِّي
سَيَهْدِينِ ۝ فَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنِ اضْرِب بِّعَصَاكَ الْبَحْرَ فَانفَلَقَ
فَكَانَ كُلُّ فِرْقٍ كَالطَّوْدِ الْعَظِيمِ ۝ وَأَزْلَفْنَا ثَمَّ الْآخَرِينَ ۝ وَأَنجَيْنَا
مُوسَىٰ وَمَن مَّعَهُ أَجْمَعِينَ ۝ ثُمَّ أَغْرَقْنَا الْآخَرِينَ ۝ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ
لَآيَةً وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُم مُّؤْمِنِينَ ۝ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝
وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ إِبْرَاهِيمَ ۝ إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَا تَعْبُدُونَ ۝
قَالُوا نَعْبُدُ أَصْنَامًا فَنَظَلُّ لَهَا عَاكِفِينَ ۝ قَالَ هَلْ يَسْمَعُونَكُمْ
إِذْ تَدْعُونَ ۝ أَوْ يَنفَعُونَكُمْ أَوْ يَضُرُّونَ ۝ قَالُوا بَلْ وَجَدْنَا آبَاءَنَا
كَذَٰلِكَ يَفْعَلُونَ ۝ قَالَ أَفَرَأَيْتُم مَّا كُنتُمْ تَعْبُدُونَ ۝ أَنتُمْ وَآبَاؤُكُمُ
الْأَقْدَمُونَ ۝ فَإِنَّهُمْ عَدُوٌّ لِّي إِلَّا رَبَّ الْعَالَمِينَ ۝ الَّذِي خَلَقَنِي
فَهُوَ يَهْدِينِ ۝ وَالَّذِي هُوَ يُطْعِمُنِي وَيَسْقِينِ ۝ وَإِذَا مَرِضْتُ

★रु. ३/७ आ १८ ★रु. ४/८ आ १७ व. लाज़िम

तरफ़ लौट जाने वाले हैं। (५०) हमें उम्मीद है कि हमारा परवरदिगार हमारे गुनाह बख़्श देगा, इस लिए कि हम पहले ईमान लाने वालों में हैं। (५१)★

और हम ने मूसा की तरफ़ वह्य भेजी कि हमारे बन्दों को रात को ले निकलो कि (फ़िऔंनियों की तरफ़ से) तुम्हारा पीछा किया जाएगा। (५२) तो फ़िऔंनियों ने शहरों में नक़ीब (एलानची) रवाना किए। (५३) (और कहा) कि ये लोग थोड़ी सी जमाअत हैं। (५४) और ये हमें ग़ुस्सा दिला रहे हैं। (५५) और हम सब साज़ और सामान के साथ हैं। (५६) तो हम ने उन को बाग़ों और चश्मों से निकाल दिया, (५७) और ख़ज़ानों और उम्दा मकानों से। (५८) (उन के साथ हम ने) इस तरह (किया) और इन चीज़ों का वारिस बनी इस्राईल को कर दिया। (५९) तो उन्हों ने सूरज निकलते (यानी सुबह को) उन का पीछा किया। (६०) जब दोनों जमाअतें आमने-सामने हुईं, तो मूसा के साथी कहने लगे कि हम तो पकड़ लिए गये। (६१) मूसा ने कहा, हर गिज़ नहीं, मेरा परवरदिगार मेरे साथ है, वह मुझे रास्ता बताएगा। (६२) उस वक़्त हम ने मूसा की तरफ़ वह्य भेजी कि अपनी लाठी दरिया पर मारो तो दरिया फट गया और हर एक टुकड़ा (यों) हो गया (कि) गोया बड़ा पहाड़ (है)। (६३) और दूसरों को वहां हमने क़रीब कर दिया। (६४) और मूसा और उन के साथ वालों को (तो) बचा लिया। (६५) फिर दूसरों को डुबो दिया[१]। (६६) बेशक इस (क़िस्से) में निशानी है, लेकिन ये अक्सर ईमान लाने वाले नहीं। (६७) और तुम्हारा परवरदिगार तो ग़ालिब और मेहरबान है। (६८)★

और उन को इब्राहीम का हाल पढ़ कर सुना दो, (६९) जब उन्हों ने अपने बाप और अपनी क़ौम के लोगों से कहा कि तुम किस चीज़ को पूजते हो? (७०) वे कहने लगे कि हम बुतों को पूजते हैं और उन (की पूजा) पर क़ायम हैं। (७१) (इब्राहीम ने) कहा कि जब तुम उन को पुकारते हो, तो क्या वे तुम्हारी (आवाज़) सुनते हैं? (७२) या तुम्हें फ़ायदा दे सकते या नुक़सान पहुंचा सकते हैं? (७३) उन्हों ने कहा, (नहीं), बल्कि हम ने अपने बाप-दादा को इसी तरह करते देखा है। (७४) (इब्राहीम ने) कहा, क्या तुम ने देखा कि जिन को तुम पूजते रहे हो, (७५) तुम भी और तुम्हारे अगले बाप-दादा भी, (७६) वे मेरे दुश्मन हैं, मगर (अल्लाह) रब्बुल आलमीन (मेरा दोस्त है), (७७) जिस ने मुझे पैदा किया है और वही मुझे रास्ता दिखाता है। (७८) और वह जो मुझे खिलाता और पिलाता है। (७९) और जब मैं बीमार पड़ता हूं, तो मुझे शिफ़ा बख़्शता

१. दूसरों से मुराद फ़िऔन और उस की पैरवी करने वाले हैं।

वल्लज़ी युमीतुनी सुम्-म युह़्यीन لا (८१) वल्लज़ी अत़्मअ़ु अंय्यग़्फ़ि-र ली ख़त़ीअती यौमद्दीन ط (८२) रब्बि हब् ली हुक्मंव-व अल्ह़िक़्नी बिस्सालिहीन لا (८३) वज्अ़ल्ली लिसा-न सिद्क़िन् फ़िल्आख़िरीन لا (८४) वज्अ़ल्नी मिंव्व-र-सति जन्नतिन्नअ़ीम لا (८५) वग़्फ़िर लिअबी इन्नहू का-न मिनज़्ज़ाल्लीन لا (८६) व ला तुख़्ज़िनी यौ-म युब्-असून لا (८७) यौ-म ला यन्फ़अ़ु मालुंव्-व ला बनून لا (८८) इल्ला मन् अ-तल्ला-ह बिक़ल्बिन् सलीम ط (८९) व उज़्लि-फ़तिल्-जन्नतु लिलमुत्तक़ीन لا (९०) व बुर्रिज़तिल्-जहीमु लिल्ग़ावीन لا (९१) व क़ी-ल लहुम् ऐनमा कुन्तुम् तअ़्-बुदून لا (९२) मिन् दूनिल्लाहि ط हल् यन्सुरूनकुम् औ यन्तसिरून ط (९३) फ़कुब्किबू फ़ीहा हुम् वल्ग़ावून لا (९४) व जुनूदु इब्ली-स अज्मअ़ून ط (९५) क़ालू व हुम् फ़ीहा यख़्तसिमून لا (९६) तल्लाहि इन् कुन्ना लफ़ी ज़लालिम्-मुबीन لا (९७) इज़् नुसव्वीकुम् बिरब्बिल्-आ़लमीन (९८) व मा अज़ल्लना इल्लल्-मुज्रिमून (९९) फ़मा लना मिन् शाफ़िअ़ीन لا (१००) व ला सदीक़िन् हमीम (१०१) फ़लौ अन्-न लना कर्रतन् फ़-नकू-न मिनल्-मुअ्मिनीन (१०२) इन्-न फ़ी ज़ालि-क ल-आ-य-तन् ط व मा का-न अक्सरुहुम् मुअ्मिनीन (१०३) व इन्-न रब्ब-क लहुवल्-अ़ज़ीज़ुर्-रहीम ★ (१०४) कज़्ज़बत् क़ौमु नूहि-निल्-मुर्सलीन ع (१०५) इज़् क़ा-ल लहुम् अख़ूहुम् नूहुन् अला तत्तक़ून ج (१०६) इन्नी लकुम् रसूलुन् अमीन لا (१०७) फ़त्तक़ुल्ला-ह व अत़ीअ़ून ج (१०८) व मा अस्-अलुकुम् अ़लैहि मिन् अज्रिन् ج इन् अज्रि-य इल्ला अ़ला रब्बिल्-आ़लमीन ج (१०९) फ़त्तक़ुल्ला-ह व अत़ीअ़ून ط (११०) क़ालू अ-नुअ्मिनु ल-क वत्तब-अ़कल्-अर्ज़लून ط (१११) क़ा-ल व मा अ़िल्मी बिमा कानू यअ़्-मलून ج (११२)

فهو يشفين ۝ والذي يميتني ثم يحيين ۝ والذي أطمع أن يغفر لي
خطيئتي يوم الدين ۝ رب هب لي حكما وألحقني بالصالحين ۝
واجعل لي لسان صدق في الآخرين ۝ واجعلني من ورثة جنة
النعيم ۝ واغفر لأبي إنه كان من الضالين ۝ ولا تخزني يوم
يبعثون ۝ يوم لا ينفع مال ولا بنون ۝ إلا من أتى الله بقلب
سليم ۝ وأزلفت الجنة للمتقين ۝ وبرزت الجحيم للغاوين ۝
وقيل لهم أين ما كنتم تعبدون ۝ من دون الله هل ينصرونكم أو
ينتصرون ۝ فكبكبوا فيها هم والغاوون ۝ وجنود إبليس أجمعون ۝
قالوا وهم فيها يختصمون ۝ تالله إن كنا لفي ضلال مبين ۝ إذ
نسويكم برب العالمين ۝ وما أضلنا إلا المجرمون ۝ فما لنا من
شافعين ۝ ولا صديق حميم ۝ فلو أن لنا كرة فنكون من
المؤمنين ۝ إن في ذلك لآية وما كان أكثرهم مؤمنين ۝ و
إن ربك لهو العزيز الرحيم ۝ كذبت قوم نوح المرسلين ۝
إذ قال لهم أخوهم نوح ألا تتقون ۝ إني لكم رسول أمين ۝
فاتقوا الله وأطيعون ۝ وما أسألكم عليه من أجر إن أجري
إلا على رب العالمين ۝ فاتقوا الله وأطيعون ۝ قالوا أنؤمن لك
واتبعك الأرذلون ۝ قال وما علمي بما كانوا يعملون ۝ إن

★रु. ५/६ आ ३६

है। (८०) और वह जो मुझे मारेगा (और) फिर ज़िंदा करेगा। (८१) और वह जिस से मैं उम्मीद रखता हूं कि क़ियामत के दिन मेरे गुनाह बख़्शेगा। (८२) ऐ परवरदिगार! मुझे इल्म और सूझ-बूझ अता फ़रमा और नेकों में शामिल कर। (८३) और पिछले लोगों में मेरा ज़िक्र (जारी) कर। (८४) और मुझे नेमत की बहिश्त के वारिसों में कर। (८५) और मेरे बाप को बख़्श दे कि वह गुमराहों में से है। (८६) और जिस दिन लोग उठा खड़े किए जाएंगे, मुझे रुसवा न कीजियो। (८७) जिस दिन न माल ही कुछ फ़ायदा दे सकेगा और न बेटे। (८८) हां, जो शख़्स ख़ुदा के पास पाक दिल ले कर आया, (वह बच जाएगा), (८९) और बहिश्त परहेज़गारों के क़रीब कर दी जाएगी। (९०) और दोज़ख़ गुमराहों के सामने लायी जाएगी। (९१) और उन से कहा जाएगा कि जिन को तुम पूजते थे, वे कहां हैं? (९२) (यानी जिन को) ख़ुदा के सिवा (पूजते थे) क्या वे तुम्हारी मदद कर सकते हैं या ख़ुद बदला ले सकते हैं? (९३) तो वे गुमराह (यानी बुत और बुतपरस्त) औंधे मुंह दोज़ख़ में डाल दिए जाएंगे। (९४) और शैतान के लश्कर सब के सब (जहन्नम में दाख़िल होंगे)। (९५) वहां वे आपस में झगड़ेंगे और कहेंगे, (९६) कि ख़ुदा की क़सम! हम तो खुली गुमराही में थे। (९७) जब कि तुम्हें (ख़ुदा-ए-) रब्बुल आलमीन के बराबर ठहराते थे, (९८) और हम को इन गुनाहगारों ही ने गुमराह किया था, (९९) तो (आज) न कोई हमारा सिफ़ारिश करने वाला है, (१००) और न गर्मजोश दोस्त। (१०१) काश, हमें (दुनिया में) फिर जाना हो, तो हम मोमिनों में हो जाएं। (१०२) बेशक इस में निशानी है और इन में अक्सर ईमान लाने वाले नहीं। (१०३) और तुम्हार परवरदिगार तो ग़ालिब और मेहरबान है। (१०४)★

नूह की क़ौम ने भी पैग़म्बरों को झुठलाया, (१०५) जब उन से उन के भाई नूह ने कहा कि तुम डरते क्यों नहीं? (१०६) मैं तो तुम्हारा अमानतदार पैग़म्बर हूं। (१०७) तो ख़ुदा से डरो और मेरा कहा मानो। (१०८) और मैं इस काम का तुम से बदला नहीं मांगता। मेरा बदला तो ख़ुदा-ए-रब्बुल आलमीन ही पर है। (१०९) तो ख़ुदा से डरो और मेरे कहने पर चलो। (११०) वे बोले कि क्या हम तुम को मान लें और तुम्हारी पैरवी करने वाले तो नीच लोग हुए हैं। (१११) (नूह ने)

★रु. ५/६ आ ३६

इन् हिसाबुहुम् इल्ला अला रब्बी लौ तश्अुरून (११३) व मा अ-न बितारिदिल् - मुअ्मिनीन (११४) इन् अ-न इल्ला नज़ीरुम् - मुबीन (११५) क़ालू ल-इल्लम् तन्तहि यानूहु ल-तकूनन्-न मिनल्-मर्जूमीन (११६) क़ा-ल रब्बि इन्-न क़ौमी कज़्ज़बून ● (११७) फ़फ़्-तह् बैनी व बैनहुम् फ़त्हंव्-व नज्जिनी व मम्मअि-य मिनल्-मुअ्मिनीन (११८) फ़-अन्जैनाहु व मम्म-अहू फ़िल्फ़ुल्किल्-मश्हून (११९) सुम्-म अग्-रक़्-ना बअ्-दुल्-बाक़ीन (१२०) इन्-न फ़ी ज़ालि-क ल-आ-य-तन् व मा का-न अक्सरुहुम्-मुअ्मिनीन (१२१) व इन्-न रब्ब-क लहुवल्-अज़ीज़ुर् - रहीम ★ (१२२) कज़्ज़-बत् आदु-निल् - मुर्सलीन (१२३) इज़् क़ा-ल लहुम् अख़ूहुम् हूदुन् अला तत्तक़ून (१२४) इन्नी लकुम् रसूलुन् अमीन (१२५) फ़त्तक़ुल्ला - ह व अतीअून (१२६) व मा अस्-अलुकुम् अलैहि मिन् अज्रिन् इन् अज्रि - य इल्ला अला रब्बिल् - आलमीन (१२७)

إِنْ حِسَابُهُمْ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّي لَوْ تَشْعُرُونَ ۝ وَمَا أَنَا بِطَارِدِ الْمُؤْمِنِينَ ۝
إِنْ أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ مُبِينٌ ۝ قَالُوا لَئِنْ لَمْ تَنْتَهِ يَا نُوحُ لَتَكُونَنَّ مِنَ
الْمَرْجُومِينَ ۝ قَالَ رَبِّ إِنَّ قَوْمِي كَذَّبُونِ ۝ فَافْتَحْ بَيْنِي وَبَيْنَهُمْ
فَتْحًا وَنَجِّنِي وَمَنْ مَعِيَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ فَأَنْجَيْنَاهُ وَمَنْ مَعَهُ
فِي الْفُلْكِ الْمَشْحُونِ ۝ ثُمَّ أَغْرَقْنَا بَعْدُ الْبَاقِينَ ۝ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً
وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ۝ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝
كَذَّبَتْ عَادٌ الْمُرْسَلِينَ ۝ إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ هُودٌ أَلَا تَتَّقُونَ ۝
إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ۝ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ۝ وَمَا أَسْأَلُكُمْ
عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ أَتَبْنُونَ بِكُلِّ
رِيعٍ آيَةً تَعْبَثُونَ ۝ وَتَتَّخِذُونَ مَصَانِعَ لَعَلَّكُمْ تَخْلُدُونَ ۝ وَإِذَا
بَطَشْتُمْ بَطَشْتُمْ جَبَّارِينَ ۝ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ۝ وَاتَّقُوا الَّذِي
أَمَدَّكُمْ بِمَا تَعْلَمُونَ ۝ أَمَدَّكُمْ بِأَنْعَامٍ وَبَنِينَ ۝ وَجَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ۝
إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۝ قَالُوا سَوَاءٌ عَلَيْنَا أَوَعَظْتَ
أَمْ لَمْ تَكُنْ مِنَ الْوَاعِظِينَ ۝ إِنْ هَٰذَا إِلَّا خُلُقُ الْأَوَّلِينَ ۝
وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِينَ ۝ فَكَذَّبُوهُ فَأَهْلَكْنَاهُمْ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً وَمَا
كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ۝ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝ كَذَّبَتْ ثَمُودُ
الْمُرْسَلِينَ ۝ إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ صَالِحٌ أَلَا تَتَّقُونَ ۝ إِنِّي لَكُمْ

अ-तब्नू-न बिकुल्लि रीअिन् आ-य-तन् तअ्-बसून (१२८) व तत्तख़िज़ू-न मसानि-अ ल-अल्लकुम् तख़्लुदून (१२९) व इज़ा ब-तश्तुम् ब-तश्तुम् जब्बारीन (१३०) फ़त्तक़ुल्ला-ह व अतीअून (१३१) वत्तक़ुल्लज़ी अ-म-द्दकुम् बिमा तअ्-लमून (१३२) अ-मद्दकुम् बि-अन्आमिंव्-व बनीन (१३३) व जन्नातिंव्-व अुयूनिन् (१३४) इन्नी अख़ाफ़ु अलैकुम् अज़ा-ब यौमिन् अज़ीम (१३५) क़ालू सवाउन् अलैना अ व-अज़्-त अम् लम् तकुम्-मिनल् - वाअिज़ीन (१३६) इन् हाज़ा इल्ला ख़ुलुक़ुल् - अव्वलीन (१३७) व मा नह्नु बिमुअज़्ज़बीन (१३८) फ़कज़्ज़बूहु फ़अह्लक्नाहुम् इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ-य-तन् व मा का-न अक्सरुहुम् मुअ्मिनीन (१३९) व इन्-न रब्ब - क लहुवल् - अज़ीज़ुर् - रहीम ★ (१४०) कज़्-ज - बत् समूदुल् - मुर्सलीन (१४१) इज़् क़ा - ल लहुम् अख़ूहुम् सालिहुन् अला तत्तक़ून (१४२) इन्नी लकुम् रसूलुन् अमीन (१४३)

● नि. १/२ ★रु. ६/१० आ १८ ★रु. ७/११ आ १८

कहा कि मुझे क्या मालूम कि वे क्या करते हैं। (११२) उन का हिसाबे (आमाल) मेरे परवरदिगार के ज़िम्मे है, काश ! तुम समझो। (११३) और मैं मोमिनों को निकाल देने वाला नहीं हूं। (११४) मैं तो सिर्फ़ खोल-खोल कर नसीहत करने वाला हूं। (११५) उन्हों ने कहा कि नूह अगर तुम मानोगे नहीं तो पत्थर मार-मार कर हलाक कर दिए जाओगे। (११६) (नूह ने) कहा कि परवरदिगार मेरी क़ौम ने तो मुझ को झुठला दिया ● (११७) सो तू मेरे और उन के दर्मियान एक खुला फ़ैसला कर दे और मुझे और जो मोमिन मेरे साथ हैं, उन को बचा ले। (११८) पस हम ने उन को और उन के साथ भरी हुई कश्ती में (सवार थे) उन को बचा लिया। (११९) फिर इस के बाद बाक़ी लोगों को डुबो दिया। (१२०) बेशक इस में निशानी है और इन में अक्सर ईमान लाने वाले नहीं थे। (१२१) और तुम्हारा परवरदिगार तो ग़ालिब (और) मेहरबान है। (१२२) ★

आद ने भी पैग़म्बरों को झुठलाया, (१२३) जब उन से उन के भाई हूद ने कहा, क्या तुम डरते नहीं ? (१२४) मैं तो तुम्हारा अमानतदार पैग़म्बर हूं। (१२५) तो खुदा से डरो और मेरा कहा मानो। (१२६) और मैं इस का तुम से कुछ बदला नहीं मांगता। मेरा बदला (खुदा-ए-) रब्बुल आलमीन के ज़िम्मे है। (१२७) भला तुम हर ऊंची जगह पर बेकार निशान तामीर करते हो। (१२८) और महल बनाते हो, शायद तुम हमेशा रहोगे।[1] (१२९) और जब (किसी को) पकड़ते हो, तो ज़ालिमाना पकड़ते हो। (१३०) तो खुदा से डरो और मेरी इताअत करो। (१३१) और उस से, जिस ने तुम को उन चीज़ों से मदद दी, जिन को तुम जानते हो, डरो। (१३२) उस ने तुम्हें चारपायों और बेटों से मदद दी, (१३३) और बाग़ों और चश्मों से, (१३४) मुझ को तुम्हारे बारे में बड़े (सख्त) दिन के अज़ाब का डर है। (१३५) वे कहने लगे, हमें नसीहत करो या न करो, हमारे लिए बराबर है। (१३६) ये तो अगलों के ही तरीक़े हैं।[2] (१३७) और हम पर कोई अज़ाब नहीं आएगा, (१३८) तो उन्हों ने हूद को झुठलाया, सो हम ने उन को हलाक कर डाला। बेशक इस में निशानी है और इन में अक्सर ईमान लाने वाले नहीं थे। (१३९) और तुम्हारा परवरदिगार तो ग़ालिब (और) मेहरबान है। (१४०) ★

(और) समूद (क़ौम) ने भी पैग़म्बरों को झुठलाया, (१४१) जब उन से उन के भाई सालेह ने कहा कि तुम डरते क्यों नहीं ? (१४२) मैं तो तुम्हारा अमानतदार पैग़म्बर हूं, (१४३) तो खुदा

---

१. इन लोगों को बड़ा शौक़ था ऊंचे मज़बूत मीनारे बनाने का, जिस से कुछ काम न निकले, मगर नाम और रहने की इमारतें बड़े तकल्लुफ़ से माल ख़राब करते हो। बाग़े इरम इन्हीं का मशहूर है।

२. यानी अगले लोग भी इसी तरह बहिश्त की नेमतों की तारीफ़ें किया करते थे और दोज़ख़ के अज़ाब से डराया करते थे।

● नि. १/२ ★रु. ६/१० आ १८ ★रु. ७/११ आ १८

फ़त्तक़ुल्ला-ह व अतीअून (१४४) व मा अस्-अलुकुम् अलैहि मिन् अज्रिन् इन् अज्रि-य इल्ला अला रब्बिल् - आलमीन (१४५) अतुत्रकू-न फ़ी मा हाहुना आमिनीन (१४६) फ़ी जन्नातिंव-व अुयूनिंव- (१४७) व जुरूअिंव-व नख़्लिन् तल्अुहा हज़ीम (१४८) व तन्हितू-न मिनल्जिबालि बुयूतन् फ़ारिहीन (१४९) फ़त्तक़ुल्ला-ह व अतीअून (१५०) व ला तुतीअू अम्-रल्-मुस्रिफ़ीन (१५१) अल्लज़ी - न युफ़्सिदू-न फ़िल्अर्ज़ि व ला युस्लिहून (१५२) क़ालू इन्नमा अन्-त मिनल् - मुसह्-ह़रीन (१५३) मा अन्-त इल्ला ब-श-रुम्-मिस्लुना फ़अ्ति बिआ - यतिन् इन् कुन्-त मिनस्सादिक़ीन (१५४) क़ा-ल हाज़िही ना-क़तुल्लहा शिर्बुंव्-व लकुम् शिर्बु यौमिम्-मअ्-लूम (१५५) व ला तमस्सूहा बिसूइन् फ़-यअ्ख़ु - ज़कुम् अज़ाबु यौमिन् अज़ीम (१५६) फ़-अ-क़रूहा फ़-अस्बहू नादिमीन (१५७) फ़-अ-ख़-ज़ - हुमुल्-अज़ाबु इन्-न फ़ी ज़ालि-क ल-आ-यतन् व मा का-न अक्सरुहुम्-मुअ्मिनीन (१५८) व इन्-न रब्ब-क लहुवल्-अज़ीज़ुर्-रहीम ★ (१५९) कज़्ज़बत् क़ौमु लूति-निल्-मुर्सलीन (१६०) इज़् क़ा - ल लहुम् अख़ूहुम् लूतुन् अला तत्तक़ून (१६१) इन्नी लकुम् रसूलुन् अमीन (१६२) फ़त्तक़ुल्ला-ह व अतीअून (१६३) व मा अस्-अलुकुम् अलैहि मिन् अज्रिन् इन् अज्रि-य इल्ला अला रब्बिल्-आलमीन (१६४) अ-तअ्-तूनज़्ज़ुक्रा - न मिनल्-आलमीन (१६५) व त-ज़-रू-न मा ख़-ल-क़ लकुम् रब्बुकुम् मिन् अज़्वाजिकुम् बल् अन्तुम् क़ौमुन् आदून (१६६) क़ालू ल-इल्लम् तन्तहि यालूतु ल-त-कूनन्-न मिनल्-मुख़्-रजीन (१६७) क़ा-ल इन्नी लि-अ-मलिकुम् मिनल्क़ालीन (१६८) रब्बि नज्जिनी व अह्-ली मिम्मा यअ्-मलून (१६९) फ़-नज्जैनाहु व अह्-लहू अज्मअीन (१७०) इल्ला अजूज़न् फ़िल्ग़ाबिरीन (१७१) सुम्-म दम्मर्नल्-आख़रीन (१७२) व अम्तर्ना अलैहिम् म-त-रन् फ़सा-अ म-त-रुल् - मुन्ज़रीन (१७३)

رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ۝ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ۝ وَمَاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ
اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ اَتُتْرَكُوْنَ فِيْ مَا هٰهُنَاۤ اٰمِنِيْنَ ۝ فِيْ
جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ۝ وَّزُرُوْعٍ وَّنَخْلٍ طَلْعُهَا هَضِيْمٌ ۝ وَتَنْحِتُوْنَ مِنَ
الْجِبَالِ بُيُوْتًا فٰرِهِيْنَ ۝ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ۝ وَلَا تُطِيْعُوْۤا اَمْرَ
الْمُسْرِفِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ يُفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ وَلَا يُصْلِحُوْنَ ۝ قَالُوْۤا
اِنَّمَاۤ اَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِيْنَ ۝ مَاۤ اَنْتَ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ۚ فَاْتِ بِاٰيَةٍ اِنْ كُنْتَ
مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝ قَالَ هٰذِهٖ نَاقَةٌ لَّهَا شِرْبٌ وَّلَكُمْ شِرْبُ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ۝
وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابُ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ۝ فَعَقَرُوْهَا فَاَصْبَحُوْا
نٰدِمِيْنَ ۝ فَاَخَذَهُمُ الْعَذَابُ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۭ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ
مُّؤْمِنِيْنَ ۝ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۝ كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوْطِ ِۨ الْمُرْسَلِيْنَ ۝
اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ لُوْطٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ۝ اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ۝
فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ۝ وَمَاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِيَ
اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ اَتَاْتُوْنَ الذُّكْرَانَ مِنَ الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَتَذَرُوْنَ
مَا خَلَقَ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ ۭ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ عٰدُوْنَ ۝ قَالُوْا لَىِٕنْ
لَّمْ تَنْتَهِ يٰلُوْطُ لَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُخْرَجِيْنَ ۝ قَالَ اِنِّيْ لِعَمَلِكُمْ مِّنَ
الْقَالِيْنَ ۝ رَبِّ نَجِّنِيْ وَاَهْلِيْ مِمَّا يَعْمَلُوْنَ ۝ فَنَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗۤ اَجْمَعِيْنَ ۝
اِلَّا عَجُوْزًا فِي الْغٰبِرِيْنَ ۝ ثُمَّ دَمَّرْنَا الْاٰخَرِيْنَ ۝ وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا

★रु. ८/१२ आ १६

से डरो और मेरा कहा मानो, (१४४) और मैं इस का तुम से बदला नहीं मांगता। मेरा बदला (ख़ुदा-ए-) रब्बुल आलमीन के ज़िम्मे है। (१४५) क्या जो चीज़ें (तुम्हें) यहां (मिलती) हैं, उन में तुम बे-ख़ौफ़ छोड़ दिए जाओगे! (१४६) (यानी) बाग़ और चश्मे, (१४७) और खेतियां और खजूरें जिन के ख़ोशे लतीफ़ और नाज़ुक होते हैं। (१४८) और तकल्लुफ़ से पहाड़ों को काट-काट कर घर बनाते हो, (१४९) तो ख़ुदा से डरो और मेरे कहे पर चलो। (१५०) और हद से आगे बढ़ जाने वालों की बात न मानो, (१५१) जो मुल्क में फ़साद करते हैं और सुधार नहीं करते। (१५२) वे कहने लगे कि तुम पर तो जादू की मार है। (१५३) तुम और कुछ नहीं, हमारी ही तरह के आदमी हो। अगर सच्चे हो तो कोई निशानी पेश करो। (१५४) (सालेह ने) कहा, (देखो) यह ऊंटनी है, (एक दिन) इस की पानी पीने की बारी है और एक तै दिन तुम्हारी बारी। (१५५) और इस को कोई तक्लीफ़ न देना, (नहीं तो) तुम को सख़्त अज़ाब आ पकड़ेगा। (१५६) तो उन्हों ने उस की कूचें काट डालीं, फिर शर्मिन्दा हुए। (१५७) सो उन को अज़ाब ने आ पकड़ा। बेशक इस में निशानी है और इन मे अक्सर ईमान लाने वाले नहीं। (१५८) और तुम्हारा परवरदिगार तो ग़ालिब (और) मेहरबान है। (१५९)★

(और) लूत की क़ौम ने भी पैग़म्बरों को झुठलाया, (१६०) जब उन से उन के भाई लूत ने कहा कि तुम क्यों नहीं डरते? (१६१) मैं तो तुम्हारा अमानतदार पैग़म्बर हूं, (१६२) तो ख़ुदा से डरो और मेरा कहा मानो, (१६३) और मैं तुम से इस (काम) का बदला नहीं मांगता। मेरा बदला (ख़ुदा-ए-) रब्बुल-आलमीन के ज़िम्मे है। (१६४) क्या तुम अह्ले आलम (दुनिया वालों) में मे लड़कों पर मायल होते हो? (१६५) और तुम्हारे परवरदिगार ने जो तुम्हारे लिए तुम्हारी बीवियां पैदा की हैं, उन को छोड़ देते हो। सच तो यह है कि तुम हद से निकल जाने वाले लोग हो। (१६६) वे कहने लगे कि लूत! अगर तुम मानोगे नहीं, तो देश-निकाला दे दिए जाओगे। (१६७) (लूत ने) कहा कि मैं तुम्हारे काम से सख़्त बेज़ार हूं। (१६८) ऐ मेरे परवरदिगार! मुझ को और मेरे घर वालों को इन के कामों (के वबाल से) निजात दे। (१६९) सो हमने उन को और उन के घर वालों को, सब को निजात दी। (१७०) मगर एक बुढ़िया कि पीछे रह गयी। (१७१) फिर हमने औरों को हलाक कर दिया। (१७२) और उन पर मेंह बरसाया, सो जो मेंह उन (लोगों) पर बरसा, जो

★रु. ८/१२ आ १६

इन्-न फ़ी ज़ालि-क ल-आ-य-तन् व मा का-न अक्सरुहुम् मुअ्मिनीन (१७४) व इन्-न रब्ब-क लहुवल् - अज़ीज़ुर्-रहीम ★(१७५) कज़्ज़-ब अस्हाबुल्-ऐकतिल्-मुर्सलीन (१७६) इज़् क़ा - ल लहुम् शुअ़ैबुन् अला तत्तक़ून (१७७) इन्नी लकुम् रसूलुन् अमीन (१७८) फ़त्तक़ुल्ला-ह व अतीअ़ूनि (१७९) व मा अस्अलुकुम् अ़लैहि मिन् अज्रिन् इन् अज्रि-य इल्ला अ़ला रब्बिल्-आलमीन (१८०) औफ़ुल्कै-ल व ला तकूनू मिनल्-मुख़्सिरीन (१८१) व ज़िनू बिल्-क़िस्तासिल्-मुस्तक़ीम (१८२) व ला तब्ख़सुन्ना-स अश्-या-अहुम् व ला तअ्-सौ फ़िल्अर्ज़ि मुफ़्सिदीन (१८३) वत्तक़ुल्लज़ी ख़-ल-क़कुम् वल् - जिबिल्ल-तल् - अव्वलीन (१८४) क़ालू इन्नमा अन्-त मिनल्-मुसह्हरीन (१८५) व मा अन्-त इल्ला ब-श-रुम्-मिस्लुना व इन् नज़ुन्नु-क लमिनल्-काज़िबीन (१८६) फ़-अस्क़ित् अलैना कि-स-फ़म् - मिनस्समाइ इन् कुन् - त मिनस्सादिक़ीन (१८७) क़ा-ल रब्बी अअ्-लमु बिमा तअ्-मलून (१८८) फ़-कज़्ज़बूहु फ़-अ-ख़-ज़हुम् अज़ाबु यौमिज़्ज़ुल्लति इन्नहू का-न अज़ा-ब यौमिन् अज़ीम (१८९) इन्-न फ़ी ज़ालि-क ल-आय-तन् व मा का-न अक्सरुहुम् मुअ्मिनीन (१९०) व इन्-न रब्ब-क लहुवल्-अज़ीज़ुर्-रहीम ★(१९१) व इन्नहू ल-तन्ज़ीलु रब्बिल्-आलमीन (१९२) न-ज़-ल बिहिर्रूहुल्-अमीन (१९३) अला क़ल्बि-क लितकू-न मिनल्-मुन्ज़िरीन (१९४) बिलिसानिन् अ़-रबिय्यिम् - मुबीन (१९५) व इन्नहू लफ़ी ज़ुबुरिल् अव्वलीन (१९६) अ-व-लम् यकुल्लहुम् आय-तन् अंय्यअ्-ल-महू उ़-लमाउ बनी इस्राई-ल (१९७) व लौ नज़्ज़ल्नाहु अ़ला बअ्-ज़िल्-अअ्-जमीन (१९८) फ़-क़-र-अहू अ़लैहिम् मा कानू बिही मुअ्मिनीन (१९९) कज़ालि-क स - लक्नाहु फ़ी क़ुलूबिल् - मुज्रिमीन (२००) ला युअ्मिनू - न बिही हत्ता य-र - वुल् - अ़ज़ाबल् - अलीम (२०१)

فَسَاءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِينَ ۝ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ
مُؤْمِنِينَ ۝ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝ كَذَّبَ أَصْحَابُ لْئَيْكَةِ
الْمُرْسَلِينَ ۝ إِذْ قَالَ لَهُمْ شُعَيْبٌ أَلَا تَتَّقُونَ ۝ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ
أَمِينٌ ۝ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ۝ وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۖ إِنْ
أَجْرِيَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ أَوْفُوا الْكَيْلَ وَلَا تَكُونُوا مِنَ الْمُخْسِرِينَ ۝
وَزِنُوا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيمِ ۝ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ وَلَا
تَعْثَوْا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ۝ وَاتَّقُوا الَّذِي خَلَقَكُمْ وَالْجِبِلَّةَ الْأَوَّلِينَ ۝
قَالُوا إِنَّمَا أَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِينَ ۝ وَمَا أَنْتَ إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُنَا وَإِنْ نَظُنُّكَ
لَمِنَ الْكَاذِبِينَ ۝ فَأَسْقِطْ عَلَيْنَا كِسَفًا مِنَ السَّمَاءِ إِنْ كُنْتَ مِنَ
الصَّادِقِينَ ۝ قَالَ رَبِّي أَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝ فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَهُمْ
عَذَابُ يَوْمِ الظُّلَّةِ ۚ إِنَّهُ كَانَ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۝ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ
وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ۝ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝
وَإِنَّهُ لَتَنْزِيلُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ نَزَلَ بِهِ الرُّوحُ الْأَمِينُ ۝ عَلَىٰ قَلْبِكَ
لِتَكُونَ مِنَ الْمُنْذِرِينَ ۝ بِلِسَانٍ عَرَبِيٍّ مُبِينٍ ۝ وَإِنَّهُ لَفِي زُبُرِ
الْأَوَّلِينَ ۝ أَوَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ آيَةً أَنْ يَعْلَمَهُ عُلَمَاءُ بَنِي إِسْرَائِيلَ ۝
وَلَوْ نَزَّلْنَاهُ عَلَىٰ بَعْضِ الْأَعْجَمِينَ ۝ فَقَرَأَهُ عَلَيْهِمْ مَا كَانُوا بِهِ مُؤْمِنِينَ ۝
كَذَٰلِكَ سَلَكْنَاهُ فِي قُلُوبِ الْمُجْرِمِينَ ۝ لَا يُؤْمِنُونَ بِهِ حَتَّىٰ يَرَوُا

★रु. ९/१३ आ १६ ★रु. १०/१४ आ १६

डराये गये थे, वह बुरा था। (१७३) बेशक इस में निशानी है और उन में अक्सर ईमान लाने वाले नहीं थे। (१७४) और तुम्हारा परवरदिगार तो ग़ालिब (और) मेहरबान है। (१७५)★

और बन के रहने वालों ने भी पैग़म्बरों को झुठलाया, (१७६) जब उन से शुऐब ने कहा कि तुम डरते क्यों नहीं, (१७७) मैं तो तुम्हारा अमानतदार पैग़म्बर हूं, (१७८) तो ख़ुदा से डरो और मेरा कहा मानो। (१७९) और मैं इस (काम) का तुम से कुछ बदला नहीं मांगता। मेरा बदला तो (ख़ुदा-ए-) रब्बुल आलमीन के ज़िम्मे है। (१८०) (देखो) पैमाना पूरा भरा करो और नुक़्सान न किया करो। (१८१) और तराज़ू सीधी रख कर तौला करो। (१८२) लोगों को उन की चीज़ें कम न दिया करो और मुल्क में फ़साद न करते फिरो। (१८३) और उस से डरो, जिसने तुम को और पहली ख़ल्क़त को पैदा किया। (१८४) वे कहने लगे कि तुम पर जादू हो गया है। (१८५) और तुम और कुछ नहीं, हम ही जैसे आदमी हो और हमारा ख़्याल है कि तुम झूठे हो। (१८६) अगर सच्चे हो तो हम पर आसमान से एक टुकड़ा ला गिराओ। (१८७) (शुऐब ने) कहा कि जो काम तुम करते हो, मेरा परवरदिगार उसे ख़ूब जानता है। (१८८) तो उन लोगों ने उन को झुठलाया, पस सायबान के अज़ाब ने उन को आ पकड़ा। बेशक वह बड़े (सख़्त) दिन का अज़ाब था। (१८९) इसमें यक़ीनन निशानी है और इनमें अक्सर ईमान लाने वाले नहीं थे। (१९०) और तुम्हारा परवरदिगार तो ग़ालिब (और) मेहरबान है। (१९१)★

और यह (क़ुरआन ख़ुदा-ए-) रब्बुल आलमीन का उतारा हुआ है। (१९२) इस को अमानतदार फ़रिश्ता लेकर उतरा है। (१९३) (यानी उस ने) तुम्हारे दिल पर (इल्क़ा किया है, यानी डाल दिया है) ताकि (लोगों को) नसीहत करते रहो। (१९४) (और इल्क़ा भी) खुली (ज़ोरदार) अरबी ज़ुबान में (किया है) (१९५) और इसकी ख़बर पहले पैग़म्बरों की किताबों में (लिखी हुई) है। (१९६) क्या उनके लिए यह सनद नहीं है कि बनी इस्राईल के उलेमा इस (बात) को जानते हैं। (१९७) और अगर हम इस को किसी ग़ैर ज़ुबान वाले पर उतारते। (१९८) और वह उसे उन (लोगों) को पढ़ कर सुनाता, तो ये उसे (कभी) न मानते। (१९९) इसी तरह हमने इंकार को गुनाहगारों के दिलों में दाखिल कर दिया। (२००) वे जब तक दर्द देने वाला अज़ाब न

★रु. ९/१३ आ १६ ★रु. १०/१४ आ १६

फ़-यअ्ति-यहुम् बग़्-त-तंव-व हुम् ला यश-अुरून॥ (२०२) फ़-यक़ूलू हल् नह्नु मुन्ज़रून॥ (२०३) अ-फ़-बिअ़ज़ाबिना यस्तअ्-जिलून (२०४) अ-फ़-रऐ-त इम्-मत्तअ्-नाहुम् सिनीन॥ (२०५) सुम्-म जा-अहुम् मा कानू यूअ़दून॥ (२०६) मा अग़्ना अ़न्हुम् मा कानू युमत्तअ़ून॥ (२०७) व मा अह्-लक्ना मिन् क़र् - यतिन् इल्ला लहा मुन्ज़िरून (२०८) ज़िक्रा क़फ़् व मा कुन्ना ज़ालिमीन (२०९) व मा त-नज़्ज़-लत् बिहिश्शयातीन (२१०) व मा यम्बग़ी लहुम् व मा यस्ततीअ़ून॥ (२११) इन्नहुम् अ़निस्सम्अि ल-मअ्-ज़ूलून॥ (२१२) फ़ला तद्अु म-अ़ल्लाहि इलाहन् आख़-र फ़-तकू-न मिनल् - मुअ़ज़्ज़बीन (२१३) व अन्ज़िर् अ़शी-र-त-कल्-अक़्रबीन॥ (२१४) वख़्फ़िज़् जना-ह-क लिमनित्त-ब-अ-क मिनल्-मुअ्मिनीन (२१५) फ़-इन् अ़सौ - क फ़क़ुल् इन्नी बरीउम् - मिम्मा तअ़्-मलून (२१६) व त-व-क्कल् अ़लल्-अ़ज़ीज़िर्रहीम॥ (२१७) अल्लज़ी यरा-क ही-न तक़ूम॥ (२१८) व तक़ल्लु-ब-क फ़िस्-साजिदीन (२१९) इन्नहू हुवस्समीअ़ुल्-अ़लीम (२२०) हल् उनब्बिउकुम् अ़ला मन् त-नज़्ज़लुश्-शयातीन॥ (२२१) त-नज़्ज़लु अ़ला कुल्लि अफ़्फ़ाकिन् असीमिंय॥ (२२२) युल्क़ूनस्सम्-अ़ व अक्सरुहुम् काज़िबून॥ (२२३) वश्शु-अ़रा-उ यत्तबिअ़ुहुमुल्-ग़ावून॥ (२२४) अ-लम् त-र अन्नहुम् फ़ी कुल्लि वादिंय्यहीमून॥ (२२५) व अन्नहुम् यक़ूलू-न मा ला यफ़्-अ़लून॥ (२२६) इल्लल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति व ज़-क-रुल्ला-ह कसीरंव्वन्-त-सरू मिम्बअ्-दि मा ज़ुलिमू॥ व स-यअ्-लमुल्लज़ी-न ज़-लमू अय्-य मुन्क़लबिंय्यन्क़लिबून★ (२२७)

العذاب الأليم ﴿٢٠١﴾ فيأتيهم بغتة وهم لا يشعرون ﴿٢٠٢﴾ فيقولوا هل نحن
منظرون ﴿٢٠٣﴾ أفبعذابنا يستعجلون ﴿٢٠٤﴾ أفرءيت إن متعناهم سنين ﴿٢٠٥﴾
ثم جاءهم ما كانوا يوعدون ﴿٢٠٦﴾ ما أغنى عنهم ما كانوا يمتعون ﴿٢٠٧﴾ و
ما أهلكنا من قرية إلا لها منذرون ﴿٢٠٨﴾ ذكرى وما كنا ظالمين ﴿٢٠٩﴾ وما
تنزلت به الشياطين ﴿٢١٠﴾ وما ينبغي لهم وما يستطيعون ﴿٢١١﴾ إنهم عن
السمع لمعزولون ﴿٢١٢﴾ فلا تدع مع الله إلها آخر فتكون من المعذبين ﴿٢١٣﴾
وأنذر عشيرتك الأقربين ﴿٢١٤﴾ واخفض جناحك لمن اتبعك من
المؤمنين ﴿٢١٥﴾ فإن عصوك فقل إني بريء مما تعملون ﴿٢١٦﴾ وتوكل على
العزيز الرحيم ﴿٢١٧﴾ الذي يراك حين تقوم ﴿٢١٨﴾ وتقلبك في الساجدين ﴿٢١٩﴾
إنه هو السميع العليم ﴿٢٢٠﴾ هل أنبئكم على من تنزل الشياطين ﴿٢٢١﴾ تنزل
على كل أفاك أثيم ﴿٢٢٢﴾ يلقون السمع وأكثرهم كاذبون ﴿٢٢٣﴾ والشعراء يتبعهم
الغاوون ﴿٢٢٤﴾ ألم تر أنهم في كل واد يهيمون ﴿٢٢٥﴾ وأنهم يقولون ما لا
يفعلون ﴿٢٢٦﴾ إلا الذين آمنوا وعملوا الصالحات وذكروا الله كثيرا وانتصروا
من بعد ما ظلموا وسيعلم الذين ظلموا أي منقلب ينقلبون ﴿٢٢٧﴾

سورة النمل مكية وهي ثلاث وتسعون آية وسبع ركوعات

بسم الله الرحمن الرحيم

طس تلك آيات القرآن وكتاب مبين ﴿١﴾ هدى وبشرى

२७ सूरतुन्-नम्लि ४८

(मक्की) इस सूर: में अ़रबी के ४८७९ अक्षर, ११६७ शब्द, ९३ आयतें और ७ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम •

ता-सीन् क़फ़् तिल्-क आयातुल्-क़ुर्आनि व किताबिम्-मुबीन॥ (१)

∵ मु. अि मु ता ख़. ६ ★रु. ११/१५ आ ३६

देख लें, उसको नहीं मानेंगे। (२०१) वह उन पर अचानक आ पड़ेगा और उन्हें ख़बर भी न होगी। (२०२) उस वक़्त कहेंगे, क्या हमें मोहलत मिलेगी? (२०३) तो क्या ये हमारे अज़ाब को जल्दी तलब कर रहे हैं? (२०४) भला देखो तो, अगर हम उन को वर्षों फ़ायदे देते रहें, (२०५) फिर उन पर वह (अज़ाब) आ वाक़ेअ हो, जिसका उनसे वायदा किया जाता है, (२०६) तो जो फ़ायदे ये उठाते रहे, उन के किस काम आएंगे? (२०७) और हमने कोई बस्ती हलाक नहीं की, मगर उस के लिए नसीहत करने वाले (पहले भेज देते) थे। ∴(२०८) (ताकि) नसीहत (कर दें)∴और हम ज़ालिम नहीं हैं। (२०९) और इस (क़ुरआन) को शैतान लेकर नाज़िल नहीं हुए। (२१०) यह काम न तो उन को मुनासिब है और न वे इसकी ताक़त रखते हैं। (२११) वे (आसमानी बातों के) सुनने (की जगहों) से अलग कर दिए गए हैं। (२१२) तो ख़ुदा के सिवा किसी और माबूद को मत पुकारना, वरना तुम को अज़ाब दिया जाएगा। (२१३) और अपने क़रीब के रिश्तेदारों को डर सुना दो। (२१४) और जो मोमिन तुम्हारे पैरो हो गये हैं, उन से नर्मी से पेश आओ। (२१५) फिर अगर लोग तुम्हारी नाफ़रमानी करें तो कह दो कि मैं तुम्हारे आमाल से बे-ताल्लुक़ हूं। (२१६) और (ख़ुदा-ए-) ग़ालिब (और) मेहरबान पर भरोसा रखो, (२१७) जो तुम को जब तुम (तहज्जुद के वक़्त) उठते हो, देखता है,[1] (२१८) और नमाज़ियों में तुम्हारे फिरने को भी। (२१९) बेशक वह सुनने वाला (और) जानने वाला है। (२२०) (अच्छा,) मैं तुम्हें बताऊं कि शैतान किस पर उतरते हैं? (२२१) हर झूठे गुनाहगार पर उतरते हैं, (२२२) जो सुनी हुई बात (उसके कान में) डालते हैं और वे अक्सर झूठे हैं। (२२३) और शायरों की पैरवी गुमराह लोग किया करते हैं। (२२४) क्या तुमने नहीं देखा कि वे हर वादी में सर मारते फिरते हैं। (२२५) और कहते वह हैं जो करते नहीं,[2] (२२६) मगर जो लोग ईमान लाये और नेक काम किये और ख़ुदा को बहुत याद करते रहें और अपने ऊपर ज़ुल्म होने के बाद[3] बदला लिया और ज़ालिम बहुत जल्द जान लेंगे कि कौन-सी जगह लौट कर जाते हैं। (२२७)★

२७ सूरः नम्ल ४८

सूरः नम्ल मक्की है और इसमें तिरानवे आयतें और सात रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

त्वा-सीन। ये क़ुरआन और रोशन किताब की आयतें हैं। (१) मोमिनों के लिए हिदायत और

१. यानी क़ियाम से रुकूअ में जाने और रुकूअ से सज्दे में जाने को भी देखता है।

२. इन आयतों में शायरों की बुराई बयान फ़रमायी गयी है, लेकिन बुराई के क़ाबिल शायर वही हैं जो बुरे और ना-पाक शेर कहते हैं और जो ऐसे शेर कहें जिन में ख़ुदा की तारीफ़ हो या जिन से उस के दीन की मदद हो, वह तारीफ़ के क़ाबिल और सवाब के हक़दार हैं।

३. यानी अगर किसी ने उस की हिज्व (शेर में बुरे नाम से याद करना) कही हो और वह भी उस की हिज्व कर के उस से बदला ले तो यह जायज़ है।

∴मु. अ़ि मु ता ख़.९ ★रु. ११/१५ आ ३६

हुदंव-व बुश्रा लिल्-मुअ्मिनीन ५(२) अल्लज़ी-न युक़ीमूनस्सला-त व युअ्-तूनज़्ज़का-त व हुम् बिल्-आख़िरति हुम् यूक़िनून (३) इन्नल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिल्आख़िरति ज़य्यन्ना लहुम् अअ्-मालहुम् फ़हुम् यअ्-महून ط(४) उलाइ-कल्लज़ी-न लहुम् सूउल्-अज़ाबि व हुम् फ़िल्आख़िरति हुमुल् अख़्सरून (५) व इन्न-क ल-तु-लक़्क़ल् - क़ुर्आ-न मिल्लदुन् हकीमिन् अलीम ●(६) इज़् क़ा - ल मूसा लिअह्लिही इन्नी आनस्तु नारन् ط स-आतीकुम् मिन्हा बि-ख़-बरिन् औ आतीकुम् बिशिहाबिन् क़-ब-सिल्-ल-अल्लकुम् तस्तलून (७) फ़-लम्मा जा-अहा नूदि-य अम्बूरि-क मन् फ़िन्नारि व मन् हौलहा ط व सुब्हानल्लाहि रब्बिल्-आलमीन (८) या मूसा इन्नहू अनल्लाहुल्-अज़ीज़ुल् - हकीम ۙ (९) व अल्क़ि असा-क ط फ़-लम्मा र-आहा तह्तज़्ज़ु क-अन्नहा जान्नुंव्वल्ला मुद्बिरंव्-व लम् युअक़्क़िब् ط या मूसा ला त-ख़फ़् इन्नी ला यख़ाफ़ु ल-दय्यल् - मुर्सलून (१०) इल्ला

मन् ज़-ल-म सुम्-म बद्-द-ल हुस्-नम्-बअ्-द सूइन् फ़इन्नी ग़फ़ूरुर्-रहीम (११) व अद्ख़िल् य-द-क फ़ी जैबि-क तख़्रुज् बैज़ा - अ मिन् ग़ैरि सूइन् फ़ी तिस्अि आयातिन् इला फ़िर्औ - न व क़ौमिही ط इन्नहुम् कानू क़ौमन् फ़ासिक़ीन (१२) फ़-लम्मा जाअत्हुम् आयातुना मुब्सि-र-तन् क़ालू हाज़ा सिह्रुम्-मुबीन ج(१३) व ज-हदू बिहा वस्तै-क़-नत्हा अन्फ़ुसुहुम् ज़ुल्मंव्-व अुलुव्वन् ط फ़न्ज़ुर् कै-फ़ का-न आक़िबतुल् - मुफ़्सिदीन ★(१४) व ल-क़द् आतैना दावू-द व सुलैमा - न अिल्मन् ج व क़ालल् - हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी फ़ज़्-ज़-लना अला कसीरिम्मिन् अिबादिहिल्-मुअ्मिनीन (१५)

●सु. ३/४ ★रु. १/१६ आ १४

ख़ुशख़बरी है। (२) वे, जो नमाज़ पढ़ते और ज़कात देते और आख़िरत का यक़ीन रखते हैं। (३) जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, हमने उन के आमाल उन के लिए सजा दिए हैं, तो वे परेशान भटक रहे हैं। (४) यही लोग हैं, जिन के लिए बड़ा अज़ाब है और वे आख़िरत में भी बहुत नुक़्सान उठाने वाले हैं। (५) और तुम को क़ुरआन हकीम व अलीम (ख़ुदा) की तरफ़ से अता किया जाता है● (६) जब मूसा ने अपने घर वालों से कहा कि मैं ने आग देखी है। मैं वहां से (रास्ते का) पता लाता हूं या सुलगता हुआ अंगारा तुम्हारे पास लाता हूं, ताकि तुम तापो। (७) जब मूसा उस के पास आए तो निदा (आवाज़) आयी कि वह जो आग में (तजल्ली दिखाता) है, बरकत वाला है और वह जो आग के आस-पास है और ख़ुदा जो पूरी दुनिया का परवरदिगार है, (८) ऐ मूसा ! मैं ही ख़ुदा-ए-ग़ालिब व हकीम हूं। (९) और अपनी लाठी डाल दो। जब उसे देखा तो (इस तरह) हिल रही थी गोया सांप है, तो पीठ फेर कर भागे और पीछे मुड़ कर न देखा। (हुक्म हुआ कि) मूसा डरो मत, हमारे पास पैग़म्बर डरा नहीं करते। (१०) हां, जिस ने ज़ुल्म किया, फिर बुराई के बाद उसे नेकी से बदल दिया, तो मैं बख़्शने वाला मेहरबान हूं। (११) और अपना हाथ अपने गरेबान में डालो, बे-ऐब सफ़ेद निकलेगा। (इन दो मोजज़ों के साथ जो) नौ मोजज़ों में (दाख़िल हैं) फ़िरऔन और उसकी क़ौम के पास (जाओ) कि वे बद-किरदार लोग हैं। (१२) जब उनके पास हमारी रोशन निशानियां पहुंचीं, कहने लगे, यह खुला जादू है। (१३) और बे-इंसाफ़ी और घमंड से उन से इंकार किया, लेकिन उन के दिल उन को मान चुके थे, सो देख लो कि फ़साद करने वालों का अंजाम कैसा हुआ। (१४)★

और हमने दाऊद और सुलेमान को इल्म बख़्शा और उन्होंने कहा कि ख़ुदा का शुक्र है, जिस ने हमें अपने बहुत-से-मोमिन बन्दों पर बड़ाई दी। (१५) और सुलेमान दाऊद के जानशीन हुए और

●मु. ३/४ ★रु. १/१६ आ १४

व वरि-स सुलैमानु दावू-द व क़ा-ल या अय्युहन्नासु अुल्लिम्ना मन्तिक़त्तैरि व ऊतीना मिन् कुल्लि शैइन्॰ इन्-न हाज़ा ल-हुवल्-फ़ज़्लुल्-मुबीन (१६) व हुशि-र लिसुलैमा-न जुनूदुहू मिनल्जिन्नि वल्इन्सि वत्तैरि फ़हुम् यू-ज़-अून (१७) हत्ता इज़ा अतौ अला वादिन्नम्लि॰ क़ालत् नम्लतुंय्या अय्युहन् - नम्लुद्ख़ुलू मसाकि-नकुम्॰ ला यह्तिमन्नकुम् सुलैमानु व जुनूदुहू॰ व हुम् ला यश्अुरून (१८) फ़-त-बस्स-म ज़ाहिकम्मिन् क़ौलिहा व क़ा-ल रब्बि औज़िअ्-नी अन् अश्कु-र निअ्-म-त-कल्लती अन्अम्-त अलय्-य व अला वालिदय्-य व अन् अअ्-म-ल सालिहन् तर्ज़ाहु व अद्ख़िल्नी बिरह्मति-क फ़ी अिबादिकस्-सालिहीन (१९) व त-फ़क़्क़-दत्तै-र फ़क़ा-ल मा लि-य ला अरल्हुद्हु - द अम् का - न मिनल् - ग़ाइबीन (२०) ल-उअज़्ज़िबन्नहू अज़ाबन् शदीदन् औ ल-अज़्-बहन्नहू औ ल-यअ्तियन्नी बिसुल्तानिम्-मुबीन (२१) फ़-म-क-स ग़ै-र बओदिन् फ़क़ा-ल अहत्तु बिमा लम् तुहित् बिही व जिअ्तु - क मिन् स-ब-इम्-बि-नबइंय्यक़ीन (२२) इन्नी व-जत्तुम्-र-अ-तन् तम्लिकुहुम्· व ऊतियत् मिन् कुल्लि शैइंव्-व लहा अर्शुन् अज़ीम (२३) व-जत्तुहा व क़ौमहा यस्जुदू-न लिश्शम्सि मिन् दूनिल्लाहि व ज़य्य-न लहुमुश्शैतानु अअ्-मालहुम् फ़-सद्दहुम् अनिस्सबीलि फ़हुम् ला यह्-तदून॰ (२४) अल्ला यस्जुदू लिल्लाहिल्लज़ी युख़्रिजुल्-ख़ब्-अ फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि व यअ्-लमु मा तुख़्फ़ू-न व मा तुअ्-लिनून (२५) अल्लाहु ला इला-ह इल्ला हु-व रब्बुल्-अर्शिल्-अज़ीम □ (२६) क़ा - ल सनन्ज़ुरु अ-स-दक़्-त अम् कुन्-त मिनल्काज़िबीन (२७) इज़्हब् बिकिताबी हाज़ा फ़-अल्क़िह् इलैहिम् सुम्-म तवल्-ल अन्हुम् फ़न्ज़ुर् मा ज़ा यर्जिअून (२८) क़ालत् या अय्युहल्म-लउ इन्नी उल्क़ि-य इलय्-य किताबुन् करीम (२९) इन्नहू मिन् सुलैमा - न व इन्नहू बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ॥ (३०)

وقال الذين ١٩ — ٣٠٢ — النمل ٢٧

مَنْطِقَ الطَّيْرِ وَأُوتِينَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ إِنَّ هَٰذَا لَهُوَ الْفَضْلُ الْمُبِينُ ﴿١٦﴾
وَحُشِرَ لِسُلَيْمَانَ جُنُودُهُ مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ وَالطَّيْرِ فَهُمْ يُوزَعُونَ ﴿١٧﴾
حَتَّىٰ إِذَا أَتَوْا عَلَىٰ وَادِ النَّمْلِ قَالَتْ نَمْلَةٌ يَا أَيُّهَا النَّمْلُ ادْخُلُوا مَسَاكِنَكُمْ
لَا يَحْطِمَنَّكُمْ سُلَيْمَانُ وَجُنُودُهُ وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿١٨﴾ فَتَبَسَّمَ ضَاحِكًا
مِنْ قَوْلِهَا وَقَالَ رَبِّ أَوْزِعْنِي أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِي أَنْعَمْتَ عَلَيَّ
وَعَلَىٰ وَالِدَيَّ وَأَنْ أَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضَاهُ وَأَدْخِلْنِي بِرَحْمَتِكَ فِي
عِبَادِكَ الصَّالِحِينَ ﴿١٩﴾ وَتَفَقَّدَ الطَّيْرَ فَقَالَ مَا لِيَ لَا أَرَى الْهُدْهُدَ أَمْ
كَانَ مِنَ الْغَائِبِينَ ﴿٢٠﴾ لَأُعَذِّبَنَّهُ عَذَابًا شَدِيدًا أَوْ لَأَذْبَحَنَّهُ أَوْ لَيَأْتِيَنِّي
بِسُلْطَانٍ مُبِينٍ ﴿٢١﴾ فَمَكَثَ غَيْرَ بَعِيدٍ فَقَالَ أَحَطْتُ بِمَا لَمْ تُحِطْ بِهِ وَ
جِئْتُكَ مِنْ سَبَإٍ بِنَبَإٍ يَقِينٍ ﴿٢٢﴾ إِنِّي وَجَدْتُ امْرَأَةً تَمْلِكُهُمْ وَأُوتِيَتْ
مِنْ كُلِّ شَيْءٍ وَلَهَا عَرْشٌ عَظِيمٌ ﴿٢٣﴾ وَجَدْتُهَا وَقَوْمَهَا يَسْجُدُونَ لِلشَّمْسِ
مِنْ دُونِ اللَّهِ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ أَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيلِ
فَهُمْ لَا يَهْتَدُونَ ﴿٢٤﴾ أَلَّا يَسْجُدُوا لِلَّهِ الَّذِي يُخْرِجُ الْخَبْءَ فِي السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُخْفُونَ وَمَا تُعْلِنُونَ ﴿٢٥﴾ اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ
الْعَظِيمِ ﴿٢٦﴾ قَالَ سَنَنْظُرُ أَصَدَقْتَ أَمْ كُنْتَ مِنَ الْكَاذِبِينَ ﴿٢٧﴾ اذْهَبْ بِكِتَابِي
هَٰذَا فَأَلْقِهْ إِلَيْهِمْ ثُمَّ تَوَلَّ عَنْهُمْ فَانْظُرْ مَاذَا يَرْجِعُونَ ﴿٢٨﴾ قَالَتْ يَا أَيُّهَا
الْمَلَأُ إِنِّي أُلْقِيَ إِلَيَّ كِتَابٌ كَرِيمٌ ﴿٢٩﴾ إِنَّهُ مِنْ سُلَيْمَانَ وَإِنَّهُ بِسْمِ اللَّهِ

منزل ٥

□ सज्दः ८

कहने लगे कि लोगो ! हमें (ख़ुदा की तरफ़ से) जानवरों की बोली सिखायी गयी है और हर चीज़ इनायत फ़रमायी गयी है। बेशक यह (उस की) खुली मेहरबानी है। (१६) और सुलेमान के लिए जिन्नों और इंसानों और परिंदों के लश्कर जमा किए गये और वे क़िस्मवार किए गए थे। (१७) यहां तक कि जब चींटियों के मैदान में पहुंचे तो एक चींटी ने कहा कि चींटियो ! अपने-अपने बिलों में दाखिल हो जाओ, ऐसा न हो कि सुलेमान और उसके लश्कर तुमको कुचल डालें और उन को खबर भी न हो। (१८) तो वह उस की बात से हंस पड़े और कहने लगे कि ऐ परवरदिगार ! मुझे तौफ़ीक़ दे कि जो एहसान तूने मुझ पर और मेरे मां-बाप पर किए हैं, उनका शुक्र करूं और ऐसे नेक काम करूं कि तू उन से खुश हो जाए और मुझे अपनी रहमत से अपने बन्दों में दाखिल फ़रमा। (१९) और जब उन्होंने जानवरों का जायज़ा लिया, तो कहने लगे, क्या वजह है कि हुदहुद नज़र नहीं आता, क्या कहीं ग़ायब हो गया है ? (२०) मैं उसे सख्त सज़ा दूंगा या ज़िब्ह कर डालूंगा या मेरे सामने (अपनी बे-क़सूरी की) खुली दलील पेश करे। (२१) अभी थोड़ी ही देर हुई थी कि हुदहुद आ मौजूद हुआ और कहने लगा कि मुझे एक ऐसी चीज़ मालूम हुई है, जिस की आप को खबर नहीं और मैं आपके पास (शहर) सबा से एक यक़ीनी खबर लेकर आया हूं। (२२) मैं ने एक औरत देखा कि इन लोगों पर बादशाहत करती है और हर चीज़ उसे मिली हुई है और उसका एक बड़ा तख्त है। (२३) मैं ने देखा कि वह और उसकी क़ौम (के लोग) ख़ुदा को छोड़ कर सूरज को सज्दा करते हैं और शैतान ने उन के आमाल उन्हें सजा कर दिखाए हैं और उनको रास्ते से रोक रखा है, पस वे रास्ते पर नहीं आते। (२४) (और नहीं समझते) कि ख़ुदा को जो आसमानों और ज़मीन में छिपी चीज़ों को ज़ाहिर कर देता और तुम्हारे छिपे और ज़ाहिर आमाल को जानता है, क्यों सज्दा न करें ? (२५) ख़ुदा के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, वही बड़े अर्श का मालिक है ☐(२६) (सुलेमान ने) कहा, (अच्छा) हम देखेंगे, तू ने सच कहा है या तू झूठा है। (२७) यह मेरा खत ले जा और इसे उनकी तरफ़ डाल दे, फिर उनके पास से फिर आ और देख कि वे क्या जवाब देते हैं ? (२८) मलका (रानी) ने कहा कि दरबार वालो ! मेरी तरफ़ एक नामा (पत्र) डाला गया है। (२९) वह सुलेमान की तरफ़ से है और (मज़्मून यह है) कि शुरू ख़ुदा का नाम ले

☐ सज्दः ८

अल्ला तअ्-लू अलय्-य वअ्तूनी मुस्लिमीन ★ (३१) क़ालत् या अय्युहल्-म-लउ अफ़्तूनी फ़ी अम्रीमा कुन्तु क़ाति-अ-तन् अम्-रन् हत्ता तश-हदून (३२) क़ालू नह्नु उलू क़ुव्वतिंव-व उलू बअ्सिन् शदीदिंव-वल्-अम्रु इलैकि फ़न्ज़ुरी माज़ा तअ्-मुरीन (३३) क़ालत् इन्नल्मुलू-क इज़ा द-ख़लू क़र-य-तन् अफ़्सदूहा व ज-अलू अअिज़्ज़-त अह्लिहा अज़िल्ल-तन् व कज़ालि-क यफ़्-अलून (३४) व इन्नी मुर्सि-लतुन् इलैहिम् बिहदिय्यतिन् फ़नाज़ि-र-तुम् बि-म यर्जिअुल्-मुर्सलून (३५) फ़-लम्मा जा-अ सुलैमा-न क़ा-ल अतुमिद्दूननि बिमालिन् फ़मा आतानि-यल्लाहु ख़ैरुम्मिम्मा आताकुम् बल् अन्तुम् बिहदिय्यतिकुम् तफ़्-रहून (३६) इर्जिअ् इलैहिम् फ़-ल-नअ्तियन्नहुम् बिजुनूदिल्ला क़ि-ब-ल लहुम् बिहा व लनुख़्रिजन्नहुम् मिन्हा अज़िल्ल-तंव्-व हुम् साग़िरून (३७) क़ा-ल या अय्युहल्म-लउ अय्युकुम् यअ्तीनी बिअर्शिहा क़ब्-ल अंय्यअ्तूनी मुस्लिमी-न (३८) क़ा-ल अिफ़्रीतुम्-मिनल्जिन्नि अ-न आती-क बिही क़ब्-ल अन् तक़ू-म मिम्मक़ामि-क व इन्नी अलैहि लक़विय्युन् अमीन (३९) क़ालल्लज़ी अिन्दहू अिल्मुम्मिनल्-किताबि अ-न आती-क बिही क़ब्-ल अंय्यर-तद्-द इलै-क तर्फ़ु-क फ़-लम्मा रआहु मुस्तक़िर्रन् अिन्दहू क़ा - ल हाज़ा मिन् फ़ज़्लि रब्बी लियब्लु - वनी अ - अश्कुरु अम् अक्फ़ुरु व मन् श-क-र फ़-इन्नमा यश्कुरु लिनफ़्सिही व मन् क-फ़-र फ़-इन्-न रब्बी ग़निय्युन् करीम (४०) क़ा-ल नक्किरू लहा अर्-शहा नन्ज़ुर् अ-तह्-तदी अम् तकूनु मिनल्लज़ी-न ला यह-तदून (४१) फ़-लम्मा जा-अत् क़ी-ल अहाकज़ा अर्शुकि क़ालत् क-अन्नहू हु-व व ऊतीनल्-अिल् - म मिन् क़ब्लिहा व कुन्ना मुस्लिमीन (४२) व सद्दहा मा कानत् तअ्-बुदु मिन्दूनिल्लाहि इन्नहा कानत् मिन् क़ौमिन् काफ़िरीन (४३)

النمل ٢٧ — ٣٠٣ — وقال الذين ١٩

الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝ اَلَّا تَعْلُوْا عَلَيَّ وَاْتُوْنِيْ مُسْلِمِيْنَ ۝ قَالَتْ يٰۤاَيُّهَا الْمَلَؤُا
اَفْتُوْنِيْ فِيْۤ اَمْرِيْ مَا كُنْتُ قَاطِعَةً اَمْرًا حَتّٰى تَشْهَدُوْنِ ۝ قَالُوْا نَحْنُ اُولُوْا
قُوَّةٍ وَّاُولُوْا بَاْسٍ شَدِيْدٍ وَّالْاَمْرُ اِلَيْكِ فَانْظُرِيْ مَاذَا تَاْمُرِيْنَ ۝ قَالَتْ
اِنَّ الْمُلُوْكَ اِذَا دَخَلُوْا قَرْيَةً اَفْسَدُوْهَا وَجَعَلُوْۤا اَعِزَّةَ اَهْلِهَاۤ اَذِلَّةً ۚ وَكَذٰلِكَ
يَفْعَلُوْنَ ۝ وَاِنِّيْ مُرْسِلَةٌ اِلَيْهِمْ بِهَدِيَّةٍ فَنٰظِرَةٌۢ بِمَ يَرْجِعُ الْمُرْسَلُوْنَ ۝
فَلَمَّا جَآءَ سُلَيْمٰنَ قَالَ اَتُمِدُّوْنَنِ بِمَالٍ فَمَاۤ اٰتٰىنِۦَ اللّٰهُ خَيْرٌ مِّمَّاۤ اٰتٰىكُمْ
بَلْ اَنْتُمْ بِهَدِيَّتِكُمْ تَفْرَحُوْنَ ۝ اِرْجِعْ اِلَيْهِمْ فَلَنَاْتِيَنَّهُمْ بِجُنُوْدٍ لَّا قِبَلَ
لَهُمْ بِهَا وَلَنُخْرِجَنَّهُمْ مِّنْهَاۤ اَذِلَّةً وَّهُمْ صٰغِرُوْنَ ۝ قَالَ يٰۤاَيُّهَا الْمَلَؤُا
اَيُّكُمْ يَاْتِيْنِيْ بِعَرْشِهَا قَبْلَ اَنْ يَّاْتُوْنِيْ مُسْلِمِيْنَ ۝ قَالَ عِفْرِيْتٌ مِّنَ
الْجِنِّ اَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ قَبْلَ اَنْ تَقُوْمَ مِنْ مَّقَامِكَ ۚ وَاِنِّيْ عَلَيْهِ لَقَوِيٌّ اَمِيْنٌ ۝
قَالَ الَّذِيْ عِنْدَهٗ عِلْمٌ مِّنَ الْكِتٰبِ اَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ قَبْلَ اَنْ يَّرْتَدَّ اِلَيْكَ
طَرْفُكَ ؕ فَلَمَّا رَاٰهُ مُسْتَقِرًّا عِنْدَهٗ قَالَ هٰذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّيْ ۖ لِيَبْلُوَنِيْۤ
ءَاَشْكُرُ اَمْ اَكْفُرُ ؕ وَمَنْ شَكَرَ فَاِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ رَبِّيْ
غَنِيٌّ كَرِيْمٌ ۝ قَالَ نَكِّرُوْا لَهَا عَرْشَهَا نَنْظُرْ اَتَهْتَدِيْۤ اَمْ تَكُوْنُ مِنَ
الَّذِيْنَ لَا يَهْتَدُوْنَ ۝ فَلَمَّا جَآءَتْ قِيْلَ اَهٰكَذَا عَرْشُكِ ؕ قَالَتْ كَاَنَّهٗ هُوَ ۚ
وَاُوْتِيْنَا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهَا وَكُنَّا مُسْلِمِيْنَ ۝ وَصَدَّهَا مَا كَانَتْ تَّعْبُدُ مِنْ
دُوْنِ اللّٰهِ ؕ اِنَّهَا كَانَتْ مِنْ قَوْمٍ كٰفِرِيْنَ ۝ قِيْلَ لَهَا ادْخُلِي الصَّرْحَ ۚ فَلَمَّا رَاَتْهُ

★रु. २/१७ आ १७

कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है। (३०) (बाद इस के यह) कि मुझ से सर-कशी न करो और इताअत गुज़ार हो कर मेरे पास चले आओ। (३१)★

(ख़त सुना कर) कहने लगी कि ऐ दरबारियो! मेरे इस मामले में मुझे मश्विरा दो, जब तक तुम हाज़िर न हो (और सलाह न दो), मैं किसी काम का फ़ैसला करने वाली नहीं। (३२) वे बोले कि हम बड़े ज़ोरावर और सख़्त लड़ाकू हैं और हुक्म आपके अख़्तियार में है, तो जो हुक्म दीजिएगा, (उसके नतीजे पर) नज़र कर लीजिएगा। (३३) उसने कहा कि बादशाह जब किसी शहर में दाख़िल होते हैं, तो उसको तबाह कर देते हैं और वहां के इज़्ज़त वालों को ज़लील कर दिया करते हैं और इसी तरह यह भी करेंगे। (३४) और मैं उनकी तरफ़ कुछ तोहफ़ा भेजती हूं और देखती हूं कि क़ासिद क्या जवाब लाते हैं। (३५) जब (क़ासिद) सुलेमान के पास पहुंचा, तो (सुलेमान ने) कहा, क्या तुम मुझे माल से मदद देना चाहते हो, जो कुछ ख़ुदा ने मुझे अता फ़रमाया है, वह उस से बेहतर है, जो तुम्हें दिया है। सच तो यह है कि अपने तोहफ़े से तुम ही ख़ुश होते होगे। (३६) उनके पास वापस जाओ। हम उन पर ऐसे लश्कर लेकर हमला करेंगे, जिन के मुक़ाबले की उन में ताक़त न होगी और उनको वहां से बे-इज़्ज़त करके निकाल देंगे और वे ज़लील होंगे। (३७) (सुलेमान ने) कहा कि ऐ दरबार वालो! कोई तुम में ऐसा है कि इससे पहले कि वे लोग फ़रमांबरदार हो कर हमारे पास आएं, मलका का तख़्त मेरे पास ले आए। (३८) जिन्नों में से एक क़वी हैकल जिन्न ने कहा कि इस से पहले कि आप अपनी जगह से उठें, मैं उस को आप के पास ला हाज़िर करता हूं और मुझे इस पर क़ुदरत (भी) हासिल है (और) अमानतदार (भी) हूं। (३९) एक शख़्स जिसको (ख़ुदा की) किताब का इल्म था, कहने लगा कि मैं आप की आंख के झपकने से पहले-पहले उसे आप के पास हाज़िर किए देता हूं। जब (सुलेमान ने) तख़्त को अपने पास रखा हुआ देखा, तो कहा कि यह मेरे परवरदिगार का फ़ज़्ल है, ताकि मुझे आज़माए कि मैं शुक्र करता हूं या नेमत की ना-शुक्री करता हूं और जो शुक्र करता है तो अपने ही फ़ायदे के लिए शुक्र करता है और जो ना-शुक्री करता है, तो मेरा परवरदिगार बे-परवाह (और) करम वाला है। (४०) (सुलेमान ने) कहा कि मलका के (अक़्ल के इम्तिहान के) लिए उस के तख़्त की सूरत बदल दो, देखें कि वह सूझ रखती है या उन लोगों में से है, जो सूझ नहीं रखते। (४१) जब वह आ पहुंची, तो पूछा गया कि क्या आप का तख़्त भी इसी तरह का है? उस ने कहा कि यह तो गोया बिल्कुल उसी जैसा है और हमको इससे पहले ही (सुलेमान की बड़ाई और शान का) इल्म हो गया था और हम फ़रमांबरदार हैं। (४२) और वह जो ख़ुदा के सिवा (और की) पूजा करती थी, (सुलेमान ने) उस को उस से मना किया (इस से पहले तो) वह काफ़िरों में से थी। (४३) (फिर) उस से कहा

★रु. २/१७ आ १७

क़ी-ल ल-हदख़ुलिस्सर्-ह ᓚ फ़-लम्मा र-अत्हु हसि-बत-हु लुज्जतंव्-व क-श-फ़त् अन् साक़ैहा ط क़ा-ल इन्नहू सर्-हुम् - मुमर्रदुम् - मिन् क़वारी-र ۬ क़ालत् रब्बि इन्नी ज़-लम्तु नफ़्सी व अस्-लम्तु म-अ सुलैमा-न लिल्लाहि रब्बिल्-आलमीन★ (४४) व ल-क़द् अर्सल्ना इला समू-द अख़ाहुम् सालिहन् अनिअ्-बुदुल्ला-ह फ़-इज़ा-हुम् फ़रीक़ानि यख़्तसिमून (४५) क़ा-ल या क़ौमि लि-म तस्तअ्-जिलू-न बिस्सय्यिअति क़ब्-लल्-ह-स-नति ᓚ लौ ला तस्तग़् - फ़िरूनल्ला-ह ल-अल्लकुम् तुर-हमून (४६) क़ालुत्तय्यर्ना बि-क व बिमम्म-अ्-क ط क़ा-ल ताइरुकुम् अिन्दल्लाहि बल् अन्तुम् क़ौमुन् तुफ़्तनून (४७) व का-न फ़िल्मदीनति तिस्अतु रह्तिंय्युफ़्सिदू-न फ़िल्अर्ज़ि व ला युस्लिहून (४८) क़ालू तक़ासमू बिल्लाहि लनुबय्यितन्नहू व अह्-लहू सुम्-म लनक़ूलन्-न लिवलिय्यिही मा शहिद्-ना मह्-लि-क अह्लिही व इन्ना ल-सादिक़ून (४९) व म-करू मक्-रंव्-व म-कर्ना मक्-रंव्वहुम् ला यश्अुरून (५०) फ़न्ज़ुर् कै-फ़ का-न आक़िबतु मक्रिहिम् ۙ अन्ना दम्मर्नाहुम् व क़ौमहुम् अज्मअीन (५१) फ़-तिल-क बुयूतुहुम् ख़ावि-य-तम्-बिमा ज़-लमू ط इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयतल्-लिक़ौमिंय्यअ्-लमून (५२) व अन्जैनल्लज़ी-न आमनू व कानू यत्तक़ून (५३) व लूतन् इज़् क़ा-ल लिक़ौमिही अ-तअ्-तूनल्-फ़ाहि-श-त व अन्तुम् तुब्सिरून (५४) अ-इन्नकुम् ल-तअ्तूनर्-रिजा-ल शह्-व-तम् - मिन् दूनिन्निसाइ ط बल् अन्तुम् क़ौमुन् तज्-हलून (५५) फ़मा का-न जवा-ब क़ौमिही इल्ला अन् क़ालू अख़्रिजू आ - ल लूतिम् - मिन् क़र्यतिकुम् ᓚ इन्नहुम् उनासुंय्य-त-तह्-हरून (५६) फ़-अन्जैनाहु व अह्-लहू इल्लम्र-अ-तहू ۫ क़द्दर्नाहा मिनल्ग़ाबिरीन (५७) व अम्तर्ना अलैहिम् म-त्-रन् ᓚ फ़सा-अ म-त-रुल्-मुन्ज़रीन ★ (५८) क़ुलिल्-हम्दु लिल्लाहि व सलामुन् अला अिबादिहिल्-लज़ीनस् - तफ़ा ط आल्लाहु ख़ैरुन् अम्मा युश्रिकून ط (५९)

حَسِبَتْهُ لُجَّةً وَّكَشَفَتْ عَنْ سَاقَيْهَا ۚ قَالَ إِنَّهُ صَرْحٌ مُّمَرَّدٌ مِّنْ قَوَارِيْرَ ۬
قَالَتْ رَبِّ إِنِّيْ ظَلَمْتُ نَفْسِيْ وَأَسْلَمْتُ مَعَ سُلَيْمٰنَ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝
وَلَقَدْ أَرْسَلْنَآ إِلٰى ثَمُوْدَ أَخَاهُمْ صٰلِحًا أَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ فَإِذَا هُمْ فَرِيْقٰنِ
يَخْتَصِمُوْنَ ۝ قَالَ يٰقَوْمِ لِمَ تَسْتَعْجِلُوْنَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ ۚ لَوْلَا
تَسْتَغْفِرُوْنَ اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۝ قَالُوا اطَّيَّرْنَا بِكَ وَبِمَنْ مَّعَكَ ۚ قَالَ
طٰٓئِرُكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ تُفْتَنُوْنَ ۝ وَكَانَ فِي الْمَدِيْنَةِ تِسْعَةُ
رَهْطٍ يُّفْسِدُوْنَ فِي الْأَرْضِ وَلَا يُصْلِحُوْنَ ۝ قَالُوْا تَقَاسَمُوْا بِاللّٰهِ لَنُبَيِّتَنَّهٗ
وَأَهْلَهٗ ثُمَّ لَنَقُوْلَنَّ لِوَلِيِّهٖ مَا شَهِدْنَا مَهْلِكَ أَهْلِهٖ وَإِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ۝
وَمَكَرُوْا مَكْرًا وَّمَكَرْنَا مَكْرًا وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ مَكْرِهِمْ ۙ أَنَّا دَمَّرْنٰهُمْ وَقَوْمَهُمْ أَجْمَعِيْنَ ۝ فَتِلْكَ بُيُوْتُهُمْ خَاوِيَةًۢ بِمَا
ظَلَمُوْا ۗ إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝ وَأَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ
كَانُوْا يَتَّقُوْنَ ۝ وَلُوْطًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ أَتَأْتُوْنَ الْفٰحِشَةَ وَأَنْتُمْ تُبْصِرُوْنَ ۝
أَئِنَّكُمْ لَتَأْتُوْنَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّنْ دُوْنِ النِّسَآءِ ۚ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُوْنَ ۝
فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ إِلَّآ أَنْ قَالُوْٓا أَخْرِجُوْٓا اٰلَ لُوْطٍ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ
إِنَّهُمْ أُنَاسٌ يَّتَطَهَّرُوْنَ ۝ فَأَنْجَيْنٰهُ وَأَهْلَهٗٓ إِلَّا امْرَأَتَهٗ ۫ قَدَّرْنٰهَا مِنَ
الْغٰبِرِيْنَ ۝ وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ۚ فَسَآءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِيْنَ ۝ قُلِ
الْحَمْدُ لِلّٰهِ وَسَلٰمٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى ۗ ءٰٓللّٰهُ خَيْرٌ أَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝

★रु. ३/१८ आ १३ ★रु. ४/१९ आ १४

गया कि महल में चलिए। जब उस ने उस (के फ़र्श) को देखा, तो उसे पानी का हौज़ समझा और (कपड़ा उठा कर) अपनी पिंडुलियां खोल दीं। (सुलेमान ने) कहा, यह ऐसा महल है, जिसके (नीचे भी) शीशे जड़े हुए हैं। वह बोल उठी कि परवरदिगार! मैं अपने आप पर ज़ुल्म करती रही थी और (अब) मैं सुलेमान के हाथ पर[1] ख़ुदा-ए-रब्बुल आलमीन पर ईमान लाती हूं। (४४)★

और हम ने समूद की तरफ़ उन के भाई सालेह को भेजा कि ख़ुदा की इबादत करो, तो वे दो फ़रीक़ हो कर आपस में झगड़ने लगे। (४५) (सालेह ने) कहा कि ऐ क़ौम! तुम भलाई से पहले बुराई के लिए क्यों जल्दी करते हो (और) ख़ुदा से बख़्शिश क्यों नहीं मांगते, ताकि तुम पर रहम किया जाए।[2] (४६) वे कहने लगे कि तुम और तुम्हारे साथी हमारे लिए बुरे शगून हैं (सालेह ने) कहा कि तुम्हारी बद-शगूनी ख़ुदा की तरफ़ से है, बल्कि तुम ऐसे लोग हो जिन की आज़माइश की जाती है। (४७) और शहर में नौ शख़्स थे, जो मुल्क में फ़साद किया करते थे और इस्लाह से काम नहीं लेते थे। (४८) कहने लगे कि ख़ुदा की क़सम खाओ कि हम रात को उस पर और उस के घर वालों पर छापा मारेंगे, फिर उस के वारिसों से कह देंगे कि हम तो घर वालों की हलाकत की जगह पर गये ही नहीं और हम सच कहते हैं। (४९) और वे एक चाल चले और हम भी एक चाल चले और उनको कुछ ख़बर न हुई। (५०) तो देख लो कि उन की चाल का अंजाम कैसा हुआ। हम ने उन को और उन की क़ौम, सब को हलाक कर डाला। (५१) अब ये उन के घर उन के ज़ुल्म की वजह से ख़ाली पड़े हैं। जो लोग समझ रखते हैं, उनके लिए इसमें निशानी है। (५२) और जो लोग ईमान लाए और डरते थे, उनको हम ने निजात दी। (५३) और लूत को (याद करो), जब उन्हों ने अपनी क़ौम से कहा कि तुम बे-हयाई (के काम) क्यों करते हो और तुम देखते हो। (५४) क्या तुम औरतों को छोड़ कर लज़्ज़त (हासिल करने) के लिए मर्दों की तरफ़ मायल होते हो। सच तो यह है कि तुम जाहिल लोग हो। (५५) तो उन की क़ौम के लोग (बोले, तो) यह बोले और इस के सिवा उन का कुछ जवाब न था कि लूत के घर वालों को अपने शहर से निकाल दो। ये लोग पाक बनाना चाहते हैं। (५६) तो हम ने उन को और उन के घर वालों को निजात दी, मगर उन की बीवी, कि उस के बारे में मुक़र्रर कर रखा था (कि वह) पीछे रह जाने वालों में होगी। (५७) और हम ने उन पर मेंह बरसाया सो (जो) मेंह उन लोगों पर (बरसा), जिन को मुतनब्बह कर दिया गया था, बुरा था। (५८)★

कह दो कि सब तारीफ़ ख़ुदा ही को (मुनासिब) है और उस के बन्दों पर सलाम है, जिन को उस ने चुन लिया। भला ख़ुदा बेहतर है या वे, जिन को ये (उस का) शरीक बनाते हैं। (५९)

---

१. लफ़्ज़ों का तर्जुमा है 'सुलेमान के साथ' मगर यहां मुराद है 'सुलेमान के हाथ पर', इस लिए हम ने यही तर्जुमा किया है।

२. हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम उन लोगों को ख़ुदा पर ईमान लाने के लिए कहते थे कि ईमान लाओगे तो तुम्हारा भला होगा, वरना तुम पर अज़ाब नाज़िल होगा। वे लोग न ईमान लाते थे, न भलाई के लिए कोशिश करते थे, बल्कि यह कहते थे कि वह अज़ाब, जिस से तुम हम को डराते हो, जल्दी नाज़िल कराओ। सालेह अलैहिस्सलाम ने कहा, तुम अज़ाब के लिए क्यों जल्दी मचाते हो। ख़ुदा से बख़्शिश मांगो, ताकि बजाए अज़ाब के तुम पर ख़ुदा की रहमत नाज़िल हो।

★रु. ३/१८ आ १३ ★रु. ४/१९ आ १४

बीसवां पारः अम्मन ख़-ल-क़स्समावाति

सूरतुन् नम्लि आयात ६० से ६३

अम्मन् ख़-ल-क़स्समावाति वल्अर्-ज़ व अन्ज़-ल लकुम् मिनस्समाइ मा-अन् फ़-अम्बत्ना बिही हदाइ-क ज़ा-त बह्जतिन् मा का-न लकुम् अन् तुम्बितू श-ज-रहा अ इलाहुम्-म - अल्लाहि बल् हुम् क़ौमुंय्यअ्-दिलून (६०) अम्मन् ज-अ-लल्अर-ज़ क़रारंव्-व ज-अ-ल ख़िलालहा अन्हारंव्-व ज-अ-ल लहा रवासि-य व ज-अ-ल बैनल्-बह्‌रैनि हाजिज़न् अ इलाहुम्-म-अल्लाहि बल् अक्सरुहुम् ला यअ्-लमून (६१) अम्मंय्युजीबुल्-मुज़्तर्-र इज़ा दआहु व यक्शिफ़ुस्सू-अ व यज्-अलुकुम् ख़ु-ल-फ़ा-अल् - अर्ज़ि अ इलाहुम्-म-अल्लाहि क़लीलम्मा त - ज़क्करून (६२) अम्मंय्यह्दीकुम् फ़ी ज़ुलुमातिल्-बर्रि वल्बह्‌रि व मंय्युर्सिलुर-रिया-ह बुश्रम्बै - न यदै रह्-मतिही अ इलाहुम् - म - अल्लाहि तआलल्लाहु अम्मा युश्रिकून (६३) अम्मंय्यब्दउल्-ख़ल-क़ सुम्-म युईदुहू व मंय्यर्ज़ुक़ुकुम् मिनस्समाइ वल्अर्ज़ि अ इलाहुम्-म अल्लाहि क़ुल् हातू बुर्हानकुम् इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (६४) क़ुल् ला यअ्-लमु मन् फ़िस्समावाति वल्अर्ज़िल्ग़ै-ब इल्लल्लाहु व मा यश्अुरू-न अय्या-न युब-असून (६५) बलिद्दा-र-क इल्मुहुम् फ़िल्आख़िरति قف बल् हुम् फ़ी शक्किम् - मिन्हा قف बल् हुम् मिन्हा अमून ★ (६६) व क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू अ इज़ा कुन्ना तुराबंव्-व आबाउना अ-इन्ना ल-मुख़्रजून (६७) ल - क़द् वुअिद्ना हाज़ा नह्नु व आबाउना मिन् क़ब्लु इन् हाज़ा इल्ला असातीरुल्-अव्वलीन (६८) क़ुल् सीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़न्ज़ुरू कै-फ़ का-न आक़िबतुल्-मुज्रिमीन (६९) व ला तह्-ज़न् अलैहिम् व ला तकुन् फ़ी ज़ैक़िम्-मिम्मा यम्कुरून (७०)

أَمَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ وَأَنْزَلَ لَكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَآءً فَأَنْۢبَتْنَا
بِهٖ حَدَآئِقَ ذَاتَ بَهْجَةٍ مَا كَانَ لَكُمْ أَنْ تُنْۢبِتُوْا شَجَرَهَا ءَإِلٰهٌ مَّعَ
اللّٰهِ بَلْ هُمْ قَوْمٌ يَّعْدِلُوْنَ ۝ أَمَّنْ جَعَلَ الْأَرْضَ قَرَارًا وَّ
جَعَلَ خِلٰلَهَآ أَنْهٰرًا وَّجَعَلَ لَهَا رَوَاسِيَ وَجَعَلَ بَيْنَ الْبَحْرَيْنِ
حَاجِزًا ءَإِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ أَمَّنْ يُّجِيْبُ
الْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوْٓءَ وَيَجْعَلُكُمْ خُلَفَآءَ الْأَرْضِ
ءَإِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ۝ أَمَّنْ يَّهْدِيْكُمْ فِيْ ظُلُمٰتِ
الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَنْ يُّرْسِلُ الرِّيٰحَ بُشْرًاۢ بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهٖ ءَإِلٰهٌ
مَّعَ اللّٰهِ تَعٰلَى اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝ أَمَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ
وَمَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْأَرْضِ ءَإِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ قُلْ هَاتُوْا
بُرْهَانَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ قُلْ لَّا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ
وَالْأَرْضِ الْغَيْبَ إِلَّا اللّٰهُ وَمَا يَشْعُرُوْنَ أَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ ۝ بَلِ
ادّٰرَكَ عِلْمُهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْهَا بَلْ هُمْ مِّنْهَا
عَمُوْنَ ۝ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا ءَإِذَا كُنَّا تُرٰبًا وَّاٰبَآؤُنَآ أَئِنَّا
لَمُخْرَجُوْنَ ۝ لَقَدْ وُعِدْنَا هٰذَا نَحْنُ وَاٰبَآؤُنَا مِنْ قَبْلُ إِنْ
هٰذَآ إِلَّآ أَسَاطِيْرُ الْأَوَّلِيْنَ ۝ قُلْ سِيْرُوْا فِي الْأَرْضِ فَانْظُرُوْا
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِيْنَ ۝ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُنْ

★रु० ५/१ आ ८

भला किस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और (किस ने) तुम्हारे लिए आसमान से पानी बरसाया ? (हम ने।) फिर हम ने उस से हरे-भरे बाग़ उगाए। तुम्हारा काम तो न था कि तुम उन के पेड़ों को उगाते, तो क्या ख़ुदा के साथ कोई और भी माबूद है ? (हरगिज़ नहीं,) बल्कि ये लोग रास्ते से अलग हो रहे हैं। (६०) भला किस ने ज़मीन को क़रारगाह बनाया और उस के बीच नहरें बनायीं और उस के लिए पहाड़ बनाए और (किस ने) दो दरियाओं के बीच ओट बनायी। (यह सब कुछ ख़ुदा ने ही बनाया।) तो क्या ख़ुदा के साथ कोई और माबूद भी है ? (हरगिज़ नहीं,) बल्कि उन में अक्सर समझ नहीं रखते। (६१) भला कौन बे-क़रार की इल्तिजा क़ुबूल करता है, जब वह उस से दुआ करता है। और (कौन उस की) तक्लीफ़ को दूर करता है और (कौन) तुम को ज़मीन में (अगलों का) जानशीन बनाता है ? (यह सब कुछ ख़ुदा करता है) तो क्या ख़ुदा के साथ कोई और माबूद भी है ? (हरगिज़ नहीं, मगर) तुम बहुत कम ग़ौर करते हो ? (६२) भला कौन तुम को जंगल और दरिया के अंधेरों में रास्ता बताता और (कौन) हवाओं को अपनी रहमत के आगे ख़ुशख़बरी बना कर भेजता है ? (यह सब कुछ ख़ुदा करता है,) तो क्या ख़ुदा के साथ कोई और माबूद भी है ? (हरगिज़ नहीं,) ये लोग जो शिर्क करते हैं, ख़ुदा (की शान) उस से बुलंद है। (६३) भला कौन ख़ल्क़त को पहली बार पैदा करता, फिर उस को बार-बार पैदा करता रहता है और (कौन) तुम को आसमान और ज़मीन से रोज़ी देता है ? (यह सब कुछ ख़ुदा करता है,) तो क्या ख़ुदा के साथ कोई और माबूद भी है ? (हरगिज़ नहीं।) कह दो कि (मुश्रिको !) अगर तुम सच्चे हो, तो दलील पेश करो। (६४) कह दो कि जो लोग आसमानों और ज़मीन में हैं, ख़ुदा के सिवा ग़ैब की बातें नहीं जानते और न यह जानते हैं कि (ज़िंदा कर के) उठाए जाएंगे। (६५) बल्कि आख़िरत (के बारे) में उन का इल्म 'मुन्तही' (ख़त्म) हो चुका है।[1] बल्कि वे इस से शक में हैं, बल्कि इस से अंधे हो रहे हैं। (६६)★

और जो लोग काफ़िर हैं, कहते हैं कि जब हम और हमारे बाप-दादा मिट्टी हो जाएंगे, तो क्या हम फिर (क़ब्रों) से निकाले जाएंगे। (६७) यह वायदा हम से और हमारे बाप-दादा से पहले से होता चला आया है। (कहां का उठना और कैसी क़ियामत !) यह तो सिर्फ़ पहले लोगों की कहानियां हैं। (६८) कह दो कि मुल्क में चलो-फिरो, फिर देखो कि गुनाहगारों का अंजाम क्या हुआ है ? (६९) और उन (के हाल) पर ग़म न करना और न उन चालों से, जो ये कर रहे हैं,

१. यानी आख़िरत के बारे में उन का इल्म कुछ भी नहीं है और उस का ख़ात्मा हो गया है।

★रु. ५/१ आ ८

व यक़ूलू-न मता हाज़ल्वअ्-दु इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (७१) क़ुल् अ़सा अंय्यकू-न
रदि-फ़ लकुम् बअ्-ज़ुल्लज़ी तस्तअ्-जिलून (७२) व इन्-न रब्ब-क लज़ू फ़ज़्लिन्
अ़लन्नासि व लाकिन्-न अक्स-रहुम् ला यश्कुरून (७३) व इन-न रब्ब-क ल-यअ्-लमु
मा तुकिन्नु सुदूरुहुम् व मा-युअ्-लिनून (७४) व मा मिन् ग़ाइबतिन् फ़िस्समाइ
वल्अर्ज़ि इल्ला फ़ी किताबिम् - मुबीन
(७५) इन्-न हाज़ल्क़ुरआ-न यक़ुस्सु अ़ला
बनी इस्राई-ल अक्स-रल्लज़ी हुम् फ़ीहि
यख़्तलिफ़ून (७६) व इन्नहू ल-हुदंव्-व
रह्-मतुल्-लिल्मुअ्मिनीन (७७) इन्-न
रब्ब-क यक़्ज़ी बै-नहुम् बिहुक्मिही ۚ व
हुवल्अ़ज़ीज़ुल् - अ़लीम ۚ (७८)
फ़ - त - वक्कल् अ़-लल्लाहि ۖ इन्न - क
अ़लल् - ह़क़्क़िल्-मुबीन (७९) इन्न-क
ला तुस्मिउ़ल्मौता व ला तुस्मिउ़स्-
सुम्मद्दुआ़-अ इज़ा वल्लौ मुद्बिरीन (८०)
व मा अन् - त बिहादिल् - उ़म्यि अ़न्
ज़लालतिहिम् ۖ इन् तुस्मिउ़ इल्ला मंय्युअ्मिनु बिआयातिना फ़हुम्
मुस्लिमून (८१) व इज़ा व-क़-अ़ल्क़ौलु अ़लैहिम् अख़्-रज्-ना लहुम् दाब्बतम्
मिनल्अर्ज़ि तुकल्लिमुहुम् ۙ अन्नन्ना-स कानू बिआयातिना ला यूक़िनून★(८२)
व यौ-म नह़्शुरु मिन् कुल्लि उम्मतिन् फ़ौजम्मिम्-मंय्युकज़्ज़िबु बिआयातिना
फ़हुम् यूज़अ़ून (८३) ह़त्ता इज़ा जाऊ क़ा-ल अ-कज़्ज़ब्तुम् बिआयाती व लम्
तुह़ीतू बिहा अ़िल्मन् अम्माज़ा कुन्तुम् तअ्-मलून (८४) व व-क़-अ़ल्क़ौलु अ़लैहिम्
बिमा ज़-लमू फ़हुम् ला यन्तिक़ून (८५) अ-लम् यरौ अन्ना ज-अ़ल-नल्लै-ल लियस्कुनू
फ़ीहि वन्नहा-र मुब्सिरन् ۚ इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल्-लिक़ौमिंय्युअ्मिनून (८६)

فِي ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُونَ ۝ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ
صَادِقِينَ ۝ قُلْ عَسَىٰ أَن يَكُونَ رَدِفَ لَكُم بَعْضُ الَّذِي
تَسْتَعْجِلُونَ ۝ وَإِنَّ رَبَّكَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ
لَا يَشْكُرُونَ ۝ وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُورُهُمْ وَمَا
يُعْلِنُونَ ۝ وَمَا مِنْ غَائِبَةٍ فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِلَّا فِي كِتَابٍ
مُّبِينٍ ۝ إِنَّ هَٰذَا الْقُرْآنَ يَقُصُّ عَلَىٰ بَنِي إِسْرَائِيلَ أَكْثَرَ
الَّذِي هُمْ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۝ وَإِنَّهُ لَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ ۝
إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُم بِحُكْمِهِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْعَلِيمُ ۝ فَتَوَكَّلْ
عَلَى اللَّهِ ۖ إِنَّكَ عَلَى الْحَقِّ الْمُبِينِ ۝ إِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتَىٰ وَلَا تُسْمِعُ
الصُّمَّ الدُّعَاءَ إِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِينَ ۝ وَمَا أَنتَ بِهَادِي الْعُمْيِ عَن
ضَلَالَتِهِمْ ۖ إِن تُسْمِعُ إِلَّا مَن يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا فَهُم مُّسْلِمُونَ ۝ وَإِذَا
وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ أَخْرَجْنَا لَهُمْ دَابَّةً مِّنَ الْأَرْضِ تُكَلِّمُهُمْ
أَنَّ النَّاسَ كَانُوا بِآيَاتِنَا لَا يُوقِنُونَ ۝ وَيَوْمَ نَحْشُرُ مِن كُلِّ أُمَّةٍ
فَوْجًا مِّمَّن يُكَذِّبُ بِآيَاتِنَا فَهُمْ يُوزَعُونَ ۝ حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوا قَالَ
أَكَذَّبْتُم بِآيَاتِي وَلَمْ تُحِيطُوا بِهَا عِلْمًا أَمَّاذَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝
وَوَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِم بِمَا ظَلَمُوا فَهُمْ لَا يَنطِقُونَ ۝ أَلَمْ يَرَوْا
أَنَّا جَعَلْنَا اللَّيْلَ لِيَسْكُنُوا فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ

★रु० ६/२ आ १६

तंगदिल होना। (७०) और कहते हैं कि अगर तुम सच्चे हो, तो यह वायदा कब पूरा होगा? (७१) कह दो कि जिस (अज़ाब) के लिए तुम जल्दी कर रहे हो, शायद उस में से कुछ तुम्हारे नज़दीक आ पहुंचा हो। (७२) और तुम्हारा परवरदिगार तो लोगों पर फ़ज़्ल करने वाला है, लेकिन इन में से अक्सर शुक्र नहीं करते। (७३) और जो बातें उन के सीनों में छिपी होती हैं और जो काम वे ज़ाहिर करते हैं, तुम्हारा परवरदिगार उन (सब) को जानता है। (७४) और आसमानों और ज़मीन में कोई छिपी चीज़ नहीं है, मगर (वह) रोशन किताब में (लिखी हुई) है। (७५) बेशक यह क़ुरआन बनी इस्राईल के सामने अक्सर बातें, जिन में वे इख़्तिलाफ़ करते हैं, बयान कर देता है। (७६) और बेशक यह मोमिनों के लिए हिदायत और रहमत है। (७७) तुम्हारा परवरदिगार (क़ियामत के दिन) उन में अपने हुक्म से फ़ैसला कर देगा और वह ग़ालिब (और) इल्म वाला है। (७८) तो ख़ुदा पर भरोसा रखो, तुम तो खुले हक़ पर हो। (७९) कुछ शक नहीं कि तुम मुर्दों को (बात) नहीं सुना सकते और न बहरों को, जब कि वे पीठ फेर कर फिर जाएं, आवाज़ सुना सकते हो। (८०) और न अंधों को गुमराही से (निकाल कर) रास्ता दिखा सकते हो। तुम तो उन्हीं को सुना सकते हो, जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं और वे फ़रमांबरदार हो जाते हैं। (८१) और जब उन के बारे में (अज़ाब का) वायदा पूरा होगा, तो हम उन के लिए ज़मीन में से एक जानवर निकालेंगे, जो उन से बयान कर देगा, इस लिए कि लोग हमारी आयतों पर ईमान नहीं लाते थे। (८२)★

और जिस दिन हम हर उम्मत में से उस गिरोह को जमा करेंगे, जो हमारी आयतों को झुठलाते थे, तो उन की जमाअतबंदी कर दी जाएगी। (८३) यहां तक कि जब (सब) आ जाएंगे तो (ख़ुदा) फ़रमाएगा कि क्या तुम ने मेरी आयतों को झुठला दिया था और तुम ने (अपने) इल्म से उन पर एहाता तो किया ही न था। भला तुम क्या करते थे? (८४) और उन के ज़ुल्म की वजह से उन के हक़ में (अज़ाब) का वायदा पूरा हो कर रहेगा, तो वे बोल भी न सकेंगे। (८५) क्या उन्होंने नहीं देखा कि हम ने रात को (इस लिए) बनाया है कि इस में आराम करें और दिन को रोशन (बनाया है कि इस में काम करें)। बेशक इस में मोमिन लोगों के लिए निशानियां हैं। (८६) और जिस दिन

★रु. ६/२ आ १६

व यौ-म युन्फ़ख़ु फ़िस्सूरि फ़-फ़ज़ि-अ मन् फ़िस्समावाति व मन् फ़िल् अर्ज़ि इल्ला मन् शा-अल्लाहु ♭ व कुल्लुन् अतौहु दाख़िरीन (८७) व त-रल्जिबा-ल तह्-सबुहा जामि-द-तंव्-व हि-य तमुर्रु मर्रस्सहाबि ♭ सुन्-अल्लाहिल्लज़ी अत्-क़-न कुल्-ल शैइन् ♭ इन्नहू ख़बीरुम् - बिमा तफ़्-अलून (८८) मन् जा - अ बिल्-ह्-स-नति फ़-लहू ख़ैरुम्-मिन्हा ट व हुम् मिन् फ़-ज़इंय्यौमइज़िन् आमिनून (८९) व मन् जा-अ बिस्सय्यि-अति फ़-कुब्बत् वुजूहुहुम् फ़िन्नारि ♭ हल् तुज्ज़ौ-न इल्ला मा कुन्तुम् तअ्-मलून (९०) इन्नमा उमिर्तु अन् अअ्-बु-द रब् - ब हाज़िहिल्-बल्दतिल्लज़ी हर्र-महा व लहू कुल्लु शैइंव्-व उमिर्तु अन् अकू - न मिनल्मुस्लिमीन ♭ (९१) व अन् अत-लुवल्-क़ुर्आ-न ट फ़-मनिह्तदा फ़-इन्नमा यह्-तदी लिनफ़्सिही ट व मन् ज़ल्-ल फ़-क़ुल् इन्नमा अ-न मिनल्-मुन्ज़िरीन (९२) व क़ुलिल्हम्दु लिल्लाहि सयुरीकुम् आयातिही फ़-तअ्-रिफ़ूनहा ♭ व मा रब्बु-क बिग़ाफ़िलिन् अम्मा तअ्-मलून ★ ९३)

لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝ وَيَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ فَفَزِعَ مَنْ فِي
السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ شَآءَ اللّٰهُ ۚ وَكُلٌّ اَتَوْهُ دٰخِرِيْنَ ۝
وَتَرَى الْجِبَالَ تَحْسَبُهَا جَامِدَةً وَّهِيَ تَمُرُّ مَرَّ السَّحَابِ ۚ صُنْعَ
اللّٰهِ الَّذِيْٓ اَتْقَنَ كُلَّ شَيْءٍ ۚ اِنَّهٗ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَفْعَلُوْنَ ۝ مَنْ جَآءَ
بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ خَيْرٌ مِّنْهَا ۚ وَهُمْ مِّنْ فَزَعٍ يَّوْمَئِذٍ اٰمِنُوْنَ ۝ وَ
مَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَكُبَّتْ وُجُوْهُهُمْ فِي النَّارِ ۚ هَلْ تُجْزَوْنَ اِلَّا
مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝ اِنَّمَآ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ رَبَّ هٰذِهِ الْبَلْدَةِ
الَّذِيْ حَرَّمَهَا وَلَهٗ كُلُّ شَيْءٍ ۫ وَّاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ۝
وَاَنْ اَتْلُوَا الْقُرْاٰنَ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِيْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَ
مَنْ ضَلَّ فَقُلْ اِنَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُنْذِرِيْنَ ۝ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ سَيُرِيْكُمْ
اٰيٰتِهٖ فَتَعْرِفُوْنَهَا ۚ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝
سُوْرَةُ الْقَصَصِ مَكِّيَّةٌ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
طٰسٓمّٓ ۝ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۝ نَتْلُوْا عَلَيْكَ مِنْ نَّبَاِ
مُوْسٰى وَفِرْعَوْنَ بِالْحَقِّ لِقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝ اِنَّ فِرْعَوْنَ عَلَا
فِي الْاَرْضِ وَجَعَلَ اَهْلَهَا شِيَعًا يَّسْتَضْعِفُ طَآئِفَةً مِّنْهُمْ
يُذَبِّحُ اَبْنَآءَهُمْ وَيَسْتَحْيٖ نِسَآءَهُمْ ۚ اِنَّهٗ كَانَ مِنَ الْمُفْسِدِيْنَ ۝

२८ सूरतुल् क़-ससि ४९

(मक्की) इस सूर: में अरबी के ६०११ अक्षर, १४५४ शब्द, ८८ आयतें और ९ रुकूअ़ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

ता-सीम्-मीम् (१) तिल्-क आयातुल् - किताबिल् - मुबीन (२) नत्लू अलै - क मिन् न - बइ मूसा व फ़िर्औ - न बिल्ह़क़्क़ि लिक़ौमिंय्युअ्मिनून (३) इन्-न फ़िर्औ-न अला फ़िल्अर्ज़ि व ज-अ-ल अह्-लहा शि-य - अंय्यस्तज़्अिफ़ु ताइ-फ़ - तम् - मिन्हुम् युज़ब्बिहु अब - ना - अहुम् व यस्तह़्यी निसा - अहुम् ♭ इन्नहू का-न मिनल् - मुफ़्सिदीन (४)

★रु. ७/२ आ ११

सूर फूंका जाएगा, तो जो लोग आसमानों और जो ज़मीन में हैं, सब घबरा उठेंगे, मगर वह जिसे ख़ुदा चाहे और सब उस के पास आजिज़ हो कर चले आएंगे। (८७) और तुम पहाड़ों को देखते हो, तो ख़्याल करते हो कि (अपनी जगह पर) खड़े हैं, मगर वे (उस दिन) इस तरह उड़ते फिरेंगे जैसे बादल। (यह) ख़ुदा की कारीगरी है, जिस ने हर चीज़ को मज़बूत बनाया। बेशक वह तुम्हारे कामों की ख़बर रखता है। (८८) जो शख़्स नेकी ले कर आएगा, तो उस के लिए उस से बेहतर (बदला तैयार) है और ऐसे लोग (उस दिन) घबराहट से बे-ख़ौफ़ होंगे। (८९) और जो बुराई ले कर आएगा, तो ऐसे लोग औंधे मुंह दोज़ख़ में डाल दिए जाएंगे। तुम को तो उन ही आमाल का बदला मिलेगा, जो तुम करते रहे हो। (९०) (कह दो,) मुझ को यही इर्शाद हुआ है कि इस शहर मक्का के मालिक की इबादत करूं, जिस ने इस को मोहतरम (और अदब की जगह) बनाया है और सब चीज़ उस की है और यह भी हुक्म हुआ है कि उस का हुक्मबरदार रहूं। (९१) और यह भी कि क़ुरआन पढ़ा करूं, तो जो शख़्स सीधा रास्ता अपनाता है तो अपने ही फ़ायदे के लिए अपनाता है और जो गुमराह रहता है तो कह दो कि मैं तो सिर्फ़ नसीहत करने वाला हूं। (९२) और कहो कि ख़ुदा का शुक्र है, वह तुम को बहुत जल्द अपनी निशानियां दिखाएगा, तो तुम उन को पहचान लोगे और जो काम तुम करते हो, तुम्हारा परवरदिगार उन से बे-ख़बर नहीं है। (९३)★

२८ सूरः क़सस् ४९

सूरः क़सस् मक्की है और इस में ८८ आयतें और ९ रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

तॉ-सीम-मीम। (१) ये रोशन किताब की आयतें हैं। (२) (ऐ मुहम्मद!) हम तुम्हें मूसा और फ़िऔन के कुछ हालात मोमिन लोगों (के सुनाने) के लिए सही-सही सुनाते हैं, (३) कि फ़िऔन ने मुल्क में सर उठा रखा था और वहां के रहने वालों को गिरोह-गिरोह बना रखा था, उन में से एक गिरोह को (यहां तक) कमज़ोर कर दिया था कि उन बेटों को ज़िब्ह कर डालता और उन की लड़कियों को ज़िंदा रहने देता। बेशक वह फ़साद फैलाने वालों में था। (४) और हम चाहते

★रु. ७/३ आ ११

व नुरीदु अन् नमुन्-न अ-लल्लज़ीनस्-तुज़्-अिफ़ू फ़िल्अर्ज़ि व नज-अ-लहुम् अ-इम्मतंव्-व नज्-अ-ल-हुमुल्-वारिसीन (५) व नुमक्कि-न लहुम् फ़िल्अर्ज़ि व नुरि-य फ़िर्औ-न व हामा-न व जुनूदहुमा मिन्हुम् मा कानू यह्ज़रून (६) व औहैना इला उम्मि मूसा अन् अर्ज़िओहि ८ फ़-इज़ा ख़िफ़्ति अलैहि फ़अल्क़ीहि फ़िल्यम्मि व ला तख़ाफ़ी व ला तह्ज़नी ८ इन्ना राद्दूहु इलैकि व जाअिलूहु मिनल् - मुर्सलीन (७) फ़ल्-त-क़-तहू आलु फ़िर्औ-न लि-यकू-न लहुम् अदुव्वंव्-व ह्-ज़-नन् ४ इन्-न फ़िर्औ-न व हामा-न व जुनूदहुमा कानू ख़ातिईन (८) व क़ालतिम् - र-अतु फ़िर्औ-न क़ुर्रतु अनिल्ली व ल - क ४ ला तक़्तुलूहु ५ असा अंय्यन्-फ़ - अना औ नत्तख़ि - ज़हू व-ल-दंव्-व हुम् ला यश्अुरून (९) व अस्-ब-ह फ़ुआदु उम्मि मूसा फ़ारिग़न् ४ इन् कादत् लतुब्दी बिही लौला अर् - बत्ना अला क़ल्बिहा लितकू - न मिनल् - मुअ्मिनीन (१०) व क़ालत् लिउख़्तिही क़ुस्सीहि ४ फ़ - बसुरत् बिही अन् जुनुबिंव्-व हुम् ला यश-अुरून ४ (११) व हर्रम्ना अलैहिल् - मराज़ि-अ मिन् क़ब्लु फ़ - क़ालत् हल् अदुल्लुकुम् अला अह - लि बैतिंय्यक्फ़ुलूनहू लकुम् व हुम् लहू नासिहून (१२) फ़-र-दद्नाहु इला उम्मिही कै त-क़र्-र अैनुहा व ला तह्-ज़-न व लि-तअ्-ल-म अन्-न वअ्-दल्लाहि हक़्क़ुंव्-व लाकिन्-न अक्स-र-हुम् ला यअ्-लमून ★● (१३) व लम्मा ब-ल-ग़ अशुद्दहू वस्तवा आतैनाहु हुक्मंव्-व अिल्मन् ४ व कज़ालि-क नज्ज़िल्-मुह्सिनीन (१४)

وَنُرِيدُ أَن نَّمُنَّ عَلَى الَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا فِي الْأَرْضِ وَنَجْعَلَهُمْ
أَئِمَّةً وَنَجْعَلَهُمُ الْوَارِثِينَ ۝ وَنُمَكِّنَ لَهُمْ فِي الْأَرْضِ وَنُرِيَ
فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَجُنُودَهُمَا مِنْهُم مَّا كَانُوا يَحْذَرُونَ ۝ وَ
أَوْحَيْنَا إِلَىٰ أُمِّ مُوسَىٰ أَنْ أَرْضِعِيهِ ۖ فَإِذَا خِفْتِ عَلَيْهِ فَأَلْقِيهِ
فِي الْيَمِّ وَلَا تَخَافِي وَلَا تَحْزَنِي ۖ إِنَّا رَادُّوهُ إِلَيْكِ وَجَاعِلُوهُ
مِنَ الْمُرْسَلِينَ ۝ فَالْتَقَطَهُ آلُ فِرْعَوْنَ لِيَكُونَ لَهُمْ عَدُوًّا وَ
حَزَنًا ۗ إِنَّ فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَجُنُودَهُمَا كَانُوا خَاطِئِينَ ۝ وَقَالَتِ
امْرَأَتُ فِرْعَوْنَ قُرَّتُ عَيْنٍ لِّي وَلَكَ ۖ لَا تَقْتُلُوهُ عَسَىٰ أَن يَنفَعَنَا
أَوْ نَتَّخِذَهُ وَلَدًا وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝ وَأَصْبَحَ فُؤَادُ أُمِّ مُوسَىٰ
فَارِغًا ۖ إِن كَادَتْ لَتُبْدِي بِهِ لَوْلَا أَن رَّبَطْنَا عَلَىٰ قَلْبِهَا لِتَكُونَ
مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ وَقَالَتْ لِأُخْتِهِ قُصِّيهِ ۖ فَبَصُرَتْ بِهِ عَن
جُنُبٍ وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝ وَحَرَّمْنَا عَلَيْهِ الْمَرَاضِعَ مِن قَبْلُ
فَقَالَتْ هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ أَهْلِ بَيْتٍ يَكْفُلُونَهُ لَكُمْ وَهُمْ لَهُ
نَاصِحُونَ ۝ فَرَدَدْنَاهُ إِلَىٰ أُمِّهِ كَيْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ وَلِتَعْلَمَ
أَنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَلَمَّا
بَلَغَ أَشُدَّهُ وَاسْتَوَىٰ آتَيْنَاهُ حُكْمًا وَعِلْمًا ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي
الْمُحْسِنِينَ ۝ وَدَخَلَ الْمَدِينَةَ عَلَىٰ حِينِ غَفْلَةٍ مِّنْ

★रु. १/४ आ १३ ● रुकूअ १/४

थे कि जो लोग मुल्क में कमज़ोर कर दिए गए हैं, उन पर एहसान करें और उन को पेशवा बनाएं और उन्हें (मुल्क का) वारिस करें। (५) और मुल्क में उन को क़ुदरत दें और फ़िऔन और हामान और उन की फ़ौज को वह चीज़ दिखा दें, जिस से वे डरते थे। (६) और हम ने मूसा की मां की तरफ़ वह्य भेजी कि उस को दूध पिलाओ, जब तुम को इस के बारे में कुछ डर पैदा हो, तो उसे दरिया में डाल देना और न तो ख़ौफ़ करना और न रंज करना। हम उस को तुम्हारे पास वापस पहुंचा देंगे और (फिर) उसे पैग़म्बर बना देंगे। (७) तो फ़िऔन के लोगों ने उस को उठा लिया, इस लिए कि (नतीजा यह होना था कि) वह उन का दुश्मन और (उन के लिए) ग़म (की वजह) हो। बेशक फ़िऔन और हामान और उन के लश्कर चूक गये। (८) और फ़िऔन की बीवी ने कहा कि (यह) मेरी और तुम्हारी (दोनों की) आंखों की ठंडक है, इस को क़त्ल न करना, शायद यह हमें फ़ायदा पहुंचाए, या हम इसे बेटा बना लें और वे (अंजाम) से बे-ख़बर थे। (९) और मूसा की मां का दिल बे-क़रार हो गया। अगर हम उन के दिल को मज़बूत न कर देते, तो क़रीब था कि वह इस (ग़ुस्से) को ज़ाहिर कर दें। ग़रज़ यह थी कि वे मोमिनों में रहें। (१०) और उस की बहन से कहा कि उस के पीछे-पीछे चली जा, तो वह उसे दूर से देखती रही और उन (लोगों) को कुछ ख़बर न थी। (११) और हम ने पहले ही से उस पर (दाइयों के) दूध हराम कर दिए थे, तो मूसा की बहन ने कहा कि मैं तुम्हें ऐसे घर वाले बताऊं कि तुम्हारे लिए इस (बच्चे) को पालें और उस की ख़ैरख़्वाही (से परवरिश) करें। (१२) तो हम ने (इस तरीक़े से) उन को उन की मां के पास वापस पहुंचा दिया, ताकि उन की आंखें ठंडी हों और वह ग़म न खाएं और मालूम करें कि ख़ुदा का वायदा सच्चा है, लेकिन ये अक्सर नहीं जानते। (१३)★●

और जब मूसा जवानी को पहुंचे और भरपूर (जवान) हो गये, तो हम ने उन को हिक्मत और इल्म इनायत किया और हम नेकों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं। (१४) और वह ऐसे वक़्त

★रु. १/४ आ १३ ●रुब्अ १/४

व द-ख़-लल्-मदी-न-त़ अला हीनि ग़फ़्-लतिम्-मिन् अह्-लिहा फ़-व-ज-द फ़ीहा रजु-लैनि यक़्ततिलानि ز हाज़ा मिन् शीअतिही व हाज़ा मिन् अदुव्विही ج फ़स्तग़ा-सहुल्लज़ी मिन् शीअतिही अलल्लज़ी मिन् अदुव्विही لا फ़-व-क - ज़हू मूसा फ़ - क़ज़ा अलैहि قف क़ा - ल हाज़ा मिन् अ - मलिश्शैतानि ط इन्नहू अदुव्वुम्-मुज़िल्लुम्-मुबीन (१५) क़ा - ल रब्बि इन्नी ज़-लम्तु नफ़्सी फ़ग़-फ़िर् ली फ़ - ग़ - फ़ - र लहू ط इन्नहू हुवल्-ग़फ़ूरुर्रहीम (१६) क़ा-ल रब्बि बिमा अन-अम्-त अ-लय्-य फ़-लन् अकू-न ज़हीरल्-लिल्मुजिरमीन (१७) फ़-अस्-ब-ह़ फ़िल्मदीनति ख़ाइफ़य्य - त - रक़्क़बु फ़-इज़ल्लज़िस्तन्स़रहू बिल - अम् - सि यस्तस़्रिख़ुहू ط क़ा - ल लहू मूसा इन्न-क ल-ग़विय्युम् - मुबीन (१८) फ़-लम्मा अन् अरा-द अंय्यब्ति-श बिल्लज़ी हु-व अदुव्वुल् - लहुमा لا क़ा - ल या मूसा अतुरीदु अन् तक़्तु-लनी कमा क़-तल् - त नफ़् - सम् - बिल्अम्सि ق इन् तुरीदु इल्ला अन् तकू-न जब्बारन् फ़िल्अर्ज़ि व मा तुरीदु अन् तकू-न मिनल्-मुस्लिहीन (१९) व जा - अ रजुलुम् - मिन् अक़्सल् - मदीनति यस्-आ ز क़ा-ल या मूसा इन्नल्-म-ल-अ यअ्-तमिरू-न बि-क लि-यक़्तुलू-क फ़ख़्रुज् इन्नी ल-क मिनन्नासिहीन (२०) फ़-ख़-र-ज मिन्हा ख़ाइफ़य्य-त-रक़्क़बु ز क़ा-ल रब्बि नज्जिनी मिनल्क़ौमिज़्-ज़ालिमीन★(२१) व लम्मा त-वज्ज-ह तिल्क़ा-अ मद्-य-न क़ा-ल असा रब्बी अंय्यह्-दि-यनी सवा-अस्सबील (२२) व लम्मा व-र-द मा-अ मद्-य-न व-ज-द अलैहि उम्म-तम्-मिनन्नासि यस्क़ू-न ق व व-ज-द मिन् दूनिहिमुम्-र-अतैनि तज़ूदानि ج क़ा-ल मा ख़त़्बुकुमा ط क़ालता ला नस्क़ी हत्ता युस़्दिरर् - रिआउ سكتة व अबूना शैख़ुन् कबीर (२३)

أَهْلِهَا فَوَجَدَ فِيهَا رَجُلَيْنِ يَقْتَتِلَانِ هَٰذَا مِنْ شِيعَتِهِ وَهَٰذَا مِنْ
عَدُوِّهِ فَاسْتَغَاثَهُ الَّذِي مِنْ شِيعَتِهِ عَلَى الَّذِي مِنْ عَدُوِّهِ
فَوَكَزَهُ مُوسَىٰ فَقَضَىٰ عَلَيْهِ قَالَ هَٰذَا مِنْ عَمَلِ الشَّيْطَانِ إِنَّهُ
عَدُوٌّ مُضِلٌّ مُبِينٌ ۝ قَالَ رَبِّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي فَاغْفِرْ لِي
فَغَفَرَ لَهُ إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۝ قَالَ رَبِّ بِمَا أَنْعَمْتَ عَلَيَّ
فَلَنْ أَكُونَ ظَهِيرًا لِلْمُجْرِمِينَ ۝ فَأَصْبَحَ فِي الْمَدِينَةِ خَائِفًا
يَتَرَقَّبُ فَإِذَا الَّذِي اسْتَنْصَرَهُ بِالْأَمْسِ يَسْتَصْرِخُهُ قَالَ لَهُ
مُوسَىٰ إِنَّكَ لَغَوِيٌّ مُبِينٌ ۝ فَلَمَّا أَنْ أَرَادَ أَنْ يَبْطِشَ بِالَّذِي
هُوَ عَدُوٌّ لَهُمَا قَالَ يَا مُوسَىٰ أَتُرِيدُ أَنْ تَقْتُلَنِي كَمَا قَتَلْتَ
نَفْسًا بِالْأَمْسِ إِنْ تُرِيدُ إِلَّا أَنْ تَكُونَ جَبَّارًا فِي الْأَرْضِ وَ
مَا تُرِيدُ أَنْ تَكُونَ مِنَ الْمُصْلِحِينَ ۝ وَجَاءَ رَجُلٌ مِنْ أَقْصَا
الْمَدِينَةِ يَسْعَىٰ قَالَ يَا مُوسَىٰ إِنَّ الْمَلَأَ يَأْتَمِرُونَ بِكَ لِيَقْتُلُوكَ
فَاخْرُجْ إِنِّي لَكَ مِنَ النَّاصِحِينَ ۝ فَخَرَجَ مِنْهَا خَائِفًا يَتَرَقَّبُ
قَالَ رَبِّ نَجِّنِي مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝ وَلَمَّا تَوَجَّهَ تِلْقَاءَ مَدْيَنَ
قَالَ عَسَىٰ رَبِّي أَنْ يَهْدِيَنِي سَوَاءَ السَّبِيلِ ۝ وَلَمَّا وَرَدَ مَاءَ
مَدْيَنَ وَجَدَ عَلَيْهِ أُمَّةً مِنَ النَّاسِ يَسْقُونَ وَوَجَدَ مِنْ
دُونِهِمُ امْرَأَتَيْنِ تَذُودَانِ قَالَ مَا خَطْبُكُمَا قَالَتَا لَا نَسْقِي

★रु. २/५ आ ८

शहर में दाख़िल हुए कि वहां के रहने वाले बे-ख़बर हो रहे थे, तो देखा कि वहां दो शख़्स लड़ रहे थे, एक तो मूसा की क़ौम का है और दूसरे उन के दुश्मनों में से। तो जो शख़्स उन की क़ौम में से था, उस ने दूसरे शख़्स के मुक़ाबले में, जो मूसा के दुश्मनों में से था, मदद तलब की, तो उन्हों ने उस को मुक्का मारा और उस का काम तमाम कर दिया।[1] कहने लगे कि यह काम तो शैतान (के बहकावे) से हुआ। बेशक वह (इन्सान का) दुश्मन और खुला बहकाने वाला है। (१५) बोले कि ऐ परवरदिगार! मैं ने अपने आप पर ज़ुल्म किया, तो मुझे बख़्श दे, तो ख़ुदा ने उन को बख़्श दिया। बेशक वह बख़्शने वाला मेहरबान है। (१६) कहने लगे कि ऐ परवरदिगार! तूने जो मुझ पर मेहरबानी फ़रमायी है, मैं (आगे) कभी गुनाहगारों का मददगार न बनूं। (१७) ग़रज़ यह कि सुबह के वक़्त शहर में डरते-डरते दाख़िल हुए कि देखें (क्या होता है), तो यकायक वही शख़्स जिस ने कल उन से मदद मांगी थी, फिर उन को पुकार रहा है। (मूसा ने) उस से कहा कि तू तो खुली गुमराही में है। (१८) जब मूसा ने इरादा किया कि उस शख़्स को, जो उन दोनों का दुश्मन था, पकड़ लें, तो वह (यानी मूसा की क़ौम का आदमी) बोल उठा कि जिस तरह तुम ने कल एक शख़्स को मार डाला था, (उसी तरह) चाहते हो कि मुझे भी मार डालो। तुम तो यही चाहते हो कि मुल्क में ज़ुल्म व सितम करते फिरो और यह नहीं चाहते कि नेकों में हो। (१९) और एक शख़्स शहर के परली तरफ़ से दौड़ता हुआ आया (और बोला कि मूसा शहर के) रईस तुम्हारे बारे में मश्विरे करते हैं कि तुम को मार डालें, सो तुम यहां से निकल जाओ। मैं तुम्हारा ख़ैरख़्वाह हूं। (२०) मूसा वहां से डरते-डरते निकल खड़े हुए कि देखें (क्या होता है और) दुआ करने लगे कि ऐ परवरदिगार! मुझे ज़ालिम लोगों से निजात दे। (२१)★

और जब मदयन की तरफ़ रुख किया तो कहने लगे, उम्मीद है कि मेरा परवरदिगार मुझे सीधा रास्ता बताए। (२२) और जब मदयन के पानी (की जगह) पर पहुंचे तो देखा कि वहां लोग जमा हो रहे (और अपने चारपायों को) पानी पिला रहे हैं और उन के एक तरफ़ दो औरतें (अपनी बकरियों को) रोके खड़ी हैं। मूसा ने (उन से) कहा, तुम्हारा क्या काम है? वे बोलीं कि जब तक चरवाहे (अपने चारपायों को) ले न जाएं, हम पानी नहीं पिला सकते और हमारे वालिद बड़ी उम्र

---

१. कहते हैं कि जिस शख़्स को हज़रत मूसा ने मुक्का मारा था, वह फ़िरऔन का बावरची था और वह हज़रत मूसा की क़ौम के शख़्स को बेगार के लिए मजबूर कर रहा था। जब उस ने मूसा अलैहिस्सलाम को देखा तो उन से मदद चाही। मूसा अलैहिस्सलाम ने उस मज़लूम को ज़ालिम के हाथ से बचाने की नीयत से उस क़िब्ती को मुक्का मारा और वह मर कर रह गया। यह क़त्ल अगरचे जान-बूझ कर न था, बल्कि इत्तिफ़ाक़ की बात थी, फिर भी मूसा अलैहिस्सलाम इस काम पर बहुत शर्मिन्दा हुए और अपनी शान के लिहाज़ से उस को ख़ता मान कर के ख़ुदा से माफ़ी चाही।

★रु. २/५ आ ८

फ़-सक़ा लहुमा सुम्-म त-वल्ला इलज़्ज़िल्लि फ़-क़ा-ल रब्बि इन्नी लिमा अन्ज़ल्-त इलय्-य मिन् ख़ैरिन् फ़क़ीर (२४) फ़जा-अत्हु इह्दाहुमा तम्शी अ-लस्तिह्याइन् ✓ क़ालत् इन्-न अबी यद्अू - क लियज्ज़ि-य-क अज् - र मा सक़ै-त लना ♭ फ़-लम्मा जा-अहू व क़स्-स अलैहिल्क़-स़-स ᐟᐟ क़ा-ल ला त - ख़फ़् क़फ़्‌ह नजौ - त मिनल् - क़ौमिज़्ज़ालिमीन (२५) क़ालत् इह्दा-हुमा या अ-बतिस्तअ्-जिर्हु ✓ इन्-न ख़ै-र मनिस्तअ्-जर्तल् - क़विय्युल् अमीन (२६) क़ा-ल इन्नी उरीदु अन् उन्कि - ह़-क इह्-दब्-न-तय्-य हातैनि अला अन् तअ्जु-रनी समानि-य हिजजिन् ぐ फ़-इन् अत्मम् - त अश्-रन् फ़मिन् अिन्दि-क ぐ व मा उरीदु अन् अशुक़्-क़ अलै - क ♭ स - तजिदुनी इन्शाअल्लाहु मिनस्सालिहीन (२७) क़ा-ल ज़ालि-क बैनी व बै-न - क ♭ अय्य-मल् - अ-जलैनि क़ज़ैतु फ़ला अुद्वा-न अ-लय्-य ♭ वल्लाहु अला मा नक़ूलु वकील ★ (२८)

القصص ٢٨ · ٣١٠ · امن خلق ٢٠

حَتّٰى يُصْدِرَ الرِّعَآءُ وَاَبُوْنَا شَيْخٌ كَبِيْرٌ ۝ فَسَقٰى لَهُمَا ثُمَّ تَوَلّٰىٓ
اِلَى الظِّلِّ فَقَالَ رَبِّ اِنِّىْ لِمَآ اَنْزَلْتَ اِلَىَّ مِنْ خَيْرٍ فَقِيْرٌ ۝ فَجَآءَتْهُ
اِحْدٰىهُمَا تَمْشِىْ عَلَى اسْتِحْيَآءٍ قَالَتْ اِنَّ اَبِىْ يَدْعُوْكَ لِيَجْزِيَكَ
اَجْرَ مَا سَقَيْتَ لَنَا ۭ فَلَمَّا جَآءَهٗ وَقَصَّ عَلَيْهِ الْقَصَصَ ۙ قَالَ
لَا تَخَفْ نَجَوْتَ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝ قَالَتْ اِحْدٰىهُمَا يٰٓاَبَتِ
اسْتَاْجِرْهُ اِنَّ خَيْرَ مَنِ اسْتَاْجَرْتَ الْقَوِىُّ الْاَمِيْنُ ۝ قَالَ اِنِّىْٓ
اُرِيْدُ اَنْ اُنْكِحَكَ اِحْدَى ابْنَتَىَّ هٰتَيْنِ عَلٰٓى اَنْ تَاْجُرَنِىْ ثَمٰنِىَ
حِجَجٍ ۚ فَاِنْ اَتْمَمْتَ عَشْرًا فَمِنْ عِنْدِكَ ۚ وَمَآ اُرِيْدُ اَنْ اَشُقَّ
عَلَيْكَ ۭ سَتَجِدُنِىْٓ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝ قَالَ ذٰلِكَ بَيْنِىْ
وَبَيْنَكَ ۭ اَيَّمَا الْاَجَلَيْنِ قَضَيْتُ فَلَا عُدْوَانَ عَلَىَّ ۭ وَاللّٰهُ عَلٰى
مَا نَقُوْلُ وَكِيْلٌ ۝ فَلَمَّا قَضٰى مُوْسَى الْاَجَلَ وَسَارَ بِاَهْلِهٖٓ اٰنَسَ
مِنْ جَانِبِ الطُّوْرِ نَارًا ۚ قَالَ لِاَهْلِهِ امْكُثُوْٓا اِنِّىْٓ اٰنَسْتُ نَارًا
لَّعَلِّىْٓ اٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِخَبَرٍ اَوْ جَذْوَةٍ مِّنَ النَّارِ لَعَلَّكُمْ تَصْطَلُوْنَ ۝
فَلَمَّآ اَتٰىهَا نُوْدِىَ مِنْ شَاطِئِ الْوَادِ الْاَيْمَنِ فِى الْبُقْعَةِ الْمُبٰرَكَةِ
مِنَ الشَّجَرَةِ اَنْ يّٰمُوْسٰٓى اِنِّىْٓ اَنَا اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَاَنْ اَلْقِ
عَصَاكَ ۭ فَلَمَّا رَاٰهَا تَهْتَزُّ كَاَنَّهَا جَآنٌّ وَّلّٰى مُدْبِرًا وَّلَمْ يُعَقِّبْ ۭ
يٰمُوْسٰٓى اَقْبِلْ وَلَا تَخَفْ اِنَّكَ مِنَ الْاٰمِنِيْنَ ۝ اُسْلُكْ يَدَكَ

फ़-लम्मा क़ज़ा मूसल्-अ-ज-ल व सा-र बि-अह्लिही आ-न-स मिन् जानिबित्तूरि नारन् ぐ क़ा-ल लि-अह्लिहिम्कुसू इन्नी आनस्तु ना-रल्ल - अल्ली आतीकुम् मिन्हा बि-ख़-बरिन् औ जज़्-वतिम्-मिनन्नारि ल-अल्लकुम् तस़्तलून (२९) फ़-लम्मा अताहा नूदि-य मिन् शाति-इल् - वादिल् - ऐमनि फ़िल्बुक़्अतिल्-मुबा-र-कति मिनश्श-ज-रति अंय्यामूसा इन्नी अनल्लाहु रब्बुल् - आलमीन ᐟᐟ (३०) व अन् अल्क़ि अस़ा - क ♭ फ़ - लम्मा र - आहा तह्तज़्ज़ु क - अन्नहा जान्नुंव्वल्ला मुद् - बिरंव - व लम् यु - अक़्क़िब् ♭ या मूसा अक़्बिल् व ला त - ख़फ़् क़फ़्‌ह इन्न - क मिनल् - आमिनीन (३१)

★रु. ३/६ आ ७

के बूढ़े हैं। (२३) तो मूसा ने उन के लिए (बकरियों को) पानी पिला दिया, फिर साए की तरफ़ चले गये और कहने लगे कि परवरदिगार! मैं इस का मुहताज हूं कि तू मुझ पर अपनी नेमत नाज़िल फ़रमाए। (२४) (थोड़ी देर के बाद) उन में से एक औरत जो शर्माती और लजाती चली आती थी, मूसा के पास आयी (और) कहने लगी कि तुम को मेरे वालिद बुलाते हैं कि तुम ने जो हमारे लिए पानी पिलाया था, उस का तुम को बदला दें। जब वह उन के पास आए और उन से (अपना) माजरा बयान किया, तो उन्हों ने कहा कि कुछ ख़ौफ़ न करो। तुम ज़ालिम लोगों से बच आए हो। (२५) एक लड़की बोली कि अब्बा! इन को नौकर रख लीजिए, क्योंकि बेहतर नौकर जो आप रखें, वह है (जो) मज़बूत और अमानतदार (हो)। (२६) (मूसा से) कहा कि मैं चाहता हूं, अपनी इन दो बेटियों में से एक को तुम से ब्याह दूं, इस (वायदे) पर कि तुम आठ वर्ष मेरी ख़िदमत करो और अगर दस साल पूरे कर दो, तो वह तुम्हारी तरफ़ से (एहसान) है और मैं तुम पर तक्लीफ़ डालनी नहीं चाहता, तुम मुझे इन्शाअल्लाह नेक लोगों में पाओगे। (२७) मूसा ने कहा कि मुझ में और आप में यह (पक्का वायदा हुआ), मैं जो-भी मुद्दत (चाहूं) पूरी कर दूं, फिर मुझ पर कोई ज़्यादती न हो और हम जो समझौता करते हैं, ख़ुदा उस का गवाह है। (२८)★

जब मूसा ने मुद्दत पूरी कर दी और अपने घर के लोगों को ले कर चले, तो तूर की तरफ़ से आग दिखाई दी, तो अपने घर वालों से कहने लगे कि (तुम यहां) ठहरो। मुझे आग नज़र आयी है, शायद मैं वहां से (रास्ते का) कुछ पता लाऊं या आग का अंगारा ले आऊं, ताकि तुम तापो। (२९) जब उस के पास पहुंचे तो मैदान के दाएं किनारे से एक मुबारक जगह में, एक पेड़ में से आवाज़ आयी कि मूसा! मैं तो ख़ुदा-ए-रब्बुल आलमीन हूं। (३०) और यह कि अपनी लाठी डाल दो। जब देखा कि वह हरकत कर रही है, गोया सांप है, तो पीठ फेर कर चल दिए और पीछे मुड़ कर भी न देखा। (हम ने कहा कि) मूसा आगे आओ और डरो मत, तुम अम्न पाने वालों में हो। (३१)

★रु. ३/६ आ ७

उस-लुक् य-द-क फ़ी जैबि-क तख़्-रुज् बैज़ा-अ मिन् ग़ैरि सूइंव्-वज़्मुम्
इलै-क जना-ह़-क मिनर्रह्बि फ़-ज़ानि-क बुर्हानानि मिर्रब्बि-क इला फ़िर्औ-न
व म-लइही ᵇ इन्नहुम् कानू क़ौमन् फ़ासिक़ीन (३२) क़ा - ल रब्बि
इन्नी क़-तल्तु मिन्हुम् नफ़्सन् फ़-अख़ाफ़ु अंय्यक़्तुलून (३३) व अख़ी
हारूनु हु - व अफ़्सहु मिन्नी लिसानन्
फ़ - अर्सिल्हु मअि - य रिद्अंय्युसद्दिक़ुनी
इन्नी अख़ाफ़ु अंय्युकज़्ज़िबून (३४)
क़ा-ल स-नशुद्दु अज़ु-द-क बि-अख़ी-क व नज्अलु
लकुमा सुल्तानन् फ़ ला यसिलू-न इलैकुमा
ᶜ बिआयातिना ᶜ अन्तुमा व
मनित्त-ब-अ-कुमल्-ग़ालिबून (३५) फ़-लम्मा
जा-अहुम् मूसा बिआयातिना बय्यिनातिन्
क़ालू मा हाज़ा इल्ला सिह़रुम्-मुफ़्तरंव्-व
मा समिअ्-ना बिहाज़ा फ़ी आबाइनल्-
अव्वलीन (३६) व क़ा-ल मूसा रब्बी
अअ्-लमु बिमन् जा - अ बिल्हुदा मिन्
अिन्दिही व मन् तकूनु लहू आक़िबतुद्दारि ᵇ

فی جیبک تخرج بیضاء من غیر سوء واضمم الیک جناحک
من الرهب فذنک برهانن من ربک الی فرعون وملایه
انهم کانوا قوما فسقین ۝ قال رب انی قتلت منهم نفسا
فاخاف ان یقتلون ۝ واخی هرون هو افصح منی لسانا
فارسله معی ردا یصدقنی انی اخاف ان یکذبون ۝
قال سنشد عضدک باخیک ونجعل لکما سلطنا فلا یصلون
الیکما بایتنا انتما ومن اتبعکما الغلبون ۝ فلما جاءهم
موسی بایتنا بینت قالوا ما هذا الا سحر مفتری وما
سمعنا بهذا فی اباىنا الاولین ۝ وقال موسی ربی اعلم
بمن جاء بالهدی من عنده ومن تکون له عاقبة الدار
انه لا یفلح الظلمون ۝ وقال فرعون یایها الملا ما علمت
لکم من اله غیری فاوقد لی یهامن علی الطین فاجعل
لی صرحا لعلی اطلع الی اله موسی وانی لاظنه من
الکذبین ۝ واستکبر هو وجنوده فی الارض بغیر الحق
وظنوا انهم الینا لا یرجعون ۝ فاخذنه وجنوده فنبذنهم
فی الیم فانظر کیف کان عاقبة الظلمین ۝ وجعلنهم ائمة
یدعون الی النار ویوم القیمة لا ینصرون ۝ واتبعنهم

इन्नहू ला युफ़्लिहुज़्ज़ालिमून (३७) व क़ा-ल फ़िर्औनु या अय्युहल्म-ल-उ
मा अलिम्तु लकुम् मिन् इलाहिन् ग़ैरी ᶜ फ़ औक़िद् ली या हामानु
अलत्तीनि फ़ज्-अल्ली स़र - ह़ल-ल - अ़ल्ली अत्तलिअु इला इलाहि मूसा ᵛ
व इन्नी ल-अज़ुन्नुहू मिनल्काज़िबीन (३८) वस्तक्-ब-र हु-व व जुनूदुहू फ़िल्अर्ज़ि
बिग़ैरिल्ह़क़्क़ि व ज़न्नू अन्नहुम् इलैना ला युर्जअून (३९)
फ़-अ-ख़ज़्नाहु व जुनूदहू फ़ - न - बज़्नाहुम् फ़िल्यम्मि ᶜ फ़न्ज़ुर् कै - फ़
का-न आक़िबतुज़्ज़ालिमीन (४०) व ज - अल्नाहुम् अ-इम्मतंय्यद्अू-न
इलन्नारि ᶜ व यौमल्क़ियामति ला युन्स़रून (४१)

•• मु. अि. मु. ता ख़. ११

अपना हाथ गरेबान में डालो तो बग़ैर किसी ऐब के सफ़ेद निकल आएगा और डर दूर होने (की वजह) से अपने बाज़ू को अपनी तरफ़ सुकेड़ लो। ये दो दलीलें तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से हैं। (उन के साथ) फ़िऔन और उस के दरबारियों के पास (जाओ) कि वे नाफ़रमान लोग हैं। (३२) (मूसा ने) कहा, ऐ परवरदिगार! उन में का एक शख़्स मेरे हाथ से क़त्ल हो चुका है, सो मुझे डर है कि वे (कहीं) मुझ को न मार डालें। (३३) और हारून (जो) मेरा भाई (है) उस की ज़ुबान मुझ से ज़्यादा साफ़ है तो उस को मेरे साथ मददगार बना कर भेज कि मेरी तस्दीक़ करे, मुझे डर है कि वे लोग मुझे झुठला देंगे।[1] (३४) (ख़ुदा ने) फ़रमाया, हम तुम्हारे भाई से तुम्हारे बाज़ू को मज़बूत करेंगे और तुम दोनों को ग़लबा देंगे, तो हमारी निशानियों की वजह से वे तुम तक पहुंच न सकेंगे (और) तुम और जिन्हों ने तुम्हारी पैरवी की, ग़ालिब रहोगे। (३५) और जब मूसा उन के पास हमारी खुली निशानियां ले कर आये, तो वे कहने लगे कि यह तो जादू है, जो इस ने बना खड़ा किया है और ये (बातें) हम ने अपने अगले बाप-दादा में तो (कभी) सुनी नहीं। (३६) और मूसा ने कहा कि मेरा परवरदिगार उस शख़्स को ख़ूब जानता है, जो उस की तरफ़ से हक़ ले कर आया है और जिस के लिए आक़िबत का घर (यानी बहिश्त) है। बेशक ज़ालिम निजात नहीं पाएंगे। (३७) और फ़िऔन ने कहा कि ऐ दरबारियो! मैं तुम्हारा, अपने सिवा, किसी को ख़ुदा नहीं जानता, तो हामान मेरे लिए गारे को आग लगा (कर ईंटें पका) दो, फिर एक (ऊंचा) महल बना दो, ताकि मैं मूसा के ख़ुदा की तरफ़ चढ़ जाऊं और मैं तो उसे झूठा समझता हूं। (३८) और वह और उस के लश्कर मुल्क में ना-हक़ घमंड में चूर हो रहे थे और ख़्याल करते थे कि वे हमारी तरफ़ लौट कर नहीं आएंगे। (३९) तो हम ने उन को और उन के लश्करों को पकड़ लिया और दरिया में डाल दिया, सो देख लो कि ज़ालिमों का कैसा अंजाम हुआ। (४०) और हम ने उन को पेशवा बनाया था। वे (लोगों को) दोज़ख़ की तरफ़ बुलाते थे और क़ियामत के दिन उन की मदद

---

१. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की ज़ुबान में लुक्नत थी और उन को ख़्याल था कि वे लुक्नत की वजह से तक़रीर साफ़ न कर सकेंगे, इस लिए ख़ुदा से इल्तिजा की कि मेरे भाई हारून को, जिन की ज़ुबान साफ़ है, मेरे साथ मददगार बना कर भेज, ताकि उन दलीलों को, जो ज़ुबान की लुक्नत की वजह से अच्छी तरह बयान न कर सकूं, वह अपनी साफ़ ज़ुबान होने की वजह से अच्छी तरह बयान कर सकें और उन लोगों के ज़ेहन में बिठा दें।

व अत्बअ्-नाहुम् फ़ी हाज़िहिद्दुन्या लअ्-न-तन् ‍ᶜ व यौमल्-क़ियामति हुम् मिनल्-मक़्बूहीन ★ (४२) व ल-क़द् आतैना मूसल्किता-ब मिम्बअ्-दि मा अह्-लक-नल्-क़ुरूनल्-ऊला बसाइ-र लिन्नासि व हुदव्-व रह्-म-तल्-ल-अल्ल-हुम् य-त-ज़क्करून (४३) व मा कुन्-त बिजानिबिल्-ग़र्बिय्यि इज् क़ज़ैना इला मूसल्-अम्-र व मा कुन्-त मिनश्शाहिदीन (४४) व लाकिन्ना अन्शअ्-ना क़ुरूनन् फ़-त - ताव-ल अलैहिमुल् - अुमुरु ‍ᶜ व मा कुन्-त साविय़न् फ़ी अह्लि मद्-य-न तत्लू अलैहिम् आयातिना व लाकिन्ना कुन्ना मुर्सिलीन (४५) व मा कुन्-त बिजानिबित्तूरि इज् नादैना व लाकिर्रह्-म-तम्-मिर्रब्बि-क लितुन्ज़ि - र क़ौमम्मा अताहुम् मिन् नज़ीरिम् मिन् क़ब्लि - क ल - अल्लहुम् य-त-ज़क्करून (४६) व लौ ला अन् तुसीबहुम् मुसीबतुम्-बिमा क़द्-द-मत् ऐदीहिम् फ़-यक़ूलू रब्बना लौ ला अर्सल-त इलैना रसूलन् फ़-नत्तबि-अ आयाति-क व नकू-न मिनल्-मुअ्मिनीन (४७) फ़-लम्मा जा-अ-हुमुल्हक़्क़ु मिन् अिन्-दिना क़ालू लौ ला ऊति-य मिस्-ल मा ऊति-य मूसा अ - व-लम् यक्फ़ुरू बिमा ऊति - य मूसा मिन् क़ब्लु ‍ᶜ क़ालू सिह्-रानि तज़ाहरा व क़ालू इन्ना बिकुल्लिन् काफ़िरून (४८) क़ुल् फ़अ्तू बिकिताबिम् - मिन् अिन्दिल्लाहि हु - व अह् - दा मिन्हुमा अत्तबिअ्-हु इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (४९) फ़-इल्लम् यस्तजीबू ल-क फ़अ्-लम् अन्नमा यत्तबिअू-न अह्-वा-अहुम् व मन् अज़ल्लु मिम्मनित्त-ब-अ हवाहु बिग़ैरि हुदम्मिनल्लाहि इन्नल्ला - ह ला यह्दिल् - क़ौमज़् - ज़ालिमीन ★ (५०)

فِي هَٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً ۖ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ هُم مِّنَ الْمَقْبُوحِينَ ﴿٤٢﴾ وَ
لَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ مِن بَعْدِ مَا أَهْلَكْنَا الْقُرُونَ الْأُولَىٰ
بَصَائِرَ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٤٣﴾ وَمَا
كُنتَ بِجَانِبِ الْغَرْبِيِّ إِذْ قَضَيْنَا إِلَىٰ مُوسَى الْأَمْرَ وَمَا كُنتَ
مِنَ الشَّاهِدِينَ ﴿٤٤﴾ وَلَٰكِنَّا أَنشَأْنَا قُرُونًا فَتَطَاوَلَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ
وَمَا كُنتَ ثَاوِيًا فِي أَهْلِ مَدْيَنَ تَتْلُو عَلَيْهِمْ آيَاتِنَا وَلَٰكِنَّا
كُنَّا مُرْسِلِينَ ﴿٤٥﴾ وَمَا كُنتَ بِجَانِبِ الطُّورِ إِذْ نَادَيْنَا وَلَٰكِن
رَّحْمَةً مِّن رَّبِّكَ لِتُنذِرَ قَوْمًا مَّا أَتَاهُم مِّن نَّذِيرٍ مِّن قَبْلِكَ
لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٤٦﴾ وَلَوْلَا أَن تُصِيبَهُم مُّصِيبَةٌ بِمَا قَدَّمَتْ
أَيْدِيهِمْ فَيَقُولُوا رَبَّنَا لَوْلَا أَرْسَلْتَ إِلَيْنَا رَسُولًا فَنَتَّبِعَ آيَاتِكَ
وَنَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٤٧﴾ فَلَمَّا جَاءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِندِنَا
قَالُوا لَوْلَا أُوتِيَ مِثْلَ مَا أُوتِيَ مُوسَىٰ ۚ أَوَلَمْ يَكْفُرُوا بِمَا أُوتِيَ
مُوسَىٰ مِن قَبْلُ ۖ قَالُوا سِحْرَانِ تَظَاهَرَا وَقَالُوا إِنَّا بِكُلٍّ
كَافِرُونَ ﴿٤٨﴾ قُلْ فَأْتُوا بِكِتَابٍ مِّنْ عِندِ اللَّهِ هُوَ أَهْدَىٰ مِنْهُمَا
أَتَّبِعْهُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٤٩﴾ فَإِن لَّمْ يَسْتَجِيبُوا لَكَ فَاعْلَمْ
أَنَّمَا يَتَّبِعُونَ أَهْوَاءَهُمْ ۚ وَمَنْ أَضَلُّ مِمَّنِ اتَّبَعَ هَوَاهُ بِغَيْرِ
هُدًى مِّنَ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿٥٠﴾ وَلَقَدْ

★रु. ४/७ आ १४ ★रु. ५/८ आ ८

नहीं की जाएगी। (४१) और इस दुनिया में हम ने उन के पीछे लानत लगा दी और वे क़ियामत के दिन भी बद-हालों में होंगे। (४२)★

और हम ने पहली उम्मतों के हलाक करने के बाद मूसा को किताब दी, जो लोगों के लिए बसीरत और हिदायत और रहमत है, ताकि वे नसीहत पकड़ें। (४३) और जब हम ने मूसा की तरफ़ हुक्म भेजा, तो तुम (तूर के) पश्चिम की तरफ़ नहीं थे और न इस वाक़िए के देखने वालों में थे। (४४) लेकिन हम ने (मूसा के बाद) कई उम्मतों को पैदा किया, फिर उन पर मुद्दत लम्बी बीत गयी और न तुम मदयन वालों में रहने वाले थे कि उन को हमारी आयतें पढ़-पढ़ कर सुनाते थे। हां, हम ही तो पैग़म्बर भेजने वाले थे। (४५) और न तुम उस वक़्त, जब कि हम ने (मूसा को) आवाज़ दी, तूर के किनारे थे, बल्कि (तुम्हारा भेजा जाना) तुम्हारे परवरदिगार की रहमत है, ताकि तुम उन लोगों को जिन के पास तुम से पहले कोई हिदायत करने वाला नहीं आया, हिदायत करो ताकि वे नसीहत पकड़ें। (४६) और (ऐ पैग़म्बर! हम ने तुम को इस लिए भेजा है कि) ऐसा न हो कि अगर इन (आमाल) की वजह से जो उन के हाथ आगे भेज चुके हैं, उन पर कोई मुसीबत वाक़ेअ हो, तो ये कहने लगें कि ऐ परवरदिगार! तू ने हमारी तरफ़ कोई पैग़म्बर क्यों न भेजा कि हम तेरी आयतों की पैरवी करते और ईमान लाने वालों में होते। (४७) फिर जब उन के पास हमारी तरफ़ से हक़ आ पहुंचा, तो कहने लगे कि जैसी (निशानियां) मूसा को मिली थीं, वैसी इस को क्यों नहीं मिलीं? क्या जो (निशानियां) पहले मूसा को दी गयी थीं, उन्हों ने उन में कुफ़्र नहीं किया? कहने लगे कि दोनों जादूगर हैं एक दूसरे के मुवाफ़िक़ और बोले कि हम सब से मुंकिर हैं। (४८) कह दो कि अगर सच्चे हो, तो तुम ख़ुदा के पास से कोई और किताब ले आओ, जो इन दोनों (किताबों) से बढ़ कर हिदायत करने वाली हो, ताकि मैं भी उसी की पैरवी करूं। (४९) फिर अगर ये तुम्हारी बात क़ुबूल न करें, तो जान लो कि ये सिर्फ़ अपनी ख़्वाहिशों की पैरवी करते हैं और उस से ज़्यादा कौन गुमराह होगा जो ख़ुदा की हिदायत को छोड़ कर अपनी ख़्वाहिश के पीछे चले। बेशक ख़ुदा ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। (५०)★

★रु. ४/७ आ १४ ★रु. ५/८ आ ८

व ल-क़द् वस़्सल्ना लहुमुल्क़ौ-ल ल-अ़ल्लहुम् य-त-ज़क्करून (५१) अल्लज़ी-न आतैनाहुमुल्-किता-ब मिन् क़ब्लिही हुम् बिही युअ्मिनून ● (५२) व इज़ा युत्ला अ़लैहिम् क़ालू आमन्ना बिही इन्नहुल् - ह़क़्क़ु मिर्रब्बिना इन्ना कुन्ना मिन् क़ब्लिही मुस्-लिमीन (५३) उलाइ-क युअ्तौ-न अज्-रहुम्

मर्रतैनि बिमा स़-बरू व यद - रऊ-न बिल्-ह़-स-नतिस्-सय्यि-अ-त व मिम्मा र-ज़क़्नाहुम् युन्फ़िक़ून (५४) व इज़ा समिअुल्-लग़्-व अअ्-रज़ू अ़न्हु व क़ालू लना अअ्-मालुना व लकुम् अअ्-मालुकुम् सलामुन् अ़लैकुम् ला नब्तग़िल् - जाहिलीन (५५) इन्न-क ला तह्दी मन् अह्-बब्-त व लाकिन्नल्ला-ह यह्दी मंय्यशाउ व हु-व अअ्-लमु बिल्मुह्-तदीन (५६) व क़ालू इन् नत्तबिअिल्-हुदा म - अ - क नु-त-ख़त्तफ़् मिन् अर्ज़िना अ-व लम् नुमक्किल्-लहुम् ह़-र-मन् आमिनंय्युज्बा इलैहि स-मरातु कुल्लि शैइर्रिज़्-क़म् - मिल्लदुन्ना

व लाकिन्-न अक्स-रहुम् ला यअ्-लमून (५७) व कम् अह्-लक्ना मिन् क़र्यतिम्-बति-रत् मअी-श-तहा फ़तिल्-क मसाकिनुहुम् लम् तुस्कन् - मिम्बअ्-दिहिम् इल्ला क़लीलन् व कुन्ना नह़्नुल्-वारिसीन (५८) व मा का-न रब्बु-क मुह्लिकल् - क़ुरा ह़त्ता यब् - अ़ - स फ़ी उम्मिहा रसूलंय्यत्लू अ़लैहिम् आयातिना व मा कुन्ना मुह्लिकिल्क़ुरा इल्ला व अह्लुहा ज़ालिमून (५९) व मा ऊतीतुम् मिन् शैइन् फ़ - मताअुल् - ह़यातिद्दुन्या व ज़ीनतुहा व मा अ़िन्दल्लाहि ख़ैरुंव-व अब्क़ा अ - फ़ला तअ् - क़िलून ★ (६०) अ-फ़-मंव्व-अ़द्नाहु वअ्-दन् ह़-स-नन् फ़हु-व लाक़ीहि क-मम्-मत्तअ्-नाहु मताअल्-ह़यातिद्दुन्या सुम्-म हु-व यौमल् - क़ियामति मिनल्-मुह्-ज़रीन (६१)

وَلَقَدْ وَصَّلْنَا لَهُمُ الْقَوْلَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ۞ الَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ
مِن قَبْلِهِ هُم بِهِ يُؤْمِنُونَ ۞ وَإِذَا يُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ قَالُوا آمَنَّا بِهِ
إِنَّهُ الْحَقُّ مِن رَّبِّنَا إِنَّا كُنَّا مِن قَبْلِهِ مُسْلِمِينَ ۞ أُولَٰئِكَ يُؤْتَوْنَ
أَجْرَهُم مَّرَّتَيْنِ بِمَا صَبَرُوا وَيَدْرَءُونَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ وَ
مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ۞ وَإِذَا سَمِعُوا اللَّغْوَ أَعْرَضُوا عَنْهُ وَ
قَالُوا لَنَا أَعْمَالُنَا وَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ لَا نَبْتَغِي
الْجَاهِلِينَ ۞ إِنَّكَ لَا تَهْدِي مَنْ أَحْبَبْتَ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ يَهْدِي
مَن يَشَاءُ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ۞ وَقَالُوا إِن نَّتَّبِعِ الْهُدَىٰ
مَعَكَ نُتَخَطَّفْ مِنْ أَرْضِنَا أَوَلَمْ نُمَكِّن لَّهُمْ حَرَمًا آمِنًا يُجْبَىٰ
إِلَيْهِ ثَمَرَاتُ كُلِّ شَيْءٍ رِّزْقًا مِّن لَّدُنَّا وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۞
وَكَمْ أَهْلَكْنَا مِن قَرْيَةٍ بَطِرَتْ مَعِيشَتَهَا فَتِلْكَ مَسَاكِنُهُمْ
لَمْ تُسْكَن مِّن بَعْدِهِمْ إِلَّا قَلِيلًا وَكُنَّا نَحْنُ الْوَارِثِينَ ۞
وَمَا كَانَ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرَىٰ حَتَّىٰ يَبْعَثَ فِي أُمِّهَا رَسُولًا يَتْلُو
عَلَيْهِمْ آيَاتِنَا وَمَا كُنَّا مُهْلِكِي الْقُرَىٰ إِلَّا وَأَهْلُهَا ظَالِمُونَ ۞ وَ
مَا أُوتِيتُم مِّن شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَزِينَتُهَا وَمَا عِندَ
اللَّهِ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۞ أَفَمَن وَعَدْنَاهُ وَعْدًا حَسَنًا
فَهُوَ لَاقِيهِ كَمَن مَّتَّعْنَاهُ مَتَاعَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ثُمَّ هُوَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

● नि. १/२ ★रु. ६/६ आ १०

और हम (एक के बाद एक) लगातार उन लोगों के पास (हिदायत की) बातें भेजते रहे हैं, ताकि नसीहत पकड़ें।[1] (५१) जिन लोगों को हम ने इस से पहले किताब दी थी, वे इस पर ईमान ले आते हैं●(५२) और जब (क़ुरआन) उन को पढ़ कर सुनाया जाता है, तो कहते हैं कि हम इस पर ईमान ले आए। बेशक वह हमारे परवरदिगार की तरफ़ से बर-हक़ है (और) हम तो इस से पहले के हुक्मबरदार हैं। (५३) इन लोगों को दोगुना बदला दिया जाएगा, क्योंकि सब्र करते रहे हैं और भलाई के साथ बुराई को दूर करते हैं और जो (माल) हम ने उन को दिया है, उस में से ख़र्च करते हैं। (५४) और जब बेहूदा बात सुनते हैं, तो उस से मुंह फेर लेते हैं और कहते हैं कि हम को हमारे आमाल और तुम को तुम्हारे आमाल, तुम को सलाम। हम जाहिलों के ख़्वास्तगार (चाहने वाले) नहीं हैं। (५५) (ऐ मुहम्मद !) तुम जिस को दोस्त रखते हो, उसे हिदायत नहीं कर सकते, बल्कि ख़ुदा ही जिस को चाहता है, हिदायत करता है और वह हिदायत पाने वालों को ख़ूब जानता है। (५६) और कहते हैं कि अगर हम तुम्हारे साथ हिदायत की पैरवी करें, तो अपने मुल्क से उचक लिए जाएं। क्या हम ने उन को हरम में, जो अम्न की जगह है, जगह नहीं दी, जहां हर क़िस्म के मेवे पहुंचाए जाते हैं (और यह) रिज़्क़ हमारी तरफ़ से है, लेकिन उनमें से अक्सर नहीं जानते। (५७) और हम ने बहुत-सी बस्तियों को हलाक कर डाला, जो अपनी दौलत (की ज़्यादती) में इतरा रहे थे, सो ये उन के मकान हैं, जो उन के बाद आबाद नहीं हुए, मगर बहुत कम और उन के पीछे हम ही उन के वारिस हुए। (५८) और तुम्हारा परवरदिगार बस्तियों को हलाक नहीं किया करता, जब तक उन के बड़े शहर में पैग़म्बर न भेज ले, जो उन को हमारी आयतें पढ़-पढ़ कर सुनाये, और हम बस्तियों को हलाक नहीं किया करते, मगर इस हालत में कि वहां के बाशिंदे ज़ालिम हों। (५९) और जो चीज़ तुम को दी गयी है, वह दुनिया की ज़िंदगी का फ़ायदा और उस की ज़ीनत है और जो ख़ुदा के पास है, वह बेहतर और बाक़ी रहने वाली है। क्या तुम समझते नहीं ? (६०)★

भला जिस शख़्स से हम ने नेक वायदा किया और उस ने उसे हासिल कर लिया तो क्या वह उस शख़्स का-सा है, जिस को हम ने दुनिया की ज़िंदगी के फ़ायदे से नवाज़ा। फिर वह क़ियामत के दिन उन लोगों में हो, जो (हमारे रू-ब-रू) हाज़िर किए जाएंगे। (६१) और जिस (दिन) (ख़ुदा)

---

१. बातें 'क़ौल' का तर्जुमा है और इस से मुराद क़ुरआन मजीद की आयतें हैं, जो एक दूसरे के बाद आती रहीं।

व यौ-म युनादीहिम् फ़-यक़ूलु ऐ-न शु-रकाँ-इयल्लज़ी-न कुन्तुम् तज़्-अुमून (६२) क़ालल्लज़ी-न हक़्-क़ अलैहिमुल् - क़ौलु रब्बना हाउलाइकल्लज़ी-न अग़्वैना ज अग़्वैनाहुम् कमा ग़वैना ج तबर्रअ्-ना इलै - क ز मा कानू इय्याना यअ्-बुदून (६३) व क़ीलद्अू शु-र-का-अकुम् फ़-दऔहुम् फ़-लम् यस्तजीबू लहुम् व र-अ-वुल्-अ़ज़ा-ब ج लौ अन्नहुम् कानू यह्-तदून (६४) व यौ-म युनादीहिम् फ़ यक़ूलु माज़ा अ-जब्तुमुल् - मुर्सलीन (६५) फ़-अ़मि-यत् अ़लैहिमुल् - अम्बाउ यौमइज़िन् फ़हुम् ला य-त-साअलून (६६) फ़-अम्मा मन् ता-ब व आ-म-न व अ़मि-ल सालिहन् फ़-असा अंय्यकू-न मिनल्मुफ़्लिहीन (६७) व रब्बु-क यख़्-लुक़ु मा यशाउ व यख़्तारु ط मा का - न लहुमुल् - ख़ि - य - रतु ط सुब्हानल्लाहि व तआ़ला अ़म्मा युश्रिकून (६८) व रब्बु-क यअ्-लमु मा तुकिन्नु सुदूरुहुम् व मा युअ्-लिनून (६९)

مِنَ الْمُحْضَرِينَ ۝ وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَائِيَ الَّذِينَ
كُنتُمْ تَزْعُمُونَ ۝ قَالَ الَّذِينَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ رَبَّنَا هَٰؤُلَاءِ
الَّذِينَ أَغْوَيْنَا أَغْوَيْنَاهُمْ كَمَا غَوَيْنَا تَبَرَّأْنَا إِلَيْكَ مَا كَانُوا إِيَّانَا
يَعْبُدُونَ ۝ وَقِيلَ ادْعُوا شُرَكَاءَكُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيبُوا
لَهُمْ وَرَأَوُا الْعَذَابَ لَوْ أَنَّهُمْ كَانُوا يَهْتَدُونَ ۝ وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ
فَيَقُولُ مَاذَا أَجَبْتُمُ الْمُرْسَلِينَ ۝ فَعَمِيَتْ عَلَيْهِمُ الْأَنبَاءُ يَوْمَئِذٍ
فَهُمْ لَا يَتَسَاءَلُونَ ۝ فَأَمَّا مَن تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَعَسَىٰ
أَن يَكُونَ مِنَ الْمُفْلِحِينَ ۝ وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ وَيَخْتَارُ مَا
كَانَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ سُبْحَانَ اللَّهِ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝ وَرَبُّكَ
يَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُورُهُمْ وَمَا يُعْلِنُونَ ۝ وَهُوَ اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا
هُوَ لَهُ الْحَمْدُ فِي الْأُولَىٰ وَالْآخِرَةِ وَلَهُ الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝
قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِن جَعَلَ اللَّهُ عَلَيْكُمُ اللَّيْلَ سَرْمَدًا إِلَىٰ يَوْمِ
الْقِيَامَةِ مَنْ إِلَٰهٌ غَيْرُ اللَّهِ يَأْتِيكُم بِضِيَاءٍ أَفَلَا تَسْمَعُونَ ۝
قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِن جَعَلَ اللَّهُ عَلَيْكُمُ النَّهَارَ سَرْمَدًا إِلَىٰ يَوْمِ
الْقِيَامَةِ مَنْ إِلَٰهٌ غَيْرُ اللَّهِ يَأْتِيكُم بِلَيْلٍ تَسْكُنُونَ فِيهِ أَفَلَا
تُبْصِرُونَ ۝ وَمِن رَّحْمَتِهِ جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ لِتَسْكُنُوا
فِيهِ وَلِتَبْتَغُوا مِن فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝ وَيَوْمَ

व हुवल्लाहु ला इला-ह इल्ला हु-व ط लहुल्-हम्दु फ़िल्-ऊला वल्-आख़िरति व लहुल्-हुक्मु व इलैहि तुर्जअून (७०) क़ुल् अ-रऐतुम् इन् ज-अ़-लल्लाहु अ़लैकुमुल्लै-ल सर्मदन् इला यौमिल्क़ियामति मन् इलाहुन् ग़ैरुल्लाहि यअ्तीकुम् बिज़ियाइन् ط अ-फ़ला तस्-मअून (७१) क़ुल् अ-रऐतुम् इन् ज-अ़-लल्लाहु अ़लैकुमुन्नहा-र सर्मदन् इला यौमिल्क़ियामति मन् इलाहुन् ग़ैरुल्लाहि यअ्तीकुम् बिलैलिन् तस्कुनू - न फ़ीहि ط अ-फ़-ला तुब्सिरून (७२) व मिर्रह़्मतिही ज-अ़-ल लकुमुल्लै-ल वन्नहा - र लितस्कुनू फ़ीहि व लि - तब्तग़ू मिन् फ़ज़्लिही व ल - अ़ल्लकुम् तश्कुरून (७३)

उन को पुकारेगा और कहेगा कि मेरे वे शरीक कहां हैं, जिन का तुम्हें दावा था? (६२) (तो) जिन लोगों पर (अज़ाब का) हुक्म साबित हो चुका होगा, वे कहेंगे कि हमारे परवरदिगार! ये वह लोग हैं, जिन को हम ने गुमराह किया था और जिस तरह हम खुद गुमराह हुए थे उसी तरह उन को गुमराह किया था, (अब) हम तेरी तरफ़ (मुतवज्जह हो कर) उन से बे-ज़ार होते हैं। ये हमें नहीं पूजते थे। (६३) और कहा जाएगा कि अपने शरीकों को बुलाओ, तो वे उन को पुकारेंगे और वे उन को जवाब न दे सकेंगे और (जब) अज़ाब को देख लेंगे (तो तमन्ना करेंगे कि) काश! वे हिदायत पाये हुए होते। (६४) और जिस दिन (खुदा) उन को पुकारेगा और कहेगा कि तुम ने पैग़म्बरों को क्या जवाब दिया? (६५) तो वे उस दिन ख़बरों से अंधे हो जाएंगे[1] और आपस में कुछ भी पूछ न सकेंगे। (६६) लेकिन जिस ने तौबा की और ईमान लाया और नेक अमल किए, तो उम्मीद है कि वह निजात पाने वालों में हो। (६७) और तुम्हारा परवरदिगार जो चाहता है, पैदा करता है और (जिसे चाहता है) चुन लेता है। उन को (इस का) अख़्तियार नहीं है, ये जो शिर्क करते हैं, ख़ुदा उस से पाक व ऊंचा है। (६८) और उन के सीने, जो कुछ छिपाते हैं और जो ये ज़ाहिर करते हैं, तुम्हारा परवरदिगार उस को जानता है। (६९) और वही ख़ुदा है, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, दुनिया और आख़िरत में उसी की तारीफ़ है और उसी का हुक्म और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे। (७०) कहो, भला, देखो तो अगर ख़ुदा तुम पर हमेशा क़ियामत के दिन तक रात (का अंधेरा) किए रहे, तो ख़ुदा के सिवा कौन माबूद है, जो तुम को रोशनी ला दे, तो क्या तुम सुनते नहीं? (७१) कहो, तो भला देखो तो अगर ख़ुदा तुम पर हमेशा क़ियामत तक दिन किए रहे, तो ख़ुदा के सिवा कौन माबूद है कि तुम को रात ला दे, जिस में तुम आराम करो, तो क्या तुम देखते नहीं? (७२) और उस ने अपनी रहमत से तुम्हारे लिए रात को और दिन को बनाया, ताकि तुम उसमें आराम करो और (उस में) उसका फ़ज़्ल तलाश करो और ताकि शुक्र करो। (७३)

---

१. लफ़्ज़ों का तर्जुमा तो यह है कि उस दिन उन पर ख़बरें अंधी हो जाएंगी लेकिन उर्दू मुहावरे को ध्यान में रखते हुए उस का तर्जुमा इस तरह किया गया।

व यौ-म युनादीहिम् फ़-यक़ूलु ऐ-न शु-रकाइ-यल्लज़ी-न कुन्तुम् तज़्अुमून (७४) व न-ज़अ्-ना मिन् कुल्लि उम्मतिन् शहीदन् फ़-क़ुल्ना हातू बुर्हानकुम् फ़-अ़लिमू अन्नल्हक़्-क़ लिल्लाहि व ज़ल्-ल अन्हुम् मा कानू यफ़्तरून★(७५) इन्-न क़ारू-न का-न मिन् क़ौमि मूसा फ़-बग़ा अलैहिम् व आतैनाहु मिनल्कुनूज़ि मा इन्-न मफ़ाति-हहू ल-तनूउ बिल्अुस्बति उलिल् - क़ुव्वति इज़् क़ा - ल लहू क़ौमुहू ला तफ़्रह् इन्नल्ला-ह ला युहिब्बुल्-फ़रिहीन (७६) वब्तग़ि फ़ीमा आताकल्लाहुद्-दारल्-आख़ि-र-त व ला तन्-स नसी-ब-क मिनद्दुन्या व अह्सिन् कमा अह्-स-नल्लाहु इलै-क व ला तब्ग़िल्-फ़सा-द फ़िल्अर्ज़ि इन्नल्ला - ह ला युहिब्बुल्-मुफ़्सिदीन (७७) क़ा-ल इन्नमा ऊतीतुहू अला अिल्मिन् अिन्दी अ-व लम् यअ्-लम् अन्नल्ला-ह क़द् अह्-ल-क मिन् क़ब्लिही मिनल्-क़ुरूनि मन् हु-व अशद्दु मिन्हु क़ुव्वतंव-व अक्सरु जम्-अन् व ला युस्अलु अन् ज़ुनूबिहिमुल्-मुज्रिमून (७८) फ़-ख़-र-ज अला क़ौमिही फ़ी ज़ीनतिही क़ालल्लज़ी-न युरीदूनल्-हयातद्दुन्या यालै-त लना मिस्-ल मा ऊति-य क़ारूनु इन्नहू ल-ज़ू हज़्ज़िन् अज़ीम (७९) व क़ालल्लज़ी-न ऊतुल्अिल्-म वैलकुम् सवाबुल्लाहि ख़ैरुल्लिमन् आम-न व अमि-ल सालिहन् व ला युलक़्क़ाहा इल्लस्साबिरून (८०) फ़ ख़ - सफ़्ना बिही व बिदारिहिल्-अर्-ज़ फ़मा का-न लहू मिन् फ़ि - अतिंय्यन्सुरूनहू मिन् दूनिल्लाहि व मा का - न मिनल् - मुन्तसिरीन (८१)

امن خلق ٢٠ القصص ٢٨

يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَاءِيَ الَّذِينَ كُنتُمْ تَزْعُمُونَ ۝ وَنَزَعْنَا
مِن كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا فَقُلْنَا هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ فَعَلِمُوا أَنَّ الْحَقَّ
لِلَّهِ وَضَلَّ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ۝ إِنَّ قَارُونَ كَانَ مِن قَوْمِ
مُوسَىٰ فَبَغَىٰ عَلَيْهِمْ ۖ وَآتَيْنَاهُ مِنَ الْكُنُوزِ مَا إِنَّ مَفَاتِحَهُ لَتَنُوأُ
بِالْعُصْبَةِ أُولِي الْقُوَّةِ إِذْ قَالَ لَهُ قَوْمُهُ لَا تَفْرَحْ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا
يُحِبُّ الْفَرِحِينَ ۝ وَابْتَغِ فِيمَا آتَاكَ اللَّهُ الدَّارَ الْآخِرَةَ ۖ وَلَا
تَنسَ نَصِيبَكَ مِنَ الدُّنْيَا ۖ وَأَحْسِن كَمَا أَحْسَنَ اللَّهُ إِلَيْكَ ۖ وَ
لَا تَبْغِ الْفَسَادَ فِي الْأَرْضِ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِينَ ۝
قَالَ إِنَّمَا أُوتِيتُهُ عَلَىٰ عِلْمٍ عِندِي ۚ أَوَلَمْ يَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ قَدْ
أَهْلَكَ مِن قَبْلِهِ مِنَ الْقُرُونِ مَنْ هُوَ أَشَدُّ مِنْهُ قُوَّةً وَأَكْثَرُ
جَمْعًا ۚ وَلَا يُسْأَلُ عَن ذُنُوبِهِمُ الْمُجْرِمُونَ ۝ فَخَرَجَ عَلَىٰ
قَوْمِهِ فِي زِينَتِهِ ۖ قَالَ الَّذِينَ يُرِيدُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا يَا لَيْتَ
لَنَا مِثْلَ مَا أُوتِيَ قَارُونُ إِنَّهُ لَذُو حَظٍّ عَظِيمٍ ۝ وَقَالَ
الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ وَيْلَكُمْ ثَوَابُ اللَّهِ خَيْرٌ لِّمَنْ آمَنَ وَعَمِلَ
صَالِحًا ۚ وَلَا يُلَقَّاهَا إِلَّا الصَّابِرُونَ ۝ فَخَسَفْنَا بِهِ وَبِدَارِهِ الْأَرْضَ
فَمَا كَانَ لَهُ مِن فِئَةٍ يَنصُرُونَهُ مِن دُونِ اللَّهِ وَمَا كَانَ مِنَ
الْمُنتَصِرِينَ ۝ وَأَصْبَحَ الَّذِينَ تَمَنَّوْا مَكَانَهُ بِالْأَمْسِ يَقُولُونَ

منزل

★रु. ७/१० आ १५

और जिस दिन वह उन को पुकारेगा और कहेगा कि मेरे वे शरीक, जिन का तुम्हें दावा था, कहां हैं ? (७४) और हम हर एक उम्मत में से गवाह निकाल लेंगे, फिर कहेंगे कि अपनी दलील पेश करो, तो वे जान लेंगे कि सच बात ख़ुदा की है और जो कुछ वे झूठ गढ़ा करते थे, उन से जाता रहेगा। (७५)★

क़ारून मूसा की क़ौम में से था और उन पर सरकशी करता था और हमने उस को इतने ख़ज़ाने दिए थे कि उन की कुंजियां एक ताक़तवर जमाअत को उठानी मुश्किल होतीं। जब उस से उस की क़ौम ने कहा कि इतराइये मत कि ख़ुदा इतराने वालों को पसन्द नहीं करता। (७६) और (माल) तुम को ख़ुदा ने अता फ़रमाया है, उस से आख़िरत (की भलाई) तलब कीजिए और दुनिया से अपना हिस्सा न भुलाइए[1] और जैसी ख़ुदा ने तुम से भलाई की है (वैसी) तुम भी (लोगों से) भलाई करो और मुल्क में फ़साद न चाहो, क्योंकि ख़ुदा फ़साद करने वालों को दोस्त नहीं रखता। (७७) बोला कि यह (माल) मुझे इल्म (के ज़ोर) से मिला है। क्या उस को मालूम नहीं कि ख़ुदा ने उस से पहले बहुत सी उम्मतें, जो उस से ताक़त में बढ़ कर और जमइयत में ज़्यादा थीं, हलाक कर डाली हैं और गुनाहगारों से उन के गुनाहों के बारे में पूछा नहीं जाएगा।[2] (७८) तो (एक दिन) क़ारून (बड़ी) सजावट (और ठाठ) से अपनी क़ौम के सामने निकला। जो लोग दुनिया की ज़िंदगी के तलबगार थे, कहने लगे कि जैसा (माल व मता) क़ारून को मिला है, काश ! (ऐसा ही) हमें भी मिले। वह तो बड़ा ही क़िस्मत वाला है। (७९) और जिन लोगों को इल्म दिया गया था, वे कहने लगे कि तुम पर अफ़सोस, मोमिनों और नेक लोगों के लिए, (जो) सवाब ख़ुदा (के यहां तैयार है, वह) कहीं बेहतर है। और वह सिर्फ़ सब्र करने वालों ही को मिलेगा। (८०) पस हमने क़ारून को और उस के घर को ज़मीन में धंसा दिया, तो ख़ुदा के सिवा कोई जमाअत उस की मददगार न हो सकी और न वह बदला ले सका। (८१) और वे लोग जो

१. यानी दुनिया में नेक अमल कीजिए कि आख़िरत में यही साथ जाएंगे।

२. यानी गुनाहगारों से पूछ कर उन को सज़ा नहीं दी जाएगी, बल्कि जब उन को अज़ाब का होना ज़रूर है, तो न पूछने की ज़रूरत है, न उन को चून व चरा करने की ताक़त।

★रु. ७/१० आ १५

व अस्बहल्लज़ी-न तमन्नौ मकानहू बिल्अम्सि यक़ूलू-न वै-क-अन्नल्ला-ह यब्सुतुर्रिज़्-क लिमंय्यशाउ मिन् अिबादिही व यक़्दिरु ᑕ लौ ला अम्मन्नल्लाहु अलैना ल-ख़-स-फ़ बिना ♭ वै-क-अन्नहू ला युफ़्लिहुल्-काफ़िरून ★(८२) तिल्कद्दारुल्-आख़िरतु नज-अलुहा लिल्लज़ी-न ला युरीदू-न अुलुव्वन् फ़िल्अर्ज़ि व ला फ़सादन् ♭ वल्-आक़िबतु लिल्मुत्तक़ीन (८३) मन् जा-अ बिल-ह-स-नति फ़-लहू ख़ैरुम्मिन्हा ᑕ व मन् जा-अ बिस्सय्यिअति फ़ला युज्ज़ल्लज़ी-न अमिलुस्सय्यिआति इल्ला मा कानू यअ्-मलून (८४) इन्नल्लज़ी फ़-र-ज़ अलैकल्-क़ुर्आ-न ल-राद्दु-क इला मआदिन् ♭ क़ुर्रब्बी अअ्-लमु मन् जा-अ बिल्हुदा व मन् हु-व फ़ी ज़लालिम्-मुबीन (८५) व मा कुन्-त तर्जू अंय्युल्क़ा इलैकल्-किताबु इल्ला रह्-म-तम्-मिर्रब्बि-क फ़ला तकूनन्-न ज़हीरल्-लिल्काफ़िरीन ✓(८६) व ला यसुद्दुन्न-क अन् आयातिल्लाहि बअ्-द इज़् उन्ज़िलत् इलै-क वद्अु इला रब्बि-क व ला तकूनन्-न मिनल्-मुश्रिकीन ᑕ (८७) व ला तद्अु म-अल्लाहि इलाहन् आख़-र⁂ला इला-ह इल्ला हु-व क़िफ़ कुल्लु शैइन् हालिकुन् इल्ला वज्-हहू ♭ लहुल्हुक्मु व इलैहि तुर्जअून ★●(८८)

وَيْكَأَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَوْلَا
أَنْ مَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا لَخَسَفَ بِنَا وَيْكَأَنَّهُ لَا يُفْلِحُ الْكَافِرُونَ ﴿٨٢﴾
تِلْكَ الدَّارُ الْآخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِينَ لَا يُرِيدُونَ عُلُوًّا فِي الْأَرْضِ
وَلَا فَسَادًا وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِينَ ﴿٨٣﴾ مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ خَيْرٌ
مِنْهَا وَمَنْ جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَى الَّذِينَ عَمِلُوا السَّيِّئَاتِ
إِلَّا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٨٤﴾ إِنَّ الَّذِي فَرَضَ عَلَيْكَ الْقُرْآنَ
لَرَادُّكَ إِلَىٰ مَعَادٍ قُلْ رَبِّي أَعْلَمُ مَنْ جَاءَ بِالْهُدَىٰ وَمَنْ هُوَ
فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ﴿٨٥﴾ وَمَا كُنْتَ تَرْجُو أَنْ يُلْقَىٰ إِلَيْكَ الْكِتَابُ إِلَّا
رَحْمَةً مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُونَنَّ ظَهِيرًا لِلْكَافِرِينَ ﴿٨٦﴾ وَلَا يَصُدُّنَّكَ
عَنْ آيَاتِ اللَّهِ بَعْدَ إِذْ أُنْزِلَتْ إِلَيْكَ وَادْعُ إِلَىٰ رَبِّكَ وَلَا تَكُونَنَّ
مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿٨٧﴾ وَلَا تَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ
كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ إِلَّا وَجْهَهُ لَهُ الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٨٨﴾
سُورَةُ الْعَنْكَبُوتِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ تِسْعٌ وَسِتُّونَ آيَةً وَسَبْعُ رُكُوعَاتٍ
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
الم ﴿١﴾ أَحَسِبَ النَّاسُ أَنْ يُتْرَكُوا أَنْ يَقُولُوا آمَنَّا وَهُمْ لَا
يُفْتَنُونَ ﴿٢﴾ وَلَقَدْ فَتَنَّا الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلَيَعْلَمَنَّ اللَّهُ
الَّذِينَ صَدَقُوا وَلَيَعْلَمَنَّ الْكَاذِبِينَ ﴿٣﴾ أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ

२९ सूरतुल्-अ़न्कबूति ८५

(मक्की) इस सूरः में अरबी के ४४१० अक्षर, ९९० शब्द, ६९ आयतें और ७ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ●

अलिफ़्-लाम्-मीम् ᑕ (१) अ-हसिबन्नासु अंय्युत्रकू अंय्यक़ूलू आमन्ना व हुम् ला युफ़्तनून (२) व ल-क़द् फ़-त-न्नल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् फ़ ल-यअ्-ल-मन्नल्लाहुल्-लज़ी-न स-दक़ू व ल-यअ्-ल-मन्नल् काज़िबीन (३)

कल उस के रुत्बे की तमन्ना करते थे, सुबह को कहने लगे, हाय शामत! ख़ुदा ही तो अपने बन्दों में से जिस के लिए चाहता है, रोज़ी फैला देता है और (जिस के लिए चाहता है) तंग कर देता है। अगर ख़ुदा हम पर एहसान न करता तो हमें भी धंसा देता। हाय ख़राबी! काफ़िर निजात नहीं पा सकते। (८२) ★

वह (जो) आख़िरत का घर (है) हमने उसे उन लोगों के लिए (तैयार) कर रखा है जो मुल्क में ज़ुल्म और फ़साद का इरादा नहीं रखते और (नेक) अंजाम तो परहेज़गारों ही का है। (८३) जो शख़्स नेकी ले कर आएगा, उस के लिए इस से बेहतर (बदला मौजूद) है और जो बुराई लाएगा तो जिन लोगों ने बुरे काम किए, उन को बदला भी उसी तरह का मिलेगा, जिस तरह के वे काम करते थे। (८४) (ऐ पैग़म्बर!) जिस (ख़ुदा) ने तुम पर क़ुरआन (के हुक्मों को) फ़र्ज़ किया है, वह तुम्हें बाज़ गश्त[1] की जगह लौटा देगा। कह दो कि मेरा परवरदिगार उस शख़्स को भी ख़ूब जानता है, जो हिदायत ले कर आया और (उस को भी), जो खुली गुमराही में है। (८५) और तुम्हें उम्मीद न थी कि तुम पर यह किताब नाज़िल की जाएगी, मगर तुम्हारे परवरदिगार की मेहरबानी से (नाज़िल हुई), तो तुम हरगिज़ काफ़िरों के मददगार न होना। (८६) और वे तुम्हें ख़ुदा की आयतों (की तब्लीग़) से, बाद इस के कि वह तुम पर नाज़िल हो चुकी हैं, रोक न दें और अपने परवरदिगार को पुकारते रहो और मुश्रिकों में हरगिज़ न होजियो। (८७) और ख़ुदा के साथ किसी और को माबूद (समझ कर) न पुकारना▨ उस के सिवा कोई माबूद नहीं। उस की ज़ात (पाक) के सिवा हर चीज़ फ़ना होने वाली है। उसी का हुक्म है और उसी की तरफ़ तुम लौट कर जाओगे। (८८) ★●

२६ सूरः अंकबूत ८५

सूरः अंकबूत मक्की है और इस में उनहत्तर आयतें और सात रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ़-लाम्-मीम्, (१) क्या ये लोग यह ख़्याल किए हुए हैं कि (सिर्फ़) यह कहने से कि हम ईमान ले आए, छोड़ दिए जाएंगे और उन की आज़माइश नहीं की जाएगी। (२) और जो लोग इन से पहले हो चुके हैं, हमने उन को भी आज़माया था (और उन को भी आज़माएंगे), सो ख़ुदा उन को ज़रूर मालूम करेगा, जो (अपने ईमान में) सच्चे हैं और उन को भी, जो झूठे हैं। (३)

---

१. बाज़ गश्त की जगह से या तो क़ियामत मुराद है या बहिश्त।

अम् हसिबल्लज़ी-न यअ्-मलूनस्-सय्यिआति अंय्यस्बिक़ूना ط सा-अ मा यह्कुमून (४) मन् का-न यर्जू लिक़ाअल्लाहि फ़इन्-न अ-ज-लल्लाहि लआतिन् ط व हुवस्समीअुल्-अ़लीम (५) व मन् जाह-द फ़-इन्नमा युजाहिदु लिनफ़्सिही ط इन्नल्ला-ह लग़निय्युन् अ़निल्-आ़लमीन (६) वल्लज़ी-न आमनू व

يَعْمَلُونَ السَّيِّاٰتِ اَنْ يَّسْبِقُوْنَا ۭ سَاۗءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ۝ مَنْ كَانَ
يَرْجُوْا لِقَاۗءَ اللّٰهِ فَاِنَّ اَجَلَ اللّٰهِ لَاٰتٍ ۭ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝
وَمَنْ جَاهَدَ فَاِنَّمَا يُجَاهِدُ لِنَفْسِهٖ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَغَنِيٌّ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ۝
وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَ
لَنَجْزِيَنَّهُمْ اَحْسَنَ الَّذِيْ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ
بِوَالِدَيْهِ حُسْنًا ۭ وَاِنْ جَاهَدٰكَ لِتُشْرِكَ بِيْ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ
فَلَا تُطِعْهُمَا ۭ اِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝
وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُدْخِلَنَّهُمْ فِي الصّٰلِحِيْنَ ۝ وَ
مِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ فَاِذَآ اُوْذِيَ فِي اللّٰهِ جَعَلَ فِتْنَةَ
النَّاسِ كَعَذَابِ اللّٰهِ ۭ وَلَىِٕنْ جَاۗءَ نَصْرٌ مِّنْ رَّبِّكَ لَيَقُوْلُنَّ اِنَّا
كُنَّا مَعَكُمْ ۭ اَوَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِمَا فِيْ صُدُوْرِ الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَ
لَيَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَيَعْلَمَنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ ۝ وَقَالَ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّبِعُوْا سَبِيْلَنَا وَلْنَحْمِلْ خَطٰيٰكُمْ ۭ وَمَا
هُمْ بِحٰمِلِيْنَ مِنْ خَطٰيٰهُمْ مِّنْ شَيْءٍ ۭ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ۝ وَ
لَيَحْمِلُنَّ اَثْقَالَهُمْ وَاَثْقَالًا مَّعَ اَثْقَالِهِمْ ۡ وَلَيُسْــَٔــلُنَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ
عَمَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَلَبِثَ
فِيْهِمْ اَلْفَ سَنَةٍ اِلَّا خَمْسِيْنَ عَامًا ۭ فَاَخَذَهُمُ الطُّوْفَانُ وَ

अ़मिलुस्सालिहाति ल-नुकफ़्फ़िरन-न अ़न्हुम् सय्यिआतिहिम् व ल-नज्ज़ियन्नहुम् अह्-स-नल्लज़ी कानू यअ्-मलून (७) व वस्सैनल्-इन्सा-न बिवालिदैहि हुस्-नन् ط व इन् जाहदा-क लितुश्रि-क बी मा लै-स ल-क बिही अ़िल्मुन् फ़ला तुतिअ् - हुमा ط इलय्-य मर्जिअुकुम् फ़-उनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् तअ्-मलून (८) वल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति ल-नुद्ख़िलन्नहुम् फ़िस्सालिहीन (९) व मिनन्नासि मंय्यक़ूलु आमन्ना बिल्लाहि फ़इज़ा ऊज़ि-य फ़िल्लाहि ज-अ़-ल फ़ित्नतन्नासि क-अ़ज़ाबिल्लाहि ط व लइन् जा-अ नस्रुम्-मिर्रब्बि-क ल-यक़ूलुन्-न इन्ना कुन्ना म-अ़कुम् ط अ-व लैसल्लाहु बिअअ्-लम बिमा फ़ी सुदूरिल्-आ़लमीन (१०) व ल-यअ़-लमन्नल्लाहुल्लज़ी-न आमनू व ल-यअ्-ल-मन्नल्-मुनाफ़िक़ीन (११) व क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू लिल्लज़ी-न आमनुत्तबिअू सबीलना वल-नह्-मिल् ख़तायाकुम् ط व मा हुम् बिहामिली-न मिन् ख़तायाहुम् मिन् शैइन् ط इन्नहुम् ल-काज़िबून (१२) व ल-यह्मिलुन्-न अस्क़ालहुम् व अस्क़ालम्-म-अ अस्क़ालिहिम् ز व ल-युस्अलुन्-न यौमल्-क़ियामति अ़म्मा कानू यफ़्तरून ★ (१३) व ल - क़द् अर्सल्ना नूहन् इला क़ौमिही फ़-लबि - स फ़ीहिम् अल - फ़ स - नतिन् इल्ला ख़म्सी-न आ़मन् ط फ़-अ-ख़-ज - हुमुत्तूफ़ानु व हुम् ज़ालिमून (१४)

★रु. १/१३ आ १३

क्या वे लोग, जो बुरे काम करते हैं, यह समझे हुए हैं कि ये हमारे क़ाबू से निकल जाएंगे। जो ख्याल ये करते हैं, बुरा है। (४) जो शख़्स ख़ुदा की मुलाक़ात की उम्मीद रखता हो, तो ख़ुदा का (मुक़र्रर किया हुआ) वक़्त ज़रूर आने वाला है और वह सुनने वाला (और) जानने वाला है। (५) और जो शख़्स मेहनत करता है, तो अपने ही फ़ायदे के लिए मेहनत करता है (और) ख़ुदा तो सारी दुनिया से बे-परवा है। (६) और जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, हम उन के गुनाहों को उन से दूर कर देंगे और उन को उन के आमाल का बहुत अच्छा बदला देंगे। (७) और इंसान को अपने मां-बाप के साथ नेक सुलूक करने का हुक्म दिया है। (ऐ मुख़ातब !) अगर तेरे मां-बाप तेरे पीछे पड़ें कि तू मेरे साथ किसी को शरीक बनाए, जिस की हक़ीक़त तुझे नहीं मालूम, तो उन का कहना न मानियो। तुम सब को मेरी तरफ़ लौट कर आना है। फिर जो कुछ तुम करते थे, मैं तुम को जता दूंगा। (८) और जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, उन को हम नेक लोगों में दाख़िल करेंगे। (९) और कुछ लोग ऐसे हैं, जो कहते हैं कि हम ख़ुदा पर ईमान लाए। जब उन को ख़ुदा (के रास्ते) में कोई तक्लीफ़ पहुंचती है, तो लोगों की तक्लीफ़ को (यों) समझते हैं, जैसे ख़ुदा का अज़ाब और अगर तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से मदद पहुंचे, तो कहते हैं कि हम तो तुम्हारे साथ थे। क्या जो दुनिया वालों के सीनों में है, ख़ुदा उसे नहीं जानता ? (१०) और ख़ुदा उन को ज़रूर मालूम करेगा जो (सच्चे) मोमिन हैं और मुनाफ़िक़ों को भी मालूम कर के रहेगा। (११) और जो काफ़िर हैं, वे मोमिनों से कहते हैं कि हमारे तरीक़े की पैरवी करो, हम तुम्हारे गुनाह उठा लेंगे, हालांकि वे उन के गुनाहों का कुछ भी बोझ उठाने वाले नहीं ! कुछ शक नहीं कि ये झूठे हैं। (१२) और ये अपने बोझ भी उठाएंगे और अपने बोझों के साथ और (लोगों के) बोझ भी और जो बोहतान ये बांधते रहे, क़ियामत के दिन उन की उन से ज़रूर पूछ-ताछ होगी। (१३) ★

और हमने नूह को उन की क़ौम की तरफ़ भेजा, तो वह उन में पचास वर्ष कम हज़ार वर्ष रहे, फिर उन को तूफ़ान (के अज़ाब) ने आ पकड़ा और वह ज़ालिम थे। (१४) फिर हमने नूह

★रु० १/१३ आ १३

फ़-अन्जैनाहु व अस्हाबस्-सफ़ीनति व ज-अल्नाहा आयतल् - लिल्आलमीन (१५) व इब्राही-म इज् क़ा-ल लिक़ौमिहिअ्-बुदुल्ला-ह वत्तक़ूहु ؕ ज़ालिकुम् ख़ैरुल्लकुम् इन् कुन्तुम् तअ्-लमून (१६) इन्नमा तअ्-बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि औसानंव्-व तख़्लुक़ू-न इफ़्कन् ؕ इन्नल्लज़ी-न तअ्-बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि ला यम्लिकू-न लकुम् रिज़्-क़न् फ़ब्तग़ू अिन्दल्लाहिर्-रिज़्-क़ वअ् - बुदूहु वश्कुरू लहू ؕ इलैहि तुर्जअून (१७) व इन् तुकज़्ज़िबू फ़-क़द् कज़्ज़-ब उ-ममुम्-मिन् क़ब्लिकुम् ؕ व मा अलर्रसूलि इल्लल्-बलाग़ुल्-मुबीन (१८) अ-व लम् यरौ कै-फ़ युब्दिउल्लाहुल्-ख़ल्-क़ सुम्-म युअीदुहू ؕ इन्-न ज़ालि-क अलल्लाहि यसीर (१९) क़ुल् सीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़न्ज़ुरू कै-फ़ ब-द-अल्-ख़ल्-क़ सुम्मल्लाहु युन्शिउन् - नश्-अ-तल् - आख़ि-र-त ؕ इन्-नल्ला - ह अला कुल्लि शैइन् क़दीर ۚ (२०) युअ़ज़्ज़िबु मंय्यशाउ व यर्हमु मंय्यशाउ ۚ व इलैहि तुक़्लबून (२१)

هم ظلمون ﴿﴾ فانجينه واصحب السفينة وجعلنها اية للعلمين ﴿﴾
وابرهيم اذ قال لقومه اعبدوا الله واتقوه ذلكم خير لكم
ان كنتم تعلمون ﴿﴾ انما تعبدون من دون الله اوثانا و
تخلقون افكا ان الذين تعبدون من دون الله لا يملكون
لكم رزقا فابتغوا عند الله الرزق واعبدوه واشكروا له
اليه ترجعون ﴿﴾ وان تكذبوا فقد كذب امم من قبلكم وما
على الرسول الا البلغ المبين ﴿﴾ اولم يروا كيف يبدئ الله
الخلق ثم يعيده ان ذلك على الله يسير ﴿﴾ قل سيروا في
الارض فانظروا كيف بدا الخلق ثم الله ينشئ النشاة
الاخرة ان الله على كل شيء قدير ﴿﴾ يعذب من يشاء
ويرحم من يشاء واليه تقلبون ﴿﴾ وما انتم بمعجزين
في الارض ولا في السماء وما لكم من دون الله من ولي
ولا نصير ﴿﴾ والذين كفروا بايت الله ولقائه اولئك يئسوا
من رحمتي واولئك لهم عذاب اليم ﴿﴾ فما كان جواب قومه
الا ان قالوا اقتلوه او حرقوه فانجه الله من النار ان في
ذلك لايت لقوم يؤمنون ﴿﴾ وقال انما اتخذتم من دون
الله اوثانا مودة بينكم في الحيوة الدنيا ثم يوم القيمة

व मा अन्तुम् बिमुअ्जिज़ी-न फ़िल्अर्ज़ि व ला फ़िस्समाइ ؗ व मा लकुम् मिन् दूनिल्लाहि मिंव्वलिय्यिंव्-व ला नसीर★ (२२) वल्लज़ी-न क-फ़रू बिआयातिल्लाहि व लिक़ाइही उलाइ-क यइसू मिर्रह्मती व उलाइ - क लहुम् अज़ाबुन् अलीम (२३) फ़-मा का-न जवा-ब क़ौमिही इल्ला अन् क़ालुक़्तुलूहु औ हर्रिक़ूहु फ़-अन्जाहुल्लाहु मिनन्नारि ؕ इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल्-लिक़ौमिंय्युअ्मिनून (२४) व क़ा-ल इन्नमत्तख़ज़्तुम् मिन् दूनिल्लाहि औसानम् ॥ म-वद्-द-त बैनिकुम् फ़िल् - हयातिद्दुन्या ۚ सुम् - म यौमल्-क़ियामति यक्फ़ुरु बअ्-ज़ुकुम् बिबअ्-ज़िंव्-व यल्अनु बअ्-ज़ुकुम् बअ्-ज़ंव् - व मअ् - वाकुमुन्नारु ؗ व मा लकुम् मिन् नासिरीन ۙ (२५)

★रु. २/१४ आ ६

को और कश्ती वालों को निजात दी और कश्ती को दुनिया वालों के लिए निशानी बना दिया। (१५) और इब्राहीम को, (याद करो) जब उन्हों ने अपनी क़ौम से कहा कि ख़ुदा की इबादत करो और उस से डरो। अगर तुम समझ रखते हो, तो यह तुम्हारे हक़ में बेहतर है। (१६) तुम तो ख़ुदा को छोड़ कर बुतों को पूजते और तूफ़ान बांधते हो, तो जिन लोगों को तुम ख़ुदा के सिवा पूजते हो, वे तुम को रोज़ी देने का अख़्तियार नहीं रखते, पास ख़ुदा ही के यहां से रोज़ी तलब करो और उसी की इबादत करो और उसी का शुक्र करो, उसी की तरफ़ तुम लौट कर जाओगे। (१७) और अगर तुम (मुझे) झुठलाओ तो तुम से पहले भी उम्मतें (अपने पैग़म्बरों को) झुठला चुकी हैं और पैग़म्बर के ज़िम्मे खोल कर सुना देने के सिवा और कुछ नहीं। (१८) क्या उन्हों ने नहीं देखा कि ख़ुदा किस तरह ख़ल्क़त को पहली बार पैदा करता है, फिर (किस तरह) उस को बार-बार पैदा करता रहता है, यह ख़ुदा को आसान है। (१९) कह दो कि मुल्क में चलो-फिरो और देखो कि उस ने किस तरह ख़ल्क़त को पहली बार पैदा किया है, फिर ख़ुदा ही पिछली पैदाइश पैदा करेगा। बेशक ख़ुदा हर चीज़ पर क़ादिर है। (२०) वह जिसे चाहे अज़ाब दे और जिस पर चाहे रहम करे और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे। (२१) और तुम (उस को) न ज़मीन में आजिज़ कर सकते हो, न आसमान में और ख़ुदा के सिवा तुम्हारा कोई दोस्त है और न मददगार। (२२)★

और जिन लोगों ने ख़ुदा की आयतों से और उस के मिलने से इन्कार किया, वे मेरी रहमत से ना-उम्मीद हो गये हैं और उन को दर्द देने वाला अज़ाब होगा। (२३) तो उन की क़ौम के लोग जवाब में बोले, तो यह बोले, कि उसे मार डालो या जला दो, मगर ख़ुदा ने उन को आग (की जलन) से बचा लिया। जो लोग ईमान रखते हैं, उन के लिए उस में निशानियां हैं। (२४) और इब्राहीम ने कहा कि तुम जो ख़ुदा को छोड़ कर बुतों को ले बैठे हो, तो दुनिया की ज़िंदगी में आपसी दोस्ती के लिए, (मगर) फिर क़ियामत के दिन एक दूसरे (की दोस्ती) से इंकार कर दोगे और एक दूसरे पर लानत भेजोगे और तुम्हारा ठिकाना दोज़ख़ होगा और कोई तुम्हारा मददगार न

★रु. २/१४ आ ६

फ़आ - म - न लहू लूतुन् ۘ व क़ा-ल इन्नी मुहाजिरुन् इला रब्बी ؕ इन्नहू हुवल्अज़ीज़ुल्-हकीम (२६) व व-हब्ना लहू इस्हा-क़ व यअ्-कू-ब व ज-अल्ना फ़ी ज़ुर्रिय्यतिहिन्-नुबुव्व-त वल्किता-ब व आतैनाहु अज्-रहू फ़िद्दुन्या ۚ व इन्नहू फ़िल् - आख़िरति लमिनस्सालिहीन (२७) व लूतन् इज् क़ा - ल लिक़ौमिही इन्नकुम् ल-तअ्तूनल् - फ़ाहि-श-त ۫ मा स-ब-क़कुम् बिहा मिन् अ-हदिम्-मिनल्-आलमीन (२८) अ-इन्नकुम् ल - तअ्तूनर् - रिजा - ल व तक़्तऊनस्सबी - ल ۙ۬ व तअ्तू - न फ़ी नादीकुमुल्-मुन्क-र ؕ फ़ मा का-न जवा-ब क़ौमिही इल्ला अन् क़ालुअ्तिना बिअ़ज़ाबिल्-लाहि इन् कुन्-त मिनस्सादिक़ीन (२९) क़ा-ल रब्बिन्सुर्नी अ-लल्क़ौमिल्-मुफ़्सिदीन ★ (३०) व लम्मा जा-अत् रुसुलुना इब् - राही - म बिल्बुश्रा ۙ क़ालू इन्ना मुह्लिकू अह्लि हाज़िहिल् - क़र्यति ۚ इन्-न अह्-लहा कानू ज़ालिमीन ۚۖ (३१) क़ा - ल इन्-न फ़ीहा लूतन् ؕ क़ालू नह्नु अअ्-लमु बिमन् फ़ीहा ۫ ल - नुनज्जियन्नहू व अह् - लहू इल्लम्-र-अ-तहू ۫ कानत् मिनल्ग़ाबिरीन (३२) व लम्मा अन् जा-अत् रुसुलुना लूतन् सी-अ बिहिम् व ज़ा-क़ बिहिम् ज़र्अ़ंव-व क़ालू ला त-ख़फ़् व ला तह्-ज़न् ۫ इन्ना मुनज्जू-क व अह् - ल-क इल्लम्-र-अ-त-क कानत् मिनलग़ाबिरीन (३३) इन्ना मुन्ज़िलू - न अ़ला अह्लि हाज़िहिल् - क़र्यति रिज् - ज़म् - मिनस्समाइ बिमा कानू यफ़्सुक़ून (३४)

يَكْفُرُ بَعْضُكُمْ بِبَعْضٍ وَّيَلْعَنُ بَعْضُكُمْ بَعْضًا ۘ وَّمَاْوٰىكُمُ النَّارُ
وَمَا لَكُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ۝ فَاٰمَنَ لَهٗ لُوْطٌ ۘ وَقَالَ اِنِّيْ مُهَاجِرٌ
اِلٰى رَبِّيْ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ وَوَهَبْنَا لَهٗۤ اِسْحٰقَ وَ
يَعْقُوْبَ وَجَعَلْنَا فِيْ ذُرِّيَّتِهِ النُّبُوَّةَ وَالْكِتٰبَ وَاٰتَيْنٰهُ اَجْرَهٗ
فِي الدُّنْيَا ۚ وَاِنَّهٗ فِي الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝ وَلُوْطًا اِذْ
قَالَ لِقَوْمِهٖۤ اِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ ۫ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ
اَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ۝ اَئِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ وَتَقْطَعُوْنَ
السَّبِيْلَ ۙ۬ وَتَاْتُوْنَ فِيْ نَادِيْكُمُ الْمُنْكَرَ ؕ فَمَا كَانَ جَوَابَ
قَوْمِهٖۤ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوا ائْتِنَا بِعَذَابِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتَ مِنَ
الصّٰدِقِيْنَ ۝ قَالَ رَبِّ انْصُرْنِيْ عَلَى الْقَوْمِ الْمُفْسِدِيْنَ ۝
وَلَمَّا جَآءَتْ رُسُلُنَاۤ اِبْرٰهِيْمَ بِالْبُشْرٰى ۙ قَالُوْۤا اِنَّا مُهْلِكُوْۤا
اَهْلِ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ ۚ اِنَّ اَهْلَهَا كَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ۝ۚۖ قَالَ اِنَّ
فِيْهَا لُوْطًا ؕ قَالُوْا نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَنْ فِيْهَا ٘ لَنُنَجِّيَنَّهٗ وَاَهْلَهٗۤ
اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۗ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ۝ وَلَمَّاۤ اَنْ جَآءَتْ رُسُلُنَا
لُوْطًا سِيْٓءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَّقَالُوْا لَا تَخَفْ وَلَا
تَحْزَنْ ۫ اِنَّا مُنَجُّوْكَ وَاَهْلَكَ اِلَّا امْرَاَتَكَ كَانَتْ مِنَ
الْغٰبِرِيْنَ ۝ اِنَّا مُنْزِلُوْنَ عَلٰۤى اَهْلِ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ رِجْزًا مِّنَ

व. लाज़िम ★रु. ३/१५ आ ८

होगा। (२५) पस उन पर (एक) लूत ईमान लाए और (इब्राहीम) कहने लगे कि मैं अपने परवरदिगार की तरफ़ हिजरत करने वाला हूं। बेशक वह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (२६) और हम ने उनको इस्हाक़ और याक़ूब बख़्शे और उन की औलाद में पैग़म्बरी और किताब (मुक़र्रर) कर दी और उन को दुनिया में भी उन का बदला दिया और वे आख़िरत में भी नेक लोगों में होंगे, (२७) और लूत (को याद करो,) जब उन्हों ने अपनी क़ौम से कहा कि तुम (अजब) बे-हयाई अपनाते हो, तुम से पहले दुनिया वालों में से किसी ने ऐसा काम नहीं किया। (२८) क्या तुम (लज़्ज़त के इरादे से) लौंडों की तरफ़ मायल होते और (मुसाफ़िरों की) लूट-मार करते हो और अपनी मज्लिसों में ना-पसन्दीदा काम करते हो, तो उन की क़ौम के लोग जवाब में बोले तो यह बोले कि अगर तुम सच्चे हो, तो हम पर अज़ाब ले आओ। (२९) (लूत ने) कहा कि ऐ मेरे परवरदिगार! इन फ़सादी लोगों के मुक़ाबले में मुझे नुसरत इनायत फ़रमा। (३०)★

और जब हमारे फ़रिश्ते इब्राहीम के पास ख़ुशी की ख़बर ले कर आए, तो कहने लगे कि हम इस बस्ती के लोगों को हलाक कर देने वाले हैं कि यहां के रहने वाले ना-फ़रमान हैं। (३१) (इब्राहीम ने) कहा कि इस में तो लूत भी हैं। वे कहने लगे कि जो लोग (यहां) रहते हैं, हमें सब मालूम हैं। हम उन को और उन के घर वालों को बचा लेंगे, अलावा उन की बीवी के, कि वह पीछे रहने वालों में होगी। (३२) और जब हमारे फ़रिश्ते लूत के पास आए तो वह उन (की वजह से) ना-ख़ुश और तंग-दिल हुए। फ़रिश्तों ने कहा, कुछ ख़ौफ़ न कीजिए और न रंज कीजिए। हम आप को और आप के घर वालों को बचा लेंगे, मगर आप की बीवी कि पीछे रहने वालों में होगी। (३३) हम इस बस्ती के रहने वालों पर, इस वजह से कि ये बद-किरदारी करते रहे हैं,

व. लाज़िम ★रु. ३/१५ आ ८

व ल-क़द्-तरक्ना मिन्हा आ-य-तम्-बय्यि-नतल्-लिक़ौमिंय्यअ्-क़िलून (३५) व इला मद्-य-न अख़ाहुम् शुअै़बन् ॥ फ़क़ा-ल या क़ौमिअ्-बुदुल्ला-ह वर्जुल्-यौमल्-आख़ि-र व ला तअ्-सौ फ़िल्अर्ज़ि मुफ़्सिदीन (३६) फ़-कज़्ज़बूहु फ़-अ-ख़-ज़त्-हुमुर्-रज्फ़तु फ़-अस्बहू फ़ी दारिहिम् जासिमीन (३७) व आदंव्-व समू-द व क़त्तबय्य-न लकुम् मिम्-मसाकिनिहिम् व ज़य्य-न लहुमुश्शैतानु अअ्-मालहुम् फ़-सद्दहुम् अनिस्सबीलि व कानू मुस्तब्सिरीन (३८) व क़ारू-न व फ़िर्औ-न व हामा-न व ल-क़द् जा-अहुम् मूसा बिल्बय्यिनाति फ़स्तक्-बरू फ़िल्अर्ज़ि व मा कानू साबिक़ीन (३९) फ़ कुल्लन् अ-ख़ज़्ना बिज़म्बिही फ़ मिन्हुम् मन् अर्सल्ना अलैहि हासिबन् व मिन्हुम् मन् अ-ख़-ज़त्हुस्-सैहतु व मिन्हुम् मन् ख़-सफ़्ना बिहिल्अर्-ज़ व मिन्हुम् मन् अग़्-रक़्ना व मा कानल्लाहु लि-यज़्लिमहुम् व लाकिन् कानू अन्फ़ुसहुम् यज़्लिमून (४०) म-स-लुल्लज़ीनत्त-ख़-ज़ू मिन् दूनिल्लाहि औलिया-अ क-म-सलिल्-अन्कबूति इत्त-ख़-ज़त् बैतन् व इन्-न औहनल्-बुयूति लबैतुल्-अन्कबूति ※ लौ कानू यअ्-लमून (४१) इन्नल्ला-ह यअ्-लमु मा यद्ऊ-न मिन् दूनिही मिन् शैइन् व हुवल्-अज़ीज़ुल्-हकीम (४२) व तिल्कल्-अम्सालु नज़्रिबुहा लिन्नासि व मा यअ्-क़िलुहा इल्लल्-आलिमून (४३) ख़-ल-क़ल्लाहुस्-समावाति वल्अर्-ज़ बिल्हक़्क़ि इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयतल्-लिलमुअ्मिनीन ★ (४४)

السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ۝ وَلَقَدْ تَرَكْنَا مِنْهَا آيَةً بَيِّنَةً
لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ۝ وَإِلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا فَقَالَ يَا قَوْمِ
اعْبُدُوا اللَّهَ وَارْجُوا الْيَوْمَ الْآخِرَ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ۝
فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ جَاثِمِينَ ۝
وَعَادًا وَثَمُودَ وَقَدْ تَبَيَّنَ لَكُمْ مِنْ مَسَاكِنِهِمْ ۖ وَزَيَّنَ لَهُمُ
الشَّيْطَانُ أَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيلِ وَكَانُوا مُسْتَبْصِرِينَ ۝
وَقَارُونَ وَفِرْعَوْنَ وَهَامَانَ ۖ وَلَقَدْ جَاءَهُمْ مُوسَىٰ بِالْبَيِّنَاتِ
فَاسْتَكْبَرُوا فِي الْأَرْضِ وَمَا كَانُوا سَابِقِينَ ۝ فَكُلًّا أَخَذْنَا
بِذَنْبِهِ ۖ فَمِنْهُمْ مَنْ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِ حَاصِبًا وَمِنْهُمْ مَنْ
أَخَذَتْهُ الصَّيْحَةُ وَمِنْهُمْ مَنْ خَسَفْنَا بِهِ الْأَرْضَ وَمِنْهُمْ
مَنْ أَغْرَقْنَا ۚ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلَٰكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ
يَظْلِمُونَ ۝ مَثَلُ الَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ أَوْلِيَاءَ كَمَثَلِ
الْعَنْكَبُوتِ اتَّخَذَتْ بَيْتًا ۖ وَإِنَّ أَوْهَنَ الْبُيُوتِ لَبَيْتُ
الْعَنْكَبُوتِ ۖ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ۝ إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يَدْعُونَ
مِنْ دُونِهِ مِنْ شَيْءٍ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ وَتِلْكَ الْأَمْثَالُ
نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ ۖ وَمَا يَعْقِلُهَا إِلَّا الْعَالِمُونَ ۝ خَلَقَ اللَّهُ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِلْمُؤْمِنِينَ ۝

※ व. लाज़िम ★रु. ४/१६ आ १४

आसमान से अज़ाब नाज़िल करने वाले हैं। (३४) और हमने समझने वाले लोगों के लिए इस बस्ती से एक खुली निशानी छोड़ दी। (३५) और मदयन की तरफ़ उनके भाई शुऐब को भेजा, तो उन्हों ने कहा, ऐ क़ौम! ख़ुदा की इबादत करो और पिछले दिन (के आने) की उम्मीद रखो और मुल्क में फ़साद न मचाओ। (३६) मगर उन्होंने उनको झूठा समझा, सो उनको ज़लज़ले (के अज़ाब) ने आ पकड़ा और वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गये। (३७) और आद और समूद को भी (हम ने हलाक कर दिया), चुनांचे उन के (वीरान) घर तुम्हारी आंखों के सामने हैं और शैतान ने उन के आमाल उन को सजा दिए और उन को (सीधे) रास्ते से रोक दिया, हालांकि वे देखने वाले (लोग) थे। (३८) और क़ारून और फ़िऔन और हामान को भी (हलाक कर दिया)। और उन के पास मूसा खुली निशानियां ले कर आए, तो वे मुल्क में घमंड करने लगे और वे (हमारे) क़ाबू से निकल जाने वाले न थे। (३९) तो हमने सब को उन के गुनाहों की वजह से पकड़ लिया, सो उन में कुछ तो ऐसे थे जिन पर हमने पत्थरों का मेंह बरसाया और कुछ ऐसे थे जिन को चिंघाड़ ने आ पकड़ा और कुछ ऐसे थे, जिन को हम ने ज़मीन में धंसा दिया और कुछ ऐसे थे जिन को डुबा दिया और ख़ुदा ऐसा न था कि उन पर ज़ुल्म करता, लेकिन वही अपने आप पर ज़ुल्म करते थे। (४०) जिन लोगों ने ख़ुदा के सिवा (औरों को) कारसाज़ बना रखा है, उन की मिसाल मकड़ी की-सी है कि वह भी एक (तरह का) घर बनाती है और कुछ शक नहीं कि तमाम घरों से कमज़ोर मकड़ी का घर है॥ काश! ये (इस बात को) जानते। (४१) ये जिस चीज़ को ख़ुदा के सिवा पुकारते हैं (चाहे) वह कुछ ही हो, ख़ुदा उसे जानता है और वह ग़ालिब (और) हिक्मत वाला है। (४२) और ये मिसालें हम लोगों के (समझाने के) लिए बयान करते हैं और इसे तो इल्म वाले ही समझते हैं। (४३) ख़ुदा ने आसमानों और ज़मीन को हिक्मत के साथ पैदा किया है। कुछ शक नहीं कि ईमान वालों के लिए इस में निशानी है। (४४) ★

॥ व. लाज़िम ★रु. ४/१६ आ १४

इक्कीसवां पारः उत्लु मा ऊहि-य

सूरतुल-अन्कबूति आयात ४५ से ६९

उत्लु मा ऊहि-य इलै-क मिनल्किताबि व अक़िमिस्सला-त ط इन्नस्सला-त तन्हा अनिल् - फ़हशा-इ वल्मुन्करि ط व ल-ज़िक्रुल्लाहि अक्बरु ط वल्लाहु यअ्-लमु मा तस्-नअून (४५) व ला तुजादिलू अह्लल्किताबि इल्ला बिल्लती हि-य अह्सनु ق इल्लल्लज़ी-न ज़-लमू मिन्हुम् व क़ूलू आमन्ना बिल्लज़ी उन्ज़ि-ल इलैना व उन्ज़ि-ल इलैकुम् व इलाहुना व इलाहुकुम् वाहिदुंव-व नह्नु लहू मुस्लिमून (४६) व कज़ालि-क अन्ज़ल्ना इलैकल्-किता-ब ط फ़ल्लज़ी - न आतैनाहुमुल्-किता - ब युअ्मिनू - न बिही ج व मिन् हाउलाइ मंय्युअ्मिनु बिही ط व मा यज्हदु बिआयातिना इल्लल् - काफ़िरून (४७) व मा कुन्-त तत्लू मिन् क़ब्लिही मिन् किताबिंव्-व ला तखुत्तुहू बियमीनि-क इज़ल्-लर-ताबल्-मुब्तिलून (४८) बल् हु-व आयातुम् - बय्यिनातुन् फ़ी सुदूरिल्लज़ी-न ऊतुल्अिल्-म ط व मा यज्हदु बिआयातिना इल्लज़्ज़ालिमून (४९) व क़ालू लौला उन्ज़ि - ल अलैहि आयातुम् - मिर्रब्बिही ط क़ुल् इन्नमल् - आयातु अिन्दल्लाहि ط व इन्नमा अ-न नज़ीरुम् - मुबीन (५०) अ - व लम् यक्-फ़िहिम् अन्ना अन्ज़ल्ना अलैकल्-किता-ब युत्ला अलैहिम् ط इन्-न फ़ी ज़ालि-क ल-रह्-म-तंव्-व ज़िक्रा लिक़ौमिंय्युअ्मिनून ★ (५१) क़ुल् कफ़ा बिल्लाहि बैनी व बैनकुम् शहीदन् ج यअ्-लमु मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि ط वल्लज़ी - न आमनू बिल्बातिलि व क - फ़रू बिल्लाहि ﻻ उलाइ - क हुमुल्ख़ासिरून (५२) व यस्तअ्-जिलून-क बिल्अज़ाबि ط व लौला अ-ज-लुम्-मुसम्मल्-लजा-अ-हुमुल्-अज़ाबु ط व ल-यअ्ति-यन्नहुम् बग़्त-तंव्-व हुम् ला यश्अुरून (५३)

الٓمّ ٢١ — اتل ما اوحی ٢١ — العنکبوت ٢٩

اُتْلُ مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنَ الْكِتٰبِ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ ؕ اِنَّ الصَّلٰوةَ
تَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ ؕ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا
تَصْنَعُوْنَ ۝ وَلَا تُجَادِلُوْٓا اَهْلَ الْكِتٰبِ اِلَّا بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ ۖ
اِلَّا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ وَقُوْلُوْٓا اٰمَنَّا بِالَّذِيْٓ اُنْزِلَ اِلَيْنَا وَاُنْزِلَ
اِلَيْكُمْ وَاِلٰهُنَا وَاِلٰهُكُمْ وَاحِدٌ وَّنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ۝ وَكَذٰلِكَ
اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ ؕ فَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ۚ
وَمِنْ هٰٓؤُلَآءِ مَنْ يُّؤْمِنُ بِهٖ ؕ وَمَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَآ اِلَّا الْكٰفِرُوْنَ ۝
وَمَا كُنْتَ تَتْلُوْا مِنْ قَبْلِهٖ مِنْ كِتٰبٍ وَّلَا تَخُطُّهٗ بِيَمِيْنِكَ اِذًا
لَّارْتَابَ الْمُبْطِلُوْنَ ۝ بَلْ هُوَ اٰيٰتٌۢ بَيِّنٰتٌ فِيْ صُدُوْرِ الَّذِيْنَ
اُوْتُوا الْعِلْمَ ؕ وَمَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَآ اِلَّا الظّٰلِمُوْنَ ۝ وَقَالُوْا لَوْلَآ
اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيٰتٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قُلْ اِنَّمَا الْاٰيٰتُ عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَاِنَّمَآ
اَنَا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝ اَوَلَمْ يَكْفِهِمْ اَنَّآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ يُتْلٰى
عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَرَحْمَةً وَّذِكْرٰى لِقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝
قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ شَهِيْدًا ۚ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ ؕ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْبَاطِلِ وَكَفَرُوْا بِاللّٰهِ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمُ
الْخٰسِرُوْنَ ۝ وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ ؕ وَلَوْلَآ اَجَلٌ مُّسَمًّى
لَّجَآءَهُمُ الْعَذَابُ ؕ وَلَيَاْتِيَنَّهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝

★रु. ५/१ आ ७

(ऐ मुहम्मद !) यह किताब जो तुम्हारी तरफ़ वह्य की गयी है, उस को पढ़ा करो और नमाज़ के पाबन्द रहो। कुछ शक नहीं कि नमाज़ बेहयाई और बुरी बातों से रोकती है और खुदा का ज़िक्र बड़ा (अच्छा काम) है और जो कुछ तुम करते हो, खुदा उसे जानता है। (४५) और अह्ले किताब से झगड़ा न करो, मगर ऐसे तरीक़े से, कि निहायत अच्छा हो, हां जो उन में से बे-इंसाफ़ी करें, (उन के साथ इसी तरह झगड़ा करो) और कह दो कि जो (किताब) हम पर उतरी और जो (किताबें) तुम पर उतरीं, हम सब पर ईमान रखते हैं और हमारा और तुम्हारा माबूद एक ही है और हम उसी के फ़रमांबरदार हैं। (४६) और इसी तरह हम ने तुम्हारी तरफ़ किताब उतारी है, तो जिन लोगों को हम ने किताबें दी थीं, वे उस पर ईमान ले आते हैं और कुछ उन (मुश्रिक) लोगों में से भी इस पर ईमान ले आते हैं और हमारी आयतों से वही इन्कार करते हैं जो काफ़िर (शुरू ही से) हैं। (४७) और तुम इस से पहले कोई किताब नहीं पढ़ते थे और न उसे अपने हाथ से लिख ही सकते थे, ऐसा होता तो बातिल वाले ज़रूर शक करते। (४८) बल्कि ये रोशन आयतें हैं। जिन लोगों को इल्म दिया गया है, उन के सीनों में (महफ़ूज़) और हमारी आयतों से वही लोग इन्कार करते हैं, जो बे-इन्साफ़ हैं। (४९) और (काफ़िर) कहते हैं कि इस पर उस के परवरदिगार की तरफ़ से निशानियां क्यों नाज़िल नहीं हुयीं। कह दो कि निशानियां तो खुदा ही के पास हैं और मैं तो खुल्लम-खुल्ला हिदायत करने वाला हूं। (५०) क्या इन लोगों के लिए यह काफ़ी नहीं कि हम ने तुम पर किताब नाज़िल की जो उन को पढ़ कर सुनायी जाती है। कुछ शक नहीं कि मोमिन लोगों के लिए इस में रहमत और नसीहत है। (५१) ★

कह दो कि मेरे और तुम्हारे दर्मियान खुदा ही गवाह काफ़ी है। जो चीज़ आसमानों में और ज़मीन में है, वह सब को जानता है और जिन लोगों ने बातिल को माना और खुदा से इन्कार किया, वही नुक़सान उठाने वाले हैं। (५२) और ये लोग तुम से अज़ाब के लिए जल्दी कर रहे हैं। अगर एक वक़्त मुक़र्रर न (हो चुका) होता तो उन पर अज़ाब आ भी गया होता और वह (किसी वक़्त में) उन पर ज़रूर आ कर रहेगा और उन को मालूम भी न होगा। (५३) ये तुम से अज़ाब के

★रु. ५/१ आ ७

यस्तअ्-जिलू-न-क बिल्अ़ज़ाबि ⅟ व इन्-न ज-हन्न-म लमुही-त-तुम्-बिल्काफ़िरीन (५४) यौ-म यग़शाहुमुल्-अ़ज़ाबु मिन् फ़ौक़िहिम् व मिन् तह़्ति अर्जुलिहिम् व यक़ूलु ज़ूक़ू मा कुन्तुम् तअ्-मलून (५५) याअि़बादि-यल्-लज़ी-न आमनू इन्-न अर्-ज़ी वासि-अ-तुन् फ़इय्या-य फ़अ्-बुदून (५६) कुल्लु नफ़्सिन् ज़ाइक़तुल्मौति قف सुम् - म इलैना तुर्जअून (५७) वल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति लनुबव्वि-अन्नहुम् मिनल्जन्नति ग़ु-र-फ़न् तज्री मिन् तह़्तिहल् - अन्हारु ख़ालिदी - न फ़ीहा ⅟ निअ् - म अज्रुल् - आ़मिलीन صلے (५८) अल्लज़ी - न स-बरू व अ़ला रब्बिहिम् य-त-वक्कलून (५९) व-क-अय्यिम् - मिन् दाब्बतिल्ला तह़्मिलु रिज़् - क़हा صلے अल्लाहु यर्ज़ुक़ुहा व इय्याकुम् صلے व हुवस्समीअुल् - अ़लीम (६०) व ल-इन् स-अल्तहुम् मन् ख़-ल-क़स्समावाति वल्-अर्-ज़ व सख़्ख़-रश्शम्-स वल्क़-म-र ल - यक़ूलुन्नल्लाहु ج फ़ - अन्ना युअ्-फ़कून (६१) अल्लाहु यब्सुतुर्रिज़्-क़ लिमंय्यशाउ मिन् अि़बादिही व यक़्दिरु लहू ⅟ इन्नल्ला-ह बिकुल्लि शैइन् अ़लीम (६२) व ल-इन् स-अल्तहुम् मन् नज़्ज़-ल मिनस्समाइ मा-अन् फ़-अह़्या बिहिल्अर्-ज़ मिम्बअ्-दि मौतिहा ल-यक़ूलुन्नल्लाहु ⅟ क़ुलिल्ह़म्दु लिल्लाहि ⅟ बल् अक्सरुहुम् ला यअ् - क़िलून ★ (६३) व मा हाज़िहिल् - ह़यातुद्दुन्या इल्ला लह् - वुं व-ल लअिबुन् ⅟ व इन्नद्दारल्-आख़ि-र-त लहि-यल्-ह़-य-वानु ▨ लौ कानू यअ्-लमून (६४) फ़इज़ा रकिबू फ़िल्फ़ुल्कि द-अ़ - वुल्ला - ह मुख़्लिसी - न लहुद्दी - न ⅟ फ़ - लम्मा नज्जाहुम् इलल्बर्रि इज़ा हुम् युश्रिकून ⅟⅟ (६५) लि-यक्फ़ुरू बिमा आतैनाहुम् ⅟⅟ व लि-य-त-मत्तअू وقف ه फ़सौ-फ़ यअ्-लमून (६६)

العنكبوت ٢٩ ٣٢٢ اتل ما اوحی ٢١

يَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيطَةٌ بِالْكٰفِرِينَ ۝
يَوْمَ يَغْشٰىهُمُ الْعَذَابُ مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ أَرْجُلِهِمْ وَيَقُولُ
ذُوقُوا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ يٰعِبَادِيَ الَّذِينَ اٰمَنُوا إِنَّ أَرْضِي
وَاسِعَةٌ فَإِيَّايَ فَاعْبُدُونِ ۝ كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ ثُمَّ
إِلَيْنَا تُرْجَعُونَ ۝ وَالَّذِينَ اٰمَنُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُبَوِّئَنَّهُمْ
مِنَ الْجَنَّةِ غُرَفًا تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ خٰلِدِينَ فِيهَا نِعْمَ
أَجْرُ الْعٰمِلِينَ ۝ الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ۝ وَ
كَأَيِّنْ مِنْ دَابَّةٍ لَا تَحْمِلُ رِزْقَهَا اللّٰهُ يَرْزُقُهَا وَإِيَّاكُمْ وَ
هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝ وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ
الْأَرْضَ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ لَيَقُولُنَّ اللّٰهُ فَأَنّٰى يُؤْفَكُونَ ۝
اللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَهُ إِنَّ اللّٰهَ
بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝ وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ نَزَّلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً
فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ مِنْ بَعْدِ مَوْتِهَا لَيَقُولُنَّ اللّٰهُ قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ
بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ۝ وَمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا إِلَّا لَهْوٌ
وَلَعِبٌ وَإِنَّ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ لَهِيَ الْحَيَوَانُ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ۝
فَإِذَا رَكِبُوا فِي الْفُلْكِ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ فَلَمَّا نَجّٰىهُمْ
إِلَى الْبَرِّ إِذَا هُمْ يُشْرِكُونَ ۝ لِيَكْفُرُوا بِمَا اٰتَيْنٰهُمْ وَلِيَتَمَتَّعُوا

منزل ٥

★रु. ६/२ आ १२ ▨ व. लाज़िम

लिए जल्दी कर रहे हैं और दोज़ख़ तो काफ़िरों को घेर लेने वाली है। (५४) जिस दिन अज़ाब उन को उन के ऊपर से नीचे ढांक लेगा और (ख़ुदा) फ़रमाएगा कि जो काम तुम किया करते थे, (अब) उन का मज़ा चखो। (५५) ऐ मेरे बन्दो! जो ईमान लाए हो, मेरी ज़मीन फैली हुई है, तो मेरी ही इबादत करो। (५६) हर नफ़्स मौत का मज़ा चखने वाला है, फिर तुम हमारी ही तरफ़ लौट कर आओगे। (५७) और जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, उन को हम बहिश्त के ऊंचे-ऊंचे महलों में जगह देंगे, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं। हमेशा उन में रहेंगे। (नेक) अमल करने वालों का (यह) ख़ूब बदला है, (५८) जो सब्र करते और अपने परवरदिगार पर भरोसा रखते हैं। (५९) और बहुत से जानवर हैं, जो अपनी रोज़ी उठाए नहीं फिरते। ख़ुदा ही उन को रोज़ी देता है और तुम को भी और वह सुनने वाला (और) जानने वाला है। (६०) और अगर उन से पूछो कि आसमानों और ज़मीन को किस ने पैदा किया और सूरज और चांद को किस ने (तुम्हारे) हुक्म के ताबेअ किया, तो कह देंगे, ख़ुदा ने, तो फिर ये कहां उल्टे जा रहे हैं? (६१) ख़ुदा ही अपने बन्दों में से जिस के लिए चाहता है रोज़ी फैला देता है और जिस के लिए चाहता है, तंग कर देता है। बेशक ख़ुदा हर चीज़ को जानता है। (६२) और अगर तुम उन से पूछो कि आसमान से पानी किस ने बरसाया, फिर उस से ज़मीन को उस के मरने के बाद (किस ने) ज़िंदा किया, तो कह देंगे कि ख़ुदा ने। कह दो कि ख़ुदा का शुक्र है, लेकिन इन में अक्सर नहीं समझते। (६३) ★

और यह दुनिया की ज़िंदगी तो सिर्फ़ खेल और तमाशा है और (हमेशा की) ज़िंदगी की (जगह) तो आख़िरत का घर है ※ काश ये (लोग) समझते! (६४) फिर जब ये कश्ती में सवार होते हैं तो ख़ुदा को पुकारते (और) ख़ालिस उसी की इबादत करते हैं, लेकिन जब वह उन को निजात देकर ख़ुश्की पर पहुंचा देता है, तो झट शिर्क करने लग जाते हैं। (६५) ताकि जो हम ने उन को बख़्शा है, उस की ना-शुक्री करें और फ़ायदा उठाएं, (सो ख़ैर,) बहुत जल्द उन को मालूम

★रु. ६/२ आ १२ ※ व. लाज़िम

अ-व लम् यरौ अन्ना ज-अल्ना ह़-र-मन् आमिनंव-व यु-त-ख़त्तफ़ुन्नासु मिन् हौलिहिम् ط अ-फ़ बिल्बातिलि युअ्मिनू-न व बिनिअ्-मतिल्लाहि यक्फ़ुरून (६७) व मन् अज़्-लमु मिम्मनिफ़्तरा अ़-लल्लाहि कज़िबन् औ कज्ज-ब बिल्ह़क़्क़ि लम्मा जा-अहू ط अलै-स फ़ी जहन्न-म मस-वल्-लिल्काफ़िरीन (६८) वल्लज़ी - न जाहदू फ़ीना ल-नह्दियन्नहुम् सुबुलना ط व इन्नल्ला-ह ल - मअ़ल् - मुह़्सिनीन ★ (६९)

३० सूरतुर्रूमि ८४

(मक्की) इस सूर: में अरबी के ३५४७ अक्षर, ८२७ शब्द, ६० आयतें और ६ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

अलिफ़् - लाम् - मीम् ج (१) गुलिबतिर्रूमु ۙ (२) फ़ी अद - नल्अर्ज़ि व हुम् मिम्बअ्-दि ग़-लबिहिम् स-यग़्लिबून ۙ (३) फ़ी बिज़्अ़ सिनी-न ط लिल्लाहिल्-अम्रु मिन् क़ब्लु व मिम्बअ् - दु ط व यौमइज़िंय्यफ़् - रहुल् मुअ्मिनून ۙ (४) बिनस् - रिल्लाहि ط यन्सुरु मंय्यशाउ ط व हुवल्-अज़ीज़ुर्रह़ीम ۙ (५) वअ् - दल्लाहि ط ला युख़्लिफ़ुल्लाहु वअ्-दहू व लाकिन्-न अक्स-रन्नासि ला यअ्-लमून (६) यअ्-लमू-न ज़ाहिरम् - मिनल् - ह़यातिद्दुन्या صلے व हुम् अ़निल् - आख़िरति हुम् ग़ाफ़िलून (७) अ-व लम् य-त-फ़क्करू फ़ी अन्फ़ुसिहिम् قف मा ख़-ल-क़ल्लाहुस्-समावाति वल्अर्-ज़ व मा बैनहुमा इल्ला बिल्ह़क़्क़ि व अ-जलिम्-मुसम्मन् ط व इन्-न कसीरम्-मिनन्नासि बिलिक़ाइ रब्बिहिम् लकाफ़िरून (८) अ-व लम् यसीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़-यन्ज़ुरू कै-फ़ का-न आ़क़िबतुल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् ط कानू अशद-द मिन्हुम् क़ुव्वतंव्-व अ-सारुल्अर्-ज़ व अ़-म-रूहा अक्स-र मिम्मा अ़ - म - रूहा व जा-अत्-हुम् रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति ط फ़मा कानल्लाहु लि - यज़्लिमहुम् व लाकिन् कानू अन्फ़ुसहुम् यज़्लिमून ط (९)

فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ۝ أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا جَعَلْنَا حَرَمًا آمِنًا وَيُتَخَطَّفُ
النَّاسُ مِنْ حَوْلِهِمْ ۚ أَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُونَ وَبِنِعْمَةِ اللَّهِ يَكْفُرُونَ ۝
وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِالْحَقِّ لَمَّا
جَاءَهُ ۚ أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِلْكَافِرِينَ ۝ وَالَّذِينَ جَاهَدُوا
فِينَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ۚ وَإِنَّ اللَّهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِينَ ۝
سورة الروم مكية وهي ستون آية وست ركوعات
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
الم ۝ غُلِبَتِ الرُّومُ ۝ فِي أَدْنَى الْأَرْضِ وَهُمْ مِنْ بَعْدِ غَلَبِهِمْ
سَيَغْلِبُونَ ۝ فِي بِضْعِ سِنِينَ ۗ لِلَّهِ الْأَمْرُ مِنْ قَبْلُ وَمِنْ بَعْدُ ۚ
وَيَوْمَئِذٍ يَفْرَحُ الْمُؤْمِنُونَ ۝ بِنَصْرِ اللَّهِ ۚ يَنْصُرُ مَنْ يَشَاءُ ۖ وَهُوَ
الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝ وَعْدَ اللَّهِ ۖ لَا يُخْلِفُ اللَّهُ وَعْدَهُ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ
النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝ يَعْلَمُونَ ظَاهِرًا مِنَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَهُمْ
عَنِ الْآخِرَةِ هُمْ غَافِلُونَ ۝ أَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوا فِي أَنْفُسِهِمْ ۗ مَا
خَلَقَ اللَّهُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ وَأَجَلٍ
مُسَمًّى ۗ وَإِنَّ كَثِيرًا مِنَ النَّاسِ بِلِقَاءِ رَبِّهِمْ لَكَافِرُونَ ۝ أَوَلَمْ
يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ
كَانُوا أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَأَثَارُوا الْأَرْضَ وَعَمَرُوهَا أَكْثَرَ مِمَّا

★रु. ७/३ आ ६

हो जाएगा। (६६) क्या उन्हों ने नहीं देखा कि हम ने हरम को अम्न की जगह बनाया है, और लोग उन के गिर्द व नवाह (पास के इलाक़े) से उचक लिए जाते हैं। क्या ये लोग बातिल पर एतक़ाद रखते हैं और ख़ुदा की नेमतों की ना-शुक्री करते हैं। (६७) और उस से ज़ालिम कौन, जो ख़ुदा पर झूठ बोहतान बांधे या जब हक़ बात उस के पास आए तो उसे झुठलाए? क्या काफ़िरों का ठिकाना जहन्नम में नहीं है? (६८) और जिन लोगों ने हमारे लिए कोशिश की, हम उन को ज़रूर अपने रास्ते दिखा देंगे और ख़ुदा तो नेकों के साथ है। (६६)★

३० सूरः रूम ८४

सूरः रूम मक्की है और इस में साठ आयतें और छः रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत करम वाला है।

अलिफ़्-लाम्-मीम्, (१) रूम (वाले) मग़लूब हो गए, (२) नज़दीक के मुल्क में और वे मग़लूब होने के बाद बहुत जल्द ग़ालिब आ जाएंगे,[1] (३) कुछ ही साल में, पहले भी और अब पीछे भी ख़ुदा ही का हुक्म है और उस दिन मोमिन ख़ुश हो जाएंगे। (४) (यानी) ख़ुदा की मदद से, वह जिसे चाहता है, मदद देता है और वह ग़ालिब (और) मेहरबान है। (५) (यह) ख़ुदा का वायदा (है)। ख़ुदा अपने वायदे के ख़िलाफ़ नहीं करता, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (६) ये तो दुनिया की ज़ाहिरी ज़िंदगी को जानते हैं और आख़िरत (की तरफ़) से ग़ाफ़िल हैं। (७) क्या इन्हों ने अपने दिल में ग़ौर नहीं किया कि ख़ुदा ने आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ इन दोनों के दर्मियान है, उन को हिक्मत से और एक मुक़र्रर वक़्त तक के लिए पैदा किया है और बहुत-से-लोग अपने परवरदिगार से मिलने के क़ायल ही नहीं। (८) क्या इन लोगों ने मुल्क में सैर नहीं की, (सैर करते) तो देख लेते कि जो लोग इन से पहले थे, उन का अंजाम कैसा हुआ। वे इन से ज़ोर व ताक़त में कहीं ज़्यादा थे और उन्हों ने ज़मीन को जोता और उस को इस से ज़्यादा आबाद किया था, जो इन्हों ने आबाद किया और उन के पास उन के पैग़म्बर निशानियां ले कर आते रहे, तो ख़ुदा ऐसा न था कि उन पर ज़ुल्म करता, बल्कि अपने आप पर ज़ुल्म करते थे। (९) फिर जिन लोगों ने बुराई की,

---

१. इन आयतों में रूमियों के ग़ालिब होने की पेशीनगोई की, जो वाक़ेअ आ चुकी। वाक़िया यह हुआ कि रूम और फ़ारस वालों में जंग हो गयी और फ़ारस वाले ग़ालिब आए। चूंकि रूमी अह्ले किताब यानी नसारा थे और फ़ारस वाले मुश्रिक, इस लिए कि मक्का के मुश्रिक मोमिनों से कहते थे कि जिस तरह फ़ारस वाले जो हमारी तरह मुश्रिक हैं रूमियों पर, जो तुम्हारी तरह अह्ले किताब हैं, ग़ालिब हो गये हैं, इसी तरह जब हम में तुम में जंग होगी तो हम भी तुम पर ग़ालिब होंगे। कुफ़्फ़ार की इस बात से मोमिनों को रंज हुआ, तब ये आयतें नाज़िल हुयीं। इन में कुछ साल में रूमियों के ग़ालिब हो जाने की ख़बर दी गयी थी और वह बिल्कुल सही निकली। आयत में 'बिज़-अ सिनीन' का लफ़्ज़ आया है 'बिज़-अ' कहते हैं, तीन नवेंसे तक को। सातवें साल फिर रूम और फ़ारस में लड़ाई हुई तो रूमी फ़ारस वालों पर ग़ालिब आए। अल्लाह तआला की क़ुदरत को देखिए कि इधर बद्र की लड़ाई में मुसलमान मक्के के काफ़िरों पर ग़ालिब आए, इस से मुसलमानों को दोहरी ख़ुशी हुई, क्योंकि ख़ुदा का वायदा सच्चा निकला और वह 'अस्दक़ुस्सादिक़ीन' जो वायदा करता है, उस को सच कर दिखाता है।

★रु. ७/३ आ ६

सुम्-म का-न आक़िबतल्लज़ी-न असाउस्सू-आ अन् कज़्ज़बू बिआयातिल्लाहि व कानू बिहा यस्तह्-ज़िऊन ★ (१०) अल्लाहु यब्दउल्ख़ल्-क़ सुम्-म युईदुहू सुम्-म इलैहि तुर्जअून (११) व यौ-म तक़ूमुस्साअतु युब्लिसुल्-मुज्रिमून (१२) व लम् यकुल्लहुम् मिन् शुरका-इहिम् शु-फ़आउ व कानू बिशु-र-काइहिम् काफ़िरीन (१३) व यौ-म तक़ूमुस्साअतु यौमइज़िंय्य-त-फ़र्रक़ून (१४) फ़-अम्मल्लज़ी-न आमनू व अमिलुस्-सालिहाति फ़हुम् फ़ी रौज़तिंय्युह्-बरून (१५) व अम्मल्लज़ी-न क-फ़रू व कज़्ज़बू बिआयातिना व लिक़ा-इल्-आख़िरति फ़-उलाइ-क फ़िल्अज़ाबि मुह्ज़रून (१६) फ़-सुब्हानल्लाहि ही-न तुम्सू-न व ही-न तुस्बिहून (१७) व लहुल्हम्दु फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि व अशिय्यंव्-व ही-न तुज़्हिरून (१८) युख़्रिजुल्-हय्-य मिनल्-मय्यिति व युख़्रिजुल्-मय्यि-त मिनल्-हय्यि व युह्यिल्-अर्-ज़ बअ्-द मौतिहा ♭ व कज़ालि-क तुख़्रजून ★ (१९) व मिन् आयातिही अन् ख़-ल-क़कुम् मिन् तुराबिन् सुम्-म इज़ा अन्तुम् ब-शरुन् तन्तशिरून (२०) व मिन् आयातिही अन् ख़-ल-क़ लकुम् मिन् अन्फ़ुसिकुम् अज़्-वाजल्-लितस्कुनू इलैहा व ज-अ-ल बैनकुम् म-वद्-द-तंव्-व रह्-म-तन् ♭ इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल्-लिक़ौमिंय्य-त-फ़क्करून (२१) व मिन् आयातिही ख़ल्क़ुस्समावाति वल्अर्ज़ि वख़्-तिलाफ़ु अल-सिनतिकुम् व अल्वानिकुम् ♭ इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल्-लिल्आलमीन (२२) व मिन् आयातिही मनामुकुम् बिल्लैलि वन्नहारि वब्-तिग़ाउकुम् मिन् फ़ज़्लिही ♭ इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल्-लिक़ौमिंय्यस्-मअून (२३)

الروم ٣٢٣ اتل ما اوحي ٢١

عمروها وجاءتهم رسلهم بالبينت فما كان الله ليظلمهم ولكن
كانوا انفسهم يظلمون ۝ ثم كان عاقبة الذين اساءوا السوأى
ان كذبوا بايت الله وكانوا بها يستهزءون ۝ الله يبدؤا الخلق ثم
يعيده ثم اليه ترجعون ۝ ويوم تقوم الساعة يبلس المجرمون ۝
ولم يكن لهم من شركايهم شفعؤا وكانوا بشركايهم كفرين ۝
ويوم تقوم الساعة يومئذ يتفرقون ۝ فاما الذين امنوا وعملوا
الصلحت فهم في روضة يحبرون ۝ واما الذين كفروا وكذبوا
باياتنا ولقاى الاخرة فاولئك في العذاب محضرون ۝ فسبحن
الله حين تمسون وحين تصبحون ۝ وله الحمد في السموت و
الارض وعشيا وحين تظهرون ۝ يخرج الحي من الميت و
يخرج الميت من الحي ويحي الارض بعد موتها وكذلك
تخرجون ۝ ومن ايته ان خلقكم من تراب ثم اذا انتم بشر
تنتشرون ۝ ومن ايته ان خلق لكم من انفسكم ازواجا لتسكنوا
اليها وجعل بينكم مودة ورحمة ان في ذلك لايت لقوم
يتفكرون ۝ ومن ايته خلق السموت والارض واختلاف
السنتكم والوانكم ان في ذلك لايت للعلمين ۝ ومن ايته
منامكم باليل والنهار وابتغاؤكم من فضله ان في ذلك

منزل

★रु. १/४ आ १० ★रु. २/५ आ ६

उन का अंजाम भी बुरा हुआ, इसलिए कि खुदा की आयतों को झुठलाते और उन की हंसी उड़ाते रहे थे। (१०) ★

खुदा ही खल्क़त को पहली बार पैदा करता है, वही उस को फिर पैदा करेगा, फिर तुम उसी की तरफ़ लौट जाओगे। (११) और जिस दिन क़ियामत बरपा होगी, गुनाहगार ना-उम्मीद हो हो जाएंगे। (१२) और उन के (बनाए हुए) शरीकों में से कोई उन का सिफ़ारिशी न होगा और वे अपने शरीकों से इन्कारी हो जाएंगे। (१३) और जिस दिन क़ियामत बरपा होगी, उस दिन वे अलग-अलग फ़िर्क़े हो जाएंगे। (१४) तो जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, वे (बहिश्त के) बाग़ में खुशहाल होंगे। (१५) और जिन्हों ने कुफ़्र किया और हमारी आयतों और आख़िरत के आने को झुठलाया, वे अज़ाब में डाले जाएंगे। (१६) तो जिस वक़्त तुम को शाम हो और जिस वक़्त सुबह हो, खुदा की तस्बीह करो, (यानी नमाज़ पढ़ो), (१७) और आसमानों और ज़मीन में उसी की तारीफ़ है और तीसरे पहर भी और जब दोपहर हो, (उस वक़्त भी नमाज़ पढ़ा करो), (१८) वही ज़िन्दा को मुर्दे से निकालता और (वही) मुर्दे को ज़िन्दा से निकालता है और (वही) ज़मीन को उस के मरने के बाद ज़िन्दा करता है और इसी तरह तुम (दोबारा ज़मीन में से) निकाले जाओगे। (१९) ★

और उसी की निशानियों (और तसर्रुफ़ात) में से है कि उस ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया। फिर अब तुम इन्सान हो कर जगह-जगह फैल रहे हो। (२०) और उसी की निशानियों (और तसर्रुफ़ात) में से है कि उस ने तुम्हारे लिए तुम्हारी ही जिन्स की औरतें पैदा कीं, ताकि उन की तरफ़ (मायल हो कर) आराम हासिल करो और तुम में मुहब्बत और मेहरबानी पैदा कर दी। जो लोग ग़ौर करते हैं, उन के लिए इन बातों में (बहुत-सी) निशानियां हैं। (२१) और उसी की निशानियों (और तसर्रुफ़ात) में से है आसमानों और ज़मीन का पैदा करना और तुम्हारी ज़ुबानों और रंगों का जुदा-जुदा होना, अक़्ल वालों के लिए इन बातों में (बहुत सी) निशानियां हैं। (२२) और उसी की निशानियों (और तसर्रुफ़ात) में से है तुम्हारा रात और दिन में सोना और उस के फ़ज़्ल का तलाश करना, जो लोग सुनते हैं उन के लिए इन (बातों) में (बहुत-सी) निशानियां हैं। (२३) और उसी

★रु. १/४ आ १० ★रु. २/५ आ ९

व मिन् आयातिही युरीकुमुल्बर-क ख़ौफ़ंव-व त-म्-अं व-व युनज़्ज़िलु मिनस्समा-इ मा-अन् फ़-युह्यी बिहिल्अर-ज़ बअ्-द मौतिहा ط इन-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल्-लिक़ौमिंय्यअ्-क़िलून (२४) व मिन् आयातिही अन् तक़ूमस्समाउ वल्अर-ज़ु बिअम्रिही ط सुम्-म इज़ा दआकुम् दअ्-व-तम्- मिनल्अर्ज़ि इज़ा अन्तुम् तख़्-रुजून (२५) व लहू मन् फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि ط कुल्लुल्लहू क़ानितून (२६) व हु-वल्लज़ी यब्दउल-ख़ल्-क़ सुम्-म युईदुहू व हु-व अह्-वनु अलैहि ط व लहुल्-म-स-लुल् - अअ्-ला फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि ج व हुवल् - अज़ीज़ुल् - हकीम ●★ (२७) ज़-र-ब लकुम् म-स-लम् - मिन् अन्फ़ुसिकुम् ط हल्लकुम् मिम्मा म-ल- - कत् ऐमानुकुम् मिन् शुरका-अ फ़ी मा र-ज़क़-नाकुम् फ़ - अन्तुम् फ़ीहि सवाउन् तख़ाफ़ूनहुम् क - ख़ीफ़तिकुम् अन्फ़ुसकुम् ط कज़ालि - क नुफ़स्सिलुल् - आयाति लिक़ौमिंय्यअ् - क़िलून (२८) बलित्-त-ब-अल्-लज़ी-न ज़-लमू अह्वा-अहुम् बिग़ैरि अिल्मिन् ج फ़ - मंय्यह्दी मन् अ-ज़ल्लल्लाहु ط व मा लहुम् मिन् नासिरीन (२९) फ़-अक़िम् वज्-ह-क लिद्दीनि हनीफ़न् ط फ़ित्-र-तल्लाहिल्-लती फ़-त-रन्ना-स अलैहा ط ला तब्दी-ल लिख़ल्-क़िल्लाहि ط ज़ालिकद्-दीनुल्-क़य्यिमु لا व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला यअ्-लमून لا (३०) मुनीबी - न इलैहि वत्तक़ूहु व अक़ीमुस्सला-त व ला तकूनू मिनल्-मुश्रिकीन لا (३१) मिनल्लज़ी-न फ़र्रक़ू दीनहुम् व कानू शि-य-अन् ط कुल्लु हिज़्बिम्-बिमा लदैहिम् फ़रिहून (३२) व इज़ा मस्सन्ना-स ज़ुर्रुन् दऔ रब्बहुम् मुनीबी-न इलैहि सुम्-म इज़ा अ-ज़ाक़हुम् मिन्हु रह्-म-तन् इज़ा फ़रीक़ुम्-मिन्हुम् बिरब्बिहिम् युश्रिकून لا (३३)

الروم ٣٢٥ اتل ما اوحي ٢١

لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ۝ وَمِنْ اٰيٰتِهٖ يُرِيْكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَّطَمَعًا
وَّيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَاۗءِ مَاۗءً فَيُحْيٖ بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ
لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝ وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ تَقُوْمَ السَّمَاۗءُ وَالْاَرْضُ
بِاَمْرِهٖ ۭ ثُمَّ اِذَا دَعَاكُمْ دَعْوَةً ڰ مِّنَ الْاَرْضِ ڰ اِذَآ اَنْتُمْ تَخْرُجُوْنَ ۝
وَلَهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوْنَ ۝ وَهُوَ الَّذِيْ
يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ وَهُوَ اَهْوَنُ عَلَيْهِ ۭ وَلَهُ الْمَثَلُ الْاَعْلٰى
فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ ضَرَبَ لَكُمْ مَّثَلًا
مِّنْ اَنْفُسِكُمْ ۭ هَلْ لَّكُمْ مِّنْ مَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ مِّنْ شُرَكَاۗءَ فِيْ
مَا رَزَقْنٰكُمْ فَاَنْتُمْ فِيْهِ سَوَاۗءٌ تَخَافُوْنَهُمْ كَخِيْفَتِكُمْ اَنْفُسَكُمْ ۭ كَذٰلِكَ
نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝ بَلِ اتَّبَعَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَهْوَاۗءَهُمْ
بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ فَمَنْ يَّهْدِيْ مَنْ اَضَلَّ اللّٰهُ ۭ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ۝
فَاَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ حَنِيْفًا ۭ فِطْرَتَ اللّٰهِ الَّتِيْ فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا ۭ
لَا تَبْدِيْلَ لِخَلْقِ اللّٰهِ ۭ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ ڎ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا
يَعْلَمُوْنَ ۝ مُنِيْبِيْنَ اِلَيْهِ وَاتَّقُوْهُ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَلَا تَكُوْنُوْا مِنَ
الْمُشْرِكِيْنَ ۝ مِنَ الَّذِيْنَ فَرَّقُوْا دِيْنَهُمْ وَكَانُوْا شِيَعًا ۭ كُلُّ حِزْبٍۢ
بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُوْنَ ۝ وَاِذَا مَسَّ النَّاسَ ضُرٌّ دَعَوْا رَبَّهُمْ
مُّنِيْبِيْنَ اِلَيْهِ ثُمَّ اِذَآ اَذَاقَهُمْ مِّنْهُ رَحْمَةً اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ بِرَبِّهِمْ

منزل

की निशानियों (और तसर्रुफ़ात) में से है कि तुम को ख़ौफ़ और उम्मीद दिलाने के लिए बिजली दिखाता है और आसमान से मेंह बरसाता है, फिर ज़मीन को उस के मर जाने के बाद ज़िंदा (व हरा-भरा) कर देता है। अक़्ल वालों के लिए इन (बातों) में बहुत-सी निशानियां हैं। (२४) और उसी की निशानियों (और तसर्रुफ़ात) में से है कि आसमान और ज़मीन उस के हुक्म से क़ायम हैं। फिर जब वह तुम को ज़मीन में से (निकालने के लिए) आवाज़ देगा, तो तुम झट निकल पड़ोगे। (२५) और आसमानों और ज़मीन में जितने (फ़रिश्ते और इन्सान वग़ैरह) हैं, उसी के (मम्लूक) हैं (और) तमाम उस के फ़रमांबरदार हैं। (२६) और वही तो है जो ख़ल्क़त को पहली बार पैदा करता है, फिर उसे दोबारा पैदा करेगा और यह उस को बहुत आसान है और आसमानों और ज़मीन में उस की शान बहुत बुलंद है और वह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (२७)★ ●

वह तुम्हारे लिए तुम्हारे ही हाल की एक मिसाल बयान फ़रमाता है कि भला जिन (लौंडी-ग़ुलामों) के तुम मालिक हो, वह उस (माल) में जो हम ने तुम को अता फ़रमाया है, तुम्हारे शरीक हैं? और (क्या) तुम उस में (उन को अपने) बराबर (मालिक) समझते हो (और क्या) तुम उन से इस तरह डरते हो, जिस तरह अपनों से डरते हो? इस तरह हम अक़्ल वालों के लिए अपनी आयतें खोल-खोल कर बयान करते हैं, (२८) मगर जो ज़ालिम हैं, बे-समझे अपनी ख़्वाहिशों के पीछे चलते हैं, तो जिस को ख़ुदा गुमराह करे, उसे कौन हिदायत कर सकता है? और उन का कोई मददगार नहीं। (२९) तो तुम एक तरफ़ के हो कर दीन (ख़ुदा के रास्ते) पर सीधा मुंह किए चले जाओ (और) ख़ुदा की फ़ितरत को, जिस पर उस ने लोगों को पैदा किया है, (अख़्तियार किए रहो)।[1] ख़ुदा की बनायी हुई (फ़ितरत) में तब्दीली नहीं हो सकती। यही सीधा दीन है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (३०) (मोमिनो!) उसी (ख़ुदा) की तरफ़ रुजूअ किए रहो और उस से डरते रहो और नमाज़ पढ़ते रहो और मुश्रिकों में न होना। (३१) (और न) उन लोगों में होना, जिन्हों ने अपने दीन को टुकड़े-टुकड़े कर दिया और (ख़ुद) फ़िर्क़े-फ़िर्क़े हो गये। सब फ़िर्क़े उसी से ख़ुश हैं, जो उन के पास है। (३२) और जब लोगों को तक्लीफ़ पहुंचती है तो अपने परवरदिगार को पुकारते और उसी की तरफ़ रुजूअ होते हैं। फिर जब-जब वह उन को अपनी रहमत का मज़ा चखाता है, तो एक फ़िर्क़ा उन में से अपने परवरदिगार से शिर्क करने लगता

---

१. फ़ितरत से मुराद अल्लाह तआला की तौहीद है यानी उस को एक-एक कर के समझना और उस के साथ किसी को शरीक न बनाना, यह तौहीद ही ख़ुदा का दीन है और इसी तौहीद को ख़ुदा ने इन्सान की फ़ितरत में दाख़िल किया है। अगर किसी शख़्स को पैदा होते ही उस की हालत पर छोड़ दिया जाए और शिर्क करने वाले उस के दिल में मुश्रिकाना ख़्यालात न डालें, तो वह कभी शिर्क नहीं करेगा। वह तौहीद पर पैदा हुआ है। न यहूदी होगा, न ईसाई, न आग का पुजारी, न सूरज का पुजारी, न बुतों का पुजारी, बल्कि ख़ालिस तौहीद परस्त होगा और तौहीद के सिवा कुछ न जानेगा। चूंकि तौहीद ख़ुदा की तरफ़ से इन्सानी फ़ितरत में दाख़िल की गयी है, इस लिए उस को अल्लाह की फ़ित्रत से ताबीर फ़रमाया है और हुक्म दिया है कि तौहीद को, जो अल्लाह तआला का सीधा दीन है, अख़्तियार किये रहो, इस में हरगिज़ तब्दीली न होने पाए।

लियक्फ़ुरू बिमा आतैनाहुम् ط फ़-त-मत्तअू فقف फ़-सौ-फ़ तअ्-लमून (३४) अम् अन्ज़ल्ना अलैहिम् सुल्तानन् फ़-हु-व य-त-कल्लमु बिमा कानू बिही युश्रिकून (३५) व इज़ा अ-ज़क़्नन्ना-स रह्-म-तन् फ़रिहू बिहा ط व इन् तुसिब्हुम् सय्यि-अतुम्-बिमा क़द्-द-मत् ऐदीहिम् इज़ा हुम् यक़-नतून (३६) अ-व लम् यरौ अन्नल्ला-ह यब्सुतुर्रिज़्-क़ लिमंय्यशाउ व यक़्दिरु ط इन्-न फ़ी ज़ालि-क ल-आयातिल्-लिक़ौमिंय्युअ्-मिनून (३७) फ़-आति ज़ल्क़ुर्बा हक़्क़हू वल्मिस्की-न वब्नस्सबीलि ط ज़ालि-क ख़ैरुल्-लिल्लज़ी-न युरीदू-न वज्हल्लाहि ز व उलाइ-क हुमुल्-मुफ़्लिहून (३८) व मा आतैतुम् मिर्रिबल्-लि-यर्बु-व फ़ी अम्वालिन्नासि फ़ला यर्बू अिन्दल्लाहि ج व मा आतैतुम् मिन् ज़कातिन् तुरीदू-न वज्-हल्लाहि फ़-उलाइ-क हुमुल्-मुज़्अिफ़ून (३९) अल्लाहुल्लज़ी ख़-ल-क़कुम् सुम्-म र-ज़-क़कुम् सुम्-म युमीतुकुम् सुम्-म युह्यीकुम् ط हल् मिन् शु-रकाइकुम् मंय्यफ़्-अलु मिन् ज़ालिकुम् मिन् शैइन् ط सुब्हानहू व तआला अम्मा युश्रिकून ★ (४०) ज़-ह-रल्फ़सादु फ़िल्बर्रि वल्बह्रि बिमा क-स-बत् ऐदिन्नासि लियुज़ीक़हुम् बअ्-ज़ल्लज़ी अमिलू ल-अल्लहुम् यर्जिअून (४१) क़ुल् सीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़न्ज़ुरू कै-फ़ का-न आक़िबतुल्लज़ी-न मिन् क़ब्लु ط का-न अक्सरुहुम् मुश्रिकीन (४२) फ़-अक़िम् वज्-ह-क लिद्दीनल्-क़य्यिमि मिन् क़ब्लि अंय्यअ्ति-य यौमुल्ला म-रद्-द लहू मिनल्लाहि यौमइज़िंय्यस्सद्-दअून (४३) मन् क-फ़-र फ़-अलैहि कुफ़्-रुहू ج व मन् अमि-ल सालिहन् फ़-लिअन्फ़ुसि-हिम् यम्हदून ‖ (४४)

يشركون ﴿٣٣﴾ ليكفروا بما آتيناهم فتمتعوا فسوف تعلمون ﴿٣٤﴾ أم
أنزلنا عليهم سلطانا فهو يتكلم بما كانوا به يشركون ﴿٣٥﴾ وإذا
أذقنا الناس رحمة فرحوا بها وإن تصبهم سيئة بما قدمت
أيديهم إذا هم يقنطون ﴿٣٦﴾ أولم يروا أن الله يبسط الرزق لمن
يشاء ويقدر إن في ذلك لآيات لقوم يؤمنون ﴿٣٧﴾ فآت ذا
القربى حقه والمسكين وابن السبيل ذلك خير للذين
يريدون وجه الله وأولئك هم المفلحون ﴿٣٨﴾ وما آتيتم من
ربا ليربو في أموال الناس فلا يربو عند الله وما آتيتم من
زكاة تريدون وجه الله فأولئك هم المضعفون ﴿٣٩﴾ الله الذي
خلقكم ثم رزقكم ثم يميتكم ثم يحييكم هل من شركائكم
من يفعل من ذلكم من شيء سبحانه وتعالى عما يشركون ﴿٤٠﴾ ظهر
الفساد في البر والبحر بما كسبت أيدي الناس ليذيقهم بعض
الذي عملوا لعلهم يرجعون ﴿٤١﴾ قل سيروا في الأرض فانظروا
كيف كان عاقبة الذين من قبل كان أكثرهم مشركين ﴿٤٢﴾
فأقم وجهك للدين القيم من قبل أن يأتي يوم لا مرد له من
الله يومئذ يصدعون ﴿٤٣﴾ من كفر فعليه كفره ومن عمل
صالحا فلأنفسهم يمهدون ﴿٤٤﴾ ليجزي الذين آمنوا وعملوا

★रु. ४/७ आ १३

है, (३३) ताकि जो हम ने उस को बख़्शा है उस की ना-शुक्री करें, सो (ख़ैर) फ़ायदे उठा लो। बहुत जल्द तुम को (इस का अंजाम) मालूम हो जाएगा। (३४) क्या हम ने उन पर कोई ऐसी दलील उतारी है कि उन को ख़ुदा के साथ शिर्क करना बताती है। (३५) और जब हम लोगों को अपनी रहमत का मज़ा चखाते हैं, तो उस से ख़ुश हो जाते हैं और अगर उन के अमलों की वजह से जो उन के हाथों ने आगे भेजे हैं, कोई तक्लीफ़ पहुंचे, तो ना-उम्मीद हो कर रह जाते हैं। (३६) क्या उन्हों ने नहीं देखा कि ख़ुदा ही जिस के लिए चाहता है, रोज़ी फैला देता है और (जिस के लिए चाहता है) तंग करता है। बेशक इस में ईमान लाने वालों के लिए निशानियां हैं। (३७) तो रिश्तेदारों और मुहताजों और मुसाफ़िरों को उन का हक़ देते रहो। जो लोग ख़ुदा की ख़ुश्नूदी की तलब में हैं, यह उन के हक़ में बेहतर है और यही लोग निजात हासिल करने वाले हैं। (३८) और जो तुम सूद देते हो कि लोगों के माल में बढ़ती हो, तो ख़ुदा के नज़दीक उस में बढ़ती नहीं होती और जो तुम ज़कात देते हो और उस से ख़ुदा की रज़ामंदी तलब करते हो, तो (वह बरकत की वजह है, और) ऐसे ही लोग (अपने माल को) दो-गुना तीन-गुना करने वाले हैं। (३९) ख़ुदा ही तो है, जिस ने तुम को पैदा किया, फिर तुम को रोज़ी दी, फिर तुम्हें मारेगा, फिर ज़िंदा करेगा। भला तुम्हारे (बनाए हुए) शरीकों में भी कोई ऐसा है जो इन कामों में से कुछ कर सके। वह पाक है और (उस की शान) उन के शरीकों से बुलंद है। (४०) ★

ख़ुश्की और तरी में लोगों के आमाल की वजह से फ़साद फैल गया है, ताकि ख़ुदा उन को उनके कुछ आमाल का मज़ा चखाये, अजब नहीं कि वे रुक जाएं। (४१) कह दो कि मुल्क में चलो-फिरो और देखो कि जो लोग (तुम से) पहले हुए हैं, उनका कैसा अंजाम हुआ है। उनमें ज़्यादातर मुश्रिक ही थे। (४२) तो उस दिन से पहले, जो ख़ुदा की तरफ़ से आ कर रहेगा और रुक नहीं सकेगा, दीन (के रास्ते) पर सीधा मुंह किए चलो। उस दिन (सब) लोग बिखरे हुए हो जाएंगे। (४३) जिस शख़्स ने कुफ़्र किया, तो उस के कुफ़्र का नुक़्सान उसी को है और जिस ने नेक अमल किए, तो ऐसे

★रु. ४/१० आ ९ ३

लि-यज्ज़ियल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति मिन् फ़ज़्लिही ط इन्नहू ला युहिब्बुल्-काफ़िरीन (४५) व मिन् आयातिही अंय्युर्सिलर् - रिया - ह मुबश्शिरातिंव्-व लियुज़ी-क़कुम् मिर्रहमतिही व लि-तज्रि-यल्-फ़ुल्कु बिअम्रिही व लितब्तग़ू मिन् फ़ज़्लिही व ल-अ़ल्लकुम् तश्कुरून (४६) व ल-क़द् अर्सल्ना मिन् क़ब्-लि-क रुसुलन् इला क़ौमिहिम् फ़जाऊहुम् बिल्बय्यिनाति फ़न्-त-क़म्ना मिनल्लज़ी-न अज्-रमू ط व का-न हक़्क़न् अ़लैना नस्रुल् - मुअ्-मिनीन (४७) अल्लाहुल्लज़ी युर्सिलुर् - रिया-ह फ़-तुसीरु स-हाबन् फ़-यब्सुतुहू फ़िस्समाइ कै-फ़ यशाउ व यज्-अ़लुहू कि-स-फ़न् फ़-त-रल्-वद्-क़ यख़्रुजु मिन् ख़िलालिही ج फ़इज़ा असा-ब बिही मंय्यशाउ मिन् अ़िबादिही इज़ा हुम् यस्तब्शिरून ج (४८) व इन् कानू मिन् क़ब्लि अंय्युनज़्ज़-ल अ़लैहिम् मिन् क़ब्लिही ल-मुब्लिसीन (४९) फ़न्ज़ुर् इला आसारि रह्मतिल्लाहि कै-फ़ युह्यिल्-अर्-ज़ बअ्-द मौतिहा ط इन् - न ज़ालि-क लमुह्यिल्मौता ج व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (५०) व लइन् अर्सल्ना रीहन् फ़-रऔहु मुस्-फ़र्रल्-ल-ज़ल्लू मिम्बअ्-दिही यक्फ़ुरून (५१) फ़-इन्न-क ला तुस्मिअ़ुल्-मौता व ला तुस्मिअ़ुस्-सुम्मद्दुआ-अ इज़ा वल्लौ मुद्बिरीन (५२) व मा अन्-त बिहादिल् - अ़ुम्यि अ़न् ज़लालतिहिम् ط इन् तुस्मिअ़ु इल्ला मंय्युअ्मिनु बिआयातिना फ़हुम् मुस्लिमून ★ (५३) अल्लाहुल्लज़ी ख़-ल-क़कुम् मिन् ज़ुअ़् - फ़िन् सुम्-म ज-अ़-ल मिम्बअ़् - दि ज़ुअ़्-फ़िन् क़ुव्वतन् सुम्-म ज-अ़-ल मिम्बअ़्-दि क़ुव्वतिन् ज़ुअ़्-फ़ंव्-व शैब-तन् ط यख़्लुक़ु मा यशाउ ج व हुवल्-अ़लीमुल्क़दीर (५४) व यौ-म तक़ूमुस्साअ़तु युक़्सिमुल्-मुज्रिमू-न ؕ मा लबिसू ग़ै-र साअ़तिन् ط कज़ालि-क कानू युअ्-फ़कून (५५)

الصّٰلِحٰتِ مِنْ فَضْلِهٖ ۭ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِيْنَ ۝ وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ يُّرْسِلَ
الرِّيَاحَ مُبَشِّرٰتٍ وَّلِيُذِيْقَكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِهٖ وَلِتَجْرِيَ الْفُلْكُ بِاَمْرِهٖ وَ
لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ
رُسُلًا اِلٰى قَوْمِهِمْ فَجَاۗءُوْهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَانْتَقَمْنَا مِنَ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا
وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ اَللّٰهُ الَّذِيْ يُرْسِلُ الرِّيٰحَ فَتُثِيْرُ
سَحَابًا فَيَبْسُطُهٗ فِي السَّمَاۗءِ كَيْفَ يَشَاۗءُ وَيَجْعَلُهٗ كِسَفًا فَتَرَى الْوَدْقَ
يَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهٖ ۚ فَاِذَآ اَصَابَ بِهٖ مَنْ يَّشَاۗءُ مِنْ عِبَادِهٖٓ اِذَا هُمْ
يَسْتَبْشِرُوْنَ ۝ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلِ اَنْ يُّنَزَّلَ عَلَيْهِمْ مِّنْ قَبْلِهٖ
لَمُبْلِسِيْنَ ۝ فَانْظُرْ اِلٰٓى اٰثٰرِ رَحْمَتِ اللّٰهِ كَيْفَ يُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ
مَوْتِهَا ۭ اِنَّ ذٰلِكَ لَمُحْيِ الْمَوْتٰى ۚ وَهُوَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ وَلَىِٕنْ
اَرْسَلْنَا رِيْحًا فَرَاَوْهُ مُصْفَرًّا لَّظَلُّوْا مِنْۢ بَعْدِهٖ يَكْفُرُوْنَ ۝ فَاِنَّكَ لَا
تُسْمِعُ الْمَوْتٰى وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَاۗءَ اِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِيْنَ ۝ وَمَآ اَنْتَ
بِهٰدِ الْعُمْيِ عَنْ ضَلٰلَتِهِمْ ۭ اِنْ تُسْمِعُ اِلَّا مَنْ يُّؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ
مُّسْلِمُوْنَ ۝ اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ ضُعْفٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْۢ بَعْدِ
ضُعْفٍ قُوَّةً ثُمَّ جَعَلَ مِنْۢ بَعْدِ قُوَّةٍ ضُعْفًا وَّشَيْبَةً ۭ يَخْلُقُ مَا يَشَاۗءُ ۚ
وَهُوَ الْعَلِيْمُ الْقَدِيْرُ ۝ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يُقْسِمُ الْمُجْرِمُوْنَ ۥ مَا لَبِثُوْا
غَيْرَ سَاعَةٍ ۭ كَذٰلِكَ كَانُوْا يُؤْفَكُوْنَ ۝ وَقَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ وَ

★रु. ५/८ आ १३

लोग अपने ही लिए आरामगाह दुरुस्त करते हैं। (४४) जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, उनको ख़ुदा अपने फ़ज़्ल से बदला देगा। बेशक वह काफ़िरों को दोस्त नहीं रखता। (४५) और उसी की निशानियों में से है कि हवाओं को भेजता है कि ख़ुशख़बरी देती हैं, ताकि तुम को अपनी रहमत के मज़े चखाए और ताकि उस के हुक्म से कश्तियां चलें और ताकि तुम उस के फ़ज़्ल से (रोज़ी) तलब करो, अजब नहीं कि तुम शुक्र करो। (४६) और हमने तुम से पहले भी पैग़म्बर भेजे, तो वे उनके पास निशानियां ले कर आए, सो जो लोग नाफ़रमानी करते थे, हम ने उन से बदला ले कर छोड़ा और मोमिनों की मदद हम पर ज़रूरी थी। (४७) ख़ुदा ही तो है, जो हवाओं को चलाता है, तो वे बादल को उभारती हैं, फिर ख़ुदा उस को जिस तरह चाहता है, आसमान में फैला देता और तह-ब-तह कर देता है, फिर तुम देखते हो कि उस के बीच में से मेंह निकलने लगता है। फिर जब वह अपने बन्दों में से जिन पर चाहता है, उसे बरसा देता है, तो वे ख़ुश हो जाते हैं। (४८) और पहले तो वे मेंह उतरने से पहले ना-उम्मीद हो रहे थे। (४९) तो (ऐ देखने वाले!) ख़ुदा की रहमत की निशानियों की तरफ़ देख कि वह किस तरह ज़मीन को उस के मरने के बाद ज़िंदा करता है। बेशक वह मुर्दों को ज़िंदा करने वाला है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है। (५०) और अगर हम ऐसी हवा भेजें कि वे (उस की वजह से) खेती को देखें (कि) पीली (हो गयी है), तो इस के बाद वे ना-शुक्री करने लग जाएं। (५१) तो तुम मुर्दों को (बात) नहीं सुना सकते और न बहरों को कि जब वे पीठ फेर कर फिर जाएं, आवाज़ सुना सकते हो। (५२) और न अंधों को उनकी गुमराही से (निकाल कर) सीधे रास्ते पर ला सकते हो। तुम तो उन ही लोगों को सुना सकते हो, जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं, सो वही फ़रमांबरदार हैं★ (५३)

ख़ुदा ही तो है, जिसने तुम को (शुरू में) कमज़ोर हालत में पैदा किया, फिर कमज़ोरी के बाद ताक़त इनायत की, फिर ताक़त के बाद कमज़ोरी और बुढ़ापा दिया। वह जो चाहता है, पैदा करता है और वह इल्म वाला (और) क़ुदरत वाला है। (५४) और जिस दिन क़ियामत बरपा होगी, गुनाहगार क़स्में खाएंगे कि वे (दुनिया में) एक घड़ी से ज़्यादा नहीं रहे थे। इसी तरह वे

★रु. ५/८ आ १३

व क़ालल्लज़ी-न ऊतुल्-अिल्-म वल्-ईमा-न ल-क़द् लबिस्तुम् फ़ी किताबिल्लाहि इला यौमिल्-बअ्-सि ✓ फ़ हाज़ा यौमुल्-बअ्-सि व लाकिन्नकुम् कुन्तुम् ला तअ्-लमून (५६) फ़यौमइज़िल्-ला यन्फ़अुल्लज़ी-न ज़-लमू मअ्-ज़ि-र-तुहुम् व ला हुम् युस्तअ्-तबून (५७) व ल-क़द् ज़-रब्ना लिन्नासि फ़ी हाज़ल्-क़ुर्आनि मिन् कुल्लि म-सलिन् ؕ व लइन् जिअ्-तहुम् बिआयतिल्-ल-यक़ूलन्नल्लज़ी-न क-फ़रू इन् अन्तुम् इल्ला मुब्तिलून (५८) कज़ालि-क यत्-बअुल्लाहु अला क़ुलूबिल्लज़ी-न ला यअ्-लमून (५९) फ़स्बिर् इन्-न वअ्-दल्लाहि हक़्क़ुंव्-व ला यस्तख़िफ़्फ़न्नकल्-लज़ी-न ला यूक़िनून ★ (६०)

الايمان لقد لبثتم في كتب الله الى يوم البعث فهذا يوم البعث
ولكنكم كنتم لا تعلمون ﴿٥٦﴾ فيومئذ لا ينفع الذين ظلموا
معذرتهم ولا هم يستعتبون ﴿٥٧﴾ ولقد ضربنا للناس في هذا القرآن
من كل مثل ولئن جئتهم باية ليقولن الذين كفروا ان انتم
الا مبطلون ﴿٥٨﴾ كذلك يطبع الله على قلوب الذين لا يعلمون ﴿٥٩﴾
فاصبر ان وعد الله حق ولا يستخفنك الذين لا يوقنون ﴿٦٠﴾

३१ सूरतु लुक़मा-न ५७

(मक्की) इस सूरः में अरबी के २२१७ अक्षर, ५५४ शब्द, ३४ आयतें और ४ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

अलिफ़्-लाम्-मीम् ۚ (१) तिल्-क आयातुल्-किताबिल्-ह़कीम ۙ (२) हुदंव्-व रह़्मतल्-लिल्मुह़्सिनीन ۙ (३) अल्लज़ी-न युक़ीमूनस्सला-त व युअ्तूनज़्ज़का-त व हुम् बिल्आख़िरति हुम् यूक़िनून ؕ (४) उलाइ-क अला हुदम्-मिर्रब्बिहिम् व उलाइ-क हुमुल्मुफ़्लिहून (५) व मिनन्नासि मंय्यश्तरी लह्-वल्-ह़दीसि लियुज़िल्-ल अन् सबीलिल्लाहि बिग़ैरि अिल्मिंव्-व यत्तख़ि-ज़हा हुज़ुवन् ؕ उलाइ-क लहुम् अज़ाबुम्-मुहीन (६) व इज़ा तुत्ला अलैहि आयातुना वल्ला मुस्तक्बिरन् क-अल्लम् यस्मअ्-हा क-अन्-न फ़ी उज़ुनैहि वक़्-रन् ۚ फ़-बश्शिर्हु बि-अज़ाबिन् अलीम (७) इन्नल्लज़ी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति लहुम् जन्नातुन्नअीम ۙ (८) ख़ालिदी-न फ़ीहा ؕ वअ्-दल्लाहि हक़्क़न् ؕ व हुवल्-अज़ीज़ुल्-ह़कीम (९)

سورة لقمن مكية وهي اربع وثلثون اية واربع ركوعات
بسم الله الرحمن الرحيم
الم ﴿١﴾ تلك ايت الكتب الحكيم ﴿٢﴾ هدى ورحمة للمحسنين ﴿٣﴾
الذين يقيمون الصلوة ويؤتون الزكوة وهم بالاخرة هم
يوقنون ﴿٤﴾ اولئك على هدى من ربهم واولئك هم المفلحون ﴿٥﴾
ومن الناس من يشتري لهو الحديث ليضل عن سبيل الله
بغير علم ويتخذها هزوا اولئك لهم عذاب مهين ﴿٦﴾ واذا
تتلى عليه ايتنا ولى مستكبرا كان لم يسمعها كان في اذنيه
وقرا فبشره بعذاب اليم ﴿٧﴾ ان الذين امنوا وعملوا الصلحت
لهم جنت النعيم ﴿٨﴾ خلدين فيها وعد الله حقا وهو العزيز
الحكيم ﴿٩﴾ خلق السموت بغير عمد ترونها والقى في الارض

(रास्ते से) उलटे जाते थे। (५५) और जिन लोगों को इल्म और ईमान दिया गया था, वे कहेंगे कि ख़ुदा की किताब के मुताबिक़ तुम क़ियामत तक रहे हो और यह क़ियामत ही का दिन है, लेकिन तुम को इसका यक़ीन ही न था। (५६) तो उस दिन ज़ालिम लोगों को उनका उज़्र कुछ फ़ायदा न देगा और न उन से तौबा क़ुबूल की जाएगी। (५७) और हम ने लोगों के (समझाने के) लिए इस क़ुरआन में हर तरह की मिसाल बयान कर दी है और अगर तुम उनके सामने कोई निशानी पेश करो, तो ये काफ़िर कह देंगे कि तुम तो झूठे हो। (५८) इसी तरह ख़ुदा उन लोगों के दिलों पर, जो समझ नहीं रखते, मुहर लगा देता है। (५९) पस तुम सब्र करो। बेशक ख़ुदा का वायदा सच्चा है और (देखो) जो लोग यक़ीन नहीं रखते, वे तुम्हें ओछा न बना दें। (६०)★

३१ सूरः लुक़्मान ५७

सूरः लुक़्मान मक्की है और इसमें चौंतीस आयतें और चार रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ़् लाम्-मीम्, (१) यह हिक्मत की (भरी हुई) किताब की आयतें हैं। (२) मुह्सिनों के लिए हिदायत और रहमत, (३) जो नमाज़ की पाबन्दी करते और ज़कात देते और आख़िरत का यक़ीन रखते हैं। (४) यही अपने परवरदिगार की (तरफ़) से हिदायत पर हैं और यही निजात पाने वाले हैं। (५) और लोगों में कोई ऐसा है, जो बेहूदा हिकायतें ख़रीदता है, ताकि (लोगों को) बे-समझे ख़ुदा के रास्ते से गुमराह करे और उसका मज़ाक़ उड़ाए। यही लोग हैं, जिनको ज़लील करने वाला अज़ाब होगा। (६) और जब उस को हमारी आयतें सुनायी जाती हैं, तो अकड़ कर मुंह फेर लेता है, गोया उनको सुना ही नहीं जैसे उन के कानों में बोझ है, तो उस को दर्द देने वाले अज़ाब की ख़ुशख़बरी सुना दो। (७) जो लोग ईमान लाये और नेक काम करते रहे, उन के लिए नेमत के बाग़ हैं, (८) हमेशा उन में रहेंगे। ख़ुदा का वायदा सच्चा है और वह ग़ालिब हिक्मत

★रु. ६/६ आ ७

ख-ल-क़स्समावाति बिग़ैरि अ-मदिन् तरौनहा व अल्क़ा फ़िल्अर्ज़ि र-वासि-य अन् तमी-द बिकुम् व बस्-स फ़ीहा मिन् कुल्लि दाब्बतिन् ط व अन्ज़ल्ना मिनस्समाइ मा-अन् फ़-अम्बत्ना फ़ीहा मिन् कुल्लि ज़ौजिन् करीम (१०) हाज़ा ख़ल्-क़ुल्लाहि फ़-अरूनी माज़ा ख़-ल-क़ल्लज़ी-न मिन् दूनिही ط बलिज़्ज़ालिमू-न फ़ी ज़लालिम्-मुबीन ★ (११) व ल-क़द् आतैना लुक़्मानल्-हिक्म-त अनिश्कुर् लिल्लाहि ط व मंय्यश्कुर् फ़-इन्नमा यश्कुरु लिनफ़्सिही ج व मन् क-फ़-र फ़-इन्नल्ला-ह ग़निय्युन् हमीद (१२) व इज़् क़ा-ल लुक़्मानु लिब्निही व हु-व यअ़िज़ुहू याबुनय्-य ला तुशिरक् बिल्लाहि ▨ इन्नश्शिर्-क ल-ज़ुल्मुन् अज़ीम (१३) व वस्सैनल्-इन्सा-न बिवालिदैहि ج ह-म-लत्हु उम्मुहू वह्नन् अला वह्निन्व-व फ़िसालुहू फ़ी आमैनि अनिश्कुर् ली व लिवालिदै-क ط इलय्यल्-मसीर ● (१४) व इन् जाहदा-क अला अन् तुशिर-क बी मा लै-स ल-क बिही अिल्मुन् لا फ़ ला तुतिअ्-हुमा व साहिब्हुमा फ़िद्दुन्या मअ्-रूफ़ंव्-वत्तबिअ् सबी-ल मन् अना-ब इलय्-य ج सुम्-म इलय्-य मर्जिअ़ुकुम् फ़-उनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् तअ्-मलून (१५) या बुनय्-य इन्नहा इन् तकु मिस्क़ा-ल हब्बतिम्मिन् ख़र्दलिन् फ़-तकुन् फ़ी सख़्-रतिन् औ फ़िस्समावाति औ फ़िल्अर्ज़ि यअ्ति बिहल्लाहु ط इन्नल्ला-ह लतीफ़ुन् ख़बीर (१६) या बुनय्-य अक़िमिस्सला-त वअ्मुर् बिलमअ्-रूफ़ि वन्-ह अनिल्मुन्करि वस्बिर् अला मा असाब-क ط इन्-न ज़ालि-क मिन् अ़ज़्मिल्-उमूर ج (१७) व ला तुसअ्-अिर् ख़द्-द-क लिन्नासि व ला तम्शि फ़िल्अर्ज़ि म-र-हन् ط इन्नल्ला-ह ला युहिब्बु कुल्-ल मुख़्तालिन् फ़ख़ूर ج (१८) वक़्सिद् फ़ी मश्यि-क वग़्ज़ुज़् मिन् सौति-क ط इन्-न अन्करल्-अस्वाति ल-सौतुल्-हमीर ★ (१९)

رواسي ان تميد بكم وبث فيها من كل دابة وانزلنا من السماء
ماء فانبتنا فيها من كل زوج كريم ﴿١٠﴾ هذا خلق الله فاروني ماذا
خلق الذين من دونه بل الظلمون في ضلل مبين ﴿١١﴾ و
لقد اتينا لقمن الحكمة ان اشكر لله ومن يشكر فانما يشكر لنفسه
ومن كفر فان الله غني حميد ﴿١٢﴾ واذ قال لقمن لابنه وهو يعظه
يبني لا تشرك بالله ان الشرك لظلم عظيم ﴿١٣﴾ ووصينا الانسان
بوالديه حملته امه وهنا على وهن وفصله في عامين ان
اشكر لي ولوالديك الي المصير ﴿١٤﴾ وان جاهدك على ان تشرك
بي ما ليس لك به علم فلا تطعهما وصاحبهما في الدنيا معروفا
واتبع سبيل من اناب الي ثم الي مرجعكم فانبئكم بما كنتم
تعملون ﴿١٥﴾ يبني انها ان تك مثقال حبة من خردل فتكن في
صخرة او في السموت او في الارض يات بها الله ان الله لطيف
خبير ﴿١٦﴾ يبني اقم الصلوة وامر بالمعروف وانه عن المنكر
واصبر على ما اصابك ان ذلك من عزم الامور ﴿١٧﴾ ولا تصعر
خدك للناس ولا تمش في الارض مرحا ان الله لا يحب كل
مختال فخور ﴿١٨﴾ واقصد في مشيك واغضض من صوتك
ان انكر الاصوات لصوت الحمير ﴿١٩﴾ الم تروا ان الله سخر لكم

★रु. १/१० आ ११ ▨ व. न बी स. ● नि १/२ ★रु. २/११ आ ८

वाला है। (९) उसी ने आसमानों को स्तूनों के बग़ैर पैदा किया, जैसा कि तुम देखते हो और ज़मीन पर पहाड़ (बना कर) रख दिए, ताकि तुम को हिला-हिला न दे और उस में हर तरह के जानवर फैला दिए और हम ही ने आसमान से पानी उतारा, फिर (उस से) उस में हर क़िस्म की नफ़ीस चीज़ें उगायीं। (१०) यह तो ख़ुदा की पैदाइश है, तो मुझे दिखाओ कि ख़ुदा के सिवा जो लोग हैं, उन्होंने क्या पैदा किया है? सच तो यह है कि ये ज़ालिम खुली गुमराही में हैं। (११)★

और हमने लुक़्मान को हिक्मत बख़्शी कि ख़ुदा का शुक्र करो और जो शख़्स शुक्र करता है, तो अपने ही फ़ायदे के लिए शुक्र करता है और जो ना-शुक्री करता है, तो ख़ुदा भी बे-परवाह (और) हम्द (व तारीफ़) के लायक़ है। (१२) और (उस वक़्त को याद करो,) जब लुक़्मान ने अपने बेटे को नसीहत करते हुए कहा कि बेटा ख़ुदा के साथ शिर्क न करना▨शिर्क तो बड़ा (भारी) ज़ुल्म है। (१३) और हम ने इंसान को, जिसे उस की मां तक्लीफ़ पर तक्लीफ़ सह कर पेट में उठाए रखती है (फिर उस को दूध पिलाती है) और (आख़िरकार में) दो वर्ष में उस का दूध छुड़ाना होता है, (अपने, साथ ही) उसके मां-बाप के बारे में ताकीद की है कि मेरा भी शुक्र करता रह और अपने मां-बाप का भी (कि तुम को) मेरी ही तरफ़ लौट कर आना है●(१४) और वे तेरे पीछे पड़े हों कि तू मेरे साथ किसी ऐसी चीज़ को शरीक करे, जिस का तुझे कुछ भी इल्म नहीं, तो उन का कहना न मानना। हां, दुनिया के कामों में उन का अच्छी तरह साथ देना और जो शख़्स मेरी तरफ़ रुजूअ लाये, उस के रास्ते पर चलना, फिर तुम को मेरी तरफ़ लौट कर आना है। तो जो काम तुम करते रहे, मैं सब से तुम को आगाह करूंगा। (१५) (लुक़्मान ने यह भी कहा कि) बेटा! अगर कोई अमल (मान लो) राई के दाने के बराबर भी (छोटा) हो और हो भी किसी पत्थर के अन्दर या आसमानों में (छिपा हुआ हो) या ज़मीन में, ख़ुदा उस को क़ियामत के दिन ला मौजूद करेगा। कुछ शक नहीं कि ख़ुदा लतीफ़ (और) ख़बरदार है। (१६) बेटा! नमाज़ की पाबन्दी रखना और (लोगों को) अच्छे कामों के करने का हुक्म और बुरी बातों से मना करते रहना और जो मुसीबत तुझ पर आए, उस पर सब्र करना। बेशक ये बड़ी हिम्मत के काम हैं। (१७) और (घमंड में आ कर) लोगों से गाल न फुलाना और ज़मीन में अकड़ कर न चलना कि ख़ुदा किसी इतराने वाले ख़ुद-पसंद को पसंद नहीं करता। (१८) और अपनी चाल में दर्मियानी रास्ता अपनाए रहना और (बोलते वक़्त) आवाज़ नीची रखना, क्योंकि (ऊंची आवाज़ गधों की-सी है और कुछ शक नहीं कि)

★रु० १/१० आ ११ ▨व. न बी स. ● नि. १/२

अ-लम् तरौ अन्नल्ला-ह सख़्ख़-र लकुम् मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि व अस्ब-ग़ अलैकुम् नि-अ-महू ज़ाहि-र-तंव्-व बाति-न-तन् ط व मिनन्नासि मंय्युजादिलु फ़िल्लाहि बिग़ैरि अिल्मिंव-व ला हुदंव्-व ला किताबिम्-मुनीर (२०) व इज़ा क़ी-ल लहुमुत्तबिअू मा अन्ज़-लल्लाहु क़ालू बल् नत्तबिअु मा व-जद्ना अलैहि आबा-अना ط अ-व लौ कानश्शैतानु यद्अूहुम् इला अज़ाबिस्सअीर (२१) व मंय्युस्लिम् वज-हहू इलल्लाहि व हु-व मुह्सिनुन् फ़-क़दिस्तम्-स-क बिल्-अुर्-वतिल्-वुस्क़ा ط व इलल्लाहि आक़िबतुल्-उमूर (२२) व मन् क-फ़-र फ़ला यह्ज़ुन्-क कुफ़्रुहू ط इलैना मर्जिअुहुम् फ़नुनब्बिउहुम् बिमा अमिलू ط इन्नल्ला-ह अलीमुम्-बिज़ातिस्सुदूर (२३) नुमत्तिअुहुम् क़लीलन् सुम्-म नज़्तर्रुहुम् इला अज़ाबिन् ग़लीअ (२४) व ल-इन् स-अल्तहुम् मन् ख़-ल-क़स्समावाति वल्अर-ज़ ल-यक़ूलुन्नल्लाहु ط क़ुलिल्हम्दु लिल्लाहि ط बल् अक्सरुहुम् ला यअ्-लमून (२५) लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि ط इन्नल्ला-ह हुवल्-ग़निय्युल्-हमीद (२६) व लौ अन्-न मा फ़िल्अर्ज़ि मिन् श-ज-रतिन् अक़्-लामुंव्वल्बह्रु यमुद्दुहू मिम्बअ्-दिही सब-अतु अब्हुरिम्-मा नफ़िदत् कलिमातुल्लाहि ط इन्नल्ला-ह अज़ीज़ुन् हकीम (२७) मा ख़ल्क़ुकुम् व ला बअ्-सुकुम् इल्ला क-नफ़्सिंव्वाहिदतिन् ط इन्नल्ला-ह समीअुम्-बसीर (२८) अ-लम् त-र अन्नल्ला-ह यूलिजुल्लै-ल फ़िन्नहारि व यूलिजुन्नहा-र फ़िल्लैलि व सख़्ख़रश्शम्-स वल्क़-म-र / कुल्लुंय्यज्री इला अ-जलिम्-मुसम्मंव-व अन्नल्ला-ह बिमा तअ्-मलू-न ख़बीर (२९) ज़ालि-क बि-अन्नल्ला-ह हुवल्-हक़्क़ु व अन्-न मा यद्अू-न मिन्दूनिहिल्-बातिलु ط व अन्नल्ला-ह हुवल्-अलिय्युल्कबीर ★ (३०)

مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَاَسْبَغَ عَلَيْكُمْ نِعَمَهٗ ظَاهِرَةً وَّ
بَاطِنَةً ۗ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِي اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّلَا هُدًى وَّلَا كِتٰبٍ
مُّنِيْرٍ ۝ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّبِعُوْا مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا بَلْ نَتَّبِعُ مَا وَجَدْنَا
عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا ۗ اَوَلَوْ كَانَ الشَّيْطٰنُ يَدْعُوْهُمْ اِلٰى عَذَابِ السَّعِيْرِ ۝
وَمَنْ يُّسْلِمْ وَجْهَهٗۤ اِلَى اللّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ
الْوُثْقٰى ۗ وَاِلَى اللّٰهِ عَاقِبَةُ الْاُمُوْرِ ۝ وَمَنْ كَفَرَ فَلَا يَحْزُنْكَ كُفْرُهٗ ۗ
اِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ فَنُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا ۗ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝
نُمَتِّعُهُمْ قَلِيْلًا ثُمَّ نَضْطَرُّهُمْ اِلٰى عَذَابٍ غَلِيْظٍ ۝ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ
خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ۗ قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ ۗ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا
يَعْلَمُوْنَ ۝ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ۝
وَلَوْ اَنَّ مَا فِي الْاَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ اَقْلَامٌ وَّالْبَحْرُ يَمُدُّهٗ مِنْۢ بَعْدِهٖ
سَبْعَةُ اَبْحُرٍ مَّا نَفِدَتْ كَلِمٰتُ اللّٰهِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝ مَا خَلْقُكُمْ وَ
لَا بَعْثُكُمْ اِلَّا كَنَفْسٍ وَّاحِدَةٍ ۗ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ۝ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ
يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ
كُلٌّ يَّجْرِيْۤ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى وَّاَنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝ ذٰلِكَ
بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهِ الْبَاطِلُ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ
الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ۝ اَلَمْ تَرَ اَنَّ الْفُلْكَ تَجْرِيْ فِي الْبَحْرِ بِنِعْمَتِ اللّٰهِ لِيُرِيَكُمْ

★रु० ३/१२ आ ११

सब से बुरी आवाज़ गधों की है★(१९) क्या तुम ने नहीं देखा कि जो कुछ आसमानों में और जो कुछ ज़मीन में है, सब को ख़ुदा ने तुम्हारे क़ाबू में कर दिया है और तुम पर अपनी ज़ाहिरी और भीतरी नेमतें पूरी कर दी हैं और कुछ लोग ऐसे हैं कि ख़ुदा के बारे में झगड़ते हैं, न इल्म रखते हैं और न हिदायत और न रोशन किताब। (२०) और जब उन से कहा जाता है कि जो (किताब) ख़ुदा ने नाज़िल फ़रमायी है, उसी की पैरवी करो, तो कहते हैं कि हम तो उसी की पैरवी करेंगे, जिस पर अपने बाप-दादा को पाया। भला अगरचे शैतान उन को दोज़ख़ के अज़ाब की तरफ़ बुलाता है, (तब भी ?) (२१) और जो शख़्स अपने आप को ख़ुदा का फ़रमांबरदार कर दे और भला भी हो तो उस ने मज़बूत दस्तावेज़ हाथ में ले ली और (सब) कामों का अंजाम ख़ुदा ही की तरफ़ है। (२२) और जो कुफ़्र करे तो उस का कुफ़्र तुम्हें ग़मनाक न कर दे। उन को हमारी तरफ़ लौट कर आना है, फिर जो काम वे किया करते थे, हम उन को बता देंगे। बेशक ख़ुदा दिलों की बातों को जानता है। (२३) हम उन को थोड़ा-सा फ़ायदा पहुंचाएंगे, फिर सख़्त अज़ाब की तरफ़ मजबूर कर के ले जाएंगे। (२४) और अगर तुम उन से पूछो कि आसमानों और ज़मीन को किस ने पैदा किया, तो बोल उठेंगे कि ख़ुदा ने, कह दो कि ख़ुदा का शुक्र है, लेकिन उन में अक्सर समझ नहीं रखते। (२५) जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है (सब) ख़ुदा ही का है। बेशक ख़ुदा बे-परवाह (और) हम्द (व तारीफ़) के लायक़ है। (२६) और अगर यों हो कि ज़मीन में जितने पेड़ हैं (सब के सब) क़लम हों और समुन्दर (का तमाम पानी) स्याही हो (और) इस के बाद सात समुन्दर और (स्याही हो जाएं) तो ख़ुदा की बातें (यानी उस की सिफ़तें) ख़त्म न हों। बेशक ख़ुदा ग़ालिब हिक्मत वाला है। (२७) (ख़ुदा को) तुम्हारा पैदा करना और जिला उठाना एक शख़्स (के पैदा करने और जिला उठाने) की तरह है, बेशक ख़ुदा सुनने वाला, देखने वाला है। (२८) क्या तुम ने नहीं देखा कि ख़ुदा ही रात को दिन में दाख़िल करता है और उसी ने सूरज और उसी ने चांद को (तुम्हारे) फ़रमान के तहत कर रखा है। हर-एक एक मुक़र्रर वक़्त तक चल रहा है और यह कि ख़ुदा तुम्हारे सब अमल से ख़बरदार है। (२९) यह इस लिए कि ख़ुदा की ज़ात बर-हक़ है और जिन को ये लोग ख़ुदा के सिवा पुकारते हैं, वे बेकार हैं और यह कि ख़ुदा ही ऊंचे मर्तबे वाला और बड़ा है। (३०) ★

★रु. २/११ आ ८ ★रु. ३/१२ आ ११

अ-लम् त-र अन्नल्फ़ुल-क तज्री फ़िल्बह्रि बिनिअ्-मतिल्लाहि लियुरि-यकुम् मिन् आयातिही ⸗ इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल्-लिकुल्लि सब्बारिन् शकूर (३१) व इज़ा ग़शि-यहुम् मौजुन् कज़्ज़ु - ललि द-अवुल्ला-ह मुख़्लिसी - न लहुद्-दी - न ⸗ फ़ - लम्मा नज्जाहुम् इलल्बर्रि फ़मिन्हुम् मुक़्तसिदुन् ⸗ व मा यज्हदु बिआयातिना इल्ला कुल्लु ख़त्तारिन् कफ़ूर (३२) या अय्युहन्नासुत्तक़ू रब्बकुम् वख़्शौ यौमल्ला यज् - ज़ी वालिदुन् अंव्-वलदिही ⸗ व ला मौलूदुन् हु-व जाज़िन् अंव्वालिदिही शैअन् ⸗ इन्-न वअ्-दल्लाहि हक़्क़ुन् फ़-ला तग़ुर्रन्नकुमुल् - ह़यातुद्दुन्या व ला यग़ुर्रन्नकुम् बिल्लाहिल्-ग़रूर (३३) इन्नल्ला - ह अिन्दहू अिल्मुस्साअति ⸗ व युनज़्ज़िलुल् - ग़ै - स ⸗ व यअ् - लमु मा फ़िल्अर्हामि ⸗ व मा तद्री नफ़्सुम्-माज़ा तक्सिबु ग़ - दन् ⸗ व मा तद्री नफ़्सुम् - बि - अय्यि अर्ज़िन् तमूतु ⸗ इन्नल्ला - ह अलीमुन् ख़बीर ★ (३४)

مِّنْ اٰيٰتِهٖ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ۝ وَاِذَا غَشِيَهُمْ مَّوْجٌ
كَالظُّلَلِ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ڬ فَلَمَّا نَجّٰىهُمْ اِلَى الْبَرِّ فَمِنْهُمْ
مُّقْتَصِدٌ ۭ وَمَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَآ اِلَّا كُلُّ خَتَّارٍ كَفُوْرٍ ۝ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا
رَبَّكُمْ وَاخْشَوْا يَوْمًا لَّا يَجْزِيْ وَالِدٌ عَنْ وَّلَدِهٖ ۡ وَلَا مَوْلُوْدٌ هُوَ جَازٍ
عَنْ وَّالِدِهٖ شَيْـــًٔا ۭ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۪ وَلَا
يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ۝ اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَيُنَزِّلُ الْغَيْثَ ۚ
وَيَعْلَمُ مَا فِي الْاَرْحَامِ ۭ وَمَا تَدْرِيْ نَفْسٌ مَّاذَا تَكْسِبُ غَدًا ۭ وَمَا
تَدْرِيْ نَفْسٌۢ بِاَيِّ اَرْضٍ تَمُوْتُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ ۝
سُوْرَةُ السَّجْدَةِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ ثَلٰثُوْنَ اٰيَةً وَثَلٰثُ رُكُوْعَاتٍ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
الۗمّۗ ۝ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ اَمْ يَقُوْلُوْنَ
افْتَرٰىهُ ۚ بَلْ هُوَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اَتٰىهُمْ مِّنْ نَّذِيْرٍ
مِّنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ۝ اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَي الْعَرْشِ ۭ مَا لَكُمْ
مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا شَفِيْعٍ ۭ اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ ۝ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ مِنَ
السَّمَاۗءِ اِلَى الْاَرْضِ ثُمَّ يَعْرُجُ اِلَيْهِ فِيْ يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗٓ اَلْفَ
سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ ۝ ذٰلِكَ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۝

३२ सूरतुस्-सज्दति ७५

(मक्की) इस सूरः में अरबी के १५७७ अक्षर, २७४ शब्द, ३० आयतें और ३ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

अलिफ़् - लाम् - मीम् ⸗ (१) तन्ज़ीलुल्किताबि ला रै-ब फ़ीहि मिर्रब्बिल् - आलमीन ⸗ (२) अम् यक़ूलूनफ़्तराहु ⸗ बल् हुवल्ह़क़्क़ु मिर्रब्बि-क लितुन्ज़ि-र क़ौमम्-मा अताहुम् मिन् नज़ीरिम्-मिन् क़ब्लि-क ल-अ़ल्लहुम् यह्-तदून (३) अल्लाहुल्लज़ी ख़-ल-क़स्समावाति वल्अर्-ज़ व मा बैनहुमा फ़ी सित्तति अय्यामिन् सुम्मस्तवा अ़लल्अ़र्शि ⸗ मा लकुम् मिन् दूनिही मिंव्वलिय्यिंव्वला शफ़ीअिन् ⸗ अ-फ़-ला त-त - ज़क्करून (४) युदब्बिरुल्-अम्-र मिनस्समाइ इलल्अर्ज़ि सुम्-म यअ्-रुजु इलैहि फ़ी यौमिन् का-न मिक़्दारुहू अल्-फ़ स-नतिम्मिम्मा त-अुद्दून (५) ज़ालि-क आ़लिमुल्-ग़ैबि वश्शहादतिल्-अ़ज़ीज़ुर्रह़ीम ⸗ (६)

★रु. ४/१३ आ ४

क्या तुम ने नहीं देखा कि ख़ुदा ही की मेहरबानी से कश्तियां दरिया में चलती हैं, ताकि वह तुम को अपनी कुछ निशानियां दिखाए। बेशक इस में हर सब्र करने वाले (और) शुक्र करने वाले के लिए निशानियां हैं। (३१) और जब उन पर (दरिया की) लहरें सायबानों की तरह छा जाती हैं, तो ख़ुदा को पुकारने (और) ख़ालिस उस की इबादत करने लगते हैं, फिर जब वह उन को निजात दे कर ख़ुश्की पर पहुंचा देता है, तो कुछ ही इंसाफ़ पर क़ायम रहते हैं और हमारी निशानियों से वही इन्कार करते हैं, जो वायदा तोड़ने वाले (और) ना-शुक्रे हैं। (३२) लोगो ! अपने परवरदिगार से डरो और उस दिन का ख़ौफ़ करो कि न तो बाप अपने बेटे के कुछ काम आए और न बेटा बाप के कुछ काम आ सके। बेशक ख़ुदा का वायदा सच्चा है, पस दुनिया की ज़िंदगी तुम को धोखे में न डाल दे और न धोखा देने वाला (शैतान) तुम्हें ख़ुदा के बारे में किसी तरह का फ़रेब दे।[1] (३३) ख़ुदा ही को क़ियामत का इल्म है और वही मेंह बरसाता है और वही (हामिला के) पेट की चीज़ों को जानता है (कि नर है या मादा) और कोई शख़्स नहीं जानता कि वह कल क्या करेगा। और कोई नफ़्स नहीं जानता कि किस ज़मीन में उसे मौत आएगी। बेशक ख़ुदा ही जानने वाला (और) ख़बरदार है। (३४)★

३२ सूर: सज्दा ७५

सूर: सज्दा मक्की है और इस में तीस आयतें और तीन रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

अलिफ़-लाम-मीम, (१) इस में कुछ शक नहीं कि इस किताब का नाज़िल किया जाना तमाम दुनिया के परवरदिगार की तरफ़ से है। (२) क्या ये लोग यह कहते हैं कि पैग़म्बर ने इस को ख़ुद से बना लिया है ? (नहीं,) बल्कि वह तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से बर-हक़ है, ताकि तुम उन लोगों को हिदायत करो, जिन के पास तुम से पहले कोई हिदायत करने वाला नहीं आया, ताकि ये रास्ते पर चलें। (३) ख़ुदा ही तो है, जिस ने आसमानों और ज़मीन को और जो चीज़ें इन दोनों में हैं, सब को छः दिन में पैदा किया, फिर अर्श पर क़ायम हुआ। उस के सिवा तुम्हारा न कोई दोस्त है और न सिफ़ारिश करने वाला। क्या तुम नसीहत नहीं पकड़ते ? (४) वही आसमान से ज़मीन तक (के) हर काम का इन्तिज़ाम करता है। फिर वह एक दिन जिस की मिक़्दार तुम्हारी गिनती के मुताबिक़ हज़ार वर्ष की होगी, उस की तरफ़ चढ़ाई (और रुजूअ) करेगा। (५) यही तो छिपे और ज़ाहिर का जानने वाला (और) ग़ालिब (और) रहम वाला (ख़ुदा) है। (६) जिस ने हर चीज़

---

१. यानी शैतान धोखा दे कि अल्लाह ग़फ़ूर और रहीम है और दुनिया का जीना बहका दे कि जिस को यहां भला है, उस को वहां भी भला है।

★रु. ४/१३ आ ४

अल्लज़ी अह्-स-न कुल-ल शैइन् ख़-ल-क़हू व ब-द-अ ख़ल्क़ल् - इन्सानि मिन् तीन७(७) सुम्-म ज-अ-ल नस्-लहू मिन् सुलालतिम्-मिम्-मा-इम्-महीन७ (८) सुम् - म सव्वाहु व न-फ़-ख़ फ़ीहि मिर्रूहिही व ज-अ-ल लकुमुस्सम्-अ वल्-अब्सा-र वल्-अफ़्इ-द-त ♭ क़लीलम्-मा तश्कुरून (९) व क़ालू अ-इज़ा ज़-लल्ना फ़िल्अर्ज़ि अ इन्ना लफ़ी ख़ल्क़िन् जदीदिन् ♭ बल् हुम् बिलिक़ाइ रब्बिहिम् काफ़िरून (१०) क़ुल् य-त-वफ़्फ़ाकुम् म-लकुल् - मौतिल्लज़ी वुक्कि-ल बिकुम् सुम्-म इला रब्बिकुम् तुर्जअून ★ (११) व लौ तरा इज़िल्-मुज्रिमू-न नाकिसू रुऊसिहिम् अिन् - द रब्बिहिम् ♭ रब्बना अब्-सर्ना व समिअ्-ना फ़र्जिअ्-ना नअ्-मल् सालिहन् इन्ना मूक़िनून (१२) व लौ शिअ्ना लआतैना कुल-ल नफ़्सिन् हुदाहा व लाकिन् हक़्क़ल्-क़ौलु मिन्नी ल-अम्-ल-अन्-न ज-हन्न-म मिनल्जिन्नति वन्नासि अज्मअीन (१३) फ़ज़ूक़ू बिमा नसीतुम् लिक़ा - अ यौमिकुम् हाज़ा७

الذي احسن كل شيء خلقه وبدا خلق الانسان من طين ۝
ثم جعل نسله من سللة من ماء مهين ۝ ثم سوىه ونفخ فيه
من روحه وجعل لكم السمع والابصار والافدة قليلا ما
تشكرون ۝ وقالوا ءاذا ضللنا في الارض ءانا لفي خلق جديد
بل هم بلقاء ربهم كفرون ۝ قل يتوفىكم ملك الموت الذي
وكل بكم ثم الى ربكم ترجعون ۝ ولو ترى اذ المجرمون ناكسوا
رءوسهم عند ربهم ربنا ابصرنا وسمعنا فارجعنا نعمل صالحا
انا موقنون ۝ ولو شئنا لاتينا كل نفس هدىها ولكن حق القول
مني لاملان جهنم من الجنة والناس اجمعين ۝ فذوقوا بما
نسيتم لقاء يومكم هذا انا نسينكم وذوقوا عذاب الخلد بما كنتم
تعملون ۝ انما يؤمن بايتنا الذين اذا ذكروا بها خروا سجدا و
سبحوا بحمد ربهم وهم لا يستكبرون ۝ تتجافى جنوبهم عن
المضاجع يدعون ربهم خوفا وطمعا ومما رزقنهم ينفقون ۝
فلا تعلم نفس ما اخفي لهم من قرة اعين جزاء بما كانوا
يعملون ۝ افمن كان مؤمنا كمن كان فاسقا لا يستون ۝ اما
الذين امنوا وعملوا الصلحت فلهم جنت الماوى نزلا بما كانوا
يعملون ۝ واما الذين فسقوا فماوىهم النار كلما ارادوا ان

इन्ना नसीनाकुम् व ज़ूक़ू अज़ाबल्-ख़ुल्दि बिमा कुन्तुम् तअ्-मलून (१४) इन्नमा युअ्मिनु बिआयातिनल्-लज़ी-न इज़ा ज़ुक्किरू बिहा ख़र्रू सुज्जदंव-व सब्बहू बिहम्दि रब्बिहिम् व हुम् ला यस्तक्बिरून □ (१५) त-त - जाफ़ा जुनूबुहुम् अनिल्मज़ाजिअि यद्अू-न रब्बहुम् ख़ौफ़ंव-व त-म-अ व्-व मिम्मा र-ज़क़्नाहुम् युन्फ़िक़ून (१६) फ़ ला तअ्-लमु नफ़्सुम्मा उख़्फ़ि-य लहुम् मिन् क़ुर्रति अअ्-युनिन् ७ जज़ा-अम्-बिमा कानू यअ्-मलून (१७) अ-फ़-मन् का-न मुअ्मिनन् क-मन् का-न फ़ासिक़न् ▒ ला यस्तवून ▒ (१८) अम्मल्लज़ी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति फ़-लहुम् जन्नातुल् - मअ्वा ✓ नुज़ुलम् - बिमा कानू यअ् - मलून (१९) व अम्मल्लज़ी-न फ़-सक़ू फ़-मअ्-वाहुमुन्नारु♭ कुल्लमा अरादू अंय्यख़्रुजू मिन्हा उअीदू फ़ीहा व क़ी - ल लहुम् ज़ूक़ू अज़ाबन्नारिल्लज़ी कुन्तुम् बिही तुकज़्ज़िबून (२०)

★रु. १/१४ आ ११ □ सज्दः ६ ▒ व. ग़ुफ़रान ▒ व. ग़ुफ़रान

को बहुत अच्छी तरह बनाया (यानी) उस को पैदा किया और इन्सान की पैदाइश को मिट्टी से शुरू किया। (७) फिर उस की नस्ल खुलासे से (यानी) हक़ीर पानी से पैदा की, (८) फिर उस को दुरुस्त किया, फिर उस में अपनी (तरफ़ से) रूह फूंकी और तुम्हारे कान और आंखें और दिल बनाये (मगर) तुम बहुत कम शुक्र करते हो। (९) और कहने लगे कि जब हम ज़मीन में मलिया-मेट हो जाएंगे, तो क्या नये सिरे से पैदा होंगे। सच तो यह है कि ये लोग अपने परवरदिगार के सामने जाने ही के क़ायल नहीं। (१०) कह दो कि मौत का फ़रिश्ता, जो तुम पर मुक़र्रर किया गया है, तुम्हारी रूहें क़ब्ज़ कर लेता है, फिर तुम अपने परवरदिगार की तरफ़ लौटाये जाओगे। (११)★

(और तुम ताज्जुब करो), जब देखो कि गुनाहगार अपने परवरदिगार के सामने सर झुकाए होंगे (और कहेंगे कि) ऐ हमारे परवरदिगार! हम ने देख लिया और सुन लिया, तो हम को (दुनिया में) वापस भेज दे कि नेक अमल करें। बेशक हम यक़ीन करने वाले हैं। (१२) और अगर हम चाहते, तो हर शख्स को हिदायत कर देते, लेकिन मेरी तरफ़ से यह बात क़रार पा चुकी है कि मैं दोज़ख को जिन्नों और इन्सानों, सब से भर दूंगा। (१३) सो (अब आग के) मज़े चखो, इस लिए कि तुमने उस दिन के आने को भुला रखा था, (आज) हम भी तुम्हें भुला देंगे और जो काम तुम करते थे, उनकी सज़ा में हमेशा के अज़ाब के मज़े चखते रहो। (१४) हमारी आयतों पर तो वही लोग ईमान लाते हैं कि जब उन को उन से नसीहत की जाती है, तो सज्दे में गिर पड़ते और अपने परवरदिगार की तारीफ़ के साथ तस्बीह करते हैं और घमंड नहीं करते ☐ (१५) उन के पहलू बिछौनों से अलग रहते हैं (और) वह अपने परवरदिगार को खौफ़ और उम्मीद से पुकारते और जो (माल) हम ने उन को दिया है, उस में से खर्च करते हैं। (१६) कोई नफ़्स नहीं जानता कि उन के लिए कैसी आंखों की ठंडक छिपा कर रखी गयी है, यह उन के आमाल का बदला है, जो वे करते थे। (१७) भला जो मोमिन हो, वह उस शख्स की तरह हो सकता है जो नाफ़रमान हो? ▨ दोनों बराबर नहीं हो सकते ▨ (१८) जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, उन के (रहने के) लिए बाग़ हैं। यह मेहमानी उन कामों का बदला है, जो वे करते थे। (१९) और जिन्हों ने ना-फ़रमानी की, उन के (रहने के) लिए दोज़ख है। जब चाहेंगे कि उस में से निकल जाएं, तो उसमें लौटा दिए जाएंगे और उन से कहा जाएगा कि जिस दोज़ख के अज़ाब को तुम झूठ समझते थे, उस के

★रु. १/१४ आ ११ ☐ सजूदः ९ ▨ व. गुफ़्रान ▨ व. गुफ़्रान

व ल-नुज़ीक़न्नहुम् मिनल् - अ़ज़ाबिल् - अद्ना दूनल् - अ़ज़ाबिल् - अक्बरि ल-अ़ल्लहुम् यर्जिअ़ून (२१) व मन् अज़्-लमु मिम्मन् ज़ुक्कि-र बिआयाति रब्बिही सुम्-म अअ़्-र-ज़ अ़न्हा ط इन्ना मिनल् - मुज्रिमी-न मुन्तक़िमून ★(२२) व ल-क़द् आतैना मूसल्किता-ब फ़ ला तकुन् फ़ी मिर्यतिम्-मिल्-लिक़ा-इही व ज-अ़ल्नाहु हुदल्लिबनी इस्राईल ج (२३) व ज - अ़ल्ना मिन्हुम् अइम्मतंय्यह्दू - न बिअम्रिना लम्मा स - बरू قف व कानू बि-आयातिना यूक़िनून (२४) इन्-न रब्ब-क हु-व यफ़्सिलु बैनहुम् यौमल्क़ियामति फ़ीमा कानू फ़ीहि यख़्-तलिफ़ून (२५) अ-व लम् यह्दि लहुम् कम् अह्-लक्-ना मिन् क़ब्-लिहिम् मिनल्क़ुरूनि यम्शू-न फ़ी मसाकिनिहिम् ط इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिन् ط अ-फ़ला यस्-मअ़ून (२६) अ-व लम् यरौ अन्ना नसूक़ुल्मा-अ इलल्-अर्ज़िल्-जुरुज़ि फ़-नुख़्रिजु बिही ज़र-अ़न् तअ्-कुलु मिन्हु अन्आमुहुम् व अन्फ़ुसुहुम् ط अ-फ़ ला युब्सिरून●(२७)

كُلَّمَآ أَرَادُوٓا أَن يَخْرُجُوا مِنْهَآ أُعِيدُوا فِيهَا وَقِيلَ لَهُمْ ذُوقُوا عَذَابَ النَّارِ الَّذِي كُنتُم
بِهِ تُكَذِّبُونَ ۝ وَلَنُذِيقَنَّهُم مِّنَ الْعَذَابِ الْأَدْنَىٰ دُونَ الْعَذَابِ
الْأَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ۝ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّن ذُكِّرَ بِآيَاتِ رَبِّهِ ثُمَّ أَعْرَضَ
عَنْهَا ۚ إِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِينَ مُنتَقِمُونَ ۝ وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ
فَلَا تَكُن فِي مِرْيَةٍ مِّن لِّقَائِهِ ۖ وَجَعَلْنَاهُ هُدًى لِّبَنِي إِسْرَائِيلَ ۝
وَجَعَلْنَا مِنْهُمْ أَئِمَّةً يَهْدُونَ بِأَمْرِنَا لَمَّا صَبَرُوا ۖ وَكَانُوا بِآيَاتِنَا
يُوقِنُونَ ۝ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا كَانُوا
فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۝ أَوَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ أَهْلَكْنَا مِن قَبْلِهِم مِّنَ
الْقُرُونِ يَمْشُونَ فِي مَسَاكِنِهِمْ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ ۖ أَفَلَا يَسْمَعُونَ ۝
أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا نَسُوقُ الْمَاءَ إِلَى الْأَرْضِ الْجُرُزِ فَنُخْرِجُ بِهِ زَرْعًا تَأْكُلُ
مِنْهُ أَنْعَامُهُمْ وَأَنفُسُهُمْ ۖ أَفَلَا يُبْصِرُونَ ۝ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا
الْفَتْحُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ۝ قُلْ يَوْمَ الْفَتْحِ لَا يَنفَعُ الَّذِينَ كَفَرُوا إِيمَانُهُمْ
وَلَا هُمْ يُنظَرُونَ ۝ فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ وَانتَظِرْ إِنَّهُم مُّنتَظِرُونَ ۝
سُورَةُ الْأَحْزَابِ مَدَنِيَّةٌ
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ اتَّقِ اللَّهَ وَلَا تُطِعِ الْكَافِرِينَ وَالْمُنَافِقِينَ ۗ إِنَّ اللَّهَ
كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝ وَاتَّبِعْ مَا يُوحَىٰ إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ

व यक़ूलू - न मता हाज़ल्फ़त्हु इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (२८) क़ुल् यौमल्फ़त्हि ला यन्फ़उ़ल्लज़ी-न क-फ़रू ईमानुहुम् व ला हुम् युन्ज़रून (२९) फ़-अअ़् - रिज़् अ़न्हुम् वन्तज़िर् इन्नहुम् मुन्तज़िरून ★(३०)

३३ सूरतुल् अह़्ज़ाबि ९०

(मदनी) इस सूरः में अरबी के ५६०६ अक्षर, १२१० शब्द, ७३ आयतें और ९ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम ●

या अय्युहन् - नबिय्युत्-तक़िल्-ला-ह व ला तुतिअ़िल् - काफ़िरी-न वल्मुनाफ़िक़ी-न ط इन्नल्ला-ह का-न अ़लीमन्-ह़कीमा ج (१) वत्तबिअ़ मा यूहा इलै-क मिर्रब्बि-क ط इन्नल्ला-ह का-न बिमा तअ़्-मलू-न ख़बीरा ج (२)

मज़े चखो। (२०) और हम उन को (क़ियामत के) बड़े अज़ाब के सिवा दुनिया के अज़ाब का भी मज़ा चखाएंगे, शायद (हमारी तरफ़) लौट आएं। (२१) और उस शख़्स से बढ़कर ज़ालिम कौन, जिस को उस के परवरदिगार की आयतों से नसीहत की जाए, तो वह उन से मुंह फेर ले। हम गुनाहगारों से ज़रूर बदला लेने वाले हैं। (२२)★

और हम ने मूसा को किताब दी, तो तुम उनके मिलने से शक में न होना[1] और हमने उस (किताब) को (या मूसा को) बनी इस्राईल के लिए हिदायत (का ज़रिया) बनाया। (२३) और उन में से हम ने पेशवा बनाये थे, जो हमारे हुक्म से हिदायत किया करते थे, जब वे सब्र करते थे और वे हमारी आयतों पर यक़ीन रखते थे। (२४) बेशक तुम्हारा परवरदिगार उन में जिन बातों में वे इख़्तिलाफ़ करते थे, क़ियामत के दिन फ़ैसला कर देगा। (२५) क्या उनको इन (बातों) से हिदायत न हुई कि हम ने इन से पहले बहुत-सी उम्मतों को, जिन के बसने की जगहों में ये चलते-फिरते हैं, हलाक कर दिया। बेशक इस में निशानियां हैं, तो ये सुनते क्यों नहीं? (२६) क्या इन्होंने नहीं देखा कि हम इस बंजर ज़मीन की तरफ़ पानी चलाते हैं, फिर इससे खेती पैदा करते हैं, जिस में से इन के चौपाए भी खाते हैं और वे भी (खाते हैं), तो ये देखते क्यों नहीं?●(२७) और कहते हैं अगर तुम सच्चे हो, तो यह फ़ैसला कब होगा? (२८) कह दो कि फ़ैसले के दिन काफ़िरों को उनका ईमान लाना कुछ भी फ़ायदे का न होगा और न उन को मुहलत दी जाएगी। (२९) तो उनसे मुंह फेर लो और इन्तिज़ार करो, ये भी इन्तिज़ार कर रहे हैं। (३०)★

३३ सूरः अह्ज़ाब ९०

सूरः अह्ज़ाब मदनी है और इस में तिहत्तर आयतें और नौ रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

ऐ पैग़म्बर! ख़ुदा से डरते रहना और काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों का कहा न मानना। बेशक ख़ुदा जानने वाला (और) हिक्मत वाला है। (१) और जो (किताब) तुम को तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से वह्य की जाती है, उसी की पैरवी किए जाना। बेशक ख़ुदा तुम्हारे सब अमलों से

१. यानी तुम मूसा से ज़रूर मिलोगे। चुनांचे आप मेराज की रात आसमान पर हज़रत मूसा अलै० से मिले, जैसा कि हदीस में है।

व त-वक्कल् अ़-लल्लाहि ᒑ व कफ़ा बिल्लाहि वकीला (३) मा ज-अ़-लल्लाहु लिरजुलिम्-मिन् क़ल्बैनि फ़ी जौफ़िही ᒐ व मा ज-अ़-ल अज़्वा-ज-कुमुल्लाई तुज़ाहिरू-न मिन्हुन्-न उम्महातिकुम् ᒐ व मा ज-अ़-ल अद्-अ़िया-अ - कुम् अब्-ना - अकुम् ᒑ ज़ालिकुम् क़ौलुकुम् बि - अफ़्वाहिकुम् ᒑ वल्लाहु यक़ूलुल् हक़्-क़ व हु-व यह्दिस्सबील (४) उद्अू-हुम् लिआबाइहिम् हु - व अक़्सतु अिन्दल्लाहि ᒐ फ़-इल्लम् तअ़्-लमू आबा-अहुम् फ़-इख़्वानुकुम् फ़िद्दीनि व मवालीकुम् ᒑ व लै-स अ़लैकुम् जुनाहुन् फ़ीमा अख़्तअ्-तुम् बिही ᒑ व लाकिम्मा त - अ़म्म - दत् क़ुलूबुकुम् ᒑ व कानल्लाहु ग़फ़ूरर् - रहीमा (५) अन्नबिय्यु औला बिल्मुअ्मिनी-न मिन् अन्फ़ुसिहिम् व अज़्वाजुहू उम्महातुहुम् ᒑ व उलुल्-अर्हामि बअ्-ज़ुहुम् औला बिबअ्-ज़िन् फ़ी किताबिल्लाहि मिनल् - मुअ्मिनी - न वल्मुहाजिरी-न इल्ला अन् तफ़्-अ़लू इला औलिया-इकुम् मअ्-रूफ़न् ᒑ का-न ज़ालि-क फ़िल्किताबि मस्तूरा (६) व इज़् अ-ख़ज़्ना मिनन्नबिय्यी-न मीसाक़हुम् व मिन-क व मिन् नूहिंव्-व इब्राही-म व मूसा व ईसब्नि मर्-य-म व अ-ख़ज़्ना मिन्हुम् मीसाक़न् ग़लीज़ल (७) लियस् - अलस् - सादिक़ी-न अ़न् सिद्क़िहिम् ᒐ व अ-अ़द्-द लिल्काफ़िरी-न अ़ज़ाबन् अलीमा ★(८) या अय्युहल्लज़ी-न आमनुज़्कुरू निअ़्-म-तल्लाहि अ़लैकुम् इज़् जाअत्कुम् जुनूदुन् फ़-अर्सल्ना अ़लैहिम् रीहंव् व जुनूदल्लम् तरौहा ᒑ व कानल्लाहु बिमा तअ़्-मलू-न बसीरा ᒐ (९) इज़् जाऊकुम् मिन् फ़ौक़िकुम् व मिन् अस् - फ़-ल मिन्कुम् व इज़् ज़ाग़तिल्-अब्सारु व ब-ल-ग़तिल्-क़ुलूबुल्-हनाजि-र व तज़ुन्नू-न बिल्लाहिज़्ज़ुनूना (१०) हुनालिकब्तुलियल्-मुअ्मिनू-न व ज़ुल्ज़िलू ज़िल्ज़ालन् शदीदा (११)

بما تعملون خبيرا ۝ وتوكل على الله وكفى بالله وكيلا ۝ ما
جعل الله لرجل من قلبين في جوفه وما جعل ازواجكم الـٰئي
تظاهرون منهن امهاتكم وما جعل ادعياءكم ابناءكم ذلكم قولكم
بافواهكم والله يقول الحق وهو يهدي السبيل ۝ ادعوهم لاباىهم
هو اقسط عند الله فان لم تعلموا اباءهم فاخوانكم في الدين و
مواليكم وليس عليكم جناح فيما اخطاتم به ولكن ما تعمدت
قلوبكم وكان الله غفورا رحيما ۝ النبي اولى بالمؤمنين من
انفسهم وازواجه امهاتهم واولوا الارحام بعضهم اولى ببعض
في كتب الله من المؤمنين والمهجرين الا ان تفعلوا الى
اوليائكم معروفا كان ذلك في الكتب مسطورا ۝ واذ اخذنا
من النبيين ميثاقهم ومنك ومن نوح وابرهيم وموسى وعيسى
ابن مريم واخذنا منهم ميثاقا غليظا ۝ ليسئل الصدقين عن
صدقهم واعد للكفرين عذابا اليما ۝ يايها الذين امنوا اذكروا
نعمة الله عليكم اذ جاءتكم جنود فارسلنا عليهم ريحا وجنودا
لم تروها وكان الله بما تعملون بصيرا ۝ اذ جاءوكم من فوقكم
ومن اسفل منكم واذ زاغت الابصار وبلغت القلوب الحناجر
وتظنون بالله الظنونا ۝ هنالك ابتلي المؤمنون وزلزلوا

★रु. १/१७ आ ८

ख़बरदार है। (२) और ख़ुदा पर भरोसा रखना और ख़ुदा ही कार-साज़ काफ़ी है। (३) ख़ुदा ने किसी आदमी के पहलू में दो दिल नहीं बनाये और न तुम्हारी औरतों को, जिन को तुम मां कह बैठते हो, तुम्हारी मां बनाया और न तुम्हारे लय-पालकों को, तुम्हारे बेटे बनाया।[1] ये सब तुम्हारे मुंह की बातें हैं और ख़ुदा तो सच्ची बात फ़रमाता है और वही सीधा रास्ता दिखाता है। (४) मोमिनो! लय-पालकों को उन के (असली) बापों के नाम से पुकारा करो कि ख़ुदा के नज़दीक यही बात दुरुस्त है। अगर तुम को उन के बापों के नाम मालूम न हों, तो दीन में वे तुम्हारे भाई और दोस्त हैं और जो बात तुम से ग़लती से हो गयी हो, उस में तुम पर कुछ गुनाह नहीं, लेकिन जो दिली इरादे से करो (उस पर पकड़ है) और ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है। (५) पैग़म्बर मोमिनों पर उनकी जानों से भी ज़्यादा हक़ रखते हैं और पैग़म्बर की बीबियां उनकी माएं हैं और रिश्तेदार आपस में अल्लाह की किताब के मुताबिक़ मुसलमानों और मुहाजिरों से एक दूसरे (के तर्के) के ज़्यादा हक़दार हैं, मगर यह कि तुम अपने दोस्तों से एहसान करना चाहो। यह हुक्म किताब (यानी क़ुरआन) में लिख दिया गया है। (६) और जब हमने पैग़म्बरों से अह्द लिया और तुम से और नूह से और इब्राहीम से और मूसा से और मरयम के बेटे ईसा से और अह्द भी उन से पक्का लिया, (७) ताकि सच कहने वालों से उन की सच्चाई के बारे में मालूम करे और उसने काफ़िरों के लिए दुख देने वाला अज़ाब तैयार कर रखा है। (८) ★

मोमिनो! ख़ुदा की उस मेहरबानी को याद करो, जो (उस ने) तुम पर (उस वक़्त) की, जब फ़ौजें तुम पर (हमला करने को) आयीं, तो हमने उन पर हवा भेजी और ऐसे लश्कर (नाज़िल किए), जिन को तुम देख नहीं सकते थे और जो काम तुम करते हो, ख़ुदा उन को देख रहा है। (९) जब वे तुम्हारे ऊपर और नीचे की तरफ़ से तुम पर (चढ़) आए और जब आंखें फिर गयीं और दिल (मारे दहशत के) गलों तक पहुंच गये और तुम ख़ुदा के बारे में तरह-तरह के गुमान करने लगे। (१०) वहां मोमिन आज़माए गए और सख़्त तौर पर हिलाए गए। (११) और जब मुनाफ़िक़

---

१. यानी न बीवी मां कह देने से मां हो जाती है, न लयपालक असली बेटे के हुक्म में होता है।

★रु. १/१७ आ ८

व इज़् यक़ूलुल्-मुनाफ़िक़ू-न वल्लज़ी-न फ़ी क़ुलूबिहिम् म-र-ज़ुम्मा व-अ-द-नल्लाहु व रसूलुहू इल्ला ग़ुरूरा (१२) व इज़् क़ालत्ताइ-फ़-तुम् - मिन्हुम् या अह्-ल यस्रि-ब ला मुक़ा-म लकुम् फ़र्जिअू ج व यस्तअ्ज़िनु फ़रीक़ुम्-मिन्हुमुन्-नबिय्-य यक़ूलू - न इन्-न बुयूतना औ़रतुन् ز व मा हि-य बिऔ़रतिन् ج इंय्युरीदू-न इल्ला फ़िरारा (१३) व लौ दुख़िलत् अलैहिम् मिन् अक़्तारिहा सुम्-म सुइलुल्-फ़ित्-न-तु लआतौहा व मा त-लब्बसू बिहा इल्ला यसीरा (१४) व ल-क़द् कानू आ़हदुल्ला-ह मिन् क़ब्लु ला युवल्लूनल्-अद्बा-र ط व का-न अ़ह्दुल्लाहि मस्ऊला (१५) क़ुल्लंय्यन्फ़-अ़् - कुमुल्-फ़िरारु इन् फ़रर्तुम् मिनल्मौति अविल्क़त्लि व इज़ल्ला तुमत्तअू-न इल्ला क़लीला (१६) क़ुल् मन् ज़ल्लज़ी यअ्-सिमुकुम् मिनल्लाहि इन् अरा-द बिकुम् सूअन् औ अरा-द बिकुम् रह्-म-तन् ط व ला यजिदू-न लहुम् - मिन् दूनिल्लाहि वलिय्यंव्-व ला नसीरा (१७)

زِلْزَالًا شَدِيدًا ۝ وَإِذْ يَقُولُ الْمُنَافِقُونَ وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ
مَّا وَعَدَنَا اللَّهُ وَرَسُولُهُ إِلَّا غُرُورًا ۝ وَإِذْ قَالَت طَّائِفَةٌ مِّنْهُمْ يَا أَهْلَ
يَثْرِبَ لَا مُقَامَ لَكُمْ فَارْجِعُوا ۚ وَيَسْتَأْذِنُ فَرِيقٌ مِّنْهُمُ النَّبِيَّ يَقُولُونَ
إِنَّ بُيُوتَنَا عَوْرَةٌ وَمَا هِيَ بِعَوْرَةٍ ۖ إِن يُرِيدُونَ إِلَّا فِرَارًا ۝ وَ
لَوْ دُخِلَتْ عَلَيْهِم مِّنْ أَقْطَارِهَا ثُمَّ سُئِلُوا الْفِتْنَةَ لَآتَوْهَا وَمَا
تَلَبَّثُوا بِهَا إِلَّا يَسِيرًا ۝ وَلَقَدْ كَانُوا عَاهَدُوا اللَّهَ مِن قَبْلُ لَا يُوَلُّونَ
الْأَدْبَارَ ۚ وَكَانَ عَهْدُ اللَّهِ مَسْئُولًا ۝ قُل لَّن يَنفَعَكُمُ الْفِرَارُ
إِن فَرَرْتُم مِّنَ الْمَوْتِ أَوِ الْقَتْلِ وَإِذًا لَّا تُمَتَّعُونَ إِلَّا قَلِيلًا ۝
قُلْ مَن ذَا الَّذِي يَعْصِمُكُم مِّنَ اللَّهِ إِنْ أَرَادَ بِكُمْ سُوءًا
أَوْ أَرَادَ بِكُمْ رَحْمَةً ۚ وَلَا يَجِدُونَ لَهُم مِّن دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا وَ
لَا نَصِيرًا ۝ قَدْ يَعْلَمُ اللَّهُ الْمُعَوِّقِينَ مِنكُمْ وَالْقَائِلِينَ لِإِخْوَانِهِمْ
هَلُمَّ إِلَيْنَا ۖ وَلَا يَأْتُونَ الْبَأْسَ إِلَّا قَلِيلًا ۝ أَشِحَّةً عَلَيْكُمْ ۖ فَإِذَا
جَاءَ الْخَوْفُ رَأَيْتَهُمْ يَنظُرُونَ إِلَيْكَ تَدُورُ أَعْيُنُهُمْ كَالَّذِي
يُغْشَىٰ عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ۖ فَإِذَا ذَهَبَ الْخَوْفُ سَلَقُوكُم بِأَلْسِنَةٍ حِدَادٍ
أَشِحَّةً عَلَى الْخَيْرِ ۚ أُولَٰئِكَ لَمْ يُؤْمِنُوا فَأَحْبَطَ اللَّهُ أَعْمَالَهُمْ ۚ وَكَانَ
ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ۝ يَحْسَبُونَ الْأَحْزَابَ لَمْ يَذْهَبُوا ۖ وَإِن يَأْتِ
الْأَحْزَابُ يَوَدُّوا لَوْ أَنَّهُم بَادُونَ فِي الْأَعْرَابِ يَسْأَلُونَ عَنْ أَنبَائِكُمْ ۖ

क़द् यअ्-लमुल्लाहुल्-मुअ़व्विक़ी-न मिन्कुम् वल्क़ाइली-न लिइख़्वानिहिम् हलुम्-म इलैना ج व ला यअ्तूनल्-बअ्-स इल्ला क़लीला (१८) अशिह्-ह - तन् अलैकुम् ج फ़-इज़ा जा-अल्ख़ौफ़ु रऐ - तहुम् यन्ज़ुरू - न इलै - क तदूरु अअ्-युनुहुम् कल्लज़ी युग़्शा अलैहि मिनल्मौति ج फ़-इज़ा ज़-ह - बल्ख़ौफ़ु स-लक़ूकुम् बि-अल्सिनतिन् हिदादिन् अशिह्-ह-तन् अलल्ख़ैरि ط उलाइ-क लम् युअ्मिनू फ़-अह्-ब-तल्लाहु अअ्-मालहुम् ط व का-न ज़ालि-क अलल्लाहि यसीरा (१९) यह्-सबूनल्-अह्ज़ा-ब लम् यज़्-हबू ج व इंय्यअ्तिल्-अह्ज़ाबु यवद्दू लौ अन्नहुम् बादू-न फ़िल्-अअ्-राबि यस्-अलू-न अन् अम्बा-इकुम् ط व लौ कानू फ़ीकुम् मा क़ातलू इल्ला क़लीला ★ (२०)

∴ मु. अि मु ता ख. १० ★रु. २/१८ आ १२

और वे लोग जिनके दिलों में बीमारी है, कहने लगे कि खुदा और उसके रसूल ने तो हम से सिर्फ़ धोखे का वायदा किया था। (१२) और जब उन में से एक जमाअत कहती थी कि ऐ मदीना वालो! (यहां) तुम्हारे (ठहरने की) जगह नहीं, तो लौट चलो और एक गिरोह उन में से पैग़म्बर से इजाज़त मांगने और कहने लगा कि हमारे घर खुले पड़े हैं, "हालांकि वे खुले नहीं थे," वे तो सिर्फ़ भागना चाहते थे। (१३) और अगर फ़ौजें मदीने के चारों तरफ़ से उन पर आ दाखिल हों, फिर उन से खाना जंगी के लिए कहा जाए, तो (फ़ौरन) करने लगें और इसके लिए बहुत कम ठहरें। (१४) हालांकि पहले खुदा से इक़रार कर चुके थे कि पीठ नहीं फेरेंगे और खुदा से (जो) इक़रार (किया जाता है, उस) की ज़रूर पूछ-ताछ होगी। (१५) कह दो कि अगर तुम मरने या मारे जाने से भागते हो, तो भागना तुम को फ़ायदा नहीं देगा और उस वक़्त तुम बहुत ही कम फ़ायदा उठाओगे। (१६) कह दो कि अगर खुदा तुम्हारे साथ बुराई का इरादा करे, तो कौन तुम को उससे बचा सकता है या अगर तुम पर मेहरबानी करनी चाहे, (तो कौन उसको हटा सकता है ?) और ये लोग खुदा के सिवा किसी को न अपना दोस्त पाएंगे और न मददगार। (१७) खुदा तुम में से उन लोगों को भी जानता है, जो (लोगों को) मना करते हैं और अपने भाइयों से कहते हैं कि हमारे पास चले आओ और लड़ाई में नहीं आते, मगर कम। (१८) (यह इस लिए कि) तुम्हारे बारे में बुख़्ल करते हैं। फिर जब डर (का वक़्त) आए तो तुम उन को देखो कि तुम्हारी तरफ़ देख रहे हैं (और) उनकी आंखें (उसी तरह) फिर रही हैं, जैसे किसी को मौत से ग़शी आ रही हो। फिर जब डर जाता रहे, तो तेज़ ज़ुबानों के साथ तुम्हारे बारे में ज़ुबानदराज़ी करें और माल में बुख़्ल करें। ये लोग (हक़ीक़त में) ईमान लाए ही न थे, तो खुदा ने उन के आमाल बर्बाद कर दिए और यह खुदा को आसान था। (१९) (डर की वजह से) ख़्याल करते हैं कि फ़ौजें नहीं गयीं और अगर लश्कर आ जाएं तो तमन्ना करें कि (काश!) गंवारों में जा रहें (और) तुम्हारी ख़बर पूछा करें और अगर तुम्हारे दर्मियान हों, तो लड़ाई न करें, मगर कम। (२०) ★

^मु. अि मु ता ख़. १० ★रु. २/१८ आ १२

ल-क़द् का-न लकुम् फ़ी रसूलिल्लाहि उस्-वतुन् ह-स-नतुल्-लिमन् का-न यर्जुल्ला-ह वल्-यौमल्-आख़ि-र व ज़-क-रल्ला-ह कसीरा ط (२१) व लम्मा र-अल्-मुअ्मिनूनल्-अह्ज़ा - ब ۙ क़ालू हाज़ा मा व - अ - द-नल्लाहु व रसूलुहू व स-द-क़ल्लाहु व रसूलुहू ز व मा ज़ादहुम् इल्ला ईमानंव्-व तस्लीमा ط (२२) मिनल् - मुअ्मिनी-न रिजालुन् स-दक़ू मा आ़हदुल्ला-ह अ़लैहि ج फ़मिन्हुम् मन् क़ज़ा नह् - बहू व मिन्हुम् मंय्यन्तज़िरु صلے व मा बद्दलू तब्दीलल् ۙ - (२३) -लियज्ज़ियल्लाहुस् - सादिक़ी-न बिसिद्क़िहिम् व युअ़ज़्ज़िबल्-मुनाफ़िक़ी-न इन् शा-अ औ यतू-ब अ़लैहिम् ط इन्नल्ला - ह का - न ग़फ़ूररहीमा ج (२४) व रद्-दल्लाहुल्-लज़ी-न क - फ़रू बिग़ैज़िहिम् लम् यनालू ख़ैरन् ط व क-फ़ल्लाहुल् - मुअ्मिनीनल् - क़िता - ल ط व कानल्लाहु क़विय्यन् अ़ज़ीज़ा ج (२५) व अन्ज़-लल्लज़ी-न ज़ा-हरूहुम् मिन् अह्लिल्-किताबि मिन् सयासीहिम् व क़-ज़-फ़ फ़ी क़ुलूबिहिमुर्-रुअ़्-ब फ़रीक़न् तक़्तुलू-न व तअ्सिरू-न फ़रीक़ा ج (२६) व औ-र-सकुम् अर्ज़हुम् व दियारहुम् व अम्वा-लहुम् व अर्ज़ल्लम् त-त-ऊहा ط व कानल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीरा ★ (२७) या अय्युहन्नबिय्यु क़ुल् लिअज़्वाजि-क इन् कुन्तुन्-न तुरिद्नल्-हयातद्दुन्या व ज़ी-न-तहा फ़-तआ़लै-न उमत्तिअ्-कुन्-न व उसर्रिह्कुन्-न सराहन् जमीला (२८) व इन् कुन्तुन्-न तुरिद्नल्ला-ह व रसूलहू वद्दारल्-आख़ि-र-त फ़-इन्नल्ला-ह अ-अ़द्-द लिल्मुह्सिनाति मिन्कुन्-न अज-रन् अ़ज़ीमा (२९) या निसा-अन्नबिय्यि मंय्यअ्ति मिन्कुन्-न बिफ़ाहिशतिम्-मुबय्यिनतिंय्-युज़ाअ़फ़् ल-हल्-अ़ज़ाबु ज़िअ्-फ़ैनि ط व का-न ज़ालि-क अ़-लल्लाहि यसीरा (३०)

لو كانوا فيكم ما قاتلوا إلا قليلا ۝ لقد كان لكم في رسول الله
أسوة حسنة لمن كان يرجوا الله واليوم الآخر وذكر الله كثيرا ۝
ولما رأ المؤمنون الأحزاب قالوا هذا ما وعدنا الله ورسوله وصدق
الله ورسوله وما زادهم إلا إيمانا وتسليما ۝ من المؤمنين
رجال صدقوا ما عاهدوا الله عليه فمنهم من قضى نحبه ومنهم
من ينتظر وما بدلوا تبديلا ۝ ليجزي الله الصدقين بصدقهم
ويعذب المنفقين إن شاء أو يتوب عليهم إن الله كان غفورا
رحيما ۝ ورد الله الذين كفروا بغيظهم لم ينالوا خيرا وكفى
الله المؤمنين القتال وكان الله قويا عزيزا ۝ وأنزل الذين
ظاهروهم من أهل الكتب من صياصيهم وقذف في قلوبهم الرعب
فريقا تقتلون وتأسرون فريقا ۝ وأورثكم أرضهم وديارهم
وأموالهم وأرضا لم تطئوها وكان الله على كل شيء قديرا ۝
يأيها النبي قل لأزواجك إن كنتن تردن الحيوة الدنيا و
زينتها فتعالين أمتعكن وأسرحكن سراحا جميلا ۝ وإن كنتن
تردن الله ورسوله والدار الآخرة فإن الله أعد للمحسنت منكن
أجرا عظيما ۝ ينساء النبي من يأت منكن بفاحشة مبينة
يضعف لها العذاب ضعفين وكان ذلك على الله يسيرا ۝

★रु. ३/१९ आ ७

तुमको ख़ुदा के पैग़म्बर की पैरवी (करनी) बेहतर है, (यानी) उस शख़्स की जिसे ख़ुदा (से मिलने) और क़ियामत के दिन (के आने) की उम्मीद हो और वह ख़ुदा का ज़िक्र ज़्यादा से ज़्यादा करता हो। (२१) और जब मोमिनों ने (काफ़िरों के) लश्कर को देखा, तो कहने लगे, यह वही है, जिस का ख़ुदा और उस के पैग़म्बर ने हम से वायदा किया था और ख़ुदा और उस के पैग़म्बर ने सच कहा था और इससे उनका ईमान और इताअत और ज़्यादा हो गयी। (२२) मोमिनों में कितने ही ऐसे शख़्स हैं कि जो इक़रार उन्होंने ख़ुदा से किया था, उस को सच कर दिखाया, तो उन में कुछ ऐसे हैं, जो अपने नज़्र से फ़ारिग़ हो गये और कुछ ऐसे हैं कि इन्तिज़ार कर रहे हैं और उन्होंने (अपने क़ौल को) ज़रा भी नहीं बदला, (२३) ताकि ख़ुदा सच्चों को उन की सच्चाई का बदला दे और मुनाफ़िक़ों को चाहे तो अज़ाब दे या (चाहे) तो उन पर मेहरबानी करे। बेशक ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है। (२४) और जो काफ़िर थे, उनको ख़ुदा ने फेर दिया। वे अपने गुस्से में (भरे हुए थे), कुछ भलाई हासिल न कर सके और ख़ुदा मोमिनों को लड़ाई के बारे में काफ़ी हुआ और ख़ुदा ताक़त-वर और ज़बरदस्त है। (२५) और अह्‌ले किताब में से, जिन्होंने उन की मदद की थी, उन को उनके क़िलों से उतार दिया, और उन के दिलों में दहशत डाल दी, तो कितनों को तुम क़त्ल कर देते थे और कितनों को क़ैद कर लेते थे। (२६) और उन की ज़मीन और उनके घरों और उन के माल का और उस ज़मीन का, जिसमें तुमने पांव भी नहीं रखा था, तुम को वारिस बना दिया और ख़ुदा हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। (२७) ★

ऐ पैग़म्बर ! अपनी बीवियों से कह दो, अगर तुम दुनिया की ज़िंदगी और उसकी ज़ीनत व आराइश चाहती हो, तो आओ, मैं तुम्हें माल दूं और अच्छी तरह से रुख़्सत कर दूं, (२८) और अगर तुम ख़ुदा और उसके पैग़म्बर और आख़िरत के घर (यानी बहिश्त) की तलब रखती हो, तो तुम में जो, नेकी करने वाली हैं, उनके लिए ख़ुदा ने बड़ा बदला तैयार कर रखा है। (२९) ऐ पैग़म्बर की बीवियो ! तुम में से जो कोई खुली ना-शाइस्ता हरकत करेगी, उस को दोगुनी सज़ा दी

★रु० ३/१९ आ ७

बाईसवां पारः व मंय्यक़्नुत

सूरतुल्-अह़्ज़ाबि आयात ३१ से ७३

व मंय्यक़्-नुत् मिन्कुन्-न लिल्लाहि व रसूलिही व तअ्-मल् सालिहन् नुअ्-तिहा अज्-रहा मर्रतैनि॥ व अअ्-तद्ना लहा रिज़्-क़न् करीमा (३१) यानिसा-अन्नबिय्यि लस्तुन्-न क-अ-ह़दिम्-मिनन्निसाइ इनित्तक़ैतुन्-न फ़ ला तख़्-ज़अ्-न बिल्क़ौलि फ़-यत्म-अल्लज़ी फ़ी क़ल्-बिही म-र-ज़ुं व्-व क़ुल्-न क़ौलम्-मअ्-रूफ़ा (३२) व क़र्-न फ़ी बुयूतिकुन्-न व ला त-बर्रज्-न त-बर्रुजल्-जाहिलिय्यतिल्-ऊला व अक़िम्-नस्सला-त व आतीनज़्ज़का-त व अतिअ्-नल्ला-ह व रसूलहू, इन्नमा युरीदुल्लाहु लियुज़्-हि-ब अन्कुमुर्रिज-स अह-लल्-बैति व युतह-हि-रकुम् तत्-हीरा (३३) वज़्कुर्-न मा युत्ला फ़ी बुयूतिकुन्-न मिन् आयातिल्लाहि वल्-हिक्मति इन्नल्ला-ह का-न लतीफ़न् ख़बीरा★(३४) इन्नल्-मुस्लिमी-न वल्मुस्-लिमाति वल्मुअ्मिनी-न वल्-मुअ्मिनाति वल्क़ानिती-न वल्क़ानिताति वस्सादिक़ी-न वस्सादिक़ाति वस्साबिरी-न वस्साबिराति वल्-ख़ाशिई-न वल्-ख़ाशिआति वल्-मु-त-सद्दिक़ी-न वल्-मु-त-सद्दिक़ाति वस्सा-इमी-न वस्सा-इमाति वल्-हाफ़िज़ी-न फ़ुरू-जहुम् वल्-हाफ़िज़ाति वज़्ज़ाकिरीनल्ला-ह कसीरंव्वज़्ज़ाकिराति अ-अद्-दल्लाहु लहुम् मग़्-फ़ि-र-तंव्-व अज्-रन् अज़ीमा (३५) व मा का-न लिमुअ्मिनिंव्-व ला मुअ्मिनतिन् इज़ा क़-ज़ल्लाहु व रसूलुहू अम्-रन् अंय्यकू-न लहुमुल्-ख़ि-य-रतु मिन् अम्रिहिम्, व मंय्यअ्-सिल्ला-ह व रसूलहू फ़-क़द् ज़ल्-ल ज़लालम्-मुबीना (३६)

وَمَنْ يَّقْنُتْ مِنْكُنَّ لِلّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتَعْمَلْ صَالِحًا نُّؤْتِهَآ اَجْرَهَا
مَرَّتَيْنِ ۙ وَاَعْتَدْنَا لَهَا رِزْقًا كَرِيْمًا ۝ يٰنِسَآءَ النَّبِيِّ لَسْتُنَّ كَاَحَدٍ
مِّنَ النِّسَآءِ اِنِ اتَّقَيْتُنَّ فَلَا تَخْضَعْنَ بِالْقَوْلِ فَيَطْمَعَ الَّذِيْ فِيْ
قَلْبِهٖ مَرَضٌ وَّقُلْنَ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ۝ وَقَرْنَ فِيْ بُيُوْتِكُنَّ وَلَا
تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْاُوْلٰى وَاَقِمْنَ الصَّلٰوةَ وَاٰتِيْنَ
الزَّكٰوةَ وَاَطِعْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۭ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ
الرِّجْسَ اَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيْرًا ۝ وَاذْكُرْنَ مَا يُتْلٰى
فِيْ بُيُوْتِكُنَّ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ وَالْحِكْمَةِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ لَطِيْفًا
خَبِيْرًا ۝ اِنَّ الْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمٰتِ وَالْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ
وَالْقٰنِتِيْنَ وَالْقٰنِتٰتِ وَالصّٰدِقِيْنَ وَالصّٰدِقٰتِ وَالصّٰبِرِيْنَ وَالصّٰبِرٰتِ
وَالْخٰشِعِيْنَ وَالْخٰشِعٰتِ وَالْمُتَصَدِّقِيْنَ وَالْمُتَصَدِّقٰتِ وَالصَّاۗىِٕمِيْنَ
وَالصّٰۗىِٕمٰتِ وَالْحٰفِظِيْنَ فُرُوْجَهُمْ وَالْحٰفِظٰتِ وَالذّٰكِرِيْنَ اللّٰهَ
كَثِيْرًا وَّالذّٰكِرٰتِ ۙ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا ۝ وَمَا
كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَّلَا مُؤْمِنَةٍ اِذَا قَضَى اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗٓ اَمْرًا اَنْ
يَّكُوْنَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ اَمْرِهِمْ ۭ وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ
ضَلَّ ضَلٰلًا مُّبِيْنًا ۝ وَاِذْ تَقُوْلُ لِلَّذِيْٓ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاَنْعَمْتَ
عَلَيْهِ اَمْسِكْ عَلَيْكَ زَوْجَكَ وَاتَّقِ اللّٰهَ وَتُخْفِيْ فِيْ نَفْسِكَ مَا اللّٰهُ

★रु. ४/१ आ ७

जाएगी और यह (बात) ख़ुदा को आसान है। (३०) और जो तुम में से ख़ुदा और उस के रसूल की फ़रमांबरदार रहेगी और नेक अमल करेगी, उस को हम दोगुना सवाब देंगे और उसके लिए हम ने इज़्ज़त की रोज़ी तैयार कर रखी है। (३१) ऐ पैग़म्बर की बीवियो! तुम और औरतों की तरह नहीं हो, अगर तुम परहेज़गार रहना चाहती हो तो (किसी अजनबी शख़्स से) नर्म-नर्म बातें न किया करो, ताकि वह शख़्स जिसके दिल में किसी तरह का मर्ज़ है, कोई उम्मीद (न) पैदा कर ले और (उन में) दस्तूर के मुताबिक़ बात किया करो। (३२) और अपने घरों में ठहरी रहो और जिस तरह (पहले) जाहिलियत (के दिनों) में इज़्हारे जमाल करती थीं, उस तरह ज़ीनत न दिखाओ और नमाज़ पढ़ती रहो और ज़कात देती रहो और ख़ुदा और उस के रसूल की फ़रमांबरदारी करती रहो। ऐ (पैग़म्बर के) अह्ले बैत! ख़ुदा चाहता है कि तुम से ना पाकी (का मैल-कुचैल) दूर कर दे और तुम्हें बिल्कुल पाक-साफ़ कर दे। (३३) और तुम्हारे घरों में जो ख़ुदा की आयतें पढ़ी जाती हैं और हिक्मत (की बातें सुनायी जाती हैं) उन को याद रखो। बेशक ख़ुदा लतीफ़ और बा-ख़बर है। (३४) ★

(जो लोग ख़ुदा के आगे इताअत का सर झुकाने वाले हैं, यानी) मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें और मोमिन मर्द और मोमिन औरतें और फ़रमांबरदार मर्द और फ़रमांबरदार औरतें और रास्तबाज़ (सच्चे) मर्द और रास्तबाज़ औरतें और सब्र करने वाले मर्द और सब्र करने वाली औरतें और ख़ुशूअ करने वाले मर्द और ख़ुशूअ करने वाली औरतें और ख़ैरात करने वाले मर्द और ख़ैरात करने वाली औरतें और रोज़े रखने वाले मर्द और रोज़े रखने वाली औरतें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करने वाले मर्द और हिफ़ाज़त करने वाली औरतें और ख़ुदा को ज़्यादा से ज़्यादा याद करने वाले मर्द और ज़्यादा से ज़्यादा याद करने वाली औरतें, कुछ शक नहीं कि उनके लिए ख़ुदा ने बख़्शिश और बड़ा बदला तैयार कर रखा है। (३५) और किसी मोमिन मर्द और मोमिन औरत को हक़ नहीं है कि जब ख़ुदा और उस का रसूल कोई अम्र मुक़र्रर कर दे, तो वे इस काम में अपना भी कुछ अख़्तियार समझें और जो कोई ख़ुदा और उस के रसूल की ना-फ़रमानी करे, वह खुला गुमराह

★रु. ४/१ आ ७

व इज़् तक़ूलु लिल्लज़ी अन्-अ़-मल्लाहु अ़लैहि व अन्अ़म्-त अ़लैहि अम्सिक् अ़लै-क ज़ौज-क वत्तक़िल्ला-ह व तुख़्फ़ी फ़ी नफ़्सि-क मल्लाहु मुब्दीहि व तख़्शन्ना-स ० वल्लाहु अ-ह़क़्क़ु अन् तख़्शाहु ط फ़-लम्मा क़ज़ा ज़ैदुम् - मिन्हा व-त्-रन् ज़व्वज्ना-क-हा लिकैला यकू-न अ़लल् - मुअ्मिनी-न ह़-र-जुन् फ़ी अज़्वाजि अद्अ़ियाइहिम् इज़ा क़ज़ौ मिन्हुन्-न व-त्-रन् व का-न अम्रुल्लाहि मफ़्अ़ूला (३७) मा का-न अ़-लन्नबिय्यि मिन् ह़-रजिन् फ़ीमा फ़-र-ज़ल्लाहु लहू ط सुन्नतल्लाहि फ़िल्लज़ी-न ख़लौ मिन् क़ब्लु ط व का-न अम्-रुल्लाहि क़-द्-रम् - मक़्दू-र ल (३८)-ल्लज़ी-न युबल्लिग़ू-न रिसालातिल्लाहि व यख़्शौनहू व ला यख़्शौ-न अ-ह़-दन् इल्लल्ला - ह ط व कफ़ा बिल्लाहि ह़सीबा (३९) मा का-न मुह़म्मदुन् अबा अ-ह़दिम्-मिर्रिजालिकुम् व लाकिर्रसूलल्लाहि व ख़ातमन्नबिय्यी-न ط व कानल्लाहु बिकुल्लि शैइन् अ़लीमा★(४०) या अय्युहल्लज़ी-न

مبديه وتخشى الناس والله احق ان تخشاه فلما قضى زيد
منها وطرا زوجناكها لكي لا يكون على المؤمنين حرج في ازواج
ادعيائهم اذا قضوا منهن وطرا وكان امر الله مفعولا ۝ ما كان
على النبي من حرج فيما فرض الله له سنة الله في الذين
خلوا من قبل وكان امر الله قدرا مقدورا ۝ الذين يبلغون
رسلت الله ويخشونه ولا يخشون احدا الا الله وكفى بالله
حسيبا ۝ ما كان محمد ابا احد من رجالكم ولكن رسول الله و
خاتم النبيين وكان الله بكل شيء عليما ۝ يايها الذين امنوا
اذكروا الله ذكرا كثيرا ۝ وسبحوه بكرة واصيلا ۝ هو الذي
يصلي عليكم وملئكته ليخرجكم من الظلمت الى النور وكان
بالمؤمنين رحيما ۝ تحيتهم يوم يلقونه سلم واعد لهم
اجرا كريما ۝ يايها النبي انا ارسلنك شاهدا ومبشرا و
نذيرا ۝ وداعيا الى الله باذنه وسراجا منيرا ۝ وبشر المؤمنين
بان لهم من الله فضلا كبيرا ۝ ولا تطع الكفرين والمنفقين
ودع اذىهم وتوكل على الله وكفى بالله وكيلا ۝ يايها الذين
امنوا اذا نكحتم المؤمنت ثم طلقتموهن من قبل ان تمسوهن
فما لكم عليهن من عدة تعتدونها فمتعوهن وسرحوهن سراحا

आमनुज़्कुरुल्ला-ह ज़िक्रन् कसीरंव- ल (४१) व सब्बिहूहु बुक्रतंव्-व असीला (४२) हुवल्लज़ी युसल्ली अ़लैकुम् व मलाइकतुहू लियुख़्रि-जकुम् मिनज़्ज़ुलुमाति इलन्नूरि ط व का-न बिल्मुअ्मिनी-न रह़ीमा (४३) तह़िय्यतुहुम् यौ-म यल्क़ौनहू सलामुन् ج व अ-अ़द्-द लहुम् अज्रन् करीमा (४४) या अय्युहन्नबिय्यु इन्ना अर्सल्ना-क शाहिदंव्-व मुबश्शिरंव्-व नज़ीरा ल (४५) व दाअ़ियन् इलल्लाहि बिइज़्निही व सिराजम्-मुनीरा (४६) व बश्शिरिल्-मुअ्मिनी-न बिअन्-न लहुम् मिनल्लाहि फ़ज़्-लन् कबीरा (४७) व ला तुतिअ़िल्-काफ़िरी-न वल्-मुनाफ़िक़ी-न व दअ़् अज़ाहुम् व त-वक्कल् अ़लल्लाहि ط व कफ़ा बिल्लाहि वकीला (४८) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इज़ा न-कह़्तुमुल्-मुअ्मि-नाति सुम्-म तल्लक़्तुमू-हुन्-न मिन् क़ब्लि अन् तमस्सूहुन्-न फ़मा लकुम् अ़लैहिन्-न मिन् इ़द्दतिन् तअ़्-तद्दूनहा ج फ़मत्तिअ़ूहुन्-न व सर्रिहूहुन्-न सराह़न् जमीला (४९)

★रु. ५/२ आ ६

हो गया।' (३६) और जब तुम उस शख़्स से जिस पर ख़ुदा ने एहसान किया और तुमने भी एहसान किया, यह कहते थे कि अपनी बीवी को अपने पास रहने दो और ख़ुदा से डरो और तुम अपने दिल में, वह बात छिपाते थे, जिस को ख़ुदा ज़ाहिर करने वाला था और तुम लोगों से डरते थे, हालांकि ख़ुदा ही इसका ज़्यादा हक़दार है कि उस से डरो। फिर जब ज़ैद ने उस से (कोई) हाजत (मुताल्लिक़) न रखी (यानी उसको तलाक़ दे दी), तो हम ने तुम से उस का निकाह कर दिया, ताकि मोमिनों के लिए उन के मुंह बोले बेटों की बीवियों (के साथ निकाह करने के बारे) में जब वह उन से (अपनी) हाजत (मुताल्लिक़) न रखें, (यानी तलाक़ दे दें), कुछ तंगी न रहे और ख़ुदा का हुक्म वाक़ेअ हो कर रहने वाला था। (३७) पैग़म्बर पर इस काम में कुछ तंगी नहीं, जो ख़ुदा ने उन के लिए मुक़र्रर कर दिया, और जो लोग पहले गुज़र चुके हैं, उनमें भी ख़ुदा का यही दस्तूर रहा है और ख़ुदा का हुक्म ठहर चुका था, (३८) और जो ख़ुदा के पैग़ाम (ज्यों के त्यों) पहुंचाते और उस से डरते और ख़ुदा के सिवा किसी से नहीं डरते थे और ख़ुदा ही हिसाब करने को काफ़ी है। (३९) मुहम्मद तुम्हारे मर्दों में से किसी के वालिद नहीं हैं, बल्कि ख़ुदा के पैग़म्बर और नबियों (की नुबूवत) की मुहर (यानी उस को ख़त्म कर देने वाले हैं) और ख़ुदा हर चीज़ को जानता है। (४०)★

ऐ ईमान वालो! ख़ुदा का बहुत ज़िक्र किया करो। (४१) और सुबह और शाम उसकी पाकी बयान करते रहो। (४२) वही तो है, जो तुम पर रहमत भेजता है और उस के फ़रिश्ते भी, ताकि तुम को अंधेरों से निकाल कर रोशनी की तरफ़ ले जाए और ख़ुदा मोमिनों पर मेहरबान है। (४३) जिस दिन वह उन से मिलेंगे उन का तोहफ़ा (ख़ुदा की तरफ़ से) सलाम होगा और उस ने उनके लिए बड़ा सवाब तैयार कर रखा है। (४४) ऐ पैग़म्बर! हमने तुम को गवाही देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है, (४५) और ख़ुदा की तरफ़ बुलाने वाला और रौशन चिराग़। (४६) और मोमिनों को ख़ुशख़बरी सुना दो कि उन के लिए ख़ुदा की तरफ़ से बड़ा फ़ज़्ल है। (४७) और काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों का कहा न मानना और न उनके तक्लीफ़ देने पर नज़र करना और ख़ुदा पर भरोसा रखना और ख़ुदा ही कारसाज़ काफ़ी है। (४८) मोमिनो! जब तुम मोमिन औरतों से निकाह कर के उन को हाथ लगाने (यानी उन के पास जाने) से पहले तलाक़ दे दो, तो तुम को कुछ अख़्तियार नहीं कि उन से इद्दत पूरी कराओ। उन को कुछ फ़ायदा (यानी ख़र्च) दे कर अच्छी

---

१. इस आयत में, जिन मियां-बीवी का ज़िक्र है, वह ज़ैद और ज़ैनब रज़ि० हैं, चुनांचे ज़ैद रज़ि० के नाम का अगली आयत में खुले तौर पर भी ज़िक्र आया है। दोनों आयतों में जिस वाक़िए की तरफ़ इशारा है, वह इस तरह पर है कि ज़ैनब जनाबे रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की फूफी की बेटी थीं और ज़ाहिर है कि एक ऊंचे ख़ानदान की लड़की थीं। ज़ैद भी एक शरीफ़ अरब थे जो बचपन में पकड़े गये थे और जवानी के क़रीब, ग़ुलामी की हालत में मक्के में आ कर बेचे गये। आंहज़रत ने उन को ख़रीद लिया और आज़ाद कर के अपने यहां रखा। ज़ैद रज़ि० में, इस के अलावा कि उन पर ग़ुलाम आज़ाद का लफ़्ज़ बोला जाता हो और कोई बुराई न थी और वह आंहज़रत सल्ल० की निगाह में बहुत इज़्ज़त रखते थे, यहां तक कि आप ने उन को लयपालक बना लिया। आप जानते थे कि ग़ुलाम हो कर बेचे जाने से असली शराफ़त में फ़र्क़ नहीं आ सकता—

हज़ार बार जो यूसुफ़ बिके ग़ुलाम नहीं।

तो आप ने इरादा फ़रमाया कि उन का ज़ैनब के साथ निकाह कर दें, ताकि आप के ख़ानदान में उन की इज़्ज़त ज़्यादा हो, साथ ही यह भी मक़्सूद था कि ग़ुलाम आज़ाद इस्लाम मज़हब में छोटे न समझे जाएं और उन की

(शेष पृष्ठ ५८५ पर)

★रु. ५/२ आ ६

या अय्युहन्नबिय्यु इन्ना अह्लल्ना ल-क अज़्वा-ज-कल्लाती आतै-त उजू़रहुन्-न व मा म-ल-कत् यमीनु-क मिम्मा अफ़ा-अल्लाहु अलै-क व बनाति अ़म्मि-क व बनाति अ़म्माति-क व बनाति ख़ालि-क व बनाति ख़ालातिकल्लाती हाजर्-न म-अ़-क ز वम्-र-अतम् - मुअ्मि-न-तन् इं व्व-ह-बत् नफ़्सहा लिन्नबिय्यि इन् अरादन्नबिय्यु अंय्यस्तन्कि-हहा ق ख़ालि-स-तल्ल - क मिन् दूनिल् - मुअ्मिनी-न ط क़द् अ़लिम्ना मा फ़-रज़्ना अ़लैहिम् फ़ी अज़्वाजिहिम् व मा म-ल-कत् ऐमानुहुम् लिकैला यकू-न अ़लै-क ह-र-जुन् ط व कानल्लाहु ग़फ़ूरर् - रहीमा (५०) तुर्जी मन् तशाउ मिन्हुन्-न व तुअ्वी इलै-क मन् तशाउ ط व मनिब्तग़ै-त मिम्मन् अ़-ज़ल-त फ़ला जुना-ह अ़लै-क ط ज़ालि-क अद्ना अन्तक़र्-र अअ्-युनु-हुन्-न व ला यह्ज़न्-न व यर्ज़ै-न बिमा आतैतहुन्-न कुल्लुहुन्-न ط वल्लाहु यअ् - लमु मा फ़ी क़ुलूबिकुम् ط व कानल्लाहु अ़लीमन् हलीमा (५१) ला यहिल्लु ल-कन्निसाउ मिम्बअ्-दु व ला अन् त-बद्-द-ल बिहिन्-न मिन् अज़्-वाजिव्-व लौ अअ्-ज-ब-क हुस्नुहुन्-न इल्ला मा म-ल-कत् यमीनु-क ط व कानल्-लाहु अ़ला कुल्लि शैइर्-रक़ीबा ★ (५२) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तद्ख़ुलू बुयूतन्नबिय्यि इल्ला अंय्युअ्-ज़-न लकुम् इला तआमिन् ग़ै-र नाज़िरी-न इनाहु ला व लाकिन् इज़ा दुईतुम् फ़द्-ख़ुलू फ़इज़ा तअिम्तुम् फ़न्तशिरू व ला मुस्तअ्-निसी-न लि-हदीसिन् ط इन्-न ज़ालिकुम् का-न युअ्ज़िन्नबिय-य फ़-यस्तह्यी मिन्कुम् ز वल्लाहु ला यस्तह्यी मिनल् - हक़्क़ि ط व इज़ा स-अल्तुमूहुन्-न मताअ़न् फ़स्अलू - हुन् - न मिंव्वराइ हिजाबिन् ط ज़ालिकुम् अत्हरु लिक़ुलूबि - कुम् व क़ुलूबिहिन्-न ط व मा का-न लकुम् अन् तुअ्ज़ू रसूलल्लाहि व ला अन् तन्किहू अज़्वाजहू मिम्बअ्-दिही अ-ब-दन् ط इन्-न ज़ालिकुम् का-न अ़िन्दल्लाहि अज़ीमा (५३)

جَمِيلًا ۝ يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّبِيُّ إِنَّآ أَحْلَلْنَا لَكَ أَزْوَٰجَكَ ٱلَّٰتِيٓ ءَاتَيْتَ أُجُورَهُنَّ
وَمَا مَلَكَتْ يَمِينُكَ مِمَّآ أَفَآءَ ٱللَّهُ عَلَيْكَ وَبَنَاتِ عَمِّكَ وَبَنَاتِ
عَمَّٰتِكَ وَبَنَاتِ خَالِكَ وَبَنَاتِ خَٰلَٰتِكَ ٱلَّٰتِي هَاجَرْنَ مَعَكَ وَٱمْرَأَةً
مُّؤْمِنَةً إِن وَهَبَتْ نَفْسَهَا لِلنَّبِيِّ إِنْ أَرَادَ ٱلنَّبِيُّ أَن يَسْتَنكِحَهَا
خَالِصَةً لَّكَ مِن دُونِ ٱلْمُؤْمِنِينَ ۗ قَدْ عَلِمْنَا مَا فَرَضْنَا عَلَيْهِمْ
فِيٓ أَزْوَٰجِهِمْ وَمَا مَلَكَتْ أَيْمَٰنُهُمْ لِكَيْلَا يَكُونَ عَلَيْكَ حَرَجٌ ۗ
وَكَانَ ٱللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ۝ تُرْجِي مَن تَشَآءُ مِنْهُنَّ وَتُـْٔوِيٓ إِلَيْكَ
مَن تَشَآءُ ۖ وَمَنِ ٱبْتَغَيْتَ مِمَّنْ عَزَلْتَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكَ ۚ ذَٰلِكَ
أَدْنَىٰٓ أَن تَقَرَّ أَعْيُنُهُنَّ وَلَا يَحْزَنَّ وَيَرْضَيْنَ بِمَآ ءَاتَيْتَهُنَّ
كُلُّهُنَّ ۚ وَٱللَّهُ يَعْلَمُ مَا فِي قُلُوبِكُمْ ۚ وَكَانَ ٱللَّهُ عَلِيمًا حَلِيمًا ۝
لَّا يَحِلُّ لَكَ ٱلنِّسَآءُ مِنۢ بَعْدُ وَلَآ أَن تَبَدَّلَ بِهِنَّ مِنْ أَزْوَٰجٍ
وَلَوْ أَعْجَبَكَ حُسْنُهُنَّ إِلَّا مَا مَلَكَتْ يَمِينُكَ ۗ وَكَانَ ٱللَّهُ عَلَىٰ
كُلِّ شَيْءٍ رَّقِيبًا ۝ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ لَا تَدْخُلُوا۟ بُيُوتَ ٱلنَّبِيِّ
إِلَّآ أَن يُؤْذَنَ لَكُمْ إِلَىٰ طَعَامٍ غَيْرَ نَٰظِرِينَ إِنَىٰهُ وَلَٰكِنْ إِذَا دُعِيتُمْ
فَٱدْخُلُوا۟ فَإِذَا طَعِمْتُمْ فَٱنتَشِرُوا۟ وَلَا مُسْتَـْٔنِسِينَ لِحَدِيثٍ ۚ إِنَّ ذَٰلِكُمْ
كَانَ يُؤْذِي ٱلنَّبِيَّ فَيَسْتَحْيِۦ مِنكُمْ ۖ وَٱللَّهُ لَا يَسْتَحْيِۦ مِنَ ٱلْحَقِّ ۚ وَإِذَا
سَأَلْتُمُوهُنَّ مَتَٰعًا فَسْـَٔلُوهُنَّ مِن وَرَآءِ حِجَابٍ ۚ ذَٰلِكُمْ أَطْهَرُ

★रु. ६/३ आ १२

तरह से रुख़्सत कर दो। (४९) ऐ पैग़म्बर! हम ने तुम्हारे लिए तुम्हारी बीवियां, जिन को तुम ने उन के मह्‌र दे दिए हैं, हलाल कर दी हैं और तुम्हारी लौंडियां, जो ख़ुदा ने तुम को (काफ़िरों से ग़नीमत के माल के तौर पर) दिलवायी हैं और तुम्हारे चचा की बेटियां और तुम्हारी फूफियों की बेटियां और तुम्हारे मामुओं की बेटियां और तुम्हारी ख़ालाओं की बेटियां, जो तुम्हारे साथ वतन छोड़ कर आयी हैं, सब हलाल हैं और कोई मोमिन औरत अगर अपने आप पैग़म्बर को बख़्श दे (यानी मह्‌र लेने के बग़ैर निकाह में आना चाहे) बशर्ते कि पैग़म्बर भी उस से निकाह करना चाहें, (वह भी हलाल है, लेकिन यह इजाज़त) (ऐ मुहम्मद!) ख़ास तुम ही को है, सब मुसलमानों को नहीं, हम ने उन की बीवियों और लौंडियों के बारे में जो (मह्‌र, अदा करने के लिए ज़रूरी) मुक़र्रर कर दिया है, हम को मालूम है (यह) इस लिए (किया गया है) कि तुम पर किसी तरह की तंगी न रहे और ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है। (५०) (और तुम को यह भी अख़्तियार है कि) जिस बीवी को चाहो, अलग रखो और जिसे चाहो अपने पास रखो और जिसको तुम ने अलाहिदा कर दिया हो, अगर उस को फिर अपने पास तलब कर लो, तो तुम पर कुछ गुनाह नहीं। यह (इजाज़त) इस लिए है कि उन की आंखें ठंडी रहें और वे ग़मनाक न हों और जो कुछ तुम उनको दो, उसे लेकर सब ख़ुश रहें और जो कुछ तुम्हारे दिलों में है, ख़ुदा उसे जानता है और ख़ुदा जानने वाला (और) बुर्दबार (हलीम) है। (५१) (ऐ पैग़म्बर!) इन के सिवा और औरतें तुम को जायज़ नहीं और न यह कि इन बीवियों को छोड़ कर और बीवियां कर लो, चाहे उन का हुस्न तुम को (कैसा ही) अच्छा लगे, मगर वह, जो तुम्हारे हाथ का माल है, (यानी लौंडियों के बारे में) तुम को अख़्तियार है और ख़ुदा हर चीज़ पर निगाह रखता है। (५२) ★

मोमिनो! पैग़म्बर के घरों में न जाया करो, मगर इस सूरत में कि तुम को खाने के लिए इजाज़त दी जाए और उस के पकने का इन्तिज़ार भी न करना पड़े, लेकिन जब तुम्हारी दावत की जाए तो जाओ और जब खाना खा चुको, तो चल दो और बातों में जी लगा कर न बैठ रहो। यह बात पैग़म्बर को तक्लीफ़ देती थी और वह तुम से शर्म करते थे, (और कहते नहीं थे), लेकिन ख़ुदा सच्ची बात के कहने से शर्म नहीं करता और जब पैग़म्बर की बीवियों से कोई सामान मांगो, तो पर्दे के बाहर मांगो। ये तुम्हारे और उन के दोनों के दिलों के लिए बहुत पाकीज़गी की बात है और तुम को यह मुनासिब नहीं कि पैग़म्बरे ख़ुदा को तक्लीफ़ दो और न यह कि उन की बीवियों से कभी उनके बाद निकाह करो। बेशक यह ख़ुदा के नज़दीक बड़ा (गुनाह का काम) है। (५३) अगर तुम

(पृष्ठ ६७३ का शेष)

इज़्ज़त भी आज़ादों की तरह ही की जाए यानी आज़ाद और ग़ुलाम में जो अरब वाले फ़र्क़ करते हैं, वह मुसलमानों में न हो, चुनांचे इन ही मामलों को सामने रख कर आप ने ज़ैद का निकाह ज़ैनब से कर दिया। ज़ैनब आख़िर औरत थीं और पुराने ख़्याल उन के दिल में बैठे हुए थे, उन्हों ने हमेशा ज़ैद से अपने को अफ़्ज़ल समझा और उन को अपने से कमतर समझा। ये बातें ऐसी थीं कि मियां-बीवी में मुवफ़क़त पैदा नहीं होने देती थीं। आख़िर ज़ैद इस बात पर मजबूर हो गये कि ज़ैनब को तलाक़ दे दें। यह हालत देख कर आंहज़रत को बहुत फ़िक्र हो गया। आप दिल से तो यही बात चाहते थे कि ज़ैनब रज़ि० ज़ैद रज़ि० ही की बीवी रहें और जिस रिश्ते से एक बड़ी इस्लाह मक़्सूद थी, वह बाक़ी रहे। इसी लिए आप ज़ैद को समझाते थे कि मियां ख़ुदा का ख़ौफ़ करो और ज़ैनब को तलाक़ देने से बाज़ रहो, लेकिन आप को यह भी डर था कि लोग कहेंगे, कैसा बे-जोड़ रिश्ता करा दिया था,

(शेष पृष्ठ ६७७ पर)

★रु. ६/३ आ १२

इन् तुब्दू शैअन् औ तुख़्फ़ूहु फ़-इन्नल्ला-ह का-न बिकुल्लि शैइन् अ़लीमा (५४) ला जुना-ह अ़लैहिन्-न फ़ी आबाइहिन्-न व ला अब्नाइहिन्-न व ला इख़्वानिहिन्-न व ला अब्नाइ इख़्वानिहिन्-न व ला अब्नाइ अ-ख़ - वातिहिन्-न व ला निसाइहिन्-न व ला मा म-ल - कत् ऐमानुहुन्-न ज वत्तक़ीनल्ला - ह ↓ इन्नल्ला-ह का-न अ़ला कुल्लि शैइन् शहीदा (५५) इन्नल्ला-ह व मलाइ-क-तहू युसल्लू-न अ़लन्नबिय्यि ↓ या अय्युहल्लज़ी-न आमनू सल्लू अ़लैहि व सल्लिमू तस्लीमा (५६) इन्नल्लज़ी - न युअ्ज़ूनल्ला-ह व रसूलहू ल-अ़-नहुमुल्लाहु फ़िद्दुन्या वल् - आख़िरति व अ-अ़द्-द लहुम् अ़ज़ाबम्-मुहीना (५७) वल्लज़ी-न युअ्ज़ूनल् - मुअ्मिनी-न वल् - मुअ्मिनाति बिग़ैरि मक्त-सबू फ़-क़दिह्-त-मलू बुह्तानंव - व इस्मम् - मुबीना ★(५८) या अय्युहन्नबिय्यु क़ुल् लि-अज़्वाजि-क व बनाति-क व निसाइल्-मुअ्मिनी-न युद्नी-न अ़लैहिन्-न मिन् जलाबीबिहिन्-न ↓ ज़ालि-क अद्ना अंय्युअ्-रफ़-न फ़ला युअ्ज़ै-न ↓ व कानल्लाहु ग़फ़ूररहीमा (५९) लइल्लम् यन्तहिल् - मुनाफ़िक़ू - न वल्लज़ी - न फ़ी क़ुलूबिहिम् म - र - ज़ुंव्वल्-मुर्जिफ़ू-न फ़िल्मदीनति ल-नुग़्रियन्न-क बिहिम् सुम्-म ला युजावि-रू-न-क फ़ीहा इल्ला क़लीलम्-ﺻﻠﮯ(६०) मल्अूनी-न ज ∴ ऐनमा सुक़िफ़ू उख़िज़ू व क़ुत्तिलू तक़्तीला (६१) सुन्नतल्लाहि फ़िल्लज़ी - न ख़लौ मिन् क़ब्लु ज व लन् तजि - द लिसुन्नतिल्लाहि तब्दीला● (६२)

لِقُلُوبِكُمْ وَقُلُوبِهِنَّ ۚ وَمَا كَانَ لَكُمْ أَن تُؤْذُوا رَسُولَ اللَّهِ وَلَا أَن
تَنكِحُوا أَزْوَاجَهُ مِن بَعْدِهِ أَبَدًا ۚ إِنَّ ذَٰلِكُمْ كَانَ عِندَ اللَّهِ
عَظِيمًا ○ إِن تُبْدُوا شَيْئًا أَوْ تُخْفُوهُ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ○
لَّا جُنَاحَ عَلَيْهِنَّ فِي آبَائِهِنَّ وَلَا أَبْنَائِهِنَّ وَلَا إِخْوَانِهِنَّ وَلَا
أَبْنَاءِ إِخْوَانِهِنَّ وَلَا أَبْنَاءِ أَخَوَاتِهِنَّ وَلَا نِسَائِهِنَّ وَلَا مَا مَلَكَتْ
أَيْمَانُهُنَّ ۗ وَاتَّقِينَ اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدًا ○
إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ ۚ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا
صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا ○ إِنَّ الَّذِينَ يُؤْذُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ
لَعَنَهُمُ اللَّهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَأَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُّهِينًا ○
وَالَّذِينَ يُؤْذُونَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ بِغَيْرِ مَا اكْتَسَبُوا فَقَدِ
احْتَمَلُوا بُهْتَانًا وَإِثْمًا مُّبِينًا ○ يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُل لِّأَزْوَاجِكَ
وَبَنَاتِكَ وَنِسَاءِ الْمُؤْمِنِينَ يُدْنِينَ عَلَيْهِنَّ مِن جَلَابِيبِهِنَّ ۚ
ذَٰلِكَ أَدْنَىٰ أَن يُعْرَفْنَ فَلَا يُؤْذَيْنَ ۗ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ○
لَّئِن لَّمْ يَنتَهِ الْمُنَافِقُونَ وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ وَالْمُرْجِفُونَ
فِي الْمَدِينَةِ لَنُغْرِيَنَّكَ بِهِمْ ثُمَّ لَا يُجَاوِرُونَكَ فِيهَا إِلَّا قَلِيلًا ○
مَّلْعُونِينَ ۖ أَيْنَمَا ثُقِفُوا أُخِذُوا وَقُتِّلُوا تَقْتِيلًا ○ سُنَّةَ اللَّهِ
فِي الَّذِينَ خَلَوْا مِن قَبْلُ ۖ وَلَن تَجِدَ لِسُنَّةِ اللَّهِ تَبْدِيلًا ○

★रु० ७/४ आ ६ ●रुबुअ १/४ ∴ मु. ख़ि मु ता ख़.१२

किसी चीज़ को ज़ाहिर करो या उसको छिपाए रखो, तो (याद रखो कि) ख़ुदा हर चीज़ से बा-ख़बर है। (५४) औरतों पर अपने बापों से (पर्दा न करने में) कुछ गुनाह नहीं और न अपने बेटों से और न अपने भाइयों से और न अपने भतीजों से और न अपने भांजों से, न अपनी (क़िस्म की) औरतों से और न लौंडियों से और (ऐ औरतो !) ख़ुदा से डरती रहो । बेशक ख़ुदा हर चीज़ को जानता है। (५५) ख़ुदा और उसके फ़रिश्ते पैग़म्बर पर दरूद भेजते हैं। मोमिनो ! तुम भी पैग़म्बर पर दरूद और सलाम भेजा करो। (५६) जो लोग ख़ुदा और उस के पैग़म्बर को रंज पहुंचाते हैं, उन पर ख़ुदा दुनिया और आख़िरत में लानत करता है और उन के लिए उस ने ज़लील करने वाला अज़ाब तैयार कर रखा है। (५७) और जो लोग मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को ऐसे काम (की तोहमत) से जो उन्होंने न किया हो, तक्लीफ़ दें, तो उन्होंने बोहतान और खुले गुनाह का बोझ अपने सर पर रखा। (५८)★

ऐ पैग़म्बर ! अपनी बीवियों और बेटियों और मुसलमानों की औरतों से कह दो कि (बाहर निकला करें तो) अपने (मुंहो) पर चादर लटका (कर घूंघट निकाल) लिया करें। यह बात उनके लिए पहचान (और फ़र्क़ की) वजह होगी तो कोई उन को तक्लीफ़ न देगा और ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है। (५९) अगर मुनाफ़िक़ और वे लोग, जिन के दिलों में मर्ज़ है और जो मदीने (के शहर) में बुरी-बुरी ख़बरें उड़ाया करते हैं, (अपने किरदार से) रुकेंगे नहीं, तो हम तुम को उनके पीछे लगा देंगे, फिर वहां तुम्हारे पड़ोस में न रह सकेंगे, मगर थोड़े दिन। (६०)˝(वह भी फिटकारे हुए)˝जहां पाये गये, पकड़े गये और जान से मार डाले गये। (६१) जो लोग पहले गुज़र चुके हैं, उन के बारे में भी ख़ुदा की यही आदत रही है, और तुम ख़ुदा की आदत में तब्दीली न

(पृष्ठ ६७५ का शेष)

जो क़ायम न रह सका। ख़ुदा ने फ़रमाया कि इस मामले में लोगों के डरने की क्या ज़रूरत थी, डर तो सिर्फ़ हम से चाहिए। लोगों का दस्तूर है कि सुधार के मामलों में ही तरह-तरह की बातें किया करते हैं, इस के अलावा आप को यह फ़िक्र लग गया कि अगर इन मियां-बीवी में अलहिदगी वाक़ेअ हुई, तो ज़ैनब रज़ि० के बारे में बड़ी मुश्किल पेश आएगी कि ज़ैद की बीवी बनी रहने की वजह से लोग ज़ैनब के एहतराम व अदब में कमी करेंगे और यह बात आप को मंज़ूर न थी और हो सकती भी न थी। जब आप ज़ैद रज़ि० की इज़्ज़त करते और लोगों से करानी चाहते थे, तो ज़ैनब रज़ि० की तहक़ीर क्योंकर गवारा कर सकते। आख़िर में ज़ैद और ज़ैनब रज़ि० का ताल्लुक़ ख़त्म हो कर रहा।

इस मौक़े पर ख़ुदा को तीन और सुधार करने थे—एक यह कि इस्लाम में लयपालक का वह हक़ न समझा जाए, जो अपने बेटे का है और दोनों क़िस्म के ताल्लुक़ात में जो फ़र्क़ है, वह ज़ाहिर कर दिया जाए। दूसरे यह कि मुंह बोले लड़कों की औरतें सगे लड़कों की औरतों की तरह हराम न समझी जाएं। चुनांचे ख़ुदा के हुक्म से आंहज़रत सल्ल० ख़ुद हज़रत ज़ैनब रज़ि० से निकाह कर लिया।

लयपालक बनाना एक पुरानी रस्म है और इस्लाम ने इस को जायज़ रखा है, लेकिन लयपालक बेटों को सगे बेटों के-से हुक़ूक़ नहीं दिए और न उन की औरतों से निकाह करना सगे बेटों की औरतों के साथ निकाह करने के बराबर समझा, तीसरे यह कि ग़ुलामों की तलाक़ दी हुई औरतों की हैसियत, जिन को शरीफ़ अरब वाले अपनी बीवी बनाने से झिझकते थे, वही क़रार दी जाए जो आज़ादों की तलाक़ दी हुई औरतों का है, यानी उन से बे-झिझक निकाह कर लिया जाए और ये तीनों सुधार आंहज़रत सल्ल० ही की बरकतों वाली ज़ात से शुरू हुआ।

★रु. ७/४ आ ६˝मु. अ़ि मु त क़. १२

यस्अलुकन्नासु अनिस्साअ़ति कुल् इन्नमा अ़िल्मुहा अ़िन्दल्लाहि व मा युद्री-क ल-अ़ल्लस्सा-अ़-त तकूनु क़रीबा (६३) इन्नल्ला-ह ल-अ़-नल् - काफ़िरी-न व अ-अ़द्-द लहुम् सअ़ीरा (६४) ख़ालिदी-न फ़ीहा अ-ब-दन् ला यजिदू-न वलिय्यंव्-व ला नसीरा (६५) यौ-म तुक़ल्लबु वुजूहुहुम् फ़िन्नारि यक़ूलू-न यालैतना अतअ्-नल्ला-ह व अतअ्-नर्रसूला (६६) व क़ालू रब्बना इन्ना अतअ्-ना सा-द-तना व कु-बरा-अना फ़-अ-ज़ल्लूनस्-सबीला (६७) रब्बना आतिहिम् ज़िअ्-फ़ैनि मिनल्-अ़ज़ाबि वल्-अ़न्-हुम् लअ़् - नन् कबीरा ★ (६८) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तकूनू कल्लज़ी-न आज़ौ मूसा फ़-बर्र-अ-हुल्लाहु मिम्मा क़ालू व का - न अ़िन्दल्लाहि वजीहा (६९) या अय्युहल्लज़ी - न आमनुत्तक़ुल्ला-ह व क़ूलू क़ौलन् सदीदंय- (७०) -युस्लिह् लकुम् अअ़् - मालकुम् व यग़्फ़िर् लकुम् ज़ुनूबकुम् व मंय्युतिअिल्ला-ह व रसूलहू फ़-क़द् फ़ा-ज़ फ़ौज़न् अ़ज़ीमा (७१) इन्ना अ़-रज़्नल् अमान-त अ़लस्समावाति वल्अर्ज़ि वल्जिबालि फ़-अबै-न अंय्यह्मिल्नहा व अश्फ़क़्-न मिन्हा व ह्-म-ल-हल्-इन्सानु इन्नहू का-न ज़लूमन् जहूलल्- (७२) -लि - युअ़ज़्ज़िबल्लाहुल् - मुनाफ़िक़ी - न वल्-मुनाफ़िक़ाति वल् - मुश्रिकी-न वल् - मुश्रिकाति व यतूबल्लाहु अ़लल्-मुअ्मिनी-न. वल् - मुअ्मिनाति व कानल्लाहु ग़फ़ूरर् - रहीमा ★(७३)

يَسْـَٔلُكَ النَّاسُ عَنِ السَّاعَةِ ۚ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللّٰهِ ۚ وَمَا
يُدْرِيْكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ تَكُوْنُ قَرِيْبًا ﴿٦٣﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَعَنَ الْكٰفِرِيْنَ
وَاَعَدَّ لَهُمْ سَعِيْرًا ﴿٦٤﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۚ لَا يَجِدُوْنَ وَلِيًّا وَّ
لَا نَصِيْرًا ﴿٦٥﴾ يَوْمَ تُقَلَّبُ وُجُوْهُهُمْ فِي النَّارِ يَقُوْلُوْنَ يٰلَيْتَنَآ اَطَعْنَا
اللّٰهَ وَاَطَعْنَا الرَّسُوْلَا ﴿٦٦﴾ وَقَالُوْا رَبَّنَآ اِنَّآ اَطَعْنَا سَادَتَنَا وَكُبَرَآءَنَا
فَاَضَلُّوْنَا السَّبِيْلَا ﴿٦٧﴾ رَبَّنَآ اٰتِهِمْ ضِعْفَيْنِ مِنَ الْعَذَابِ وَالْعَنْهُمْ
لَعْنًا كَبِيْرًا ﴿٦٨﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ اٰذَوْا مُوْسٰى
فَبَرَّاَهُ اللّٰهُ مِمَّا قَالُوْا ۗ وَكَانَ عِنْدَ اللّٰهِ وَجِيْهًا ﴿٦٩﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَقُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا ﴿٧٠﴾ يُّصْلِحْ لَكُمْ اَعْمَالَكُمْ
وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ۗ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا
عَظِيْمًا ﴿٧١﴾ اِنَّا عَرَضْنَا الْاَمَانَةَ عَلَى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَالْجِبَالِ فَاَبَيْنَ اَنْ
يَّحْمِلْنَهَا وَاَشْفَقْنَ مِنْهَا وَحَمَلَهَا الْاِنْسَانُ ۗ اِنَّهٗ كَانَ ظَلُوْمًا جَهُوْلًا ﴿٧٢﴾
لِّيُعَذِّبَ اللّٰهُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْمُشْرِكِيْنَ وَالْمُشْرِكٰتِ وَيَتُوْبَ
اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٧٣﴾
سُوْرَةُ سَبَاٍ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ اَرْبَعٌ وَّخَمْسُوْنَ اٰيَةً وَّسِتُّ رُكُوْعَاتٍ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَلَهُ الْحَمْدُ

३४ सूरतु स-बइन् ५८

(मक्की) इस सूर: में अ़रबी के ३६३६ अक्षर, ८९६ शब्द, ५४ आयतें और ६ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि व लहुल्हम्दु फ़िल्आख़िरति व हुवल्-हकीमुल् - ख़बीर (१)

पाओगे●(६२) लोग तुम से क़ियामत के बारे में पूछते हैं (कि कब आएगी ?) कह दो कि इसका इल्म ख़ुदा ही को है और तुम्हें क्या मालूम है, शायद क़ियामत क़रीब ही आ गयी हो। (६३) बेशक ख़ुदा ने काफ़िरों पर लानत की है और उनके लिए (जहन्नम की) आग तैयार कर रखी है। (६४) उस में हमेशा-हमेशा रहेंगे, न किसी को दोस्त पाएंगे और न मददगार। (६५) जिस दिन उन के मुंह आग में उलटाए जाएं, कहेंगे, ऐ काश ! हम ख़ुदा की फ़रमांबरदारी करते और (अल्लाह के) रसूल का हुक्म मानते। (६६) और कहेंगे कि ऐ हमारे परवरदिगार ! हमने अपने सरदारों और बड़े लोगों का कहा माना, तो उन्होंने हमको रास्ते से गुमराह कर दिया। (६७) ऐ हमारे परवरदिगार ! उनको दोगुना अज़ाब दे और उन पर बड़ी लानत कर। (६८)★

मोमिनो ! तुम उन लोगों जैसे न होना, जिन्होंने मूसा को (ऐब लगा कर) रंज पहुंचाया, तो ख़ुदा ने उन को बे-ऐब साबित किया और वह ख़ुदा के नज़दीक आबरू वाले थे। (६९) मोमिनो ! ख़ुदा से डरा करो और बात सीधी कहा करो। (७०) वह तुम्हारे सब अमाल दुरुस्त कर देगा और तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और जो शख़्स ख़ुदा और उसके रसूल की फ़रमांबरदारी करेगा, तो बेशक बड़ी मुराद पाएगा। (७१) हमने अमानत (के बोझ) को आसमानों और ज़मीन पर पेश किया तो उन्होंने उस के उठाने से इन्कार किया और उस से डर गये और इंसान ने उसको उठा लिया। बेशक वह ज़ालिम और जाहिल था।[1] (७२) ताकि ख़ुदा मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों और मुश्रिक मर्दों और मुश्रिक औरतों को अज़ाब दे और ख़ुदा मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों पर मेहरबानी करे और ख़ुदा तो बख़्शने वाला मेहरबान है। (७३)★

३४ सूरः सबा ५८

सूरः सबा मक्की है और इस में चौवन आयतें और छः रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

सब तारीफ़ ख़ुदा ही को (मुनासिब) है, (जो सब चीज़ों का मालिक है, यानी) वह कि जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, सब उसी का है और आख़िरत में भी उसी की तारीफ़

---

१. अमानत से मुराद अल्लाह तआला के अह्काम और फ़राइज़ हैं, जिन के उठाने से आसमान ने भी अपनी बे-बसी ज़ाहिर की और ज़मीन और पहाड़ों ने भी, मगर इन्सान ने अपनी ताक़त तो देखी नहीं, कहा कि मैं इस बोझ को उठाऊंगा, नादानी से उस को उठा तो लिया, लेकिन उठाते ही ख़ुदा के हुक्म के ख़िलाफ़ अमल करने लगा और अल्लाह तआला की तरफ़ से गुस्से का शिकार हुआ। जब समझा कि मैं ने बड़ी नादानी की और अपने हक़ में बड़ा ज़ुल्म किया और लगा ख़ुदा से माफ़ी मांगने। इस मुट्ठी भर ख़ाक को देखो और उस की ताक़त को देखो और उस की हिम्मत को देखो। ख़ुदा की अमानत को क़ुबूला तो ज़ाहिर हो गया 'इन्नहू का-न ज़लूमन जहूला०

●रुबुअ़ १/४ ★रु. ८/५ आ १० ★रु. ९/६ आ ५

यअ्-लमु मा यलिजु फ़िल्अर्ज़ि व मा यख़्रुजु मिन्हा व मा यन्ज़िलु मिनस्समाइ व मा यअ्-रुजु फ़ीहा ♭ व हुवर्-रहीमुल्-ग़फ़ूर (२) व क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू ला तअ् - तीनस्साअतु ♭ क़ुल् बला व रब्बी ल - तअ्तियन्नकुम् ॥ आलिमिल्-ग़ैबि ८ ला यअ् - ज़ुबु अन्हु मिस्क़ालु ज़र्रतिन् फ़िस्समावाति व ला फ़िल्अर्ज़ि व ला अस्ग़रु मिन् ज़ालि-क व ला अक्बरु इल्ला फ़ी किताबिम्-मुबीनिल्- (३) -लि-यज्ज़ियल् - लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति ♭ उलाइ - क लहुम् मग़्-फ़ि-रतुं व-व रिज़्क़ुन् करीम (४) वल्लज़ी-न सऔ फ़ी आयातिना मुआजिज़ी-न उलाइ - क लहुम् अज़ाबुम् - मिर्रिज्ज़िन् अलीम (५) व य-रल्लज़ी-न ऊतुल्-अिल्मल्लज़ी उन्ज़ि-ल इलै-क मिर्रब्बि-क हुवल्-हक़्-क़ ॥ व यह्दी इला सिरातिल्-अज़ीज़िल्-हमीद (६) व क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू हल् नदुल्लुकुम् अला रजुलिंय्युनब्बिउकुम् इज़ा मुज़्ज़िक़्तुम् कुल् - ल मुमज़्ज़क़िन् ॥ इन्नकुम् लफ़ी ख़ल् - क़िन् जदीद ८ (७) अफ़्तरा अलल्लाहि कज़िबन् अम् बिही जिन्नतुन् ♭ बलिल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिल्-आख़िरति फ़िल् - अज़ाबि वज़्ज़लालिल्-बओद (८) अ-फ़-लम् यरौ इला मा बै-न ऐदीहिम् व मा ख़ल्फ़हुम् मिनस्समाइ वल्अर्ज़ि ♭ इन् न - शअ् नख़्सिफ़् बिहिमुल्अर् - ज़ औ नुस्क़ित् अलैहिम् कि-स-फ़म्-मिनस्समाइ ♭ इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयतल्-लिकुल्लि अ़ब्दिम् - मुनीब ★ (९) व ल-क़द् आतैना दावू - द मिन्ना फ़ज़्-लन् ♭ या जिबालु अव्विबी म-अ़हू वत्तै-र ८ व अलन्ना लहुल्-हदीद ॥ (१०)

فِي الْآخِرَةِ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْخَبِيرُ ۝ يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي الْأَرْضِ وَمَا
يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيهَا ۚ وَهُوَ
الرَّحِيمُ الْغَفُورُ ۝ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَأْتِينَا السَّاعَةُ ۖ قُلْ
بَلَىٰ وَرَبِّي لَتَأْتِيَنَّكُمْ عَالِمِ الْغَيْبِ ۖ لَا يَعْزُبُ عَنْهُ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ
فِي السَّمَاوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ وَلَا أَصْغَرُ مِنْ ذَٰلِكَ وَلَا أَكْبَرُ
إِلَّا فِي كِتَابٍ مُبِينٍ ۝ لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
أُولَٰئِكَ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ۝ وَالَّذِينَ سَعَوْا فِي آيَاتِنَا
مُعَاجِزِينَ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مِنْ رِجْزٍ أَلِيمٌ ۝ وَيَرَى الَّذِينَ
أُوتُوا الْعِلْمَ الَّذِي أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ هُوَ الْحَقَّ وَيَهْدِي إِلَىٰ
صِرَاطِ الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ ۝ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا هَلْ نَدُلُّكُمْ عَلَىٰ
رَجُلٍ يُنَبِّئُكُمْ إِذَا مُزِّقْتُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ إِنَّكُمْ لَفِي خَلْقٍ
جَدِيدٍ ۝ أَفْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَمْ بِهِ جِنَّةٌ ۗ بَلِ الَّذِينَ
لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ فِي الْعَذَابِ وَالضَّلَالِ الْبَعِيدِ ۝ أَفَلَمْ يَرَوْا
إِلَىٰ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۚ إِنْ
نَشَأْ نَخْسِفْ بِهِمُ الْأَرْضَ أَوْ نُسْقِطْ عَلَيْهِمْ كِسَفًا مِنَ السَّمَاءِ ۚ
إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِكُلِّ عَبْدٍ مُنِيبٍ ۝ وَلَقَدْ آتَيْنَا دَاوُودَ مِنَّا
فَضْلًا ۖ يَا جِبَالُ أَوِّبِي مَعَهُ وَالطَّيْرَ ۖ وَأَلَنَّا لَهُ الْحَدِيدَ ۝ أَنِ

★रु. १/७ आ ६

है और वह हिक्मत वाला (और) खबरदार है। (१) जो कुछ ज़मीन में दाख़िल होता है और जो उसमें से निकलता है और जो आसमान से उतरता है और जो उस पर चढ़ता है, सब उसको मालूम है और वह मेहरबान (और) बख्शने वाला है। (२) और काफ़िर कहते हैं कि (क़ियामत की) घड़ी हम पर नहीं आएगी। कह दो, क्यों नहीं (आएगी), मेरे परवरदिगार की क़सम! वह तुम पर ज़रूर आ कर रहेगी, (वह परवरदिगार) ग़ैब का जानने वाला (है), ज़र्रा भर चीज़ भी उस से छिपी नहीं, (न) आसमानों में और न ज़मीन में और कोई चीज़ उस से छोटी या बड़ी नहीं, मगर रोशन किताब में (लिखी हुई) है। (३) इस लिए कि जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, उन को बदला दे। यही हैं, जिन के लिए बख्शिश और इज़्ज़त की रोज़ी है। (४) और जिन्होंने हमारी आयतों में कोशिश की कि हमें हरा दें, उन के लिए सख्त दर्द देने वाले अज़ाब की सज़ा है। (५) और जिन लोगों को इल्म दिया गया है, वे जानते हैं कि जो (क़ुरआन) तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से तुम पर नाज़िल हुआ है, वह हक़ है और ग़ालिब (और) तारीफ़ के क़ाबिल (खुदा) का रास्ता बताता है। (६) और काफ़िर कहते हैं कि भला हम तुम्हें ऐसा आदमी बताएं, जो तुम्हें खबर देता है कि जब तुम (मर कर) बिल्कुल पारा-पारा हो जाओगे, तो नए सिरे से पैदा होगे। (७) या तो उस ने खुदा पर झूठ बांध लिया है, या उसे जुनून है। बात यह है कि जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, वह आफ़त और परले दर्जे की गुमराही में (पड़े) हैं। (८) क्या उन्होंने उस को नहीं देखा, जो उन के आगे और पीछे है यानी आसमान और ज़मीन। अगर हम चाहें, तो उनको ज़मीन में धंसा दें या उन पर आसमान के टुकड़े गिरा दें। इस में हर बन्दे के लिए, जो रुजूअ करने वाला है, एक निशानी है। (९) ★

और हमने दाऊद को अपनी तरफ़ से बरतरी बख्शी थी। ऐ पहाड़ो! इन के साथ तस्बीह करो और परिंदों को (उन के वश में कर दिया) और उनके लिए हमने लोहे को नर्म कर दिया, (१०)

★रु. १/७ आ ९

अनिअ्-मल् साबिग़ातिव्-व क़द्दिर् फ़िस्सर्दि वअ्-मलू सालिहन्ᵇ इन्नी बिमा तअ्-मलू-न बसीर (११) व लि-सुलैमानर्-री-ह ग़ुदुव्वुहा शह्रुंव्-व रवाहुहा शह्रुन्ᶜ व अ-सल्ना लहू अ़नल्क़ित्रिᵇ व मिनल्जिन्नि मंय्यअ्-मलु बै-न यदैहि बिइज़्नि रब्बिहीᵇ व मंय्यज़िग़् मिन्हुम् अ़न् अम्रिना नुज़िक़्हु मिन् अ़ज़ाबिस्सअ़ीर (१२) यअ्-मलू-न लहू मा यशाउ मिम्-महारी-ब व तमासी-ल व जिफ़ानिन् कल्जवाबि व क़ुदूरिर्-रासियातिन्ᵇ इअ्-मलू आ-ल दावू-द शुक्-रन्ᵇ व क़लीलुम्-मिन् अ़िबादि-यश-शकूर (१३) फ़-लम्मा क़ज़ैना अ़लैहिल्-मौ-त मा दल्लहुम् अ़ला मौतिही इल्ला दाब्बतुल्-अर्ज़ि तअ्कुलु मिन्स-अ-तहू ᶜ फ़-लम्मा ख़र्-र त-बय्यनतिल्-जिन्नु अल्लौ कानू यअ्-लमूनल्-ग़ै-ब मा लबिसू फ़िल्-अ़ज़ाबिल्-मुहीनᵇ (१४) ल-क़द् का-न लि-स-बइन् फ़ी मस्कनिहिम् आयतुन् ᶜ जन्नतानि अ़ंय्यमीनिंव-व शिमालिन् ᵇ कुलू मिर्रिज़्क़ि रब्बिकुम्

اعمل سبغت وقدر في السرد واعملوا صالحا اني بما تعملون
بصير ﴿١١﴾ ولسليمن الريح غدوها شهر ورواحها شهر وارسلنا
له عين القطر ومن الجن من يعمل بين يديه باذن ربه
ومن يزغ منهم عن امرنا نذقه من عذاب السعير ﴿١٢﴾ يعملون
له ما يشاء من محاريب وتماثيل وجفان كالجواب وقدور
رسيت اعملوا ال داود شكرا وقليل من عبادي الشكور ﴿١٣﴾
فلما قضينا عليه الموت ما دلهم على موته الا دابة الارض
تاكل منساته فلما خر تبينت الجن ان لو كانوا يعلمون
الغيب ما لبثوا في العذاب المهين ﴿١٤﴾ لقد كان لسبا في
مسكنهم اية جنتن عن يمين وشمال كلوا من رزق ربكم
واشكروا له بلدة طيبة ورب غفور ﴿١٥﴾ فاعرضوا فارسلنا
عليهم سيل العرم وبدلنهم بجنتيهم جنتين ذواتي اكل
خمط واثل وشيء من سدر قليل ﴿١٦﴾ ذلك جزينهم بما
كفروا وهل نجزي الا الكفور ﴿١٧﴾ وجعلنا بينهم وبين القرى
التي بركنا فيها قرى ظاهرة وقدرنا فيها السير سيروا فيها
ليالي واياما امنين ﴿١٨﴾ فقالوا ربنا بعد بين اسفارنا وظلموا
انفسهم فجعلنهم احاديث ومزقنهم كل ممزق ان في

वश्कुरू लहूᵇ बल्दतुन् तय्यिबतुंव्-व रब्बुन् ग़फ़ूर (१५) फ़-अअ्-रज़ू फ़ अर्सल्ना अ़लैहिम् सैलल्-अ़रिमि व बद्दल्नाहुम् बिजन्नतैहिम् जन्नतैनि ज़वातै उकुलिन् ख़म्-तिंव्-व अस्लिंव्-व शैइम्मिन् सिद्रिन् क़लील (१६) ज़ालि-क जज़ैना-हुम् बिमा क-फ़रूᵇ व हल् नुजाज़ी इल्लल्-कफ़ूर (१७) व ज-अ़ल्ना बैनहुम् व बैनल्-क़ुरल्लती बारक्ना फ़ीहा क़ुरन् ज़ाहिरतंव्-व क़द्दर्ना फ़ीहस्सै-र सीरू फ़ीहा लयालि-य व अय्यामन् आमिनीन (१८) फ़ क़ालू रब्बना बाअ़िद् बै-न अस्फ़ारिना व ज़-लमू अन्फ़ुसहुम् फ़-ज-अ़ल्नाहुम् अहादी-स व मज़्ज़क़्ना-हुम् कुल्-ल मुमज़्ज़क़िन्ᵇ इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल्-लिकुल्लि सब्बारिन् शकूर (१९)

कि कुशादा ज़िरहें बनाओ और कड़ियों को अन्दाज़े से जोड़ो और नेक अमल करो, जो अमल तुम करते हो, मैं उन को देखने वाला हूं। (११) और हवा को (हम) ने सुलेमान का ताबेअ कर दिया था, उस की सुबह की मंज़िल एक महीने की राह होती और शाम की मंज़िल भी महीने भर की होती और उन के लिए हम ने तांबे का चश्मा बहा दिया था और जिन्नों में से ऐसे थे, जो उनके परवरदिगार के हुक्म से उनके आगे काम करते थे और जो कोई उनमें से हमारे हुक्म से फिरेगा, उस को हम (जहन्नम की) आग का मज़ा चखाएंगे। (१२) वे जो चाहते, ये उन के लिए बनाते यानी क़िले और मुजस्समे[1] और (बड़े-बड़े) लगन जैसे तलाब और देगें, जो एक ही जगह रखी रहें। ऐ दाऊद की औलाद! (मेरा) शुक्र करो और मेरे बंदों में शुक्रगुज़ार थोड़े हैं। (१३) फिर जब हम ने उनके लिए मौत का हुक्म दिया, तो किसी चीज़ से उनका मरना मालूम न हुआ, मगर घुन के कीड़े से, जो उनकी लाठी को खाता रहा। जब लाठी गिर पड़ी, तब जिन्नों को मालूम हुआ (और कहने लगे) कि अगर वे ग़ैब जानते होते तो ज़िल्लत की तक्लीफ़ में न रहते। (१४) सबा (वालों) के लिए उन के रहने-सहने की जगह में एक निशानी थी (यानी) दो बाग़, (एक) दाहिनी तरफ़ और (एक) बायीं तरफ़। अपने परवरदिगार का दिया खाओ और उसका शुक्र करो। (यहां तुम्हारे रहने को यह) पाकीज़ा शहर है और (वहां बख़्शने को) ख़ुदा-ए-ग़फ़्फ़ार। (१५) तो उन्होंने (शुक्रगुज़ारी से) मुंह फेर लिया, पस हम ने उन पर ज़ोर का सैलाब (बाढ़) छोड़ दिया और उन्हें उन के बाग़ों के बदले दो ऐसे बाग़ दिए, जिन के मेवे बद-मज़ा थे और जिन में कुछ तो भाऊ था और थोड़ी-सी बेरियां। (१६) यह हमने उन की ना-शुक्री की उन को सज़ा दी और हम सज़ा ना-शुक्रे ही को दिया करते हैं। (१७) और हमने उन के और (शाम में) उन की बस्तियों के दर्मियान, जिन में हमने बरकत दी थी, (एक दूसरे से मिले हुए) दीहात बनाए थे, जो सामने नज़र आते थे और उन में आने-जाने का अन्दाज़ा मुक़र्रर कर दिया था कि रात-दिन बे-ख़ौफ़ व ख़तर चलते रहो, (१८) तो उन्होंने दुआ की कि ऐ परवरदिगार! हमारे सफ़रों में दूरी (और लंबाई पैदा) कर दे और (इस से उन्होंने अपने हक़ में ज़ुल्म किया, तो हम ने (उन्हें बर्बाद कर के) उनके अफ़साने बना दिए और उन्हें बिल्कुल बिखेर दिया। इसमें हर सब्र करने वाले और शुक्र करने वाले के लिए निशानियां

---

१. हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम की शरीअत में मुजस्समे यानी मूर्तियां बनाना जायज़ था। ये मूर्तियां नबियों और नेक लोगों और आलिमों और फ़रिश्तों की होती थीं, जो मस्जिदों और इबादतगाहों में रखी जाती थीं, और मक़्सूद इस से यह होता था कि उन को देख कर लोगों के दिलों में ख़ुदा की इबादत का ज़्यादा शौक़ हो और वह उस में ज़्यादा लगा हुआ हो। अरब वालों ने ग़ज़ब कर दिया कि मूर्तियों को पूजने लगे यानी उन को (अल्लाह की पनाह) ख़ुदा समझने लगे, इन्सान के लिए जो सब से शानदार मख़्लूक़ है, बे-इन्तिहा ज़िल्लत और अल्लाह तआला के हक़ में निहायत ज़ुल्म है। मुहम्मदी शरीअत में जानदार की मूर्ति बनाना मना कर दिया गया, ताकि बुतपरस्ती की जड़ कट जाए।

व ल-क़द् सद्-द-क़ अलैहिम् इब्लीसु अन्नहू फ़त्त-ब-ऊहु इल्ला फ़रीक़म्-मिनल्-मुअ्मिनी-न (२०) व मा का-न लहू अलैहिम् मिन् सुल्तानिन् इल्ला लिनअ्-ल-म मंय्युअ्मिनु बिल्आख़िरति मिम्मन् हु-व मिन्हा फ़ी शक्किन् ط व रब्बु-क अला कुल्लि शैइन् हफ़ीज़ ★ (२१) क़ुलिद्अुल्लज़ी - न ज़-अम्तुम् मिन् दूनिल्लाहि ج ला यम्लिकू - न मिस्क़ा - ल ज़र्रतिन् फ़िस्समावाति व ला फ़िल्अर्ज़ि व मा लहुम् फ़ीहिमा मिन् शिर्किंव्-व मा लहू मिन्हुम् मिन् ज़हीर (२२) व ला तन्फ़अुश - शफ़ाअतु अिन्दहू इल्ला लिमन् अज़ि-न लहू ط हत्ता इज़ा फ़ुज़्ज़ि-अ अन् क़ुलूबिहिम् क़ालू माज़ा ۙ क़ा - ल रब्बुकुम् ط क़ालुल्हक़्-क़ ج व हुवल् - अलिय्युल्-कबीर (२३) क़ुल् मंय्यर्ज़ुक़ुकुम् मिनस्समावाति वल्अर्ज़ि ط क़ुलिल्लाहु ۙ व इन्ना औ इय्याकुम् ल-अला हुदन् औ फ़ी ज़लालिम् - मुबीन (२४) क़ुल् ला तुस-अलू-न अम्मा अज्-रम्ना व ला नुस्अलु अम्मा तअ्-मलून (२५) क़ुल् यज्-मअु बैनना रब्बुना सुम्-म यफ़्तहु बैनना बिल्हक़्क़ि ط व हुवल् - फ़त्ताहुल् अलीम (२६) क़ुल् अरूनियल्लज़ी - न अल्हक़्तुम् बिही शु-रका-अ कल्ला ط बल् हुवल्लाहुल्-अज़ीज़ुल्-हकीम (२७) व मा अर्सल्ना-क इल्ला काफ़्फ़तल्-लिन्नासि बशीरंव्-व नज़ीरंव्-व लाकिन्-न अक्स-रन्नासि ला यअ्-लमून (२८) व यक़ूलू-न मता हाज़ल्वअ्-दु इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (२९) क़ुल् लकुम् मीआदु यौमिल्ला तस्-तअ्-ख़िरू-न अन्हु साअ-तंव्-व ला तस्तक़्-दिमून ★● (३०) व क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू लन्नुअ्मि-न बिहाज़ल्-क़ुर्आनि व ला बिल्लज़ी बै-न यदैहि ط व लौ तरा इज़िज़्ज़ालिमू-न मौक़ूफ़ू-न अिन् - द रब्बिहिम् ج यर्जिअु बअ्-ज़ुहुम् इला बअ्-ज़ि-निल् - क़ौ-ल ج यक़ूलुल्-लज़ीनस्तुज़्-अिफ़ू लिल्लज़ीनस्तक्बरू लौला अन्तुम् लकुन्ना मुअ्मिनीन (३१)

ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ۝ وَلَقَدْ صَدَّقَ عَلَيْهِمْ اِبْلِيْسُ
ظَنَّهٗ فَاتَّبَعُوْهُ اِلَّا فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَمَا كَانَ لَهٗ عَلَيْهِمْ
مِّنْ سُلْطٰنٍ اِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يُّؤْمِنُ بِالْاٰخِرَةِ مِمَّنْ هُوَ مِنْهَا فِيْ
شَكٍّ ؕ وَرَبُّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ حَفِيْظٌ ۝ قُلِ ادْعُوا الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ
مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۚ لَا يَمْلِكُوْنَ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي
الْاَرْضِ وَمَا لَهُمْ فِيْهِمَا مِنْ شِرْكٍ وَّمَا لَهٗ مِنْهُمْ مِّنْ ظَهِيْرٍ ۝
وَلَا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا لِمَنْ اَذِنَ لَهٗ ؕ حَتّٰۤى اِذَا فُزِّعَ عَنْ
قُلُوْبِهِمْ قَالُوْا مَاذَا ۙ قَالَ رَبُّكُمْ ؕ قَالُوا الْحَقَّ ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ۝
قُلْ مَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ قُلِ اللّٰهُ ۙ وَاِنَّاۤ اَوْ اِيَّاكُمْ
لَعَلٰى هُدًى اَوْ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝ قُلْ لَّا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّاۤ اَجْرَمْنَا
وَلَا نُسْـَٔلُ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝ قُلْ يَجْمَعُ بَيْنَنَا رَبُّنَا ثُمَّ يَفْتَحُ بَيْنَنَا
بِالْحَقِّ ؕ وَهُوَ الْفَتَّاحُ الْعَلِيْمُ ۝ قُلْ اَرُوْنِيَ الَّذِيْنَ اَلْحَقْتُمْ بِهٖ شُرَكَآءَ
كَلَّا ؕ بَلْ هُوَ اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ وَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا كَآفَّةً لِّلنَّاسِ
بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى
هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝ قُلْ لَّكُمْ مِّيْعَادُ يَوْمٍ لَّا تَسْتَاْخِرُوْنَ
عَنْهُ سَاعَةً وَّلَا تَسْتَقْدِمُوْنَ ۝ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ
بِهٰذَا الْقُرْاٰنِ وَلَا بِالَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ ؕ وَلَوْ تَرٰۤى اِذِ الظّٰلِمُوْنَ

हैं। (१६) और शैतान ने उन के बारे में अपना ख्याल सच कर दिखाया कि मोमिनों की एक जमाअत के सिवा वे उसके पीछे चल पड़े। (२०) और उसका उन पर कुछ ज़ोर न था, मगर (हमारा) मक्सूद यह था कि जो लोग आखिरत में शक रखते हैं, उन से उन लोगों को, जो उस पर ईमान रखते हैं अलग कर दें और तुम्हारा परवरदिगार हर चीज़ पर निगहबान हैं। (२१)★

कह दो कि जिन को तुम खुदा के सिवा (माबूद) ख्याल करते हो, उन को बुलाओ, वह आसमानों और ज़मीन में ज़र्रा भर चीज के भी मालिक नहीं हैं और न उन में उन की शिर्कत है और न उन में से कोई खुदा का मददगार है। (२२) और खुदा के यहां (किसी के लिए) सिफ़ारिश फ़ायदा न देगी, मगर उस के लिए, जिस के बारे में वह इजाज़त बख्शे, यहां तक कि जब उन के दिलों से बेचैनी दूर कर दी जाएगी, तो कहेंगे कि तुम्हारे परवरदिगार ने क्या फ़रमाया है ? फ़रिश्ते कहेंगे कि हक़ (फ़रमाया है) और वह ऊंचे मर्तबे वाला (और) बहुत बड़ा है। (२३) पूछो कि तुम को आसमानों और ज़मीन से कौन रोज़ी देता है ? कहो कि खुदा और हम या तुम (या तो) सीधे रास्ते पर हैं या खुली गुमराही में (२४) कह दो कि न हमारे गुनाहों की तुम से पूछ-गछ होगी और न तुम्हारे आमाल की हम से पूछ-गछ होगी। (२५) कह दो कि हमारा परवरदिगार हम को जमा करेगा, फिर हमारे दर्मियान इंसाफ़ के साथ फ़ैसला कर देगा और वह खूब फ़ैसला करने वाला (और) इल्म वाला है। (२६) कहो कि मुझे वे लोग तो दिखाओ जिन को तुम ने (खुदा का) शरीक बना कर उस के साथ मिला रखा है। कोई नहीं, बल्कि वही (अकेला) खुदा ग़ालिब (और) हिक्मत वाला है। (२७) और (ऐ मुहम्मद !) हमने तुम को तमाम लोगों के लिए खुशखबरी सुनाने वाला और डराने वाला बना कर भेजा है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (२८) और कहते हैं, अगर तुम सच कहते हो, तो यह (क़ियामत का) वायदा कब पूरा होगा ? (२९) कह दो कि तुम से एक दिन का वायदा है, जिस से न एक घड़ी पीछे रहोगे, न आगे बढ़ोगे। (३०)★●

और जो काफ़िर हैं, वे कहते हैं कि हम न तो इस क़ुरआन को मानेंगे और न उन (किताबों) को, जो उन से पहले की हैं और काश ! (इन) ज़ालिमों को तुम उस वक़्त देखो, जब ये अपने परवरदिगार के सामने खड़े होंगे और एक दूसरे से रद्द व कद्द कर रहे होंगे। जो लोग कमज़ोर समझे जाते थे, वे बड़े लोगों से कहेंगे कि अगर तुम न होते, तो हम ज़रूर मोमिन हो जाते। (३१)

★रु. २/८ आ. १२ ★रु. ३/९ आ ९ ●नि. १/२

क़ालल्लज़ीनस-तक्बरू लिल्लज़ीनस-तुज़्अिफ़ू अ-नह्नु स-दद् - नाकुम् अनिल्हुदा बअ्-द इज़् जा-अकुम् बल् कुन्तुम् मुज्रिमीन (३२) व क़ालल्लज़ीनस-तुज़्अिफ़ू लिल्लज़ीनस-तक्बरू बल् मक-रुल्लैलि वन्नहारि इज़् तअ्-मुरूनना अन् नक्फ़ु-र बिल्लाहि व नज्-अ्-ल लहू अन्दादन् ط व असर्रुन्नदाम-त लम्मा र-अवुल्-अज़ा-ब ط व ज-अल् - नल् - अग़ला-ल फ़ी अअ्-नाक़िल्लज़ी-न क-फ़रू ط हल् युज्ज़ौ-न इल्ला मा कानू यअ्-मलून (३३) व मा अर्सल्ना फ़ी क़र्यतिम्-मिन् नज़ीरिन् इल्ला क़ा-ल मुत-रफ़ूहा ؕ इन्ना बिमा उर्सिल्तुम् बिही काफ़िरून (३४) व क़ालू नह्नु अक्सरु अम - वालंव्-व औलादंव्-व मा नह्नु बिमुअ़ज़्ज़बीन (३५) क़ुल् इन्-न रब्बी यब्सुतुर - रिज़्-क़ लिमंय्यशाउ व यक़्दिरु व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला यअ्-लमून★ (३६) व मा अम्वालुकुम् व ला औलादुकुम् बिल्लती तुक़र्रिबुकुम् अिन्दना ज़ुल्फ़ा इल्ला मन् आम - न व अमि - ल सालिहन् ز फ़-उलाइ-क लहुम् जज़ाउज़्-ज़िअ्-फ़ि बिमा अमिलू व हुम् फ़िल्ग़ुरुफ़ाति आमिनून (३७) वल्लज़ी - न यस्औ-न फ़ी आयातिना मुआ़जिज़ी-न उलाइ-क फ़िल्-अ़ज़ाबि मुह्-ज़रून (३८) क़ुल् इन्-न रब्बी यब्सुतुर्रिज़्-क़ लि-मंय्यशाउ मिन् अिबादिही व यक़्दिरु लहू ط व मा अन्फ़क़्तुम् मिन् शैइन् फ़हु-व युख़्लिफ़ुहू ج व हु-व ख़ैरुर-राज़िक़ीन (३९) व यौ-म यह्शुरुहुम् जमीअ़न् सुम्-म यक़ूलु लिल्मलाइकति अ-हाउलाइ इय्याकुम् कानू यअ् - बुदून (४०)

مَوْقُوفُونَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۖ يَرْجِعُ بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ الْقَوْلَ يَقُولُ
الَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا لَوْلَا أَنْتُمْ لَكُنَّا مُؤْمِنِينَ ۝
قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا لِلَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا أَنَحْنُ صَدَدْنَاكُمْ عَنِ
الْهُدَىٰ بَعْدَ إِذْ جَاءَكُمْ ۖ بَلْ كُنْتُمْ مُجْرِمِينَ ۝ وَقَالَ الَّذِينَ
اسْتُضْعِفُوا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا بَلْ مَكْرُ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ إِذْ تَأْمُرُونَنَا
أَنْ نَكْفُرَ بِاللَّهِ وَنَجْعَلَ لَهُ أَنْدَادًا ۚ وَأَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَأَوُا
الْعَذَابَ ۚ وَجَعَلْنَا الْأَغْلَالَ فِي أَعْنَاقِ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ هَلْ يُجْزَوْنَ
إِلَّا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ وَمَا أَرْسَلْنَا فِي قَرْيَةٍ مِنْ نَذِيرٍ إِلَّا
قَالَ مُتْرَفُوهَا إِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُمْ بِهِ كَافِرُونَ ۝ وَقَالُوا نَحْنُ أَكْثَرُ
أَمْوَالًا وَأَوْلَادًا وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِينَ ۝ قُلْ إِنَّ رَبِّي يَبْسُطُ
الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَمَا
أَمْوَالُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ بِالَّتِي تُقَرِّبُكُمْ عِنْدَنَا زُلْفَىٰ إِلَّا مَنْ آمَنَ
وَعَمِلَ صَالِحًا فَأُولَٰئِكَ لَهُمْ جَزَاءُ الضِّعْفِ بِمَا عَمِلُوا وَهُمْ فِي
الْغُرُفَاتِ آمِنُونَ ۝ وَالَّذِينَ يَسْعَوْنَ فِي آيَاتِنَا مُعَاجِزِينَ أُولَٰئِكَ
فِي الْعَذَابِ مُحْضَرُونَ ۝ قُلْ إِنَّ رَبِّي يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ
مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَهُ ۚ وَمَا أَنْفَقْتُمْ مِنْ شَيْءٍ فَهُوَ يُخْلِفُهُ ۖ وَ
هُوَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ۝ وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ يَقُولُ لِلْمَلَائِكَةِ

★रु. ४/१० आ ६

बड़े लोग कमज़ोरों से कहेंगे कि भला हमने तुम को हिदायत से, जब वह तुम्हारे पास आ चुकी थी, रोका था, (नहीं) बल्कि तुम ही गुनाहगार थे। (३२) और कमज़ोर लोग बड़े लोगों से कहेंगे, (नहीं) बल्कि (तुम्हारी) रात-दिन की चालों ने (हमें रोक रखा था), जब तुम हम से कहते थे कि हम ख़ुदा से कुफ़्र करें और उस का शरीक बनाएं और जब वे अज़ाब को देखेंगे, तो दिल में शर्मिन्दा होंगे और हम काफ़िरों की गर्दनों में तौक़ डाल देंगे। बस, जो अमल करते थे, उन्हीं का उन को बदला मिलेगा। (३३) और हमने किसी बस्ती में कोई डराने वाला नहीं भेजा, मगर वहां के ख़ुशहाल लोगों ने कहा कि जो चीज़ तुम दे कर भेजे गये हो, हम उस के क़ायल नहीं। (३४) और (यह भी) कहने लगे कि हम बहुत सा माल और आल-औलाद रखते हैं और हम को अज़ाब नहीं होगा। (३५) कह दो कि मेरा रब जिस के लिए चाहता है, रोज़ी फैला सकता है और (जिस के लिए चाहता है) तंग कर देता है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (३६)★

और तुम्हारा माल और औलाद ऐसी चीज़ नहीं कि तुम को हमारा मुक़र्रब बना दें, हां, (हमारा मुक़र्रब वह है) जो ईमान लाया और नेक अमल करता रहा, ऐसे ही लोगों को उन के आमाल की वजह से दोगुना बदला मिलेगा और वे सुकून से कोठों में बैठे होंगे, (३७) जो लोग हमारी आयतों में कोशिश करते हैं कि हमें हरा दें, वे अज़ाब में हाज़िर किए जाएंगे। (३८) कह दो कि मेरा परवरदिगार अपने बन्दों में से, जिस के लिए चाहता है, रोज़ी कुशादा करता है और (जिसके लिए चाहता है) तंग कर देता है और तुम जो चीज़ ख़र्च करोगे, वह इसका (तुम्हें) बदला देगा। वह सब से बेहतर रोज़ी देने वाला है। (३९) और जिस दिन वह इन सब को जमा करेगा, फिर फ़रिश्तों से फ़रमाएगा, क्या ये लोग तुम को पूजा करते थे? (४०) वे कहेंगे, तू पाक है, तू ही

★रु. ४/१० आ ६

क़ालू सुब्-हान-क अन्-त वलिय्युना मिन् दूनिहिम् ट बल् कानू यअ्-बुदूनल्-जिन्-न ट अक्सरुहुम् बिहिम् मुअ्मिनून (४१) फ़ल्-यौ-म ला यम्लिकु बअ्-ज़ुकुम् लिबअ्-ज़िन् नफ़-अ़ व्-व ला ज़र्रन् ط व नक़ूलु लिल्लज़ी-न ज़-लमू ज़ूक़ू अ़ज़ाबन्नारिल्लती कुन्तुम् बिहा तुकज़्ज़िबून (४२) व इज़ा तुत्ला अ़लैहिम् आयातुना बय्यिनातिन् क़ालू मा हाज़ा इल्ला रजुलुंय्युरीदु अंय्यसुद्दकुम् अ़म्मा का-न यअ्-बुदु आबाउकुम् ट व क़ालू मा हाज़ा इल्ला इफ़्कुम्-मुफ़्तरन् ط व क़ालल्लज़ी - न क - फ़रू लिल्हक़्क़ि लम्मा जा-अहुम् ل इन् हाज़ा इल्ला सिह्रुम्-मुबीन (४३) व मा आतैनाहुम् मिन् कुतुबिंय्यद्रुसूनहा व मा अर्सल्ना इलैहिम् क़ब्-ल-क मिन् नज़ीर ط (४४) व कज़्ज़बल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् ل व मा ब-लग़ू मिअ्-शा-र मा आतैनाहुम् फ़-कज़्ज़बू रुसुली ^क़फ़^ फ़कै-फ़ का-न नकीर ★ (४५) क़ुल् इन्नमा अ - अ़िज़ुकुम् बिवाहिदतिन् ट अन् तक़ूमू लिल्लाहि मस्ना व फ़ुरादा सुम्-म त-त - फ़क्करू ^क़फ़^ मा बिसाहिबिकुम् मिन् जिन्नतिन् ط इन् हु - व इल्ला नज़ीरुल्लकुम् बै-न यदै अ़ज़ाबिन् शदीद (४६) क़ुल् मा स - अल्तुकुम् मिन् अज्रिन् फ़हु - व लकुम् ط इन् अज्रि - य इल्ला अ़लल्लाहि ट व हु - व अ़ला कुल्लि शैइन् शहीद (४७) क़ुल् इन्-न रब्बी यक़्ज़िफ़ु बिल्हक़्क़ि ट अ़ल्लामुल्-ग़ुयूब (४८) क़ुल् जा-अल्हक़्क़ु व मा युब्दिउल्-बातिलु व मा युईद (४९) क़ुल् इन् ज़ - लल्तु फ़-इन्नमा अज़िल्लु अ़ला नफ़्सी ट व इनिह्तदैतु फ़बिमा यूही इलय्-य रब्बी ط इन्नहू समीअ़ुन् क़रीब (५०) व लौ तरा इज़् फ़ज़िअ़ू फ़ला फ़ौ - त व उख़िज़ू मिम्मकानिन् क़रीब ل (५१)

سبأ ٣٤ ومن يقنت ٢٢

اهؤلاء اياكم كانوا يعبدون ۝ قالوا سبحنك انت ولينا من
دونهم بل كانوا يعبدون الجن اكثرهم بهم مؤمنون ۝ فاليوم
لا يملك بعضكم لبعض نفعا ولا ضرا ونقول للذين ظلموا
ذوقوا عذاب النار التي كنتم بها تكذبون ۝ واذا تتلى عليهم
ايتنا بينت قالوا ما هذا الا رجل يريد ان يصدكم عما كان
يعبد اباؤكم وقالوا ما هذا الا افك مفترى وقال الذين
كفروا للحق لما جاءهم ان هذا الا سحر مبين ۝ وما اتينهم
من كتب يدرسونها وما ارسلنا اليهم قبلك من نذير ۝ وكذب
الذين من قبلهم وما بلغوا معشار ما اتينهم فكذبوا رسلي فكيف
كان نكير ۝ قل انما اعظكم بواحدة ان تقوموا لله مثنى و
فرادى ثم تتفكروا ما بصاحبكم من جنة ان هو الا نذير
لكم بين يدي عذاب شديد ۝ قل ما سالتكم من اجر فهو
لكم ان اجري الا على الله وهو على كل شيء شهيد ۝ قل
ان ربي يقذف بالحق علام الغيوب ۝ قل جاء الحق وما يبدئ
الباطل وما يعيد ۝ قل ان ضللت فانما اضل على نفسي
وان اهتديت فبما يوحي الي ربي انه سميع قريب ۝ ولو
ترى اذ فزعوا فلا فوت واخذوا من مكان قريب ۝ وقالوا امنا

منزل

★रु. ५/११ आ ६

हमारा दोस्त है, न ये, बल्कि ये जिन्नों को पूजा करते थे और अक्सर उन ही को मानते थे। (४१) तो आज तुम में से कोई किसी को नफ़ा और नुक़्सान पहुंचाने का अख़्तियार नहीं रखता और हम ज़ालिमों से कहेंगे कि दोज़ख़ के अज़ाब का, जिस को तुम झूठ समझते थे, मज़ा चखो। (४२) और जब उन को हमारी रोशन आयतें पढ़ कर सुनायी जाती हैं, तो कहते हैं, यह एक (ऐसा) शख़्स है, जो चाहता है कि जिन चीज़ों को तुम्हारे बाप-दादा पूजा किया करते थे, उन से तुम को रोक दे और (यह भी) कहते हैं कि यह (क़ुरआन) सिर्फ़ झूठ है, जो (अपनी तरफ़ से) बना लिया गया है और काफ़िरों के पास जब हक़ आया तो उस के बारे में कहने लगे कि यह तो खुला जादू है। (४३) और हमने न तो उन (मुश्रिकों) को किताबें दीं, जिन को ये पढ़ते हैं और न तुम से पहले उन की तरफ़ कोई डराने वाला भेजा, (मगर उन्हों ने झुठला दिया)। (४४) और जो लोग उन से पहले थे, उन्हों ने झुठलाया था और जो कुछ हमने उन को दिया था, ये उस के दसवें हिस्से को भी नहीं पहुंचे।[1] तो उन्होंने तेरे पैग़म्बरों को झुठलाया, सो मेरा अज़ाब कैसा हुआ? (४५)★

कह दो कि मैं तुम्हें एक नसीहत करता हूं कि तुम ख़ुदा के लिए दो-दो और अकेले-अकेले खड़े हो जाओ, फिर ग़ौर करो। तुम्हारे साथी को बिल्कुल सौदा नहीं, वह तो तुम को सख़्त अज़ाब (के आने) से पहले सिर्फ़ डराने वाले हैं। (४६) कह दो कि मैं ने तुम से कुछ बदला मांगा हो, तो वह तुम्हारा। मेरा बदला ख़ुदा ही के ज़िम्मे है और वह हर चीज़ से ख़बरदार है। (४७) कह दो कि मेरा परवरदिगार ऊपर से हक़ उतारता है (और वह) ग़ैब की बातों का जानने वाला है। (४८) कह दो कि हक़ आ चुका और बातिल (माबूद) न तो पहली बार पैदा कर सकता है और न दोबारा पैदा करेगा। (४९) कह दो कि अगर मैं गुमराह हूं तो मेरी गुमराही का नुक़्सान मुझी को है और और अगर हिदायत पर हूं, तो यह उसीकी तुफ़ैल है, जो मेरा परवरदिगार मेरी तरफ़ वह्य भेजता है, बेशक वह सुनने वाला (और) नज़दीक है। (५०) और काश तुम देखो, जब ये घबरा जाएंगे तो (अज़ाब से) बच नहीं सकेंगे और नज़दीक ही से पकड़ लिए जाएंगे, (५१)

---

१. यानी जो माल और दौलत पहले काफ़िर रखते थे, उस का दसवां हिस्सा भी इन अरब के काफ़िरों के पास नहीं, मगर हम ने उन को भी तबाह व बर्बाद कर दिया और यह तो कुछ ऐसी हक़ीक़त नहीं रखते, इन को मिटा देना क्या मुश्किल है?

★रु. ५/११ आ ९

व क़ालू आमन्ना बिही ج व अन्ना लहुमुत् - तनावुशु मिम् - मकानिम् - बओदिंव्-ج (५२) -व क़द् क-फ़रू बिही मिन् क़ब्लु ج व यक़्ज़-फ़ू-न बिलग़ैबि मिम्-मकानिम्-बओद (५३) व ही-ल बैनहुम् व बै-न मा यश्तहू-न कमा फ़ुअि-ल बिअश्याअि-हिम् मिन् क़ब्लु ط इन्नहुम् कानू फ़ी शक्किम्-मुरीब★(५४)

به وأنى لهم التناوش من مكان بعيد ۝ وقد كفروا به من
قبل ويقذفون بالغيب من مكان بعيد ۝ وحيل بينهم
وبين ما يشتهون كما فعل بأشياعهم من قبل إنهم
كانوا في شك مريب ۝

سورة فاطر مكية وهي خمس وأربعون آية وخمس ركوعات

بسم الله الرحمن الرحيم

الحمد لله فاطر السموت والأرض جاعل الملئكة رسلا
أولي أجنحة مثنى وثلث وربع يزيد في الخلق ما يشاء إن
الله على كل شيء قدير ۝ ما يفتح الله للناس من رحمة فلا
ممسك لها وما يمسك فلا مرسل له من بعده وهو العزيز
الحكيم ۝ يأيها الناس اذكروا نعمت الله عليكم هل من
خلق غير الله يرزقكم من السماء والأرض لا إله إلا هو
فأنى تؤفكون ۝ وإن يكذبوك فقد كذبت رسل من قبلك
وإلى الله ترجع الأمور ۝ يأيها الناس إن وعد الله حق فلا
تغرنكم الحيوة الدنيا ولا يغرنكم بالله الغرور ۝ إن الشيطن
لكم عدو فاتخذوه عدوا إنما يدعوا حزبه ليكونوا من أصحب
السعير ۝ الذين كفروا لهم عذاب شديد والذين آمنوا وعملوا

३५ सूरतु फ़ातिरिन् ४३

(मक्की) इस सूरः में अरबी के ३२८६ अक्षर, ७९२ शब्द, ४५ आयतें और ५ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

अल-ह्म्दु लिल्लाहि फ़ातिरिस्समावाति वल्अर्ज़ि जाअिलिल् - मला-इकति रुसुलन् उली अज्नि-ह्तिम्-मस्ना व सुला-स व रुबा - अ ط यज़ीदु फ़िल्ख़ल्क़ि मा यशाउ ط इन्नल्ला-ह अला कुल्लि शैइन् क़दीर (१) मा यफ़्तहिल्लाहु लिन्नासि मिर्रह्-मतिन् फ़ला मुम्सि - क लहा ج व मा युम्सिक् ز फ़ला मुर्सि-ल लहू मिम्बअ्-दिही ط व हुवल्-अज़ीज़ुल्-ह्कीम (२) या अय्युहन्नासुज़्कुरू निअ्-म-तल्लाहि अलैकुम् ط हल् मिन् ख़ालिक़िन् ग़ैरुल्लाहि यर्ज़ुक़ुकुम् मिनस्समाइ वल्अर्ज़ि ط ला इला-ह इल्ला हु-व ج फ़-अन्ना तुअ्-फ़कून (३) व इंय्युकज़्ज़िबू-क फ़-क़द् कुज़्ज़िबत् रुसुलुम्-मिन् क़ब्लि-क ط व इलल्लाहि तुर्जअुल्-उमूर (४) या अय्युहन्नासु इन्-न वअ्-दल्लाहि ह्क़्क़ुन् फ़ला तग़ुर्रन्नकुमुल्-ह्यातुद्दुन्या ج व ला यग़ुर्रन्नकुम् बिल्लाहिल् - ग़रूर (५) इन्नश्शैता - न लकुम् अदुव्वुन् फ़त्तख़िज़ूहु अदुव्वन् ط इन्नमा यद्अू हिज़्बहू लियकूनू मिन् अस्हाबिस्सओर ط (६) अल्लज़ी-न क - फ़रू लहुम् अज़ाबुन् शदी - दुन् ط वल्लज़ी - न आमनू व अमिलुस्सालिहाति लहुम् मग़्फ़ि-र-तुंव-व अज्रुन् कबीर★(७)

★रु. ६/१२ आ ९ ★रु. १/१३ आ ७
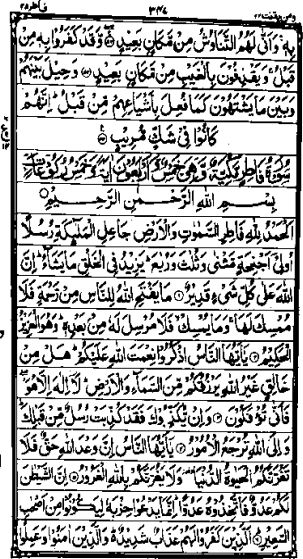
और कहेंगे कि हम इस पर ईमान ले आए और (अब) इतनी दूर से उन का हाथ ईमान के लेने को कैसे पहुंच सकता है? (५२) और पहले तो इस से इंकार करते रहे और बिन देखे दूर ही से (अटकल के) तीर चलाते रहे। (५३) और उन में और उन की ख़्वाहिश की चीज़ों में पर्दा रोक बना दिया गया, जैसा कि पहले उन के हमजिंसों (उन्हीं जैसे लोगों) से किया गया, वह भी उलझन में डालने वाले शक में पड़े हुए थे। (५४)★

४३ सूरः फ़ातिर ३५

सूरः फ़ातिर मक्की है और इस में ४५ आयतें और पांच रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

सब तारीफ़ ख़ुदा ही के लिए है, जो आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला (और) फ़रिश्तों को क़ासिद बनाने वाला है, जिन के दो-दो और तीन-तीन और चार-चार पर हैं, वह (अपनी) मख़्लूक़ में जो चाहता है, बढ़ाता है। बेशक ख़ुदा हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। (१) ख़ुदा जो अपनी रहमत (का दरवाज़ा) खोल दे तो कोई उस को बन्द करने वाला नहीं और जो बंद कर दे तो उस के बाद कोई उस को खोलने वाला नहीं और वह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (२) लोगो! ख़ुदा के जो तुम पर एहसान हैं, उन को याद करो। क्या ख़ुदा के सिवा कोई और पैदा करने वाला (और रोज़ी देने वाला) है, जो तुम को आसमान और ज़मीन से रोज़ी दे? उस के सिवा कोई माबूद नहीं, पस तुम कहां बहके फिरते हो? (३) और (ऐ पैग़म्बर!) अगर ये लोग तुम को झुठलाएं, तो तुम से पहले भी पैग़म्बर झुठलाए गए हैं और (सब) काम ख़ुदा ही की तरफ़ लौटाए जाएंगे। (४) लोगो! ख़ुदा का वायदा सच्चा है, तो तुम को दुनिया की ज़िंदगी धोखे में न डाल दे और न (शैतान) धोखा देने वाला तुम्हें धोखा दे। (५) शैतान तुम्हारा दुश्मन है, तुम भी उसे दुश्मन ही समझो। वह अपने (पैरुओं के) गिरोह को बुलाता है, ताकि वह दोज़ख़ वालों में हों, (६) जिन्हों ने कुफ़्र किया। उन के लिए सख़्त अज़ाब है और जो ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, उन के लिए बख़्शिश और बड़ा सवाब है। (७)★

★रु. ६/१२ आ ९ ★रु. १/१३ आ ७

अ-फ़-मन् ज़ुय्यि-न लहू सूउ अ-मलिही फ़-रआहु ह़-स-नन् ط फ़-इन्नल्ला-ह युज़िल्लु मंय्यशाउ व यह्दी मंय्यशाउ ۖ फ़ला तज़्-हब् नफ़्सु-क अलैहिम् ह़-स-रातिन् ط इन्नल्ला-ह अलीमुम्-बिमा यस्-नअून (८) वल्लाहुल्लज़ी अर्सलर् - रिया-ह़ फ़-तुसीरु सहाबन् फ़-सुक़्नाहु इला ब-लदिम्-मय्यितिन् फ़-अह्यैना बिहिल्अर-ज़ बअ्-द मौतिहा ط कज़ालिकन् - नुशूर (९) मन् का-न युरीदुल्-अिज़्ज़-त फ़लिल्लाहिल्-अिज़्ज़तु जमीअन् ط इलैहि यस् - अदुल् - कलिमुत्तय्यिबु वल्-अ-म-लुस्सालिहु यर्फ़अुहू ط वल्लज़ी-न यम्कुरूनस - सय्यिआति लहुम् अज़ाबुन् शदीदुन् ط व मक्रु उलाइ - क हु-व यबूर (१०) वल्लाहु ख़-ल-क़कुम् मिन् तुराबिन् सुम्-म मिन् नुत्फ़तिन् सुम्-म ज-अ-लकुम् अज़्वाजन् ط व मा तह़्मिलु मिन् उन्सा व ला त-ज़-अु इल्ला बिअिल्मिही ط व मा यु-अम्मरु मिम्-मु-अम्मरिंव्-व ला युन्क़सु मिन् अुमुरिही इल्ला फ़ी किताबिन् ط इन्-न ज़ालि-क अलल्लाहि यसीर (११)

الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ۞ اَفَمَنْ زُيِّنَ لَهٗ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ
فَرَاٰهُ حَسَنًا ؕ فَاِنَّ اللّٰهَ يُضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ۖ فَلَا
تَذْهَبْ نَفْسُكَ عَلَيْهِمْ حَسَرٰتٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ ۞
وَاللّٰهُ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ الرِّيٰحَ فَتُثِيْرُ سَحَابًا فَسُقْنٰهُ اِلٰى بَلَدٍ مَّيِّتٍ
فَاَحْيَيْنَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ كَذٰلِكَ النُّشُوْرُ ۞ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ
الْعِزَّةَ فَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ جَمِيْعًا ؕ اِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّيِّبُ وَالْعَمَلُ
الصَّالِحُ يَرْفَعُهٗ ؕ وَالَّذِيْنَ يَمْكُرُوْنَ السَّيِّاٰتِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ؕ
وَمَكْرُ اُولٰٓئِكَ هُوَ يَبُوْرُ ۞ وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ
ثُمَّ جَعَلَكُمْ اَزْوَاجًا ؕ وَمَا تَحْمِلُ مِنْ اُنْثٰى وَلَا تَضَعُ اِلَّا بِعِلْمِهٖ ؕ وَمَا
يُعَمَّرُ مِنْ مُّعَمَّرٍ وَّلَا يُنْقَصُ مِنْ عُمُرِهٖٓ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى
اللّٰهِ يَسِيْرٌ ۞ وَمَا يَسْتَوِي الْبَحْرٰنِ ۖ هٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ سَآئِغٌ شَرَابُهٗ
وَهٰذَا مِلْحٌ اُجَاجٌ ؕ وَمِنْ كُلٍّ تَاْكُلُوْنَ لَحْمًا طَرِيًّا وَّتَسْتَخْرِجُوْنَ
حِلْيَةً تَلْبَسُوْنَهَا ۚ وَتَرَى الْفُلْكَ فِيْهِ مَوَاخِرَ لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ
وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۞ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ
وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ كُلٌّ يَّجْرِيْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ
لَهُ الْمُلْكُ ؕ وَالَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ مَا يَمْلِكُوْنَ مِنْ قِطْمِيْرٍ ۞
اِنْ تَدْعُوْهُمْ لَا يَسْمَعُوْا دُعَآءَكُمْ ۚ وَلَوْ سَمِعُوْا مَا اسْتَجَابُوْا لَكُمْ ۗ وَيَوْمَ

व मा यस्तविल् - बह्रानि ۖ हाज़ा अज़्बुन् फ़ुरातुन् सा - इग़ुन् शराबुहू व हाज़ा मिल्हुन् उजाजुन् ط व मिन् कुल्लिन् तअ् - कुलू-न लह़् - मन् त़रिय्यंव्-व तस्तख़्रिजू-न ह़िल् - य-तन् तल्बसूनहा ۚ व तरल्फ़ुल - क फ़ीहि मवाख़ि-र लितब्तग़ू मिन् फ़ज़्लिही व ल-अ़ल्लकुम् तश्कुरून (१२) यूलिजुल्लै-ल फ़िन्नहारि व यूलिजुन्नहा-र फ़िल्लैलि ۙ व सख़्ख़रश्शम्-स वल्क़-म-र ۖ कुल्लुंय्यज्री लि - अ-जलिम् - मुसम्मन् ط ज़ालिकुमुल्लाहु रब्बुकुम् लहुल्मुल्कु ط वल्लज़ी - न तद्अू - न मिन् दूनिही मा यम्लिकू - न मिन् क़ित़्मीर ط (१३)

भला जिस शख़्स को उस के बुरे आमाल सजा कर के दिखाए जाएं और वह उन को उम्दा समझने लगे, तो (क्या वह भला आदमी जैसा हो सकता है)? बेशक ख़ुदा जिस को चाहता है, गुमराह करता है और जिस को चाहता है, हिदायत देता है, तो उन लोगों पर अफ़सोस कर के तुम्हारा दम न निकल जाए। ये जो कुछ करते हैं, ख़ुदा उसे जानता है। (८) और ख़ुदा ही तो है, जो हवाएं चलाता है और वे बादल को उभारती हैं, फिर हम उस को एक बे-जान शहर की तरफ़ चलाते हैं, फिर उस से ज़मीन को उस के मरने के बाद ज़िंदा कर देते हैं। इसी तरह मुर्दों को जी उठना होगा। (९) जो शख़्स इज़्ज़त की तलब में है, तो इज़्ज़त तो सब ख़ुदा ही की है। उसी की तरफ़ पाकीज़ा कलिमे चढ़ते हैं और नेक अमल उन को बुलंद करते हैं और जो लोग बुरे-बुरे मक्र करते हैं, उन के लिए सख़्त अज़ाब है और उन का मक्र नाबूद हो जाएगा। (१०) और ख़ुदा ही ने तुम को मिट्टी से पैदा किया, फिर नुत्फ़े से, फिर तुम को जोड़ा-जोड़ा बना दिया और कोई औरत न हामिला होती है, और न जानती है, मगर उस के इल्म से और न किसी बड़ी उम्र वाले को उम्र ज़्यादा दी जाती है और न उस की उम्र कम की जाती है, मगर (सब कुछ) किताब में (लिखा हुआ है)। बेशक यह ख़ुदा को आसान है। (११) और दोनों दरिया (मिल कर) एक जैसे नहीं हो जाते, यह तो मीठा है, प्यास बुझाने वाला, जिस का पानी ख़ुशगवार है और यह खारी है, कड़आ और सब से तुम ताज़ा गोश्त खाते हो और ज़ेवर निकालते हो, जिसे पहनते हो। और तुम दरिया में कश्तियों को देखते हो कि (पानी को) फाड़ती चली आती हैं, ताकि तुम उस के फ़ज़्ल से (रोज़ी) खोजो और ताकि शुक्र करो। (१२) वही रात को दिन में दाख़िल करता और (वही) दिन को रात में दाख़िल करता है और उसी ने सूरज-चांद को काम में लगा दिया है। हर-एक एक मुक़र्रर वक़्त तक चल रहा है। यही ख़ुदा तुम्हारा परवरदिगार है, उसी की बादशाही है और जिन लोगों को तुम उस के सिवा पुकारते हो, वे खजूर की गुठली के छिलके के बराबर भी तो (किसी चीज़ के)

इन् तद्अूहुम् ला यस्मअू दुआ-अकुम् ज व लौ समिअू मस्तजाबू लकुम् ط व यौमल्क़ियामति यक्फ़ुरू-न बिशिर्किकुम् ط व ला युनब्बिउ-क मिस्लु ख़बीर ★● (१४) या अय्युहन्नासु अन्तुमुल्-फ़ु-क़राउ इलल्लाहि ج वल्लाहु हुवल्-ग़निय्युल्-ह़मीद (१५) इंय्यशअ् युज़्हिब्कुम् व यअ्ति बिख़ल्क़िन् जदीद ज (१६) व मा ज़ालि-क अ-लल्लाहि बिअ़ज़ीज़ (१७) व ला तज़िरु वाज़ि-रतुंव्विज़्-र उख़्रा ط व इन् तद्अु मुस्क़-लतुन् इला ह़िम्लिहा ला युह़्मल् मिन्हु शैउंव्-व लौ का-न ज़ाक़ुर्बा ط इन्नमा तुन्ज़िरुल्लज़ी-न यख़्शौ-न रब्बहुम् बिल्ग़ैबि व अक़ामुस्सला-त ط व मन् त-ज़क्का फ़-इन्नमा य-त-ज़क्का लि-नफ़्सिही ط व इलल्लाहिल्-मसीर (१८) व मा यस्तविल्-अअ्-मा वल्बसीर ز (१९) व लज़्ज़ुलुमातु व लन्नूर ز (२०) व लज़्ज़िल्लु व लल्ह़रूर ज (२१) व मा यस्तविल्-अह़्याउ व लल्अम्वातु ط इन्नल्ला-ह युस्मिअु मंय्यशाउ ज व मा अन्-त बिमुस्मिअिम्-मन् फ़िल्क़ुबूर (२२) इन् अन्-त इल्ला नज़ीर (२३) इन्ना अर्सल्ना-क बिल्ह़क़्क़ि बशीरंव्-व नज़ीरन् ط व इम्मिन् उम्मतिन् इल्ला ख़ला फ़ीहा नज़ीर (२४) व इंय्युकज़्ज़िबू-क फ़-क़द् कज़्ज़बल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् ज जा-अत्हुम् रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति व बिज़्ज़ुबुरि व बिल्-किताबिल्-मुनीर (२५) सुम्-म अ-ख़ज़्तुल्लज़ी-न क-फ़रू फ़-कै-फ़ का-न नकीर★(२६) अ-लम् त-र अन्नल्ला-ह अन्ज़-ल मिनस्समाइ मा-अन् ज फ़-अख़्-रज्ना बिही स-मरातिम्-मुख़्तलिफ़न् अल्वानुहा ط व मिनल्-जिबालि जु-ददुम्-बीज़ुंव्-व हुम्रुम्-मुख़्तलिफ़ुन् अल्वानुहा व ग़राबीबु सूद (२७) व मिनन्नासि वद्दवाब्बि वल्-अन्आमि मुख़्तलिफ़ुन् अल्वानुहू कज़ालि-क ط इन्नमा यख़्शल्ला-ह मिन् अिबादिहिल्-अुलमाउ ط इन्नल्ला-ह अज़ीज़ुन् ग़फ़ूर (२८)

فاطر ۳۵ — ۶۳۹

الْقِيٰمَةِ يَكْفُرُوْنَ بِشِرْكِكُمْ ۗ وَلَا يُنَبِّئُكَ مِثْلُ خَبِيْرٍ ۝ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ
اَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ اِلَى اللّٰهِ ۚ وَاللّٰهُ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ۝ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ
وَيَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ ۝ وَمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ ۝ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ
وِّزْرَ اُخْرٰى ۗ وَاِنْ تَدْعُ مُثْقَلَةٌ اِلٰى حِمْلِهَا لَا يُحْمَلْ مِنْهُ شَيْءٌ وَّلَوْ كَانَ
ذَا قُرْبٰى ۗ اِنَّمَا تُنْذِرُ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ۗ
وَمَنْ تَزَكّٰى فَاِنَّمَا يَتَزَكّٰى لِنَفْسِهٖ ۗ وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ۝ وَمَا يَسْتَوِي
الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ۝ وَلَا الظُّلُمٰتُ وَلَا النُّوْرُ ۝ وَلَا الظِّلُّ وَلَا
الْحَرُوْرُ ۝ وَمَا يَسْتَوِي الْاَحْيَآءُ وَلَا الْاَمْوَاتُ ۗ اِنَّ اللّٰهَ يُسْمِعُ مَنْ
يَّشَآءُ ۚ وَمَآ اَنْتَ بِمُسْمِعٍ مَّنْ فِي الْقُبُوْرِ ۝ اِنْ اَنْتَ اِلَّا نَذِيْرٌ ۝ اِنَّآ
اَرْسَلْنٰكَ بِالْحَقِّ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ۗ وَاِنْ مِّنْ اُمَّةٍ اِلَّا خَلَا فِيْهَا نَذِيْرٌ ۝
وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ
بِالْبَيِّنٰتِ وَبِالزُّبُرِ وَبِالْكِتٰبِ الْمُنِيْرِ ۝ ثُمَّ اَخَذْتُ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ۝ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ
فَاَخْرَجْنَا بِهٖ ثَمَرٰتٍ مُّخْتَلِفًا اَلْوَانُهَا ۗ وَمِنَ الْجِبَالِ جُدَدٌۢ بِيْضٌ
وَّحُمْرٌ مُّخْتَلِفٌ اَلْوَانُهَا وَغَرَابِيْبُ سُوْدٌ ۝ وَمِنَ النَّاسِ وَالدَّوَآبِّ
وَالْاَنْعَامِ مُخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ كَذٰلِكَ ۗ اِنَّمَا يَخْشَى اللّٰهَ مِنْ عِبَادِهِ
الْعُلَمٰٓؤُا ۗ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ غَفُوْرٌ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ يَتْلُوْنَ كِتٰبَ اللّٰهِ وَ

★रु. २/१४ आ ७ ●सु. ३/४ ★रु. ३/१५ आ १२

मालिक नहीं। (१३) अगर तुम उन को पुकारो, तो वे तुम्हारी पुकार न सुनें और अगर सुन भी लें, तो तुम्हारी बात को क़ुबूल न कर सकें और क़ियामत के दिन तुम्हारे शिर्क से इंकार कर देंगे और बा-ख़बर (ख़ुदा) की तरह तुम को कोई ख़बर नहीं देगा। (१४)★●

लोगो! तुम (सब) ख़ुदा के मुहताज हो और ख़ुदा बे-परवा, हम्द (व सना) के लायक़ है।(१५) अगर चाहे तो तुम को नाबूद कर दे और नयी मख़्लूक़ ला आबाद करे। (१६) और यह ख़ुदा को कुछ मुश्किल नहीं। (१७) और कोई उठाने वाला दूसरे का बोझ न उठाएगा और कोई बोझ में दबा हुआ अपना बटाने को किसी को बुलाए, तो कोई उस में से कुछ न उठाएगा, चाहे रिश्तेदार ही हो। (ऐ पैग़म्बर!) तुम उन ही लोगों को नसीहत कर सकते हो, जो बिन-देखे अपने परवरदिगार से डरते और नमाज़ एहतिमाम से पढ़ते हैं और जो शख़्स पाक होता है, अपने ही लिए पाक होता है और (सब को) ख़ुदा ही की तरफ़ लौट कर जाना है। (१८) और अंधा और आंख वाला बराबर नहीं। (१९) और न अंधेरा और रोशनी, (२०) और न साया और धूप, (२१) और न ज़िंदे और मुर्दे बराबर हो सकते हैं। ख़ुदा जिस को चाहता है, सुना देता है और तुम उन को जो क़ब्रों में (दफ़्न) हैं, सुना नहीं सकते। (२२) तुम तो सिर्फ़ हिदायत करने वाले हो। (२३) हमने तुम को हक़ के साथ ख़ुशख़बरी सुनाने वाला और डराने वाला भेजा है और कोई उम्मत नहीं, मगर इस में हिदायत करने वाला गुज़र चुका है। (२४) और अगर ये तुम्हें झुठलाएं, तो जो लोग उन से पहले थे, वे भी झुठला चुके हैं, उन के पास उन के पैग़म्बर निशानियां और सहीफ़े और रोशन किताबें ले-ले कर आते रहे। (२५) फिर मैं ने काफ़िरों को पकड़ लिया, सो (देख लो कि) मेरा अज़ाब कैसा हुआ। (२६)★

क्या तुम ने नहीं देखा कि ख़ुदा ने आसमान से मेंह बरसाया तो हम ने उस से तरह-तरह के रंगों के मेवे पैदा किए और पहाड़ों में सफ़ेद और लाल रंगों के क़तए (टुकड़े) और (कुछ) काले-स्याह हैं। (२७) इंसानों और जानवरों और चौपायों के भी कई तरह के रंग हैं। ख़ुदा से तो उस के बन्दों में से वही डरते हैं, जो इल्म वाले हैं। बेशक ख़ुदा ग़ालिब (और) बख़्शने वाला है। (२८)

★रु. २/१४ आ ७ ●सु. ३/४ ★रु. ३/१५ आ १२

इन्नल्लज़ी-न यत्लू-न किताबल्लाहि व अक़ामुस्सला-त व अन्फ़क़ू मिम्मा र-ज़क़्नाहुम् सिर्रंव्-व अलानि-य-तंय्यर्जू-न तिजारतल्लन् तबूर ۙ (२९) लियुवफ़्फ़ि-यहुम् उजूरहुम् व यज़ीदहुम् मिन् फ़ज़्लिही ط इन्नहू ग़फ़ूरुन् शकूर (३०) वल्लज़ी औहैना इलै-क मिनल्किताबि हुवल्हक़्क़ु मुसद्दिक़ल्लिमा बै-न यदैहि ط इन्नल्ला-ह बिअिबादिही ल-ख़बीरुम्-बसीर (३१) सुम्-म औरस्नल्-किताबल्-लज़ीनस्तफ़ैना मिन् अिबादिना ج फ़मिन्हुम् ज़ालिमुल्-लिनफ़्सिही ج व मिन्हुम् मुक़्तसिदुन् ج व मिन्हुम् साबिक़ुम्-बिल्-ख़ैराति बिइज़्निल्लाहि ط ज़ालि-क हुवल्-फ़ज़्लुल्-कबीर ط (३२) जन्नातु अद्निंय्यद्ख़ुलूनहा युहल्लौ-न फ़ीहा मिन् असावि-र मिन् ज़-ह-बिंव्-व लुअ्लुअन् ج व लिबासुहुम् फ़ीहा हरीर (३३) व क़ालुल्-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अज़्-ह-ब अन्नल्-ह-ज़-न ط इन्-न रब्बना ल-ग़फ़ूरुन् शकूरु-नि- ۙ (३४) -ल्लज़ी अ-हल्लना दारल्-मुक़ामति मिन् फ़ज़्लिही ج ला यमस्सुना फ़ीहा न-स-बुंव्-व ला यमस्सुना फ़ीहा लुग़ूब (३५) वल्लज़ी-न क-फ़रू लहुम् नारु ज-हन्न-म ج ला युक़्ज़ा अलैहिम् फ़-यमूतू व ला युख़फ़्फ़फ़ु अन्हुम् मिन् अज़ाबिहा ط कज़ालि-क नज्ज़ी कुल्-ल कफ़ूर ج (३६) व हुम् यस्तरिख़ू-न फ़ीहा ج रब्बना अख़्रिज्ना नअ्-मल् सालिहन् ग़ैरल्लज़ी कुन्ना नअ् - मलु ط अ-व लम् नुअम्मिर्-कुम् मा य-त-ज़क्करु फ़ीहि मन् त-ज़क्क-र व जा-अकुमुन्नज़ीरु ط फ़-ज़ूक़ू फ़मा लिज़्ज़ालिमी-न मिन् नसीर ★ (३७) इन्नल्ला-ह आलिमु ग़ैबिस्समावाति वल्अर्ज़ि ط इन्नहू अलीमुम्-बिज़ातिस्सुदूर (३८) हुवल्लज़ी ज-अ-लकुम् ख़लाइ-फ़ फ़िल्अर्ज़ि ط फ़-मन् क-फ़-र फ़-अलैहि कुफ़्रुहू ط व ला यज़ीदुल्-काफ़िरी-न कुफ़्रुहुम् अिन्-द रब्बिहिम् इल्ला मक़्तन् ج व ला यज़ीदुल्-काफ़िरी-न कुफ़्रुहुम् इल्ला ख़सारा (३९)

فاطر ٣٥ ٦٥٠ ومن يقنت ٢٢

اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً يَّرْجُوْنَ تِجَارَةً
لَّنْ تَبُوْرَ ۙ لِيُوَفِّيَهُمْ اُجُوْرَهُمْ وَيَزِيْدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ۭ اِنَّهٗ غَفُوْرٌ
شَكُوْرٌ ۝ وَالَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ مِنَ الْكِتٰبِ هُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا
بَيْنَ يَدَيْهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ بِعِبَادِهٖ لَخَبِيْرٌۢ بَصِيْرٌ ۝ ثُمَّ اَوْرَثْنَا الْكِتٰبَ
الَّذِيْنَ اصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَا ۚ فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ ۚ وَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ ۚ
وَمِنْهُمْ سَابِقٌۢ بِالْخَيْرٰتِ بِاِذْنِ اللّٰهِ ۭ ذٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيْرُ ۝ جَنّٰتُ
عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّلُؤْلُؤًا ۚ وَ
لِبَاسُهُمْ فِيْهَا حَرِيْرٌ ۝ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْٓ اَذْهَبَ عَنَّا الْحَزَنَ ۭ
اِنَّ رَبَّنَا لَغَفُوْرٌ شَكُوْرُۨ ۝ الَّذِيْٓ اَحَلَّنَا دَارَ الْمُقَامَةِ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ
لَا يَمَسُّنَا فِيْهَا نَصَبٌ وَّلَا يَمَسُّنَا فِيْهَا لُغُوْبٌ ۝ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ نَارُ
جَهَنَّمَ ۚ لَا يُقْضٰى عَلَيْهِمْ فَيَمُوْتُوْا وَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ مِّنْ عَذَابِهَا ۭ
كَذٰلِكَ نَجْزِيْ كُلَّ كَفُوْرٍ ۝ وَهُمْ يَصْطَرِخُوْنَ فِيْهَا ۚ رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا
نَعْمَلْ صَالِحًا غَيْرَ الَّذِيْ كُنَّا نَعْمَلُ ۭ اَوَلَمْ نُعَمِّرْكُمْ مَّا يَتَذَكَّرُ فِيْهِ
مَنْ تَذَكَّرَ وَجَاۗءَكُمُ النَّذِيْرُ ۭ فَذُوْقُوْا فَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ نَّصِيْرٍ ۝ اِنَّ
اللّٰهَ عٰلِمُ غَيْبِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝ هُوَ
الَّذِيْ جَعَلَكُمْ خَلٰۗىِٕفَ فِي الْاَرْضِ ۭ فَمَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهٗ ۭ وَلَا يَزِيْدُ
الْكٰفِرِيْنَ كُفْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ اِلَّا مَقْتًا ۚ وَلَا يَزِيْدُ الْكٰفِرِيْنَ كُفْرُهُمْ

★रु. ४/१६ आ ११

जो लोग खुदा की किताब पढ़ते और नमाज़ की पाबन्दी करते हैं और जो कुछ हमने उन को दिया है, उस में से छिपे और ज़ाहिर खर्च करते हैं, वे उस तिजारत (के फ़ायदे) के उम्मीदवार हैं, जो कभी तबाह नहीं होगी, (२६) क्योंकि खुदा उन को पूरा-पूरा बदला देगा और अपने फ़ज़्ल से कुछ ज़्यादा भी देगा। वह तो बख़्शने वाला (और) क़द्रदां है। (३०) और यह किताब जो हमने तुम्हारी तरफ़ भेजी है, बर-हक़ है और उन (किताबों) की तस्दीक़ करती है, जो इस से पहले की हैं। बेशक खुदा अपने बन्दों से खबरदार (और उन को) देखने वाला है। (३१) फिर हमने उन लोगों को किताब का वारिस ठहराया, जिन को अपने बन्दों में से चुना, तो कुछ तो उन में से अपने आप पर ज़ुल्म करते हैं और कुछ बीच के रास्ते पर हैं और कुछ खुदा के हुक्म से नेकियों में आगे निकल जाने वाले हैं। यही बड़ा फ़ज़्ल है, (३२) (उन लोगों के लिए) हमेशा की जन्नतें (हैं) जिन में वे दाखिल होंगे। वहां उन को सोने के कंगन और मोती पहनाए जाएंगे और उन का लिबास रेशमी होगा। (३३) वे कहेंगे कि खुदा का शुक्र है, जिस ने हम से ग़म दूर किया। बेशक हमारा परवरदिगार बख़्शने वाला (और) क़द्रदां है, (३४) जिस ने हम को अपने फ़ज़्ल से हमेशा के रहने के घर में उतारा। यहां न तो हम को रंज पहुंचेगा और न हमें थकन ही होगी। (३५) और जिन लोगों ने कुफ़्र किया, उन के लिए दोज़ख की आग है, न उन्हें मौत आएगी कि मर जाएं और न उस का अज़ाब ही उन से हल्का किया जाएगा। हम हर एक ना-शुक्रे को ऐसा ही बदला दिया करते हैं। (३६) वे उस में चिल्लाएंगे कि ऐ परवरदिगार! हम को निकाल ले, (अब) हम नेक अमल किया करेंगे, न वह जो (पहले) करते थे। क्या हमने तुम को इतनी उम्र नहीं दी थी कि उस में जो सोचना चाहता, सोच लेता और तुम्हारे पास डराने वाला भी आया, तो अब मज़े चखो, ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं। (३७) ★

बेशक खुदा ही आसमानों और ज़मीन की छिपी बातों का जानने वाला है। वह तो दिल के भेदों तक को जानता है। (३८) वही तो है, जिस ने तुम को ज़मीन में (पहलों का) जानशीं बनाया, तो जिस ने कुफ़्र किया, उस के कुफ़्र का नुक़्सान उसी को है और काफ़िरों के हक़ में उन के कुफ़्र से परवरदिगार के यहां ना-खुशी ही बढ़ती है और काफ़िरों को उन का कुफ़्र नुक़्सान ही

★रु. ४/१६ आ ११

क़ुल् अ-र-ऐ-तुम् शु-रका-अ-कुमुल्लज़ी-न तद्अू-न मिन् दूनिल्लाहि ط अरूनी माज़ा ख़-लक़ू मिनल्अर्ज़ि अम् लहुम् शिर्कुन् फ़िस्समावाति ج अम् आतैनाहुम् किताबन् फ़हुम् अ़ला बय्यिनतिम्-मिन्हु ج बल् इंय्यअिदुज़्-ज़ालिमू-न बअ्-ज़ुहुम् बअ्-ज़न् इल्ला ग़ुरूरा (४०) इन्नल्ला - ह युम्सिकुस - समावाति वल्अर् - ज़ अन् तज़ूला ج व लइन् ज़ालता इन् अम-स-कहुमा मिन् अ-ह़दिम् - मिम्बअ्-दिही ط इन्नहू का-न ह़लीमन् ग़फ़ूरा (४१) व अक़्समू बिल्लाहि जह्-द ऐमानिहिम् लइन् जा-अहुम् नज़ीरुल्-ल-य-कूनन्-न अह्दा मिन् इह्दल् - उममि ج फ़-लम्मा जा - अहुम् नज़ीरुम्मा ज़ादहुम् इल्ला नुफ़ू-र-नि-ﻻ (४२) स्तिक्बारन् फ़िल्अर्ज़ि व मक्रस्सय्यिइ ط व ला यह़ीक़ुल् - मक्रुस्सय्यिउ इल्ला बिअह्लिही ط फ़ - हल् यन्ज़ुरू - न इल्ला सुन्नतल् - अव्वली-न ج फ़ - लन् तजि - द लिसुन्नतिल्लाहि तब्दीला ج व लन् तजि-द लिसुन्नतिल्लाहि तह़्वीला (४३) अ-व लम् यसीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़यन्ज़ुरू कै-फ़ का-न आक़िबतुल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् व कानू अशद्-द मिन्हुम् क़ुव्वतन् ط व मा कानल्-लाहु लियुअ्-जिज़हू मिन् शैइन् फ़िस्समावाति व ला फ़िल्अर्ज़ि ط इन्नहू का-न अ़लीमन् क़दीरा (४४) व लौ युआख़िज़ुल्लाहुन्-ना-स बिमा क-सबू मा त-र-क अ़ला ज़ह्रिहा मिन् दाब्बतिंव्-व लाकिंय्युअख़्ख़िरुहुम् इला अ-जलिम्-मुसम्मन् ج फ़-इज़ा जा-अ अ-ज-लुहुम् फ़-इन्नल्ला-ह का-न बिअ़िबादिही बसीरा ★ (४५)

إِلَّا غُرُورًا ۝ قُلْ أَرَءَيْتُمْ شُرَكَآءَكُمُ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ
أَرُونِي مَاذَا خَلَقُوا مِنَ الْأَرْضِ أَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمٰوٰتِ أَمْ ءَاتَيْنٰهُمْ
كِتٰبًا فَهُمْ عَلَىٰ بَيِّنَتٍ مِّنْهُ بَلْ إِن يَعِدُ الظّٰلِمُونَ بَعْضُهُم بَعْضًا إِلَّا
غُرُورًا ۝ إِنَّ اللَّهَ يُمْسِكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ أَن تَزُولَا وَلَئِن زَالَتَا إِنْ
أَمْسَكَهُمَا مِنْ أَحَدٍ مِّنۢ بَعْدِهِۦٓ إِنَّهُۥ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا ۝ وَأَقْسَمُوا
بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمٰنِهِمْ لَئِن جَآءَهُمْ نَذِيرٌ لَّيَكُونُنَّ أَهْدَىٰ مِنْ إِحْدَى الْأُمَمِ
فَلَمَّا جَآءَهُمْ نَذِيرٌ مَّا زَادَهُمْ إِلَّا نُفُورًا ۝ اسْتِكْبَارًا فِي الْأَرْضِ وَمَكْرَ
السَّيِّئِ وَلَا يَحِيقُ الْمَكْرُ السَّيِّئُ إِلَّا بِأَهْلِهِۦ فَهَلْ يَنظُرُونَ إِلَّا
سُنَّتَ الْأَوَّلِينَ فَلَن تَجِدَ لِسُنَّتِ اللَّهِ تَبْدِيلًا وَلَن تَجِدَ لِسُنَّتِ
اللَّهِ تَحْوِيلًا ۝ أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنظُرُوا كَيْفَ كَانَ عٰقِبَةُ
الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ وَكَانُوٓا أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُعْجِزَهُۥ مِن
شَيْءٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ إِنَّهُۥ كَانَ عَلِيمًا قَدِيرًا ۝ وَلَوْ يُؤَاخِذُ
اللَّهُ النَّاسَ بِمَا كَسَبُوا مَا تَرَكَ عَلَىٰ ظَهْرِهَا مِن دَآبَّةٍ وَلٰكِن يُؤَخِّرُهُمْ
إِلَىٰٓ أَجَلٍ مُّسَمًّى فَإِذَا جَآءَ أَجَلُهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِعِبَادِهِۦ بَصِيرًا ۝
سُورَةُ يٰسٓ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ ثَلٰثٌ وَثَمٰنُونَ ءَايَةً وَخَمْسُ رُكُوعَاتٍ
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ
يٰسٓ ۝ وَالْقُرْءَانِ الْحَكِيمِ ۝ إِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ۝ عَلَىٰ

३६ सूरतु यासीन् ४१

(मक्की) इस सूर: में अरबी के ३०१० अक्षर, ७३६ शब्द, ८३ आयतें और ५ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

यासीन् ج (१) वल्क़ुरआनिल्-ह़कीम ﻻ (२) इन्न-क लमिनल्-मुर्सलीन ﻻ (३)

ज़्यादा करता है। (३९) भला तुम ने अपने शरीकों को देखा, जिन को तुम खुदा के सिवा पुकारते हो; मुझे दिखाओ कि उन्हों ने ज़मीन से कौन सी चीज़ पैदा की है, या (बताओ कि) आसमानों में उन की शिर्कत है या हम ने उन को किताब दी है, तो वे उस की सनद रखते हैं? (इन में से कोई बात भी नहीं), बल्कि ज़ालिम जो एक दूसरे को वायदा देते हैं, सिर्फ़ धोखा है। (४०) खुदा ही आसमानों और ज़मीन को थामे रखता है कि टल न जाए अगर वे टल जाएं तो खुदा के सिवा कोई ऐसा नहीं जो उनको थाम सके। बेशक वह बुर्दबार (और) बख़्शने वाला है। (४१) और ये खुदा की सख़्त-सख़्त क़स्में खाते हैं कि अगर उन के पास कोई हिदायत करने वाला आए, तो ये हर एक उम्मत से बढ़कर हिदायत पर हों, मगर जब उन के पास हिदायत करने वाला आया तो उस से उन को नफ़रत ही बढ़ी। (४२) यानी (उन्हों ने) मुल्क में घमंड करना और बुरी चाल चलना (अख़्तियार किया) और बुरी चाल का वबाल उस के चलने वाले ही पर पड़ता है। ये अगले लोगों के रवैए के सिवा और किसी चीज़ के इंतिज़ार में नहीं,[1] सो तुम खुदा की इबादत में हरगिज़ तब्दीली न पाओगे और खुदा के तरीक़े में कभी तब्दीली न देखोगे। (४३) क्या उन्हों ने ज़मीन में सैर नहीं की, ताकि देखते कि जो लोग उन से पहले थे, उन का अंजाम क्या हुआ, हालांकि वे इन से ताक़त में बहुत ज़्यादा थे। और खुदा ऐसा नहीं कि आसमानों और ज़मीन में कोई चीज़ उस को आजिज़ कर सके। वह इल्म वाला (और) क़ुदरत वाला है। (४४) और अगर खुदा लोगों को उनके आमाल की वजह से पकड़ने लगता तो रू-ए-ज़मीन पर एक भी चलने-फिरने वाले को न छोड़ता, लेकिन वह उन को मुक़र्रर वक़्त तक मोहलत दिए जाता है। सो जब उन का वक़्त आ जाएगा, तो (उन के आमाल का बदला देगा), खुदा तो अपने बन्दों को देख रहा है। (४५) ★

३६ सूरः यासीन ४१

सूर: यासीन मक्की है और इस में तिरासी आयतें और पांच रुकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

यासीन, (१) क़सम है क़ुरआन की, जो हिक्मत से भरा हुआ है। (२) (ऐ मुहम्मद !)

---

१. यानी अल्लाह तआला के उस तरीक़े का, जो अगले लोगों के साथ बरता जाता था, इन्तिज़ार करते हैं और वह यह कि उन के कुफ़्र की वजह से उन पर अज़ाब नाज़िल किया जाता था, ये भी अज़ाब ही के इन्तिज़ार में हैं।

★रु. ५/१७ आ ८

अ़ला सिरातिम् - मुस्तक़ीम (४) तन्ज़ीलल् - अ़ज़ीज़िर् - रहीम (५) लितुन्ज़ि-र क़ौमम्मा उन्ज़ि-र आबाउहुम् फ़हुम् ग़ाफ़िलून (६) ल-क़द् हक़्क़ल्-क़ौलु अ़ला अक्सरिहिम् फ़हुम् ला युअ्मिनून (७) इन्ना ज-अ़ल्ना फ़ी अअ्-नाक़िहिम् अग़्लालन् फ़हि-य इलल्-अज़्क़ानि फ़हुम् मुक़्महून (८) व ज-अ़ल्ना मिम्बैनि ऐदीहिम् सद्दंव्-व मिन् ख़ल्फ़िहिम् सद्दन् फ़-अग़्शैनाहुम् फ़हुम् ला युब्सिरून (९) व सवाउन् अ़लैहिम् अ-अन्ज़र्तहुम् अम् लम् तुन्ज़िर्-हुम् ला युअ्मिनून (१०) इन्नमा तुन्ज़िरु मनित्त-ब-अ़ज़् - ज़िक्-र व ख़शि-यर्रह्मा-न बिल्ग़ैबि फ़बश्शिर्हु बिमग़्फ़ि - र-तिंव्-व अज्रिन् करीम (११) इन्ना नह्नु नुह्यिल्-मौता व नक्तुबु मा क़द्दमू व आसारहुम् व कुल्-ल शैइन् अह्सैनाहु फ़ी इमामिम्-मुबीन ★ (१२) वज़्रिब् लहुम् म-स - लन् अस् - हाबल् क़र्यति इज् जा-अ-हल् - मुर्सलून (१३) इज् अर्सल्ना इलैहिमुस्नैनि फ़ - कज़्ज़बू - हुमा फ़-अ़ज़्ज़ज़्ना बिसालिसिन् फ़-क़ालू इन्ना इलैकुम् मुर्सलून (१४) क़ालू मा अन्तुम् इल्ला ब-शरुम्-मिस्लुना व मा अन्ज़लर्-रह्मानु मिन् शैइन् इन् अन्तुम् इल्ला तक्ज़िबून (१५) क़ालू रब्बुना यअ् - लमु इन्ना इलैकुम् लमुर्सलून (१६) व मा अ़लैना इल्लल्-बलाग़ुल्-मुबीन (१७) क़ालू इन्ना त-तय्यर्ना बिकुम् ल-इल्लम् तन्तहू ल-नर्जुमन्नकुम् व ल-य-मस्सन्नकुम् मिन्ना अ़ज़ाबुन् अलीम (१८) क़ालू ताइरुकुम् म-अ़कुम् अइन् ज़ुक्किर्तुम् बल् अन्तुम् क़ौमुम्-मुस्रिफ़ून (१९) व जा-अ मिन् अक़्सल्-मदीनति रजुलुंय्यस्आ क़ा-ल या क़ौमित्तबिउ़ल्-मुर्सलीन (२०) - त्तबिउ़ मल्ला यस्अलुकुम् अज्रंव्-व हुम् मुह्तदून (२१)

صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ۝ تَنْزِيلَ الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ ۝ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّا أُنْذِرَ آبَاؤُهُمْ فَهُمْ غَافِلُونَ ۝ لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ عَلَىٰ أَكْثَرِهِمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ إِنَّا جَعَلْنَا فِي أَعْنَاقِهِمْ أَغْلَالًا فَهِيَ إِلَى الْأَذْقَانِ فَهُمْ مُّقْمَحُونَ ۝ وَجَعَلْنَا مِنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ سَدًّا وَمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا فَأَغْشَيْنَاهُمْ فَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ ۝ وَسَوَاءٌ عَلَيْهِمْ أَأَنْذَرْتَهُمْ أَمْ لَمْ تُنْذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ إِنَّمَا تُنْذِرُ مَنِ اتَّبَعَ الذِّكْرَ وَخَشِيَ الرَّحْمَٰنَ بِالْغَيْبِ فَبَشِّرْهُ بِمَغْفِرَةٍ وَأَجْرٍ كَرِيمٍ ۝ إِنَّا نَحْنُ نُحْيِي الْمَوْتَىٰ وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوا وَآثَارَهُمْ وَكُلَّ شَيْءٍ أَحْصَيْنَاهُ فِي إِمَامٍ مُّبِينٍ ۝ وَاضْرِبْ لَهُمْ مَثَلًا أَصْحَابَ الْقَرْيَةِ إِذْ جَاءَهَا الْمُرْسَلُونَ ۝ إِذْ أَرْسَلْنَا إِلَيْهِمُ اثْنَيْنِ فَكَذَّبُوهُمَا فَعَزَّزْنَا بِثَالِثٍ فَقَالُوا إِنَّا إِلَيْكُمْ مُّرْسَلُونَ ۝ قَالُوا مَا أَنْتُمْ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا وَمَا أَنْزَلَ الرَّحْمَٰنُ مِنْ شَيْءٍ إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا تَكْذِبُونَ ۝ قَالُوا رَبُّنَا يَعْلَمُ إِنَّا إِلَيْكُمْ لَمُرْسَلُونَ ۝ وَمَا عَلَيْنَا إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ۝ قَالُوا إِنَّا تَطَيَّرْنَا بِكُمْ لَئِنْ لَمْ تَنْتَهُوا لَنَرْجُمَنَّكُمْ وَلَيَمَسَّنَّكُمْ مِّنَّا عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ قَالُوا طَائِرُكُمْ مَّعَكُمْ أَئِنْ ذُكِّرْتُمْ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُونَ ۝ وَجَاءَ مِنْ أَقْصَا الْمَدِينَةِ رَجُلٌ يَسْعَىٰ قَالَ يَا قَوْمِ اتَّبِعُوا الْمُرْسَلِينَ ۝ اتَّبِعُوا مَنْ لَا يَسْأَلُكُمْ أَجْرًا وَهُمْ مُّهْتَدُونَ ۝

व. ग़ुफ़रान ★रु. १/१८ आ १२ व. लाज़िम

बेशक तुम पैग़म्बरों में से हो, (३) सीधे रास्ते पर। (४) (यह ख़ुदा-ए) ग़ालिब (और) मेहरबान ने नाज़िल किया है, (५) ताकि तुम उन लोगों को, जिन के बाप-दादा को तंबीह नहीं की गयी थी, तंबीह कर दो। वे ग़फ़लत में पड़े हुए हैं। (६) उन में से अक्सर पर (ख़ुदा की) बात पूरी हो चुकी है, सो वे ईमान नहीं लाएंगे। (७) हमने उन की गरदनों में तौक़ डाल रखे हैं और वे ठोड़ियों तक (फंसे हुए) हैं, तो उन के सर उलल रहे हैं। (८) और हमने उन के आगे भी दीवार बना दी और उन के पीछे भी, फिर उन पर पर्दा डाल दिया, तो ये देख नहीं सकते। (९) और तुम उन को नसीहत करो या न करो, उन के लिए बराबर है, वे ईमान नहीं लाने के। (१०) तुम तो सिर्फ़ उस शख़्स को नसीहत कर सकते हो, जो नसीहत की पैरवी करे और ख़ुदा से ग़ायबाना डरे सो उस को मग़फ़िरत और बड़े सवाब की ख़ुशख़बरी सुना दो। (११) बेशक हम मुर्दों को ज़िंदा करेंगे और जो कुछ वे आगे भेज चुके और (जो) उन के निशान पीछे रह गये, हम उन को लिख देते हैं और हर चीज़ को हमने रोशन किताब (यानी लौहे महफ़ूज़) में लिख रखा है। (१२)★

और उन से गांव वालों का क़िस्सा बयान करो, जब उन के पास पैग़म्बर आये।[1] (१३) (यानी) जब हमने उन की तरफ़ दो (पैग़म्बर) भेजे, तो उन्हों ने उन को झुठलाया, फिर हमने तीसरे से ताक़त पहुंचायी, तो उन्हों ने कहा कि हम तुम्हारी तरफ़ पैग़म्बर हो कर आए हैं।[2] (१४) वे बोले कि तुम (और कुछ) नहीं, मगर हमारी तरह के आदमी (हो) और ख़ुदा ने कोई चीज़ भी नाज़िल नहीं की, तुम सिर्फ़ झूठ बोलते हो। (१५) उन्हों ने कहा कि हमारा परवरदिगार जानता है कि हम तुम्हारी तरफ़ (पैग़ाम) दे कर भेजे गये हैं। (१६) और हमारे ज़िम्मे तो साफ़-साफ़ पहुंचा देना है और बस। (१७) वे बोले कि हम तुम को ना-मुबारक देखते हैं। अगर तुम मानोगे नहीं, तो हम तुम्हें संगसार कर देंगे और तुम को हम से दुख देने वाला अज़ाब पहुंचेगा। (१८) उन्होंने कहा कि तुम्हारी नहूसत तुम्हारे साथ है।[3] क्या इसलिए कि तुम को नसीहत की गयी, बल्कि ऐसे लोग हो जो हम से आगे निकल गये हो।[4] (१९) और शहर के परले किनारे से एक आदमी दौड़ता हुआ आया।[5] कहने लगा कि ऐ मेरी क़ौम! पैग़म्बरों के पीछे चलो, (२०) ऐसों के जो तुम से बदला नहीं मांगते और वे सीधे रास्ते पर हैं। (२१) और मुझे क्या है कि मैं उस की

---

१. मुल्क रूम में अन्ताकिया एक गांव था, यह वहां के लोगों का क़िस्सा है।

२. कहते हैं, ये लोग हज़रत ईसा अलै० के हवारियों में से थे, जिन को अल्लाह तआला ने हज़रत ईसा के बाद पैग़म्बरी अता फ़रमायी थी। पहले दो पैग़म्बरों का नाम यूहन्ना और शमऊन था और तीसरे का शुकूम।

३. यानी नहूसत जो तुम्हारे बुरे आमाल की वजह से है, तुम जहां भी होगे, वह तुम्हारे साथ होगी।

४. यानी जो नसीहत तुम को की गयी, क्या वह तुम्हारे लिए नहूसत की वजह साबित हुई? यह हरगिज़ नहीं है, बल्कि तुम्हारी शामते आमाल तुम्हारे लिए वबाल की वजह हो रही है।

५. यह शख़्स शहर के क़रीब एक ग़ार में इबादत करता था। जब उस ने पैग़म्बरों के आने का हाल सुना, तो शहर में दौड़ता हुआ आया और वहां के लोगों से कहने लगा कि पैग़म्बरों की इताअत करो और उनकी हिदायत पर चलो, उस का नाम हबीबा था।

व. ग़ुफ़रान ★रु. १/१८ आ १२ व. लाज़िम

तेईसवां पारः व मा लि-य

सूरतु यासीन आयात २२ से ८३

व मा लि-य ला अअ्-बुदुल्लज़ी फ़-त-रनी व इलैहि तुर्जअून (२२) अ अत्तख़िज़ु मिन् दूनिही आलि-ह-तन् इंय्युरिद्निर्-रह्मानु बिज़ुर्रिल्-ला तुग्नि अन्नी शफ़ाअतुहुम् शैअंव्-व ला युन्क़िज़ून ع (२३) इन्नी इज़ल्लफ़ी ज़लालिम्-मुबीन (२४) इन्नी आमन्तु बिरब्बिकुम् फ़स्मअून ط (२५) क़ीलद्ख़ुलिल्जन्न-त ط क़ा-ल यालै-त क़ौमी यअ्-लमून ز (२६) बिमा ग़-फ़-र ली रब्बी व ज-अ-लनी मिनल्-मुक्रमीन (२७) व मा अन्ज़ल्ना अला क़ौमिही मिम्बअ्-दिही मिन् जुन्दिम् - मिनस्समाइ व मा कुन्ना मुन्ज़िलीन (२८) इन् कानत् इल्ला सैह्-तंव्वाहि-द-तन् फ़-इज़ा हुम् ख़ामिदून (२९) या हस्-र-तन् अलल्-अिबादि ※ मा यअ्तीहिम् मिर्-रसूलिन् इल्ला कानू बिही यस्तह्ज़िऊन (३०) अ-लम् यरौ कम् अह्-लक्ना क़ब्-लहुम् मिनल्क़ुरूनि अन्नहुम् इलैहिम् ला यर्जिअून ط (३१) व इन् कुल्लुल्लम्मा जमीअुल्लदैना मुह्ज़रून ★ (३२) व आयतुल्-लहुमुल्-अर्ज़ुल्मैततु ع अह्यै-नाहा व अख़्-रज्ना मिन्हा हब्बन् फ़मिन्हु यअ्-कुलून (३३) व ज-अल्ना फ़ीहा जन्नातिम्मिन् नख़ीलिंव्-व अअ्-नाबिंव्-व फ़ज्जर्ना फ़ीहा मिनल्-अुयून ز (३४) लि-यअ्कुलू मिन् स-मरिही ز व मा अमि-लत्हु ऐदीहिम् ط अ-फ़-ला यश्कुरून (३५) सुब्हानल्लज़ी ख़-ल-क़ल्-अज़्वा-ज कुल्लहा मिम्मा तुम्बितुल्-अर्ज़ु व मिन् अन्फ़ुसिहिम् व मिम्मा ला यअ्-लमून ع (३६) व आयतुल् लहुमुल्लैलु ع नस्लख़ु मिन्हुन्नहा - र फ़-इज़ा हुम् मुज़्लिमून ز (३७) वश्शम्सु तज्री लिमुस्तक़र्रिल्-लहा ط ज़ालि-क तक़्दीरुल्-अज़ीज़िल्-अलीम ط (३८) वल्-क़-म-र क़द्दर्नाहु मनाज़ि-ल हत्ता आ-द कल्-अुर्जूनिल्-क़दीम (३९)

وَمَا لِيَ لَا أَعْبُدُ الَّذِي فَطَرَنِي وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝ ءَأَتَّخِذُ
مِن دُونِهِ آلِهَةً إِن يُرِدْنِ الرَّحْمَٰنُ بِضُرٍّ لَّا تُغْنِ عَنِّي شَفَاعَتُهُمْ
شَيْئًا وَلَا يُنقِذُونِ ۝ إِنِّي إِذًا لَّفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝ إِنِّي آمَنتُ
بِرَبِّكُمْ فَاسْمَعُونِ ۝ قِيلَ ادْخُلِ الْجَنَّةَ ۖ قَالَ يَا لَيْتَ قَوْمِي يَعْلَمُونَ ۝
بِمَا غَفَرَ لِي رَبِّي وَجَعَلَنِي مِنَ الْمُكْرَمِينَ ۝ وَمَا أَنزَلْنَا عَلَىٰ
قَوْمِهِ مِن بَعْدِهِ مِن جُندٍ مِّنَ السَّمَاءِ وَمَا كُنَّا مُنزِلِينَ ۝
إِن كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً فَإِذَا هُمْ خَامِدُونَ ۝ يَا حَسْرَةً عَلَى
الْعِبَادِ ۚ مَا يَأْتِيهِم مِّن رَّسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۝ أَلَمْ يَرَوْا
كَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُم مِّنَ الْقُرُونِ أَنَّهُمْ إِلَيْهِمْ لَا يَرْجِعُونَ ۝ وَإِن كُلٌّ
لَّمَّا جَمِيعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُونَ ۝ وَآيَةٌ لَّهُمُ الْأَرْضُ الْمَيْتَةُ أَحْيَيْنَاهَا وَ
أَخْرَجْنَا مِنْهَا حَبًّا فَمِنْهُ يَأْكُلُونَ ۝ وَجَعَلْنَا فِيهَا جَنَّاتٍ مِّن نَّخِيلٍ وَ
أَعْنَابٍ وَفَجَّرْنَا فِيهَا مِنَ الْعُيُونِ ۝ لِيَأْكُلُوا مِن ثَمَرِهِ وَمَا عَمِلَتْهُ
أَيْدِيهِمْ ۖ أَفَلَا يَشْكُرُونَ ۝ سُبْحَانَ الَّذِي خَلَقَ الْأَزْوَاجَ كُلَّهَا مِمَّا
تُنبِتُ الْأَرْضُ وَمِنْ أَنفُسِهِمْ وَمِمَّا لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَآيَةٌ لَّهُمُ اللَّيْلُ
نَسْلَخُ مِنْهُ النَّهَارَ فَإِذَا هُم مُّظْلِمُونَ ۝ وَالشَّمْسُ تَجْرِي لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا
ذَٰلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ۝ وَالْقَمَرَ قَدَّرْنَاهُ مَنَازِلَ حَتَّىٰ عَادَ
كَالْعُرْجُونِ الْقَدِيمِ ۝ لَا الشَّمْسُ يَنبَغِي لَهَا أَن تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا

※ व. ग़ुफ़रान ★ रु. २/१ आ २०

इबादत न करूं, जिस ने मुझे पैदा किया और उसी की तरफ़ तुम को लौट कर जाना है। (२२) क्या मैं उन को छोड़ कर औरों को माबूद बनाऊं? अगर ख़ुदा मेरे हक़ में नुक़सान करना चाहे, तो उन की सिफ़ारिश मुझे कुछ भी फ़ायदा न दे सके और न वे मुझे छुड़ा ही सकें। (२३) तब तो मैं खुली गुमराही में पड़ गया। (२४) मैं तुम्हारे परवरदिगार पर ईमान लाया हूं, सो मेरी बात सुन रखो। (२५) हुक्म हुआ कि बहिश्त में दाख़िल हो जा। बोला, काश! मेरी क़ौम को ख़बर हो, (२६) कि ख़ुदा ने मुझे बख़्श दिया और इज़्ज़त वालों में किया। (२७) और हमने उस के बाद उस की क़ौम पर कोई लश्कर नहीं उतारा और न हम उतारने वाले थे ही। (२८) वह तो सिर्फ़ एक चिंघाड़ की (आग थी,) सो वे (इस से) यकायक बुझ कर रह गये। (२९) बन्दों पर अफ़सोस ※ है कि उन के पास कोई पैग़म्बर नहीं आता, मगर उस का मज़ाक़ उड़ाते हैं। (३०) क्या उन्हों ने नहीं देखा कि हमने उन से बहुत से लोगों को हलाक कर दिया था। अब वे उन की तरफ़ लौट कर नहीं आएंगे। (३१) और सब के सब हमारे सामने हाज़िर किए जाएंगे। (३२)★

और एक निशानी उन के लिए मुर्दा ज़मीन है कि हम ने उस को ज़िंदा किया और उसमें से अनाज उगाया, फिर ये उस में से खाते हैं। (३३) और उस में खजूरों और अंगूरों के बाग़ पैदा किए और उस में चश्मे जारी किए, (३४) ताकि ये उन के फल खाएं और उन के हाथों ने तो उन को नहीं बनाया, तो फिर क्या ये शुक्र नहीं करते? (३५) वह ख़ुदा पाक है, जिस ने ज़मीन के, पेड़-पौधों के और ख़ुद उन के और जिन चीज़ों की उन को ख़बर नहीं, सब के जोड़े बनाए। (३६) और एक निशानी उन के लिए रात है कि उस में से हम दिन को खींच लेते हैं, तो उस वक़्त उन पर अंधेरा छा जाता है। (३७) और सूरज अपने मुक़र्रर रास्ते पर चलता रहता है। यह (ख़ुदा-ए-) ग़ालिब (और) दाना का (मुक़र्रर किया हुआ) अन्दाज़ा है। (३८) और चांद की भी हम ने मंज़िलें मुक़र्रर कर दीं, यहां तक कि (घटते-घटते) खजूर की पुरानी शाख़ की तरह हो जाता है। (३९)

※ व. ग़ुफ़रान ★रु. २/१ आ २०

लश्शम्सु यम्बग़ी लहा अन् तुद्‌रिकल्-क़-म-र व लल्लैलु साबिक़ुन्नहारि॰ व कुल्लुन् फ़ी फ़-लकिंय्यस्बहून (४०) व आयतुल्लहुम् अन्ना ह-मल्ना ज़ुर्रिय्य-त-हुम् फ़िल्-फ़ुल्किल्-मश्हून ॥ (४१) व ख़-लक़्ना लहुम् मिम्-मिस्लिही मा यर्कबून (४२) व इन्-नशअ् नुग़्रिक़्-हुम् फ़ला सरी-ख़ लहुम् व ला हुम् युन्क़ज़ून ॥ (४३) इल्ला रह्-म-तम्-मिन्ना व मताअन् इला ही-न् (४४) व इज़ा क़ी-ल लहुमुत्तक़ू मा बै-न ऐदीकुम् व मा ख़ल्फ़कुम् ल-अल्लकुम् तुर्हमून (४५) व मा तअ्तीहिम् मिन् आयतिम्मिन् आयाति रब्बिहिम् इल्ला कानू अन्हा मुअ्-रिज़ीन (४६) व इज़ा क़ी-ल लहुम् अन्फ़िक़ू मिम्मा र-ज़-क़कुमुल्लाहु ॥ क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू लिल्लज़ी-न आमनू अ-नुत्‌इमु मल्लौ यशाउल्लाहु अत्-अ-महू ॥ इन् अन्तुम् इल्ला फ़ी ज़लालिम्-मुबीन (४७) व यक़ूलू-न मता हाज़ल्‌वअ्-दु इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (४८) मा यन्ज़ुरू-न इल्ला सैहतंव्वाहि-द-तन् तअ्-ख़ुज़ुहुम् व हुम् यख़िस्सिमून

الليل سابق النهار وكل في فلك يسبحون ۝ وآية لهم أنا حملنا
ذريتهم في الفلك المشحون ۝ وخلقنا لهم من مثله ما
يركبون ۝ وإن نشأ نغرقهم فلا صريخ لهم ولا هم ينقذون ۝ إلا
رحمة منا ومتاعا إلى حين ۝ وإذا قيل لهم اتقوا ما بين
أيديكم وما خلفكم لعلكم ترحمون ۝ وما تأتيهم من آية
من آيات ربهم إلا كانوا عنها معرضين ۝ وإذا قيل لهم أنفقوا
مما رزقكم الله قال الذين كفروا للذين آمنوا أنطعم من لو يشاء
الله أطعمه إن أنتم إلا في ضلال مبين ۝ ويقولون متى هذا
الوعد إن كنتم صادقين ۝ ما ينظرون إلا صيحة واحدة
تأخذهم وهم يخصمون ۝ فلا يستطيعون توصية ولا إلى
أهلهم يرجعون ۝ ونفخ في الصور فإذا هم من الأجداث إلى ربهم
ينسلون ۝ قالوا يا ويلنا من بعثنا من مرقدنا هذا ما وعد
الرحمن وصدق المرسلون ۝ إن كانت إلا صيحة واحدة فإذا هم
جميع لدينا محضرون ۝ فاليوم لا تظلم نفس شيئا ولا تجزون
إلا ما كنتم تعملون ۝ إن أصحاب الجنة اليوم في شغل فاكهون ۝
هم وأزواجهم في ظلال على الأرائك متكئون ۝ لهم فيها فاكهة
ولهم ما يدعون ۝ سلام قولا من رب رحيم ۝ وامتازوا

(४९) फ़ला यस्ततीऊ-न तौसि-य-तंव-व ला इला अह्‌लिहिम् यर्जिऊन ★ (५०) व नुफ़ि-ख़ फ़िस्सूरि फ़-इज़ा हुम् मिनल्-अज्दासि इला रब्बिहिम् यन्सिलून (५१) क़ालू यावैलना मम्ब-अ-सना मिम्-मर्क़दिना ▨ हाज़ा मा व-अ-दर्रह्‌मानु व स-द-क़ल्-मुर्सलून (५२) इन् कानत् इल्ला सैहतंव्वाहि-द-तन् फ़इज़ा हुम् जमीउल्लदैना मुह्ज़रून (५३) फ़ल्यौ-म ला तुज़्लमु नफ़्सुन् शैअंव्-व ला तुज्ज़ौ-न इल्ला मा कुन्तुम् तअ्-मलून (५४) इन्-न अस्हाबल्-जन्नतिल्-यौ-म फ़ी शुग़ुलिन् फ़ाकिहून (५५) हुम् व अज़्वाजुहुम् फ़ी ज़िलालिन् अ-लल्-अराइकि मुत्तकिऊन (५६) लहुम् फ़ीहा फ़ाकिहतुंव्-व लहुम् मा यद्दऊन (५७) सलामुन् क़ौलम्-मिर्रब्बिर्-रहीम (५८) वम्ताज़ुल् यौ-म अय्युहल्-मुज्रिमून (५९)

★रु. ३/२ आ १८ ▨ व. लाज़िम, व. ग़ुफ़रान, व. मंज़िल

न तो सूरज ही से हो सकता है कि चांद को जा पकड़े और न रात ही दिन से पहले आ सकती है और सब अपने दायरे में तैर रहे हैं। (४०) और एक निशानी उन के लिए यह है कि हम ने उन की औलाद को भरी हुई कश्ती में सवार किया। (४१) और उन के लिए वैसी ही और चीजें पैदा कीं, जिन पर वे सवार होते हैं। (४२) और अगर हम चाहें, तो उन को डुबा दें, फिर न तो उन की कोई फ़रियाद सुनने वाला हो और न उन को रिहाई मिले, (४३) मगर यह हमारी रहमत और एक मुद्दत तक के फ़ायदे हैं। (४४) और जब उन से कहा जाता है कि जो तुम्हारे आगे और जो तुम्हारे पीछे है, उस से डरो ताकि तुम पर रहम किया जाए। (४५) और उन के पास उन के परवरदिगार की तरफ़ से कोई निशानी नहीं आयी, मगर उन से मुंह फेर लेते हैं। (४६) और जब उन से कहा जाता है कि जो रोज़ी ख़ुदा ने तुम को दी है, उस में से ख़र्च करो, तो काफ़िर मोमिनों से कहते हैं कि भला हम उन लोगों को खाना खिलाएं, जिन को अगर ख़ुदा चाहता, तो ख़ुद खिला देता, तुम तो खुली ग़लती में हो। (४७) और कहते हैं कि अगर तुम सच कहते हो, तो यह वायदा कब (पूरा) होगा? (४८) ये तो चिंघाड़ के इन्तिज़ार में हैं, जो उन को इस हाल में कि आपस में झगड़ रहे होंगे, आ पकड़ेगी। (४९) फिर न तो वसीयत कर सकेंगे और न अपने घर वालों में वापस जा सकेंगे। (५०)★

और (जिस वक़्त) सूर[१] फूंका जाएगा, यह क़ब्रों से (निकल कर) अपने परवरदिगार की तरफ़ दौड़ पड़ेंगे। (५१) कहेंगे, (ऐ हे!) हमें हमारी ख़्वाबगाहों से किस ने (जगा) उठाया? यह वही तो है जिस का ख़ुदा ने वायदा किया था और पैग़म्बरों ने सच कहा था। (५२) सिर्फ़ एक ज़ोर की आवाज़ का होना होगा कि सब के सब हमारे सामने आ हाज़िर होंगे। (५३) उस दिन किसी शख़्स पर कुछ भी ज़ुल्म नहीं किया जाएगा और तुम को बदला वैसा ही मिलेगा, जैसे तुम काम करते थे। (५४) जन्नत वाले उस दिन ऐश व निशात के मश्ग़ले में होंगे, (५५) वे भी और उन की बीवियां भी, सायों में तख़्तों पर तकिए लगाए बैठे होंगे। (५६) वहां उन के लिए मेवे और जो चाहेंगे, (मौजूद होगा)। (५७) परवरदिगार मेहरबान की तरफ़ से सलाम (कहा जाएगा)। (५८)

---

१. सूर दो बार फूंका जाएगा। पहली बार के बाद सब लोग बेहोश हो जाएंगे और उन पर नींद की हालत छा जाएगी। दूसरी बार के बाद सब ज़िंदा हो जाएंगे। चूंकि पहले सूर के बाद उन की हालत यह होगी कि गोया सो रहे हैं, इस लिए दूसरे सूर के बाद यह ख़्याल करेंगे कि नींद से जागे हैं, तब कहेंगे कि ऐ हे! हम को किस ने जगा दिया।

★रु. ३/२ आ १८ व. लाज़िम व. ग़ुफ़रान व. मंज़िल

अ-लम् अअ्-हद् इलैकुम् या बनी आद-म अल्ला तअ्-बुदुश्शैता-न॰ इन्नहू लकुम् अदुव्वुम् मुबीनुंव-ल (६०)- व अनिअ्-बुदूनी ※ हाज़ा सिरातुम्-मुस्तक़ीम (६१) व ल-क़द् अज़ल्-ल मिन्कुम् जिबिल्लन् कसीरन्ط अ-फ़-लम् तकूनू तअ्-क़िलून (६२) हाज़िही जहन्नमुल्लती कुन्तुम् तूअ़दून (६३) इस्लौहल्-यौ-म बिमा कुन्तुम् तक्फ़ुरून (६४) अल्यौ-म नख़्तिमु अ़ला अफ़्वाहिहिम् व तुकल्लिमुना ऐदीहिम् व तश्हदु अर्जुलुहुम् बिमा कानू यक्सिबून (६५) व लौ नशाउ ल-त-मस्ना अ़ला अअ्-युनिहिम् फ़स्त-बक़ुस्-सिरा-त फ़-अन्ना युब्सिरून (६६) व लौ नशाउ ल-म-सख़्नाहुम् अ़ला मकानतिहिम् फ़मस्तताअू मुज़िय्यंव्-व ला यर्जिअून ★ (६७) व मन् नुअ़म्मिर्हु नुनक्किस्हु फ़िल्ख़ल्किط अ-फ़ला यअ्-क़िलून (६८) व मा अ़ल्लम्ना-हुश्-शिअ्-र व मा यम्बग़ी लहूط इन् हु-व इल्ला ज़िक्रुंव्-व क़ुर्आनुम्-मुबीनुल-ल (६९) लियुन्ज़ि-र मन् का-न हय्यंव्-व यहिक़्क़ल्-क़ौलु अ़लल्-काफ़िरीन (७०) अ-व लम् यरौ ※ अन्ना ख़-लक़्ना लहुम् मिम्मा अ़मिलत् ऐदीना अन्आमन् फ़हुम् लहा मालिकून (७१) व ज़ल्लल्नाहा लहुम् फ़मिन्हा रकूबुहुम् व मिन्हा यअ्कुलून (७२) व लहुम् फ़ीहा मनाफ़िअ़ु व मशारिबुط अ-फ़ला यश्कुरून (७३) वत्तख़ज़ू मिन् दूनिल्लाहि आलि-ह-तल्-लअ़ल्लहुम् युन्सरूनط (७४) ला यस्ततीअू-न नस्रहुम्ل व हुम् लहुम् जुन्दुम्-मुह्ज़रून (७५) फ़ला यह्ज़ुन्-क क़ौलु-हुम् ※ इन्ना नअ़्लमु मा युसिर्रून व मा युअ़्-लिनून (७६) अ-व लम् यरल्-इन्सानु अन्ना ख़-लक़्नाहु मिन् नुत्फ़तिन् फ़इज़ा हु-व ख़सीमुम्-मुबीन (७७) व ज़-र-ब लना म-स-लंव्-व नसि-य ख़ल्क़हूط क़ा-ल मंय्युह्यिल्-अिज़ा-म व हि-य रमीम (७८)

الْيَوْمَ أَيُّهَا الْمُجْرِمُونَ ﴿٥٩﴾ أَلَمْ أَعْهَدْ إِلَيْكُمْ يَا بَنِي آدَمَ أَنْ لَا تَعْبُدُوا
الشَّيْطَانَ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُبِينٌ ﴿٦٠﴾ وَأَنِ اعْبُدُونِي هَذَا صِرَاطٌ
مُسْتَقِيمٌ ﴿٦١﴾ وَلَقَدْ أَضَلَّ مِنْكُمْ جِبِلًّا كَثِيرًا أَفَلَمْ تَكُونُوا تَعْقِلُونَ ﴿٦٢﴾
هَذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي كُنْتُمْ تُوعَدُونَ ﴿٦٣﴾ اصْلَوْهَا الْيَوْمَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿٦٤﴾
الْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلَى أَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَا أَيْدِيهِمْ وَتَشْهَدُ أَرْجُلُهُمْ بِمَا
كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٦٥﴾ وَلَوْ نَشَاءُ لَطَمَسْنَا عَلَى أَعْيُنِهِمْ فَاسْتَبَقُوا الصِّرَاطَ
فَأَنَّى يُبْصِرُونَ ﴿٦٦﴾ وَلَوْ نَشَاءُ لَمَسَخْنَاهُمْ عَلَى مَكَانَتِهِمْ فَمَا اسْتَطَاعُوا
مُضِيًّا وَلَا يَرْجِعُونَ ﴿٦٧﴾ وَمَنْ نُعَمِّرْهُ نُنَكِّسْهُ فِي الْخَلْقِ أَفَلَا
يَعْقِلُونَ ﴿٦٨﴾ وَمَا عَلَّمْنَاهُ الشِّعْرَ وَمَا يَنْبَغِي لَهُ إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ وَقُرْآنٌ
مُبِينٌ ﴿٦٩﴾ لِيُنْذِرَ مَنْ كَانَ حَيًّا وَيَحِقَّ الْقَوْلُ عَلَى الْكَافِرِينَ ﴿٧٠﴾ أَوَ
لَمْ يَرَوْا أَنَّا خَلَقْنَا لَهُمْ مِمَّا عَمِلَتْ أَيْدِينَا أَنْعَامًا فَهُمْ لَهَا مَالِكُونَ ﴿٧١﴾
وَذَلَّلْنَاهَا لَهُمْ فَمِنْهَا رَكُوبُهُمْ وَمِنْهَا يَأْكُلُونَ ﴿٧٢﴾ وَلَهُمْ فِيهَا مَنَافِعُ
وَمَشَارِبُ أَفَلَا يَشْكُرُونَ ﴿٧٣﴾ وَاتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ آلِهَةً لَعَلَّهُمْ
يُنْصَرُونَ ﴿٧٤﴾ لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَهُمْ وَهُمْ لَهُمْ جُنْدٌ مُحْضَرُونَ ﴿٧٥﴾
فَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ إِنَّا نَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ﴿٧٦﴾ أَوَلَمْ يَرَ
الْإِنْسَانُ أَنَّا خَلَقْنَاهُ مِنْ نُطْفَةٍ فَإِذَا هُوَ خَصِيمٌ مُبِينٌ ﴿٧٧﴾ وَضَرَبَ
لَنَا مَثَلًا وَنَسِيَ خَلْقَهُ قَالَ مَنْ يُحْيِي الْعِظَامَ وَهِيَ رَمِيمٌ ﴿٧٨﴾ قُلْ

※ व. ग़ुफ़रान ★ रु. ४/३ आ १७ ※ व. लाज़िम

और गुनाहगारो ! तुम आज अलग हो जाओ। (५९) ऐ आदम की औलाद ! हम ने तुम से कह नहीं दिया था कि शैतान को न पूजना, वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (६०) और यह कि मेरी ही इबादत करना, यही सीधा रास्ता है। (६१) और उस ने तुम में से बहुत-सी खल्क़त को गुमराह कर दिया था, तो क्या तुम समझते नहीं थे ? (६२) यही वह जहन्नम है, जिस की तुम्हें खबर दी जाती थी। (६३) (सो,) जो तुम कुफ़्र करते रहे, उस के बदले आज इस में दाख़िल हो जाओ। (६४) आज हम उन के मुंहों पर मुहर लगा देंगे और जो कुछ ये करते रहे थे, उन के हाथ हम से बयान कर देंगे और उन के पांव (उस की) गवाही देंगे। (६५) और अगर हम चाहें तो उन की आंखों को मिटा (कर अंधा कर) दें, फिर ये रास्ते को दौड़ें, तो कहां देख सकेंगे ? (६६) और हम चाहें तो उन की जगह उन की शक्लें बदल दें, फिर वहां से न आगे जा सकें, न पीछे लौट सकें। (६७)★

और जिस को हम बड़ी उम्र देते हैं, तो उसे खल्क़त में औंधा कर देते हैं,[1] तो क्या ये समझते नहीं ?[2] (६८) और हम ने उन (पैग़म्बर) को शेर कहना नहीं सिखाया और न वह उन को मुनासिब है। यह तो सिर्फ़ नसीहत और साफ़-साफ़ क़ुरआन (हिक्मत से भरा हुआ) है, (६९) ताकि उस शख्स को जो ज़िंदा हो, हिदायत का रास्ता दिखाए और काफ़िरों पर बात पूरी हो जाए। (७०) क्या उन्होंने नहीं देखा कि जो चीज़ें हमने अपने हाथों से बनायीं हम ने उन में से उन के लिए चारपाए पैदा कर दिए और ये उन के मालिक हैं। (७१) और उन को उन के क़ाबू में कर दिया, तो कोई तो उन में से उन की सवारी है और किसी को ये खाते हैं। (७२) और उन में उन के लिए (और) फ़ायदे और पीने की चीज़ें हैं, तो क्या ये शुक्र नहीं करते ? (७३) और उन्हों ने ख़ुदा के सिवा (और) माबूद बना लिए हैं कि शायद (उन से) उन को मदद पहुंचे। (७४) (मगर) वे उन की मदद की (हरगिज़) ताक़त नहीं रखते और वे उन की फ़ौज हो कर हाज़िर किए जाएंगे।[3] (७५) तो उन की बातें तुम्हें ग़मनाक न कर दें ▩ यह जो कुछ छिपाते हैं और जो कुछ ज़ाहिर करते हैं, हमें सब मालूम हैं। (७६) क्या इंसान ने नहीं देखा कि हम ने उस को नुत्फ़े से पैदा किया, फिर वह तड़ाक-पड़ाक झगड़ने लगा। (७७) और हमारे बारे में मिसालें बयान करने लगा और अपनी पैदाइश को भूल गया, कहने लगा कि (जब) हड्डियां सड़-गल जाएंगी, तो इन को कौन ज़िंदा करेगा ? (७८) कह दो कि उन को वह ज़िंदा

---

१. यानी बच्चे से जवान करते हैं, फिर जवान से बूढ़ा कर देते हैं।

२. जो ख़ुदा इन्सान की बनावट को इस तरह बदल देता है, वह इस पर भी क़ुदरत रखता है कि मुर्दों को जिला उठाए।

३. यानी क़ियामत के दिन, जहां से बुतपरस्त ख़ुदा के सामने हाज़िर किए जाएंगे, वहां यह बुत भी, जो बुतपरस्तों का लश्कर होगा, जवाबदेही के लिए हाज़िर किया जाएगा। कुछ ने यही मतलब निकाले हैं कि वह यानी बुत ख़ुद अपनी मदद तो कर सकते ही नहीं और बुतपरस्त उन की हिफ़ाज़त के लिए एक लश्कर बन कर उन के सामने मौजूद रहते हैं। ऐसे बे-अख़्तियार और बे-बस उन की क्या मदद करेंगे ?

क़ुल् युह्‌यीहल्लज़ी अन्शा-अहा अव्व-ल मर्रतिन् व हु-व बिकुल्लि ख़ल्क़िन् अ़लीमु-नि- (७९) ल्लज़ी ज-अ़-ल लकुम् मिनश्-श-जरिल्-अख़्-ज़रि नारन् फ़इज़ा अन्तुम् मिन्हु तूक़िदून (८०) अ-व लैसल्लज़ी ख़-ल-क़स्समावाति वल्अर्-ज़ बिक़ादिरिन् अ़ला अंय्यख़्लु-क़ मिस्लहुम् ▩ बला व हुवल्ख़ल्लाक़ुल्-अ़लीम (८१) इन्नमा अम्रुहू इज़ा अरा-द शैअन् अंय्यक़ू-ल लहू कुन् फ़-यकून (८२) फ़-सुब्हानल्लज़ी बियदिही म-लकूतु कुल्लि शैइंव्-व इलैहि तुर्जअ़ून ★ (८३)

३७ सूरतुस्साफ़्फ़ाति ५६

(मक्की) इस सूरः में अरबी के ३९५१ अक्षर, ८७३ शब्द, १८२ आयतें और ५ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्‌मानिर्रहीम •

वस्साफ़्फ़ाति सफ़्फ़न् (१) फ़ज़्ज़ाजिराति ज़ज्रन् (२) फ़त्तालियाति ज़िक्रन् (३) इन्-न इलाहकुम् ल-वाहिद (४) रब्बुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बैनहुमा व रब्बुल्-मशारिक़ (५) इन्ना ज़य्यन्नस्समा-अद्दुन्या बिज़ीनतिनिल्-कवाकिब (६) व हिफ़्ज़म्-मिन् कुल्लि शैतानिम्-मारिद (७) ला यस्सम्मअ़ू-न इलल्-म-ल-इल्-अअ़्-ला व युक़्ज़फ़ू-न मिन् कुल्लि जानिब (८) दुहूरंव्-व लहुम् अ़ज़ाबुंव्वासिब (९) इल्ला मन् ख़तिफ़ल्-ख़त्फ़-त फ़-अत्ब-अ़हू शिहाबुन् साक़िब (१०) फ़स्तफ़्तिहिम् अहुम् अशद्दु ख़ल्क़न् अम्मन् ख़-लक़्ना इन्ना ख़-लक़्नाहुम् मिन् तीनिल्-लाज़िब (११) बल् अ़जिब्-त व यस्ख़रून (१२) व इज़ा ज़ुक्किरू ला यज़्कुरून (१३) व इज़ा रऔ आयतंय्यस्तस्ख़िरून (१४) व क़ालू इन् हाज़ा इल्ला सिह्‌रुम्-मुबीन (१५) अ-इज़ा मित्ना व कुन्ना तुराबंव्-व अ़िज़ामन् अ इन्ना ल-मब्ऊसून (१६) अ-व आबाउनल्-अव्वलून (१७) क़ुल् न-अ़म् व अन्तुम् दाख़िरून (१८)

يحييها الذي أنشأها أول مرة وهو بكل خلق عليم ۝ الذي
جعل لكم من الشجر الأخضر نارا فإذا أنتم منه توقدون ۝
أوليس الذي خلق السماوات والأرض بقادر على أن يخلق مثلهم
بلى وهو الخلاق العليم ۝ إنما أمره إذا أراد شيئا أن يقول له كن
فيكون ۝ فسبحان الذي بيده ملكوت كل شيء وإليه ترجعون ۝
سورة الصافات مكية وهي مائة واثنتان وثمانون آية وخمس ركوعات
بسم الله الرحمن الرحيم
والصافات صفا ۝ فالزاجرات زجرا ۝ فالتاليات ذكرا ۝ إن إلهكم
لواحد ۝ رب السماوات والأرض وما بينهما ورب المشارق ۝
إنا زينا السماء الدنيا بزينة الكواكب ۝ وحفظا من كل شيطان
مارد ۝ لا يسمعون إلى الملإ الأعلى ويقذفون من كل جانب ۝
دحورا ولهم عذاب واصب ۝ إلا من خطف الخطفة فأتبعه
شهاب ثاقب ۝ فاستفتهم أهم أشد خلقا أم من خلقنا إنا خلقناهم
من طين لازب ۝ بل عجبت ويسخرون ۝ وإذا ذكروا لا
يذكرون ۝ وإذا رأوا آية يستسخرون ۝ وقالوا إن هذا إلا
سحر مبين ۝ أإذا متنا وكنا ترابا وعظاما أإنا لمبعوثون ۝
أوآباؤنا الأولون ۝ قل نعم وأنتم داخرون ۝ فإنما هي

▩ व. ग़ुफ़रान ★रु. ५/४ आ १६

करेगा, जिस ने उन को पहली बार पैदा किया था और वह सब क़िस्म का पैदा करना जानता है। (७९) (वही) जिस ने तुम्हारे लिए हरे पेड़ से आग पैदा की, फिर तुम उस (की टहनियों को रगड़ कर उन) से आग निकालते हो।[1] (८०) भला जिस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया, क्या वह इस पर क़ुदरत नहीं रखता कि (उन को फिर) वैसे ही पैदा कर दें ※ क्यों नहीं, और वह तो बड़ा पैदा करने वाला (और) इल्म वाला है। (८१) उस की शान यह है कि जब वह किसी चीज़ का इरादा करता है, तो उस से फ़रमा देता है कि हो जा, तो वह हो जाती है। (८२) वह (ज़ात) पाक है, जिस के हाथ में हर चीज़ की बादशाही है और उस की तरफ़ तुम को लौट कर जाना है। (८३)★

३७ सूरः साफ़्फ़ात ५६

सूरः साफ़्फ़ात मक्की है, इस में एक सौ बयासी आयतें और पांच रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

क़सम सफ़ बांधने वालों की, परा जमा कर,[2] (१) फिर डांटने वालों की, झिड़क कर,[3] (२) फिर ज़िक्र (यानी क़ुरआन) पढ़ने वालों की,[4] (ग़ौर कर-कर)[5], (३) कि तुम्हारा माबूद एक ही है, (४) जो आसमानों और ज़मीन और जो चीज़ें इन में हैं, सब का मालिक है और सूरज के निकलने की जगहों का भी मालिक है। (५) बेशक हम ही ने दुनिया के आसमान को सितारों की ज़ीनत से सजाया। (६) और हर शैतान सरकश से उस की हिफ़ाज़त की, (७) कि ऊपर की मज्लिस की तरफ़ कान न लगा सकें और हर तरफ़ से (उन पर अंगारे) फेंके जाते हैं। (८) (यानी वहां से) निकाल देने को और उन के लिए हमेशा का अज़ाब है। (९) हां, जो कोई (फ़रिश्तों की किसी बात को) चोरी से झपट लेना चाहता है, तो जलता हुआ अंगारा उस के पीछे लगता है। (१०) तो उन से पूछो कि उन का बनाना मुश्किल है या जितनी ख़ल्क़त हमने बनायी है उन का? उन्हें हमने चिपकते गारे से बनाया है। (११) हां, तो तुम ताज्जुब करते हो और ये मज़ाक़ उड़ाते हैं। (१२) और जब उन को नसीहत दी जाती है, तो नसीहत क़ुबूल नहीं करते। (१३) और जब कोई निशानी देखते हैं, तो ठट्ठे करते हैं। (१४) और कहते हैं कि यह तो खुला जादू है, (१५) भला जब हम मर गये और मिट्टी और हड्डियां हो गये, तो क्या फिर उठाए जाएंगे? (१६) और क्या हमारे बाप-दादा भी (जो) पहले (हो गुज़रे हैं)? (१७)

---

१. कहते हैं कि बांस या कुछ और पेड़ ऐसे हैं कि रहते तो हरे हैं, लेकिन अगर उन की शाख़ों को रगड़ा जाए, तो उन में से आग निकलती है और यह ख़ुदा की बहुत बड़ी क़ुदरत की दलील है।

२. सफ़ बांधने वालों से मुराद या तो मुजाहिद हैं, जो लड़ाई के बाद में सफ़ बांध कर खड़े होते हैं या नमाज़ी या फ़रिश्ते कि वे भी सफ़ में मिल कर और पैर जमा कर खड़े होते हैं।

३. डांटने वालों से या तो ग़ाज़ी मुराद हैं, जो अपने घोड़ों को दूर से डांट कर हमला करते हैं या रब्बानी इल्म रखने वाले मुराद हैं, जो लोगों को गुनाह करने पर गुनाह से रोकने के लिए डांटते हैं।

४. फ़रिश्ते खड़े होते हैं क़तार हो कर अल्लाह का हुक्म सुनने को, फिर झिड़कते हैं शैतानों को, जो सुनने को जा लगते हैं, फिर जब उतर चुका, उस को जा लगते हैं, फिर जब उतर चुका, उस को पढ़ते हैं एक दूसरे को बताने को।

५. क़ुरआन पढ़ने वालों से या तो वे लोग मुराद हैं, जो लड़ाई से फ़ारिग़ हो कर क़ुरआन की तिलावत में लग जाते

(शेष पृष्ठ ७११ पर)

※ व. ग़ुफ़रान ★रु. ५/४ आ १६

फ़ इन्नमा हि-य ज़जरतुंव्वाहि-द-तुन् फ़इज़ा हुम् यन्ज़ुरून (१९) व क़ालू या वैलना हाज़ा यौमुद्दीन (२०) हाज़ा यौमुल्-फ़स्लिल्लज़ी कुन्तुम् बिही तुकज़्ज़िबून★ (२१) उह्शुरुल्लज़ी-न ज़-लमू व अज़्वाजहुम् व मा कानू यअ्-बुदून (२२) मिन् दूनिल्-लाहि फ़ह्दूहुम् इला सिरातिल् जहीम ● (२३) व क़िफ़ूहुम् इन्नहुम् मस्ऊलून (२४) मा लकुम् ला तनासरून (२५) बल् हुमुल्यौ-म मुस्तस्लिमून (२६) व अक़्ब-ल बअ्-ज़ुहुम् अला बअ्-ज़िंय्य-त-सा-अलून (२७) क़ालू इन्नकुम् कुन्तुम् तअ्-तूनना अनिल्यमीन (२८) क़ालू बल् लम् तकूनू मुअ्मिनीन (२९) व मा का-न लना अलैकुम् मिन् सुल्तानिन् बल् कुन्तुम् क़ौमन् ताग़ीन (३०) फ़-हक़्-क़ अलैना क़ौलु रब्बिना इन्ना ल-ज़ाइ-क़ून (३१) फ़-अग़्वैनाकुम् इन्ना कुन्ना ग़ावीन (३२) फ़-इन्नहुम् यौमइज़िन् फ़िल्अज़ाबि मुश्तरिकून (३३) इन्ना कज़ालि-क नफ़्अलु बिल्-मुज्रिमीन (३४) इन्नहुम् कानू इज़ा क़ी-ल लहुम् ला इला-ह इल्लल्लाहु यस्तक्बिरून (३५) व यक़ूलू-न अ-इन्ना ल-तारिकू आलिहतिना लिशाअिरिम्-मज्नून (३६) बल् जा-अ बिल्हक़्क़ि व सद्-द-क़ल्-मुर्सलीन (३७) इन्नकुम् लज़ाइक़ुल्-अज़ाबिल्-अलीम (३८) व मा तुज्ज़ौ-न इल्ला मा कुन्तुम् तअ्-मलून (३९) इल्ला अिबादल्लाहिल्-मुख़्-लसीन (४०) उलाइ-क लहुम् रिज़्क़ुम्-मअ्-लूम (४१) फ़वाकिहु व हुम् मुक्रमून (४२) फ़ी जन्नातिन्नअीम् (४३) अला सुरुरिम्-मु-त-क़ाबिलीन (४४) युताफ़ु अलैहिम् बिकअ्-सिम्-मिम्मअीनिम्- (४५) बैज़ा-अ लज़्ज़तिल्-लिश्शारिबीन (४६) ला फ़ीहा ग़ौलुंव्-व ला हुम् अन्हा युन्ज़फ़ून (४७) व अिन्दहुम् क़ासिरातुत्तर्फ़ि अीनुन् (४८)

زَجْرَةٌ وَّاحِدَةٌ فَاِذَا هُمْ يَنْظُرُوْنَ ۝ وَقَالُوْا يٰوَيْلَنَا هٰذَا يَوْمُ
الدِّيْنِ ۝ هٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ۝ اُحْشُرُوا
الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا وَاَزْوَاجَهُمْ وَمَا كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ ۝ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ
فَاهْدُوْهُمْ اِلٰى صِرَاطِ الْجَحِيْمِ ۝ وَقِفُوْهُمْ اِنَّهُمْ مَّسْـُٔوْلُوْنَ ۝ مَا
لَكُمْ لَا تَنَاصَرُوْنَ ۝ بَلْ هُمُ الْيَوْمَ مُسْتَسْلِمُوْنَ ۝ وَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ
عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَاۗءَلُوْنَ ۝ قَالُوْٓا اِنَّكُمْ كُنْتُمْ تَاْتُوْنَنَا عَنِ الْيَمِيْنِ ۝
قَالُوْا بَلْ لَّمْ تَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ۝ وَمَا كَانَ لَنَا عَلَيْكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ
بَلْ كُنْتُمْ قَوْمًا طٰغِيْنَ ۝ فَحَقَّ عَلَيْنَا قَوْلُ رَبِّنَآ اِنَّا لَذَاۗىِٕقُوْنَ ۝
فَاَغْوَيْنٰكُمْ اِنَّا كُنَّا غٰوِيْنَ ۝ فَاِنَّهُمْ يَوْمَىِٕذٍ فِي الْعَذَابِ
مُشْتَرِكُوْنَ ۝ اِنَّا كَذٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِيْنَ ۝ اِنَّهُمْ كَانُوْٓا اِذَا
قِيْلَ لَهُمْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ يَسْتَكْبِرُوْنَ ۝ وَيَقُوْلُوْنَ اَىِٕنَّا لَتَارِكُوْٓا
اٰلِهَتِنَا لِشَاعِرٍ مَّجْنُوْنٍ ۝ بَلْ جَاۗءَ بِالْحَقِّ وَصَدَّقَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝ اِنَّكُمْ
لَذَاۗىِٕقُوا الْعَذَابِ الْاَلِيْمِ ۝ وَمَا تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝
اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ۝ اُولٰۗىِٕكَ لَهُمْ رِزْقٌ مَّعْلُوْمٌ ۝ فَوَاكِهُ
وَهُمْ مُّكْرَمُوْنَ ۝ فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ۝ عَلٰى سُرُرٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ ۝
يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِكَاْسٍ مِّنْ مَّعِيْنٍ ۝ بَيْضَاۗءَ لَذَّةٍ لِّلشّٰرِبِيْنَ ۝
لَا فِيْهَا غَوْلٌ وَّلَا هُمْ عَنْهَا يُنْزَفُوْنَ ۝ وَعِنْدَهُمْ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ

★रु. १/५ आ २१ ● रुबअ १/४

कह दो कि हां, और तुम ज़लील होगे। (१८) वह तो एक ज़ोर की आवाज़ होगी और ये उस वक़्त देखने लगेंगे। (१९) और कहेंगे, हाय शामत! यही बदले का दिन है। (२०) (कहा जाएगा कि हां,) फ़ैसले का दिन, जिस को तुम झूठ समझते थे, यही है। (२१)★

जो लोग ज़ुल्म करते थे, उन को और उन के हमजिंसों को और जिन की वे पूजा करते थे, (सब को) जमा कर लो। (२२) (यानी जिन को) ख़ुदा के सिवा (पूजा करते थे) फिर उन को जहन्नम के रास्ते पर चला दो●(२३) और उन को ठहराए रखो कि उन से (कुछ) पूछना है। (२४) तुम को क्या हुआ कि एक दूसरे की मदद नहीं करते, (२५) बल्कि आज तो वे फ़रमांबरदार हैं। (२६) और एक दूसरे की तरफ़ रुख़ कर के सवाल (व जवाब) करेंगे। (२७) कहेंगे, क्या तुम ही हमारे पास दाएं (और बाएं) से आते थे। (२८) वे कहेंगे, बल्कि तुम ही ईमान लाने वाले न थे। (२९) और हमारा तुम पर कुछ ज़ोर न था, बल्कि तुम सर-कश लोग थे। (३०) सो हमारे बारे में हमारे परवरदिगार की बात पूरी हो गयी, अब हम मज़े चखेंगे। (३१) हमने तुम को भी गुमराह किया (और) हम ख़ुद भी गुमराह थे। (३२) पस वे उस दिन अज़ाब में एक दूसरे के शरीक होंगे। (३३) हम गुमराहों के साथ ऐसा ही किया करते हैं। (३४) उन का यह हाल था कि जब उन से कहा जाता था कि ख़ुदा के सिवा कोई माबूद नहीं, तो घमंड करते थे। (३५) और कहते थे कि भला हम एक दीवाने शायर के कहने से कहीं अपने माबूदों को छोड़ देने वाले हैं। (३६) (नहीं) बल्कि वे हक़ ले कर आए हैं और (पहले) पैग़म्बरों को सच्चा कहते हैं। (३७) बेशक तुम तक्लीफ़ देने वाले अज़ाब का मज़ा चखने वाले हो। (३८) और तुम को बदला वैसा ही मिलेगा, जैसे तुम काम करते थे, (३९) मगर जो ख़ुदा के ख़ास बन्दे हैं। (४०) यही लोग हैं, जिन के लिए रोज़ी मुक़र्रर है। (४१) (यानी) मेवे और उन का एज़ाज़ किया जाएगा। (४२) नेमत के बाग़ों में, (४३) एक दूसरे के सामने तख़्तों पर (बैठे होंगे), (४४) शराबे लतीफ़ के जाम का उन में दौर चल रहा होगा, (४५) जो रंग की सफ़ेद और पीने वालों के लिए (सरासर) लज़्ज़त होगी, (४६) न उस से सर-दर्द हो और न वे उस से मतवाले हों, (४७) और उन के पास औरतें होंगी, जो निगाहें नीची रखती होंगी और आंखें बड़ी-बड़ी, (४८) गोया

(पृष्ठ ७०९ का शेष)

हैं या आम क़ुरआन पढ़ने वाले। चूंकि अल्लाह तआला ने इन ख़ूबियों के लोगों की क़समें खायी हैं, इस लिए समझना चाहिए कि उस के नज़दीक उन की बड़ी बड़ाई है। 'ग़ौर कर-कर' लफ़्ज़ जो तर्जुमे में बढ़ाया गया है, इस से एक तो इबारत फ़ाफ़िएदार हो गयी है, दूसरे यह ज़ाहिर करना मक़्सूद है कि क़ुरआन का पढ़ना इसी सक्ल में मुफ़ीद हो सकता है और इस के पढ़ने से जो ग़रज़ है, वह तभी पूरी हो सकती है, जब ग़ौर व फ़िक्र कर के पढ़ा जाए। क़ुरआन मजीद का नाज़िल करने वाला फ़रमाता है, ऐ मुहम्मद! यह क़ुरआन एक बरकत वाली किताब है, जो हम ने तुम पर नाज़िल की है। मक़्सूद यह है कि लोग उस की आयतों पर ग़ौर करें और अक़्ल वाले उस से नसीहत पकड़ें।

★रु. १/५ आ २१ ●रुबअ़ १/४

क-अन्नहुन्-न बैज़ुम्-मक्नून (४९) फ़-अक़्ब-ल बअ्-ज़ुहुम् अला बअ्-ज़िय्य-तसा-अलून (५०) क़ा-ल क़ाइलुम्-मिन्हुम् इन्नी का-न ली क़रीनु य्-ۙ(५१) - यक़ूलु अइन्न-क लमिनल्-मुसद्दिक़ीन (५२) अ-इज़ा मित्ना व कुन्ना तुराबंव्-व अिज़ा-मन् अ-इन्ना ल-मदीनून (५३) क़ा-ल हल् अन्तुम् मुत्तलिअ़ून (५४) फ़त्त-ल-अ फ़-र-आहु फ़ी सवाइल्-जहीम (५५) क़ा-ल तल्लाहि इन् कित्-त ल-तुर्दीनि ۙ(५६) व लौ ला निअ्-मतु रब्बी लकुन्तु मिनल्-मुह्ज़रीन (५७) अ-फ़मा नह्नु बिमय्यितीन ۙ(५८) इल्ला मौत-त-नल्-ऊला व मा नह्नु बिमुअ़ज़्ज़बीन (५९) इन्न हाज़ा लहुवल् - फ़ौज़ुल्-अ़ज़ीम (६०) लिमिस्लि हाज़ा फ़ल्यअ्-मलिल्-आमिलून (६१) अ ज़ालि-क ख़ैरुन् नुज़ुलन् अम् श-ज-रतुज़्-ज़क़्क़ूम (६२) इन्ना ज-अल्नाहा फ़ित्-न-तल्-लिज़्ज़ालिमीन (६३) इन्नहा श-ज-रतुन् तख़्रुजु फ़ी अस्लिल्-जहीमि ۙ(६४) तल्अुहा क-अन्नहू रुऊसुश्-शयातीन (६५) फ़-इन्नहुम् ल-आकिलू-न मिन्हा फ़मालिऊ-न मिन्हल्-बुतून ط(६६) सुम्-म इन्-न लहुम् अलैहा लशौबम्-मिन् हमीम ۚ(६७) सुम्-म इन्-न मर्जि-अहुम् ल-इलल्-जहीम (६८) इन्नहुम् अल्फ़ौ आबा-अहुम् ज़ाल्लीन ۙ(६९) फ़हुम् अ़ला आसा-रिहिम् युह्-रअ़ून (७०) व ल-क़द् ज़ल्-ल क़ब्-लहुम् अक्सरुल्-अव्वलीन ۙ(७१) व ल-क़द् अर्सल्ना फ़ीहिम् मुन्ज़िरीन (७२) फ़न्ज़ुर् कै-फ़ का-न आक़िबतुल्-मुन्ज़रीन ۙ(७३) इल्ला अ़िबादल्लाहिल्-मुख़्-लसीन ✱(७४) व ल-क़द् नादाना नूहुन् फ़-लनिअ्-मल्-मुजीबून ۚ(७५) व नज्जैनाहु व अह्लहू मिनल्-कर्बिल्-अ़ज़ीम ۚ(७६) व ज-अ़ल्ना ज़ुर्रिय्य-तहू हुमुल्-बाक़ीन ۚ(७७) व त-रक्ना अ़लैहि फ़िल्-आख़िरीन ۚ(७८) सलामुन् अ़ला नूहिन् फ़िल् - आलमीन (७९)

الصّٰفّٰت ٣٧ ‏ ٣٥٨ ‏ ومالی ٢٣

عِيْنٌ ۝ كَاَنَّهُنَّ بَيْضٌ مَّكْنُوْنٌ ۝ فَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ
يَّتَسَآءَلُوْنَ ۝ قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ اِنِّيْ كَانَ لِيْ قَرِيْنٌ ۝ يَّقُوْلُ اَئِنَّكَ
لَمِنَ الْمُصَدِّقِيْنَ ۝ ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَدِيْنُوْنَ ۝
قَالَ هَلْ اَنْتُمْ مُّطَّلِعُوْنَ ۝ فَاطَّلَعَ فَرَاٰهُ فِيْ سَوَآءِ الْجَحِيْمِ ۝ قَالَ
تَاللّٰهِ اِنْ كِدْتَّ لَتُرْدِيْنِ ۝ وَلَوْلَا نِعْمَةُ رَبِّيْ لَكُنْتُ مِنَ
الْمُحْضَرِيْنَ ۝ اَفَمَا نَحْنُ بِمَيِّتِيْنَ ۝ اِلَّا مَوْتَتَنَا الْاُوْلٰى وَمَا نَحْنُ
بِمُعَذَّبِيْنَ ۝ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝ لِمِثْلِ هٰذَا فَلْيَعْمَلِ
الْعٰمِلُوْنَ ۝ اَذٰلِكَ خَيْرٌ نُّزُلًا اَمْ شَجَرَةُ الزَّقُّوْمِ ۝ اِنَّا جَعَلْنٰهَا فِتْنَةً
لِّلظّٰلِمِيْنَ ۝ اِنَّهَا شَجَرَةٌ تَخْرُجُ فِيْٓ اَصْلِ الْجَحِيْمِ ۝ طَلْعُهَا كَاَنَّهٗ
رُءُوْسُ الشَّيٰطِيْنِ ۝ فَاِنَّهُمْ لَاٰكِلُوْنَ مِنْهَا فَمَالِــُٔوْنَ مِنْهَا الْبُطُوْنَ ۝
ثُمَّ اِنَّ لَهُمْ عَلَيْهَا لَشَوْبًا مِّنْ حَمِيْمٍ ۝ ثُمَّ اِنَّ مَرْجِعَهُمْ لَاِلَى
الْجَحِيْمِ ۝ اِنَّهُمْ اَلْفَوْا اٰبَآءَهُمْ ضَآلِّيْنَ ۝ فَهُمْ عَلٰٓى اٰثٰرِهِمْ يُهْرَعُوْنَ ۝
وَلَقَدْ ضَلَّ قَبْلَهُمْ اَكْثَرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا فِيْهِمْ
مُّنْذِرِيْنَ ۝ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِيْنَ ۝ اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ
الْمُخْلَصِيْنَ ۝ وَلَقَدْ نَادٰىنَا نُوْحٌ فَلَنِعْمَ الْمُجِيْبُوْنَ ۝ وَنَجَّيْنٰهُ
وَاَهْلَهٗ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ۝ وَجَعَلْنَا ذُرِّيَّتَهٗ هُمُ الْبٰقِيْنَ ۝
وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْاٰخِرِيْنَ ۝ سَلٰمٌ عَلٰى نُوْحٍ فِي الْعٰلَمِيْنَ ۝

✱रु. २/६ आ ५३

वह महफ़ूज़ अंडे हैं, (४६) फिर वे एक दूसरे की तरफ़ रुख़ करके सवाल (व जवाब) करेंगे।(५०) एक कहने वाला उन में से कहेगा कि मेरा एक साथी था, (५१) (जो) कहता था कि भला तुम भी (ऐसी बातों के) मान लेने वालों में हो, (५२) भला जब हम मर गये और मिट्टी और हड्डियां हो गये तो क्या हम को बदला मिलेगा ? (५३) (फिर) कहेगा कि भला तुम (उसे) झांक कर देखना चाहते हो ? (५४) (इतने में) वह (ख़ुद) झांकेगा, तो उस को दोज़ख़ के बीच में देखेगा। (५५) कहेगा, कि ख़ुदा की क़सम ! तू तो मुझे हलाक ही कर चुका था। (५६) और अगर मेरे परवरदिगार की मेहरबानी न होती तो मैं भी उन में होता जो (अज़ाब में) हाज़िर किए गए हैं। (५७) क्या (यह नहीं कि) हम (आगे कभी) मरने के नहीं। (५८) हां, (जो) पहली बार मरना (था, सो मर चुके) और हमें अज़ाब भी नहीं होने का, (५६) बेशक यह बड़ी कामियाबी है। (६०) ऐसी ही (नेमतों) के लिए अमल करने वालों को अमल करने चाहिएं। (६१) भला यह मेहमानी अच्छी है या थूहर का पेड़? (६२) हमने उसको ज़ालिमों के लिए अज़ाब बना रखा है। (६३) वह एक पेड़ है कि जहन्नम के निचले हिस्से में उगेगा। (६४) उसके ख़ोशे ऐसे होंगे, जैसे शैतानों के सर, (६५) सो वे उसी में से खाएंगे और उसी से पेट भरेंगे। (६६) फिर उस (खाने) के साथ उनको गर्म पानी मिला कर दिया जाएगा। (६७) फिर उनको दोज़ख़ की तरफ़ लौटाया जाएगा। (६८) उन्होंने अपने बाप-दादा को गुमराह ही पाया। (६६) सो वे उन्हीं के पीछे दौड़े चले जाते हैं। (७०) और उनसे पहले बहुत से पहले लोग भी गुमराह हो गये थे, (७१) और हमने उन में तंबीह करने वाले भेजे। (७२) सो देख लो, जिन को तंबीह की गयी थी, उन का अंजाम कैसा हुआ ? (७३) हां, ख़ुदा के ख़ास बन्दों (का अंजाम बहुत अच्छा हुआ)। (७४)★

और हम को नूह ने पुकारा, सो (देख लो कि) हम (दुआ को कैसे) अच्छे क़ुबूल करने वाले हैं। (७५) और हम ने उन को और उन के घर वालों को बड़ी मुसीबत से निजात दी। (७६) और उन की औलाद को ऐसा किया कि वही बाक़ी रह गये। (७७) और पीछे आने वालों में उन का (अच्छा) ज़िक्र (बाक़ी) छोड़ दिया। (७८) (यानी) तमाम जहान में (कि) नूह पर

★रु. २/६ आ ५३

इन्ना कज़ालि-क नज्ज़िल्-मुह्सिनीन (८०) इन्नहू मिन् अिबादिनल्-मुअ्मिनीन (८१) सुम्-म अग़्-रक़्-नल्-आख़रीन (८२) व इन्-न मिन् शी-अतिही ल-इब्राहीम (८३) इज् जा-अ रब्बहू बिक़ल-बिन् सलीम (८४) इज् क़ा-ल लिअबीहि व क़ौमिही माज़ा तअ्-बुदून (८५) अ-इफ्कन् आलि-ह-तन् दूनल्लाहि तुरीदून (८६) फ़ मा ज़न्नुकुम् बिरब्बिल्-आलमीन (८७) फ़-न-ज़-र नज़्-र-तन् फ़िन्नुजूमि (८८) फ़ क़ा-ल इन्नी सक़ीम (८९) फ़-त-वल्लौ अन्हु मुद्बिरीन (९०) फ़रा-ग़ इला आलिहतिहिम् फ़-क़ा-ल अला तअ्-कुलून (९१) मा लकुम् ला तन्तिक़ून (९२) फ़रा-ग़ अलैहिम् ज़र्बम्-बिलयमीन (९३) फ़-अक़्बलू इलैहि यज़िफ़्फ़ून (९४) क़ा-ल अ-तअ्-बुदू-न मा तन्हितून (९५) वल्लाहु ख़-ल-क़कुम् व मा तअ्-मलून (९६) क़ालुब्नू लहू बुन्-यानन् फ़-अल्क़ूहु फ़िल्जहीम (९७) फ़-अरादू बिही कैदन् फ़-ज-अल्ना-हुमुल्-अस्-फ़लीन (९८) व क़ा-ल इन्नी ज़ाहिबुन् इला रब्बी स-यह्दीन (९९) रब्बि हब् ली मिनस्सालिहीन (१००) फ़-बश्शर्नाहु बिग़ुलामिन् हलीम (१०१) फ़-लम्मा ब-ल-ग़ म-अहुस्सअ्-य क़ा-ल या बुनय्-य इन्नी अरा फ़िलमनामि अन्नी अज़्बहु-क फ़न्ज़ुर् माज़ा तरा क़ा-ल या अ-बतिफ़्-अल् मा तुअ्-मरु स-तजिदुनी इन् शाअल्लाहु मिनस्-साबिरीन (१०२) फ़-लम्मा अस्-लमा व तल्लहू लिलजबीन (१०३) व नादैनाहु अंय्या इब्राहीम (१०४) क़द् सद्-दक़्तर्-रुअ्या इन्ना कज़ालि-क नज्ज़िल्-मुह्सिनीन (१०५) इन्-न हाज़ा ल-हुवल्-बलाउल्-मुबीन (१०६) व फ़दैनाहु बिज़िब्हिन् अज़ीम (१०७) व त-रक्ना अलैहि फ़िल्-आख़िरीन (१०८) सलामुन् अला इब्राहीम (१०९) कज़ालि-क नज्ज़िल्-मुह्सिनीन (११०) इन्नहू मिन् अिबादिनल्-मुअ्मिनीन (१११)

الصافات ٣٧ ٣٥٩ ومالي ٢٣

إِنَّا كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۝ إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ۝
ثُمَّ أَغْرَقْنَا الْآخَرِينَ ۝ وَإِنَّ مِنْ شِيعَتِهِ لَإِبْرَاهِيمَ ۝ إِذْ جَاءَ
رَبَّهُ بِقَلْبٍ سَلِيمٍ ۝ إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَاذَا تَعْبُدُونَ ۝
أَئِفْكًا آلِهَةً دُونَ اللَّهِ تُرِيدُونَ ۝ فَمَا ظَنُّكُمْ بِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۝
فَنَظَرَ نَظْرَةً فِي النُّجُومِ ۝ فَقَالَ إِنِّي سَقِيمٌ ۝ فَتَوَلَّوْا عَنْهُ مُدْبِرِينَ ۝
فَرَاغَ إِلَىٰ آلِهَتِهِمْ فَقَالَ أَلَا تَأْكُلُونَ ۝ مَا لَكُمْ لَا تَنْطِقُونَ ۝ فَرَاغَ
عَلَيْهِمْ ضَرْبًا بِالْيَمِينِ ۝ فَأَقْبَلُوا إِلَيْهِ يَزِفُّونَ ۝ قَالَ أَتَعْبُدُونَ
مَا تَنْحِتُونَ ۝ وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ وَمَا تَعْمَلُونَ ۝ قَالُوا ابْنُوا لَهُ بُنْيَانًا
فَأَلْقُوهُ فِي الْجَحِيمِ ۝ فَأَرَادُوا بِهِ كَيْدًا فَجَعَلْنَاهُمُ الْأَسْفَلِينَ ۝
وَقَالَ إِنِّي ذَاهِبٌ إِلَىٰ رَبِّي سَيَهْدِينِ ۝ رَبِّ هَبْ لِي مِنَ الصَّالِحِينَ ۝
فَبَشَّرْنَاهُ بِغُلَامٍ حَلِيمٍ ۝ فَلَمَّا بَلَغَ مَعَهُ السَّعْيَ قَالَ يَا بُنَيَّ إِنِّي
أَرَىٰ فِي الْمَنَامِ أَنِّي أَذْبَحُكَ فَانْظُرْ مَاذَا تَرَىٰ ۚ قَالَ يَا أَبَتِ افْعَلْ
مَا تُؤْمَرُ ۖ سَتَجِدُنِي إِنْ شَاءَ اللَّهُ مِنَ الصَّابِرِينَ ۝ فَلَمَّا أَسْلَمَا
وَتَلَّهُ لِلْجَبِينِ ۝ وَنَادَيْنَاهُ أَنْ يَا إِبْرَاهِيمُ ۝ قَدْ صَدَّقْتَ الرُّؤْيَا ۚ
إِنَّا كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۝ إِنَّ هَٰذَا لَهُوَ الْبَلَاءُ الْمُبِينُ ۝
وَفَدَيْنَاهُ بِذِبْحٍ عَظِيمٍ ۝ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ ۝ سَلَامٌ عَلَىٰ
إِبْرَاهِيمَ ۝ كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۝ إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا

व. लाज़िम

सलाम। (७९) भले लोगों को हम ऐसा ही बदला दिया करते हैं। (८०) बेशक वह हमारे मोमिन बन्दों में से थे। (८१) फिर हमने दूसरों को डुबो दिया। (८२) और उन्हीं की पैरवी करने वालों में इब्राहीम थे ※(८३) जब वह अपने परवरदिगार के पास (ऐब से) पाक दिल लेकर आए। (८४) जब उन्हों ने अपने बाप से और अपनी क़ौम से कहा कि तुम किन चीज़ों को पूजते हो? (८५) क्यों झूठ (बनाकर) ख़ुदा के सिवा और माबूदों की तलब में हो? (८६) भला दुनिया के परवरदिगार के बारे में तुम्हारा क्या ख़्याल है?[1] (८७) जब उन्हों ने सितारों की तरफ़ एक नज़र की। (८८) और कहा मैं तो बीमार हूं। (८९) तब वे उन से पीठ फेर कर लौट गये। (९०) फिर (इब्राहीम) उन के माबूद की तरफ़ मुतवज्जह हुए और कहने लगे कि तुम खाते क्यों नहीं? (९१) तुम्हें क्या हुआ है, तुम बोलते नहीं? (९२) फिर उन को दाहिने हाथ से मारना (और तोड़ना) शुरू किया।[2] (९३) तो वे लोग उन के पास दौड़े हुए आए। (९४) उन्हों ने कहा कि तुम ऐसी चीज़ों को क्यों पूजते हो, जिन को ख़ुद तराशते हो, (९५) हालांकि तुम को और जो तुम बनाते हो, उस को ख़ुदा ही ने पैदा किया है। (९६) वे कहने लगे कि इस के लिए इमारत बनाओ, फिर उस को आग के ढेर में डाल दो। (९७) ग़रज़ उन्हों ने उन के साथ एक चाल चलनी चाही और हमने उन्हीं को ज़ेर (पसपा) कर दिया। (९८) और इब्राहीम बोले कि मैं अपने परवरदिगार की तरफ़ जाने वाला हूं, वह मुझे रास्ता दिखाएगा। (९९) ऐ परवरदिगार! मुझे (औलाद) अता फ़र्मा (जो) सआदतमंदों में से (हो) (१००) तो हमने उन को एक नर्मदिल लड़के की ख़ुशख़बरी दी, (१०१) जब वह उन को साथ दौड़ने (की उम्र) को पहुंचा, तो इब्राहीम ने कहा कि बेटा! मैं सपना देखता हूं कि (गोया) तुम को ज़िब्ह कर रहा हूं, तो तुम सोचो कि तुम्हारा क्या ख़्याल है?[3] उन्हों ने कहा कि अब्बा, जो आप को हुक्म हुआ है, वही कीजिए। ख़ुदा ने चाहा, तो आप मुझे सब्र करने वालों में पाइएगा। (१०२) जब दोनों ने हुक्म मान लिया, और बाप ने बेटे को माथे के बल लिटा दिया, (१०३) तो हमने उन को पुकारा कि ऐ इब्राहीम! (१०४) तुम ने सपने को सच्चा कर दिखाया, हम मुह्सिनों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं। (१०५) बेशक यह खुली आज़माइश थी। (१०६) और हमने एक बड़ी क़ुर्बानी को उन का फ़िद्या दिया।[4] (१०७) और पीछे आने वालों में इब्राहीम का (अच्छा) ज़िक्र (बाक़ी) छोड़ दिया, (१०८) कि इब्राहीम पर सलाम हो। (१०९) मुह्सिनों को हम ऐसा ही बदला दिया करते हैं। (११०) बेशक वह हमारे मोमिन बन्दों में से थे। (१११) और हमने उन को इस्हाक़

---

१. क्या वह तुम को शिर्क करने पर पकड़ेगा नहीं और यों ही छोड़ देगा?

२. फिर वे लोग मेले में जाने लगे, तो हज़रत इब्राहीम अलै० से कहने लगे कि हमारे साथ मेले में चलिए। चूंकि वे लोग इस बात पर एतक़ाद रखते थे कि दुनिया का कारख़ाना सितारों की गर्दिश से चल रहा है, इस लिए हज़रत इब्राहीम ने सितारों पर एक नज़र की ताकि वे समझें कि जो हालत आप पर गुज़रे, वह सितारों की गर्दिश से होगी, तो आप ने कहा कि मैं तो बीमार हूं। यह उज़्र सुन कर वे चल दिए। इधर उन का जाना था, उधर आप ने उन के बुतों की तरफ़ तवज्जोह की और उन को तोड़ डाला।

३. इस में इख़्तिलाफ़ है कि बेटे से इस्माईल मुराद हैं या इस्हाक़। अक्सर तफ़्सीर लिखने वालों के नज़दीक इस्माईल मुराद हैं और यही सही है।

४. कहते हैं कि हज़रत इब्राहीम ने हज़रत इस्माईल को ज़िब्ह करने के लिए बड़ी कोशिश की, मगर छुरी ने जिस

(शेष पष्ठ ७१७ पर)

※ व. लाज़िम

व बश्शर्-नाहु बिइस्हा-क़ नबिय्यम्-मिनस्सालिहीन (११२) व बारक्ना अलैहि व अला इस्हा-क़ व मिन् ज़ुर्रिय्यतिहिमा मुह्सिनुंव्-व ज़ालिमुल्-लिनफ़्सिही मुबीन ★ (११३) व ल-क़द् मनन्ना अला मूसा व हारून (११४) व नज्जैनाहुमा व क़ौमहुमा मिनल्-कर्बिल्-अज़ीम (११५) व न-सर्-नाहुम् फ़-कानू हुमुल्-ग़ालिबीन (११६) व आतैनाहुमल्-किताबल्-मुस्तबीन (११७) व हदैना हुमस्सिरातल्-मुस्तक़ीम (११८) व त-रक्ना अलैहिमा फ़िल्-आख़िरीन (११९) सलामुन् अला मूसा व हारून (१२०) इन्ना कज़ालि-क नज्ज़िल्-मुह्-सिनीन (१२१) इन्नहुमा मिन् अिबादिनल्-मुअ्मिनीन (१२२) व इन्-न इल्या-स लमिनल्-मुर्सलीन (१२३) इज़् क़ा-ल लिक़ौमिही अला तत्तक़ून (१२४) अ-तद्अू-न बअ्-लंव्-व त-ज़रू-न अह्-स-नल् ख़ालिक़ीन (१२५) अल्ला-ह रब्बकुम् व रब्-ब आबाइकुमुल्-अव्वलीन (१२६) फ़-कज़्ज़बूहु फ़-इन्नहुम् ल-मुह्ज़रून (१२७) इल्ला अिबादल्लाहिल्-मुख़्लसीन (१२८) व त-रक्ना अलैहि फ़िल्-आख़िरीन (१२९) सलामुन् अला इल्यासीन (१३०) इन्ना कज़ालि-क नज्ज़िल्-मुह्सिनीन (१३१) इन्नहू मिन् अिबादिनल्-मुअ्मिनीन (१३२) व इन्-न लूतल्-लमिनल्-मुर्सलीन (१३३) इज़् नज्जैनाहु व अह्-लहू अज्मअीन (१३४) इल्ला अजूज़न् फ़िल्-ग़ाबिरीन (१३५) सुम्-म दम्मर्नल्-आख़रीन (१३६) व इन्नकुम् ल-तमुर्-रू-न अलैहिम् मुस्बिहीन (१३७) व बिल्लैलि अ-फ़ला तअ्-क़िलून ★ (१३८) व इन्-न यूनु-स लमिनल्-मुर्सलीन (१३९) इज़् अ-ब-क़ इलल्फ़ुल्किल्-मश्हूनि (१४०) फ़ सा-ह-म फ़का-न मिनल्-मुद्हज़ीन (१४१) फ़ल्त-क़-महुल्-हूतु व हु-व मुलीम (१४२) फ़लौला अन्नहू का-न मिनल्-मुसब्बिहीन (१४३)

الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَبَشَّرْنٰهُ بِاِسْحٰقَ نَبِيًّا مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝ وَبٰرَكْنَا
عَلَيْهِ وَعَلٰۤى اِسْحٰقَ ؕ وَمِنْ ذُرِّيَّتِهِمَا مُحْسِنٌ وَّظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ مُبِيْنٌ ۝
وَلَقَدْ مَنَنَّا عَلٰى مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ۝ وَنَجَّيْنٰهُمَا وَقَوْمَهُمَا مِنَ الْكَرْبِ
الْعَظِيْمِ ۝ وَنَصَرْنٰهُمْ فَكَانُوْا هُمُ الْغٰلِبِيْنَ ۝ وَاٰتَيْنٰهُمَا الْكِتٰبَ
الْمُسْتَبِيْنَ ۝ وَهَدَيْنٰهُمَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۝ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِمَا فِي
الْاٰخِرِيْنَ ۝ سَلٰمٌ عَلٰى مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ۝ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي
الْمُحْسِنِيْنَ ۝ اِنَّهُمَا مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَاِنَّ اِلْيَاسَ لَمِنَ
الْمُرْسَلِيْنَ ۝ اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖۤ اَلَا تَتَّقُوْنَ ۝ اَتَدْعُوْنَ بَعْلًا وَّ
تَذَرُوْنَ اَحْسَنَ الْخٰلِقِيْنَ ۝ اللّٰهَ رَبَّكُمْ وَرَبَّ اٰبَآئِكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ۝
فَكَذَّبُوْهُ فَاِنَّهُمْ لَمُحْضَرُوْنَ ۝ اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ۝ وَتَرَكْنَا
عَلَيْهِ فِي الْاٰخِرِيْنَ ۝ سَلٰمٌ عَلٰۤى اِلْ يَاسِيْنَ ۝ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي
الْمُحْسِنِيْنَ ۝ اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَاِنَّ لُوْطًا لَّمِنَ
الْمُرْسَلِيْنَ ۝ اِذْ نَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗۤ اَجْمَعِيْنَ ۝ اِلَّا عَجُوْزًا فِي الْغٰبِرِيْنَ ۝
ثُمَّ دَمَّرْنَا الْاٰخَرِيْنَ ۝ وَاِنَّكُمْ لَتَمُرُّوْنَ عَلَيْهِمْ مُّصْبِحِيْنَ ۝ وَ
بِالَّيْلِ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝ وَاِنَّ يُوْنُسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝ اِذْ اَبَقَ اِلَى
الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ۝ فَسَاهَمَ فَكَانَ مِنَ الْمُدْحَضِيْنَ ۝ فَالْتَقَمَهُ
الْحُوْتُ وَهُوَ مُلِيْمٌ ۝ فَلَوْلَآ اَنَّهٗ كَانَ مِنَ الْمُسَبِّحِيْنَ ۝ لَلَبِثَ

★रु. ३/७ आ ३१ ★रु. ४/८ आ २५

की खुशखबरी भी दी (कि वह) नबी और नेकों में से (होंगे)। (११२) और हमने उन पर और इस्हाक़ पर बरकतें नाज़िल की थीं और उन दोनों की औलाद में से मुह्सिन भी हैं और अपने आप पर खुला ज़ुल्म करने वाले (यानी गुनाहगार) भी हैं। (११३)★

और हमने मूसा और हारून पर एहसान किए, (११४) और उन को और उन की क़ौम को बड़ी मुसीबत से निजात बख़्शी। (११५) और उन की मदद की, तो वे ग़ालिब हो गये। (११६) और उन दोनों को किताब साफ़ (मतलब वाली) इनायत की, (११७) और उन को सीधा रास्ता दिखाया, (११८) और पीछे आने वालों में उन का (अच्छा) ज़िक्र (बाक़ी) छोड़ दिया, (११९) कि मूसा और हारून पर सलाम। (१२०) बेशक हम नेकों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं। (१२१) वे दोनों हमारे मोमिन बन्दों में से थे। (१२२) और इल्यास भी पैग़म्बरों में से थे। (१२३) जब उन्होंने अपनी क़ौम से कहा कि तुम डरते क्यों नहीं? (१२४) क्या तुम बअ्ल[1] को पुकारते (और उसे पूजते हो) और सब से बेहतर पैदा करने वाले को छोड़ देते हो। (१२५) (यानी) खुदा को, जो तुम्हारा और तुम्हारे अगले बाप-दादा का परवरदिगार है। (१२६) तो उन लोगों ने उन को झुठला दिया, सो वे (दोज़ख में) हाज़िर किए जाएंगे। (१२७) हां, खुदा के खास बन्दे (अज़ाब में नहीं डाले जाएंगे।) (१२८) और उन का (अच्छा) ज़िक्र पिछलों में (बाक़ी) छोड़ दिया, (१२९) कि इल्यासीन पर सलाम।[2] (१३०) हम नेक लोगों को ऐसा ही बदला देते हैं। (१३१) बेशक वे हमारे मोमिन बन्दों में से थे। (१३२) और लूत भी पैग़म्बरों में से थे, (१३३) जब हमने उनको और उनके घर वालों को, सब को (अज़ाब से) निजात दी, (१३४) मगर एक बुढ़िया कि पीछे रह जाने वालों में थी। (१३५) फिर हम ने औरों को हलाक कर दिया। (१३६) और तुम दिन को भी उन (की बस्तियों) के पास से गुज़रते रहते हो, (१३७) और रात को भी, तो क्या तुम अक़्ल नहीं रखते? (१३८)★

और यूनुस भी पैग़म्बरों में से थे, (१३९) जब भाग कर भरी हुई कश्ती में पहुंचे। (१४०) उस वक़्त क़ुरआ डाला, तो उन्हों ने ज़क उठायी। (१४१) फिर मछली ने उन को निगल लिया और वह मलामत (के क़ाबिल काम) करने वाले थे। (१४२) फिर अगर वह (खुदा की) पाकी

(पृष्ठ ७१५ का शेष)

को बार-बार तेज़ करते रहे, कुछ काम न दिया। आख़िर ज़ोर से चलाते-चलाते एक बार ऐसी आवाज़ आयी कि गोया कोई चीज़ कट गयी है, खून बहने लगा है। तब आप ने अपनी आंखों पर से पट्टी खोल दी, जो ज़िब्ह करते वक़्त इस लिए बांध ली थी कि कहीं बाप की मुहब्बत जोश में न आए और अल्लाह तआला के हुक्म की तामील में पांव डगमगा न जाएं। देखा तो एक दुंबा ज़िब्ह किया हुआ पड़ा है और हज़रत इस्माईल पास ही सही-सालिम खड़े हैं, उसी दुंबे के बारे में खुदा ने फ़रमाया कि एक बड़ी क़ुर्बानी को हम ने उन का फ़िद्या किया।

१. अल्लाह तआला ने हज़रत इल्यास को नबी बना कर बालबक की तरफ़ भेजा था। यहां के लोग एक बुत की पूजा करते थे, जिस का नाम बाल था।

२. हज़रत इल्यास को इल्यासीन भी कहते हैं, जैसे तूरे सीना और तूरे सीनीन और आले-यासीन भी पढ़ा है किसी ने, तो यासीन उन के बाप का नाम है।

ल-लबि-स फ़ी बत्-निही इला यौमि युब्-असून ● (१४४) फ़-न-बज़्नाहु बिल्-अराइ व हु-व सक़ीम (१४५) वअम्बत्ना अलैहि श-ज-र-तम्-मिंय्यक़्तीन (१४६) व अर्सल्नाहु इला मि-अति अल्फ़िन् औ यज़ीदून (१४७) फ़-आमनू फ़-मत्तअ्-नाहुम् इलाहीन (१४८) फ़स्तफ़्तिहिम् अ-लिरब्बिकल्-बनातु व लहुमुल्-बनून (१४९) अम् ख़-लक़्-नल्-मलाइक-त इनासंव-व हुम् शाहिदून (१५०) अला इन्नहुम् मिन् इफ़्किहिम् ल-यक़ूलून (१५१) व-ल-दल्लाहु व इन्नहुम् ल-काज़िबून (१५२) अस्त़-फ़ल्-बनाति अलल्-बनीन (१५३) मा लकुम् कै-फ़ तह्कुमून (१५४) अ-फ़ला त-ज़क्करून (१५५) अम् लकुम् सुल्तानुम्-मुबीन (१५६) फ़अ्तू बि-किताबिकुम् इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (१५७) व ज-अलू बैनहू व बैनल्जिन्नति न-स-बन् व ल-क़द् अलि-मतिल्-जिन्नतु इन्नहुम् लमुह़्ज़रून (१५८) सुब्-हानल्लाहि अ़म्मा यसिफ़ून (१५९) इल्ला अिबादल्लाहिल्-मुख़्-लसीन (१६०) फ़-इन्नकुम् व मा तअ्-बुदून (१६१) मा अन्तुम् अलैहि बिफ़ातिनीन (१६२) इल्ला मन् हु-व सालिल्-जहीम (१६३) व मा मिन्ना इल्ला लहू मक़ामुम्-मअ्-लूमुंव- (१६४) व इन्ना ल-नह्नुस्-साफ़्फ़ून (१६५) व इन्ना ल-नह्नुल्-मुसब्बिहून (१६६) व इन् कानू ल-यक़ूलून (१६७) लौ अन्-न अिन्दना ज़िक्-रम-मिनल्-अव्वलीन (१६८) लकुन्ना अिबादल्लाहिल्-मुख़्-लसीन (१६९) फ़-क-फ़रू बिही फ़सौ-फ़ यअ्-लमून (१७०) व ल-क़द् स-ब-क़त् कलिमतुना लिअिबादिनल्-मुर्सलीन (१७१) इन्नहुम् लहुमुल्-मन्सूरून (१७२) व इन्-न जुन्दना लहुमुल्-ग़ालिबून (१७३) फ़-त-वल्-ल अ़न्हुम् ह़त्ता ह़ीनिंव- (१७४) -व अब्सिर्हुम् फ़सौ-फ़ युब्सिरून (१७५) अ-फ़ बि-अ़ज़ाबिना यस्तअ्-जिलून (१७६) फ़-इज़ा न-ज़-ल बिसाह़तिहिम् फ़सा-अ सबा-हुल्-मुन्ज़रीन (१७७) व त-वल्-ल अ़न्हुम् ह़त्ता ह़ीनिंव- (१७८)

في بطنه إلى يوم يبعثون ۞ فنبذنه بالعراء وهو سقيم ۞ و
أنبتنا عليه شجرة من يقطين ۞ وأرسلنه إلى مائة ألف أو يزيدون ۞
فآمنوا فمتعنهم إلى حين ۞ فاستفتهم ألربك البنات ولهم
البنون ۞ أم خلقنا الملئكة إنثا وهم شهدون ۞ ألا إنهم من
إفكهم ليقولون ۞ ولد الله وإنهم لكذبون ۞ أصطفى البنات
على البنين ۞ ما لكم كيف تحكمون ۞ أفلا تذكرون ۞ أم
لكم سلطن مبين ۞ فأتوا بكتبكم إن كنتم صدقين ۞ وجعلوا
بينه وبين الجنة نسبا ولقد علمت الجنة إنهم لمحضرون ۞
سبحن الله عما يصفون ۞ إلا عباد الله المخلصين ۞ فإنكم
وما تعبدون ۞ ما أنتم عليه بفتنين ۞ إلا من هو صال
الجحيم ۞ وما منا إلا له مقام معلوم ۞ وإنا لنحن الصافون ۞
وإنا لنحن المسبحون ۞ وإن كانوا ليقولون ۞ لو أن عندنا
ذكرا من الأولين ۞ لكنا عباد الله المخلصين ۞ فكفروا به
فسوف يعلمون ۞ ولقد سبقت كلمتنا لعبادنا المرسلين ۞ إنهم
لهم المنصورون ۞ وإن جندنا لهم الغلبون ۞ فتول عنهم حتى
حين ۞ وأبصرهم فسوف يبصرون ۞ أفبعذابنا يستعجلون ۞ فإذا
نزل بساحتهم فساء صباح المنذرين ۞ وتول عنهم حتى حين ۞

बयान न करते, (१४३) तो उस दिन तक कि लोग दोबारा ज़िंदा किए जाएंगे, उसी के पेट में रहते●(१४४) फिर हमने उन को, जबकि वह बीमार थे, खुले मैदान में डाल दिया। (१४५) और उन पर कद्दू का पेड़ लगाया। (१४६) और उन को लाख या उस से ज़्यादा (लोगों) की तरफ़ (पैग़म्बर बना कर) भेजा। (१४७) तो वे ईमान ले आए, सो हम भी उन को (दुनिया में) एक (मुक़र्रर) वक़्त तक फ़ायदे देते रहे। (१४८) इन से पूछो तो कि भला तुम्हारे परवरदिगार के लिए तो बेटियां और उन के लिए बेटे, (१४९) या हमने फ़रिश्तों को औरतें बनाया और वे (उस वक़्त) मौजूद थे? (१५०)देखो, ये अपनी झूठ बनायी हुई (बात) कहते हैं,(१५१)कि ख़ुदा के औलाद है, कुछ शक नहीं कि ये झूठे हैं।(१५२) क्या उस ने बेटों के मुक़ाबले में बेटियों को पसन्द किया है? (१५३) तुम कैसे लोग हो? किस तरह का फ़ैसला करते हो? (१५४) भला तुम ग़ौर (क्यों) नहीं करते? (१५५) या तुम्हारे पास कोई खुली दलील है, (१५६) अगर तुम सच्चे हो, तो अपनी किताब पेश करो। (१५७) और उन्हों ने ख़ुदा में और जिन्नों में रिश्ता मुक़र्रर किया, हालांकि जिन्नात जानते थे कि वे (ख़ुदा के सामने) हाज़िर किए जाएंगे। (१५८) यह जो कुछ बयान करते हैं, ख़ुदा उस से पाक है। (१५९) मगर ख़ुदा के ख़ालिस बन्दे (अज़ाब में नहीं डाले जाएंगे), (१६०) सो तुम और जिन को तुम पूजते हो, (१६१) ख़ुदा के ख़िलाफ़ बहका नहीं सकते, (१६२) मगर उस को, जो जहन्नम में जाने वाला है। (१६३) और (फ़रिश्ते कहते हैं कि) हम में से हर एक का एक मक़ाम मुक़र्रर है। (१६४) और हम सफ़ बांधे रहते हैं। (१६५) और (ख़ुदा-ए-) पाक (ज़ात का) ज़िक्र करते रहते हैं, (१६६) और ये लोग कहा करते थे, (१६७) कि अगर हमारे पास अगलों की कोई नसीहत (की किताब) होती, (१६८) तो हम ख़ुदा के ख़ालिस बन्दे होते, (१६९) लेकिन (अब) इस से कुफ़्र करते हैं, सो बहुत जल्द उन को (इस का नतीजा) मालूम हो जाएगा। (१७०) और अपने पैग़ाम पहुंचाने वाले बन्दों से हमारा वायदा हो चुका है, (१७१) कि वही (ग़ालिब व) मंसूर (मदद किए हुए) हैं, (१७२) और हमारा लश्कर ग़ालिब रहेगा, (१७३) तो एक वक़्त तक उन से एराज़ किए रहो, (१७४) और उन्हें देखते रहो। ये भी बहुत जल्द (कुफ़्र का अंजाम) देख लेंगे। (१७५) क्या ये हमारे अज़ाब के लिए जल्दी कर रहे हैं, (१७६) मगर जब वह उन के मैदान में आ उतरेगा, तो जिन को डर सुनाया गया था, उन के लिए बुरा दिन होगा। (१७७) और एक वक़्त तक उन से मुंह फेरे

● नि. १२

व अब्सिर् फ़सौ-फ़ युब्सिरून (१७६) सुब्हा-न रब्बि-क रब्बिल्-अिज़्ज़ति अम्मा यसिफ़ून (१८०) व सलामुन् अलल्-मुर्सलीन (१८१) वल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल्-आलमीन (१८२)

३८ सूरतु साॅद ३८

(मक्की) इस सूर: में अरबी के ३१०७ अक्षर, ७३८ शब्द, ८८ आयतें और ५ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

साॅद् वल्क़ुर्आनि ज़िज़्ज़िक्र (१) बलिल्लज़ी-न क-फ़रू फ़ी अिज़्ज़तिंव-व शिक़ाक़ (२) कम् अह-लक्ना मिन् क़ब्लिहिम् मिन् क़र्निन् फ़नादव्-व ला-त-ही-न मनास (३) व अजिबू अन् जा-अहुम् मुन्ज़िरुम्-मिन्हुम् व क़ालल्-काफ़िरू-न हाज़ा साहिरुन कज़्ज़ाब (४) अ-ज-अ-लल् आलि-ह-त इलाहंव्वाहिदन् इन्-न हाज़ा लशैउन् अुजाब (५) वन्त-ल-क़ल् म-ल-उ मिन्हुम् अनिम्शू वस्बिरू अला आलिहतिकुम् इन्-न हाज़ा लशैउंय्युराद (६) मा समिअ्-ना बिहाज़ा फ़िल्-मिल्लतिल्-आख़िरति इन् हाज़ा इल्लख़्तिलाक़ (७) अ उन्ज़ि-ल अलैहिज़्ज़िक्रु मिम्बैनिना बल् हुम् फ़ी शक्किम्-मिन् ज़िक्री बल् लम्मा यज़ूक़ू अज़ाब (८) अम् अिन्दहुम् ख़ज़ाइनु रह्मति रब्बिकल्-अज़ीज़िल्-वह्हाब (६) अम् लहुम् मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बैनहुमा फ़ल्यर्तक़ू फ़िल्अस्बाब (१०) जुन्दुम्मा हुनालि-क मह्ज़ूमुम्-मिनल्-अह्ज़ाब (११) कज़्ज़-बत् क़ब्-लहुम् क़ौमु नूहिंव्-व आदुंव्-व फ़िर्औनु ज़ुल्औताद (१२) व समूदु व क़ौमु लूतिंव्-व अस्हाबुल्-ऐकति उलाइकल्-अह्ज़ाब (१३) इन् कुल्लुन् इल्ला कज़्ज़बर-रुसु-ल फ़ हक़्-क अिक़ाब ★ (१४) व मा यन्ज़ुरु हाउलाइ इल्ला सैह-तंव्वाहि-द-तम्-मा लहा मिन् फ़वाक़ (१५) व क़ालू रब्बना अज्जिल् लना क़ित्तना क़ब्-ल यौमिल्-हिसाब (१६)

صٓ ٣٨ ٣٤٢ وما لي ٢٣

وَّاَبْصِرْ فَسَوْفَ يُبْصِرُوْنَ ﴿١٧٩﴾ سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿١٨٠﴾
وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٨١﴾ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٨٢﴾
سُوْرَةُ صٓ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ ثَمَانٌ وَّثَمَانُوْنَ اٰيَةً وَّخَمْسُ رُكُوْعَاتٍ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
صٓ وَالْقُرْاٰنِ ذِي الذِّكْرِ ﴿١﴾ بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ عِزَّةٍ وَّشِقَاقٍ ﴿٢﴾ كَمْ اَهْلَكْنَا
مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ قَرْنٍ فَنَادَوْا وَّلَاتَ حِيْنَ مَنَاصٍ ﴿٣﴾ وَعَجِبُوْا اَنْ جَآءَهُمْ
مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ وَقَالَ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا سٰحِرٌ كَذَّابٌ ﴿٤﴾ اَجَعَلَ الْاٰلِهَةَ اِلٰهًا
وَّاحِدًا اِنَّ هٰذَا لَشَيْءٌ عُجَابٌ ﴿٥﴾ وَانْطَلَقَ الْمَلَاُ مِنْهُمْ اَنِ امْشُوْا وَ
اصْبِرُوْا عَلٰٓى اٰلِهَتِكُمْ اِنَّ هٰذَا لَشَيْءٌ يُّرَادُ ﴿٦﴾ مَا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِي الْمِلَّةِ
الْاٰخِرَةِ اِنْ هٰذَآ اِلَّا اخْتِلَاقٌ ﴿٧﴾ ءَاُنْزِلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ مِنْ بَيْنِنَا
بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْ ذِكْرِيْ بَلْ لَّمَّا يَذُوْقُوْا عَذَابِ ﴿٨﴾ اَمْ عِنْدَهُمْ
خَزَآئِنُ رَحْمَةِ رَبِّكَ الْعَزِيْزِ الْوَهَّابِ ﴿٩﴾ اَمْ لَهُمْ مُّلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
وَمَا بَيْنَهُمَا فَلْيَرْتَقُوْا فِي الْاَسْبَابِ ﴿١٠﴾ جُنْدٌ مَّا هُنَالِكَ مَهْزُوْمٌ مِّنَ
الْاَحْزَابِ ﴿١١﴾ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّعَادٌ وَّفِرْعَوْنُ ذُو الْاَوْتَادِ ﴿١٢﴾
وَثَمُوْدُ وَقَوْمُ لُوْطٍ وَّاَصْحٰبُ لْـَٔيْكَةِ اُولٰٓئِكَ الْاَحْزَابُ ﴿١٣﴾ اِنْ كُلٌّ اِلَّا
كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ عِقَابِ ﴿١٤﴾ وَمَا يَنْظُرُ هٰٓؤُلَآءِ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً مَّا لَهَا
مِنْ فَوَاقٍ ﴿١٥﴾ وَقَالُوْا رَبَّنَا عَجِّلْ لَّنَا قِطَّنَا قَبْلَ يَوْمِ الْحِسَابِ ﴿١٦﴾ اِصْبِرْ عَلٰى مَا

★रु. ५/६ आ ४४ ★रु. १/१० आ १४

रहो। (१७८) और देखते रहो, ये भी बहुत जल्द (नतीजा) देख लेंगे। (१७९) यह जो कुछ बयान करते हैं, तुम्हारा परवरदिगार, जो इज़्ज़त वाला है (इस से) पाक है। (१८०) और पैग़म्बरों पर सलाम। (१८१) सब तरह की तारीफ़ ख़ुदा-ए-रब्बुल आलमीन ही के लिए है। (१८२)★

३८ सूरः साद ३८

सूरः स्वाद मक्की है और इस में अठासी आयतें और पांच रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

स्वाद, क़सम है क़ुरआन की, जो नसीहत देने वाला है (कि तुम हक़ पर हो), (१) मगर जो लोग काफ़िर हैं, वे घमंड और मुख़ालफ़त में हैं। (२) हम ने उन से पहले बहुत-सी उम्मतों को हलाक कर दिया, तो वे (अज़ाब के वक़्त) लगे फ़रियाद करने और वह रिहाई का वक़्त नहीं था। (३) और उन्हों ने ताज्जुब किया कि उन के पास उन ही में से हिदायत करने वाला आया और काफ़िर कहने लगे कि यह तो जादूगर है झूठा। (४) क्या उस ने इतने माबूदों की जगह एक ही माबूद बना दिया ? यह तो बड़ी अजीब बात है। (५) तो उन में जो मुअज़्ज़ज़ थे, वे चल खड़े हुए (और बोले) कि चलो और अपने माबूदों (की पूजा) पर क़ायम रहो। बेशक यह ऐसी बात है, जिस से (तुम पर बुज़ुर्गी और बड़ाई) मक़्सूद है। (६) यह पिछले मज़हब में हम ने कभी सुनी ही नहीं। यह बिल्कुल बनायी हुई बात है। (७) क्या हम सब में से इसी पर नसीहत (की किताब) उतरी है ? (नहीं) बल्कि ये मेरी नसीहत की किताब से शक में हैं, बल्कि उन्हों ने अभी मेरे अज़ाब का मज़ा नहीं चखा। (८) क्या उन के पास तुम्हारे परवरदिगार की रहमत के ख़ज़ाने हैं, जो ग़ालिब (और) बहुत अता करने वाला है। (९) या आसमानों और ज़मीन और जो कुछ उन में है, उन (सब) पर उन ही की हुकूमत है, तो चाहिए कि रस्सियां तान कर (आसमानों पर) चढ़ जाएं। (१०) यहां हारे हुए गिरोहों में से यह भी एक लश्कर है। (११) इन से पहले नूह की क़ौम और आद और मेख़ों वाला फ़िर्औन (और उस की क़ौम के लोग) भी, झुठला चुके हैं। (१२) और समूद और लूत की क़ौम और बन के रहने वाले भी यही वे गिरोह हैं। (१३) (इन) सब ने पैग़म्बरों को झुठलाया, तो मेरा अज़ाब (उन पर) आ वाक़ेअ हुआ। (१४)★

और ये लोग तो सिर्फ़ ज़ोर की आवाज़ का, जिस में (शुरू हुए पीछे) कुछ वक़्फ़ा नहीं होगा, इन्तिज़ार करते हैं। (१५) और कहते हैं कि ऐ हमारे परवरदिगार ! हम को हमारा हिस्सा हिसाब

★रु. ५/६ आ ४४ ★रु. १/१० आ १४

इस्बिर् अला मा यक़ूलू-न वज़्कुर् अब्दना दावू-द ज़ल्ऐदि इन्नहू अव्वाब (१७) इन्ना सख़्ख़र्नल्-जिबा-ल म-अहू युसब्बिह्-न बिल्-अशिय्यि वल्-इश्राक़ (१८) वत्तै-र मह्शूरतन् कुल्लुल्लहू अव्वाब (१९) व श-दद्ना मुल्कहू व आतैनाहुल्-हिक्म-त व फ़स्-लल्-ख़िताब (२०) व हल् अता-क न-ब-उल्-ख़स्मि इज् तसव्व-रुल्-मिह्राब (२१) इज् द-ख़लू अला दावू-द फ़-फ़ज़ि-अ मिन्हुम् क़ालू ला त-ख़फ् ख़स्मानि बग़ा बअ्-ज़ुना अला बअ्-ज़िन् फ़ह्कुम् बैनना बिल्हक़्क़ि व ला तुश्तित् वह्दिना इला सवा-इस्सिरात (२२) इन्-न हाज़ा अख़ी लहू तिस्अु व्-व तिस्अू-न नअ्-ज-तंव्-व लि-य नअ्-जतुंव्वाहिदतुन् फ़क़ा-ल अक्फ़िल्नीहा व अज़्ज़नी फ़िल्ख़िताब (२३) क़ा-ल ल-क़द् ज़-ल-म-क बिसुआलि नअ्-जति-क इला निआजिही व इन्-न कसीरम्-मिनल्-ख़ु-लताइ ल-यब्ग़ी बअ्-ज़ुहुम् अला बअ्-ज़िन् इल्लल्लज़ी-न आमनू व अमि-लुस्सालिहाति व क़लीलुम्मा-हुम् व ज़न्-न दावूदु अन्नमा फ़-तन्नाहु फ़स्तग़्फ़-र रब्बहू व ख़र्-र राकिअंव्-व अनाब □(२४) फ़-ग़-फ़र्ना लहू ज़ालि-क व इन्-न लहू अिन्दना लज़ुल्फ़ा व हुस्-न मआब (२५) या दावूदु इन्ना ज-अल्ना-क ख़लीफ़तन् फ़िल्अर्ज़ि फ़ह्कुम् बैनन्नासि बिल्हक़्क़ि व ला तत्तबिअिल्हवा फ़युज़िल्ल-क अन् सबीलिल्लाहि इन्नल्-लज़ी-न यज़िल्लू-न अन् सबीलिल्लाहि लहुम् अज़ाबुन् शदीदुम्-बिमा नसू योमल्-हिसाब★(२६) व मा ख़-लक़नस्समा-अ वल्अर्-ज़ व मा बैनहुमा बातिलन् ज़ालि-क अन्नुल्लज़ी-न क-फ़रू फ़वैलुल्-लिल्लज़ी-न क-फ़रू मिनन्नार (२७) अम् नज्अ-लुल्लज़ी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति कल्मुफ़्सिदी-न फ़िल्अर्ज़ि अम् नज्अलुल्-मुत्तक़ी-न कल्-फ़ुज्जार (२८) किताबुन् अन्ज़ल्नाहु इलै-क मुबारकुल् - लियद्-दब्बरू आयातिही व लि - य-त - ज़क्क-र उलुल्-अल्बाब (२९) व व - हब्ना लिदावू-द सुलैमा-न निअ् - मल्अब्दु इन्नहू अव्वाब (३०)

يَقُولُونَ وَاذْكُرْ عَبْدَنَا دَاوُدَ ذَا الْأَيْدِ ۖ إِنَّهُ أَوَّابٌ ﴿١٧﴾ إِنَّا سَخَّرْنَا الْجِبَالَ مَعَهُ
يُسَبِّحْنَ بِالْعَشِيِّ وَالْإِشْرَاقِ ﴿١٨﴾ وَالطَّيْرَ مَحْشُورَةً ۖ كُلٌّ لَهُ أَوَّابٌ ﴿١٩﴾ وَشَدَدْنَا
مُلْكَهُ وَآتَيْنَاهُ الْحِكْمَةَ وَفَصْلَ الْخِطَابِ ﴿٢٠﴾ وَهَلْ أَتَاكَ نَبَأُ الْخَصْمِ إِذْ
تَسَوَّرُوا الْمِحْرَابَ ﴿٢١﴾ إِذْ دَخَلُوا عَلَىٰ دَاوُدَ فَفَزِعَ مِنْهُمْ ۖ قَالُوا لَا تَخَفْ ۖ خَصْمَانِ
بَغَىٰ بَعْضُنَا عَلَىٰ بَعْضٍ فَاحْكُمْ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ وَلَا تُشْطِطْ وَاهْدِنَا إِلَىٰ سَوَاءِ
الصِّرَاطِ ﴿٢٢﴾ إِنَّ هَٰذَا أَخِي لَهُ تِسْعٌ وَتِسْعُونَ نَعْجَةً وَلِيَ نَعْجَةٌ وَاحِدَةٌ
فَقَالَ أَكْفِلْنِيهَا وَعَزَّنِي فِي الْخِطَابِ ﴿٢٣﴾ قَالَ لَقَدْ ظَلَمَكَ بِسُؤَالِ نَعْجَتِكَ
إِلَىٰ نِعَاجِهِ ۖ وَإِنَّ كَثِيرًا مِنَ الْخُلَطَاءِ لَيَبْغِي بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ إِلَّا الَّذِينَ
آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَقَلِيلٌ مَا هُمْ ۗ وَظَنَّ دَاوُدُ أَنَّمَا فَتَنَّاهُ فَاسْتَغْفَرَ
رَبَّهُ وَخَرَّ رَاكِعًا وَأَنَابَ ۩ ﴿٢٤﴾ فَغَفَرْنَا لَهُ ذَٰلِكَ ۖ وَإِنَّ لَهُ عِنْدَنَا لَزُلْفَىٰ وَ
حُسْنَ مَآبٍ ﴿٢٥﴾ يَا دَاوُدُ إِنَّا جَعَلْنَاكَ خَلِيفَةً فِي الْأَرْضِ فَاحْكُمْ بَيْنَ
النَّاسِ بِالْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعِ الْهَوَىٰ فَيُضِلَّكَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ۚ إِنَّ الَّذِينَ
يَضِلُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ بِمَا نَسُوا يَوْمَ الْحِسَابِ ﴿٢٦﴾
وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاءَ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا بَاطِلًا ۚ ذَٰلِكَ ظَنُّ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ
فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ كَفَرُوا مِنَ النَّارِ ﴿٢٧﴾ أَمْ نَجْعَلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
كَالْمُفْسِدِينَ فِي الْأَرْضِ أَمْ نَجْعَلُ الْمُتَّقِينَ كَالْفُجَّارِ ﴿٢٨﴾ كِتَابٌ أَنْزَلْنَاهُ إِلَيْكَ
مُبَارَكٌ لِيَدَّبَّرُوا آيَاتِهِ وَلِيَتَذَكَّرَ أُولُو الْأَلْبَابِ ﴿٢٩﴾ وَوَهَبْنَا لِدَاوُدَ سُلَيْمَانَ

व. लाज़िम □ सज्दः १० ★रु. २/११ आ १२

के दिन से पहले ही दे दे। (१६) (ऐ पैग़म्बर!) ये जो कुछ कहते हैं, उस पर सब्र करो और हमारे बन्दे दाऊद को याद करो, जो ताक़त वाले थे (और) बेशक वे रुजूअ करने वाले थे। (१७) हम ने पहाड़ों को उन के फ़रमान के तहत कर दिया था कि सुबह व शाम उन के साथ (ख़ुदा-ए-) पाक (का) ज़िक्र करते थे। (१८) और परिंदों को भी कि जमा रहते थे, सब उन के फ़रमांबरदार थे। (१९) और हम ने उन की बादशाही को मज़बूत किया और उन को हिक्मत अता फ़रमायी और (लड़ाई की) बात का फ़ैसला (सिखाया)। (२०) भला तुम्हारे पास उन झगड़ने वालों की भी ख़बर आयी है, जब वे दीवार फांद कर अन्दर दाख़िल हुए। (२१) जिस वक़्त वे दाऊद के पास आए, तो वे उन से घबरा गये। उन्हों ने कहा, कि ख़ौफ़ न कीजिए। हम दोनों का एक मुक़दमा है कि हम में से एक ने दूसरे से ज़्यादती की है, तो आप हम में इंसाफ़ से फ़ैसला कर दीजिए और बे-इंसाफ़ी न कीजिएगा और हम को सीधा रास्ता दिखा दीजिए। (२२) (हाल यह है कि) यह मेरा भाई है, इस के (यहां) निन्यान्वे दुंबियां हैं और मेरे (पास) एक दुंबी है। यह कहता है कि यह भी मेरे हवाले कर दे और बातों में मुझ पर ज़बरदस्ती करता है। (२३) उन्हों ने कहा कि यह जो तेरी दुंबी मांगता है कि अपनी दुंबियों में मिला ले, बेशक तुम पर ज़ुल्म करता है और अक्सर शरीक एक-दूसरे पर ज़्यादती ही किया करते हैं। हां, जो ईमान लाए और नेक अमल करते रहे और ऐसे लोग बहुत कम हैं और दाऊद ने ख़्याल किया कि (इस वाक़िए से) हम ने उन को आज़माया है, तो उन्हों ने अपने परवरदिगार से मग़्फ़िरत मांगी और झुक कर गिर पड़े और (ख़ुदा की तरफ़) रुजूअ किया ☐ (२४) तो हम ने उन को बख़्श दिया और बेशक उन के लिए हमारे यहां क़ुर्ब और उम्दा जगह है। (२५) ऐ दाऊद! हम ने तुम को ज़मीन में बादशाह बनाया है, तो लोगों में इंसाफ़ के फ़ैसले किया करो और ख़्वाहिश की पैरवी न करना कि वह तुम्हें ख़ुदा के रास्ते से भटका देगी जो लोग ख़ुदा के रास्ते से भटकते हैं, उन के लिए सख़्त अज़ाब (तैयार) है कि उन्हों ने हिसाब के दिन को भुला दिया। (२६) ★

और हम ने आसमान और ज़मीन को और जो (कायनात) उन में है, उस को मस्लहत से ख़ाली नहीं पैदा किया। यह उन का गुमान है, जो काफ़िर हैं, सो काफ़िरों के लिए दोज़ख़ का अज़ाब है। (२७) जो लोग ईमान लाए और अमल करते रहे, क्या उन को हम उन की तरह कर देंगे, जो मुल्क में फ़साद करते हैं या परहेज़गारों को बद-कारों की तरह कर देंगे। (२८) (यह) किताब, जो हम ने तुम पर नाज़िल की है, बरकत वाली है, ताकि लोग इस की आयतों में ग़ौर करें और ताकि अक़्ल वाले नसीहत पकड़ें। (२९) और हम ने दाऊद को सुलेमान अता किए। बहुत ख़ूब बन्दे (थे और) वे (ख़ुदा की तरफ़) रुजूअ करने वाले थे। (३०) जब उन के सामने शाम को ख़ासे के घोड़े

व. लाज़िम ☐ सज्दः १० ★रु. २/११ आ १२

इज़् अुरि-ज़ अलैहि बिलअ़शिय्यिस्-साफ़िनातुल-जियाद (३१) फ़क़ा-ल इन्नी अह्-बब्तु हुब्बल्-ख़ैरि अन् ज़िक्रि रब्बी हत्ता त-वारत बिल्-हिजाब (३२) रुद्दूहा अलय्-य फ़-तफ़ि-क़ मस्हम्-बिस्सूक़ि वल्-अअ्-नाक़ (३३) व ल-क़द् फ़-तन्ना सुलैमा-न व अल्क़ैना अला कुर्सिय्यिही ज-स-दन् सुम्-म अनाब (३४) क़ा-ल रब्बिग़्फ़िर् ली व हब् ली मुल्कल्ला यम्बग़ी लि-अ-हदिम्-मिम्बअ्-दी इन्न-क अन्तल्-वह्हाब (३५) फ़-सख़्ख़र्ना लहुर्-री-ह तज्री बिअम्रिही रुख़ाअन् हैसु असाब (३६) वश्शयाती-न कुल्-ल बन्नाइंव्-व ग़व्वास (३७) व आख़री-न मुक़र्रनी-न फ़िल्-अस्फ़ाद (३८) हाज़ा अता-उना फ़म्नुन् औ अम्सिक् बिग़ैरि हिसाब (३९) व इन्-न लहू अिन्दना लज़ुल्फ़ा व हुस्-न मआब (४०) वज़्कुर् अ़ब्दना अय्यू-ब इज़् नादा रब्बहू अन्-नी मस्सनियश्-शैतानु बिनुस्-बिंव्-व अज़ाब (४१) उर्कुज़् बिरिज्लि-क हाज़ा मुग़्-त-सलुम्-बारिदुंव्-व शराब (४२) व व-हब्ना लहू अह्-लहू व मिस्लहुम् म-अहुम् रह्-म-तम्-मिन्ना व ज़िक्रा लिउलिल्-अल्बाब (४३) व ख़ुज़् बियदि-क ज़िग़्-सन् फ़ज़्रिब् बिही व ला तह्-नस् इन्ना व-जद्नाहु साबिरन् निअ्-मल् अब्दु इन्नहू अव्वाब (४४) वज़्कुर् अिबादना इब्राही-म व इस्हा-क़ व यअ्-क़ू-ब उलिल्-ऐदी वल्-अब्सार (४५) इन्ना अख़्-लस्नाहुम् बिख़ालि-सतिन् ज़िक-रद्दार (४६) व इन्नहुम् अिन्दना लमिनल्-मुस्तफ़ैनल्-अख़्यार (४७) वज़्कुर् इस्माअ़ी-ल वल-य-स्-अ व ज़ल्किफ़्लि व कुल्लुम्-मिनल्-अख़्यार (४८) हाज़ा ज़िक्रुन् व इन्-न लिल्मुत्तक़ी-न लहुस्-न मआब (४९) जन्नाति अद्निम्-मुफ़त्त-ह-तल्-लहुमुल्-अब्वाब (५०) मुत्तकिई-न फ़ीहा यद्अू-न फ़ीहा बिफ़ाकिहतिन् कसीरतिंव्-व शराब (५१) व अिन्दहुम् क़ासिरातुत्-तर्फ़ि अतराब (५२)

إِذْ عُرِضَ عَلَيْهِ بِالْعَشِيِّ الصَّافِنَاتُ الْجِيَادُ ۝ فَقَالَ إِنِّي أَحْبَبْتُ حُبَّ الْخَيْرِ عَن ذِكْرِ رَبِّي حَتَّىٰ تَوَارَتْ بِالْحِجَابِ ۝ رُدُّوهَا عَلَيَّ فَطَفِقَ مَسْحًا بِالسُّوقِ وَالْأَعْنَاقِ ۝ وَلَقَدْ فَتَنَّا سُلَيْمَانَ وَأَلْقَيْنَا عَلَىٰ كُرْسِيِّهِ جَسَدًا ثُمَّ أَنَابَ ۝ قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِي وَهَبْ لِي مُلْكًا لَّا يَنبَغِي لِأَحَدٍ مِّن بَعْدِي إِنَّكَ أَنتَ الْوَهَّابُ ۝ فَسَخَّرْنَا لَهُ الرِّيحَ تَجْرِي بِأَمْرِهِ رُخَاءً حَيْثُ أَصَابَ ۝ وَالشَّيَاطِينَ كُلَّ بَنَّاءٍ وَغَوَّاصٍ ۝ وَآخَرِينَ مُقَرَّنِينَ فِي الْأَصْفَادِ ۝ هَٰذَا عَطَاؤُنَا فَامْنُنْ أَوْ أَمْسِكْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝ وَإِنَّ لَهُ عِندَنَا لَزُلْفَىٰ وَحُسْنَ مَآبٍ ۝ وَاذْكُرْ عَبْدَنَا أَيُّوبَ إِذْ نَادَىٰ رَبَّهُ أَنِّي مَسَّنِيَ الشَّيْطَانُ بِنُصْبٍ وَعَذَابٍ ۝ ارْكُضْ بِرِجْلِكَ هَٰذَا مُغْتَسَلٌ بَارِدٌ وَشَرَابٌ ۝ وَوَهَبْنَا لَهُ أَهْلَهُ وَمِثْلَهُم مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنَّا وَذِكْرَىٰ لِأُولِي الْأَلْبَابِ ۝ وَخُذْ بِيَدِكَ ضِغْثًا فَاضْرِب بِّهِ وَلَا تَحْنَثْ إِنَّا وَجَدْنَاهُ صَابِرًا نِّعْمَ الْعَبْدُ إِنَّهُ أَوَّابٌ ۝ وَاذْكُرْ عِبَادَنَا إِبْرَاهِيمَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ أُولِي الْأَيْدِي وَالْأَبْصَارِ ۝ إِنَّا أَخْلَصْنَاهُم بِخَالِصَةٍ ذِكْرَى الدَّارِ ۝ وَإِنَّهُمْ عِندَنَا لَمِنَ الْمُصْطَفَيْنَ الْأَخْيَارِ ۝ وَاذْكُرْ إِسْمَاعِيلَ وَالْيَسَعَ وَذَا الْكِفْلِ وَكُلٌّ مِّنَ الْأَخْيَارِ ۝ هَٰذَا ذِكْرٌ وَإِنَّ لِلْمُتَّقِينَ لَحُسْنَ مَآبٍ ۝ جَنَّاتِ عَدْنٍ مُّفَتَّحَةً لَّهُمُ الْأَبْوَابُ ۝ مُتَّكِئِينَ فِيهَا يَدْعُونَ فِيهَا بِفَاكِهَةٍ كَثِيرَةٍ وَشَرَابٍ ۝ وَعِندَهُمْ قَاصِرَاتُ الطَّرْفِ أَتْرَابٌ

★रु. ३/१२ आ १४ व लाज़िम

पेश किये गये, (३१) तो कहने लगे कि मैं ने परवरदिगार की याद से (ग़ाफ़िल हो कर) माल की मुहब्बत अख़्तियार की, यहां तक कि (सूरज) पर्दे में छिप गया। (३२) (बोले कि) उन को मेरे पास वापस लाओ, फिर उन की टांगों और गर्दनों पर हाथ फेरने लगे। (३३) हम ने सुलेमान की आज़माइश की और उन के तख़्त पर एक धड़ डाल दिया, फिर उन्हों ने (ख़ुदा की तरफ़) रुजूअ किया। (३४) (और) दुआ की कि ऐ परवरदिगार! मुझे मग़फ़िरत कर, मुझ को ऐसी बादशाही अता कर कि मेरे बाद किसी को मुनासिब न हो। बेशक तू बड़ा अता फ़रमाने वाला है। (३५) फिर हम ने हवा को उन के फ़रमान के तहत कर दिया कि जहां वह पहुंचना चाहते, उन के हुक्म से नर्म-नर्म चलने लगती। (३६) और देवों को भी (उन के फ़रमान के तहत किया), यह सब इमारतें बनाने वाले और ग़ोता मारने वाले थे। (३७) और औरों को भी, जो ज़ंजीरों में जकड़े हुए थे। (३८) (हम ने कहा) यह हमारी बख़्शिश है, (चाहो तो) एहसान करो या (चाहो तो) रख छोड़ो, (तुम से) कुछ हिसाब नहीं है। (३९) और बेशक उन के लिए हमारे यहां क़ुर्ब और अच्छी जगह है। (४०) ★

और हमारे बन्दे अय्यूब को याद करो ▨ जब उन्हों ने अपने रब को पुकारा कि (ऐ ख़ुदा!) शैतान ने मुझ को तक्लीफ़ दे रखी है। (४१) (हम ने कहा कि ज़मीन पर) लात मारो, (देखो), यह (चश्मा निकल आया), नहाने को ठंडा और पीने को (मीठा)। (४२) और हम ने उन को बीवी (-बच्चे) और उन के साथ उन के बराबर और बख़्शे।[1] (यह) हमारी तरफ़ से रहमत और अक़्ल वालों के लिए नसीहत थी, (४३) और अपने हाथ में झाड़ू लो और उस से मारो और क़सम न तोड़ो।[2] बेशक हम ने उन को साबित क़दम पाया बहुत ख़ूब बन्दे थे, बेशक वह रुजूअ करने वाले थे। (४४) और हमारे बन्दों इब्राहीम और इस्हाक़ और याक़ूब को याद करो, जो ताक़त वाले और नज़र वाले थे। (४५) हम ने उन को एक ख़ास (सिफ़त) (आख़िरत के) घर की याद से मुम्ताज़ किया था। (४६) और वे हमारे नज़दीक चुने हुए और नेक लोगों में से थे। (४७) और इस्माईल और अल्-यसअ् और ज़ुलकिफ़्ल को याद करो। वे सब नेक लोगों में से थे। (४८) यह नसीहत और परहेज़गारों के लिए तो उम्दा जगह है, (४९) हमेशा रहने के बाग़, जिन के दरवाज़े उन के लिए खुले होंगे। (५०) उन में तकिए लगाए बैठे होंगे और (खाने-पीने के लिए) बहुत से मेवे और शराब मांगते रहेंगे। (५१) और उन के पास नीची निगाह रखने वाली (और) हम-उम्र

---

१. यानी जितने बाल-बच्चे पहले थे, वह भी दिए और उतने ही और अता किए।

२. कहते हैं कि हज़रत अय्यूब की बीवी ने कोई ऐसी हरकत की या आप से कोई ऐसी बात कही, जो आप को ना-गवार हुई, तो आप ने क़सम खा ली कि मैं तुझ को सौ छड़ियां मारूंगा, तो आप को यह इर्शाद हुआ कि सौ सींकों की झाड़ू ले कर उस से बीवी को मारो, क़सम सच्ची हो जाएगी।

★रु. ३/१२ आ १४ ▨ व. लाज़िम

हाज़ा मा तूअदू-न लियौमिल्-हिसाब ●(५३) इन्-न हाज़ा ल-रिज़्क़ुना मा लहू मिन् नफ़ाद ᴬ(५४) हाज़ा ᵇव इन्-न लित्ताग़ी-न ल-शर्-र म-आब ᴸ(५५) जहन्न-म यस्लौनहा ᶜ फ़बिअ्सल्-मिहाद (५६) हाज़ा ᴸ फ़ल्यज़ूक़ूहु हमीमु व-व ग़स्साक़ ᴸ(५७) व आख़रु मिन् शक्लिही अज़्वाज ᵇ(५८) हाज़ा फ़ौजुम्-मुक़्तहिमुम् म-अकुम् ᶜ ला मर्हबम्-बिहिम् ᵇ इन्नहुम् सालुन्नार (५९) क़ालू बल् अन्तुम् ^क़िफ़^ ला मर्हबम्-बिकुम् ᵇ अन्तुम् क़द्दम्तुमूहु लना ᶜ फ़बिअ्सल्-क़रार (६०) क़ालू रब्बना मन् क़द्-द-म लना हाज़ा फ़ज़िद्हु अज़ाबन् ज़िअ्-फ़न् फ़िन्नार (६१) व क़ालू मा लना ला नरा रिजालन् कुन्ना नअुद्दुहुम् मिनल्-अश्रार ᵇ(६२) अत्त-ख़ज़्नाहुम् सिख़्रिय्यन् अम् ज़ाग़त् अन्हुमुल्-अब्सार (६३) इन्-न ज़ालि-क ल-हक़्क़ुन् तख़ासुमु अह्लिन्नार ★(६४) क़ुल् इन्नमा अना मुन्ज़िरुंव्-व मा मिन् इलाहिन् इल्लल्लाहुल-वाहिदुल-क़ह्हार ᶜ(६५) रब्बुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बैनहुमल-अज़ीज़ुल-ग़फ़्फ़ार (६६) क़ुल् हु-व न-ब-उन् अज़ीम ᴸ(६७) अन्तुम्-अन्हु मुअ्रिज़ून (६८) मा का-न लि-य मिन् अिल्मिम्-बिलमल-इल-अअ्-ला इज़् यख़्तसिमून (६९) इंय्यूहा इलय्-य इल्ला अन्नमा अ-न नज़ीरुम्-मुबीन (७०) इज़् क़ा-ल रब्बु-क लिल्मलाइकति इन्नी ख़ालिक़ुम्-ब-श-रम् मिन् तीन (७१) फ़-इज़ा सव्वैतुहू व न-फ़ख़्तु फ़ीहि मिर्रूही फ़-क़अू लहू साजिदीन (७२) फ़-स-ज-दल-मलाइकतु कुल्लुहुम् अज्मअून ᴸ(७३) इल्ला इब्लीस ᵇ इस्तक्ब-र व का-न मिनलकाफ़िरीन (७४) क़ा-ल या इब्लीसु मा म-न-अ-क अन् तस्जु-द लिमा ख़-लक़्तु बि-य-दय-य ᵇ अस्तक्बर-त अम् कुन्-त मिनल-आलीन (७५) क़ा-ल अ-न ख़ैरुम्-मिन्हु ᵇ ख़-लक़्तनी मिन् नारिंव्-व ख़-लक़्तहू मिन् तीन (७६) क़ा-ल फ़ख़्रुज् मिन्हा फ़-इन्न-क रजीम ᴬ(७७) व इन्-न अलै-क लअ्नती इला यौमिद्दीन (७८) क़ा-ल रब्बि फ़-अन्ज़िर्नी इला यौमि युब्-असून (७९) क़ा-ल फ़-इन्न-क मिनल-मुन्ज़रीन ᴶ(८०) इला यौमिल-वक़्तिल-मअ्-लूम (८१)

أَتْرَابٌ ۝ هَٰذَا مَا تُوعَدُونَ لِيَوْمِ الْحِسَابِ ۝ إِنَّ هَٰذَا لَرِزْقُنَا مَا لَهُ مِن نَّفَادٍ ۝
هَٰذَا ۚ وَإِنَّ لِلطَّاغِينَ لَشَرَّ مَآبٍ ۝ جَهَنَّمَ يَصْلَوْنَهَا فَبِئْسَ الْمِهَادُ ۝ هَٰذَا
فَلْيَذُوقُوهُ حَمِيمٌ وَغَسَّاقٌ ۝ وَآخَرُ مِن شَكْلِهِ أَزْوَاجٌ ۝ هَٰذَا فَوْجٌ مُّقْتَحِمٌ
مَّعَكُمْ ۖ لَا مَرْحَبًا بِهِمْ ۚ إِنَّهُمْ صَالُو النَّارِ ۝ قَالُوا بَلْ أَنتُمْ لَا مَرْحَبًا بِكُمْ ۖ
أَنتُمْ قَدَّمْتُمُوهُ لَنَا ۖ فَبِئْسَ الْقَرَارُ ۝ قَالُوا رَبَّنَا مَن قَدَّمَ لَنَا هَٰذَا فَزِدْهُ عَذَابًا
ضِعْفًا فِي النَّارِ ۝ وَقَالُوا مَا لَنَا لَا نَرَىٰ رِجَالًا كُنَّا نَعُدُّهُم مِّنَ الْأَشْرَارِ ۝ أَتَّخَذْنَاهُمْ
سِخْرِيًّا أَمْ زَاغَتْ عَنْهُمُ الْأَبْصَارُ ۝ إِنَّ ذَٰلِكَ لَحَقٌّ تَخَاصُمُ أَهْلِ النَّارِ ۝ قُلْ
إِنَّمَا أَنَا مُنذِرٌ ۖ وَمَا مِنْ إِلَٰهٍ إِلَّا اللَّهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝ رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَ
الْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الْعَزِيزُ الْغَفَّارُ ۝ قُلْ هُوَ نَبَأٌ عَظِيمٌ ۝ أَنتُمْ عَنْهُ مُعْرِضُونَ ۝
مَا كَانَ لِيَ مِنْ عِلْمٍ بِالْمَلَإِ الْأَعْلَىٰ إِذْ يَخْتَصِمُونَ ۝ إِن يُوحَىٰ إِلَيَّ إِلَّا أَنَّمَا
أَنَا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۝ إِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَائِكَةِ إِنِّي خَالِقٌ بَشَرًا مِّن طِينٍ ۝
فَإِذَا سَوَّيْتُهُ وَنَفَخْتُ فِيهِ مِن رُّوحِي فَقَعُوا لَهُ سَاجِدِينَ ۝ فَسَجَدَ الْمَلَائِكَةُ
كُلُّهُمْ أَجْمَعُونَ ۝ إِلَّا إِبْلِيسَ اسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكَافِرِينَ ۝ قَالَ يَا إِبْلِيسُ
مَا مَنَعَكَ أَن تَسْجُدَ لِمَا خَلَقْتُ بِيَدَيَّ ۖ أَسْتَكْبَرْتَ أَمْ كُنتَ مِنَ الْعَالِينَ ۝
قَالَ أَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ ۖ خَلَقْتَنِي مِن نَّارٍ وَخَلَقْتَهُ مِن طِينٍ ۝ قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا
فَإِنَّكَ رَجِيمٌ ۝ وَإِنَّ عَلَيْكَ لَعْنَتِي إِلَىٰ يَوْمِ الدِّينِ ۝ قَالَ رَبِّ فَأَنظِرْنِي
إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ ۝ قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ الْمُنظَرِينَ ۝ إِلَىٰ يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُومِ ۝

●सु. ३/४ ★रु. ४/१३ आ २४

(औरतें) होंगी। (५२) ये वह चीजें हैं, जिन का हिसाब के दिन के लिए, तुम से वायदा किया जाता था●(५३) यह हमारी रोजी है, जो कभी ख़त्म नहीं होगी। (५४) ये (नेमतें तो फ़रमां-बरदारों के लिए हैं) और सर-कशों के लिए बुरा ठिकाना है। (५५) (यानी) दोज़ख़, जिस में वे दाख़िल होंगे और वह बुरी आरामगाह है। (५६) यह खौलता हुआ गर्म पानी और पीप (है), अब उस के मज़े चखें। (५७) और इसी तरह के और बहुत से (अज़ाब होंगे) (५८) यह एक फ़ौज है, जो तुम्हारे साथ दाख़िल होगी, इन को ख़ुशी न हो, ये दोज़ख़ में जाने वाले है, (५९) कहेंगे, बल्कि तुम ही को ख़ुशी न हो, तुम ही तो यह (बला) हमारे सामने लाए हो, सो (यह) बुरा ठिकाना है। (६०) वे कहेंगे, ऐ परवरदिगार ! जो इस को हमारे सामने लाया है, उस को दोज़ख़ में दूना अज़ाब दे, (६१) और कहेंगे, क्या वजह है कि (यहां) हम उन शख़्सों को नहीं देखते, जिन को बुरों में गिना करते थे। (६२) क्या हम ने उन से ठट्ठा किया है या (हमारी) आंखें उन (की तरफ़) से फिर गयी हैं ? (६३) बेशक यह दोज़खियों का झगड़ना ना बर-हक़ है। (६४)★

कह दो कि मैं तो सिर्फ़ हिदायत करने वाला हूं और ख़ुदा-ए-यक्ता (और) ग़ालिब के सिवा कोई माबूद नहीं। (६५) जो आसमानों और ज़मीन और जो (मख़्लूक़) उन में है, सब का मालिक है, ग़ालिब (और) बख़्शने वाला। (६६) कह दो कि यह एक बड़ी (हौलनाक चीज़ की) ख़बर है। (६७) जिस को तुम ध्यान में नहीं लाते, (६८) मुझ को ऊपर की मज्लिस (वालों) का जब वे झगड़ते थे, कुछ भी इल्म न था। (६९) मेरी तरफ़ तो यही वह्य की जाती है कि मैं खुल्लम-खुल्ला हिदायत करने वाला हूं। (७०) जब तुम्हारे परवरदिगार ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं मिट्टी से इंसान बनाने वाला हूं। (७१) जब उस को दुरुस्त कर लूं और उस में अपनी रूह फूंक दूं तो उस के आगे सज्दे में गिर पड़ना। (७२) तो तमाम फ़रिश्तों ने सज्दा किया, (७३) मगर शैतान अकड़ बैठा और काफ़िरों में हो गया। (७४) (ख़ुदा ने) फ़रमाया कि ऐ इब्लीस जिस शख़्स को मैं ने अपने हाथों से बनाया, उस के आगे सज्दा करने से तुझे किस चीज़ ने मना किया। क्या तू घमंड में आ गया या ऊंचे दर्जे वालों में था ? (७५) बोला कि मैं इस से बेहतर हूं (कि) तू ने मुझ को आग से पैदा किया और इसे मिट्टी से बनाया। (७६) कहा, यहां से निकल जा, तू मर्दूद है। (७७) और तुझ पर क़ियामत के दिन तक मेरी लानत (पड़ती) रहेगी। (७८) कहने लगा कि मेरे परवरदिगार मुझे उस दिन तक कि लोग उठाए जाएं, मुहलत दे। (७९) कहा, तुझ को मुहलत दी जाती है। (८०) उस दिन तक, जिस का वक़्त मुक़र्रर है। (८१) कहने लगा कि मुझे तेरी इज़्ज़त की

●सु. ३/४ ★रु. ४/१३ आ २४

क़ा-ल फ़बिअिज़्ज़तिक ल-उग्वियन्नहुम् अज्-मअीन(८२) इल्ला अिबाद-क मिन्हुमुल-मुख़्-लसीन (८३) क़ा-ल फ़ल्हक़्क़ु वल्हक़्-क अक़ूल(८४) ल-अम्-ल-अन्-न जहन्न-म मिन-क व मिम्मन् तबि-अ-क मिन्हुम् अज्-मअीन (८५) क़ुल् मा अस्-अलुकुम् अलैहि मिन् अज्रिव्-व मा अ-न मिनल्-मु-त-कल्लिफ़ीन (८६) इन् हु-व इल्ला ज़िक्रुल-लिल्आलमीन (८७) व ल-तअ्-लमुन-न न-ब-अहू बअ्-द हीन★(८८)

३९ सूरतुज़्ज़ु-मरि ५९

(मक्की) इस सूरः में अरबी के ४९६५ अक्षर, ११८४ शब्द, ७५ आयतें और ८ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

तन्ज़ीलुल-किताबि मिनल्लाहिल-अज़ीज़िल-हकीम (१) इन्ना अन्ज़ल्ना इलैकल-किता-ब बिल्हक़्क़ि फ़अ्-बुदिल्ला-ह मुख़्लिसल-लहुद्दीन(२) अला लिल्लाहिद-दीनुल्-ख़ालिसु वल्लज़ीनत्त-ख़-ज़ू मिन्दूनिही औलिया-अ※ मा नअ्-बुदुहुम् इल्ला लियुक़र्रिबूना इलल्लाहि ज़ुल्फ़ा इन्नल्ला-ह यह्कुमु बैनहुम् फ़ीमा हुम् फ़ीहि यख़्तलिफ़ू-न इन्नल्ला-ह ला यह्दी मन् हु-व काज़िबुन् कफ़्फ़ार (३) लौ अरादल्लाहु अंय्यत्तख़ि-ज व-ल-दल्लस्तफ़ा मिम्मा यख़्लुक़ु मा यशाउ सुब्-हानहू हुवल्लाहुल-वाहिदुल-क़ह्हार (४) ख़-ल-क़स्समावाति वल्अर्-ज़ बिल्हक़्क़ि युकव्विरुल्लै-ल अलन्नहारि व युकव्विरुन्-नहा-र अलल्लैलि व सख़्ख़-रश्शम्-स वल्क़-म-र कुल्लुंय्यजरी लि-अ-जलिम-मुसम्मन् अला हुवल-अज़ीज़ुल-ग़फ़्फ़ार (५) ख़-ल-क़कुम् मिन् नफ़्सिव्वाहिदतिन् सुम्-म ज-अ-ल मिन्हा ज़ौजहा व अन्ज़-ल लकुम् मिनल-अन्आमि समानि-य-त अज़्वाजिन् यख़्लुक़ुकुम् फ़ी बुतूनि उम्महातिकुम् ख़ल्क़म-मिम्बअ्-दि ख़ल्क़िन् फ़ी ज़ुलुमातिन् सलासिन् ज़ालिकुमुल्लाहु रब्बुकुम् लहुल्मुल्कु ला इला-ह इल्ला हु-व फ़-अन्ना तुस्रफ़ून (६) इन् तक्फ़ुरू फ़-इन्नल्ला-ह ग़निय्युन् अन्कुम् व ला यर्ज़ा लिअिबादिहिल-कुफ़्-र व इन् तश्कुरू यर्ज़हु लकुम् व ला तज़िरु वाज़िरतुंव्विज़्-र उख़्रा सुम्-म इला रब्बिकुम् मर्जिअुकुम् फ़-युनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् तअ्-मलू-न इन्नहू अलीमुम्-बिज़ातिस्सुदूर (७)

قَالَ فَبِعِزَّتِكَ لَأُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ۝ إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِينَ ۝ قَالَ
فَالْحَقُّ وَالْحَقَّ أَقُولُ ۝ لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنكَ وَمِمَّن تَبِعَكَ مِنْهُمْ أَجْمَعِينَ ۝
قُلْ مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ وَمَا أَنَا مِنَ الْمُتَكَلِّفِينَ ۝ إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ
لِّلْعَالَمِينَ ۝ وَلَتَعْلَمُنَّ نَبَأَهُ بَعْدَ حِينٍ ۝
سُورَةُ الزُّمَرِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
تَنزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ۝ إِنَّا أَنزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ
فَاعْبُدِ اللَّهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّينَ ۝ أَلَا لِلَّهِ الدِّينُ الْخَالِصُ ۚ وَالَّذِينَ
اتَّخَذُوا مِن دُونِهِ أَوْلِيَاءَ مَا نَعْبُدُهُمْ إِلَّا لِيُقَرِّبُونَا إِلَى اللَّهِ زُلْفَىٰ إِنَّ
اللَّهَ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِي مَا هُمْ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَنْ هُوَ كَاذِبٌ
كَفَّارٌ ۝ لَّوْ أَرَادَ اللَّهُ أَن يَتَّخِذَ وَلَدًا لَّاصْطَفَىٰ مِمَّا يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۚ سُبْحَانَهُ
هُوَ اللَّهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۖ يُكَوِّرُ اللَّيْلَ عَلَى
النَّهَارِ وَيُكَوِّرُ النَّهَارَ عَلَى اللَّيْلِ ۖ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ كُلٌّ يَجْرِي لِأَجَلٍ
مُّسَمًّى ۗ أَلَا هُوَ الْعَزِيزُ الْغَفَّارُ ۝ خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْهَا
زَوْجَهَا وَأَنزَلَ لَكُم مِّنَ الْأَنْعَامِ ثَمَانِيَةَ أَزْوَاجٍ ۚ يَخْلُقُكُمْ فِي بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ
خَلْقًا مِّن بَعْدِ خَلْقٍ فِي ظُلُمَاتٍ ثَلَاثٍ ۚ ذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ۖ لَا إِلَٰهَ إِلَّا
هُوَ ۖ فَأَنَّىٰ تُصْرَفُونَ ۝ إِن تَكْفُرُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ عَنكُمْ ۖ وَلَا يَرْضَىٰ لِعِبَادِهِ الْكُفْرَ
وَإِن تَشْكُرُوا يَرْضَهُ لَكُمْ ۗ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ۗ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُم مَّرْجِعُكُمْ

★रु. ५/१४ आ २४ ※व. लाज़िम

क़सम ! मैं उन सब को बहकाता रहूंगा। (८२) सिवा उन के, जो तेरे खालिस बन्दे हैं। (८३) कहा, सच (है) और मैं भी सच कहता हूं। (८४) कि मैं तुझ से और जो उन में से तेरी पैरवी करेंगे, सब से जहन्नम को भर दूंगा। (८५) (ऐ पैग़म्बर !) कह दो कि मैं तुम से इस का बदला नहीं मांगता और न मैं बनावट करने वालों में हूं। (८६) यह (क़ुरआन) तो दुनिया वालों के लिए नसीहत है। (८७) और तुम को इस का हाल एक वक़्त के बाद मालूम हो जाएगा। (८८)★

३६ सूरः ज़ुमर ५६

सूरः ज़ुमर मक्की है। इस में पचहत्तर आयतें और आठ रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

इस किताब का उतारा जाना ख़ुदा-ए-ग़ालिब (और) हिक्मत वाले की तरफ़ से है। (१) (ऐ पैग़म्बर !) हम ने यह किताब तुम्हारी तरफ़ सच्चाई के साथ नाज़िल की है, तो ख़ुदा की इबादत करो (यानी) उस की इबादत को (शिर्क से) ख़ालिस कर के। (२) देखो ख़ालिस इबादत ख़ुदा ही के लिए है और जिन लोगों ने उस के सिवा और दोस्त बनाये हैं/// (वे कहते हैं कि) हम इन को इस लिए पूजते हैं कि हम को ख़ुदा का मुक़र्रब बना दें, तो जिन बातों में ये इख़्तिलाफ़ करते हैं, ख़ुदा उन में इन का फ़ैसला कर देगा। बेशक ख़ुदा उस शख़्स को, जो झूठा, ना-शुक्रा है, हिदायत नहीं देता। (३) अगर ख़ुदा किसी को अपना बेटा बनाना चाहता, तो अपनी मख़्लूक़ में से जिस को चाहता, चुन लेता। वह पाक है, वही तो ख़ुदा अकेला (और) ग़ालिब है। (४) उसी ने आसमानों और ज़मीन को तद्बीर के साथ पैदा किया है (और) वही रात को दिन पर लपेटता और दिन को रात पर लपेटता है और उसी ने सूरज और चांद को बस में कर रखा है। सब एक मुक़र्रर वक़्त तक चलते रहेंगे। देखो वही ग़ालिब (और) बख़्शने वाला है। (५) उसी ने तुम को एक शख़्स से पैदा किया, फिर उस से उस का जोड़ा बनाया और उसी ने तुम्हारे लिए चारपायों में से आठ जोड़े बनाए। वही तुम को तुम्हारी माओं के पेट में (पहले) एक तरह, फिर दूसरी तरह तीन अंधेरों में बनाता है। यही ख़ुदा तुम्हारा परवरदिगार है, उसी की बादशाही है। उस के सिवा कोई माबूद नहीं, फिर तुम कहां फिर जाते हो ? (६) अगर ना-शुक्री करोगे, तो ख़ुदा तुम से बे-परवा है और वह अपने बन्दों के लिए ना-शुक्री नहीं पसन्द करता।[1] और अगर शुक्र करोगे, तो वह इस को तुम्हारे लिए पसन्द करेगा और कोई उठाने वाला दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा, फिर तुम को अपने परवरदिगार की तरफ़ लौटना है। फिर जो कुछ तुम करते रहे, वह तुम को बताएगा, वह तो दिलों की

१. यानी इस बात को पसंद नहीं करता कि उस के बन्दे हो कर उस की ना-शुक्री करो।

★रु. ५/१४ आ २४ ///व. लाज़िम

व इज़ा मस्सल-इन्सा-न ज़ुर्रुन् दआ रब्बहू मुनीबन् इलैहि सुम्-म इज़ा ख़व्व-लहू निअ्-म-तम्-मिन्हु नसि-य मा का-न यद्अू इलैहि मिन् क़ब्लु व ज-अ-ल लिल्लाहि अन्दादल-लियुज़िल्-ल अन् सबीलिही ᵇक़ुल् तमत्तअ्-बिकुफ़्रि-क क़लीलन्ᶜइन्न-क मिन् अस्हाबिन्नार (८) अम्मन् हु-व क़ानितुन् आनाअल्लैलि साजिदव्-व क़ाइमंय्यह़्ज़रुल-आख़ि-र-त व यर्जू रह्-म-त रब्बिही क़ुल् हल् यस्तविल्लज़ी-न यअ्-लमू-न वल्लज़ी-न ला यअ्-लमू-न ᵇइन्नमा य-त-ज़क्करु उलुल्अल्बाब ★ (९) क़ुल् या अिबादिल्लज़ी-न आमनुत्तक़ू रब्बकुम् लिल्लज़ी-न अह्सनू फ़ी हाज़िहिद्दुन्या ह़-स-नतुन् ᵇव अर-ज़ुल्लाहि वासि-अतुन् ᵇइन्नमा युवफ़्फ़स्साबिरू-न अज्-रहुम् बिग़ैरि हिसाब (१०) क़ुल् इन्नी उमिर्तु अन् अअ्-बुदल्ला-ह मुख़्लिसल्लहुद्दीन ᵘ (११) व उमिर्तु लि-अन् अकू-न अव्वलल-मुस्लिमीन (१२) क़ुल् इन्नी अख़ाफ़ु इन् असैतु रब्बी अज़ा-ब यौमिन् अज़ीम (१३) क़ुलिल्ला-ह अअ्-बुदु मुख़्लिसल्लहू दीनी ᵘ (१४) फ़अ्-बुदू मा शिअ्तुम् मिन् दूनिही ᵇक़ुल् इन्नल-ख़ासिरीनल-लज़ी-न ख़सिरू अन्फ़ुसहुम् व अह्लीहिम् यौमल्-क़ियामति ᵇअला ज़ालि-क हुवल-ख़ुस्रानुल-मुबीन (१५) लहुम् मिन् फ़ौक़िहिम् ज़ु-ल-लुम-मिनन्नारि व मिन् तह्तिहिम् ज़ु-ल-लुन् ᵇज़ालि-क युख़व्वि-फ़ुल्लाहु बिही अिबादहू ᵇ याअिबादि फ़त्तक़ून (१६) वल्लज़ीनज्-त-नबुत्ताग़ू-त अंय्यअ्-बुदूहा व अनाबू इलल्लाहि लहुमुल्बुश्रा ᶜफ़बश्शिर् अिबाद ᵘ (१७) अल्लज़ी-न यस्तमिअूनल् - क़ौ - ल फ़यत्तबिअू - न अह् - स - नहू ᵇ उलाइकल्लज़ी - न हदाहुमुल्लाहु व उलाइ-क हुम् उलुल्अल्बाब (१८) अ-फ़-मन् हक़्-क़ अलैहि कलिमतुल् अज़ाबि ᵇ अ-फ़ अन्-त तुन्क़िज़ु मन् फ़िन्नार ᶜ (१९)

فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۚ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝٧ وَإِذَا مَسَّ
الْإِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَا رَبَّهُ مُنِيبًا إِلَيْهِ ثُمَّ إِذَا خَوَّلَهُ نِعْمَةً مِنْهُ نَسِيَ مَا كَانَ
يَدْعُو إِلَيْهِ مِنْ قَبْلُ وَجَعَلَ لِلَّهِ أَنْدَادًا لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيلِهِ ۚ قُلْ
تَمَتَّعْ بِكُفْرِكَ قَلِيلًا ۖ إِنَّكَ مِنْ أَصْحَابِ النَّارِ ۝٨ أَمَّنْ هُوَ قَانِتٌ آنَاءَ اللَّيْلِ
سَاجِدًا وَقَائِمًا يَحْذَرُ الْآخِرَةَ وَيَرْجُو رَحْمَةَ رَبِّهِ ۗ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الَّذِينَ
يَعْلَمُونَ وَالَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۗ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولُو الْأَلْبَابِ ۝٩ قُلْ يَا عِبَادِ الَّذِينَ
آمَنُوا اتَّقُوا رَبَّكُمْ ۚ لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا فِي هَٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ۗ وَأَرْضُ اللَّهِ
وَاسِعَةٌ ۗ إِنَّمَا يُوَفَّى الصَّابِرُونَ أَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝١٠ قُلْ إِنِّي أُمِرْتُ
أَنْ أَعْبُدَ اللَّهَ مُخْلِصًا لَهُ الدِّينَ ۝١١ وَأُمِرْتُ لِأَنْ أَكُونَ أَوَّلَ الْمُسْلِمِينَ ۝١٢
قُلْ إِنِّي أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۝١٣ قُلِ اللَّهَ أَعْبُدُ
مُخْلِصًا لَهُ دِينِي ۝١٤ فَاعْبُدُوا مَا شِئْتُمْ مِنْ دُونِهِ ۗ قُلْ إِنَّ الْخَاسِرِينَ الَّذِينَ
خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ وَأَهْلِيهِمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ أَلَا ذَٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِينُ ۝١٥
لَهُمْ مِنْ فَوْقِهِمْ ظُلَلٌ مِنَ النَّارِ وَمِنْ تَحْتِهِمْ ظُلَلٌ ۚ ذَٰلِكَ يُخَوِّفُ اللَّهُ
بِهِ عِبَادَهُ ۚ يَا عِبَادِ فَاتَّقُونِ ۝١٦ وَالَّذِينَ اجْتَنَبُوا الطَّاغُوتَ أَنْ يَعْبُدُوهَا وَ
أَنَابُوا إِلَى اللَّهِ لَهُمُ الْبُشْرَىٰ ۚ فَبَشِّرْ عِبَادِ ۝١٧ الَّذِينَ يَسْتَمِعُونَ الْقَوْلَ
فَيَتَّبِعُونَ أَحْسَنَهُ ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ هَدَاهُمُ اللَّهُ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمْ أُولُو الْأَلْبَابِ ۝١٨
أَفَمَنْ حَقَّ عَلَيْهِ كَلِمَةُ الْعَذَابِ أَفَأَنْتَ تُنْقِذُ مَنْ فِي النَّارِ ۝١٩ لَٰكِنِ الَّذِينَ

★रु० १/१५ आ ६

छिपी बातें तक जानता है। (७) और जब इन्सान को तक्लीफ़ पहुंचती है, तो अपने परवरदिगार को पुकारता है (और) उस की तरफ़ दिल से रुजूअ करता है। फिर जब वह उस को अपनी तरफ़ से कोई नेमत देता है, तो जिस काम के लिए पहले उस को पुकारता है, उसे भूल जाता है और ख़ुदा का शरीक बनाने लगता है, ताकि (लोगों को) उस के रास्ते से गुमराह करे। कह दो कि (ऐ काफ़िरे नेमत) अपनी ना-शुक्री से थोड़ा-सा फ़ायदा उठा ले, फिर तो तू दोज़खियों में होगा। (८) (भला मुश्रिक अच्छा है) या वह जो रात के वक़्तों में ज़मीन पर पेशानी रख कर और खड़े हो कर इबादत करता और आख़िरत से डरता और अपने परवरदिगार की रहमत की उम्मीद रखता है। कहो, भला जो लोग इल्म रखते हैं और जो नहीं रखते, दोनों बराबर हो सकते हैं, (और) नसीहत तो वही पकड़ते हैं, जो अक़्लमंद हैं। (९) ★

कह दो कि ऐ मेरे बन्दो ! जो ईमान लाए हो, अपने परवरदिगार से डरो, जिन्हों ने इस दुनिया में नेकी की, उन के लिए भलाई है और ख़ुदा की ज़मीन कुशादा है, जो सब्र करने वाले हैं, उन को बे-शुमार सवाब मिलेगा। (१०) कह दो कि मुझ से इर्शाद हुआ है कि ख़ुदा की इबादत को ख़ालिस कर के उस की बन्दगी करूं। (११) और यह भी इर्शाद हुआ है कि मैं सब से अव्वल मुसलमान बनूं। (१२) कह दो कि अगर मैं अपने परवरदिगार का हुक्म न मानूं तो मुझे बड़े दिन के अज़ाब से डर लगता है। (१३) कह दो कि मैं अपने दीन को (शिर्क से) ख़ालिस कर के उस की इबादत करता हूं। (१४) तो तुम उस के सिवा, जिस की चाहो, पूजा करो। कह दो कि नुक़्सान उठाने वाले वही लोग हैं, जिन्हों ने क़ियामत के दिन अपने आप को और अपने घर वालों को नुक़्सान में डाला। देखो यही खुला नुक़्सान है। (१५) उन के ऊपर तो आग के सायबान होंगे और नीचे (उसके) फ़र्श होंगे। यह वह (अज़ाब) है, जिस से ख़ुदा अपने बन्दों को डराता है, तो ऐ मेरे बन्दो ! मुझ से डरते रहो। (१६) और जो इस से बचा कि बुतों को पूजे और ख़ुदा की तरफ़ रुजूअ किया, उन के लिए ख़ुशख़बरी है, तो मेरे बंदों को ख़ुशख़बरी सुना दो, (१७) जो बात को सुनते और अच्छी बातों[1] की पैरवी करते हैं। यही वे लोग हैं जिन को ख़ुदा ने हिदायत दी और यही अक़्ल वाले हैं। (१८) भला जिस शख़्स पर अज़ाब का हुक्म हो चुका, तो क्या तुम (ऐसे) दोज़ख़ी को मुख़्लसी

---

१. यानी जिन बातों के करने का उन को हुक्म दिया गया, वे करते हैं और जिन से मना किया गया है, वह नहीं करते। ये दोनों अच्छी बातें हैं।

लाकिनिल-लज़ीनत्तक़ौ रब्बहुम् लहुम् ग़ु-रफ़ुम्-मिन् फ़ौक़िहा ग़ु-रफ़ुम्-मब्निय्यतुन्, तज्री मिन् तह्तिहल-अन्हारु, वअ्-दल्लाहि, ला युख़्लिफ़ुल्लाहुल-मीआद (२०) अ-लम् त-र अन्नल्ला-ह अन्ज़-ल मिनस्समाइ माअन् फ़ स-ल-कहू यनाबी-अ फ़िल्अर्ज़ि सुम्-म युख़्रिजु बिही ज़र-अम्-मुख़्तलिफ़न् अल्वानुहू सुम्-म यहीजु फ़-तराहु मुस्फ़र्रन् सुम्-म यज्-अलुहू हुतामन्, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लज़िक्रा लिउलिल-अल्बाब ★(२१) अ-फ़ मन् श-र-हल्लाहु सद्-रहू लिल्इस्लामि फ़ हु-व अला नूरिम्-मिर्रब्बिही, फ़वैलुल-लिल्क़ासियति क़ुलूबुहुम् मिन् ज़िक्रिल्लाहि, उलाइ-क फ़ी ज़लालिम्-मुबीन (२२) अल्लाहु नज़्ज़-ल अह्-स-नल-हदीसि किताबम्-मु-त-शाबिहम्-मसानि-य तक़्शअिर्रु मिन्हु जुलूदुल्लज़ी-न यख़्शौ-न रब्बहुम् सुम्-म तलीनु जुलूदुहुम् व क़ुलूबुहुम् इला ज़िक्रिल्लाहि, ज़ालि-क हुदल्लाहि यह्दी बिही मंय्यशाउ, व मंय्युज़्लिल-लिल्लाहु फ़मा लहू मिन् हाद (२३) अ-फ़ मंय्यत्तक़ी बिवज्हिही सू-अल्-अज़ाबि यौमल्-क़ियामति, व क़ी-ल लिज़्ज़ालिमी-न ज़ूक़ू मा कुन्तुम् तक्सिबून (२४) कज़्ज़-बल्-लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् फ़-अताहुमुल-अज़ाबु मिन् हैसु ला यश्अुरून (२५) फ़-अज़ा-क़-हुमुल्लाहुल-ख़िज़्-य फ़िल-हयातिद्दुन्या व ल-अज़ाबुल्-आख़िरति अक्बरु, लौ कानू यअ्-लमून (२६) व ल-क़द् ज़-रब्ना लिन्नासि फ़ी हाज़ल-क़ुर्आनि मिन् कुल्लि म-सलिल्-ल-अ़ल्लहुम् य-त-ज़क्करून (२७) क़ुर्आनन् अ-रबिय्यन् ग़ै-र ज़ी अि-व-जिल्-ल-अ़ल्लहुम् यत्तक़ून (२८) ज़-र-बल्लाहु म-स-लर्-रजुलन् फ़ीहि शु-रकाउ मु-तशाकिसू-न, व रजुलन् स-ल-मल्-लिरजुलिन्, हल् यस्तवियानि म-स-लन्, अल्हम्दु लिल्लाहि, बल् अक्सरुहुम् ला यअ्-लमून (२९) इन्न-क मय्यितुं व्-व इन्नहुम् मय्यितू-न (३०) सुम्-म इन्नकुम् यौमल्क़ियामति अिन्-द रब्बिकुम् तख़्तसिमून★(३१)

الذين اتقوا ربهم لهم غرف من فوقها غرف مبنية تجري من تحتها الانهر
وعد الله لا يخلف الله الميعاد ۝ الم تر ان الله انزل من السماء ماء
فسلكه ينابيع في الارض ثم يخرج به زرعا مختلفا الوانه ثم يهيج
فتره مصفرا ثم يجعله حطاما ان في ذلك لذكرى لاولي
الالباب ۝ افمن شرح الله صدره للاسلام فهو على نور من ربه
فويل للقسية قلوبهم من ذكر الله اولئك في ضلل مبين ۝ الله
نزل احسن الحديث كتبا متشابها مثاني تقشعر منه جلود الذين
يخشون ربهم ثم تلين جلودهم وقلوبهم الى ذكر الله ذلك هدى
الله يهدي به من يشاء ومن يضلل الله فما له من هاد ۝ افمن
يتقي بوجهه سوء العذاب يوم القيمة وقيل للظلمين ذوقوا ما كنتم
تكسبون ۝ كذب الذين من قبلهم فاتىهم العذاب من حيث لا
يشعرون ۝ فاذاقهم الله الخزي في الحيوة الدنيا ولعذاب الاخرة
اكبر لو كانوا يعلمون ۝ ولقد ضربنا للناس في هذا القران من
كل مثل لعلهم يتذكرون ۝ قرانا عربيا غير ذي عوج لعلهم
يتقون ۝ ضرب الله مثلا رجلا فيه شركاء متشكسون ورجلا سلما
لرجل هل يستوين مثلا الحمد لله بل اكثرهم لا يعلمون ۝ انك
ميت وانهم ميتون ۝ ثم انكم يوم القيمة عند ربكم تختصمون ۝

★रु. २/१६ आ १२ ▒ व. लाज़िम ★रु. ३/१७ आ १०

दे सकोगे ? (१९) लेकिन जो लोग अपने परवरदिगार से डरते हैं, उन के लिए ऊंचे-ऊंचे महल हैं, जिन के अन्दर कोठे बने हुए हैं (और) उन के नीचे नहरें बह रही हैं। (यह) ख़ुदा का वायदा है। ख़ुदा वायदे के ख़िलाफ़ नहीं करता। (२०) क्या तुम ने नहीं देखा कि ख़ुदा आसमान से पानी नाज़िल करता, फिर उस को ज़मीन में चश्मे बना कर जारी करता, फिर उस से खेती उगाता है, जिस के तरह-तरह के रंग होते हैं, फिर वह ख़ुश्क हो जाती है, तो तुम उस को देखते हो (कि) पीली (हो गयी है) फिर उसे चूरा-चूरा कर देता है। बेशक इस में अक्ल वालों के लिए नसीहत है। (२१)★

भला जिस शख़्स का सीना ख़ुदा ने इस्लाम के लिए खोल दिया हो और वह अपने परवरदिगार की तरफ़ से रोशनी पर हो, (तो क्या वह सख़्त-दिल काफ़िर की तरह हो सकता है ?) पस उन पर अफ़सोस है, जिनके दिल ख़ुदा की याद से सख़्त हो रहे हैं और यही लोग खुली गुमराही में हैं। (२२) ख़ुदा ने निहायत अच्छी बातें नाज़िल फ़रमायी हैं (यानी) किताब (जिस की आयतें आपस में) मिलती-जुलती (हैं) और दोहरायी जाती (हैं,) जो लोग अपने परवरदिगार से डरते हैं, उन के बदन के (उस से) रोंगटे खड़े हो जाते हैं, फिर उन के बदन और नर्म (हो कर) ख़ुदा की याद की तरफ़ (मुतवज्जह) हो जाते हैं। यही ख़ुदा की हिदायत है, वह इस से जिस को चाहता है, हिदायत देता है और जिस को ख़ुदा गुमराह करे, उस को कोई हिदायत देने वाला नहीं। (२३) भला जो आदमी क़ियामत के दिन अपने मुंह से बुरे अज़ाब को रोकता हो, (क्या वह वैसा हो सकता है, जो चैन में हो) और ज़ालिमों से कहा जाएगा कि जो कुछ तुम करते रहे थे, उस के मज़े चखो। (२४) जो लोग इन से पहले थे, उन्हों ने भी झुठलाया था, तो उन पर अज़ाब ऐसी जगह से आ गया कि उन को ख़बर ही न थी। (२५) फिर उन को ख़ुदा ने दुनिया की ज़िंदगी में रुसवाई का मज़ा चखा दिया और आख़िरत का अज़ाब तो बहुत बड़ा है▨काश ये समझ रखते (२६) और हम ने लोगों के (समझाने के लिए) इस क़ुरआन में हर तरह की मिसालें बयान की हैं, ताकि वे नसीहत पकड़ें। (२७) यह क़ुरआन अरबी (है), जिस में कोई ऐब (और इख़्तिलाफ़) नहीं, ताकि वे डर मानें। (२८) ख़ुदा एक मिसाल बयान करता है कि एक शख़्स है, जिस में कई (आदमी) शरीक हैं, (अलग-अलग मिज़ाज) और बुरी आदतों वाले और एक आदमी ख़ास एक शख़्स का (ग़ुलाम है।) भला दोनों की हालत बराबर है ? (नहीं) अल्हम्दुलिल्लाह ! बल्कि यह अक्सर लोग नहीं जानते। (२९) (ऐ पैग़म्बर !) तुम भी मर जाओगे और ये भी मर जाएंगे।[1] (३०) फिर तुम सब क़ियामत के दिन अपने परवरदिगार के सामने झगड़ोगे, और झगड़े का फ़ैसला कर दिया जाएगा। (३१)★

---

१. काफ़िर इस बात की तमन्ना में थे और इन्तिज़ार कर रहे थे कि हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़िंदगी ख़त्म हो जाए। अल्लाह तआला ने हज़रत सल्ल० से फ़रमाया कि हमेशा की ज़िंदगी तुम्हारे लिए भी नहीं है और इन लोगों के लिए भी नहीं है, मौत तुम को भी आएगी और इन को भी क़ब्रस्तान में ले जाएगी, फिर उन का तुम्हारी मौत की तमन्ना और इन्तिज़ार करना सिर्फ़ हिमाक़त और नादानी की बात है। रिवायत है कि जब हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इन्तिक़ाल हुआ, तो हज़रत उमर को यक़ीन न हुआ, तो उन्हों ने कहा कि जो कोई कहेगा कि आप वफ़ात पा गये हैं, उस का सर तलवार से (जो नंगी हाथ में लिए हुए थे) उड़ा दूंगा। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने यह सुना तो हज़रत उमर रज़ि० से कहा कि तलवार को म्यान में कीजिए और मिंबर पर चढ़ कर यह आयत पढ़ी, तब सब को यक़ीन हुआ कि आप इन्तिक़ाल फ़रमा गये।

चौबीसवां पारः फ़-मन अज़्लमु

सूरतुज़्ज़ु-मरि आयात ३२ से ७५

फ़-मन् अज़्लमु मिम्मन् क-ज़-ब अ़लल्लाहि व कज़्ज़-ब बिस्सिद्क़ि इज़् जा-अहू अलै-स फ़ी जहन्न-म मस्-वल्-लिलकाफ़िरीन (३२) वल्लज़ी जा-अ बिस्सिद्क़ि व सद्-द-क़ बिही उलाइ-क हुमुल्मुत्तक़ून (३३) लहुम् मा यशाऊ-न अिन्-द रब्बिहिम् ज़ालि-क जज़ाउल्-मुह्-सिनीन (३४) लियुकफ़्फ़िरल्लाहु अ़न्हुम् अस्-व-अल्लज़ी अ़मिलू व यज्ज़ि-यहुम् अज्-रहुम् बिअह्सनिल्लज़ी कानू यअ्-मलून (३५) अलैसल्लाहु बिकाफ़िन् अ़ब्दहू व युख़व्विफ़ू-न-क बिल्लज़ी-न मिन् दूनिही व मंय्युज़्लिलिल्लाहु फ़मा लहू मिन् हाद् (३६) व मंय्यह्दिल्लाहु फ़मा लहू मिम्मुज़िल्लिन् अलै-सल्लाहु बिअ़ज़ीज़िन् ज़िन्तिक़ाम (३७) व ल-इन् स-अल्तहुम् मन् ख़-ल-क़स्समावाति वल्-अर्-ज़ ल-यक़ूलुन्नल्लाहु क़ुल् अ-फ़-रऐतुम् मा तद्ऊ-न मिन् दूनिल्लाहि इन् अरादनियल्लाहु बिज़ुर्रिन् हल् हुन्-न काशिफ़ातु ज़ुर्रिही औ अरादनी बिरह्मतिन् हल् हुन्-न मुम्सिकातु रह्मतिही क़ुल् ह़स्बियल्लाहु अलैहि य-त-वक्क-लुल्-मु-त-वक्किलून (३८) क़ुल् याक़ौमिअ्-मलू अ़ला मकानतिकुम् इन्नी आमिलुन् फ़सौ-फ़ तअ्-लमून (३९) मंय्यअ्तीहि अ़ज़ाबुंय्युख़्-ज़ीहि व यहिल्लु अ़लैहि अ़ज़ा-बुम्-मुक़ीम (४०) इन्ना अन्ज़ल्ना अ़लैकल्-किता-ब लिन्नासि बिल्हक़्क़ि फ़-मनिह्-तदा फ़लिनफ़्सिही व मन् ज़ल्-ल फ़-इन्नमा यज़िल्लु अ़लैहा व मा अन्-त अ़लैहिम् बिवकील ★ (४१) अल्लाहु य-त-वफ़्फ़ल्-अन्फ़ु-स ह़ी-न मौतिहा वल्लती लम् तमुत् फ़ी मनामिहा फ़-युम्सिकुल्लती क़ज़ा अ़लैहल्मौ-त व युर्सिलुल्-उख़्रा इला अ-जलिम्-मुसम्मन् इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल्-लिक़ौमिंय्य-त-फ़क्करून (४२)

فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَبَ عَلَى اللّٰهِ وَكَذَّبَ بِالصِّدْقِ
إِذْ جَاءَهُ ۚ أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكٰفِرِيْنَ ۝ وَالَّذِي
جَاءَ بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ بِهٖٓ أُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ ۝ لَهُمْ
مَّا يَشَاءُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ ذٰلِكَ جَزَاءُ الْمُحْسِنِيْنَ ۝ لِيُكَفِّرَ
اللّٰهُ عَنْهُمْ أَسْوَأَ الَّذِي عَمِلُوْا وَيَجْزِيَهُمْ أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ
الَّذِي كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ أَلَيْسَ اللّٰهُ بِكَافٍ عَبْدَهُ ۖ وَيُخَوِّفُوْنَكَ
بِالَّذِيْنَ مِنْ دُوْنِهٖ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ۝ وَ
مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَمَا لَهُ مِنْ مُّضِلٍّ ۗ أَلَيْسَ اللّٰهُ بِعَزِيْزٍ ذِي انْتِقَامٍ ۝
وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ۚ
قُلْ أَفَرَأَيْتُمْ مَّا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ إِنْ أَرَادَنِيَ اللّٰهُ بِضُرٍّ
هَلْ هُنَّ كٰشِفٰتُ ضُرِّهٖٓ أَوْ أَرَادَنِي بِرَحْمَةٍ هَلْ هُنَّ مُمْسِكٰتُ
رَحْمَتِهٖ ۚ قُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ ۖ عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ۝ قُلْ
يٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ إِنِّي عَامِلٌ ۖ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۝
مَنْ يَّأْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ۝ إِنَّا أَنْزَلْنَا
عَلَيْكَ الْكِتٰبَ لِلنَّاسِ بِالْحَقِّ ۖ فَمَنِ اهْتَدٰى فَلِنَفْسِهٖ ۖ وَمَنْ
ضَلَّ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۖ وَمَا أَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ۝ اللّٰهُ
يَتَوَفَّى الْأَنْفُسَ حِيْنَ مَوْتِهَا وَالَّتِي لَمْ تَمُتْ فِي مَنَامِهَا ۖ فَيُمْسِكُ

★रु. ४/१ आ १०

तो उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन, जो ख़ुदा पर झूठ बोले और सच्ची बात, जब उस के पास पहुंच जाए तो उसे झुठलाए ? क्या जहन्नम में काफ़िरों का ठिकाना नहीं है ? (३२) और जो शख़्स सच्ची बात ले कर आया और जिस ने उस की तस्दीक़ की, वही लोग मुत्तक़ी हैं। (३३) वे जो चाहेंगे, उन के लिए उन के परवरदिगार के पास (मौजूद है) मुह्सिनों का यही बदला है, (३४) ताकि ख़ुदा उन से बुराइयों को जो उन्हों ने कीं, दूर कर दे और नेक कामों का जो वे करते रहे, उन को बदला दे। (३५) क्या ख़ुदा अपने बन्दे को काफ़ी नहीं ? और यह तुम को उन लोगों से, जो इस के सिवा हैं, (यानी ग़ैर-ख़ुदा से) डराते हैं और जिस को ख़ुदा गुमराह करे, उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं। (३६) और जिस को ख़ुदा हिदायत दे, उस को कोई गुमराह करने वाला नहीं। क्या ख़ुदा ग़ालिब (और) बदला लेने वाला नहीं है ? (३७) और अगर तुम उन से पूछो कि आसमानों और ज़मीन को किस ने पैदा किया, तो कह दें कि ख़ुदा ने। कहो कि भला देखो तो जिनको तुम ख़ुदा के सिवा पुकारते हो, अगर ख़ुदा मुझ को कोई तक्लीफ़ पहुंचानी चाहे, तो क्या वे उस तक्लीफ़ को दूर कर सकते हैं या अगर मुझ पर मेहरबानी करना चाहे, तो वे उसकी मेहरबानी को रोक सकते हैं ? कह दो कि मुझे ख़ुदा ही काफ़ी है, भरोसा रखने वाले उसी पर भरोसा रखते हैं। (३८) कह दो कि ऐ क़ौम ! तुम अपनी जगह अमल किए जाओ, मैं (अपनी जगह) अमल किए जाता हूं। बहुत जल्द तुम को मालूम हो जाएगा, (३९) कि किस पर अज़ाब आता है जो उसे रुसवा करेगा और किस पर हमेशा का अज़ाब नाज़िल होता है ? (४०) हम ने तुम पर किताब लोगों (की हिदायत) के लिए सच्चाई के साथ नाज़िल की है, तो जो शख़्स हिदायत पाता है, तो अपने (भले के) लिए और जो गुमराह होता है तो गुमराही से अपना ही नुक़्सान करता है और (ऐ पैग़म्बर !) तुम उन के ज़िम्मेदार नहीं हो। (४१) ★

ख़ुदा लोगों के मरने के वक़्त उन की रूहें क़ब्ज़ कर लेता है और जो मरे नहीं (उन की रूहें) सोते में (क़ब्ज़ कर लेता है) फिर जिन पर मौत का हुक्म कर चुकता है, उन को रोक रखता है और बाक़ी रूहों को एक मुक़र्रर वक़्त तक के लिए छोड़ देता है। जो लोग सोच-विचार करते हैं, उन के

★रु० ४/१ आ १०

अमित्त-ख़-ज़ू मिन् दूनिल्लाहि शुफ़-आ-अ ॰ क़ुल् अ-वलौ कानू ला यम्लिकू-न शैअंव्-व ला यअ्-क़िलून (४३) क़ुल् लिल्लाहिश्शफ़ाअतु जमीअन् लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि ॰ सुम्-म इलैहि तुर्जअून (४४) व इज़ा ज़ुकिरल्लाहु वह्-दहुश्-म-अज़्ज़त् क़ुलूबुल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिल्-आख़िरति ॰ व इज़ा ज़ुकि-रल्लज़ी-न मिन् दूनिही इज़ा हुम् यस्तब्शिरून (४५) क़ुलिल्लाहुम्-म फ़ातिरस्-समावाति वल्अर्ज़ि आलिमल्-ग़ैबि वश्शहादति अन्-त तह्कुमु बै-न अिबादि-क फ़ीमा कानू फ़ीहि यख़्तलिफ़ून (४६) व लौ अन्-न लिल्लज़ी-न ज़-लमू मा फ़िल्अर्ज़ि जमीअंव्-व मिस्-लहू म-अहू लफ़्तदौ बिही मिन् सूइल्-अज़ाबि यौमल्क़ियामति ॰ व बदा लहुम् मिनल्-लाहि मा लम् यकूनू यह्-तसिबून (४७) व बदा लहुम् सय्यिआतु मा क-स-बू व हा-क़ बिहिम् मा कानू बिही यस्तह्ज़िऊन (४८) फ़इज़ा मस्सल्-इन्सा-न ज़ुर्रुन् दआना ॰ सुम्-म इज़ा ख़व्वल्नाहु निअ्-म-तम्-मिन्ना ॰ क़ा-ल इन्नमा ऊतीतुहू अला अिल्मिन् ॰ बल् हि-य फ़ित्-नतुंव्-व लाकिन्-न अक्स-रहुम् ला यअ्-लमून (४९) क़द् क़ाल-हल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् फ़मा अग़्ना अन्हुम् मा कानू यक्सिबून (५०) फ़-असाबहुम् सय्यिआतु मा क-सबू ॰ वल्लज़ी-न ज़-लमू मिन् हाउला-इ सयुसीबुहुम् सय्यिआतु मा क-सबू ॰ व मा हुम् बिमुअ्-जिज़ीन (५१) अ-व लम् यअ्-लमू अन्नल्ला-ह यब्सुतुर्रिज़्-क़ लिमंय्यशाउ व यक़्दिरु ॰ इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल्-लिक़ौमिंय्युअ्मिनून ★ (५२)

الَّتِي قَضَىٰ عَلَيْهَا الْمَوْتَ وَيُرْسِلُ الْأُخْرَىٰ إِلَىٰ أَجَلٍ مُسَمًّى ۚ
إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ۝ أَمِ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ
شُفَعَاءَ ۚ قُلْ أَوَلَوْ كَانُوا لَا يَمْلِكُونَ شَيْئًا وَلَا يَعْقِلُونَ ۝ قُلْ لِلَّهِ
الشَّفَاعَةُ جَمِيعًا ۖ لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝
وَإِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَحْدَهُ اشْمَأَزَّتْ قُلُوبُ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ ۖ
وَإِذَا ذُكِرَ الَّذِينَ مِنْ دُونِهِ إِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ۝ قُلِ اللَّهُمَّ
فَاطِرَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ عَالِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ أَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ
عِبَادِكَ فِي مَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۝ وَلَوْ أَنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا مَا
فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لَافْتَدَوْا بِهِ مِنْ سُوءِ الْعَذَابِ
يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۚ وَبَدَا لَهُمْ مِنَ اللَّهِ مَا لَمْ يَكُونُوا يَحْتَسِبُونَ ۝ وَ
بَدَا لَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا كَسَبُوا وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۝
فَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَانَا ثُمَّ إِذَا خَوَّلْنَاهُ نِعْمَةً مِنَّا قَالَ
إِنَّمَا أُوتِيتُهُ عَلَىٰ عِلْمٍ ۚ بَلْ هِيَ فِتْنَةٌ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا
يَعْلَمُونَ ۝ قَدْ قَالَهَا الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُمْ مَا كَانُوا
يَكْسِبُونَ ۝ فَأَصَابَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا كَسَبُوا ۚ وَالَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْ
هَٰؤُلَاءِ سَيُصِيبُهُمْ سَيِّئَاتُ مَا كَسَبُوا وَمَا هُمْ بِمُعْجِزِينَ ۝ أَوَلَمْ
يَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ

★रु. ५/२ आ ११

लिए इस में निशानियां हैं। (४२) क्या उन्हों ने ख़ुदा के सिवा और सिफ़ारिशी बना लिए हैं। कहो कि चाहे वे किसी चीज़ का भी अख़्तियार न रखते हों और न (कुछ) समझते ही हों? (४३) कह दो कि सिफ़ारिश तो सब ख़ुदा ही के अख़्तियार में है। उसी के लिए आसमानों और ज़मीन की बादशाही है, फिर तुम उसी की तरफ़ लौट कर जाओगे।' (४४) और जब तंहा ज़िक्र किया जाता है, तो जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, उन के दिल भींच उठते हैं और जब इस के सिवा औरों का ज़िक्र किया जाता है, तो ख़ुश हो जाते हैं। (४५) कहो कि ऐ ख़ुदा! (ऐ) आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले (और) छिपे और खुले के जानने वाले! तू ही अपने हर बन्दों में इन बातों का, जिन में वे इख़्तिलाफ़ करते रहे हैं, फ़ैसला करेगा। (४६) और अगर ज़ालिमों के पास वह सब (माल व मताअ) हो जो ज़मीन में है और उस के साथ उसी क़दर और हो तो क़ियामत के दिन बुरे अज़ाब (से मुख़्लसी) पानी के बदले में दे दें और उन पर ख़ुदा की तरफ़ से वह बात ज़ाहिर हो जाएगी, जिस का उन को ख़्याल भी न था। (४७) और उन के आमाल की बुराइयां उन पर ज़ाहिर हो जाएगी और जिस (अज़ाब) की वे हंसी उड़ाते थे, वह उन को आ घेरेगा। (४८) जब इंसान को तक्लीफ़ पहुंचती है, तो हमें पुकारने लगता है, फिर जब हम उस को अपनी तरफ़ से नेमत बख़्शते हैं, तो कहता है कि यह तो मुझे (मेरे) इल्म (व सूझ-बूझ) की वजह से मिली है। (नहीं,) बल्कि वह आज़माइश है, मगर उन में से अक्सर नहीं जानते। (४९) जो लोग इन से पहले थे, वे भी यही कहा करते थे, जो कुछ वे किया करते थे, उन के कुछ काम भी न आया। (५०) उन पर उन के आमाल के वबाल पड़ गये और जो लोग उन में से ज़ुल्म करते रहे हैं, उन पर उन के अमलों के वबाल बहुत जल्द पड़ेंगे और वे (ख़ुदा को) आजिज़ नहीं कर सकते। (५१) क्या उन को मालूम नहीं कि ख़ुदा ही, जिस के लिए रोज़ी को फैला देता है और (जिस के लिए चाहता है) तंग कर देता है। जो ईमान लाते हैं, उन के लिए इस में (बहुत-सी) निशानियां हैं। (५२) ★

★रु. ५/२ आ ११

कुल् या अिबादि-यल्लज़ी-न अस्-रफ़ू अला अन्फ़ुसिहिम् ला तक़्-नतू मिर्रह्मतिल्लाहि ♭ इन्नल्ला-ह यग़्फ़िरुज़्ज़ुनू-ब जमीअन् ♭ इन्नहू हुवल्-ग़फ़ूरुर्रहीम (५३) व अनीबू इला रब्बिकुम् व अस्लिमू लहू मिन् क़ब्लि अंय्यअ्ति-यकुमुल्-अज़ाबु सुम्-म ला तुन्सरून (५४) वत्तबिअू अह्-स-न मा उन्ज़ि-ल इलैकुम् मिर्रब्बिकुम् मिन् क़ब्लि अंय्यअ्ति-यकुमुल्-अज़ाबु बग़्-त-तंव-व अन्तुम् ला तश्अुरून ♭ (५५) अन् तक़ू-ल नफ़्सुंय्या-ह्स्-रता अला मा फ़र्रत्तु फ़ी जम्बिल्लाहि व इन् कुन्तु ल-मिनस्-साख़िरीन ♭ (५६) औ तक़ू-ल लौ अन्नल्ला-ह हदानी लकुन्तु मिनल्-मुत्तक़ीन ♭ (५७) औ तक़ू-ल ही-न तरल्अज़ा-ब लौ अन्-न ली कर्-रतन् फ़-अकू-न मिनल्-मुह्सिनीन (५८) बला क़द् जा-अत्-क आयाती फ़-कज़्ज़ब्-त बिहा वस्तक्बर्-त व कुन्-त मिनल्काफ़िरीन (५९) व यौमल्क़ियामति त-रल्लज़ी-न क-ज़बू अलल्लाहि वुजूहुहुम् मुस्-वद-दतुन् ♭ अलै-स फ़ी जहन्न-म मस्वल्-लिल्मु-त-कब्बिरीन (६०) व युनज्जिल्लाहुल्-लज़ीनत्तक़ौ बि-मफ़ा-ज़ति-हिम् ला यमस्सुहुमुस्सूउ व ला हुम् यह्-ज़नून (६१) अल्लाहु ख़ालिक़ु कुल्लि शैइंव्-व हु-व अला कुल्लि शैइंव्वकील (६२) लहू मक़ालीदुस्-समावाति वल्अर्ज़ि ♭ वल्लज़ी-न क-फ़रू बिआयातिल्लाहि उलाइ-क हुमुल्-ख़ासिरून ★ (६३) कुल् अ-फ़-ग़ैरल्लाहि तअ्मुरून्नी अअ्-बुदु अय्युहल्-जाहिलून (६४) व ल-क़द् ऊहि-य इलै-क व इलल्लज़ी-न मिन् क़ब्लि-क ♭ लइन् अश्रक्-त ल-यह्बतन्-न अ-मलु-क व ल-तकूनन्-न मिनल्ख़ासिरीन (६५) बलिल्ला-ह फ़अ्-बुद् व कुम्-मिनश्शाकिरीन (६६)

لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝ قُلْ يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ
لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا ؕ اِنَّهٗ هُوَ
الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝ وَاَنِيْبُوْٓا اِلٰى رَبِّكُمْ وَاَسْلِمُوْا لَهٗ مِنْ قَبْلِ اَنْ
يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ۝ وَاتَّبِعُوْٓا اَحْسَنَ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ
مِّنْ رَّبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ بَغْتَةً وَّاَنْتُمْ لَا
تَشْعُرُوْنَ ۝ اَنْ تَقُوْلَ نَفْسٌ يّٰحَسْرَتٰى عَلٰى مَا فَرَّطْتُّ فِيْ جَنْۢبِ
اللّٰهِ وَاِنْ كُنْتُ لَمِنَ السّٰخِرِيْنَ ۝ اَوْ تَقُوْلَ لَوْ اَنَّ اللّٰهَ هَدٰىنِيْ لَكُنْتُ
مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ۝ اَوْ تَقُوْلَ حِيْنَ تَرَى الْعَذَابَ لَوْ اَنَّ لِيْ كَرَّةً
فَاَكُوْنَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝ بَلٰى قَدْ جَآءَتْكَ اٰيٰتِيْ فَكَذَّبْتَ بِهَا وَ
اسْتَكْبَرْتَ وَكُنْتَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ۝ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ تَرَى الَّذِيْنَ
كَذَبُوْا عَلَى اللّٰهِ وُجُوْهُهُمْ مُّسْوَدَّةٌ ؕ اَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْمُتَكَبِّرِيْنَ
وَيُنَجِّي اللّٰهُ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا بِمَفَازَتِهِمْ ۫ لَا يَمَسُّهُمُ السُّوْٓءُ وَلَا هُمْ
يَحْزَنُوْنَ ۝ اَللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ ۫ وَّهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ۝
لَهٗ مَقَالِيْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ اُولٰٓئِكَ
هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝ قُلْ اَفَغَيْرَ اللّٰهِ تَاْمُرُوْٓنِّيْٓ اَعْبُدُ اَيُّهَا الْجٰهِلُوْنَ ۝
وَلَقَدْ اُوْحِيَ اِلَيْكَ وَاِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ لَئِنْ اَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ
عَمَلُكَ وَلَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝ بَلِ اللّٰهَ فَاعْبُدْ وَكُنْ مِّنَ

★रु. ६/३ आ ११

(ऐ पैग़म्बर ! मेरी तरफ़ से लोगों को) कह दो कि ऐ मेरे बन्दो ! जिन्हों ने अपनी जानों पर ज़्यादती की है, ख़ुदा की रहमत से ना-उम्मीद न होना। ख़ुदा तो सब गुनाहों को बख़्श देता है (और) वह तो बख़्शने वाला मेहरबान है। (५३) और इस से पहले कि तुम पर अज़ाब आ वाक़ेअ हो, अपने परवरदिगार की तरफ़ रुजूअ करो और उस के फ़रमांबरदार हो जाओ, फिर तुम को मदद नहीं मिलेगी। (५४) और इस से पहले कि तुम पर अचानक अज़ाब आ जाए और तुम को ख़बर भी न हो, इस निहायत अच्छी (किताब) की, जो तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से तुम पर नाज़िल हुई है, पैरवी करो, (५५) कि (शायद उस वक़्त) कोई नफ़्स कहने लगे कि (हाय ! हाय !!) उस ग़लती पर अफ़सोस है, जो मैं ने ख़ुदा के हक़ में की और मैं तो हंसी ही करता रहा, (५६) या यह कहने लगे कि अगर ख़ुदा मुझ को हिदायत देता तो मैं भी परहेज़गारों में होता। (५७) या जब अज़ाब देख ले तो कहने लगे कि अगर मुझे फिर एक बार दुनिया में जाना हो तो मैं नेक लोगों में हो जाऊं। (५८) (ख़ुदा फ़रमाएगा,) क्यों नहीं, मेरी आयतें तेरे पास पहुंच गयी हैं, मगर तू ने उन को झुठलाया और शेख़ी में आ गया और तू काफ़िर बन गया। (५६) और जिन लोगों ने ख़ुदा पर झूठ बोला, तुम क़ियामत के दिन देखोगे कि उन के मुंह काले हो रहे होंगे। क्या घमंड करने वालों का ठिकाना दोज़ख़ में नहीं है ? (६०) और जो परहेज़गार हैं, उन की (सआदत और) कामियाबी की वजह से ख़ुदा उन को निजात देगा, न तो उन को कोई सख़्ती पहुंचेगी और न ग़मनाक होंगे। (६१) ख़ुदा ही हर चीज़ का पैदा करने वाला है और वही हर चीज़ का निगरां है। (६२) उसी के पास आसमानों और ज़मीन की कुंजियां हैं और जिन्हों ने ख़ुदा की आयतों से कुफ़्र किया, वही नुक़सान उठाने वाले हैं। (६३) ★

कह दो कि ऐ नादानो ! तुम मुझ से यह कहते हो मैं ग़ैर-ख़ुदा की पूजा करने लगूं। (६४) और (ऐ मुहम्मद !) तुम्हारी तरफ़ और उन (पैग़म्बरों) की तरफ़, जो तुम से पहले हो चुके हैं, यही वह्य भेजी गयी है कि अगर तुम ने शिर्क किया, तो तुम्हारे अमल बर्बाद हो जाएंगे और तुम नुक़सान उठाने वालों में हो जाओगे, (६५) बल्कि ख़ुदा ही की इबादत करो और शुक्रगुज़ारों में

★रु. ६/३ आ ११

व मा क़-द - रुल्ला-ह हक़्-क क़द्रिही ❀ वल्अर्ज़ु जमीअन् क़ब्ज़तुहू
यौमल्क़ियामति वस्समावातु मत्विय्यातुम् - बियमीनिही ط सुब्हानहू व तआला
अम्मा युश्रिकून (६७) व नुफ़ि-ख़ फ़िस्सूरि फ़-सअि-क़ मन् फ़िस्-
समावाति व मन् फ़िल्अर्ज़ि इल्ला मन् शा-अल्लाहु ط सुम्-म नुफ़ि-ख़ फ़ीहि उख़्रा
फ़-इज़ाहुम् क़ियामुंय्यन्ज़ुरून (६८) व अश्-
र-क़तिल्-अर्ज़ु बिनूरि रब्बिहा व वुज़िअल्-
किताबु व-जी-अ बिन्नबिय्यी-न वश्शु-ह-दाइ व
क़ुज़ि-य बैनहुम् बिल्हक़्क़ि व हुम् ला युज़्लमून
(६९) व वुफ़्फ़ियत् कुल्लु नफ़्सिम्मा अमिलत्
व हु-व अअ्-लमु बिमा यफ़्-अलून ★ (७०) व
सीक़ल्लज़ी-न क-फ़रू इला जहन्न-म ज़ु-म-रन् ط
हत्ता इज़ा जाऊहा फ़ुतिहत् अब्वाबुहा व क़ा-ल
लहुम् ख़-ज़-नतुहा अ-लम् यअ्तिकुम् रुसुलुम्-
मिन्कुम् यत्लू-न अलैकुम् आयाति रब्बिकुम् व
युन्ज़िरूनकुम् लिक़ा-अ यौमिकुम् हाज़ा ط क़ालू
बला व लाकिन् हक़्क़त् कलिमतुल्-अज़ाबि

الزمر ٣٩ ٣٤٢ فمن اظلم ٢٤

الشكرين ۝ وما قدروا الله حق قدره ۖ والارض جميعا قبضته
يوم القيمة والسموت مطويت بيمينه ۚ سبحنه وتعلى عما يشركون ۝
ونفخ في الصور فصعق من في السموت ومن في الارض الا
من شاء الله ۖ ثم نفخ فيه اخرى فاذا هم قيام ينظرون ۝ و
اشرقت الارض بنور ربها ووضع الكتب وجاىء بالنبين والشهداء
وقضي بينهم بالحق وهم لا يظلمون ۝ ووفيت كل نفس
ما عملت وهو اعلم بما يفعلون ۝ وسيق الذين كفروا
الى جهنم زمرا ۖ حتى اذا جاءوها فتحت ابوابها وقال لهم
خزنتها الم ياتكم رسل منكم يتلون عليكم ايت ربكم و
ينذرونكم لقاء يومكم هذا ۚ قالوا بلى ولكن حقت كلمة العذاب
على الكفرين ۝ قيل ادخلوا ابواب جهنم خلدين فيها ۚ فبئس
مثوى المتكبرين ۝ وسيق الذين اتقوا ربهم الى الجنة زمرا ۖ
حتى اذا جاءوها وفتحت ابوابها وقال لهم خزنتها سلم عليكم
طبتم فادخلوها خلدين ۝ وقالوا الحمد لله الذي صدقنا
وعده واورثنا الارض نتبوا من الجنة حيث نشاء ۚ فنعم
اجر العملين ۝ وترى الملئكة حافين من حول العرش
يسبحون بحمد ربهم ۚ وقضي بينهم بالحق وقيل الحمد

अ-लल्काफ़िरीन (७१) क़ीलद्ख़ुलू अब्वा-ब ज-हन्न-म ख़ालिदी-न फ़ीहा ج
फ़बिअ्-स मस्-वल् - मु - त-कब्बिरीन (७२) वसीक़ल्लज़ीनत्तक़ौ रब्बहुम्
इलल्जन्नति ज़ुम - रन् ط हत्ता इज़ा जाऊहा व फ़ुतिहत् अब्वाबुहा व
क़ा-ल लहुम् ख़-ज़-नतुहा सलामुन् अलैकुम् तिब्तुम् फ़द्ख़ुलूहा ख़ालिदीन
(७३) व क़ालुल्-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी स-द-क़ना वअ्-दहू व औ-र-स-
नल्-अर्-ज़ न-त-बव्वउ मिनल्जन्नति हैसु नशाउ ج फ़निअ्-म अज्रुल्-आमिलीन
(७४) व-त-रल्-मलाइ-क-त हाफ़्फ़ी-न मिन् हौलिल्-अर्शि युसब्बिहू-न बिहम्दि रब्बिहिम् ج
व क़ुज़ि-य बैनहुम् बिल्हक़्क़ि व क़ीलल्-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल्-आलमीन ★ ● (७५)

★रु ७/४ आ ७ ★रु. ८/५ आ ५ ● रुबुअ् १/४

हो। (६६) और उन्हों ने खुदा की क़द्रशनासी जैसी करनी चाहिए थी, नहीं की और क़ियामत के दिन तमाम ज़मीन उस की मुट्ठी में होगी और आसमान उस के दाहिने हाथ में लिपटे होंगे (और) वह इन लोगों के शिर्क से पाक और आली शान है। (६७) और जब सूर फूंका जाएगा, तो जो लोग आसमान में हैं और जो ज़मीन में हैं, सब बेहोश हो कर गिर पड़ेंगे, मगर वह जिस को खुदा चाहे, फिर दूसरी बार सूर फूंका जाएगा, तो फ़ौरन सब खड़े हो कर देखने लगेंगे। (६८) और ज़मीन अपने परवरदिगार के नूर से चमक उठेगी और (आमाल की) किताब (खोल कर) रख दी जाएगी और पैग़म्बर और (और) गवाह हाज़िर किए जाएंगे और उन में इंसाफ़ के साथ फ़ैसला किया जाएगा और बे-इंसाफ़ी नहीं की जाएगी। (६९) और जिस शख़्स ने जो अमल किया होगा, उस को उस का पूरा-पूरा बदला मिल जाएगा और जो कुछ ये करते हैं, उस को सब की ख़बर है। (७०)★

और काफ़िरों को गिरोह-गिरोह बना कर जहन्नम की तरफ़ ले जाएंगे, यहां तक कि जब वे उस के पास पहुंच जाएंगे, तो उस के दरवाज़े खोल दिए जाएंगे, तो उस के दारोग़ा उन से कहेंगे कि क्या तुम्हारे पास तुम ही में से पैग़म्बर नहीं आए थे, जो तुम को तुम्हारे परवरदिगार की आयतें पढ़-पढ़ कर सुनाते और उस दिन के पेश आने से डराते थे, कहेंगे, क्यों नहीं, लेकिन काफ़िरों के हक़ में अज़ाब का हुक्म तह्क़ीक़ हो चुका था। (७१) कहा जाएगा कि दोज़ख़ के दरवाज़ों में दाख़िल हो जाओ, हमेशा उस में रहोगे, तकब्बुर करने वालों का बुरा ठिकाना है। (७२) और जो लोग अपने परवरदिगार से डरते हैं, उन को गिरोह-गिरोह बना कर बहिश्त की तरफ़ ले जाएंगे, यहां तक कि जब उस के पास पहुंच जाएंगे और उस के दरवाज़े खोल दिए जाएंगे, तो उस के दारोग़ा उन से कहेंगे कि तुम पर सलाम ! तुम बहुत अच्छे रहे। अब इस में हमेशा के लिए दाख़िल हो जाओ। (७३) वे कहेंगे कि खुदा का शुक्र है, जिस ने अपने वायदे को हम से सच्चा कर दिया और हम को उस ज़मीन का वारिस बना दिया, हम बहिश्त में जिस मकान में चाहें रहें, तो (अच्छे) अमल करने वालों का बदला भी कैसा ख़ूब है। (७४) तुम फ़रिश्तों को देखोगे कि अर्श के गिर्द घेरा बांधे हुए हैं (और) अपने परवरदिगार की तारीफ़ के साथ तस्बीह कर रहे हैं और उन में इन्साफ़ के साथ फ़ैसला किया जाएगा और कहा जाएगा कि हर तरह की तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है, जो सारे जहान का मालिक है। (७५)★●

★रु. ७/४ आ ७ ★रु. ८/५ आ ५ ●रुबुअ् १/४

४० सूरतुल् मुअ्मिनि ६०

(मक्की) इस सूर: में अरबी के ५२१३ अक्षर, १२४२ शब्द, ८५ आयतें और ९ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

हा-मीम् ८ (१) तन्ज़ीलुल्-किताबि मिनल्लाहिल् - अज़ीज़िल् - अलीम (२) ग़ाफ़िरिज़्ज़म्बि व क़ाबिलित्तौबि शदीदिल्-अिक़ाबि ज़ित्तौलि ला इला - ह इल्ला हु - व इलैहिल्-मसीर (३) मा युजादिलु फ़ी आयातिल्लाहि इल्लल्लज़ी - न क-फ़रू फ़ला यग़्रुर्-क त-क़ल्लुबुहुम् फ़िल्-बिलाद (४) कज़्ज़-बत् क़ब्लहुम् क़ौमु नूहिंव्वल्-अह्ज़ाबु मिम्बअ्-दिहिम् व हम्मत् कुल्लु उम्मतिम्-बिरसूलिहिम् लियअ्ख़ुज़ूहु व जादलू बिल्बातिलि लियुद्हिज़ू बिहिल्हक़्-क़ फ़-अ-ख़ज़्तुहुम् फ़कै-फ़ का-न अिक़ाब (५) व कज़ालि-क हक़्क़त् कलिमतु रब्बि-क अ-लल्लज़ी-न क-फ़रू अन्नहुम् अस्हाबुन्नार ※(६) अल्लज़ी-न यह्मिलूनल्अर्-श व मन् हौलहू युसब्बिहू-न बिहम्दि रब्बिहिम् व युअ्मिनू-न बिही व यस्तग़्फ़िरू-न लिल्लज़ी-न आमनू रब्बना वसिअ्-त कुल्-ल शैइर्रह्मतंव्-व अिल्मन् फ़ग़्फ़िर् लिल्लज़ी-न ताबू वत्त-ब-अू सबील-क व क़िहिम् अज़ाबल्-जहीम (७) रब्बना व अद्ख़िल्हुम् जन्नाति अद्नि-निल्लती व-अत्तहुम् व मन् स-ल-ह मिन् आबाइहिम् व अज़्वाजिहिम् व ज़ुर्रिय्यातिहिम् इन्न-क अन्तल् - अज़ीज़ुल्-हकीम (८) व क़िहिमुस्सय्यि-आति व मन् तक़िस्सय्यिआति यौमइज़िन् फ़-क़द् रहिम्तहू व ज़ालि-क हुवल्फ़ौज़ुल्-अज़ीम★(९) इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू युनादौ-न ल-मक़्तुल्लाहि अक्बरु मिम्मक़्तिकुम् अन्फ़ुसकुम् इज़् तुद्औ - न इलल्ईमानि फ़ - तक्फ़ुरून (१०)

لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝
سُوْرَةُ الْمُؤْمِنِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ خَمْسٌ وَّثَمَانُوْنَ اٰيَةً وَّتِسْعُ رُكُوْعَاتٍ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
حٰمٓ ۝ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ۝ غَافِرِ الذَّنْبِ وَ
قَابِلِ التَّوْبِ شَدِيْدِ الْعِقَابِ ذِي الطَّوْلِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ اِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ۝
مَا يُجَادِلُ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ اِلَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَلَا يَغْرُرْكَ تَقَلُّبُهُمْ فِي
الْبِلَادِ ۝ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّالْاَحْزَابُ مِنْ بَعْدِهِمْ وَهَمَّتْ
كُلُّ اُمَّةٍ بِرَسُوْلِهِمْ لِيَاْخُذُوْهُ وَجٰدَلُوْا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوْا بِهِ
الْحَقَّ فَاَخَذْتُهُمْ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ۝ وَكَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ
رَبِّكَ عَلَى الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّهُمْ اَصْحٰبُ النَّارِ ۝ اَلَّذِيْنَ يَحْمِلُوْنَ الْعَرْشَ
وَمَنْ حَوْلَهٗ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَيَسْتَغْفِرُوْنَ لِلَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا ۚ رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَّحْمَةً وَّعِلْمًا فَاغْفِرْ لِلَّذِيْنَ تَابُوْا وَ
اتَّبَعُوْا سَبِيْلَكَ وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ۝ رَبَّنَا وَاَدْخِلْهُمْ جَنّٰتِ عَدْنِ
الَّتِيْ وَعَدْتَّهُمْ وَمَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَاَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ
اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ وَقِهِمُ السَّيِّاٰتِ وَمَنْ تَقِ السَّيِّاٰتِ يَوْمَئِذٍ
فَقَدْ رَحِمْتَهٗ وَذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُنَادَوْنَ
لَمَقْتُ اللّٰهِ اَكْبَرُ مِنْ مَّقْتِكُمْ اَنْفُسَكُمْ اِذْ تُدْعَوْنَ اِلَى الْاِيْمَانِ

※ व. लाज़िम व. न बी स. ★रु. १/६ आ ९

४० सूरः मुअ्मिन् ६०

सूरः मुअ्मिन मक्की है, इस में पचासी आयतें और नौ रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

हामीम, (१) इस किताब का उतारा जाना ख़ुदा-ए-ग़ालिब व दाना की तरफ़ से है, (२) जो गुनाह बख़्शने वाला है और तौबा क़ुबूल करने वाला (और) सख़्त अज़ाब देने वाला (और) करम वाला है। उसके सिवा कोई माबूद नहीं, उसी की तरफ़ फिर कर जाना है। (३) ख़ुदा की आयतों में वही लोग झगड़ते हैं, जो काफ़िर हैं, तो उन लोगों का शहरों में चलना-फिरना तुम्हें धोखे में न डाल दे। (४) उन से पहले नूह की क़ौम और उनके बाद और उम्मतों ने (पैग़म्बरों को) झुठलाया, और हर उम्मत ने अपने पैग़म्बर के बारे में यही इरादा किया कि उसको पकड़ लें और बेहूदा (शुब्हों से) झगड़ते रहे कि उस से हक़ को ख़त्म कर दें, तो मैं ने उनको पकड़ लिया, सो (देख लो) मेरा अज़ाब कैसा हुआ? (५) और इसी तरह काफ़िरों के बारे में भी तुम्हारे परवरदिगार की बात पूरी हो चुकी है कि वे दोज़ख़ी हैं ▨(६) जो लोग अर्श को उठाए हुए और जो उसके चारों तरफ़ (हल्क़ा बांधे हुए) हैं (यानी फ़रिश्ते,) वे अपने परवरदिगार की तारीफ़ के साथ तस्बीह करते रहते हैं और उसके साथ ईमान रखते हैं और मोमिनों के लिए बख़्शिश मांगते रहते हैं कि ऐ हमारे परवरदिगार! तेरी रहमत और तेरा इल्म हर चीज़ को एहाता किए हुए है, तो जिन लोगों ने तौबा की और तेरे रास्ते पर चले, उन को बख़्श दे और दोज़ख़ के अज़ाब से बचा ले। (७) ऐ हमारे परवरदिगार! उनको हमेशा रहने की बहिश्तों में दाख़िल कर, जिन का तूने उनसे वायदा किया है और जो उन के बाप-दादा और उन की बीवियों और उनकी औलाद में से नेक हों, उनको भी। बेशक तू ग़ालिब हिक्मत वाला है। (८) और उनको अज़ाबों से बचाए रख और जिस को तू उस दिन अज़ाबों से बचा लेगा, तो बेशक उस पर मेहरबानी हुई और यही बड़ी कामियाबी है। (९)★

जिन लोगों ने कुफ़्र किया उन से पुकार कर कह दिया जाएगा कि जब तुम (दुनिया में) ईमान की तरफ़ बुलाए जाते थे और मानते नहीं थे तो ख़ुदा इस से कहीं ज़्यादा बेज़ार होता था, जितने कि

▨व. लाज़िम　व. न बी स.　★रु. १/६ आ ६

क़ालू रब्बना अ-मत्त-नस्नतैनि व अह्यैत-नस्नतैनि फ़अ्-त-रफ़्ना बिज़ुनूबिना फ़-हल् इला ख़ुरूजिम् - मिन् सबील (११) ज़ालिकुम् बिअन्नहू इज़ा दुअि-यल्लाहु वह्दहू क-फ़र्तुम्ॅव इंय्युश्-रक् बिही तुअ्मिनूॅ फ़ल्हुक्मु लिल्लाहिल्-अलिय्यिल् - कबीर (१२) हुवल्लज़ी युरीकुम् आयातिही व युनज़्ज़िलु लकुम् मिनस्समाइ रिज़्क़न्ॅव मा य-त-ज़क्करु इल्ला मंय्युनीब (१३) फ़द्अुल्ला-ह मुख़्लिसी-न लहुद्दी-न व लौ करिहल्-काफ़िरून (१४) रफ़ीअुद्-द-रजाति ज़ुल्अर्शि युल्क़िर्रू-ह मिन् अम्रिही अ़ला मंय्यशाउ मिन् अिबादिही लि-युन्ज़ि-र यौमत्तलाक़ (१५) यौ-म हुम् बारिज़ू-नॅला यख़्फ़ा अ़लल्लाहि मिन्हुम् शैउन्ॅ लि-मनिल्-मुल्कुल्यौ-म ॅ लिल्लाहिल्-वाहिदिल्-क़ह्हार (१६) अल्यौ-म तुज्ज़ा कुल्लु नफ़्-सिम्-बिमा क-स-बत्ॅला ज़ुल्मल्-यौ-मॅइन्नल्ला-ह सरीअुल्-हिसाब (१७) व अन्ज़िर्-हुम् यौमल्-आज़िफ़ति इज़िल्क़ुलूबु ल-दल्हनाजिरि काज़िमी-न ॅ मा लिज़्ज़ालिमी-न मिन् हमीमिंव्-व ला शफ़ीअिंय्युता-अ़ॅ (१८) यअ्-लमु ख़ाइन-तल् - अअ् - युनि व मा तुख़्फ़िस्सुदूर (१९) वल्लाहु यक़्ज़ी बिल्हक़्क़िॅवल्लज़ी-न यद्अू-न मिन् दूनिही ला यक़्ज़ू-न बिशैइन् ॅ इन्नल्ला-ह हुवस्समीअुल् - बसीर ★(२०) अ-व लम् यसीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़-यन्ज़ुरू कै-फ़ का-न आक़िबतुल्लज़ी-न कानू मिन् क़ब्लिहिम्ॅ कानू हुम् अशद् - द मिन्हुम् क़ुव्वतंव्-व आसारन् फ़िल्अर्ज़ि फ़-अ-ख़-ज़-हुमुल्लाहु बिज़ुनूबिहिम्ॅ व मा का-न लहुम् मिनल्लाहि मिंव्वाक़ (२१) ज़ालि - क बि - अन्नहुम् कानत् तअ्तीहिम् रुसुलुहुम् बिलबय्यिनाति फ़-क-फ़रू फ़-अ-ख़-ज-हुमुल्लाहु ॅ इन्नहू क़विय्युन् शदीदुल्-अिक़ाब (२२)

فمن أظلم ٢٤ المؤمن ٤٠

تَكْفُرُونَ ﴿١٠﴾ قَالُوا رَبَّنَا أَمَتَّنَا اثْنَتَيْنِ وَأَحْيَيْتَنَا اثْنَتَيْنِ فَاعْتَرَفْنَا
بِذُنُوبِنَا فَهَلْ إِلَىٰ خُرُوجٍ مِّن سَبِيلٍ ﴿١١﴾ ذَٰلِكُم بِأَنَّهُ إِذَا دُعِيَ اللَّهُ
وَحْدَهُ كَفَرْتُمْ ۖ وَإِن يُشْرَكْ بِهِ تُؤْمِنُوا ۚ فَالْحُكْمُ لِلَّهِ الْعَلِيِّ الْكَبِيرِ ﴿١٢﴾
هُوَ الَّذِي يُرِيكُمْ آيَاتِهِ وَيُنَزِّلُ لَكُم مِّنَ السَّمَاءِ رِزْقًا ۚ وَمَا يَتَذَكَّرُ إِلَّا
مَن يُنِيبُ ﴿١٣﴾ فَادْعُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ﴿١٤﴾
رَفِيعُ الدَّرَجَاتِ ذُو الْعَرْشِ يُلْقِي الرُّوحَ مِنْ أَمْرِهِ عَلَىٰ مَن يَشَاءُ مِنْ
عِبَادِهِ لِيُنذِرَ يَوْمَ التَّلَاقِ ﴿١٥﴾ يَوْمَ هُم بَارِزُونَ ۖ لَا يَخْفَىٰ عَلَى اللَّهِ مِنْهُمْ
شَيْءٌ ۚ لِّمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ۖ لِلَّهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ﴿١٦﴾ الْيَوْمَ تُجْزَىٰ كُلُّ
نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ ۚ لَا ظُلْمَ الْيَوْمَ ۚ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿١٧﴾ وَأَنذِرْهُمْ
يَوْمَ الْآزِفَةِ إِذِ الْقُلُوبُ لَدَى الْحَنَاجِرِ كَاظِمِينَ ۚ مَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ
حَمِيمٍ وَلَا شَفِيعٍ يُطَاعُ ﴿١٨﴾ يَعْلَمُ خَائِنَةَ الْأَعْيُنِ وَمَا تُخْفِي
الصُّدُورُ ﴿١٩﴾ وَاللَّهُ يَقْضِي بِالْحَقِّ ۖ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِن دُونِهِ لَا
يَقْضُونَ بِشَيْءٍ ۗ إِنَّ اللَّهَ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ﴿٢٠﴾ أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي
الْأَرْضِ فَيَنظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ كَانُوا مِن قَبْلِهِمْ ۚ كَانُوا
هُمْ أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَآثَارًا فِي الْأَرْضِ فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ وَ
مَا كَانَ لَهُم مِّنَ اللَّهِ مِن وَاقٍ ﴿٢١﴾ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانَت تَّأْتِيهِمْ رُسُلُهُم
بِالْبَيِّنَاتِ فَكَفَرُوا فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ ۚ إِنَّهُ قَوِيٌّ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿٢٢﴾ وَ

★रु. २/७ आ ११

तुम अपने आप से बेजार हो रहे हो। (१०) वे कहेंगे कि ऐ हमारे परवरदिगार ! तू ने हमको दो बार बे-जान किया और दो बार जान बख्शी। हम को अपने गुनाहों का इक़रार है, तो क्या निकलने का कोई रास्ता है ? (११) यह इसलिए कि जब तन्हा ख़ुदा को पुकारा जाता था, तो तुम इन्कार कर देते थे और अगर उस के साथ शरीक मुक़र्रर किया जाता था, तो मान लेते थे, तो हुक्म तो ख़ुदा ही का है, जो (सब से) ऊपर (और सब से) बड़ा है. (१२) वही तो है, जो तुम को अपनी निशानियां दिखाता है और तुम पर आसमान से रोज़ी उतारता है और नसीहत तो वही पकड़ता है, जो (उस की तरफ़) रुजूअ करता है। (१३) तो ख़ुदा की इबादत को ख़ालिस कर-कर उसी को पुकारो, अगरचे काफ़िर बुरा ही मानें। (१४) वह मालिक ऊंचे दर्जे (और) अर्श वाला है । अपने बन्दों में से, जिस को चाहता है, अपने हुक्म से वह्य भेजता है, ताकि मुलाक़ात के दिन से डराए, (१५) जिस दिन वे निकल पड़ेंगे, उन की कोई चीज़ ख़ुदा से छिपी न रहेगी, आज किस की बादशाही है ? ख़ुदा की जो अकेला (और) ग़ालिब है। (१६) आज के दिन हर शख़्स को उसके आमाल का बदला दिया जाएगा। आज (किसी के हक़ में) बे-इंसाफ़ी नहीं होगी। बेशक ख़ुदा जल्द हिसाब लेने वाला है। (१७) और उन को क़रीब आने वाले दिन से डराओ, जब कि दिल ग़म से भरकर गलों तक आ रहे होंगे (और) ज़ालिमों का कोई दोस्त नहीं होगा, और न कोई सिफ़ारिशी, जिस की बात क़ुबूल की जाए। (१८) वह आंखों की ख़ियानत को जानता है और जो (बातें) सीनों में छिपी हैं (उनको भी) (१९) और ख़ुदा सच्चाई के साथ हुक्म फ़रमाता है और जिनको ये लोग पुकारते हैं, वे कुछ भी हुक्म नहीं दे सकते। बेशक ख़ुदा सुनने वाला (और) देखने वाला है। (२०)★

क्या उन्होंने ज़मीन में सैर नहीं की, ताकि देख लेते कि जो लोग उन से पहले थे, उनका अंजाम कैसा हुआ, वह उनसे ज़ोर और ज़मीन में निशान (बनाने) के लिहाज़ से कहीं बढ़ कर थे, तो ख़ुदा ने उनको उनके गुनाहों की वजह से पकड़ लिया और उनको ख़ुदा (के अज़ाब) से कोई भी बचाने वाला न था। (२१) यह इसलिए कि उनके पास पैग़म्बर खुली दलीलें लाते थे, तो ये कुफ़्र करते थे, सो ख़ुदा ने उनको पकड़ लिया, बेशक वह ताक़त वाला (और) सख़्त अज़ाब देने वाला है। (२२)

★रु. २/७ आ ११

व ल-क़द् अर्सल्ना मूसा बिआयातिना व सुल्तानिम्-मुबीन (२३) इला फ़िर्ओ-न व हामा-न व क़ारू-न फ़क़ालू साहिरुन् कज़्ज़ाब (२४) फ़-लम्मा जा-अहुम् बिल्-हक़्क़ि मिन् अिन्दिना क़ालुक़्तुलू अब्नाअल्लज़ी-न आमनू म-अहू वस्तह्यू निसा-अहुम् व मा कैदुल्काफ़िरी-न इल्ला फ़ी ज़लाल (२५) व क़ा-ल फ़िर्औनु ज़रूनी अक़्तुल मूसा वल्यद्अु रब्बहू इन्नी अख़ाफ़ु अंय्युबद्-दि-ल दी-नकुम् औ अंय्युज़्हि-र फ़िल्अर्ज़िल्-फ़साद (२६) व क़ा-ल मूसा इन्नी अुज़्तु बिरब्बी व रब्बिकुम् मिन् कुल्लि मु-त-कब्बि-रिल्ला युअ्मिनु बियौमिल्-हिसाब ★(२७) व क़ा-ल रजुलुम्-मुअ्मिनुम्-मिन् आलि फ़िर्औ-न यक्तुमु ईमानहू अ-तक़्तुलू-न रजुलन् अंय्यक़ू-ल रब्बियल्लाहु व क़द् जा-अकुम् बिल्बय्यिनाति मिर्रब्बिकुम् व इंय्यकु काज़िबन् फ़-अलैहि कज़िबुहू व इंय्यकु सादिक़ंय्युसिब्-कुम् बअ्-ज़ुल्लज़ी यअिदुकुम् इन्नल्ला-ह ला यह्दी मन् हु-व मुस्रिफ़ुन् कज़्ज़ाब (२८) या क़ौमि लकुमुल्-मुल्कुल्-यौ-म ज़ाहिरी-न फ़िल्अर्ज़ि फ़-मंय्यन्सुरुना मिम्बअ्सिल्लाहि इन् जा-अना क़ा-ल फ़िर्औनु मा उरीकुम् इल्ला मा-अरा व मा अह्दीकुम् इल्ला सबीलर्-रशाद (२९) व क़ालल्लज़ी आ-म-न या क़ौमि इन्नी अख़ाफ़ु अलैकुम् मिस्-ल यौमिल्-अह्ज़ाब (३०) मिस्-ल दअ्बि क़ौमि नूहिंव्-व आदिंव्-व समू-द वल्लज़ी-न मिम्बअ्-दिहिम् व मल्लाहु युरीदु ज़ुल्मल्-लिल्अिबाद (३१) व या क़ौमि इन्नी अख़ाफ़ु अलैकुम् यौमत्तनाद (३२) यौ-म तुवल्लू-न मुद्बिरी-न मा लकुम् मिनल्लाहि मिन् आसिमिन् व मंय्युज़्लि-लिल्लाहु फ़मा लहू मिन् हाद (३३)

لقد ارسلنا موسى بايتنا وسلطن مبين ۝ الى فرعون وهامن
وقارون فقالوا سحر كذاب ۝ فلما جاءهم بالحق من عندنا
قالوا اقتلوا ابناء الذين امنوا معه واستحيوا نساءهم وما كيد
الكفرين الا في ضلل ۝ وقال فرعون ذروني اقتل موسى وليدع
ربه اني اخاف ان يبدل دينكم او ان يظهر في الارض الفساد ۝
وقال موسى اني عذت بربي وربكم من كل متكبر لا يؤمن
بيوم الحساب ۝ وقال رجل مؤمن من ال فرعون يكتم
ايمانه اتقتلون رجلا ان يقول ربي الله وقد جاءكم بالبينت
من ربكم وان يك كاذبا فعليه كذبه وان يك صادقا يصبكم
بعض الذي يعدكم ان الله لا يهدي من هو مسرف كذاب ۝
يقوم لكم الملك اليوم ظهرين في الارض فمن ينصرنا من
بأس الله ان جاءنا قال فرعون ما اريكم الا ما ارى وما اهديكم
الا سبيل الرشاد ۝ وقال الذي امن يقوم اني اخاف عليكم
مثل يوم الاحزاب ۝ مثل دأب قوم نوح وعاد وثمود و
الذين من بعدهم وما الله يريد ظلما للعباد ۝ ويقوم اني
اخاف عليكم يوم التناد ۝ يوم تولون مدبرين ما لكم من
الله من عاصم ومن يضلل الله فما له من هاد ۝ ولقد جاءكم

★रु. ३/८ आ ७

और हमने मूसा को अपनी निशानियां और रोशन दलील देकर भेजा, (२३) (यानी) फ़िर्औन और हामान और क़ारून की तरफ़, तो उन्होंने कहा कि यह तो जादूगर है झूठा। (२४) ग़रज़ जब वह उनके पास हमारी तरफ़ से हक़ ले कर पहुंचे, तो कहने लगे कि जो लोग उसके साथ (ख़ुदा पर) ईमान लाए हैं, उन के बेटों को क़त्ल कर दो और बेटियों को रहने दो और काफ़िरों की तद्बीरें बे-ठिकाने होती हैं। (२५) और फ़िर्औन बोला कि मुझे छोड़ो कि मूसा को क़त्ल कर दूं और वह अपने परवरदिगार को बुला ले। मुझे डर है कि वह (कहीं) तुम्हारे दीन को (न) बदल दे या मुल्क में फ़साद (न) पैदा कर दे। (२६) मूसा ने कहा कि मैं हर घमंडी से, जो हिसाब के दिन (यानी क़ियामत) पर ईमान नहीं लाता, अपने और तुम्हारे परवरदिगार की पनाह ले चुका हूं। (२७)★

और फ़िर्औन के लोगों में से एक मोमिन शख़्स जो अपने ईमान को छिपाए रखता था, कहने लगा, क्या तुम ऐसे शख़्स को क़त्ल करना चाहते हो, जो कहता है कि मेरा परवरदिगार ख़ुदा है और वह तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार (की तरफ़) से निशानियां भी लेकर आया है और अगर वह झूठा होगा, तो उसके झूठ का नुक़्सान उसी को होगा और अगर सच्चा होगा, तो कोई-सा अज़ाब, जिसका वह तुम से वायदा करता है, तुम पर वाक़ेअ हो कर रहेगा। बेशक ख़ुदा उस शख़्स को हिदायत नहीं देता, जो बे-लिहाज़ झूठा है। (२८) ऐ क़ौम! आज तुम्हारी ही बादशाही है और तुम ही मुल्क में ग़ालिब हो, (लेकिन) अगर हम पर ख़ुदा का अज़ाब आ गया, तो (उस के दूर करने के लिए) हमारी मदद कौन करेगा! फ़िर्औन ने कहा कि मैं तुम्हें वही बात सुनाता हूं, जो मुझे सूझी है और वही राह बताता हूं, जिसमें भलाई है। (२९) तो जो मोमिन था, वह कहने लगा कि ऐ क़ौम! मुझे तुम्हारे बारे में डर है कि (शायद) तुम पर और उम्मतों की तरह के दिन का अज़ाब आ जाए। (३०) (यानी) नूह की क़ौम और आद और समूद और जो लोग उनके पीछे हुए हैं, उनके हाल की तरह (तुम्हारा हाल न हो जाए) और ख़ुदा तो बन्दों पर ज़ुल्म करना नहीं चाहता। (३१) और ऐ क़ौम! मुझे तुम्हारे बारे में पुकार के दिन (यानी क़ियामत) का डर है, (३२) जिस दिन तुम पीठ फेर कर (क़ियामत के मैदान से) भागोगे, (उस दिन) तुम को कोई (अज़ाबे) ख़ुदा से बचाने वाला न होगा और जिस शख़्स को ख़ुदा गुमराह करे, उसको कोई हिदायत देने वाला

★रु. ३/८ आ ७

व ल-क़द् जा-अकुम् यूसुफ़ु मिन् क़ब्लु बिल्बय्यिनाति फ़मा ज़िल्तुम् फ़ी शक्किम्-मिम्मा जा-अकुम् बिही ط हत्ता इज़ा ह-ल-क क़ुल्तुम् लंय्यब्-असल्लाहु मिम्बअ्-दिही रसूलन् ط कज़ालि-क युज़िल्लुल्लाहु मन् हु-व मुस्रिफ़ुम्-मुर्ताबु नि- ج (३४) -ल्लज़ी-न युजादिलू-न फ़ी आयातिल्लाहि बिग़ैरि सुल्तानिन् अताहुम् ط कबु-र मक़्तन् अिन्दल्-लाहि व अिन्दल्लज़ी-न आमनू ط कज़ालि-क यत्-बअुल्लाहु अला कुल्लि क़ल्बि मु-त-कब्बिरिन् जब्बार (३५) व क़ा-ल फ़िर्-औनु या हामानुब्नि ली सर्हल्-ल-अल्ली अब्लुग़ुल्-अस्बाब (३६) अस्बाबस्समावाति फ़-अत्तलि-अ इला इलाहि मूसा व इन्नी ल-अज़ुन्नुहू काज़िबन् ط व कज़ालि-क ज़ुय्यि-न लिफ़िर्-औ-न सूउ अ-म-लिही व सुद-द अनिस्सबीलि ط व मा कैदु फ़िर्-औ-न इल्ला फ़ी तबाब ★ (३७) व क़ा-लल्लज़ी आम-न या क़ौमित्तबिअूनि अह्-दिकुम् सबीलर्रशाद ج (३८) या क़ौमि इन्नमा हाज़िहिल् - हयातुद्दुन्या मताअुंव्-व इन्नल्-आख़ि-र-त हि-य दारुल्क़रार (३९) मन् अमि-ल सय्यि-अ-तन् फ़ला युज्ज़ा इल्ला मिस्लहा ج व मन् अमि-ल सालिहम्-मिन् ज़-क-रिन् औ अुन्सा व हु-व मुअ्मिनुन् फ़-उलाइ-क यद्ख़ुलूनल्-जन्न-त युर्ज़क़ू-न फ़ीहा बिग़ैरि हिसाब (४०) व या क़ौमि मा ली अद्अूकुम् इलन्नजाति व तद्अूननी इलन्नार ط ● (४१) तद्अूननी लि-अक्फ़ु-र बिल्लाहि व उश्रि-क बिही मा लै-स ली बिही अिल्मुंव्-व अ-न अद्अूकुम् इलल्-अज़ीज़िल्-ग़फ़्फ़ार (४२) ला ज-र-म अन्नमा तद्अूननी इलैहि लै-स लहू दअ्-वतुन् फ़िद्दुन्या व ला फ़िल्आख़िरति व अन्-न म-रद्दना इलल्लाहि व अन्नल्-मुस्रिफ़ी-न हुम् अस्हाबुन्नार (४३) फ़-स-तज़्कुरू-न मा अक़ूलु लकुम् ط व उफ़व्विज़ु अम्री इलल्लाहि ط इन्नल्ला - ह बसीरुम् - बिल्अिबाद (४४)

المؤمن ٤٠ ٧٤٩ فمن اظلم ٢٤

يُوسُفُ مِنْ قَبْلُ بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا زِلْتُمْ فِيْ شَكٍّ مِّمَّا جَآءَكُمْ بِهٖ
حَتّٰٓى اِذَا هَلَكَ قُلْتُمْ لَنْ يَّبْعَثَ اللّٰهُ مِنْۢ بَعْدِهٖ رَسُوْلًا ۚ كَذٰلِكَ
يُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ مُّرْتَابُ ۝ الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِ
اللّٰهِ بِغَيْرِ سُلْطٰنٍ اَتٰىهُمْ ۚ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ وَعِنْدَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۚ
كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ قَلْبِ مُتَكَبِّرٍ جَبَّارٍ ۝ وَقَالَ فِرْعَوْنُ
يٰهَامٰنُ ابْنِ لِيْ صَرْحًا لَّعَلِّيْٓ اَبْلُغُ الْاَسْبَابَ ۝ اَسْبَابَ السَّمٰوٰتِ
فَاَطَّلِعَ اِلٰٓى اِلٰهِ مُوْسٰى وَاِنِّيْ لَاَظُنُّهٗ كَاذِبًا ۚ وَكَذٰلِكَ زُيِّنَ لِفِرْعَوْنَ
سُوْٓءُ عَمَلِهٖ وَصُدَّ عَنِ السَّبِيْلِ ۚ وَمَا كَيْدُ فِرْعَوْنَ اِلَّا فِيْ تَبَابٍ ۝
وَقَالَ الَّذِيْٓ اٰمَنَ يٰقَوْمِ اتَّبِعُوْنِ اَهْدِكُمْ سَبِيْلَ الرَّشَادِ ۝ يٰقَوْمِ
اِنَّمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا مَتَاعٌ ۡ وَّاِنَّ الْاٰخِرَةَ هِيَ دَارُ الْقَرَارِ ۝ مَنْ
عَمِلَ سَيِّئَةً فَلَا يُجْزٰٓى اِلَّا مِثْلَهَا ۚ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ
اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ يُرْزَقُوْنَ فِيْهَا بِغَيْرِ
حِسَابٍ ۝ وَيٰقَوْمِ مَا لِيْٓ اَدْعُوْكُمْ اِلَى النَّجٰوةِ وَتَدْعُوْنَنِيْٓ اِلَى النَّارِ ۝
تَدْعُوْنَنِيْ لِاَكْفُرَ بِاللّٰهِ وَاُشْرِكَ بِهٖ مَا لَيْسَ لِيْ بِهٖ عِلْمٌ ۡ وَّاَنَا اَدْعُوْكُمْ
اِلَى الْعَزِيْزِ الْغَفَّارِ ۝ لَا جَرَمَ اَنَّمَا تَدْعُوْنَنِيْٓ اِلَيْهِ لَيْسَ لَهٗ دَعْوَةٌ فِي
الدُّنْيَا وَلَا فِي الْاٰخِرَةِ وَاَنَّ مَرَدَّنَآ اِلَى اللّٰهِ وَاَنَّ الْمُسْرِفِيْنَ هُمْ
اَصْحٰبُ النَّارِ ۝ فَسَتَذْكُرُوْنَ مَآ اَقُوْلُ لَكُمْ ۚ وَاُفَوِّضُ اَمْرِيْٓ اِلَى

★रु. ४/१ आ १० ● नि. १/२

नहीं। (३३) और पहले यूसुफ़ भी तुम्हारे पास निशानियां ले कर आए थे, तो जो वह लाए थे, उस से तुम हमेशा शक ही में रहे, यहां तक कि जब वह फ़ौत हो गये, तो तुम कहने लगे कि ख़ुदा उसके बाद कभी कोई पैग़म्बर नहीं भेजेगा। इसी तरह ख़ुदा उस शख़्स को गुमराह कर देता है, जो हद से निकल जाने वाला (और) शक करने वाला हो। (३४) जो लोग बग़ैर इसके कि उन के पास कोई दलील आयी हो, ख़ुदा की आयतों में झगड़ते हैं, ख़ुदा के नज़दीक और मोमिनों के नज़दीक झगड़ा सख़्त ना-पसन्द है। इसी तरह ख़ुदा हर घमंडी-सरकश के दिल पर मुहर लगा देता है। (३५) और फ़िऔन ने कहा कि हामान मेरे लिए एक महल बनाओ ताकि मैं उस पर चढ़ कर रास्तों पर पहुंच जाऊं। (३६) (यानी) आसमानों के रास्तों पर, फिर मूसा के ख़ुदा को देख लूं और मैं तो उसे झूठा समझता हूं और इसी तरह फ़िऔन को उस के बुरे आमाल अच्छे मालूम होते थे और वह रास्ते से रोक दिया गया था और फ़िऔन की तद्बीर तो बेकार थी। (३७)★

और वह शख़्स जो मोमिन था, उसने कहा कि भाइयो! मेरे पीछे चलो, मैं तुम्हें भलाई का रास्ता दिखाऊंगा। (३८) भाइयो! यह दुनिया की ज़िंदगी (कुछ दिन) फ़ायदा उठाने की चीज़ है और जो आख़िरत है, वही हमेशा रहने का घर है। (३९) जो बुरे काम करेगा, उसको बदला भी वैसा ही मिलेगा और जो नेक काम करेगा, मर्द हो या औरत और वह ईमान वाला भी होगा, तो ऐसे लोग बहिश्त में दाख़िल होंगे, वहां उनको बे-हिसाब रोज़ी मिलेगी। (४०) और ऐ क़ौम! मेरा क्या (हाल) है कि मैं तो तुम को निजात की तरफ़ बुलाता हूं और तुम मुझे (दोज़ख़ की) आग की तरफ़ बुलाते हो●(४१) तुम मुझे इस लिए बुलाते हो कि ख़ुदा के साथ कुफ़्र करूं और उस चीज़ को उसका शरीक मुक़र्रर करूं, जिस का मुझे कुछ भी इल्म नहीं और मैं तुम को (ख़ुदा-ए-) ग़ालिब (और) बख़्शने वाले की तरफ़ बुलाता हूं। (४२) सच तो यह है कि जिस चीज़ की तरफ़ तुम मुझे बुलाते हो, उसको दुनिया और आख़िरत में बुलाने (यानी दुआ क़ुबूल करने) की क़ुदरत नहीं और हम को ख़ुदा की तरफ़ लौटना है और हद से निकल जाने वाले दोज़ख़ी हैं। (४३) जो बात मैं तम से कहता हूं, तुम उसे (आगे चल कर) याद करोगे और मैं अपना काम ख़ुदा के सुपुर्द करता

★रु. ४/६ आ १० ●नि. १/२

फ़-वक़ाहुल्लाहु सय्यिआति मा म-करू व हा-क़ बि आलि फ़िर्औ-न सूउल्अज़ाब ᵹ (४५) अन्नारु युअ्-र-ज़ू-न अलैहा ग़ुदुव्वंव्-व अशिय्यन् व यौ-म तक़ूमुस्साअतु अद्ख़िलू आ-ल फ़िर्औ-न अशद्द-दल्-अज़ाब (४६) व इज़् य-तहाज्जू-न फ़िन्नारि फ़-यक़ूलुज़्-ज़ु-अफ़ाउ लिल्लज़ीनस्तक्बरू इन्ना कुन्ना लकुम् त-ब-अन् फ़-हल् अन्तुम् मुग़्नू-न अन्ना नसीबम्-मिनन्नार (४७) क़ालल्लज़ीनस्तक्बरू इन्ना कुल्लुन् फ़ीहा॥ इन्-नल्ला-ह क़द् ह-क-म बैनल्अिबाद (४८) व क़ालल्लज़ी-न फ़िन्नारि लि-ख़-ज़-नति ज-हन्नमद्अू रब्बकुम् युख़फ़्फ़िफ़् अन्ना यौमम्मिनल्-अज़ाब (४९) क़ालू अ-व लम् तकु तअ्-तीकुम् रुसुलुकुम् बिल्बय्यिनाति♭क़ालू बला♭क़ालू फ़द्अू ᵹ व मा दुआउल्-काफ़िरी-न इल्ला फ़ी ज़लाल ★ (५०) इन्ना ल-नन्सुरु रुसु-लना वल्लज़ी-न आमनू फ़िल्हयातिद्दुन्या व यौ-म यक़ूमुल्-अश्हाद॥ (५१) यौ-म ला यन्फ़अुज़्ज़ालिमी-न व मअ्-ज़ि-रतुहुम् व लहुमुल्लअ्-नतु व लहुम् सूउद्दार (५२) व ल-क़द् आतैना मूसल्हुदा व औरस्ना बनी इस्राईलल्-किताब॥ (५३) हुदंव्-व ज़िक्रा लिउलिल्-अल्बाब (५४) फ़स्बिर् इन्-न वअ्-दल्लाहि हक़्क़ुंव्वस्तग़्-फ़िर् लिज़म्बि-क व सब्बिह् बिहम्दि रब्बि-क बिल्अशिय्यि वल्इब्कार (५५) इन्नल्लज़ी-न युजादिलू-न फ़ी आयातिल्लाहि बिग़ैरि सुल्तानिन् अताहुम्॥ इन् फ़ी सुदूरिहिम् इल्ला किब्रुम्-मा हुम् बिबालिग़ीहि ᵹ फ़स्तअिज़् बिल्लाहि♭ इन्नहू हुवस्समीअुल्-बसीर (५६) ल-ख़ल्क़ुस्समावाति वल्अर्ज़ि अक्बरु मिन् ख़ल्क़िन्नासि व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला यअ्-लमून (५७)

اللهَ اِنَّ اللهَ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ۝ فَوَقٰىهُ اللهُ سَيِّاٰتِ مَا مَكَرُوْا وَ
حَاقَ بِاٰلِ فِرْعَوْنَ سُوْٓءُ الْعَذَابِ ۝ اَلنَّارُ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَّ
عَشِيًّا ۚ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ ۣ اَدْخِلُوْٓا اٰلَ فِرْعَوْنَ اَشَدَّ الْعَذَابِ ۝
وَاِذْ يَتَحَاۗجُّوْنَ فِي النَّارِ فَيَقُوْلُ الضُّعَفٰۗؤُا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُنَّا
لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ اَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ عَنَّا نَصِيْبًا مِّنَ النَّارِ ۝ قَالَ الَّذِيْنَ
اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُلٌّ فِيْهَآ ۙ اِنَّ اللهَ قَدْ حَكَمَ بَيْنَ الْعِبَادِ ۝ وَقَالَ
الَّذِيْنَ فِي النَّارِ لِخَزَنَةِ جَهَنَّمَ ادْعُوْا رَبَّكُمْ يُخَفِّفْ عَنَّا يَوْمًا مِّنَ
الْعَذَابِ ۝ قَالُوْٓا اَوَلَمْ تَكُ تَاْتِيْكُمْ رُسُلُكُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ۭ قَالُوْا بَلٰى ۭ
قَالُوْا فَادْعُوْا ۚ وَمَا دُعٰۗؤُا الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ ۝ اِنَّا لَنَنْصُرُ
رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ يَقُوْمُ الْاَشْهَادُ ۝
يَوْمَ لَا يَنْفَعُ الظّٰلِمِيْنَ مَعْذِرَتُهُمْ وَلَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوْۗءُ الدَّارِ ۝
وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْهُدٰى وَاَوْرَثْنَا بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ الْكِتٰبَ ۝
هُدًى وَّذِكْرٰى لِاُولِي الْاَلْبَابِ ۝ فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللهِ حَقٌّ وَّ
اسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ بِالْعَشِيِّ وَالْاِبْكَارِ ۝ اِنَّ
الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِ اللهِ بِغَيْرِ سُلْطٰنٍ اَتٰىهُمْ ۙ اِنْ فِيْ صُدُوْرِهِمْ
اِلَّا كِبْرٌ مَّا هُمْ بِبَالِغِيْهِ ۚ فَاسْتَعِذْ بِاللهِ ۭ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ۝
لَخَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ

★रु. ५/१०आ१३

हूं। बेशक ख़ुदा बन्दों को देखने वाला है। (४४) ग़रज़ ख़ुदा ने (मूसा को) उन लोगों की तद्बीरों की बुराइयों से बचाए रखा और फ़िरऔन वालों को बुरे अज़ाब ने आ घेरा, (४५) (यानी जहन्नम की) आग कि सुबह व शाम उसके सामने पेश किए जाते हैं और जिस दिन क़ियामत बरपा होगी, (हुक्म होगा कि) फ़िरऔन वालों को सख़्त अज़ाब में दाख़िल करो।[1] (४६) और जब वे दोज़ख़ में झगड़ेंगे, तो छोटे दर्जे के लोग बड़े आदमियों से कहेंगे कि हम तो तुम्हारे ताबेअ थे, तो क्या तुम दोज़ख़ (के अज़ाब) का कुछ हिस्सा हम से दूर कर सकते हो? (४७) बड़े आदमी कहेंगे कि तुम (भी और) हम (भी) सब दोज़ख़ में हैं, ख़ुदा बन्दों में फ़ैसला कर चुका है। (४८) और जो लोग आग में (जल रहे) होंगे, वे दोज़ख़ के दारोग़ाओं से कहेंगे कि अपने परवरदिगार से दुआ करो कि एक दिन तो हम से अज़ाब हल्का कर दे। (४९) वे कहेंगे कि क्या तुम्हारे पास तुम्हारे पैग़म्बर निशानियां लेकर नहीं आए थे? वे कहेंगे, क्यों नहीं, तो वे कहेंगे कि तुम ही दुआ करो और काफ़िरों की दुआ (उस दिन) बेकार होगी। (५०)★

हम अपने पैग़म्बरों की और जो लोग ईमान लाए हैं उनकी, दुनिया की ज़िंदगी में भी मदद करते हैं और जिस दिन गवाह खड़े होंगे, (यानी क़ियामत को भी,) (५१) जिस दिन ज़ालिमों को उनकी माज़रत कुछ फ़ायदा न देगी और उन के लिए लानत और बुरा घर है। (५२) और हमने मूसा को हिदायत (की किताब) दी और बनी इस्राईल को उस किताब का वारिस बनाया। (५३) अक़्ल वालों के लिए हिदायत और नसीहत है। (५४) तो सब्र करो, बेशक ख़ुदा का वायदा सच्चा है और अपने गुनाहों की माफ़ी मांगो और सुबह व शाम अपने परवरदिगार की तारीफ़ के साथ तस्बीह करते रहो। (५५) जो लोग बग़ैर किसी दलील के, जो उनके पास आयी हो, ख़ुदा की आयतों में झगड़ते हैं, उन के दिलों में और कुछ नहीं बड़ाई (का इरादा) है और वह उसको पहुंचने वाले नहीं,[2] तो ख़ुदा की पनाह मांगो। बेशक वह सुनने वाला (और) देखने वाला है। (५६) आसमानों और ज़मीन का पैदा करना लोगों के पैदा करने के मुक़ाबले में बड़ा (काम) है, लेकिन

१. यह क़ब्र की दुनिया का हाल है। काफ़िर को इस का ठिकाना दिखाया जाता है और क़ियामत को उस में बैठेगा और मोमिन को बहिश्त।

२. यानी ये कुफ़्फ़ार जो अल्लाह तआला की आयतों में बे-दलील झगड़ते और उन को झुठलाते हैं, तो उन का मक़सद यह होता है कि पैग़म्बरे ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन पर कभी ग़ालिब नहीं हो सकते।

व मा यस्तविल्-अअ्-मा वल्बसीरु ॥ वल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति व लल्मुसीउ ط क़लीलम्-मा त-त-ज़क्करून (५८) इन्नस्सा-अ़-त लआति-यतुल्ला रै-ब फ़ीहा व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला युअ्मिनून (५९) व क़ा-ल रब्बुकुमुद्अूनी अस्तजिब् लकुम् ط इन्नल्लज़ी-न यस्तक्बिरू-न अन् अ़िबादती स-यद्ख़ुलू-न ज-हन्न-म दाख़िरीन ★ (६०) अल्लाहुल्लज़ी ज-अ़-ल लकुमुल्लै-ल लितस्कुनू फ़ीहि वन्नहा-र मुब्सिरन् ط इन्नल्ला-ह लज़ू फ़ज़्लिन् अ़-लन्नासि व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला यश्कुरून (६१) ज़ालिकुमुल्लाहु रब्बुकुम् ख़ालिक़ु कुल्लि शैइन् ला इला-ह इल्ला हु-व फ़-अन्ना तुअ्-फ़कून (६२) कज़ालि-क युअ्फ़कुल्लज़ी-न कानू बिआयातिल्लाहि यज्हदून (६३) अल्लाहुल्लज़ी ज-अ़-ल लकुमुल्अर-ज़ क़रा-रंव्वस्समा-अ बिनाअंव्-व सव्व-रकुम् फ़-अह्-स-न सु-व-रकुम् व र-ज़-क़कुम् मिनत्तय्यिबाति ط ज़ालिकुमुल्लाहु रब्बुकुम् फ़-त-बारकल्लाहु रब्बुल्-आलमीन (६४) हुवल्हय्यु ला इला-ह इल्ला हु-व फ़द्अूहु मुख़्लिसी-न लहुद्दी-न ط अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल्-आलमीन (६५) क़ुल् इन्नी नुहीतु अन् अअ्-बुदल्लज़ी-न तद्अू-न मिन् दूनिल्लाहि लम्मा जा-अनियल्-बय्यिनातु मिर्रब्बी व उमिर्तु अन् उस्लि-म लिरब्बिल्-आलमीन (६६) हुवल्लज़ी ख़-ल-क़कुम् मिन् तुराबिन् सुम्-म मिन् नुत्फ़तिन् सुम्-म मिन् अ़-ल-क़तिन् सुम्-म युख़्रिजुकुम् तिफ़्लन् सुम्-म लितब्लुग़ू अशुद्-दकुम् सुम्-म लितकूनू शुयूख़न् व मिन्कुम् मंय्यु-त-वफ़्फ़ा मिन् क़ब्लु व लितब्लुग़ू अ-ज-लम्-मुसम्मंव्-व ल-अ़ल्लकुम् तअ्-क़िलून (६७)

النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَمَا يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ ۙ وَالَّذِينَ
آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَلَا الْمُسِيءُ ۚ قَلِيلًا مَا تَتَذَكَّرُونَ ۝
إِنَّ السَّاعَةَ لَآتِيَةٌ لَا رَيْبَ فِيهَا وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا
يُؤْمِنُونَ ۝ وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ ۚ إِنَّ الَّذِينَ
يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ دَاخِرِينَ ۝ اللَّهُ
الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِتَسْكُنُوا فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۚ إِنَّ اللَّهَ
لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ۝ ذَٰلِكُمُ
اللَّهُ رَبُّكُمْ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ فَأَنَّىٰ تُؤْفَكُونَ ۝
كَذَٰلِكَ يُؤْفَكُ الَّذِينَ كَانُوا بِآيَاتِ اللَّهِ يَجْحَدُونَ ۝ اللَّهُ الَّذِي
جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ قَرَارًا وَالسَّمَاءَ بِنَاءً وَصَوَّرَكُمْ فَأَحْسَنَ
صُوَرَكُمْ وَرَزَقَكُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ ۚ ذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ ۖ فَتَبَارَكَ اللَّهُ
رَبُّ الْعَالَمِينَ ۝ هُوَ الْحَيُّ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ فَادْعُوهُ مُخْلِصِينَ
لَهُ الدِّينَ ۗ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ قُلْ إِنِّي نُهِيتُ أَنْ
أَعْبُدَ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَمَّا جَاءَنِيَ الْبَيِّنَاتُ مِنْ
رَبِّي وَأُمِرْتُ أَنْ أُسْلِمَ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ
مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ يُخْرِجُكُمْ طِفْلًا
ثُمَّ لِتَبْلُغُوا أَشُدَّكُمْ ثُمَّ لِتَكُونُوا شُيُوخًا ۚ وَمِنْكُمْ مَنْ

★रु. ६/११ आ १० ※व. लाज़िम

अक्सर लोग नहीं जानते। (५७) और अंधा और आंख वाला बराबर नहीं और न ईमान वाले नेक और बद-कार बराबर हैं। (सच तो यह है कि) तुम बहुत कम ग़ौर करते हो। (५८) क़ियामत तो आने वाली है, इसमें कुछ शक नहीं, लेकिन अक्सर लोग ईमान नहीं रखते। (५९) और तुम्हारे परवरदिगार ने कहा है कि तुम मुझ से दुआ करो, मैं तुम्हारी (दुआ) क़ुबूल करूंगा। जो लोग मेरी इबादत से घमंड के तौर पर कतराते हैं, बहुत जल्द जहन्नम में ज़लील हो कर दाख़िल होंगे★(६०)

ख़ुदा ही तो है, जिस ने तुम्हारे लिए रात बनायी कि इस में आराम करो और दिन को रोशन बनाया (कि इस में काम करो।) बेशक ख़ुदा लोगों पर फ़ज़्ल करने वाला है, लेकिन अक्सर लोग शुक्र नहीं करते। (६१) यही ख़ुदा तुम्हारा परवरदिगार है, जो हर चीज़ का पैदा करने वाला है, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, फिर तुम कहां भटक रहे हो? (६२) इसी तरह वे लोग भटक रहे थे, जो ख़ुदा की आयतों से इंकार करते थे। (६३) ख़ुदा ही तो है, जिस ने ज़मीन को तुम्हारे लिए ठहरने की जगह और आसमान को छत बनाया और तुम्हारी शक्लें बनायीं और शक्लें भी अच्छी बनायीं और तुम्हें पाकीज़ा चीज़ें खाने को दीं। यही ख़ुदा तुम्हारा परवरदिगार है। पस अल्लाह रब्बुल आलमीन बहुत ही बरकत वाला है। (६४) वह ज़िंदा है, (जिसे मौत नहीं,) उस के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, तो उस की इबादत को ख़ालिस कर-कर उसी को पुकारो। हर तरह की तारीफ़ ख़ुदा ही के लिए है जो तमाम जहान का परवरदिगार है। (६५) (ऐ मुहम्मद!) इनसे कह दो कि मुझे इस बात से मना किया गया है कि जिन को तुम ख़ुदा के सिवा पुकारते हो, उन की इबादत करूं (और मैं उन की कैसे इबादत करूं,) जबकि मेरे पास मेरे परवरदिगार (की तरफ़) से खुली दलीलें आ चुकी हैं और मुझ को यह हुक्म हुआ है कि सारे जहान के परवरदिगार ही के फ़रमान के ताबेअ हूं। (६६) वही तो है, जिस ने तुम को (पहले) मिट्टी से पैदा किया, फिर नुत्फ़ा बना कर, फिर लोथड़ा बना कर, फिर तुम को निकालता है (कि तुम) बच्चे (होते हो,) फिर तुम अपनी जवानी को पहुंचते हो, फिर बूढ़े हो जाते हो और कोई तुम में से पहले ही मर जाता है और तुम (मौत के) मुक़र्रर वक़्त तक पहुंच जाते हो, और ताकि तुम समझो।[1] (६७) वही तो है,

---

1. यानी इस बात को सोचो कि जिस ख़ुदा ने तुम को पहली बार पैदा किया और तुम पर बचपन और जवानी और बुढ़ापे की हालतें पैदा कर के फिर तुम को मौत दी, वह इस बात पर भी क़ुदरत रखता है कि तुम को क़ियामत के दिन फिर ज़िंदा करे और जो लोग इन बातों पर ग़ौर करते हैं, उन को इस बात के मानने में झिझक नहीं हो सकती कि उसी तरह क़ियामत को ज़िंदा किए जाएंगे।

★रु. ६/११ आ १०　▨ व. लाज़िम

हुवल्लज़ी युह़्यी व युमीतु ८ फ़-इज़ा क़ज़ा अम्-रन् फ़-इन्नमा यक़ूलु लहू कुन् फ़यकून ★(६८) अ-लम् त-र इलल्लज़ी-न युजादिलू-न फ़ी आयातिल्लाहि ♭ अन्ना युस्-रफ़ून ६(६९) अल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिल्किताबि व बिमा अर्सल्ना बिही रुसुलना फ़-सौ-फ़ यअ्-लमून ॥ (७०) इज़िल्-अग़्-लालु फ़ी अअ्-नाक़िहिम् वस्सलासिलु♭ युस्-हबू-न॥ (७१) फ़िल्हमीमि॥ सुम्-म फ़िन्नारि युस्जरून ८(७२) सुम्-म क़ी-ल लहुम् ऐनमा कुन्तुम् तुश्रिकू-न॥ (७३) मिन् दूनिल्लाहि♭ क़ालू ज़ल्लू अ़न्ना बल् लम् नकुन् नद्अू मिन् क़ब्लु शैअन्♭ कज़ालि-क युज़िल्-लुल् लाहुल्-काफ़िरीन (७४) ज़ालिकुम् बिमा कुन्तुम् तफ़्रहू-न फ़िल्अर्ज़ि बिग़ैरिल्-ह़क़्क़ि व बिमा कुन्तुम् तम्-रहून ८ (७५) उद्ख़ुलू अब्-वा-ब ज-हन्न-म ख़ालिदी-न फ़ीहा ८ फ़बिअ्-स मस्-वल् - मु-त-कब्बिरीन (७६) फ़स् - बिर् इन्-न वअ्-दल्लाहि हक़्क़ुन् ८ फ-इम्मा नुरि-यन्न-क बअ्-ज़ल्लज़ी नअिदुहुम् औ न-त-वफ़्फ़यन्न-क फ़-इलैना युर्जअून (७७) व ल-क़द् अर्सल्ना रुसुलम् - मिन् क़ब्लि-क मिन्हुम् मन् क़-सस्ना अलै - क व मिन्हुम् मल्लम् नक़्सुस् अलै-क♭ व मा का - न लिरसूलिन् अंय्यअ्ति - य बिआयतिन् इल्ला बिइज़्निल्लाहि ८ फ़इज़ा जा - अ अम्रुल्लाहि क़ुज़ि - य बिल्ह़क़्क़ि व ख़सि-र हुनालि-कल्-मुब्तिलून ★(७८) अल्लाहुल्लज़ी ज-अ-ल लकुमुल्-अन्आ-म लितर्कबू मिन्हा व मिन्हा तअ्-कुलून ✓(७९) व लकुम् फ़ीहा मनाफ़िअु व लितब्-लुग़ू अलैहा हा-ज-तन् फ़ी सुदूरिकुम् व अलैहा व अलल्फ़ुल्कि तुह़् - मलून ♭ (८०)

يُتَوَفّٰى مِنْ قَبْلُ وَلِتَبْلُغُوْٓا اَجَلًا مُّسَمًّى وَّلَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ۝ هُوَ
الَّذِيْ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۚ فَاِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ۝
اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ ۭ اَنّٰى يُصْرَفُوْنَ ۝ الَّذِيْنَ
كَذَّبُوْا بِالْكِتٰبِ وَبِمَآ اَرْسَلْنَا بِهٖ رُسُلَنَا ۚ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ۝
اِذِ الْاَغْلٰلُ فِيْٓ اَعْنَاقِهِمْ وَالسَّلٰسِلُ ۭ يُسْحَبُوْنَ ۝ فِي الْحَمِيْمِ ۙ
ثُمَّ فِي النَّارِ يُسْجَرُوْنَ ۝ ثُمَّ قِيْلَ لَهُمْ اَيْنَ مَا كُنْتُمْ تُشْرِكُوْنَ ۝
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ قَالُوْا ضَلُّوْا عَنَّا بَلْ لَّمْ نَكُنْ نَّدْعُوْا مِنْ قَبْلُ شَيْـًٔا ۭ
كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ الْكٰفِرِيْنَ ۝ ذٰلِكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَفْرَحُوْنَ فِي
الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَمْرَحُوْنَ ۝ اُدْخُلُوْٓا اَبْوَابَ
جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ فَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ۝ فَاصْبِرْ اِنَّ
وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ ۚ فَاِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِيْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ
فَاِلَيْنَا يُرْجَعُوْنَ ۝ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ مِنْهُمْ مَّنْ
قَصَصْنَا عَلَيْكَ وَمِنْهُمْ مَّنْ لَّمْ نَقْصُصْ عَلَيْكَ ۭ وَمَا كَانَ
لِرَسُوْلٍ اَنْ يَّاْتِيَ بِاٰيَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ فَاِذَا جَاۗءَ اَمْرُ اللّٰهِ
قُضِيَ بِالْحَقِّ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْمُبْطِلُوْنَ ۝ اَللّٰهُ الَّذِيْ جَعَلَ
لَكُمُ الْاَنْعَامَ لِتَرْكَبُوْا مِنْهَا وَمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ۝ وَلَكُمْ فِيْهَا
مَنَافِعُ وَلِتَبْلُغُوْا عَلَيْهَا حَاجَةً فِيْ صُدُوْرِكُمْ وَعَلَيْهَا وَعَلَى

जो जिलाता और मारता है, फिर जब वह कोई काम करना (और किसी को पैदा करना) चाहता है, तो उस से कह देता है कि हो जा तो वह हो जाता है। (६८)★

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा, जो ख़ुदा की आयतों में झगड़ते हैं। ये कहां भटक रहे हैं? (६९) जिन लोगों ने (ख़ुदा की) किताब को और जो कुछ हमने अपने पैग़म्बरों को दे कर भेजा, उस को झुठलाया, वे बहुत जल्द मालूम कर लेंगे, (७०) जबकि उन की गरदनों में तौक़ और ज़ंजीरें होंगी (और) घसीटे जाएंगे। (७१) (यानी) खौलते हुए पानी में, फिर आग में झोंक दिए जाएंगे। (७२) फिर उन से कहा जाएगा कि वे कहां हैं, जिन को तुम (ख़ुदा के) शरीक बनाते थे, (७३) (यानी) ग़ैरेख़ुदा कहेंगे, वे तो हम से जाते रहे, बल्कि हम तो पहले किसी चीज़ को पुकारते ही नहीं थे, इसी तरह ख़ुदा काफ़िरों को गुमराह करता है। (७४) यह इस का बदला है कि तुम ज़मीन में हक़ के बग़ैर (यानी इस के ख़िलाफ़) ख़ुश हुआ करते थे और उस की (सज़ा है) कि इतराया करते थे। (७५) (अब) जहन्नम के दरवाज़ों में दाख़िल हो जाओ, हमेशा उसी में रहोगे। घमंड करने वालों का क्या बुरा ठिकाना है। (७६) तो (ऐ पैग़म्बर!) सब्र करो, ख़ुदा का वायदा सच्चा है। अगर हम तुम को कुछ उस में से दिखा दें, जिस का हम तुम से वायदा करते हैं (यानी काफ़िरों पर अज़ाब नाज़िल करें) या तुम्हारी ज़िंदगी की मुद्दत पूरी कर दें, तो उन को हमारी ही तरफ़ लौट कर आना है।[1] (७७) और हमने तुम से पहले (बहुत से) पैग़म्बर भेजे, उन में कुछ तो ऐसे हैं, जिन के हालात तुम से बयान कर दिए हैं और कुछ ऐसे हैं, जिन के हालात बयान नहीं किए और किसी पैग़म्बर की ताक़त न थी कि ख़ुदा के हुक्म के बग़ैर कोई निशानी लाए, फिर जब ख़ुदा का हुक्म आ पहुंचा, तो इंसाफ़ के साथ फ़ैसला कर दिया गया और बातिल वाले नुक़्सान में पड़ गये। (७८)★

ख़ुदा ही तो है, जिसने तुम्हारे लिए चारपाए बनाए, ताकि उनमें से कुछ पर सवार हो और कुछ को तुम खाते हो। (७९) और तुम्हारे लिए उन में (और भी) फ़ायदे हैं और इसलिए भी कि (कहीं जाने की) तुम्हारे दिलों में जो ज़रूरत हो, उन पर (चढ़ कर वहां) पहुंच जाओ और उन

---

१. यानी अगर तुम्हारी ज़िंदगी में उन पर अज़ाब नाज़िल न किया जाए, तो तुम्हारी वफ़ात के बाद उन को हमारे ही पास लौट कर आना है, उस वक़्त ख़ुदा का वायदा पूरा हो जाएगा और ये दर्दनाक अज़ाब में पड़े होंगे।

★रु. ७/१२ आ ८५मु. अ़ि मु त क़. १३ ★रु. ८/१३ आ १०

व युरीकुम् आयातिही फ़-अय्-य आयातिल्लाहि तुन्किरून (८१) अ-फ़-लम् यसीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़-यन्ज़ुरू कै-फ़ का-न आक़िबतुल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम्, कानू अक्स-र मिन्हुम् व अशद्-द क़ुव्वतंव्-व आसारन् फ़िल्अर्ज़ि फ़मा अग्ना अन्हुम् मा कानू यक्सिबून (८२) फ़-लम्मा जा-अत्हुम् रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति फ़रिहू बिमा अिन्दहुम् मिनल्अिल्मि व हा-क़ बिहिम् मा कानू बिही यस्तह्ज़िऊन (८३) फ़-लम्मा रऔ बअ्-सना क़ालू आमन्ना बिल्लाहि वह्-दहू व क-फ़र्ना बिमा कुन्ना बिही मुश्रिकीन (८४) फ़-लम् यकु यन्फ़अुहुम् ईमानुहुम् लम्मा रऔ बअ्-सना, सुन्नतल्लाहिल्लती क़द् ख़-लत् फ़ी अिबादिही व ख़सि-र हुनालिकल्-काफ़िरून★ (८५)

الفلك تحملون ۝ ويريكم ءايته فأي ءايت الله تنكرون ۝
أفلم يسيروا في الأرض فينظروا كيف كان عقبة الذين
من قبلهم كانوا أكثر منهم وأشد قوة وءاثارا في
الأرض فما أغنى عنهم ما كانوا يكسبون ۝ فلما
جاءتهم رسلهم بالبينت فرحوا بما عندهم من العلم
وحاق بهم ما كانوا به يستهزءون ۝ فلما رأوا بأسنا
قالوا ءامنا بالله وحده وكفرنا بما كنا به مشركين ۝
فلم يك ينفعهم إيمنهم لما رأوا بأسنا سنت الله التي
قد خلت في عباده وخسر هنالك الكفرون ۝
سورة حم السجدة مكية وهي اربع وخمسون آية وست ركوعات
بسم الله الرحمن الرحيم
حم ۝ تنزيل من الرحمن الرحيم ۝ كتب فصلت ءايته
قرءانا عربيا لقوم يعلمون ۝ بشيرا ونذيرا فأعرض أكثرهم
فهم لا يسمعون ۝ وقالوا قلوبنا في أكنة مما تدعونا إليه
وفي ءاذاننا وقر ومن بيننا وبينك حجاب فاعمل إننا عملون ۝
قل إنما أنا بشر مثلكم يوحى إلي أنما إلهكم إله وحد
فاستقيموا إليه واستغفروه وويل للمشركين ۝ الذين لا

४१ सूरतु हामीम्-अस्सज्दति ६१

(मक्की) इस सूरः में अरबी के ३४०६ अक्षर, ८०६ शब्द, ५४ आयतें और ६ रुकूअ़ हैं।•

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

हामीम् (१) तन्ज़ीलुम्-मिनर्रह्मानिर्रहीम (२) किताबुन् फ़ुस्सिलत् आयातुहू क़ुर्आनन् अ-रबिय्यल्-लिक़ौमिंय्यअ्-लमून (३) बशीरंव्-व नज़ीरन् फ़-अअ्-र-ज़ अक्सरुहुम् फ़हुम् ला यस्-मअ़ून (४) व क़ालू क़ुलूबुना फ़ी अकिन्नतिम्-मिम्मा तद्अूना इलैहि व फ़ी आज़ानिना वक़्रुंव्-व मिम्बैनिना व बैनि-क हिजाबुन् फ़अ्-मल् इन्नना आमिलून ●(५) क़ुल् इन्नमा अ-न ब-श-रुम्-मिस्लुकुम् यूहा इलय्-य अन्नमा इलाहुकुम् इलाहुंव्वाहिदुन् फ़स्तक़ीमू इलैहि वस्तग़्फ़िरूहु, व वैलुल्-लिल्-मुश्रिकीन (६)

★रु. ६/१४ आ ७ ●सु. ३/४

पर और कश्तियों पर सवार होते हो। (८०) और वह तुम्हें अपनी निशानियां दिखाता है, तो तुम ख़ुदा की किन-किन निशानियों को न मानोगे? (८१) क्या इन लोगों ने ज़मीन में सैर नहीं की, ताकि देखते कि जो लोग इन से पहले थे, उन का अंजाम कैसा हुआ, (हालांकि) वह उनसे कहीं ज़्यादा और ताक़तवर और ज़मीन में निशान (बनाने) के एतबार से बहुत बढ़कर थे, तो जो कुछ वे करते थे वह उनके कुछ काम न आया। (८२) और जब उनके पैग़म्बर उनके पास खुली निशानियां लेकर आए तो जो इल्म (अपने ख़्याल में) उनके पास था, उस पर इतराने लगे और जिस चीज़ का मज़ाक़ उड़ाया करते थे, उस ने उन को आ घेरा। (८३) फिर जब उन्हों ने हमारा अज़ाब देख लिया, तो कहने लगे कि हम ख़ुदा-ए-वाहिद पर ईमान लाए और जिस चीज़ को उस के साथ शरीक बनाते थे, उस से इंकारी हुए। (८४) लेकिन जब वह हमारा अज़ाब देख चुके (उस वक़्त) उन के ईमान ने उन को कुछ भी फ़ायदा न दिया। (यह) ख़ुदा की आदत (है) जो उस के बन्दों (के बारे में) चली आती है और वहां काफ़िर घाटे में पड़ कर रह गये। (८५)★

४१ सूरः हामीम अस्-सज्दा ६१

सूरः हामीम अस-सज्दा मक्की है, इस में चौवन आयतें और छे रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

हामीम, (१) यह किताब (ख़ुदा-ए-) रहमान व रहीम (की तरफ़) से उतरी है। (२) (ऐसी) किताब जिस की आयतें खुले (मतलब वाली) हैं, (यानी) क़ुरआने अरबी उन लोगों के लिए है, जो समझ रखते हैं। (३) जो ख़ुशख़बरी भी सुनाता है और ख़ौफ़ भी दिलाता है, लेकिन उन में से अक्सरों ने मुंह फेरे और वे सुनते ही नहीं। (४) और कहने लगे कि जिस चीज़ की तरफ़ तुम हमें बुलाते हो, उस से हमारे दिल पर्दों में हैं और हमारे कानों में बोझ (यानी बहरापन) है और हमारे और तुम्हारे दर्मियान पर्दा है, तो तुम (अपना) काम करो, हम (अपना) काम करते हैं●(५) कह दो कि मैं भी आदमी हूं, जैसे तुम, (हां,) मुझ पर यह वह्य आती है कि तुम्हारा माबूद एक ख़ुदा है, तो सीधे उसी की तरफ़ मुतवज्जह रहो और उसी से मग़फ़िरत मांगो और

★रु. ६/१४ आ ७ ●सु. ३/४

अल्लज़ी-न ला युअ्तूनज़्ज़का-त व हुम् बिल्-आख़िरति हुम् काफ़िरून (७) इन्नल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति लहुम् अज्रुन् ग़ैरु मम्नून (८) ★ क़ुल् अ-इन्नकुम् ल-तक्फ़ुरू-न बिल्लज़ी ख़-ल-क़ल्-अर्-ज़ फ़ी यौमैनि व तज्-अलू-न लहू अन्दादन् ۚ ज़ालि-क रब्बुल्-आ़लमीन ۚ (९) व ज-अ़-ल फ़ीहा रवासि-य मिन फ़ौक़िहा व बार-क फ़ीहा व क़द्-द-र फ़ीहा अक़्वा-तहा फ़ी अर्ब-अ़ति अय्यामिन् ۚ सवा-अल् लिस्साइलीन (१०) सुम्मस्तवा इलस्समा-इ व हि-य दुख़ानुन् फ़क़ा-ल लहा व लिल्-अर्ज़िअ्तिया तौअ़न् औ कर्हन् ۚ क़ालता अतैना ताइ-अ़ीन (११) फ़-क़ज़ाहुन्-न सब्-अ़ समावातिन् फ़ी यौमैनि व औहा फ़ी कुल्लि समा-इन् अम्-रहा ۚ व ज़य्यन्नस्समाअद्दुन्या बिमसाबी-ह ۖ व हिफ़्ज़न् ۚ ज़ालि-क तक़्दीरुल्-अ़ज़ीज़िल्-अ़लीम (१२) फ़-इन् अअ्-रज़ू फ़क़ुल् अन्ज़र्तुकुम् साअि-क़-तम्-मिस्-ल साअि-क़ति आ़दिंव - व समूद ۚ (१३) इज़् जा-अत्हुमुर्रुसुलु मिम् - बैनि ऐदीहिम् मिन् ख़ल्फ़िहिम् अल्ला तअ्-बुदू इल्लल्ला - ह ۚ क़ालू लौशा - अ रब्बुना ल - अन्ज़ - ल मलाइक - तन् फ़-इन्ना बिमा उर्सिल्तुम् बिही काफ़िरून (१४) फ़-अम्मा आ़दुन् फ़स्तक्बरू फ़िल्अर्ज़ि बिग़ैरिल् - हक़्क़ि व क़ालू मन् अशद्दु मिन्ना क़ुव्वतन् ۚ अ - व लम् यरौ अन्नल्लाहल्लज़ी ख़ - ल - क़हुम् हु - व अशद्दु मिन्हुम् क़ुव्वतन् ۚ व कानू बिआयातिना यज्-हदून (१५) फ़-अर्सल्ना अ़लैहिम् रीहन् सर्-स-रन् फ़ी अय्यामिन् नहिसातिल्-लिनुज़ीक़हुम् अ़ज़ाबल्-ख़िज़्यि फ़िल्-हयातिद्-दुन्या ۚ व ल-अ़ज़ाबुल्-आख़िरति अख़्ज़ा व हुम् ला युन्सरून (१६)

يُؤْتُونَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ۝ قُلْ اَئِنَّكُمْ لَتَكْفُرُوْنَ بِالَّذِيْ خَلَقَ
الْاَرْضَ فِيْ يَوْمَيْنِ وَتَجْعَلُوْنَ لَهٗٓ اَنْدَادًا ۭ ذٰلِكَ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۝
وَجَعَلَ فِيْهَا رَوَاسِيَ مِنْ فَوْقِهَا وَبٰرَكَ فِيْهَا وَقَدَّرَ فِيْهَآ اَقْوَاتَهَا
فِيْٓ اَرْبَعَةِ اَيَّامٍ ۭ سَوَاۗءً لِّلسَّاۗىِٕلِيْنَ ۝ ثُمَّ اسْتَوٰٓى اِلَى السَّمَاۗءِ وَ
هِيَ دُخَانٌ فَقَالَ لَهَا وَلِلْاَرْضِ ائْتِيَا طَوْعًا اَوْ كَرْهًا ۭ قَالَتَآ اَتَيْنَا
طَاۗىِٕعِيْنَ ۝ فَقَضٰىهُنَّ سَبْعَ سَمٰوَاتٍ فِيْ يَوْمَيْنِ وَاَوْحٰى فِيْ كُلِّ
سَمَاۗءٍ اَمْرَهَا ۭ وَزَيَّنَّا السَّمَاۗءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيْحَ ڰ وَحِفْظًا ۭ ذٰلِكَ
تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ۝ فَاِنْ اَعْرَضُوْا فَقُلْ اَنْذَرْتُكُمْ صٰعِقَةً
مِّثْلَ صٰعِقَةِ عَادٍ وَّثَمُوْدَ ۝ اِذْ جَاۗءَتْهُمُ الرُّسُلُ مِنْۢ بَيْنِ
اَيْدِيْهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ۭ قَالُوْا لَوْ شَاۗءَ رَبُّنَا
لَاَنْزَلَ مَلٰۗىِٕكَةً فَاِنَّا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ۝ فَاَمَّا عَادٌ فَاسْتَكْبَرُوْا
فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَقَالُوْا مَنْ اَشَدُّ مِنَّا قُوَّةً ۭ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ
اللّٰهَ الَّذِيْ خَلَقَهُمْ هُوَ اَشَدُّ مِنْهُمْ قُوَّةً ۭ وَكَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ۝
فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا صَرْصَرًا فِيْٓ اَيَّامٍ نَّحِسَاتٍ لِّنُذِيْقَهُمْ
عَذَابَ الْخِزْيِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۭ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَخْزٰى وَ
هُمْ لَا يُنْصَرُوْنَ ۝ وَاَمَّا ثَمُوْدُ فَهَدَيْنٰهُمْ فَاسْتَحَبُّوا الْعَمٰى عَلَي

★रु. १/१५ आ ८

मुश्रिकों पर अफ़सोस है, (६) जो ज़कात नहीं देते और आख़िरत के भी क़ायल नहीं। (७) जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, उन के लिए (ऐसा) सवाब है, जो ख़त्म ही न हो★(८) कह दो, क्या तुम उस से इंकार करते हो, जिस ने ज़मीन को दो दिन में पैदा किया और (बुतों को) उस के मुक़ाबले का ठहराते हो ? वही तो सारे जहान का मालिक है। (६) और उसी ने ज़मीन में उस के ऊपर पहाड़ बनाए और ज़मीन में बरकत रखी और उस में रोज़ी का सामान मुक़र्रर किया, (सब) चार दिन में (और तमाम) तलब रखने वालों के लिए बराबर। (१०) फिर आसमान की तरफ़ मुतवज्जह हुआ और वह धुवां था तो उसने उससे और ज़मीन से फ़रमाया कि दोनों आओ (चाहे) ख़ुशी से चाहे ना-ख़ुशी से, उन्होंने कहा कि हम ख़ुशी से आते हैं। (११) फिर दो दिन में सात आसमान बनाये और हर आसमान में उस (के काम) का हुक्म भेजा और हमने दुनिया के आसमान को चिराग़ों (यानी सितारों) से सजा दिया और (शैतानों से) बचाए रखा। ये ज़बरदस्त (और ख़बरदार के (मुक़र्रर किए हुए) अंदाज़े हैं। (१२) फिर अगर ये मुंह फेर लें, तो कह दो कि मैं तुम को (ऐसी) चिंघाड़ (के अज़ाब) से डराता हूं, जैसे आद और समूद पर चिंघाड़ (का अज़ाब आया था)। (१३) जब उन के पास पैग़म्बर उन के आगे और पीछे से आए कि ख़ुदा के सिवा (किसी की) इबादत न करो, कहने लगे कि अगर हमारा परवरदिगार चाहता तो फ़रिश्ते उतार देता, सो जो तुम दे कर भेजे गये हो, हम उस को नहीं मानते। (१४) जो आद थे, वे ना-हक़ मुल्क में घमंड करने लगे कि हम से बढ़ कर ताक़त में कौन है ? क्या उन्हों ने नहीं देखा कि ख़ुदा, जिसने उन को पैदा किया, वह उन से ताक़त में बहुत बढ़ कर है और वे हमारी आयतों से इंकार करते रहे। (१५) तो हमने उन पर नहूसत के दिनों में ज़ोर की हवा चलायी, ताकि उन को दुनिया की ज़िंदगी में ज़िल्लत के अज़ाब का मज़ा चखा दें और आख़िरत का अज़ाब तो बहुत ज़लील करने वाला है और (उस दिन) उन को मदद भी न मिलेगी। (१६) और समूद थे, उन को हमने सीधा

★रु. १ /१५ आ ८

व अम्मा समूदु फ़-हदैनाहुम् फ़स्त-हब्बुल्-अमा अलल्-हुदा फ़-अ-ख़-ज़त्हुम् साअि-क़तुल्-अज़ाबिल्-हूनि बिमा कानू यक्सिबून ८ (१७) व नज्जैनल्लज़ी - न आमनू व कानू यत्तक़ून ★ (१८) व यौ-म युह्शरु अअ्-दाउल्लाहि इलन्नारि फ़हुम् यूज़अून (१६) हत्ता इज़ा मा जा-ऊहा शहि-द अलैहिम् सम्अुहुम् व अब्सारुहुम् व जुलूदुहुम् बिमा कानू यअ्-मलून (२०) व क़ालू लिजुलूदिहिम् लि-म शहित्तुम् अलैना क़ालू अन्-त-क़-नल्-लाहुल्लज़ी अन्-त-क़ कुल-ल शैइंव्-व हु-व ख़-ल-क़कुम् अव्व-ल मर्रतिंव्-व इलैहि तुर्जअून (२१) व माकुन्तुम् तस्ततिरू-न अंय्यश्-ह-द अलैकुम् सम्-अुकुम् व ला अब्सारुकुम् व ला जुलूदुकुम् व लाकिन् ज़-नन्तुम् अन्नल्ला-ह ला यअ्-लमु कसीरम्-मिम्मा तअ्-मलून (२२) व ज़ालिकुम् ज़न्नुकुमुल्लज़ी ज़ - नन्तुम् बिरब्बिकुम् अर्दाकुम् फ़ - अस्बह्तुम् मिनल्ख़ासिरीन (२३) फ़इंय्यस्बिरू

الْهُدٰى فَاَخَذَتْهُمْ صٰعِقَةُ الْعَذَابِ الْهُوْنِ بِمَا كَانُوْا
يَكْسِبُوْنَ ۝ وَنَجَّيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ۝ وَيَوْمَ يُحْشَرُ
اَعْدَآءُ اللّٰهِ اِلَى النَّارِ فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ۝ حَتّٰٓى اِذَا مَا جَآءُوْهَا شَهِدَ
عَلَيْهِمْ سَمْعُهُمْ وَاَبْصَارُهُمْ وَجُلُوْدُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝
وَقَالُوْا لِجُلُوْدِهِمْ لِمَ شَهِدْتُّمْ عَلَيْنَا ؕ قَالُوْٓا اَنْطَقَنَا اللّٰهُ الَّذِيْٓ
اَنْطَقَ كُلَّ شَيْءٍ وَّهُوَ خَلَقَكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝
وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَتِرُوْنَ اَنْ يَّشْهَدَ عَلَيْكُمْ سَمْعُكُمْ وَ
لَآ اَبْصَارُكُمْ وَلَا جُلُوْدُكُمْ وَلٰكِنْ ظَنَنْتُمْ اَنَّ اللّٰهَ لَا يَعْلَمُ
كَثِيْرًا مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝ وَذٰلِكُمْ ظَنُّكُمُ الَّذِيْ ظَنَنْتُمْ
بِرَبِّكُمْ اَرْدٰىكُمْ فَاَصْبَحْتُمْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝ فَاِنْ يَّصْبِرُوْا فَالنَّارُ
مَثْوًى لَّهُمْ ۚ وَاِنْ يَّسْتَعْتِبُوْا فَمَا هُمْ مِّنَ الْمُعْتَبِيْنَ ۝ وَ
قَيَّضْنَا لَهُمْ قُرَنَآءَ فَزَيَّنُوْا لَهُمْ مَّا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ
وَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِيْٓ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ
الْجِنِّ وَالْاِنْسِ ۚ اِنَّهُمْ كَانُوْا خٰسِرِيْنَ ۝ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
لَا تَسْمَعُوْا لِهٰذَا الْقُرْاٰنِ وَالْغَوْا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَغْلِبُوْنَ ۝
فَلَنُذِيْقَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَذَابًا شَدِيْدًا ۙ وَّلَنَجْزِيَنَّهُمْ
اَسْوَاَ الَّذِيْ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ ذٰلِكَ جَزَآءُ اَعْدَآءِ اللّٰهِ

फ़न्नारु मस् - वल् - लहुम् ८ व इंय्यस्तअ् - तिबू फ़मा हुम् मिनल् - मुअ् - तबीन (२४) व क़य्यज़्ना लहुम् क़ु - र-ना - अ फ़-ज़य्यनू लहुम् मा बै - न ऐदीहिम् व मा ख़ल्फ़हुम् व हक़्-क़ अलैहिमुल्-क़ौलु फ़ी उममिन् क़द् ख़ - लत् मिन् क़ब्लिहिम् मिनल्जिन्नि वल्-इन्सि ८ इन्नहुम् कानू ख़ासिरीन ★ (२५) व क़ालल्लज़ी - न क - फ़रू ला तस् - मअू लिहाज़लक़ुर्आनि वल्ग़ौ फ़ीहि ल - अल्लकुम् तग़्लि - बून (२६) फ़ - लनुज़ीक़न्नल्लज़ी - न क - फ़रू अज़ाबन् शदीदंव् - व ल - नज्ज़ियन्नहुम् अस्-व-अल्लज़ी कानू यअ्-मलून (२७)

★रु० २/१६ आ १० ★रु० ३/१७ आ ७

रास्ता दिखा दिया था, मगर उन्हों ने हिदायत के मुक़ाबले में अंधा रहना पसन्द किया, तो उन के आमाल की सज़ा में कड़क ने उन को आ पकड़ा और वह ज़िल्लत का अज़ाब था। (१७) और जो ईमान लाए और परहेज़गारी करते रहे, उन को हमने बचा लिया। (१८)★

और जिस दिन ख़ुदा के दुश्मन दोज़ख़ की तरफ़ चलाए जाएंगे, तो तर्तीबवार कर लिए जाएंगे, (१९) यहां तक कि जब उस के पास पहुंच जाएंगे, तो उन के कान और आंखें और चमड़े (यानी दूसरे अंग,) उन के ख़िलाफ़ उन के आमाल की गवाही देंगे। (२०) और वे अपने चमड़ों (यानी अंग) से कहेंगे कि तुमने हमारे ख़िलाफ़ क्यों गवाही दी? वे कहेंगे कि जिस ख़ुदा ने सब चीज़ों को ज़ुबान दी, उसी ने हम को भी बोलने की ताक़त दी और उसी ने तुम को पहली बार पैदा किया था और उसी की तरफ़ तुम को लौट कर जाना है। (२१) और तुम इस (बात के डर) से तो पर्दा नहीं करते थे कि तुम्हारे कान और तुम्हारी आंखें और चमड़े तुम्हारे ख़िलाफ़ गवाही देंगे, बल्कि तुम यह ख़्याल करते थे कि ख़ुदा को तुम्हारे बहुत से अमलों की ख़बर ही नहीं। (२२) और इसी ख़्याल ने, जो तुम अपने परवरदिगार के बारे में रखते थे, तुम को हलाक कर दिया और तुम घाटा पाने वालों में हो गये। (२३) अब अगर ये सब्र करेंगे, तो उन का ठिकाना दोज़ख़ ही है और अगर तौबा करेंगे, तो उन की तौबा क़ुबूल नहीं की जाएगी। (२४) और हमने (शैतानों को) उन का हमनशीन मुक़र्रर कर दिया था, तो उन्हों ने उन के अगले और पिछले आमाल उन को उम्दा कर दिखाए थे और इंसानों की जमाअतें जो उन से पहले गुज़र चुकीं, उन पर भी ख़ुदा (के अज़ाब) का वायदा पूरा हो गया। बेशक ये नुक़सान उठाने वाले हैं। (२५)★ और काफ़िर कहने लगे कि इस क़ुरआन को सुना ही न करो और (जब पढ़ने लगें तो) शोर मचा दिया करो, ताकि ग़ालिब रहो। (२६) सो हम भी काफ़िरों को सख़्त अज़ाब के मज़े चखाएंगे और बुरे अमल की जो

★रु. २/१९ आ १० ★रु. ३/१७ आ ७

ज़ालि - क जज़ा - उ अअ् - दा - इल्लाहिन्नारु ۚ लहुम् फ़ीहा दारुल्ख़ुल्दि ط जज़ा - अम् - बिमा कानू बिआयातिना यज्ह - हूदून (२८) व क़ालल्लज़ी - न क-फ़रू रब्बना अरिनल्लज़ैनि अ - ज़ल्लाना मिनल्जिन्नि वल्इन्सि नज्-अल्हुमा तह्-त अक़्दामिना लि-यकूना मिनल्-अस्फ़लीन (२९)

इन्नल्लज़ी-न क़ालू रब्बुनल्लाहु सुम्मस्-तक़ामू त-त-नज़्ज़लु अलैहिमुल् - मला-इकतु अल्ला तख़ाफ़ू व ला तह्ज़नू व अब्शिरू बिल्-जन्नतिल्लती कुन्तुम् तूअदून (३०) नह्नु औलियाउकुम् फ़िल्हयातिद्दुन्या व फ़िल्आख़िरति ۚ व लकुम् फ़ीहा मा तश्तही अन्फ़ुसुकुम् व लकुम् फ़ीहा मा तद्-दअून ط (३१) नुज़ुलम्-मिन् ग़फ़ूरिर्रहीम ★(३२) व मन् अह्सनु क़ौलम् - मिम्मन् दआ इलल्लाहि व अमि-ल सालिहंव्-व क़ा-ल इन्ननी मिनल्मुस्लिमीन (३३) व ला तस्तविल्-ह-स-नतु व लस्सय्यिअतु ط इद्फ़अ् बिल्लती हि - य अह्सनु फ़ - इज़ल्लज़ी बै-न - क व बैनहू अदावतुन् क - अन्नहू वलिय्युन् हमीम (३४) व मा युलक़्क़ाहा इल्लल्लज़ी-न स - बरू ۚ व मा युलक़्क़ाहा इल्ला ज़ू हज़्ज़िन् अज़ीम (३५) व इम्मा यन्-ज़-ग़न्न-क मिनश्शैतानि नज़्गुन् फ़स्तअिज़् बिल्लाहि ط इन्नहू हुवस्समीअुल् - अलीम (३६) व मिन् आयातिहिल्लैलु वन्नहारु वश्-शम्सु वल्क़ - मरु ط ला तस्जुदू लिश्शम्सि व ला लिल्क़-मरि वस्जुदू लिल्लाहिल्लज़ी ख़-ल-क़हुन्-न इन् कुन्तुम् इय्याहु तअ् - बुदून (३७)

النار لهم فيها دار الخلد جزاء بما كانوا بآياتنا
يجحدون ۝ وقال الذين كفروا ربنا أرنا الذين
أضلانا من الجن والإنس نجعلهما تحت أقدامنا ليكونا
من الأسفلين ۝ إن الذين قالوا ربنا الله ثم استقاموا
تتنزل عليهم الملائكة ألا تخافوا ولا تحزنوا وأبشروا
بالجنة التي كنتم توعدون ۝ نحن أولياؤكم في
الحياة الدنيا وفي الآخرة ولكم فيها ما تشتهي أنفسكم
ولكم فيها ما تدعون ۝ نزلا من غفور رحيم ۝ و
من أحسن قولا ممن دعا إلى الله وعمل صالحا وقال
إنني من المسلمين ۝ ولا تستوي الحسنة ولا السيئة
ادفع بالتي هي أحسن فإذا الذي بينك وبينه عداوة
كأنه ولي حميم ۝ وما يلقاها إلا الذين صبروا و
ما يلقاها إلا ذو حظ عظيم ۝ وإما ينزغنك من
الشيطان نزغ فاستعذ بالله إنه هو السميع العليم ۝
ومن آياته الليل والنهار والشمس والقمر لا تسجدوا
للشمس ولا للقمر واسجدوا لله الذي خلقهن إن
كنتم إياه تعبدون ۝ فإن استكبروا فالذين عند

منزل

★रु. ४/१८ आ ७

वे करते थे, सज़ा देंगे (२७) यह ख़ुदा के दुश्मनों का बदला है (यानी) दोज़ख़। उन के लिए इसी में हमेशा का घर है। यह इस की सज़ा है कि हमारी आयतों से इंकार करते थे। (२८) और काफ़िर कहेंगे कि ऐ हमारे परवरदिगार! जिन्नों और इंसानों में से जिन लोगों ने हम को गुमराह किया था, उन को हमें दिखा कि हम उन को अपने पांवों के तले (रौंद) डालें, ताकि वे निहायत ज़लील हों। (२९) जिन लोगों ने कहा कि हमारा परवरदिगार ख़ुदा है, फिर वे (उस पर) क़ायम रहे, उन पर फ़रिश्ते उतरेंगे (और कहेंगे) कि ख़ौफ़ करो और न ग़मनाक हो और बहिश्त की, जिस का तुम से वायदा किया जाता है, ख़ुशी मनाओ। (३०) हम दुनिया की ज़िंदगी में भी तुम्हारे दोस्त थे और आख़िरत में भी (तुम्हारे साथी हैं) और वहां जिस (नेमत) को तुम्हारा जी चाहेगा, तुम को मिलेगी और जो चीज़ तलब करोगे, तुम्हारे लिए मौजूद होगी। (३१) (यह) बख़्शने वाले मेहरबान की तरफ़ से मेहमानी है। (३२)★

और उस शख़्स से बात का अच्छा कौन हो सकता है, जो ख़ुदा की तरफ़ बुलाए और नेक अमल करे और कहे कि मैं मुसलमान हूं। (३३) और भलाई और बुराई बराबर नहीं हो सकती, तो (सख़्त बातों का) ऐसे तरीक़े से जवाब दो, जो बहुत अच्छा हो, (ऐसा करने से तुम देखोगे) कि जिस में और तुम में दुश्मनी थी, वह तुम्हारा गर्म-जोश दोस्त है। (३४) और यह बात उन ही लोगों को हासिल होती है, जो बर्दाश्त करने वाले हैं और उन ही को नसीब होती है, जो बड़ी क़िस्मत वाले हैं। (३५) और अगर तुम्हें शैतान की तरफ़ से कोई वस्वसा पैदा हो, तो ख़ुदा की पनाह मांग लिया करो। बेशक वह सुनता जानता है। (३६) और रात और दिन, सूरज और चांद उस की निशानियों में से हैं। तुम लोग न तो सूरज को सज्दा करो और न चांद को, बल्कि ख़ुदा ही को सज्दा करो, जिस ने इन चीज़ों को पैदा किया है, अगर तुम को उस की इबादत मंज़ूर है। (३७)

★रु. ४/१८ आ ७

फ़इनिस्तक्बरू फ़ल्लज़ी-न अिन्-द रब्बि-क युसब्बिहू-न लहू बिल्लैलि वन्नहारि व हुम् ला यस्-अमून □ (३८) व मिन् आयातिही अन्न-क त-रल्अर-ज़ ख़ाशि-अ-तन् फ़-इज़ा अन्ज़ल्ना अलैहल्-मा-अह्तज़्ज़त् व र-बत् ط इन्नल्लज़ी अह्-याहा लमुह़्यिल्मौता ط इन्नहू अला कुल्लि शैइन् क़दीर (३९) इन्नल्लज़ी-न युल्हिदू-न फ़ी आयातिना ला यख़्फ़ौ-न अलैना ط अ-फ़-मंय्युल्क़ा फ़िन्नारि ख़ैरुन् अम्मंय्यअ्ती आमिनंय्यौमल् - क़ियामति ط इअ् - मलू मा शिअ्तुम् ﻻ इन्नहू बिमा तअ्-मलू-न बसीर (४०) इन्नल्लज़ी - न क - फ़रू बिज़्ज़िक्रि लम्मा जा - अहुम् ج व इन्नहू लकिताबुन् अज़ीज़ुल्-ﻻ (४१) ला यअ्तीहिल्-बातिलु मिम्बैनि यदैहि व ला मिन् ख़ल्फ़िही ط तन्ज़ीलुम्-मिन् ह़कीमिन् ह़मीद (४२) मा युक़ालु ल-क इल्ला मा क़द् क़ी-ल लिर्रुसुलि मिन् क़ब्लि-क ط इन्-न रब्ब-क लज़ू मग़्फ़ि-रतिंव्-व ज़ू अिक़ाबिन् अलीम (४३)

ربك يسبحون له بالليل والنهار وهم لا يسأمون ۩ و
من آياته أنك ترى الأرض خاشعة فإذا أنزلنا عليها
الماء اهتزت وربت إن الذي أحياها لمحي الموتى إنه
على كل شيء قدير ۝ إن الذين يلحدون في آياتنا لا
يخفون علينا أفمن يلقى في النار خير أم من يأتي آمنا
يوم القيامة اعملوا ما شئتم إنه بما تعملون بصير ۝
إن الذين كفروا بالذكر لما جاءهم وإنه لكتاب عزيز ۝
لا يأتيه الباطل من بين يديه ولا من خلفه تنزيل
من حكيم حميد ۝ ما يقال لك إلا ما قد قيل للرسل
من قبلك إن ربك لذو مغفرة وذو عقاب أليم ۝ و
لو جعلناه قرآنا أعجميا لقالوا لولا فصلت آياته ءأعجمي
وعربي قل هو للذين آمنوا هدى وشفاء والذين
لا يؤمنون في آذانهم وقر وهو عليهم عمى أولئك
ينادون من مكان بعيد ۝ ولقد آتينا موسى الكتاب
فاختلف فيه ولولا كلمة سبقت من ربك لقضي
بينهم وإنهم لفي شك منه مريب ۝ من عمل صالحا
فلنفسه ومن أساء فعليها وما ربك بظلام للعبيد ۝

व लौ ज-अ़ल्नाहु क़ुर्आनन् अअ्-जमिय्यल्लक़ालू लौला फ़ुस्सिलत् आयातुहू ط अ-अअ्-जमिय्युंव् - व अ़रबिय्युन् ط क़ुल् हु-व लिल्लज़ी - न आमनू हुदंव - व शिफ़ाउन् ط वल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न फ़ी आज़ानिहिम् वक़्-रुंव्-व हु-व अलैहिम् अ़-मन् ط उलाइ-क युनादौ-न मिम् - मकानिम् - बअीद ★ (४४) व ल - क़द् आतैना मूसल्किता - ब फ़ख़्तुलि-फ़ फ़ीहि ط व लौला कलि - मतुन् स-ब-क़त् मिर्रब्बि-क लक़ुज़ि-य बैनहुम् ط व इन्नहुम् लफ़ी शक्किम्-मिन्हु मुरीब (४५) मन् अमि - ल सालिहन् फ़लि-नफ़्सिही व मन् असा - अ फ़-अलैहा ط व मा रब्बु - क बिज़ल्लामिल् - लिल्अबीद (४६)

□ सजूद: ११ ★रु. ५/१६ आ १२

अगर ये लोग सर-कशी करें, तो (ख़ुदा को भी इन की परवाह नहीं) जो (फ़रिश्ते) तुम्हारे परवरदिगार के पास हैं, वे रात दिन उस की तस्बीह करते रहते हैं और (कभी) थकते ही नहीं □ (३८) और (ऐ बन्दे ! ये) उसी (की क़ुदरत) के नमूने हैं कि ज़मीन को दबी हुई (यानी सूखी) देखता है। जब हम उस पर पानी बरसा देते हैं, तो हरी-भरी हो जाती और फूलने लगती है, तो जिस ने ज़मीन को ज़िंदा किया, वही मुर्दों को ज़िंदा करने वाला है। बेशक वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। (३९) जो लोग हमारी आयतों में कजराही करते हैं,[1] वे हम से छिपे नहीं हैं। भला जो शख़्स दोज़ख़ में डाला जाए, वह बेहतर है या वह जो क़ियामत के दिन अम्न व अमान से आए? (तो ख़ैर) जो चाहो सो कर लो। जो कुछ तुम करते हो, वह उस को देख रहा है। (४०) जिन लोगों ने नसीहत को न माना, जब वह उन के पास आयी और यह तो एक बुलंद मर्तबा किताब है। (४१) उस पर झूठ का दख़्ल न आगे से हो सकता है, न पीछे से (और) दाना (और) ख़ूबियों वाले (ख़ुदा) की उतारी हुई है। (४२) तुम से वही बातें कही जाती हैं, जो तुम से पहले और पैग़म्बरों से कही गयी थीं। बेशक तुम्हारा परवरदिगार बख़्श देने वाला भी है और दर्दनाक अज़ाब देने वाला भी है। (४३) और अगर हम इस क़ुरआन को ग़ैर ज़ुबाने अरब में (नाज़िल) करते, तो ये लोग कहते कि इस की आयतें (हमारी ज़ुबान में) क्यों खोल कर बयान नहीं की गयीं? क्या (ख़ूब, कि क़ुरआन तो) ग़ैर-अरबी और (मुख़ातब) अरबी। कह दो कि जो ईमान लाते हैं, उन के लिए (यह) हिदायत और शिफ़ा है और जो ईमान नहीं लाते, उन को कानों में बोझ (यानी बहरापन) है और यह उन के हक़ में अंधेपन (की वजह) है। बोझ की वजह से उन को (गोया) दूर जगह से आवाज़ दी जाती है। (४४) ★

और हमने मूसा को किताब दी, तो इस में इख़्तिलाफ़ किया गया और अगर तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से एक बात पहले ठहर चुकी होती, तो उन में फ़ैसला कर दिया जाता और ये इस (क़ुरआन) से शक में उलझ रहे हैं। (४५) जो नेक काम करेगा तो अपने लिए और जो बुरे करेगा, तो उन का नुक़्सान उसी को होगा और तुम्हारा परवरदिगार बन्दों पर ज़ुल्म करने वाला

---

१. कजराही करने का मतलब यह है कि आयतों का मतलब बदल देते हैं। साफ़ और सही और खुला मतलब है, उस को छोड़ कर और मतलब निकालते हैं। यह बहुत गंदी हरकत है और इस पर जहन्नम की धमकी है। ख़ुदा इस से पनाह में रखे।

□ सज्दः ११ ★रु. ५/१९ आ १२

पच्चीसवां पारः इलैहि युरद्दु

सूरतु हामीम-अस्सजदति आयात ४७ से ५४

इलैहि युरद्दु अिल्मुस्साअति ۚ व मा तख़्रुजु मिन् स-मरातिम्-मिन् अक्मामिहा व मा तह्मिलु मिन् उन्सा व ला त-ज़अु इल्ला बिअिल्मिही ۚ व यौ-म युनादीहिम् ऐ-न शु-रकाई ۙ क़ालू आज़न्ना-क ۙ मा मिन्ना मिन् शहीद ۚ (४७) व ज़ल् - ल अन्हुम् मा कानू यद्अू - न मिन् क़ब्लु व ज़न्नू मा लहुम् मिम्-महीस (४८) ला यस्-अमुल्-इन्सानु मिन् दुआइल्ख़ैरि ✓ व इम्-मस्सहुश्-शर्रु फ़-यऊसुन् क़नूत (४९) व ल-इन् अ-ज़क्नाहु रह्-म-तम्-मिन्ना मिम्बअ्-दि ज़र्-रा-अ मस्सत्हु ल-यक़ूलन्-न हाज़ा ली ۙ व मा अज़ुन्नुस्सा-अ-त क़ाइ-म-तंव्-व लइर्रुजिअ्-तु इला रब्बी इन्-न ली अिन्दहू लल्हुस्ना ۚ फ़-ल नुनब्बिअन्नल्लज़ी-न क-फ़रू बिमा अमिलू ✓ व ल-नुज़ीक़न्नहुम् मिन् अज़ाबिन् ग़लीज़ (५०) व इज़ा अन्-अम्ना अ-लल्इन्सानि अअ्-र-ज़ व नआ बिजानिबिही ۚ व इज़ा मस्सहुश्शर्रु फ़ज़ू दुआइन् अरीज़ (५१) क़ुल् अ-र-ऐतुम् इन् का-न मिन् अिन्दिल्लाहि सुम्-म क-फ़र्तुम् बिही मन् अज़ल्लु मिम्मन् हु-व फ़ी शिक़ाक़िम्-बअीद (५२) सनुरीहिम् आयातिनाफ़िल्आफ़ाक़ि व फ़ी अन्फ़ुसिहिम् हत्ता य-त-बय्य-न लहुम् अन्नहुल्-हक़्क़ु ۚ अ-व लम् यक्फ़ि बिरब्बि-क अन्नहू अला कुल्लि शैइन् शहीद (५३) अला इन्नहुम् फ़ी मिर्-यतिम्-मिल्लिक़ाइ रब्बिहिम् ۚ अला इन्नहू बिकुल्लि शैइम्-मुहीत ★(५४)

إِلَيْهِ يُرَدُّ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَمَا تَخْرُجُ مِن ثَمَرَاتٍ مِّنْ أَكْمَامِهَا وَ
مَا تَحْمِلُ مِنْ أُنثَىٰ وَلَا تَضَعُ إِلَّا بِعِلْمِهِ ۚ وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ أَيْنَ شُرَكَائِي
قَالُوا آذَنَّاكَ مَا مِنَّا مِن شَهِيدٍ ۞ وَضَلَّ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَدْعُونَ
مِن قَبْلُ ۖ وَظَنُّوا مَا لَهُم مِّن مَّحِيصٍ ۞ لَّا يَسْأَمُ الْإِنسَانُ مِن دُعَاءِ
الْخَيْرِ وَإِن مَّسَّهُ الشَّرُّ فَيَئُوسٌ قَنُوطٌ ۞ وَلَئِنْ أَذَقْنَاهُ رَحْمَةً مِّنَّا
مِن بَعْدِ ضَرَّاءَ مَسَّتْهُ لَيَقُولَنَّ هَٰذَا لِي وَمَا أَظُنُّ السَّاعَةَ قَائِمَةً
وَلَئِن رُّجِعْتُ إِلَىٰ رَبِّي إِنَّ لِي عِندَهُ لَلْحُسْنَىٰ ۚ فَلَنُنَبِّئَنَّ الَّذِينَ
كَفَرُوا بِمَا عَمِلُوا وَلَنُذِيقَنَّهُم مِّنْ عَذَابٍ غَلِيظٍ ۞ وَإِذَا أَنْعَمْنَا
عَلَى الْإِنسَانِ أَعْرَضَ وَنَأَىٰ بِجَانِبِهِ وَإِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ فَذُو دُعَاءٍ
عَرِيضٍ ۞ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِن كَانَ مِنْ عِندِ اللَّهِ ثُمَّ كَفَرْتُم بِهِ مَنْ
أَضَلُّ مِمَّنْ هُوَ فِي شِقَاقٍ بَعِيدٍ ۞ سَنُرِيهِمْ آيَاتِنَا فِي الْآفَاقِ وَ
فِي أَنفُسِهِمْ حَتَّىٰ يَتَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُ الْحَقُّ ۗ أَوَلَمْ يَكْفِ بِرَبِّكَ
أَنَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ۞ أَلَا إِنَّهُمْ فِي مِرْيَةٍ مِّن لِّقَاءِ
رَبِّهِمْ ۗ أَلَا إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيطٌ ۞

سُورَةُ الشُّورَىٰ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ ثَلَاثٌ وَخَمْسُونَ آيَةً وَخَمْسُ رُكُوعَاتٍ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

حم ۞ عسق ۞ كَذَٰلِكَ يُوحِي إِلَيْكَ وَإِلَى الَّذِينَ مِن قَبْلِكَ

४२ सूरतुश्शूरा ६२

(मक्की) इस सूरः में अरबी के ३५८५ अक्षर, ८६९ शब्द, ५३ आयतें और ५ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

हामीम् ۚ (१) अैन्-सीन्-क़ाफ़् (२) क-ज़ालि-क यूही इलै - क व इलल्लज़ी-न मिन् क़ब्लि - क ۙ -ल्लाहुल् - अज़ीज़ुल् - हकीम (३)

★रु. ६/१ आ १०

नहीं। (४६) क़ियामत के इल्म का हवाला उसी की तरफ़ दिया जाता है (यानी क़ियामत का इल्म उसी को है) और न तो फल गाभों से निकलते हैं और न कोई मादा हामिला होती और न जनती है, मगर उस के इल्म से और जिस दिन वह उन को पुकारेगा (और कहेगा) कि मेरे शरीक कहां हैं, तो वे कहेंगे कि हम तुझ से अर्ज़ करते हैं कि हम में से किसी को (उन की) ख़बर ही नहीं। (४७) और जिन को पहले वे (ख़ुदा के सिवा) पुकारा करते थे, (सब) उन से ग़ायब हो जाएंगे और वे यक़ीन कर लेंगे कि उन के लिए मुख़्लिसी नहीं। (४८) इंसान भलाई की दुआएं करता-करता तो थकता नहीं और अगर तक्लीफ़ पहुंच जाती है, तो ना-उम्मीद हो जाता और आस तोड़ बैठता है। (४९) और अगर तक्लीफ़ पहुंचने के बाद हम उस को अपनी रहमत का मज़ा चखाते हैं तो कहता है कि यह तो मेरा हक़ था और मैं नहीं ख़्याल करता कि क़ियामत बरपा हो और अगर (क़ियामत सचमुच भी हो और) मैं अपने परवरदिगार की तरफ़ लौटाया भी जाऊं, तो मेरे लिए उस के यहां भी ख़ुशहाली है, पस काफ़िर जो अमल किया करते हैं, वे हम ज़रूर उन को जताएंगे और उन को सख़्त अज़ाब का मज़ा चखाएंगे। (५०) और जब हम इंसान पर करम करते हैं, तो मुंह मोड़ लेता और पहलू फेर कर चल देता है और जब उस को तक्लीफ़ पहुंचती है, तो लंबी-लंबी[1] दुआएं करने लगता है। (५१) कहो कि भला देखो अगर यह (क़ुरआन) ख़ुदा की तरफ़ से हो, फिर तुम इस से इंकार करो, तो उस से बढ़ कर कौन गुमराह है जो (हक़ की) परले दर्जे की मुख़ालफ़त में हो। (५२) हम बहुत जल्द उन को (दुनिया के) हर तरफ़ में भी और ख़ुद उन की ज़ात में भी अपनी निशानियां दिखाएंगे, यहां तक कि उन पर ज़ाहिर हो जाएगा कि (क़ुरआन) हक़ है। क्या तुम को यह काफ़ी नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार हर चीज़ से ख़बरदार है। (५३) देखो, ये अपने परवरदिगार के सामने हाज़िर होने से शक में हैं। सुन रखो कि वह हर चीज़ पर एहाता किए हुए है। (५४)★

४२ सूरः शूरा ६२

सूरः शूरा मक्की है और इस में ५३ आयतें और पांच रुकूअ़ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

हामीम्, (१) ऐन्-सीन्-क़ाफ़, (२) ख़ुदा-ए-ग़ालिब व दाना इसी तरह तुम्हारी तरफ़ (मज़्मून और साफ़ दलीलें) भेजता है, (जिस तरह) तुम से पहले लोगों की तरफ़ वह्य भेजता

---

१. यहां अरबी लफ़्ज़ 'अरीज़' है, जिसे मुहावरे में लम्बी-लम्बी दुआएं कहते हैं, न चौड़ी-चौड़ी, इस लिए तर्जुमे में 'लम्बी-लम्बी दुआएं' लिखा गया।

★रु. ६/१ आ १०

लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि ط व हुवल्-अ़लिय्युल्-अ़ज़ीम (४) तकादुस्-समावातु य-त-फ़त्तर्-न मिन् फ़ौक़िहिन्-न वल्मलाइकतु युसब्बिहू-न बिहम्दि रब्बिहिम् व यस्तग़्फ़िरू-न लिमन् फ़िल्अर्ज़ि ط अला इन्नल्ला-ह हुवल्-ग़फ़ूरुर्रहीम (५) वल्लज़ी-नत्त-ख़ज़ू मिन् दूनिही औलिया-अल्लाहु हफ़ीज़ुन् अ़लैहिम् ز व मा अन्-त अ़लैहिम्

القرآن ۳۸۹

اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَهُوَ الْعَلِيُّ
الْعَظِيْمُ ۝ تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْ فَوْقِهِنَّ وَالْمَلٰٓئِكَةُ يُسَبِّحُوْنَ
بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيَسْتَغْفِرُوْنَ لِمَنْ فِي الْاَرْضِ اَلَآ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَفُوْرُ
الرَّحِيْمُ ۝ وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ اللّٰهُ حَفِيْظٌ عَلَيْهِمْ
وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ۝ وَكَذٰلِكَ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا
لِّتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى وَمَنْ حَوْلَهَا وَتُنْذِرَ يَوْمَ الْجَمْعِ لَا رَيْبَ فِيْهِ
فَرِيْقٌ فِي الْجَنَّةِ وَفَرِيْقٌ فِي السَّعِيْرِ ۝ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَهُمْ اُمَّةً
وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ يُّدْخِلُ مَنْ يَّشَآءُ فِيْ رَحْمَتِهٖ وَالظّٰلِمُوْنَ مَا
لَهُمْ مِّنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ۝ اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ فَاللّٰهُ
هُوَ الْوَلِيُّ وَهُوَ يُحْيِ الْمَوْتٰى وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ وَمَا
اخْتَلَفْتُمْ فِيْهِ مِنْ شَيْءٍ فَحُكْمُهٗٓ اِلَى اللّٰهِ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبِّيْ عَلَيْهِ
تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْهِ اُنِيْبُ ۝ فَاطِرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ جَعَلَ لَكُمْ
مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا وَّمِنَ الْاَنْعَامِ اَزْوَاجًا يَذْرَؤُكُمْ فِيْهِ لَيْسَ
كَمِثْلِهٖ شَيْءٌ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ۝ لَهٗ مَقَالِيْدُ السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝
شَرَعَ لَكُمْ مِّنَ الدِّيْنِ مَا وَصّٰى بِهٖ نُوْحًا وَّالَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ
وَمَا وَصَّيْنَا بِهٖٓ اِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى وَعِيْسٰٓى اَنْ اَقِيْمُوا الدِّيْنَ وَ

बिवकील (६) व कज़ालि-क औहैना इलै-क क़ुर्आनन् अ़-रबिय्यल्-लितुन्ज़ि-र उम्मल्क़ुरा व मन् हौलहा व तुन्ज़ि-र यौमल्-जम्अ़ि ला रै-ब फ़ीहि ط फ़रीक़ुन् फ़िल्जन्नति व फ़रीक़ुन् फ़िस्सअ़ीर (७) व लौ शाअल्लाहु ल-ज-अ़-लहुम् उम्मतंव्वाहि़द-तंव्-व लाकिंय्युद्ख़िलु मंय्यशाउ फ़ी रह़्मतिही ط वज़्ज़ालिमू-न मा लहुम् मिंव्वलिय्यिंव्-व ला नसीर (८) अमित्त-ख़-ज़ू मिन् दूनिही औलिया-अ ج फ़ल्लाहु हुवल्वलिय्यु व हु-व युह़्यिल्मौता ز व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर ★ (९) व मख़्तलफ़्तुम् फ़ीहि मिन् शैइन् फ़हुक्मुहू इलल्लाहि ط ज़ालिकुमुल्लाहु रब्बी अ़लैहि तवक्कल्तु ج व इलैहि उनीब (१०) फ़ातिरुस्समावाति वल्अर्ज़ि ط ज-अ़-ल लकुम् मिन् अन्फ़ुसिकुम् अज़्-वाजंव्-व मिनल्-अन्आ़मि अज़्वाजन् ج यज़्-रऊकुम् फ़ीहि ط लै-स कमिस्लिही शैउन् ج व हुवस्समीअ़ुल् बसीर (११) लहू मक़ालीदुस्समावाति वल्अर्ज़ि ج यब्सुतुर्रिज़्-क़ लिमंय्यशाउ व यक़्दिरु ط इन्नहू बिकुल्लि शैइन् अ़लीम (१२) श-र-अ़ लकुम् मिनद्दीनि मा वस्सा बिही नूहंव्वल्लज़ी औहैना इलै-क व मा वस्सैना बिही इब्राही-म व मूसा व ई़सा अन् अक़ीमुद्दी-न व ला त-त-फ़र्रक़ू फ़ीहि ط कबु-र अ़लल्मुश्रिकी-न मा तद्अ़ूहुम् इलैहि ط अल्लाहु यज्तबी इलैहि मंय्यशाउ व यह्दी इलैहि मंय्युनीब (१३)

★रु. १/२ आ ६

रहा है। (३) जो कुछ आसमानों में और जो कुछ ज़मीन में है, सब उसी का है, और वह बुलंद मर्तबा (और) अज़ीम है। (४) क़रीब है कि आसमान ऊपर से फट पड़ें और फ़रिश्ते अपने परवरदिगार की तारीफ़ के साथ उस की तस्बीह करते रहते और जो लोग ज़मीन में हैं, उन के लिए माफ़ी मांगते रहते हैं।[1] सुन रखो कि ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है। (५) और जिन लोगों ने उस के सिवा कारसाज़ बना रखे हैं, वे ख़ुदा को याद हैं और तुम उन पर दारोग़ा नहीं हो। (६) और इसी तरह तुम्हारे पास अरबी क़ुरआन भेजा है, ताकि तुम बड़े गांव (यानी मक्के) के रहने वालों को और जो लोग उस के इर्द-गिर्द रहते हैं, उन को रास्ता दिखाओ और उन्हें क़ियामत के दिन का भी, जिस में कुछ शक नहीं, डर दिलाओ। उस दिन एक फ़रीक़ बहिश्त में होगा और एक फ़रीक़ दोज़ख़ में। (७) और अगर ख़ुदा चाहता, तो उन को एक ही जमाअत कर देता, लेकिन वह जिस को चाहता है, अपनी रहमत में दाख़िल कर लेता है और ज़ालिमों का न कोई यार है और न मददगार। (८) क्या उन्हों ने उस के सिवा कारसाज़ बनाए हैं? कारसाज़ तो ख़ुदा ही है और वही मुर्दों को ज़िंदा करेगा और वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। (९) ★

और तुम जिस बात में इख़्तिलाफ़ करते हो, उस का फ़ैसला ख़ुदा की तरफ़ (से होगा)। यही ख़ुदा मेरा परवरदिगार है, मैं उसी पर भरोसा रखता हूं और उसी की तरफ़ रुजूअ करता हूं। (१०) आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला (वही है।) उसी ने तुम्हारे लिए तुम्हारी ही जिंस के जोड़े बनाए और चारपायों के भी जोड़े (बनाए और) इसी तरीक़े पर तुम को फैलाता रहता है। उस जैसी कोई चीज़ नहीं और वह सुनता-देखता है। (११) आसमानों और ज़मीन की कुंजियां उसी के हाथ में हैं। वह जिस के लिए चाहता है, रोज़ी फैला देता है और (जिस के लिए चाहता है) तंग कर देता है। बेशक वह हर चीज़ को जानता है। (१२) उस ने तुम्हारे लिए दीन का वही रास्ता मुक़र्रर किया, जिस (के अपनाने) का नूह को हुक्म दिया था और जिस की (ऐ मुहम्मद!) हम ने तुम्हारी तरफ़ वह्य भेजी है और जिस का इब्राहीम और मूसा और ईसा को हुक्म दिया था, (वह यह) कि दीन को क़ायम रखना और उस में फूट न डालना। जिस चीज़ की तरफ़ तुम मुश्रिकों को बुलाते हो, वह उन को मुश्किल गुज़रती है। अल्लाह जिस को चाहता है, अपनी बारगाह का चुना हुआ कर लेता है और जो उस की तरफ़ रुजूअ करे उसे अपनी तरफ़ रास्ता दिखा देता है। (१३)

---

१. जो लोग ज़मीन पर हैं, इस में मोमिन और काफ़िर सब शामिल हैं। काफ़िरों के हक़ में फ़रिश्ते इस लिए दुआ करते हैं कि उन को उम्मीद होती है कि शायद वे ईमान ले आएंगे। कुछ ने कहा, बख़्शिश की दुआ से रोज़ी की दुआ मुराद है, यानी तमाम फ़रिश्ते ज़मीन वालों के लिए रोज़ी मांगते रहते हैं, चाहे मोमिन हों, चाहे काफ़िर। अगर यही मानी मुराद लिए जाएं तो फ़रिश्तों की दुआ का असर ज़ाहिर है।

★रु. १/२ आ ६

व मा त-फ़र्रक़ू इल्ला मिम्बअ्-दि माजा-अ हुमुल्अिल्मु बग़्-यम्-बैनहुम्ᐟ व लौला कलि - मतुन् स - ब - क़त् मिर्रब्बि - क इला अ-जलिम् - मुसम्मल् - लक़ुज़ि-य बैनहुम्ᐟ व इन्नल्लज़ी-न ऊरिसुल्किता-ब मिम्बअ्-दिहिम् लफ़ी शक्किम्-मिन्हु मुरीब (१४) फ़लिज़ालि - क फ़द्अु ᑦ वस्तक़िम् कमा उमिर्-त ᑦ व ला तत्तबिअ्-अह्वा-अहुम् ᑦ व क़ुल् आमन्तु बिमा अन्ज़-लल्लाहु मिन् किताबिन् ᑦ व उमिर्तु लिअअ्-दि-ल बैनकुम्ᐟ अल्लाहु रब्बुना व रब्बुकुम्ᐟ लना अअ्-मालुना व लकुम् अअ्-मालुकुम्ᐟ ला हुज्ज-त बैनना व बैनकुम्ᐟ अल्लाहु यज्मअु बैनना ᑦ व इलैहिल्-मसीर ᐟ (१५) वल्लज़ी-न युहाज्जू-न फ़िल्लाहि मिम्बअ्-दि मस्तुजी-ब लहू हुज्जतुहुम् दाहि-ज़तुन् अिन्-द रब्बिहिम् व अलैहिम् ग़-ज़-बु व्-व लहुम् अज़ाबुन् शदीद (१६) अल्लाहुल्लज़ी अन्ज़-लल्किता-ब बिल्हक़्क़ि वल्मीज़ा-न ᐟ व मा युद्री-क ल-अल्लस्सा-अ-त क़रीब (१७) यस्तअ्-जिलु बिहल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिहा ᑦ वल्लज़ी-न आमनू मुश्फ़िक़ू-न मिन्हा ᐟ व यअ्-लमू-न अन्नहल्हक़्क़ु ᐟ अला इन्नल्लज़ी-न युमारू-न फ़िस्साअ़ति लफ़ी ज़लालिम्-बईद (१८) अल्लाहु लतीफ़ुम्-बिअिबादिही यर्ज़ुक़ु मंय्यशाउ ᑦ व हुवल्क़विय्युल्-अज़ीज़★(१९) मन् का-न युरीदु हर्-सल्-आख़िरति नज़िद् लहू फ़ी हर्सिही ᑦ व मन् का-न युरीदु हर्सद्-दुन्या नुअ्तिही मिन्हा व मा लहू फ़िल्आख़िरति मिन् नसीब (२०) अम् लहुम् शु-रकाउ श-रअू लहुम् मिनद्दीनि मा लम् यअ्-जम्-बिहिल्लाहु ᐟ व लौला कलि-मतुल्-फ़स्लि लक़ुज़ि-य बैनहुम्ᐟ व इन्नज़्ज़ालिमी-न लहुम् अज़ाबुन् अलीम (२१)

لا تفرقوا فيه كبر على المشركين ما تدعوهم اليه الله يجتبي
اليه من يشاء ويهدي اليه من ينيب ﴿١٣﴾ وما تفرقوا الا من
بعد ما جاءهم العلم بغيا بينهم ولولا كلمة سبقت من ربك
الى اجل مسمى لقضي بينهم وان الذين اورثوا الكتب من
بعدهم لفي شك منه مريب ﴿١٤﴾ فلذلك فادع واستقم كما امرت
ولا تتبع اهواءهم وقل امنت بما انزل الله من كتب وامرت
لاعدل بينكم الله ربنا وربكم لنا اعمالنا ولكم اعمالكم لا
حجة بيننا وبينكم الله يجمع بيننا واليه المصير ﴿١٥﴾ والذين
يحاجون في الله من بعد ما استجيب له حجتهم داحضة عند
ربهم وعليهم غضب ولهم عذاب شديد ﴿١٦﴾ الله الذي انزل
الكتب بالحق والميزان وما يدريك لعل الساعة قريب ﴿١٧﴾
يستعجل بها الذين لا يؤمنون بها والذين امنوا مشفقون
منها ويعلمون انها الحق الا ان الذين يمارون في الساعة
لفي ضلل بعيد ﴿١٨﴾ الله لطيف بعباده يرزق من يشاء وهو
القوي العزيز ﴿١٩﴾ من كان يريد حرث الاخرة نزد له في حرثه
ومن كان يريد حرث الدنيا نؤته منها وما له في الاخرة من
نصيب ﴿٢٠﴾ ام لهم شركؤا شرعوا لهم من الدين ما لم يأذن به

★रु. २/३ आ १०

और ये लोग जो अलग-अलग हुए हैं, तो इल्म (हक़) आ चुकने के बाद आपस की ज़िद से (हुए हैं) और अगर तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से एक मुक़र्रर वक़्त तक के लिए बात न ठहर चुकी होती तो उन में फ़ैसला कर दिया जाता और जो लोग उन के बाद (ख़ुदा की) किताब के वारिस हुए, वे उस (की तरफ़) से शुबहे की उलझन में (फंसे हुए) हैं। (१४) तो (ऐ मुहम्मद !) उसी (दीन की) तरफ़ (लोगों को) बुलाते रहना और जैसा तुम को हुक्म हुआ है, (उसी पर) क़ायम रहना और उन की ख़्वाहिशों की पैरवी न करना और कह दो कि जो किताब ख़ुदा ने नाज़िल फ़रमायी, मैं उस पर ईमान रखता हूं और मुझे हुक्म हुआ है कि तुम में इंसाफ़ करूं। ख़ुदा ही हमारा और तुम्हारा परवरदिगार है, हम को हमारे आमाल (का बदला मिलेगा) और तुम को तुम्हारे आमाल (का,) हम में और तुम में कुछ बहस व तकरार नहीं। ख़ुदा हम (सब) को इकट्ठा करेगा और उसी की तरफ़ लौट कर जाना है। (१५) और जो लोग ख़ुदा (के बारे) में इस के बाद कि उसे (मोमिनों ने) मान लिया हो, झगड़ते हैं, उन के परवरदिगार के नज़दीक उन का झगड़ा बेकार है और उन पर (ख़ुदा का) ग़ज़ब और उन के लिए सख़्त अज़ाब है। (१६) ख़ुदा ही तो है, जिस ने सच्चाई के साथ किताब नाज़िल की और (अद्ल व इंसाफ़ की) तराज़ू[1] और तुम को क्या मालूम शायद क़ियामत क़रीब ही आ पहुंची हो। (१७) जो लोग इस पर ईमान नहीं रखते, वे इस के लिए जल्दी कर रहे हैं और जो मोमिन हैं, वह इस से डरते हैं और जानते हैं कि वह बर-हक़ है। देखो जो लोग क़ियामत में झगड़ते हैं, वे परले दर्जे की गुमराही में हैं। (१८) ख़ुदा अपने बन्दों पर मेहरबान है, वह जिस को चाहता है, रोज़ी देता है और वह ज़ोर वाला (और) ज़बरदस्त है। (१९)★

जो शख़्स आख़िरत की खेती का तालिब हो, उस के लिए हम उस की खेती में बढ़ाएंगे और जो दुनिया की खेती की ख़्वाहिश रखता हो, उस को हम उसमें से देंगे और उस का आख़िरत में कुछ हिस्सा न होगा। (२०) क्या उन के वे शरीक हैं, जिन्हों ने उन के लिए ऐसा दीन मुक़र्रर किया है, जिस का ख़ुदा ने हुक्म नहीं दिया और अगर फ़ैसले (के दिन) का वायदा न होता, तो उन में फ़ैसला कर दिया जाता और जो ज़ालिम हैं उन के लिए दर्द देने वाला अज़ाब है। (२१) तुम देखोगे कि

---

१. तराज़ू फ़रमाया दीने हक़ को जिस में बात पूरी है, न कम, न ज़्यादा।

★रु. २/३ आ १०

त-रज़्ज़ालिमी-न मुश्फ़िक़ी-न मिम्मा क-सबू व हु-व वाक़िअुम्-बिहिम्ʼ वल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति फ़ी रौज़ातिल्-जन्नाति ʼ लहुम् मा यशाऊ-न अ़िन्-द रब्बिहिम्ʼ ज़ालि-क हुवल्-फ़ज़्लुल्-कबीर (२२) ज़ालिकल्लज़ी युबश्शिरुल्लाहु अ़िबादहुल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहातिʼ क़ुल् ला अस्-अलुकुम् अ़लैहि अज्-रन् इल्लल्म-वद्-द-त फ़िल्क़ुर्बाʼ व मंय्यक़्तरिफ़् ह़-स-न-तन् नज़िद् लहू फ़ीहा हुस्-नन्ʼ इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुन् शकूर (२३) अम् यक़ूलूनफ़्तरा अ-लल्लाहि कज़िबन्ʼ फ़इंय्यश-इल्लाहु यख़्तिम् अ़ला क़ल्बि-कʼ व यम्हुल्लाहुल्-बाति-ल व युहिक़्क़ुल्-हक़्-क बिकलिमातिहीʼ इन्नहू अ़ली-मुम्-बिज़ातिस्सुदूर (२४) व हुवल्लज़ी यक़्बलुत्तौ-ब-त अ़न् अ़िबादिही व यअ़्-फ़ू अ़निस्सय्यिआति व यअ़्-लमु मा तफ़्-अ़लून (२५) व यस्तजीबुल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति व यज़ीदुहुम् मिन् फ़ज़्लिहीʼ वल्काफ़िरू-न लहुम् अ़ज़ाबुन् शदीद (२६) व लौ ब-स-तल्लाहुर्रिज़्-क़ लिअ़िबादिही ल-बग़ौ फ़िल्अर्ज़ि व लाकिंय्युनज़्ज़िलु बिक़-दरिम्-मा यशाउʼ इन्नहू बिअ़िबादिही ख़बीरुम् - बसीर (२७) व हुवल्लज़ी युनज़्ज़िलुल्-ग़ैस मिम्बअ़्-दि मा क़-नतू व यन्शुरु रह़्म-तहूʼ व हुवल् - वलिय्युल्-हमीद (२८) व मिन् आयातिही ख़ल्क़ुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बस्-स फ़ीहिमा मिन् दाब्बतिन्ʼ व हु-व अ़ला जम्अ़िहिम् इज़ा यशाउ क़दीर ★● (२९) व मा असाबकुम् मिम् - मुसीबतिन् फ़बिमा क - स - बत् ऐदीकुम् व यअ़् - फ़ू अ़न् कसीरʼ (३०)

الشورى ٤٢ ٣٨٨ اليه يرد ٢٥

اللهُ ۗ وَلَوْلَا كَلِمَةُ الْفَصْلِ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ۗ وَإِنَّ الظّٰلِمِينَ لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٢١﴾ تَرَى الظّٰلِمِينَ مُشْفِقِينَ مِمَّا كَسَبُوا وَهُوَ وَاقِعٌ
بِهِمْ ۗ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فِي رَوْضٰتِ الْجَنّٰتِ ۚ لَهُمْ مَا
يَشَاءُونَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ ذٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيرُ ﴿٢٢﴾ ذٰلِكَ الَّذِي
يُبَشِّرُ اللهُ عِبَادَهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۗ قُلْ لَا أَسْأَلُكُمْ
عَلَيْهِ أَجْرًا إِلَّا الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبٰى ۗ وَمَنْ يَقْتَرِفْ حَسَنَةً نَزِدْ لَهُ
فِيهَا حُسْنًا ۚ إِنَّ اللهَ غَفُورٌ شَكُورٌ ﴿٢٣﴾ أَمْ يَقُولُونَ افْتَرٰى عَلَى اللهِ
كَذِبًا ۚ فَإِنْ يَشَإِ اللهُ يَخْتِمْ عَلٰى قَلْبِكَ ۗ وَيَمْحُ اللهُ الْبَاطِلَ وَيُحِقُّ
الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهِ ۚ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿٢٤﴾ وَهُوَ الَّذِي يَقْبَلُ
التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهِ وَيَعْفُوا عَنِ السَّيِّئَاتِ وَيَعْلَمُ مَا تَفْعَلُونَ ﴿٢٥﴾
وَيَسْتَجِيبُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَيَزِيدُهُمْ مِنْ فَضْلِهِ ۚ
وَالْكٰفِرُونَ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ﴿٢٦﴾ وَلَوْ بَسَطَ اللهُ الرِّزْقَ لِعِبَادِهِ
لَبَغَوْا فِي الْأَرْضِ وَلٰكِنْ يُنَزِّلُ بِقَدَرٍ مَا يَشَاءُ ۚ إِنَّهُ بِعِبَادِهِ خَبِيرٌ
بَصِيرٌ ﴿٢٧﴾ وَهُوَ الَّذِي يُنَزِّلُ الْغَيْثَ مِنْ بَعْدِ مَا قَنَطُوا وَيَنْشُرُ
رَحْمَتَهُ ۚ وَهُوَ الْوَلِيُّ الْحَمِيدُ ﴿٢٨﴾ وَمِنْ آيٰتِهِ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ
وَمَا بَثَّ فِيهِمَا مِنْ دَابَّةٍ ۚ وَهُوَ عَلٰى جَمْعِهِمْ إِذَا يَشَاءُ قَدِيرٌ ﴿٢٩﴾
وَمَا أَصَابَكُمْ مِنْ مُصِيبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ أَيْدِيكُمْ وَيَعْفُوا

★रु. ३/४ आ १० ● रुबुअ १/४

ज़ालिम अपने आमाल (के वबाल) से डर रहे होंगे और वह उन पर पड़ कर रहेगा और जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, वे बहिश्त के बाग़ों में होंगे। वे जो कुछ चाहेंगे, उन के परवरदिगार के पास (मौजूद) होगा। यही बड़ा फ़ज़्ल है। (२२) यही वह (इनाम है,) जिस की ख़ुदा अपने उन बन्दों को जो ईमान और नेक अमल करते हैं, ख़ुशख़बरी देता है। कह दो कि मैं उस का तुम से बदला नहीं मांगता, मगर (तुम को) रिश्तेदारी की मुहब्बत (तो चाहिए[1]) और जो कोई नेकी करेगा, हम उस के लिए उस में सवाब बढ़ाएंगे। बेशक ख़ुदा बख़्शने वाला क़द्रदान है। (२३) क्या ये लोग कहते हैं कि पैग़म्बर ने ख़ुदा पर झूठ बांध लिया है? अगर ख़ुदा चाहे तो (ऐ मुहम्मद!) तुम्हारे दिल पर मुहर लगा दे[2] और ख़ुदा झूठ को मिटाता और अपनी बातों से हक़ को साबित करता है। बेशक वह सीने तक की बातों को जानता है। (२४) और वही तो है, जो अपने बन्दों की तौबा क़ुबूल करता और (उन के) क़ुसूर माफ़ फ़रमाता है और जो तुम करते हो (सब) जानता है। (२५) और जो ईमान लाए और नेक अमल किए, उन की (दुआ) क़ुबूल फ़रमाता और उन को अपने फ़ज़्ल से बढ़ाता है और जो काफ़िर हैं, उन के लिए सख़्त अज़ाब है। (२६) और अगर ख़ुदा अपने बन्दों के लिए रोज़ी में फैलाव कर देता तो ज़मीन में फ़साद करने लगते, लेकिन वह जिस क़दर चाहता है, अन्दाज़े के साथ नाज़िल करता है। बेशक वह अपने बंदों को जानता (और) देखता है। (२७) और वही तो है जो लोगों के ना-उम्मीद हो जाने के बाद मेंह बरसाता और अपनी रहमत (यानी बारिश की बरकत) को फैला देता है और वह कारसाज़ (और) तारीफ़ के लायक़ है। (२८) और उन निशानियों में से है आसमानों और ज़मीन का पैदा करना और उन जानवरों का जो उस ने उन में फैला रखे हैं और वह जब चाहे, उन के जमा कर लेने की क़ुदरत रखता है। (२९)★●

और जो मुसीबत तुम पर वाक़ेअ होती है, सो तुम्हारे अपने फ़ेलों से और वह बहुत से गुनाह

---

१. यानी अगर तुम मुझ पर ईमान नहीं लाते, तो रिश्तेदारी का पास तो करना चाहिए और मुझे तक्लीफ़ नहीं देना चाहिए। कुछ ने यह मतलब बताए हैं कि ख़ुदा का क़ुर्ब हासिल करने के लिए उस से मुहब्बत रखो।

२. ताकि तुम क़ुरआन के मज़्मून न बयान कर सको और काफ़िरों को यह कहने का मौक़ा न मिले कि तुम ख़ुदा पर झूठ गढ़ते हो, मगर ख़ुदा को कुफ़्फ़ार के बकने की क्या परवा है? वह उन की बातों को झुठलाता है और अपने पैग़म्बर पर क़ुरआन नाज़िल कर के हक़ साबित करता है।

★रु. ३/४ आ १० ● रुबुअ् १/४

व मा अन्तुम् बिमुअ्-जिज़ी-न फ़िल्अर्ज़ि व मा लकुम् मिन् दूनिल्लाहि मिव्वलिय्यिव्-व ला नसीर (३१) व मिन् आयातिहिल्-जवारि फ़िल्बह़रि कल्अअ्-लाम (३२) इंय्य-शअ् युस्किनिर्री-ह फ़-यज़्-लल्-न रवाकि-द अला ज़ह्रिही इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल्-लिकुल्लि सब्बारिन् शकूर (३३) औ यूबिक़्हुन-न बिमा क-सबू व यअ्-फ़ु अन् कसीर (३४) व यअ्-ल-मल्लज़ी-न युजादिलू-न फ़ी आयातिना मा लहुम् मिम्-महीस़ (३५) फ़मा ऊतीतुम् मिन् शैइन् फ़-मताअुल्-हयातिद्दुन्या व मा अिन्दल्लाहि ख़ैरुंव्-व अब्क़ा लिल्लज़ी-न आमनू व अला रब्बिहिम् य-त-वक्कलून (३६) वल्लज़ी-न यज्तनिबू-न कबाइरल्-इस्मि वल्फ़वाहि-श व इज़ा मा ग़ज़िबू हुम् यग़्फ़िरून (३७) वल्-लज़ीनस्तजाबू लिरब्बिहिम् व अक़ामुस्सला-त व अम्रुहुम् शूरा बैनहुम् व मिम्मा र-ज़क़्ना-हुम् युन्-फ़िक़ून (३८) वल्लज़ी-न इज़ा असाबहुमुल्-बग़्यु हुम् यन्तसिरून (३९) व जज़ाउ सय्यि-अतिन् सय्यि-अतुम्-मिस्-लुहा फ़-मन् अफ़ा व अस्-ल-ह फ़-अज्रुहू अलल्लाहि इन्नहू ला युहिब्बुज़्ज़ालिमीन (४०) व ल-मनिन्त-स-र बअ्-द ज़ुल्मिही फ़-उलाइ-क मा अलैहिम् मिन् सबील (४१) इन्नमस्सबीलु अ-लल्लज़ी-न यज़्लिमूनन्ना-स व यब्ग़ू-न फ़िल्अर्ज़ि बिग़ैरिल्हक़्क़ि उलाइ-क लहुम् अज़ाबुन् अलीम (४२) व ल-मन् स-ब-र व ग़-फ़-र इन्-न ज़ालि-क लमिन् अ़ज़्मिल्-उमूर ★ (४३) व मंय्युज़्लिलिल्लाहु फ़मा लहू मिव्वलिय्यिम्-मिम्बअ्-दिही व त-रज़्ज़ालिमी-न लम्मा र-अवुल्-अ़ज़ा-ब यक़ूलू-न हल् इला म-रद्दिम्-मिन् सबील (४४)

عن كثير ۝ وما انتم بمعجزين في الارض وما لكم من
دون الله من ولي ولا نصير ۝ ومن ايته الجوار في البحر
كالاعلام ۝ ان يشا يسكن الريح فيظللن رواكد على ظهره
ان في ذلك لايت لكل صبار شكور ۝ او يوبقهن بما كسبوا و
يعف عن كثير ۝ ويعلم الذين يجادلون في ايتنا ما لهم من
محيص ۝ فما اوتيتم من شيء فمتاع الحيوة الدنيا وما عند
الله خير وابقى للذين امنوا وعلى ربهم يتوكلون ۝ و
الذين يجتنبون كبئر الاثم والفواحش واذا ما غضبوا هم
يغفرون ۝ والذين استجابوا لربهم واقاموا الصلوة و
امرهم شورى بينهم ومما رزقنهم ينفقون ۝ والذين اذا
اصابهم البغي هم ينتصرون ۝ وجزؤا سيئة سيئة مثلها
فمن عفا واصلح فاجره على الله انه لا يحب الظلمين ۝
ولمن انتصر بعد ظلمه فاولئك ما عليهم من سبيل ۝ انما
السبيل على الذين يظلمون الناس ويبغون في الارض بغير
الحق اولئك لهم عذاب اليم ۝ ولمن صبر وغفر ان ذلك
لمن عزم الامور ۝ ومن يضلل الله فما له من ولي من
بعده وترى الظلمين لما راوا العذاب يقولون هل الى مرد

★रु. ४/५ आ १४

तो माफ़ कर देता है। (३०) और तुम जमीन में (ख़ुदा को) आजिज़ नहीं कर सकैते और ख़ुदा के सिवा न तुम्हारा कोई दोस्त है और न मददगार।(३१)और उसी की निशानियों में से समुद्र के जहाज़ हैं (जो) गोया पहाड़ (हैं।) (३२) अगर ख़ुदा चाहे तो हवा को ठहरा दे और जहाज़ उस की सतह पर खड़े रह जाएं। तमाम सब्र और शुक्र करने वालों के लिए इन (बातो)में ख़ुदा की क़ुदरत के नमूनें हैं। (३३) या उस के आमाल की वजह से उन को तबाह कर दे और बहुत-से क़ुसूर माफ़ कर दे। (३४) और (बदला इस लिए लिया जाए कि) जो लोग हमारी आयतों में झगड़ते हैं वे जान लें कि उन के लिए ख़लासी नहीं। (३५) (लोगो!) जो (माल व मताअ) तुम को दिया गया है, वह दुनिया की जिंदगी का (ना-पायदार) फ़ायदा है और जो कुछ ख़ुदा के यहां है, बेहतर और क़ायम रहने वाला है (यानी) उन लोगों के लिए जो ईमान लाए और अपने परवरदिगार पर भरोसा रखते हैं, (३६) और जो बड़े-बड़े गुनाहों और बे-हयाई के कामों से परहेज करते हैं और जब गुस्सा आता है, तो माफ़ कर देते हैं, (३७) और जो अपने परवरदिगार का फ़रमान क़ुबूल करते हैं और नमाज पढ़ते हैं और अपने काम आपस के मश्विरे से करते हैं और जो (माल) हम ने उन को अता फ़रमाया है, उस में से ख़र्च करते हैं। (३८) और जो ऐसे हैं कि जब उन पर ज़ुल्म हो तो (मुनासिब तरीक़े से) बदला लेते हैं। (३९) और बुराई का बदला तो उसी तरह की बुराई है, मगर जो दर-गुज़र करे और (मामले को) दुरुस्त कर दे तो इस का बदला ख़ुदा के जिम्मे है। इस में शक नहीं कि वह ज़ुल्म करने वालों को पसन्द नहीं करता।(४०) और जिस पर ज़ुल्म हुआ हो, अगर वह इस के बाद बदला ले, तो ऐसे लोगों पर कुछ इल्ज़ाम नहीं। (४१) इल्ज़ाम तो उन लागों पर है, जो लोगों पर ज़ुल्म करते हैं और मुल्क में ना-हक़ फ़साद फैलाते हैं यही लोग हैं, जिन को तक्लीफ़ देने वाला अज़ाब होगा। (४२) और जो सब्र करे और क़ुसूर माफ़ कर दे, तो ये हिम्मत के काम हैं। (४३)★

और जिस शख़्स को ख़ुदा गुमराह करे, तो इस के बाद उस का कोई दोस्त नहीं और तुम ज़ालिमों को देखोगे कि जब वे (दोज़ख़ का) अज़ाब देखेंगे, तो कहेंगे, क्या (दुनिया में) वापस जाने

★रु. ४/५ आ १४

व तराहुम् युअ्-रज़ू-न अलैहा ख़ाशिअी-न मिनज़्ज़ुल्लि यन्ज़ुरू-न मिन् तर्फ़िन् ख़फ़िय्यिन्ॽ व क़ालल्लज़ी - न आमनू इन्नल् - ख़ासिरीनल्लज़ी-न ख़सिरू अन्फ़ुसहुम् व अह्लीहिम् यौमल्-क़ियामतिॽअला इन्नज़्ज़ालिमी-न फ़ी अज़ाबिम्-मुक़ीम (४५) व मा का-न लहुम् मिन् औलिया - अ यन्सुरूनहुम् मिन् दूनिल्लाहिॽ व मंय्युज़्-लिलिल्लाहु फ़मा लहू मिन् सबीलॽ (४६) इस्तजीबू लि-रब्बिकुम् मिन् क़ब्लि अंय्यअ्ति-य यौमुल्ला म-रद्-द लहू मिनल्लाहिॽ मा लकुम् मिम्-मल्जइंय्यौमइज़िंव्-व मा लकुम् मिन् नकीर (४७) फ़-इन् अअ्-रज़ू फ़मा अर्सल्ना-क अलैहिम् हफ़ीज़न्ॽइन् अलै-क इल्लल्बलाग़ुॽव इन्ना इज़ा अ-ज़क़्-नल्-इन्सा-न मिन्ना रह्-म-तन् फ़रि-ह बिहाॽ व इन् तुसिब्-हुम् सय्यि-तुम् बिमा क़द्-द-मत् ऐदीहिम् फ़-इन्नल्-इन्सा-न कफ़ूर (४८) लिल्लाहि मुल्कुस्-समावाति

مِّن سَبِيلٍ ۝ وَتَرٰىهُمْ يُعْرَضُونَ عَلَيْهَا خٰشِعِينَ مِنَ الذُّلِّ يَنْظُرُونَ
مِنْ طَرْفٍ خَفِيٍّ وَقَالَ الَّذِينَ اٰمَنُوٓا اِنَّ الْخٰسِرِينَ الَّذِينَ خَسِرُوٓا
اَنْفُسَهُمْ وَاَهْلِيهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَلَآ اِنَّ الظّٰلِمِينَ فِي عَذَابٍ مُّقِيمٍ ۝
وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنْ اَوْلِيَآءَ يَنْصُرُونَهُمْ مِّنْ دُونِ اللّٰهِ وَمَنْ يُّضْلِلِ
اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ سَبِيلٍ ۝ اِسْتَجِيبُوا لِرَبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ
لَّا مَرَدَّ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ مَا لَكُمْ مِّنْ مَّلْجَاٍ يَّوْمَئِذٍ وَّمَا لَكُمْ مِّنْ نَّكِيرٍ ۝
فَاِنْ اَعْرَضُوا فَمَآ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيظًا اِنْ عَلَيْكَ اِلَّا الْبَلٰغُ
وَاِنَّآ اِذَآ اَذَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً فَرِحَ بِهَا وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ
بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيهِمْ فَاِنَّ الْاِنْسَانَ كَفُورٌ ۝ لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ يَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ اِنَاثًا وَّيَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ
الذُّكُورَ ۝ اَوْ يُزَوِّجُهُمْ ذُكْرَانًا وَّاِنَاثًا وَيَجْعَلُ مَنْ يَّشَآءُ عَقِيمًا اِنَّهٗ
عَلِيمٌ قَدِيرٌ ۝ وَمَا كَانَ لِبَشَرٍ اَنْ يُّكَلِّمَهُ اللّٰهُ اِلَّا وَحْيًا اَوْ مِنْ وَّرَآئِ
حِجَابٍ اَوْ يُرْسِلَ رَسُولًا فَيُوحِيَ بِاِذْنِهٖ مَا يَشَآءُ اِنَّهٗ عَلِيٌّ حَكِيمٌ ۝
وَكَذٰلِكَ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ رُوحًا مِّنْ اَمْرِنَا مَا كُنْتَ تَدْرِي مَا الْكِتٰبُ
وَلَا الْاِيمَانُ وَلٰكِنْ جَعَلْنٰهُ نُورًا نَّهْدِي بِهٖ مَنْ نَّشَآءُ مِنْ عِبَادِنَا
وَاِنَّكَ لَتَهْدِيٓ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ۝ صِرَاطِ اللّٰهِ الَّذِي لَهٗ مَا فِي
السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ اَلَآ اِلَى اللّٰهِ تَصِيرُ الْاُمُورُ ۝

वल्अर्ज़िॽ यख़्लुक़ु मा यशाउॽ य-हबु लिमंय्यशाउ इनासंव्-व य-हबु लिमंय्यशाउज़्-ज़ुकूरॽ (४९) औ युज़व्विजुहुम् ज़ुक-रानंव्-व इनासन्ॽव यज्अलु मंय्यशाउ अक़ीमन्ॽ इन्नहू अलीमुन् क़दीर (५०) व मा का-न लि-ब-शरिन् अंय्युकल्लिमहुल्लाहु इल्ला वह्-यन् औ मिंव्वरा-इ हिजाबिन् औ युर्सि-ल रसूलन् फ़यूहि-य बिइज़्निही मा यशाउॽइन्नहू अलिय्युन् हकीम (५१) व कज़ालि-क औहैना इलै-क रूहम्मिन् अम्रिनाॽ मा कुन्-त तद्री मल्किताबु व लल् ईमानु व लाकिन् ज-अल्नाहु नूरन् नह्दी बिही मन् नशाउ मिन् अिबादिना ॽ व इन्न-क ल-तह्दी इला सिरातिम् - मुस्तक़ीम ॽ (५२) सिरातिल्लाहिल्लज़ी लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि ॽ अला इलल्लाहि तसीरुल् - उमूर ★ (५३)

★रु. ५/६ आ १०

का कोई रास्ता है ? (४४) और तुम उन को देखोगे कि दोज़ख़ के सामने लाए जाएंगे, ज़िल्लत से आजिज़ी करते हुए, छिपी (और नीची) निगाह से देख रहे होंगे और मोमिन लोग कहेंगे कि घाटा उठाने वाले तो वे हैं, जिन्हों ने क़ियामत के दिन अपने आप को और अपने घर वालों को घाटे में डाला। देखो कि बे-इंसाफ़ लोग हमेशा के दुख में (पड़े) रहेंगे। (४५) और ख़ुदा के सिवा उनके कोई दोस्त न होंगे कि ख़ुदा के सिवा उन को मदद दे सकें और जिस को ख़ुदा गुमराह करे, उस के लिए (हिदायत का) कोई रास्ता नहीं। (४६) (उन से कह दो कि) इस से पहले कि वह दिन, जो टलेगा नहीं, ख़ुदा की तरफ़ से आ मौजूद हो, अपने परवरदिगार का हुक्म क़ुबूल करो। उस दिन तुम्हारे लिए न कोई पनाह लेने की जगह होगी और न तुम से गुनाहों का इन्कार ही बन पड़ेगा। (४७) फिर अगर ये मुंह फेर लें, तो हम ने तुम को उन पर निगहबान बना कर नहीं भेजा, तुम्हारा काम तो सिर्फ़ (हुक्म का) पहुंचा देना है और जब हम इंसान को अपनी रहमत का मज़ा चखाते हैं, तो उस से ख़ुश हो जाता है और अगर उन को उन्हीं के आमाल की वजह से कोई सख़्ती पहुंचती है तो (सब एहसानों को भूल जाता है) बेशक इंसान बड़ा ना-शुक्रा है। (४८) (तमाम) बादशाही ख़ुदा ही की है, आसमानों की भी और ज़मीन की भी। वह जो चाहता है, पैदा करता है, जिसे चाहता है, बेटियां अता करता है और जिसे चाहता है, बेटे बख़्शता है, (४९) या उन को बेटे और बेटियां दोनों को इनायत फ़रमाता है और जिस को चाहता है, बे-औलाद रखता है। वह तो जानने वाला (और) क़ुदरत वाला है। (५०) और किसी आदमी के लिए मुम्किन नहीं कि ख़ुदा उस से बात करे, मगर इल्हाम (के ज़रिए) से या पर्दे के पीछे से या कोई फ़रिश्ता भेज दे, तो वह ख़ुदा के हुक्म से जो ख़ुदा चाहे इल्क़ा करे। बेशक वह बुलंद मर्तबा (और) हिक्मत वाला है। (५१) और इसी तरह हम ने अपने हुक्म से तुम्हारी तरफ़ रूहुल क़ुद्स के ज़रिए से (क़ुरआन) भेजा है। तुम न तो किताब को जानते थे और न ईमान को, लेकिन हम ने उस को नूर बनाया है कि इस से हम अपने बन्दों में से, जिस को चाहते हैं, हिदायत करते हैं और बेशक, (ऐ मुहम्मद !) तुम सीधा रास्ता दिखाते हो। (५२) (यानी) ख़ुदा का रास्ता, जो आसमानों और ज़मीन की सब चीज़ों का मालिक है। देखो, सब काम ख़ुदा की तरफ़ रुजूअ होंगे (और वही इन में फ़ैसला करेगा।) (५३) ★

★रु. ५/६ आ १०

४३ सूरतुज़्ज़ुख़रुफ़ ६३

(मक्की) इस सूर: में अरबी के ३६५६ अक्षर, ८४८ शब्द, ८९ आयतें और ७ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम •

हामीम् ج (१) वल्‌किताबिल्‌मुबीन لا (२) इन्ना ज-अ़ल्नाहु क़ुरआनन् अ-रबिय्यल् - ल-अ़ल्लकुम् तअ़्‌क़िलून ج (३) व इन्नहू फ़ी उम्मिल्‌किताबि लदैना ल - अ़लिय्युन् हकीम ط (४) अ - फ़ नज़्रिबु अन्कुमुज़्ज़िक-र सफ़्-हन् अन् कुन्तुम् क़ौमम्-मुस्रिफ़ीन (५) व कम् अर्सल्-ना मिन् नबिय्यिन् फ़िल्‌अव्वलीन (६) व मा यअ्तीहिम् मिन् नबिय्यिन् इल्ला कानू बिही यस्तह्ज़िऊन (७) फ़-अह्‌लक्ना अशद्-द मिन्हुम् बत्‌-शंव्-व मज़ा म-स-लुल्-अव्वलीन (८) व ल-इन् स-अल्तहुम् मन् ख़-ल-क़स्समा-वाति वल्‌अर्-ज़ ल-यक़ूलुन्-न ख़-ल-क़हुन्नल्-अज़ीज़ुल्-अ़लीम لا (९) अ्ल्लज़ी ज-अ़-ल लकुमुल्‌अर्-ज़ मह्‌दंव्-व ज-अ़-ल लकुम् फ़ीहा सुबुलल्-ल-अ़ल्लकुम् तह्-तदून ج (१०) वल्लज़ी नज़्ज़-ल मिनस्समाइ माअम्-बि-क़-दरिन् ج फ़-अन्शर्ना बिही बल्द-तम्-मैतन् ج कज़ालि-क तुख़-रजू-न् (११) वल्लज़ी ख़-ल-क़ल्-अज़्वा-ज कुल्लहा व ज-अ़-ल लकुम् मिनल्-फ़ुलिक वल्-अन्आ़मि मा तर्कबून لا (१२) लितस्तवू अ़ला ज़ुहूरिही सुम्-म तज़्कुरू निअ्‌-म-त रब्बिकुम् इज़स्तवैतुम् अ़लैहि व तक़ूलू सुब्हा-नल्लज़ी सख़्ख़-र लना हाज़ा व माकुन्ना लहू मुक़्रिनीन لا (१३) व इन्ना इला रब्बिना लमुन्क़लिबून (१४) व ज-अ़लू लहू मिन् अ़िबादिही जुज़्-अन् ط इन्नल् - इन्सा-न ल-कफ़ूरुम् - मुबीन ط ★ (१५) अमित्त-ख़-ज़ मिम्मा यख़्‌-लुक़ु बनातिंव्-व अस्फ़ाकुम् बिल्बनी-न (१६) व इज़ा बुश्शि-र अ-हदुहुम् बिमा ज़-र-ब लिर्रह्‌मानि म-स-लन् ज़ल्-ल वज्-हुहू मुस्-वद्‌दंव्-व हु-व कज़ीम (१७) अ-व मंय्युनश्शउ फ़िल्-हिल्यति व हु-व फ़िल्‌ख़िसामि ग़ैरु मुबीन (१८)

سُوْرَةُ الزُّخْرُفِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ تِسْعٌ وَّثَمَانُوْنَ اٰيَةً وَّسَبْعُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

حٰمٓ ﴿۱﴾ وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿۲﴾ اِنَّا جَعَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿۳﴾
وَاِنَّهٗ فِيْٓ اُمِّ الْكِتٰبِ لَدَيْنَا لَعَلِيٌّ حَكِيْمٌ ﴿۴﴾ اَفَنَضْرِبُ عَنْكُمُ الذِّكْرَ صَفْحًا
اَنْ كُنْتُمْ قَوْمًا مُّسْرِفِيْنَ ﴿۵﴾ وَكَمْ اَرْسَلْنَا مِنْ نَّبِيٍّ فِي الْاَوَّلِيْنَ ﴿۶﴾ وَ
مَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ نَّبِيٍّ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿۷﴾ فَاَهْلَكْنَآ اَشَدَّ مِنْهُمْ
بَطْشًا وَّمَضٰى مَثَلُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿۸﴾ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ خَلَقَهُنَّ الْعَزِيْزُ الْعَلِيْمُ ﴿۹﴾ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ
مَهْدًا وَّجَعَلَ لَكُمْ فِيْهَا سُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿۱۰﴾ وَالَّذِيْ نَزَّلَ
مِنَ السَّمَآءِ مَآءًۢ بِقَدَرٍ فَاَنْشَرْنَا بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا كَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ﴿۱۱﴾
وَالَّذِيْ خَلَقَ الْاَزْوَاجَ كُلَّهَا وَجَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الْفُلْكِ وَالْاَنْعَامِ مَا
تَرْكَبُوْنَ ﴿۱۲﴾ لِتَسْتَوٗا عَلٰى ظُهُوْرِهٖ ثُمَّ تَذْكُرُوْا نِعْمَةَ رَبِّكُمْ اِذَا اسْتَوَيْتُمْ
عَلَيْهِ وَتَقُوْلُوْا سُبْحٰنَ الَّذِيْ سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِيْنَ ﴿۱۳﴾
وَاِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ ﴿۱۴﴾ وَجَعَلُوْا لَهٗ مِنْ عِبَادِهٖ جُزْءًا اِنَّ الْاِنْسَانَ
لَكَفُوْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿۱۵﴾ اَمِ اتَّخَذَ مِمَّا يَخْلُقُ بَنٰتٍ وَّاَصْفٰىكُمْ بِالْبَنِيْنَ ﴿۱۶﴾
وَاِذَا بُشِّرَ اَحَدُهُمْ بِمَا ضَرَبَ لِلرَّحْمٰنِ مَثَلًا ظَلَّ وَجْهُهٗ مُسْوَدًّا وَّ
هُوَ كَظِيْمٌ ﴿۱۷﴾ اَوَمَنْ يُّنَشَّؤُا فِي الْحِلْيَةِ وَهُوَ فِي الْخِصَامِ غَيْرُ مُبِيْنٍ ﴿۱۸﴾

∴ मु. भि मु ता ख. ११ ★रु. १/७ आ १५

४३ सूरः ज़ुख़रुफ़ ६३

सूरः ज़ुख़रुफ़ मक्की है और इस में नवासी आयतें और सात रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

हामीम, (१) रोशन[1] किताब की क़सम, (२) कि हम ने इस को अरबी क़ुरआन बनाया है, ताकि तुम समझो। (३) और यह बड़ी किताब (यानी लौहे महफ़ूज़) में हमारे पास (लिखी हुई और) बड़ी फ़ज़ीलत और हिक्मत वाली है। (४) भला इस लिए कि तुम हद से निकले हुए लोग हो, हम तुम को नसीहत करने से बाज़ रहेंगे। (५) और हम ने पहले लोगों में भी बहुत से पैग़म्बर भेजे थे, (६) और कोई पैग़म्बर उन के पास नहीं आता था, मगर वे उस का मज़ाक़ उड़ाते थे। (७) तो जो उन में सख़्त ज़ोर वाले थे, उन को हम ने हलाक कर दिया और अगले लोगों की हालत गुज़र गयी। (८) और अगर तुम उन से पूछो कि आसमानों और ज़मीन को किस ने पैदा किया है, तो कह देंगे कि उन को ग़ालिब (और) इल्म वाले (ख़ुदा) ने पैदा किया है, (९) जिस ने तुम्हारे लिए ज़मीन को बिछौना बनाया और उस में तुम्हारे लिए रास्ते बनाए ताकि तुम राह मालूम करो। (१०) और जिस ने एक अन्दाज़े के साथ आसमान से पानी उतारा, फिर हम ने उस से मुर्दा शहर को ज़िंदा किया, इसी तरह तुम (ज़मीन से) निकाले जाओगे। (११) और जिस ने तमाम क़िस्म के जानवर पैदा किए और तुम्हारे लिए कश्तियां और चारपाए बनाए, जिन पर तुम सवार होते हो, (१२) ताकि तुम उन की पीठ पर चढ़ बैठो और जब उस पर बैठ जाओ, फिर अपने परवरदिगार के एहसान को याद करो और कहो कि वह (ज़ात) पाक है, जिस ने उस को हमारे फ़रमान के मातहत कर दिया और हम में ताक़त न थी कि उस को बस में कर लेते। (१३) और हम अपने परवरदिगार की तरफ़ लौट कर जाने वाले हैं। (१४) और उन्हों ने उस के बन्दों में से उस के लिए औलाद मुक़र्रर की। बेशक इंसान खुला ना-शुक्रा है। (१५)★

क्या उस ने अपनी मख़्लूक़ में से ख़ुद तो बेटियां लीं और तुम को चुन कर बेटे दिए? (१६) हालांकि जब उन में से किसी को उस की चीज की ख़ुशख़बरी दी जाती है, जो उन्हों ने ख़ुदा के लिए बयान की है, तो उस का मुंह काला हो जाता और वह ग़म से भर जाता है। (१७) क्या वह जो ज़ेवर में परवरिश पाए और झगड़े के वक़्त बात न कर सके, (ख़ुदा की बेटी हो सकती है?) (१८)

---

१. रोशन का मतलब है साफ़ और खुले मतलब का, जिस में ख़ुदा के हुक्म साफ़-साफ़ बग़ैर किसी पेचीदगी के लिखे हुए हैं।

व ज-अलुल् - मलाइ-क-तल्लज़ी-न हुम् अिबादुर्रह्मानि इनासन्॥ अ - शहिदू ख़ल्क़हुम्॥ स-तुक्तबु शहादतुहुम् व युस्-अलून (१९) व क़ालू लौ शा-अर्रह्मानु मा अ-बद्नाहुम्॥ मा लहुम् बिज़ालि-क मिन् अिल्मिन्॥ इन् हुम् इल्ला यख़्रुसून॥ (२०) अम् आतैनाहुम् किताबम्-मिन् क़ब्लिही फ़हुम् बिही मुस्तम्सिकून (२१) बल् क़ालू इन्ना व-जद्ना आबा-अना अला उम्मतिंव्-व इन्ना अला आसारिहिम् मुह-तदून (२२) व कज़ालि-क मा अर्सल्ना मिन् क़ब्लि-क फ़ी क़र्यतिम्-मिन् नज़ीरिन् इल्ला क़ा-ल मुत्-रफ़ूहा॥ इन्ना व-जद्ना आबा-अना अला उम्मतिंव्-व इन्ना अला आसारिहिम् मुक़्तदून (२३) क़ा-ल अ-वलौ जिअ्तुकुम् बि-अह्-दा मिम्मा व-जत्तुम् अलैहि आबा-अकुम्॥ क़ालू इन्ना बिमा उर्सिल्तुम् बिही काफ़िरून (२४) फ़न्त-क़म्ना मिन्हुम् फ़न्ज़ुर् कै-फ का-न आक़िबतुल्-मुकज़्ज़िबीन ●★ (२५) व इज़् क़ा-ल इब्राहीमु लिअबीहि व क़ौमिही इन्ननी बराउम् मिम्मा तअ्-बुदून॥ (२६) इल्लल्लज़ी फ़-त-रनी फ़-इन्नहू स-यह्दीन (२७) व ज-अ-लहा कलि-म-तम्-बाक़ि-य-तन् फ़ी अक़िबिही ल-अल्लहुम् यर्जिअून (२८) बल् मत्तअ्-तु हाउला-इ व आबा-अ-हुम् हत्ता जा-अ-हुमुल्-हक़्क़ु व रसूलुम्-मुबीन (२९) व लम्मा जा-अ-हुमुल्-हक़्क़ु क़ालू हाज़ा सिह्रुंव्-व इन्ना बिही काफ़िरून (३०) व क़ालू लौला नुज़्ज़ि-ल हाज़ल्क़ुर्आनु अला रजुलिम्-मिनल्-क़र्यतैनि अज़ीम (३१) अहुम् यक़्सिमू-न रह्-म-त रब्बि-क॥ नह्नु क़-सम्ना बैनहुम् मअी-श - तहुम् फ़िल् - हयातिद्दुन्या व रफ़अ्ना बअ् - ज़हुम् फ़ौ-क़ बअ् - ज़िन् द-र-जातिल् - लि-यत्तख़ि - ज़ बअ् - ज़ुहुम् बअ् - ज़न् सुख़्रिय्यन्॥ व रह्मतु रब्बि-क ख़ैरुम् - मिम् - मा यज्मअून (३२)

وجعلوا الملٰئكة الذين هم عبٰد الرحمٰن اناثا اشهدوا خلقهم
ستكتب شهادتهم ويسـٔلون ﴿١٩﴾ وقالوا لو شاء الرحمٰن ما عبدنٰهم
ما لهم بذٰلك من علم ان هم الا يخرصون ﴿٢٠﴾ ام اٰتينٰهم كتٰبا
من قبله فهم به مستمسكون ﴿٢١﴾ بل قالوا انا وجدنا اٰباءنا علٰى امة
وانا علٰى اٰثٰرهم مهتدون ﴿٢٢﴾ وكذٰلك ما ارسلنا من قبلك في
قرية من نذير الا قال مترفوها انا وجدنا اٰباءنا علٰى امة
وانا علٰى اٰثٰرهم مقتدون ﴿٢٣﴾ قٰل اولو جئتكم باهدٰى مما
وجدتم عليه اٰباءكم قالوا انا بما ارسلتم به كٰفرون ﴿٢٤﴾ فانتقمنا
منهم فانظر كيف كان عاقبة المكذبين ﴿٢٥﴾ واذ قال ابرٰهيم لابيه
وقومه انني براء مما تعبدون ﴿٢٦﴾ الا الذي فطرني فانه
سيهدين ﴿٢٧﴾ وجعلها كلمة باقية في عقبه لعلهم يرجعون ﴿٢٨﴾
بل متعت هٰؤلاء واٰباءهم حتٰى جاءهم الحق ورسول مبين ﴿٢٩﴾
ولما جاءهم الحق قالوا هٰذا سحر وانا به كٰفرون ﴿٣٠﴾ وقالوا لولا نزل
هٰذا القراٰن علٰى رجل من القريتين عظيم ﴿٣١﴾ اهم يقسمون رحمت
ربك نحن قسمنا بينهم معيشتهم في الحيٰوة الدنيا ورفعنا بعضهم
فوق بعض درجٰت ليتخذ بعضهم بعضا سخريا ورحمت ربك خير
مما يجمعون ﴿٣٢﴾ ولولا ان يكون الناس امة واحدة لجعلنا لمن

★रु. २/८ आ १० ●नि. १/२

और उन्हों ने फ़रिश्तों को, कि वे भी खुदा के बंदे हैं, (खुदा की) बेटियां मुक़र्रर किया। क्या ये उन की पैदाइश के वक़्त हाज़िर थे, बहुत जल्द उन की गवाही लिख ली जाएगी और उन से पूछ-गछ की जाएगी। (१९) और कहते हैं, अगर खुदा चाहता, तो हम उन को न पूजते। उन को इस का कुछ इल्म नहीं। वह तो सिर्फ़ अटकलें दौड़ा रहे हैं। (२०) या हम ने उन को इस से पहले कोई किताब दी थी, तो ये उस से सनद पकड़ते हैं। (२१) बल्कि कहने लगे कि हम ने अपने बाप-दादा को एक रास्ते पर पाया है और हम उन ही के क़दम-ब-क़दम चल रहे हैं। (२२) और इसी तरह हम ने तुम से पहले किसी बस्ती में कोई हिदायत करने वाला नहीं भेजा, मगर वहां के खुशहाल लोगों ने कहा कि हम ने अपने बाप-दादा को एक राह पर पाया है और हम क़दम-ब-क़दम उन ही के पीछे चलते हैं। (२३) पैग़म्बर ने कहा, अगरचे मैं तुम्हारे पास ऐसा (दीन) लाऊं कि जिस (रास्ते) पर तुम ने अपने बाप-दादा को पाया, वह उस से कहीं सीधा रास्ता दिखाता हो, कहने लगे कि जो (दीन) तुम दे कर भेजे गये हो, हम उस को नहीं मानते। (२४) तो हम ने उन से बदला लिया, सो देख लो कि झुठलाने वालों का अंजाम कैसा हुआ। (२५)★●

और जब इब्राहीम ने अपने बाप और अपनी क़ौम के लोगों से कहा कि जिन चीज़ों को तुम पूजते हो, मैं उन से बेज़ार हूं। (२६) हां, जिस ने मुझ को पैदा किया, वही मुझे सीधा रास्ता दिखाएगा। (२७) और यही बात अपनी औलाद में पीछे छोड़ गये, ताकि वे (खुदा की तरफ़ रुजूअ) रहें। (२८) बात यह है कि मैं इन कुफ़्फ़ार को और उन के बाप-दादा को नवाज़ता रहा, यहां तक कि उन के पास हक़ और साफ़-साफ़ बयान करने वाला पैग़म्बर आ पहुंचा। (२९) और जब उन के पास हक़ (यानी क़ुरआन) आया तो कहने लगे कि यह तो जादू है और हम इस को नहीं मानते। (३०) और (यह भी) कहने लगे कि यह क़ुरआन इन दोनों बस्तियों (यानी मक्के और ताइफ़) में से किसी बड़े आदमी पर क्यों नाज़िल न किया गया? (३१) क्या ये लोग तुम्हारे परवरदिगार की रहमत को बांटते हैं? हम ने उन में उन की मईशत (रोज़ी) को दुनिया की ज़िंदगी में तक़्सीम कर दिया और एक दूसरे पर दर्जे बुलंद किए, ताकि एक दूसरे से ख़िद्मत ले और जो कुछ ये जमा करते हैं, तुम्हारे परवरदिगार की रहमत उस से कहीं बेहतर है। (३२) और अगर यह

★रु. २/८ आ १० ● नि. १/२

व लौला अंय्यकूनन्नासु उम्मतंव्वाहि-द-तल्-ल-ज-अल्ना लिमंय्यक्फ़ुरु बिर्रह्मानि लि-बुयूतिहिम् सुक़ुफ़म्-मिन् फ़िज़्ज़तिंव्-व मआरि-ज अलैहा यज़्-हरून (३३) व लिबुयूतिहिम् अब्-वाबंव्-व सुररन् अलैहा यत्तकिऊन (३४) व ज़ुख़्-रुफ़न् व इन् कुल्लु ज़ालि-क लम्मा मताअुल्-हयातिद्दुन्या वल्-आख़िरतु अिन्-द रब्बि-क लिल्-मुत्तक़ीन ★ (३५) व मंय्यअ्-शु अन् ज़िक्रिर्-रह्मानि नुक़य्यिज़् लहू शैतानन् फ़हु-व लहू क़रीन (३६) व इन्नहुम् ल-य-सुद्दूनहुम् अनिस्सबीलि व यह्-सबू-न अन्नहुम् मुह्-तदून (३७) हत्ता इज़ा जा-अना क़ा-ल यालै-त बैनी व बैन-क बुअ्-दल् मश्रिक़ैनि फ़बिअ्सल्-क़रीन (३८) व लंय्यन्फ़-अ-कुमुल्-यौ-म इज़्ज़-लम्तुम् अन्नकुम् फ़िल्अज़ाबि मुश्तरिकून (३९) अ-फ़-अन्-त तुस्मिअुस्सुम्-म औतह्दिल्-अुम्-य व मन् का-न फ़ी ज़लालिम्-मुबीन (४०) फ़-इम्मा नज़्-ह-बन्-न बि-क फ़-इन्ना मिन्हुम् मुन्तक़िमून (४१) औ नुरि-यन्न-कल्लज़ी व-अद्नाहुम् फ़-इन्ना अलैहिम् मुक़्तदि-रून (४२) फ़स्तम्-सिक् बिल्लज़ी ऊहि-य इलै-क इन्न-क अला सिरातिम्-मुस्तक़ीम (४३) व इन्नहू ल-ज़िक्रुल्ल-क व लिक़ौमि-क व सौ-फ़ तुस्-अलून (४४) वस्-अल् मन् अर्सल्ना मिन् क़ब्लि-क मिर्रुसुलिना अ-ज-अल्ना मिन् दूनिर्रह्मानि आलिहतंय्युअ्-बदून ★ (४५) व ल-क़द् अर्सल्ना मूसा बिआयातिना इला फ़िरऔ-न व म-ल-इ-ही फ़-क़ा-ल इन्नी रसूलु रब्बिल्-आलमीन (४६) फ़-लम्मा जा-अ-हुम् बिआयातिना इज़ा हुम् मिन्हा यज़्-हकून (४७) व मा नुरीहिम् मिन् आयतिन् इल्ला हि-य अक्बरु मिन् उख़्-तिहा व अ-ख़ज़्नाहुम् बिलअज़ाबि ल-अल्लहुम् यर्जिअून (४८) व क़ालू या अय्युहस्-साहिरुद्अु लना रब्ब-क बिमा अहि-द अिन्द-क इन्नना ल-मुह्-तदून (४९) फ़-लम्मा क-शफ़्ना अन्हुमुल्-अज़ा-ब इज़ा हुम् यन्कुसून (५०)

يَّكْفُرُ بِالرَّحْمٰنِ لِبُيُوْتِهِمْ سُقُفًا مِّنْ فِضَّةٍ وَّمَعَارِجَ عَلَيْهَا يَظْهَرُوْنَ ۝
وَلِبُيُوْتِهِمْ اَبْوَابًا وَّسُرُرًا عَلَيْهَا يَتَّكِـُٔوْنَ ۝ وَزُخْرُفًا ۭ وَاِنْ كُلُّ ذٰلِكَ لَمَّا
مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۭ وَالْاٰخِرَةُ عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُتَّقِيْنَ ۝ وَمَنْ يَّعْشُ
عَنْ ذِكْرِ الرَّحْمٰنِ نُقَيِّضْ لَهٗ شَيْطٰنًا فَهُوَ لَهٗ قَرِيْنٌ ۝ وَاِنَّهُمْ
لَيَصُدُّوْنَهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ۝ حَتّٰٓى اِذَا
جَاۗءَنَا قَالَ يٰلَيْتَ بَيْنِيْ وَبَيْنَكَ بُعْدَ الْمَشْرِقَيْنِ فَبِئْسَ الْقَرِيْنُ ۝
وَلَنْ يَّنْفَعَكُمُ الْيَوْمَ اِذْ ظَّلَمْتُمْ اَنَّكُمْ فِي الْعَذَابِ مُشْتَرِكُوْنَ ۝ اَفَاَنْتَ
تُسْمِعُ الصُّمَّ اَوْ تَهْدِي الْعُمْيَ وَمَنْ كَانَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝ فَاِمَّا
نَذْهَبَنَّ بِكَ فَاِنَّا مِنْهُمْ مُّنْتَقِمُوْنَ ۝ اَوْ نُرِيَنَّكَ الَّذِيْ وَعَدْنٰهُمْ فَاِنَّا عَلَيْهِمْ
مُّقْتَدِرُوْنَ ۝ فَاسْتَمْسِكْ بِالَّذِيْٓ اُوْحِيَ اِلَيْكَ ۚ اِنَّكَ عَلٰي صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝
وَاِنَّهٗ لَذِكْرٌ لَّكَ وَلِقَوْمِكَ ۚ وَسَوْفَ تُسْـَٔــلُوْنَ ۝ وَسْـَٔــلْ مَنْ اَرْسَلْنَا
مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رُّسُلِنَآ اَجَعَلْنَا مِنْ دُوْنِ الرَّحْمٰنِ اٰلِهَةً يُّعْبَدُوْنَ ۝
وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ىِٕهٖ فَقَالَ اِنِّىْ رَسُوْلُ
رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ فَلَمَّا جَاۗءَهُمْ بِاٰيٰتِنَآ اِذَا هُمْ مِّنْهَا يَضْحَكُوْنَ ۝ وَمَا
نُرِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ اِلَّا هِىَ اَكْبَرُ مِنْ اُخْتِهَا ۡ وَاَخَذْنٰهُمْ بِالْعَذَابِ لَعَلَّهُمْ
يَرْجِعُوْنَ ۝ وَقَالُوْا يٰٓاَيُّهَ السّٰحِرُ ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ ۚ اِنَّنَا
لَمُهْتَدُوْنَ ۝ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ اِذَا هُمْ يَنْكُثُوْنَ ۝ وَنَادٰى

★रु. ३/६ आ १० ★रु. ४/१० आ १०

(ख़्याल) न होता कि सब लोग एक ही जमाअत हो जाएंगे, तो जो लोग ख़ुदा से इंकार करते हैं, हम उन के घरों की छतें चांदी की बना देते और सीढ़ियां (भी,) जिन पर वे चढ़ते। (३३) और उनके घरों के दरवाज़े भी और तख़्त भी, जिन पर तकिया लगाते हैं। (३४) और (ख़ूब) तजम्मुल (सजावट व आराइश कर देते) और यह सब दुनिया की ज़िंदगी का थोड़ा-सा सामान है और आख़िरत तुम्हारे परवरदिगार के यहां परहेज़गारों के लिए है। (३५)★

और जो कोई ख़ुदा की याद से आंखें बन्द कर ले, (यानी जानी-बूझी ग़फ़लत से) हम उस पर एक शैतान मुक़र्रर कर देते हैं, तो वह उस का साथी हो जाता है। (३६) और ये (शैतान) उन को रास्ते से रोकते रहते हैं और वे समझते हैं कि सीधे रास्ते पर हैं, (३७) यहां तक कि जब हमारे पास आएगा तो कहेगा कि ऐ काश ! मुझ में और तुझ में पूरब और पच्छिम का फ़ासला होता, तू बुरा साथी है। (३८) और जब तुम ज़ुल्म करते रहे, तो आज तुम्हें यह बात फ़ायदा नहीं दे सकती कि तुम (सब) अज़ाब में शरीक हो। (३९) क्या तुम बहरे को सुना सकते हो या अंधे को रास्ता दिखा सकते हो और जो खुली गुमराही में हो, उसे (राह पर ला सकते हो) ? (४०) अगर हम तुम को (वफ़ात देकर) उठा लें तो उन लोगों से हम बदला ले कर रहेंगे, (४१) या (तुम्हारी ज़िंदगी ही में) तुम्हें वह (अज़ाब) दिखाएंगे, जिन का हम ने उन से वायदा किया है, हम उन पर क़ाबू रखते हैं। (४२) पस तुम्हारी तरफ़ जो वह्य की गयी है, उस को मज़बूत पकड़े रहो, बेशक तुम सीधे रास्ते पर हो। (४३) और यह (क़ुरआन) तुम्हारे लिए और तुम्हारी क़ौम के लिए नसीहत है और (लोगो !) तुम से बहुत जल्द पूछ-ताछ होगी। (४४) और (ऐ मुहम्मद !) जो अपने पैग़म्बर हम ने तुम से पहले भेजे हैं, उन के हाल मालूम कर लो। क्या हम ने (ख़ुदा-ए-) रहमान के सिवा और माबूद बनाए थे कि उन की इबादत की जाए ? (४५) ★

और हम ने मूसा को अपनी निशानियां दे कर फ़िरऔन और उस के दरबारियों की तरफ़ भेजा, तो उन्हों ने कहा कि मैं अपने परवरदिगारे आलम का भेजा हुआ हूं। (४६) जब वे उन के पास हमारी निशानियां ले कर आए तो वे निशानियों से हंसी करने लगे। (४७) और जो निशानी हम उन को दिखाते हैं, वह दूसरों से बड़ी होती थी और हम ने उन को अज़ाब में पकड़ लिया, ताकि बाज़ आ जाएं। (४८) और कहने लगे कि ऐ जादूगर ! उस अह्द के मुताबिक़, जो तेरे परवरदिगार ने तुझ से कर रखा है, उस से दुआ कर, बेशक हम हिदायत पाए हुए होंगे। (४९) सो जब हम ने उन से अज़ाब को दूर कर दिया, तो वह अह्द को तोड़ने लगा। (५०) फ़िरऔन ने अपनी

★रु. ३/९ आ १० ★रु. ४/१० आ १०

व नादा फ़िर्औनु फ़ी क़ौमिही क़ा-ल याक़ौमि अलै-स ली मुल्कु मिस्-र व हाज़िहिल्-अन्हारु तज्री मिन् तह़्ती ج अ-फ़ला तुब्सिरून ط (५१) अम् अ-न ख़ैरुम्मिन् हाज़ल्लज़ी हु-व महीनुंव्-व ला यकादु युबीन (५२) फ़-लौला उल्कि-य अलैहि अस-वि-रतुम्-मिन् ज़-ह-बिन् औ जा-अ म-अहुल्-मला-इकतु मुक़्तरिनीन (५३)

फ़स्तख़फ़्-फ़ क़ौमहू फ़-अताऊहु ط इन्नहुम् कानू क़ौमन् फ़ासिक़ी-न (५४) फ़-लम्मा आसफ़ूनन्-त-क़म्ना मिन्हुम् फ़-अग़रक़्ना-हुम् अज्मईन ل (५५) फ़-ज-अल्नाहुम् स-ल-फ़ंव्-व म-स-लल्-लिल्आख़िरीन ★ (५६) व लम्मा ज़ुरिबब्नु मर्य-म म-स-लन् इज़ा क़ौमु-क मिन्हु यसिद्दून (५७) व क़ालू-अ आलिहतुना ख़ैरुन् अम् हु-व ط मा ज़-रबूहु ल-क इल्ला ज-द-लन् ط बल् हुम् क़ौमुन् ख़सिमून (५८) इन् हु-व इल्ला अब्दुन् अन-अम्ना अलैहि व ज-अल्नाहु म-स-लल्-लि-बनी इस्राई-ल ط (५९) व लौ नशाउ ल-ज-अल्ना मिन्कुम् मलाइ-क-तन् फ़िल्अर्ज़ि यख़्लुफ़ून (६०) व इन्नहू ल-अिल्मुल्-लिस्साअति फ़-ला तम्तरुन्-न बिहा वत्तबिऊनि ط हाज़ा सिरातुम्-मुस्तक़ीम (६१) व ला यसुद्दन्नकुमुश्-शैतानु ج इन्नहू लकुम् अदुव्वुम्-मुबीन (६२) व लम्मा जा-अ ईसा बिल्बय्यिनाति क़ा-ल क़द् जिअ्तुकुम् बिल्हिक्मति व लिउबय्यि-न लकुम् बअ्-ज़ल्लज़ी तख़्-तलिफ़ू-न फ़ीहि ج फ़त्तक़ुल्ला-ह व अतीऊन (६३) इन्नल्ला-ह हु-व रब्बी व रब्बुकुम् फ़अ्-बुदूहु ط हाज़ा सिरातुम्-मुस्तक़ीम (६४) फ़ख़्त-ल-फ़ल्-अह़्ज़ाबु मिम्-बैनिहिम् ج फ़वैलुल्-लिल्लज़ी-न ज़-लमू मिन् अज़ाबि यौमिन् अलीम (६५) हल् यन्ज़ुरू-न इल्लस्सा-अ-त अन् तअ्ति-य-हुम् बग़्-त-तंव्-व हुम् ला यश्अुरून (६६) अल्-अख़िल्लाउ यौमइज़िम्-बअ्-ज़ुहुम् लिबअ्-ज़िन् अदुव्वुन् इल्लल्-मुत्तक़ीन ط ★ (६७) या-अिबादि ला ख़ौफ़ुन् अलैकुमुल्-यौ-म व ला अन्तुम् तह़्-ज़नून ج (६८)

فرعون في قومه قال يقوم أليس لي ملك مصر وهذه الأنهر
تجري من تحتي أفلا تبصرون ۝٥١ أم أنا خير من هذا الذي هو
مهين ولا يكاد يبين ۝٥٢ فلولا ألقي عليه أسورة من ذهب أو جاء
معه الملئكة مقترنين ۝٥٣ فاستخف قومه فأطاعوه إنهم كانوا
قوما فسقين ۝٥٤ فلما آسفونا انتقمنا منهم فأغرقنهم أجمعين ۝٥٥
فجعلنهم سلفا ومثلا للآخرين ۝٥٦ ولما ضرب ابن مريم مثلا إذا
قومك منه يصدون ۝٥٧ وقالوا ءألهتنا خير أم هو ما ضربوه لك إلا
جدلا بل هم قوم خصمون ۝٥٨ إن هو إلا عبد أنعمنا عليه وجعلنه
مثلا لبني إسراءيل ۝٥٩ ولو نشاء لجعلنا منكم ملئكة في الأرض
يخلفون ۝٦٠ وإنه لعلم للساعة فلا تمترن بها واتبعون هذا صراط
مستقيم ۝٦١ ولا يصدنكم الشيطن إنه لكم عدو مبين ۝٦٢ ولما
جاء عيسى بالبينت قال قد جئتكم بالحكمة ولأبين لكم بعض
الذي تختلفون فيه فاتقوا الله وأطيعون ۝٦٣ إن الله هو ربي وربكم
فاعبدوه هذا صراط مستقيم ۝٦٤ فاختلف الأحزاب من بينهم فويل
للذين ظلموا من عذاب يوم أليم ۝٦٥ هل ينظرون إلا الساعة أن
تأتيهم بغتة وهم لا يشعرون ۝٦٦ الأخلاء يومئذ بعضهم لبعض
عدو إلا المتقين ۝٦٧ يعباد لا خوف عليكم اليوم ولا أنتم تحزنون ۝٦٨

★रु. ५/११ आ ११ ★रु. ६/१२ आ ११

क़ौम से पुकार कर कहा कि ऐ क़ौम ! क्या मिस्र की हुकूमत मेरे हाथ में नहीं है और ये नहरें जो मेरे (महलों के) नीचे बह रही हैं (मेरी नहीं हैं), क्या तुम देखते नहीं। (५१) बेशक मैं उस शख़्स से, जो कुछ इज़्ज़त नहीं रखता और साफ़ बात-चीत भी नहीं कर सकता, कहीं बेहतर हूं। (५२) तो उस पर सोने के कंगन क्यों न उतारे गये या (यह होता कि) फ़रिश्ते जमा हो कर उस के साथ आते ? (५३) ग़रज़ उस ने अपनी क़ौम की अक़्ल मार दी और उन्हों ने उस की मान ली, बेशक वे ना-फ़रमान लोग थे। (५४) जब उन्हों ने हम को ख़फ़ा किया, तो हम ने उन से बदला ले कर और उन सब को डुबो कर छोड़ा। (५५) और उन को गये-गुज़रे कर दिया और पिछलों के लिए इब्रत (सबक़) बना दिया। (५६) ★

और जब मरयम के बेटे (ईसा) का हाल बयान किया गया, तो तुम्हारी क़ौम के लोग उस से चिल्ला उठे। (५७) और कहने लगे कि भला हमारे माबूद अच्छे हैं या वह (ईसा) ? उन्हों ने जो इस (ईसा) की मिसाल तुम से बयान की है, तो सिर्फ़ झगड़े को। सच तो यह है कि ये लोग हैं ही झगड़ालू। (५८) वह तो हमारे ऐसे बन्दे थे, जिन पर हम ने फ़ज़्ल किया और बनी इस्राईल के लिए उन को (अपनी क़ुदरत का) नमूना बना दिया। (५९) और अगर हम चाहते तो तुम में से फ़रिश्ते बना देते, जो तुम्हारी जगह ज़मीन में रहते। (६०) और वह (ईसा) क़ियामत की निशानी हैं। तो (कह दो कि लोगो !) इस में शक न करो और मेरे पीछे चलो। यही सीधा रास्ता है। (६१) और (कहीं) शैतान तुम को (इससे) रोक न दे। वह तो तुम्हारा खुला दुश्मन है। (६२) और जब ईसा निशानियां ले कर आए, तो कहने लगे कि मैं तुम्हारे पास दानाई (की किताब) ले कर आया हूं। इस लिए कि कुछ बातें, जिन में तुम इख़्तिलाफ़ करते हो, तुम को समझा दूं, तो ख़ुदा से डरो और मेरा कहा मानो। (६३) कुछ शक नहीं कि ख़ुदा ही मेरा और तुम्हारा परवरदिगार है, पस उसी की इबादत करो, यही सीधा रास्ता है। (६४) फिर कितने फ़िर्क़े उन में से फट गये, सो जो लोग ज़ालिम हैं, उन की, दर्द देने वाले दिन के अज़ाब से ख़राबी है। (६५) ये सिर्फ़ इस बात के इन्तिज़ार में हैं कि क़ियामत उन पर यकायक आ मौजूद हो और उन को ख़बर तक न हो। (६६) जो आपस में दोस्त (हैं,) उस दिन एक दूसरे के दुश्मन होंगे, मगर परहेज़गार (कि) क़ियामत में दोस्त ही रहेंगे।[1] (६७) ★

मेरे बन्दो ! आज तुम्हें न कुछ ख़ौफ़ है और न तुम ग़मनाक होगे, (६८) जो लोग हमारी

१. उस दिन दोस्त से दोस्त भागेगा कि इस की वजह से मैं पकड़ा न जाऊं।

अल्लज़ी-न आमनू बिआयातिना व कानू मुस्लिमीन ℓ (६९) उद्ख़ुलुल्-जन्न-त अन्तुम् व अज़्वाजुकुम् तुह्-बरून (७०) युताफ़ु अलैहिम् बिसिहाफ़िम्-मिन् ज़-हबिंव्-व अक-वाबिन् ℓ व फ़ीहा मा तश्तहीहिल्-अन्फ़ुसु व त-लज़्ज़ुल्-अअ्-युनु ℓ व अन्तुम् फ़ीहा ख़ालिदून ℓ (७१) व तिल्कल्-जन्नतुल्लती ऊरिस्तुमूहा बिमा कुन्तुम् तअ्-मलून (७२) लकुम् फ़ीहा फ़ाकि-ह-तुन् कसी-रतुम्-मिन्हा तअ्-कुलून (७३) इन्नल्-मुज्रिमी-न फ़ी अज़ाबि ज-हन्न-म ख़ालिदून ℓ (७४) ला युफ़त्तरु अन्हुम् व हुम् फ़ीहि मुब्लिसून ℓ (७५) व मा ज़-लम्नाहुम् व लाकिन् कानू हुमुज़्-ज़ालिमीन (७६) व नादौ या मालिकु लि-यक़्ज़ि अलैना रब्बु-क ƅ क़ा-ल इन्नकुम् माकि-सून (७७) ल-क़द् जिअ्-नाकुम् बिल्हक़्क़ि व लाकिन्-न अक्स-रकुम् लिल्हक़्क़ि कारिहून (७८) अम् अब्-रमू अम्-रन् फ़-इन्ना मुब्रिमून ℓ (७९) अम् यह्-सबू-न अन्ना ला नस्मअु सिर्रहुम् व नज्वाहुम् ƅ बला व रुसुलुना लदैहिम् यक्तुबून (८०) क़ुल् इन् का-न लिर्रह्मानि व-लदुन् ƒ फ़-अ-न अव्वलुल्-आबिदीन (८१) सुब्हा-न रब्बिस्समावाति वल्अर्ज़ि रब्बिल्-अर्शि अम्मा यसिफ़ून (८२) फ़-ज़र्हुम् यख़ूज़ू व यल्-अबू हत्ता युलाक़ू यौमहुमुल्लज़ी यू-अदून (८३) व हुवल्लज़ी फ़िस्समाइ इलाहुंव्-व फ़िल्अर्ज़ि इलाहुन् ƅ व हुवल्-हकीमुल्-अलीम (८४) व तबा-र-कल्लज़ी लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बैनहुमा ℓ व अिन्दहू अिल्मुस्साअति ℓ व इलैहि तुर्जअून (८५) व ला यम्लिकुल्लज़ी-न यद्अू-न मिन् दूनिहिश्शफ़ा-अ-त इल्ला मन् शहि-द बिल्हक़्क़ि व हुम् यअ्-लमून (८६) व लइन् स-अल्तहुम् मन् ख़-ल-क़हुम् ल-यक़ूलुन्नल्लाहु फ़-अन्ना युअ्फ़कून ℓ (८७) व क़ीलिही या रब्बि इन्-न हाउला-इ क़ौमुल्ला युअ्मिनून ※ (८८) फ़स्-फ़ह् अन्हुम् व क़ुल् सलामुन् ƅ फ़सौ-फ़ यअ्-लमून (८९) ★

الذين آمنوا بآياتنا وكانوا مسلمين ﴿٦٩﴾ ادخلوا الجنة أنتم وأزواجكم
تحبرون ﴿٧٠﴾ يطاف عليهم بصحاف من ذهب وأكواب وفيها ما تشتهيه
الأنفس وتلذ الأعين وأنتم فيها خالدون ﴿٧١﴾ وتلك الجنة التي
أورثتموها بما كنتم تعملون ﴿٧٢﴾ لكم فيها فاكهة كثيرة منها تأكلون ﴿٧٣﴾
إن المجرمين في عذاب جهنم خالدون ﴿٧٤﴾ لا يفتر عنهم وهم فيه
مبلسون ﴿٧٥﴾ وما ظلمناهم ولكن كانوا هم الظالمين ﴿٧٦﴾ ونادوا يا مالك
ليقض علينا ربك قال إنكم ماكثون ﴿٧٧﴾ لقد جئناكم بالحق ولكن
أكثركم للحق كارهون ﴿٧٨﴾ أم أبرموا أمرا فإنا مبرمون ﴿٧٩﴾ أم يحسبون
أنا لا نسمع سرهم ونجواهم بلى ورسلنا لديهم يكتبون ﴿٨٠﴾ قل إن
كان للرحمن ولد فأنا أول العابدين ﴿٨١﴾ سبحان رب السماوات و
الأرض رب العرش عما يصفون ﴿٨٢﴾ فذرهم يخوضوا ويلعبوا حتى يلاقوا
يومهم الذي يوعدون ﴿٨٣﴾ وهو الذي في السماء إله وفي الأرض إله و
هو الحكيم العليم ﴿٨٤﴾ وتبارك الذي له ملك السماوات والأرض وما بينهما
وعنده علم الساعة وإليه ترجعون ﴿٨٥﴾ ولا يملك الذين يدعون
من دونه الشفاعة إلا من شهد بالحق وهم يعلمون ﴿٨٦﴾ ولئن سألتهم
من خلقهم ليقولن الله فأنى يؤفكون ﴿٨٧﴾ وقيله يا رب إن هؤلاء قوم
لا يؤمنون ﴿٨٨﴾ فاصفح عنهم وقل سلام فسوف يعلمون ﴿٨٩﴾

※ व. लाज़िम ★रु. ७/१३ आ २२

आयतों पर ईमान लाए और फ़रमांबरदार हो गये, (६६) (उन से कहा जाएगा) कि तुम और तुम्हारी बीवियां इज़्ज़त (व एहतराम) के साथ बहिश्त में दाखिल हो जाओ। (७०) उन पर सोने की पिरचों और प्यालों का दौर चलेगा और वहां जो जी चाहे और जो आंखों को अच्छा लगे (मौजूद होगा) और (ऐ जन्नत वालो !) तुम इसमें हमेशा रहोगे। (७१) और यह जन्नत जिसके तुम मालिक कर दिए गये हो, तुम्हारे आमाल का बदला है। (७२) वहां तुम्हारे लिए बहुत-से मेवे हैं, जिन को तुम खाओगे, (७३) (और कुफ़्फ़ार) गुनाहगार हमेशा दोज़ख के अज़ाब में रहेंगे, (७४) जो उन से हल्का न किया जाएगा और वे इस में ना-उम्मीद हो कर पड़े रहेंगे। (७५) और हम ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि वही (अपने आप पर) ज़ुल्म करते थे। (७६) और पुकारेंगे कि ऐ मालिक! तुम्हारा परवरदिगार हमें मौत दे दे। वह कहेगा कि तुम हमेशा (इसी हालत में) रहोगे। (७७) हम तुम्हारे पास हक़ ले कर पहुंचे, लेकिन तुम में अक्सर हक़ से ना-खुश होते रहे। (७८) क्या उन्होंने कोई बात ठहरा रखी है, तो हम भी कुछ ठहराने वाले हैं।[1] (७९) क्या ये लोग यह ख्याल करते हैं कि हम उन की छिपी बातों और सरगोशियों को सुनते नहीं ? हां, हां, (सब सुनते हैं) और हमारे फ़रिश्ते उन के पास (उन की) सब बातें लिख लेते हैं। (८०) कह दो कि अगर खुदा के औलाद हो, तो मैं (सब से) पहले (उस की) इबादत करने वाला हूं। (८१) ये जो कुछ बयान करते हैं, आसमानों और ज़मीन का मालिक (और) अर्श का मालिक उस से पाक है, (८२) तो उन को बक-बक करने और खेलने दो, यहां तक कि जिस दिन का उन से वायदा किया जाता है, उस को देख लें। (८३) और वही (एक) आसमानों में माबूद है और (वही) ज़मीन में माबूद है और वह हिक्मत वाला (और) इल्म वाला है। (८४) और वह बहुत बरकत वाला है, जिस के लिए आसमानों और ज़मीन और जो कुछ उन दोनों में है, सब की बादशाही है और उसी को क़ियामत का इल्म है और उसी की तरफ़ तुम लौट कर जाओगे। (८५) और जिन को ये लोग खुदा के सिवा पुकारते हैं, वे सिफ़ारिश का कुछ अख्तियार नहीं रखते, हां, जो इल्म व यक़ीन के साथ हक़ की गवाही दें, (वे सिफ़ारिश कर सकते हैं।[2]) (८६) और अगर तुम उन से पूछो कि उन को किस ने पैदा किया है, तो कह देंगे कि खुदा ने, तो फिर ये कहां बहके फिरते हैं ? (८७) और (कभी-कभी) पैग़म्बर कहा करते हैं कि ऐ परवरदिगार ! ये ऐसे लोग हैं कि ईमान नहीं लाते ▓ (८८) तो उन से मुंह फेर लो और सलाम कह दो, उन को बहुत जल्द (अंजाम) मालूम हो जाएगा। (८९) ★

---

१. काफ़िरों ने तो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़त्ल और मक्का से उन के निकाले जाने की स्कीम सोची थी और खुदा ने यह इरादा फ़रमाया था कि वह आप को कुफ़्फ़ार पर ग़ालिब करेगा। चुनांचे आप मक्के से हिजरत कर के मदीना तश्रीफ़ ले गये, तो अल्लाह तआला ने आप की मदद फ़रमायी और आप ने मक्का फ़त्ह कर लिया और काफ़िर मग़लूब हो कर रह गये।

२. यानी बुत, जिन की ये कुफ़्फ़ार पूजा करते थे, उन की सिफ़ारिश नहीं कर सकेंगे। सिफ़ारिश करने का हक़ तो खुदा के उन नेक बंदों को होगा, जिन को खुदा के एक होने का यक़ीन है और वह उन के एक होने और अकेला माबूद होने की गवाही देते हैं और वही सिफ़ारिश कर सकते हैं।

४४ सूरतुद्दुख़ानि ६४

(मक्की) इस सूर: में अरबी के १४६५ अक्षर, ३४६ शब्द, ५६ आयतें और ३ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

हामीम् ۚ (१) वल्किताबिल्मुबीन ۙ (२) इन्ना अन्ज़ल्नाहु फ़ी लैलतिम्-मुबा-र-कतिन् इन्ना कुन्ना मुन्ज़िरीन (३) फ़ीहा युफ़रक़ु कुल्लु अम्रिन् ह़कीम ۙ (४) अम्-रम्-मिन् अ़िन्दिना ط इन्ना कुन्ना मुर्सिलीन ۚ (५) रह़्-म-तम्-मिर्रब्बि-क ط इन्नहू हुवस्समीअुल्-अ़लीम ۙ (६) रब्बिस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बैनहुमा ⁂ इन् कुन्तुम् मूक़िनीन (७) ला इला-ह इल्ला हु-व युह़्यी व युमीतु ط रब्बुकुम् व रब्बु आबाइकुमुल्-अव्वली-न (८) बल् हुम् फ़ी शक्किंय्यल्-अबून (९) फ़र्तक़िब् यौ-म तअ्तिस्समाउ बि दुख़ानिम्-मुबीनिंय-ۙ (१०) यग़्-शन्ना-स ط हाज़ा अ़ज़ाबुन् अलीम (११) रब्ब-नक्शिफ़् अ़न्नल्-अ़ज़ा-ब इन्ना मुअ्मिनून (१२) अन्ना लहुमुज़्ज़िक-रा व क़द् जा-अहुम् रसूलुम्-मुबीन ۙ (१३) सुम्-म त-वल्लौ अ़न्हु व क़ालू मु-अ़ल्लमुम्-मज्नून ⁂ (१४) इन्ना काशिफ़ुल्-अ़ज़ाबि क़लीलन् इन्नकुम् आ़-इदून ⁂ (१५) यौ-म नब्तिशुल् - बत्-श-तल् - कुब्रा ۚ इन्ना मुन्तक़िमून (१६) व ल-क़द् फ़-तन्ना क़ब्-लहुम् क़ौ-म फ़िर्औ-न व जा-अहुम् रसूलुन् करीम ۙ (१७) अन् अद्दू इलय्-य अ़िबादल्लाहि ط इन्नी लकुम् रसूलुन् अमीनुंव्-ۙ (१८) -व अल्ला तअ्-लू अ़लल्लाहि ۚ इन्नी आतीकुम् बिसुल्तानिम्-मुबीन ۚ (१९) व इन्नी अ़ुज़्तु बिरब्बी व रब्बिकुम् अन् तर्जुमून ۙ (२०) व इल्लम् तुअ्मिनू ली फ़अ्-तज़िलून (२१) फ़-दआ़ रब्बहू अन-न हाउला-इ क़ौमुम्-मुज्रिमून ● (२२) फ़-अस्रि बिअ़िबादी लैलन् इन्नकुम् मुत्त - बअ़ून ۙ (२३) वत-रुकिल्-बह़्-र रह़्-वन् ط इन्नहुम् जुन्दुम्-मुग़्-रक़ून (२४) कम् त-रकू मिन् जन्नातिंव-व अ़ुयूनिंव- ۙ (२५) व ज़ुरूअ़िंव-व मक़ामिन् करीमिंव- ۙ (२६)

سورة الدخان مكية وهي تسع وخمسون آية وثلاث ركوعات
بسم الله الرحمن الرحيم
حم ۝ والكتب المبين ۝ إنا أنزلنه في ليلة مبركة إنا كنا
منذرين ۝ فيها يفرق كل أمر حكيم ۝ أمرا من عندنا إنا كنا
مرسلين ۝ رحمة من ربك إنه هو السميع العليم ۝ رب السموت و
الأرض وما بينهما إن كنتم موقنين ۝ لا إله إلا هو يحي ويميت
ربكم ورب آبائكم الأولين ۝ بل هم في شك يلعبون ۝ فارتقب
يوم تأتي السماء بدخان مبين ۝ يغشى الناس هذا عذاب أليم ۝
ربنا اكشف عنا العذاب إنا مؤمنون ۝ أنى لهم الذكرى وقد جاءهم
رسول مبين ۝ ثم تولوا عنه وقالوا معلم مجنون ۝ إنا كاشفوا
العذاب قليلا إنكم عائدون ۝ يوم نبطش البطشة الكبرى
إنا منتقمون ۝ ولقد فتنا قبلهم قوم فرعون وجاءهم رسول
كريم ۝ أن أدوا إلي عباد الله إني لكم رسول أمين ۝ وأن لا تعلوا
على الله إني آتيكم بسلطن مبين ۝ وإني عذت بربي وربكم أن
ترجمون ۝ وإن لم تؤمنوا لي فاعتزلون ۝ فدعا ربه أن هؤلاء
قوم مجرمون ۝ فأسر بعبادي ليلا إنكم متبعون ۝ واترك البحر
رهوا إنهم جند مغرقون ۝ كم تركوا من جنت وعيون ۝ وزروع

.:मु. अ़ि मु. ता ख़.१२ ⁂ व. लाज़िम ●मु. ३/४

४४ सूरः दुख़ान ६४

सूरः दुखान मक्की है, इस में ५६ आयतें और तीन रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

हामीम, (१) इस रोशन किताब की क़सम ! (२) कि हम ने उस को मुबारक रात में नाज़िल फ़रमाया, हम तो रास्ता दिखाने वाले हैं, (३) उसी रात में तमाम हिक्मत के काम फ़ैसले किए जाते हैं, (४) (यानी) हमारे यहां से हुक्म हो कर, बेशक हम ही (पैग़म्बर को) भेजते हैं। (५) (यह) तुम्हारे परवरदिगार की रहमत है। वह तो सुनने वाला, जानने वाला है। (६) आसमानों और ज़मीन और जो कुछ इन दोनों में है, सब का मालिक बशर्ते कि तुम लोग यक़ीन करने वाले हो। (७) उस के सिवा कोई माबूद नहीं, (वही) जिलाता है और (वही) मारता है, (वही) तुम्हारा और तुम्हारे पहले बाप-दादा का परवरदिगार है। (८) लेकिन ये लोग शक में खेल रहे हैं। (९) तो उस दिन का इन्तिज़ार करो कि आसमान से साफ़ धुआँ निकलेगा, (१०) जो लोगों पर छा जाएगा। यह दर्द देने वाला अज़ाब है। (११) ऐ परवरदिगार ! हम से इस अज़ाब को दूर कर, हम ईमान लाते हैं। (१२) (उस वक़्त) उन को नसीहत कहां मुफ़ीद होगी, जबकि उन के पास पैग़म्बर आ चुके, जो खोल-खोल कर बयान कर देते थे। (१३) फिर उन्हों ने उन से मुंह फेर लिया और कहने लगे, (यह तो) पढ़ाया हुआ (और) दीवाना है (१४) हम तो थोड़े दिनों अज़ाब टाल देते हैं, (मगर) तुम फिर कुफ़्र करने लगते हो (१५) जिस दिन हम बड़ी सख़्त पकड़ पकड़ेंगे, तो बेशक बदला ले कर छोड़ेंगे। (१६) और उन से पहले हम ने फ़िऔन की क़ौम की आज़माइश की और उन के पास एक बुलंद मर्तबा पैग़म्बर आए, (१७) (जिन्हों ने) यह (कहा) कि ख़ुदा के बन्दों (यानी बनी इस्राईल) को मेरे हवाले कर दो, मैं तुम्हारा अमानतदार पैग़म्बर हूं, (१८) और ख़ुदा के सामने सर-कशी न करो, मैं तुम्हारे पास खुली दलील ले कर आया हूं। (१९) और इस (बात) से कि तुम मुझे पत्थर मार-मार कर हलाक कर दो, अपने और तुम्हारे परवरदिगार की पनाह मांगता हूं। (२०) और अगर मुझ पर ईमान नहीं लाते, तो मुझ से अलग हो जाओ। (२१) तब (मूसा ने) अपने परवरदिगार से दुआ की कि ये ना-फ़रमान लोग हैं। (२२) (ख़ुदा ने फ़रमाया कि) मेरे बन्दों को रातों-रात ले कर चले जाओ और (फ़िऔनी) ज़रूर तुम्हारा पीछा करेंगे, (२३) और दरिया से (कि) सूखा (हो रहा होगा) पार हो जाओ। (तुम्हारे बाद) उन का तमाम लश्कर डुबो दिया जाएगा। (२४) वे लोग बहुत-से बाग़ और चश्मे छोड़ गये, (२५) और खेतियां और नफ़ीस मकान, (२६) और

मु. अि मु त क़. १२ व. लाज़िम व लाज़िम व. लाज़िम मु. ३/४

व नअ्-मतिन् कानू फ़ीहा फ़ाकिहीन (२७) कज़ालि-क व औरस्-नाहा क़ौमन् आख़रीन (२८) फ़ मा ब-कत् अलैहिमुस्समाउ वल्अर्ज़ु व मा कानू मुन्ज़रीन ★ (२९) व ल-क़द् नज्जैना बनी इस्राई-ल मिनल्-अज़ाबिल्-मुहीन (३०) मिन् फ़िर्औ-न इन्नहू का-न आलियम्-मिनल्-मुस्रिफ़ीन (३१) व ल-क़दिख़्तर्-नाहुम् अला अिल्मिन् अ-लल्-आलमीन (३२) व आतैनाहुम् मिनल्आयाति मा फ़ीहि बलाउम्-मुबीन (३३) इन्-न हाउला-इ ल-यक़ूलून (३४) इन् हि-य इल्ला मौततुनल्-ऊला व मा नह्नु बिमुन्शरीन (३५) फ़अ्तू बिआबा-इना इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (३६) अहुम् ख़ैरुन् अम् क़ौमु तुब्बअिंव्-वल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् अह्-लक-नाहुम् इन्नहुम् कानू मुज्रि-मीन (३७) व मा ख़-लक़्नस्समावाति वल्-अर्-ज़ व मा बैनहुमा लाअिबीन (३८) मा ख़-लक़्नाहुमा इल्ला बिल्हक़्क़ि व लाकिन्-न अक्स-रहुम् ला यअ्-लमून (३९) इन्-न यौमल्फ़स्लि मीक़ातुहुम् अज्-मअीन (४०) यौ-म ला युग़्नी मौलन् अम्मौलन् शैअंव्-व ला हुम् युन्सरून (४१) इल्ला मर्रहिमल्लाहु इन्नहू हुवल्-अज़ीज़ुर्रहीम (४२) इन्-न श-ज-र-तज़्ज़क़्क़ूम (४३) तआमुल्-असीम (४४) कल्मुह्लि यग़्ली फ़िल्-बुतून (४५) क-ग़ल्यिल् हमीम (४६) ख़ुज़ूहु फ़अ्-तिलूहु इला सवा-इल्-जहीम (४७) सुम्-म सुब्बू फ़ौ-क़ रअ्सिही मिन् अज़ाबिल्-हमीम (४८) ज़ुक़् इन्न-क अन्तल्-अज़ीज़ुल्-करीम (४९) इन्-न हाज़ा मा कुन्तुम् बिही तम्तरून (५०) इन्नल्मुत्तक़ी-न फ़ी मक़ामिन् अमीन (५१) फ़ी जन्नातिंव्-व अुयूनिंय- (५२) यल्बसू-न मिन् सुन्दुसिंव्-व इस्तब्रक़िम्-मु-त-क़ाबिलीन (५३) कज़ालि-क व ज़व्वज्-नाहुम् बिहूरिन् अीन (५४) यद्अू-न फ़ीहा बिकुल्लि फ़ाकिहतिन् आमिनीन (५५)

وَّمَقَامٍ كَرِيمٍ ﴿٢٦﴾ وَنَعْمَةٍ كَانُوا فِيهَا فَاكِهِينَ ﴿٢٧﴾ كَذَٰلِكَ ۖ وَأَوْرَثْنَاهَا قَوْمًا آخَرِينَ ﴿٢٨﴾
فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَاءُ وَالْأَرْضُ وَمَا كَانُوا مُنظَرِينَ ﴿٢٩﴾ وَلَقَدْ نَجَّيْنَا
بَنِي إِسْرَائِيلَ مِنَ الْعَذَابِ الْمُهِينِ ﴿٣٠﴾ مِن فِرْعَوْنَ ۚ إِنَّهُ كَانَ عَالِيًا
مِّنَ الْمُسْرِفِينَ ﴿٣١﴾ وَلَقَدِ اخْتَرْنَاهُمْ عَلَىٰ عِلْمٍ عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿٣٢﴾ وَآتَيْنَاهُم
مِّنَ الْآيَاتِ مَا فِيهِ بَلَاءٌ مُّبِينٌ ﴿٣٣﴾ إِنَّ هَٰؤُلَاءِ لَيَقُولُونَ ﴿٣٤﴾ إِنْ هِيَ إِلَّا
مَوْتَتُنَا الْأُولَىٰ وَمَا نَحْنُ بِمُنشَرِينَ ﴿٣٥﴾ فَأْتُوا بِآبَائِنَا إِن كُنتُمْ
صَادِقِينَ ﴿٣٦﴾ أَهُمْ خَيْرٌ أَمْ قَوْمُ تُبَّعٍ وَالَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ أَهْلَكْنَاهُمْ ۖ إِنَّهُمْ
كَانُوا مُجْرِمِينَ ﴿٣٧﴾ وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لَاعِبِينَ ﴿٣٨﴾ مَا
خَلَقْنَاهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٩﴾ إِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ
مِيقَاتُهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٤٠﴾ يَوْمَ لَا يُغْنِي مَوْلًى عَن مَّوْلًى شَيْئًا وَلَا هُمْ
يُنصَرُونَ ﴿٤١﴾ إِلَّا مَن رَّحِمَ اللَّهُ ۚ إِنَّهُ هُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿٤٢﴾ إِنَّ شَجَرَتَ
الزَّقُّومِ ﴿٤٣﴾ طَعَامُ الْأَثِيمِ ﴿٤٤﴾ كَالْمُهْلِ يَغْلِي فِي الْبُطُونِ ﴿٤٥﴾ كَغَلْيِ
الْحَمِيمِ ﴿٤٦﴾ خُذُوهُ فَاعْتِلُوهُ إِلَىٰ سَوَاءِ الْجَحِيمِ ﴿٤٧﴾ ثُمَّ صُبُّوا فَوْقَ رَأْسِهِ
مِنْ عَذَابِ الْحَمِيمِ ﴿٤٨﴾ ذُقْ إِنَّكَ أَنتَ الْعَزِيزُ الْكَرِيمُ ﴿٤٩﴾ إِنَّ هَٰذَا مَا
كُنتُم بِهِ تَمْتَرُونَ ﴿٥٠﴾ إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي مَقَامٍ أَمِينٍ ﴿٥١﴾ فِي جَنَّاتٍ وَ
عُيُونٍ ﴿٥٢﴾ يَلْبَسُونَ مِن سُندُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ مُّتَقَابِلِينَ ﴿٥٣﴾ كَذَٰلِكَ وَ
زَوَّجْنَاهُم بِحُورٍ عِينٍ ﴿٥٤﴾ يَدْعُونَ فِيهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ آمِنِينَ ﴿٥٥﴾ لَا

★रु. १/१४ आ २९ ★रु. २/१५ आ १३ .˙. मु. अि मु ता ख़. १४

आराम की चीज़ें, जिन में ऐसा किया करते थे, (२७) इसी तरह (हुआ) और हम ने दूसरे लोगों को उन का मालिक बना दिया। (२८) फिर उन पर न तो आसमान और ज़मीन को रोना आया और न उन को मोहलत ही दी गयी। (२९)★

और हम ने बनी इस्राईल को ज़िल्लत के अज़ाब से निजात दी। (३०) (यानी) फ़िरऔन से, बेशक वह सर-कश (और) हद से निकला हुआ था। (३१) और हम ने बनी इस्राईल को दुनिया वालों से समझ-बूझ कर चुना था। (३२) और उन को ऐसी निशानियां दी थीं, जिन में खुली आज़माइश थी। (३३) ये लोग यह कहते हैं, (३४) कि हमें सिर्फ़ पहली बार (यानी एक बार) मरना है और (फिर) उठना नहीं, (३५) पस अगर तुम सच्चे हो, तो हमारे बाप-दादा को (ज़िंदा कर) लाओ। (३६) भला ये अच्छे हैं या तुब्बअ् की क़ौम![1] और वे लोग जो तुम से पहले हो चुके हैं, हम ने उन (सब) को हलाक कर दिया। बेशक वे गुनाहगार थे। (३७) और हम ने आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ उन में है, उन को खेलते हुए नहीं बनाया। (३८) उन को हम ने तद्बीर से पैदा किया है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (३९) कुछ शक नहीं कि फ़ैसले का दिन उन सब (के उठने का) वक़्त है, (४०) जिस दिन कोई दोस्त, किसी दोस्त के कुछ काम न आएगा और न उन को मदद मिलेगी, (४१) मगर जिस पर ख़ुदा मेहरबानी करे, वह तो ग़ालिब (और) मेहरबान है। (४२)★

बेशक थूहर का पेड़, (४३) गुनाहगार का खाना है, ∴(४४) जैसे पिघला हुआ तांबा, ∴ पेटों में (इस तरह) खौलेगा, (४५) जिस तरह गर्म पानी खौलता है। (४६) (हुक्म दिया जाएगा कि) इस को पकड़ लो और खींचते हुए दोज़ख़ के बीचों-बीच ले जाओ। (४७) फिर उस के सर पर खौलता हुआ पानी उंडेल दो (कि अज़ाब पर) अज़ाब (हो,) (४८) (अब) मज़ा चख, तू बड़ी इज़्ज़त वाला (और) सरदार है। (४९) यह वही (दोज़ख़) है, जिस में तुम लोग शक किया करते थे। (५०) बेशक परहेज़गार लोग अम्न की जगह में होंगे। (५१) (यानी) बाग़ों और चश्मों में, (५२) हरीर का बारीक और दबीज़ (भारी) लिबास पहन कर एक-दूसरे के सामने बैठे होंगे। (५३) (वहां) इस तरह (का हाल होगा) और हम बड़ी-बड़ी आंखों वाली सफ़ेद रंग की औरतों से उन के जोड़े लगाएंगे। (५४) वहां अम्न-सुकून से हर क़िस्म के मेवे मंगाएंगे (और

१. तुब्बअ् यमन का बादशाह था, कहते हैं कि वह तो ईमान वाला था और उस की क़ौम बुतपरस्त थी, जो हलाक कर दी गयी।

ला यज़ूक़ू-न फ़ीहल्मौ-त इल्लल्मौत - तुल् - ऊला ^ व वक़ाहुम् अज़ाबल्-जहीम // (५६) फ़ज़् - लम् - मिर्रब्बि - क ♭ ज़ालि - क हुवल् - फ़ौज़ुल्-अज़ीम (५७) फ़-इन्नमा यस्सर-नाहु बिलिसानि-क ल-अ़ल्लहुम् य - त - ज़क्करून (५८) फ़र्तक़िब् इन्नहुम् मुर्तक़िबून ★(५९)

४५ सूरतुल् जासियति ६५

(मक्की) इस सूरः में अरबी के २१३१ अक्षर, ४९२ शब्द, ३७ आयतें और ४ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम •

हामीम् ^ (१) तन्ज़ीलुल्-किताबि मिनल्लाहिल्-अ़ज़ीज़िल्-ह़कीम (२) इन्-न फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि लआयातिल्-लिल्मुअ्मिनीन♭ (३) व फ़ी ख़ल्क़िकुम् व मा यबुस्सु मिन् दाब्बतिन् आयातुल्-लिक़ौमिय्यूक़िनून // (४) वख़्तिलाफ़िल्लैलि वन्नहारि व मा अन्ज़-लल्लाहु मिनस्समाइ मिर्रिज़्क़िन् फ़-अह़्या बिहिल्अर-ज़ बअ़्-द मौतिहा व तस्रीफ़िर-रियाहि आयातुल्-लिक़ौमिय्यअ़्-क़िलून (५) तिल-क आयातुल्-लाहि नत्लूहा अ़लै-क बिल्ह़क़्क़ि ^ फ़बिअय्यि ह़दीसिम् बअ़्-दल्लाहि व आयातिही युअ्मिनून (६) वैलुल्-लिकुल्लि अफ़्फ़ाकिन् असीमिय-// (७) -यस्-मअ़ु आयातिल्लाहि तुत्ला अ़लैहि सुम्-म युसिर्रु मुस्तक-बिरन् क-अल्लम् यस्-मअ़्-हा ^ फ़बश्शिरहु बिअ़ज़ाबिन् अलीम (८) व इज़ा अ़लि-म मिन् आयातिना शै-अ-नित्त-ख़-ज़हा हुज़ुवन् ♭ उलाइ-क लहुम् अ़ज़ाबुम्-मुहीन ♭ (९) मिंव्वराइहिम् जहन्नमु ^ व ला युग़्नी अ़न्हुम् मा क-सबू शैअंव्-व ला मत्त-ख़-ज़ू मिन् दूनिल्लाहि औलिया-अ^व लहुम् अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीम ♭ (१०) हाज़ा हुदन् ^ वल्लज़ी-न क-फ़रू बिआयाति रब्बिहिम् लहुम् अ़ज़ाबुम्-मिर्रिज्ज़िन् अलीम ★(११) अल्लाहुल्लज़ी सख़्ख़ - र लकुमुल् - बह़्-र लितज्रि - यल् - फ़ुल्कु फ़ीहि बिअम्रिही व लि - तब्तग़ू मिन् फ़ज़्लिही व ल - अ़ल्लकुम् तश्कुरून ^ (१२)

يَذُوقُونَ فِيهَا الْمَوْتَ إِلَّا الْمَوْتَةَ الْأُولَىٰ وَوَقَاهُمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ﴿٥٦﴾
فَضْلًا مِّن رَّبِّكَ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٥٧﴾ فَإِنَّمَا يَسَّرْنَاهُ بِلِسَانِكَ
لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٥٨﴾ فَارْتَقِبْ إِنَّهُم مُّرْتَقِبُونَ ﴿٥٩﴾
سُورَةُ الْجَاثِيَةِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ سَبْعٌ وَثَلٰثُونَ آيَةً وَأَرْبَعُ رُكُوعَاتٍ
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
حم ﴿١﴾ تَنزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ﴿٢﴾ إِنَّ فِي السَّمَاوَاتِ وَ
الْأَرْضِ لَآيَاتٍ لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴿٣﴾ وَفِي خَلْقِكُمْ وَمَا يَبُثُّ مِن دَابَّةٍ آيَاتٌ
لِّقَوْمٍ يُوقِنُونَ ﴿٤﴾ وَاخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَا أَنزَلَ اللَّهُ مِنَ السَّمَاءِ
مِن رِّزْقٍ فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَتَصْرِيفِ الرِّيَاحِ آيَاتٌ لِّقَوْمٍ
يَعْقِلُونَ ﴿٥﴾ تِلْكَ آيَاتُ اللَّهِ نَتْلُوهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ فَبِأَيِّ حَدِيثٍ بَعْدَ
اللَّهِ وَآيَاتِهِ يُؤْمِنُونَ ﴿٦﴾ وَيْلٌ لِّكُلِّ أَفَّاكٍ أَثِيمٍ ﴿٧﴾ يَسْمَعُ آيَاتِ اللَّهِ تُتْلَىٰ
عَلَيْهِ ثُمَّ يُصِرُّ مُسْتَكْبِرًا كَأَن لَّمْ يَسْمَعْهَا فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٨﴾ وَإِذَا
عَلِمَ مِنْ آيَاتِنَا شَيْئًا اتَّخَذَهَا هُزُوًا أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ﴿٩﴾ مِّن
وَرَائِهِمْ جَهَنَّمُ وَلَا يُغْنِي عَنْهُم مَّا كَسَبُوا شَيْئًا وَلَا مَا اتَّخَذُوا مِن دُونِ
اللَّهِ أَوْلِيَاءَ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١٠﴾ هَٰذَا هُدًى وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ
لَهُمْ عَذَابٌ مِّن رِّجْزٍ أَلِيمٌ ﴿١١﴾ اللَّهُ الَّذِي سَخَّرَ لَكُمُ الْبَحْرَ لِتَجْرِيَ
الْفُلْكُ فِيهِ بِأَمْرِهِ وَلِتَبْتَغُوا مِن فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿١٢﴾ وَسَخَّرَ لَكُم

★रु॰ ३/१६ आ १७ ★रु॰ १/१७ आ ११

खाएंगे।) (५५) (और) पहली बार के मरने के सिवा (कि मर चुके थे) मौत का मज़ा नहीं चखेंगे और ख़ुदा उन को दोज़ख़ के अज़ाब से बचा लेगा। (५६) यह तुम्हारे परवरदिगार का फ़ज़्ल है। यही तो बड़ी कामियाबी है। (५७) हम ने इस (क़ुरआन) को तुम्हारी ज़ुबान में आसान कर दिया है, ताकि ये लोग नसीहत पकड़ें। (५८) पस तुम भी इन्तिज़ार करो, ये भी इन्तिज़ार कर रहे हैं। (५९)★

४५ सूरः जासिया ६५

सूरः जासिया मक्की है। इस में ३७ आयतें और चार रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

हामीम, (१) इस किताब का उतारा जाना ख़ुदा-ए-ग़ालिब (और) हकीम (की तरफ़) से है। (२) बेशक आसमानों और ज़मीन में ईमान वालों के लिए (ख़ुदा की क़ुदरत की) निशानियां हैं। (३) और तुम्हारी पैदाइश में भी और जानवरों में भी, जिन को वह फैलाता है, यक़ीन करने वालों के लिए निशानियां हैं। (४) और रात और दिन के आगे-पीछे आने-जाने में और वह जो ख़ुदा ने आसमान से रोज़ी (का ज़रिया) नाज़िल फ़रमाया, फिर इस से ज़मीन को उस के मर जाने के बाद ज़िंदा किया, उस में और हवाओं के बदलने में अक़्ल वालों के लिए निशानियां हैं। (५) ये ख़ुदा की आयतें हैं, जो हम तुम को सच्चाई के साथ पढ़ कर सुनाते हैं, तो यह ख़ुदा और उस की आयतों के बाद किस बात पर ईमान लाएंगे? (६) हर झूठे गुनाहगार पर अफ़सोस है, (७) (कि) ख़ुदा की आयतें उस को पढ़ कर सुनायी जाती हैं तो उन को सुन तो लेता है (मगर) फिर घमंड में आ कर ज़िद करता है कि गोया उन को सुना ही नहीं, सो ऐसे शख़्स को दुख देने वाले अज़ाब की ख़ुशख़बरी सुना दो। (८) और जब हमारी कुछ आयतें उसे मालूम होती हैं, तो उन की हंसी उड़ाता है, ऐसे लोगों के लिए ज़लील करने वाला अज़ाब है। (९) इन के सामने दोज़ख़ है और जो काम वे करते रहे, कुछ भी उन के काम न आएंगे और न वही (काम आएंगे) जिन को उन्हों ने ख़ुदा के सिवा माबूद बना रखा था और उन के लिए बड़ा अज़ाब है। (१०).

यह हिदायत (की किताब) है और जो लोग अपने परवरदिगार की आयतों से इन्कार करते हैं, उन को सख़्त क़िस्म का दर्द देने वाला अज़ाब होगा। (११)★ ख़ुदा ही तो है, जिस ने दरिया को तुम्हारे क़ाबू में कर दिया, ताकि उस के हुक्म से उस में कश्तियां चलें और ताकि तुम उस के फ़ज़्ल

★रु० ३/१६ आ १७ ★रु० १/१७ आ ११

व सख़्ख़-र लकुम् मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि जमीअम्-मिन्हु इन्-न फ़ी ज़ालि-क ल-आयातिल्-लिक़ौमिय्य-त-फ़क्करून (१३) क़ुल् लिल्लज़ी-न आमनू यग़्फ़िरू लिल्लज़ी-न ला यर्जू-न अय्यामल्लाहि लि-यज्ज़ि-य क़ौमम्-बिमा कानू यक्सिबून (१४) मन् अ़मि-ल सालिहन् फ़लिनफ़्सिही व मन् असा-अ फ़-अ़लैहा सुम्-म इला रब्बिकुम् तुर्जअ़ून (१५) व ल-क़द् आतैना बनी इस्राईलल्-किता-ब वल्-हुक्-म वन्नुबुव्व-त व र-ज़क़्नाहुम् मिनत्तय्यिबाति व फ़ज़्ज़ल्-नाहुम् अ़लल्-आ़लमीन (१६) व आतैनाहुम् बय्यिनातिम्-मिनल्अम्रि फ़-मख़्त-लफ़ू इल्ला मिम्बअ़्-दि मा जा-अ-हुमुल्-अि़ल्मु बग़्-यम्-बैनहुम् इन्-न रब्ब-क यक़्ज़ी बैनहुम् यौमल्-क़ियामति फ़ीमा कानू फ़ीहि यख़्तलिफ़ून (१७) सुम्-म ज-अ़ल्ना-क अ़ला शरीअ़तिम्-मिनल्-अम्रि फ़त्तबिअ़्-हा व ला तत्तबिअ़्-अह्वा-अल्लज़ी-न ला यअ़्-लमून (१८) इन्नहुम् लंय्युग़्नू अ़न्-क मिनल्लाहि शैअन् व इन्नज़्ज़ालि-मी-न बअ़्-ज़ुहुम् औलियाउ बअ़्-ज़िन् वल्लाहु वलिय्युल्-मुत्तक़ीन (१९) हाज़ा बसाइरु लिन्-नासि व हुदंव-व रह्-मतुल्-लिक़ौमिय्यूक़िनून (२०) अम् हसिबल्लज़ीनज्-त-रहुस्-सय्यिआति अन् नज्-अ़-लहुम् कल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति सवा-अम्महयाहुम् व ममातुहुम् सा-अ मा यह्-कुमून ★ (२१) व ख़-ल-क़ल्लाहुस्-समावाति वल्अर्-ज़ बिल्-हक़्क़ि व लितुज्ज़ा कुल्लु नफ़्सिम्-बिमा क-स-बत् व हुम् ला युज़्-लमून (२२) अ-फ़-रऐ-त मनित्त-ख़-ज़ इलाहहू हवाहु व अ-ज़ल्लहुल्लाहु अ़ला अि़ल्-मिंव-व ख़-त-म अ़ला सम्अ़िही व क़ल्बिही व ज-अ़-ल अ़ला ब-सरिही ग़िशा-व-तन् फ़मंय्यह्दीहि मिम्बअ़्-दिल्लाहि अ-फ़ला त-ज़क्करून (२३) व क़ालू मा हि-य इल्ला हयातुनद्दुन्या नमूतु व नह्या व मा युह्लिकुना इल्लद्-दह्-रु व मा लहुम् बिज़ालि-क मिन् अि़ल्मिन् इन् हुम् इल्ला यज़ुन्नून (२४)

مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا مِّنْهُ ۚ إِنَّ فِي ذٰلِكَ لَآيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُونَ ﴿١٣﴾
قُلْ لِّلَّذِينَ آمَنُوا يَغْفِرُوا لِلَّذِينَ لَا يَرْجُونَ أَيَّامَ اللّٰهِ لِيَجْزِيَ قَوْمًا بِمَا
كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿١٤﴾ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهِ ۖ وَمَنْ أَسَاءَ فَعَلَيْهَا ۖ ثُمَّ
إِلٰى رَبِّكُمْ تُرْجَعُونَ ﴿١٥﴾ وَلَقَدْ آتَيْنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَ
النُّبُوَّةَ وَرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ وَفَضَّلْنٰهُمْ عَلَى الْعٰلَمِينَ ﴿١٦﴾ وَآتَيْنٰهُمْ
بَيِّنٰتٍ مِّنَ الْأَمْرِ ۖ فَمَا اخْتَلَفُوا إِلَّا مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًا
بَيْنَهُمْ ۚ إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿١٧﴾
ثُمَّ جَعَلْنٰكَ عَلٰى شَرِيعَةٍ مِّنَ الْأَمْرِ فَاتَّبِعْهَا وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَ الَّذِينَ لَا
يَعْلَمُونَ ﴿١٨﴾ إِنَّهُمْ لَنْ يُّغْنُوا عَنْكَ مِنَ اللّٰهِ شَيْئًا ۚ وَإِنَّ الظّٰلِمِينَ بَعْضُهُمْ
أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۖ وَاللّٰهُ وَلِيُّ الْمُتَّقِينَ ﴿١٩﴾ هٰذَا بَصَائِرُ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَّ
رَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُّوقِنُونَ ﴿٢٠﴾ أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ اجْتَرَحُوا السَّيِّئٰتِ أَنْ نَّجْعَلَهُمْ
كَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَوَاءً مَّحْيَاهُمْ وَمَمَاتُهُمْ ۚ سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ﴿٢١﴾
وَخَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ وَلِتُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ وَهُمْ
لَا يُظْلَمُونَ ﴿٢٢﴾ أَفَرَأَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ إِلٰهَهُ هَوٰىهُ وَأَضَلَّهُ اللّٰهُ عَلٰى عِلْمٍ وَّخَتَمَ
عَلٰى سَمْعِهِ وَقَلْبِهِ وَجَعَلَ عَلٰى بَصَرِهِ غِشٰوَةً ۖ فَمَنْ يَّهْدِيهِ مِنْ بَعْدِ اللّٰهِ ۚ أَفَلَا
تَذَكَّرُونَ ﴿٢٣﴾ وَقَالُوا مَا هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوتُ وَنَحْيَا وَمَا يُهْلِكُنَا
إِلَّا الدَّهْرُ ۚ وَمَا لَهُمْ بِذٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۖ إِنْ هُمْ إِلَّا يَظُنُّونَ ﴿٢٤﴾ وَإِذَا تُتْلٰى

★रु. २/१८ आ १०

से (रोज़ी) तलाश करो और ताकि शुक्र करो। (१२) और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, सब को अपने (हुक्म) से तुम्हारे काम में लगा दिया, जो लोग ग़ौर करते हैं, उन के लिए उस में (ख़ुदा की क़ुदरत की) निशानियां हैं। (१३) मोमिनों से कह दो कि जो लोग ख़ुदा के दिनों की (जो आमाल के बदले के लिए मुक़र्रर हैं), उम्मीद नहीं रखते, उन से दरगुज़र करें, ताकि वह उन लोगों को उन के आमाल का बदला दे। (१४) जो कोई नेक अमल करेगा, तो अपने लिए और जो बुरे काम करेगा, तो उन का नुक़्सान उसी का होगा, फिर तुम अपने परवरदिगार की तरफ़ लौट कर जाओगे। (१५) और हम ने बनी इस्राईल को किताबे (हिदायत) और हुकूमत और नुबूवत बख़्शी और पाकीज़ा चीज़ें अता फ़रमायीं और दुनिया वालों पर फ़ज़ीलत दी। (१६) और उन को दीन के बारे में दलीलें अता कीं, तो उन्हों ने जो इख़्तिलाफ़ किया, तो इल्म आ चुकने के बाद आपस की ज़िद से किया। बेशक तुम्हारा परवरदिगार क़ियामत के दिन उन में उन बातों का, जिन में, वे इख़्तिलाफ़ करते थे, फ़ैसला करेगा। (१७) फिर हम ने तुमको दीन के खुले रास्ते पर (क़ायम) कर दिया, तो उसी (रास्ते) पर चले चलो और नादानों की ख़्वाहिशों के पीछे न चलना। (१८) ये ख़ुदा के सामने तुम्हारे किसी काम नहीं आएंगे और ज़ालिम लोग एक दूसरे के दोस्त होते हैं और ख़ुदा परहेज़गारों का दोस्त है। (१९) यह (क़ुरआन) लोगों के लिए दानाई (हिक्मत) की बातें हैं और जो यक़ीन रखते हैं, उन के लिए हिदायत और रहमत है। (२०) जो लोग बुरे काम करते हैं, क्या वह यह ख़्याल करते हैं कि हम उन को उन लोगों जैसा कर देंगे, जो ईमान लाये और नेक अमल करते रहे (और) उनकी ज़िंदगी और मौत बराबर होगी। ये जो दावे करते हैं, बुरे हैं। (२१) ★

और ख़ुदा ने आसमानों और ज़मीन को हिक्मत से पैदा किया है और ताकि हर शख़्स अपने आमाल का बदला पाए और उन पर ज़ुल्म नहीं किया जाएगा। (२२) भला तुम ने उस शख़्स को देखा, जिस ने अपनी ख़्वाहिश को माबूद बना रखा है और बावजूद जानने-बूझने के (गुमराह हो रहा है तो) ख़ुदा ने (भी) उस को गुमराह कर दिया और उस के कानों और दिल पर मुहर लगा दी और उस की आंखों पर पर्दा डाल दिया। अब ख़ुदा के सिवा उस को कौन राह पर ला सकता है, तो क्या तुम नसीहत नहीं पकड़ते ? (२३) और कहते हैं कि हमारी ज़िंदगी तो सिर्फ़ दुनिया ही की है कि (यहीं) मरते और जीते हैं और हमें तो ज़माना मार देता है और उन को इस का कुछ इल्म नहीं,

★रु. २/१८ आ १०

व इज़ा तुत्ला अ़लैहिम् आयातुना बय्यिनातिम्-मा का-न हुज्जतहुम् इल्ला अन् क़ालुअ्तू बिआबाइना इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (२५) क़ुलिल्लाहु युह़्यीकुम् सुम्-म युमीतुकुम् सुम्-म यज्मअुकुम् इला यौमिल्-क़ियामति ला रै-ब फ़ीहि व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला यअ्-लमून ★ (२६) व लिल्लाहि मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि ط व यौ-म तक़ूमुस्साअ़तु यौमइज़िंय्यख़्-सरुल्-मुब्तिलून (२७) व तरा कुल्-ल उम्मतिन् जासि-य-तन् قف कुल्लु उम्मतिन् तुद्आ इला किताबिहा ط अल्यौ-म तुज्ज़ौ-न मा कुन्तुम् तअ्-मलून (२८) हाज़ा किताबुना यन्तिक़ु अ़लैकुम् बिल्ह़क़्क़ि ط इन्ना कुन्ना नस्तन्सिख़ु मा कुन्तुम् तअ्-मलून (२६) फ़-अम्मल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति फ़-युद्ख़िलुहुम् रब्बुहुम् फ़ी रह़्मतिही ط ज़ालि-क हुवल्-फ़ौज़ुल्-मुबीन • (३०) व अम्मल्लज़ी-न क-फ़रू قف अ-फ़ लम् तकुन् आयाती तुत्ला अ़लैकुम् फ़स्तक्बर्तुम् व कुन्तुम् क़ौमम्-मुज्रिमीन (३१) व इज़ा क़ी-ल इन् - न वअ् - दल्लाहि ह़क़्क़ुंव्वस्साअ़तु ला रै-ब फ़ीहा क़ुल्तुम् मा नद्री मस्साअ़तु ۙ इन् नज़ुन्नु इल्ला ज़न्-नंव्-व मा नह़्नु बिमुस्तैक़िनीन (३२) व बदा-लहुम् सय्यिआतु मा अ़मिलू व ह़ा-क़ बिहिम् मा कानू बिही यस्तह्-ज़िऊन (३३) व क़ीलल्यौ-म नन्साकुम् कमा नसीतुम् लिक़ा-अ यौमिकुम् हाज़ा व मअ्वाकुमुन्नारु व मा लकुम् मिन् नासिरीन (३४) ज़ालिकुम् बि अन्नकुमुत्तख़ज़्तुम् आयातिल्लाहि हुज़ुवंव्-व ग़र्रत्-कुमुल्-ह़यातुद्दुन्या ج फ़ल्यौ-म ला युख़्-रजू-न मिन्हा व ला हुम् युस्तअ़्-तबून (३५) फ़लिल्लाहिल्-ह़म्दु रब्बिस्समावाति व रब्बिल्-अर्ज़ि रब्बिल्-आलमीन (३६) व लहुल्-किब्रियाउ फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि صلے व हुवल्-अ़ज़ीज़ुल्-ह़कीम ★ (३७)

عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ مَّا كَانَ حُجَّتَهُمْ اِلَّآ اَنْ قَالُوا ائْتُوْا بِاٰبَآىِٕنَآ اِنْ كُنْتُمْ
صٰدِقِيْنَ ۞ قُلِ اللّٰهُ يُحْيِيْكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يَجْمَعُكُمْ اِلٰى يَوْمِ
الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۞ وَلِلّٰهِ مُلْكُ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يَوْمَىِٕذٍ يَّخْسَرُ الْمُبْطِلُوْنَ ۞
وَتَرٰى كُلَّ اُمَّةٍ جَاثِيَةً ۫ كُلُّ اُمَّةٍ تُدْعٰۤى اِلٰى كِتٰبِهَا ؕ اَلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ
مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۞ هٰذَا كِتٰبُنَا يَنْطِقُ عَلَيْكُمْ بِالْحَقِّ ؕ اِنَّا كُنَّا
نَسْتَنْسِخُ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۞ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
فَيُدْخِلُهُمْ رَبُّهُمْ فِيْ رَحْمَتِهٖ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْمُبِيْنُ ۞ وَاَمَّا الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا ۫ اَفَلَمْ تَكُنْ اٰيٰتِيْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَاسْتَكْبَرْتُمْ وَكُنْتُمْ قَوْمًا
مُّجْرِمِيْنَ ۞ وَاِذَا قِيْلَ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّالسَّاعَةُ لَا رَيْبَ فِيْهَا
قُلْتُمْ مَّا نَدْرِيْ مَا السَّاعَةُ ۙ اِنْ نَّظُنُّ اِلَّا ظَنًّا وَّمَا نَحْنُ بِمُسْتَيْقِنِيْنَ ۞
وَبَدَا لَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا عَمِلُوْا وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۞ وَ
قِيْلَ الْيَوْمَ نَنْسٰىكُمْ كَمَا نَسِيْتُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا وَمَاْوٰىكُمُ النَّارُ وَ
مَا لَكُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ۞ ذٰلِكُمْ بِاَنَّكُمُ اتَّخَذْتُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ هُزُوًا وَّغَرَّتْكُمُ
الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۚ فَالْيَوْمَ لَا يُخْرَجُوْنَ مِنْهَا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ۞ فَلِلّٰهِ
الْحَمْدُ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَرَبِّ الْاَرْضِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۞ وَلَهُ الْكِبْرِيَآءُ
فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۪ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۞

★रु. ३/१६ आ ५ ★रु. ४/२० आ ११

सिर्फ़ अटकल से काम लेते हैं। (२४) और जब उन के सामने हमारी खुली-खुली आयतें पढ़ी जाती हैं, तो उन की यही हुज्जत होती है कि अगर सच्चे हो, तो हमारे बाप-दादा को (ज़िंदा कर) लाओ। (२५) कह दो कि ख़ुदा ही तुम को जान बख़्शता है, फिर (वही) तुम को मौत देता है, फिर तुम को क़ियामत के दिन, जिस (के आने) में कुछ शक नहीं, तुम को जमा करेगा, लेकिन बहुत से लोग नहीं जानते। (२६)★

और आसमानों और ज़मीन की बादशाही ख़ुदा ही की है और जिस दिन क़ियामत बरपा होगी, उस दिन अह्ले बातिल घाटे में पड़ जाएंगे। (२७) और तुम एक फ़िर्क़े को देखोगे कि घुटनों के बल बैठा होगा (और) हर एक जमाअत अपने (आमाल की) किताब की तरफ़ बुलायी जाएगी। जो कुछ तुम करते रहे हो, आज तुम को उस का बदला दिया जाएगा। (२८) यह हमारी किताब तुम्हारे बारे में सच-सच बयान कर देगी, जो कुछ तुम किया करते थे, हम लिखवाते जाते थे। (२९) तो जो लोग ईमान लाए और नेक काम करते रहे, उन का परवरदिगार उन्हें अपनी रहमत (के बाग़) में दाखिल करेगा। यही खुली कामियाबी है। (३०) और जिन्हों ने कुफ़्र किया, (उन से कहा जाएगा कि) भला हमारी आयतें तुम को पढ़ कर सुनायी नहीं जाती थीं ? मगर तुम ने तकब्बुर किया और तुम ना-फ़रमान लोग थे। (३१) और जब कहा जाता था कि ख़ुदा का वायदा सच्चा है और क़ियामत में कुछ शक नहीं, तो तुम कहते थे, हम नहीं जानते कि क़ियामत क्या है। हम उस का सिर्फ़ अटकल का ख़्याल करते हैं और हमें यक़ीन नहीं आता। (३२) और उन के आमाल की बुराइयां उन पर ज़ाहिर हो जाएंगी और जिस (अज़ाब) की वे हंसी उड़ाते थे, वह उन को आ घेरेगा। (३३) और कहा जाएगा कि जिस तरह तुम ने इस दिन के आने को भुला रखा था, उसी तरह आज हम तुम्हें भुला देंगे[1] और तुम्हारा ठिकाना दोज़ख है और कोई तुम्हारा मददगार नहीं।' (३४) यह इस लिए कि तुम ने ख़ुदा की आयतों को मज़ाक़ बना रखा था और दुनिया की ज़िंदगी ने तुम को धोखे में डाल रखा था, सो आज ये लोग न दोज़ख से निकाले जाएंगे और न उनकी तौबा क़ुबूल की जाएगी ? (३५) पस ख़ुदा ही के लिए हर तरह की तारीफ़ है, जो आसमानों का मालिक और तमाम ज़मीन का मालिक और तमाम जहान का परवरदिगार है। (३६) और आसमानों और ज़मीन में उसी के लिए बड़ाई है और वह ग़ालिब (और) हकीम है। (३७) ★

१. अल्लाह तआला भुलावेंगे यानी तुम पर मेहरबानी न करेंगे।

★रु. ३/१६ आ ५ ★रु. ४/२० आ ११

छब्बीसवां पारः हामीम

४६ सूरतुल-अह्क़ाफ़ि ६६

(मक्की) इस सूरः में अरबी के २७०६ अक्षर, ७५० शब्द, ३५ आयत और ४ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ●

हामीम्ठ (१) तन्ज़ीलुल्-किताबि मिनल्लाहिल्-अज़ीज़िल्-हकीम (२) मा ख़-लक़्नस्समावाति वल्अर्-ज़ व मा बैनहुमा इल्ला बिल्हक़्क़ि व अ-जलिम्-मुसम्मन्ॽ वल्लज़ी-न क-फ़रू अ़म्मा उन्ज़िरू मुअ्-रिज़ून (३) क़ुल् अ-रएतुम् मा तद्‌अू-न मिन् दूनिल्लाहि अरूनी माज़ा ख़-लक़ू मिनल्अर्ज़ि अम् लहुम् शिर्कुन् फ़िस्समावातिॽ ईतूनी बिकिताबिम्-मिन् क़ब्लि हाज़ा औ असारतिम्मिन् अि़ल्मिन् इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (४) व मन् अज़ल्लु मिम्मंय्यद्‌अू मिन् दूनिल्लाहि मल्ला यस्तजीबु लहू इला यौमिल्-क़ियामति व हुम् अन् दुआइहिम् ग़ाफ़िलून (५) व इज़ा हुशि-रन्नासु कानू लहुम् अअ्-दा-अंव्-व कानू बिअिबादति-हिम् काफ़िरीन (६) व इज़ा तुत्ला अ़लैहिम् आयातुना बय्यिनातिन् क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू लिल्हक़्क़ि लम्मा जा-अहुम्ॽ हाज़ा सिह्रुम्-मुबीनॽ (७) अम् यक़ूलूनफ़्तराहुॽ क़ुल् इनिफ़्-तरैतुहू फ़ला तम्लिकू-न ली मिनल्लाहि शैअन्ॽ हु-व अअ्-लमु बिमा तुफ़ीज़ू-न फ़ीहिॽ कफ़ा बिही शहीदम्-बैनी व बैनकुम्ॽ व हुवल्-ग़फ़ूरुर्रहीम (८) क़ुल् मा कुन्तु बिद्-अम्-मिनर्रुसुलि व मा अद्‌री मा युफ़्अलु बी व ला बिकुम्ॽ इन् अत्तबिअ़ु इल्ला मा यूहा इलय्-य व मा अ-न इल्ला नज़ीरुम्-मुबीन (९) क़ुल् अ-रऐतुम् इन् का-न मिन् अि़न्दिल्लाहि व क-फ़र्तुम् बिही व शहि-द शाहिदुम्-मिम्बनी इस्-राई-ल अ़ला मिस्लिही फ़-आ-म-न वस्तक्बर्तुम्ॽ इन्नल्ला-ह ला यह्दिल्-क़ौमज़्ज़ालिमीन ★ (१०)

سُوْرَةُ الْاَحْقَافِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ خَمْسٌ وَّثَلٰثُوْنَ اٰيَةً وَّاَرْبَعُ رُكُوْعَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

حٰمٓ ۝ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ۝ مَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَاۤ اِلَّا بِالْحَقِّ وَاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا
عَمَّاۤ اُنْذِرُوْا مُعْرِضُوْنَ ۝ قُلْ اَرَءَيْتُمْ مَّا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ
اَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقُوْا مِنَ الْاَرْضِ اَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمٰوٰتِ ؕ اِيْتُوْنِيْ
بِكِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ هٰذَاۤ اَوْ اَثٰرَةٍ مِّنْ عِلْمٍ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝
وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنْ يَّدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَنْ لَّا يَسْتَجِيْبُ لَهٗۤ اِلٰى
يَوْمِ الْقِيٰمَةِ وَهُمْ عَنْ دُعَآئِهِمْ غٰفِلُوْنَ ۝ وَاِذَا حُشِرَ النَّاسُ كَانُوْا
لَهُمْ اَعْدَآءً وَّكَانُوْا بِعِبَادَتِهِمْ كٰفِرِيْنَ ۝ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا
بَيِّنٰتٍ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ ۙ هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝ؕ
اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ اِنِ افْتَرَيْتُهٗ فَلَا تَمْلِكُوْنَ لِيْ مِنَ اللّٰهِ
شَيْـًٔا ؕ هُوَ اَعْلَمُ بِمَا تُفِيْضُوْنَ فِيْهِ ؕ كَفٰى بِهٖ شَهِيْدًا بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ؕ
وَهُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝ قُلْ مَا كُنْتُ بِدْعًا مِّنَ الرُّسُلِ وَمَاۤ اَدْرِيْ
مَا يُفْعَلُ بِيْ وَلَا بِكُمْ ؕ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰۤى اِلَيَّ وَمَاۤ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ
مُّبِيْنٌ ۝ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ وَكَفَرْتُمْ بِهٖ وَ
شَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْۢ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ عَلٰى مِثْلِهٖ فَاٰمَنَ وَاسْتَكْبَرْتُمْ ؕ

★रु. १/१ आ १०

४६ सूरः अह्क़ाफ़ ६६

सूरः अह्क़ाफ़ मक्की है और इस में पैंतीस आयतें और चार रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

हामीम, (१) (यह) किताब ख़ुदा-ए-ग़ालिब (और) हिक्मत वाले की तरफ़ से नाज़िल हुई है। (२) हमने आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ इन दोनों में है, हिक्मत के साथ और एक मुक़र्रर वक़्त तक के लिए पैदा किया है और काफ़िरों को जिस चीज़ की नसीहत की जाती है, उससे मुंह फेर लेते हैं। (३) कहो कि भला तुम ने उन चीज़ों को देखा है, जिन को तुम ख़ुदा के सिवा पुकारते हो। (ज़रा) मुझे भी तो दिखाओ कि उन्हों ने ज़मीन में कौन-सी चीज़ पैदा की है या आसमानों में उन की शिर्कत है। अगर सच्चे हो तो इस से पहले की कोई किताब मेरे पास लाओ या (नबियों के) इल्म (में) से कुछ लिखा चला आता हो, (तो उसे पेश करो।) (४) और उस शख़्स से बढ़ कर कौन गुमराह हो सकता है, जो ऐसे को पुकारे, जो क़ियामत तक उसे जवाब न दे सके और उन को उन के पुकारने ही की ख़बर न हो। (५) और जब लोग जमा किए जाएं, तो वे उन के दुश्मन होंगे और उन की इबादत से इंकार करेंगे। (६) और जब उन के सामने हमारी खुली आयतें पढ़ी जाती हैं, तो काफ़िर हक़ के बारे में, जब उन के पास आ चुका, कहते हैं कि यह तो खुला जादू है। (७) क्या ये कहते हैं कि उस ने इस को ख़ुद से बना लिया है? कह दो कि अगर मैं ने इस को अपनी तरफ़ से बनाया हो, तो तुम ख़ुदा के सामने मेरे (बचाव के) लिए कुछ अख़्तियार नहीं रखते। वह उस बात-चीत को ख़ूब जानता है, जो तुम उस के बारे में करते हो, वही मेरे और तुम्हारे दर्मियान गवाह काफ़ी है और वह बख़्शने वाला मेहरबान है। (८) कह दो कि मैं कोई नया पैग़म्बर नहीं आया और मैं नहीं जानता कि मेरे साथ क्या सुलूक किया जाएगा और तुम्हारे साथ क्या (किया जाएगा।) मैं तो उसी की पैरवी करता हूं, जो मुझ पर वह्य आती है और मेरा काम तो एलानिया हिदायत करना है। (९) कहो कि भला देखो तो अगर यह (क़ुरआन) ख़ुदा की तरफ़ से हो और तुम ने उस से इंकार किया और बनी इस्राईल में से एक गवाह इसी तरह की एक (किताब) की गवाही दे चुका और ईमान ले आया और तुम ने सरकशी की (तो तुम्हारे ज़ालिम होने में क्या शक है) बेशक ख़ुदा ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। (१०)★

★रु. १/१ आ १०

व क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू लिल्लज़ी-न आमनू लौ का-न ख़ैरम्मा स-बक़ूना इलैहि व इज़् लम् यह्-तदू बिही फ़-स-यक़ूलू-न हाज़ा इफ़्कुन् क़दीम (११) व मिन् क़ब्लिही किताबु मूसा इमामंव्-व रह्-म-तन् व हाज़ा किताबुम्-मुसद्-दिक़ुल्-लिसानन् अ-रबिय्यल्-लियुन्ज़ि-रल्लज़ी-न ज़-लमू व बुश्रा लिल्मुह्-सिनीन (१२)

إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۞ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ
آمَنُوا لَوْ كَانَ خَيْرًا مَا سَبَقُونَا إِلَيْهِ ۚ وَإِذْ لَمْ يَهْتَدُوا بِهِ فَسَيَقُولُونَ
هَٰذَا إِفْكٌ قَدِيمٌ ۞ وَمِنْ قَبْلِهِ كِتَابُ مُوسَىٰ إِمَامًا وَرَحْمَةً ۚ وَهَٰذَا
كِتَابٌ مُصَدِّقٌ لِسَانًا عَرَبِيًّا لِيُنْذِرَ الَّذِينَ ظَلَمُوا وَبُشْرَىٰ
لِلْمُحْسِنِينَ ۞ إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا فَلَا خَوْفٌ
عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۞ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ خَالِدِينَ فِيهَا
جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۞ وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ إِحْسَانًا
حَمَلَتْهُ أُمُّهُ كُرْهًا وَوَضَعَتْهُ كُرْهًا ۖ وَحَمْلُهُ وَفِصَالُهُ ثَلَاثُونَ شَهْرًا
حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ أَشُدَّهُ وَبَلَغَ أَرْبَعِينَ سَنَةً قَالَ رَبِّ أَوْزِعْنِي
أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِي أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلَىٰ وَالِدَيَّ وَأَنْ أَعْمَلَ
صَالِحًا تَرْضَاهُ وَأَصْلِحْ لِي فِي ذُرِّيَّتِي ۖ إِنِّي تُبْتُ إِلَيْكَ وَإِنِّي
مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۞ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ نَتَقَبَّلُ عَنْهُمْ أَحْسَنَ مَا عَمِلُوا
وَنَتَجَاوَزُ عَنْ سَيِّئَاتِهِمْ فِي أَصْحَابِ الْجَنَّةِ ۖ وَعْدَ الصِّدْقِ الَّذِي
كَانُوا يُوعَدُونَ ۞ وَالَّذِي قَالَ لِوَالِدَيْهِ أُفٍّ لَكُمَا أَتَعِدَانِنِي أَنْ
أُخْرَجَ وَقَدْ خَلَتِ الْقُرُونُ مِنْ قَبْلِي وَهُمَا يَسْتَغِيثَانِ اللَّهَ وَيْلَكَ
آمِنْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ فَيَقُولُ مَا هَٰذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۞
أُولَٰئِكَ الَّذِينَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِي أُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ

इन्नल्लज़ी-न क़ालू रब्बुनल्लाहु सुम्मस्तक़ामू फ़ला ख़ौफ़ुन् अलैहिम् व ला हुम् यह्-ज़नून (१३) उलाइ-क अस्ह़ाबुल्-जन्नति ख़ालिदी-न फ़ीहा जज़ा-अम्-बिमा कानू यअ्-मलून (१४) व वस्सैनल्-इन्सा-न बिवालिदैहि इह्सानन् ह़-म-लत्हु उम्मुहू कुर्-हंव्-व व-ज़-अत्हु कुर्-हन् व हम्-लुहू व फ़िसा-लुहू सलासू-न शह्-रन् ह़त्ता इज़ा ब-ल-ग़ अशुद्-दहू व ब-ल-ग़ अर्बई-न स-न-तन् क़ा-ल रब्बि औज़िअ्-नी अन् अश्कु-र निअ्-म-त-कल्लती अन्-अम्-त अ-लय्-य व अला वालिदय्-य व अन् अअ्-म-ल सालिहन् तर्ज़ाहु व अस्लिह् ली फ़ी ज़ुर्रिय्यती इन्नी तुब्तु इलै-क व इन्नी मिनल्-मुस्लिमीन (१५) उलाइ-कल्लज़ी-न न-त-क़ब्बलु अन्हुम् अह्-स-न मा अमिलू व न-त-जावज़ु अन् सय्यिआतिहिम् फ़ी अस्-ह़ाबिल्-जन्नति वअ्-दस्-सिद्क़िल्लज़ी कानू यूअदून (१६) वल्लज़ी क़ा-ल लिवालिदैहि उफ़्फ़िल्लकुमा अ-तअिदानिनी अन् उख़्-र-ज व क़द् ख़-लतिल्-क़ुरूनु मिन् क़ब्ली व हुमा यस्तग़ीसानिल्ला-ह वै-ल-क आमिन् इन्-न वअ्-दल्लाहि ह़क़्क़ुन् फ़-यक़ूलु मा हाज़ा इल्ला असातीरुल्-अव्वलीन (१७) उलाइ-कल्लज़ी-न ह़क़्-क़ अलैहिमुल्क़ौलु फ़ी उ-ममिन् क़द् ख़-लत् मिन् क़ब्लिहिम् मिनल्जिन्नि वल्इन्सि इन्नहुम् कानू ख़ासिरीन (१८)

और काफ़िर मोमिनों से कहते हैं कि अगर यह (दीन) कुछ बेहतर होता, तो ये लोग उस की तरफ़ हम से पहले न दौड़ पड़ते और जब वे इस से हिदायत न पा सके, तो अब कहेंगे कि यह पुराना झूठ है। (११) और इस से पहले मूसा की किताब थी (लोगों के लिए) रहनुमा और रहमत और यह किताब अरबी ज़ुबान में है उसी की तस्दीक़ करने वाली, ताकि ज़ालिमों को डराए और नेकी करने वालों को ख़ुशख़बरी सुनाए। (१२) जिन लोगों ने कहा कि हमारा परवरदिगार ख़ुदा है, फिर वे उस पर क़ायम रहे, तो उन को न कुछ ख़ौफ़ होगा और न वे ग़मनाक होंगे। (१३) यही जन्नत वाले हैं कि हमेशा इस में रहेंगे। (यह) उस का बदला है, जो वे किया करते थे। (१४) और हमने इंसान को अपने मां-बाप के साथ भलाई करने का हुक्म दिया। उस की मां ने उस को तक्लीफ़ से पेट में रखा और तक्लीफ़ ही से जना और उस का पेट में रहना और दूध छोड़ना ढाई वर्ष में होता है, यहां तक कि जब ख़ूब जवान होता और चालीस वर्ष को पहुंच जाता है, तो कहता है कि ऐ मेरे परवरदिगार ! मुझे तौफ़ीक़ दे कि तूने जो एहसान मुझ पर और मेरे मां-बाप पर किए हैं, उन का शुक्रगुज़ार हूं और यह कि नेक अमल करूं, जिन को तू पसन्द करे और मेरे लिए मेरी औलाद में इस्लाम (व तक़्वा) दे। मैं तेरी तरफ़ रुजूअ करता हूं और मैं फ़रमांबरदारों में हूं। (१५) यही लोग हैं, जिन के नेक अमल हम क़ुबूल करेंगे और उन के गुनाहों से दरगुज़र फ़रमाएंगे, (और यही) जन्नत वालों में (होंगे) (यह) सच्चा वायदा (है) जो उन से किया जाता था। (१६) और जिस शख़्स ने अपने मां-बाप से कहा कि उफ़ ! उफ़ !! तुम मुझे यह बताते हो कि मैं (ज़मीन से) निकाला जाऊंगा, हालांकि बहुत से लोग मुझ से पहले गुज़र चुके हैं और वे दोनों ख़ुदा की जनाब में फ़रियाद करते (हुए कहते) थे कि कमबख़्त ईमान ला। ख़ुदा का वायदा सच्चा है, तो कहने लगा, यह तो पहले लोगों की कहानियां हैं।[1] (१७) यही वे लोग हैं, जिन के बारे में जिन्नों और इंसानों की (दूसरी) उम्मतों में से, जो इन से पहले गुज़र चुकीं, अज़ाब का वायदा तहक़ीक़ हो गया। बेशक

---

१. यह उस का हाल है जो काफ़िर है और मां-बाप समझाते हैं ईमान की

व लिकुल्लिन् द-र-जातुम्-मिम्मा अ़मिलू॰ व लियुवफ़्फ़ि-यहुम् अअ्-मालहुम् व हुम् ला युज़्-लमून (१९) व यौ-म युअ्-रज़ुल्लज़ी-न क-फ़रू अ़लन्नारि॰ अज़्-हब्तुम् तय्यिबातिकुम् फ़ी ह़यातिकुमुद्दुन्या वस्तम्तअ्-तुम् बिहा॰ फ़ल्यौ-म तुज्ज़ौ-न अ़ज़ाबल्-हूनि बिमा कुन्तुम् तस्तक्बिरू-न फ़िल्अर्ज़ि बिग़ैरिल्-ह़क़्क़ि व बिमा कुन्तुम् तफ़्सुक़ून ★ (२०) वज़्कुर् अख़ा आ़दिन्॰ इज़् अन्ज़-र क़ौमहू बिल्-अह्क़ाफ़ि व क़द् ख़-लतिन्नुज़ुरु मिम्बैनि यदैहि व मिन् ख़ल्फ़िही अल्ला तअ्-बुदू इल्लल्ला-ह॰ इन्नी अख़ाफ़ु अ़लैकुम् अ़ज़ा-ब यौमिन् अ़ज़ीम (२१) क़ालू अजिअ्-तना लितअ्-फ़िकना अ़न् आलिहतिना॰ फ़अ्-तिना बिमा तअ़िदुना इन् कुन्-त मिनस्-सादिक़ीन (२२) क़ा-ल इन्नमल्-इ़ल्मु अ़िन्दल्लाहि॰ व उबल्लिग़ुकुम् मा उर्सिल्तु बिही व लाकिन्नी अराकुम् क़ौमन् तज्-हलून (२३) फ़-लम्मा रऔहु आ़रिज़म्-मुस्तक़्बि-ल औदियतिहिम्॰ क़ालू हाज़ा आ़रिज़ुम्-मुम्तिरुना॰ बल् हु-व मस्तअ्-जल्तुम् बिही॰ रीहुन् फ़ीहा अ़ज़ाबुन् अलीम॰ (२४) तुदम्मिरु कुल्-ल शैइम्-बिअम्रि रब्बिहा फ़-अस्बहू ला युरा इल्ला मसाकिनुहुम्॰ कज़ालि-क नज्ज़िल्-क़ौमल्-मुज्रिमीन (२५) व ल-क़द् मक्कन्नाहुम् फ़ीमा इम्मकन्ना-कुम् फ़ीहि व ज-अ़ल्ना लहुम् सम्-अ़ंव्-व अब्सारंव्-व अफ़्इ-द-तन्॰ फ़मा अग़्ना अ़न्हुम् सम्अ़ुहुम् व ला अब्सारुहुम् व ला अफ़्इदतुहुम् मिन् शैइन् इज़् कानू यज्-हदू-न॰ बिआयातिल्लाहि व हा-क़ बिहिम् मा कानू बिही यस्तह्ज़िऊन ★ (२६) व ल-क़द् अह्-लक्ना मा ह़ौलकुम् मिनल्क़ुरा व सर्रफ़्नल्-आयाति ल-अ़ल्लहुम् यर्जिऊन (२७) फ़लौला न-स़-रहुमुल्-लज़ीनत्त-ख़ज़ू मिन् दूनिल्लाहि क़ुर्बानन् आलि-ह-तन्॰ बल् ज़ल्लू अ़न्हुम्॰ व ज़ालि-क इफ़्कुहुम् व मा कानू यफ़्तरून (२८)

مِّنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا خٰسِرِينَ ﴿١٨﴾ وَلِكُلٍّ دَرَجٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوا
وَلِيُوَفِّيَهُمْ أَعْمَالَهُمْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿١٩﴾ وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِينَ كَفَرُوا
عَلَى النَّارِ ۖ أَذْهَبْتُمْ طَيِّبٰتِكُمْ فِي حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُمْ بِهَا ۚ فَالْيَوْمَ
تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُونِ بِمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ
وَبِمَا كُنْتُمْ تَفْسُقُونَ ﴿٢٠﴾ وَاذْكُرْ أَخَا عَادٍ ۖ إِذْ أَنْذَرَ قَوْمَهُ بِالْأَحْقَافِ
وَقَدْ خَلَتِ النُّذُرُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا اللّٰهَ
إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿٢١﴾ قَالُوا أَجِئْتَنَا لِتَأْفِكَنَا عَنْ
آلِهَتِنَا فَأْتِنَا بِمَا تَعِدُنَا إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِينَ ﴿٢٢﴾ قَالَ إِنَّمَا الْعِلْمُ
عِنْدَ اللّٰهِ ۖ وَأُبَلِّغُكُمْ مَا أُرْسِلْتُ بِهِ وَلٰكِنِّي أَرٰىكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُونَ ﴿٢٣﴾
فَلَمَّا رَأَوْهُ عَارِضًا مُسْتَقْبِلَ أَوْدِيَتِهِمْ قَالُوا هٰذَا عَارِضٌ مُمْطِرُنَا ۚ
بَلْ هُوَ مَا اسْتَعْجَلْتُمْ بِهِ ۖ رِيحٌ فِيهَا عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٢٤﴾ تُدَمِّرُ كُلَّ شَيْءٍ
بِأَمْرِ رَبِّهَا فَأَصْبَحُوا لَا يُرٰى إِلَّا مَسٰكِنُهُمْ ۚ كَذٰلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ
الْمُجْرِمِينَ ﴿٢٥﴾ وَلَقَدْ مَكَّنّٰهُمْ فِيمَا إِنْ مَكَّنّٰكُمْ فِيهِ وَجَعَلْنَا لَهُمْ
سَمْعًا وَأَبْصَارًا وَأَفْئِدَةً فَمَا أَغْنٰى عَنْهُمْ سَمْعُهُمْ وَلَا أَبْصَارُهُمْ وَلَا
أَفْئِدَتُهُمْ مِنْ شَيْءٍ إِذْ كَانُوا يَجْحَدُونَ بِآيٰتِ اللّٰهِ وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا
بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ﴿٢٦﴾ وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا مَا حَوْلَكُمْ مِنَ الْقُرٰى وَصَرَّفْنَا
الْآيٰتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٢٧﴾ فَلَوْلَا نَصَرَهُمُ الَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ

★रु. २/२ आ १०   ★रु. ३/३ आ ६

वे नुक़सान उठाने वाले थे। (१८) और लोगों ने जैसे काम किए होंगे, उन के मुताबिक़ दर्जे होंगे, (ग़रज़ यह है) कि उन को उन के आमाल का पूरा बदला दे और उन का नुक़सान न किया जाए। (१९) और जिस दिन काफ़िर दोज़ख़ के सामने किए जाएंगे, (तो कहा जाएगा कि) तुम अपनी दुनिया की ज़िंदगी में लज़्ज़तें हासिल कर चुके और उन से फ़ायदा उठा चुके, सो आज तुम को ज़िल्लत का अज़ाब है, (यह) इस की सज़ा (है) कि तुम ज़मीन में ना-हक़ घमंड किया करते थे और इस की कि बद-किरदारी करते थे। (२०)★

और (क़ौमे) आद के भाई (हूद) को याद करो, कि जब उन्हों ने अपनी क़ौम को अह्क़ाफ़ की सर-ज़मीन में हिदायत की और उन से पहले और पीछे भी हिदायत करने वाले गुज़र चुके थे कि ख़ुदा के सिवा किसी की इबादत न करो। मुझे तुम्हारे बारे में बड़े दिन के अज़ाब का डर लगता है। (२१) कहने लगे, क्या तुम हमारे पास इसलिए आए हो कि हम को हमारे माबूदों से फेर दो। अगर सच्चे हो, तो जिस चीज़ से हमें डराते हो, उसे हम पर ले आओ। (२२) उन्हों ने कहा कि (इस का) इल्म तो ख़ुदा ही को है और मैं तो जो (हुक्म) दे कर भेजा गया हूं, वह तुम्हें पहुंचा रहा हूं, लेकिन मैं देखता हूं कि तुम लोग नादानी में फंस रहे हो। (२३) फिर जब उन्हों ने उस (अज़ाब) को देखा कि बादल (की सूरत में) उन के मैदानों की तरफ़ आ रहा है, तो कहने लगे, यह तो बादल है, जो हम पर बरस कर रहेगा, (नहीं,) बल्कि (यह) वह चीज़ है, जिस के लिए तुम जल्दी करते थे यानी आंधी, जिस में दर्द देने वाला अज़ाब भरा हुआ है, (२४) हर चीज़ को अपने परवरदिगार के हुक्म से तबाह किए देती है, तो वे ऐसे हो गये कि उन के घरों के सिवा कुछ नज़र ही न आता था। गुनाहगार लोगों को हम इसी तरह सज़ा दिया करते हैं। (२५) और उनको हम ने ऐसी क़ुदरतें दे दी थीं, जो तुम लोगों को नहीं दीं और उन्हें कान और आंखें और दिल दिए थे, तो जब कि वे ख़ुदा की आयतों से इंकार करते थे, तो न तो उन के कान ही उन के कुछ काम आ सके और न आंखें और न दिल और जिस चीज़ का मज़ाक़ उड़ाया करते थे, उस ने उन को आ घेरा। (२६)★

और तुम्हारे आस-पास की बस्तियों को हमने हलाक कर दिया और बार-बार (अपनी) निशानियां ज़ाहिर कर दीं, ताकि वे रुजूअ करें। (२७) तो जिन को उन लोगों ने (ख़ुदा की) नज़दीकी के लिए ख़ुदा के सिवा माबूद बनाया था, उन्हों ने उन की क्यों मदद न की? बल्कि वे उन (के सामने) से गुम हो गये और यह उन का झूठ था और यही वे झूठ गढ़ा करते थे। (२८)

★रु. २/२ आ १० ★रु. ३/३ आ ६

व इज़् स-रफ़्ना इलै-क न-फ़-रम्-मिनल्-जिन्नि यस्तमिअूनल्-क़ुर्आ-न फ़-लम्मा ह-ज़रूहु क़ालू अन्सितू फ़-लम्मा क़ुज़ि-य वल्लौ इला क़ौमिहिम् मुन्ज़िरीन (२९) क़ालू या क़ौमना इन्ना समिअ्-ना किताबन् उन्ज़ि-ल मिम्बअ्-दि मूसा मुसद्-दि-क़लिमा बै-न यदैहि यह्दी इलल्हक़्क़ि व इला तरीक़िम्-मुस्तक़ीम (३०) या क़ौमना अजीबू दाअि-यल्लाहि व आमिनू बिही यग़्फ़िर्-लकुम् मिन् ज़ुनूबिकुम् व युजिर्कुम् मिन् अ़ज़ाबिन् अलीम (३१) व मल्ला युजिब् दाअि-यल्लाहि फ़लै-स बिमुअ्-जिज़िन् फ़िल्अर्ज़ि व लै-स लहू मिन् दूनिही औलियाउ उलाइ-क फ़ी ज़लालिम्-मुबीन (३२) अ-व लम् यरौ अन्नल्लाहल्लज़ी ख़-ल-क़स्समा-वाति वल्अर्-ज़ व लम् यअ्-य बिख़ल्क़िहिन्-न बिक़ादिरिन् अला अंय्युह्यि-यल्-मौता बला इन्नहू अला कुल्लि शैइन् क़दीर (३३) व यौ-म युअ्-रज़ुल्लज़ी-न क-फ़रू अलन्नारि अलै-स हाज़ा बिल्हक़्क़ि क़ालू बला व रब्बिना क़ा-ल फ़ज़ूक़ुल्-अ़ज़ा-ब बिमा कुन्तुम् तक्फ़ुरून (३४) फ़स्बिर् कमा स-ब-र उलुल्-अ़ज़्मि मिनर्रुसुलि व ला तस्तअ्-जिल् लहुम् क-अन्नहुम् यौ-म यरौ-न मा यूअ़दू-न लम् यल्बसू इल्ला साअ़तम्-मिन् नहारिन् बलाग़ुन् फ़-हल् युह्लकु इल्लल् - क़ौमुल् - फ़ासिक़ून ★ ●(३५)

اللّٰهِ قُرْبَانًا اٰلِهَةً ۭ بَلْ ضَلُّوْا عَنْهُمْ ۚ وَذٰلِكَ اِفْكُهُمْ وَمَا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٢٨﴾
وَاِذْ صَرَفْنَآ اِلَيْكَ نَفَرًا مِّنَ الْجِنِّ يَسْتَمِعُوْنَ الْقُرْاٰنَ ۚ فَلَمَّا حَضَرُوْهُ قَالُوْٓا
اَنْصِتُوْا ۚ فَلَمَّا قُضِيَ وَلَّوْا اِلٰى قَوْمِهِمْ مُّنْذِرِيْنَ ﴿٢٩﴾ قَالُوْا يٰقَوْمَنَآ اِنَّا
سَمِعْنَا كِتٰبًا اُنْزِلَ مِنْ بَعْدِ مُوْسٰى مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ يَهْدِيْٓ
اِلَى الْحَقِّ وَاِلٰى طَرِيْقٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٣٠﴾ يٰقَوْمَنَآ اَجِيْبُوْا دَاعِيَ اللّٰهِ وَاٰمِنُوْا
بِهٖ يَغْفِرْ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَيُجِرْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٣١﴾ وَمَنْ لَّا
يُجِبْ دَاعِيَ اللّٰهِ فَلَيْسَ بِمُعْجِزٍ فِي الْاَرْضِ وَلَيْسَ لَهٗ مِنْ دُوْنِهٖٓ
اَوْلِيَاۗءُ ۭ اُولٰۗىِٕكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٣٢﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِيْ خَلَقَ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَلَمْ يَعْيَ بِخَلْقِهِنَّ بِقٰدِرٍ عَلٰٓي اَنْ يُّحْيِۦ الْمَوْتٰى
بَلٰٓى اِنَّهٗ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٣٣﴾ وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَلَي
النَّارِ ۭ اَلَيْسَ هٰذَا بِالْحَقِّ ۭ قَالُوْا بَلٰى وَرَبِّنَا ۭ قَالَ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ
بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿٣٤﴾ فَاصْبِرْ كَمَا صَبَرَ اُولُوا الْعَزْمِ مِنَ الرُّسُلِ وَلَا
تَسْتَعْجِلْ لَّهُمْ ۭ كَاَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَ مَا يُوْعَدُوْنَ ۙ لَمْ يَلْبَثُوْٓا اِلَّا سَاعَةً
مِّنْ نَّهَارٍ ۭ بَلٰغٌ ۚ فَهَلْ يُهْلَكُ اِلَّا الْقَوْمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٣٥﴾
سُوْرَةُ مُحَمَّدٍ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ ثَمَانٌ وَّثَلٰثُوْنَ اٰيَةً وَّاَرْبَعُ رُكُوْعَاتٍ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَضَلَّ اَعْمَالَهُمْ ﴿١﴾ وَالَّذِيْنَ

४७ सूरतु मुहम्मदिन् ९५

(मदनी) इस सूरः में अरबी के २४७५ अक्षर, ५५८ शब्द, ३८ आयतें और ४ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम •

अल्लज़ी-न क फ़रू व सद्दू अन् सबीलिल्लाहि अ-ज़ल्-ल अअ्-मालहुम् (१)

★रु. ४/४ आ ६

और जब हमने जिन्नों में से कई शख्स तुम्हारी तरफ़ मुतवज्जह किये कि क़ुरआन सुनें, जब वे उस के पास आए, तो (आपस में) कहने लगे कि खामोश रहो। जब (पढ़ना) तमाम् हुआ तो अपनी बिरादरी के लोगों में वापस गये कि (उन को) नसीहत करें। (२९) कहने लगे कि ऐ क़ौम! हमने एक किताब सुनी है, जो मूसा के बाद नाज़िल हुई है, जो (किताबें) इस से पहले (नाज़िल हुई) हैं, उन की तस्दीक़ करती है (और) सच्चा (दीन) और सीधा रास्ता बताती है। (३०) ऐ क़ौम! खुदा की तरफ़ बुलाने वाले की बात को क़ुबूल करो और उस पर ईमान लाओ। खुदा तुम्हारे गुनाह बख्श देगा और तुम्हें दुख देने वाले अज़ाब से पनाह में रखेगा। (३१) और जो शख्स खुदा की तरफ़ बुलाने वाले की बात क़ुबूल न करेगा, तो वह ज़मीन में (खुदा को) आजिज़ नहीं कर सकेगा और न उस के सिवा उस के हिमायती होंगे। ये लोग खुली गुमराही में हैं। (३२) क्या उन्हों ने नहीं समझा कि जिस खुदा ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और उन के पैदा करने से थका नहीं, वह इस (बात) पर भी क़ुदरत रखता है कि मुर्दों को ज़िंदा कर दे हां, (हां,) वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। (३३) और जिस दिन इंकार करने वाले आग के सामने किए जाएंगे, क्या यह हक़ नहीं? तो कहेंगे, क्यों नहीं, हमारे परवरदिगार की क़सम (हक़ है।) हुक्म होगा कि तुम जो (दुनिया में) इंकार किया करते थे, (अब) अज़ाब के मज़े चखो।(३४) पस (ऐ मुहम्मद !) जिस तरह और बुलंद हिम्मत पैग़म्बर सब्र करते रहे है, उसी तरह तुम भी सब्र करो और उन के लिए (अज़ाब) जल्दी न मांगो। जिस दिन ये उस चीज़ को देखेंगे, जिस का उन से वायदा किया जाता है, तो (ख्याल करेंगे कि) गोया (दुनिया में) रहे ही न थे, मगर घड़ी भर दिन। यह (क़ुरआन) पैग़ाम है, सो (अब) वही हलाक होंगे जो नाफ़रमान थे। (३५) ★ ●

४७ सूरः मुहम्मद ९५

सूरः मुहम्मद मदनी है और इस में ३८ आयतें और चार रुकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

जिन लोगों ने कुफ़्र किया और (औरों को) खुदा के रास्ते से रोका, खुदा ने उन के आमाल

वल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति व आमनू बिमा नुज़्ज़ि-ल अ़ला मुहम्मदिंव-व हुवल्हक़्क़ु मिर्रब्बिहिम् कफ़्फ़-र अ़न्हुम् सय्यिआतिहिम् व अस्ल-ह बालहुम् (२) ज़ालि-क बि-अन्नल्लज़ी-न क-फ़रुत्त-बअ़ुल्-बाति-ल व अन्नल्लज़ी-न आमनुत्त-बअ़ुल्-हक़्-क़ मिर्-रब्बिहिम् ط कज़ालि-क यज़्रिबुल्लाहु लिन्नासि अम्सालहुम् (३) फ़-इज़ा लक़ीतुमुल्लज़ी-न क-फ़रू फ़-ज़र्-बर्रिक़ाबि ط हत्ता इज़ा अस्ख़न्तुमूहुम् फ़शुद्दुल्-वसा-क़ ق फ़-इम्मा मन्नम्बअ्-दु व इम्मा फ़िदा-अन् हत्ता त-ज़-अल्-हर्बु औज़ारहा ج ज़ालि-क ط व लौ यशा-उल्लाहु लन्त-स-र मिन्हुम् व लाकिल्लियब्लु-व बअ़्-ज़कुम् बिबअ़्-ज़िन् ط वल्लज़ी-न क़ुतिलू फ़ी सबीलिल्लाहि फ़लंय्युज़िल-ल अअ़्-मालहुम् (४) स-यह्दीहिम् व युस्लिहु बालहुम् ج (५) व युद्ख़िलुहुमुल-जन्न-त अर्र-फ़हा लहुम् (६) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इन् तन्सुरुल्ला-ह यन्सुर्-कुम् व युसब्बित् अक़्दामकुम् (७) वल्लज़ी-न क-फ़रू फ़-तअ़्-सल्लहुम् व अ-ज़ल्-ल अअ़्-मालहुम् (८) ज़ालि-क बिअन्नहुम् करिहू मा अन्ज़-लल्लाहु फ़-अह्-ब-त अअ़्-मा-ल-हुम् (९) अ-फ़-लम् यसीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़यन्ज़ुरू कै-फ़ का-न आ़क़िबतुल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् ط दम्म-रल्लाहु अ़लैहिम् व लिलकाफ़िरी-न अम्सालुहा (१०) ज़ालि-क बि-अन्नल्ला-ह मौलल्लज़ी-न आमनू व अन्नल्-काफ़िरी-न ला मौला लहुम् ★ (११) इन्नल्ला-ह युद्-ख़िलुल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति जन्नातिन् तजरी मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ط वल्लज़ी-न क-फ़रू य-त-मत्तअ़ू-न व यअ्कुलू-न कमा तअ्कुलुल्-अन्आ़मु वन्नारु मस्वल्-लहुम् (१२) व क-अय्यिम्-मिन् क़र-यतिन् हि-य अशद्दु क़ुव्वतम्-मिन् क़र्यति-कल्लती अख़्-र-जत्-क अह्-लक्नाहुम् फ़ला नासि-र लहुम् (१३) अ-फ़ मन् का-न अ़ला बय्यिनतिम्-मिर्रब्बिही क-मन् ज़ुय्यि-न लहू सूउ अ़-मलिही वत्त-ब-अ़ू अह्-वा-अहुम् (१४)

اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاٰمَنُوْا بِمَا نُزِّلَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّهُوَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ
كَفَّرَ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَاَصْلَحَ بَالَهُمْ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوا اتَّبَعُوا
الْبَاطِلَ وَاَنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّبَعُوا الْحَقَّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۭ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ
لِلنَّاسِ اَمْثَالَهُمْ ۝ فَاِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَضَرْبَ الرِّقَابِ ۭ حَتّٰٓى اِذَآ
اَثْخَنْتُمُوْهُمْ فَشُدُّوا الْوَثَاقَ ۙ فَاِمَّا مَنًّۢا بَعْدُ وَاِمَّا فِدَاۗءً حَتّٰى تَضَعَ
الْحَرْبُ اَوْزَارَهَا ڗ ذٰلِكَ ڔ وَلَوْ يَشَاۗءُ اللّٰهُ لَانْتَصَرَ مِنْهُمْ وَلٰكِنْ لِّيَبْلُوَا
بَعْضَكُمْ بِبَعْضٍ ۭ وَالَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَلَنْ يُّضِلَّ اَعْمَالَهُمْ ۝
سَيَهْدِيْهِمْ وَيُصْلِحُ بَالَهُمْ ۝ وَيُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ عَرَّفَهَا لَهُمْ ۝ يٰٓاَيُّهَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تَنْصُرُوا اللّٰهَ يَنْصُرْكُمْ وَيُثَبِّتْ اَقْدَامَكُمْ ۝ وَالَّذِيْنَ
كَفَرُوْا فَتَعْسًا لَّهُمْ وَاَضَلَّ اَعْمَالَهُمْ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَرِهُوْا مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ
فَاَحْبَطَ اَعْمَالَهُمْ ۝ اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۭ دَمَّرَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ۡ وَلِلْكٰفِرِيْنَ اَمْثَالُهَا ۝
ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ مَوْلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَاَنَّ الْكٰفِرِيْنَ لَا مَوْلٰى لَهُمْ ۝ اِنَّ
اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا
الْاَنْهٰرُ ۭ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَتَمَتَّعُوْنَ وَيَاْكُلُوْنَ كَمَا تَاْكُلُ الْاَنْعَامُ وَالنَّارُ
مَثْوًى لَّهُمْ ۝ وَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ هِىَ اَشَدُّ قُوَّةً مِّنْ قَرْيَتِكَ الَّتِيْٓ
اَخْرَجَتْكَ ۚ اَهْلَكْنٰهُمْ فَلَا نَاصِرَ لَهُمْ ۝ اَفَمَنْ كَانَ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ

∴ मु. अि मु ता ख़. १३ ★रु. १/५ आ ११

बर्बाद कर दिए। (१) और जो ईमान लाये और नेक अमल करते रहे और जो (किताब) मुहम्मद पर नाज़िल हुई, उसे मानते रहे और वह उन के परवरदिगार की तरफ़ से बर-हक़ है, उन से उन के गुनाह दूर कर दिए और उन की हालत संवार दी। (२) यह (अमल की बर्बादी और इस्लाहे हाल) इसलिए है कि जिन लोगों ने कुफ़्र किया, उन्हों ने झूटी बात की पैरवी की और जो ईमान लाए, वे अपने परवरदिगार की तरफ़ से (दीने) हक़ के पीछे चले। इसी तरह ख़ुदा लोगों से उन के हालात बयान फ़रमाता है। (३) जब तुम काफ़िरों से भिड़ जाओ, तो उन की गरदनें उड़ा दो, यहां तक कि जब उन को ख़ूब क़त्ल कर चुको तो (जो ज़िंदा पकड़े जाएं, उन को) मज़बूती से क़ैद कर लो, फिर इस के बाद या तो एहसान रख कर छोड़ देना चाहिए या कुछ माल ले कर, यहां तक कि (मुख़ालिफ़ फ़रीक़) लड़ाई (के) हथियार (हाथ से) रख दे।"यह (हुक्म याद रखो)"और अगर ख़ुदा चाहता तो (और तरह) उन से बदले ले लेता, लेकिन उस ने चाहा कि तुम्हारी आज़माइश एक (को) दूसरे से (लड़वा कर) करे और जो लोग ख़ुदा की राह में मारे गये, उन के अमलों को हरगिज़ बर्बाद नहीं करेगा। (४) (बल्कि) उनको सीधे रास्ते पर चलाएगा और उनकी हालत दुरुस्त कर देगा। (५) और उन को बहिश्त में, जिस से उन को पहचनवा रखा है, दाख़िल करेगा। (६) ऐ अह्ले ईमान! अगर तुम ख़ुदा की मदद करोगे, तो वह भी तुम्हारी मदद करेगा और तुम को साबित क़दम रखेगा। (७) और जो काफ़िर हैं, उन के लिए हलाकत है और वह उन के आमाल को बर्बाद कर देगा। (८) यह इसलिए कि ख़ुदा ने जो चीज़ नाज़िल फ़रमायी, उन्हों ने उस को नापसन्द किया, तो ख़ुदा ने उन के आमाल अकारथ कर दिए। (९) क्या उन्हों ने मुल्क में सैर नहीं की, ताकि देखते कि जो लोग उन से पहले थे, उन का अंजाम कैसा हुआ? ख़ुदा ने उन पर तबाही डाल दी और इसी तरह का (अज़ाब) उन काफ़िरों को होगा। (१०) यह इसलिए कि जो मोमिन हैं, उन का ख़ुदा कारसाज़ है और काफ़िरों का कोई कारसाज़ नहीं। (११)★

जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, उन को ख़ुदा बहिश्तों में, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, दाख़िल फ़रमाएगा। और जो काफ़िर हैं, वे फ़ायदे उठाते हैं और (इस तरह) खाते हैं, जैसे हैवान खाते हैं और उन का ठिकाना दोज़ख़ है। (१२) और बहुत-सी बस्तियां तुम्हारी बस्ती से जिस (के बाशिंदों) ने तुम्हें (वहां से) निकाल दिया, ज़ोर व ताक़त में कहीं बढ़ कर थीं। हमने उन का सत्यानाश कर दिया और उन का कोई मददगार न हुआ। (१३) भला जो शख़्स अपने परवरदिगार (की मेहरबानी) से खुले रास्ते पर (चल रहा) हो, वह उन की तरह (हो सकता) है जिन के बुरे आमाल उन्हें अच्छे कर के दिखाए जाएं और जो अपनी ख़्वाहिशों की पैरवी करें। (१४)

"मु. अि मु. ता ख़. १३ ★रु. १/५ आ ११

म-सलुल्-जन्नतिल्लती वुअिदल्-मुत्तक़ू-न ط फ़ीहा अन्हारुम्-मिम्-मा-इन् ग़ैरि आसिनिन् ج व अन्हारुम्-मिल्-ल-बनिल्-लम् य-त-ग़य्यर् तअ्-मुहू ج व अन्हारुम्-मिन् ख़म्रिल्-लज़्ज़तिल्-लिश्शारिबीन ج व अन्हारुम्-मिन् अ़-सलिम्-मुसफ़्फ़न् ط व लहुम् फ़ीहा मिन् कुल्लिस्स-मराति व मग़्फ़ि-रतुम्-मिर्रब्बिहिम् ط क-मन् हु-व ख़ालिदुन् फ़िन्नारि व सुक़ू मा-अन् ह़मीमन् फ़-क़त्त-अ अम्आ-अहुम् (१५) व मिन्हुम् मंय्यस्तमिअु इलै-क ج हत्ता इज़ा ख-रजू मिन् अिन्दि-क क़ालू लिल्लज़ी-न ऊतुल्-अिल्-म माज़ा क़ा-ल आनिफ़न् قف उलाइ-कल्लज़ी-न त-ब-अल्लाहु अ़ला क़ुलूबिहिम् वत्त-बअू अह्वा-अहुम् (१६) वल्लज़ीनह-तदौ ज़ा-दहुम् हुदंव्-व आताहुम् तक़्-वाहुम् (१७) फ़-हल् यन्ज़ुरू-न इल्लस्सा-अ-त अन् तअ्-ति-यहुम् बग़्-त-तन् ج फ़-क़द् जा-अ अश-रातुहा ج फ़-अन्ना लहुम् इज़ा जा-अत्हुम् ज़िक्राहुम् (१८) फ़अ्-लम् अन्नहू ला इला-ह इल्लल्-लाहु वस्तग़्फ़िर् लिज़म्बि-क व लिल्मुअ्मिनी-न वल्मुअ्मिनाति ط वल्लाहु यअ्-लमु मु-त-क़ल्ल-बकुम् व मस्वाकुम् ★ (१९) व यक़ूलुल्-लज़ी-न आमनू लौला नुज़्ज़िलत् सू-रतुन् ج फ़-इज़ा उन्ज़िलत् सूरतुम्-मुह़्-क-मतुंव्-व ज़ुकि-र फ़ीहल्क़ितालु ۙ रऐतल्लज़ी-न फ़ी क़ुलूबिहिम् म-र-ज़ुंय्यन्ज़ुरू-न इलै-क न-ज़-रल्-मग़्शिय्यि अ़लैहि मिनल्मौति ط फ़-औला लहुम् ج (२०) ता-अतुंव्-व क़ौलुम्-मअ्-रूफ़ुन् قف फ़-इज़ा अ-ज़-मल्-अम्रु قف फ़लौ स-दक़ुल्ला-ह लका-न ख़ैरल्लहुम् ج (२१) फ़-हल् असैतुम् इन् त-वल्लैतुम् अन् तुफ़्सिदू फ़िल्अर्ज़ि व तुक़त्तिअू अर्-हामकुम् (२२) उलाइकल्लज़ी-न ल-अ़-नहुमुल्लाहु फ़-असम्महुम् व अअ्-मा अब्सा-रहुम् (२३) अ फ़-ला य-त-दब्बरूनल् - क़ुरआ-न अम् अ़ला क़ुलूबिन् अक़्-फ़ालुहा (२४)

كَمَنْ زُيِّنَ لَهٗ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ وَاتَّبَعُوْٓا اَهْوَآءَهُمْ ۝ مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِيْ وُعِدَ
الْمُتَّقُوْنَ ۭ فِيْهَآ اَنْهٰرٌ مِّنْ مَّآءٍ غَيْرِ اٰسِنٍ ۚ وَاَنْهٰرٌ مِّنْ لَّبَنٍ لَّمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهٗ
وَاَنْهٰرٌ مِّنْ خَمْرٍ لَّذَّةٍ لِّلشّٰرِبِيْنَ ڬ وَاَنْهٰرٌ مِّنْ عَسَلٍ مُّصَفًّى ۭ وَلَهُمْ
فِيْهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ وَمَغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ ۭ كَمَنْ هُوَ خَالِدٌ فِي النَّارِ وَ
سُقُوْا مَآءً حَمِيْمًا فَقَطَّعَ اَمْعَآءَهُمْ ۝ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُ اِلَيْكَ ۚ حَتّٰٓى اِذَا
خَرَجُوْا مِنْ عِنْدِكَ قَالُوْا لِلَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ مَاذَا قَالَ اٰنِفًا ۣ اُولٰۗىِٕكَ
الَّذِيْنَ طَبَعَ اللّٰهُ عَلٰي قُلُوْبِهِمْ وَاتَّبَعُوْٓا اَهْوَآءَهُمْ ۝ وَالَّذِيْنَ اهْتَدَوْا زَادَهُمْ
هُدًى وَّاٰتٰىهُمْ تَقْوٰىهُمْ ۝ فَهَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا السَّاعَةَ اَنْ تَاْتِيَهُمْ بَغْتَةً ۚ
فَقَدْ جَاۗءَ اَشْرَاطُهَا ۚ فَاَنّٰى لَهُمْ اِذَا جَاۗءَتْهُمْ ذِكْرٰىهُمْ ۝ فَاعْلَمْ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ
اِلَّا اللّٰهُ وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ۭ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مُتَقَلَّبَكُمْ
وَمَثْوٰىكُمْ ۝ وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَوْلَا نُزِّلَتْ سُوْرَةٌ ۚ فَاِذَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ
مُّحْكَمَةٌ وَّذُكِرَ فِيْهَا الْقِتَالُ ۙ رَاَيْتَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ يَّنْظُرُوْنَ
اِلَيْكَ نَظَرَ الْمَغْشِيِّ عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ۭ فَاَوْلٰى لَهُمْ ۝ طَاعَةٌ وَّقَوْلٌ
مَّعْرُوْفٌ ۣ فَاِذَا عَزَمَ الْاَمْرُ ۣ فَلَوْ صَدَقُوا اللّٰهَ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ۝ فَهَلْ
عَسَيْتُمْ اِنْ تَوَلَّيْتُمْ اَنْ تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ وَتُقَطِّعُوْٓا اَرْحَامَكُمْ ۝
اُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فَاَصَمَّهُمْ وَاَعْمٰٓى اَبْصَارَهُمْ ۝ اَفَلَا يَتَدَبَّرُوْنَ
الْقُرْاٰنَ اَمْ عَلٰي قُلُوْبٍ اَقْفَالُهَا ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ ارْتَدُّوْا عَلٰٓي اَدْبَارِهِمْ

★रु. २/६ आ ८

जन्नत जिस का परहेज़गारों से वायदा किया जाता है, उस की खूबी यह है कि इस में पानी की नहरें है, जो बू नहीं करेगा और दूध की नहरें हैं, जिस का मज़ा नहीं बदलेगा और शराब की नहरें हैं, जो पीने वालों के लिए (सरासर) लज्ज़त है और शहदे मुसफ़्फ़ा की नहरें हैं (जो मिठास ही मिठास है) और (वहां) उन के लिए हर क़िस्म के मेवे हैं और उन के परवरदिगार की तरफ़ से मग़फ़िरत है। (क्या ये परहेज़गार) उन की तरह (हो सकते) हैं जो हमेशा दोज़ख में रहेंगे और जिन को खौलता हुआ पानी पिलाया जाएगा, तो उन की अंतड़ियों को काट डालेगा। (१५) और उन में कुछ ऐसे भी हैं, जो तुम्हारी तरफ़ कान लगाए रहते हैं, यहां तक कि (सब कुछ सुनते हैं, लेकिन) जब तुम्हारे पास से निकल कर चले जाते हैं, तो जिन लोगों को इल्म (दीन) दिया गया है, उन से कहते हैं कि (भला) अभी उन्हों ने क्या कहा था? यही लोग हैं, जिन के दिलों पर खुदा ने मुहर लगा रखी है और वे अपनी ख्वाहिशों के पीछे चल रहे हैं। (१६) और जो लोग हिदायत पाए हुए हैं, वह उन को और हिदायत बख्शता है और परहेज़गारी देता है। (१७) अब तो ये लोग क़ियामत ही को देखते हैं कि यकायक उन पर आ वाक़ेअ हो, सो उस की निशानियां (वक़ूअ में आ चुकी हैं।) फिर जब उन पर आ नाज़िल होगी, उस वक़्त उन्हें नसीहत कहां (मुफ़ीद हो सकेगी?) (१८) पस जान रखो कि खुदा के सिवा कोई माबूद नहीं और अपने गुनाहों की माफ़ी मांगो और (और) मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों के लिए भी और खुदा तुम लोगों के चलने-फिरने और ठहरने को जानता है। (१९)★

और मोमिन लोग कहते हैं कि (जिहाद की) कोई सूरः क्यों नाज़िल नहीं होती? लेकिन जब कोई साफ़ मानी की सूरः नाज़िल हो और उस में जिहाद का बयान हो, तो जिन लोगों के दिलों में (निफ़ाक़ का) मर्ज़ है, तुम उन को देखो कि तुम्हारी तरफ़ इस तरह देखने लगें, जिस तरह किसी पर मौत की बेहोशी (छा) रही हो, सो उन के लिए खराबी है। (२०) (खूब काम तो) फ़रमांबरदारी और पसंदीदा बात कहना (है.) फिर जब (जिहाद की) बात हो गयी, तो अगर ये लोग खुदा से सच्चे रहना चाहते तो उन के लिए बहुत अच्छा होता। (२१) (ऐ मुनाफ़िक़ो!) तुम से अजब नहीं कि अगर तुम हाकिम हो जाओ तो मुल्क में खराबी करने लगो और अपने रिश्तों को तोड़ डालो। (२२) यही लोग हैं, जिन पर खुदा ने लानत की है और उन (के कानों) को बहरा और (उन की) आंखों को अंधा कर दिया है। (२३) भला ये लोग क़ुरआन में ग़ौर नहीं करते या

★रु. २/६ आ ८

इन्नल्लज़ीनतंदद्दू अला अद्बारिहिम् मिम्बअ्-दि मा त-बय्य-न लहुमुल्हुदश्शैतानु सव्व-ल लहुम्ط व अम्ला लहुम् (२५) ज़ालि-क बि-अन्नहुम् क़ालू लिल्लज़ी-न करिहू मा नज़्ज़-लल्लाहु सनुतीअुकुम् फ़ी बअ्-ज़िल्-अम्रि صلے वल्लाहु यअ्-लमु इसरा-रहुम् (२६) फ़कै-फ़ इज़ा त-वफ़्फ़त्-हुमुल्-मलाइकतु यज़्रिबू-न वुजू-हहुम् व अद्बारहुम् (२७) ज़ालि-क बिअन्नहुमुत्त-ब-अू मा अस्ख-तल्ला-ह व करिहू रिज़्-वानहू फ़-अह्-ब-त अअ्-मालहुम् ★ (२८) अम् हसिबल्-लज़ी-न फ़ी क़ुलूबिहिम् म-रज़ुन् अल्-लंय्युख़्रि-जल्लाहु अज़्ग़ानहुम् (२९) व लौ नशाउ ल-अरैनाकहुम् फ़-ल-अरफ़्-त-हुम् बिसीमाहुम्ط व ल-तअ्-रिफ़न्नहुम् फ़ी लह्निल्-क़ौलिط वल्लाहु यअ्-लमु अअ्-मालकुम् (३०) व ल-नब्लुवन्-नकुम् हत्ता नअ्-ल-मल्-मुजाहिदी-न मिन्कुम् वस्साबिरी-नز व नब्लु-व अख़्बारकुम् (३१) इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू व सद्दू अन् सबीलिल्लाहि व शा-क़्क़ुर्रसू-ल मिम्बअ्-दि मा त-बय्य-न लहुमुल्हुदाز लंय्यज़ुर्रुल्ला-ह शैअन्ط व सयुह्बितु अअ्-मालहुम् (३२) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू अतीअुल्ला-ह व अतीअुर्-रसू-ल व ला तुब्तिलू अअ्-मालकुम् (३३) इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू व सद्दू अन् सबीलिल्लाहि सुम्-म मातू व हुम् कुफ़्फ़ारुन् फ़लंय्यग़्-फ़ि-रल्लाहु लहुम् (३४) फ़ला तहिनू व तद्अू इलस्सल्मि ق व अन्तुमुल्-अअ्-लौ-न ج वल्लाहु म-अकुम् व लंय्यति-रकुम् अअ्-मालकुम् (३५) इन्नमल्-हयातुद्दुन्या लअिबुंव्-व लह्वुन्ط व इन् तुअ्मिनू व तत्तक़ू युअ्तिकुम् उजूरकुम् व ला यस्अल्कुम् अम्वालकुम् (३६) इंय्यस्अल्कुमूहा फ़-युह्-फ़िकुम् तब्ख़लू व युख़्रिज् अज़्ग़ानकुम् (३७) हाअन्तुम् हाउलाइ तुद्औ-न लितुन्-फ़िक़ू फ़ी सबीलिल्लाहि ج फ़मिन्कुम् मंय्यब्ख़लु ج व मंय्यब्ख़ल् फ़-इन्नमा यब्ख़लु अन् नफ़्सिही ط वल्लाहुल्-ग़निय्यु व अन्तुमुल्-फ़ु-क़राउ ج व इन् त-त-वल्लौ यस्तब्दिल् क़ौमन् ग़ैरकुम् ز सुम्-म ला यकूनू अम्सालकुम् ★ (३८)

مِّنۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَى الشَّيْطٰنُ سَوَّلَ لَهُمْ وَاَمْلٰى لَهُمْ ۝
ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لِلَّذِيْنَ كَرِهُوْا مَا نَزَّلَ اللّٰهُ سَنُطِيْعُكُمْ فِىْ بَعْضِ الْاَمْرِ ۚ
وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِسْرَارَهُمْ ۝ فَكَيْفَ اِذَا تَوَفَّتْهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ يَضْرِبُوْنَ وُجُوْهَهُمْ
وَاَدْبَارَهُمْ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمُ اتَّبَعُوْا مَآ اَسْخَطَ اللّٰهَ وَكَرِهُوْا رِضْوَانَهٗ فَاَحْبَطَ
اَعْمَالَهُمْ ۝ اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ فِىْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ اَنْ لَّنْ يُّخْرِجَ اللّٰهُ
اَضْغَانَهُمْ ۝ وَلَوْ نَشَآءُ لَاَرَيْنٰكَهُمْ فَلَعَرَفْتَهُمْ بِسِيْمٰهُمْ ۚ وَلَتَعْرِفَنَّهُمْ فِىْ
لَحْنِ الْقَوْلِ ۚ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اَعْمَالَكُمْ ۝ وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ حَتّٰى نَعْلَمَ الْمُجٰهِدِيْنَ
مِنْكُمْ وَالصّٰبِرِيْنَ ۙ وَنَبْلُوَا اَخْبَارَكُمْ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ وَشَآقُّوا الرَّسُوْلَ مِنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدٰى ۙ لَنْ
يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْـًٔا ۗ وَسَيُحْبِطُ اَعْمَالَهُمْ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَطِيْعُوا
اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَلَا تُبْطِلُوْٓا اَعْمَالَكُمْ ۝ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا
عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ مَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ۝ فَلَا تَهِنُوْا
وَتَدْعُوْٓا اِلَى السَّلْمِ ۖۗ وَاَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ ۖۗ وَاللّٰهُ مَعَكُمْ وَلَنْ يَّتِرَكُمْ
اَعْمَالَكُمْ ۝ اِنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ ۗ وَاِنْ تُؤْمِنُوْا وَتَتَّقُوْا يُؤْتِكُمْ
اُجُوْرَكُمْ وَلَا يَسْـَٔلْكُمْ اَمْوَالَكُمْ ۝ اِنْ يَّسْـَٔلْكُمُوْهَا فَيُحْفِكُمْ تَبْخَلُوْا وَ
يُخْرِجْ اَضْغَانَكُمْ ۝ هٰٓاَنْتُمْ هٰٓؤُلَآءِ تُدْعَوْنَ لِتُنْفِقُوْا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ
فَمِنْكُمْ مَّنْ يَّبْخَلُ ۚ وَمَنْ يَّبْخَلْ فَاِنَّمَا يَبْخَلُ عَنْ نَّفْسِهٖ ۗ وَاللّٰهُ الْغَنِىُّ

★रु. ३/७ आ ६   ★रु. ४/८ आ १०

(उन के) दिलों पर ताले लग रहे हैं। (२४) जो लोग हिदायत की राह जाहिर होने के बाद पीठ दे कर फिर गये, शैतान ने (यह काम) उन को सजा कर दिखाया और उन्हें लम्बी (उम्र का वायदा) दिया। (२५) यह इस लिए कि जो लोग ख़ुदा की उतारी हुई (किताब) से बेज़ार हैं, यह उन से कहते हैं कि कुछ कामों में हम तुम्हारी बात भी मानेंगे और ख़ुदा उन के छिपे मश्विरों को जानता है। (२६) तो उस वक़्त (उन का) कैसा (हाल) होगा, जब फ़रिश्ते उन की जान निकालेंगे (और) उन के मुंहों और पीठों पर मारते जाएंगे। (२७) यह इस लिए कि जिस चीज़ से ख़ुदा ना-ख़ुश है, ये उस के पीछे चले और उस की ख़ुश्नूदी को अच्छा न समझे, तो उस ने भी उन के अमलों को बर्बाद कर दिया। (२८)★

क्या वे लोग जिन के दिलों में बीमारी है, यह ख़्याल किए हुए हैं कि ख़ुदा उन के कीनों को ज़ाहिर नहीं करेगा? (२९) और अगर हम चाहते तो वे लोग तुम को दिखा भी देते और तुम उन को उन के चेहरों ही से पहचान लेते और तुम उन्हें (उन के) बात-चीत के अन्दाज़ ही से पहचान लोगे और ख़ुदा तुम्हारे आमाल को जानता है। (३०) और हम तुम लोगों को आज़माएंगे, ताकि जो तुम में लड़ाई करने वाले और साबित क़दम रहने वाले हैं, उन को मालूम करे और तुम्हारे हालात जांच लें। (३१) जिन लोगों को सीधा रास्ता मालूम हो गया (और) फिर उन्होंने कुफ़्र किया और (लोगों को) ख़ुदा की राह से रोका और पैग़म्बर की मुख़ालफ़त की, वे ख़ुदा का कुछ भी बिगाड़ नहीं सकेंगे और ख़ुदा उन का सब किया-कराया अकारथ कर देगा। (३२) मोमिनो! ख़ुदा का इर्शाद मानो और पैग़म्बर की फ़रमांबरदारी करो और अपने अमलों को बर्बाद न होने दो। (३३) जो लोग काफ़िर हुए और ख़ुदा के रास्ते से रोकते रहे, फिर काफ़िर ही मर गये, ख़ुदा उन को हरगिज नहीं बख़्शेगा। (३४) तो तुम हिम्मत न हारो और (दुश्मन को) सुलह की तरफ़ न बुलाओ और तुम तो ग़ालिब हो और ख़ुदा तुम्हारे साथ है। वह हरगिज़ तुम्हारे आमाल को कम (और गुम) नहीं करेगा। (३५) दुनिया की ज़िंदगी तो सिर्फ़ खेल और तमाशा है और अगर तुम ईमान लाओगे और परहेज़गारी करोगे, तो वह तुम को तुम्हारा बदला देगा और तुम से तुम्हारा माल तलब नहीं करेगा। (३६) अगर वह तुम से माल तलब करे और तुम्हें तंग करे तो तुम बुख़्ल (कंजूसी) करने लगो और वह (बुख़्ल) तुम्हारी बद-नीयती ज़ाहिर कर के रहे। (३७) देखो, तुम वे लोग हो कि ख़ुदा की राह में ख़र्च करने के लिए बुलाए जाते हो तो तुम में ऐसे शख़्स भी हैं, जो बुख़्ल करने लगते हैं और जो बुख़्ल करता है अपने आप से बुख़्ल करता है और ख़ुदा बे-नियाज़ है और तुम मुहताज। और अगर तुम मुंह फेरोगे, तो वह तुम्हारी जगह और लोगों को ले आएगा और वे तुम्हारी तरह के नहीं होंगे। (३८)★

★रु. ३/७ आ ९ ★रु. ४/८ आ १०

४८ सूरतुल-फ़त्हि १११

(मदनी) इस सूरः में अरबी के २५५५ अक्षर, ५६८ शब्द, २६ आयतें और ४ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

इन्ना फ़-तह़्ना ल-क फ़त्हम्-मुबीनल-ۙ (१) -लि-यग़्फ़ि-र ल-कल्लाहु मा त-क़द्-द-म मिन् ज़म्बि-क व मा त-अख़्ख़-र व युतिम्-म निअ्-म-तहू अ़लै-क व यह्दि-य-क सिरातम्-मुस्तक़ीमंव्-ۙ (२) -व यन्सु-र-कल्लाहु नस्रन् अ़ज़ीज़ा (३) हुवल्लज़ी अन्ज़-लस्सकी-न-त फ़ी क़ुलूबिल्-मुअ्मिनी-न लि-यज़्दादू ईमानम्-म-अ ईमानि-हिम् ط व लिल्लाहि जुनूदुस्समावाति वल्अर्ज़ि ط व कानल्लाहु अ़लीमन् ह़कीमा ۙ (४) लियुद्ख़ि-लल्-मुअ्मिनी-न वल्-मुअ्मिनाति जन्नातिन् तज्री मिन् तह़्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा व युकफ़्फ़ि-र अ़न्हुम् सय्यिआतिहिम् ط व का-न ज़ालि-क अ़िन्दल्लाहि फ़ौज़न् अ़ज़ीमंव्-ۙ (५) -व युअ़ज़्ज़ि-बल्-मुनाफ़िक़ी-न वल्मुनाफ़िक़ाति वल्मुश्रिकी-न वल्-मुश्रिकातिज़्-ज़ान्नी-न बिल्-लाहि ज़न्नस्सौइ ط अ़लैहिम् दा-इरतुस्सौइ ج व ग़ज़िबल्लाहु अ़लैहिम् व ल-अ़-नहुम् व अ-अ़द्-द लहुम् ज-हन्न-म ط व सा-अत् मसीरा (६) व लिल्लाहि जुनूदुस्समावाति वल्अर्ज़ि ط व कानल्लाहु अ़ज़ीज़न् ह़कीमा (७) इन्ना अर्सल्ना-क शाहिदंव्-व मुबश्शिरंव्-व नज़ीरल-ۙ (८) -लितुअ्मिनू बिल्लाहि व रसूलिही व तुअ़ज़्ज़िरूहु व तुवक़्क़िरूहु ط व तुसब्बिहूहु बुक-रतंव्-व असीला (९) इन्नल्लज़ी-न युबायिअू-न-क इन्नमा युबायिअूनल्ला-ह ط यदुल्लाहि फ़ौ-क़ ऐदी-हिम् ج फ़-मन् न-क-स फ़-इन्नमा यन्कुसु अ़ला नफ़्सिही ج व मन् औफ़ा बिमा आ़-ह-द अ़लैहुल्ला-ह फ़-स-युअ्तीहि अज्रन् अ़ज़ीमा ★ (१०)

وانتم الفقراء وان تتولوا يستبدل قوما غيركم ثم لا يكونوا امثالكم

سورة الفتح مدنية وهي تسع وعشرون اية واربع ركوعات

بسم الله الرحمن الرحيم

انا فتحنا لك فتحا مبينا ۙ ليغفر لك الله ما تقدم من ذنبك وما تاخر
ويتم نعمته عليك ويهديك صراطا مستقيما ۙ وينصرك الله نصرا
عزيزا ۝ هو الذي انزل السكينة في قلوب المؤمنين ليزدادوا
ايمانا مع ايمانهم ۗ ولله جنود السموت والارض ۗ وكان الله عليما
حكيما ۙ ليدخل المؤمنين والمؤمنت جنت تجري من تحتها
الانهر خلدين فيها ويكفر عنهم سياتهم ۗ وكان ذلك عند الله فوزا
عظيما ۙ ويعذب المنفقين والمنفقت والمشركين والمشركت
الظانين بالله ظن السوء ۗ عليهم دائرة السوء ۚ وغضب الله عليهم
ولعنهم واعد لهم جهنم ۗ وساءت مصيرا ۝ ولله جنود السموت
والارض ۗ وكان الله عزيزا حكيما ۝ انا ارسلنك شاهدا ومبشرا
ونذيرا ۙ لتؤمنوا بالله ورسوله وتعزروه وتوقروه ۗ وتسبحوه بكرة
واصيلا ۝ ان الذين يبايعونك انما يبايعون الله ۗ يد الله فوق ايديهم
فمن نكث فانما ينكث على نفسه ۚ ومن اوفى بما عهد عليه الله
فسيؤتيه اجرا عظيما ۝ سيقول لك المخلفون من الاعراب

★रु० १/६ आ १०

४८ सूरः फ़त्ह १११

सूरः फ़त्ह मदनी है, इस में २९ आयतें और चार रुकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

(ऐ मुहम्मद !) हम ने तुम को फ़त्ह दी, फ़त्ह भी साफ़ और खुली हुई।[1] (१) ताकि खुदा तुम्हारे अगले और पिछले गुनाह बख़्श दे और तुम पर अपनी नेमत पूरी करदे और तुम को सीधे रास्ते चलाए। (२) और खुदा तुम्हारी ज़बरदस्त मदद करे। (३) वही तो है, जिसने मोमिनों के दिलों पर तसल्ली फ़रमायी, ताकि उनके ईमान के साथ और ईमान बढ़े और आसमानों और ज़मीन के लश्कर (सब) खुदा ही के हैं और खुदा जानने वाला (और) हिक्मत वाला है। (४) (यह) इस लिए कि वह मोमिन मर्दों और औरतों को बहिश्तों में, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, दाख़िल करे। वे उस में हमेशा रहेंगे और उन से उन के गुनाहों को दूर कर दे और यह खुदा के नज़दीक बड़ी कामियाबी है। (५) और (इस लिए कि) मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों और मुश्रिक मर्दों और मुश्रिक औरतों को, जो खुदा के हक़ में बुरे-बुरे ख़्याल रखते हैं, अज़ाब दे। उन्हीं पर बुरे हादसे वाक़ेअ हों और खुदा उन पर ग़ुस्से हुआ और उन पर लानत की और उन के लिए दोज़ख़ तैयार की और वह बुरी जगह है। (६) और आसमानों और ज़मीन के लश्कर खुदा ही के हैं और खुदा ग़ालिब (और) हिक्मत वाला है। (७) (और) हम ने (ऐ मुहम्मद !) तुम को हक़ ज़ाहिर करने वाला और ख़ुशख़बरी सुनने वाला और ख़ौफ़ दिलाने वाला (बना कर) भेजा है। (८) ताकि (मुसलमानो !) तुम लोग खुदा पर और उस के पैग़म्बर पर ईमान लाओ और उस की मदद करो और उस को बुज़ुर्ग समझो और सुबह व शाम उस की तस्बीह करते रहो। (९) जो लोग तुम से बैअत करते हैं, वे खुदा से बैअत करते हैं। खुदा का हाथ उन के हाथों पर है। फिर जो अह्द को तोड़े, तो अह्द तोड़ने का नुक़्सान उसी को है और जो उस बात को, जिस का उस ने खुदा से अह्द किया है, पूरा करे, तो वह उसे बहुत जल्द बड़ा बदला देगा। (१०) ★

---

१. फ़त्ह के बारे में इख़्तिलाफ़ है कि इस से क्या मुराद है। अक्सर का क़ौल यह है कि इस से मुराद हुदैबिया का समझौता है, क्योंकि कभी समझौते का नाम जीत भी रख लेते हैं। हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० से रिवायत है कि तुम तो मक्के की फ़त्ह को फ़त्ह ख़्याल करते हो और हम हुदैबिया के समझौते को फ़त्ह समझते हैं। बुख़ारी में हज़रत बरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि तुम लोग मक्का की फ़त्ह को फ़त्ह गिनते हो और हम बैअ-तुर्रिज़्वान को, जो हुदैबिया के दिन हुई, फ़त्ह समझते हैं। इस समझौते के वाक़िआत इस तरह हैं कि जमाबे रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सन् ०६ हि० में हुदैबिया जाने से पहले ख़्वाब देखा कि गोया आप ने और आप के अस्हाब ने सर मुंडवाया और बाल कटवाए। यह ख़्वाब आप ने अस्हाब को सुनाया तो यह ख़्याल कर के ख़ुश हुए कि इसी साल मक्के में दाख़िल होंगे, तो आप बैतुल्लाह की ज़ियारत और उमरे की नीयत से मक्के को रवाना हुए। जब अस्फ़ान में पहुंचे तो आप को बशीर बिन सुफ़ियान ने ख़बर दी कि आप की रवानगी का हाल सुन कर क़ुरैश बड़ी फ़ौज के साथ निकले हैं और उन्हों ने अह्द किया है कि ऐसा हरगिज़ न होने पाए कि आप उन पर ग़ालिब हो कर मक्के में दाख़िल हों और ख़ालिद बिन वलीद भी उन के सवारों में हैं जो कुराअे ग़मीम की तरफ़ आगे भेजा गया है तो आप ने फ़रमाया कि अब दो ही शक्लें हैं, या तो जिहाद कर के कामियाबी और

(शेष पृष्ठ ८७९ पर)

★रु० १/९ आ १०

स-यक़ूलु ल-कल्-मुख़ल्लफ़ू-न मिनल्-अअ्-राबि श-ग़-लत्ना अम्-वालुना व अह्लूना फ़स्तग़्फ़िर् लना ^c^ यक़ूलू-न बि-अल्सिनतिहिम् मा लै-स फ़ी क़ुलूबिहिम् ^b^ क़ुल् फ़-मंय्यम्लिकु लकुम् मिनल्लाहि शैअन् इन् अरा-द बिकुम् ज़र्रन् औ अरा-द बिकुम् नफ़्-अन् ^b^ बल् कानल्लाहु बिमा तअ्-मलू-न ख़बीरा (११) बल् ज़-नन्तुम् अल्लंय्यन्क़लिबर्-रसूलु वल्-मुअ्मिनू-न इला अह्लीहिम् अ-ब-दंव्-व ज़ुय्यि-न ज़ालि-क फ़ी क़ुलूबिकुम् व ज़-नन्तुम् ज़न्नस्सौइ ^c^ व कुन्तुम् क़ौमम्-बूरा (१२) व मल्लम् युअ्मिम्-बिल्लाहि व रसूलिही फ़-इन्ना अअ्-तद्ना लिल्काफ़िरी-न सअीरा (१३) व लिल्लाहि मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि ^b^ यग़्फ़िरु लिमंय्यशाउ व युअ़ज़्ज़िबु मंय्यशाउ ^b^ व कानल्लाहु ग़फ़ूरर्-रहीमा (१४) स-यक़ूलुल्-मुख़ल्लफ़ू-न इज़न्त़-लक़्तुम् इला मग़ानि-म लितअ्ख़ुज़ूहा ज़रूना नत्तबिअ्-कुम् ^c^ युरीदू-न अंय्यु-बद्-दि-लू कलामल्लाहि ^b^ क़ुल्लन् तत्तबिअूना कज़ालिकुम् क़ालल्लाहु मिन् क़ब्लु ^c^ फ़-स-यक़ूलू-न बल् तह्सुदूनना ^b^ बल् कानू ला यफ़्क़हू-न इल्ला क़लीला (१५) क़ुल् लिल्-मुख़ल्लफ़ी-न मिनल्-अअ्-राबि स-तुद्औ-न इला क़ौमिन् उली बअ्सिन् शदीदिन् तुक़ातिलूनहुम् औ युस्लिमू-न ^c^ फ़-इन् तुतीअू युअ्तिकुमुल्लाहु अज-रन् ह-स-नन् ^c^ व इन् त-त-वल्लौ कमा त-वल्लैतुम् मिन् क़ब्लु यु-अ़ज़्ज़िब्कुम् अ़ज़ाबन् अलीमा (१६) लै-स अ-लल्-अअ्-मा ह-र-जुंव्-व ला अ-लल्-अअ्-रजि ह-र-जुंव्-व ला अ-लल्मरीज़ि ह-रजुन् ^b^ व मंय्युति-अिल्ला-ह व रसूलहू युद्ख़िल्हु जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ^c^ व मंय्य-त-वल्-ल युअ़ज़्ज़िब्हु अ़ज़ाबन् अलीमा★●(१७) ल-क़द् रज़ियल्लाहु अ़निल्-मुअ्मिनी-न इज़् युबायिअू-न-क तह्-तश्श-ज-रति फ़-अ़लि-म मा फ़ी क़ुलूबिहिम् फ़-अन्ज़-लस्-सकी-न-त अ़लैहिम् व असाबहुम् फ़त्-हन् क़रीबा ^ゾ^ (१८)

شَغَلَتْنَآ اَمْوَالُنَا وَاَهْلُوْنَا فَاسْتَغْفِرْ لَنَا ۚ يَقُوْلُوْنَ بِاَلْسِنَتِهِمْ مَّا لَيْسَ
فِيْ قُلُوْبِهِمْ ۚ قُلْ فَمَنْ يَّمْلِكُ لَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْئًا اِنْ اَرَادَ بِكُمْ ضَرًّا اَوْ
اَرَادَ بِكُمْ نَفْعًا ۚ بَلْ كَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿۱۱﴾ بَلْ ظَنَنْتُمْ اَنْ
لَّنْ يَّنْقَلِبَ الرَّسُوْلُ وَالْمُؤْمِنُوْنَ اِلٰٓى اَهْلِيْهِمْ اَبَدًا وَّزُيِّنَ ذٰلِكَ فِيْ
قُلُوْبِكُمْ وَظَنَنْتُمْ ظَنَّ السَّوْءِ ۖۚ وَكُنْتُمْ قَوْمًا ۢ بُوْرًا ﴿۱۲﴾ وَمَنْ لَّمْ يُؤْمِنْ
بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ فَاِنَّآ اَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ سَعِيْرًا ﴿۱۳﴾ وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ ۚ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا
رَّحِيْمًا ﴿۱۴﴾ سَيَقُوْلُ الْمُخَلَّفُوْنَ اِذَا انْطَلَقْتُمْ اِلٰى مَغَانِمَ لِتَاْخُذُوْهَا
ذَرُوْنَا نَتَّبِعْكُمْ ۚ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّبَدِّلُوْا كَلٰمَ اللّٰهِ ۚ قُلْ لَّنْ تَتَّبِعُوْنَا كَذٰلِكُمْ
قَالَ اللّٰهُ مِنْ قَبْلُ ۚ فَسَيَقُوْلُوْنَ بَلْ تَحْسُدُوْنَنَا ۚ بَلْ كَانُوْا لَا يَفْقَهُوْنَ
اِلَّا قَلِيْلًا ﴿۱۵﴾ قُلْ لِّلْمُخَلَّفِيْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ سَتُدْعَوْنَ اِلٰى قَوْمٍ اُولِيْ
بَاْسٍ شَدِيْدٍ تُقَاتِلُوْنَهُمْ اَوْ يُسْلِمُوْنَ ۚ فَاِنْ تُطِيْعُوْا يُؤْتِكُمُ اللّٰهُ اَجْرًا
حَسَنًا ۚ وَاِنْ تَتَوَلَّوْا كَمَا تَوَلَّيْتُمْ مِّنْ قَبْلُ يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿۱۶﴾
لَيْسَ عَلَى الْاَعْمٰى حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْاَعْرَجِ حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْمَرِيْضِ حَرَجٌ ۗ
وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ وَ
مَنْ يَّتَوَلَّ يُعَذِّبْهُ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿۱۷﴾ لَقَدْ رَضِيَ اللّٰهُ عَنِ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ
يُبَايِعُوْنَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ فَاَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ عَلَيْهِمْ

★रु० २/१० आ ७ ● नि० १/२

जो गंवार पीछे रह गये, वे तुम से कहेंगे कि हमको हमारे माल और बाल-बच्चों ने रोके रखा। आप हमारे लिए (ख़ुदा से) बख़्शिश मांगें। ये लोग अपनी ज़ुबान से वह बात कहते हैं, जो उन के दिल में नहीं है। कह दो कि अगर ख़ुदा तुम (लोगों) को नुक़्सान पहुंचाना चाहे या तुम्हें फ़ायदा पहुंचाने का इरादा फ़रमाए, तो कौन है जो उस के सामने तुम्हारे लिए किसी बात का कुछ अख़्तियार रखे ? (कोई नहीं,) बल्कि जो कुछ तुम करते हो, ख़ुदा उसे जानता है। (११) बात यह है कि तुम लोग यह समझ बैठे थे कि पैग़म्बर और मोमिन अपने बाल-बच्चों में कभी लौट कर आने ही के नहीं और यही बात तुम्हारे दिलों को अच्छी मालूम हुई और (इसी वजह से) तुम ने बुरे-बुरे ख़्याल किए और (आख़िरकार) तुम हलाकत में पड़ गए। (१२) और जो शख़्स ख़ुदा पर और उस के पैग़म्बर पर ईमान न लाए, तो हम ने (ऐसे) काफ़िरों के लिए आग तैयार कर रखी है। (१३) और आसमानों और ज़मीन की बादशाही ख़ुदा ही की है। वह जिसे चाहे बख़्शे और जिसे चाहे सज़ा दे और ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है। (१४) जब तुम लोग ग़नीमत लेने चलोगे तो जो लोग पीछे रह गए थे, वे कहेंगे हमें भी इजाज़त दीजिए कि आप के साथ चलें। ये चाहते हैं कि ख़ुदा के क़ौल को बदल दें। कह दो कि तुम हरगिज़ हमारे साथ नहीं चल सकते। इसी तरह ख़ुदा ने पहले से फ़रमा दिया है। फिर कहेंगे, (नहीं) तुम तो हम से हसद रखते हो। बात यह है कि ये लोग समझते ही नहीं, मगर बहुत कम।[1] (१५) जो गंवार पीछे रह गए थे, उन से कह दो कि तुम जल्द एक सख़्त लड़ाकू क़ौम (से लड़ाई के) लिए बुलाए जाओगे। उन से तुम (या तो) जंग करते रहोगे या वे इस्लाम ले आएंगे, और अगर तुम हुक्म मानोगे तो ख़ुदा तुम को अच्छा बदला देगा और अगर मुंह फेर लोगे जैसे पहली बार फेरा था, तो वह तुम को बुरी तक्लीफ़ की सज़ा देगा। (१६) न तो अंधे पर गुनाह है (कि लड़ाई के सफ़र से पीछे रह जाए) और न लंगड़े पर गुनाह है और न बीमार पर गुनाह है और जो शख़्स ख़ुदा और उस के पैग़म्बर के फ़रमान पर चलेगा, ख़ुदा उस को बहिश्त में दाख़िल करेगा जिनके तले नहरें बह रही हैं और जो मुंह मोड़ेगा, उसे बुरे दुख की सज़ा देगा★(१७) ●

(ऐ पैग़म्बर !) जब मोमिन तुम से पेड़ के नीचे बैअत कर रहे थे, तो बहुत ख़ुश हुआ और जो सच्चाई और ख़ुलूस उन के दिलों में था, वह उस ने मालूम कर लिया तो उन पर तसल्ली नाज़िल

---

१. जब रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हिजरत के छठे साल हुदैबिया से लौट कर मदीना तश्रीफ़ लाए, तो ख़ुदा ने आप को फ़त्हे ख़ैबर का वायदा दिया और वहां की ग़नीमतों के लिए उन्हीं लोगों को ख़ास फ़रमाया जो हुदैबिया में आप के साथ थे, जब आप ख़ैबर की तरफ़ तश्रीफ़ ले चले, तो जो लोग हुदैबिया में नहीं गये थे, उन्हों ने ग़नीमत के लालच से दर्ख़्वास्त की कि हम को भी साथ ले चलिए। जवाब मिला कि तुम हमारे साथ चलो ही मत, क्योंकि ख़ैबर की ग़नीमत में तुम लोगों का कुछ हिस्सा नहीं और ख़ुदा का यही इर्शाद है। तो वे लोग कहने लगे कि ख़ुदा ने तो ऐसा नहीं कहा होगा। यों कहो कि तुम को हम से हसद है और सारी हसद यह कि तुम हमें ग़नीमत में शरीक नहीं करना चाहते। ख़ुदा ने फ़रमाया कि ये अहमक़ लोग हैं, उन को इन बातों के समझने की अक़्ल ही नहीं।

★रु. २/१० आ ७ ● नि. १/२

व मग़ानि-म कसी-र-तंय्यअ्-ख़ुज़ूनहा॰ व कानल्लाहु अ़ज़ीज़न् हकीमा (१९) व-अ़-दकुमुल्लाहु मग़ानि-म कसी-र-तन् तअ्ख़ुज़ूनहा फ़-अ़ज्ज-ल लकुम् हाज़िही व कफ़्-फ़ ऐदि-यन्नासि अ़न्कुम् व लि-तकू-न आयतल्-लिल्मुअ्मिनी-न व यह्दि-यकुम् सिरातम्-मुस्तक़ीमा (२०) व उख़्रा लम् तक़्दिरू अ़लैहा क़द् अहातल्लाहु बिहा॰ व कानल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीरा (२१) व लौ क़ा-त-लकुमुल्लज़ी-न क-फ़रू ल-वल्लवुल्-अद्बा-र सुम्-म ला यजिदू-न वलिय्यंव्-व ला नसीरा (२२) सुन्नतल्लाहिल्लती क़द् ख़-लत् मिन् क़ब्लु व लन् तजि-द लिसुन्नतिल्लाहि तब्दीला (२३) व हुवल्लज़ी कफ़्-फ़ ऐदि-यहुम् अ़न्कुम् व ऐदि-यकुम् अ़न्हुम् बि-बत्नि मक्क-त मिम्बअ्-दि अन् अज़्-फ़-रकुम् अ़लैहिम् व कानल्लाहु बिमा तअ्-मलू-न बसीरा (२४) हुमुल्लज़ी-न क-फ़रू व सद्दूकुम् अ़निल्-मस्जिदिल्-हरामि वल-हद्-य मअ्-कूफ़न् अंय्यब्-लु-ग़ महिल्लहू॰ व लौला रिजालुम्-मुअ्मिनू-न व निसाउम्-मुअ्मिनातुल्-लम् तअ्-लमूहुम् अन् त-त-ऊहुम् फ़-तुसीबकुम् मिन्हुम् म-अ़र्रतुम्-बिग़ैरि अ़िल्मिन् लि-युद्ख़िलल्लाहु फ़ी रह्मतिही मंय्यशाउ लौ त-ज़य्यलू ल-अ़ज़्ज़ब्-नल्लज़ी-न क-फ़रू मिन्हुम् अ़ज़ाबन् अलीमा (२५) इज् ज-अ़-लल्लज़ी-न क-फ़रू फ़ी क़ुलूबिहिमुल्-हमिय्य-त हमिय्य-तल्-जाहिलिय्यति फ़-अन्ज़-लल्लाहु सकी-न-तहू अ़ला रसूलिही व अ़-लल्-मुअ्मिनी-न व अल्ज़-महुम् कलि-म-तत्तक़्वा व कानू अ-हक़्-क़ बिहा व अह्-लहा॰ व कानल्लाहु बिकुल्लि शैइन् अ़लीमा ★ (२६) ल-क़द् स-द-क़ल्लाहु रसूलहुर्रुअ्-या बिल्हक़्क़ि ल-तद्ख़ुलुन्नल्-मस्जिदल्-हरा-म इन्शाअल्लाहु आमिनी-न मुहल्लिक़ी-न रुऊसकुम् व मुक़स्सिरी-न ला तख़ाफ़ू-न॰ फ़-अ़लि-म मा लम् तअ्-लमू फ़-ज-अ़-ल मिन् दूनि ज़ालि-क फ़त्-हन् क़रीबा (२७)

واثابهم فتحا قريبا ۝ ومغانم كثيرة ياخذونها وكان الله عزيزا
حكيما ۝ وعدكم الله مغانم كثيرة تاخذونها فعجل لكم هذه و
كف ايدي الناس عنكم ولتكون اية للمؤمنين ويهديكم
صراطا مستقيما ۝ واخرى لم تقدروا عليها قد احاط الله بها و
كان الله على كل شيء قديرا ۝ ولو قاتلكم الذين كفروا لولوا
الادبار ثم لا يجدون وليا ولا نصيرا ۝ سنة الله التي قد خلت
من قبل ولن تجد لسنة الله تبديلا ۝ وهو الذي كف ايديهم
عنكم وايديكم عنهم ببطن مكة من بعد ان اظفركم عليهم
وكان الله بما تعملون بصيرا ۝ هم الذين كفروا وصدوكم عن المسجد
الحرام والهدي معكوفا ان يبلغ محله ولولا رجال مؤمنون
ونساء مؤمنت لم تعلموهم ان تطئوهم فتصيبكم منهم معرة
بغير علم ليدخل الله في رحمته من يشاء لو تزيلوا لعذبنا
الذين كفروا منهم عذابا اليما ۝ اذ جعل الذين كفروا في
قلوبهم الحمية حمية الجاهلية فانزل الله سكينته على رسوله
وعلى المؤمنين والزمهم كلمة التقوى وكانوا احق بها واهلها
وكان الله بكل شيء عليما ۝ لقد صدق الله رسوله الرءيا بالحق
لتدخلن المسجد الحرام ان شاء الله امنين محلقين رءوسكم ومقصرين

★रु० ३/११ आ ६

फ़रमाई और उन्हें जल्द फ़त्ह इनायत की।[1] (१८) और बहुत सी ग़नीमतें, जो उन्हों ने हासिल कीं और ख़ुदा ग़ालिब हिक्मत वाला है। (१९) ख़ुदा ने तुम से बहुत सी ग़नीमतों का वायदा फ़रमाया है कि तुम उन को हासिल करोगे, सो उस ने ग़नीमत की तुम्हारे लिए जल्दी फ़रमायी और लोगों के हाथ तुम से रोक दिए। ग़रज़ यह थी कि यह मोमिनों के लिए (ख़ुदा की) क़ुदरत का नमूना है और वह तुम को सीधे रास्ते पर चलाए। (२०) और और (ग़नीमतें दीं), जिन पर तुम क़ुदरत नहीं रखते थे (और) वह ख़ुदा ही की क़ुदरत में थीं और ख़ुदा हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। (२१) और अगर तुम से काफ़िर लड़ते तो पीठ फेर कर भाग जाते, फिर किसी को दोस्त न पाते, और न मददगार। (२२) (यही) ख़ुदा की आदत है जो पहले से चली आती है और तुम ख़ुदा की आदत कभी बदलती न देखोगे। (२३) और वही तो है, जिस ने तुम को उन (काफ़िरों) पर फ़त्हयाब करने के बाद मक्का की सरहद में उन के हाथ तुम से और तुम्हारे हाथ उन से रोक दिए और जो कुछ तुम करते हो, ख़ुदा उस को देख रहा है। (२४) ये वही लोग हैं, जिन्हों ने कुफ़्र किया और मस्जिदे हराम से रोक दिया और क़ुर्बानियों को भी कि अपनी जगह पहुंचने से रुकी रहीं। और अगर ऐसे मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें न होतीं, जिन को तुम जानते न थे कि अगर तुम उन को पा-माल कर देते तो तुम को उन की तरफ़ से बे-ख़बरी में नुक़सान पहुंच जाता (तो भी तुम्हारे हाथ फ़त्ह हो जाती मगर देर) इस लिए (हुई) कि ख़ुदा अपनी रहमत में जिस को चाहे दाख़िल कर ले और अगर (दोनों फ़रीक़) अलग-अलग हो जाते, तो जो उन में काफ़िर थे, उन को हम दुख देने वाला अज़ाब देते।[2] (२५) जब काफ़िरों ने अपने दिलों में ज़िद की और ज़िद भी जाहिलियत की तो ख़ुदा ने अपने पैग़म्बर और मोमिनों पर अपनी तरफ़ से तस्कीन नाज़िल फ़रमायी और उन को परहेज़गारी की बात पर क़ायम रखा और वे इसी के हक़दार और अह्ल थे और ख़ुदा हर चीज़ से ख़बरदार है। (२६) ★

बेशक ख़ुदा ने अपने पैग़म्बर को सच्चा (और) सही ख़्वाब दिखाया कि तुम, ख़ुदा ने चाहा तो मस्जिदे हराम में अपने सर मुंडवा कर और अपने बाल कतरवा कर अम्न व अमान से दाख़िल होंगे और किसी तरह का ख़ौफ़ न करोगे। जो बात तुम नहीं जानते थे, उस को मालूम थी, सो उस ने

---

१. चूंकि इस बैअत की वजह से ख़ुदा मोमिनों से ख़ुश हुआ था, इस लिए इस को बैअतुर्रिज़्वान कहते हैं। यह बैअत इस बात पर ली गयी थी कि मुसलमान क़ुरैश से लड़ाई करेंगे और मरते दम तक नहीं भागेंगे, इसके बदले में ख़ुदा ने मोमिनों के दिलों में तसल्ली पैदा की और जल्द ख़ैबर की फ़त्ह नसीब की जिस में बहुत-सी ग़नीमतें हाथ आयीं। बैअत के वक़्त जनाब रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, अक्सर लोगों के क़ौल के मुताबिक़ कीकर के पेड़ और कुछ के मुताबिक़ बेरी के तले तश्रीफ़ रखते थे। चूंकि लोग बैअत की वजह से इस पेड़ की इज़्ज़त के लिए उसके पास आने लगे थे, तो हज़रत उमर रज़ि० ने इस ख़्याल से कि इज़्ज़त इबादत की हद तक न पहुंच जाए, उस को कटवा डाला।

२. इस आयत में मक्का फ़त्ह होने में देर की वजह बयान फ़रमायी गयी, वह यह कि मक्के में इस तरह की औरतें और मर्द मुसलमान भी थे कि जान के अंदेशे से अपना ईमान कुफ़्फ़ार से छिपाए रखते थे और ख़ुदा के सिवा इन का हाल किसी को मालूम न था, तो अगर ख़ुदा मुसलमानों को मक्के पर चढ़ाई का हुक्म दे देता तो जो सुलूक काफ़िरों के साथ होता, वही अनजाने में भी उन के साथ होता और ख़ुदा को यह मंज़ूर न था और अगर वे लोग इन में न होते तो मक्का की फ़त्ह में देर न होती।

हुवल्लज़ी अर्स-ल रसूलहू बिल्हुदा व दीनिल्-ह़क़्क़ि लियुज़्हि-रहू अ़-लद्-दीनि कुल्लिही व कफ़ा बिल्लाहि शहीदा (२८) मुह़म्मदुर्-रसूलुल्लाहि वल्लज़ी-न म-अ़हू अशिद्दाउ अ़-लल्-कुफ़्फ़ारि रु-ह़-माउ बैनहुम् तराहुम् रुक्कअ़न् सुज्ज-दंय्यब्तग़ू-न फ़ज़्-लम्-मिनल्लाहि व रिज़्वानन् सीमाहुम् फ़ी वुजूहिहिम् मिन् अ-सरिस्सुजूदि ज़ालि-क म-सलुहुम् फ़ित्तौराति व म-सलुहुम् फ़िल्इन्जीलि क-ज़र्अ़िन् अख़्-र-ज शत्-अहू फ़-आ-ज़-रहू फ़स्तग़्-ल-ज़ फ़स्-तवा अ़ला सूक़िही युअ्-जिबुज़्-ज़ुर-रा-अ़ लि-यग़ी-ज़ बिहिमुल्-कुफ़्फ़ा-र व-अ़-दल्लाहुल्-लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति मिन्हुम् मग़्-फ़ि-र-तंव्-व अज्रन् अ़ज़ीमा ★ (२९)

لا تخافون فعلم ما لم تعلموا فجعل من دون ذلك فتحا قريبا ۝ هو
الذي أرسل رسوله بالهدى ودين الحق ليظهره على الدين كله و
كفى بالله شهيدا ۝ محمد رسول الله والذين معه أشداء على
الكفار رحماء بينهم تراهم ركعا سجدا يبتغون فضلا من الله
ورضوانا سيماهم في وجوههم من أثر السجود ذلك مثلهم في
التوراة ومثلهم في الإنجيل كزرع أخرج شطأه فآزره
فاستغلظ فاستوى على سوقه يعجب الزراع ليغيظ بهم الكفار
وعد الله الذين آمنوا وعملوا الصالحات منهم مغفرة وأجرا عظيما ۝
سورة الحجرات مدنية وهي ثماني عشرة آية وفيها ركوعان
بسم الله الرحمن الرحيم
يا أيها الذين آمنوا لا تقدموا بين يدي الله ورسوله واتقوا الله
إن الله سميع عليم ۝ يا أيها الذين آمنوا لا ترفعوا أصواتكم فوق
صوت النبي ولا تجهروا له بالقول كجهر بعضكم لبعض أن
تحبط أعمالكم وأنتم لا تشعرون ۝ إن الذين يغضون أصواتهم
عند رسول الله أولئك الذين امتحن الله قلوبهم للتقوى
لهم مغفرة وأجر عظيم ۝ إن الذين ينادونك من وراء
الحجرات أكثرهم لا يعقلون ۝ ولو أنهم صبروا حتى تخرج إليهم

४९ सूरतुल हुजुराति १०६

(मदनी) इस सूरः में अरबी के १५७३ अक्षर, ३५० शब्द, १८ आयतें और २ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तुक़द्दिमू बै-न य-दयिल्लाहि व रसूलिही वत्तक़ुल्ला-ह, इन्नल्ला-ह समीअ़ुन् अ़लीम (१) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तर-फ़अ़ू अस्-वातकुम् फ़ौ-क़ सौतिन्नबिय्यि व ला तज्-हरू लहू बिल्क़ौलि क-जह्रि बअ़्-ज़िकुम् लि-बअ़्-ज़िन् अन् तह़्-ब-त अअ़्-मालुकुम् व अन्तुम् ला तश्अ़ुरून (२) इन्नल्लज़ी-न यग़ुज़्ज़ू-न अस्वातहुम् अ़िन्-द रसूलिल्लाहि उलाइ-कल्-लज़ीनम्-त-ह़-नल्लाहु क़ुलूबहुम् लित्तक़्वा, लहुम् मग़्फ़ि-र-तुंव्-व अज्रुन् अ़ज़ीम (३) इन्नल्लज़ी-न युनादू-न-क मिंव्वराइल्-हुजुराति अक्सरुहुम् ला यअ़्-क़िलून (४) व लौ अन्नहुम् स-बरू हत्ता तख़्रु-ज इलैहिम् लका-न ख़ैरल्लहुम्, वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रह़ीम (५)

★रु. ४/१२ आ ३ ∴ मु. अ़ मु. ता क़. १५

उस से पहले ही जल्द फ़त्ह करा दी।[1] (२७) वही तो है, जिस ने अपने पैग़म्बर को हिदायत (की किताब) और सच्चा दीन दे कर भेजा, ताकि उस को तमाम दीनों पर ग़ालिब करे और हक़ ज़ाहिर करने के लिए ख़ुदा ही काफ़ी है। (२८) मुहम्मद ख़ुदा के पैग़म्बर हैं, और जो लोग उन के साथ हैं, वे काफ़िरों के हक़ में तो सख़्त हैं और आपस में रहम दिल। (ऐ देखने वाले !) तू उन को देखता है कि (ख़ुदा के आगे) झुके हुए, सर सज्दे में रखे हुए हैं और ख़ुदा का फ़ज़्ल और उसकी ख़ुश्नूदी तलब कर रहे हैं। सज्दों (की ज़्यादती) के असर से उन की पेशानियों पर निशान पड़े हुए हैं। उन की यही सिफ़तें तौरात में (दर्ज) हैं और यही सिफ़तें इंजील में हैं।‥ (वे) गोया एक खेती हैं, जिस ने (पहले ज़मीन से) अपनी सूई निकाली, फिर उस को मज़बूत किया, फिर मोटी हुई और फिर अपनी नाल पर सीधी खड़ी हो गयी और लगी खेती वालों को ख़ुश करने ताकि काफ़िरों का जी जलाए। जो लोग उन में से ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, उन से ख़ुदा ने गुनाहों की बख़्शिश और बड़े अज्र का वायदा किया है। (२९)★

४९ सूरः हुजुरात १०६

सूरः हुजुरात मदनी है और इस में अठारह आयत और दो रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

मोमिनो ! (किसी बात के जवाब में) ख़ुदा और उस के रसूल से पहले न बोल उठा करो और ख़ुदा से डरते रहो। बेशक ख़ुदा सुनता-जानता है। (१) ऐ ईमान वालो ! अपनी आवाज़ें पैग़म्बर की आवाज़ से ऊंची न करो और जिस तरह आपस में एक दूसरे से ज़ोर से बोलते हो (उस तरह) उनके सामने ज़ोर से न बोला करो। (ऐसा न हो) कि तुम्हारे आमाल बर्बाद हो जाएं और तुम को ख़बर भी न हो। (२) जो लोग ख़ुदा के पैग़म्बर के सामने दबी आवाज़ से बोलते हैं, ख़ुदा ने उन के दिल तक़्वे के लिए आज़मा लिए हैं। उन के लिए बख़्शिश और बड़ा बदला है। (३) जो लोग तुम को हुजरों के बाहर से आवाज़ देते हैं, उन में अक्सर बे-अक़्ल हैं। (४) और अगर वे सब्र किए रहते, यहां तक कि तुम ख़ुद निकल कर उन के पास आते, तो यह उन के लिए बेहतर था और ख़ुदा तो

१. जनाब रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ज़ीक़ादा सन् ०६ हि० में हुदैबिया से मदीने को वापस तशरीफ़ ले गये। ज़िलहिज्जा और मुहर्रम वहां ठहरे। सफ़र के महीने में ख़ैबर पर चढ़ाई कर के उस को फ़त्ह किया और फिर मदीने को लौट गये। ज़ीक़ादा ०७ हि० आप और हुदैबिया वाले उमरा करने के लिए मक्का को रवाना हुए तो आप ने ज़ुल हुलैफ़ा से एहराम बांधा और क़ुर्बानियों के जानवरों को साथ लिया। ग़रज़ आप मक्के में बिला किसी डर के दाख़िल हुए और जो बातें आप ने ख़्वाब में देखी थीं, वे इस साल पूरी हुयीं। इसी ख़्वाब के सच होने का इस आयत में ज़िक्र है।

★रु. ४/१२ आ ३ ‥ मु. ख़ि मु ता क़. १५

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इन् जा-अकुम् फ़ासिक़ुम्-बि-न-बइन् फ़-त-बय्यनू अन् तुसीबू क़ौमम्-बिजहालतिन् फ़तुस्बिहू अला मा फ़-अल्तुम् नादिमीन (६) वअ्-लमू अन्-न फ़ीकुम् रसूलल्लाहि ط लौ युतीअुकुम् फ़ी कसीरिम्-मिनल्-अम्रि ल-अनित्तुम् व लाकिन्नल्ला-ह हब्ब-ब इलैकुमुल्-ईमा-न व ज़य्य-नहू फ़ी क़ुलूबिकुम् व कर्र-ह इलै-कुमुल्-कुफ़्-र वल्फ़ुसू-क़ वल् - अिस्या-न ط उलाइ-क हुमुर-राशिदून ॥ (७) फ़ज़्-लम्-मिनल्लाहि व निअ्-म-तन् ط वल्लाहु अलीमुन् हकीम (८) व इन् ता - इफ़तानि मिनल् - मुअ्मिनीनक़्-त - तलू फ़ - अस्लिहू बैनहुमा ج फ़-इम् - ब-ग़त् इह्दाहुमा अ-लल्-उख़रा फ़क़ातिलुल्लती तब्ग़ी हत्ता तफ़ी-अ इला अम्रिल्लाहि ج फ़-इन् फ़ा-अत् फ़-अस्लिहू बैनहुमा बिल्अद्लि व अक़्सितू ط इन्नल्ला - ह युहिब्बुल् - मुक़्सितीन (९) इन्नमल् - मुअ्मिनू-न इख़्वतुन् फ़-अस्लिहू बै-न अ-ख़वैकुम् वत्तक़ुल्ला-ह ल-अल्लकुम् तुर्-हमून ★● (१०) या अय्युहल्लज़ी--न आमनू ला यस्ख़र् क़ौमुम्-मिन् क़ौमिन् असा अंय्यकूनू ख़ैरम्-मिन्हुम् व ला निसाउम्-मिन् निसाइन् असा अंय्यकुन् - न ख़ैरम्मिन्हुन - न ج व ला तल्मिज़ू अन्फ़ुसकुम् व ला तनाबज़ू बिल्-अल्क़ाबि ط बिअ्-स-लिस्मुल् - फ़ुसूक़ु बअ्-दल्-ईमानि ج व मल्लम् यतुब् फ़-उलाइ-क हुमुज़्ज़ालिमून (११) या अय्युहल्लज़ी-न आमनुज्तनिबू क़सीरम्-मिनज़्ज़न्नि ز इन्-न बअ्-ज़ज़्ज़न्नि इस्मुंव्-व ला त-जस्ससू व ला यग़्-तब् बअ्-ज़ुकुम् बअ्-ज़न् ط अ-युहिब्बु अ-हदुकुम् अंय्यअ्-कु-ल लह्-म अख़ीहि मै-तन् फ़-करिह - तुमूहु ط वत्तक़ुल्ला-ह ط इन्नल्ला - ह तव्वाबुर्रहीम (१२)

لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ۚ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ جَآءَكُمْ
فَاسِقٌۢ بِنَبَاٍ فَتَبَيَّنُوْٓا اَنْ تُصِيْبُوْا قَوْمًۢا بِجَهَالَةٍ فَتُصْبِحُوْا عَلٰى مَا فَعَلْتُمْ
نٰدِمِيْنَ ۝ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ فِيْكُمْ رَسُوْلَ اللّٰهِ ۭ لَوْ يُطِيْعُكُمْ فِيْ كَثِيْرٍ
مِّنَ الْاَمْرِ لَعَنِتُّمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ حَبَّبَ اِلَيْكُمُ الْاِيْمَانَ وَزَيَّنَهٗ فِيْ
قُلُوْبِكُمْ وَكَرَّهَ اِلَيْكُمُ الْكُفْرَ وَالْفُسُوْقَ وَالْعِصْيَانَ ۭ اُولٰۗىِٕكَ هُمُ
الرّٰشِدُوْنَ ۝ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَنِعْمَةً ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝ وَ
اِنْ طَاۗىِٕفَتٰنِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اقْتَتَلُوْا فَاَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا ۚ فَاِنْۢ بَغَتْ
اِحْدٰىهُمَا عَلَي الْاُخْرٰى فَقَاتِلُوا الَّتِيْ تَبْغِيْ حَتّٰى تَفِيْۗءَ اِلٰٓى اَمْرِ اللّٰهِ ۚ
فَاِنْ فَاۗءَتْ فَاَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا بِالْعَدْلِ وَاَقْسِطُوْا ۭ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ
الْمُقْسِطِيْنَ ۝ اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ اِخْوَةٌ فَاَصْلِحُوْا بَيْنَ اَخَوَيْكُمْ وَاتَّقُوا
اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ مِّنْ قَوْمٍ
عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنُوْا خَيْرًا مِّنْهُمْ وَلَا نِسَاۗءٌ مِّنْ نِّسَاۗءٍ عَسٰٓى اَنْ يَّكُنَّ
خَيْرًا مِّنْهُنَّ ۚ وَلَا تَلْمِزُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَزُوْا بِالْاَلْقَابِ ۭ بِئْسَ
الِاسْمُ الْفُسُوْقُ بَعْدَ الْاِيْمَانِ ۚ وَمَنْ لَّمْ يَتُبْ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اجْتَنِبُوْا كَثِيْرًا مِّنَ الظَّنِّ ۡ اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ اِثْمٌ
وَّلَا تَجَسَّسُوْا وَلَا يَغْتَبْ بَّعْضُكُمْ بَعْضًا ۭ اَيُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ يَّاْكُلَ
لَحْمَ اَخِيْهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوْهُ ۭ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ رَّحِيْمٌ ۝

★रु. १/१३ आ १० ●सु. ३/४

बख़्शने वाला मेहरबान है। (५) मोमिनो ! अगर कोई बद-किरदार तुम्हारे पास कोई ख़बर लेकर आए, तो ख़ूब तह्क़ीक़ कर लिया करो, (शायद) कि किसी क़ौम को ना-दानी से नुक़्सान पहुंचा दो, फिर तुम को अपने किए पर शर्मिन्दा होना पड़े। (६) और जान रखो कि तुम में ख़ुदा के पैग़म्बर हैं। अगर बहुत-सी बातों में वह तुम्हारा कहा मान लिया करें तो तुम मुश्किल में पड़ जाओ, लेकिन ख़ुदा ने तुम को ईमान अज़ीज़ बना दिया और उस को तुम्हारे दिलों में सजा दिया और कुफ़्र और गुनाह और ना-फ़रमानी से तुम को बेज़ार कर दिया, यही लोग हिदायत के रास्ते पर हैं। (७) (यानी) ख़ुदा के फ़ज़्ल और एहसान से और ख़ुदा जानने वाला (और) हिक्मत वाला है। (८) और अगर मोमिनों में से कोई दो फ़रीक़ आपस में लड़ पड़ें, तो उन में सुलह करा दो। और अगर एक फ़रीक़ दूसरे पर ज़्यादती करे तो ज़्यादती करने वाले से लड़ो, यहां तक कि वह ख़ुदा के हुक्म की तरफ़ रुजूअ लाए। पस जब वह रुजूअ लाए तो दोनों फ़रीक़ में बराबरी के साथ सुलह करा दो और इंसाफ़ से काम लो कि ख़ुदा इंसाफ़ करने वालों को पसन्द करता है। (९) मोमिन तो आपस में भाई-भाई हैं, तो अपने दो भाइयों में सुलह करा दिया करो। और ख़ुदा से डरते रहो, ताकि तुम पर रहमत की जाए। (१०) ★●

मोमिनो ! कोई क़ौम किसी क़ौम का मज़ाक़ न उड़ाये। मुम्किन है कि वे लोग उन से बेहतर हों और न औरतें औरतों का (मज़ाक़ उड़ाएं) मुम्किन है कि वे उन से अच्छी हों और अपने (मोमिन भाई) को ऐब न लगाओ और न एक-दूसरे का बुरा नाम रखो। ईमान लाने के बाद बुरा नाम (रखना) गुनाह है।[1] और जो तौबा न करें, वे ज़ालिम हैं ! (११) ऐ ईमान वालो ! बहुत गुमान करने से बचो कि कुछ गुमान गुनाह हैं और एक-दूसरे के हाल की टोह में न रहा करो और न कोई किसी की ग़ीबत करे। क्या तुम में से कोई इस बात को पसन्द करेगा कि अपने मरे हुए भाई का गोश्त खाये ? इस से तो तुम ज़रूर नफ़रत करोगे, (तो ग़ीबत न करो) और ख़ुदा का डर रखो।

---

१. यानी जब कोई ईमान ले आए, तो उस को यहूदी या ईसाई या मजूसी वग़ैरह कह कर नहीं पुकारना चाहिए ऐसे नामों से पुकारना गुनाह है। अगर कोई यहूदी था तो इस्लाम लाने से पहले था। इसी तरह ईसाई और मजूसी वग़ैरह, ये नाम इस्लाम से पहले थे, लेकिन इस्लाम लाने के बाद न यहूदी यहूदी रहा, न ईसाई ईसाई, न मजूसी मजूसी, इन जाहिलियत के नामों से मुसलमानों को क्यों पुकारा जाए और उन को रंज क्यों पहुंचाया जाए या यह कि ईमान लाने के बाद फ़ासिक़ कहना बुरा नाम (रखना) है और बुरा नाम रखना बुरा है। जो गुनाह किसी से इस्लाम लाने से पहले हुआ हो, अब जब कि उस से तौबा कर लिया है, तो वह उस से मंसूब क्यों किया जाए और उसे बुरे नाम से क्यों ताना दिया जाए या यह कि ईमान लाने के बाद नाम रखना यानी (फ़िस्क़ से मंसूब करना) बुरा है। बहरहाल ऐब लगाने, ताने देने, बुरा नाम रखने, बुरे लक़ब से पुकारने से मना किया गया है।

★रु. १/१३ आ १० ●सु. ३/४

या अय्युहन्नासु इन्ना ख़-लक़्नाकुम् मिन् ज़-करिंव-व उन्सा व ज-अल्नाकुम् शुऊबंव्-व क़बाइ-ल लि-त-आरफ़ू इन्-न अक-र-मकुम् अिन्दल्लाहि अत्-क़ाकुम् इन्नल्ला-ह अलीमुन् ख़बीर (१३) क़ालतिल्-अअ्-राबु आमन्ना क़ुल् लम् तुअ्मिनू व लाकिन् क़ूलू अस्-लम्ना व लम्मा यद्ख़ुलिल्-ईमानु फ़ी क़ुलूबिकुम् व इन् तुतीअुल्ला-ह व रसूलहू ला यलित्कुम् मिन् अअ्-मालिकुम् शैअन् इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम (१४) इन्न-मल्-मुअ्मिनूनल्लज़ी-न आमनू बिल्लाहि व रसूलिही सुम्-म लम् यर्ताबू व जाहदू बिअम्वा-लिहिम् व अन्फ़ुसिहिम् फ़ी सबीलिल्लाहि उलाइ-क हुमुस्सादिक़ून (१५) क़ुल् अ-तुअ़ल्लिमूनल्ला-ह बिदीनिकुम् वल्लाहु यअ्-लमु मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि वल्लाहु बिकुल्लि शैइन् अलीम (१६) यमुन्नू-न अलै-क अन् अस्लमू क़ुल् ला तमुन्नू अ-लय्-य इस्लामकुम् बलिल्लाहु यमुन्नु अलैकुम् अन् हदाकुम् लिलईमानि इन् कुन्तुम् सादिक़ी-न (१७) इन्नल्ला-ह यअ्-लमु ग़ैबस्समावाति वल्अर्ज़ि वल्लाहु बसीरुम् - बिमा तअ्-मलून ★ (१८)

يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ إِنَّا خَلَقْنَٰكُم مِّن ذَكَرٍ وَأُنثَىٰ وَجَعَلْنَٰكُمْ شُعُوبًا وَ
قَبَآئِلَ لِتَعَارَفُوٓا۟ ۚ إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِندَ ٱللَّهِ أَتْقَىٰكُمْ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ ۝
قَالَتِ ٱلْأَعْرَابُ ءَامَنَّا ۖ قُل لَّمْ تُؤْمِنُوا۟ وَلَٰكِن قُولُوٓا۟ أَسْلَمْنَا وَلَمَّا يَدْخُلِ
ٱلْإِيمَٰنُ فِى قُلُوبِكُمْ ۖ وَإِن تُطِيعُوا۟ ٱللَّهَ وَرَسُولَهُۥ لَا يَلِتْكُم مِّنْ
أَعْمَٰلِكُمْ شَيْـًٔا ۚ إِنَّ ٱللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ إِنَّمَا ٱلْمُؤْمِنُونَ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟
بِٱللَّهِ وَرَسُولِهِۦ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوا۟ وَجَٰهَدُوا۟ بِأَمْوَٰلِهِمْ وَأَنفُسِهِمْ فِى سَبِيلِ
ٱللَّهِ ۚ أُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلصَّٰدِقُونَ ۝ قُلْ أَتُعَلِّمُونَ ٱللَّهَ بِدِينِكُمْ وَٱللَّهُ يَعْلَمُ
مَا فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَمَا فِى ٱلْأَرْضِ ۚ وَٱللَّهُ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيمٌ ۝ يَمُنُّونَ
عَلَيْكَ أَنْ أَسْلَمُوا۟ ۖ قُل لَّا تَمُنُّوا۟ عَلَىَّ إِسْلَٰمَكُم ۖ بَلِ ٱللَّهُ يَمُنُّ عَلَيْكُمْ
أَنْ هَدَىٰكُمْ لِلْإِيمَٰنِ إِن كُنتُمْ صَٰدِقِينَ ۝ إِنَّ ٱللَّهَ يَعْلَمُ غَيْبَ
ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ ۚ وَٱللَّهُ بَصِيرٌۢ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝

سُورَةُ قٓ مَكِّيَّةٌ وَهِىَ خَمْسٌ وَأَرْبَعُونَ ءَايَةً وَثَلَٰثُ رُكُوعَاتٍ

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

قٓ ۚ وَٱلْقُرْءَانِ ٱلْمَجِيدِ ۝ بَلْ عَجِبُوٓا۟ أَن جَآءَهُم مُّنذِرٌ مِّنْهُمْ
فَقَالَ ٱلْكَٰفِرُونَ هَٰذَا شَىْءٌ عَجِيبٌ ۝ أَءِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا ۖ
ذَٰلِكَ رَجْعٌۢ بَعِيدٌ ۝ قَدْ عَلِمْنَا مَا تَنقُصُ ٱلْأَرْضُ مِنْهُمْ ۖ وَعِندَنَا
كِتَٰبٌ حَفِيظٌۢ ۝ بَلْ كَذَّبُوا۟ بِٱلْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ فَهُمْ فِىٓ أَمْرٍ

५० सूरतु क़ाफ़ ३४

(मक्की) इस सूरः में अरबी के १५२५ अक्षर, ३७६ शब्द, ४५ आयतें और ३ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

क़ाफ़् वल्क़ुरआनिल् - मजीद (१) बल् अजिबू अन् जा-अहुम् मुन्ज़िरुम्-मिन्हुम् फ़-क़ालल्-काफ़िरू-न हाज़ा शैउन् अजीब (२) अ-इज़ा मित्ना व कुन्ना तुराबन् ज़ालि-क रज्अुम्-बअीद (३) क़द् अलिम्ना मा तन्क़ुसुल्-अर्ज़ु मिन्हुम् व अिन्दना किताबुन् हफ़ीज़ (४) बल् कज़्ज़बू बिल्हक़्क़ि लम्मा जा-अहुम् फ़हुम् फ़ी अम्रिम्-मरीज (५)

★रु. २/१४ आ ८

बेशक खुदा तौबा क़ुबूल करने वाला मेहरबान है। (१२) लोगो ! हम ने तुम को एक मर्द और एक औरत से पैदा किया और तुम्हारी क़ौमें और क़बीले बनाये, ताकि एक-दूसरे की पहचान करो (और) खुदा के नज़दीक तुम में ज़्यादा इज़्ज़त वाला वह है, जो ज़्यादा परहेज़गार है। बेशक खुदा सब कुछ जानने वाला (और) सब से खबरदार है। (१३) देहाती कहते हैं कि हम ईमान ले आए। कह दो कि तुम ईमान नहीं लाए (बल्कि यों) कहो कि हम इस्लाम लाए हैं और ईमान तो अब भी तुम्हारे दिलों में दाखिल ही नहीं हुआ और अगर तुम खुदा और उस के रसूल की फ़रमांबरदारी करोगे तो खुदा तुम्हारे आमाल में से कुछ कम नहीं करेगा। बेशक खुदा बख़्शने वाला मेहरबान है। (१४) मोमिन तो वे हैं जो खुदा और उस के रसूल पर ईमान लाए, फिर शक में न पड़े और खुदा की राह में जान और माल से लड़े। यही लोग (ईमान के) सच्चे हैं। (१५) उन से कहो, क्या तुम खुदा को अपनी दीनदारी जतलाते हो और खुदा तो आसमानों और ज़मीन की सब चीज़ों को जानता है और खुदा हर चीज़ को जानता है। (१६) ये लोग तुम पर एहसान रखते हैं कि मुसलमान हो गये हैं। कह दो कि अपने मुसलमान होने का मुझ पर एहसान न रखो, बल्कि खुदा तुम पर एहसान रखता है कि उस ने तुम्हें ईमान का रास्ता दिखाया, बशर्ते कि तुम सच्चे मुसलमान हो। (१७) बेशक खुदा आसमानों और ज़मीन की छिपी बातों को जानता है और जो कुछ तुम करते हो, उसे देखता है। (१८)★

५० सूर: क़ाफ़ ३४

सूर: क़ाफ़ मक्की है और इस में पैंतालीस आयतें और तीन रुकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

क़ाफ़, क़ुरआन मजीद की क़सम (कि मुहम्मद खुदा के पैग़म्बर हैं,) (१) लेकिन इन लोगों ने ताज्जुब किया कि उन्हीं में से एक हिदायत करने वाला उन के पास आया, तो काफ़िर कहने लगे कि यह बात तो (बड़ी) अजीब है। (२) भला जब हम मर गये और मिट्टी हो गये (तो फिर ज़िंदा होंगे?) यह ज़िंदा होना (अक़्ल से) दूर है। (३) उन के जिस्मों को ज़मीन जितना (खा-खा कर) कम करती जाती है, हमको मालूम है और हमारे पास लिखी याद-दाश्त भी है। (४) बल्कि (अजीब बात यह है कि) जब उन के पास (दीन) हक़ आ पहुंचा तो उन्हों ने उस को झूठ समझा, सो यह एक

★रु. २/१४ आ ८

अ-फ़-लम् यन्ज़ुरू इलस्समा-इ फ़ौक़हुम् कै-फ़ बनैनाहा व ज़य्यन्नाहा व मा लहा मिन् फ़ुरूज (६) वल्अर्-ज़ म-दद्नाहा व अल्क़ैना फ़ीहा रवासि-य व अम्बत्ना फ़ीहा मिन् कुल्लि ज़ौजिम्-बहीज ॥ (७) तब्सि-र-तंव्-व ज़िक्रा लिकुल्लि अ़ब्दिम्-मुनीब (८) व नज़्ज़ल्ना मिनस्समा-इ मा-अम्-मुबा-र-कन् फ़-अम्बत्ना बिही जन्नातिंव्-व हब्बल्-हसीद ॥ (९) वन्नख़्-ल बासिक़ातिल्लहा तल्अुन् नज़ीद ॥ (१०) रिज़्क़ल्-लिल्अिबादि ॥ व अह्यैना बिही बल्द-तम्-मै-तन् ♭ कज़ालिकल्-ख़ुरूज (११) कज़्ज़-बत् क़ब्-लहुम् क़ौमु नूहिंव्-व अस्हाबुर्रस्सि व समूद ॥ (१२) व आ़दुंव्-व फ़िर्औ़नु व इख़्वानु लूत ॥ (१३) व अस्हाबुल्-ऐकति व क़ौमु तुब्बअिन् ♭ कुल्लुन् कज़्ज़-बर्रुसु-ल फ़-हक़्-क़ वओ़द (१४) अ-फ़-अ़यीना बिल्ख़ल्किल्-अव्वलि ♭ बल् हुम् फ़ी लब्सिम्-मिन् ख़ल्क़िन् जदीद ★ (१५) व ल-क़द् ख़-लक़्नल् - इन्सा - न व नअ़-लमु मा तुवस्विसु बिही नफ़्सुहू ✓ व नह्नु अक़्-रबु इलैहि मिन् हब्लिल्-वरीद (१६) इज़् य-त-लक़्क़ल्-मु-त-लक़्क़ियानि अ़निल्यमीनि व अ़निश्शिमालि क़अ़ीद (१७) मा यल्फ़िज़ु मिन् क़ौलिन् इल्ला लदैहि रक़ीबुन् अ़तीद (१८) व जा-अत् सक्-रतुल्-मौति बिल्हक़्क़ि ♭ ज़ालि-क मा कुन्-त मिन्हु तहीद (१९) व नुफ़ि - ख़ फ़िस्सूरि ♭ ज़ालि-क यौमुल् - वओ़द (२०) व जा-अत् कुल्लु नफ़्सिम्-म-अ़हा साइक़ुंव्-व शहीद (२१) ल-क़द् कुन्-त फ़ी ग़फ़्-लतिम्-मिन् हाज़ा फ़-क-शफ़्ना अ़न्-क ग़िता-अ-क फ़-ब-सरुकल्-यौ-म हदीद (२२) व क़ा-ल क़रीनुहू हाज़ा मा ल-दय्-य अ़तीद ♭ (२३) अल्क़िया फ़ी ज-हन्न-म कुल्-ल कफ़्फ़ारिन् अ़नीद ॥ (२४)

مَرِيجٍ ۝ أَفَلَمْ يَنظُرُوا إِلَى السَّمَاءِ فَوْقَهُمْ كَيْفَ بَنَيْنَاهَا وَزَيَّنَّاهَا وَمَا
لَهَا مِن فُرُوجٍ ۝ وَالْأَرْضَ مَدَدْنَاهَا وَأَلْقَيْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ وَأَنبَتْنَا
فِيهَا مِن كُلِّ زَوْجٍ بَهِيجٍ ۝ تَبْصِرَةً وَذِكْرَىٰ لِكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيبٍ ۝
وَنَزَّلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً مُّبَارَكًا فَأَنبَتْنَا بِهِ جَنَّاتٍ وَحَبَّ الْحَصِيدِ ۝
وَالنَّخْلَ بَاسِقَاتٍ لَّهَا طَلْعٌ نَّضِيدٌ ۝ رِّزْقًا لِّلْعِبَادِ ۖ وَأَحْيَيْنَا بِهِ
بَلْدَةً مَّيْتًا ۚ كَذَٰلِكَ الْخُرُوجُ ۝ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَ
أَصْحَابُ الرَّسِّ وَثَمُودُ ۝ وَعَادٌ وَفِرْعَوْنُ وَإِخْوَانُ لُوطٍ ۝ وَ
أَصْحَابُ الْأَيْكَةِ وَقَوْمُ تُبَّعٍ ۚ كُلٌّ كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ وَعِيدِ ۝
أَفَعَيِينَا بِالْخَلْقِ الْأَوَّلِ ۚ بَلْ هُمْ فِي لَبْسٍ مِّنْ خَلْقٍ جَدِيدٍ ۝
وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ وَنَعْلَمُ مَا تُوَسْوِسُ بِهِ نَفْسُهُ ۖ وَنَحْنُ
أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيدِ ۝ إِذْ يَتَلَقَّى الْمُتَلَقِّيَانِ عَنِ الْيَمِينِ
وَعَنِ الشِّمَالِ قَعِيدٌ ۝ مَّا يَلْفِظُ مِن قَوْلٍ إِلَّا لَدَيْهِ رَقِيبٌ
عَتِيدٌ ۝ وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ۖ ذَٰلِكَ مَا كُنتَ مِنْهُ
تَحِيدُ ۝ وَنُفِخَ فِي الصُّورِ ۚ ذَٰلِكَ يَوْمُ الْوَعِيدِ ۝ وَجَاءَتْ كُلُّ
نَفْسٍ مَّعَهَا سَائِقٌ وَشَهِيدٌ ۝ لَّقَدْ كُنتَ فِي غَفْلَةٍ مِّنْ هَٰذَا
فَكَشَفْنَا عَنكَ غِطَاءَكَ فَبَصَرُكَ الْيَوْمَ حَدِيدٌ ۝ وَقَالَ قَرِينُهُ هَٰذَا
مَا لَدَيَّ عَتِيدٌ ۝ أَلْقِيَا فِي جَهَنَّمَ كُلَّ كَفَّارٍ عَنِيدٍ ۝ مَّنَّاعٍ

★रु० १/१५ आ १५

उलझी हुई बात में (पड़ रहे) हैं। (५) क्या उन्हों ने ऊपर आसमान की तरफ़ निगाह नहीं की कि हम ने उस को कैसे बनाया और (कैसे) सजाया और इस में कहीं दराड़ तक नहीं। (६) और ज़मीन को (देखो, इसे) हम ने फैलाया और इस में पहाड़ रख दिए और इस में हर तरह की खुशनुमा चीज़ें उगाईं, (७) ताकि रुजूअ लाने वाले बंदे हिदायत और नसीहत हासिल करें। (८) और आसमान से बरकत वाला पानी उतारा और उस से बाग़-बगीचे उगाए और खेती का अनाज, (९) और लम्बी-लम्बी खजूरें, जिन का गाभा तह-ब-तह होता है। (१०) (यह सब कुछ) बन्दों को रोज़ी देने के लिए (किया है) और उस (पानी) से हम ने मुर्दा शहर (यानी बंजर ज़मीन) को ज़िंदा किया, (बस) इसी तरह (क़ियामत के दिन) निकल पड़ना है। (११) उन से पहले नूह की क़ौम और कुएं वाले और समूद झुठला चुके हैं, (१२) और आद और फ़िरऔन और लूत के भाई, (१३) और बन के रहने वाले और तुब्बअ् की क़ौम। (ग़रज़) इन सब ने पैग़म्बरों को झुठलाया, तो हमारी धमकी भी पूरी हो कर रही। (१४) क्या हम पहली बार पैदा कर के थक गये हैं? (नहीं,) बल्कि यह फिर से पैदा करने में शक में (पड़े हुए) हैं। (१५) ★

और हम ही ने इंसान को पैदा किया है और जो ख़्याल उस के दिल में गुज़रते हैं, हम उन को जानते हैं और हम उस की रगे जान से भी उस से ज़्यादा क़रीब हैं। (१६) जब (वह कोई काम करता है तो) दो लिखने वाले जो दाएं-बाएं बैठते हैं, लिख लेते हैं। (१७) कोई बात उसकी ज़ुबान पर नहीं आती, मगर एक निगहबान उस के पास तैयार रहता है, (१८) और मौत की बेहोशी हक़ीक़त खोलने को छा गयी। (ऐ इंसान!) यही (वह हालत है) जिस से तू भागता था। (१९) और सूर फूंका जाएगा। यही (अज़ाब की) धमकी का दिन है। (२०) और हर शख़्स (हमारे सामने) आएगा। एक (फ़रिश्ता) उस के साथ चिल्लाने वाला होगा और एक (उस के अमलों की) गवाही देने वाला। (२१) (यह वह दिन है कि) इस से तू ग़ाफ़िल हो रहा था। अब हम ने तुझ पर से पर्दा उठा दिया, तो आज तेरी निगाह तेज़ है। (२२) और उसका हमनशीं (फ़रिश्ता) कहेगा कि यह (आमालनामा) मेरे पास हाज़िर है। (२३) (हुक्म होगा कि) हर सरकश ना-शुक्रे को

★रु. १/१५ आ १५

मन्नाअिल्-लिल्ख़ैरि मुअ्-तदिम्-मुरीबि-नि (२५) -ल्लज़ी ज-अ-ल म-अल्लाहि इलाहन् आख़-र फ़-अल्क़ियाहु फ़िल्-अज़ाबिश्शदीद (२६) क़ा-ल क़रीनुहू रब्बना मा अत्ग़ैतुहू व लाकिन् का-न फ़ी ज़लालिम्-बअ़ीद (२७) क़ा-ल ला तख़्तसिमू ल-दय्-य व क़द् क़द्दम्तु इलैकुम् बिल्वअ़ीद (२८) मा युबद-दलुल्-क़ौलु ल-दय्-य व मा अ-न बिज़ल्लामिल्-लिल्अ़बीद ★(२९) यौ-म नक़ूलु लिज-हन्न-म हलिम्त-लअ्ति व तक़ूलु हल् मिम्-मज़ीद (३०) व उज़्लि-फ़तिल्-जन्नतु लिल्-मुत्तक़ी-न ग़ै-र बअ़ीद (३१) हाज़ा मा तू-अ़दू-न लिकुल्लि अव्वाबिन् हफ़ीज़ (३२) मन् ख़शियर्रह्मा-न बिल्ग़ैबि व जा-अ बिक़ल्बिम्-मुनीबि-नि (३३) -द्ख़ुलूहा बि-सलामिन् ज़ालि-क यौमुल्ख़ुलूद (३४) लहुम् मा यशाऊ-न फ़ीहा व लदैना मज़ीद (३५) व कम् अह्-लक्ना क़ब्-लहुम्-मिन् क़र्निन् हुम् अशद्दु मिन्हुम् बत्-शन् फ़-नक़्क़बू फ़िल्बिलादि हल् मिम्-महीस़ (३६) इन्-न फ़ी ज़ालि-क लज़िक्रा लिमन् का-न लहू क़ल्बुन् औ अल्-क़स्सम्-अ व हु-व शहीद (३७) व ल-क़द् ख़-लक़्-नस्समावाति वल्अर्-ज़ व मा बैनहुमा फ़ी सित्तति अय्यामिंव्-व मा मस्सना मिल्-लुग़ूब (३८) फ़स्बिर् अ़ला मा यक़ूलू-न व सब्बिह् बिहम्दि रब्बि-क क़ब्-ल तुलूअ़िश्शम्सि व क़ब्-लल्-ग़ुरूब (३९) व मिनल्लैलि फ़सब्बिह्हु व अद्-बारस्सुजूद (४०) वस्तमिअ़-यौ-म युनादिल्मुनादि मिम्-मकानिन् क़रीब (४१) यौ-म यस्मअ़ूनस्-सै-ह-त बिल्हक़्क़ि ज़ालि-क यौमुल्-ख़ुरूज (४२) इन्ना नह्नु नुह्यी व नुमीतु व इलैनल् मसीर (४३) यौ-म त-शक़्क़क़ुल्अर्ज़ु अन्-हुम् सिराअन् ज़ालि-क हश्रुन् अलैना यसीर (४४) नह्नु अअ्-लमु बिमा यक़ूलू-न व मा अन्-त अलैहिम् बिजब्बारिन् फ़-ज़क्किर् बिल्क़ुरआनि मंय्यख़ाफ़ु वअ़ीद ★(४५)

لِلْخَيْرِ مُعْتَدٍ مُّرِيبٍ ۝ الَّذِي جَعَلَ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ فَأَلْقِيَاهُ فِي
الْعَذَابِ الشَّدِيدِ ۝ قَالَ قَرِينُهُ رَبَّنَا مَا أَطْغَيْتُهُ وَلَٰكِن كَانَ فِي
ضَلَالٍ بَعِيدٍ ۝ قَالَ لَا تَخْتَصِمُوا لَدَيَّ وَقَدْ قَدَّمْتُ إِلَيْكُم
بِالْوَعِيدِ ۝ مَا يُبَدَّلُ الْقَوْلُ لَدَيَّ وَمَا أَنَا بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيدِ ۝ يَوْمَ
نَقُولُ لِجَهَنَّمَ هَلِ امْتَلَأْتِ وَتَقُولُ هَلْ مِن مَّزِيدٍ ۝ وَأُزْلِفَتِ
الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِينَ غَيْرَ بَعِيدٍ ۝ هَٰذَا مَا تُوعَدُونَ لِكُلِّ أَوَّابٍ حَفِيظٍ ۝
مَّنْ خَشِيَ الرَّحْمَٰنَ بِالْغَيْبِ وَجَاءَ بِقَلْبٍ مُّنِيبٍ ۝ ادْخُلُوهَا بِسَلَامٍ
ذَٰلِكَ يَوْمُ الْخُلُودِ ۝ لَهُم مَّا يَشَاءُونَ فِيهَا وَلَدَيْنَا مَزِيدٌ ۝ وَكَمْ أَهْلَكْنَا
قَبْلَهُم مِّن قَرْنٍ هُمْ أَشَدُّ مِنْهُم بَطْشًا فَنَقَّبُوا فِي الْبِلَادِ هَلْ مِن
مَّحِيصٍ ۝ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَذِكْرَىٰ لِمَن كَانَ لَهُ قَلْبٌ أَوْ أَلْقَى السَّمْعَ وَهُوَ
شَهِيدٌ ۝ وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ وَمَا
مَسَّنَا مِن لُّغُوبٍ ۝ فَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ
طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوبِ ۝ وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَأَدْبَارَ السُّجُودِ ۝
وَاسْتَمِعْ يَوْمَ يُنَادِ الْمُنَادِ مِن مَّكَانٍ قَرِيبٍ ۝ يَوْمَ يَسْمَعُونَ الصَّيْحَةَ
بِالْحَقِّ ذَٰلِكَ يَوْمُ الْخُرُوجِ ۝ إِنَّا نَحْنُ نُحْيِي وَنُمِيتُ وَإِلَيْنَا الْمَصِيرُ ۝
يَوْمَ تَشَقَّقُ الْأَرْضُ عَنْهُمْ سِرَاعًا ذَٰلِكَ حَشْرٌ عَلَيْنَا يَسِيرٌ ۝ نَّحْنُ أَعْلَمُ بِمَا
يَقُولُونَ وَمَا أَنتَ عَلَيْهِم بِجَبَّارٍ فَذَكِّرْ بِالْقُرْآنِ مَن يَخَافُ وَعِيدِ ۝

★रु. २/१६ आ १४ ★रु. ३/१७ आ १६

दोज़ख़ में डाल दो। (२४) जो माल में बुख़्ल करने वाला, हद से बढ़ने वाला, शुब्हे निकालने वाला था, (२५) जिस ने ख़ुदा के साथ और माबूद मुक़र्रर कर रखे थे, तो उस को सख़्त अज़ाब में डाल दो। (२६) उस का साथी (शैतान) कहेगा कि ऐ हमारे परवरदिगार! मैं ने उस को गुमराह नहीं किया था, बल्कि यह आप ही रास्ते से दूर भटका हुआ था। (२७) (ख़ुदा) कहेगा कि हमारे हुज़ूर में रद्द व कद्द न करो। हम तुम्हारे पास पहले ही (अज़ाब की) धमकी भेज चुके थे। (२८) हमारे यहां बात बदला नहीं करती और हम बन्दों पर ज़ुल्म नहीं किया करते। (२९)★

उस दिन हम दोज़ख़ से पूछेंगे कि क्या तू भर गयी? वह कहेगी कि कुछ और भी हैं? (३०) और बहिश्त परहेज़गारों के क़रीब कर दी जाएगी (कि बिल्कुल) दूर न होगी। (३१) यही वह चीज़ है, जिस का तुम से वायदा किया जाता था (यानी) हर रुजूअ लाने वाले, हिफ़ाज़त करने वाले से, (३२) जो ख़ुदा से बिन देखे डरता रहा और रुजूअ लाने वाला दिल ले कर आया, (३३) इस में सलामती के साथ दाख़िल हो जाओ, यह हमेशा रहने का दिन है। (३४) वहां वह जो चाहेंगे, उन के लिए हाज़िर है और हमारे यहां और भी (बहुत कुछ) है। (३५) और हमने उन से पहले कई उम्मतें हलाक कर डालीं, वह इन से ताक़त में कहीं बढ़ कर थे, वह शहरों में गश्त करने लगे, क्या कहीं भागने की जगह है? (३६) जो शख़्स दिल (आगाह) रखता है या दिल से मुतवज्जह हो कर सुनता है, उस के लिए इस में नसीहत है। (३७) और हमने आसमानों और ज़मीन को और जो (मख़्लूक़ात) उन में हैं, सब को छः दिनों में बना दिया और हम को ज़रा भी थकन नहीं हुई। (३८) तो जो कुछ ये (कुफ़्फ़ार) बकते हैं, इस पर सब्र करो और सूरज के निकलने से पहले और उस के डूबने से पहले अपने परवरदिगार की तारीफ़ के साथ तस्बीह करते रहो। (३९) और रात के कुछ वक़्तों में भी और नमाज़ के बाद भी उस (के नाम) की पाकी बयान करो। (४०) और सुनो जिस दिन पुकारने वाला नज़दीक की जगह से पुकारेगा, (४१) जिस दिन लोग चीख़ यक़ीनी तौर पर सुन लेंगे। वही निकल पड़ने का दिन है। (४२) हम ही तो ज़िंदा करते हैं और हम ही मारते हैं और हमारे ही पास लौट कर आना है। (४३) उस दिन ज़मीन उन पर से फट जाएगी और वे झट-पट निकल खड़े होंगे। यह जमा करना हमें आसान है। (४४) ये लोग जो कुछ कहते हैं, हमें ख़ूब मालूम है और तुम उन पर ज़बरदस्ती करने वाले नहीं हो। पस जो हमारे (अज़ाब की) धमकी से डरे, उस को क़ुरआन से नसीहत करते रहो। (४५)★

★रु. २/१६ आ १४　★रु. ३/१७ आ १६

५१ सूरतुज़्-ज़ारियाति ६७

(मक्की) इस सूरः में अरबी के १५५६ अक्षर, ३६० शब्द, ६० आयतें और ३ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

वज़्ज़ारियाति ज़र्वन् (१) फ़ल्ह़ामिलाति विक़्रन् (२) फ़ल्जारियाति युस्रन् (३) फ़ल्मुक़स्सिमाति अम्रन् (४) इन्नमा तूअ़दू-न लसादिक़ुंव- (५) व इन्नद्दी-न ल-वाक़ि-अ़् (६) वस्समा-इ ज़ातिल्-हुबुकि (७) इन्नकुम् लफ़ी क़ौलिम्-मुख़्तलिफ़िय्- (८) युअ्फ़कु अ़न्हु मन् उफ़िक (९) क़ुतिलल्-ख़र्रासून (१०) अल्लज़ी-न हुम् फ़ी ग़म्रतिन् साहून (११) यस्-अलू-न अय्या-न यौमुद्दीन (१२) यौ-म हुम् अ़लन्नारि युफ़्तनून (१३) ज़ूक़ू फ़ित-न-तकुम् हाज़ल्लज़ी कुन्तुम् बिही तस्तअ्-जिलून (१४) इन्नल्मुत्तक़ी-न फ़ी जन्नातिंव्-व अ़ुयूनिन् (१५) आख़िज़ी-न मा आताहुम् रब्बुहुम् इन्नहुम् कानू क़ब्-ल ज़ालि-क मुह़्सि-नीन (१६) कानू क़लीलम्-मिनल्लैलि मा यह्-जअ़ून (१७) व बिल्-अस्ह़ारि हुम् यस्-तग़्फ़िरून (१८) व फ़ी अम्वालिहिम् ह़क़्क़ुल्-लिस्साइलि वल्-मह़्रूम (१९) व फ़िल्अर्ज़ि आयातुल्-लिल्मूक़िनीन (२०) व फ़ी अन्फ़ुसि-कुम् अ-फ़-ला तुब्सिरून (२१) व फ़िस्समाइ रिज़्क़ुकुम् व मा तूअ़दून (२२) फ़-व-रब्बिस्-समाइ वल्अर्ज़ि इन्नहू ल-ह़क़्क़ुम्-मिस्-ल मा अन्नकुम् तन्तिक़ून ★ (२३) हल् अता-क ह़दीसु ज़ैफ़ि इब्राहीमल्-मुक्रमीन (२४) इज़् द-ख़-लू अ़लैहि फ़क़ालू सलामन् क़ा-ल सलामुन् क़ौमुम् मुन्करून (२५) फ़रा-ग़ इला अह़्लिही फ़जा-अ बिअ़िज्लिन् समीन (२६) फ़-क़र्रबहू इलैहिम् क़ा-ल अला तअ्-कुलून (२७) फ़-औज-स मिन्हुम् ख़ी-फ़-तन् क़ालू ला त-ख़फ़् व बश्शरूहु बिग़ुलामिन् अ़लीम (२८) फ़-अक़्-ब-लतिम-र-अतुहू फ़ी सर्रतिन् फ़-सक्कत् वज्हहा व क़ालत् अ़जूज़ुन् अ़क़ीम (२९) क़ालू कज़ालिकि क़ा-ल रब्बुकि इन्नहू हुवल्-ह़कीमुल्-अ़लीम (३०)

سُوْرَةُ الذّٰرِيٰتِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
وَالذّٰرِيٰتِ ذَرْوًا ○ فَالْحٰمِلٰتِ وِقْرًا ○ فَالْجٰرِيٰتِ يُسْرًا ○ فَالْمُقَسِّمٰتِ
اَمْرًا ○ اِنَّمَا تُوْعَدُوْنَ لَصَادِقٌ ○ وَّاِنَّ الدِّيْنَ لَوَاقِعٌ ○ وَالسَّمَآءِ
ذَاتِ الْحُبُكِ ○ اِنَّكُمْ لَفِيْ قَوْلٍ مُّخْتَلِفٍ ○ يُّؤْفَكُ عَنْهُ مَنْ اُفِكَ ○
قُتِلَ الْخَرّٰصُوْنَ ○ الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ غَمْرَةٍ سَاهُوْنَ ○ يَسْـَٔلُوْنَ اَيَّانَ
يَوْمُ الدِّيْنِ ○ يَوْمَ هُمْ عَلَى النَّارِ يُفْتَنُوْنَ ○ ذُوْقُوْا فِتْنَتَكُمْ هٰذَا
الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تَسْتَعْجِلُوْنَ ○ اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ○
اٰخِذِيْنَ مَآ اٰتٰىهُمْ رَبُّهُمْ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَبْلَ ذٰلِكَ مُحْسِنِيْنَ ○ كَانُوْا
قَلِيْلًا مِّنَ الَّيْلِ مَا يَهْجَعُوْنَ ○ وَبِالْاَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ ○ وَفِيْٓ
اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِّلسَّآئِلِ وَالْمَحْرُوْمِ ○ وَفِي الْاَرْضِ اٰيٰتٌ لِّلْمُوْقِنِيْنَ ○
وَفِيْٓ اَنْفُسِكُمْ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ○ وَفِي السَّمَآءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تُوْعَدُوْنَ ○
فَوَرَبِّ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اِنَّهٗ لَحَقٌّ مِّثْلَ مَآ اَنَّكُمْ تَنْطِقُوْنَ ○ هَلْ اَتٰىكَ
حَدِيْثُ ضَيْفِ اِبْرٰهِيْمَ الْمُكْرَمِيْنَ ○ اِذْ دَخَلُوْا عَلَيْهِ فَقَالُوْا سَلٰمًا قَالَ
سَلٰمٌ قَوْمٌ مُّنْكَرُوْنَ ○ فَرَاغَ اِلٰٓى اَهْلِهٖ فَجَآءَ بِعِجْلٍ سَمِيْنٍ ○ فَقَرَّبَهٗٓ اِلَيْهِمْ
قَالَ اَلَا تَاْكُلُوْنَ ○ فَاَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيْفَةً قَالُوْا لَا تَخَفْ وَبَشَّرُوْهُ
بِغُلٰمٍ عَلِيْمٍ ○ فَاَقْبَلَتِ امْرَاَتُهٗ فِيْ صَرَّةٍ فَصَكَّتْ وَجْهَهَا وَقَالَتْ عَجُوْزٌ
عَقِيْمٌ ○ قَالُوْا كَذٰلِكِ قَالَ رَبُّكِ اِنَّهٗ هُوَ الْحَكِيْمُ الْعَلِيْمُ ○

★रु० १/१८ आ २३ व० लाज़िम

५१ सूरः ज़ारियात ६७

सूरः ज़ारियात मक्की है और इस में साठ आयतें और तीन रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

बिखेरने वालियों की क़सम! जो उड़ा कर बिखेर देती हैं, (१) फिर (पानी का) बोझ उठाती हैं, (२) फिर धीरे-धीरे चलती हैं, (३) फिर चीज़ें तक़्सीम करती हैं,[१] (४) कि जिस का तुम से वायदा किया जाता है, वह सच्चा है। (५) और इंसाफ़ (का दिन) ज़रूर वाक़ेअ होगा। (६) और आसमान की क़सम! जिसमें रास्ते हैं, (७) कि (ऐ मक्का वालो!) तुम एक झगड़े की बात में (पड़े हुए) हो।[२] (८) इस से वही फिरता है, जो (ख़ुदा की तरफ़ से) फेरा जाए। (६) अटकल दौड़ाने वाले हलाक हों, (१०) जो बे-ख़बरी में भूले हुए हैं। (११) पूछते हैं कि बदले का दिन कब होगा? (१२) उस दिन (होगा) जब उन को आग में अज़ाब दिया जाएगा। (१३) अब अपनी शरारत का मज़ा चखो। यह वही है, जिस के लिए तुम जल्दी मचाया करते थे। (१४) बेशक परहेज़गार बहिश्तों और चश्मों में (ऐश कर रहे) होंगे। (१५) (और) जो-जो (नेमतें) उन का परवरदिगार उन्हें देता होगा, उन को ले रहे होंगे। बेशक वे उस से पहले नेकियां करते थे, (१६) रात के थोड़े से हिस्से में सोते थे, (१७) और सुबह के वक़्तों में बख़्शिश मांगा करते थे। (१८) और उन के माल में मांगने वाले और न मांगने वाले (दोनों) का हक़ होता है। (१६) और यक़ीन करने वालों के लिए ज़मीन में (बहुत-सी) निशानियां हैं। (२०) और ख़ुद तुम्हारे नफ़्सों में, तो क्या तुम देखते नहीं? (२१) और तुम्हारी रोज़ी और जिस चीज का तुम से वायदा किया जाता है आसमान में है। (२२) तो आसमानों और ज़मीन के मालिक की क़सम! यह (उसी तरह) यक़ीन के क़ाबिल है, जिस तरह तुम बात करते हो। (२३)★

भला तुम्हारे पास इब्राहीम के मुअज़्ज़ज़ मेहमानों की ख़बर पहुंची है? ⁂ (२४) जब वे उनके पास आए तो सलाम कहा। उन्हों ने भी (जवाब में) सलाम कहा, (देखा तो) ऐसे लोग कि न जान, न पहचान। (२५) तो अपने घर जा कर एक (भुना हुआ) मोटा बछड़ा लाए। (२६) (और खाने के लिए) उन के आगे रख दिया। कहने लगे कि आप खाते क्यों नहीं? (२७) और दिल में उन से ख़ौफ़ मालूम किया। उन्हों ने कहा कि ख़ौफ़ न कीजिए और उन को एक दानिशमंद (सूझ-बूझ वाले) लड़के की ख़ुशख़बरी भी सुनायी। (२८) तो इब्राहीम की बीवी चिल्लाती आयीं और अपना मुंह पीट कर कहने लगीं कि (ऐ है, एक तो) बुढ़िया और (दूसरे) बांझ? (२६) उन्हों ने कहा, (हां) तुम्हारे परवरदिगार ने यों ही फ़रमाया है। वह बेशक हिक्मत वाला (और)

---

१. तफ़्सीरों में इन चार आयतों में एक ही चीज़ भी मुराद ली गयी है यानी हवा और चार मुख़्तलिफ़ चीज़ें भी मुराद ली गयी हैं यानी 'ज़ारियाति ज़र्वन' से तो हवाएं कि धूल वग़ैरह को उड़ा कर बिखेर देती हैं और 'हामिलाति विक्रन' से बदलियां, जो मेंह का बोझ उठाती हैं और 'जारियाति युस्रन' से किश्तियां जो दरिया में सहज-महज चलती हैं और 'मुक़स्सिमाति अम्रन' से फ़रिश्ते, जो बारिश और रोज़ी और सूखे और सस्ताई और चीज़ों को तक़्सीम करते हैं। कुछ तफ़्सीर लिखने वालों ने इन चीज़ों के अलावा और चीज़ें भी मुराद ली हैं, मगर उन का ज़िक्र ग़ैर ज़रूरी है।

२. झगड़े की बात यानी बे-जोड़ बात यानी रसूले ख़ुदा सल्ल० की शान में कोई तो कहता है कि शायर है, कोई

(शेष पृष्ठ ८३१ पर)

★रु. १/१८ आ २३ ⁂ व. लाज़िम

सत्ताईसवां पारः क़ा-ल फ़मा ख़त्बुकुम्

सूरतुज़्ज़ारियाति आयात ३१ से ६०

क़ा-ल फ़मा ख़त्बुकुम् अय्युहल् मुर्सलून (३१) क़ालू इन्ना उर्सिल्ना इला क़ौमिम्-मुज्रिमीन (३२) लिनुर्सि-ल अलैहिम् हिजा-र-तम्-मिन्तीन (३३) मुसव्व-म-तन् अिन्-द रब्बि-क लिल्मुस्रिफ़ीन (३४) फ़-अख़-रज्ना मन् का-न फ़ीहा मिनल्-मुअ्मिनीन (३५) फ़-मा व-जद्ना फ़ीहा ग़ै-र बैतिम्-मिनल्-मुस्लिमीन (३६) व त-रक्ना फ़ीहा आयतल्-लिल्लज़ी-न यख़ाफ़ूनल्-अ़ज़ाबल्-अलीम (३७) व फ़ी मूसा इज् अर्सल्नाहु इला फ़िर्औ-न बिसुल्तानिम्-मुबीन (३८) फ़-त-वल्ला बिरुक्निही व क़ा-ल साहि-रुन् औ मज्नून (३९) फ़-अ-ख़ज्नाहु व जुनूदहू फ़-न-बज्नाहुम् फ़िल्-यम्मि व हु-व मुलीम (४०) व फ़ी आदिन् इज् अर्सल्ना अलैहिमुर्-रीहल्-अ़क़ीम (४१) मा त-ज़रु मिन् शैइन् अ-तत् अलैहि इल्ला ज-अ-लत्हु करमीम (४२) व फ़ी समू-द इज् क़ी-ल लहुम् त-मत्तअू हत्ता हीन (४३) फ़-अ़तौ अन् अम्रि रब्बिहिम् फ़-अ-ख़-ज़त्-हुमुस्साअिक़तु व हुम् यन्ज़ुरून (४४) फ़-मस्तताअू मिन् क़ियामिव्-व मा कानू मुन्तसिरीन (४५) व क़ौ-म नूहिम्मिन् क़ब्लु इन्नहुम् कानू क़ौमन् फ़ासिक़ीन ★ (४६) वस्समा-अ बनैनाहा बिऐदिव्-व इन्ना लमूसिअून (४७) वल्अर्-ज़ फ़-रश्नाहा फ़निअ्-मल्-माहिदून (४८) व मिन् कुल्लि शैइन् ख़-लक़्ना ज़ौजैनि ल-अल्ल-कुम् त-ज़क्करून (४९) फ़फ़िर्रू इलल्लाहि इन्नी लकुम् मिन्हु नज़ीरुम्-मुबीन (५०) व ला तज्-अलू म-अल्लाहि इलाहन् आख़-र इन्नी लकुम् मिन्हु नज़ीरुम्-मुबीन (५१) कज़ालि-क मा अ-तल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् मिर्रसूलिन् इल्ला क़ालू साहिरुन् औ मज्नून (५२) अ-त-वासौ बिही बल् हुम् क़ौमुन् ताग़ून (५३) फ़-त-वल्-ल अन्हुम् फ़मा अन्-त बिमलूमिव्- (५४) व ज़क्किर् फ़-इन्नज़्ज़िक्रा तन्फ़अुल्-मुअ्मिनीन (५५) व मा ख़-लक़्तुल्जिन-न वल्इन-स इल्ला लि-यअ्-बुदून (५६)

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ أَيُّهَا الْمُرْسَلُونَ ۝ قَالُوا إِنَّا أُرْسِلْنَا إِلَىٰ قَوْمٍ
مُجْرِمِينَ ۝ لِنُرْسِلَ عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِنْ طِينٍ ۝ مُسَوَّمَةً عِنْدَ
رَبِّكَ لِلْمُسْرِفِينَ ۝ فَأَخْرَجْنَا مَنْ كَانَ فِيهَا مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ فَمَا
وَجَدْنَا فِيهَا غَيْرَ بَيْتٍ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۝ وَتَرَكْنَا فِيهَا آيَةً لِلَّذِينَ
يَخَافُونَ الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ۝ وَفِي مُوسَىٰ إِذْ أَرْسَلْنَاهُ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ
بِسُلْطَانٍ مُبِينٍ ۝ فَتَوَلَّىٰ بِرُكْنِهِ وَقَالَ سَاحِرٌ أَوْ مَجْنُونٌ ۝ فَأَخَذْنَاهُ
وَجُنُودَهُ فَنَبَذْنَاهُمْ فِي الْيَمِّ وَهُوَ مُلِيمٌ ۝ وَفِي عَادٍ إِذْ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ
الرِّيحَ الْعَقِيمَ ۝ مَا تَذَرُ مِنْ شَيْءٍ أَتَتْ عَلَيْهِ إِلَّا جَعَلَتْهُ كَالرَّمِيمِ ۝
وَفِي ثَمُودَ إِذْ قِيلَ لَهُمْ تَمَتَّعُوا حَتَّىٰ حِينٍ ۝ فَعَتَوْا عَنْ أَمْرِ رَبِّهِمْ
فَأَخَذَتْهُمُ الصَّاعِقَةُ وَهُمْ يَنْظُرُونَ ۝ فَمَا اسْتَطَاعُوا مِنْ قِيَامٍ وَمَا كَانُوا
مُنْتَصِرِينَ ۝ وَقَوْمَ نُوحٍ مِنْ قَبْلُ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَاسِقِينَ ۝ وَالسَّمَاءَ
بَنَيْنَاهَا بِأَيْدٍ وَإِنَّا لَمُوسِعُونَ ۝ وَالْأَرْضَ فَرَشْنَاهَا فَنِعْمَ الْمَاهِدُونَ ۝
وَمِنْ كُلِّ شَيْءٍ خَلَقْنَا زَوْجَيْنِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ۝ فَفِرُّوا إِلَى اللَّهِ إِنِّي
لَكُمْ مِنْهُ نَذِيرٌ مُبِينٌ ۝ وَلَا تَجْعَلُوا مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ إِنِّي لَكُمْ مِنْهُ نَذِيرٌ
مُبِينٌ ۝ كَذَٰلِكَ مَا أَتَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا قَالُوا سَاحِرٌ أَوْ
مَجْنُونٌ ۝ أَتَوَاصَوْا بِهِ بَلْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُونَ ۝ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ فَمَا أَنْتَ بِمَلُومٍ ۝
وَذَكِّرْ فَإِنَّ الذِّكْرَىٰ تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِينَ ۝ وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ

★रु. २/१ आ २३

ख़बरदार है। (३०) (इब्राहीम ने) कहा कि फ़रिश्तो ! तुम्हारा मतलब क्या है ? (३१) उन्होंने कहा कि हम गुनाहगारों की तरफ़ भेजे गये हैं, (३२) ताकि उन पर खंगर बरसाएं, (३३) जिन पर हद से बढ़ जाने वालों के लिए तुम्हारे परवरदिगार के यहां से निशान कर दिए गए हैं, (३४) तो वहां जितने मोमिन थे, उन को हमने निकाल लिया, (३५) और उस में एक घर के सिवा मुसलमानों का कोई घर न पाया, (३६) और जो लोग दर्दनाक अज़ाब से डरते हैं, उन के लिए वहां निशानी छोड़ दी। (३७) और मूसा (के हाल) में (भी निशानी है) जब हमने उन को फ़िरऔन की तरफ़ खुला हुआ मोजज़ा दे कर भेजा। (३८) तो उस ने अपनी ताक़त (के घमंड) से मुंह मोड़ लिया और कहने लगा, यह तो जादूगर है या दीवाना, (३९) तो हमने उस को और उसके लश्करों को पकड़ लिया और उन को दरिया में फेंक दिया और वह काम ही मलामत के क़ाबिल करता था। (४०) और आद (की क़ौम के हाल) में भी (निशानी है,) जब हम ने उन पर ना-मुबारक हवा चलायी। (४१) वह जिस चीज़ पर चलती, उस को रेज़ा-रेज़ा किये बग़ैर न छोड़ती। (४२) और (क़ौम) समूद (के हाल) में भी (निशानी है,) जब उन से कहा गया कि एक वक़्त तक फ़ायदा उठा लो। (४३) तो उन्हों ने अपने परवरदिगार के हुक्म से सरकशी की, सो उन को कड़क ने आ पकड़ा और वे देख रहे थे। (४४) फिर वे न तो उठने की ताक़त रखते थे और न मुक़ाबला कर सकते थे। (४५) और इस से पहले (हम) नूह की क़ौम को (हलाक कर चुके थे,) बेशक वे ना-फ़रमान लोग थे। (४६) ★

और आसमानों को हम ही ने हाथों से बनाया और हम को सब मक़्दूर है। (४७) और ज़मीन को हम ही ने बिछाया, तो (देखो) हम क्या ख़ूब बिछाने वाले हैं। (४८) और हर चीज़ की हम ने दो क़िस्में बनायीं, ताकि तुम नसीहत पकड़ो, (४९) तो तुम लोग ख़ुदा की तरफ़ भाग चलो, मैं उस की तरफ़ से तुम को खुला रास्ता बताने वाला हूं। (५०) और ख़ुदा के साथ किसी और को माबूद न बनाओ। मैं उस की तरफ़ से तुम को खुला रास्ता बताने वाला हूं। (५१) इसी तरह इन से पहले लोगों के पास जो पैग़म्बर आता, वे उस को जादूगर या दीवाना कहते। (५२) क्या ये लोग एक-दूसरे को इसी बात की वसीयत करते आए हैं, बल्कि ये शरीर लोग हैं। (५३) तो इन से एराज़ करो। तुम को (हमारी तरफ़ से) मलामत न होगी। (५४) और नसीहत करते रहो कि नसीहत मोमिनों को नफ़ा देती है। (५५) और मैंने जिन्नों ओर इंसानों को इसलिए पैदा किया है

(पृष्ठ ८२९ का शेष)

कहता है कि दीवाना है, कोई कहता है कि काहिन है और इसी तरह क़ुरआन मजीद को शेर, जादू और कहानत वग़ैरह कहते हैं। कुछ ने कहा, इस से यह मुराद है कि कोई क़ियामत का इन्कार करता है, कोई इस में शक करता है। कुछ ने कहा, इस से यह मुराद है कि वे ख़ुदा का तो इक़रार करते हैं और बुतों को पूजते हैं।

★रु. २/१ आ २३

मा उरीदु मिन्हुम मिर्रिज़्क़िव्-व मा उरीदु अंय्युत्अिमून (५७) इन्नल्ला-ह हुवर्रज़्ज़ाक़ु ज़ुल्क़ु व्वतिल्-मतीन (५८) फ़-इन्-न लिल्लज़ी-न ज़-लमू ज़नूबम्-मिस्-ल ज़नूबि अस्-हाबिहिम् फ़ला यस्तअ्-जिलून (५९) फ़वैलुल् - लिल्लज़ी - न क - फ़रू मिंय्यौमिहिमुल्लज़ी यूअ़दून ★ (६०)

५२ सूरतुत्तूरि ७६

(मक्की) इस सूरः में अरबी के १३३४ अक्षर, ३१९ शब्द, ४९ आयतें और २ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम ●

वत्तूर (१) व किताबिम्-मस्तूरिन् (२) फ़ी रक़्क़िम्-मन्शूरिंव- (३) वल्बैतिल्-मअ्-मूर (४) वस्सक़्फ़िल्-मर्फ़ूअ़ि (५) वल्बह़्रिल्-मस्जूर (६) इन-न अज़ा-ब रब्बि-क लवाक़िअ़ुम्- (७) मा लहू मिन् दाफ़िअ़िय्- (८) यौ-म तमूरुस्समाउ मौरंव- (९) व तसीरुल्-जिबालु सैरा (१०) फ़वैलुंय्यौ-मइज़िल्-लिल्मुकज़्ज़िबीन (११) अल्लज़ी-न हुम् फ़ी ख़ौज़िंय्यल्-अ़बून ※(१२) यौ-म युदअ़्-ऊ-न इला नारि ज-हन्न-म दअ़्-आ (१३) हाज़िहिन्-नारुल्लती कुन्तुम् बिहा तुकज़्ज़िबून (१४) अ-फ़-सिह़्रुन् हाज़ा अम् अन्तुम् ला तुब्-सिरून (१५) इस्लौहा फ़स्बिरू औ ला तस्बिरू सवाउन् अ़लैकुम् इन्नमा तुज्-ज़ौ-न मा कुन्तुम् तअ़्-मलून (१६) इन्नल्-मुत्तक़ी-न फ़ी जन्नातिंव्-व नअ़ीम (१७) फ़ाकिही-न बिमा आताहुम् रब्बुहुम् व वक़ाहुम् रब्बुहुम् अ़ज़ाबल्-जह़ीम (१८) कुलू वश्रबू हनीअम्-बिमा कुन्तुम् तअ़्-मलून (१९) मुत्तकिई-न अ़ला सुरुरिम्-मस्फ़ूफ़तिन् व ज़व्वज्नाहुम् बिहूरिन् अ़ीन (२०) वल्-लज़ी-न आमनू वत्त-ब-अ़त्हुम् ज़ुर्रिय्यतुहुम् बिईमानिन् अल्-ह़क़्ना बिहिम् ज़ुर्रिय्य-तहुम् व मा अ-लत्नाहुम् मिन् अ़-मलिहिम् मिन् शैइन् कुल्लुम्रिइम्-बिमा क-स-ब रहीन (२१) व अम्दद्नाहुम् बिफ़ाकिहतिंव्-व लह़्मिम्-मिम्मा यश्तहून (२२)

قال فما خطبكم ٢٧ — ٩١٨ — الطور

إِلَّا لِيَعْبُدُونِ ۝ مَا أُرِيدُ مِنْهُم مِّن رِّزْقٍ وَمَا أُرِيدُ أَن يُطْعِمُونِ ۝ إِنَّ
اللَّهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِينُ ۝ فَإِنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذَنُوبًا مِّثْلَ
ذَنُوبِ أَصْحَابِهِمْ فَلَا يَسْتَعْجِلُونِ ۝ فَوَيْلٌ لِّلَّذِينَ كَفَرُوا مِن
يَوْمِهِمُ الَّذِي يُوعَدُونَ ۝

سُورَةُ الطُّورِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

وَالطُّورِ ۝ وَكِتَابٍ مَّسْطُورٍ ۝ فِي رَقٍّ مَّنشُورٍ ۝ وَالْبَيْتِ الْمَعْمُورِ ۝ وَ
السَّقْفِ الْمَرْفُوعِ ۝ وَالْبَحْرِ الْمَسْجُورِ ۝ إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ لَوَاقِعٌ ۝ مَّا لَهُ
مِن دَافِعٍ ۝ يَوْمَ تَمُورُ السَّمَاءُ مَوْرًا ۝ وَتَسِيرُ الْجِبَالُ سَيْرًا ۝ فَوَيْلٌ
يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ۝ الَّذِينَ هُمْ فِي خَوْضٍ يَلْعَبُونَ ۝ يَوْمَ يُدَعُّونَ
إِلَىٰ نَارِ جَهَنَّمَ دَعًّا ۝ هَٰذِهِ النَّارُ الَّتِي كُنتُم بِهَا تُكَذِّبُونَ ۝ أَفَسِحْرٌ
هَٰذَا أَمْ أَنتُمْ لَا تُبْصِرُونَ ۝ اصْلَوْهَا فَاصْبِرُوا أَوْ لَا تَصْبِرُوا سَوَاءٌ
عَلَيْكُمْ إِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَ
نَعِيمٍ ۝ فَاكِهِينَ بِمَا آتَاهُمْ رَبُّهُمْ وَوَقَاهُمْ رَبُّهُمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ۝
كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ مُتَّكِئِينَ عَلَىٰ سُرُرٍ مَّصْفُوفَةٍ
وَزَوَّجْنَاهُم بِحُورٍ عِينٍ ۝ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَاتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّيَّتُهُم بِإِيمَانٍ
أَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَمَا أَلَتْنَاهُم مِّنْ عَمَلِهِم مِّن شَيْءٍ كُلُّ
امْرِئٍ بِمَا كَسَبَ رَهِينٌ ۝ وَأَمْدَدْنَاهُم بِفَاكِهَةٍ وَلَحْمٍ مِّمَّا يَشْتَهُونَ ۝

★रु॰ ३/२ आ १४ ※व. लाज़िम

कि मेरी इबादत करें। (५६) मैं उन से रोज़ी नहीं चाहता और न यह चाहता हूं कि मुझे (खाना) खिलाएं (५७) ख़ुदा ही तो रोज़ी देने वाला, ज़ोरावर (और) मज़बूत है। (५८) कुछ शक नहीं कि इन ज़ालिमों के लिए भी (अज़ाब की) नौबत मुक़र्रर है, जिस तरह उन के साथियों की नौबत थी, तो उन को मुझ से (अज़ाब) जल्दी नहीं तलब करना चाहिए। (५९) जिस दिन का इन काफ़िरों से वायदा किया जाता है, उस से उन के लिए ख़राबी है। (६०) ★

५२ सूरः तूर ७६

सूरः तूर मक्की है, इस में ४९ आयतें और दो रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

तूर (पहाड़) की क़सम ! (१) और किताब की जो लिखी हुई है ![1] (२) कुशादा पन्नों (वरक़ों) में, (३) और आबाद घर की ! (४) और ऊंची छत की ! (५) और उबलते हुए दरिया की ! (६) कि तुम्हारे परवरदिगार का अज़ाब वाक़ेअ हो कर रहेगा। (७) (और) उस को कोई रोक नहीं सकेगा, (८) जिस दिन आसमान लरज़ने लगे कपकपा कर, (९) और पहाड़ उड़ने लगें ऊन हो कर, (१०) उस दिन झुठलाने वालों के लिए ख़राबी है। (११) जो (बातिल के) ख़ौज़ (हुज्जतबाज़ी) में पड़े खेल रहे हैं ▨ (१२) जिस दिन उन को जहन्नम की आग की तरफ़ धकेल-धकेल कर ले जाएंगे। (१३) यही वह जहन्नम है जिस को तुम झूठ समझते थे। (१४) तो क्या यह जादू है या तुम को नज़र ही नहीं आता। (१५) इस में दाख़िल हो जाओ और सब्र करो या न करो, तुम्हारे लिए बराबर है, जो काम तुम किया करते थे, (यह) उन ही का तुम को बदला मिल रहा है। (१६) जो परहेज़गार हैं, वे बाग़ों और नेमतों में होंगे। (१७) जो कुछ उन के परवरदिगार ने उन को बख़्शा, उस (की वजह) से ख़ुशहाल, और उन के परवरदिगार ने उन को दोज़ख़ के अज़ाब से बचा लिया, (१८) अपने आमाल के बदले में, मज़े से खाओ और पियो, (१९) तख़्तों पर जो बराबर-बराबर बिछे हुए, तकिया लगाए हुए और बड़ी-बड़ी आंखों वाली हूरों को हम उनका साथी बना देंगे। (२०) और जो लोग ईमान लाए और उनकी औलाद भी ईमान (की राह) में उन के पीछे चली, हम उन की औलाद को भी उन (के दर्जे) तक पहुंचा देंगे और उन के आमाल में से कुछ कम न करेंगे। हर शख़्स अपने आमाल में फंसा हुआ है। (२१) और जिस तरह के मेवे और गोश्त को उन का जी चाहेगा, हम उन को अता करेंगे। (२२) वहां वे एक दूसरे से जामे-

१. किताब के बारे में कई क़ौल हैं। किसी ने कहा, दूसरी आसमानी किताबें

★रु. ३/२ आ १४ ▨ व. लाज़िम

य-त-नाज़अू-न फ़ीहा कअ्-सल्ला लग़्वुन् फ़ीहा व ला तअ्-सीम (२३) व यतूफ़ु अलैहिम् ग़िल्मानुल्-लहुम् क-अन्नहुम् लुअ्लुउम्-मक्नून (२४) व अक़्ब-ल बअ्-ज़ुहुम् अला बअ्-ज़िंय्य-त-सा-अलून (२५) क़ालू इन्ना कुन्ना क़ब्लु फ़ी अह्लिना मुश्फ़िक़ीन (२६) फ़-मन्नल्लाहु अलैना व वक़ाना अज़ाबस्समूम (२७) इन्ना कुन्ना मिन् क़ब्लु नद्ऊहु इन्नहू हुवल्बर्रुर्-रहीम ★ (२८) फ़-ज़क्किर् फ़मा अन्-त बिनिअ्-मति रब्बि-क बिकाहिनिंव्-व ला मज्नून (२९) अम् यक़ूलू-न शाअिरुन् न-त-रब्बसु बिही रैबल्-मनून (३०) क़ुल् त-रब्बसू फ़इन्नी म-अकुम् मिनल्-मु-त-रब्बिसीन (३१) अम् तअ्मुरुहुम् अह्लामु-हुम् बिहाज़ा अम् हुम् क़ौमुन् ताग़ून (३२) अम् यक़ूलू-न त-क़व्व-लहू बल् ला युअ्मिनून (३३) फ़ल-यअ्-तू बिहदीसिम्-मिस्लिही इन् कानू सादिक़ीन (३४) अम् ख़ुलिक़ू मिन् ग़ैरि शैइन् अम् हुमुल-ख़ालिक़ून (३५) अम् ख़-लक़ुस्-समावाति वल्अर्-ज़ बल् ला यूक़िनून (३६) अम् अिन्दहुम् ख़ज़ाइनु रब्बि-क अम् हुमुल्-मुसैतिरून (३७) अम् लहुम् सुल्लमुंय्यस्तमिअू-न फ़ीहि फ़ल्-यअ्ति मुस्तमिअुहुम् बिसुल्तानिम्-मुबीन (३८) अम् लहुल्बनातु व लकुमुल्बनून (३९) अम् तस्-अलुहुम् अज्रन् फ़हुम् मिम्-मग़्-रमिम्-मुस्क़लून (४०) अम् अिन्दहुमुल्-ग़ैबु फ़हुम् यक्तुबून (४१) अम् युरीदू-न कैदन् फ़ल्लज़ी-न क-फ़रू हुमुल्-मकीदून (४२) अम् लहुम् इलाहुन् ग़ैरुल्लाहि सुब्हानल्लाहि अम्मा युश्रिकून (४३) व इंय्यरौ किस्फ़म्-मिनस्समाइ साक़ितंय्यक़ूलू सहाबुम्-मर्कूम (४४) फ़-ज़र्हुम् हत्ता युलाक़ू यौ-महुमुल्लज़ी फ़ीहि युस्-अक़ून (४५) यौ-म ला युग़्नी अन्हुम् कैदुहुम् शैअंव्-व ला हुम् युन्सरून (४६) व इन्-न लिल्लज़ी-न ज़-लमू अज़ाबन् दू-न ज़ालि-क व लाकिन्-न अक्सरहुम् ला यअ्-लमून (४७)

يتنازعون فيها كأسا لا لغو فيها ولا تأثيم ۝ ويطوف عليهم غلمان
لهم كأنهم لؤلؤ مكنون ۝ وأقبل بعضهم على بعض يتساءلون ۝
قالوا إنا كنا قبل في أهلنا مشفقين ۝ فمن الله علينا ووقانا عذاب
السموم ۝ إنا كنا من قبل ندعوه إنه هو البر الرحيم ۝ فذكر فما أنت
بنعمت ربك بكاهن ولا مجنون ۝ أم يقولون شاعر نتربص به ريب
المنون ۝ قل تربصوا فإني معكم من المتربصين ۝ أم تأمرهم
أحلامهم بهذا أم هم قوم طاغون ۝ أم يقولون تقوله بل لا
يؤمنون ۝ فليأتوا بحديث مثله إن كانوا صادقين ۝ أم خلقوا من
غير شيء أم هم الخالقون ۝ أم خلقوا السماوات والأرض بل لا
يوقنون ۝ أم عندهم خزائن ربك أم هم المصيطرون ۝ أم لهم سلم
يستمعون فيه فليأت مستمعهم بسلطان مبين ۝ أم له البنات و
لكم البنون ۝ أم تسألهم أجرا فهم من مغرم مثقلون ۝ أم عندهم
الغيب فهم يكتبون ۝ أم يريدون كيدا فالذين كفروا هم
المكيدون ۝ أم لهم إله غير الله سبحان الله عما يشركون ۝ و
إن يروا كسفا من السماء ساقطا يقولوا سحاب مركوم ۝ فذرهم
حتى يلاقوا يومهم الذي فيه يصعقون ۝ يوم لا يغني عنهم كيدهم
شيئا ولا هم ينصرون ۝ وإن للذين ظلموا عذابا دون ذلك و

★रु १/३ आ २८

शराब झपट लिया करेंगे, जिस (के पीने) से न बक-झक होगी, न कोई गुनाह की बात। (२३) और नव-जवान ख़िद्मतगार, (जो ऐसे होंगे,) जैसे छिपाए हुए मोती, उन के आस-पास फिरेंगे, (२४) और एक दूसरे की तरफ़ रुख़ कर के आपस में बात-चीत करेंगे। (२५) कहेंगे कि इस से पहले हम अपने घर में (ख़ुदा से) डरते रहते थे, (२६) तो ख़ुदा ने हम पर एहसान फ़रमाया और हमें लू के अज़ाब से बचा लिया। (२७) इस से पहले हम उस से दुआएं किया करते थे। बेशक वह एहसान करने वाला मेहरबान है। (२८)★

तो (ऐ पैग़म्बर!) तुम नसीहत करते रहो, तुम अपने परवरदिगार के फ़ज़्ल से न तो काहिन हो और न दीवाने। (२९) क्या काफ़िर कहते हैं कि यह शायर है (और) हम उस के हक़ में ज़माने के हादिसों का इन्तिज़ार कर रहे हैं। (३०) कह दो कि इन्तिज़ार किए जाओ, मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करता हूं। (३१) क्या उन की अक़्लें उन को यही सिखाती हैं, बल्कि ये लोग हैं ही शरीर। (३२) क्या कुफ़्फ़ार कहते हैं कि इन पैग़म्बर ने क़ुरआन ख़ुद से बना लिया है? बात यह है कि ये (ख़ुदा पर) ईमान नहीं रखते। (३३) अगर ये सच्चे हैं तो ऐसा कलाम बना तो लाएं। (३४) क्या ये किसी के पैदा किए बग़ैर ही पैदा हो गये हैं या ये ख़ुद (अपने आप) पैदा करने वाले हैं? (३५) या उन्हों ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया है? (नहीं) बल्कि ये यक़ीन ही नहीं रखते। (३६) क्या उन के पास तुम्हारे परवरदिगार के ख़ज़ाने हैं या ये (कहीं के) दारोग़ा हैं? (३७) या उन के पास कोई सीढ़ी है जिस पर (चढ़ कर आसमान से बातें) सुन आते हैं, तो जो सुन आता है, वह खुला सनद दिखाए। (३८) क्या ख़ुदा की तो बेटियां और तुम्हारे बेटे? (३९) ऐ पैग़म्बर! क्या तुम उन से बदला मांगते हो कि उन पर जुर्माने का बोझ पड़ रहा है? (४०) या उन के पास ग़ैब (का इल्म) है कि वे उसे लिख लेते हैं? (४१) क्या ये कोई दांव करना चाहते हैं, तो काफ़िर तो ख़ुद दांव में आने वाले हैं? (४२) क्या ख़ुदा के सिवा उन का कोई और माबूद है? ख़ुदा उन के शरीक बनाने से पाक है? (४३) और अगर ये आसमान (से अज़ाब) का कोई टुकड़ा गिरता हुआ देखें तो कहें कि यह गाढ़ा बादल है, (४४) पस उन को छोड़ दो, यहां तक कि वह दिन, जिस में वे बे-होश कर दिए जाएंगे, सामने आ जाएं। (४५) जिस दिन उन का कोई दांव कुछ भी काम न आए और न उन को (कहीं से) मदद ही मिले। (४६) और ज़ालिमों के लिए इस के सिवा और अज़ाब भी है, लेकिन उन में के अक्सर नहीं जानते। (४७) और तुम अपने परवरदिगार के हुक्म के इन्तिज़ार में सब्र करो, तुम तो हमारी आंखों के सामने हो और जब उठा करो, तो अपने परवरदिगार की तारीफ़ के साथ तस्बीह किया करो। (४८) और रात के कुछ

★रु. १/३ आ २८

वस्बिर् लिहुक्मि रब्बि-क फ़इन्न-क बिअअ्-युनिना व सब्बिह् बिहम्दि रब्बि-क ही-न तक़ूम (४८) व मिनल्लैलि फ़सब्बिह्हु व इद्बारन्नुजूम ★ (४९)

५३ सूरतुन्नज्मि २३

(मक्की) इस सूर: में अ़रबी के १४५० अक्षर, ३६५ शब्द, ६२ आयतें और ३ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

لكن اكثرهم لا يعلمون ﴿٤٧﴾ واصبر لحكم ربك فانك باعيننا وسبح
بحمد ربك حين تقوم ﴿٤٨﴾ ومن الليل فسبحه وادبار النجوم ﴿٤٩﴾
سورة النجم مكية بسم الله الرحمن الرحيم
والنجم اذا هوى ﴿١﴾ ما ضل صاحبكم وما غوى ﴿٢﴾ وما ينطق عن الهوى ﴿٣﴾
ان هو الا وحي يوحى ﴿٤﴾ علمه شديد القوى ﴿٥﴾ ذو مرة فاستوى ﴿٦﴾
وهو بالافق الاعلى ﴿٧﴾ ثم دنا فتدلى ﴿٨﴾ فكان قاب قوسين او
ادنى ﴿٩﴾ فاوحى الى عبده ما اوحى ﴿١٠﴾ ما كذب الفؤاد ما راى ﴿١١﴾ افتمارونه
على ما يرى ﴿١٢﴾ ولقد راه نزلة اخرى ﴿١٣﴾ عند سدرة المنتهى ﴿١٤﴾
عندها جنة المأوى ﴿١٥﴾ اذ يغشى السدرة ما يغشى ﴿١٦﴾ ما زاغ
البصر وما طغى ﴿١٧﴾ لقد راى من ايت ربه الكبرى ﴿١٨﴾ افرءيتم اللت
والعزى ﴿١٩﴾ ومنوة الثالثة الاخرى ﴿٢٠﴾ الكم الذكر وله الانثى ﴿٢١﴾
تلك اذا قسمة ضيزى ﴿٢٢﴾ ان هي الا اسماء سميتموها انتم و
اباؤكم ما انزل الله بها من سلطن ان يتبعون الا الظن وما
تهوى الانفس ولقد جاءهم من ربهم الهدى ﴿٢٣﴾ ام للانسان ما
تمنى ﴿٢٤﴾ فلله الاخرة والاولى ﴿٢٥﴾ وكم من ملك في السموت لا تغني
شفاعتهم شيئا الا من بعد ان ياذن الله لمن يشاء ويرضى ﴿٢٦﴾ ان
الذين لا يؤمنون بالاخرة ليسمون الملئكة تسمية الانثى ﴿٢٧﴾ وما

वन्नज्मि इज़ा हवा (१) मा ज़ल्-ल साहिबुकुम् व मा ग़वा (२) व मा यन्तिक़ु अनिल्हवा (३) इन् हु-व इल्ला वह्युंय्यूहा (४) अ़ल्ल-महू शदीदुल्क़ुवा (५) ज़ू मिर्रतिन् फ़स्तवा (६) व हु-व बिल्-उफ़ुक़िल्-अअ्-ला (७) सुम्-म दना फ़-त-दल्ला (८) फ़का-न क़ा-ब क़ौसैनि औ अद्ना (९) फ़औहा इला अ़ब्दिही मा औहा (१०) मा क-ज़-बल्-फ़ुआदु मा रआ (११) अ-फ़-तुमारूनहू अ़ला मा यरा (१२) व ल-क़द् रआहु नज़्-ल-तन् उख़्रा (१३) अिन्-द सिद्रतिल्-मुन्तहा (१४) अिन्दहा जन्नतुल्-मअ्वा (१५) इज़् यग़्शस्-सिद्-र-त मा यग़्शा (१६) मा ज़ाग़ल्-ब-सरु व मा तग़ा (१७) ल-क़द् रआ मिन् आयाति रब्बिहिल्-कुब्रा (१८) अ-फ़ रऐतुमुल्ला-त वल्अ़ुज़्ज़ा (१९) व मनातस्-सालि-स-तल्-उख़्रा (२०) अ लकुमुज़्-ज़-करु व लहुल्-उन्सा (२१) तिल्-क इज़न् क़िस्मतुन् ज़ीज़ा (२२) इन् हि-य इल्ला अस्माउन् सम्मैतुमूहा अन्तुम् व आबाउकुम् मा अन्ज़-लल्लाहु बिहा मिन् सुल-तानिन् इंय्यत्तबिअ़ू-न इल्लज़्ज़न्-न व मा तह्वल्-अन्फ़ुसु व ल-क़द् जा-अहुम् मिर्रब्बि-हिमुल्-हुदा (२३) अम् लिल्-इन्सानि मा तमन्ना (२४) फ़-लिल्लाहिल्-आख़िरतु वल्-ऊला ★ (२५) व कम् मिम्म-लकिन् फ़िस्समावाति ला तुग़्नी शफ़ाअ़तुहुम् शैअन् इल्ला मिम्बअ़्-दि अंय्यअ्-ज़-नल्लाहु लिमंय्यशाउ व यर्ज़ा (२६) इन्नल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिल्आख़िरति लयुसम्मूनल्-मलाइक-त तस्मि-य-तल्-उन्सा (२७)

★रु. २/४ आ २१ ★रु. १/५ आ २५

वक़्तों में भी और सितारों के डूबने के बाद भी उस की पाकी बयान किया करो। (४६)★

५३ सूर: नज्म २३

सूर: नज्म मक्की है, इस में बासठ आयतें और तीन रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

तारे की क़सम, जब ग़ायब होने लगे, (१) कि तुम्हारे साहिब (मुहम्मद) न रास्ता भूले हैं, न भटके हैं। (२) और न नफ़्स की ख़्वाहिश से मुंह से बात निकालते हैं। (३) यह (क़ुरआन) तो ख़ुदा का हुक्म है, जो (उन की तरफ़) भेजा जाता है, (४) उन को बहुत ताक़त वाले ने सिखाया, (५) (यानी जिब्रील) ताक़तवर ने, फिर वह पूरे नज़र आये, (६) और वह (आसमान के) ऊंचे किनारे में थे, (७) फिर क़रीब हुए और आगे बढ़े, (८) तो वह कमान के फ़ासले पर या उस से भी कम, (९) फिर ख़ुदा ने अपने बन्दे की तरफ़ जो भेजा, सो भेजा, (१०) जो कुछ उन्हों ने देखा, उन के दिल ने उस को झूठ न जाना। (११) क्या जो कुछ वे देखते हैं, तुम इस में उन से झगड़ते हो? (१२) और उन्हों ने उस को एक और बार भी देखा है। (१३) परली हद की बेरी के पास, (१४) उसी के पास रहने की बहिश्त है, (१५) जबकि उस बेरी पर छा रहा था, जो छा रहा था। (१६) उन की आंख न तो और तरफ़ मायल हुई और न (हद से) आगे बढ़ी। (१७) उन्हों ने अपने परवरदिगार (की क़ुदरत) की कितनी ही बड़ी-बड़ी निशानियां देखीं। (१८) भला तुम लोगों ने लात और उज़्ज़ा को देखा, (१९) और तीसरे मनात को (कि ये बुत कहीं ख़ुदा हो सकते हैं?) (२०) मुश्रिको! क्या तुम्हारे लिए तो बेटे और ख़ुदा के लिए बेटियां? (२१) यह तक़्सीम तो बहुत बे-इंसाफ़ी की है। (२२) वे तो सिर्फ़ नाम ही नाम हैं, जो तुम ने और तुम्हारे बाप-दादा ने गढ़ लिए हैं, ख़ुदा ने तो उन की कोई सनद नहीं उतारी। ये लोग सिर्फ़ (गंदे) गुमान और नफ़्स की ख़्वाहिशों के पीछे चल रहे है, हालांकि उन के परवरदिगार की तरफ़ से उन के पास हिदायत आ चुकी है। (२३) क्या जिस चीज़ की इंसान आरज़ू करता है, वह उसे ज़रूर मिलती है? (२४) आख़िरत और दुनिया तो ख़ुदा ही के हाथ में है, (२५)★

और आसमानों में बहुत से फ़रिश्ते हैं, जिनकी सिफ़ारिश कुछ भी फ़ायदा नहीं देती, मगर उस वक़्त कि ख़ुदा जिस के लिए चाहे, इजाज़त बख़्शे और (सिफ़ारिश) पसन्द करे। (२६) जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं लाते, वे फ़रिश्तों को (ख़ुदा की) लड़कियों के नाम से मौसूम करते

★रु. २/४ आ २१ ★रु. १/५ आ २५

व मा लहुम् बिही मिन् अ़िल्मिन् इंय्यत्तबिअू-न इल्लज़्ज़न-न व इन्नज़्ज़न-न ला युग़नी मिनल्-ह़क़्क़ि शैअन् (२८) फ़-अअ्-रिज़् अ़म्मन् त-वल्ला अ़न् ज़िक्रिना व लम् युरिद् इल्लल्-ह़यातद्दुन्या (२९) ज़ालि-क मब्-लग़ुहुम् मिनल्अ़िल्मि इन्-न रब्ब-क हु-व अअ्-लमु बिमन् ज़ल्-ल अ़न् सबीलिही व हु-व अअ्-लमु बि-मनिह्तदा ● (३०) व लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि लि-यज्ज़ि-यल्लज़ी-न असाऊ बिमा अ़मिलू व यज्ज़ि-यल्लज़ी-न अह्-सनू बिल्हुस्ना (३१) अल्लज़ी-न यज्-तनिबू-न कबाइरल्-इस्मि वल्-फ़वाहि-श इल्ललल-मम इन्-न रब्ब-क वासिअ़ुल्-मग़्फ़ि-रति हु-व अअ्-लमु बिकुम् इज् अन्-श-अकुम् मिनल्अर्ज़ि व इज् अन्तुम् अजिन्-नतुन् फ़ी बुतूनि उम्महातिकुम् फ़ला तुज़क्कू अन्फ़ुसकुम् हु-व अअ्-लमु बिमनित्तक़ा★(३२) अ-फ़-रऐतल्लज़ी त-वल्ला (३३) व अअ्-ता क़लीलंव्-व अक्दा (३४) अ-अ़िन्दहू अ़िल्मुल्-ग़ैबि फ़-हु-व यरा (३५) अम् लम् युनब्बअ् बिमा फ़ी सुहुफ़ि मूसा (३६) व इब्राही-मल्लज़ी वफ़्फ़ा (३७) अल्ला तज़िरु वाज़ि-रतुंव्विज़्-र उख़्रा (३८) व अल्लै-स लिल्-इन्सानि इल्ला मा सआ (३९) व अन्-न सअ्-यहू सौ-फ़ युरा (४०) सुम्-म युज्ज़ाहुल्-जज़ा-अल्-औफ़ा (४१) व अन्-न इला रब्बिकल्-मुन्तहा (४२) व अन्नहू हु-व अज़्-ह़-क व अब्का (४३) व अन्नहू हु-व अमा-त व अह़्या (४४) व अन्नहू ख़-ल-क़ज़्-ज़ौजैनिज़्-ज़-क-र वल्-उन्सा (४५) मिन् नुत्-फ़तिन् इज़ा तुम्ना (४६) व अन्-न अ़लैहिन्नश्-अतल्-उख़्रा (४७) व अन्नहू हु-व अग़्ना व अक़्ना (४८) व अन्नहू हु-व रब्बुश्शिअ्-रा (४९) व अन्नहू अह्-ल-क आ़द-निल्-ऊला (५०) व समू-द फ़मा अब्क़ा (५१) व क़ौ-म नूहिम् - मिन् क़ब्लु इन्नहुम् कानू हुम् अज़्-ल-म व अत़्ग़ा (५२)

قال فما خطبكم ٣٢١ النجم

لَهُمْ بِهِ مِنْ عِلْمٍ إِنْ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِي مِنَ الْحَقِّ
شَيْئًا ۝ فَأَعْرِضْ عَنْ مَنْ تَوَلَّىٰ عَنْ ذِكْرِنَا وَلَمْ يُرِدْ إِلَّا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ۝
ذَٰلِكَ مَبْلَغُهُمْ مِنَ الْعِلْمِ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيلِهِ
وَهُوَ أَعْلَمُ بِمَنِ اهْتَدَىٰ ۝ وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ
لِيَجْزِيَ الَّذِينَ أَسَاءُوا بِمَا عَمِلُوا وَيَجْزِيَ الَّذِينَ أَحْسَنُوا بِالْحُسْنَى ۝
الَّذِينَ يَجْتَنِبُونَ كَبَائِرَ الْإِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ إِلَّا اللَّمَمَ إِنَّ رَبَّكَ وَاسِعُ
الْمَغْفِرَةِ هُوَ أَعْلَمُ بِكُمْ إِذْ أَنْشَأَكُمْ مِنَ الْأَرْضِ وَإِذْ أَنْتُمْ أَجِنَّةٌ
فِي بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ فَلَا تُزَكُّوا أَنْفُسَكُمْ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقَىٰ ۝
أَفَرَأَيْتَ الَّذِي تَوَلَّىٰ ۝ وَأَعْطَىٰ قَلِيلًا وَأَكْدَىٰ ۝ أَعِنْدَهُ عِلْمُ
الْغَيْبِ فَهُوَ يَرَىٰ ۝ أَمْ لَمْ يُنَبَّأْ بِمَا فِي صُحُفِ مُوسَىٰ ۝ وَإِبْرَاهِيمَ الَّذِي
وَفَّىٰ ۝ أَلَّا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ۝ وَأَنْ لَيْسَ لِلْإِنْسَانِ إِلَّا
مَا سَعَىٰ ۝ وَأَنَّ سَعْيَهُ سَوْفَ يُرَىٰ ۝ ثُمَّ يُجْزَاهُ الْجَزَاءَ الْأَوْفَىٰ ۝ وَ
أَنَّ إِلَىٰ رَبِّكَ الْمُنْتَهَىٰ ۝ وَأَنَّهُ هُوَ أَضْحَكَ وَأَبْكَىٰ ۝ وَأَنَّهُ هُوَ أَمَاتَ
وَأَحْيَا ۝ وَأَنَّهُ خَلَقَ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْأُنْثَىٰ ۝ مِنْ نُطْفَةٍ إِذَا
تُمْنَىٰ ۝ وَأَنَّ عَلَيْهِ النَّشْأَةَ الْأُخْرَىٰ ۝ وَأَنَّهُ هُوَ أَغْنَىٰ وَأَقْنَىٰ ۝
وَأَنَّهُ هُوَ رَبُّ الشِّعْرَىٰ ۝ وَأَنَّهُ أَهْلَكَ عَادًا الْأُولَىٰ ۝ وَثَمُودَ فَمَا
أَبْقَىٰ ۝ وَقَوْمَ نُوحٍ مِنْ قَبْلُ إِنَّهُمْ كَانُوا هُمْ أَظْلَمَ وَأَطْغَىٰ ۝ وَ

منزل

● रुकूअ़ १/४ ★रु २/६ आ ७

हैं। (२७) हालांकि उन को इस की कुछ ख़बर नहीं। वे सिर्फ़ गुमान पर चलते हैं और गुमान यक़ीन के मुक़ाबले में कुछ काम नहीं आता। (२८) तो जो हमारी याद से मुंह फेरे और सिर्फ़ दुनिया ही की ज़िंदगी की तलब में हो, उस से तुम भी मुंह फेर लो। (२९) उन के इल्म की यही इन्तिहा है। तुम्हारा परवरदिगार उस को भी ख़ूब जानता है, जो उस के रास्ते से भटक गया और उसे भी ख़ूब जानता है, जो रास्ते पर चला ● (३०) और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, सब ख़ुदा ही का है (और उस ने ख़ल्क़त को) इसलिए (पैदा किया है) कि जिन लोगों ने बुरे काम किए, उन को उन के आमाल का (बुरा) बदला दे और जिन्हों ने नेकियां कीं, उन को नेक बदला दे। (३१) जो छोटे गुनाहों के सिवा बड़े-बड़े गुनाहों और बे-हयाई की बातों से बचते हैं, बेशक तुम्हारा परवरदिगार बड़ी बख़्शिश वाला है। वह तुम को ख़ूब जानता है, जब उस ने तुम को मिट्टी से पैदा किया और जब तुम अपनी माओं के पेट में बच्चे थे तो अपने आप को पाक-साफ़ न जताओ। जो परहेज़गार है, वह इसे ख़ूब जानता है। (३२) ★

भला तुम ने उस शख़्स को देखा, जिस ने मुंह फेर लिया, (३३) और थोड़ा-सा दिया (फिर) हाथ रोक लिया। (३४) क्या उस के पास ग़ैब का इल्म है कि वह उसे देख रहा है। (३५) क्या जो बातें मूसा के सहीफ़ों (किताबों) में हैं, उन की उस को ख़बर नहीं पहुंची ? (३६) और इब्राहीम की, जिन्हों ने (इताअत व रिसालत का हक़) पूरा किया। (३७) (वह) यह कि कोई शख़्स दूसरे (के गुनाह) का बोझ नहीं उठाएगा। (३८) और यह कि इंसान को वही मिलता है, जिस की वह कोशिश करता है। (३९) और यह कि उस की कोशिश देखी जाएगी, (४०) फिर उस को उस का पूरा-पूरा बदला दिया जाएगा, (४१) और यह कि तुम्हारे परवरदिगार ही के पास पहुंचना है। (४२) और यह कि वह हंसाता और रुलाता है, (४३) और यह कि वही मारता और जिलाता है, (४४) और यह कि वही नर और मादा दो क़िस्म (के हैवान) पैदा करता है, (४५) (यानी) नुत्फ़े से जो (रहम में) डाला जाता है, (४६) और यह कि (क़ियामत को) उसी पर दोबारा उठाना लाज़िम है, (४७) और यह कि वही दौलतमन्द बनाता और मुफ़्लिस करता है, (४८) और यह कि वही शेअरा का मालिक है। (४९) और यह कि उसी ने अव्वल आद को हलाक कर डाला। (५०) और समूद को भी, ग़रज़ किसी को बाक़ी न छोड़ा। (५१) और इन से पहले नूह की क़ौम को भी। कुछ शक नहीं कि वे लोग बड़े ही ज़ालिम और बड़े ही सरकश

● रुबूअ १/४ ★ रु॰ २/६ आ ७

वल्-मुअ्-तफ़ि-क-त अह्वा (५३) फ़-ग़श्शाहा मा ग़श्शा (५४) फ़बि-अय्यि आलाइ रब्बि-क त-त-मारा (५५) हाज़ा नज़ीरुम्-मिनन्नुज़ुरिल्-ऊला (५६) अज़ि-फ़तिल्-आज़िफ़तु (५७) लै-स लहा मिन् दूनिल्लाहि काशिफ़ः (५८) अ-फ़मिन् हाज़ल्-हदीसि तअ्-जबून (५९) व तज़्-हकू-न व ला तब्कून (६०) व अन्तुम् सामिदून (६१) फ़स्जुदू लिल्लाहि वअ्-बुदू □ ★(६२)

وَالْمُؤْتَفِكَةَ أَهْوَىٰ ﴿٥٣﴾ فَغَشَّاهَا مَا غَشَّىٰ ﴿٥٤﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكَ تَتَمَارَىٰ ﴿٥٥﴾
هَٰذَا نَذِيرٌ مِّنَ النُّذُرِ الْأُولَىٰ ﴿٥٦﴾ أَزِفَتِ الْآزِفَةُ ﴿٥٧﴾ لَيْسَ لَهَا مِن
دُونِ اللَّهِ كَاشِفَةٌ ﴿٥٨﴾ أَفَمِنْ هَٰذَا الْحَدِيثِ تَعْجَبُونَ ﴿٥٩﴾ وَتَضْحَكُونَ وَ
لَا تَبْكُونَ ﴿٦٠﴾ وَأَنتُمْ سَامِدُونَ ﴿٦١﴾ فَاسْجُدُوا لِلَّهِ وَاعْبُدُوا ۩ ﴿٦٢﴾

५४ सूरतुल्-क़-मरि ३७

(मक्की) इस सूरः में अरबी के १४८२ अक्षर, ३४८ शब्द, ५५ आयतें और ३ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

سُورَةُ الْقَمَرِ مَكِّيَّةٌ — بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

اقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَانشَقَّ الْقَمَرُ ﴿١﴾ وَإِن يَرَوْا آيَةً يُعْرِضُوا وَيَقُولُوا
سِحْرٌ مُّسْتَمِرٌّ ﴿٢﴾ وَكَذَّبُوا وَاتَّبَعُوا أَهْوَاءَهُمْ وَكُلُّ أَمْرٍ مُّسْتَقِرٌّ ﴿٣﴾
وَلَقَدْ جَاءَهُم مِّنَ الْأَنبَاءِ مَا فِيهِ مُزْدَجَرٌ ﴿٤﴾ حِكْمَةٌ بَالِغَةٌ فَمَا
تُغْنِ النُّذُرُ ﴿٥﴾ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ يَوْمَ يَدْعُ الدَّاعِ إِلَىٰ شَيْءٍ نُّكُرٍ ﴿٦﴾
خُشَّعًا أَبْصَارُهُمْ يَخْرُجُونَ مِنَ الْأَجْدَاثِ كَأَنَّهُمْ جَرَادٌ مُّنتَشِرٌ ﴿٧﴾
مُّهْطِعِينَ إِلَى الدَّاعِ يَقُولُ الْكَافِرُونَ هَٰذَا يَوْمٌ عَسِرٌ ﴿٨﴾ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ
قَوْمُ نُوحٍ فَكَذَّبُوا عَبْدَنَا وَقَالُوا مَجْنُونٌ وَازْدُجِرَ ﴿٩﴾ فَدَعَا رَبَّهُ أَنِّي
مَغْلُوبٌ فَانتَصِرْ ﴿١٠﴾ فَفَتَحْنَا أَبْوَابَ السَّمَاءِ بِمَاءٍ مُّنْهَمِرٍ ﴿١١﴾ وَفَجَّرْنَا
الْأَرْضَ عُيُونًا فَالْتَقَى الْمَاءُ عَلَىٰ أَمْرٍ قَدْ قُدِرَ ﴿١٢﴾ وَحَمَلْنَاهُ عَلَىٰ ذَاتِ
أَلْوَاحٍ وَدُسُرٍ ﴿١٣﴾ تَجْرِي بِأَعْيُنِنَا جَزَاءً لِّمَن كَانَ كُفِرَ ﴿١٤﴾ وَلَقَد تَّرَكْنَاهَا
آيَةً فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ ﴿١٥﴾ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذُرِ ﴿١٦﴾ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا
الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ ﴿١٧﴾ كَذَّبَتْ عَادٌ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي

इक्त-र-बतिस-साअतु वन्शक़्क़ल्-क़-मर (१) व इंय्यरौ आयतंय्युअ्-रिज़ू व यक़ूलू सिह्रुम्-मुस्तमिर्र (२) व कज़्ज़बू वत्त-बअ़ू अह्-वा-अहुम् व कुल्लु अम्रिम्-मुस्तक़िर्र (३) व ल-क़द् जा-अहुम् मिनल्-अम्बाइ मा फ़ीहि मुज़्दजर (४) हिक-मतुम्-बालि-ग़तुन् फ़मा तुग़निन्नुज़ुर (५) फ़-त-वल्-ल अन्हुम् यौ-म यद्अुद्दाअि इला शैइन् नुकुर (६) ख़ुश्श-अन् अब्-सारु-हुम् यख़्-रुजू-न मिनल्-अज्दासि क-अन्नहुम् जरादुम्-मुन्तशिर (७) मुह्तिओ-न इलद्दाअि यक़ूलुल्-काफ़िरू-न हाज़ा यौमुन् असिर (८) कज़्ज़-बत् क़ब्-लहुम् क़ौमु नूहिन् फ़-कज़्ज़बू अब्-दना व क़ालू मज्नूनुंव्वज़्दुजिर (९) फ़-दआ रब्बहू अन्नी मग़्लूबुन् फ़न्तसिर (१०) फ़-फ़-तह्ना अब्वाबस-समाइ बिमाइम्-मुन-हमिर (११) व फ़ज्जर-नल्-अर्-ज़ अुयूनन् फ़ल्त-क़ल्-माउ अला अम्रिन् क़द् क़ुदिर (१२) व ह्-मल्-नाहु अला ज़ाति अल-वाहिंव-व दुसुरिन् (१३) तजरी बि-अअ्-युनिना जज़ा-अल्-लिमन् का-न कुफ़ि-र (१४) व ल-क़त्-त-रक्नाहा आ-य-तन् फ़-हल् मिम्मुद्दकिर (१५) फ़-कै-फ़ का-न अज़ाबी व नुज़ुर (१६) व ल-क़द् यस्सर्नल-क़ुर्आ-न लिज़्ज़िक्र फ़-हल् मिम्मुद्दकिर (१७) कज़्ज़-बत् आदुन् फ़-कै-फ़ का-न अज़ाबी व नुज़ुर (१८)

★रु. ३/७ आ ३० □ सजदः १२ ▨ व. लाज़िम

थे। (५२) और उसी ने उल्टी हुई बस्तियों को दे पटका। (५३) फिर उन पर छाया, जो छाया। (५४) तो (ऐ इंसान!) तू अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत पर झगड़ेगा? (५५) यह (मुहम्मद) भी अगले डर सुनाने वालों में से एक डर सुनाने वाले हैं। (५६) आने वाली (यानी क़ियामत) क़रीब आ पहुंची। (५७) उस (दिन की तक्लीफ़ों) को ख़ुदा के सिवा कोई दूर नहीं कर सकेगा। (५८) (ऐ ख़ुदा के इंकारियो!) क्या तुम इस कलाम से ताज्जुब करते हो? (५९) और हंसते हो और रोते नहीं, (६०) और तुम ग़फ़लत में पड़ रहे हो, (६१) तो ख़ुदा के आगे सज्दा करो और (उसी की) इबादत करो। (६२)★☐

५४ सूरः क़मर ३७

सूरः क़मर मक्की है, इस में पचपन आयतें और तीन रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

क़ियामत क़रीब आ पहुंची और चांद शक़ हो (फट) गया। (१) और अगर काफ़िर कोई निशानी देखते हैं, तो मुंह फेर लेते हैं और कहते हैं कि यह एक हमेशा का जादू है। (२) और उन्हों ने झुठलाया और अपनी ख़्वाहिशों की पैरवी की और हर काम का वक़्त मुक़र्रर है। (३) और उन को ऐसे (पिछले) हालात पहुंच चुके हैं, जिन में इबरत है। (४) और पूरी दानाई (हिक्मत) (की किताब भी,) लेकिन डराना उन को कुछ फ़ायदा नहीं देता, (५) तो तुम भी उन की कुछ परवाह न करो,▨ जिस दिन बुलाने वाला उन को एक नाख़ुश चीज़ की तरफ़ बुलाएगा, (६) तो आंखें नीची किए हुए क़ब्रों से निकल पड़ेंगे गोया बिखरी हुई टिड्डियां हैं। (७) उस बुलाने वाले की तरफ़ दौड़ते जाते होंगे। काफ़िर कहेंगे यह दिन बड़ा सख़्त है। (८) इन से पहले नूह की क़ौम ने भी झुठलाया था, तो उन्हों ने हमारे बन्दे को झुठलाया और कहा कि दीवाना है और उन्हें डांटा भी। (९) तो उन्होंने अपने परवरदिगार से दुआ की कि (ऐ अल्लाह!) मैं (उन के मुक़ाबले में) कमज़ोर हूं, तो (उन से) बदला ले। (१०) पस हमने ज़ोर के मेंह से आसमान के मुहाने खोल दिए। (११) और ज़मीन में चश्मे जारी कर दिए, तो पानी एक काम के लिए, जो मुक़द्दर हो चुका था, जमा हो गया। (१२) और हमने नूह को एक कश्ती पर जो तख़्तों और मेख़ों से तैयार की गयी थी, सवार कर लिया। (१३) वह हमारी आंखों के सामने चलती थी। (यह सब कुछ) उस शख़्स से बदला लेने के लिए किया गया, जिस को काफ़िर मानते न थे। (१४) और हम ने उस को एक इब्रत बना छोड़ा, तो कोई है कि सोचे-समझे? (१५) सो (देख लो कि) मेरा अज़ाब और डराना कैसा हुआ? (१६) और हम ने क़ुरआन को समझने के लिए आसान कर दिया, तो कोई है कि सोचे-समझे? (१७) आद ने भी झुठलाया था, सो (देख लो) कि मेरा अज़ाब और डराना

★रु. ३/७ आ ३० ☐ सज्दः १२ ▨ व. लाज़िम

इन्ना अर्सल्ना अलैहिम् रीहन् सर-स-रन् फ़ी यौमि नह़्सिम्-मुस्तमिर्रि-॥ (१९) तन्ज़िउन्ना-स॥ क-अन्नहुम् अअ्-जाज़ु नख़्लिम्-मुन्क़अिर (२०) फ़-कै-फ़ का-न अज़ाबी व नुज़ुर (२१) व ल-क़द् यस्सर्नल्-क़ुर्आ-न लिज़्ज़िक्रि फ़-हल् मिम्-मुद्दकिर ★ (२२) कज़्ज़-बत् समूदु बिन्नुज़ुर (२३) फ़-क़ालू अ-ब-श-रम्-मिन्ना वाहिदन् नत्तबिअुहू॥ इन्ना इज़ल्लफ़ी ज़लालिंव्-व सुअुर (२४) अ उल्क़ि-यज़्-ज़िक्रु अलैहि मिम्बैनिना बल् हु-व कज़्ज़ाबुन् अशिर (२५) स-यअ्-लमू-न ग़दम्मनिल्-कज़्ज़ाबुल्-अशिर (२६) इन्ना मुर्सिलुन्नाक़ति फ़ित्-न-तल्-लहुम् फ़र्तक़िब्हुम् वस्तबिर् ✓ (२७) व नब्बिअ्हुम् अन्नल्मा-अ क़िस्मतुम्-बैनहुम् ॖ कुल्लु शिर्बिम्-मुह्-त-ज़र (२८) फ़नादौ साहि-बहुम् फ़-तआता फ़-अ-क़र (२९) फ़कै-फ़ का-न अज़ाबी व नुज़ुर (३०) इन्ना अर्सल्ना अलैहिम् सै-हतंव्-वाहि-द-तन् फ़-कानू क-हशीमिल्-मुह्तज़िर (३१) व ल-क़द् यस्सर्नल्-क़ुर्आ-न लिज़्ज़िक्रि

وَنُذُرِ ۝ إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا صَرْصَرًا فِي يَوْمِ نَحْسٍ مُّسْتَمِرٍّ
تَنزِعُ النَّاسَ كَأَنَّهُمْ أَعْجَازُ نَخْلٍ مُّنقَعِرٍ ۝ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذُرِ ۝
وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ ۝ كَذَّبَتْ ثَمُودُ بِالنُّذُرِ ۝
فَقَالُوا أَبَشَرًا مِّنَّا وَاحِدًا نَّتَّبِعُهُ إِنَّا إِذًا لَّفِي ضَلَالٍ وَسُعُرٍ ۝ أَأُلْقِيَ
الذِّكْرُ عَلَيْهِ مِن بَيْنِنَا بَلْ هُوَ كَذَّابٌ أَشِرٌ ۝ سَيَعْلَمُونَ غَدًا مَّنِ الْكَذَّابُ
الْأَشِرُ ۝ إِنَّا مُرْسِلُو النَّاقَةِ فِتْنَةً لَّهُمْ فَارْتَقِبْهُمْ وَاصْطَبِرْ ۝ وَ
نَبِّئْهُمْ أَنَّ الْمَاءَ قِسْمَةٌ بَيْنَهُمْ كُلُّ شِرْبٍ مُّحْتَضَرٌ ۝ فَنَادَوْا صَاحِبَهُمْ
فَتَعَاطَىٰ فَعَقَرَ ۝ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذُرِ ۝ إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ
صَيْحَةً وَاحِدَةً فَكَانُوا كَهَشِيمِ الْمُحْتَظِرِ ۝ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ
لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ ۝ كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوطٍ بِالنُّذُرِ ۝ إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ
حَاصِبًا إِلَّا آلَ لُوطٍ نَّجَّيْنَاهُم بِسَحَرٍ ۝ نِّعْمَةً مِّنْ عِندِنَا كَذَٰلِكَ نَجْزِي
مَن شَكَرَ ۝ وَلَقَدْ أَنذَرَهُم بَطْشَتَنَا فَتَمَارَوْا بِالنُّذُرِ ۝ وَلَقَدْ رَاوَدُوهُ
عَن ضَيْفِهِ فَطَمَسْنَا أَعْيُنَهُمْ فَذُوقُوا عَذَابِي وَنُذُرِ ۝ وَلَقَدْ صَبَّحَهُم
بُكْرَةً عَذَابٌ مُّسْتَقِرٌّ ۝ فَذُوقُوا عَذَابِي وَنُذُرِ ۝ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ
لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ ۝ وَلَقَدْ جَاءَ آلَ فِرْعَوْنَ النُّذُرُ ۝ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا
كُلِّهَا فَأَخَذْنَاهُمْ أَخْذَ عَزِيزٍ مُّقْتَدِرٍ ۝ أَكُفَّارُكُمْ خَيْرٌ مِّنْ أُولَٰئِكُمْ
أَمْ لَكُم بَرَاءَةٌ فِي الزُّبُرِ ۝ أَمْ يَقُولُونَ نَحْنُ جَمِيعٌ مُّنتَصِرٌ ۝ سَيُهْزَمُ

फ़-हल् मिम्-मुद्दकिर (३२) कज़्ज़बत् क़ौमु लूतिम्-बिन्नुज़ुर (३३) इन्ना अर्सल्ना अलैहिम् हासिबन् इल्ला आ-ल लूतिन्॰ नज्जैनाहुम् बि-स-हरिन्॥ (३४) निअ्-म-तम्-मिन् अिन्दिना॰ कज़ालि-क नज्ज़ी मन् श-कर (३५) व ल-क़द् अन्ज़-रहुम् बत़्श-तना फ़-तमारौ बिन्नुज़ुर (३६) व ल-क़द् रावदूहु अन् ज़ैफ़िही फ़-त-मस्ना अअ्-युनहुम् फ़ज़ूक़ू अज़ाबी व नुज़ुर (३७) व ल-क़द् सब्ब-हहुम् बुक-र-तन् अज़ाबुम्-मुस्तक़िर ॖ (३८) फ़-ज़ूक़ू अज़ाबी व नुज़ुर (३९) व ल-क़द् यस्सर्नल्-क़ुर्आ-न लिज़्ज़िक्रि फ़-हल् मिम्मुद्दकिर ★ (४०) व ल-क़द् जा-अ आ-ल फ़िर्औनन्नुज़ुर ॖ (४१) कज़्ज़बू बिआयातिना कुल्लिहा फ़-अ-ख़ज़्नाहुम् अख़्-ज़ अज़ीज़िम्-मुक़्तदिर (४२) अकुफ़्फ़ारुकुम् ख़ैरुम्मिन् उलाइकुम् अम् लकुम् बरा-अतुन् फ़िज़्ज़ुबुर ॖ (४३) अम् यक़ूलू-न नह्नु जमीअुम्-मुन्तसिर (४४)

★रु. १/८ आ २२ ★रु. २/९ आ १८

कैसा हुआ ? (१८) हमने उन पर सख़्त मनहूस दिन में आंधी चलायी। (१९) वह लोगों को (इस तरह) उखेड़े डालती थी, गोया उखड़ी हुई खजूरों के तने हैं, (२०) सो (देख लो कि) मेरा अज़ाब और डराना कैसा हुआ ? (२१) और हमने क़ुरआन को समझने के लिए आसान कर दिया है, तो कोई है कि सोचे-समझे ? (२२) ★

समूद ने भी हिदायत करने वालों को झुठलाया। (२३) और कहा कि भला एक आदमी, जो हम ही में से है, हम उस का पैरवी करें ? यों हो तो हम गुमराही और दीवानगी में पड़ गये। (२४) क्या हम सब में से उसी पर वह्य नाज़िल हुई है ? (नहीं) बल्कि यह झूठा ख़ुदपसन्द है। (२५) उन को कल ही मालूम हो जाएगा कि कौन झूठा ख़ुदपसन्द है। (२६) (ऐ सालेह !) हम उन की आज़माइश के लिए ऊंटनी भेजने वाले हैं तो तुम उन को देखते रहो और सब्र करो। (२७) और उन को आगाह कर दो कि उन में पानी की बारी मुक़र्रर कर दी गयी है। हर (बारी वाले को अपनी) बारी पर आना चाहिए। (२८) तो उन लोगों ने अपने साहिब को बुला लिया और उसने (ऊंटनी को) पकड़ कर उस की कूचें काट डालीं। (२९) सो (देख लो कि) मेरा अज़ाब और डराना कैसा हुआ, (३०) हम ने उन पर (अज़ाब के लिए) एक चीख़ भेजी, तो वे ऐसे हो गये, जैसे बाड़ वाले की सूखी और टूटी हुई बाड़, (३१) और हमने क़ुरआन को समझने के लिए आसान कर दिया, तो कोई है कि सोचे-समझे ? (३२) लूत की क़ौम ने भी डर सुनाने वालों को झुठलाया था, (३३) तो हमने उन पर कंकड़ भरी हवा चलायी, मगर लूत के घर वाले कि हमने उन को पिछली रात ही से बचा लिया, (३४) अपने फ़ज़्ल से शुक्र करने वाले को हम ऐसा ही बदला दिया करते हैं, (३५) और (लूत ने) उन को हमारी पकड़ से डरा भी दिया था, मगर उन्हों ने डराने में शक किया। (३६) और उन से उन के मेहमानों को ले लेना चाहा, तो हमने उन की आंखें मिटा दीं, सो (अब) मेरे अज़ाब और डराने के मज़े चखो। (३७) और उन पर सुबह-सवेरे ही अटल अज़ाब आ नाज़िल हुआ। (३८) तो अब मेरे अज़ाब और डराने के मज़े चखो। (३९) और हमने क़ुरआन को समझने के लिए आसान कर दिया है, तो कोई है कि सोचे-समझे ? (४०) ★

और फ़िरऔन की क़ौम के पास भी डर सुनाने वाले आए, (४१) उन्हों ने हमारी तमाम निशानियों को झुठलाया, तो हमने उन को इस तरह पकड़ लिया, जिस तरह एक ताक़तवर और ग़ालिब शख़्स पकड़ लेता है। (४२) (ऐ अरब वालो ?) क्या तुम्हारे काफ़िर उन लोगों से बेहतर हैं या तुम्हारे लिए (पहली) किताबों में कोई फ़ारिग़ ख़ती लिख दी गयी है ? (४३) क्या ये लोग कहते हैं कि हमारी जमाअत बड़ी मज़बूत है ? (४४) बहुत जल्द यह जमाअत हार खाएगी और

★रु. १/८ आ २२ ★रु. २/९ आ १८

सयुह्-ज़मुल्-जम्अु व युवल्लूनद्दुबुर (४५) बलिस्साअ़तु मौअ़िदुहुम् वस्साअ़तु अद्हा व अमर्र (४६) इन्नल्-मुज्रिमी-न फ़ी ज़लालिंव-व सुअ़ुर॥(४७) यौ-म युस्हबू-न फ़िन्नारि अ़ला वुजूहिहिम् ज़ूक़ू मस-स स-क़र (४८) इन्ना कुल-ल शैइन् ख़-लक़्नाहु बि-क़-दर (४९) व मा अम्रुना इल्ला वाहि-दतुन् क-लम्हिम्-बिल्ब-सर (५०) व ल-क़द् अह्-लक्ना अश्याअ़कुम् फ़-हल् मिम्मुद्दकिर (५१) व कुल्लु शैइन् फ़-अ़लूहु फ़िज़्ज़ुबुर (५२) व कुल्लु सग़ीरिंव-व कबीरिम्-मुस्ततर (५३) इन्नल्-मुत्तक़ी-न फ़ी जन्नातिंव-व न-हरिन्(५४) फ़ी मक़्-अ़दि सिद्क़िन् अ़िन-द मलीकिम्-मुक़्तदिर★(५५)

سيهزم الجمع ويولون الدبر ۝ بل الساعة موعدهم والساعة أدهى
وأمر ۝ إن المجرمين في ضلل وسعر ۝ يوم يسحبون في النار
على وجوههم ذوقوا مس سقر ۝ إنا كل شيء خلقنه بقدر ۝
وما أمرنا إلا وحدة كلمح بالبصر ۝ ولقد أهلكنا أشياعكم
فهل من مدكر ۝ وكل شيء فعلوه في الزبر ۝ وكل صغير
وكبير مستطر ۝ إن المتقين في جنت ونهر ۝ في مقعد
صدق عند مليك مقتدر ۝

سورة الرحمن — بسم الله الرحمن الرحيم

الرحمن ۝ علم القرءان ۝ خلق الإنسن ۝ علمه البيان ۝
الشمس والقمر بحسبان ۝ والنجم والشجر يسجدان ۝ والسماء
رفعها ووضع الميزان ۝ ألا تطغوا في الميزان ۝ وأقيموا الوزن
بالقسط ولا تخسروا الميزان ۝ والأرض وضعها للأنام ۝ فيها
فكهة والنخل ذات الأكمام ۝ والحب ذو العصف والريحان ۝
فبأي ءالاء ربكما تكذبان ۝ خلق الإنسن من صلصل كالفخار ۝
وخلق الجان من مارج من نار ۝ فبأي ءالاء ربكما تكذبان ۝ رب
المشرقين ورب المغربين ۝ فبأي ءالاء ربكما تكذبان ۝ مرج البحرين
يلتقيان ۝ بينهما برزخ لا يبغيان ۝ فبأي ءالاء ربكما تكذبان ۝

५५ सूरतुर्-रह़्मानि ९७

(मदनी) इस सूरः में अरबी के १६८३ अक्षर, ३५१ शब्द, ७८ आयतें और ३ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रहीम •

अर्रह़्मानु (१) अ़ल्ल-मल्-क़ुर्आन (२) ख़-ल-क़ल्-इन्सा-न (३) अ़ल्ल-महुल्-बयान (४) अश्शम्सु वल्क़-मरु बिहुस्बानिंव्- (५) वन्नज्मु वश्श-जरु यस्जुदान (६) वस्समा-अ र-फ़-अ़हा व व-ज़-अ़ल्-मीज़ान (७) अल्ला तत़्ग़ौ फ़िल्मीज़ान (८) व अक़ीमुल्-वज़्-न बिल्क़िस्ति व ला तुख़्सिरुल्-मीज़ान (९) वल्अर्-ज़ व-ज़-अ़हा लिल-अनामि (१०) फ़ीहा फ़ाकि-हतुं व-वन्नख़्लु ज़ातुल्-अक्मामि (११) वल्हब्बु ज़ुल्-अ़स्फ़ि वर्-रैहान (१२) फ़बिअय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (१३) ख़-ल-क़ल-इन्सा-न मिन् सल्सालिन् कल्फ़ख़्ख़ारि (१४) व ख़-ल-क़ल्-जान्-न मिम्-मारिजिम्-मिन्नार (१५) फ़बिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (१६) रब्बुल-मश्रिक़ैनि व रब्बुल-मग़्रिबैनि (१७) फ़बिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्-ज़िबान (१८) म-र-जल-बह्रैनि यल्तक़ियानि (१९) बैनहुमा बर्ज़ख़ुल्-ला यब्-ग़ियान (२०) फ़बिअय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (२१)

※ व. लाज़िम ★रु. ३/१० आ १५

वे लोग पीठ फेर-फेर कर भाग जाएंगे। (४५) उन के वायदे का वक़्त तो क़ियामत है और क़ियामत बड़ी सख़्त और बहुत कड़वी है। (४६) बेशक गुनाहगार लोग गुमराही और दीवानगी में (पड़े हुए) हैं। (४७) उस दिन मुंह के बल दोज़ख़ में घसीटे जाएंगे। अब आग का मज़ा चखो। (४८) हमने हर चीज़ मुक़र्रर अन्दाज़े के साथ पैदा की है। (४९) और हमारा हुक्म तो आंख के झपकने की तरह एक बात होती है। (५०) और हम तुम्हारे हम-मज़हबों को हलाक कर चुके हैं, तो कोई है कि सोचे-समझे? (५१) और जो कुछ उन्हों ने किया (उन के) आमालनामों में (दर्ज) है। (५२) (यानी) हर छोटा और बड़ा काम लिख दिया गया है। (५३) जो परहेज़गार हैं, वे बाग़ों और नहरों में होंगे, (५४) (यानी) पाक मक़ाम में हर तरह की क़ुदरत रखने वाले बादशाह की बारगाह में। (५५)★

५५ सूरः रहमान ९७

सूरः रहमान मक्की है, इस में अठहत्तर आयतें और तीन रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

(ख़ुदा, जो) निहायत मेहरबान, (१) उसी ने क़ुरआन की तालीम फ़रमायी, (२) उसी ने इंसान को पैदा किया। (३) उसी ने उस को बोलना सिखाया, (४) सूरज और चांद एक मुक़र्रर हिसाब से चल रहे हैं, (५) और बूटियां और पेड़ सज्दा कर रहे हैं। (६) और उसी ने आसमान को बुलंद किया और तराज़ू क़ायम की, (७) कि तराज़ू (से तौलने) में हद से आगे न बढ़ो। (८) और इंसाफ़ के साथ ठीक तौलो और तौल कम मत करो (९) और उसी ने ख़ल्क़त के लिए ज़मीन बिछायी, (१०) उस में मेवे और खजूर के पेड़ हैं, जिन के खोशों पर ग़िलाफ़ होते हैं। (११) और अनाज, जिस के साथ भुस होता है और ख़ुश्बूदार फूल, (१२) तो (ऐ जिन्नों और इंसानों के गिरोह!) तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमतों को झुठलाओगे?[1] (१३) उसी ने इंसान को ठीकरे की तरह खनखनाती मिट्टी से बनाया, (१४) और जिन्नों को आग के शोले से पैदा किया, (१५) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे? (१६) वही दोनों मश्रिक़ों और दोनों मग़्रिबों का मालिक (है,) (१७) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे? (१८) उसी ने दो दरिया जारी किए जो आपस में मिलते हैं। (१९) दोनों में एक आड़ है कि (उस से) आगे नहीं बढ़ सकते। (२०) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे? (२१) दोनों दरियाओं से मोती और मूंगे निकलते

१. इस आयत में ख़िताब दो जमाअतों की तरफ़ है और इस से मुराद इन्सान और जिन्न हैं, चुनांचे इक्तीसवें आयत में 'सक़लान' का लफ़्ज़ है, जिसके मानी हैं दो गिरोह और उनसे जैसा कि हदीसे सही में आया है, जिन्न और इन्सान मुराद हैं और तेतीसवीं आयत में तो साफ़ जिन्न व इन्स का नाम ले कर उन से ख़िताब किया गया है। इसी वजह से हम ने इस आयत के तर्जुमे में, ऐ जिन्न व इन्स के गिरोहो! के लफ़्ज़ बढ़ा दिए हैं।

व. लाज़िम ★रु. ३/१० आ १५

यख़्रुजु मिन्हुमल्-लुअ्लुउ वल्-मर्जानु(२२) फ़बिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (२३) व लहुल्-जवारिल्-मुन्श-आतु फ़िल्बह्रि कल-अअ्-लामि(२४) फ़बिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (२५) कुल्लु मन् अलैहा फ़ानिंव्-(२६) व यब्क़ा वज्हु रब्बि-क ज़ुल्जलालि वल-इक्रामि(२७) फ़बिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (२८) यस्-अलुहू मन् फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि कुल-ल यौमिन् हु-व फ़ी शअ्निन्(२९) फ़बिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (३०) स-नफ़्-रुग़ु लकुम् अय्युहस्-सक़लानि(३१) फ़बिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (३२) यामअ्-श-रल्-जिन्नि वल्इन्सि इनिस्तत़अ्-तुम् अन् तन्फ़ुज़ू मिन् अक़्तारिस्समावाति वल्अर्ज़ि फ़न्फ़ुज़ू ला तन्फ़ुज़ू-न इल्ला बिसुल्तान(३३) फ़बिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (३४) युर्सलु अलैकुमा शुवाज़ुम्-मिन्नारिंव-व नुहासुन् फ़ला तन्तसिरानि(३५) फ़बिअय्यि आला-इ रब्बि-कुमा तुकज़्ज़िबान (३६) फ़-इज़न-शक़्क़तिस्-समाउ फ़-कानत् वर्द-तन् कद्दिहानि(३७)

يَخْرُجُ مِنْهُمَا اللُّؤْلُؤُ وَالْمَرْجَانُ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ وَلَهُ
الْجَوَارِ الْمُنْشَآتُ فِي الْبَحْرِ كَالْأَعْلَامِ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝
كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ۝ وَيَبْقَىٰ وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ ۝
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ يَسْأَلُهُ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ كُلَّ
يَوْمٍ هُوَ فِي شَأْنٍ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ سَنَفْرُغُ لَكُمْ أَيُّهَ
الثَّقَلَانِ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ يَا مَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ إِنِ
اسْتَطَعْتُمْ أَنْ تَنْفُذُوا مِنْ أَقْطَارِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ فَانْفُذُوا لَا
تَنْفُذُونَ إِلَّا بِسُلْطَانٍ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا
شُوَاظٌ مِنْ نَارٍ وَنُحَاسٌ فَلَا تَنْتَصِرَانِ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝
فَإِذَا انْشَقَّتِ السَّمَاءُ فَكَانَتْ وَرْدَةً كَالدِّهَانِ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبَانِ ۝ فَيَوْمَئِذٍ لَا يُسْأَلُ عَنْ ذَنْبِهِ إِنْسٌ وَلَا جَانٌّ ۝ فَبِأَيِّ
آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ يُعْرَفُ الْمُجْرِمُونَ بِسِيمَاهُمْ فَيُؤْخَذُ بِالنَّوَاصِي
وَالْأَقْدَامِ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ هَٰذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي يُكَذِّبُ
بِهَا الْمُجْرِمُونَ ۝ يَطُوفُونَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ حَمِيمٍ آنٍ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبَانِ ۝ وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ جَنَّتَانِ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝
ذَوَاتَا أَفْنَانٍ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ فِيهِمَا عَيْنَانِ تَجْرِيَانِ ۝
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ فِيهِمَا مِنْ كُلِّ فَاكِهَةٍ زَوْجَانِ ۝ فَبِأَيِّ

फ़बिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (३८) फ़यौमइज़िल्ला युस-अलु अन् ज़म्बिही इन्सुंव्-व ला जान्नुन्(३९) फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़ि-बान (४०) युअ्-रफ़ुल्-मुजिरमू-न बिसीमाहुम् फ़युअ्-ख़ज़ु बिन्नवासी वल-अक़्दामि(४१) फ़बिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (४२) हाज़िही ज-हन्नमुल्लती युकज़्ज़िबु बिहल्-मुजिरमून(४३) यतूफ़ू-न बैनहा व बै-न हमीमिन् आन(४४) फ़बिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान ★(४५) व लि-मन् ख़ा-फ़ मक़ा-म रब्बिही जन्नतानि(४६) फ़बिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान(४७) ज़वाता अफ़्नानिन्(४८) फ़बिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (४९) फ़ीहिमा अ़ैनानि तज्रियानि(५०) फ़बिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (५१) फ़ीहिमा मिन् कुल्लि फ़ाकिहतिन् ज़ौजानि(५२) फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (५३)

★रु. १/११ आ २५ ● नि. १/२ ▒व. लाज़िम ★रु. २/१२ आ २०

हैं। (२२) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (२३) और जहाज़ भी उसी के हैं जो नदी में पहाड़ों की तरह ऊंचे खड़े होते हैं, (२४) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (२५)★●

जो (मख़्लूक़) ज़मीन पर है, सब को फ़ना होना है। (२६) और तुम्हारे परवरदिगार ही की ज़ात (बरकत वाली,) जो जलाल व अज़्मत वाली है, बाक़ी रहेगी, (२७) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (२८) आसमान व ज़मीन में जितने लोग हैं, सब उसी से मांगते हैं, वह हर दिन काम में लगा रहता है।[1] (२९) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (३०) ऐ दोनों जमाअतो ! हम बहुत जल्द तुम्हारी तरफ़ मुतवज्जह होते हैं। (३१) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (३२) ऐ जिन्न व इन्सान के गिरोह ! अगर तुम्हें क़ुदरत हो कि आसमान और ज़मीन के किनारों से निकल जाओ, तो निकल जाओ और ज़ोर के सिवा तो तुम निकल सकने ही के नहीं।[2] (३३) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (३४) तुम पर आग के शोले और धुवां छोड़ दिया जाएगा, तो फिर तुम मुक़ाबला न कर सकोगे। (३५) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (३६) फिर जब आसमान फट कर तेल की तलछट की तरह गुलाबी हो जाएगा, (तो वह कैसा हौलनाक दिन होगा ?) (३७) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (३८) उस दिन न तो किसी इंसान से उस के गुनाहों के बारे में पूछ-ताछ की जाएगी और न किसी जिन्न से। (३९) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (४०) गुनाहगार अपने चेहरे ही से पहचान लिए जाएंगे, तो पेशानी के बालों और पांवों से पकड़ लिए जाएंगे। (४१) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (४२) यही वह जहन्नम है, जिसे गुनाहगार लोग झुठलाते थे। (४३) वे दोज़ख़ और खौलते हुए गर्म पानी के दर्मियान घूमते फिरेंगे। (४४) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (४५)★

और जो शख़्स अपने परवरदिगार के सामने खड़े होने से डरा, उस के लिए दो बाग़ हैं। (४६) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (४७) उन दोनों में बहुत-सी शाख़ें (यानी क़िस्म-क़िस्म के मेवों के पेड़ हैं,) (४८) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (४९) इन में दो चश्मे बह रहे हैं, (५०) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (५१) उन में सब मेवे दो-दो क़िस्म के हैं, (५२) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे ? (५३) (जन्नत वाले) ऐसे बिछौनों

---

१. मतलब यह है कि जितने तसर्रुफ़ात इस दुनिया में हो रहे हैं, उन सब का मस्दर वही रब्बुल आलमीन है।
२. और ज़ोर तुम में है नहीं, तो तुम भाग कर निकल सकते भी नहीं।

मुत्तकिई-न अ़ला फ़ुरुशिम्-बताइनुहा मिन् इस्तब्रक़िन् व ज-नल्-जन्नतैनि दान (५४) फ़बिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (५५) फ़ीहिन्-न क़ासिरातुत्तर्फ़ि लम् यत्मिस-हुन्-न इन्सुन् क़ब्-लहुम् व ला जान्न (५६) फ़बिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (५७) क-अन्नहुन्नल-याक़ूतु वल्मर्जान (५८) फ़बिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (५९) हल् जज़ाउल-इह्सानि इल्लल-इह्सानु (६०) फ़बिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (६१) व मिन् दूनिहिमा जन्नतानि (६२) फ़बिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (६३) मुद-हाम्मतानि (६४) फ़बिअय्यि आला-इ रब्बि-कुमा तुकज़्ज़िबान (६५) फ़ीहिमा अ़ैनानि नज़्ज़ाख़तानि (६६) फ़बिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (६७) फ़ीहिमा फ़ाकि-हतुंव्-व नख़्लुंव्-व रुम्मान (६८) फ़बिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (६९) फ़ी-हिन्-न ख़ैरातुन् हिसान (७०) फ़बिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (७१) हूरुम्-मक़्सूरातुन् फ़िल - ख़ियामि (७२) फ़बिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (७३) लम् यत्मिस-हुन्-न इन्सुन् क़ब्-लहुम् व ला जान्न (७४) फ़बिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (७५) मुत्तकिई-न अ़ला रफ़्रफ़िन् ख़ुज़्रिंव्-व अ़ब्क़रिय्यिन् हिसान (७६) फ़बिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (७७) तबा-र - कस्मु रब्बि-क ज़िल-जलालि वल् - इक्राम ★ (७८)

الآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ مُتَّكِـِٔيْنَ عَلٰى فُرُشٍۢ بَطَآئِنُهَا مِنْ اِسْتَبْرَقٍ
وَجَنَا الْجَنَّتَيْنِ دَانٍ ۝ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ فِيْهِنَّ قٰصِرٰتُ
الطَّرْفِ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ ۝ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبٰنِ ۝ كَاَنَّهُنَّ الْيَاقُوْتُ وَالْمَرْجَانُ ۝ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝
هَلْ جَزَآءُ الْاِحْسَانِ اِلَّا الْاِحْسَانُ ۝ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ وَ
مِنْ دُوْنِهِمَا جَنَّتٰنِ ۝ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ مُدْهَآمَّتٰنِ ۝
فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ فِيْهِمَا عَيْنٰنِ نَضَّاخَتٰنِ ۝ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ
رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ فِيْهِمَا فَاكِهَةٌ وَّنَخْلٌ وَّرُمَّانٌ ۝ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبٰنِ ۝ فِيْهِنَّ خَيْرٰتٌ حِسَانٌ ۝ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝
حُوْرٌ مَّقْصُوْرٰتٌ فِى الْخِيَامِ ۝ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝
لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ ۝ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝
مُتَّكِـِٔيْنَ عَلٰى رَفْرَفٍ خُضْرٍ وَّعَبْقَرِيٍّ حِسَانٍ ۝ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبٰنِ ۝ تَبٰرَكَ اسْمُ رَبِّكَ ذِى الْجَلٰلِ وَالْاِكْرَامِ ۝
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
اِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۝ لَيْسَ لِوَقْعَتِهَا كَاذِبَةٌ ۝ خَافِضَةٌ رَّافِعَةٌ ۝
اِذَا رُجَّتِ الْاَرْضُ رَجًّا ۝ وَّبُسَّتِ الْجِبَالُ بَسًّا ۝ فَكَانَتْ هَبَآءً مُّنْۢبَثًّا ۝
وَّكُنْتُمْ اَزْوَاجًا ثَلٰثَةً ۝ فَاَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ۝ مَآ اَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ۝ وَاَصْحٰبُ

५६ सूरतुल् वाक़िअ़ति ४६

(मक्की) इस सूर: में अरबी के १७६८ अक्षर, ३८४ शब्द, ९६ आयतें और ३ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

इज़ा व-क़-अ़तिल-वाक़िअ़तु (१) लै-स लिवक़्-अ़तिहा काज़िबतुन् (२) ख़ाफ़ि-ज़तुर-राफ़िअ़तुन् (३) इज़ा रुज्जतिल्अर्ज़ु रज्जंव- (४) व बुस्सतिल-जिबालु बस्सन् (५) फ़-कानत् हबा-अम्-मुम्बस्संव- (६) व कुन्तुम् अज़्वाजन् सला-सः (७) फ़-अस्हाबुल-मैमनति मा अस्हाबुल्-मैमनः (८)

★रु. ३/१३ आ ३३ व. लाज़िम

पर जिन के स्तर अतलस के हैं, तकिया लगाये हुए होंगे और दोनों बाग़ों के मेवे क़रीब (झुक रहे) हैं। (५४) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे? (५५) इन में नीची निगाह वाली औरतें हैं जिन को जन्नत वालों से पहले न किसी इन्सान ने हाथ लगाया और न किसी जिन्न ने, (५६) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे? (५७) गोया वे याक़ूत और मर्जान हैं। (५८) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे? (५९) नेकी का बदला नेकी के सिवा कुछ नहीं है, (६०) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे? (६१) और इन बाग़ों के अलावा दो बाग़ और हैं (६२) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे? (६३) दोनों ख़ूब गहरे हरे, (६४) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे। (६५) इन में दो चश्मे उबल रहे हैं, (६६) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे? (६७) इन में मेवे और खजूरें और अनार हैं। (६८) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे? (६९) इन में नेक सीरत (और) ख़ूबसूरत औरतें हैं, (७०) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे? (७१) (वे) हूरें (हैं, जो) ख़ेमों में छिपी (हैं), (७२) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे? (७३) उन को (जन्नत वालों में) न किसी इंसान ने हाथ लगाया और न किसी जिन्न ने, (७४) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे? (७५) हरी क़ालीनों और उम्दा मस्नदों पर तकिया लगाए बैठे होंगे। (७६) तो तुम अपने परवरदिगार की कौन-कौन सी नेमत को झुठलाओगे? (७७) (ऐ मुहम्मद!) तुम्हारा परवरदिगार, जो जलाल व अज़्मत का मालिक है, उस का नाम बड़ा बरकत वाला है। (७८) ★

५६ सूरः वाक़िअः ४६

सूरः वाक़िअः मक्की है, इस में ९६ आयतें और तीन रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

जब वाक़ेअ होने वाली वाक़ेअ हो जाए, (१) उस के वाक़ेअ होने में कुछ झूठ नहीं, (२) किसी को पस्त करे, किसी को बुलंद, (३) जब ज़मीन भूंचाल से कांपने लगे, (४) और पहाड़ टूट-टूट कर रेज़ा-रेज़ा हो जाएं, (५) फिर ग़ुबार हो कर उड़ने लगें, (६) और तुम लोग तीन क़िस्म हो जाओ, (७) तो दाहिने हाथ वाले, (सुब्हानल्लाह!) दाहिने हाथ वाले क्या (ही चैन में) हैं, (८)

★रु. ३/१३ आ ३३ ▨व. लाज़िम

व अस्हाबुल-मश्-अ-मति ۙ मा अस्-हाबुल-मश्-अ-मः ؕ (९) वस्साबिक़ूनस्-साबिक़ून ۙ (१०) उला-इकल्-मुक़र्रबून ە (११) फ़ी जन्नातिन्नअ़ीम (१२) सुल्लतुम्-मिनल-अव्वलीन ۙ (१३) व क़लीलुम्-मिनल-आख़िरीन ؕ (१४) अ़ला सुरुरिम्-मौज़ूनतिम्- ۙ (१५) - मुत्तकिई-न अ़लैहा मु-त-क़ाबिलीन (१६) यतूफ़ु अ़लैहिम् विल्दानुम्-मु-ख़ल्लदून ۙ (१७) बि-अक्वाबिंव्-व अबारी-क़ ە व कअ्सिम्-मिम्-मअ़ीनिल- ۙ (१८) ला युसद्-दअ़ू-न अ़न्हा व ला युन्ज़िफ़ून ۙ (१९) व फ़ाकिहतिम्-मिम्मा य-त-ख़य्यरून ۙ (२०) व लह़्मि तैरिम्-मिम्मा यश्तहून ؕ (२१) व ह़ूरुन् अ़ीनुन् ۙ (२२) क-अम्सालिल-लुअ्लुइल-मक्नून ە (२३) जज़ा-अम्-बिमा कानू यअ़्-मलून (२४) ला यस्-मअ़ू-न फ़ीहा लग़्वंव-व ला तअ्सीमा ۙ (२५) इल्ला क़ीलन् सलामन् सलामा (२६) ع व अस्ह़ाबुल-यमीनि ۙ मा अस्ह़ाबुल-यमीन ؕ (२७) फ़ी सिद्रिम्-मख़्ज़ूदिव- ۙ (२८) व त़ल्ह़िम्-मन्ज़ूदिव- ۙ (२९) व ज़िल्लिम्-मम्दूदिव्- ۙ (३०) व माइम्-मस्कूबिव्- ۙ (३१) व फ़ाकिहतिन् कसीरतिल- ۙ (३२) ला मक़्तूअ़तिंव-व ला मम्नूअ़तिव्- ۙ (३३) व फ़ुरुशिम्-मर्फ़ूअः ؕ (३४) इन्ना अन्शअ्नाहुन्-न इन्शा-अन् ۙ (३५) फ़-ज-अ़ल्नाहुन-न अब्कारन् ۙ (३६) अ़ुरुबन् अत्राबल- ۙ (३७) लि-अस्ह़ाबिल-यमीन ؕ ★ (३८) सुल्ल-तुम्-मिनल्-अव्वलीन ۙ (३९) व सुल्लतुम्-मिनल-आख़िरीन ؕ (४०) व अस्-ह़ाबुश्शि-मालि ۙ मा अस्ह़ाबुश्शिमाल ؕ (४१) फ़ी समूमिंव्-व ह़मीमिंव्- ۙ (४२) व ज़िल्लिम्-मिंय्यह़्मूमिल- ۙ (४३) ला बारिदिंव-व ला करीम (४४) इन्नहुम् कानू क़ब्-ल ज़ालि-क मुत-रफ़ीन ە (४५) व कानू युसिर्रू-न अ़-लल्-ह़िन्सिल-अ़ज़ीम ە (४६) व कानू यक़ूलू-न ۙ अ इज़ा मित्ना व कुन्ना तुराबंव्-व अ़िज़ामन् अ इन्ना ल-मब्अ़ूसून ۙ (४७) अ-व आबाउनल्-अव्वलून (४८) क़ुल् इन्नल-अव्वली-न वल्आख़िरी-न ۙ (४९)

الْمَشْئَمَةِ ۝ مَآ أَصْحٰبُ الْمَشْئَمَةِ ۝ وَالسّٰبِقُونَ السّٰبِقُونَ ۝ أُولٰٓئِكَ الْمُقَرَّبُونَ ۝
فِي جَنّٰتِ النَّعِيمِ ۝ ثُلَّةٌ مِّنَ الْأَوَّلِينَ ۝ وَقَلِيلٌ مِّنَ الْآخِرِينَ ۝
عَلٰى سُرُرٍ مَّوْضُونَةٍ ۝ مُّتَّكِئِينَ عَلَيْهَا مُتَقٰبِلِينَ ۝ يَطُوفُ عَلَيْهِمْ وِلْدٰنٌ
مُّخَلَّدُونَ ۝ بِأَكْوَابٍ وَّأَبَارِيقَ ۝ وَكَأْسٍ مِّن مَّعِينٍ ۝ لَّا يُصَدَّعُونَ
عَنْهَا وَلَا يُنزِفُونَ ۝ وَفَاكِهَةٍ مِّمَّا يَتَخَيَّرُونَ ۝ وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا
يَشْتَهُونَ ۝ وَحُورٌ عِينٌ ۝ كَأَمْثٰلِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُونِ ۝ جَزَآءً بِمَا
كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا تَأْثِيمًا ۝ إِلَّا قِيلًا
سَلٰمًا سَلٰمًا ۝ وَأَصْحٰبُ الْيَمِينِ مَآ أَصْحٰبُ الْيَمِينِ ۝ فِي سِدْرٍ
مَّخْضُودٍ ۝ وَطَلْحٍ مَّنضُودٍ ۝ وَظِلٍّ مَّمْدُودٍ ۝ وَمَآءٍ مَّسْكُوبٍ ۝ وَ
فَاكِهَةٍ كَثِيرَةٍ ۝ لَّا مَقْطُوعَةٍ وَلَا مَمْنُوعَةٍ ۝ وَفُرُشٍ مَّرْفُوعَةٍ ۝
إِنَّآ أَنشَأْنٰهُنَّ إِنشَآءً ۝ فَجَعَلْنٰهُنَّ أَبْكَارًا ۝ عُرُبًا أَتْرَابًا ۝
لِّأَصْحٰبِ الْيَمِينِ ۝ ثُلَّةٌ مِّنَ الْأَوَّلِينَ ۝ وَثُلَّةٌ مِّنَ الْآخِرِينَ ۝
وَأَصْحٰبُ الشِّمَالِ مَآ أَصْحٰبُ الشِّمَالِ ۝ فِي سَمُومٍ وَحَمِيمٍ ۝
وَظِلٍّ مِّن يَحْمُومٍ ۝ لَّا بَارِدٍ وَلَا كَرِيمٍ ۝ إِنَّهُمْ كَانُوا قَبْلَ
ذٰلِكَ مُتْرَفِينَ ۝ وَكَانُوا يُصِرُّونَ عَلَى الْحِنثِ الْعَظِيمِ ۝ وَكَانُوا
يَقُولُونَ أَئِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظٰمًا أَئِنَّا لَمَبْعُوثُونَ ۝ أَوَ
ءَابَآؤُنَا الْأَوَّلُونَ ۝ قُلْ إِنَّ الْأَوَّلِينَ وَالْآخِرِينَ ۝ لَمَجْمُوعُونَ

منزل

★रु. १/१४ आ ३८

और बाएं हाथ वाले (अफ़सोस !) बाएं हाथ वाले क्या (अज़ाब में गिरफ़्तार) हैं, (९) और जो आगे बढ़ने वाले हैं, (उन का क्या कहना) वे आगे ही बढ़ने वाले हैं, (१०) वही (ख़ुदा के) मुक़र्रब हैं, (११) नेमत की बहिश्त में, (१२) वे बहुत से तो अगले लोगों में से होंगे, (१३) और थोड़े से पिछलों में से, (१४) (लाल व याक़ूत वग़ैरह से) जड़े हुए तख़्तों पर, (१५) आमने-सामने तकिया लगाये हुए, (१६) नवजवान ख़िद्मतगुज़ार, जो हमेशा (एक ही हालत में) रहेंगे, उन के आस-पास फिरेंगे। (१७) यानी आबख़ोरे और आफ़ताबे और साफ़ शराब के गिलास ले ले कर, (१८) इस से न तो सर में दर्द होगा और न उन की अक़्लें मारी जाएंगी। (१९) और मेवे, जिस तरह के उन को पसन्द हों, (२०) और परिंदों का गोश्त, जिस क़िस्म का उन का जी चाहे, (२१) और बड़ी-बड़ी आंखों वाली हूरें, (२२) जैसे (हिफ़ाज़त से) तह किए हुए (आबदार) मोती। (२३) यह उन के आमाल का बदला है, जो वे करते थे। (२४) वहां न बेहूदा बात सुनेंगे और न गाली-गलौज, (२५) हां, उन का कलाम सलाम-सलाम (होगा,) (२६) और दाहिने हाथ वाले ! (सुब्हानल्लाह !) दाहिने हाथ वाले क्या (ही ऐश में) हैं ? (२७) (यानी) बे-कांटे की बेरियों, (२८) और तह-ब-तह केलों, (२९) और लम्बे-लम्बे सायों, (३०) और पानी के झरनों, (३१) और ज़्यादा से ज़्यादा मेवों (के बाग़ों) में, (३२) जो न कभी ख़त्म हों और न उन से कोई रोके,[1] (३३) और ऊंचे-ऊंचे फ़र्शों में, (३४) हम ने इन (हूरों) को पैदा किया, (३५) तो उन को कुंवारियां बनाया, (३६) (और शौहरों की) प्यारियां और हम-उम्र, (३७) (यानी) दाहिने हाथ वालों के लिए, (३८)★

(ये) बहुत से तो अगले लोगों में से हैं, (३९) और बहुत से पिछलों में से। (४०) और बाएं हाथ वाले (अफ़सोस !) बाएं हाथ वाले क्या (ही अज़ाब में) हैं। (४१) (यानी दोज़ख़ की) लपट और खौलते हुए पानी में, (४२) और स्याह धुएं के साए में, (४३) (जो) न ठंडा (है,) न ख़ुशनुमा, (४४) ये लोग इस से पहले नेमतों के ऐश में पड़े हुए थे, (४५) और बड़े गुनाह पर अड़े हुए थे, (४६) और कहा करते थे कि भला जब हम मर गये और मिट्टी हो गये और हड्डियां (ही हड्डियां रह गये) तो क्या हमें फिर उठाना होगा ? (४७) और क्या हमारे बाप-दादा को भी ? (४८) कह दो कि बेशक पहले और पिछले, (४९) (सब) एक मुक़र्रर दिन के वक़्त पर जमा

---

१. यानी इस में से कुछ टूट नहीं चुका।

★रु. १/१४ आ ३८

ल-मज्मूअू-न ۙ इला मीक़ाति यौमिम्-मअ्-लूम (५०) सुम्-म इन्नकुम् अय्युहज़्ज़ा-ल्लूनल-मुकज़्ज़िबून ۙ (५१) ल-आकिलू-न मिन् श-जरिम्-मिन् ज़क़्क़ूम ۙ (५२) फ़मालिऊ-न मिन्हल-बुतून ج (५३) फ़-शारिबू-न अ़लैहि मिनल् ह़मीमि ج (५४) फ़-शारिबू-न शुर्बल्-हीम् ط (५५) हाज़ा नुज़ुलुहुम् यौमद्दीन ط (५६) नह़्नु ख़-लक़्ना-कुम् फ़लौला तुसद्दिक़ून (५७) अ-फ़-रऐतुम् मा तुम्नून ط (५८) अ अन्तुम् तख़्लुक़ूनहू अम् नह़्नुल-ख़ालिक़ून (५९) नह़्नु क़द्-दर्ना बैनकुमुल्मौ-त व मा नह़्नु बिमस्बूक़ीन ۙ (६०) अ़ला अन् नुबद्-दि-ल अम्-सा-लकुम् व नुन्शि-अकुम् फ़ी मा ला तअ्-लमून (६१) व ल-क़द् अ़लिम्तुमुन्-नश्-अ-तल-ऊला फ़लौला त-ज़क्करून (६२) अ-फ़-रऐतुम् मा तह़्रुसून ط (६३) अ अन्तुम् तज़्-रअूनहू अम् नह़्नुज़्ज़ारिअून (६४) लौ नशाउ ल-ज-अ़ल्नाहु हुतामन् फ़-ज़ल्तुम् त-फ़क्कहून (६५) इन्ना ल-मुग़्रमून ۙ (६६) बल् नह़्नु मह़्रूमून (६७) अ-फ़-रऐतुमुल्-मा-अल्लज़ी तश्-रबून ط (६८) अ अन्तुम् अन्ज़ल्तुमूहु मिनल्मुज़्नि अम् नह़्नुल-मुन्ज़िलून (६९) लौ नशाउ ज-अ़ल्नाहु उजाजन् फ़लौला तश्कुरून (७०) अ-फ़-रऐतुमुन्-नारल्लती तूरून ط (७१) अ अन्तुम् अन-शअ्-तुम् श-ज-र-तहा अम् नह़्नुल-मुन्शिऊन (७२) नह़्नु ज-अ़ल्नाहा तज़्-कि-र-तंव्-व मताअ़ल्-लिल्मुक़्वीन ج (७३) फ़-सब्बिह़् बिस्मि रब्बिकल-अ़ज़ीम ★● (७४) फ़ला उक़्सिमु बि-मवाक़िअिन्नुजूम ۙ (७५) व इन्नहू ल-क़-समुल्-लौ तअ्-लमू-न अ़ज़ीम ۙ (७६) इन्नहू लक़ुर्आनुन् करीम ۙ (७७) फ़ी किताबिम्-मक्नूनिल- ۙ (७८) -ला यमस्सुहू इल्लल-मुतह्-हरून ط (७९) तन्ज़ीलुम्-मिर्रब्बिल - आ़-लमीन (८०) अ-फ़बिहाज़ल - ह़दीसि अन्तुम् मुद्हिनून ۙ (८१) व तज्-अ़लू-न रिज़् - क़कुम् अन्नकुम् तुकज़्ज़िबून (८२)

الى ميقات يوم معلوم ۝ ثم انكم ايها الضالون المكذبون ۝
لاكلون من شجر من زقوم ۝ فمالـٔون منها البطون ۝
فشربون عليه من الحميم ۝ فشربون شرب الهيم ۝ هذا
نزلهم يوم الدين ۝ نحن خلقنكم فلولا تصدقون ۝
افرءيتم ما تمنون ۝ ءانتم تخلقونه ام نحن الخلقون ۝ نحن
قدرنا بينكم الموت وما نحن بمسبوقين ۝ على ان نبدل امثالكم
وننشئكم في ما لا تعلمون ۝ ولقد علمتم النشاة الاولى فلولا
تذكرون ۝ افرءيتم ما تحرثون ۝ ءانتم تزرعونه ام نحن
الزرعون ۝ لو نشاء لجعلنه حطاما فظلتم تفكهون ۝ انا
لمغرمون ۝ بل نحن محرومون ۝ افرءيتم الماء الذي تشربون ۝
ءانتم انزلتموه من المزن ام نحن المنزلون ۝ لو نشاء جعلنه
اجاجا فلولا تشكرون ۝ افرءيتم النار التي تورون ۝ ءانتم
انشاتم شجرتها ام نحن المنشـٔون ۝ نحن جعلنها تذكرة ومتاعا
للمقوين ۝ فسبح باسم ربك العظيم ۝ فلا اقسم بموقع النجوم ۝
وانه لقسم لو تعلمون عظيم ۝ انه لقران كريم ۝ في كتب
مكنون ۝ لا يمسه الا المطهرون ۝ تنزيل من رب العلمين ۝
افبهذا الحديث انتم مدهنون ۝ وتجعلون رزقكم انكم تكذبون ۝

★रु. २/१५ आ ३६ ●सु. ३/४

किए जाएंगे। (५०) फिर तुम ऐ झुठलाने वाले गुमराहो! (५१) थूहर के पेड़ खाओगे, (५२) और इसी से पेट भरोगे, (५३) और इस पर खौलता हुआ पानी पियोगे, (५४) और पियोगे भी तो इस तरह जैसे प्यासे ऊंट पीते हैं, (५५) बदले के दिन यह उन की मेहमानी होगी। (५६) हम ने तुम को (पहली बार भी तो) पैदा किया है, तो तुम (दोबारा उठने को) क्यों सच नहीं समझते? (५७) देखो तो कि जिस (नुत्फ़े) को तुम (औरतों के रहम में) डालते हो, (५८) क्या तुम इस (से इंसान) को बनाते हो या हम बनाते हैं? (५९) हम ने तुम में मरना ठहरा दिया है और हम इस (बात) से आजिज़ नहीं, (६०) कि तुम्हारी तरह के और लोग तुम्हारी जगह ले आएं और तुम को ऐसे जहान में जिस को तुम नहीं जानते, पैदा कर दें। (६१) और तुम ने पहली पैदाइश तो जान ही ली है, फिर तुम सोचते क्यों नहीं? (६२) भला देखो तो कि जो कुछ तुम बोते हो, (६३) तो क्या तुम उसे उगाते हो या हम उगाते हैं? (६४) अगर हम चाहें तो उसे चूरा-चूर कर दें और तुम बातें बनाते रह जाओ। (६५) (कि हाय!) हम तो मुफ़्त जुर्माने में फंस गये, (६६) बल्कि हम हैं ही बे-नसीब। (६७) भला देखो तो कि जो पानी तुम पीते हो, (६८) क्या तुम ने उस को बादल से नाज़िल किया है या हम नाज़िल करते हैं? (६९) अगर हम चाहें तो हम उसे खारी कर दें, फिर तुम शुक्र क्यों नहीं करते? (७०) भला देखो तो, जो आग तुम पेड़ से निकालते हो, (७१) क्या तुम ने उस पेड़ को पैदा किया है या हम पैदा करते हैं? (७२) हम ने उसे याद दिलाने और मुसाफ़िरों के बरतने को बनाया है। (७३) तो तुम अपने परवरदिगार बुज़ुर्ग के नाम की तस्बीह करो। (७४)★●

हमें तारों की मंज़िलों की क़सम! (७५) और अगर तुम समझो तो यह बड़ी क़सम है, (७६) कि यह बड़े रुत्बे का क़ुरआन है, (७७) (जो) किताबे महफ़ूज़ में (लिखा हुआ है।) (७८) इस को वही हाथ लगाते हैं, जो पाक हैं। (७९) परवरदिगारे आलम की तरफ़ से उतारा गया है। (८०) क्या तुम उस कलाम से इंकार करते हो? (८१) और अपना वज़ीफ़ा यह बनाते हो कि (इसे)

★रु. २/१५ आ ३६ ●सु. ३/४

फ़लौला इज़ा ब-ल-ग़तिल-हुल्क़ूम (८३) व अन्तुम् हीनइज़िन् तन्ज़ुरून (८४) व नह्नु अक़्-रबु इलैहि मिन्कुम् व लाकिल्ला तुब्सिरून (८५) फ़लौला इन् कुन्तुम् ग़ै-र मदीनीन (८६) तर्जिऊनहा इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (८७) फ़-अम्मा इन् का-न मिनल-मुक़र्रबीन (८८) फ़रौहुंव्-व रैहानुंव्-व जन्नतु नओम (८९) व अम्मा इन् का-न मिन् अस्हाबिल-यमीन (९०) फ़-सलामुल्ल - क मिन् अस्हाबिल - यमीन (९१) व अम्मा इन् का-न मिनल-मुकज़्ज़िबीनज़्-ज़ाल्लीन (९२) फ़नुज़ुलुम्-मिन् हमीमिंव्- (९३) व तस्लि-यतु जहीम (९४) इन्-न हाज़ा लहु - व हक़्क़ुल - यक़ीन (९५) फ़सब्बिह् बिस्मि रब्बिकल - अज़ीम ★ (९६)

فَلَوْلَآ إِذَا بَلَغَتِ الْحُلْقُومَ ۝ وَأَنتُمْ حِينَئِذٍ تَنظُرُونَ ۝ وَنَحْنُ أَقْرَبُ
إِلَيْهِ مِنكُمْ وَلَٰكِن لَّا تُبْصِرُونَ ۝ فَلَوْلَآ إِن كُنتُمْ غَيْرَ مَدِينِينَ ۝
تَرْجِعُونَهَآ إِن كُنتُمْ صَٰدِقِينَ ۝ فَأَمَّآ إِن كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِينَ ۝
فَرَوْحٌ وَرَيْحَانٌ وَجَنَّتُ نَعِيمٍ ۝ وَأَمَّآ إِن كَانَ مِنْ أَصْحَٰبِ الْيَمِينِ ۝
فَسَلَٰمٌ لَّكَ مِنْ أَصْحَٰبِ الْيَمِينِ ۝ وَأَمَّآ إِن كَانَ مِنَ الْمُكَذِّبِينَ
الضَّآلِّينَ ۝ فَنُزُلٌ مِّنْ حَمِيمٍ ۝ وَتَصْلِيَةُ جَحِيمٍ ۝ إِنَّ هَٰذَا
لَهُوَ حَقُّ الْيَقِينِ ۝ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ۝

५७ सूरतुल् हदीदि ९४

(मदनी) इस सूर: में अरबी के २५९९ अक्षर, ५८६ शब्द, २९ आयतें और ४ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

सब्ब-ह लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि व हुवल-अज़ीज़ुल-हकीम (१) लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि युह्यी व युमीतु व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (२) हुवल - अव्वलु वल-आख़िरु वज़्ज़ाहिरु वल्बातिनु व हु-व बिकुल्लि शैइन् अ़लीम (३) हुवल्लज़ी ख़-ल - क़स्समावाति वल्अर्-ज़ फ़ी सित्तति अय्यामिन् सुम्मस्तवा अ़-लल्अ़र्शि यअ्-लमु मा यलिजु फ़िल्अर्ज़ि व मा यख़्रुजु मिन्हा व मा यन्ज़िलु मिनस्समाइ व मा यअ्-रुजु फ़ीहा व हु-व म-अ़कुम् ऐनमा कुन्तुम् वल्लाहु बिमा तअ् - मलू-न बसीर (४) लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि व इलल्लाहि तुर्जअ़ुल - उमूर (५) यूलिजुल्लै-ल फ़िन्नहारि व यूलिजुन्नहा-र फ़िल्लैलि व हु-व अ़लीमुम् - बिज़ातिस - सुदूर (६)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
سَبَّحَ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَٰوَٰتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ لَهُ مُلْكُ
السَّمَٰوَٰتِ وَالْأَرْضِ ۖ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۖ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ هُوَ
الْأَوَّلُ وَالْآخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ۖ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝ هُوَ
الَّذِي خَلَقَ السَّمَٰوَٰتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى
الْعَرْشِ ۚ يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي الْأَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنزِلُ
مِنَ السَّمَآءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيهَا ۖ وَهُوَ مَعَكُمْ أَيْنَ مَا كُنتُمْ ۚ وَاللَّهُ بِمَا
تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝ لَّهُ مُلْكُ السَّمَٰوَٰتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ
الْأُمُورُ ۝ يُولِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُولِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ ۚ وَهُوَ عَلِيمٌ
بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝ ءَامِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَأَنفِقُوا مِمَّا جَعَلَكُم مُّسْتَخْلَفِينَ

★रु. ३/१६ आ २२

झुठलाते हो, (८२) भला जब रूह गले में आ पहुंचती है, (८३) और तुम उस वक़्त (की हालत को) देखा करते हो, (८४) और हम उस (मरने वाले) से तुम से भी ज़्यादा नज़दीक होते हैं, लेकिन तुम को नज़र नहीं आते। (८५) पस अगर तुम किसी के बस में नहीं हो, (८६) तो अगर सच्चे हो तो रूह को फेर क्यों नहीं लेते? (८७) फिर अगर वह (ख़ुदा के) मुक़र्रिबों में से है, (८८) तो (उस के लिए) आराम और ख़ुश्बूदार फल और नेमत के बाग़ हैं, (८९) और अगर वह दाएं हाथ वालों में से है, (९०) तो (कहा जाएगा कि) तुझ पर दाहिने हाथ वालों की तरफ़ से सलाम, (९१) और अगर वह झुठलाने वाले गुमराहों में से है, (९२) तो (उस के लिए) खौलते पानी की मेहमानी है, (९३) और जहन्नम में दाख़िल किया जाना। (९४) यह (दाख़िल किया जाना यक़ीनन सही यानी) हक़्क़ुल यक़ीन है। (९५) तुम अपने परवरदिगार बुज़ुर्ग के नाम की तस्बीह करते रहो। (९६) ★

५७ सूरः हदीद ९४

सूरः हदीद मदनी है, इस में २९ आयतें और चार रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

जो मख़्लूक़ आसमानों और ज़मीन में है, ख़ुदा की तस्बीह करती है और वह ग़ालिब (और) हिक्मत वाला है। (१) आसमानों और ज़मीन की बादशाही उसी की है, (वही) ज़िंदा करता और मारता है और वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। (२) वह (सब से) पहला और (सब से) पिछला और (अपनी क़ुदरतों से सब पर) ज़ाहिर और (अपनी ज़ात से) पोशीदा है और वह तमाम चीज़ों को जानता है। (३) वही है जिस ने आसमानों और ज़मीन को छः दिन में पैदा किया, फिर अर्श पर जा ठहरा। जो चीज़ ज़मीन में दाख़िल होती और जो उस से निकलती है और आसमान से उतरती और जो उस की तरफ़ चढ़ती है, सब मालूम है और तुम जहां कहीं हो, वह तुम्हारे साथ है और जो कुछ तुम करते हो, ख़ुदा उस को देख रहा है। (४) आसमानों और ज़मीन की बादशाही उसी की है और सब मामले उसी की तरफ़ रुजूअ होते हैं। (५) (वही) रात को दिन में दाख़िल करता और दिन को रात में दाख़िल करता है और वह दिलों के भेदों

★रु० ३/१६ आ २२

आमिनू बिल्लाहि व रसूलिही व अन्फ़िक़ू मिम्मा ज-अ-लकुम् मुस्तख़-लफ़ी-न फ़ीहि फ़ल्लज़ी-न आमनू मिन्कुम् व अन्फ़क़ू लहुम् अज्-रुन् कबीर (७) व मा लकुम् ला तुअ्मिनू-न बिल्लाहि ج वर्रसूलु यद्अूकुम् लितुअ्मिनू बिरब्बिकुम् व क़द् अ-ख़-ज मीसाक़कुम् इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन (८) हुवल्लज़ी युनज़्ज़िलु अला अब्दिही आयातिम्-बय्यिनातिल-लियुख़्रि-जकुम् मिनज़्ज़ुलुमाति इलन्नूरि ط व इन्नल्ला-ह बिकुम् ल-रऊफ़ुर्रहीम (९) व मा लकुम् अल्ला तुन्फ़िक़ू फ़ी सबीलिल्लाहि व लिल्लाहि मीरा सुस्समावाति वल्अर्ज़ि ط ला यस्तवी मिन्कुम् मन् अन्फ़-क़ मिन् क़ब्लिल-फ़त्हि व क़ात-ल ط उलाइ-क अअ्-ज़मु द-र-ज-तम्-मिनल्लज़ी-न अन्फ़क़ू मिम्-बअ्-दु व क़ातलू ط व कुल्लंव्व-अ्-दल्लाहुल्-हुस्ना ط वल्लाहु बिमा तअ्-मलू-न ख़बीर ★ (१०) मन् ज़ल्लज़ी युक़्रिज़ुल्ला-ह क़र्-ज़न् ह-स-नन् फ़-युज़ाअि-फ़हू लहू व लहू अजरुन् करीम ج (११) यौ-म त-रल्-मुअ्मिनी-न वल्मुअ्मिनाति यस्आ नूरुहुम् बै-न ऐदीहिम् व बिऐमानिहिम् बुश्रा-कुमुल्यौ-म जन्नातुन् तज्री मिन् तह्ति-हल-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा ط ज़ालि-क हुवल-फ़ौज़ुल-अ़ज़ीम ج (१२) यौ-म यक़ूलुल-मुनाफ़िक़ू-न वल्मुनाफ़िक़ातु लिल्लज़ी-न आमनुन्ज़ुरूना नक़्तबिस् मिन् नूरिकुम् ج क़ीलर्जिअू वरा-अकुम् फ़ल्तमिसू नूरन् ط फ़ज़ुरि-ब बैनहुम् बिसूरिल्लहू बाबुन् ط बातिनुहू फ़ीहिर्रह्-मतु व ज़ाहिरुहू मिन क़ि-बलिहिल-अ़ज़ाब ط (१३) युनादूनहुम् अ-लम् नकुम्-म-अकुम् ط क़ालू बला व लाकिन्नकुम् फ़-तन्तुम् अन्फ़ुसकुम् व तरब्बस्तुम् वर्तब्तुम् व ग़र्रत्कुमुल - अमानिय्यु हत्ता जा-अ अम्रुल्लाहि व ग़र्रकुम् बिल्लाहिल - ग़रूर (१४)

فِيهِ ۚ فَالَّذِينَ آمَنُوا مِنكُمْ وَأَنفَقُوا لَهُمْ أَجْرٌ كَبِيرٌ ۝ وَمَا لَكُمْ لَا
تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ ۙ وَالرَّسُولُ يَدْعُوكُمْ لِتُؤْمِنُوا بِرَبِّكُمْ وَقَدْ أَخَذَ
مِيثَاقَكُمْ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ۝ هُوَ الَّذِي يُنَزِّلُ عَلَىٰ عَبْدِهِ آيَاتٍ
بَيِّنَاتٍ لِّيُخْرِجَكُم مِّنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ ۚ وَإِنَّ اللَّهَ بِكُمْ لَرَءُوفٌ رَّحِيمٌ ۝
وَمَا لَكُمْ أَلَّا تُنفِقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلِلَّهِ مِيرَاثُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ
لَا يَسْتَوِي مِنكُم مَّنْ أَنفَقَ مِن قَبْلِ الْفَتْحِ وَقَاتَلَ ۚ أُولَٰئِكَ أَعْظَمُ
دَرَجَةً مِّنَ الَّذِينَ أَنفَقُوا مِن بَعْدُ وَقَاتَلُوا ۚ وَكُلًّا وَعَدَ اللَّهُ
الْحُسْنَىٰ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝ مَّن ذَا الَّذِي يُقْرِضُ اللَّهَ
قَرْضًا حَسَنًا فَيُضَاعِفَهُ لَهُ وَلَهُ أَجْرٌ كَرِيمٌ ۝ يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِينَ
وَالْمُؤْمِنَاتِ يَسْعَىٰ نُورُهُم بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَبِأَيْمَانِهِم بُشْرَاكُمُ الْيَوْمَ
جَنَّاتٌ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ
الْعَظِيمُ ۝ يَوْمَ يَقُولُ الْمُنَافِقُونَ وَالْمُنَافِقَاتُ لِلَّذِينَ آمَنُوا انظُرُونَا
نَقْتَبِسْ مِن نُّورِكُمْ قِيلَ ارْجِعُوا وَرَاءَكُمْ فَالْتَمِسُوا نُورًا فَضُرِبَ
بَيْنَهُم بِسُورٍ لَّهُ بَابٌ بَاطِنُهُ فِيهِ الرَّحْمَةُ وَظَاهِرُهُ مِن قِبَلِهِ
الْعَذَابُ ۝ يُنَادُونَهُمْ أَلَمْ نَكُن مَّعَكُمْ ۖ قَالُوا بَلَىٰ وَلَٰكِنَّكُمْ فَتَنتُمْ
أَنفُسَكُمْ وَتَرَبَّصْتُمْ وَارْتَبْتُمْ وَغَرَّتْكُمُ الْأَمَانِيُّ حَتَّىٰ جَاءَ
أَمْرُ اللَّهِ وَغَرَّكُم بِاللَّهِ الْغَرُورُ ۝ فَالْيَوْمَ لَا يُؤْخَذُ مِنكُمْ فِدْيَةٌ

★रु. १/१७ आ १०

तक को जानता है। (६) (तो) ख़ुदा पर और उस के रसूल पर ईमान लाओ और जिस (माल) में उस ने तुम को (अपना) नायब बनाया है, उस में से ख़र्च करो। जो लोग तुम में से ईमान लाए और (माल) ख़र्च करते रहे, उन के लिए बड़ा सवाब है। (७) और तुम कैसे लोग हो कि ख़ुदा पर ईमान नहीं लाते, हालांकि (उस के) पैग़म्बर तुम्हें बुला रहे हैं कि अपने परवरदिगार पर ईमान लाओ और अगर तुम को बावर हो, तो वह तुम से (इस का) अह्द भी ले चुका है। (८) वही तो है जो अपने बन्दे पर खुले (मतलब वाली) आयतें नाज़िल करता है, ताकि तुम को अंधेरे में से निकाल कर रोशनी में लाए। बेशक ख़ुदा तुम पर निहायत शफ़क़त करने वाला (और) मेहरबान है। (९) और तुम को क्या हुआ है कि ख़ुदा के रास्ते में ख़र्च नहीं करते, हालांकि आसमानों और ज़मीन की विरासत ख़ुदा ही की है, जिस शख़्स ने तुम में से (मक्का की) फ़त्ह से पहले ख़र्च किया और लड़ाई की, वे (और जिस ने ये काम पीछे किए, वे) बराबर नहीं। उन का दर्जा उन लोगों से बढ़ कर है, जिन्हों ने बाद में (माल का) ख़र्च और (कुफ़्फ़ार से) जिहाद व क़िताल किया और ख़ुदा ने सब से नेक (सवाब) (का) वायदा तो किया है और जो काम तुम करते हो, ख़ुदा उन्हें जानता है। (१०)★

कौन है जो ख़ुदा को नेक (नीयत और ख़ुलूस से) क़र्ज़ दे, तो वह उस को उस से दोगुना अदा करे और वह उस के लिए इज़्ज़त का बदला (यानी) जन्नत है। (११) जिस दिन तुम मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को देखोगे कि उन (के ईमान) का नूर उन के आगे-आगे और दाहिनी तरफ़ चल रहा है, (तो उन से कहा जाएगा कि) तुम को बशारत हो (कि आज तुम्हारे लिए) बाग़ हैं, जिन के तले नहरें बह रही हैं, उन में हमेशा रहोगे। यही बड़ी कामियाबी है। (१२) उस दिन मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें मोमिनों से कहेंगे कि हमारी तरफ़ (शफ़क़त की) नज़र कीजिए कि हम भी तुम्हारे नूर से रोशनी हासिल करें तो उनसे कहा जाएगा कि पीछे को लौट जाओ, (वहां) और नूर तलाश करो, फिर उन के बीच में एक दीवार खड़ी कर दी जाएगी, जिस में एक दरवाज़ा होगा, जो उस के अन्दरूनी जानिब है, उस में तो रहमत है और जो बाहरी जानिब है, उस तरफ़ अज़ाब (व तक्लीफ़) (१३) तो मुनाफ़िक़ लोग मोमिनों से कहेंगे कि क्या हम (दुनिया में) तुम्हारे साथ न थे, वे कहेंगे, क्यों नहीं थे? लेकिन तुम ने ख़ुद अपने आप को बला में डाला और (हमारे हक़ में हादसे के) इंतिज़ार में रहे और (इस्लाम में) शक किया और (लम्बी-चौड़ी) आरज़ूओं ने तुम को धोखा दिया, यहां तक कि ख़ुदा का हुक्म आ पहुंचा और ख़ुदा के बारे में तुम को (शैतान)

★रु. १/१७ आ १०

फ़ल्यौ-म ला युअ्-ख़ज़ु मिन्कुम् फ़िद्-य-तुं व्-व ला मिनल्लज़ी-न क-फ़रू ᵇ मअ्वाकुमुन्नारु ᵇ हि-य मौलाकुम् ᵇ व बिअ्-सल्मसीर (१५) अ-लम् यअ्नि लिल्लज़ी-न आमनू अन् तख़्श-अ़ क़ुलूबुहुम् लिज़िक्रिल्लाहि व मा न-ज़-ल मिनल्ह़क़्क़ि ᵘ व ला यकूनू कल्लज़ी-न ऊतुल्किता-ब मिन् क़ब्लु फ़-ता-ल अ़लैहिमुल-अ-मदु फ़-क़-सत् क़ुलूबुहुम् ᵇ व कसीरुम्-मिन्हुम् फ़ासिक़ून (१६) इअ्लमू अन्नल्ला-ह युह्यिल्-अर्-ज़ बअ्-द मौतिहा ᵇ क़द् बय्यन्ना लकुमुल-आयाति ल-अ़ल्लकुम् तअ्-क़िलून (१७) इन्नल-मुस्सद्दिक़ी-न वल्मुस्सद्दिक़ाति व अक़्-र-ज़ुल्ला-ह क़र्ज़न् ह़-स-नंय्युज़ाअफ़ु लहुम् व लहुम् अज्रुन् करीम (१८) वल्लज़ी-न आमनू बिल्लाहि व रुसुलिही उलाइ-क हुमुस्सिद्दीक़ू-न वश्शु-ह-दाउ अ़िन्-द रब्बिहिम् ᵇ लहुम् अज्-रुहुम् व नूरुहुम् ᵇ वल्लज़ी-न क-फ़रू व कज़्ज़बू बि-आयातिना उलाइ-क अस्ह़ाबुल-जह़ीम★ (१९) इअ्लमू अन्नमल् ह़यातुद्दुन्या लअिबुं व्-व लह्वुं व्-व ज़ीनतुं व्-व तफ़ाख़ुरुम्-बैनकुम् व

فَالْيَوْمَ لَا يُؤْخَذُ مِنْكُمْ فِدْيَةٌ وَلَا مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا مَأْوٰىكُمُ النَّارُ هِيَ مَوْلٰىكُمْ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ⑮
أَلَمْ يَأْنِ لِلَّذِينَ آمَنُوا أَنْ تَخْشَعَ قُلُوبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ وَمَا نَزَلَ مِنَ
الْحَقِّ وَلَا يَكُونُوا كَالَّذِينَ أُوتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلُ فَطَالَ عَلَيْهِمُ
الْأَمَدُ فَقَسَتْ قُلُوبُهُمْ وَكَثِيرٌ مِنْهُمْ فٰسِقُونَ ⑯ اِعْلَمُوا أَنَّ اللّٰهَ
يُحْيِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْآيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ⑰
إِنَّ الْمُصَّدِّقِينَ وَالْمُصَّدِّقٰتِ وَأَقْرَضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُضٰعَفُ
لَهُمْ وَلَهُمْ أَجْرٌ كَرِيمٌ ⑱ وَالَّذِينَ آمَنُوا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهِ أُولٰٓئِكَ هُمُ
الصِّدِّيقُونَ وَالشُّهَدَآءُ عِنْدَ رَبِّهِمْ لَهُمْ أَجْرُهُمْ وَنُورُهُمْ
وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيٰتِنَا أُولٰٓئِكَ أَصْحٰبُ الْجَحِيمِ ⑲ اِعْلَمُوا
أَنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَلَهْوٌ وَزِينَةٌ وَتَفَاخُرٌ بَيْنَكُمْ وَتَكَاثُرٌ فِي
الْأَمْوَالِ وَالْأَوْلَادِ كَمَثَلِ غَيْثٍ أَعْجَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتُهُ ثُمَّ يَهِيجُ
فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُونُ حُطٰمًا وَفِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيدٌ وَ
مَغْفِرَةٌ مِنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانٌ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا إِلَّا مَتَاعُ الْغُرُورِ ⑳
سَابِقُوا إِلٰى مَغْفِرَةٍ مِنْ رَبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَآءِ
وَالْأَرْضِ أُعِدَّتْ لِلَّذِينَ آمَنُوا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهِ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ
يُؤْتِيهِ مَنْ يَشَآءُ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ㉑ مَا أَصَابَ مِنْ
مُصِيبَةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي أَنْفُسِكُمْ إِلَّا فِي كِتٰبٍ مِنْ قَبْلِ أَنْ

منزل

तकासुरुन् फ़िल-अम्वालि वल-औलादि ᵇ क-म-सलि ग़ैसिन् अअ्-ज-बल-कुफ़्फ़ा-र नबातुहू सुम्-म यहीजु फ़-तराहु मुस्फ़र्रन् सुम्-म यकूनु ह़ुतामन् ᵇ व फ़िल्आख़िरति अ़ज़ाबुन् शदीदुं व्-व मग़्फ़ि-र-तुम्-मिनल्लाहि व रिज़्वानुन् ᵇ व मल-ह़यातुद्दुन्या इल्ला मताअुल-ग़ुरूर (२०) साबिक़ू इला मग़्फ़ि-रतिम्-मिर्रब्बिकुम् व जन्नतिन् अर्-ज़ुहा क-अ़र्ज़िस्समा-इ वल्अर्ज़ि ᵘ उअिद्दत् लिल्लज़ी-न आमनू बिल्लाहि व रुसुलिही ᵇ ज़ालि-क फ़ज़्लुल्लाहि युअ्तीहि मंय्यशाउ ᵇ वल्लाहु ज़ुल्फ़ज़्लिल-अ़ज़ीम (२१) मा असा-ब मिम्-मुसीबतिन् फ़िल्अर्ज़ि व ला फ़ी अन्फ़ुसिकुम् इल्ला फ़ी किताबिम्-मिन् क़ब्लि अन् नब्-र-अहा ᵇ इन्-न ज़ालि-क अ़लल्लाहि यसीरुन् (२२)

★रु. २/१८ आ ६

दग़ाबाज़ दग़ा देता रहा। (१४) तो आज तुम से मुआवज़ा नहीं लिया जाएगा और न (वह) काफ़िरों ही से (क़ुबूल किया जाएगा)। तुम सब का ठिकाना दोज़ख़ है (कि) वही तुम्हारे लायक़ है और वह बुरी जगह है। (१५) क्या अभी मोमिनों के लिए इस का वक़्त नहीं आया कि ख़ुदा की याद करने के वक़्त और (क़ुरआन) जो (ख़ुदा-ए-बर-) हक़ (की तरफ़) से नाज़िल हुआ है, उस के सुनने के वक़्त उन के दिल नर्म हो जाएं और वे उन लोगों की तरह न हो जाएं, जिन को (उन से) पहले किताबें दी गयी थीं, फिर उन पर लम्बा ज़माना गुज़र गया, तो उन के दिल सख़्त हो गए और उन में से अक्सर ना-फ़रमान हैं। (१६) जान रखो कि ख़ुदा ही ज़मीन को उस के मरने के बाद ज़िंदा करता है। हम ने अपनी निशानियां तुम से खोल-खोल कर बयान कर दी हैं, ताकि तुम समझो। (१७) जो लोग ख़ैरात करने वाले हैं मर्द भी और औरतें भी और ख़ुदा को नेक (नीयत और ख़ुलूस से) क़र्ज़ देते हैं, उन को दोगुना अदा किया जाएगा और उन के लिए इज़्ज़त का बदला है। (१८) और जो लोग ख़ुदा और उस के पैग़म्बरों पर ईमान लाए, यही अपने परवरदिगार के नज़दीक सिद्दीक़ और शहीद हैं। उन के लिए उन (के आमाल) का बदला होगा और उन (के ईमान) की रोशनी और जिन लोगों ने कुफ़्र किया और हमारी आयतों को झुठलाया, वही दोज़ख़ी हैं। (१९)★

जान रखो कि दुनिया की ज़िंदगी सिर्फ़ खेल और तमाशा और ज़ीनत (व आराइश) और तुम्हारे आपस में घमंड (व तारीफ़) और माल व औलाद की एक दूसरे से ज़्यादा तलब (व ख़्वाहिश) है।[1] (इस की मिसाल ऐसी है) जैसे बारिश, कि (इस से खेती उगती और) किसानों को खेती भली लगती है, फिर वह ख़ूब ज़ोर पर आती है, फिर (ऐ देखने वाले!) तू उस को देखता है कि (पक कर) पीली पड़ जाती है, फिर चूरा-चूरा हो जाती है और आख़िरत में (काफ़िरों के लिए) तेज़ अज़ाब और (मोमिनों के लिए) ख़ुदा की तरफ़ से बख़्शिश और ख़ुश्नूदी है और दुनिया की ज़िंदगी तो धोखे का माल है। (२०) (बन्दो) अपने परवरदिगार की बख़्शिश की तरफ़ और जन्नत की (तरफ़) जिस का अर्ज़ आसमान और ज़मीन के अर्ज़ का-सा है और जो उन लोगों के लिए तैयार की गयी है जो ख़ुदा पर और उस के पैग़म्बरों पर जो ईमान लाए हैं, लपको। यह ख़ुदा का फ़ज़्ल है, जिसे चाहे अता फ़रमाए और ख़ुदा बड़े फ़ज़्ल का मालिक है। (२१) कोई मुसीबत मुल्क पर और ख़ुद तुम पर नहीं पड़ती, मगर इस से पहले कि हम उस को पैदा करें, एक किताब में (लिखी हुई) है, (और) यह (काम) ख़ुदा को आसान है। (२२) ताकि जो (मतलब) तुम से

---

१. हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक बार मस्जिद में तश्रीफ़ लाए तो देखा कि कुछ लोग मस्जिद में हंस रहे हैं। आप ने फ़रमाया, क्या तुम लोगों को ख़ौफ़ नहीं रहा? साफ़ ही यह आयत पढ़ी, तो उन लोगों ने पूछा कि ऐ अल्लाह के रसूल! उस का कफ़्फ़ारा क्या है? आप ने फ़रमाया, जितना हंसे हो, उतना ही रोओ।

★रु. २/१८ आ ६

लिकैला तअ्सौ अ़ला मा फ़ातकुम् व ला तफ़्रहू बिमा आताकुम् ط वल्लाहु ला युहिब्बु कुल्-ल मुख़्तालिन् फ़ख़ूरि-नि- (२३) -ल्लज़ी-न यब्ख़लू-न व यअ्मुरू-नन्ना-स बिल्बुख़्लि ط व मंय्य-त-वल्-ल फ़-इन्नल्ला-ह हुवल्-ग़निय्युल्-ह़मीद (२४) ल-क़द् अर्सल्ना रुसुलना बिलबय्यिनाति व अन्ज़ल्ना म-अ़हुमुल-किता-ब वलमीज़ा-न लियक़ूमन्नासु बिल्क़िस्ति ج व अन्ज़ल्नल-ह़दी-द फ़ीहि बअ्सुन् शदीदुंव्-व मनाफ़िअ़ु लिन्नासि व लियअ्-ल-मल्लाहु मंय्यन्सुरुहू व रुसुलहू बिल्ग़ैबि ط इन्नल्ला-ह क़विय्युन् अ़ज़ीज़ ★ (२५) व ल-क़द् अर्सल्ना नूहंव्-व इब्-राही-म व ज-अ़ल्ना फ़ी ज़ुर्रिय्यति-हिमन्-नुबुव्व-त वल्किता-ब फ़मिन्हुम् मुह्-तदिन् ج व कसीरुम्-मिन्हुम् फ़ासिक़ून (२६) सुम्-म क़फ़्फ़ैना अ़ला आसारिहिम् बिरुसुलिना व क़फ़्फ़ैना बिईसब्नि मर्-य-म व आतैना-हुल-इन्जी-ल ५ व ज-अ़ल्ना फ़ी क़ुलूबिल्-लज़ीनत्त-ब-अ़ूहु रअ्-फ़-तंव्-व रह्-म-तन् ط व रह्बानिय्य-त-निब्-त-दअ़ूहा मा क-तब्नाहा अ़लैहिम् इल्लब्तिग़ा-अ रिज़्-वानिल्लाहि फ़मा रऔ़हा ह़क़्-क़ रिआ़यतिहा ج फ़आतैनल्लज़ी-न आमनू मिन्हुम् अज्-रहुम् ج व कसीरुम्-मिन्हुम् फ़ासिक़ून (२७) या अय्युहल्लज़ी-न आम-नुत्तक़ुल्ला-ह व आमिनू बिरसूलिही युअ्तिकुम् किफ़्लैनि मिर्रह्मतिही व यज्-अ़ल्लकुम् नूरन् तम्शू-न बिही व यग़्फ़िर् लकुम् ط वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीमुल्- (२८) लि-अल्ला यअ्-ल-म अह्लुल-किताबि अल्ला यक़्दिरू-न अ़ला शैइम्-मिन् फ़ज़्लिल्लाहि व अन्नल्फ़ज़्-ल बियदिल्लाहि युअ्तीहि मंय्यशाउ ط वल्लाहु ज़ुल्-फ़ज़्लिल्-अ़ज़ीम ★ (२६)

نَبْرَاَهَا ۭ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ۝ لِّكَيْلَا تَاْسَوْا عَلٰى مَا فَاتَكُمْ وَلَا
تَفْرَحُوْا بِمَآ اٰتٰىكُمْ ۭ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرِۨ ۝ الَّذِيْنَ
يَبْخَلُوْنَ وَيَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ ۭ وَمَنْ يَّتَوَلَّ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ
الْحَمِيْدُ ۝ لَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِالْبَيِّنٰتِ وَاَنْزَلْنَا مَعَهُمُ الْكِتٰبَ
وَالْمِيْزَانَ لِيَقُوْمَ النَّاسُ بِالْقِسْطِ ۚ وَاَنْزَلْنَا الْحَدِيْدَ فِيْهِ بَاْسٌ
شَدِيْدٌ وَّمَنَافِعُ لِلنَّاسِ وَلِيَعْلَمَ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ وَرُسُلَهٗ بِالْغَيْبِ ۭ
اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ عَزِيْزٌ ۝ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا وَّاِبْرٰهِيْمَ وَجَعَلْنَا فِيْ
ذُرِّيَّتِهِمَا النُّبُوَّةَ وَالْكِتٰبَ فَمِنْهُمْ مُّهْتَدٍ ۚ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ۝
ثُمَّ قَفَّيْنَا عَلٰٓي اٰثَارِهِمْ بِرُسُلِنَا وَقَفَّيْنَا بِعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ وَاٰتَيْنٰهُ
الْاِنْجِيْلَ ۥ وَجَعَلْنَا فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ رَاْفَةً وَّرَحْمَةً ۭ
وَرَهْبَانِيَّةَۨ ابْتَدَعُوْهَا مَا كَتَبْنٰهَا عَلَيْهِمْ اِلَّا ابْتِغَاۗءَ رِضْوَانِ
اللّٰهِ فَمَا رَعَوْهَا حَقَّ رِعَايَتِهَا ۚ فَاٰتَيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْهُمْ اَجْرَهُمْ ۚ
وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَاٰمِنُوْا
بِرَسُوْلِهٖ يُؤْتِكُمْ كِفْلَيْنِ مِنْ رَّحْمَتِهٖ وَيَجْعَلْ لَّكُمْ نُوْرًا
تَمْشُوْنَ بِهٖ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ لِّئَلَّا يَعْلَمَ
اَهْلُ الْكِتٰبِ اَلَّا يَقْدِرُوْنَ عَلٰي شَيْءٍ مِّنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَاَنَّ
الْفَضْلَ بِيَدِ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ۝

★रु. ३/१६ आ ६ ★रु. ४/२० आ ४

फ़ौत हो गया हो, उस का ग़म न खाया करो और जो तुम ने उस को दिया हो, उस पर इतराया न करो और ख़ुदा किसी इतराने और शेख़ी बघारने वाले को दोस्त नहीं रखता, (२३) जो ख़ुद भी बुख़्ल करें और लोगों को भी बुख़्ल सिखाएं और जो शख़्स मुंह फेर ले, तो ख़ुदा भी बे-परवा है (और) वही हम्द (व सना) के लायक़ है। (२४) हमने अपने पैग़म्बरों को खुली निशानियां दे कर भेजा और उन पर किताबें नाज़िल कीं और तराज़ू (यानी इन्साफ़ के क़ायदे,) ताकि लोग इंसाफ़ पर क़ायम रहें और लोहा पैदा किया। उस में (लड़ाई के हथियार के लिहाज़ से) ख़तरा भी तेज़ है और लोगों के फ़ायदे भी हैं और इस लिए कि जो लोग बिन-देखे ख़ुदा और उस के पैग़म्बरों की मदद करते हैं, ख़ुदा उन को मालूम करे। बेशक ख़ुदा ताक़तवर और ग़ालिब है। (२५)★

और हम ने नूह और इब्राहीम को (पैग़म्बर बना कर) भेजा और उन की औलाद में पैग़म्बरी और किताब (के सिलसिले) को (वक़्त-वक़्त पर) जारी रखा, तो कुछ तो उन में से हिदायत पर हैं और अक्सर उन में से इताअत से बाहर हैं। (२६) फिर उन के पीछे उन्हीं के क़दमों पर (और) पैग़म्बर भेजे और उन के पीछे मरयम के बेटे ईसा को भेजा और उन को इंजील इनायत की और जिन लोगों ने उन की पैरवी की, उन के दिलों में शफ़क़त और मेहरबानी डाल दी और लज़्ज़तों से किनारा-कशी की, तो उन्हों ने ख़ुद एक नयी बात निकाल ली। हम ने उन को इस का हुक्म नहीं दिया था, मगर (उन्हों ने अपने ख़्याल में) ख़ुदा की ख़ुश्नूदी हासिल करने के लिए (आप ही ऐसा कर लिया था) फिर जैसा उस को बनाना चाहिए था, निबाह भी न सके। पस जो लोग उन में से ईमान लाए उन को हम ने उन का बदला दिया और उन में से बहुत से ना-फ़रमान हैं। (२७) मोमिनो! ख़ुदा से डरो और उस के पैग़म्बर पर ईमान लाओ, वह तुम्हें अपनी रहमत से दोगुना बदला अता फ़रमाएगा और तुम्हारे लिए रोशनी कर देगा, जिस में चलोगे और तुम को बख़्श देगा और ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है। (२८) (ये बातें) इस लिए (बयान की गयी हैं) कि अह्ले किताब जान लें कि वे ख़ुदा के फ़ज़्ल पर कुछ भी क़ुदरत नहीं रखते और यह कि फ़ज़्ल ख़ुदा के ही हाथ है, जिस को चाहता है देता है और ख़ुदा बड़े फ़ज़्ल का मालिक है। (२९)★

★रु. ३/१९ आ ६ ★रु. ४/२० आ ४

अट्ठाईसवां पारः क़द् समि-अल्लाहु

५८ सूरतुल्-मुजादलति १०५

(मदनी) इस सूर: में अरबी के २१०३ अक्षर, ४७६ शब्द, २२ आयतें और ३ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

क़द् समिअल्लाहु क़ौलल्लती तुजादिलु-क फ़ी ज़ौजिहा व तश्तकी इलल्लाहि व वल्लाहु यस् - मअु तहावु-र-कुमा ♭ इन्नल्ला-ह समीअुम् - बसीर (१) अल्लज़ी-न युज़ाहिरू-न मिन्कुम् मिन् निसाइहिम् मा हुन्-न उम्महातिहिम् ♭ इन् उम्महातुहुम् इल्लल्लाई व - लद्नहुम् ♭ व इन्नहुम् ल-यक़ूलू-न मुन्करम्-मिनल्क़ौलि वज़ूरन् ♭ व इन्नल्ला-ह ल-अफ़ुव्वुन् ग़फ़ूर (२) वल्लज़ी-न युज़ाहिरू-न मिन् निसाइहिम् सुम्-म यअ़ूदू-न लिमा क़ालू फ़-तह़रीरु र-क़-बतिम्मिन् क़ब्लि अंय्य-त-मास्सा ♭ ज़ालिकुम् तू-अज़ू-न बिही ♭ वल्लाहु बिमा तअ्-मलू-न ख़बीर (३) फ़ - मल्लम् यजिद् फ़सियामु शह्रैनि मु-त-ताबिअ़ैनि मिन् क़ब्लि अंय्य-त-मास्सा ♭ फ़-मल्लम् यस्ततिअ् - फ़इत्आमु सित्ती-न मिस्कीनन् ♭ ज़ालि-क लितुअ्मिनू बिल्लाहि व रसूलिही ♭ व तिल्-क हुदूदुल्लाहि ♭ व लिल्काफ़िरी-न अ़ज़ाबुन् अलीम (४) इन्नल्लज़ी-न युहाद्दूनल्ला-ह व रसूलहू कुबितू कमा कुबितल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् व क़द् अन्ज़ल्ना आयातिम्-बय्यिनातिन् ♭ व लिल्काफ़िरी-न अ़ज़ाबुम्-मुहीन ♭ (५) यौ-म यब्अ़सु - हुमुल्लाहु जमीअ़न् फ़-युनब्बिउहुम् बिमा अ़मिलू ♭ अह़्साहुल्लाहु व नसूहु ♭ वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् शहीद ★ (६)

سورة المجادلة مدنية وهي اثنتان وعشرون آية وثلاث ركوعات
بسم الله الرحمن الرحيم
قد سمع الله قول التي تجادلك في زوجها وتشتكي إلى
الله والله يسمع تحاوركما إن الله سميع بصير ۝ الذين
يظهرون منكم من نسائهم ما هن أمهاتهم إن أمهاتهم
إلا الئي ولدنهم وإنهم ليقولون منكرا من القول وزورا
وإن الله لعفو غفور ۝ والذين يظهرون من نسائهم ثم
يعودون لما قالوا فتحرير رقبة من قبل أن يتماسا ذلكم
توعظون به والله بما تعملون خبير ۝ فمن لم يجد فصيام
شهرين متتابعين من قبل أن يتماسا فمن لم يستطع
فإطعام ستين مسكينا ذلك لتؤمنوا بالله ورسوله و
تلك حدود الله وللكافرين عذاب أليم ۝ إن الذين
يحادون الله ورسوله كبتوا كما كبت الذين من قبلهم
وقد أنزلنا آيات بينات وللكافرين عذاب مهين ۝ يوم
يبعثهم الله جميعا فينبئهم بما عملوا أحصاه الله ونسوه
والله على كل شيء شهيد ۝ ألم تر أن الله يعلم ما في
السموت وما في الأرض ما يكون من نجوى ثلثة إلا هو

★रु० १/१ आ ६

५८ सूरः मुजादला १०५

सूरः मुजादला मदनी है, इस में बाईस आयतें और तीन रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

(ऐ पैग़म्बर !) जो औरत तुम से अपने शौहर के बारे में झगड़ती और ख़ुदा से शिकायत (रंज व मलाल) करती थी। ख़ुदा ने उसकी इल्तिजा सुन ली और ख़ुदा तुम दोनों की बात-चीत सुन रहा था। कुछ शक नहीं कि ख़ुदा सुनता-देखता है। (१) जो लोग तुममें से अपनी औरतों को मां कह देते हैं, वह उन की माएं नहीं (हो जातीं)। उन की माएं तो वही हैं, जिन के पेट से वह पैदा हुए। बेशक वे ना-माक़ूल और झूठी बात कहते हैं और ख़ुदा बड़ा माफ़ करने वाला (और) बख़्शने वाला है। (२) और जो लोग अपनी बीवियों को मां कह बैठें, फिर अपने क़ौल से रुजूअ कर लें, तो (उन को) हम-बिस्तर होने के पहले एक ग़ुलाम आज़ाद करना (ज़रूर) है। (मोमिनो !) इस (हुक्म) से तुम को नसीहत की जाती है और जो कुछ करते हो, ख़ुदा उस से ख़बरदार है। (३) जिस को ग़ुलाम न मिले, वह हम-बिस्तरी से पहले लगातार दो महीने के रोज़े रखे, जिस को इस की भी क़ुदरत न हो, (उसे) साठ मुहताजों को खाना खिलाना (चाहिए)। यह (हुक्म) इस लिए (है) कि तुम ख़ुदा और रसूल के फ़रमांबरदार हो जाओ और ये ख़ुदा की हदें हैं और न मानने वालों के लिए दर्द देने वाला अज़ाब है।[1] (४) जो लोग ख़ुदा और उस के रसूल की मुख़ालफ़त करते हैं, वे (इसी तरह) ज़लील किए जाएंगे, जिस तरह उन से पहले ज़लील किए गये थे और हम ने साफ़ और खुली आयतें नाज़िल कर दी हैं। जो नहीं मानते उन को ज़िल्लत का अज़ाब होगा। (५) जिस दिन ख़ुदा उन सब को जिला उठाएगा, तो जो काम वे करते रहे, उन को जताएगा। ख़ुदा को वे सब (काम) याद हैं और यह उन को भूल गये हैं और ख़ुदा हर चीज़ को जानता है, (६) ★

---

१. ये आयतें ख़ौला बिन्त सालबा के हक़ में नाज़िल हुई हैं। उस का शौहर ओस बिन सामित ग़ुस्से की हालत में उस से ज़िहार कर बैठा और यों भी अरब में ज़िहार का रिवाज था। ज़िहार इस को कहते है कि मियां अपनी बीवी से इस तरह के लफ़्ज़ कह दे, तू मेरी मां की जगह है या तेरी पीठ मेरी पीठ की जगह है। इस तरह कह देना जाहिलियत में तलाक़ समझा जाता था, तो ख़ौला इस बारे में हुक्म मालूम करने के लिए हज़रत सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुईं। आप ने फ़रमाया कि तू अपने शौहर पर हराम हो गयी। उस ने कहा कि उस ने तलाक़ तो नहीं दी। ग़रज़ आप तो यह फ़रमाते कि तू उस पर हराम हो चुकी और वह कहती कि उस ने तलाक़ का नाम नहीं लिया। इसी बात-चीत को ख़ुदा ने 'झगड़ा' कहा है। फिर वह ख़ुदा से कहती कि रब्बुल आलमीन मेरी बेबसी का हाल तुझ को मालूम है। मेरे नन्हें-नन्हें बच्चे हैं। अगर मैं उन को अपने शौहर के हवाले कर दूं तो अच्छी तरह परवरिश न होने की वजह से ख़राब हो जाएंगे और अगर अपने पास रखूं तो भूखे मरेंगे और आसमान की तरफ़ सर उठा कर कहती कि ऐ अल्लाह ! मेरी शिकायत तुझी से है। ख़ुदा ने उस की इज्ज़ व ज़ारी को क़ुबूल फ़रमाया और ज़िहार को तलाक़ नहीं, बल्कि एक ना-माक़ूल बात क़रार दे कर उस का कफ़्फ़ारा मुक़र्रर फ़रमाया।

★रु. १/१ आ ६

अ-लम् त-र अन्नल्ला-ह यअ्-लमु मा फ़िस्समावाति व मा फ़िलअर्ज़ि ط मा यकूनु मिन् नज्वा सलासतिन् इल्ला हु-व राबिअुहुम् व ला ख़म्सतिन् इल्ला हु-व सादिसुहुम् व ला अद्ना मिन् ज़ालि-क व ला अक्स-र इल्ला हु-व म-अ़हुम् ऐ-न मा कानू ج सुम्-म युनब्बिउहुम् बिमा अ़मिलू यौमल - क़ियामति ط इन्नल्ला-ह बिकुल्लि शैइन् अ़लीम (७) अ-लम् त-र इलल्लज़ी-न नुहू अ़निन्नज्वा सुम्-म यअूदू-न लिमा नुहू अ़न्हु व य-त-नाजौ-न बिल्इस्मि वल्अुद्वानि व मअ्-सियतिर्रसूलि ز व इज़ा जाऊ-क हय्यौ-क बिमा लम् युहय्यि-क बिहिल्लाहु ز व यक़ूलू-न फ़ी अन्फ़ुसिहिम् लौला युअ़ज़्ज़िबुनल्लाहु बिमा नक़ूलु ط हस्बुहुम् जहन्नमु ج यस्लौनहा ج फ़बिअ्सल मसीर (८) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इज़ा तनाजैतुम् फ़ला त-त-नाजौ बिल्इस्मि वल्अुद्वानि व मअ्-सि-यतिर्-रसूलि व तनाजौ बिल्बिर्रि

رَابِعُهُمْ وَلَا خَمْسَةٍ إِلَّا هُوَ سَادِسُهُمْ وَلَا أَدْنَىٰ مِن ذَٰلِكَ وَلَا
أَكْثَرَ إِلَّا هُوَ مَعَهُمْ أَيْنَ مَا كَانُوا ثُمَّ يُنَبِّئُهُم بِمَا عَمِلُوا
يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ
نُهُوا عَنِ النَّجْوَىٰ ثُمَّ يَعُودُونَ لِمَا نُهُوا عَنْهُ وَيَتَنَاجَوْنَ بِالْإِثْمِ
وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ الرَّسُولِ وَإِذَا جَاءُوكَ حَيَّوْكَ بِمَا لَمْ
يُحَيِّكَ بِهِ اللَّهُ وَيَقُولُونَ فِي أَنفُسِهِمْ لَوْلَا يُعَذِّبُنَا اللَّهُ بِمَا
نَقُولُ حَسْبُهُمْ جَهَنَّمُ يَصْلَوْنَهَا فَبِئْسَ الْمَصِيرُ ۝ يَا أَيُّهَا
الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا تَنَاجَيْتُمْ فَلَا تَتَنَاجَوْا بِالْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَ
مَعْصِيَتِ الرَّسُولِ وَتَنَاجَوْا بِالْبِرِّ وَالتَّقْوَىٰ وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي
إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ۝ إِنَّمَا النَّجْوَىٰ مِنَ الشَّيْطَانِ لِيَحْزُنَ الَّذِينَ
آمَنُوا وَلَيْسَ بِضَارِّهِمْ شَيْئًا إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ
الْمُؤْمِنُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا قِيلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوا فِي
الْمَجَالِسِ فَافْسَحُوا يَفْسَحِ اللَّهُ لَكُمْ وَإِذَا قِيلَ انشُزُوا فَانشُزُوا
يَرْفَعِ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا مِنكُمْ وَالَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ دَرَجَاتٍ
وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا نَاجَيْتُمُ
الرَّسُولَ فَقَدِّمُوا بَيْنَ يَدَيْ نَجْوَاكُمْ صَدَقَةً ذَٰلِكَ خَيْرٌ
لَّكُمْ وَأَطْهَرُ فَإِن لَّمْ تَجِدُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

वत्तक़्वा ط वत्तक़ुल्लाहल्लज़ी इलैहि तुह्शरून (९) इन्नमन्नज्वा मिनश्शैतानि लियह्-ज़ुनल्लज़ी-न आमनू व लै-स बिज़ार्रिहिम् शैअन् इल्ला बिइज़्निल्लाहि ط व अ़-लल्लाहि फ़ल्-य-त-वक्कलिल - मुअ्मिनून (१०) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इज़ा क़ी-ल लकुम् तफ़स्सहू फ़िलमजालिसि फ़फ़्सहू यफ़्सहिल्लाहु लकुम् ج व इज़ा क़ीलन्शुज़ू फ़न्शुज़ू यर्फ़अिल्लाहुल - लज़ी-न आमनू मिन्कुम् ز वल्लज़ी - न ऊतुल्अिल-म द-र - जातिन् ط वल्लाहु बिमा तअ्-मलू-न ख़बीर (११) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इज़ा नाजैतुमुर्रसू-ल फ़-क़द्दिमू बै - न यदै नज्वाकुम् स-द - क़ - तन् ط ज़ालि-क ख़ैरुल्लकुम् व अत्हरु ط फ़इल्लम् तजिदू फ़इन्नल्ला - ह ग़फ़ूरुर - रहीम (१२)

क्या तुम को मालूम नहीं कि जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, ख़ुदा को सब मालूम है। (किसी जगह) तीन (शख़्सों) का (मज्मा और) कानों में सलाह व मश्विरा नहीं होता, मगर वह उन में चौथा होता है और न कहीं पांच का, मगर वह उन में छठा होता है और न उस से कम या ज़्यादा, मगर वह उन के साथ होता है, चाहे वे कहीं हों। फिर जो-जो काम ये करते रहे हैं, क़ियामत के दिन वह (एक-एक) उन को बताएगा। बेशक ख़ुदा हर चीज़ को जानता है। (७) क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जिन को कानाफूसियां करने से मना किया गया था। फिर जिस (काम) से मना किया गया था, वही फिर करने लगे और यह तो गुनाह और ज़ुल्म और (ख़ुदा के) रसूल की ना-फ़रमानी की कानाफूसियां करते हैं और जब तुम्हारे पास आते हैं तो जिस (कलिमे) से ख़ुदा ने तुम को दुआ नहीं दी, उस से तुम्हें दुआ देते हैं और अपने दिल में कहते हैं कि (अगर यह वाक़ई पैग़म्बर हैं तो) जो कुछ कहते हैं, ख़ुदा हमें उस की सज़ा क्यों नहीं देता (ऐ पैग़म्बर!) उन को दोज़ख़ (ही की सज़ा) काफ़ी है, ये उसी में दाख़िल होंगे और वह बुरी जगह है। (८) मोमिनो! जब तुम आपस में कानाफूसियां करने लगो तो गुनाह और ज़्यादती और पैग़म्बर की ना-फ़रमानी की बातें न करना बल्कि नेकी और परहेज़गारी की बातें करना और ख़ुदा से जिस के सामने जमा किए जाओगे, डरते रहना। (९) (काफ़िरों की) कानाफूसियां तो शैतान (की हरकतों) से हैं, (जो) इस लिए (की जाती हैं) कि मोमिन (उन से) ग़मनाक हों, मगर ख़ुदा के हुक्म के सिवा उन से उन्हें कुछ नुक़्सान नहीं पहुंच सकता, तो मोमिनों को चाहिए कि ख़ुदा ही पर भरोसा रखें।(१०) मोमिनो! जब तुम से कहा जाए कि मज्लिस में खुल कर बैठो तो खुल कर बैठा करो। ख़ुदा तुम को कुशादगी बख़्शेगा और जब कहा जाए कि उठ खड़े हो तो उठ खड़े हुआ करो। जो लोग तुम में से ईमान लाए हैं और जिन को इल्म अता किया गया है, ख़ुदा उन के दर्जे बुलंद करेगा और ख़ुदा तुम्हारे सब कामों को जानता है। (११) मोमिनो! जब तुम पैग़म्बर के कान में कोई बात कहो तो बात कहने से पहले (मिस्कीनों को) कुछ ख़ैरात दे दिया करो। यह तुम्हारे लिए बहुत बेहतर और पाकीज़गी की बात है और अगर ख़ैरात तुम को मयस्सर न आए, तो ख़ुदा बख़्शने

---

१. हदीसों में है कि यहूदी हज़रत के पास आते, तो बजाए 'अस्सलामु अलै-क' के 'अस्सामु अलै-क' कहते। 'साम' मौत को कहते हैं, तो वे ज़ाहिर में तो नेक दुआ देते और हक़ीक़त में मौत मुराद लेते और बद-दुआ देते। आप उस के जवाब में सिर्फ़ 'व अलैकुम' फ़रमाते जिस का मतलब यह होता कि मौत तुम ही पर वाक़ेअ हो। वे लोग अपने दिल में कहते कि अगर मुहम्मद सच्चे पैग़म्बर होते तो हमारे इस कलिमे के कहने से ज़रूर हम पर अज़ाब नाज़िल होता। कुछ ने यह मानी किए हैं कि अगर यह नबी होते तो उन की बद-दुआ हमारे हक़ में ज़रूर क़ुबूल होती और हम पर मौत वाक़ेअ हो कर रहती। इन बातों के जवाब में ख़ुदा ने फ़रमाया कि इन लोगों को दोज़ख़ ही का अज़ाब काफ़ी है।

अ अश्फ़क़्तुम् अन् तुक़द्दिमू बै-न यदै नज्वाकुम् स-द-क़ातिन् ⌐ फ़इज़् लम् तफ़्अलू व ताबल्लाहु अलैकुम् फ़-अक़ीमुस्सला-त व आतुज़्ज़का-त व अतीउल्ला-ह व रसूलहू ⌐ वल्लाहु ख़बीरुम्-बिमा तअ्-मलून ★ (१३) अ-लम् त-र इलल्लज़ी-न त-वल्लौ क़ौमन् ग़ज़िबल्लाहु अलैहिम् ⌐ मा हुम् मिन्कुम् व ला मिन्हुम् ⌐ व यह्लिफ़ू-न अलल्कज़िबि व हुम् यअ्-लमून (१४) अ-अद्दल्लाहु लहुम् अज़ाबन् शदीदन् ⌐ इन्नहुम् सा-अ मा कानू यअ्-मलून (१५) इत्त-ख़ज़ू ऐमानहुम् जुन्नतन् फ़-सद्दू अन् सबीलिल्लाहि फ़-लहुम् अज़ाबुम्-मुहीन (१६) लन् तुग्नि-य अन्हुम् अम्वालुहुम् व ला औलादुहुम् मिनल्लाहि शैअन् ⌐ उलाइ-क अस्हाबुन्नारि ⌐ हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (१७) यौ-म यब्-असुहुमुल्लाहु जमीअन् फ़-यह्लिफ़ू-न लहू कमा यह्लिफ़ू-न लकुम् व यह्सबू-न अन्नहुम् अला शैइन् ⌐ अला इन्नहुम् हुमुल-काज़िबून (१८) इस्तह्-व-ज़ अलैहिमुश्-शैतानु फ़-अन्साहुम् ज़िक्रल्लाहि ⌐ उलाइ-क हिज़्बुश्शैतानि ⌐ अला इन्-न हिज़्बश्शैतानि हुमुल-ख़ासिरून (१९) इन्नल्लज़ी-न युहाद्दूनल्ला-ह व रसूलहू उलाइ-क फ़िल्अज़ल्लीन (२०) क-त-बल्लाहु ल-अग्लि-बन्-न अ-न व रुसुली ⌐ इन्नल्ला-ह क़विय्युन् अज़ीज़ (२१)

ءأشفقتم أن تقدموا بين يدي نجوىكم صدقت فإذ
لم تفعلوا وتاب الله عليكم فأقيموا الصلوة وآتوا الزكوة
وأطيعوا الله ورسوله والله خبير بما تعملون ﴿١٣﴾ ألم تر
إلى الذين تولوا قوما غضب الله عليهم ما هم منكم ولا
منهم ويحلفون على الكذب وهم يعلمون ﴿١٤﴾ أعد الله لهم
عذابا شديدا إنهم ساء ما كانوا يعملون ﴿١٥﴾ اتخذوا
أيمانهم جنة فصدوا عن سبيل الله فلهم عذاب مهين ﴿١٦﴾
لن تغني عنهم أموالهم ولا أولادهم من الله شيئا أولئك
أصحب النار هم فيها خلدون ﴿١٧﴾ يوم يبعثهم الله جميعا
فيحلفون له كما يحلفون لكم ويحسبون أنهم على شيء
ألا إنهم هم الكذبون ﴿١٨﴾ استحوذ عليهم الشيطن فأنسىهم
ذكر الله أولئك حزب الشيطن ألا إن حزب الشيطن هم
الخسرون ﴿١٩﴾ إن الذين يحادون الله ورسوله أولئك في
الأذلين ﴿٢٠﴾ كتب الله لأغلبن أنا ورسلي إن الله قوي
عزيز ﴿٢١﴾ لا تجد قوما يؤمنون بالله واليوم الآخر يوادون
من حاد الله ورسوله ولو كانوا آباءهم أو أبناءهم أو
إخوانهم أو عشيرتهم أولئك كتب في قلوبهم الإيمان

★रु. २/२ आ ७

वाला मेहरबान है। (१२) क्या तुम इस से कि पैग़म्बर के कान में कोई बात कहने से पहले ख़ैरात दिया करो, डर गये ? फिर जब तुम ने (ऐसा) न किया और खुदा ने तुम्हें माफ़ कर दिया तो नमाज पढ़ते और ज़कात देते रहो और खुदा और उस के रसूल की फ़रमांबरदारी करते रहो और जो कुछ तुम करते हो, खुदा उस से ख़बरदार है। (१३)★

भला तुम ने उन लोगों को नहीं देखा, जो ऐसों से दोस्ती करते हैं, जिन पर खुदा का ग़ज़ब हुआ, वह न तुम में हैं, न उन में और जान-बूझ कर झूठी बातों पर क़स्में खाते हैं। (१४) खुदा ने उन के लिए सख़्त अज़ाब तैयार कर रखा है। ये जो कुछ करते हैं, यक़ीनन बुरा है। (१५) उन्हों ने अपनी क़स्मों को ढाल बना लिया और (लोगों को) खुदा के रास्ते से रोक दिया है, सो उन के लिए ज़िल्लत का अज़ाब है। (१६) खुदा के (अज़ाब के) सामने न तो उन का माल ही कुछ काम आएगा और न औलाद ही.(कुछ फ़ायदा देगी) ये लोग दोज़ख़ी हैं, इस में हमेशा (जलते) रहेंगे। (१७) जिस दिन खुदा उन सब को जिला उठाएगा, तो जिस तरह तुम्हारे सामने क़स्में खाते हैं (उसी तरह) खुदा के सामने क़स्में खाएंगे और ख़्याल करेंगे कि (ऐसा करने से) काम ले निकले हैं देखो ये झूठे (और ग़लती पर) हैं। (१८) शैतान ने उन को क़ाबू में कर लिया है और खुदा की याद उन को भुला दी है। यह (जमाअत) शैतान का लश्कर है और सुन रखो कि शैतान का लश्कर नुक़्सान उठाने वाला है। (१९) जो लोग खुदा और उस के रसूल की मुख़ालफ़त करते हैं, वे बहुत ज़लील होंगे। (२०) खुदा का हुक्म नातिक़ है कि मैं और मेरे पैग़म्बर ज़रूर ग़ालिब रहेंगे, बेशक खुदा ज़ोरावर (और) ज़बरदस्त है। (२१) जो लोग खुदा पर और क़ियामत के दिन पर ईमान

★रु. २/२ आ ७

ला तजिदु क़ौमंय्युअ्मिनू-न बिल्लाहि वल-यौमिल-आख़िरि युवाद्दू-न मन् ह़ाद्दल्ला-ह व रसूलहू व लौ कानू आबा-अहुम् औ अब्ना-अहुम् औ इख़्वानहुम् औ अ़शी-र-तहुम् ♭ उलाइ-क क-त-ब फ़ी क़ुलूबिहिमुल-ईमा-न व अय्य-दहुम् बिरूह़िम् - मिन्हु ♭ व युद्ख़िलुहुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह़्तिहल - अन्हारु ख़ालिदी - न फ़ीहा ♭ रज़ियल्लाहु अ़न्हुम् व रज़ू अ़न्हु ♭ उलाइ - क हिज़्बुल्लाहि ♭ अला इन - न हिज़्बल्लाहि हुमुल - मुफ़्लिहून ★ (२२)

५९ सूरतुल्-ह़श्रि १०१

(मदनी) इस सूरः में अरबी के २०१६ अक्षर, ४५५ शब्द, २४ आयतें और ३ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम ●

सब्ब-ह़ लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि ج व हुवल-अ़ज़ीज़ुल-ह़कीम (१) हुवल्लज़ी अख़्-र-जल्लज़ी-न क-फ़रू मिन् अह्लिल-किताबि मिन् दियारिहिम् लि-अव्वलिल-ह़श्रि ░ मा ज़-नन्तुम् अंय्यख़्रुजू व ज़न्नू अन्नहुम् मानि-अ़तुहुम् ह़ुसूनुहुम् मिनल्लाहि फ़ अताहुमुल्लाहु मिन् ह़ैसु लम् यह़्तसिबू ج व क़-ज-फ़ फ़ी क़ुलूबिहिमुर्रुअ़्-ब युख़्रिबू-न बुयूतहुम् बिऐदीहिम् व ऐदिल-मुअ्मिनी-न ج फ़अ़्-तबिरू या उलिल-अब्सार (२) व लौला अन् क-त-बल्लाहु अ़लैहिमुल-जला-अ ल-अ़ज़्ज़-बहुम् फ़िद्दुन्या ♭ व लहुम् फ़िल-आख़िरति अ़ज़ाबुन्नार (३) ज़ालि-क बिअन्नहुम् शा-क़्क़ुल्ला-ह व रसूलहू ج व मंय्युशा-क़्क़िल्ला-ह फ़-इन्नल्ला-ह शदीदुल-अ़िक़ाब (४) मा क़-तअ्-तुम् मिल्लीनतिन् औ त-रक्तुमूहा क़ा-इ-म-तन् अ़ला उसूलिहा फ़बिइज़्निल्लाहि व लियुख़्ज़ि-यल-फ़ासिक़ीन (५) व मा अफ़ा - अल्लाहु अ़ला रसूलिही मिन्हुम् फ़मा औजफ़्तुम् अ़लैहि मिन् ख़ैलिंव् - व ला रिकाबिंव् - व लाकिन्नल्ला - ह युसल्लितु रुसुलहू अ़ला मंय्यशाउ ♭ वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (६)

وَأَيَّدَهُمْ بِرُوحٍ مِنْهُ ۖ وَيُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا
الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ ۚ أُولَٰئِكَ
حِزْبُ اللَّهِ ۚ أَلَا إِنَّ حِزْبَ اللَّهِ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝
سُورَةُ الْحَشْرِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ أَرْبَعٌ وَعِشْرُونَ آيَةً وَثَلَاثُ رُكُوعَاتٍ
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
سَبَّحَ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۖ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ①
هُوَ الَّذِي أَخْرَجَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ مِنْ
دِيَارِهِمْ لِأَوَّلِ الْحَشْرِ ۚ مَا ظَنَنْتُمْ أَنْ يَخْرُجُوا ۖ وَظَنُّوا أَنَّهُمْ
مَانِعَتُهُمْ حُصُونُهُمْ مِنَ اللَّهِ فَأَتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ حَيْثُ لَمْ يَحْتَسِبُوا
وَقَذَفَ فِي قُلُوبِهِمُ الرُّعْبَ ۚ يُخْرِبُونَ بُيُوتَهُمْ بِأَيْدِيهِمْ وَأَيْدِي
الْمُؤْمِنِينَ فَاعْتَبِرُوا يَا أُولِي الْأَبْصَارِ ② وَلَوْلَا أَنْ كَتَبَ اللَّهُ
عَلَيْهِمُ الْجَلَاءَ لَعَذَّبَهُمْ فِي الدُّنْيَا ۖ وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابُ
النَّارِ ③ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ شَاقُّوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۖ وَمَنْ يُشَاقِّ اللَّهَ
فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ④ مَا قَطَعْتُمْ مِنْ لِينَةٍ أَوْ تَرَكْتُمُوهَا
قَائِمَةً عَلَىٰ أُصُولِهَا فَبِإِذْنِ اللَّهِ وَلِيُخْزِيَ الْفَاسِقِينَ ⑤ وَمَا
أَفَاءَ اللَّهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ مِنْهُمْ فَمَا أَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَ
لَا رِكَابٍ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ يُسَلِّطُ رُسُلَهُ عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ عَلَىٰ

★रु. ३/३ आ ६ ░ व. न बी स.

रखते हैं तो उन को ख़ुदा और उस के रसूल के दुश्मनों से दोस्ती करते हुए न देखोगे, चाहे वे उन के बाप या बेटे या भाई या ख़ानदान ही के लोग हों। ये वह लोग हैं, जिन के दिलों में ख़ुदा ने ईमान (पत्थर पर लकीर की तरह) लिख दिया है और ग़ैबी फ़ैज़ से उन की मदद की है और वह उन को बहिश्तों में, जिन के तले नहरें बह रही हैं, दाख़िल करेगा, हमेशा उन में रहेंगे। ख़ुदा उन से ख़ुश और वे ख़ुदा से ख़ुश। यही गिरोह ख़ुदा का लश्कर है। (और) सुन रखो कि ख़ुदा ही का लश्कर मुराद हासिल करने वाला है। (२२) ★

५६ सूरः हश्र १०१

सूरः हश्र मदनी है, इस में चौबीस आयतें और तीन रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

जो चीज़ें आसमान में हैं और जो चीज़ें ज़मीन में हैं, (सब) ख़ुदा की तस्बीह करती हैं और वह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (१) वही तो है जिस ने कुफ़्फ़ार अह्ले किताब को पहले हश्र के वक़्त उन के घरों से निकाल दिया ▨ तुम्हारे ख़्याल में भी न था कि वे निकल जाएंगे और वे लोग यह समझे हुए थे कि उन के क़िले उन को ख़ुदा (के अज़ाब) से बचा लेंगे, मगर ख़ुदा ने उन को वहां से आ लिया, जहां से उन को गुमान भी न था और उन के दिलों में दहशत डाल दी कि अपने घरों को ख़ुद अपने हाथों और मोमिनों के हाथों से उजाड़ने लगे, तो ऐ (बसीरत की) आंखें रखने वालो! इबरत (सबक़) पकड़ो। (२) और अगर ख़ुदा ने उन के बारे में वतन से निकालना न लिख रखा होता, तो उन को दुनिया में भी अज़ाब दे देता और आख़िरत में तो उन के लिए आग का अज़ाब (तैयार) है। (३) यह इस लिए कि उन्हों ने ख़ुदा और उस के रसूल की मुख़ालफ़त की और जो शख़्स ख़ुदा की मुख़ालफ़त करे, तो ख़ुदा सख़्त अज़ाब देने वाला है। (४) (मोमिनो!) खजूर के जो पेड़ तुम ने काट डाले या उन को अपनी जड़ों पर खड़ा रहने दिया, सो ख़ुदा के हुक्म से था और मक़्सूद यह था कि वह ना-फ़रमानों को रुस्वा करे।[1] (५) और जो (माल) ख़ुदा ने अपने पैग़म्बर को उन लोगों से (लड़ाई-भिड़ाई के बग़ैर) दिलवाया है, उस में तुम्हारा कुछ हक़ नहीं, क्योंकि इसके लिए न तुम ने घोड़े दौड़ाए, न ऊंट, लेकिन ख़ुदा अपने पैग़म्बरों को जिन पर चाहता है, मुसल्लत

---

१. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब बनू नज़ीर अपने मकानों से निकाल दिए गए और उन की खजूरों के काट डालने का हुक्म हुआ तो मुसलमानों ने कुछ खजूरें तो काट दीं और कुछ रहने दीं, मगर उन को इस बारे में शुब्हा हुआ कि क्या उन को काटने पर सवाब होगा और न काटने पर गुनाह, तो उन्हों ने यह बात जनाब रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मालूम करने का इरादा किया, इस पर ख़ुदा ने फ़रमाया कि खजूरों के काटने, न काटने से मक़्सूद यह है कि मुसलमान अपने ग़लबा पाने से ख़ुश हों और ना-फ़रमान लोगों को यह देख कर कि उन के मालों में मुसलमान अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ इस्तेमाल कर रहे हैं, रंज और ज़िल्लत हासिल हो।

★रु. ३/३ आ ६ ▨ व. न बी स.

मा अफ़ा-अल्लाहु अला रसूलिही मिन् अह्लिल-क़ुरा फ़लिल्लाहि व लिर्रसूलि व लिज़िल्क़ुर्बा वल - यतामा वल-मसाकीनि वब्निस्सबीलि ॥ कैला यकू-न दूल-तम् - बैनल - अग्नियाइ मिन्कुम् ط व मा आताकुमुर्रसूलु फ़ख़ुज़ूहु ق व मा नहाकुम् अन्हु फ़न्तहू ۚ वत्तक़ुल्ला - ह ط इन्नल्ला-ह शदीदुल - अिक़ाब ▓ (७) लिल्फ़ु-क़-राइल - मुहाजिरीनल्लज़ी-न उख़्रिजू मिन् दियारिहिम् व अम्वालिहिम् यब्तग़ू-न फ़ज़्लम् - मिनल्लाहि व रिज़्-वानंव् - व यन्सुरूनल्ला - ह व रसूलहू ط उलाइ-क हुमुस्सादिक़ून ۚ (८) वल्लज़ी-न त-बव्वउद्दा-र वल्ईमा-न मिन् क़ब्लिहिम् युहिब्बू-न मन् हाज-र इलैहिम् व ला यजिदू-न फ़ी सुदूरिहिम् हा-ज-तम्-मिम्मा ऊतू व युअ्सिरू - न अला अन्फ़ुसिहिम् व लौ का - न बिहिम् ख़सासतुन् ط व मय्यू-क़ शुह् - ह नफ़्सिही फ़-उलाइ - क हुमुल - मुफ़्लिहून ۚ (९) वल्लज़ी - न जाऊ मिम्बअ्-दिहिम् यक़ूलू-न रब्बनग़्फ़िर् लना व लि-इख़्वानि-नल्लज़ी-न स-ब-क़ूना बिल - ईमानि व ला तज् - अल् फ़ी क़ुलूबिना ग़िल्लल-लिल्लज़ी -'न आमनू रब्बना इन्न - क रऊफ़ुर्रहीम ★● (१०) अ-लम् त - र इलल्लज़ी - न नाफ़क़ू यक़ूलू - न लिइख़्वानि - हिमुल्लज़ी - न क - फ़रू मिन् अह्लिल - किताबि ल - इन् उख़्रिज्तुम् ल - नख़्रुजन्-न म - अकुम् व ला नुतीअ़ु फ़ीकुम् अ - ह़ - दन् अ - ब - दंव्-व इन् क़ूतिल्तुम् ल - नन्सुरन्नकुम् ط वल्लाहु यश्हदु इन्नहुम् लकाज़िबून (११)

كل شيء قدير ۝ ما افاء الله على رسوله من اهل القرى
فلله وللرسول ولذي القربى واليتمى والمسكين وابن
السبيل كي لا يكون دولة بين الاغنياء منكم وما اتكم
الرسول فخذوه وما نهكم عنه فانتهوا واتقوا الله
ان الله شديد العقاب ۝ للفقراء المهجرين الذين
اخرجوا من ديارهم واموالهم يبتغون فضلا من الله و
رضوانا وينصرون الله ورسوله اولئك هم الصدقون ۝
والذين تبوو الدار والايمان من قبلهم يحبون من هاجر
اليهم ولا يجدون في صدورهم حاجة مما اوتوا ويؤثرون
على انفسهم ولو كان بهم خصاصة ومن يوق شح نفسه
فاولئك هم المفلحون ۝ والذين جاءو من بعدهم يقولون
ربنا اغفر لنا ولاخواننا الذين سبقونا بالايمان ولا تجعل
في قلوبنا غلا للذين امنوا ربنا انك رءوف رحيم ۝ الم تر
الى الذين نافقوا يقولون لاخوانهم الذين كفروا من
اهل الكتب لئن اخرجتم لنخرجن معكم ولا نطيع فيكم
احدا ابدا وان قوتلتم لننصرنكم والله يشهد انهم
لكذبون ۝ لئن اخرجوا لا يخرجون معهم ولئن قوتلوا

▓ व. लाज़िम ★रु. १/४ आ १० ● रुबुअ १/४

कर देता है और ख़ुदा हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। (६) जो माल ख़ुदा ने अपने पैग़म्बर को देहात वालों से दिलवाया है, वह ख़ुदा के और पैग़म्बर के और (पैग़म्बर के) क़रीबी रिश्ते वालों के और यतीमों के और ज़रूरतमंदों के और मुसाफ़िरों के लिए है, ताकि जो लोग तुम में दौलतमंद हैं, उन्हीं के हाथों में न फिरता रहे, सो जो चीज़ तुम को पैग़म्बर दें, वह ले लो और जिस से मना करें, (उस से) रुके रहो और ख़ुदा से डरते रहो। बेशक ख़ुदा सख़्त अज़ाब देने वाला है।(७) और उन ग़रीब वतन छोड़ने वालों के लिए भी जो अपने घरों और मालों से ख़ारिज (और अलग) कर दिए गए हैं (और) ख़ुदा के फ़ज़्ल और उस की ख़ुश्नूदी की तलब रखने वाले और ख़ुदा और उस के पैग़म्बर के मददगार हैं। यही लोग सच्चे (ईमानदार) हैं। (८) और (उन लोगों के लिए भी) जो मुहाजिरों से पहले (हिजरत के) घर (यानी मदीने) में ठहरे रहे और ईमान में (मुस्तक़िल) रहे (और) जो लोग हिजरत कर के उन के पास आते हैं, उन से मुहब्बत करते हैं और जो कुछ उन को मिला, उस से अपने दिल में कुछ ख़्वाहिश (और बेचैनी) नहीं पाते और उन को अपनी जानों पर तर्जीह देते हैं, चाहे उन को ख़ुद ज़रूरत ही हो। और जो शख़्स नफ़्स के लोभ से बचा दिया गया तो ऐसे ही लोग मुराद पाने वाले हैं। (९) और (उन के लिए भी) जो उन (मुहाजिरों) के बाद आए (और) दुआ करते हैं कि ऐ परवरदिगार! हमारे और हमारे भाइयों के जो हम से पहले ईमान लाए हैं गुनाह माफ़ करना और मोमिनों की तरफ़ से हमारे दिल में कीना (व हसद) न पैदा होने दे, ऐ हमारे परवरदिगार! तू बड़ा शफ़क़त करने वाला मेहरबान है। (१०)★●

क्या तुम ने उन मुनाफ़िक़ों को नहीं देखा, जो अपने काफ़िर भाइयों से जो अह्ले किताब हैं, कहा करते हैं कि अगर तुम देश निकाला पा गये, तो हम भी तुम्हारे साथ निकल चलेंगे और तुम्हारे बारे में कभी किसी का कहा न मानेंगे और अगर तुम से लड़ाई हुई, तो तुम्हारी मदद करेंगे, मगर

१. यानी फ़ै पर क़ब्ज़ा रसूल का और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पीछे सरदार का कि सरदार पर ये ख़र्च पड़ते हैं, अल्लाह सभी का मालिक है, मगर काबे का ख़र्च और मस्जिदों का भी इस में आ गया और नाते वाले हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने उन के नाते वाले और पीछे भी वही लोग उन पर चाहिए।

व. लाज़िम ★रु. १/४ आ १० ●रुब्अ १/४

ला इन् उख़्रिजू ला यख़्-रुजू-न म-अहुम् ۚ व लइन् क़ूतलू ला यन्सुरू-नहुम् ۚ व लइन् न-सरूहुम् लयु-वल्लुन्नल-अद्बा-र ۖ सुम्-म ला युन्सरून (१२) ल अन्तुम् अशद्दु रह्-ब-तन् फ़ी सुदूरिहिम् मिनल्लाहि ۭ ज़ालि-क बि-अन्नहुम् क़ौमुल्ला यफ़क़हून (१३) ला युक़ातिलूनकुम् जमीअ़न् इल्ला फ़ी क़ुरम्-मुहस्स-नतिन् औ मिंव्वराइ जुदुरिन् ۭ बअ्-सुहुम् बैनहुम् शदीदुन् ۭ तह्-सबुहुम् जमीअ़ंव्-व क़ुलूबुहुम् शत्ता ۭ ज़ालि-क बि-अन्नहुम् क़ौमुल्ला यअ्-क़िलून ۚ (१४) क-म-सलिल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् क़रीबन् ज़ाक़ू वबा-ल अम्रिहिम् ۚ व लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम ۚ (१५) क-म-सलिश्-शैतानि इज़् क़ा-ल लिल्-इन्सानिक्फ़ुर् ۚ फ़-लम्मा क-फ़-र क़ा-ल इन्नी बरीउम्-मिन-क इन्नी अख़ाफ़ुल्ला-ह रब्बल्-आ़लमीन (१६) फ़-का-न आ़क़ि-ब-तहुमा अन्नहुमा फ़िन्नारि ख़ालिदैनि फ़ीहा ۭ ज़ालि-क जज़ाउज़्ज़ालिमीन ✱ (१७) या अय्युहल्लज़ी-न आमनुत्तक़ुल्ला-ह वल्तन्ज़ुर् नफ़्सुम्मा क़द्-द-मत् लिग़दिन् ۚ वत्तक़ुल्-ला-ह ۭ इन्नल्ला-ह ख़बीरुम्-बिमा तअ्-मलून (१८) व ला तकूनू कल्लज़ी-न नसुल्ला-ह फ़-अन्साहुम् अन्फ़ु-सहुम् ۭ उलाइ-क हुमुल्-फ़ासिक़ून (१९) ला यस्तवी अस्हाबुन्नारि व अस्हाबुल्-जन्नति ۭ अस्-हाबुल्-जन्नति हुमुल्फ़ा-इज़ून (२०) लौ अन्ज़ल्ना हाज़ल्-क़ुरआ-न अ़ला ज-ब-लिल्-ल-र-ऐतहू ख़ाशिअ़म्-मु-त-सद्दिअ़म्-मिन् ख़श्-यतिल्लाहि ۭ व तिल्कल्-अम्सालु नज़्रिबुहा लिन्नासि ल-अ़ल्लहुम् य-त-फ़क्करून (२१) हु-वल्लाहुल्लज़ी ला इला-ह इल्ला हु-व ۚ आ़लिमुल्ग़ैबि वश्शहादति ۚ हुवर्रह्मानुर्रहीम (२२)

لَا يَنْصُرُوْنَهُمْ ۚ وَلَئِنْ نَّصَرُوْهُمْ لَيُوَلُّنَّ الْاَدْبَارَ ۫ ثُمَّ لَا يُنْصَرُوْنَ ۝
لَاَنْتُمْ اَشَدُّ رَهْبَةً فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنَ اللّٰهِ ۭ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ
لَّا يَفْقَهُوْنَ ۝ لَا يُقَاتِلُوْنَكُمْ جَمِيْعًا اِلَّا فِيْ قُرًى مُّحَصَّنَةٍ اَوْ مِنْ
وَّرَاۗءِ جُدُرٍ ۭ بَاْسُهُمْ بَيْنَهُمْ شَدِيْدٌ ۭ تَحْسَبُهُمْ جَمِيْعًا وَّقُلُوْبُهُمْ
شَتّٰى ۭ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُوْنَ ۝ كَمَثَلِ الَّذِيْنَ مِنْ
قَبْلِهِمْ قَرِيْبًا ذَاقُوْا وَبَالَ اَمْرِهِمْ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝
كَمَثَلِ الشَّيْطٰنِ اِذْ قَالَ لِلْاِنْسَانِ اكْفُرْ ۚ فَلَمَّا كَفَرَ قَالَ اِنِّيْ
بَرِيْۗءٌ مِّنْكَ اِنِّىْٓ اَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ فَكَانَ عَاقِبَتَهُمَآ
اَنَّهُمَا فِي النَّارِ خَالِدَيْنِ فِيْهَا ۭ وَذٰلِكَ جَزٰۗؤُا الظّٰلِمِيْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ ۚ وَاتَّقُوا
اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ نَسُوا
اللّٰهَ فَاَنْسٰىهُمْ اَنْفُسَهُمْ ۭ اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۝ لَا يَسْتَوِيْٓ
اَصْحٰبُ النَّارِ وَاَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۭ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ هُمُ الْفَاۗىِٕزُوْنَ ۝
لَوْ اَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْاٰنَ عَلٰي جَبَلٍ لَّرَاَيْتَهٗ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا
مِّنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ۭ وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ
يَتَفَكَّرُوْنَ ۝ هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَ
الشَّهَادَةِ ۚ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ۝ هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا

★रु. २/५ आ ७

ख़ुदा ज़ाहिर किए देता है कि ये झूठे हैं। (११) अगर वे निकाले गये, तो ये उन के साथ नहीं निकलेंगे और अगर उन से जंग हुई तो उन की मदद नहीं करेंगे और अगर मदद करेंगे तो पीठ फेर कर भाग जाएंगे, फिर उन को (कहीं से भी) मदद न मिलेगी। (१२) (मुसलमानो !) तुम्हारी हैबत उन लोगों के दिलों में ख़ुदा से भी बढ़ कर है, यह इस लिए कि ये समझ नहीं रखते। (१३) ये सब जमा हो कर भी तुम से (आमने-सामने) नहीं लड़ सकेंगे, मगर बस्तियों के क़िलों में[1] (पनाह ले कर) या दीवारों की ओट में (छिप कर) उन का आपस में बड़ा रौब है। तुम शायद ख़्याल करते हो कि ये इकट्ठ (और एक जान) हैं, मगर उन के दिल फटे हुए हैं, यह इस लिए कि ये बे-अक़्ल लोग हैं। (१४) उन का हाल उन लोगों का-सा है, जो उन से कुछ ही पहले अपने कामों की सज़ा का मज़ा चख चुके हैं और (अभी) उन के लिए दुख देने वाला अज़ाब (तैयार) है। (१५) (मुनाफ़िक़ों की) मिसाल शैतान की सी है कि इंसान से कहता रहा कि काफ़िर हो जा। जब वह काफ़िर हो गया, तो कहने लगा कि मुझे तुझ से कुछ सरोकार नहीं। मुझ को तो ख़ुदा-ए-रब्बुल आलमीन से डर लगता है। (१६) तो दोनों का अंजाम यह हुआ कि दोनों दोज़ख़ में (दाख़िल हुए), हमेशा उस में रहेंगे और बे-इन्साफ़ों की यही सज़ा है। (१७) ★

ऐ ईमान वालो ! ख़ुदा से डरते रहो और हर शख़्स को देखना चाहिए कि उस ने कल (यानी क़ियामत के कल) के लिए क्या (सामान) भेजा है और (हम फिर कहते हैं कि) ख़ुदा से डरते रहो। बेशक ख़ुदा तुम्हारे सब आमाल से ख़बरदार है। (१८) और उन लोगों जैसे न होना, जिन्होंने ख़ुदा को भुला दिया, तो ख़ुदा ने उन्हें ऐसा कर दिया कि ख़ुद अपने आप को भूल गये। ये बद-किरदार लोग हैं। (१९) दोज़ख़ वाले और जन्नत वाले बराबर नहीं। जन्नत वाले तो कामियाबी हासिल करने वाले हैं। (२०) अगर हम यह क़ुरआन किसी पहाड़ पर नाज़िल करते, तो तुम उस को देखते कि ख़ुदा के ख़ौफ़ से दबा और फटा जाता है और ये बातें हम लोगों के लिए बयान करते हैं ताकि वे ग़ौर करें। (२१) वही ख़ुदा है, जिस के सिवा कोई माबूद नहीं, छिपे और ज़ाहिर का जानने वाला, वह

---

१. लफ़्ज़ों का तर्जुमा तो यह है कि ऐसी बस्तियों में जिन में क़िले बने हुए हैं, मगर चूंकि मुराद यह है कि उन क़िलों में जो बस्तियों में हैं, इस लिए तर्जुमे में ऐसे लफ़्ज़ अख़्तियार किए गए हैं कि 'बस्तियों के क़िलों में।'

हुवल्लाहुल्लज़ी ला इला - ह इल्ला हु-व अल्मलिकुल् - क़ुद्दूसुस्सलामुल्-मुअ्मिनुल् - मुहैमिनुल् - अ़ज़ीज़ुल् - जब्बारुल् - मु - त - कब्बिरु सुब्हानल्लाहि अ़म्मा युश्रिकून (२३) हुवल्लाहुल् - ख़ालिक़ुल् - बारिउल् - मुसव्विरु लहुल् - अस्माउल् - हुस्ना युसब्बिहु लहू मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि व हुवल् - अ़ज़ीज़ुल् - हकीम ★ (२४)

६० सूरतुल्-मुम्तहिनति ६१

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के १५६३ अक्षर, ३७० शब्द, १३ आयतें और दो रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ●

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तत्तख़िज़ू अ़दुव्वी व अ़दुव्वकुम् औलिया-अ तुल्क़ू-न इलैहिम् बिल्म-वद्-दति व क़द् क-फ़रू बिमा जा-अकुम् मिनल्हक़्क़ि युख़्रिजूनर्रसू-ल व इय्याकुम् अन् तुअ्मिनू बिल्लाहि रब्बिकुम् इन् कुन्तुम् ख़-रज्तुम् जिहादन् फ़ी सबीली वब्तिग़ा-अ मर-ज़ाती तुसिर्रू-न इलैहिम् बिल्म-वद्दति व अ-न अअ्-लमु बिमा अख़्-फ़ैतुम् व मा अअ्-लन्तुम् व मंय्यफ़्-अल्-हु मिन्कुम् फ़-क़द् ज़ल-ल सवा-अस्सबील (१) इंय्यस्क़फ़ूकुम् यकूनू लकुम् अअ्-दा-अंव्-व यब्सुतू इलैकुम् ऐदि-यहुम् व अल्सि-न-तहुम् बिस्सूइ व वद्दू लौ तक्फ़ुरून (२) लन् तन्फ़-अ़-कुम् अर्हामुकुम् व ला औलादुकुम् यौमल्-क़ियामति यफ़्सिलु बैनकुम् वल्लाहु बिमा तअ्-मलू-न बसीर (३) क़द् कानत् लकुम् उस्-वतुन् ह-स-नतुन् फ़ी इब्राही-म वल्लज़ी-न म-अ़हू इज़् क़ालू लिक़ौमिहिम् इन्ना बु-रआउ मिन्कुम् व मिम्मा तअ्-बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि क-फ़र्ना बिकुम् व बदा बैनना व बैनकुमुल् अ़दावतु वल्बग़ज़ाउ अ-ब-दन् हत्ता तुअ्मिनू बिल्लाहि वह्दहू इल्ला क़ौ-ल इब्राही-म लिअबीहि ल-अस्तग़्फ़िरन्-न ल-क व मा अम्लिकु ल-क मिनल्लाहि मिन् शैइन् रब्बना अ़लै-क त-वक्कलना व इलै-क अनब्ना व इलैकल्-मसीर (४)

هُوَ الْمَلِكُ الْقُدُّوسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيزُ الْجَبَّارُ
الْمُتَكَبِّرُ ۚ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝ هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ
الْمُصَوِّرُ لَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنٰى ۚ يُسَبِّحُ لَهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ
الْأَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

سُورَةُ الْمُمْتَحِنَةِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ ثَلٰثَ عَشْرَةَ آيَةً وَفِيهَا رُكُوعَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

يٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا عَدُوِّي وَعَدُوَّكُمْ أَوْلِيَاءَ تُلْقُونَ
إِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ وَقَدْ كَفَرُوا بِمَا جَاءَكُمْ مِنَ الْحَقِّ ۚ يُخْرِجُونَ
الرَّسُولَ وَإِيَّاكُمْ ۙ أَنْ تُؤْمِنُوا بِاللّٰهِ رَبِّكُمْ ۙ إِنْ كُنْتُمْ خَرَجْتُمْ
جِهَادًا فِي سَبِيلِي وَابْتِغَاءَ مَرْضَاتِي ۚ تُسِرُّونَ إِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ ۖ
وَأَنَا أَعْلَمُ بِمَا أَخْفَيْتُمْ وَمَا أَعْلَنْتُمْ ۚ وَمَنْ يَفْعَلْهُ مِنْكُمْ
فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ ۝ إِنْ يَثْقَفُوكُمْ يَكُونُوا لَكُمْ أَعْدَاءً وَ
يَبْسُطُوا إِلَيْكُمْ أَيْدِيَهُمْ وَأَلْسِنَتَهُمْ بِالسُّوءِ وَوَدُّوا لَوْ تَكْفُرُونَ ۝
لَنْ تَنْفَعَكُمْ أَرْحَامُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ ۚ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ يَفْصِلُ
بَيْنَكُمْ ۚ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝ قَدْ كَانَتْ لَكُمْ أُسْوَةٌ
حَسَنَةٌ فِي إِبْرٰهِيمَ وَالَّذِينَ مَعَهُ ۚ إِذْ قَالُوا لِقَوْمِهِمْ إِنَّا بُرَآءُ
مِنْكُمْ وَمِمَّا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللّٰهِ ۖ كَفَرْنَا بِكُمْ وَبَدَا بَيْنَنَا

★रु. ३/६ आ ७ ∴ मु. अ़ि मु ता ख़. १६

बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है। (२२) वही ख़ुदा है, जिस के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं। बादशाह (हक़ीक़ी) पाक ज़ात (हर ऐब से) सलामती, अम्न देने वाला, निगहबान, ग़ालिब, ज़बरदस्त, बड़ाई वाला। ख़ुदा उन लोगों के शरीक मुक़र्रर करने से पाक है। (२३) वही ख़ुदा (तमाम मख़्लूक़ का) पैदा करने वाला, ईजाद करने वाला, सूरतें बनाने वाला, उस के सब अच्छे नाम हैं। जितनी चीज़ें आसमानों और ज़मीन में हैं, सब उस की तस्बीह करती हैं और वह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (२४) ★

६० सूरः मुम्तहिनः ६१

सूरः मुम्तहिना मक्की[1] है, इस में तेरह आयतें और दो रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

मोमिनो! अगर तुम मेरी राह में लड़ने और मेरी ख़ुश्नूदी तलब करने के लिए (मक्के से) निकले हो तो मेरे और अपने दुश्मनों को दोस्त न बनाओ तुम तो उन को दोस्ती के पैग़ाम भेजते हो और वे (दीने) हक़ से जो तुम्हारे पास आया है, मुन्किर हैं और इस वजह से कि तुम अपने परवरदिगार ख़ुदा-ए-तआला पर ईमान लाए हो, पैग़म्बर को और तुम को देश निकाला देते हैं, तुम उन की तरफ़ पोशीदा दोस्ती के पैग़ाम भेजते हो और जो कुछ तुम छिपे तौर पर और जो खुले तौर पर करते हो, वह मुझे मालूम है और जो कोई तुम में से ऐसा करेगा, सीधे रास्ते से भटक गया। (१) अगर ये काफ़िर तुम पर क़ुदरत पा लें, तो तुम्हारे दुश्मन हो जाएं और तक्लीफ़ पहुंचाने के लिए तुम पर हाथ (भी) चलाएं और ज़ुबानें (भी) और चाहते हैं कि तुम किसी तरह काफ़िर हो जाओ। (२) क़ियामत के दिन न तुम्हारे रिश्ते-नाते काम आएंगे और न औलाद। उस दिन वही तुम में फ़ैसला करेगा, और जो कुछ तुम करते हो ख़ुदा उस को देखता है। (३) तुम्हें इब्राहीम और उन के साथियों की नेक चाल चलनी (ज़रूर) है, जब उन्हों ने अपनी क़ौम के लोगों से कहा, कि हम तुम से और उन (बुतों) से, जिन को तुम ख़ुदा के सिवा पूजते हो, बे-ताल्लुक़ हैं (और) तुम्हारे (माबूदों के कभी) क़ायल नहीं (हो सकते) और जब तक तुम ख़ुदा-ए-वाहिद पर ईमान न लाओ, हम में, तुम में हमेशा खुल्लम-खुल्ला अदावत और दुश्मनी रहेगी। हां, इब्राहीम ने अपने बाप से यह (ज़रूर) कहा कि मैं आप के लिए मग़्फ़िरत मांगूंगा और मैं ख़ुदा के सामने आप के बारे में किसी चीज़ का कुछ अख़्तियार नहीं रखता। ऐ हमारे परवरदिगार! तुझी पर हमारा भरोसा है और तेरी ही तरफ़

1. यह सूरः मक्की है या मदनी, इस में इख़्तिलाफ़ है।

रब्बना ला तज्-अल्ना फ़ित्-न-तल्-लिल्लज़ी-न क-फ़रू वग़्फ़िर-लना रब्बना इन्न-क अन्तल् अज़ीज़ुल् - हकीम (५) ल - क़द् का - न लकुम् फ़ीहिम् उस्-व-तुन् ह-स-नतुल्-लिमन् का-न यर्जुल्ला-ह वल्-यौमल् आख़ि-र व मंय्य-त-वल्-ल फ़-इन्नल्ला-ह हुवल्-ग़निय्युल्-हमीद ★ (६) अ-सल्लाहु अंय्यज्-अ-ल बैनकुम् व बैनल्लज़ी-न आदैतुम् मिन्हुम् म-वद्-द-तन् वल्लाहु क़दीरुन् वल्लाहु ग़फ़ूरुर-रहीम (७) ला यन्हाकुमुल्लाहु अनिल्लज़ी-न लम् युक़ा-तिलूकुम् फ़िद्दीनि व लम् युख़्रिजूकुम् मिन् दियारिकुम् अन् तबर्रूहुम् व तुक़्सितू इलैहिम् इन्नल्ला - ह युहिब्बुल्-मुक़्सितीन (८) इन्नमा यन्हाकुमुल्लाहु अनिल्लज़ी-न क़ा-त-लूकुम् फ़िद्दीनि व अख़्-र - जूकुम् मिन् दियारिकुम् व ज़ाहरू अला इख़्-राजिकुम् अन् तवल्लौ - हुम् व मंय्य-त - वल्लहुम् फ़-उलाइ - क हुमुज़्ज़ालिमून (९) या अय्युहल्लज़ी - न आमनू इज़ा जा - अ - कुमुल्मुअ्मिनातु मुहाजिरातिन् फ़म्तहिनूहुन - न अल्लाहु अअ् - लमु बिईमानिहिन् - न फ़-इन् अलिम्तुमूहुन्-न मुअ्मिनातिन् फ़ला तर्जिअूहुन्-न इलल्कुफ़्फ़ारि ला हुन्-न हिल्लुल् - लहुम् व ला हुम् यहिल्लू-न लहुन् - न व आतूहुम् मा अन्फ़क़ू व ला जुना-ह अलैकुम् अन् तन्किहू - हुन-न इज़ा आतै-तुमूहुन-न उजूरहुन्-न व ला तुम्सिकू बिअ़िसमिल्-कवाफ़िरि वस्अलू मा अन्फ़क़्तुम् वल्-यस्-अलू मा अन्फ़क़ू ज़ालिकुम् हुक्मुल्लाहि यह्कुमु बैनकुम् वल्लाहु अलीमुन् हकीम (१०)

وَبَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةُ وَالْبَغْضَاءُ أَبَدًا حَتَّىٰ تُؤْمِنُوا بِاللَّهِ وَحْدَهُ
إِلَّا قَوْلَ إِبْرَاهِيمَ لِأَبِيهِ لَأَسْتَغْفِرَنَّ لَكَ وَمَا أَمْلِكُ لَكَ مِنَ
اللَّهِ مِن شَيْءٍ رَّبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا وَإِلَيْكَ أَنَبْنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ ۝
رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلَّذِينَ كَفَرُوا وَاغْفِرْ لَنَا رَبَّنَا إِنَّكَ
أَنتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيهِمْ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ
لِّمَن كَانَ يَرْجُو اللَّهَ وَالْيَوْمَ الْآخِرَ وَمَن يَتَوَلَّ فَإِنَّ اللَّهَ
هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ۝ عَسَى اللَّهُ أَن يَجْعَلَ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ الَّذِينَ
عَادَيْتُم مِّنْهُم مَّوَدَّةً وَاللَّهُ قَدِيرٌ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝
لَّا يَنْهَاكُمُ اللَّهُ عَنِ الَّذِينَ لَمْ يُقَاتِلُوكُمْ فِي الدِّينِ وَلَمْ يُخْرِجُوكُم
مِّن دِيَارِكُمْ أَن تَبَرُّوهُمْ وَتُقْسِطُوا إِلَيْهِمْ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ
الْمُقْسِطِينَ ۝ إِنَّمَا يَنْهَاكُمُ اللَّهُ عَنِ الَّذِينَ قَاتَلُوكُمْ فِي الدِّينِ
وَأَخْرَجُوكُم مِّن دِيَارِكُمْ وَظَاهَرُوا عَلَىٰ إِخْرَاجِكُمْ أَن تَوَلَّوْهُمْ
وَمَن يَتَوَلَّهُمْ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا
جَاءَكُمُ الْمُؤْمِنَاتُ مُهَاجِرَاتٍ فَامْتَحِنُوهُنَّ اللَّهُ أَعْلَمُ بِإِيمَانِهِنَّ
فَإِنْ عَلِمْتُمُوهُنَّ مُؤْمِنَاتٍ فَلَا تَرْجِعُوهُنَّ إِلَى الْكُفَّارِ
لَا هُنَّ حِلٌّ لَّهُمْ وَلَا هُمْ يَحِلُّونَ لَهُنَّ وَآتُوهُم مَّا أَنفَقُوا
وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ أَن تَنكِحُوهُنَّ إِذَا آتَيْتُمُوهُنَّ أُجُورَهُنَّ

★रु. १/७ आ ६

हम रुजूअ करते हैं। और तेरे ही हुज़ूर में (हमें) लौट कर आना है। (४) ऐ हमारे परवरदिगार ! हम को काफ़िरों के हाथ से अज़ाब न दिलाना और ऐ परवरदिगार हमारे ! हमें माफ़ फ़रमा, बेशक तू ग़ालिब हिक्मत वाला है। (५) तुम (मुसलमानों) को यानी जो (ख़ुदा के सामने जाने) और आख़िरत के दिन (के आने) की उम्मीद रखता हो, उसे उन लोगों की नेक चाल चलनी (ज़रूर) है और जो मुंह फेरे, तो ख़ुदा भी बे-परवा और हम्द (व सना) के लायक़ है। (६)★

अजब नहीं कि ख़ुदा तुम में और उन लोगों में, जिन से तुम दुश्मनी रखते हो, दोस्ती पैदा कर दे और ख़ुदा क़ुदरत वाला है और ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है। (७) जिन लोगों ने तुम से दीन के बारे में जंग नहीं की और न तुम को तुम्हारे घरों से निकाला, उन के साथ भलाई और इन्साफ़ का सुलूक करने से ख़ुदा तुम को मना नहीं करता। ख़ुदा तो इन्साफ़ करने वालों को दोस्त रखता है। (८) ख़ुदा उन्हीं लोगों के साथ तुम को दोस्ती करने से मना करता है, जिन्हों ने तुम से दीन के बारे में लड़ाई की और तुम को तुम्हारे घरों से निकाला और तुम्हारे निकालने में औरों की मदद की, तो जो लोग ऐसों से दोस्ती करेंगे, वही ज़ालिम हैं। (९) मोमिनो ! जब तुम्हारे पास मोमिन औरतें वतन छोड़ कर आएं तो उन की आज़माइश कर लो (और) ख़ुदा तो उन के ईमान को ख़ूब जानता है, सो अगर तुम को मालूम हो कि मोमिन हैं, तो उन को कुफ़्फ़ार के पास वापस न भेजो कि न ये उन को हलाल हैं और न वे उन को जायज़। और जो कुछ उन्हों ने (उन पर) ख़र्च किया हो, वह उन को दे दो और तुम पर कुछ गुनाह नहीं कि उन औरतों को मह्र दे कर उन से निकाह कर लो और काफ़िर औरतों की इज़्ज़त को क़ब्ज़े में न रखो (यानी कुफ़्फ़ार को वापस दे दो) और जो कुछ तुम ने उन पर ख़र्च किया हो, तुम उन से तलब कर लो और जो कुछ उन्होंने (अपनी औरतों पर) ख़र्च किया हो, वह तुम से तलब कर लें, यह ख़ुदा का हुक्म है जो तुम में फ़ैसला किए देता है और ख़ुदा जानने वाला, हिक्मत वाला है। (१०) और अगर तुम्हारी औरतों में से कोई

★रु. १/७ आ ६

व इन् फ़ातकुम् शैउम्मिन् अज़्वाजिकुम् इलल् - कुफ़्फ़ारि फ़ - आक़ब्तुम् फ़आतुल्लज़ी - न ज़ - ह - बत् अज़्वाजुहुम् मिस् - ल मा अन्फ़क़ू ♭ वत्त-क़ुल्लाहल्लज़ी अन्तुम् बिही मुअ्मिनून (११) या अय्युहन्नबिय्यु इज़ा जा - अकल् - मुअ्मिनातु युबायिअ् - न - क अ़ला अल्ला युश्रिक्-न बिल्लाहि शैअंव्-व ला यस्रिक़ - न व ला यज़्नी-न व ला यक़्तुल्-न औलाद-हुन्-न व ला यअ्ती-न बिबुह्तानिंय्यफ़्-तरीनहू बै-न ऐदीहिन्-न व अर्जुलिहिन्-न व ला यअ्सी-न-क फ़ी मअ् - रूफ़िन् फ़बायिअ् - हुन्-न वस्तग़्फ़िर् लहुन्नल्ला-ह ♭ इन्नल्ला - ह ग़फ़ूरुर्रहीम (१२) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला त - त-वल्लौ क़ौमन् ग़ज़िबल्लाहु अ़लैहिम् क़द् यइसू मिनल् - आख़िरति कमा यइसल्-कुफ़्फ़ारु मिन् अस्हाबिल् - क़ुबूर ★ ●(१३)

وَلَا تُمْسِكُوا بِعِصَمِ الْكَوَافِرِ وَسْـَٔلُوا مَا أَنْفَقْتُمْ وَلْيَسْـَٔلُوا
مَا أَنْفَقُوا ذَٰلِكُمْ حُكْمُ اللَّهِ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝
وَإِنْ فَاتَكُمْ شَيْءٌ مِنْ أَزْوَاجِكُمْ إِلَى الْكُفَّارِ فَعَاقَبْتُمْ فَآتُوا
الَّذِينَ ذَهَبَتْ أَزْوَاجُهُمْ مِثْلَ مَا أَنْفَقُوا وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي
أَنْتُمْ بِهِ مُؤْمِنُونَ ۝ يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا جَاءَكَ الْمُؤْمِنَاتُ يُبَايِعْنَكَ
عَلَىٰ أَنْ لَا يُشْرِكْنَ بِاللَّهِ شَيْئًا وَلَا يَسْرِقْنَ وَلَا يَزْنِينَ وَلَا يَقْتُلْنَ
أَوْلَادَهُنَّ وَلَا يَأْتِينَ بِبُهْتَانٍ يَفْتَرِينَهُ بَيْنَ أَيْدِيهِنَّ وَأَرْجُلِهِنَّ
وَلَا يَعْصِينَكَ فِي مَعْرُوفٍ فَبَايِعْهُنَّ وَاسْتَغْفِرْ لَهُنَّ اللَّهَ
إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَوَلَّوْا قَوْمًا
غَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ قَدْ يَئِسُوا مِنَ الْآخِرَةِ كَمَا يَئِسَ
الْكُفَّارُ مِنْ أَصْحَابِ الْقُبُورِ ۝

سُورَةُ الصَّفِّ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ أَرْبَعَ عَشْرَةَ آيَةً وَفِيهَا رُكُوعَانِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

سَبَّحَ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لِمَ تَقُولُونَ مَا لَا تَفْعَلُونَ ۝ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ
اللَّهِ أَنْ تَقُولُوا مَا لَا تَفْعَلُونَ ۝ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الَّذِينَ يُقَاتِلُونَ
فِي سَبِيلِهِ صَفًّا كَأَنَّهُمْ بُنْيَانٌ مَرْصُوصٌ ۝ وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ

६१ सूरतुस्सफ़्फ़ १०९

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के ६६१ अक्षर, २२३ शब्द, १४ आयतें और २ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ●

सब्ब - ह लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि ℭ व हुवल् - अ़ज़ीज़ुल् - हकीम (१) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू लि - म तक़ूलू-न मा ला तफ़्-अ़लून (२) कबु-र मक़्तन् अ़िन्दल्लाहि अन् तक़ूलू मा ला तफ़्-अ़लून (३) इन्नल्ला-ह युहिब्बुल्लज़ी-न युक़ातिलू-न फ़ी सबीलिही सफ़्फ़न् क - अन्नहुम् बुन्यानुम् - मर् - सूस (४)

औरत तुम्हारे हाथ से निकल कर काफ़िरों के पास चली जाए (और उस का मह्र वसूल न हुआ हो) फिर तुम उन से जंग करो (और उन से तुम को ग़नीमत हाथ लगे) तो जिन की औरतें चली गयी हैं, उन को (उस माल में से) उतना दे दो, जितना उन्हों ने ख़र्च किया था और ख़ुदा से, जिस पर ईमान लाए हो, डरो। (११) ऐ पैग़म्बर! जब तुम्हारे पास मोमिन औरतें इस बात पर बैअत करने को आएं कि ख़ुदा के साथ न तो शिर्क करेंगी, न चोरी करेंगी, न बदकारी करेंगी, न अपनी औलाद को क़त्ल करेंगी, न अपने हाथ-पांव में कोई बोहतान बांध लाएंगी, न नेक कामों में तुम्हारी ना-फ़रमानी करेंगी, तो उन से बैअत ले लो और उन के लिए ख़ुदा से बख़्शिश मांगो। बेशक ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है। (१२) मोमिनो! उन लोगों से, जिन पर ख़ुदा ग़ुस्से हुआ है, दोस्ती न करो (क्योंकि) जिस तरह काफ़िरों को मुर्दों (के जी उठने) की उम्मीद नहीं, उसी तरह उन लोगों को भी आख़िरत (के आने) की उम्मीद नहीं। (१३) ★ ●

६१ सूरः सफ़्फ़ १०९

सूरः सफ़्फ़ मदनी है, इस में चौदह आयतें और दो रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

जो चीज़ आसमानों में है और जो ज़मीन में है, सब ख़ुदा की तस्बीह करती है और वह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (१) मोमिनो! तुम ऐसी बातें क्यों कहा करते हो, जो किया नहीं करते? (२) ख़ुदा इस बात से सख़्त बेज़ार है कि ऐसी बात कहो, जो करो नहीं। (३) जो लोग ख़ुदा की राह में (ऐसे तौर पर) पैर जमा कर लड़ते हैं कि गोया सीसा पिलाई हुई दीवार हैं, वह

★रु. २/८ आ ७ ● नि. १/२

व इज़् क़ा-ल मूसा लिक़ौमिही याक़ौमि लि-म तुअ्ज़ू-ननी व क़त्तअ्-ल-मू-न अन्नी रसूलुल्लाहि इलैकुम् ط फ़-लम्मा ज़ाग़ू अज़ाग़ल्लाहु क़ुलूबहुम् ط वल्लाहु ला यह्दिल् - क़ौमल् - फ़ासिक़ीन (५) व इज़् क़ा - ल ईसब्नु मर्-य-म या बनी इस्राई-ल इन्नी रसूलुल्लाहि इलैकुम् मुसद्दिक़ल्लिमा बै-न य - दय्-य मिनत्तौराति व मुबश्शिरम् - बिरसूलिंय्यअ्ती मिम्बअ् - दिस्मुहू अह्मदु ط फ़-लम्मा जा-अहुम् बिलबय्यिनाति क़ालू हाज़ा सिह्रुम् - मुबीन (६) व मन् अज़्-लमु मिम्मनिफ़्तरा अलल्लाहिल्-कज़ि-ब व हु - व युद्आ इलल् - इस्लामि ط वल्लाहु ला यह्दिल्-क़ौमज़् - ज़ालिमीन (७) युरीदू - न लियुत्फ़िऊ नूरल्लाहि बि-अफ़्वाहिहिम् वल्लाहु मुतिम्मु नूरिही व लौ करिहल् - काफ़िरून (८) हुवल्लज़ी अर्स-ल रसूलहू बिल्हुदा व दीनिल्हक़्क़ि लियुज़्हि - रहू अलद्दीनि कुल्लिही व लौ करिहल्-मुश्रिकून ★ (९) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू हल् अदुल्लुकुम् अला तिजा-रतिन् तुन्जीकुम् मिन् अज़ाबिन् अलीम (१०) तुअ्मिनू - न बिल्लाहि व रसूलिही व तुजाहिदू - न फ़ी सबीलिल्लाहि बि - अम्वालिकुम् व अन्फ़ुसिकुम् ط ज़ालिकुम् ख़ैरुल्लकुम् इन् कुन्तुम् तअ्-लमून ۙ (११) यग़्फ़िर् लकुम् ज़ुनू-बकुम् व युद्ख़िल्कुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल् - अन्हारु व मसाकि-न तय्यि-ब-तन् फ़ी जन्नाति अद्निन् ط ज़ालिकल् - फ़ौज़ुल् - अज़ीम ۙ (१२) व उख़्रा तुहिब्बूनहा नस्रुम्-मिनल्लाहि व फ़त्हुन् क़रीबुन् ط व बश्शिरिल् - मुअ्मिनीन (१३)

لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ لِمَ تُؤْذُوْنَنِيْ وَقَدْ تَّعْلَمُوْنَ اَنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ
فَلَمَّا زَاغُوْٓا اَزَاغَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ۝
وَاِذْ قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ
اِلَيْكُمْ مُّصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَمُبَشِّرًاۢ بِرَسُوْلٍ
يَّاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِي اسْمُهٗٓ اَحْمَدُ فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ قَالُوْا
هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ
وَهُوَ يُدْعٰٓى اِلَى الْاِسْلَامِ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝
يُرِيْدُوْنَ لِيُطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ وَاللّٰهُ مُتِمُّ نُوْرِهٖ وَلَوْ كَرِهَ
الْكٰفِرُوْنَ ۝ هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ
لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰى تِجَارَةٍ تُنْجِيْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝ تُؤْمِنُوْنَ
بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُجَاهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ
ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ وَ
يُدْخِلْكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ
جَنّٰتِ عَدْنٍ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝ وَاُخْرٰى تُحِبُّوْنَهَا نَصْرٌ مِّنَ
اللّٰهِ وَفَتْحٌ قَرِيْبٌ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْٓا
اَنْصَارَ اللّٰهِ كَمَا قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ لِلْحَوَارِيّٖنَ مَنْ اَنْصَارِيْٓ

★रु. १/९ आ ९

बेशक अल्लाह के महबूब हैं। (४) और (वह वक़्त याद करने के लायक़ है) जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि भाइयो ! तुम मुझे क्या तक्लीफ़ देते हो, हालांकि तुम जानते हो कि मैं तुम्हारे पास ख़ुदा का भेजा हुआ आया हूं तो जब उन लोगों ने टेढ़ अपनाया, ख़ुदा ने भी उन के दिल टेढ़े कर दिए और ख़ुदा ना-फ़रमानों को हिदायत नहीं देता। (५) और (वह वक़्त भी याद करो) जब मरयम के बेटे ईसा ने कहा कि ऐ बनी इस्राईल ! मैं तुम्हारे पास ख़ुदा का भेजा हुआ आया हूं (और) जो (किताब) मुझ से पहले आ चुकी है (यानी) तौरात, उस की तस्दीक़ करता हूं और एक पैग़म्बर, जो मेरे बाद आएंगे, जिन का नाम अहमद होगा, उन की ख़ुशख़बरी सुनाता हूं, (फिर) जब वह उन लोगों के पास खुली निशानियां ले कर आए, तो कहने लगे कि यह तो खुला जादू है। (६) और उस से ज़ालिम कौन कि बुलाया तो जाए इस्लाम की तरफ़ और वह ख़ुदा पर झूठ बुहतान बांधे और ख़ुदा ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं दिया करता। (७) ये चाहते हैं कि ख़ुदा (के चिराग़) की रोशनी को मुंह से (फूंक मार कर) बुझा दें, हालांकि ख़ुदा अपनी रोशनी को पूरा कर के रहेगा, चाहे काफ़िर ना-ख़ुश ही हों। (८) वही तो है, जिस ने अपने पैग़म्बर को हिदायत और दीने हक़ दे कर भेजा, ताकि उसे और सब दीनों पर ग़ालिब करे, चाहे मुश्रिकों को बुरा ही लगे। (९) ★

मोमिनो ! मैं तुम को ऐसी तिजारत बताऊं, जो तुम्हें दर्दनाक अज़ाब में मुख़्लिसी दे। (१०) (वह यह कि) ख़ुदा पर और उस के रसूल पर ईमान लाओ और ख़ुदा की राह में अपने माल और जान से जिहाद करो, अगर समझो तो यह तुम्हारे हक़ में बेहतर है। (११) वह तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और तुम को जन्नत के बाग़ों में, जिन में नहरें बह रही हैं और पाकीज़ा मकानों में, जो हमेशा की बहिश्तों में (तैयार) हैं, दाख़िल करेगा। यह बड़ी कामियाबी है। (१२) और एक और चीज़, जिस को तुम बहुत चाहते हो (यानी तुम्हें) ख़ुदा की तरफ़ से मदद (नसीब होगी) और फ़त्ह (बहुत) जल्द (होगी) और मोमिनों को (इस की) ख़ुशख़बरी सुना दो। (१३) मोमिनो ! ख़ुदा

★रु. १/९ आ ९

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू कूनू अन्सारल्लाहि कमा क़ा-ल ईसब्नु मर्य-म लिल् - हवारिय्यी-न मन् अन्सारी इलल्लाहि ط क़ालल् - हवारिय्यू-न नह्नु अन्सारुल्लाहि फ़-आ-म-नत् - ताइफ़-तुम् - मिम्बनी इस्राई-ल व क-फ़-रत्- ताइफ़ - तुन् ج फ़ - अय्यद्नल्लज़ी - न आमनू अला अदुव्विहिम् फ़ - अस्बहू ज़ाहिरीन ★ (१४)

إِلَى اللَّهِ ۖ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ نَحْنُ أَنصَارُ اللَّهِ ۖ فَآمَنَت طَّائِفَةٌ مِّن
بَنِي إِسْرَائِيلَ وَكَفَرَت طَّائِفَةٌ ۖ فَأَيَّدْنَا الَّذِينَ آمَنُوا عَلَىٰ
عَدُوِّهِمْ فَأَصْبَحُوا ظَاهِرِينَ ﴿١٤﴾

سُورَةُ الْجُمُعَةِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ إِحْدَى عَشْرَةَ آيَةً وَفِيهَا رُكُوعَانِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

يُسَبِّحُ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ الْمَلِكِ الْقُدُّوسِ الْعَزِيزِ
الْحَكِيمِ ﴿١﴾ هُوَ الَّذِي بَعَثَ فِي الْأُمِّيِّينَ رَسُولًا مِّنْهُمْ يَتْلُو عَلَيْهِمْ
آيَاتِهِ وَيُزَكِّيهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَإِن كَانُوا مِن قَبْلُ
لَفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٢﴾ وَآخَرِينَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوا بِهِمْ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ
الْحَكِيمُ ﴿٣﴾ ذَٰلِكَ فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ
الْعَظِيمِ ﴿٤﴾ مَثَلُ الَّذِينَ حُمِّلُوا التَّوْرَاةَ ثُمَّ لَمْ يَحْمِلُوهَا كَمَثَلِ
الْحِمَارِ يَحْمِلُ أَسْفَارًا ۚ بِئْسَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ ۚ
وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿٥﴾ قُلْ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ هَادُوا إِن
زَعَمْتُمْ أَنَّكُمْ أَوْلِيَاءُ لِلَّهِ مِن دُونِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ إِن
كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٦﴾ وَلَا يَتَمَنَّوْنَهُ أَبَدًا بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ ۚ وَاللَّهُ
عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ ﴿٧﴾ قُلْ إِنَّ الْمَوْتَ الَّذِي تَفِرُّونَ مِنْهُ فَإِنَّهُ
مُلَاقِيكُمْ ۖ ثُمَّ تُرَدُّونَ إِلَىٰ عَالِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ

منزل

६२ सूरतुल्-जुमुअति ११०

(मदनी) इस सूरः में अरबी के ७८७ अक्षर, १७६ शब्द, ११ आयतें और २ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

युसब्बिहु लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्-अर्ज़िल्-मलिकिल् - क़ुद्दूसिल्-अज़ीज़िल्-हकीम (१) हुवल्लज़ी ब-अ-स फ़िल्उम्मिय्यी - न रसूलम् - मिन्हुम् यत्लू अलैहिम् आयातिही व युज़क्कीहिम् व युअल्लिमुहुमुल् - किता - ब वल्हिक्-म - तق व इन् कानू मिन् क़ब्लु लफ़ी ज़लालिम्- मुबीनिव्-لا (२) व आख़री-न मिन्हुम् लम्मा यल्हक़ू बिहिम् ط व हुवल्-अज़ीज़ुल्-हकीम (३) ज़ालि-क फ़ज़्लुल्लाहि युअ्तीहि मंय्यशाउ ط वल्लाहु ज़ुल्फ़ज़्लिल्-अज़ीम (४) म-सलुल्लज़ी-न हुम्मिलुत्तौरा-त सुम्-म लम् यह्मिलूहा क-म-सलिल्-हिमारि यह्मिलु अस्फ़ारन् ط बिअ्-स म-सलुल्-क़ौमिल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिल्लाहि ط वल्लाहु ला यह्दिल्-क़ौमज़्-ज़ालिमीन (५) क़ुल् या अय्युहल्लज़ी-न हादू इन् ज़-अम्तुम् अन्नकुम् औलियाउ लिल्लाहि मिन् दूनिन्नासि फ़-त-मन्नवुल्-मौ-त इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (६) व ला य-त-मन्नौनहू अ-ब-दम्-बिमा क़द्-द-मत् ऐदीहिम् ط वल्लाहु अलीमुम्-बिज़्ज़ालिमीन (७) क़ुल् इन्नल्-मौतल्लज़ी तफ़िर्रू-न मिन्हु फ़-इन्नहू मुलाक़ीकुम् सुम्-म तुरद्दू-न इला आलि-मिल्-ग़ैबि वश्शहादति फ़युनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् तअ् - मलून ★ (८)

★रु. २/१० आ ५ ★रु. १/११ आ ८
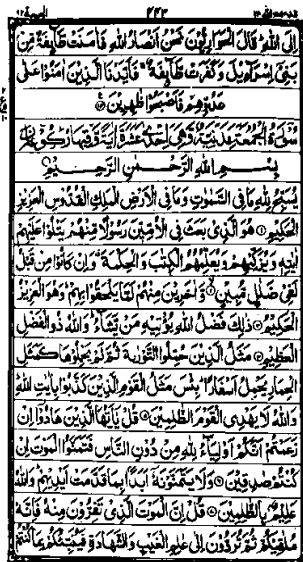
के मददगार हो जाओ जैसे ईसा बिन मरयम ने हवारियों से कहा कि (भला) कौन हैं जो ख़ुदा की तरफ़ (बुलाने में) मेरे मददगार हों, हवारियों ने कहा कि हम ख़ुदा के मददगार हैं, तो बनी इस्राईल में से एक गिरोह तो ईमान ले आया और एक गिरोह काफ़िर रहा। आख़िरकार हम ने ईमान लाने वालों को उन के दुश्मनों के मुक़ाबले में मदद दी और वह ग़ालिब हो गये।[1] (१४)★

६२ सूरः जुमुअः ११०

सूरः जुमुअः मदनी है, इस में ग्यारह आयतें और दो रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

जो चीज़ आसमानों में है और जो चीज़ ज़मीन में है, सब ख़ुदा की तस्बीह करती है, जो हक़ीक़ी बादशाह, पाक ज़ात, ज़बरदस्त हिक्मत वाला है। (१) वही तो है, जिस ने अ-पढ़ों में उन्हीं में से (मुहम्मद को) पैग़म्बर (बना कर) भेजा, जो उस के सामने उस की आयतें पढ़ते और उन को पाक करते और (ख़ुदा की) किताब और हिक्मत सिखाते हैं और इस से पहले तो ये लोग खुली गुमराही में थे।[2] (२) और उन में से और लोगों की तरफ़ भी (उन को भेजा है) जो अभी उन (मुसल-मानों) से नहीं मिले और वह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (३) यह ख़ुदा का फ़ज़्ल है, जिसे चाहता है, अता करता है और ख़ुदा बड़े फ़ज़्ल का मालिक है। (४) जिन लोगों (के सर) पर तौरात लदवायी गयी, फिर उन्हों ने उस (के पालन के बोझ) को न उठाया, उन की मिसाल गधे की-सी है, जिस पर बड़ी-बड़ी किताबें लदी हों। जो लोग ख़ुदा की आयतों को झुठलाते हैं, उन की मिसाल बुरी है और ख़ुदा ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। (५) कह दो कि ऐ यहूदियो! अगर तुम को यह दावा हो कि तुम ही ख़ुदा के दोस्त हो और लोग नहीं, तो अगर तुम सच्चे हो तो (ज़रा) मौत की आरज़ू तो करो। (६) और ये उन (आमाल) की वजह से, जो कर चुके हैं, हरगिज़ इस की आरज़ू नहीं करेंगे और ख़ुदा ज़ालिमों को ख़ूब जानता है। (७) कह दो कि मौत, जिस से तुम भागते हो, वह तो तुम्हारे सामने आ कर रहेगी, फिर तुम छिपे और ज़ाहिर के जानने वाले (ख़ुदा) की तरफ़ लौटाए जाओगे, फिर जो-जो कुछ तुम करते रहे हो, वह तुम्हें सब बताएगा। (८)★

---

१. हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बाद उन के यारों ने बड़ी मेहनत की है, तब उन का दीन फैला। हमारे हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पीछे भी ख़लीफ़ों ने उस से ज़्यादा किया।

२. अ-पढ़ अरब के लोग थे, जिन के पास नबी की किताब न थी।

★रु. २/१० आ ५ ★रु. १/११ आ ८

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इज़ा नूदि-य लिस्सलाति मिंय्यौमिल्-जुमुअ़ति फ़स्औ इला ज़िक्रिल्लाहि व - ज़रुल्बै - अ़ ۖ ज़ालिकुम् ख़ैरुल्लकुम् इन् कुन्तुम् तअ़्-लमून (९) फ़-इज़ा क़ुज़ियतिस् - सलातु फ़न्तशिरू फ़िल्अर्ज़ि वब्तग़ू मिन् फ़ज़्लिल्लाहि वज़्कुरुल्ला-ह कसीरल्ल-अ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून (१०) व इज़ा रऔ तिजा-र-तन् औ लह्व-निन्फ़ज़्ज़ू इलैहा व त-र-कू-क क़ाइमन् ۖ क़ुल् मा अ़िन्दल्लाहि ख़ैरुम् - मिनल्लह्वि व मिनत्तिजारति ۖ वल्लाहु ख़ैरुर् - राज़िक़ीन ★ (११)

६३ सूरतुल्-मुनाफ़िक़ू-न १०४

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के ८२१ अक्षर, १८३ शब्द, ११ आयतें और २ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ●

इज़ा जा-अकल् - मुनाफ़िक़ू-न क़ालू नश्हदु इन्न-क ल - रसूलुल्लाह ▨ वल्लाहु यअ़्-लमु इन्न-क ल-रसूलुहू ۖ वल्लाहु यश्हदु इन्नल् - मुनाफ़िक़ी - न लकाज़िबून ۚ (१)

تَعْمَلُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا نُوْدِيَ لِلصَّلٰوةِ مِنْ يَّوْمِ الْجُمُعَةِ
فَاسْعَوْا اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ وَذَرُوا الْبَيْعَ ۭ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ
تَعْلَمُوْنَ ۝ فَاِذَا قُضِيَتِ الصَّلٰوةُ فَانْتَشِرُوْا فِي الْاَرْضِ وَابْتَغُوْا
مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝ وَاِذَا رَاَوْا
تِجَارَةً اَوْ لَهْوَا انْفَضُّوْٓا اِلَيْهَا وَتَرَكُوْكَ قَاۗىِٕمًا ۭ قُلْ مَا عِنْدَ اللّٰهِ
خَيْرٌ مِّنَ اللَّهْوِ وَمِنَ التِّجَارَةِ ۭ وَاللّٰهُ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ۝
سُوْرَةُ الْمُنٰفِقُوْنَ مَدَنِيَّةٌ وَّهِيَ اِحْدٰى عَشْرَةَ اٰيَةً وَّفِيْهَا رُكُوْعَانِ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
اِذَا جَاۗءَكَ الْمُنٰفِقُوْنَ قَالُوْا نَشْهَدُ اِنَّكَ لَرَسُوْلُ اللّٰهِ ۘ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ
اِنَّكَ لَرَسُوْلُهٗ ۭ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَكٰذِبُوْنَ ۝ اِتَّخَذُوْٓا
اَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ اِنَّهُمْ سَاۗءَ مَا كَانُوْا
يَعْمَلُوْنَ ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا فَطُبِعَ عَلٰي قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ
لَا يَفْقَهُوْنَ ۝ وَاِذَا رَاَيْتَهُمْ تُعْجِبُكَ اَجْسَامُهُمْ ۭ وَاِنْ يَّقُوْلُوْا
تَسْمَعْ لِقَوْلِهِمْ ۭ كَاَنَّهُمْ خُشُبٌ مُّسَنَّدَةٌ ۭ يَحْسَبُوْنَ كُلَّ صَيْحَةٍ
عَلَيْهِمْ ۭ هُمُ الْعَدُوُّ فَاحْذَرْهُمْ ۭ قٰتَلَهُمُ اللّٰهُ ۡ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ۝ وَ
اِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا يَسْتَغْفِرْ لَكُمْ رَسُوْلُ اللّٰهِ لَوَّوْا رُءُوْسَهُمْ وَ
رَاَيْتَهُمْ يَصُدُّوْنَ وَهُمْ مُّسْتَكْبِرُوْنَ ۝ سَوَاۗءٌ عَلَيْهِمْ اَسْتَغْفَرْتَ

इत्त - ख़ज़ू ऐमानहुम् जुन्नतन् फ़-सद्दू अन् सबीलिल्लाहि ۖ इन्नहुम् सा - अ मा कानू यअ़् - मलून (२) ज़ालि-क बि-अन्नहुम् आमनू सुम्-म क-फ़रू फ़तुबि-अ़ अ़ला क़ुलूबिहिम् फ़हुम् ला यफ़्क़हून (३) व इज़ा रऐतहुम् तुअ़् - जिबु - क अज्सामुहुम् ۖ व इंय्यक़ूलू तस्मअ़् - लिक़ौलिहिम् ۖ क-अन्नहुम् ख़ुशुबुम् - मुसन्नदतुन् ۖ यह्सबू - न कुल् - ल सैहतिन् अ़लैहिम् ۖ हुमुल् - अ़दुव्वु फ़ह्-ज़रहुम् ۖ क़ा-त-लहुमुल्लाहु ۡ अन्ना युअ़्-फ़कून (४) व इज़ा क़ी - ल लहुम् तआ़लौ यस्तग़्फ़िर् लकुम् रसूलुल्लाहि लव्वौ रुऊसहुम् व रऐतहुम् यसुद्दू - न व हुम् मुस्तक्बिरून (५)

★रु. २/१२ आ ३ ▨ व. लाज़िम

मोमिनो ! जब जुमा के दिन नमाज़ के लिए अज़ान दी जाए, तो ख़ुदा की याद (यानी नमाज़) के लिए जल्दी करो और (ख़रीदना व) बेचना छोड़ दो। अगर समझो तो यह तुम्हारे हक़ में बेहतर है। (९) फिर जब नमाज़ हो चुके, तो अपनी-अपनी राह लो और ख़ुदा का फ़ज़्ल खोजो और ख़ुदा को बहुत-बहुत याद करते रहो, ताकि निजात पाओ। (१०) और जब ये लोग सौदा बिकता, या तमाशा होता देखते हैं तो उधर भाग जाते हैं और तुम्हें (खड़े का) खड़ा छोड़ जाते हैं। कह दो कि जो चीज़ ख़ुदा के यहां है, वह तमाशे और सौदे से कहीं बेहतर है और ख़ुदा सब से बेहतर रोज़ी देने वाला है।[1] (११)★

६३ सूरः मुनाफ़िक़ून १०४

सूरः मुनाफ़िक़ून मदनी है। इस में ग्यारह आयतें और दो रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

(ऐ मुहम्मद !) जब मुनाफ़िक़ लोग तुम्हारे पास आते हैं, तो (निफ़ाक़ की वजह से) कहते हैं कि हम इक़रार करते हैं कि आप बेशक ख़ुदा के पैग़म्बर हैं और ख़ुदा जानता है कि हक़ीक़त में तुम उस के पैग़म्बर हो, लेकिन ख़ुदा ज़ाहिर किए देता है कि मुनाफ़िक़ (दिल से एतक़ाद न रखने के लिहाज़ से) झूठे हैं।[2] (१) उन्हों ने अपनी क़स्मों को ढाल बना रखा है और उन के ज़रिए से (लोगों को) ख़ुदा के रास्ते से रोक रहे हैं। कुछ शक नहीं कि जो काम ये करते हैं, बुरे हैं। (२) यह इस लिए कि ये (पहले तो) ईमान लाए, फिर काफ़िर हो गये, तो उन के दिलों पर मुहर लगा दी गयी, सो अब ये समझते ही नहीं।[3] (३) और जब तुम उन (के अंगों के मेल) को देखते हो तो उन के जिस्म तुम्हें (क्या ही) अच्छे मालूम होते हैं और जब वे बातें करते हैं, तो तुम उन के बोल को तवज्जोह से सुनते हो, गोया लकड़ियां हैं, जो दीवारों से लगायी गयी हैं, (डरपोक ऐसे कि) हर ज़ोर की आवाज़ को समझें (कि) उन पर (बला आयी)। ये (तुम्हारे) दुश्मन हैं, इनसे बे-ख़ौफ़ न रहना। ख़ुदा उन को हलाक करे, ये कहां बहके फिरते हैं। (४) और जब उन से कहा जाए कि आओ ख़ुदा के रसूल तुम्हारे लिए मग़फ़िरत मांगें तो सर हिला देते हैं और तुम उन को देखो कि तकब्बुर

---

१. जनाब सरवरे कायनात सल्ल० जुमे का ख़ुत्बा पढ़ रहे थे, इतने में शाम का क़ाफ़िला ग़ल्ला ले कर आया। उन दिनों मदीने में मंहगाई थी और लोगों को ग़ल्ले की ज़रूरत थी। ख़ुत्बा सुन रहे लोगों के कानों में जो नक़्क़ारे की आवाज़ आयी तो आंहज़रत को ख़ुत्बे में खड़ा छोड़ कर सब उस के देखने को चले गये। मस्जिद में सिर्फ़ बारह मर्द और सात औरतें रह गयीं, तब यह आयत नाज़िल हुई।

२. यानी चूंकि ये लोग दिल से तुम्हारी रिसालत के क़ायल नहीं और तुम्हारे सामने सिर्फ़ ज़ुबान से इक़रार करते हैं, भीतर कुछ रखते हैं और बाहर कुछ, इस लिए झूठे हैं और उन के कहने का एतबार नहीं।

३. यानी मुंह से तो ये कहते हैं कि हम ईमान लाए, मगर दिल में कुफ़्र है और इसी पर जमे हुए हैं, या यह कि मुसलमानों के पास आते हैं तो उन से मोमिन होने का इक़रार करते हैं और जब काफ़िरों के पास जाते हैं, तो इस्लाम से इन्कार करते हैं।

★रु० २/१२ आ ३ व. लाज़िम

सवाउन् अलैहिम अस्तग़फ़र्-त लहुम् अम् लम् तस्तग़्फ़िर् लहुम्ᵗलंय्यग़्फ़िरल्लाहु लहुम्ᵗ इन्नल्ला-ह ला यह्दिल् - क़ौमल् - फ़ासिक़ीन (६) हुमुल्लज़ी-न यक़ूलू-न ला तुन्फ़िक़ू अ़ला मन् अ़िन्-द रसूलिल्लाहि ह़त्ता यन्फ़ज़्ज़ूᵗव लिल्लाहि ख़ज़ाइनुस्समावाति वल्अर्ज़ि व लाकिन्नल् - मुनाफ़िक़ी - न ला यफ़्क़हून (७) यक़ूलू-न लइर्-र-जअ्-ना इ-लल्मदीनति लयुख़्रिजन्नल् - अ-अ़ज़्ज़ु मिन्हल् - अ-ज़ल्-लᵗ व लिल्लाहिल्-अ़िज़्ज़तु व लिरसूलिही व व लिल्-मुअ्मिनी-न व लाकिन्नल्-मुनाफ़िक़ी-न ला यअ्-लमून ★(८) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तुल्हिकुम् अम्वालुकुम् व ला औलादुकुम् अ़न् ज़िक्रिल्लाहिᶜ व मंय्यफ़्-अ़ल् ज़ालि-क फ़उलाइ-क हुमुल्-ख़ासिरून (९) व अन्फ़िक़ू मिम्मा र-ज़क़्नाकुम् मिन् क़ब्लि अंय्यअ्ति-य अ-ह़-दकुमुल्मौतु फ़-यक़ू-ल रब्बि लौ ला अख़्ख़र - तनी इला अ-जलिन् क़रीबिन्ᶠ फ़-अस्सद्द - क़ व अकुम् - मिनस्सालिह़ीन (१०) व लंय्यु-अख़्ख़िरल्लाहु नफ़्सन् इज़ा जा-अ अ-जलुहाᵗ वल्लाहु ख़बीरुम् - बिमा तअ् - मलून ★(११)

لهم ام لم تستغفر لهم لن يغفر الله لهم ان الله لا يهدي
القوم الفسقين ۝ هم الذين يقولون لا تنفقوا على من
عند رسول الله حتى ينفضوا ولله خزائن السموت والارض
ولكن المنفقين لا يفقهون ۝ يقولون لئن رجعنا الى
المدينة ليخرجن الاعز منها الاذل ولله العزة ولرسوله
وللمؤمنين ولكن المنفقين لا يعلمون ۝ يايها الذين
امنوا لا تلهكم اموالكم ولا اولادكم عن ذكر الله ومن
يفعل ذلك فاولئك هم الخسرون ۝ وانفقوا من ما رزقنكم
من قبل ان ياتي احدكم الموت فيقول رب لولا اخرتني
الى اجل قريب فاصدق واكن من الصلحين ۝ ولن يؤخر
الله نفسا اذا جاء اجلها والله خبير بما تعملون ۝

سورة التغابن مدنية وهي ثمان عشرة اية وفيها ركوعان

بسم الله الرحمن الرحيم

يسبح لله ما في السموت وما في الارض له الملك وله
الحمد وهو على كل شيء قدير ۝ هو الذي خلقكم فمنكم
كافر ومنكم مؤمن والله بما تعملون بصير ۝ خلق السموت
والارض بالحق وصوركم فاحسن صوركم واليه المصير ۝

६४ सूरतुत्तग़ाबुनि १०८

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के ११२२ अक्षर, २४७ शब्द, १८ आयतें और २ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रहीम ●

युसब्बिहु लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़िᶜ लहुल्मुल्कु व लहुल्ह़म्दुᶻ व हु - व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (१) हुवल्लज़ी ख़ - ल - क़कुम् फ़मिन्कुम् काफ़िरुंव् - व मिन्कुम् मुअ्मिनुन्ᵗ वल्लाहु बिमा तअ्-मलू-न बसीर (२) ख़-ल - क़स्समावाति वल्अर्-ज़ बिल्हक़्क़ि व सव्व - रकुम् फ़-अह़्-स-न सु-व - रकुम्ᶜ व इलैहिल् - मसीर (३)

करते हुए मुंह फेर लेते हैं। (५) तुम उन के लिए मग़्फ़िरत मांगो या न मांगो, उन के हक़ में बराबर है, ख़ुदा उन को हरगिज़ न बख़्शेगा। बेशक ख़ुदा ना-फ़रमान लोगों को हिदायत नहीं दिया करता। (६) यही हैं जो कहते हैं कि जो लोग अल्लाह के रसूल के पास (रहते) हैं, उन पर (कुछ) ख़र्च न करो, यहां तक कि ये (ख़ुद ही) भाग जाएं, हालांकि आसमानों और ज़मीन के ख़ज़ाने ख़ुदा ही के हैं, लेकिन मुनाफ़िक़ नहीं समझते। (७) कहते हैं कि अगर हम लौट कर मदीने पहुंचे तो इज़्ज़त वाले ज़लील लोगों को वहां से निकाल बाहर करेंगे हालांकि इज़्ज़त ख़ुदा की है और उस के रसूल की और मोमिनों की, लेकिन मुनाफ़िक़ नहीं जानते। (८) ★

मोमिनो ! तुम्हारा माल और औलाद तुम को ख़ुदा की याद से ग़ाफ़िल न कर दे और जो ऐसा करेगा, तो वे लोग घाटा उठाने वाले हैं। (९) और जो (माल) हम ने तुम को दिया है, उस में से उस (वक़्त) से पहले ख़र्च कर लो कि तुम में से किसी की मौत आ जाए तो (उस वक़्त) कहने लगे कि मेरे परवरदिगार ! तू ने मुझे थोड़ी-सी और मोहलत क्यों न दी, ताकि मैं ख़ैरात कर लेता और नेक लोगों में दाख़िल हो जाता। (१०) और जब किसी की मौत आ जाती है, तो ख़ुदा उस को हरगिज़ मोहलत नहीं देता और जो कुछ तुम करते हो, ख़ुदा उस से ख़बरदार है। (११) ★

६४ सूरः तग़ाबुन १०८

सूरः तग़ाबुन मदनी है, इस में अठारह आयतें और दो रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

जो चीज़ आसमानों में है और जो चीज़ ज़मीन में है, (सब) ख़ुदा की तस्बीह करती है, उसी की सच्ची बादशाही है और उसी की तारीफ़ (न ख़त्म होने वाली) है और वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। (१) वही तो है, जिस ने तुम को पैदा किया फिर कोई तुम में काफ़िर है और कोई मोमिन और जो कुछ तुम करते हो, ख़ुदा उस को देखता है। (२) उसी ने आसमानों और ज़मीन को हिक्मत के साथ पैदा किया और उसी ने तुम्हारी सूरतें बनायीं और सूरतें भी पाकीज़ा बनायीं

★रु. १/१३ आ ८ ★रु. २/१४ आ ३

यअ्-लमु मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि व यअ्-लमु मा तुसिर्रू-न व मा तुअ्-लिनू-न ♭ वल्लाहु अ़लीमुम् - बिज़ातिस्सुदूर (४) अ-लम् यअ्तिकुम् न-ब-उल्लज़ी-न क-फ़रू मिन् क़ब्लु ✓ फ़-ज़ाक़ू वबा-ल अम्रिहिम् व लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम (५) ज़ालि-क बि-अन्नहू कानत् तअ्तीहिम् रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति फ़ - क़ालू अ ब-शरुंय्यह्दूनना ✓ फ़-क-फ़रू व त-वल्लौ-वस्तग़्नल्लाहु ♭ वल्लाहु ग़निय्युन् हमीद (६) ज़-अ़-मल्लज़ी-न क-फ़रू अल्लंय्युब्अ़सू ♭ क़ुल् बला व रब्बी ल-तुब् - अ़सुन्-न सुम्-म ल-तुनब्बउन्-न बिमा अ़मिल्तुम् ♭ व ज़ालि-क अ़लल्लाहि यसीर (७) फ़आमिनू बिल्लाहि व रसूलिही वन्नूरिल्लज़ी अन्ज़ल्ना ♭ वल्लाहु बिमा तअ्-मलू-न ख़बीर (८) यौ-म यज्-मअ़ुकुम् लियौमिल्-जम्अ़ि ज़ालि-क यौमुत्तग़ाबुनि ♭ व मंय्युअ्मिम् - बिल्लाहि व यअ् - मल् सालिहंय्युकफ़्फ़िर् अ़न्हु सय्यिआतिही व युद्ख़िल्हु जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा अ-ब-दन् ♭ ज़ालिकल्-फ़ौज़ुल्-अ़ज़ीम (९) वल्लज़ी-न क-फ़रू व कज़्ज़बू बिआयातिना उलाइ-क अस्हाबुन्नारि ख़ालिदी-न फ़ीहा ♭ व बिअ्सल्-मसीर ●★ (१०) मा असा-ब मिम्मुसीबतिन् इल्ला बिइज़्निल्लाहि ♭ व मंय्युअ्मिम्-बिल्लाहि यह्दि क़ल्बहू वल्लाहु बिकुल्लि शैइन् अ़लीम (११) व अतीअ़ुल्ला-ह व अतीअ़ुर्-रसू-ल ज फ़-इन् त-वल्लैतुम् फ़-इन्नमा अ़ला रसूलिनल्-बलाग़ुल्-मुबीन (१२) अल्लाहु ला इला-ह इल्ला हु-व ♭ व अ़-लल्लाहि फ़ल्-य-त-वक्कलिल्-मुअ्मिनून (१३) या अय्यु-हल्लज़ी-न आमनू इन्-न मिन् अज़्वाजिकुम् व औलादिकुम् अ़दुव्वल्लकुम् फ़ह्ज़रूहुम् ज व इन् तअ्-फ़ू व तस्फ़हू व तग़्फ़िरू फ़-इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम (१४)

يعلم ما في السموت والارض ويعلم ما تسرون وما تعلنون
والله عليم بذات الصدور ۝ الم ياتكم نبؤا الذين كفروا
من قبل فذاقوا وبال امرهم ولهم عذاب اليم ۝ ذلك بانه
كانت تاتيهم رسلهم بالبينت فقالوا ابشر يهدوننا فكفروا
وتولوا واستغنى الله والله غني حميد ۝ زعم الذين كفروا
ان لن يبعثوا قل بلى وربي لتبعثن ثم لتنبؤن بما عملتم
وذلك على الله يسير ۝ فامنوا بالله ورسوله والنور الذي انزلنا
والله بما تعملون خبير ۝ يوم يجمعكم ليوم الجمع ذلك
يوم التغابن ومن يؤمن بالله ويعمل صالحا يكفر عنه
سياته ويدخله جنت تجري من تحتها الانهر خلدين فيها
ابدا ذلك الفوز العظيم ۝ والذين كفروا وكذبوا بايتنا
اولئك اصحب النار خلدين فيها وبئس المصير ۝ ما اصاب
من مصيبة الا باذن الله ومن يؤمن بالله يهد قلبه
والله بكل شيء عليم ۝ واطيعوا الله واطيعوا الرسول فان
توليتم فانما على رسولنا البلغ المبين ۝ الله لا اله الا هو
وعلى الله فليتوكل المؤمنون ۝ يايها الذين امنوا ان من
ازواجكم واولادكم عدوا لكم فاحذروهم وان تعفوا وتصفحوا

और उसी की तरफ़ (तुम्हें) लौट कर जाना है। (३) जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, वह सब जानता है और जो कुछ तुम छिपा कर करते हो और जो खुल्लम-खुल्ला करते हो, उस से भी आगाह है और ख़ुदा दिल के भेदों को जानता है। (४) क्या तुम को उन लोगों के हाल की ख़बर नहीं पहुची, जो पहले काफ़िर हुए थे, तो उन्हों ने अपने कामों की सज़ा का मज़ा चख लिया और (अभी) दुख देने वाला अज़ाब (और) होना है। (५) यह इस लिए कि उन के पास पैग़म्बर खुली निशानियां ले कर आते तो यह कहते कि क्या आदमी हमारे हादी बनते हैं ? तो उन्हों ने (उन को) न माना और मुंह फेर लिया और ख़ुदा ने भी बे-परवाई की और ख़ुदा बे-परवा (और) तारीफ़ (व सना) के लायक़ है। (६) जो लोग काफ़िर हैं, उन का एतक़ाद है कि वे (दोबारा) हर गिज़ नहीं उठाए जाएंगे। कह दो कि हां, मेरे परवरदिगार की क़सम ! तुम ज़रूर उठाए जाओगे, फिर जो-जो काम तुम करते रहे हो, वे तुम्हें बताए जाएंगे और यह (बात) ख़ुदा को आसान है। (७) तो ख़ुदा पर और उस के रसूल पर और नूर (क़ुरआन) पर जो हम ने नाज़िल फ़रमाया है, ईमान लाओ और ख़ुदा तुम्हारे सब आमाल से ख़बरदार है। (८) जिस दिन वह तुम को इकट्ठा होने (यानी क़ियामत) के दिन इकट्ठा करेगा वह नुक़्सान उठाने का दिन है और जो शख़्स ख़ुदा पर ईमान लाए और नेक अमल करे वह उस से उस की बुराइयां दूर कर देगा। और जन्नत के बाग़ों में, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, दाख़िल करेगा, हमेशा उन में रहेंगे। यह बड़ी कामियाबी है। (९) और जिन्हों ने कुफ़्र किया और हमारी आयतों को झुठलाया, वही दोज़ख़ वाले हैं, हमेशा उसी में रहेंगे और वह बुरी जगह है (१०) ★ ●

कोई मुसीबत नाज़िल नहीं होती मगर ख़ुदा के हुक्म से और जो शख़्स ख़ुदा पर ईमान लाता है, वह उस के दिल को हिदायत देता है और ख़ुदा हर चीज़ से बा-ख़बर है। (११) और ख़ुदा की इताअत करो और उस के रसूल की इताअत करो। अगर तुम मुंह फेर लोगे, तो हमारे पैग़म्बर के ज़िम्मे तो सिर्फ़ पैग़ाम का खोल-खोल कर पहुंचा देना है। (१२) ख़ुदा (जो सच्चा माबूद है, उस) के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, तो मोमिनों को चाहिए कि ख़ुदा ही पर भरोसा रखें। (१३) मोमिनो ! तुम्हारी औरतों और औलाद में से कुछ तुम्हारे दुश्मन (भी) हैं, उन से बचते रहो और अगर माफ़ कर दो और दरगुज़र करो और बख़्श दो तो ख़ुदा भी बख़्शने वाला मेहरबान

★रु. १/१५ आ १० ●सू. ३/४

इन्नमा अम्वालुकुम् व औलादुकुम् फ़ित्-नतुन्ᵇ वल्लाहु अिन्दहू अज्रुन् अ़ज़ीम (१५) फ़त्तक़ुल्ला-ह मस्त-त़अ्-तुम् वस्-मअ़ू व अत़ीअ़ू व अन्फ़िक़ू ख़ैरल्-लिअन्फ़ुसिकुम्ᵇ व मंय्यू-क़ शुह़्-ह़ नफ़्सिही फ़उलाइ-क हुमुल्-मुफ़्लिह़ू-न (१६) इन् तुक़्रिज़ुल्ला-ह क़र्-ज़न् ह़-स-नंय्युज़ाअिफ़्हु लकुम् व यग़्फ़िर् लकुम्ᵇ वल्लाहु शकूरुन् ह़लीम (१७) आ़लिमुल्ग़ैबि वश्शहादतिल्-अ़ज़ीज़ुल्-ह़कीम★(१८)

وتغفروا فان الله غفور رحيم ۝ انما اموالكم واولادكم فتنة
والله عنده اجر عظيم ۝ فاتقوا الله ما استطعتم واسمعوا
واطيعوا وانفقوا خيرا لانفسكم ومن يوق شح نفسه فاولئك
هم المفلحون ۝ ان تقرضوا الله قرضا حسنا يضعفه لكم ويغفر لكم
والله شكور حليم ۝ علم الغيب والشهادة العزيز الحكيم ۝

سورة الطلاق مدنية وهي اثنتا عشرة اية وفيها ركوعان

بسم الله الرحمن الرحيم

يايها النبي اذا طلقتم النساء فطلقوهن لعدتهن واحصوا
العدة واتقوا الله ربكم لا تخرجوهن من بيوتهن ولا
يخرجن الا ان ياتين بفاحشة مبينة وتلك حدود
الله ومن يتعد حدود الله فقد ظلم نفسه لا تدري
لعل الله يحدث بعد ذلك امرا ۝ فاذا بلغن اجلهن
فامسكوهن بمعروف او فارقوهن بمعروف واشهدوا ذوي
عدل منكم واقيموا الشهادة لله ذلكم يوعظ به من
كان يؤمن بالله واليوم الاخر ومن يتق الله يجعل له
مخرجا ۝ ويرزقه من حيث لا يحتسب ومن يتوكل
على الله فهو حسبه ان الله بالغ امره قد جعل الله لكل

६५ सूरतुत्तलाक़ि ९९

(मदनी) इस सूरः में अरबी के १२३७ अक्षर, २६८ शब्द, १२ आयतें और २ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रहीम •

या अय्युहन्नबिय्यु इज़ा तल्लक़्तुमुन्नि-सा-अ फ़-तल्लिक़ूहुन्-न लिअि़द्दतिहिन्-न व अह़्सुल्-अि़द्द-त वत्तक़ुल्ला-ह रब्बकुम् ला तुख़्रिजूहुन्-न मिम्-बुयूतिहिन्-न व ला यख़्रुज्-न इल्ला अंय्यअ्ती-न बिफ़ाह़िशतिम्-मुबय्यिनतिन्ᵇ व तिल-क हुदूदुल्लाहिᵇ व मंय्य-त-अ़द्-द हुदू-दल्लाहि फ़-क़द् ज़-ल-म नफ़्सहूᵇ ला तद्री ल-अ़ल्लल्ला-ह युह़्दिसु बअ़्-द ज़ालि-क अम्रा (१) फ़-इज़ा ब-लग़्-न अ-ज-लहुन्-न फ़-अम्सिकूहुन्-न बिमअ़्-रूफ़िन् औ फ़ारिक़ूहुन्-न बिमअ़्-रूफ़िंव्-व अश्हिदू ज़वै अ़द्लिम्-मिन्कुम् व अक़ीमुश्शहाद-त लिल्लाहिᵇ ज़ालिकुम् यू-अ़ज़ु बिही मन् का-न युअ्मिनु बिल्लाहि वल्-यौमिल्-आख़िरिᵇ व मंय्यत्तक़िल्ला-ह यज्-अ़ल् लहू मख़्-र-जंव्- (२) व यर्ज़ुक़्हु मिन् हैसु ला यह़्-तसिबुᵇ व मंय्य-त-वक्कल् अ़लल्लाहि फ़हु-व ह़स्बुहूᵇ इन्नल्ला-ह बालिग़ु अम्रिहीᵇ क़द् ज-अ़-लल्लाहु लिकुल्लि शैइन् क़द्रा (३)

★रु. २/१६ आ ८

है। (१४) तुम्हारा माल और तुम्हारी औलाद तो आज़माइश है और ख़ुदा के यहां बड़ा बदला है। (१५) सो जहां तक हो सके, ख़ुदा से डरो और (उस के हुक्मों को) सुनो और उसके फ़रमांबरदार (उस की राह में) ख़र्च करो, (यह) तुम्हारे हक़ में बेहतर है और जो शख़्स तबीयत के बुख़्ल से बचाया गया तो ऐसे ही लोग राह पाने वाले हैं। (१६) अगर तुम ख़ुदा को (इख़्लास और नीयत) नेक (से) क़र्ज़ दोगे, तो वह तुम को उस का दो गुना देगा और तुम्हारे गुनाह भी माफ़ कर देगा और ख़ुदा क़द्र शनास और बुर्दबार है। (१७) छिपे और खुले का जानने वाला ग़ालिब (और) हिक्मत वाला। (१८)★

६५ सूरः तलाक़ ६६

सूरः तलाक़ मदनी है। इस में बारह आयतें और दो रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

ऐ पैग़म्बर! (मुसलमानों से कह दो कि) जब तुम औरतों को तलाक़ देने लगो, तो उन की इद्दत के शुरू में तलाक़ दो[1] और इद्दत को गिनते रहो और ख़ुदा से, जो तुम्हारा परवरदिगार है, डरो। (न तो तुम ही) उन को (इद्दत के दिनों में) उन के घरों से निकालो और न वे (ख़ुद ही) निकलें। हां, अगर वे खुली बे-हयाई करें (तो निकाल देना चाहिए) और ये ख़ुदा की हदें हैं। जो ख़ुदा की हदों से आगे बढ़ेगा, वह अपने आप पर ज़ुल्म करेगा। (ऐ तलाक़ देने वाले!) तुझे क्या मालूम, शायद ख़ुदा इसके बाद कोई (रुजूअ होने का) रास्ता पैदा कर दे। (१) (फिर जब वह अपनी मीयाद (यानी इद्दत पूरी होने) के क़रीब पहुंच जाएं, तो या तो उन को अच्छी तरह से (ज़ौजियत में) रहने दो या अच्छी तरह से अलग कर दो और अपने में से दो इन्साफ़पसन्द मर्दों को गवाह कर लो और (गवाहो!) ख़ुदा के लिए ठीक गवाही देना। इन बातों से उस शख़्स को नसीहत की जाती है, जो ख़ुदा पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है और जो कोई ख़ुदा से डरेगा, वह उस के लिए (रंज व ग़म से) मुख़्लिसी की शक्ल पैदा कर देगा। (२) और उस को ऐसी जगह से रोज़ी देगा, जहां से (वह्म व) गुमान भी न हो और जो ख़ुदा पर भरोसा रखेगा, तो वह उस को किफ़ायत करेगा। ख़ुदा अपने काम को (जो वह करना चाहता है) पूरा कर देता है। ख़ुदा ने हर चीज़ का

१. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० से रिवायत है कि उन्हों ने अपनी बीवी को तलाक़ दी और वह उस वक़्त हैज़ से थीं। हज़रत उमर रज़ि० ने जनाब रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में इस का ज़िक्र किया तो आप गुस्सा हुए और रुजूअ कर लेने का हुक्म दिया और फ़रमाया कि इसे रहने देना चाहिए, यहां तक कि पाक हो जाए, फिर हैज़ आए फिर पाक हो, फिर अगर तलाक़ देनी चाहे, तो हम-बिस्तर होने से पहले तलाक़ दो। यह वह इद्दत है, जिस को ख़ुदा ने इर्शाद फ़रमाया है कि औरतों को उन की इद्दत के शुरू में तलाक़ दो और यह आयत पढ़ी—'या अय्युहन्नबीयु इज़ा तल्लक़्तुमुन्निसा-अ फ़तल्लिक़ूहुन-न लि इद्दतिहिन-न'।

★रु० २/१६ आ ८

वल्लाई य-इस्-न मिनल्-महीज़ि मिन् निसाइकुम् इनिर्तब्तुम् फ़अिद्दतुहुन्-न सलासतु अश्हुरिंव्-वल्लाई लम् यहिज़्-न ط व उलातुल्-अह्मालि अ-जलुहुन्-न अंय्य-ज़अ्-न हम्ल-हुन्-न ط व मंय्यत्तक़िल्ला-ह यज्-अल् लहू मिन् अम्रिही युस्रा (४) ज़ालि-क अम्रुल्लाहि अन्ज़-लहू इलैकुम् ط व मंय्यत्तक़िल्ला-ह युकफ़्फ़िर् अन्हु सय्यिआतिही व युअ्-ज़िम् लहू अज्रा (५) अस्किनूहुन्-न मिन् हैसु स-कन्तुम् मिंव्वुज्दिकुम् व ला तुज़ार्-रूहुन्-न लितुज़य्यिक़ू अलैहिन्-न ط व इन् कुन्-न उलाति हम्लिन् फ़-अन्फ़िक़ू अलैहिन्-न हत्ता य-ज़अ्-न हम्-लहुन-न ج फ़-इन् अर्ज़अ्-न लकुम् फ़आतूहुन्-न उजूरहुन्-न ج वअ्तमिरू बैनकुम् बिमअ् - रूफ़िन् ج व इन् त - आसर्तुम् फ़ - स - तुर्ज़िअु लहू उख़्रा ط (६) लियुन्फ़िक़् ज़ू स-अतिम् - मिन् स-अतिही ط व मन् क़ुदि-र अलैहि रिज़्क़ुहू फ़ल्युन्फ़िक़् मिम्मा आताहुल्लाहु ط ला युकल्लिफ़ुल्लाहु नफ़्सन् इल्ला मा आताहा ط सयज्-अलुल्लाहु बअ्-द अुस्रिय्युस्रा ★ (७)व क-अय्यिम्-मिन् क़र्यतिन् अ-तत् अन् अम्रि रब्बिहा व रुसुलिही फ़-हासब्नाहा हिसाबन् शदीदंव्-व अज़्ज़ब्नाहा अज़ाबन् नुक्रा (८) फ़ - ज़ाक़त् वबा - ल अम्रिहा व का-न आक़िबतु अम्रिहा ख़ुस्रा (९) अ-अद्दल्लाहु लहुम् अज़ाबन् शदीदन् ٥ फ़त्तक़ुल्ला - ह या उलिल् - अल्बाबि- ج -ल्लज़ी - न आमनू قف क़द् अन्ज़-लल्लाहु इलैकुम् ज़िक्रर्- ٥ (१०) रसूलंय्यत्लू अलैकुम् आयातिल्लाहि मुबय्यिनातिल् - लियुख़्रिजल् - लज़ी - न आमनू व अमिलुस्सालिहाति मिनज़्ज़ुलुमाति इलन्नूरि ط व मंय्युअ्मिम् - बिल्लाहि व यअ् - मल् सालिहंय्युद्ख़िल्हु जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल् - अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा अ-ब-दन् ط क़द् अह्-स-नल्लाहु लहू रिज़्क़ा (११)

الطلاق ٦٥ قد سمع الله ٢٨

شيء قدرا ۝ والئي يئسن من المحيض من نسائكم ان
ارتبتم فعدتهن ثلثة اشهر والئي لم يحضن واولات الاحمال
اجلهن ان يضعن حملهن ومن يتق الله يجعل له من امره
يسرا ۝ ذلك امر الله انزله اليكم ومن يتق الله يكفر عنه
سيأته ويعظم له اجرا ۝ اسكنوهن من حيث سكنتم
من وجدكم ولا تضاروهن لتضيقوا عليهن وان كن اولات
حمل فانفقوا عليهن حتى يضعن حملهن فان ارضعن
لكم فاتوهن اجورهن وأتمروا بينكم بمعروف وان
تعاسرتم فسترضع له اخرى ۝ لينفق ذو سعة من سعته
ومن قدر عليه رزقه فلينفق مما اته الله لا يكلف
الله نفسا الا ما اتها سيجعل الله بعد عسر يسرا ۝ و
كاين من قرية عتت عن امر ربها ورسله فحاسبنها حسابا
شديدا وعذبنها عذابا نكرا ۝ فذاقت وبال امرها وكان
عاقبة امرها خسرا ۝ اعد الله لهم عذابا شديدا فاتقوا الله
يأولي الالباب الذين امنوا قد انزل الله اليكم ذكرا ۝
رسولا يتلوا عليكم ايت الله مبينت ليخرج الذين امنوا وعملوا
الصلحت من الظلمت الى النور ومن يؤمن بالله ويعمل

منزل

★रु. १/१७ आ ७ .·. मु. अि मु त क़. १४

अन्दाज़ा मुक़र्रर कर रखा है। (३) और तुम्हारी (तलाक़ पायी) औरतें जो हैज़ से ना-उम्मीद हो चुकी हों, अगर तुम को (उन की इद्दत के बारे में) शुब्हा हो, तो उन की इद्दत तीन महीने है और जिन को अभी हैज़ नहीं आने लगा, (उन की इद्दत भी यही है) और हमल वाली औरतों की इद्दत हमल होने (यानी बच्चा जनने) तक है। और जो ख़ुदा से डरेगा, ख़ुदा उस के काम में आसानी पैदा कर देगा। (४) ये ख़ुदा के हुक्म हैं जो ख़ुदा ने तुम पर नाज़िल किए हैं और जो ख़ुदा से डरेगा, वह उस से उस के गुनाह दूर कर देगा और उसे बड़ा बदला बख़्शेगा। (५) (तलाक़ पायी) औरतों को (इद्दत के दिनों में) अपने क़ुदरत के मुताबिक़ वहीं रखो, जहां ख़ुद रहते हो और उन को तंग करने के लिए तक्लीफ़ न दो और अगर हमल से हों, तो बच्चा जनने तक उन का ख़र्च देते रहो। फिर अगर वह बच्चे को तुम्हारे कहने से दूध पिलाएं तो उन को उन की उज्रत दो और (बच्चे के बारे में) पसन्दीदा तरीक़े से मुवाफ़क़त रखो और अगर आपस में ज़िद (और ना-इत्तिफ़ाक़ी) करोगे तो (बच्चे को) उस के (बाप के) कहने से कोई और औरत दूध पिलाएगी। (६) वुस्अत वाले को अपनी वुस्अत के मुताबिक़ ख़र्च करना चाहिए और जिस की रोज़ी में तंगी हो, वह जितना ख़ुदा ने उस को दिया है, उस के मुवाफ़िक़ ख़र्च करे। ख़ुदा किसी को तक्लीफ़ नहीं देता, मगर उसी के मुताबिक़ जो उस को दिया है और ख़ुदा बहुत जल्द तंगी के बाद कुशादगी बख़्शेगा। (७)★

और बहुत-सी बस्तियों (के रहने वालों) ने अपने परवरदिगार और उस के पैग़म्बरों के हुक्मों से सरकशी की, तो हम ने उन को सख़्त हिसाब में पकड़ में लिया और उन पर (ऐसा) अज़ाब नाज़िल किया, जो न देखा था, न सुना। (८) सो उन्हों ने अपने कामों की सज़ा का मज़ा चख लिया और उन का अंजाम नुक़्सान ही तो था। (९) ख़ुदा ने उन के लिए सख़्त अज़ाब तैयार कर रखा है, तो ऐ अक़्ल वालो! ̈जो ईमान लाए हो, ̈ख़ुदा से डरो। ख़ुदा ने तुम्हारे पास नसीहत (की किताब) भेजी है। (१०) (और अपने) पैग़म्बर (भी भेजे हैं) जो तुम्हारे सामने ख़ुदा की खुली मतलब वाली आयतें पढ़ते हैं, ताकि जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे हैं, उन को अंधेरे से निकाल कर रोशनी में ले आएं और जो शख़्स ईमान लाएगा और नेक अमल करेगा, उन को बहिश्त के बाग़ों में दाख़िल करेगा, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, हमेशा-हमेशा उन में रहेंगे। उनको

★रु. १/१७ आ ७ ̈मु. अि मु ता ख़. १४

अल्लाहुल्लज़ी ख़-ल-क़ सब्-अ समावातिव्-व मिनल् - अर्ज़ि मिस् - लहुन-न ط य-त-नज़्ज़लुल्-अम्रु बैनहुन्-न लितअ्-लमू अन्नल्ला-ह अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीरुंव्-व अन्नल्ला-ह क़द् अहा - त बिकुल्लि शैइन् अिल्मा ★ (१२)

صَالِحًا يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ
اَبَدًا ۭ قَدْ اَحْسَنَ اللّٰهُ لَهٗ رِزْقًا ﴿١١﴾ اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ وَّ
مِنَ الْاَرْضِ مِثْلَهُنَّ ۭ يَتَنَزَّلُ الْاَمْرُ بَيْنَهُنَّ لِتَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ عَلٰي كُلِّ
شَيْءٍ قَدِيْرٌ ڏ وَّاَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا ﴿١٢﴾
سُوْرَةُ التَّحْرِيْمِ مَدَنِيَّةٌ وَّهِيَ اثْنَتَا عَشْرَةَ اٰيَةً وَّفِيْهَا رُكُوْعَانِ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَآ اَحَلَّ اللّٰهُ لَكَ ۚ تَبْتَغِيْ مَرْضَاتَ اَزْوَاجِكَ ۭ
وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١﴾ قَدْ فَرَضَ اللّٰهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ اَيْمَانِكُمْ ۚ
وَاللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ ۚ وَهُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ﴿٢﴾ وَاِذْ اَسَرَّ النَّبِيُّ اِلٰى
بَعْضِ اَزْوَاجِهٖ حَدِيْثًا ۚ فَلَمَّا نَبَّاَتْ بِهٖ وَاَظْهَرَهُ اللّٰهُ عَلَيْهِ
عَرَّفَ بَعْضَهٗ وَاَعْرَضَ عَنْۢ بَعْضٍ ۚ فَلَمَّا نَبَّاَهَا بِهٖ قَالَتْ
مَنْ اَنْۢبَاَكَ هٰذَا ۭ قَالَ نَبَّاَنِيَ الْعَلِيْمُ الْخَبِيْرُ ﴿٣﴾ اِنْ تَتُوْبَآ اِلَى
اللّٰهِ فَقَدْ صَغَتْ قُلُوْبُكُمَا ۚ وَاِنْ تَظٰهَرَا عَلَيْهِ فَاِنَّ اللّٰهَ
هُوَ مَوْلٰىهُ وَجِبْرِيْلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ وَالْمَلٰۗىِٕكَةُ بَعْدَ ذٰلِكَ
ظَهِيْرٌ ﴿٤﴾ عَسٰى رَبُّهٗٓ اِنْ طَلَّقَكُنَّ اَنْ يُّبْدِلَهٗٓ اَزْوَاجًا خَيْرًا
مِّنْكُنَّ مُسْلِمٰتٍ مُّؤْمِنٰتٍ قٰنِتٰتٍ تٰۗىِٕبٰتٍ عٰبِدٰتٍ سٰۗىِٕحٰتٍ
ثَيِّبٰتٍ وَّاَبْكَارًا ﴿٥﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ

६६ सूरतुत्तह़रीमि १०७

(मदनी) इस सूरः में अरबी के ११२४ अक्षर, २५३ शब्द, १२ आयतें और २ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

या अय्युहन्नबिय्यु लि-म तुह़रिमु मा अ - ह़ल्लल्लाहु ल-क ج तब्तग़ी मर्-ज़ा-त अज़्वाजि - क ط वल्लाहु ग़फ़ूरुर् - रह़ीम (१) क़द् फ़-र-ज़ल्लाहु लकुम् तह़िल्ल-त ऐमानिकुम् ج वल्लाहु मौलाकुम् ج व हुवल्-अ़लीमुल् - ह़कीम (२) व इज् असर्रन्नबिय्यु इला बअ़् - ज़ि अज़्वाजिही ह़दीसन् ج फ़-लम्मा नब्ब - अत् बिही व अज़्-ह-रहुल्लाहु अ़लैहि अ़र्-र-फ़ बअ़्-ज़हू व अअ़्-र-ज़ अम्-बअ़् - ज़िन् ج फ़-लम्मा नब्ब-अहा बिही क़ालत् मन् अम्ब-अ-क हाज़ा ط क़ा-ल नब्ब-अनि-यल्-अ़लीमुल्-ख़बीर (३) इन् ततूबा इलल्लाहि फ़-क़द् स़-ग़त् क़ुलूबुकुमा ج व इन् तज़ाहरा अ़लैहि फ़-इन्नल्ला-ह हु-व मौलाहु व जिब्रीलु व स़ालिहुल्-मुअ्मिनी-न ج वल्मलाइकतु बअ़् - द ज़ालि - क ज़हीर (४) अ़सा रब्बुहू इन् तल्ल-क़कुन्-न अंय्युब्दि-लहू अज़्-वाजन् ख़ैरम्-मिन्कुन्-न मुस्लिमातिम्-मुअ्मिनातिन् क़ानितातिन् ता-इबातिन् आबिदातिन् साइह़ातिन् सय्यिबातिंव्-व अब्कारा (५)

ख़ुदा ने ख़ूब रोज़ी दी है। (११) ख़ुदा ही तो है, जिस ने सात आसमान पैदा किए और वैसी ही ज़मीनें, उन में (ख़ुदा के) हुक्म उतरते रहते हैं, ताकि तुम लोग जान लो कि ख़ुदा हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है और यह कि ख़ुदा अपने इल्म से हर चीज़ पर एहाता किए हुए है।(१२)★

६६ सूर: तह्रीम १०७

सूर: तह्रीम मदनी है। इस में बारह आयतें और दो रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

ऐ पैग़म्बर! जो चीज़ ख़ुदा ने तुम्हारे लिए जायज़ की है, तुम उस से किनाराकशी क्यों करते हो? (क्या इस से) अपनी बीवियों की ख़ुश्नूदी[1] चाहते हो? और ख़ुदा बख़्शने वाला[2] मेहरबान है। (१) ख़ुदा ने तुम लोगों के लिए तुम्हारी क़स्मों का कफ़्फ़ारा मुक़र्रर कर दिया है और ख़ुदा ही तुम्हारा कारसाज़ है और वह जानने वाला (और) हिक्मत वाला है। (२) और (याद करो) जब पैग़म्बर ने अपनी एक बीवी से एक भेद की बात कही, तो (उस ने दूसरी को बता दी) जब उस ने उस को खोल दिया और ख़ुदा ने इस (हाल) से पैग़म्बर को आगाह कर दिया, तो पैग़म्बर ने (इन बीवी को वह बात) कुछ तो बतायी और कुछ न बतायी[3], तो जब वह उन को बतायी, तो पूछने लगीं कि आप को यह किस ने बताया? उन्हों ने कहा कि मुझे उस ने बताया है, जो जानने वाला ख़बरदार है। (३) अगर तुम दोनों ख़ुदा के आगे तौबा करो, (तो बेहतर है, क्योंकि) तुम्हारे दिल टेढ़े हो गये हैं और अगर पैग़म्बर (की तक्लीफ़) पर आपस में मदद करोगी, तो ख़ुदा और जिब्रील और नेक मुसलमान उन के हामी और दोस्तदार हैं और इन के अलावा (और) फ़रिश्ते भी मददगार हैं। (४) और पैग़म्बर तुम को तलाक़ दे दें तो अजब नहीं कि उन का परवरदिगार तुम्हारे बदले उन को तुम से बेहतर बीवियां दे दे, मुसलमान, ईमान वालियां, फ़रमांबरदार, तौबा करने वालियां, इबादत गुज़ार, रोज़ा रखने वालियां, बिन शौहर और कुंवारियां,[4] (५) मोमिनो! अपने आप को

---

१. कहते हैं आंहज़रत ने अपनी बीवी उम्मुल मोमिनीन हज़रत ज़ैनब के पास शहद पी लिया, जब आप हज़रत आइशा और हज़रत हफ़्सा रज़ि० के पास आए तो उन दोनों ने जैसा कि पहले सलाह कर ली थी, आप से कहा कि आप के मुंह से बू आती है। आप को बू से सख़्त नफ़रत थी, तो आप ने फ़रमाया कि मैं आगे कभी शहद नहीं पियूंगा। कुछ कहते हैं कि हज़रत हफ़्सा को ख़ुश करने के लिए आप ने मारिया क़िब्तिया को, जो आप की हरम और आप के साहबज़ादे इब्राहीम की वालिदा थीं, अपने ऊपर हराम कर लिया था, तब यह आयत उतरी।

२. हलाल चीज़ को अपने ऊपर हराम कर लेना, गोया बुरी बात पर क़सम खाना है, तो जो कफ़्फ़ारा क़सम तोड़ डालने का है, वही हलाल चीज़ को अपने ऊपर हराम कर के फिर हलाल कर लेने का है और क़सम तोड़ने का कफ़्फ़ारा सूर: माइदा में ज़िक्र किया जा चुका है।

३. आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मारिया को अपने ऊपर हराम कर लिया तो हज़रत हफ़्सा से फ़रमाया कि यह हाल किसी से बयान न करना। हफ़्सा और आइशा रज़ि० में बड़ा मेल था। उन्हों ने इस को हज़रत आइशा पर ज़ाहिर कर दिया। अल्लाह तआला ने इस हाल से आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मुत्तला फ़रमाया।

४. सय्यिब (बिन शौहर) उस औरत को कहते हैं, जो ब्याह हो जाने के बाद बे-शौहर हो गयी हो।

★रु० २/१८ आ ५

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू क़ू अन्फ़ु-सकुम् व अह्लीकुम् नारंव्वक़ूदुहन्नासु वल्हिजारतु अ़लैहा मलाइ-कतुन् ग़िलाज़ुन् शिदादुल्ला यअ्-सूनल्ला-ह मा अ-म-रहुम् व यफ़्-अ़लू-न मा युअ्-मरून (६) या अय्युहल्लज़ी-न क-फ़रू ला तअ्-तज़िरुल्-यौ-म ط इन्नमा तुज्ज़ौ-न मा कुन्तुम् तअ्-मलून ★ (७) या अय्युहल्लज़ी-न आमनू तूबू इलल्लाहि तौब - तन् नसूहन् ط अ़सा रब्बुकुम् अंय्युकफ़्फ़ि-र अ़न्कुम् सय्यिआति-कुम् व युद्ख़ि-लकुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह़्तिहल् - अन्हारु ۙ यौ - म ला युख़्ज़िल्लाहुन्नबिय् - य वल्लज़ी-न आमनू म-अ़हू ج नूरुहुम् यस्आ बै - न ऐदीहिम् व बिऐमानिहिम् यक़ूलू-न रब्बना अत्मिम् लना नूरना वग़्फ़िर-लना ج इन्न-क अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (८) या अय्युहन्नबिय्यु जाहिदिल्-कुफ़्फ़ा-र वल्मुनाफ़िक़ी-न वग़्लुज़् अ़लैहिम् ط व मअ् - वाहुम् जहन्नमु ط व बिअ्-सल्-मसीर (९) ज़-र-बल्लाहु म-स-लल्-लिल्लज़ी-न क-फ़-रुम्-र-अ-त नूहिंव्वम्-र-अ-त लूतिन् ط कानता तह्-त अ़ब्दैनि मिन् अ़िबादिना सालिहैनि फ़-ख़ानताहुमा फ़-लम् युग़्निया अ़न्हुमा मिनल्लाहि शैअंव्वक़ीलद्ख़ुलन्ना-र म-अ़द्दाख़िलीन (१०) व ज़-र-बल्लाहु म-स-लल्-लिल्लज़ी-न आमनुम् - र-अ-त फ़िर्औ-न ※ इज़् क़ालत् रब्बिब्नि ली अ़िन्द-क बैतन् फ़िल्जन्नति व नज्जिनी मिन् फ़िर्औ - न व अ़मलिही व नज्जिनी मिनल् - क़ौमिज़् - ज़ालिमीन ۙ (११) व मर्-य-मब्-न-त अ़िम्रानल्लती अह्-स-नत् फ़र-जहा फ़-न-फ़ख़्ना फ़ीहि मिर्रूहिना व सद्-द-क़त् बिकलि-माति रब्बिहा व कुतुबिही व कानत् मिनल् - क़ानितीन ★ (१२)

نَارًا وَّقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلٰٓئِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ
لَّا يَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَآ اَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَعْتَذِرُوا الْيَوْمَ ۭ اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا تُوْبُوْٓا اِلَى اللّٰهِ تَوْبَةً نَّصُوْحًا ۭ عَسٰى رَبُّكُمْ
اَنْ يُّكَفِّرَ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَيُدْخِلَكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا
الْاَنْهٰرُ ۙ يَوْمَ لَا يُخْزِي اللّٰهُ النَّبِيَّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ ۚ نُوْرُهُمْ
يَسْعٰى بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَبِاَيْمَانِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اَتْمِمْ لَنَا نُوْرَنَا
وَاغْفِرْ لَنَا ۚ اِنَّكَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ
الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ۭ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۭ وَبِئْسَ
الْمَصِيْرُ ۝ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوا امْرَاَتَ نُوْحٍ وَّ
امْرَاَتَ لُوْطٍ ۭ كَانَتَا تَحْتَ عَبْدَيْنِ مِنْ عِبَادِنَا صَالِحَيْنِ
فَخَانَتٰهُمَا فَلَمْ يُغْنِيَا عَنْهُمَا مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا وَّقِيْلَ ادْخُلَا النَّارَ
مَعَ الدّٰخِلِيْنَ ۝ وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا امْرَاَتَ
فِرْعَوْنَ ۘ اِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِيْ عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ وَنَجِّنِيْ
مِنْ فِرْعَوْنَ وَعَمَلِهٖ وَنَجِّنِيْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَمَرْيَمَ
ابْنَتَ عِمْرٰنَ الَّتِيْٓ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهِ مِنْ رُّوْحِنَا
وَصَدَّقَتْ بِكَلِمٰتِ رَبِّهَا وَكُتُبِهٖ وَكَانَتْ مِنَ الْقٰنِتِيْنَ ۝

★रु. १/१९ आ ७ ※ व. लाज़िम ★रु. २/२० आ ५

और अपने घर वालों को (जहन्नम की) आग से बचाओ, जिस का ईंधन आदमी और पत्थर हैं और जिस पर तुंदख़ू और सख़्त मिज़ाज फ़रिश्ते (मुक़र्रर) हैं जो इर्शाद ख़ुदा उन को फ़रमाता है, उस की ना-फ़रमानी नहीं करते और जो हुक्म उन को मिलता है, उसे बजा लाते हैं। (६) काफ़िरो! आज बहाने मत बनाओ। जो अमल तुम किया करते हो, उन्हीं का तुम को बदला दिया जाएगा। (७) ★

मोमिनो! ख़ुदा के आगे साफ़ दिल से तौबा करो, उम्मीद है कि वह तुम्हारे गुनाह तुमसे दूर कर देगा और तुम को बहिश्त के बाग़ों में, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, दाख़िल करेगा, उस दिन ख़ुदा पैग़म्बर को और उन लोगों को, जो उन के साथ ईमान लाए हैं, रुसवा नहीं करेगा, (बल्कि) उन का नूर (ईमान) उन के आगे और दाहिनी तरफ़ (रोशनी करता हुआ) चल रहा होगा और वे ख़ुदा से इल्तिजा करेंगे कि ऐ परवरदिगार! हमारा नूर हमारे लिए पूरा कर और हमें माफ़ फ़रमा। बेशक ख़ुदा हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। (८) ऐ पैग़म्बर! काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों से लड़ो और उन पर सख़्ती करो। उन का ठिकाना दोज़ख़ है और वह बहुत बुरी जगह है। (९) ख़ुदा ने काफ़िरों के लिए नूह की बीवी और लूत की बीवी की मिसाल बयान फ़रमायी है दोनों हमारे दो नेक बन्दों के घर में थीं और दोनों ने उन की ख़ियानत की तो वे ख़ुदा के मुक़ाबले में उन औरतों के कुछ भी काम न आए और उन को हुक्म दिया गया कि और दाख़िल होने वालों के साथ तुम भी दोज़ख़ में दाख़िल हो जाओ। (१०) और मोमिनों के लिए (एक) मिसाल (तो) फ़िर्औन की बीवी की बयान फ़रमायी कि उस ने ख़ुदा से इल्तिजा की कि ऐ मेरे परवरदिगार! मेरे लिए बहिश्त में अपने पास एक घर बना और मुझे और उस के आमाल से निजात बख़्श और ज़ालिम लोगों के हाथ से मुझ को मुख़्लिसी अता फ़रमा। (११) और (दूसरी) इम्रान की बेटी मरयम की, जिन्हों ने अपनी शर्मगाह को बचाए रखा तो हम ने उस में अपनी रूह फूंक दी और वह अपने परवरदिगार के कलाम और उस की किताबों को सच्चा समझती थीं और फ़रमांबरदारों में से थीं। (१२) ★

★रु. १/१९ आ ७ व. लाज़िम ★रु. २/ २० आ ५

उन्तीसवां पारः तबा-र-कल्लज़ी

६७ सूरतुल्-मुल्कि ७७

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के १३५९ अक्षर, ३३५ शब्द, ३० आयतें और २ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम •

तबा - र - कल्लज़ी बियदिहिल् - मुल्कु व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (१) अल्लज़ी ख़-ल-क़ल् - मौ-त वल्ह़या-त लि-यब्लु-व-कुम् अय्युकुम् अह़्सनु अ़-म-लन् व हुवल्-अ़ज़ीज़ुल्-ग़फ़ूर (२) अल्लज़ी ख़ - ल - क़ सब् - अ़ समावातिन् तिबाक़न् मा तरा फ़ी ख़ल्क़िर्रह़्मानि मिन् तफ़ावुतिन् फ़र्जिअ़िल् - ब-स़-र हल् तरा मिन् फ़ुतूर (३) सुम्मर्जिअ़िल - ब-स़-र कर्रतैनि यन्क़लिब् इलैकल् - ब-स़रु ख़ासिअंव-व हु-व ह़सीर (४) व ल-क़द् ज़य्यन्नस्समाअद्-दुन्या बिमस़ाबी-ह़ व ज-अ़ल्नाहा रुजूमल्-लिश्शयातीनि व अअ़्-तद्ना लहुम् अ़ज़ाबस्सअ़ीर (५) व लिल्लज़ी-न क-फ़-रू बिरब्बिहिम् अ़ज़ाबु जहन्न-म व बिअ्सल्-मस़ीर (६) इज़ा उल्क़ू फ़ीहा समिअ़ू लहा शहीक़ंव-व हि-य तफ़ूर (७) तकादु त-मय्यज़ु मिनल्ग़ैज़ि कुल्लमा उल्क़ि-य फ़ीहा फ़ौजुन् स-अ-लहुम् ख़-ज़-नतुहा अ-लम् यअ्तिकुम् नज़ीर (८) क़ालू बला क़द् जा-अना नज़ीरुन् फ़-कज़्ज़ब्ना व क़ुल्ना मा नज़्ज़-लल्लाहु मिन् शैइन् इन् अन्तुम् इल्ला फ़ी ज़लालिन् कबीर (९) व क़ालू लौ कुन्ना नस्मअ़ु औ नअ़्क़िलु मा कुन्ना फ़ी अस़्ह़ाबिस्सअ़ीर (१०) फ़अ़्-त-रफ़ू बिज़म्बिहिम् फ़सुह़्क़ल - लि-अस़्ह़ाबिस् - सअ़ीर (११) इन्नल्लज़ी-न यख़्शौ-न रब्बहुम् बिलग़ैबि लहुम् मग़्फ़ि-र-तुंव्-व अज्रुन् कबीर (१२) व असिर्रू क़ौलकुम् अविज-हरू बिही इन्नहू अ़लीमुम् - बिज़ातिस्सुदूर (१३)

سورة الملك مكية وهي ثلثون اية وفيها ركوعان

بسم الله الرحمن الرحيم

تبرك الذي بيده الملك وهو على كل شيء قدير ۝ الذي خلق الموت والحيوة ليبلوكم ايكم احسن عملا وهو العزيز الغفور ۝ الذي خلق سبع سموت طباقا ما ترى في خلق الرحمن من تفوت فارجع البصر هل ترى من فطور ۝ ثم ارجع البصر كرتين ينقلب اليك البصر خاسئا وهو حسير ۝ ولقد زينا السماء الدنيا بمصابيح وجعلنها رجوما للشيطين واعتدنا لهم عذاب السعير ۝ وللذين كفروا بربهم عذاب جهنم وبئس المصير ۝ اذا القوا فيها سمعوا لها شهيقا وهي تفور ۝ تكاد تميز من الغيظ كلما القي فيها فوج سالهم خزنتها الم ياتكم نذير ۝ قالوا بلى قد جاءنا نذير فكذبنا وقلنا ما نزل الله من شيء ان انتم الا في ضلل كبير ۝ وقالوا لو كنا نسمع او نعقل ما كنا في اصحب السعير ۝ فاعترفوا بذنبهم فسحقا لاصحب السعير ۝ ان الذين يخشون ربهم بالغيب لهم مغفرة واجر كبير ۝ واسروا قولكم او اجهروا به انه عليم بذات الصدور ۝ الا يعلم

६७ सूरः मुल्क ७७

सूरः मुल्क मक्की है, इस में तीस आयतें और दो रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

वह (ख़ुदा) जिस के हाथ में बादशाही है, बड़ी बरकत वाला है और वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। (१) उसी ने मौत और ज़िंदगी को पैदा किया, ताकि तुम्हारी आज़माइश करे कि तुम में कौन अच्छे काम करता है और वह ज़बरदस्त (और) बख़्शने वाला है। (२) उस ने सात आसमान ऊपर तले बनाए। (ऐ देखने वाले !) क्या तू (ख़ुदा-ए-) रहमान की कायनात में कुछ कमी देखता है ? ज़रा आंख उठा कर देख, भला तुझ को (आसमान में) कोई दराड़ नज़र आता है। (३) फिर दोबारा (तीसरी बार) नज़र कर, तो नज़र (हर बार) तेरे पास नाकाम और थक कर लौट आएगी। (४) और हम ने क़रीब के आसमान को (तारों के) चिराग़ों से ज़ीनत दी और उन को शैतान के मारने का आला बनाया और उनके लिए दहकती आग का अज़ाब तैयार कर रखा है। (५) और जिन लोगों ने अपने परवरदिगार से इन्कार किया, उन के लिए जहन्नम का अज़ाब है और वह बुरा ठिकाना है। (६) जब वे उस में डाले जाएंगे, तो उस का चीख़ना-चिल्लाना सुनेंगे और वह जोश मार रही होगी। (७) गोया मारे जोश के फट पड़ेगी। जब उस में उन की जमाअत डाली जाएगी, तो दोज़ख़ के दारोग़ा उन से पूछेंगे, तुम्हारे पास कोई हिदायत करने वाला नहीं आया था ? (८) वे कहेंगे, क्यों नहीं, ज़रूर हिदायत करने वाला आया था, लेकिन हम ने उस को झुठला दिया और कहा कि ख़ुदा ने तो कोई चीज़ नाज़िल ही नहीं की। तुम तो बड़ी ग़लती में (पड़े हुए) हो। (९) और कहेंगे, अगर हम सुनते या समझते होते तो दोज़ख़ियों में न होते, (१०) पस वे अपने गुनाहों का इक़रार कर लेंगे, सो दोज़ख़ियों के लिए (ख़ुदा की रहमत से) दूरी है। (११) (और) जो लोग बिन देखे अपने परवरदिगार से डरते हैं, उन के लिए बख़्शिश और बड़ा बदला है। (१२) और तुम (लोग) बात छिपी कहो या ज़ाहिर। वह दिल के भेदों तक को जानता

अला यअ्-लमु मन् ख-लक़ व हुवल्लतीफ़ुल् - ख़बीर ★ (१४) हुवल्लज़ी ज-अ़-ल लकुमुल्अर्-ज़ ज़लूलन् फ़म्शू फ़ी मनाकिबिहा व कुलू मिरिज़्क़िही व इलैहिन्नुशूर (१५) अ अमिन्तुम् मन् फ़िस्समा-इ अंय्यख़्सि-फ़ बिकुमुल्अर-ज़ फ़-इज़ा हि-य तमूर (१६) अम् अमिन्तुम् मन् फ़िस्समा-इ अंय्युर्सि-ल अलैकुम् हासिबन् फ़-स-तअ्-लमू-न कै-फ़ नज़ीर (१७) व ल-क़द् क-ज़्-ज़-बल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् फ़-कै-फ़ का-न नकीर (१८) अ-व लम् यरौ इलत्तैरि फ़ौक़हुम् साफ़्फ़ातिंव्-व यक़्बिज़्-न ※ मा युम्सिकुहुन्-न इल्लर्रह़्मानु इन्नहू बिकुल्लि शैइम् बसीर (१९) अम्मन् हाज़ल्लज़ी हु-व जुन्दुल्लकुम् यन्सुरुकुम् मिन्दूनिर्-रह़्मानि इनिल्काफ़िरू-न इल्ला फ़ी ग़ुरूर (२०) अम्मन् हाज़ल्लज़ी यर्ज़ुक़ुकुम् इन् अम्-स-क रिज़्क़हू बल् लज्जू फ़ी अुतुव्विंव्-व नुफ़ूर (२१) अ-फ़-मंय्यम्शी मुकिब्बन् अला वज्हिही अह्-दा अम्मंय्यम्शी सविय्यन् अला सिरातिम्-मुस्तक़ीम (२२) क़ुल् हुवल्लज़ी अन्श-अकुम् व ज-अ़-ल लकुमुस्सम्-अ़ वल्अब्सा-र वल् - अफ़्इ-द-त क़लीलम्मा तश्कुरून (२३) क़ुल् हुवल्लज़ी ज़-र-अकुम् फ़िल्अर्ज़ि व इलैहि तुह़्शरून (२४) व यक़ूलू-न मता हाज़ल् - वअ्-दु इन कुन्तुम् सादिक़ीन (२५) क़ुल् इन्नमल् - अिल्मु अिन्दल्लाहि व इन्नमा अ-न नज़ीरुम् - मुबीन (२६) फ़-लम्मा रऔहु ज़ुल्-फ़-तन् सी-अत् वुजूहुल्लज़ी-न क-फ़रू व क़ी-ल हाज़ल्लज़ी कुन्तुम् बिही तद्-द-अून (२७) क़ुल् अ-र-ऐतुम् इन् अह्-ल-कनियल्लाहु व मम्मअि-य औ रहि़-मना फ़मंय्युजीरुल्-काफ़िरी-न मिन् अ़ज़ाबिन् अलीम (२८)

مَنْ خَلَقَ ۚ وَهُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ ۝ هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ
ذَلُولًا فَامْشُوا فِي مَنَاكِبِهَا وَكُلُوا مِنْ رِزْقِهِ ۖ وَإِلَيْهِ النُّشُورُ ۝
ءَأَمِنْتُمْ مَنْ فِي السَّمَاءِ أَنْ يَخْسِفَ بِكُمُ الْأَرْضَ فَإِذَا هِيَ
تَمُورُ ۝ أَمْ أَمِنْتُمْ مَنْ فِي السَّمَاءِ أَنْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ۖ
فَسَتَعْلَمُونَ كَيْفَ نَذِيرِ ۝ وَلَقَدْ كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَكَيْفَ
كَانَ نَكِيرِ ۝ أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَى الطَّيْرِ فَوْقَهُمْ صَافَّاتٍ وَيَقْبِضْنَ ۚ
مَا يُمْسِكُهُنَّ إِلَّا الرَّحْمَٰنُ ۚ إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ بَصِيرٌ ۝ أَمَّنْ هَٰذَا
الَّذِي هُوَ جُنْدٌ لَكُمْ يَنْصُرُكُمْ مِنْ دُونِ الرَّحْمَٰنِ ۚ إِنِ الْكَافِرُونَ
إِلَّا فِي غُرُورٍ ۝ أَمَّنْ هَٰذَا الَّذِي يَرْزُقُكُمْ إِنْ أَمْسَكَ رِزْقَهُ ۚ
بَلْ لَجُّوا فِي عُتُوٍّ وَنُفُورٍ ۝ أَفَمَنْ يَمْشِي مُكِبًّا عَلَىٰ وَجْهِهِ
أَهْدَىٰ أَمَّنْ يَمْشِي سَوِيًّا عَلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝ قُلْ هُوَ الَّذِي
أَنْشَأَكُمْ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ ۖ قَلِيلًا مَا تَشْكُرُونَ ۝
قُلْ هُوَ الَّذِي ذَرَأَكُمْ فِي الْأَرْضِ وَإِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ۝ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ
هَٰذَا الْوَعْدُ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝ قُلْ إِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللَّهِ وَإِنَّمَا
أَنَا نَذِيرٌ مُبِينٌ ۝ فَلَمَّا رَأَوْهُ زُلْفَةً سِيئَتْ وُجُوهُ الَّذِينَ كَفَرُوا وَقِيلَ
هَٰذَا الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تَدَّعُونَ ۝ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَهْلَكَنِيَ اللَّهُ وَمَنْ
مَعِيَ أَوْ رَحِمَنَا فَمَنْ يُجِيرُ الْكَافِرِينَ مِنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ۝ قُلْ هُوَ الرَّحْمَٰنُ

★रु. १/१ आ १४ ※ व. लाज़िम् तलाफ़ी व. मं. श. गु फ़्.

है। (१३) भला जिस ने पैदा किया, वह बे-ख़बर है ? वह तो छिपी बातों का जानने वाला और (हर चीज़ से) आगाह है। (१४)★

वही तो है जिस ने तुम्हारे लिए ज़मीन को नर्म किया, तो उस की राहों में चलो-फिरो और ख़ुदा की (दी हुई) रोज़ी खाओ और (तुम को) उसी के पास (क़ब्रों से) निकल कर जाना है।(१५) क्या तुम उस से जो आसमान में है, बे-ख़ौफ़ हो कि तुम को ज़मीन में धंसा दे और वह उस वक़्त हरकत करने लगे। (१६) क्या तुम उस से जो आसमान में है, निडर हो कि तुम पर कंकड़ भरी हवा छोड़ दे, सो तुम बहुत जल्द जान लोगे कि मेरा डराना कैसा है। (१७) और जो लोग इन से पहले थे, उन्हों ने झुठलाया था, सो (देख लो कि) मेरा कैसा अज़ाब हुआ ? (१८) क्या उन्होंने अपने सरों पर उड़ते जानवरों को नहीं देखा जो परों को फैलाए रहते हैं और उन को सुकेड़ भी लेते हैं▨ख़ुदा के सिवा उन्हें कोई थाम नहीं सकता। बेशक वह हर चीज़ को देख रहा है। (१९) भला ऐसा कौन है, जो तुम्हारी फ़ौज हो कर ख़ुदा के सिवा तुम्हारी मदद कर सके। काफ़िर तो धोखे में हैं। (२०) भला अगर वह अपनी रोज़ी बन्द कर ले, तो कौन है जो तुम को रोज़ी दे। लेकिन ये सरकशी और नफ़रत में फंसे हुए हैं। (२१) भला जो शख़्स चलता हुआ मुंह के बल गिर पड़ता है, वह सीधे रास्ते पर है या वह जो सीधे रास्ते पर बराबर चल रहा हो ? (२२) वह ख़ुदा ही तो है, जिस ने तुम को पैदा किया और तुम्हारे कान और आंखें और दिल बनाए, (मगर) तुम कम एहसान मानते हो। (२३) कह दो कि वही है, जिस ने तुम को ज़मीन में फैलाया और उसी के सामने तुम जमा किए जाओगे। (२४) और काफ़िर कहते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो यह धमकी कब (पूरी) होगी ? (२५) कह दो कि इस का इल्म ख़ुदा ही को है और मैं तो खोल-खोल कर डर सुना देने वाला हूं। (२६) सो जब वे देख लेंगे कि वह (वायदा) क़रीब आ गया, तो काफ़िरों के मुंह बुरे हो जाएंगे और (उन से) कहा जाएगा कि यह वही है जिस की तुम ख़्वाहिश करते थे। (२७) कहो कि भला देखो तो अगर ख़ुदा मुझ को और मेरे साथियों को हलाक कर दे या हम पर मेहरबानी करे, तो कौन है जो काफ़िरों को दुख देने वाले अज़ाब से पनाह दे ? (२८) कह दो

★रु. १/१ आ १४ ▨व. लाज़िम् तलाफ़ी व. मं. व. गु फ़.

क़ुल् हुवर्रह्-मानु आमन्ना बिही व अलैहि त-वक्कल्ना फ़-स-तअ्-ल-मू-न मन् हु-व फ़ी ज़लालिम्-मुबीन (२९) क़ुल् अ-र-ऐतुम् इन् अस्ब-ह् मा-उकुम् ग़ौरन् फ़-मंय्यअ्-तीकुम् बिमाइम्-मअीन ★ (३०)

६८ सूरतुल्-क़लमि २

(मक्की) इस सूरः में अरबी के १२९५ अक्षर, ३०६ शब्द, ५२ आयतें और २ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

नून् वल्क़-लमि व मा यस्तुरून (१) मा अन्-त बिनिअ्-मति रब्बि-क बिमज्नून (२) व इन्-न ल-क ल-अज्रन् ग़ै-र मम्नून (३) व इन्न-क ल-अला ख़ुलुक़िन् अज़ीम (४) फ़-स-तुब्सिरु व युब्सिरून (५) बि-अय्यिकुमुल्-मफ़्तून (६) इन्-न रब्ब-क हु-व अअ्-लमु बिमन् ज़ल्-ल अन् सबीलिही व हु-व अअ्-लमु बिल्मुह्-तदीन (७) फ़ला तुतिअिल्-मुकज़्ज़िबीन (८) वद्दू लौ तुद्हिनु फ़युद्हिनून (९) वला तुतिअ् कुल्-ल हल्लाफ़िम्-महीन (१०) हम्माज़िम्-मश्शाइम्-बिनमीमिम्-(११) -मन्नाअिल्-लिल्ख़ैरि मुअ्-तदिन् असीम (१२) अुतुल्लिम्-बअ्-द ज़ालि-क ज़नीम (१३) अन् का-न ज़ा मालिंव-व बनीन (१४) इज़ा तुत्ला अलैहि आयातुना क़ा-ल असातीरुल्-अव्वलीन (१५) स-नसिमुहू अलल्-ख़ुर्तूम (१६) इन्ना बलौनाहुम् कमा बलौना अस्हाबल्-जन्नति इज़् अक़्समू ल-यस्रिमुन्नहा मुस्बिहीन (१७) व ला यस्-तस्-नून (१८) फ़-ता-फ़ अलैहा ताइफ़ुम्-मिर्रब्बि-क व हुम् नाइमून (१९) फ़-अस्-ब-हत् कस्सरीम (२०) फ़-तनादौ मुस्बिहीन (२१) अनिग़्दू अला हर्सिकुम् इन् कुन्तुम् सारिमीन (२२) फ़न्-त-लक़ू व हुम् य-त-ख़ाफ़तून (२३) अल्ला यद्ख़ुलन्नहल्-यौ-म अलैकुम् मिस्कीन (२४) व ग़दौ अला हर्दिन् क़ादिरीन (२५)

ءَامَنَّا بِهِۦ وَعَلَيْهِ تَوَكَّلْنَا فَسَتَعْلَمُونَ مَنْ هُوَ فِى ضَلَـٰلٍ مُّبِينٍ ۝ قُلْ
أَرَءَيْتُمْ إِنْ أَصْبَحَ مَآؤُكُمْ غَوْرًا فَمَن يَأْتِيكُم بِمَآءٍ مَّعِينٍۭ ۝
سُوْرَةُ الْقَلَمِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ اثْنَتَانِ وَخَمْسُوْنَ اٰيَةً وَّفِيْهَا رُكُوْعَانِ
بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَـٰنِ ٱلرَّحِيمِ
نٓ وَٱلْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُونَ ۝ مَآ أَنتَ بِنِعْمَةِ رَبِّكَ بِمَجْنُونٍ ۝ وَ
إِنَّ لَكَ لَأَجْرًا غَيْرَ مَمْنُونٍ ۝ وَإِنَّكَ لَعَلَىٰ خُلُقٍ عَظِيمٍ ۝ فَسَتُبْصِرُ
وَيُبْصِرُونَ ۝ بِأَييِّكُمُ ٱلْمَفْتُونُ ۝ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَن ضَلَّ
عَن سَبِيلِهِۦ وَهُوَ أَعْلَمُ بِٱلْمُهْتَدِينَ ۝ فَلَا تُطِعِ ٱلْمُكَذِّبِينَ ۝
وَدُّوا۟ لَوْ تُدْهِنُ فَيُدْهِنُونَ ۝ وَلَا تُطِعْ كُلَّ حَلَّافٍ مَّهِينٍ ۝
هَمَّازٍ مَّشَّآءٍۭ بِنَمِيمٍ ۝ مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ أَثِيمٍ ۝ عُتُلٍّۭ بَعْدَ
ذَٰلِكَ زَنِيمٍ ۝ أَن كَانَ ذَا مَالٍ وَبَنِينَ ۝ إِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِ ءَايَـٰتُنَا
قَالَ أَسَـٰطِيرُ ٱلْأَوَّلِينَ ۝ سَنَسِمُهُۥ عَلَى ٱلْخُرْطُومِ ۝ إِنَّا بَلَوْنَـٰهُمْ
كَمَا بَلَوْنَآ أَصْحَـٰبَ ٱلْجَنَّةِ إِذْ أَقْسَمُوا۟ لَيَصْرِمُنَّهَا مُصْبِحِينَ ۝ وَ
لَا يَسْتَثْنُونَ ۝ فَطَافَ عَلَيْهَا طَآئِفٌ مِّن رَّبِّكَ وَهُمْ نَآئِمُونَ ۝
فَأَصْبَحَتْ كَٱلصَّرِيمِ ۝ فَتَنَادَوْا۟ مُصْبِحِينَ ۝ أَنِ ٱغْدُوا۟ عَلَىٰ
حَرْثِكُمْ إِن كُنتُمْ صَـٰرِمِينَ ۝ فَٱنطَلَقُوا۟ وَهُمْ يَتَخَـٰفَتُونَ ۝
أَن لَّا يَدْخُلَنَّهَا ٱلْيَوْمَ عَلَيْكُم مِّسْكِينٌ ۝ وَغَدَوْا۟ عَلَىٰ حَرْدٍ

★रु. २/२ आ १६

कि वह (जो ख़ुदा-ए-) रहमान (है) हम उसी पर ईमान लाए और उसी पर भरोसा रखते हैं। तुम को जल्द मालूम हो जाएगा कि खुली गुमराही में कौन पड़ रहा था। (२९) कहो कि भला देखो तो, अगर तुम्हारा पानी (जो तुम पीते हो और बरतते हो) ख़ुश्क हो जाए तो (ख़ुदा के सिवा) कौन है जो तुम्हारे लिए मीठे पानी का चश्मा बहा लाए? (३०)★

६८ सूरः क़लम २

सूरः क़लम मक्की है। इस में ५२ आयतें और दो रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

नून, क़लम की और जो (क़लम वाले) लिखते हैं, उन की क़सम, (१) कि (ऐ मुहम्मद!) तुम अपने परवरदिगार के फ़ज़्ल से दीवाने नहीं हो, (२) और तुम्हारे लिए बे-इंतिहा बदला है, (३) और तुम्हारे अख़्लाक़ बड़े (बुलंद) हैं, (४) सो बहुत जल्द तुम भी देख लोगे और ये (काफ़िर) भी देख लेंगे, (५) कि तुम में से कौन दीवाना है। (६) तुम्हारा परवरदिगार उस को भी ख़ूब जानता है, जो उस के रास्ते से भटक गया और उन को भी ख़ूब जानता है, जो सीधे रास्ते पर चल रहे हैं, (७) तो तुम झुठलाने वालों का कहा न मानना। (८) ये लोग चाहते हैं कि तुम नर्मी अख़्तियार करो, तो ये भी नर्म हो जाएं, (९) और किसी ऐसे शख़्स के कहे में न आ जाना, जो बहुत क़स्में खाने वाला, ज़लील औक़ात है, (१०) तानों भरे इशारे करने वाला, चुग़लियां लिए फिरने वाला, (११) माल में बुख़्ल करने वाला, हद से बढ़ा हुआ बद-कार, (१२) सख़्त मिज़ाज और इस के अलावा बद-ज़ात है, (१३) इस वजह से कि माल और बेटे रखता है, (१४) जब उस को हमारी आयतें पढ़ कर सुनायी जाती हैं, तो कहता है कि ये अगले लोगों की कहानियां हैं, (१५) हम बहुत जल्द उस की नाक पर दाग़ लगाएंगे। (१६) हम ने उन लोगों की इसी तरह आज़माइश की है, जिस तरह बाग़ वालों की आज़माइश की थी, जब उन्हों ने क़स्में खा-खा कर कहा कि सुबह होते-होते हम इस का मेवा तोड़ लेंगे। (१७) और इन्शाअल्लाह न कहा, (१८) सो वे अभी सो रहे थे कि तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से (रातों-रात) उस पर एक आफ़त फिर गयी, (१९) तो वह ऐसा हो गया जैसे कटी हुई खेती। (२०) जब सुबह हुई तो वे लोग एक दूसरे को पुकारने लगे, (२१) कि अगर तुम को काटना है तो अपनी खेती पर सवेरे ही जा पहुंचो, (२२) तो वे चल पड़े और आपस में चुपके-चुपके कहते जाते थे, (२३) कि आज यहां तुम्हारे पास कोई फ़क़ीर न आने पाये, (२४) और कोशिश के साथ सवेरे ही जा पहुंचे (गोया खेती पर) क़ुदरत रखते (हैं) (२५) जब बाग़ को

★रु. २/२ आ. ८६

फ़-लम्मा रऔहा क़ालू इन्ना लज़ाल्लून ॥ (२६) बल् नह्नु मह्रूमून (२७) क़ा-ल औसतुहुम् अ-लम् अक़ुल् लकुम् लौला तुसब्बिहून (२८) क़ालू सुब्हा-न रब्बिना इन्ना कुन्ना ज़ालिमीन (२९) फ़-अक़्-ब-ल बअ्-ज़ुहुम् अला बअ्ज़िय्य-त-लावमून (३०) क़ालू यावैलना इन्ना कुन्ना ताग़ीन (३१)

असा रब्बुना अंय्युब्दि - लना ख़ैरम्मिन्हा इन्ना इला रब्बिना राग़िबून (३२) कज़ालिकल् - अ़ज़ाबु ♭ व ल - अ़ज़ाबुल्-आख़िरति अक्बरु ※ लौ कानू यअ्-लमून ★ (३३) इन्-न लिलमुत्तक़ी-न अिन्-द रब्बिहिम जन्नातिन्नअ़ीम (३४) अ-फ़-नज्अ़लुल् - मुस्-लिमी - न कल्मुज्रिमीन ♭ (३५) मा लकुम् वक़्फ़ कै-फ़ तह्कुमून (३६) अम लकुम् किताबुन् फ़ीहि तद्रुसून ॥ (३७) इन्-न लकुम् फ़ीहि लमा त-ख़य्यरून (३८) अम लकुम् ऐमानुन् अलैना बालि-ग़-तुन् इला यौमिल-क़ियामति ॥ इन् - न लकुम् लमा तह्कुमून (३९) सल् - हुम अय्युहुम

قَدِرِينَ ۝ فَلَمَّا رَأَوْهَا قَالُوا إِنَّا لَضَالُّونَ ۝ بَلْ نَحْنُ مَحْرُومُونَ ۝
قَالَ أَوْسَطُهُمْ أَلَمْ أَقُل لَّكُمْ لَوْلَا تُسَبِّحُونَ ۝ قَالُوا سُبْحَانَ
رَبِّنَا إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ ۝ فَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَلَاوَمُونَ ۝
قَالُوا يَا وَيْلَنَا إِنَّا كُنَّا طَاغِينَ ۝ عَسَىٰ رَبُّنَا أَن يُبْدِلَنَا خَيْرًا
مِّنْهَا إِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا رَاغِبُونَ ۝ كَذَٰلِكَ الْعَذَابُ ۖ وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ
أَكْبَرُ ۚ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ۝ إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ عِندَ رَبِّهِمْ جَنَّاتِ
النَّعِيمِ ۝ أَفَنَجْعَلُ الْمُسْلِمِينَ كَالْمُجْرِمِينَ ۝ مَا لَكُمْ كَيْفَ
تَحْكُمُونَ ۝ أَمْ لَكُمْ كِتَابٌ فِيهِ تَدْرُسُونَ ۝ إِنَّ لَكُمْ فِيهِ لَمَا
تَخَيَّرُونَ ۝ أَمْ لَكُمْ أَيْمَانٌ عَلَيْنَا بَالِغَةٌ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ ۙ إِنَّ لَكُمْ
لَمَا تَحْكُمُونَ ۝ سَلْهُمْ أَيُّهُم بِذَٰلِكَ زَعِيمٌ ۝ أَمْ لَهُمْ شُرَكَاءُ
فَلْيَأْتُوا بِشُرَكَائِهِمْ إِن كَانُوا صَادِقِينَ ۝ يَوْمَ يُكْشَفُ عَن سَاقٍ
وَيُدْعَوْنَ إِلَى السُّجُودِ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ ۝ خَاشِعَةً أَبْصَارُهُمْ
تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ۖ وَقَدْ كَانُوا يُدْعَوْنَ إِلَى السُّجُودِ وَهُمْ سَالِمُونَ ۝
فَذَرْنِي وَمَن يُكَذِّبُ بِهَٰذَا الْحَدِيثِ ۖ سَنَسْتَدْرِجُهُم مِّنْ حَيْثُ
لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَأُمْلِي لَهُمْ ۚ إِنَّ كَيْدِي مَتِينٌ ۝ أَمْ تَسْأَلُهُمْ
أَجْرًا فَهُم مِّن مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُونَ ۝ أَمْ عِندَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ
يَكْتُبُونَ ۝ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تَكُن كَصَاحِبِ الْحُوتِ إِذْ

बिज़ालि - क ज़अ़ीम (४०) अम लहुम् शु - र-काउ फ़ल् - यअ्तू बि - शु-र-काइ - हिम इन् कानू सादिक़ीन (४१) यौ-म युक्शफ़ु अन साक़िव्-व युद्औ - न इलस्सुजूदि फ़ला यस्ततीअ़ून ॥ (४२) ख़ाशि - अ - तन् अब्सारुहुम तर्हक़ुहुम ज़िल्लतुन् ♭ व क़द कानू युद्औ-न इलस्सुजूदि व हुम सालिमून (४३) फ़ - ज़र्नी व मंय्युकज़्ज़िबु बिहाज़ल् - हदीसि ♭ स-नस्तद्रिजुहुम मिन हैसु ला यअ्-लमून ॥ (४४) व उम्ली लहुम् ♭ इन्-न कैदी मतीन (४५) अम् तस्-अलुहुम् अज्-रन् फ़हुम् मिम् - मग़्-रमिम् - मुस्क़लून (४६) अम् अिन्द-हुमुल-ग़ैबु फ़हुम् यक्तुबून (४७) फ़स्-बिर लिहुक्मि रब्बि-क व ला तकुन् क-साहिबिल् - हूति ※ इज् नादा व हु - व मक्ज़ूम ♭ (४८)

※ व. लाज़िम ★ रु. १/३ आ ३३, मु. बि मु ता ख. १५ ※ व. लाज़िम

देखा तो (वीरान,) कहने लगे कि हम रास्ता भूल गये हैं। (२६) नहीं, बल्कि हम (बिगड़ी क़िस्मत के) बे-नसीब हैं। (२७) एक जो उनमें से अक़्लमंद था, बोला, क्या मैं ने तुम से नहीं कहा था, कि तुम तस्बीह क्यों नहीं करते ? (२८) (तब) वे कहने कि हमारा परवरदिगार पाक है। बेशक हम ही क़ुसूरवार थे। (२९) फिर लगे एक दूसरे को आमने-सामने मलामत करने, (३०) कहने लगे, हाय शामत ! हम ही हद से बढ़ गये थे। (३१) उम्मीद है कि हमारा परवरदिगार इस के बदले में हमें इस से बेहतर बाग़ इनायत करे, हम अपने परवरदिगार की तरफ़ रुजूअ लाते हैं। (३२) देखो अज़ाब यों होता है और आख़िरत का अज़ाब इस से कहीं बढ़ कर है काश ये लोग जानते होते। (३३) ★

परहेज़गारों के लिए उन के परवरदिगार के यहां नेमत के बाग़ हैं। (३४) क्या हम फ़रमां-बरदारों को नाफ़रमानों की तरह (नेमतों से महरूम) कर देंगे ? (३५) तुम्हें क्या हो गया है, कैसी तज्वीजें करते हो ? (३६) क्या तुम्हारे पास कोई किताब है जिस में (यह) पढ़ते हो, (३७) कि जो चीज तुम पसन्द करोगे, वह तुम को ज़रूर मिलेगी, (३८) या तुम ने हम से क़स्में ले रखी हैं, जो क़ियामत के दिन तक चली जाएंगी कि जिस चीज़ का तुम हुक्म करोगे, वह तुम्हारे लिए हाज़िर होगी, (३९) उन से पूछो कि इन में से इस का कौन ज़िम्मा लेता है ? (४०) क्या (इस क़ौल में) उन के और भी शरीक हैं ? अगर ये सच्चे हैं, तो अपने शरीकों को ला सामने करें, (४१) जिस दिन पिंडुली से कपड़ा उठा दिया जाएगा[1] और कुफ़्फ़ार सज्दे के लिए बुलाए जाएंगे, तो वे सज्दा न कर सकेंगे। (४२) उन की आंखें झुकी हुई होंगी और उन पर ज़िल्लत छा रही होगी, हालांकि पहले (उस वक़्त) सज्दे के लिए बुलाए जाते थे, जब कि सही व सालिम थे। (४३) तो मुझ को इस कलाम के झुठलाने वालों से समझ लेने दो। हम उन को धीरे-धीरे ऐसे तरीक़े से पकड़ेंगे कि उन को ख़बर भी न होगी। (४४) और मैं उन को मोहलत दिए जाता हूं, मेरी तद्बीर मज़बूत है। (४५) क्या तुम उन से कुछ अज्र मांगते हो कि उन पर जुर्माने का बोझ पड़ रहा है, (४६) या उन के पास ग़ैब की ख़बर है कि (उसे) लिखते जाते हैं, (४७) तो अपने परवरदिगार के हुक्म के इंतिज़ार में सब्र किए रहो और मछली का (लुक़्मा होने) वाले (यूनुस) की तरह न होना कि उन्हों ने (ख़ुदा को) पुकारा और वह (ग़म व)

---

१. पिंडुली से कपड़ा उठा देने से मुराद उस वक़्त की तक्लीफ़ है। इसी वास्ते हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि एक बड़ी कड़ी घड़ी होगी।

लौला अन् तदा-र-कहू निअ्-मतुम् - मिर्रब्बिही लनुबि-ज बिल्अराइ व हु-व मज़्मूम (४९) फ़ज्तबाहु रब्बुहू फ़-ज-अ-लहू मिनस्सालिहीन (५०) व इंय्यकादुल्लज़ी-न क-फ़रू लयुज़्लिक़ू-न-क बि-अब्सारिहिम लम्मा समिअुज़्ज़िक्-र व यक़ूलू-न इन्नहू ल-मज्नून ▩ (५१) व मा हु-व इल्ला ज़िक्रुल-लिल्आलमीन ★ ● (५२)

نادى وهو مكظوم ۝ لولا أن تداركه نعمة من ربه لنبذ
بالعراء وهو مذموم ۝ فاجتباه ربه فجعله من الصالحين ۝
وإن يكاد الذين كفروا ليزلقونك بأبصارهم لما سمعوا الذكر
ويقولون إنه لمجنون ۝ وما هو إلا ذكر للعالمين ۝

بسم الله الرحمن الرحيم
الحاقة ۝ ما الحاقة ۝ وما أدراك ما الحاقة ۝ كذبت ثمود
وعاد بالقارعة ۝ فأما ثمود فأهلكوا بالطاغية ۝ وأما عاد
فأهلكوا بريح صرصر عاتية ۝ سخرها عليهم سبع ليال و
ثمانية أيام حسوما فترى القوم فيها صرعى كأنهم أعجاز
نخل خاوية ۝ فهل ترى لهم من باقية ۝ وجاء فرعون
ومن قبله والمؤتفكات بالخاطئة ۝ فعصوا رسول ربهم
فأخذهم أخذة رابية ۝ إنا لما طغا الماء حملناكم في
الجارية ۝ لنجعلها لكم تذكرة وتعيها أذن واعية ۝ فإذا
نفخ في الصور نفخة واحدة ۝ وحملت الأرض والجبال فدكتا
دكة واحدة ۝ فيومئذ وقعت الواقعة ۝ وانشقت السماء فهي
يومئذ واهية ۝ والملك على أرجائها ويحمل عرش ربك

६९ सूरतुल्-हाक़्क़ति ७८

(मक्की) इस सूरः में अरबी के ११३४ अक्षर, २६० शब्द, ५२ आयतें और २ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ●

अल्हाक़्क़तु (१) मल्हाक़्क़ः (२) व मा अद्रा-क मल्हाक़्क़ः (३) कज़्ज़-बत् समूदु व आदुम्-बिल्क़ारिअः (४) फ़-अम्मा समूदु फ़उह्लिकू बित्ताग़ियः (५) व अम्मा आदुन् अुह्लिकू बिरीहिन् सर्सरिन् आतियतिन् (६) सख़्ख़-रहा अलैहिम् सब्-अ लयालिव्-व समानि-य-त अय्यामिन् हुसूमन् फ़-त-रल्-क़ौ-म फ़ीहा सर्आ क-अन्नहुम् अअ्-जाज़ु नख़्लिन् ख़ावियः (७) फ़-हल् तरा लहुम् मिम् - बाक़ियः (८) व जा-अ फ़िर्औनु व मन् क़ब्-लहू वल् - मुअ्-तफ़िकातु बिल्ख़ातिअः (९) फ़-असौ रसू-ल रब्बिहिम् फ़-अ-ख़-ज़-हुम् अख़्-ज़-तर्-राबियः (१०) इन्ना लम्मा तग़ाल्माउ ह्-मल्नाकुम फ़िल्जारियः (११) लिनज्-अ-लहा लकुम् तज़्कि-र-तंव्-व तअि-यहा उज़ुनुंव्वाअियः (१२) फ़इज़ा नुफ़ि - ख़ फ़िस्सूरि नफ़्-ख़तुंव्वाहिदतुंव्- (१३) -व हुमि-लतिल - अर्ज़ु वल्जिबालु फ़-दुक्कता दक्कतंव्वाहि-द-तन् (१४) फ़यौमइज़िंव्व-क़-अतिल - वाक़िअः (१५) वन्-शक़्क़तिस् - समाउ फ़हि - य यौमइज़िंव्वाहि - यतुंव्- (१६) -वल्म-लकु अला अर्जाइहा व यह्मिलु अर् - श रब्बि - क फ़ौक़हुम् यौमइज़िन् समानियः (१७)

▩ व. लाज़िम ★रु. २/४ आ १६ ●रुबअ १/४

गुस्से में भरे हुए थे। (४८) अगर तुम्हारे परवरदिगार की मेहरबानी उन की यावरी न करती, तो वह चटयल मैदान में डाल दिए जाते और उन का हाल बुरा हो जाता। (४६) फिर परवरदिगार ने उन को चुन कर भलों में कर लिया। (५०) और काफ़िर जब (यह) नसीहत (की किताब) सुनते हैं तो यों लगते हैं कि तुम को अपनी निगाहों से फिसला देंगे[1] और कहते हैं कि यह तो दीवाना है ※(५१) और (लोगो!) यह (क़ुरआन) दुनिया वालों के लिए नसीहत है। (५२)★ ●

६६ सूरः हाक़्क़ा ७८

सूरः हाक़्क़ा मक्की है। इस में बावन आयतें और दो रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

सचमुच होने वाली, (१) वह सचमुच होने वाली क्या है? (२) और तुम को क्या मालूम है कि वह सचमुच होने वाली क्या है? (३) (वही) खड़खड़ाने वाली, (जिस) को समूद और आद (दोनों) ने झुठलाया, (४) सो समूद तो कड़क से हलाक कर दिए गए, (५) रहे आद, उन का निहायत तेज़ आंधी से सत्यानाश कर दिया गया, (६) ख़ुदा ने उस को सात रात और आठ दिन उन पर चलाए रखा, तो (ऐ मुख़ातब!) तू लोगों को इस में (इस तरह) ढहे (और मरे) पड़े देखे, जैसे खजूरों के खोखले तने, (७) भला तू उन में से किसी को भी बाक़ी देखता है? (८) और फ़िऔन और जो लोग इस से पहले थे और वे जो उलटी बस्तियों में रहते थे, सब गुनाह के काम करते थे। (६) उन्हों ने अपने परवरदिगार के पैग़म्बर की ना-फ़रमानी की, तो ख़ुदा ने भी उन को बड़ा सख़्त पकड़ा। (१०) जब पानी बाढ़ पर आया, तो हम ने तुम (लोगों) को कश्ती में सवार कर लिया, (११) ताकि उस को तुम्हारे लिए यादगार बनाएं और याद रखने वाले कान उसे याद रखें, (१२) तो जब सूर में एक (बार) फूंक मार दी जाएगी, (१३) और ज़मीन और पहाड़ दोनों उठा लिए जाएंगे, फिर एकबारगी तोड़-फोड़ कर बराबर कर दिए जाएंगे, (१४) तो उस दिन हो पड़ने वाली (यानी क़ियामत) हो पड़ेगी। (१५) और आसमान फट जाएगा तो वह उस दिन कमज़ोर होगा, (१६) और फ़रिश्ते उस के किनारों पर (उतर आएंगे) और तुम्हारे परवरदिगार के अर्श को

---

१. यानी तुम को इस तरह घूर-घूर कर देखते हैं कि तुम डर कर फिसल जाओ, यहां यह मुराद है कि यह तुम्हें बुरी नज़र लगाना चाहते हैं, जिस के असर से ख़ुदा ने तुम को महफ़ूज़ रखा है।

यौमइज़िन् तुअ्-रज़ू-न ला तख़्फ़ा मिन्कुम ख़ाफ़ियः (१८) फ़-अम्मा मन् ऊति-य किताबहू बियमीनिही फ़-यक़ूलु हाउमुक़्रऊ किताबियः (१९) इन्नी ज़नन्तु अन्नी मुलाक़िन् हिसाबियः (२०) फ़हु-व फ़ी ईशतिर्-राज़ियः (२१) फ़ी जन्नतिन् आलियः (२२) क़ुतूफ़ुहा दानियः (२३) कुलू वश्रबू हनीअम्-बिमा अस्-लफ़्तुम फ़िल-अय्यामिल-ख़ालियः (२४) व अम्मा मन् ऊति-य किताबहू बिशिमालिही फ़-यक़ूलु यालैतनी लम् ऊ-त किताबियः (२५) व लम् अदरि मा हिसाबियः (२६) या लैतहा कानतिल-क़ाज़ियः (२७) मा अग़्ना अन्नी मालियः (२८) ह-ल-क अन्नी सुल्तानियः (२९) ख़ुज़ूहु फ़ग़ुल्लूहु (३०) सुम्मल्-जही-म सल्लूहु (३१) सुम-म फ़ी सिलसि-लतिन् ज़र्अुहा सब्ऊ-न ज़िराअन् फ़स्लुकूहु (३२) इन्नहू का-न ला युअ्मिनु बिल्लाहिल-अज़ीम (३३) व ला यहुज़्ज़ु अला तआमिल-मिस्कीन (३४) फ़-लै-स लहुल्यौ-म हाहुना हमीमुंव्- (३५) -व ला तआमुन् इल्ला मिन् ग़िस्लीन (३६) ला यअ्कुलुहू इल्लल्-ख़ातिऊन ★ (३७) फ़ला उक़्सिमु बिमा तुब्सिरून (३८) व मा ला तुब्सिरून (३९) इन्नहू लक़ौलु रसूलिन् करीम (४०) व मा हु-व बिक़ौलि शाअिरिन् क़लीलम्मा तुअ्मिनून (४१) व ला बिक़ौलि काहिनिन् क़लीलम्मा त-ज़क्करून (४२) तन्ज़ीलुम-मिर्रब्बिल-आलमीन (४३) व लौ त-क़व्व-ल अलैना बअ्-ज़ल्-अक़ावीलि (४४) ल-अ-ख़ज़्ना मिन्हु बिल्यमीन (४५) सुम्-म ल-क़-तअ्-ना मिन्हुल-वतीन (४६) फ़मा मिन्कुम् मिन् अ-हदिन् अन्हु हाजिज़ीन (४७) व इन्नहू ल-तज़्कि-र-तुल्-लिल्मुत्तक़ीन (४८)

فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَمَانِيَةٌ ۝ يَوْمَئِذٍ تُعْرَضُونَ لَا تَخْفَىٰ مِنكُمْ خَافِيَةٌ ۝
فَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ بِيَمِينِهِ فَيَقُولُ هَاؤُمُ اقْرَءُوا كِتَابِيَهْ ۝
إِنِّي ظَنَنتُ أَنِّي مُلَاقٍ حِسَابِيَهْ ۝ فَهُوَ فِي عِيشَةٍ رَّاضِيَةٍ ۝
فِي جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ۝ قُطُوفُهَا دَانِيَةٌ ۝ كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا
أَسْلَفْتُمْ فِي الْأَيَّامِ الْخَالِيَةِ ۝ وَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ بِشِمَالِهِ
فَيَقُولُ يَا لَيْتَنِي لَمْ أُوتَ كِتَابِيَهْ ۝ وَلَمْ أَدْرِ مَا حِسَابِيَهْ ۝
يَا لَيْتَهَا كَانَتِ الْقَاضِيَةَ ۝ مَا أَغْنَىٰ عَنِّي مَالِيَهْ ۝ هَلَكَ عَنِّي
سُلْطَانِيَهْ ۝ خُذُوهُ فَغُلُّوهُ ۝ ثُمَّ الْجَحِيمَ صَلُّوهُ ۝ ثُمَّ فِي
سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُونَ ذِرَاعًا فَاسْلُكُوهُ ۝ إِنَّهُ كَانَ لَا
يُؤْمِنُ بِاللَّهِ الْعَظِيمِ ۝ وَلَا يَحُضُّ عَلَىٰ طَعَامِ الْمِسْكِينِ ۝
فَلَيْسَ لَهُ الْيَوْمَ هَاهُنَا حَمِيمٌ ۝ وَلَا طَعَامٌ إِلَّا مِنْ غِسْلِينٍ ۝
لَّا يَأْكُلُهُ إِلَّا الْخَاطِئُونَ ۝ فَلَا أُقْسِمُ بِمَا تُبْصِرُونَ ۝ وَمَا
لَا تُبْصِرُونَ ۝ إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ۝ وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَاعِرٍ
قَلِيلًا مَّا تُؤْمِنُونَ ۝ وَلَا بِقَوْلِ كَاهِنٍ قَلِيلًا مَّا تَذَكَّرُونَ ۝
تَنزِيلٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ۝ وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْأَقَاوِيلِ ۝
لَأَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِينِ ۝ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِينَ ۝ فَمَا مِنكُم
مِّنْ أَحَدٍ عَنْهُ حَاجِزِينَ ۝ وَإِنَّهُ لَتَذْكِرَةٌ لِّلْمُتَّقِينَ ۝

★रु. १/५ आ ३७

उस दिन आठ फ़रिश्ते उठाए होंगे। (१७) उस दिन तुम (सब लोगों के सामने) पेश किए जाओगे और तुम्हारी कोई पोशीदा बात छिपी न रहेगी। (१८) तो जिस का (आमाल-) नामा उस के दाहिने हाथ में दिया जाएगा, वह (दूसरों से) कहेगा कि लीजिए मेरा नामा (-ए-आमाल) पढ़िए। (१९) मुझे यक़ीन था कि मुझ को मेरा हिसाब (-किताब) ज़रूर मिलेगा। (२०) पस वह (शख़्स) मनमाने ऐश में होगा, (२१) (यानी) ऊंचे (-ऊंचे महलों के) बाग़ में, (२२) जिन के मेवे झुके हुए होंगे, (२३) जो (अमल) तुम पिछले दिनों में आगे भेज चुके हो, उस के बदले में मज़े से खाओ और पियो। (२४) और जिस का नामा (-ए-आमाल) उस के बाएं हाथ में दिया जाएगा, वह कहेगा, ऐ काश ! मुझ को मेरा (आमाल-) नामा न दिया जाता। (२५) और मुझे मालूम न होता कि मेरा हिसाब क्या है। (२६) ऐ काश ! मौत (हमेशा-हमेशा के लिए मेरा काम) तमाम कर चुकी होती। (२७) (आज) मेरा माल मेरे कुछ भी काम न आया, (२८) (हाय !) मेरी सल्तनत ख़ाक में मिल गयी। (२९) (हुक्म होगा कि) इसे पकड़ लो और तौक़ पहना दो। (३०) फिर दोज़ख़ की आग में झोंक दो, (३१) फिर ज़ंजीर से जिस की नाप सत्तर गज़ है, जकड़ दो। (३२) यह न तो ख़ुदा-ए-जल्लशानुहू पर ईमान लाता था, (३३) और न फ़क़ीर के खाना-खिलाने पर आमादा करता था, (३४) सो आज इस का भी यहां कोई दोस्तदार नहीं, (३५) और न पीप के सिवा (उस के लिए) खाना है, (३६) जिस को गुनाहगारों के सिवा कोई नहीं खाएगा, (३७) ★

तो हम को उन चीज़ों की क़सम, जो तुमको नज़र आती हैं। (३८) और उनकी जो नज़र नहीं आतीं, (३९) कि यह क़ुरआन बुलंद मर्तबा फ़रिश्ते की ज़ुबान का पैग़ाम है, (४०) और यह किसी शायर का कलाम नहीं, मगर तुम लोग बहुत ही कम ईमान लाते हो, (४१) और न किसी काहिन की बातें हैं लेकिन तुम लोग बहुत ही कम फ़िक्र करते हो। (४२) (यह तो) दुनिया के परवरदिगार का उतारा (हुआ) है। (४३) अगर यह पैग़म्बर हमारे बारे में कोई बात झूठ बना लाते, (४४) तो हम उन का दाहिना हाथ पकड़ लेते, (४५) फिर उन की गर्दन की रग काट डालते, (४६) फिर तुम में से कोई (हमें) इस से रोकने वाला न होता। (४७) और यह (किताब) तो परहेज़-

★रु. १/५ आ ३७

व इन्ना ल-नअ्-लमु अन्-न मिन्कुम मुकज़्ज़िबीन (४९) व इन्नहू ल-हस्-रतुन अ़लल्-काफ़िरीन (५०) व इन्नहू लहक़्क़ुल-यक़ीन (५१) फ़-सब्बिह़ बिस्मि रब्बिकल्-अ़ज़ीम ★ (५२)

إِنَّا لَنَعْلَمُ أَنَّ مِنْكُمْ مُكَذِّبِينَ ۝ وَإِنَّهُ لَحَسْرَةٌ عَلَى الْكٰفِرِينَ ۝
وَإِنَّهُ لَحَقُّ الْيَقِينِ ۝ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ۝
سُورَةُ الْمَعَارِجِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ أَرْبَعٌ وَأَرْبَعُونَ آيَةً وَفِيهَا رُكُوعَانِ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ
سَأَلَ سَائِلٌ بِعَذَابٍ وَاقِعٍ ۝ لِلْكٰفِرِينَ لَيْسَ لَهُ دَافِعٌ ۝ مِنَ
اللّٰهِ ذِي الْمَعَارِجِ ۝ تَعْرُجُ الْمَلٰئِكَةُ وَالرُّوحُ إِلَيْهِ فِي يَوْمٍ
كَانَ مِقْدَارُهُ خَمْسِينَ أَلْفَ سَنَةٍ ۝ فَاصْبِرْ صَبْرًا جَمِيلًا ۝
إِنَّهُمْ يَرَوْنَهُ بَعِيدًا ۝ وَنَرٰهُ قَرِيبًا ۝ يَوْمَ تَكُونُ السَّمَاءُ كَالْمُهْلِ ۝
وَتَكُونُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ ۝ وَلَا يَسْأَلُ حَمِيمٌ حَمِيمًا ۝ يُبَصَّرُونَهُمْ
يَوَدُّ الْمُجْرِمُ لَوْ يَفْتَدِي مِنْ عَذَابِ يَوْمِئِذٍ بِبَنِيهِ ۝ وَصَاحِبَتِهِ
وَأَخِيهِ ۝ وَفَصِيلَتِهِ الَّتِي تُؤْوِيهِ ۝ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا
ثُمَّ يُنْجِيهِ ۝ كَلَّا إِنَّهَا لَظٰى ۝ نَزَّاعَةً لِلشَّوٰى ۝ تَدْعُوا مَنْ
أَدْبَرَ وَتَوَلّٰى ۝ وَجَمَعَ فَأَوْعٰى ۝ إِنَّ الْإِنْسَانَ خُلِقَ هَلُوعًا ۝
إِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ جَزُوعًا ۝ وَإِذَا مَسَّهُ الْخَيْرُ مَنُوعًا ۝ إِلَّا
الْمُصَلِّينَ ۝ الَّذِينَ هُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ دَائِمُونَ ۝ وَالَّذِينَ فِي
أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ مَعْلُومٌ ۝ لِلسَّائِلِ وَالْمَحْرُومِ ۝ وَالَّذِينَ يُصَدِّقُونَ
بِيَوْمِ الدِّينِ ۝ وَالَّذِينَ هُمْ مِنْ عَذَابِ رَبِّهِمْ مُشْفِقُونَ ۝

७० सूरतुल्-मआ़रिजि ७९

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के ६७७ अक्षर, २६० शब्द, ४४ आयतें और २ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

स-अ-ल साइलुम-बिअ़ज़ाबिव्वाक़िअ़िल्-ۙ (१) -लिल्-काफ़िरी-न लै-स लहू दाफ़िउ़म्-ۙ (२) -मिनल्लाहि ज़िल्मआ़रिज ط (३) तअ्-रुजुल-मलाइ-कतु वर्रूहु इलैहि फ़ी यौमिन् का-न मिक़्दारुहू ख़म्सी-न अल्-फ़ स-नतिन् ۚ (४) फ़स्बिर सब्-रन् जमीला (५) इन्नहुम् यरौनहू बअ़ीदंव्-ۙ (६) व नराहु क़रीबा ط (७) यौ-म तकूनुस्-समाउ कल्मुह्लि ۙ (८) व तकूनुल-जिबालु कल्अ़िह्नि ۙ (९) व ला यस्-अलु ह़मीमुन् ह़मीमंय-ۚ (१०) युबस्सरूनहुम् ط यवद्दुल्-मुज्रिमु लौ यफ़्तदी मिन अ़ज़ाबि यौमिइज़िम-बिबनीहि ۙ (११) व साहिबतिही व अख़ीहि ۙ (१२) व फ़सीलतिहिल्लती तुअ्वीहि ۙ (१३) व मन् फ़िलअर्ज़ि जमीअ़न् ۙ सुम्-म युन्जीहि ۙ (१४) कल्ला ط इन्नहा लज़ा ۙ (१५) नज़्ज़ा-अ-तल्-लिश्शवा ۚ (१६) तद्ऊ़ मन् अद्-ब-र व त-वल्ला ۙ (१७) व ज-म-अ फ़औआ़ (१८) इन्नल्-इन्सा-न ख़ुलि-क़ हलूअ़न् ۙ (१९) इज़ा मस्सहुश्शर्रु जज़ूआ़ ۙ (२०) व इज़ा मस्सहुल् ख़ै-रु मनूआ़ ۙ (२१) इल्लल्-मुसल्लीन ۙ (२२) अल्लज़ी-न हुम् अ़ला सलातिहिम् दाइमून ۙ (२३) वल्लज़ी-न फ़ी अम्वालिहिम् ह़क़्क़ुम्-मअ्-लूमुल-ۙ (२४) लिस्साइलि वल्मह़्रूम ۙ (२५) वल्लज़ी-न युसद्दिक़ू-न बियौमिद्दीनि ۙ (२६) वल्लज़ी-न हुम् मिन् अ़ज़ाबि रब्बिहिम् मुश्फ़िक़ून ۚ (२७)

★रु. २/६ आ १५

गारों के लिए नसीहत है। (४८) और हम जानते हैं कि तुम में से कुछ इस को झुठलाने वाले हैं। (४९) साथ ही यह काफ़िरों के लिए हसरत (की वजह) है। (५०) और कुछ शक नहीं कि यह सच बात यक़ीन के क़ाबिल है। (५१) सो तुम अपने परवरदिगारे अज़्ज़ व जल्ल के नाम की तस्बीह करते रहो। (५२) ★

७० सूरः मआरिज ७९

सूरः मआरिज मक्की है, इस में ४४ आयतें और दो रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

एक तलब करने वाले ने अज़ाब तलब किया, जो नाज़िल हो कर रहेगा, (१) (यानी) काफ़िरों पर (और) कोई उस को टाल न सकेगा। (२) (और वह) दर्जों के मालिक ख़ुदा[1] की तरफ़ से (नाज़िल होगा)। (३) जिस की तरफ़ रूहुल अमीन और फ़रिश्ते चढ़ते हैं (और) उस दिन (नाज़िल होगा) जिस का अन्दाज़ा पचास हज़ार वर्ष का होगा। (४) (तो तुम काफ़िरों की बातों को) हौसले के साथ बर्दाश्त करते रहो।[2] (५) वह उन लोगों की निगाहों में दूर है, (६) और हमारी नज़र में क़रीब, (७) जिस दिन आसमान ऐसा हो जाएगा और पिघला हुआ तांबा, (८) और पहाड़ (ऐसे), जैसे (धुंकी हुई) रंगीन ऊन। (९) और कोई दोस्त किसी दोस्त का पूछने वाला न होगा, (१०) (हालांकि) एक दूसरे को सामने देख रहे होंगे, (उस दिन) गुनाहगार ख़्वाहिश करेगा कि किसी तरह उस दिन के अज़ाब के बदले में (सब कुछ) दे दे, (यानी) अपने बेटे, (११) और अपनी बीवी और अपने भाई, (१२) और अपना ख़ानदान, जिस में वह रहता था। (१३) और जितने आदमी ज़मीन पर हैं (ग़रज़) सब (कुछ) दे दे और अपने आप को अज़ाब से छुड़ा ले। (१४) (लेकिन) ऐसा हरगिज़ नहीं होगा, वह भड़कती हुई आग है, (१५) खाल उधेड़ डालने वाली, (१६) उन लोगों को अपनी तरफ़ बुलाएगी, जिन्हों ने (दीने हक़ से) एराज़ किया और मुंह फेर लिया, (१७) और (माल) जमा किया और बन्द कर रखा। (१८) कुछ शक नहीं कि इंसान कम हौसला पैदा हुआ है। (१९) जब उसे तक्लीफ़ पहुंचती है, तो घबरा उठता है। (२०) और जब आराम हासिल होता है, तो बख़ील बन जाता है, (२१) मगर नमाज़ गुज़ार, (२२) जो नमाज़ की पाबन्दी करते, (और बिला-नाग़ा पढ़ते) हैं, (२३) और जिन के माल में हिस्सा मुक़र्रर है, (२४) (यानी) मांगने वाले का और न मांगने वाले का, (२५) और जो बदले के दिन को सच समझते हैं, (२६) और जो अपने परवरदिगार के अज़ाब से ख़ौफ़ रखते

---

१. दर्जों से मुराद आसमान हैं, चूंकि वे दर्जा-ब-दर्जा ऊपर तले हैं, इस लिए उन के दर्जे फ़रमाया।

२. सब्रे जमील उस सब्र को कहते हैं जिस में चीख़ना-चिल्लाना, सर पटकना वग़ैरह न हो, इसी लिए इस का तर्जुमा हौसले के साथ किया है।

इन्-न अ़ज़ा-ब रब्बिहिम् ग़ैरु मअ्मून (२८) वल्लज़ी-न हुम् लिफ़ुरूजिहिम् हाफ़िज़ून (२९) इल्ला अ़ला अज़्वाजिहिम् औ मा म-ल-कत् ऐमानुहुम् फ़-इन्नहुम् ग़ैरु मलूमीन (३०) फ़-मनिब्तग़ा वरा-अ ज़ालि-क फ़उलाइ-क हुमुल्आ़दून (३१) वल्लज़ी - न हुम् लि - अमानाति - हिम् व अ़ह्दिहिम् राऊ़न (३२) वल्लज़ी-न हुम् बि-शहादाति - हिम् क़ाइमून (३३) वल्लज़ी-न हुम् अ़ला सलातिहिम् युहाफ़िज़ून (३४) उलाइ - क फ़ी जन्नातिम् - मुक्रमून ★ (३५) फ़मालिल्लज़ी-न क-फ़रू क़ि-ब-ल-क मुह्तिओ़न (३६) अ़निल् - यमीनि व अ़निश्शिमालि अ़िज़ीन (३७) अ-यत्मअ़ु कुल्लुम्रिइम् - मिन्हुम् अंय्युद्ख़-ल जन्न - त नओ़ीम (३८) कल्ला इन्ना ख़-लक़्नाहुम् मिम्मा यअ़्-लमून (३९) फ़ला उक़्सिमु बिरब्बिल् - मशारिक़ि वल्मग़ारिबि इन्ना ल - क़ादिरून (४०) अ़ला अन् नुबद्दि - ल ख़ैरम् - मिन्हुम् व मा नह़्नु बिमस्बूक़ीन (४१) फ़-ज़र्हुम् यख़ूज़ू व यल्अ़बू हत्ता युलाक़ू यौमहुमुल्लज़ी यूअ़दून (४२) यौ - म यख़् - रुजू - न मिनल् - अज्दासि सिराअ़न् क-अन्नहुम् इला नुसुबिंय्यूफ़िज़ून (४३) ख़ाशि-अ-तन् अब् - सारुहुम् तर् - हक़ुहुम् ज़िल्लतुन् ज़ालिकल् - यौमुल्लज़ी कानू यू-अ़दून ★ (४४)

إِنَّ عَذَابَ رَبِّهِمْ غَيْرُ مَأْمُونٍ ۝ وَالَّذِينَ هُمْ لِفُرُوجِهِمْ حَافِظُونَ ۝
إِلَّا عَلَىٰ أَزْوَاجِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُومِينَ ۝
فَمَنِ ابْتَغَىٰ وَرَاءَ ذَٰلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْعَادُونَ ۝ وَالَّذِينَ هُمْ
لِأَمَانَاتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رَاعُونَ ۝ وَالَّذِينَ هُمْ بِشَهَادَاتِهِمْ قَائِمُونَ ۝
وَالَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ ۝ أُولَٰئِكَ فِي جَنَّاتٍ
مُكْرَمُونَ ۝ فَمَالِ الَّذِينَ كَفَرُوا قِبَلَكَ مُهْطِعِينَ ۝ عَنِ الْيَمِينِ
وَعَنِ الشِّمَالِ عِزِينَ ۝ أَيَطْمَعُ كُلُّ امْرِئٍ مِنْهُمْ أَنْ يُدْخَلَ جَنَّةَ
نَعِيمٍ ۝ كَلَّا إِنَّا خَلَقْنَاهُمْ مِمَّا يَعْلَمُونَ ۝ فَلَا أُقْسِمُ بِرَبِّ
الْمَشَارِقِ وَالْمَغَارِبِ إِنَّا لَقَادِرُونَ ۝ عَلَىٰ أَنْ نُبَدِّلَ خَيْرًا مِنْهُمْ
وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوقِينَ ۝ فَذَرْهُمْ يَخُوضُوا وَيَلْعَبُوا حَتَّىٰ يُلَاقُوا
يَوْمَهُمُ الَّذِي يُوعَدُونَ ۝ يَوْمَ يَخْرُجُونَ مِنَ الْأَجْدَاثِ سِرَاعًا
كَأَنَّهُمْ إِلَىٰ نُصُبٍ يُوفِضُونَ ۝ خَاشِعَةً أَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ
ذِلَّةٌ ذَٰلِكَ الْيَوْمُ الَّذِي كَانُوا يُوعَدُونَ ۝

سُورَةُ نُوحٍ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ ثَمَانٍ وَعِشْرُونَ آيَةً وَفِيهَا رُكُوعَانِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

إِنَّا أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ أَنْ أَنْذِرْ قَوْمَكَ مِنْ قَبْلِ أَنْ
يَأْتِيَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ قَالَ يَا قَوْمِ إِنِّي لَكُمْ نَذِيرٌ مُبِينٌ ۝ أَنِ

७१ सूरतु नूहिन् ७१

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के ९७४ अक्षर, २३१ शब्द, २८ आयतें और २ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम •

इन्ना अर्सल्ना नूहन् इला क़ौमिही अन् अन्ज़िर् क़ौ-म-क मिन् क़ब्लि अंय्यअ्ति - यहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम (१) क़ा-ल या क़ौमि इन्नी लकुम् नज़ीरुम् - मुबीन (२)

★रु. १/७ आ ३५ ★रु. २/८ आ ६

हैं। (२७) बेशक उन के परवरदिगार का अज़ाब है ही ऐसा कि उस से बे-खौफ़ न हुआ जाए, (२८) और जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करते हैं, (२६) मगर अपनी बीवियों या लौंडियों से कि (उन के पास जाने पर) उन्हें कुछ मलामत नहीं, (३०) और जो लोग इन के सिवा और चाहते हों, वे हद से निकल जाने वाले हैं, (३१) और जो अपनी अमानतों और इक़रारों का ध्यान करते हैं, (३२) और जो अपनी गवाहियों पर क़ायम रहते हैं, (३३) और जो अपनी नमाज़ की खबर रखते हैं, (३४) यही लोग बहिश्त के बाग़ों में इज़्ज़त व इकराम से होंगे। (३५)★

तो उन काफ़िरों को क्या हुआ है कि तुम्हारी तरफ़ दौड़े चले आते हैं, (३६) (और) दाएं-बाएं से गिरोह-गिरोह हो कर (जमा होते) जाते हैं। (३७) क्या उन में से हर शख्स यह उम्मीद रखता है कि नेमत के बाग़ में दाखिल किया जाएगा? (३८) हरगिज़ नहीं! हम ने उन को उस चीज़ से पैदा किया है, जिसे वे जानते हैं, (३६) हमें मश्रिक़ों और मग़रिबों के मालिक की क़सम! कि हम ताक़त रखते हैं। (४०) (यानी) इस बात (की क़ुदरत है) कि उन से बेहतर लोग बदल लाएं और हम आजिज़ नहीं हैं। (४१) तो (ऐ पैग़म्बर!) उन को बातिल में पड़े रहने और खेल लेने दो, यहां तक कि जिस दिन का उन से वायदा किया जाता है, वह उन के सामने आ मौजूद हो। (४२) उस दिन ये क़ब्रों से निकल कर (इस तरह) दौड़ेंगे जैसे (शिकारी) शिकार के जाल की तरफ़ दौड़ते हैं। (४३) उन की आंखें झुक रही होंगी और ज़िल्लत उन पर छा रही होगी। यही वह दिन है जिस का उन से वायदा किया जाता था। (४४)★

७१ सूर नूह ७१

सूरः नूह मक्की है। इस में २८ आयतें और दो रुकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

हमने नूह को उन की क़ौम की तरफ़ भेजा कि इस से पहले कि उन पर दर्द देने वाला अज़ाब वाक़ेअ हो, अपनी क़ौम को हिदायत कर दो। (१) उन्हों ने कहा कि भाइयो! मैं तुम को खुले तौर

★रु. १/७ आ ३५ ★रु. २/८ आ ६

अनिअ़् - बुदुल्ला - ह वत्तक़ूहु व अती़अ़ून ॥ (३) यग़्फ़िर लकुम् मिन् ज़ुनूबिकुम् व यु-अख़्ख़िर् - कुम् इला अ - जलिम् - मुसम्मन् ॥ इन् - न अ-ज-लल्लाहि इज़ा जा-अ ला यु-अख़्ख़रु ※ लौ कुन्तुम तअ्-लमून (४) क़ा-ल रब्बि इन्नी दऔतु क़ौमी लैलंव्-व नहारन् ॥ (५) फ़ - लम् यज़िद्हुम् दुआई इल्ला फ़िरारा (६) व इन्नी कुल्लमा दऔतुहुम् लि-तग़्-फ़ि-र लहुम् ज-अ़लू असाबि-अ़हुम् फ़ी आज़ानिहिम् वस्तग़्शौ सिया-बहुम् व असर्रू वस्तक्बरुस्तिक्बारा ॥ (७) सुम्-म इन्नी दऔतुहुम् जिहारन् ॥ (८) सुम्-म इन्नी अअ्-लन्तु लहुम् व अस् - रर्तु लहुम् इस्-रारा ॥ (९) फ़क़ुल्तुस्तग़्फ़िरू रब्बकुम् ॥ इन्नहू का - न ग़फ़्फ़ारंय् - ॥ (१०) -युर्सिलिस्समा - अ अ़लैकुम् मिद्रारंव् ॥- (११) -व युम्दिद्कुम् बि-अम्वालिंव्-व बनी - न व यज्-अ़ल् लकुम् जन्नातिंव्-व यज्-अ़ल् लकुम् अन्हारा ॥ (१२) मा लकुम् ला तर्जू-न लिल्लाहि वक़ारा ॥ (१३) व क़द् ख़-ल-क़कुम् अत्वारा (१४) अ-लम् तरौ कै-फ़ ख़-ल-क़ल्लाहु सब्-अ़ समावातिन् तिबाक़ा ॥ (१५) व ज-अ़-लल् - क़-म-र फ़ीहिन्-न नूरंव्-व ज-अ़-लश्शम्-स सिराजा (१६) वल्लाहु अम्ब-त-कुम् मिनल्अर्ज़ि नबाता ॥ (१७) सुम् - म युअ़ीदुकुम् फ़ीहा व युख़्रिजुकुम् इख़्राजा (१८) वल्लाहु ज-अ़-ल लकुमुल्अर्-ज़ बिसाता ॥ (१९) लितस्लुकू मिन्हा सुबुलन् फ़िजाजा ★ (२०) क़ा-ल नूहुर्रब्बि इन्नहुम् अ़सौनी वत्त-बअ़ू मल्लम् यज़िद्हु मालुहू व व-ल-दुहू इल्ला ख़सारा ॥ (२१) व म-करू मक्रन् कुब्बारा ॥ (२२) व क़ालू ला त-ज़-रुन्-न आलि-ह-तकुम् व ला त-ज़-रुन्-न वद्दंव्-व ला सुवाअ़ंव् ॥ व ला यग़ू - स व यऊ़ - क़ व नस्रा ॥ (२३) व क़द् अज़ल्लू कसीरन् ॥ व ला तज़िदिज़्ज़ालिमी - न इल्ला ज़लाला (२४)

اعْبُدُوا اللَّهَ وَاتَّقُوهُ وَأَطِيعُونِ ۝ يَغْفِرْ لَكُم مِّن ذُنُوبِكُمْ وَيُؤَخِّرْكُمْ
إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ إِنَّ أَجَلَ اللَّهِ إِذَا جَاءَ لَا يُؤَخَّرُ ۖ لَوْ كُنتُمْ
تَعْلَمُونَ ۝ قَالَ رَبِّ إِنِّي دَعَوْتُ قَوْمِي لَيْلًا وَنَهَارًا ۝ فَلَمْ يَزِدْهُمْ
دُعَائِي إِلَّا فِرَارًا ۝ وَإِنِّي كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ جَعَلُوا أَصَابِعَهُمْ
فِي آذَانِهِمْ وَاسْتَغْشَوْا ثِيَابَهُمْ وَأَصَرُّوا وَاسْتَكْبَرُوا اسْتِكْبَارًا ۝
ثُمَّ إِنِّي دَعَوْتُهُمْ جِهَارًا ۝ ثُمَّ إِنِّي أَعْلَنتُ لَهُمْ وَأَسْرَرْتُ لَهُمْ
إِسْرَارًا ۝ فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ إِنَّهُ كَانَ غَفَّارًا ۝ يُرْسِلِ السَّمَاءَ
عَلَيْكُم مِّدْرَارًا ۝ وَيُمْدِدْكُم بِأَمْوَالٍ وَبَنِينَ وَيَجْعَل لَّكُمْ جَنَّاتٍ
وَيَجْعَل لَّكُمْ أَنْهَارًا ۝ مَّا لَكُمْ لَا تَرْجُونَ لِلَّهِ وَقَارًا ۝ وَقَدْ خَلَقَكُمْ
أَطْوَارًا ۝ أَلَمْ تَرَوْا كَيْفَ خَلَقَ اللَّهُ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ طِبَاقًا ۝ وَجَعَلَ
الْقَمَرَ فِيهِنَّ نُورًا وَجَعَلَ الشَّمْسَ سِرَاجًا ۝ وَاللَّهُ أَنبَتَكُم مِّنَ
الْأَرْضِ نَبَاتًا ۝ ثُمَّ يُعِيدُكُمْ فِيهَا وَيُخْرِجُكُمْ إِخْرَاجًا ۝ وَاللَّهُ
جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ بِسَاطًا ۝ لِّتَسْلُكُوا مِنْهَا سُبُلًا فِجَاجًا ۝ قَالَ
نُوحٌ رَّبِّ إِنَّهُمْ عَصَوْنِي وَاتَّبَعُوا مَن لَّمْ يَزِدْهُ مَالُهُ وَوَلَدُهُ إِلَّا
خَسَارًا ۝ وَمَكَرُوا مَكْرًا كُبَّارًا ۝ وَقَالُوا لَا تَذَرُنَّ آلِهَتَكُمْ وَلَا
تَذَرُنَّ وَدًّا وَلَا سُوَاعًا وَلَا يَغُوثَ وَيَعُوقَ وَنَسْرًا ۝ وَقَدْ أَضَلُّوا
كَثِيرًا ۖ وَلَا تَزِدِ الظَّالِمِينَ إِلَّا ضَلَالًا ۝ مِّمَّا خَطِيئَاتِهِمْ أُغْرِقُوا

※ व. लाज़िम ★रु. १/१ आ २०

पर नसीहत करता हूं, (२) कि ख़ुदा की इबादत करो और उससे डरो और मेरा कहा मानो, (३) वह तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और (मौत के) मुक़र्रर वक़्त तक तुम को मोहलत अता करेगा। जब ख़ुदा का मुक़र्रर किया हुआ वक़्त आ जाता है तो देर नहीं होती, काश तुम जानते होते। (४) जब लोगों ने न माना, तो (नूह ने) ख़ुदा से अर्ज़ की कि परवरदिगार! मैं अपनी क़ौम को रात-दिन बुलाता रहा, (५) लेकिन मेरे बुलाने से वे और ज़्यादा भागते रहे। (६) जब-जब मैं ने उन को बुलाया कि (तौबा करें और) तू उन को माफ़ फ़रमाए, तो उन्हों ने अपने कानों में उंगलियां दे लीं और कपड़े ओढ़ लिए और अड़ गये और अकड़ बैठे। (७) फिर मैं उन को खुले तौर पर भी बुलाता रहा, (८) और खुले और छिपे हर तरह समझाता रहा, (९) और कहा कि अपने परवरदिगार से माफ़ी मांगो कि वह बड़ा माफ़ करने वाला है, (१०) वह तुम पर आसमान से मेंह बरसाएगा, (११) और माल और बेटों से तुम्हारी मदद फ़रमाएगा और तुम्हें बाग़ अता करेगा और (उन में) तुम्हारे लिए नहरें बहा देगा। (१२) तुम को क्या हुआ है कि तुम ख़ुदा की अज़्मत का एतक़ाद नहीं रखते। (१३) हालांकि उसने तुमको तरह-तरह (की हालतों) का पैदा किया है। (१४) क्या तुमने नहीं देखा कि ख़ुदा ने सात आसमान कैसे ऊपर-तले बनाए हैं, (१५) और चांद को उन में (ज़मीन का) नूर बनाया है और सूरज को चिराग़ ठहराया है, (१६) और ख़ुदा ही ने तुम को ज़मीन से पैदा किया है, (१७) फिर उसी में तुम्हें लौटा देगा और (उसी से) तुम को निकाल खड़ा करेगा, (१८) और ख़ुदा ही ने ज़मीन को तुम्हारे लिए फ़र्श बनाया, (१९) ताकि उस के बड़े-बड़े कुशादा रास्तों में चलो-फिरो (२०)। ★

(इस के बाद) नूह ने अर्ज़ की कि मेरे परवरदिगार! ये लोग मेरे कहने पर नहीं चले और ऐसों के ताबेअ हुए हैं, जिन को उन के माल और औलाद ने नुक़्सान के सिवा कुछ फ़ायदा नहीं दिया। (२१) और वे बड़ी-बड़ी चालें चले, (२२) और कहने लगे कि अपने माबूदों को हरगिज़ न छोड़ना और वद्द और सुवाअ और यग़ूस और यऊक़ और नस्र[1] को कभी न छोड़ना। (२३) (परवरदिगार!) उन्होंने बहुत लोगों को गुमराह कर दिया है, तो तू उन को और गुमराह कर

१. वद्द और सुवाअ और यग़ूस और यऊक़ और नस्र बुतों के नाम हैं।

※ व. लाज़िम ★रु. १/९ आ २०

मिम्मा ख़तीआतिहिम उग्रिक़ू फ़-उद्ख़िलू नारन् ۙ फ़-लम् यजिदू लहुम् मिन दूनिल्लाहि अन्सारा (२५) व क़ा-ल नूहुर्रब्बि ला त-ज़र् अ-लल्अर्ज़ि मिनल्-काफ़िरी-न दय्यारा (२६) इन्न-क इन् त-ज़र्हुम् युज़िल्लू अिबा-द-क व ला यलिदू इल्ला फ़ाजिरन् कफ़्फ़ारा (२७) रब्बिग़्फ़िर्ली व लिवालिदय्-य व लिमन् द-ख़-ल बैति-य मुअ्मिनंव्-व लिल्-मुअ्मिनी-न वल्मुअ्मिनाति ط व ला तज़िदिज़्ज़ालिमी-न इल्ला तबारा ★ ● (२८)

فَأُدْخِلُوا نَارًا فَلَمْ يَجِدُوا لَهُمْ مِّنْ دُونِ اللَّهِ أَنصَارًا ﴿٢٥﴾ وَقَالَ
نُوحٌ رَّبِّ لَا تَذَرْ عَلَى الْأَرْضِ مِنَ الْكَافِرِينَ دَيَّارًا ﴿٢٦﴾ إِنَّكَ
إِن تَذَرْهُمْ يُضِلُّوا عِبَادَكَ وَلَا يَلِدُوا إِلَّا فَاجِرًا كَفَّارًا ﴿٢٧﴾ رَّبِّ
اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِمَن دَخَلَ بَيْتِيَ مُؤْمِنًا وَلِلْمُؤْمِنِينَ
وَالْمُؤْمِنَاتِ وَلَا تَزِدِ الظَّالِمِينَ إِلَّا تَبَارًا ﴿٢٨﴾

سُورَةُ الْجِنِّ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ ثَمَانٌ وَعِشْرُونَ آيَةً وَرُكُوعَانِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

قُلْ أُوحِيَ إِلَيَّ أَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوا إِنَّا سَمِعْنَا قُرْآنًا
عَجَبًا ﴿١﴾ يَهْدِي إِلَى الرُّشْدِ فَآمَنَّا بِهِ ۖ وَلَن نُّشْرِكَ بِرَبِّنَا أَحَدًا ﴿٢﴾ وَ
أَنَّهُ تَعَالَىٰ جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَلَا وَلَدًا ﴿٣﴾ وَأَنَّهُ كَانَ يَقُولُ
سَفِيهُنَا عَلَى اللَّهِ شَطَطًا ﴿٤﴾ وَأَنَّا ظَنَنَّا أَن لَّن تَقُولَ الْإِنسُ وَالْجِنُّ
عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ﴿٥﴾ وَأَنَّهُ كَانَ رِجَالٌ مِّنَ الْإِنسِ يَعُوذُونَ بِرِجَالٍ
مِّنَ الْجِنِّ فَزَادُوهُمْ رَهَقًا ﴿٦﴾ وَأَنَّهُمْ ظَنُّوا كَمَا ظَنَنتُمْ أَن لَّن
يَبْعَثَ اللَّهُ أَحَدًا ﴿٧﴾ وَأَنَّا لَمَسْنَا السَّمَاءَ فَوَجَدْنَاهَا مُلِئَتْ حَرَسًا
شَدِيدًا وَشُهُبًا ﴿٨﴾ وَأَنَّا كُنَّا نَقْعُدُ مِنْهَا مَقَاعِدَ لِلسَّمْعِ ۖ فَمَن يَسْتَمِعِ
الْآنَ يَجِدْ لَهُ شِهَابًا رَّصَدًا ﴿٩﴾ وَأَنَّا لَا نَدْرِي أَشَرٌّ أُرِيدَ بِمَن
فِي الْأَرْضِ أَمْ أَرَادَ بِهِمْ رَبُّهُمْ رَشَدًا ﴿١٠﴾ وَأَنَّا مِنَّا الصَّالِحُونَ وَمِنَّا

७२ सूरतुल्-जिन्नि ४०

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के ११२६ अक्षर, २८७ शब्द, २८ आयतें और २ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ●

क़ुल ऊहि-य इलय्-य अन्नहुस्त-म-अ न-फ़रुम्-मिनल्-जिन्नि फ़-क़ालू इन्ना समिअ्ना क़ुर्-आनन् अ-ज-बंय्- ۙ (१) -यह्दी इलर्रुश्दि फ़-आमन्ना बिही ط व लन् नुश-रि-क बिरब्बिना अ-ह-दा ۙ (२) व अन्नहू तआ़ला जद्दु रब्बिना मत्त-ख़-ज साहि-ब-तंव्-व ला व-ल-दा ۙ (३) व अन्नहू का-न यक़ूलु सफ़ीहुना अ-लल्लाहि श-त़-ता ۙ (४) व अन्ना ज़-नन्ना अल्लन् तक़ूलल्-इन्सु वल्जिन्नु अ़लल्लाहि कज़िबा ۙ (५) व अन्नहु का-न रिजालुम्-मिनल्-इन्सि य-ऊज़ू-न बिरिजालिम-मिनल्-जिन्नि फ़ज़ादू-हुम् र-ह-क़ंव्- ۙ (६) व अन्नहुम् ज़न्नू कमा ज़-नन्तुम् अल्लंय्यब्-अ-सल्लाहु अ-ह-दा ۙ (७) व अन्ना ल-मस्-नस्समा-अ फ़-व-जद्नाहा मुलि-अत् ह-र-सन् शदीदंव्-व शुहुबंव- ۙ (८) व अन्ना कुन्ना नक़्-अुदु मिन्हा मक़ाअि-द लिस्सम्अि ط फ़मंय्यस्तमिअिल्-आ-न यजिद् लहू शिहाबर्-र-स-दंव्- ۙ (९) व अन्ना ला नद्री अ-शर्रुन् उरी-द बिमन् फ़िल्अर्ज़ि अम् अरा-द बिहिम् रब्बुहुम् र-श-दा ۙ (१०) व अन्ना मिन्नस्सालिहू-न व मिन्ना दू-न ज़ालि-क कुन्ना तराइ-क़ क़ि-द-दा ۙ (११)

कर दे। (२४) (आख़िर) वे अपने गुनाहों की वजह से (पहले) डुबा दिए गए, फिर आग में डाल दिये गये, तो उन्हों ने ख़ुदा के सिवा किसी को अपना मददगार न पाया। (२५) और (फिर) नूह ने (यह) दुआ की कि मेरे परवरदिगार किसी काफ़िर को धरती पर बसता न रहने दे। (२६) अगर तू उन को रहने देगा, तो तेरे बन्दों को गुमराह करेंगे और उन से जो औलाद होगी, वह भी बद-कार और ना-शुक्रगुज़ार होगी। (२७) ऐ मेरे परवरदिगार ! मुझ को और मेरे मां-बाप को और जो ईमान ला कर मेरे घर में आए उस को और तमाम ईमान वाले मर्दों और ईमान वाली औरतों को माफ़ फ़रमा और ज़ालिम लोगों के लिए और ज़्यादा तबाही बढ़ा। (२८)★●

७२ सूरः जिन्न ४०

सूरः जिन्न मक्की है, इस में २८ आयतें और दो रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

(ऐ पैग़म्बर ! लोगों से) कह दो कि मेरे पास वह्य आयी है कि जिन्नों की एक जमाअत ने (इस किताब को) सुना तो कहने लगे कि हम ने एक अजीब क़ुरआन सुना, (१) जो भलाई का रास्ता बताता है, सो हम उस पर ईमान ले आए और हम अपने परवरदिगार के साथ किसी को शरीक नहीं बनाएंगे।(२)और यह कि हमारे परवरदिगार की (शान की)बड़ाई बहुत बड़ी है, वह न बीवी रखता है न औलाद, (३) और यह कि हममें से कुछ बेवक़ूफ़ ख़ुदा के बारे में झूठ गढ़ते हैं, (४) और हमारा (यह) ख़्याल था कि इन्सान और जिन्न ख़ुदा के बारे में झूठ नहीं बोलते, (५) और यह कि कुछ आदम की औलाद कुछ जिन्नों की पनाह पकड़ा करती थी, (इस से) उन की सरकशी और बढ़ गयी थी। (६) और यह कि उन का भी यही एतक़ाद था, जिस तरह तुम्हारा था कि ख़ुदा किसी को नहीं जिलाएगा। (७) और यह कि हमने आसमान को टटोला, तो उस को मज़बूत चौकीदारों और अंगारों से भरा हुआ पाया, (८) और यह कि पहले हम वहां बहुत सी जगहों में (ख़बरें) सुनने के लिए बैठा करते थे। अब कोई सुनना चाहे तो अपने लिए अंगारा तैयार पाए, (९) और यह कि हमें मालूम नहीं कि इस से ज़मीन वालों के हक़ में बुराई मक़्सूद है या उन के परवरदिगार ने उन की भलाई का इरादा फ़रमाया है। (१०) और यह कि हम में कोई नेक है और

★रु. २/१० आ ८ ● नि. १/२

व अन्ना ज़-नन्ना अल्लन् नुअ्जिज़ल्ला-ह फ़िल्अर्ज़ि व लन् नुअ्जि-ज़हू ह-र-बंव्- (१२) व अन्ना लम्मा समिअ्-नल्-हुदा आमन्ना बिही फ़मंय्युअ्मिम्-बिरब्बिही फ़ला यख़ाफ़ु बख़्संव्-व ला र-ह-क़ा (१३) व अन्ना मिन्नल्-मुस्लिमू-न व मिन्नल-क़ासितून फ़-मन् अस्-ल-म फ़-उलाइ-क त-हर्रौ र-श-दा (१४) व अम्मल्-क़ासितू-न फ़-कानू लि-ज-हन्न-म ह-त-बंव्- (१५) -व अल्लविस्तक़ामू अ-लत्तरीक़ति ल-अस्क़ैनाहुम् माअन् ग़-द-क़ल्- (१६) लिनफ़्ति-नहुम् फ़ीहि व मंय्युअ्-रिज़् अन् ज़िक्रि रब्बिही यस्लुक्हु अज़ाबन् स-अ-दंव्- (१७) व अन्नल्-मसाजि-द लिल्लाहि फ़ला तद्अू म-अल्लाहि अ-ह-दा (१८) व अन्नहू लम्मा क़ा-म अब्दुल्लाहि यद्अूहु कादू यकूनू-न अलैहि लि-ब-दा ★ (१९) क़ुल् इन्नमा अद्अू रब्बी व ला उश्रिकु बिही अ-ह-दा (२०) क़ुल इन्नी ला अम्लिकु लकुम् ज़र्रंव्-व ला र-श-दा (२१) क़ुल् इन्नी लंय्युजीरनी मिनल्लाहि अ-हदुंव्- व लन् अजि-द मिन् दूनिही मुल्त-ह-दा (२२) इल्ला बलाग़म्-मिनल्लाहि व रिसालातिही व मंय्यअ्-सिल्ला-ह व रसूलहू फ़-इन्-न लहू ना-र जहन्न-म ख़ालिदी-न फ़ीहा अ-ब-दा (२३) हत्ता इज़ा रऔ मा यू-अदू-न फ़-स-यअ्-लमू-न मन् अज़्अफ़ु नासिरंव्-व अक़ल्लु अ-द-दा (२४) क़ुल् इन् अद्री अ-क़रीबुम् मा तूअदू-न अम् यज्अलु लहू रब्बी अ-म-दा (२५) आलिमुल्-ग़ैबि फ़ला युज़्हिरु अला ग़ैबिही अ-ह-दन् (२६) इल्ला मनिर्तज़ा मिर्रसूलिन् फ़इन्नहू यस्लुकु मिम्बैनि यदैहि व मिन् ख़ल्फ़िही र-स-दल्- (२७) लियअ्-ल-म अन् क़द् अब्-लग़ू रिसालाति रब्बिहिम् व अहा-त बिमा लदैहिम् व अह्-सा कुल्-ल शैइन् अ-द-दा ★ (२८)

دُوْنَ ذٰلِكَ كُنَّا طَرَآئِقَ قِدَدًا ۝ وَّاَنَّا ظَنَنَّآ اَنْ لَّنْ نُّعْجِزَ اللّٰهَ فِي الْاَرْضِ وَلَنْ نُّعْجِزَهٗ هَرَبًا ۝ وَّاَنَّا لَمَّا سَمِعْنَا الْهُدٰٓى اٰمَنَّا بِهٖ ۭ فَمَنْ يُّؤْمِنْۢ بِرَبِّهٖ فَلَا يَخَافُ بَخْسًا وَّلَا رَهَقًا ۝ وَّاَنَّا مِنَّا الْمُسْلِمُوْنَ وَمِنَّا الْقٰسِطُوْنَ ۭ فَمَنْ اَسْلَمَ فَاُولٰۗىِٕكَ تَحَرَّوْا رَشَدًا ۝ وَاَمَّا الْقٰسِطُوْنَ فَكَانُوْا لِجَهَنَّمَ حَطَبًا ۝ وَّاَنْ لَّوِ اسْتَقَامُوْا عَلَي الطَّرِيْقَةِ لَاَسْقَيْنٰهُمْ مَّاۗءً غَدَقًا ۝ لِّنَفْتِنَهُمْ فِيْهِ ۭ وَمَنْ يُّعْرِضْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهٖ يَسْلُكْهُ عَذَابًا صَعَدًا ۝ وَّاَنَّ الْمَسٰجِدَ لِلّٰهِ فَلَا تَدْعُوْا مَعَ اللّٰهِ اَحَدًا ۝ وَّاَنَّهٗ لَمَّا قَامَ عَبْدُ اللّٰهِ يَدْعُوْهُ كَادُوْا يَكُوْنُوْنَ عَلَيْهِ لِبَدًا ۝ قُلْ اِنَّمَآ اَدْعُوْا رَبِّيْ وَلَآ اُشْرِكُ بِهٖٓ اَحَدًا ۝ قُلْ اِنِّىْ لَآ اَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَّلَا رَشَدًا ۝ قُلْ اِنِّىْ لَنْ يُّجِيْرَنِيْ مِنَ اللّٰهِ اَحَدٌ ڏ وَّلَنْ اَجِدَ مِنْ دُوْنِهٖ مُلْتَحَدًا ۝ اِلَّا بَلٰغًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِسٰلٰتِهٖ ۭ وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاِنَّ لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۝ حَتّٰٓي اِذَا رَاَوْا مَا يُوْعَدُوْنَ فَسَيَعْلَمُوْنَ مَنْ اَضْعَفُ نَاصِرًا وَّاَقَلُّ عَدَدًا ۝ قُلْ اِنْ اَدْرِيْٓ اَقَرِيْبٌ مَّا تُوْعَدُوْنَ اَمْ يَجْعَلُ لَهٗ رَبِّيْٓ اَمَدًا ۝ عٰلِمُ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلٰي غَيْبِهٖٓ اَحَدًا ۝ اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ فَاِنَّهٗ يَسْلُكُ مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ رَصَدًا ۝ لِّيَعْلَمَ اَنْ قَدْ اَبْلَغُوْا رِسٰلٰتِ رَبِّهِمْ وَاَحَاطَ بِمَا لَدَيْهِمْ وَاَحْصٰى كُلَّ شَيْءٍ عَدَدًا ۝

منزل ٧

★रु. १/११ आ १९ ★रु. २/१२ आ ९

कोई और तरह के, हमारे कई तरह के मजहब हैं। (११) और यह कि हमने यक़ीन कर लिया है कि हम जमीन में (चाहे कहीं हों) ख़ुदा को हरा नहीं सकते और न भाग कर उस को थका सकते हैं। (१२) और जब हमने हिदायत (की किताब) सुनी, उस पर ईमान ले आए तो जो शख़्स अपने परवरदिगार पर ईमान लाता है, उस को न नुक़सान का डर है, न ज़ुल्म का। (१३) और यह कि हम में कुछ फ़रमांबरदार हैं और कुछ (ना-फ़रमान) गुनाहगार हैं, तो जो फ़रमांबरदार हुए, वे सीधे रास्ते पर चले। (१४) और जो गुनाहगार हुए, वे दोज़ख का ईंधन बने। (१५) और (ऐ पैग़म्बर!) यह (भी उन से कह दो) कि अगर ये लोग सीधे रास्ते पर रहते तो हम उन के पीने को बहुत-सा पानी देते, (१६) ताकि इस से उन की आज़माइश करें और जो शख़्स अपने परवरदिगार की याद से मुंह फेरेगा, वह उस को सख़्त अज़ाब में दाख़िल करेगा। (१७) और यह कि मस्जिदें (ख़ास) ख़ुदा की हैं, तो ख़ुदा के साथ किसी और की इबादत न करो। (१८) और जब ख़ुदा के बन्दे (मुहम्मद) उस की इबादत को खड़े हुए तो काफ़िर उन के चारों तरफ़ भीड़ कर लेने को थे। (१९) ★

कह दो कि मैं तो अपने परवरदिगार ही की इबादत करता हूं और (२०) यह भी कह दो कि मैं तुम्हारे हक़ में नुक़सान और नफ़े का कुछ अख़्तियार नहीं रखता। (२१) यह भी कह दो कि ख़ुदा (के अज़ाब) से मुझे कोई पनाह नहीं दे सकता और मैं उस के सिवा कहीं पनाह की जगह नहीं देखता। (२२) हां, ख़ुदा की (तरफ़ से हुक्मों का) और उस के पैग़ामों का पहुंचा देना (ही मेरे ज़िम्मे है) और जो शख़्स ख़ुदा और उस के पैग़म्बर की ना-फ़रमानी करेगा तो ऐसों के लिए जहन्नम की आग है, हमेशा-हमेशा उस में रहेंगे, (२३) यहां तक कि जब ये लोग वह (दिन) देख लेंगे, जिस का उन से वायदा किया जाता है, तब उन को मालूम हो जाएगा कि मददगार किस के कमज़ोर और तायदाद किन की थोड़ी है। (२४) कह दो कि जिस (दिन) का तुम से वायदा किया जाता है, मैं नहीं जानता कि वह (बहुत) क़रीब (आने वाला) है या मेरे परवरदिगार ने उस की मुद्दत लम्बी कर दी है। (२५) (वही) ग़ैब (की बातें) जानने वाला है और किसी पर अपने ग़ैब को ज़ाहिर नहीं करता। (२६) हां, जिस पैग़म्बर को पसन्द फ़रमाए तो उस (को ग़ैब की बातें बता देता और उस) के आगे और पीछे निगहबान मुक़र्रर कर देता है, (२७) ताकि मालूम फ़रमाए कि उन्हों ने अपने परवरदिगार के पैग़ाम पहुंचा दिए हैं और (यों तो) उस ने उन की सब चीज़ों को हर तरफ़ से क़ाबू कर रखा है और एक-एक चीज़ गिन रखी है। (२८) ★

★रु. १/११ आ १९ ★रु. २/१२ आ ९

७३ सूरतुल्-मुज़्ज़म्मिलि ३

(मक्की) इस सूरः में अरबी के ८६४ अक्षर, २०० शब्द, २० आयतें और २ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम •

या अय्युहल् - मुज़्ज़म्मिलु (१) क़ुमिल्लै - ल इल्ला क़लीलन् -(२) निस्फ़हू अविन्क़ुस् मिन्हु क़लीलन् (३) औ ज़िद् अलैहि व रत्तिलिल् - क़ुरआ-न तर्तीला (४) इन्ना सनुल्क़ी अलै-क क़ौलन् सक़ीला (५) इन्-न नाशि-अ-तल्लैलि हि-य अशद्दु वत्-अंव्-व अक़्वमु क़ीला (६) इन्-न ल-क फ़िन्नहारि सब् - हन् तवीला (७) वज़्कुरिस्-म रब्बि-क व त-बत्तल् इलैहि तब्तीला (८) रब्बुल् - मशरिक़ि वलमग़्रिबि ला इला-ह इल्ला हु-व फ़त्तख़िज़्हु वकीला (९) वस्बिर अला मा यक़ूलू-न वह्जुर्हुम् हज्-रन् जमीला (१०) व ज़र्नी वल्-मुकज़्ज़िबी-न उलिन्नअ्-मति व महि्हल्हुम् क़लीला (११) इन्-न लदैना अन्कालंव्-व जहीमंव् - (१२) व तआमन् ज़ागुस्सतिंव्-व अज़ाबन् अलीमा (१३) यौ-म तर्जुफ़ुल्अर्ज़ु वल्जिबालु व कानतिल् - जिबालु कसीबम् - महीला (१४) इन्ना अर्सल्ना इलैकुम् रसूलन् शाहिदन् अलैकुम् कमा अर्सल्ना इला फ़िर्औ-न रसूला (१५) फ़-असा फ़िर्औनुर् - रसू-ल फ़-अ-ख़ज़्नाहु अख़्ज़ंव्वबीला (१६) फ़-कै-फ़ तत्तक़ू-न इन् क-फ़र्तुम् यौमंय्यज-अलुल् -विल्दा-न शी-ब-नि- (१७) -स्समाउ मुन्फ़तिरुम् - बिही का - न वअ्दुहू मफ़्अूला (१८) इन्-न हाज़िही तज़्कि-रतुन् फ़-मन् शा-अत्त-ख़-ज इला रब्बिही सबीला ★ (१९)

سورة المزمل مكية وهي عشرون آية وفيها ركوعان

بسم الله الرحمن الرحيم

يا أيها المزمل ۝ قم الليل إلا قليلا ۝ نصفه أو انقص منه
قليلا ۝ أو زد عليه ورتل القرآن ترتيلا ۝ إنا سنلقي عليك قولا
ثقيلا ۝ إن ناشئة الليل هي أشد وطئا وأقوم قيلا ۝ إن لك في
النهار سبحا طويلا ۝ واذكر اسم ربك وتبتل إليه تبتيلا ۝ رب
المشرق والمغرب لا إله إلا هو فاتخذه وكيلا ۝ واصبر على ما
يقولون واهجرهم هجرا جميلا ۝ وذرني والمكذبين أولي النعمة
ومهلهم قليلا ۝ إن لدينا أنكالا وجحيما ۝ وطعاما ذا غصة
وعذابا أليما ۝ يوم ترجف الأرض والجبال وكانت الجبال
كثيبا مهيلا ۝ إنا أرسلنا إليكم رسولا شاهدا عليكم كما
أرسلنا إلى فرعون رسولا ۝ فعصى فرعون الرسول فأخذناه أخذا
وبيلا ۝ فكيف تتقون إن كفرتم يوما يجعل الولدان شيبا ۝
السماء منفطر به كان وعده مفعولا ۝ إن هذه تذكرة فمن
شاء اتخذ إلى ربه سبيلا ۝ إن ربك يعلم أنك تقوم أدنى
من ثلثي الليل ونصفه وثلثه وطائفة من الذين معك
والله يقدر الليل والنهار علم أن لن تحصوه فتاب عليكم فاقرءوا

★रु० १/१३ आ १९

७३ सूरः मुज़्ज़म्मिल ३

सूरः मुज़्ज़म्मिल मक्की है, इस में २० आयतें और दो रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

ऐ (मुहम्मद !) जो कपड़े में लपट रहे हो, (१) रात को क़ियाम किया करो, मगर थोड़ी-सी रात[1] (२) यानी आधी रात या उस से कुछ कम, (३) या कुछ ज़्यादा और क़ुरआन को ठहर-ठहर कर पढ़ा करो। (४) हम बहुत जल्द तुम पर एक भारी फ़रमान नाज़िल करेंगे। (५) कुछ शक नहीं कि रात का उठना (हैवानी नफ़्स को) सख़्त पामाल करता है और उस वक़्त ज़िक्र भी ख़ूब दुरुस्त होता है। (६) दिन के वक़्त तो तुम्हें और बहुत से शुग़्ल (काम) होते हैं। (७) तो अपने परवरदिगार के नाम का ज़िक्र करो और हर तरफ़ से बे-ताल्लुक़ हो कर उसी की तरफ़ मुतवज्जह हो जाओ। (८) (वही) पूरब और पश्चिम का मालिक (है और) उस के सिवा कोई माबूद नहीं, तो उसी को अपना कारसाज़ बनाओ। (९) और जो-जो (दिल दुखाने वाली) बातें ये लोग कहते हैं, उन को सहते रहो और अच्छे तरीक़े से उन से किनारा अख़्तियार कर लो। (१०) और मुझे उन झुठलाने वालों से जो दौलतमंद हैं, समझ लेने दो[2] और उन को थोड़ी-सी मोहलत दो। (११) कुछ शक नहीं कि हमारे पास बेड़ियां हैं और भड़कती आग है, (१२) और गुलूगीर[3] खाना है और दर्द देने वाला अज़ाब है, (१३) जिस दिन ज़मीन और पहाड़ कांपने लगें और पहाड़ (ऐसे भुरभुरे, गोया) रेत के टीले हो जाएं। (१४) (ऐ मक्का वालो !) जिस तरह हम ने फ़िरऔन के पास (मूसा को) पैग़म्बर (बना कर) भेजा था, (उसी तरह) तुम्हारे पास भी (मुहम्मद) रसूल भेजे हैं, जो तुम्हारे मुक़ाबले में गवाह होंगे। (१५) सो फ़िरऔन ने (हमारे) पैग़म्बर का कहा न माना, तो हम ने उस को बड़े वबाल में पकड़ लिया। (१६) अगर तुम भी (उन पैग़म्बर को) न मानोगे तो उस दिन से कैसे बचोगे, जो बच्चों को बूढ़ा कर देगा,[4] (१७) (और) जिस से आसमान फट जाएगा। यह उस का वायदा (पूरा) हो कर रहेगा। (१८) यह (क़ुरआन) तो नसीहत है, सो जो चाहे अपने परवरदिगार तक (पहुंचने का) रास्ता अख़्तियार कर ले। (१९) ★

---

१. रात को खड़ा रह यानी नमाज़ पढ़ो रात को अव्वल। दीन में नमाज़ रात ही की फ़र्ज़ हुई, मगर किसी रात न हो तो माफ़ है।

२. लफ़्ज़ों का मतलब तो यह है कि मुझे और इन झुठलाने वालों को जो दौलतमंद हैं, छोड़ दो, मगर हम ने मुहावरे का ख़्याल किया है।

३. हलक़ में फंसने वाला, जो न अन्दर जाए, न बाहर जाए।

४. इस आयत के यह मानी भी हैं कि अगर तुम उस दिन को न मानोगे जो बच्चों को बूढ़ा कर देगा, तो कैसे बचोगे।

★रु. १/१३ आ १९

इन्-न रब्ब-क यअ्-लमु अन्न-क तक़ूमु अद्ना मिन् सुलुसयिल्लैलि व निस्-फ़हू व सुलु-सहू व ता-इफ़तुम्-मिनल्लज़ी-न म-अ-क वल्लाहु युक़द्दिरुल्लै-ल वन्नहा-र अलि-म अल्लन् तुह्सूहु फ़ता-ब अलैकुम् फ़क़्-रऊ मा त-यस्स-र मिनल्-क़ुर्आनि अलि-म अन् स-यकूनु मिन्कुम् मर्-ज़ा व आख़रू-न यज़्रिबू-न फ़िल्अर्ज़ि यब्तग़ू-न मिन् फ़ज़्-लिल्लाहि व आख़रू-न युक़ातिलू-न फ़ी सबी-लिल्लाहि फ़क़्-रऊ मा त-यस्स-र मिन्हु व अक़ीमुस्सला-त व आतुज़्ज़का-त व अक़्रिज़ुल्ला-ह क़र्-ज़न् ह-स-नन् व मा तुक़द्दिमू लि-अन्-फ़ुसि-कुम् मिन् ख़ैरिन् तजिदूहु अिन्दल्लाहि हु-व ख़ैरंव्-व अअ्-ज़-म अज्-रन् वस्तग़्फ़िरुल्ला-ह इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्-रहीम ★ (२०)

المزمل ٧٣ ٣٤٣ تبارك الذي ٢٩

مَا تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْآنِ عَلِمَ أَن سَيَكُونُ مِنكُم مَّرْضَىٰ وَآخَرُونَ يَضْرِبُونَ
فِي الْأَرْضِ يَبْتَغُونَ مِن فَضْلِ اللَّهِ وَآخَرُونَ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ
فَاقْرَءُوا مَا تَيَسَّرَ مِنْهُ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَأَقْرِضُوا اللَّهَ
قَرْضًا حَسَنًا وَمَا تُقَدِّمُوا لِأَنفُسِكُم مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوهُ عِندَ اللَّهِ هُوَ
خَيْرًا وَأَعْظَمَ أَجْرًا وَاسْتَغْفِرُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ
سُورَةُ الْمُدَّثِّرِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ سِتٌّ وَخَمْسُونَ آيَةً وَفِيهَا رُكُوعَانِ
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
يَا أَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ قُمْ فَأَنذِرْ وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ وَثِيَابَكَ فَطَهِّرْ
وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ وَلَا تَمْنُن تَسْتَكْثِرُ وَلِرَبِّكَ فَاصْبِرْ فَإِذَا نُقِرَ
فِي النَّاقُورِ فَذَٰلِكَ يَوْمَئِذٍ يَوْمٌ عَسِيرٌ عَلَى الْكَافِرِينَ غَيْرُ يَسِيرٍ
ذَرْنِي وَمَنْ خَلَقْتُ وَحِيدًا وَجَعَلْتُ لَهُ مَالًا مَّمْدُودًا وَبَنِينَ
شُهُودًا وَمَهَّدتُّ لَهُ تَمْهِيدًا ثُمَّ يَطْمَعُ أَنْ أَزِيدَ كَلَّا إِنَّهُ كَانَ
لِآيَاتِنَا عَنِيدًا سَأُرْهِقُهُ صَعُودًا إِنَّهُ فَكَّرَ وَقَدَّرَ فَقُتِلَ كَيْفَ
قَدَّرَ ثُمَّ قُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ثُمَّ نَظَرَ ثُمَّ عَبَسَ وَبَسَرَ ثُمَّ أَدْبَرَ
وَاسْتَكْبَرَ فَقَالَ إِنْ هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ يُؤْثَرُ إِنْ هَٰذَا إِلَّا قَوْلُ الْبَشَرِ
سَأُصْلِيهِ سَقَرَ وَمَا أَدْرَاكَ مَا سَقَرُ لَا تُبْقِي وَلَا تَذَرُ
لَوَّاحَةٌ لِّلْبَشَرِ عَلَيْهَا تِسْعَةَ عَشَرَ وَمَا جَعَلْنَا أَصْحَابَ النَّارِ إِلَّا

७४ सूरतुल्-मुद्दस्सिरि ४

(मक्की) इस सूरः में अरबी के ११४५ अक्षर, २५६ शब्द, ५६ आयतें और २ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ●

या अय्युहल्-मुद्दस्सिरु (१) क़ुम् फ़-अन्-ज़िर् (२) व रब्ब-क फ़-कब्बिर (३) व सिया-ब-क फ़-तहिहर् (४) वर्रुज्-ज़ फ़ह्जुर् (५) व ला तम्-नुन् तस्तक्सिर (६) व लिरब्बि-क फ़स्बिर् (७) फ़इज़ा नुक़ि-र फ़िन्नाक़ूरि (८) फ़ज़ालि-क यौमइज़िंय्यौमुन् असीरुन् (९) अलल्-काफ़िरी-न ग़ैरु यसीर (१०) ज़र्नी व मन् ख़-लक़्तु वहीदंव्- (११) व ज-अल्तु लहू मालम्-मम्दूदंव्- (१२) व बनी-न शुहूदंव्- (१३) व मह्-हत्तु लहू तम्हीदा (१४) सुम्-म यत्मअु अन् अज़ी-द (१५) कल्ला इन्नहू का-न लिआयातिना अनीदा (१६) सउर्हिक़ुहू सअूदन् (१७) इन्नहू फ़क्क-र व क़द्-द-र (१८) फ़क़ुति-ल कै-फ़ क़द्-द-र (१९) सुम्-म क़ुति-ल कै-फ़ क़द्-द-र (२०) सुम्-म न-ज़-र (२१) सुम्-म अ-ब-स व ब-स-र (२२) सुम्-म अद्-ब-र वस्तक्-ब-र (२३) फ़-क़ा-ल इन् हाज़ा इल्ला सिह्रुंय्युअ्-सरु (२४) इन् हाज़ा इल्ला क़ौलुल्-ब-शर (२५) सउस्लीहि स-क़र (२६) व मा अद्-रा-क मा स-क़र (२७) ला तुब्क़ी व ला त-ज़र (२८) लव्वाहतुल्-लिल-ब-शर (२९) अलैहा तिस्-अ-त अ-शर (३०)

★रु० २/१४ आ १
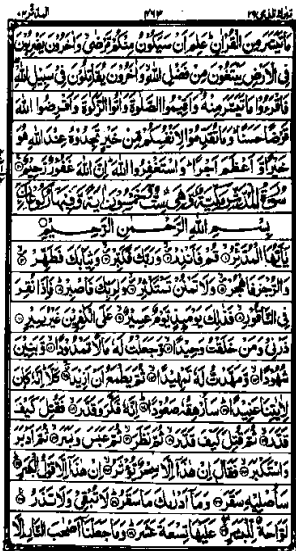
तुम्हारा परवरदिगार ख़ूब जानता है कि तुम और तुम्हारे साथ के लोग (कभी) दो तिहाई रात के क़रीब और (कभी) आधी रात और (कभी) तिहाई रात क़ियाम किया करते हो और ख़ुदा तो रात और दिन का अन्दाज़ा रखता है। उस ने मालूम किया कि तुम उस को निबाह न सकोगे तो उस ने तुम पर मेहरबानी की, पस जितना आसानी से हो सके (उतना) क़ुरआन पढ़ लिया करो। उस ने जाना कि तुम में कुछ बीमार भी होते हैं, और कुछ ख़ुदा के फ़ज़्ल (यानी रोज़ी) की खोज में मुल्क में सफ़र करते हैं और कुछ ख़ुदा की राह में लड़ते हैं, तो जितना आसानी से हो सके उतना पढ़ लिया करो और नमाज़ पढ़ते रहो और ज़कात अदा करते रहो और ख़ुदा को नेक (और नीयत के ख़ुलूस से) क़र्ज़ देते रहो और जो नेक अमल तुम अपने लिए आगे भेजोगे, उस को ख़ुदा के यहां बेहतर और बदले में बुज़ुर्गतर पाओगे और ख़ुदा से बख़्शिश मांगते रहो। बेशक ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है। (२०)★

७४ सूरः मुद्दस्सिर ४

सूरः मुद्दस्सिर मक्की है। इस में ५६ आयतें और दो रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

ऐ (मुहम्मद !) जो कपड़ा लपेटे पड़े हो[1], (१) उठो और हिदायत कर दो, (२) और अपने परवरदिगार की बड़ाई करो, (३) और अपने कपड़ों को पाक रखो, (४) और नापाकी से दूर रहो, (५) और (इस नीयत से) एहसान न करो कि इस से ज़्यादा की तलब में हो, (६) और अपने परवरदिगार के लिए सब्र करो। (७) जब सूर फूंका जाएगा, (८) वह दिन मुश्किल का दिन होगा, (९) (यानी) काफ़िरों पर आसान होगा, (१०) हमें उस शख़्स से समझ लेने दो, जिस को हम ने अकेला पैदा किया, (११) और ज़्यादा माल दिया, (१२) और (हर वक़्त उस के पास) हाज़िर होने वाले बेटे (दिए,) (१३) और हर तरह के सामान में वुस्अत दी। (१४) अभी ख़्वाहिश रखता है कि और ज़्यादा दें। (१५) ऐसा हरगिज़ नहीं होगा। यह हमारी आयतों का दुश्मन रहा है। (१६) हम उसे सऊद पर चढ़ाएंगे। (१७) उस ने फ़िक्र किया और तज्वीज़ की। (१८) यह मारा जाए, उस ने कैसी तज्वीज़ की, (१९) फिर यह मारा जाए, उस ने कैसी तज्वीज़ की, (२०) फिर ताम्मुल किया, (२१) फिर त्यौरी चढ़ायी और मुंह बिगाड़ लिया, (२२) फिर पीठ फेर कर चला और (हक़ क़ुबूल करने से) घमंड किया, (२३) फिर कहने लगा कि यह तो जादू है, जो (अगलों से) बराबर होता चला आया है।[2] (२४) (फिर) बोला) यह (ख़ुदा का कलाम नहीं, बल्कि) इंसान का कलाम है। (२५) हम बहुत जल्द उस को सक़र में दाख़िल करेंगे, (२६) और तुम क्या समझे कि सक़र क्या है? (२७) (वह आग है कि) न बाक़ी रखेगी और न छोड़ेगी। (२८) और बदन को झुलसा कर काला कर देगी, (२९) उस पर उन्नीस दारोग़ा

---

१. यह सूरः वह्य के शुरू के दिनों में नाज़िल हुई थी। चूंकि हज़रत सल्ल० वह्य के डर की वजह से कपड़ा ओढ़ लेते थे, इस लिए 'मुद्दस्सिर' से ख़िताब फ़रमाया।

२. ये आयतें वलीद बिन मुग़ीरह के हक़ में नाज़िल हुई हैं। यह शख़्स बड़ा मालदार और क़ुरैश में नामी था। बेटे भी बहुत-से रखता था। ग़रज़ दुनिया में जो बातें ख़ुशक़िस्मती की समझी जाती हैं, सब उस को हासिल थीं। (शेष पृष्ठ ९२५ पर)

★रु० २/१४ आ १

व मा ज-अल्ना अस्-हाबन्नारि इल्ला मलाइ-क-तंव्-व मा ज-अल्ना अिद्-द-तहुम् इल्ला फ़ित्-न-तल्-लिल्लज़ी-न क-फ़रू॥ लियस्तैक़िनल्लज़ी-न ऊतुल्-किता-ब व यज़्दा-दल्लज़ी-न आमनू ईमानंव्-वला यर्ताबल्लज़ी-न ऊतुल्-किता-ब वल्मुअ्मिनू-न॥ व लियक़ूलल्लज़ी - न फ़ी क़ुलूबिहिम् म - र - ज़ुंव्वल् - काफ़िरू-न माज़ा अरादल्लाहु बिहाज़ा म-स-लन्॥ कज़ालि - क युज़िल्लुल्लाहु मंय्यशाउ व यह्दी मंय्यशाउ॥ व मा यअ्-लमु जुनू-द रब्बि-क इल्ला हु-व॥ व मा हि-य इल्ला ज़िक्रा लिल्ब-शर ★ (३१) कल्ला वल्क़मरि॥ (३२) वल्लैलि इज् अद्-ब-र॥ (३३) वस्सुब्हि इज़ा अस्-फ़-र॥ (३४) इन्नहा ल-इह्दल् - कुबरि॥ (३५) नज़ीरल् - लिल्ब-शर॥ (३६) लिमन् शा-अ मिन्कुम् अंय्य-त-क़द्-द-म औ य-त-अख़्ख़-र॥ (३७) कुल्लु नफ़्सिम् - बिमा क-स-बत् रहीनतुन्॥ (३८) इल्ला अस्-हाबल् - यमीन॥ (३९) फ़ी जन्ना-तिन् य-त-सा-अलून॥ (४०) अनिल्-मुज्रिमीन॥ (४१) मा स-ल-ककुम् फ़ी स-क़र (४२) क़ालू लम् नकु मिनल्-मुसल्लीन॥ (४३) व लम् नकु नुत्अिमुल् - मिस्कीन॥ (४४) व कुन्ना नख़ूज़ु म-अल् - ख़ाइज़ीन॥ (४५) व कुन्ना नुकज़्ज़िबु बियौमिद्दीन॥ (४६) हत्ता अतानल् - यक़ीन॥ (४७) फ़मा तन्फ़अुहुम् शफ़ा-अतुश् - शाफ़िईन॥ (४८) फ़मा ल-हुम् अनित्तज़्-किरति मुअ् - रिज़ीन॥ (४९) क-अन्नहुम् हुमुरुम् - मुस्तन्फ़िरः॥ (५०) फ़र्रत् मिन् क़स्-वरः॥ (५१) बल् युरीदु कुल्लुम्रिइम् - मिन्हुम् अंय्युअ्ता सुहुफ़म् - मुनश्-श-र-तन्॥ (५२) कल्ला॥ बल् ला यख़ाफ़ूनल् - आख़िरः॥ (५३) कल्ला इन्नहू तज़्कि-रतुन्॥ (५४) फ़-मन् शा-अ ज़-करह॥ (५५) व मा यज़्कुरू-न इल्ला अंय्यशा-अल्लाहु॥ हु-व अह्लुत्तक़्वा व अह्लुल् - मग़्फ़िरः ★ ● (५६)

★रु. १/१५ आ ३१ मु. अि मु. ता ख़. १६ ★रु. २/१६ आ २५ ●मु. ३/४

हैं, (३०) और हम ने दोज़ख़ के दारोग़ा फ़रिश्ते बनाए हैं और उन की तायदाद को काफ़िरों की आज़माइश के लिए मुक़र्रर किया है (और) इस लिए कि किताब वाले यक़ीन करें और मोमिनों का ईमान और ज़्यादा हो और अह्ले किताब और मोमिन शक न लाएं और इस लिए कि जिन लोगों के दिलों में (निफ़ाक़ का) मर्ज़ है और (जो) काफ़िर (हैं) कहें कि इस मिसाल (के बयान करने) से ख़ुदा का मक़्सूद क्या है ? इसी तरह ख़ुदा जिस को चाहता है, गुमराह करता है और जिस को चाहता है, हिदायत देता है और तुम्हारे परवरदिगार के लश्करों को उस के सिवा कोई नहीं जानता और यह तो आदम की औलाद के लिए नसीहत है। (३१)★

हां, (हां, हमें,) चांद की क़सम ! (३२) और रात की, जब पीठ फेरने लगे, (३३) और सुबह की जब रोशन हो, (३४) कि वह (आग) एक बहुत बड़ी (आफ़त) है, (३५) (और) बशर के लिए ख़ौफ़ की वजह, (३६) जो तुम में से आगे बढ़ना चाहे या पीछे रहना चाहे।' (३७) हर शख़्स अपने आमाल के बदले रेहन है, (३८) मगर दाहिनी तरफ़ वाले (नेक लोग) (३९) ∴(कि) वे बहिश्त के बाग़ों में (होंगे और) पूछते होंगे, (४०) (यानी आग में जलने वाले) गुनाहगारों से, (४१) कि तुम दोज़ख़ में क्यों पड़े ? (४२) वे जवाब देंगे कि हम नमाज़ नहीं पढ़ते थे, (४३) और न फ़क़ीरों को खाना खिलाते थे, (४४) और बातिल वालों के साथ मिल कर (हक़ से) इंकार करते थे, (४५) और बदले के दिन को झुठलाते थे, (४६) यहां तक कि हमें मौत आ गयी, (४७) तो (इस हाल में) सिफ़ारिश करने वालों की सिफ़ारिश उन के हक़ में कुछ फ़ायदा न देगी. (४८) उन को क्या हुआ है कि नसीहत से मुंह फेर रहे हैं। (४९) गोया गधे हैं कि बिदक जाते हैं, (५०) (यानी) शेर से डर कर भाग जाते हैं। (५१) असल यह है कि उन में से हर शख़्स यह चाहता है कि उस के पास खुली हुई किताब आए। (५२) ऐसा हरगिज़ नहीं होगा। हक़ीक़त यह है कि उन को आख़िरत का ख़ौफ़ ही नहीं। (५३) कुछ शक नहीं कि यह नसीहत है। (५४) तो जो चाहे याद रखे, (५५) और याद भी तभी रखेंगे जब ख़ुदा चाहे। वही डरने के लायक़ और बख़्शिश का मालिक है। (५६) ★●

(पृष्ठ ६२३ का शेष)

एक बार जो हज़रत सल्ल० के पास आया तो आप ने उस को क़ुरआन सुनाया, ऐसा मीठा कलाम सुन कर फड़क उठा और बे-साख़्ता तारीफ़ करने लगा। यह बात अबू जह्ल को मालूम हुई तो उस ने वलीद से आ कर कहा कि चचा ! तुम्हारी बिरादरी के लोग तुम्हारे लिए चन्दा जमा करना चाहते हैं। उस ने कहा किस लिए ? अबू जह्ल ने कहा कि तुम मुहम्मद के पास जा कर उन की बातें सुनते हो। उस ने कहा कि क़ुरैश को मालूम है कि मैं इन सब से ज़्यादा दौलतमंद हूं, तो मुझे उन के चन्दे की क्या ज़रूरत है। अबू जह्ल ने कहा, अच्छा, तो ऐसी बात कहो, जिस से साबित हो कि तुम उन के कलाम को पसन्द नहीं करते। उस ने कहा कि मैं उन के हक़ में क्या कहूं। ख़ुदा की क़सम ! तुम में कोई शख़्स मुझ से ज़्यादा अशआर व क़सीदे का आलिम नहीं और मैं उन के कलाम को हरगिज़ शेर नहीं कह सकता। अबू जह्ल ने कहा, जब तक तुम उन के बारे में कोई बात लोगों की ख़्वाहिश के मुताबिक़ तज्वीज़ न करोगे, वे तुम से ख़ुश नहीं होंगे। आख़िर उस ने सोच कर कहा कि यह जादू है। सऊद दोज़ख़ में एक पहाड़ है, जिस पर काफ़िर को चढ़ा कर नीचे गिरा दिया करेंगे। कुछ ने कहा कि सऊद दोज़ख़ में एक बहुत बड़ा पत्थर है, जिस पर काफ़िर को मुंह के बल घसीटेंगे। किसी ने कहा कि सऊद जहन्नम में एक चिकना पत्थर है, जिस पर काफ़िर को चढ़ने के लिए मजबूर करेंगे।

७५ सूरतुल्-क़ियामति ३१

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के ६८२ अक्षर, १६४ शब्द, ४० आयतें और २ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रहीम •

ला उक़्सिमु बियौमिल्-क़ियामति (१) व ला उक़्सिमु बिन्नफ़्सिल्-लव्वाम: (२) अ-यह़्सबुल-इन्सानु अल्लन् नज्म-अ अ़िज़ामहू (३) बला क़ादि-री-न अ़ला अन्नुसव्वि-य बनानहू (४) बल् युरीदुल-इन्सानु लियफ़्जु-र अमामहू (५) यस्अलु अय्या-न यौमुल-क़ियाम: (६) फ़इज़ा बरिक़ल-ब-सरु (७) व ख़-स-फ़ल्-क़-मरु (८) व जुमिअ़श्शम्सु वल्क़-मरु (९) यक़ूलुल-इन्सानु यौमइज़िन् ऐनल-म-फ़र्रु (१०) कल्ला ला व-ज़र (११) इला रब्बि-क यौमइज़ि-निल-मुस्तक़र्र (१२) युनब्बउल-इन्सानु यौमइज़िम्-बिमा क़द्-द-म व अख़्ख़-र (१३) बलिल-इन्सानु अ़ला नफ़्सिही बसीरतुंव- (१४) व लौ अल्क़ा मआ़ज़ीरः (१५) ला तुह़र्रिक् बिही लिसान-क लितअ़्-ज-ल बिही (१६) इन-न अ़लैना जम्-अ़हू व क़ुर्आनहू (१७) फ़इज़ा क़-रअ्नाहु फ़त्तबिअ़्-क़ुर्आनः (१८) सुम-म इन-न अ़लैना बयानः (१९) कल्ला बल् तुह़िब्बूनल-आ़जि-ल-त (२०) व त-ज़रूनल-आख़ि-र: (२१) वुजूहुंय्यौमइज़िन् नाज़ि-र-तुन् (२२) इला रब्बिहा नाज़िरः

الْاِنْسَانُ اَلَّنْ نَّجْمَعَ عِظَامَهٗ ۝ بَلٰى قٰدِرِيْنَ عَلٰٓى اَنْ نُّسَوِّيَ
بَنَانَهٗ ۝ بَلْ يُرِيْدُ الْاِنْسَانُ لِيَفْجُرَ اَمَامَهٗ ۝ يَسْـَٔلُ اَيَّانَ يَوْمُ
الْقِيٰمَةِ ۝ فَاِذَا بَرِقَ الْبَصَرُ ۝ وَخَسَفَ الْقَمَرُ ۝ وَجُمِعَ الشَّمْسُ وَ
الْقَمَرُ ۝ يَقُوْلُ الْاِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ اَيْنَ الْمَفَرُّ ۝ كَلَّا لَا وَزَرَ ۝ اِلٰى
رَبِّكَ يَوْمَئِذِ الْمُسْتَقَرُّ ۝ يُنَبَّؤُا الْاِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ بِمَا قَدَّمَ وَاَخَّرَ ۝
بَلِ الْاِنْسَانُ عَلٰى نَفْسِهٖ بَصِيْرَةٌ ۝ وَّلَوْ اَلْقٰى مَعَاذِيْرَهٗ ۝ لَا تُحَرِّكْ
بِهٖ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهٖ ۝ اِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهٗ وَقُرْاٰنَهٗ ۝ فَاِذَا قَرَاْنٰهُ
فَاتَّبِعْ قُرْاٰنَهٗ ۝ ثُمَّ اِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَهٗ ۝ كَلَّا بَلْ تُحِبُّوْنَ الْعَاجِلَةَ ۝
وَتَذَرُوْنَ الْاٰخِرَةَ ۝ وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ نَّاضِرَةٌ ۝ اِلٰى رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ۝
وَوُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ بَاسِرَةٌ ۝ تَظُنُّ اَنْ يُّفْعَلَ بِهَا فَاقِرَةٌ ۝ كَلَّآ اِذَا
بَلَغَتِ التَّرَاقِيَ ۝ وَقِيْلَ مَنْ رَاقٍ ۝ وَّظَنَّ اَنَّهُ الْفِرَاقُ ۝ وَ
الْتَفَّتِ السَّاقُ بِالسَّاقِ ۝ اِلٰى رَبِّكَ يَوْمَئِذِ الْمَسَاقُ ۝ فَلَا صَدَّقَ
وَلَا صَلّٰى ۝ وَلٰكِنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ۝ ثُمَّ ذَهَبَ اِلٰٓى اَهْلِهٖ يَتَمَطّٰى ۝
اَوْلٰى لَكَ فَاَوْلٰى ۝ ثُمَّ اَوْلٰى لَكَ فَاَوْلٰى ۝ اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَنْ
يُّتْرَكَ سُدًى ۝ اَلَمْ يَكُ نُطْفَةً مِّنْ مَّنِيٍّ يُّمْنٰى ۝ ثُمَّ كَانَ
عَلَقَةً فَخَلَقَ فَسَوّٰى ۝ فَجَعَلَ مِنْهُ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى ۝
اَلَيْسَ ذٰلِكَ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ يُّحْيِۦَ الْمَوْتٰى ۝

(२३) व वुजूहुंय्यौमइज़िम्-बासि-रतुन् (२४) तज़ुन्नु अंय्युफ़्-अ़-ल बिहा फ़ाक़ि-र: (२५) कल्ला इज़ा ब-ल-ग़तित-तराक़ि-य (२६) व क़ी-ल मन् राक़िव (२७) -व ज़न-न अन्नहुल-फ़िराक़ु (२८) वल-तफ़्फ़तिस्साक़ु बिस्साक़ि (२९) इला रब्बि-क यौमइज़ि-निल-मसाक़ ★ (३०) फ़ला सद्-द-क़ व ला सल्ला (३१) व लाकिन् कज़्ज़-ब व त-वल्ला (३२) सुम-म ज़-ह-ब इला अह्लिही य-त-मत़्ता (३३) औला ल-क फ़-औला (३४) सुम-म औला ल-क फ़-औला (३५) अ-यह़्सबुल-इन्सानु अंय्युत-र-क सुदा (३६) अ-लम् यकु नुत़्फ़-तम्-मिम्-मनिय्यिंय्युम्ना (३७) सुम-म का-न अ़-ल-क़-तन् फ़-ख़-ल-क़ फ़-सव्वा (३८) फ़-ज-अ़-ल मिन्हुज़्-ज़ौजैनिज़्-ज़-क-र वल-उन्सा (३९) अलै-स ज़ालि-क बिक़ादिरिन् अ़ला अंय्युह़्यि-यल-मौता ★ (४०)

★रु. १/१७ आ ३० ★रु. २/१८ आ १०

७५ सूरः क़ियामः ३१

सूरः क़ियामः मक्की है, इस मे चालीस आयतें और दो रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

हम को क़ियामत के दिन की क़सम, (१) और नफ़्से लव्वामा[1] की (कि सब लोग उठा कर खड़े किए जाएंगे,) (२) क्या इंसान यह ख़्याल करता है कि हम उस की (बिखरी हुई) हड्डियां इकट्ठी नहीं करेंगे ? (३) ज़रूर करेंगे (और) हम इस बात पर क़ुदरत रखते हैं कि उसके पोर-पोर दुरुस्त कर दें, (४) मगर इंसान चाहता है कि आगे को ख़ुदसरी करता जाए। (५) पूछता है कि क़ियामत का दिन कब होगा ? (६) जब आंखें चुंधिया जाएं, (७) और चांद गहना जाए, (८) और सूरज और चांद जमा कर दिए जाएं, (९) उस दिन इंसान कहेगा कि (अब) कहां भाग जाऊं ? (१०) बेशक कहीं पनाह नहीं, (११) उस दिन परवरदिगार ही के पास ठिकाना है, (१२) उस दिन इंसान को जो (अमल) उस ने आगे भेजे और जो पीछे छोड़े होंगे, सब बता दिए जाएंगे, (१३) बल्कि इंसान आप अपना गवाह है, (१४) अगरचे उज़्र माज़रत करता रहे (१५) और (ऐ मुहम्मद !) वह्य के पढ़ने के लिए अपनी ज़ुबान न चलाया करो कि उस को जल्द याद कर लो। (१६) उस का जमा करना और पढ़ाना हमारे ज़िम्मे है। (१७) जब वह वह्य पढ़ा करें, तो तुम (उस को सुना करो और) फिर उसी तरह पढ़ा करो, (१८) फिर उस (के मानी) का बयान भी हमारे ज़िम्मे है, (१९) मगर (लोगो !) तुम दुनिया को दोस्त रखते हो, (२०) और आख़िरत को छोड़े देते हो, (२१) उस दिन बहुत से मुंह रौनक़दार होंगे, (२२) (और) अपने परवरदिगार का दीदार कर रहे होंगे, (२३) और बहुत-से मुंह उस दिन उदास होंगे, (२४) ख़्याल करेंगे कि उन पर मुसीबत वाक़ेअ होने को है। (२५) देखो, जब जान गले तक पहुंच जाए, (२६) और लोग कहने लगें, (इस वक़्त) कौन झाड़-फूंक करने वाला है, (२७) और उस (जान गले तक पहुंचे हुए शख़्स) ने समझा कि अब सब से जुदाई है, (२८) और पिंडली से पिंडली लिपट जाए, (२९) उस दिन तुझ को अपने परवरदिगार की तरफ़ चलना है, (३०) ★

तो उस (अंजाम से ना-समझ) ने न तो (ख़ुदा के कलाम की) तस्दीक़ की, न नमाज़ पढ़ी। (३१) बल्कि झुठलाया और मुंह फेर लिया, (३२) फिर अपने घर वालों के पास अकड़ता हुआ चल दिया। (३३) अफ़सोस है तुझ पर, फिर अफ़सोस है, (३४) फिर अफ़सोस है तुझ पर, फिर अफ़सोस है। (३५) क्या इंसान ख़्याल करता है कि यों ही छोड़ दिया जाएगा ? (३६) क्या वह मनी की, जो रहम में डाली जाती है, एक बूंद न था ? (३७) फिर लोथड़ा हुआ, फिर (ख़ुदा ने) उस को बनाया, फिर (उस के अंगों को) ठीक किया, (३८) फिर उस की दो क़िस्में बनायीं, (एक) मर्द और (एक) औरत। (३९) क्या उस को इस बात पर क़ुदरत नहीं कि मुर्दों को जिला उठाये ? (४०) ★

---

१. इन्सान का जी तीन तरह का है, एक जो गुनाहों और बुरे कामों की तरफ़ मायल रहे, उस को नफ़्से अम्मारा या अम्मारा बिस्सूइ कहते हैं, दूसरा जो बुराई और क़ुसूर के होने पर मलामत करे कि तू ने यह हरकत क्यों की, उस को नफ़्से लव्वामा कहते हैं। तीसरा जो नेकियों में दिलचस्पी बढ़ाएं और बुराइयों से नफ़रत दिलाए, ऐसा जी बड़े चैन में रहता है और उस को नफ़्से मुत्मइन्ना कहते हैं। यहां ख़ुदा ने नफ़्से लव्वामा की क़सम खायी है।

★रु. १/१७ आ ३० ★रु. २/१८ आ १०

७६ सूरतुद्‌दह्‌र ९८

(मदनी) इस सूरः में अरबी के १०९९ अक्षर, २४६ शब्द, ३१ आयतें और २ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

हल् अता अ़-लल-इन्सानि ह़ीनुम्-मिनद-दह्‌रि लम् यकुन् शै-अम्-मज़्कूरा (१) इन्ना ख़-लक़्नल-इन्सा-न मिन् नुत्‌फ़तिन् अम्शाजिन्नब्तलीहि फ़-ज-अ़ल्नाहु समीअ़म्-बसीरा (२) इन्ना हदैनाहुस्सबी-ल इम्मा शाकिरंव्-व इम्मा कफ़ूरा (३) इन्ना अअ्-तद्‌ना लिल्काफ़िरी-न सलासि-ल व अग़्लालंव्-व सअ़ीरा (४) इन्नल-अब्रा-र यश्-रबू-न मिन् कअ्सिन् का-न मिज़ा-जुहा काफ़ूरा (५) अ़ैनंय्यश्-रबु बिहा अ़िबादुल्लाहि युफ़ज्जिरू-नहा तफ़्-जीरा (६) यूफ़ू-न बिन्नज़्रि व यख़ाफ़ू-न यौमन् का-न शर्रुहू मुस्ततीरा (७) व युत्अ़िमूनत्तआ़-म अ़ला हुब्बिही मिस्कीनंव्-व यतीमंव्-व असीरा (८) इन्नमा नुत्अ़िमुकुम् लिवज्हिल्लाहि ला नुरीदु मिन्कुम् जज़ाअंव्-व ला शुकूरा (९) इन्ना नख़ाफ़ु मिर्रब्बिना यौमन् अ़बूसन् क़म्-तरीरा (१०) फ़-वक़ाहुमुल्लाहु शर्-र ज़ालिकल-यौमि व लक़्क़ाहुम् नज़्-रतंव्-व सुरूरा (११) व जज़ाहुम् बिमा स-बरू जन्नतंव्-व ह़रीरम्- (१२) मुत्तकिई-न फ़ीहा अ़लल्-अराइकि ला यरौ-न फ़ीहा शम्संव्-व ला ज़म्-हरीरा (१३) व दानि-य-तन् अ़लैहिम् ज़िलालुहा व ज़ुल्लिलत् क़ुतूफ़ुहा तज़्लीला (१४) व युताफ़ु अ़लैहिम् बिआनि-यतिम्-मिन् फ़िज़्ज़तिंव्-व अक्वाबिन् कानत् क़वारी-र (१५) क़वारी-र मिन् फ़िज़्ज़तिन् क़द्‌दरूहा तक़्दीरा (१६) व युस्क़ौ-न फ़ीहा कअ्-सन् का-न मिज़ाजुहा ज़न्जबीला (१७) अ़ैनन् फ़ीहा तुसम्मा सल्सबीला (१८) व यतूफ़ु अ़लैहिम् विल्दानुम्-मुख़ल्लदू-न इज़ा रऐतहुम् ह़सिब्-तहुम् लुअ्लुअम्-मन्सूरा (१९) व इज़ा रऐ-त सम्-म रऐ-त नअ़ीमंव्-व मुल्कन् कबीरा (२०)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
هَلْ أَتَىٰ عَلَى الْإِنسَانِ حِينٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُن شَيْئًا مَّذْكُورًا ۝ إِنَّا
خَلَقْنَا الْإِنسَانَ مِن نُّطْفَةٍ أَمْشَاجٍ نَّبْتَلِيهِ فَجَعَلْنَاهُ سَمِيعًا بَصِيرًا ۝
إِنَّا هَدَيْنَاهُ السَّبِيلَ إِمَّا شَاكِرًا وَإِمَّا كَفُورًا ۝ إِنَّا أَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ
سَلَاسِلَ وَأَغْلَالًا وَسَعِيرًا ۝ إِنَّ الْأَبْرَارَ يَشْرَبُونَ مِن كَأْسٍ كَانَ
مِزَاجُهَا كَافُورًا ۝ عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللَّهِ يُفَجِّرُونَهَا تَفْجِيرًا ۝ يُوفُونَ
بِالنَّذْرِ وَيَخَافُونَ يَوْمًا كَانَ شَرُّهُ مُسْتَطِيرًا ۝ وَيُطْعِمُونَ الطَّعَامَ
عَلَىٰ حُبِّهِ مِسْكِينًا وَيَتِيمًا وَأَسِيرًا ۝ إِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللَّهِ لَا نُرِيدُ
مِنكُمْ جَزَاءً وَلَا شُكُورًا ۝ إِنَّا نَخَافُ مِن رَّبِّنَا يَوْمًا عَبُوسًا قَمْطَرِيرًا ۝
فَوَقَاهُمُ اللَّهُ شَرَّ ذَٰلِكَ الْيَوْمِ وَلَقَّاهُمْ نَضْرَةً وَسُرُورًا ۝ وَجَزَاهُم بِمَا
صَبَرُوا جَنَّةً وَحَرِيرًا ۝ مُّتَّكِئِينَ فِيهَا عَلَى الْأَرَائِكِ لَا يَرَوْنَ فِيهَا
شَمْسًا وَلَا زَمْهَرِيرًا ۝ وَدَانِيَةً عَلَيْهِمْ ظِلَالُهَا وَذُلِّلَتْ قُطُوفُهَا تَذْلِيلًا ۝
وَيُطَافُ عَلَيْهِم بِآنِيَةٍ مِّن فِضَّةٍ وَأَكْوَابٍ كَانَتْ قَوَارِيرَا ۝ قَوَارِيرَ مِن
فِضَّةٍ قَدَّرُوهَا تَقْدِيرًا ۝ وَيُسْقَوْنَ فِيهَا كَأْسًا كَانَ مِزَاجُهَا زَنجَبِيلًا ۝
عَيْنًا فِيهَا تُسَمَّىٰ سَلْسَبِيلًا ۝ وَيَطُوفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُونَ إِذَا
رَأَيْتَهُمْ حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا مَّنثُورًا ۝ وَإِذَا رَأَيْتَ ثَمَّ رَأَيْتَ نَعِيمًا وَمُلْكًا

७६ सूर: दह्र ९८

सूर: दह्र मक्की है, इस में इक्तीस आयतें और दो रुकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

बेशक इंसान पर ज़माने में एक ऐसा वक़्त भी आ चुका है कि वह कोई चीज़ ज़िक्र के क़ाबिल न था। (१) हम ने इंसान को मिले-जुले नुत्फ़े से पैदा किया[1], ताकि उसे आज़माएं, तो हम ने उसे सुनता-देखता बनाया। (२) और उसे रास्ता भी दिखा दिया। (अब वह) चाहे शुक्रगुज़ार हो, चाहे ना-शुक्रा। (३) हम ने काफ़िरों के लिए ज़ंजीरें और तौक़ और दहकती आग तैयार कर रखी है। (४) जो नेकी वाले हैं, वह ऐसी शराब[2] पिएंगे, जिस में काफ़ूर की मिलावट होगी। (५) यह एक चश्मा है, जिस में से खुदा के बन्दे पिएंगे और उस में से (छोटी-छोटी) नहरें निकाल लेंगे। (६) ये लोग नज़्रें पूरी करते हैं और उस दिन से जिस की सख़्ती फैल रही होगी, ख़ौफ़ रखते हैं, (७) और इसके बावजूद कि उन को खुद खाने की ख़्वाहिश (और ज़रूरत) है, फ़क़ीरों और यतीमों और क़ैदियों को खिलाते हैं। (८) (और कहते हैं कि) हम तुम को ख़ालिस खुदा के लिए खिलाते हैं, न तुम से बदले की ख़्वाहिश है, न शुक्रगुज़ारी के (तलबगार।) (९) हम को अपने परवरदिगार से उस दिन का डर लगता है जो (चेहरों को) देखने में बुरा और (दिलों को) सख़्त (बेचैन कर देने वाला) है। (१०) तो खुदा उन को उस दिन की सख़्ती से बचा लेगा और ताज़गी और खुशदिली इनायत फ़रमाएगा। (११) और उन के सब्र के बदले उन को बहिश्त (के बाग़) और रेशम (के कपड़े) अता करेगा ? (१२) उन में वे तख़्तों पर तकिए लगाए बैठे होंगे, वहां न धूप (की गर्मी) देखेंगे, न सर्दी की तेज़ी, (१३) उन से (फलदार शाख़ें और) उन के साए क़रीब होंगे और मेवों के गुच्छे झुके हुए लटक रहे होंगे। (१४) (नौकर-चाकर) चांदी के बासन लिए हुए उन के चारों तरफ़ फिरेंगे, और शीशे के (निहायत साफ़-सुथरे) गिलास, (१५) और शीशे भी चांदी के, जो ठीक अन्दाज़े के मुताबिक़ बनाए गए हैं, (१६) और वहां उन को ऐसी शराब (भी) पिलायी गयी, जिस में सोंठ की मिलावट होगी। (१७) यह बहिश्त में एक चश्मा है, जिस का नाम सलसबील है। (१८) और उन के पास लड़के आते जाते होंगे, जो हमेशा एक ही हालत पर आएंगे। जब तुम उन पर निगाह डालो, तो ख़्याल करो कि बिखरे हुए मोती हैं। (१९) और बहिश्त में (जहां) आंख उठाओगे, कसरत से नेमत और शानदार सल्तनत देखोगे। (२०) (उन (के बदनों) पर हरी दीबा

१. चूंकि मर्द और औरत दोनों के नुत्फ़ों के मिलने से बच्चा बनता है, इस लिए मिला-जुला नुत्फ़ा फ़रमाया।

२. 'कास' शराब के साग़र को भी कहते हैं और इसे शराब के लिए भी बोल सकते हैं, इस लिए यहां हम ने इस का तर्जुमा शराब किया।

आलि-यहुम् सियाबु सुन्दुसिन् ख़ुज़्रुंव्-व इस्तब्रक़ुंव्-व हुल्लू असावि-र मिन् फ़िज़्ज़-तिन् व सक़ाहुम् रब्बुहुम् शराबन् तहूरा (२१) इन्-न हाज़ा का-न लकुम् जज़ा-अंव्-व का-न सअ्-युकुम् मश्कूरा ★ (२२) इन्ना नह्नु नज़्ज़ल्ना अलैकल-क़ुर्आ-न तन्ज़ीला (२३) फ़स्बिर् लिहुक्मि रब्बि-क व ला तुतिअ्-मिन्हुम् आसिमन् औ कफ़ूरा (२४) वज़्कुरिस्-म रब्बि-क बुक्-र-तंव्-व असीला (२५) व मिनल्लैलि फ़स्जुद् लहू व सब्बिह्हु लैलन् तवीला (२६) इन्-न हाउला-इ युहिब्बूनल्-आजि-ल-त व य-ज़-रू-न वरा-अहुम् यौमन् सक़ीला (२७) नह्नु ख़-लक़्नाहुम् व शदद्ना अस्-रहुम् व इज़ा शिअ्ना बद्दल्ना अम्सालहुम् तब्दीला (२८) इन्-न हाज़िही तज़्कि-रतुन् फ़-मन् शा-अत्त-ख़-ज़ इला रब्बिही सबीला (२९) व मा तशाऊ-न इल्ला अंय्यशाअल्लाहु इन्नल्ला-ह का-न अलीमन् हकीमंय्- (३०) -युद्ख़िलु मंय्यशाउ फ़ी रह्मतिही वज़्ज़ालिमी-न अ-अद्-द लहुम् अज़ाबन् अलीमा ★ (३१)

عٰلِيَهُمْ ثِيَابُ سُنْدُسٍ خُضْرٌ وَّاِسْتَبْرَقٌ وَّحُلُّوْٓا اَسَاوِرَ
مِنْ فِضَّةٍ وَسَقٰىهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُوْرًا ۞ اِنَّ هٰذَا كَانَ لَكُمْ جَزَآءً
وَّكَانَ سَعْيُكُمْ مَّشْكُوْرًا ۞ اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ تَنْزِيْلًا ۞
فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تُطِعْ مِنْهُمْ اٰثِمًا اَوْ كَفُوْرًا ۞ وَاذْكُرِ اسْمَ
رَبِّكَ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ۞ وَمِنَ الَّيْلِ فَاسْجُدْ لَهٗ وَسَبِّحْهُ لَيْلًا
طَوِيْلًا ۞ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ يُحِبُّوْنَ الْعَاجِلَةَ وَيَذَرُوْنَ وَرَآءَهُمْ يَوْمًا
ثَقِيْلًا ۞ نَحْنُ خَلَقْنٰهُمْ وَشَدَدْنَآ اَسْرَهُمْ وَاِذَا شِئْنَا بَدَّلْنَآ اَمْثَالَهُمْ
تَبْدِيْلًا ۞ اِنَّ هٰذِهٖ تَذْكِرَةٌ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ۞ وَ
مَا تَشَآءُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۞ يُّدْخِلُ
مَنْ يَّشَآءُ فِيْ رَحْمَتِهٖ وَالظّٰلِمِيْنَ اَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۞
سُوْرَةُ الْمُرْسَلٰتِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ خَمْسُوْنَ اٰيَةً وَّفِيْهَا رُكُوْعَانِ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
وَالْمُرْسَلٰتِ عُرْفًا ۞ فَالْعٰصِفٰتِ عَصْفًا ۞ وَّالنّٰشِرٰتِ نَشْرًا ۞
فَالْفٰرِقٰتِ فَرْقًا ۞ فَالْمُلْقِيٰتِ ذِكْرًا ۞ عُذْرًا اَوْ نُذْرًا ۞ اِنَّمَا
تُوْعَدُوْنَ لَوَاقِعٌ ۞ فَاِذَا النُّجُوْمُ طُمِسَتْ ۞ وَاِذَا السَّمَآءُ فُرِجَتْ ۞
وَاِذَا الْجِبَالُ نُسِفَتْ ۞ وَاِذَا الرُّسُلُ اُقِّتَتْ ۞ لِاَيِّ يَوْمٍ اُجِّلَتْ ۞
لِيَوْمِ الْفَصْلِ ۞ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا يَوْمُ الْفَصْلِ ۞ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ

७७ सूरतुल्-मुर्सलाति ३३

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के ८४६ अक्षर, १८१ शब्द, ५० आयतें और २ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

वल्मुर्सलाति अुर्फ़न् (१) फ़ल-आसिफ़ाति अस्फ़न् (२) वन्नाशिराति नश्रन् (३) फ़ल्फ़ारिक़ाति फ़र्क़न् (४) फ़ल्मुल्क़ियाति ज़िक्रन् (५) अुज़्रन् औ नुज़्रन् (६) इन्नमा तू-अदू-न लवाक़ि-अ (७) फ़-इज़न्नुजूमु तुमिसत् (८) व इज़स्समाउ फ़ुरिजत् (९) व इज़ल्-जिबालु नुसिफ़त् (१०) व इज़र्रुसुलु उक़्क़ितत् (११) लिअय्यि यौमिन् उज्जिलत् (१२) लियौमिल्-फ़स्लि (१३) व मा अद्रा-क मा यौमुल्-फ़स्ल (१४)

★रु. १/१९ आ २२ ★रु. २/२० आ ९

और अतलस के कपड़े होंगे और उन्हें चांदी के कंगन पहनाए जाएंगे और उन का परवरदिगार उन को निहायत पाकीज़ा शराब पिलाएगा। (२१) यह तुम्हारा बदला है और तुम्हारी कोशिश (ख़ुदा के यहां) मक़बूल हुई। (२२) ★

(ऐ मुहम्मद !) हम ने तुम पर क़ुरआन धीरे-धीरे नाज़िल किया है, (२३) तो अपने परवरदिगार के हुक्म के मुताबिक़ सब्र किए रहो और उन लोगों में से किसी बद-अमल और ना-शुक्रे का कहा न मानो, (२४) और सुबह व शाम अपने परवरदिगार का नाम लेते रहो। (२५) और रात को बड़ी रात तक उस के आगे सज्दे करो और उस की पाकी बयान करते रहो। (२६) ये लोग दुनिया को दोस्त रखते हैं और (क़ियामत के) भारी दिन को पीठ पीछे छोड़ देते हैं। (२७) हम ने उन को पैदा किया और उन के जोड़ों को मज़बूत बनाया और अगर हम चाहें तो उन के बदले उन्हीं की तरह और लोग ले आएं। (२८) यह तो नसीहत है, जो चाहे अपने परवरदिगार की तरफ़ पहुंचने का रास्ता अख़्तियार करे। (२९) और तुम कुछ भी नहीं चाह सकते, मगर जो ख़ुदा को मंज़ूर हो। बेशक ख़ुदा जानने वाला, हिक्मत वाला है, (३०) जिस को चाहता है, अपनी रहमत में दाख़िल कर लेता है और ज़ालिमों के लिए उस ने दुख देने वाला अज़ाब तैयार कर रखा है★(३१)

७७ सूरः मुर्सलात ३३

सूरः मुर्सलात मक्की है, उस में पचास आयतें और दो रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

हवाओं की क़सम जो नर्म-नर्म चलती हैं, (१) फिर ज़ोर पकड़ कर झक्कड़ हो जाती हैं, (२) और (बादलों को) फाड़ कर फैला देती हैं, (३) फिर उन को फाड़ कर जुदा-जुदा कर देती हैं, (४) फिर फ़रिश्तों की क़सम, जो वह्य लाते हैं, (५) ताकि उज़्र (दूर) कर दिया जाए, (६) कि जिस का तुम से वायदा किया जाता है, वह हो कर रहेगा। (७) जब तारों की चमक जाती रहे, (८) और जब आसमान फट जाए, (९) और जब पहाड़ उड़े-उड़े फिरें, (१०) और जब पैग़म्बर फ़राहम किए जाएं, (११) भला (इन मामलों में) देर किस लिए की गयी ? (१२) फ़ैसले के दिन के लिए, (१३) और तुम्हें क्या ख़बर कि फ़ैसले का दिन क्या है, (१४) उस दिन झुठलाने वालों के

★रु. १/१९ आ २२ ★रु. २/२० आ ९

वैलुंय्योमइज़िल् - लिलमुकज़्ज़िबीन (१५) अ-लम् नुह्लिकिल् - अव्वलीन (१६) सुम्-म नुत्बिअुहुमुल् - आख़िरीन (१७) कज़ालि-क नफ़्अ़लु बिल्-मुज्‌रिमीन (१८) वैलुंय्योमइज़िल् - लिलमुकज़्ज़िबीन (१९) अ - लम् नख़्लुक़्कुम् मिम् - माइम् - महीन (२०) फ़-ज-अ़ल्नाहु फ़ी क़रारिम् - मकीन (२१) इला क़-दरिम्-मअ़्लूम (२२) फ़-क़-दर्ना फ़निअ़्-मल् - क़ादिरून (२३) वैलुंय्योमइज़िल्-लिलमुकज़्ज़िबीन (२४) अ-लम् नज्‌अ़लिल्-अर्-ज़ किफ़ातन् (२५) अह्याअंव्-व अम्वातंव्- (२६) व जअ़ल्ना फ़ीहा रवासि-य शामिख़ातिंव्-व अस्क़ैनाकुम् माअन् फ़ुराता (२७) वैलुंय्योमइज़िल-लिलमुकज़्ज़िबीन (२८) इन्तलिक़ू इला मा कुन्तुम् बिही तुकज़्ज़िबून (२९) इन्तलिक़ू इला ज़िल्लिन् ज़ी सलासि शु-अ़बिल- (३०) ला ज़लीलिंव्-व ला युग़्नी मिनल्ल-हब (३१) इन्नहा तर्मी बि-श-ररिन् कल्-क़स्रि (३२) क-अन्नहू जिमा-लतुन् सुफ़्र (३३) वैलुंय्योमइज़िल-लिल-मुकज़्ज़िबीन (३४) हाज़ा यौमु ला यन्तिक़ून (३५) व ला युअ्ज़नु लहुम् फ़-यअ़्-तज़िरून (३६) वैलुंय्-योमइज़िल-लिलमुकज़्ज़िबीन (३७) हाज़ा यौमुल-फ़स्लि ज-मअ़्-नाकुम् वल्-अव्वलीन (३८) फ़इन् का-न लकुम् कैदुन् फ़कीदून (३९) वैलुंय्योमइज़िल-लिलमुकज़्ज़ि-बीन ★ (४०) इन्नल्-मुत्तक़ी-न फ़ी ज़िलालिंव-व अुयून (४१) व फ़वाकि-ह मिम्मा यश-तहून (४२) कुलू वश्रबू हनीअम्-बिमा कुन्तुम् तअ़्-मलून (४३) इन्ना कज़ालि-क नज्ज़िल-मुह्सिनीन (४४) वैलुंय्योमइज़िल-लिलमुकज़्ज़िबीन (४५) कुलू व त-मत्तअ़ू क़लीलन् इन्नकुम् मुज्‌रिमून (४६) वैलुंय्योमइज़िल-लिलमुकज़्ज़िबीन (४७) व इज़ा क़ी-ल लहुमुर-कअ़ू ला यर्-कअ़ून (४८) वैलुंय्योमइज़िल-लिलमुकज़्ज़िबीन (४९) फ़-बिअय्यि हदीसिम्-बअ़्-दहू युअ्मिनून ★ (५०)

المكذبين ۝ ألم نهلك الأولين ۝ ثم نتبعهم الآخرين ۝
كذلك نفعل بالمجرمين ۝ ويل يومئذ للمكذبين ۝ ألم نخلقكم
من ماء مهين ۝ فجعلناه في قرار مكين ۝ إلى قدر معلوم ۝
فقدرنا فنعم القادرون ۝ ويل يومئذ للمكذبين ۝ ألم
نجعل الأرض كفاتا ۝ أحياء وأمواتا ۝ وجعلنا فيها رواسي
شامخات وأسقيناكم ماء فراتا ۝ ويل يومئذ للمكذبين ۝
انطلقوا إلى ما كنتم به تكذبون ۝ انطلقوا إلى ظل ذي ثلاث
شعب ۝ لا ظليل ولا يغني من اللهب ۝ إنها ترمي بشرر
كالقصر ۝ كأنه جمالت صفر ۝ ويل يومئذ للمكذبين ۝
هذا يوم لا ينطقون ۝ ولا يؤذن لهم فيعتذرون ۝ ويل
يومئذ للمكذبين ۝ هذا يوم الفصل جمعناكم والأولين ۝
فإن كان لكم كيد فكيدون ۝ ويل يومئذ للمكذبين ۝ إن
المتقين في ظلال وعيون ۝ وفواكه مما يشتهون ۝ كلوا
واشربوا هنيئا بما كنتم تعملون ۝ إنا كذلك نجزي المحسنين ۝
ويل يومئذ للمكذبين ۝ كلوا وتمتعوا قليلا إنكم مجرمون ۝
ويل يومئذ للمكذبين ۝ وإذا قيل لهم اركعوا لا يركعون ۝
ويل يومئذ للمكذبين ۝ فبأي حديث بعده يؤمنون ۝

★रु. १/२१ आ ४० ★रु. २/२२ आ १०

लिए ख़राबी है। (१५) क्या हम ने पहले लोगों को हलाक नहीं कर डाला? (१६) फिर इन पिछलों को भी उन के पीछे भेज देते हैं। (१७) हम गुनाहगारों के साथ ऐसा ही करते हैं। (१८) उस दिन झुठलाने वालों की ख़राबी है। (१९) क्या हम ने तुम को हक़ीर पानी से नहीं पैदा किया? (२०) (पहले) उस को एक महफ़ूज़ जगह में रखा, (२१) एक मालूम वक़्त तक, (२२) फिर अन्दाज़ा मुक़र्रर किया और हम क्या ही ख़ूब अन्दाज़ा मुक़र्रर करने वाले हैं। (२३) उस दिन झुठलाने वालों की ख़राबी है। (२४) क्या हम ने ज़मीन को समेटने वाली नहीं बनाया? (२५) (यानी) ज़िंदों और मुर्दों को, (२६) और उस पर ऊंचे-ऊंचे पहाड़ रख दिए और तुम लोगों को मीठा पानी पिलाया, (२७) उस दिन झुठलाने वालों की ख़राबी है। (२८) जिस चीज़ को तुम झुठलाया करते थे, (अब) उस की तरफ़ चलो, (२९) (यानी) उस साए की तरफ़ चलो, जिस की तीन शाखें हैं, (३०) न ठंडी छांव और न लपट से बचाव, (३१) उस से आग की (इतनी-इतनी बड़ी) चिंगारियां उड़ती हैं, जैसे महल, (३२) गोया पीले रंग के ऊंट हैं, (३३) उस दिन झुठलाने वालों की ख़राबी है। (३४) यह वह दिन है कि (लोग) लब तक न हिला सकेंगे, (३५) और न उन को इजाज़त दी जाएगी कि उज़्र कर सकें। (३६) उस दिन झुठलाने वालों की ख़राबी है। (३७) यही फ़ैसले का दिन है, (जिस में) हम ने तुम को और पहले के लोगों को जमा किया है। (३८) अगर तुम को कोई दांव आता हो तो मुझ से कर चलो। (३९) उस दिन झुठलाने वालों की ख़राबी है। (४०) ★

बेशक परहेज़गार सायों और चश्मों में होंगे। (४१) और मेवों में जो उन को पसन्द हों, (४२) जो अमल तुम करते रहे थे, उन के बदले में मज़े से खाओ और पियो। (४३) हम नेकों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं। (४४) उस दिन झुठलाने वालों की ख़राबी है। (४५) (ऐ झुठलाने वालो!) तुम किसी क़दर खा लो और फ़ायदे उठा लो, तुम बेशक गुनाहगार हो। (४६) उस दिन झुठलाने वालों की ख़राबी है। (४७) और जब उन से कहा जाता है कि (ख़ुदा के आगे) झुको तो झुकते नहीं। (४८) उस दिन झुठलाने वालों की ख़राबी है। (४९) अब इस के बाद ये कौन-सी बात पर ईमान लाएंगे? (५०)★

★रु. १/२१ आ ४० ★रु. २/२२ आ १०

तीसवां पारः अम्-म य-त-सा-अलून

७८ सूरतुन्नबइ ८०

(मक्की) इस सूरः में अरबी के ८०१ अक्षर, १७४ शब्द, ४० आयतें और २ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

अम्-म य-त-सा-अलून (१) अनिन्न-ब-इल्-अज़ीम (२) अल्लज़ी हुम् फ़ीहि मुख़्तलिफ़ून (३) कल्ला स-यअ्-लमू-न (४) सुम्-म कल्ला स-यअ्-लमून (५) अ-लम् नज्अलिल्-अर्-ज़ मिहादंव्- (६) वल्जिबा-ल औतादंव्- (७) व ख़-लक़्नाकुम् अज़्वाजंव्- (८) व ज-अ़ल्ना नौमकुम् सुबातंव्- (९) व ज-अ़ल्नल्लै-ल लिबासंव्- (१०) व ज-अ़ल्नन्नहा-र मआशंव्- (११) व बनैना फ़ौ-क़कुम् सब्-अ़न् शिदादंव्- (१२) व ज-अ़ल्ना सिराजंव्वह्हा-जंव्- (१३) व अन्ज़ल्ना मिनल्-मुअ़-सिराति मा-अन् सज्जाजल्- (१४) लि-नुख़्रि-ज बिही ह़ब्बंव्-व नबातंव- (१५) व जन्नातिन् अल्-फ़ाफ़ा (१६) इन्-न यौमल्फ़स्लि का-न मीक़ातंय्- (१७) यौ-म युन्फ़ख़ु फ़िस्सूरि फ़-तअ्-तू-न अफ़्वाजंव्- (१८) व फ़ुतिह़तिस्-समाउ फ़-कानत अब्-वाबंव्- (१९) व सुय्यि-रतिल-जिबालु फ़-कानत सराबा (२०) इन्-न ज-हन्न-म कानत मिर्-सादल- (२१) लित्ता-ग़ी-न म-आबल्- (२२) लाबिसी-न फ़ीहा अह़्-क़ाबा (२३) ला यज़ूक़ू-न फ़ीहा बर्दंव्-व ला शराबन् (२४) इल्ला ह़मीमंव्-व ग़स्सा-क़न् (२५) जज़ाअंव्विफ़ाक़ा (२६) इन्नहुम् कानू ला यर्जू-न हि़साबंव्- (२७) व कज़्ज़बू बिआयातिना किज़्ज़ाबा (२८) व कुल्-ल शैइन् अह़्सैनाहु किताबन् (२९) फ़ज़ूक़ू फ़-लन् नज़ी-द-कुम् इल्ला अ़ज़ाबा ★ (३०) इन्-न लिल-मुत्तक़ी-न मफ़ाज़न् (३१) ह़-दाइ-क़ व अअ्-नाबंव्- (३२) व कवाअि-ब अत-राबंव्- (३३) व कअ्-सन् दिहाक़ा (३४) ला यस्-मऊ-न फ़ीहा लग़्वंव्-व ला किज़्ज़ाबा (३५) जज़ाअम् - मिर्रब्बि-क अ़ताअन् हि़साबर्- (३६)

سورة النبأ مكية وهي اربعون اية وفيها ركوعان
بسم الله الرحمن الرحيم
عم يتساءلون ۝ عن النبإ العظيم ۝ الذي هم فيه
مختلفون ۝ كلا سيعلمون ۝ ثم كلا سيعلمون ۝ الم نجعل
الارض مهادا ۝ والجبال اوتادا ۝ وخلقناكم ازواجا ۝ وجعلنا
نومكم سباتا ۝ وجعلنا الليل لباسا ۝ وجعلنا النهار معاشا ۝ و
بنينا فوقكم سبعا شدادا ۝ وجعلنا سراجا وهاجا ۝ وانزلنا
من المعصرات ماء ثجاجا ۝ لنخرج به حبا ونباتا ۝ وجنات
الفافا ۝ ان يوم الفصل كان ميقاتا ۝ يوم ينفخ في الصور فتاتون
افواجا ۝ وفتحت السماء فكانت ابوابا ۝ وسيرت الجبال فكانت
سرابا ۝ ان جهنم كانت مرصادا ۝ للطاغين مابا ۝ لابثين فيها
احقابا ۝ لا يذوقون فيها بردا ولا شرابا ۝ الا حميما وغساقا ۝
جزاء وفاقا ۝ انهم كانوا لا يرجون حسابا ۝ وكذبوا باياتنا
كذابا ۝ وكل شيء احصيناه كتابا ۝ فذوقوا فلن نزيدكم الا
عذابا ۝ ان للمتقين مفازا ۝ حدائق واعنابا ۝ وكواعب اترابا ۝
وكاسا دهاقا ۝ لا يسمعون فيها لغوا ولا كذابا ۝ جزاء من ربك
عطاء حسابا ۝ رب السماوات والارض وما بينهما الرحمن لا

★रु. १/१ आ ३०

७८ सूरः नबा ८०

सूरः नबा मक्की है। इस में चालीस आयतें और दो रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

(ये) लोग किस चीज़ के बारे में पूछते हैं? (१) (क्या) बड़ी ख़बर के बारे में? (२) जिस में ये इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं। (३) देखो, ये बहुत जल्द जान लेंगे। (४) फिर देखो, ये बहुत जल्द जान लेंगे। (५) क्या हम ने ज़मीन को बिछौना नहीं बनाया? (६) और पहाड़ों को (उस की) मेखें (नहीं ठहराया?) (७) (बेशक बनाया) और तुम को जोड़ा-जोड़ा भी पैदा किया, (८) और नींद को तुम्हारे लिए आराम की (वजह) बनाया, (९) और रात को पर्दा मुक़र्रर किया, (१०) और दिन को रोज़ी (का वक़्त) क़रार दिया, (११) और तुम्हारे ऊपर सात मज़बूत (आसमान) बनाये, (१२) और (सूरज का) रोशन चिराग़ बनाया, (१३) और निचुड़ते बादलों से मूसलाधार मेंह बरसाया, (१४) ताकि उस से अनाज और सब्ज़ा पैदा करें, (१५) और घने-घने बाग़। (१६) बेशक फ़ैसले का दिन मुक़र्रर है, (१७) जिस दिन सूर फूंका जाएगा, तो तुम लोग गुट के गुट आ मौजूद होगे, (१८) और आसमान खोला जाएगा, तो (उस में) दरवाज़े हो जाएंगे, (१९) और पहाड़ चलाए जाएंगे, तो वे रेत हो कर रह जाएंगे। (२०) बेशक दोज़ख़ घात में है, (२१) (यानी) सर-कशों का वही ठिकाना है। (२२) उस में मुद्दतों पड़े रहेंगे। (२३) वहां न ठंडक का मज़ा चखेंगे, न (कुछ) पीना (नसीब होगा), (२४) मगर गर्म पानी और बहती पीप, (२५) (यह) बदला है पूरा-पूरा। (२६) ये लोग हिसाब (आख़िरत) की उम्मीद नहीं रखते थे। (२७) और हमारी आयतों को झूठ समझ कर झुठलाते रहते थे। (२८) और हम ने हर चीज़ को लिख कर ज़ब्त कर रखा है। (२९) सो (अब) मज़ा चखो। हम तुम पर अज़ाब ही बढ़ाते जाएंगे। (३०)★

बेशक परहेज़गारों के लिए कामियाबी है। (३१) (यानी) बाग़ और अंगूर, (३२) और हम-उम्र नव-जवान औरतें, (३३) और शराब के छलकते हुए गिलास, (३४) वहां न बेहूदा बात सुनेंगे, न झूठ (ख़ुराफ़ात)।[1] (३५) यह तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से बदला है तै इनाम, (३६)

१. कोई किसी से झगड़ता नहीं कि उस की बात मुकरावे।

★रु. १/१ आ ३०

रब्बिस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बैनहुमर्रह्मानि ला यम्लिकू-न मिन्हु ख़िताबा(३७) यौ-म यक़ूमुर्रूहु वल्मला-इकतु सफ़्फ़ल्-ला य-त-कल्लमू-न इल्ला मन् अज़ि-न लहुर्रह्मानु व क़ा-ल सवाबा (३८) ज़ालिकल-यौमुलहक़्क़ु फ़-मन् शा-अत्त-ख़-ज़ इला रब्बिही मआबा (३९) इन्ना अन्ज़र्नाकुम् अज़ाबन् क़रीबंय्-यौ-म यन्ज़ुरुल्-मरउ मा क़द्-द-मत यदाहु व यक़ूलुल-काफ़िरु यालैतनी कुन्तु तुराबा ★ (४०)

يَمْلِكُونَ مِنْهُ خِطَابًا ۝ يَوْمَ يَقُومُ الرُّوحُ وَالْمَلَائِكَةُ صَفًّا لَا
يَتَكَلَّمُونَ إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ الرَّحْمَٰنُ وَقَالَ صَوَابًا ۝ ذَٰلِكَ الْيَوْمُ
الْحَقُّ فَمَنْ شَاءَ اتَّخَذَ إِلَىٰ رَبِّهِ مَآبًا ۝ إِنَّا أَنْذَرْنَاكُمْ عَذَابًا قَرِيبًا
يَوْمَ يَنْظُرُ الْمَرْءُ مَا قَدَّمَتْ يَدَاهُ وَيَقُولُ الْكَافِرُ يَا لَيْتَنِي كُنْتُ تُرَابًا ۝

७९ सूरतुन्-नाज़िआति ८१

سُورَةُ النَّازِعَاتِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ سِتٌّ وَأَرْبَعُونَ آيَةً وَفِيهَا رُكُوعَانِ

(मक्की) इस सूर: में अरबी के ७९१ अक्षर, १८१ शब्द, ४६ आयतें और २ रुकूअ हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

वन्नाज़िआति ग़र्क़न् (१) वन्नाशिताति नश्तं-व् (२) वस्साबिहाति सब्हन् (३) फ़स्साबिक़ाति सब्क़न् (४) फ़ल्मुदब्बिराति अम्रा (५) यौ-म तर्जुफ़ुर्राजिफ़तु (६) तत्बअुहर-रादिफ़: (७) क़ुलूबुंय्यौमइज़िंव्वाजिफ़तुन् (८) अब्सारुहा ख़ाशिअ: (९) यक़ूलू-न अ इन्ना ल-मर्दूदू-न फ़िल्-हाफ़िर: (१०) अ इज़ा कुन्ना अिज़ामन् नख़िर: (११) क़ालू तिल्-क इज़न् कर्रतुन् ख़ासिर: (१२) फ़-इन्नमा हि-य ज़ज्-रतुंव्वाहिदतुन् (१३) फ़-इज़ा हुम् बिस्साहिर: (१४) हल् अता-क हदीसु मूसा (१५) इज़् नादाहु रब्बुहू बिल्वादिल-मुक़द्दसि तुवा (१६) इज़्हब् इला फ़िर्औ-न इन्नहू तग़ा (१७) फ़क़ुल् हल् ल-क इला अन् त-ज़क्का (१८) व अह्दि-य-क इला रब्बि-क फ़-तख़्शा (१९) फ़-अराहुल-आ-य-तल-कुब्रा (२०) फ़-कज़्ज़-ब व असा (२१) सुम्-म अद्-ब-र यस्आ (२२) फ़-ह-श-र फ़नादा (२३) फ़क़ा-ल अ-न रब्बुकुमुल-अअ्-ला (२४) फ़-अ-ख़-ज़हुल्लाहु नकालल्-आख़िरति वल्ऊला (२५) इन्-न फ़ी ज़ालि-क ल-अिब्रतल-लिमंय्यख़्शा ★ (२६) अ अन्तुम् अशद्दु ख़ल्-क़न् अमिस्समाउ बनाहा (२७)
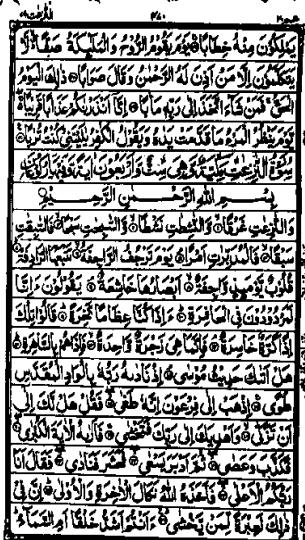
وَالنَّازِعَاتِ غَرْقًا ۝ وَالنَّاشِطَاتِ نَشْطًا ۝ وَالسَّابِحَاتِ سَبْحًا ۝ فَالسَّابِقَاتِ
سَبْقًا ۝ فَالْمُدَبِّرَاتِ أَمْرًا ۝ يَوْمَ تَرْجُفُ الرَّاجِفَةُ ۝ تَتْبَعُهَا الرَّادِفَةُ ۝
قُلُوبٌ يَوْمَئِذٍ وَاجِفَةٌ ۝ أَبْصَارُهَا خَاشِعَةٌ ۝ يَقُولُونَ أَإِنَّا
لَمَرْدُودُونَ فِي الْحَافِرَةِ ۝ أَإِذَا كُنَّا عِظَامًا نَخِرَةً ۝ قَالُوا تِلْكَ
إِذًا كَرَّةٌ خَاسِرَةٌ ۝ فَإِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَاحِدَةٌ ۝ فَإِذَا هُمْ بِالسَّاهِرَةِ ۝
هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ مُوسَىٰ ۝ إِذْ نَادَاهُ رَبُّهُ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ
طُوًى ۝ اذْهَبْ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَىٰ ۝ فَقُلْ هَلْ لَكَ إِلَىٰ
أَنْ تَزَكَّىٰ ۝ وَأَهْدِيَكَ إِلَىٰ رَبِّكَ فَتَخْشَىٰ ۝ فَأَرَاهُ الْآيَةَ الْكُبْرَىٰ ۝
فَكَذَّبَ وَعَصَىٰ ۝ ثُمَّ أَدْبَرَ يَسْعَىٰ ۝ فَحَشَرَ فَنَادَىٰ ۝ فَقَالَ أَنَا
رَبُّكُمُ الْأَعْلَىٰ ۝ فَأَخَذَهُ اللَّهُ نَكَالَ الْآخِرَةِ وَالْأُولَىٰ ۝ إِنَّ فِي
ذَٰلِكَ لَعِبْرَةً لِمَنْ يَخْشَىٰ ۝ أَأَنْتُمْ أَشَدُّ خَلْقًا أَمِ السَّمَاءُ

★रु. २/२ आ १० व. लाज़िम व. लाज़िम व. लाज़िम व. लाज़िम ★रु. १/३ आ २६

वह जो आसमानों और ज़मीन और जो उन दोनों में है, सब का मालिक है, बड़ा मेहरबान, किसी को उस से बात करने का यारा न होगा। (३७) जिस दिन रूहुल अमीन और (और) फ़रिश्ते सफ़ बांध कर खड़े हों, तो कोई बोल न सकेगा, मगर जिस को (ख़ुदा-ए-) रहमान इजाज़त बख़्शे और उस ने बात भी दुरुस्त कही हो। (३८) यह दिन बर-हक़ है। पस जो शख़्स चाहे अपने परवरदिगार के पास ठिकाना बना ले। (३९) हम ने तुम को अज़ाब से, जो बहुत जल्द आने वाला है, आगाह कर दिया है। जिस दिन हर शख़्स उन (आमाल) को जो उन से आगे भेजे होंगे, देख लेगा और काफ़िर कहेगा कि ऐ काश ! मैं मिट्टी होता। (४०) ★

८१ सूरः नाज़िआत ७९

सूर: नाज़िआत मक्की है। इस में छियालीस आयतें और दो रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

उन (फ़रिश्तों) की क़सम, जो डूब कर खींच लेते हैं, (१) और उन की जो आसानी से खोल देते हैं, (२) और उन की जो तैरते-फिरते हैं, (३) फिर लपक कर आगे बढ़ते हैं, (४) फिर (दुनिया के) कामों का इन्तिज़ाम करते हैं[1] (५) (कि वह दिन आ कर रहेगा), जिस दिन ज़मीन को भोंचाल आएगा, (६) फिर उस के पीछे और (भोंचाल) आएगा, (७) उस दिन (लोगों के) दिल डर रहे होंगे। (८) (और) आंखें झुकी हुई (९) काफ़िर कहते हैं, क्या हम उलटे पांव फिर लौटेंगे ? (१०) भला जब हम खोखली हड्डियां हो जाएंगे, (तो फिर ज़िंदा किए जाएंगे)। (११) कहते हैं कि यह लौटना तो नुक़सान (की वजह) है (१२) वह तो सिर्फ़ एक डांट होगी। (१३) उस वक़्त वे (सब हश्र के) मैदान में जमा होंगे। (१४) भला तुम को मूसा की हिकायत पहुंची है, (१५) जब उन के परवरदिगार ने उन को पाक मैदान (यानी) तुवा में पुकारा, (१६) (और हुक्म दिया) कि फ़िऔन के पास जाओ, वह सरकश हो रहा है, (१७) और (उस से) कहो, क्या तू चाहता है कि पाक हो जाए, (१८) और मैं तुझे तेरे परवरदिगार का रास्ता बताऊं, ताकि तुझ को ख़ौफ़ (पैदा) हो। (१९) ग़रज़ उन्हों ने उस को बड़ी निशानी दिखायी, (२०) मगर उस ने झुठलाया और न माना, (२१) फिर लौट गया और तद्बीरें करने लगा, (२२) और (लोगों को) इकट्ठा किया और पुकारा, (२३) कहने लगा कि तुम्हारा सब से बड़ा मालिक मैं हूं। (२४) तो ख़ुदा ने उस को दुनिया और आख़िरत (दोनों) के अज़ाब में पकड़ लिया। (२५) जो शख़्स (ख़ुदा से) डर रखता है, उस के लिए इस (क़िस्से) में इब्रत है। (२६) ★

भला तुम्हारा बनाना मुश्किल है या आसमान का ? उसी ने उस को बनाया, (२७) उस की

१. जिन चीज़ों की यह ख़ूबियां बयान की गयी हैं, उन के बारे में आम राय यही है कि वे फ़रिश्ते हैं, इसी लिए तर्जुमे में हम ने फ़रिश्तों का लफ़्ज़ बढ़ा दिया है। डूब कर खींचने से मुराद रूहों का खींचना है। किसी की रूह को मुश्किल से निकालते हैं और किसी की रूह को आसानी से गोया बन्द खोल देते हैं।

र-फ़-अ सम्कहा फ़-सव्वाहा (२८) व अग़्-श लैलहा व अख़्र-ज ज़ुहाहा (२९) वल्अर्-ज़ बअ्-द ज़ालि-क दहाहा (३०) अख़्-र-ज मिन्हा मा-अहा व मर्आहा (३१) वल्जिबा-ल अर्साहा (३२) मताअल्-लकुम् व लि-अन्आमिकुम् (३३) फ़-इज़ा जा-अतित्-ताम्मतुल-कुब्रा (३४) यौ-म य-त-ज़क्करुल् इन्सानु मा सआ (३५) व बुर्रिज़तिल-जहीमु लिमंय्यरा (३६) फ़-अम्मा मन् तग़ा (३७) व आ-स-रल्-हयातद्दुन्या (३८) फ़-इन्नल्-जही-म हियल्-मअ्वा (३९) व अम्मा मन् ख़ा-फ़ मक़ा-म रब्बिही व नहन्नफ़्-स अनिल्-हवा (४०) फ़-इन्नल-जन्न-त हि-यल्-मअ्वा (४१) यस्-अलू-न-क अनिस्साअ़ति अय्या-न मुर्साहा (४२) फ़ी-म अन्-त मिन् ज़िक्-राहा (४३) इला रब्बि-क मुन्तहाहा (४४) इन्नमा अन्-त मुन्ज़िरु मंय्यख़्-शाहा (४५) क-अन्नहुम् यौ-म यरौनहा लम् यल्बसू इल्ला अशिय्य-तन् औ ज़ुहाहा★ (४६)

بَنٰىهَا ۝ رَفَعَ سَمْكَهَا فَسَوّٰىهَا ۝ وَاَغْطَشَ لَيْلَهَا وَاَخْرَجَ ضُحٰىهَا ۝
وَالْاَرْضَ بَعْدَ ذٰلِكَ دَحٰىهَا ۝ اَخْرَجَ مِنْهَا مَآءَهَا وَمَرْعٰىهَا ۝ وَ
الْجِبَالَ اَرْسٰىهَا ۝ مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِاَنْعَامِكُمْ ۝ فَاِذَا جَآءَتِ الطَّآمَّةُ
الْكُبْرٰى ۝ يَوْمَ يَتَذَكَّرُ الْاِنْسَانُ مَا سَعٰى ۝ وَبُرِّزَتِ الْجَحِيْمُ لِمَنْ
يَّرٰى ۝ فَاَمَّا مَنْ طَغٰى ۝ وَاٰثَرَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ۝ فَاِنَّ الْجَحِيْمَ هِيَ
الْمَاْوٰى ۝ وَاَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوٰى ۝
فَاِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَاْوٰى ۝ يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ السَّاعَةِ اَيَّانَ مُرْسٰىهَا ۝ فِيْمَ
اَنْتَ مِنْ ذِكْرٰىهَا ۝ اِلٰى رَبِّكَ مُنْتَهٰىهَا ۝ اِنَّمَآ اَنْتَ مُنْذِرُ مَنْ يَّخْشٰىهَا ۝
كَاَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَهَا لَمْ يَلْبَثُوْٓا اِلَّا عَشِيَّةً اَوْ ضُحٰىهَا ۝
سُوْرَةُ عَبَسَ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ اثْنَتَانِ وَاَرْبَعُوْنَ اٰيَةً وَّفِيْهَا رُكُوْعٌ وَّاحِدٌ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
عَبَسَ وَتَوَلّٰىٓ ۝ اَنْ جَآءَهُ الْاَعْمٰى ۝ وَمَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّهٗ يَزَّكّٰىٓ ۝ اَوْ
يَذَّكَّرُ فَتَنْفَعَهُ الذِّكْرٰى ۝ اَمَّا مَنِ اسْتَغْنٰى ۝ فَاَنْتَ لَهٗ
تَصَدّٰى ۝ وَمَا عَلَيْكَ اَلَّا يَزَّكّٰى ۝ وَاَمَّا مَنْ جَآءَكَ يَسْعٰى ۝ وَ
هُوَ يَخْشٰى ۝ فَاَنْتَ عَنْهُ تَلَهّٰى ۝ كَلَّآ اِنَّهَا تَذْكِرَةٌ ۝ فَمَنْ شَآءَ
ذَكَرَهٗ ۝ فِيْ صُحُفٍ مُّكَرَّمَةٍ ۝ مَّرْفُوْعَةٍ مُّطَهَّرَةٍ ۝ بِاَيْدِيْ
سَفَرَةٍ ۝ كِرَامٍ بَرَرَةٍ ۝ قُتِلَ الْاِنْسَانُ مَآ اَكْفَرَهٗ ۝ مِنْ اَيِّ

८० सूरतु अ-ब-स २४

(मक्की) इस सूरः में अरबी के ५५३ अक्षर, ११३ शब्द, ४२ आयतें और १ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

अ-ब-स व त-वल्ला (१) अन् जा-अहुल-अअ्-मा (२) व मा युद्री-क ल-अल्लहू यज़्ज़क्का (३) औ यज़्ज़क्करु फ़-तन्फ़-अ-हुज़्ज़िक्रा (४) अम्मा मनिस्तग़ना (५) फ़-अन्-त लहू त-सद्दा (६) व मा अलै-क अल्ला य-ज़्ज़क्का (७) व अम्मा मन् जा-अ-क यस-आ (८) व हु-व यख़्शा (९) फ़-अन-त अन्हु त-लह्हा (१०) कल्ला इन्नहा तज़्कि-रतुन् (११) फ़-मन् शा-अ ज़-क-रः ▓ (१२) फ़ी सुहुफ़िम्-मुकर्रमतिम्- (१३) मर्फ़ूअतिम्-मुतह-ह-रतिम् (१४) बिऐदी सफ़-रतिन् (१५) किरामिम् - ब-र-र: (१६) क़ुतिलल-इन्सानु मा अक्फ़र: (१७) मिन् अय्यि शैइन् ख़-ल-क़: (१८)

★रु. २/४ आ २० ▓ व. लाज़िम

छत को ऊंचा किया, फिर उसे बराबर कर दिया, (२८) और उसी ने रात अंधेरी बनायी और (दिन को) धूप निकाली (२९) और उस के बाद ज़मीन को फैला दिया, (३०) उसी ने इस में से इस का पानी निकाला और चारा उगाया, (३१) और उस पर पहाड़ों का बोझ रख दिया। (३२) यह सब कुछ तुम्हारे और तुम्हारे चौपायों के फ़ायदे के लिए (किया)। (३३) तो जब बड़ी आफ़त आएगी, (३४) उस दिन इंसान अपने कामों को याद करेगा, (३५) और दोज़ख़ देखने वाले के सामने निकाल कर रख दी जाएगी, (३६) तो जिस ने सरकशी की, (३७) और दुनिया की ज़िंदगी को मुक़द्दम समझा, (३८) उस का ठिकाना दोज़ख़ है। (३९) और जो अपने परवरदिगार के सामने खड़े होने से डरता और जी को ख़्वाहिशों से रोकता रहा, (४०) उस का ठिकाना बहिश्त है। (४१) (ऐ पैग़म्बर! लोग) तुम से क़ियामत के बारे में पूछते हैं कि वह कब वाक़ेअ होगी? (४२) सो तुम उस के ज़िक्र से किस फ़िक्र में हो? (४३) उस का मुन्तहा (यानी वाक़ेअ होने का वक़्त) तुम्हारे परवरदिगार ही को (मालूम है)[1] (४४) जो शख़्स उस से डर रखता है, तुम तो उसी को डर सुनाने वाले हो। (४५) जब वे उस को देखेंगे, (तो ऐसा ख़्याल करेंगे) कि गोया (दुनिया में सिर्फ़) एक शाम या सुबह रहे थे। (४६)★

८० सूरः अ-ब-स २४

सूर: अ-ब-स मक्की है। इस में ४२ आयतें और एक रुकूअ है।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

(मुहम्मद मुस्तफ़ा) तुर्शरू हुए और मुंह फेर बैठे, (१) कि उन के पास एक अंधा आया, (२) और तुम को क्या ख़बर, शायद वह पाकी हासिल करता, (३) या सोचता तो समझाना उसे फ़ायदा देता। (४) जो परवाह नहीं करता, (५) उस की तरफ़ तो तवज्जोह करते हो, (६) हालांकि अगर वह न संवरे, तो तुम पर कुछ (इल्ज़ाम) नहीं, (७) और जो तुम्हारे पास दौड़ता हुआ आया, (८) और (ख़ुदा से) डरता है, (९) उस से तुम बे-रुख़ी करते हो,[2] (१०) देखो यह (क़ुरआन) नसीहत है, (११) पस जो चाहे, उसे याद रखे ▩ (१२) अदब के क़ाबिल पन्नों में (लिखा हुआ), (१३) जो बुलन्द मक़ाम पर रखे हुए (और) पाक हैं, (१४) (ऐसे) लिखने वालों के हाथों में, (१५) जो सरदार और नेक हैं, (१६) इंसान हलाक हो जाए, कैसा ना-शुक्रा है (१७) उसे

---

१. पूछते-पूछते इसी तक पहुंचता है, बीच में सब बे-ख़बर हैं।

२. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि जनाबे रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उत्बा बिन रबीआ और अबू जह्ल बिन हिशाम और अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब से बड़ी तवज्जोह से बातें कर रहे थे, क्योंकि आप दिल से चाहते थे कि वे इस्लाम ले आएं। इतने में अब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम, जो आंखों से मजबूर थे, आए और हज़रत से कहने लगे कि मुझ को क़ुरआन सुनाइए और जो कुछ ख़ुदा ने आप को सिखाया है, वह मुझे सिखाइए? आप ने इस हालत में उन की बात को पसन्द न फ़रमाया और पेशानी पर बल ला कर उस की तरफ़ से मुंह फेर लिया। इस पर ये आयतें नाज़िल हुयीं।

★रु. २/४ आ २० ▩ व. लाज़िम

मिन् नुत्-फ़तिन् ख़-ल-क़हू फ़-क़द्-द-रहू (१९) सुम्मस्सबी-ल यस्स-रहू (२०) सुम्-म अमातहू फ़-अक़्ब-रहू (२१) सुम्-म इज़ा शा-अ अन्शरः (२२) कल्ला लम्मा यक़्ज़ि मा अ-म-रः (२३) फ़ल्-यन्ज़ुरिल-इन्सानु इला तआमिही (२४) अन्ना स-बब्नल-मा-अ सब्बन् (२५) सुम्-म श-क़क़्नल्अर्-ज़ शक़्क़न् (२६) फ़-अम्बत्ना फ़ीहा हब्बंव्- (२७) व अि-न-बंव्-व क़ज़्बंव्- (२८) व ज़ैतूनंव्-व नख़्लंव्- (२९) व हदाइ-क़ ग़ुल्बंव्- (३०) व फ़ाकिहतंव्-व अब्बम्- (३१) मताअल्-लकुम् व लि-अन्आमिकुम् (३२) फ़-इज़ा जा-अतिस्साख़्ख़ः (३३) यौ-म यफ़िर्रुल-मर्उ मिन् अख़ीहि (३४) व उम्मिही व अबीहि (३५) व साहिबतिही व बनीह (३६) लि-कुल्लिम्-रिइम्-मिन्हुम् यौमइज़िन् शअ्नुंय्युग़्नीह (३७) वुजूहुंय्यौमइज़िम्-मुस्फ़ि-र-तुन् (३८) ज़ाहि-कतुम्-मुस्तब्शि-रतुन् (३९) व वुजूहुंय्यौमइज़िन् अलैहा ग़-ब-रतुन् (४०) तर्हक़ुहा क़-त-रः (४१) उलाइ-क हुमुल्-क-फ़-रतुल्-फ़-ज-रः ★ (४२)

شيء خلقه ۝ من نطفة خلقه فقدره ۝ ثم السبيل يسره ۝
ثم أماته فأقبره ۝ ثم إذا شاء أنشره ۝ كلا لما يقض ما
أمره ۝ فلينظر الإنسان إلى طعامه ۝ أنا صببنا الماء صبا ۝
ثم شققنا الأرض شقا ۝ فأنبتنا فيها حبا ۝ وعنبا وقضبا ۝
وزيتونا ونخلا ۝ وحدائق غلبا ۝ وفاكهة وأبا ۝ متاعا لكم
ولأنعامكم ۝ فإذا جاءت الصاخة ۝ يوم يفر المرء من أخيه ۝
وأمه وأبيه ۝ وصاحبته وبنيه ۝ لكل امرئ منهم يومئذ
شأن يغنيه ۝ وجوه يومئذ مسفرة ۝ ضاحكة مستبشرة ۝
ووجوه يومئذ عليها غبرة ۝ ترهقها قترة ۝ أولئك هم الكفرة الفجرة ۝

سورة التكوير مكية ... آية

بسم الله الرحمن الرحيم

إذا الشمس كورت ۝ وإذا النجوم انكدرت ۝ وإذا الجبال سيرت ۝
وإذا العشار عطلت ۝ وإذا الوحوش حشرت ۝ وإذا البحار
سجرت ۝ وإذا النفوس زوجت ۝ وإذا الموءودة سئلت ۝ بأي
ذنب قتلت ۝ وإذا الصحف نشرت ۝ وإذا السماء كشطت ۝ و
إذا الجحيم سعرت ۝ وإذا الجنة أزلفت ۝ علمت نفس ما
أحضرت ۝ فلا أقسم بالخنس ۝ الجوار الكنس ۝ والليل إذا

८१ सूरतुत्-तक्वीरि ७

(मक्की) इस सूरः में अरबी के ४३६ अक्षर, १०४ शब्द, २९ आयतें और १ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ●

इज़श्शम्सु कुव्विरत् (१) व इज़न्नुजूमुन-क-द-रत् (२) व इज़ल-जिबालु सुय्यिरत् (३) व इज़ल्अिशारु अुत्तिलत् (४) व इज़ल्वुहूशु हुशिरत् (५) व इज़ल्बिहारु सुज्जिरत् (६) व इज़न्नुफ़ूसु ज़ुव्विजत् (७) व इज़ल्मौऊदतु सुइ-लत् (८) बिअय्यि ज़म्बिन् क़ुतिलत् (९) व इज़स्सुहुफ़ु नुशिरत् (१०) व इज़स्समाउ कुशितत् (११) व इज़ल - जहीमु सुअ्-अिरत् (१२) व इज़ल्जन्नतु उज़्लिफ़त् (१३) अ़लिमत नफ़्सुम्मा अह् - ज़ - रत (१४) फ़ला उक़्सिमु बिल्ख़ुन्नसिल्- (१५) जवारिल्-कुन्नस (१६)

★रु. १/५ आ ४२

(ख़ुदा ने) किस चीज़ से बनाया? (१८) नुत्फ़े से बनाया, फिर उस का अन्दाज़ा मुक़र्रर किया, (१९) फिर उस के लिए रास्ता आसान कर दिया, (२०) फिर उस को मौत दी, फिर क़ब्र में दफ़्न कराया, (२१) फिर जब चाहेगा, उसे उठा खड़ा करेगा। (२२) कुछ शक नहीं कि ख़ुदा ने उसे जो हुक्म दिया, उस ने उस पर अमल न किया, (२३) तो इंसान को चाहिए कि अपने खाने की तरफ़ नज़र करे। (२४) बेशक हम ही ने पानी बरसाया, (२५) फिर हम ही ने ज़मीन को चीरा-फाड़ा। (२६) फिर हम ही ने उसमें अनाज उगाया, (२७) और अंगूर और तरकारी, (२८) और ज़ैतून और खजूरें, (२९) और घने-घने बाग़, (३०) और मेवे और चारा, (३१) (यह सब कुछ) तुम्हारे और तुम्हारे चारपायों के लिए बनाया, (३२) तो जब (क़ियामत का) गुल मचेगा, (३३) उस दिन आदमी अपने भाई से दूर भागेगा, (३४) और अपनी मां और अपने बाप से, (३५) और अपनी बीवी और अपने बेटे से, (३६) हर आदमी उस दिन एक फ़िक्र में होगा, जो उसे (मसरूफ़ियत के लिए) बस करेगा, (३७) और कितने मुंह उस दिन चमक रहे होंगे, (३८) हंसते और खिले हुए चेहरे (ये नेक लोग हैं), (३९) और कितने मुंह होंगे, जिन पर धूल पड़ रही होगी, (४०) (और) स्याही चढ़ रही होगी, (४१) ये कुफ़्फ़ार बद-किरदार हैं (४२)★

८१ सूर: तक्वीर ७

सूर: तक्वीर मक्की है और इस में २९ आयतें हैं। और १ रुकूअ् है।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

जब सूरज लपेट लिया जाएगा, (१) और जब तारे बे-नूर हो जाएंगे, (२) और जब पहाड़ चलाए जाएंगे, (३) और जब ब्याने वाली ऊंटनियां बेकार हो जाएंगी, (४) और जब वहशी जानवर जमा किए जाएंगे, (५) और जब दरिया आग हो जाएंगे, (६) और जब रूहें (बदनों से) मिला दी जाएंगी। (७) और जब उस लड़की से जो ज़िंदा दफ़्न की गयी हो, पूछा जाएगा, (८) कि वह किस गुनाह पर मार दी गयी? (९) और जब (अमलों के) दफ़्तर खोले जाएंगे, (१०) और जब आसमान की खाल खींच ली जाएगी, (११) और जब दोज़ख़ (की आग) भड़कायी जाएगी, (१२) और बहिश्त जब क़रीब लायी जाएगी, (१३) तब हर शख़्स मालूम कर लेगा कि वह क्या ले कर आया है। (१४) हम को उन सितारों की क़सम जो पीछे हट जाते हैं, (१५) और

★रु. १/५ आ ४२

वल्लैलि इज़ा अस्-अ़स (१७) वस्सुब्हि इज़ा त-नफ़्फ़स (१८) इन्नहू लक़ौलु रसूलिन् करीमिन् (१९) ज़ी क़ुव्वतिन् अ़िन्-द ज़िल्अ़र्शि मकीनिम्- (२०) मुताअ़िन् सम्-म अमीन (२१) व मा साहिबुकुम् बिमज्नून (२२) व ल-क़द् रआहु बिल्उफ़ुक़िल्-मुबीन (२३) व मा हु-व अ़लल्ग़ैबि बिज़नीन (२४) व मा हु-व बिक़ौलि शैता़निर्रजीम (२५) फ़-ऐ-न तज़्हबून (२६) इन् हु-व इल्ला ज़िक्रुल-लिल्आ़लमीन (२७) लिमन् शा-अ मिन्कुम् अंय्यस्तक़ीम (२८) व मा तशाऊ-न इल्ला अंय्यशाअल्लाहु रब्बुल-आ़लमीन ★ (२९.)

عَسْعَسَ وَالصُّبْحِ إِذَا تَنَفَّسَ إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ
ذِي قُوَّةٍ عِنْدَ ذِي الْعَرْشِ مَكِينٍ مُطَاعٍ ثَمَّ أَمِينٍ وَمَا
صَاحِبُكُمْ بِمَجْنُونٍ وَلَقَدْ رَآهُ بِالْأُفُقِ الْمُبِينِ وَمَا هُوَ عَلَى
الْغَيْبِ بِضَنِينٍ وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَيْطَانٍ رَجِيمٍ فَأَيْنَ تَذْهَبُونَ
إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ لِمَنْ شَاءَ مِنْكُمْ أَنْ يَسْتَقِيمَ وَمَا
تَشَاءُونَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ
سُورَةُ الْانْفِطَارِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ تِسْعَ عَشْرَةَ آيَةً
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
إِذَا السَّمَاءُ انْفَطَرَتْ وَإِذَا الْكَوَاكِبُ انْتَثَرَتْ وَإِذَا الْبِحَارُ
فُجِّرَتْ وَإِذَا الْقُبُورُ بُعْثِرَتْ عَلِمَتْ نَفْسٌ مَا قَدَّمَتْ وَ
أَخَّرَتْ يَا أَيُّهَا الْإِنْسَانُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيمِ الَّذِي خَلَقَكَ
فَسَوَّاكَ فَعَدَلَكَ فِي أَيِّ صُورَةٍ مَا شَاءَ رَكَّبَكَ كَلَّا بَلْ
تُكَذِّبُونَ بِالدِّينِ وَإِنَّ عَلَيْكُمْ لَحَافِظِينَ كِرَامًا كَاتِبِينَ
يَعْلَمُونَ مَا تَفْعَلُونَ إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ وَإِنَّ الْفُجَّارَ
لَفِي جَحِيمٍ يَصْلَوْنَهَا يَوْمَ الدِّينِ وَمَا هُمْ عَنْهَا بِغَائِبِينَ
وَمَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمُ الدِّينِ ثُمَّ مَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمُ الدِّينِ يَوْمَ
لَا تَمْلِكُ نَفْسٌ لِنَفْسٍ شَيْئًا وَالْأَمْرُ يَوْمَئِذٍ لِلَّهِ

८२ सूरतुल्-इन्फ़िता़रि ८२

(मक्की) इस सूर: में अरबी के ३३४ अक्षर, ८० शब्द, १९ आयतें और १ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

इज़स्समाउन्फ़-त-रत (१) व इज़ल-कवाकिबुन्-त-स-रत् (२) व इज़ल्बिहारु फ़ुज्जिरत् (३) व इज़ल्क़ुबूरु बुअ्-सिरत् (४) अ़लिमत नफ़्सुम्मा क़द्-द-मत् व अख़्ख़-रत् (५) या अय्युहल-इन्सानु मा ग़र्-र-क बिरब्बिकल-करीम (६) अल्लज़ी ख़-ल-क़-क फ़-सव्वा-क फ़-अ़्-द-लक (७) फ़ी अय्यि सूरतिम्-मा शा-अ रक्क-बक (८) कल्ला बल् तुकज़्ज़िबू-न बिद्दीनि (९) व इन्-न अ़लैकुम् लहाफ़िज़ीन (१०) किरामन् कातिबीन (११) यअ्-लमू-न मा तफ़्-अ़लून (१२) इन्नल-अब्रा-र लफ़ी नअ़ीम (१३) व इन्नलफ़ुज्जा-र लफ़ी जहीमिंय् (१४)-यस्लौनहा यौमद्दीन (१५) व मा हुम् अ़न्हा बिग़ाइबीन (१६) व मा अद्रा-क मा यौमुद्दीन (१७) सुम्-म मा अद्रा-क मा यौमुद्दीन (१८) यौ-म ला तम्लिकु नफ़्सुल-लिनफ़्सिन् शैअन् वल्अम्रु यौमइज़िल-लिल्लाह ★ (१९) ●

जो सैर करते और ग़ायब हो जाते हैं, (१६) और रात की क़सम, जब ख़त्म होने लगती है, (१७) और सुबह की क़सम जब नमूदार होती है, (१८) कि बेशक यह (क़ुरआन) बुलंद दर्जा फ़रिश्ते की ज़ुबान का पैग़ाम है, (१६) जो ताक़त वाला, अर्श के मालिक के यहां ऊंचे दर्जे वाला, (२०) सरदार (और) अमानतदार है। (२१) और (मक्के वालो!) तुम्हारे रफ़ीक़ (यानी मुहम्मद) दीवाने नहीं है। (२२) बेशक उन्होंने इस (फ़रिश्ते) को (आसमान के) खुले (यानी पूर्वी) किनारे पर देखा है, (२३) और वह छिपी बातों (के जाहिर करने) में बख़ील नहीं, (२४) और यह शैतान मर्दूद का कलाम नहीं। (२५) फिर तुम किधर जा रहे हो? (२६) यह तो जहान के लोगों के लिए नसीहत है, (२७) (यानी) उस के लिए जो तुम में से सीधी चाल चलना चाहे, (२८) और तुम कुछ भी नहीं चाह सकते, मगर वही जो ख़ुदा-ए-रब्बुल आलमीन चाहे। (२६)★

८२ सूरः इन्फ़ितार ८२

सूरः इन्फ़ितार मक्की है। इस में १६ आयतें हैं। और १ रुकूअ है।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

जब आसमान फट जाएगा, (१) और जब तारे झड़ पड़ेंगे, (२) और जब दरिया बह (कर एक दूसरे से मिल) जाएंगे, (३) और जब क़ब्रें उखेड़ दी जाएंगी, (४) तब हर शख़्स मालूम कर लेगा कि उस ने आगे क्या भेजा था और पीछे क्या छोड़ा था? (५) ऐ इंसान! तुझ को अपने परवरदिगारे करीम के बारे में किस चीज ने धोखा दिया? (६) (वही तो है) जिस ने तुझे बनाया और (तेरे अंगों को) ठीक किया और (तेरी क़ामत को) एतदाल में रखा, (७) और जिस सूरत में चाहा, तुझे जोड़ दिया, (८) मगर हैरत (अफ़सोस!) तुम लोग बदले को झुठलाते हो, (६) हालांकि तुम पर निगहबान मुक़र्रर हैं, (१०) बुलंद मर्तबा, (तुम्हारी बातों के) लिखने वाले, (११) जो तुम करते हो, वे उसे जानते हैं, (१२) बेशक नेक लोग नेमतों (की) बहिश्त में होंगे। (१३) और बुरे दोज़ख में, (१४) (यानी) बदले के दिन उस में दाख़िल होंगे, (१५) और उस से छिप नहीं सकेंगे, (१६) और तुम्हें क्या मालूम कि बदले का दिन कैसा है? (१७) फिर तुम्हें क्या मालूम कि बदले का दिन कैसा है? (१८) जिस दिन कोई किसी का कुछ भला न कर सकेगा और हुक्म उस दिन ख़ुदा ही का होगा। (१६)★ ●

★रु. १/६ आ २६ ★रु. १/७ आ १६ ●रुबुअ १/४

८३ सूरतुल्-मुतफ़्फ़िफ़ीन ८६

(मक्की) इस सूरः में अरबी के ७५८ अक्षर, १७२ शब्द, ३६ आयतें और १ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

वैलुल् - लिल्मुतफ़्फ़िफ़ीन (१) अल्लज़ी-न इज़क्तालू अलन्नासि यस्तौफ़ून (२) व इज़ा कालू-हुम् अव्व-ज़नूहुम् युख़्सिरून (३) अला यज़ुन्नु उलाइ-क अन्नहुम् मब्ऊसून (४) लियौमिन् अज़ीम (५) यौ-म यक़ूमुन्नासु लिरब्बिल्-आलमीन (६) कल्ला इन्-न किताबल्-फ़ुज्जारि लफ़ी सिज्जीन (७) व मा अद्रा-क मा सिज्जीन (८) किताबुम्-मर्क़ूम (९) वैलुंय्यौ-म - इज़िल्लिल्-मुकज़्ज़िबीन (१०) अल्लज़ी-न युकज़्ज़िबू-न बियौमिद्दीन (११) व मा युकज़्ज़िबु बिही इल्ला कुल्लु मुअ्-तदिन् असीम (१२) इज़ा तुत्ला अलैहि आयातुना क़ा-ल असातीरुल्-अव्वलीन (१३) कल्ला बल् रा-न अला क़ुलूबिहिम् मा कानू यक्सिबून (१४) कल्ला इन्नहुम् अर्रब्बिहिम् यौमइज़िल्-ल-मह्जूबून (१५) सुम्-म इन्नहुम् लसालुल्-जहीम (१६) सुम्-म युक़ालु हाज़ल्लज़ी कुन्तुम् बिही तुकज़्ज़िबून (१७) कल्ला इन्-न किताबल्-अब्रारि लफ़ी अिल्लिय्यीन (१८) व मा अद्रा-क मा अिल्लिय्यून (१९) किताबुम् - मर्क़ूमुंय् (२०) यश्हदुहुल् - मुक़र्रबून (२१) इन्नल् - अब्रा-र लफ़ी नअ़ीम (२२) अलल् - अराइकि यन्ज़ुरून (२३) तअ् - रिफ़ु फ़ी वुजूहिहिम् नज़्-र-तन्नअ़ीम (२४) युस्क़ौ-न मिर्रहीक़िम् - मख़्तूम (२५) ख़ितामुहू मिस्क व फ़ी ज़ालि-क फ़ल् - य-त-नाफ़सिल्-मु-त-नाफ़िसून (२६) व मिज़ाजुहू मिन् तस्नीम (२७) अ़ंनय्यश्रबु बिहल् - मुक़र्रबून (२८) इन्नल्लज़ी-न अज्रमू कानू मिनल्लज़ी-न आमनू यज़्-हकून (२९)

سُورَةُ الْمُطَفِّفِيْنَ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ سِتٌّ وَّثَلٰثُوْنَ اٰيَةً

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ اِذَا اكْتَالُوْا عَلَى النَّاسِ يَسْتَوْفُوْنَ ۝ وَ
اِذَا كَالُوْهُمْ اَوْ وَّزَنُوْهُمْ يُخْسِرُوْنَ ۝ اَلَا يَظُنُّ اُولٰٓئِكَ اَنَّهُمْ
مَّبْعُوْثُوْنَ ۝ لِيَوْمٍ عَظِيْمٍ ۝ يَّوْمَ يَقُوْمُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝
كَلَّآ اِنَّ كِتٰبَ الْفُجَّارِ لَفِيْ سِجِّيْنٍ ۝ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا سِجِّيْنٌ ۝ كِتٰبٌ
مَّرْقُوْمٌ ۝ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ يُكَذِّبُوْنَ بِيَوْمِ
الدِّيْنِ ۝ وَمَا يُكَذِّبُ بِهٖٓ اِلَّا كُلُّ مُعْتَدٍ اَثِيْمٍ ۝ اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ
اٰيٰتُنَا قَالَ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝ كَلَّا بَلْ رَانَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ مَّا
كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝ كَلَّآ اِنَّهُمْ عَنْ رَّبِّهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّمَحْجُوْبُوْنَ ۝ ثُمَّ
اِنَّهُمْ لَصَالُوا الْجَحِيْمِ ۝ ثُمَّ يُقَالُ هٰذَا الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ۝
كَلَّآ اِنَّ كِتٰبَ الْاَبْرَارِ لَفِيْ عِلِّيِّيْنَ ۝ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا عِلِّيُّوْنَ ۝
كِتٰبٌ مَّرْقُوْمٌ ۝ يَّشْهَدُهُ الْمُقَرَّبُوْنَ ۝ اِنَّ الْاَبْرَارَ لَفِيْ نَعِيْمٍ ۝
عَلَى الْاَرَآئِكِ يَنْظُرُوْنَ ۝ تَعْرِفُ فِيْ وُجُوْهِهِمْ نَضْرَةَ النَّعِيْمِ ۝
يُسْقَوْنَ مِنْ رَّحِيْقٍ مَّخْتُوْمٍ ۝ خِتٰمُهٗ مِسْكٌ وَفِيْ ذٰلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ
الْمُتَنَافِسُوْنَ ۝ وَمِزَاجُهٗ مِنْ تَسْنِيْمٍ ۝ عَيْنًا يَّشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُوْنَ ۝
اِنَّ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا كَانُوْا مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يَضْحَكُوْنَ ۝ وَاِذَا مَرُّوْا

८३ सूरः मुतफ़्फ़िफ़ीन ८६

सूरः तत्फ़ीफ़ मक्की है, इस में ३६ आयतें और १ रुकूअ है।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

नाप और तौल में कमी करने वालों के लिए ख़राबी है, (१) जो लोगों से नाप कर लें तो पूरा लें, (२) और जब उन को नाप कर या तौल कर दें तो कम दें, (३) क्या ये लोग नहीं जानते कि उठाए भी जाएंगे, (४) (यानी) एक बड़े (सख़्त) दिन में, (५) जिस दिन (तमाम) लोग रब्बुल आलमीन के सामने खड़े होंगे। (६) सुन रखो कि बद-कारों के आमाल सिज्जीन में हैं, (७) और तुम क्या जानते हो कि सिज्जीन क्या चीज़ है? (८) एक दफ़्तर है लिखा हुआ। (९) उस दिन झुठलाने वालों की ख़राबी है, (१०) (यानी) जो इंसाफ़ के दिन को झुठलाते हैं, (११) और उस को झुठलाता वही है जो हद से निकल जाने वाला गुनाहगार है। (१२) जब उस को हमारी आयतें सुनाई जाती हैं, तो कहता है, यह तो अगले लोगों की कहानियां हैं। (१३) देखो, ये जो (बुरे आमाल) करते हैं, उन का उन के दिलों पर ज़ंग बैठ गया है, (१४) बेशक ये लोग उस दिन अपने परवरदिगार (के दीदार) से ओट में होंगे, (१५) फिर दोज़ख़ में जा दाख़िल होंगे, (१६) फिर उन से कहा जाएगा कि यह वही चीज़ है जिस को तुम झुठलाते थे। (१७) (यह भी) सुन रखो कि नेकों के आमाल इल्लीयीन में है, (१८) और तुम को क्या मालूम कि इल्लीयीन क्या चीज़ है? (१९) एक दफ़्तर है लिखा हुआ, (२०) जिस के पास मुक़र्रब (फ़रिश्ते) हाज़िर रहते हैं। (२१) बेशक नेक लोग चैन में होंगे, (२२) तख़्तों पर बैठे हुए नज़ारे करेंगे, (२३) तुम उन के चेहरों ही से राहत की ताज़गी मालूम कर लोगे, (२४) उन को ख़ालिस शराब मुहरबन्द पिलायी जाएगी, (२५) (२६) जिस की मुहर मुश्क की होगी, तो (नेमतों का) शौक़ रखने वालों को चाहिए कि उसी का चाव करें। (२६) और इस में तस्नीम (के पानी) की मिलावट होगी। (२७) वह एक चश्मा है, जिस में से (ख़ुदा के) मुक़र्रब पिएंगे, (२८) जो गुनाहगार (यानी कुफ़्फ़ार) हैं, वे (दुनिया में) मोमिनों से हंसी किया करते थे। (२९) और जब

व इज़ा मर्रू बिहिम् य-त-ग़ा-मज़ून (३०) व इज़न्क़लबू इला अह्लिहिमुन्क़-लबू फ़किहीन (३१) व इज़ा रऔहुम् क़ालू इन्-न हाउलाइ लज़ाल्लून (३२) व मा उर्सिलू अलैहिम् हाफ़िज़ीन (३३) फ़ल-यौमल्लज़ी-न आमनू मिनल्-कुफ़्फ़ारि यज़्-हकून (३४) अलल् - अराइ-कि यन्ज़ुरून (३५) हल् सुव्विबल्-कुफ़्फ़ारु मा कानू यफ़्-अलून ★ (३६)

يَتَغَامَزُونَ ۝ وَإِذَا انقَلَبُوا إِلَىٰ أَهْلِهِمُ انقَلَبُوا فَكِهِينَ ۝ وَإِذَا
رَأَوْهُمْ قَالُوا إِنَّ هَٰؤُلَاءِ لَضَالُّونَ ۝ وَمَا أُرْسِلُوا عَلَيْهِمْ حَافِظِينَ ۝
فَالْيَوْمَ الَّذِينَ آمَنُوا مِنَ الْكُفَّارِ يَضْحَكُونَ ۝ عَلَى الْأَرَائِكِ يَنظُرُونَ ۝
هَلْ ثُوِّبَ الْكُفَّارُ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ۝

८४ सूरतुल्-इन्शिक़ाक़ि ८३

(मक्की) इस सूरः में अरबी के ४४८ अक्षर, १०८ शब्द, २५ आयतें और १ रुकूअ हैं।

سُورَةُ الْإِنشِقَاقِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ خَمْسٌ وَعِشْرُونَ آيَةً

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ●

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

इज़स्समाउन्शक़्क़त् (१) व अज़िनत लिरब्बिहा व हुक़्क़त (२) व इज़ल्अर्ज़ु मुद्दत् (३) व अल्क़त मा फ़ीहा व त-ख़ल्-लत (४) व अज़िनत लिरब्बिहा व हुक़्क़त (५) या अय्युहल-इन्सानु इन्न-क कादिहुन् इला रब्बि-क कद्हन् फ़मुलाक़ीहि (६) फ़-अम्मा मन् ऊति-य किताबहू बियमीनिही (७) फ़सौ-फ़ युहासबु हिसाबंय्यसीरा (८) व यन्क़लिबु इला अह्लिही मस्रूरा (९) व अम्मा मन् ऊति-य किताबहू वरा-अ ज़ह्रिही (१०) फ़सौ-फ़ यद्अू सुबूरा (११) व यस्ला सअ़ीरा (१२) इन्नहू का-न फ़ी अह्लिही मस्रूरा (१३) इन्नहू ज़न्-न अल्लंय्यहू-र (१४) बला इन्-न रब्बहू का-न बिही बसीरा (१५) फ़ला उक़्सिमु बिश्शफ़क़ि (१६) वल्-लैलि व मा व-स-क़ (१७) वल्क़-मरि इज़त्त-स-क़ (१८) ल-तर्कबुन्-न त-ब्-क़न् अ़न् त-बक़ (१९) फ़मा लहुम् ला युअ्मिनून (२०) व इज़ा क़ुरि-अ अलैहिमुल-क़ुर्आनु ला यस्जुदून □ (२१) बलिल्लज़ी-न क-फ़रू युकज़्ज़िबून (२२) वल्लाहु अअ्-लमु बिमा यूअून (२३) फ़-बश्शिर्हुम् बिअ़ज़ाबिन् अलीम (२४) इल्-लल्लज़ी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति लहुम् अज्रुन् ग़ैरु मम्नून ★ (२५)
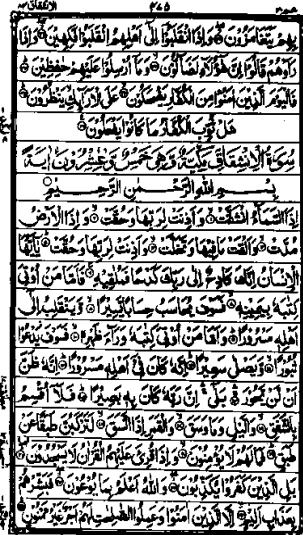
إِذَا السَّمَاءُ انشَقَّتْ ۝ وَأَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ۝ وَإِذَا الْأَرْضُ
مُدَّتْ ۝ وَأَلْقَتْ مَا فِيهَا وَتَخَلَّتْ ۝ وَأَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ۝ يَا أَيُّهَا
الْإِنسَانُ إِنَّكَ كَادِحٌ إِلَىٰ رَبِّكَ كَدْحًا فَمُلَاقِيهِ ۝ فَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ
كِتَابَهُ بِيَمِينِهِ ۝ فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَسِيرًا ۝ وَيَنقَلِبُ إِلَىٰ
أَهْلِهِ مَسْرُورًا ۝ وَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ وَرَاءَ ظَهْرِهِ ۝ فَسَوْفَ يَدْعُو
ثُبُورًا ۝ وَيَصْلَىٰ سَعِيرًا ۝ إِنَّهُ كَانَ فِي أَهْلِهِ مَسْرُورًا ۝ إِنَّهُ ظَنَّ
أَن لَّن يَحُورَ ۝ بَلَىٰ إِنَّ رَبَّهُ كَانَ بِهِ بَصِيرًا ۝ فَلَا أُقْسِمُ
بِالشَّفَقِ ۝ وَاللَّيْلِ وَمَا وَسَقَ ۝ وَالْقَمَرِ إِذَا اتَّسَقَ ۝ لَتَرْكَبُنَّ طَبَقًا عَن
طَبَقٍ ۝ فَمَا لَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ وَإِذَا قُرِئَ عَلَيْهِمُ الْقُرْآنُ لَا يَسْجُدُونَ ۝
بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا يُكَذِّبُونَ ۝ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يُوعُونَ ۝ فَبَشِّرْهُم
بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ۝ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ۝

★रु. १/८ आ ३६ □सज्दः १३ ★रु. १/६ आ २५ ∴ मु. अि मु. ता ख. १७

उन के पास से गुज़रते, तो हिक़ारत से इशारे करते, (३०) और जब अपने घर को लौटते, तो इतराते हुए लौटते, (३१) और जब उन (मोमिनों) को देखते तो कहते कि ये तो गुमराह हैं, (३२) हालांकि वे उन पर निगरां बना कर नहीं भेजे गये थे। (३३) तो आज मोमिन काफ़िरों से हंसी करेंगे, (३४) (और) तख़्तों पर (बैठे हुए उन का हाल) देख रहे होंगे। (३५) तो काफ़िरों को उन के अमलों का (पूरा-पूरा) बदला मिल गया। (३६)★

८४ सूरः इन्शिक़ाक़ ८३

सूरः इन्शिक़ाक़ मक्की है, इस में पचीस आयतें हैं। और १ रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

जब आसमान फट जाएगा, (१) और अपने परवरदिगार का फ़रमान बजा लाएगा और उसे वाजिब भी यही है, (२) और जब ज़मीन हमवार कर दी जाएगी। (३) और जो कुछ इस में है, उसे निकाल कर बाहर डाल देगी और (बिल्कुल) ख़ाली हो जाएगी, (४) और अपने परवरदिगार के इर्शाद की तामील करेगी और उस को लाज़िम भी यही है, (तो क़ियामत क़ायम हो जाएगी।) (५) ऐ इंसान! तू अपने परवरदिगार की तरफ़ (पहुंचने में) ख़ूब कोशिश करता है, सो उस से जा मिलेगा। (६) तो जिस का नामा (-ए-आमाल) उस के दाहिने हाथ में दिया जाएगा, (७) उस से आसान हिसाब लिया जाएगा, (८) और वह अपने घर वालों में ख़ुश-ख़ुश आएगा, (९) और जिस का नामा (-ए-आमाल) उस की पीठ के पीछे से दिया जाएगा, (१०) वह मौत को पुकारेगा, (११) और दोज़ख़ में दाख़िल होगा, (१२) यह अपने अह्ल (व अयाल) में मस्त रहता था, (१३) और ख़्याल करता था कि (ख़ुदा की तरफ़) फिर कर न जाएगा,∴(१४) हां, (हां,)∴उस का परवरदिगार उस को देख रहा था। (१५) हमें शाम की लाली की क़सम! (१६) और रात की और जिन चीज़ों को वह इकट्ठा कर लेती है, उन की, (१७) और चांद की जब पूरा हो जाए, (१८) कि तुम दर्जा-दर्जा (ऊंचे रुत्बे पर) चढ़ोगे, (१९) तो उन लोगों को क्या हुआ है कि ईमान नहीं लाते, (२०) और जब उन के सामने क़ुरआन पढ़ा जाता है, तो सज्दा नहीं करते,□(२१) बल्कि काफ़िर झुठलाते हैं, (२२) और ख़ुदा उन बातों को, जो ये अपने दिलों में छिपाते हैं, ख़ूब जानता है, (२३) तो उन को दुख देने वाले अज़ाब की ख़बर सुना दो। (२४) हां, जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, उन के लिए बे-इन्तिहा बदला है। (२५)★

★रु. १/८ आ ३६∴मु. अि मु ता ख़. १७ □सज्दः १३ ★रु. १/९ आ २९

८५ सूरतुल्-बुरूजि २७

(मक्की) इस सूर: में अरबी के ४७५ अक्षर, १०९ शब्द, २२ आयतें और १ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

वस्समाइ जातिल्बुरूजि (१) वल-यौमिल-मौअूदि (२) व शाहिदिंव्-व मश्हूद (३) क़ुति-ल अस्हाबुल-उख़्दूदि- (४) -न्नारि जातिल्वक़ूदि (५) इज् हुम् अलैहा क़ुअूदु व्- (६) व हुम् अला मा यफ़्-अलू-न बिल्-मुअ्मिनी-न शुहूद (७) व मा न-क़मू मिन्हुम् इल्ला अंय्युअ्मिनू बिल्लाहिल-अज़ीज़िल-हमीद (८) अल्लज़ी लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि वल्लाहु अला कुल्लि शैइन् शहीद (९) इन्नल्लज़ी-न फ़-तनुल्-मुअ्मिनी-न वल-मुअ्मि-नाति सुम्-म लम् यतूबू फ़-लहुम् अज़ाबु ज-हन्न-म व लहुम् अज़ाबुल-हरीक़ (१०) इन्नल्लज़ी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति लहुम् जन्नातुन् तज्री मिन् तह्तिहल-अन्हारु ज़ालिकल-फ़ौज़ुल-कबीर (११) इन्-न बत्-श रब्बि-क ल-शदीद (१२) इन्नहू हु-व युब्दिउ व युईद (१३) व हुवल-ग़फ़ूरुल-वदूद (१४) ज़ुलअर्शिल-मजीद (१५) फ़अ्-आलुल-लिमा युरीद (१६) हल् अता-क हदीसुल्-जुनूद (१७) फ़िर्औ-न व समूद (१८) बलिल्लज़ी-न क-फ़रू फ़ी तक्ज़ीबिन्- (१९) वल्लाहु मिंव्वराइहिम् मुहीत (२०) बल् हु-व क़ुर्आनुम्-मजीद (२१) फ़ी लौहिम्-मह्फ़ूज़★ (२२)

سورة البروج مكية وهي اثنتان وعشرون آية
بسم الله الرحمن الرحيم
والسماء ذات البروج ۝ واليوم الموعود ۝ وشاهد ومشهود ۝
قتل أصحاب الأخدود ۝ النار ذات الوقود ۝ إذ هم عليها قعود ۝
وهم على ما يفعلون بالمؤمنين شهود ۝ وما نقموا منهم إلا
أن يؤمنوا بالله العزيز الحميد ۝ الذي له ملك السماوات و
الأرض والله على كل شيء شهيد ۝ إن الذين فتنوا المؤمنين
والمؤمنات ثم لم يتوبوا فلهم عذاب جهنم ولهم عذاب
الحريق ۝ إن الذين آمنوا وعملوا الصالحات لهم جنات تجري
من تحتها الأنهار ذلك الفوز الكبير ۝ إن بطش ربك لشديد ۝
إنه هو يبدئ ويعيد ۝ وهو الغفور الودود ۝ ذو العرش
المجيد ۝ فعال لما يريد ۝ هل أتاك حديث الجنود ۝
فرعون وثمود ۝ بل الذين كفروا في تكذيب ۝ والله من
ورائهم محيط ۝ بل هو قرآن مجيد ۝ في لوح محفوظ ۝
سورة الطارق مكية وهي سبع عشرة آية
بسم الله الرحمن الرحيم
والسماء والطارق ۝ وما أدراك ما الطارق ۝ النجم الثاقب ۝

८६ सूरतुत्-तारिक़ि ३६

(मक्की) इस सूर: में अरबी के २५४ अक्षर, ६१ शब्द, १७ आयतें और १ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

वस्समाइ वत्तारिक़ि (१) व मा अद्रा-क मत्तारिक़ु- (२) -न्नज्मुस्साक़िबु (३)

※ आयतह्मिसीय: ★रु. १/१० आ २२

८५ सूरः बुरूज २७

सूरः बुरूज मक्की है, इस में बाईस आयतें हैं। और १ रुकूअ है।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

आसमान की क़सम, जिस में बुर्ज हैं,[1] (१) और उस दिन की, जिसका वायदा है, (२) और हाज़िर होने वाले की और जो उस के पास हाज़िर किया जाए उस की, (३) कि ख़न्दक़ों (के खोदने) वाले हलाक कर दिए गए, (४) (यानी) आग (की ख़न्दक़ें) जिस में ईंधन (झोंक रखा था,) (५) जबकि वे उन (के किनारों) पर बैठे हुए थे, (६) और जो (सख़्तियां) ईमान वालों पर कर रहे थे, उन को सामने देख रहे थे। (७) उन को मोमिनों की यही बात बुरी लगती थी कि वे ख़ुदा पर ईमान लाए हुए थे, जो ग़ालिब और तारीफ़ के क़ाबिल है।[2] (८) जिस की आसमानों और ज़मीन में बादशाही है और ख़ुदा हर चीज़ को जानता है। (९) जिन लोगों ने मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को तक्लीफ़ें दीं और तौबा न की, उन को दोज़ख़ का (और) अज़ाब भी होगा और जलने का अज़ाब भी होगा। (१०) (और) जो ईमान लाए और नेक काम करते रहे, उन के लिए बाग़ हैं, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं। यही बड़ी कामियाबी है ▨ (११) बेशक तुम्हारे परवरदिगार की पकड़ बहुत सख़्त है। (१२) वही पहली बार पैदा करता है और वही दोबारा (ज़िंदा) करेगा। (१३) और वह बख़्शने वाला (और) मुहब्बत करने वाला है। (१४) अर्श का मालिक, बड़ी शान वाला, (१५) जो चाहता है, कर देता है, (१६) भला तुम को लश्करों का हाल मालूम हुआ है, (१७) (यानी) फ़िऔन और समूद का, (१८) लेकिन काफ़िर (जान-बूझ कर) झुठलाने में (गिरफ़्तार) हैं, (१९) और ख़ुदा (भी) उन को गिर्दा-गिर्द से घेरे हुए है। (२०) (वह किताब बकवास व झूठ नहीं,) बल्कि यह क़ुरआन अज़ीमुश्शान है, (२१) लौहे महफ़ूज़ में (लिखा हुआ।) (२२) ★

८६ सूरः तारिक़ ३६

सूरः तारिक़ मक्की है, इस में सत्तरह आयतें और चार रुकूअ है।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

आसमान और रात के वक़्त आने वाले की क़सम ! (१) और तुम को क्या मालूम कि रात के वक़्त आने वाला क्या है ? (२) वह तारा है, चमकने वाला, (३) कि कोई नफ़्स नहीं, जिस पर

---

१. बुर्जों से मुराद तारे या उन की मंज़िलें हैं। बुर्ज अरब में महल को कहते हैं, तारों की मंज़िलों का नाम बुर्ज इस लिए रखा गया कि ये गोया उन के घर हैं।

२. कहते हैं अगले ज़माने में, जब कि दीन में बहुत-सी ख़राबियां पड़ गयीं और लोगों में फ़िल्ने और फ़साद बरपा हो गये, तो एक दीनदार और ख़ुदा परस्त क़ौम ने अलग एक गांव आबाद किया और उस में रहने-सहने और ख़ुदा की इबादत करने लगे, यहां तक कि उस के काफ़िर ज़ालिम बादशाह को इस हाल से इत्तिला हुई तो उस ने उन लोगों को कहला भेजा कि जिन बुतों को हम पूजते हैं, तुम भी उन्हीं को पूजो। उन्हों ने इन्कार किया और कहा कि हम ख़ुदा के सिवा किसी की इबादत न करेंगे, क्योंकि वह हमारा माबूद है। बादशाह ने धमकी दी कि अगर हमारे माबूदों को नहीं पूजोगे तो मैं तुम को क़त्ल कर दूंगा। इस का कुछ असर उन के दिल पर न हुआ।

(शेष पृष्ठ ९५१ पर)

▨ आयत हम्सीयः ★रु. १/१० आ २२

इन् कुल्लु नफ़्सिल्-लम्मा अलैहा हाफ़िज़ ط (४) फ़ल्-यन्ज़ुरिल-इन्सानु मिम्-म ख़ुलि-क़ ط (५) ख़ुलि-क़ मिम्माइन् दाफ़िक़िय्- لا (६) - यख़्रुजु मिम्बैनिस्सुल्बि वत्तराइब ط (७) इन्नहू अ़ला रज्अिही लक़ादिर ط (८) यौ-म तुब्-लस्सराइरु لا (९) फ़मा लहू मिन् क़ुव्वतिंव्-व ला नासिर ط (१०) वस्समाइ ज़ातिर्रज्अि لا (११) वल्अर्ज़ि ज़ातिस्सद्अि لا (१२) इन्नहू ल-क़ौलुन् फ़स्लुंव्- لا (१३) व मा हु-व बिल्-हज़्ल ط (१४) इन्नहुम् यकीदू-न कैदंव्- لا (१५) व अकीदु कैदन् ج (१६) फ़-महहिलिल-काफ़िरी - न अम्हिल्हुम् रुवैदा ★ (१७)

إِن كُلُّ نَفْسٍ لَّمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ ۝ فَلْيَنظُرِ الْإِنسَانُ مِمَّ خُلِقَ ۝
خُلِقَ مِن مَّاءٍ دَافِقٍ ۝ يَخْرُجُ مِن بَيْنِ الصُّلْبِ وَالتَّرَائِبِ ۝
إِنَّهُ عَلَىٰ رَجْعِهِ لَقَادِرٌ ۝ يَوْمَ تُبْلَى السَّرَائِرُ ۝ فَمَا لَهُ مِن قُوَّةٍ وَ
لَا نَاصِرٍ ۝ وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الرَّجْعِ ۝ وَالْأَرْضِ ذَاتِ الصَّدْعِ ۝
إِنَّهُ لَقَوْلٌ فَصْلٌ ۝ وَمَا هُوَ بِالْهَزْلِ ۝ إِنَّهُمْ يَكِيدُونَ كَيْدًا ۝
وَأَكِيدُ كَيْدًا ۝ فَمَهِّلِ الْكَافِرِينَ أَمْهِلْهُمْ رُوَيْدًا ۝

سُورَةُ الْأَعْلَىٰ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ تِسْعَ عَشْرَةَ آيَةً

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْأَعْلَى ۝ الَّذِي خَلَقَ فَسَوَّىٰ ۝ وَالَّذِي قَدَّرَ
فَهَدَىٰ ۝ وَالَّذِي أَخْرَجَ الْمَرْعَىٰ ۝ فَجَعَلَهُ غُثَاءً أَحْوَىٰ ۝
سَنُقْرِئُكَ فَلَا تَنسَىٰ ۝ إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ ۚ إِنَّهُ يَعْلَمُ الْجَهْرَ وَمَا
يَخْفَىٰ ۝ وَنُيَسِّرُكَ لِلْيُسْرَىٰ ۝ فَذَكِّرْ إِن نَّفَعَتِ الذِّكْرَىٰ ۝
سَيَذَّكَّرُ مَن يَخْشَىٰ ۝ وَيَتَجَنَّبُهَا الْأَشْقَى ۝ الَّذِي يَصْلَى
النَّارَ الْكُبْرَىٰ ۝ ثُمَّ لَا يَمُوتُ فِيهَا وَلَا يَحْيَىٰ ۝ قَدْ أَفْلَحَ
مَن تَزَكَّىٰ ۝ وَذَكَرَ اسْمَ رَبِّهِ فَصَلَّىٰ ۝ بَلْ تُؤْثِرُونَ الْحَيَاةَ
الدُّنْيَا ۝ وَالْآخِرَةُ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ ۝ إِنَّ هَٰذَا لَفِي الصُّحُفِ
الْأُولَىٰ ۝ صُحُفِ إِبْرَاهِيمَ وَمُوسَىٰ ۝

८७ सूरतुल्-अअ्-ला ८

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के २९९ अक्षर, ७२ शब्द, १९ आयतें और १ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

सब्बिहिस्-म रब्बिकल-अअ्-ला لا (१) अल्लज़ी ख़-ल-क़ फ़-सव्वा لا (२) वल्लज़ी क़द्-द-र फ़-हदा لا (३) वल्लज़ी अख़्-र-जल-मर्आ لا (४) फ़-ज-अ़-लहू ग़ुसाअन् अह्वा ط (५) सनुक़्रिउ-क फ़ला तन्सा لا (६) इल्ला मा शा-अल्लाहु ط इन्नहू यअ्-लमुल-जह्-र व मा यख़्फ़ा ط (७) व नुयस्सिरु-क लिल्युस्रा ج (८) फ़ज़क्किर् इन् न-फ़-अ़तिज़्ज़िक्रा ط (९) स-यज़्ज़क्करु मंय्यख़्शा لا (१०) व य-त-जन्नबुहल-अश्क़- لا (११) -ल्लज़ी यस्लन्नारल-कुब्रा ج (१२) सुम्-म ला यमूतु फ़ीहा व ला यह्या ط (१३) क़द् अफ़्-ल-ह मन् त-ज़क्का لا (१४) व ज़-क-रस्-म रब्बिही फ़-सल्ला ط (१५) बल् तुअ्सिरूनल-हयातद्दुन्या ز (१६) वल्आख़िरतु ख़ैरुंव् - व अब्क़ा ط (१७) इन् - न हाज़ा लफ़िस् - सुहुफ़िल्ऊला لا (१८) सुहुफ़ि इब्राही - म व मूसा ★ (१९)

★रु. १/११ आ १७ ★रु. १/१२ आ १९

निगहबान मुक़र्रर नहीं। (४) तो इंसान को देखना चाहिए कि वह काहे से पैदा हुआ है, (५) वह उछलते हुए पानी से पैदा हुआ है, (६) जो पीठ और सीने के बीच में से निकलता है। (७) बेशक ख़ुदा उस के इआदे (यानी फिर पैदा करने) पर क़ादिर है, (८) जिस दिन दिलों के भेद जांचे जाएंगे,' (९) तो इंसान की कुछ पेश न चल सकेगी और न कोई उस का मददगार होगा। (१०) आसमान की क़सम, जो मेंह बरसाता है, (११) और ज़मीन की क़सम! जो फट जाती है, (१२) कि यह कलाम (हक़ को बातिल से) जुदा करने वाला है, (१३) और बेहूदा बात नहीं, (१४) ये लोग तो अपनी तद्बीरों में लग रहे हैं, (१५) और अपनी तद्बीर कर रहे हैं.(१६) तो तुम काफ़िरों को मोहलत दो, बस कुछ दिन ही मोहलत दो। (१७)★

८७ सूरः अअ्ला ८

सूरः अअ्ला मक्की है। इस में उन्नीस आयतें हैं। और १ रुकूअ़ है।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

ऐ पैग़म्बर! अपने परवरदिगार जलीलुश्शान के नाम की तस्बीह करो, (१) जिस ने (इंसान को) बनाया, फिर (उस के अंगों को) ठीक किया, (२) और जिस ने (उस का) अन्दाज़ा ठहराया फिर उन को) रास्ता बताया, (३) और जिस ने चारा उगाया, (४) फिर उस को स्याह रंग का कूड़ा कर दिया। (५) हम तुम्हें पढ़ा देंगे कि तुम भूलोगे नहीं, (६) मगर जो ख़ुदा चाहे। वह खुली बात को भी जानता है और छिपी को भी। (७) हम तुम को आसान तरीक़े की तौफ़ीक़ देंगे, (८) सो जहां तक नसीहत (के) नफ़ा देने (की उम्मीद) हो, नसीहत करते रहो। (९) जो ख़ौफ़ रखता है, वह तो नसीहत पकड़ेगा, (१०) और (बे-ख़ौफ़) बद-बख़्त पहलू बचाएगा, (११) जो (क़ियामत को) बड़ी (तेज़) आग में दाख़िल होगा, (१२) फिर वहां न मरेगा, न जिएगा। (१३) बेशक वह मुराद को पहुंच गया, जो पाक हुआ, (१४) और अपने परवरदिगार के नाम का ज़िक्र करता रहा और नमाज़ पढ़ता रहा, (१५) मगर तुम लोग तो दुनिया की ज़िंदगी को अख़्तियार करते हो, (१६) हालांकि आख़िरत बहुत बेहतर और बाक़ी रहने वाली है। (१७) यही बात पहले सहीफ़ों (किताबों) में (लिखी हुई) है, (१८) (यानी) इब्राहीम और मूसा के सहीफ़ों में★ (१९)

(पृष्ठ ६४६ का शेष)
तब उस ने ख़न्दक़ें खुदवा कर उन में आग जलवा दी और ख़ुद उन के किनारे पर खड़े हो कर उन से कहने लगा कि या तो हमारे दीन को क़ुबूल करो या इस आग को अपनाओ, मगर उन्हों ने बुतों को पूजना मंज़ूर न किया और आग में पड़ना मंज़ूर किया। यह हाल देख कर औरतें और बच्चे चिल्ला उठे। दीनदार शौहर और बाप जो ख़ुदा पर पूरा ईमान रखते थे, उन्हों ने तसल्ली दी कि उस को आग न समझो, यह तुम्हारे लिए निजात है। चुनांचे सब के सब इस में कूद पड़े। कहते हैं कि आग के शोले अभी उन के जिस्मों तक पहुंचने न पाए थे कि ख़ुदा ने उन की रूहें क़ब्ज़ कर लीं और आग भड़क कर बादशाह और उस के दरबारियों में जो किनारे पर खड़े थे, जा लगी और सब को जला कर ख़ाक कर दिया।

१. दिलों के भेद जानने से यह मुराद है कि ताल्लुक़ात और ख़्यालात ज़ाहिर कर दिए जाएंगे और अच्छे-बुरे अलग कर दिए जाएंगे।

★रु. १/११ आ १७ ★रु. १/१२ आ १९

८८ सूरतुल्-ग़ाशियति ६८

(मक्की) इस सूर: में अरबी के ३८४ अक्षर, ९३ शब्द, २६ आयतें और १ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ●

हल् अता-क हदीसुल-ग़ाशिय: ط (१) वुजूहुं य्यौमइज़िन् ख़ाशि-अतुन् ۙ (२) आमि-लतुन् नासि-बतुन् ۙ (३) तस्ला नारन् हामि-य-तन् ۙ (४) तुस्क़ा मिन् अ़ैनिन् आनिय: ط (५) लै-स लहुम् तआमुन् इल्ला मिन् ज़रीअिल्- ۙ (६) -ला युस्मिनु व ला युग़्नी मिन् जू-अ ط (७) वुजूहुं य्यौमइज़िन् नाअिमतुल- ۙ (८) लिसअ्-यिहा राज़ियतुन् ۙ (९) फ़ी जन्नतिन् आलि-यतिल- ۙ (१०) ला तस्मअु फ़ीहा लाग़िय: ط (११) फ़ीहा अ़ैनुन् जारिय: (१२) फ़ीहा सुरुरुम्-मर्फ़ूअतुं व- ۙ (१३) व अक्वा-बुम्-मौज़ूअतुं व- ۙ (१४) व नमारिक़ु मस्फ़ू-फ़तुं व- ۙ (१५) व ज़राबिय्यु मब्सूस: ط (१६) अ-फ़ला यन्ज़ुरू-न इलल् - इबिलि कै-फ ख़ुलिक़त् (१७) व इलस्समाइ कै-फ रुफ़ि-अत् (१८) व इलल्-जिबालि कै-फ नुसिबत् (१९) व इलल्अर्ज़ि कै-फ सुतिहत् (२०) फ़-ज़क्किर् इन्नमा अन् - त मुज़क्किर ط (२१) लस - त अ़लैहिम् बिमुसैतिरिन् ۙ (२२) इल्ला मन् त-वल्ला व क-फ़र ۙ (२३) फ़युअज़्ज़िबुहुल्लाहुल-अ़ज़ाबल अक्बर ط (२४) इन-न इलैना इयाबहुम् ۙ (२५) सुम्-म इन्-न अ़लैना हिसाबहुम् ★ (२६) ●

سُوْرَةُ الْغَاشِيَةِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ الْغَاشِيَةِ ۞ وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ خَاشِعَةٌ ۞ عَامِلَةٌ
نَّاصِبَةٌ ۞ تَصْلٰى نَارًا حَامِيَةً ۞ تُسْقٰى مِنْ عَيْنٍ اٰنِيَةٍ ۞ لَيْسَ
لَهُمْ طَعَامٌ اِلَّا مِنْ ضَرِيْعٍ ۞ لَّا يُسْمِنُ وَلَا يُغْنِيْ مِنْ جُوْعٍ ۞
وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ نَّاعِمَةٌ ۞ لِّسَعْيِهَا رَاضِيَةٌ ۞ فِيْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ۞
لَّا تَسْمَعُ فِيْهَا لَاغِيَةً ۞ فِيْهَا عَيْنٌ جَارِيَةٌ ۞ فِيْهَا سُرُرٌ
مَّرْفُوْعَةٌ ۞ وَّاَكْوَابٌ مَّوْضُوْعَةٌ ۞ وَّنَمَارِقُ مَصْفُوْفَةٌ ۞ وَّزَرَابِيُّ
مَبْثُوْثَةٌ ۞ اَفَلَا يَنْظُرُوْنَ اِلَى الْاِبِلِ كَيْفَ خُلِقَتْ ۞ وَاِلَى السَّمَآءِ
كَيْفَ رُفِعَتْ ۞ وَاِلَى الْجِبَالِ كَيْفَ نُصِبَتْ ۞ وَاِلَى الْاَرْضِ كَيْفَ
سُطِحَتْ ۞ فَذَكِّرْ اِنَّمَآ اَنْتَ مُذَكِّرٌ ۞ لَسْتَ عَلَيْهِمْ بِمُصَيْطِرٍ ۞
اِلَّا مَنْ تَوَلّٰى وَكَفَرَ ۞ فَيُعَذِّبُهُ اللّٰهُ الْعَذَابَ الْاَكْبَرَ ۞ اِنَّ
اِلَيْنَآ اِيَابَهُمْ ۞ ثُمَّ اِنَّ عَلَيْنَا حِسَابَهُمْ ۞
سُوْرَةُ الْفَجْرِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ ثَلٰثُوْنَ اٰيَةً
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
وَالْفَجْرِ ۞ وَلَيَالٍ عَشْرٍ ۞ وَّالشَّفْعِ وَالْوَتْرِ ۞ وَالَّيْلِ اِذَا يَسْرِ ۞
هَلْ فِيْ ذٰلِكَ قَسَمٌ لِّذِيْ حِجْرٍ ۞ اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ
بِعَادٍ ۞ اِرَمَ ذَاتِ الْعِمَادِ ۞ الَّتِيْ لَمْ يُخْلَقْ مِثْلُهَا فِي الْبِلَادِ ۞

८९ सूरतुल्-फ़ज्र १०

(मक्की) इस सूर: में अरबी के ५८५ अक्षर, १३७ शब्द, ३० आयतें और १ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ●

वल्फ़ज्रि ۙ (१) व लयालिन् अ़श्रिव्- ۙ (२) वश्शफ़्अि वल्वत्रि ۙ (३) वल्लैलि इज़ा यस्रि ۚ (४) हल् फ़ी ज़ालि-क क़-समुल्लिज़ी हिज्र ط (५) अ-लम् त-र कै-फ फ़-अ - ल रब्बु-क बिआदिन् ۙ (६) इर-म ज़ातिल्अिमादि- ۙ (७) -ल्लती लम् युख़-लक़् मिस्लुहा फ़िल्बिलाद ۙ (८)

ﻻ व. लाज़िम ★रु. १/१३ आ २६ ● नि. १/२

८८ सूर: ग़ाशिय: ६८

सूर: ग़ाशिय: मक्की है, इस में २६ आयतें हैं और १ रुकूअ है।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

भला तुम को ढांप लेने वाली (यानी क़ियामत) का हाल मालूम हुआ है? (१) उस दिन बहुत से मुंह (वाले) ज़लील होंगे, (२) सख्त मेहनत करने वाले, थके-मांदे, (३) दहकती आग में दाखिल होंगे, (४) एक खौलते हुए चश्मे का उन को पानी पिलाया जाएगा, (५) और कांटेदार झाड़ के सिवा उन के लिए कोई खाना नहीं (होगा,) (६) जो न मोटा बनाये, न भूख में कुछ काम आए। (७) और बहुत से मुंह (वाले) उस दिन खुश होंगे, (८) अपने आमाल (के बदले) से खुश दिल, (९) ऊंची बहिश्त में, (१०) वहां किसी तरह की बकवास नहीं सुनेंगे, (११) उस में चश्मे बह रहे होंगे, (१२) वहां तख्त होंगे ऊंचे बिछे हुए, (१३) और आबख़ोरे (क़रीने से) रखे हुए, (१४) और गाव तकिए क़तार की क़तार लगे हुए, (१५) और उम्दा मस्नदें बिछी हुई। (१६) ये लोग ऊंटों की तरफ़ नहीं देखते कि कैसे (अजीब) पैदा किए गए हैं, (१७) और आसमान की तरफ़ कि कैसा बुलन्द किया गया है, (१८) और पहाड़ों की तरफ़ कि किस तरह खड़े किए गए हैं, (१९) और ज़मीन की तरफ़ कि किस तरह बिछायी गयी, (२०) तो तुम नसीहत करते रहो कि तुम नसीहत करने वाले ही हो, (२१) तुम उन पर दारोग़ा नहीं हो, (२२) हां, जिसने मुंह फेरा और न माना, (२३) तो ख़ुदा उस को बड़ा अज़ाब देगा। (२४) बेशक उन को हमारे पास लौट कर आना है, (२५) फिर हम ही को उन से हिसाब लेना है। (२६) ★ ●

८९ सूर: फ़ज्र १०

सूर: फ़ज्र मक्की है, इस में तीस आयतें हैं और १ रुकूअ है।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

फ़ज्र की क़सम, (१) और दस रातों की,[1] (२) और जुफ़्त और ताक़ की, (३) और रात की जब जाने लगे, (४) (और) बेशक ये चीज़ें अक़्लमन्दों के नज़दीक क़सम खाने के लायक़ हैं (कि काफ़िरों को ज़रूर अज़ाब होगा।) (५) क्या तुमने नहीं देखा कि तुम्हारे परवरदिगार ने आद[2] के साथ क्या किया? (६) (जो) इरम (कहलाते थे, इतने) लम्बे क़द। (७) कि तमाम

१. दस रातों के तै करने में अलग-अलग क़ौल हैं। कुछ लोग कहते हैं, उन से ज़िलहिज्जा का अशरा मुराद है, कुछ का क़ौल है रमज़ान का पहला अशरा मुराद है, मगर कोई दलील इस पर नहीं कि इस से यही अशरे मुराद हैं।

२. आद दो थे। पहले आद जिन को इरम कहते हैं, दूसरे आद समूद। इरम के आद हज़रत हूद अलै० की उम्मत के लोग थे। इरम उस के क़बीले का नाम था।

व. लाज़िम ★रु. १/१३ आ २६ ● नि. १/२

व समूदल्लजी-न जाबुस्सख़्-र बिल्वादि (९) व फ़िर्औ-न ज़िल्औतादि- (१०) ल्लजी-न तग़ौ फ़िल्बिलादि (११) फ़-अक्सरू फ़ीहल्फ़साद (१२) फ़-सब्-ब अलैहिम् रब्बु-क सौ-त अज़ाब (१३) इन्-न रब्-ब-क लबिल्-मिर्साद ط (१४) फ़-अम्मल-इन्सानु इज़ा मब्तलाहु रब्बुहू फ़-अक्-र-महू व नअ्-अ-महू फ़-यक़ूलु रब्बी अक्-र-मन ط (१५) व अम्मा इज़ा मब्तलाहु फ़-क़-द-र अलैहि रिज़्क़हू फ़यक़ूलु रब्बी अहानन् (१६) कल्ला बल् ला तुक्रिमूनल्-यती-म (१७) व ला तहा-ज़्ज़ू-न अला तआमिल-मिस्कीन (१८) व तअ्कुलूनत्तुरा-स अक्-लल्-लम्मव्- (१९) व तुहिब्बूनल्-मा-ल हुब्बन् जम्मा ط (२०) कल्ला इज़ा दुक्कतिल-अर्ज़ु दक्कन् दक्कंव्- (२१) व जा-अ रब्बु-क वल-म-लकु सफ़्फ़न् सफ़्फ़ा ج (२२) व जी-अ यौमइज़िम्-बिज-हन्न-म यौमइज़िय्य-त-ज़क्करुल-इन्सानु व अन्ना लहुज़्ज़िक्रा ط (२३) यक़ूलु यालैतनी क़द्दम्तु लिहयाती ج (२४) फ़यौमइज़िल्ला युअज़्ज़िबु अज़ाबहू अ-हदु व- (२५) व ला यूसिक़ु व-साक़हू अ-हद ط (२६) या अय्यतुहन्नफ़्सुल-मुत्मइन्नतु- (२७) -जिई इला रब्बिकि राज़ि-य-तम्-मर्ज़िय्यतन् ج (२८) फ़द्ख़ुली फ़ी अिबादी (२९) वद्ख़ुली जन्नती ★ (३०)

وَثَمُوْدَ الَّذِيْنَ جَابُوا الصَّخْرَ بِالْوَادِ ۝ وَفِرْعَوْنَ ذِي الْاَوْتَادِ ۝
الَّذِيْنَ طَغَوْا فِي الْبِلَادِ ۝ فَاَكْثَرُوْا فِيْهَا الْفَسَادَ ۝ فَصَبَّ عَلَيْهِمْ
رَبُّكَ سَوْطَ عَذَابٍ ۝ اِنَّ رَبَّكَ لَبِالْمِرْصَادِ ۝ فَاَمَّا الْاِنْسَانُ اِذَا
مَا ابْتَلٰىهُ رَبُّهٗ فَاَكْرَمَهٗ وَنَعَّمَهٗ فَيَقُوْلُ رَبِّيْ اَكْرَمَنِ ۝ وَاَمَّا
اِذَا مَا ابْتَلٰىهُ فَقَدَرَ عَلَيْهِ رِزْقَهٗ فَيَقُوْلُ رَبِّيْ اَهَانَنِ ۝ كَلَّا
بَلْ لَّا تُكْرِمُوْنَ الْيَتِيْمَ ۝ وَلَا تَحٰٓضُّوْنَ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ۝
وَتَاْكُلُوْنَ التُّرَاثَ اَكْلًا لَّمًّا ۝ وَّتُحِبُّوْنَ الْمَالَ حُبًّا جَمًّا ۝ كَلَّآ اِذَا
دُكَّتِ الْاَرْضُ دَكًّا دَكًّا ۝ وَّجَآءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا ۝ وَ
جِايْٓءَ يَوْمَئِذٍۢ بِجَهَنَّمَ ۙ يَوْمَئِذٍ يَّتَذَكَّرُ الْاِنْسَانُ وَاَنّٰى لَهُ
الذِّكْرٰى ۝ يَقُوْلُ يٰلَيْتَنِيْ قَدَّمْتُ لِحَيَاتِيْ ۝ فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُعَذِّبُ
عَذَابَهٗٓ اَحَدٌ ۝ وَّلَا يُوْثِقُ وَثَاقَهٗٓ اَحَدٌ ۝ يٰٓاَيَّتُهَا النَّفْسُ
الْمُطْمَئِنَّةُ ۝ ارْجِعِيْٓ اِلٰى رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً ۝ فَادْخُلِيْ
فِيْ عِبٰدِيْ ۝ وَادْخُلِيْ جَنَّتِيْ ۝
سُوْرَةُ الْبَلَدِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ عِشْرُوْنَ اٰيَةً
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝
لَآ اُقْسِمُ بِهٰذَا الْبَلَدِ ۝ وَاَنْتَ حِلٌّۢ بِهٰذَا الْبَلَدِ ۝ وَوَالِدٍ وَّمَا
وَلَدَ ۝ لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِيْ كَبَدٍ ۝ اَيَحْسَبُ اَنْ لَّنْ يَّقْدِرَ عَلَيْهِ

९० सूरतुल्-ब-लदि ३५

(मक्की) इस सूरः में अरबी के ३४७ अक्षर, ८२ शब्द, २० आयतें और १ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ●

ला उक़्सिमु बिहाज़ल्ब-लदि (१) व अन्-त हिल्लुम्-बिहाज़ल-ब-लदि (२) व वालिदिंव्-व मा व-लद (३) ल-क़द् ख़-लक़्नल-इन्सा-न फ़ी क-बद ط (४) अ-यह्सबु अल्लंय्यक़्दि-र अलैहि अ-हद (५)

★रु. १/१४ आ ३०　▒ व. लाज़िम

मुल्क में ऐसे पैदा नहीं हुए थे, (८) और समूद के साथ (क्या किया) जो (क़ुरा की) वादी में पत्थर तराशते और (घर बनाते) थे ?[1] (९) और फ़िऔन के साथ (क्या किया) जो ख़ेमे और मेख़ें रखता था ? (१०) ये लोग मुल्कों में सरकश हो रहे थे, (११) और उन में बहुत-सी ख़राबियां करते थे, (१२) तो तुम्हारे परवरदिगार ने उन पर अज़ाब का कोड़ा नाज़िल किया, (१३) बेशक तुम्हारा परवरदिगार ताक में है, (१४) मगर इंसान (अजीब मख़्लूक़ है कि) जब उस का परवरदिगार उस को आज़माता है कि उसे इज़्ज़त देता और नेमत बख़्शता है, तो कहता है कि (आ हा) मेरे परवरदिगार ने मुझे इज़्ज़त बख़्शी। (१५) और जब (दूसरी तरह) आज़माता है कि उस पर रोज़ी तंग कर देता है, तो कहता है कि (हाय) मेरे परवरदिगार ने मुझे ज़लील किया। (१६) नहीं, बल्कि तुम लोग यतीम की ख़ातिर नहीं करते, (१७) और न मिस्कीन को खाना खिलाने का चाव पैदा करते हो, (१८) और मीरास के माल को समेट कर खा जाते हो, (१९) और माल को बहुत ही अज़ीज़ रखते हो, (२०) तो जब ज़मीन की बुलंदी कूट-कूट कर पस्त कर दी जाएगी, (२१) और तुम्हारा परवरदिगार (जलवा फ़रमां होगा) और फ़रिश्ते लाइन बना-बना कर आ मौजूद होंगे, (२२) और दोज़ख़ उस दिन हाज़िर की जाएगी, तो इंसान उस दिन चेतेगा, मगर (अब) चेतने (से) उसे (फ़ायदा) कहां (मिल सकेगा ?) (२३) कहेगा, काश ! मैं ने अपनी (हमेशा की) ज़िंदगी के लिए कुछ आगे भेजा होता, (२४) तो उस दिन न कोई ख़ुदा के अज़ाब की तरह का (किसी को) अज़ाब देगा। (२५) और न कोई वैसा जकड़ना जकड़ेगा। (२६) ऐ इत्मीनान पाने वाली रूह ! (२७) अपने परवरदिगार की तरफ़ लौट चल, तू उस से राज़ी, वह तुझ से राज़ी, (२८) तू मेरे (मुम्ताज़) बन्दों में शामिल हो जा, (२९) और मेरी बहिश्त में दाख़िल हो जा, (३०) ★

९० सूरः ब-लद ३५

सूरः ब-लद मक्की है, इस में बीस आयतें और १ रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

हमें इस शहर (मक्का) की क़सम, (१) और तुम इसी शहर में तो रहते हो, (२) और बाप (यानी आदम) और उस की औलाद की क़सम, (३) कि हमने इंसान को तक्लीफ़ (की हालत) में (रहने वाला) बनाया है, (४) क्या वह ख़्याल रखता है कि उस पर कोई क़ाबू न पाएगा ▨ (५)

---

१. समूद हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की क़ौम का नाम है। ये लोग ऐसे कारीगर थे कि पहाड़ों में पत्थर काट-काट कर घर बनाते थे और उस में रहते-सहते थे।

यक़ूलु अह्-लक्तु मालल-लु-ब-दा (६) अ-यह्सबु अल्लम् य-रहू अ-हद (७) अ-लम् नज्-अल् लहू अ़ैनैनि (८) व लिसानंव्-व श-फ़तैनि (९) व हदैनाहुन्-नज्दैनि (१०) फ़-लक़्त-ह्-मल्-अ-क़-ब-तु (११) व मा अद्रा-क मल्-अ-क़-ब: (१२) फ़क्कु र-क़-बतिन् (१३) औ इत्-आमुन् फ़ी यौमिन् ज़ी मस्ग़-बतिय-(१४) यतीमन् ज़ा मक्-र-बतिन् (१५) औ मिस्कीनन् ज़ा मत्-र-ब: (१६) सुम्-म का-न मिनल्लज़ी-न आमनू व त-वासौ बिस्स-ब्रि व त-वासौ बिलमर्-ह-म: (१७) उलाइ-क अस्हाबुल् - मै-म-न: (१८) वल्लज़ी-न क-फ़रू बिआयातिना हुम् अस्हाबुल्-मश्-अ-म: (१९) अलैहिम् नारुम्-मुअ्-स-द: ★ (२०)

يَقُولُ أَهْلَكْتُ مَالًا لُّبَدًا ۞ أَيَحْسَبُ أَن لَّمْ يَرَهُ أَحَدٌ ۞
أَلَمْ نَجْعَل لَّهُ عَيْنَيْنِ ۞ وَلِسَانًا وَشَفَتَيْنِ ۞ وَهَدَيْنَاهُ النَّجْدَيْنِ ۞
فَلَا اقْتَحَمَ الْعَقَبَةَ ۞ وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْعَقَبَةُ ۞ فَكُّ رَقَبَةٍ ۞ أَوْ
إِطْعَامٌ فِي يَوْمٍ ذِي مَسْغَبَةٍ ۞ يَتِيمًا ذَا مَقْرَبَةٍ ۞ أَوْ مِسْكِينًا ذَا
مَتْرَبَةٍ ۞ ثُمَّ كَانَ مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا وَتَوَاصَوْا
بِالصَّبْرِ وَتَوَاصَوْا بِالْمَرْحَمَةِ ۞ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْمَيْمَنَةِ ۞ وَ
الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِنَا هُمْ أَصْحَابُ الْمَشْأَمَةِ ۞ عَلَيْهِمْ نَارٌ مُّؤْصَدَةٌ ۞

९१ सूरतुश्शम्सि २६

(मक्की) इस सूर: में अरबी के २५४ अक्षर, ५६ शब्द, १५ आयतें और १ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ●

سُورَةُ الشَّمْسِ — بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
وَالشَّمْسِ وَضُحَاهَا ۞ وَالْقَمَرِ إِذَا تَلَاهَا ۞ وَالنَّهَارِ إِذَا جَلَّاهَا ۞
وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْشَاهَا ۞ وَالسَّمَاءِ وَمَا بَنَاهَا ۞ وَالْأَرْضِ وَمَا طَحَاهَا ۞
وَنَفْسٍ وَمَا سَوَّاهَا ۞ فَأَلْهَمَهَا فُجُورَهَا وَتَقْوَاهَا ۞ قَدْ أَفْلَحَ مَن
زَكَّاهَا ۞ وَقَدْ خَابَ مَن دَسَّاهَا ۞ كَذَّبَتْ ثَمُودُ بِطَغْوَاهَا ۞ إِذِ
انبَعَثَ أَشْقَاهَا ۞ فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللَّهِ نَاقَةَ اللَّهِ وَسُقْيَاهَا ۞
فَكَذَّبُوهُ فَعَقَرُوهَا فَدَمْدَمَ عَلَيْهِمْ رَبُّهُم بِذَنبِهِمْ
فَسَوَّاهَا ۞ وَلَا يَخَافُ عُقْبَاهَا ۞
سُورَةُ اللَّيْلِ — بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْشَىٰ ۞ وَالنَّهَارِ إِذَا تَجَلَّىٰ ۞ وَمَا خَلَقَ الذَّكَرَ وَالْأُنثَىٰ ۞

वश्शम्सि व ज़ुहाहा (१) वल्क़-मरि इज़ा तलाहा (२) वन्नहारि इज़ा जल्लाहा (३) वल्लैलि इज़ा यग़्शाहा (४) वस्समाइ व मा बनाहा (५) वल्अर्ज़ि व मा तहाहा (६) व नफ़्सिंव् - व मा सव्वाहा (७) फ़-अल्-ह-महा फ़ुजूरहा व तक्-वाहा (८) क़द् अफ़्-ल-ह मन् ज़क्काहा (९) व क़द् ख़ा-ब मन् दस्साहा (१०) कज़्ज़-बत् समूदु बितग़्वाहा (११) इजिम्ब-अ-स अश्क़ाहा (१२) फ़-क़ा-ल लहुम् रसुलुल्लाहि ना-क़-तल्लाहि व सुक़्याहा (१३) फ़-कज़्ज़बूहु फ़-अ-क़रूहा फ़-दम्द-म अलैहिम् रब्बुहुम् बिज़म्बिहिम् फ़-सव्वाहा (१४) व ला यख़ाफ़ु अुक़्बाहा ★ (१५)

९२ सूरतुल्लैलि ९

(मक्की) इस सूर: में अरबी के ३१४ अक्षर, ७१ शब्द, २१ आयतें और १ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ●

वल्लैलि इज़ा यग़्शा (१) वन्नहारि इज़ा त-जल्ला (२) व मा ख़-ल-क़ज़्ज़-क-र वल्उन्सा (३)

★रु. १/१५ आ २० ★रु. १/१६ आ १५

कहता है कि मैं ने बहुत-सा माल बर्बाद कर दिया। (६) क्या उसे यह गुमान है कि उस को किसी ने देखा नहीं? (७) भला हमने उस को दो आंखें नहीं दीं? (८) और जुबान और दो होंठ (नहीं दिए?) (९) (ये चीजें भी दीं) और उस को (भलाई-बुराई के) दोनों रास्ते भी दिखा दिए, (१०) मगर वह घाटी पर से हो कर न गुजरा, (११) और तुम क्या समझे कि घाटी क्या है? (१२) किसी (की) गरदन का छुड़ाना, (१३) या भूख के दिन खाना खिलाना, (१४) यतीम रिश्तेदार को,[1] (१५) या फ़क़ीर खाकसार को, (१६) फिर उन लोगों में भी (दाखिल) हुआ, जो ईमान लाए और सब्र की नसीहत और (लोगों पर) शफ़क़त करने की वसीयत करते रहे। (१७) यही लोग सआदत वाले हैं, (१८) और जिन्हों ने हमारी आयतों को न माना, वे बद-बख्त हैं, (१९) ये लोग आग में बन्द कर दिए जाएंगे। (२०) ★

९१ सूरः शम्स २६

सूरः शम्स मक्की है। इस में पन्द्रह आयतें और १ रुकूअ है।

शुरू खुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

सूरज की क़सम और उस की रोशनी की, (१) और चांद की, जब उस के पीछे निकले, (२) और दिन की जब उसे चमका दे, (३) और रात की जब उसे छिपा ले, (४) और आसमान की और उस ज़ात की, जिस ने उसे बनाया, (५) और ज़मीन की और उस की, जिस ने उसे फैलाया, (६) और इंसान की और उस की जिस ने उस के अंगों को बराबर किया, (७) फिर उस को बद-कारी (से बचने) और परहेज़गारी करने की समझ दी, (८) कि जिस ने (अपने) नफ़्स (यानी रूह) को पाक रखा, वह मुराद को पहुंचा, (९) और जिस ने उसे ख़ाक में मिलाया, वह घाटे में रहा, (१०) समूद (क़ौम) ने अपनी सरकशी की वजह से (पैग़म्बर को) झुठलाया। (११) जब उन में से एक निहायत बदबख्त उठा, (१२) तो खुदा के पैग़म्बर (सालेह) ने उन से कहा कि खुदा की ऊंटनी और उस के पानी पीने की बारी से बचो, (१३) मगर उन्होंने पैग़म्बर को झुठलाया और ऊंटनी की कूंचे काट दीं, तो खुदा ने उन के गुनाह की वजह से उन पर अज़ाब नाज़िल किया और सब को (हलाक कर के) बराबर किया,[2] (१४) और उस को उन के बदला लेने का कुछ भी डर नहीं। (१५) ★

९२ सूरः लैल ९

सूरः लैल मक्की है, इस में २१ आयतें और १ रुकूअ हैं।

शुरू खुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

रात की क़सम, जब (दिन को) छिपा ले, (१) और दिन की क़सम, जब चमक उठे, (२) और उस (ज़ात) की क़सम, जिस ने नर और मादा पैदा किए, (३) कि तुम लोगों की कोशिश

---

१. यतीम का एक हक़, नातेदार का एक हक़, जो दोनों हुए तो दो हक़।

२. खुदा ने हज़रत सालेह को एक ऊंटनी मोजज़े के तौर पर दी थी, जो एक बड़े भारी पत्थर में से निकाली गयी थी। सालेह अलैहिस्सलाम ने उन लोगों से कहा कि यह ऊंटनी खुदा की है। उस को बुरी तरह हाथ न लगाना और जो दिन उस के पानी पीने का हो, उस में छेड़खानी न करना। उन्हों ने यह बात न मानी और एक निहायत बद-बख्त शख्स ने जिस का नाम क़िदार बिन सालिफ़ था, ऊंटनी के पांव काट दिए। इस वजह से उन सब पर अज़ाब नाज़िल हुआ।

इन्-न सअ्-यकुम् लशत्ता ط (४) फ़-अम्मा मन् अअ्-ता वत्तक़ा ॥ (५) व सद्-द-क़ बिल्हुस्ना ॥ (६) फ़-स-नुयस्सिरुहू लिल्-युस्रा ط (७) व अम्मा मम्-बख़ि-ल वस्तग़्ना ॥ (८) व कज़्ज़-ब बिल-हुस्ना ॥ (९) फ़-सनुयस्सिरुहू लिल-उस्रा ط (१०) व मा युग़्नी अन्हु मालुहू इज़ा त-रद्दा ط (११) इन्-न अलैना लल्हुदा ج (१२) व इन्-न लना लल्-आख़ि-र-त वल्ऊला (१३) फ़-अन्ज़र्तुकुम् नारन् त-लज़्ज़ा ج (१४) ला यस्-लाहा इल्लल-अश्क़- ॥ (१५) -ल्लज़ी कज़्ज़-ब व त-वल्ला ط (१६) व सयुजन्नबुहल-अत्क़- ॥ (१७) -ल्लज़ी युअ्ती मा-लहू य-त-ज़क्का ج (१८) व मा लि-अ-ह्-दिन् अिन्दहू मिन् निअ्-मतिन् तुज्ज़ा ॥ (१९) इल्लब्तिग़ा - अ वज्हि रब्बिहिल - अअ्-ला ج (२०) व लसौ-फ़ यर्ज़ा ★ (२१)

إِنَّ سَعْيَكُمْ لَشَتَّىٰ ۝ فَأَمَّا مَنْ أَعْطَىٰ وَاتَّقَىٰ ۝ وَصَدَّقَ بِالْحُسْنَىٰ ۝
فَسَنُيَسِّرُهُ لِلْيُسْرَىٰ ۝ وَأَمَّا مَنْ بَخِلَ وَاسْتَغْنَىٰ ۝ وَكَذَّبَ
بِالْحُسْنَىٰ ۝ فَسَنُيَسِّرُهُ لِلْعُسْرَىٰ ۝ وَمَا يُغْنِي عَنْهُ مَالُهُ إِذَا
تَرَدَّىٰ ۝ إِنَّ عَلَيْنَا لَلْهُدَىٰ ۝ وَإِنَّ لَنَا لَلْآخِرَةَ وَالْأُولَىٰ ۝
فَأَنْذَرْتُكُمْ نَارًا تَلَظَّىٰ ۝ لَا يَصْلَاهَا إِلَّا الْأَشْقَى ۝ الَّذِي كَذَّبَ
وَتَوَلَّىٰ ۝ وَسَيُجَنَّبُهَا الْأَتْقَى ۝ الَّذِي يُؤْتِي مَالَهُ يَتَزَكَّىٰ ۝
وَمَا لِأَحَدٍ عِنْدَهُ مِنْ نِعْمَةٍ تُجْزَىٰ ۝ إِلَّا ابْتِغَاءَ وَجْهِ رَبِّهِ
الْأَعْلَىٰ ۝ وَلَسَوْفَ يَرْضَىٰ ۝

سُورَةُ الضُّحَىٰ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ إِحْدَىٰ عَشْرَةَ آيَةً

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

وَالضُّحَىٰ ۝ وَاللَّيْلِ إِذَا سَجَىٰ ۝ مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلَىٰ ۝ وَلَلْآخِرَةُ
خَيْرٌ لَكَ مِنَ الْأُولَىٰ ۝ وَلَسَوْفَ يُعْطِيكَ رَبُّكَ فَتَرْضَىٰ ۝ أَلَمْ
يَجِدْكَ يَتِيمًا فَآوَىٰ ۝ وَوَجَدَكَ ضَالًّا فَهَدَىٰ ۝ وَوَجَدَكَ
عَائِلًا فَأَغْنَىٰ ۝ فَأَمَّا الْيَتِيمَ فَلَا تَقْهَرْ ۝ وَأَمَّا السَّائِلَ فَلَا تَنْهَرْ ۝
وَأَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ۝

سُورَةُ الشَّرْحِ مَكِّيَّةٌ　بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ　وَهِيَ ثَمَانِ آيَاتٍ

أَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ۝ وَوَضَعْنَا عَنْكَ وِزْرَكَ ۝ الَّذِي

९३ सूरतुज़्ज़ुहा ११

(मक्की) इस सूर: में अरबी के १६६ अक्षर, ४० शब्द, ११ आयतें और १ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

वज़्ज़ुहा ॥ (१) वल्लैलि इज़ा सजा ॥ (२) मा वद्-द-अ-क रब्बु-क व मा क़ला ط (३) व लल्आख़िरतु ख़ैरुल्ल-क मिनल्ऊला ط (४) व लसौ-फ़ युअ्-ती-क रब्बु-क फ़-तर्ज़ा ط (५) अ-लम् यजिद्-क यतीमन् फ़-आवा ج (६) व व-ज-द-क ज़ाल्लन् फ़-हदा ج (७) व व-ज-द-क आइलन् फ़-अग़्ना ط (८) फ़-अम्मल-यती-म फ़ला तक़्-हर् ط (९) व अम्मस्साइ-ल फ़ला तन्हर् ط (१०) व अम्मा बिनिअ्-मति रब्बि-क फ़-हद्दिस् (११) ★

९४ सूरतु अ-लम् नश्रह् १२

(मक्की) इस सूर: में अरबी के १०३ अक्षर, २७ शब्द, ८ आयतें और १ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

अ-लम् नश्रह् ल-क सद् - र-क ॥ (१) व व-ज़अ्-ना अन्-क विज़्-र-क- ॥ (२) -ल्लज़ी अन्क़-ज़ ज़ह् - र-क ॥ (३)

★रु. १/१७ आ २१　★रु. १/१८ आ ११

तरह-तरह की है, (४) तो जिस ने (ख़ुदा के रास्ते में माल) दिया और परहेज़गारी की, (५) और नेक बात को सच जाना, (६) उस को हम आसान तरीक़े की तौफ़ीक़ देंगे, (७) और जिस ने कंजूसी की और बे-परवाह बना रहा, (८) और नेक बात को झूठ समझा, (९) उसे सख़्ती में पहुंचाएंगे, (१०) और जब वह (दोज़ख़ के गढ़े में) गिरेगा, तो उस का माल उस के कुछ भी काम न आएगा। (११) हमें तो राह दिखाना है, (१२) और आख़िरत और दुनिया हमारी ही चीज़ें हैं, (१३) सो मैं ने तुम को भड़कती आग से डरा दिया। (१४) उस में वही दाख़िल होगा, जो बड़ा बद-बख़्त है, (१५) जिस ने झुठलाया और मुंह फेरा, (१६) और जो बड़ा परहेज़गार है, वह (उस से) बचा लिया जाएगा, (१७) जो माल देता है ताकि पाक हो, (१८) और (इस लिए) नहीं (देता कि) उस पर किसी का एहसान (है,) जिस का वह बदला उतारता है, (१९) बल्कि अपने ख़ुदावंदे आला की रज़ामंदी हासिल करने के लिए देता है, (२०) और वह बहुत जल्द ख़ुश हो जाएगा। (२१) ★

९३ सूरः ज़ुहा ११

सूरः ज़ुहा मक्की है और इस में ग्यारह आयतें और १ रुकूअ है।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

सूरज की रोशनी की क़सम, (१) और रात (की अंधियारी) की जब छा जाए, (२) (ऐ मुहम्मद !) तुम्हारे परवरदिगार ने न तो तुम को छोड़ा और न (तुम से) नाराज़ हुआ, (३) और आख़िरत तुम्हारे लिए पहली (हालत यानी दुनिया) से कहीं बेहतर है, (४) और तुम्हें परवरदिगार बहुत जल्द वह कुछ अता फ़रमाएगा कि तुम ख़ुश हो जाओगे। (५) भला उस ने तुम्हें यतीम पाकर जगह नहीं दी, (बेशक दी) (६) और रास्ते से अनजान देखा तो सीधा रास्ता दिखाया, (७) और तंगदस्त पाया तो ग़नी कर दिया (८) तो तुम भी यतीम पर सितम न करना, (९) और मांगने वाले को झिड़की न देना, (१०) और अपने परवरदिगार की नेमतों का बयान करते रहना ★ (११)

९४ सूरः इन्शिराह् १२

सूरः इन्शिराह मक्की है और इस में आठ आयतें और १ रुकूअ है।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

(ऐ मुहम्मद !) क्या हमने तुम्हारा सीना खोल नहीं दिया ? (बेशक खोल दिया।) (१) और तुम पर से बोझ भी उतार दिया, (२) जिस ने तुम्हारी पीठ तोड़ रखी थी, (३) और तुम्हारा

★रु. १/१७ आ २१ ★रु. १/१८ आ ११

व र-फ़अ्-ना ल-क ज़िक्-रक (४) फ़-इन्-न म-अल्-अुस्रि युस्रन् (५) इन्-न म-अल्-अुस्रि युस्रा (६) फ़इज़ा फ़-रग्-त फ़न्सब् (७) व इला रब्बि-क फ़र्गब् ★ (८)

९५ सूरतुत्तीनि २८

(मक्की) इस सूर: में अरबी के १६५ अक्षर, ३४ शब्द, ८ आयतें और १ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

वत्तीनि वज़्ज़ैतूनि (१) वतूरि सीनी-न (२) व हाज़ल् - ब-लदिल्-अमीन (३) ल-क़द् ख़-लक़्-नल्-इन्सा-न फ़ी अह्सनि तक़्वीम (४) सुम्-म र-दद्नाहु अस्फ़ - ल साफ़िलीन (५) इल्लल्लज़ी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति फ़-लहुम् अज्रुन् ग़ैरु मम्नून (६) फ़मा युकज़्ज़िबु-क बअ् - दु बिद्दीन (७) अलैसल्लाहु बि-अह्कमिल्-हाकिमीन ★ (८)
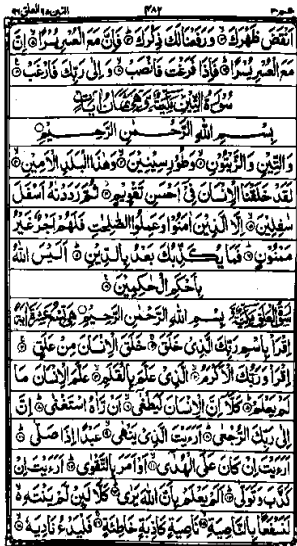
९६ सूरतुल्-अ-लक़ि ९

(मक्की) इस सूर: में अरबी के २६० अक्षर, ७२ शब्द, १६ आयतें और १ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

इक़-रअ् बिस्मि रब्बिकल्लज़ी ख़-लक़ (१) ख़-ल-क़ल् - इन्सा-न मिन् अ-लक़ (२) इक़्रअ् व रब्बुकल्-अक्रमु- (३) ल्लज़ी अल्ल-म बिल्-क़-लमि (४) अल्ल-मल्-इन्सा-न मा लम् यअ्-लम् (५) कल्ला इन्नल्-इन्सा-न ल-यत्ग़ा (६) अर्-र - आहुस्तग़ना (७) इन्-न इला रब्बिकर्रुज्आ (८) अ-र-ऐ-तल्लज़ी यन्हा (९) अब्-दन् इज़ा सल्ला (१०) अ-र-ऐ-त इन् का-न अलल्-हुदा (११) औ अ-म-र बित्तक़्वा (१२) अ-र-ऐ-त इन् कज़्ज़-ब व त-वल्ला (१३) अ-लम् यअ्-लम् बिअन्नल्ला-ह यरा (१४) कल्ला लइल्लम् यन्तहि ल-नस्फ़ - अम् - बिन्नासियति (१५) नासियतिन् काज़िबतिन् ख़ातिअ: (१६) - फ़ल् - यद्अु नादिय: (१७)

أَنْقَضَ ظَهْرَكَ ۝ وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ۝ فَإِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۝ إِنَّ
مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۝ فَإِذَا فَرَغْتَ فَانْصَبْ ۝ وَإِلَىٰ رَبِّكَ فَارْغَبْ ۝

سُورَةُ التِّينِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ ثَمَانُ آيَاتٍ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

وَالتِّينِ وَالزَّيْتُونِ ۝ وَطُورِ سِينِينَ ۝ وَهَٰذَا الْبَلَدِ الْأَمِينِ ۝
لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ فِي أَحْسَنِ تَقْوِيمٍ ۝ ثُمَّ رَدَدْنَاهُ أَسْفَلَ
سَافِلِينَ ۝ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَلَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ
مَمْنُونٍ ۝ فَمَا يُكَذِّبُكَ بَعْدُ بِالدِّينِ ۝ أَلَيْسَ اللَّهُ
بِأَحْكَمِ الْحَاكِمِينَ ۝

سُورَةُ الْعَلَقِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ وَهِيَ تِسْعَ عَشْرَةَ آيَةً

اقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِي خَلَقَ ۝ خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ ۝
اقْرَأْ وَرَبُّكَ الْأَكْرَمُ ۝ الَّذِي عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ۝ عَلَّمَ الْإِنْسَانَ مَا
لَمْ يَعْلَمْ ۝ كَلَّا إِنَّ الْإِنْسَانَ لَيَطْغَىٰ ۝ أَنْ رَآهُ اسْتَغْنَىٰ ۝ إِنَّ
إِلَىٰ رَبِّكَ الرُّجْعَىٰ ۝ أَرَأَيْتَ الَّذِي يَنْهَىٰ ۝ عَبْدًا إِذَا صَلَّىٰ ۝
أَرَأَيْتَ إِنْ كَانَ عَلَى الْهُدَىٰ ۝ أَوْ أَمَرَ بِالتَّقْوَىٰ ۝ أَرَأَيْتَ إِنْ
كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ۝ أَلَمْ يَعْلَمْ بِأَنَّ اللَّهَ يَرَىٰ ۝ كَلَّا لَئِنْ لَمْ يَنْتَهِ
لَنَسْفَعًا بِالنَّاصِيَةِ ۝ نَاصِيَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِئَةٍ ۝ فَلْيَدْعُ نَادِيَهُ ۝

★रु. १/१६ आ ८ ★रु. १/२० आ ८

ज़िक्र बुलंद किया, (४) हां, (हां) मुश्किल के साथ आसानी भी है। (५) (और) बेशक मुश्किल के साथ आसानी भी है, (६) तो जब फ़ारिग़ हुआ करो, तो (इबादत में) मेहनत किया करो, (७) और अपने परवरदिगार की तरफ़ मुतवज्जह हो जाया करो। (८) ★

९५ सूरः तीन २८

सूरः तीन मक्की है और इस में आठ आयतें और १ रुकूअ है

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

इंजीर की क़सम और ज़ैतून की, (१) और तूरे सीनीन की, (२) और इस अम्न वाले शहर की, (३) कि हमने इंसान को बहुत अच्छी सूरत में पैदा किया है। (४) फिर (धीरे-धीरे) उस (की हालत) को (बदल कर) पस्त से पस्त कर दिया। (५) मगर जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, उन के लिए बे-इन्तिहा बदला है, (६) तो (ऐ आदम की औलाद!) फिर तू बदले के दिन को क्यों झुठलाता है? (७) क्या ख़ुदा सब से बड़ा हाकिम नहीं है? (८) ★

९६ सूरः अलक़ १

सूरः अलक़ मक्की है और इसमें १९ आयतें और १ रुकूअ है।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।

(ऐ मुहम्मद!) अपने परवरदिगार का नाम ले कर पढ़ो, जिस ने (दुनिया को) पैदा किया, (१) जिस ने इंसान को ख़ून की फुटकी से बनाया, (२) पढ़ो और तुम्हारा परवरदिगार बड़ा करम वाला है, (३) जिस ने क़लम के ज़रिए से इल्म सिखाया, (४) और इंसान को वे बातें सिखाईं, जिन का उस को इल्म न था,[1] (५) मगर इंसान सरकश हो जाता है, (६) जबकि अपने आप को ग़नी देखता है, (७) कुछ शक नहीं कि (उस को) तुम्हारे परवरदिगार ही की तरफ़ लौट कर जाना है। (८) भला तुम ने उस शख़्स को देखा, जो मना करता है। (९) (यानी) एक बन्दे को जब वह नमाज़ पढ़ने लगता है। (१०) भला देखो तो अगर यह सीधे रास्ते पर हो, (११) या परहेज़गारी का हुक्म करे (तो मना करना कैसा![2]) (१२) और देख तो अगर उस ने दीने हक़ को झुठलाया और उस से मुंह मोड़ा, (तो क्या हुआ?) (१३) क्या उस को मालूम नहीं कि ख़ुदा देख रहा है। (१४) देखो, अगर वह बाज़ न आएगा तो हम (उस की) पेशानी के बाल पकड़ कर घसीटेंगे। (१५) यानी उस झूठे ख़ताकार की पेशानी के बाल। (१६) तो वह अपने यारों को

---

१. हज़रत सल्ल० पर जो वह्य सब से पहले नाज़िल हुई, वही इस सूरः की पहली पांच आयतें हैं। ये आयतें हिरा के ग़ार में नाज़िल हुयीं, जहां आप तश्रीफ़ ले जा कर तंहाई में इबादत किया करते थे। आप फ़रमाते हैं कि जब फ़रिश्ते ने आ कर मुझ से कहा कि पढ़ो तो मैं ने कहा कि मैं पढ़ा हुआ नहीं हूं तो उस ने मुझे पकड़ कर दबाया, यहां तक कि मैं थक गया, फिर छोड़ दिया और कहा कि पढ़ो, मैं ने कहा कि मुझे पढ़ना नहीं आता, फिर दोबारा मुझ को दबोचा, यहां तक कि मैं थक गया, फिर छोड़ दिया और कहा कि पढ़ो। मैं ने कहा, मैं पढ़ना नहीं जानता। फिर तीसरी बार दबाया, यहां तक कि मैं थक कर चूर हो गया, फिर छोड़ दिया और कहा, 'इक़्रअ् बिस्मि रब्बिकल्लज़ी ख़लक़' और 'मालम्यअलम' तक पहुंचा। इस के बाद आप डर की वजह से कांपते-कांपते हज़रत ख़दीजा के पास आए और कहा कि मुझे लिहाफ़ उढ़ाओ। जब ख़ौफ़ दूर हुआ तो आप ने अपना हाल बयान

(शेष पृष्ठ ९८० पर)

स-नद्अुज़्ज़बानियः ॥ (१८) क़ल्ला ط ला तुतिअ्-हु वस्जुद् वक़्तरिब् ★ □ (१९)

९७ सूरतुल्-क़द्रि २५

(मक्की) इस सूरः में अरबी के ११५ अक्षर, ३० शब्द, ५ आयतें और १ रुकूअ् हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

इन्ना अन्ज़ल्नाहु फ़ी लैलतिल्-क़द्रि (१) व मा अद्रा-क मा लैलतुल्-क़द्रु ط (२) लैलतुल्-क़द्रि ॥ ख़ैरुम्-मिन् अल्फ़ि शह्र्ِ ▒ (३) त-नज़्ज़लुल-मलाइकतु वर्रूहु फ़ीहा बिइज़्नि रब्बिहिम् मिन् कुल्लि अम्रिन् (४) सलामुन् हि-य हत्ता मत्-लअिल्-फ़ज्रि ★ ● (५)

९८ सूरतुल्-बय्यिनति १००

(मदनी) इस सूरः में अरबी के ४१३ अक्षर, ९५ शब्द, ८ आयतें और १ रुकूअ् हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

लम् यकुनिल्लज़ी-न क-फ़रू मिन् अह्लिल्-किताबि वल्मुश्रिकी-न मुन्फ़क्की-न हत्ता तअ्ति-यहुमुल-बय्यिनः ॥ (१) रसूलुम्-मिनल्लाहि यत्लू सुहुफ़म्-मुतह्-ह-र-तन् ॥ (२) फ़ीहा कुतुबुन् क़य्यिमः ط (३) व मा त-फ़र्रक़ल्लज़ी-न ऊतुल्-किता-ब इल्ला मिम्बअ्-दि मा जाअत्हुमुल-बय्यिनः ط (४) व मा उमिरू इल्ला लियअ्-बुदुल्ला-ह मुख़्लिसी-न लहुद्दी-न ॥ हु-नफ़ा-अ व युक़ीमुस्सला-त व युअ्तुज़्ज़का-त व ज़ालि-क दीनुल-क़य्यिमः ط (५) इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू मिन् अह्लिल्किताबि वल्मुश्रिकी-न फ़ी नारि ज-हन्न-म ख़ालिदी-न फ़ीहा ط उलाइ-क हुम् शर्रुल-बरिय्यः ط (६) इन्नल्लज़ी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति ॥ उलाइ-क हुम् ख़ैरुल-बरिय्यः ط (७) जज़ाउहुम् अिन्-द रब्बिहिम् जन्नातु अद्निन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा अ-ब-दन् ط रज़ियल्लाहु अन्हुम् व रज़ू अन्हु ط ज़ालि-क लिमन् ख़शि-य रब्बः ★ (८)

سَنَدْعُ الزَّبَانِيَةَ ﴿١٨﴾ كَلَّا ۚ لَا تُطِعْهُ وَاسْجُدْ وَاقْتَرِبْ ﴿١٩﴾

سُوْرَةُ الْقَدْرِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ خَمْسُ اٰيَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةِ الْقَدْرِ ﴿١﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ ﴿٢﴾ لَيْلَةُ الْقَدْرِ خَيْرٌ مِّنْ اَلْفِ شَهْرٍ ﴿٣﴾ تَنَزَّلُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ فِيْهَا بِاِذْنِ رَبِّهِمْ ۚ مِنْ كُلِّ اَمْرٍ ﴿٤﴾ سَلٰمٌ ۛ هِيَ حَتّٰى مَطْلَعِ الْفَجْرِ ﴿٥﴾

سُوْرَةُ الْبَيِّنَةِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ ثَمَانُ اٰيَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

لَمْ يَكُنِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَالْمُشْرِكِيْنَ مُنْفَكِّيْنَ حَتّٰى تَاْتِيَهُمُ الْبَيِّنَةُ ﴿١﴾ رَسُوْلٌ مِّنَ اللّٰهِ يَتْلُوْا صُحُفًا مُّطَهَّرَةً ﴿٢﴾ فِيْهَا كُتُبٌ قَيِّمَةٌ ﴿٣﴾ وَمَا تَفَرَّقَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنَةُ ﴿٤﴾ وَمَآ اُمِرُوْٓا اِلَّا لِيَعْبُدُوا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۙ حُنَفَآءَ وَيُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوا الزَّكٰوةَ وَذٰلِكَ دِيْنُ الْقَيِّمَةِ ﴿٥﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَالْمُشْرِكِيْنَ فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۗ اُولٰٓئِكَ هُمْ شَرُّ الْبَرِيَّةِ ﴿٦﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمْ خَيْرُ الْبَرِيَّةِ ﴿٧﴾ جَزَآؤُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ

मु. खि मु ता ख. १८

★रु. १/२१ आ १९ □ सजूदः १४ ▒ व. न बी स. ★रु. १/२२ आ ५ ● मु. ३/४ ★रु. १/२३ आ ८

मज्लिस को बुला ले। (१७) हम भी अपने दोज़ख़ के मुवक्किलों को बुलाएंगे। (१८) देखो, उस का कहा न मानना और सज्दा करना और (ख़ुदा का) क़ुर्ब हासिल करते रहना। (१९) ★ □

९७ सूरः क़द्र २५

सूरः क़द्र मक्की है और इस में पांच आयतें और १ रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

हम ने इस (क़ुरआन) को शबे क़द्र में नाज़िल (करना शुरू) किया, (१) और तुम्हें क्या मालूम कि शबे क़द्र क्या है? (२) शबे क़द्र हज़ार महीने से बेहतर है।[1] ▩ (३) इस में रूहुल अमीन और फ़रिश्ते हर काम के (इन्तिज़ाम के) लिए, अपने परवरदिगार के हुक्म से उतरते हैं। (४) यह (रात) सुबह के होने तक (अमान और) सलामती है। (५) ★ ●

९८ सूरः बय्यिनः १००

सूरः बय्यिनः मदनी है और इस में आठ आयतें और १ रुकूअ हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

जो लोग काफ़िर हैं यानी अह्ले किताब और मुश्रिक वे (कुफ़्र से) बाज़ रहने वाले न थे, जब तक कि उन के पास खुली दलील न आती, (१) (यानी) ख़ुदा के पैग़म्बर जो पाक पन्ने पढ़ते हैं, (२) जिन में मज़बूत (आयतें) लिखी हुई हैं, (३) और अह्ले किताब जो अलग-अलग (और मुख़्तलिफ़) हुए हैं तो खुली दलील के आने के बाद (हुए हैं) (४) और उन को हुक्म तो यही हुआ था कि अमल के इख़्लास के साथ ख़ुदा की इबादत करें (और यक्सू हो कर) और नमाज़ पढ़ें और ज़कात दें और यही सच्चा दीन है। (५) जो लोग काफ़िर हैं (यानी) अह्ले किताब और मुश्रिक, वे दोज़ख़ की आग में (पड़ेंगे और) हमेशा उस में रहेंगे। ये लोग सब मख़्लूक़ से बद-तर हैं। (६) और जो लोग ईमान लाए और नेक अमल करते रहे, वे तमाम ख़ल्क़त से बेहतर हैं। (७) उन का बदला उन के परवरदिगार के यहां हमेशा रहने के बाग़ हैं, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं। हमेशा-हमेशा उन में रहेंगे। ख़ुदा उन से ख़ुश और वे उस से ख़ुश। यह (बदला) उस के लिए है, जो अपने परवरदिगार से डरता है। (८) ★

मु. ख़िमुताख़. १८

---

१. क़ुरआन मजीद एक ही बार नाज़िल नहीं हुआ, बल्कि पारा-पारा नाज़िल हुआ है। पहले-पहल वह शबेक़द्र में नाज़िल हुआ। इस आयत से मालूम होता है कि शबेक़द्र रमज़ान के महीने में है, जैसा कि दूसरी जगह फ़रमाया — 'शह्रु र-म-ज़ानल्लज़ी उन्ज़ि-ल फ़ीहिल क़ुरआन' यह मालूम नहीं कि यह रात किस तारीख़ को होती है, लेकिन सही हदीसों से इतना साबित है कि हज़रत रमज़ान की आख़िरी दहाई में एतिकाफ़ फ़रमाया करते थे और जितना एहतिमाम इस दहाई में फ़रमाते और में न फ़रमाते। ज़्यादातर तफ़्सीर लिखने वालों का ख़्याल है कि इस रात का अमल हज़ार महीने के अमल से अफ़्ज़ल है।

९९ सूरतुज़्-ज़िलज़ालि ९३

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के १५८ अक्षर, ३७ शब्द, ८ आयतें और १ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

इज़ा ज़ुल्ज़ि-लतिलअर्ज़ु ज़िल्ज़ालहा (१) व अख़्-र-जतिलअर्ज़ु अस्क़ालहा (२) व क़ालल-इन्सानु मा लहा (३) यौमइज़िन् तुह़द्दिसु अख़्-बारहा (४) बि-अन्-न रब्ब-क औहा लहा (५) यौमइज़िंय्यस्दुरुन्नासु अश्तातल-लियुरौ अअ़्-मालहुम् (६) फ़मंय्यअ़्-मल् मिस्क़ा-ल ज़र्रतिन् ख़ैरंय्यरः (७) व मंय्यअ़्-मल् मिस्क़ा-ल ज़र्रतिन् शर्रंय्यरः (८) ★

१०० सूरतुल्-आदियाति १४

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के १७० अक्षर, ४० शब्द, ११ आयतें और १ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

वल्आ़दियाति ज़ब्ह़न् (१) फ़ल्मूरि-याति क़द्ह़न् (२) फ़ल्मुग़ीराति सुब्ह़न् (३) फ़-अ-सर्-न बिही नक़्-अ़न् (४) फ़-व-सत्-न बिही जम्-अ़न् (५) इन्नल-इन्सा-न लि-रब्बिही ल-कनूद (६) व इन्नहू अ़ला ज़ालि-क ल-शहीद (७) व इन्नहू लिहुब्बिल-ख़ैरि ल-शदीद (८) अ-फ़ला यअ़्-लमु इज़ा बुअ़्-सि-र मा फ़िल्क़ुबूरि (९) व हुस्सि-ल मा फ़िस्सुदूरि (१०) इन्-न रब्बहुम् बिहिम् यौमइज़िल्-ल-ख़बीर ★ (११)

فِيهَآ أَبَدًا رَّضِيَ ٱللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا۟ عَنْهُ ذَٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ رَبَّهُۥ ۝
سُورَةُ الزِّلْزَالِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ ثَمَانُ آيَاتٍ
بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ
إِذَا زُلْزِلَتِ ٱلْأَرْضُ زِلْزَالَهَا ۝ وَأَخْرَجَتِ ٱلْأَرْضُ أَثْقَالَهَا ۝ وَ
قَالَ ٱلْإِنسَٰنُ مَا لَهَا ۝ يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ أَخْبَارَهَا ۝ بِأَنَّ رَبَّكَ
أَوْحَىٰ لَهَا ۝ يَوْمَئِذٍ يَصْدُرُ ٱلنَّاسُ أَشْتَاتًا لِّيُرَوْا۟ أَعْمَٰلَهُمْ ۝ فَمَن
يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَرَهُۥ ۝ وَمَن يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَرَهُۥ ۝
سُورَةُ الْعَادِيَاتِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ وَهِيَ إِحْدَى عَشْرَةَ آيَةً
وَٱلْعَٰدِيَٰتِ ضَبْحًا ۝ فَٱلْمُورِيَٰتِ قَدْحًا ۝ فَٱلْمُغِيرَٰتِ صُبْحًا ۝ فَأَثَرْنَ
بِهِۦ نَقْعًا ۝ فَوَسَطْنَ بِهِۦ جَمْعًا ۝ إِنَّ ٱلْإِنسَٰنَ لِرَبِّهِۦ لَكَنُودٌ ۝ وَ
إِنَّهُۥ عَلَىٰ ذَٰلِكَ لَشَهِيدٌ ۝ وَإِنَّهُۥ لِحُبِّ ٱلْخَيْرِ لَشَدِيدٌ ۝ أَفَلَا
يَعْلَمُ إِذَا بُعْثِرَ مَا فِي ٱلْقُبُورِ ۝ وَحُصِّلَ مَا فِي ٱلصُّدُورِ ۝
إِنَّ رَبَّهُم بِهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّخَبِيرٌۢ ۝
سُورَةُ الْقَارِعَةِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ إِحْدَى عَشْرَةَ آيَةً
بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ
ٱلْقَارِعَةُ ۝ مَا ٱلْقَارِعَةُ ۝ وَمَآ أَدْرَىٰكَ مَا ٱلْقَارِعَةُ ۝ يَوْمَ يَكُونُ
ٱلنَّاسُ كَٱلْفَرَاشِ ٱلْمَبْثُوثِ ۝ وَتَكُونُ ٱلْجِبَالُ كَٱلْعِهْنِ ٱلْمَنفُوشِ ۝

१०१ सूरतुल्-क़ारिअ़ति ३०

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के १६० अक्षर, ३५ शब्द, ११ आयतें और १ रुकूअ़ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

अल्क़ारिअ़तु (१) मल्क़ारिअ़ः (२) व मा अद् - रा-क मल्क़ारिअ़ः (३) यौ - म यकूनुन्नासु कल्फ़राशिल - मब्सूसि (४) व तकूनुल्जिबालु कल्अ़िह्निल - मन्फ़ूश (५)
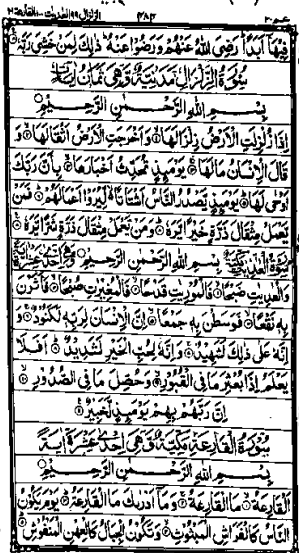
९९ सूरः ज़िलज़ाल ९३

सूर: जिलज़ाल मदनी है और इस में आठ आयतें और १ रुकूअ है।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

जब ज़मीन भोंचाल से हिला दी जाएगी, (१) और ज़मीन अपने (अन्दर के) बोझ निकाल डालेगी, (२) और इन्सान कहेगा कि इस को क्या हुआ है ? (३) उस दिन वह अपने हालात बयान कर देगी, (४) क्योंकि तुम्हारे परवरदिगार ने उस को हुक्म भेजा (होगा।) (५) उस दिन लोग गिरोह-गिरोह हो कर आएंगे, ताकि उन को उन के आमाल दिखा दिए जाएं। (६) तो जिस ने ज़र्रा भर नेकी की होगी, वह उस को देख लेगा, (७) और जिस ने ज़र्रा भर बुराई की होगी, वह उसे देख लेगा। (८)★

१०० सूरः आदियात १४

सूर: आदियात मक्की है और इस में ग्यारह आयतें और १ रुकूअ है।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

उन सरपट दौड़ने वाले घोड़ों की क़सम, जो हांप उठते हैं, (१) फिर पत्थरों पर (नाल) मार कर आग निकालते हैं, (२) फिर सुबह को छापा मारते हैं, (३) फिर उस में गर्द उठाते हैं, (४) फिर उस वक़्त (दुश्मन की) फ़ौज में जा घुसते हैं, (५) कि इंसान अपने परवरदिगार का नाशुक्रा है, (६) और वह इस से आगाह भी है। (७) वह तो माल की सख़्त मुहब्बत करने वाला है। (८) क्या वह उस वक़्त को नहीं जानता कि जो (मुर्दे) क़ब्रों में हैं, वे बाहर निकाल लिए जाएंगे, (९) और जो (भेद) दिलों में हैं, वे ज़ाहिर कर दिए जाएंगे। (१०) बेशक उन का परवरदिगार उस दिन को ख़ूब जानता होगा। (११)★

१०१ सूरः क़ारिअः ३०

सूर: क़ारिअ: मक्की है, और इस में ग्यारह आयतें और १ रुकूअ है।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

खड़खड़ाने वाली, (१) खड़खड़ाने वाली क्या है ? (२) और तुम क्या जानो कि खड़खड़ाने वाली क्या है ? (३) (वह क़ियामत है,) जिस दिन लोग ऐसे होंगे जैसे बिखरे हुए पतंगे, (४) और पहाड़ ऐसे हो जाएंगे जैसे धुंकी हुई रंग-बिरंग की ऊन, (५) तो जिस के (आमाल के) वज़न भारी

★रु. १/२४ आ ८ ★रु. १/२५ आ ११

फ़-अम्मा मन् सक़ुलत् मवाज़ीनुहू ॥ (६) फ़हु-व फ़ी ईशतिर्-राज़िय: ॥ (७) व अम्मा मन् ख़फ़्फ़त् मवाज़ीनुहू ॥ (८) फ़-उम्मुहू हाविय: ॥ (९) व मा अद्रा-क मा हिय: ॥ (१०) नारुन् हामिय: ★ (११)

१०२ सूरतुत्तकासुरि १६

(मक्की) इस सूर: में अरबी के १२३ अक्षर, २८ शब्द, ८ आयतें और १ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

अल्हाकुमुत्तकासुरु ॥ (१) हत्ता ज़ुर्तुमुल्-मक़ाबिर ॥ (२) कल्ला सौ-फ़ तअ्-लमून ॥ (३) सुम्-म कल्ला सौ-फ़ तअ्-लमून ॥ (४) कल्ला लौ तअ्-लमू-न अिल्मल्-यक़ीन ॥ (५) ल-त - रवुन्नल्-जहीम ॥ (६) सुम्-म ल-त-र-वुन्नहा अ़ैनल्-यक़ीन ॥ (७) सुम्-म लतुस - अलुन्-न यौमइज़िन् अनिन्नअीम ★ (८)

१०३ सूरतुल्-अस्रि १३

(मक्की) इस सूर: में अरबी के ७४ अक्षर, १४ शब्द, ३ आयतें और १ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

फَاَمَّا مَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ ۙ فَهُوَ فِيْ عِيْشَةٍ رَّاضِيَةٍ ۭ وَاَمَّا مَنْ
خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ ۙ فَاُمُّهٗ هَاوِيَةٌ ۭ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا هِيَهْ ۭ نَارٌ حَامِيَةٌ

سُوْرَةُ التَّكَاثُرِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ ثَمَانُ اٰيَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْهٰىكُمُ التَّكَاثُرُ ۙ حَتّٰى زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ۭ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ
ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۭ كَلَّا لَوْ تَعْلَمُوْنَ عِلْمَ الْيَقِيْنِ ۭ لَتَرَوُنَّ
الْجَحِيْمَ ۙ ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيْنَ الْيَقِيْنِ ۙ ثُمَّ لَتُسْـَٔـلُنَّ يَوْمَىِٕذٍ
عَنِ النَّعِيْمِ

سُوْرَةُ الْعَصْرِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَهِيَ ثَلٰثُ اٰيَاتٍ

وَالْعَصْرِ ۙ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِيْ خُسْرٍ ۙ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ ۙ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ

سُوْرَةُ الْهُمَزَةِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ تِسْعُ اٰيَاتٍ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةِ ۙ الَّذِيْ جَمَعَ مَالًا وَّعَدَّدَهٗ ۙ يَحْسَبُ
اَنَّ مَالَهٗٓ اَخْلَدَهٗ ۚ كَلَّا لَيُنْۢبَذَنَّ فِي الْحُطَمَةِ ڮ وَمَآ اَدْرٰىكَ
مَا الْحُطَمَةُ ۭ نَارُ اللّٰهِ الْمُوْقَدَةُ ۙ الَّتِيْ تَطَّلِعُ عَلَي الْاَفْـِٕدَةِ ۭ
اِنَّهَا عَلَيْهِمْ مُّؤْصَدَةٌ ۙ فِيْ عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ

منزل ٧

वल्अस्रि ॥ (१) इन्नल्-इन्सा-न लफ़ी ख़ुस्र ॥ (२) इल्लल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति व त-वासौ बिल्हक़्क़ि ॥ व त-वासौ बिस्सब्रि ★ (३)

१०४ सूरतुल्-हु-मज़ति ३२

(मक्की) इस सूर: में अरबी के १३५ अक्षर, ३३ शब्द, ९ आयतें और १ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम •

वैलुल्लिकुल्लि हु-म-ज़तिल्-लु-मज़: ॥ (१) अ़ल्लज़ी ज-म-अ मालव्-व अ़द्-द-दहू ॥ (२) यह्सबु अन्-न मा लहू अख़्-ल-द: ॥ (३) कल्ला लयुम्बज़न्-न फ़िल्-हु-तमति ॥ (४) व मा अद्रा-क मल्हु-त-म: ॥ (५) नारुल्लाहिल्-मूक़-दतु- ॥ (६) -ल्लती तत्तलिअु अलल्-अफ़्-इद: ॥ (७) इन्नहा अ़लैहिम् मुअ्-स-दतुन् ॥ (८) फ़ी अ़-मदिम्-मुमद्-द-द: ★ (९)
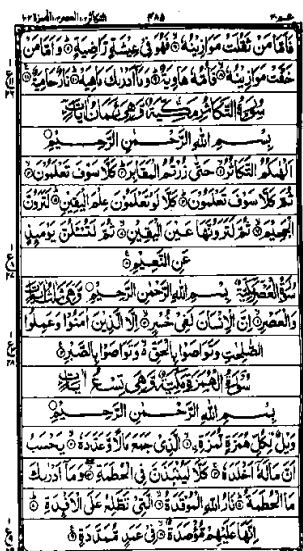
निकलेंगे, (६) वह दिल पसन्द ऐश में होगा, (७) और जिस के वज़न हल्के निकलेंगे, (८) उन के लौटने की जगह हाविया है, (९) और तुम क्या समझे कि हाविया क्या चीज़ है ? (१०) (वह) दहकती हुई आग है। (११) ★

१०२ सूरः तकासुर १६

सूरः तकासुर मक्की है और इस में आठ आयतें और १ रुकूअ है।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

(लोगो !) तुम को (माल की) बहुत सी तलब ने ग़ाफ़िल कर दिया, (१) यहां तक कि तुम ने क़ब्रें जा देखीं। (२) देखो, तुम्हें बहुत जल्द मालूम हो जाएगा, (३) फिर देखो, तुम्हें बहुत जल्द मालूम हो जाएगा। (४) देखो अगर तुम जानते (यानी) यक़ीन का इल्म (रखते, तो ग़फ़लत न करते,) (५) तुम ज़रूर दोज़ख़ को देखोगे। (६) फिर उस को (ऐसा) देखोगे (कि) ऐनुन् यक़ीन (यक़ीन की आंख) (आ जाएगा), (७) फिर उस दिन तुम से नेमत के (शुक्र के) बारे में पूछ-गछ होगी। (८) ★

१०३ सूरः अस्र १३

सूरः अस्र मक्की है और इस में तीन आयतें और १ रुकूअ है।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

अस्र की क़सम, (१) कि इंसान नुक़सान में है, (२) मगर वे लोग, जो ईमान लाए और नेक अमल करते रहे और आपस में हक़ (बात) की तल्क़ीन और सब्र की ताकीद करते रहे। (३) ★

१०४ सूरः हु-म-ज़: ३२

सूरः हु-म-ज़: मक्की है और इस में नौ आयतें और १ रुकूअ है।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

हर तानों भरे इशारे करने वाले चुग़लख़ोर की ख़राबी है, (१) जो माल जमा करता और उस को गिन-गिन कर रखता है, (२) और ख़्याल करता है कि उस का माल उस की हमेशा की ज़िंदगी की वजह होगा। (३) हरगिज़ नहीं, वह ज़रूर हुतमा में डाला जाएगा। (४) और तुम क्या समझे कि हुतमा क्या है ? (५) वह ख़ुदा की भड़कायी हुई आग है, (६) जो दिलों पर जा लपटेगी, (७) (और) वे उस में बन्द कर दिए जाएंगे, (८) यानी (आग के) लम्बे-लम्बे स्तूनों में। (९) ★

★रु. १/२६ आ ११ ★रु. १/२७ आ ८ ★रु. १/२८ आ ३ ★रु. १/२९ आ ९

१०५ सूरतुल्-फ़ीलि १९

(मक्की) इस सूर: में अरबी के ९४ अक्षर, २४ शब्द, ५ आयतें और १ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

अ-लम् त-र कै-फ़ फ़-अ-ल रब्बु-क बि-अस्ह़ाबिल्फ़ील (१) अ-लम् यज्-अल् कैदहुम् फ़ी तज़्लीलिंव- (२) व अर्-स-ल अलैहिम् तैरन् अबाबील (३) तर्मीहिम् बिहिजा-रतिम्-मिन् सिज्जीलिन् (४) फ़-ज-अ-लहुम् क-अस्फ़िम-मअ्-कूल ★ (५)

१०६ सूरतु क़ुरैशिन् २९

(मक्की) इस सूर: में अरबी के ७९ अक्षर, १७ शब्द, ४ आयतें और १ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

लि - ईलाफ़ि क़ुरैशिन् (१) ईलाफ़िहिम् रिह़-ल-तश् - शिताइ वस्सैफ़ (२) फ़ल्यअ्-बुदू रब्-ब हाज़ल्बैति- (३) ल्लज़ी अत् - अ - महुम् मिन् जूअिंव्- व अ-म - नहुम् मिन् ख़ौफ़ ★ (४)

१०७ सूरतुल्-माऊनि १७

(मक्की) इस सूर: में अरबी के ११५ अक्षर, २५ शब्द, ७ आयतें और १ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

अ-र-ऐ-तल्लज़ी युकज़्ज़िबु बिद्दीन (१) फ़-ज़ालिकल्लज़ी यदुअ्-उल्-यतीम (२) व ला यहुज़्ज़ु अला तआमिल् - मिस्कीन (३) फ़वैलुल्-लिल्मुसल्लीन (४) अल्लज़ी-न हुम् अन् सलातिहिम् साहून (५) अल्लज़ी-न हुम् युराऊ-न (६) व यम्-ऊनल्-माऊन ★ (७)

سُوْرَةُ الْفِيْلِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ خَمْسُ اٰيَاتٍ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِاَصْحٰبِ الْفِيْلِ ۞ اَلَمْ يَجْعَلْ كَيْدَهُمْ
فِيْ تَضْلِيْلٍ ۞ وَّ اَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا اَبَابِيْلَ ۞ تَرْمِيْهِمْ
بِحِجَارَةٍ مِّنْ سِجِّيْلٍ ۞ فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّاْكُوْلٍ ۞
سُوْرَةُ قُرَيْشٍ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَهِيَ اَرْبَعُ اٰيَاتٍ
لِاِيْلٰفِ قُرَيْشٍ ۞ اٖلٰفِهِمْ رِحْلَةَ الشِّتَآءِ وَالصَّيْفِ ۞
فَلْيَعْبُدُوْا رَبَّ هٰذَا الْبَيْتِ ۞ الَّذِيْٓ اَطْعَمَهُمْ مِّنْ جُوْعٍ ۙ وَّ
اٰمَنَهُمْ مِّنْ خَوْفٍ ۞
سُوْرَةُ الْمَاعُوْنِ مَكِّيَّةٌ وَّهِيَ سَبْعُ اٰيَاتٍ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
اَرَءَيْتَ الَّذِيْ يُكَذِّبُ بِالدِّيْنِ ۞ فَذٰلِكَ الَّذِيْ يَدُعُّ الْيَتِيْمَ ۞
وَلَا يَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ۞ فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَ ۞ الَّذِيْنَ
هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ ۞ الَّذِيْنَ هُمْ يُرَآءُوْنَ ۞ وَ
يَمْنَعُوْنَ الْمَاعُوْنَ ۞
سُوْرَةُ الْكَوْثَرِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَهِيَ ثَلٰثُ اٰيَاتٍ
اِنَّآ اَعْطَيْنٰكَ الْكَوْثَرَ ۞ فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ ۞ اِنَّ

१०८ सूरतुल्-कौ-सरि १५

(मक्की) इस सूर: में अरबी के ३७ अक्षर, १० शब्द, ३ आयतें और १ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

इन्ना अअ्-तैनाकल्-कौ-सर (१) फ़-सल्लि लिरब्बि-क वन्हर् (२)

★रु. १/३० आ ५ ★रु. १/३१ आ ४ ★रु. १/३२ आ ७

१०५ सूरः फ़ील १९

सूर: फ़ील मक्की है और इस में पांच आयतें और १ रुकूअ है।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

क्या तुम ने नहीं देखा कि तुम्हारे परवरदिगार ने हाथी वालों के साथ क्या किया ? (१) क्या उन का दांव ग़लत नहीं किया ? (किया।) (२) और उन पर झिल्लड़ के झिल्लड़ जानवर भेजे, (३) जो उन पर कंकर की पत्थरियां फेंकते थे, (४) तो उन को ऐसा कर दिया जैसे खाया हुआ भुस। (५) ★

१०६ सूरः क़ुरैश २९

सूर: क़ुरैश मक्की है और इस में चार आयतें और १ रुकूअ है।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

क़ुरैश के मानूस करने की वजह से, (१) (यानी) उन को जाड़े और गर्मी के सफ़र से मानूस करने की वजह से, (२) (लोगों को) चाहिए कि (इस नेमत के शुक्र में) इस घर के मालिक की इबादत करें, (३) जिस ने उन को भूख में खाना खिलाया और ख़ौफ़ से अम्न बख़्शा।[1] (४) ★

१०७ सूरः माऊन १७

सूर: माऊन मक्की है और इस में सात आयतें आयतें और १ रुकूअ है।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

भला तुम ने उस शख़्स को देखा जो बदले (के दिन) को झुठलाता है। (१) यह वही (बदबख़्त) है जो यतीम को धक्के देता है, (२) और फ़क़ीर को खाना खिलाने के लिए (लोगों को) तर्ग़ीब नहीं देता। (३) तो ऐसे नमाज़ियों की ख़राबी है, (४) जो नमाज़ की तरफ़ से ग़ाफ़िल रहते हैं। (५) जो दिखावे का काम करते हैं, (६) और बरतने की चीज़ें (उधार) नहीं देते। (७) ★

१०८ सूरः कौसर १५

सूर: कौसर मक्की है और इस में तीन आयतें आयतें और १ रुकूअ है।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

(ऐ मुहम्मद !) हम ने तुम को कौसर अता फ़रमायी है।[2] (१) तो अपने परवरदिगार के

---

१. हज़रत की बारहवीं पीढ़ी में एक आदमी नज़्र बिन कनाना था। उस की औलाद क़ुरैश में है। ये बैतुल्लाह के ख़ादिम थे और लोग उन का बहुत अदब और एहतराम करते थे। इस सूर: में ख़ुदा क़ुरैश पर अपना एहसान बताता है कि वह जाड़े और गर्मी में तिजारत के लिए सफ़र करते हैं और कोई उन को टोकता नहीं, चैन से खाते-पीते और अम्न से रहते-सहते हैं तो उन को चाहिए कि तौहीद अपनाएं और बुतों की पूजा को छोड़ कर उस के घर के मालिक यानी एक ख़ुदा की इबादत करें। कुछ तफ़्सीर लिखने वालों ने लिखा है कि यह सूर: पहली सूर: से मुताल्लिक़ है और उन के नज़दीक इस के मानी यह हैं कि हम ने जो मक्के से हाथियों और हाथी वालों को रौंद

(शेष पृष्ठ ९८० पर)

इन्-न शानि-अ-क हुवल्-अब्तर ★ (३)

१०९ सूरतुल्-काफ़िरून १८

(मक्की) इस सूर: में अरबी के ९९ अक्षर, २६ शब्द, ६ आयतें और १ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ●

क़ुल् या अय्युहल्-काफ़िरून (१) ला अअ्-बुदु मा तअ्-बुदून (२) व ला अन्तुम् आबिदू-न मा अअ्-बुद (३) व ला अ-न आबिदुम्-मा अबत्तुम् (४) व ला अन्तुम् आबिदू-न मा अअ्-बुद (५) लकुम् दीनुकुम् वलि - य दीन ★ (६)

११० सूरतुन्नस्रि ११४

(मदनी) इस सूर: में अरबी के ८१ अक्षर, १९ शब्द, ३ आयतें और १ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ●

इज़ा जा-अ नस्रुल्लाहि वल्फ़त्हु (१) व रऐ-तन्ना-स यद्खुलू-न फ़ी दीनिल्लाहि अफ़्वाजा (२) फ़सब्बिह् बिहम्दि रब्बि-क वस्तग़्फ़िर्हु इन्नहू का-न तव्वाबा ★ (३)

१११ सूरतुल्-ल-हबि ६

(मक्की) इस सूर: में अरबी के ८१ अक्षर, २४ शब्द, ५ आयतें और १ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ●

तब्बत् यदा अबी ल-हबिंव्-व तब्-ब (१) मा अग़्ना अन्हु मा लुहू व मा क-सब् (२) स-यस्ला नारन् ज़ा-त ल-हबिंव्- (३) वम्-र-अतुहू हम्मालतल्-ह-तबि (४) फ़ी जीदिहा हब्लुम्-मिम्-म-सद् ★ (५)

شَانِئَكَ هُوَ الْاَبْتَرُ
سُوْرَةُ الْكٰفِرُوْنَ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ سِتُّ اٰيَاتٍ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
قُلْ يٰۤاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۙ لَاۤ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ۙ وَلَاۤ اَنْتُمْ
عٰبِدُوْنَ مَاۤ اَعْبُدُ ۚ وَلَاۤ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ۙ وَلَاۤ اَنْتُمْ
عٰبِدُوْنَ مَاۤ اَعْبُدُ ؕ لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ
سُوْرَةُ النَّصْرِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ ثَلٰثُ اٰيَاتٍ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ ۙ وَرَاَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُوْنَ فِيْ دِيْنِ
اللّٰهِ اَفْوَاجًا ۙ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ ۚ اِنَّهٗ كَانَ تَوَّابًا
سُوْرَةُ اللَّهَبِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ خَمْسُ اٰيَاتٍ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
تَبَّتْ يَدَاۤ اَبِيْ لَهَبٍ وَّتَبَّ ؕ مَاۤ اَغْنٰى عَنْهُ مَالُهٗ وَمَا كَسَبَ ؕ
سَيَصْلٰى نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ۚۖ وَّامْرَاَتُهٗ ؕ حَمَّالَةَ الْحَطَبِ ۚ
فِيْ جِيْدِهَا حَبْلٌ مِّنْ مَّسَدٍ
سُوْرَةُ الْاِخْلَاصِ مَكِّيَّةٌ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَهِيَ اَرْبَعُ اٰيَاتٍ
قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۚ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۚ لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ۙ

११२ सूरतुल् इख्लासि २२

(मक्की) इस सूर: में अरबी के ४९ अक्षर, १७ शब्द, ४ आयतें और १ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम ●

क़ुल् हुवल्लाहु अ - हद (१) अल्लाहुस्स-मद (२) लम् यलिद् व लम् यूलद् (३)

के लिए नमाज़ पढ़ा करो और क़ुर्बानी किया करो। (२) कुछ शक नहीं कि तुम्हारा दुश्मन ही बे-औलाद रहेगा।' (३) ✱

१०९ सूर: काफ़िरून १८

सूर: काफ़िरून मक्की है और इस में छः आयतें और १ रुकूअ है।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

(ऐ पैग़म्बर! इस्लाम के इन मुन्किरों से) कह दो कि ऐ काफ़िरो! (१) जिन (बुतों) को तुम पूजते हो, उन को मैं नहीं पूजता, (२) और जिस (ख़ुदा) की मैं इबादत करता हूं, उस की तुम इबादत नहीं करते, (३) और (मैं फिर कहता हूं कि) जिन की तुम पूजा करते हो, उन की मैं पूजा करने वाला नहीं हूं। (४) और न तुम उस की बन्दगी करने वाले (मालूम होते) हो, जिस की मैं बन्दगी करता हूं। (५) तुम अपने दीन पर, मैं अपने दीन पर। (६) ✱

११० सूर: नस्र ११४

सूर: नस्र मदनी है और इस में तीन आयतें और २ रुकूअ है।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

जब ख़ुदा की मदद आ पहुंची और फ़त्ह (हासिल हो गयी,) (१) और तुम ने देख लिया कि लोग झुंड के झुंड ख़ुदा के दीन में दाख़िल हो रहे हैं, (२) तो अपने परवरदिगार की तारीफ़ के साथ तस्बीह करो और उस से मग़्फ़िरत मांगो▨बेशक वह माफ़ करने वाला है। (३) ✱

१११ सूर: ल-हब ६

सूर: ल-हब मक्की है और इस में पांच आयतें और १ रुकूअ है।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

अबू लहब के हाथ टूटें और वह हलाक हो, (१) न तो उस का माल ही उस के कुछ काम आया हो और न वह जो उस ने कमाया। (२) वह जल्द भड़कती हुई आग में दाख़िल होगा। (३) और उस की जोरू भी जो ईंधन सर पर उठाए फिरती है, (४) उस के गले में मूंज की रस्सी होगी।' (५) ★

११२ सूर: इख़्लास़ २२

सूर: इख़्लास मक्की है और इस में चार आयतें और १ रुकूअ है।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

कहो कि वह (ज़ात पाक जिस का नाम) अल्लाह (है) एक है, (१) (वह) माबूदे बरहक़, बे-नियाज़ है। (२) न किसी का बाप है और न किसी का बेटा, (३) और कोई उस का हमसर

---

१. अब्तर उस को कहते हैं जिस के मर्द औलाद में से कोई न रहे। जब हज़रत के बेटों का इन्तिक़ाल हो गया तो कुछ काफ़िर कहने लगे कि मुहम्मद अब्तर हो गया, इस के बाद कोई इस का नाम लेने वाला न रहेगा। ख़ुदा ने आप से फ़रमाया कि तुम्हारा बुरा चाहने वाले ही की नस्ल कट जाएगी और आप का नाम आप की उम्मत के ज़रिए से हमेशा के लिए बाक़ी रखा।

२. 'अबू लहब' रिश्ते में हज़रत का चचा था, मगर बड़ा काफ़िर और आप की जान का दुश्मन, उस का नाम तो

(शेष पृष्ठ ९७३ पर)

व लम् यकुल्लहू कुफ़ुवन् अ - ह़द ★(४)

११३ सूरतुल्-फ़-लक़ि २०

(मक्की) इस सूर: में अरबी के ७३ अक्षर, २३ शब्द, ५ आयतें और १ रुकूअ हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

क़ुल् अऊ़ज़ु बिरब्बिल्-फ़-लक़ि (१) मिन् शर्रि मा ख़-लक़् (२) व मिन् शर्रि ग़ासिक़िन् इज़ा व-क़ब् (३) व मिन् शर्रिन्नफ़्फ़ासाति फ़िल्अ़ुक़द् (४) व मिन् शर्रि ह़ासिदिन् इज़ा ह़-सद् ★(५)

११४ सूरतुन्नासि २१

(मक्की) इस सूर: में अरबी के ८१ अक्षर, २० शब्द, ६ आयतें और १ रुकूअ है।

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम •

क़ुल् अऊ़ज़ु बिरब्बिन्नासि (१) मलिकिन्नासि (२) इलाहिन्नासि (३) मिन् शर्रिल्-वस्वासिल्-ख़न्नासि- (४) -ल्लज़ी युवस्विसु फ़ी सुदूरिन्नासि (५) मिनल्जिन्नति वन्नास ★ (६)

(साथी) नहीं। (४) ★

११३ सूरः फ़लक़ २०

सूरः फ़लक़ मदनी है और इस में पांच आयतें और १ रुकूअ है।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

कहो कि मैं सुबह के मालिक की पनाह मांगता हूं, (१) हर चीज़ की बुराई से, जो उस ने पैदा की, (२) और अंधेरी रात की बुराई से, जब उस का अंधेरा छा जाए, (३) और गंडों पर (पढ़-पढ़ कर) फूंकने वालियों की बुराई से, (४) और हसद (जलन) करने वाले की बुराई से, जब हसद करने लगे।[1] (५) ★

११४ सूरः नास २१

सूरः नास मदनी है और इस में छः आयतें और १ रुकूअ है।

शुरू ख़ुदा का नाम ले कर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

कहो कि मैं लोगों के परवरदिगार की पनाह मांगता हूं, (१) (यानी) लोगों के हक़ीक़ी बादशाह की, (२) लोगों के माबूदे बर-हक़ की, (३) (शैतान) वस्वसा डालने वाले की बुराई से जो (ख़ुदा का नाम सुन कर) पीछे हट जाता है[2], (४) जो लोगों के दिलों में वस्वसे डालता है, (५) (चाहे वह) जिन्नों में से (हो) या इंसानों में से। (६) ★

अब्दुल उज़्ज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब था, मगर मशहूर इसी कुन्नियत से था, क्योंकि बहुत ज़्यादा ख़ूबसूरत था और हुस्न व जमाल की वजह से उस का चेहरा आग की तरह चमकता था। जब आप को हुक्म हुआ कि अपने क़बीलों को तंबीह करो तो आप ने क़ुरैश को जमा कर के फ़रमाया कि भला अगर मैं तुम को ख़बर दूं कि दुश्मन की फ़ौज सुबह या शाम तुम पर हमला करने वाली है तो तुम इस बात को मान लोगे ? उन्हों ने कहा ज़रूर मानेंगे। आप ने फ़रमाया कि मैं तुम को एक सख़्त अज़ाब से आगाह करता हूं जो तुम पर नाज़िल होने वाला है तो अबू लहब ने कहा कि तुम्हारे हाथ टूटें (यानी तुम हलाक हो) जो तुम ने हम को इसी लिए जमा किया था ? इस के जवाब में यह आयत नाज़िल हुई थी। अबू लहब की जोरू जिस का नाम उम्मे जमील था, उस को भी आप से बड़ा बैर था। उस ने यह तरीक़ा अख़्तियार कर रखा था कि रात को आप के रास्ते में कांटेदार लकड़ियां डाल जाती थी, इसी लिए उस को 'हम्मालतल हतब' फ़रमाया।

१. उस वक़्त उस की टोक लग जाती है।

२. शैतान गुनाह की दावत दे और आप नज़र न आए।

دعائے ماثورہ

اَللّٰهُمَّ اٰنِسْ وَحْشَتِیْ فِیْ قَبْرِیْ اَللّٰهُمَّ ارْحَمْنِیْ بِالْقُرْاٰنِ
الْعَظِیْمِ وَاجْعَلْهُ لِیْ اِمَامًا وَّنُوْرًا وَّهُدًی وَّرَحْمَةً اَللّٰهُمَّ
ذَكِّرْنِیْ مِنْهُ مَا نَسِیْتُ وَعَلِّمْنِیْ مِنْهُ مَا جَهِلْتُ وَارْزُقْنِیْ
تِلَاوَتَهٗ اٰنَآءَ الَّیْلِ وَاٰنَآءَ النَّهَارِ وَاجْعَلْهُ لِیْ حُجَّةً یَّا رَبَّ الْعٰلَمِیْنَ

दुआए मासूर:

अल्लाहुम्-म आनिस् वह्-शती फ़ी क़ब्री अल्लाहुम्मर्-ह्म्नी बिक़ुर्आनिल्-अज़ीमि वजअ़ल्हु ली इमामंव्-व नूरंव्-व हुदंव्-व रह्म-तन् अल्लाहुम्-म ज़क्किर्नी मिन्हु मा नसीतु व अ़ल्लिम्नी मिन्हु मा जहिल्तु वर्ज़ुक़्नी तिलाव-तहू आनाअल्लैलि व आनाअन्नहारि वजअ़ल्हु ली हुज्जतंय्या रब्बल्-आ़लमीन (आमीन)

दुआए मासूर:

ऐ अल्लाह ! मेरे मरने के बाद मेरी क़ब्र की परेशानी से मुझ को मानूस (अभ्यस्त) करना। इस महान क़ुरआन मजीद (की बरकत) के वसीले से मुझ पर रहम कर और क़ुरआन मजीद को मेरे लिए इमाम (अधिनायक), नूर (प्रकाश), हिदायत (पथ-प्रदर्शक), और रहमत (का साधन) बना। ऐ अल्लाह ! (क़ुरआन मजीद में) जो मैं भूल गया हूं मुझे याद दिला (और) जो मैं नहीं जान पाया वह मुझे सिखला। अमन से रात दिन (क़ुरआन मजीद की) तिलावत करने का नसीब दे और उसको मेरे लिए दलील बना, ऐ दुनिया के पालनहार ! (यह मेरी दुआ क़ुबूल कर।)

(पृष्ठ ५ का शेष)

यह मुराद है कि जिन रास्तों से इन्सान हिदायत की बातों को सुन सकता और समझ सकता है, वे बन्द हैं।

३. इस आयत से मुनाफ़िक़ों का हाल शुरू होता है। मुनाफ़िक़ उस को कहते हैं जो दिल से तो काफ़िर हो और ज़ाहिर में अपने को मोमिन बयान करे। इस तरह के लोग मदीने में थे और काफ़िरों के मुक़ाबले में उन से नुक़सान पहुंचने का ज़्यादा ख़तरा रहता था, इस लिए अल्लाह तआला ने उन के हाल और उन की चाल से मुसलमानों को आगाह फ़रमा दिया, ताकि उन से बचते रहें और उन के धोखे में न आएं।

४. ये लोग मुसलमानों के पास भी आते थे और काफ़िरों के यहां भी जाते थे, तो ऐसी बात करते जिन से फ़साद पैदा हो, सो जब उन से कहा जाता कि फ़साद की बातें न करो, तो जवाब देते कि हमारी ग़रज़ तो दोनों फ़रीक़ों में सुलह व साज़गारी पैदा करना है। ख़ुदा ने फ़रमाया कि उन के काम फ़साद की वजह हैं और ये यक़ीनी तौर पर फ़साद पैदा करने वाले हैं, लेकिन इन को मालूम नहीं।

५. शैतानों से मुराद उन के सरदार हैं। मुनाफ़िक़ लोग जब मुसलमानों से मिलते तो कहते कि हम तो तुम्हारी तरह मोमिन हैं और जब अपने सरदारों के पास जाते तो कहते, कहां का ईमान, कैसी मुसलमानी! हम तो मुसलमानों से दिल-लगी करते हैं और अपना ईमान ज़ाहिर कर के उन को मूर्ख बनाते हैं।

६. इस आयत में ख़ुदा मुनाफ़िक़ों की इन बातों के जवाब में फ़रमाता है कि उनसे ख़ुदा हंसी करता है। हंसी से मुराद यहां यह है कि जिस तरह वे देखने में ईमान ज़ाहिर करते हैं और अपने सरदारों से मिल कर यह कहते हैं कि हम तुम्हारे साथ हैं, इसी तरह ख़ुदा दुनिया में उन को पनाह देता और उन के माल व जान को महफ़ूज़ रखता है और वे समझे हुए हैं कि उन के काम उन को नुक़्सान नहीं पहुंचाते, लेकिन क़ियामत के दिन उन को अज़ाब में मुब्तला किया जाएगा।

७. मुनाफ़िक़ कई क़िस्म के थे। कुछ ऐसे थे कि पहले मुसलमान हो गये थे, फिर मुनाफ़िक़ हो गये। इस आयत की मिसाल उन्हीं का नक़्शा खींचती है कि उन्होंने पहले ईमान लाकर रोशनी हासिल की, फिर मुनाफ़िक़ बनकर इस रोशनी को खो दिया और निफ़ाक़ के अंधेरे में पड़ गये यानी उन के दिल अंधे हो गये।

(पृष्ठ ७ का शेष)

२. इस आयत में यह बयान है कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ुदा के पैग़म्बर और क़ुरआन मजीद ख़ुदा का कलाम है और कुफ़्फ़ार को चैलेंज किया गया है कि अगर तुम इन बातों को नहीं मानते और समझते हो कि यह किताब ख़ुदा की तरफ़ से नाज़िल नहीं हुई, बल्कि मुहम्मद (सल्लम) ने अपनी तरफ़ से बना ली है, तो इस जैसी एक सूरः तुम भी बना लाओ। इस बारे में इख़्तिलाफ़ है कि क़ुरआन किस लिहाज़ से बे-मिस्ल और चुप कर देने वाला है यानी जैसी उम्दा, साफ़-सुथरी और जानदार इबारत क़ुरआन मजीद की है, ऐसी इबारत किसी से नहीं बन सकती। वे यह भी कहते हैं और इसे उन के दावे की दलील समझना चाहिए कि जिस ज़माने में, जिस का ज़्यादा प्रचार होता था, उस वक़्त के पैग़म्बर को उसी क़िस्म का मोजज़ा दिया जाता था। चूंकि क़ुरआन मजीद के उतरने के ज़माने में अरब में जानदार और साफ़-सुथरी ज़ुबान का बहुत चर्चा था, इस लिए ख़ुदा ने ख़ात-मुन्नबीयीन (नबियों में आख़िरी नबी) को क़ुरआन की ज़ोरदार और साफ़-सुथरी ज़ुबान का ऐसा मोजज़ा बख़्शा कि बड़े-बड़े नामी और माहिर शायर और ख़तीब उस के मुक़ाबले में आजिज़ हो गये। कुछ ने कहा कि क़ुरआन अपनी हकीमाना हिदायतों के लिहाज़ से मोजिज़ (चुप कर देने वाली) है। कुछ इस को रूहानियत के एतबार से मोजिज़ मानते हैं, बहरहाल इस में आदाब हैं, अख़्लाक़ हैं, समाजी ज़िंदगी गुज़ारने का बेहतरीन तरीक़ा है, नफ़्स को संवारने की बात है, सियासत के क़ानून हैं, मुल्क का इंतिज़ाम चलाने के क़ायदे हैं, अदब व इंसाफ़ है, कमाई व व्यापार है, हुक़ूक़ हैं, इबादतें हैं, बराबरी है, भाईचारा है, नर्मी है, रियायत है, ख़ैरख़्वाही है, नसीहत है, ख़ुदा की हस्ती

और रूहानियत है, गरज़ इसमें कमाल दर्जे की इंसान की हालत की इस्लाह है और कुछ शक नहीं कि वह क्या साफ़-सुथरी ज़ोरदार ज़ुबान के लिहाज़ से और क्या हकीमाना हिदायतों और रूहानियत के, बे-मिसाल व बेनज़ीर है ? और कोई आदमी इस क़िस्म की किताब बनाने की क़ुदरत नहीं रखता। इसी वजह से दूसरी जगह इर्शाद हुआ है, 'क़ुल ल-इनिज-त-म-अतिल इन्सु वल जिन्नु अला अय्यअ्तू बिमिस्लि हाज़ल क़ुरआनि ला यातू-न बिमिस्लिही व लौ का-न बअ्ज़ुहुम लि बअ्ज़िन ज़हीर०' (कह दीजिए, अगर तमाम जिन्न व इंसान इस क़ुरआन जैसा बना लाने पर जमा हो जाएं, तो वे इस जैसा नहीं ला सकते, चाहे वे एक दूसरे के पुश्त-पनाह ही क्यों न हों।)

३. क़ुरआन में मुश्रिकों और उनके झूठे माबूदों की मिसालें कुछ आयतों में इस तरह बयान हुई हैं कि 'जो लोग ख़ुदा को छोड़ कर औरों को कर्ता-धर्ता बनाते हैं, उनकी मिसाल मकड़ी की-सी है कि वह भी एक (तरह का) घर बनाती है और कुछ शक नहीं कि तमाम घरों से कमज़ोर मकड़ी का घर होता है, काश ये इस बात को जानते।' दूसरी आयत में है, 'लोगो ! एक मिसाल बयान की जाती है, उसे ग़ौर से सुनो कि जिन लोगों को तुम ख़ुदा के सिवा पुकारते हो, वे एक मक्खी भी नहीं बना सकते, अगरचे इस (काम) के लिए सब जमा हो जाएं और अगर उनसे मक्खी कोई चीज़ छीन ले जाए तो उसे उससे छुड़ा नहीं सकते। तालिब और मतलूब (यानी आबिद और माबूद) दोनों गये गुज़रे हैं।' काफ़िर लोग ये मिसालें सुनते तो कहते कि ऐसी छोटी और मामूली चीज़ों की मिसालें बयान करना ख़ुदा की शान के ख़िलाफ़ है। ख़ुदा ने फ़रमाया कि ख़ुदा मच्छर या जो चीज़ें इससे बड़ी हैं, उनकी मिसालें बयान करने से शर्माता नहीं। इन चीज़ों को पैदा भी तो उसी ने किया है और जब पैदा करने में उसे शर्म नहीं तो उनकी मिसाल में क्यों शर्म हो ?

(पृष्ठ ६ का शेष)

२. शैतान जिन्न की क़िस्म से था, बड़ी इबादत किया करता था और बड़ा इल्म रखता था। इबादत की ज़्यादती की वजह से फ़रिश्तों का दर्जा मिल गया था। यही वजह है कि जब अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि आदम को सज्दा करें तो इस ख़िताब में वह भी दाख़िल था। चूंकि उस की पैदाइश आग से हुई थी और आदम की मिट्टी से, और आग को मिट्टी पर बरतरी है, इस के अलावा वह इबादत करने वाला और इल्म रखने वाला भी बड़ा था, इस लिए शेख़ी में आ गया और आदम अलैहिस्सलाम को सज्दा न किया। ख़ुदा ने इस घमंड-ग़ुरूर की वजह से उसे मर्दूद (धुत्कारा हुआ) कर दिया।

(पृष्ठ १५ का शेष)

उस हुक्म के ख़िलाफ़ करते और एक दिन पहले दरिया के किनारे गढ़े खोद कर उस में पानी भर देते थे और जब मछलियां उनमें जमा हो जातीं, तो निकालते और कहते कि यह शिकार जुमा का है। इस हीले की वजह से बन्दर बना दिये गये।

२. तफ़्सीर लिखने वाले लिखते हैं कि बनी इस्राईल में एक बड़ा मालदार शख़्स था, मगर बे-औलाद। उस का वारिस उस का एक भतीजा था। उस ने माल के लोभ की वजह से उस को क़त्ल कर डाला। जो लोग इस तरह क़त्ल किया करते थे, बड़ी एहतियात से काम लिया करते थे। उस ने भी ऐसे तरीक़े से उसे क़त्ल किया कि क़ातिल का कुछ पता नहीं मिलता था। लोग इस बारे में लड़ने-झगड़ने लगे, तो किसी ने कहा कि तुम में ख़ुदा के पैग़म्बर मौजूद हैं, उन से रुजूअ़ करो। उन्होंने मूसा अलै० से यह कैफ़ियत बयान की। आप ने बैल ज़िब्ह करने का हुक्म दिया। अजब नहीं कि क़ातिल को इस बात का ख़ौफ़ हो गया हो कि कहीं राज़ न खुल जाए, इस लिए इस से पहले कि बैल के बारे में हुज्जतें करें, यह बात कही कि क्या आप इस से हंसी करते हैं, क्योंकि हम पूछते हैं कि क़ातिल कौन है ? आप कहते हैं कि बैल ज़िब्ह करो और यह एक बिल्कुल बे-मुनासिब बात है। मूसा अलै० ने फ़रमाया

कि मैं हंसी नहीं करता, बल्कि हक़ीक़त तो यह है कि वह बात कहता हूं, जिस को ख़ुदा ने इर्शाद फ़रमाया है, तो उन्होंने बैल की ख़ूबियां मालूम करने में कई तरह की बातें कीं। आख़िरकार उन्होंने उस को ज़िब्ह किया, तो हुक्म हुआ, उस का कोई-सा टुकड़ा मक़्तूल को मारो। उस के मारने से मक़्तूल ज़िंदा हो गया और उस से पूछा गया कि तुझ को किस ने मारा था ? तो उस ने क़ातिल का नाम ले दिया। इस क़िस्से से यह ज़ाहिर करना मक़्सूद है कि जिस तरह ख़ुदा ने उस मक़्तूल को तुम्हारी आंखों के सामने ज़िंदा कर दिया, उसी तरह वह क़ियामत के दिन तमाम मुर्दों को उठा खड़ा करेगा और यह उस को कुछ मुश्किल नहीं।

(पृष्ठ १७ का शेष)

ऐसी बातें मुसलमानों को क्यों बताया करते हो ? वे उन की सनद से तुम को क़ियामत के दिन ख़ुदा के सामने इल्ज़ाम देंगे। ख़ुदा ने फ़रमाया कि मुनाफ़िक़ों का यह ख़्याल ग़लत है कि उन के अपने बताने से हमारे यहां उन पर इल्ज़ाम लगेगा, बल्कि हम तमाम बातों को, जो ये छिपे या खुले तौर पर करते हैं, जानते हैं और ख़ुदा ही उन से पूछ लेंगे कि हमारी नाफ़रमानी क्यों करते रहे ?

३. यहूदी कहते थे कि हम ने चालीस दिन बछड़े की पूजा की थी, सो उतने ही दिन हम को दोज़ख़ का अज़ाब होगा और किसी और असल की वजह से हम ज़्यादा अज़ाब नहीं पाएंगे। ख़ुदा ने इस क़ौल की तर्दीद (खंडन) की और फ़रमाया कि क्या ख़ुदा ने तुम से वायदा किया है कि तुम कुछ दिन से ज़्यादा दोज़ख़ में न रहोगे, हालांकि तुम्हारे अमल ऐसे हैं कि हमेशा जहन्नम की आग में जलते रहो।

(पृष्ठ ५६१ का शेष)

कहा था, फिर उस ने सवारी का अगला पांव दबाया, तो मैं उस पर सवार हो गयी और वह मेरी सवारी की बाग हाथ में ले कर चला, यहां तक कि हम लश्कर में जा पहुंचे और उस वक़्त ठीक दोपहर थी। फिर मेरे बारे में जो कुछ अफ़वाहें फैलायी गयीं, फैलायी गयीं और जो हलाक हुआ, सो हुआ।

इस तूफ़ान उठाने में जिस ने सब से बड़ा हिस्सा लिया, वह अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल था, इस के बाद हम मदीना आए और वहां आ कर मैं महीने भर बीमार रही। लोग मेरे बारे में तज़्किरे करते थे, लेकिन मुझ को कुछ ख़बर न थी। अलबत्ता मुझे एक बात से शक होता था कि जनाब रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुझ पर वह लुत्फ़ व तवज्जोह नहीं फ़रमाते थे, जो पहले मेरी बीमारी के ज़माने में फ़रमाया करते थे। अब जो तश्रीफ़ लाते तो सलाम करने के बाद सिर्फ़ इतना पूछते कि तुम्हारा हाल कैसा है। इस से मुझे एक तरह का शुब्हा तो होता, लेकिन बोहतान लगाने वालों के बोहतान व शरारत की बिल्कुल ख़बर न थी। इस हालत में मैं बहुत कमज़ोर हो गयी। एक रात जो ज़रूरत पूरी करने बाहर निकली, तो मिस्तह की मां मेरे साथ थी। इत्तिफ़ाक़ से उस का पांव लड़खड़ाया तो उस ने कहा, 'मिस्तह हलाक हो। मैं ने कहा तुम ऐसे शख़्स को बद-दुआ देती हो, जो बद्र में शरीक हुआ। उस ने कहा, क्या तुम ने नहीं सुना कि क्या बोहतान लगाया है ? मैं ने कहा, नहीं, तुम बताओ कि उस ने क्या कहा है ? तो उस ने पूरा माजरा बयान किया। उस को सुन कर मुझे बहुत रंज हुआ। एक तो मैं पहले ही बीमार थी। यह हालत सुन कर रंज पर रंज हुआ। जब मैं लौट कर अपने घर आयी, तो जनाबे रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तश्रीफ़ लाए और मेरा हाल पूछा। मैं ने कहा, अगर आप इजाज़त बख़्शें तो मैं अपने मायके चली जाऊं। मेरा मतलब यह था कि वहां जा कर इस ख़बर की यक़ीनी मालूमात करूं। आप ने इजाज़त दे दी और मैं अपने मां-बाप के पास चली गयी। वहां मैं ने अपनी मां से पूछा कि लोग क्या तज़्किरा करते हैं ? उन्हों ने कहा कि बेटा ! कोई ऐसी बड़ी बात नहीं है, तुम कुछ ख़्याल न करो। इस जवाब से मेरा दिल मुत्मइन न हुआ और मैं रात भर रोती रही। उधर जनाब रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर वह्य आने में बहुत देर हो गयी तो आप ने मश्विरा लेने के लिए हज़रत अली बिन अबी तालिब और उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हुमा को बुलाया। उसामा ने तो यह कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल ! वह आप की

बीवी हैं और हम को उन के बारे में भलाई के सिवा कुछ नहीं मालूम। रहे अली बिन अबी तालिब, उन्हों ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! ख़ुदा ने आप पर तंगी नहीं की, औरतें और बहुत हैं। अगर आप लौंडी यानी बरीरा रज़ि० से मालूम फ़रमाएंगे, तो वह सच-सच बयान कर देंगी। आप ने बरीरा रज़ि० को बुला कर मालूम किया, तो उस ने कहा कि क़सम है उस ज़ात की! जिस ने आप को हक़ दे कर भेजा है, मैं ने कोई ऐसी बात नहीं देखी कि इस का उन पर ऐब लगाऊं। वह तो एक सीधी-सादी और भोली-भाली नव-उम्र लड़की है। यह सुन कर आप उसी दिन ख़ुत्बा पढ़ने को खड़े हुए और फ़रमाया कि उस शख़्स के मुक़ाबले में, जिस की वजह से मुझे मेरे अह्ल के मामले में इतनी तक्लीफ़ पहुंची है, कौन मेरी मदद करता है, तो साद बिन मुआज़ अंसारी खड़े हुए और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! मैं आप की मदद करता हूं और वह शख़्स औस क़बीले से है, तो हम उस की गरदन मारेंगे और अगर भाइयों या ख़ज़रज क़बीले से है तो आप जो इर्शाद फ़रमाएंगे, हम उसे पूरा करेंगे। फिर साद बिन उबादा खड़े हुए। यह ख़ज़रज क़बीले के सरदार थे, थे तो नेक आदमी, लेकिन हमीयत ने जोश मारा तो साद बिन मुआज़ से कहने लगे कि तुम ने ग़लत कहा। अगर वह शख़्स तुम्हारी जमाअत से है, तो मैं भी पसन्द नहीं करता कि क़त्ल किया जाए, तो उसैद बिन हुज़ैर रज़ि० जो साद बिन मुआज़ रज़ि० के चचेरे भाई हैं, खड़े हुए और साद बिन उबादा रज़ि० से कहने लगे कि तुम ने झूठ कहा। ख़ुदा की क़सम! हम उस को ज़रूर क़त्ल कर डालेंगे। तुम मुनाफ़िक़ हो कि मुनाफ़िक़ों की तरफ़ से झगड़ते हो। फिर दोनों क़बीले औस और ख़ज़रज मारे ग़ुस्से के खड़े हो गये और क़रीब था कि उन में लड़ाई और हाथापाई हो जाए, मगर प्यारे नबी सल्ल० ने उन के जोश को ठंडा किया और लड़ाई होने से रुक गयी। हां, तो मेरे रोने का यह हाल था कि मेरे मां-बाप सोचते थे कि रोना मेरे कलेजे को फाड़ कर रहेगा। इसी बीच एक दिन दोनों मेरे पास बैठे थे, और मैं रो रही थी कि अंसार की एक औरत मेरे पास आयी और वह भी बैठ कर मेरे साथ रोने लगी। अभी हम रो ही रहे थे कि रसूले ख़ुदा सल्ल० तश्रीफ़ लाए और सलाम कर के बैठ गये। जब से लोगों ने मेरे बारे में वह कहा जो कहा, आप मेरे पास नहीं बैठते थे और आप पर मेरी शान में कुछ वह्य नहीं हुई थी। जब आप बैठ गये तो ख़ुत्बा पढ़ा और फ़रमाया, ऐ आइशा! तुम्हारे बारे में ऐसी बात मुझ तक पहुंची है, अगर तुम बरी हो, तो बहुत जल्द ख़ुदा तुम्हारा बरी होना ज़ाहिर कर देगा और अगर तुम से गुनाह हुआ है, तो ख़ुदा से बख़्शिश मांगो और उस की तरफ़ रुजूअ हो, क्योंकि बन्दा जिस वक़्त अपने गुनाह का इक़रार करता और तौबा कर लेता है, तो ख़ुदा भी उस पर रुजूअ फ़रमाता और उस की तौबा क़ुबूल कर लेता है। जब आप बात ख़त्म कर चुके, तो मेरे आंसू थम गये, यहां तक कि एक क़तरा भी आंख से नहीं निकलता था। फिर मैं ने अपने बाप से कहा कि आप मेरी तरफ़ से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जवाब दे दीजिए। उन्हों ने कहा, मैं नहीं जानता कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से क्या कहूं। फिर मैं ने अपनी मां से कहा कि आप जवाब दे दीजिए। उन्हों ने भी यही कहा कि ख़ुदा की क़सम! मैं नहीं जानती कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से क्या कहूं। फिर मैं ने ख़ुद ही कहा, हालांकि मैं एक नव-उम्र लड़की थी और क़ुरआन भी बहुत-सा नहीं पढ़ा था कि जो क़िस्सा आप ने सुना है, वह मुझे मालूम हो गया है और यह भी कि आप उसे बावर कर चुके हैं, लेकिन अगर मैं कहूं कि मैं बरी हूं और ख़ुदा ख़ूब जानता है कि मैं बरी हूं तो आप उस को सच नहीं समझेंगे और अगर इस का इक़रार कर लूं हालांकि ख़ुदा जानता है कि मैं उस से बरी हूं, तो आप इस को मना लेंगे, सो ख़ुदा की क़सम! मैं वही बात कहती हूं, जो यूसुफ़ के बाप ने कही थी कि 'फ़सब्रुन जमील वल्लाहुल मुस्तआनु अला मा तसिफ़ून०' फिर मैं वहां से उठ कर अपने बिस्तर पर आ लेटी और मैं यक़ीन करती थी कि चूंकि मैं बरी हूं, इस लिए ख़ुदा ज़रूर मेरे बरी होने का एलान फ़रमायेगा, लेकिन मैं यह ख़्याल नहीं करती थी कि मेरी शान में क़ुरआन की आयतें नाज़िल होंगी, क्योंकि मैं अपनी शान को इस से कमतर समझती थी कि ख़ुदा मेरे बारे में अपना कलाम नाज़िल फ़रमाएगा, जो हमेशा पढ़ा जाएगा, अल-बत्ता उम्मीद ज़ाहिर करती थी कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

कोई ख़्वाब देख लेंगे, जिस में ख़ुदा मेरा बरी होना ज़ाहिर फ़रमाएगा। सो ख़ुदा की क़सम ! अभी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मज्लिस से तश्रीफ़ भी नहीं ले जाने पाए थे कि ख़ुदा ने आप पर क़ुरआन नाज़िल फ़रमाया और वह्य नाज़िल होते वक़्त जिस तरह आप पसीना-पसीना हो जाते थे, उसी तरह उस वक़्त आप के मुबारक जिस्म से मोतियों की तरह पसीने के क़तरे टपकने लगे। जब वह हालत दूर हो गयी तो आप का चेहरा खिल उठा और पहला जुम्ला जो आप की मुबारक ज़ुबान से निकला, वह यह था कि ऐ आइशा रज़ि० ! ख़ुश हो जाओ, ख़ुदा ने तुम्हें बरी क़रार दे दिया है। जब ख़ुदा ने हज़रत आइशा के बरी किए जाने में 'इन्नल्लज़ी-न जाऊ बिल इफ़्कि अुस्बतुम मिन्कुम' से दस आयतें नाज़िल कीं, तो हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा कि अल्लाह की क़सम ! मैं आगे मिस्तह को कुछ ख़र्च नहीं दूंगा। मिस्तह हज़रत अबूबक्र रज़ि० के अज़ीज़ों में थे और ग़रीब थे। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ख़र्च से उन की मदद किया करते थे, लेकिन इत्तिफ़ाक़ से इस बोहतान के तज़्किरे में वह भी शरीक हो गये थे। जब हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने क़सम खायी कि वह मिस्तह को ख़र्च नहीं देंगे, तो ख़ुदा ने आयत 'व ला यअ्तलि उलुल फ़ज़्लि मिन्कुम' नाज़िल फ़रमायी। इस पर हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने पहले ही की तरह ख़र्च देना जारी कर दिया और कहने लगे कि अल्लाह की क़सम ! मैं इस को ख़र्च देने से कभी हाथ न रोकूंगा।

(पृष्ठ ८१३ का शेष)

ग़लबा हासिल करें या जान ही दे दें।

चुनांचे साथियों को हुक्म दिया कि ख़ुदा का नाम ले कर चल दो। फिर वहां से रवाना हुए और मुरार की घाटी में से हो कर हुदैबिया के परले सिरे जा उतरे। वहां आप के पास क़ुरैश के कई आदमी एक-एक कर के आते रहे। आप उन से यही फ़रमाते रहे कि हम तो सिर्फ़ काबा की ज़ियारत के लिए आए हैं, लड़ाई लड़ने नहीं आए। वे लोग जो बातें यहां सुनते थे वहां जा कर कह देते थे। आख़िर में आप ने अपनी तरफ़ से हज़रत उस्मान रज़ि० को क़ुरैश के पास यह पैग़ाम दे कर भेजा कि हम लड़ने नहीं आए, ख़ाना-ए-ख़ुदा की ज़ियारत करने को आए हैं, अभी आप वापस नहीं आए थे कि यहां यह अफ़वाह उड़ गयी कि आप क़त्ल कर दिए गए हैं। यह ख़बर सुन कर जनाब रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को लड़ाई का इरादा करना पड़ा और इसी इरादे से आप ने मुसलमानों से बैअत ली, जिस को 'बैअतुरिज़्वान' कहते हैं। उधर कुफ़्फ़ार को जो यहां के हालात मालूम हुए, तो वह जोश व ख़रोश हल्का पड़ गया और उन्हों ने सुहैल बिन अम्र को हज़रत सल्ल० के पास समझौते के लिए रवाना किया और समझौते की शर्तें यह क़रार दीं कि आप अब के बे उमरा किए वापस चले जाएं, अगले साल उमरे को आएं और सिर्फ़ तीन दिन ठहरें और तलवारों के सिवा कोई हथियार साथ न लाएं और उन को भी म्यान से न निकालें।

शर्तें हज़रत सल्ल० ने मंज़ूर फ़रमा लीं और सुलहनामा तैयार होने लगा, तो आप ने हज़रत अली रज़ि० से फ़रमाया कि लिखो, 'बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम' तो सुहैल बोला, हम नहीं जानते 'बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम' क्या है, 'बिस्मिकल्लाहुम-म' लिखो। फिर आप ने फ़रमाया लिखो 'मिम मुहम्मदिर्रसूलुल्लाह' तो कहा कि हम अगर इस बात को मान लेते कि आप ख़ुदा के रसूल हैं, तो आप की पैरवी ही न अपना लेते ? अपने वालिद का नाम लिखवाइए, तो आप ने फ़रमाया, लिखो, 'मिम मुहम्मदिब्नि अब्दुल्लाह' और एक शर्त कुफ़्फ़ार ने यह की कि जो शख़्स आप की तरफ़ से हमारे पास जाए, हम उसको वापस न करेंगे और जो हमारी तरफ़ से आपके पास जाए, आप उस को वापस कर दें। इस समझौते की जो मसलहत थी, उस को तो जनाब रसूले ख़ुदा ही ख़ूब समझते थे, लेकिन जोशीले साथियों को सुलह की बातें बहुत बोझ मालूम हुयीं और सख़्त रंजीदा हुए और इस पर ख़्वाब का मामला उन को बे-दिल किए देता था। वे यह समझते थे कि इसी साल उमरा करेंगे, मगर जाते हैं नाकाम व ना-मुराद। इसी बीच एक ना-ख़ुशगवार वाक़िआ पेश आया कि अभी सुलहनामा लिखा ही जा रहा था कि अचानक

अबू जुन्दल बिन सुहैल बिन अम्र, पैरों में ज़ंजीर पड़ी हुई, कुफ़्फ़ार में से भाग कर पास आ मौजूद हुए, तो सुहैल ने कहा कि जिन लोगों के बारे में मैं आप से समझौता करता हूं, उन में यह पहला शख़्स है, इस को आप मेरे हवाले कर दीजिए। आप ने फ़रमाया कि अभी तक सुलहनामा मुकम्मल नहीं हुआ। उस ने कहा कि मामला उस के आने से पहले तै हो चुका है। आप ने फ़रमाया, हां, यह सच है। फिर सुहैल ने उठ कर अबू जुन्दल का गरेबान पकड़ लिया और अबू जुन्दल धाड़ें मार-मार कर रोने और कहने लगे कि मुसलमानो ! तुम मुझे मुश्रिकों के हवाले क्यों करते हो ? ये तो मुझे मेरे दीन से हटा देंगे। हज़रत सल्ल० ने फ़रमाया, अबू जुन्दल ! सब्र कर और ख़ुदा से अपने बदले की उम्मीद रख, ख़ुदा तेरी मुश्किलों का हल करने वाला है। हम तुझ को हरगिज़ वापस न देते, लेकिन हम इन लोगों से इस बात का अह्द कर चुके हैं और हम अह्द तोड़ना नहीं चाहते। बहरहाल ये बातें मुसलमानों पर बहुत बोझ रहीं और इन्हों ने उन को बड़ा दुखी किया, लेकिन यह समझौता ही था, जो तमाम कामियाबियों की तम्हीद साबित हुआ। इस के बाद वही बात हो गयी—

जिधर रुख़ किया, सल्तनत ज़ेरे फ़रमां,
जिधर आंख उठायी ममालिक मुसख़्ख़र॥

(पृष्ठ ९९१ का शेष)

फ़रमाया। ख़दीजा ने आप को तसल्ली दी और वरक़ा बिन नौफ़ल (अपने चचेरे भाई) के पास ले गयीं। ये बूढ़े शख़्स जाहिलियत के ज़माने में ईसाई हो गये थे। उन्हों ने आप से यह माजरा सुना तो कहा कि यह वही नामूस है, जो ईसा पर उतरा था और ख़ुदा ने आप को पैग़म्बर किया है और यह भी कहा, काश मैं जवान होता और जिस वक़्त आप की क़ौम आप को वतन से निकालती, उस वक़्त तक ज़िन्दा रहता। आप ने पूछा, क्या वे मुझ को निकाल देंगे ? उस ने कहा, हां, जो शख़्स ऐसी चीज़ लाया करता है जो आप लाए हैं, लोग उस के दुश्मन हो जाया करते हैं। अगर मैं उस वक़्त तक जीता रहूंगा तो तुम्हारी बहुत मदद व हिमायत करूंगा। मगर उस के थोड़े ही अर्से के बाद वह इन्तिक़ाल फ़रमा गये और जी की आरज़ू जी ही में ले गये।

२. यह मतलब भी हो सकता है कि अगर यह मना करने वाला शख़्स सीधे रास्ते पर होता और परहेज़गारी की बातें सिखाता तो क्या अच्छा होता। तफ़्सीर लिखने वालों ने लिखा है कि मना करने वाले शख़्स से मुराद अबू जह्ल है, जो नमाज़ पढ़ते वक़्त आप को देखता, तो चिढ़ाता। ख़ुदा ने फ़रमाया कि क्या यह नहीं जानता कि ख़ुदा उस के कामों को देख रहा है और अगर यह ऐसी गुस्ताख़ियों से बाज़ न आएगा, तो हम उस को घसीट कर जहन्नम में दाख़िल कर देंगे। कहते हैं कि दुनिया में भी उस को यह सज़ा मिली कि बद्र की लड़ाई में मारा गया और घसीट कर गढ़े में डाल दिया गया।

(पृष्ठ ९९९ का शेष)

कर हलाक किया, तो इस लिए कि क़ुरैश जाड़े और गर्मी के सफ़र से मानूस हो कर अपने शहर में अम्न व अमान से रहें।

२. बहुत-सी हदीसें हैं, जिनसे साबित होता है कि कौसर बहिश्त की एक नहर का नाम है जो हज़रत सल्ल० को अता हुई है। हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि आंहज़रत सल्ल० को ऊंघ आ गयी, फिर सर उठा कर मुस्कराए और मुस्कराने की यह वजह बयान फ़रमायी कि अभी मुझ पर एक सूरः नाज़िल हुई है और फिर यह सूरः पढ़ी और फ़रमाया कि तुम जानते हो कि कौसर क्या चीज़ है। सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया कि ख़ुदा और रसूल ही जानें। फ़रमाया, वह एक नहर है जो ख़ुदा ने मुझ को बहिश्त में दी है, इस में ख़ैरे कसीर (बड़ी भलाई) है।

क़ुरआन ख़त्म करने के बाद की दुआ

अल्लाह बुलन्द और अज़मत (बड़ा दर्जे) वाले ने सच्चा कलाम नाज़िल (उतारा) किया और उसके रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जो बहुत ही इज़्ज़त और इकराम वाले नबी हैं, उन्होंने सच सच हम तक पहुंचा दिया। हम सब उसके सच्चा होने की गवाही देते हैं। ऐ हमारे रब ! तू इस क़ुरआन की तिलावत (पाठ) हम से क़ुबूल फ़रमा, बेशक तू बड़ा सुनने वाला, जानने वाला है।

ऐ अल्लाह ! तू हमें क़ुरआन मजीद के हर एक हुरूफ़ के बदले में ईमान की लज़्ज़त (मज़ा) और मिठास अता फ़रमा (दे) और क़ुरआन मजीद के हर मक़ाम (जगह) के हर हिस्सा में से तिलावत करने की हम को जज़ाएं ख़ैर (अच्छा बदला) अता फ़रमा। ऐ अल्लाह हर (अलिफ़) के पढ़ने पर हमें उलफ़त (मुहब्बत) अता फ़रमा और (बा) के सबब बरकत अता फ़रमा और (ता) के पढ़ने पर हमारी तौबा क़ुबूल फ़रमा और (सा) के हर्फ़ पर हमें सवाब अता फ़रमा और (जीम) के पढ़ने पर हमें जमाल (ख़ूबसूरती) अता फ़रमा और (हा) के अदा करने पर हिकमत अता फ़रमा और हर्फ़(ख़ा)के पढ़ने पर हमें ख़ैर(भलाई)से नवाज़ दे और(दाल)के अदा करने(पढ़ने)पर हमें दलील अता कर और हर्फ़(ज़ाल)के पढ़ने पर हमें ज़िक्र(याद)की तौफ़ीक़ अता फ़रमा और हर्फ़(रा)पर हमें अपनी रहमत से नवाज़ दे और(ज़ा)पर हमें साफ़ सुथरापन अता कर और (सीन) से हम में सआदत मन्दी (नेक बख़्ती) पैदा फ़रमा और (शीन) के पढ़ने पर शिफ़ा (तन्दुरुस्ती) अता फ़रमा और (साद) पर हमें सच्चा सादिक़ (सच बोलने वाला) बना दे और (ज़ाद) से हमें रोशनी में चला दे और (तो) से हमें ताज़गी अता फ़रमा और (ज़ो) से हमें कामयाब कर और (ऐन) से हमें इल्म (ज्ञान) अता फ़रमा और (ग़ैन) से माल की कुशादगी अता फ़रमा और (फ़ा) से फ़लाह (निजात) और फ़तह (कामयाबी) अता फ़रमा और (क़ाफ़) से हमें अपनी क़ुर्बत (नज़दीकी) अता फ़रमा और (क़ाफ़) हमें इकराम (अच्छाई) की जिन्दगी अता फ़रमा और (लाम) से हम पर लुत्फ़ व इनायत (मेहरबानी) की बारिश कर दे और(मीम)के बदले में हमें अच्छी नसीहत पर चला दे और (नून)से हम पर अपने नूर की किरनों को नुज़ूल फ़रमा और हर्फ़ (वाव) से हमें इत्तफ़ाक़ व इत्तहाद की बरकत से नवाज़ दे और (हा) के बदले हमें हिदायत (सीधी राह) पर चला दे और क़ुरआन मजीद में हर जगह तिलावत में आये हुये (या) की बरकत से हम को यक़ीने मुहकम (पक्का यक़ीन) अता फ़रमा।

ऐ अल्लाह ! हमें तू अज़मत (बुज़ुर्गी) वाले क़ुरआन मजीद की बरकत से ख़ूब नफ़ा अता फ़रमा और हर आयत की दानिश मन्दाना (बुद्धिपरख) नसीहत से हमारे दरजात में बुलन्दी अता फ़रमा और हमारे इस पढ़ने पढ़ाने को क़ुबूल फ़रमा। क़ुरआन मजीद की तिलावत के मौक़े पर हम से जो ख़ता (ग़लती) हो गई हो और भूल चूक हुई हो उसे माफ़ कर दे, क़ुरआन पढ़ते वक़्त किसी लफ़्ज़ में उस के ठिकाने से हट कर ग़लती की हो तो उसे माफ़ कर दे या कोई हर्फ़ आगे पढ़ लिया, या आगे का पीछे पढ़ लिया, या कोई हम से ज्यादती हुई, या पढ़ने में कमी हुई सब हम को माफ़ फ़रमा और तूने जो कलाम नाज़िल फ़र्माया (उतारा) उस के ख़ुलासे में ग़लती करने से हम को बचा ले, हर तरह के शक शुब्हा और भूल चूक से हमें बचा ले, चाहे नामुनासिब

आवाज से पढ़ने में आ गया हो, या क़ुरआन की तिलावत में हम से उजलत (जल्द बाज़ी) हो गई हो, या सुस्ती सी हो या कहीं तेज़ी से गुज़र गये हों या पढ़ते वक़्त हमारी ज़ुबान लड़खड़ा गई हो, तो ऐसी तमाम भूल चूक से दर गुज़र फ़रमा।

पढ़ते वक़्त जहां ठहरने की जगह हो वहां न ठहरे हों या अल्फ़ाज़ (शब्द) मिला कर पढ़ने की बजाए बग़ैर मिलाए पढ़ लिये हों या कोई ऐसा लफ़्ज़ जो तूने बयान न फ़रमाया हो और हमारी ज़ुबान से निकल गया हो, तो उसकी भी हम तुझ से माफ़ी चाहते हैं।

ऐ अल्लाह ! क़ुरआन मजीद में कोई मद (~) की जगह हो या तशदीद (ّ) या जहां तशदीद न हो, या जज़म (ْ) हो या कोई ज़ेर, ज़बर (ِ , َ) और पेश (ُ)। इस तरह पढ़ लिया हो जो वहां लिखा हुआ न हो, तो उस भूल की भी हम तुझ से माफ़ी के तलबगार (चाहने वाले) हैं। रहमत की आयत पढ़ते वक़्त बग़ैर रग़बत (लगाव) के पढ़ लिये हों और अज़ाब की आयातें पढ़ने पर हमारे दिल में तेरा डर पैदा होने की कमी रह गई हो तो माफ़ कर दे।

ऐ हमारे रब ! हमारे गुनाहों को माफ़ फ़रमा और हक़ (सच्चाई) की गवाही देने वालों की फ़ेहरिस्त (सूची) में हमारा भी नाम लिख ले। या अल्लाह ! हमारे दिलों को क़ुरआन मजीद के नूर (रोशनी) से जगमगा दे, हमारे अख़्लाक़ (आचरण) में क़ुरआन मजीद की तालीम से ज़ीनत पैदा फ़रमा। ऐ अल्लाह ! क़ुरआन मजीद की बरकत से हमें आग से निजात अता फ़रमा और क़ुरआन मजीद के ज़रिए हमें जन्नत में दाखिल अता फ़रमा। ऐ अल्लाह ! दुनिया की ज़िन्दगी में हमारे लिये क़ुरआन मजीद को तुझ से ताल्लुक़ बनाये रखने का ज़रिया बना और क़ब्र में क़ुरआन मजीद की बरकत से हमारे लिये वहशत (खौफ़) को दूर कर दे, आखिरत का रास्ता तै करने पर हमारे लिये क़ुरआन मजीद को जन्नत में हमारा रफ़ीक़ (साथी) बना दे और आग से बचने की ढाल बना और तमाम भलाइयों के हासिल करने में क़ुरआन मजीद को हमारे लिये दलील (राह बताने वाला) बना दे और तमाम भलाइयां हमारे लिये नामए आमाल (कर्मनामा) में दर्ज फ़र्मा (लिख दे) और हमें तौफ़ीक़ दे कि सच्चे दिल से, साफ़ सुथरी ज़ुबान से, खैर व भलाई की मुहब्बत से और ईमान की बशारत (खुश खबरी) से हम माला माल हो जायें।

और ऐ अल्लाह ! तूने दरूद व सलाम का तोहफ़ा हज़रत मुहम्मद सल्ल० को अता फ़रमाया है जो तेरी मख़्लूक़ में सब से अफ़ज़ल (उत्तम) और बेहतर हैं और तेरे लुत्फ़ व इनायत (मेहरबानी) की हम को पहचान कराने वाले हैं जो हम सब के सरदार हैं और अपने अर्श (तख़्त) के नूर से तूने उनको नवाज़ा (अता किया) है। ऐ अल्लाह ! तू हम सब की तरफ़ से दरूद व सलाम का तोहफ़ा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर, उन की अज़वाजे मुतह्हरात (पाक बीवियों) पर उनकी औलाद पर और उन के तमाम असहाबे किराम (नेक साथियों) तक पहुंचा दे, सलाम पर सलाम और बहुत बहुत बहुत सलाम......

अल्लाहुम्मा सल्लि अला मुहम्मदिन०